& duc.

## শৰ্কল্পদ্ৰনঃ

অর্থাৎ

এতদেশস্থ সমস্ত কোষাশেষশাস্ত্র সঞ্চলিতাকারাদিবর্ণ ক্রমবিন্যস্ত শব্দ তল্লিঙ্গ নানার্থ পর্য্যায় প্রমাণ প্রযোগ ধাতু তদনুবন্ধাভিধেষ সহিত তত্তচ্ছক প্রসঙ্গোখিত বেদ বেদাঙ্গ পুরাণেতিহাস জ্যোতি স্তন্ত্রাখ্যান কাব্যালকার চ্ছকঃ প্রভৃতি নাম লক্ষণোদাহরণ জব্যগুণ রোগনিদানৌষধ স্মৃত্যুক্ত ব্যবস্থাদি সংযুক্ত সর্বদর্শন মতানুসারি সংস্কৃতাভিধানগ্রন্থঃ

---

তত্র

## পঞ্চন কাণ্ডঃ

রাজ্ঞীরাধাকান্তবাহাদুরেণ বিরচিতঃ

১৭৬৬ ষট্ষষ্ট্যধিক সপ্তদশশত শকাব্দে কলিকাতাখ্যনগরে শ্রীপ্রাণক্ষকনাগেন মদ্রান্ধিতঃ



द्र (द्रकः। यथा। वर्गाटकात्र उकारही व्राप्तिकः। ইতি कलाश সংক্ষিপ্ত जात्रवहाकत्राणः ॥ (त्रकाट कात्रका त्रकातः। ইতি পুক্রিशাকৌনুদী॥ স তু সপ্তবি•শ হলবর্ণ:। তস্যোচা-त्रव इति मूर्वा। इंडि मूर्वावायवा क्रा । । । ।। उन्। यक्ष भ यथा। (त-कक हकनाशांकि क अनी घर मः ব্তং। রক্তবিদ্যুল্ল ভাকারং পঞ্চে-वाञ्चकः मना॥ भक्षभाग नयः वर्गः ত্রিবিন্দ সহিত সদা। ইতি কাম-(धनु उट्य ५ भटेन: ॥#॥ उम्र (नः थन भू नादा गया। मक्क उः क उनी রেখা বামাদ্দ গভাপ্যধ:। পুন দ্দিক্গতা দ্বেধা ততো হথো গত্য कार्क **३:** ॥ खवानी महत्त्र। वि স্তাসু ভিষ্ঠন্তি নিত্যশং। অজনাত্রা युक्तन्त्रा गराणकिः भुकीर्विजा।। ইতি বর্ণোদ্ধারতন্ত্র•॥ র: পু: পাবক:।। তীক্ষ:। ইতি (मिनि।। कानविद्यः। ইতি শক ब्र्वावनी।। व्रः हो (दगः। इंडामदः॥ **रक क शारा। या भरा। ই** ७ कवि-

कन्नकनः॥ चार्ता त्रामाभारानः।

ক রাক্ষতি মোদক বালক:।

इिंड मूर्गामामः ॥

ब्रकः क्ली बह्नुमः॥ जामुः॥ भाषी-নামলক । ইতি মেদিনী ॥ পদ্মক ।। त्रिन्स्द्र॰ ।। श्रिकृतः । ইতি दाकः निर्घण्डः ॥ नदीवष्ट्र मश्रभाद्रश्चर्ण्ड वाज्वित्मवः। ७८ वर्गागः। कवित्रं २ व्यम्क् ३ (वाह्ड ४ व्यमुः ६ कः তজ ৬ শোণিত ৭। ইত্যমর:।। পলস্কার ৮ রে।হি ত ১ রক্ক > ১০ । इंडि भद्रबद्दावनी ॥ कीनानः ১১ व्यक्षक १२ (द्राधित ) १३ वर्ष १४ । इंडि ब्रोगंबरः॥ वृत्रुः २६ म्नानः ३५ (वारु· )१ हर्यक्र ३৮। ইতি রাজ-निघक्तः॥ 🗱 ॥ व्यथ त्रक्रमा स्वन् মাহ। যদা রসে। যক্ষাতি তত্ত রঞ্জ ক পিত্তঃ।রাগণ পাকঞ্চ সংপাপ্ত न ভবেদুক म•छकः ॥ द्रकः नर्द **ण**द्रीद्रष्ट्रः कीवम्याथात्र উख्यः । স্থি ওক চল স্বাদু বিদ্যা পিত্ত বন্তবেৎ॥ জীবস্যাধার উত্তম ইতি । যত আহ। জীবো বসতি সর্গমিন্ (मरह छव विष्मय उ: । वीर्यं। ब्राक्ड मल यिम् कीए या उक्य क-गाहि ।। वीर्य्य ब्राङ गल **५ म**-রীরারম্ভকে। বাণ্টোক্ত পরিমাণ নিতে শুদ্ধে জীবো বসতি নত্ দুষ্টে नुवृद्ध ब्रक्त मावाना शाम मा विवर्ष नुमकार । शिखवर्ख्य । अमः

ख्रिकाशः ॥ # ॥ ख्रश्च तक्रमा श्राम मार्च। यक् श्रीका ह तक्रमा मूथः श्रामः ख्राः श्रिकः। ख्रमाः ख्रानि श्रिक्वाः त्रकामाः शाय-कः ख्रायः ॥ इति ख्राय्याः । ॥ # ॥ तक्रमायमाम्यकोवयः यथा । तुक्रपष्टि क्षाः शिष्टेः वाति। ख्रम् (व्राप्तः । (च्र घ्रेडेः तक्र द्रायः श्रीमाऽकि म मःम्यः ॥ वृति गाक्ष्पि ऽऽर ख्रायः ॥

त्रकः भ्॰ (वाह् उदर्गः । इंड प्राप्तः ॥ अनुसुः ॥ हिज्जनः । इंडि द्राप्तः निघकः॥

तुकः वि अन्त्रकः ॥ नीनगरित्र क्षित्रः ॥ त्वारित्रः ॥ इकि प्यमिनी ॥ की मात्र त्रः ॥ इकि अतिः ॥ इकि ।। इकि ।। इकि अतिः ॥ इकि अतिः ॥ इकि ।। इकि ।। इकि ।। विकासि ।। वि পল্লবৌ ॥ ভাষ্ল রাগো মঞ্জিচা-লকক• রক্ত হন্দেন• । ত্রেতা নথক-় **उक्किन १याँ होनुद्रमान्यः ॥ 🕸 ॥** व्रक्त नीण वाहकानि यथा। (लाहिड नीलो भूक्षत इति विक्रम कमल क्य **ब्र**द्धानि । भिन्द्द ज्वरणार्शन धन-क्षयास्त्राजिनी मनानि ॥ यथा । भू-ষর পদ্মাকাশযো:। হরি: সূর্য্য কৃ कर्याः। विक्रमः भुवाल विनिष्ठेतृकः যোঃ। **কমল॰ প**দ্ম পাণীয়ামলযোৱা ্ড क्षाञ्चः कोश्वरज्ञम्भीनायाः। नि-• ন্দুর ভূষণ সিন্দুরালক্ষার গছযো: । উ**्পन ग्**रक्ष्ठे नाग्रमन्तिवद्रासाः। **श्**नकुरमञ्जि भार्थस्याः। अस्म्राजिनी-म्म भद्मभव भवेकित्याता करना-বিপ পদ্মেশৌ নাগজিৎকান্ত সূৰ্য্যভূঃ । ब्रज्ञाकत् वब ज्ञीकः भराधिकम्बन्धः তিঃ।। কনলাধিপ পামশো নূর্য্য क्ष्मे। नागहिए शक्षा नागल-ष्वी है। काष्ठः कर्नीयः व अन **७म** (१७७६ । मृय) छः मृत्ये (१ छत्व। य-भक्त।। भना भिन्तुत मूख्छ । कलयम् কণল শূিশ•। স্কুট শোভন তানুঞী বঁরাহ বানি দীধিতিং॥ এব সুস-ম্পন থ পুভঃ বিদ্যানণি দী ব্ৰিভিঃ। প্ৰাল প্ৰল্ভায়: কল্ভান নিত-ह्दिः ॥ 🗱 ॥ **त्रक** स्थ **वा**ठकानि

খথা ৷ রক্ত খেলে হরি শৃচি পদ্ধ 🏻 **শতপত্র নূর্য্কান্তারুঃ। নব্হংস ন**ং हानचार्क (मारदाः कमन कीना-**ल्या इति कल्यु मुयुर्गाः। कृ**ष्टिः **प्य ७ देवश्वानद्रायाः । श**ुक्रद्र• अ*ल*ः भग्रायाः। **भ उभ** ब • इ • म भग्रायाः । भूगं/कान्तः मुहित्क न्यं/देशकात्ने ह। चतुः नज्ञावज्ञत्याः। नवङ्भः নবহ-সে পুত্যগুস্যে চ। নহাপ। মু: খেতনগে পদ্মেচ। অক: मु. हेक म्याराक्षाक्रमण बनायुक-(याः। कं। नानः जनतक्याः॥ मू कृर्वानि ७ जात्म ब्राह्मनाः बनाः শুকৈ: জলেভ্যে জন্ম শোভাভি: সরোর স্থ্রারিভি:।। ভানোঃ পরবাৎ সৃত্তু দুরাদিভিঃ ॥ # ॥ नि **उ द**क्को यथा। द्रवि निब• हम्मः রবিত্ব্যাচে। ভানুরর্ণ সুর্য্যান্তঃ ন্ধবি পদ্মরাগৌ চ। অগ্নিরত্র• স্বা/-কান্তো হল্লি পদ্যরাগৌ চারনা শূক দন্তবন্তে অধরশ্চ। জলজ শেভা কলজা চামৌ শোভা চেত্রি পক্ষে পদাকান্তি:। এবং সরোজা রিশোভা সরোজম্পজিশোভা পক্ষে সরোজারি শ্লন্তঃ। ক্যুদা রি শোভা **স**মুদস্যতি শোভা প **क्ष स**ग्राति त्रारिछाः। ইভি क

বিকল্পলভাষা ২ লেবস্তবকে উ-দিষ্টবর্ণন নাম ১ সমূম ।।

রক্তকঃ পুণ অস্তানবৃক্ষঃ। বন্ধ্রক্তকঃ

। রক্তব্যা । অনুরাগী । ইতি
নেদিনী ॥ বিনোদী । ইতি শব্দ রত্তাবলী ॥ রক্তশিশুঃ ॥ রক্তৈর ওঃ
। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

রক্তকন: পু॰ বিজন:।ইতি হেন-চন্দু:।। রাজপলাণ্ডু:।। রক্তালু:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

রক্তকললঃ পু॰ পুরাল•। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ॥

त्रक्तनमः क्षे त्रक्तर्नाः श्वाः।

ठ० शर्यायः। (काक्रमरः २ द्रकाः

द्धाद्धः २ स्रक्तक्तर्मः ८ स्मानमः

प्राः ६ द्राक्वाः भागः ४ स्विदिन् १ भ द्रितिस् ५ द्रक्वदित्रः २। स्वत्रद्रः । छाः। कर्रेद्रः। ठिक्दः। म्वत्रद्रः । भागावद्रः। द्रक्तव्याद्वद्रः। भिज्ञक् वा ५ स्वत्रद्रः। स्वत्रद्रः। भागावद्रः। द्राद्धः। ইठि त्राक्षः निवन्द्रः॥

तक क्षण हो। तक ८ भण । यथ।।

क्रमाधक कर्त्र क्रक्टिक जूनक्रिकिः। क्रोलः क्रिटिः भे हाः

क्रोरित तक क्रिलः॥ करेल व्भित्रभूरेभक भारति ६५ मि मु-

े ढि: । व्यह्र्यद्विन द्राजानः मस्त्रन | द्रक्टेकद्रवः क्षी দ্বিজ সত্তম: ।। ইতি পাদ্মোত্তর थएउ >० व्यथायः ॥

রক্তকরবীরক: পু• লোহিতবর্ণকর-वीत्रभूञ्चवृक्षः । नान्कत्नन् ३७ **क्ति**ली **ভाষা। ७**९ পर्यग्रायः। রক্ত **পুস**বঃ २ गान**नक मूमः ३ छ** छी असू ম: ৪ কুর: ৫ ভূতদাৰী ৬ রবিপুর: ৭। অস্য ভণাঃ। কটুত্ব•। তীক্ষ্ব•। विष्णाधनञ्च । इत्याव व्रा कञ्ज হ্ব বিষহরত্বঞ্চ। ইতি রাজনিঘণী:

त्रक्रकाक्षनः भू यनानथाउभूञ वृक्कविष्मयः। **७८ भ**र्यप्रायः। विष-লঃ ২ চমরিকঃ ৩। ইভি শব্দরত্ন। वनी ॥ काकना नः ८ जामुनु यः ৫ व्यनात्रः ७। ইতি क्रिवादतः ॥

तकका । जी तकभूनर्नता । इंडि রাজনিঘণী: !!

রক্তকাষ্ঠ ক্লী পত্তক্।ইভিরাজ-নির্ঘণ্টঃ।। লোহিভবর্ণদাক্ চ।।

রক্তপ্যুদ• ন্নী রক্তকৈরব॰।ইতি क्रहाथतः ॥

রক্তসমূমঃ পু॰ পারিভদুঃ।। ধর্ম-বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

রক্তকেশর: পুণ পারিভদু:। ইতি রাজনিষ্ট:।। পুমাগবৃক্ষ:। ইতি इड्नाना ॥

व्रक्तभगूषः। ইঙ্কি किराधनः॥

রক্তকোকনদ• ক্লী রক্তোৎপল•। इंडि क्रोधितः॥

রক্তথদির: পু॰ রক্তবর্ণথদিরবৃ**ক্ষ:।** তৎপর্য্যাयः। রক্তসার: ২ সুসার: ৩ তামুসারক: ৪ বহুশল্য: ৫ যা-জ্ঞিকঃ ৬ স্বস্থানাদনঃ ৭ যুপজনঃ ৮ অসুথদির: ১ অক: २०। অস্ত खगाः। क्रुवः। उक्ववः। कंषायवः। **खक्त्रः। ठिक्क्नुः। व्याम**वाजापुः বাত বুণ ভ্ত জ্ব নাশিত্বঞ। ইতি द्राजनिर्घणेः॥

রক্তগন্ধক লী বোল। ইতিরাজ-निर्घणः॥

রক্তগুলা: পুণ জীণা রক্তরশুলারোগঃ । তञ्य निमानामि छन्य मास्य पृष्टेवाः ॥ उत्मारिषः यथा। विवयश्चीवि-কটুক দূর্ণ পীত হরেছিব। ভিল-ক্বাথেন সংযুক্ত রক্তগুল্ম: **ব্রি**ধা **হর** ।। ইতি গাৰুডে ১৯৬ অধ্যাय: ।।

ুপু• রোহিতকবৃক্ষ:।ইতি करेग्यतः ॥

ब्रक्शी **की मृर्वादिष्मयः।** गाँठिया-**मृ**र्द्वा इंडि ভाষा। यथा। मस्रोयि **ষ্চ গোলোম্যা• রক্ত**দ্মী রক্তপিত্ত-इ।। ইতি শব্চিন্দুকা।।

- <del>द्राक्कुन्स्</del>न॰ क्ली द्राक्क्वर्ग**ठन्स्न** । उ९-नकायः। जिन्ननो २ नजातः उं े त्रक्षन ८ घटन्यन ७। ইত্যনর:॥ তামুসার ও তাম্বৃক্ষ: ৭চন্দ্ন ৮ ) ইতি রত্নালা n লোহিত ১ শোণিতচন্দন ১০ রক্তসার ১১ ं छामुभावकः १२ क्षृपुरुग्रतः १३ वा ্ ক্চন্দ্ৰ ১৪। ইভি রাজনিঘট:॥ রকাক। ১৫ পুবালফল। ১৬। ইতি ভাবপুকাশ: ৷৷ অস্য গুণা: ৷ অতি . मी उन्दर । उिक्र**दर । वेक**नगः তাসুদোষ ভূত পিত্ত কফ কাস জ্বর ভাষ্তি জন্ত বমথু ভ্যা নাশি-ত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ অপিচ । রক্ত পীত গুৰু স্বাদু ছদি তৃষ্ণা-সু পিত্তৃৎ।পিত্তনেত্র হিত বৃষ্য জুর বুণ বিষাপছ ।। ইতি ভাব-পুকাশঃ।। অন্যন্ত। রক্তপিত্তহর• वना । हक्षु वा । इंडि রাজবলভ:॥

রক্ত চিত্রক: পু॰ ক্ষুপবিশেষ:।রাক্ষতি কাইতি ভাষা। তৎ পর্য্যায়:।
কাল: ২ অত্যাল: ৩ কালমূল: ৪
অতিদীপ্য: ৫ নার্জার: ৬ অগ্নি: ৭
দাহক: ৮ পাবক: ৯ চিত্রাক্ষ: ১০
নহাক্ষ: ১১৷ অন্য গুণা:। পুরকা
যকরত্ব॰ । কচ্যত্ব॰ । স্কান্ধ্রণ ।

त्वाहरवधकष् । दमनियामकष् । तमायनष् । ইতি রাজনির্ঘট: ॥ तक्कर्णः क्ली मिन्द्र । ইতি हात्रा-वनी ॥ दक्कवर्ण्यमाञ्च ॥ तक्कस्व : भू ज्नामः। ইতি রাজ निर्घणः ॥ तक्कवर्णकस्त्रभाञ्च ॥ तक्किस्तः भू मिन्दः। ইতি मद-भाना ॥ दक्कवर्णकस्त्रापुरक् जि ॥ तक्किणो स्त्री तक्कवर्णकिष्णोभूस्रवृक्कः । उट्भयंऽ। एककवकः २ । ইতऽ-भतः ॥ तक्किशः भः मक्मस्त्री। ইতি রাজ-

রক্ত ও: পু॰ শ্কপক্ষী।ইতি রাজ-নিঘট: ।। লোহিত মুখ্যুকে ত্রি।। রক্ত তুওক: পু॰ ভ্নাগ:।ইতি রাজ-নিঘট:॥

রক্তত্ণা জী গোন্দ্রিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

রক্ত ত্রিক্ জী রক্ত বর্ণ ক্রিবৃত্তা। লাল তেউ ডী ইতি ভাষা। তৎ পর্য্যায়ঃ
। কালিন্দী ২ ত্রিপটা ০ তামুপু ক্লিকা ৪ কলবর্ণা ৫ মসূরী ৬ অমৃতা ৭ কাকনাসিকা ৮। অস্যা গুণাঃ।
তিক্তত্বং। কটু বুং। উষ্ণবুং। রেচন্ত্রুণ। গুহণী মলবিষ্ট স্তহারি বুং।
হিত্রকারি বৃঞ্চাইতি রাজনিহণ্টঃ।।
রক্ত দিন্তকা জী চণ্ডিকা। বথা।
ভক্ষ যন্ত্র্যাক্ত তান্গ্রান্ধিপুচিত্তান্

महामुद्रान् । त्रका महा खित्राहि माफिनी समूरमानमाः ॥ उट्छा मा॰ रम्य हाः सःनं मर्ज्यात्मार ह मानवाः। स्वरहा व्याह्र दिव्य हिमानवाः। स्वरहा व्याह्र दिव्य हिमानवाः। स्वरहा व्याह्र दिव्य हिमानवाः। स्वरहा व्याह्र दिव्य हिमानवाः। स्वरहा हिमानवाः। हिविलिका । स्वरहा हिमानवां हिविलिका । स्वरहा हिन्दी हि

রক্তনাসিক: পু॰ পেচক:। ইতি শব্দ রত্ববেলী । লোহি তনাসাযুক্তে ত্রি রক্তপ: পু॰ রাক্ষস:। ইতি নেদিনী।। রক্তপানকর্ত্তরি ত্রি।।

রক্পতিকা জী নাকুলী ॥ রক্তপ্ন-র্বা ৷ ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ লোহিত-প্রঞ্চা।

রক্তপদী স্ত্রী ক্ষুদুক্কবিশেষঃ। যথা
। শমীপত্রারক্তপদী সমস্বাঞ্জলি
কারিকা। ইতি জটাধরঃ।।

विज्ञान: भू॰ क्षी बक्तवर्गकमनः। उद्भग्रीय:। बक्तवर्गकमनः। त्राखार भवः २। (काकनरः ७।
इंडामतः ॥ ज्यमा भूमाण यथा।
रेगवा व्यविक कालाबा। दिवी मव्यविक विक कालाबा। दिवी मव्यविक शिका। देन्न। खग्रस्या व विज्ञा भोत्रासर्हिका॥ तक्तनगामम् व किं। मृष्टि मिख्या।
तक्कार्ययद्वा व मिख्यकः मजानना॥ नदस्योदनमन्त्रमा वादःकी व्यविक्रम्ला। इंडि खिथारिखन्।।

तकनलाः भ् व्यागकतृकः। ই ि व्याजनियं है ।। (लाहि उनवकः ॥ तकनकः भः भक्षः। ই ि कि हि ८॥ तकना की ब्रालीका।। हा किनी। ই ि व्याजनियां के विष्यां विष्यां के विषयां के विषया

্রত্নাবলী॥ রক্তপাদঃ পু॰ শুকপক্ষী।ইতিহেন-

চন্দু:।। লোহি ওচর ণয়ক্তে ত্রি।। রক্তপানী স্ত্রী লঙ্কালু:।। হণ্সপদী । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

রক্তপাবিনী জ্রী জলৌকা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

রক্তপায়ী পু॰ রক্তপানশীল:। ইঙি ব্যাক্রণ॰॥

;

वक्शावनः क्री हिन्दुनः। इति हाता वनी।। क्रोंचरव शूः।। वक्शिश्वः क्षी क्षवाशूप्रः। ইति मप्तवद्वावनी।। वक्शिश्वकः शूः वकान्।। ইति वाकनिर्यकः।।

রক্তপিত্ত• ক্লী রোগবি**শেষঃ। উ**স্য निमान यथा। धनुष्ठतिक्वाह। व्य থাতো রক্তলিন্তন্য নিনান পুর-मानाइः। ज्लाक जिक कर्न्न লবণাদি বিদাহিভিঃ। কোদুবো-पालक कार्राना खनुरेक **द्रांडरम** বিতৈ:। দ্বলিত পিত্তলৈ: লিভ मुद॰ द्रक्क मृह्र्य ।। एउ मिथ स ল্যুক্পত্ব নাগন্য ব্যাপ্ত বং ভনুং। পিত্তরক্তস্য বিক্তে: সংসর্গাদূ-यगानिमा। गञ्जवनानुव्रवयु ब्राङ ন ব্যপদিশ্যতে । পুভব্ত্যসূজ স্ত ষাৎ প্লীহতে। যক্তক তত্॥ শিরো গুকুর নক্চি: শীতেছা নধু का८ककः।इर्फि ठ्उइर्फि रेवड८ স্যুৎ কাশঃ স্থাসো ভ্রমঃ ক্লমঃ॥লো হিতো হলোহিতো মৎস্যা মগ-क्यामा १६ विङ्गः। तक राति मुर त्रिञ वर्गजा नयनामियू ॥ नील (ला-হিত্পী তানা বৰ্ণানামবিচেতন ।। ৰংপ্ন তদৰ্থ ধৰ্মি হু ভবত্যমিন্ ভ

বিষ্যতি। উদ্ধৃ • নাসাক্ষি কণ্টেস্য-र्प्यापु रयानि खरेन इदः ॥ जनिजः (ब्रामकृरे**न फ म**मरेख ख॰ भुवर्डर छ। উন্ধৃ • সাধ্য• কফাল্মাৎ ভদিরে-हन माविजः॥ बःख्रीयवक्ष निवंत्री विद्यादन हि वद्योगवं । अनुवक्षी क का यक उब उन्हां नि निक्रिक्ट ॥ कवायाः चारता यम्। विन् क (भूग्र त्वाहिजा: । कर्षे जिक क्याया वा (य निमर्गाट ककावहाः ॥ वात्वा या-भाक्ष नामुबाट **७**८ भुवर्खन जा-धन । अङ्गोषयक शिखन। वसन नन् होरथः॥ अन्विक्त ह लानन्। শান্ত পিত্ত'নরস্য তত্। ক্যাযাশ্চ হিতা স্তদ্য মধুরা এব কেবলং॥ কফ माक्ड मःग्रुड ममाध्यम् भनायनः। व्यमञ् भुजित्नामञ्चारमाधारमी-यथम्। है। । निर्वे मः । । यन कि विः -मम् । भुजित्यास्त । (भाषत পুতিলোনঞ্চরক্তপিত্তে বিনিজ্জিত• ।। এব মেবোপশমন সর শোধন भिवारा मामृष्टिया ह (नार्ययु म-ৰ্বথা ছৰ্দ্ন হিত ।। তত্ৰ দোষোত্ৰ গনন শোবাক্স ইব লক্ষ্যতে। উপ-দুবাশ্চ বিকৃত। ফলত স্তেষ্ চাধিক। ।। ইতি পাক্ডে ১৫০ স্ধ্যায়:।। # ।। তरम्)। यथः यथा। जित् जा जिक्ना

भागमा शिश्रनी भक्तरा मधु ॥ सामे-়কঃ সন্নিপাতান্তো **রক্তপিত জুরাপ**় रू:॥ वानायाः विनुतानाया **नाना**ः या॰ जी विजम्र ह। ब्रक्त शिखी क्यी কাশী কিমৰ্থ মবসীদতি॥ অটক্বক মৃদ্বীকা পথ্যা স্থাথ: সশকর:। ক্ষৌ ্দাঢ্যঃ কাশন খাস রক্তপিত্ত নিবর্ছ-नः॥३७ि गाक्ष**७) १८ व्यथ्यायः॥ 🗱॥** অপিচ। তত্র রক্তপিত্তস্য নিদান পূ-বিকা সংপাপ্তি মাহ। ঘর্ম ব্যাথাম শোকাপ্ব ব্যবাবৈ র**ভিসে**বিতৈ: । ভীক্ষেক কার লবণৈ রাম্ন: কটুভি (त्रव ह ॥ भिन्ड॰ विमक्षः ऋखेंग र्विम ্হত্যাশু শোণিত । তীক্ষণ মরিচাদি । উষ্ণে হণ্নিভাপাদিঃ। ক্ষারো যব क्कात्रानिः। विमक्षः मूचिउः। ऋखरैग ম্বকারণৈ গু গৈ স্তীক্ষাদিভিঃ। গুণৈ রিতি বহুত্বেন তীক্ষাম লবণ কট্ফ यगामरा। शृशास । विमञ्ज मृत्य-তি ৷৷ 🗱 ৷৷ রক্তপিত্তস্য সামান্যল-ক্ষণ মাহ। ততঃ পুৰৰ্ত্তে রক্ত মৃ-জ্ব বাথে। দ্বিধাপি বা। ব্লক্তমিত্যু-भनक्षा । उৎস সর্গি পিত্তঞ্চ । অতএব রক্তঞ্চ পিত্তঞ্চ রক্তপিত্ত মিতি দ্বন্ধ ইতি সুশুতঃ। রক্তঞ তৎ পিত্তঞ্চেতি রক্তপিত্ত রাগ-পাপ্ত পিত্ত নিতি কর্মধার্য ইতি

हब्रक: II मार्गानार I अक् नामा कि क्वारेम्य स्पूर्ण यानि च्टेम ब्रयः। ब्रिशिङ (द्वामक्रिशक ममेख खर् भुवर्खंड ॥ स्निष्ठ मिष्क्रिणेडः ॥ 🗱 ॥ भृदंकभगारः। जपनः भीजः काभिष् कश्रेश्मायन विभः। लाइ-গদ্ধিক নিখাসো ভবত্যমিন্ ভবি<sup>ই</sup> यां जिला का विशिष्ट क्ल मारा मानुः मभाधु मात्रशः भिहिषकः কফাদ্বিত । স্যাবাৰণ সফেণঞ্চ তনুক্কঞ্চ বাভিক- ৷৷ রক্তপিত্ত-কৰায়াভ কৃষণ গোমূত্ৰ সন্ধিভ।। মেচকাগার ধূমাভ মঞ্জনাভঞ্চলৈ **ब्हिक• ॥ म•मृष्टे विद्य• म•मर्गा**खि-লিক্ সামিপাতিক । সপাও क्वरभाख्। भिह्नि मग्रभिह्ह-বিযুক্ত । কৃষণ কজ্জলাভ । মেচক • চিক্কণ কৃষ্ণবর্ণ। অঞ্জন শূোতোঞ্জ-ন• তদাভ•॥ #।। স•সর্গাবিশেষেণ মাৰ্গভেদ মাহ। উদ্ধৃণি কফ সংসৃ-ষ্ট মধোগ॰ মাক তানুগ॰। ঘিমার্গ॰ কফ বাতাভ্যা• উভাভ্যা**• ত**ৎ **প্**-वर्ख्छ।। 🗱।। 🖰 भूवानाष्ट्र । (मीर्बन) খাস কাস জ্ব বনথু মদাঃ পাণ্ডতা माइ मूही ভূকে ঘোরো বিদাহ खु-ধৃতি রপি সদা হৃদ্য ত্ল্যা চ পীড়া । ভৃষ্ণা কোপ্তস্য ভেদঃ শিরসি চ

छनन পৃতি निष्ठी वनक। (हार्य। जुरक **e**বিপাকো বিকৃতি রপি ভবেদুক্ত পিত্তোপসর্গাঃ॥ উপসর্গা উপদ্বাঃ । विकृष्टि मां भ भूकालना उदारिः ॥ 🕸 ॥ मायुद्धापिक मारु । এक (मायानूग॰ माथा दिएमाय यापा म्हारा याधाराय मनायाः नाम् नताः त्र जित्वगवट् ॥ छेष्टु नाष्ठं माला गाना मनावाः यूगनमञ् । व्याधि : की गरि हम् वृष्यम्यानम्-७ म ग्टा 🛊 ॥ माथा माहा এक-মার্গণ বলবভো নাতিবেগণ নচোপ্থি-ভ•। ব্রক্তপিত্ত• সুখে কা**লে সাধ্য**• न्याधिक भूष ।। नृत्यकाल हिम निनिद्राराः॥ अ ॥ अनाषा मार्। মাণ্স পুক্ষালনাভ গ্ৰথিত নিব চ यट कर्पमारम्भा निजया त्यरः भूगाः जु कल्लः यक्षित यहि उ। श्रञ्जा वा কফ। ভং। যথ কৃষণ যह নীলং ভূশ-মপি স্বণপ যত্র চোক্তা বিকারা স্ত ঘজ্জা রক্তপিত্ত সুরপতি ধনুষা যছ তুল্যুণ বিভাতি॥ উক্তা বিকার। (दोईन)। द्याः। जूत्र शिष्ठ धनुषा कृषाः। নান। বর্ণ ॥ যেন চোপছতো ব্লক त्रक्तभित्वन मानवः । भाषाप्रम्भाः বিষয়াপি তছাসাধ্য মসংশ্য ॥ যেন রক্তপিত্তেন উপস্তা মনুষ্য:

দৃশ্যু ঘট পটাদিক বিষ্টু রক্ত প **শ্যুক্তি স নশ্যুক্তি** বিষয়াপি অদৃশ্যু মপীত্যর্থঃ॥#॥ অরিষ্ট নাহ। লো-হিত্ত ছর্দযেদাস্ত বহুশো লোহিতে-ক্ষণ:। লোহিতোদ্ধারদশী চি মুিযতে রক্তপিত্তকঃ ৷৷ লোহিতোদ্বারদশী ব্যাৰি মহিনোনার মণি লোহিত• পশ্যতি ইত্যর্থ: ।। 🕸 ।। অথ রক্ত-পিত্তস্য চিকিৎসা। পিত্তাসূণ শুস্ত (यमाप्ती भुवृत्तः विल्ता १म ७: । हरनाषु गुरुगी द्याग श्लीर छला **ब्रुतापिक्**र ॥ **भा**लि यश्चिक नीवात कात्रम्य शुनाविकाः। महामाकाण्ड পুষ্ড্ভক ভোজন রক্তপিভিনা।।। नियुक् कक्ः॥ ममूत्र यून् ठनकाः जन क्षांतिक्ताः। भुणखाः म्भ যুষার্থে কল্পিতা রক্তপিত্তিনা ।। দাং ডিনামলক বিদ্বানমার্থে চাপি দা-পথেৎ। পটোল নিম্ন বেত্রাগু প্লক্ষ-বেতস পল্লবাঃ॥ শাকাথে শাক্ষা-जाप्रानाः उञ्जीयामस्या हिजाः । পারাবতান্ কপোতাংশ্চ লাবানুক্তা-क वर्खकान्।। भाभान् कशिक्षना-तिगान् इद्विगान् कान शृहकान्। त्रक्रिक इदान् विम्रामुनाः (उषाः भुर्याक्रय्य ॥ द्रेयम्यानन्याः म्ह 

ষুব শীকে দদগান্বাতানুগে রসং॥। পথ্য সতীল ফুষেণ সসিতা লাজ শক্তি:৷ খান্যাক খাত্ৰী বাদানা• मुक्का भभंदेया हिंगः॥ द्रक्रभिड• জ্র॰ দাহ• তৃঞা• শোষণ নাশ্যেৎ ा थान जाकार हिंगः।। श्री द्वीरवत्र म्थ-পল পান্য চন্দ্ৰ যষ্টিকাম্তা। উ यीत्रक वृष रेण्ठमा कृषि ममधू भा-क्त ।। भागस्य खन मान्। हि त छः পিত্ত পুণশ্যতি। রক্তপিত্ত জয जुर्गु ज्या माइ ज्रा ज्या। स।। भूतानः भीन मानीम अन्या अन्य क ল দৃদে। ভদীলাবার বীল ত্বক मित्रा मृन्यः अभावदृष्ट् ॥ उउ खना ज्वाः नीवा भए छन ज्वाः ख्या। जिम्मीत १ किना है जू येइ ত: শীত্ৰীকৃতে॥ তানি জন্মাও খণ্ডানি পীড়বেদ্ট বাদসা। হর্ত खब्जन बोद्दा भूनः भाकाय थाव-(यट्या अग्राखः ल्यावराम् वर्ष्य जातु পাত্রে ভতঃ কিপেৎ। किপ্তা ত্র যৃত পুস্থ সন্মাও তেন ভজ্ঞাথ ॥ नथ्दर्भ छमारलाका उद्धल उब নিঃক্ষিপেৎ। সিতাযাশ্চ তুলা তত্ৰ किथु। उद्माह्य शहर ॥ मनाव शिश्रनो मुश्रे जीद्रागा (व शल श्-थक्। श्यक् शन । छ । धन्। क शरेब-

ना गितिष्ठ पुष्ठ ।। हुर्ग स्मरा किरम ख व घ् ठार्छ । को नु मा जर्ग ८। अ-**७८ भन भिड॰ थारिम्थ्याशिवन॰** यथा।। थे असा अलाहा २ग॰ **রক্ত পিত্ত**• বিনা**শ**যেৎ। পিত্ত জুর• ত্বাং দাহং পুদরং ক্শতাং বনিং ॥ ষরভেদ সহদ্যোগ কাস খাস। क्क उ॰ क्कय॰। नामगर उत्र व्रम्ता-यः व्रश्ना वनवर्षानः ॥ थ७ म-गां अवल है: ॥ इ। मं अवती मृत कन्न कन्ना ८ क्वीत • ठर्ज्य । क्वीत ত্র্যু ঘৃত্ত গব্যু সিত্র কল্পত্ল্যু -য।।। য্ হশেষ পচেত্ত প্ৰাদ্ধ লেহ্যেৎ সদা। রক্তপিত্ত হ্র-शिवः क्यः श्वामकः नामायट् ॥ শতাবরীপাক:। ইতি রক্তপিত্তা-ধিকারঃ। ইতি ভাবপুকাশ:॥ রক্তপিত্ত। জ্রী রক্তন্নী। গাঁঠিযাদুর্র। ইতি ভাষা। ইতি শব্চন্দ্রিকা॥ इ छ भूनर्ने वा छो इ छ वर्ष भूनर्नवामा कः । ७८ १ वं (१४:। क्त्र। २ म ७ न १४-গ্রিক। ৩ রক্তকাও। ৪ বর্ষকেত্: ৫ লোহিতা ৬ রক্তপ গ্রিকা ৭ বৈশা-খী ৮ রক্তবর্ষাভূ: ১ শোক্ষমী ১০ রক্তপুদ্ধিক। ১১ বিকন্ধরা ১২ বিষ-भ्रो >> भ्राव्यमा >८ मानिमी >৫ বৰ্ষাভবঃ ১৬ শোণপত্ৰ: ১৭ ভৌদঃ

১৮ भूनर्खनः ১৯ननः २० नन्। २) । त्रक्कनः भूः बहेन्सः। देखि कही-चम्। धनाः। जिक्दः। मात्रकदः। শোফ রক্ত পুদর দোষ পাণ্ড পিত্ত नामिष्क। इंजि जाननिर्यण्यः॥ 'ব্ৰক্ত পুত্ৰ: পু॰ করবীর:। ইতি জটা-ধর:।। রৌহিত্যুক্ষ:। ইতি শব-नामा।। রক্তকাঞ্চনবৃক্ষঃ।। দাডিম-वृक्तः॥वकवृक्तः। ইতি রয়्নाना॥ वक्कृकृकः ॥ भूगागवृकः । ইতি द्राक्षनिघं छै:॥ शक्तभूसकः भू॰ भनामवृष्टः॥ (त्री-• হিতকবৃক্ষ:। ইতি কটাধর:॥ পপুট:।। শালালিবৃক্ষ:। ইতি त्राकिनियंग्टेः ॥ রকপ্রা জী শাল্মলিবৃষ্ণ:। ইতি किराध्यः ॥ রকপুদ্ধিক। স্ত্রী লব্জালু:। ইতি भद्वितुका॥ त्रक्रभूननेवा॥ जूला টলি:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ तक भूबी की भारति वृक्तः। इंडि क्रिवितः ॥ क्या ॥ व्यावर्वभीन अ ।। नागरमनी ।। कक्नीवृक्षः ॥ उर्थे কাণ্ডী। ইতি রাজনিঘণ্ট:।। রকৃপুরক জী বৃক্ষামু।ইতিরাজ

निर्घण्डः ॥

রক্তপুসবঃ পু॰ রক্তকরবীরঃ।।রকা-

म्नानः। ইতি द्राजनिर्वण्डेः॥

थ्यः ॥ র্ক্তক্লা দ্রী বিশ্বিকা। ইত্যমর:॥ त्र्गवली। ইতি दाबिमिंगेः॥ त्रक्रकाकः पुः वामभार्थङ्क्षामः। उद्भर्गायः। भूतुवः २। इंडि (रुग्रहम्मु: ॥ मिन्म्द्रः। ইতি ंब्रक्रवानुक ही श्रावावनी ॥ নিচুলবৃক্ষ:। ইতি রক্তমঞ্জরঃ পু• विकाश्रम्भयः॥ व्रक्रमध्माः भू व्रक्रवर्गमध्मावि-শেষ:। যথা। যোরভাক্ষে। নাতি-मीर्या नहारत्तुः ना**िङ्**ला ब्रक्डम्८ স্য: সত্তঃ। শীতো ক্চ্য: পুঞ্জি कृ प्रीनामा नामः श्रः किथः-(माय वय मु।। इंडि ब्राज्ञ निर्घणेः ॥ त्रक्रम्लकः शृः (प्रवेशवृक्तः। ইতি রাজনির্ঘট:।। ं वक्रम्म। खो मञ्जान्यूकः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ तक्ति हः भू भूति हात्रागिवास्यः। তস্য লক্ষণ যথা। বিসুমুঞ্ নল বণ রক্তাভ রক্তমেহত:। মূত্র मृज्यविष्ठि (गाजनीयः।। जाः**म**ोष-थः। यथा। जन्मुन् जा वजा मूजा ভূনিয় সুরদারব:। হরি দাতি বিশা

माबी लिश्ननी मूब हिबक ॥ ধান্যক ত্রিফল। চব্য বিডক্ গ किश्रिनी । সুবর্ণমাক্ষিক ব্যোষ (हो क्वाद्रो लवनवय॰।। এতানि **छेक भाजानि मः**गृङ्गीयाट मृषक् भृथक्। दिक्षं इङ लाइ माइ जु इर्या मिडा छत्य ।। निनाबद्धे-कर्यः न्यापरश्चे कर्यान्त्र खश्चरवाः। বিধিনা যোজিতৈ রেতৈঃ কর্ত্তব্যা গুটিকা শুভা ॥ চন্দুপুভেতি বি-थ्याञा नर्दाताग भूगामिनी। नि-হন্তি বি শতি মেহান্ কৃছ মন্ত विष• ७था।। ठउनु कान्प्रदी छ-দ্বৎ মূত্রাঘাতা॰ জুযোদশ। অও वृक्षिः পा अस्तागः कामनाक इनी-নক ৷৷ কাস স্থাস তথা স্থ মগ্রমান্দ্য মরোচক। বাভ শিত্ত क्क व्याधीन् वन्या व्यम ब्रमायनी ।। সমারাধ্য শিব তমাৎপুষরাৎ গুটিকা মিমাণ। প্রাপ্তবাণ শচন্দুমা-যমাৎ তমাচন্পুতা মৃতা ইতি ভাবপুকাশঃ॥

রক্তনোক্ষণ ক্লী শোণিত সুবি: যথ।

1বেদনোপশমার্থায় তথা পাক শান্ত নায় চ। অচিরোৎপতিতে শোলত প্রেশ্বিশ । চরেৎ

কর্ত্যাৎ । একতত্ত ক্রিয়া: সর্বা

त्रक्ताकृष (मक्छः । त्रक्तः हि

त्वरना मृनः उद्दिष्ठा वि नंगि कृक्

।। विवर्ण कृष्टिन मृगात वृष्ण ग्राकुः

स्व त्वरन । त्र विष्णत्य विष्णत्यण

क्रानोक्षाक्तिः भरेन त्रिभा। भागिः

ज्यावगक्षत्र मिक्यानान्यः। हेकि

ভावभुकाणः ।।

त्रक्यि की मिक्षिष्ठा। ইতি करें। ध्रतः॥

রক্তবস্থিক। জ্রী মঞ্জিপ্তা। ইতিরাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

রক্তযাবনালঃ পু: তুবরযাবনাল: १ ইতি রাজনিষ্ট: ॥

রক্তরেণু: পু॰ সিন্দ্র॰॥ পলাশ-কলিকা।ইতি মেদিনী॥ পুমাগঃ। ইতি রাজনিঘটঃ॥

त्रक्तत्र को अनामक्रिका। उट भर्गायः । अञ्चातिका २ । इंडि मद्माना॥

রক্তরৈবতক• ল্লী নহাপারেবত• । ইতি রাজনির্ঘটঃ ।।

तकनण्नः श्रु तक्वर्तम्नविष्णवः। ज्रुभग्रायः। स्राकनतः २ ग्छानः ० नीर्यभ्रकः ८ शृथ्भश्रः ६ ष्ट्नः कन्तः ७ वदन्द्वः १। यम् छ्ताः। गृङ्गनम् नयूत्रः कृकन्तः नाल स-शूर्भिष्णिष्ठ कवावः। भ्र न्यः ষ মুশন্তি স তিক্রণ স্রযো লবণ।
মহি বদন্তি।। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: i।
রক্তলা জ্ঞী কাকতুঞী। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।।

রক্তলোচন: পু॰ কপোত:।ইতি হে নচন্দু।।লোহিতলে,চনযুক্তে ত্রি।। রক্তবটী জী নস্বিকা।ইতি ত্রিকা-ওশেষ:।।

ब्रक्टंवब्रही जी सम्ब्रिका। ইতি ब्रही। यतः॥

রক্তবর্গ: পু॰ দাডিম: ।। কি॰ শুক॰ ।।

শাক্ষা ।। বন্ধুক॰ ।। নিশাদ্ব॰ ।।

শসুদ্রপুত্র॰ ।। নঞ্জি গ্লাইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।।

র জবর্ণ: পু॰ ইন্দুগোপ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

ब्रख्यक्षनः भू॰ बार्खाकः। ইতি শদ্জন্দ্ৰনা।

রক্তবর্ষাভ্: জী রক্তপুনর্বা। ইতি রাজনিঘটাঃ।।

রক্তবসন: পু॰ সংন্যাসী।ইতিহেম-চন্দু:।।

রক্তবাতঃ পুণ রোগবিশেষ: । অ-স্টোষধণ । যথা । নারিকেলস্য বৈ-মূলণ ছাগ ক্ষীরেণ সম্মূতণ । পি-বেছ ত্রিবিধ শুস্য রক্তবাতো বি-নশ্যতি ॥ ইতি গাক্তে ১৯৩

व्यवशयः ॥ त्रक्तवानुका जी जिन्मूतः। ইতি भद्म-त्रञ्जावनी ॥

त्रकृतिन्मः भूः त्रक्रकृगा। यथा। त्रकृ तिन्मू यमा ज्यो भठजाना नती-त्रजः। नगूरभजि स्मिना छर भूगाग जमानूदः॥ देखि मार्कर्णस्य स्वीमाहाजाः॥

ब्रक्तीबः भू॰ मा**डियः। ই**তি ब्राब-निर्घण्डः ॥ अभुन्नविष्णयः । अ ह শুম্ভ নিশুম্ভ সেনাপজি:। দেখ্যা रुजः। यथा। भनायन भन्नान् मृक्षु रिच्छान् माज्यपार्विजान्। याषा मञ्जादयो कुल्बा ब्रक्तवीला महा-नुदः ॥ द्रकृषिम् यमा जूभी भज-ভাসা শরীরজঃ। সমূৎপত্তি विषिन्। उट भुमान उपामुद्रः ॥ युग्रं न गरानानि किन्तुनक्। भः शामुत्रः। ७७ रिक्तमी स्वराजुन त्रकः বীজ নতাড়ব**ে।। স**লিশেনাহ**ত**, স্যাশু তস্য সুনাব শোণিত। সমুত্তম্ব ভাষো ভাদুপা ভং পরাক্ষা: ৷৷ যাবম্ব: পতিতা তুস্য **म**त्रीत्रापृक्त दिनहराः। ठावन्तः भूक-न। काठा उद्योग्र दल दिक्साः॥ ভস্যা হত্তস্য বহুখা শক্তি শুলাদি-ভি ভূবি॥ পপাত যে। বৈ রক্টৌ

য স্বোদক্তলো হসুরা: ॥ তৈ স্থাসূক্ সমূতি রস্ট্রে: সক ল হণে। ব্যাপ্ত নাসীক্তাক দে-वः जगभाहगू। कखमः॥ जान् दिः द्यान् मुद्रान् मृष्ट्री ठिखका श्राह् म-एदा। উवाह काली हामुए वि रूत वनन नत्।। महज नाउ জ মৃতানুক বিন্দৃন্ ৰহাস্রান্ । बक्वित्माः भुजीह द्वः वरकुणातन विनिजा। सक्तरही हत त्रान उन्ट-भवान महाजुद्रात्। अतः त्मव क्रयः देन छ।: ফীণর কো গনিষ্যতি।। जकामाना ख्या हाना नहार भर স্যাপ্তি চাপরে। ইত্যক্তা তা॰ ততো দেবী শ্লেনভিজ্যান তেশা মূথে-न कानी कग्रह् ब्रक्टवीक्षम्। (मा ণিত । তস্য হত্স্য দেহাভূবত্ সুসাব শোণিত ॥ যত তত তত্ত্ব ক্রিচান্তা সংপ্রীয়তি। মুখে সম্পূতা যে ২স্যা রক্তপাতামহা-সুরংঃ। ভা॰ শংখাদাথ চামুগু। প্রাপেট্র ভদ্য চ শোণত ৷৷ দেবী শ্ৰেন বজুণ বাগৈ রসিভিপঞ্জি ভিঃ। জঘান রক্তনীত্ব ত চামুগুা-পাত শেণিত ॥ স পণাত মহী भाष्ठ महा मन्त मग्रहणः । भीतः कि वहीयान प्रक्तिः भर्तः॥

मूतः ॥ उठ छ हर्ष मङ्ग नवाल् जिनमा नृत्र । ठिवाः माङ्गणा कार्डा नवर्त्ताभूषासाक्षकः ॥ इंडि स्वीमाहाजाऽः ॥ तक्तीकका जी छत्रसीवृकः। इंडि ताजनिर्षकेः ॥ प्रकृत्वा जी स्मानिका। इंडि

मफ्रिका ॥
तकर्धिः खो क्षित्वर्षणः। उनु उद्भाउविष्यः । उद् कृषः मखाद्याणः । यथा । क्रुडिशम्पो ।
तक्ष्मखात्यारमा माःमाङ् वमाषि ग्रंत कः। धान् हित्रण ए ह्
कृष सन्गात्म वर्षित छमः विमार ॥ ইতি জ্যোভিস্ত छः ॥

त्रक्रणालिः शुः तक्रवनसम्मित्रं विश्वासः
। उट भर्यत्रायः। उप्णाणिः २ (मानणालिः २ (मानणालिः २ (मानण्यादः। उप्णाणिः २ (मानण्यादः। स्वयुदः। सिकादः।
वलावरुदः। क्रिकात्रिदः। सिननजः। भथ्रदः। भिक्त माश्रानिणाः
म् नाणाद्यः। ইতি ताक्रानिर्णः।।
तक्रणामनः क्री मिनम्दः। ইতিহারাयली।।

तकिन्यः म् तकामा जाञ्जनवृक्तः । उर्भवागः तककः २ मध्तः ० यङ्गहरः ६ मृत्यः ৫ (कम्बी ७

**সিণ্ড: ৭ মৃগারি: ৮। অস্য গুণা: 🛚 রক্তসাব: পুণ বেতসামু:। ইতি জটা**-। महावीर्याद्वः । मयुद्रद्वः । द्रमाय-नवु । भाकाधान मनोदार्खि नि-ৈ ভ শ্লেম নাশিত্ব•। সারকত্বঞ্চা ইতি दाजनियंग्टः॥

ब्रङ्गीर्वकः शृ अत्रवमुदः। इंडि त्रज्ञाना ॥

রক্তপ্রিক ল্লী বিষণ।ইতিরাজ निघंकः॥

রক্তবণজ্ঞা **স্ক্রণ। ইতি ত্রিকা**-· প্রশ্বঃ [[

इङनस्तिका खी कलोका। इंडि ब्राक्षिकिंगः॥

রক্তমন্ত্রণ ক্রী রক্তমন্ত্রারণ। তৎ-शरीतायः। इलकः २। ইडाज्यतः ॥ तक्रमादशक्रः क्षी ब्रक्टभघः।**इ**छाः नद्रः ॥

त्क पर्यंभः भू॰ दाकिका। ইতি दास-निघक्तः ॥

রক্তসহা জী রক্তালানঃ।ইতিরাজ-निर्घण्डेः ॥

इक्जाद्र ही इक्डन्स्नः॥ शब्रः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

রক্তসার: পু অমুবেতসং !! রক্ত খদিরঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ !। ब्र**क्टमो**शक्तिकः द्वी ब्रक्तिहात्र । ङ्कि क्रिवितः॥

ध्वः ॥ ब्रङ्गाउनधः ॥ क्रक्रश्या की क्राणिगीदिष्णवः। **इंजि इनायथः** ॥

तका जी एका॥ नाका॥ निक्षिष्ठा ॥ উপ্তকাণ্ডী। ইভি রাজনির্ঘণ্ট:॥ রক্তাকার: পু• পুবাল:। ইতি রাজ-निर्यक्तः॥

রক্তাক্ত• ক্লী রক্তচন্দ্র•। ইতি জটা-ধরঃ ৷৷ শোণিতনিশিতে ত্রি ৷৷ त्रकाकः ही विक्रमः॥ अहमः। **३७ (मितनी ॥** 

রক্তাহ্য: পু: মহলগুহ্যাকিন্সিল্ল: । ইতি নেদিনী।। পুবাল:।। নৎ-वनः। ইতি রাজনির্ঘটः॥ ন ওল। **इंडि भप्**तद्वावनी !!

রকাশী জী জীবন্তী।ইভিনেদিনী ॥ নজিঙা। ইতি ভাবপুকাশঃ ॥ রক্তাতিসার: প্রাগবিশেষঃ। তদ্য সংপাপ্তি মাছ। পিত্তক্ত্র ষণাত্যর্থণ দুব্য মন্ত্রাতি পৈত্তিকে। তদ্যোবাজ্ঞায়তে শীঘুণ রক্তাতী-লার উল্বাঃ।। তল্য চিকিৎসা दर मक उक दुगामा नाफिन कन मञ्जूषा पुरुष पुरुष गल । भलमान বিশচেদ্টাঙ্গ সমিজে ভোগে 🛭 খাইনভাগ শেষ কৃথে ন্যুনা

नित्य भूकयः। त्रक्वािकात मू
त्वा सिक्वािका नाम्यित्रयकः॥
क्रिक्क नाफिन क्वायः॥ क्षाः। त्याप्त्रयः
नदनी उन्त सपूना निज्या मह। नी
ए द्रक्कािकात्व ज् श्वाहकः नद्रसः नहर ॥ नदनी जावत्वहः॥ क्षाः।
भी कः सधू निजा यूकः हन्दनः जेषु
नाषूना। त्रक्वािकात्व किष्क निष्ठ
ज्फ् नाह त्यहन् ॥ हन्दन भव
(चिकः । हन्दनकन्नः। हेि जावभूकाणः॥

রক্তাধার: পু চর্ম। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

রক্তাপহ॰ ক্লী বোল•। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।

রক্তাপামার্গ: পু॰ রক্তবর্ণাপামার্গক্লুপ:।। রাঙ্গাআপাড় ইতি ভাষা
। লালচির চিরী ইতি হিন্দীভাষা
। তৎপর্য্যায়:। ক্লুদুগপামার্গ:২
আঘউক: ৩ দুজিনিকা ৪ রক্তবিট্
৫ কল্যপত্রিকা ৬ । অস্য গুণা:।
শীতত্ব॰। কটুব॰। কফ বাত বুণ
কণ্টু বিষ নাশিব॰। সংগ্রাহিব॰।
বান্তি সারি তৃঞ্চ। ইতিরাজনির্ঘণ্ট:।।
রক্তান্তর॰ ক্লী কাবায়বক্তং। যথা।
শবোপরি সমাসীনাং রক্তান্তর পরিছদাং রক্তালক্ষার সংযুক্তা॰ গু

জ্ঞাহার বিভ্বিতা । ইতি তক্ত্র-সারগ্তমু হিইচাণ্ডালিনী ধ্যান ॥ তদ্যুক্তে তি ॥

রক্তামু: পু॰ কোশামু:। ইতি রাজ- ' নিঘ<sup>্</sup>ট:।।

व्रकामानः भू बङ्ग्लभूमितिणवः । उर्भग्रयः । बङ्गङ्ग २ व्यभिन म्रानः ० बङ्गमानकः ६ ब्रागभुमवः ६ बङ्गुमवः ७ क्कवकः ७ ब्रामा-लिङ्गकानः १ वश्वर्मवभुमवः ৮ मृज्यः २ ज्यबानन्तः २० । व्यम्र ख्याः । कृष्ट्र । উक्छ् । वाजान्य (भाक जुबाधान मृत्र काम धामा-र्वि भूगमन्द्र । वर्ग्युक् । इन्डि ब्राक्षनिर्घरः ॥

রক্তার্য ক্লী নেত্ররোগভেদঃ। তস্যু লক্ষণ যথা। পদ্যাভ ন্দুরক্তার্য যঝাস চীযতে সিতে। ইতি মাধ্য বকরঃ।।

त्रकार्ब्रः भुः तागिविष्मयः। यथा।
भागाजभीय कर्याविभारतः। जलाएक यक् श्लीरु मृनाताग वृगानि हः
। धामाजीर्ग ज्ञत हिर्म ज्या स्मारु
गनगुराः ॥ त्रकार्ब्र विमर्भाए।
छेभभारभाष्ट्रवा गनाः। ইতি मनमामगङ्गः ॥ ॥ तकार्ब्रमारु
। (ए। यभुक्षा क्षित्रः भिताम्ह

লক্ষোচ্য সংগীড্য ততত্ত্বপাক। স ' সুবেম্গছতি মা'সপিও' মা'সা -. खूरेत ताव्छ माणु वृक्षि।। मुवछ। कम् कथितः भुष्टे ममाध्र (म ভক্ষিরাত্মকন্ত । রক্তক্ষ্যোপদুব **ঁ পীডিত ত্বাৎ পাণ্ড**র্ভবেদর দি পী ডিভক্ষ।। দোবোত্র পিত্ত ক্ধিরণ সিরাশ্চ সংকাচ্য সংগীড়া সংছ **जी क्**छ। भाष्माम्राकाः मरबंश्वर् -্দেষ্ দুষ্যন্ত্ব ক্লেজ ত্ বিশেষভো রক্তদৃষ্ঠি: এবং মাংসারু দে বিশেষ **তো মাণস** দুস্থি বৌদ্ধন্যা। ততো মা সপিও মুনহাতি বিদ্যুত করে। छ । অभाकः देव< भाकः यथा</li> স্যাদেব মিতি কিলা বিশেষণ । नेयरभाक रेष्ठकरमण भारकन । রক্তফযোপদুব পীডিতত্বাৎ রক্ত कत्याभनुवाः मृभु छ्यालाकाः। टिः भी फिज्जार अह म भी फिजः।।#॥ व्यथाव् तना जिल्लिना । भूषाव् मानाः न याजा विष्णयः शुक्तमा इ ত্বাক্তি দোষ দূষৈঃ। সত ক্চি-किट्रान्छिषगवू मानि विधानिन-দ্গুছি চিকিৎসিতেন।। স্রিদ্রা लाषु भाउत्र गृहध्य मनः शिलाः। मधुनुगाछा (लाला २ग मामार् म হর: পর: ।৷ মূলকস্য ক্তঃ ক্লারে ৷

रित्रमुगा खरेथत ह । महिट्रांन नःग्रङा लिनः निरक्ष १ कुं मान-रः ॥ विष्य अष्ठ त्रा मक लिन्छः वक्षः वर्षम् अष्ट त्रा मक लिन्छः वक्षः वर्षम् अर्था । अपुष्टि मन्छः व्राजास्त्रम् भूनमान्छि सर्व मः गः ह्यः ॥ निर्मु स्नकर्या क्षे क्षः व-क्षाः मृत्रमा यवः । अर्क्ष्णाः भवि-नुः निर्दे। निष्णम् वृत्त मान्छर्य ॥ वर्ष्णाः मर्यभः। स्वमा ज्नमी । यवः हेन्म्यवः। अयित्रभः क्रवीवः । ইতি ভাवभुकामः॥

त्रकार्मः क्ली जार्मात्तागविष्मयः। उन्। वक्त भार। ब्राक्तान्ता अपर কীলাঃ পিতাক্তি সমল্বতাঃ । विष्युताह नम्मा छ्छा विकन निम्नाः॥ (उ १ ठ)र्थः पृष्ठे मुक्क गांচ विश्वः भूभीषिजाः । भुवश्वि সহসা রক্ত তম্য চাতিপুর্ত্তি ভঃ ॥ ভেকাভঃ পীড্যতে দুংথৈঃ मानिज क्य मञ्जूतः। श्रीनदर्भ বলোৎসাহো হতৌজাঃ কলুষে निम्यः। विद्नाशवः कठिनः ककः মধো বাযু ন বৰ্তে ॥ তন্চাকণ वर्गक (क्रिक्शाम्गणमा । कर्।क खरम्लक (मोर्बन्। यनि वाधिकः ।। তত्रानुवस्ता वाजम् (इज्यंपि ह ৰক্ষণ। শিথিল: খেত গীতঞ্

विष् तिकः ७क मीउनः॥ यम्। नाः यनकामृक् उद् मर्भाषः नि हिलः। छनः मिहः खिमिठः छक न्निषक कार्रा ॥ स्नियानुवस्ता वि-জ্ঞেয় স্তত্র বক্তার্শসাংবুধৈ:। গুদে কীলা অশাংনি পিত্তাকৃতি সমন্থি তাঃ। পিত্তাশোলফণ যুক্তাঃ। আ-काद्भग ह वहेन्द्राङ्गि मन्नाः। मुर्देशः (द्वारिगः। जुक् शाक्ष्याम् भी-ত পुार्थनानि छिः कन्य निम्यः वता-वन नर्विनुषः। त्रक्कनग्रांशि वाः ভোল্নস্য লক্ষণ মাহ। তত্ৰ রক্তাশ नि अन्वकः উन्नगत्वः । कक्कनः ककः যতীতি ককণ কক দুব্য । পিছে। वुनम्। वाक्रनः ब्राङाव्नना थरः कीवाः शिडाकृष्ठि समीव जा इंडग्राहितेन বোক্ত । রক্তপিত্তযোঃ সমান লিঙ্ক द्वार ॥ अ।। करकाल भग वाकन वाक । मिशह शिह्ला मूं खिन उमापूं-क्ष्यादक्षिञ निवा। जम्र हिक्टि-স।। রক্তার্শস। মুপেক্ষেত রক্তনা-रही जुवन्छिषक्। मुक्षा (मुनि गृहीरड मुहः मृनानाराम्गानयाः । छन्दन কিরাতভিক্তক ধন্ব ধ্বাসাঃ স্নাগ हाः कृष्डि। तक मानाः भून वता माबी इल्लांब्र निषा वा। इन्तन ग्व इङ्ब्ल्सनः। ज्लामानि कृष्यः॥ नवः।

- नी उ जिला ड्यानाट (कन्यत्र नवनी उ শর্করাভ্যাসাৎ। দ্ধিসর ম্থিতা ভ্যাসাৎ গুদ্ধা শাম্যন্তি রক্তবহাঃ . -।। म्य ख्निति या जाला घनः स्इ যুতঃ সর:। নথিত সর রহিত । 'निर्जन वज्जभ्**ङ मधि। म भमारक**ं भातः (क्लोमुः नवनीजः नवः विष्ट्न्।। সিতা কেশর সংযুক্ত রক্তার্শঃসু সুখী खरवर ॥ भवना मृः उन यूरेयः न-**ठीन मृ**हाएकी समृहाभा•। अरन म-म्डाम्ट्रेन संयुद्धि तीष्ट मूगरिक्षण्डानः মঙ্গেৎপল মোচান্ত্র তির্রাট ভিল ठन्हरेनः। निषाः छाशी भाषा प्रमा-म्धम्हा भागिजाञ्चक ॥ अमञ् विकालः। (बाहास्त्रा (बाहब्रमः। ভিনাটে। লোধুঃ। চন্দ্ৰ মুত্ৰ রক্ত5-न्दनः ॥ भगकापि पूषः ॥ ভाविछः तक्रती हुर्गः तु की कीरेंद्रः भूतः भूतः । বন্ধনাথ সূন্ত সূত্ৰ ছিনভামো ভগন্দরে ।। ক্ষারসূত্র ।। নাসা নাভি सर्एथ्यू उँथा सिद्धारिकश्रि । किः যা নশঃসূজ্রীতি ভত্র তত্র হথো ति जा ।। एम शेव छ म । हिन्दु मह्ट कारत प्राधिमा । विभावस्ताव छी **ल्४ यानान्**रक्रुकायन ॥ यथान् • लावनकाम पर्णमः भविवर्जाद् । ইতি ভাবপুকাশঃ॥

1

तिवालः भू तक्वर्गाल्विष्मवः।

• भक्तकन्त्वाल् ই जि जाय। उट्ट भर्यायः। तक्विश्वालः २ तक्व भिष्ठकः ० लाह्जिः ८ तक्किन्तः विष्ठालः ७। व्यम्प्रच्याः।

• भीज्यः। मध्राययः। जुम भिक्व नाहाभह्यः। त्यायः। वस भूष्टि कातियः। अक्षयः। ই जि त्राक्व निवालः॥

র জাকাঃ পু॰ নহিষঃ ॥ পারাবতঃ ॥
চকোরঃ ॥ জ্রঃ । ইতি নেদিনী ॥
নারনঃ । ইতি রাজনিঘণ্টঃ ॥ রক্ত বণ্চক্ষ্ কে ত্রি ॥

प्रक्रिका खी ख्या।। ताकिका। इठि प्राप्त निर्वेष्ठः।। तिक्रिकामित्रभागकः।। प्राप्त क्ष्यः भू प्रक्रागकः। नान माक् हेठि जाया। जर्मित्रायः। मृष्य श्वः २ (मानः २ (नाह्यः ६ छेर्-किः ६ मध्यः ५ ह्यम् नः १ (ना हिउक्तः ४ । यम् ख्नाः। नध्यवः १ भारक मीजनवः। मृष्यः। भिख् मार्च ह्यवः। त्यावः। (ज्ञा पन्त विवक्षमञ्चः। हिज प्राप्तः। निर्वेषः।।

त्रेकत्रथः भू• त्रक्षितः । नान ४ जत्रथा है जि जाया। जद्भग्रायः १ वर्धः २ हिस्तिः १ कृतः ४ উक्र्कः ६ नागवर्गः ५ हक्षः १ উङ्डानभग्रकः ৮ क्रमभ्रगः २ भाह-नः २० निकः २२ व्यायुङ्गः २२ त्रक्कः २० हिन्दवीर्यः १८ द्रेष-त्रक्कः २० हिन्दवीर्यः १८ द्रेष-त्रकः २० व्याः। ययपू भ-वन भाषि त्रकार्ति भाष् ज्ञादि याम ज्ञादाहक नामिद्रः। नघ्-दक्ष। ইতি ताजनिर्यकः।। कर्वाकः भ्र॰ ইन्मवाकरी। ইতি

तरिक्शं श्र. हेन्द्रवाक्षी। इंडि त्राजनिर्घण्डः॥

রজোৎপল লী রক্তপদা। তৎ:
শর্য্যায়ঃ। রক্তসরোক্ত্ ২ কোকনদ ৩। ইত্যম্রঃ।।

রক্তেৎপল: পু॰ শালালিচ্ফ:। ইতিরাজনিঘণ্ট:॥

রক্তোৎপলাভঃ পু॰ শোণবর্ণঃ। ইতিজটাধরঃ। তত্মকে ত্রি॥ রক্তেপেল• ক্লী গৈরিক•। ইতিহার।-বলী॥

রথ ই সর্পণে। ইতি কবিকল্পজনঃ।।
ইর্মনেত। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
রথ সর্পণে। ইতি কবিকল্পজনঃ।।
রথতি। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

রগ মএ শক্ষেট্তিকবিকল্পদনঃ
ন রগ্যতি ৷ এ অরগীৎ ৷ শক্ষঃ
শক্ষারগতি রোগী লগথ্যভ্যঃ
ট্রিদুর্গাদাসঃ॥

রগ ক স্থাদআপনে। ইতিকবি-কল্পদনঃ॥ ক রাগণ্ডি। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

রগ ই গতৌ। ইতি কবিকল্পদম: ॥ ই রস্থাতে। ইতি দুর্গাদাস: ॥ রঘ ই ক ভাসি। ইতি কবিকল্পদম: ॥ ই ক রম্ভ্রথতি। ভাসি দীপ্তৌ। ইতি দুর্গাদাস:॥

রঘ ইড গননে। ইতি কবিকল্পদনঃ

।। ই রল্পতে। ড রল্পতে। ইতি দুর্গাদিনা:

দাসঃ ।।

द्वयः शृ म्र्यंत्रं मीयि विनि शता क श्वः । म ज् व्यायात्रा विश्व विः श्विता मिन्तु मुश्री जाम रः । यथा । म का जक योग्य थित्व जिल्ला दिना जिल्ला मृन् मेनित्रा करता ज्वः शुः युक्त मः का त है वा विकः वर्ष्ण ॥ जन्नाम युष्ट शिक्त यथा । मुज्म अ काया म्यम च मर्जिक ख्या भरत्र याः यूवि कि जिल्ला थितः । व्यादक प्रधाः यूवि कि जिल्ला थितः । व्यादक प्रधाः यूवि कि जिल्ला भिर्व । व्याप्त स्थाः यूवा व्याप्त मर्था विक्र वा नामा तः यूना व्याप्त मर्था । है जित्र यूनः शाः महाकार्व । अर्थः ।।

রযুদার: পু• কালিদান:।ইতি ক্রিকাণ্ডশেব:॥ রত্বন: পু• গ্রিনান:।ইতি শব . ब्रङ्गवनी ॥ ब्रयूनाथः भू• श्रीब्रामः। **रुंडि भद्द** ब्रङ्गवनी ॥

রযুপতি: পু॰ শ্রীরাম:। যথা। যদু৽ পতে: কুগতা নথুরাপুরী রযুপতে: । কুগতোত্তরকোশলা। ইতি বিচি-স্তঃ সক্ষ নন: স্থিরণ নসদিদে জ্ব-গদিত্যবধার্য। ইতি ক্পগো-যানী।।

त्रघूव॰मः भू॰ कानिरामक् उत्रघूताकात्ववर्णनम् हा हावर्रण्ड विष्मवः ।
यथा। त्रघ्ना मन्त्रव॰ व्यक्तर छन् वायि ज्वा २ शि मन्। उन्छोनः कर्णमाण्ड हाभनाय भुजातिकः ॥
देजित्रयून॰मा महाका व्यर् भर्णः॥
त्रघृव॰मा जनकः भू॰ श्री द्रामः। यथा
। जयि त्रघ्व॰मा जिनकः कोमानाः।
निम् वर्षाना त्रामः। मन्यदम निवनकाती मामत्रथिः भूछत्तीकाकः॥
देजि त्रामायनः॥

त्य्वतः शूरं श्रीत्रामः। यथा। त्रामः

नञ्चा शृर्वजः त्रपृवतः मीजाशिकः

मृन्दतः काम् श्रूरः कक्ष्णामयः छनः

निविः विशुल्रिनः धार्मिकः। इज्राः

नित्रामायनः॥

इप्षदः शः शिवामः। ইভिणमः इदावनी।। त्रकः भू॰ कृषगः॥ नन्तः। ইতি (मिनी॥

রফু: পু মৃগবিশেষ:। ইত্যমর:॥
সত্শবল পৃষ্ঠ হরিণ:। ইতিরাজনির্ঘট:॥

়রক লী প্ ধাত্বিশেষ:। রাক্ इंडि ভाषा। उर्भर्तायः। बनुः र जभूवः २ वाभ्यः ८ वकः ৫ मधूतः ৬ হিন ৭ সক্স্ড ৮ পিছট ১ প্তিগন্ধ• ১০। यमा खनाः। कडूद्द• ा ठिक्कद्वर । हिमद्वर । कवायद्वर । লবণরসত্ত্ব । মেহ্মুদ্র । কৃমি পা-पु मार भगनदः। काछि हत्रदः। त्रभागनदृष्धाः जिल्लास्या यथा । (चं ठ॰ मृनू चट्ट चह॰ त्रिक मुक्तरर॰ হিন•। সূত্র পত্রকর• কান্ত• ত্রপু শেষ্ঠ নুবাহ্নত ॥ ক্ষরক মিশুক ঞাপি দ্বিবিধ বন্ধ মুচ্যতে। উত্ত-ম' ক্ষুরক' তত্র মিশুক' তৃহিত' নত ।। ইতি রাজনিঘণ্ট: ॥ তস্যা-भूकम्। पाष्ट्रा विश्राख थनु म्किरीन खया श्रमकृष्ठ कि वाम छल्यो। अधानि म्ल॰ किल বাত শোথ পাঞু পুমেহঞ্ ভগ-न्द्रवः ॥ विरवाभनः त्रक विकात वृन्तः क्रमक कृ हानि कक क्रम । भिष्टा न्यूनी विक्षि मूथ्य (न्नागाना-

গোপি अर्य्या कथिजान् विकाता-ন্।। 🕸।। ভস্য শোধন মভিধীয়তে । यक नारगी नुजरही ह गनिरजी ভৌ নিষেচযেৎ। ত্রিধা ত্রিধা বি-শুদ্ধি: স্যাদুবি দুঞ্চেপি চ ত্রিধা।। তৈল তক্ৰ কাঞ্জিক গোম্**ৰ জল**-অদ্বাথেষু পুত্যেক ত্রিধা ত্রিধা । **उ**टा १र्क दूर्थ विद्या ॥ # ॥ व्यय বঙ্গ্য মারণ বিধিঃ। মৃৎপাত্তে माविए वाक विकासन्य प्रवा ब्रहः । किथा वक ठउ्थाः म भाषा पर्वाः भुषान (यर ॥ हिका चिननी ॥ त्रक कर्न । व्यायाम्बी कत्रकृती । ততো বিযাম মাত্রেণ বঙ্গ ভষা পুকায়তে। অথ ভনা সম তাল किन्छाद्मन विवर्षारय ॥ जाजा भ-ब्रभूषि भक्ता भून द्राप्तन नर्परा । ভালেন দশনাংশন. যাম মেকং ততঃ পটেং !৷ এবং দশপটেঃ পত্ৰু বঙ্গ ভবতি মারিতে ৷৷ 🕸 ৷৷ এবং মারিতসঃ বঙ্গসঃ ওণাঃ। বঙ্গ লঘু সর কক ক ক বেহ কফ ক্-মীন্। নিহন্তি পাও সম্বাসং নেত্র্য भीषज्ञित्रज्ञन ॥ मिरहा गहाविख यथा निरुष्ठि छरेथव ब्राह्म १थिन एमवर्गः। (महमा (मीथाः भुवान-नित्यदः नद्रमा भूष्टिः विषयाजि

त्रक्ष

শ্ন• ।। ইতি ভাবপুকাশ: ॥ बकः পु बागः॥ नृष्ठाः॥ त्रपञ्चिः । ইতিমেদিনী॥ নাট্যস্থান । ইতি ट्यहन्मः ॥ हेक्षनः॥ चानित्रमात्रः इंडि द्राजनिर्घण्टः॥ রক্কাষ্ঠ ল্লী পতকু।ইতি রাজ

निर्घण्डः॥

त्रक्षः क्ली मिन्द्रः। ইতিরল্মালা!। রস্জীবক: পু•े চিত্রকার:। ইতি मप्तज्ञावनी।। नाहेऽकाज्ञ ।।

व्यक्तः पु॰ देखनः॥ थानिव्यमावः। ইভি রাজনির্ঘন্টঃ॥

त्रक्षना खी गुजै। इंडि ताजनियं है:॥ রস্বাধক জ্লী কন্তুই । ইতি রাজ

नियकः॥

মুদী। ইতি রাজ রস্গৃত। ক্রী नियकः॥

त्रक्रणवी की नीलीव्कः। ইতি রাজ नियंकः॥

बक्र পूझी खी नी नी वृक्तः। ইতিরাজ निर्घकः ॥

রস্ভ্তিঃ জী কোলাগরপ্রিমা। इंडि नम् तज्ञावली।।

রঙ্গভ্নিঃ জ্ঞা মল্লভ্নিঃ। ইতি শক बङ्गावनी ॥ नाष्ट्रज्ञिण्ह ॥

बङ्गसी ही वीगा। इंडि भवत्रः बनी।।

बक्सानिकाः क्षी मानिकाबन्। ইঙ্জি ं त्राजनिर्घण्टेः ॥

तक्रमाठा स्त्री क्षेत्री ॥ काक्ना ह इंडि (मिनि ॥

রস্নাত্ক। জ্রী লাক্ষা। ইতি ত্রিকা-अप्बद्धः ॥

न्त्रक्तामिनी खी मिकानिका। इंडि भद्रान्युका ॥

त्रक्षी**जः** क्ली क्लारः। ইতি मदत्रद्राः वनी ॥

**तत्रनाना छी ना**ष्ठे/गृह । नाष्ट्रवह . इंडि ভाष।। इंडि भक्तक्वावली।! **बक्षाका की** मुज़ी। ইखि बाहा-निघकः॥

রস্থাজীবং পু॰ চিত্রকরং। ইত্যমরঃ ॥ निः। ইভি হেমচন্দুः॥

রস্থাবভারকঃ পু॰ রস্থাবভারী। তংপর্যায়ঃ। শৈল্যঃ ২ ভরতঃ ১ সর্বশী ৪ ভরতপু একঃ ৫ থাত্রী-পूषः ७ ब्रम् जीतः १ जागाजीतः ৮ निहः २ क्नाची २० देननानी २२। ইতি হেমচন্দু: ॥ নৃত্যগীতস্থানে গীতবাদ্যাদিনা ভদনুগুণত্যা পু-नशी। इंडि भुायिकिखवित्वकः॥ নটগায়ন ব্যতিরিক্ত রঙ্গারতরণ कोवी। इंडि ब्रह्मकडणैः॥ उन्ता-मञक्त शायिकिङ यथा। मङ

क्षाञ्जानाक न जुकी ठ कराठन।
। (कण की ठाव भाक भाग्म है कः का नजः ॥ इंजु भ कन । कर्यात मा जिन्न का त्र का त्

রস্থারিঃ পু॰ করবীর: ! ইতি রত্ন-মালা।।

রঙ্গিণী জ্রী শতম্বী।ইতি জটা ধর: ॥ কৈবর্ত্তিকা।ইতি রাজ-নির্ঘট: ॥রঙ্গবিশিপ্টে তি ॥ রষ্ট্র: ক্রী রংহ:।বেগ:।ইতি ভরত দ্বিজ্পকোষ:॥

রচ তক কৃত্যা । ইতিকবিকল্ল জনঃ ।। রচযতি । ইতি দুর্গাদাসঃ ।। রচন লী নির্মাণ । গুরুন । যথা। বাচঃ পল্লবযত্যনা পতিবরঃ সন্দর্ভ শ্ব্দি গিরা জানীতে জয়দেব এব সরণঃ শ্লাঘ্যো দুক্ত ফতেঃ। শৃস্থা- রোত্তর সং পুনেষ রচনৈ রাচার্য্য গোবর্জন: স্পন্ধী কোপি ন বিশুতঃ শুতিধরোধোষী কবিঃ স্থাপতিঃ।। ইতি ক্রয়দেবঃ।।

त्राहिण द्वी समूमभुकाताहः भवा-वणाहिण तहनः। छ८ भर्यायः। भित्रिण्नाः २। इछामतः॥ भिति-मान्तः २। इछा छत्रः॥ यथा-करमगङ्गामनः । छ८ भर्यायः। निर्वणः २ हिछिः २। इछि इम-हम्मः॥ निर्मिछः। कृष्ठिः। यथा। व्याधात्रम हम८कात् कातिनी तह-ना हि निर्मिछः। इछाणकात्रको-स्राहः २ हित्राः। छ८ भर्यायः। मन्द्र छः २ ह्याः २ मुद्रनः २ गुद्रनः ६। इछि इसहन्द्रः॥

রচিত: জি ক্তঃ।রচধাতো:কর্ম
ণি ক্ত পুত্যুদেন নিয়ন: ॥ যথা।
শির:পদ্ম শ্বেণী রচিত চরণাস্তোক্ত বলে: স্থিরাযান্ত ডক্তে জ্রিপুর
হর বিমুর্জিত নিদেশ ইতি পুষ্কদন্ত কৃতন্ত ভি:॥

রজ॰ ক্লী জীন্স সুন । ইতি শব্রক্লা-বলী।।

तकः भू॰ भर्तागः॥ ततपः॥ छन-ভেদः॥ आर्छरः। ইতি जाउपर्ण-भफ्तञ्जावनी॥ রজ: ল্লী জ্রীণা মাসি মাসি যোনি नि:मृ उद्गकः। ७९ भर्यायः। भूञ्जः २ व्यार्खर ७ । इंडामद्रः ॥ अवूः ६ হ্বসুম ৫ রজ ৬। ইতি শবর্যা वनी ॥ भुक्छ र्थनित्मयः । उडु রাগ দ্বোত্ম ক দুঃথহে তুঃ। রজো **२ हरः भू** वित्वा १ मि । यथा । द्र . জো হয় রজসা সার্দ্ধ জীপুর গুণ ধূলিষ্। ইত্যারদত্তঃ। ইতি ভর তঃ।।**ঞা। মহা ভারতমতে দুং**খজন ক গুণ:। তস্য ধর্ম: কাম: কোধঃ ला जः भानः प्रशम्ह। ইতি भाक ধর্ম: ॥ তৃষ্ণ কোধোভিসংরয়ে। রাজসা তে গুণা: মৃতা:। অভি সংরস্থো দ্বেষাভিনিবেশঃ। ইত্যা-খনেধিকপর্ব। অপিচ। কান এব কোৰ এৰ রজো গুণ সমুদ্ভব:। মহাশনো মহাপাপ্মা বিদ্ধেরন নিহ বৈরিণ ।। রজো রাগাত্মক বি**দ্ধি তৃ**ঞা সঙ্গ সমু ভব । ভণ্নি-বধ্বাতি কৌন্তেয় কর্মা সঙ্গেন দেহি-ন।। ইতি শীভগবদ্গীতাদা ২। ১৪ व्यक्षारयो ॥ अद्भः द्रज उम इंडि দৃশ্যন্তে পুৰুষে গুণাঃ। কালসঞ্চো-দিতা তেপি পরিবর্ভন্ত আত্মনি।। भुङ् उक्ष यहा मञ्च मत्ना वृद्धीनिषु या-शिका उना क् उर्ग शिक्तामात उ

शनि य पुजि: ॥ यना कर्याम् कार्याः · ষু শক্তি র্যশসি দেহিনা । ভদাত্তে তা রজো বৃদ্ধি রিতি জানীহি শৌ-नक ॥ यहा (वा छ्यु मस्त्रास्या नात्नाः म्हा २० मट्मतः । कर्मानाकः नि কাম্যানা॰ দ্বাপর॰ তদুজ তন:।। यहा मना न्छ जिल्ली निमा हि॰ मा দি সাধন । শোক মোহ ভ**্** रेप्तनाः न कनिस्न छना युजः॥ ই जि गाक्र ७२२१ वर्षायः ॥ 🛊 ॥ भ-রাগঃ। ইতি মেদিনী ॥ রেণুঃ। জ: मा भर्यायः धृतिभाक् मुश्चेयाः ॥ निविद्यानिविद्य त्राजा यथा। जारूः কানো ন সেবেত তথা সন্মার্ননী রজ:। তথাশ্ব রথ ধান্যানাং গবা-रिक्षत ब्रज्ञः म छ॰ ॥ जाम् उक्ष विज्ञा-नीगा८ थात्राष्ट्राजादिक युष्टा गवा॰ द्राजा शान।द्रज्ञ: भूधन।क् ७व॰ রজ: ॥ এতদুলো মহাশত মহা-পাতক নাশন । অজারজ: খরর-बा यञ्च मनार्जनीत्रबः।। এउन्द्रा महाभाभ महाकिल्वि कात्रभ । ইতি গাক্ডে ১১৪ অধ্যায: ॥ ুপু• স্বরুর:। ইতি শব্দ: রজঃশ্যঃ गाना ॥ রজ:সার্থি: পূ॰ বায়ু:1 ইতি **শ**দ: ब्रङ्गवनी।।

. अजकः भूः वर्गमहत्रकाि वित्मवः।
त्यावा इंडि ভाषा। म ह ठीवत्रभः
च्याः थीवताब्हां छः। ইंडि वुक्करिः
वर्जभूतां ।। उद्भर्षशायः। निर्दे ककः २। ইंडि मस्तर्भावः। वर्णभीनकः ८। ইंडि मस्तर्भावनी थावकः ६। ইंडि मस्तर्भावनी थावकः ६। ইंडि एमहन्मुः॥ तकः कम् वृद्ध निर्देशन भूकात्वा यथा। वामाः मिकनरिकः मुद्धि निर्देशान् ककः मरिनः। अत्यान्यथा ह स्वी-उ म्छाः म्याक्य मायकः॥ ইंडि माद्रम् २०० अक्यायः॥ अम्मूकः । ইंडि विश्वः॥

রদ্ধী জ্ঞী রজকপত্নী। রনুধাতোঃ
কক পুত্র্যান্তাদীপিকৃতে সিদ্ধা।
ইতিমুধ্ধবোধব্যাকরণা।

ब्रज्ञ के क्षेत्र । इंज्या । इंजि । हिंदि । इंजि । इंजि । हिंदि । इंजि । हिंदि । ह

मख मक्सवारगालकन्नारा ॥ यथा-र्घा लिख (जाक्यारमे लिज्ना॰ ता-काउ॰ मठ॰। निवानकार्ण्य॰ जमा-मख॰ छ८ लिज् वल्लछ॰॥ जमन-ज॰ जन्मारक्षवृ (स्वकार्य्यम् विर्क्ति ७॰ । ইতি मा८ मा २१ ज्यशायः॥ त्रकावनी॥ त्रकावनी॥ त्रकावनु हिंदे भू॰ हम्मान्। ইতি मद-त्रवावनी॥

ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥ ब्रज**ा**ठनः भु• (द्रोभ)भर्वतः॥ তন্য পরিমাণ দান বিবিশ্চ যথা। রাজতো নবন গুলুদ্রনা: শর্কুরা-**চলঃ । বফ্চ্যে বিধান নেতে**ষাণ यथायमनू भूर्यणः ।। जाजः भवः भू-ৰক্ষ্যামি রৌপ্যাচল মনুত্রম । য**় পুসাদালরে। যাতি সোমলো**-कः धिरवाखन।। मगि छि: शनमार् रेमु कडामा त्रज्ञाहनः । পঞ্জ र्यभुभः (भुष्क उपरक्षनावद्रः गृजः ॥ অশক্তো বিংশতে ৰুজু • কার-থেৎ **শ**ক্তি**ত: স**দা। বিষয় প-**র্বতা॰ স্তদ্বৎ** তুরীযা**ংশন** কল্লয়েৎ ॥ भूबवनुाजञान् वर्यान्यनस्त्रामीन् विधायकः। भूर्ववे त्रञ्जावनवे । कनाधी अया॰ खब व्याकिमान् ब्रहराष्ट्रयः ॥ तुका विकृष्टं वदकाः

হেঠা নিত<del>ছে। ২</del>ত হির্থায**়। র**ি कड॰ ज्याद्यन्त्या नमका निरु काक्षन ।। (मयक भू र्वव अर्या) रहाम कागत्रगानिक । शुन्राबु পুভাতে তু গুরুবে রৌপ্য পর্বত ॥ विषय रेमलान्षियुः भूका वज विভृष्ताः। इसः मञ्जः भठेन् एन्। फ डंलानि विंग्रू मद्रः ॥ लिड्ना॰ वल ड॰ यमाट थिएका दी नक्तमा চ। রজ**ত পাহি ত**মান্ন **শো**ক স'সার সাগরাৎ॥ ইত্থা নিবেদ্য পৰামযুত দানস্য ফল প্ৰপ্ৰেতি मानवः ॥ (मामलातक मणकीर्वः किनब्राञ्जदमाक्ताः । भूकानाता वरमिष्वान् यावनाष्ट्र मःश्लवः ॥ **ইতি নাৎ** मि। ११ यस्यायः ॥ त्रज्ञ जापुः भूः देवनामभर्व जः। ইতি (२ भ हन्तुः ॥ রজন• ক্লী রাগঃ!ইতি সিন্ধান্ত· कोमूर्गामूनारिवृज्धिः॥ রজনিঃ জ্রী রাজিঃ। ইত্যমরটাকা।। द्रक्रभी छी दाजिः॥ इतिम्।। कञ का। इंडापदः ॥ नीविनी । हैं उ (मिनि ॥ ब्रह्मीकवः शु॰ व्युः। ইতি শব बङ्गावनी ॥

व्रजनीगन्ना जी यनामध्याउटपाउदर्ग-· পুন্নবিশেষ: ৷ ইভি লোকপুনি**দি:** রজনীচর: পু॰ রাক্ষম:। ইতি শব্-त्रज्ञावली॥कोत्रः॥यामिकछोन्छ॥ . त्रस्तीकन की नीश्रतः। ইতি श्रता-वनी ॥ वं बनी भूषः भूः भू छिकव्रक्षः। इंडि -রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ व्रजनीमूथः क्ली भुरमायः। ইত্যमवः॥ व्रजनीकामा जी (नकानिकानुष्रः। इ**डि भ**पत्रज्ञावनी ॥ রজসানু: পু॰ মেঘ:॥ চিত্ত॰। ইত্ शाहित्कायः ॥ व्रक्षत्रलः भू महियः। ইতি मिनि ন্ত্ৰী রজোযুক্তা। তৎ-व्रक्रम्याः भर्यतायः । ज्वीविर्मिगी २ व्यवी ३ আত্রেয়ী ৪ মলিনী ৫ পুল্লবতী ১ খাতৃমতী ৭ উদক্যা ৮ ॥ ই ত্যারঃ ॥ দুরি: ৯পুয়হাসা ১০।ইভিশদ-রত্নাবলী।। পুগ্লিতা ১১ অবীরা ১২ विक्नी २० नियनी २८॥ इंडि बंदे। ধ্রঃ।। মুনো ১৫ পা•শুলা ১৬।ইতি ताजनिच्छेः॥ #॥ व्यथ तज्जन्ना न्त्रायिष्टिनः। कामाश्रः। ब्रज-यत। ज् मः ल्राहः वाक्ता वाक्ती যদি। এত রাজ্র নিরাহার। পঞ্স-ব্যেন শ্ব্যতি ৷ রজরলা তু সংস্থা

রাজন্যা, ব্রাহ্মণী ত্যা। তিরাতেণা विमृक्तिः मा वाष्ट्रमा वहनः यथा श बन्न बना ज् म॰म्पृष्ठा विभावा वा-ऋगी ह या। शक्षत्राजः नित्रा हात्रा शक्ष গব্যেন শৃধ্যক্তি।। রঙ্গমলা তু স• म्भृष्टी मृ मुने वृक्ति । यपुर्वादान • विশ्याद् वाक्षणी कामजात्रजः ॥ का नान उ कारतम्बं गुक्ती मर्वजाः **তিব । এতেন রজবলায়া ব্রাহ্ম**ণ্যাঃ সবণর হবলা স্পর্শে একরাত্রোপবা-স: পঞ্চার্য গান কান্ড: । অকা-ं गठ खरका । नङ्का । यमवर्ग রজন্বলা স্পর্শে ত্রিরাত্র পঞ্চরাত্র ব <u> ড</u>ाञाभवामाः। অकाम**उ** उपर्तः। এত্যতৃर्थाश्वाबद्धः कर्खवाः। हाखाः लिन यंशाकिन मःग्लेश (हमूजस्ता। অতিক্ম্য তান্যহানিপুায় শিক্ত ন नाज्यत्य ॥ विज्ञाव गूनवानः नगर शक्ष गर्वात म्याजि। जा॰ निमान्त ব্যতিক্রা বলাভ্যক্তর কারণেৎ।। है कि वहनायत्र मणनाए अवस कान তঃ। অত্র দিনভেদে। হপি নাস্তি। অ ফ্লানে নৃছ শে তি:। পতিতান্ত্য শ্ব-शारिकम्ह मःग्णुडा खी ब्रज्यनः । ভান্যস্থানি ব্যক্তিক্রায় পুর্যাশ্চর• **जगारात्र ॥ भूषाग २**क्स् बिद्राब॰ ज् विजात पार नाज्य । गर्श-

রাত্র ভূতীয়ে ইছি চতুর্থে নক মা-চরে ।। চত্র্থ १३ोडि मुक्ति मा-नाट भूतं। वश्राष्ट्रः। त्रक्रमला यहा म्मृष्ठे। यज्ञपृक थोदाः कृष्टि । निद्रा-कात्रा खरवडावर यावर मारानम् ধ্যতি ॥ অত্যাপি বহস্পত্যক দিন (७२४) वहा। वृक्षभा जा जभः। द्र-कप्तल जु (य नार्य) वत्न । न न्यून-তো यहि। नवार्ग मक्ष्यवास वृक्षक्ई-मङः भद्रः॥ भक्षमवा भानः वुङ्क-भः। তেনোপবাস: ॥ तुक्ककृई मा**रू** बारानः। अरहातात्वावित्वा जूना लोर्गमानाः विलयकः। अक्षमवाः शित्र भाउत् काकृहं विवि: म् उ: ॥ **जनमा**को भूतारेगकः माजवाः। इंजि প্राथिक उव्।। क्षः। यन् । मृष्त **ভ**र्जु फडार्थिश जम्हा रिवरेन-बर्याः। रेन्द्र कर्यान रेन्द्र व नथः নে ২হনি শুধ্যতি॥ ইতি শ্লিতত্ত্ব ॥ उत्राः गन्त भाभः यथा। भूथः म दिवस्य काञ्चाः या वि शह्युज-यना । युक्त र छा ह जूर्था म । व कार छ नाब मः गयः॥ मनुवाबाई कर्यार्हा रेरावरेगांव इ कर्मण । अपनः म इ मर्खियाः निन्ति च म्हायमञ्जूतः ॥ षि जीन निवरम नात्री । यो बुरकह ब्र-कामाः। कान उः भित्रम्याक वृक्तः

হত্যা• লভেজুব• ৷৷ আজীবন• नाधिकाही शिक् विशु मूबाहरन।। व्यगन्त्या १यमगः महारिड्डा-ঙ্গিরস ভাষিত।। তৃতীয় দিবসে कावा॰ या हि शह्दब्बवा॰। म ন্চোবুকাহতগ্ৰ**ণ লভতে** নাত স• শ্বঃ।। পূৰ্ববং পতিতঃ সোপি ন চাহ: সর্বকর্মস্। অসৎ পুঞা চত্ত্-র্থেহ্নি ন গছেত্তা বিচক্ষণ:।। ইতি तुक्तरिवर्स्व औक्षकत्रग्रश्ख ৫२ व **४**ऽ।यः।। अ।। याभित्र। यभूति याजु काल जू या जिनह मुजस्ता।। রে তপা: পিতর স্তম্য এব মেতন मः गयः ॥ এकस्त भूकरमा याजि দ্বিতীয়া॰ কাম নোহিতঃ। ভূতী या॰ वा ठजुवीं १७ जमा न भूकवाद-নঃ ! খাত্কালে তু সন্থাসাং পিত্ৰ র্থ- ভোগ ইষ্যতে। পতুকালাভি गानी या वृक्षजार्य्य मन जः॥ न-গছতি চ যঃ কোধাৎ মোহাদ্বা পু ক্ষাধনঃ। ঝতৌ ঝতৌ ভুণহত্যা• शुरक्षाि शुक्व कत्रा इंडिवा-ब्राट्ट छश्कर्य वर्णनः नामाव्यायः॥ त्रिकः पू॰ हन्पूव॰श्रीयताकविरश्यवः। यथा। পূৰ্ৱবসো জ্যেষ্ঠ পুত্ৰ শ্চাযু র্নাম। স রাছো দু হিতর মুপ্যেনে । उम्राः शक्षम् वान् शाह्यानाः

न। नक्ष कव वृष्क ब्रस्ट ब्रिक अर-• জ্ঞাঃ। রজেঃ পঞ্পুত্র শতান্যকু वर्वार्यः माद्रान्धामन्। इंडि विकू-शुद्रात्व अ अभावा । . अवशायो । . রজোবল• ল্লী অন্ধকার:।ইতি ত্রি-কাওশেবঃ ॥ রজোরস॰ ল্লী অন্ধকার:। ইতি मक्रव्यावनी ॥ রজোহর: পু· রজক: ৷ ইতি শব্দ-गाना॥ बी বেণী। ইতিমেদিনী।। वन्ननगधनवस्त्र। मडी इंडि ভाषा। ত भर्गायः। मुझ २ वताहेकः ၁ বটী ৪ গুণঃ ৫। ইত্যনরঃ ॥ শুলা ৬ । ইতি ভর তথ্ত রতকোষঃ॥ শুলু॰ १ म्युः ४ म्युः २ म्यु २० मृया १० वब्रावेः १२ ववाकबः १० ववीखनः १८ । इंडि होका खन् ॥ क्री রঞ্জক• হিঙ্গুণ । ইতি রাজ: निर्घण्डेः ॥ রঞ্জ হঃ পু॰ কম্পিল্লকঃ। ইতিরাজ-निघंछै: ॥ श्रीिंडिजनकः ॥ वञ्जामिः রাগকর্তা চ ॥ त्रक्षनः क्री त्रक्रान्सनः। इति सिहिनी ॥ विक्रुन । इंडि व्राजनिर्ध छै: ॥

त्रक्षनः श्रु॰ त्रागजननः। ইতি गिरिनी

।। मूअङ्ग । इंछि ब्राजनिर्घन्छैः॥

क्रक्षनकः. भू॰ कर्षकनः। ইতি রাজ-निर्घणः ॥

পু॰ অম্কর্কঃ। আচ্ গাছ ইতি ভাষা।

त्रक्षनी खो मुखाद्राप्तिका।। नीनी ॥ मिक्किश । इंडि मिरिनी ॥ भा-कालिका। इंडि नेष्ठन्मिका ॥ হরিদু।। পপ্নটী। ইতি রাজ निर्घणेः॥

क्षे वाहि। इंडि कविकन्नस्मः॥ ব্রট ভি। ইভি দুর্গাদাস:॥

রটিত জি কথিত। রটগাডো: कर्मा कि भुजारयन निव्वतः॥ कथ नगाव ही॥

রঠ ভাষণে। ইতি কবিকল্পদ্রমা। ভাষণ কথন । বঠতি। ইতি দুর্গা माजः ॥

রণ ম গভৌ। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ।। ন রণ্যতি। ইতি দুর্গাদাস: !!

রণ ক্তি। ইতি ক্বিকল্লুফ্সঃ॥ রণতি। কৃতি শব্দে। ইতি দুর্গা मामः॥

द्रप॰ क्षी भू॰ युक्त । ইত্যयदः॥ त्रवः पूर मदः॥ कवः। इंडि मिनि ॥ गिजः। इंजि मद्दद्वावनी ॥ রণত্র্য্য ক্লী যুদ্ধবাদ্য । তৎপর্য্যায়ঃ । রণ্ডা জ্ঞী মৃষিকপণী । ইত্যমরঃ।।

। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ वर्गान्य की उमीव । इंडि ब्राइ-निर्घण्डः ॥

त्रविष्यः शृ (मानशकी। ইতি রাজ-निर्घणेः ॥

त्रगम्बः भूः इखी। ইखि नदमाजा।। त्रगमूक्षिः भू विषम् क्षिक्भा । इंडि ब्राजनियफैः॥

রণরক্ষ: পু॰ রণকাতরহস্তী। তৎ-नयं। भू जिमः २। इजि हाका-वनी ॥

রণরণ ল্লী উদ্বাহন। ইতি ত্রিকাও শেষ: ॥

রণরণঃ পু• মশকঃ। ইতি ত্রিকাও<sub>ঁ</sub> भावः ॥

রণরণক: পু॰ উৎকণ্ঠা। ইতি ছেন্-5 m: !!

व्याप्त क्षेत्र विष्यु**न्। इ**ज्ञानवः॥ त्रगानक्षत्रगः भ् कक्षभक्षी। इंडि ब्राजनियंगः ॥

রশুঃ ত্রি অক্ত্রহর্মাবছিমাব্যবঃ ম ধূর্ত্ত:। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদি-वृज्धिः॥

রওক: পু॰ অফলবৃক্ষ:। ইতিশক্ विमुका ॥

। সংগ্রামপটহ: ২ অভযডিভিন: ১ 📗 বিধ্বা। রাঁড ইভি ভাষা। ফ্রা

য় ব্যবক্তীত্যর্থঃ ৷ ইতি সংক্ষিপ্ত সারে তিউন্তপাদ:॥

त्र आमुमी भु॰ यष्टे ठ्वाति भद्दमः রোপরিভার্য্যাবিহীন:। যথা ভ-বিষ্য পুরাণ । চত্ত্বারি শহৎ সরা-गाः माष्ट्रानाथः भात्र यनि । जिया বিযুজ্যতে কশিৎ সতু রণ্ডাশুমী **নতঃ**॥ ইত্যুদাহতত্ত্ব• ॥

इड॰ क्ली रेमध्न । इंडामद्रः॥ खद्य ॰ । इंडि सिरिनी।। अनुब्रक्त जि॥

রতকীল: পূ: জরর:।ইতি **হেন**া हन्तः॥ भूत उक्केकक ॥

व्र अक् जिल् क्षेत्र हो रेन थ्नका नी नवाक्। ७९ भर्यायः। म्विडः २ । इंछि (रुमहन्दुः ॥

রতভকঃ পু॰ পতি:। ইতি ত্রিকা अम्बः॥

রতজ্ব: পু॰ কাক:। ইতি ত্রিচাও भियः ॥

याना॥

अभियः॥

त्र अनात्रीष्टः भू॰ नात्रीगाः भी एकातः त्र अवन्त्री खी (वण्डा हिंछ मस् ॥ अक्रतः॥ यतः। इंडि (मिनी ॥ विकः। ইতি শহনালা॥

ভি%তে রণ্ডা বিকর্মাছভাঃ স্বস্ত্দ- ॥ রভনিধিঃ পূ• খঞ্জনঃ। ইতি শক্-. ब्रङ्गावनी ॥ ব্রতর্জিক জ্লী দিবস: মসুথমু নে 🐮 **अर्डभङ्ग नः। इंडि (मिम्बी ।।** রত্রণ: পু• জন্তুর:। ইতি ছেন<sup>ু</sup> ठन्मः ॥

রতশাধী পু॰ জক্তরঃ। ইতি ছেম-हन्पः ॥ রতহিওক: পু॰ জ্রীচৌর:। ইতি

विका**ं अन्यः ॥ जन्य है**≈। लाहा ইতি ভাষ।। তৎপর্য্যাय:। यिज्ञः २ वानीकः । श्रामा । । पूर्विकः । जुजरः ७ हूरकः १ नदः ৮ जुदः ৯ নারীতরঙ্গকঃ ১০ ব্যক্তিনঃ ১১ ब्रजनातीहः >२ वश्वकः >**> ब्रज्ज**ा-निः 78 करोतः ७৫ कामी ७५ (थरी २१ नागतः २४ मानी श्रियः २२ वः अभिहें २०। इंडि मद्माना॥

त्रजान्त्रः भूः सक्ताः। इंजि एम-**ठन्मः** ॥

রততালী পু• বিজ:। ইতি শদ্দ- রতান্ত্রী জ্ঞী সজুটি:।ইতি ত্রিকাও-শেষ: 11

गना॥

याना ॥

त्र जाथिनी जी रेमथूना जिला विनी।

हेि इनायूथः॥ ब्रिडिः जी कामाप्त्र अश्री॥ वागः॥ রভণাভহ্যণ। ইতিনেদিনী ॥ তস্যা উৎপত্তি:নামকারণ কামপত্নীত্ব-. अ रथा। एक उवाठ। माप्त्र एकर॰ कन्तर्भ मुन्न खन्नानिनी। अत्राः গৃহীয় ভার্য্যার্থে ভবতঃ সদৃশী **®ेगः ॥ এषा उद मङाटिकाः म** ে র্বনা সহচারিণী। ভবিষ্যতি যথা **'কাম' ুখ্মতে। বশ**ৰভিনা । মাৰ্ক (७ग डेवार । इंट्राङ्गा अमारी म का (रह (इर जलाफ्ना•॥ कः नत्रभाषाणुजः कृदा नाम क्दा द **छीस्ट** डा॰ ॥ डा॰ वीक्टा सरता ब्रामाः রত্যাখ্যाः सुम्याह्याः। আ আশুগেন বিছো হসৌ মুমো: হ রভিরঞ্জিত:।। ইতি কালিকা-পুরাণে ৩ অধ্যায়:।। 🗱 ।। রভিবন্ধা यथा । न ভवस्टि यना नार्या स्रही বাদ্য রতে মতাঃ। নানাবিধৈ তথা वरिक्त ब्रह्मवाः कामिन्तिः ज्ञियः ॥ পত্মাসনো নাগপাশো লভাবে (है। रखंगः शूरेः । जलिनः जुन्स्त ৈচব **তথা কেশর** এব চ ॥ ছিল্লো-লো নরসি হে৷ হপি বিপরীত স্তথা ९ शदः। कुरता रेव (वनुकरेम्हव मू८তিনাগো বিদ্যাধরস্ক যোডশ: । ইতি রতিমঞ্জরী ।। এতেযাং লক্ষ্যু-ণানি তত্তৎ শব্দে দুপ্টব্যানি ।। রতিকহরং ক্লী যোনি:। ইতি ত্রিকান্ গুশেষ: ।। রতিক্রিয়া জী যৈথনং। তথ পর্যবহণ।

রতিকিয়া স্ত্রী নৈথুন । তৎপর্য্যায়:।
সম্বেশন ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।।
রতিগৃহ স্ত্রী যোনি:। ইতি ত্রিকাশুলোষ:।। র্মণমন্দ্রঞ্চা

त्रिवागः श्रु॰ (दाउमव्द्वान्तर्गठ-श्रक्षम्भवद्यः। उत्तर वद्यः। श्रीप्रयम्बय्णान कामूकः कानि-नी यित । त्रिवागः समाध्याठः कामिनीनाः मरनात्रमः॥ ইতি त्र-তিমঞ্জরী॥

विशिव्धः भू कामस्यः। इंडान् मः॥ हिम्हिति मय ब्रीना इति विश्वित उम्राविज्ञाता यथा। वाि श्रीमाथ्वीना क्रेनक क्रम्स इतिनेना क्रोक्षि मस्य गोजा-स्वाना मूल्लि ब्राटन हाि क्ल भूयमीना । देल्ल्यीना निज्ञ महत्व सम्बद्धो क्रवली क्ल्या-ला कार्नाना क्रोना क्रवली क्ल्या-ला कार्नाना क्रोना क्रवली क्ल्या-वािक्रानिना क्रोने ह मुब्रि प्राविश्वित र्ख्जवीना स्वत्व ॥ इंडि प्राविज्ञामर्गन।।

ক∂ন্ত ততঃপর∙॥ সি•হামনে। র- 🏿 রতিপাশকঃ পু•ু রতিবৃদ্ধবিশেবঃ 🕽

य्या । की अःयन्क्यूण्यन कामूरका |

যদি সুনরো । রতিপাশ: তথা च्याङः कारिनीनाः जूशावहः॥ इंडि भवनी शिका॥ রতিপুিষঃ পু॰ কামদেবঃ। ইতি भवत्रदादनी ॥ भूद्र छित्रक ॥ क्षी अञ्जातमः। यथा। রতিম্দা न्मभानन्त्। द्रियमाञ्चद्र**मः सू**ममा-অন্তা। ইতি ত্রিকাওশেব: ।। अञ्मिलितः क्षी (यानिः। इति इति। ५ तः।। रेनथूनगृरु। यथा। मकाता इंडियन्तिदादिष मधी क्लादिष ব্যাহ্নত চেতঃ কাম্ব সমীহিতাক ৰি গদন্যসাৰ্থি প্ৰেক্ষিত। হা-ন্যু চাবরপলবাবধি মহামানে। < शि भोनाविषः **गद्यः गाविष्या**वः ধিঃ জল ভবাংপ্রেম্র: পরং কেবলং॥ ইতি রসমঞ্জরী।। রতিনিত্রঃ পু॰ রভিবন্ধবিশেষঃ। **ভ**म। बक्षः यथा। भाउरम्कः ्राध ह कामूक यहि कामूकी। ब्र-তিনিত্র ভাষা খ্যাতঃ কামিনীনাং নথাবহঃ। ইতি রভিনঞ্জনী ॥

इंडिइन्पः 🌪 काम्रास्यः। इंडि

নিধুবন । ইভি

বিকাওশেষ: 11

রতিল্ম• ক্লী

इ.जादनी ॥

त्रिक्त श्री वित्रश्लीवाः निष्ठि स्माक इंडि ভाषा। इंडि मद्म वित्रृका।।
तितृका।।
तितृका।।
तितृकाः प् तिडिक्तिवित्राम्यः।
उग्र वृष्ट्राभ यथा। नातीनम्बयः काभीधात्र (यक्ष म् त्य यमि। श्वकर्छ।
त्र स्य काभी दक्षः म् ग्रामु जिमुन्दतः।।
इंडि तिज्ञाञ्जकी मात्रमी निका ह।।
त्र ज्यो मित्रमी।। मञ्जवाक्।
इंडि निक्ताञ्जको मृत्रामुणामितृष्टिः
तर्जाह्यः प् काकिनः। इंडि

बन्धः वि अभाकािः ॥ मूकाि ॥ खर्णाि ।। चर्णाि ।। चर्णाः । चर्णाः । चर्णाः । चर्णाः । चर्णाः । चर्णाः ।। चर्

(क्षन कर्मना। काय महावयवाः महर्व जज़्वीक क्वाययुः ॥ (स्वाना नथ्यः **ं ক্লুণাণ সিদ্ধানা**॰ প্ৰনাশিনা॰ । तञ्जीक गरा गुराः मुगरानज्य उपा ॥ 🛊 ॥ जय उम्राकद्रज्ञाना-নি যথা। তেষান্ত পততা বেগা-দ্বিমানেম বিহাযসা। যদ্ম**্পপা** ত রত্নানা বীত্র কুচন কিঞ্চন।। , महामासी मित्रि वि वा भवं एक का-ননে হ'পবা। ভত্তদাকরতা যাত • . স্থান মাধেষ গৌরবাৎ ॥ ভেষ্ अस्का विष व्यान व्याधिमान्यशः নি চ। প্রাদুভবন্তি রত্নানি তথৈব বিশুণানি চ।। বজু নুক্তাশ্ম মণगः স পদারাগাঃ স মরকতাঃ প্রোক্তাঃ । अभि हिन्दुनीलम्पि वद्र रेवमूर्यं।-क भूष्ठद्रागाक ॥ कर्त्वन जेनू-লক ক্ষিরাক্ষ সমন্তিত তথা সু-**िक•। विकास स्वान्य यञ्जापृत्रिक्षः** স•গুহে ভজ্জ:।। 🗱 ।। আকার वानो भूषन खनामासो उटकन পরীক। চামূল্যঞ্রর জ্পলৈ ৰিজ্ঞেয় সৰ্ব শাস্ত্ৰাণা !! স্বল-গ্ৰেষ্পজায়তে যানি চোপহতে **२**शन । (नारेष छान्भयूकारस शिवास खन मणना ॥ भन्नीका পরিশুজানা রল্পানা প্থিয়ীভূ

का। वाद्रगः मःगुरश वाभि कार्यः শূি্য মভীপ্পতা।৷ শাস্ত্রজ্ঞাঃ দশ-ল। শ্চাপি রত্নভাজ: পরীক্ষকাঃ। তএব মূল্য মাত্রায়া বেত্তার: প-রিকীর্ভিতা:।। ইতি পাৰুডে ১৮ অধ্যায়ঃ ।। বিশেষরত্নপরীক্ষা ত-ख्ट मास मुद्देवता ॥ 🗱 ॥ ठजूर्ममा महाब्रद्वानि यथा। क्लास्का किञ्च-র্থ: তত্তন্য: শশ্বিন্দু শ্চতুর্না महाबन्न मञ्जवसंस्वदः। ठजूर्यम নহান্তি রহ্বানি যস্য সং। রহ্বানি जु यजाजिएनुशनि धर्मन हिला-ক্তানি।চক্রণ রথো মণিঃ খল্ল কর্মো রত্থ পঞ্ন । কেত্রিশ্চ স-প্তিব মপাণানি পুচক্ষ্যতে॥ ভার্য্য नुरताहि उटेन्छव रमनानी त्रथक्ह यः া পত্তাপৌ কলভ শেতি প্রাণিনঃ मथ की र्डिंगः ॥ हजूर रेमजानि রহানি সর্বেধা• চক্রবর্তিনা মিতি। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৪ অংশ 汉 আ-ধ্যায়: ভট্টাকা চ।।

त्रङ्गकन्मलः शू॰ श्रुवानः। ইতি শব্द-त्रङ्गावनी ॥

तङ्क्रः भू भर्व जित्रिभयः। ইতি भग्दत्रञ्जवनी ॥

রহ্নগর্ভ: পু॰ জবের:।ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ:।।সমুদু:।ইতিরালনির্ঘটঃ।। प्रशिक्ष जी नृषिती। ইতি एम हन्द्रः ॥ উপहादाट खनवटन्य वजी ह ॥

রর্দ্বীপ· क्ली **র**র্নির্মিতস্থান । যথা। সি: হক্ষমাধিস-কঢ়া। নানা-লকারভ্যিতা । চতুভুঁ জা • মহা-দেবী নাগযজ্ঞাপবীতিনী ৷৷ ব্ল-क्रवज्ञभद्रीधानाः वालाकं अपृश्ली छन्। नात्रनारेन्। सू निर्गारेनः स्म विठा॰ ভवमूनरती ।। जिवनी वनः যোপেত নাভিনালম্ণালিনী•।র-ত্বৰীপে মহাদ্বীপে সিংহাসনসম-निष्ठ।। शुक् झ कमलाक्रा॰ श्राय ত্তা•ভবগেহিনী•।ইতি তক্ত্রসারঃ। ত্রী মহাদানবিশেষ:। রত্ব হেনুঃ यथा। स्ट्रिंग डेवाह । ज्या उः সংপ্ৰক্যামি মহাদান মনুত্ৰন । র মধ্যু রি তি খ্যা ত গোলোক ফ वादः नृभाः ॥ भूभानित्न मथामादा जुनाभुक्ष मानदर । (नाकिमा-वाङ्ग कृषा जाता (वनु भुकन्नाय ॥ ज्यो क्काडिन क्दां जनत्रात न पुञ । (धनु तन्न वन्ने। वर्षा ८ नकन्ना विवि भूर्बकः ॥ ज्ञाभारयः পঘরগোণা নেকাশীতি মুখে বুধঃ ৷ পুস্তরাগ শতং তদ্বদ্ধোণা याः निविक्तस्य ॥ ननारि रहम

তিলক মুক্তাফল শত দ্শো: । ज्यूरण विक्रम भठः मूकी कर्नबाय মৃতে।। কাঞ্চনানি ত্ শৃঙ্কাণি শিব্ধে ব<u>জু</u> শতাত্মক । গ্রীবাধা নেত্রপট-व शायि क अमृत्रि उ ।। इन्तृ नैव **শত॰ পৃ**ঠে বৈদ্র্য্য শতপার্শকৌ। माहिक करत्र कार्या भोगिक्तक শতান্ হদি॥ খুরা হেন ন্যা: কা-, र्याः भूष्ट् मुकावली मयः । मृग्र काष्ट्रम् काष्ट्रो ह घु। १ कर्ने त हम्। रैनः ॥ ऋक गानि ७ त्रामानि त्रोभः নাভিঞ্চ কার্ণে**ং। গাক্**ল্লভ শত• তন্ত্রদক্ষীনি পরিকল্পয়েং ॥ তথা-ন্যানি চ রভ্রনি স্থাপ্রেৎ, সর্ব সং क्षियु। अपाइकंत्रया किल्ला॰ (गाम-যক ভ্ডালাক ॥ গোন্ৰ নাল্ঞ তथा निव नृकः स्क्रान् । नृहार्य চানর দ্ব্যাৎ সমীপে তানু দেছে-**ब॰ ॥ अ ७** नानि ह रेश्यानि ज्यान नि ए मिकिन्छः। कात्रस्यस्य स्ववञ्च চতুর্থাংশেন ব**্স**ক্।। তথান্যানি ठ महीति शानाः (ण्डळ स्याः ख्याः । नाना कवानि नहां नि शक्षवर्ग वि-তানক ।। এব বিরচন কৃত্বা ভদ্ব-(कामाविवासनः । अञ्चिष्णुत निकः -गा र कु। (थन् मान**ञ** एय**छ ५:** ॥ ७५-(थन् वनावाश हेन्त्काना हत्व छ उ: ।

ष् अर्द मित्रान थाम यजः शर्रेडि क पुनमू विकु कमनामन वामप्तवाः। তুমাৎ সনস্ত ভূবন ত্ৰয় হেতু যুক্তা ম) পাহি দেবি ভবসাগর পীড্য-িমান•।। আমু**স্ত**ে ধেনু মভিত: প तिवर्डा छक्ता मन्त्रामिन्नाय धत्व দিনমত্র কৃ:তাপবাস: পাপৈ বি মুক্ত তনু রেভি পদ মুরারে: ॥ ্ষ্ট্রিভ সকল বিধিক্তে। রর্গ্রেনু পু দান বিভর্তি চ বিমান প্রাপ্য-रमिनापानः। कलि कन्य विम ক্তো বন্ধুভি: পুত্র পৌবৈ: সহি भरन मुक्तभः छान नाउँ। जि. म ষ্ট্রো:॥ ইতি নৎস্যপুরাণে মহা-मानानूकीर्ज्यन ब्रङ्गाथन् श्रुमानित्का नाम २७२ जवतायः ॥

রত্নবিধিঃ পু॰ থঞ্জনপক্ষী। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

द्रष्ट्रभाद्रायन क्षी **मर्वदङ्गान ।** যথা। সমূদ্যেপত্যকা হৈনী পর্য তাধিত্যকাপুরী। রত্নপারাযণ ना मा नाक्षि गग गिथिन ॥ इंडि ভিড়ি: ॥

ग्रृश्रु जी जिनाना नद्रकविष्णयः । यथा । রত্ন শর্করা বালুকা পক ধুম তম পুভা:। মহাতমপুভাবে

**ज्राक्षाक्षा नद्रक जूनगः । इ**जि (रुमहन्मु: 11 রত্রম্থ্য ল্লী হীরকণাইভি হেমণ **ठन्पः** ॥ त्रञ्जाह<sup>®</sup> क्षी भागिकाः। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥ রত্ত্রশুষ্ঠण्ड ॥ कन পূর্বক- তা॰। यः পুণ্য মাপ্য রহ্মতী জ্ঞী পৃথিবী। ইতি শদ-माला।। ब्रद्गुका ह।। त्रज्ञात्र क॰ क्ली भूबकत्रथः। ই**डि** मद्रवावनी ॥ त्रव्यर्गमील वि॥ तन्त्रमान्ः भू म्याक्षव वः । इज्डा नदः ॥ রত্রসূ: জ্ঞা পৃথিবী। ইতি হেমচন্দু:।। রয়াকর: পু॰ সমূদু:।ইত্যমর:।।

রলেৎপত্তিস্থানক।। রত্নাঙ্ক: পু॰ বিষ্ণুরথ:। ইতি শব-

त्रावनी ॥ त्र कि इस ।। ब्रञ्जाहलः भु मानार्थन्तिग्यश्वं उः । यथा। वा ठः भवः भ्वकः। भि बङ्गाः চল मन्ख्य । नुकाकन महस्म्प পৰ্ত: স্যাদনুভম: ॥ মধ্যম: প-ঞ্শতিক জ্রিশতৈ রবর: মৃত:। চত্ৰথাংশেন বিক্ষয়া: পৰ্বতা: সুঃ সমন্তত: ॥ भूदिंग वज्रु शासिति फंकिश्नानम्नीनिकः। भूत्रवाग यू-रैं कार्य्या विषक्ति गंक्रशापनः ॥ रेवपूर्वे विकरेमः शकार मःभित्या

বিপুলো ২চল: ৷ পদ্মরাগ সমো 🛚 वर्षिक खाद्म १ जू विमात्म ।। धाना পর্বতবৎসর্ব মত্রাপি পরিকল্লয়েৎ । उधनावास्तः कृषा वृक्षान् (नवाः म काक्षनान्।। श्रुकायट श्रुष्ट्र भी-নীয়ৈ পুভাতে চাথ পূৰ্বে । भृद्ववम् छक अद्युः। कन मञ्जान् मीत्रस्य ॥ यथा (मवगनाः मर्ख **गर्व त**ङ्ग्यविष्ट् जाः। द्वश्च तङ्गया निउ। मुडः भाहि महाव्या। ययाः দুর পুদানেন তৃষ্টি পুসক্তে হরিঃ । जनाननत् शुनातन उत्यामः शाहि **शर्वछ ॥ व्यानन विश्विना** यञ्च हर्ह्या-<u>দুল্ল মহাগিরিণ। স যাতি বৈ</u>ঞ্চবণ লোক মনরেশ্বর প্জিত: ৷৷ যাবং কল্লশত সাগু বসেছেহ নরাধিপ । ক্পারোগ্য গুণোপেতঃ সন্তরী পাধিপো ভবেৎ॥ বুক্ষহত্যাদিক। কিঞ্চিঅদত্রামূত্র বা কৃত। তৎ সর্ব নাশ নাযাতি গিরি বঁজুহতো যথা ॥ ইতি মাৎস্যে ৭৭ অধ্যাय:॥ अञ्चलका की स्वायानकार । ন্ডাওগহ্না ইতি ভাষা। তস্য थावर खनाः। धनाः यनमा मायः याः श्रीमहाजनमूहनः। इर्याः काः भु भाजमुः রব্রভিরণ ধারণ।।। ইভি রাজবল্ল 🤃 ॥

রব্রি: প্ বন্ধনৃপ্তিহন্ত:। নুটুন হাজ্ ইতি ভাষা। ইত্যনর:॥ জী পুশ্ সবো রহারত্নী ইত্যন্যে। ইতি ভরত:॥
( রত্তরণ ল্লী যোনি:।ইতি শব্দান্যাল বলী।।

त्थः श्रुः कायः॥ हहनः॥ (वजन-( বৃক্ষঃ। ইভি বিশ্বঃ ॥ ভিনিম্বৃদ্হ🍃 । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ চক্রবিশিষ্ট্র/ যুদ্ধাথয়ান । তৎপর্য্যায়ঃ । শত্র-क्: २ न/मत्नः ७ । इंड/मद्रः ॥ मान्द्रिया वर्षा इंडाइवः ॥ उद्यात्रा ज्ञनखनाः। इन्छ। च त्रथ (सानारेन्र) ভূমণ বাতকোপন । ভ্রিকরণ भक्षानाः वन्। वङ्गि विवर्धनः ॥ ই 🧟 রাজবল্প ভঃ॥ 🗱 ॥ রথ বিশেষাণা॰ नागानि यथा। युक्तार्थ ठक्कवप्यातन **শ**তात्रः मान्स्ता तथः। मःको-ডার্থ: প্রারথো দেবার্থস্ত নক্দুথঃ ११ (वारगर) ज्ञत्था देवनियत्का ५ थुज्ञ-থ: পরিযাতিক:। কণীরথ: পুত্-রণ ডয়ন রথপত্রক: ॥ অনস্ক শ-कारी २थ नामुखी कप्रविवाशकः । অথ কাত্ৰল বস্ত্ৰাদ্যা তৈ তৈঃ প-तिव्र**७ त्राथ ॥ मगा** ७ कद्यली यः স্যাথ সম্বীতঃ পাণ্ড্ৰন্ধলৈ:। সতু दिला दियाचुक या वृत्ज बील

চমলা ৷ ইতি হেনচন্দুঃ ৷৷ ক্ষা গো-লোকস্য রথো যথা। পুনত্ত বিপ্ পান্তি নিষ্টে নম্ম সুধোপন। বাল-- শ্বান্ ভোজযিত্ব। তুষ্যক বুভুজে , বিভূঃ ⊬ এতমিগলরে তএ শাতস **छ तथः वद्यः । एएमं विभूभञ्ञोन्ध** প তন্ত গগনাদছে। । রত্নর্দর্গণ স•ু युक्त बङ्ग नात भतिहरः। बङ्ग खरेस्र जिय्काम मपुद्र कवामाङ्कृत्रशास्त्र-তচানুর সংযুক্ত বহিশ্বাংশ্কা-বিভি । পারিজাত পুস্নানা মা ল্যজাল বিরাজিত ।। শতচক স-भायुक्त भतायायि मताहत । (वः ष्टिङ भार्य रेन फिरिया इनमाना বিভূষিতৈঃ।। পীতবক্ত পরীধানৈ **ब्र**ानकाब ভृषिडि: । नवरयोवन जम्मदेशः भाग्राभटेनः ज्ञारवाक्रेदाः ॥ দ্বিভুলৈ মুরিলী হলৈ গেলেবেশখরৈ र्व दिः। निथि शृह ७ अभाना वक विक्रिमह्डरेकः॥ अवक्श द्रथार्ङ्॰ তে পুণম্য হরে: পদ । রথ মারো-হণ করু মৃচ্ বুলিক কামিনী:।। বিপুভার্য্যা হরি নত্বা জ্মার্গোলো-ক মীপ্লিত। বভুবু গোপিকাঃ ২৮১ স্ত্যুত্র মানুষ বিগুহান্।। ইতিবুকা বৈবর্ত্তে ঐকৃষ্ণজন্মখণ্ডে ১৮ অধ্যা-यः ॥ 🕸 ॥ (स्वरा त्रथ्याजा यथा । वुष्मावाष्ट्र । ज्य एउ मः भ्वक्रामि (नव) विश्व मुख्य । यट कृता म-ৰ্বকানাণাণ ব্যাপ্তি ভৃপ্তি ভবিষ্যতি ।। मिंड में ने नेरेय में रिख दिन्न देखाः সুশোভনৈ:। বিচিত্র পদ্মরাগাদ্যৈ নণিভি কপশোভিতৈ: ৷৷ রথকৈ: कात्ररएप्ट्रिगः मध ভोमः मरनाद्र-भ॰ ॥ पूक्त वञ्जभ॰ हम भक्ष हिन्तु १४-শোভিত । ঘণ্টা কিন্ধিণি শগ্নাচ্য চানরৈ: কটকান্বিত• ॥ পতাকা ধৃ**ন্ন** শোভাঢ্যে দর্গ ণৈ ক্পশোভিতং। ত রথ পূর্বেছক জাতী স্মুম ম-ল্লিকৈ:॥ পারিজাতক পুল্লৈশ্চ যক্ষ-কদন চন্দনৈ:। সুগন্ধ ধূপিতৈ:কৃত্না দেবী॰ তত্র নিবেশযেৎ ॥ পুতিমা॰ (भाजनाः व< म महामृत क्रयक्षत्रीः</p> । পূজ্যেদুথবিন্যস্তা॰ সর্বনঙ্গল ম-क्ला ।। पूर्ण काउप्रायनी (पवी व-त्रसः विकारवाभिनी । निम् छ म् छन-थनी महिकाम्ब्रथा जिनी ॥ शुनी पञ् **जना भ २** ख यह ता वाक्षितः क्रिन । অনেন বলি পূর্বেণ নমস্কার যুতেন চ ।। পূজ্বিত্বা ততো নেশা সনস্তাপ্সর शीउरेकः। शक्ष्मी मखनी भूगी नव-ন্যেকাদশীযুচ।। তৃতীয়া শিব বিংঘ্ন-म पित्रपृष्मात्र ह। महामणी नर স•জ্ঞ পর্বত সুবণেষুচ॥ তত্র মণ্ডপ

विन्यामः मङ्गाविष्ठ निम्यिजः। শ 🛚 वा वा मृश्यर वाशि कृषा वास वि চারিত ।। সর্ব লক্ষণ সম্পূর্ণ সর্ব শোভা সমন্বিত। পূর্বেচ কার্যে-ছক পশ্চান্দাত্তা পুচকিরে॥ মহা-জনপদোপেতা• মহান্ত্ৰীভি: স**স**্ कुला । महीव भान रेनरवरेन्तरः मः भरें उति भृष्ययः ॥ मन्त्राष्ट्रविः শক সর্ব॰ সর্বদিক্ষু সমন্ততঃ। ভূযো-বেতাল সংঘদ্য মস্ত্রেণানেন সূব্ত ।। রক্ষ মা॰ নিজ ভ্রেভেগ বলি॰। शृह मरा नियः। भाउ मीठ र्वाद रम्वि अवकाशाश्रीभाषनि ॥ अरनन विनासन मर्बकामान् भुयह स्म। এবং দত্ত্বা বলিং শক্র তথা দেব্যাব-তারযেৎ।। বিন্যসেন্ডদুপীঠে তু ম-ণ্ডলৈ ৰূপশোভিতা । তব্ৰস্থা পূজবেদ্বৌ হৈন ক্**পেশ্চ তামুজৈঃ** ।। कनरेमस महत्युग गक्तापक मूश्-तिरेड:। मगस कनमण्रेर्ग र्यक्डिय त्रथश्रह्मदेवः ॥ ज्ञाश्ररात्क स्मरकन तन्गरेख नं रेव मृं रिष्टः। रवम मक्त नक्ति नइवाहिक निश्रोनः ॥ त्व वीगा म्मरेक्ष क घष्टा कि स्किन तावि-रेनः। ज्ञाशविद्या उट्या (मवी॰ निर्मः क्षुहर्नेकः मृहेजः॥ शामगारि क् रेजः शरमा मी भवर्त्ता विरमाधिरेजः।

म्र**ख्टिक नंन्सिकावर्रिकः म**ेड्डा नी र्लाट **भर्तारभरेतः ॥ यद भान्यकृ**द्धाः खिरेत्र यंवाहारेत्र निमक्कायट्। পुर्डि कक मरङ्कुभः भुरञ्जकः कनरेहा नुरम् ॥ उथा कभ् त क्वारिन हमेर রনঃ <del>জ্</del>জুমেন চ। গোরোচনা সমে তেন দেবী সালিপ্য পূজ্যেৎ।। ছে **শলৈ জাতিকৈ মাল্যে** রত্নমাল্যে র तिकथा। वारमाजिः जूबरेन किरेज भूनध् भः ममूर्काल्यः॥ जक्कायर उथा कन्। विका जीनथ मृः विजे । ভক্ষ্য ভোষ্যাম পানেন ত্র সর্বা॰শ্চ পুণিয়েছ।। ভোজযিত্বা ক্ষ भारयङ (पर्वी (म श्रीयङ) गिङि রথে ক্রা তথা দেবী পুন রেব গৃহ ন্যেৎ।। মহতা জন সংঘেন সমূহ বিভবাদিতৈ:। শান্ত রেণু পথা সর্ব भूम मृद्याकरें ज तिः ॥ भूकि भ মাণৈ: কন্যাভি: জ্রীভি মঙ্গল বা-रि**ভिঃ । म**िल्लन यथा भाष्मुः ক্র। পক্ত পুচকিরে ॥ পুরশোভা। পথে শোভা দ্বারশোভা গৃছে गृह् । कात्रयी उ उथा भक्त नर्ब वावा॰ निवातरणः। व्यरह्ना उत्रव खियन् भागिरि म। विवद्धः य ॥ व्यान्छ। वियाकवा वधाः ধাদি শত্রব:। অকাল কৌমুদীণ

ं भक् तथगावास कातरय ।। मर्वपा ज्रुद्रित्य महत्रारिनः भुविधित। े द्रवराजा उना मक मूरितः श्रर्श मना ্ত্ভাদ্ভথা কিম্ম গন্ধৰৈ ভূ পা-তাল পনিবাসিভি:। রথযাত্রা পু-ु जारवन स्मानस्य निवि स्विजाः ॥ স্বাদিত্যে রথযাত্রা কূদুথেন নভসঃ कुरम् । (मरवा मिवा विमानसी রিখ্যাত্রা পূভাবতঃ ৷ জীড়ত্তে বি-विक (छीर्गः मही उक्र विवर्क्षिजाः । वर्ष व्यशि परवन्तु तथयाजाक त्रा छव।। निवायाः निवनायाञ्च পর্মেণ সমাধিনা। অগস্ত্য উবাচ ৰ রথখাত্রা কৃত পুণ্য বুন্ধণো বা-नवम् जू। भूर्बः यट कथिकः जाक তত্তে **স**र्वः भया थि**लः**॥व्यानिजः नाज **जल्मत्हा (**म्वीना हाजा) मुख-मः। यः भारेट मृगुराष्ट्राभ ভङ्कि भाग्यमञ्जभ ।। म मुख यणः (मीः ভাগ্য পুত্রপুান্তি মথেপ্লিতা লভতে নাত্ৰ সন্দেহ ইত্যেব বুন্ধ ণো ধ্রুবী ে॥ স্ববলেন কৃতে রাজ্যে পুরা শক্রম্য কীর্ত্তিতা। ধনদস্য পু-রী প্রাপ্তি র্বকণস্যচ বায়ুনা।। হৃতে স্থানে কৃতা তেন তথা শু.দ্বা চ নিৰ্শ তে:। ভুঞ্জতে পর্যা দৃষ্ট্যা পুরী র্ভোগবভী: শৃভা:।। ইতিদেবীপুরা

ণে রথশাত্রা বিধি মাহাত্ম্য ৩৯ অ-यहायः॥ #।। नवगुरानाः त्रथा यथा। याजनाना॰ সহসাণি ভাকর মা র-(थ। नव । केनाम ७ खेशवामा फ्रिन গুণো ৰিজসত্তমা: ॥ সাৰ্ককোটি ত্তথা সপ্ত নিযুতান্যবিকানি তু। যো• জনানান্ত ভস্যাক্ষণ তত্ৰ চক্ৰণ পুঞ্জি ষ্ঠিত ।। ত্রিনাভিমতি পঞ্চারে ব্রে-মিন্যক্ষযাত্মকে। সম্ব**্সরন্ত ব**্তক্ সু কালচক প্তিষ্ঠিত।। চত্তারি-শৎসহসাণি দ্বিতীযোকো বিবশ্বতঃ । পঞ্চান্যানি তু সার্ভানি স্যুন্দ্রস্তু ৰিজোন্তনা: ॥ অক পুনাণ মূভযো: भुमानः उर्भद्राख्याः। ज्याश्यः স্তদ্মুগা**দ্ধে চ প্রুবাধার• রথস্য বৈ** 🎚 দ্বিতীযেক্ষে তু তচ্ক সংস্থিত মা-नमाहला । इयान्ह मश्रहमाः मि ভন্নানানি নিবোধত ৷৷ গাব্জী চ বৃহত্যুক্ষিক্ জগভী প'ক্তি রেব চ। অনুষ্ঠুপ ভিষ্টুবিত্যুক্তা শুন্দাণসি रुव्रत्या व्रत्यः ॥ > ॥ इंजि क्लार्स्य ০৮ অধ্যায়ঃ।। রথ জ্রিচক্র: সো-মস্য স্থলাভা স্তস্য বাজিন:। বাম দক্ষিণতো যুক্তা দশ তেন নিশাক-র: ৷৷ বীথ্যাশুবাণি চরতি নক্ষত্রা-ণি রবি যথা। ২। সোম পুএস্য চাষ্টাভি বাজিভি বাযুবেণিভি:।।

वाद्रिकेः म्यान्स्ता युक्त (खनारमो | যাতি সর্বতঃ। ১। শুক্রস্য ভূমিজৈ **इरियः म्यान्स्राम्यान्य** वृंजः ॥ ८ ॥ অস্টাভি শ্চাথ ভৌমস্য রথো হৈমঃ সুশোভন:।৫। বৃহস্পতে রথাষ্টা-र्थः मुन्द्रत्नात्ह्म् निर्म्मिङः ॥ ७ ॥ রथ স্তনোমধ্যে ছংশ্বা মন্দ্রস্যায়স নির্মি তঃ। १। স্বর্ভানো ভাস্করারেশ্চ তথা। ষণ্ডি হ যৈ বৃতি: ॥ ৮।৯॥ এতে নহ। গুহাণা• বৈ সমাখ্যাতা রথা নব। সৰ্বে খুবে মহাভাগা নিবদ্ধা বাত রশ্মিভি: ৷৷ গুহু ক্ষ্ তারাধিষ্ট্যানি প্রবে বন্ধান্যশেষতঃ। ভুমন্তি ভুা ম্বন্ত্যেন সর্বাণ্যনিল রশ্মিভি: !! ইতি কৌর্ম্যে ৪০ অধ্যায়ঃ ॥ 🕸 ॥ 🗟 জগন্ধ থেদেবস্য রথ: যাত্রাশদে দুষ্ট **ব্যঃ।ঞ্চ। অথ জ্যোতির্বিদা ভরণে র**থ কর্মাছ।লোল নৈত্র লঘু জিফুক ভেষু म्यान्ति विधान मथाहः। स्मन **म**नुष् वनाषु उभरिङः माधूबानिवि সাধুভিরকে॥#॥অথর্থচক্রমাহ । उक वृकि कद्रकीर्भ भूद्रकारम्य मृक বৰ্ষণ বৰ্ষস্য। স্ব্যভাগ নিচিত -ভুম মগুদোবিমধ্য মনসো নবভাগ• ।। অণুভে ভব্তি সংক্লিরন্ত: ক্ব-द्वापुनि करगाथ द्रथात्म । मित्राज्यी ভূতি রন্তরসন্ধৌ ভীতি রিষ্ট মনসে।

नन् गर्छ।। 🗱।। जल मृह्र्वगनभर्छ त्रथ क्छा । भूरवे भूनवेम् (कार्ष्ठ न्वाक्षा द्वरजी षत्याः । चुरिन्छि ত্রিভে হস্ত ত্রিভাষে রোহিণী শৃংগ্র मार्क भोग्र हित्न भोग्र दिना त्रथ कर्म नट । # । व्यथ क्यां दि সাগরে রথচক। রথাকার গলেও ছক্র° ভানুভাদৌ বি**লোক্ষে**<। খাগুে ত্রীণি রক্ষাণি সৃষ্টি মার্গে 🎉 माभाष ॥ मृत्य मृजुरू कंप (अर निक्रिराध सङ्ख्यः। तथारो 📫 হোৎপাত মধ্যে চৈব সথপুদ• ইত্যায়েষ জ্যোতিরিদ্বল্লভরামে क् जाः मु जा दिणः॥ 🗱 ॥ व्यम् 🖯 र्थः अयानद्यतः श्रीताः मान्सनानाः तथः नाः यथिनः मल्नाः विश्वानः कार মাতঃ কথ্যন্তি। কেষ্ লোল সং क्कानि बाजी भूनवंग् मुवना धनिः শতভিষা এতানি।নৈত্ৰ সংজ্ঞা মৃগশিরা রেবতী চিত্রা অনরাং এতানি।লবুস•জ্ঞানি হন্তা অশ্বিন পৃষ্যা অভিজিৎ এতানি। জিফু রি ন্দু স্তন্ত জ্যেষ্ঠা কো বুন্ধা ভদ্ত রোহিণী এতেযু নক্ষতেষু । পুন কেষু সেন সদ্যুয়ু ইন: সূর্য্য: তেঃ সহ বর্ত্তনানেষু। সভা শুভ্গুহাণা म्।यू वादिष्। भूनः कित्रान् माधूदानि

ৰতি শৃত্ৰুহ বালিযুক্তে অৰে লগু ल् । भूमः किः वनाजी मध्यः शाने अपू ठज्थं छनः नवम् अठः , फ्रान्टेशः माधूजिः मुख्यूरेश विजि ॥. र्यं तथ्ठाक नक्क ज ज्ञानन । ं । উक्कि । উक्क विकः मूर्ग उम्र करितः ' किंद्ररेगः कीर्न ब्राप्तः भूद्रः कम्मा মিওলীৰ মভাগ পুনেশং বৃদ্যু তচ্ **ए**क्न: 🕫 उचार वर्थार मूर्गाः बोड नकु बाट अनगः भक्तेगा नव 🎢 কি তন্যাগুৰে অপুভাগ মার ভা আবিনধ্য সন্ধ্যভাগপর্য্যন্ত স্ विगा अक्तवज्ञध॰ उटक॰ (पर्य॰ न्त्रा-শীকভব্যু কিন্তু ত পক্ষ বল্বণ ন বভাগ নবভি ভাগৈ: ছিজ মিতি यावर। भूनः किः ज्उः मव्यज्ञागनिः চিত্ত ভুন• বাম ভাগেন ব্যাপ্ত ভুমণ মিতি ॥ অথাস্য ফল । অনসঃ नकरेमा अगुर्ज अगुगउ वर्जभारत চলু নক্ষতে সংগলি: যুদ্ধ ভবতি। ক্বরোড়নি যুগন্ধরণতে বর্তনান ন-ক্ষত্রে অন্তোন্ডি: নরণ ভবভি। র-খাঙ্গে চক্রয়ণ্মে জয়ে। ভবতি। সন্ধি তে সন্ধিগত নক্ষত্ৰে অৰ্থছ্তি: ু ব্যহরণ ভবতি। অন্তরসদ্ধৌ নধ্য नकान गठ नकरब छीठि छर्गा छ বভি। গর্ভে মধ্যভাগ গত নক্ষত্রে

ইঙ্ক শুভ ভবতি। ননু নিশ্চিত बिछि। जन्रद मुग्रम ॥ রথকড্যা जी त्रथमग्रः। ७८ **ग**ः र्यायः। द्रथ्युकः २। ইত্যমतः।। त्रथकतः शुः त्रथकातः। ইতি শদ ब्रङ्गावनी ॥ त्रथकातः भू• त्रथनिर्यागकर्छ। ছ-তার ইতি ভাষা। সতু করণীগত্তে गाहिकाङा ३:। उट्चर्यायः। उक्का २ वस्कि: o पृष्ठी 8 कांक्र उहे ৫। इंड्रमद्रः ॥ সূত্রবার: ৬ दर्छा ही १ त्रथकतः ৮ काष्ठउक्ककः २। ইতি मद्रवावनी ॥ त्रथलपूरी यु॰ मात्रथिः। ইত্যনরः॥ त्रथगर्छरः भू॰ कक्षवाश्यानः। नत्रः व्रथः। उर्भग्रायः। कर्गे व्रथः २ পु बङ्ग॰ ० एयन । इ ि इ । हन्तुः ॥ রখণ্ড জি পরপ্ররণাভিঘাত-त्रकार्थः त्रथम्। मनास्वतावद्गतकाः भिमुवा ॥ त्रथमा खिक्षः काखानि-(छा। तकार्थमायद्र**ा** ७८ शर्यापः । বৰূপঃ ২। ইত্যুদ্ধ : ভর্তক্চ।। রথগোপন· ङ्री রথগুন্তি:। ইঙ্কি रुनागुथः ॥ त्रथहत्रनः भू॰ हक्तवाकभक्ती। इंडि

**म**म्बद्वावनी ॥ ब्रथ्ठकः । यथा ।

রথ:কোনী যন্তা শ তথ্তি রগেন্দ্রে ধনুরথো রথাকে চন্দ্রাকৌ রথচ-রণপাণি: শর ইতি ৷ ইতি নহিন্ন: ভোত্র• ॥

त्रथकः भू जिनिष्यकः। ইত্যমরः॥ त्रथस्तः वि त्रथ्यमञ्ज्ञजियः। ইতি মুধ্ববোধব্যাকরণः॥

त्रथभर्यायः भू॰ (वडमव्कः। ইडि णद्रविदुका॥

রথপাদঃ পু• চক্র•1 ইন্ডি ছেম-চন্দু: 11

त्रथञ्जा की मरीविष्णयः। इंडिणकः त्रञ्जावभी॥

त्रथात्रः क्षी ठकः। ইত্যमतः॥ त्रथात्रः भूः ठकवाकभक्षी। ইত্য मतः॥

ब्रथा अभागिः भू• दिक्षः। ই**डि इसा** ृतः।

প্রাকী জী ক্ষিত্র ইভিরাজ হিহ্নীয়ো

রথভরঃ পু• কল্লভেদঃ। ইভ্যারি পুরাণ•।।

त्रथाञ्चः श्रु॰ (वज्ञनन्कः। हेजि भपत्रज्ञावनी।।

त्रथाञ्चूमः भूः विजनः। इत्यानतः विकायाः जन्नजः॥ तथावानार्थः भूः तथस्यूक्षकर्ता। ইতি হেমচন্দুঃ।।

রথিক: পুশ্রথী।ইত্যনর:॥তি
নিশবৃক্ষ:।ইতিরাজনির্ঘট:॥ রথিন: পুশরথী।ইত্যনর:॥
রথির: পুশরথী।ইতিশদর্য

রথিরঃ পু॰ রথী।ইতিশব্রয়। ্বলী।।

तथी भू तथवानीताकानिः। उट भग्रायः। तथिकः २ तथिनः ० इठामतः॥ तथाताशी ८ तथीः ० त्रथितः ७। इंडि एम्प्रमुः॥ तथी चामी १ माताकः ৮। इंडि म्य्रे त्रञ्जावनी ॥ मान्यनाताशः २। इंडि क्रोधितः॥

রখ্য: পু॰ রথস্যবোচাঘোটক: । ইত্যমর: ॥ রথা:স: । ইতি হেম-স্দু:॥ চক্রে ল্লী ॥

রথ্য জ্ঞী রথসমূহ: । তৎপর্য্যায়: ।
রথকড্যা২ রথবুজ: ০ ।। অভ্যন্তরনার্গ: । নাছ ইতি ভাষা । তৎপর্য্যায়: । পুতোলী ২ বিশিখা ০
। ইত্যমর: ॥ আবর্জনী । ইতি
নেদিনী ।। পছা: ।। চত্তরং । ইতি
হেন্চন্দু: ।।

রদ উৎথাতে। ইতি কবিকল্পজন:

।। রেকানি: । উৎথাত মৃৎথনন
নিতি গোনিন্দ ভউ:।। রদতি ভূনি।
শ্কর:। ইতি দুগাদাসঃ।।

पष्ठ: II विरम्थन । ३७ (मिनि ।। भूक्षर्ष वक्षा ग्राथा ! ्विंचीर्ग र्थनहीनाण्ड प्रसाः श्रिकः घ না; শুভা: । তীক্ষা দ ষ্টাঃ সমা: ্শুেষ্ঠা কিন্তা রক্তা সমা শুভা।। क्षीप्रत्यक्षण यथा। जन्मभुत्र म-মা দন্তা ভাষি হং কোকিলাসমং े। नाकिना युक्त समावे राजमान ्रे जुथावरु ॥ नामा मना मनभूदे। ্জীণান্ত ক্রিয়ে শুভা। করাল বি रेहकी प्रश्नाः (क्रमान ठ ज्याग ह ॥ होस्ताः कृद्वेपाः माक मीर्घा छवु-🕫 মৃ 5্রে। ইতি গাক্তে ৬৬ অ श्वायः।। इत्राप्ता मुक्तिक यथा । मञ्चान् उवारा वृ जिल्ला झामं १म् ह র্ভবেৎ। ইতি কৌর্মে উপরিভাগে >२ व्यव्यायः ॥ 🕸 ॥ मञ्जा मनः रार्याः (नभः मत्रिक मह्य । न তত্র বহুশঃ অর্য্যান্ত্রমুদ্ধরণে পুনঃ ॥ ভবেদশোচ মত্ত্যর্থ তৃণবেধাদু ণে কৃতে। ইতি প্ৰায়ণ্চিত্ততত্ত্ব্যুত বচন• 11

द्रमहरः পृ॰ ७४:। ইতি (रुमहन्तुः ॥ द्रमनः भू॰ मस्तः। ইত্যমর:॥ উৎ-थनम ज्ञी॥

রদন্দ্র: পু॰ ওষ্ট: || অধ্র: ! ইত্য মর: || তস্যশূভাশুভ লক্ষণ যথা

। मां मेलण प्राल्प जा जाते के अपरें में में निर्माण निर्माण के में में कि उन्ने कि कि कि कि कि कि कि कि जान कि जा

রন্ধ ম ঔ ঞ ) রাগে। ইতি কবিরন্ধ ম ঔ ঞ ) বল্ল দমঃ ।। য ঞ
রঙ্গাতি রঙ্গাতে। ম রঙ্গাতি নৃগান্
নৃগরনণাদন্য রঞ্জাতি পুঞ পিতা। ঔ রঙ্জা। ঞ রঙ্গতি রঙ্গতে
। রাগো বর্ণান্তরোৎপাদন মাস্তি
ক্ষাইতি দুর্গাদাসঃ।।

রম্ভিদেবঃ পু• বিষ্ণু:॥ চন্দুব•শীযনৃপতিভেদঃ। স ত্ সাস্কৃতিপুঞ:।
ইতি মেদিনী॥ স্কুরঃ। ইতি শদ্রমুবলী॥

त्रष्ठः खी वर्जा। निष्। ইতিনে দিনী।।

त्रक्षनः ली शाकः। त्रथ्याका कार्य

श्निते शुकुरयन निल्लक्षणः। यथा त्रक्षः

नायसानी । ইতি সংক্ষিপ্তসার

वृश्कृत्यः।।

विभिनी।।

बामवव्द्रकः। इंडि র্দ্ধকণ্ট: द्राजनिय्कः॥

রন্ত্রক: পু• উন্দুক:। ইতি ত্রি নাও শেবঃ ॥

**রন্ধুবংশঃ পু• ছিদু**যুক্তব**ংশঃ।**ফো-क्वाँ में इंडि ভाषा। उद्भर्गायः । पुक्नाद्रः २ की हका ख्राः ७ म क द्रः ८ वारनीयः ६ मविद्राम्यः ७। অস্য গুণাঃ। বংশৌ জ্বাস্লী কৰাথৌ চ কিঞ্ছিত্তেলী চ শীতলৌ। মূত্ৰ कृ हु भूरमहार्भः भिख माराहु सा भारती।। दिष्णाया त्रक्षुव भारत नीन নো ২জীৰ্ণসাশকঃ। কচিজ্ৎ পা-हाता क्राः मृनाया ७ न्यनामनः ॥ ই ভিরাজনিঘণ্ট: ॥

বদে। ইতি কবিকল্পজন:।। রপতি । বদঃ কথন•। ইতি দুর্গা-मानः॥

রফ ই গভ্যা•॥ববে। ইভি কবি-क्त्रक्रमः॥ हे द्रग्नुट्छ । हेक्ति पूर्गा-मानः॥

গত্যা ।। বধে। ইতি কবিকল্প करः॥ त्रक्छि। ইতিদুর্গাদা मः ॥ রব ই শত্যা॰। ইতি কবিকল্লছন:॥ ই রম্ব্যতে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

मूरुगः ॥ हिपुः । इंजि ॥ इव इ ७ अ(**५ । इंजि** कविक्**तक**पः।! পু॰ শবঃ। রবধাতো ভাবে २व् भुउऽरयन निम्नमः ॥ রভ 🗟 ড রাভস্যে। ইতি কঞ্চির জন: ॥ রাভস্য মুৎ সুকীভাষ:. । निर्दिठात्रा शुरुष्डि त्रिष्ठि शाविन्त ভটঃ॥ ঔ রক্ষা। ড রভতে সাধুঃ भूति । चाड भूर्बा २य माइएस । শাত্রণ পঠিতু মারভতে শিব্যঃ ) इंडिन्सारा**मः**॥

ৱত ই ড শব্দে।**ই**তি কবিক**ন্নজন** ॥ ই রন্ত্রতে। ড রম্ভতে। ইক্তি नृतादानः ॥

ज्ञाञ्चनः शृ॰ (दगः॥ इर्यः। **३७** (मिनि ॥ (भौदीभर्य)विठादः । ইত্যৰণঃ॥ ঔংসুক্য মিতি কলি: হ্য:।। ব্রিয়া নারভসাচ দৃশ্যতে । ইতি কৃষ্ণ: ৷৷ যদা তুরভদ ওণ सागार वर्ग गामिदार वर्षेड्र-যে ভদ্বতি বৰ্ত্ততে তদা বাচ্যলিস্ক-छ। नाट। इंडि विकारिम<u>ःग्</u>रह ভরতঃ।। অভিধানবিশেষশ্চ।।

রন উডজ ঔ ক্রীডে।ইতিকবি-কল্লজনঃ।। রেফাদিঃ। উ রমিশ্ব1 রান্তা। ড রমতে। জ রান: রন:। 🍪 রস্তা। ইতি দুর্গাদাস:॥

त्रनः शूः काष्टः॥ त्रकाःभाकर्कः॥

कागास्यः । इन्डि मिस्नि ॥ इम-१क्षा तमभाजा जीव १नहे शुक्रय निञ्जमः ॥

• त्रमकः शृ॰ काष्ठः। हेजुशामितकायः॥ त्रमठे॰ त्री सिक्ष्। हेजुशामितकायः॥ त्रमठेवृनिः शृ॰ धिक्ष्। हेजिसम हिस्तुका॥

ब्रम्गः क्री शिंहानम्नः। इंडि मि पिनी। क्षनः। इंडि ह्महन्मः॥ क्राक्तः। তৎপर्यत्यः। जनुक्कहर्यः। कः र गामप्रध्यः अ मृत्रकः ८ व्रकः ८ मः स्टानः ५ निवृतनः १ रेनथूनः ৮ ब्रिटः ८ उपम्छे १० व्रवितः १३ को छात्र इः १२ महाम्यः १० विज्नुः १८ योगिन्थूनः १८ অजिमानितः १८। ইंडि मञ्जू व्याननी।। की छनः १ हेंडि ब्रम्था वर्षन् मिना ।।

রমণঃ পৃ॰ পতি:।। কামদেবঃ। ইতি মেদিনী ।। গদভঃ। ইতি হেমচন্দুঃ ।। তৃষণঃ। ইতি শন্চন্দুকা ॥ ম হারিষ্টঃ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

রনণ হ॰ ক্লী জনুদ্বীপান্তর্গতবর্ষবিশেষ: । স তু রন্যক্রম: । ব্থা ।
এবনেবোভরে এটি বর্ষাণি চ তপোধন । সক্রমণ সিলুক্লাৎ
শ্র্মবান্যধি: স্ত: ।। হ্রিপ্রমণ ততো বর্ষণ শেতাব্ধি নিগদ্যতে ।

त्रगुकक ठाडा वर्षः नीन छम्।विधः मृडः ॥ व्यक्ति। एनय उवाह।
पिक्तित्व ज् त्यञ्मा निष्यत्मा छ्वाहः
प्रत्य ज् । वर्षः त्रभाकः नाम काराष्ठ
जब मानवाः ॥ मृङ्गाञ्चिन मण्याः
माः मर्द्य मृत्यपण्याः । एण वर्षः
महम्।विक्रां मण्यान पण्याः । एण वर्षः
महम्।विक्रां मण्यान पण्याः । एण वर्षः
महम्।विक्रां मण्यान पण्याः । एणः
कीविष्ठ ज महाजागं निष्ठाः मृषिज मानमाः । ইতি भाष्य ज्याः
प्रति प्रदेश व्यक्तारो ॥

त्रमण खी त्रमणी। इंड्रामति ।। त्रमणे खी नाती। इंड्रिसिमिने ।। उंट्रक्टेडीविष्णयः। यारभू ईला-भवाद्यपत्नी छारणान काछः त्रमय-उंजा। इंड्रामत् छत्र छो।। वाला-थात्कः। यथा। वाला व द्रमणी त्रामा वक्षा कामकनाशि व। इंडि भववन्तिका।।

রমণীয়ণ ত্রি সুন্দরেণ। ইত্যনরটীকা:! রমণ্যণ ত্রি রমণীয়ণ। ইতি সিচ্চাস্ত-কৌনুদ্যামুণাদিবৃত্তি: ।।

तगिः भू नायकः ॥ अर्गः । इठि स्मिनी ॥ काकः । इठि मदतः । दली ॥ कालः ॥ कामरमयः । इठि निषाष्ठकोमून्यामूनानिवृद्धिः ॥ तमा की लक्षीः । इठि स्मिनी ॥ मिनवृद्धताककन्या । नाकहिरम्यन विवाहिज। यथा। छठः मनिधुः जा बाजा युक्ताना हुए भू धकान्। भूगा-खारा निक्छ वृद्धा ब्रगाः भाना प्रमा-कन्नर्य ॥ इंडि कन्नि भूबारा २० खाद्यायः ॥ माजा। इंडि ब्राज-निर्यक्तेः॥

রমানাথঃ পু॰ ত্রীকৃষ্ণ:। রমা লক্ষ্মী স্তস্যানাথ: স্থামী। ইতি ষণ্ঠীতৎ-পুক্ষসমাস নিয়ম:॥

রনাপতি: পৃ• শ্রীকৃষ:। যথা।

মুদ্দেস্যাসিত নিদ নিদ• যাত•
রনাপতে:। ভুক্ত নেডদনন্তস্যেত্যুচু গোপ্যো: দিদৃক্ষব:।। ইতি
মুদ্ধবোধব্যাকরণ•।।

রমাপুষ জ্লী পদ্ম । ইতি শব্দ চন্দ্রিকা।।

त्रभाविष्टः भू श्रीवामः। ইতি ताब-निर्धन्तः॥

রমিতা ত্রি রতিপ্রাপিতা। যথা।
ত্বিতগতি বুঁজযুবতি ভরণিস্তাবিপিনগতা। মুর্রিপুণা রতিগুকণা পরিরমিতা পুনদ মিতা।।
ইতি ছন্দোমগুরী ॥ বুজযুবতি
গোপবধূ: মুর্রিপুণা শ্রিক্ফেন

পরিরমিতা সতী পুদদং হর্ষণ ইতা গতা। কিন্তু তা। ছরিতগাঁজঃ ছরিতগাঁজঃ ছরিতগাঁজঃ ছরিতগাঁজঃ আরি জালা কিন্তু তা তর নিস্তা বিশিল্প কার মন্ত্রনা সম্বন্ধি বন নুপাগজা। কিন্তুতেন রতিগুকুণা রতে শ্-কারে গুকুণা উপাধ্যাযেন। অ্যন্ত্রনা ম্বাং রতি স্লালো না-ি যিকাঞ্চ রতি নধ্যাপ্রতি। ইতি ভাটীকা।।

इत्यन्धद्रः 🦅 विकुः। यथा। 🕮 द्रा 🦄 **রাবব রনেশ্বর** রাবণারে ভ্তে**শ** নমথরিপে। পুম্থাধিনাথ। চান্-রনর্দন ছ্যাকপতে ংসুরারে ত্যা-জ্যা ভটা য ইতি সম্ভত মামনন্তি।। **ইতি কাশী**থণ্ডে হরিহরস্তোত্র•।। রম্ভঃ পু॰ বেণুঃ।। বানরবিশেষঃ। ইতি মেদিনী ॥ মহিধাসুরপিতা । যথা। এপ্তির্ব উবাচ। আরাধিতো मशाप्तरवा ब्रास्थ्र मृत्रदेवविना। हि-রেণ সচ সূপীত স্তপসা তস্য শ; एतः ॥ जय ज्रष्टा **महा**प्तियः <u>भ</u>ज्ऽ-ক্ষণ রন্ত মুক্তবান্। প্রীভোমি তে বর• রম্ভ বরশ্ব যথেপ্পিত• ॥ এব মুক্তঃ পুত্যুব চরস্ল ন্ত চন্দুশেখ-র• ৷ অপরোহ• ন্হাদের যদি তে नग्रन्थः।। यन सम्बद्ध शूखा

खरान्, छर्व च महत्। यर मुकस्र **रि**ণত্যেন পুত্রবাচ ব্রপ্র:॥ ভবः -বেতদাঞ্ড তে তবিষ্যামি সুত **खत। ইত্যক্তা म महारम्य छोजता**-স্তরবীয়ত।। রস্তোপি যাতঃ স্বস্থা-न रखाँ कुज विष्माहनः। भिष शहन् न द्राधाय पृष्ण भहिषी॰ শুভা ।। ত্রিহাযণী চিত্রবর্ণা সু न्ततीः अञ्मानिनीः। स जाः मृ श्रेष्य गहियी॰ ब्रह्मः कामन स्मा-( इंडः॥ (मार्डत गृहीद्वा ह उमा চকার मृत्र छाट् नव । ज्याः भू বৃত্তে সুরতে সা তথা তস্যতেদ্ধসা ॥ नवात्र महियो गर्ङ उना ज्य-হিষাসুর:। ইতি কালিকাপুরাণে ৫৯ অধ্যাयः॥

त्र खी करनी।। अञ्चादावित्मवः

1 इंडि भिन्नी ।। गोती। इंडि
में पत्र द्वादनी ।। गाष्ट्र निः। इंडि
स्वादनी ।। गाष्ट्र निः।।
त्र अञ्चादनी ।। विष्णा। इंडि ध्र निः॥
त्र अञ्चीया खी तुर्जितित्मकानः।
यथा। तुरक्षावाठ। त्र आञ्जीयाः
विक्षा ठ भोजागाः श्री मृञानिनाः
। मार्गमीर्ष मिट्ठ भक्क ञृञीया
या मुश्गिषिजः।। गोतीः यद्यदिन्
भेटाः म्हानानः कत्र सुनः। करस्वाहा गितिमूजाः शोष्ट्र मक्ष्रदेक

र्याजर ॥ कभ्दानः कृभद्राना मल्लि-कारष्ठ काष्ठ क्ट। नाख मू जुना कः ङ्गोदेत स् जाम्मा गलक्षुमः॥ गीजी-भय॰ पष्ठकाष्ठः कालुःन भागजी॰ यः (जर। इतिमः क्वा एडका छ॰ कीवा-**णः म**ङ्नी शुनः ॥ विभानाश्ची • स्म-নকৈ শৈচত্রে কাশার সংপ্রদঃ। দবি-भु। म। मछका है जगत निम्थी यख्य ॥ देवणात्थं कृतिकादिवक वा-(माकारमा विभुतः। किंद्रिक नाता-यनी मरहह्उभोज=५ थ ७२: ॥ नव-कामक उज्जार जावार माथवी॰ याजर । जिनारमा विन्नशेखण्ड क्लीब्राम वहेकशुमः ॥ ॐ पूत्रब्र॰ म-ন্তকাষ্ঠ• ভগয্যাঃ শাুবণে শা্রিব•। দন্ত-काक्षः वर्गकाणः क्रीत्राहा क्रूउल्याः यरक्र ॥ भरेम यरक्र जामुभाम मृत्कारात्मा अभाविषः । त्राज्ञभू-बीकायगुरत जवान्द्रिक जीवक॰ ॥ भागायमिणि देनरवरेनाः कृणदेतः कार्जिक यहार ॥ ज्ञाजिनूरेब्रः न-प्रजाक **शक्ष** गवामाना गांकर ॥ ঘ্ভোদনঞ্ ব্ৰ্যান্তে সপত্নীকান্ছি-बान् यरबर । डिमा मरङ्खद्र सार्गः লবণে তু গুড়ে স্কিত !৷ বন্ধ ছত্ৰ সুবর্ণাদ্যে রাজৌ চ কৃত জাগর: । गीं वारिन्द्र मंत्रिट भाज ग्वान्तुः

সর্বনাপু যাৎ।। ইতি গাৰুডে ১২•

व्यथायः ॥ 🗱 ॥ व्यभिष्ठ । व्यथ ज्-

তীযা। সা চতুথী যুভা রস্তাবুতে-তর দৈবকর্মসূ গুাহ্ছা। রম্ভাখ্যাণ বজ্জবিত্ব: তু তৃতীযাণ মুনি সভ্তম। অন্যেষ্ সর্ব কার্য্যেষু গণযুক্তা পূল-न्ध्रा ३० वृक्तरेववखा**ः। ७७**-শ্চ যুখাবাল্য রম্ভাবুতপর । ভ বিষ্যোভরে। **স**কর্মভদে যরেন র ম্ভাখ্য বুড নৃতন ! জ্যৈ শুল্ল-ज्जीयाया॰ ज्ञाञा नियम **७८ भन्ना** ম রম্ভাখ্য নিতি রম্ভণা কৃত নিতি त्रञ्जावुञ । ইতি ভিष्णारिञ हु॰ ॥ इत्साकः खी इत्स्य इव छेक यम् ११: ना। इंडि व्यानवृत्।। त्रभाः क्षी भाषाचिम्नः। इंजिपा-मिनी ।। भूधानधाजूः । इंडि कंटी-धवः ॥ इस्रः-शृ॰ व्रम्भंकतृक्कः। **३७** व्यक्तिनी ॥ वकवृक्षः। ইতি नय्हिनुका ॥ त्रमाः जि गताङः। इं (अपिनी ।। বলকর:। ইতি জটাধর:।। রন্যক জী ব্রবিশেষঃ। ইতি জটা-ध्वः ॥ এতল্য विवद्गः यथा। म-ক্ষিণেন তু নেরোম্ভ শ্বেতস্যচোম্ভ-

खिन है। वासवा त्रनाहक नाम जा-

यर छ ज नानवाः ॥ मिल्लिषाना । त्रवः शृ भदः। इक्रामतः ॥

বিন্দা জরা দুর্গ বিবর্জিভা:। ভঙ্গা-. পি সুমহান্ বৃক্ষো ন্যেণ্যাথো রো-্হিতঃ স্তৃতঃ॥তৎফল প্রাশনাদেব **জীবন্তি বহু বাসর•। ইতি বরাহ** भूदारा कृष्णी जा नामाध्यायः ॥ श्व--টোলমূল•। ইতি ত্রিফাওশেষ:া। রন্যপূল্ল: পু॰ শাল্মলিনৃক্ষ:।ইতি ब्राक्रनिर्घण्डः ॥ त्रभाष्मनः भू॰ कातस्वत्रवृक्षः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ त्रग्रा खी ब्राजिः। ইতি मिनि।।। স্লপদানী। ইতি রাজনিঘণ্ট: ॥ त्रमुः भूः व्यक्तवर्गः॥ (माजा । ইভুগাদিকোষ: ॥ র্য ড গভৌ। ইতি কবিঞ্লুক্ষ: 🛚 । ভ রযভে। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ রবঃ পু॰ বেগঃ। ইত্যমর:।। পুবা-रः। यथा। भुवारः भून द्वादः न्याः দ্বেণী ধার। রয়ক স:। ইতি হেম-ठन्मः ॥ बदाही जी नगाहै:। इंडि भ्वान ॥ প্" কখল:। ইত্যন্ত:।। পক্ষ ৷ ইভি সূভূতি: ৷৷ মৃগবিশেষ: । ইতি নুষ্ঠ: ॥ রব ই বুজে। ই তি ভবিকল্পদন: ॥ ই রগ্বত। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

ह्रवनः क्री काःमाः। ইতি एस हम्मुः। ॥ द्रवणः॥

त्रताः भू उधः। ইতি ह्महन्तः॥ (काकिनः। ইতি निकास्टकोम्हा प्रनाहितृस्तिः॥

শ্বনঃ ত্রি শদ্ব:॥ তীক্ষ:॥ ভণ্ডক:
।। চঞ্চল:। ইতি শদ্বরত্নাবলী ॥
রবথ: পু॰ কোকিল:। ইত্যাদিকোব:॥

त्रविः 💇 मृर्युः॥ **अ**र्कवृक्षः। ইত্য মর: ॥ তম্য ভোগ্য দিন বার-े दान । यथा। तरवी वर्जा : ठठः नक भारत मध दग उथा। इंड्राफि वाद्र(वद्या कथरन मनगन्नीभः॥ তত নিবিদ্ধানি যথা। নাব মা-भिव माः मक्ष भम्तः निम्नण बकः। **७क**रग्रह्मा द्राव शादि मधक्रम-न्रभुक्तः॥ याप्कि मधु मद्माक 🖷कृत्यव्या द्राव मित्र । मधकस ভবেদ্বেগী জন্ম জন্ম দরিদুতা।। নিষণ নাশ্য মস্বঞ্ নিল্ কাঞ্জিক भाद्वे । ज्यापात्या त्राव द्यांत मधज्ञानार्भू अवः॥ इति कर्माला-ठन॰ ॥ ॐ ॥ द्रविशुहनाः तङ्कांशगः भिन् उवर्गः। घयः भूदं मिक् श्रूक्त ক্ষবিষয়।তি সভ্তণ ক্রৈস সিশ হরাশি হস্তানক্ষম সন্ত্রীতিথি

**जानु कनिक्रमभानामधिश**जिः काम। भारतायः । दारमाञ्चलमत्रीतः । भग्रक्षदयः। भूदीननः । अक्षा-थवाहनः । भिवाशित्वजः । विद् **পু**ত্যধিদৈবভক্ষ । ইভি গুহ্যজ্ঞ-खड़ारयः ॥ क ॥ व्यमः वृद्धलि র্যথা। অবতী মাণ জ্রো লোকাণ স্ত-मा८ मूर्यः भित्रजुमा८। चित्रिन्तु পুকাশেত অবনাৎ স রবি: মৃত:।। हेि बाट्सि ३०३ व्यथायः॥ 🗱॥ অস্য ভার্য্যাপভ্যানি যথা। মরীচে: কশ্যপো মজ্জে তমাজ্জজে বিভা-वमुः। ७मा ভार्या ७व८ मः छ। भूभी एष्ट्रेः **भुक्षाभाउः॥ जी**नाभाउ॥-নিরাজেন্দু সংজ্ঞাযাং মহসাং নিবিঃ । আদিতের জন্যানাস কন্যা**ঞ্**-काः मृत्नाहनाः ॥ देववश्रकः स्नूर्णुः ষ্ঠ বনক বন্না ততঃ। নাতি তে-জো মধ কপ সোচু সাল বিব্য নিৰ্মানে ৰত:। সংজ্ঞোবাচ তত শা या॰ नवर्ल भृतु (म दहः ॥ व्यक्॰ या-স্যামি সদনং পিতৃস্থ পুন রত্ন 🕽 ভবনে বস কল্যাণি নির্দ্দিক্ষণ ননা-क्रमा ।। भनुरत्रम यज्ञारवरको यमुना यम म॰क्काको । सामका मृष्टेरा मुष्टेरा (मञ्चाणवरः प्या।। न दक्का भिरः

वृत्तः पुराभाउति कराव्या देउति कर्नाथ मा जाड्री पती हारा सगा-দ ভা॰।। আক্সগ্ৰণান্ত নাশা भाइ कराठन। णाथ्यान्यानि ठित्र-ত্র•তে যাহি দেবি যথা সুখণা ইভি ছাবা প্ছে স্থাপ্য সংজ্ঞানাৎ পি-**छ द्राव्य । উवाह भिउत्र (म**वी কামাতু ত্তব ন ক্ষা।। তেজ: সোচু মহ॰ তাত কাশ্যপদ্য মহাত্মন:। <u> जिन्नगुह्काभाम् ज्यम्यामाम</u> কন্যকাণা নহাণ শ্ৰেৰ: কথা বাস্যান দিতি সা পরিচিম্ভাচ। অগছম্বডবা ভূবা চরন্তী চোত্রান্ স্কন্ ॥ তপ ख: लह मा जीतु : পতি बाबान (5) তসি। নন্যনানো হথ তাং সংজ্ঞাং **न**दर्गायाः ७४। द्रविः ॥ नाविनः छ नयानान गनुष्पुष्ठः नही भटि। मटिन শ্চর• দ্বি গী<sup>ন্</sup>ঞ সূতা• ভবুা• ত্রী বিকাং ৷৷ সৰ্বণ বেশ্বপত্যেষু সাপ-জ্ঞাৎ জীয়ভাবতঃ। চকারাভ্যবি ক সেহ ন তথা পূর্জেয়হো ॥ চির্মালোক্য তা॰ ভার্য্যা- উবাচ निविद्या विष्टः। अपि ভाविति वालयु गरमञ्जल इंग ॥ विश्वीयाञ **২**ধিক: স্থে: নাবৰ্গাদি সূতান্ পু তি ৷ নাচচক্ষে তথা সাথ ভাষাত **গ**রিপ্**তে ৷৷ ত চঃ সন্দ**্রে শঙ্

हावा नर्वः मनः नर्। यथा वृडः . তথা তথ্য তুতোষ ভগবান্ রবিঃ ॥ निवाशमः न ममाभ क्यान द्रश्रु इ छिकः। दृष्टानि ह यथा न्यायः ना-स्विदाथ काना। निर्धातानः ८ हारभन भागहंह नूमा उमा ॥ पुन ঠোবাচ। ত্রবাতিতে জসো ভীভা न्। व्याज्यक्रकम् वत् ॥ वज्या ৰূপ নাস্থায় সংজ্ঞা চরতি শাদ্ধলে । मुक्षे। हि छा॰ छवानम् । ख् छायं।। • তাত নাৰুষ: ৷৷ লৱান্ডেৰে স্-বিতা গল্বেভের **স**ক্রথ। স হরি ইরিকপেণ মুখেন সমতাডং**ই** ॥ ত্রমাণা চ সবিতুঃ পরপ্রধ শহ্ব-যা। সা তলিরবন্থ শত্রু নাসিকা-**छ्याः विवयञः ॥ (मर्थ्यो उधान-**জানেতা নশ্বিনৌ ভিষরা বরৌ। ইতি পাদা ৰগখণ্ডে ১১ অধ্যয়ং ॥ व्रविकाष्टः भुः मूर्यह्वाड्यिनिः। ইडि ब्राजनिर्घक्तः॥

विष्ठकः क्ष नवाकाव्यम्ग्रीहकदिष्ण-यः। यथा। निश्वाः व्यविद्यक्ष उप्यादः। नव स्विद्यः। य्याद्यक्ष उत्य स्तृतः स्वादः। य्याद्यक्ष उत्य स्तृतः स्वादः। विश्विकः यक्षाः। नवाः । व्यक्कः दास्यु-या स्वादः। व्यक्कः दास्यु- ক্রামে পঞ্জ শক্ষাণি এক নাভৌ রবিপত্তঃ পু আদিত্যপত্রক্ষুপঃ। नुमाभाष्ट। याक (नकः माम ख्रा व्येकक जानुक न्राम् ।। नक्वा-नि ह (भयानि द्रविशास नियाज-(१८ । চরণছেন अक्ति। अन्नाय র্জায়তে নর:।। বিদেশ গমন জানৌ च्छाङ भद्रमाद्रवान् । नाजिङ् নাল্লমন্তটো হাৎছেন স্যান্নহেশ র:।। পাণিছেন ভবেটোর: ছান **ভূপ্তে।** ভবেন্দ্ৰ**ে হয় হিতে ধন** পতি মুখে । ইান নাগুযাৎ ॥ गरुक शरे विकस नक्षा ग्राचिति স্থিত । ইতি গাকডেড অধ্যাদঃ॥ त्रविषः शृ॰ मरिनणतः। यथा। **उ**त्रश শতভিষাড়া সাতি মূল৷ ত্ৰিপূৰ্ৱা রবি রবিজ্ঞ জ্জাহে ভূত্রষ্ঠী নব্ म्रा । इंड्राहि (क्राडिव उद्ध ॥ ब्रिविजनयः भुः मावर्गिकरहः। यथा । স বভ্ৰ মহাভাগঃ সাব্ৰিত্তন या द्रावः। इंडि (स्वीमाश्वाहः)।। रिववस्डमनूः॥ मनिः॥ यस्र मा द्वविनन्दनः शृ॰ शूश्रीवः। इंडि बि कार्खानयः॥ नाविभगुः॥ देववस **७ मन्:।। णिनः।।** यमक्।। त्रविनाथ॰ हो भग्न•॥वह्तक भू•॥ द्रमना खो किस्त्र। इंडिमदत्रा-ইতি শব্দ न्तिका॥

ইতি রাজনির্ঘট:॥ इविश्रियः ही इक्तकमलः॥ जामुः। ইতি রাজনিঘণ্ট:।। রবিপুর: পু॰ আদিত্যপত্র:॥রক্ত-क्र ग्रेतः। ইভি রাজনির্ঘণীং।। ল-**छ**ऽ:। ই ि भद्र माना ॥ त्वित्रकृषः ह्या भागिकः। ইতি ताकः निर्घणेः ॥ রবিলোহণ জ্লী তানুণাইতিরাজ-निर्घणेः॥ त्रविरवाहनः भू विक्ः। यथा। त्रवि বিরোচন: স্থ্য: সবিতা রবিলোচ-नः। इंडि उत्रा त्रहत्रामरखाकः॥ রবিস·জ্ঞ क ही छानु । ইতি শদ-हिन्तुका ॥ त्रतिनृतः भु• महेन **महत्रा यथा।** नीलाञ्जन हम् भुष्यः द्रविमृन् सङ्गः शृहः। ज्ञायाया भद्धमः ज्ञः वत्तर ভক্ত। শरिनम्द्रशा ই ि नवगुरु খেন ।। রশ বনে। ইতি কবিকল্পদা।। (इक्षि खानर)। इनना। दे**ि पूर्गारामः ॥ (नोब**वाङ्बयः ॥ वनो।। काक्षी। इजुलाहित्वायः ॥ विशेलः क्षी भणः। **३७ धर्नाः॥ ॥ द्रान्यः भू** कित्रगः॥ भश्रा अथ-

त्रब्दः। इंडि भिनि ॥ 🕸 ॥ সूर्य) म त्रिम्या कवारानरात यथा । **उ** कािं: नर्रावाक्तां शाहर রশ্মিভি জলে। সমৃদাদাযু সং यागाहर्डााला गंज्याः ॥ उ **७**स भग्ना• काल भित्रवर्खन्तिया-কর:। নিয়ন্ত্রপো মেঘেভ্য: শুক্লা-শুক্লৈন্ত রশ্মিভি: ॥ ইতি মাৎস্যে ১০২ অধ্যায:॥ #॥ অপিচ। এব भिष भशास्त्रा (एवएवः भिजा-মহ:। করোভি নিযত কাল কা লাত্মা হৈশেরী তনুঃ ॥ ভস্য যে त्रन्याया विश्वाः अर्दालाक शुनीश-কা:। তেষা॰ শুেষ্ঠা পুৰ: সপ্ত র-न्यात्वा गुरुरयानयः ॥ जुजुत्वा रुति-কেশ'চ বিশ্বকর্মা তথৈব চ। বিশ্ব-ব্যচাঃ পুন শ্চান্যঃ সম্পন্ধসূ রভঃ পরঃ ৷৷ অর্রাগ্বসু রিভি খ্যাভ: স্বরা-उन्धः भुकी बिंठः । मूमृगः भूर्यात्र-শ্মিন্ত পুৰুণতি শিশিরদু/তি॰। তি-র্য্যাক্ত্ব পুচারে। ৎসৌ সুসুশ্র: পরি গীযতে ॥ হরিকেশন্ত यः প্রোক্তো व्रिन्ध नंक्कब्रायकः। विश्वकर्णा ख्या तन्त्रि वृ व नुका**डि मर्वरा**॥ বিশ্বব্যবাস্ত যো রশিম: শুক্রণ পুঞা-তি নিজ্যদা। সম্পদ্স ট্রিতি খ্যাভ: স পূঞাতি চ লোহি ড ॥ বৃহস্প

जि॰ अनुकाि तन्त्र तर्वाक् वमः <u> भुखाः। मरिनम्बरः भुभूकाठि मध</u>-मक बन्नार् उथा ॥ এवः স्वं। পুजा-বেন সর্বা নক্ষত্র তারকা: ৷ বর্জস্তে বৰ্জিতা নিভ্যু নিভ্যু মাপ্যায়যুদ্ভি D ॥ फिर्याना॰ भाषितानाक रेनमा-नारिक्षत महानाः। जानानामिकः मा-ৰিত্য স্তেজদা তমসাণ পুভুঃ।। আ-দত্তে স ত্ নাডীনা সহস্থে সম-छ छः। नारत्यारिकत मामनान क् পাংশৈচৰ সত্সুক্ষা স্থাবরান্জ-क्रान्टेक्टव यह जनग्रस्य भाषः। **७मा अन्य महमुद्ध मी उ**रायीक নিসুবং ৷৷ তাসাং চতুঃ শতং নাডেঞ वयंख हिक मूखंगः । इत्सनारेकव याश्राण काउना ज्वना खया।। অমৃতা নামভং সর্বা রশ্মধাে বৃঙ্কি সজ্জনা:। হিনোছহাক তানসের রশ্মণ ব্রিশভ• পুনঃ 🛭 বশ্যো মে-याण रेभवाण ज्ञानित्ना विनम-क्कनाः । हन्तः छ। नाय ७: गर्दाः পীতাভাঃ মুগ্রভত্তয় ॥ শুক্রাক কন্ধভ শৈচৰ গাৰে। বিশ্বভূত স্তথ।। শুका **डा नाय डः मर्बा** खिविदा वर्ग সজনা: ॥ সন্ বিভব্তি তাৰি: ৰ হন্ধ্য পিত দেবতা:। ন্ৰ্যা-নৌগবেনেই স্বধ্য চ পিতৃনপি।।

\_ অমৃতেন স্রান্ সর্বান্ তিসু জীণ छर्भगडांभो। वमः शुीयाक हिव শতে: সম্বর্গতি ত্রিভি:।। শরদ্যপি চ বর্ষাদ চতুর্ভি: সংপুর্বতি। হেম-' ত্তে শিশিরে চৈব ছিম মূৎস্ঞতি विजि: ।। वक्षा भाषनात्म जु मूर्य्यः পুষা তু ফাল্লুনে। চৈত্রে মাসি ভূ-(वरीत्मा वाजा रेक्माथजाभनः ॥ रिकार्क्षमूर्ण **ভ**विषि**नम् आयारा म**ा विजा इविः। विवतान् भावता मानि (भीडिभन्ताः जनः स् उः ॥ भर्ग्रत्ना হখ্যুদ্ধি বৃষ্টা কার্ত্তিকে মাসি ভা ফাঃ। মার্গশীর্ষে ভবেবির পৌষে িঞঃ সনতেন: ॥ পঞ্জিলিন সহ नुशि वकामहाकं कथा। यहिः नश्रमः भूषा जू स्तित्मः मश्रजि खणा। धा ठाष्ट्रे । अहरे मुख नवः ভিন্ত শতক্ৰতঃ। বিব্যান্দশভি: পাতি পাত্যেকাদশভি ভঁগ:॥ স প্ততি ন্তপতে মিত্র স্তৃষ্টা চৈবাষ্ট্রভি স্তপেৎ। অর্য্যা দশভিঃ পাতি পয্যগ্যে নবভি স্তপেশ। ষদ্ৰী রশ্মি महरेमुख विकृ उपि विषक्त्। ৰসত্তেকপিলঃ সূৰ্ব্যে গ্ৰীম্মে কাঞ্চন সপুভঃ ।। ধেতে। বর্ষাসু বর্ণেন পা গুরঃ শরদি পুভু:। (হনন্তে তামু-বর্ণঃ স্যাৎ শিশিরে লোহিতো রবিঃ

।। 'अवेशी यू वेल' धर्छ ऋषा मिल পিত্রথ। স্থ্যে। ২মরত্ব মন্ভত্তং ত্ৰিষু নিষছতি॥ অন্যে চাঙৌ গুহা: জ্ঞেगाः স্থ্যে চাধিষ্ঠিতা দ্বিজা:। চন্দুনা: সোনপুত্রণ্ট শুক্র পৈচব वृहस्पिजि: ॥ (ভोगा जानू स्था রাহু: কেতুনানপি চাষ্টম: ৷ সর্বে ধুবে নিক্জা যে গুছা তে বাত র-न्मिजिः॥ जामामा यथा (यानः जुमन्त्रान् रिवाकतः। ইতি कोर्प्या ८० अध्रायः ॥ রশ্মিপতিঃ পু॰ আদিত্যপত্রক্পঃ । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ শদে। ইতি কবিকল্পন্ন: ॥ রসতি। ইতি দুর্গাদাস:।। त्रम ८ क व्यासारिया (मृश्व् । वृद्धि करिकन्नकमः ॥ मस्त्राभधः। व्रन-যতিমধুদ্বিরেফঃ। ইতিদুগাদাস:॥ রস॰ ক্লী বোল। ইত্রিরাজনিঘণ্টঃ।। **द्रमः भू॰ द्रम**त्निनुग्गु। श्व वस्तु। म ह कालमहाय ज्ञि वियम् निलानल সংসর্গেণ পরিণামান্তরং গতঃ ষট্ পুকারো ভবতি । তত্র পৃথিবান্ত্র **७१ वाल्ल्यामध्यः )** ভागान् গুণ বাহল্যাদম: ২ পৃথিব্যায় গুণ বাহল্যাল্লবনঃ ৩ বায়ুত্নি ভণৰাত্-

न्तर कर्कः ८ वादाकाम छा

বাহুল্যাৎ তিক্তঃ ৫ পৃথিব্যনিল শুণ বাহুন্যাৎ কৰাব: ১। আপো রসানামাধার কারণ অভ আপ্যো नाम । जनाः भृषिका मन्नुत्वणार পৃথিব্যপ্যাধারকারণ নেব ৷ তেন कन कि जी वालि जनावात ज्या त সানা নভিব্যক্তো কারণে। অভি-व्यक्तिक सब्दारिक्ष गरःद्रशामः ম্ভবাৎ মধুরাদি বিশেষেপি জল **कि** ठी काद्रण । याग्रान्यस खरः নীরসভ্যা নপুরাদি বিশেষে <del>পু</del>া-খান্যেন নিমিক্তকারণ । ভদ্ব্যতিরে কেণ্যানি রসাভাবাৎ। রসাভি-ব্যক্তেশ্চ অগ্ন্যাদি ভূত ত্রথ সমিধা-ন বিনান্পলন্ধে রভিব্যক্তাবিপ আগ্লগদীনাং কারণ হং। তদুক্তং চর-कि। बमनार्था द्रम छम्। पुत्र नामः ক্ষিতি স্তথ।। নিষ্ঠিতী চ বিশেষে চ পুত্যाः थार्य खगः॥ এ:७ ह दनाः পরস্পার সংযোগাৎ সপ্ত পঞ্চাশ ভ বন্তি। ইতি চক্র পাণিরত্ত কৃত দুর্যু-र्खां अदि नियमा में यही का ॥ # ॥ ন্যায্নতে তু। রসস্ত রসনা পুছে। स्थुदापि द्रान्तवा। सङ्कादी द्रमः क्छाया निजाञ्चानि ह भूबंबर ॥ इति ভাষাপরিছেদঃ॥ রস্বস্তৃতি। সহ काबीजिबा मनज्जात्न बमकात्र निः

ভ্যৰ্থ: ৷ পূৰ্বদিতি জলপর্মাণে রসো নিত্যঃ অন্যঃ সর্বোগি রসো ৎনিত্য ইত্যৰ্থ:। ইতি সিদ্ধান্ত্যু-ভাবলী।। 🛊 ।। শরীরস্বাত্বিশে-यः। তথপर्यायः । द्रिन हा २ (वर-भाजा । वशुः भ्वः । हम्बा सः १ हर्म-সার:১রকসার: ৭ অসুমাত্কা ৮ । ই 🧿 রাজনির্ঘট:।। আহারসম্ভা: ৯ তেজ:সম্ভব: ১০ অগ্নিয়ব: ১১ यपुनामवः १२ जावाः १० वमृङ्ग-র: ১৪ ধাত্বন: ১৫ মূলমহাপর: ১৬ । ইতি (१२० न्युः॥ ७ म) निकक्तिः। **যৎপাথে। র**সবাত্ র্য স্ততে। হভব-**५**ग॰ द्र**मः। म**रेस्य मक्त्वः (५३० র্বত্তিরস: মৃত: 🛭 ত্দ্য স্ক্প নাহ। সন্যক্পন্ন্যভুক্তন্য সারো निगरित्जा द्रमः । मञ् पुदः मिजः শীতঃ স্বাদুঃ ব্লিঞ্জ শ্চলো ভবেৎ ।। नातः। यथा ७७ मध्र भुन्न वन्न नपु युरतीगुलापि खदः भारता मनिता । **७** तर्र इनि भारु। मब्दिन् इत्रम्रा-शि द्रमम्। इत्यः इवः। नवान वः क् जा भूबं: यत्यः क्राय व्जः॥ उन्र कर्चानग्रह। जाक्छ् ध्रामी गंद्रा था-তূন্ সর্বানয় রসঃ। প্রাতি ভদনু স্থীবৈ ব্যাপ্নোভি চ ভনু• ভবৈঃ। গু-रेनः भीज शिक्ष स्थायक्रेदः ॥ मन्त्र ্ৰাক্স বিদপন্ত 🕫 हूं दी। বাৰ বুস:। अञ्चर्यां बंह्लान्दागान् विषक्टरः করোত্যপি ॥ ইতি ভাবপুকাশ: ।। 🛊 ॥ मृश्वादिषम् विषशागी ভावः ॥ मृक्षात्रामरमा २८%। त्रमणक् वा-**र्ह्याः । त्रमारष्ठ व्यासानारष्ठ त्रमाः** त्रम ८क दाश्वारम घकः। उथाहि ।। বিভাবৈ রনুভাবৈশ্চ ব্যক্তো বা ব্য **ভিনারিভিঃ। আমান্যবাৎ পুধা** নত্বাৎ স্থাবীভাবোরসোভবেদিতি । রত্যুৎসাহ শোক বিষয়ে হাস **७** । जुरुश्ना काशाः कनात्रिक मृ স্থাবিন:। সদুক্রণারতি ইসম্চ শো<sup>:</sup> কণ্চ ক্রোৎসাহে। ভব তথা। ৰুণ্ডপ্ন। বিষয় শেচতি স্থায়িভাবা: करारती॥ नमत्य यः नम् छ् उः अ। ম্বে শ্চাবভিপ্তত। ভাব: স্থায়ী স বিজেয়ো ব্যক্তিচারী ততে। হন্যথা।। নির্বেদ শ্লানি শঙ্কাদ্যা ব্যভিচারিণ बेत्रिजाः । ইতি। স্থাযিন: কারণ विज्ञादः म हावणश्रताम्हीभनरव्न দ্বিবিশ্ব: ৷ **ষ্থ**্রতে রবলম্বন কারণ• शुरमा यूवजी युवज्याक भूमान्। उ-म्रीभन कात्रणः मुक् इन्ह्रनाहि। अतः সর্বরোমেয় । রতিপুমোদাত্মকো ভাব: সচযুবভি ৰুৎপাদিত: শৃঞ্। इः। यनाङ्। शुःमः ज्ञियाः ज्ञियाः

श्री मार्यामः भुवि या स्पृहा । স শৃকার ইতি খ্যাতো র তিকীডাদি কারণ নিতি। দান ধর্ম যুক্ষেষু জীধা-নপেক্ষোৎসাহকারী রসো বীর: ৷ শোকস্থাবিভাগ: ককণ:। অসম্ভা-विज मर्ज्या इतीक गमना दिखा २ फ-**७:। (को ज्**रका स्टारा शाम:। क्युरे-मुक्किमापि खरकात्रा खरानकः। धृ-**गाक्त्र भू**। त्रमापिष्का वीख्र मः। সর্বাভিভাবিতারৌদু:। যথা রাবণ চরিতাদি। শাস্তো হ'ল রগো হস্তি। **म्का**त्रवीत्रवं ७९ मःत्रोतुरामः ७४१-नकाः। कक्षाकु मानाम नव नहे। রস। মৃতা: ।: ইতি রব্কোষ: ।। এব-वर्माला २लि इत्मा २छि। मृद्धा-র বীর কক্ণান্ডুত হাস্য ভ্যানকাঃ । वीज्यम होष्मे वायमनाः भाउ শ্চেভি রস৷ দশ¦৷ ইভি নাম্নিধান•-॥ वर्ननः भुवानि (तुहार बाद्रिक ভেদ এয়। শান্ত ত্রলৌকিকত্বালোক্তঃ । ইতি নুসটঃ।। চ শব্দাৎ শান্ত ব্ৎ-সলাবপি সংগৃহী তাবিতি কেচিৎ । इञ्जादिशकायाः ভরত: ॥ # ॥ অপিচ। তত্র শৃঙ্গরোদি সর্বরস ক-**मत्र** मृद्धि र्जगवान् उखर िशुरागन् -नादिश वर्छो न नाक्त्वान नरहेंया भिज्याह। मज्ञाना भिज्यानज्ञाती:

नाः मनानाः मुक्षेताः अनन्। दिक পেণ দশ্ধা বিদিতঃ সন্ সাগুজো রকং গতঃ ইত্যের্য:। মল্লাদিযু অভিব্যক্তা রসাঃ ক্রমেণ প্লোকেন নিবধ্যন্তে রৌদ্যে হল্ড চল্চ শৃক্ষা (त्र) शामा वीद्रो म्या उथा । ज्या নকক্ষ বীভৎস: শাস্তঃ স পুেম-ভিক্তি है: ॥ यदिनुषा॰ दिवादे दि कनः अवग्राक्षा कड इंडि गावट 1 थरनन वी **ड**्घ डेकः। विक्वाद्य-क इवज् नात नर्वाकाविज्यामिना বক্ষ্যতি। ইতি শ্রীমন্ডাগবতে ১০ স্বন্ধে ৪০ স্বগ্রায়ে ১৫ স্লোক টীকা-याः ञ्रीधद्रश्वानी ॥ 🗫 ॥ विषः ॥ ચીચું) ॥ જીવ: ॥ द्वाध: ॥ मुबः । ইত্যনরঃ।। পদ্ধরুসঃ।। জল•া। পা ब्रन्ध। इंडि (निनिशा

इनकः পुः निकायनाःमः। ইতি (स्म्हलुःस

রসমপ্র কি কিপ্ররসঃ। রসকাপ্র ইতি ভাষা। যথা। তত্র
পারদস্য সংক্ষিপ্ত শোধন কর্ত্তি
হ্য শোদ্ধন্ত সন্ধ্য ভাইতিকা থটি
কা তত্ব হু ডিলা সিদ্ধন্ম চা।
বল্মীক কার লবণ ভাওরঞ্জ ক্
নৃত্তিলা । সর্বাণ্ডেলান সংচ্ঠি

वाममा हालि (नावायः ॥ चि का थडी। तु रिका किरिकती। नि ন্ধুড়ন্ম সৈন্ধব•। বল্মীক• **ওজ্জা** मृद्र। वन्त्रीक यत्र हेत्र। क्यातन वंगः । খারীলবণ। ভাণ্ডরঞ্জক্যুব্রিকা : । काविमगारी । এভি महैन पूंजः मूड गावलाम विवक्ति । उर्न সহিত সত স্থালী ন্থ্যে পরিফি-পেৎ।। তদ্যাঃ স্থাল্যা মুখে স্থানী गश्रताः श्रावरम्य सभाः। गवख छ-**ष्टिञ मृता स्पृत्यम् अत्या गृथः** ॥ **नःलार्यः नृ**षुरवःख्यः ज्यः नः**ला**-् य। मृत्रार्थः। मन्। वृत्नायः। मृत्राः **ा॰ श्रानीः ह्**लाः विदादस्**र।।** व्यक्षिः निवंबवः मन्त्राध्याविष्यन हक्-ষ্ট্রাণ। অসারোপরি তত্মন্ত্র রক্ষে ष्यञ्चारश्चिमः।। गरेन कषात्रराष्ट्र अ म्कु राजागङ दमः। क्पूर वर-সুবিনল গৃহী বাদ্ভণ বক্তর।। ত॰ (२वजन्न वन्तन कल्ही जन्हिन पू-कः। थामन् इत्रिक्तिकः वाधिः (माभूव मनि।। विन्ति वदः फीं छि शृष्टि वीर्या वन विश्वन। बन्य जिब्रन्थे स्वकः बसक्भू बस्र সেব্চঃ সতত ।। ইতি ভাবপ্কাশঃ ॥ 🕸 ॥ यांत्रियः। रिगतिक जुनती थ-টিকা দৈদ্ধব গড়জ রজ হতবে।

- 3 ...

तगरबर

नुर्छ्यकः मृत्रस्था माथायास्मानः · রি শত• স্থাপ্য:।। স্বত্তব মিতোথ छम्मू रिया रू श उमामा भाउ ं मृथी। व्यथ उट मक्ष मुन् क्वा उम्राथा ङ्जानामा ज्ञानाः ॥ अर्थान • ষট্ক পুমিতৈ দাৰিভে রনু নাতি দুর্ব व ङ्रीवः। जातः करमण मन्त्राम् एक म भिक्त वर्षाना ब्रिनिण ।। उपन् उ তো যন্ত্রবরাদ্যক্ত্যা কপুর সমিভ मृ**ङ । जा**नाय काष्ट्रसञ्ज निषाय न वमान्त्र मन्त्रात्। मन्मम् हाथ का क्षि इकार्या मार्गिकः शहर शमु । চুল্লী ডমকক মধ্যু বিক্তন্তি চতরা-क्वावकाणेखा कर्वरुः कगरहमः जन्यः भुङ्गामारम्मभ्रः। मामा धवन न् পরিলা: गुङ्धा जःगृश রক্ষযেন वारा। वलः वलार्कः वा शएन कीर्लन রো গিণে দদ্যা**।** मूक्षामन अप्रा (मय॰ उत्थि ह जासून॰॥ इद्रजि नम ন্ত রোগ কপ্রথেগ রসো নুণা ॥ कित्रक्षकतित्वभाती मकनक्षेत्रा-वानला श्थिलदुग विनाणक्ष वृग-जगर्ज शृर्जिश्रुरः। मूवर्ग ममवर्गकृर বলহত লভে জকর: সমস্তগদত क'ता बनशक्तिः न कम्बकः॥ गु शास्त्रः । वेकनः मयु नाकाथ हिना च्छा यू: । मर्म्यस्ट ज्क्क ∥

मुदि मि दिनक धानस्य र भूनः॥ ধ্যাতো ভমার মাপোতি শুল্ক-পূর সলিভ: ॥ नवमान्त्र भाव-मोहजूर्थाण्य मिजि माइड:। १७५-জ সাম্ভরিলোন ভাষা। শেষ व्यक्ति। इंड्रागुर्खम् भुकामः ॥ রসকেশর জী কপুরি । ইতি হারা-वनी।। রসগন্ধ॰ ল্লী বোল•। ইতি রাজ-निघंकः॥ त्रमणकः भू॰ शक्तमः।यथा।त्रम-পদ্ধে৷ গদ্ধরসো গান্ধার মসিব্দ্ধ-ন•। ইতি ত্রিকাণ্ডশেবঃ।। त्रमगक्षकः भू॰ गक्षत्रमः । ইভি শদ্যন্দ্রকা॥ গন্ধক:। ইতি রাজ-निर्घण्टे: 11 রসগর্ভ ক্লী রসাঞ্জন । ইত্যমর:॥ **रिक्रुतः। ই**ভি রাজনিষ<sup>্</sup>ট;।। त्रमः: টক্ষণঃ। ইতি রাজ-निघंकः॥ त्रमञ॰ क्ली त्रक्छ॰। ইতিশব্চন্দ্রকা।। রসজঃ পু॰ গুড়:। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ मन्द्रकीर्देः। इंडि (इन्हन्दुः॥ র সজ্ঞা खी किञ्चा। ই ठानतः ॥ রসবেভরি ত্রি ॥ রসভেগ্নঃ পু নধুররস: ৷ ইভি (रगठमुः॥ म्यात्ररगक्तः॥

द्रगढिकः ही द्रकः। इंडि (रूपः . इन्द्रः ॥

दमनानिका जी भू धुक्क कुः। ই डि व्राक्रनिर्घले ॥

तम पाती भ् भथूत कथीतः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

র দধা হু: পু॰ পারদ:। ইতি রাজ-निघंगिः॥

রসংধনুঃ জ্ঞী দানার্থেক্রসনিমিত বেনু:। যথা। হোতোবাচ। রস ধেনু মহারাজ কথ্যানি সনাস তঃ ৷ অন্লিপ্তে নহীপ্ঠে কৃঞাজিন হৃশা ভরে ।। রসন্য তু ঘট॰ রাজন্ अ ल ल ते बक्र का है। उद्दर्भ क न्नाय भा ज्व मह त्र्या रमन वर मकः ।। ইফুদ্ও ম্যাঃ পাদা র্**জভফ্**র-সংয্তা:। সুর্ণশৃক্ষভেরণাং বন্ত্র भूष्ट्रा• मृ**डस**नी॰ ।! भुद्ध कश्चन **न**•गु ক্তা॰ শতরা মুখ জিখিকাণ। দন্তাঃ कनन्या उत्रताः शृष्ठ जामुनयी मू ভা ॥ পুয়রোনান্ত রাজেন্দু মুক্তা ফল কৃতিছণা। সপ্তবাহি সমা युक्तः ठज् फिक् ह भी भिका ।। সর্বোপস্কর সংযুক্তা সর্বাহ্বাদি বাসিতা । চহারি তিল্পাতাণি

विरविष्यं (भावियायाश्वाग्य)।

প্রাণজে বিশেষেণ সাধ্বৃত্তাব शीमरा ।। जान्नाय शुराजवा। **त**-সংখ্র: স্টুধিনে। সর্ব লক্ষণ যুক্তা-य माञियाय करूपिता। तनार्युन्ः भुमा ठव्या सर्वकारमण निक्रमा । . দাতা স্বৰ্গ মবাপোতি সৰ্বপাতক বজ্জি হঃ॥ দাভা চ পুাহকো বাথ এ ফকাল নভোজন:। সোন্পান ফল তুস্য সৰ্ক্তৃফল লভেৎ 🛚 । দীৰ্মানান্ত পশ্যন্তিতে যান্তিপত্র-না গতি ৷ বেনুঞ্জ পূজবিদ্বাগ্রে গদ্ধ श्य मुगामि जि: ॥ भृति कि दिव मरेज ह उठ डा॰ भूषियट मृदीः। পূৰ্যাৰ্থনা প্ৰকং ভক্তা দ্বিলাগুৱাৰ निःवन्ययः।। नमभूद्यान् भद्गाः रेक-व याजान क्षिक विष्णकः। भानः (य**् भव्रमः इ।नः प्र**र्गामादर्ख्**ठ** পুনঃ ॥ এষা তে কথিতা রাজন্ त्रमाथन् तन्खमा। पपत्र ह सङ्ग রাজ পর স্থান নবাপু হি॥ य हेर॰ शर्टा बिडा॰ मृत्यास्थ छ-ক্তি হ:। সর্বপাপ বিনিমুক্তো বি-ফুলোকে মহীযতে।। ইত্যাদি বা-রাহপুরাণে খেতোপাখ্যানে **র স**-ধেনু নাহাজ্য্য সমাপ্ত ॥

চতুর্দ্দিক নিবেশ্বেৎ ।। বুন্ধণে রসন জ্রী স্বাদন ।। ধুনি: । ইতি (गिनिनी।

**त्रम**्र क्री क्री किख्।।ইভিনেদিনী ॥ जा ह काल निष्युगः। यथा। निर्जुः 'छारि পुथनवट किन्छ (एक् ग्राया निज्ञ । ইन्দिय द्रिमन निक् र्श्मा-'দি বিষয়ে। মতঃ।। ইতি ভাষাপ ब्रिष्ट्मः ॥ भूषम विक्छि भृषिवृत ইবেতার্থ:। তথাছি জল দ্বিবিধ• নিত্য মনিত্যঞ্ । পরমাণুক্লণ নিত্যু॰ ছাণুকাদিক সর্মনিত্যু । অব্যব সম্বেডঞ্চানিত্য জলমপি ত্রিবি**খ**া শরীরেন্দ্রির বিষয় ভে माट। किन्छ भृषि ी ভाষ্যো यां विष्णिय खमार किखि 🦻 । व्यापा-নিজ নেবেত্যর্থঃ ৷ জনীয়ণ শরীরণ অবোনিল ব্ৰুণলোকে পুসিদ্ধ মিতি। ইন্দিন্ত রসন জলীয়া ত थारि तमन जनीय गन्नान रवर्क ক্ত্বেসতি রস ব্যঞ্জকত্বাৎা শক্তর-माভिवाञ्चरकारकवर्। द्रमना म নিকর্ষে ব্যভিচার বারণায় দুব্যত্ত্ব• হেতৌ দেয় । বিষয় দশ্যতি সি कु र्हिनापि दि छि । शिकुः अमृपुः হিম • তুষার:। আদিনা সরিৎকা সার করকাদি: সরোগ্রাহা: ١ইতি সিদ্ধান্তমূক্তাবলী॥ রসনা জ্রী জিল্ব।।ইত্যমর:॥তস্যা:

শুভ লক্ষণ যথা। তীক্ষা দংষ্ট্রা:

সনা: শুেষ্ঠা জিন্তা রক্তা সমা শুভা । नुका मीर्घा ह विष्क्रिया जीलः एकः ভো ধনক্ষযে ॥ ইতি গাৰুডে ৬৬ व्यक्षायः ॥ न्यायमञ्ज तम्मान्य পু।ছো রসে। রসত্বাদি সহিভ:। यथा। दमस दमना गुराङ्ग मधुदा-দি রনেক্খা। সহকারী রসজ্ঞায়। নিত্যতাদি চ পূৰ্বৎ ॥ ঘু।ণস্য গোচরো গন্ধো গন্ধত্বাদি রপি ফা তঃ । उथा द्रामा तमञ्जामा उथा मा-দোপি চ শু:তঃ ॥ ইতি ভাষাপ-बिष्हर: II ज्थातम इंडि तमञ्जानि সহিত ইত্যর্থ:। ইতি দিরাভমুক্তা वली।। 🗱 🛭 इ.स. । इ.जि. (यहिनी 💵 गक्त अनु।। इंडि मप् इन्ति हा।। का-क्षी। इंडि (इन्हमु: ॥ त्रद्धः। इंडि न किछमादाना दिन्जिः॥ द्रवनाथः भुः পার্দঃ! ইতি রাজ-निर्घण्टः ॥ ब्बिरः। इंडि मद-द्रभनायकः ब्रद्भावकी ॥ রসনালিট্পু• জররঃ ! ইতি হেম -চন্দুঃ।। র সন্ধালেছন কর্ত্তরি তি।। त्रमानविका छी मनः भिना। ইতি (र्निम्यः ॥ রসপাকজ: পু॰ গুড:।ইতি রাজ-निर्घणेः ॥

त्रमक्षः भ् नावित्कनवृक्षः। ইতি
भन्तु

শদ্র্মাবলা।।
রসভব লী রক্ত ।ইতিরাজনির্ঘটঃ।।
রসমঞ্জরী জী নাযকনাধিকাভেদক
শুস্বিশেষ: ! যথা। বিদ্বজ্জন মনো
ভূক্ত রস ব্যাসক হেতবে । এষা
শুকাশ্যতে শ্রীমন্ডানুনা রসমঞ্জরী
।।ইতি ভস্য দিতীয়: শ্লোক: ।।
রসমর্দ্দন লী পারদচ্গী করণ ।
যথা । ইপ্তিকাচ্ণ চ্ণাভ্যা মাদৌ
মদ্যো রস স্তত: । দ্বা গুডেন সিক্রুথ রাজিকা গৃহধুনকৈ: ।। অন্যচ্
। ক্নারিকা চিত্রক রক্তসর্য পৈ:
কৃতি: ক্যাযে বৃহতী বিনিশ্রিত:
। ফলত্রিকেণাপি বিম্দিতো রদো
দিনত্রয সর্ব নলৈ বিম্নচ্তে ।।

त्रभगात १० त्री भात्रमगुभात १०।
यथा। धूमभात १ त्रभः द्याति १ त्रभः
कः स्वभामतः । यात्मकः सम्दिमदेस जीनः कृषा भमः भमः ॥ काठ
स्वभाः विभिः सिन् भुः जाक्ष मृष्ठ सुन्
मृया। विनिश्य भिति छ। वर्जु सुन्।
स्वः विद्यावत्य ॥ जवः महिन्
निर्वती स्वयु कृषीः निद्यम् त्यः ।
भिर्वती वाजूका भृदेत ज्ञान जम्

ইতি ভাবপুকাশঃ॥

विहः अर्ग्राहरेनः नरेनः । उथान् मभाषिकः किव्हिः भावकः कान-यय क्रमारः ॥ अवः बामन् किर्मन् रेम मिर्गरक्षम छेखनः । स्मानेस्य बामनीजः उम्ब्रांगः गन्नकः छा-एत्रः ॥ अवस्रकं मृतः मृतः गृङ्गी-याय जन्न माज्या। यर्शानिजान्-भारान मर्वकर्यम् (याहराषः ॥ इकि कार्युकानः ॥

त्रममृह्न की भावतम्यमृह्यकत्र । यथा। ज्रावन जिक्ना वक्ताकरेन्तः कृष्वयादिर । विक्रान वक्ताकरेन्तः कृष्वयादिर । विक्रान प्रेवः ॥ मृज् कृर्वः यथा वातान मधाल्मिह्न यथा वातान मधाल्मिह्न यथा मधाल्मि विक्ष्यान् ॥ हिज् ज्ञावः भुकानः ॥

রসরাজঃ পু॰ পারেবং॥রসাঞ্জন়•। ইতিরাজনির্ঘণটঃ॥

রসবতী স্ত্রী নহানসং। ইত্যমরঃ॥ রসবিশিঙে ত্রি॥

त्रन्यः वि त्रमयक्षशः। त्रमाञ्चकः। त्रमणकारभग्दे गुजुरयन् निञ्चमः॥ त्रमणकः भ् भावसः। ই जित्राकः निर्यण्यः॥

तनामायन को हेकाः। ইতি हिन-हन्मुः॥ भातरमूकिः। यथा। स्रता- तिका विका तक मर्थ रेगः क्रिः क्रिः क्रिंगः मर्थः मर्थाणः विभिन्नः विभूतः । क्रिंगः मर्थः मर्थः मर्थः क्रिंगः क्रिंगः क्रिंगः विका क्रिंगः ।। हिं क्रिंगः विका क्रिंगः ।।

निमन्द्र क्री अवविदिश्वः। **७म**् नामान्द्रः मिन्द्रद्रमः। यथा । শুक স্তন্য গৃহীया ভिष्णांग इ-তুষ্টব । শুদ্ধগন্ধস্য ভাগৈক ভা ब्द कृष्टिम गञ्जक ॥ व्यथ वा भा-ब्रह्मार्क्षः मुक्कगक्षक (भव हि। उ याः कब्बलिकाः अर्याम्पनत्मकः विवर्ष्क्रांय ।। मृजिकाः वाममा मार्कः अउरायम् छि यङ्ग छ। उसा ৰার ত্রয়ণ সম্যক্ কাচকূপীণ পু-লেপথেৎ॥ মৃত্তিকা॰ শোষ্যিত্বা তু ক্প্যা॰ কক্জলিকা॰ ক্ষিপেৎ। छा॰ क्षी॰ वान्काय**त्व शा**शि ত্ব। রসং পচেত ॥ অ্রিণ নিরম্ভরণ मन्त्राच्याविक्तन हज्क्षेत्र । गृङ्गीया-पृङ्क् नः नयः निन्द् नम्भः द्रनः॥ 🎚

इंडि ভাবপুकाणः ॥

तमझानः जी रिक्युनः। ইडि णय
हिन्दुका ॥ भन्नोत्रमान्न नकः ।

उमा भागः जमणाय पृष्ठेवाः ॥ तमनः

तमा जी পृथिवी। इंडामनः ॥ तमनः

॥ भागः ॥ भज्ञकी ॥ कन्नः । ইडि

भिद्दिनी ॥ पृक्ता ॥ कारकाली। ইडि

भद्दिनी ॥ व

त्रनाथनः भू अङ्ग्रेश हेलि अप-विमुका ॥

রসাপুত্র- লী রসাঞ্জন-। ইতিরাজ-নির্ঘট:।।

রসাঞ্জন স্থা রসজাতাঞ্জনবিশেষঃ।
রসবৎ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ।
রসগর্ত্ত ২ তাজ্ক শৈল ৩। ইত্যমরঃ।। রসোভ্ত ৪ রসাগুরু ৫
কৃতক ৬ বাল ভৈষজ্য ৭ দারী হ্বাথোভব ৮ রসরাজঃ ৯ বর্য্যাঞ্জন
১০ রসনার্ভ ১১ অগ্রিসার ৯২ ।
অস্য ভণাঃ। হিমন্ত । তিক্তব ।
চক্ষ্যত্ত । মধ্রব । কটুত্ত । রক্তপিত্ত বিষ ছদ্দি হিক্বাপশ্যার নাশা
ত্তথা। রীত্যান্ত প্যায়মা নাবা তৎ
কিউত্ত রসাঞ্জন । তদভাবে তু
কর্ত্তব্য দারী হ্বাথ সম্ভ্রেণ। ইতি
রাজনিঘটঃ।। অপিচ। দারী হ্বাথ
সম শ্রীর পাদ পক্ত্বা যথা ঘন ঃ

তদ্ রসাঞ্চনাখ্য তানেরযো: প্রন্থ হিত ।। রসাঞ্জন তার্চ্জ্য লাজ্য হল। রসা লৈলি রসগর্ভঞ্চ তার্ক্সক । রসা জন কটু স্লেঘ্য বিষ নেত্র বিকার-নুৎ।।উষণ রসাধন তিক্ত ছে দন বুণদোষভ্ছ । ইতি ভাবপুকাশা।। রসাচ্য পুণ আমাতকঃ। ইতি রাজ-নির্ঘটাঃ।।

র্সাতল লী পাতাল।ইত্যমর:

।। পাতালভেদ: । যথা । অতল
বৈতলঞ্চের নিতলঞ্চ তলাতল ।
নহাতলঞ্চ সূতল সপ্তমঞ্চ রসা
তল ।। পাতালভেদা: সভৈর না
নতঃ কীভিতা অমী। তত্র পাতা
লব্টে কে দশসাহসু যোজন ।।
ভিভি শ্রমালা ।

इंग तान॰ क्षी (**नावन॰। ইভি (इग**॰ ृहनुः॥ ভूबिमात्थः॥

त्रमादातः भू मृग्धः । ইভি শব-त्रद्वारती॥ दमम्भादादम्य॥

রসাধিক: পু• টস্কণ:।ইতিরাজ নির্ঘণ্ট:॥ অধিকরসক্ষা।

রসাধিক। স্ত্রী কাকোলীদাক্ষা। ইতি রাজনিঘণ্টঃ।।

রসাভাসঃ পু॰ অনৌচিত্যবিশিষ্ট রসঃ।তস্য লক্ষণ যথা। অনৌ চিত্য পুর্ত্তঃর আভাসো রসভা বধো:। অনেচিত্যকাত রসানা। ভরতাদি পুণীত লক্ষণানাং সামগ্রী ব্ৰহিডৰে সভ্যেকদেশ যোগিছোপ-वक्र भद्र (वाक्षा) उह वानवृद्ध-পত্তবে একদেশতো দর্শতে। উপ-নায়ক সংস্থায়া মুনি ওক্পত্নী গতা-য়াঞ্চা বহুনাথক বিষযায়াণ রতৌ ত থানু ভব নিষ্ঠাবাণ প্রতিনাবক নিষ্ঠত্ত্বে ভদ্দধম পাত্র ভির্য্যাদিগতে শৃস্থা-রে অনৌচিত্য•ারৌদু গুর্রাদি গভ কোপে। শান্তে চ হীননিষ্ঠে। গুর্বাদ্যা बञ्चत्व हारम् । तुक्कवबाहु। नारह । অধন পাত্রগতে তথা বারে। উত্তন পাত্র শতত্বে ভয়ানকে ডেব্রে নেব ম-ন্যত্র। তব্র রতে ক্পনায়ক নিষ্ঠত্ত্বে **বথা** খন। স্বামী নুক্ষতরো **বন ঘন**। मिन वालाइ (मकाकिनी क्लोनी मा-বৃণতে তমাল নলিন ছায। তম: স ন্ততিঃ তেনো সূন্দর মৃঞ্চ কৃষ্ণ সহসা বর্ত্তো তি গোপ্যা গির: শুহ্বা তা প-রিবভ্যমন্মথ কলাসক্তে। হরি: পা-তু বংগা বহুনায়ক নিষ্ঠত্বে মথা। কাস্তা ন্তএৰ ভুৰন ত্ৰিভ্যেপি মন্যে যেষা• ক্তে স্তন পাও রয় কপোল:। অনভয় নিষ্ঠত্বে যথা। মালভীমাধ-(व जन्तन्त्र) नावाज्याः। शम्हानुस् নিষ্ঠত্বেপি পুর্বন নেকনিষ্ঠত্বে রভে

রাভাসত্ব মিতি শ্রীমল্লোচনকারা: ্র জাদাহরণ যথা রত্নাবল্যা। जागित्रकागा ज्याना मर्णनाट প্রাক্বৎসরাজে রতিঃ। পুতিনায-क निश्रं यथा इंग् गुरि वर्ष। इंग शीवना कनकी छ। दर्शन । अस्य পাত্র গতত্বে যথা। জবন স্থল নৃদ্ধ পত্র বল্লী গিরিমল্লী সমুমানি কা-পি ভিল্লী। অবচিত্য গিরে পুরে। নিষয়। স্বক্চানুৎকচ্যাঞ্চকার ভ· भ उल्लोषु वनान्यतम् वलान्यतः वलाः ভ না ব্যত্তী। পঞ্ছি শঞ্চী কলনা-**म** ज्यो नशे अशे अका अस जुनी ॥ जारि भदाखाननाम्यः ারৌদাভাসে। যথা। রক্তোৎফর विणान (नाननयनः कस्णाखद्रा-কে। নৃহ মুজিকে। নপেতভী ধ্ত **ध**नु बाला रुद्धः भन्। जाधाः তঃ কটকোক্তিভিঃ স্বমসকৃদ্বোর্ষি क्रयः कीर्डंग्नःमा स्मार्टे भर्टे यू वि হিন মদৌ হস্ত পুনিষ্টো হজ্জ ন:॥ ভयानका जारना यथा। यमकुतन् সোচু মধীর লোচন: সহসু রশ্মে तिव यम्। एमन । भुविषा (इ माष्ट्रि ७ श शृक्षा खब्र निनाय विक्र निवनानि को निकः ॥ छी नी ह

বিষয় মেব হি ভয়ণ রস পুকৃতি:। এবমন্যন। ইতি সাহিত্যদর্গণে ৩ পরিছেদ:॥

রসাম লী বৃক্ষাম । ইতি রাজ-নির্ঘটঃ॥ চুক । ইতি ভাবপুকাশঃ রসাম: পু অমুবেতস:। ইতি রাজ; নির্ঘটঃ।।

त्रमायकः भुः ज्वितिष्यः। **३७** भद्रानुको॥

त्रमायन क्री कितः। इंडि द्राज-নির্ঘণ্ট: ॥ ভক্র• । ইতি হেনচন্দু: ॥ বিষণা জরাব্যাধিনাশকৌষধণা **ইতি মেদিনী॥ ন সূতে ন** বিনাকান্ত• নকান্তেন বিনার সঃ: সূতকান্ত সনা-যোগাৎ রসায়ন মুদীরিত। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ 🕸॥ অথ রসাযনা-থিকার:। তত্র রদাধনস্য লক্ষণ **गार्। यब्ज्रता** तहा**थि** दिशुःनि दयन **उम्रक्षा । उक्ष्य ( वृ रुगः व्यर्** (७४क ७५मायन ॥ त्रमायनम्) कनगर। नीर्घनायः मृ जी (संशाना-রোগ্যণ ভরুণণ বয:। দেছে नितय व-**लः कान्डिः नरदा** विःन्तम् नायना था। তদ্বিমাহ। পূর্বে বংসি মধ্যে বা ননুষ্যস্য রসাবন । পুযুঞ্জীত ভি-ষক পাজঃ: সিপ্ধ শুদ্ধ তনোঃ সদা ॥ नाविणुक गतीत्रमा यूरका द्रमाः

যদে। বিধিঃ । ন ভাতি বাসসি | ्रिष्टे तक्राग इवाहिजः॥ व्यथ जन्)तश्रवगानि। भीर**जानकः भगः** कोपुः घ्ठ (मरेक्करणा विणः । ত্রিশ: সমস্ত মথ বা প্রাক্ পীতণ शानायहरः॥ मञ्डूननर्गः यद्रनः পুভাতে পুৰোজ্য বঙ্টামধুকস্য চূৰ্ণ । त्रामा ७ प्राचि नम्स न्यः कतः श्याबाः थल् भन्नभूद्वाः। जागः अुरान्धात्रयनाणनानि वलाचि वर्ग **चत्रवर्ष्कनानि ॥ स्मर्थानि टिजानि** রসায়নানি মেধ্যা বিশেষেণ চ শ্রু भूबी। मञ्ह्मा वृक्ती विक्री। वद्र जी ইতি ৰোকে। তংলাভে নঞ্জি%।-পি গুঞা। তস্যা অপি রসাযন दाए।। माक्तिका जुगाकीर्या नि প্লল্যা লবণেন চ। ত্রিফলা সিত্যা বাপি যুক্তা সিদ্ধ রসাধন ।। সি कृष मर्कद्रा मूठी कना मध्र खरेडः ক্রমাৎ ৷ বর্তাদিম্বভ্যা পুশোগ त्रमायन खेराविणा॥ भूननंदम्यार्ष পল নবস্য পিষ্ট পিবেদঃ প্রা সাৰ্দাস । নাস ত্ৰ্য ত্ৰিগুণ नशा वा जीर्ला शि ज्वः म भून र्वतः न्। (य मानस्मकः स्वतनः भि বন্তি দিনে ধিনে ভূপরজঃ সম্থা । क्रीदामिन एउ वन दीयं युकाः

সনাশত জীবন মাপুৰস্তি 🛭 শ<sup>ু</sup> তাবরী মুণ্ডিতিকা শুড়ুগী সহুন্তি-कर्गा जङ्डालग्ली। এडानि क्दा नम ভाগ यूकान्यायात्र किशा म-ध्नाविषश्र ।। बदाक्का मृजुः वियुक्त (मरहा कर्वमात्रा वीर्य) वना-पि युकः। विভाতি দেবপুতিম: **म**ः নিত্য পুভামযোভ্রি বিবৃদ্ধ বৃদ্ধিঃ ॥ भीजायगक्का भगमार्क मामः घ्-তেন তৈলেন সুখান্থনা বা ৷ বীৰ্য্যস্ত পুষ্টি বপুষে৷ বিধন্তে বালস্য শ-नमः यथाष्ट्र वृद्धिः ॥ व्यतः भलः खगुन् बन (याबाः भनन्यः (वताय-পন।নি গঞা পলানি চাঙৌ ত্রি-क ना **त्रज्ञ कर** जिल्न या छ। सत्र-ত্ব মেব ৷৷ লোহ গুলু: ৷৷ ন কেবল• দীর্ঘনিহা পুরশুতে রসায়ন যো বিবিধ• নিষেবতে। গতি• স দেব-ৰ্ষি নিষেবিতা শৃতা পুপদ্যতে বুন্দ তথৈৰ চাক্ষয়ণ।। ইতি বসাধ-নাবিকার:। ইতি ভাবপুকাশ:॥ त्रमायनः भूः गक्छः॥ विष्ठश्रः। ইতি নেদিনী॥ रबीउकी। ইতি **त्र**मापनकना ञी ত্ৰিকাওশেষঃ॥ त्रमायनामुष्टः भू পারদ:। ইতি द्राजनियंकः॥

बनायनी .को एज्री॥का हनाही॥ 🗕 महाकत्रञ्जः॥ (गातकपृषा॥ मा॰-सहरा। इंडि बाबनिर्घणः॥ बनावः ही निद्धकः॥ वावः। इंडि भिषिनी ॥ त्रमानः भू॰ हेक्ः॥ यागुः। हेउ भवः॥ भनमः। ইতি भदत्रवादली ॥ बन्दब्रज्नः॥ (गाव्मः॥ भूख कनारमक्ः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ [मालमा बी नाजी। इंडि मक् **व्याप्त**्रा ॥ [नाना जी जनना। मूर्वा। विनाती । इंडि मिनिनी ॥ मुक्ता। इंडि **म**क्रव्रज्ञावली ॥ मिथांब्रेनी । **७**९-পर्यग्रायः। भार्किंठा २। ইত্যमद्रः॥ उन्तराः कद्रगुनाद्वा यथा। जात्नी माहिष मम मधु ब्रह्छि॰ प्रधार ক শর্করা শৃভা পুত্র যুগোমি তা শুটিপটে কিঞ্চি কিঞ্চিৎ किल्ल । मूर्यनार्क चरनन मृग्य नवञ्चालाऽ। मृष्ठः मुवरयरम् नावीः ब नवक वन्त्र मित्रिव (यारिगान्क छ-দ্যান্তবেশ্য ভীমেন প্রিয় ভোন নন রচিতা নামা রসালা স্বয় 🗐 ্ফেন পুর। পুনঃ পুন রিয়ণ প্রীত্যা ाभाश्वा**रिङा।** এव। य्यन दमञ्ज व-

জ্জিত দিনে সেব্যা পর দিত্যশ্

রসালি खना नाम जिवीया वृद्धि प्रतिभाग महिम्मियानाः वनः ॥ श्रीएम छथा मद्रिष व द्रवि माविजाका रेव ह পুমত্ত বনিতা সুরতাতিথিল। (य ठानि मार्ग भवित्रभंग मीर्ग-গাত্ৰা তেষা নিয় বপুষি পোষণ भाणु वर्ग्डाट ॥ त्रभाणा भूकना-वन्। वाज्नी वाज निज बिट्। मीशनी वृञ्दगी शिका सधुता निः শিরা সরা ॥ রক্তপিত্ত তৃষা দা-रः পुजिम्यायः विनामस्य । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। অপিচ। দপ্নো ২জা-एक भीषत्य अध्यः थश्चमः हन्तृः-(ठ: गुङ् । को मृ भनक भक्ष शक्ष हिं-वः मृष्ठेत मञ्जूषीयकान्। এवा गाय छज्हेग भित्र छ । कर्ष वत-क् उथा ध्वा मूक्ष्माति मरिनः कतः **उत्नत्वात्र्यः)** वित्राव्ययः ॥ मृद्धाः ७ मृगना छि हन्दन द्रम मृष्ट्रे २७-ক্ষ্পিতে কপ্রেণ সুগন্ধিত• তদ-थिन मंतापुर मंद्राभायर। मु স্যার্থে নথুরে <del>থ</del>রেণ রচিতা ছেয়া রসাল। স্বয় ভোকু মন্মথ দীপনী मूथकत्री कास्त्रिव निकुष शिषा ॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥ त्रमाणिश जी भीवनाना। हाजनिया

ইতি ভাষা। ইতি শব্দক্রি ।।

त्रमानी श्री नृष्टुरककः । ইडि त्राक विष्टेः ॥

রসাধাস। দ্রী পলাশীলতা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

রসায়াদী পু॰ ভ্নর:।ইতি শব-মালা॥ রসায়াদবিশিষ্টে তি।।

ब्रमान्तः भ्• मदलपुरः। ইতি दञ् भाना ॥

রসিক: পু॰ সারসপক্ষী। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ তুরস্ক: ॥ হন্তী। ইতি সারস্বত:॥ সরসে তি। ইতি নেদিনী॥

রনিকা জ্রী রসাল। ।। ইফুরস:। ইতি নেদিনী ।। কাঞ্চী ।। রসনা। ইতি বিশ্বঃ।।

রসিকেশ্বর: প্ এক্ফ: 1 যথা। বৃন্দাবনান্তরেরমেররাসেংহসব স

মুৎ সুক•। রা দন গুল নধ্যক্ত ননা
নি র সিকেশ্বর•।। ইতি বুক্ক বৈবর্ত্তে
গণপ তিথপ্তে ৩২ অধ্যামঃ।।

রসিত ক্লি নেধনিযোষ:। ইত্য-নর:।। ক্ত ।। স্বর্ণানিথ চিতে ত্রি। ইতি মেদিনী।।

त्रमूनः श्रु॰ लणूनः । ই जि मक् हिम्मुका ॥

त्राम्यः पूर् भातपः। ইতি রাজ निर्वणेः॥ রসোত্তম: পু॰ ন্দ্র: । ইতি,রাজ৽ নিঘণ্ট: ৷৷ শুেগ্রসম্চ ৷৷
রসোজ্তব॰ ক্লী হিন্দুল ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ৷৷ রসজাতে ত্রি ৷৷
রসোন: পু॰ রসুন: ৷ ইতি রাজনিঘণ্ট: ৷৷

त्रांनानकः भू॰ त्रमृनः। ७८ भर्यायः ् । लगन्छ ब्रामानः न्यान्गुगस्ता गरहोषय । च तिरही (महकन्त म्ह প্রবেষ্টো রসোনক: 🔃 ভস্যোৎ পক্তি यंथा। यसामृजः देवनक्तरया জহার সুরসত্তমাৎ। তদা ততে। **ৎপ**তদ্বিদ্যু: সুবসোনো ২ভবন্তু-वि॥ १ विका तिम गुक्ति। त्राम-नायून विर्द्धि इ: । उथामुरमान है-ভ্যাক্ত। দুব্যাণা• গুণবেদিভিঃ ॥ व्यम्याव्यवख्याः । कृत्ककाशि ম্লেষু তিক্ত: পতেষু স•স্থিত: । नात्न केयाय উদিছে। नानात्य न-বণ: মত:।। বীজে তু মধুর: প্রেক্তো রস স্তদ্গণবেদিভিঃ॥ অস্য ভক ণ গুণা:। রসোনো বৃ•ছনো বৃষ্যো निःकाकः भावनः मद्रः । तस्म शाकि ह कर्तृक छी। मधुत्रका म-छः ॥ ভग्नमकानकृष्ट कर्छ्या खकः পিতাসবৃদ্ধিদঃ। বল বর্ণকরে। মেধাহিতো নেত্রো রসায়ন: 11

कामाण कीर्नज्ञ सिकम्ल विवस् स्थानकि काम (माकान । पूर्नाम स्थानकमाम देख मभीत्रम श्वाम कका कि इशि । महु मान्म छ-श्वामक विछ लम्म (मविना । वड़ा याम माज्य विख ताम मिलिनित थ (मा छु ।। त्रामान मम्म शुक्यं छु (कार छिन्न त्रामान मम्म शुक्यं सुकामः ॥

াসোপল॰ ক্লী মৌক্তিক•। ইতি - ত্রিকাণ্ডশেষ:।।

ातः क्षी पुन्तः। इति निकासको सून्तास्थानिक्तिः॥

[স্যু° ক্রীরক্ত: । ইতি শব্দনিদুকা ।! [স্যা জ্রী রাম্মা ॥ পাঠা । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

িছ ত ক গতৌ। ইতি কবিকল্প জন: ।। র•হ্যতি র•হ্যপথতি । ইতি দুর্গাদাস: ।।

िरः क्री त्वरः। उर्भर्गायः। उतः
र त्रयः ० माप्तः ६ यदः ६। ইতামतः
।। त्रयः ७ यदः १। ইতি उद्योका।।
।र ह ७ गठाः। ইতি कृतिकस्मनः
।। ই त्रः श्टा । ইতি कृतिकस्मनः।।
।र छाजि। ইতি কৃतिकस्मनः।।
। द्रहे भूयः भीनः। ইতি দুর্গা
।। ।।

রহিত
রহ তক ত্যাগে। ইতি কবিকল্পজন: ॥ রহ্যতি শোক ধীর: ।
ইতি দুর্গাদাস:॥

त्रहः क्री निर्द्धनः। उर्श्यागः।
विविकः २ विजनः २ एगः ४ निःणनाकः ६ त्रहः ५ উপाःम् १ ।
इंग्रमतः॥ उद्धुः॥ त्रिः॥ उद्यः।
१ इंजि मिनिनी॥

রহঃ ব্য বিজন। ইত্যমরঃ॥ র-হো নিধবনে হপিস্যাদুহো গুছে নপুংসকং॥ ইতিরভসণ্চ॥

রহন্য তি গোপনীয় রহ্সিভবং ইতি নেদিনী অনরশ্চ ।!
রহস্যরোদস্পর্শ নিষেধে যথা ।
ন সর্প শক্তৈ: ক্রীডেত স্থানি থানি
ন সংস্পৃশেৎ। রোমানি চ রহস্যানি নাশিষ্টেন সদা বুজেৎ ৷৷ ইতি
কৌর্মে ১৫ অধ্যাম: ৷৷

রহস্যা স্ত্রী নদীভেদ: ইভিনেদিনী
। রাম্না।। পাঠ।। ইভি রাজনির্ঘণ্ট:
রহিত তি বজ্জিত । যথা। জাত
সূতক মাদৌ চ অন্তে চ মৃত সূতক
। গুরো স্তদুহিত কৃত্রা জপকর্ম সং
মাচরেৎ ।। ইভি তক্তরসার: ॥ অপিচ। দিগ্রো হ্দো হৃদ্ধি রহিতো
জন্মক্ষাট্যো ভশেষিত:। ভণ ভবেদ্ব্ বেশে হ্র গোগেপ্যেব বিচি-

त क

ধ্যেব ।। ইতি জাতকপদ্ধতি:।। ব্ৰক্ষ শিং পালনে। ইতি কবিকল ক্ৰম: ।। ঞি ব্ৰহ্মিতো প্ৰি। ইতি দুৰ্গাদাস:।।

রক্ষ: की রাক্ষ:। ইত্যমর:।। छिष्टा यथा। मृष्ट्री जू विकलान् वाङ्गाननाथान् (द्राणिन छथा। एगा ন জায়তে যস্যসরক্ষ ইতিমে মতিঃ ৷ ইত্যাণেষে যুদ্দিলোপাথ্যান नामाध्यायः ॥ त्रक्षम् अवयः यथा। মনুক্বাচ।রকোমানি বিবয়ানিযা-नि वार्यानि ज्जूका। यगनानि न-নাচকু তানি ধর্মভ্তাধর।৷ নৎস্য উবাচ। পত্রিকা রোহিণী চৈব র क्रमाना मरहोयती। उथामनक व-न्तात्र याठ ठिज्ञ भारति विका ॥ का (कानी क्रोतकारकानी भीनभर्गी , छरेथव छ। (किमानी वृम्हिकाली छ নহানাগা শতাবরী।। তথা গৰু-उदिगा ह इत इस्मिनी उथा। স্তলেচোৎপলিনী যা চমস্থাভূমি-व उ। ह या।। উन्मानिनी (मामद्राजी অৱর্ত্তানি পার্থিব ৷ বিশেষামর-কভান্যত্ৰ কীট পক্ষ্য বিশেষতঃ॥ कीत जा जा क गगयः मर्ख शार्या বিশেষ ভঃ। রক্ষোয়াত যশাস্যাত ক্ভ্যা বেভাল নাশনা: ।। ইভি

बार्टिमा १५२ व्यक्तायः ॥ . त्रकःमञ् क्री क्रकःमम्रः। **३७**३---

त्रकः जि तकाकर्त्त। यथा। शातकः नरूप्तवण नक्षणा र्य तकः
कः। देवता है क्करायापा नदागाः
भाज्य कनः ॥ इंडि क्षताः।
तकः। की तक्षा । यथा। इंडि क्षाः
विकाल श्री निकास । यथा। इंडि क्षाः
विकाल श्री निकास । यथा। विकाल ।
भाषिदा जनः भाजा मः नहदण
यमाञ्जाः॥ इंडि क्षिलाग्रदाः

त्रक्षनावकः भू ग्वकृह्त्वागः। इिंग्यस्त्रज्ञावनी॥ वृहिर्भुष्ठत्क त्रक्षनीव्रत्काभि भार्तः॥

ऋक्षि ७ व्यथ्रायः ॥

রক্ষণি: জ্রী তাবনাণালতা।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

का खी जज् । तकन । इंडि

स्मिती ।। जम । इंडि मेस तज्ञावनी ।। रामाना क्ञा तका यथा ।

तका । विनिध्य मन्द्रक् राम्य जुः

नगानि जिः । रिम्म (खन मानि विनिध्य मन्द्रक मनि विनिध्य मनि विनिध्य मनि विनिध्य मनि विनिध्य मनि विनिध्य के ।। तका । ज्ञान । ज्ञ

**২ড়ি**য় মণিমা• স্তব জান্বথোক যজে। रिठाउ: किंडिंग कटेत्र रुपानाः। **श्रुर्व में में हेन्स क**रे॰ विकृ वृ कः मूथ मुक्कम मे पतः कः ॥ চক্র্যুত: সহগদে৷ হরি রস্ত পশ্চাৎ पुर भार्याया धनुत्रमी मध्रा कनन्। কোণেষ শ•খ উৰুগায় উপযুৰ্গপেন্দু खार्कः कित्वो श्वधः भुक्षः मन खाट।। इन्तियानि इंबीरकनः शानान् নারায়ণো**ংবভু**৷খেতদ্বীপপতি কি खः मत्ना वारमस्त्रा १वज्॥ भृति গর্ভন্ত বুদ্ধি মান্ত্রান ভগবান্ পর: ক্রীডম্ভ পাতুগোবিন্দ: শ্যা-नः भाज्नाथवः॥ वृक्षत्र मव्यादिक्ष व्यामीन दा नि्गः প जि:। ভূঞान यक नूक भाज् नईगुर खयकतः॥ **जित्ना राज्यानाक स्याक्ष (र** ৎপ্রক গুহা:। ভূত মাত্ পিশাচান্চ यक ब्रह्मा विनायकाः ॥ (काहेब्रा রেবতী জ্যেষ্ঠা প্তনা মাত্কাদ্য:। **উबारा ए इभयाता (रङ् भा**रा-निप्य करः॥ यश्र मृडे गरहार भाउ। वृक्ष वाल शुराक (य। मर्ख नक्षेत्रक তে विक्था नीमगुरुगजीत्रवः॥ इंडि শ্ৰীভাগতে ১০ কল্পে ৬ অধ্যায়:॥#॥ व्ययः (भोर्गमाम्)। त्रका वज्ञनः। রাখীবাঁধা ইতি ভাষা ৷ পৌর্ণনা-

न्धाः हरत्र त्रका वक्षनः विधि न्द्रः कः। तुक्तताहस्मात्रदार किनिन ছন্তি সাধব: ।। ত**ৰ** ভদুদি সন্তা-বে তা মতিক্রমৈয়ব স্বর্য্যাৎ। তথাচ म्बा अनुवारा । स्व न कर्डावा मावनी कानुनी उथा। मावनी न्थ-जि· रिंड गुमान् पर्ठि कालूनीजि ॥ বিধিষ্ঠ ভবিষ্যোত্তরে। উপাক-र्यिदिन (भुक्ति म्यीगोरिक्त उर्नन्। ততো २পরাহ সমযে রক্ষা (পাট-**जिका॰ मुजा॰** ॥ कात्रसम्बर्धेडः मरिष्ठः निष्कारिर्थ (ईन जृषि जाः। वरेष्ठ विंठिक: कार्भारमः कोरेम वं मन-বজ্জি তৈ:। বিচিত্রণ গুথিত। সূত্রণ স্থাপযেন্ডারনোপরি। উপল গৃহ मरबा मध्यप्रज्ञहानात्मह् छ भीठे । ভবে প্ৰিশেদালা সামাত্য: স পু-রো হতঃ সমূহৎ ॥ তদনু পুরোধা নৃপতে রক্ষা॰ ব্প্লীত নজেণ। যেন वरका वजी बाजा मानव्यत्नु। सहा-বল:। ভেন ত্বা॰ পুতিবপ্বামি রক্ষে माठल माठल ।। रेविक्किक । यहा वश्च দাক্ষণা ছিত্যাঃ শতানীকা নন-ষ্য মানা তথ্যা বল্লানি শতং শার-नाया युग्मन् कत्र निष्ठि र्यथा **म॰।** जा॰ ऋरेनः कविरेग रेश्व रेनाः मृत्य महा-रेनाक मानरेवः। कखरवा। ब्रक्तभावाः

রো (।পুন্ সংগ্রাশক্তিতঃ ।। অ-**टन-** विधिना यस ब्रिक्षका वक्त माठ-রেং। স সর্ব দোষ রহিতঃ সুথ সংবৎসর বসেদিতি।। 🗱।। অথ छि मिन निर्वयार्थ मुलाकर्ण मिन निर्व यः ক্রিয়তে। यদাহ স্ত্রেরে। উ-পাকর্ম ভূ দর্বন্তি তে সাম পাগ্ যজু र्बिनः । गुरु न-कान्ति गुरक्षम् रुख শুবণ পর্যসু ॥ তথাচ। সামবেদিনা ভাদুস্য হস্তানক্ষত্র ঋগ্রেদিনা শুবি-ণস্য শ্বণ নক্ষত্ৰ হজার দিনা শাব गीनृनिरंगानाकर्षा हानः । উनक्रम का उन्न की इंन्स्न क्य उनाक्य। অত্র করণাভাবে ভাদে শুাবণেপি विष्य । अवृष्ट्ठित्राष्य्य खिना गान ন হি ভবন্তি চেৎ। তথা ভাগুপদে মাসি শাুবণেপি তদিষ্যতে !৷ ইতি বস্ত্রদার শিষ্ট বচনাত। শাবণপঞ भारत्कन्नः । जनारु गर्गः । यनि महार् শাৰণ পৰ গৃহ সংক্ৰান্ত দ্বিত । न्। मुशाकत्वाः मुल शक्याः माव-ণম্চ ইতি ৷ অত্ত চুত বিদ্ধা পূৰ্ণি मा ह निमिष्ता। उथा ह का निकानु-। রাণে। চত্রশাণ সমূহ পরাবস্থা রিক্ষিতা পুণ রফাকর।। যথা। আ-মধুকৈটভৌ ৷ বেদান্ ৰীজ্ৰৱতঃ প ঘ্ৰোদে ভৌজন্ম, শু, নিঃ। জ্লা তা दमूखो (१व भाजान उन न नित्ने।।

वाह छ। छ। मु. ही खेरम रंपि र्याक अकः अगः। मः शाखदान भु. ही व का शर्बाभागिक श्रुनः ॥ 🦈 ভ্ত যুতে ভিমালাপাকরণ মিষ্য-তে। আসর বজায় কাল (ব-় দাহরণ শঙ্কযেতি।। ব্যাসোপি। শ্বণেন ত যৎকর্মা উত্তরাষাট সং-यु इ॰ । म॰व्यमद्र क्छा २४॥य ন্তৎক্ষণাদের নশ্যতি॥ ধনিষ্ঠা সং-युक्त अस्ति। हादन कर्य युद्धद्य । তৎকর্ম সফল বিদ্যাদপাকরণ স জ্ঞা নিতি ॥ ইডি শ্রীহরিভ-ক্তিবিলাসে ৫১ বিলাস:।। রক্ষাপত্র: পু॰ ভ্রত্ক:।ইতি রাজ-नियंग्रेः॥ जुर्जद्रिति ही ॥ विक्तिका स्त्री विकाशियशा ज्यानिस विधिना यस तक्किका वक्क माहरत् । न नई (नाय त इ छ: नथ नन्दर সর বসে ।। ইতি হরিভক্তিবি-नाम ७३ विनामः॥ त्रिक्ठि जि त्रकाक् उः। उৎ भर्यायः । ত্রাত॰ ২ ত্রাণ• ১ অবিত• ৪ গো-পাধিত ৫ গুড় ৬। ইত্যমর: ॥ गन्। विश्वा (माण्डा (माणा -পতিনিশারদং। কৃতাক্তজ্ঞে। ভূ-जाना किनः महादम क्रिका।

कृष्टि माध्यम् ४५० व्यथायः ॥ इक्तियर्गः भुः ब्राजाञ्चबक्तवर्गनः। ज्यभर्यक्षयः। यनीकञ्चः २। इज्र मनः॥

রকোন লৈ কাজিক। ইতি ছেম-চন্দুঃ।। হিন্ধ । ইতি রাজনিষ্টঃ ।। রকোম: পু॰ ভল্লাভকবৃষ্ণ:।ইভি-ত্রিকাঞ্জম:॥ খেতস্যুপঃ। ইতি ब्रह्माना ॥ त्रक्षानुमुखा यथा । क्राप्त क्र्योक्तम उद भुकेन्छ। ज-গৎ প্রষ্টার্জ্যতে চারকাণ সি ভীতানি দিশো দুবন্তি সর্বে ন মুস্যন্তি চ সিদ্ধ সংঘা: ৷৷ ইতি ভগবদ্ধীভাষা >> অধ্যায:॥ স্থানে ইত্যব্যয় যুক্ত মিত্যুর্থে। হে স্বী किन मरबन्तिय भुवर्खक यञ खुरमः বাত্যভান্তত পুভাবো ভক্তবৎস লক্ষ ভত তত্তব পুকীৰ্ত্ত্যা পুকৃষ্টবা की र्डा। नित्र जिनय शाम छ। न। की-র্ত্তনেন শুবণেন চ ন কেবল মহমেব পুহ্ব্যামি কিন্তু সর্বমেব জগছে-তন নাত্ৰ রক্ষে। বিরোধি পুছ্ব্য তি পুকৃষ্ট হর্ষ মাপ্মেতি ইতি বৎ তৎ স্থানে যুক্ত নিভ্যৰ্থ:। ভথা **गर्ब क**श्य जनुदस्ताउठ द्विवर মনুরাণ মুগৈতি ইতি চ বভদপি সু জ নেব। তথা রক্ষা পি ভীতানি मिछ दिश्ला पुर्वे नर्वा नृति क्यू श
वाय इंडि य उ दिश गुक (मद ।

उथा नर्दियाः निकानाः किलवा
दिशाः नः या नममुद्धि (ठिड य उ
दिशाः निकाः । व्याः निकाः निकाः निकाः ।

दिशाः । व्याः विकाः विकाः ।

दिशाः । विकाः ।

दिशाः ।

द

त्राकाष्ट्री जी वहा। इंडि त्रज्ञनां हा। त्राकां कानी जी ताजिः। इंडि जि-काश्वामयः ॥ त्राकां मना उ। ह।। त्राकां ही पू॰ क्षान् । इंडि ताजि-निर्यक्तेः॥

तकः शुः वागः। इन्त्रातः॥

ता ल पात्।। शृष्ट्या हैनि कविकल्लक्रमः॥ ल तानि। हैनि पूर्णापानः॥

ता खी विज्राः॥ प्रानः। हैनिकाक्रतकायः॥ कांक्रनः। हैनिशृक्षत्रञ्जावनी॥

ताः प् धनः ॥ वर्गः । इत्रुग्तः ॥

णपः । इति णप्तः । वर्षा । ।

ताका जी ननी दिष्णयः ॥ कह्दागः

॥ नवजा उत्र ज्ञा ।। मञ्जूर्मिक् ि

थिः । इति मिनी ॥

ताथ य ष्णाया नवर्षयाः । इति

कित्वक्रमः ॥ भाषः श्हरक्रि

'তীভাবঃ। অলমর্থো ভ্রণ সাম র্থা: নিবালণক । ঝ অরর্থেশ । ইতিদুর্গানাসঃ ।।

রাগঃ পু• মাৎসর্ব্য•া। লোহিভা-निः।। (क्रमानिः।। अन्त्राभः ।। भा-क्षाद्यानिः॥ वृशः। इंजि त्यप्तिनी॥ **ष्ट्रन्यः। नृ**र्यः। ইতি भवतञ्जावली ।। वाकारिः।। ब्रांक्रम विष्।। ब्रञ्जनः । ইতি নানাথরত্বনালা॥ পুরীভিঃ। যথা। বীত রাগ ভগ ক্রো**ধ হি**ত-ধী নু নি ক্চাতে। ইতি ভগবদ্গীতা। स्नाकडीकायाः श्रीधदयामी ॥ **७**मऽ লকণ যথা। সুখ মগ্যধিক চিত্তে সুথত্বেনিব রজ্যতে। যভন্ত পুণ याटकर्याट न ज्ञान इंछि कीर्छाः 🗷 ॥ इंजुङ्क् ननीनमनिः ॥ 🗱 ॥ गानभाजीय द्रागा यथा । ভরত মতে হন্নমূতে চ রাগঃ ফড়িবঃ। (उवा॰ नामानि यथा। टिख्रवः > कि भिकः २ हिल्लानः ७ नी भकः s बितागः e मियः । हन्मख রত্যো মতে পুত্যেক নেষা পঞ্চ ब्राजिगः। स्मारमध्य कलामाथः যো মতে পুত্যেক নেতেষা ষট্ রানিণ্যঃ। এতেষা পুত্যেক মঞ্জৌ পুত্রাঃ একৈক পুত্রভার্যাচ।। ক লানাথ সোনেশ্বর মতে যুড়াগা

यथा। 🗐 द्वागः 🕽 वमञ्चः २ 🗨 🕸 मः ত ভৈরবঃ ৪ মেহঃ ৫ নটনার।যভাতির ইতি নানাস•গীতশাস্ত•।। ঋা∶অণ্ রাগন্য বুড়ংপত্তি সংখ্যা স্থানা া থৈন্ত চেতা সি রঙ্গন্তে জগগ্রেত্র বৰ্ভিনা । তে রাগ। ইতি কথ্যস্তে মুনিভি ভরতাদিভি:।। গোপীতি गी ज भावन (गरेकक॰ कृष्ण भनि-ধৌ। তেন জাতানি রাগাণা॰ সহ-সাণি ভুষোডশ ॥ রাগেষু ভেষু য-ট্ত্রি**:শ**দুগা জগতি বিশু,সাঃ। কা-লকনেণ ভ্রাপি হাসএন ভু দৃশ্যতে ।। কেচিম্বদন্তি তে রাগা সরে সন্তী-তি নিশ্চিত ৷ নেরো ক্তরত: পুরে প'শ্চমে দক্ষিণে তথা।। সমুদু কণ্ঠে य (मणः खबाभीयाः भूठाइना । छ-থাচ ! অফ বঙ্গ কলিস্ক তেল**ক** ভূ-লিক হাবছ সুরক্ যুপ**লক থেলা**ক সৌবীর কীর কাশ্মীর নাভীর নাছী-র সিজু জালজ্ব নগ নগধ বিষধ্ मनप्रशेर्य गक्षास्त्य मानव **कानव** सक मृत्र (हान डें ८ क**ल अउन ति १२**-ল হরিকেল কেরলকোবল মলিবা-ল মল ভল্ল সৌবিদল বাত কিঞ্জা-ত ওজুরাত গুপ্তর কালঞ্জর গৌড দুবিড ওড় সম্ভৱেদি কাঞ্চী পাঞ্চা-व भोहार्ड भवद्र लोश्ववद्र थण

কীকশ বন্ধপ কামৰূপ হরিগর্ভ বি-मूर्ज मूर्गे हे वाहे की कहे (मरवक्ष बहेक ন্ন্টি ভোট কবাট করহাট কর্ণাট **হ্য**ন্তিকাবন্তিক কলক আব্লু কান্য**ন্ত**্ৰ ভোগ কাখোলতোজ তৃথার বিহা-র বলীফার বাজগে<del>হ</del> বিদে**হ বা**-श्लीक हराबीक जिगर्जानजीति (त-শেষু রাগাঃ পুচরক্তীতি ।৷ যস্য শু-বণ নাবেণ রঞ্জন্তে সকলা: পূজা:। সর্বাধ রঞ্জনাক্ষেতো স্তেন রাগ ইতি মৃত:॥#॥ অথ রাগা:। আদৌ भावत द्वारमम् छछ। भन्नात्र मः প্রিত:। এরাগণ্ট ততঃ পশ্চাদ্দ ন্ত তদনভর ।। হিল্লোল স্চাথ কর্ণা। ট এতে রাগা: **ব**ডেব তু। ৬। ষট্ব্রি• শদুৰ্গিণী তত্ৰ ক্ৰম**শ: কথিতা ম্যা** । धाननी नालभी टेव्य बामकीबी व সিহুডা। আশাবরী ভৈরবাচ মা-ववग्र श्रिया इयाः ॥७॥ (ववाववी ह भूतवी कानजा माथवी उथा। काजा কেদারিকা চাপি মলারদ্যিতা ই-মাঃ ৷৷৬৷৷ গান্ধারী শুভগা চৈব গৌ রী কৌমারিকা তথা। বে**লোযারী** ह रेवब्राणी श्रिवाणमा निया हैमाः ॥७॥ वृक्षे ह शक्ष्मी हिन निका शर्वमञ्जरी । एकती ह विचारा ह बमलम् भिया हैमाः ॥ ७॥ भाग्री मीनिका देव प्रमाकाती ह शाहिए। । বরাজ নোরহাটী চ হিল্লোব্স্য **প্রিয়া ইমা: ॥৬॥ না**টিকা চাথ ভূপা-লী রামকেলী গড়া তথা। কামো-मा ठानि कन्याभी क्यांहेम्य निया ইমা: ॥ ७ ॥ ७७॥ 🗱 ॥ जय कान-নিযম: । বিভাষা ললিতা চৈব কা-भाग भवेगक्षती । तामकीती ताम-क्नी (बलायाती ह एक्नती ॥ पर-শকারী চ শৃভগা পঞ্মী চ গড়া-তৃতী। ভৈরবী চাথ কৌমারী রাগি-ণ্যো দাপঞ্চ ॥ এতাঃ প্রাহ্ काल जु भीगस्त्र भागत्मान्हरेमः। बद्राजी भागृती (काउ। दिवागी हाथ शानुषी ॥ (वनावनी भावशाही म-প্তিতা রাগ যোষিতঃ। গেষা মধ্যা-হ্রকালে তু যথা ভারত ভাষিত• 🛚 गामात्री मीलिका हिव कन्याभी भूत-বী তথা। কানডা শারবী চৈব গৌরী क्रमात्र भाश्छि।। भाग्त्री भावनी नामी जूनानी निक्रफः उथा। नाया-हि जान बारिनाः भुगायनि हजुर्मन ।। भूक्या वस ज्वाहत ज्ञाना एक मा-नवामयः। शुरमाय जानताह ठ ब्रजन्ताः गान (गाठवाः ॥ मणम् अट পর রাজৌ সর্বেষা গান নীরিত । । (सघमलात तागम) गान दयानू

नर्मप्। शिशक्षम्। नमात्र छ। या-व् करमार्मव रहाः। जावसमञ् त्रंभगमा गान मूकः मनीविण्डिः॥ **ल्यान्यान नमाद्र जा राज्यान म**े হোৎসব ৷ গীযতে তদুধৈ নিত্য भावती नामताङ्जा।। मर्खिया भिरु ज्ञागानाः ज्ञागिनीनाकः गर्नमः। ज्रव ज्रा नृशाङ्गायाः कालासारा बः विम्राज्या वागका नाभायमामी जर পত্ন্য ভদনভর•। নান্যপত্নী পুগাত-या नृभाड्यायाः न मूयगः ॥ द्राणाः यउथ जाशिनाः यहेकिः महाक विश्-হাঃ। আগতা বুন্ধ সদনাৎ বুন্ধাণ সমুপাসতে ৷৷ ৠ ৷৷ অথখ্যান ৷ নি ভিদিনী চৃষ্ণিত বক্তু পদ্ম: শ্ক্ৰুতি: व्यक्षतान् भूनकः। मङ्गीक भानी श्रुविणम् श्रुप्तार्य मानावरता मान বরাগরাজঃ॥১॥ নীলোৎপল্ কর্ণ युल दश्डी न्यामा मुक्तमी ह म्यशु ভাগা। ঈषट नहानाष्ट्र ब्रग्धवंकु। ना थान्यी भन्न जुहाक (नवा।। ।।। করে যুতা চাতুজ যুগা রম্যা ইত ভত **म्हा**क् वित्वाक्षश्री। क्षेप्न, ब्रत्सोङ्गि क बङ्गाङ्गा मा गामनी म कथिजा विविद्या।। २।। भूग्रह गागीकत मार्ग बद्धाः वर्गायज्ञः नः नः वर्गा । शूझ वर् शुरुषात क्वाना हत्तु। न

त्रामकिती भुषिक्षा ॥ ०॥ मर्छन्तु नी वम्। ७ त्रष्ताकी भुवान यही क्श-**লাশ** বজ্রণ। বিচিত্র রহ্নাভরণা সু<sup>ন</sup> কেশী সা সিদ্ধুড়া কান্ত সমীপ সং-इ।।। ।। जवा भूम्नमू जि विषवक्। निक्षु नमा कत्रयां मंदाना। की-মাংশুকাছাদিত গাত্র যঞ্জি রাশা-वत्री ब्रम्भ किला विषया।। १।। म-রোবরহা স্টিকস্য মন্দিরে সরো-क्रेंशः मक्त गहंग्डी। जान भुर्यान পুতিরক্ষ গাঁতে গোঁরী তনু ভৈরবি-ক। সতীয় ।। ৬।। 🗱।। অথ মল্লার: । विश्वमीलाजि मकायुप्तरः काष्ट्रा लुएया शासिकः भीषयङः। कामा-ত্র: পিঙ্গল নেত্র যুগ্মো নলার র। गः नियुक्ट जूरवणः ॥ 🗷 मरह्रकि তোৎফুল লভা নিসঞ্জে কৃত্জিভিঃ काष्ठ मभागभाष। (वलावली हन्त्रक भोनिनी म। वाना विविद्यालवना निक्का॥)॥ त्रश्मकाष्ठ लियमान পত্র• রম্য• বহন্তী হ্লচ হ্লন্ত গুণ্মে। **मृबाम्बन्धामञ्जूः जकामा शृताज-**निः मः भूतवी निक्का । २ ॥ अ-শোক বৃক্ষস্য তলে নিষ্মাবিযোগি নী বাস্পক্ণাঞ্জাজী। বিভূ**ষিতা**-की अजिलाब बाला मा लागछ। (इम-षाउव जरी।। २।। माण्या मःग्या

गल मधाना भुगून माला मिराउन वाला। शोबी बुकांडानन हृषि जान्ता र्मा मुन्दत्री माध्यिका निञ्च एक ॥ ८॥ नुकह्ली॰ वारविक चल्ल गानार्थ गভारा जिल्लामा अरे एवं जाना-বিহিতাচ মালা কোডা কলা ভান वजी मजा मा॥ दा। माषा मम्बीर्ग वजी मूलहा (कम भुगिमामित वा রিবিন্দু:। নিদ্নী ডযন্তী তিনিরা শু काष्ठः (कराद्रिका त्रक्रभाराधत्र 🕮: ॥७॥ # ॥ यथ श्रिवागः। नीना-বভারেণ বনাভরাণি চিবুন্ পুসুনানি वश् नहायः। विकान (वर्णा श्रुडि দিব্য নৃর্ত্তি: ত্রীরাগ এয পুথিতঃ প্-**बि**र्जाः॥ आ मक्जाम् कात्न ग्रम् (नरम পু**वान्यछी इ शिनाक गञ्ज**ा খারাণরা ধাতু বিচিত্রিতাক্সী গান্ধা-तिका गक्त **मुक• निवालः ॥ ३॥ तमन**-যা সুবিচার কৌভুক বিদধতী ক বিলোবিদ কৌতক। সুক্ৰিভান্ত ভাবন তৎপরা ভগবতী সূভগা সং मुनाञ्जा॥२॥ भ्रामान्यान मार्क गानी क्यारियः कीउएउप्रवः काकि **ण।** काकनीषु । द्रामा **म**्रामा नम्ख भानाक नीना लोबी लोबी लोबन लाक मिश्रा॥ ॥ अप्रेलिकायाः कुष्टे कोनुनीजः भूकाणिजायाः त

कनी विहातः। यहार काछन न्रंगः वनडी कोमादिका कामकना वर्ष्ट्री ॥ ৪॥ পৌরীপাদাম্যেন মভ্যর্চয়ন্তী गक्षाक्ष्ठः गक्षमान्। मधाना । ना-ना द्राञ्चाचारान जिल्लाहित (वंदना-यात्री कथ्राउ वानिक्यः ॥ ६॥ উल्लामगढी थियाला त्ररः हान् भाग वक्रुग। मान जो समूम मुखिरेबंबा भी द्राणिनी मृडा॥ ७॥ #॥ व्यथ वनसः । চ্<del>তাক্রে</del>ণৈব ক্তাব**ভংস**। বিষ্ণ মানাক্ণনেত্রপদ্ম:। পীতামুর: কা-क्षेत्र ठाक्रांस्ट्र। वसल्द्रारमा युवजी शियक।। >।। जून्छ। मानाछि जूनी-অযুক্তা নৃক্তালতা কল্পিত হার্য্তি: । চ্তা ऋद्रः भागियूरंग वर्ष्ठी कवाकः ণান্ধী তড়িকেরিতেয় ।। ১॥ সংগী-ত গোষ্ঠাযু গরিষ্ঠ ভাবে সনাশিতা गायन मञ्जूनारेयः। धर्वकिनी नृश्व भारभद्या मा भक्त्मी भक्षम (वर-বেত্রী।। ২ ।। উরসি কেশচযস্য সু-সার বিদ্ধতী শ্যনোথিত চাক্-विण्णि जालक विल क्णा-की जाम्बा निन्छ। क्षिका जूरिकः ॥ ०॥ मधी कनारैभः भविशामाः माना विरयाणिनी कांच विरयांग (न-रू। शीनखनी छिव थता शुनुखा मात्रामा मूकमी शर्वनक्षदीय ॥ इ॥

कार्गाद्भावाविश्व सभू नुकानी म् 📢 । তি সা মঞ্ল ক্জিতানি। কালা-खिक गरुमनाः भुत्माय मा ७ জ्ज्री বেশ কলে:চিতাহী।।৫।। অখ্যা-**भयञ्जी निक्राभिष्ठ।** तृत्तरः मञ्जीक **भा**न স্ত্রাণি বিবেচনাভিঃ। মনোহর। হার **ল**তাভিরামা সমস্ত ভাষা সশলা विष्णया ॥ ७॥ 🗱 ॥ जाय हिल्लानः **াহাসাভিলাসেন পত**ন্ পৃথিব্<u>য</u>াণ উত্থাপিত उৎक्रम भानिन्रेनरः। উল্লোল সঙ্গীত রূসৈ বিদক্ষে। হি-লোল রাগঃ কথিতো রসকৈ:॥ ১:। मय्त (कका भ्वाभाष्ट्रमञ्जी मय्त्रिका न्डा ७ड॰ किंद्रडी । मग्द्रकाडीव সিতি দধানা মাযুরিকা সংক্থিতা खनरेकः॥ ।। भुरमाय काल गृश **मः शुविक्षा भूमीश इंखाक्**ण गांक व-জা। সীমন্ত সিন্দুর বিরাজমানা जूतक भाना। किन मीशिक्यगार॥ সার্দ্ধ সথীভি বিজনে বসন্তী বিচিত্র বক্ষোজ নিতম্ব সঞ্চা! নিরীক্ষ্যমাণা নন দর্শণা যা সাদেশকারী কথিতা खगरेकः ॥ ०॥ छर्जु मेथाना हर्यशात विनरः निष्ययञ्जी भन्नरम्भ यानः। পুকান দাস্পত্য সুখে নিম্মা সাপা रिषा म कथिता कवीरेनुः॥ ८॥ क र्ण तथाना मूत्रल्झ यूगा स्तूत्र सूत

ক্ষোল মনোহরাকী ৷ মেলাননা চাক विलाल निका वहाक्र निक् क থিতা বডারী ॥ ৫॥ উৎপন্নগাত্রে भुषमाणवारि मानः भूनः कर्ड मना-শ্চিরেণ। ঝজ ৰ ভাবালিয়ত 🕫 দন্তী 🦠 निंदगात्रहाणी हर्शकिल कर्रे। ॥ ५ ॥ 🗱।। অথ কর্ণাটঃ। কুলাণপাণি স্ত রগাধিকাটো ন্যুর কথাতিসুক্থকা **ন্তিঃ। সূরৎমিত স্থিরসঃ পুশা**ি কর্ণাট রাগো হরিতালবর্ণ: 11 ১ **চির• নটন্তী শুভ রঙ্গমধ্যে স•প্রা**ৎ यञ्ची महिनः वमन्तः। সুগীত ভালে वृ क्ञावधाना नहीय नाही পরিশাन (म्हा॥ )। श्रनायक॰ পुञ्जवाङाधि-क्रा इमग्री मर्बगून वरुडी। यना नि मधिव उत्नाजि मुक्षा ज्लानिका ना ज्ञलपुखद्रीया ॥२॥ अध्याभवश्री **म्**कगात्र नात्रीः श्रीत्राम तारमञ्ज मू-(वन वन्नीः। वामखनाम्नं मृ विठा॰-শুকত্রী: ত্রীরামকেলী কথিতা কবী-रिन्मुः॥ ७॥ विरमय रैवनकात्र जी स-मखान क्लाविलारमन विस्मा १ यही। বৃহন্লিভয়া পরিপুষ্টদেহা বড়া পুল-য়ন্ত্ৰন ভায়ভব্যা ॥ ৪ ॥ ভর্ত্ত: नম॰ পাথনি সম্ভরন্তী পয়ো বিহারেণ সং রোক্হাণি।বিটিম্বভী সৌরভ নোদ-নানা কানোদ রাগিণু/দিতা ভণজেঃ

।। ৫।। ব্যাধৃতা নট নৃত্য পরিশুমেণ। वाना नीनाजिः मुम्ठी क्ठाम्दा । नहीनाः कन्यांनी कनयं अ अंडर्डी এণ পুস্থান মুখরিতা কিন্ধিণী ক लाभः॥७॥ #॥ व्यथ द्राग द्रागिन् ণীনা• ভাব নিৰূপণ•। মালব: শ্ৰীক शिल्लाला मलाव उपनन्तरः। गागः ্ৰ স্তি গায়কা ধীর সানন্দেন চত্তপ্তয়ণ ॥ বসভো রাগ: কর্ণাটো দ্বৌ বীরৌ ভব-**७:** क्यां । धानमी यानमी हित् ভৈরবী মাধবী তথা।। সূভগা পঞ্চ-भी नाष्ट्री (दालायात्री ह चक्तित्री। কামোদা চাপি কল্যাণী কোডা কে-माहिका जुड़ी॥ कोमाबी माग्बी हिव (मनकाती ह निकुछा। त्रामत्वली ह ভূপালী রাগিণ্য ক্ষেতি বিশেঙি:।। व्याननताः ना इंडि (शाका शीयस्त পানকোবিদৈ:। পুরবী কানডা গৌ-রী রামকীরী চ দীপিকা। আশাবেরী

বিভাষা চ বডারী চ গড়া তথা।।

এতাশ্চ নবরাগিণ্যে বীরাংশে গান

मृखमः। (वनावनी ह मामात्री न-

वि**छ। १**ठेन छात्री ।। रेक्ना गिन्ना गिनी

চাপি নোরহাটী চ পাহিডা। কৰ

ণা-শা বিজানীযাৎ সম্ভৈতা রাগ-

যোবিতঃ॥ রাগেণ রসভাগেন বট্

রাগতৃ রেষ্ জ্ঞাপনার্থ মতত্রয় ।। ইতি जःगी उनारभानात्र भिवनात्रम्युः-वारह ३। ७ व्यथ्नारयो ॥ त्रागवृर्गः **भु** कामरहवः॥ थहिद्र-वृक्तः । इंडि स्मिनि ॥ कन्नुहूर्नः । इंजि मदद्रावनी ॥ नाकात्रमः । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। রাগছম: शु<sup>•</sup> कानरत्यः । इंडि শব্রহাবলী।। রাগেণাছমে তি ॥ त्रागमः पृ टिज्र**ीक्**णः । इंडि রান্ধনির্ঘণ্টঃ।। রাগদাভরি ত্রি।। রাগদা**লিঃ পু**॰ সস্রঃ।ইতিরাজ: निर्घण्डः ॥ রাগপুষ্ণ: थु॰ दक्कः॥ त्रकाम्मानः । इंडि ब्राकनिर्घणेः ॥ রাগপুল্লী জ্ঞী জবা। ইতি রাজ-নিঘণ্ট:॥ রাগপুসব: পু॰ বফুক:।। রক্তামানঃ । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। রাগযুক্<sup>®</sup> পু• মাণিক্য°। ইতিরাজ-নিঘণ্টঃ ৷৷ কমিংশিৎ প্তকে রা-গদৃক্ইতি পাঠোপি বিদ্যুতে॥ রাগরজ্বঃ পু॰ কামদেবঃ। ইতি नक्तज्ञावनी ॥ রাগলতা জ্রী কামদেবপত্নী।ইতি क देश्यतः॥ जि॰ममागिनीयू ह। करूगाननर वी- | द्रागव्छः পৃ कागएवः । ইভি

र्वद्याना ॥

রা বিষ্টেব: পু॰ দাডিস দাকাযুক্ত মুন্নুব:। অস্য গুণা:। ফচিকারিত্ব া লঘুপাকিত্ব॰। বাত পিত্ত ক্ষা বিরোধিত্ব। ইতি রাজনক্ষত:।। রাগসূহ• ক্লী ত্লাস্বা। পউস্বা। ইতি মেদিনী।।

রাগান্দী) জী নঞ্জি। ইতিরাজ: রাগাঢ়্যা) নির্ঘণ্টঃ ।।

त्राशाकः जि व्यामाः मञ्जामानित्र्यः
। यथः। व्यामाः वत्रविः मञ्जाया

क्ञि शिक्षामा बनः। म कीवारमाः

क्शि वाशाक पूर्णामान्छ माउदि

॥ इंडि भद्रांना ॥

রাগাশনিঃ পু•ুদ্ধ:।ইতি বিকাও শেষ:।

हाणि की विस्थानाती। इंडि काष्ट्रा । विस्थानाती। काष्ट्रक्रम्। । २९। ताणिनी नाम मः का ठ व्हा छ। एमसे मुग्न म् जाकी मान उत्पर्धी नीमक्षिण म्यांका। । इंडि पानमभूतारम् ८৮ अद्यापः ।। क्य-कि नाली बच्चीः। इंडि भूतानः ॥ अपुणाना- न ्ति। इंडि स्वायुद्धः।। व्यानाः विवत्ताः त्रागमायः पृथ्रेदाः।
त्रानी जि व्यत्त जः।। कामूकः। इंडि
विश्वः।। त्रङ्का। इंडि मिहिनीः।
ङ्गथानाऽविष्मयः। छट भर्यायः।
ज्ञाक्तः २ वङ्जत्रकिष्मः २ छहकः
विषः । व्याप्तः। जिङ्कदः।
निषः । व्यापतः। जिङ्कदः।
निश्वानुनाणिदः। वृज्ञाद्वः। इंडि
त्राक्षनिर्यः।।

রাথ ঋড শক্তৌ। ইতি কৰিকল্পদনঃ
।৷ ঋ অব্বাবং ৷ড বাবতে। শক্তিঃ
সামধ্যণ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

রাঘব: প্ রানচলু:॥ নহান্স্ স্বান্তলু:॥ নহান্স্ স্বান্তলু:॥ নহান্স্ স্বান্তলু:॥ নহান্স্ স্বান্তল্য ক্লাহ্বান্তল্য প্রাণানি রাঘ্বান্ত্র ক্লাহ্বান্তল্য কলাহ্বান্তল্য ক্লাহ্বান্তল্য কলাহ্বান্তল্য কলাহ্বান্তল

নাজবং ত্রি মৃগলোমকাতবজ্ঞানি।
তৎপর্যায়:। মৃগরোমকং ২। ইত্যার:॥ রজু মৃগতেন: ততো জাতাদ্যথে কঃ পশবোপি মৃগা ইতি
কট্যা নেযানি লোমক মপি কয়লাদি রাজবং। ইতি তট্টাকায়াং

ভরত: 11

রাজণ ক্লী পুশ্লবিশেবং।রস্থন ইতি ভাষা। অস্য শুণঃ।রক্তপিত না-শিত্বণ ইতি দুব্যগুণঃ।।

মাজ পাঞাণ দীপ্তো।ইতি কবিকল্প-ফন:।। পা অররাজে । ঞারাজ-তি রাজতে। ণরেজত্ঃ ররাজতুঃ।

्र इंडि मुर्गामानः॥

त्राक्षकः क्षी न्नजन्दः। इञ्जनतः॥

त्राक्षमः भूः॥ मीखिकात्रकः वि॥

त्राक्षकम्यः भूः कमञ्जविष्णयः। यथा

। कामञ्जर्धः भूग्वस्या नीला व् जीवमयकः। कमय भिगको त्राक्षः

कमस्य १व्यक्षता भूगकः॥ इंडि को। ध्रः॥

রাজকন্যা স্ত্রী কেবিকাপুল্ল ৷ ইভি রাজনির্যণ্টঃ ৷৷ নৃপসূতা চ ৷৷

ब्राजकक्क ही छी हीनाकक्क हो। इंडि ब्राजनियन्त्रः॥

प्राक्षकरणकः शुः जुनुसुरु।। हेिं जाक्षनियंक्तः॥

রাজকীय: ত্রি রাজসম্বর্জা রাজ কস্যায়ণ ইড্যার্থে গীয় পুড্যায়েন সিদ্ধাঃ।।

রাজসনার: পু॰ রাজপ্র: । তত্র বর্ণনীযানি যথা । জনারে শস্ত্র শান্তে আ কলা বল গুণোছুবা: । वार्गानी थूत्रनी द्रामञ्कि: जूज-गञारय: ॥ ইভি कविकन्ननजायाः > खवक: ॥

त्राह्मस्याखः भ् दार्शकी। हैि किंग्यतः॥

त्राह्मत्वायाञ्की क्वी सिक्षाकितित्वयः। वियाद्यात्रहे हेि हिन्ती ज्ञाया। वियाद्यात्रहे हेि हिन्ती ज्ञाया। विवाद्यायः। हिल्पितंकार भी उन्भूष्टि भित्तंकार भी उन्भूष्टि विवाद्यायः। व्याप्टि विवाद्यायः। विवाद्यायः

রাজগানি জি রাজসয়য়ি। যথা।
অন্তঞ্চ সম্থকর্ষে রাজগানি চ
গৈশুন । গুরোশ্চালীক নির্বন্ধঃ
সমানি বৃক্ষহত্যথা। ইতি মানবে
১১ অখ্যানঃ।। রাজনি বা তেনাদীনা পরেষা মরণফল দোষাভি ।
খানাইতি জ্লুকভটঃ।। অপিচ
। অপুশ্রস্যধন প্র্যভিগানি ভদ্

চাবে মাতৃগামি তদভাবে ত্যুত্-পামি তদভাবে ভাতৃপুগ্রগামি ত-দভাবে সঙ্গল্যগামি তদভাবে বন্ধু গামি তদভাবে শিব্যগামি তদভাবে ভাবে সহাধ্যাবিগামি তদভাবে ব্যাহ্মণ ধনবৰ্জ্জণ রাজগামি। ইতি দাবভাগগুভৃধৃতবিষ্ণুবচনণ।

রাজগিরি: পু॰ শাকভেদ:। তথপর্য্যায়:।রাজাদু: ২ রাজশাকিনী
এরাজশাকনিকা ৪।অস্য গুণা:।
ক্চ্যত্ত্বা পিত্তনাশিত্ত্বা শীতল ত্ত্বা গুলস্য তু অতিশীতলত্ত্বা অতিক্চ্যত্ত্বা ইতি রাজনির্ঘন্টা। রাজগুবি: পু॰ মৎস্যবিশেষ:। ফলুই

**इं** ि ভाষা। यथा। ফলকী স্যাहि

ত্রফলী রাজগ্রীবো নদার্মদঃ। ইতি

বিকাওশেব: ।।

রাজ্য: তি তীক্ষ:।ইতি তিকাওশেব: ।। রাজহন্তা। যথা । অনম্প
দ্থারি পুরানলোজ্জ্বলৈ নিজপুতাপৈ বলযা জলজুব:। পুদ্ফিন্ডিস্কুত্য জ্যায় সৃষ্ট্যা ররাজ নীরাজন্যা
স রাজ্য:।।ইতিনৈষ্ধপুথন সর্মাঃ।
রাজচিক্লক ল্লী উপস্থ:।ইতি শন্দ্রচন্দ্রিকা।। চিক্লানা জ্লী পু- বিভা

ককানা বাজা ইতি বুংৎপন্ত্যা

जिषः॥

রাজজদু: জ্রী পিওথজুর:।ইজি মেদিনী।। মহাজদু:।ইজি রাজ; নিঘণ্ট:।।

রাজজন্মী প্ ক্ষ্যরোগঃ। যক্ষ্যতে
পূজ্যতে রোগরাজন্বাৎ যন্ধা যক্ষ
ক্ত মহি অন্তহাদি ভাসুসিসিতি
মন্চবর্গতৃতীযাদি রিত্যেকে ওদা
জক্ষ ভক্ষ হসনযো রিত্যস্য ক্পশ্রাজযন্ধ শব্দোপ্র । ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ।।

রাজত • ত্রি রজতনির্মিত । যথা।
সৌবর্ণ রাজত তানু পিতৃণা পাত্র নুচ্যতে। রজতস্য কথা বাপি দর্শন দান নেব বা।। ইতি নাৎ-স্যে ১৭ অধ্যায়ঃ।। রজতে ল্লী।।

রাজতক: পু॰ কর্ণিকারবৃক্ষঃ॥ আ-রগুধ:। ইতি রাজনিঘট:॥

ताबलका जी भूझिति म्यः। उट भर्यशयः। भरामरा २ वर्गभूझः ७ ज्यानः ८ ज्यालकः ६ मृगूझः ७ मूर्वभूझः १। ज्याश छ्वाः। क्या-यदः। क्क कातिदः। ठक्ष्युदः। र्यम्दः। क्रश्दः। मृत्विदः। मृथ वल्ल ज्यकः। रेजि ताबनियंकः॥ ताबला जी ताबदः। ताद्धा जाव

রাজতা জী রাজত্ব•।রাজ্ঞোভাব ইত্যথেরাজন্শদাৎ ত পুত্যয়েন বিশ্বা।। ब्राज**ामः भू ख्वाक**र्कः। ইতি শব্दवावनी ॥

রাজভিনিষ: পু• সুথাশ:। ইতি . হারাবলী॥

রাজত্ব প্লা রাজতা। রাজ্যে ভাব ইত্যর্থে রাজন্শবাৎ ত্ব পুত্যবেন নিয়ম ।।

নাজদণ্ড: পূ॰ রাজশাসন । যথা।
উনৈকাদশবর্ষস্য পঞ্চবর্ষাধিকস্য
চ। চরেদ্গুক্: সূহৃদ্ধাপি পুর্যাশ্চি
ত্ত বিশুদ্ধয়ে। ততো ন্যুনতরস্যাল্য ন পাতক । ন চাস্য রাজদণ্ডোপি পুর্যাশ্চিত্ত ন বিদ্যাল্য । রো বচন ।।

ব্লাজদন্তঃ পুণ দন্তানাণরাজা। উপ-রিশ্রেণীস্থ নখ্যবর্ত্তি দন্তম্বয়ণ। যথা । রাজদন্তৌ তু মধ্যস্থাবুপরিশ্রেণি-কৌ কুচিৎ। ইতি হেমচন্দুঃ।।

ज्ञाजतम्भायः भू ज्ञाजतम्भाः। ज्ञा-क्रकतः। वेषम् न ज्ञाका हेण्डार्थ ज्ञाकन् भपातम्भीयभुग्रायन नि ज्ञाः॥

त्राकथञ्तकः भू वृश्क्युतः। इठि किन्छिर ताकिन्यिन्छैः॥ उत्राप्तर्याः यः ताकयुख्तभाष्य मुद्धेवाः॥ त्राकथुख्तभाष्य मुद्धेवाः॥ यथा। त्राज्ययान् भूवक्तामि यथा বৃত্তো ভবেমৃপ:। সম্ভবক্ষ যথা তস্য সিদ্ধিক পরনা যথা।৷ ব্রাক্ষ• शास्त्रन मःकातः क्वियि यथा विधि। সর্বস্যাস্য यथा न्यायः क-র্ভব্য পরিরক্ষণ ॥ অরাজকে হি লোকেম্মিন্ সৰ্বতো বিষ্ণতে ভযাৎ ারকার্থ নস্য সর্ব্যরাজান ন্ मुबद शुजुः ॥ हेन्स्रानिव यमाका १। মগ্ৰেষ্ট বৰুণস্য চ। চন্দু বিত্তেশযো শৈচৰ মাত্ৰা নিৰ্দ্নত্য শাশ্বতী: ॥ যনাদেবা সুরেন্দ্রাণা মাত্রাভ্যে নিৰ্মিতো নৃপ:। তমাদভিভব-ত্যে**ৰ সহ** ভূতানি তেজসা॥ তপ-ত্যাদিত্যবদৈষ চক্ষু বি চ মনা সি চ ৷ ন চৈন• ভূবি শক্ষোত্তি কশ্চিদ-প্যভিবীক্ষিতৃ•।৷সো ২গ্নি ভবিত্তি বাযুক্ত সে। হক্ক:সোম: স ধ্র্যরাট্ । म ब्रावितः म वक्षः म मार्चनुः পুভাবতঃ ৷৷ বালোপি নাবমন্তব্যে মনুষ্য ইতি ভূমিপঃ। নহতী দেব-তা ছেষা নর্জপেণ ভিচ্তি ॥ এ-কমেব দহত্যগ্নি নর দুক্পস্পিণ । হল দহতি রাজাণি: সপশ্-म्वर मक्ष्य ।। कार्यः भा श्वकः শক্তিঞ্ দেশ কালৌচ ভত্তঃ হ **ৰুতে ধ্যমিক্যথে বিশ্ব**র্প পুনঃ

भूनः ॥ यम् भुनारम् भगा 🗐 र्विज-খিশ্চ পরাক্ষাে । মৃত্যুক্ত বস্তি कारि नर्बटिकायया हिन:॥ उ॰ যস্ত দ্বেষ্টি সংমোহাৎ স বিনশ্যত্য সংশয়। ভদ্য হাশু বিনাশায় রাজা পুৰুক্তে মন: ৷৷ ওমাজ্মৰ্ম ব্মিষ্টেবৃ স ব্যরস্যের বিপ:। অনিষ্টঞ্চাপ্য নিষ্টেষ্ ত পৰ্মা ন বিচালযে ।। ত-স্যাৰ্থে সৰ্বভূতানা গোপ্তার ধর্ম মাজ্যজ । বুন্ধতেজোনয দও মস্-জৎ পূৰ্ব মীশ্বর: ।। তস্য সর্বাণি ভূতানি স্থাবরাণি চরাণি চ। ভ-যান্ডোগায় কল্পত্ত স্বধর্মান্নচলম্ভিচ ॥ ७ (मण भावा) मकिक विम्रा-कार्यका उकुछः। यथाई उ: मः भुगरयज्ञदत्रवन्ताय वर्खिष् ॥ म त्राजा পুৰুষো দণ্ড: স নেতা শাসিতা ह मः । ठड्नां भानुभानाकः अर्थात्रः পুতিভু: মৃত: ॥ দণ্ড: শান্তি পুলা: সর্ব। দণ্ড এবাভিরক্ষতি । দণ্ড: সুপ্তেষ্ জাগর্ভি দণ্ড ধর্মা বিদু রু ধাঃ ।। मनीका मर्जः मनाक् मदा तक्षः यि भुद्धाः । यमभीकः। भुनीउस विनामविक मईकः॥ यान न मुन्द्यः मुका प्रखासिक प्रकार किन्तु स्था । मृत्य মৎস্যানি বাপক্যন্দুরলান্বলব खदाः॥ जन्म काकः भूरवाषामः

**याविद्याक्षिय उथा। याम्यः न**-'স্যাৎ কম্মি'লিৎ পুবর্ত্তেতাখরো-ন্তর•॥ সর্বোদণ্ড জিতো লোকো দু-र्वाखः हि मूहि नद्रः। प्रथमः हि छ-যাৎ সর্ব জগজোগায় কল্পতে।। দেব দানব গন্ধর্যা রক্ষাণসি পত-গোরগা: তেপি ভোগায় বল্লন্তে मत्थितिय निभीषिठाः ॥ मूरवायूः नर्दवर्गाक जिल्हाद्रन् नर्दरन्ठवः । সর্বলোকপুকোপশ্চ ভবেদগুস্য বিভুমাৎ ॥ যত্ত্ৰ শ্যামো লোহিতা-ক্ষো দণ্ড শহরতি পাপহা। পুজা ন্তত্ৰ ন মুহ্যন্তি নেতা চেৎ সাধু পশ্য-তি ॥ তস্যাহু: স**-পুণেতার**• রাজ:-नः मञ्जवादिनः । मभीक्युकाद्विनः প্রাক্তঃ ধর্মকামার্থকোবিদং ॥ ত॰ রাজা পুণ্যন্ সম্যক্ ত্রিবর্গেণা-ভিবৰ্জতে। কামাত্মা বিষম: কুদ্ৰো म् एक्टेन्य निष्ट्नप्रक ॥ म्राप्ता क् ज्-মহত্তেজা দুর্জার শ্চাকৃতাত্মভি:। थर्मा विठलि ७ १ इ नृशस्त म वास्तव ।। ততো দুর্গঞ্চ রাষ্ট্রঞ্চ লো-কঞ্চ সচরাচর । অন্তরীক্ষণতা -रेम्घव मृनीन् (स्वा॰म्घ भी प्रत्यू ॥ (म। १मशायन म्एन नुस्त्रनाक्छ-বুজিনা। ন শক্যে ন্যানতো নেতৃ• সক্তেন বিষ্যেষ্ চ।। শুচিনা সভ্য

मस्त्र यथा भाजानुमातिना। भुत-তু পক্যতে দণ্ড: স্মহাযেন ধীম: **छ।** ॥ सत्रार्थ्ड् नतायवृक्तः मताकृण प-ওক্ত শত্রু। সূত্ৎ যঞ্জিক্ক: রিঞ্চেযু वाकारायुक्तमानिजः॥ वयः व्खन्र न्भाउः निलाक्षामि कीवजः। विखीर्याए याना व्यादक रेखनिवन्तु রিবাস্তুসি ॥ অভ্ৰ-বিপরীত্স্য ন্পতে ব্দ্বিতাল্ন:। স্কেপ্তে যশো লোকে ঘ্তৰিন্দু বিৰাম্ভনি।। स्य (स श्राम निविश्वानाः मर्द्यः अनु शृह्मः। वर्गनामानुमानाव विका স্টো ৎভিরক্ষিতা ॥ 🕸 ॥ তেন যন্মং সভূত্যেন কর্ত্তরণ রক্ষতা পু-কাঃ। ভত্তদ্বো ২হণ পুৰক্ষ্যানি যথা-वनन्भ्दंभः ॥ वाक्षणन् भ्यूर्भाः नीउ भाउकथाय भार्थितः। बिवि मा वृक्षान् विमूष खिरश्च खाक्ष नाः সনে 🏿 বৃদ্ধাণ্শ্চ নিভ্যুণ সেবেভ বি-शुन (वरविषः भूठीन्। वृष्क्रभवी शि সতত রক্ষোভি রপিপ্রতে ॥ আপি নিত্যশ:। বিনীতাল্মা হি **নূপতি ন বিনশ্যতি ক**হিচিৎ ॥ ব-হবো হবিন্যান্ন প্রাজান: সপরি হৃদা:। বন ছ। অপি রাজ্যানি বিন

या भुजिरमित्र ॥ (वर्गा विनर्छ।

श्विनयामञ्घ टेक्टव भाषिवः। पृन् मारमा यवन रेम्हव मृगुरशा निमि क्रैं-व ह ॥ शृथ्स विनवानां कार भाखवान भनु (त्रव ह। ऋ (व्रतन्ह श्रेनश्रर्य) तु।-व्यागुरिक्ष गाविजः ॥ देवितिराज्य ज्ययो॰ विष्ठा॰ मखनी जिक्क माचि औ॰ । আমিক্ষি কীঞ্চাত্ম বিদ্যাণ বার্ত্তা র-ञ्चाःण लाकजः ॥ इन्त्रियानाः कत्य যোগণ সনা তিপ্তেদিবানিশণ। জি-তেন্দ্রিয়ে হি শক্রেতি বলে স্থাপ-বিত্ৰ পুজাং॥ দশ কাম সমুখানি ख्याद्धे काषजानि ह। यात्रनानि मृत्रञ्जानि भुगरञ्ज विवर्क्करंट ॥ का-माज्य भूमाला हि वामानयू मही পতি:। বিযুজ্যতে হর্থ ধর্মাভ্যা• कारफश्चावारेनव कु॥ मृगशाका मिवास्र भन्नीवामः खिर्या समः। ভৌৰ্য্যত্ৰিক্ষ• বৃথাট্যা চ কামজো मण्यका गणः ॥ रेशमन्। जाङ्ज॰ पुष्ट देवान्यार्थम्दन । वागु अन-ঞ্ পাক্ষ্য কোষজো হপি গণেঃ **২**৪৯: ॥ দ্বে। রপ্যেত্যাে **মূল**• य अर्ख कराया विषृ: 1 छ याज्ञन क्षराह्माङ छद्धारवजावुर्छ। गली ।। भान सका जिय रिक्ट मृगया ह यथा क्रम•। এउट कष्टे इप• विन्ता-हरूक कामल গণ।। দওন্য পा

ব্ৰাজধ

**छन्दिक्व वाक्नाक्य्यार्थम्या। का**ं খুজৈ হপি গণে বিদ্যাৎ কষ্ট মে: ভব্তিক সদা ৷৷ সপ্তক্স্যাস্য বর্গস্য नर्व जिवान्यकिंगः । भूवं भूवं खक्छत्र विम्याद्यम्य भाषावान् ॥ ব্যসনস্য চ মৃত্যোক্ষ ব্যসন কই মুচ্যতে ৷ ব্যসন্ধো ২ংখা বুজতি স্ব-र्याज्य व्यननी मृजः ॥ (भोनान् **माज**े विषः मृद्रान् जक्तवकान् अत्वाप्तः তান্। সচিবান্সগু চাঙৌ বা পু জন্বী ত পরীক্ষিতান্।। অপি যৎ সুকর• কর্ম তদপ্যেকেন দুষর•। বি-শেষতো হসহাযেন কিন্ত রাজ্য ম (श्वाप्य ।। टेंड: नार्कः विख्यमिख्यः সামান্য সন্ধি বিগুহু । স্থান সম্-मय॰ खिखि॰ वाका शुभागनानि **छ**॥ তেষা স্থ সমভিপাৰ মুপলভ্য পৃথক্ পৃথক্। সমস্তানাঞ্চ কার্য্যেষু विष्धाकृष्ठ नाजानः ॥ नर्द्ववास्त्र বিশিষ্টেন ব্ৰাহ্মণেন বিপশ্চিতা ৷ मखराय भन्नमः मखः त्राकः वास् গুণ্ড সংযুক্ত ।। নিত্যু তিমান সন্। খন্ত: সর্বকার্য্যাণি নি: ফিপেৎ। (उ-ন সাজা বিনিশ্চিত্য ভতঃ কর্ম স-भावाख्य ॥ अन्यानित भुक्रहीं उ मूठीन् शुद्धानविष्ठान्। সন্যুগর্থ नगरकू नगाउगन् मूलबीकि जान्

।। নির্বর্ভেভাস্য যাবন্ডি রিভি.কর্জ-ব্যতা নৃভি:। তাবতো হতন্দুতান্ मकान् भुक्तवी उ विष्ठक्षणान् ॥ एक-यामर्थि नियुक्षीज भूत्रान् मकान् सः लिएजान्। भूठीनाकत्र कर्यास्त्र छी-क्त अ निर्विणान ॥ म्डरेक व भूक ही ত সর্বশাল্প বিশারদ•। ইঞ্চিতাকা-त्र तिडेखः भूति मकः स्वाप्त छ ।। जन्द्रकः पूठि फंकः मृजिमान् (मण कालिदि । दशुप्रान् वीउंजी बंग्पी मूर्ड<sub>धुर</sub>ा**द्धः भुने**म्राड ॥ यभार्डा দও ীয়েতো দণ্ডে বৈন্যিকী ক্রিয়া । নৃপতৌ কোষ রাষ্ট্রে চ দূতে সন্ধি বিপর্য্যৌ॥ দূত এব হি সন্ধত্তে ভি-बर्खाद ह म॰ इडान्। मूड खर अक-**তে** কর্ম ভিদ্যম্ভে যেন বা নবা ॥ **স**-বিদ্যাদস্য কৃত্যেরু নিগ্ঢেঞ্চিত চে-প্রিতঃ। আকার মিক্সি**ড** চে**ই**।° ভ্তে । বৃদ্ধা চ কৰি বিত ।। বৃদ্ধা চ সর্ব তত্ত্বেন পররাজ চিকীর্ষিত। তথা পুगङ्ग गाजि। अष्यथाञ्चान ने ने ने जिल्ला (य९॥ काञ्चल नम्भामनाम नार्याः शुाय मनादिलः तम् । भानजनामसः अजीवाः रम्भ भावरम् ॥ धनुपूर्गः নহীদুগ মনুৰ্গ বাৰ্ক মেব বা । मृक्णं शितिकृषं वा **मनान्िउ व**-लिए भूदर ॥ महिंग जू भुराङ्गन

भितिपूर्ण गमानुष्य । वया हि वङ् छात्रान नित्रिपूर्गः विणिष्रारः ॥ बीनप्रान्प्रान्प्रान्त्रुञ ख्रिकाः मृगगर्खा শ্বাপ্রা: ৷ তীণ্যতরাণি কনশ: প্রব্ হ্মনরামরা: ॥ যথা দুর্গাশ্রিতানে-তালোপ হি পত্তি শত্তবঃ। তথারয়ো ় ন হি॰সভি নৃপ॰ দুর্গ সমাশ্রিভ॰॥ এক: শত॰ যোধ্যতি প্রাকারছে। খনুর্ধর:। শত দশ সহস্যাণি ত স্বাদ্দুর্গণ বিধীয়তে ॥ ভৎস্যাদাযুধ जम्भकः धन धार्त्यान वाहरेनः। <u>व</u>ा-कारेगः निन्नि र्घ रेख र्यवस्मानान-কেন চ ॥ ভস্য মধ্যে সুপর্য্যাপ্ত কা-त्रराष्ण्रस्भाषानः । ७४ मर्बर्क् म्जू बन र्क ममदिज ॥ 🗱 ॥ **उरक्षात्म्याद्यस्थार्थ्याः स्वर्गाः व**-ক্ষণান্বিতা । দলে মহতি সমূতা হৃদ্যা কপ গুণান্বিতা ॥ পুরোহি-**७क म**हीं ७ वृग्यास्य চ र्षिक । তে १मा गृशानि कर्यानि क्यूर रेबे-ভানিকানি চ ॥ যজেও রাজ িক্তু-ि विविधि द्वाछ मक्किरा:। **धर्मा**र्थः रेक्षव विर्भुख्या मन्त्रारखागान धना-नि ह।। भा•वर महिक गाँखिक हा-होनाहात्यविन ।। **म**ाहाताय श-রে:লোকে বর্ত্তেক্ত পি তৃৰমূষ্ 🛭 অধ্য-कान् विविधान् क्यां उब उब

বিপশ্চিত:।তে ২স্য সর্বাণ্যবেক্ষেত্র म्गा कार्याणि अई डा ।। आवृङ् :-नाः खक्रमाहिशागाः भूकत्वा छः (वर्। नृभाग सक्तरा एएव निधि ব্ৰু হ্লো হভিধীয়তে ॥ ন ত স্তেনা নচামিত্রা হরম্ভি নচ নশ্যতি। তমা-<u>मु</u>ाङ्घ। निश्राज्यत्र। <u>तु</u>ाऋागञ्चकरगा-নিধি:॥ ন ক্ষন্তে ন ব্যথতে ন বিন-শ্যতি কর্হিচিৎ ৷ বরিষ্ঠ মগ্নিছোত্তে-ভ্যে বান্ধণস্য মুখে হুত্ত ৷৷ সম ম-वाकार मान विख्य वाकावुत्व। পাধীতে শতমাহ্মু মনন্ত বেদপা-রগে।। পাত্রস্য হি বিশেবেণ শুদ্ধ-ধান তথৈব চ। অল্ল॰ বা বহু বা প্রেত্ত্য দানস্যাবাপ্যতে ফল ।। য়ে। সমো-खनाधीन ताजा जार्ठः भावयन् भु-জা:। ন নিবর্ত্তে সংগ্রামাৎ ক্ষাত্রণ थर्म मनुष्यतम् ॥ अःगुप्रासयः निवर्डि-षः भुकानारिकत भावनः। भून्या বান্ধণানাঞ্চরাজ্ঞা শ্রেযক্ষর পর ॥ আছবেষু নিথো ধন্যোন্য জিঘা॰-সভো মহীক্ষিত:। যুধ্যমানা: পর॰ শক্ত্যা স্বর্গ• যাভ্যপরাত্মথাঃ ।। ন-कृरें हो तागरेव ईम्यार यथामारना द्राप রিপুন্। ন কণিভি নাপি দিখে নাগ্র-জুলিত তেজনৈ: ॥ नह हनत् इन लाक्ष न दीव न क्टाइ लि। न

্মুক্তকে**শ• নাসীন**্ন তবামীতি বা किन ।। न जल न विजन्ना र न नग न नित्रायूषः। ना यूष्रमानः शनाउडः न পরেণ সমাগত।। নাযুধ ব্যসন भूषि नार्ड नार्डिभदीक्व छ । न ভীত ন পরাবৃত্ত সতা ধর্ম মনু মরেন্।৷ যস্ত ভীতঃ পরাবৃতঃ সং গ্রামে হন্যতে পরি:। ভর্ত্তর্যদুত্ত কিঞ্চিত্ৰৎ সর্ব• পুতিপদ্যতে ॥ य **ছাস্য সুক্ত কিঞ্চিদ্যুত্রার্থ মুপা**-জিত। ভর্তা তৎ সর্ব মাদত্তে পরা বৃত্ত হতস্যতু ॥ 🗱 ॥ রথাস্ব॰ হস্তিন• **छ्ब॰ धन॰ धाना॰ शर्म्न् क्रियः। यर्ब** দুব্যাণি **স্প**্ৰঞ্গ যে। যজ্জ :তি তস্য ভং ।। রাজ্ঞ চ দুনুক দার মিত্যে ष। विक्कि गुःजिः । ब्राङ्यः ह नर्ब (यार्थएङ्या माउव्य मभृथग् जिञ्।। এষে। হনুপক্তঃপ্রেক্তো যোধ ধর্মঃ মনতেনঃ। অমাজেমান চ্যবেত ক ব্রিয়ো মুন্রণে রিপূন্।। অলক্ঞেব लिञ्जि निक्षः ब्राक्षः भुषञ्जः । **রক্ষিত• ব**র্দ্ধাটের বৃদ্ধ• পাত্রেষু नि:किरम् ॥ এक इंडिय विनार भूक्षार्थ भूषाजनः । यमः निडः बनुष्ठानः सन्।क **अ**र्युगरङन्तिङः ॥ **ञ्चलक्ष भिष्टुम्**८७३ लक्षः इ**८क्टर्**द क्ट्या । दक्षिकः वकाराम्या वृक्षः

দানেৰ নিঃক্ষিপেৎ ॥#॥ নিত্য মৃদ্য 'ভদণ্ড: স্যাগ্রিভ্যু বিবৃত পৌক্ষঃ। নিত্য সংবৃত সংবার্য্যে নিত্য ছি দানুসার্য্যরে:॥ নিত্য মৃদ্যত দণ্ডস্য 🔻 কৃৎসু মুদ্বিজতে জগৎ। তথাৎ **স**-ৰ্বাণি ভূতানি দণ্ডেনৈৰ পুসাধ্যেৎ ॥ व्यथायरेयव वर्ल्ड ज न कथकन भारया। वृष्क्राजाति भुगुकाक मा-যা• নিভ্য• শ্বস•বৃত: ৷৷ নাস্য ছিদু• পরে। বিদ্যাদ্বিদ্যাছি দু পরস্য তু। श्र्ट्र कृषं हैवाक्यानि त्राक्विविद्र মাজন:।। বক বট্টিন্তবেদ্পান্সি •-হবছ পরাক্রমেশ। বৃক্বছাবলুম্পেত শশবह विनिञ्चाउर ॥ এव विजय-মানস্য যে হস্য সূত্র: পরিপন্থিন: । তানানদেশ পর্বান্ সামাদিভি-ৰুপক্ষি:।। যদি তে তু ন ডিঙেযু क्लारेयः भूषरेम ज्ञिन्तिः। मर्त्यरेनद <u> श्रुप्रहेश क्षेत्र क्षेत्र भागस्य ॥</u> नागरीना मुलायाना॰ ठउनानिना পণ্ডিতাঃ ৷ সামদণ্ডৌ পুশ•সন্তি নি-ভ্যা রাষ্ট্রাভিবৃদ্ধযে ॥ যথোদ্ধরতি নির্দ্ধাতা কক্ষণ খান্যঞ্চ রক্ষতি। ত থা রক্ষেম্পো রাষ্ট্রণ হন্যায় পরিপ-श्निः ॥ याश्नुका खबाष्टे• यः क-র্যব্যানবৈক্ষ্যা। সো হচিরা ভ্রশ্য-তে রাজ্যাক্তীবিভাচ স্বাক্তর ॥

भारीत कर्यनाट जानाः कीयछ जा **ণিনা• यथा। उथा ताञ्जामशि श्रानाः** क्षीयस्त्र द्वाष्ट्रेकर्यनाट् ॥ # ॥ द्वाष्ट्रेन्य 🕻 সংগ্ৰহে নিভ্যং বিধান নিদ মাচয়েৎ । সুসংগৃহীত রাষ্ট্রে। হি পার্থিব: সু थ (मथ्ड ॥ घरवा ज्यवानाः नक्षानाः ं सर्वा खला निविद्धिः । उथा गाम শতानाक वर्गामुद्धिमा मःगुरु ॥ গুনিস্যাধিপতি স্ব্যাদ্শগুনি প**্** তি তথা। বি**শ্বতীশ শতেশঞ্চ স**-হসুপতি মেব চা৷ গামে দোষান্স मूर्भान् गानिकः मन्किः स्यः। भः त्रमृश्चमत्मभाय मत्मामा वि•ः শতীশিন ।। বিশ্বতীশস্তু তৎসর্বণ माउभाग निर्वत्रयः । म॰ सम्गुः म শতেশস্ত সহসুপত্রে ম্বরণ ।। যানি बाबभुरियानि भुजाहर गुमिवानिः ভিঃ। अज्ञेशातिक्षनातीन शामिक खान/वाशूयार ॥ मनी वनस ज ঞ্জীত বিংশী পঞ্চ জলানি চ। গুমেং গুনে শতাব্যক্ষ: সহসাধিপতি: পু র । । তেবাং গ্রাম্যানি কার্য্যানি পৃথ ক্ কাৰ্য্যাণি চৈব হি। রাজ্ঞো ৎন্যঃ সচিবঃ শ্লিপ্স স্তানি পশ্যেদত ন্দ্রিতঃ মানগরে নগরে চৈক স্বর্ণ্যাৎ সর্বার্থ विञ्च हे । छेहि: श्वान शाबक्त भ न क्वांगानिव शुरु ॥ नजानन् श्रहः

ক্রামেৎ সর্বানেব সদা স্বয়ণ। তেখাণ व्खः भारतिगाय मन्त्रगाक्षित उहरितः া রাজ্ঞা হি রক্ষাধিকৃতা: পরস্বা मायिनः मठाः। ভ্ত্যা ভवन्ति भा-(यंग (उट्डा) इक्ष्मित्राः भूजाः ॥ य कार्यितकाडा र्थायव मृद्यीमुः **পाপচেতস:। (उवा॰ স**र्दस्नानाय त्राजा कर्गाट भुवामन ॥ त्राजाम्यं मू युकानाः जीगाः (भुष्य इनम् ) ह । পুত্যহু কল্লযেদ্ভি স্থান কর্মানু-क्षण ।। भाषा (मर्या भ्वकृष्टेम्) বডুৎকৃষ্টস্য বেতন । বাগ্মাসিক खर्था हात्रा धाना (मुग्छ मानिकः ।। 🚓 ।। ক্রয় বিক্রয় মধ্যান ভক্তঞ্চ স शिविद्य । (याश (क्रमक मान्युक्त) विभिक्ता पानियद क्रान्।। यथा ফলেন যুজ্যেত রাজা কর্ত্তা চ কর্মা-गाः। তথा विकार नृत्शा द्वारक्षे कन्न-यर नउउ कद्रान्।। यथान्नान्न मन-ख्याम्यः वार्यातका वट्म बर्ध्नमाः । उथाङ्गाङ्गः गृशे उरवता बाह्यम्। छ।-क्तिः कद्रः ॥ शकामान्नाग व्यापः যোরাক্তা পশু হিরণ যোঃ।। ধান্যা-নামপ্রনো ভাগঃ যগ্যে দ্বাদশ এব वा ॥ ज्याननी छाथ वज्ञागः छ साःम मध् मिन्याः। गक्तीविधि द्वसामाकः পুश्र म्ल फलमा ह।। भवनाक व्या-

माकः दिन्तमा ह हमांगाः। मृत्रायाः नाक ভाञानाः मर्बन्धान्यस्यम् ह ।। बि्यमाला भारती उन ताजाला।-बिवाट कदरा नह क्षुवामा मानी रम्हाजित्य। विषय वजन् ॥ 🕬। यज् রাজন্ত বিষধে শোুত্রিব: সীদতি ক্ষা তস্যাপি তৎ ক্ষুধা রাষ্ট্র মটি রেণৈৰ সীদতি॥ শ্রুতবিক্তে বিদিত্বা-ना वृक्ति धर्माा भुकन्नाय । भार ক্ষেৎ সৰ্বত শৈচন পিতা পুত্ৰ মি-वोद्रम• ॥ **म•द्रक**्रभारमा द्राख्डा य• ब्रक्ट धर्म भन्दर। (उनायू ईष्टंड ब्राड्डा मुविग बाड्डे त्मव ह ॥ यू-किक्षिरिभ वर्षेत्र। माभायए कद्र मः **क्किडः। व्यवहादिन कीवरः द्राका** ब्राष्ट्रे भृषश्चनः ॥ कासकात् निन्निन ৈচব শূদা কাজোপদীবিন:। এ-কৈক• কার্যেৎ কর্ম মাসি মাসি ম श्रीभिज्ञः॥ (नाहिन्स्यानाञ्चाना मूलः **পরেবাঞ্চাতিতৃ**ঞ্যা। উদ্হিদন্ হা জ্মনো নুল নাজান তাংক পীড় यथ।। जीक्स रेक्टव मृद्क महा का र्याः वीका गरीशिजः। श्रीकृ टेम्हव মৃদু কৈব রাজা ভবতি সন্মতঃ॥ অ নাত্য মুখ্যা ধর্মজ্ঞ প্রাক্ত দান্ত ञ्रलाप्नुजः। ज्ञाभरयनामान जिमान थिमः कार्याकान नृगाः॥ वदः नर्दः

विवारयम नििं कर्डवा मान्नानः। यू-क रेन्ठवानुमखन्द्र निव्वतः किमाः পুরা:।। বিকোশন্ত্যে যস্য রাষ্ট্রা-**ब्रि**वर मगुजि: शुका: । मःशमु তঃ সভ্ত্যস্য মৃতঃ স নতু দীবঙি া ক্ষত্রিয়স্য পরে৷ ধর্ম: পুজানামেব शानन । निर्मिष्ठेकना**डा**ङ। हि द्राज्ञा श्रामं युक्राउ ॥ उत्थाय श्र-শ্চিমে যামে কৃতশৌচ: সমাহিত:। ङ्डाविद्रा क्यां काई। श्विष्ट म শুভা॰ সভা॰॥ তত্ত স্থিতঃ পুজাঃ नर्वाः भुविनन्तः विमर्द्धारायः । वि-ज्ञा ह भुबाः नर्व। मञ्जायः नर **মব্রিভিঃ।। ‡।।** গিরিপ্<sup>ধ</sup> সমাৰ∙ হ্য প্রাসাদে বা রহোগত:। অরণ্যে নি:শলাকে বা মন্ত্রযেদবিভাবিতঃ॥ যদ্য মন্ত্ৰণ ন জানন্তি সমাগন্য পৃথ-श्वनाः । जक्रजाः श्विवीः जुरु कावशिकाणि भाषिवः॥ कछ मू-काक विषद्रा॰ छिर्यत्वानान् वरगाग-তান্। জী সেছ ব্যাধিত ব্যক্ষান্ম-জ্রকালে হপসার্থেৎ।। ভিন্দন্ত্যব-मञा मञ्जः रिजर्माञ्चाना खरेषद ह । ব্রিয় কৈব্ বিশেষেণ ভষ্মান্ততাদৃতো ज्तर ॥ मथ्यम्मत्न १ वर्तात्व या বিশ্বান্তে। বিগত ক্লমঃ। চিন্তবে**দ্ধর্য্য** কানাপান সার্দ্ধ তৈরেক এব বা ॥

পরস্পার বিক্জানা তেযাঞ্চ সমূ शार्क्जनः। कन्यानाः अञ्चलनिक कः ্ মারাণাঞ্চ রক্ষণ ॥ দূতসংপূেষণ 🕻 रेक्षव कार्य्यामयः ७रेश्वर ह। जन्नः-পুর পুচারঞ পুণিধীনাঞ্চ চেপ্তিত।।। क्टन ठाडेविथ कर्मा शक्कवर्गक उ ্ ভুত:। অনুরাগাপরাগৌচ পুচার• म ७ वन १ ।। सश्मन १ भू वा इक বিজিগীযোশ্চ চেপ্তিত ৷ উদাসীন भुहात्रक माञा रेक्टव भुगद्रञः ।। #।। এতাঃ পুক্তযো মূল মণ্ডলস্য স-মাসত:। অঙী চান্যা: স্নাখ্যাতা ছাদলৈব তু তাঃ মৃতাঃ।। অমাত্য त्राक्ट्रे मूर्गार्थ म् खार्याः शक्ष ठाशताः ৷ পুত্যেক কথিতা হেতা: সংক্ষে পেণ দ্বিসপ্ততি: ৷৷ 🗱 ৷৷ অনন্তর মরিণ বিদ্যাদরিসেবিন মেব চ। অরে রন-खत्र भित्र मृशाभीन उत्याः भन्न ॥ তান্ সর্বানভিসন্ধ্যাৎ সামাদি-ভি ৰূপক্ৰি:৷ ব্যস্তৈ শৈচব সমন্তৈ **\***५ (भोक्रदेश नियम ५ ॥ अक्तिक विश्र हेक्षिय यान नाजन (मव ह। दि थीजावः मः मुगक यए छनाः किछ-ध्ययः नता ॥ जाननत्थ्यव यानत्य नः कि विशुष्ट भव छ। कर्षि वीका পুযুজীত দ্বৈধ সংশ্য মেব চ।। निक्छ षिविषः विमामाजा विगुर

মেৰ চ। উভে যানাসনে চৈব দ্বিবিধঃ नः मुगः मृजः ॥ ननान यान कर्मा ह বিপরীত ভথৈব চ। তদাত্বাযতি সংযুক্ত: সন্ধি জেঁথে। দ্বিলক্ষণ: ॥ ৰ্য কৃত্ত কাৰ্য্যাৰ্থ ন্কালে কাল এব বা। মিত্রস্য চৈবাপকৃতে দ্বিবি-খো বিগুছ: মৃত:॥ একাকিন শ্চা-ज्यवित्क कार्या भारत यह ह्या। मः হতস্য চ মিত্রেণ ছিবিছ যান মু-**हुएछ ॥ क्वीनमा हेव्य क्वनामा हेव-**বাৎ পূৰ্বকৃতেন বা। নিত্ৰদ্য চান্-রোধেন দ্বিবিধ সূত মাসন ।। ব লস্য স্বানিন কৈব ছিতি: কাৰ্য্যাৰ্থ নিদ্ধযে। দ্বিবিধ কীৰ্ত্তাতে দ্বৈধ মা-एखना खनविष्ठः॥ अर्थ मम्मा-मनार्थक भीष्णानानम् भवुष्टिः। সাধ্যু ব্যপদেশার্থ ছিবিখঃ সংশ্যঃ म् जः ॥ 🗱 ॥ यनावशरह्मायजा मा-ধিক্য প্রব মাত্মন:। তদাত্ত্বে চাল্লি काः भीषाः उता मिकः ममाभूरायः ।। उनाद्व उटकाला ॥ यना भुक्ट्ठा মন্যেত সর্বাস্ত পুক্তী ভূপি। অ-ত্যুদ্ধিত তথাআন তদা দৰীত বিগুহ• ৷৷ যদ৷ মন্যেত ভাৰেন শৃষ্ট• পৃষ্ট বল স্বক। পরস্য বিপরী-ভঞ্চ ভদা যাযাদ্ৰিপু• পুতি 🔢 যদা ज् मा १ भित्रकी ए। वाहरनन वरन

न ह। जमात्रीज अ्यरवन भनेरैकः। সাস্ত্যন্ত্রীন্।। মনে/তারি॰ যদারা-का नर्वेथा वनवेखद्भः। उना विधा বল কৃত্বা সাধ্যেৎ কাৰ্য্য মাজ্মনঃ ।। यहा शत्रवणानास गमनीय उपमा ভবে । उपा जुन मुद्र कि भु• ধার্মিক বলিন নৃপণা নিগুহণ পু কৃতীনাঞ্চ স্বৰ্য্যান্মো হরিবলস্য চ । উপসেবেত ত॰ নিত্যু॰ সর্বধীয় ৰ্গুক্ যথা।। যদি ভত্ৰাপি সংপশ্যে-ত্লোৰ সংশ্য কারিত ৷ সুযুদ্ধ নেব তথাপি নিবিশক্ষঃ সমাচরেৎ ।। नर्स्वाभारिय खबा क्यां मी ठिक्तः পৃথিবীপতিঃ। যথান্যাভ্যধিকা ন স্তানিত্রোদাসীন শত্রেং ৷৷ আগভি-नर्बकार्याणाः उताङ्क विष्ठात्रारू । অতীতানাঞ্চ সরেষা তণ্দোষে **ठ उत्तृडः ॥ व्यायङ्गः स्वारायङ** ন্তদাত্ত্বে কিপু নিশ্য:। অঠাতে কার্য্শেষজ্ঞ: শত্রভি নাভিভ্যতে ॥ यरेथन नाजियनाश गिर्वाना পান শতবঃ। তথা সর্হ সংবিদ-यास्य नागानिका वयः।। यम्। ण्यान मालि धनति ताहै श्रु श्र छः। **छनात्मन** विशासन यायानित ब्रुड़- बरेनः ।। यार्गबीस्य ब्रुट्ड मानि বাবালারা নহীপতি:। কারুর

বাথটৈত্র বা নাসৌ পুক্তিয়থা বলং ।। অন্যেম্বপি তুকালেমু মদা পশ্যে-**कु**त• कर• । उन। यायाहिश्**रेश**र ব্যসনে চোণ্খিতে রিপো: 11 কৃত্বা বিধান- মূলে ত যাত্রিকঞ্ যথা বিধি । উপगृष्टान्त्रमरेकव ठाजान नगाः খিবাৰ চা। সংশোধ্য ত্ৰিবিৰণ মাৰ্গণ यज्ञिश्रक्ष वलः स्रकः। नाम्भवायिक কল্পেন যাযাদরিপুর॰ শনৈঃ ॥ শত্রু সেবিনি নিজে চ গ্টে যুক্ততরো ভ বেৎাগত পুত্যাগতে চৈব স হি কষ্ট-ভরে। রিপঃ।। দপুব্যহেন ভন্মার্গ• যাগাত শকটেন বা। বরাহ নকরা-ভ্যা॰ वा मृह्या वा शक्राउन वा।। य-তশ্চ ভয় নাশক্ষেত্ততো বিস্তারয়ে-ছল-। প্রঘেন চৈব বুংহেন নিবিশে**ত जरा** चय॰ ॥ (सनाश जि वदाश्याको नर्विषक निर्वासिए। यठक छय-गामास्ट शाही जा क्यायिक्षण । গুল্যা শচ স্থাপ্যেদাপান কৃত সং-জ্ঞান্ নমন্ততঃ। জ্ঞানে শু**দ্ধে চ জ**-**ण**ज्ञानजीतनविकातिनः।**:#।। अःह**-তান বোধ্যেদল্লান্ কান্- বিস্তার্থে-ছত্ন। মৃত্যা ৰজেণ চৈ বৈভান ব্যু-(इन कृष्ण (माधराष्ट्र ॥ **म**)स्त्रहारे**यः** जरा वृत्तापन्ति भो विले खेथा। रुक खना एउ ठारेन जनि ठर्माः

যুধৈ: স্থান 🕦 স্ক্ৰেতা 🗝 নেং-म्राः म्ह शक्षानाम् मृतरमन्डाम्। भीर्घान् वयुः रेक्टव नदान्यानीक्य-( যোধ্যে ।। পুহৰ্ষেদ্ৰ বৃহ্ছ ভা শ্চ সম্যক্ পরীক্ষ্যেত। চেপ্তা শৈচব विकाभीयामतीम् (याध्यका मिल ॥ ্র উপৰুধ্যারি মানীত রাষ্ট্রণচাস্যোপ 🏻 शीउरायः। मृषरगङ्गामाः नाउउ यदः ञामाप्रकन्ननः।। ভिन्त्राहिव उउ।-গানি প্রাকার পরিখা স্তথা। সমব-ক্ষন্যেট্রেন রাত্রী বিত্রাস্থেত্তথা ।। উপজ্প্যানুপজ্পেদ্বধ্যৈত্ব চ ভৎ कृष्ठ•। युःक ह रेमाव यु**रश्रक क**् যপুেশ্সূরপেভভীঃ॥ সাম্রা দানেন ভেদেন সমতৈ রথবা পৃথক্। বিজে जुः भुग्राङ्काकीय यूर्यान कमाहन ॥ অনিভ্যো বিজযো য্মাদৃশ্যভে যু थ्यानत्याः। शदाकवन्त मःगुास ভমান্মদ্ধ বিবৰ্জতে ॥ ত্ৰযাণাম शुभारामाः भूदिङ्गानाममञ्जूदि । তথা যুধ্যেত সংযক্তে। বিষয়েত রি-शृन् रथा॥ #॥ जिद्वा गम्भृ जरगप्त्र वान् द्राञ्चणः रेक्टव धार्मिकान्। सुप्तम्। পরিহারা শ্চ খ্যাপ্যেদভ্যানি চ ॥ मर्द्धवास विभिट्यानी नगामन চিকীযিত। স্থাপথেত্তত তথশ্য श्रविग्रह समयकियाः ॥ भूनागानि ह

**স**রী ত তেবা খর্মান্ যথোদিতান্ । द्रोद्रण्ड भृषायरहनः भुषान भूक्रेयः नर ।। जारान मिलुगकतः मानशः প্রিযকারক । অভীপ্লিভানা মর্থা-না কালে যুক্ত পুশস্যতে॥সর্ব ক त्याम्यायखः विधात रेमव मानुत्य । তযোদৈৰ্ব নচিন্ত্যন্ত মানুষে বিদ্যুত ক্রিযা।। সহ বাপি বুজেদ্মক্ত: সন্ধি• কৃত্বা পুষত্নত:। মিত্রণ হিরণ্য ভূনি। वा मलानार जितिश क्वा ॥ भार्कि-গুহিঞ্চ সংপ্রক্য তথাকলঞ্চে ম-ওলে। মিত্রাদ্থাপ্যমিত্রাদ্বা বাত্রা **ফল মবাপু** যাৎ॥ আক্রন: পার্ফি: প্রাছস্য নিয়ামকো রাজা ॥ হিরণ্য ভূমি সম্পুল্ড্যা পার্থিবো ন তথৈধ-তে। যথা মিত্র পুর লক্তা কৃশ ম-भागिक क्रमः ॥ 🗱 ॥ धर्मकः क्-ভক্তঞ্চ তুষ্ট পুকৃতি মের চ। অনুর ক্ত স্থিরারম্ভ লঘু নিত্র পুশস্যতে ॥ शुद्धः क्लीनः भ्द्रकः मकः माठाः র মেব চাক্তজ্ঞ প্তিমন্তব্য কষ্ট নাহ ররি॰ বুধাঃ ।। আবঁ/তা প্ক্ষ জ্ঞाন-भोर्ग्यं करूपविष्ठा। छोव-লক্ষ্যঞ্জ সভত মুদাসীন গুণোদযঃ॥ खोननकाः वरुशुमदः ॥ (क्याः শস্পুদাং নিভ্যু পশ্বজিকরী মা পি। পরিত্যক্রেম্পো ভূনি মাআর্থ

মবিচার্যন্।। আপদর্থ- ধন- রক্ষে-फातानुष्मक्ति त्रि । आजान न **७७॰ द्राक्तप्तादि द्राश धरेन द्राश ।।** সহ সরাঃ সমুৎপন্নাঃ পুসমীক্যা পদে৷ ভূশ•। সংযুক্তা•ক বিযুক্তা•-শ্চ সর্বোপায়ান্ সূজেদুধ: II উপে-ভার মুপেযঞ্চ সর্বোপাযা স্চ কৃৎ-স্বশঃ।এভত্ত্য সনাশ্রিত্য প্রবতে-তার্থ সিদ্ধযে।। উপেতার পাত্মান 1 উপেय॰ भाखवा॰ ॥ #॥ अव॰ मर्ब নিদ রাজা সহ সমজ্যে নজিভি:। ব্যাযাম্যাপ্লুভ্যমধ্যাহে ভোকুমন্ত: পুরণ বিশেৎ ৷৷ ভত্রাত্মভূতৈ: কাল-জ্ঞৈ রহার্য্যে: পরিচারকৈ:। সুপরী-किञ्माम् मम्याच्ये विवाशिकः ।। विष्येषु ब्रगरेन कान्य नर्बन्वरानि যোজবেৎ। বিষয়ানি চ রজানি নিয তো ধার্যেৎ সদা ৷৷ পরীক্ষিতা: खिय टेक्टन॰ व्यक्तानक धूर्निः । (व-णाञ्डल मः मुकाः स्मृत्ममः जुममा হিতাঃ।। এবং পুষত্ন স্বীতি যান भग्रामनाभरन। ज्ञारन भुमाश्रम देव সর্বালস্কারকেষু চ।। ভুক্তবান্ বিহ-রেট্রেব জ্রীভি রন্তঃপুরে সহ। বিহ্ন **ভ**্য ত্ যথা কাল• পুন: কার্য্যাণি চি-स्टर्ट ।। अवस्त्रक मः भागाप्ताम् षीय॰ পুন र्ज्जन॰ । বाহনানি চ সর্বাণি | রাজধুসূরকঃ পূ॰্ বৃহজুসূরঃ । ত**ে** 

শক্রাণ্যাভরণানি চাং সন্ধ্যাঞ্চো-भागा भूग्यामस्वर्भनानि भक्षस्य। ब्रह्मप्राथप्रायिनारिकव श्रुनिधीन्मक् চেপ্তিত।। গত্বা কক্ষান্তরণ ত্বন্যৎ 🕽 সমনুজ্ঞাপ্য ত॰ জন॰ । পুৰিশে-ভোজনার্থক জীবৃতো হন্ত:পুরণ পুন: ॥ ভত্ৰ ভক্তা পুন: কিঞ্চিভুৰ্য্য 🖟 धारियः भूक्षिजः। मः विष्णेख यथा কাল মুব্ডিটেছ গভন্নম:॥ এওবি-ধান মাভিঙেদরোগ: পৃথিবীপতিঃ । অস্বস্থ: দর্রমেতভু ভৃত্যেযু বিনি-याक्रायर ॥ इंजि भानाव १ व्यवताः यः ॥ 🗱 ॥ काली भूतारगांक त्राज्य-र्यः ৮৫। ৮७ व्यथ्रायसा मु हेवाः ॥ মহাভারভোক্ত রাজ্যমা: শান্তি-পর্বণি দুষ্টব্যঃ ॥ পদাপুরাণোক ताक्षयः वर्गथए७ २०৮ व्यथ्यात मुळेबाः ॥ ताजवानकः क्री त्राजभूतः। इंडि मद्वज्ञावली ॥ त्राज्ञथानी खो त्राज्ञथानिका। **७८**. भर्यप्रायः। (काउः २ द्राज्ञशानकः ५। ইতি শব্দরত্নাবলী।। স্বন্ধাবার: ৪। ইতি হেন্চন্দু: ॥ वाजवाना की मामाकः। इंडि রাজনিঘট: 11

भर्यश्रवः । त्रावध्रवः २ महान्तृः ० निष्यानुद्रकः ८ खाष्ठः ६ त्रावधर्गः ७। ইতি त्रावनिर्यातः ॥ व्यम् खगः भृद्रवाद्य पृष्ठेवशः ॥ त्रावनामा भृ भर्तिवः । ইতি त्रावनिर्यातः ॥

ब्राबनीजिः जी द्राङ्खाःनयः। यथा া নানা শাস্ত্রোজ ত বক্ষ্যেরাজ भी ७ मगुइयः। महिवाब निषः नाः क्ष ठानका जाद जागुरु ॥ इंडि চানক্যপণ্ডিত কৃত পুথন: স্লোক: ।। স। যথা। গদিত বলি শুক্রাভ্যা॰ শুরা ভাগবতো হসর:। পুাই ধ मीर्थ मःगृङः भुञ्जारम वाका मुख भः ॥ यनाय छ।। क्रमः द्राक्रम् य किः ত ভূবনস্যহ। অবিরোধেন ধর্মস্য व्यर्थामाङ्केनक यट् ॥ महम जान्गमनः कामवर्गक मक यटा भ त्राबर ह यहियः **পু এ ७८ कमा जा**-हत्। यथा नावाः नुवामान्यथा कीर्खि ভবেত্তব। यथा नाभगणा যোগ তথা হক নহামতে।। এত मर्थः नियः शिधाः काङ्गास्त भूकाया ভনাঃ। যেনৈতি হি গৃছেমাক নি-বদভি স্নিৰ্ তা: ॥ ব্দো ভাতি र्खना विशुः कीर्जिक यममा मह। তন্মান্যথাতে নিবস ন্তি পুঞ রাজ্য

श्चित्रप्र **वर्णा**ख्याम्याः । उथा यज्यायन मद् (इष्ट्रेग यथा यमञ्जी ভবিতাসি লোকে ৷৷ ভ্রমা সদা ব্ৰাহ্মণ ভ্ৰিতাযা ক্ষেত্ৰাবিভাযা দৃঢ় বাপিতাবাং। শুশুৰণাসক্ত স-मुख्यायाः अकिः भुवाडी इ नदाधिः পেন্দু: ৷৷ তমাদ্দিলাগুৱা: শু.তি শাস্ত্রযুক্তা নরাধিপাণ তে পুতিয়া-জয়ন্তে।। দিৰৈ। ৰ্যজন্ত ক্ৰতুভি দ্বিজে-न्तु। यञ्जाद्म श्रमान नृशमा भा शिः॥ তলো ২খ্যমন সম্পানা যাল্লনাখ্যা-পনে রভাঃ। সন্ত বিপু। বলে প্রা छाडा २नुका भवाभा हि॥ याधाय যজ্ঞ নিরভা দাতার: শস্ত্রজীবিন: । कवियाः मस रिएज्यम् भुकाभावन প্রমিণঃ ৷৷ যক্তাধ্যয়নসম্পন্না দাডা-র: কৃষিকারিণ:। পাশুপাল্য পু-व्यवंख दिनाता विभिन्नजीविनः ॥ तुः कान का दिय विषाः जना मुभुषान রভাঃ। শৃদ্যু: সম্ভুসুরশ্রেষ্ঠ তবাজ্ঞা। कार्त्रिगः सरा ॥ यसा वर्गाः खक्यं हा ভবন্তি দিভিজেখর। ধর্যাবৃদ্ধি স্ত-मा अर्रोष धर्मवृष्को नृत्भामयः॥ छ-माह्नर्गाः स्वर्गञ् छुरा कार्याः मना বলে। ভদ্জৌ ভবতো বৃদ্ধি শুদ্ধা-लो हानि क्राटा ।। हैन्ये वहः नावा सहामू(द्रान्तु। विनः सहाचा भ वज्व

ভুঞ্চীণ। ততো যদা জ্ঞাপয়সে করি-(क) इन्यः विनः भार वाहा मस्यं॥ इंडि वाम्रत १) व्यव्यायः ॥ #॥ অপিচ। এবং দত্ত্বা ততো রাজ্য मुक्ति हायाय श्रमंदि । उदाह मधूव॰ काकाः भूभः भूभवजाः वतः॥ ताः कारस्याभि ए भूध कर्ववाः भृगू छ-ন্মন।। ধरীছেৎ পরম ধর্মণ পিতৃণা काद्रग॰ उथा। माञ्चा १ विं नेक ৰ্ত্তব্যা হন্তব্যা পরদারিকাঃ।। বা**ল**া হাতাত হত্তব্যা হস্তব্যা জীবিঘাত-काः।भारता छ भन्न न्रवाय सम्रायाः পাৰ্জ্জিতেৰু চাাৰ চিন্ন তি ষ্ঠতে স্থাপি नर्दि मान्।: कलाइन। ब्रक्क भेगक्ट (रमः ज्ञ ब्रायदमार्क्किः ॥ नि-ত্যোত্মকেন স্থাতব্য নমাত্য বচন क्कः अभारका यहारा तुगार भूख कार्ये, विनर्भन ॥ अवन्य (मन कर्न वाः मात्रीतः भविवक्षाः। भुका (यन **পু**रमारिङ (यन ज्य)िङ वाक्षणाः ॥ এব তেপু এক ৰ্ভব্য মন প্ৰিয় হিকৈ বিণা। সপ্তব্যসন কছেটিত নোষো द्राइट हु उच्च १। (यव ताका दिन শ্যেত সম্পলোপি নহানু/তি:। ব क्रांश मुताशान मृगया वर्ष्ड (नर गरा।। वाकाः क्षः न वज्वाः द्था सान्य कहाहन। त्राज्य भूः न वक्तवाः।

म् उत्पन् विवक्त (यथ ।। वष्क (यम-जिलाक्ष्य व्यमस्तिक नेभागमः ( 'व्यर्थम्यगक्रीक्षव न कर्खवाः कमाहम ॥/ व्यमार्के नाशियः त्यात्वतीरहत्त्राक्ष কর্মণ। মাছ নিবারণীয়ন্তে গমনায পথেছিত: ৷৷ এতমে ক্রিয়তাণ শীযুণ यभीइमि মন প্রিব । তত: পিতৃ রচ: শুরা রাজপ্রো যশস্বিনি।। উভৌ जुनारही मःगृश् काक्गाः भुज्रवाः চ ত•। ইত্যাদি ঞ্জীবরা**হপুরাণে** ভ· প্রবাজে শৌকরবে জীর্থনাহাজ্যে व्यानिक। वत्रभुतान मृशकपूरकाशाः थान नामाधायः ॥ अ॥ जन्ह । মনুক্রাচ।রাজ্ঞে প্তিষিক গাত্রস্থ কিন্তু কৃত্যুত্তন ভবেং। এতৎসর্বণ नभाव्य नभारपं जिल्ला ज्यान्।। নৎস্যটবাচ। অভিষে চাদু শিরসা बाञ्जाताकीवरनाहन। महायावद्गनः কাৰ্য্য' তত্ৰ বাজ্য' পুতিষ্ঠিত 🛚 মদ म्रान्न छत्र॰ कर्ष छम्लारकन मुक्कत्र॰ । পঞ্**বেণাসহা**যেন কিন্নু রাজ্য बहर भर ।। उमार महागान् स्त एट क्रजीनाम् अ छि: सग । मूत्रान् **अ**नीनान् जाञीयान् रलयुकान् भिः যায়ি যুন্।। ক্স সহতলেপেতান্ नग्राजान् करवा युजान। (कुन क्रमा न् नाराट्याहान् वर्षाकाः का लिय

রাজনী

ম্বদান্।। হিভোপদেশ কালজ্ঞান্ সুৰানিভক্তান্ যশে। হুৰ্থিনঃ। এক ষ্থিবান্ সহাযা: স্চ শুভক্মসু যোজ kne ॥ **७१ होनाननि म**रा विद्धाय মূপতিঃ স্বয়ণ। কর্মান্তের নিযুঞ্জীত। যথা যোগ্যের ভারত।। জলীনঃ भीकमण्याः त्रक् (वंतिविभात्रमः । इंखिनिकारिनिकाम सनवः भूक ভাষণঃ ৷ নিমিত্তে স্পল জ্ঞানে বে ত্ত চৈব চিকিৎ নিতে। ক্তন্ত: ক-র্মাণা শুর তথা ক্লেশসছে। থাজু: ॥ বু,হতত্ত্ব বিধানজ্ঞ: ফল্লুসার বিশে-ষবিৎ । রাজ্ঞা দেনাপতি: কার্য্যো बुगक्तनः कविरया यथा ॥ शुन्नः ज्वाला मक्क नियवानी नाहा कड: । চিত্তগাহক সর্বেষা পুতীহারে। विधीव अ। यथा कवारी मृजः म्रा-रम्भ जायाविष्यात्रमः । भकः (क्रम-সংহা বাগ্মী দেশকালবিভাবিত: ॥ বিজ্ঞাত দেশ কালশ্চ দূত: স্যাৎ न भरोक्षि जः। वङालि यन्। यः काः লে সন্তো ভূপতে ভবেৎ ॥ প্রাণ্শ-বো ব্যাৰ্ভা: শূরা দৃঢ়ভক্ত। নিরা**জ**-**जाः। त्राञ्छः जुत्रकिनः कार्य**ाः **সरा** ল্লেশস্থ। হিতার।। অনাস্থার্য্যে নৃ**শ**ং ৰক্ত ভক্তিক পাৰ্থিব।। তাধুল-धाती जविक नात्री वालीय उन्हरी

। वाज्खना विविज्वल्छा (रम्खाः वाविणात्रमः ॥ मिक्कविगुहिकः का-र्य्। द्राखानस्विभाद्रमः॥ आय्वऽयः <u>জ্ঞোলোকজ্ঞোদেশোৎপত্তি বিশা-</u> রদ: ॥ কৃ эাক্ হজ্ঞে। ভৃত্যানা• জ্ঞে-यः महारम्य ब्रक्तिजा । मृत्रम खङ्गः প্রাণ্সু দূ ত ভক্তি: জলোচিত: ॥ শূর: क्षिणमर रेक्टर अनुवाती भुकी खिनः । भूतक वलयुक्तक ग्रहाच द्रथ्का-विनः ॥ धनूर्वात्री ভविमाद्धः मर्व ল্লেশ সহ: শুচি:। নিমিত্তশঙ্কন-छ्डान रुयानिकाविनाद्ररः ॥ रुया যুর্বেদ তত্ত্বজ্ঞা ভূবিভাগ বিশেষ-विट। बागिज्का नरहाटगाइः ज (र्वयाक निष्यकः ॥ वजावनाद्धाः রথিক: ভ্রিদৃষ্টি: প্রিয়য়দ: ৷ শ্রুণচ কৃতবিদ্যক্ষ সার্থিঃ পরিকীর্ভিতঃ।। व्यवाद्यार्थः मुक्ति पर्यक्त निष्ठकिर्धान-তবিদায়র: ৷ স্দশাস্ত্রিশেষজ্ঞ: ज्माध्यकः भूमनः ५ ॥ ज्म्माञ्च विधानकाः भन्नारक्ताः करनात्रः ভাঃ। সর্বে মহানদে ধার্য্য লুপ্তকে-শ্ৰথা জনাঃ। স্ব: শ্ৰৌচ গিৰেচ थ्यं नाळिविनावरः । विलुसयाः ऋ-वीनक धर्माधिकद्रामा खदव ॥ दा-র্য্যা স্তথাবিধ। স্তত্র দ্বিজমুখ্যাঃ সভা-সদ:। দর্বদেশাক্ষরাভিজ্ঞ: সর্ঘ-

শান্তবিশারদঃ 🛭 লেথক: কথিতো बाड्डः गर्वाधिकंद्रशिषु रेव। भीर्या পেতান্ সুসম্পূর্ণান্ সমশ্বেণিগতান্ नमान् ।। व्यक्ततान् रेव नित्थर यस (मथ रः न क्रः मृठः । উপাयवाकः क्ननः मर्बनाञ्जविनात्रमः॥ वस्त्रर्थ वका ठाः त्रन (नथकः म्यानजृगुखन। वाकाञ्चिभागञ्जुःखा (एमकान विভागविष् ॥ व्यनाहार्र्या नृत्यज (क) (लथक: म्राष्ट्रग्बम । भूक ষান্তরতভুক্তাঃ প্রাংশব স্চাপ্রেবালু পাঃ॥ ধর্মাধিকরণে কার্য্যা জনাস্থা नक्दा नदाः॥ এविश्विश खणा कार्या ब्राख्डा होरादिका जनाः॥ लाङ् व खाजिनारीनाः द्रज्ञानाकः विधानविधा বিজ্ঞাতা ফল্লুসারাণা মনাহার্য্যঃ শু টি: সরা।। নিপুণ শ্চাপুমন্তশ্চ ধনা ध्यकः भूकी खिंडः। व्यायवादत्यु न र्दिष् अनाष्ठ्रकः मना नदाः॥ वर्षषा রেষ্চ তথা কর্ত্তব্যা পৃথিবীক্ষিতা। পরস্পার গতো য়: স্যাদপ্তাঙ্গে ভু টিকিৎসিতে॥ অনাহার্য্য: স বৈদ্য: नहास्त्रयां ज्या व स्वाप्त उहां भागावा-र्यः न विष्कारमः वहनः छन्। ভূ ভূङः ।। ब्राज्य ब्राङ्धा मना कार्येष्ट यथा कार्याः भृषग्डतः। इति निका विवानः वनकाजिदिणात्रमः ॥

क्ष्मिक कम खया ब्राख्डा ग**डावाकः** भुगमाउ। व्याजात्व खेरा मूकः मा जनक विष्मवजः। गकाद्वारका ने दिन्दुन्। नर्बकर्यान नन्तर्छ ॥ इय् শিক্ষাবিধানজ স্ত চিকিৎসিত পা-ं द्रगः। वायाय (एका मही उर्वः साम-ন চ পুশস্তে ৷৷ অনাহার্য্য শ্রক্ষ उथा शाकः व्याजा उः। प्रशिवाकः মৃতো রাজ্ঞ উত্যক্ত: সর্ব কর্মসূ।। वास्त्रविम्याविशावाळा नयू रखा बि-**७ मुनः । मीर्घनभी क मृत्र क इन-**তিঃ পরিকীর্ত্তি হঃ ॥ যজ্রযুক্তে পা-ণিবৃক্তে **অ**ণুক্তে যুক্তধারিতে। স**জা**-চাर्य्या निक्ष्मगः समामक विभिन ব্যতে ৷৷ বৃদ্ধঃ সলোগ্নতঃ সূকঃ পি-ত्रिण असरः मुहिः। ब्राङ्माससः ग्-ब्रायात्कः। विनीजम्ह उत्थवार**ः।।** এবং সপ্তাধিকারের পুরুষা: সপ্ত তে পরে। গঞ্জদাধিকরণা: পুক্ষা: मछ (उ भद्रः॥ व्यसःभूद्रहद्राः कार्या রাজ্ঞ। সর্বের কর্মাদৃ। ভাপনাজাতি তভুক্ত: সতত পুতিজাগ্ডা॥ রা-জ্ঞঃ স্যাদাবুধাগারে দক্ষঃ কর্মসূ চোদ্যতঃ। কর্মাণ্যপরিমেযানি রা-काः ভ्रमाना छव ॥ উ समाधन मथानि वृष्कः कर्यानि পार्थितः। উ-जगाधनमाध्यम् भूकायम् निर्याकः

र्यं ॥ नद्रकर्य विशर्यशामामाना ना-न मवाश्रुवार। निरवागः (भोकृषः ভক্তি मुद्धेः भोर्याः **मनः** नयः ॥ জ্ঞাত্বা বৃত্তি বিধাতব্যা পুৰুষাণাং भशिकि । शुक्रवास्त्र विस्तान তত্ত্বসার নিবন্ধনাৎ ॥ বহুভি র্মন্ত যেৎ কাম রাজা মন্ত্র পৃথক্ পৃথক্ । নজিণামপি নো স্ব্যান্সজি মজ পুকাশন ৷৷ কৃচিৎ কন্যচিদ্বিখাসো ভৰতীহ সদা নৃণা। নিশ্চৰশ্চ সদা মক্তে কাৰ্য্য একেন শ্রিণা।। ভবে-ष। निक्रवावाधिः भत्रवृष्कानुकीवः नाथ । अक्रोतात मही छुँ छूँगः कार्य्या विनिन्हयः ॥ वाक्षान् शयूः পাসীত এঘী॰ নান সুনিশ্চিতা॰ । নাস্চ্ত্রেব্ডো মূঢ়া ওে হিলোকস্য কণ্টকা:।। বৃদ্ধাণ্ট নিভ্যুণ সেবেভ বিপ্রান্ বেদবিদঃ শুগীন্ ৷ তেভ্যো হি শিক্ষেছিন্য বিনীতাত্মা হি নিত্যশ:।। সম্পূা• বশগা• স্ব্যাৎ পৃথিবী। নাত্র সংশযঃ। বহুবো হবি। नगाकुट्टी ब्राजानः म भविष्ट्रनाः ॥ ৰনস্থ। কৈব রাজ্যানি বিনযাৎ পুতি-श्निरित । कितिराज्य क्रियोविन्धाः म्खनीजिक मार्चजी ।। जानी का কীঞ্চাত্রবিদ্যা বার্দ্রারন্ত্রাণ্ট্র লো -काः । इन्दियानाः ब्राय् (यानः

সমাতিষ্ঠেন্দিবানিশ ॥ ভিতেনিদ্র-যো হি শক্নোতি বশে স্থাপিয়িতৃণ পু जाः। यहाउ द्राजा क वृचि वं एछि-म्हास्रकितः ॥ धर्मार्थ स्थिव वि-(পুভেয় मन्त्रास्कागान् धनानि हः। नाष्ट्रमिक बारिक बाड्डामाहा-त्रयम्बलिः ॥ महाहारखयः भात्र ला-কে বর্ত্তে পিতৃবন্ধুষ্। আবৃত্তানা• खक्रवाट विकासा भूकत्वा छ-বেং ॥ নৃপাণামক্ষযো ছেষ বিধি ব্ৰাপ্ক্যো বিধীয়ন্তে। তত্তঃ স্তেনা নচা-মিত্র। হরস্তি নচ নশ্যতি ।। তন্মাদ্রা-ক্ত। বিধাতবের ব্রাহ্মণেয়ক্ষযো নি-**थि:। मरमाखनायरेम** রাজা ছাত্য शामाय< পুজা:।। न निदर्खं उप•ः गुामार कव वु मन्यद्रन्। मःगुा-(मञ्चनिवर्खिद्वः भुकानाः भद्रिभाल-नः।। শূनुषा द्राक्रगानाक प्राका निः-(म्यमः भवः। क्षानाक वृकाना মাত্রাণাঞ্ রোগিণা া যোগক্ষে-भक्ष वृद्धिक **जरेशव भ**तिकन्नरय**्**। বৰ্ণাশুন ব্যবস্থান তথা কাৰ্য্যুণ বিশেষত: ॥ স্বধ্র্যা পুচুতান্ রাজা स्थर्फ भानायख्या । जानुम ह यथा कार्याः ठिव ভाङ्ग ভाङ्गनः ॥ ব্য মেবান্যেদ্রো সংকৃত্যা-मावनानरष्ट। उनरम मईकार्गाणि

व्राक्त्र भाजान (भव ह ॥ नित्वन्त्य 🕻 भ्याद्वन (म्वविद्यत महाराष्ट्र) (ख পুজে বেদিতব্যেচ খাজী বকা চ মানবৈ: ৷৷ বক্রাণ জ্ঞাত্বা ন সেবেত পুতিবাধার্থ মাগতা । নাস্যছি-<u>দু</u>• পরে। বিদ্যাৎ বিদ্যাছিদু• পর-म् जु ॥ गृरहर क्यं हेवाकानि ब्रक्तः षिवद्र भाजानः। न विश्वरमप्रविश्वरख विश्वत्य नाजिविश्वरम् ॥ विश्वामा-फ्य मूर्भन्न म्लान्ध्री निक्ष्ठि । বিশ্বাসযেদ্বাপ্যপর• তত্ত্বভূতন ছে-जुना ।। वकविष्ठ खर्मर्थान् निः इ वह भन्नाक्राय । वृक्वहावन्त्रा मामवह विनिञ्चाउट ॥ मृष्युरादी ह ভবেৎ তথা শ্করবয়্প: ৷ চিত্রা-কারক শিথিবদ্চভক্ত স্তথাশ द**्राः** ज्वह मथुद्रा जावी ख्या (का কিল ব্যুপ:। ক্লাকশন্ধী ভবেমিত্য° नाद्धां उदम्खः दरम् ॥ नामही-ক্ষিত প্রঞ্ভোজন শধন মৃত। वश्व शृञ्च नवस्रातः यहान्। सन्दर्भा-ত্তনামন গাহেজ্জনসম্বাধ্য ন চাজ্ঞা-ভঙ্কলাশয় । অপরীক্ষিত পূর্বস্ত शृद्देव ब्राधकार्ति जिः ॥ नार्त्वार्ह्ट জ্ঞার ব্যাল নজাত ত্রণ তথা। नाविक्वा ७ जियः गाहर देन्य (म (वाध्याद वर्ष्यः ॥ नदास् वाक्षा

ধর্মজ্ঞ আতাবজো ভবেষ্প:। স ৰ্ৰা**ক তথা দু**ৱা সতত পুতি-मानिजाः॥ ब्राद्धः महायाः कर्खव्याः পৃথিবী জেত্নিছভা। যথাইঞাথ 'সুভ্তান্রালা কমসু যোজযেৎ।। विश्विष्ठान् वर्षाकार्यात्र्यु मूत्रान् अःगाम কর্মসু। নিপুণানথ কৃত্যেষ্ সর্ত্র চ उथा भूहोन्।। जीयू य छान् नियुक्षी उ जिक्कान् माक्गकर्यम् । श्रायं हार्ष्यं ह कार्म ह ভर्य ह इविनन्दन ॥ ब्राजा यथाईक व्याप्रमुभशाजिः भन्नीकृतः ী সমতীতোপধান্ ভৃত্যান্ *স*ৰ্য্যা**জ**-खि वानव्रान् ॥ ७८ शामात्वया रञ्जाः छत्युक्षाः क कात्रारट । এव यानीनि कर्यानि न्रेशः कार्यानि जा-গব।। সর্বথানেষ্যতে রাজ্ঞ স্তীক্ষো**প**-কর্ণ ক্ষ্য:। পাপসাধ্যানি কর্মাণি যানি রাজ্ঞা নৃপোত্তন।। সম্ভ স্তানি ন প্রস্তি ভ্যাত্তান্ বিভ্যায়ূপ: 1 নেষ্যতে পৃথিবীশানা তীক্ষোপকর-१ किया ॥ यश्चिन् कर्चनि यम्। मा९ বিশেষেণ চ কৌশলং। ভিমান কমাণ छ दाबा नदीका विनियाक्षय ।। পিতৃপৈ**অ**মেহান্ ভূত্যান্ সর্বক্ষসু বোজয়েং! বিনা দায়াদ কৃত্যে**যু প**া রীক্ষর খকু তাল্লন্। নিযুঞ্জীত ন-হাভাগ তস্য তে হিভকারিণ: 📙

भववां बर्गाः शुक्त बने मण्यूर कामाया। मुझान् वाना अवामुझानाम् 'হীত পুৰত্নত: ॥ দুষ্ট বিজ্ঞাৰ বিশ্বা সং ন স্ব্যান্তত্র ভূমিপ:। বৃত্তি ত-স্যাপি বৰ্ত্তেত জনসংগ্ৰহ কাম্যযা া রাজা দেশান্তর পুাপ্ত পুকর भूकत्य स्मार्ग । ममायः (तम मःभा-खा वङ्गानन हिन्तिजः॥ (उषाकाः রেণ চারিত্রণ রাক্ষা বিজ্ঞায় নিভ্যদা । গুণিনাং প্রনং জ্যার্যাৎ নির্গ্রণানা-क्ष শাসন।। কৃথিতা: न হত রাজ ন্রাজান ক্চারচক্ষঃ। স্বকে দেকে शाद (माम ज्हाजनीमान् विष्कः) गान् ॥ **ञनाहार्यधन् द्विभन**हान्। निगुक्की उन्तरा ह्यान् । जनन्तरावि দিতান্ সৌন্যাণ স্তথাজ্ঞাতান্ প রস্গর । বণিজে৷ ন্**তরস্ললা**ন্ नाष्ट्रपदि किट्यकान्। उथा शु-বুজিতাকারান্ চারান্ রাজা নিযো-जाय ।। रेनकमा बाजा मुक्तकार চারস্যাপি চ ভাষিতে। ঘথো: স <del>ষ</del>দ্ধ মাজ্ঞায় **শুদ্ধ**্যামূপতি স্তত:।। পরস্পরস্যাবিনিতৌ যদি স্যাতাঞ্চ-রাবুভৌ। তমাদুাজা পুষট্রেন ভটো न्ठातानियाक्य ॥ त्राक्री भून মেতাৰ্থ যা রাজ্ঞ শ্চারদৃষ্টিক। हात्राण निल यङ्गन त्राड्या कार्यः

পরীক্ষণ ।। বিরন্ধ্যতে তথা কেন বিজ্ঞেয় ভন্মহীক্ষিতা। অনুরাগাৎ कथः (बाक् कर्य कार्यः) भशक्तिजा ॥ (नाक्यागाभवार्ग) ह ज्जानाक खगाखगान्। मर्बः द्राड्डाः हद्रायञ्चः তেৰু যত্নপরে৷ ভবেৎ ৷৷ কর্মাণা কেন भ लाक बनः मर्खानुत्रकारक। विन রন্ধ্যতে কেন তথা বিজ্ঞেয় তম্ছী कि जा। विद्राध बनक लाक व-ৰ্জনীয় বিশেষতঃ ।। জনানুরাগপু-ভবা হি লক্ষ্মী রাজ্ঞা মতা ভার্গব वः निव्या । ज्या । भुगाइन नावन्तु म्रेथाः कार्यान्द्राला ভ्वि मानत्वृ ॥ ইতি মাৎস্যে১৮৯ অধ্যাयः॥#॥ অপরঞ্।রাজোবাচ। বহুবো ভূপ-তে ধৰ্মা স্তান্ বক্ত• নহি শক্যতে ৷ ভমাৎ সমাসতো বিদা মহাভাগ निमामय।। भृषिवी देवकवी भूग्रा সদা প্রিয়ত্তরা হরে:। নারামণাদৃতে नारनता वमुमजताः পजि र्जल्यः ॥ নারাযণাংশজো রাজা মনুষ্ঠো ন ক-माहन। अ उस्त पूर्नर उड़्वा मही॰ भी**उ॰ म**नाहरत्य ॥ नीडिगाशी নৃপো যস্ত বিপত্তি নাস্তি তস্য বৈ। চির• ভুনক্তি পৃথিবী• কণ্টকৈঃ প-विवर्ड्डि : II योग नवाहरू नी**ङ** र्भावाय मुद्राज्यत् । जुक्षेम् द्रि

রেণৈব স ভবেয়াত্র সংশয: ॥ আ-যুৰ্বল বশো বিত্ত বিজয় সুথ মি হুতা। মব্রিত্বে পণ্ডিতো রাজ্ঞা নি-रवाकाः मर्वे रेनव हि ॥ व्यवद्धवा मः হীভরু স্তাজ সদসী বুধা:। স ভागाः वृषशीनायाः नीजि ईनवजी ন হি।। তত্তো নীতৌ বিপন্নাযা স হসা ধরণীপতে:। রাজশ্রিয়া বিন-म। खिनाका वन वाहनाः ॥ वान्नाः गान् गनका रेम्छव रेवम् आ म्ह वास्त्रवाः खथा। नृभाः कन्।। मिह्रासा न हि-বস্তি কদাচন।। গতনী গণকদেই। रैवर (रहर्ष्ट) यू इंक्जिंठ: । ज्ञाञिह्य है। निष्कृतः मार विकासकी थिना র্ত্তিভাক্।। রাজানঃ পিতরঃ প্রো-ক্তাঃ পুঞা জনপদা তথা। অভো ज्भाः भावयं अभुकाः भूञानियो-त्रमान्।। श्रीद्रालाकवृध् त्राङ्गा श-শ্যেৎ পুত্রবধূমিব। পৌরলোকে ख्या अर्याए यथा (मुर्ग्श निकाञ्च-(क)। भुडाभी डाक्दा (य ह ज्भाना অতিপাপিনঃ ৷ শিরস্থা বিপদ স্তে-या॰ विरक्षियाः भीर्घभिनिः ॥ विरव-किता महीशालाः शालयिष्ठ यथा পুজা:। তথা তানপি নেভেশঃ পা-ল্যত্যনিশ হরি: ॥ পুজানা পা ननः रानः विशिवाङ्याः मू अप्टा

षाভ্যা॰ যে বৰ্জিত। ভূপা ত্তে বিজ্ঞে या नृभाषनाः ॥ पृष्टानाः णामनरेक्षक मिक्षानाः भुजिशालनः । भुन्दहारी 'मशीপाला किंद्र नम्सडि ভ्उला॥ न्। रियाना शिक्किंड विक यशामु-(क्यरीगिज:। निर्दिख। हि मही-পালো বিপত্ত্যা । ন হি নিস্তরেৎ।। न्नाः कन्।। निह्रस् निकताक। শুভাশৃভ । পদ্যন্তি নিভ্যা বিপ্ৰেন্দু नद्ता न्हात्रहक्त्वः ॥ भत्रहक्र छर्। यावट नायाजि हिस्रायक्तयः। आः গতে তু ভবেভূপ আচরেমির্ভবো यथा।। জ্ঞাভৌ বাপি চ মিত্রে বা পুত্রে বাপি চ ন স্থিণ। স্বর্য্যান্মুথেন गाञ्जीर्यं ननमा (भून (क्वनः ॥ মজ্রিণো জ্ঞাত্য: পুলা: পুলাক্ষ जाठत ख्या। गाम्चीर्ग्रहीन **ज्ना** ল মন্যান্ত ন হি ভূপব ।। তিইন্তি পুথন দুরে বসন্তি পুরত ভদা। वाकाः निय॰ यिष इंडि ठाकगा श्रीयं। ভূপতেঃ।।একস্য মন্ত্রিণে রাজ্ঞা চি-র' রাজত্ব মিছতা। কর্ত্তব্যা: সকলে রাজ্যে বু<del>ৰ</del>যো নৈব ভূসুর ॥ **অ**ত্য**ন্ত** লক্ষ্যুৰা ভ্ৰানা সম্পদ হ-**ब्रट**्री उम्रा॰ मम्मिष ज्नाता ्डिंड मना निर्धाङ्गर्य । मूर्थः প্রতিভিতো রাজা গীত বাদ্য রভঃ

नहा । ठ छुत्रक वरेन ही नः महना विभन् बुद्धः ॥ साठात गुरुनः পত্ব॰ স্ববাক্য প্তিপালন॰। গাস্ত্রী. ৰ্যুঞ্জেত ভূপানা লক্ষণানি দ্বি-· (बाउम ॥ म कथ· न्भिंछ र्यस्र. পুতাপেন বিবজিত: ৷ স কথা নৃ পতি যেন ন জিতা পরমেদিনী 11. जिजागा॰ **भ**त्रत्मिम्ना याद शामः वुर्विम्भः। भुजिभाग् एषः (भथम) कन॰ शाल्यां हि हाक्स्य॰ ।। পরভ্মিজযাকাউক্লী হতে। বা न्भिं यूपि। उना गाहर भन्न॰ थाम विमुकः नर्वभाठरेकः ॥ गृथि পুাপ্ত জবোরাজা পাপোতি পরম• शहराम माइम शुख मृङ्का दिवीन्त मन्तरः वाख्या जुक्तव्वः जुक् **नंज॰ श**नायन शत्रायन । (याष्त्रात्र॰ যুধিযো হন্যাৎ সভূপো যাত্যধো-পক্তিণা পলাখনপরো যুদ্ধে তদ্ধস্তা চ দ্বিজ্ঞান্তম। তাবু ভাবপি তিপ্তে ७१ नत्राक एउउ मूः मार ॥ तूथि माहमवान् (याक्षा उक्त छ। ह मही সুর। ভিষ্ঠেতা॰ দ্বাবিশ স্থার্গ যাব-हन्मु पिवाकत्वो ॥ वङ्गाञीकमूरकः न मः क्लिभान्हाउ गरा 🕽 भुद्धाः शालन कृताजा करा हिमावको दिं ॥ ইতি পাদ্ম কিযাযোগসারি 🖟 🛚 রাজপটোল:

व्यव्यायः॥ बाजनीनः जी मत्रक्डमनिः। इंडि नद्रज्ञावनी॥

त्राजनाः म् क्वियः। इछामतः॥ त्राजम्यः॥ व्याः। इजुगानिका-यः॥ कीतिकावृक्षः। इजि करा-थतः॥

त्राजनाकः ती कविषमम्हः। इंछ्री स्वः॥

द्राक्यान् जि मुताजगुक्तस्मः । इंडागतः ॥ भूकाभावना विस्थर्गः পরায়ণরাজ্যুক্তেদেশে রাজা বিদ্যুতে হস্যেতি মোল্মঝ-পাদি**তি পুস**ংশাযা• বতু:। যদুক্ত• ভত্রান্তরে। ভূমি নিন্দা পুশাসাসূ নিত্য যোগে ২তিশায়নে। সংস্ র্গে হস্তি বিবক্ষাযাণ ভবন্তি মতুবা-मय ই**ভि। स**नएड अङ्गर्श्य छम्। म या हभी वर्षा वर्षा बुन ब्रह्म এव । নিপাতনামলোপাভাবঃ। নসৌ-রাজ্যে রাজ্যে নস্য লুঘ্রতাবিতি পরে। সুরাজ্ঞি স্বধর্মপরত্বাৎ শো-ভনা রাজানো হত্তেতি নাছাযাণ बार्खाति व निरम्भः। (माना কোপলক্ষণ সুরাজ্ঞিলোকে ইত্য-র্থ:। ইতি ভটীকাযাণ ভরত:।। भए।वः। इंडि পু•

রত্নালা।। শ্রেপটোলী জী নমুরপটোলী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

রাজপট: পু॰ মণিবিশেষ: । ড< পর্য্যায়: । বিরাটল: ২ । ইভি ত্রি কাপ্তশেষ: ॥

রাজপত্তিকা স্থী চাতকপক্ষী। ইতি হারাবদী।।

द्राव्यथः भू द्राव्यगरः। उम्र वक्ष्यः यथा। धन्ष्म हण विडी गः श्रीमानाव्यथः कृडः। न्वावि द्रथ नागाना सम्बाधः मूमध्दः॥ इति (प्रवीभूदापः॥

রাজপণী জী পুসারিণীলতা। ইতিরাজনিঘটা।

वाजनाखः भ्र तक्नवर्णनाखः।
नानगान इंडि छावा। छ८ भयााः। इत्रत्न द्वः २ न्भाल्यः २
वाजिभाः ४ न्रान्तः ६ मीर्चनवः
५ (वाकः ४ न्रान्तः ४ न्भकन्तः ३
वन्तः ३२ व्राक्तदेः ३०। जमः छ्वाः
। मिनिवदः। लिख कक् नानिवः।
मीनवः। वङ्निमुक्तद्वः। ইडि
वाजनिर्यकः॥

রাজপীতৃঃ পু॰ নহাপীলুব্ফঃ। ইভিরাজনিঘটঃ।। बाबन्यः भ् व्यप्रः। हेडि मप 'রত্বাবলী।। মহারাজচ্ত: । ইতি ब्राजनियंगः ॥ বর্ণসঙ্করজাতি বিশেষ: । রজপুত ইতি ভাবা । चथा। रेवन प्रमन्न कन प्रमा॰ द्राज-পুএম্য সম্রবঃ। ইতি পরাশর-পদ্ধতিঃ ৷৷ করণকন্যাযাণ ক্ষত্রিযা-জ্জাভক্ষ। ইতি পুরাণ ॥ রাজ-नन्तः । ७८ शर्यप्रायः । यूद्याजः **১ ল্মার:**২ ভর্ত্তারক:৩।ইত্য-मद्रः॥ उम्। तक्तनः यथा। ताह्र-भूधना ब्रक्का ह कर्खवा। भृषिवीः किंठा। बाहारेग्रं महामा कर्चगुर নিভ্য মুক্তৈশ্চ রক্ষণ।। ধর্মা কামা-र्थ माञ्जानि धन्दर्यन्थ मिक्कर्यट् । রথে 5 হস্তারে চৈন• ব্যায়ান-কার-(य८ जना ॥ निद्धानि निक्रासिहर नोरिष्ठ गिंग्यान्यः यदम् । खनायान নশক্ত যস্য কর্ত্ত স্বভাবতঃ।। বন্ধাণ ভদ্য কর্ত্তব্য অপ্তে দেশে স্থাদিত । অবিনীত স্নার হৈ হল মাশু বিশীর্য্যতে॥অধিকারেবু সর্বেষ বিনীত হি নিযোজ্যে । আদেশবল্লেৰ তৎপশ্চাৎ ক্ৰমেণাথ নহু হিলি ।৷ ন্গণা পান মকা৽-(म्वनानास विनष्टाः शृथिवी

**भूकिछः।। वहरवा न्श्रनाप्**वा रव-॥ मा॰ म॰च्छा न विष्ठ । वृथा हेन कि॰ )वास्त्रश्च विष्मायन विवक्कंरर् ॥ ৰাক্পাক্ষ্যুণ ন কৰ্ত্তব্যুণ দণ্ডপাক্ষ্য कः (भव ह। शर्बाक्कनिन्ह। ह उथा वर्क्डनीया नशिक्षि ।। व्यर्थमः मृ या ब्राका विः भुकातः विवक्कत्वर। े कार्थाना॰ मूच॰ रिक्षत ख्या ठार्थिषु मू याः ॥ अकादगाद अमृहहर पूर्वाः भीना मञ्चिमा। व्यर्थानाः मृत्राः পোক্ত বিশুকীৰ্ণদ্ব মেৰ চা ৷ অদেশ কালে যদান মপাতে দান মেবচ। অর্থস্য দূরণ প্রোক্ত মস্থ্রম্থ পু वर्खन ।। काम काम मान লোভ॰ হর্ষ ভবৈর চাঞ্জেজর; ম-ब्रिवर्र्ण नामद्र **न्यि**वीक्किला ॥ व्यक्तिं। विश्वरं कृषा कार्यः ভृष्ठा-হ্রয়ণ ততঃ। কৃত্রা ভ্ত্যক্রয়ণ সর্বণ রাজা জনপদ• জবেৎ ॥ কৃত্বা তু বিল্ল্য তেষা শত্ন ৰাছা স্ততে৷ कारट । वाक्राफ जिविद्या (द्ध्या खन्यान्यस्य कृष्टिमाः ॥ ध्यव (स যথা পূরণ ভেষু যত্নপরো ভবেৎ। পিতৃ পৈতান্হ । মিত্র সামভ্য তথা রিপো:।। কৃত্রিনঞ্চ ইছ্যুভাগ भिञ् विविध गुठारछ । उपस्कित विकः भूबं छावछ्यानि हाम् र्रः

चामामार्खाः बनशरहा मुर्न- रेमना खेंबर ह। कारवा भिज्ञ भग्जि भः **धाक् ताब्र गृ**ह्या ।। मधाक्न्या शि ब्राक्तरमा म्ल॰ यामी **প्**कीर्स्डः । उग्वदाख्याक्रानाः त्राक्षा तकः পুষত্রতঃ ৷৷ ষডফ্ রক্ষা কর্ত্তব্যা তথা (७व भूगङ्गठः । व्याक्षरच्या य खरेब-कमा (मुष्ट भाष्ट्रबाड इस्त्री: ।। वस् ন্তস্য তু কর্ত্তব্যঃ শীঘু মেব মহীক্ষি-তা। ন রাজ্ঞা মৃদুনা ভাষ্য॰ মৃদু হি পরিভূযতে ৷৷ ন ভাব্যু দাক্ণে-নাপি ভীক্নাদুৰিজতে জন:। কালে मृषु (या ভविंठ का**ल** ভविंठ माक-भः ॥ ताक। लाक्ष्याशको उन्र लाक दयः ভবেৎ। ভৃতৈয়: সহ षशीभानः भित्रकामः विवद्धांतर ।। ভূত্যাঃ পরিভবন্তীহ নৃপ হর্য ৰশ গত। ব্যসনানি চু সর্বাণি ভ্-পতि: পরিবজ্জবিৎ ॥ লোক সং-গুহণাৰ্থায় কৃত্তক ব্যসনে। ভবেৎ । শৌটীরস্য নরেন্দুস্য নিভ্য মুদুক্ত **टिउनः ॥ जना विदाश मायास्टिन**ः দা দুঃসেব্য ভাৰত:। মিত পূর্বাভি-ভाষी महा९ मब रेमहब मशीम जि:॥ মধ্যেত্বলি নহাভাগ ভূফটী নসনা-চরে**ে। ভাব্যং ধমাভ্**তাং শুেষ্ঠ স্থল-न(क्ष ज्लूका।। यूगलकमा दमगा

সর্বা ভবতি মেদিনী। অদীর্ঘসূত্রক ভবেৎ সর্কর্মস্ পার্থিবঃ।। দীর্ঘস্ ত্রস্য নৃপতে: কর্মাহানি প্রুব ভবেৎ । রাগে ছেষে চকানে চ দ্রেছে পা-পে চ ক্মণি 11 অপ্রিয়ে চৈব কর্ত্তৰেঃ দীর্ঘসূত্র: পুশস্যতে। রাজ্ঞা সংভ্ত মজেণ সদা ভাব্য দিলোত্তম ॥ তস্যাস ভৃত মন্ত্রস্য জ্ঞেষাঃ সর্বা পদে। পুরা:। কৃত্যান্যের তু কর্মাণি कायस्य यम्। जूभरा ।। नात्रकानि মহাভাগ ভদ্য দ্যাদ্যমুধা বশে । মতা মূলং সদারাজ্য তথামত্রং সু त्रिक्ष उ॰ ॥ कर्खवा॰ मृथिवी भारित र्याः জ্ঞভেদভয়াৎ সদা। মজ্রবিৎ স থিতো মন্ত্র: সংযতানা• সুধাবছ:॥ मञ्चह्राचन वहरवा विनद्धाः भृथिः বীক্ষিত: ৷ আকারৈ রিঙ্গিত গ্রা চেপ্টথা ভাষিতেন চ ।। নেত্ৰবক্তা-বিকারৈশ্চ গৃহতে ২ন্তর্গত মনঃ। न यम। अभीत छम। वाम मही वमू-इता ॥ ভवडीर गरी ভर्जुः नता-পার্থিবনন্দ। নৈকস্ত মত্রযেক্সস্ত• ন রাজা বহুভিঃ সহ ।। নারোহে-ছিষ্মাণ নাবণ নাপরীক্ষিত নাবি কাণ। যে চাস্য ভূমিণ জগতে। ভবেশুং পরিপছিন: ॥ তানান্যেছশে স र्शन् नामापि छ क्राक्रीयः। यथा। 🎤 नेताली इंडि छाया। यथा। नतार्शत

ন স্যাৎ ক্ৰীভাব: পুজানা সনপে ·क्ष्या ॥ ७**था द्वा**क्डा **भुक्**र्खव्यः स्रो রাষ্ট্র পরিরক্ষতা। মোহাদুারা স্বর্ 🗸 ष्ट्रे॰ यः क्रयंयल्डानरभक्त्या ॥ (मा ६-) চিরাজুশ্যতে রাজ্যৎ ক্রীবিভাচ <del>স</del> বান্ধব:। ভূতো বংসে। জাতব**ল: ক**-র্মযোগ্যো যথা ভবেৎ 🛭 তথা রাষ্ট্রণ মহাভাগ ভৃত কর্ম সম ভবে । যো রাষ্ট্র মন্গৃহাতি রাজা স্ব• পরি-রক্ষতি II সংঘাত মুপযাচেজু বিন্দ তে স মহৎফল । রাষ্ট্রাজ্মিরণ্য थान ४ भ की द्राक्तः मद्रिक्ताः। নিভ্যুণ স্বেভ্যু: পরেভ্যুক্চ যথা মাতা যথা পিতা। নিত্যু রাজ বরষ্ট্রে যঃ ক্ষত্যন্যস্য চেছ্যা ॥ গোপিতানি मन वर्षायम विज्ञानी जियानि ह । অজমু মুপযোক্তব্য করণ ভেড্য खरेबव हम सर्वाक्त्यारमायखः विधाः ति रेहत मानुरम । उरमा रेहत महिन्छा হি পৌৰুষে বিদ্যুতে ক্ৰিয়া।। এবং ग्री शानराजा २मा छर्ड व्लोकान्-রাগঃ পরনো ভবেচা লোকানুরাগ পুভবাচ লক্ষ্মী লক্ষ্মীবন্ত শৈহব পরা চ कीर्षिः ॥ ইতি माध्यम् ३৯९ 🐃 ध्याग्रही।

র্ফুন্ট্রিফা ত্রী শরারিপকী!

রাটি রাডিক হাপুনী রাজপুনি কা। ইতি জটাধর: ॥ রাজকন্যাচা। রাজপুনী জী কটুত্মী॥ রেণুকা॥ ভাতী॥ রাজরীতি: ॥ ছচ্চু নরী। ইতি রাজনির্ঘট:॥ মালতী॥ যথা। যতিমুক্তকাথ জাতি মালতী সুমনা অপি। রাজপুনী মনোজ্রেতি জটাধর:॥ রাজকন্যাচ।।

রাজপুয়: পূ॰ নাগকেশরপুয়ঽৄয়:
1 যথা। চাস্পেয়: কেশরো নাগকেশর: কনকান্ত্রম: । নহৌষধণ রাজপুয়: ফলক: খরঘাতন: ।। ইতি
শক্চিন্দুকা।।

রাজপুয়ী ত্রী ককণীবৃ**ক্ষ:। ইতি** রাজনির্ঘণটঃ।।

রাজপুরা স্ত্রী করণীর্ক: 1 ইতি রাজনির্ঘট: 11

त्राज्ञकि । भू नागत्रक्तृकः। इंडि भक्ताला ॥

রাজফল লী পটোল। ইতি ত্রিকাণ্ডলেম:॥

ब्राह्मका जी हमू:। इंकि ब्राह्म-निर्घरिः॥

बाजवनतः ही तकामनकः। ेन्तुः । ইভিমেদিনী।।

ब्रोकवम्बः पु॰ উত্তমকোলি:1 उर्दे शर्याय:1 न्भरमुक्षः २ न्भवम्बः

त्राक्षवस्राचः ८ मृथ्यानः १ उन् वीकः ५ मधुत्रकनः १ त्राक्ष्यानः ৮ । चाना खगाः। मृभधृतद्वः। निनि-तद्वः। पाक्षार्खं भिख वाउ हतदः। वृष्यः। वीर्यः वृष्क्ष कत्रदः। गाय-मुम नानिद्धः। ইতি त्राक्षनिर्यकः॥ त्राक्षक्षेत्रः भक्षकीत्रा हा-भूभी त्राक्षक्षेत्रः भक्षकीत्रा हा-भूभी त्राक्षकिका। ইতि क्रि। प्रशः। त्राक्षक्षः भूः स्रक्षः।। निम्नः। ইতি त्राक्षनिर्यक्षः।। भाति चमुकः ইতि माधुभातः॥

রাজভ্য॰ ক্লী রাজত্ব। যথা। স্যা-দুক্ষভ্য॰ বুক্ষত্ব॰ বুক্ষসাযুজ্য মি-ভ্যপি। দেবভ্বাদিক॰ ভদ্দিত্য-মরকোব দর্শনাৎ।।

রাজভোগ্য ক্লী জাতীকোষ । প্রিয়ালবৃক্ষে পু । ইতি শব-চন্দ্রিকা।।

রাজনপ্ত পৃণ বৃহজ্ঞেক:। বড়-বেঙ্গ ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায:। নহামপুক: ২ পীতাঙ্গ: ০ পীত-মপুক:৪ বর্ষাঘোষ: ৫ মহারব: ৬ । ইতিরাজনিঘণ্ট:॥

রাজমল্ল: পুণ রাজ্ঞাণনল:।রাজার: নাল্ ইতি ভাবা । তৎপর্য্যায:। উৎসিক্ত: ২ উদ্ধৃত: ৩ । ইতি ত্রিকাপ্তশেষ:॥

রাজমার্গ: পু॰ রাজপথ:। তদিব-द्रनः यथा। द्राज्ञमार्गः (मोध्युकः ण: করোতি পতিবুতে। বর্ষাণান-যুত পোপি শকলোকে মহীযতে ।। ইতি বুদ্ধবৈবর্ত্তে পুকৃতিখণ্ডে ২৪ व्यश्रायः॥ अभितः। जिः मञ्जूर्व विखीर्ण (मनभागंख रैजः क्जः। विः मः थन् श्रामिमार्गः नीमामार्गा मरेण व जू ।। धन् यि मण विखीर्गः 🗐 गानाजनथः कृष्ठः। न् वाकि त्रथ नागाना ममञ्चादः मूमक्षतः ॥ धन्ः বি চৈব চত্ত্বারি শাখারথ্যান্ত নি র্মি তা:। ত্রিকরা স্চেপেরপ্যাস্ত দ্বি कतानुरनद्रथाका ॥ जहानय क-তুয়াদ দ্রিপাদশ্চ গৃহান্তর। বৃতী भार ख्रेत्रामः भाषः भारकः ফ্ড: ॥ অবকরঃ পরিবা**র: পাদ**-নাত্র: সমন্ততঃ। ইতি দেবীপুরাণে (गा भूत हात जन्म ना ना मा प्राय: ॥ **द्रा**कशायः भू• वर्वष्ठेः। वद्रवष्ठेक-**डाई है कि जाया। उ**ट्मर्यग्राय: 1 নীলনাৰ: ২ নূপনাৰ: **৩ নূপোচি**-তঃ ৪। অন্য গুণাঃ ॥ কফ পিত্ত इत्र 🖫 । क्ष्युष् । वाज कातिष् । वनमायकद्भा इंडि ब्राजनिर्धकः সারকরণ। শুকান্নগিত হররণ। 🛚

সুষাদুর্ণ। ক্ষরণ। ক্যাযরণ विषरपुः। नयूपुषः । ইতি द्रांड वद्याः ॥ यन्। ह । त्राबनाया नर মাৰ ভগলভ বল: মৃত:। রা . नारवा क्यः साम् खवद खर्भागा द्रम ।। क्ष्म। वाजकात्रा क्ष्यः छान्। ভূরি মলপুদঃ। ইতি ভাবপুকাশ ॥ 🗱 ॥ कानवित्नव व्यम्। ভक् प् यथा। नात्रशीरय । निञ्चाताः ब्राबगायाः क जुल्छ (मत्य बनार्मर । যে। ভক্ষযতি রাজেন্দু চাণ্ডাল। **দধিকো হি স:।। কার্ত্তিকে ত** বি (भारत दाक्र माया का वर्ड्स रव निम्नावान् मुनिमाप्त यावनाश्ः नात्रकी॥ ইভি ভিष्णानिञ्जु॰॥ त्राजगृतः शृ गृ**यश्चेकः।** ইতি (इन हन्मुः॥ ब्राह्मयन्त्रा भू॰ क्रमरतागः। ইति **इम्हन्तः ॥ अम् भर्यम् निरा** 

রাজযক্ষা পু ক্ষযরোগ:। ইনি
হেন্চন্দু:।। অস্য পর্য্যায় নিন্ত্র
নৌববাদ্যো যক্ষশদ্ দুষ্টব্যা:
মহাপাতকজচিই মপ্যয়ণ। বং
বিষ্ণু:। অথ নরকান্ত্ত দু:খানা
তির্যুক্র মৃত্তীর্ণানাণ নানুষ্যে দ ক্রানি ভবস্তি। স্প্যতিপাতর ক্রিজাহা যক্ষী স্রাপঃ শ্যাবদ্তর স্পানিরি অনথী গুক্তলুগোরা শুকুর্মা। ইত্যাদি ক্যাপুরাপণা বি যাহীনস্য মূর্থস্য মহারোগিণ এব ৈচন যথেষ্টাচরনস্যান্ত মরণান্ত নলো চক ।। মহারোগিণ: পাপরোগাই কান্যতম রোগবতঃ। তেচ উন্মাদ खुः द्वारमा द्वाद्यका चारमा मधुरमः (रु। क्रगन्तद्रः উन्द्रा १ प्राती है-তগুঙী পাপরোগা নারদোকা:। ইতি শৃষিতত্ব ৷৷ #৷৷ তস্যেৎপত্তি क्र ज्ञानानि यथा। यथ कालवङ ন্তস্য দক্ষস্য সুমহাত্মনঃ। নিশ্চকা-ম তদা যন্ত্ৰ। নাসিকাগু।ছিভীৰণ:।। म् द्रे। कदावयमनः क्काकाद मन् ভ:। অতিদীর্ঘ: यन्नदिশ: ক্শো ध মনি সন্তত: ॥ অধোমুখো দওহতঃ कामः विभुगः महनः। सर्वाता নিশ্ননেত্রন্স যোষা সম্ভোগ লোলুপঃ । সচোবাচ ভদা দক্ষণ লব হাস্যা-ম্যাহণ মুনে। কিংবা চাহণ করিব্যামি তমে বদ মহামতে।। ততো দক্ষস্ত ত পুাহ সোম থাতু ফত ভবান্। সোন মন্তু ভবানিত্য সোমে ত্ব তি ষেছ্যা।। মাৰ্কণ্ডেয়উবাচ। ইভি ভ म। यहः भुन्ना मक्षमा। भे द्वान्तानः। भरेनः भरेन खजः लाग नाममार দচজত।। আসাদ্য স তহি। ইপুন• वन्त्रीकः भग्ना यथा। भुविर्दाकुत्र हर्तय हिनुः शाभाग्यहागरः ॥ उ

यिन পुविष्टे क्राय माक्त ताब-यक्षि। भूष्णाठ ठम्तु उन्तेश विष-भाः भाष्ठवाः खजः ॥ উৎপত্য भू-थनः यमाञ्चीता त्राकन्यत्नो गरः। রাজগঙ্গেতি লোকে ২মিণ শুস্য খ্যাতি রভ্ৎ दिकाः॥ তত তেনা-ভিভ্ৰক বন্ধণা রোহিণীপতি: । क्य कगामानु हिन शीरम मुझा नही यथा।। उथा हत्मु कीयमात मही-वर्षः क्यः गजाः। क्यः बाजासाव-ধীবু ন ৰজ্ঞ: সণ্পুৰৰ্ত্তে ॥ ৰজ্ঞাভা-वाकु (मवाना समः मर्बः क्रमः गउः। भर्यानाक उठा नही खाडा वृद्धि ৰ্ন চাভবৎ ॥ বৃষ্ট্যভাবে তু লোকানা भाशाताकी गडाइ उ:। मुर्जिक वऽ-সনোপেতে সর্বলোকে দ্বিজোত্তনাঃ ।। मानव्यामिक किकिशलाकियु भुवर्ख्य । मङ्ग्रीनाः भुषाः **म**र्वा-লোভেনোপহতেন্দ্রিয়া: ॥ পাপ भित उना हक् मंध्यंक्रय उथा । এउपृष्ट्री उना जावः निक्लानाः न भुद्रम्हताः ॥ ज्याः क्वाञः भद्रः দেবাঃ সাগরাক্ত গুহা তথা। ততো मृह्ये जगर मर्ब कामन मम् भी-फिड• ॥ वृक्षान मगमत्म्वाः मार्ब শক পুরোগনা:। উপসঙ্কম্য লো-কেশ• সুপ্রার• জগতা• গতি• ॥ পু-

नम्याथ यथारयाम्य मूनविश्वे छउः जुदा:। जान झानवरनान् वीकाः वु-ন্ধা লোকপিতামহ:।। অভিভূতান্ পারেণৈৰ জ্ভ স্বিষ্যানিব । পা পুছ সুম্থীক্তা গুৰু মিন্দু হতা-শন ।। বুকোবাচ। স্বাগত ভোঃ **जूदगगाः किमर्थः यूय माग**जाः। पूः-থোপহতদেহা শ্যান্মানা শচ लक्ष्य ॥ नित्राधात्रान् नित्राज्ञान् **जूदान् नर्वा ख कामगान् । क्**दा स विषय नाजान् कथः भनाति मूबि-छान्॥ यद्म जूद मृत्र वीकः युगान् বা যস্ত বাধ্তে। তৎকথ্যতা মশে ষেণ সিদ্ধি চাপ্যব্ধার্য্যতা ।। মা-कं ७ व उंदाह । ज्ञा वृष्ण्या की ব: কৃষ্ণবৰ্ত্মা চ লোককৃৎ। উবাচা-অভুবে তথ্যৈ সুরাণাণ দুব্রকারণণ।। भृगु मई कगरकर्ख छा । यन वय मा গভাঃ। यদমাক দুর্বীজ যতো স্লান नि्रया वरा ॥ न क्विट अन्भुवर्खस्य यक्का লোকপিতামহ।। দেবাউচু:। নিরাধারা নিরাভক্কা: পুজা: সর্বা: क्रयः गडाः। नव मानामि धर्माण्ड न जभा नि किलो कृष्टि ॥ निव वर्षा भग्रनाः कीगरजायाज्य क्षिजि:। कीनाःगदी खरणीयधाः भ-न्या (वाकाः नवाववाः ॥ स्मूर्णः

भीष्टिं विशा (वस्वामा मण्डी তে। অन বৈকল্য मानाम्य भि्राह वहवः भुकाः ॥ कीरायु यद्धजारा य (ভাগহীনা खथा वयः । मुद्रवानः निया शीना रेनव भासि नजामर**र** া। রোহিণ্যা মন্দিরে চন্দ্রো বক্রপ जा किंद्र क्रिज: 11 व्यवार**णी न क** ক্ষীণো ক্যোৎসাহীনক্ষ বৰ্ত্তত ।। स्यरेमवाद्यिष्ठाट**७ (५**टेव **म्हटन्द्र) रेनका** পুরংসর:। ক্লাচিদ্পি দেবানাং স गाक वा खबहार ॥ कराहिष्मार गी॰ छाञ्जा रेनव कुछ न गहिंछ। यहा ন্য: কোপি ন ভবেত্তদা চন্দ্রো বহি र्ल्य ।। मृन्या अन्याशीनः कवा মাত্রাবশেষিত:। ইতি সর্বত্র লো **किन वृद्धः कर्या विशर्यप्रयः ॥ ७० मृष्ट्रा** कान्तिभीकास वयः पाः भव्रगः ग **जाः। भाजामामा** वन्थाय कानक क्षान्त्या २ जुद्धाः ॥ नामान् त्वारकर् বাধন্তে ভাবন্ন: পাছি সাধুনাৎ ষ্বণ পুৰন্ততে কমাজ্জগতা বাব্যতি ক্ৰম: ।৷ ন জানীমস্ত তৎসৰ্বণ বিপ্লবে हािल क्रांत्रगः। भाकत्थ्य **উवाह**ा **७७८ जुद्रागा वहन दिवास्मी** श्रिकामेशः। भुदा कत मिष्धाय र्विकागि मृत्याख्यान्।। वृत्कावाह শ্বস্থ দেবতাঃ সর্বা যদর্থণ লেবি

বিপ্লব: ৷ পুবৰ্ততে ংখুনা যেন শাস্তি ুগুস্য ভবিষ্য**ি ॥ সোমো দাক্ষা**য ণীঃ কন্যাঃ সপ্তবিংশতি সংখ্যযা। णिन्याम्या वज्ञवष् ভार्यप्रार्थ भ রিণীতবান্।। পরিণীয় সূ তাঃ সর্ব। রোহিণ্যাণ সতত বিধু:। পুরর্ত্তে ভানুরাগেণ ন সর্বাসূ পুবর্ততে ॥ ্অস্থিন্যাদ্যা স্ত**তঃ সর্বাদৌর্ভাগ্য জু** রগীডিভা:। **ব**িংশতি বরারোহা: গিডর পুহিতা: ৰক ॥ পুবর্ততে নিশানাথে। রোহিণ্যা রাগতো य-থা। তথা ন ভাস্ ভজতে তদকায न्यायम् ।। अट्डा म्हा भ्राविद्या সাম। সংস্থ বিট্পতি । বহুস্নৃত নাভাষ্য পুল্যথে ইন্করোধ ত॰ ॥ অনুক্ৰো ব্থা কান দক্ষেণ সুমহা-জনা। সমং পুৰৰ্জিহ্ ভাস্ সময় কৃতবান্ বিধুঃ॥ সম মঞ্চীকৃতে ভাব• তাস করু । হিমা শুনা। য জগাম **७७: ञ्रान प्रकाशि ग्**निमखमः॥ गाउँ हत्क मुनिर्मु (१ दियम्) जामू-চন্দুনাঃ। জহৌ ন ভাবে তাঃ শশ্বৎ জ্পিতা: গিতর• গতা:।। ডতো-मकः श्रमण्डम् स्वक्षा मुख्यतः। जगवृत्तिः शुजिन्यावा वहनात्कम भव বীৎ ৷৷ ন সম• বৰ্ততে চল্ডু সৰ্ব্যুম্বাসু प्वान् अहि। जहां भारत्राः वृत्तः जुन्हेः 🖟

**ভন্মাৎ হ্বক সমঞ্জম•।।** ততে। গতে भून परिकान नमा वर्डा यहा। जानू **ठन्तु उरा रकः भू**न गंदादुरन् क्या য়া ন**তে বচঃ স স**ৰুতে নৈবাহ্যাসূপু-বর্ত্ত। বয় তপ: করিব্যান: স্থা স্যামশ্চ ত্বদন্তিকে ॥ তাসা নিতি বচ: শুরা **জপিত**স্য তদা মুনে: । क्याय वन्त्र। ननः भाभाषारम्-कडा॰ गड॰॥ भाभारयाष्ट्रक नन স: হ্লপিত্স্য মহাত্মন:। ক্লে। नाम महाद्वारण। नामिकाणुष्टिनि-গ্ত:।। পূেষিত: স চ চন্দ্ৰায় দক্ষেণ मुनिना उजः। शुविष्टेवा॰ उन्। (पर् क्रियं उत्त हन्तुभाः ॥ कील हत्नु ক্ষ্য যাতা জ্যোৎসা তস্যমহাত্ম-नः। कीशामु मर्ब (क्यार मानू महो -वशः करः गठाः ॥ ७वश्राचाना-ল্লোকে ২িমান্বজঃ সংপুরর্ভাত । য্জ্ঞাভাবাদ্নাবৃষ্টি স্ততঃ সর্ব পুজা-क्रयः ॥ यक्क जामान जामान ही-नानाः ভवजाः जथा। पूर्ववद्यः मगूर्-পন্ন বিকার চ স্বগোচরে ॥ ইতি বঃ কথিত সর্ব যথ। ভূলোক বি-প্লবঃ।যেনোপায়েন তৎশান্তি ৪৫ **म्**गश्व• मूरताखनाः ॥ ইতি.कानिका-পুরাণে ২০ অধ্যায়ঃ ৮ঞ্চা ব্রন্দোবাচ । गह्छ (जाः मृत्रगना रक्षम) जरून

<u> भुजि। उ॰ भुगारय वन्तुार्थ न व</u> भूर्ता ভবেष्यथा॥ भूर्ति हत्मु जगर-সর্ব॰ পুকৃতিছ॰ ভবিষ্যতি। যুখা। কঞ্চ ভবেৎ শান্তি রোষধীনা**ঞ্চ স**ণ ভব:।। মার্কণ্ডেয় উবাচ। ইতি বুক্ষ बहः भुन्। (एवाः मक्रभूत्रागमाः। পुययू क् क्षेत्रनम खना नक निरवणन • ॥ यथान्याय मूलङाय नार्स मूनिवतः **जूदाः । (পु**ष्ट्रः **পुबाপ**তि॰ एकः পুণম্য শ্লন্ধ বা গিরা ॥ দেবাউচু: । भूनीम जीमजाः वृक्षप्रयाकः वङ्मूः থিনা ৷ উদ্ধরম্ব নহাবুদ্ধে তাহি নঃ শোকসাগরাৎ ॥ যদুপ•বুদ্দস•জ্ঞ স্ক সৃষ্টিকৃৎ পরমাত্মন:। তদংশ ত্তুণ পর• জ্যোতি বিশ্বরূপ• নতোমি তে ॥ मक्तार जर्बनगढाः भुनाभावन কারণাৎ। দক্ষপুজাপতি শেচতি रयाणिन उम्रामा वयः ॥ मकाय नर्व জগতা॰ দক্ষায় **সংশ**লাত্মনা৽। দক্ষা যাত্মহিতাযাশু নম স্কল্যু- মহাত্ম-নে ॥ সতত চিন্ত্যমানস্য যোগিভি র্নিযতাত্মভিঃ। সারস্য সারভ্ত ভু॰ मकाय भवगाजात ॥ रयाभविक्ति त्रनाष्ट्रेः भात्रगा**गाः भत्रारगः। आ** দ্যন্তমূক্তঃ সহসা উষ্মে নিত্যু নমে। ননঃ।। ইতি তেষা বচঃ শুক্রা দক্ষে। यञ्जूषाः छना । शुरु शुनमयन्तः

**णक गांखाया गूथा ७: ॥ एक उ**राहर । জভ: শক্র মহাভাগ ভবতা: দু: ধ্ মাগক। দু:খহেতৃ বদ বিভে। শ্রো/ ত্নিছান্যহন্ত তে ।। মমান্তি বদি ক-र्खवरु खवजाः मृःथहानस्य । उपरु যদি শক্ষোমি করিব্যামি হিত সঁন ॥ भार्का ७ वर्ष । जन्मुदा वहन **ভস্য বৃহ্ম স্**নো মহর্ষিণ:। জগাদ গী-, স্প্ৰতিঃ শক্ৰো বীতিহোত্ৰো ২থ ত• मूनि ॥ क्य याजा निमाना छ-श्चिन् कीरा कया गठाः। महो वरद्या ৰিজশ্ৰেষ্ঠ ভদ্ধানি যজ্ঞ হানিক্ত।। याञ्ज विनाष्ट्रे जकलाः भूकाः कृष्ट्य কাতরাঃ। বৃষ্টাভাবামহদ্বংখ পা-भा नहा क का क ॥ क्या १४ द्रा-ত্রিনাথন্য যন্তে কোপাৎ পুবর্ত্তে। স সর্ব জগতো বুক্ষমভবার্থ মুপস্থি-তঃ।। নাধুনা তঞিভূবনে यद्यक्तुञ्जन्त किथन। विश्लव याछि वित्भुन्तु माग-ताः ञ्चादता "bताः॥ न यक्ताः मः भु-বৰ্ত্তন্ত ন তপস্যতি তাপসা:। **অহি**।-র দু:খানিন্দ্রীকাঃ পুজা: ক্ষীণা ভযা-তুরাঃ॥ এব॰ পুবৃত্তে বিপেুন্দু বিপ্ল-বে হ্যান্রসাতলাৎ।দৈত্যা ন্যা-বদুখাৰ বাধন্তে ভাবদুদ্ধর ৷৷ পুনীদ দক্ষতভ ত প্রণ তপোবলাং। भूर्ण हत्तु जगदमन् भुक्षिष्ट जू

विवाजि॥ मार्काख्य खैवाह। इंडि তেষা বঁচ: শুনা পুলাপতিসূত স্বদা । উবাচ ভান্ সুরুগণান্ ছ্রবাছলাঃ मुंबद्गन्।। एक उवाह । यत्म वत्हा निनानात्व भुवृद्धः नानकाव्रनः । ন কেনাপি নিদানেন মিথ্যা• কৰুঁশ **जन्दनार्ह ।। किन्छ मह**हन॰ समारित्र-कारत्रन भ्या खरवर । हत्सुानि वर्क-তে যথাৎ তমুপায মপেক্ষতে।। ত ত্রাপ্যয় মুপায়োস্তি মাসার্ছ যাতু **हन्द्रनाः। कयः वृक्षिकः मानार्कः** ৰয়• ভাৰ্য্যাসূ বন্ধতা• ॥ তস্য তদ চন শুদ্ধা ত॰ পুসাদ্য পুকাপতি॰। সর্বে সুরগণা স্তত্ত গতা যত্তান্তি চ-न्त्राः॥ এर गुल्क जू रहत्न मरक्ष्म मूनिना विकाः। अथ हम्मु ननामाय ভार्यााञ्चः महिङ उना ॥ बग्र (उ **तुक्त मरन मृहिजाः मूत्रमख्याः।** তর গরা মহাভাগা যথা দক্ষেণ ভाষिত ॥ उ९ मई कथ्यामाम् বু স্বাণে পরনাত্মনে। বৃক্ষা দক্ষ বচঃ भुन्नः (प्रवानाः अप्तनः छप्ता ॥ हन्तुः ভাগ নহাশৈল জগান সহিতঃ न्दिः ॥ তত गद्मा मृतरम् ४: नुकानाः হিত্রান্য্যা। স্থাপর্নোস শুভাু -শু॰ বৃহল্লে।হিত পুষরে।। ভ্ত ভব্য ভবুজ্জান: পূর্বনেব পিতানহ: 1 এতদর্থ চকারাত্র সর: পূর্ণ লগত: পুভু: ॥ ভত্র স্নাতস্যলোকস্য নীরো: গত্ব- পুজাযতে। চিরাযু স্তৃঞ্চ সভত বৃহল্লোহিওস'জ্ঞকে ॥ তত্র স্না-जम् हन्तुम् भद्रीद्राख्यक्रनः गरः। द्राष्ट्रया निः ननाद न्र्वेक्ता यथाः **पिछ: ॥ नि:मृ**छ। द्रावयका जू दुका-गक कार शिष्ठः । भूगम्याहः किः করিষ্যে হু গছামীভূর্বাচ হ।। স্থান॰ পত্নীঞ্গ লোকেশ কৃত্যু মম সদা **७न• । निरम्**णयानुक्**श• (म जुडे) द्व• बगठा॰ यठ: ॥ माङ्**रिखय डेवाह । ততো वुकाशि उ॰ शूडे॰ निदीक्कान्तु শরীরগৈ:। অমৃতৈ স্তেনাতিভুক্তি: क्वीनकाशि निमाशिष्ठः ॥ सार्जिः स्रयः छः गृशेषा गिरद्रो निश्चिष्ठ देव ম্ভ:। অমৃত• গাল্যামা**স শরী**-बोद्राजयस्य ।। अम् जानि ह गान्। म् उरभूड॰ उरा काला कीता-দস্চ চিক্ষেপ নধ্যে রহসি লো-कर्ट्।। उत्राप्तराम्जापित्माः क-লা: ক্ষীণা: পুরাথ যা:। তাসা জ-গুছে লবল শুর্ণন ক্লীরোদসাগরাৎ ।। কলানাতাবশেষস্য সংস্থালু জ-यक्ताः। कीताः कनाः शक्षरण याः পূর মৃত্তাআ্কা: ৷৷ তারাজযক্ষ গন্তস্থ। শুণী ভূতাস্ত পীড্যা। তে-

জো জ্যোৎ সা কলাভিন্ত নিবদ্ধ যৎ কলাপতে:।। শরীর ত্তাপ্র ভ্ত গৰ্ভ্ৰন্থ রাজযক্ষণ:। জ্যোতি শূর্ণ ম-ভূৎ জ্যোৎসা লীনা রাজাদি যক্ষ্ ॥ मुवीज्ञाः मूथाः मर्वा गर्छ दा गः न्। हि जाः। यहा निर्मानयामान नु-शा वुका गराष्ठ्रा ।। उरा जार न्। मुशाक्षाि : मर्बः उत्रावहिर्गउः 1 क्वीदारमागदा किन्छ उरमर्बः विधिना छमा।। (मबान् शिर्त्तो भिन्न-ভ্যন্ত্য শ্বৰণ গল্পা হৃত্তত ততঃ। ততো **২মৃতানি পুফাল্য কলাচ্**ণানি বা রিখে: ৷৷ জ্যোৎসাঞ্চাপ্যাত্রগানাশু गृशीदा ७ थर गित्रि । की द्यारा-দ্ধিরি মাগম্য চন্দুভাগ তদা বিধিঃ ।। দেব মধ্যে কলাচূর্ণ সুধা জ্যাৎ-ল্লা॰ ন্যবীবিশৎ। সংস্থাপ্য তথাৰ বুকা দেবানা মধ্যত ভত: 🛚 জগাদ রাজযক্ষাণ ভৎসানাদি নিদেশযুন্ । वृत्कावाठ । मर्बन (या निवा दावी সন্ধ্যাথা• বনিতারতঃ 🛭 সেবতে সু-র্ত॰ ত্থিন্রাজ্যক্ষ্ন্বসিধ্স<u>ি।</u> পুতিশ্যাৰ স্বাস কাস বুজোৰোবৈ থুন॰ চরেং। স তে পুবেশ্যঃ সতত। শ্লেম্মণশ্চ তথা বিষয়া কৃকাখ্যা কৃ जुर्जुञी या जवजः महभी खेतः। मा **তে হ**ন্ত ভাৰ্য্য সভত ভব্ন দৰুষা-

স্যতি ৷৷ ক্ষীণত্ব' ভবত: কৃত্য্য'তত-ন্তু॰ বিষয়ে জক জত গছ যথা কামণ हंत्मु 🖫 विमुखा **७व ॥ मार्क्ए**ख : উবাচ। এবং বিস্প্টো বিধিনা রাজ-য়ক্ষা মহাগদঃ। পশ্যতা সর্বদে-वाना मलकान जगाम र ॥ यह रिंड মহারোগে বুকা লোকপিতামহঃ। চন্দু সম্পূৰামাস কলাপঞ্*দ*েশ-থিত।। তেন ক্ষীরোদধৌতেন সুধা श्रान वाजा ज्या महा । रेम स कना-ह्रॅन: शूर्व वहाकरता विश्व ।। य वा उ **मकना भृ**गः भृईविषयि । **इन्तु छरा अर्दर**िया यूगुनु छन्। पर्णः नार ।। व्यथ हन्तु छन्। भूर्गः भूरिन ত্য পিতামহ• ৷ উবাচেদ• সুরসদো নধ্যগো নাতিহ্যিত: ৷৷ সোমউবা-চান স্থান॰ প্রবিদ্যান্শারীরে নম বৰ্ত্ততে। ন বীৰ্য্যণ বা তথোৎসা-হে। বিসীদন্ত্যক্র সন্ধ্যঃ।। নেংৎ স হে পূর্বছে স্টা বিধাতু সূতরামহ। চেষ্টাহীন স্তৃনুদিন বর্ত্তেশ কেন লো-কভ্ৎ ॥ বুন্ধোবাচ। গুন্তস্য যন্ত্রণা रमास यप्तज्यक् मक्तयः। शृर्वः विली-র্ণা ভবত স্তৎ পূর্ণ মভবন্নহি ।। অধু-না ভবতো দেহ চুর্ণ নিঃসারিত• ন্যা। শ্রীরাথ সাম্ত জ্যোৎসা। অঞ্জসা রাজ্যজ্বণ: 🛭 তেষা পুরুষা-

नन तिरशे नवरमा यट्डि उ करन। (बार्गायाण जूषायाण **(उन ही**. নো ভবান্ যতঃ ।। ততো হক সন্ধাৰা রাজ তথ সীদন্তি সাম্পুত । অবো श्रायः विवामप्राभि यथा नार्खिः न-ভেন্ডবার্ম পুরোপত্যঃ পুরোডা 🖯 🞮 इतनीयः भूरता २धरत । अन्मु छ-তোনু চাম্মयः পুদেयः गर्बछः कछो ॥ তভোনু ভবতো ভাগঃ পুরোডা-শো ম্যাকৃত:। তেন ভাগেন ভুক্তেন निडा॰ यक्कल्उन हि ॥ भूईवरङ मन्द्रभारः द्यान वीर्यं । ভविष्यं । या भाग उक्ना खाय की तारम স্থিতা তথা। শরীর চূর্ণবায়ত্তে জ্যেৎসায়া শাপি বে কণাঃ। বৃদ্ধিং যান্যন্তি সভত ক্ষীরসাগর মধ্য গাঃ। স্বারোচিষে হস্তরে প্রাণ্ডে দ্বি তীযে শঙ্করা শজঃ। দূর্বাসা ভবিতা বিপু: পুচণ্ড শুণ্ড ভাষর: 11 স ম-**(रुन्तुम्याविनयाध भाभः हज्। मुहा**ः ৰুণ । করিষ্যতি ত্রিভূবণ নি:শ্রীক। সস্রাসুর•॥ শ্রিযা ছীনে ডতো লো-কে ভবিতা লোকবিপ্লব: ৷ যথা তব क्षरार भाग भुवृत्त्व। (लाकदिश्रवः ।। তন্মানুষ পুনাণেন তৃতীযে তু ক্তে যুগে।ভবিষ্যতি স্থাস্যতি চহাবদ্যু भा ठळ्**डे**य॰ ॥ ७७ म्हजूर्थ मन्पुरस्डे

मह (मेरेव: कृष्ड यूर्ण) कीद्रापः नि-र्या थिष्रामः भास्य विकृत्रहः ख्या ॥ मञ्चानः सन्तरः कृषा मर्भवाकः उ-থা শুক । ৰজ্ঞাগেরু ছীনেষু দে-বালার্থণ বৃষ্ণ ভক্তঃ।। মৃথিব্যামঃ नगः (मरिवः कीरतामः नह मानरेवः। ত্বৎ সরীরামৃত মিদ হৎস্থিত কী-রসাগরে। তৎপুনথ্য গুহীষ্যামো রাশীভূত তথা ক্ষণ। সরৌ বধ্য-खरत कृदा द्वः भन्नीतः छना दयः । क्ष्मित्रामः मागत्रक्षता महीतार्थः विश्वा जव।। निर्माश्य गागवः भागाः मगुष्तार्य) यहामृजः। जना जव वनू ভিমিমপূর্ব• সম্ভবিষ্যতি।। ওজে। বীৰ্ণ্য শৃক্ত কান্ত মক্ষমঞ্চ সুখাত্ম-ক । দৃঢাস্থ সন্ধিক চাক ভবিব্য**ি** वभु खव ॥ मार्ऋ (७४ উवाह । मु-খা-শুনেব মাভাষ্য বুন্ধা লোক পিতানহ:। বিধো: क्याय माना-र्क्षः वृद्धाय यञ्जवानज्दा यथा मह्मान गिन्छ॰ भागार्कः या जू हन्तुनाः ॥ क्रयः वृक्षिक मानार्खः यद्गः उदा-कादा विश्विः ॥ यञः (यो उभया हन्तुः সুরজ্যেষ্ঠো বিভক্তবান্। বিভক্তা চ সুরান্ সর্ধান্ সমুবাচেদ মভুত ।।। कलाः (वाउन हन्द्रग) छोबका नासु मूर्जिन। जिक्ठ अर्गाविव भदाः क्य •े

यां इक्य विना। क्रायन यहि द्रा-গেণ মাসার্ছ্য দক্ষ বাক্যতঃ। ক্ষ্যায পীডাতে চন্দ্রে নোপশান্তি: সদা ভবেৎ ॥ किन्नुम्य राकना भएही क्यारमा गहु छा: शुकि। ठठूमं म কলা সংস্থা: পুতিমাসং স্রোত্তমা: ।। চতুর্দশকলা সংস্থান্যমূতানি পি-বস্ত বৈ। পুতিপত্তিথি নারভ্য ভবস্ত खाठजूरंगी ।। (अत्बाजागाः म्यं)-বিষণ চতুর্দশভিথৌ ক্রমাৎ। পুবিশ-স্ত ক্ষয় বেবং কৃষ্ণপক্ষে বিধাে র্ভবেৎ ।। যাতু শেষা কলাদর্শে হরিৎপত্তে পলাযিতা। ভিঃতৃ পুথমে ভাগে তিথৌ তস্যা• নিশাপডেঃ॥ দ্বিভীযে দর্শভাগে তুরোহিণ্যা যাতু মন্দির । তৃতীযে তু সরম্বত্যা• স্নাত্বা সন্ধ্ ক্ষিতো বিধু: । চতুর্থে বল সংপূর্ণ ত্তিথিভাগে বিভাবসো: ॥ মণ্ডল॰ যাতু চন্দুেয়ি সবিদ্ধ রথ ঘোটক:। याव एका त्वन हि कला भूषना ऋष নাপ্লুযাত।। এব মেব কৃষ্ণপক্ষে তা-বৎস্থা পুতিপৎ ভবেৎ। দ্বিতীয়া मो क्षणाक वृद्धि द्वां म उथा विधः ।। তিথীনা॰ বৃদ্ধি হেতুশ্চ শুক্লে কৃষ্ণে তথা ভবেং। ততঃ পুনঃ শুক্লপক্ষে यावर भूर्वा कलामिछ। ॥ वृद्धि মৈতি ভবেতাবৎ প্রতিপত্তিথি র।

দিত: ৷ ততো দিতীয় ভাগস্যা .জ্যোৎসা হরমূর্জনি ।। স্থিতাযাণ বৈ কলায়ান্ত গতা সা পুন রেষ্যতি। যুন্মাভিন্ত ভবেৎ পেয় মমৃত যদি-ति हित्त ॥ उष्मि शैयाहि जिथि : পূর্ণাস্তাভিঃ সদৈব হি। স্বযমূৎপৎ-**ল্যন্তে চন্দ্রে। জ্যোৎস্থা যোগাৎ সু** রোভমা:।। य्था मित्न मित्न ভাগা: ক্ষয॰ যান্তি তথা বিধো:। বৃদ্দি॰ গছন্ত্যনুদিন শৃক্লপক্ষে ২ন্নহং সুরা: েতেজোভাগ: সূর্য্য বিস্বাৎ পুন রেব সমেব্যতি । পুযাস্যতি কৃষ্পক্ষে যথা ভাগক্রতথা।। জ্যোৎসা হ-ब्रिकिकन्त्राट भुजाहर भून (त्रवा)-তি। তেজোভাগঃ সুর্য্যবিষাদমূত• বংস্যতে শ্বৰণ।। এবং বৃদ্ধি: শুকুপ-ক্ষে সুধাংশো: সংভবিষ্যতি। পক্ষ याः मृङ्ग कृष्णद्वः हन्मृवृद्धि क्रयाण्डः বেৎ॥ যাবৎকালেন যোভাগ: ক্ষয় বৃদ্ধিক যাদ্যতি। তাবৎকাল নভি-ব্যাপ্য তিথিঃ স্থাস্যতি সা পুন: ।। চিরেণ বৃদ্ধি যদি বা ক্ষ্যো বা ক্রতেন বৃদ্ধি যদি বা ক্ষযো বা। জতাভিথী-नाः ज नमा क्यः महाहिदाख वृष्कि স্থিতিযু পুৰে**শে ।। হ**ব্য॰ কৰ্যঞ্চ-त्मुगावना न ज जिंदिष्ठा । जमार क्राः भ्रष्काथः हन्तुः त्रकश्च (म्र

वाजय

े छाः ॥ शांशारनीयश्रेण्जाः कना े ছে, তু পিত্ভী রোহিণী গৃছে।। खेरमायामामना८ कवा वृक्षि या ি স্যুতি চান্নহণ। তেন কব্যেন পিং **ভর** रुधि गामाछि वि भवा ॥ 🗐 🕽 নাকণ্ডেয উবাচ। ততঃ সুরগণাঃ नार्त्व याथाकः विधिना छथा। हक् र्लाकिह्ञार्थाय हन्तुम् इव्यवृद्धाय ।। महारमवाणि हन्तुः क्र क्र भः भ त्रभाञ्चनः । अगुार परिव विधिना শিরসাভুগনিতো ভূশণা যতেজ: প-इसः निज्र मह भवाय मक्षयः॥ उट यक्षा कमुक्ताः भाभउस क्राः গতা: ৷৷ পুবিশন্তি যদা জ্যোতি রা-नन् मक्तः अतः। योगिनाञ् उताः ভেষা॰ চিত্ত• তল্লীন মেষ্যভি॥ ম-হাদেব **শির:স•স্থে লীনে** চিত্তে সুধা-নিখৌ। চন্দুদ্বারা ভবেমুক্তি রিভ্যেব বৈদিকী শু.তি:।। এতজ্জাত্বা নহা-(मवः क्वव्रक्ता विनाक् छ-। ङ्छाय সরলোকানা জগুছে শিরসা বিধু।।। **ठन्मु** (क्रां श्चा ननारगणामावस्त्रा याछि वृद्धाय । मञ्जीवशीषु वृद्धाम् পুবর্ত্তরে ভড়ো হধুরাঃ ॥ অধ্রেষু পুর্তেষু ধান্ ধান্ ভাগা স্তেদেবতাঃ া পরিগৃহ্ ন্তি পিতর তথা কব্যানি

ভূরি চ ৷৷ অনৃত বুন্ধণা সৃষ্ট যদে-বেভ্যঃ পুরাতন ৷ তেন তৃপ্যন্তি शैना (य श्वा जारान देवकाः ॥ যক্তেনাপ্যাথিতে তচ্চ জ্যোৎস্মাভি বৃদ্ধি মেতি বৈ। যক্ত জ্যোৎনা विना ज्उ छह महार कीन मनुशा। অতো হম্ভস্যযক্তন্য চন্দ্রা: কা-রণ ষ্ব। অতো ২স্য দক্ষশাপাত্ত त्रकारेय छहिकीर्घिङ ॥ यम्राभि क्षणाक्रि मुधा मःशीया मृदाः। তেकः সূर्यप्र• या**ङि म**ञ्जा क्वन्यार्का• জ্যোৎস্নিকা তথা।। পুনক্ষ শূরুপ-ক্ষে ভু শেষোদেতি কলা তত:। জ্যোৎসা দ্বিতীযো ভাগন্ত তেজো ভাগো विठीयकः ॥ অনে ভাগুলি-द्रन्हन्तुः भूर्यः विश्वाष्ये क्रमः। कः লাঃ ষোডশ চন্দুস্য তবৈকা শস্ত্ৰ-শেখরে ॥ সিতাসিতাবৃভৌ পঙ্গে। **ागाना मू**मयक्तरयो। इंडि वः मर्बः মাথ্যাত বিভক্ত ক্রন্মা বথা।। বু-হ্মণাপর্বত শুেষ্টে তথা তচ্ন্দু ভাগতঃ । বজ্ঞভাগে স্থিতে বন্সাদেবার্থম-করোদ্বিধু•। কবে গ্রন্তেপি পিত্রর্থ• তিথি वृक्षि कायो यथा। इमः भूगा-তমাখ্যান যঃ শৃণোতি শক্ষর:।। রাজ্যক্ষা তস্য হলে न कराहिन्छ-বিষ্যতি। যক্ষণা পরিভূতো यः শ্-

ণোজি বচন বিষে:। ন চিরাৎ य স্থান মুক্তঃ স ভবেমরসভাঃ। ইদণ স্থান পুণ্য গুছাৎ গুছাতর পর ।। যা স্ণোভ্যেকচিতঃ সন্ স মহাপুণ্যভাগ্যবেৎ । ইভি কা লিকাপুরাণে ২১ অধ্যাবঃ।।

রাজযোগ্য: ত্রি রাজার্হ: । নৃপোচিত: । যথা । ত্রিকোণ কণ্টকে সৌম্যে পাপে চোপচযন্তিতে । রাজযোগ্যা ভাবেমারী সুন্দরী স্বল্বদ্বিনী ।। ইতি জাতকানৃতং ।।

द्राङ्कद्रष्ट्र॰ क्षी द्रज्ञाङ । ইভি न्यस्-द्रञ्जादनी॥

রাজরাজ: পুশু ক্ষবের:।ইভ্যমর:॥
সার্বভৌন:॥ সুধাকর:।ইভি
মেদিনী॥

রাজরীতি: ত্রী পিত্তলবিশেষ:।
তৎপর্ব্যায়:। পাকতৃণ্ডী ২ রাজপুত্রী ১ নহৈশ্বরী ৪ বুন্ধাণী ৫ বুন্ধারীভিঃ ৬ কপিলা ৭ পিঙ্গলা ৮।
অন্য গুণাঃ। তিক্তব্বুণ। শীতলব্বুণ
। লবণব্বুণ। শোধনব্বুণ। পাপু বাত
কিমি প্লীফ্ পিত্ত নাশিব্বুঞ্ছ।
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

রাজবি: পু॰ শতপণাদিরাজ:।ইতি ্ ত্রিকাণ্ডশেষ:॥ তস্য মারণ• কলি নাশন•। যথা। কর্কোটকস্যনাগস্য स्वयस्ता नवना है। चडनर्गता द्वा-कार्यः कीर्जनः किनाननः ॥ इंडि महाजाद्वारः ॥

রাজলক্ষা পু• যুধি । ইভি ধনঞ্যকোব:।।

রাজলন্ধী: জ্রী রাজজী: । যথা।
সজ্র পুড়াব নিপ্ণ: পুমদা বিলাস: শ্বেতাতপত্র নৃপ পূজিত দেশ
লাভ: । হস্ত্যখলাভ ধনপূর্ণমনোরথ: স্যাৎশোকীদশা ভবতি নিশ্বল রাজলন্ধী: ॥ ইভি জ্যোতিষতল্প: ॥

ताजवः णाः वि ता व्यः (प्लास्त्रवः । ७८ शर्यायः । ताजवीजी २ । इउः भतः ॥

ताकवजा की जाकनथः। उर भर्गा यः। यक्षानथः र मःमत्रः ० जी-भथः ४ जेनिक् भवः ६ जेनिक्दतः ७ महानथः १। इंजि एस्मान्तः ॥ ताकवना की जन्दना । भक्तजा-मानिया इंजि जावा। रेजुमदः ॥ त्राकवज्ञ अः त्राकामनी ॥ त्रा-कामः ॥ त्राकवम्तः। इंजि ताक-नियकः ॥ नात्रायनमामकवित्राक कृज मृत्रुखन्ग् इतिस्यः । यथा । जीनात्रायनमास्मन कित्राह्मन थी-मजा। शुक्रिमः ख्रियर् मृत्रुखन्धः ब्राजम्

श्व देशक वहा छ ।। है जि जमा हि जी वि ।।

जीव देश की की जीव वि ।।

के कि का मा में कि तक माना ।।

ता कवा न कि जो कमा के वृक्त प्रमान मा ।

वि वि वि वि वि वि वि ।

वि वि वि वि वि ।

वि वि वि वि ।

वि वि वि वि ।

वि वि वि ।

वि वि वि ।

वि वि वि वि ।

वि वि वि ।

वि वि वि वि ।

वि

রাজনাহা: পু- রাজনাহকছ্তী।
তৎপর্য্যায়:। উপনাহা: ২। ইতি
হেমচন্দ্র:।। বিজয়সঞ্জর: ৩। ইতি
ভিক্যগুলেষ:।। রাজনহনীয়ে ভি॥
রাজনীজী ভি রাজনশ্য:। ইত্যমর:।।

त्राक्षवृक्षः शृ व्यात्ययवृक्षः। इति । स्र ।। शिवानवृक्षः। इति । सि नी ।। नक्षाञ्चायीवृक्षः। नक्षात्रक् इति ভाषा। इति नक्षित्रका॥ त्राजननः शृ शर्षः। शाहे इति ভाषा। इति नक्ष्माना।। त्राक्षनक्षतः शृ इल्लिम्बर्गः। इति श्रावनी।।

ब्राक्रमाग्रा छी ब्राक्कः मयनीयः। उद्भिर्गत्यः। महामय्रा २। इंडि इंसहन्तुः॥

बाज्यास्यः भ् वाख्रः। इंजिबाज

निघंकै: ॥

त्राक्रणुकः शृ शक्तिविश्णयः। त्रा-जण्गा ইতি हिन्ती जावा। उट-शर्यप्रायः। शुद्धः २ णजश्यः ३ नृशश्यः ४। ইতি त्राक्तिर्वण्टः॥ त्राक्रणुकः त्री त्राक्षह्यः। उट्श-र्यप्रायः। कनकन्छकः २। ইতি वि-काष्ट्राण्यः॥

त्राजम्बः भ् मन्छत्रमय्त्राः। हेडि (रमहन्तुः॥

রাজদঃ ত্রি রজোগুণান্ডব: ৷ ডে ल्लकन• यथा। व्यात्रसुक्रिका शेष-র্য্য নসৎকার্য্য পরিসূহ:। বিষয়ো-প্রেবা চারসু• রাজস• গুণ লক্ষণ• ॥ वात्रस्किति कवार्थः कर्याः নুধানশীলতা।। # ।। সংক্ষেপত उज्जन यथा। (यना विन् कर्माना লোকে খ্যাভি নিছ্ভি পৃষ্ণা। নচ **শো**চত্যসম্পত্তৌ তদ্বিজ্ঞেয়ন্ত वाक्रमः ॥ 🗱 ॥ उत्यान्नि र्यथा । (एवड्र नाडिका याचि मन्त्र) दुक् রাজসা:। তির্য্যক্ত্বণ তামসা নিত্য নিত্যেষা ত্রিবিধা গতি: 11 # 11 তন্নভিপুকারা যথা। কল্লা মল্লা निर्देश निर्व भूक्याः मञ्ज वृद्धयः। দ্যতপানপুসক্তাক জঘন্যা রাজ-मी गिजः।। द्राकानः कवियारिकव

রাজ্ঞতৈর প্রোহিতা:। বাদ যুদ্ধ भुवानाण मध्या ब्राह्मीगिष्टिः॥ গন্ধর্য গুছাকা যক্ষা বিবৃধানুচরা শচ यে। उरेथवाञ्जरमः मही द्राक्रमीय् ত্তনা পতিঃ।। ইতি মানবে ১২ অ थ्यायः ॥ 🚓॥ त्राज्ञाश्वारायथा। कः টুন্ন লবণাত্যুঞ্চ তীক্ষ কক্ষ বিদাহি नः। व्याहात्रा द्रावमस्म्राष्ट्री मूःथ শোকাম্য পুদাঃ।।ঞ্চারাজস্যক্তো यथा। অভিসন্ধায় তু ফল • দম্ভার্থ মপিটেব যথ। ইন্ন্যুক্ত ভরতশেষ্ঠ **७**• यञ्ज• विश्वि द्राजम• ॥#.। द्राज লতপো যথা। সৎকার মান পূলা र्थः उरमा मस्मिन हेठव यद् । किय-তে ভদিছ পোক্তি রাজ্যা চল্ম-**अ.**ः । अः । রাজসদান• यथा । यखु পুত্রপ হারার্থ ফল মুদ্দিশ্য বা পুন: বিষতে চ পরিদ্রিষ্ট ভদ্যান রাজসং অৃতং॥ইতি জ্রীভগব্দী তायाः 😘 व्यशायः ॥ 🕸 ॥ द्राजन जााम। यथा। मृत्थ भित्जात य कर्य काराङ्गम ज्यार जारहर। म কৃত্বা রাজস•ত্যাগ• নৈব ত্যাগ ক नः नाउट ॥ । । द्राज्ञ ज्ञानः यथा । প्থक्ति जूयक्कानः नाना जा 🚽 ়বান পৃথগিখান্। বেতি সরে বৃ ভূ **७रू उज्जान (विकि दाक्रम ।।।।।।।** 

রাজসকর্ম যথা। যতু কামেপ্সুনা কর্ম সাহস্কারেণ বা পুন:। ক্রিয়তে বহুলায়াস তদাজস মুদাজ্ত ধ 🗱 🛚 রাজস কর্ত্তা 🕬 । রাগী কর্ম কলপেপ্সু লুন্ধো হিংসাত্মকো হৃশুচিঃ। হর্ষশোকাশ্বিতঃ কর্ত্তারা-कनः পরিকীর্ভিত:॥#॥ রাজসী-वृष्कि र्यथा। यया धर्म सदमक का-र्याकार्या भाव ह । व्यवधाव পুজানাতি বুদ্ধি: সা পার্থ রাজসী ।। 🗱 ।। ज्ञाजनीथ् 🤝 यंथा। यया जू খ্মকামার্থান্ ধ্ত্যা ধার্যতে eজ্ न। পुসঙ্কেन कजाका एकी धृष्ठिः मा भार्थ दाक्रमी ॥ 🛊 ॥ दाक्रम সূথ যথা। বিষয়েন্দ্রিসংযো-गाट यखनागु २मृत्जाभमः। भ-রিণামে বিষমিব তৎ সুথ রাজ-সং মৃতং ৷৷ ইতি শ্রীভগদীতামাং ১৮ अव्यायः ॥ **# ॥ রাজস**পুরা-गानि रथ। । तुका ७ वक्तरेववर्ड মার্ক:গুশ ইথৈব চ। ভবিষ্য বা-মন ব্রাহ্ম রাজসানি নিবো**ধত** ।।**♦** । রাজবস্মৃত্যো **যথা। চ**রাব-नः गाञ्चवद्गः १ जात्वयः माकावाद **छ। का**ञ्चायनः रेत्रकरक ब्रिकेंगः স্বৰ্ণনা নুড়াঃ ।। ইভি পান্মেত্ৰি दाख ६० षाद्रामः ॥

द्राजममन की द्रोबग्रः। उद्भा र्यायः । स्नोदः २ । ইত্যমद्रः ॥ 🔍 জুপালভবন ৩ সুধাময ৪। ইতি नेद्रहादिक्षे ॥ ७८७ र। यथा । ं भोर्षा २जी द्रोजगरन गून कार्य्याः পকারিকা। স্বতিক: সর্বডোভদ্যে नन्त्रावर्डाम्या ११ । विहन्तः ক: পুভেদা হি ভবন্তী খরসম্মনাণ

রাজসভা জী রাজ্ঞ:সভা। নৃপতি-সম্যাজ: ৷ ইত্যমর: ৷৷

।। ইত্যমর: ॥

ब्रावमर्गः भू मर्गविष्मयः। ७८-भर्यप्रायः । ভूबक्खाकी २ । ইতি (इनहन्तुः॥

द्राजनर्थनः भू नर्यभविष्मयः। রাজসর্ঘা ইতি ভাষা। রাই ইতি কেচিৎ। তৎপর্য্যায়ঃ। কৃষ্ণিকা ২ রাজিকা ৩ সুরী ৪ মুগ্রক: ৫। মৃগ্রক ইত্যৰ ব্যষ্টক ইতি বা পাঠঃ। ইতি রত্নমালা।। ফ্বং ৬। ফ্রভাভিজ-ননঃ ৭ ৷ ফ্ ভাভিজনন ইভ্যত ক্ৰু-খাভিজনন ইতি বা পাঠঃ। ইতি (रुमहन्मुः॥ कृष्ण ৮ जीव्यक्षणा ३ রাজী ১০ ক্ফসর্থপাখ্যা ১১। অস্ত্রাজহর্ষণ লী তগরশুল্ল । ইতি 🗝गाः। जिक्कद्वः। कर्षेद्वः। উक्षद्वः। षु । भिड हार भुहद्वक । ইতি

রাজহ

व्राव्यनिर्घणः ॥

वाजनायुष्ठाः ली वाजवः। नाष्ट्रक ভ্য•ব্ৰহ্মত্ব-ব্ৰহ্মসাযুক্ত্য নিত্যপি। (एवज्यानिकः उद्यमिज्यम् पर्भ-नार ॥

त्राजमात्रमः भू नग्तः। ই**छि भ**दः याना ॥

রাজসী জ্রী দুর্গা।ইতি শব্রত্না-वनी ॥ द्राज्ञान्धनमप्रक्रिनी ह ॥

**त्राबम्गः भू॰ त्रा**बकर्खद्यरद्धवि-**भिषः। ७८ भ**र्यत्रायः। नृभाष्ट्रवः २ कज्रानः ၁ कज्खमः ४। ইভি नम्बद्धावनी ॥

রাজক্ষ: পু॰ ঘোটক:৷ইভি জি-কাওশেব:।।

ब्राक्य भु ही ब्राक्यन । ब्राज-কর:। ইতি লোকপুসিদ্ধ ।। त्राज्ञधर्गः **णु** त्राज्ञपुष्ठ्त्रकः। ই**ठि** ब्राकनिर्घणः॥

রাজহংস: পু• চঞ্চরণলোহিত-ष्यञ्दर्गरु भः। ইত্যমরः ॥ कम्यः ॥ কলহ•স:॥ নৃপোত্তম:। ইতি (मिनि)।।

ब्राकनिर्घणः॥

পুৰাত শুল গুল্ম কণ্ডু সন্ত বুণ নাশি। রাজহন্তী পু॰ রাজগজ: । তুৎ প-र्यायः। भातीहः २ याजक्रमाङः ३

द्राज्ञा भुः भुजुः ॥ नृপिष्ठिः ॥ ऋकियः ।। চन्द्रः ।। यक्तः ।। इन्द्रः । ইতি स्न-मिनी।। উত্তরপদে চেৎ শেষ্টার্থ वाहकः ॥ व्यथं नृপতেः भग्रायः । द्राहे २ भाषिकः ० चाज् ६ 8 न्थः ৫ उथः ७ महीकि ८ १। ইত্যমর: 🛭 নরপতিঃ ৮ পার্থ: ১ न्পि । ७ ज्यावः ১১ ज्र्र २ मशीপिं ३० नां छि: ३८ नातां हे oe ज्भीन्यः ob नामनः od नामन কাধিপঃ ১৮। ইতি শবর্রাবলী ম পুজেশরঃ ২৯ ভূমিথঃ ২০ ইনঃ २) मखर्द्रः २२ व्यवनीश्विः २० कन्तः २८ ककः २৫ ज्जूक २५ অর্থপভি: ২৭ । ইতি জটাধর: ॥ 🕸 ॥ अभावुष्टभन्ति र्यथा। यः হতা রাজরাজ্যেন পৃথু বৈণ্য: পুতাগৰান্। যোভিষিক্তো মহা ভেজা विधिदक्षर्यकावि**राः॥ शि** আপর্জিতা ভদ্য পূজা ভেনানু রঞ্জিঙা: মনুরাগান্তত স্তস্য ৰাম রাজেড্যভাবত ।। ইতি বিকৃ भुद्रार्थ 🕽 जंग्ल 📭 ज्यायः ॥ অপিচ। রাণী রাজসিক স্বর্ণ্<u>ড</u> वक्र क्य द्वागं । द्वागार्शाम ब्राजिका एउ द्रांजा गुकीर्डिठः ।। ইতি বৃদ্ধবৈৰৰে গণপডিখণ্ডে 🤐 व्यथ्रायः ॥ 🗰 ॥ ७म् । मद्रशि-**ত্**षः यथा । **म**ह्याः । मृत् यः म মহারাজ হে তাত ভবভঞ্জন।। ভ-ব্ৰাকাচ রাজাচ করেবাং পালকঃ পিতা।। ভুইত্রীশ্চ মহেন্দ্রে ২৮; षुष्ध चर्ला नृत्या २थूना। (या द्राजा ज পিতা পাতা পুজানা মেষ নিশ্চযঃ ।। ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে ত্রীকৃষ্ণজন্মপণ্ডে ৫৯ व्यथ्रायः ॥ # ॥ भृत्यात्रवात्नो त्राका इंजि **म** ज्जाबामी ८। यथा। দেবৈ বি পুৈ তথা সৰৈ ব্ৰভিষিকো महामनाः। ब्राङ्यांश्वराधिकात्र दि भृषु रेवन्तरः भुजाभवान्।। उमा भिजा পুর্জা: সর্বা: কদা নৈবানুরঞ্জিতা:। **छ्नानुत्रक्षिछाः मद्याः म्रेथ मृ** मृ म-त्र उमा ॥ व्यनुतामाख्ना वीत्रमा নাম রাজেভ্যভাষত। ইতি পান্মে-ভূখাঞ २৯ जर**ायः ॥ ३ ॥ ज**थ রাজলক্ষণ । সো ২পকৃষ্টে পাঞ্চ বাল দৃষ্ট্বাশীবিষ পীডিত ৷ নরেন্ট্র্ লক্ষণোপেত চিতানাপ নরে খরং।।

र जि

जम्रामाः हन्त् विश्वाखः मूक्ष त्रमाः। जगूनजः। नीलाः क्णाः व्यक्षिजाः के मना होयां खतक्रिजाः॥ ताजी वत्नवेषुमत्ना (वर्घाष्ठभूष्टेमःवृज्ः 1 हे कुर्य है के कुषिड़ पी र्घारमा। मीर्घः काङ् हः ॥ हजुःर्लिथाकदा साम्। यवतृरेक्षकभर्वकः ॥ मित्रानभारमा শস্ত্রীরঃ সৃশ্বত্ত তিবলীধর: ॥ इंडि मार्कछो भूताल इति कल्ला-भार्थरानाथरायः॥ #॥ अन्रह । अ-(सिरिनो मृष्डतो कमलामत्रमिः जि । भिक्षाकृती जानुनर्थो भारा-ब्र्को निर्वाज्जित्तो ॥ क्र्यान्त्रजो भूष्डा मूनाको न्नाउः मृत्वो ॥ মৃদুলোম। সমাজহ্ব। তথা করিকর-भुजा । उद्रादा कानव खन्। नृशः স্যোপচিতা: মৃতা: ॥ কোবগ্ঢে न्त्रा मीर्घ ज्रीयक धनविर्द्धिकः । স্মাভ্যাণ ফিডিপ: (পুক্তি: পুল-(यन मजास्यान्।। मणकः निः भकः म्बाः मुर्भितिमाण मानवाः। এक वि ত্রি চতু: পঞ্চবড্ধারাদিভিরেব চ।। দক্ষিণাবর্ত্ত চলিত শ্ভুগভিশ্চ নৃপা: म्जाः । नृभाः भूज्ञगक्तिभूका भ्रष् रुष्क थन वह ॥ मा नलकिक् मूथी -{স্যাচ সিংহরিক্ ভূপতি: মৃত:। च्वा जिंदर जिंदरकी दावा निषः क

निकृष्टि नंत्रः ॥ नृशा म्हामञ्क्रमाः म्। क्लिका विवय कक्काः। विवय-भागा नाजिः म्लवाताः करताजि शि अर्था भवाष्ठाः अर्थातः वृभद्धः পদ্মকর্ণিকা। অনুদ্ধতৈ শুচুকৈশ্চ ভবন্তি সূত্রগা নরাঃ। নির্দ্ধনা বিষ্টম मी दिंश भी जा भिष्ठ है के नृभाः ॥ मरभाव उक्ष इत्य भकष्णाः भाः भवः শিরালক ।। কছুগুবিক ন্পতি ল'ষ্কণে। হতিভক্ষণ:। আজানুল-খিনৌ বাহ্বভৌ পীনৌ ন্পেখরে॥ भिवरिष्ठ निर्गूषण मूजिल मूजम-क्ति 😇 । नृशा होतैनः कद्राहर सभ-दि र्यनविक्रिजाः ॥ निम्ना मञ्जनरेथ ত্তদম্বৰ্ণিক পরভঙ্কা:। তামৈ ভূ-**ना ध**नात्रा**क अञ्**रेष्ठः मयरेव खथा ৷৷ ঘনাস্লিক সধন ভিস্নে রেথাক যস্য বৈ । নৃপতেঃ করতলগা মনি-বন্ধে সম্থিতা; ॥ শহ্বাতপত্ৰ শি-विका गडभामा भग नृत्भ । अञ्चा-কুশ পতাকাভা মৃণালাভা নিরী-খরে।। দামাভাশ্চ গবাঢ্যানা স্ব-ব্রিকাভা নৃপেশ্বরে। চক্রাসি *ত*ো-মর ধনু: জন্তাভা নৃপতে: করে ॥ भा भो निष्क धानात्म जा अधिक त-धरेत न् भार्भ विद्या गरिमक सु विदेख

कारेष्ठ करेकक चालि**ंडः ॥** विवर्रेन र्यन्हीनाक हडाः निषा घनाः मुखाः া তীক্ষা দণ্ট্রাঃ সমাঃ শেষা জিছা ়**র**ক্তা সমা শৃভা ॥ প্লক্লা দীর্ঘা চ বি জ্ঞেযা ভালু খেত খনেখরে। ক্ফাচ পৰ্যাৰ্জু সম সৌম্যঞ্চ সংবৃতণা ভূপাৰা মনলং শ্লুক্ৰু বিপরীতঞ্চ দু:-থিবা॰। শঙ্কুকর্ণাশ্চ রাজানো রোম-কর্ণা: শতাযুব:॥করা: স্থিকাবনদ্ধৈ-क ब्यानरेषयाः महेन वृत्राः। जीवृत जूर किलिएनाम अज्ञी जागावजाः ভবেৎ ৷৷ অল্লছিদু৷ সুপুটা চ অবকা৷ ठ नृत्भचत्त्र । अ॰बृरॅंडण्ड ननारेंद्रण्ड कृत्रना উन्नटे वृत्राः ॥ ननारहान-সৃতা ভিস্মে **রেখা: স্যু: শত**বর্ষি ণা । নৃপত্ব স্যাহতস্ভি রাযু: পঞ্চ নবত্যথ।। ছত্ৰাকারে: শিরো ভিস্ত নৃপ। नियमात्रा **धनी । य**ष्ट्रमञ क्रजुङ्का दकः मध्यस्मी नृशः॥ इं जि भाकरफ नद्र खी लक्षण नाम ७७ व्यथायः।। 🗱।। व्यनिह । भार्षित् ৰাজু বৰুগামি ভ্ৰানা**ংখ্য লক্ষ**ণ• য় সর্বাণি যো মহীপালঃ সম্যান্মত্যুত্যু भर्तीकृष्य । त्राकाः भावप्र न **७**९: ज्ञान्यक्षां ज्ञात्रवराष्ट्रः ॥ निर्कात्र र्क्नोद्देशिशानि क्रिकि सर्व्या भाग त्यः। नूष्टिनुष्टे किन्तिगाण्याह-

ए॰ न कात्ररार ॥ नानाकात्र ईरात्र-ल्या न यथाक्यातकात्रकः । मुक्यी क्यी-রম্ভ ভূঞ্জীত বিকেতারে ন ভূঞ্জুর।। नत्रद्राष्ट्रे भक्षेनार्गं केन्द्रभागः क मूबरयर । त्नाथिश्वन्त्राख्र्या (४-সা: ক্ষীরাথী লভতে প্য: II এব• রাষ্ট্র ময়োগেন পীডামান ৰ বৰ্ষতে । ভঘাৎ সর্ব প্রত্ত্রন পৃথিবী মনু-পালযেৎ ৷৷ পালকস্য ভবেন্ডূমিঃ কীর্ত্তিরাযুর্যশো বল•। অভ্যচ্য বি-ফু• ধর্মাত্মা গো বাহ্মণ হিতে রত:॥ भुवाः भाविष्ठ् भकः भाविता থো জিতেন্দ্রিয়: । ঐপর্য্য মধুর পুা-প্য রাজা থর্মে মতিঞ্রেৎ।। ইতি गारूए७७७ व्यथायः ॥ 🕬 । तुका 😇 -বিক্ত রাজানো যথা। এপরাশর উবাচ। যদাভিবিক্ত: স পৃথু: পূর্ব॰ द्रात्कः नक्षिण्यः । उठः करमण ব্লাজ্যানি দদৌ লোকপিতামহ: ॥ নক্ষ গৃহ বিপাণা বীক্ষা বাপ্য শেষত:। সোম রাজ্যে দখাগুলা বক্তানা• ভপসামপি ॥ রাজ্ঞা• रिव्युवनः त्राष्ट्रा बनानाः वक्नाः छः থা ৷ আদিভগ্যনা পতি বিষ্ণু বসুনা মথ পাবক ।। পুজাপতীর্টাঃ দক্ষর বাসব মক্তা ম্পি। দৈ<sup>ত</sup> ज्यामा॰ सानवा नाक जुल्लाम मिल्नि॰ হদৌ । পিতৃশাং ধর্মরাজানং যমং আজ্যে হভাবেচয়ত। এরাবতং - फिल्माना मालवानाः शिंक मामो ा। পত्रविविधि श्रेक्ष ए (एवाना गि बांगवः । छरेहः जुवन संधानाः वृष ্ভন্ত গ্রাম্পি।। শেষ্ত্র নাগরাজা-ন মৃগাণা সি ছ भी खत । বনক ভীনা বাজান প্লক্ষ মেবাভাৰেচ-ষ্ৎ ৷৷ এবং বিভজ্য রাজ্যানি দিশাং পালাননন্তর । পূজাপতিপতি বুঁসা भानगामाम मर्वजः॥ शृवंम्याः हि-শি রাজান বৈরাজস্য পুজাপতে:। **मिमानानः मुक्तानः नुधः दि मा ९** जारवहरू ॥ मिक्सना । मिना ख्या कर्मभुष्ठा **পु**काभुष्ठः। পুध শহুপদ্• নাম রাজান• সো ২ভ্যেষ-**ठय** ॥ शिक्तमायाः विका ख्या রভ্রম: পুত্র মচ্যুক্ত ।কেতুমস্ক মহা-আনে রাজান নভিষক্তবান্।। তথা হিরণ্যরোমাণ পর্জন্যস্য পুরুষণ **७:। উদিচ্যা॰ निम्मि मुर्कार्य॰ दासान** मि जियान्।। उ तियः भृषिती नर्वः मधवीया ममखना। स्था नु पिन मन्त्राणि धर्यकः भुजिलान्तर्र । বিভে সর্ধে পুর্ত্তন্য ছিতৌ বিফো 'আ্ইাত্মন:। বিভূতিভূতা রাজানে। (य मात्र म्निम उम।। (य ভবिष्ठि

যে ২তীতাঃ সর্বভ্তেখরা দ্বিদ্ধ। তে সর্বে সর্ব ভূতস্য বিক্ষো রংশা দ্বি-জোন্তম।। ইতি শ্রীবিফুপুরাণেপুথমে **e শে ২২ অধ্যায়:॥ #॥ সূত** উবাচ । ७व॰ मृक्षाम् महीम् इ।वदाम् हत्राः म् ह । तुन्तां करम् न न जान । तुन्तां करम् मू भठकरम ॥ विकानाः वीक्वारिकव নক্ষরণাণ গুটিছ: সহ। যজ্ঞানাণ **७१ मारि**क्षव (माम त्राह्म) १ छ। (व-**চयट ।। वृष्ट्रणाठिक मार्बवा॰ मनाव-**কিরসা মপি। ভূগুণা মাধিপত্ত্যে চ कावाः द्वारंकाः २७। यहन्यः ॥ यहन দিত্যানাং পুন বিঞ্ বস্নামথ পা-वकः । भुकाभञीनाः मक्क मक्जा মথ বাসব মা দৈত্যানা নথ রাজান <u>भुङ्गामः मिष्टिनम्पनः । नातायगञ्ज</u> শাধ্যানা ক্ৰুমাণ ব্ৰভগ্ন ॥ ম্-<del>গাণা মথ শাদ্</del>লি গৰুড পততা বর•। গল্পরাণা• চিত্রর্থ• নাগানা नथ वामुकिः॥ भन्नानाः मक्छेरिक्द ज्ञानाक महीदिगाः। मर्खिषाः हः ষ্ট্রিণা• শেষ• সর্পাণাঞ্চৈব ভক্ষক•।। जागद्रागाः नहीनाकः (मधानाः वर्षि-তস্চ। আদিত্যান। মন্যতম প-জ্জন্য মভিবিক্তবান্ ৷৷ সর্বাপ্পুরো-गगानाक कामरस्व उथा भूजू। य-ज्ना मिमामाना हिंदमानो छरे थर

চ ।। शकानाक क भागाक मूङ्छं जि-থি পর্বা । কলা কাষ্টা প্রাণানা গতে র্যন্যে। তথা ॥ গণিতস্যাথ (यागमः) हाक मःवट्मब्रः भुजूः। পুজাপতে বিৱলসঃ প্ৰস্যা মভি (वहरान् ॥ भूषः नामा भूषामानः त्राकान क्षां छ। यह वर्षा शुक्तः ্শ• রাজান দক্ষিণস্যা• পুজাপ-তে: ।৷ কদমস্য শহুপদ পুঞ রা-জ্যে হভিষিক্তবান্। পশ্চিমস্যাণ **दिन्धि उथा तक्षमः भूध मूखमः ॥** কেত্যন্ত মহাত্মান রাদ্ধান হা ভ্যবেচয় । उथा हित्रगुरत्रामानः পর্জ্যন্যস্য পুজাপতে:।। দিগুরুরা याः भूधक ब्राकान मजुरवहयू । মানুষাণা ম**ধিপতি** চক্রে বৈবস্বত मन् ॥ टिजाइद मृथिदी मर्हा मधः दीना नन <u>बना। यथा नु</u>रम्भ नम्। পি ধর্মেণ পরিগৃহতে ॥ স্বাযম্ভবে-স্তরে পূর্ব• বুহ্মণা ভেভিষেচিতা:। इन्ताहि लाकशा**लास भून दि**व्य-उ २ उदा ।। त्राजम् (य २ जितक स পृथुः পূर्वः सङ्घिष्ठिः । सनुष्ठि वि ধিনা তছ**ে সো ২ধিরাজ: পুতাপ**্ बहुन्।। ইত্যাদ্যে विक्सिश्रुवाण वदाह शार्वे जावनामाधायः ॥ अ॥ त्राज क उवाक मानि येथान् महाना मावाह

া বংস রাজ্ঞাতিবিক্তেন পুজা র-**ेखन मार्फिजः। कर्ज्व) मविद्याध्य**े ्य वर्षक मही ज्ञा ॥ अविद्वा वर्षणाळावित्ताद्यना विजनानि পরিভাজা সগুযুক হরাণি বৈ। দ্পা-আ রিপুভ্য: সংরক্ষ্যে বহি ম্জ विनिर्गभार ॥ अष्टेश नाम भारताछि यहक म्मान्याच्या ॥ उथा द्राज्ञा-श्वानित्धः विश् र्यञ्चः विभिन्नेमारः । দুষ্টা দুষ্টাণ্চ জানীয়াদ্মাত্যানরি <mark>দোষভঃ। চরৈ ক্ররা তথা শ</mark>ত্রো রন্নে-**हे**व्याः शुरञ्जः॥ विश्वारमा नकु कर्छः ব্যে রাজ্ঞা মিত্রাত্মবন্ধ যু। কার্য্য যোগাদমিত্রেরু বিশ্বসীত নরাধিপঃ ॥ ञ्चानवृष्किक्षयञ्जन साज्ख्या वि-দিতাত্মনা । ভবিতব্য নরেন্দ্রেণ न कामदणवर्डिना ॥ शुगगाञ्चा म-ব্রিণ কৈব ভঙো ভৃত্যা মহীভৃতা । (क्या कानखन्नः भोत्रा विक्रासुज ততো হরিভি:।। য স্ত্রেনবিজি-ৈত্যৰ বৈব্লিণে বিজিগীষতে। সো **ę জিতাত্মা জিতামাত্য: শ**তুবর্গেণ বাধ্যতে ॥ ভকাৎ কানাদ্য: পূর্ব॰ (क्याः **প**्र महीज्ञ । उद्भाष हि करवा बाख्छा बाका स्नाड ৈ জিত: ॥ কাম: ক্রোধ্ন লো-चन मान अर्थित ह । इर्थन्ड

শত্ৰবো হৈতে নাশাব সমহীভূতা• ্।। কামপুসক্ত মাআনে সৃত্। দণ্ড —শিপাতিতৃ। নিবর্ত্যেত্তথা ক্রোধাদ-👉 नु द्रोहर इंडाजोन्।। इंडरेमन उंथा লোভান্সদাদ্দেন• দ্বিজৈ হত•। মানা-য়। এভি জি তৈ জিত সর্ব মক্তেন महाजाना । सृजा विवर्क्कायामञान् यउपावाः क महीशिवः ॥ काक কোকিল ভূঙ্গাণা বক ব্যাল শি খণ্ডিনা । হ সানা লোহস্টানা শিক্ষেত চরিত নৃগঃ।। কাকাৎ गर्वनिक्ठि । (काकिनार माभूर्घ)। ज्**ना** नुशीउगा वर्णानान । व-কাৎ শতুগৃহণে একাগুতা । ব্যা-লাৎ দুৰুপসর্পিত্ব। শিখণ্ডিন শিচ-ত্রতা সপ্রহণায় মুক্তা রাজা-বাত্মগোপনঞ্চ। হ॰সস্য সার্গাহি पुः। (वाश्वजाः मक्तानः।।(कोनिः কস্য ক্রিয়া॰ স্বর্য্যাদ্বিপক্ষে মৃনুক্রেশ্ব-तः। (हर्षे: शिशी विकास काल ज्भः भुम्मायः ॥ कोमिकमा **छ**-ल्कम्। भाजो काकावस्रनम्न• । भि-পীলিকানা পেনা বহুত্ব সর্পভক্ষ-१वश्री। (क्यानि विद्वालकाना वीज किटी ह नानालः। हन् मूर्ये इक-পশ্ম নীত্যৰ্থে পৃথিবী ক্ষিতা ।৷ অ-

विविद्यु लिकार मूतार मारः। वीका-सर्पर्वनिद्राप्तः। उक्षकात्न हन्तुः मृथमारी भी उकारन न। এव॰ मूर्यं भीत्व मूथमायी डिककाल ना अवः कानानुजादिन जूथ मृःथ माञ्च ॥ वश्कार भग्न मत्र मृतिना शर्विनी उनार । भुजा न्रापन हारिया उथा **ष्ठानरगिवः** ॥ वशकार, निर्घः ণব্ৰ । পদাৎ কণ্টকগোপন श्रि-ভনুথতা চ। সরভাৎ হত্বাপি শত্ন নোদেক:। যথা সরভোপ্তাপদ: প রোয়তি॰ নসহতে। শূলিন্যা আর্ত্তি-क्वाभन । खिर्विग्रा खनाए काल र्थामानः। हु खालरगावि (भोनकी ছাগশিরো দর্শবিত্বা অন্যদ্বিকীণা-তি॥ শক্রার্ক যম সোমানা ত षषाया मंश्रीभिज्ः। क्रिभागि भक्ष ष्रवी ७ मशीभावनकर्मा ॥ य-थिन्द्र महजूद्रा नामान् वाराहे (ध-ণৈৰ ভূতল। আপ্যাযযেত্তথা লো-कान् भित्रहारित संशोभिष्ठिः ॥ भ-विठारेव वर्षमानामि**डिः।** गानान-ষ্টো যথা সূর্য্য স্তোষণ হরতি রশ্মি-**ভि: । স্**যৌগেবাভাপাযেন তথা শু-क्षापिना नृभः ॥ यथा गरः शिरादः (या) शास्त्र कात्न निगङ्ख । उथा शियानियो हाडा मृश्रामुक गरमा

রাজা\_

ভবেट ।। পূर्णन्द्र वालाका यथा भीजिमान् जायाज नद्रः। अरः यव भुकाः मर्ता निर्देखा उहिम्बुउ॰ 11 भाक्जः नर्ब ज्उष् निग्र फार्राङ यथा। এव॰ हरत्रम्ल ण्डारेतः ली द्वामाञ्जादिवकृषु ॥ न ला ভार्रिथं ने कामार्थि नार्थार्थि र्यम् मानमः। भ मार्थिः क्षाउ धर्मान् म ब्राह्म अर्ग मृह्छि ॥ लाजामिनुरगकरैनः উৎপথ্যাহিণো মূঢান্ स्थर्माइनि-ভানরান্। য: করোভি নিজেখর্মে স রাজা ধর্গ মৃছতি।। উৎপথ্যাহিণ: भाभिनः। दर्गवर्षा न भीपि यम्। রাষ্ট্রে তথাশুনা:। রাজ্ঞ ত্তস্য সূপ। তাত পরত্তেই চ শাখত ।। এত্যা ক্তঃপর কৃত্য তথৈ তদ্ দি কারণ। স্বধ্যে জ্ঞান- নূণা- চাল্যতে ন স্বু জিভিঃ। পালনেনৈব ভূত্যানা কৃত कृत्जा महीপजिः। सम्यक् भाविः ভা ভাগ• ধর্মস্যাপ্মোতি বৈ য**ত:**॥ এৰ নাৰেতে রাজা চাতুৰণসারক্ষ ণিঃ৷ দ বুখী বিহুরত্যেষ **শক্রস্যে**তি সলোকতা ।। ইতিমার্কণ্ডেযপুরাণে भनानस्मार्थाभाष्याय खडीका ह <u>াখ্</u>যরাজাভিষেকস্যবিহিত**নক্ষ**তা ণি যথা। পুষ্যানুরাধা জ্যেষ্ঠা চরো-হিণী চেত্তিরা ত্রমণ্ড হত্তাখিনী রেব

তী চ নৃপাভিবেচনোত্তমা: ॥ ইঙি (कार्जाजः नात्र मः गुरु: II जना विव्: त्र १ व्यक्तिकनाय पुदेव् ।। 🗱। 🖰 द्राक्ति वर्गनीयानि, यंथा। नृत्य कीर्जि পুতাপাক্ত। দুষ্টশান্তি বিবেকিতা:। श्रम् भुगान जन्माम नजाम्।: जनग क्याः ॥ भूकातारगातिर्गनापियाः সো পরিপুরশূন্তা। ঔদার্য্য থৈর্য্য शास्त्रीर्ये (मोरियं)श्वर्यनाम् अन्यः ॥ ইতি কবিকল্পলভাষা > স্তব্বে ৩ হসুষ ।। 🗱 ।। রাজাম ভক্ষণে দো-ৰে। যথা। বারাহ উবাচ। শুদ্ধাভা-গৰতা ভ্তা মম কর্ম পরাষণা:। যে ভু ভুঞ্জন্তি রাজান্ধ লোভেন চ ভবেনচ ৷৷ আপদ্মতা হি ভূঞ্জীত রা-জামন্ত বসৃন্ধরে । দশবর্ষ সহসাণি পচ্যন্তে নরকে নরা:।। ভগবদ্বচন॰ শুত্রা কম্পিতা চ বসুন্ধরা। দিনানি मधरण ह जय॰ जीवु॰ वाकायज।! **उ**टारिनामना जूदा मा नहीं म॰-শিতবুতা। উবাচ মধুর বাক্য সর্ব· लाकम्थावरः ॥ धत्रपूरवाह । भृगू তন্ত্रেन मে एवं क्रमण कि वावश्चिणः । কোনুদোষো হি রাজ্ঞান্ত তৃমে ত্ব॰ বক্তু মহসি ॥ ততো ভূম্যা বচঃ শুত্রা मर्वयम्यविनाः वदः। शुक्तः नाद्रायता वाकाः धर्मकामाः वमूक्तवाः ॥ माताः

ग' श्रीकान्

**रू** उवार । मृग् मृन्स्ति उरवृत छश् ধ্যতদনিদিতে। রাজায়ন্ত ন ভো - क्कान्तुः महेज जीननरेजः जना ॥ यः ্- দ্যপ্যের সমত্ত্বেন রাজা লোকে পুর र्छा । द्वाजन छोमामा वालि अर्वन्. कर्म जूराकन ।। अभि वा गर्डिङ **७न ता**जावन्छ वमुक्तात्र ॥ थर्मा मक्ती-রণার্থায় ন তু মে রোচতে ভূবি। ত-তো ২ন্য সংপ্ৰক্যানি তছ্ণুষ্ বসু দ্বরে॥ যথা রাজ্ঞান্ত ভোঙ্গু বৈ मुक्ति र्जागवेठः मुख्या ज्ञानविदा जु गा॰ प्रिव विशिष्ट्रहेन कर्माण ॥ थन थाना भुरुक्षानि पद्मा ভागवरैज রপি। সিদ্ধ ভাগবতৈ কাম মন পূাপণশেষক ॥ ভূঞানস্ত বরারো-ছে ন স পাপেন লিপ্যতে। এব॰ বিষ্ণুবচ: শুল্বা ধরণী সংশিতবুতা।। বারাহ ক্রপিণ দেব পুত্যবাচ বরা-नना ॥ 🛊 ॥ उपश्र का सन्भायकि ন্তাৰি যথা। ধরণ্যবাচ। রাজানন্ত ততো ভুক্তা শক্ষো ভাগবত: শুচি:। কৰ্মণা কেন শুদ্ধ্যত তল্মে বুহি জনা र्फन ।। वाजार डेवाह । मृन् उरङ्ग (म (मित्र गमा) पु॰ जीक जानत्म । তর্ভি মনজা ধেন রাজান্নসোপভূ छकाः॥ এकः हान्मुख्यः कृदा छन्छ-क् हुक भूक्षा । अग्राट माउनन

दिक्क भीष् मुक्छ किन्सि ।।

जुक् दि झा खा नि है ए कर्म भ
मात एट । न जित्र वा भना । येव स्मव न

र न क्व देव वर्षा मन ॥ येव स्मव न

र न क्व देव वर्षा मन ॥ येव स्मव न

र न क्व देव वर्षा मन ॥ येव स्मव न

र न क्व देव वर्षा मन । येव स्मव न

मात नियका माय यही हि ९ भन्न मा॰

गित्र ॥ इत्या नि वा ना ए न न न ।।

क ॥ जिल । न न न न । हे ज जा ह
र क्व क्व हा न । इत्या ह न । हे ज जा ह
जिशाय जुक्व हा न । इत्य मा मन

ज जा क्व ह ।।

ह जि भार कि छ छ ।।

ह जि भार कि छ छ ।।

রাজাতন: পু॰ পিয়ালবৃক্ষ:। ইতি শব্দমালা।। রাজাদন ল্লী ক্ষীরিকা॥ পিয়াল:

 বক্তব্য মপ্রিয় যদ্ধিত ভবেৎ।। পরার্থ মস্য বক্তব্য বস্থে চেডসি ভार्गव। सार्थः मुक्टिन्तः बंकरवा न স্বযন্ত কদাচন ॥ কার্য্যাভিঘাত: সর্বেষ রক্ষিতব্যঃ পুষরুতঃ । নচ হিংস্য প্রন কিঞ্চিনিযুক্তেন চ কর্ম ণি ।৷ নোপেক্ষ্যু ভাষ্যমাণ্ট্ৰ তথা ब्राद्धः भिूषा ७ वट् । ब्राद्धण न তথা কাৰ্য্য বেশ ভাষিত চেপ্টিত ॥ রাজলীলান কর্ত্তব্যা তদ্বিদিষ্ট বিব कायर । ज्ञाञ्जः माम। १थिका वा ন কাৰ্যেয়া বেশো বিজানতা ॥ দুতো-भियु उरिथदामा (कोणनक भूमर्गाय८ । भूरणं (कोणजकामः) त्राज्ञानक वित्नवरवट् ॥ यन्त्रभूत्र वनाश्रोक क्तब्रम्रिङः नमागरिङः । मःमर्गः न ূৰেদুজেন্ বিনা পাথিব শাসন ।। নিঃস্নেহতাঞাবমান পুষরেন চগো शरय । यह रुष् । जर्तमाख्या न ज्ञाति श्वामाय् ॥ न्ति। म्।-বিত যথস্যাদ্বাচ্যাবাচ্য নৃপোত্তম ান তৎসংশাব্যেলোকে তদা রাজ্ঞ: लिया ভবেৎ॥ बाद्धानामान हा-न्धिन् नमूथाय ब्राद्यिः। व्यहः কি করবাণীতি বাচ্যো রাজা বি-জানতা ৷৷ কাৰ্য্যবস্থাঞ্চ বিজ্ঞায় কাষ্য মেৰু তথা ভবেৎ। সতত।

कियमारा १ मिन् नाघवस्तुः वृत्वर श्वरः॥ ताछः श्रियानि वाक्रानि व-চাত্যর্থণ পুন: পুন:। न হাস্যশীল~ শ্চ ভবেলচাপি ভূজ্টীমূথ: ॥ ना-তিবক্তা ন নির্বক্তা নচ ম্ৎসরিক ন্তথা। আত্ম সম্ভাবিতকৈবন ভ विक कथक्षन ॥ मृष्ट् जानि नहनुन्तु नजू मःकी खंराय कृष्टि । वज्रः मञ्ज भनकातः त्राञ्जा पडक पात्रयए ॥ **जिनार्यांग न जल्म्य मनारेम ज्**जिन মিছ্তা। তট্টেবোপাসন কায্য দি-वाष्ट्रशः न कात्रयर ॥ नानिर्फिष्ट তথা দ্বারে পুবিশেত কদাচন। নচ পশ্যেত রাজান মযোগ্যাসূ চ ভূমি-ষু।। রাজ্ঞ । দক্ষিণে পার্শ্বোনে-চোপবিশেত্তথা । পুরস্তাভু**্ত**থা शण्ठामामनञ्ज विगर्हि**ड•** ॥ जुञ्जा নিষ্ঠীবন কাস কোপ পর্য্যন্তিকা-শুয়ণ। ভূকটীণ বান্ত ম্নারণ তৎ স মাপে বিবজ্ঞাে ।। স্বয়ন্তত্ত্ৰ ন জন্বী ত ब्रुधनाथ्याभन्छ्या । ब्रुखनाथ्याभ-न हिन भन्नाम भूरगाक्राय**्।। इ**नस् নিৰ্মাশ কৃষা পরা ভক্তি মুপাশি-ৈতঃ। অনুদ্রীবিগণৈ ভাব্যুণ নিত্যুণ ब्राक्ता म**उ**न्मिर्टिः॥ मार्गः लोनाः क रेशमून। भाखिकाः ऋष्ठा छथा। हाभन्।क भित्र ग्राम्। निज्रः **बाक्रा** 

मृक्षीविना॥ भुरञ्ज विन्त्राणिरेन्नण ने रहा बहा जाने भाजाना। ब्राइटनदा॰ **७**ड: वर्षशास्त्र्ज्य च्डि दिविनी॰ - ॥ नम्यार्याः नम् हान्। भूभ दः ল্লভ মজিণ:। সচিবৈ শ্চাস্য বি-খালো ন তু কাৰ্য্য: কথকন ৷৷ অপৃষ্ট শ্চাস্য ৰ বুয়াৎ কাম• বুয়াত্তথাপা িদি। হিত• পথ্যঞ্ বচৰ<u>+</u> হিতৈ: সহ সুনিশ্চিত ৷৷ চিত্তকৈবাস্য বি-জ্ঞেয়ণ নিভ্য নেবোপজীবিনা ৷ ভ र्खन्नात्राथन क्यार हिन्दख्डा बा नवः भूषः ॥ ज्ञाशाभद्गातमे हिवामा বিজেযৌ ভূতি মিছতা। ত্যকেষ্ ভি॰ বিরক্তন্ত র**কে। বৃত্তিন্ত কার**যে**ৎ** ॥ বিরক্তঃ কারখেলাশ বিশক্ষাভূচ্ব ख्या। आभादर्खनक कृषा कनना-শ• করোভি চা৷ অকোপোপি স-কোপান্ত: পুসলোপি চু নিয়ুল: ৷ বা-काः मनन्तः वन् कृ वृद्धिः इनः काताः ভিচ।। পুদেশবাক্য মুদিভো ন স-ञ्चावराज १न/था। बाद्राधनामू म ৰ্বাসু সৃগুবছ বিচেষ্টতে ॥ কৰাসু দোষ ক্লিপতি বাক্য ভঙ্গ করে। ভি চ। লক্ষ্যতে বিমুখৈ কৈব গুণ সংকীৰ্ত্তনে কৃতে ম দৃষ্টিং ক্ষিপত্যথা-नाज कियमार्ग ह कर्षाण । विव्रक বদ্শ হেতৎ শৃণুরক্তস্য লক্ষণ ।।

দৃষ্টা পুৰমো ভৰতি বাৰ্ক্য গৃহাতি **हामद्रार्ध। जन्मवा**षि शदिश्शी मः भुयहु ि ठाजन ।। विद्रक पर्जान চাস্যরহস্যে চনশঙ্কতে। জাযতে इक्टेवरनः भुद्धा जना ज् उट कथाः ॥ অপ্রিযাণ্যপি বাক্যানি ভদুক্তা-न्। जिनन्त्र । उभायनक गृङ्गाजि खाक मन्त्राम्ब्राख्या ॥ कथा छात्र-ষু মারতি পুজ্টবদন গুণা। ইতি রক্তস্যকর্ত্তব্যা সেবা রবিন্সলোদ্ধ-হ।। আগৎসু ন ত্যজেৎ পূর্বণ বি-রক্ত মপি সেবিভ•্যা মিত্র• নচা-পৎসু তথা চাভ্ত্যু ভ্যদ্বস্তি যে নির্গুণ মপুমেয়া। পুভা বিশেষেণ চ **छ वृत्रिष्ठ मूर्त्रमृश्वामा स्त्रवृन्स्**यू-ষ্ট• ৷৷ ইতি মৎস্যপুরাণে রাজধর্মে অনুধীবিবৃত্তি নাম ১৯০ অধ্যায:॥ ताकारनी जी वृक्तितृभवः। की-त्र**ी इं**जि **ভाষা। उ**९ भर्यायः। त्राक्रकाः २ कीत्रवृक्तः ० नृशक्तः ৪ নিঘ্ৰীজ: ৫ মধুফল: ৬ কপীষ্ট: १ भाषरवाष्ट्रवः ৮ की ब्री ৯ एहकः **ল: ১০ ভূপে\$: ১১ রাজ**ব**ল্লভ: ১**২ ব্রিকল: ১১ দুচক্ষন্ধ: ১৪ ফীরশ্লুঃ ५८। व्यम्प्रा ७।।। गथुतद्वः । शि-खनाणिषुः । खक्षुः । ७ र्शगद्गः । वृष्रुषुः। (ङोन)कत्रषुः। रुप्तुपुः।

जूनिकान । (महनानिक्क । हैंजि बाद्यनिकंग्टे: ॥ व्यानिक । क्यानिका-याः कतः वृष्ण वृष्ण निका हिना ख्या । ज्या गूर्वा मन ज्यानिका रनावव्यामुक्ति ॥ हैंजि जाव-भूकानः॥

वाकामः क्री व्यक्तामण्डवनानि-वित्नसः। उट् शर्यप्रायः। नृशामः २ वाकारः ७ नीर्घन् करः ८ थानप्रम्हः १ वाकथानपः ७ वाष्ट्रः १ नीर्घ-कृतकः ৮। व्यनप्र ख्याः। वित्नाय-एवः। सूत्रिकदः। सध्यवः। नयुद्रः। नीशनदः। वनकाविदः। शथ्यः । काष्टि वीर्यप्र वृक्षि । दृष्टः। व्यक्षः। किर्मिन्दः।। वाक्षामिकञ्कः। उद्धाननित्यस्भायन्तिस्व वाकन् नारम पृक्षेत्यु।।

प्राक्षामः भू व्यानित्मवः। छ न भर्यश्रायः। त्राक्षकनः २ स्रात्मानः ० (काकित्नार भवः ४ सध्तः ६ का-किनानम् १५ कार्म्यः १ न्भवल्ल छः ५। व्यम् कन छ गाः। कामन् । क्ष्मा द्वः। भिल्ल मारु म् द्वा । मूभ क्ष्मा उम्र छ गाः। सामू दः। सध्त-दः। भूषि वीर्यः वन भूम द्वः। इठि त्राक्ष निर्देशः। व्यभित्। त्राक्षाम् छ ह व्याम् उः कामा स्था त्राक्ष भू वकः। জারামু ত্বর বাদ বিবদ পীত-লে ওক।। গুাহি কক্ষণ বিবদাখা-বাতকৃৎ কক পিত্তমূৎ। ইতি ভাবপুকাশ:।।

রাজান্ন: পু• অনুবে**ডস:। ইভি** রাজনিঘট:॥

वाकार्कः शृ (भेडाक्वृक्षः। नामा वाकनस्ट्रेंडि छाता। उद्भग्रायः विम्कार्थ व्यक्षः २ मन्तावः ४ गग-क्षकः ६ काष्ठीनः ७ मनाभूषः १। हेडि वाक्षमिर्यण्टः ॥ व्यवकः ৮ भूडाभमः भेटि मन्दवः विनाश वाक्ष्यः क्षी व्यक्ष्यः। वाक्ष्याः १। वि। ইতি মেদিনী।।

রাজার্হা জ্বী জমূ:। ইতি রাজ-নির্ঘট:া।

बाजानातुः जी यामूजुषी। मिठीनाउँ इंजि जाया। जर्भाराः।
महाज्षीर मेधुबानात्नी २ माकानातुः ८ ज्यकः ৫ ज्यानातुः ५ जनातुनी १ मिळेजुशी ৮। ज्याः कन
ख्याः। त्यादुः। कक भिछ इत्रदः।
छक्षद्ध। ইजि मननितामः।।

द्राबाजूकः भृ सशकमाः। इंडि हादावनी ॥

রাজাবর্ত্ত: পু• উপরত্নভেদ:। রে-় উটা ইতি হিন্দ্বীভাষা। তৎপ্র্য্যা- यः। नृभावर्खः श्राकान्तावर्षकः । व्यावर्खमाः । श्रावर्षः । व्यावर्षः । व्यावर्यः । व्यावर्यः । व्यावर्यः । व्यावर

রাজাহি: পু॰ দ্বিমুখ্দর্প:। তথ্পর্যায়:। দ্বিমুখাহি:২ বিলাবাদী গ্রবিষাযুধ: ৪। ইতি শদর হাবলী ॥ অহীরণি: ৫। ইতি ত্রিকাণ্ড শেষ:॥

রাজি: জ্রী শ্রেণী। রেথা ইতি নেদিনী।।

ब्राह्मिका खी (करातः ॥ त्राह्मिकं भः ॥ (त्रथा। केंक्र (चित्रिनी ॥ भड़िकः। केंक्रिकः। केंक्रिकः। केंक्रिकः। केंक्रिका ॥ क्रिकः। केंक्रिका ॥ क्रिका ॥ क्रिका ॥ क्रिका ॥ क्रिका ॥ त्रिका वर्षम् वर्षा । वर्षा वर्षा ।

क्व : २०। व्यम् । खगाः । कर्षेषुः । তিকবৃণ উক্তবৃণ। বাত প্লীহার্ত্তি শ্ল ফক গুলা কৃষি বুণ নালিত্ব• ৷ मार भिख्नुमख्या। उदिन्याः । जीक्षद्भः। वाजानिरमाय नामिद्धः । निनित्रद्वः। यूक कथ्यद्वः। (क-नारद्वः। द्वत्यायनानिद्धः।। ७९ পত্ৰ গুণাঃ। কটুত্ব•। উফাব্ব•। কৃনি वा ७ कक कथा भय इब्रद्भ । सामृत्य । बङ्कि मी भनकात्रि दुः छ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।। অপিচ। রাজী তুরা-किका जीक् गन्ना कु ब्लिनिका मूत्री। ক্ৰ: কৃতাভিজনক: ক্ৰিক: ক্ঞ সর্বপ:।। ব্রাজিকা কফ পিত্রী তীক্ষোঞ্চ। রক্তপিত্তকৃৎ। কিঞ্চি प्रकाशिमा कंख् कह काठे क्तीन् হরেৎ।। অভিভীক্ষা বিশেষেণ ত-षट क्षानि ताजिका। इंडि ভावः পুकाणः ॥

রাজিকাফল: পু॰ গৌরসর্যপ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

রাজিফল। জ্রী চীনাকর্কটা। ইতি সরাজনির্ঘণ্ট: ॥

दाकिनः भू॰ फूञ्च ज्ञर्भः। ইত্যমরः॥ রাজী জ্ঞা নিছিদুপড্কি:। ইতি শদরত্বাবলী॥

बर्ध्वका १ क्रवकः ৮ क्रूडकः ১ । রাজीফল: পু পটোল: । ইতি

त्राजनिर्यण्टः ॥

त्राजीयः जी शन्यः । हैल्यासः ॥

त्राजीयः श्रूः क्तिगालमः ॥ वृहचीनालमः । हेल्यासमः ॥ मात्रमनकी ।
हेल्यास्याः ॥ नात्रमनकी ।
हेल्यासः ॥ त्रार्व्यास्त्रमञ्जीविनि विक्र

त्रास्त्रन्तुः शू ्यक्षत्रभेत्राटम् ্ অণোরাজা। যথা। চতুর্যোজনগ-র্যান্ত মীধিকারে নৃপস্য চ। বো রাজা তেশেভগুণ: সূত্র মণ্ডলেখর: ।। ত্যাদশগুণোরাজা রাজেন্দু: প রিকীর্ভিডঃ ॥ ইভি বুন্ধবৈবর্ভে 🖺 কৃকজন্মথণ্ডে ৮৬ অধ্যায: ॥ द्राह्माख्यक्र**ान्यः ज्ञाह**् শবৃক্ষঃ। ইভি রাজনিঘটঃ॥ রাজী জা রাজপরী। রাণী ইতি ভাষা। দূর্য্যপত্নী। ইতি মেদিনী।। का॰ माः। इंजि (इनहन्दुः॥ नीबी। कें जि जानिय है। साम जान गड़ा वर्तनीयानि यथा। (स्वाः सोडाः गाउ वार्याज्यीन मृक्षाद्र सम्पाः। ত্ৰপা চাতুৰ্য্য দাক্ষিণ্য প্ৰেম মান वुकारयः॥ (वर्गी धमिन) नीनह

ভাল শুৰণ নাসিকং। কপোলাধর

নেত্র ভ্রু ক**ৌক্ষ রদ কন্ধ**না: ॥ গণ্ড বাহু ক**রোরোজ নাভীনথ্য বলিত্র** 

यः। লোমালি শ্রোণি রাজ্বার পাদ 'যুণ্ম নথ• ক্ৰমাৎ 🛭 ইতি ক্বিকল্প-वाडायाः ) खवरक ३ अमूबः ॥ 🗱 💵 म्बं भङ्गाः नुमानास्त्रः यथा। मृङ উবাচ। বিবম্বান্ কল্যপাৎ পূর্ব-মদিত্যা মভবৎ পুর।। তস্য পত্নী ত্রবণ তদ্বং সংজ্ঞা রাজ্ঞী পুভা তথা।। রেবভস্য সূতারাজ্ঞীরে-वस्त मृत्रव मूजः। भूजा भूजातः • मृयुरव दाष्ट्री म•क्का उथा मन् ॥ यमण यम्ना हित यमली ज् तज् बकुः। इंडि मार्मा ३३ व्यवायः॥ बाकाः क्री बाक्डहेनः। उ**्न**यंत्रा-यः। नीवृष्ट २ मखनः ० जनगरः ६ रिनः ৫ भूरिनः ७ विषयः १ द्राष्ट्रेन ৮ উপবৰ্ত্তন• ৯। ইতি শব্দৰহাবলী ॥ अमन्ननराज नीवृञ्जनभारते अक् বন্ধ কলিকু পঞ্চাল মুগধ কোশ-नारि मञ्जलेषुन चत्राठ गुरामन-गृष्ट् । दिन्धविषयाभवर्जनानि ह बनशास बनशासम्बद्धारय । बन-भरिकारण मञ्जलनिर्धेण ज्ञानमा-**ब्र ह । উপाधि छार्न्य (रणा**हि-ত্রিক ভিন্নার্থ । শানান্যেন পুযো-न मर्जनाट । नीवृतामयः शर्किव कार्थाः। हेजानाता वजहायुकः। ইতি ভরত:॥ 🛊 ॥ তস্য ক্ষণ

ं बाक्रानि क्रायथा। संदरिम्यांश-। द्राज्याक्र কারীদ সপ্তাক রাজ্য মুচ্যতে। व्यमाञ्ज बाह्रे मुगानि कार्या मन . ও দ পঞ্চম: ॥ এতাঃ পুক্ত্য ভ षविकिगीया समाज्ञाः। এতाः - পঞ্চ তথা নিত্ৰ সন্তম পৃথিবী পতি: ৷৷ সপ্তশুকৃতিক রাজ্য মি ভাবাচ বৃহস্পতি:। পৌরদ্রেণী তদ#ংগু বুরতে শব্দবেদিনঃ ॥ স্বা-ম্যাত্যঃ সূত্ৎ কোষো রাষ্ট্রণ দুর্গণ বল তথা। পৌরশূেণী চ রাজ্যা-क भुक् जिक जत्र हारा ।। इंडि भद्रज्ञावनी।। यशिष्ठ। नक्षाधि-পত্যু রাজ্যু স্যাৎ সামাজ্যু দ मनक्राक । मजनाक मार्मान মহাসামুাজ্য মুচ্যতে।। ইতি বরদা **उद्ध**ः ॥

त्राक्षाकः। जी भिन्नािकिकार धिन-वनिम्निक्रम्सामा व्यक्षानः। ता-यठा ইতি क्षा। यथा। मः ह्ना नि-किरमे क्षेत्र क्षेत्र के स्मू ह म-वनास्त्र किना मकनानिभ मञ्ज-वनास्त्र किना मकनानिभ मञ्ज-विवस्त के किना के द्यान-हिना क्षः। विवस्त के किना ही ह द्या-मनः भवना भरः॥ त्राक्षाक्र वाणि-व्याहिना भाहना जा स क्षाव्य द्या

त्री बाज्यम्त्राभागः। তৎপর্যায:। পুকৃতি:২। তত্ত্ব-**ষ্টবিধ• বথা। স্বামী ১ অমাত্যঃ ২** সূহত ৩ কোব: ৪ রাষ্ট্রণ ৫ দুর্গণ ৬ वन १ भोत्रागाः स्थापम । ইত্যমর:।। স্বাম্যাদ্য: সপ্ত প্রস্থ लाकत्मुगयक ब्राह्माक्शर भुक्-তিপদ বাচ্যা:। রাজ্যু সপ্তাঙ্গু। কন্ট্রিয়তে অপ্তাক্সঞ্জত্যভ্যনে-व मर्गिङ । यमुक कामन्दकीय । सामामानान बाहेक पूर्ण कार्या वनः मुक्ट । भद्रम्भाद्राभकादीरः সপ্তাক রাজ্য মৃচ্যতে ॥ পৌর<sup>্</sup> শ্লোর সহাষ্টাক মলি রাজ্য পু-কীৰ্ত্তিত মিতি। ৰাম্যাদ্য: সপ্ত-পরস্পরোপকারিত্বাৎ রাজ্যস্য অকানি উপায়াঃ সাধনানি রাজ্যা कानि भुक्षे अवंधि ताला । भुक्-७यः कृष्काः क ভाব ইত্যুক্তः ক্তি: পুকৃতি: ব্রিযাণ। স্বামী রাজী । অমাত্যে মন্ত্রী। সুভ্নিত্ত। স্বর্ণাদিভাগুলার• কোব:। রাষ্ট্র• जनभरवजी**ज्**भिः। পর্বতাদি দুর্গ-भः भुतः पुर्भः। वलः रेमनाः। (भोतः **ा**न्ती गृहत जिल्ल भूनर्वहन शुक्षा-ন্যখ্যাপনার্থ । ইতি ভরত: ॥#॥ ज्लिह। साम्याउता जनभए।

মূৰ্গণ ও তথৈৰ চ। কোৰে। বিত্ৰঞ वर्षक मधान- दाका मृह्य ॥ ् नशास्त्रप्रशिदावानःभूनः स्मी भुकेखिंड:। उग्रमपाडवानामाः बाका ब्रक्ताः शुरुष्ठ अः यउनः वः ক্ষুণা কৰু ব্যা তথা তেন পুষত্বত:। অব্যেভ্যা ব ত্তবিক্স্য দুোই মা-চরতে হল্পীঃ ।। বধ ভস্য জু ক र्खराः नीमुत्मद मशीक्षज्। इंडि नाट्रा ३३३ वर्गायः ॥ ब्राहिः जी यूषः। ইতি*হে* महन्तुः॥ শরারিপকী। ইত্যমর:।। শরারিপকী। ইত্য রাডিঃ बी মর: ॥ भू· स्नामश्राजामः। রাচক: হথা ৷ পুচ্যা মাগধ শোণী চ বারেন্দ্রী গৌড রাচকা: । ইভি জ্যোতিবঁতত্ত্ব ॥

स्। जी म्यः।। (भाज। हेि स
हिनी।। পूती दि (भवः। यथा। (गोउ॰

त्राष्ट्र भनुष्ठम॰ निक्षभमा छ्वाभि
त्राण्ड भनुष्ठम॰ निक्षभमा छ्वाभि
त्राण्ड भनुष्ठम॰ निक्षभमा छ्वाभि
त्राण्ड भनुष्ठम॰ निक्षभमा छ्वाभि
त्राण्ड । व्याप्ट स्मुण्ड भिक्र ।।

त्राण्य । व्याप्ट स्मुण्ड भिक्र ।।

व्याप्ट । व्याप्ट स्मुण्ड भिक्र ।।

ভবাৰ ছলভো প্ৰ তু । ইভি
মলনা সভব ।।

কাৰ নী ভাৰ । বথা বাৰণ
ভাৰৰ ন ভাৰ প্ৰথি মৃত
ভোৰৰ ন ভাৰ প্ৰথি মৃত
ভোৰৰ ন ভাৰ প্ৰথি মৃত
ভোৰৰ ন ভাৰ প্ৰথি মনী
বিণঃ ।। ইভি নাৱদপক্ষাতে পুথমরাতে ১ অধ্যাতঃ ।।

কাৰক নী পক্ষাত্ৰ । ইভি মেদিনী ।।

ब्राज्यकः भू॰ अक्वर्यस्वनात्रागृह्वाजी । ইতি भिषिनी ॥ রাজি: জ্রী হরিদুা ৷৷ এতদ্বীপাবছিল **স্**र्याकित्रगानविहमका**लः** । त्राजि ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শর্বরী २ निना ७ निनी थिनी ८ खियांना ৫ क्रामा ७ क्रा १ विভावती ৮ তमस्रिनी ৯ तस्रिनी >> यामिनी >> छमी २२ **वि**ज्ञानदः ॥ न्यामा २० वाता 28 याद्य 20 जूनी 29 नकः ११ (मार्या १६) मृतामाख्यी १३ जमा २० कमा २ भी गुजाकी २२ क्रिनि २० निष्यप्रे १४ हकाछ-मिनी २० भारती २७ वर्गा २१ वामूबा २৮ निषक्ती २२ १ इंडि **भद्रत्रावनी ॥ वज्रिः ७० वा**यू-রোষা ৩১ নিশীথ: ৩২ নিট্ ৩৩ । ইতি জটাধর: ৷৷ যাস্বতী ০৪ তারা কং ভ্ৰা ৩৬ ক্যোভিম্বভী ৩৭ ভার-किनी ०७ काली ०० कवालिनी ४०। के कि बाक निर्यणेः ॥ अ।। उन्।: का ब गः यथा। यमा मिक्कृ ठ अक्षेत्र (भारताः र्णामकास्वा। हारा छवडरा রাজি: স্যাচ তদ্বিহাদিন ।। ইতি विश्वितालगना छत्नामा भागा था। 🦚 🛚 পি তদেবানা॰ রাত্রি র্যথা। মা-সেন চ নরাণাঞ্চ পিতৃণা তদহর্নি ण । ক্ৰ পক্ষে দিন পোক শা্ক রাত্রি: পুকীর্ভিতা।। বৎসরেণ নরা **ণাঞ্চ দে**বানাঞ্চ দিবানি**শ•**। উ**ত্তরা**-যণে দিন পোক্ত রা ত্রিক্ত দক্ষিণায়ণে ।। ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে পুক্তিখণ্ডে ৫১ অধ্যায: ।। 🟶 ।। অথ রাত্রিকৃত্য: । म्जि:। भ्वाङ्ग विश्विः कर्य न क्वः তৎ প্রমাদতঃ। রাত্তেম্ব পুহর যা-वट उट कर्डवाः ग्रुप्टमक दट ॥ हि-বোদিতানি কৰাণি পুমাদাৎ পতি-তানিচ। শুরুর্ব্যাঃ পুথমে যামে তানি হ্বর্গদভাষ্ট্র ॥ ইতি রত্নাকর:॥ याञ्जवन्त्रिक्तित्रामो । উপामः श শ্চিমা বিষয়ে হুৱাগ্নী স্তানুপাস্য চ । ভূঠিয়: পরিবৃতো ভুজ্বা নাভিত্ঞো হথ সন্বিশেৎ ॥ অগ্নি হোমোপা-সনে সাগ্নিপরে। উপাস্যচেতি চ कां्त्रा रेवचरमवामिकः अगूहिरनाजि ॥

। मिन्निष्में चानि । उथा ह विकृ প্রাণা পুনঃ পাক মুপাদাব সাব-মপ্যবনীপতে। বৈশ্বদেব নিমিত্ত॰ रेव भन्ना मार्चः विनः रुद्धिः।। अ তিথিকাপত ওত্র স্থলক্যা প্রযে-षूष: । दिवाजिएयो जू विमूर्थ गर्ज যৎ পাতক ভবেৎ। তদেবাই গুণ পৃ•সা• স্র্য্যাটে বিমুখে গতে ॥ স্-র্য্যোচ্চ, অন্ত॰ গতে স্র্য্য। তথা। क्डभारारि मोठस उक्वा भागः ज्ञा गृशी। गहिन्युः हिंजाः **भ**या। মপি দাক্মযী । নৃপ ।। ভোজনে সা-যমিতি সার্ভপুহরপর পুাওক্তাৎ ।।#!। অথ রাভৌ শ্যন বিধি:। সতি স্যেं। भया हन भाउनीया ना ह मृ-र्याप्यार भूवं मूर बाननीया। उथा ह মৃতি:। ভাক্ষরাদৃষ্ট শ্ব্যানি নিত্যা-नि मिलानि ह। मूर्गायलाकि ही-পানি লক্ষ্যা বেশ্মানি ভাজন 🗐 । व्यातः । मुक्ती (माम विविर्क्त ह গোমযেনোপলেপিতে । পুাগুদক্ প্লবনে চৈব সন্থিশেखु সদা বুধ: ॥ मक्रवाः भूर्वञ्च भितः शास वि-थाय ह । दिविहिक शीक्टिंड में दिख রক্ষা কৃত্বা মণেত্ততঃ ॥ গর্গ: । স্বৃগৃহে পাুুুক্লিরা: শেতে হাাযুুুুু্ব দক্ষিণাশিরা:। পুত্রক্শিরা: পু-

वांत्र जून कमाहिमूमक् निवाः ॥ गार्क् ७ वश्वारा । भुक्ति इः नयः त विष्णा भन भागुण पक्तित। পশ্চিমে পুবলাং চিস্তাং হানিং মৃত্যুং **७**(थान्डात्र ॥ ७था । नमक्**र**ातर्यः विष्णुः नभाविष्टः यशिष्टि । भार्तः (७यः। मृन्। नारा भाषाति **५ ०**क-বৃক্ষে চতুয়্লথে।মহাদেবগৃহে চাপি শক্রা লোষ্ট পা॰শুবু ॥ ধান্য গো বিপু দেবানা গুৰুণাঞ্চ তথোপরি । न ठानि ज्यमयत नाम्को नाम् ि खय ।। नामु वाना न नग्न ना ভরাপরনতকঃ। নাকা**শে সর্ব শ্**নে১ **চ नहर्देह** जुक्स्स उथा ॥ स्रत्निष्ठि শেষঃ ॥ ঋ ॥ অথ রাত্রো দারোপগ-मन विविः। याञ्चवद्याः। (वाउम-ৰু নিশাঃ জীণা তাসু যুগ্মা**সু সমি** लिट । युक्तार्याय शर्वापाना **क**ड-भू ख वर्ज्जाय ॥ जीना वाउम নিশা অতু গৰ্ভাখান যোগ্য কাল:। তত্তোক্ত বিধিনা গছেশ্যে তত্ত্ৰ যুণ্মাসু র। ত্রিম্বপি পর্বণি বুন্ধচার্য্যেব ভবতি । তত্র বুডাদৌ গছতো বুক্ষচর্য্য স্থলন (मार्या नाखि इंडि भिजाक्ता ॥ विक् भूतानः। यष्ठाञ्चेभी समावाना मुख भाष्म हज्यंनी । रेमथ्न ता প্ৰদেবেত দ্বাদশীঞ্চ ম**ম প্ৰি**য়া•॥

**হারীত:। চতুর্থে ২হনি স্নাতাবা•**া যুগ্মাসু চ গভাধান বদুপেত বুদ্ধণ-র্ভ• সন্দধাতীতি। অত্র চতুর্থ্যা• রাতৌ যদ্বর্ভাধান মুক্ত• তদুকো নি-বৃত্তৌ বোধ্য । রজস্যুপরতে সাধী न्नात्नव खी ब्रह्मचा । इंजि मन्वहरेन-कवांकाजार । माश्री गर्जाधानामि विह्डि कर्यायाण्य डार्थः। ज्यान्ता-শ্চতসুস্ত বৰ্জ্জবৈৎ। ইতি তু রজোনি-বৃত্তীতরপর । অন্তাবপি কামুকী পন্ন নাহ। বিফুপুরাণ । মৃতো নরক মভ্যেতি হীয়েদক্রাপি চাযুবঃ । পরদাররতিঃ পু•স। মূভযত্রাপি-ভীতিদা ৷৷ ইতি মত্বা স্বদারেষু পাতৃ মৎসু বুধো বুজেৎ। যথোক্ত দোষ-ছীনেষু সকামেম্বন্তাবলি ॥ পৈঠী নসি:। ত্বাষ্ট্ৰু বিশ্বৰূপণ জঘান বজু-ণেন্দু স্ত পুডি দেবা বুক্সইন্নিতি অ-वषन् न जिय छेन्।गृङ्गी उ वद्गः माः म्याभि ততো **२**म्या **प्**रीय दुकारः ত্যাযাঃ পুৰাদ্যন্ত জ্বিষ্ট্ৰক ভূমি इनम्भाउरोक्का। यामर्श्विमवता जू-(क्षे) वद्र शागहा ज्यानः दित्तु र क्राना॰ ছिन्नभुद्राईन खीना जर्द-কালেষু সম্ভবঃ। সম্ভবে। মিলন मञ्जाग इंडि याद्य । मर्बकाल अञावन्रको छ। न जू भुक्तिक

সর্বাদৌ। তথা চ গোতমঃ। খতার 🛚 मिं ।। मूडेकान मार (ब्राजिय । জ্যেষ্ঠা মূলা মঘাশ্লেষা রেবতী কৃত্তি কাশ্বিনী। উত্তর্গতিতবং ত্যক্ত্বা পর্স্ব वक्त वुर्बाम् छ।। এवक अछ। নোপৈতি যো ভার্য্য মন্তৌ যক गहुं ि ुला भाक् खर्या (मीय में रगानी यक निक्षिति॥ दोशायनीय মন্তৌ পদন দোষাভিধান নকামা विषय । विष्यः। श्रद्धानाद्वागः। वर्ज्ज নৃতাবগছন্ পত্নী তিরাত মপবসে দিতি ৷৷ বৃজ্বশাতাতপঃ ৷ জীণা• স•-প্রেক্ষণাৎ স্থার্শাৎ তাভি: সংকথ-नामि । वुक्तवर्धाः विशामा न मा (त्रवृत् मद्गार ॥ मर**भूक**गार সংকথনাদিত্যত্র সরাগড়ু সংশক্ষা র্থ:। শুক্ষানভরক্ত নিষেধ মাহতু: শন্ধলিখিতো। গুরুপাতা তদহো রাত্র পরিহরে নাভবে দিবা নৈথু न बुरक्ट क्रिया स्वीर्गाम दिवा भुम् यस श्लोक ज्यामि जिल्लाम ৷ পুজারীনশ্চ পিতৃণা নোপছরে: छ उन्ने सिह्नरारि पुगरउडारहमा-ৰ যিনাপুতিগৈ ভবতি ভনাৎ পু ভিগ্নান: পুল্ব। পুতিগ্নেভভি। নোশন্ধে। নিবেধে। তন্ত্র॰ সন্তান•

অছেদায অবিছেদায় সম্ভানস্যায়েন यमार चनुष्ठिष्ठः नुजानुर भन्ता य-পাুপ্ত পৃতি ই: সন্ পত্তি ভ্যাৎ ত-দুৎপত্ত্যর্থ যভিতব্যমিতিকল্পতকঃ । अवक भाक्षिति यह जिगमनः श्री-শুক্ত যাজ্ঞবন্ধ্য বচনাদুক্ত• নিতাক্ষ-त्रायाः जस्त्रयः। विणिष्ठः। मृमुाम् उ ज्ञिन रेमथून या श्वग्हि । य-স্যান্ত তস্ত তে পুত্রা অস্বর্গ্যাঃ শৃদু বৎ, ছিজা:।। পরাশর:। খতসাতা-ঞ্যো ভার্য্যা সমিধৌনোপগছভি। সগছেমরক ধোর বুন্ধহেতি তথো-চ্যতে ৷৷ সন্নিধাবিত্যভিধানাৎঅস-মিহিতস্য গম্নাভাবে ন দোষ:॥ পুগ্রোৎপত্তি পর্য্যন্ত মৃত্বভিগমন নি বনমাহ। ক্র্মপুরাণ। খাত্কালাভি-গামীস্যাৎ যাবৎ পুগ্রো ন জাযতে ৷ याना नकर्यनार्थं हि भू भारतार भार ন পুতি।। যতিতব্য মিতি শেষ ।। वाभडरः। अठो जू गर्जनिक्रिकी न्नान रेमथूनिनः मृठ । जन्छी जु जना कार्याः (नोठः मूख भूदी वविनिष्ठ ।। দাবেতাবশুচী স্যাতা দম্পতী भगनः गछो। भगनामृत्यिक। नःही मूकिः माप्रमूकिः भूगान् ॥ रिम्पन मुखाः भाक् मलम्बार्माश्नं न मन ग्राट । टिनाजाक उथा वास मा

भुक्तर्यानि देवयुर्व । म्राजाहातः यमा জ্বানহোরাত্রেণ শুদ্ধ্যতি।। ইতি वहनाए। भ्यान्द्रभावी भावस्वः । भा यति गर्ड- नाम्श्रीक निमिश्वकाः যাঃ শ্বেতপুল্লায়া উপোষ্য পৃষ্যন ক্ষত্তে মূলমূত্থাল্য চতুর্থে ২ছনি স্থাতায়াং নিশায়া নুদকেন পিষ্ট্ৰা 🔻 ফ্রিণদ্যা নাদিকায়া নাদিঞ্জীতি । ইয়মোৰ্থী জাৰ্মাণা **সহ্**মানং **স** व्रस्त्री। जागा। जारु वृर्काः भूयः পিতৃরিব নাম জন্যত্যভিতইভি। সা পরিণীতা পত নালেপি কৃতাভিগ মন। যদি গর্ভ ন দধাতি তদা উপো ষ্য পুৰে। নক্ষতে খেতকণ্টকারিকা মূলম-থাপ্য চত্তে ংহৰি শত্রাতা খ্য- সভ্যা• রাত্রাবুদকেন পিঞ্চী দক্ষিণ নাশাপুটে পতিঃ ইয়নোষ্ধী বিতি ন্ত্ৰেণ নস্যাদদাতি দক্ষিণস্তানা-নিক্ষিষ্ঠাভ্যা গৃহীত্বা পাক্শির: স্বিপ্টাশা, ইতি গোভিল মারণাৎ। वार्वेक्सींय। निश्ननौ॰ मृक्रावत्रक দ্রীসং লাগকে**শরং। আজ্যেন সহ** ভঞ্জীত অপি বন্ধ্য পুস্যতে॥ या छढ∞हुाः। এव• शहन् खिय• काना• मया जनाक रक्तांग्ट। मं उ हैरन्ती मार्ट अधा नामगु अन्ति भ्रान श कराष नाइ। हाबाबवादिना । अर्

দেকবার । অত্র সম্যোধার হের্ভু ত্যা উত্তান কর চরণামেব স্বর্হা ত ন ভির্য্যগাছিতকর চরণা জিব্রু अवुज्जिममानस्त्रः मिक्नारार्थं न খাপ্যেৎ ৷ পুৰুষায়িতে তু গৰ্ভা: ৰুৎপত্তি রিভি বিশেষ:। দক্ষ:। পু-मायश्रीकामी यात्मी (वनाज्यातम **ा नरय**्। यामचय मयानस तुका-ভ্যায় কল্পতে ৷৷ ইভ্যাহ্লিকভৰু ॥ 🗱 ॥ অথ রাত্রিজাগরণ দোবও-ণো। রাত্রো রাজরণ কৃষণ সিপ্ত পুৰপন দিবা। অৰক্ষ মনভিষ্যনিদ ज्ञात्रीनशुः नायिकः ॥ कक (मर्हा বিষার্ভানা রাভৌ জাগরণ হিত । क्रिया वा यक्ति वा ब्राख्यो निमु। बा-ত্মীকৃতা তু যৈ:। ন তেষা স্পতা रमाया जागुजा वा विश्वीयाज !! इंजि রাজবল্লভ: ॥ গ্লা রাত্রৌ কলপূরা यथा। यञ्च রাজাবের নহাপুরা ক-र्खवता वीववन्ति 🖲 🖣न मिल जर्बथा कार्याः नाजनात्रम मुद्भुक ॥ उ९-श्रुनः जलभूकाविषयः 👢 अर्द्धताः बाट भन्न यह गृज्र्ड वय श्रीन ह। मा মহারাত্রি কদিপ্তা তদুভ নিক্ষজ-ৰৈ ॥ ইতি তজ্ঞসারঃ॥ 🗱 ॥ অথ রাতৌ বিহিতনিধিংল ৷ ছন্দোগ প্রশিষ্ট । মুনিজি ছিরশ্ন পূো-

রাত্রি

ক্ত বিশ্বাণা নর্ত্যবাসিনা নিভ্য ্ৰি অহনি চ তথা তমম্বিন্যাণ সাৰ্দ্ধ नुद्रेत यामासः ॥ कावानः । व्यहः मु जिथयः भूगाः कर्यान् धानला मि বা। নক্তাদিবুতযোগে ত্রাতিযো ১ পো বিশিষ্যতে। দেবলঃ। রাহুদ ৰ্শন স কান্তি বিবাহাত্য বৃদ্ধিযু ্লুনে দানাদিক জ্ব্যু নিশা কাম্যু বুতেষুচ। বুন্ধাগুপুরাণ। ন রাত্রৌ भातन अवंशर अल्डे दे ब्राहिनी ব্ৰতাৎ : তত্ৰ নি**শ্যপি বৈ স**ৰ্য্যাদ্বৰ্জ-যিত্ব নহা**নিশা**ণ ৷৷ ইতি তিথ্যাদি-ভকু !! # ৷৷ এ চভকেন নক্তেন তথৈ বাহাচিতেন চ। উপবা**সেন দা**নেন रेनदानादिका ७१४८ ॥ कन्म-भूजान, । भूरताय वहाभिनी गुाइए। रिधि न ज्वाउ महा। (हवी भूतानः। হবিষ্যভোগনং সভ্যং ল্লান মাহা-बनाधवः । अधिकाळे स्थः भगाः वक्ताकी यपान्तर ॥ ইত্যেकार-णी उनुः।का। अवनः। ब्राब्वी मुक्तः न सर्वी छ ब्रक्रिकी की खिंछ। हि ना । मन्नुरमा ब्रिक्टिया है कव मूर्या देववा हिरद्वा रिक् हिंकि मू कि व शिक्षा। विकृभूवीया भुक्ति निम्न उपः महत भष्णाहा विष् ल स्मात् नात्। या स वाध्यति सर्वः भागमनः नदः।

बाजाविन गनायाः मानारमे भुजिः भुजव मार। वृक्षभूद्रागः। निवा द्रा-(क) ठ नक्षावाः गक्षावाक शुनक्षः न्नाजाचरमध्यः भूगाः ग्रम्भूष्व তজ্জলৈ:। রাত্রিঞ্রাধিকারমূপক-ম্য আদিপর্বণি। অভো রাত্রৌ পা-পুৰতো জল• বুন্ধবিদো জনাঃ। গর্হ-যি**ভি জনান্ স্রান্বন্**ছান্ নৃপ্তী নপি।। তত্রাজু নস্যপুতি বচন । স-मूर्ष हिमवर भार्य नम्यान म्यान म्र र्गाल। ब्राजावहिन मन्त्रायाः कम् **७४: भरिगुर: ।। (मर्या: । स्रानि**-শা তু বিজেষা মধ্যনং পুতর দ্বৰং ! তস্যাণ স্নানণ ন স্বর্গীত কান্যনৈমি-ব্রিকাদ্তে ॥ অতএব কল্পতকঃ। न নক্ত· স্থায়াদিতি বৌধায়ন বচন· রা-গপুণপ্ত সান বিষয়ণ। এবঞ্চ গঙ্গাসা-नम्। निवाद्गाञिक र्डन्। वाविष्णया ভত্তন্নমিত্ত ভিথি বিশেষস্যাপি मिवादाजि नमकिः इनादिः **प्र**ः ইতি পাুযশ্চিত্ততত্ত্ব ॥ র:ত্রিকর: পু॰ চন্দুঃ। ইভি ছেম-हत्तु निमाल्य भव मर्माट ॥ ब्राबिठबः भू ब्राक्तमः। ইত্যादः॥ রাত্রোগ্যনকভরি জি 🛭 दाजिन्द्री खी ताकनी। यथा। ७० বিপুদর্শ কৃত্যাত যত্না বাছে বনে রাতিব:

রাত্রিচরী ভূটোকে। জিঘা সূ বেদ

পৃতভাসুরা**ন্ত্র** স্তা• তাডকখ্যা• নি-

জঘান রামঃ।। ইতি ভঞ্চি।।

बङ्गिरिका। इंडि ब्री রাতিজল

नद्याना ॥

রাত্রিজাগরঃ পু॰ অনুরঃ। ইতিহে

মচন্দু: ৷৷ রাত্রৌজাগরণকর্ত্তরি ত্রিঃ৷

রাত্রিজাগরদঃ পু॰ মশক:।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

রাত্রিঞ্জঃ পু জী রাক্ষ্যঃ ইত্য-

নর:।। রাত্রো গমনকর্ত্তরি তি ।।

উৎপनः। ইउ রাতিপুয়• ङ्गी

রাজনির্ঘণ্ট:॥

রাত্রিমটঃ পু॰ রাক্ষসঃ।ইতিত্রি

কাণ্ডশেষঃ॥ রাত্রোগমনকর্ত্তরি ত্রি

রাভিনণিঃ পু॰ চন্দু:।ইতি হারা-

वनी ॥

ন্নী অন্ধকার:। ইতি রাতিবাসঃ

শহসালা।। রাত্রো শ্যনকালীন

श्रिव्यवज्ञः। यथा। वाकामूक्रवं

উত্থায় মুক্তৰাপঃ রাত্রিবাস স্ত্য

জ্বা শির্দি সহসুদল কমলাবস্থি

ত॰ শ্বেতবর্ণ• দ্বিভুত্র• বরাভ্যকর•

(चंडमान्।।न्।न्थन चपुकाणक-

প' স্বামস্তিরকশক্রা সূপুকা

শ্ৰূপ্য সহিত গুঞ্ বিভাব্য

गानत्मा नहारेत दात्राया नमक्षी

व्राव्य क

। ইতি তন্ত্রসার:।। অপিচ। नि

नकाक्षकात्त्र ह दाजियात्म पिरन्

ख्या। मानाम्बद्धः स्टात्मक दृद्धः

যেৎ শুদ্ধভোজন ॥ ইতি লক্ষী-

চরিত্র• ॥

রাত্রিবিগম: পু॰ পুভাত । ইতি

. जब्बाना ॥

রাত্রিবিশ্লেষগামী পু চক্রবাক: 1

इंडि द्राजनियंग्रेः॥

রাত্রিবেদঃ পু• **স**্কুটঃ।ই**তি শব**ে

ब्रज्ञावकी ॥

সক্টঃ। ইতি ত্রি রাত্রিবেদী পু

কাগুশেব: !!

রাতিহাস: **%**°

ইতি শব্যন্ত্রাবলী।।

রাত্রিহিণ্ডকঃ পু॰ অভঃপুররক্ষকঃ।

ইতি শব্দরত্নাবলী।।

রাত্রী জী নিশা। ইত্যনরটীক শাং

ভরত: 🏗

রাত্র্টঃ পু॰ র কেন:। ইতিকেচিত

। রাত্রৌ গমনক উবি তি ॥

ताबाकः वि तावि (११० ही नामकः।

রাতিকানা ইতি 👌 বা । রাভৌ

या जादिकपृष्टिकीनर्नको । म जु

काकामिः। यथां। मिवाक्तीः श्राणिः

ন: কেচিদাত্রাবন্ধা ততথা পরে। কে-हिम्पिया उथा ब्राखो श्रानिन रुषा

/ कृष्टेयः ॥ ইতি নার্কণ্ডেয়পুরাণে দে-।। वीने। हाजाऽ।। उमामकोवषः यथा । रेनवनाताण्ड रेव ठूर्न अज्ञाम्रावन ভাবয়েৎ। একবি শতি বৈ বার মক্ষিণী তেন চাঞ্জযেৎ ॥ রাত্র্যন্ধ ভা পটলতা নশ্যেদিভি বিনিশ্চয়ঃ । इंडि गाक्ए २४२ वर्षायः ॥ পক্। সিদ্ধ। ইতি র**াদ্র** (इमहन्तुः जिका अल्पवन्ह ॥ রাকান্ত: প্ সিদ্ধান্ত:।ইত্যমর:॥ व्राथ न छ य मिस्को। ইতি कवि-কল্লছনঃ॥রেফাদিঃ। ন রাপ্রোতি । য রাধ্যতি। ঔ অরাৎসীৎ। পিজি রিহ স্থাদিপক্ষে নিম্নাদনা। দিবাদি পক্ষে নিয়াত্তি:। অম• রা প্লোতি বিপাণা য ইতি হলাযুধ:। নিম্লাদযভীত্যর্থ:। সতত রাধ্যতি निर्य इंडि इलायुष्ध निम्नी ना **मिडार्थः। मिषि द्रष्ठ**ङ्ख्यार्थद् দুভয়তৈর বিশ্লাদনেতি গোবিন্দ ভर्षः। ইব্রিদুর্গাদাস:॥

রাথ: পু: বিশাখনাস:। ইত্য

রাধন লী নাধন।। প্রান্তি:। ইতি নেদিনী ।। তোষ: । ইতি হেন চন্দু:।।

ब्रायनो जी ভाষণ । ইতি मिहनी।।

धन्निनाः विज्ञास्यः ॥ जी द्राधा (गाभीवित्नवः ॥ विनाथानकवः ॥ व्यामनकी ॥ विकृकास ॥ वि-দু/ে। ইতি মেদিনী।। #।। রাধাযা উৎপত্তি यंथा। भूता वृन्तावरन द्र-ম্যে গোলোকে রাসম্প্রলে। শত-भृदेशकरमाभ ह मिल्लका माध्यी-বনে।। রত্নসি-ছাসনে রমের তঙ্গৌ তত্র জগৎপতি:। স্বেদ্বাম্যক্ষ ভ-পবার্বভূব রমণোৎসুক:।। রমণ॰ কর্মিছক তদ্ভুব সুরেশরী ইম্বাচ ভবেৎ সর্ব তস্য স্বেদ্বা-মযস্য চ।। এত মিশ্বস্তরে দুর্গে ছি: भाकरला वज्व मः। एकिनाक्र म **এিক্ফো বামার্জাঙ্গাচ রাধিকা।।** বভ্ব রমণী রম্যা রাসেশী রম্ ণোৎস্কা। অমূল্যরহ্বাভরণা র-ত্ৰসি•হাসনস্থিতা।। বৃত্তিশ্ৰী শুকাবানা কোটিপূর্ণশিশুভা তথকাঞ্চনবর্ণাভা রাজি**ভ**িচ<sup>ি</sup>শ্ব তেজসা।। সমিতা সুৰতী শুদ্ধা শর্বৎপদ্মনিভাননা। বিভ্রতী ক-বরী॰ রম্যা॰ মালভীমাল্যমণ্ডি-তাং ৷৷ রত্নমালাঞ্চ দ্বতী গ্রীম্মং স্र्या सम्बारादि म्-**ज़ित गक्ना धाद्रा निरंजन है ॥ ज**ेश्-क वर्जु लाडुक मूपक गिति म-

मिछा। कठिन जुन्सदा मृन्धा कल्की প্রচিত্রিক ৷৷ মাঙ্গল্য মঙ্গলা-ৰ্হঞ্চ শুনযুশ্মঞ্চ বিভূতী । নিতম শোণভারার্ত্তা নবযৌবনসংযুতাং ।। কামাতুরা সমিতাঞ্চ দদর্শ র मिक्यद्रः। मृष्ट्री काञ्चाः कगटकाः स्था वज्**व ब्रम्पाटमुकः ॥ मृ**क्ष्वे द्रि-র•সু• কান্তঞ্চ সা দধাব হরে: পুর:। त्रार**मणः** ज्य गालाक ना स्थात रुद्धः भुद्रः ॥ छन द्वाश मनाश्रा-তা পুরাবিন্ডি মহেশ্বরি । রাধা ক্রবতি শ্রীকৃষণ সচ ভাঞ্চ পরস্পারণ ॥ উভযোঃ সর্বসান্যঞ্জ সদা সর্বে वम्छि है। छवन भावन ब्राह्म ब्रद ভ্যালিক্ন জপেৎ॥ তেন জন্নতি भारतकानुगत तावा यमी खंदश ता াৰ রালগাড়ভোরা**তি মুক্তিণ সু** कि जिल्ली था सन्पाहात्रभाष्ट्रं था-যুত্ত্বে প্রাক্র গ্রামা**ণা স** 

ট্টিল রাখে রাদেশ্বরী পুরা।। ত ज्यान्धाःमाः म कलरा वज्रु (मंब যোৰিতঃ। রা ইত্যাদানবচনো ধাচ ি নির্বাণ বাচকঃ ॥ যতো ২বাপ্রোতি बूकिक म। ह ताना भूके विका। व ভূব গোপী সংবশ্চ রাধানা লোন কুণ তঃ॥ প্রীকৃক লোমক্লৈদ বভ্ वृः नर्व दलदाः । वाश वानाःम

ब्राधा छारगन महालची वज्य मा। हर्

क्षमा मा भन्नी (हवी देवनर्शवामि-नी। उरःना बादनकी क बादन-म्मर्भुरायिमी ॥ ७२ मा मर्जानः श्रीक गृहिनाक गृह्ह गृह्ह। नगा-বিষ্ঠাত্দেবী চ সা এব গৃহদেবতা।। ৰণ বাৰা কৃষণহী কৃষ্ণবদ:ছল পরনাত্মন: ॥ বুন্ধাদি **ভয়প**র্যন্ত সর্ব নিথ্যৈব পার্বতি। ভল সত্যু भद्र· युक्त द्रार्थमा बिखनाट भद्र ॥ পর• পুধান• পরম• পরনাজান মী चद्र । मर्वाम् । मर्वभूका । मर्वामः পু চ্তেঃ পর•।।ধেছাম্য• নিত্যৰূপ• ভকানুগৃহবিগুহ• ৷ তজিলানাঞ্ দেবানা পুাকৃত ক্প মেব চা৷ ত্ৰা পুণাৰিকা রাধা বহুসৌ ভাগ্য সংযু-**তা। মহ** দ্বিকো: পুসু: সাচ মূল পুকৃ-তি दी पदी॥ नानिनी दाधिका मरः সদা সেবন্তি নি চ্যশঃ। স্বভো যৎ भराष्ट्रारका वृक्षारीयाः गूप्रवं छः॥ মপ্রে রাধা পদাস্ত্রোজ । নহি পশ্য-ভি বল্লবা:। ৰণ বেৰী হার: ক্রোডে ছारा द्वाराण कामिनी ॥ म ह दार-न (गानानाः द्रायानः भतनः भूति । আকৃষ্ণাশশ ভগবান্ বিষ্ণু ভুল্য পद्राक्रमशा बिहान माभाष्मा (हरी

পোলোকাদাগতা নহীণা ইতি বুক रैववर्स भुक्डिबर्ख ब्राचानाच्या न १८ व्यव्यायः ॥ 🛊 ॥ व्यन्ति । गर्ग छेवाछ। मृण् नमर भुवरकार मिः ভিহাস পুরাওন। পুরা গোলোক বৃত্তান্ত শুক্ত শঙ্কর বক্ত:।। 🗐 দালো রাখনা সাজ্ঞ বভ্ব কলহো, নহান। জিদানা শাপাদৈত্যক গোপীরার চ গোললে॥ বৃষভানু সূতা সাচ মাল যুস্যা: কলাবতী। कृष्णगाकाकः युवा नाथमः नर् শী সভী ৷৷ গোলোক বাসিনী সেয মত্র কৃষ্ণাক্ত শাধুনা। অযোদিসম্ভবা रिवी म्ल भुक्ठि बीचबी ॥ माजू গৰ্ভ বাযুপূৰ্ণ ক্ত্ব। চ মাষ্যা সভী। বাযু নিঃসারণে কালে গৃত্বা চ শিশু विशुरु ।। जाविर्वज्व मा मन्द्रः भ्-খুগ্র ক্লোপদেশতঃ। বদ্ধতে সা वुष्क दावा भाक्त हम्मुकना यथा।। ্রিকৃঞ্জেজনোদ্ধেন সাচন্ত্রিতী সঠী। এল মূর্ত্তি দ্বিধা ভূতা ভে নো বেদে নিৰূপিতঃ।। ইয় জী ন श्रुवान् किंघा ना वा कान्ना श्रुवानगः া দ্বে ৰূপে তেলসা তুল্বের ৰূপেণ চ र्भान है। श्राक्त्यग्रुक्ता वा का নেন সম্পাদেন চ। পুরতো গমনে रेनव कि उमा वयमाधिका ॥ ध्रायरङ

ভাষৰ পশ্ববিদ সা মর্নতি প্রিবং । ब्रिक्का नामा भारेनक उर भारेन म् खिंसानयः ॥ जनः द्राधानुनारतः । গোঙ্গলাগমন পর। স্বীকার সার্থ-ক কর্ পোলোকে যৎ কৃত পুরা।। कः मञीजि इत्वरिन्द भाजवागमनः হরে:। পুতিক্তা পালনার্থঞ্চ ভবে-मन् ज्यः इतः ॥ । द्वारा मद्रन वुर्भि यथा। द्राक्षा भयम्। वुर्-পত্তিঃ সামবেদে নিৰূপিতা। নারা-यन खामूबाठ बुक्तानः ना जिनक्रा ॥ तुन्ना छा॰ कथयामान तुन्नलारक **ठ मकद्र । भू**दा रेकनाम निथात भागुवाह महत्त्रवः ॥ (प्रवागाः पूर्व-ভ নন্দ নিশাম্য বদামি তে। সূর।-मुत्र मूनीनुगा वाक्षिता मुक्तिमा পরা ।। রেফো হি কোটি জন্মাঘ ক-ৰ্ঘভোগণ শ্ভাশৃভণ ্ আহারে। गर्डवामक मृज्यक त्रामीट्रम् ।। वकात मागुरवाद्यानि मौकारव्यक्ष्य বন্ধন । শুবণ মরণোজিভ্যঃ পুণ मा/जिन जंगायः। (त्राका हि निक्क-লা॰ ভক্তি॰ দাস্য ক্ষপদায়জে। मर्खिञ्च ७ महासम् भविषयोधः নীশর•॥ ধকার: সহ্বাদ্ধ ভত্ল্য कानाग्व ह। एमाजि मार्थिः मा-क्षार छनुकान रहाः स्य ॥ व्या ·কার স্তেজসোরা**লি**• দান**ল**ক্তি• হ রৌ যথা। যোগশক্তি যোগমতি। সর্বকাল হরিষ্তি ।। শুত্যুক্তি ম ব্রণামোগামোহজালঞ্ কিল্বি। রোগ শোক মৃত্যুম্যা বেপন্তে নাত্র **जः**भगः ॥ इंडि तुक्तरेवदार्ख श्रीकृष ङ्मथए७ ३० वर्षायः ॥॥। उन्राः ষোডশ নামানিতেষা বৃুৎপত্তিক যথা। নারদ উবাচ। কানি বোডশ नामानिज्ञाधिकाय। जगमुद्धाः । जानि মে বদ শিষ্যায় শ্ৰোত্তু কৌতূহল भभ ॥ भु, ७: नामाः महमुक्ष माभावत নিক্পিত । তথাপি শ্রেত্মিছামি ত্বৰো নামানি বোড**শ**।। অভ্যন্তরা ণি তেষা॰ বা তদন্যান্যের বা বিভো েখ্যেপ্ণ্য ৰক্পাণি ভক্তানা বা-শ্ভিতানি সামানি তেষা• বু**ংপ**-खि मर्खिश पूर्व छानि ह। भावना-দি ভগদাত্ ভগতা। গ্ঢৰপিণী।। न्त्रायणे जेवाह । जाशा जारमध्रजी दामवीमिनी ब्रमिरकथन्नी। कृष्ट-शांगाधिका क्किल्या क्क्यक्रिनी ॥ क्ष्यामाः ममञ्जा भद्रमानन्त-क्षिभी। कृष्म वृन्तावनी वृन्ता वृन्ताः वनविद्यापिनी ॥ हन्मुविजी हन्मुका <mark>छ। শত</mark>हम्मुनि जानना । नामात्नर-তানি সারাণি তেখা নভ্যন্তরাণি চ

।। #।। द्रार्थि ७। विका द्राका রে। দানবাচকঃ। স্বয়ণ নির্বাণধাত্রী যা সা রাধা পরিকীর্ত্তিতা।। রা চ त्रारम ह ज्वनाष्त्रा वर शात्र शास्त्र।। रुत द्राविक्नाधातारखन द्राधा भू-**কীর্ত্তিতা।। রাসেশ্বরস্য প**ত্নীয• তে ন রাসেশ্বরী মৃতা। রাসে চবাসো यम्याक्त एक जामनिवानिनी ॥ সর্বাংশা রসিকানাঞ্চ দেবীনামী-শ্বরী পরা। পুরুরন্তি পুরা **সন্ত তেন**-তা॰রসিকেশ্বরী•॥ প্রাণা**ধিকা পেু**-यभी मा कृष्मा भद्रभाजानः। क्ष পুণোবিকা সাচ কঞেন পরিকী ত্তি তা।। কৃঞ্স্যাপি পি্যা শান্তা কৃষ্ণো वान्त्राः श्रियः मरा । मर्खि (र्पवगरैन ৰজা তেন কৃষ্পপুৰা মৃতা।। কৃষ্ণ ক্প • স•বিধাত্ যা শক্তা চাবলী-वया । नर्बार्टनः कृक्ष्मपृनी उन কৃষ্ণৰক্পিণী। বামাৰ্জাঙ্গেন কৃষ্ণ-স্যা সমূতা পরা সতী। কৃঞ্বা-মাণ্শ সম্ভূতা তেন কৃষ্ণেতি কীৰ্ত্তিতা ॥ পর ानन्द्रानिष्ठ खर मृर्खिः মতী সতী। শুক্তিভিঃ কীৰ্ত্তিতা তেন भत्रगाननरक्षिणी ॥ कृषि भाक्षार्थ वहरना १ अरवार्क्षे वाहकः। आ-কারে৷ দাতৃক্চন তেন কৃষ্ণা পুঞ্চী-र्खिञा।। অस्ति वृन्हादनः युन्ता (स्वन

वृन्तावंनी मृजा। वृन्तावनम्याधिरमः वी (उन द्राधा भूकी डिंडा ॥ वृन्हें: সণ্ট বচ: সখ্য রাকারোপ্যন্তি বাচ कः। मधि वृन्तास्ति यम्। मह गी तृनता পরিকীত্তিতা ।। মুদ্বাচকো বি-নোদ । যা যাস্যা অস্তি ভত্ত চ। বে দা বদন্তি তাণতেন বৃদ্দাবন বিনো मिनी ।। नथ इन्हावनी वक हर्त्मु। खि যত্ত সন্তত । তেন চন্দুবিলী নাচ কৃষ্ণেন কীত্তিতা পরা।। কাভি রন্তি हन्दुञ्चा यरा यम्। क्वानिनः। সাচন্দু চাতা হর্ষেণ হরিণা পরি-की डिंग।। भद्रहन्तुनु वा यम्। का-नत्रशिख दिवानिणः। मूनिना कीर्डि ডা তেন শর্চন্দু প্রভাননা ॥ ইদ॰ বোডশ নামোক্ত মূর্থ ব্যাখ্যান সং-युडः । नाद्रायलन यम्बः वृक्तल নাভিপঙ্কজে॥ বুন্ধণা চ পুরা দত্ত॰ थर्माय बनकाय स्म। थरम्न कृशया मः ভ মহ্ নাদিত্য পর্বণ ।৷ প্ররেচ महाजीर्थ भूगाहि स्वमःमि । 'রাধা পু ভাব পুস্তাবে সূপ্সন্নেন চেত সা॥ ইদ॰ ভোত্র মহাপুণ্য তুভ্য मञ्ज महामूत्न । निन्तकां वादियः वा य न माम्यान सहामृतन ॥ यावब्जीव गिम • स्टाब • विमक्तर यः भारेनद्रः । রাধা মাধ্বযো: পাদপদ্মে ভক্তি

र्ज्दिन्हि ॥ व्याख वा ख्रु खार्मामा मश्य मङ्हादा ভবে । अगिमामि-ক সিজিঞ্চ সংপাপ্য নিত্যবিগুহ্ণ ॥ वुजनाताभवारिमक मर्रिब नियम भूर्बकः। ठजूर्नात्कव (वनानाः भारिः नवीर्थ **न**•यु**रिजः ॥ न**रविवा• यद्ध-जीर्थानाः कद्रीत विधिताधिरैजः । नामकितान ज्यमक क्ट याया वर সপ্তথা।। শর্ণাগত রক্ষায়া নজ্ঞান व्हान मानजः । रम्यानाः दिक्याः नाक मर्भावनाति यथकाः॥ उत्तव **ভোত্র পাঠস্য কলা**॰ নাহন্তি বোড-শী॰। স্তোত্রস্যাস্য পুভাবেন জীব-मुक्ता ভবেষর:। ইতি বুক্ষবৈব ত্রীকৃষ্ণজন্মখণ্ডে ১৭ অধ্যয:।। # ।। রাধানামোচারণান্তর কৃঞ্চনামো हाइन विधि यंथा। नाइन डेवाह । व्याप्ती द्राशाः मनुहार्यः अनुहारःक्-कः विष् ब्राः। निनिख ग्रेगः गाः ভক্ত বদ ভক্তজনপ্রিয়। খ্রীনারবেণ উবাচ। নিমিত্ত মৃস্য ত্রিবিখণ কথ-যামি নিশাম্য। জগন্মাভাচ পুক্ডিঃ পুক্ষক জগৎপিতা॥ গ্রীয়সীতি জগভা• মাভা শভগুণৈ: পিত্ঃা রাখা ক্ষেতি গৌরীশেভ্যেব শক্তঃ শুতৌ শুত: ॥ ক্ফ রাধেশ গৌরী जिल्लाक न ह कहा मुझा भुशीह

রোহিণী চলু গৃহাণার্য্য নিদ মন।। गृहाताघी भया पख मः ख्वा नर - ভাক্ষর। পুসীদ কমলাকান্ত গৃহাণ भन भूकन ॥ इंडि मृष्टे मानरवरम কৌথুমে মূনিসভা । রা শক্ষোচার-ণাদেব স্থ্রীতো ভবতি মাধব:।। ধা শব্দোদারত: পশ্চাজাকতেয়ের স मञ्जा:। जाती भूकव मृहार्ग्य भः कार भूक्छि महत्वर ॥ म जतमा ভূগানী চবেদাতিক্রমণে মূনে। ইতি वुकरेववर्ड जीकृक्षम्यश्र व्यक्षायः ॥ 🗱 ॥ उन्हा निन्तायाः (मारवा वर्षा। य वा द्विव द्वि निम्म द्वि পাপিনক হসতি চ। কৃষপাণাৰি का॰रिक स्वीक दाविका॰ भद्रा॰॥ বুকাহ্ভাগ শতিং ভেচ লভভে নাৰ ् मःभगः। ७९ भारभग ५ भगरि मः क्रीयाक्ट कोवरव ॥ **उ**र्श्वरण म-्रावादि शांड की है ह यद्धाति। চত্*ত*পুশ্ৰুবিছিল পিত্ভিঃ সপ্ত ভি: সহ।। ততঃ পর নজায়ন্ত জ रैयक (काम (यानिजः। हिद्र) दर्व नर्नुक विधाकीने क भाभ डः । পুণ্চলীনা॰ যোনি ছীটা खनुक म वस्त्रभाः । मयानीवे क उत्तान বৰ্ষণ্ড পূয়ভক্ষকা: !! বেদে চ কাৰ্ **णाथाया मि**ज्याह कमलाऋदः ।

ইতি বুদ্ধবৈবৰ্তে ত্ৰীক্ষণ্ডমখণ্ডে ৯৭ अथ्यायः ॥ # ॥ ताया चक्नाः यथा। यानामात्राह। इत्तो ह निम्ह-ল। ভক্তি স্তদাস্য বাঞ্চিত মম। তব নাম্মশ্চ বৃৃৎেপ ক্তিণকা বা ত্বণ বন্ধু-মর্হসি ।। রাধিকোবাচ। ভবেন্ডক্রি নিশ্চলা তে হয়ে দাস্ঞ**ু**লভ•া ल ভশ্ব নৰরেণাপি কথবানি স্থনির্ণ-यः ॥ भूता नरम्हन पृष्टाङ् ভाञ्जीद्यः विष्टेन् ने कि । स्या ह कथिए । सन्ता নিবিদ্ধাশ বুজেখর: ৷৷ অহমেব স্বয়ণ রাখা ছাথা রাখাণ কামিনী। রাখাণ: জীহরে রংশ: পাশ্বদ প্ররোমহা-न्।। ता नयफ महस्यका विश्वानि यमः (लाबन्। विश्वन्तानियु विश्वम् খা ধাত্রী নাতৃনাচক: ।। ধাত্রী মাত। হ নেতেষা ম্লপুক্তি রীখরী। তেন রাধা সনাখ্যাতা হরিণা চ পুরা বৃধৈ: ৷৷ অস্থ শ্রীদানশাগেন व्य जानुभू जाधूना । भाजवर्मक विरह-मा इति । अह मान् उ ।। वृष जान्-শ্চ কৃঞ্স্য পাখদপুররো মহান্। পিতৃণা নাৰ্মী কন্যা নম নাতা কলাবতী॥ ক্সংগনিসম্ভবাহঞ্চ মন নাভাচ ভারতে। পুন: সার্জ্ঞ যু-শাভি বাস্যামি ভীহরে: পদ ॥ ইতিতে কথিত সর্বং বুল বুল বুলে-

শ্বরি বিজেখরেশ সহিতা স্বামিনা জ্ঞানিনা সভি॥ ইজি বুন্ধবৈবর্ত্তে গ্রিক্ষ্রমথণ্ডে ১১০ অধ্যায়: । ২ রাখা পরিভােরভেদাে যথা চুপা र् क्वूरवाउ । कि॰ वा भूध-कविष्ठामि \ত্বাং রাধাং মক্লাল্যাং। গভা ভে वितर कृत्वा शिकामः नामस्याकर्ग **া। সভত•** তল্ম : প্ৰে। ল্যের মযি-তে তথা। নছেব মাবযো ভেঁৱ: 🖷 कि भूक षटा यंथा ।: (य द्वाः निन्हिड মন্ডক। ভুক্তক। শাপি মামপি। **ब**द्धीलाक व भहारत यावहन्तु मि वाकरत्रो ॥ हाश्रामास्त्ररया (र्जर॰ रय **ष**र्वे छ - बाथनाः । यः **ण** शानि र्छ्यनः ন্ত্রস্থ পচ্যন্তে নরক চির । যান্তি শুকরযোনিঞ্ পিতভি:শতকৈ:সহ । यहिः वर्ष मञ्जाणि विश्वायाः कृषग खया ॥ इंजि तुक्षरेवदाई 🗐 कृषण्डम थ(७)२० व्यव्यायः॥ 🗱॥ (गात्वा-কে তস্যা আশ্মো যথা। এতান न (नाद्रभान् मृष्ट्वा (क (म्वागन (नाम्) थाः। जग्नः भीषुः कियम् तः मृणुः मुन्दर ७७:॥ अम्मून द्राविकाया **म्ठ द्रारमञ्जर्यग्राम्ड** नाद्रम् । स्ट्राधि (रत्रा (गाभी ना॰ वद्गाय। काक नि बिंड ।। भागाधि भयाः क्षका ब ग्रापुत्रपुर मानाइतः। स्वानिकनी

यक मुखिदे ने निक्षि उ॰ ॥ मूजिक विक्रुवाको । यजगव्यक्तिभ्यानकः। **শতনন্দির\স**ম্ভুক্ত ভ্রনিড র্ডুকে-कना॥ व्यम्नात्रङ्गात्रागाः वरेत्र र्वि-রচিত: বর:। দুর্লব্ধগাভি গ'ভীরাভি: পরিথাভি: সুশেভিত ৷৷ বল্লুরু-रेकः भारत्वः भारताम्। न वास्तरः । সুমূল্য दङ्ग ब्रिडिंग् श्राकारेबः श्रीतः विश्विष्ठः ॥ न्युत्रविष्कायुक्तः यूकि দ্বারৈশ্চ সপ্তভিঃ। সংযুক্ত রত্নচিত্রৈ-क विक्रिंब ईज़ुरेन मूर्य ॥ भुषान দার সপ্তভ্য: কমশ: ক্রশো মুনে। সর্বভোপি তত তত্ত বোডশ দার नःगृञः ॥ (मवा मृष्ट्री ह श्रीकाद्रः न-**म्मु ध**न्कह् छ । समूत्र इत् कलस मম্হৈ: সুননোহরণ।। দুর্নীপ্তণ তে-জস। রম্য পরম বিষয়ে যুদু:। **७७: शुरकि** शोक् डा क्रियुतः य्यू म् ना ॥ इं जि वृक्तरेववर ई बी कृष्ण जन-খণ্ডে ৪ অধ্যাयः ॥ 🗱 ॥ তদ্যা জন্ম-তিথি যাৰা। ভাদুস্য ক্ফপক্ষে ত্ रुद्रिकचार्रभी यहा। छम्याः भाद তু যা শুল্লা ভস্যা জাতা হরিপুিয়া ।। ব্যভানুপুরী নার। সর্ররন্থী শু-ভা। সুবৰ্ণমণি মাণিক্য বিচিত্ৰ ভব-नाक्ष्ना॥ अभिगाति मृरेथयगु भ-রিপুণ মনোহর।। চিত্রগৃল পতাকা-

रि विविवा विव निर्मित्र। किरा नन्तस्क्षा जा किमानन्त्रभूमायिनी। चानमः कनिना नार्या यव ठिश्री नर्मा। विविध्यादमार्थकाता वि **ठिज्यमनायता। नाना (वन्न विकि** वाका भूगमात्माममायिनी॥ नर्द वक्क वजन्मका द्राक्षा नामा वित्ना हिनी । क्रगठाः (माहिनी (मवी एक् एक्) **जि ज्ञाती ॥ ज्ञाना मज**ारिक्द न कथ्रः मृनिमखम्। नात्रम উवाह । পুণিপত্য মহাভাগ পৃছামি তব কি कतः। गालक्षीः कि मृत्रवश् र्यश्चन স্থী: সরম্বতী।। বিদ্যা কিমন্তরজ্ঞাণ विकवी शुक्**छिः किम्। (वनक**न्।। (म-चकन्रा म्निकन्राथवा वरः ॥ जनानि ব উবাচ ৷ কোটি কোটি মহালন্ধী र्लक्षीः का वा शद्रा वद्रा ॥ निक्तिजा য়ং হাদ্যস্ত্রোজে কথিতা মুনিসত্তম। ্ৰেপর কি নিগদেহ মেক বজুেণ মার নর্মা এরাখা রূপ লাবণ্য গুণা-দীন্ বজুমক্ষম:। তত্তদুপাদি মাহা-ত্ম্যা লজ্জেহ মপি নারদ।। তৈলো ক্যে তু সমর্থো হিন মাতৃ বক্তমর্হ তি ৷ তদেহ ৰূপ মাধুৰ্য্য জগনোহন নোহন• ।। যদ্যনন্তনুখোপিস্যা• ত দ্বকু নান্তিমে গতি:। লক্ষণ: কন-ना नारम्या यम्याः मा नाक्षकी गङा

।। এবং শতসহসূথে। মীশ্রী রাবি-কা পরা। নারদ উবাচ। পুভো 🕮 ब्राधिका जगगाराजाः गर्वहः भन । उद्दर শোত্মিছামি সমন্ত ভক-वट्जेंग ।। उत्पुडाः स्म महाजागः বুতা**না#** বুতোত্তম• । ধ্যান• বা **ক**িু∕ দৃশী পূজা স্কৃতি বাপি বদয় নে।। তৎ সর্ব শ্রোতৃনিছানি কথ্যতা মে जहानिव । हर्येशः शूका विश्वानक বিশেষ নচন ভব ৷৷ যজ্ঞ নজ্ঞ स्रि छ। नः भूजनः यक निर्मितः। পূজনে কিং বিধানঞ্চ ভক্তৎ সেবা-ছনে বিধৌ ॥ শিবউবাচ । বৃষভানু-পুরীরাজা বৃষভান মহাশ্য: ৷ ম-राञ्चलभूग्रा राजी नवंगाञ्जितिना त्र ।। बङ्गालया धर्नी बिशान निया-**मृष्टे दिख्दः। दिक्षाः अम्ब**श्कद्भ**ाः व्यक्तीनः** कृष्णरेष्ठवाः॥ उत्र सार्या। महाजागा द्यागट ब्रीकी खिरास्या। ৰূপযৌবনসম্পন্না মহারাজস্থােড वा।। नश्वकी बक्षा मा ভव्या-পরনসুন্দরী। মহাপতিবৃতা কাফা সর্বিদ্যান্ত্রণাদ্বিতা ॥ তস্যা 🗐 রাধিকা জাতা শ্রীনদ্বন্দাবনেশ্বরী ৷ ভাদে মাসি সিতাষ্ট্রন্যা মধ্যাহে मुजनायिनी ॥ (वनागम भूताना नि शीजा या क्क बहाजा। **जना क्क शुरा** 

🔪 द्राधा

नाषी विक्कानन्तरायिनी ॥ भूगू মুৰো নহাভাগ পূজন ভলন তথা । कर्न्त्राः यसन्धानः ज्ञाधाकवात्र हा८ मेदः ॥ नमहंग नमा ब्राधाः बस्युजनवारियः । उद्भानम् नु वक्रामि धानारिक मनूकमार ॥ সর্বদা পশ্চিমদারে ত্রীরাধা কৃঞ্ম-্লিরে। ধৃদ্ধ সুখন্ত কলস পতাক। **ভোরণাদিভিঃ ।। নান। সুমক্ল দু** रित्र र्यथा बिधि <u>भ</u>ुवर्डरङ । সুবাসি**ङ** मर्था भक्षरगहरेन मंख्या मनरता-क्र । मृथाउनम्याकात्र छव নিৰ্মাণ যত্নতঃ।। দিৰ্গাসনে পদাম-থ্যে পশ্চিমাভিমুখীণ স্থিতাং। 🗐 युग्र मूर्जिः ज्लान) ब्रान लाम्प्रानि-ডি: কনাৎ।। ভ`ক্ত: সহ সম্বাতী-থৈ: শক্যানুসার বস্তুভি:। তন্তক: পুরুষেক্তক্ত্যা তা॰ সদা সংযতেনিদুয়: ।। 🖘।। व्यथ थ्यान । (इसम्मी वद्गका छि মঞ্জত্বতর•শ্রীনজ্জগন্মোহন• নিত্যা ভি ললি তাদিভি: পরিবৃত সমীল পীভাষর । নানা ভ্ষণ ভ্ষণাক मधूत रेकामात्रक्ष गूग गाम्न ही-কন ম্ব্যুয়ণ সললিতণ নিত্যুণ শর্ণ্যুণ ভলে।। যুশ্ম নু ব্ৰি নিতি খ্যাত্ব। শা-नगुरम २० वा भूनः। माकार रेण-

नामि माले वा मानामया नमई-वट् ॥ व्यं जा मखन न्वाक उत्याः नग्राचा केमार ॥ वर्गाचकः भू याज्ञन थाप्न भाषा कि जिल्ला निर्मा ললিভা পশ্চিমে পূজ্যা পীতবর্ণদ-ৰে ৎপরা। চন্দ্রাবতীণ লুক্লদলে ত-बास्य भूकायर जूथी: ।। वायत्वर भारा-भणा । पिवी व्यवन परण १ हरिय । ভদানে চিত্ররেখাখ্যা শুক্লবর্ণদলে ততঃ ৷৷ উত্তরে শ্রীমতী ত্বর্চ্যা রক্তবর্ণ म्त उथा। उदामशार्यं हन्तुः थाः नीववर्गम्यः २ इर्ष्यः ॥ त्रक्ववर्गम्यः প্যর্চ্যা ইশানে শ্রীহরিপ্রিয়া। তস্যা বানে শুক্লবলে প্ৰ্যাম্বনসূন্দ্রী।। भी उदर्गहरण भूरई विशाया बईरए-ত্ততঃ। প্রিযাণ তস্যা বামপার্শ্বে শুক্ল-वर्गरा १ इत्य । अग्निकाल भागमः वर्गा॰ म्हा मवा। नगहर्य ना-उदा-भ ब्रीमबूनजी मुङ्गवर्ग माली शहरवट्य । भू करमम् कित्। भगाः त्रक्रवर्ग मर्ला उथा।। मिनिद्रिथाक उद्यास नीलः বর্ণদলে २६(य८ । পূজ্যেইরপতে ভ-দাু রক্তবর্ণদলে ততঃ॥ রসপ্রিযাঞ্চ **उद्यास्य मूक्कदर्गराम ९** हराय 🗢 ॥ জ্বিরাধা প্রিয়সঙ্গিনীণ বিধুমুখীণ কৃণ क्लिया (भूयती (इमाजा शति-वानिनी॰ जूमधूत्रश्वाना॰ मृत्यणास्त्राः

। त्रमुङ्गा छत्ररेगर्भरमाङ्क र् उम् निक्राः कगत्वाहिनी वत्म बिक्लिंग क ब्रक्नवर्गी॰ लीजाचरवर्गिव्जा॰॥ ३॥ শ্যামা॰ শ্যামপরাবধা বরভন্• ठानीकत्राक्ष्हिंगः मञ्जीदेव मंधूत्रश्व-निः পরিলসहन्द्राननाः সুষরাः। अपुदा छत्र ११ अद्भाष्ट्र विश्व मृङ्गा॰-স্থী সুচিবুকা চন্দ্রবতী মুত্তমা ।। ২।। কান্ত্যা কাঞ্চন সন্ধিতা। সূল লিতা ক্ফাম্র বিভুতী নানা ভ্ वत मञ्जनाक मुक्जी मार्फिकी जूनहरी । 🗐 वृन्हा विशित्यकी • लू-যুস্থী ভব্যা শশাস্কাননা বেণী চাৰু সুনল্লিভাসুত্ৰ মৃষ্ণ নিত্যু ভ জে শ্যামলা।।। ৩। এক্ণপূব ব ल्लाः नानगरीः महम् उद्गान्जाः শ্রাহর্শবীর কান্তি মত্লা শুক্লা-चात्रा हिना । अर्गाह्या छत्रा न-मा भून किनी॰ बिक्ष जारवन रेव गाः যন্ত্য ৰবৈ ববৈরত প্রতিবলে-খা ভজে॥ ৪॥ কন্ট নিভ শরীরা বিভুতী রক্তবন্ত ললিত নলিন নে ত্রা॰ চাক ভূষাক শোভা॰। সুমধর পিকবাৰ্ক্যাণ চন্দ্ৰবক্তাণ সুবেশাণ ম-ধুরিপু নিজ দাসী ভীমতী তা হি ब्ला । १ ।। वृन्हाव्यन निकामदन

स्त्रीश्वामी द्रम्याः मूर्नीवंदननाः भूद्रवावयञ्जाः। नाना विज्विज अंगू र् व्रम्युकाकी ठन्मा अक्र जनन त्राध्मत्नाञ्चगानाः॥ ७॥ र्यूवर्गवर्गाः मुक्बोतियी छ। गूनाक यखा মণিভ্ৰণাকী । হরিপ্রিয়া মঞ্ল পদ্মনেত্রাণ ভজে ২হ মীড্যাণ কনকা क्रांजा॰ ॥ १ ॥ त्रवीत कलवाहि नी जकन द्वाग ज गायनी जूठाव मिन इ अनाः मदार भूनंह न्यून मनाः । সুরত্ন বরভূষণা কচির শুভু পউায়-द्रा॰ ভঙ্গে सहतमूनस्त्री॰ कनक वर्ण (महा॰ म्डा॰॥ ৮॥ मूडानछा॰ গীতে ভুমর কলক্ঠী স্চতুরা জ-गम्बन्ह्याः (यञ्जम्बिन नयना भिन्ह्यः দনা । বিশাখা গৌরাসী কলিত মুরলী॰ পীতবসনা॰ ভৱে শ্যানা॰ (मव्याः मकण्डनमूर्गाः मुधनयीः ॥ ৯॥ সূচামীকরাভূষণাচ্যা সূবে-ना॰ जून॰शी उविष्ठा जुधीदा॰ वरतः ग्रा । मूव भी मूगाना मुह्माकः শোভা• ভরে ত্রীপুষা• শূন্নবন্তা• म्ताङ्काः ॥ २०॥ शाक्षदी निक्रमा-সিকাণ সুগদবাগ্যস্তণ সদা বিভু গীণ নঞ্ধণ বিভ্বিতা বরতনু পাথো জ (मजा वता। यायि कृष्णमात्रि म्ममधूनी॰ क्काइदागाव्डा॰ नकी

ী 🕽 রাং

তে মঙুরবরা মবিরত সৈব্যাণ মনো || हातिनी ।। १२ ॥ कित मध्म औः তা তপ্তচামীকরাভা পিককলরব্ कंशी भेजन्ज माथानाः। जिल्हा-ज्ञानुनामाः ठाकार्गाक ज्वार यूगः वाह्य प्रकार वा उट श्रा मां खेल १३ ন। ১২ ॥ রব্বালকারদেহাণ জিত - **अ**मुमक्त्री सक्तायगुक्तेश खंबतार সঙ্গীতবিদ্যা সুনিপুণ রসিকাণ তা न मानाञ्जि विञ्जाः। भावकी यञ्जाः ীনাং কনকনিভতন্<u>ণ সর্বলা কৃঞ্ছ সে</u> वी वत्म भगा मूर्वभा भगवत्व मना॰ विज्जी॰ तक्षवक्षः॥ १०॥ भः **निर्दिशाः मृत्वस्य वार्यञ्जाः मृ**ष्ट्यूरी छः। तमानाभ स्तभाकः तम्भूति-কসংযুতা।।। ১৪॥ ভব্যা। শ্রীশশি। त्रिथिकाः मूथ्यकाः गुजामि गानाय-त्राः वत्मर्**रः मध्यस्याः भ**त्रस्याः লাবণ্য সারাবিতা । নানা যজ্ঞ বি-শারদা॰ বরতনু• পউল্লেরণাত্তা• कु:लन्दीवद्रालाहना नविद्रञ श्रा-य क्रगत्माहिनी ।। ১৫ ।। ब्रियखः सत्त्र ७ व कार्य गात मना विज् তী জীভদা মধ্রষরা স্বলিতা সদুক্রভাব্তা । রাজৎস্বাক্চি বিভূষণবরৈ ইজৈ: সদা শোভিতা प्राय श्रीगूगरमविकाः भन्नभिकाः

ञ्लारेकमग्रा निम्म ॥ १५॥ त्राधाकृष मित्रिक्सिमधूमी॰ मख्यजून्।-থিনী॰ নামাভূষণভ্ষিতাস্কচিরাণ সদুক্তবন্ত্রাণ শুভাগ। ধ্যায়ে সন্তত ক্ষভাৰললিভা কেযুর হেমাজ-माः अगात्रीक तमलुगाः मूथमरीः সর্বাঙ্গশোভান্বিতাং ॥ ১৭॥ মধু-🚉 স্বরাং কোকিল ভ্রুগানাং সভুম্রী यञ्ज विधात्रिगीकः। वनिभुवाः मृक्ष সূচীনবক্তা ভাজে হরিদাক সমগ্রু **(माजा: 11 )৮ ।। এव: श्राद्धा भू**ज-বিত্বা ললিতাদ্যা যথা ক্রমাৎ। পা-দ্যাদিভিঃ সোপচারৈ বিধিবন্ডক্তি ভৎপরঃ।৷ সঙ্গিন্যে ললিভাদীনা দলাৎ পশ্চিমতো মুনে। পুণবাদি नरमारञ्जन मः भूमानभरमन रेव ॥ ज-खनामा जू मनूना भृष्ठभन्ना पि ज्र्रान । ইতি পাদ্মে উত্তরথণ্ডে তীরাধাল-बार्डभीतु उक्थनमा हाजा हामि ३७२ श्रायः ॥ श्रा श्री मना निव हैवाह । १९ **उ**ऽरक २ हि। भृहरयहि क्रम उस परन म्राता । मृत् नाः। कथ्या उन्हारि । विः भाषिकः भं छ ।। इन्तु गुशी तम-का ह मूल्या मूम्थी उथा। दल्ली চন্দ্রিকা চাক্ চত্রা চ সুচঞ্লা॥ মধুরা হস্তকমলা তথা মধুর ভাবিনী । विवासिनी तमव्छी उथा थं धन-

ल्लाहना।। ज्थरा हच्यक्तिका द्रम मा त्रममञ्जती। जमा म्रेजूबरी मार् हन्त्। हन्तुश्रु **डाव** छी। / वात्र ही सारे वजी काजी हन्द्रकाची मुझसना। রম্ভা ভূমরগম্ভীরা সুশীলাচ সূবে-निनी।। यामनकी मुधाकशे निुया ह প্রিরভিপ্রিয়া। শুকপ্রিয়া মধুকরী मूरवणा हाम्राखाखवा ॥ मूत्रवीवलः **छो वृन्म। পারিজাতপ্রিয়া শূভা**। পঞ্চর। রত্নালা মদিরা রাসবল্ল-বী ।। মা**ভঙ্গমনী** ভারাব**ভী স**ং **७न्यातिगी। क्लाती भिवन्ना** ह লক্ষণাচ্যুত্রমালিকা ॥ মাধাবতী কৌশিকী চ কোমলাঙ্গী সূচনদ্নী। পীয্বভাষিণী সভ্যবভী চ**ল**ঞ বাসিনী ॥ কপোতমালিকা লো-পামুদা চ কি॰ শুকপ্রিয়া। দলাবতী वस्तुमा ह कमना हममानमा ॥ जि-লোউকা চ সাবিত্রী বহুলা প্রিযবা-निनी। जुकादली চিত্ররেখা সুমিত্র। लानम्खना।। चक्क्रजी विवक्जी জীরক্তা পদ্মদন্ধিনী। মেনকা ক जिका द्रक्र (कंडकी काममूई**नी ।।** क মুনপুৰা চ ভাৰজা তথা নৃত্যবি-ল।শিনী। হিরাবতী হার 🕬 সি•-श्यक्षा मलाइना ॥ नन्द्रा नन्द् क्विका यूनन्ता नन्तराधिनी। अतः।

কাকী চ স্শোণীকেলিলোকা পুৰ-भना ॥ न्यामाद्राया न्यामरम्बरा কন্ত্রী মানভঞ্জিনী। বিচ্ছিত্রবর্মনা केन्द्रमञ्जीद्रा मञ्जूकिकिनी (॥ निक-८ सके ज्वनाना उथा ज्ञानविद्याति गैर् । बिक्क रिकिश भूका। यङ्गा र हम्तुः वनी ७७:॥ ध्रान भारतारि**डिः गे**ं माक् भुकादाग ह भूक्रकिः॥ (इमा-ভा॰ मधूतस्ता॰ विधूमुखी॰ गास्तर्व বিদ্যারতা• নানাভূষণভূবিতা**ঞ্ ম**-थुद्रा बाजी जुमलीजुल । वीगी যক্স সুবাদিনী বরতনু চিত্রাম্বর বিভুতী প্যাযে কৃষ্ণ পরাযণা সুচি-वुका॰ हन्मावनी॰ मञ्जूना॰॥ व्यर রাধা জন্মতিথৌ স্থ্যান্মগুল পূজন• । कार्कानीन् रेवकवान् नवान् यञ्चः शतिभूकारय ।। এव॰ त्रांशाकृष्ण भूका॰ তবে। ম'ণ্ডলপূজন । পুত্যদে যত্নতঃ व्यंग्रं कारका द्रामनत्शरमत् ॥ ন্যুনাভিরিক্ত দেবর্ষে ন কর্ত্তব্য ক-দাচন। এমংকৃষ্ণিকতানেনাব । (उतिव मर्बना ॥ नाङ्ख्य देनव ना-ক্তাদীন্রাধাজন্মনহোৎ সবে। পা-ষ্ঞান্পতিতান্ কোলানভাজাম নিম্ভ্রবেৎ ॥ বিনা ভাগবভাঁলো-কান্নচ ভত্ত পুবেশযেৎ। গন্ধপুদ্ধা-দিভি মালৈঃ শ্চন্দনৈ স্তমিবেদিকৈঃ

য় নানাপরাধ ভীতস্ত ভক্তাণ স্তাণ खेब हाईराट । खखमाराभुगरिक्क क्के श्रामिष्डि ख्या।। ख्या अने भूबायाः कार्या नान्। • **क**ञ्जाबर्यः i विस्तृ शान् शिक्षमः गाह्य वा 🄰 कि उर्जातः ॥ कार्कामीन् रिवणवान् चक्रा (ভाषाय**् भूकायउथा। उ**-रेज्ञर्वरित गंज मुद्रि मंति। मंत्रया দিভি:।। সজাভীবৈ র্ভক্তৃন্দৈ: সমণ 🗕 ७व गरहार मदः। पिता सर्गार पुः যরেন রাধাভক্তিপরায়ণ:।। মহা-পুসাদ ভুঞ্জীত দিনান্তে চরণোদ ক । পূজা কৃত্বা পিবেৎ কাঞি: भार्क मानन्दिए छड: ॥ त्राबी জাগরণ স্ব্যাদাধাক্ষেতি বা মা-রন্। পূজদেম্র্ভি মারোপ্য ক্প্য बर्गानि मःकृ**डाः**॥ অकृदान्य क**था**ः वानः भूतागारान्की उनः । भूवनी-यः भुगद्भने नात्री जि बीक्रदेवः मह ॥ ব: করোতি নরে৷ ভক্ত্যা রাধাকমা-**ই**নী॰ শুভা॰। বদন্তি বিৰুধাঃ সর্বে রাধাভকো ২স্তি ভূতলে ৷৷ পুহরে भुक्त बाधाः शाक्षाञ्चनाः पिवानि শি। প্জযিত্বা বিধানেন খ্রীকৃষ্ণ সহিত্য' তথা ৷৷ তদুসিকৈ: সহা-नारेश द्वाचाकृक मृजि॰ मृहः। उज्जः गेरहा भव कृषा शत्रमानिक्रा

রাধা

क्रमन् । मुश्रेवर भुगिष्ठिः वर्षामञ्चान বিধিবোপিতা। পুত্যদ মেব জৰু **७ द्राधावैद्यम**रहार गर ॥ यः भू- \_ **মান্থ বা সারী রাধাভক্তিপরা**য্ণা ! **जूदा वृन्तावत्व वानः जीवाधा**क्छ मिन्दी ॥ वुक्रवामी ভবেৎ সোপি রাঘাভজিপরাষণঃ। তস্যালাপ <u>প</u>ু যোগাছ মুক্তবদ্ধো নরো ভবেৎ ॥ রাধা রাখেতি হো ব্যাৎ মারণ স্ব-ৰুতে নর: । সর্বতীর্থেষ্ স<sup>.</sup>ক্ষারাৎ, সর্বিদ্যাপুষত্রবান্ ।। রাধা রাধেতি অর্য্যান্তু রাধা রাধেতি পূজ্যেৎ। রাবা রাধেতি যদিষ্ঠা রাধা রাধেতি জন্নতি ।। বৃদ্দারণ্যে মহাভাগা রা-ধাস্চরী ভবেৎ। জগতা পৃথিবী धन्। তब वृन्तावन भूती ॥ তब ধন্য: সভী রাধা ধ্যেয়া যা মুনিসন্ত-रिनः। तुक्कानीनाः सङ्गतारहाः मृद्रजः সেবতে সুর:।। ভা॰ রাথিকা॰ *দ্*য ভলতে দেবর্ষে ত॰ ভলেনহি। তদা-লাপ॰ লক্ষ্বৈৰ জপৰ মজ্ৰমুভ্ৰম॰॥ অহনিশা নহাভাগ স্ক্রাধেতি की बंग । রাধেতি की खंग ऋग्री८ কৃষ্ণেন সহ যো জনঃ !! তন্মাহাল্য্য° न मार्का १२ वक्ः (मार्य। १५ तिव চ। ন গঙ্গা ন গ্যা নিত্য । ন হিতা চ **गत्रम् ठी ।। करा**हिरेस्य विस्था नर्स-

রাধা

**डीर्थकन भूम। । अर्बर्डी (मधी कार्य)** नदिवं चर्याप्रयी भूनः ॥ वृद्धां हिष्टिम् থ। লক্ষ্মীৰ্ন ভবেন্তু তদাৰ্লঃয়। তস্যা-লযে বদেৎ কৃষ্ণো রাধ্যদিসহ নারদ ।। রাধাক্কতি যসে। 🕏 তদেত্রুত মুত্তম•া তদ্ধেহে দে**হ মনসো: কদা**-চিন্ন চলেজরি:।। এতদেব বচ: শুরা নারদো মুনিসক্তমঃ। পুণতঃ পূজ্যা माम लाशिष्ठेम्। ग्रामिकः॥ ज আইনী বুত কথা যঃ শৃণোতীহ মা नवः। अत्राधायाः मृथी मानी धनी সর্বগুণান্বিত:।। জপে**দ্বৈ ভক্তি স**্ যুক্তঃ পঠেয়ারা স্বরেয়র: । ধর্মাথী লভতে ধর্ম মর্থাথী লভতে ধন ॥ কামাথী লভতে কান নোকাথী भाक्त माशु याए । **मर्व**शाननामात्रशः कार्कानि विकवः मूथी।। विविकी ह তথা ৰিষ্কাৰী যদা ভক্তি মাপ্লু যাৎ। ইভি পাদ্ম উত্তরথণ্ডে শ্রীসদাশিব नोंद्रर मद्वारर श्रीदाधाजवाह्नेगी क-धन भाहारबार ४५० व्यथायः ॥ 🛊 ॥ অস্যা: সহসুনানানি যথা। পার্রত্যু-বাচ। দেবদেব জগন্যথ ভক্তানুগৃহ-कातक। यम् । खि भिय काक् १ । यम् । खि सदि उ रया ॥ यष्ट प्रा भुगिर ७ তৎ সর্ব মে শুক্ত পুভো। গুহাৎ গু**হু তরু**॰ যুক্তু যুক্তে মনসি কা**শতে**।।

द्राधा

ष्यानगरिज यञ्जू यरेम करेम कमाइ-ন। তন্মা॰ কথ্য দেবে**শ সহসু**॰ না<sup>্র</sup> मेळ्। छम ।। श्रीजाशाया महारिता গোপ্যা ভক্তিপুসাধন । বুদ্ধাও-কত্রী হত্রী সার্কিথ গোপীত্র মান গড়া ।। মহাদেব উবাচ । শৃণ দেবি 🐛 -বিচিত্রার্থাণ কথাণ পাপহরাণ শুভাণ । সন্তি জন্মানি কর্মাণি তস্যা নূন• मर्श्वित ॥ यन इति कतिवानि **म**क्छ कार्ग्याभित्रवाट । जना विध- — ভে ৰূপাণি হরিসালিধ্যসাধিনী।। ভস্যা গোপীত্ব ভাবস্য কারণ গ-**पिछ॰ भूदा। इसानी॰ म्**नू प्रतिमा ৰামা• চৈব **সহসূক•** ।। যন্মযা কথি-**७॰ नि**व जिञ्जन्न कि कमान्य । जव **(प्तराट পुरक्तामि ভ**क्ता **शा**र्याः मू-मुक्कु जि: ॥ मम शुरानमा विन्ता छा-ব্যতে মে অ্হর্নিশ । শৃণুয় গিরিজে নিভ্যু পঠম্ব চ যথা নভি ৷৷ যস্যা: পুসাদাৎ কৃষস্ত গোলোকেশ: প-রপুভূ:। অস্যা নাম সহসুস্য ক্ষ-নারদ এব চা৷ 🛠 🛭 দেবী রাখা পরা প্রোক্তা চতুর্বর্ণপুসাধিনী। জীরাধা রাধিকা কৃষ্ণবল্লভা কৃষ্ণ সংযুতা॥ वृन्तावतमधन्नी कृष्णभुषा भएनस्मा-হিনী। এমতী কৃষ্ণকান্তা চ কৃষ্ণ-नन्त् भूनायिनी ॥ यणसिनी याणार्थ-

न्त्र यानामानन्त्रवज्ञका। मारमामत्र े निया (गानी (गानानस्कर्ते) उथा ा क्कान्यामिनी क्रमा इतिकाडा ছরিপ্রিয়া। প্থানা গোপিকা রো अकन्। जिल्लाक। मुन्मनी ॥ वृन्माव-नेविहाती ह विद्यु क्लि उमुथापृका (गाभक्षानन्तकवी (गाक्ष्णानन्त मायिनी ॥ গতিপুদা গীতগম্যা আ-গমাগমনপ্রিয়া। বিফুপ্রিয়া বিফু ক্রাম্ভাবিক্ষোরঙ্গনিবাসিনী ৷৷ যশো দানন্দপত্নী চ যশোদানন্দগেছিনী। কামারিকান্তা কামেশী কামলালস विग्रा ॥ अयुन्त इया कीवा की-बाननरभूमायिनी। यण्मामाननरभञ्जी চ ব্ৰভানৃসুতা শিবা ॥ গণাধ্যক্ষা গবাধ্যক্ষা গবাংগতি রনুত্তনা। কা ঞ্নাভাহেনগাত্রী কাঞ্চনাঙ্গদ্ধারি ণী।। অশোক।শোকরছিতা বিশো-কা শোকনাশিনী। গায়প্রী বেদমা-তা চ বেদাতীতা বিদুক্তমা।। নীতি শান্ত্রপূিয়া নীতি গতি নতি রভী-ষ্টদা। বেদপ্রিয়া বেদগর্ভা বেদমার্গ शुविक्ति।। (यह गम्। (यह भन्न। वि

চিত্র‡নকোজ্বলা। ডথোজ্বলপুদা নিত্যা তথৈবোজ্বলগাত্রিকা॥ ন

नोर्भुया नन्तर्भुष्ठा द्वाथानन्तर्भुषा

मुले। मुखाकी विभवाकी ह विवा

क्षेत्रश

मिन्ध्यता किर्ण ॥ बननी बद्यम्ना চ জন্ম মৃত্যু জুরাপহ।। গতি গতি-भ जा॰ थाजी क्षाजानन्त्र शुप्तायिनी ॥ कश्माथित्य/रेणवादामिनी (इममू न्द्रशी। विविज्ञवानिनी विज्ञवानिनी চিত্ৰৰূপিণী।। নিৰ্গুণা সুম্বলীনা চ . নিষুলীনা নিরাজলা। গোজলান্তর-গেছা চ যোগাৰন্দকরী তথা ৷৷ বেণু-বাদ্যা বেণুরতি র্বেণুবাদ্যপরায়ণা। গোপালন্যপুষা দৌন্যা রম্যানৌ-माञ्चलान्त्रवा ॥ चित्रिमोगानि-মোহাচ গতি রিষ্টা গতিপুদা। গী-र्द्धान्तन्त्रा गीर्द्धाना गीर्द्धानगन्त्रनः বিভা ৷৷ ললিভা চ বিলোকাচ বি-माथ। विज्ञभाविनी । **कि**ट्टिन्स्या **णुक्त पद्मा व्यक्तीना व्यक्त**िका ॥ मील श्रिया मीलमाबी विभना विभ-**लारका। काञ्चा**त्रवात्रिमी कृक्षः कृ-**क्ष्ट्रन्दृश्चिया मिडिः॥ अन् बदा मृःथ**-रखी पृःथकञी बलाक्तवा । मि লক্ষী পৃতি লজ্জা কাম্ভি:পুষ্টি:মৃতি: क्रमा। कीद्राप्तायनी (पदी (ए-वादिक्वमिकिनी। रेवक्षवी ह महा-वन्नीः वन्नभूका। वन्निया।। मःइ-बी अब रिन्छानाः भाविजी विन-गामिनी। (वराञीका निदानका नि-त्रालयगरितुया।। निद्रालयकरेनः शू-

छा। निवादगाका निकासयो । अक की नर्बना (नव्या विद्धाः भन्नी नद ৰতী।। রাসপুরা রাসগম্যারাসা ধিষ্ঠাত্দেবতা। রসিকা রসিকান नतः चय॰ द्रारमधदी शद्राः।। द्रामन-ওলমধ্যস্থা রাসম্ওলশোভিতা। **রাসমণ্ডলসে**ব্যাচ রাসক্রীডামনো ह्या।। भूखनीकाक्यनिवासा भूखनी-काक्करगहिनी। भूखद्रीकाकरमद्रा চ পুগুরীকাক্ষবল্লভা ॥ সর্বন্ধীবে-यती गर्वजीववन्त्रा नदारनदा পুকৃতি: শন্তুকান্তাচ সদাশিবমনো हता।। कृष निभागा मया निमा जा खिः भाषिः क्रमा क्ला। दिधुक्ला গোপপন্নী ভারতী সিদ্ধযোগিনী ৷৷ শত্ৰপা মিত্ৰৰূপা নিত্যাস্থী নিত্য গেহিনী। স্থানদাত্রী তথা ধাত্রী महाबाभीः ययः পु जा ॥ निकृकन्ता ञ्चानराजी द्वावकावामिनी उपा । বুদ্ধি: স্থিতি: স্থানৰূপা সৰ্বকারণ কারণা॥ ভক্তপুষা ভক্তগম্যা ভ कानम्मभूमायिनी । ভक्तकन्नक्रमा-তীতা তথাতীতখণা তথা।। মনো-ধিষ্ঠাত্দেবী চ কৃষ্ণপুনপরাযণা। निद्रागया भोग्रहाजी उथा महन-**ग**िह्नी।। একান শা শিবা ক্ষেমা দুর্গা দুর্গতিনাশিনী। ঈশরী সর্ব

ৰন্দ্যা চ গোপনীয়া শুভাৰন্নী চ नानिनी नई क्ञाना । उथा कामाक शांत्रिणी । भागाम् जिल्लाम् (पर्वी বেদসারা পরাৎপরা ॥ হিমাল্য-সুতা সর্বঃ পরিতী পিরিজ। সতী । पक्क कन्या (प्रवसाज। सन्म वड्डा राष्ट्र-) खनुः ॥ वृन्तात्रग्रिष्ट्रिया वृन्ता वृन्ता-वन वेलामिनी। विवासिनी विक्वी চ বুদলোকপুভিপ্তিতা।। ক্লিণী রেৰতী সভ্যভানা জাহবতী তথা मूनक्या भिजविन्सा कालिन्सी अङ्गः कम्रका ॥ भित्रभूमा भूमं उदा छथा ছৈনবতী গভিঃ । অপুৰা বুন্ধৰূপা চ दुका ७ भति भानि नी ॥ दुका ७-ভাওমধ্যস। কুলাওভাওক্পিণী। অওকণাওন্ধ্যস্থা তথাণ্ডপরি-भाविनी ॥ অ**ख**वाशाखमः रू**डी** বুক্ষশিবহরিপুিযা। মহাবিঞুপিুযা कन्न वृक्कक्षा निवस्त्रता॥ भावज्-তা ছিবা গৌরী গৌরাক্সী শশিশে-খরা। খেতচস্পকবর্ণাভা **শশিকো**-টিসমপুভা।। নালতীমাল্যভূষাঢ্যা भावजीमावाधातिनी। क्षच्छा क्-ककाष्ठा वृन्तावनविवानिनी ॥ ेवृब-স্থিষ্ঠাত্দেরী সংসারাণ্যপারদা। मात्रमा हात्रमा लालनन्तिनी अंब-शिक्षिमा ॥ अञीजगमना

পরানুগৃহকারিণী। করুণার্ণবসংপূর্ণা कक्रानंवधात्रिनी ॥ माध्यी माध्य मताश्विभी नामयल्ला। यक्ष-कात्र डेथपुडा सङ्ग्रा सङ्ग्रा ॥ শ্রীপুতা শ্রীপুদা শ্রীশা শ্রীনিবাসা १ हुं। छिष्या। श्रीक्षे श्री श्री श्री श्री श्री ্গ্ৰিকানা গ্ৰীম্বৰূপিণী । গ্ৰীদামা-नन्तराञी छ श्रीरामध्यवद्वां । শ্রীনিতয়া গ্রীগণেশা শ্রীম্বরপাশ্রি-তা শুক্ত:।। একিবাৰূপিণী এলা ত্রীকৃষভদ্ধনাশিতা। প্রীরাধা 🗐-মডিঃ শুেষ্ঠা শুেষ্ঠকুপা শু,ভিপুিষা ॥ যোগেশা যোগনাতা চ যোগাতীতা যুগপুৰা। যোগপুৰা যোগগম্যা-যোগিনীগণৰজিতা ৷৷ জবাজসুম্ जकाना पाछिशीकपूरमानमा। भी-काषत्र पदाः थाती रेथर्ग्यक्रमा थता यू-**তি:।। র**ত্নসি·হাসনস্থা চরত্নসপ্ত**ল** ভ্ষিতা। রবালফারস•যুক্তা রব্রমা ল্যধরা পরা।। রত্ত্বেনুসারস্থারাট্যা बन्नगलाविज्**विजा। इन्म्नील**म्बि ন্যস্পাদপদ্মা শূভা শুচি:।। কা র্ত্তিরীপৌর্ণমাসী চ অমাবস্যা ভ যাপুরু। গোবিনরোজগৃহিণী গো-विनादेशकभूषिजा॥ भाविनहानि-ত্চিত্তা চ গোপীজনগণান্বিতা বৈষ্ঠনাথগৃছিণী গোবিনপেরমান- मा ॥ भाविनस्पिवस्पान्। उथा रिवन्धेर्युन्दद्गी । माननामा (वनवजी সীভা সাধী পতিবুতা।। অনপূর্ণা महानम्बन्। किर्वामुन्द्रशी दैक्वन। साथिनी (मुधा (भाभीनाथ-भतारता ॥ भाभीनावयती हजी नायिका नयनान्धि। नायका नायक-श्रीज नायकानन्त्किशि ॥ व्यवान শেষবভী শেষজ্ঞপা চৈব জগন্ময । (गाभानभानिका मागा नन्रजाया उथा भन्ना।। अनानी (योवनाननी যুবতী গোপসুন্দ্রী। গোপনাতা कानकी व जनकानन्तकातिगी॥ कि नामवामिनी तुम्रा इद्राटाम्पटर **পরা। হরেখ**রী রামরতা রাম্রামে-খরী রমা।। শ্যানলা চিত্রলেখা চ उथा ভূবননোহিনী। সুগোপ্যা গোপব্নিতা গোপরাজ্যপুদা শুভা ॥ আনন্দ পূর্ণা মাহেশী মৎস্রাজ সূতা সতী। কৌনারী নারসিংখী চ वाजाही नवपूर्णिका ॥ हक्ष्माहक्ष्म। भाग नात्री ज्वनमून्त्री । मक्य-कुरुता माकी मक्क कम्या जूलाहना ।। রতিক্পা রতিপুীতা রতিংশুঠা রতিপুদা। রতিলকণগেছতা বি-त्रका जुरानचत्री ॥ नकाण्यामा स्टार জায়া জামাতৃ**স্ল**বন্দিত। বস্পা

वज्जात्यामवादिनी यम्ना कया।। विजया खरभनी ह यमनाञ्जू नजिला-নী। বক্ষেপ্রী বক্রবপা বক্রবীক্ষণ বীফিতা !৷ অপরাজিতা জগনাথা জগনাথেশ্বরী মতিঃ। **খেচরী খেচ**র जुङ। (थहद्रज्ञुनायिनी।। विकृवकः স্বস্থা চ বিষ্ণু ভাবনতৎ পরা। চ-न्तुकाडिमुगाञा ह हन्तुाननगताः रुत्रा॥ मर्दरमवता निवा क्लगा उथा (क्रमकती वधः। यानरवन्युवधः रेणः **ব্যা শিবভক্তা শি**বাহ্মিতা ॥ **কেবলা** নিয়ল। সূজা মহাভীমা ভ্যপুদা। জীন্তক্পা জৈন্তী জিতা নিত্ৰপু भारिनी।। शालानविन्छ। २नका क्रवाजनुनिवानिनी। जयञी रुम्ना-क्षे চ হুমুনভোষকারিণী ॥ কলি-कन्पवञ्चा व कनिकन्पयमानिनी। कलिकन्यक्षा ह निज्यानम्क्री क्षा ॥ क्याव**ी व्यवकी रेक** वात्राव्यवात्रिनी। वायरहवी वामः ভাগা গোবিন্দপু্যকারিণী ॥ ব (गनत्कन्या (यागिनी (यागिनी (याग-ক্তিণী ৷ যোগসিকা সিদ্ধক্পা সি-দ্ধিক্রবিবাদিনী।। ক্ষেত্রাধিধাত্ বাণাচ ক্ষেত্ৰা জীতা সংগ্ৰহা। কে मादानन्त्रका है कि किमातानन्त्रायि-नी । किणवा किमवर्शी जा किएमानी কেশবপ্রিবান রাসকীডাকরী রাস-वासिनी ब्रास्त्रमुग्दबी ॥ (गाइना-निउपका ह गाञ्चक्श्रमायिनी। व्यवस्नादी नातस्री नातक्ष्ववस्थ-ना ॥ अनान्यक्ष्रभूत्रमूथशात्रम् থান্বিভা। মুখ্যা মুখ্যপুদা মুখ্য-क्रा मुश्रभुमायिनी ॥ नादायनी क्षा द्वारा करूना करूनामगी। का-क्ना कक्नाक्नी (भावनी नागक-র্ণি ।। সর্পিণী কৌলিনী ক্ষেত্রবা-निनी ह जगन्मी। बढिना क्रिया नीला नीलाप्रत्यता भूजा ॥ निज्ञि-নী ৰূপৰতী যুৱতী কৃঞ্পীৰরী। বিভাৰরী বেত্রবৃতী শংকটা সটিলা-वका ॥ नादायनित्या त्वा मृक्ती-পরিমোহিতা। দৃকপাতমোহিতা-পাতবাশীনা নবনীতিকা ॥ নবীনা नवनात्री ह नात्रक्कलालाञ्जि । रेइनी इनमृथी हन्मृम्थी नानिज्-**(भा**खना ॥ व्यक्तन्त्र्यदा ठन्त्र्यहा-ভা রোহিণী তিমিঃ। তিমিহিল-**ক্লানোদ মৎস্যজ্পাক্**হারিণী !! कावनी नद्यञ्जाना कार्याजीजा কিশোরিণী। কিশোর বল্ল ভাণকেশ-कात्रिका कामकातिका !! कार्यियत्री कामकना कानिजी जनशीभका। कविन्तजन्याजीवदागिनी जीवरण

रिनी एं कारम्ब्रीशानभन्ना अनुमा (मारकातिनी। अमूना अमूनानना क्ष्णी कामवल्ल छ।।। एकात्री रेवज यक्षी ह निषमाजिषकाशिगी। विलुव् क्रिश् क्काषत्रा विष्याश्रमखनी ॥ বিশ্বাত্মিকা বিশ্ববৃশু বিশ্বৃক্ষনিবা সিনী। তুলদী ভেচ্বিকা চৈব হৈ-ভিলানनरकातिगी॥ गरबनुत्रामिनी শ্যান্লভানস্লভা তথা ৷ যোগিত শক্তি যুদ্ধপাচ যোবিতা নন্দকারি ्गी।। (প्रमिश्रा (প्रक्राना (भूगानारः) তর ফিণী। প্রেমহরা প্রেমদাত্রী প্রে-मण्डिम्यी उथा ॥ क्कर्भुमवजी धना क्षरभुभाउत्रिक्ती। रभुमार्थ দাযিনী সর্বত্বেতা নিত্যতরঙ্গিণী।। **हा**व जावादिजा होषा कषानन्त्र কাশিনী। কপিলা শৃত্বলা কেশ भागमपर्किनी भंदी ॥ अडी तवामि-नी भूगा ध्रमुक्षणा ज्ञानम्त्री। वृक्षा-গুণোচরা বুন্ধৰ পিণী ভবভাবিনী ।। मः माद्रवामिनी रेमदा रेमदावस्त পুরাথিনী। শিশিরা হেমরাগাট্যা নেবৰপাতিসুন্দরী॥ মনোরমা বে-गष्ञी (वगाष्ट्र) (वस्वासिनी। स्या क्रिंग नगाथात्रा नगाकता मूरनविभी ॥ किछ्लातमञ्चानर्भा लोकन्तु। न के। कला। कलानिदिनाथवरना कला

নাথাখিরে।হিণী ॥ বিরা<del>গঞ্জলা</del> হেমপিক্লা হেমমণ্ডলা। ভাণ্ডীরু जानवनमा देक्वजी भीवती नूकी ॥ णुकापवखनाजीका णुकापविश्वा-नथी । विकला कियी कोना कोरवयाध्रवभातिनी ॥ कावावती कारका जगमूर भिक्ति कि । সৃষ্টিস্থিতিকরী সংহারিণী সংহার-কারিণী ॥ কেশলৈবালধাত্রী চ চন্দুগাত্রা সুকোমলা। পদ্মা**সরাপ** नः द्रागा विकाष्ट्रिमद्रिवामिनी ॥ वि-क्रान्या भागमन्थी मधी मःमात्र-রাগিণী। ভূতা ভবিষ্যা ভব্যা চ ভব্যগাত্রা ভবাতিগা।। ভব্না শান্তকারিণ্যাকাশক্পা সুবেশিনী । রভিরস্পরিভ্যাগা রভিবেশা র-তিপ্রিয়া ৷৷ তেজস্বিনী তেজকপা কৈ-বল্যপথদা শুভা। মুক্তিহেতু মুক্তি-হেতৃলত্বিনী লক্ষণা ক্ষমা।। বিশাল। (नका देशांनी दिशानऋगम्भवा। বিশালগৃহবাসা চ বিশালবদরী-রতি:।। ভক্তাতীতা ভক্তিগতি র্ভ-ক্তিবাধ্যা ভবাক্তি: । বামাঙ্গহা-রিণী বিষোঃ শিবভক্তিসুথান্ত্বি-তা।। বিভিত। হবিজিতা মোদমশ্ম চ গণভোষিতা। হ্যান্যা হেরম্বসু-ত। गनगाजा मूख्यकी॥ मृःथहजी

ছুঃখহর। সেবিতেপ্লিতসর্বন।। স-श्राकानृतिथाजी চ क्रजाक्रजितना-निनी ॥ वरका भाउरमधी मधी मध्यविनामिनी । गुामागीजा गया পম্যা গমনাতীতনির্ভরা । সর্বাক্ जुम्हती गङ्गा गङ्गाकनभयी उथा।। গকেরিতা প্তমাত্র৷ পবিত্র**ল**া मीलिका। भविज खगमीलाएडा भः विजानन्द्रभाषिनी ॥ शविज्ञक्ष्मीः भाष्ट्रा भविबञ्जनभाविका । गिल-ক্তা গীত**ল্ল**লা দন্জেন্দুনিবারিণী য়। শিৰ্বানদাত্ৰী নৈৰ্বাণী হেতৃযুক্তা-গমোভর। । পর্বতাধিনিবাস। চ निवा**मञ्ज्ञाना उथा।। मम्राम**ध्या क्नेना मन्त्रारम्कन्ता मुखा। भेत्र-**চন্দু**ৰুথী শ্যামহারা ক্ষেত্রনিবাসি नी ॥ वमञ्जाना मूत्मानी वमञ्चनना क्िः। ठजुज् का राष्ट्रका र विज्का গৌরবিশুহা।। সহসাস্যা বিহাস্যা व मूनुमा मूनुनायिनी । भागिन्या পুণিৰূপা পুণিৰূপিণ্যপাবৃতা ॥ কৃষপুীতা কৃষরতা কৃষতোষণতং-পর। কৃষ্ণপুমবতী কৃষ্ণভক্ত। ভ ककन भूरा ॥ क्का भूम (भूम छ छ। रित्र छ जिल्ला पिनी । रिष्ठ न । क्लिम हिजनाश्रिया हिजनाक्रिमी ॥ छेगुः ৰূপা শিবকোডা কৃষ্ণকোডা জলো-

मती। मरशमती महामूर्णकाड़ाद्र इ-व्यवामिनी ॥ हमुगवनी हमुरकनी हम्पूर्भ्य उद्गिष्णी। समृ मान् उन्ना ठ अगू पुक्रववानिका ॥ त्रणेशाणः র তা নিদু। ক্লুখা প্রেমর তান্তিকা । मूर्वामनमाग्रागठम् मूर्वामनउन्हरिः ॥ नागता नामत्रीवामा नगतानम् कार्रिशी । नागदा विञ्न भद्री नग-ताक्रनमक्षा ॥ উह्नीहा दिगवजी श्रियाकृष्ण्वत्रक्ति । (भूगाविक्ननः সিদ্ধাস্থী সিদ্ধসাধ্যবিলাসিকা II-मञ्जा (मान्जनमी (मथ्ना (मान्-थातिगी । ब्रङ्गकीत्र ज्याकी बङ्ग ज्यगज्यभा ॥ अयान नानिका क्षः श्रामा श्रामवित्माहना । मङ्ग्रभूमा **স**ভ্যবতী সেবকানन्द्रमाधिका ॥ **क**ः গদ্মোনি ৰ্জগদীগু৷ বিভিত্রনণিভূষ-পা।রাধারকণকান্তা চ রাধ্যরাধ্ন-ৰূপিণী॥ কৈলাসবাসিনী কৃষ্ণপুণ সর্বস্থাবিনী ৷ কৃষ্ণাব্তারনি**রতা** क्ष ভক্ত कवार्थिनी ॥ याहका याह-कानन्तका तिभी याहरकाब्ज्जना ॥ ए-রিভ্যণভ্যাত্য নন্দেযুক্তা কৃপাপ্লা । रिहेड्डान्यता रेथरियमम मर्झिन भूकाणिनी ॥ (इएइणप सक्रा) है शेशीवाकाविभावना। कशनानणतक-ত্রীচ শাত্রানন্দবিশারদা।। পণ্ডিতৃ।

পণ্ডিভূগুণা পণ্ডিভানন্দকারিণী।। श्राविशानमक्दी ह ख्या शिलिव-(नाहिमी । छथा जन्हात्रणकाए।। वि क्क्निमानास्त्रा ॥ विमुवाः श्रीजिकः ननी विवेदरभुमविविक्ति। नारम्यी माप्ताना ह नाष् विन्तृविवातिनी ॥ भू न्। इ। न्रिक्श म्रोक्श शाम्भवा निनी । कार्खिक्युडकबी ह व्रजना স্বারিণী ধরা ॥ জুলনা চাতলভলী भिनाउनिवासिनी। कू पुनिहेक् - मः मर्गमक्रमायविमाणिमी ॥ दहा विकम्पर्भवावन्ता कम्पर्भरका विज्ञम्ह त्री। कन्दर्शकार्धिकननी कामनी छ-भुमािनी ॥ काशमाञ्जवितामा ह কানশান্তপুকাশিনী ৷ কামপুকা-भिका काश्रिन। निमान्। क्षेत्रिक्ता ॥ यायिनी यायिनीनाथ्यमना कानिनी-भन्नी। रगारमभन्नी इत्ररगांगमुक्ति-माजी हिन्नगुरा ॥ कंशानगानिनी (रवी मीनाशागस्त्रभा। कृशानि **छ।** खना भौगा। खनाजीजां कवलुमा ॥ स्या ७ च्डाव जा मना मान রদ্ধিবভা। সিভাসিভা চ সরলা बी 🖖 बादगुमक्वा ॥ विम्रार्थि-विक्री माया ह विम्याविम्याञ्चलिभी । यानिकिकी माजक्रा माजनि कष्टिकातिनी।। नारमनुन्ति नाममा

তা ক্রীডাকৌত্রুকর্নিণী। হরিভা-वनभोना ह स्त्रिप्यवनख्रभद्रा ॥ इतिनाग इतनाग निवनाग नि-वान्जि। मद्रकार्गवमः हजी नद्रका-र्गवमाणिनी ।। नरत्रचंत्री नत्राजीका नद्राम्यता वद्राक्षां विष्णामानित्-बीकीडा बरमानाकाउवानिनी।। यानामानम्बन्धाः राजासानन्द्रनाः র্থদা। বৎসলা কোষলা কালা ক-क्गानंवक भिगे।। वर्गनकी अभिन-की (में निमी भाखवित्रवा । उधा-क्क् नमशी (जोनी जीना रेक्सी जगी-নকা।। ত্রিজপন্মোহিনী ক্ষীণা পুঞ্জ-मुक्के छन्न। छथा। भागार्थिनी भान-शाजः शानशानन्त्राविनी ॥ पुष्पम-স্থনকর্মাট্যা দধিমস্থনভৎ পরা। দ-, খিতাভাথিনী কৃষ্ণকোধিনী নন্দ্ৰা-क्ना। घ्डलिधा उक्यूका य**नूना**-পারকৌতুকা। বিচিত্রকর্মকা কৃষ্ণ-श्रामुखायग्वरभद्गा ॥ (भाभाक्-নাবেষ্ঠিতা চ কৃষ্ণসঙ্গার্থিনী তথা 🖟 রাসশক্তা রাসরতি রা<mark>সবাস</mark>ক্তবা-সনা ॥ হরিদু। হরিতার্কা হরাব-পিউচেডসা। নিক্তৈরন্য চ কি শেতা তথা দাক্ল্রিদ্কা ৷৷ সুব-**णमात्रमा रे**ठव कृष्ण्जाषाज्यिती-नी । जीराममानसी नामनाधिनी

দানধারিণী II মল্লিকোল্লাসিনীকে भी रुद्रिपयुद्रथादिगी। रुद्रिमासिष्ऽ-দাত্রী চ হরিকৌতুকমঙ্গলা।। হরি-शुमा इतिशागा यम्ना जलवानिनी। खनः नुमा बिजार्था ह हज्द्रा हाजुदी-তমী।। ভমিশা ভপৰপা চ রৌদুৰ-পা যশোর্থিনী। কৃষ্ণকামা কৃষ্ণভ-का क्कानम् भूमायिनी ॥ क्कार्थवाः जना क्कब्राणिनी ভाविनी उथा। কৃষার্থরহিতা ভকা ভকাভকসু ভক্তিদা।। এক্ষরহিতা দীনা বির हिनी ह हातः शिया। मथुता मधुताः রাজণেহভাবনভালনা।। 🗐 কৃষ্ণভা-वनात्भामा ज्लाभामिविधायिनी । কৃষ্ণার্থকশলা ক্ষ্সারচর্মধরা শুভা ।। অলকেশ্বরপ্রা। চ হ্লবেরেশ্বরবল্ল-छ। धनधान।विधानी ह क्या कारा ह्या ह्यो ॥ भुगवा भुगवनी ह भुग-वार्धम्बलिंगी। दुक्क विकृ मिवा-का नश्राद्विभी रेगविन में भागा तकः जीनानिनी ভূতপেতপুণবিনানিनी । मकानश्लिखनाबी व मछी माधी অক্ষতী॥ পতিবুতা পতিপুণা প **তিবাক্যবিনোদিনী। অশেষসাধিনী** कन्नवामिनी दन्नकिशा। ॥॥ ইতে তৎ कथिङ (रवि রাধানাম সহসু कः। यः भारते । भारति विषयि जन

তৃষ্ঠতি মাধ্ব: ।। কি॰ তস**ঃ যমুনা**-ভি র্বানদীভি: সর্বত: প্রিয়ে। স্বরু. ক্ষেত্রাদিতীর্থেন যস্য তুষ্টো জনার্দ্ধ-নঃ৷জোত্রস্যাস্যপুসাদেন কিংন সি ধ্যতি ভূতলে। বান্ধণো বৃন্ধবর্দ্ধী ক্ষত্রিয়ে জগভীপতিঃ।। বৈশ্যে নি ধিপতি ভ্যাৎশূলো মুচ্যেত জন্তঃ । बुक्षरुष्ठा मुद्राभाग भिष्ठाानीनाः তিপাপত: ॥ সদ্যো মৃচ্যেত দেৰে-শি সত্যু সত্যু ন সংশযঃ। রাধা-নাম **সহসুস্**∕ সমান•নাস্তি ভ্তলে।⊱ স্বৰ্গে ৰাপ্যথ পাতালে গিরৌ বা জ-লভোপি বা। নাজঃ পর• শু ঢ়• স্তো-ৰ ভীৰ্থ নাড: পর পর ।। একাদ मारा मुहि जू द। यः भारते मुनया-হিতঃ। তস্য সর্বার্থ সিদ্ধি: স্যাৎ **ण्**ग्राष्ट्रा **ज्राना ज्ञा शाहारण**्रा रशी-र्वभान्ताः वा जुलभी निम्रिको लिख। यः भारते मृत्याद्यामि उत्र उडर कलः मृगु॥ व्ययस्यदः ब्राक्रम्यः वा-হস্পভ্য• ভথা বিধ•। অভিবাত্র• বা-জপেয় অগ্নিষ্টোন তথা শুভ ।। কৃত্বা य कनगाला जि मुना उर कनगा-भू यार । कार्खिक हारेभी-साना भारतेषा मृग्यामि ॥ अञ्जूर्भक्त्री-**छ**• रेक्स्थ वनिक नाउट । उउन्ह दुक्क छवरन भिदम् छवरन भूति ॥

সুরাধিনাথভবনে পুন র্যাতি সলো-क्छा । गङ्गाजीद निमानाम्। यः भारेट भृग्यामि ॥ विष्याः स्वर्गः ভা• যাতি সত্য• সত্য• সুরেশবি। ্ৰম বকুণিয়ে জাতা পাৰ্বতী বদনা-निजा। वाधानाममञ्जाया नरी विद्याकाभावनी । श्रेशं हि भ्या **নিভ্য: শক্ত্যা** ভক্ত্যা যথোচিত্ত ।। মম পাণসম ছেত্ত তব ভক্তা পু কাশিত । নাভক্রায পুদাতব্য **भावखाय कराइन॥ नाखिकाय वि** त्रागाय त्रागयुक्ताय **जूनह**त्रि । **उथा** (मय भशास्त्राज श्रिजकाय म-**इति ॥ विकारम् यथामकिनाव** भूग्रार्थमीनित्। ताथानाममूथावा-ब्रिमम बकुः महाथिनिः॥ উक्उःहि व्या गङ्गा भाग मिक्कवागुनीः। विमुखनदाय यथार्थवामित विक স্য সেবানিরতায মজ্রিণে।। দাক্রে যথাশক্তি সুভক্তিনানসে রাধাপ দ্ধ্যানপরায় শোভনে। হরিপা मात्रुमधुनमानाङ्जाय मानाम ॥ त्राभाभाममूथायामभानित रेवकः वर्ष है। पर्गाट (खाव महान्ग्र) ह्या ७ कि भुभाषन ।। क्या उद्ग न তস্যান্তি রাধাক্ষণদার্থিন:। মন नागा दिक्या हि उवा अकार्थ भव

हि॥ मून भया धार्याउ हि नानाथा रेभबकात्रणः । इति छक्ति विवासर्थ **म्ल॰ ज॰धार्यऽएउ मरा।। मृ**तू पिति य-থার্থ নে গদিত ত্বি সুবুতে। ভক্তা সিমে প্রিয়াসি ত্ব মত: স্লেহাৎ পুকা শিত।। কদাপি নোচ্যতে দেবি ম্যা নান সহসুক। কিং পরং ত্বাং পুব: क्रांभि शान् इन्। मम शिर्य। स्था-ब भक्त द्राधिकाया यख कवह विव हि। इंडि नात्रम्भक्षत्राख दाधिका नरन्नामनभाष्टा २१। १। १। অথ রাধা কবচ•। 🖺 পার্বত্যবাচ। কৈলাসবাসিন্ ভগবন্ ভক্তানু গুহ-कांत्रक। त्राधिका कवहर भूग्रार कथ्य-ৰ ন্ম প্ৰো। যদ্যন্তি কৰ্ণা নাথ वाहि माः मृःथाडा जगरा प्रामव শরণ নাথ শ্লপাণে পিনাকধৃক্।৷ প্রীমহাদেব উবাচ। শৃণ্য গিরিজে তুভ্যা কবচ প্রস্চিত ।৷ সর্বর-काकतः भूगाः भवष्ठा। इतः भवः । इतिङ्किल्पुरः माकार ভृक्ति मुक्तिभुनाथनः ॥ विलाक्याकर्यनः (एवि इतिमानिश्वाद्रगः। मर्दव क्षयमः (मित अर्दमञ्चराभशः ॥ সর্বেষাঞ্চৈব ভূতানা॰ মনোবৃত্তি ক র॰ পর॰। চতুর্ধা ম্ক্তিজনক সদা-नन्दक्र भर् ॥ द्राक्रम्यायस्य

नाः यञ्जानाः कलमायकः। इकः कवह मञ्जादा द्वाधामञ्जूभ (यो ज-পেৎ।। স নাপোতি ফলং তস্য বি मु खन्। शाम शाम । याचि त्रमा सहा परिया २न्ध्रेभ्रङ्गः भुकीर्खिङः ॥ রাধাস্য দেবতা শ্রোক্তা রাণ বীজণ পরিকীর্ভিত। ধর্মার্থ কাম মোক্ষেযু বিনিযোগ: পুকী ভিড: ॥ 🎒 রাধানে শির: পাতু ললাট্র ক্লাধিকা তথা । বৃষভানুসূতা দম্ভান্ চিবুক গোপ नित्नी ॥ हन्द्रावनी भाजू गर्छ कि ञ्चाः क्ष्मिनुया उथा। कथेः भाजू र्श्निश्राण क्रम्य विषया उथा॥ वा क्षो हन्दुवनना छेनद्र गुवनवना। কটি যোগাস্থিতা পাতৃ পানৌ নৌ ভ दिका उथा।। नथान् हन्द्रम्थी भा-ত্ গুল্লীগোপালবল্পভা। মৃথ বিধু-मूथी পाजु (गाभी भरजन ज्या।। শুভপুদা পাতু পৃষ্ঠ সক্ষী শ্ৰীকান্ত-वल्ला अस्तिनः सदा भाव इदिनी পাত্ সর্বতঃ॥ বাক্য বাণী সদা পা-कु धनागातः धरनभन्नी। भूबाः मिनाः क्कत्र वा क्क भागा ह शन्त्र मा। ।। छे ভরা হরিতা পাতু দক্ষিণা ব্রভা-नुका। हन्तावनी तिनास्य पिया (थ फिडरमथना ॥ स्मोजागाना मध्र-मित नायाद्य कामकिनी। होषी

পাত: পাতৃ মা ছি গোপিনী রজনী-ক্ষ্যে।। হেত্দা সম্বে পাতৃকোন न। ह स्वाब्दकः (भ्याभदाइ अ-भाष भाषा जर्मभक्षयू॥ वानिनी ভোগসন্যে बल्डो ब्रक्तिभूमा जना। কানেশীকৌভুকে নিভ্যাবোগে রন্না-वनी मम ॥ नर्ज्यक्र नर्जकार्यम् दावि-কা ক্ঞমানসা। ইত্যেত**ে কথিত**॰ प्रिक कवहर शहमा खु**डः॥ गर्दतका**-কর নাম মহারক্ষাকর পর । সর্বার্থমিছির গুল্ড স্থাৎ ব্ৰহ্মন: সি বর্ত্ত।। রাজঘারে সভাবাঞ্চ अश्वास भक्षभ करहे। श्वामार्थनाम-मनाय यः भारते र भुयाका नद्रः ॥ जना निष्क र्राटापित न खर विन्ता छ কুচিৎ। আরাধিতা রাধিকাচ তেন ৰত্যু ন সংশযঃ।। গঙ্গায়ানাৎ হ-त्र नीमगुरुगार यर कनः नाजर। उर कम उम्र जवि यः भारेर পুষত: শুচি:।। হরিদা রোচনা চন্দু-मिखिङ इदिहन्तनः। कृषा निशिषा कृष्क ह शाहरयर मन्डरक कुरक ।। कछ वा (मवरमरविन न स्ति न्। अ गः भयः । कव्हन्। भुनात्न द्वा সৃষ্টি জিতি হরি:। সংহারপারি নিয়ত• করে।মি জ্বতে তথা। বৈ कवाय ह भूकाय विज्ञागन्त्रभी निहन

ग मन्। द कवह भवागु मनाथा नाम माश्यार। इंडि बीनावरगक्ताव े खानाम् उनात পक्तात नर्वतका क्वह ममार्थ ।। 🗱 ।। ज्या द्राधार्खां जः. । ন্তোত্রঞ্চ সামবেদোক্ত পুপঠেন্ড-किन्दंकः। त्राक्षा द्वारमध्येती त्रमेऽ। পরমা চ পরাত্মন: ॥ রাসোভবা क्कथाडा क्करकः इनिक्ठा। क्क. भागाधिकवी ह महाविष्णुम् द्रिश ।। সর্বথা বিষ্ণুমাযা চ সভ্যাসভ্যা সনাতনী।বুক্ষম্বরূপা পর্মা নির্লি: छ। निर्छंगा भन्ना।। वृन्तावरनभा वि-क्या यमूना उदेवामिनी । शालाकः বাসিনী গোপী গোপীশা গোপনা-ज्का ॥ मानन्ता भव्रभानन्ता नन्त-ननरनकामिनौ। वृषञानुत्रुठा भाषा কান্তা পূৰ্ণভমস্য চ ।। কাম্যা কলা-বজীকন্যা ভীর্থপূতা সতীনিভা। সপ্তত্তি শচ নামানি বেদোকানি শু-ভানি চ ॥ সারভ্তানি প্ণ্যানি স-इनामम् नातन । यः भारते मध्यकः শাদ্ধা বিষ্ণুভক্তো বিতেন্দ্রিয়া। ইছ-विवृति "हना नश्ची नक्। या छ रातः পদ। হরিভক্তি হরে দাস্য বভ ভে নাত্ৰ সংশ্বঃ ।। ভক্তো **ল**ক্ষ ष्ट्रीरेनव रसाजनिक र्ज्यदः धुवः । স্তোত্র স্বরণমাত্রেণ জীবন্মকো ভবে 📗

য়য়ঃ॥ পদে পদে হখনেধ্স্য ল-ভতে নিশ্চিত কল । কোটি কয়ার্জিভাৎ পাপাৎ বৃদ্ধহত্যা-শতাদিপা। স্তোক্রমরণমাত্রেণ মু-চ্যুতে নাত্র সংশ্বঃ । মৃতবৎ সা কাকবন্ধ্যা মহাবন্ধ্যা পুস্বতে॥ শ্বোভি বর্ষমেক যা শৃদ্ধা স্থিয়ন-ভোজনী। শ্বোতি মাসমেক বঃ সর্বাভীষ্ট লভেমরঃ॥ সামবেদে সমার ভানিত্যাহ কমলোড্বঃ। ইতি নারদপঞ্চরাত্রে জ্ঞানামৃত-সারে দিতীয্রাত্রৌ শিবনারদ সং-বাদে ভক্তিজ্ঞানকথনে শ্রীরাধিক। স্থোত্র সমাপ্ত ॥

রাধাকান্ত: পু॰ প্রীকৃষ্ণ:। যথা।
গোলোকে দ্বিভূক: কৃষ্ণো রাধাকান্ত: সনাতন:। গোপাঙ্গনাদিভি
যুক্তা দ্বিভূজৈ গোপপার্থ দৈ:॥
ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে বুদ্ধবণ্ড ১৭ জ্বধ্যায়:॥

রাধাতনথ: পু• কর্ণ:। ইতি হেন-চল্দে কর্ণপর্য্যায়ে রাধাস্তশন-দর্শনাং ।।

রাখাভেদী পু• অজুন:। ইতি ভূরিপুয়োগ:।।

त्राशात्वधी नुः अक्तूनः। यथा। त्राशात्वधी कित्रीक्षितन्तु हिन्दुः (ध তহযো নর:। বৃহন্নলো গুডাকেশ: সূভদুেশঃ কপিপুল:।। বীভৎসু: কর্ণজিজস্য গাঙীবং গাঙিবংখনু:। ইতি হেমচন্দু:।।

রাধাসুতঃ পু॰ কর্ণ:। যথা। বেদি-জা বাজ্ঞসেনী চ কর্ণ শচম্পাধিপে। স্বরাট্। রাধাসুতো স্ক্তনযঃ কালপৃষ্ঠত্ত ভদ্দু:।। ইতি হেন-চন্দু:।।

রাধেষ: পু• কর্ণ:। ইতি ত্রিকাও শেষ:।।

রাপ্য: ত্রি কথনীয়:। রপধাতো:
কর্মণি ঘ্যণ্পুত্যযেন নিল্লম:।।

রাম° ক্লা বাস্ত্ক ।। স্ব চ । ইতি মেদিনী ।। তমালপত্র । ইতি রা-জনির্ঘণ্ট: ।।

রান: বি মনোক্ত:।। সিত:॥ অ সিত:। ইতি নেদিনী॥

द्रानः शृ भद्रभूत्रामः । म ज् वि

क्षित्रः भः जमत्रिम्दाः भूजद्वन

क्रित्रं भः जमत्रिम्दाः भूजद्वन

क्रित्रं भृषिवीः निःक्षि जिर्मा क्रित्रं भ्राव्यः । म म भूष्युक्षः

स्रक्षाः भ्रायाश्वरः । म म भूष्युक्षः

स्रक्षाः भ्रायाश्वरः । म म भूष्युक्षः

स्रक्षाः भ्रायाश्वरः । स्रक्षां स्रम्यः ।

स्रक्षाः भ्रायाश्वरः । स्रम्यः ।

स्रक्षाः भ्रायाश्वरः । स्रम्यः ।

स्रम्यादिवशायम्यः भिर्णः ।। स्रम्यः ।

स्रम्यादिवशायम्यः ।

यमूर्याभीययम् स्वर्वाष्ट्रम् सार्थः स् गास्त्र कः मारिवशार्थमवञीर्गः ॥ व-क्यः॥ वार्षकः॥ भणुष्कमः। ইঙি (मिनिनी ११ 🗯 ११ व्यापा ज्ञामा यथा । অঘোর ক্ষাধ্রাণক মহাকালৌ পু দীর্ভিভৌ। ভার্গবো রাঘবো গৌপ জ্বৰো রামা: পুকীর্ত্তিভা: ॥ ইতি ব **क्लिश्रुवाणः॥ #॥ ब्रामम्बन्धः यूऽदः** পত्তि र्यथा। द्वा भारता विश्व वहरना मकाभी यद्रवाहकः । विश्वानाभी श्र-রোযোহি তেন রাম: পুকীর্ভিড: ॥ রমতে রম্যা সার্জ্ব তেন রাম্ব বিদু বু**খাঃ ৷ রমাণা॰ রমণক্তান**৽ রাম• রা सविष्मा विष्नुः। द्वा छि जि जासीवहरना भक्ताभीश्वदगहकः ॥ नश्वीभितिः शक्तिः ज्ञामः भुवम्खि मनीविनः । नानाः जहमुः स्वितानाः स्वराग रू कनः नाउट ॥ उट कनः न जाउ ৰ্ন রামোচারণ নাত্তঃ। ইতি বু কবৈবৰ্ত্তে 🗐 কৃ শ্ৰহম্পণ্ডে ১১০ আ -খ্যাব: ॥ 🗱 ॥ ভদ্য পরিপুর্ণ জ্ম দ্ব: यथा । नर्स्त जान्म कलाः भुन्नः क्-क्छ जगवान् भगः। भविभूग्रेद्या রামে। বুক্ষশাপাৎ ষবিষ্ত: ॥ ইতি তবৈর ১১৬ অধ্যায়:॥ 🍎 🗓। অথ শ্রীরাননজাঃ। অনন্তো হযুগ্র मनः (मन्तू दी जि॰ द्वायाय क्यानूः

य्उक्ता श्यमानिष्टी खबडा॰ का माता मन्: ।। अ।। व्यम् भूकाभुर्या ्र गः । भाजःक् डप्राप्ति देवकः दाक्ति। ठेन्। नाक कर्याविषाय अवग्रानिन्। न क्र्याट। भित्रनि उँ वृक्ता अवार तमः। मूर्यं गरिकी इन्स्राम नमः। ्र किषि श्रीतानाय (मवजारेय नमः। उ--णः कदाक्नारमो। दा॰ व्यक्षा जाः নমঃ। রী॰ তজ্জনীভ্যা॰ স্বাহা। ক॰ मध्या छा॰ वष्ट्र। देव॰ अनानिका-ভ্যাণ হৃণ।রৌণ কনিষ্ঠাভ্যাণ বৌষট্ । तः कत्रउनभृक्षान्ताः करे । वरः क्रम्यापियु॥ उट्यामखन्यानः। तुषा-त्राकु ज्ञा॰ ननः । ज्ञन्यशु त्रा नमः । क्षिमानमः॥ नाजी यनमः। लिष्ट न नमः। भारत्या मं नमः॥ उत्ताम् जि अक्षत्रामि विधि विधाय (मव धा-(य८ । कामास्त्राध्त्रकांडि कांड म निम् वीद्राप्तनाष्ठाभिन । मृत्रा कानमधी प्रधान मनात स्यामूक ক্লানুৰি॥ সীতা॰ পাৰ্খগতা॰ সরো-क्रक्ताः विमूशिकाः त्राधवः । भणान्यः मूक्टोक्सामि विविधा कः श्याङ्गाकः छत्व ॥ **এवः व्यादा** . मानरेनः मःश्**क**ु मञ्जूषाना स-\र्ग्गाट । ততঃ भीठेलुका॰ বিধায िरक्षवाक भीठेगकीः भीठेमन्ध

मःभ्बा भून था। वाहनारि भक भूज्ञाञ्जिनिहानभर्यप्रष्ठः विश्वायावद्रश-পূলা মারভেৎ। যথা দেব বাম-পাৰ্শ্বে 🗐 পীতাবৈ নম:। তংগু 👸 भाक्तीय नमः। मिक्किन वामशार्थः र्याः उँ नार्वरच्या नयः। उँ ठानाय নমঃ। তছহিঃ কেশরেষু অগ্নগদি-কোণেষু মধ্যে দিক্ষু চ রা ছ দ্বাধন-भः। इंड्याहिना वंडकानि शृहरद्या **छ**ानाम् भूर्व। निषिक्षु ७ इन्नाउ नगः। ७ मृशीवाय नगः। ७ जन्नाय ननः। 'उँ विভीषाय नमः। 'उँ नन्त्र-शाय नमः। ७ व्यक्ताय ननः। ७ শত্ৰুম্য নম:। ও জামুবতে নম:।। मलार्गुन् अं मृद्वाय नमः। अँ व्यवस्य नमः। अ विक्रयाय नमः। अ मूबाक्षाय ननः। ७ ताष्ट्रवर्षनाय नमः। ७ च-(काभाय नमः। ७ थ्याभानाय नमः। अं मूमजाय नमः॥ उष्टि तिस्पारी-न् वक्रामी मह भूकत्र । उर डा धूमा-मि विमर्द्धनाष्टः कर्म ममाभारर ।। 🕸 ।। व्यम् अतुत्रक्रत्र १ च ए वक् सः পঃ ৷ ওপা চ ৷ খাতু লক্ষণ জপেমান্ত্ৰণ म्मान्म कर्रातः मृटिः । कुर्याः महिं उद्यो गुमान् । जाहर व उः ।। 🚓 ।। व्यवः मञ्जः य एविषः। उथा ह । ধকাম শক্তি বাক্ লক্ষী তারাদ্য: ं शक्य वर्गकः। य एका तः य ए विषः ग्राप्ट **इ**जूर्वर्गकन नुमः । तुका नामारनः मिक् पंकिनामूर्डि क्राउ। यग ন্ত্য: প্রিশিব: প্রোক্তো মুনযোর के भारित्य ॥ व्यथ वा कामवीकार वि-খামিত্রে মুনি মনো:। ছদের গাঁযতী म ज्ज्ञक बीद्रामरे क्व (एवजा। युगन भूजापिक अर्द भूर्ववह ममाहाद्र ।। छथा। जानकी वझ छ॰ (उन्नः वर्ह् कीया इमानिकः। मणाक्राद्वा १यः मझः माइनिष्ठस अवि विवार ॥ ছন্দস্ত দেবতা রামঃ সীতাপাণি-পরিপুহ:। আদ্য বীজ দ্বিঠ: শক্তি: কামেনাক্ষজিয়া মতা।। শিরো ল লাট ভুনধ্য ভালুকণ্ঠেষ্ হৃদ্যপি। नाज्रक कानू शापितू मनवर्गान् ना সেহ্নো: ।। # ।। ততো ধ্যান• । অ (याध्यानगात्र विजयक्षात्राचर्गमण्डल । মন্দারপুষ্ণৈ রাবন্ধ বিভাবে ভোর-ণাঞ্চিতে।। সিংহাসন সমার্কটে পু-ম্লকোপরি রাঘব•। রক্ষোভি ইরি-**ভि रेर्न रेव क्विं**यानगरे**छः भूरे**छः ॥ **ज॰ ख्यमान• मूनि छि र्गम्नोद्धः भद्रि**-**(माञ्जि: । भी**जानक्ष्ठवामाक्: লক্ষণেনোপশোভিত· II শ্যান্• পুসমবদন সর্বাভরণভূবিত थ्रार्राम्यः अर्थमञ्चः वर्गनक मनः

माधीः॥ वानार नर्वः न्वतः॥ इ।। विक्रि नीवायलनाएँ। क्रेवेद: (क्य-न वर है। बाक्ता मज्जा का रूप नहां शिष्ठक नं भूपः ॥ व्यानीया सम् থৈকৈক বীজাদ্যস্ত্ৰগ্ৰেতা মনু:। চ-ভূর্বণ: স এব স্ট্রাৎ ষড্রণো লাক্তি-**७ पुरः ॥ सा**शास्त्रा हे क्उस्ता के: ননোন্ডোবা ভবেশ্বনু:। তথা। তার भाग तभानक वाक् बदीकि व विषयः । ত্র্করো নত্ররাজ: স্যাৎ সর্বাভী। **हे**कनभूरः ॥ घाष्मत्र कम् खमाखा **टान्द्रायः ठञ्**तकतः। त्रामाय श्वानुः পুোক্তো মন্ত্র: পঞ্চাক্ষর: পর: ॥ পঞ্চাশন্মাভ্কাবর্ণ: পুত্যেকপূর্বকো मनुः। लच्ची वाक् मन्मशामिक ठाङ्गा-म् । न्याम्याक्षा ॥ उन व्यः ज्ञाम । আ॰ রাম। ইভ্যাদি ত্র্যক্ষর:॥ ভথা वन्त्री वाक् मन्नथामीनामना<del>उम मा</del> নেপি ত্র্যক্ষরঃ। তেন ञী॰ রাম। ঐ• রাম। ক্লী• রাম ইতি।। বহিছে• শয ন বিকো রন্ধচন্দ্রবিভূষিত। একা-कारता मनुः (शास्त्रा मजताबः भूत-कनः ॥ वुका मृनिः म्राम्गायजीहा न्ता द्रामछ (हवजा।। #।। এकाकदि তু দাদশ লক্ষজপঃ পুরশ্বরণ । ড-থাচ। ভানু লক্ষণ ৰূপেয়ন্ত্ৰণ ইচি बहनाद व्यातारवाः वर्षक्रका है उ

विष्मयः। ध्रान शृजापिकः यउक्तव द् ॥ 🗱 ॥ व्यथ 🗐 ब्रामहन्तुनु े ्रागः। बाजीनुन्न बुङ्गारिनिर ্রাবাপ্তয়ে নরঃ। জাতীপুস্নৈ জুভ্ योद्दलनोस् जन्किरेजः ॥ द्राजन म्। य कमेल विन्यान्। पि जन्ननः। की लारभनानाः स्थापन वनस्यमः िचित्र कगर।। विव्य भूम्रेन क्र्ल्यामि-निर्द्रावाश्वरय नदः । मूर्बास्मासन मीयांग र्ज्यमञ्जी नित्रामयः ॥ तः জেংপল ভূতামন্ত্ৰী ধন মাপ্নোতি ৰাঞ্জি। নেধাকানেন হোভব্য भनामञ्जूरम न रेत्रः॥ उद्धाः अञ्चल मञ्जः প্রপিবেৎ কবি ভবতি বৎসরাৎ। ভনিশ্বাদ ভূঞ্জীত নহদারোগ্য वकान ।। #।। जथ औत्रामहन्तुरसा-্ৰ-। তী হনুমানুবাচ। তিরশ্চামণি রাজেতি সমবাय॰ সমীযুষা । यथा मृशीव मूर्थामाः य खमुगुः नमामाइः ॥ मक्द्रव शुभन्नाय विभिश्वीरेयव वट श्रिपः । विजीवनायाक्ति उटि य सः वीत्र॰ ननाम। ए। ए। महान् भूजि-💇 वााणी महात्तः ककणाम् उ । **पृ**ष्ट्रः किरायूना त्यन सङ्गिविष्ट्रः नः बागाङ् ॥ (उक्रमान्यायिक। यम् ৰুবান্তি জ্বনাদ্য:। পুকাশতে ষত (ऋ। य छ॰ ज्वड॰ नगाम।इ॰॥ म-

ৰতো মুখতা যেন লীলয়া দৰ্শিতা রণে। রাক্ষসেশ্বর যোধানা ও॰ वस्म मर्बाषा मूथः॥ नृजावस भून-লানা॰ হিনন্তি চ বথা নৃবু। সি॰ছ: माप्तिश्वितारक्षे छ॰ नृमि॰इ॰ नमा-ন্যহ॰॥ यमाहि ভ্যতি বাভার্ক জুল-নেশ্যা: স মৃত্যব:। ভিষা ধিনোতি शाशानाः **ভीषतः उः नमाम**हरः॥ পরস্য যোগ্যতাপেক্ষা রহিতো নি-**७। मह्न । मन्त** । मन्ति। विकास म् उ॰ जर्॰ नमान।इ॰।। या मृजू। निजरानानाः भात्रयङ्ख्यालक्षेपः। ত্রোদাস্ত্রে। বহ্নে। মৃত্যু মৃত্যু• नमाग्रहः ॥ यटभारभम् भुगाउ। ভবেদুভমপুৰুষ: । তথীশ সর্ব-(मवाना॰ नमनीयः नमान्। इ॰ ॥ ञा-অভাব সমুৎ ক্ষিপ্য দাস্যৌনব রঘূভন ৷ ভজে ২হ পুত্যহ রাম मनीड॰ महनऋगः॥ निडाः 🕮-রামভক্তস্য কিন্ধরা বমকিন্ধরাঃ । निवस्या हिन उना निक्य उना मानिकाः ॥ इमः श्नृयञा (भाकः মজ্র রাজাত্মক ভব । পঠেদন্দিন যন্ত সরামে ভক্তিমান্ ভ্রেৎ ॥ ইতি হন্নৎকল্পে মন্তরালালাকণ শ্রীরামচন্দুস্তোত্র সমাপ্ত । # ।। वय श्रीबानहन्तुम्याष्ट्रीखद्रन्य उत्रः

नाम । विषवताम उवाह । मृगु गाः व्हिय वक्तांभि ज्ञानमा ज्विक्यंगः। নামাষ্টশতক পুণ্য তিষু লোকেষু বিশুক্ত ।। নাত: পরতর গুহু • ত্রিষু লোকেষু বিদ্যতে। কৈলাসশিথরে রন্যে নানা রুজু বিচিত্রিতে ॥ একাগু পুষতো ভূত্বা বিষ্ণু মারাধ্য ভক্তিতঃ । উপবিষ্ঠ স্ততো ভোকু পার্ন্তী শঙ্করো হ্রুবীৎ ৷৷ পার্বত্যেহি মযা সার্দ্ধ ভোক্তু॰ ভুবনবন্দিতে । ত মাহ পাৰ্বতী দেবী ডপ্থানান সহ-সুক্ ।। ততো ভোক্যাম্যছ ( दव ভুন্গভা• ভবতা পুভো। তত স্তা• পার্বতী পুত্র পুত্রন্ গরমেশর: য় ধন্যালি কৃতপ্ৰয়ালি বিফুভক্ত<del>া</del> ति भावं छ। मूर्व छ। देवस्वी छक्ति र्ভा॰ त्युय॰ वित्मर्थात् ॥ त्रकात्रामीनि নান।নি শৃগতো ন্ন পাৰ্বতি।ন্ন: পুসয়তা যেতি রাম নামাভিশক যা।। রএত্তে যোগিনো হনতে নিত্যা নলে চিদাতানি: ইতি রানপদে-নাদৌ পরণুক্ষাভিধীয়তে ॥ রাম রামেতি রামেতি রমে রানে মনো-इस्य । सहस्यागि छ नाउ दास मास वज्ञानम ॥ ज्ञामञ्जञ्ज नहामिव ভূঙ্ক সার্ভণ নহাধুনা। ততো রা-মেতি নামোজ্বা সহ ভুজ্বাচ পার্র

তী ।। ততো ভুক্তা নহাদেবী পতি-না সহ স•ছি ভা। পপুছ ঞীনহাদে-ব• প্রীতিপুৰণ মানসায় সহসুৰাম-ভি স্তল্য রামনাম ব্যোদিত। ত-স্যান্যান্যপি নামানি সুত্তি চেদাুব্ৰ-ष्ट्रियः ॥ कथ् अन्त्रीम (मृद्रिक छुज নে প্রীভিকত্তমা। গ্রীশকর উবাচ্ । भृगू नामानि वक्कामि द्वानहन्तुमो शाईछि । (बोकिका रैविंग्का: नम्। যে কেটিৎ সন্তি পাৰ্বতি ॥ নামানি রামচন্দ্র সহসু ভেষু চাধিক । তেষ্চাত্যন্ত মুখ্য হি নামা মাষ্টোত্ত-**द्रः শ**ङ् ॥ विष्का (द्वेदिक नामानि সর্ববেদাধিক ফল । তাদ্ড্নান স-হসেুধু রাম নাম পর মত ।। জপ-ত: সর্ববেদা শ্চ সর্বস্ত্রা শ্চ পার্র-তি। ভদ্মাৎ কোটি গুণ পুণ্য রাম নানৈব লভ্যতে। অস্য শ্রীরান না মাষ্টোত্তরশতনান স্তোত্রস্য ঈশ্বর अिव त्रवृष्टे भक्तः जीवामहान्तुरम्व-তা জীরানচন্দ্র পীত্যর্থ জপে ব্নি-त्रागः। धित्रात्मा त्रायहन्तु क द्राय-जुन्ह नाथउः। ताजीवानाहनः श्री मानु। दिल्लु। इत्भूक्षतः ॥ डान्स्रीह-লভোজৈকো জিতানিত্রোজনাদনী বিশ্বানিত্রপ্রিয়ো দান্তঃ শরণ্য ত্রাণ-ভৎগর: ॥ বালিপুন্থনে। বাশ্মী

শভ্যবাক্ সভ্যবিক্রম:। সভ্যবুতো वु उक्तः प्रता इन्यराभुषः ॥ (को-) माल्यः अत्रधु मी विद्राध्वध्नि । িতঃ। বিভীৰণপরিত্রাতা দশগুীব-্ শিরোহৡ ।। সপ্ততালপুভেত্তা চ **र्**तकार ७ थे ७ न्:्। जान नगुः गरा-निर्भवसन खाउकाडकः ॥ (वर्षाष्ठ 🖅 नाद्मा १८नयाचा ७६८वम् 🖘 🤝 वजः । पृषाविभितार्छ। विभूर्डि স্ত্রিগুণ স্কর্যা॥ ত্রিবিক্রন ক্রিলোকা-আ। পুণগোৱিত্রকীর্ত্তনঃ। ত্রিলোকী बक्क का धनी ए अकावगुन्न गुक्ट ॥ অহল্যাপাবনশ্চৈর পিভৃত্তভো ব রপ্দ:। জিতে নিদ্যো জিভকোথে। জিতলোভো জগদ্ভক: 11 খাক্ वानव्रमःवाजी हिजक्षेनगाम्यः । স্মিত্রাপুরসেবি क्यल्यागत्त्र रः <sup>।</sup> छः ॥ সর্বেবাধিদেব । মৃত্রান-बकीवनः। गायागाती हरु छ। ह म-হাভাগো নহাভ্য: ॥ সর্বদেবস্ত-र्छः भौरमेत्रा वृक्षरेत्रा मृनिनः छ उः । संशायाणी मरशासात्रः सृत्रीरवञ्जिक द्राष्ट्राः॥ नर्वभूग्राधिककन खीर्थः मद्योधनामनः। जा विभुक्रयः। म हाः र्श्वियः भद्रमः भ्यम उथा।। भूराग्रा मया मयानातः भूतानः भूक्रवाख मः। जिञ्बल्ला निज्ञामी भून

ভाषी ह द्राघवः ॥ व्यनस्थानस्त्री-রো श्रीরোদাভগুণোভর: । भागा-নানুৰচারিত্রো মহাদেবাভিপুজি-তঃ ॥ সেতুক্ৎ জিতবারীশ: দর্ব-जीर्थनया इति:। मानामाकः मु-न्हदः मृदः भी उदात्रा धनुर्खदः ॥ সর্বত্তাবিপো বজ্যে জরামরণব-ব্ৰিভ:। শিবলিঙ্গপুঙিগাতাসর্বা-घगनविद्धितः ॥ भत्रवाचा भव्र-वुक्त महिनानन्त्रियुद्यः । পর জ্যো-তিঃ পর ধান পরাকাষ্টাপরাৎ-श्रदः ॥ श्रद्धाः श्राद्धशः श्रदः श्रद বেদাত্মক:শিব: ৷ ইত্যেতদুামভদু-স্য নাশা মষ্টোত্তর শত।। ওহাছু-ছভর দেবি তব প্রীভ্যা পুকীব্রিত। । यः भारेट मृत्याद्यामि ভक्तिय-ক্তেন চেতসা ॥ স সর্বৈ মূচ্যতে পাপৈ: কল্লকোটিসমৃদ্ভবৈ:। জলা-নি স্বতা থান্তি শত্রো যান্তি মি-वडा ।। ताजाना मामडा याडि বহুণো যাত্তি সৌন্যতাশ আনুক্ল্য क जुडानि रेस्यं । याखि हलाः छियः ॥ वन्त्रः तुरा याडि माडि नावा-ন্ত্যগদুবা:। পঠতো ভক্তিভাবেন जनमा निविमञ्जूष ॥ यः भएटे পর্যা ভক্ত্যা তস্য বৃশ্যু জগ্রয় । यब्द कामग्र हिर्छ उन्हार्था-

**डि कीर्डना**८ ॥ यः शार्टनामहन्त्रम् নামা মস্টোত্তরং শতং। অজ্ঞানেনা-नि इद्वारा न म भारेन विविभार ।। भूग्रकालयु मर्खियु भटेगानस्या श्रया । मर्बायान कु जीर्थिषु नात्म ह ভগঃসু চা৷ তৎ ফল কোটি গুণি ত ত্তবেনানেন লভ্যতে। পুণ্যকা लिवृ मर्खिष् भठेगाम मञाष्टेकः ॥ कन्नकाढि मह्मानि कन्नकाढि न-ভানি চা বৈষ্ঠে বাস মাপ্মোতি मणभूरित मंगाभरितः ॥ तामः मृत्रीः দলশ্যান পদ্মাক্ষণ পীত্রাসস। স্তবন্তি নামভি দি বৈচৰ্নতে সাংসা तिरा नदाः ॥ त्राभाग ताम <u>जन</u>ाय রামচন্দ্র বেখসে। রঘুনাথায় না-থাৰ সীতাবাঃ পত্ত্যে ননঃ ॥ ইন• মুক্ত মহেশানি জপলেব দিবানি-শ । সর্বপাপ বিনিমুক্তো বিষ্ণুসা-युक्ता भाश्र या ।। इत्जिज्नाम जुन् म। भाराबार (वरमण्डः । कथि ७ उवगाव्य यञ सु दिक्षवा जनः ।। বন্দানহে নহেশান হরকোদও थ्यन । कानकीक्षरगाननहम्तन त्रघूरक्तरा। इंडि शम्मभूत्राण **उ**मा-মহেশ্বর সংবাদে শ্রীরামচন্দাঞ্জেত্ত त्र**गउ**नाम् खावः मनार्थः ॥ 🛊 ॥ व्यथ बितामकदः । भाषा नी- লোৎপল্ল্যান রাম রাজীক (बाहन । कानकी वस्राशायड **ৰ**টামুন্ধটমণ্ডিত • 11 সামিতৃণ ধ্নপ্রাণপাণি নকঞ্বান্ধক• ষ্ণীল্যা জগ্গাড় মাকিভূতি মূজ विज् ॥ तामत्रका भारे भू। जुः भाभन्नी॰ मर्बकामना॰। व्यम् 🚭 द्रामहन्द्रक्षवहनः वृथकोत्निकश्रवि र्णायजीहन्तः बित्रामहान्मु। (स्वज) **জারানচম্দু প্রীভার্থ জপে বিনিযো-**পঃ। ওঁশিরে। মে রাঘবঃ পাত্ ভालः मन्द्रथाञ्चकः। कोनलाया দৃশৌ পাতু বিশ্বানিত্রপূর্য: শুকী।। যুণে পাতৃ মথ্যাতা মৃথং সৌনিত वर्भनः। किन्नाः विन्तानिधिः भाजु कर्श्व खंद्र खंदिन हुन्। क्रिको निव्या-যুধ: পাত্ ভূজৌ ভগ্নেশকান ক:। করৌ সীতাপতি: পাতৃ হৃদয় কা-**मन्यार्डिट्या वकः शा**जु कवकातिः स्टाने शीर्वागवन्तिस्यः। भाष्यों **न**-लगिजः भाजू अकि निकासन्तिः ন: ৷৷ নধ্যু পাতু খরধু সী নাভি• काषु वमाणुयः । धशः किछिन्त्यः পাতু পৃষ্ঠ পাত্ রঘ্রন: ॥ সূণী, বেশ: কটি পাতু শক্থিনী হনুমৎ-পুভু: ৷ উক রঘ্তন: পাতু রক্ষ:-ञ्चितिगणक्र ॥ जातूनी (मञ्क्र

भाजृ काङ्व मणम्याष्टकः । भारते | বিভীষণশ্জীদ: পাতুরামো ংথিলং ্বপঃ ৷৷ এতা॰ রামবলোপেতা॰ র-का गः पूक् नी भारे । म विद्रायुः मुची भूजी दिक्यी दिनयी ভবেৎ ॥ প্রভাল নূতলব্যোমচারিণ শুদা<u>র</u>া: রিণ:। নুদুষ্ট্ মপি শক্তা তেরিকি ত বামনামভি: ॥ রামেতি রাম-ভদুতি রামচন্দেতি বা মারন্। न রোন লিপ্যতে পাপৈ ভূক্তি মুক্তি-ঞ্চ বিন্দতি ৷৷ জগজৈত্তিকমন্ত্রেণ রামনামাভি রক্ষিত । য: করে ধার-(यञ्जभ) कत्रष्टाः भर्तभिष्वयः॥ जू क्क्ली (ब्रिमाः विम्राः गञ्ज हन्सन **চ**र्हिञा । क् द्वा देव शावरयन्य छ स्मा **♥ ভীপ্ত क व भाश्री पाट ।। রণে রাজ** 🔪 হলে দূ্তে নিভ্যু• ভস্য জ্বো ভ-(वट् । काकवक्ता ह या नाती म्डा পত্যাচ যা ভবেৎ ৷৷ বস্থপত্যা জী-वृद्धम् रा ভবেদাৰ সংশयः। वज् পঞ্জর নিমেদ যো রামকবচ প-ঠেখ।। অব্যাহতা জ্ঞ: সর্বত্র লভতে ্জ্য মঙ্গলং। আদিষ্টবান্যথা স্থাপু রানে রক্ষা নিমা॰ হরি:।। তথা লি-িথিভবান পুনভঃপুবজোবুধকৌশিকঃ । ধর্নো বন্ধ নিস্ত্রিংশৌ কাকপক্ষ-ध्रतो मूट्डो ॥ वीत्रो माः शिथ त्रकः-

তা॰ ভাবুভৌ রাম লক্ষণৌ। তৰুণৌ क्रमणामी मुख्यादी महावाली ॥ भुअत्रीकविभानात्को हीत्रक्का-बिनाषदो। क्लम्लाणियो मास्त्री ভাপসৌ বুক্ষচারিণৌ॥ পুঞৌ দশ-त्रथरिम्य छ। छ। इति त्राम नम्मर्गी। শরণ্যে সর্বসত্বানা শ্রেষ্ঠো সর্বধন্-प्रजाः ॥ द्रकः ज्लानिङ्खादो जा-বেতা॰ নো রঘ্তমৌ। আভসজ্য **थनुया विष्णुणा वक्त याणुग निषक्र म**-क्टिनो ॥ तक्कभाय मन ज्ञान लक्ष-ণাব্যুত: পথি সদৈব গছতাং। সন্ন **দ্ধ: কবচী খ**ন্নী চাপবাণবরো যুবা 🛚। যছন্মনোরথঞ্যোন্যন: পাতৃ সল-হ্মণ:।। অগুভস্ত নৃসিংহা মে পৃষ্ঠ-(ङ) शक्फ दृकः। शाश्वरयास धनुषा-ন্তৌ স শরৌ রাম লক্ষণৌ ॥ রামে। मामद्रशिः भृत्या लक्ष्यान्हत्या वली। कान्द्र श्राम्यः भूनि को भारत्या রঘূত্রম: ৷৷ বেদান্ত বেদ্যো যজ্ঞেশ: পুরাণ: পুৰুষোত্তম:। জানকীবল্ল-ভ: শ্রীমানপুমেয়পরাক্রম: ।৷ আ-পদামপহন্তার দাতার সর্বসলা দা । গুণাভিরান প্রীরান ভ্যো ভূযো नमामाइ॰ ॥ मकिए नच्या খন্বী বামতো জানকীশুভা পুরতো মাৰুতি ৰ্যম্য ত॰ নমানি রঘ্জ্ম॰॥

এতানি মম নামানি মন্তক্তো यः
সদা মরে । অখনেধাযুত পুণ্ড
সপ্রাণে বজুপঞ্জরনামাখ্য শ্রীরা
মকবচ । ইতি তজ্ঞসার: ।।
রামকপ্রক: পুণ স্বনামখ্যাতত্ণ ।
যথা । সৌগদ্ধিকঞ্চ সৌগদ্ধ রামকপ্রকে ত্ণে । ইতি শদ্রল্লা
বলী ।।

রামকরী জ্রী রামকলীরাগিণী। ইতি হলাযুধ:।। অস্যা বিবরণ রাগশব্দে দুষ্টব্যং।।

রামগিরি: পু পর্তবিশেষ: ।

চিত্রক্টপর্ত: । ইতি কন্চিৎ ॥

যথ: । কন্চিৎ কান্তাবিরহ গুরুণা

যাধিকারপুমরা: শাপেনান্তণ নিত নহিনা বর্ষভোগ্যেন ভর্তু: ।

যক্ষ শুকে জনকতন্যা স্থান পু গ্যেদকেষু স্থিকছাযাতক্ষু বস তিং রামগির্যাশুমেষু ॥ ইতি মে-ঘদ্ত: ॥

द्रापठनुरः श्रु॰ श्रीद्रापः। ই**डि णयः** द्रज्ञावली ॥

दानहर्मनकः श्रु भएनवृक्तः। ইতি
ভাবপুকाশः॥ वृहिৎ পুস্তকে द्वाभाहर्मनकः। ইতিচ পাঠः॥
दानहननी जी दलएदमाजा। यथा

ा द्राहिनी तामजननी द्राहिनिक वल्नुम्: । इंडि मक्तद्वादनी ॥ कोमना।।। द्रिन्का ह ॥ व्राम्ये: व्री हिक्रू। इंडिंग्रद्राः।। व्राम्ये: प्र् व्यक्ष्येर्यकः। इंडिंग्रुवाना।।

রামণঃ পু• গিরিনিয়:॥ তিন্দুক: । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

রামণীযক জি রমণীয় ইত্য-মরটীকা।৷

রানতকণী জ্রী তকণীপুল্ল•।সে: উতীইতি ভাষা।ইতি রাজ-নির্ঘণী:॥

तामम्बः প्॰ रुन्नान्। ইভি শব-রহাবলী।।

द्रामम्ञी खी जूनमीविरमयः १ ७९ भर्यत्रायः । भर्दभूष्टी २ विम्नात्रा ७ नागमस्विका ८ का खनी द्रम्भिन्ति । ७ जद्रभी स्रोति । उत्तर्विका स्रोति । इति मद्राहम्बन्ता ॥

রামনবমী জী চৈত্রশুক্লনবমী। সাচ শ্রীরামচন্দুস্য জন্মতিথি:। বঞ্চা অগস্ত্যসংহিতাযাণ। চৈত্রে নামি নবন্যান্ত জাতো রান: ষয়ণ হরি:। পুনর্ষমৃক্ষ সংযুক্তা সা তিথি: সর্ষ্র-

काममा ॥ भूनवयुक्तमः रवानः चल्ला श्रा यंति वाजारा रिष्वमृङ्गनव-ম্যান্ত সা তিথি: সর্বকামদা।। 🗐 রামনবনী পোকা কোটিস্ব্যুগ্রহা ধিকা। ভাষান্ দিনে মহাপুণ্যেরাম रूफिणा ভिक्तितः ॥ यटकिश्विट किया कर्य उद्धवक्षयकात्रकः। উপোষণ জাগরণ পিতৃনুদিশ্য তৰ্পণ ।। তদ্মন্ দিনে তু কৰ্ত্তব্য বুন্ধপুষ্ঠি মভীপু ভিঃ। চৈত্রপদং **ठान्त्रश्वः। (भवः भ्यांग मःशा**रिष्ठ वार्य ह कक हे। ख्राय । जाविज्ञामी 🧠 সকল্যা কৌশল্যায়া পরঃ পুমান্ ৷৷ অত্র মেষস্থ সূর্যের চান্দুটৈত্রসৈর সংভবাৎ ভিথিকৃ গ্রন্তা । তথা তিষান্দিনে মহাপুণের রামমুদিদেশ্য ү ভক্তিত: । জপেদেকান্ত আসীনো याव<मामसभी दिन ॥ (उरेनव স্যাৎ পুরক্ষর্যা দশম্যা ভোজ্যে দ্বিদ্বানু 🕽 ভক্ষ্য ভোক্তের র্বহুবিধৈ - जेक्सिएसिंगाइ पिक्तना ॥ क्उक (छा ভবেত্তেন সদ্যো রাম: পুসी-দতি। তথা চৈত্ৰ শুদ্ধা তু নবনী পু-न्तर्बमृयुजा यति । रेमव मध्याङ्ग (या-। গেন মহাপূণ্যতমা ভবেৎ।। নবগী চাষ্টনী বিদ্ধা ত্যাজ্যা বিজ্পরায়ণেঃ । উপোষণ नवन्याङ मणन्या (गव

भारतः ॥ এउ६०न धरः कालमाधः वीयिन । किन्छ महानुग्रा इंड्राब মহাফলেতি পাঠ:। শুদ্ধেতি শুব-ণাৎ সর্বত্র শুদ্ধাযামৃক্ষাদরে। ন বি-দ্ধাযা মিতি। অতত্রবাষ্ট্রমীবিদ্ধা নবমী সনক্ষত্রাপি নোপোষ্যা। ইতি মাধবাচার্য্য:। সৈব ভাদৃশ্যে-व नजू विश्वा। यहा जू भद्रहितन একাদশ্যা দশ্মী পারণযোগ্যা তদা দশনীযুক্তা নবম্যুপোষ্যা । বৈষ্ণবৈ বিষ্ণু পরায়ণৈ রিভি শুবণাৎ । व्यवकारम् व्यक्षेत्री विरेक्षव गुष्ट्रा । यमा ज् भ्वमित्न अक्षेत्रीविका न-वभी भन्न प्रभागयुका नवभी अका-দশীদিনে চন পারণ যোগ্যাদশনী **७मा नक्ष** बरगागार्याण २ १ ४ औ বিলৈব গুাহা। পরদিনে দশন্য নেব পারণ মিতি নিয়মাৎ। তথাচ द्रामाईनिव्जनुकायाः । मन्मग्रानियू वृष्टि: कट जाजा विष्टित विकरितः ॥ তদন্যেষান্ত সর্বেষা• বুত• তত্তিব নিশ্চিত। দশন্য মেব শদেন দ-भागी रेनव नष्ट्राय ॥ निक्ति छ। व विठाद्मण नवमीयु अभागति ইতি কারিকাভ্যা নগস্ত্যসংহিতা ব্যাখ্যান । বস্তুতস্তু দশনী পারণ-मञ्जू मर्रेबंद्रवाष्ट्रभीविष्कात्नारभाष्ठा

। বিষ্ণুপরায়ণৈ রিতি তু বিষ্ণুপ-রাষণত্বেন ভবিতব্য মিত্যুগদেশ-পর॰ নত্ কভূ বিশেষণ । অগ *त्खाना*दिक्षवमा विष्काभवामान्भ **(मणा८ । कर्न्ड् (छर्म विधिष्ठग क**ल्ल নাপত্তেশ্চ। অভএব মাধ্বাচার্য্যেণ नामान्य ७ व विका निविका। य গন্ত্যস•হিতায়া মস্য নিত্যত্ব মাহ । প্রাপ্তে গ্রীরামনবমী দিনে মর্ত্যে। বিমৃচধী:। উপোষণ ন জৰুতে জ ন্ত্রীপাকেষু পচ্যতে ॥ যন্ত্র রামনব বন্যান্ত ভুজ্জে মোহাদ্বিমূচ্ধী:। ষম্ভীপাকেষু ঘোরেষু পচ্যতে নাত্র সংশয়: !৷ অত্ৰ মৰ্ত্য ইত্যুপাদানাৎ नद्रभाजम्याधिकादः । अत्रकः सर्यप्राः দ্রামনবম্যা• য উপোষণ মতন্দ্রিত: । মাতু গর্ভ মবাপ্নোতি নৈব রানে। ভবেৎ স্বয়ণ ৷৷ তমাৎ সর্বাত্মনা अर्धि क्रेंष्वर नवशीतुं छ । मूह्यस्त्र পাতকৈ: সর্বৈর্যান্তি বুল্লসনাতন ।। ३७ि कन नीर्जन शुरुक मरवान भृथकज्ञनायार भिष्यः ॥ व्यगसा ञ । इंडाया । जानगुम जिनायाक जूनमीरनकन्नि ।। भूका बीदामह न्मुम् (कार्षि (कार्षि खनाधिका ॥ 🛊॥ **ত**্ৰানুধান মগস্ত্যস·হিতাতঃ স•্ ক্ষিপ্য লিখ্যতে। কৃতপুাতঃস্থানা-

मि:। উপোষ্য **ন**ব भो खुम्य शासाय है-সুরাঘব। তেন প্রীতো ভব ত্বং ভো স সারাগ্রাহি মা হরে ॥ ইতি निविद्या कानवाङ् विभाजाक मिन्द्रनीलममभुङ । प्रदेशपाः ए ए-**णेत्रथः भूधारवश्चेन छराभद्रः ॥ भू**-প্ৰতো ৰাহ্মণ দেব সম্ভ্ৰা কৰ্ম পুত•। পার্শ্বে ভরত শরুদ্বৌ তাল-বৃত্তকরাকুভৌ।। অগ্রে ব্যুণ্ হন্মস্ত রামানু গুহকাদ্ধিণ ৷ এবং খ্যাত্বা 🏖 त्रामः भूजायट । मान मञ्जल । हेरन्तु। হগ্নিন্চ যম কৈচব নৈৰ্মতে। বৰুণো **২নিল: । সং**রে ইশো বুকা **২হি** দিক্পালাঃ য়াপযন্ত তে ॥ অহি র-नउः। कोमण्याः शृष्ट्राय्य। मञ्जस्र। রানস্য জননী চাসি রাম্ম্য মিদ্ জগৎ৷ অত ভুা• পুজ্যিব্যামিলোক-মাক ৰ্নমা হস্ত তেয়া তথা ৰমো দ শরথাযেতি পূজ্বেৎ পিতর ভতঃ। ভতো হনুজ্ঞাপ্য দেবেন্ধ্য পরিবা-त्रान् जनहरवट् ॥ शृहविद्विकार्गाःका-(१व इत्यारीनि 5 क्यां । इपया-भीनि यथा द्वा॰ ऋष्याय नमः। **ब्री॰** शिवरम खाहा। कः शिथारेय व**य**्रे । রৈ কবগায় হু । কৌ নেত্রাভ্যা वोगर्। तः अजाग करे।। उथा। इन्-মন্ত্র সমূগ্রি ভরত সবিভীবণ।

लक्षराकृत भवूत्र जाववस्य पना-पियु ।। श्रमः कगन्नः विजयः **जू**दाष्टेः द्राष्ट्रवर्षनः। अकानः ध्रम्भानास्रः न्मक मंस्मध्यः। मनाश्रालाक-भाषाःक उपञ्जात उपगुजः। (वाः कृषाना हेन्द्रामस्या मेन । जमजानि ়াৰ্বজু শক্তি দণ্ড থন্ন পাশাকুশ গদা 🖟 শুল পদাচকাণি। মধ্যাহে জন্ম ভাববেৎ ৷৷ উচ্ছে গৃহপঞ্চক সুর-खात्री (मान्सी नवम्याः जिल्लो नाः কর্কটকে পুনর্বসুদিনে নেষ্ণ গতে भूवि। निर्मेश्वः निथिलाः भलाम **निभाषा मध्या**परगाष्ट्राद्रः त्राविज् **७ मज़्र भूर्वविख्यः यट् किश्विरहकः** भरः ॥ भनाभा द्राक्रमाः । मरेव्यः ् वामरम्बाम्यानर्याः मम्याङ्कगर्भः <छः । कनभूब्रायूत्रः भूगं गृशीदा শ अ ग्डम ॥ जामाक बद्द्रभूरेम यू कक जूनमीर्गनः। मञ्जसः। रणा-नन वृष्यिष्यम् मः ज्ञाभनाय ह। ना-नवाना॰ विनामाय टेम्ड्याना॰ निष् নায চ ॥ পরিত্রাণায় সাধুনা• রামো काउ: यग रुद्रि: ॥ गृहानार्घ्यः भगा দ্ধ ভাতৃতি: সহিতো মন ॥ পু-ब्रीक्किलि॰ পून र्मद्वा यात्म यात्म व्य न्मि **७:। প্**জযে बिषिव खळा किया ब्राजः नद्यष्यः ॥ 🗱 ॥ छन्यः जः- क्लिशः । मृकायाः नक्कवयुक्तायाः विवामाञ्चावः । विकायाञ्च এका-मणीपित्न मण्यो भावत (याग्रा न हिट छमा नक्कवरयागार्यारगभि यहेमीविकायाः । भावतरयाग्रा हिट छमा यहेमीविकाः छुक्। भाव रहनि छेभवामः । ইতি তি-ध्रामिछकुः ॥

রামপ্ণ: পু গুবাকবিশেষ: । তৎপর্য্যায: । কামীন: ২ মুনিপ্ণ: ০ সুরেবট: ৪ । ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ: ।।

রামভদু: পু॰ ত্রীরাম:। ইতি শব-রত্নাবলী।।

द्रामनवन की भास्तिनवन। उट् भर्यायः। द्रामकः २ भाषान्ताकः द्रमस्वरः २। ইতি तङ्गाना ॥ द्रामवझ छ की द्राप्तः । ইতি द्राकः निर्यन्तेः ॥ द्रामिनुष्य वि॥ वास्त्रायः भः अवस्ति। स्था

রামবাণ: পৃ• ঔবধবিশেষ:। যথা
। রসেন্দুচিন্তামণৌ। পারদামৃত
লবক গদ্ধক• ভাগযুণ্ম মরিচেন
মিশ্রিত•। তত্র জাতিফল মর্দ্ধতা
গিক• তিত্তিলীফল রসেন মদিতি•
।। বহি নান্দ্যদেশবজুনাশনোরামরাণ ইতি বিশুতো রস:। সংগ্রহগুহণীসম্ভকর্ণক মামবাতথর-

त्रामणतः भू णत्रक्षां छ । उर भर्यायः। त्रामका छः २ त्रामवागः ० त्राम् ३ व्यभ्वत् छः ६ नीर्यः ७ म्भिनुषः १। उम्र म्ल छगाः । स्वम्कञ्चः । किन्नुमञ्चः । त्राम व्यादः क्षायञ्चः। भिक्रकातिञ्चः। क्क वाज नाणिष्कः। ইতি त्राक्ष-

वनी ॥

রামশীতলা স্ত্রী আরামশীতলা। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

রানসথঃ পৃ• সুগীবঃ।ইতি শব-রত্নাবলী॥

রামসেনক: পু॰ ভ্নিম:।। কট্ফল:

कामा जी उंट क्षेत्री दिल्प । इंड प्रदः ॥ गीडक लां जी द्रमण्ड । शीडक लां जी द्रमण्ड । याचा ॥ विकृ ॥ निर्मा । विकृ ॥ निर्मा । विकृ ॥ निर्मा । विकृ ॥ निर्मा ॥ विकृ लां । इंड मिद्र वावली ॥ व्यान । विकृ लां निर्मा ॥ व्यान । विकृ वाक निर्मा ॥ विकृ वाक निर्मा ॥

त्राभाषण क्री द्वारमणदावनवष्टकावरः। ইতি ত্রিকাওশেব: ॥ তह শত-(कांटिम थ)क । यथा । कान्म পাতালথণ্ডে অযোধ্যা মাহাত্মে তত্রত্য ভীথাশুন বর্ণন পুস্তাবে। শাপোক্ত্যা ক্দি সম্বপ্ত প্রাচেতস মকল্মৰ । প্ৰোবাচ বচন বুকা ভত্রাগত্য সুসৎকৃত:।। ন নিবাদ: न रेव द्वारमा मृगराक्ष ज मागजः। उम्र मःवर्गन्तेनव् क्रिम्माक् स् ভবিষ্যাস ॥ ইত্যক্তা ঠ জগামাশু বুন্ধলোক সনাতন:। ততঃ স ব-র্ণযামাস রাঘব॰ পুড়কে:টিভি: ॥ কোটিভি: শতকোটিভি:। টরিত ব্যুবাথস্য শতকোটি পুবিস্তর নি ভানাত্রাক্তে:।। ভাই সংপূর্ণ বৃদ্ধ-লোকে ইত্যৈতিহা। ই**ছ**ুত্ **দশ** 

লবোপদিটা চতুর্বি-শতিসাহসু **छानः। ই**ভি द्रामायग्रीकायाः ना-(गाञ्जी ७ ए: ॥ 🗱 ॥ उथाहि । शार्थ ব্বাজ্যসংবামস্য বাল্মীকি র্ভগবান্ ঋষি:। চকার চরিত কৃৎসু বিচিত্র , भम मर्थवर ।। हजुर्विः भर महमानि েশোকানা মুক্তবান্ ঋষি:। তথা সূৰ্য **শতান্পঞ্** ষট্কাণ্ডানি তথোত্তর• ॥ ইতি রামাযণে বাল্মীকীযে বাল-काएउ ७ नर्गः॥ #॥ न कि ध द्राम-চরিত্র यथा। রামাযণ মথো বক্ষে শুক্তং পাপ বিনাশনং। বিফু নাভ্য<u>ং</u> ব্রুকো বুন্ধা মরীচি ন্তৎ সূত: মৃত: ॥ মরীচে: কশ্যপ স্তন্মাৎ পর স্তমাৎ मनुः भुजः। मना विकास वः भाग **२**ভূদ•শে রাজা রঘু: মৃত:।।রঘোরজ ে স্ততো জাতো রাজা দশর্থো বলী। তস্য পুঞাস্ত চত্বারো মহাবল প वाकमाः।। को नन्।या मञ्जूराया ভরত: কেক্যীসূত:। সূতৌ লক্ষণ শ্রুঘ্রে সুমিতাযা॰ বভ্বতু:।। রা-নে৷ ভক্তঃ পিতু মাতু বিখানিত্রাদ বাপ্তবান্। অন্ত্ৰুমণ যতে৷ যক্ষীণ ্ভাডকা॰ পুজঘান হ।। বিশ্বানিত্রস্য याक वृ भुवाङ नावशिष्ट ना । जन कना कर् गदा उभायत १थ हा-नकी ।। উर्जिना नम्मर्गा वीरता

ভরতো মাগুরী• সুতা•। শত্রুগ্নে বৈ कीर्जिम छी॰ मणशुक्रमुख ह (छ।। **शिकारिछि द्रायाध्याया॰ शक्। द्रा-**भारयः इंजाः। यूशाकिजः भाजूनकः শতুম্ব ভরতৌ গতৌ।। গত্যো ন্'প-বর্য্যেণ রাজ্য দাতৃ সমুদ্যত । द्राभाग (कार्ष्ठभूनाय देकरक्या) भा-থিত তদা ॥ চতুদশসমা বাসো বনে রামস্য বাঞ্চিতঃ। রামঃ পিতৃ হিতার্থম্ভ লক্ষণেন চ সীত্রা।। রাজ্যঞ্চ ভূণবত্ত্যক্ত্বা শৃঙ্গবেরপুর• গতঃ॥রথ ত্যক্ত্বা পুযাগঞ্চ চিত্র-কুট পারি গভ:।। রামস্য তু বি-যোগেন রাজা স্বর্গণ সমাশ্রিতঃ। সণ-ফু**ভ্য ভরত "চাগাৎ রাম• মা**তৃব-वादिकः ॥ व्याधास नमागठा রাজ্য লক মহামতে। স নৈছৎপা-দুকে দত্বা রাজ্যায ভরতায তু ॥ বি-সজ্জিতো হথ ভরতো রামরাজ্য मशानगर । निस्तृताम श्रिजा छः ক্তো হ্যোধ্যা॰ নাবি**শ**দুভী ॥ রা-মোপি চিত্রকুটাছ অত্রে রাশুন না-ययो। नद्गा अजीक्ष॰ ठागस्त्राः मञ्जः কারণ্য মাগত:।। ভত্র সূপন্থ। নান ब्राक्कनीनार्ख भागजा। निक्छ। क-ণৌ নাসে চ রামেণাথ পরাহিতা।। তৎ পেরিত: থর কাগাদ্যণ জি-

শিরা তথা। চতুর্দশসহস্থে রক্ষ-সান্ত বলেন চ।। ব্লামোপি প্রেব্যা-भाम वारेग र्यमभुत्रक जान्। ब्राक्मम्। পেরিতো হভ্যাগাৎ রাবণো হরণা-য হি।। মৃগৰূপং স মারীচ কৃত্বাগ্রে **২থ ত্রিদেওবৃক্। সীত্রা প্রেরিতো** ब्रामा भावीष्टः भुक्षयान र ॥ भिष-মাণ: সচ পাহ হা সীতে লন্ধণে তি চ**া সীভোক্তো লন্মণো হথা**গা-দ্ৰাম শ্চাশু দদৰ্শ ত**ং।। উবাচ রাক্ষ** সীমাষা নূন সীতা হতেতি সা। जावला रुख मामान्य व्यक्तनामाय बानकी ।। कठायूव विनिष्क्तिं ३ वृक्क हायाया विक्रिजा जा सथा दय ৷৷ আগভ্য রাম: শূন্যঞ্চ পর্ণালাণ परमाँ इ। (भाकः कृषाथ जानका)। भार्गनः क्ष्वान् भुज्ः॥ कर्षायूषक ज॰कृত। उद्गुरका दिक्का । গত্বা সথ্য তত শ্চকে সুগ্রীবেণ চরা-ঘবঃ॥ সপ্ততালান্ বিনির্ভিদ্য শরে-शानजभार्वे । वालिनः विनिर्ভित्र किकिकाया॰ रुद्रीयद्र॰ ॥ সूर्गीव॰ क् ज्वान् दार्भा अयुर्ग् क चर हिंछ:। সূর্ণীব: পুেব্যানাস বানরান্ পর্ব-তোপমান্।। সীতাবা মার্গণ করু भ्दीरिष्ठः भूगश्वनान् । भुजीनी

मूखद्राः भागिः मिनः गर्दा नमानः जाः॥ मिक्कगाञ्ज मिन एव मार्गय-छ। २थ कानकी । यनानि भई जान् षीभान् नहीनाः भूलिन्ग्रान हं।। জানকী তে হাপশ্যন্তো মরণে কৃত-নিশ্চযা:।। সম্পাতি বচনাৎ জ্ঞা**ত্বা** হন্মান্ কপিজ্ঞর: ॥ শতংঘা**লন**্ বিস্তীর্ণ পুপ্ল বে মকরালয়ণা অপশ্য-জ্জানকী• তত্ৰ অশোকবনিকা ছি-তা॰।। ভৎর্সিতা॰ রাক্ষসীভিষ্ঠ রা-বণেন চ ব্লহ্মসা। ভবভার্য্যেতি বৃদ-তা চিন্তবন্তীক্ষ রাঘব ।। অঙ্গুলীব • কলি দ্বা সীতা কৌশল্য মবুবীৎ । রামস্য তস্য দৃতোহং শোকং না व्यक्रेमिथिनि॥ अञ्ज्ञानकः मि (म-হি যেন রাম: মরিষ্যতি। তৃৎ শুত্রা **शुरारो जीजा (व**शीतकः इन्माज ॥ . যথা রামো নযেৎ শীঘু• তথা বাচ্য• प्या गाउ । उत्थञ्डा जू रुन्मान् वनः स्वितः वज्ञ उर्।। हवाकः ब्राक्षमाः कान्यान् वर्क्षनः वर्षे **७: । मर्रेब विन्दुकि**छा वारेग म् द्वी রাবণ মবুবীৎ ॥ রামদ্ভোম্মি হনু-भाग् (महि द्रामाय मिथिनी । এउद শুত্রা পুন্দলিতো দীপযানাস পূর্ছ-कः॥ किन ब्ह्रिनि उनाञ्चा नहा গেছে মহাবল:। দগ্যা লকাং সমা-

याः वामनार्यः न वानवः॥ जन्तः कल मधुवान मृष्टी नीएउड्यादमयर । भिंग ब्रङ्ग ब्रामाय ब्रामा वर्षाः शयो भूती ।। अभूगीयः अहन्मानः माम्।: नवज्ञाः। विভीयागि अः शाक्षः भवनः वाषयः भुि ॥ व रिक्र थर्राञ्च छ। जिक्ष्माभ छ॰ द्रावणी-नुकः। রামো নলেন সেতৃঞ্চ কৃত্যান্ধী চোট্ডিতাযত া৷ সুবেলাবস্থিত শৈব भुद्री<sup>॰</sup> लक्षा॰ एमर्ग **र**। अथ उ वानः द्वा वीदा नीलाक्र नलाम्यः॥ श्रु ध्याक थ्यम्म काषवर भुम्था छः मा। रेमन्स विविष मूर्या एउ भूबी॰ লক্ষাণ বভঞ্জিরে ॥ রাক্ষসাংশ্চ মা शकायान् कालाञ्जनहरयाशमान् । রান: সলন্ধণো হত্বা সকলি: সর্ব ब्राक्रमान्॥ विमुर्डिक्सिक्ष ध्राक्र॰ (एवाञ्चक नदाञ्चको। मह्मापद्र महा পাশ্বাবতিকাৰ মহাবল ॥ সম্ভ নিসন্ত নতঞ্চ নকরাক্ষণ হাকলান । পुरुष वीत्र मृचल अञ्चकन महा वनः।। द्वारायनः नम्भन निष्द्रा शकारेनः ব্লাঘবে। বলী। নিকৃত্য বাহু বক্সাণি রাবণন্ত ব্যুষ্ঠাত্তয়ৎ ॥ সীতা• শুদ্ধা• গৃহীত্বাথ বিমানে পুল্লকে ছিত:। नवानतः मभायाः श्राथा भ्व-র॰ পুর॰॥ তত্র রাজ্য॰ চকারাথ পু-

जर्ट भाजयम् भुजाः । मणायस्यः ধানাস্ত্য গ্যাশির্সি পাতন ॥ निश्वानाः विधिव८ कृष्वा म्या नानाः नि द्राष्ट्रः। भूट्यो समन्द्रो मृक्ष्री-**(छो ठ द्रारक्र) २७**,रव्हगर ॥ এका-দশ সহসাণি রামো রাজ্য মকার-य । मजुष्मा नवन इन्ना निन्यः खत्र इंडः ॥ यगरा प्रीन् मूनीन् <u>चुःच। चुःद्वा८ शक्तिक व्रक्तमाः। वर्गः</u> गर्डा बर्रिः मार्ख् भरवाष्ट्राः रिकृ-ভান্তক: ॥ ইতি গাৰুডে ১৪৮ অ-খ্যায়: ॥ 🗱 ॥ এতদভিব্রিক্ত° বা-न्मीकिन्नीड॰ मधिक्शिकिमर्गयुक्तः नर्मुत्माकाञ्चरु मीठाकवृ क न-হসুকন্ধরাৰণ বধ কাব্যক্রপান্ডুতো-ভরকাও মন্তি। তস্য পুথমসগী-যশোকা যথা। ভমসাভীরনিলয়॰ मार्ववा जनमा छकः। वहमा भू-थमः द्यानः वाल्मीकः मूनिशृक्षयः॥ বিৰ্যাবনতো ভূত্বা ভারদ্বাজো মৃ-श्रामृनिः। পপুष्ट मया अः भिष्ठाः क्-**ভাঞ্জ नि**शुर्ति। वनी ॥ त्रामायन मिडि খ্যাত শতকোটিপুবিন্তর। পুণী-ত ভবতায় বুন্ধলোকে পুতিপ্তিত ।। শুষতে বুশ্বণা নিত্য মৃষিভিঃ পি-ত্ভি: সুরৈ:। পঞ্বি শতিসাহসু॰ त्रामायग मिन· जूवि ॥ **उ**नाकर्शिङ

মুমাজি: সাবশেষ মহামুনে। শ ভকোটি পুবিস্তারে রামাষণ মহা ৰ্ণবে।। কি॰ গীত মিছ यमान्डि তন্মে कथर मृत्उ । व्याकर्गामविगः शृष्टेः ভারদ্বাজস্য বৈ মূনি: 11 হস্তামলক বৎ সর্ব সমার শতকোটিক। ও-মিত্যুক্ত্ব। মুনি: শিষ্য প্রোবাচ ব দতা বর:॥ ভারদ্বাল চির জীব সাধু মারিত মদ্য ন:। শতকোটি পুবিভারে রামায়ণ মহার্ণবে ॥ রা-মস্য চরিত পর্ব মাশ্চর্য্য সম্যুগী-রিত । পঞ্বি **শ**তিসাহসু ন্লো क यट পুতिश्चिष्ठ । नृगा हि मम्म রামচরিত বর্ণিত মধা। সীতামা-হাত্ম্যসারণ য়ৎ বিশেবাদত্র নোক্ত-वान्।। भृगृञ्चावहिरठा वुन्नन् कान्नरः স্চরিত মহ**ে। সীতা**যা ম্লভূ जायाः भुक्छ **कतिज्य य** ॥ है **ত्যान्यार्यं द्राभागत् वान्मीकीरयं ज-**ভূতোত্তরকাণ্ডে আদিকাব্যে **পূথ**া नमर्गः ॥ 🗱 ॥ जन्रट तुकाखन् রাণীযোত্তরখণ্ডান্তর্গ তৈকষপ্টেতমা ধ্যায়াদিক হরপার্বতীসংবাদক্পা-**ध्राञ्जनामायं मिखा ७**क यद्गाः जावानकार**७ मर्गाः मरि**धव **म**ञ्जू নোদিষ্টাঃ ষষ্ট্যুত্তরত্তিশত শ্লোকাই भाक्ष्युरा नृगा•)। अध्याञ द्रामः 🕆 **চরিতে অযোধ্যাকাণ্ডে नंবানা স**-র্গাণা॰ সপ্তশতানি শ্লোকা: পুণ্য-(भाक्तभूमाः २। कार्त्थ १ अर्गः १ ४। আখ্যে সর্গা দ্বিপঞ্চ পরিক্ষিপ্তাঃ পঞ্চতানি লোকা: পাপহরা: भार्वजीत्माकाः ०। श्रीमन्ध्रात्रा রামায়ণে উমামছেশ্বর সংবাদে কি-ষিদ্ধাকাণ্ডে নব্দ: সর্গ: পঞ্চশতানি শ্লোকা: দুরিতহর। পঞ্চ পঞ্চাশ ভ্ 81 जुन्दबकात्य नर्गाः भरेकवाद्याः আ্রিকশদিতে প্রোক্তা জ্রীণিশতানি শ্লোকা জিভুবনপাপহরা: ৫। কা-(७ यूकाञारक मर्गा नवमछ नीलक-**ঠোকা: সার্দ্ধিকাদশশতল্লোকা** ম-न्मःथायूजाः भूगाः ७ । व्यशाः ত্মোত্তরকাণ্ডে সর্গা: গুছসংখ্যবা পুঞ্চিপ্ত। শতুশতসংখ্যশ্লোকাঃ १। পুরাণসংখ্যাক্ষ পুরা হরেণোক্তাঃ ৷ পার্র ভৈঃ পরমেশ্বরেণ গদিতে श्राज्यद्रामायत कार्षः मध्र রবিতে হতিশুভদে সর্গা শ্চতু:বঞ্চি-কাঃ। প্লোকানান্ত শতদ্ববেন সহিতা যুক্তানি চত্তারিসাহস্যাণ্ডের সমা-স্তঃ শু,ভিশতে সূকানি ভদ্বার্থতঃ ॥ इंड्रिशाजाद्रामायंगः ॥ 🗱 ॥ व्य-পর রাম বশিষ্ঠস বাদক্রপ নো-ফোপায়ক দেবহুতোক্ত বাশিষ্ঠ

त्राम

मामक मर्गाद्रीभाषण मस्ति। उत्र পুথনার্চ্চে অষ্টাবিংশভু্যন্তর্শত স র্ণা:। তস্য আদ্যন্ত স্লোকৌ যথা। शिवामीकि कवार । উপশম পুকः প্রণাদনম্বর মিদ শৃণু । ভগ্নির্বাণ পু-कद्रन खाङ निर्वानमायि य ॥ ১॥ य इंग॰ मृत्यामिछा॰ विधि॰ द्रामः विनिश्रयाः। मदीवाद्यानि मुवनाम् চ্যতে বুদ্ধ ঋছতি।। ২।। উত্তরার্জে ষোডশোভর দ্বিশত সর্গা:। ত-স্যাদ্যন্ত শ্লোকৌ যথা। প্রীরাম উ वाह । निष्कर्याट कन्ननाज्यागाट ভনু: পভত্তি রোহিত:। কথ্মেভদ-তো বুদ্ধন্ সম্ভবত্যাশু জীবত: ॥ ১॥ যৎ সর্ব্য খলিদ বৃদ্ধ ভজ্জা। निकि व सूर्वे । मुन्त्रान्त्र्वीर्यारक नानि ज्या वृक्षाज्ञात ननः ॥ २॥ व्यवासी देवतागानुकत्रगगुष्टः । वि छीरा मूम्कूग्रः। ज्जीय उँ८ भ-खिगुइ:। চতুর্থ: **ছি তি**गुष्ठ:। **পঞ্চন:** লকলোপশমোগুছ: ৷ ষ্ঠপুকরণে निर्वागगुष्टः। भूबार्ष्यं महीक्गुष्टमः-था। ১১५००। উত্তরাজে महोकगुञ्च-স থ্যা ২০৯৫০। ইতি ত্রীমহারামা-যণে নিৰ্বাণপুকৰ্মণে বালকাণ্ডে মো-ক্ষোপায়ে দেবইকোক্তে ছাত্রি-শৎ-অহেসুগ্ৰ সংহিতায়া বাশিঙে বুদ্ধ

দর্শণে উত্তরাক্তে বোডশোতর দি-শতভম: সর্গ: ॥ त्रामालिक्नकामः भू রকামান:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ রামাবক্ষজোপম: পু চক্ৰবাক:। ় ইতি রাজনিঘণ্টঃ।। রামিল: পু: রমণ:॥ কাম:। ইতি विषिनी।। রাম্ভ: পু• ব্রেবেণুকৃতোদণ্ড:। রস্ত্রো বেণু: তস্য বিকার:। ইত্য-মর ভরতৌ ॥ রায়ণ ল্লী পীড়া। ইতি কাচিৎ-नपत्रज्ञावनी ॥ রাযভাটী জী নদীসোতোবিশেষ: । আপড় ইতি ভাষা। যথা। প্রোটি: পাত্রসঙ্কারে। রায্ভাটী সমাস্থ্যে। ইতি শব্রত্নাবলী।। त्रालः भू भाववृक्षिविरामः। धूना ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। সর্জ্জ-व्रमः २ मानः ७ कनकलान्धवः ८ वननः ৫ गानिन्यां मः ७ (मरवर्षः १ শীতল: ৮ বহুরুপ: ১ সালরস: >० मर्ब्बनिर्यामकः >> मूत्रिकः >२ সূরধূপ: ১৩ যক্ষধূপ: ১৪ অগ্নিবল্ল-ভ: ১৫ কল: ১৬ কললজ: ১৭। व्यम् ख्याः। मिन्तित्रवृः। त्रिक्षद्रः । कषायदः । তিজবः ! मःशुरुदः ।

वाङ निष (मुारे कक्ष्युग नानिष्क क्षा अम्य भान (लग क्ष्मो। नि-नित्र ष्वः। भूष्त्रामय मास्तिकातिष्कः क्षा इिंड त्राक्षनिर्यः। प्रभिष्ठ। द्रालक्ष मालनिर्याम स्था मर्कत्रमः मृङः। (प्रवेश्ला स्कृष्ण स्था मर्वत्रमक्ष मः॥ वाला हिस्सा क्ष्म खिङः क्षाया गुग्हरका हत्त्रः। (प्राचाम (यप वीमर्भ जृत्र तुन वि-भाषिकाः॥ गुरुखमाग्निष्काःक म्लाङीमात्र नामनः। इिंड जावनु-कामः॥

द्रानकार्य्यः भू नानवृकः। हेि द्राक्रनिर्वणः॥

রাব: পু॰ শব:। ইতি শবরত্না বলী।।

त्रावनः भू नकाविशिक्तः। छट् शर्यावः। (शोन्नस्त्रः २ त्रकः २ न रूणः ४ मण्डस्त्रः ६। ইकि एस्म रुन्तः ॥ मण्डशेः ७ निकवाञ्रासः १ त्राक्ररमन्तुः ৮ नक्षणः २ शिहु भूनि वः २० मणाननः २२ । ইकि णक् त्रज्ञावनी ॥ नक्षाशिकः २२ मणा-अाः २०। ইकि क्रोधितः॥ छरम्। १० शक्ति नाष्णो यथा। मूठ उँवार । भानवम् नद्रिवास स्वामी भूरणा मनः किनः । नवम सम् माग्वन

ন্ত্ণবিন্দ রিতি মৃতঃ ॥ তস্য কন্যা ইডবিতা কপেণাপুতিমা ভূবি। भूलन्डाय म द्राजिं न कन्।। भुवाभाष्य ॥ अवि देव उति । যস্যা॰ বিশুবাঃ সম্পদ্যত। তস্য পর্য শতসুশ্চ পূর্বা বৈ দেববর্ণিনী ।। জ্যেষ্ঠ বৈশ্বণ জভ্তে প্ৰপণ ( दिवर्गानी । विशाम जूमकाकाय ज्ञानीयं गहाइन् ॥ अष्ठरःष्ट्रे হরি শাশু: শক্কর্ণ বিলোহিত।। পিস্বা নাম সংদ্ধা পিতা তস্যা-বুবীত্ততঃ।। সৎসাযান্ত সশক্ষোয়॰ শরীরঞ্চেদ মূচ্যতে। স্পরীরত্বা- ह नाम। তেন বৈ স অবেরক: ।। थाध्याः करवरता कनयिष्ट्राप्तः नलः क्वद्रः। द्रावनः अञ्चकनंश्रः कन्याः म्পनशी जभा ॥ विजीयग ठजूर्थम् रेनकम् बनयर मूडः । मह्नूकार्गा मणगीयः भिक्ता तकमूर्वतः ॥ চতুয়াদি শতিভ্জো মহাকাথো ম-श्वावनः । बाजाञ्जन निर्वा सर्म লোহিত গুীব এব চ॥ নিসর্গাদা-ৰুণ: কুর: স রাবণ ইতি মৃত: । हित्रगुक्रिश खुर्गी न ताना भृइंबच्चित्र ॥ **ठ**ःश्रृंगाना॰ द्राका जु दायामण मा त्राक्तमः । जाः शक्षकारित व्यापाः मःथाजाः

রাশি

है: मः थेऽ।विक्ति क्रमाञ्जानात्मकव-है: मः थेऽ।विक्ति क्रमाञ्जाः। विष्ठे टिव मञ्जाति वर्षाणाः वि म द्रा वराः॥ त्रवजानाः शिज्ञाक व्यादाः क्षा भुक्तागद्रः। व्यञागुरम ठजूः थाः एम द्रावत उत्तमः क्रमारः ॥ द्रामः मामद्रथः भागः क्रम भीगिवान्। ইक्ति विज्ञिन्द्रात् वा द्राञ्जानुर्जावनाभाषात्राः॥

द्वादनगङ्गा जी मिःश्लादमञ्जनिः বিশেষ:। যথা। সূত উবাচ। দিবাকর ভস্য নহামহিয়ো মহা-न्त्राज्य द्वरीबः। अमृग् गृशीः ত্ব। চরিত পুতত্তে নিজিংশনী-লেন নভন্তলেন।। জেতা সুরাণাণ সনরেম্বজসু বীর্য্যাবলেপোদ্ধত **गानाम । जकाधिरमनार्क्षभथः** সমেত্য স্বভানুনের পুসভ নিক্ষা ।। ত্ৰ সিংহলী চাক্ৰিডম্বিম্ব বিক্ষোভিভাগাধ মহাহুদাযা । भूगक्रमावक उदेवयायाः मुस्माह मृर्ग्धः मित्रमुखभाषाः॥ उठः भुक् তি সা গঙ্গা তুল্যপুণ্যকলোদ্যা। नामा बावनगरक्छि भुषिमनन मू-পাগতা ॥ বে তু রাবণগঞ্চাযা। कायां अर्के विन्तकाः। नम्मद्रागा वन त्रागणिक्षांगाः बक्त हेर्विः ॥

ইতি গাৰুডে ৭০ অধ্যায়: ।। বাবণারি: পু: শ্রীবাম: । ইঙি জটাধ্য: ॥

রাবণি: পু॰ রাবণজ্যে পুত্র:। সচ ইন্দুজিত। যথা। রাবণি: শক্রজি-মেঘনাদো মনেদাদরীসূতঃ। ইতি হেমচন্দু:।।

त्राम य ७ मार्स । इंडि कविकन्नक्रमः ॥ मछा। छ। २२ मिडि गमःनिः इः ॥ त्रामङः थतः । मूर्गमिःइस इमः जानवा। छ। यदा उपामि 
दुसः कृषा तिमाममः वार्रभामिङवान् । य व्यवताम्य छ तामाङ ।
इंडि मूर्गामामः ॥

थता जगार । खेंगकव्षा शिक्व মহাভ্তানি ছজিরে ॥ অগ্রী সো মৌ ভাস্করেন্দ্ তত ত্তৃসারকাদয:। তেলো ভূখাছুবাতেভা: কমশঃ প क्ष जिल्दा ।। भून सीम मधायान वि खब्दानि मः खकः । नक्क वक्तिनः ভ্য: সপ্তবিংশাত্মক বদী॥ ইতি সूर्व। जिकारि शानाव। गरः ॥ 🗱 ॥ তস্য সংস্থান যথা। বিষুবৎক্রান্তি-বৃত্তিয়ক্যাৎ পূৰ্বভাগন্থিতা: ছিন্না: । स्वाम्त द्राम्यः काडिव्डयः পূর্বদিক্ কনাৎ ৷৷ ইতি মুনীশ্বরকৃত मार्वाङोगमिषाष्ट्रः ॥ 🗱 ॥ व्यथे त्रा-भागि किनियं । स्वयं वृष निथून केर्क ট সিংহা: কন্যা তুলাথ বৃশ্চিকভ । धन तथ नकतः अत्या भीन इंडि চরাশযঃ কৃথিকাঃ।। রাশিকথন ॥ 🗱 ॥ व्यक्षिन्ता मञ्ज्यो कृत्रि काशारक कीर्डिका (स्यः । ) । বৃষভঃ কৃত্তি সাম্পেষ• রোহিণ্যক্ষ মৃগশিরস:।।২।।মৃগশিরসোর্জাতা-षा भूनई(मा जिलाह नियून । )। भारः भूनईरमा ब्रस्टाः भूरिकारमधा ह কর্র ট:।। ৪।। সি ছোথ মহা পূর্বক-ल्लुगी भाम छेखद्रायाः। ६। छहिषः হস্তা চিত্ৰাৰ্ত্তক কন্যকাখ্য: ॥ ৬॥ তৌলিনি চিত্ৰাৰ্জ স্বাভী বিশাখা-

याः नाम्बरः। १। व्यक्ति विभाशः পাদ তথানুরাখান্বিতা জ্যেষা।। ৮।। ব म्ब भ्रवायाण भुषम कान्। खता --শকে। ধরী। ৯। মকর তুৎ পরিশেষ• मुवना ठार्क- धनिष्ठायाः ॥ २०॥ धनि-ধার্জ শতভিষা প্রভাদুপদ পাদ-वंगः मुद्धः। १)। भूदं जामुभनात्मय ন্তথোত্তরারেবতী মীনঃ ॥ ১২॥ইতি त्रानिमक्कवर**ভ**দকথन•॥ 🗱 ॥ द्रौनि নামানি চ ক্ষেত্ৰ ভ মৃক্ষণ গৃহনাম চ । (भवानी नाक भर्यप्रायः व्याकारस्य विविष्ठाय् ॥ इं जि ज्ञानिभर्यग्रय क-থন ।। 🗱 ।। ক্রিয় জাবুরি জিত্ম ভলীর লেখ পাথেখ যুক কৌপা-খ্যা:। ভৌক্ষিক আকোকেরো হ-लुग नास्त्र एक्ष ॥ (स्वानी-नाः विष्णयनाभक्षनः॥ 🗱॥ व्यरूप সিত হরিত পাটল পাঙু বিচিত্র্য সিতেভর পিয়কৌ। পিঞ্ল করুর वक गणिना कृत्या यथा जिथ्यु ॥ रमयाहीनाः वर्गाञ्चम कथनः ॥ 🕸 ॥ बर्जा घंटी मृजिथून जगम न বীণ চাপী নরো হস্বরঘনো মকরো भृगामाः । (होनी जनमाप्रह्ना श्रुवंगा ह कन्। (न्यूनाः चनामन्-শাঃ স্বচরাশ্চ সংস্থি। অশ্বলঘনো श्याकात्रक्रवासा वे ज् यथाकाज-

বৈশী তিৰুৱত চতুশ্চরণত্কথনাৎ 🎢 রাশ্রবিষ্ঠাভূদেবতাকথন ॥ 🛠 ॥ क्तिताथ भोगाः भूकाया १कना চ ওরে। यूग्रा॰ विषयः समक । চর ছির ছ্যাত্মক নামধেণা মেবাদ: या श्मी कमणः भूषिकाः॥ त्राणी-না কুর সৌনাদি বিবেক: ॥ 🛊 ॥ रिष्वक्षमानाहात्। भ्गाणः भूकतः ৈ কৈব সাধনিথ্য তথৈব চ। শুভ্যা বৃত্ত্যা ভবস্তেয়তে নিত্য দাদশ রাশ-यः ॥ भूगति वित्वकः ॥ 🛊 ॥ भिश्न তুলা ঘট কন্যা ছিপদাখ্যা শ্চাপপ্ র্মভাগশ্চ। মৃগ ধনু রাদ্যন্তার্চ্চে বৃষা-জসি•হা শ্চতৃশ্চরণা: ৷৷ দ্বিপদ চতু-ञ्चर द्राष्ट्रिकथन ।। 🗱।। क्क हे वृष्टिक भीना नक्द्रान्ध्राष्ट्रंक कीवेम-खाःमुऽः াতৃশ্চিকরাশি মু'নিভি: শরীস্পত্তে न निर्मिश्वः॥ कींग्रे जजीज्ञ ज्ञाणिकथ-निर्म<del>िश्वनिष्यणस्यण</del>गाः अर्थे जि॰३॰ विश्व । ठञ्चनाः । निल्लानिन्य। ভক্ষ্যা **বশ্যা: স**রীসৃপঙাত্য: ৷৷ **নৃগপতিবশে তি**প্ত**ন্তে** বিহায সরীস্পান্। অকথিতগৃংহয়্য বশ্যু অনব্যবহারত: ।। সরীসূপ জাত্য ইতি বৃহ বচনাৎ ক্চিদ্যাপি পরিগৃহ: । जुन्नीनाः वन्तावना क थन ।। सन्ति।। मिथून ज्वा जी

हालानि वहाः निनामु वृव (मरवो । भकता दिभार्क निरहो वत्तरी निवरन १ अन्वरणे ह ॥ जनहा कर्क है भी-নৌ মকরাস্ত্যার্জঞ্চ শিবমতে হয়: ৷ গুম্বারণ্য জলক রাশি কথন ।। ধা হুৰা স্তিমি গো ধ্বি ঘটা মিথুন ধনুঃ कर्कि मृगम्थाक जमाः। वृक्तिक কন্যা মৃগপতি বণিজো দীৰ্ঘা: সমা-খ্যাতা:।। রাশীনা• হুদ দীর্ঘ কথন• ॥ #॥ भागानि कल्ला नाथा यथा जःथाः भुनकिनः। (सवाना द्राण-বো জ্ঞেবা জ্ঞিরাবৃত্তি পরিভূমাৎ ॥ **मिगिषिण लग्न कथनः ।। 🗱 ।। अ**क्र मृक् বৃ**ংখন্দ্বর্ক সৌম্য শু**ক্রাবনীভূবাণ। জী-বার্কি ভানুজেজ্যানা ক্ষেত্রাণিসুর জাদ্য: 11 গৃহাণা ৷ ক্ষেত্ৰ কথন ৷ 11#11 অজো গোপতি যুগ্মঞ্চ কর্কি ধৃদ্বি মৃ-গা **তথা**। নিশাস<sup>্</sup>জ্ঞা: মৃত্য শৈতে শেষা শ্চান্যে দিনাত্মকা:।। নিশা সংজ্ঞ। বিনিথুনাঃ সূতাঃ প্ঠোদযা ন্তথা 11 শৈষাঃ শীৰ্ষোদ্যা হেতে মীন শ্চোভযজজেক:। নিশাদি अ • छ । कथन • ।। \* ।। द्रवि र्गा म • नि শানাথ: সপাদদিবসন্বয়ণ। পাক্ষ ত্রবণ ভূমিপুত্রো বুধো ২ন্টাদশবাস-तान्।। वर्षायकः मुद्राहार्यं। काश्चावि -**मिनि॰ ভূछः। मिनिः जाक**द्वरः दर्ष॰

वर्जानुः मार्कवट्मद्रः ॥ ववः भूमागाट সকলা: স্বরাশি ভূঞ্জতে গুহা: ॥ ইতি রাশিভোগকথন । ইতি জ্যো-ভিতত্ত্ব ৷৷ 🗱 ৷৷ দাদশরাশ্যাত্মক निवक्रभः यथा। भूनछा उवाह। स ৰূপণ ত্ৰিপুরন্ন্য বদিষ্যে কালৰ भिगः । अभिनी **७**द्रगी हेव कृतिः কাপুথমাংশক ॥ মেষক হি বি कानीयार अकाक्षव मुराह्उ । व्याद्यां मा ख्या वृक्तन् शुक्तां न-ত্য কবে গৃহং। সৌম্যাৰ্ছ ব্ৰন। (भन् वन्न शतिकी खिंड ॥ मृगार्क মাদুর্ণদিত্যাংশা জ্রয়ঃ সৌম্যগৃহং जिन । निथुन जुकारा उन्। गगन इगः भूलनः ॥ वारिकाःभगः প্ৰযুক্ত অশ্লেষা শশিনো গৃহ ৷ রা-**मिः** कर्क हेत्का नाम शार्ष्य मथ्यिः नानिनः ॥ পिತ्रकः ভগদৈবভ্য• উद्धराः मण्ड (कमत्री । স্र्याक्कवः বিভো বুঁন্ধন্ হৃদয• পরিকীর্ভিড• II উত্তরাংশা জ্রয়ঃ পাণি শিচত্রার্জণ কন্যকা ত্বিয়ণ। সোমপুগ্রস্য সবৈত্ত দ্দিতীয় জঠর বিভো: ।। চিত্রা**-শ** দ্বিভয় স্বাভী বিশাখায়া শক ব্রুষণা দ্বি ভীষণ শুক্র সদন• তুলা নাভি কদ। হ্তা ৷ বিশাখা শ মনুরাধা জ্যোগ ভৌনগৃহ জ্বিদ । দ্বিভীয় বৃশ্চি-

का द्रामि (र्यष्टुः कान्यक्रिम्।)।। म्ल भूदि। खत्राः भागः (प्रवाहार्यस्ति) रः शनुः। উक्यूगन भीनना जैभ-द्रार्थ भूगीयाञ् ॥ উত্তরাশা खाया थकः नुवनः मकत्त्रा मृतन। धनिष्ठाकः निक्कितः जानुनी निद्विचित्रः ॥ ষ্নিষ্ঠার্জ প্তভিষা প্রোষ্ঠপদা-শক ত্রয়ণ। সৌরং সন্মাপর মিদং ব্যম্ভো জন্ধে চ বিশুতে । প্রেষ্টিপ-দ্য শ মেকন্ত উত্তরা রেবতী তথা। विजीय कीव जनन भीनल हर्राग्तु-ভৌ ৷৷ 🛊 ৷৷ রাশীনা তলকণ স্বরূপা-कि यथा। नात्रम উवाठ। तालयः कः থিতা বুকান্ দ্বা দাদশ বৈ নম। তেবাং বিশেষতো বুহি লক্ষণানি ষ্কপত:।। পুলন্ত্য উবাচ। ষ্কপ-তত্র বক্ষ্যামি রাশীনা শৃণু নারদ। यामृणा यज जकाता यिवन् इताद्र वमिष्ठि हि ॥ मक्षाम स्मृन् (मक्म) ধান্য রত্নাকরাদিষু। নব সাদ্ব**ল স**ং-हामा वज्थायाक अर्बनः ॥ निज्रः চরতি ফুল্লেষু সরসাং পুলিনেষু চ ৷ (भव: मनान मृर्जिक जजाविक ध-नामिषु ॥ वृषः मम्मकाभषु हत्राज शाञ्चलामिष् । **उत्पाधिवाम**ञ्**ञिस** क्वीवनवज्ञानुया भे छी भू मायाः नमः ভदु नग्रापिन नितिशुरेशः।

शिवाहाष्ट्र मिथून गीउ नर्डक শির্দ্নিবু॥ স্থিত কীডা রতি নিত্য বিহারো হবনি রস্য তু। মিথুন নাম বিখ্যাত রাশি হেঁগাত্মক: মৃত:।। कैर्किः क्रजीदिश मभः मिलन्सः पुः के खिंड:। (करात्र वाशी श्राम वि বিক্তাবনিরেব চ।। সি·হস্ত পর্বতা রণ্য দুর্গ কলরে ভূমিষু। বসতে ব্যাপ नेह्नीव् गस्रात्रवृ छहान् ।। या हि भुमी भक्कत्रा नावाक्षः ह कन्यका । চরতে জ্রীরতিস্থানে বসতে ভদ্ধনে-यु ह।। जुलाभानिम्ह भूक्रा वीष्रा शगविठाइकः । नगदाध्वि भाषाः সু বসতে তথ নারদ।। যভু বন্মীক সঞ্চারী বৃশ্চিকো বৃশ্চিকাকৃতি:। व्यागान्य की छ। १ इ भावागाहिय সংস্থিত: ।। ধনু স্তরঙ্গ জঘনে। দীপ্য-भारना थनुक्तंतः। वाकिन्रता २ छवि-बीमार्गियेष वनारिष्।। म्गारम्। नकात्रा वुकान व्यक्ताका कालाक्षरः। নকরো হসৌ নদীচারী বসতে চ महामत्यो ॥ त्रिकन्यसुक्त भूक्यः क्रक्शाती बनाश्रुउः । मृज्ञाना-**ठतः मञ्ज इ**।यी स्मोखिक मग्रम् ॥ मीनक्षण प्रामाका मीन खीर्था पूम ঞ্জঃ । ব্যাতে পুণ্যদেশেষু দেব वास्तरम्बर्ग ॥ व्यक्तनः গদিত•

তুন্ত্য মেৰাদীনা মহামুনে। न क म्राहिबुवार्थायः छञ् भिष्ट भू রাভনা। এতথ্যাতে কথিত সু-त्राच वथा जित्नजः भूममाथ राज्य । भूगाः भूजागः भव्रमः भवितः जन् मृश्जाः भागहतः मिवसः ॥ इंडि **এবামনপুরাণে পুলস্ত্য নারদ স**্-वारमञ्जलनिजः ११ स्थान्या ।। त्राणिठकः क्षी **भिवारण**ताः শ্যাদিযুক্তবৃত্ত । তস্য নামান্তর ভচক্র জ্যোতিষচক্রঞ্চ। যথা। সপ্তবিংশতিকৈ জ্যোতিশক্ত স্তি মিত বাযুগণ। তদকাণশো ভবে-मानि नेवक्कं हत्र शक्ति : ।। इंडि मीनिका।। 🗱।। ७ दिवद्रागः यथा। ७-**ठक• क्षुत्रया बंध गाक्षिश्च• शुद्रहा**-नितः। भर्याउउ। जमुः उमका गुर কক্ষা যথা ক্রন•॥ উপরিস্থস্য ন-হতী কক্ষাল্পাথ:স্থিতস্য চ। মহ-ভ্যা কক্ষণা ভাগা মহান্তো ২লু ख्यान्या ॥ कालनात्नन जगन॰ ভূঙ্ক্তে **१** सुज्ञा भिकः। गुरुः का লেন মহতামণ্ডলে মহতি ভুনন্॥ यन्त्रा पुरस्त् ভृष्टि जगनान् भौजितीविजिः। मङ्ज्या कक्त्या-गह्न ७७: यद्भ भरिन्छतः॥ न-नतात्रथः करम्पम् मञ्था पित्रा-

রাশিচ

ধিপা:। বর্ষাধিপত্তব তত্ত্ব ভূতী याः निर्द्रकीर्खिजाः ॥ উদ্ধৃ करम् भाभारता यात्रानायविशाः यृजाः ॥ (हादिनाः ज्यं) जनगम्या ক্রমণ তথা। ভবেদ্দককা তীণ্মাণ শো ভু<sup>ৰ্</sup>মণ ৰঞ্চিতাডিত । সর্বোপ রিষ্টাৎভুমতি যোজনৈ তৈ ভ্রমণ্ডলং য়া তত্র কক্ষা ক্রমমাহ। বুক্ষাওমধ্যে পরিধি ব্যোমকক্ষাভিধীয়তে। 😇 মধ্যে ভূমণ ভানা মধোধ: ক্রমশ खथा ॥ मनरामस्त्रका ज्ल्य मूर्य শুকেন্দুজেন্দ্ৰ:। পরিভূমস্ত্যধোধ: ञ्राः निकविष्ठाथत्रा घनाः ॥ इंडि স্र্যাসিদ্ধান্ত: ॥ 🛊 ॥ গুহুত্রয চন্দু-সংযোগে ফলবিশেষজনক রাশি हकः यथा। द्राम्पहकः भुवक्तानि নূপাণা হিতকাম্যথা। রবি জীব ख्या (मोन) **रिक्ष**फ हत्मु मगाग**७**॥ জলপাতো ভবেৎ সত্য মিত্যুক্ত**ং** विकृषामल। द्रवि की व खथा मुक ত্তিশ্চ চ**ন্দ্রে ম**মাগতে। বাযুপাতো ভবেৎ সত্য মিত্যুক্ত বিষ্ণুযানলে ।। রবি জীব স্তথা ভৌন স্তৈশ্চ চল্দে সমাগতে। অগ্নিপাতো ভবেৎ স **७**। बिङ्गुङ• तुकायाभान ॥ इवि ভৌন তথা রাহু তৈক্ত চন্দ্রে সমা-গতে। লোহপাতো ভবেৎ সভ্য

मिजुडि क्प्याभाष ॥ इसे होसि ভথা কেতু ভৈশ্চ চন্দ্রে সমাগতে 🙌 পাষাণপাতো ংপি ভবেদিত্যক্ত-ভাৰুযামলে ॥ ইতি নরপতিজ্যচ-र्य्याया॰ जुषुक्ठक द्राश्विठक ।। 🛠 ॥ জাতকরাশিচক্র• যথা। তদ্বাদি ব্য-যপর্য্যন্ত রাশিচকে ব্যবস্থিত। তর্ম वृष्णान्त्रमञ्ज्या बन्नगरि व्या व्या ॥ इंडि भक्षम्या ॥ 🗱 ॥ मखगुरुरगाळ **द्रानि**ठक• यथा। जागमकञ्जूकस्य । রেখাছ্য পূর্বপরাগত স্যাৎ ত-শ্বধ্যতো বান্য স্বের ভেদাৎ। একৈক মীশান নিশাচরে ভু হু ভাশ वार्या विविधिख्डा १र्गान्॥ विना-नि विक्र गुगल भ्वाकि माथ्यान পঞ্চেসু বাণ শর পঞ্চতুষ্ট্যার্ণান্। भिवापिकः भुविनिध्ये अकनाः स्य वर्गान् कन्यागाजान् भविनिष्युम् थ भारिवर्गान्॥ उथा। वालर्कीवर খুর• শোণ• শনী শোভেতি রাশিষু । ক্রনেণভেদিতাবর্ণাঃ কন্যাযা• শা मयः मृजाः॥ (जन व्य व्या ३ व्रे (स्यः । 🕏 🕏 या त्यः। श्रा 🛪 🕽 हा पूनः। এ 🗗 कर्क है: । ও 🔡 नि र ह: । व्यः व्यः ना य जा वा काः कन्।। १ कदर्श खना । চবর্ণো বৃশ্চিকঃ । 🗗 र्गा परुः । उदर्गा नकतः । श्वर्गाः क्रेंगुः । व-

वृक्तिनिः। य ब्रामीना मनुक्नः मः ্ৰিভর্কেই। উদাচ। ৰ তার রাশি কৌধানা মনুক্লান্ ভরেমন্ন।ইতি वहनाया। द्रामीनाः मूक्तजा द्वारा ভ্যাঞ্ছে শত্ৰু মৃতি ব্যব। ৰ রাশে मं द्व तामाउ॰ गननीय॰ विष्करिनः। यमा जू स द्वारम द्रव्हान जमा भक् नामाम् क्रिक नम्मिन दाणि। गृहीद्वा गनरवट । नाब्राम्यकत ता-माजः गगराए माथकाक्षत्राए। इंडि द्रानाईनिव्युका ध्उ ववनार । उथा অন্তাতে রাশি নক্ষতে নামাদ্যক র রাশিত ইভি। তন্ত্ররাঞ্চে। তেন अखाम् । वर्षान नाम काम । क्वान । गगरयम्बर्षि यष्ठः वाभाद्वेनः **बास्य**-ন্ত বা।। রিপু র্মজ্ঞাদ্যবর্ণ: স্যাৎতেন छम्।हिं जिल्हा विक भक्ष नव स्कताः म् जाः। (क्षी ह यह ह मण-गांन्छ (जातकाः। विश् ब्रक्तु सूनयस পোৰকা। দাদশাই চতুরস্ত ঘাতকা: ॥ ইতি विकु विवयः॥ द्रामाहन्हिन्तुः काष्उदार। मक्तारो ज् वर्धः व-र्व्छनीयः। उथाठ। यष्टाञ्चन चामणानि বৰ্জনীয়ানি যুত্নতঃ। ইতি বচনাৎ।। ष्यथ। नाः धनुं /जाञ् रक्षु भू म मञ् क्लबकाः। मह्या थया क्यांग व्यय हामण ता नवः। नानान्कण (मर्छः

वाः मुजामुख कनः नर्छर।। नर्भ সিদ্ধি তথা নিভ্যুণ খনে খন সমৃদ্ধি-দঃ। ভ্রাতরি ভ্রাতৃবৃদ্ধিক শতৌ भवुविवर्षनः ।। भूत्य भूवविवृषिः मार । वाको वाक्वववर लियः । কলতে মধ্যমাপোক্তা মরণে মর-ं १९ ७ तर ॥ धर्म्य धर्माविवृद्धिः न्। निष्किमः कर्मन छिछः। আয়েচ ধনসম্পত্তি ব্যয়েচ সঞ্চিত क्यः !। रिक्विठाख जू मजूसान বন্ধুরিতি পাঠ:। ইতি ভব্রসার:॥ ब्राङ्कः शुः क्ली विषयः॥ উপपूरः। ইত্যমর: ।। বিষয়ে। জনপদ: । উ-পদুবো মূরকাদি:। ইতি ভরত:।। ब्राष्ट्रिनिवानी न्थः जानशरः। रिणवा-সী। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ রাষ্ট্রিকা জী কণ্টকারিকা। ইভ্য-गतः ॥ त्राष्ट्रियः পू॰ नार्ष्टेशास्त्रीताक्रमशानः।

ইত্যমর:॥

त्राष्ट्रीयः भुः नार्हेशस्कोत्राक्र**म**हा-नः । ইতি হেমচন্দুः ॥ রাষ্ট্রসম্ব-ন্ধিনি ত্রি।।

রাস ড ঋ শদে। ইতি কবিকল্প-क्यः ॥ मस्तात्वा २व मिन्नि गम-সিংহ:। রাসভ: খ্র: দুর্গসিংহ-ख्रिमः जानवाराञ्चः मद्मा डेगासी

হুদ্ব কৃত্বা রশ্মি শব্দ বুৎপাদিত-বান্। ঝ অররাসং। ড রাসতে । ইতি দুর্গাদাস:।।

द्रामः भू (कालाह्लः॥ श्वानः॥ ॥ ভাষা ॥ শৃগ্রলক: ॥ গোপানা॰ ক্রীডাভেদ:। ইতি মেদিনী।। শেষ স্যবিধি র্যথা। কার্ত্তিকী পূর্ণিমাযাঞ্ কৃত্বা তু রাসমগুল । গোপানা শতক কৃত্বা গোপীনা শতকন্ত-থা ৷৷ শিলাযা• পুতিমাযা• বা 🗐 কৃষণ রাধ্যা সহ। ভারতে পূজ-যেৎ কৃত্বা চোপহারাণি যোড**শ**।। গোলোকে চ বঙ্গেৎ সোপি যাবদৈ বুন্ধণো বয়:। ভারত পুন রাগত্য ছবিভক্তি লভেজুব ॥ কমেণ সুদ্ঢা॰ ভক্তি**• ল**ন্ধা **মন্ত্র• হ**রে র-পি। দেহ ত্যক্তা চ গোলোক পুন রেব পুযাতি চ।। তত্র কৃষ্ণস্য সাৰ্বপ্য সংশ্ৰাপ্য পাৰ্যদে। ভ-(दए। भून खए भठनः नाखि बदा मृज्रुश्रदा मशान् ॥ ই**ভ** दुक्तरेवः বর্ত্তে পুকৃতিথণ্ডে ২৫ অধ্যায়ঃ ॥ বিস্তারন্ত শ্রীকৃষ্ণজন্মথণ্ডে ২৮ আ খ্যায়ে শ্রীমন্ডাগবতীয় রাসপঞ্চা-श्वाराषुठ मुष्ठेवाः ॥ 🗱 ॥ कनातिः ন্মতে **ক**ল্পভক্ষাত্রেয়ণ। অস্য বিধি र्यथा। कार्ज्धिक (भोर्गमाम्याञ्च द्वाग

যাত্রা মহানিশি। নন্দ স্নে। भुक् वता महाविख्व विखेरितः ॥ इस्यी কে সুথ পুাপ ) আন্তে বিষ্ণুপুর বুর্তিট । পূজা কার্য্যান্ধরাত্রে তু নবেৎ শে-य সহোৎ সমৈ:।। গীতৈ নানাবিধৈ वीरित (ईनू वीना मृहक्रिक:। नृरेक्त वंत्राइना भीटि तक्षनानाक कीर्ड-বৈ:॥ চন্দ্রাগুক্ত কন্ত্রী পদ্ধ লেপৈ वित्राबिरेजः। विरुत्राच्छ विकृष्टरेकः ष्कृतायान द्रामा यमुनाश्रु विदन वदन । নিজ্ঞসদনে কৃষণ গোপীন গুল ম-ণ্ডিত ।। রাসম্ভল যন্ত্রস্য গো· বিন্দে কর্ণিকাগত। দ্বযো দ্বযো গোপিকযো র্মধ্যে সান্ত মনেকথা ৷৷ ব্দপর• নটবেশেন মধ্যে ত• মরলীধ-রণ। গোপীগণ মুখাস্তোজ মধুপান মধ্বুত ।। জলালচকপুতিম মুঞ্ ল পক্ষ নান্ধিত । দলন্তি শোভি-ত॰ কার্য্য॰ মহিব্যোপ্টো চ সন্ধিষু ॥ यर्था यर्था ह शाविन्तः भार्याया-রষ্টকপক । মূজনে মাধ্ব কৃষণ নট নাপর মেব চ।। হরি॰ দামোদ-র॰ বিষ্ণু॰ পূজয়েৎ কামক্রিপণ । ভদাহে ভূপরে গোগ্য: শতশো २० महम्मः ॥ भूकिनीयाः भूयद्व-ন নৃত্যগীতপরার্গীটো স্বৰংখ্যা

শিকান্তৰ মণ্ডলে ৰঙৌ ৰৱাক্ भित्री महिया छाः नयाचा छाः न अन्यक्ष्म् निवुजाः। ভाङाह मदा छि-बारमन कमला वरुकिशानी।। द्राधा বিশাখা বিমলা সুমিকা লালিতা. े ७०१ । मृन्स्त्री कमना त्रञ्जा महि-विश रही भुकी विकाश जाता ताथा নিরাবাধা কৃষ্ণা ভে**দ মুপাগতা:**। जाना शाति का निर्माण शृह्मका यें विस्मव उ: ॥ डेबीर्ल भागः गन्य (गाल्य)। वृन्तावनः ययुः॥ রাসকীড়া• ভত ভাভি শকে চ কগদীখরঃ ৷ গোপ্যের রাসক্রীডাণ ठकुः लोर्नमान्ताः सर्गानिना। न छत्र शक्किनिन्दा न विक्रीनिन्द স্তথা। নহানিশা তু ছে ঘটিকে রা-ख यंश्वम यामयाः॥ जननारको कर्खवरः भोनंमानग्राः निमामूर्यः। ্এবং রাসকীডাং যস্ত কারবেডবি गानवेशा न नदम्हू ७ ठाक्। निर्वागमुक्ति माभुयाद ॥ इज्रूद-कलकलिका।।

त्रामकः भू॰ शक्तकः। ইठामतः॥ त्रामक्वितिन्ति जी मिल्लका। ইठि सम्हित्स्का॥ त्रामकी जी शक्की। ইठिसम सङ्गवित्ती॥ **दानमधनः ही धि**क्यग्रदानकी-তাছল। তদিবরণ কথা। তথা-मुनति भाषाकः नकानर्कारि वाकान। वायुमा बार्यप्रमानण वि-চিত্র পরসাশুবঃ।। অভীবরম্য নি-र्यारा निकृत्समा मनीहरा। भः **जन्दिन मिलान भूग्र वृत्तरावरानन** । नुद्राम्म अल्बनाणि वक्ता वि-इक्यावृद्धः । क्यांद्रिकाकनविखीर्गा পুष्ट्रन विज्ञका युवा। दिएर्था छना শতগুণা পরিত: পরমা শুভা।। व्यय्ताद्वव्यविक्र होता मानिका-या ख्या ॥ मगीना को खडाही-ना मनःचानाः मतारद्रा । अ-ম্ল্যরত্বনির্মাণ ত্রাপি পুতি-यन्तितः॥ यत्राष्ट्रत्रः शुकात्र य-দৃষ্ট বিশ্বকর্মণ। গোপীভি র্গো-পনিকরৈ র্বেষ্টিড কামধেনুভি:।। কল্লগুক্তিঃ পারিজাতৈ রসংখ্যেক नातावितः । शुःक्षाम्यात्मः नूष्का-টীভি: সংৰূত রাসমগুল ৷৷ বে ष्टिङ हिर्डि लिलि मन्दितः শতকোটিভি:। রত্নপুদীপযুক্তিক **পুञ्ज उन्न**मन द्विष्ठः ॥ मूगक्षिष्टन्त-नात्नारिनः कलूती अक्तूमाहिरे छः। कीखानगुरेक (डिशिक अपूरेन वांत्रिक क लाः ॥ श्रेशः मूर्वाच

রাসের

द्रोयाण्ड मारेनाण्ड द्रव्यस्थ रेगः । ब्रक्टिक् ब्रक्टिंग्डः मधुम्यामानी बिरकोर्डि ।। अमृग्रज्ञा छत्री र्वि मूका मेर द्रिश । वक्रमेख-श्राबन्द्रांगा॰ विश्विरेजन वरेनः क-मार ॥ नवरयोवनमञ्जीम करेल निं क्लोभ द्रिन । द्रमाक्ष वर्जुनाकाद्रः हम्दिष यथा वुक्त ॥ व्यम् न । त्र त्रविखः मगरगाजम विख् छः । कल् ती षक्रिय द्रोताः मुगक्ति वन्त्रवाहि-रिजः ॥ चाव्छः मन्नवरिष्ठः कव পল্লবসংযুতৈ:। मधिनारिकण প र्शिक त्रिकार्बाक्रियः करेनः ॥ विवानकरमी उरेस वनश्याण म-নোহরৈঃ। পউপ্তনিবদৈশ্চ সি-रिक फन्सन्श्रहरिवः ॥ हन्सनाजक মাল্যৈশ্চ ভ্ৰণৈশ্চ বিভূষিত । অ-ম্লারর্রচিত শতশৃক্ মনোহর ॥ कार्किरयाजनमूक् क रेमचं। मन গুণোত্তর । শৈ**নপুছ পরিমিত** পঞ্চাশৎকোটিযোজন•।। <mark>অভী</mark>বক भनीयक (वरह १ निर्द्धानीयकः । भाः কার নিব তস্যাপি গোলোকস্য মনোহর ।। পরিতো বেঞ্চিত রম্য হীরাহার সনবিত। তত্র বৃন্দাবন त्रभाः रङ्गः हन्त्रभाष्ट्रभः ॥ कन्न वृंदेक कर प्रदेश का मन्ति दिन का मार

नृष्टिः।(भो ভিত॰(भो छन्।ई)**।** भू श्चाम्।रिनर्माना होतः। की प्रामहित् वरित्र त्ररेभाः जूतरेमा त्रजिननिर्देशे. অভীবরম্য রহসি রাসযোগ্যন্থ-লাহ্নিত ॥ রক্ষিত রক্ষকৈ রমৈর রসংখ্য র্গোলিকাগণৈ:। পরিভো वर्जु नाकातः बिनक्याकनः वनः॥ बद्भरथ्वि अःयुक्तः भूरकािकवर-তাবিত। তত্রাক্ষ্যটা রম্যে র-रुरमाव हि विख्ठः॥ महमुरेयाबः নোজু ক পরিতক চতুর্গুণ:। গো-नीना कन्नवृहेक्क नर्ववाका कन-शुपः।। कीषादिरेख बाव्यक बावा-मानीजिनकरेकः। वित्रकाजीत्रना-ব্লীণা॰ বমুনা শীতলেন চ ॥ পুত্লা-স্থিতেন মান্দ্যেন পবিত্রক্ত সুগন্ধি-ना। मात्रीगरेन व्रत्रारेश्वाक वृन्ता-বনবিনোদিনী ৷৷ ভত্ৰ ক্ৰীডভি সা রাধা মম পুাণাধিদেবতা ৷৷ সেফ শ্ৰীদান শাপেন ব্যভাৰ্সূতা ংখু ना। वुकामितिरा निर्मानि मूर्नी रेन्युः नृष्टिञा वुत्र ॥ ইতি वुक्ररेव-वार्ख जगवनम्मा वात्र निक्षकः ম্বতে ৮৪ অধ্যাব:।।

রাসেরস: পু॰ গোষ্ঠা। রাস:॥ শৃকার:।। রসসিদ্ধি:॥ রসাবাসং ॥ ষষ্ঠাজাগরক:। ইতি মেদিনী।।

উৎসবৃ: । **ইতি শব্দন্নত্বাবলী** ॥ श्रीविश्वानः। इंडि क्रिविश्वा उपन्ने की नावा । यथा। नावा ब्रामधनी ज्ञानवानिनी न्रनिरक्ध-রী। ইতি বুদ্ধবৈবর্ত্তে 🏖 কৃষ্ণ জন্ম-चार्ख ३१ व्यवतामः ॥ ায়া জী খনাম্খ্যাতলভাবিশে-वः । রাসন ইতি হিন্দীভাষা। उर्पर्गायः । नाजनी २ मूत्रमा o मृत्रक्ष 'ह गञ्जन। जली ৫ नज्जलहै। ७ ভুৱসাকী ৭ ছত্রাকী ৮ সুবহা ১। ইড)মুর:।। নাজ্ল্যাদি পঞ্ক° द्राप्तायाः । नञ्चलक्षेपि ठज्**यः न**ः র্পাক্ষ্যা মিত্যাহ:। ইতি তটীকা-যা॰ ভরত:॥ রস্যা ১০ শ্রেয়সী ১১ व्रमना १२ व्रमा १० मृगक्षिम्ला १८ त्रमाणा ७६ चित्रमा ७७। चम्रा ন্দ্রণা:। ওক্তর্ণ। উক্তরণ। উঞ্চরণ। বিষ বা তাসু কাস শোফ কম্পোদর **(सूत्रोग्रामियुः। शा**हनवृक्षः।। तास्रा তু ত্ৰিবিধা পুোক্তা মূল• পঞ্ ত্ণ स्था। क्वायो म्नम्लो न्निरहो তৃণা রাম্ম তু মধ্যমা॥ ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥ অপিচ। নাসলী সুরসা द्राना मुगन्ना गन्नना स्वी। नन्दा है। जुजकाकी मर्गाकी विवनानि भी ॥ नामनी जूबद्रा जिका करू

কোষণ বিনাশবেৎ। ভোগি ল্ডা বৃশ্চিকাখু বিষ জ্ব কৃষি বুণান্। ইতি ভাবপু**কাশ:** ॥ রান্না**শোখা**-স্বাতশ্বী। ইতি রাজবন্ধভ:।। 🛊 ।। ওবিধিবিশেব: । কাঁটাআমকলী পণী হ সুবহা ৩ যুক্তরসা ৪। ইত্য-মর:।। অপিচ। রাম্ব। যুক্তরসা রস্যা সুবহা রসনা রসা। এলা। পर्ग ह मूत्रमा मृन्निका (मुबनी তথা।। রাস্নামপাচনী তিক্তা গু-ককা কফ বাত জিং। শোপ খাস नभीवाम् वाङ म्लामबाभहा ॥ কাশ জুর বিষাশীতি বাতিকাম্য হিধাহৃৎ। ইতি ভাবপুকাশ:।। রাহ: পু ত্যাগ:। ইতি স কিন্ত-नात्नागामिवृज्धिः ॥ गुरुविश्मवः । ভৎপর্য্যায়:। ভম: ২ স্বর্ভানু: ১ रेम शिक्यः ८ विश्वसः ६ । इंडा-মর:।। অসুপিশাচ: ৬ গুহকলো-नः १ रेम किकः ৮ উপপ্रवः २ भी-র্যক: ১০ উপরাগ: ১১ সি•হিকা-मृनुः ४२ । ইতি मदत्रदावणी ॥ कृष्ण्यर्गः २० करमः २८। ইতি करो। ধর:।। অভঃ ১৫ অসুর: ১৬। ইতি *(ब्रां* जिख्नुः ॥ जरम्यार्भन्यारि র্যথা। সি ছিকায়া মথোৎপদা

विश्रुहिएक काजूप्रमा । भवः भवतः भावण वाकः भाग खरेश्व ह ॥ ইল্লো নমুচিল্ডৈৰ ৰাতাপী হস্ ला किकः। रत्रकन्न किन नाट्ने ভৌমক্ষ নরক তথা ৷৷ রাছ র্জ্যেষ্ঠ-क (उदाः दिव हम्पुत्र्यं भूमस्यः । ইভ্যেতে সিংছিকাপুত্রা দেবৈ রপি मुद्रामनाः ॥ नाक्नाज्जिनाः कृताः गर्द वुक्किविष्ठ (छ। मन्नान्यानि সহসাণি সৈ হিকেবো গণঃ মৃতঃ ॥ নিহতো যামদশ্যেন ভার্গবেশ ব नीयमा । यर्जानास भुजावन्ता পুলোম্বন্ত শচীসূতা।। ইতি বহিং-भूतातभुकामिकमर्गनामास्यायः॥ 🗱 ॥ ७ म ६ मित्राम् एकात्रगः यथा। रिविक्शुिक्सः चर्जान् (४व न मिर । পुविष्ठेः (माम मिनवर চন্দ্রার্কাভ্যাঞ্চ সৃষ্টিতঃ ॥ চক্রেণ স্কুরধারেণ জহার পিবতঃ শির:। হরি স্তস্য কবন্ধন্ত সুধ্বাপ্পাবিতে। २ भ उट् ॥ भित्र सुग्रतकाः नीज माजा गुरु महीकुन् । यस नर्वा চন্দ্ৰাকাৰভিধাবতি বৈর্ধীঃ ইতি জ্রভাগরতে ৮ ক্ষন্নে ১ অ ধ্যায: ॥ সচ মল্যপ্রত্জাত: । भू <u>म</u>ुवर्गः । सामभाञ्चल विभागः । कृक्षदर्भः । क्कब्रहः । भिःश्वाहनः

। हज्जूकः। थन वन म्ल्ह्यायांक्री । मूर्यप्राम्यः । यम् व्यक्तियुक्त कालः। भुजाबाह्यकामभागिक পুহ্যজ্ঞ ভক্ত ।। অস্য স্বৰণ শনি-ब्दा म ह हुआनबाजिः। मर्ना-क्जि:। अश्विषाभी निर्वटिष्यमा-भी छ। ইতি वृश्ब्जा उका परः ॥ ब्रांट्गारः भ्रं वन्तुभ्र्य्याग् इनः। यथा। ब्राङ्गाङ्गार्क्त्वाग्र्क् डेन-রাণ উপপ্লবঃ। ইতি হেম্চপ্দুঃ।। द्राष्ट्रकः क्ली द्रवशिष्टमध्याद्रयू-অখগত্যা বানাবর্ত্তন বানার্ছণ পুশ্রে সপ্তদিক রাছে। গমন । यथा। भन्नाम् विष्ये वाही भी-**ম্যা॰ জে বা**যবে **স**জে। রক্ষোদি-लि ज्लो यान्। अद्रावील नतो **मिति ॥ ब्राङ् जूँ निक यानाकारण**-পভ্যা চ বামতঃ ৷ দূয়তে যুদ্ধে বিবা-(र চ याजायाः **अगुथः इडिः**)। त्राङ्• विवर्षसम्बन्नाम्<del>यर्</del>होहिंद क-মাণ: ফল॰। ইতি সৎকৃত্যমুক্তাবা नी।। #।। त्राङ्कानाननहकः यथः । তস্য চক্র• পুরক্ষ্যামি রাহুর্কালা-নলাখ্যক । শলাকা সপ্তক চক্র देनामि कृखिकामिकाः ॥ সাভি-জিৎকা লিখেতত চাষ্টাবি**ংশ**তি ভারকা:। যত্র খন্দে স্থিতো রাহ

রাক্স

विष्नः छिनिर्माण्यः । मृथार निष्माणः अक्ष उत्तरः शृहः वर्षः हिउः । अक्षाउत्रम्यः थाञा नायस्य यव क्ष्यदः ॥ वर्राभार छुन् नंगर नर्बः नह्मार्कत्रमित् । द्राञ्ज्ञानि स्काणि नीदशक्षः वर्षाप्तम् ॥ वर्षाप्तम् व खागाः नि मृज्यक्षः भृकीर्वर्षरः । मृज्य-क्ष्यः जित्र छुनः नीवाङ्ग मध्रः गः॥ वर मङ्गर्या द्राञ् छ्वाउत्रः स्त्रभाद्रशः । नीदशक्षः क्ष्याना-व्यम् अ्ष्यः वर्षाः हिर्द्धः ॥ उत्तिनः स्त्रभाद्रशः । नीदशक्षः क्ष्याना-व्यम् अ्ष्यः यावा विभवीर् ज् हानिषा ॥ हिन्द्वाप्तः ॥ द्रकः-मद्विनि वि ॥

রাহুছত্র॰ ক্লী আদুকিং। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ॥

রাত্দর্শন লী রাহোশ্চাক্ষ্বজ্ঞান । গুঁহণ নিতি যাবং । যথা।
চক্ষ্মাদর্শন রাহো যন্তদ্পুহণ মু
চ্যতে । তত্র কর্মাণি স্বর্ধী ত কণনামাত্রতো নতু ।। রাত্দর্শন সংক্রান্তি
বিবাহাত্যয় বৃদ্ধিয় । সান্মাত্রস্ত কর্ত্রবিং দান শুল্ল বিব্যক্তিত ।
ইতি তিথ্যাদিত জ্বং ।।

त्रान्टान्ती शृं विकृ: । ইতি करे। ध्राः ॥

বিদ্না তিন্নির্দ্ধিশেশ ।। মূথাৎ রাহমূর্জভিৎ পুণ বিষ্ণু:।ইতি ত্রি-পিট্রেলে ক্ষক্ষে ভস্য পূহণ ব্যব্দ কাগুলেবঃ।। ছিত্ত । অস্টোত্তরশত্ত খ্যাতা রাহ্রত্ত্ব লী গোমেদকঃ। ইতি

त्रीच्त्रतः ज्ञा शिष्मस्यः। इंडि क्राजनिर्घणेः॥

द्राष्ट्रणम्: भू वृष्तः । इंख् रहम-

রাহস্পর্শ: পু• উপরাগ:। ইতি হলাযুধ:।।

ब्राइश<sup>ि</sup> शुः विकृः । ইতি **११**ग-हन्दुः ॥

द्राष्ट्रिष्टेः भू॰ वण्नः। ইভি वि-काश्रणमः॥

वाङ्८मृ**डेः भू॰ ज**ण्नः ! हेि हावावनी ॥

बाक्रमः भू बक्छ्रमार् बक्षः बक्र्य बाक्रमः । उर्श्यापः । कोन्शः र क्व्रार ० क्व्रानः ॥ क्रम्भः ६ व्यान्तः ५ ब्राज्क्रियः १ बाज्ज्ञः ४ क्व्राः ५ निक्षाञ्चकः १० याज्यानः १० भूगुक्रनः १२ निर्वा १० याज् १८ बक्षः १६ । हेज्यवः ॥ मक्यावनः १५ क्वाणाः १० न्वक्षाः २० न्वक्ष्यः २० भवाणी २२ भवानः २० च्वः २८ । हेज् मद्वावनी ॥ नीवाञ्चयः २६ क् न्याषः २५ क्वेन्दः २१ व्याग्यः २४

ः कीवावभाः २० मज्ञिष्यमः 👀 🔝 ইতি জটাধর: ॥ তদ্যেৎপত্তি ্ৰথা চৰুজামাত্ৰাব্বিকা মেৰ জঃ তোন্যা জগ্হে उत्। তত: कृष्-- জ্বো কাতা ক্রডে কোপাশুবাত-ত:॥ ক্ৰুৎক্ষামানন্যাকারা শে সো ে হস্জভগৰা স্ততঃ। বিৰূপা: শ্ম **म्ना बाउा (उज) धावड उ॰ जुज्** া নৈব ভো রক্ষ্যতা মেব তৈ কক্ত রাক্ষসাম্ভ তে। ইতি বহি পুরাণ ।। 🕸।। অপিচ। রক্ষোগণ কোধ্ব-नार बनानान मजीजनरा मर्श्रुगार নিযুত তেষা ভীনসেনাদ্ব ক্ষয় ॥ ইতি নাৎস্যে আদিসর্গে কশ্য नान्यनाम् ७ व्यव्यायः॥ अ। ब्राक्तम ভाजामानि यथा। कृ कि हो पूर भभन्भ वहाहिश्वानि उ॰ ভবে**८**। কেশবেপন মাধুত মাক্তখাসব क्टार्ट ॥ क्रिः मः मृष्टे ममक्ष छ। গো বৈ রক্ষসো ভবেৎ। তমাজ্ छादा नमा विद्यानमात्म्यान বর্জবেৎ ৷৷ রাক্ষসা নাম যে প্রোক্তা ए जुक्क अध्योम्**म**। ইতি वासन পরাণে ১৯ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ তেষা विश्वादः मृयुरलाकाम्यः । यथा। অন্তরীক্ষ চরা যে চ ভূত পুেড পি-**ना**हकाः । वर्जयिद्या स्ट्रुगगाः (स

ভবৈত্ৰৰ চক্ৰভি হি।। নোজু ' বিক্ৰ-· भारत मिकि रहवाः मध्य उन्धरिकाः াজত উদ্ধৃ হি বিশ্নেশু রাক্ষরায়ে ः कृष्डिनः ॥ एड जु मूर्यग्राम्यः मार्वे বিহুরভূজ্বর্জিতা: ৷ ইতি পান্মে वर्गचर७ २० व्यवप्रायः ॥ 🗭 ॥ व्यष्ट 'পুকার বিবাহান্তর্গত বিবাহবিশে-बः। यथा। जामूरत्रा मुविशामाना-माम्बद्धः मगराधिषः। बाक्रामा युष्पञ्जाट रेमनाठः कन्यकाहः चार ॥ इजुङ्गाहउङ्ग ॥ ज्ञाकनो जो कोननी। ज्ञाकननज़ी ॥ দ•ষ্ট্রা। বৃহদ্দ্তেক্তি বাবৎ । ইতি रहमहन्द्रः ॥ हथा। हात्रनामनञ्जू-ব্যমিতি যাব**্রইতি মেদিনী**।। नायाङ्कानः। यथा। भुाउःकालाः মুফ্রাংজীন সঙ্গব ভাবদেব তু। मधाङ जिन्र्वः नामभनाङ छ-जःभवः॥ नागङ् जिनुष्कं नार णुषि उब न कात्रराए। ताक्रमी-ন্ম সা বেলা গহিতা সর্বকর্মসূ।। ইতি তিথ্যাদিভত্ত্ব ॥ द्रावनः । इंडि द्राक्त्यम्: ত্রিকাপ্তশেষ:।। क्यी वाका। इंडामद्रः॥ রাক্ষা রি 🕶 গভৌ।ইভিকবিকল্লন্ডম: ॥ রেফাদি:। শ রিয়তি। ইতি

म्जामानः ॥

हिन्दे की भूबा । स्त । इंडि

तिकः वि निर्धनः। ই डिणम् त्रः इ।-वनी।।

রিক্তক॰ ত্রি শ্ন্যণ। ইত্যমর: ॥ রিক্তা দ্রী তিথিভেদঃ।সাত্চতুথী

नवनी ठजुष्टंगी ह। यथा। नन्ता ভুদা হ্বয়া রিক্তা পূর্ণা চ তিথ্য: क्रमार । इंजि जिथ्यामि उद्धः ॥ कमां मु जन्या निरंदेश विधी यथा। ननता जुना कया तिका भूनी ह नाम जर्क् कलाः। न तिकाः नर्कर्ममू । ইতি জ্যোতিঃসারঃ॥ চন্দে চার্ক জ্জাকি শুক্রবিযুতে নধ্যে ২৭ বা পাপযোঃ। ত্যক্তা চ ব্যবিপাত বৈধৃতি দিন বিষ্টিঞ্চ ব্লিক্তা তিথি কুরাহায**ন চৈত্র পৌষ রহিতে ল** ্রাণশকে মানুষে।। রিক্তাস্ বিধ वा कन्या मर्ल्साल न्याहिवाहिन।। मारेन कत्रिपत रेहन यभि तिका তিথি ভবেৎ।। তিমান্ বিবাহিত। কন্যা পতি সন্তান বন্ধিনী। ইতি भी**ल**का ॥ यर्ष्ठ मात्रि निमाक्रत শূ ভকরে রিক্তে**ভ**রে বা ভিথৌ সৌ महानि छहनिए उन्हु जीव निवरित शः **ংক্ষ** চ কৃষ্ণে ভরে। ইতি ভুজবল-

ভীম: 🛚 ঘাদুশী সপ্তমী নন্দা ব্লিকা-म् ११ भन हम्। वन नायुर्यत्मा इन्। ८ শিশ্নাম্মভক্ষণ ।। ইতি কৃত্যচি-স্তামণি: ৷৷ পূর্বেশান্তক সর্প ম্লরছি-ভেষ্ণক্ষেপ্রবিক্তে তিথৌ বঙে মাসি সিতেनम् कीविषयम (ग। क्वकं मी-(नामरव। म॰ भारिक्ष भक्ष्य वर्ष चानु-मूख बनार्पात । वश्री भुजिनमर्कत বর্জযিত্বা তথাইনী। রিক্তাণ পঞ্চদ-শীঞ্চৈব সৌরি ভৌনদিনে তথা ।। এবং সুনিশ্চিতে কালে বিদ্যারম্ভক্ত কার্যেশ। ইতি বিফ্রুর্মোত্তর:।। পু-ৰাগ্নিযাম্য কণি চিত্ৰ শিবান্যভেষু রিক্রাষ্ট্রমীণ বিগত চন্দ্রতিথিণ বি-হায। इ इंगि भा मगून स विश्व किंवादा माखन्तू याग कव्राव्यू इ-**ल** पुराह:। इंडि मी शिका ॥ हन्ता-करिया र्जरदे भूगी स्ट्रांक रूपा करा च्दत्रो। वृष भत्नती ह नन्तायाः मुद्क রিকাম্তা তিথি: ৷৷ ইতি ভীন-পরাক্রম: 🛭 সর্বত কার্য্যে বধ জীব শ্কা: কেন্দু তিকোণোপগতাঃ পু শন্তা: । তৃতীয লাভারিগতাক পাপা তিথি বিরিক্তা শুভদন্য চা-रः ॥ इंजि मीलका ॥ हजुर्थी नव-भी हिन तिङ्गा हिन हजुर्मभी। मुद्ध ननता दूरव जुना मास्त्रो जिङा अरख

कशा। अत्रो भूगं ह मःयुका निक यागाः भुकीर्खिठाः। वृष्येनरगठा नन्ता अरब जुना क्या स्ट्रो॥ ज्स রিক্তামৃত প্রোক্ত পূর্ণা চ রবি চন্দুযোঃ 🖟 ইতি জ্যোভি:সাগর नातः ॥ वश्रद्धेमी चाम्मीयु नगः ছে প্রিদিনস্ছ। প্রিনা প্রতিপদ-ৰ্শ ব্লিক্তাবমদিনেষু চা। তথা যম দ্বিতীযায়া• যাত্রায়া• **মরণ•** ভবে**ৎ** । ইতি সৎক্ত্যমুক্তাবলী।। ली প্রন•। ইত্যমরঃ।। রিক্রহারী ত্রি দাযাদ:।খনহারী । यथा । यमारमो नियुक्ता (मदर्ताः দিঃ স্বয়নপ্যপুণ্ডো হপুত্রস্য ক্ষেত্রে স্ব পরপুত্রার্থণ পুতৃত্তোরণ জনয়তি স দ্বিপিতৃকো দ্যানুষ্যায়ণো দ্বযো রপি রিক্থহারী পিণ্ডদাতা চ। ইতি নিতাক্ষরাযা• দাযভাগ:॥ রিক্রী" তি ধনহারী ॥ ধনী । রিক্রু• হ-রতিয:ইভ্যথেইন্পুত্যযনিষ্কর:॥ রিথ ই সর্পণে। ইতি কবিকল্পড়মঃ ।।ই বিড্থ্যতে। ইতি দুর্গাদাস:।। রিগ ই গভৌ। ইতি কবিকল্পদ্ম: ॥ ই রিঙ্গতে। ইতি দুর্গাদাস:॥ विद्वन क्षी ज्ञुनन । ইতি ह्मिष्मुः॥ স্থলন । ইত্যমর:॥ क्री ব্লিঞ্চনণ ष्व वर्षाम्। श्रिकारा मुख्यागः य-॥ কীযবিধানাদন্যথাভাবে ইত্যথি।

উচিত্যাৎ পিছিলাদেশ্চ মুল্নি
ইতি রমানাথা।। ধর্মবিলম্প্রনং রিহুল মিতি ধানী ।। বালানাং হুল
পাদাভ্যাং চলনং রিহ্ননং। পিছিলাদো পতনং মুলন মিত্যন্যে।
এতমতে ভেদেপ্যভেদোপচারেণ
সমে ইত্যুক্তং। রগ রিগ লিগি গতৌ অনট্। রিম্প্রন মিতি পাঠে
রথি রথ রিথি সর্পণে ইত্যুস্য
ক্রপং। ইতি ভরতঃ।।

ति कि जम्लक दिया गरियाः। ই जि कि विकल्ल क्रमः॥ कि त्र हर्या छ। ति हु जि। ति हु ति शूर्य माका छ। धरेन मं-रेख क ति हि। ति हर्या है हि ज्यों मानः॥ देख क्ला यूथः। ই जि मूर्या मानः॥ ति ह ष देत के जित्तक। देजि कि विकल्ल क्रमः॥ वित्तकः भोनः शु-नि ह श्री या ए मर्गः। देजि हजू-जु कः। देत जित्र ह व्योत क्री ८। थ क्ष ति नि ति ति हु जि जाति । छ ति जा। देजि मूर्या मानः॥

রিজ ড খাজ্যথে। ইতি করিকল্পদ্দনঃ
।৷ খাজ্যথে ভর্জনে। ড রেজতে।
ইতিদুর্গাদাসঃ।।

तिथनः े भू कानः ॥ ये गन्नः । इंडि विषः॥

শত্ঃ। ইত্যমরঃ।। চো-क्रिनामं गन्नमुवां । इंजि जाजनिर्ध-े कें: ॥ नगुर्शिक्या वष्टनगुर । उट-श्रयायः। यह्रकातः २ द्रिश्मानितः **৩**। যথা। ধীস্থান• পঞ্চন• জেন্দ্ৰ ৰামিত্ৰ॰ সপ্তম॰ মৃত্ । দুনে দুনে ख्याखाचाः बह्तानः विभूत्रनि র্ণ। অপিচ। সুনীচণে হস্তগেপি-বা রিপো গৃ ছে ছিতা গুছাঃ। বৃথা ফল' পুকী ভিত• সমস্তমেৰ সৃবি-**ভिঃ ।। अम्रह । अद्राक्ति दुगरमाः** ৰষ্ঠে চাষ্ট্ৰমে মৃত্যু রক্ষ্যোঃ। ব্যযস্য দাদশস্থানে বৈপরীত্যেন চিন্তন•।। इंजि क्यां जिख्नु ।। 🗱 ॥ भद्री दञ् ষড়িপবো যথা। কাম: কোধ: लाजः (मारुः मरः मार्मर्ग्रफः । তথাহি। আস্থায যোগ মবিজ छ। ह विजि वहेक मावशः हिन्तिय-গণ মনসি পুসলে। ইত্যাদি ত-জসারে ভ্রনেশ্বরীস্তোত্র•॥

त्रिभूषाजिनी जी नजावित्मर्यः। ষ্টুই ইতি ভাষা। যথা। স্কিকা বহুবিস্তীর্ণা জ্ঞিকা বিপুষাতিনী। ইভি শব্চন্দ্রিকা॥

রির পশ ব্রে। ইতি কবিকল্লজ্ম: ।। নোপথ:। পশ রিশ্বতি রিরিশ্ব।

विक **पूर्णापाणः**॥

त्रिश्रः त्री वशाशक्यादारभंतानिः ।'यथरा कर्य द्वानक मननः शः ता-मृत्रग मान्यम् । हिमुंग्थः मङ्ग ञ्चानः त्रिश्वाचाः सम्मः मृउः॥ **उक हिन्दीय यथा। शुरक्षायायथ** চিন্তবেদ্ভবগৃহে বিপ্লেথ মজিব্য-यो मोभा साभिगृजीकिरेज रूप-চিতি স্তেকা• ক্ষতি স্তুন্যথা॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব: 💵

রিপু: ত্রি অথম:। ই**তি** সিদ্ধান্ত-कोगूम्त्रामूनामिवृज्धिः॥

ব্লিফ জ্বংসনে। ইতি কবিকল্পজন:।। সৌত্রধাতুরয় । রিপ্ন: রেফ:। ইতি मुर्गामामः ॥

রিফ শ অর্ফে। ইতি কবিকল্পদনঃ ॥ শ রিফভি। অর্ফো দান শ্লাঘা शिका निन्ता युष्कानि। ই**छि पू**र्गाः मात्रः॥

রিব ই গড়্যা। ইতি কবিকল্লছনঃ ॥ ই রিম্ব্যতে। ইতি দুর্গাদাস:॥ রবে। ইতি কবিকল্লক্ষম:।। विविक्तः। ইতি पूर्णामानः ॥ রিনেদঃ পু॰ অরিনেদঃ। ইতি রাজ-निघंग्टः॥

तित्री भी शिखनः। ইতি एम हमूशा অপ্তনম্বরাদির্থমিত্যনের । ইতি । বিব ই বুজে। ইতি কবিকল্লছনঃ ।। है तिक्षारा । जुड़ा गडिः । हैिंड मूर्गामानः ॥

तिम म के हिंग्स। हैकि कविक्य क्रमः॥ के चतिक्र । म तिमिछि। त्रकाछि। हैकि मूर्नामामः॥

রিশ্য: পু॰ মৃগঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেবঃ।।

রিষ বধে। ইভি কবিক**ল্লন্ডনঃ**॥ রেষভি। ইভি দুর্গাদাসঃ॥

तियः भू श्रावः । श्रवेष छान जः नाद्रायाः भादः गृहेष्ठ श्रवयः । श्रयोग गठो नानी छ किः । दिवि इनाहिण्छ । दिन्ता दिक्क न ज्या दिवयः भूनिकाः । ইতি भूर्यागाट ।। जिया श्रवी ह । ইত্যনदिने का या छद्र छ।।

রিষ্ট লী ক্ষেম । কল্যাণ । অশৃভণ । অমঙ্গ লা । অভাব: । নাশঃ ।। ইত্যমরভরতৌ ।। অশৃভস্যাভাব: । ইতি কেচিৎ । ইভি ভরত: ॥ পাপ । ইত্যর্য: ॥ তদ্বতি জি ॥ রিষ্ট: পুং খন: ॥ ফেণিল:। স তু

রিষ্টঃ পুণ খন:॥ ফেণিল:। স জু রক্তশিশু:। ইতি মেদিনী ॥

রিষ্টকঃ পু॰ রক্তশিশুঃ। ইতি শদ রত্নাবলী।।

तिहिः मू॰ चङ्गः। ইতি मिनि ॥ विक्रिः की जनुङ। ইতি मिनि॥

भेजरखनः। ইতি শব্দ प्रशासनी क्ष्यः श्रुष्ट म् मृगिविष्यः । यथा । स्वयः स्वयः । स्वयः ।

রিব্র: ত্রি বৃধক: । ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তি: ॥

ব্লিছ বধে। ইতি কবিকল্পজনঃ। ব্লেছতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

तिका जी निकार्यका। ইতি হে-भवन्तः॥

রী ওষ্ড ক্ষরণে।ইতিকবিকল্প-ক্ষন: ।। ও রীণ:। উষ্গীয়তেপ্য: ।ইতি দুর্গাদাস: ॥

রী গি রবে॥ বধে॥ শতৌ।ইতি কবিকল্লন্ধনা। গি রিণাতি রীণঃ রীণিঃ। রবং শদং। তথা চকাত-স্থাদৌরী গতি রেষণযোঃ। রেষণ বৃক্ত্বনি রিতি রমানাথঃ। রিণাতি রেষতে বৃক্ষঃ। ইতি শদার্থে ভউ-

রী জ্রী পতি:। ইতি শব্দরত্নাবলী । য়ব:।। বধ:। ইতি রীধাত্বর্থ-দর্শনাৎ।।

রীজ্য জী হ্ণাহথা। সোহোরী-জ্য জুভপ্রাচহণীয়া হৃণিয়া হৃণে-ভি বাচস্পতি:। অযুদ্ধ কজাবাং श्रीनाषाः भूनामार घ्नायाः भूयुक कें ज किन्दः । इंडानब्रहीकायाः ভवजः ॥

त्रीठा **জी রীঠাকরপ্ত:। ইভি রাজ**-নির্ঘণ্ট: ।।

बीएकः भुः भृष्ठवःमः। ইভিছেম-हम्मुः॥

রীচা জী অবজ্ঞা। ইত্যনর:॥ রীণ ত্রি সুত্রজ্বাদি। ক্ষরিত। ইত্যমর:॥

त्री जि: की जात्रक्रेः ॥ भुहातः ॥

गुन्तः । इठ्डमदः ॥ लाइकि छै॰ ।

इठि भिति ॥ प्रवेशापिमणः ।

इठि भद्रिः ॥ भीमा ॥ जुदगः ॥

गिरुः ॥ स्वादः । लादमुभर्यक्रिः ।

गिरुः ॥ स्वादः । लादमुभर्यक्रिः ।

गिरुः ॥ स्वादः । लादमुभर्यक्रिः ।

गिरुक्तिः ७ महतः १ तभ्य खुः ৮

यर्थः २ मर्गः २० निमर्गः २२ भी नः

)२ मङ्बु॰ ३० नःनिष्दः १८ । ইতি হেৰচন্দু:॥#॥ কাব্যস্যাত্ম। । ইতি বামনসূত্রণ।। গুণভেদেন ত-विভागमार । ७जः गुनार माधू-ৰ্য্য গুণ ব্ৰিতৰ ভেদতঃ। গৌড বৈ-मर्ज्य नाकान त्रीज्यः পরिकीर्जि-छाः ॥ भुज्जात्वरेनवाः वक्तगानि यथा। ७वः नगामङ्ययुः भाःम-লং পদভাষ্ত্ৰৰ । ব্যক্তাৰ্থপদ নগা-नाः भुतारः भविकीर्खितः ॥ भ-पार्थाया त्र त्र त्र विश्व क्षेत्र क्षेत्र की खि-छ । **नर्दाकावन**न्द्र यम्ग्रान्द्र তদভিধীয়তে॥ সুশাব্য মণি গ-स्रीतः भुगम मूलनागदः। भुानाः यथा। कान्य भारत्य १ श्राहमी पान्ता युष्टा सम् । विवाह्तर । नाः व्रव ख्यमा व छ। जूनत्त्रकी मनागनः া উপন্যগর যথা। তদ্বি ভ্রদধর चामू नाविममविष्मा कनाः । वमूभा-याः मूका जावास्वा सर्गः विदानवः ॥ मकानक्त्रा॰ एए महाचक्नूश्राम ভाষর । दर्गावृद्धि द्रनुशामः भार शाप्त विधीया ॥ भनावृज्जि यमक मानि मध्याष्ठ मर्द्रगः। #॥ करमण दी जि व्यापामू मा इद्यानि । গবেশত্ত্ব তরত্ব সত্বত হটাজ্টাগু জাগুৎকৃণি সূত্রৎ ফুৎকৃতি ভীতি

সমৃতি চন্দ্রার স্বর্থ সমুসা।। व्याननराम् उवानिकाः विषय्ञी हि ত্তে গিরীশ পুভো স্থাণ পায়ামব नक्रम ভগবতी वृद्धावे शार्त তী।। ভবতো বিরহ্ব্যাধি মধিশ-मा अमुमा। कामिनी यामिनी-কান্ত কৃতান্ত মিব পশ্যতি।। হ सानि मडामनिवृद्धरा १मा: कि॰ তালবৃষ্ণ তরলীকরোবি। উত্তাপ এষোম্বরতাপহেতু র্নতক্রবে। নব্য-জনাপনেय: ॥ ইভি কাব্যচন্দ্রা॥ রীতিক ল্লী পুল্লাঞ্জন।ইতিরাক্ত নির্ঘণ্ট:।। রীতিকা अो ञ्जूमाঞ্জন•। ইতি मफ्ठिम्का ॥ शिखन्छ ॥

শদ্চন্দ্রকা॥ পিত্তলঞ্চ।। রীতিপুস্ল ল্লী জসুমাঞ্জন । ইত্য মর: ॥

রীব শ্ব ঞ চীবে। ইতি কবিকল্ল-দ্দন: ।। শ্ব অরিরীবৎ ঞ রীবতি রীবতে। চীবো গুহণ সংবরণযো:। ইতি দুর্গাদাস: ।।

ক ল ধ্বনৌ। ইতি কবিকল্লজন: ॥ ল রৌতি রবীতি পক্ষী। ইতি দুর্গাদাস:॥

ক্ ড বধে।। গত্যা । ইতি কবি কল্লজন:।। ড রবতে। ইতি দুর্গা-দাস:।। कः भू॰ भयः। ইত্যেক। क्याँ विकास संविधाः
करुः जि वस्भुषः। ইতি भयम संविधाः
कर्वे जी (भाजा।। पृष्ठिः।। ইहा।
ইতি শেষর হাবলী।।
कर्वे जी (दागः।। पीछिः। ইত্যभवः।।

ৰুক্পুতিক্রিয়া জ্রী চিকিৎসা। ই-ত্যমরঃ।।

ক্ষা ক্লী কাঞ্চন।। ধুসূরণ। ইত্য-নর: ।। লোহণ। ইতি নেদিনী ।। নাগকেশরণ। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।। ক্ষাকারক: পুণ স্বর্ণকার:। ইত্য-নর: ।।

কন্মান্তদ: পু॰ রাজবিশেষ:। যথা
। অত্তি কলিক্বিষ্ঠে কন্মান্তদা
নামা নরপতি দিগ্রিজ্যব্যাপার কমেণাগত্য চন্দুভাগানদীতীরে সমাবেদিতকটকো বর্ত্তে। ইত্যাদি
হিতোপদেশে ১ পরিছেদ:।।

क्बिप्रेर्भः भू वनाप्तरः । ইতি इनागृधः॥

ক্দ্মিদারী পু• বলদেব:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

ক্ল্মিণী জ্ঞী কৃষ্ণমহিষীবিশেষ: । তৎপর্য্যায়:। ই: ২ রমা ৩ সিন্ধু জা ৪সামা ৫ চলা ৬ হীরা ৭ চঞ্চলা ৮ व्याकिनां श्री २ हमना २० हिम्स् वा २० विश्वी: २२ शमान्या २० शमां २८ कमना २८ ज्ञी: २५ हितिनुया २१ । इठि किं। पद्मः ॥ अम्प्रा विव-त्रंगः यथा । विष्ठंत्राका धर्माजा छीमाकानाम धार्मिकः। वज्य उम् भूजास नामा कम्प्राप्यः मूखाः ॥ उत्रा भवतका कन्न्राप्यः मूखाः ॥ अविकाग्याजिता । कम्बाग्यः मुखाः ॥ स्विवि । कम्बाग्यान मस्त्राप्यः । स्विव भाविति ॥ इति भाष्मास्त्र-थास ५१ अध्यायः ॥ ॥ सर्गकीती । इति त्राक्षनिर्यः ॥

কল্মিণীবৃত লী বৃতবিশেষ: । যথা
। স্তউবাচ। জামদাঃ: সমাকণ্
রমাণতা পুল গদ্ধিনী । কল্পেরভিমত বৃদ্ধা কার্যক্ষক্মিণীবৃত ।।
বৃত্তন তেন চরনা পুলাচ্যা স্ভগা
সতী। সর্বভোগেন সংযুক্তা বৃত্
হ্বিয়েটাবনা।। শৌনক উবাচ। বিথান বৃহি মে স্ত বৃতস্যাস্য চ যৎ
ফল । পুরা কেন কৃত থর্ম্য ক্
ক্মিণীবৃত মুক্তম ।। স্ত উবাচ। শৃণু
বৃদ্ধন্ রাজপুলী শ্মিষ্ঠা বার্ষপর্বণী
। অবগাহ্য সরোনীর গোমণ হর

মপশ্যত।। সা স্থীভি: পরিবৃতা प्रविधाना ह मन्गठा। मञ्जूबीना मम्थाय भर्ग्रषु र्वमन छउरे।। उब শুক্রস্য কন্যায়া বন্তব্যভ্যাস মা-ত্মনঃ। সংলক্য হ্লিতা প্রাহ वनने जाक जिक्क् कि।। इंडि मानव কন্যা সা দাসীভি: পরিবারিতা। ভা ভস্যা বাসসা বদ্ধা কূপে ক্ষি-প্তা গতা গৃহ• ॥ তা॰ ক্পমশা॰ क॰ म्की बनाथी नह्याञ्चः। क्रत-ম্পা, সমুদ্ত্য পাছ কান্ত্ৰ বরান-নে।। সা শুক্রপুত্রী বসন পরিধায क्रिया ভिया । भर्मिश्रया क्उ॰ मर्ब॰ भार दाकान भीक् शे॥ ययाजि স্তদভিপাৰ জাত্বানু বুজ্য শোভনা• । व्यापाना जाः ययो (गरुः उन्।ः পরিণযাদ্ত:॥ সাগত্বা ভবন শুক্র• भार भिर्मिश्रया क्उ॰ । उहुदा **स**-निज विशु वृषभद्दांश मान्न्यन्।। দণ্ড্য মাণ দণ্ডয বিভো রোষো য-দ্যন্তি তে মযি। শর্মিষ্ঠাণ বাপ্যপ-কৃতা॰ স্ক যন্মনসেপ্লিত ।। ব্লাজান পুণত পাদে পিতু দৃ ষ্টা ক্ষাবুৰী । **(एवरानी द्विय॰ कन्या सम मार्गा छ**-विविधि ॥ सभानीय छमा ब्राजा मा-স্যে তা॰ বিনিযুক্ত্য স: 1 যথে নিজ-गृहः ज्ञानी रेपवः शत्रमकः स्वत्।

ভত: শৃক ভমানীয় ব্যাতি পুতি-लामकः। उरेब मरही जाः विधिवः रम्वयानी • जया मह ॥ मङ्ग शुक्-**নৃপণ বিপোপে**গনাণ রাজসুতাণ বদি । भगत नगत जारा कड़ा दा मूनः ভোক্ষ্যতি॥ শুক্ষৈয়তবৃচঃ শুরু। রাজা তা॰ বরব<sup>্র</sup>নী॰ **। অদৃশ্যা**ণ ऋालयामात्र (एवयानऽन्गाः जिया ।। সা শর্মিষ্ঠা রাজপুত্রী দুঃখ শোক ভयाञ्चा। निज्यः नामीमजाकीना দেবয়ানীস্তসেবতে ৷৷ একদা সা বন-গতা ৰুদ্ৰী জাহ্নবী**ত**টে। বিশ্বা-মিত্রণ মুনিণ সা তণ দদৃশে জীভি রাব্ত ।। বুজিন পুণ্যসন্ধাভি: সুক্ भा**ভि:** সুবাসিত । काद्वयष्ठ वुड बान्य ध्रम हीरमा**न शादिकः ॥ वि**-स्मायाष्ट्रम्बः शमाः (विविकायाः मू-চিহ্নিত । রম্ভাপোতৈ শতর্ভিস্ত চতুষ্কোণ বিরাজিত। বাসসা নি-ম্মি তগৃছে শ্বৰ্ণপট্টৈ বিচিত্ৰিতে॥ নি-র্মিত জীবাসুদেব নানারত্র বিষ-উত্ত । পৌৰুষেণ চ স্ক্তেন নানা गत्त्राप्तरेकः भूटेजः ॥ शकामृटिः পঞ্চগব্যৈ র্যথা মক্তৈ দ্বিজেরিকৈ:। স্থাপযিত্বা ভদুগীঠে কর্ণিকাযাণ পু-পুজ্বন্য পঞ্জি দ<del>শ</del>ভি র্বাপি বো ডলৈ ৰূপচারকৈ:। পান্য মধুশুম-।

**च्रतः भी**जनः मृगताच्ये । भन्नमान नमरक्रनकः शृहागः शत्रासम्बद्ध । पूर्वा চন্দ্ৰপদ্ধাচ্য মৰ্য্যযুক্তণ পুষত্মতঃ ॥ गृहान कन्मिनीकां जुलम्मा मम भुक्ता। नानाजीर्थान्छवः वाद्रिः <del>म</del>ु-পদ্ধি সুমনোহর ।। গৃহাণাচমনী र्यं द भी निवास लिया सह। नाना সস্মগন্ধাচ্য সূত্ৰ পুথিত মুভ্ৰম'।। वक्ः (लाजाक्त्र गिक भाग) नय সরেশ্বর । তন্ত্রসন্তানসন্ধানরচি-छ वन्सन इस्त्र ॥ गृहानावद्रन **णुषः** निदावद्ग मितुर। राज्जम्ब মিদ° ধ্বে পুজাপতি বিনির্মিত । গৃহাণ বাসুদেব ত্ব কন্মিণ্যা রম্যা সহ।। নানারত্র সনাযুক্তণ স্বর্ণমুক্তা-ि विष्ठि । श्रियमा जरू (मदि**ण** गृ-হাণাভরণ মম।। দধি ক্ষীর ভডা-मारि भूभ वाषु क थ ७कान्। गृहान ক্ৰিণ্টানাথ সনাথ হৰু মাণ পুভো ॥ क्श्रांश्क्यकाष्ठाः श्रामानम्त-माक्कः। धूनः ग्राग वद्रम रेवमर्डा পূিৰ্যা সহ। ভক্তানা গেছ সকা-ना॰ जः जात्रश्रीखनानमः ॥ ही श মালোক্য বিভো জগদালোকনাদ-त । मार्गममृन्दत भद्याक भी जा यत ठजूर्ब ॥ भूशमः भाहि (मरव**म** ৰুশ্মিণ্যা সহিতাচ্যুত। ইতি তাস।•

. तुज मृड्ढा म्नि मदा मृपूःथिजा।। শৰ্মিষ্ঠা নিষ্টবচনা কৃত্তাঞ্জলি ক্বা-**ठ छा: । नर्बिक्शिबाठ । ब्राबन्बी**॰ **पूर्लगा॰ मा॰ बामिना পরিবজ্জিতা॰** া ভাতৃ মৰ্হণ ছে দেব্যে বুতেনানেৰ া কর্মণা।। শুদ্ধা তু ভা বচ গুস্যা: কা-्रक्गाह कियट कियट । भूरकार्भकः রণ<sup>,</sup> দত্বা কার্যামাসু রাদ্রাৎ ॥ বুত ক্রা ভূ শর্মিষ্ঠা লল্লা যানিন মীশর । সূত্রা পুঞান্ সুসম্ভপ্তা সম-ज् भित्रयोवना ॥ त्री जा **जात्माक** বনিকানথ্যে সরম্যা সছ । বুত্ত কৃত্বা পতি॰ লেভে রাম• রা**ক্ষস**া नामनः ॥ वृश्रमध्नुभाष्मन कृत्वृषः দৌপদী বুত । পতিযুক্তা দু:খমৃক্তা वज्र इत्रायीयना ॥ जथा द्रभा नि त्व भाक्ष्य देवनात्थ दारमी दित्त । काममग्राष्ट्रज• ठाक नृर्ग• वर्षठजूहेय• ।। পউসূত্র করে ব্রদ্ধা ভোজবিত্ব। विजान वर्न। जुका रुविवार कीता क प्रिष्ठ सामिना मुक्र मर्जु जूरक পৃথিবी॰ সর্বা মপ্রা॰ বঁজনৈ বৃতি।। স। পূত্ৰী সুষ্ধে সাধী মেহমাল। वलाष्ट्रको ॥ (हवाना मूलकर्खाद्रो यः জ্ঞদান ভপোবুতৌ। মহোৎসাহৌ মহাবীর্য্যৌ সূভগৌ কল্পিসমতৌ ॥ বুতবর মিতি ক্রা সরসম্পৎ সমৃ- 🏻

শা ভবতি বিদিতত বৃ প্রিতা পূর্ণকারা । হরিলরণসরোজখনদ ভক্তেকভানা বুজতি গভি নপ্রাণ বুদ্ধবিজ্ঞৈ রগন্যা ।। ইভি কল্লি-প্রাণে কৃষ্মিণীবৃত ৩১ অধ্যায়।। কৃষ্মভিত্ পু বলদেব: । ইভি হেম্চন্দ্র: ।।

कि ७२ श्री तिश्काणायाः। ই उ कि कि क्षण्यः।। श्री ति विश्व अनु वा-गिविष्णयः। उव यम्प्रान् वाग सम्प्र मण्युतानवः। उ व्याहात स्मः पूज् कार्व। २ सक्षणः। ই ति मूर्गातामः कृष्ठकः क्षी मर्जिकाकावः॥ स्मया-जवनः॥ मान्युः॥ स्मोवहनः॥ मास्रम्पुत्रः॥ दे ८ कृष्टः। ই उ ं त्निरिनी ॥ सार्क्ष्यः । इंडि भद-त्रज्ञावनी ॥ द्वाह्मा ॥ विषकः । इंडि (स्महम्मुः ॥ नव्यः । इंडि सात्रावनी ॥

क्ठकः भू वीबभूतः॥ निकः॥
म्हः॥ करभातः। ইতি मिनी॥
क्ठा जी मीछिः॥ भाजा॥ ইहा
॥ भातिकाभूकवाक्। ইতি भन्न
तज्ञावनी॥

कृष्टिः श्वी व्यक्षित्रकः। व्यनुत्रागः व्यामिक र्वा॥ म्णृशा व्यक्षित्रागः॥ गुज्रुखः। कित्रगः। इज्यमत्रज्ञत्वो ॥ (माजा। इजि मिनित्री॥ वृज्रुक्षः। । इजि (इम्मान्तुः॥ (गाद्माम्ना। इजि त्राव्यनिर्मण्डः॥ व्यक्षिम्नितः। स्वारं। उल्लब्धनः यथा। नायिकाया नायकम्य मन्मूर्थ जाद्यः क्ष्मयूर्यः भविन्य वक्षमि विकामाञ्जः॥

কচি: পু॰ পুজাপতিবিশেষ:। সচ
রৌচ্যননুপিতা। যথা। মার্কণ্ডেয
উবাচ। কচি: পুজাপতি: পূর্বণ নির্মানো নিরহক্তি:। যবাস্তমিত-শারী চ চচার পৃথিবী নিমাণ।। অন্ত্রিমনিকেতন্ত নেকাহাবস্থা-শুরণ। বিমুক্তসঙ্গণ ত॰ দৃষ্টা পোচ্য স্থিপিতরো মুনিণ।। পিতর উচুং।

বৎস কমাৎ ত্বয় পুণ্যো ন কৃতো-मात्रमःगुरः। यगीनवर्गारुज्ञावक खनानिण विना ॥ गृशी नमख (प-वानाः निज्नाक उषाईगाः। अवीगा মতিথীনাঞ্জরন লোকানুপাশুতে ॥ बारकाहात्रगरका रहवान् बरशहा-রণতঃ পিতৃন্1 বিভৱ্ষদানেন জু- 🕹 जाम्यानिक्शीनिशा म पुर प्रवाम्-गावकः वक्षमयम्गाम् नि । व्यवाद्यां-সি মনুধ্যবিভূতেভ্যক্ষ দিনে দিনে ॥ व्यनूरभाष्य मुजान् (प्रवानमञ्जर्भ) পিতৃ তথা। ভ্তাদী শ্চ কথ মৌ-ঢ্যাৎ সুগতি গম্ভ মিছসি॥ কচি-ৰুবাচ। পরিপুছো ২তিদু:খায পা-পাৰাধোগতে তথা। ভৰত্যতো ম-या भूई॰ न क्छा मात्रम•गुरुः ।। भु-ক্ষাল্যতে প্নুদিব্স ব্দাত্মা নিম্ন-রিণুহৈ:। মমত্বপক্ষদিধোপি চিন্তা-स्त्रां वृद्धः हि उर ॥ इठानि ॥ পিতর উচু:। যুক্ত পুক্ষালন করু भाजारेया नियरजन्मिरयः। किन्छ । পায় নাৰ্গেষ্টি যত্ৰ ত্ব পুত্ৰ বৰ্ত্তসে ॥ इंड्रामि॥ 🗱 🕽 मार्क(अय উवाह । স তেন পিতৃবাক্যেন ভ্শমৃদ্ধি गानमः । कन्याञ्चिलामी विशुर्विः পরিবভাম মেদিনী ।। কন্যা মল ভ-মানো হসৌ পিতৃবাক্যাগ্রিদীপিত:।

)চিভামবাপ মহতী মতীবোদিয় মা<sup>⊢</sup> बनः।। कि कात्रीम द गहामि कथः म नात्र मः गुरुः। कि भुः खरदः भिः जुंशा था ममाजुरमयकात्रकः॥इंडि ্চিন্তৰত স্তস্য মতি জাতা নহাত্মন<u>ং</u> । उभना द्रावयास्त्रान-तुकान-कम-त्वान्तर**ा। उत्ता दर्यनंडः रि**व्यः उभाउरल मरिवधमः। विवृक्तः मृष्टि-तः कालः कि नियम माश्चितः h ভতঃ ম্বন্দ্যানাস বুক্কা লোকপি-তানহ:। উবাচচ পুসলো হমীতু চ্যতা মভিবাঞ্চিত।। ততো ৎসৌ পুণিপভ্যাহ বুক্ষাণ জগভ: পজি । পিতৃণা•বচনাত্তেন য**েক**ভূ<sup>′</sup>মভি-बाक्ष्डिं।। वुक्ता ठाइ कि विभुः শুক্লা ভদ্যাভিবাঞ্ছিত। পুলাপতি ন্ত্ৰণ ভবিতা সুষ্টব্যা ভবতা পুলা: ॥ मृक्षा भुकाः मृजान् विभु म्यूरशाम्। किया ख्या । कृदा श्वाशिकात खु ততঃ সি**দ্ধি** মবাপ্ল্যাসি ॥ সৃদ্ধু য থোক্ত পিত্তি: স্কু সের্গরিগুছ্ । কামঞ্চেম নভিধপ্নয ক্রিযতা• পি তৃপুজন ॥ তএর তুষ্টা: পিতর: প্রদাস্যত্তি তবেপ্লিত । পত্নী স্তা শ্চ সন্ত্ষ্ঠাঃ কিং ন দদুয়ে পিতানহাঃ ।। মাৰ্কণ্ডেণ উবাচ। ইত্যুষি ৰ্লচন• শ্রহা বুন্ধণো ধব্যক্ত কল্মনঃ। নদ্যা

বিবিক্তে পুলিনে চকার পিতৃ তর্পক ॥ তুষ্টাৰ চ পিতৃন্ বিপু: স্তবৈ রেভি রথাদ্ত:। একাশু: পুষতো ভূত্বা ভ-ক্তিন্মাত্মকো কচিঃ॥#॥ কচি কৃত পিতৃত্তোত্র• যথা। কচিক্বাচ। নম-**ন্যেহ॰ পিতৃন্** ভক্ত্যা যে বসম্ভাধি-্দৈৰত । দেবৈ ব্লপি হি ভৰ্প্যন্তে र्य भाष्क्रय यथा उदिः ॥ नमामाङ् পিতৃন্ ৰৰ্গেযে ভৰ্গ্যন্ত নহৰিভি: 1 भारिक र्यानारीय जंकता जुकि मुक्ति মভীপ্সুভি:া৷ নমস্যেহণ পিত্ন্ ষ্ঠে সিদ্ধাঃ সন্তর্গরন্তি যান্। শান্তেযু मिटेवाः अकटेन क्षार्शित त्रमुख्याः॥ নমস্যেহণ পিতৃন্ ভক্ত্যা যে ২চ্যন্তে एश्रोक मिति। जन्मगर्वन वाकृष्टि র্শবিমাত্যন্তিকী পরাণা ননসে ছ পিতৃন্ মতৈঁ। রচ্যন্তে ভূবি যে সদা। मुाष्क्यू मुख्या छोडे (लाकशृहिल्-मायिनः ॥ नमस्मार्कः भिज्न विले রঠ্যন্তে ভূবিযে সদা। বাঞ্চিতাভী প্র-লাভায পুাজাপত্যপুদাযিনঃ।। নম-স্যেহ• পিতৃন্বিপু রচ্যন্তে হরণ্য-वाजिन्धिः। वरेनाः मारेक यजाकारेत खरना निक् उक्नारियः ॥ नगरम। इ॰ পিতৃষ্ বিশৈষ্টেনিষ্ঠিকবৃত্তধারিভিঃ। যে সংয্তাত্মভি নিত্যু সভল্যুত্ত সমাধিভি: ॥ ননসে,হ' পিতৃন্

भाषा द्राइन्। सर्वरिष्ठ यान्। करैवर त्राणीय विधियालाकषयक**णभूमा**न्।। नमरमाइ॰ शिकृत् विरेमा त्रहां जु-वि (यं मरा। त्रक्यां जित्रहें विंजुः পুয়ধুপানবারিভি: ৷৷ নমস্যেহ পি-जून मुगस्क य मृरेषु त्रिन ७ कि छः । সভৰ্গ্ৰে জগভামিন্ নামা খ্যাতাঃ 'সুকালিন: II নৰ্মন্যেহ° পিজুন্ <mark>শ্</mark>ৰাব্দে भाजात य महाम्दिः। महर्गाष्ड चथाशात्रा छऽक्तस्त्रभरेतः जनगा। न মস্যেহ পিতন শালৈ রচ্যন্তে যে র-সাতলে। ভোগে রশেকৈ বিবিধ नीरिगः कामान जीक्ष जिः ॥ नमर्गः হু পিতৃন্ শুদ্ধে সপৈঃ সম্ভূপিতান্ সদা। তবৈৰ বিবি**ধৈ ম্ব জৈ** ৰ্ভোগ ,সম্প**্স**মন্থিত: ।। পিতৃন্নস্যাস্থ নিবসন্তি সাক্ষাদ্যে দেবলোকে হথ नही उत्न वा। उथा खती कि ह मुता-मि প्<sup>क्रा एक</sup> म॰ भुजीह हु मरगाभनी-ত।। পি ভুরনসের পরমাণুভুত। ধে-रेव विचारन निवनश्चमूर्जाः । यकासः यानखभना म्लाजि (याभीश्रद्धाः ক্লেশবিমুক্তিফেতৃন্।। পিতৃল্নসেঙ-দিবি যে চমূর্তাঃ স্বধাভূকঃ কান্য कवाञ्चिमको। भूगानणकाः नकः লেপ্লিতানা বিযুক্তিদা যে ২নভি **স**ংহিতেরু॥ তৃপ্যন্তুতে হমিন্ পিত

तः সমস্তা ইছাবতা । य পুনিশ **উ**( काभान् । भूद्रव् मिन्मुव् भराविकः বা বৰাজালান্ স্থানবলাং গৃহাণি 🔢 भूर्यामा रव ब्रान्पायू हन्मुविस्य भूद्भि বিমানে চ সদা বসন্তি। তৃপ্যন্ত তে 🈜 মিন্ পিতরোলতোবৈ র্গন্ধাদিন। 🖓 भूडिमाला <u>द</u>ुक्छ ॥ यया॰ इरड **২**গ্ৰৌ হবিৰাচ ভৃপ্তি যে ভুপ্তাতে বিশু শরীর স•স্থাঃ। যে পিগুদানেন মু<sub>ং</sub> দ পুষাম্ভি তৃপ্যস্ত তে ২মিন্ পিত-(द्वा • चाठारेयः ।। (य चन्नमाण्यन मूरेत त्रजीरें: कृष्क खिरेन रेर्नजा मरहाद्रोगणः। कारणन भारकन म-श्विवेर्याः मःश्रीनिका एव मुसमज याख ॥ कव्यान्यानवानि ह यान्य-ভীষ্টান্যতীব যেবা মমরাৰ্ছিতানা । তেৰান্ত সালিখ্য মিহান্ত পুল্লগন্ধা-**रि ভোজ্যেयू मसाङ्**छियू ।। क्रिस्ब **दित (विश्वेश) हैं (उ**र्हा॰ भागांड পূৰ্যা ভুবি যেপ্টকাসু। যে বৎ সরান্তে **२**ज्रासरक म्ब्राः भुगास ए । পিতরে। ২ত্র ব্র্প্টি॰ ।। প্র্যা দ্বিজা-ना॰ अनुहिन्मु जारेना एव कवियाना-एक नवाकंबर्णाः । ज्ञथा विन्नाः रव कनकावराजा नीनीनिष्ठाः मृपुष्ठन-স্য যে চ ॥ তে হিমন্ সমন্তা নম পুল্লগন্ধ ধুপান্ন ভোষাদি নিবেদনেন

)। उथाधि (शासन ह या छ ज्थि जरा | পিতৃভ্য: পুণতোমি তেভ্য:॥ य দেবপূরাণ্যতিতৃপ্তিহেতো ক্র্যানি শুভাজ্তানি। তৃপ্তাশ যে ভূতিস্জো ভবন্তি তৃপ্যন্ত তে ৎমিন্ পুণভোমি তেভ্যঃ।। রক্ষা সি ভ্তা निर्मुत्रा ख्राथागान् विनामश्रः कु बिदः भुकानाः । जाम्यः मृजाश ম্মরেশপুজ্যা স্থ্যান্ত তে ৎবিদ্ পুণভোমি ভেভ্য: ৷৷ অগ্নিয়াভা ক रिवर बाब्राभाः (माम्भा खबा। বুন্ধত তৃথি শুন্দে হমিন্ পিডর ন্তর্পিতা মধা।। অগ্নিয়ান্তা: পিত্ গণা: পাচী রক্ষন্ত মে দিশ। তথা বহিৰদ: পান্ত যান্যা যে পিতর: **इ** जः॥ नुजीही माक्राना उद्यूपीः চী মপি সোমপা:। উদ্ধৃ ত স্তর্য্যমা ब्राक्रं कवादाला १नालाभाषः ॥ রকো ভ্রু পিশাচেট্য উথেবাসুর দোৰত:। সৰ্বতশ্চাধিপ ভেষা; ব-भा त्रका॰ करताज् भा । विश्वी विश्व-ज्गादात्या श्वा अर्थः अनाउनः। ভূতিদে৷ ভূতিকৃন্তুতি: পিছুণা ফে ग्रा नव् ॥ कन्यानः कन्यानः कर्जा कनाः कनाउत्राम्यः। कनाउारिः তু রনকঃ ষডিতেগতে গণাঃ মৃতাং।। वात्र। वात्राना वत्रम खिलः भूष्टिम

ত্তথা। বিশ্বপাতা তথা ধাতা সপ্ত हिट गगाः म्ञाः ॥ महान् महाजा महित्ा महिमावान् महावनः । गनाः भक्ष जरेषरिवरङ भिज्नाः भाभ नामनाः ॥ मृथामा धनमण्डात्ना धर्म-দোন্যে বিশ্তিদ: ৷ পিতৃণা কৰ্য-**उ हिउल्ला गगठ**जूडेग ।। এक्रकि. भट निज्नना हैय वंशास मथिन ब-গৎ। তেনে ধক ভৃগ্ড কব্যন্ত यह छ ह मनीहिन ॥ देखि मार्का अगृतात রৌচ্যে মন্বরে পিতৃত্তবং।। 🛊 ।। 🕮-মাৰ্কভেষ্ উবাচ। এবন্ত ব্যবত স্থস্য **ठिकाम। द्रामि क**हिथः । भाष्युर्वज्य नहमा गगनवा धिकातकः॥ उपृद्री मूगर्खनः नमाहार। इ उ नगर । জানুভ্যা মবনি॰ পত্না কচিঃ ভোত্ৰ भिनः काणी ॥ अमृडीनाक म्डीनाः পিতৃণা॰ দীপ্তভেলসা॰। নমস্যামি সদা তেবা প্যানিনা দিব্যচক্ষ্বা ॥ इन्द्रामीनाक (नठाता मक्तमाती-हर्या ख्या। मधरी ना ख्यात्रवा॰ ভাষ্মস্যামি কান্দান্ ॥ ম্বাদীনা-क (नजातः मूर्य) हन्तु मरमा खथा। তান্নস্যান্যহ সরান্ পিতৃনপ্রণ-तियु ।। नक्कजानाः गुरुनाधः वागृति नज्ञाः जथा । म्यावामृथिरव्याक एथा नम्भागि क्ठाञ्जनिः॥ पुकाः

পতে: কশ্যপায় সোমায় বৈশ্বীয় চ া যোগেখরেভ্যক্ত তথা নমস্যামি কৃতাঞ্জলি: ৷৷ নমো গণেভ্য: সপ্তভ্য खवा (नारक्यू मधम् । स्यस्रुत्व नम-भागि वृक्तरा यागवक्ष्य ॥ (भी মাধারা: শিত্গণা যোগমূর্তিধরা হি তেন ন্যস্যামি ভতঃ সোমঃ পি-ভর জগভামহ ।। অগ্নিক্শা ভথৈ বান্যাল্মস্যামি পিতৃনহ•া অগ্নী সোম্ময় বিশ্ব যত এতদশেষত: ।। যে তু তেজনি যে বাযৌ সোম সৃ र्याश्चिम्ख्यः । जगरमकारिकत তথা বুক্ষম্বলিশ: ॥ তেভ্যো হথি **লেভ্যো**য়োগিভ্যঃ পিত্ভ্যোয়ত্তনা नगः। नमा नमा नमाखाम शुनीपः ন্ত ৰধাভুনঃ।। এমাকণ্ডেৰ উবাচ। এবং স্তু হা স্তুত স্তেন ভেন্নসোমুনি সন্ত্রমঃ। নিশ্চক্রমু স্তে পিতরে। ভা ञयस्त्रा नित्ना मन्।। नित्निरुख যত্তেন পুষ্ণগদ্ধানুলেপন•। তদ্বি-তানথ সতান্দদ্শে পুরত: স্থিতান্ ।। পুণিপত্য কচি ভক্ত্যা পুন রেব ক্ ভাঞ্জলি:। নগস্তভ্যু নমস্তভ্যু নি **छ्यार् भृष्गाम्**जः ॥ **उउः भूम**माः ্পিতর ভন্চুমু′নিসভম•। বর• বৃণী-ষ্বেতি স ভানুবাচানতকল্পর:।। সা-म्युक मर्ग कर्व् व नाति है वुक्तना नम

। (मारः भन्नी मजी भामि बन्।। मि-( ব্যা॰ পুজাবতী॰॥ পিতৃর উচ্:। ব रेर्द्रिय जर्द्रः भन्नी एउ खविष्ठा विन নোরনা। তস্যাঞ্চ পুশ্রো ভবিতী खराङा मूमिमखम्।। मन्डद्राधित्याः धीमान् वृत्तात्यां विकास । क्ष রৌচ্য ইতি খ্যাতি প্রাস্যতি স পত্ৰে।। ভদ্যাপি বছবঃ পুত্ৰা মহা-বলপরাক্রমা: । ভবিষ্যন্তি মহা-আনঃ পৃথিবীপরিপালকা: ॥ उक পুলাপতি ভূবা পুলা: সৃষ্টা চতুর্বি थाः। की गाधिकादा धर्मा छ । ख उः मिक्षि म्वाञ्चानि ॥#॥त्याद्यगानन চ নরো যোম্মাণস্তোষ্য**তি ভক্তিত:।** তস্যতৃষ্টা ব্যা ভোগান্ দাস্যামো-জ্ঞানমূত্তন॰ ॥ শরীরারোগ্য মৈ-यर्ग्यः भूध (भोजाहि मञ्जि । भू-मात्राभा न जल्माङ्। यहान्।मञ् वाक्षित्री उचार भूगा कन लाक বাণ্ডি: সভত নরৈ:। পিতৃণাঞ্চা-क्रयाः वृद्धिः खर्जाः खाख्य मानः वि:।। भाषा ६ य हेम॰ ভক্ত। जः बर भी ठिकत खेव। भिर्वेष हि-জাগুগণা ভূঞ্জভা পুরভ: স্থিতা: ।। ন্তোত্র শুব্ব সংপ্রীত্যা সন্নিধানে পরে কৃতে। অমাভি রক্ষণ শাহ্র ভন্ডবিষ্যত্যসংশ্য• 11

श्लाबिक भाषा वर्ष्यपुरमहरू क्रांत्र्य चानाः । जानाः विष्य वा क्छ मनाथा ॥ अनुष्कारिस कन-्रहरे उक्त हारेब्र खबा क्छ । व्यकाः क रमाध्या परम विविद्यीन मधाः िनिवाः।। अनुष्वयाना शूकरेट म्छ मा िणुं इर वा क् इर । व्यवाक भी अरंप मासः ज्यारगाजपूरीवराया ॥ योव-তৎ পঠ্যতে भाषा खाज मयर म् थावरः। अमाकः बाग्रं ज्थि उव बार्णवार्थिकी।। (इमस्य बार्णाकाः নি তৃপ্তি মেতৎ পুষছতি। শিশিরে দ্বিভণাদানি তৃগ্ডি স্তোক্ত মিদ শু, ভ॰।। বসভে বোডশসম। ভৃগুবে শু।-क्रकर्पा । श्रीत्य ह साउटेमदेवड८ পঠিত ভৃগ্ডিকারক ॥ বিকালে চ কৃতে শুংদ্ধে স্তোত্তেণানেন সাধিতে। বর্ষাসু তৃপ্তি রম্মাক নক্ষ্যা জায়তে কচে।। শরৎকালেপ<u>্রি পঠিত</u> শা क्षकात्व भुगह्छि। समाक भिष्ट न्बरेष ख्धिः नक्षमामिकीः॥ य-মিন্ গৃহেপি লিখিত শেতভিৡতি निजामा। निम्यान कृत्व मुहस्स ত্রামাক ভবিষ্যতি ৷৷ তমাদেত े ভুষা শালে বিপাণা ভুঞ্জতা। পুর: । শাবণীয় সহাভাগ অমাক তুঙ্কি কারক ॥ ইভি মার্কণ্ডেরপুরাণে 🏻

রৌচ্যে মহন্তরে পিভৃতবে 🏗 🤁 🛚 মার্কওেয় উবাচ। তত ভ্রমান্দীম-भार नमूखको मतात्रमा। भाराठा नाम उन्ही उर मभील वहा अहा: ।। সা চোবাচ মহাত্মান কচি সু-मधूत्राक्षताः । भुभुगावनका मृद्धः ·পुःसाठा देव वज्राञ्जज्ञाः ॥ व्यञीवकः পিণী কন্যা মৎসূতা তপতামর। জাতা বৰুণপুগ্ৰেণ পুষরেণ মহা-আনা।। তা॰ পৃহাণ ম্যা দত্তা॰ ভা৽ য্যার্থেবরবর্ণিনী। মনু মহামতি छ। স্যা সমুৎ গৎস্যতিতে সূতঃ।।মা-কণ্ডেয উবাচ। তথেতি তেন চাপু্য-का उमारकायाद्वभूग्रञी । উक्कः হার ভতঃ কন্যা॰ নালিনী॰ নান না-মতঃ ৷৷ নদ্যাশ্চ পুলিনে ভস্মিন্স মুনিমুনিসভম। জ্বাহ পাণি বি-धिवट **जभा**नाग्र भश्मभूनीन् ॥ छः न्तरा उन्र मूला क्राब्ड महावीर्यन মহামজি:। রৌচ্যো হভবৎ পি ভু নামা খ্যাতো হত্ত বসুধাতলে।। ত म। भन्द्रद्वाद (मदा ख्या मधर्मदक्क (म । ভनगाण नृপारण्डव (७ नम)क् कथिजा खरा। धर्मतृष्टि खथारत्राग्र **बनशानामू** (जो क्रवः । न्नाः खवडाः সন্দিধ্য মন্মিন্ মন্বস্তরে শ্রুতে ॥ পি-**ভূত্তব তথা শু**द्धा शिकृगाक उथा

गणान्। नर्बान् कामानवाल्याि । छथ भुनातामः द्वा म्ता । इंडि मा-कं खिरभूदात् । द्वोठ्यमन् इद्वः ममा-छ॰ ॥ ॥ गाक् एउ ५२ । २० व्यद्याः रारभ्यस्थि ॥

কৃচিত ৰি শিইবস্ত। ইত্যাদি-কোষ: ।।

কৃচিক্**ন॰ ক্লী অমৃতান্ত্র•। ইতি** রাজনির্ঘট:॥

ক্চির॰ ল্লী ম্লক॰॥ জ্কুম॰॥ লবক্ৰু। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

ক্চির॰ ত্রি সুন্দর॰।**ইভ্যনরঃ ।।** নিষ্ট•।ইভ্যণাদিকোবঃ ॥

ক্চির। স্ত্রী গোরোচনা। ইভি রাজনির্ঘটঃ।।

ক্চিরাঞ্জনঃ প্\* শোভাঞ্জনঃ। ইতিরাজনিঘটঃ।।

किताधः प् ताकविष्मयः। मञ् (स्वालाः धण्तः। यथा। मता ज् भान काकानाः चल्रयं करु भा व-हः। किताध मृजाः भाषाः (स्वा-(भ जः मम्बर्॥ हेि कन्नि नृताल ५৮ यथायः॥ मृनस्त्रवाहेकक्।। कृतिवाः वि भिष्ठेवस्त। हेव्यामि-कायः॥ অভিপুতः। हेव्याः

क्ठी जी किटः। यथा। कक् किटी

किछनाताना दिवृद्धिः ॥

কচৰ: সমা:। ইন্ড্যেকার্থসণ্যুহ:॥ কচ্য শ্লী সৌন্ধলে। ইভি রাজ নির্ঘণ্ট:॥

**₹** 

ক্চ্য: পূ॰ কভকবৃক্ষ: 11 শালি-বান্য: 1ইতি রাজনিঘট: 11 পতিঃ-1 ইতি হেন্চন্দু: 11 সুন্রে তি 1 ইত্যমর: 11

क्ठाकन्तः अ. न्याः। ইভি রাজ-নির্যন্টা।।

ক্ষ ও ঔ শ ভকে। ইতি কবি: কল্লফম: ॥ ও ক্ম:। শ ক্ষতি রোগো হন্ত । ও রোকা। ইতি দুর্গাদাস:॥

यक क हिएत। ই ि कविक त्र कराः॥
क द्राञ्चय कि। ই ि मूर्गामानः॥
क् का जी द्रागः॥ छद्दः। ই ि
द्रिकी॥ स्रिकी। ই ि इंग्रिक्ताः
॥ इंश्रिक्ताः कि द्रिकाः

क्ताकृतः ही कर्यद्रव्यक्षः। ইভি

क्काल्द्रः भू॰ वत्रिसः। यथा । वत्रिति छुःशी क्काक्द्रः। ইতি হে-भहन्मुः॥ \

कडामहः शृ धन्नत्कः। ই ि द्राजनिर्घणः॥

কট ই তেখে। ইতি কবিকল্পন:

। প্রশাসন্মন মনী। ই কট্যতে খন চৌ-

রেণ। ইতি দুগদেশে: ॥ ফুট ক কবি।। দুগতৌ। ইতি কবি-কলুজন: ॥ ক রোট্যতি । ইতি

**मूर्गानामः॥** 

कर्ते २ ६ मिलिशु (उहर छा:। इंडिं क विकन्न इन्हा २ १ १ व्यक्ट १ ६ द्वा-हे: ७ १ श्रु (उहर ६) स्माका सिना भ उन्हें भून होनन वा १ इंडि पूर्वा-मात्रः॥

ক্ট্<sup>\*</sup> কোধ:। ইত্যমর:॥ ক্ঠ উপঘতে।ইতি ক্বিকল্পস্ম:॥ বোঠতি লোক শোক:। ইতি

मृतीरात्रः ॥

क्रे े ३ ७ शुडीवार्ड। ইতি कवि-क्तुक्रमः ॥ ३ व्यक्टे ६ उताटेर्ड । शुडीवाडः भाकादिना भठनः शू नईननः वा। ইতি দুর্গাদাসः ॥

क्ठे इ गड्यानम्प्रस्वर्थाति। इंडि कविक्त्रक्रमः ॥ भूकमस्त्री । इंक् छेऽछ । व्यानम्यः मन्ति छोदः । ख यः होर्येऽः । त्याहेः त्याह्न । इंडि पूर्वादानः ॥

कर्षे को करे। इंडि वर्गकद्मणः ॥ कणकत्रा क्षीं मृथमान्दाका लोः । इंडि भन्दर्गनुका ॥

কণ্ড: পু• কবদ্ধ:। ইতি জটাধর:।। কণ্ডিকা জী যুদ্ধভূমি:॥ ছারপি खिका ॥ विভ্তি:। ইতি শব্যক্র-वनी ॥

क्छ॰ क्री **পশ্পक्ष्यकीनाः समः।** छ<भर्यक्षयः। वा**सिङ** २। इँछु-भद्रः। वासि**ङ ०। ইङिसम्**दद्वा-वनो ॥

कर न घ हेत्र (त्राप्तः) हेि किंदिकल्लक्ष्मः ॥ (त्राप्तः) हेन्, विरमाहनः ।

व च (त्राप्तिः (व्याकः (व्याकारः) ।

हेत्र व्यक्तरः व्यातानीः । (त्राप्तिः)

वामा भावान मिठि छर्छ। वा
खान विविश्वःताननक्षियावात्रानाः

खान विविश्वःताननक्षियावात्रानाः

खान विविश्वःताननक्षियावात्रानाः

खान विविश्वःताननक्षियावात्रानाः

खान मन्धं नच्च मिठि ख्रम्मक्ष्मा।
हेठि पूर्गानामः ॥

ফ্**দথ: পূ**ণ স্বন্ধুর:। ইত্যুণাদি: -কোব:।। ছাঞ্ । ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তি:।।

करिका) खी क्ष्मुकूर्णातालयः । करती । जिल्लायाः । मुन्दलायाः र मञ्जीवनी । जम् अमुवा । द्वामा-किका द महामा मी ७ व्यामा । कर्रुष्यः । जिल्ला । जिल्ला । कर्रुष्यः । कृमि ब्रल्लाल कक चाम (मह-नालियः । द्वामायाद्यः । जम्म । व्याम । नालियः । द्वामायाद्यः । जम्म । नालियः । द्वामायाद्यः । जम्म । नालियः । द्वामायाद्यः । जम्म । नालियः । द्वामायाद्यः । जमा । व्यामायाद्यः । नालियः । द्वामायाद्यः । जमा । व्यामायाद्यः । नालियः । द्वामायाद्यः । जमा । व्यामायाद्यः । विन्त्नाः भुवज्ञीक क्षिणा। इंजि ब्राजनिर्घणेः ॥ अभ्य लगाः । क्ष्णी बङ्गिकृष्या भिज्ञी ह ब्रभायनी । देखि ब्राजव्लाजः ॥

कारिजः क्री कन्तनः। इठामदः॥ তদ্বতি ত্রি॥

क्षः वि निर्मुकात्राप्तिनाक्छ-त्रिष्ठेनः। छद्भर्यायः। विद्रिष्ठः २ वृषयिष्ठः २ मःवीष्ठः ८ षावृष्ठः ८। इष्टामत्रः॥

ৰুদুঃ পু॰ আদিত্যপত্ৰবৃদ্ধঃ।ইতি द्राक्षनिर्घण्डः॥ निवः॥ गनरम्वजा-বিশেষ:। **ইত্য**নর:।। অষণ অগ্নিমৃ र्खि:। रथा कृताय अञ्चिमूर्खस्य नमः। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্বে শিবপ্রাপদ ভি:।। স চ বুন্ধণ: ক্রোথৰপ: সৃষ্টি-कारण ज्रमध्राब्हाउः । ७८ मृष्टेः ভূত পুেত পিশাচাদিঃ। অযমেরা ন্তে সংহারকর্তা। ইন্ডি ভাগবতং ॥ 🗱॥ व्यापकारणकपुनामानि य-था। बद्धः ) এक्পांट २ वस्तुः পিণাকী ৪ অপরাজিত: ৫ জ্ঞান স্বক: ৬ মহেম্বর: ৭ বৃবাক্সি: ৮ শস্তু: ৯ হরণঃ ১০ ঈথরঃ ১১। ইতি নহাভারতে দানধর্ম:॥ #॥ অপিচ। অজৈকপাদহিবুংগ্না বি-क्राकः मूर्त्रयतः। क्रयुखा दङ्

ক্পশ্চ ত্ৰ্যম্বকো হপ্যপরাজিতঃা। বৈবৰতশ্চ সাবিজে। হরে। কদুা ইন্দের্ ষ্তা:। ইতি জটাধর:।। 🗱।। জন:ह । অজৈকপাদ হিবুগ্ন স্তৃষ্টা ৰুদুশ্চ বী-र्यायान् । एके काम्याज्यकः भूटकी বিশ্বক্পো মহাতপা: ৷৷ হ্রশ্চ বহু-ৰূপশ্চ ত্ৰ্যম্বক্ষাপরাজিতঃ। বৃধা-কপিশ্চ শস্তুক্ত ক্পদ্বী রৈবত স্ত-থা ।। একাদশৈতে কথিতা কুদুা জ্রিভূবনেশ্বরা:। ইতি গাৰুডে ৬ অ-श्रायः ॥ चार्राभुद्रातः वृक्ष्क्रातः कृः खिदामाः ॥ 🗱 ॥ यशद्रकः। यक्ति-কপাদহিবুয়ে৷ বিৰূপাক্ষো হৰ বৈ-वजः। इत्रम्ठ वङ्क्षभण्ठ ब्राप्यकण्ड সুরে খর:।। সাবিত্র্যান্চ জ্বস্তুন্চ লি-ণাকী চাপরাজিত:। এতে ক্দুা: সমাধ্যাতা একাদশ গণেশ্বরা: ॥ এতেবাং মানসানাম্ভ ত্রিশ্লবর্থা; রিণা । কোটবশ্চতুরাশীভ়ি তৎপু-वाकाकनी मेजाः॥ किक् भर्वाम् যে রক্ষা পুরুরন্তি গণেশ্বরা:। পুঞ পৌএস্ট:ত্তেত্েসুরভীগর্ভ্রসম্ভবাঃ ॥ इंडि माटरमारे विश्वायः॥ #॥ उन्। उर्भाव वंशी। नुकाः मुध्यना ख्रिल **उनः भत्र**भद्गमंत्रः । **छरेग**)वः তপ্যমানস্য ন কিঞ্চিৎ ষম্বর্ত্ত ॥ 🗇 ততে। दीर्घंग कारमन दूःथा८ कारम

ৰ্যুৰাব্**ত**া ক্যেখাবিষ্টস্য নেত্ৰা-**छ्या॰ नाश**्यम् विनरवः ॥ **७७** ৰেভেগ ২শুবিন্দুভেগ ভ্তা: পুেডা खरीख्यन्। भर्वाः खानगुबान् मृड्वे। वन्नाञ्चान मिन्स्छ ॥ उमा भागम-सा कृष: भाषृद्राजी भाषा मूर्था । নহসুদিত্যসকাশে। যুগাও দহ নোপন: ৷৷ করোদ সম্বর ধোরণ **(**मवरमव: खय॰ निव:। द्वामभान॰ ভদা বুল্ধা মারোদী রিভ্যভাষ্ড।। রোদনাক্ষু ইত্যেব লোকে খ্যাতি गिभियामि । जन्यानि मधनामानि পরীঃ পুঞা•ফ শাশ্বভান্ ॥ ছানা• नि रेहवागडानाः माने लाक शिला-महः। खदः नई खर्यनानः भण्मा ষ্পতি রেবচ।। ভীম ষ্টোগ্রো মহা **(एव छानि नामानि म**छ दि। সূर्य्या **ৰল নহী বহি** বাযুৱাকা**ল** মেৰ চ ॥ ধীক্ষিভো ব্ৰাহ্মণ কন্দু ইভ্যৈতা षक्षेम्बंगः ॥ शानम् उत्रु स् कर् थ्यायस्त्रि मन्साथिश / তেयामध्यः न् (मंदा मना**छ् भूतमः भमः ॥ ज्** वहंना जरेवायाम्। विकला ह लियां उथा। बाहा मिना ह मीका हता-হিণীক্রিচ পর্য: !! শনৈকর তথা শ্কো লোহিতাক্ষে। মনোজবঃ। जुन्दः मर्गा १० महाता दूधरेकवाः

সূতা: অ্তা:া। ইতি কৌর্মে ১০ व्यथ्रायः॥ 🛊 ॥ विक् कृष्या द्रास्टामा यथा। जरिन्द स्तर्वी क्रगदीन सङ्स-(मरवा न जंभवः। मन्राख व अभ-प्यानि विक्रिक विकृ भी धनार ॥ भार्मार्यप्रिमिशाषा (उ गांख नत्रकः नहाः। विषानुवर्खिनः अपनः (षवः नात्रायन उषा ॥ अकी डार्यन शर्माः ভিমুক্তিভালো ভবঁভিভে। ইতিচ **छदेवंद २० व्यथ्ऽायः ॥ 🛊 ॥ कन्नाफल्स** তস্যেৎপত্তি নাম স্থান ভার্য্যাদী নি যথা। চুকোপ চ ভভো বুদ্ধা জ্বলিব হুডাশন: । ভত: কোপ ৰপ্ৰেভ্য: কৃত মন্যাব্য মিভ্যপি 🛭 বিচার্য্য পরিবর্জন্ত নিবস্ত মুপচক্র-মে। যত্নামিষম্যানোপি স কোপঃ शहरमहिनः ॥ ज्ञारा र्यभाप्तराष्ट्र-**७: ब्रनादा नीन (मास्टि: 1 का**न् তमाबः बनात्रा श्लो क्ताम छ-গবান্ ভব:।। বুন্ধোবাচ কথ পু এ द्राप्तिय पु॰ स्टावन । ज्या कथ्य कान (उ महाः मन्त्रान्यानाइः ॥ क्नु উবাচ। नामानि अक म दुक्त्य স্থানানি চ অংগদ্ভরো ।। পারী ক **मिट्ट जगदन् ठठः ना**डि जिविष्ठ-**তি। वृत्कावाठ। बानामि जा॰** एव (१व॰ भूबं॰ १७॰ वत्र॰ मन।। मक्रा॰

কর্ত ভবান্জাত ন্তু হি সর্বেশক্রে थतः। बाजगाको तारिति ए ज छ। रुपु ३७ मृङः॥ नामानानाः नि एक (स्व विषारम् भूग् भूधक। अउध्रका मन् मम् अगुरह छ। सङ्गन् णियः ॥ **७वः काला महिन**स्मा ৰামদেবো খৃত্ৰুত:৷ এতানি তব ৰা মানিয়ে মরম্ভি নুরা ভূবি।। তেবাং गरिष्य कन्।। क्रियां महा মতে ৷ স্থানানি চ প্রক্যানি তেৰু वारमा विधीयजाः ॥ इन्मियागामू क्राचाम वायु त्रश्चिक भरी। छन-শ্চন্দুশ্চ সূৰ্য্যশ্চ স্থানান্যেতানি তে खव।। षृष्ठि धी ब्रिमिलामा ह नियूर সর্গি বিলাঘিকা। ইরাবতী মধা দীক্ষা যোষিত স্তব সুন্দরীঃ ॥ পুদাঃ সূত্র মহাভাগ জগদেতৎ পুপুর্য। ইত্যাধিষ্টঃ স ভগবান্ ব্ৰহ্মণা নীল कारिङः॥ मृष्ठेवान् म भुजा वस्त्री ভ্ত প্ৰেড িশাচকান। ক্ষাওান্ বিকৃতাকায় ন্ভৈরবান্ ভীগনাদিন: ।। जान् मृष्ट्री ज् उमा तुका कगिष्ट्रना-वकान् वङ्न्। वात्रयानाम भूध पुः बामाकी त्रीमृणीः भुकाः ॥ उभमा विक् गाताथा विरुत्रय गथान्य । ইতি ভে কথিতো রাজন্ ক্রদুসর্গ: পু कागरकः॥यः गुद्धांशि नदः त्रास्त्रा

कशाफु उक्ड छर।। है जि शास बर्गचरछ क्रमुमार्गा ৮ व्यव्यायः।।अ।। পুকারান্তর॰ যথা। ক্ষিত ভ্রমসং সর্গো বৃক্ষা তে হয় মহামুনে কিনু-नर्गः भूवक्तामि उत्य निगम् : मृगू ॥ कन्नामावाञ्चन सन्। मुख् भुष्ता-ষত ভতঃ। পুাদুরাসীৎ পুভো রক্ষে ब्यमादा नीवावाहिकः ॥ व्यन् रेव সম্বর সোহ্য দুব শ্চ দ্বি সন্তম । कि॰ রোদিষীতি ত॰ বুন্ধা কদন্ত॰ পুতৃ sवाह रेव ।। नाम (वशिष्ठ छ॰ (मा **ংথ পু**ত্যবাচ পুজাপতি• । ক্র<u>দু</u> স্তৃ• प्तरनामानि माखानी रिवरी मानी रि ॥ এवमुकः भूनः (मा २४ मध क्षा क्षताम वि। छछान्। नि मानी ত্যৈ সগুৰামানি স পুভু:।। ছানানি চৈষা মন্তানা পত্নী: পুত্রা ক বৈ পু जुः। जरु मर्ब गर्थमान उथा भे-শুপতি । ভীন মুগু মহাদেব মুবাচ্স পিতামহ:। চক্রে নামা-न्ररिथञानि ङ्वानात्रियाः हकात्र मः ॥ मूर्यं। कनः नेही विह बागु बाका-শ মেৰ চ। দী কিংতা ব্ৰাহ্মণঃ সোম ইভ্যেতা खनवः क्रमार ॥ भूवईना **७रेथ** (वांचा मुरक्मी ठांल्य भिवा । बाहा मिन ख्या भीका दाहिनी ह यथाकनः ॥ मृर्ग्यानीनाः नद्राष्ट्रं ह

क्ष्मारेग्। निविधः नह । भद्रः। म्ब्रुक्, महाखाग उरश्रजानि (म ्रमृग्। शियाः नृजि शुन्न् उन्ह इष-निम्मुबिङ सगर। मरिमण्ड छवा . मूर्का लाहिजावा म्याबदः ॥ ্স্কল: সর্গোপ সম্ভানো বুধ কানু-ক্রমাৎ সূতাঃ। এবং প্রকার করে। रात्री नठी जायी महिन्यज ॥ দক্ষকোপায় তত্যাত্র সা যতী **ষ**ণ **কলেবর: । হিন্**বদুঞ্জিতা হা জ্ . (स्पनाया॰ विक्रमञ्जन ॥ ऊँभः एत्य भून (कामा मनन्याः अगवान् अवः त (मरवी पाउ। विवाजात्री ज्रामाः খ্যাতি রস্যত।। শ্রিকদেবদেবস্য , পত্নী নরোয়ণ্ম্য या ॥ ইভি বিষ্ণু · शूद्रांत > चःल ৮ जद्राय:॥#॥ · ক্রুগীতা বরাহপুরাণে দুইব্যা ॥ क्पुक्वठ॰ ब्ली निवनाममम्ह्निमर्बा-व्यक्रकः। यथा। वक्तांनि केपुक्वह भाराः भागमा बक्षाः। व्यव्यक्षाः ত্ৰ নহাদেব রক্ষার্থ দেব নির্মিত ॥ उँ कामामा मणुर्जः भावू भृष्ठवः भाज् भक्तः 🗸 कशमी मिला পাতু বামপার্যে তথা হর: ॥ मिखः भिल्ला म ह भाजू ननारि नीनानाहिजः। (नवाया अप्रकः भाजू मूर्थ भाजू मरम्पदः॥ कर्न-

या निकाराक विश्वारा मञ्ज बव्रवः। धिक्शेस गान गान् वारखाः भाकू भिना**क**ष्क् ॥ कृषय का न-हारहर देशक्छ छर्पामकः । नास्त्रो **मक्तो किएएन भाजू गर्ब॰ भुका**न . পতि:।। উक् बान् बहारम्यः भारमो পাতু মছেখর:। সর্ব-রক্ষত ভূতে-णः गर्दगाञानि यञ्जः ॥ शत्रमु॰ শূল খড়াক্স দিব্যান্ত্র রৌদু মেব চ। नमकाताय (मरवनाः क्रक् माः क्रमही-শ্বঃ।। রক্ষেত্রে গ্রুপীডাভ্যো রোপ শোলির্থবু চ। পাগেভের **নরকেভ্যুক্ত আহি না**ণ ভত্তরং ধ্যা **।। কম মৃত্যু করা ব**্যাবিং কালঃ কোষ: শ্ৰা দ্য:। লোভ মেহ मना काशि छ। बङ जूबनशतः ॥ ত্ব' গতি স্তু' মতি শৈচৰ ত্ব' বুদ্ধি ভূ' भवारपः। कार्यन मनमा वाहा जुरि ভক্তি দুলিস্ত নে॥ ইত্যেতজদুক্রঃ• পঠेडः भाभनामनः। सङ्कादिव भु-भारत्न पूर्वामः भतिकीर्खिङ ॥ नः ভন্য পাপলেশো হস্তি ভয় তস্য ন বিদ্যতে। প্রাপ্নোতি সূথ মারো-गाः भूगा माञाभुवस्तरः ॥ भूवाधी লভতে পুত্ৰ• ধ্নাথী বভতে খন•। বিদ্যাথী পভতে বিদ্যাণ নোক্ষা-थी (माक मानुवाद ।। एवर एक

्रकृषि नामा (भवकात्र) छर्वमदः । ুমুচ্যতে সর্বলাপেভ্যে ক্যুলোক স গছতি।। ইতি কলপুরাণে কৃদু-কবচ সমাপ্ত। ইতি তজ্ঞার:।। क्मूननः भू भिवभावंगम्बः। यथा । अभाव कपूनामात्ना क्रांती-हन्सुक्ति खिछाः । (मर्त्वन्तुम् नि-(यार्गन वर्जस्य जिमिरव जना ॥ ভেষা• সংখ্যা চৈককোটি ভে সর্বে वन्वख्राः। क्रबंहि हि मना (भवाः হরস্য সভত গণা:॥ বিষয়ে ট পাপি ধান্ ধর্মিধান্ পাল্যন্তি চ। অনুগৃহ ডি সভত ধৃতপাশুপত-वुडान् ॥ विशाःक मजंड इहि यागिनाः शुषठाञ्चनाः । वर्षे बिः माट कार्रेथ**े क्व इत्रमा मकलाग**-गाः ॥ वदारुगनना**मार्थः हि**ष्टाय জগতা• তথা। শঙ্করস্যাথ সেবা-থৈ সমুৎপনা ইমে পণা:।। ইভি कानिकाभूद्राति २३ व्यव्यायः॥ क्षुष्ठ श्री क्षुयामालाकारवी नाहाजाः। यथा। जम् हिल्हा गराभवगा गराकम् अपि तनुष्ट्रभ-ছন্দ শ্চভিকাদেবতা ক্দুচভীজপে विनियागः । ७ नम् म्हा खनारेय। প্রীশক্ষর উবাচ। চণ্ডিকা• হৃদযে नागा यद्रभः यः कद्राजाला नि । व्यनह

ফল মাথোতি দেবি চতী পুনাইতঃ ।। त्रविवादि यना हशी नार्टमानम मण्डा । नवावृत्ति कर्न जन्द्र बी-युख बाज जल्लयः।। लामवादि वैरा हजी॰ भार्टम्यस मगाहिजः । म**र**-मुावृज्जि भाष्टेम् एक बानीहि मू-বুতে ৷৷ জন্ধবারে জগজাত্তি পঠে-দ্মানল সমতা। শভাবৃত্তি কল ভস্য বুধে লক্ষ ফল ভবেৎ ॥ अती यक्ति महाभाष वाक यूप्त कनः ध्रुवः। मूरकः पिति सगसाबि हिं भारतेन मस्ति॥ उत्तर वृत्रकः नः मूर्ण यपि हुः। न-নিবারে **জগন্ধা**ত্রিকোট্যাবৃত্তি **ফল**ণ পুরণা অভএব জগন্ধাত্রী ধক্চ চঞ্জী সমভ্যমেশ। স ধন্যক কৃতার্থক রাজরাজাধিপো ভবেশা আরোগ্য विकयः स्मोर्थः वज्र बङ्ग भुवानकः । शर्टनाह्यगोहिय कायाल नाज **अःण**-यः'।। धनः थानाः भुवानाः वज्र ब्रञ्ज বিভূবিত ১ চণ্ডী মরণ নাত্রেণ কু-র্য্যাৎ সর্ব॰ নছেশ্বরি॥ ওঁ ঘোরচঙী महाहजी हजुमुख्विथिकी। हज-वक्ना महामाया महारमवविज्विका ॥ চতুর্বজু ইত্যপি পাঠঃ মক্রন্তবিস্তা বরারে।হা মহাসুরবিনদিনী। তা-রিণীজননী দুর্গাচ গুকাচ গুবিক্রমা।।

अञ्कानी बगबाबी हुओं ह याग-लाक्ष्वेभ भागानवामिनी (मनी व्या-ब्रह् श्री क्यानका।। मिना वाबा कर् - इ श्री महिमागगक्षिका। बाह्रवी भः त्रमा क्का महाजिल्त्रमूलती।। वि-म्रा 🗐 भन्नभाविष्ठा हु 🗐 हु वৈর্भः দিনী। দুর্গে দুর্গা লিবা ধোরা চওছ-खी পुर्जिको।। मरहभी वगनारित्वी रैजनवी हखविकमा। भुमरेथ ज्वि তা কৃষ। চাম্ভা মুঙ্মদিনী ॥ রণ খণ্ট। চণ্ডখণ্টা রণরামবরপুদা । ভারিণা ভদুকালী চ শিবা ধোর। ख्यानका ॥ विक्लपुरा महामाया नन्तरगाभगृह्याच्यता । सङ्गा जमः नी हुं । नहाकुका ज्यक्ती॥ विमः ল। ভৈর্থী নিদু জাতিজ্বপা মনো হর। তৃক্ষা নিদু। কুধা মাযা শক্তি क्षना मताइत। ॥ ज्हेम् (महेव) नन खरेगा मर्वकालन मः रिङ् छ। शुनिशु-या काजिमाया स्मिक्त भागर देशी ।। या (रवी भ्वं ज्उष् मर्वकाशन मः श्चित्र। नम् खरेमा नङ्ग खरेमा नम् ख সৈ বনো নম: 🗤 🔑 তা চণ্ডী জগ-काजी वाकास्त्र नेना माठेट। नानाः स्त भारेका प्रिति भरेत युक्तहा छ (वट् ॥ नात्रनः भाठेकरेण्ठव रेकणारण রত্ত্বিতে। বৈশ্বপ্তে বুন্ধলোকে চ দেৰরাজপুরে শিবে॥ यः শৃণোতি ध्रत्रायाक्षमुह्रात् मर्वभाखरेकः। वृक्ष-হত্যা চ গোহত্যা দ্রীবধান্তব পা-**उक् ।। उ८ मर्ब भाउक मू**र्ग माजू প্ৰস্থাতক ৷ খ্ৰুগম্ন পাপঞ্ কন্যাগমন পাডক• ৷৷ সুভন্তীগমন-रिक्य यद यद भाभः भुकायरा । रात्रमात्रकृष्ठः भाभः ष्ट्रक्रभारम्य नम्/जि ॥ बस्बसास्त्राट नानार चकरजािमाजकार। मुहारक मू-চ্যতে দেবি গুৰুপত্নীযু সক্ষাৎ।। মনসা বচসা পাপ বৎ পাপ বুদ্ধ-क्रिना विशायार्किय यट भानः ख्र भाभः नम्। जि क्षनार । मुवनः भव्रेमरेक्षव यः करत्राजि भ्रताज्ञाला । **স ধ্ন্যশ্চ** কৃতার্থশ্চ রাজরাজাবি-**भा फरवर ॥ यः कवि**त्रज्ञातङ्खाः रेव कृष्याभवाद्यक्षिकाः। भारेभ ति-**ৈ:** সমাযুক্তো রৌরবং নরক• বুজে**ৎ** া৷ অশুদ্ধাণ যে পজরন্তি তেচ পাত-কিনো নরাঃ। রৌরবণ র ক্র**স**গুঞ্চ কৃ भिन्न ७ मन्त्र दिया मुक्त मान ७ छी **রক্ত• যান্তি ভেপ**্যচিরেণ বৈ ৷ ভতঃ পিতৃগণৈ: সার্ক্ত বিষ্টাধা জামতে क्बिशा भृगु (रिव सहासाय शहेर **ठ छी : मृत्या उडिम । ग**या गारिकत य भूगा कामा विषयम् त्राणु ः ।।

श्रुवाण मूखनरिक्व इतिहात इति भ्रंह । जूनाः भ्राः ভरतस्वि मङ्यः দুর্গে লিবে রনে 🛭 ত্রিগ্যাযাণ ত্রিকা-माताः देव यह भूगाः मृत् भिर्व। उह भूगा जह भूगा छह भूगा न मः मार । खवानी ह खवानी ह खवानी कुडिं। তে বুধৈ: ৷ ভকারস্ত ভকারস্ত ভকা जः (करवाः निवः ॥ वानी हेव वनः দ্ধাত্রী বরারোহে ভকারক:।পূেত বদ্দেবি বিশ্বেশি ভকারঃপ্রেডবৎস मा।। आरतागुक क्यः मृःथनामनः ज्थदक्रनः। धनः भूषः स्रवादानाः क्षष्ठः गविज्ञानकः ॥ वर्षाक्रदा-গামুচ্যেত দফরোগান্ধি পার্বতি। সভ্যু সভ্যু জগল্পাত্রি মহামাথে শিবেরমে ॥ চণ্ডে চণ্ডে মহাঘোরে इंखिएक व्याधिनाणिनि । मान्स हिन निन्हिनानि विलियकवनायिनी।। जहनूःथा८ नुग्हाउ जन्ता हली• শূণোতি য:। ব্ৰা**ন্ধণো হিতকারী চ** भारते चिष्यानमः ॥ स**क्षाः सक्षाः** (छ्डयः मञ्ज्लः क्यमङ्गाः । **ভবে कि** भूध (भौधारि कन्यामाना रिंखि यू-তঃ ॥ তত্ত্বজ্ঞানক্ষ নিধনে কালে নি बाग मान्यूयार । महामात्माख्यः भूगा ज्वा हित्रगारक यथा ॥ ठ छी मुक्पभाज्य भवेनाष्ट्राऋत्याभि नः।

নিৰ্বাণ মেতি দেবেশি মহাম্বস্থন 🖳 हि उद्या म र्वज विजयः यां जि भूवनाः म्गुरुमायजः। मूह्या मर्व नाम-**छ्या बाबबाकाशिला खरवेट**्रा महाठ औ निवा (चाद्रा) खरानक वद्र-शुरा। कानी ह कमवा विरा भरहा-जगिवमिनि ॥ उद्यह्णी (वाजहारी हकी विलाक पूर्व छ। । (स्वान !\* · मूर्व न हजी क्रम्याननमञ्ज्ञता व्यभुकाना। महास्वित्या द्रावन-मिनी। मर्मार्भिया माण्मत्रजा **মৎ**স্থাশসবলিপ্রিয়া।মদমন্তা স-দা নিত্যা ভূত পুম্থ সঙ্গতা। মধ্য ভागा सहातामा धानप्रताधनतज्ञना ।। वज्रमा सनिमा ब्राज्यभूमा विवयव-क्तिका । मूकिना नर्वना ठली महा-विश्वमना भिनी ॥ इमाक छन्नी शर्छ-তে মনুষ্যঃ শৃণোতি ভক্ত্যা পর্মাণ শিক্স্য ৮ চণ্ডী ধরণ্যা মতিপুণ্য-युक्तः भारतेह गाहकत्रमनित्तः मुख् ॥ यम्बन्धानात्रथान् मूर्णं क्रुद्रीां उद्योग-उत्त। कृत्रे श्रेशुत्रारम्नं कि न ति-थाछ ज्ञल ॥ कृत्याग कृत्कना क्रुांगी क्रुवझ छै। क्रुडंडा क्रु-ৰূপ। কৃদুভ্যাসমন্বিহা।। শিব্ৰচণ্ডী भशतका मिवभी जिगगीरिंजा टिन्दर्वा भद्रमा विन्ता मङ्खिन्ता ह

ः रवाजना ॥ मृन्द्रवी भवमा विष्ठा म श्विनुक्रम्म् दी। अश्कानी जम् कानी महाकानविमर्पिनी ॥ क्षा ্-কৃষ্ণুৰক্পা সাজননী মোহকারিণী । अञ्जिल् । स्राम्ब । सर्मन्त দাযিনী।। বোরচণ্ডী ভীনক্রপ। ভী-मा (मवी मत्नारुद्रा। वंगला वंगल। ्रिकिसायिका मर्बरा निवा॥ सृजि क्षा की विक्षा विक्किश मरनाइः **রা।** বিজ্লিষ্য শক্তপুজ্যা বাগে रिन्नु इति व्यवि 🕕 जगनका महा-সূজা (रवी ७ वर्गाभेगी। हिंखका **ण**क्डिह्छा 5 को नाओ नईकामरा॥ वादाशी ह बदाइया हेन्द्रानी नकः श्किछ। नाष्ट्रयती नष्ट्रममा म হেশগণভূষিতা।। চামুগু। নারসি॰ शी ह नृति ए भजुनाभिनी। नर्व >णजूलुणननी महादाग्रभुमायिनी।। रेनव मू:था जया किथिए शर्रनाए ्रमुर्गाड्जनः । इंकि मञ्जः नरश्रेगानि ज डारेज्डा वंशामाइः ॥ देनव (भाः कः रेनव १ देशांगः रेन ४ मृत्थः ७ यद्यश য় আরোগ্য: ম্কুল: নিত্য: করোতি म् ज सक्व ।। देशियानि वदादि । ह व्वीभि मर्ग मूडमः। यङ्कार न सिड्यारं मन भागाधिकः मूडः॥ नम ज्लाय भाउाय भिविष्कृति

याय ह । एम्राट कमाहित्म्त्विण भड़ा॰ भड़ा॰ न भः**भ**यः ॥ अनस्र ফলমাপ্নেতি শিব চণ্ডী পুসাদতঃ । व्यथ्यस्य वाकालग ब्राक्रम्य ण-তেন বৈ।।তৃপ্তা: সূত্য পিতরোদেবা ত্তথা চ সর্বাদবতা:। দুর্গে ত্বা॰ মৃম্ম-यीक्कानः स्पृतामनभूखकः ॥ मञ्ज मक्त मः छानः यः करता छ नता-ধনঃ। অভএব মহেশানি কি॰ ব-ক্ষ্যে তব সনিধৌ। লাফ্রাদরাবিক-**म्छ और्य वाह्य गाय स्वतः। उद्**य-সীতি বাক্যেন মুক্তি মাপ্নোতি দু-र्ल जागा है जि श्रीकृष्गामल इवर्गी-त्रीमः वारम्बर्गामन छीमनाछ।।। क्रूबः भू भावतः। ইতি वाकः निर्घणः॥

क्नुकिं। स्ती लाकावित्मवः। ७९
गर्यायः। (बोनी २ किं। ० कन्। ८

स्मिमा ६ मृगक्षा ७ मृद्दा १ घन।

७ देखें वे २ कृत्वा ७ मृद्दा १ घन।

७ देखें वे २ कृत्वा ७ मृद्दा १ घन।

४ मृद्रा २ मृद्रा २० मिवास्ता

३८ मध्यक्षी ३८ किं। विक्षी ३७ कन्

मृत्री ३१ (नव्य मुद्रा ३৮ महास्ते।

३० किं। श्रीम हाम हृद्रा छ्
७ त्रक्षा नामिष्ध । हिं द्रा कन्

निर्व कें।।

ৰদুপত্নী জী অতদী। ইতি রত্ন बाबा।। मुर्गा। ইত্যুণाদিকোयः ।। कृतिया जो इतीउकी। ইতি नय-ब्रज्ञावनी॥ भावंठी ह।। वमुकः जी न्यानानः। क्रेजिक्तिव्या क्षृतिः मजिः भूः भू छवानियहिः বৰ্ষান্তগতশেষবি শক্তিব্ৰাণি। তে ষা । নামানি ফলানি চ যথা। আ-দ্যাত্ বি**ংশভিব্যুক্ষী দ্বিতীয়া বৈ** क्वी मृजा। ज्जीया क्षु रेनवज्या শুষ্ঠা মধ্যাধনা ভবেৎ।। তৃণধা-न्यानि भी उप्रस्तर्भी त्या वर्षि वा नवः । পুৰকে পীডিতা: সর্বা: পূজাশ্চ স্রবন্দিতে ॥ ।।। জায়তে সর্বশ স্যানি সুভিক্ষণ নিৰুপদুবণ। সৌ ম্যুদৃষ্টি ভবেদুজা কালিকে চ শুভ वत्रर ॥२॥ मुडिकः किम गाता गाः मूथक निक्षमृत्। (मोगाः हि र्जत्मुका भोम्य भीष्य भूकी र्ङि ত ৷৷ ৩ ৷৷ ভোষপূর্ণো ভবেমেঘো ব্ৰ্যতে চ দিনে দিনে ৷ নিৰুপৰুবা: 🏲 রাজানঃ সর্বসাধারণে পি্যে ॥ ।। वामत्वा वर्षः । एवि एएन চাখণ্ডমণ্ডলে। অহিছবে কান্য-ब्रात् विद्धावी कृषिना नक्षा । । । । অভিভূত জগৎসর কৌশ বহিবি रियः निर्वा गाकरितः कनतारिकः

পরিবারিণি শোভনে ॥১॥ নিয়া ৰ্ভি: সৰ্বশন্যানা সুভিক্ষ ভবতি लिएय । **भूमाथिनि जला**मानी जला (मा भागत् अबा।। १।। निर्मुखिः সর্বশন্যানা সর্শন্য মহার্থতা ৷ घुउ रेजुनगम याजि जानस्य न-नित्नी भुषा।। ৮॥ कामुवाः भानि মুদ্ধাক্ষ পীড্যন্তে বরবর্ণিনি। সর্বেটি-ষ্বানি খান্যানি রাক্ষ্যে নিভ্রা: পুজা: ॥ ৯ ৷৷ দুর্ভিক্ষণ জাগতে হোরণ शान्त्रोविश भूशीएन । यनान ह সমাথ্যাত নাত্র কার্য্য বিচারণা।। ১০॥ দেশভবে। ২৭ দুভিক্ষণ সমা-नाए कथरानाइ। निङ्गल ठाक-পদ্মাকি দুর্ভিক্ষ• নর্মরাতটে ॥ ১১॥ ला मस्टिष्ठा विमम्प्रिड (य চान्त्र নট নর্ভকাঃ । বাসবো ব্যতে দেবি শন্যঞ্ব হি জায়তে॥ তিল সর্যগ गावादि कार्भागानाः महार्घछ।। গো/নহিষ্য: সুবৰ্মনি কাংস্য তা-মুদ্যশেষত:।। তৎসর্গদৈবি বি-कीय कर्डातारे धानामकंदः । (उन धारमान ब्लारकायुः निखतियाछि पु-र्क्तिनः ॥ भार्थिवा (नायका मीनाः कानगुरक भुभी डिडो: ॥ >2\_11 তোবপুৰ্ণাঃ মূতা নেঘা বছশিস্যা চ निहिनी। निष्ट्रवाः, भार्थिना प्रिवि

निकार्छ ह वजानत्न ॥ २०॥ वन्न ्र छोरा स्राटेन्डर कीर्वेकाः भुरताः म्जान विक्षाः भाषिवा प्रवि हो। (मृ यर्थि वद्रान्तन ॥ >८ ॥ मृर्ভिक्क॰ भ -খ্যন•প্রেক্ত• ৰ্যবহারে। ন বর্ত্তে। ভবেদ্ধৈ মধ্যমা वृष्टि पूर्याली नमूर्ण-**इ**रिज ॥ ७८ ॥ मूजिक बायरज लोकः मरदाभमुददक्षितः। भागि নাং জাধতে হংৰা দুন্দভৌ বরবর্ণি नि ॥ ७७ ॥ महियो (गो हिन्नगाहि ठानु का मामामालवडः । **७८ गर्ब** (मवि विकीय कर्डावा। **यानामक्यः** ॥ রক্তে সম্প্রসারে দেবি জুরবৃদ্ধি র্বরাধিপ:। মানবা: ক্রচে ভাশ্চ সংগানে न কযো ভবেৎ ॥ ১৭ ॥ मुख्किः भद्रभः द्वारमा शास्त्रीयवि নিপীডন•। পাপরোগো ভবেদেবি রিক্তাথ্যে হনরবন্দিতে ॥ ১৮ ॥ भूताला नवन मूर् डिक् विवित्थानम्या क्लें <del>। व्यक्त ज</del>्वियन गर्बर मगाः था उर इत्रीनेत्य ॥ १२ ॥ समिनी চলতে দেবি সন্মূত্র চরাচর । (तमा अक्र क मूर्जिके कार्य मध्की या भुका।। (मोबाह्य भावाद पराम मिकिले क्रांक्श उथा। पूर्विकः ্ জাযতে ঘোর• ক্ষ্যে সৰ্ৎসরে প্রি-् (य ॥ कोर्म्नी वसीहरहताण्ड यसूना

नर्यमाञ्चर्वे। विक्रावाः रेमक्रत्व देवव বিনশ্যতি ন সংশ্य: ৷৷ সিংহলো भक्रान्मण्ड कानक्षत्रः उरेथव छ । करा क्षेत्रक मर्वानि नानाथा वत्रन् ণিনি॥২০॥ইতি ক্যোতিস্তব্ধ ।। बमुवीना जी वीनारजनः। यथा। म् अः म्। क्षुवीनीया मुहिकाम्म সমিত:। ভুমদকুটাঁগু মিত॰ শুবি-ু ब • उन्। की खिंड ।। में खर्मा हर-(ञ्चर॰ का॰म) मञ्जदकष्वर॰ । পশ্চাৎ সম্ব্ৰক্ষাত্ৰ ছত্ৰীকৃত শি-द्भो **ভবে** ।। मध्या (दक्षेत्रः भार्षः পঞ্চাঙ্গুল মিৰোনিত। তন্মিতা नथती उम्राः कर्उच्या मुन्दवाकृ-जिः॥ कन्रां क मृतीगारा जिलि-রা: পরিকীর্ত্তিত:। উদ্জ্বশিরসি দাতব্যা লোহপত্রী সমন্বিতা।। মূলভন্নী ভদুপরি ভস্যা লৌহী ততঃ পর•। দক্ষিণে শির্সি ন্য-স্যেৎ শুভি ভন্ত্ৰী ধ্বণ কৰাৎ !! এ-বস্তু কন্ধভ• তত্ৰ বীণাদণ্ডে নিবেশ-(यट । ष्रुक्ट्रलाइ मृष्कु निरता २क्र्रु **माञ्छ भार्यकः ॥ म**ुशास्त्रकः **उमा उम्मक नि**ष्य मार्थ । यारा **७७ फठ् जि: म**रञ्जा छत मा कि-(१८ ॥ अक्षारमाञ्चनगूथ : ठक दि চাৰু গৰ্ভক । দণ্ড সমুন্নত কান্ত

कम्बी

বৰু ল॰ তৃষ্ণ যুশ্মকং॥ ঔদত্বে কিঞ্চি-माधिक। म्लयक भूजगाउ। वर्षाः কুলান্তর পশ্চাভ্রর ছাপবেদুধঃ 11 म ७ मृश्व तकुष्यकः ऋभावह मय-खठः। लोहासूनल् कर्ववाः वर्ज् नः পৰজাকৃতি। তত্ত্বস্থন: গুণ: তমিন্ (वृष्टे वार्क निविन्त्रायर ॥ अउर भन्ना-ব্যাণ ম্যোট্ন্যাণ বেষ্টরক্রণ কশাং ক্ষি-(१९ । उत्यादेनी वृज्यम् नम्मन र ७ ब्र<u>क</u>्षकः ॥ সুম্বিতে তু **ও**বৈব বধীয়ামূথ্য ভক্তিকা । তাবছ জান-(सदः भूद्वाः (माहेनीकः नौनः नौनः ।। नशावामिक सङ्गनः छत्नी वजन বিশারদ:। অস্যা নৃষ্টাদশ প্রোকা: শারিকাঃ পূর্বসূরিভি:।। তাসাং वृश्खद्रा वाश्वी मणकू माः भुकी खि-তা:। এতান্ত তারবাদিন্য তিপ্তত্তি পদিকোপরি॥ বিতন্তি মাত্র পদি-কাঙ্গুগ্লোপ্যস্য গর্ভক:। ভাবৎ **म्**नाञ्च कडावडा यथा **एए७ ছिरद्रा** ভবে ।। भरनमा ह मिक्नुमा खाला न সুদ্ঢोक्छ।। वृष्ट्ञीनाः मात्रीगाः बन्दायः उन कमार्॥ वजास म-द्वावयदेवः कथि ज खाक्तृना वृतेषः । शाना मखना जाः भृष्टि यथा द्वान ার• পুনঃ ৷৷ মদনস্য চ শিক্সস্যো-ান সুদূঢীকৃতাঃ। সর্হাসাণ লোহ यम्वी /

किता मस्राक्त्रम् प्रविद्धाः ॥ वकाकुलाहाः कृ माः ए ब्रिडि भात्री विनिर्गयः। এवः विश्विर्धिका कृत्वीना क्रम मताहद्रा ॥ व्यम्प्रान निका जू कर्डवा। माकिगाउग्राभः रम्भेडः। ইতি সঙ্গীতনারায়ণ: ॥ क्मुमर्गः भूः क्मुकर्क् कम् है:। यथा । हेरानी कपुत्रर्ग दुः मृत् नार्थित সত্তম। দশবর সহসাণি তপশ্চী-র্থা মহাজলে ॥ পুতিবুদ্ধো যদা क्षु उरा छावी 'नकाननाः। मृक्षाः न्नगुवजी॰ ब्रम्पा॰ सन्वर श्रमूकः क्ला ॥ भूगुव ठ छन भनावृद्धि **ञाः एकः ग**ण्यनि । चानुस्य यिषुनाः अभिक्षेत्र विशिष्ट विश्विकी विश्वान् ॥ ७७: भुदा मशाउकाः मईछः **भत्रसम्बद्धः । हुत्काश मृज्णः ८ए**-(व) वाकप्रकृत मूवाह रू॥ व्यर्-े **न्रहंड कविने मुद्धेः महीजानारे** बिल् । भुबाः मृबायी जुल वाका ता-छ खरथा कवान्।। इनिनी कन छ८ कर्म क् छ॰ मृष्टे । प्रति वर्गने॰। अवस्कृ। ज्न कार्शर्भनार भद्रामधदः ॥ ै তস্য তা নদক্তে জালা: শো্ৰে-ভো নিৰ্যয় স্তম ২ জ্ঞানি বেতাল। উहुपा: (পুত প্তনা:।। बचाला गार्ट्यानाक मर्ख भुक् 🖯 क्रमुञ्

्वाज्ञाननाः। प्रेडेशः क्वाहिण खब न्यान् भुस्त्रगावृज्ञाः॥ इति वतार भूतामः॥

ৰ্দু দাবৰ্ণিঃ नुः बारामामनुः। व्यमिग्रन्ष्टरत्न मूधाभार्थतः १वडा-तः। अउधाना हेन्<del>मुः। ए</del>त्रिजामरवा रिताः। उर्लाम् ब्रीहराः मधर्ययः i দেববদুপদেবাদযো মনুপুত্রা ভবি-ব্যন্তি। ইতি জ্ঞীভাগবভমত ॥ অপিচ। দ্বাদশে ক্দুপুত্রস্য পুরে भन्न अरत गताः। সাবर्ग्राथाना (य (मवा मूनवण मृगूष जान्।। मूकर्या-ণ: সুমনসো হরিতো রৌহিত শুপা । সুরাপাশ্চ সূরা তত্ত্র পক্ষৈতে দশ-কা গণা:॥ ব্রি: পুকারা ভবিষ্যন্তি একৈক জ্রিশ্লকো গণঃ। তেষা নি-ন্দু। হি বিজ্ঞেষো **শত**ধানা নহা-वनः ॥ नर्दे द्रिन्मुख्रेग यू कः नश्च ु वी निश **(म र्श्**ण् । मृत्रिक्ष खनवी সুত্ৰপা কৰে মিত্তি তাপানিধি:।। তপোৰীতি স্তথিবান্যঃ সপ্তম্ব ত (भार्विज्ञः) (मववान् वामामवण्ड (एवर्ण्रेष्ठा विमृत्रथः।। निजवान्त्रिज-ष्ठक अधिव खर मुखा मानाः। ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণ।।।

ब्रुम्: जी अकारमञ्चकननी। स्था विनुम्ब्मञ्चा महारहकाथि क्याक

का जूकपुत्रः। ইতি भद्र द्वावती ॥ कृतुक्वीषः भूः भागानः। ইতি ক্রিকাণ্ডশেষः॥

क्पृति जी पूर्ण। इंडामतः॥ उन्ता वृद्ध शिंडी यथा। क्पृत्मागु क्पृति गी तोपुः (रुष्डि क्रांडा वि या। इंडि (प्रवीनुवात ८६ अर्थायः॥ क्पृत् क्रो। इंडि ब्राक्षनियंकः॥

ৰুদাবাস: পু• কাশী। ইতি কেচিৎ।।

ক্দুারি: পু কামদেব:। ইতি কেচিৎ।।

कृत्रकः शृ सनामश्राउत्कः।
ज्याना । ज्य

কৃদাক

मध्यमत्रभूमील। जिन्द्रमा दायका-লৈ ক্দুস্যাক্ষোৎপত স্কাষ্যে অশ্রুণো বিন্দ্ৰ শ্ৰেত্ ক্লাক্ষা অভবন্ ভূবি॥ यम्। (भ)कामि ठञ्चन ग्रथकप्रास्कृ यखकनविष्मदाः यसिष्ठिपाणि मू-मञ्जाद शक्षत्रकुत्र कृत मञ्जाव जिथीरगाउ। यथा कात्म । शक्वकुः चयः दुष्टुः कालाधि नीम नामञः। অগন্যাগননাচ্চৈব অভক্ষস্য চ ভ ক্ষণাৎ ৷৷ মুচ্যতে সর্বপাপেভ্যঃ প क्षवज्रुमा बाद्यनाट । रू नमः इंडि পুত্যেক নপ্টোত্তরশত ৰুপ্বা শিবা ख्रमा शुक्रान्य धात्रगीयः। विना मः **खि** । या धर्ड क्षु। कः जूवि मानवः। **স** যাতি নরক ঘোর যাবদিন্দু। শ্চ-जूर्ममा। ইভি जिथ्यामिञ्जुः॥ 🗱 ॥ তস্যধারণে আবশ্যকত্ব। যথা। স ब्रद्भत्रभूतील। व्यक्षुक्षाक्ष्रता ज्वा যদ্মৎ কর্মাচ বৈদিক। করোতি লপ रहामाप्ति उट मर्बः नियुक्तः ভरिट ।। क्वात्म । श्रानशादगशीताणि कः माक शावरयह वः। मर्वभाभ विनि মুক্ত: স যাতি পরমাণ গতিও ॥ ই-**७८कामणी उबुः ॥#॥ यथ** कृमुक्कः माहाजा । श्रीमहात्तव उैवाह। इलानी (प्रवास्ति मालाना था-রণ শুভা কেদাক্ষ্য চ মাহাত্ম্য वरः भ भव्राययित ॥ श्रीतर्वेशसूष्ट । শিখাৰা হস্তবোঃ কণ্ঠে কৰ্ণখ্য কা-शि र्यो नद्रः। कृमुक्तः धाद्रय छक्त **শिवलाक मवाश्रुयार ॥ नववकु** क्षाक धात्रश्यामवाङ्गा । पक वाहो उपाचि म भावत्यव्यवमाः नमः ॥ मिथाया॰ ममनः धार्यः कः ঠেচ পঞ্চবি•শক্তি•। কর্ণযোঃ পঞ্-সংখ্রা হৃদি চাষ্টোব্রং শতং॥ না-ভৌসপ্ত চ ক্দুাক্ষণ ধারণায়োক্ষ-ভাগুবেং। ক্দুাক্ষ ধারণাদেব নরে। দেবত্ব নাপুয়াৎ।৷ শিথাযাং দশনং দ্বাত্রি॰শৎ পরিমিতং ॥ তথা। কদু-कः शाद्रायमि डाः जन्।ककः मृति यत । ক্দাক্ষন্য নহাবাহো নাহাজ্যঃ শুণু यङ्ग ।। এकवकुः निवः সाकार বুন্ধহত্যা ব্যপোহতি। অবধ্যত্ব পুতিশোতো বহিষ্কন্ত করোতি চ ॥ विद्राक्तः रुत्रभोत्री नग्रट भावश्र म्। धनामक्ट । विवर्षिक्त २ विकर् (ग्राव्यभाभवामिः भुगामश्र<u>्यः ॥ जू</u> लातानि यथा विक् विमनी क কতে হর। ত্রিবক্তো ২পি চ কদাক खथा म्हिं किन्दिष १। ठवूर्व ब्रुख ধাতা স্যাৎ নরহত্যা ব্যপোহ-তি। পঞ্বজুস্ত কালাগ্নি রগম্যাভ-का भाभन्य ॥ मृत्जु। या छरः मोक्षां भारत्य । महामार्थः। मध वाक्ता क्र अंध मर्वास्यायन् यमा ॥ दिनात्का १४वकः महा८ नदीन्छ विनामकृष्य। रेखद्रादा नववकुः महाष् निर्देशायुक्तास्यः ॥ मन्देकः सरः বিষ্ণু ভূত পুত পিশাচহা। একা দশন্থো কদো নানা যক্তকলপুদঃ ।। दामगामा ভবেদकः गई शर्थ-कल भूषः । व्याहमगू थः कामः সর্বকানফলপুদ: 🕕 চতুর্দশাস্য: **একঠো বংশোদ্ধারকরঃ মৃতঃ।** যথোক্তন্তে ৎপি ক্দুাকে তথেন্দুা-क्त भुकी खिंउ।। जुनाक श्री সুরশে্ষ ভদ্ভণ পরিকীর্ত্তিত । ইতি যোগসারে ২ পরিছেদ:॥ 🗱 🛚 । व्यशिष्ठ। निम्भूनाम् मृशक्रामः स-দাক্ষা ধারণে মৃতা:। পঞ্চামৃত• शक्ष गवा नामकारन भूरवा करर ॥ कृताक्त्रा भुष्ठिश्वागः मञ्जः १काः क्षत्र उथा । जाज्ञकारिक सुख्यक ुर्थ। ভत्र भूरगुन्तरेयः ॥ इत्रोधकः यकाबर्द्ध मृगिक्षि शृष्टिवर्षन । छे-द्वांकक निर्दे वक्तनाम् एडा मूकीय माम् छाट ॥ छेथा छ हो व्याचाद হৌঁ ঘোরে হূঁ ঘোর ঘোরতরে ওঁ रिट्रॅं हों बीं में नवंड: मर्ब मर्वास्ट्रा नन्दिस केंद्रुक्तिशित हैं हैं। व्यानना-

পি চ মন্ত্ৰেণ ক্ৰাক্স্য ছিজোত্ৰয়ঃ । পুভিষ্ঠাং বিধিবৎ স্বৰ্য্যাৎ ভৱে। **e বিক ফল• লভে** ।। ভভো ৰথা ৰম্জেণ থার্যেভক্তি সংযুক্ত:া अकाि हजूर्यभवजागा संकारत <u> भुर्ड। वर्षे क्यूमन मठा यथा ! ५ ५ ५</u> ज्यः नगः / १। ज ज नगः। १। र्छ छ नमः निर्छ । छ छ ही नमः 18। ७ इँ नमः। ৫। ७ इँ नमः । ७। ७ छ हुँ हूँ नमः। १। अँनमः। ৮। ह्रॅनमः। ১। अँ ह नमः। ১०। ७ हीं नमः। ১১। **७ हैं। नमः। २२। ७ काँ। (काँ** नमः। ১৩। ७ नमा नमः। ১৪। ক্দাকে দেহসংছে ত্ৰকুরো মি-যতে যদি। সোপি ক্দুপদ॰ যাতি किः भून मानवा ७२। मधिनाजि क्षृाक भावया (एक् मःश्या । यः करत्राजि नद्रः भूगुः मर्बः रकाहि-खन जरद्या या प्रमाजि विजा-তিভ্যো ৰুদাক্ষণ ভূবি যথা। তস্য প্রীতো ভবেজদুঃ ম্বপদক্ষ পু যছতি ।। বিনা মজেণ যো খতে ক-দুক্ষণ ভূবি মানবঃ ৷ স যাতি নর-कान् (राज्ञान् याविष्नुना महजूर्मम ॥ इेडिभन्नभूद्रालकम्।कमाहान्त्राः॥ ইভি ভম্সার:॥

কদী স্ত্রী বীণাভেদ:। ইতি শব্দ রত্নাবলী॥ অসগ্র বিবরণ কদুবী-ণাশব্দে দুষ্টব্যং ॥

क्ष ७ व छ कात्म। धनुभूर्वायः।
इंडिकविकन्नक्रमः॥ य ७ अपूर्व्याः
उ थनः व्याकः। इ धनुरत्राका।
इंडि पूर्णामानः ॥

क्ष इत्र १ छ कि क व्याग्र छ। ।
इति कविकन्नकमः ॥ इत्र व्यक्ष व्यातोदनीदा थ क क्षिक क्षक । छ त्राष्ट्रा कि क्षका छ। इति मूर्गानानः॥

किष्तः क्ली महीत्रस्तम् विश्वान् । ज्ञान्ति । त्रकः २ समुः ० पृत्वः ६ कीनानः ६ क्षण्डः ५ स्मानिजः न नाह्यः ৮ सम्बन्धः । हेलि त्राक निर्वाणः ॥ सस्त्रः । हेल् त्राक निर्वाणः ॥ सस्त्रः । हेल् त्राक किष्तः भ् मस्त्रभुरः। हेल् त्र सिनी ॥

क्षिताथां क्री मिनिः । यथा । इंडल्युन मानाय नानवमा यख श्रिडः । नर्मानायाः निन्निक्त कि श्रिकः । नर्मानायाः निन्निक्त कि श्रिकोनानि ज्ञला। उत्वस्तुत्याः भ क्लिडः मुक्दक्र्वर्नः मः हानडः भुक्ते भीन् ममान मावः । नान। भुकात विह्डः क्षिताथा तन्न मू क्उ। उमा थन मर्ब म्हानरमय ॥
स्थानम् भा ७ मर्वा महीय विश्व वर्गः
जार । रमध्यं क्उ। कनने किया
ज अरद भक्ष उर किन कर्वर
मूजव कुवर्गः ॥ इंडि गाक्र ए १৮
वर्ग वर्ग है।

क्ष य इत विस्मारह। इति कवि कन्नक्षमः ॥ विस्माह व्याव्याकित्रवः । य क्ष्माठि लाकः लाकः । इत व्यक्ष्माट व्याद्याभीट । व्यव्याट भू-यामिदाभिठाः उ इत्जाता । इति मूर्गामानः ॥

क्या जी जूगीवडार्गा॥ विभिद्ध-व्याकदः। इंडि सिम्बी॥

क्या सः ज्यासः। इंडि सिम्बास-

ৰুমু: পু অৰুণ:। ইতি সিদ্ধান্ত; কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তি:।।

কক: পু' মৃগবিশেষ:। ইত্যমর:

। অস্য না'স গুণা:। বিপার'।

গুনুত্ব'। নিশ্বালি বলপুদ্রপা।

ইতিরাজনিঘত: । বৈত্যভেদ্যা

कर्ः श्रु अत्रखर्कः। हेि त्रकः भाषा ॥ त्रक्तिः। हेि त्रकः निर्घणः॥

क्त्कः भू• अत्र ७ रेक्ट्:। इंडि तज्ञ-भाषा ॥ त्रेडित्र ७:। इंडि त्राब निर्मितः ।।

देक में अत्र अत्रक्षः। ইতি प्रञ् ग्रेक में अत्रक्ष्यः। ইত্যম तः॥

ग्रेक में हिंग्म। ইতি क्विकन्न क्मः॥ अ अक्ष्यः। में क्षाकिः द्वाकः । अ अक्ष्यः। म क्षाकिः द्वाकः । वि अक्ष्यः। म क्षाकिः द्वाकः । वि अक्षाकः। म ग्रेक विष्णे। ইতি क्विकन्नक्रमः ॥ कि क्विला क्षा । क्षावा। हेठि प्रापानः॥

हर यहेत कि क्वि। हेि क्वि क्वक्ष्मः ॥ य क्वि। कि ज्ञाय ज् भानः ॥ हेत्र जक्ष्य व्याद्वावी ८। श्रमा ८ भ्वा दिवा बिञ्ड है डिड़ तिरु । कि क्षेट क्विला हिंह। है डि पूर्गा नामः ॥

इष क् कृषि। ইতি कविकन्नक्षमः॥ क রোষ্যতি। ইতি দুর্গাদাসः॥ हषा खी अभवः। তৎপর্য্যাयः। কোধাং ২ মন্যাং ১ কৃষা ৪ জুৎ ৫ কোপাং ৬ পুড়িছাং ৭ রোষাং ৮ কট্ মাইছি, হেমচন্দ্রং॥

क्षिजः जि काषयुकः। यथा। जः
नागभारेम वैनिनन्तता वनी इडः
स्रोमनाः क्षिजिनन्तता वनी इडः
स्रोमनाः क्षिजा ववस्र रु। देखि
क्षिजागवर्त्व वागयुक्तः। यथा। निद्

क्रिड एक जांडा एर्स्नो क्रिड न क-फनः। ইতি उज्जनातः।। क्रिड क्रिड जन्माः। ইতি কবি-

ক্হ: বি কাত:।। আক্চ:॥ ইঙি ক্হধাতো: কর্ত্তরি ক পুত্রবেন নিয়ম:॥

करक क्री हिंदू । हैनि भन्-विसुका॥

क्श खी मूर्वा। ইত্যমর: ॥ सङ्गः সমস্।। ইতি রাজনির্ঘট: ॥

कहिकहिका खी उँ८क्श । इंडि मूत्रागः॥

ক্সা<sup>ন</sup> পু• বৃক্ষ:। ইতি সিদ্ধান্ত: কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তি:।।

কক্ষঃ তি অপেন। অচিত্রণঃ। কহধাতো রৌণাদিক স পুত্যবেন নিয়মঃ। ইত্যুণাদিকোবঃ।।

क्षः वि बाउः॥ शुनिषः। ইতি भित्ति॥ काः भू भुक्छिभु छ। यार्थ मनाभ-क्रुणाम् (वाष्ठ्वनकः भमः। यथा। মুখ্যো লাক্ষণিকো গৌণ: শব: न्त्राप्त्रेभहाद्रिकः । योगिका या-গৰুটো বা ৰুটো বা মুখ্য এব मेः ॥ ইতি শাহিকাঃ।।।। খপিচ। ব ঢমালক্ষ্যভি বিভঞ্তে চ। ক্ঢ॰ मह्ह उत्शाम मित म एक्डि की-র্ভ্যতে । নৈমিন্তিকী পারিভাবি ं क्रोभाषिकाभि उक्तिमा । यद्याम যাদৃশার্থে সঙ্কেতিত মেব নতু যৌ-িগিকনপি ভদুটে । যোগৰুটন্ত প क्ष्वािषक न उथा कानास्य ह স'জ্ঞাপদেনাভিলপ্যতে । নতু ুক্কচানিব**্ স**ণ্জ্ঞাপি নাম্নে। হবা-ন্তরভেদ:। যেন বিভাগ ব্যাঘাত: नग्रा । म जाया क बारा (जनाः নৈসিভিকী পারিভাবিকী ঔপা-धिकी (চভি। পাচক পাঠकाদयस्र ন সংজ্ঞাঃ সঙ্কেত শ্ন্যবাদিতি ৰক্ষ্যতে ॥ যেতু ৰচস্য নাম কতু विधन्नाञ् खन्य मुलनामाजि । काञि मुवा खाम्मरिन्स सं रेगः माक्ष-ত বভ্ৰথা জাতি শব্দদি ভেদেন চাত্রিখ্য পরে জগুঃ ॥ গো গ্র্যা-দীনা গোত্বাদি জাত্যা গখা-जारीना॰ नाक्न धनारि मुख्या।

धना शिणुनामीनाः भूगा (क्वांपि ख्रान । ठव ठशवामीनाक भारा-नाः कर्मागविष्टमणकिमद्भित्र भिव कागना भिक्ति। यमूक रेडिंग्डान ठारियाः। मरिष द्वर भुजीयस क्रिक मुव्र ७१ कियाः । ठाजूर्विधानभी-বান্ত<u>্র শব্দ</u> উক্ত শ্চতুর্বিধ ইতি । उररउद्ध मूर्यारीना मनाभूनान দীনাঞ্ শহানা মপরিপূহাগভ্যা পরিত্যক্ত নম্মাভিঃ ॥ 🗱 ॥ নৈনি-ত্তিক সংজ্ঞা লক্ষ্যতি। ক্লাত্যব ছিন্নসন্ধেতবতী নৈমিত্তিকী মতা। জাতি মাত্রে হি সঙ্কেতাদ্যক্তে ভান• সুদৃষ্ণর ।। যুগান জাত্যবৃহিন্ন সংক্ষ **७** द८ मा रेनमिखिकी म•छा यथा গো চৈত্রাদি:। সা হি গোত্র চৈত্রাদি জাত্যবৃহ্নি মেব গৰাদিক মভিধক্তে ন তু গোত্বাদি জাতি মাত্র । গো পদ• গোদ্বে সঙ্কেতিত নিত্যাকা तक, गुरामाभार्यक्याको (गाड्ना-रिमा गवारि ब्रह्मयानुभगा**ङ: এक**ी भक्त श्रहमानान् जात्केरेव **१**जि-भुत्रकार ॥ #॥ भावि हो (वकी भी-পাধিকীঞ্চ সংজ্ঞা ক্রমেণ লক্ষ্যতি । উভयाव्जिथार्यन् मः छ। म्यार পারিভাষিকী। ঔপট্রিকীত্বনুগতো-**পा**धिना या **পু**वर्खएं ॥ উভयावृद्धि

পূর্বীবেছিন সঙ্কেতবতী সংজ্ঞাপা-ति प्रकिती। यथाकाण जिल्यापिः মুক্তানুগতোপাধ্যবছিন **সংকত**-वृत्री मःका मार्चो भाषिकी। यथा ভূত দ্তানি। সা হি সচেওন বৃত্তি: বিশেষগুণৰভূ বাৰ্ভাহারকভাদ্যনু-গতোপাধিপুৰুষারেণৈৰ পুৰব্ততে । ইতি শব্দক্তিপুকাশিকা।। क्या। भार्जादः। जी ইতি কহধাতো ভাবে জি পুত্য-যেন নিয়ুন্ন ।৷ ক্রচশব্দনিষ্ঠশক্তিঃ। যথা। লক্ষাত্মিকা সভীকটি ভবি-দ্যোগাপহারিণী। কল্পনীযা তুল ভতে ন্যজ্মান যোগ বাধ্ত: ॥ ইতি জনারভউকারিকা।। iপ ভক ভৎকৃতৌ।ইভিকবি কল্লছমঃ।। তৎকৃতী ৰূপকরণ । অফ্রপৎ পুতিমাণ শিল্পী। পুতি-**না**যা ৰূপ• করোজীভ্যর্থ:। নি পু-र्वः सक्लकथान । अनुमामः निकः भारत केटामूनानथेखः। ই**তি मू**र्गा मा**नः**। 🗸 ह्म॰ क्ली बेजावः ॥ स्नोन्हर्य्यः॥ नामकः ॥ शम्ः ॥ भदः ॥ शुष्ट्रा-वृज्धिः॥ नाहेकारिः॥ व्याकादः॥

লোক: । ইতি মেদিনী **শদর**ত্না

वनी ज्विभुर्यागाः ॥ मुङ्गाहिः ॥

नामकद्रात नागक । इंडि नाना-র্থরত্নমালা বিশ্ব ছেন্চন্দু:।। #।। কপস্ত বোড়শ বিধ•। যথা। <u>ভূম•</u> ১ मीर्वः २ इनः ० ठजुत्रमुः ८ वृखः ৫ मुक्त ५ क्ष १ नीलाक्ष ४ द्व ৯:পীত• ১০ কঠিम• ১১ চিহ্নণ• ১২ भूषः १० शिह्यि १४ शृह् १८ माय-ণ ১৬। ইতি মহাভারতে নোক-थर्यः ॥ 🗱 ॥ उन् । नक्ष । यथा । অঙ্গান্যভূবিভ্যান্যেব কেনচিন্ড্য-ণাদিনা। যেন ত্ষিতবদ্ভান্তি ত-पुर मिंडि कथारि ॥ हेब्रुब्ब्वनः नीनमितः ॥ 🗱 ॥ न्यायवारः उट **ठक्ष्रिन्त्रिग्राश् । पुराप्तिभ्**जाकः कात्रपः। ठक्कः गरुकाति । भूलाम्।-तिक शुकात्र। बलामि भत्रमाणु कः প • নিত্য অন্যত্র অনিভ্য । যথা । ठक्तू ग्रंशः खरव मुन मुव्यास क-পলম্ভক ৷ চক্ষ: সহকারিস্যা-इक्रांक्कि मानकथा।। जनाहि भन-মাণৌ ভন্নিভ্য মন্যৎ সহেভ্রক। ইতি ভাষাপরিছেদ: ॥ 🗱 ॥ উত্ত-द्रभरञ्कलामिनक्त्र उलमानवाः **टकष्•ा यथा।** मुहक्खद्रभाम भूथाः পুকার:পুতিমো নিভ:। ভূত ব্রুপা-পমা: কাশ: সন্ধি পু পু ডিভ: পর: ॥ इंडि (रुम्हमु: ॥ # ॥ अंडि:

শযক্রপদ্য দোষো যথা। উনো-বাচ। ক্পাতিশ্যসম্পন্না নানা গুণসমন্বিতা: । কিম্বর্ণ দু:বিতা काठाः कान्तरमोश्यादिवर्किताः ॥ ঈশ্বর উবাচ। দমধন্তী তথা সীতা ক্পাতিশ্বপার্গা। দু:খিতা জে ন সংজাতা কান্তলোখ্যবিবজিতা ॥ অহল্য বন্ধকী জাতা কপিল্স্য তু যোষিভা ক্পস্য ত পভাবেন দাসী জাতা ভিলোভনা ৷৷ তথা-<u> मु</u>नक (नहुडि नक्षाञ्जा उरना-থনা: ১ অতিকপেণ স্বল্লাযু: পুক-ষে। যোষিতো ৎপি বা ॥ অথ বা সৌধ্যহীনম্ভ জাযতে তু মহাতপে । इंडि (स्वीभूज्ञात नन्ता अर्थु-विनाध्यायः ॥

क्षणकः क्षी नाहेकः ॥ मूर्लः ॥ का-वश्यक्षप्रभा देखि भिरिनी ॥ व्या-वश्यक्षप्रभा । क्षणकः क्षि-द्वाक्षां विषय नित्रभञ्ज्ञात । ख्राक्षां विषय नित्रभञ्ज्ञात । ख्राक्ष्मात्र द्वा । यक क्ष्माहिमाद्वा-काः भजाद्वाभा काष्रभः । ख्रा भः भजाद्वाभा काष्रभः । ख्रा भः भजाद्वाभा काष्रभः । ख्रा व्याक्षिक हर्विषः। ख्राक्षां य मि नाक्षणा क्षांभः माक्षः भव ख्रा

॥ नगरुवस विषय मिक्षम ह। आह्वाभागा मानस् হবে পুথমুং মতং ॥ যত্র 🦎 ্রচির্ 'দার্থত্বমেকদেশবিবর্ত্তিত**্**। শির্**ক**° **কেবলসৈ** যুব ৰূপণ তদ**পি** ছিখা।। মালা কেবল ৰূপড়াং তেনাঙৌ **ৰ্কপকে ভিদা: ।। ইতি সাহিত্য দ**্ र्भगः ॥ 🛊 ॥ ज्रिकि । ज्ञान्ति । जा সতে বৃষ্মিমুপমানোপমেয্যো: 1 ৰূ**পৰ•** ৰুথ্যতে সন্দ্ৰি রলঙ্কারো-खमः यथा । **७**दि युग्रमूर्थात्माद्यः लीलालक नधुतुज्ञः। न कमा इत-তে চেতো লসদ্শন কেশর• ৷৷ অ-স্ত্যনেক পুকারত্ব• রূপকোপন্যো রপি। সংক্ষেপেণোক্ত মন্যুত্র সুধী-ভি রবধীয়তা া। ইতি কাব্যচন্দ্রি-का।। क्रा मः श्रादिष्णयः। यथा। সঞ্চালী প্রোচ্যতে গুঞ্জা সা ভিস্নে ৰূপক ভবেৎ। ৰূপকৈ দশভিঃ र्ल्याङः कन्नर्र्धाः नाम नाम**ः** ॥ ইতি যুক্তিকল্ল তবং ।।

ৰপতত্ত্ব ক্লী শীলা ব্ৰা। স্যান্ দুপণ লক্ষণ ভাব শাত্তাপুক্তি রী চনঃ । সহজো ৰূপতত্ত্বক ধর্ম সংগানিস্গ্রহ । ইতি হেনচন্দুঃ॥ ৰূপধানী ত্রি নৌন্দ্র্যাবিশিষ্টঃ । ব্ৰা। ভত্তে। বিক্ট্রাপো হসৌ

भाजार्थभात्रगः। विवाहयिष्ट्-। कुल्लानुलमाः विकः॥ मध्यीत ह छर्डा तः म्मीनमिश छ/विभी। विक्रिश मिछि मन्नामा নির্বেদসংযুক্তা গড়াশুন পদ ম**া** १८। इतावजा उति वीनान् कन-খারিণ মান্তং । ত্রারাধ্য রুগ-মাথ নক্ষতপুক বণ হি। সুৰূপতা মবাপ্যাগুটা তথ্যিকের চ জ্মনি॥ ইতি বামনপুরণে ৭৬ অধ্যায়ঃ।। ক্পনাশন: পেচক: ৷ ইভি भदत्र्वावनी ॥ ক্রপবান<sup>®</sup> ত্রি আকার্বিশিষ্ট: ॥ भिन्तर्यायुकः । क्षणमपामस्यार्थ বতু পুত্যবেদ নিল্পলে। ९य॰।। ৰূপাজীবা জী বেশ্যা। ইভাগর:॥ ক্পাস্ত: काभरतयः। इंडि • ত্রিভাওশেষ:॥ खी (पं ठाक्तृकः। हे उ ক্পিকা बन्भाषा ॥ ৰূপেশ্বরী জ্বী দেবীবিশেষঃ। সাত্ ु भु ज्यापि विश्विषां छर्ग टेजकविर **শ**वदर्व भृ<u>कता । यथा ।</u> दरभश्ववी পুরুর্ত্তব্যা বৃষযুদ্ম ব্যবস্থিত।। জটা। মুস্ট ভারেশ ভিদ্লোরগভ্ষণা ॥ মণি মৌজিক শোভাট্যা সিভ

हन्द्रनहिं । भूकि छ। अपूरिम ङ्-दिन्द्रः सर्वकासक लभूदा ॥ इंडि दिनो स्वारत सञ्चल्या दिन्द्र भूडि विदिः भूषमः ॥

ৰূপ্য ল্লী আছতম্বরজত। ইভ্য-মর: ॥ হেমক্প ঞ্ আহত তাখ বরাহ পুক্ষাদিল্প নুত্থাপ্যিতৃ নিৰ্যাতিক্যা তাডিভ' কুপ্য নুচ্যতে क्राय आइड क्रां एएकानि-তি ফ্য:। ইতি ভরত:॥ 🕸॥ ধা তু বিশেষ:। ৰূপ। ইতি ভাষা। তৎ-**श**र्यतायः । सृजुः २ वसूरम्४ः ० ब-ধির• ৪ চন্দুলোছক• ৫ খেতক• ৬ মহাশুভূ ৭ রজত ৮ তওলপক ৯ চন্দুভূতি ১০ সিতা ১১ তারণ ১২ কলধৃত ১০ ইন্দুলোহক ১৪ জৌ-ना ३४ त्ये छ॰ ३५ मोध॰ ३४ हन्मू-হাস ১৮। ইতি রাজনিঘট:॥ খজ্র ১৯ দুর্বণ ২০ খেত ২১ त्रक्रीजः २२ त्राङ्ककः २० (ना**र्**-वाजक २८। ইতি শব্র ব্রেণী।। कनार्थां उ॰ २०। ই 🗟 ऊठे। धरः ॥ व्यमः ७११ः। निषदः । कवायदः । অন্নত্রণ বিপাকে মধুরত্বণ সরত্বণ। বাত পিত্ত হরত্ব। ফচ্যত্বণ। বলী পুলিত নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজ-निघकः।।आयक्नाःनाटमाड

নাম লক্ষণ গুণাঃ। ত্রিপুরস্য ব্ধা-र्थाय निर्नितिष्य विंत्वाकरैनः। नि রীক্ষ্যামাস শিব: ক্রোথেন পরি<sup>-</sup> প্রিত: ৷৷ তত স্কু৷ সমপতজীশ क्याहिलाकना । অতো कृषुः अभा अविषयानत हेव कृषन् ॥ वि जीगामभाजसम्बाम्<u>म</u> विन्तृस वाम-कार। इमापुका गूरभम गूक कर्पम् (साम्यार ॥ कृषिम् चत ভব্দি রক্ষাদিরসযোগতঃ । ৰূপ্য ম্ভ রজভ• ভার• চন্দুকান্তি সিত• শুভ ।। গুক স্নিজ মৃদু খেত দাহ हिन बनक्करा । बर्गान्तर वन्तुवर स्रह् क्षा अप क्षा मुख्या कि किन কৃত্রিম কক্ষণ রক্তণ পীতণ দলা লঘু । मारु (इन घरेन नंद्रें क्या, मुद्रें পুकीर्ভिङ ॥ क्लाः भीङ क्याः যানু স্বাদৃপাক রস সর । ব্যসঃ স্থাপন স্থিম্ম লেখন বাত পিক্ত জিৎ।। পুনেহাদিক রোগাণ্চ না শযত্যচিরাৎ ধুবং। ভারং শরী-রস্য করোভি ভাগা বিধ্বাসনা यहाँ भूकनामः । वीर्यप्रः वनः ইম্ভি তনোশ্চ পুষ্টি মহাগদান্ পোৰ্যতি হাশুদ্ধ ॥ 🕸 ॥ অথ মারণায যোগ্য কপ্য মাহ। ভুক मिथा सृष्ट्र (चंड नाष्ट्र हन घनक्रमः

। वर्गाष्ट्राः हन्मुवर बहुः जाति निव्दनः मृं छ ।। # ।। व्यथारग गर्भा कृषिन क्विम कक प्रक भी उ रेकी वर्ष । मारु (इम घरिन नंक्षे॰ कुन्। मुक्षे भु-कीर्खिङ ।। 🕸 ।। यथ माधन वितिः । পত্তলীকৃত পত্রাণি ভারস্যাগ্রৌ পুরাপযেতা নিষিঞ্চে তপ্ত তপ্তা নি তৈ**লে ভ**ক্রেচ কাঞ্জিকে ৷৷ গো-মূত্ৰে চ জলত্থানা ক্ষাযে চ ত্ৰিখা ক্রিধা ৷ এব• রজ্ঞ পত্রাণা° বিশু-জি: **সংপু**জায়তে॥#॥ অথাশুজস্য ৰপ্যস্য দোৰ নাহ। ৰপ্যু হু শু-দ্বন্ত করোভি ভাপণ বিধৃণসনণ বীর্য্য वलक्यकः। (महन्। भूष्टे इत्र তনোতি রোগা॰ স্ততঃ শোধন নস্য হ্বর্যাৎ॥ ৠ। অথ ক্প্যস্য মারণ বিধি:। ভাগৈক তালক মর্দ্য যাম মম্লেন কেনচিৎ। তেন ভাগত্র্যণ তার প্রাণি পরিলেপ্রেৎ 🛭 ধৃত্বা মুষা-পুর্টে কদ্ধা পুটেৎ ত্রিংশদনোপলৈ: । त्रमुख् हा भून छान प्रा कका भू-न महारेटा। वर ठउम्म भूटि छात्र ভথা পুরুষতে ॥ 🕸 ॥ অন্যপুকার: ١ মুহীক্ষীরেণ সংপিষ্ট মাক্ষিক তে न (नभरयर । जानकम् । भुकाद्रग ভারগঞাণি বৃদ্ধিমান।। পুটে চতুর্দ্ধ-मन्दि खाद ज्या भुकाय । 🛊 ॥

क (वर्षे व्यव क्रम्)। विद्युत्रान कः।

वितः मात्रिजमा कामामा खेगाः। क्यो नी उ॰ कंषायाम् साम्भाक तंकु नतः। वय्नः ज्ञालनः निष्कः প্ৰথম বাত পি ভুজিৎ। পুনেছা· **क्ति द्यागाः क नामयङ्घाद्या** ধুরণ। ইতি ভাবপুকাশ:।। व्यथ क्राक्रियः । मधाकाः उउ তা<u>নুঞ্চ করেণা মান্দিক রসং ।</u> धननाह ভবেদৌপ্য সুবর্গকরণ শৃণু ।। ইতি গাৰুডে ১৮৮ অধ্যায:।। लि। वि जुन्मतः। इं**डि** मिमिरी।। भाषाकः भू रेनिककः। इंडा মর: ।৷ ৰূপ্য: রজত: তদেব নিছ: भूर्बरे एक: ब्रज्जाश्राकारेनकि कः। देक्षकभिक्त रेन इकः इक्रान्। । পুৰুষাখাদি ব্লেণ গঠিত ব্লভ ক্প্যুণ তস্যাধ্যক্ষো নৈষ্কিক ইতি কেচিৎ। ইতি ভরত:॥ এর গুঃ। ই**তি শব্**-भाषा ॥ াষ ত ক বিষুব্রণে। ইতি **ক**বি कन्नकमः ॥ सिघी मृद्धानानशः । व्यक्तियः। इति पूर्णामानः।। ষেকঃ পু॰ বাসকঃ। ইতি ভটা-थवः ॥ हिष्ठ वि ७७७०। ইত্যমর:॥ ष् भू निख अकरेनच मुक्ति । ७ फि-

ইতি ভরত: ।।

কাদ ভ ক পাক্ষের। ইতি কবিকল্পদ্ম: ॥ দীষা । তথা চ। স পু
ৰাতু বুলে যুক্ত গোরল:পাত্তরকিতো। শিশু কহিদ্য যমজো নিলিপেষ ভর্কিতো॥ ইতি কীচক

যমকং ॥ পাক্ষ্য মালুকীভাব: ।

কাদ্যতি কাদ্যাতি কেশ: তৈলাভাবাদিভিশ্বে: । ইতি দুর্গা-

কক্ষণ ক্রি অপ্রেম ।। অচিক্ষণ । ইত্যমর: ।।

मानः।।

কক: পু॰ বৃক্ষ:। ইতি হেমচন্দ্র:
।। বরকত্ণ । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।
কক্ষণস্কক: পু॰ গুগুলু:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

কৃষ্ণাত্মিক। স্ত্রী লক্ষাধান্য । ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

ক্**ক্**দৰ্ভ: পু: হ্রিদ্র্ভ:।ই**ডি** রাজনির্ঘণ্ট:॥

क्कभवः भू॰ भाष्य। हेवृक्षः। ইতি द्राव्यनिर्घण्टः॥

कक्कि श्रिः भू श्रीवाहीय वशा है जि जाक निर्मित्ते ।।

क्षक्षामूकनः भू॰ भन्नवृक्षः। ইতি 
क्राक्षनिर्घणः॥

क्षका जी म्डीव्कः। ইতি दाव-

दत्रक ष ड मझायाः। हैंडि कवि-कन्नक्रमः । मका मःमयात्राणः। थ स्वाद्रिकेटा ड द्विकट्ट भूक्य-षः सार्गि। सागूर्वे। भूक्रवादिडि मःमयमाद्राभगजीकार्थः। त्रिद्र क। हेडि मुर्गामामः॥

রেক: পু॰ শক্ষা।। নীচ: ম বিরেচন । ইতি নেদিনী।। ভেক:। ইতি তিকাপ্তশেষ:॥

রেকণঃ ক্লী স্বৰ্ণ। ইতি সিন্ধান্ত। কৌমুদ্যামুণাদিকৃতিঃ।।

त्रका जी नित्महः। इंडि एम-हन्मः॥

রেখা জী অল্পক ।। ছদ্ম।। আভোগঃ।। উল্লেখ: । ইতি বিশ্ব: ।। উলেখ স্বৃত্ত দণ্ডাকারলি পিবিশেবঃ । দাঁটো ইতি কসী ইতি চ
ভাষা। যথা। যাবতী যাবতী রেখা
গুহাণা মন্তবর্গকে। ভারতী ছিণ্ডণীকৃত্য অস্তাভিঃ পরিশোধ্যেৎ
।। অস্তোপরি ভবেদুখা অস্তাভ্য

छत्र विनम्दः। यज त्रथा न विनमुण्ड खर मम शतिकी विंउ । । कि (के। जिल्लुः ॥ 🗱 ॥ नदीदस्क्रथग् **म्**डाम्ड लक्ष्यः यथा। ननारि**ध**नऽ দৃশ্যন্তে ভিস্নো রেখা: সমা হি তাঃ µসুশ্ৰী পুঞ্ৰমমাযুক্তঃ স বঙিং জীব∵ তে নর: ম চজারি শচ বর্ষাণি ছিরে-খা দর্শনামর: ৷ বিংশত্যুদ্দ মেক রে: থ আৰুৰ্ণান্তা: শভাযুৰ: ॥ আৰুণা-ন্তরিতা রেখা ভিসুক্ত সূতঃ শতাযুষঃ । সপ্তত্যা মৃদ্ধি রেখা তু ষষ্ট্যায় ভি-সৃতি ভবেৎ ॥ ব্যক্তাব্যক্তাভী রে-খাভি বিংশত্যদায় রেব হি। চ-पाति नह वर्षाण शैनात्रथल की-বক্তি।। ভিন্নাভিশ্চৈব রেখাভি রপ-মৃত্যু র্বরস্য হি। ত্রিশ্লণ পরিশণ বালি ললাটে যুস্য দৃশ্যতে ৷৷ ধন পুঞ সমাযুক্ত: স জীবেৎ শরদ: শত । ভর্ন্যা মধ্যমাকুল্যা আ-गृत्रथा ज् मध्य :।। मन्त्राक्षा या **ভবেজদু স** জীবেৎ শরদ: শত• ॥ बनात्रचा जू मुषमा जक्षामनूव-र्ख्ए ।। भवामाया करत्र दिशा व्याप्-রেখা অতঃ পরে। কনিষ্ঠিকা স-शानिका अव्रात्था<sup>र</sup> नगानिल्ल ॥ অছিন্না বা বিভক্তা বা স জীবেৎ শরদ: শত ৷ খস্য পাতিতলে রে-

थ्रं बायु सम्मुकानायर ॥ मठ । विश्वागिषः भू विद्यवि क्षर् विशिविदह छागी कृप म मःन र्यः। किनिष्ठिका॰ जमाण्डि। मध् े भारा मूनागडा ॥ विष्टिः वर्यायूवः वर्गार वाग्रवथा ज्ञानवः।। इजि গাকডে ৬৩ অধ্যায়:॥ #॥ অপিচ । घनाक लिक मधन खिरमार्त्र थीक यम् रिव । नृश्रातः क्रज्ञन्या मनि दक्ति अमू व्यि जा ॥ यूगमीना व्यि छ-করে। ভবেৎ সত্রপুদো নর:। বজু। कात्र । धनिना॰ नर्मा शृहिन एका বুধে ৷৷ শহ্বাভপত্ৰ শিবিকা গজ भाषाभा न्ता व साक्ष्म भः তাকাভা নৃণালাভা নিরীশ্বরে॥ मागाजाक गनागानाः संखिकां छ। নৃপেখরে । চক্রাসি তোমর খনু: ब्रञ्जां नृशिकः करत् ॥ উদূখनाः ভা বজ্ঞাঢ়ে বেদীভা শ্চাগ্রিছো-ত্রিণ। বাপী দেবঙ্গলাভাচ্চ ত্রি-কোণাভাশ্চ ধার্মিকে।। অঙ্গুখ্ন-লগা রেখাঃ পুত্রাঃ সৃত্রা চ্চ কারি काः।। भूरिमिनीगठा (द्रथा क ৰিষ্টামূলগামিনী।। শতাগুৰঞ্জ-কতে ছিন্নগা ভক্তো ভব্ া নি-साम्ह वङ्ख्याः मु। निमु वा। निह वृरेकः कृत्मः॥ इंडि गाकाउ ५५ व्यक्तायः ॥

व्राजनिक्छ विक्रम्यारे क्रम्याथ-কৃত গণিতগুত্বশেষঃ। তস্য म् कि छ विवद्गा यथा । यानहे वाकाशयारि। वंशामाना वाज-**ण।** प्रखानि विव्यवर्त्यग्रेष्ट्रगः शा পুাম গল্পবাজিন: 11 ডস্য শ্রীল-यिन हन्। जूरेहे। त्रवृति सूरि । विकः मुनादे बगमाद्यी तिथागिनिङ मुखम'।। चन्द्रे विहिछ नाजः যত্ৰ কোণাৰবোধনাৎ । ক্ষেত্ৰেষু জায়তে সম্যক্ বুগুৎপত্তি গণিতে उथा।। निन्ननाज भिष् (भाकः বুন্ধণা বিশ্বকর্মণে। পারস্পর্য্য বশা-रिक्तागढः ध्रतीखल ॥ जमृहि-यः भहाताज करिमः हाउद्धरा भूनः । পुका भिष्ठः भया भग्रक् गनकान-म्(इड्दा ॥ 🗱॥ व्यथ्यभागिना । অত্র গুম্থে পঞ্চদশাধ্যাযা: সন্তি । অষ্ট্র সপ্তোত্তর চতু:শত• শকলা-নি সন্তি। তত্ৰ পৃথমাধ্যাবে অষ্ট্ৰ-চত্বারি শছকলানি। ভত্রাদৌ প-রিভাষা। যঃ পদার্থঃ দর্শনযোগ্যঃ विভागानईः त्र विन्तु वीष्ठाः । यः नमार्थः मीर्घः विखात्रत्रहिजः वि-जागाई: न (त्रथानक्वाघ्रः। वि-স্তার দৈর্ঘ্যযো যজ্জিদ্যতে তব্দরা-

তল দেবক্ষেত্ৰ ৷ ভদ্ধিবিশ এক क्रवद्यम् विजीयः विषमः। जय রেখাপি ছিবিধা। একা বকা অ-न्त्रा अद्रवा । अथ अद्रवद्रिश् व-का १ यम् । यम् । वाद्या विनर्वः व्यव-लाकिछाः मष्ठः अकविनमुनाहाम् ऽ रह मा मद्रवा अनाथा **क** हिवा। ४-রাতল নলি সম্ বিবমঞ্জের। नम य जांत्रुता जि।यद दिशा वय সম• সমানান্তরি• ন ভবতি তস্য **ৰম্মিন্ পুদেশেবস্থম্ভর•** ভবতি ত **দিশে বর্জিত**যোরেখযোরন্তর নৃ **ভরোভর মধিক মেব** ভবতি যত্র।-- **প্লমন্তর• ভবতি তদ্দিশি** বৰ্দ্ধিতযো রেখযো রন্তর মুক্তরোক্তরমল্ল মেব ভবতি যাবদুেখা সংযোগ তদন ম্বর মন্তর বন্ধিঞ্ ভবতি। যত্র কোণ শব্বঃ তত্র সরলরেখা কৃত-এব কোণো তেৱয:। যত্র রেখাশব: তত্র সরলৈব রেখা জেয়া। যত্র ভূমিতলশদ: তত্ৰ জল সমীকৃত মেব ভূতল জেন। ইতি রেখা-গণি ভস্য পরিভাষা ॥

রেখাভ্নি: স্ত্রী লক্ষাস্নেকপর 
ত্যোমধ্যস্ত্রগতদেশ: । যথা ।
যল্লকোজ্নানী পুরোপরি জক
ক্ষেত্রাদি দেশান্সপ্শন্স্তাংনক

गङ यूरेष निगरिण मा महाद्विशा र्ज्यः । जामा शुक्रम्भू रुगेष्ठ्व विवस शकाकि दिश्योमयोध् महान खबाट किया छम्डब्र ज्व (थ्रिटे वृगं व कल।। इंडि निष्नांडान-রোমণি:।। 🗱।। অন্যন্থ।রেখোক্তা **স্**र्यं। जिक्कारि । यथा द्रिथाम विक् छ। विज्ञाकमान्य सरवोकः रेमन्या र्गः খ্যসূত্রগা:। রৌহিতক নবন্তী চ তথা मिबिरिड• भद्रः ॥ व्यम्प्रार्थः । वद्रा সুমেৰুপৰ্যত্যো র্য্যসূত্রণা দেশা রেখা সংজ্ঞিতা:। তান্ দেশানাছ। রৌহিতকদেশো হবন্তীদেশঃ সন্মি-**হিত• সর: হ**ক্কেত্রঞ্চেত্র্থ:।রে-थायाः भूबंदरम भत्रदसम ह यथा नःथाः भूर्याप्तय काला । भन्नकालः পূর্বকালঞ্চ বারপুবৃত্তি: স্যাদিত্য-র্থ:। এতেনৈতদুক্তণ ভবতি রেখা-সংজ্ঞক দেশস্থাকা যদা সূৰ্য্যণ পশ্যন্তি তদৈব সর্বদেশে বারপুর্-ভি রিভ্যর্থ:। তত্র রেখা পূর্বছা: সন্নিহিতত্বাদাদৌ সূর্য্যা পশ্যস্তি তদনস্তর্ক রেথাছা:। অতো রেখা भृद्धं मृर्य्यामयार भन्नः वानः । उथा त्रिथार्रिः मूर्यि मृष्टि मृष्टि भकार রেখা পরস্থা: পশ্যন্তি অতো রেখা-

ইত্যথাঃ ভত্ত কাল পরিমাণ মাহ । রেখাতো বাবন্তি দে**শা**ন্তর্যোক নানি ভৎস্মিতাভি বিষ্টাভি: भीवः भारहीनाजिः ठुर्थजाग शैनां वंत्रभुवृद्धिः ग्रामिज्रथः । (एणाञ्चत्रमाधनभूकात्रस्र मूर्ग्) সিদ্ধান্তে উক্ত:। অত্র ভূ সংক্ষপে ণ কিঞ্চিৎ কথ্যতে। গৌডে পঞ্চদ-माधिक मंजरवाडनानि ১৯৫। म ক্ষিণরাঢ়ে গঙ্গাতীরে দশাধিক শ ভ• ১১০। ভৈরবীতীরে বি•শত্য থিকশত ১২০। বঙ্গে স্বণ্যামা দৌ চত্ত্বারিংশব্যবিশত ১৪০ 1 বারাণস্যামস্টোত্তরশত ১০৮ দে-শান্তর ৷ এব নন্তাপ্তে ৷ তর তম্ভ লোকসংগৃহীত মিতি কিন্ত भ्यंत्रिकास्त्र अर्घ्वतावार्यय यात्र পুবৃত্তি কক।। যথা। বারপুবৃত্তি: গাণ্বেশে ক্ষপার্জে ২ত্যবিকে ভ (वट् । उप्प्रभाष्ठवनाफीनिः भ শ্চাদ্নে বিনিৰ্দিশেৎ ॥ ইতি দী <u> शिकाहीकायामर्थाकोमून्त्राः</u> शाः विनहाननहः॥

রেচক• ক্লী কন্ধুইস্ভিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ৭৮

রেচক: পূ• যবক্ষার: ৷ ইভি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ জ্যপাল্যুক্ষ: ॥ जिनकर्कः । ইতি রাজনির্ঘণ্টः ॥
की उपर्यक्रन निः क्षिण्यक्षन निः क्षिण्यक्षन निः क्षिण्यक्षन । भिरुक्षित्री हिं कार्या । यथा । भिरुक्ष्याना । रहाउ खां कि संहिषी हिः स्वादित्र । स्विष्टिक्षण्य विविकी । एउ यक्षी कि यंक्ष त्राप्ति । ই जिल्लाभवकः ॥

(त्रव्रनः ज्ञी मलाज्यनगं उट् भर्याः यः। भूकन्तनः २ विद्यवः ७ विद्य-व्रनः ४। ইতি द्रव्याला ॥ द्यवः ६ (त्रव्रना ७। ইতি नद्यव्यावनी ॥ (त्रव्रनकः भू॰ कम्भिज्ञकः। ইতি द्राजनिर्देषेः॥

রেচনা জ্রী কাম্পিল:। ইতি শব্দ রত্নাবলী।।

রেচনী জী কাম্পিল:।ইতি শব্দ-রহাবলী॥ কালাঞ্জনী॥ দন্তীবৃক্ষ: ।ইতি রাজনিঘণ্ট:॥শ্বেডত্রিবৃতা। ইতি মেদিনী॥

রেচী জ্রী কম্পিলকঃ ।। অকোঠঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

রেল ঝড দীগুৌ।ইতিকবিকল্ল-ফন:।। ঝ অরিরেজং । ড রেজতে রিরেজে। ইতি দুর্গানাদ:।।

রেট খা ঞা যাচে ॥ বাতি। ইতি কবিকল্লজন: । খা অরিরেটং । ঞা রেটভি রেটভে ৷ যাচে। যাচনা । ইতি দুর্গাদা**সঃ** ॥

(त्रगू: भू॰ जी थ्वा:। इंडामदः॥ (त्रगू: भू॰ भर्भ हे:॥ (त्रगूका॥ भाःभू:। इंडि दाखनिर्घणे:॥

রেণুকা জী সরিচাক্তিসুগরিদ্ব্যু-विष्णयः। उद्भर्गग्रायः। विका २ হরেণু: ৩ কৌন্তী ৪ কপিলা ৫ ভম-गिक्षिनी ५। ইত্যমর: ॥ काषा १ निम्नी ৮ महिला २ द्राक्युधी >० হিনা ১১ রেণুঃ ১২ পাঞ্পত্রী ১৩ रुद्रिगुका 😘 जूलगै 🗘 लिलिहा ১৬ শাস্তা ১৭ বৃদ্ধা ১৮ কুটিৎপুত্ত-কে বৃক্তা ইতি চ পাঠঃ। ধর্মিণী ১৯ क्शिलामा २० रेहमवजी २७ शाः खभड़ी २२। **अम्रा ख्नाः। कर्वृद्धः।** भी उद्ग । थर्क् कर्ष् ७ ठ्का राष्ट् বিষনা শত্ত্ব । মুখবৈমল্যকারিত্ব-थः। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ অপিচ। অথ রেণুকা মরীচসদৃশী। রেণুকা রাজপুঞ্জী চ নন্দিনী কপিলা দ্বিজ্ঞা । ভষ্মগদ্ধা পাণ্ডপুত্রী ষ্তাকৌন্তী ছরেণুকা।। রেণুকা কটুকা পাকে जिङ्गानुका कर्षे वयः । भिखना मीलनी (मध्या भावनी गर्खभाउ-नी ॥ वलाम वाज विक्ववर ज्हे कथ् विष मार्ग्रा ३७ ভावलु कानाः॥ अन्। (त्रुका कक वा

**७**श्री मीभनी भिड़ना वृद्धः । हैं ७ রাজবল্লভ: ॥ 🛊 ॥ পরশ্রামমাতা । अधिवद्गन थथा। भाकर ७ व उँवाठ । অথ কালে ব্যতীতে তু ক্ষমী র্মহাতপা: । বিদর্ভরাজস্য সূতা॰ भुषाञ्चन क्रिका॰ स्वर ॥ ভार्यप्रार्थ প্তিরগাহ রেণুকা লক্ষণানিতাং । সা ভমাৎ সুষ্বে পুঞান্ চতুরো (वहमञ्चाजान् ॥ क्यव्यः मृत्याशः বিশ্ব বিশ্বাবসু তথা। পশ্চান্তস্যা• স্ব॰ জভ্তে ভগবান্ নধুস্দন: Il कार्खवीर्यायश्चम् मकारेमाः नकः লৈ: সুরৈ:। যাচিত: পঞ্ম: সো **२ ভূতেবা॰ রামাস্থ্যস্ত য:।। ভা-**রাবভারণার্থায় জাতঃ পরশুনা সহ । সহজ: পরশু স্তম্য ত॰ জহাতি কদাচ ন ৷৷ অ্যাথ নিজ পিতামহা শ্চকভূক্তিবিপর্য্যথাৎ। ব্রাহ্মণ: ক্ষ-প্রিধাচারো রামে। ২ভূৎ কুরক-यांकृट् ॥ म (दमानिधनान् उद्यादा খনুৰ্বেদাণ্ড সৰ্বতঃ। যতাতাৎ কৃ-**उक्**रित्रा १ ज्याप्ति विष्तु दिन ॥ अकरा उना जननी मानार्थ (द्र. ণুকা গতা। গঙ্গাতোযে তথা প-भारमान्। हिळ्डल्थः नृष्टाः ॥ ভार्यरा -ভি: সদৃশীভিশ্চ জলকীডারত• ण्ड•। সুমালিন স্কারঞ্ তকণ•

· / ব্লেণুকা **ठम्**न्नविछः ॥ उथाविधः नृत्रः षृष्ट्री **जःबाउ**मरना ज्**नः।** রেণুকা ण्णृह्यामान उत्म त्राख्ड ह रेमथुन॰ ॥/ग्ण्हायुजाया खना अ न १ दूरः नमकायछ। विक्रिजना छथा क्रिमां ज्ञ मा साम्भ ययो ॥ व्यव्यर्थि ज मनश्च खा॰ (त्रगुका॰ विक्ञा॰ उथा। थिक् थिक् भाभन्न एंड एंड निनिन्त **চ সমন্তত: ॥ ७७: यजनयान् श्रारु ठ**जूतः शुथमः मूनिः । अवन्रश्मुन् থান্ সরান্ একৈক জনতো কভ।।। ছিক্ষ্যেনা॰ পাপনিরতা৽ রেণুকা৽ ব্যভিচারিণী । তে ভদ্বচো নৈব চক্র মুটা শগসন্ ছড। ইব ॥ জপিতো জনৰণ্ন স্তান্ শশাপেতি বিচেতনা-ন। ভবধৃ যুষ ন চিরাৎ জড়াগো-বিদ্বিসহিতা:।। অথাজগান চরমো कामनः प्रांजिवीयं द्वान्। उक्ष द्रामः পিতাপাহ পাপিগা ছিন্ধি মাতর ।। স ভাুতৃ: ক তথা ভ্তান্দৃষ্টাজ্ঞান বিবৰ্জ্জিতান্। পিত্র। শপ্তান্ মহা-। **ভिजाः लुज् शर्बम्बाहिन्या रा**-स्नि (द्रगुका॰ क्षित्रा॰ मृक्ष्री हाट्का॰ थाना २७वट । जनविः शुभनः मः মিতি রাম-মুবাচ হ।। প্রীতোমি পুত্ৰ ভদু তে বৰুষা মঘচঃ কৃত । ज्यापिक्षवद्रान्कानान् दः देव वत्रय

সাস্পৃত ॥ স ভু রামো বরান্ বরে নাতু ৰুখান নাদিত:। বধ্ন্যাম-রণ ভস্যা ভ্রাতৃণাশ শাপমোচন ॥ নাতৃহত্যা ব্যপন্য বুদ্ধে সর্বত্র বৈ करः। आयुः कन्नाडभर्ग् हः कमारिष न्लमख्य ॥ मर्वान् वद्रान् म भुराती জনদন্নি মঁহাতপা:। সুপ্তোত্থিতেব क्रननी (इनुकान) छवछना ॥ वधः ন চাপি সমার সহজপুকৃতি তথা । युष्क कर हित्रापृष्ट्रे लाज त्राम उद्देव हि ॥ भाठ्हजावारभाद्याय পিতা ড॰ বাক্য মুব্বীৎ। ন পুত্র বরদানেন মাতৃহত্যাপগছতি ॥ **उचा**जुः वुक्तकथार गह नाजुक उ-ব্জলে। তত্র সাস্ত্রা মৃক্তপাপে। ন **हिदार भून दियामि ॥ जगिष्क अय** পুল বুং বুক্ষকণ্ডং বুর ফতং। স ভসঃ বচন শুদ্ধা রান: পরশৃধ্ক ভদা ॥ উপদেশাৎ পিতু यांछा *वुन्नञ्च* ७॰ व्रवाहकः। তত मानः न विविद কৃত্বা ধৌতপরশ্ব: ৷৷ শরীরামি:-সূতা সম্যক্ মাত্হত্যা ব্যলোক-य । जा उम भू उ। यः साथ छीर्थ মাসাদ্য ত বরণা বীথি পরশুনা कृद्वा वृष्मभुध भवाहरा । वृष्मञ् গুাৎ সূতঃ সো ২৭ কা সারে লো হিতান্ত্রে।। কৈলাসোপত্যকানা-

**সরস ভীর• সম্**ত্থায মহাব**ল:** ॥ अर्ठारत्न पिण शृही मनयहुकाः সুত:। ততে। ২পরতাপি গিরি• হেমশৃঙ্গ বিভিদ্যচ ৷৷ কামকপা-खतः भीठे भवाश्यमम् श्राः । ভস্য নাম বিধি শ্চক্রে স্বয় লোহি-তগঙ্গক ॥ লৌহিত্যাৎ সরসো बाला लोहिजाथा खाउ। २७-বং। স কামৰূপ মথিলং পীঠ माञ्जावर वादिना ॥ त्गानवन् अर्ब-ভীর্থানি দক্ষিণ যাতি সাগর।। প্রাণেব দিব্যবমুনাং সংভ্যক্তা বুন্ধ-ণঃ সূতঃ।। পুন: পত্তি লৌহিত্যে गदा चारण याजन। टिव्य मानि मिजाञ्चेन्।। या नात्र। नियरजन्मु-यः॥ সাভি লৌহিত্যতোষেষু স যাতি বুল্লণঃ পদ । চৈত্রস্ত সক-**ल॰ भाम॰ मृहिः नु**यउभानमः ॥ क्षीहिंजुरजार यः माजि म कि বল্য মবাপুষা । ইতি তে ক-थिত दाजन् यमर्थ भाजद भूदा ॥ श्चि बीद्रा जामन ११।। यसामा कृत-कर्मक्ट । इन्छ गहनाथानः यः भृताि दित दित ॥ म दीर्घायुः পুনুদিতে। ধনবানভিজায়তে। ইতি कालकाभूद्रात ৮ ६ व्यथायः॥

স্তু ন্যপত্রু দ্বণ: সূতঃ। তস্যাপি । রেণুকাসুতঃ পূ॰ পরশুরাম:। ইডি সরস স্তীর• সমূত্যাব মহাবল:।। (স্মচন্দু:।।

রেণুক্ষিত: পু॰ গর্দ্দভ:। ইতি
ক্রিকাণ্ডশেষ:।। খুলিমুক্ষিতে ত্রি।।
রেণুবাস: প॰ ভমর:। ইতি ত্রি-

রেণুবাসঃ পু• ভুমরঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।।

রেণুসার: পুণ কপ্র:। ইতি ত্রি-কাওশেষ:।।

त्रिगुत्रावकः भू कर्ग्द्रः। इंडि मुद्देशवनी ॥

রেত: ক্লী শুকং।। পারদং। ইতি
নেদিনী।। অপ্সুরেত:পাতনিষেথো যথা। ন বানহস্তেনোজ্ত্য
পিবেছক্ত্রেণ বা জলং। নোত্রেদনুপস্শার নাপ্সুরেত: সমুৎস্জেৎ।। ইতি কৌমে উপরিভাগে
১৫ অধ্যায়:।।

রেতকা জী বালুকা। ইতি ভাব-পুকাশ:॥

রেতন॰ ল্লী শুক্র•। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।।

রেত্র্য ক্লী পিত্তল । ইত্যমর্ট্রী কাষা নীলকঠঃ।।

রেত্র॰ ক্লী রেতঃ ॥ পীযুব॰ ॥ পট-বাসঃ ॥ সূত্রক॰ । ইতি মেদিনী ॥

রেপ ড প<sup>্</sup> শদ্যোগমনে। ইতি কবিকল্লছনঃ।। ড'রেপতে রিরেপে 👃 রেবত

यां जित्रित्रेशर । इंडि मूर्गामानः ॥ ॥

রেপ: बि , निन्ति उ: ।। कृत: ॥ कृ পণঃ। ইতি মেদিনী।।

রেফ: পু: রবর্ণ:।। রাশ:। ইতি

मद्भवज्ञावनी ।।

রেফ:ু ত্রি **স**ংসিত:।ইত্যমর;়া

**রেফাः** जि कृतः॥ **अथमः॥ मूर्धः** 

।। कृष्णाः। इंडि भयत्रज्ञावली ॥ রেভ ড ঋ শব্দে। ইতি কবিকল্ল-

ফন:।। ড রেভতে রিরেভে। খ

অব্লিব্লেভং। ইতি দুর্গাদাস:।।

রেভণ ল্লী গবাংধুনি:। ইতি ক্রি-

কাপ্তশেষ: []

द्रि**द्रिशाः भुः भि**वः ॥ अमृतः । ইতি যেনিনী।। চৌরঃ। ইতি শক্

ब्रज्ञावनी ॥

রেব কড প্লুভৌ।। ব্লে। ইভি कविकन्नकभः॥ প्रु जिः প্লবেন गम-

ন•। ঋ অব্লিবেব । ড রেবতে ক

পি: উৎপ্লুভ্য গছতীভ্যৰ্থ:। ইতি **मूर्गामात्रः** ॥

রেবট॰ ক্লী দক্ষিণাবর্ত্তশত্রঃ। ইত্য

क्यभानः॥

शुः भूकद्रशा (वृष्शा वा-ज्नः ॥ वियरिक्तः । इंडाइव-

शानः ॥

**तिर्डः पू॰ क**र्युतः। ই डिडिटिंग

রেবতী

ধর:।। আরগ্ধবৃক্ষ:। ইতি শব-

ब्रङ्गावणी ।। ब्राह्मविरणयः। त्र जु

রেবতীপিতা বলরামখশূর্শ ইতি মহাভারত ॥

রেবতক ল্লী পারেবত । ইতি

ब्राक्रनिर्घण्डः॥

রেবতিঃ জ্রী কামদেবপত্নী। ইতি

ত্ৰিকাণ্ডশেষ:॥

**त्रिवणी खी वनास्वश**्री॥ नक्रकः

**. जिम: ॥ माज्कार्ज्य: । ই**जि स-

मिनी ।। जीगवी । ইত্য बर्गानः ॥

मूर्गा। यथा। द्विता जू नर्यमा (मती

নদী বা রেবতী মতা। অতিপ্রত্ন

बक्षा वा लाक (मवी नुकीर्डिंग)।।

इंडि (मवी भूत्रात ४० व्यव्यायः

।। 🗱 ।। রেবতীনক্ষত্রন্ত অখিন্যাদি-

সপ্তবি•শভিনক্ষত্রান্তর্গতশেষনক্ষ-

ত্ৰ ৷ ত্ৰস্য ৰূপ নংস্যাকৃতি দ্বা-ত্রি-শন্তারাত্মক । তস্যাধিষ্ঠাত্-

रित्वा भ्याथाः **भू**र्याः । यथा ।

দন্তসংখ্যভবনে ঝসাকৃতাবন্তভে

वनरनसम्बद्धारम । (कामनान्सि निश्रानियाट शिर्य कान थानन

कवाः शिर्य १ वन्।। इं कि का नि

দাসক্ত রাতিলঃনিক্পণ।। #।।

ডত্ৰ জাতফল যথা। চাৰুশীল

বিভবে৷ জিতেন্দ্রিয়: সৎসল স্ব

**ख्वरेनक मानमः। मानरवा नन् खर्व**-মহীপভী রেবতী ভবতি যস্য জমা ভ ।। ইতি কোষীপুদীপঃ।। 🖷 ॥ বালগুহ্বিশেব:। ভজ্জুইস্য চি-किट्ना यथा। अध्यक्षाक्षम्की ह भाजियाथ भूननेवा । महा विषात्री ছেতাসা<sup>•</sup> স্থাথেন পরিষেচন•॥ **অ**--জশৃস্বী মেঢাশৃস্বী। সহা সেবতী পুত্ৰজাতি: ৷৷ তৈলমভ্যঞ্জনে কাৰ্য্য-व्रक्षि गर्जद्राम उथा। भनक्षागाः नवार उथा भोत्रकरच्यक ॥ नर्जः त्रमः त्रायः। भनक्ष्या ख्युष्ट्ः। नजर॰ लामञ्जूक मुनीदर शीछ-ছবি। গৌরকদমকো হারিদুক:। হরদুআ ক্দম ইতি লোকে ৷৷ ধ্বাখ-**ক**ৰ্ণ ক**ন্দ্ৰভ শল্পকী ভিন্দুকেষু চ। কা** কোল্যাদৌ গণে চাপি সিল্প: সর্পি: शिविहिणुः॥ अथकर्गः भाश् इंडि लाक । जनशाः महर्मक भूपरः नाथगिककः ॥ गृष्ट्रान्क भूत्रीया-नि यदान् यदकत्ना घुङ । **नक**्र-(या क जरया: कार्य) (म ज मुक्तू श्रनः निष्णाः ॥ यवकत्ना वः नासूतः ॥ যুক্তা: মুমনসো লাজা: প্য: শা-(लाग्रास्ने पित्र । यद्यि निर्दास्त्रार्गाः **छी**र्थि द्विदेखि भूषञाञ्चना ॥ त्मः **छीर्थ्य** भारति ॥ द्वान थानी **ब्रना**त्रा-

ख्रप्र• अक्ष्म काद्रयिख्यक्॥ नाना नंज्यश्रापियी विजयान प्रमुखना। **চল** इन्डिनिनी महाना (इन्डी एड পুনীদতৃ II উপাসতে যা**ণ সতত** দেব্যো বিবিশ্বভূষণাঃ। লম্বাক্রালা বিমতা তথৈব বহুপুত্রিকা ৷৷ রেবতী শুষনাসাচ ভূভ্য দেবী পুসীদতু ॥ इंडि ভावनुकानः ॥ #॥ वलाप्य-भन्नाविवन्न यथा। (त्रवम् देवव-তঃ প্এ: কল্মালান থানিকি: 1 শুষ্ঠঃ পুঞ্জতস্যাস্বীভস্যাণ পর্য্যাণ ৰূপো ९७বং। স কন্যাসহিতঃ शायादिक्षा वृक्षाः शंखकः ॥ न জরা ক্ে পিপাসা থান মৃত্যু স্ত্র ক*হিচিৎ। ঋতু*্ত্ৰণ ভবতি বুদ্ধ-লোকে দিজোভনা: ॥ রৈবভস্য গভদ্যাথ भा भुती ब्राक्षरेम ङ्जा। তস্য প্ল শতং যা ত্যক্তা তা নগ-মদিশেঃ ॥ তন্য বংশে তু যে তত্র স্বৰ্গাত। ইতি বিশুকা:। ক্ষপ্ৰিয়া হাভবন্বিপা দিফু সর্বাস্থার্মি-কা:।। গতে বহুযুগে কালে আজ-গামাথ রৈবত:। মৃহুর্ত্ত নেক মত্ত্বা-সৌ দদর্শ যাদবৈ বৃত্তা ।। কৃতা দারবতী নাম বহুদারা মনোরমা । ভোজ व्कामित र्छका वामुस्व श्रुद्धागरेमः॥ गङ्गा जू देववडः ममऽ

युर्व छुन्।य (ब्रवछी॰ । भुामाप्तुकछः ब्रा॰ **छाङ, वलाम्**या श्लन रेव।। त्र-माना॰ वष्ठा॰ नीषा उवार म शुरु र्यठः । पद्धा जगाम मिथतः (मात्रा रूर्भिन देववडः ॥ द्वारम द्वारमाणि ধর্মাত্মা রেবত্যা সহিতঃ সুথী 🖊 इंजि दक्षि भूजांग ॥ 🗱 ॥ देवेंच-ননুমাতা। তদ্বিরণ যথা। মার্ক (७य উवाह। भक्षाना शिमन वृक्ता ন্ রৈবতো নাম বিশুক্তঃ। তদ্যোৎ-পাত্তি বিস্তরঞ্চ শৃণুগু কথ্যামিতে॥ প্ৰ রাসামহাভাগ প্তবাগিতি বিশুক:। তস্যাপুএস্য পুএে। ২ভূৎ রেবত্যন্তে মহাত্মনঃ দাস তস্য বি-ধিবছকে জাতকর্মাদিকা: ক্রিবা: 1 **তথোপ नयनानी • \* ह म**ानीत्ना **e**ভবন্মনে ॥ যত: পুভৃতি জাতো। ৎসৌ ততঃ পুভূতি সোপ্যবি:। দীর্ঘ (द्वाग भद्राभण म्याभ म्विशृक्षवः।। মাতা চান্য পরা মার্ভি স্ক্রিরোগা-দি পীডিতা। জগান স পিতাচাস্য িন্তবান্যস দঃখিত: ৷৷ কিনেতদি তি সো হপ্যস্য পুশ্রো হত্যমুদ্ माजि:। कगुार जाया ननामा मृनि **পু** भ्रम । व्याप्त विषया ननमा अভवाभिषमुक्तवान् । **अ**शुः धा भन्यगागाः भाषाम न कर्नु এडा।। द्यम् (धा क्ष्यामानः नर्दश মকতে পিতৃ:। মাতৃশ্চ মর্গ সংস্থা। শ্চ ৰণিতৃন্ পাত্যত্যধ: ॥ সুহ্ন। নোপকারায় পিতৃণা নাপি তৃপ্তয়ে । পিত্রো দু:খাব ধিক্ জন্ম তস্য দু-**इ** उकर्याः ॥ धन्। एउ उनग ययाः সর্বলোকাভিসমতা: । পরোপ-कादिनः भाषाः नाधुकर्यागुनुबुखाः।। অনিবৃত্তি তথা মূর্থ পরলোক প-রাত্মথা। নরকাষ ন সন্নত্যৈ দপু-धानिध रमनः॥ कात्रां महारा रिना महिजानाः उथा मुमरो चर কালে চ জরা পিতোঃ স্পুগ্র: স্ব-ক্তে হি বৈ ॥ মার্কণ্ডেণ উবাচ । এবং সো হত্যন্ত দৃষ্টস্য পুল্লস্য চরি-তৈ মু নি:। দহামানমনোগৃত্তি বৃ দ্ধ• গৰ্গ নপ্ছত।। ঋষিৰ্বাচ। সুবুতেন পুরা বেদা গৃহীতা বিধিবন্নযা। স-মাপ্য বেদান্ বিধিবৎ কৃতো দার-পরিগৃহ: ।। সদারেণ যথা কার্য্যঃ শৌতা: মার্ভা তথা কিযা:। নানু-নুলাঃ কৃতাঃ কাশ্চিত্মাবদদ্য মহা-মুনে ॥ গর্ভাধান বিধানেন ন কাম মনুক্ধ্যতা। পুলার্থ জনিত কাষ্ পুলায়ো বিভাগে মুনে ॥ সো १४॰ किमाजारनारवन मम रनारवन वा मू-নে। অমদু:খবছো জাতো দৌঃ

भीन। विक्रुलाकनः ॥ गर्ग देवा । রেবভ্যন্তে মুনিশুেণ্ঠ জাতো হয় তন-য স্তব। তেন দুংখায় তে কালে দুষ্টে যুখ্যাদভাষত ॥ ন তে ২পচারে। নৈ-বাস্যমাতু নাপি স্বস্যতে। তস্য দৌ:শীল্যাহেত্ত্ব রেবত্যন্ত মুপা-**गउः ॥ अउ**वाखवा**छ ।** ययात्ररिमकः পুগ্রস্য রেবত্যস্তসমুক্তব । দৌ: শীল্য নেতৎ সা তমাৎ পত্তা মাশুরেবতী।।মার্কণ্ডেয় উবাচ। তে নৈব ব্যাহ্তে শাপে রেবভূাফ পপাত হা পশ্যতঃ মর্লাক্ষ্য বিষাধাবিষ্টচেভস: ৷৷ রেবভূগ্রকঞ পভিত बगुराष्ट्री नमञ्जः। ভान यागात्र त्रह्मा वनकन्तत्र निवंद्यान् ।। सम्मामुक उरशाजार थाएजा রৈবতকো হভবৎ । অতীবরম্যঃ नर्बम्याः भृषिव्याः भृषिवीषद्रः ॥ তস্যক্ষ্য ভূষা কান্তি জাতা পঞ্জি নীসর:। ততো জড়ে তদা কন্যা ক পেণাতীবশোভনা ৷৷ রেবর্তা কান্তি नःज्ञाः जाः मृक्षे। शुन्रहा मृनिः । **७**म्। नाम हकादिःयं द्वविशेष्ठि हि जान्द्रता (भाषपामाम दिदेव) नाः वासुनाच्यान मञ्जवाः। भुग्रः न भरा जाग खिलाय महाहत्व ॥ তান্ত যৌবনিনী দুট্টা হ্বাকা অপ

भाविनी। म मूनि भिड्यामामरकाः **ধ্**স্যা ভর্রা ভবেদিতি ৷ এবং চিন্ত या कारणा कगाम नुमश्यामः। ন চাসমাদ মদৃশা বর তম্যা নহা-মুনিং ॥ তত ভস্য বর পুষ্টু মৃত্যি च् भूगुटा गृनिः। विदिश विद्रिला-**ला॰ रे**व शृष्टे **छ॰** शाह इराजुक ।। **गहावला गहा**बीर्ग्यः लि्नवाक व-र्यद**्मनः। मु**र्द्धा नाम ভविতा **ভर्डा श्र**म्या ग्रीमिङिः॥ गार्काल्य **खेदा** । व्यनस्वत्रकः म्याराश्वरस्य নাগতো মুনে। তস্যাশুমগদ• ধীনা-न् मूर्फ्रभः ज नजाधिशः॥ श्रिप्युडाः ব্যভবো মহাবলপরাক্রম:। পু-(था विक्रमणीलम् कालिन्तीकठे-রোভব:।। স পুরিশ্যাশ্মপদ• তা॰ তবী॰ জগতীপতিঃ। অপশ্য-मान उम्बि लुप्यज्यामञ्जा भृहे-বান্।। রাজোবাচ। কু গতো ভগবা-नयाराम्याग्रानिशृक्वः । ७ शुल-তু নিংইছানি তবুং পুরুহি শোভনে ॥ মার্কণ্ডেম উবাচ। অণ্নিশালা। গতো বিপু স্তৎ শুত্বা ভস্য ভাষিত । প্রিযেত্যানজনকৈব নিশ্চকা**ন ত্ব**-ब्राविज्याः म मन्धं सहाज्यानः **द्या**-कान मुर्चन मूनिः । नात मुक्ति महिल भूग्यावन्तर भूतः॥ ७मिन्

্দৃষ্টে, <del>ততঃ শিষ্য মুবাচ সত্</del> গোভ म । गाउँमानीय **डा॰ नीवु म**र्छा হস্য জগতা পতেঃ ৷৷ এব তাবদ্য ভুপ •িচরকালানুপাগত:। ক্লামাতা চ বিশেষৈণ যোগ্যোর্ঘা হস্য মন্ত মম।। শ্রীমার্কণ্ডেষ উবাচ। ততঃ স চিন্তবামাস রাজা জামাতৃ কার্প্র বিবেদ নচ তল্মোনী জগৃছে র্যঞ্চ ত॰ নৃপঃ ৷৷ ত্যাসনগতং বিপু গৃহীতা-ঘ নহামুনি:। পুসৃত পাহ রাজে-ন্দু মণি তে সশল পুরে ॥ কোষে বলে ২থ মিত্রেষু ভ্ত্যামাত্যেষু চে খ্যা তথাক্সনি নহাবাহো যত্ৰ নৰ্ব• পুতিপ্তিত ৷৷ পত্নী চ তে জ্পলিনী যভএবাত্র তিষ্ঠতি। প্রান্যস্যা স্ত তো নাহ• স্বশলিন্যে ২পরা স্তব।। द्रारकावाह। **५८ शुमानान्यणणः** न স্চিম্নি সভ্ম। জাতকৌত্হলাচা-भि मम ভार्य्याव का मृत्न ॥ श्रविक-বাচ॥ রেবতী তৃ মহাভাগা ত্রৈলো का माभि मृन्त्री । उव ভार्या वद्राद्राङ्ग मानरवन्तु न विश्वि कि॰ ॥ द्रारक्षावार । मुख्याः मास्टनशाः কাবেরীতনযাণ বিভো। শূরাত্মজাণ সুজাতাঞ্চ কদ্যাঞ্চ বৰ্মথজা।। বি-পাঠা• নন্দিনীঞ্চৈব বেদ্মি ভার্য্যা গৃ-हि शि याः । विश्वति स्म न जगदन

রেবতী বেদ্মি কা ত্বিয়া খবি করা। চ। প্রিয়েতি সাম্পুত যেয় ব্যোক্তা বরবর্ণিনী। কি॰ বিষ্যুত্ত তে ভূপাল न्नारयायः गृहिभी उव ॥ त्रारकावाछ । नठामूक भगा किछ ভাবো দুश्ची **ৰ মি মুনে। নাত্ৰ কোপ॰ ভ**বান্ কৰ্ত্ত্ মৰ্ভ্যমাস্ যাচিত:।। প্ৰিক্বাচ। 'সত্য' বুবীবি ভূপাল ন ভাব স্তব দূ-বিত:। ব্যাজহার ভবানেব বহিনা न्श (ना पिछ: ॥ नया श्रष्टे। इ उ व इ: কোস্যা ভর্ত্তে পার্থিব। ভবিতা তেন চাপু্যক্তো ভবানেবাদ্য চাগ-छः ॥ उन्गृञ्जाः मया नजा कन्।-তুভ্য নরাধিপ। প্রিয়েক্যানন্তিতা **टिय॰ विठातः अ**क्ष्य कथः ॥ डी भार्क्र ७ वे वाह । ७ उन्ह भा १ ७ व মৌনী ডেনোক্তঃ পৃথিবীপতি: । व्यवि खर्थाम् उठ: कर्जु • जन्ता दिवा-হিক বিধি।। সমুদ্যতঞ্পাতর विवाहाय महामूति। উवाह कन्या ना किथिए भुभुयावनजानना ॥ यदि भ পুৰি মাণ স্তাত পুসাদণ কৰু নিছসি । त्रवक्राक विवादः भ उ८ कत्राक् **भुमापिजः ॥ अधिकवा** । (त्रवक्)ः कः नरेव छामु हन्मुरयारम निवि श्चि-ভণ অন্যানি সন্তি থকাণি সুক্র বৈ বাহিকানি তে ৷৷ কন্যোবাচ ৷ তাত

(छन विना कारना विकनः शुिष्ठा-ि (म । विवाद्श विकला कार्ल मः षिवावाः कथुः खत्र ॥ श्रविकवाः

। প্ৰত্বাগিতি বিখ্যাত <mark>তপৰী রে</mark>-বতী পুতি ৷ চকার কোপ কোথেন তেনক্ষণ ভগ্নিপাভিত ॥ মধা চাক্ষৈ পুতিজ্ঞাতা ভার্য্যেতি মদিরেক্ষণে। न्द्रहिम विवादः पुः जःकरेः नः जः भागक ॥ कत्नावाह । अखवाक् म মুনি স্তাত কি॰ মে ক স্তপ্তবাণ স্তপ:। ন ত্বা সমতা তেন বৃহ্ণবন্ধোঃ সু-ভামি কি ।। ঋষিকবাচ। বুন্ধবন্ধোঃ সুতা ন ত্বং বালে নৈবাতপধিনঃ। मू जा चु भभ (या (एवान् कर्बु भन्डान् मग्र मार्च।। कत्नावाह । उभवी যদি মে তাত ভং কিমৃক মিদ॰ किवि। जभाद्वाभ्य विवाद्या (म ना ত্রক্ষে ক্রিয়তে পিত:।। ঋষিক্রাচ। এবং ভবতু ভদুং তে ভদুে প্রীতিমতী ভব। আরোপযামीनमू নার্গ রেবত্য ক্ষ• কৃতে তব॥ শ্রীমার্কণ্ডেষ উবাচ । তত ত্তপঃ পুভাবেন রেবভঃক। महामृतिः। यथा भूतं उथा ठाक

সোন যোগে দ্বিজোত্তম: ॥ বিবাহ-

পৈষ্ব দুহ্ছিতু বিধিবরাজ্রযোগজ।।

निम्नाम् श्रीजिमान् ज्या कामाजद्र-

मथाव्वी ।। अविकवाह। अहाहि-

রেবস্ত

क (उ ज्नान कथाउर) विश्मम ্ৰ্যুক্। দুৰ্লভ্য মণি দাস্যামি ম-সাপুতিহত তপঃ ॥ রাজোবাচ । मताः नावसुवन्याह मूर्णमः नष्ड-**७। मूल। मन्डद्राधिनः नृधः उट** भूजामाष्ट्रामाइः ॥ मूनिक्वाह । 'ভূবিষ্যত্যেষ তে কামে। মনু স্তত্ত-नाया महान्। मकलाः (ভाक्रऽर्ड ভূমি• ধর্মবিচ ভবিষ্যতি।। শ্রীমার্ক-প্তেৰ উবাচ। তামাদাৰ ততো ভূপ স্তদ্ধৈ নগর॰ যথৌ। তস্যাঞ্চাজা-যত সুতো রেবভ্যাণ রৈবতো মনু: ।। मरमञः मक्टन थं रैस्स मीनदिव ब्र-পরাজিড:। বিজ্ঞাতা থিল শাস্তা। र्शा तक विकार्थ भाष्ठिवि ॥ **इं**जि मार्क(७यপুরাণে রৈবতনর-स्रवः नगाश्चः॥

**शू॰ म**रिनम्ब्यः। इंडि (द्रवञी छवः হেমচন্দ্ৰ: 11

বলদেব:। ইভ্য-রেবতীরমনঃ गतः ॥

রেবতীশঃ वनद्रामः। ইঙি ह्महन्मुः ॥

त्त्रकः भू ज्र्राभूशिविष्णवः। ज ह গুছাকাধিপতি:। তস্যোৎপত্তি र्यथा। उट्डा श्रेनो याग नाइ।य चा॰ ভार्य्या॰ वर्ष्या॰ त्रविः । मम्म निरमेका डा मथक्श मथाकरहार । रिमथुनारित्राभठकान मुख्रारमो ह षुद्रान्विज्ञः। (नहुन्नी (जन मःर्यार्गः **পরপু·সোভিশঙ্ক**যা ॥ সণ্মুছাৎ निभूथी र उरका मुथ नानिकय। तरदः । দেবৌ यত: পুकारयञा मिथरनोजि-ৰজাম্বরো।। নাসভ্যোদ্ধো ভৃতী্ৰুক্ত রেবন্তো ংখপুবাহক:। ইতি বহি পুরাণ ।। #।। অপিচ। ততো হয-क्ष भव्क जानू क ज्ञानगम ८ क्कर्। দদৃশে তত্ৰ সংজ্ঞান্ত বডবাৰ্কপথা-রিণীণা সাচ দৃষ্ট্য তনাবাত্ত পর-शूरमाजिनक्या । कगाम मःगृथः जम्र भृष्ठ ब्रक्षन उर्श्वता II उउम्ह নানিকা যোগে তথো স্তত্ত সমেত<sup>ু</sup> रवाः ! नामञ् रत्भो जनवावश्ववकु। দ্বিনির্গতৌ :৷ ব্লেভসে৷ প্স্তেচ ব্লেবস্তঃ খ্যী ধ্বী ভনুত্রধৃক্। অস্বাক্**চঃসমূৎ**-পয়ো বাণ তৃণ সমন্বিতঃ ।। ততঃ স্থা ক্পন্নলা দশ্যানাস ভানুমান্ । তলৈঃ সাচ সমালোকঃ ছর্পণ मुम माम्रतः ॥ अक्षानिशिष्टमाः বানিনায নিজাশুম । স জা ভা র্য্যা•পুরিন্নতী• ভাস্করে। বারিত-কর: ॥ ততঃ প্রত্তো যোদ্যা: সো হভূদৈবয়া ননু:। দিভীয়া यनः भाभाषिमम् । त्र त्र जूटः भूठः ॥

কৃনবো না'ল নাদাৰ পাদত ভৈন-হীতলং। পতিব্যস্তীতি শাপান্তং उन्। ठळ शिजा यगः॥ वर्षमृष्टिर्य-ত কাসৌ সমো মিত্রে তথাহিতে। ততো নিযোগ ত যাম্যে চকার তি-श्रित्री शहः॥ यमूना ह नही काछः क-निन्ता छत्रवाहिनी । अश्विती (एव ভিষ্কো কৃতো পিত্রা মহাত্মনা।। গুছু কাধিপতিত্বে চ বেবস্তে৷ বিনি-याषिकः । इंकि मार्क्ष्यभूतात दिवस्क्रमञ्ज्जा ॥ 🗱 ॥ मध्यम् व 🐠 র্ভব্যনীরাজনবিধৌ বেবস্তস্য রাজক-ৰ্ভুক প্লাবিধি যথা। সপ্তমে হি তু রেবন্ত পূজবেন্ডোরণান্তরে। স্র্যপু-धः महावाष्ट्रः विज्वः कवाहाक्कृतः ।। জ্বন্ত শুকুবজেণ কেশান্ বিতত্য বাসসা। কশা বামকরে বিভুদ্দ-ক্ষিণে তু করে পুনং। খন্নং ন্যস্য মহাতীক্ষ্ণ সিত্তসৈদ্ধব সংস্থিত।। এবশ্বিখন্ত রেবন্ত পুতিমাঘা ঘটে शिवा । স্य्रेश्का विधानन नुकरय-ত্তোরণান্তরে।। ইতি কালিকাপুরাণে नीवाजनविधिः ৮७ व्यव्यायः ॥ #॥ কোলাগরপূর্ণিমারাত্রৌ দারোপাত্তে **७मः न्हाविधि र्यथा।** हात्राभारः जूरीश्रस्त जः भूरा एव। इव। वाहनः । ষ্বাক্ষত ঘ্তোপেতৈ স্ত ভূলৈক সু छर्निङः ॥ मः भृष्ठि छ व । भूर्यनपुः भवमा भाषरम् । क्रान्तः म छार्यः । कृष्ण छथा नन्ती खर्ता गृनिः ॥ भा-मिष्डः मृत्रिष्डः भृष्ठा। छागविष्ठ छ्-छाणनः । छेत्र ज्विष्ठ वंकर्गा गष्ठ-विष्ठ विनायकः ॥ भूष्ठाः मार्ट्यस्ट् स्त्रवस्त्रा यथा विक्रव विखरितः ॥ हेि छिथ्राहिछक्वः ॥

রেবন্তমনুস্: জ্রী সংজ্ঞা। ইতি ত্রিকাওশেষ:॥

द्रिया जी नर्मरानरी। इंड्रानद्रः॥ षान्। भिवित्रादश अ वि येथा। রেব্যাচ কৃত পূর্ব তপ: শিব সু ज्डिन । मम ष्यम्मः भूषा কস্যাপি ন সূতঃ কিং করিষ্যামি विखयन्। (त्रवायाच्य वरत्रा (मय खुव-**म्याः म्यवाक्ष्या। विन्धिर्वे अरा** (शुक्तिः भुगम्बनाडद्राज्यना । निक् ৰূপেণ তে দেবি গজানন পুরফৃতঃ ॥ গৰ্জ্তে তব বসিষ্যানি পুৰো ভূ-ত্ব। শিবপুথে। মন ত্ব নপরামূর্ত্তি: খ্যাতা জলম্যী শিবা॥ শিব শ-ক্তি বিভেদেন চাবামেকত্র সংস্থি-তৌ। এবং দত্তবরা রেবা মৎ সালি-ধ্য মিহাগতা।। রেবাখণ্ড নৈতি থ্যাত ততঃ পুভৃতি গোপতে 🖂 ইতি বারাছে সোনে ইরাফিনিফ্ নহিমাধ্যায়: 11 # 11/ রতিঃ 1 मा চ কানপত্নী 11 नी नी कृकः 1 ইতি মেদিনী 11 দুর্গা 1 যথা 1 রেবা ভূ নর্মান দেবী নদী বা রেব ই মঙ্গ 1 অভিযঞ্জন বন্ধা বা লোকে দেবী পুকীর্ভিভা 11 ইতি দেবী পুরাণে ৪৫ অধ্যায়: 11

রেষ খা ড হেষাযা । ইতি কবি-কল্লজন: ।। হেষা ঘোটককত্ ক-শব্দ: । খা আরিরেষৎ ড রেষতে রিরেষে ২খ: । ইতি দুর্গাদাস: ।। রৈ শব্দে । ইতি কবিকল্লজন: ।। রেকাদি: । রাষতি । ইতি দুর্গা-দাস: ।।

दिवजः श्रु वर्गानुवृक्तः ॥ देणन(छपः॥ णद्यः। इंडि (निप्ति)॥
देनकादिण्यः। इंडि ध्वानिः॥
वर्जनावक्त्रीयः श्रक्षमा मनुः। स ज् (वर्षणी गर्छ पूर्णम बाक्षश्रः। स ज् (वर्षणी गर्छ पूर्णम बाक्षश्रः। स व्यामन् मद्रुष्ठत िज्यक्षा १ वर्णावः। । विज् विन्तुः। ज्ञत्यामस्या (म्वाः)। विज् विन्तुः। ज्ञत्यामस्या (म्वाः)। विज्ञाम्य ख्यानुस्ताः। इंडि बी जानवजः॥ जिव्यवनः यथा। श-क्षमस्य मस्या ख्या देविष्ठ स्वा । श-क्षमस्य मस्या ख्या देविष्ठ स्वा । स्वा

রৈবতকঃ পু॰ রৈবতপর্বতঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। উজ্জ্যন্তঃ ২া ইতি ছেন-চন্দুঃ॥ তস্য নামকারণ রেবতী-শব্দে দুইব্য়ং॥

রৈবতিক: ত্রি রেবভ্যাঅপভ্যা ।
ইতি মুধ্ববোধব্যাকরণা।

রোক॰ ক্লী ছিদু । ইত্যনর: ॥ নৌকা।। চল ।। ইতি সেদিনী।।

রোক: পু• কৃষভেদঃ।। দীপ্তি:। ইতিমেদিনী।।

द्गानः भू जिल्होययः। इंडि स्नि मिनी ॥ दिक्किकात्रकः। छ८-

পৰ্য্যায়:। ৰুক্ ২ ৰুজা ৩ উপতাপঃ ८ व्याधिः १ गनः ५ व्यानगः १। ইত্যমর:।। অপার্টবঃ ৮ আনঃ ৯ वारुकः ३० खरः ३३ डेशवाउः ३२ र्खनः १० व्यक्तिः १८ उत्माविकासः a प्रानिः १५ क्यः ११ व्यनाब्हिवी ১৮ মৃত্যুভ্ত্যঃ ১৯। ইতি রাজ-निर्यक्तः॥ समः २०। इंकि क्रिंगध्यः । मान्ताः २५ व्याकन्नः २२। ইতি एस-हन्द्रः॥ 🗱॥ अत्र नित्तनादि वंषा । थन् प्रतिक्वारः। नर्द्रतागनिसानक ৰক্ষ্যে সূশুভ তন্ত্ৰতঃ। আৰেণাদ্যৈ मू निवदेव येथान् व मूनीविछ ॥ वि।-गः भागा इता व्याध विकाता **मुद्रे मान्यः। यञ्चाउक्तगमायाधाः** नदाः भर्यप्रयवास्तिः ॥ निमानः भूईक्भागि क्भागू।भगय ख्या । সংশাধিকেতি বিজ্ঞান রোগা-ণা॰ পঞ্ধা মৃত ।। নিমিত্ত হেত্বা-यञन भुजारयान्यानकात्ररैगः । निन मान बाद्यः भर्यशियः भाग्नभः (वन वक्तां ॥ उंटिशिटम् द्राभाग मायविष्णायगानिविधिष्ठः । निक् मवाक मन्नवाट वाशीमा॰ उष्यथा তথ- ॥ তদেব ব্যক্ততা- যাত-ৰূপ নিত্যভিধীয়তে। সংখান वाक्षनः निकः नक्षाः विक्र माक्षिः ा एक् वंशिष विभव्याः विभव्याः र्थकात्रिणाः। अववाहिवहात्राणाः **উनरवान• मूथावह• ॥ विन्।। न्न** व्यय वहार्यः न हि माज्रहितिब्यु छः ৷ বিপরীতোনুপশয়ে ব্যাধিসাম্যী ভিস·ক্তিত: ।। यथा मूर्डेन (मार्विष তথা চাত্মবিদর্গতা। নিবৃত্তি রাম-যস্যাসৌ সংপাপ্তি জাতি ব্লাপতি:॥ मःथा विकन्न भाषामायन कान वि-শেষত:। স ভিদ্যুতে যথাত্ৰৈব স<sup>্</sup> খ্যন্তেষ্টো জুরা ইতি ॥ দোষাণা• अगरवजानाः विकन्नाः भाः भ कन्नना । বাতস্ত্র পারতজ্ঞাভ্যা॰ ব্যাং शारान्। माहिष्मः।। (इज्राहिका **ज्**तुशवयरेद वंनावन्दिर्भवनः । - নক্ত• দিনৰু ভুক্তা•শৈ ব্যাধিকালো যথা মল।। ইভি প্রোক্তো নিদানা-र्थः म व्यामित्नाभाषकार्छ। महिंचा নেব রোগাণা নিদান ক্রপিতাম-লা:।। তং পুকোপস্য তু প্রোক্ত বিবিধাহিতদেবন । অহিত দ্রি-विर्धा याग ख्यानाः शाखनाक् उ:।। ভিক্তোৰণ ক্ৰাযাদ্ল ক্ষাপুনিত (जाकतिः। शावतामीत्रग निमानाः भद्रागुष्ट्रजायरेनः ॥ कियाजिरयान क्रिक्नोक हिंखा व्यायाम रेमथूरेनः। পুীঘাহোরার ভুকাতে পুম্পাতি

मुमीत्रपः ॥ निजः कहेत् जीत्काक **ग**र्हे (काष विमाहिकि:। नेत्रसप्राह बाकाच विवाहमभाययू ह ॥ साहम व्यवन शिक्ष धर्मा कार्मित भी अर्थाः। व्यानग्रमञ्च ग्राकीव पिवामश्रापिः वृं:स्री: 11 शुहर्मनाम्याराणन जुक भाव वमस्याः। भूवीतः भूवतात ह भूषा वक्तिम णक्तान्।। मि-**শ্রিভাবাৎ সমস্তানা সন্মিপাত স্ত**-था भूः । मकीर्गाकोर्ग विवम विक-काश्रणनारिजिः ॥ वृत्रभव मन् পानीय मुद्द भाकाम म्लर्दः। लि ণ্যাক মৃত্যুবসরা পুতি শুষ্ক ক্ষামি-रेवः॥ (नावजगळीत्रे छि रेख खणान-পরিবর্ত্তভঃ। ঋতো দুঠি।ৎ পুরো-विगुशावना विम्त्रार ॥ मुद्दीमार भर्व उत्त्रवाम्गुरेक् जंबार्क भीजनार । मिथ्यायागाइ विवि-श्राट भाभानाक निरंवतनाट ॥ जी-णाः भुमवरेवयम्याङ्या मिरयग्राभः চারতঃ। পুতিরোগ মিতি কুদা द्यागाविष्ठानगामिनः ॥ द्रमायनीः পুপদ্যাশু দোৰ। দেহে বিজর্গতে। इंडि गाक्ष मर्बद्धागनिमान १७১ **अव**तायः ॥ द्वागदित्मवानाः श्वेषः धानि गाक्छ १४२। १३०। १३१। ףהנו פהנו שהניו אהנו כהנו גבנ

रद्वान

रेके । रेके व्यक्तात्वव मुद्देवानि॥ भर्तात्रागरंत्रोदक्ष्यकवष्टक ठोजव २०० व्यथ्रारय मुद्धेवारा ॥ स्रा व्यक्ति । क्रमकः मर्बाद्याणागाः पूर्वाद्या मारू (गा खुद्र:। निवचकक यागी ह म-এব বিকৃতাকৃতিঃ।। ভীম জিলাদ जिलिहाः यज्जूका नवलाहनः । ख्यानुइद्रांश द्रोदः कानाइकरः (भाषमः ॥ मन्तान्न उन्र अन्तका भन्तादा र्जनका खराः। शिख स्निदा अभीदाण भागिनाः पृ:श्रमायकाः॥ বাযুক্ত পিত্রভালের শ্লেম্মকল্চ ত থৈব চ। জুরভেদাশ্চ ত্রিবিধা শ্চত্-র্থান্ট ত্রিদোষজ: ৷৷ পাণ্ড্ক: কাম্লঃ क्ष क्षायः श्लीश ह मृतकः। जुद्रा-তিসার গৃহণী কাশ বুণ হলীমকাঃ ।। মৃত্রকূ <u>ছ</u>ুণ্চ গুল্মণ্চ রক্তদোৰ বি কারক:। আরিশো মেছজ: হ্রো (गामण गलग ७कः ॥ जुमद्री निम-পাতশ্চ বিসূচী দাৰুণী সভি। এবা॰ ভেদপুভেদেন চতু:ৰপ্তি ক্লঃ মৃ-তাঃ।। মৃত্যুকন্যাসুতাশৈতে জরা-তস্যাশ্চ কন্যকা। জরা চ ভাুত্ভি: সাৰ্দ্ধ শশভ্মকৈ ভূতল ।। এতে চোপাষবেক্তার ন গছন্তি চ সংষ্ত । भनागरङ हं उ॰ मृक्ष्म रेवनरज्य निर्वाद्रगाः ॥ 🗱 ॥ हऋ्डलक व्या

यामः भाराषरिखनामयनः। कर्न-তৈলং মৃজ্বিতিলং লরাব্যাধি বি-नाणकः ॥ वमस्ड जुमनः वङ्गिरानवा चनुः-कत्राि यः। वानाक मिवल কাঁলে লয়া ভা নোপগছভি॥ থাত শীতোদকশ্বাধী সেবতে চন্দ্ৰদূব । नाभयां जिल्ला उक्ष निशाय श्निल (मविनः ॥ शुाव्युष्यामकन्नायी घन-ভোষণ ন সেবতে । সন্যে চ সমা-হারী জরা ভ নোপগছভি।। শর-দৌদু ন গৃহাতি ভুমণ ভত্ৰ বৰ্জ বেং থা তমাণী সমাহারী জরা ত॰ নোপতিপ্ততে ৷৷ খাতসাধী চ হেম্ডে কালে বহিং নিষেবতে। ভূড্কে ন-वास मुक्क्ष हात्रा उ ताशगहि ॥ শিলিরে १ শুক বহিংক নবোফায়ঞ भ्याक्त । यथादाक्शास्य मार्थी **क**द्रा ত নাপগছতি ৷৷ সদ্যোমাণস ন-वामक वालाजी की त्राजाबन । घृ-তঞ্চ সেবতে যো হি জরাত নোপগ-इंडि ॥ ভূউক্ত সদয়॰ ऋৎকালে তৃঞাযা॰ পীয়তে জল•। নিভ্যু• ভূ-জ্জে চ ভাছ্ল জরা ত নোপগছতি ।। मि वि रेह्यक्वीनक्ष नवनीजः जथा णुङ । निङ्धः जुङ्खः मःयभी या জর। ত নৈব গছতি॥ শ্বা শ্বা । শ जिया वृका वालाकं उक्न पि।

अ·भिवस अहा याजि शुक्की जाङ्-जि: **नर् ॥ द्रा**खो ए पि भि स्वराह পু:फলोक রজবলা। তমুপৈতি बता क्षेत्र जाञ्जिः मर मूम्हित ॥ त्रजयना ह व्यन्ति हारीता बातम् जिका। मृप्याब**क ग**ञ्जी या **पञ्**रीना চ ধা সতি॥ যোহি তাসামন্বভোচী বুনাহত্যা• লভেডু সঃ। তেন পাপে-ন সাৰ্দ্ধ সা জরা তমুপগছভি॥ পাপানা' ব্যাধিভি: নাৰ্দ্ধণ মিত্ৰভা সম্ভত: ধুবং। পাপং ব্যাধি জরাবী-জ বিম্বীজ্ঞ নিশ্চিত ৷৷ পাপেন কাৰতে ব্যাধি: পাপেন জাৰতে জ-त्रा। भाभन बाया रिनाः मुःशः শোক ভয় কলি: ॥ তথাৎ পাপ भश्रदेश (पाववीक ममक्ष्य । ভারতে সম্ভত• সম্ভো নাচরম্ভি ভ্যা-जुद्राः ॥ स्रभगितात्रगुकक नीकिन्छः र्श्वरमवकः। ७४ (म्वाजिथीनाकः ভক্ত সক্ত তপ:সুচা৷ বুভোপবাস युक्क जना जीर्थनित्यविनः। भाभा-দুবন্তি ত দৃষ্ট্ৰা বৈনতেয মিবোরগা: য় এতান্জরা ন সেবেত ব্যাধি স•-यण मुर्जयः। मर्बः (वाष्ट्र भमनाय काल नर्बः गुरीवाछ।। 🗱।। जुनक সর্বরোগাণা জনক: কথিত: সতি ৷ পিত শ্লেম স্থীরাশ্চ জ্বস্য জনকা

ख्यः ॥ এতে यथा नेकवि इर कासि ह (मिक्यू । उत्भव विविद्धा-পায় সাধি মত্তো নিশাম্য ৷ ক্রি ৰাজ্ল্যোনাৰা মাহারাভাব এব চ। পাণিনাণ জায়তে পিত্তণ চক্রে চ মু নিপ্রকে।। ভালা বিল্কলা ভুকু। सन्भानक उरक्षा । उपव कु छ-(वर्षा निष्ठः निष्ठः भूगिष्ट्रवः भवः॥ তপ্তোদকঞ্চ শরদি ভাদ্রে তিক্তণ বি-**শেবতঃ। দৈবগুত্তক** যো ভূড়কো পিত্ত ত্ৰস্য পুৱাৰতে ৷৷ নশৰ্ক্ত্ৰঞ্চ ধন্যাক পিষ্ট শীভোদকান্বিত । চণক সর্বগব্যঞ্চ দুধি ভক্র বিবহির্জ-छ।।विन् जानकन भक् मर्गमात्र भिव ह। चार्नक गृत्रयुषक जिल्ला-**हे॰ नण**र्कत्र ।। श्रकात्र हात् श्रेक्क মিতিচপাঠঃ॥ পিত্রক্ষয়কর• সদ্যো-বলপুষ্টিপুদ পর। পিত্রনাশঞ্চ তন্বীন্ধ মুক্তমন্য নিবোধ মে।। ভো-জনানন্তর• স্থান• জলপান• বিনা তৃ-व।। जिन्देजनः श्रिक्षेजनः श्रिक गामनकीपुर ॥ পगुर्विजाम उ-कक भवत्र भाषा का निव । ज्ञारा पू नर्कद्रारायः मृश्विषद्यारम्बनः ॥ नातिरकरणामकः । काममानः भग्रं-विछ॰ बनः । एक्मूआ शक्षका मूलक कर्व होकनः ॥ थाउनानक

वर्षान् मूलकः त्यसकात्रनः। तुका-রক্ষেচ ভজ্জম মহমীর্য্য বিনাশন ॥ विक्रिष्टें पृष्टि छन्नः भक्रेउनः वि श्नायंक । जुनगः **न्**ड**क्क** न्द्रः পত্ব হরীভকী।। পিণ্ডারক মপক্ষ ब्रह्याक्**ल मशङ्कः।** (द**णदात्र शि**-ন্ধার ননাহার মৃশানক ।। সমূত রোচনাচ্র্ণ সমৃত শুর্শকর । मत्रीष्ठः शिश्चनी भूक्षमाम् कः बीब क॰ गयु ॥ पुरारापुडानि शक्तर्वि সদ্য শ্লেমহরাণি চাবল পৃষ্টিক त्रालात्व वायुवीकः निमानय ॥ # ॥ ভোজনানন্তর॰ সদ্যোগন্ন• খাব্ন• তথা। ছেদন বিহ্যাপদ শখ্-कुमन रेमथ्न ॥ वृक्ष द्वीनमनरेकन মন:সভাপ এব চ। অভিকল্প ম-नारुद्धिः युक्तः कलारु स्वय ह ॥ कर्षे-ৰাক্য ভব শোক: কেবল বাযু কারণ ৷ #৷ আজ্ঞাখ্যচকে তজ্জন নিশান্য তদৌষধা ৷৷ পদ্মস্তাফল-रिकर नवीकः भकरतास्कः। नाजिः (कलामकरेक्ष्य सम्द्राख्यकः सुनिष्ठकः ॥ माहियन्द्रिमिष्ठेक (क्वल व) ननकंतर । न्मृः भगुर्विजानक भोवीद्रः भीउद्गारकः ॥ भङ्गेउन वित्मयण जिल्लैंडलक (क्वनः। वाक्वी जान थङ्ब मूख मामनकी

ष्व ।। भी अलाका एक नाम मृतिका চন্দ্রপুর । স্থিপদ্মপত্রতল্প সু-- স্থিপান্তৰানিলঃ ॥ এভত্তে কথিভ क्टाम माम्या वाजभुगामन । कः। ৰায়ৰ জ্বিবিধাঃ পু-সা- ক্লেশ সম্ভাগ কানজাঃ।। ব্যাধি সংঘশ্চ কঞ্চিত ন্তভ্ৰাণি বিবিখানি চ। তানি ব্যাধি পুণাশায় কৃতানি সন্ভিরেব চ ॥ তক্ৰাণ্যেতানি সন্থাণি ব্যাধিক্ষক-রাণি চারসাধনাদ্যো দেষু চো-পায়ক সুদুর্লভঃ ৷৷ ন শক্তঃ কথিতু৽ जावि याचार्थाः वटमात्रन ह। उ **ৰাঞ্চ সৰ্ব ভন্তা**ণাণ কৃতাৰ্থানাণ বি-**४ करेनः** ॥ ३७ वुक्तरेववरखं वुक्त-स्ति १५ व्यथायः ॥ 🗱 ॥ व्य ব্যাধিলক্ষণ। ভত্ত বাণুটঃ। ব্যোগ-स (माव्देववबार मावनावा भारता-গভা। রোগা দু:খদ্য দাভারে৷ জুই-পুভৃতযো হি তে ৷৷ ভেচ স্বাভাবি-কাঃ কেচিৎ কেহিদাগন্তবঃ মৃতাঃ ৷ মানসাঃ কেচিদাখ্যাতাঃ কথিতাঃ কেপি কাৰিকাঃ॥ ভত্ৰ স্বাভাবিকাঃ শরীরশভাবাদেবজাতাঃ। ফুৎগি-পাসা সুষ্থা ভাগরা মৃত্যুপুভ্তাং। অথবা ধন্য ভাবাদুৎপত্তে জাতাঃ স্বাভাবিকা: সহজা ইতি যাবং ! (उ ह बनाकारयः ॥ जागल्या

**●ভিঘাতাদি জনিতা:। অথবা জ**-त्याखब्र ভाविनः ॥ मानमाः काम ক্রোধ লোভ মোহ ভ্যাভ্িমান रिमन् रिनम्न विवासियाम्या मारे नर्य। नुज्उरः। व्यथरा উद्यानान-মার মূর্ছা ভুম তম: সন্ন্যাস পুভূ-**७**यः॥ कायिकाः भाश्रुद्धांग भुक् **७ सः ।। कर्मकाः कथिजाः (क**िरम्रा-যক্কা: সন্তি চাপরে। কর্ম দোষো-দ্ভব। শ্চান্যে ব্যাধ্য দ্বিবিধা: মৃতা: ॥ ভত্ত কর্মালা ব্যাপ্য:। যৎ প্রাক্ত ন দৃষ্মপূবল ব্যাধিক্প কেব ল'ভোগ নাশ্য' পায়শ্চিত্তনাশ্য' বা জতো জাতা: ন তু দুইবাতাদি रनारवन कनिजाः। खथा। यथा भाः জ্ৰম্ভ নিণী তা যথা ব্যাধি চিকিৎ-সিতা:। ন শম॰ যান্তি যে রোগান্তে **ब्ह्नियाः कर्णका** बूरिशः ॥ स्नायकाः মিথ্যাহার বিহার পুদ্পিত বাত পিত্ত কফ্জা: ।। #।। ননু নিথ্যাহার বিহারিণা মপি পাক্তন সুক্তেন বৈক্জ্যুণ দৃশ্যুত এব ততো দেশ্ব-**জেম্বপি প্রাক্তনকমৈর্য কারণ ত**ৎ কথ দোষজা ইতি। উচ্যতে। দো-याज्ञ श्री वस्त जानिकात्र पृक्ष य বৰ্ত্তত এব কিন্তু তত্ৰ মিথ্যাহার বি-হার ভূবিতা দোষা হেতবো দৃশ্যন্ত

ইতি দোৰজা ইভূচ্যত ইতি সমাৰি: ॥ 🛊 ॥ कर्यापाया ज्वाः। सन्नामा गत्रीयाःम (स (छ्वाः कर्मारावजाः । অৰ কারণ দুৱৰ্মপুবল যতো দো-বাল্লভেপি ব্যাধে গরীযন্ত্রণ তৎ ক भ्रांक्रयात्रिकीश खर्जि। सायास यद्म। व्यशि निमान(द्वाराकः। मृभाष्ठ এবেভি।দোষাণাণ কারণন্ত মন্যত ইতি কর্মদোষোদ্ভবা: ॥ কর্মক্র-याद कर्षकृता (मायजा: स स (७४-रिकः। कर्यासारमाख्या याखि कर्या (नायक्यार क्या ।। (नायका: स स् ভেষ্টা বিভি দোষজেম্বাদিকার-१ मुक्कर्य ७ एक वजार्थ मुवाक याहि জনিত দুংখভোগেন কটু ভিক্ত কযা-याराङ्गा जक्षणारि जनिउ मृःथ-ভোগেন চ ক্ষয় যাতি ৷ শেবাদৃষ্ট **रिज्या (माया एउ य य खियों ज:** क्रयः याडीजार्थः ॥ नाषा याना অসাধ্যাক্ষ ব্যাধ্য ক্রিবিধাঃ মৃতাঃ । সৃথসাধ্য: क्ट्रेসাধ্যে हिविद: সাধ্য উচ্যতে ॥ যাপ্য লক্ষণ মাহ া যাপনীযন্ত তং বিদ্যাৎ ক্রিয়াং ধা-त्रयर**७ हि ७ । े**कियाया छ निवृज्ञा-যা॰ সদ্যো ষক্ষ বিনশ্যতি ॥ প্রাপ্তা ক্রিয়া ধারয়তি /নূথিন পাপ্য মা-তুর•। পুপতিষ্য দিবাগার• শুষ্টো

ষ্ট্রেন যোজিত: 11 সাধ্যা যাপ্যত্ব মাধান্তি যাপ্যা শ্চাসাধ্যতা তথা। इष्टि भुःवानमायास्य नद्राणा मिकः ষাবজাণ।। অক্রিয়াবতাণ চিকিৎসা त्रहिडाना•॥ 🗱 ॥ व्याथाशमुद **लक**ः ণ । রোগরেম্রক দোষদ্য পুকো-পাদুপলাযতে। যো হন্যো বিকার: ज तुरि क् भूत ই हा मिजः ॥ 🗱 ॥ অথারিষ্টদ্য লক্ষণ মাহ। রোণি-ণো নরণ যমান্ত্রশান্ত্রাবি লক্ষ্য 🤇 । ভল্লভা মরিষ্ট স্যাদ্রিকা-পি ভদ্চগ্রভার 🖯 🛪 ।। অথ রোগস্য **ठिकि॰. मा कक्ष्म बाइ। या किया** ব্যাবিহরণী সাচিত্রিৎসা নিগদ্য তে। দোৰ গাত মলানা॰ যা সাম্য-क्टरेमव (ब्रागवृट्।। किया कर्य। न्। वि वि्राउ श्नायि वादिश রণী। করণাধিকরণযোক্তেতি সূত্রে-শাত্র করণার্থে ল্যুট্।। তথচে। যাভি: ক্রিয়াভি জাঁয়ন্তে শরীরে খাতবঃ সমা:। সা চিকিৎসা বিকারাণা॰ क्यं उक्तिकाः भठः ॥ याश्रीर्गः শমযতি নান্য ব্যাধি করোতি চ। ना किया न जुश्या वर्रात्रि रत्रज्ञानर मूपीद्रायट ह्यू कियाज हिक्टिना। **७**थाठामत्रनिष्टः। जात्रस्रा निष्ट्-তি: শিকা প্রন সপুধারণ । উ

भायः कर्प (हड्डी ह हिक्टिना ह नवे ক্রিয়া ইতি।। ৠ। অথ চিকিৎ সাবি-थु। नामः। बाउ मात्र किविर्नः मुजासारिका १ मुख्या गरः। बङ्ग শত্র বিধৈ স্তল্যঃ মল্লো ৎপি বিকরো ত্যসৌ ৷৷ রোগমাদৌ পরীক্ষেত ত-তো १न उद्र भोषध्। उठ: कर्म जि-यक् भक्कार द्वानभूर्वः ममाहाद्वर ॥ অযুমূৰ্যঃ। ভিষক্ আদৌ রোগণ প-রীক্ষেত বিচারযেৎ। ভতো হনম্বর• ঔষ**ব॰ বিচার্যে**ং। ভতঃ পশ্চাং रतारगोयथ विठातानखतः क्खान**ग्**र्वः সাবধানো ন তু অবজ্ঞবা কর্ম চি-কিৎসা নৌষধ দানাদিৰূপ সমা-हात्रनिकार्थः ॥ 🕸 ॥ त्रागाळात्न **हिकि** शाक्रता (मायगार । यस রোগ মবিজ্ঞায় কর্মাণ্যারভতে जियक्। व्यालीयथ विधानकः सम्र निष्क र्यमृह्या ॥ यम्ह्या स्वितिज्या সিদ্ধি ভ্ৰতি নাপি ভ্ৰতীত্যৰ্থ:।। অন্য**ন্থ ওবধ কেবল কত্ত্র বা**-जानाजि न हाभय । रिवर । कथा में हिंद ষ্ঠ্যাদ্বধ নহতি রাজতঃ ।। 🗱 ॥ রো-গজ্ঞানে ভেষজাজ্ঞানে দোষনাহ। যস্ত কেবল রোগজ্ঞে। ভেষজেম্ববি-**ठक्कवः। उ**॰ रेवहार शुक्ताशास्त्रामी महा-ष्य्था (नो नाविकः विना॥ नाविकः कर्तवात्र विना यथा (नीः मक्स्टे १५-**उठि उथा (ब्रा**गीउ)र्थ: ॥ जन्रह । **যন্ত কেবল লাজ**ত্তঃ ক্রিযায়**স**ল-লে। ভিবক্। সমূহত্যাতুর পু ग्र डोकः भजीर हार्वः ॥ 🗱 ॥ **(द्वा**रगोष व्ययः) उद्घारन खननाङ् । यञ्ज রোগবিশেষজ্ঞ: সর্ব ভৈষজ্যকো विषः। (एमहानविज्ञागञ्ज खम्) **निक्ति ने अ॰ण**यः !। जारावस्य क्जा॰ জ্ঞানে পুষতেত চিকিৎসক:। ভে-কিৎসিত।। চিকিৎসিত মিত্যত্র ভাবে ক্য: ৷৷ ইতি ভাবপুকাশে পু র্বথণ্ডঃ ।৷ 🗱 ৷৷ অথ যেন রোগাণাে• জ্ঞান'স্যাভভদাহ। হেতু স্তদ্মু ग्•भाष्टिः भ्रवंकशक नक्षाः । उरेषः বোপশন: পঞ্জাগবিজ্ঞান হেড-ব: ॥ তত্ৰ হেতো লঁকণ নাহ। যুৰু ন স্যাদ্বিনা যেন তস্য তচ্চোতু কচ্যতে । भारक मःवावकादाय उर्भगायाः न् भुवच्चरम् ॥ निरामः कात्रभः रहज् निनिज्ञ निवस्तरः। गृल नायज्यः ভত্ত প্ৰভ্যযোগি নিগদ্যভে॥ ভত্ত **(हजू** वं)ाधीनाः खानाय हिंजू यंथा। वर्षा कक जुन हिमाननना जित्यु-न लाक हिंडा ज्यानत्या वाज्यु-কোপছেতবে৷ বাতজান্ ব্যাধীন্

र्वाथगित ॥ भार क्येंद्धाक जीक ক্রোধ ভৃষ। ক্রুথাভিঘাতাদযঃ পিত্ত-পুকোপছে তবঃ পিত্ত জান্ব্যাবীন্ (वाध्यक्ति॥ वमन्त्र मधुत शिक्ष भी-जारयः कक्नुरकान (२ ३ वः कक् जान् व्याधीन् (वावविष्ठि ॥ 🕸 ॥ ञ्य मः गुाए नंकन नार । यथा पूर्धन (माराय विषा कानुविमर्भका। उद-পত্তি যাম্যস্যাসৌ সংপ্রাপ্তি জাতি রাগতি:।। যথা দুষ্টেন দোষেণ যথা काद्रगरज्यम् मूर्छेन (मार्यण । यथा চাৰুবিদৰ্শতা জ্বেদ্ধা দোষাণা• বিদর্পণ মূজাৰ স্তিগ্যগাদিগতিভে দেন। তথাচ বিলপ্তা আন্যদ্য যা উৎপত্তিঃ অসৌ সংশুষ্ঠিঃ। শাড্রে व्यवक्रात्राय मः भारतः भर्यशायावाक् জাতি রাগতি রিতি 🛚 সংপ্রাপ্তে রৌ-भाविक ভেদানাছ। मण्या विक्न পাধান্য বল কাল বিশেষতঃ। সা ভিদ্যতে যথা ত্রৈব বক্ষ্যন্তে ২প্টো জ্বা इंडि॥ मन्थ्यास्किना य विष्णवा ষ্টেভ্যঃ সা সংপাপ্তি ভিন্যতে ভেদ-বতী ক্রিয়তে ইত্যর্থ:। তত্র সংখ্যা• विवृत्गाञ्च। यथा खुद्रा। २४था व्य-তীসার: বহিখ ইঠ্যদি। বিশ্ল विवृत्गाञि। पाषापुरः सम्दर्भानाः विकल्ला ९ मा म कन्ना। नगद-

**ं डादा॰ ममूहि**डानाः रहार्याणाः जेः नाःन कन्नन। शैन मध्याधिक एउटिक र्वाश्र कत्त्वा विकल्लः ॥ श्रा श्राथानाः ৰিবৃণোতি। ৰাতজ্য পারতজ্ঞান্ড্যাণ ेब्रात्यः भाषान्य मानित्मरः। व्यात्यः। ৰাতত্ত্ব্যেণ প্ৰাধান্য পারতত্ত্ব্যেগা भाषानाक वारिकार्थः। यथा य ্ তন্ত্রস্য জুরস্য প্রাথীন্য জুরাধীন नानाः चाजाशीना मनुष्यानाः ॥ 🕬 বল• বিবৃণোভি । **হেড্বাদি কাত্**ি युग्रवरिव वंकावन विरम्भवनः। व्य-ত্রাপি ব্যাধে বিত্যনুবর্ত্তে। হে-ত্বাদে: হেত্ পূৰ্বৰূপাণা কাত্য্ল্যে-न भाकत्वान । व्यवयदिः अकारायन । व्याप्त वंनावनाया वित्नवनः वि-শেব বোধ: ॥ 🗱 ॥ কাল বিৰূণোভি । नकः रिनर्व जुकारेम व्याधिकाः ला यथा वलः। नक मजावायः द्राः ত্রিবাচক । এতেনৈতদুক্ত যমিন कारम द्राप्त वन्तर रहावनर भुरकान উক্তোন্তি সো•শ তুদ্দোৰজস্য ব্যা-(धः काम इंडार्थः। नकारम ब्र'मिष् বাভাদি পুকোপ উক্তো বাণ্ডটেন। তে ব্যাপিনোপি হ্যাভ্যে রধাে ম (प्राक् मः भ्याश्वीरा शहा ताबि ভুক্তানা মন্ত নধ্যাপুদগা: ক্রমাদিতি ।। তে বাত পিত্ত ককা:। ঋতুবু বা

ভাদিকোপো বথা। ব্রাসু লিলিরৈ वायुः शिखः भद्रति छेत्राकः। वनस्य क् ककः सामा प्रकृष्टि द्वार्खवी H # JI नः शांखि वंशिवीनाः ज्जानाय হেতু র্যথা। মিথ্যাহার বিহার জ পিত বাভাদ্যামাশ্য গমন রসন্ধণ কোঠাণ্নি বহিনিরসনক্পণ জ্বরোৎ-পত্তি পুকারণ বোধযতি তথা ব্যা-थीनाः जःथा (मायाः माः म दल्लना প্রাধান্য বলকালাম্চ বোধ্যতি। छिषु क्छातियु हिकिए मावित्मयः म्राट् ॥ १। व्यथं भू इक्नम्र वक्र মাহ।পূৰ্বৰপদ্ধ তদ্মেন বিদ্যান্তা-विन सामयः। नामानाकः विनिष्टकः দ্বিবিশ তদুদাজ্ত ॥ সামান্য ভত্ত रिायागाः विरमिरेय व्रविश्विकः। विलिक्ट भीवबाकः माए विल्लेवन **ममन्दिः ॥ (मायागाः वित्नयाः कृ ञ्चाञ्जिय (ब**ञ्चराष्ट्राञ्च मान्स्राप्तरः । তত্ৰ পূৰ্বৰূপ ব্যাধীনা জ্ঞানাৰ হেতু যথা। শুমাদযো ভাবিন লুরু বোধ্যন্তি। অথচ তএব শুনাদযো **প্তিশ্**ষিত জ্ঞাযুক্তা ভাবিন• ব্}ু ভজ্রণ নেত্র দাহ্যুক্তা ভাবিনা পি-ভদ্মৰ বহিমান্ত্য যুক্তা ভাবিন (भूराह्युत्रः (वाष्युद्धि ।। # !! अप नक्तमा नक्त भार । श्रवित्र

বিশিষ্ট যন্ত্যক তল্লকণ মৃত । সংস্থান লিক্ চিয়ে চব্যঞ্জন ৰূপ माक् जिः॥ विभिष्टेः भू बंक् भः स्य-बाक क्ष जार स्व समायाक वः ক্ষণ মৃত । তত্ত্ৰ লাজে ব্যবহারায . अवं अया ना**र नः रान मि** छ अपि ॥ **শ্ৰহ্মণ** ব্যা**ধে** জ্ঞানায় হেতু ৰ্য**ধা**ন (बरावरत्राथः मञ्जाभः मर्वाक्गुरुग-ঞ্চ যুগপদেভল্লক্ষণ জ্বন বোধয়ভি ।। 🕸 ।। व्याथा शर्मियम्। वाक् ग गारु। প্রবধান বিহারাণা **মুপ্রোগ**ণ **স্** थावरुः। नृगामुश्रामयः विদ্যाद् मः হি সাজ্য নিতি মৃত:।। 🗱 🛚 তর বাতসেগপশ্য মাহ।মধুর লা∢ণ भाम जिला नामा कि निम् । अप कृष्टिक-द्र **४७ (दर न**भ्यमंगिन ! एक्न जनः দ শেষাভাজ্ লভৰ্ণানি পুল্লাপিত প্ৰনাৰ শাভ্যেতাৰি স্বুর্গাঞ্চা অয পি ভস্যোগশ্য নাহ। তিক चानु कदाय भी अभवन हाया निष्णा दीकन (क्रांट्या जृगृह यञ्चदाति **जनर जीगावमःस्थानंनः । मर्लिः** ক্ষীর বিরেক সেক ক্ষবিরস্থাব পুদে হাদিক পানাহার বিহার ভেষজ बिषः পिङः भूगान्तिः नरस्य।। #॥ অথ কফস্যোপশ্য নাহ ৷ ৰক্ষ ক্ষার ক্যায় তিক্ত কটুক ব্যায়ান 🖟

নিষ্ঠীবন স্থাত্যকশিরো কিরেক বমন ধেদোপবাসাদিক । ভৃড্বা-তাধ্ব নিযুদ্ধ জাগর জল্জ<del>ীভাক্স</del>ি সেবৰ পাৰাহার বিহার ভেষজ भिषः एक्षयान मृशुः रुप्तरः ॥ 🛊 ॥ बनकी पा कथ कक रत्र उनार । जबकोডा জনিত শৈত্যেনাবৰুদ্ধ দেহোত্মা পর্কলিগু পাকাগ্রি রিবো-গে। ভূত্বা কফ শোষযভি ইতি স-भाषिः ॥ 🕸 ॥ छेननया वताः 🔻 র্জ্তানায হেতু র্যদুক্ত চরকেণ। গূচ-लिकः महीर्ग लक्ष्म व्यासि यून-শবানুপশ্যাভ্যা• পরীক্ষেতেতি ॥ ত্তথা চ সুশুতে। অভ্যক্ষ স্বেদন স্নে-हि विकासि। वाजिका न यः। ना-ন্যেৰত তু বিজেশ রক্তনাতাৰি দ্বিত ।। সর্বেষা মেব রোগাণা• निमान क्षिजा गलाः। उद शु-কোপস্য তুপ্রোক্ত বিবিধাহিতসে-বন ।। সর্বেধা রোগাণা নিদান সন্নিকৃষ্ট• কারণ•। স্বপিতাঃ ম্বহেতু দুষ্টা:। মলা: বাত পিত্ত কফা এ-(वज्रम्यः। ज्था व वायुवेः। (नाया-এব ছি সর্বেষা রোগাণামেককারণ मि । न द्वागस जेवाविष् वा चिनाः त्रः महार । **७**म ∳बाशृह्भखान्<del>ड,</del> द्राः त्राव भुकाशनात्रवादाः जाविः

রোগশি

द्यार । उठमा प्रामम् जारमा স্যেব। ইতি ভাবপুকাশ:॥ 🛊 ॥ भाशकात्रामा यथा। माजाउनीय कर्मादिशादि । अष्टक द्राजयन्त्रा ह ् भुम्मा गुरुशे उथा। मूबक् हाना-त्री काणा অভিসার ভগন্রো॥ मृहेर्ग गश्याना शकावात्वा शक नामनः। ইত্যেব মাদযো রোগা ম-হাপাপোন্ডবা: মৃতা:॥ জলোদর यक्ट श्लीह म्नादाग वृगानि हा श्वामानीर्वे इहिं जून साह गन-गुरुाः ॥ त्रकात्र्रम वित्रभीम्। छै-श्रशास्त्रा भनाः। म्खावजानक শ্চিত্র বপু: কম্প বিচর্চ্নকা: ॥ ব-ল্মিক প্ররীকাদ্য রোগাঃ পাপ अगुक्तवाः। उथा अर्भ जान्ता नृगाः রোগা অভিপাপান্ডবম্ভি হি॥ অ-(न)ह वर्ष्ट्या (द्वागा कायर इद्वागमः क्षद्राः। উচ্যন্ত हि निनानानि शुप्र-শ্চিত্তানি চ ক্রমাৎ॥ #॥ সর্বরো: গনাশক দান যথা। হেমাদি ধৃত দানথণ্ডে ভগবদ্বাক্য । সূবর্ণদান अर्खवा॰ द्वागाना॰ नामकाद्रन॰ । 🖊 ७ 🏿 🔍 अर्च भुराङ्गन कर्खवाः कमः लाफ्व ॥ 🕫 यनमामञ्डू ॥ # ॥ व्यथा ताग्रज्ञानम्निः । उत्र

**পুতিপ**ৎ बिजीया जायामणी शक्षः मीजिमा मध्याः। उत्र नक्वानि । ষাতী, শুবণা খনিষ্ঠা শতভিষা क्षिक्षे **रखा भू**वे। भूबीवीण भूबी कब्लुनी न्र्डामुन्थ मदा खत्री ম্গলিরা সি। তর বারা: ক্রা: । তত্র যোগে। ব্যতীপাত:। অশে।-खमणमुः। वद्याशका किल्पुर् পাপগৃহ:। ইভি জ্যোতিস্তত্ত্বণ ॥ 🛊 ॥ अभिन् । नम्गु मृष्को वर्डी-পাতে ভৌমার্ক শনি বাসরে। বুণ गुल्का वहारि मुक्तः कृषः श्रीनः न-माहाद्र ॥ भूबीजय मधारम्य। छ-রণী কৃত্তিকা তথা। আদাুযাঞ্চ তি-থৌ রিক্তে চারোগ্যস্থান মাচরেৎ ॥ इंडि (ब्रांडि: मात्रमःगुरु: ॥ (द्रागम्<sup>)</sup> क्ली 'लेषध-। इंखि देवराकः ॥ রোগনাশকে ত্রি॥ রোগভূ: জी भंतीतः। ইতি भंदर **চ**न्द्रिका ॥ রোগরাজ: পু॰ রাজ্যক্ষা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ রোগলকণ ङ्गी निमान । इंडि द्रावनिर्घणः॥ রোগশান্তক: পু॰ বৈদ্য:। ইতি मद्ठिन्स्का ॥ ভিথযো विका: भुणखा:। मन्त्री | विश्वामनिना खी मनः निना। ইভি

त्राजनिर्घण्डः॥

রোগশিলী পু• বৃক্ষবিশেষ:। শ-রালু ইতি ভাষা। ইতি মটাধর:॥ রোগশেুগঃ পু• জ্ব:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:॥

রোগছ॰ ক্লী ঔবধ•।ইতি শব্দ চন্দ্রিকা।।

রোগহর দুব্য জী রোগনাশকবস্ত । यथा । धनु अति क्वार । मुव्राणि মধুরাদীনি বক্ষে। রোগহরাণ্ডহ ।। শালি ষষ্টিক গোধ্ম ক্ষীরক্ষৈব ত-था मध्।। मब्हा मृजाहेक यव करम ৰ্বাৰুক গোক্ষুরণ। গম্ভারী পৌষ तः वीकः माका थज्तकः वना ॥ नात्रिक्लकुञ्ज्ञ एका विराती ह পিয়ালক। মধুক তাল স্মাও मूर्था १र॰ मधुरतागनः ॥ मूही मारु भूमभनः विजित्य भूगामनः । क्मिक्ट ककक्ट व्या अका-ত্যর্থ নিষেবিতঃ ।। খাস কাশাস্য মাধুৰ্য্য ৰৱহাতাৰু দানি চ। গল গণ্ড শ্লীপদানি গুড়**লেপাদি কার** (यर ॥ 🛊 ॥ माजियायन का मुक्ष कः निष्य कत्रमर्गको । भाजुनुकामाः তৰুঞ্চ বদর• তিত্তিরী ফল•।। দ ধি ভক্ৰণ কাঞ্জিকঞ্চ লন্দচ• চামু-বেতস•। অশ্লো দন্তশঠাযুকো লা-

त्रवः नोज्या-दशः शः स्वरंता वृक्तः क्८ व्रवता विषाशी ठानुं लाभनः। रुर्यक ।। नदीवमा ह रेम थिना यद-वर्थभक्खावट । ছिन्न जिन्न दुवाली নি পাচয়ত্যশ্মি ভারতঃ।:#:৷ লবণা-मि यवकात्रैः मर्ज्जकाषिक वावनः। **लायनः ला**हनः (क्वरी विरम्नय नर्ल-गामिक्८ ।। मार्गाद्वाधी मार्मवक्८ म-🗬ক: পরিবেবিত:। গাত্রকণ্ডু কো-ठेलाफ रेववर्गः, बनाय मुनः ॥ ब्रज्य বাত বক্তপিত পুংস্কেন্যি কলা **मिकः ।। क्षा (व) व मिनुः म्यक्थ (म**-वराक व अर्थकः ॥ नवनः बसूब कतः मुखा ख्रुल् वाक्ली। करूँका नीन-नः (भाषी मध क्षु क्काइक्ट ॥ **(इ)न्रानम् क्यिर्द्रः मूक (मर्ह्रा** विद्रापनः । এका २७)र्थः (मद्र गाना जुन नारानिक्छावट ॥ 🛊॥ क्ञगानः कत्रीत्राणि हत्रिष्मुग्रवा ত্তথা। স্বাদু কণ্টক বেত্রাণি বৃহতী षय मझिनी ॥ ७ फुठी ठ पुरकी ठ ত্রিবৃন্ধপূকপর্ণ্যপি। কারবেল্লক বা-ভাজ করবীরক বাসকা: ॥ ক্রো-🔍 हिनी नह भूझी ह क्यकारि। दिवस्य-ন্তিকা। জাতী বৰুণক নিয়ো জ্যো-ভিম্মতী পুনর্ণবা ॥ তিকো রস-

নে:গহ

(मूहिनः महापूर्वाहरना हीशन खथा। শোধনো জ্বর ভৃঞায়ো নুর্ছা কণ্ডৃতি-क्। विभ्व क्षि न न भार फिनकार्खि निजः मूच तुराहिक्ट ॥ #॥ ত্রিফলা শলকী হনু আসুমুণত विवेतिकः। जिन्तुकः दञ्जनः भाकः নিষ্কাব মৃদ্ধ চিল্লিকা।। নিষ্কাবহানে **भावक्या इं**जि इंहि**८ भा**ठेश क्यार्या গ্রাহকে৷ রোর্পী শুস্তুনঃ ক্লেব শোষ-ণঃ। একো ২ত্যর্থ সেব্যনানো হৃদ-याम्य भी ७क्८ ॥ गृथम्माय जुद्रा-थान मन्।। अञ्चारिकातकः । 🗱 । হরিদা জণ্ড লবণ নেষশৃকী বলাদ্বয় ।। कहली नज्ञकी शक्षा भूननंदा न-**ा**वती। जामिए। वृक्तम श्री सम्रेष्ट्र ब्रुखरक ख्या ॥ यव रकाल क्लप्यानि कर्वामीम अभूवकः। পृथक् अभाखाः বাতান্তো বহুপিত্তহর তথা ॥ শ-भवती विराजी व वालकाणीत व-एक । पृद्धा विष्टे शिक्षणी ह वपत्री । इनकी उथा।। करली (ठाए भलः म् गुपुषत भटोनकः। 🕸। व्यथ नुग्रेहरता वार्ता हतिमा ७७ क्ष । শতপুশ্লী है बाতी ह ব্যোষারশ্ব ।।वनी। 🗱। नेलि रेडन दमा मङ्जा मुश्रियु भूवद्र धृक ।। उथा भी मृजि রোগছ

নেধাণ্নি কাঙ্ক্লিণা• **শ**স্যতে ঘৃতণা কে বল পৈত্তিকে সর্লি র্বাতিকে লবণা-ব্বিত না দেয় বহুককে বাপি ব্যোষ ক্ষার সমন্বিত•।পুছী নাডী ক্রমিল্লে-ম্মনেদোমাক্তরোগিষু॥#।তৈল• লাঘব দার্ঢ্যায ক্রুর কোণ্টেষু দেহিষু। বাতাতপা স্বভাবাতিব্যাযাম ক্ষীণ থাতুষু।। কক্ষে ক্লেশক্ষযাত্যগ্লিবাতা-বৃত পথেমুচ। তথা দক্ষা হলভুষ্টা যোনিকর্মা শিরোঞ্জি॥ উত্তমস্য পল মাত্রা ত্রিভি শ্চাকৈশ্চ মধ্যনে । জবন্যস্য পলার্চ্জন সেহ ক্বাথীय-(वय ह।। 🗱।। कन्मूक शृं एउ (म य शृं थ) ক্তৈলে ন শস্যতে। স্নেহে পীতে ত্ ज्कायाः निर्वनुकानकः नद्रः॥ वा-তানুলোম দীগুাণ্নি বৰ্চা গ্ৰিঞ্চ সম্ মত । কক্ষস্য স্থেহন কাৰ্য্য মতি-ব্রিশ্বস্য ক্লণ ।।।। শ্বামাক কো-রদূবাল ভক্র-**পি**ণ্যাক বস্থিভি**ং।** বাত শ্লেমাণি বাতে বা ককে বা স্বেদ ইয্যতে ॥ न (त्रप्रपष्टिञ्च क्र দুর্বল মুর্হিতান্। ইত্যাদি মহাপুরা-ণে গাৰুডে যোগসারে ১৭৭ অখ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ भनुषु द्रिक्वा । घृषु रेजना नि वक्रामि मृत मृत्रु आगम् । मङ् भूबी बहा भागा वाकी वृक्षम्वई-ना।। अञ्चा चज्ठी रेठव अटेबवक

রোচক

বাষ্চী। এতৈ রক্ষসমৈ ভাগৈ ঘ্ভ भुञ् विभावत्यः ॥ कप्रेकार्या तम शृह: की द्रशृह मन दिंछ:। এ उद्या শ্বী ঘৃত নাম শু.তি মেধাকর পর ॥ 🗱 ॥ बिकना हिबक दना निर्श्रं थी নিম্ব বাসকা:। পুনৰ্ণবাশুডুচী চ বৃহ তী চ শতাবরী।। এতৈ ঘ্ ত বথা बाज् अर्द्धाभविभर्मन । 🕸 । व न। चलकवारव जू रेजनमार्काएकः भारत्य ॥ करेलू अधुक मिक्किश हन्त নোৎপল পদ্মকৈ:। স্ক্রেল। পিপ্ন লী হ্বপ্ত ভুগেলাগুক কেশরৈ: ৷৷ গ-क्षाश्र कीवनीरेयण कीवाहक जना-শ্ৰিত ৷ এতব্যস্থানা পক্ স্থাপথে-<u>দুজতে শুভে॥ সর্বাত বিকারা স্ত</u> **স**र्यशाद्वाद्यान्। **टिल (**मख्ट পূশনযেদ্বলাখ্য রাজবল্পভ ।। 🕸 ।। শতাবরী রসপুস্থ শ্লীরপুস্থ তথৈ व हा भाजभूझा (स्वसाक भा•जी रेष्णात्वयकः यद्या ॥ हन्स्यः छभद्रः क्ष भावा हा भूम जी उथा। बरेंड: कर्यमिः करेन्न रेखन भुष्ट् विभा ष्टरा **ज**बु वामन शक्ना विश्व ব্যঙ্গ অপ্তিনাং ৷ বাযুনা ভগ্ন গাত্রাণাং (य ह नीक् कि रेसथुरन ॥ क्रत्रा कब्छेत्र গাত্রাণা চাধ্যান মূখশোবিণা।। ত্বগ্রতা শ্চাপি যে বাতাঃ শিরা স্না-

যুগতাক যে।। স বভি নাশ্যভ্যাশু-रेखरेकव म्याक्ष्माक्ष्कः । नादायम् भिष् रेजनः विकृत्नाकः क्राप्तंमः .॥ ಈ॥ পৃথক্ তৈল∙ ঘৃত∙ জ্য্∕াৎ ममरेख द्वीवरिशः भृथक् । भञावर्ग्रा ভড়চ্যা বা চিত্রকৈ রোচনাযুত:।। निर्छछा वा अुनाव्रगा कण्कार्या त्रमापि ভि: । वर्षा वानवरा वाशि वामक्तम कवाबिकिः ॥ वाक्ता हिन्न-ওকেনাপি ভৃঙ্গরাজেন মুণ্ডিনা। মূ-খল্যা দশম্লেন খদিরেণ বটাদি-ভিঃ 
। বটিকা মোদকে৷ বাপি চুর্ণণ महार नर्वाद्यागन्य । घृष्ठन मधुना বাপি যুক্ত খণ্ড ভডাদিভি:।। লব-ণৈ: কটুকৈ যুক্তি যথা ভাগঞ্চ রো-পন্ৎ। #1 চিত্ৰ কৰ্কাৰু ত্ৰিবৃতা ম-লমুহ্যনারক।। স্থা চ বালা গ-ণিকা সপ্তপর্ণ সুবর্চিকাং। জ্যোতি-ন্মতীঞ্চ সংভূজ্য তৈলং ধীরে৷ বিপা-চযেৎ।। এতন্নিষ্যন্দন্ তৈল ভূশ। দদ্যাৎ ভগন্দরে। শোধন রোচন-रेक्षव अर्द्धवर्गकद्गः श्रद्धः ॥ विज्ञका्म्ऽः मरारेडन॰ नहातानमुख्यनः।∤ः। व्यक्तामः अनिन्द्रुता रहिजीन ती भाष्ट्रयः ॥ कात्ष्यः (किन्यु अ मानुकः **अत**्नान्छवः । इन्प्रवाक्रगुभासार्थ कर्तेनः कन्रतेनः गरेमः ॥ कन्रतेनः

हात मामरिनः है जिह भाठेः॥ व जिः भर्यभक्षः रेजन मकाम्रेज्यः रग्निकः । मृद्याना भरहरस्जः व्यक्तिति भक्षः गुजः॥ व्यक्तिमानः पिकः रेजनः गुजः॥ व्यक्तिमानः जि। विस्थस्य भरहरः भक्षः भक्षां वि। विस्थस्य भरहरः भक्षः भक्षां विरामाध्यरः॥ (द्राभनः मृज्ञा-वशः रेजनात्म कात्रस्यः। व्यक्तिमानिकः रेजनः भक्षावीर्यप्रभ रत्नामहिकः रेजनः भक्षावीर्यप्रभ रत्नामहरः ॥ हिज भाक्षर् २१৮ व्यक्षायः॥

রোগহারী পূ বৈদ্য:। ইত্যমর:॥ রোগনাশকে ত্রি॥

রোগিতক: পু॰ অশোকবৃক্ষ:। ইতিরাজনির্ঘট:॥

हाउ बाका नयणः ॥

त्वागिवल्ला का अवसः । इठि

न्य प्रित्युका ॥ त्वागि निष्य वि ॥

त्वागी वि त्वागयुकः। उर्देश मानः ॥

यः। व्याधिकः २ विक् कः २ भानः ॥

यः। ४० व्याधिकः २ विक् वाकः

विविधः ॥ व्याधिकः । देवि वाकः

विविधः ॥ व्याधिकः । व्याधिकः ।

र्वागिषः । व्याध्वाधिकः ।

प्राणिषः । व्याध्वाधिकः ।

विविधः । व्याध्वाधिकः ।

ছীতাদে: পুশ্বতো **ৎপর**ণ ৷৷ আযু-जारि। जारि नदाए नाश्राद्धाना-थ्यामि र्मा पर्मातन । अब म-ম্পদাদিভাঠ চাতে ভাবে হিপ্। শা-र्माए भी जारिः। भी जाक मृहूक-ठिनदाहिना शतीकाथ । शुन्न ७: । উদর লামব গৌরব ভূষা বুভূকা वनावनामिश्रा विष्णाम् हो विकाबा হিদুরাখ্যাতা তথৈবচ।তথা দুল্লব্নি-भृक्षाण भाइरययू णिकिट मकान्।। তর দর্শন নেত্র জিন্তা মূতাদে: কর্ত্ত-ব্যা ।। 🗱। তত্র নেত্রপরীক্ষা যথা। নে-वः म्राट् भवना मुक्कः ध्रमुवर्गः ख्रथा-ৰুণ°। কোটরান্ত: পুবি**ইঞ্চ তথা <del>প্র</del>ঞ্চ** विल्लाकन ।। इतिमाथ अवर्गक द्रकः বা হরিত তথা। দীপদ্বেষি সদা-হঞ্চ নেত্র• স্ব্যাৎ পিত্তকোপতঃ ॥ व्यान वाल्नार शिक्ष गार **সলিলপ্লু ত•। তথা ধ্ব**শবর্ণঞ্চ জ্যো-**जिहीं न॰ वलान्विज• ॥ (नव• हि-**स्तियं वाङ्न्रार महाराष्ट्रायवयं न-ক্ষণ । ত্রিদোষ লিঙ্গ সেবেত ত-ন্মার্যতি রোগিণ ৷৷ ত্রিদোষ দৃষি-ত॰ নেত্র মন্তর্মগ্ন• ভূশ• ভবেৎ। ক্রি विकः मनिवमादि शाख्यामीवरः **७**।भि ॥ अथ जिल्ला भदीका। শাকপত্রপুভা ককা যু টিতারসনা-

র্বাচ্য

নিকাং ! রক্তা শ্যানা ভবেৎ পিত্তা-क्षिश्राम्। श्वन। ककाट ॥ পत्रिन्धा খরম্পর্লা কৃষ্ণ। দোষত্রযে, ইবিকে। रेमव (नायह्याधिक) (नाय हिउय লকণা।। #।। অথ মূত্রপরীকা। বাতেন পাঙুর• মূব• রক্ত্ নীলঞ্ পিত্তত:। রক্তনেব ভবেদুক্তাদ্ধবল ফেনিল কফাৎ।। 🗱।। অথ শরী व्रम् उकदामि ज्ञानार्थः स्थाननः कार्यप्र । ७७ नाडी भन्नी का मारु । भू·भा प्रक्रिंग इसम्। क्रिया वाम-করস্য ত্। অঙ্গু মূলগা নাডী প-ब्रीकाउ ভिष्यदेशः॥ अङ्गुनी ভिस्र किम्बि नाषी भवहिष्ठः न्ण्राम् । छए हेरा मूथ मू:थ कानी राट स-প্তস্য ক্ষুঞ্চাতপশীলিন:। ব্যাযা-মশান্ত দেহস্য সম্যক্ নাডী ন বুধ্য-ভে।। বাতে প্ৰিকে ভৰেনাডী পুব্য-ক্তা ভৰ্জনীভলে। পিত্তে ব্যক্তা ম-**श्रमागाः** जृजीपाञ्चलित्रा करक ॥ **७**र्ज्जनी नवामा माध्य वा**ठ शि**छ **१**थिक सुहै। अनागिकाया उद्ध न्याः व्यक्ता वाज करक ভरवट् ॥ मध्यान।निका मध्य सुष्ठ। शिख करक २ सिक। अजूनि वि उरायि স্যাৎ পূব্যক্তা স্বিপাতিন: ॥ বা

তাছক্রণতি নীড়া পিত্তাদৃৎপ্ল,্ড্য गामिनी । ककात्रमागि (छाँगा সনিপাতাদতিজতা দেবকম্ৎপু -ড্য চলতি ধুমুনী বাত পিত্ৰতঃ ! বহেদ্বকঞ্চ মন্দঞ্চ বাত শ্লেমাৰ্থি-कि उठ:। উৎপ্লু ত্য मन्तः हवा उ নাড়ী পিত্ত কফে হধিকে।। কা-মাৎ কোঘাৎ বেগবহা ক্ষীণা চিন্তা ভ্যাপ্লুতা। স্থিতা স্থিতী हरनम्या मा इडि इ। नहाउ। उथा ।। অভিক্ষীণা চ সীভা চ প্ৰাণান্ হস্তি ন সংশযঃ। জুর কোপেন ধ मनी (माका (रगवडी खरदर ॥ मन्ताः की नशाकाक रेमव म-ব্দতর। মতা। চপলা ক্ষুধিত্স্য স্যাৎ তৃপ্তন্য ভবতি ছিরা ॥ সু-খিনোপি ছিরা জ্ঞেয়া তথা বল বতী মতা। ইভি ভাবপুকাশ: ॥ রোগ্য॰ ত্রি অপথ্য•। অহিত•। इेंडि **न**फ्ठिन्तिको ॥ द्रागमद क्तिनि ह।।

(द्राठकः भ् क्षा। उट्भग्रीयः।

रूड्का २ व्यम्ना ० किवट्का ८

कृष्टिः १ इंडि ह्रिन्टन्दुः । कृष्टी ।

१ इंडि सम्द्रद्वादकी ॥ द्राक्तभना७:॥ व्यवस्थाः। इंडि द्राक्रिक्टः
॥ शृह्मिर्गट्डितः। इंडिदाक्रिक्ट

**ब्राइनी** 

खिशानामि का अवः चिर्मिगीयः। । निमाठतः: २ ४ न रुतः ० कि उतः ८

गंगक्षात्रकः ७। जमा खनाः। मधुः

त्रदः। उक्ति को विष्यः। भारक . करूँदः। वयूदः। जीकृदः। इत्रुदः

। श्रियु॰। अष्ठ कथ् क्यानिन द (का **२**की (यम भिर्म) जुन्न शक विष

বুণ নাশিত্বঞ। ইভি ভাবপুকাশ:

॥ कठिकात्रक जि ॥

রেচিন: পু॰ ক্টশল্যলি:। ইও-मद्रः ॥ स्थउमिशुः॥ भनाकुः॥

व्यात्रगृथः॥ कत्रक्षः॥ व्यक्तितेः॥

माफिनः। ইতি ब्राजनिर्घणः॥ (ब्रा-চকে ত্রি। ইতি মেদিনী ॥

(ब्राहनकः पु॰ **बर्ची**बः। ইতি ब्राङ

विर्यक्तः ॥

রোচনফলঃ পু: বীজপুরকঃ। ইতি व्राविविच्छ: ।।

রোচনকলা हिं हैं। विहास

ब्राजनिर्घकः॥

রোচনা র্মজ্জকঙ্গার । গো-वी পিত্ত। গোরোচনা ইতি খ্যাত ॥

वत्रवाविट। इंडि स्मिनी ॥

ज़िक्षिका जी वन्मद्राहना। इंडि

वाजनियकः॥ माखादाहनी। इंडि त्रज्ञाना ॥

त्राव्नी की जामनकी॥ रगादा

রোট্

চনা। ইতি রাজনির্ঘন্ট: ।। মন:-**णिवा । ই**ভি হেমচন্দু: ॥ খেত-

ত্রিবৃতা॥ ঔঁডারোচনীতিখ্যাত ব-

निक् मुंवा । उट मर्यायः । काण्य-

লঃ ২ কর্কশ: ১চন্দু: ৪ রক্তাঙ্গ: ৫ । ইত্যমর:।। কম্পিল: ৬ কম্পীল:

१ केम्भिनः ৮ काम्भिन्।ः ৯ व्राप्ति

১০। ইতি ভরতঃ।। পর্য্যাবান্তর॰

खनाक किन्निज्ञक भाष पुष्ठेव्याः ॥

क्रिंग्मानः भू॰ अध्युविष्ड्रामा-वंदः। यथा। श्रीवृत्का क्षमगावांदी

बावमाना गला छवः। ইতি वि-

काश्रमवः॥

রোচি: ন্নী পুভা। ইত্যমর:॥

(ब्राहिकू: बि चनकावाहिनाही-शिमीनः। उर्भर्गायः। विजाहिर

जुाबिकुः १। ইउ।मतः॥

রোচী जी हिनांना हिका। इंडि मंद्रज्ञावनी ॥

রোচী बि রোচিফু:। ইতি হেম-ठन्मः ॥

রোচ্য ৰি পুকাশ্যা প্ৰীতি বিষয়: । ৰুচখাতো: কৰ্মণি য পু-

**छ** । एयन निष्ठां सा र्ये ।।

तार्षे बि शिन्तः। दशकः। द्वाव-তীতি বিচি গুণঃ। ইতি মুগাবোধ-

**होकायाः मूर्गामात्रः ॥** 

রোটিকা

द्यार्टिका जी निष्ठेकविष्णवः।द्राष्टी ইতি কটা ইতিচ ভাষা। তৎকরণ পুকারমাহ। শৃষ্কগোধুমচ্র্নে কি-ঞিৎ পুষ্টাঞ্চ পোলিকা· i তপ্তকে (बनरयर कृदा जूर्याकारतिभ छा॰ भरहर ॥ भिर्देश (द्राविका (भू) ক্তা গুণানস্যা: পুচক্ষহে। রোটি--का वलक्ष्रहा वृष्ट्री शाजूवर्षनी । वाजन्नी कक इहुदी मीलानीना॰ পুপুজিতা।। 🟶 ।। অথ লেটা। মুদ্ধ शाध्यष्व माष्गाः विमर्पाय 1 विश्वायं विकाकात्रः निश्रास्था শ্নৈ: পচেৎ ॥ অস্বারকর্টী হোষা কৃহণী শুকলা লঘুঃ। দীপ-नी कफर्षवा शीनम शामकाम-**डि**ए ॥ 🕸 ॥ व्यथ यवत्तािका । यवका রোটিকা क्छा। सधूता विष-मा नघुः। यन मुकानिनकती वन्तरा হন্তি কফানযান্।। পীনস খাস काञा क (यस। (यह गनाययान् ॥ 🗱 ॥ व्यथ भाषत्त्राहिका। हुर्न॰ य-इक्ष नायागाः हमभी माভिशीयछ। व्यभी ब्रव्हिं द्वाही क्थारं वन ভिদ্ক।।। बद्धाका वाउन। वन्।। मीखायीनाः পुপ्जिञा। मायागाः **मान्य (खार्य ञ्राभिजा स्र**)क्क-ঞ্কাঃ!৷ আতপে শোষিতা যন্তে রোদন

পিত্রা ভার্নুসী মৃত্য ধ্নসী ব্রচিতা নৈব পোকা বার্যারিকা ব্রথ: ।।
বার্যারিকা স্থানে ভূভ্রিকা ইতি
গুর্গরিকা ইতিবাপাঠ: বির্যারী-কফ
পিত্তন্নী কিঞ্চিদ্বাতকরী মৃত্যা ক্রা
তিকা কক্ষা শ্লেষ্য পিত্তাসুনুদ্গুক:
। বিপ্তিন্তিনী ন চক্ষ্য্যা ভদ্গুণা তিল্লামুলী।।ইতি ভাবপুকাশ: ।।
রোড শ্ল অনাদরে । ইতি কবিক্লেদ্য: ।। শ্ল অক্রোড্থ । ইতি
দুর্গাদাস: ।।

त्रामः क्री सर्गः॥ ज्ञाः। इंडि स्मिनि॥

(द्राप्तनः क्री कन्दनः। अनु। ইতি

(क्रिप्ति।। उन्न मृजाम् छः यथा।

यन् प्रिक्ष किष्ठ निनः मृजपः

न्गाः। भूठ्द्राम् पीनः कक्ष्ण किः

छः न मृथावरः॥ ইতি गाकए ५५५

यथायः॥ ॥ ।। किष्ण्वा (धन्नाः

त्राक्ष मृनिः मृठः मृद्रो करद्राप्त किष्णः

वा मृजः। ইত্যপক্ষ मृ। उपम् विष्णुः

ना मर्छः। इज्याक्त मृ। उपम् विष्णुः

ना मर्छः द्र द्र मः एवा वज्य क्राप्ताः।

रद्राप्ताम् भ उद्देनम्, मृजिनाः नद्रकः।

यथा। उद्यानिता माक्ष्परस्थ माः

रद्राप्तीः भूव मान्यु छः। (द्राप्तनाः)

मुन्निञ्चास् ज्ञानाः निद्धः दुनः ॥
इंडि नुक्तिवदः ग्रंगनाः निद्धः ११
व्यक्षायः ॥ ॥ ॥ मृज गृष्णिमा द्राः
मन निर्वादा यथा। (स्यानः वाक्ति
वे ग्रंकः (भुडा ভ्डाक्त याः।
स्वाकार्या विधानजः॥ ইडि म्
ष्विज्वः ॥
द्रामनिका ज्ञी यवानः। ইडि द्राः
कनियंगः।।

রোদনী জ্ঞী দুরালভা।ইত্যমর:।। রোদসী জ্ঞী স্বর্গ:।।ভূনি:।ইত্য-নর:।

রোদসী ব্য় স্বর্গ: ।। ভূমি: । যথা

। দ্যাবাপ্থিব্যো রোদস্যো রোদসী রোদসীতি চ। ইতি ভরতগৃতকোষ: ।।

द्वाप्ति । जी ज्वित्राणी । यथा ।

भूमृत्रत्राणि ज्वा ज्वित्राणी । यथा ।

भूमृत्रत्राणि ज्वारायो द्वाप्ति । जुर्

विः प्रोत्राकाण अल महर् दि
गृशीर क द्वाप्ती द्वापः णक्रया

वाक्तार हे जि ज्वारायो मन् व्या

प्रे विकार हो मह प्रात्यो मन्

प्रि उ उ कि ज्वापि ज्वाप्ति मन्

प्रि उ उ कि ज्वापि ज्वाप्ति मन्

प्रि उ उ कि जिल्ला म्या

সহপুষোগেপ্যনযো রোদ: স্যাদ?
পি রোদসীতি বিশ্ব: ।। রোদসী
রোদসা সার্দ্রণ পৃথীন্বর্গে দিবি
ক্ষিতৌ । ইত্যজ্য: ।। রোদসীত্যব্যয মপ্যস্তি । যথা । দ্যাবাপৃথিব্যো রোদস্যো রোদসী রোদসীতিচেতি । ইতিতটীকাষা ভরত:
রোধ: ) পুণ নদীতীরণ । ইত্যমররোধন: ত্রি রোধকর্জা ।। রোধে লী
। ইতিব্যাকরণণ ।।

রোধবক। জ্ঞী নধী। যথা। নিমুগা রোধবকাচ সুবন্ধী সিদ্ধুরাপগেতি নদীপর্য্যায়ে ভাগুরিঃ। ইকি ভ রতঃ।।

রোধোবকা **জী নদী। ইতি** ত্রি-কাণ্ডশেব:।।

त्रात्मावजी खी निर्मा इंडि द्राज-निर्मण्डः॥

রোধু ক্লী অপরাব: ॥ পাপ । ইতিমেমিনী ॥

त्राधुः भू लाधुः। इठि प्रिनी त्राकनिर्यन्ते ।।

त्राष्ट्रभुष्टः भू॰ नध्कृक्षः। ইতি द्राक्षनिर्घणः॥

রোধুপুদ্ধিণা জী ধাতকীবৃক্ষঃ। ইতিরাজনির্ঘটঃ।। রোপ: পু বাণ:। ইত্যার:॥ রোপণ। ইতি মেদিনী॥ ছিদ্রে লী । ইতি হেমচন্দ্র:॥

(कालगः क्री विस्ताहनः। कलगः।
(का जांद १ नहे शुण्डादन निम्नमः।।
काननः।। शुम्कादः। क्ष्युख कह
शाखाः लखारण जनहे शुण्डादन
निषमः। इकि द्याकद्रनः॥ ॥ ॥
व्यक्षनिविष्णः। यथा। द्यालगः
त्रमकः लिक्षे। ममुद्रकः मः श्लाद्य वातिना। गृङ्गियाखब्दलः मर्वः छुःकह्नं भरशागङः॥ मृद्रकः छद्दनः
मर्वः लश्नं हो मिम्न छः छद्दनः विहर्न्य जाद्दन् ममुद्रकः विद्वनः विहर्न्य जाद्दन् ममुद्रकः ।।
इकि जाद्दन्य निम्नाः।।

(त्राभगहर्गः क्री नयनाञ्जनिवाणियः।
यथा। व्यथ (त्राभगहर्गः। भिनायाः
त्रमकः भिट्टे। मन्द्रगाश्लाव्य वात्रिगः।
गृङ्गियाज्ञ्ज्जनः मर्बः उद्यक्तहृबं
माथा गजः॥ मृद्धः उद्य क्रनः मर्बः
भश्न ही महिन्।
जावाय मन्द्रम् जिद्यनः जिक्नाः
तरमः॥कर्म् तम्य ज्ञा ज्ञ सम्माः
लगन निक्तिश्यः। व्यञ्जायम्यनः

उन नर्दार या श्रुणास्य ।। त्रम् । त्र द्वा त्रा त्र हुर्ग (म उन्न न्यः ॥ इंडि ভाद शुकाणः ॥

রোপণীবর্ত্তি: ত্রী নেরাজ্ঞনভেত্তঃ।

বথা। অথ রোপণীবর্ত্তিঃ। অশীতি
ভিল পুরাণি বৃষ্টি: পিপ্ললি তুওু
লাঃ। কাতীপুরাণি পঞ্চাশন্মরিচানি চ বোডেশ॥ সৃক্ষণ পিষ্টাস্থুনা
বর্ত্তি: কৃতা সমুমিকাভিষা। তিমিরাজুন শুকানাং নাশিনী মাংসবৃ
ক্রিক্ত।। এতস্যা অঞ্জনে প্রোক্তা
নাত্রাসার্ত্ব হরেণুকা। সমুমিকাবটী
রোপণী। ইতি ভাবপুকাশঃ।।

त्त्रान्। जित्रान्धः न् वान्। वि
त्मवः। जन्ध स्थाः। त्रान्धाि 
त्रान्धा नघवः मीषुनाका स्थाः 
ताः। जनाहिता (नावहत्रा वन्धाः

मृख्विवर्ष्यनाः।। ইতি द्राक्षवल्लनः।।

त्रामः न्नी कनः। ইতি मद-

চলিকা।।
রোম প্লী শরীরজাতাল্পর:।রোঁআই ইতি ভাষা। তৎ পর্য্যাকঃ।
লোম ২ অকলং ৩ ভুলুং ৪ চর্মালং
৫ তন্কহং ৬।ইতি রাজনির্যুক্তা।
ভানবিশেষে তস্যুক্তাল্ভার্ত্ত বথা
। অলুরোমযুতা শুেষ্ঠ জন্ধা হন্দিকরোপমা। রোনৈকৈকং কৃপকেস্যা-

म्भागास महास्रानाः ॥ स प्र - (द्वारम शिक्षांनाः स्मृतियांगास्तरः) स्थित । (द्वामस्याः महिम्नुनाः स्मृत्राः निर्माः मस्नानुकः ॥ इकि गाक्रप्र ७० स्थानि । स्थान मर्न निर्मानीः की एक सानि थानि म मन्त्रान्यः । द्वामानि ह द्वस्त्रानि मानिर्द्धन मना नुद्धर ॥ इकि देकीर्प्य केगदि-कार्ग १८ स्थानः ॥

(ज्ञानकः क्री शाः मूलवनः ॥ व्यन व्याष्ट्राज्ञः। ইতি ज्ञाक्ष निर्धितः॥ (ज्ञानकन्मः शुः शिखानः। ইতি ज्ञाक्ष निर्धितः॥

রোদকপাত্তন ক্লী দেশবিশেষ:।

(द्रामक्शः भू॰ (लामविवतः। यथा । भुडाशिक काक्षमालाः मासी यु का कम अण्या ममख (द्रामक्शियु निष्ठ तमीन्दिगकदः॥ ইভি मार्क

निदागली लानाकायः॥

(खरनुवाल (प्रवीमा श्वा) ।।
(वामत्मवः की ठामवः । ই छि

किका छर्मवः ।।
(वामख्यः विका ठामवः । ই छि एक्सः)
(वामख्यः विका ठामवः । ই छि एक्सः)
(वामख्यः वृष् छेत्तीर्य (ह वेणः । का छवः ।।
(वामख्यः व्यो ह छाया । ই छ । मवः ।।
(वामख्यः ।।
(वामख्यः ।।
(वामख्या जी ज्वामावितः । ই छि

र्मिनमुः॥ त्राभवान् जि लामविणिष्ठेः। त्राम णपामखप्रश्वेतज्भुज्यसमिन्नमः॥

(ब्रामिविकातः भू (ब्रामाकः। इंडि स्वाय्थः॥

রোমশঃ পু॰ নেষঃ। ইতি হেমচন্দুঃ॥ পিণ্ডালুঃ॥ সম্ভী॥ শুকরঃ
। ইতি রাজনির্ঘটঃ ॥ অতিশ্যলোমবিশিষ্টে ত্রি॥

রোমশফল: পু॰ টিভিশবৃক্ষ: 1 ইতিরাজনির্ঘণী: !!

রোনশ। জী দকাবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। লোনশা চ।।

রোমশুক ক্লী স্থৌণেযক। ইভি ভাবপুকাশ:॥

का कम ७ वृर्। मम छ (द्रामक्रियु (द्रामहर्यः भू॰ द्रामाकः। ইতি निष्ठ द्रामीनिर्याकदः॥ ইতি मार्क ह्वायुषः॥ রোম্ছর্যণ ল্লী রোমাঞ্চঃ। ইত্য মর: ॥

রোমহর্ষণঃ পু॰ সূতঃ।। বিভীতক-वृकः। इंडि सिनिनी।। वारामा বুঙ্পত্তি ৰ্যথা। অস্য তে সর্বরো-মাণি বচসা হৃষিতানি যথ। দৈ-পায়নস্য ভগর স্ততো বৈ রোম-হ্র্বাঃ ৷৷ ভবন্ত মেব ভগবান্ ব্যা-बहात सग পुजुः। ইতি कोर्ष्य 🔾 व्यथ्यायः ॥

রোমাঞ্চ: পু॰ রোমহর্বণ ৷ ইত্য-মর: ।। পুলক কণ্ট হ রোমবিকি· যা রোমোদ্দম রোম্ছর্যা শ্চাত । ইতি ভরত:॥

রোমাঞ্চিকা জী क्रस्डीवृक्त:। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

রোনাঞ্চিতঃ ত্রি জাতপুলক:।রো-भाक्षविणिष्टेः । उर्भर्गायः । क्-ষ্টরোমা২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেব: ॥

রোনালী জ্রী বয:সন্ধি:। ইভি भक्राना॥ (द्वाभावनी ह ॥

রোনাল: পু পিণ্ডাল্:। ইতি द्राजनिर्घकः॥

द्यामान्विष्टेभी भू अञ्ची क्कः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

द्राभावनी जी नाज्यक द्वाम

। ইতি হেম্চলুঃ॥ রোমার্ফী ৩।-इंडि भक्तीला॥ लामताकी ८। যথা। ভস্যা: প্ৰিষ্টা নতনাভি রক্স• ররাজ ভদ্ম নব লোমরাজী। নীবী মতিক্রম্য সিতেতরস্যাত-বেখলা মধ্য মণে রিবার্চি:।। ইতি म्माद्रमञ्जयः ॥ मा ह योवनात्रस्त्र ভবতি ৷ অজ্ঞাতধৌবনা যথা ৷ নীরাত্তীর মুঁপাগতা শুবণযো: সী-नि मुत्रसबर्याः ल्याब वन्न भिरः কিমৃৎপল মিভি জ্ঞাতুণ করণ ন্য-जऽ**ভि। रेम**रालासूद्र भक्त्या भनि-बूधी द्वामावनी ल्याकुठि मासा-মীতি মুহু: সখী মবিদিত শুোণী-ভরা পৃহতি॥ ইতি রসমঞ্জরী॥ রোমাশ্যকলা জী বিঞ্জিরিষ্টা-ক্ষুপ:। ইতি বান্ধনির্ঘণ্ট:॥ রোমোদ্ধ:। পু॰ রোমাঞ্চ:। ইতি रुवायुषः ॥

द्धारमारक्षमः **পু॰ द्धामाक्षः। ই**ভি ত্রিকাওশেय:॥

(द्राण: १० भानीयामणकः। ই मद्द्रिका ॥

রোলম: পু॰ ভুমর:।ইভি ত্রিকা -প্রশেষ: 11

রোব: পু॰ কোধ;। ইত্যমর:।। শুণী। তৎপর্য্যায়:। রোমলতা ২ রোষণঃ পু॰ পারদঃ।। ছেম্বর্ষ থোপল: । ইতি নেদিনী ॥ ঊষর ভূমি: ॥ কোখনে ত্রি । ইতি ছেম চন্দু: ॥

রোহঃ পু॰ অজুরঃ। ইতি হেম-চন্দুঃ।।

রোহক: পু॰ পুেতভেদ:।।বোচরি ভি।ইতিমেদিনী।।

রোহণ ক্লী শুক্রণ। ইতি রাজ নির্ঘট:॥ জন্ম ॥ প্রাদুর্ভাব:। ইতি কহধাতো র্ভাবে ২নট্ পুত্যবেন নিয়ন।।

द्मारुगः भुः भर्वजितिःभवः। उट् भर्यप्रायः। तिम्तानुः २। देजि क्रो ् थतः॥

রোহন্ত: পু॰ বৃক্ষভেদ:।ইত্যুণাদি-কোব:॥ বৃক্ষমাত্র-।ইতি সংক্ষি-গুসারোণাদিবৃত্তি:॥

রোহন্তী দ্রী লভাভেদ:। ইত্যুণা-দিকোষ:।। লভানাত্রণ। ইতি স•-ক্লিগুসারোণাদিবৃত্তি:।।

রোহি: পু॰ বীজ•॥ বৃক্ষ:। ইতু ণাদিকোৰ:॥ ধার্মিক:। ইতি সি জান্তকৌমুদ্যামূণাদিবৃক্তি:॥

রোহিণ ল্লী কালভেদ:। ইত্যান দিকোষ:॥ সতু দিবসীয় নব্ম মূ হুৰ্ত্ত:। পূৰ্বাক্স শুক্ষস্য গৌণকাল দ্বোভরাবধি:। অপরাহ্মশুদ্ধ न् भृतीविधः। একোদিইশু। क्षत्र। **गमाभनकानः ॥ (द्रोहि**नकाम् नामान्द्रनः। यथा । जाज भृदीहर শান্ধ মভিধায় রৌহিণস্ক ন লম্বুৰে দিত্যভিধানেন পূর্বাহ্মশুদ্ধস্য স-क्वार भाषा होहिन भर्गाष्ठ भी-**ग**ल्हां इकानः मुठीयर । उन होशिन भूबीइ मुख्या गीनका नाजुरना जुदाविशः वानदाङ्गा-षमा भूबीविध विजायगमाउ । (ब्रोहिन**ड** रिवनम्) नवम मुह्र्ड: 1 তস্য জ্যোতিবোক্ত রোহিণী দৈব-তত্ত্বাৎ রৌহিণত্ব মিতি। ব্যাস: । আরভ্য সভপে শুদ্ধে সর্য্যাদা-द्रोहिन· वृषः। विषिद्धा विषिमा-शाय होहिगछ न नहुरय ।। इंडि শাৰ্ভত্ত ॥

রোছিণ: পু॰ ভুক্ণ:।। বটবৃক্ষ:।।
রোছিডকবৃক্ষ:।ইডিরাজনির্ঘণ্ট:।।
রোছিণি: জ্রী রোছিণীনক্ষত্রণ।
ইভি শব্রত্তাবলী।।
রোছিণিকা জ্রী কোপাদিনারক্তবর্ণাজ্রী।ইডিজটাধ্র:।।
রোছিণী জ্রী জ্ঞীগরী।ইড্নের:।।

রোহিণী জ্ঞী জ্ঞীগবী।ইত্যমর:॥ ভডিৎ॥ কটুম্ভরা। সোমবল্ন:॥ লোহিতা।ইতি মেদিনী॥ জিনা-নাণ বিদ্যাদেবীবিশেষ:। ইতি

रहमहन्दुः ॥ कान्प्रती ॥ हत्रीषकी ॥ मिलिशा ইতি ब्राजनिर्घणेः॥ किंश ্লবর্ণা বন্ধুলাকার। বিপ্লেচনে পুশা-न्छ। रत्रीजकी । ইতি রাজবল্লভ: া 🏶 🗈 ব্লদেবমাতা। লা বসুদেব ভার্য্য কশ্যপপত্নী সূরভ্যশক্ষতা া বথা। দেবকী রোহিণী চেমে বসু-(स्दम्) बीमणः। त्राक्ति मुद्राज र्मिती व्यमिछि र्मिवकी शख्ट ॥ हेि **गद्म जाद्राज र**दिवण्णः ॥ # ॥ मूत · ভিকন্যা। यथा। श्रीमार्क्स खेरा **উ**वाह । स्क्रमा जनया याज्य मूत्र जि नाम নামতঃ। গবা॰ মাতা মহাভাগা স-র্বলোকোপকারিণী।। তস্যাস্ত ত-ন্যা জন্তে কশ্যপান্ত পূজাপতে: 1 নাম্মা সাংরোহিণী শুভূা সর্বকামদুঘা রিভিভগো জ্লাং। কামবেনু রি-িতি খ্যাতা সর্বাক্ণসংযুতা ॥ इंভि काणिकाभुज्ञांत (मेवाध्याय: ॥ 🗱 ॥ नववधी याकन्या यथा। ज-🕏 वर्षा छत्या ज्ञोत्री नववर्षा ज्रु । द्वार्शि । দশনে কন্যক। প্ৰোক্তা অত উদ্ধু '• ं**द्रक**प्रला ॥ ३७,४१२७७<sup>,</sup> ॥ 🗱 ॥ প্ৰশ্বিন্যদি সপ্তবিশেক্তি নক্ষরান্ত র্গত চতুর্থ নক্ষত্রণ। তৎপর্য্যায়:। রোহিণিঃ २। ইতি শব্রজাবলী।।

बाबी ७। इंडि रहमम्बः ॥उंब् -শন্সাকৃতি পঞ্চারাত্মক ! ত: म्याधिकाकी (एवडा वुका । भनगंभ-त्या উদিতে मस्त्रिनः इ वर्गमा **च**-ষ্টত্রি**-শ**ৎপলাধিক দণ্ড**ভিতয**•শত• ভবতি। যথা । কঘুকণ্ঠি শঙ্গলাক্ তৌ নভোমধ্যমাগতৰভি*-*পুজাপ-ভৌ৷ পঞ্চে গছ স গছ বিশ্বিকা निःमृजाः मृगुधि मि॰ वशुजः॥ **ইভি** কালিদাসকৃতরাত্রিল**গ্ননিক**; পণ ।। 🛠 ।। তত্ৰ জাত ফল যথা ৷ माञ्चर्यकार्या जनानः जनीनः म्-চাৰুদেছে। বিলগৎ কলেবরঃ। ম-রাণ্নিনা কলিভাখিলাশযোগোরো-হিণীজঃ সুধনী সুমানী ॥ ইতি কো-<u>क्षेत्रभाकाः ।। क्षाः भवत्रागवित्यवः।</u> যথা। রোহিণীনানক গলরোগাণা নামানি সংখ্যাঞ্চাহ। রোহিণী প-ক্ষাপোক্তা কণ্ঠশাল্ক এব চ। **অ**-थिकिञ्च = ६ वलाया १ लाम नारेमकतृ-न्तकः॥ उटा वृन्तः भउद्यी ह नि-नायः केशिषु विः। गत्नीयः भुषद्रम्-শ্চ মা**ণ্স**ভাল স্তথৈৰ চ**া৷ বিদা**হী क्षेप्राम ज् द्वामा अक्षेत्रम म्ठाः । #। ভত্র পঞ্চানামপি রোহিণীনা সামান্য সংস্থান্তি মাহ। গলে ধনি-नः भिड करको ह मृहित्छो भुन्य।

্সা সঞ্চ ভথৈব শোণিত ৷ গলোপ-अंदाषकरेंब ख्यांकुरेत्र निरुद्ध। रुमून् ब्राधि त्रियः क् ज्ञाकिशी । व्यनिनः मूहिंड: नुंव्कः कक लिखो ह मृहिं-ভৌ পিত্ত বা মূৰ্ছিত কফো বা মূ-ছিতি:। ননু অযোপি মূৰ্ছিতা: পৃথ भारकाया व्यविवक्तमानदार्थ। # ॥ **७ म**ऽ। वाउबाया वक्त गार्। बिञ्चा সমস্তাভূশ বেদনাস্ত মাংসাজ্যা: कर्थ विद्राधनाः मुद्रः। मा द्राहिनी বাতকৃতা পুদিষ্ঠা বাতাত্মকোপদুৰ গাঢ় যুষ্টা।। জিন্তা সমস্তাৎ কিন্তা-বাঃ সর্বতঃ। বাতাত্মকোপদুবগাঢ যুষ্টা স্তম্ভাদিভি ব্রতিশবেন যুক্তা ॥ 🗱 ॥ शिउका मार । किल्यानमाः ক্ষিপু বিদাহ পাকা ভীবুজুরা পিত্ত নিনিভজাতা।। 🗱 ॥ শ্লেম্মানাহ। শ্রোতো নিরোধিন্যপি মন্দপাকা গুৰী ছিন্না সাক্ষসম্ভবা ভূ। সো-তো হত্র কণ্ঠসোত:।। 🗱 ।। সন্ধি-পাতজা মাহ। গম্ভীর পাকিন্যনি-वार्य वीर्या जिलाय निश्चा जिड्या ভবেৎসা। #॥ রক্তরামাহ।য়ো-টৈ শ্চিতা পিত্ত সমান লিক্: সাধ্যা পুদিষ্ঠা ক্ধিরাত্মিকা তৃ। 🕸 । রক্ত-জেভরাস হারকত্বাবধিমাহ। সদ্য জ্রিদোষজা হন্তি ত্যহাৎ কফসমূ-

। পঞ্চাহাৎ পিত্তসভূতা जशहार भवतात्यि ।। 🕸 ।। कर्थ-**শালুকমাহ।** কোলাস্থিমাত্র: কফ্-मञ्जरवा (या गृष्टि र्गाल कफेक मूकेजू-তঃ। খর: ছির: শঙ্ক নিপাত সাধ্য **ন্ত• কণ্ঠশালুক মিতি বুবস্তি॥কণ্টক**় **म्क** ज्**ड:** कचेकरष्ट्कराष्ट्रनाहनकः श का व्यविज्ञियार । किञ्जागुक-পঃ খবথু: কফাভু জিহ্বোপরিষ্টাদ-স্কৈবমিশাৎ। জেযো १विजिखः मिनः ॥ अमृजा मिनुगारत्वि । वृत्तः ।। #।। বল্যমাহ। বলাশএবায্তমু-মতঞ্চ **শোণ** করোত্যনগতি নি-ৰাৰ্য্য। ত॰ সৰ্ব থৈবাপুতিবাৰ্য্য বী-र्य्युः विवर्जनीयः वनयः वन्ति ॥ 🗱 ॥ অলাসমাহ। গলে তু শোপ क क् ड: शुट्रको (सम्मानिलो यागकः কোপপন । নম্ছিদ দুভর নেন মাহু রলাম সংজ্ঞা ভিষজো বি-कात ।। मर्चा हिन : इन्यमर्गा । ছ-(एरनव (व्हनाजनकः ॥ 🕸 ॥ अक-বৃন্দমাহ। বৃভোগতোন্ত: স্যথু: স্-मारः मक अरता २ भाकामृमू र्वक का नार्यकवृन्तः পরिकीर्डाउ १रमोवाः ধি বলাশঃ ক্তত্ত পুস্তঃ।। অতঃ गलम्(४)। जमाकी देवरभाकी।

व्यमृद्: देवसृद्: ।। 🗱 ।। व्नरमार । সমূষত বৃত্ত সমনদে। হ তীবুজ্ব বৃন্দ মুদাহরন্তি। তদ্বাপি পিত **ফ** ভদ্ধ প্ৰকোপাদ্বিদ্যাৎ সতোৰ্দণ প বনাত্মকন্ত ॥ 🕸 ॥ শতদ্বীমাহ । বর্ত্তির্ঘনা কণ্ঠ নিরোধিনী তু চিতাতি মাত্র• পিশিতপুরোহৈ: । অনেক क्क् भागहती जिल्लाका उद्ध्या न ভন্নী সদৃশী শভন্নী॥ ঘনা কঠিনা। অনেককক্ বাত পিত্ত কফজতোদ मारु कञ्जामि युक्ता। भठभी मम्भी লোহকণ্টক সংহল্য শতন্নী মহতী **मिना। उ**खुन्या य**ड: श्रानहत्री॥#**॥ গিলাযুমাছ। পুছি গলে ভামলকা-श्चिमावः श्रिद्धा श्लक्क् महार কফ রক্তমূর্ত্তি:। সংলক্ষ্যতে শক্ত মিবাশিতঞ্চ স শব্র সাধ্যন্ত গিলায়ু ज·छः ॥ 🗱 ॥ गनविमुधिमार । नर्ब॰ गन॰ व्याभ्य नम्स्यिखा यः শোফো ক্জ: সন্তিচ যত্ৰ সর্বা:। স नर्ब भारेव र्गनिवृधिञ्च उरेमाव जू-व्यः थव् अर्वजग्रा। 🗱 ॥ गलीघ भार । भाषा भरान् यस गलाव রোধী তীবুজুরো বাযুগতে নিহন্তা। কফেন জাভো ক্ষিরাহিতেন গলে গলৌঘ: পরিকীর্ত্তাতে ২সৌ ।৷ বাযু গতেনিহন্তা উদানবায়ু গতিয়ো 📗

ধক:।। 🟶 ।। স্বরম্মাহ ়্য ভাস্য মান: শ্বসিতি পুসক্ত ভিন্নপ্র: শৃষ विमुक्त कथे:। करका भ मूर् हे विनवाः यत्नयु (ज्जयः न त्रांगः भगना सत्र-ব: ॥ তাম্যান: তম: পশ্যন্। শৃষ বিমুক্তকণ্ঠ: শুষ্কো বিমুক্তো হৰাধীন: কঠো যস্য সং। অস্বাধীনতা ভুক্ত। गिनिजुः यमकं।दार । यनिनायः तियू वायू वर्जा**मू। श्वमनादाउाट्या#॥** भा भारताभार । भुजानवान् यः ध-যথু: সুকপ্তো গলোপরোধ সক্তে ক্রমেণ। স সাংস্তান: কথিতোব-লম্বী প্ৰাণপুণুৎ সৰ্বকৃতো বিকার: ।। भुजानवान् विखादवान् । भुक्ष्टेः অভিশ্বিত কষ্ট যত্ৰ স: !! 🗱 !! विनातीयाह ॥ जनाहरजान अयथ् সুভানু মন্তৰ্গলে পুতি বিশীৰ্ণ মাণসং । शिर्खन विन्ताद्यस्य विनाती श-শ্বে বিশেষাৎ স তৃ যেন শেতে।। পার্শ্বে বিশেষাৎ সতু যেন শেতে স পুক্ষো যেন পাৰ্শ্বেন বিশেষাদ্বাহু-্য্যেন শেভে ভূমিন পার্ম্বে সা বিদা-রী ভবতি ইত্যর্থঃ ॥ 🕸 ॥ অথ গল-রোগাণা• চিকিৎসা। রোহিণীনান্ত সাধ্যানা• হিত• শোণিত নোঞ্চণ• । ব্মন পুনপান্ঞ পভূষে৷ নস্যুক্ম চ।। বাভদান্ত হতে রক্তে লবণৈঃ

ब्राजनिर्घण्टः॥ वमूरम्वणः॥

भुजिमात्रस्त्रः । मूर्थाकान (मुह গপুৰান্ধার্যেছাপ্তিক্লি ।। বিসাব্য পি্ডস'ভূতা' সিতা কৌ-मु भियम् जिः। वर्षायः कवानाम्। **কা প**কবৈ: কথিতো হিত:।। আ गात्रथ्म कर्ट्रेकः ककजाः भुजिनाः इत्यर । यागाव्रव्मः स्न इंडि लारक। कड्रकानि मुश्री भिश्रमी মরিচানি।। খেতা বিভঙ্গ দন্তীযু रिजनः त्रिकः मरेमक्षवः। नम्यकर्या ণি দাতব্য॰ কবলঞ্চ ককোছুযে॥ খেত। অপরাজিতা।। পিত্তবৎ শাধ্যেদিদ্যো রোহিণী বক্তসম্ভ বা॰। বিসাব্য কণ্ঠশাল্ক॰ সাধ-य वृधिक त्रिवट् ॥ এक काम य -বামঞ্চ ভূঞ্জীত স্থিদল্শ:। উ शिक्षञ्चक वहाशि नाश्रयम्थिकि खक ॥ একবৃন্দন্ত বিসাব্য বিধি भाषन माठातर । अक्वृन्स मिव भाषा वृन्तक ममूनाहात्र ॥ नि-नागुम्हानि या व्याधि उक्ष माजन माधराट । यमर्गष्टः मुमःभकः **ছে राय**ञ्जलितुषि ॥ ইতি ভাব शुकाणः ॥ রোহিণীপতি: शुः हन्मुः। ইতি (रुगहन्मु: ॥

পু• বৃষভ:। ইতি

রোহিণীরমণ;

রোহিণীবল্লভ: পু॰ চন্দু:। ইত্তি रुवायुषः ॥ वजूरस्वन्छ ॥ রোহিণীশঃ পু॰ চন্দু:। ইতি ছেম-व्याः ॥ वनुष्यवण्यः ॥ ब्राह्गिक्षेमी जी व्याहिगीनक्वः युक्जामुक्कार्रभी। यथा। क्कार्र-भाष दाशिगा नर्षवात १६न॰ रुद्धः। कार्ये। विकालि मध्या হস্তি পাপ॰ ত্রিজন্মজ॰।। উপো-পারণ । যোগায যোগপত্যে যোগেশ্বরাষ যোগসম্ভবায গোবি-न्त्राय नत्भा नमः। मानमञ्जः॥ य-জ্ঞায় যজ্ঞেশব্বায় যজ্ঞপত্তধে যজ্ঞ-नञ्जवाय भाविन्ताय नमा नमः। অর্ছনস্য॥ বিশ্বায বিশ্বেশ্বরায বি-শ্বপত্যে বিশ্বসম্ভবাযগোবিন্দায न्या ननः॥ णयनम्। महीय महि-শ্বরায় সর্বপত্যে সর্বসম্ভবায়গো-विन्ताय नत्ना नमः। भावतम्।॥ श्रुखाल भूकायाप्त्व महम्मुा । (द्रा-हिनी डथा। माइ (जाय॰ ममानाय সপুষ্প ফল চননে ।। জানুভ্যা ম-वनी॰ गञ्जा हन्तु। वार्ष्यं निविषय । ক্ষীরোদার্গর সম্ভূত অতিনেত্র नगुच्चव ॥ शृहातार्घाः मनास्करः

রোহিণ্যা সহিতো নম। শ্রিবৈ वमूरम्वाय वलरम्वाय ननंताय यः (मानारेय ॥ व्यनमः वामनः (मोत्रिः रिवष्रथे॰ भूकरवाख्यः । वामूरस्वः वृधीतका न्ति इ रिष्ठु मूमन ॥ বরাহণ পুগুরীকাক্ষণ শ্রীকান্ত মজ भवाय । मार्गामत श्रामां क रक-. भव• गरू **प्रश्वक• ॥ (गाविन्स म**हु। **उ**• দেব মনন্ত মপরাজিত ৷ অধ্যেক্ষত্ত জগদ্বীজ সর্গ স্থিত্যস্তকারক ॥ স্ব-नामि नियन विक्षु जिलाकण जि বিক্রমণ। নারায়ণ ঞ্চত্রবাহণ শায় চক গদাধর ।। পীতাম্বরধর দিব্য বন भावाविवृधि उ॰। श्रीवर्भाकः कः গদাস গ্রিপতি গ্রীধরণ হরি।। য (एव॰ (एवकी (एवी वमूरएवाएकी क नरा जीममा युक्ता गरिका छोया ব্ৰন্ধাত্মনে নমঃ। নামান্যেতানি স•-कीनं गन्धं भाषीय भूनः ॥ ত্ৰাহি মা• সৰ্বপাপন্ন দুঃখ শোকা-र्गवाद शुर्छ। । (भवकीनन्तन व्याम-ह्रा न नाद्रमागद्राए ॥ पृतृ छा। জ্রাবদে বিকো যে মরন্তি সকৃৎ স-ক্ৎ। সোহ• দেবাতিদুব্ ও জ্রাহি भा<sup>र</sup> (माकनागद्राष्ट्रा) शृक्षद्राक नि िह् भा॰ प्रवास्त्वण ज्ञा मृत्छ १८न्त्रा

ন রক্ষিতা ।। স্বজন্-বাস্থেবাৰ গোবাল্বা হিতাৰ চ । লগজিতাৰ কৃষ্ণায় গোবিন্দায় নমো নমঃ ।। শান্তি রস্ত শিবঞ্চান্ত খন জিখ্যা তি রাজ্যভাক ।। ইতি পাক্তে ১৩২ অধ্যায়ঃ ।।

রোহিৎ পু॰ সূর্য্য:।ইতিমেদিনী
।। বর্ণভেদ: ॥ মৎস্যভেদ: ।ইতি
সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তি: ॥
রোহিৎ জী মৃগী॥ লতাভেদ: ।

ইতি মেদিনী॥ ङ्गी व्यक्ष्मशात्रकः॥ রোহিত• ঋজুশক্রশরাসন•। ইতি মেদিনী।। রোহিত: পু॰ भीनविष्णयः॥ मृश-ভেদ: ॥ রোহিতকবৃক্ষ: । ইতি भिष्मि ।। त्रकृष्णः ॥ त्रकृष्णि स्-প্তে ত্রি। ইত্যনরঃ ॥ 🗱 ॥ রোহি-**७**न्था। ক্লঃ শল্পী খেত স্বন্ধিস্ত মৎস্যো-यः (मुक्षा श्रमा लाहिए वृत्त-বক্র:। কোঞ্চণ বল্যণ রোহিতস্যা-পি মাণ্স• বাত• হন্তি স্নিঞ্ম মৃগ্নাতি বীর্য্য• ॥ ইতি ব্লাজনির্ঘণ্টঃ ॥ অপি-চ। রক্তোদরো রক্তমু**ংখা রক্তা**-ক্ষোরক্তপক্ষ**ি:। কৃশপক্ষো ঝ**: সশ্রেষ্ঠা রোহিত: কথিতো বুবৈঃ ॥ রোহিত: मर्बम्यमानाः व्या

त्रंगः साम् बाजाः। नाजिभि छक् ।। উজু জতু গভান্ রোগান্ হন্যা-দোহিত্ৰপুত্তক । ইতি ভাব-পুকাশঃ ॥

वृक्कविष्मयः। রোহিতক: পৃ• রোহডা ইত্তি ভাষা। তৎপর্য্যা-यः। রোছী ২ প্লীহশকুः ৩ দাডি মপুল্লক: ৪ । ইত্যমর: ॥ রো<sup>-</sup> शेउकः ৫ রোহিত: ৬ রোহিণ: १ विभाग्यनिः ৮ माডिमश्रयः ১ अमानुम्बः ३० क्रेमान्यनिः ३३ विरत्नाहनः ১२ भान्यानिकः ১৩ । व्यम् छनाः। कड्ड्वः। न्निक्षद्वः। क्षाग्वः। मुमीउनवः । क्रि-দোৰ বুণ প্লীহু ব্লক্ত নেত্ৰানবাপহ-पुक्ष । इंडि ब्राजनिर्घण्टः ॥ जानि । রোহিতো লোহিতো রোহী লো-ही माफिन्नुझकः। রোহीতकः প্লীহ্ঘাতী কচ্যো রক্তপ্রসাদন: ॥ ইতি ভাব**পুকাশঃ।।** অন্যচ্ন রো-হীতকো যক্ৎপ্লীহ গুল্মাদরহর:

মৃত:। ইতি রাজবল্লভ:॥ রোহিতা জী রাগাদিনারক্তবর্ণা। यथा। রোহিণী রোহিতা রক্তা लाहिनी लाहिजा ह मा। इंडि क्रोष्त्रः॥

ব্বের १ फिँ ठाর্তিজিং। কবাযানু । রোহিতাখঃ পু॰ অগ্নি:। ইত্যমরঃ॥ र्तिमन्प्राजभू यः। ইতিনেদিনী।। রোহিতিকা জী রাগাদিনার জবর্ণা । ইর্ভি জটাধর:।।

> রোহিতেয়: পু রোহিতকবৃক্ষ:১ यथा । श्लीकात्री द्याक्रिउयः म्या-দুকপুষ্ণত রোহিত:। ইতি ভর-তপৃত রত্নকোষ: ।।

রোহী " 910 রোহিতকবৃক্ষ: 🕦 व्यथ्यवृक्षः ॥ वर्षेवृक्षः । इंडि (मिनि ॥

রোহীতক: পু॰ রোহিতকবৃক:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

नुः मनुदिश्मियः। यथाः রৌচ্যাদ্য তথানে। ११ मनवः **ग**•्रम्कीर्विजाः । करतः भुकाभरतः পুণ্ডো রৌচ্যো নাম ভবিষ্যতি॥ ইতিমাৎস্যে ৯ অধ্যায়ঃ।। তন্ম-नुष्ठात (प्रवापया) यथा। ज्यापण्य পর্য্যায়ে যে ব্লোচ্যস্য মনোঃ সুরাঃ । मक्षवी • मह नृशा • रेम्हव वहर छ। নে নিশান্য।। সুপর্বাণ: সূরা গুত্র সুকর্মাণ তথা পরে। সুশর্মাণ তথা ছেতে সমস্তা মূনিসভন।। নহা-वला भश्वीर्य ख्याभिल्या भिव-**স্পাতি: ৷ ভবিষ্যত্যথ স**গুৰী ন্ **गरला भि निमा**न्य ॥ वृज्ञिमानः

वाय रेक्टव उखुन्मी निक् पूकः ।
निर्माहः मूजना काला निम्नुककाक नवक्रिकंखा मृष्टः। मूलकः कख्रुष्तिक मूजलेक्टव उट मूजाः॥
इंजि भार्क ख्रुष्ट्रवानः ॥ जनप्रविवत्रनः किमान मुद्रविश् ॥ भा विम्नु
काष्ठित्थः। उट्नियंग्रायः। विम्नु
। इंजि एक्पेन्युः॥

त्रोहे स नामर्त । इंडि कविक मुन् कनः ॥ हजूर्म मस्ति । स स्वर्त । हेट । नामर्त्ता श्नामदः । द्रोहेडि थन (लाकः । इंडि मूर्गामामः ॥ स्रोड स स्नामर्त्त । इंडि कविक मुन् कमः ॥ स स्वर्त्तोष्ठ । इंडि मूर्गा-मामः ॥

त्रोपुः ली मृद्धात्राम् छेत्र भाउर्गठ-(भाषत्र मः । ७९ शर्यशायः । छेतुः २ । हे ठ अत्रः ॥ १६ क्लास्त्र शामुख । क-पुः । प्रवेश सम् । त्रोष्ट्रः । यमाह छत्र छः । मृद्धात्रा विकृष्मवः मश्चा-स्वामः भूमण्ये प्रवेश केक्षणा यम-प्रवः मश्चिष्ठा केष्ट्रा । छेठ छि कृश ममदेवि छेतुः । छेठि यं मम-वायत्म मान्नी छित्रक निभाजनाहम । गः॥ मर्वा छिन्। विठा (द्रोपुः । यथा

রাবণচরিতাদি।এযুবীভৎসরৌদু ক্লীবে ৰূপভেদাৎ অন্যে পু'সি বী-ভৎ महिर्मे किंडि भूविक भार्व ইহ যুক্ত: ৷ইতি ভরত:৷৷ঞা৷অপিচ । অথ রৌদুঃ। রৌদুঃ কোধস্থা যিভা-বো রক্তো কদাধিদৈৰতঃ। আলম্ব न दिन् छव उद्धारी भन भजः।। মুপ্তিপুহার পাতন বিকৃত ছেদাব-मोब्रीनरेक्ट । मःग्राम मःजुमारेमः রস্যোদীপ্তি র্ভবেৎ পৌচা॥ ভ্রুবি-ভক্ষেষ্ঠ নিৰ্দ•শ বাহুয়োটন ভৰ্জনাঃ । আত্মাবদানকথন মাধুধে। কে-পণানিচ। অনুভাবা তথা (क्र প क्-त मन्दर्भनामयः॥ উপুতা বেগ রো-মাঞ্চ ৰেদ বেপথবো মদঃ। মোহা-र्यारयम्बाब ভावाः मुर्वरे जिहा-রিণ:।। যথা। কৃত মনুমত দৃষ্ঠ বা যৈ বিদে গুৰুপাতক মনুত্ৰ পশুভি निर्मर्गारित र्ख्वन्छि कमायूरिशः। भन्नक রিপুণা সার্জণ তেষাণ সভীম কি-রীটিনাম্য মহমস্ভ্রেদো মা•ৈসৈঃ করে৷ মিদিশা বলি ৷৷ অস্য যুদ্ধ-বীরাজেদমাহ। রক্তাস্য নেত্রতা চাত্র ভেদিনী যদ্ধবীয়ত: ॥ ইতি माह्डिपर्भाग भिन्नाहरः॥ तोषुः **भू** भूष्राउषः। उर्भिश्यः।

घर्गः २। ইতি নে दिनी ॥ পুকাশः ०

(म)।उ: ८ जाउंभः ৫। ইउ/म**तः**।। ∥ ্তস্যর্গুণাঃ।।আতপঃ কটুকো রক্ষ: स्वत मूहा ज्याव इशामा ह रेववर्ग्रजः ননো নেহরোগপুকোপন:। ইভি बाजवल उः । शा नश्रतीम् रथा। कठेत्रः शिक्षाणा (त्रीरम्। शाताचाः कानमः জिङ:। अञ्चनामा ছर्छा (ब्रोनुः मक्षःब्रोनुः नुकीर्डिजाः ॥ गुराख्य मध्या जोनः भागनारः ।। (उषा॰ कनानि यथा। शिक्रला (त्रीमुनामा ह कालक्लः भुकाक्रयः। न्नानात वर्ष्ट्रागः मार मर्बहीवः नगुष्कवः ॥ कठेत्र। होनुनामा ह धात्रष् मुक्ष कातरायः। तुगानि भिन्त (द्राव्य नानाक्ष्मकरता नृगाः ॥ णाप्त नामा यहा वर्ष होता अवि नानाथा। उँखालन कि जि मूर्याट नद्रानाः (द्रागरमा ভदिर ॥ (द्रोनु नामा नहारतीरमा यजारम ह जरव-জুর । চিত্তোদেশ বুণ অর্য্যামানা রোগ সমন্বিত ।। ঘোরনামা মহা-ब्रोप्ना धात्रधृ मुक्ष कात्रायट । উ-ভাপেন সদা দক্ষ নানারোগ স-मदिष्ठः॥ कालनामा महाद्रीषु छै-खाल भीष्ठनः मना । नानाद्वाण मभागुकः वृशामि कञ्चकः छात्र ॥ हैि (ब्राजिद॰ ॥ 🗱 ॥ त्रगविष्ण- ব: । ইতি নেদিনী ।। তদ্বিরণণ লীবলিক রৌদুশদে দুষ্টব্য ।। হে মন্তব্য : ইতি হেন্চন্দু: ।। যন: । ইতি বর শি: ।।

तोमुः वि **छोतुः॥ छोर**गः। ইতি (मिरिनो।। क्पुनश्किनि छ।। तिषी की कंशी। देखि सिमिनी।। क्षुकि।। इंजि ब्राक्तिविधिः॥ कः करिष्ठाक् उभशास्त्रोमीगाया भशा-রৌদীনান্নীচামুগুা চ। যথা। এক-वर महारिए। क्क उरही महा-मृत्धा न ह भागा महात्रे ी॰ द्यो**तवी॰ विममर्क्क ए**।। या माया वर्ष जीमा जर्बरम्व नुरमाहिनी। ত্যা তু মোহিতা দেবা: সদ্যো নিদুৰণ তুভেজিরে ।। দেবী চ ত্রি-**मि**र्थनास्त्रो छ॰ रिन्छा॰ मग्छा-ডবং। তথা তু তাডিত তস্য रिष्ठामा मुख्यांहरन ॥ हर्यामुख উভে সম্যক্ পৃথক্ ভ্তে বভ্ষতু: । करतास नागरवन्तुमः हर्धगृर्ध ধ্বণান্দ্রঃ॥ অপচ্ত্য হরেদেবী চামূণ্ডা তেন সাভবৎ । সর্বভূত महादोती या प्रदी श्रद्धानश्रदी ॥ म'श्रिती कु या रेवि कानदाविः পুকীর্ত্তিতা।। ইতি বারাছে তিশ; ক্তিমাহাত্ম্য ॥

(त्रोभाः क्षी क्षाः । ইতি রাজ
निর্ঘটিঃ ॥ তৎ করণ বথা মধ্যজ্যः

শুন্নান্ত ভবেদ্বৌপাঃ সূবর্ণ হবণ শৃণ্

॥ ইতি গাৰুডে ১৮৮ অধ্যায়ঃ ॥
রৌন ক্ষী শান্ত রিলবণ । ইতা
নরটীকাষা রামাশুনঃ ॥
রৌমক ক্ষী সান্তে রিলবণ । তৎপর্যায়ঃ । বসুক ২ । ইতাদরঃ ॥
ক্ষানামনদী লবণাকরঃ তত্র ভব
রৌমক । ঢ ঘে কাদিতি কঃ রৌন
ভতঃ স্বার্থে কং রৌনক । ইতি ত
উ্টাকাষা ভরতঃ ॥
রৌমলবণ ক্লী শান্তারিলবণ । ইতি

त्राज्ञवा ।।

त्राज्ञवः श्रु नज्ञकविष्मयः।। याजः

। इिंछ भिर्मिनी।। व्याम् अम्म विवतः।

यथा। द्रोज्ञव क्रिमाक्षी ज् याणि

यकान् जी नजः। जम्म बक्तः वरः

व्या द्रोज्ञवम् निमामय।। याजः

नानाः मह्यु (इ द्रोज्ञवा हि शुः

माग्जः। जान्माज श्रुमागञ्च जञ्ज यजुः जूम्खनः।। जञाङ्गाज हत्या

रयन क्रु जिक्तनी ममः। काज्ञ्जाः

তাতিতীরেণ তাপিভাবর ভূমিনা

৷৷ তন্মধ্যে পাপকর্মাণ বিমুঞ্জি

यमानूगाः। म मश्मान छीत्त्व व

द्विना उन वावित ॥ शर शर ह भारतान्य मीर्याट कावर श्रेनः । शरहादार द्वापद्व वर्षः शाहनामः भ गहु । वर मह्यू विस्तिर् याक्रमानाः विम्हार । इति मार्कः खपश्रदारा शिन्न श्रु भ्रम्भानाः मायायः॥

द्वीत्रयः बि क्रक्षनः॥ धृर्वः॥ ध्वादः । ইভি भददनावनी ॥ (द्रोहिं कु (द्रोहिंग्यूगः। रथा। न এষ রৌহিষা• মধ্যে চরতীতি ভব-ভূতিঃ। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ॥ (ब्रोहिंगः क्री हिनमानवसमृहुर्जः । यथा। অত প्राङ्ग्याक मिन **था**य (द्रोहिशक न वह्र(यशिक) छि-शानन न्वीक्र्णाकम् मक्वा८-পরো রৌহিণ পর্য্যন্ত গৌণ পূর্বাহ্ন-কাল: পুভীয়তে। তেন রৌহিণ<sup>ু</sup> প্রায় শাদ্ধস্য গৌণকালত্বো-खद्राविदः व्यभद्राङ्गमुष्कन्। भू-ৰ্বাবধি ব্লিভ্যবগম্যতে ভতক্ষ পূ-র্বদিনে সঙ্গবাৎ পর রৌহিণপ-र्याष्ठ॰ जिल्थ लीए भन्निति मृठ्वं ত্রযমাত্রে ভত্তিথিলাভে পূর্বদিনে শাৰা। রৌহিণান্তরাপ গৌণপূর্বা-क्र माजार न भविष्य उथादाः ভाবा**८।** উভर्गति अञ्चलाञ्

भारति मुद्धितिक ठिथि गुर्गश् व दि किनार । जोहिनस् निवममा नवममूर्व समा (कास्तिकाक जाहिनेदेरवरकार जोहिनस् मिः डि। ইতি भारतिकार

রৌছিণঃ পু• চন্দ্নবৃক্ষ:। ইতি তিনাওশোষঃ॥

রৌছিণেয় প্লী মন্নক্তমণিঃ। ইভি রাজনির্ঘটঃ।।

तोहित्यः भू वहास्यः॥ तूष गुरः। ইडामतः॥

রৌহিণেয়: ত্রি গোবৎসঃ। ইতি নেদিনী ॥

(दोहिय॰ क्ली कड्ग॰। ইডि मिनिनी (दोहियः भू॰ मृगविष्मयः। ইড্য-मदः॥ (दाहिउन ८ म्यः। ইড্যজ्ञय-भावः॥

(दोशिषी जी मृगी॥ मूर्वा। ইতি अक्षिश्चमादाना पितृ जिः॥

রৌক্যে ল্লী ক্ফডা। ক্ফস্যভাব
ইত্যথে ফ্যপুত্যবেন নিয়ন । ত
থাহি । তৈল বাদ্বীক্ষ্য দোষ্ম
তৈল বঢ়াপুকি স্তান তেন ত্বা
স্থাপ্যান্য জগনাত্ম মহিকা
।। ইতি দুর্গালুজাষা মহাইমী ন
হানবম্যে মহাস্থান পুকরণে দেবী
পুরাণ ।।

वकातः। म ত यदर्शमा जुडीएगा वर्णा वाक्षनमाहोति म दर्गम । অস্যোচারণ স্থান দম্ভঃ ৷ ই 🕏 ব্যাকরণে ॥ তদ্য স্বরূপণ যথা । नकात । ठथना शास्त्र संखनी जय সংযুক্ত । পীত বিদ্যুল্লভাকারণ अर्द्वतुनुष्यक• ॥ **अ**क्षरस्ययक वर्षः शक्षभुष्मयः मना। जिल्लि সহিত বৰ্ণ ত্ৰিবিন্দু সহিত সনা ।। আলাদি ভত্তু মহিত জ্বি ভা-ব্য পাৰ্তি। ইভি কানধেনু ভক্ত 11 🕸 11 जन्य (नथन शुकादा यथा । अधनीवर अभूका वानामक-গতা বৃধঃ। পুন্ৰজ্ব'গতা রেখা তাসু নারায়ণ: শিব:॥ বুদ্দশক্তি-**म्ह अ**ख्टिष्क्यान मन्त्र शहक्काउ। ইতি বণৌদ্ধারতজ্ঞ ॥ 🗱 ॥ उৎ-भर्याया यथा। व कन्तुः भूउना शृशी भाषवः শক্রবাচক:। বলানু-जः निगाकीत्मा ब्राभका मा**-**म-न : छकः।। शृथी नारमा २ मृ छ । रावी बतग বাকণীপতিঃ। শিখা বাণী ক্রিবা দাতা ভালিনী কানিনী প্রি-या।। ज्ञानिनी (विभिन्नी नारः भुन्।-ন্ন: শোষণো হরিঃ। বিশ্বাস্থা মস্ত্রৌ বলী চেতো মেক গিরিঃ কলারসঃ ॥ इंडि उद्धः ॥ 🕸 ॥ यम् धानः

लेकुक

यथा। ठठ्ड्डा॰ भीडवडा॰ त्रकः
भक्ष्यकावना॰ । भर्षमः वर्तमः
छीना॰ भर्षाणकात्रक्षिका॰।।याः
भीन्त्रविका॰ निक्रा॰ यांगिनी॰
यांगक्षिणी॰ । ठठ्दर्गभुमा॰ पिनी॰
यांगक्षिणी॰ । ठठ्दर्गभुमा॰ पिनी॰
वो॰ नागहात्राभणा क्रिका॰।। वर॰
थादा लकात्रस्त उत्तर्यः मण्याक्रिल्ट। ইতি চ वर्णाकात्रक्रसः ।।
ल॰ ली शृथीवीजः। ইठि उद्यः।।
लः भू॰ हेन्द्रः। ইठि मिनी ।।
लक क साम्जाभरन। हेठि किनि
कल्लक्रमः।। सामा त्रमाभामान॰।
क लाक्यिक स्मान्तः।।
हेठि मुर्गामानः।।

वक्टः भू<sup>,</sup> वक्टव्कः। ३**७ भ**दः क्रजावनी॥

लकाः भृ वृक्त दिल्यः। एउ या के जि माना दे कि जाया। उद-शर्यप्रायः। लिकाः २ म्नालः ० क यायी ४ मृत्वन्न तः ६ एकः ५ कार्मप्रःः १ मृदः ५ स्निक्त सः २। जम्मु खनाः १ कि जन प्रश् । के याय प्रश् । के व्यवः । लघ् प्रश । के श्रेमाय क्ष्म । के कि प्रश । गलमः ग्रुक्ताय क प्रम । के कि ताज निघण्डः ॥ ॥ ज्ञानिघण्डः । स्मा ज्ञानिघण्डः ॥ ॥ ज्ञानिघण्डः ॥ ॥ ज्ञानिघण्डः । स्मा ज्ञानिघण्डाः । स्मा ज्ञानिघणाः । स्मा । स्मा ज्ञानिघणाः । स्मा । स् ক্তথা।। মণ্ডবঞ্চ তথা মঞ্চ দোষ ত্রিতব্য রক্তক্থা শুকা গ্রিনাশন থাপি
নেত্রযোর হিত স্ত গা সুপক্ত তত্ত্ব
মঞ্র মান চানিল পিত্তক্থা ক্ষ
বহি কর কচ্য বৃষ্য বিষ্টান্তকঞ্চ
তথা ইতি ভাবপুকাশঃ ।। # ।।
অন্য চালকচ গুক বিষ্টান্তি স্বাধান
মান রক্ত পিত্তকতা শ্রেমাকারি সনীরন্ন মুক্ত শুকা গ্রিনাশন ।। ইতি
বৈদ্যক।।

वक्कः भुः व्यवक्कः। ই जिम्म-त्रञ्जावनी ॥ जीनवन्त्रय ७ । (नक्छ। ইতি ভাষা। **उ**९ भर्यातः। कर्न है: २। इन्डामदः॥ नक्नकः २। इन्डि ভরত: ৷৷ বে মলিনত্বাদিদুষ্ট জীর্ণ বস্ত্রথণ্ডে নেকডা ইতি খ্যাতে ৷ **ল**ক্তকাদ্যস্থক• ব**ন্ত্ৰ**মাত্ৰে ই**তি কে**-हिट्या शही श्रञ्जी कर्ल है: भाहे: সিচ্য পোত লক্তকা:। ইতি রভ**দঃ** ৷৷ লক্যতে ছীনৈ রাখাদ্য**েড** অনুভূষতে লক্তঃ রক লক ক স্বাদ আপনে চুৰ্ভ্যোঞির্বেতি বিভাবি-ত ত্বাৎ ন ঞি: কর্মণি ক্ত: ততঃ স্বার্থেক: লক্তকো ২ওস্থাদি:। অ-**ভাৰেম অক্ত** ব্য**ক্ত** অনুো: ক্ত: ন অক্তণ কণ মূখণ যমাদিতি ত্রিপান দবহুবীহো মনীমাদিত্বাৎ অক্তস্য

न् र्वाताः न क्रिक खर्ननथमाषिः । न एउः - রপি শইতি ভট্টীকাবা ভরতঃ॥ बक्कर्या अ॰ तकवर्गानानुः। ইতি

भद्रनिद्धा !! 🍎 লখ সৃপি। ইতি কবিকল্লছদ:॥ লগতি। সূপি গতৌ। ইতি দুর্গা मानः॥

> অথ ই সৃপি। ইতি কবিকল্লফনঃ ॥ इ न्यारा । मृशिं गाओ । इंडि मुर्भागानः॥

> লগ ই খাঞ্জে।। গভৌ। ইভিকবি-कन्नफ्राः ॥ ই नङ्गारा । थाञ्जा গতিবৈকল্যে । ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ রাগ মৃত্য সঙ্গে। ইতি কবিকল

क्रमः॥ न नगर्डि। এ यनगी८। লগতি অধরওঙে। ইতি দুর্গা-मानः॥

ল্গ ক রকে। ইতি কবিকল্লছন:॥ क नागयि । त्राक श्वानारक्षाः । রকে ইভি রকক্ স্বাদ্যাপনে। ইঙ্কাস্য ঞে রনিভ্যত্ত্বে ভাবে অলি ৰূপণ। ইতি দুৰ্পাদাসঃ।।

লগড• ত্রি চাক্। ইতি ত্রিকাও (mi य: 11

লগিত ত্রি সঙ্গৃক্ত। লাগাইতি ভाय।। इंडि नगशाखाः कर्मान ক পুতাযে ননিয়ন।।

**ভावा। इंडामदः ॥ नश्या वः मी** मिनया मणः। (लाइनया रेखे (बर: **) हे** नुब्धि: । मध्या

লোহম্যী যপ্তি রন্যক্রোপচারাদি-**७,(न,)। ইঙি ভ**উोकायाः ভরত:॥ वार की बामीनागुनयः। इंछानदः॥ त्रां कि क्**न** शाम खानवामकातः । अव्हाताजमास्य चात्रणाताणाय छै-**मयित । जैनयः शृ**र्वाद्यन अःरयागः । তেষা ক্রমেণ উদ্যালল সংযো-ला नगुः अनुष्टी दीएफ अस्टिगम নিগাতৰাজ্ঞদ্য গঃ। ইতি ভটী-কাষাণ ভাষত: ॥ তেষাণ শ্ন্যায-না শপরিমাণ খথা। রামোগ (वरिन २। ३१ र्जनिविस्तरिम देव ६। २१ र्चाणा हो मः ७ । ७ भक्ष थ मागरेत्र-**म्ह क्षाः । वानः ऋ**खिर क् । ८५ विं-षरगाः १ १ १ २० करमा ८ क-नारवि क्लारि मान ।। उथाहि। 11 981 016 91012211 2.813911 P1 @187 !! टावा जा 216180 11 81618011 ३०१६। ७॥ 11 64 18166 11681919 ७१६।२२॥ X10189 11 इंजिही शिका।। श्रा दणवा कुला विक

পঞ্চাসুলপুতে কলিকাতাখ্যদেশে বর্তুনানোনবি শাখনা শেপুনোণিক কারিকা যথা। বেদৌকৈ:৪।৬ সো खरवरिम 81 86 वियु वन नवर्रनेः ७। रेन मार्ख्योकाषुनार्थः **৫। ८० भा**ता-वाजागुगारेन ६। ०८ र्गननग नगरेनः ৫। २२ वर्षे विज्ञि ६। ०५ म्हन्मू (वरिनः ৫।৪১। অহু স্বাভিঃ ৫। ১৯ সমু (द्वा २ जु णू विक्ति 8 । ०१ तन व्यार धेयु-**ि:** २। ८৮ সোগ विष २। ६१ मि হাদেকোনবিংশে গণিত পরিগতং भान मञायनारण ॥ 🛠 ॥ छेतरण-গ্নান্তলগ্ৰনে৷ দিন• পুতি রবিভোগ্য• यथा। वर्र मेख भवः विष्रः उट मः খ্যু কৃষ্ত: পল । বিপল্প রবে र्ভाग्र स्वर कन्नन नस्ट ।। इंडि জ্যোতিয় ।। এত্যো বিবরণ যথা।

তত্ৰ পুাচীনলগ্নান ।

रिन**ञ्**ज । भागञ्ज टा ीः भवः।विभवः। ह उश्वभवः राष्ट्र 018911 910811 ১ হেষঃ 8179!1 २ दुषः b10811 1 ৩ গিথন । वा जा 1156106 ८ कर्क हैः 110819 1105166 116819 ৫ नि इ: । 11 22 166 116519 3010411 ৬ কন্যা 116519 2016411 ৭ তুলা

भेविक्तिः । २२ देशा ८ । ८ १८ ॥ । २ भक्तः । २२ । २२ ॥ ६ । ४० ॥ । २० भक्तः । २० । २२ ॥ ६ । २५ ॥ । २२ भीनः । १ । २८ ॥ १ । १९ ॥ । २२ भीनः । १ । २८ ॥ १ । १९ ॥ ।

ত্ৰ ষ্দেশাধ্নিক লগুমান । লগাঃ দিনভুক্ত । মাসভুক্ত ।

श्लाविश्लाम अश्रीश्री যথা 81 511 117511 ১ মেষঃ 11 एट । द 8 1 8 11 ২ বৃষ্: 1 @12911 ৩ মিথন । 3010811 ८ कर्क हैः । @18011 1105166 118019 ৫ नि॰इः। 221 111 012211 2016411 ७ क्ना 1 11 एटा १ 11 2212511 ৭ তলা ५ विष्ठिकः। 11 (819) 2215511 वाज्या 1140106 ৯ ধনঃ 115018 213011 २० गवदः । 11 रहा C 9:3511 ३३ बद्धः l 018911 91 28 11 **ડ**ર નીનઃ व्यथ जगकानीन नगुरुगुरुम् छ उ कन । नशु मृत्रं १ कि द्राभी में नि-নি বল্যুতো ৰূপবান্ বিভযুক্তো ভৌ (न वादः मुवाग्दी भभवत उन्य म-

वंगाजार्थावला। जीत माजाशिवजः

সুক্রি রথ গতে ভাগবে মণ্ডলেশঃ

সৌরৌ কণ্ডৃতি গাত্র স্তন্সিচ নিয়ত•

লঘ

Lविशिर्डा वर्गरीनः॥ देखि हाराष्ट्रि-**खबुः ॥ # ॥ वां भि**ष्ठ । इतिक्वो **%।** উদयञ्च नमात्र छ। द्वारमो छानूः श्रिका रत । चत्रामा ग्राप्ते वृत्सर्गक् বড়ি: বড়ি তথা নিশা ।। মীনে মেৰে **চ পঞ্চ मूर महज्ञा वृय ब्रह्मायाः ।** भकात निथुत जिनुः भक्ष हार्श ह কর্নটে।। সিংহে চ বৃশ্চিকে ষট্চ সপ্ত कन्। जुल उथा। এजा नगु भूनातन 🍜 ষ্টিকা: পরিকীর্ত্তিতা:॥ শর পূর্বা-वनात्वयु त्रमाकीयुविमागताः । ल स्कार्य। हि रेर वस्तुः बाग्ना (सवाद्या रूथवा ॥ भिवनः अध्यक्षका वृत्य ভবতি কামিনী। মিথুমে শুভগা কন্যা বেশ্যা ভবতি কর্কটে॥ সিংহে 'চৈবাল্লপুতা চ কন্যাযাণ ক্পস্ণ-युका। जुलायाः क्रायायर्गः वृक्ति-কে কর্ত্রশা ভবেৎ ॥ সৌভাগ্যুণ ধ-नुषि माइ मक्त्र नीहगानिनी। अ ্স্তে চৈবাল্লপত্রা স্যান্দীনে বৈরাগ্য সংযুতা।। তুলা কর্কটকো নেধো ्यकतरेक्टव ज्ञानयः । চत्रकार्यानि व्यर्गाह श्रिवकार्यग्राणि हिन श्रि ॥ नकाना व्यः बस्या व्यक्तिकः मु ष्ट्रिज्ञाणि हि । कन्। धनुष्ठ मीनण्ड 🥻 নিথুন দিৰভাবত: ।। দিৰভাবা-नि कर्णानि अर्थ्यारत्यू विव्यक्तः।

যাত্রা চরেণ কর্ত্তব্যা পুষেপ্তব্য স্থি-রেণ ভূ। দেবস্থাপন বৈবাহ্য দ্বি-ক্রক্তিক কার্যেৎ ॥ ইতি গাক্ড ৬২ অখ্যায়ঃ ॥

না: পু স্তৃতিপাঠক:। তৎপর্য্যা. য:। পাতর্গের: ২ স্কৃতিবৃত: ১।
ইতি ত্রিকাওশেষ: ।। সূত: ৪।
ইতি কটাধর: ।।

नः: बि मकः॥ निष्कितः। ই**ठि** ्मिरिनी॥

লগুক: পু

পু

তিভূ:।ইত্যর:।।

টেলাগাইতি জানিনইতিচ খ্যাতে।তৎকার্য্যে লগুক: ওল্ফ্রী ব্রীডেক্ড: স্বার্থেক:।পুতিনিবি র্ভবতি পুতিভূ: বিপ্।ইতি তট্টাকাষা ভরত:।।

লগ্নিকা দ্রী নগ্নিকা। ইত্যমর-টীকা।।

লঘ ই ড অভূগ্গভ্যো: । ইবি
্কবিকল্লফন: ।। ই লট্টাতে । ড লট্টা
তে । অভূক্ভোজনাভাব: । তথাচ
। যে গুণা লট্টনে প্ৰোক্তা তে গুণা
লঘুভোজনে । ইতি বৈদ্যক ।। লছবে উপবাসে ইত্যৰ্থ: । ইতি দুৰ্গাদাস: ।।

লঘ ই শোবে। ইতি কবিকল্লন্ম:

॥ ই লছ্যতে। শোষ ইহ অলী

वाधु

कर्ता । यः वर्राष्ट्र प्रतिशिष्टः कराहिन सङ्घि । ইতি रुवायुषः ॥ गठावगरत्र । जात्र राज्यस्यः रेमवान्। ইতি पूर्णारामः ॥ व्या हेक दिवि। ইতি कविक्सक्रमः॥ इक सङ्घि । दिवि रीखी। ইতি पूर्णारामः॥

णवर्षे शृ॰ वायः। इजुगाहित्कावः॥
णविः शृ॰ वायः। इजुगाहित्कावः॥
णविन् शृ॰ वायः। इजुगाहित्कावः॥
विन्यं । वायः। वायः। उजु व्यवग्रारेश्वयं। वर्षाः विव्यवं। विज्ञाः विव्यवं।
वार्षाः विव्यवं। यज्ञ कामावनाविद्यः
शृश्वि देवश्वयं। महेषाः। इजि स्मकन्तः॥

তিখিনে বিষ:। ইভারে ইণ্ড পুত্রতিখনে বিষ:। ইভারে ইণ্ড পুত্রতিথেন নিয়নঃ। ইতি ব্যাকরণং।।
ভাষীয়ন তি অধননয়ে রেষায়া
অভিনানে বায়ু: ইভারে ইয়ুপু
ভারেন নিয়নঃ। ইতি ব্যাকরণং।।
ভাষা লী শীঘুং। ইভানরঃ।। কৃষ্ণাগ্রা ইভি মেদিনী।। লানজ্জকং।
ইভি মেদিনী।। লানজ্জকং।

लमुः जी शृहानाम् छेषदिः। इंडि समिनी ॥

वदः वि षण्यः॥ सराज्यः॥

निःमातः । इठि सिहिनी ॥ दूषः ॥ इडि एक्सहम्मः ॥ ॥ वडाकत्रान-क नयूनःका यथा । दुखा नेषुः भीर्षा एक तिज्हातंत्रवनाप्तमः

তে। তথা সংযোগে সতি দুষোপি .গুৰু গুৰুষতো ২নৃষ্ট ইতি বজ্জনায়

। ইতি দুর্গসিংহকৃত কলাপবৃৰি:

॥ ॥ १ म्हा चार्कः व्यकः व्यवः व्यकः व्यकः व्यकः व्यकः व्यकः व्यकः व्यकः व्यवः व्

नकारका ভारि छकः भून तारि क्यू

र्यः । (का खरूम्(ब्रा) (द्रा न्यूमस्रः

সোৎস্কৃতক:কথিতো ৎত পদ্ ত:।।

ख्य (त्रका गकात्रस्र मकात्रा वयु (त्रककः। ইতি ছম্দোনঞ্জরী।।

वधुकायः भू॰ ছागः। ইতি ভিका-

अभावः ॥ कृष्णक्षीत्रकः॥

बयुकानार्यः भू॰ क्र्विववृक्तः। इंडिजाबनिर्यन्तः॥

नव्यदिका जी कृत्यदे। उट-, शर्यायः। यामन्ती २। इंडि हार्ता-वद्यो ॥

ব্যুগণঃ পু॰ অস্থিনী পুষ্য হস্ত নক্ষজানি। যথা। উশুঃ পূর্নহান্ত-কা পুরণণ জীপু্যন্তরানি মভুরাভা-দিত্য হরিত্রয়ণ চরগণঃ পুষ্যাস্থি হস্তা ব্যুঃ। ইতি দীপিকা।।

**न**युगर्गः भू- बिक्ष्वेकम् न्याः।

इंडि हाद्रान्ती ॥ । युक्ति हों जी म्राग्बीक । इंडि न्द्राकिनिर्घणेः॥

ाबुकक्षनः शुः नादक्शकी। हेडि

जिकाश्यमयः ॥

गघ्रडी खी कृपुरठीवृक्तः। यथा। बाद्यी पछी विभागा ह माम्जूपत পর্ণ্যপি ৷ তথৈর ওফলা শীঘা শ্যে-नवला घुनलिया।। बदाकाकी ह কথিতা নিজয়ত নক্লক:। অ-भाग खनाः। मधी घरः अद्रः भारक द्राम ह कर्षे दीशनः। खनाञ्चत्राणा

ण्वामु कछ् बन्न विनाश्नृ ॥ তীম্বোঞ্চ হন্তি শিক্তাসু বফ শো-

থোদর ক্রিনীন্॥ ইতি ভাবপুকা-

भः ॥ उट कन खगः। कृ पुरुषी

कन्छ न्यात्रधूद्र दमभाक्ताः।

भी उनः गृष्ठे विम् बः गन (**माथ** कः কাপহ•॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥

वयुनन्तृ िः श्रु॰ मुगङ्गाम्। इंडि भवबद्यादली ॥

नयुपुत्राका श्री काक्नीपुत्रका। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

লগুনাম ল্লী অওক। ইঙি শদ-

विस्तृका ॥

न पूर्वभूत ही कृ पूर्वक मून या

हनः। उद् भानशरी श्चिशरी

णयूव

बृङ्**ी कर्**षेकात्री (भाक्ष्रम यूक्र• । यथा। भाजभगी भृश्चिभगी वार्छाः

की उर्देकादिका। शाक्षुत्रः शकः

**ভि टेन्टेंडिंड किनिष्ठः शक्षम्लकः** ॥ वामा खनाः। नक्म्ब नघू मानू

বৃদ্যু পিত্তানিলাপহ । নাভ্যুক্ত

व् इन गाहि जुत्र यानामात्री भुः गूट ॥ इंजि ভावनुकामः ॥

লঘুপএক: পু॰ রোচনী॥ শুণা-রোচনী ইতি খ্যাতঃ। ইতি শব্

**ठिन्त्का**॥

नदृभधी खी अधथीर्कः। इंडि

রাজনির্ঘণ্ট: ॥

লঘুপিছিল: পু ত্কর্বারক:।

ইতি রাজনিঘণ্ট:।।

লযুপুয়: পু ভ্মিকদম্ব:। ইতি

রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

नयुरमद्रः शृः कृरुकानिः। ७८-

भर्यायः। नृज्यकनः २ वङ्कद्रः ၁

সূজ্মপঞ্ ৪ দুস্পর্শঃ ৫ মধুরঃ ৬ দর-

হার: ৭ শিথিপুর: ৮। অস্য পর্

কল গুণাঃ। নধুরামুত্র•। কফ বাত

ना मिद्रुः। क्ठाद्रुः। जिक्कद्रः। अछ -

कात्रकष् । देवट्रशिखार्खि माङ्

स्भाषपुष्क। ३ कि ब्राष्ट्रनिर्घण्टेः ॥

क्षुयम्त्री जी ज्यम्त्री। इंजि त्राजः

নিঘটঃ !!

मध्याकी खी क्रुप्ताकी। उर नहा भर्यत्रायः। जलाख्या २ म्झभ्या जन् १। ইতি রাজনির্শুটা।

लयूगद्रः श्र कृपुतिगद्रः। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

লযুনা স: পু তিভিরিপদী। ইতি ভিকাওশেষ: ॥

व्यागिको की गक्षगानी। हैि जाकनिर्यन्हेः॥

चयुनय॰ क्री वीत्रगम्नः। ३७% मतः॥

লঘুসদাফলা জী লঘুদ্ধরিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

व्ययूरुखः भुः भीयुत्वसी। **है** डि

লঘুহেনদুখা **জী ল**ঘুদুম্রিকা। ইভিরজেনির্ঘট:।।

লঘূদুষরিক। স্ত্রী ক্লুদ্রোড্রারিকা।
ছোটোড়নুর ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। লঘুপ এফলা ২ লঘুছেনদুখা ১ লঘুসদাফলা ৪। লঘ্বাদ্যুডুম্বরাস্থা ৫। রসবীর্য্য বিপাকেষু
উডুম্বরাৎ কিঞ্চিন্যুন গুণেষ্ণ।
ইতি রাজনির্ঘন্ট:।।

লখী জী লাঘবযুক্তা।। স্যান্দন-পুভেদ:। ইতি নেদিনী।। প্রা। ইতি রাজনিষ্ণী:।।

की तकः श्री । अध्वारेन नन् इंडि नाना थेग्राठा। स्न्राडिः শান্ত্রমতে সাচ পৃথিব্যা নধ্যউদি गि उिष्ठेषि॥ नाकामगा एत्रथं েওভা: মদেশে লাগুমাণ ভবিতি । यथा। जसा व मस्या यमस्याहि রস্যা: পাক্পশ্চিমে রোমকণত্ত-ন্ঞ ৷ অধ ভঁতঃ সিক্ষপুরি সুনেকঃ (क्रोस)थ यास्य। वडवानल**ण्ड** ॥ জ্বত্তপাদান্তরিতানি তানি ছা-নানি ষদ্ধোলবিদে বদন্তি। অপিচ । घझत्काञ्जयनी शुद्धाशति व्यक्-ক্ষেত্রাদি দেশান্ স্পূশন্ সূত্র মে-ৰুগত• বুধৈ নিঁগদিতা সা মধ্যৱে*-*था जूदः। जात्तो भाखन्या भन्न ब विवाय शक्तांकि (त्रःथामया ८ न।।-ন্তমাৎ ক্রিয়তে তদন্তর ভুব• থেটে-ষুণ স্বণ ফল ।। ইতি সিজান্তশি-রোমণিঃ।। 🗱।। অথ লঙ্কাপুরী ব-र्गन । पुरश्चावाठ । बिःमाप्याजन विखीर्ना॰ यर्नभाकात्राजात्रना॰ ॥ দক্ষিণস্যোদধে ভীরে ত্রিক্টেপুনাম পর্বতঃ । শিখরে তন্য শৈল্স্য নধ্য মদৃধি সন্নিধৌ।। পত্রপ্রিভিক্ষ मुञ्जानाः देकिन्द्रिशः छञ्पिनः ॥ শক্তাপ নহক্তা পূর্ব পুষ্ণুংহ বহু বৎসরৈ:।। বসম্ভ তত্ত্র দুর্দ্ধর্যাঃ

मुर्थ>त्राक्ष्मभूक्षाः । अनदात्-छी: मम्प्रमाम्। सम्मा हैव मिरवोक नः ॥ वस्तानुर्गः ममामान्। **म**जूनाः भंकमूपनाः। मुद्राधर्या खरिया छि ब्राक्रीम बंद्र हिं व् जाः ॥ इंडि वं হিপুরাণে কপিলদর্শন নামাধ্যায়ঃ ।। 🕬 । भाषा।। भाकिनी।। अन्हा। ইতিমেদিনী।। ধান্যবিশেষ:।ডৎ পর্য্যায়:। করাল্ডি সুটা ২ কাণ্ডি-কা ১ ৰক্ষণাত্মিকা ৪। অস্যা खगाः। कऽ।दुः। हिनदुः। (गोन्। ত্বু । পিত্তনাশিত্ব । বাতকারিত্ব । ७ व व १ छ। इ डि ता जनियं छै: ॥ क्षामाशी भू• হন্নান্। ইভি नद्रवावनी ॥ ক্ষাধিপতি: ﴿ পৃ॰ ব্লাবণ:। ইতি জ ) টাধ্যভ্রিপুযোগৌ দাগতি: ্ৰী পৃক্ষা। পিডিংশাক **इ**गियक। ইতি ভাষা। ই**তি শ**দ क्षात्रिका । त्रज्ञावनी ॥ का इसी न् वृक्षवित्ययः। लहा-गिंक देखि ভाषा। यथा। वक्षाञ्चा-যী রাজবৃক্ষো ভদুত্তো বিশাযকঃ। ইতিশব্চন্দ্রিগালক্ষাবাসিনিত্রি ।কে**শঃ পু॰ রা**বণঃ।ইতি ত্রিকা अःमामः ॥ াফোপিকা जी भृषा। ইতि मदः

ब्रज्ञावनी ॥ न्त्रायिका जी भूद्रा। हेि अप-ब्रङ्गविधी भ नदः पूर नदः॥ विद्वानाः ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী।। नी वाक्षा। हेजुरगामि-*বাঙ্ল*• (कावः ॥ नहुन क्री উপবাস:।। क्रमणः।। প্লবন•। ইভি মেদিনী।। অশ্বভূতী-यगिः। यथा। প্ল তম্ভ लङ्गनः পः ক্ষিমৃগণত (নুহারক॰। ইতি হেন-हम्मः ॥ ऋ॥ ऋशिवाइननियस्य रथा । न हातिः वद्ययक्ती भारमा श्रम्भान-थः कृष्टि। न रिनः भाम छः अर्गाट মুখেন ন ধনেদ্ধ:।। ইতি কৌর্মে **উপ**রিভাগে ১৫ অখ্যাব: ॥ লক্ষণি। ইতি কবিকল্লদ্ম:।। লছতি বৃষ চক্রেণ পোপঃ। ইক্রি मूर्गामा मः ॥ লম ড ব্রীডে। ইতি কবিকল্লফনঃ ११ ७ नज्ञा । निष्ठायाः नग् ३७।(न) । ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ **ই ভয়ে । ইতি কবিকল্ল**ছতঃ ॥ লঙ্গতি। ই লঞ্জতে। ইতি मुकामानः ॥ **ক অন্তজ্জোঁ। ইতি** কৰিবল্প-क्तः ॥ अञ्चलि ताक्षापनः। क

লক্তাল

जाजयिक हन्तुः (स्वः। ইकि पूर्णाः भागः ॥

জ্জ ইক ভাষ উথপে ইতিকবি-কল্লজমঃ ।। ইক লঞ্জয়তি। ভা দী-ডিঃ যউথপোনিকেতন হিংসা বল-দানানি। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

লন্ধ ত্ক ভাসনে।ইতিকবিকল্প জনঃ।৷ ক লন্ধ্যতি। ভাসনং দী-প্তিঃ।ইতি দুর্গাদাসঃ॥

ল্ডকারিক। দ্রী লজ্জালুল্ডা। ইতিশ্বমালা।।

লজা জী অন্ত:করণকৃত্তিবিশেষ:।
ইতি নাগোজীভট: ॥ অকর্ত্তব্যে
কর্মাণ পরজ্ঞানভ্যণ। লাজ ইতি
ভাষা। তৎপর্য্যায়:। মন্যাক্ষণ ২
হুী: ০ ত্রপা ৪ ব্রী ডা ৫। সা অন্যতক্ষেৎ অপত্রপা ৬। ইত্যমর:॥ মন্
ন্যোগ ৭ লজ্যা ৮ ব্রীড: ৯ ব্রীডন
১০। ইতি শদরক্রবেলী॥ লজ্জালু:
। ইতি রাজনিষ্টাঃ ॥

विद्धानः गृञ्जी क्षूनित्मयः। ७९-शर्यायः। त्रज्ञनामी २ मभीनजा २ ग्णृकः। ६ थिम्त्रशिक्त ६ मस्मार्ति-नी ५ मभकी १ नभकाती ५ नुमा-दिनी २ मधना १० थिमती २२ गश्चमानिका १२ वद्धा १० विद्धिती २५ রক্তম্লা ১৭ তামুন্দা ১৮ ৰঙ্গা ১৯ অर्छानका ब्रिका <sup>१</sup>२० ४-हें जि রাজনির্ঘটঃ ॥ নহাজীতা ২১ ব-**णिनी २२ मरहोस्थि: २०। ই** डि नद्विक्ता। यम्। खनाः। कः 'টুরু'। শীতরু'। পিভাতিসার শোফ দাহ শুন খাস বুণ জ্ঞ क्कार्नि नानिवृक्ष ॥ 🗱 ॥ उरस् (ना यथा। वड्डाल् विभन्नीजान) অল্লজুপ বৃহদ্বলা। বৈপরীত্যা চ वज्जान् र्शां जिवात भुराहरप् ।। नज्जान् रिवंभन्नीज्यानः कर्षे कथः कका भन्ट । त्राम नियामको कि নানা বিজ্ঞানকারক:।। ইতি রাজ· निर्यण्डः ॥ व्यन्ता इन्त्रभाषीमाय मुष्टेवता ॥ 🗱 ॥ व्यन्तितः। वङ्जानः म्यार्णभीभवा मभक्षाञ्जनिकात्रि का। तक्र भारी नमकाती नामा शक् রকেত্যপি।। লজালু:শীতলাতি ক্তা ক্যায়া ক্ফপিড্ডিছে । রক্ত পিত্ত মতীসার যোনিরোগান विनाभाष्ट्य ॥ 🗱 ॥ व्यथ विद्धाल ভেদঃ। অলমুশা খরত্তক্চ তথ (भरिशना थ्डा। अलपूरा लघु স্বাদু: কৃমি পিত্ত কফাপহা॥ ইবি ভাবপুকাৰ্শঃ।৷ অন্যা দু ক্ষিকাৰ্শকে म्धेव्या ॥

हाकाणीनः वि विद्धाविणिष्ठः । विदेशितः क्री उद्देशियः । অপত্রপিঞ্: २ । निर्धिः ॥ इंडाप्रदः ॥ विद्धिः २ । ইতি विदेः भू पूर्व भवत्रवावनी ॥ वनी ॥

शक्किनः बि लब्हायूकः। उट्-भग्रायः। श्रीतः २ श्रीतः २ । इन्जाः भन्नः॥

দজিরী স্ত্রী লজালু:। ইতিরাজ-নিঘট:।।

नक्या जो वद्धा। **३७ मस्त्र**ञ्जा-वनीः।

লপ্ত ত্ক ভাষনে। ইতি কবিকল্ল জন: ।। ক লপ্তাতি লপ্তাপয়তি। ভাষন দীপ্তি:। ইতি দৰ্গাদাস: ।।

লঞ্জঃ পৃ॰ পদ:।। কह:। ইতি ছে-নচন্দু:।। পৃষ্ট:। ইতি জটাবর:।। লঞ্জিকা জী বেশ্যা। ইতি হেম-চন্দু:।।

विष्ठ वाल्याः । इति कवि कन्नक्रमः ॥ वाल्या १ छः छम्य छा-वा वाल्यः व्यात्माङ् इति यावट । बहित्र लाकः निष्यः म्याट । कि-क्षित्र विष्ठ व्याव्यः। इति मर्गामामः

बहेः भुः भुगाम्बहनः॥ (मायः। इंडि विश्वः॥

मध्यः पुर्वतः । देकुलानि स्वायः ॥ লটপর্ণ ক্লী ভ্চ•। ইতি রাজ: নির্ঘণ্ট:॥

विषे: श्रु मूर्जनः। ইতি भामतङ्गाः विषी ॥

লট্ব: পু• জাতিবিশেষ:। নেট্যা ইতি ভাষা। রাগভেদ:।। তুরঙ্গ: ইত্যণাদিকোষ:।।

**व**दे। **डो कब्रक्कर** छनः ॥ नाटे। कब्रक्का ইতি ভাষা। বাদ্যভেদঃ॥ পক্ষি-विल्गयः । गामहर्षेक इंडि थ्याउः । ইতি मिरिनी ॥ अनुस्र । ইতি (रुमहन्तुः ॥ जुमतकः । (जाउद्री ইতি খ্যাত:। ইত্যদর ভরতৌ ॥ লড বিলাসে। ইতি কবিকলুজম:।। **लडिं वाला। ই**তি দুর্গাদাস:॥ উন্নম্নজিল্বযো:। ইভি कविकन्नफमः॥ উत्रज्ञ- भी फिठी-ভাব:। উৎক্ষিণ্ডীভাবক। লডভি লতা বাদুনা পীডিতা উৎক্ষিণ্ডা বা স্যাদিত্যৰ্থ:।। জিন্তা তদ্বিষ্থ-কিया। লড়তি জিহ্বা স্পান্দ্ৰবতী म्यां विडार्थः ॥ म न उपिता न उप-তি বৃচ মুল্লল্যভান্নিভি 🗐 হয:। भीउग्डीडार्थः ॥ क्वाहेष्टी मिन्नः কিরণ লছরী মুল্ললযতীতি মুরারি: । উৎकिপठी उर्थः। উভयव उनः যে। রেকমাল মুণ।। কেচিভু ছিস্কো;

শ্বান্থনে ইতি পঠিত্ব। জিপ্তায়া উন্ম-স্থন• উৎক্ষেপন নিতি ব্যাখ্যায় লডতি জিপ্তা• নৰ্প ইত্যেবোদা-হয়ন্তি। ইতি দুৰ্গাদাসঃ॥

मफ क उभरमार । इंडिक विकन्न-स्मः ॥ उभरमय इंड् अउ। इभान-नः। क नानाय १ भक्ष्यकां नि भू म नि जि अब उनाया (तक्षास्त पुः)। कन्नाया सम्। भूरयागः । इंडि तसामार्थः ॥ नाउ थ जि नजाः वायः। । इंडि मूर्गामामः ॥

লড ক উ বীপ্দে। ইতি কবিকল্প জন: ॥ ক ভ লাডযতে। লাভ এব ইত্যন্যে। বিশেষেণ আপ্তুমিছা বীপ্দা। ইতি দুর্গাদাস:॥

विष्ठ है कि जायरा। है कि किंदि कन्नकमः॥ है वाखारा कि वाखय जि वाखि। जायरा कथनः। ज्यरा कि विश्व मनारा हिन्द्र मिनामः॥ विष्ठ के कि उपक्रमरा। है कि कि विकन्नकमः॥ कि विश्व । जानुत क व्यानिस्यावशासिन निश्वा मान बद्धा ज्या विश्व । है वाखारा । कि वाखयि वाखि जाखुवा । कि वाखयि वाखि जाखुवा । कः। है जि पूर्णामामः॥

লভ ভ ক কেপে। ইতি কৰি্কল

क्रमः ॥ वाउपि वावापि । इति वि पूर्णामामः ॥ वाउरः वि गताकः । इति वि काउन्यः ॥

नमु जि मूर्जनः । ইতি भस्त्रजाः वनी ॥

नडू कः शृ शिक्षेकवित्मयः। नाड् इंडि ভाषा। यथा। नहु का दृ व्हांद्रा एकः। ইंडि द्राक्षवद्वां ।। व्यक्षित। रेडिन्स हिंदिया भक्ष्ण डं (यथ हर्षक नडू कः। ইंडि मेप-हिंदुका॥

লণ্ড• ক্লী বিধা। ল্যাড ইতি ভাষা াইতি কেচিৎ ॥

मञ्जः जि मञ्जूरम्मकानः। यथा

। প্রাশ্রায়ে নবশত বড় मो जिः প্রकी दिनाः। ফিরক্ ভাষয় তত্তা

তেষা সংসাধনাৎ ভুবি ॥ অধিপা মঙ্লানাঞ্চ সংগ্রামেয়পরা

জিলা:। ই রেজা নব বট্ পঞ্চলভুজা শাসি ভাবিন:॥ ইতি মেক্তত্তে ২০ পুকাশ:॥ ক্লালগুরু
অধুনা লগুন্ ইতি খ্যাত:। ই রেজানা রাজধানী চ ॥

ল্ড যাতে। সৌত্রয়ত্রয়•। ইতি ক্বিকল্লফন: ॥ ল্ডা । ইতি দুর্গা-দাস: ॥ নতা ত্রী লভভি বেইবতে যা। সা माथादिक्षेत्रिं। उट् भिगोर्यः। वली २ व्छि: १। इंडा মর:।। বল্লি: ৪ বেল্লি: ৫ পুত্তি: ৬। সা শাথাপত্ৰসমাযুকা চেৎ পুতানিনী। ইতি শবর রাবলী॥ তৎপৰ্য্যাय:। বীৰুৎ ২ গুল্মিনী ৩ উলপ: ৪। ইত্যমর:।।#।। অমাধা• वीक्षा॰ ছেদকরু নিন্দা यथा। অপ্লু ভিমিন্নহোরাত্রে পূর্ব বিশo हन्दुभाः। उठा वीक्ट्रम् व সতি পুযাত্যক তত: ক্রমাই।। **ছिनिंख वीक्राया यञ्च वीक्र ग**न স্থে নিশাকরে। পঞ্ বা পাত্য ত্যেক বুদ্ধহত্যা স বিন্দতি॥ इंडि बीदिक्भूद्रारा २ वारण ३२ व्यथायः॥ 🗱 ॥ वान्यम् त्रानिन वा मुख्ना नजानि र्यथा। अनातु **काशि अ**च्या ७ भाषाष्ट्रक मूका-मूकः। थड्जू ती ककरी हाशि नि-विति सक्षमभूमा ॥ वाख्रः कातः विज्ञक वार्डाञ्च मृज्युहा। व डाफलक्ष मुङ्गर॰ मर्ब॰ मर्बङ नि **শ্চত•।। ইতি বুন্ধবৈ**ৰ্বৰ্ত্তে শ্ৰীকৃঞ ज्ञांचर ७ ३०२ व्यथा गः ॥ 🛊 ॥ भाषा॥ भि्रकृः॥ भृकः॥ व्यन শূণী । ইত্যমর: ॥ জ্যোভিমতী॥

লতাকরপ্তঃ পু॰ করপ্তবিশেবঃ।
কণ্টকরেজ্ ইতি হিন্দাভাষা।
তৎপর্য্যায়ঃ। দুয়্মর্শঃ ২ বীরাখ্যঃ ৩
বজুবীজকঃ ৪ খনদাক্ষী ৫ কণ্টকলঃ
৬ স্বেরাক্ষী ৭। অন্য পত্র গুণাঃ।
। কটুত্ব॰। উষ্ণত্ব॰। কফ বাত নাল্ শিত্বঞ্চ।। তদ্বীজ গুণাঃ। দীপনত্ব॰।
। পথ্যত্ব॰। শ্লু গুল্ম বিষাপত্ত্বঞ্চ।
। ইতি রাজনির্যাটঃ।।

न जाक ख्रिका खी न जाक ख्री।
जद्भ र्याप्तः। कर्ट्रः २ म्हिल्स्म्म्
का ०। अम्रा एगाः। जिक्द्रः।
यापूद्भः। त्याद्भः। हिमद्भः। न्युद्धः।
क्का वर्षामा प्रमाद्भः। न्युद्धः। क्षित्रद्धः। अभिष्ठ
। न जाक ख्रिका जिक्का क्रमा मीजामा प्रमात्र्भः। व्याप्तिः। व्यापत्रः।।
न जाक ख्रिका जिक्का क्रमा मीजामा प्रमात्रः। व्याप्तिः।।
न जाक ख्रिका जिक्का क्रमा मीजामा प्रमात्रः। व्याप्तिः।
न जाक ख्रिका जिक्का क्रमा मीजामा ।।

লভাতকঃ পু• নারস্বৃক্ষ:॥ ভাল-বৃক্ষ:। ইতি শব্দালা ॥ শাল-বৃক্ষ:। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥ লভাক্য: পু• লভাশালঃ। তে भर्यायः । जार्कः २ व्यथकः ० क्लिकः ८ वनाः ६ मीर्वः ७ । ইजि बञ्जभावा ॥

লভাপননঃ পূ ফললভাবিশেবঃ।
তর্মুজ ইতি খ্যাতঃ। তৎপর্য্যায়ঃ
। চেলালঃ ২ চিত্রফলঃ ০ সূথাশঃ
৪ রাজতেনিয়ঃ ৫ নাটামুঃ ৬ সেদুঃ
৭। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥

লতাপূক্বা খ্রী সমুদান্তা।পিডিন্স-শাকইতি ভাষা।ইতি শবর্ত্বা-বলী।।

चठानुकानिनी खी भाषानुष्ठय-वठीनका। ज्यानगायः। वीक्य २ ब्हिनी ० जैनमः ८। ইन्जानब ब्हिजी।। वीक्या ७ वक्य ७। ইन्जि भयद्रकृतिकी।।

ल जाकन श्री शिक्षा । यथा । वाल्कः काद्रादल क वार्लाञ्च क् ज्युन । ल जाकनक क् ज्ञान मर्व ज्ञान विश्विष्ट ।। ইजि वृक्षतिर्वर्द्ध श्रीकृष्ट ज्ञावाल २०२ व्यवप्रयः ।।

वजाजमा की जमुगीवृकः। हेजि सद्यावा।।

ত্রতান্থি: পু• পুরাল: । ইভি
ক্রিকাগুলেব: রাজনির্বটক ॥
ত্রতানক্থ গ্রী প্রা। ইভিশন
রহাবলী॥

लागावती जी नावती ना । इंडिंग्स् भन्त ज्ञात जी ॥ लाग है: जी मिला छ। इंडिंग्स् ना ना ॥ लाग विकास की भूतान । इंडिंग्स् हा जात नी ॥ लाग के: श्रु नर्भः। इंडिंग्सा-वनी ॥ लाग के: श्रु इंडिंग्सा । ए श्रिम्स । इंडिंग्स । । लाग के: श्रु इंडिंग्स । । लाग के: श्रु इंडिंग्स । । लाग के: श्रु इंडिंग्स । ।

लकात्यक्टेः भू॰ (याष्ठभविवकात्रः)
गंडज्ञीयवत्तः। यथा। वाङ्ज्याः
गाम्यूग्राज्याः (वद्धिय्वा क्रियः व्रत्यः। नय्निक् ठाफनः (यानो नः
जात्रक्षिय गूठ्याः । हिंठ व्रिज्यः
क्षवी।। सः। (मन्यित्मयः। यथा।
व्यत्याः निक्षवत्र ह्वान् व्यानिष्ठेवान् उमा। व्यञ्च्यक्ष गार्गयः वाः
यञ्च ममञ्ज्ञः।। (वनुमञ्चः नजाः
विश्वेः उथा देव ठकः गिविः। याक्यः
वन्नः गिविक्षिय भार्गयः ज्विजा हः
रेगः।। हेि ङ्वियः भी जिल्लकः।।
व्या। हेन्ने प्रकः भी जिल्लकः नजाः
(विश्वेष्ठकः ज्या। हेि नद्माना।।

ুলাতাশ্র: १: শালাব্দঃ। ইতি। मद्दद्भावनी॥ লতিক। স্থী লড়া। ইভি লড়া। नदाट सार्थ कर भुकुरयन किक शुक्रायन वा नियमः॥ লভিকা জ্রী গোধা। ই**ভি সিদ্ধান্ত** कोप्नाम्यामिवृज्धिः॥ লপ খ ভাষে। ইতিকবিকল্পদ্দাঃ । य अजीवनट यननानट । ভাষঃ কথন•। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ न्यत्र क्षी मृथः। ইত্যमद्रः॥ ভाষণ। ইতি লপধার্থদর্শনাৎ॥ লপিত লী বচন।। কথিতে তি। ইভ্যন্তঃ ॥

बञ्जिला जी थान्यविष्णयः। वञ्जी ্ ইতি খ্যাজা। যথা। সমিজা• স-পিয়া ভূষ্টা॰ শকরা॰ পয়সি কি পেং। তিমান্ ঘনীকৃতে ন্যাস্থ व्यवक् महिष्ठापिक ॥ मिरिक्रवा লপ্পিকা খ্যাতা গুণানস্যা বদাস্য-ए । विश्वका वृष्ट्गी व्या रवा। পিতানিলাপছা।। বিধা প্লেম্- লভসঃ পু বাজিবন্ধনরজ্বঃ। ই-क्त्री ख्वी (ताहनी जलनी भन्न । ই**তি** ভাবপুকাশ:॥

क्विक्त्रघरः।। इ नव्रट्ड ७ नद- । व्यव्युः। इंडि निभिनी ।। তে। गु॰मन विरादनधन मिछि नमकः पु॰ विः। ইতি मिकाउ-

(गाविन्सञ्जेः ॥ ननाम हद्रभायूष खरिश भोन नाल राम। इंडि मूर्गा-मानः ॥

नदः वि भावः। हेल्यस्यः॥ वस्वर्यः भुः भिष्ठः। ইত্যুनदः॥ <u> विका की नाविकारज्यः। यथा।</u> थिएडा८किश्रेडा विका (পু। विज्जुका। कनशास्त्रिका वाममञ्जा शारीनज्ज्रंका ॥ इंडि किंग्यतः॥

वভ ইড শদে। ইতি কবিকল্প क्मः॥ ३ नमु/छ। ७ नज्जा ইতি দুর্গাদাস: ॥

লভ ডুওডৰ প্ৰাপ্তো। ইভি कविकद्मक्रमः ॥ जु निक्रुमः । जे नक्षा । इ नज्र । य नजा । नज्र ন্তি পুন ৰুত্থান মিতি গণকৃতা নি-ত্যবাদিতি রমানাথ:। বস্তুতস্ত वाज्य वाजः भगिमियामन् ज्ञा লভ ইবাচরতীতি ক্রৌ সাধ্য । इंडि पूर्गामामः ॥

जुलामिरकायः ॥ थनः ॥ याहकः। इंडि भिकास्ताममाम्याम्बिडिः কেন্দ্যান্গাদিবৃতিঃ ।।

লম্পটিঃ পু॰ বিদ্ধা । ইতি লম্পাকশব্ধে নেদিনী ।। আসকঃ ।

ৰথা । বথৈহিকান্দ্ৰিক কানল

ম্পটিঃ সূতেযু দারেযু ধনেযু চিত্তযন্
। শক্ষেত বিদ্ধান ককলেবরাত্যাদ্ব শুস্য যত্নঃ শুন এব কেবলং ॥
ইতি প্রিভাগবতে ৫ ক্ষন্ধে ১৯
অধ্যায়ঃ ।।

লস্পাক: পু: লস্সট:।। দেশভেদ: । ইতি মেদিনী।।

लम्भार्टेशः शू॰ भरेह्याम् ४ । इंडि हात्रावली ॥

লন্ধ: পৃ• প্লুডগডি:। লাফ ইতি ভাষা। ইতি লোকপুসিদ্ধ:॥ উ-ক্লয়ন• পুলয়নঞ্চাত্র॥

वायः शृ॰ नर्खकः॥ व्यत्रः॥ काछः॥
इठि नः किछनाताना पितृ विः॥
देशकाः। यथा। श्राञ्चः छोक
नः वाद्याध्यकाः (काणविकानि
स्व । उनाहातः श्रुपानन्त। हाता
श्राह्याया जनि ॥ इठि (इनहन्तुः
॥ व्यक्ष ज्वनः। यथा। हत व्यर्थना
देश भाषिका १ स्वापि व्याप्तः।
इठि णयमावा॥ (क्ष्वापि व्यक्षः)
नात्रत्था नृवः वा। यथा। विज्
स्व जुक्या (योग खंदन्छत छत्।

ভুবাহতো লক্ষ্য। দিস্থা ভূক্ব যুতা দলিভাবাংশ জীয়া: সূগুড়া• ।। স্বাবাধা ভূজকৃত্যে। রন্তর মূলা পুकायाञ नयः। नष्टनः ভ্रমার্জ স্পষ্ট• ত্রিভুজে ফল• ভবতি ॥ উ-দাহরণ<sup>।</sup> ক্লেতে নহী ননুমি**তা** বিভুষে ভুজো তু যত্ৰ ব্যোদশতি-থি পুমিতৌ হি যুস্য। ভত্রাবল 🕶 কমথো কথ্যাব্বাধে ক্ষিপু• তথা চ সমকোষ্ঠ মিতি॰ ফলাখ্যা॰।। न्यानः । ज्ः ४८ ज्राह्मे २०११८ लक्ष आवार्ष ७। ३ लक्षालस्क ১২ ক্ষেত্ৰফলঞ্চ ৮৪। ইতি লীলা-বভী॥ দীৰ্ঘঃ। লঘা ইভি ভাষা। যথা। দূর ডঃ শোভতে নূর্থে। লম্ব-শাট পটাবৃতঃ। তাবह শোভতে মূর্থো ব্যব্দ কিঞ্চিল ভাষতে ॥ ইভি চাণক্য়ু ॥

লয়কর্ণ: পূ॰ অক্ষোঠকৃক্ষ:॥ছাশ:
। ইতি মেদিনী॥ রাক্ষস:॥ হতী
। ইতি শব্রজ্বাবলী॥ শেনপক্ষী
। ইতি রাজনিষ্টা:॥ দীর্ঘ্শুতে
॥ তদ্মক্তি তি॥

লংকেশ: পু° বিষ্টর: । স ত বিবা হকালে বরোপবেশনার্থ সাদ দ্বিত্যবাদাবর্ত্বলিভাগোমূখাত সংখ্যাতদ্ভা: । যথা । উদ্ধৃ কেশে ভবেৎ বুকা লৰকেশস্ত বিষ্টর:। मिक्कियवर्कका वृक्षा वामावर्क्छ विहेत्रः।। इंडि.स कात्र उतुः॥ कि-শো ২ত্রাগুঃ। ইতি পুষেশ্চিত্ততত্ত্বে গল্মাহান্ত্যে পুতিনিহিতদর্ভ বটুরানপুকরণে লিথিত ॥ 🛊 ॥ भीर्घाकणगुःक वि॥

णयुरसा जी रिमः हली लिल्लनी। इंडि द्राजिन्यणेः॥ वृष्ण्यनिविणिष्टे वि লম্বন ল্লী নাভিল্মিতকণ্ঠিকাদিঃ। **७८ भर्यायः। जनहिका २। इंड**ऽ-**ग**द्रः । लग्नु व लग्नु न नन्तु । क्रियु । मनः। इंडि उड़ी कायाः छत्रजः॥ नश्मपार्थाकाव॥

কফ:। ইতি শদ-लघनः 91. छिन्तुका ॥

विषयानः जि लशागनानवस्य । অব্যাতোঃ কর্ত্তরি শান পুত্যযেন विज्ञम'॥

व विका खी रेम स्वीशिक्षनी। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

नम्रा खी नन्दीः॥ भोडी ॥ ভিক্ত-जुबी। इंजि मिनिनी ॥ मञ्जूकन्ता-विष्णयः। यथा। शकक्र औ॰ वस्॰ িযামী॰ লয়া॰ ভারু॰ নক্ত্রভী॰। नक्ताक मुङ्डाक नाव्याः विवाक ভারত ।। ননবে দক্ষপুপ্রায় দক্ষ 🛮 লখেছি: পু• উট্টু:।ইতি ত্রিকাও-

এতা राही शुजुः। ইতি इदिरण **অধিপতিস্থাপন•।।**হিনাল্যকন্যা वित्मवः। यथा। उठ खाद्मविकः मुद्धा (नवी नचा मथानुवीर । १ इस वास भीषु दु वान मन्त्रकृत अक ।। ততো যোগ॰ সমাধায় অদৃশ্য 'श्निवरमूडा । क्क्रिगुक्ना छ-मुभ॰ मर्भावट भार्श्वगाणा।। ना-ভৰ্জান নুপাগম্য ত্যক্তা সা বাসসী পুনঃ। পরিত্রাণায় বাণস্য বিজযা-ধিষ্ঠিতা তভঃ ৷৷ পুমুৰে বাসুদেব-স্য দিশ্বাসাঃকোউবী স্থিতা। ইতি মহাভারতে **হ**রিক**েশ** বাণ্যুদ্ধ•॥ ন্ত্ৰী তাল্ভু/সৃক্ষজিল্বা। তৎর্য্যায়:। যণ্টিকা ২। ইতি রাজ-নিষ্ট: ॥ স্থাসুবা ৩ গলপুভিকা 8। ইতি হেনচন্দু:।। অলিজিলা ৫ অলিজিন্থিকা ৬। ইতি শব-ब्रङ्गदनी ॥

ল্বিভঃ তি সুংসিতঃ। শ্বিডঃ। ইতি লগ থাডোঃ কর্মণি ত পুত্য-(यन निद्धः।। नयुगाननान्।। हि क बाषाम्यः शुः शामाः। ইত্যানরः॥ 'ঔरतिक वि। ইতি (इमहन्तुः ॥ উন্ধ:। ইতি রাজ वायाश्वः 9[\* নিঘণীঃ ॥ লম্বনানোপ্তযুক্তে তি ।।

শেষ: ॥ দীর্ঘোষ্ঠবিশিষ্টে ত্রি ॥ লন্তুন ক্লী পুভিলন্ত্র: । ইভি হেম চন্দু: ॥ ধ্বনি: । লভি ড শব্দে ইত্য-সাৎ ভাবে ধনট্ পুত্যবেন নিম্নন্ন নিতি ॥

লম্ভা জী বাটশৃত্বল।।ইতিহারাবলী লয় ড গত্যা । ইতি কবিকল্লজন:।।

**७ नगञ। ३७ि मूर्गामानः** ॥ विनाणः ॥ नः (भूवः॥ ভৌৰ্য্যত্ৰিকস্য সম্যে । ইতি মে रिनी ।। **भु**लयः । इंजि भक्तन्ना-वनी॥ 🗱॥ गीजवान्। भारन्। मा-না জিয়াকালয়ো: পরস্পার সম-**छ। वयः। व**्यस्त्र श्चियास्त्र श्वानः তিলগন্তি বুজন্তি সাম্যু গীতাদনে राजि वा नगः। जो ए य ७ जिपि লশগভ্যা• বা অল্। ইত্যমন্ত্ৰীকা-याः छत्र अः॥ 🗱 ॥ वयक्षानि दिवर्कः ব গায়কস্য চত্দ্**শদোষান্তৰ্গত**-स्मिर्वात्माया यथा। निक्कि ७॰ ভীত মৃত্তে যু অব্যক্ত মনুনাসিক।। **ङाङ्घतः शिवःकस्मा नग्रङानदि**-र जिं उ ।। विश्वतः वित्र गरेक्षव विल्लि & বিষয়াহত। ব্যা**সল তাল**-रीनक गाज लावा मञ्जर्मा 🗱॥ ध्यथलयाः । अमिष्टिजिः कश्रेष्टि-िः क्याविहि जि द्वि**छ वय वय-।** 

অপরে তু। দ্বিপদী স্যাদলভিক। यक्षिका ছिम्थिक्षा । मांग्जिव ন্তত শ্যা থাওধানা ক্রিক্রকঃ॥ अ ম্রুডিকা কলভিক: খণ্ডক: খুরিক স্তথা: কথিত শ্চতুরসূোর্দ্ধ শত্র-(माथ नर्खकः।। का गुः यह । मरा लगा-বকৃষ্টা মনদেঘটীত্যপি । কাদৰ শ্চ-র্বরী ঘউ। মিশ্রোর্জবনিতা ততঃ॥ ष्विठिवः সময্क विवादार्जाह्म व ন্তথা। আবিদ্ধস্ত টক্ষবক ন্তত শ্চি-ত্র বিচিত্রকৌ ॥ আজ্রী বিকৃত্রধা-বা চ মুঙ্গলোথ বিলোলক:। রম-ণীয স্ত**ভশ্চৈব করকণ্ট**ক স**ং**জ্ঞকঃ৷৷ **চড्ডाद्धिः मिरिस (शु**क्ति नया नय-विभात्ररेरः । वायन वामा जगवा-न् वारा वीता जनार्यनः ॥ इंडि मःशीउनायामतः॥ न्यभूञी बी नर्डि । इंडि मद-बद्दावनी ॥

রহাবলা।। লবারস্ত্রঃ পু• নটঃ।ইতি ত্রিকাণ্ড: শেষঃ।। লয়ালম্ভ প্রভাইতি মান্ত্রতা:

नगानमः भू॰ निः। ইতি শদর্গা-यनी॥ सर्वे । सर्वे । सर्वे । ইकि जिल्हास

লৰ্ব্ব গতৌ। লৰ্বতি। ইতি সিদ্ধান্ত কৌমুদী॥

লল ড ক ইপ্পাযা•। ইতি কবি-কল্লছম:।। ক ড লাল্যতে। ইপ্পা

व्याथ्यिहा। ইতি मूर्गामानः॥ वन : ज क. देखा हिंछ कविकन्न-क्रमः ॥ वेश्रा इंडि जानवाजाः जनसम्बद्धाः क्षा **भ•स्त्रा**म हेर्डाः कांद्रिंग जब्हा शि श्राह्म कर्ष न वाधार७ इंडि क्रम छोविहिङ भुड।रेयः कृष्टि मक्तिशालि न वा-ধ্যতে ইত্যস্য বাচ্যত্বাৎ অন্যথা কারণা কারণ নিত্যাদযোপি নসুঃ । এব॰ বক্ষ্যমাণেষু ব্রীড লজ্জে ই-ত্যাদিম্বলি বোধ্যা । লল্যতি ধন (लाकः। ইতি দুর্গাদাসः॥ ननक्तितः भुः उष्टुः॥ वङ्दः॥ शिष्यु वि। ইতি मिनिनी ॥ **नन** वि दिनामगुजः॥ উत्रह्म-विणिष्ठैः ॥ जिल्लाकियाविणिष्ठैः ॥ ं क्लिपविभिष्ठेः ॥ वीञ्चाविभिष्ठेः ॥ উপসেবাবিশিষ্ট: ৷৷ ভাষণবিশি-ষ্ঠঃ ॥ উৎক্ষেপবিশিষ্ট: । ইতি

ध्यः ॥ **न**नन• क्ली (क्लि:। ইভি (इम्राज्यः ॥ চালন•। ইতি নাগোজীভউ:॥ यथा। काली कब्रालवस्मा विश्विष्ठाः ন্তাসিপাশিনী। বিচিত্র খ্টাঙ্গ-

লডবাতো: কর্ত্তরি শত্ পুত্যযেন-

ডস্য লকারাদেশেন চ নিয়য়॰।।

वनम्यः भू विम्याकः। इठि बहै।

ध्या मत्रमाणाविज्वना। बीलिवर्य-**भन्नीयामा मृ**ह्म्याः माजिरे छत्रवा ॥ व्याजिविखात्रवरना किञ्चाललन छी-বণা। ইতি দেবীমাহাত্ম্য ।। वननः भुः वानः॥ जानः॥ भिु-यानः। ইতি রাজনির্ঘণীः॥ खी कामिनी।। नाबीएजनः ॥ জিস্থা। ইতি মেদিনী॥ **नननालिय॰** क्री शीरवब्र•। इंडि वाजनियंगः॥ वननातियः भू कम्यः। इंडि द्राजनियण्डः ॥ कामिनीवल्लाङ्कः ॥ वविष्का जी नाज्यिम् क्रिकानिः

हिन्तुका ॥ वनाहे• क्री অব্যব্বিশেষঃ। ক-भाव हेडि थ्याड**ा उ**०भय्यायः। অলিক ২ গোধি: ১। ইভ্যনর: ॥ মহাশন্ধঃ ৪ শন্ধ্ৰ ভোলঃ ৬ কপা-লকঃ ৭ অলীক ৮। ইভি শবরত্না-বলী।। ললাটক ১। ইতি ধনজা: ।। তস্যু শুভাশ্ভ লঞ্ণ ব্থা। उन्ने विभूतिः गाँद्य जनारि विन यरेम खया। निकाना धनवक्रक ज-क्षिन्तुमृहीण नेद्राः ॥ जाहार्याः

। उद्भर्यायः । वस्तः २ । ३७५-

मदः॥ (गावा। इंडि भक्तमाना॥

ननाकः भु (महनः। ইতি भदः

मुकिविमारिनः नित्रातिः शाश-কারিণঃ । উন্নতাভিঃ শিরাভিন্ত **अखिका** छि र्थात यहाः॥ निरेत्र र्वानाः हि वंधार्शः क्रुवकर्षव्या खया । भःश्रिक ननारिक क्षना उम रिङ न्'भाः ॥ नमाधा**भम्**ञा खि-লোরেখান্য: শতবর্ষিণা । নৃ**গত্ত** ন্যান্ত সৃতি রাযু: পঞ্নবত্যথ।। व्यादारथनायु र्वविक विहिन्ना छिन्ह পূ•ফলাঃ। কেশাস্তোগগতাভি क्र जमीठायु मंद्रा ভ्रवर ॥ পঞ্জি: সগুভি: বড়ি: পঞ্চাশ-দ্রহ 😼 তথা। চত্ত্বারি শচ্চ বক্রাভি ব্রি:শতুলাগুলামিভি:।। বি:শতি र्यागरकार्ड बायः कृष्टुा जि ब्रह्मकः । न भृषुः वारनम् निर छ ज्यो हाथ ववाहेकः ॥ मूज्यस्तंन्यू मः इत भकुक्र· महानत्वानगः। इ**डि** गा-क्रिड ७৫ व्यव्यायः ॥

बनाहेक॰ जी भुगउननाहे॰।ইভি শব্দন্ধবৰ্ণী॥ ननाहेमाञ॰।ইভি भन्छकः॥

বলাটভপঃ পৃ• সূর্ব্যঃ। ইতি **সি**-জান্তকৌমুদী।।

শ্রদাটিক। দ্রী স্বর্ণাদিরচিতললা-টাভরণ । টিকা ইতি খ্যাতা । ভৎপর্য্যায়ঃ।পত্রপাশ্যা২।ইত্য सदः ॥ व्यवादेश्वरुपतः । ए९ शर्यप्रायः । मङ्गहि १ २ । इन्हि सप्-त्रज्ञावनी ॥

ननाम ही ननाम । यूषा। भूषा-न धुक म्रस्य पूजु वानि विक्यम्। ज्यावाकि भुजात्वयू ननाम मा८ ननाम हा। इंडि कपुः॥

वनामः त्री विद्यः॥ धृषः॥ मृतः
॥ भुषानः॥ ভ्या॥ त्रमः॥ यानः
दिः॥ शृञ्जः॥ ज्रवः॥ भुजावः॥
इठि भिष्नो॥ अथननाउँ व्यनः
वर्गाः द्राः॥ गवाषीनाः ननाउँ विवः
॥ अथनः ।। व्यक्तः।। इज्यन्ति।

वनानकः क्षी भूर्तान्यभानाः।
इंडाम्बः ॥ छरम्यमानाः भूतः
अः ब्रूथजाल माउः वनावे भर्यतः
मागजः नवायकः मनामः हिनक भित दें दें देवार्थ कः। दें डि

णवाभी जी कर्नम्यनविष्णयः। उट शर्यापः। उटकिछिन २। इंडि णक्यावा॥

ললিত॰ ল্লী শৃস্বারভাবজজিয়া-বিশেষঃ। ইত্যমরঃ ॥ সুস্মার বিধানেন জুনতাদি জিয়াসচিব বর চরণাস্থিন্যাসোললিত । ं उथा छ। मुक्तभाताक विन्धारम भर्म-ণা ছলি ३। ভবেং। যথা। সভুভ-क् क्वकिणनगावलीन द्वाणउडी ञा दिम्मद्री विव व विव । (वाह-नम्राक्षात्व । विन्यमान्त्री हत्रशकः भाग नीनगा सित्रगार विश्वका हं পুখনবয়ন। নৰ্ভিতা পঞ্চলাকী।। जुत्वारि कियानानि जुन्नगत বিধানতঃ। হস্ত পাদাক বিন্যাস सक्ना ननिउ॰ विष् ब्रिट्यान्यनि ॥ अनागार्यज्ञाभिष्ठः म्याल्लिखः রতিচেষ্টিত ইত্যন্যে। ললৎকে-প্লে ভাবে ক্ত:।লড বিলাসে ইত্য-म। मनीवारिदार उम। वदः वा। ইতি ভরত: ॥ অণিচ। বিন্যাস ভঙ্গি ब्रङ्गानाः पुविनामन्यताङ्का া সূজনারা ভবেদ্যত্র ললিত তদু-मीबिज•॥ इंज्युङ्ख्यानीलम्भिः॥ পু॰ রাগবিশেষঃ ভদ্য लनि उ: चक्षणः रथा। পुकू समश्रहम्भानः ধরী যুবাভিগৌরো ৎলাদ লোচন শ্রি: । বিনিঃসরন্ বাসগৃহাৎ পু-ভাতে বিলাসিবেশো ললিত: পু-रिष्टेः ॥ उत्रु भानमन्या यथा । शुाउर्गिरास (स्मामा न निः ·शटेम अती। विভाষ। ভৈরবী চৈব कारनारन (गाउँ नीर्याल ॥ इंडि

नशीजमामाम्यः ॥ विवादः जि. जुन्मयः ॥ विश्विजः ॥ इजि. यमिनी ॥ विवादः ॥ इजि. विश्व नम्ययः ॥ विवादः ॥ इजि.

ললিভকান্তা দ্রী মক্লচিতিকা।
তস্যাধ্যান যথা। যৈ সা ললিতকান্তাথ্যা দেবী মক্লচিতিকা
বরদাভ্যহন্তা চ দ্বিভুলা গৌরদেহিকা। রক্লকৌষেণবন্তা চ মিভবজু শুভাননা নবগৌবনসম্পদ্দা
চার্যকী ললিভপুভা।। ইতি তিখ্যাদিভ নুং।।

विनिज को कल्बी।। नाती। ইতি

त्राक्ष निर्धा । निर्मा निर्म निर्मा निर्मा

ললিভাখ্যা সরিদ্বরা।। সাগরা। দ্ফিণাৎ পূর্ব মহাদেবাবভারি তা। বৈশাখ্দুব্লপক্ষন্য ভ্তীযা-याः नद्रस्य यः। ऋर्ग्रादेष वानि छ। ना-नः म मञ्जूममनः वुरब्धः ॥ विनि-**छायाः পূর** शेख्न जगवामान भर्न-তঃ। ম্বৰ বিষ্ণু লিহ্দ্ৰূপী ভত্ৰান্তে ভगवान् इतिः ॥ विविভाषाः नतः সাত্বা দ্বাদশ্যা শুল্লপক্ষকে। ভগ-वल नमाक्श (या यहार भन्नाम-শ্বর•॥ স যাতি বিফুভবন• শরী-রেণ বিরাজতঃ ॥ ইতি কালিকা-श्रुवारा ৮) वर्षायः ॥ क्ष्या (गा-পীবিশেবঃ। যথা। অথিল রসঃ মৃত মূর্ত্তি: পুস্মর কচি কদ্ধ তা-্বকা পালিঃ। কলিত শ্রামা ল লিতে। রাখাপেুযান্ বিধু জঁ০তি ।। ইতি ভক্তিরসামৃতসিদ্ধ:।। ললি-छ। माग्रवा निवा शमा छम्। क भूयस्य । इंडि ७ छोकायाः कीवः लायामी॥ उन्।ः यक्षणः यथा। या पूर्णा रेमव नानिजा नानिजा रिगव दाधिका । এडामा महद्रः नाखि त्रडाः त्रडाः हि नाद्रम् ॥ ইতি পাঘে পাতালখণ্ডে রাস-लीलायाः नाद्रमः भुष्ठि श्रीकृषः वाकाः॥

वविजामध्यी की जामुमुद्रमध्यी । তত্ৰ স্কুটী বুত কাৰ্য্য । মথা ভ-বিষ্যে। ভাদেু মাসি মিতে পক্ষে সম্ভন্য • নিয়নেন যা। দ্বাদ্ধা শিব• লেখবিদ্বা মণ্ডলে চ সহাধিক ।।। भूकाराह छमा जम्या मूझाभः रेनव विन्तरञ। इन अक्टी तु अरदन था। **७**•। इंडि जिथ्रामिडङ्गु•॥#॥ **७**-बिधिर्थथा। उजारनी बिखिवाहन शूर्ब-कः मक्रवः अर्याप्राध्य त्राप्रकारि ভাদেমাসি শক্লেপকে সপ্তব্যান্তি-(थो यावर्জीवनभर्य) छ॰ अमृक (गा-ত্রা শ্রীমদমুকী শিবদুর্গাপুীতিকা-না পুতিবধীবৈ ভাদুশুল্ল সন্তম্যাণ गलभारिएरवजा भूडा भूईक निव পাৰ্বতী পূজা যাবজ্ঞীবন ডোর-ধারণ ভবিষ্যপুরাণোক্ত বুভকথা শুবণকাপ লালিভাসগুনী বুভমহ• করিষ্যে। ততঃ সহল্পসূক্ত পঠিত্বা नाभान्।। र्घं विधाय गलनानीन् भः भूका ज्ञम्बा दिकः विशाय মণ্ডলাদিষ পূজা মারভেৎ। ততে। **थ्यादा चिन्त्रमि भूझ• म**खुः मान-সোপচারৈ: সংপ্রু অঘ্য সং ञ्चान । नुनर्भ । ज्ञाबा इत्य । निवभूकाविधिना निव॰ मूर्गाभूका-विधिना मुर्गाक यथा मञ्जूषा हारितः

ं जःभ्का जावदगस्यान् भृह्रायः । **एटा २३** छियक छात्र हे। हूर्या न निक्र भिवनुर्गाच्या अर्गाद्वा ভৎ ডোরক বানকরে বদ্ধা ভোদ্য मूटम्बा कथा॰ मृत्याट । यश्कना-नि मन्। ७८७। मिक्शि मन्। ८ ॥ 🗱 ॥ जय कथा। 🗐 कृष्णे देवा है। লোমশো নাড়দেব্যিম্পুরা নাগভঃ পুরা। সে। ২ ছিতো বসুদেবেন দেব-ক্যা চ যুৰিষ্টির ॥ উপবিষ্টঃ কথাঃ পুণ্যাঃ কথ্যামাস বৈ তদা। ততঃ কথবিতৃ ভ্ৰ: কথা নেতা পুচক থে ॥ কংসেন নিহ্ভা: পুঞা জাতা জাতাঃ পুনঃ পুনঃ। মৃতব্ৎ সা দেব। कि दु॰ भूध म्हरूचन मूहिया ॥ यथा इन्द्रम्थी भीना वज्व नल्यभ्या । ंख्या पुः (मवकी छात् भूधमृः(थन ছু:থিতা।। পশার্ছাণ্যুতা সা তু वज्राक्रयभू धिका। प्रानव (मवकी प्तिव **ভ**विष्ठाम न मः भयः ॥ प्तिव-कुरवाछ। का मा हन्मुमूथी मीना वज्व नहरुत्या । कथः ठीर्न्तु अगाक् তস্যা: সন্ততিকারণ ৷৷ সপরী मर्भम्बनः भो जाग्राद्वाग्रदर्कनः। लागण উবাচ। অযোধ্যাया॰ প্রা রাজা নহংষা নাম বিশুক:। তস্ত बारका महारहती नामा हन्द्रम्थी॥

প্রিয়া॥ পুরোহিতন্য তল্যৈর পত্নী नाला ह नामिका। उत्या तानीपृह-श्री जि: म्पृहनीया भद्रायाद्र ॥ व्यथ-তেপি চ মিত্রিণ্টো স্নানার্থণ সর্যুজ-ला। शास्त्र शासास उदेवव वदाणा নগরাস্কা: ।। সাতা স্তা মণ্ডল•চকু ত্তমধ্যে ব্যক্তক্পিণ । লেখ্যিত্বা শিব॰ শান্ত মুম্য। সহ শঙ্কর ।। গন্ধপুয়াক্তৈ ভ্ক্ত্যা পূজ্যিত্বা যথা বিধি। পুণন্য শিরসা ভক্ত্যা দৃষ্টা স্তাভ্যা• বরজ্রিय:।। কিনিদ॰ ক্রিय-তে সাধুঃ কথ্যতা॰ यদি রোচতে। কদা বা ক্রিয়তে কিং বা ফলং সম্যক্ ভদুচ্যতা ।। জ্রিয উচ্:। পূজিতে। হ্মাভি রেত্ফিন্ পাইত্য সহ শ-হুর:। বজা সূত্র মিদং শুভু শিব-স্যাত্ম। নিবেদিত:।। ধারণীয় নিদ• তাবদ্মাবৎ পাণম্য ধারণ। তাসা-ন্ত ভদ্বচ: শুদ্ধা তে কৃত্বা নানসং তথা। কৃত্বা চ সন্মতি তত্ৰ বদ্ধা দেশ্র্ডাণ সুডোরক• ॥ **ভত তা: স্ব**-গৃ ় জ্মা: সথীভি: পরিবারিতা:। কালেন নহতা তৰ বিষয়ত তঘ্ত• न्भ ॥ भुमख्या हन्द्रमूथ्या विम्रउक मृत्पात्रकः। मृजा किन्छिम् हादारिजः ना वज्व क्षवक्भी ॥ नाला ह अर-कूषी बाजा प्रमाक् व्दशालना ।

ভথৈৰতে চ মিত্ৰিণ্যে জাতে জাতি यदा जला॥ मञ्जूष ज्व खेळा 🐠 **७ क मगरः भू**नः। তদ্বিনে তদ্বিন পাণ্ডে পুন: কালে চ তে নৃতে 🗓 অদৈব্যাতৃকে দেশে জাতে গোস लमझ्री । রাজ্ঞো জায়া বভুবাথ পৃথীনাথস্য সা পুন: ॥ ঈশ্রনী নান বিখ্যাতা সাতু রাজ্ঞে৷ ২তি वल्ल हा । जशिभील विवस्तानीन्ता র্য্যা ভূষণনানিকা ॥ পুরোহিতস্য কালেন অকুটী বহুপুঞ্গী। জাতি সারা চাপ্তপুত্র। তথিব চাম্তপুত্রা।। পুন নিরম্বরা পুীতি বভুবাথ তথা षिषा । ততে यत्री भू धारमकः भूम् छ। ভঞ্রোগিণ।। নবব্যে তু পঞ্ত্ব মগাত্তর যুধিষ্ঠির। তত্র তাং ভূষণা <u> मुश्चे माजगागा छिद्वः थिङ। ॥ স्वि</u> ভাবাদভিয়েহাদঙ্কপুত্র সমন্বিতা। অযুক্তাভরণা নিত্যা বভাবেনৈব ভ্ विञा। जा मृक्षे भूञिी जन्मा পুজ कृत्विभन्नी क्या। उटा गृहः পুেষণিত্বা তাং স্থীং ভীবু নৎসরা ।। চিত্তধানাৰ ব। রাজ্ঞী তষ্যা: পুত্ৰৰ প্তি। হ্তা হতাক যে পু তাঃ পুন জী বন্ত্যনান্যাঃ ।। বহুপু এ बीववद्मा भुगुका छत्रता कथा। मानः स्विकः लपु उपिर हो।

দানিনী হথা ।। ভূষণোবাচ। ভানে । নাসি সিতেপকে সভান্যা আলি বা-बाय। मु: इर बिद (स्थि । इ) मुख-(ल 5 महाश्विकः॥ मः भुष्य विविद् भारत दिवासार यह विकास । ज (रव हि बुज • भूई • द्वा अह भया क-ভ॰॥ তন্ম্যা চব্লিত•ভক্ত্যা তেনাহ• সৃ্ছিরা সথি ৷ তথা না∋রি**ড∙ স**ং ম্যক্দর্প থ্যাত শরীর্যা ।। তেন তে সন্ততি শ্বিয়া রাজ্যে হপি সতি দুঃ-থিতা। পুভাব এব: কথিতো বুক্ত-স্যাস্য ন্যা স্থা।। অর্জ তভ্যু• পুদান্যানি তস্য ধ্যান্য সুবুতে। স্থি ভাষাৎ পুতীয় হ' নাত্র কার্য্যা বিচারণা।। সংপ্ষ্য শহরণ ভক্তা। करत रक्षा मृत्फातकः। गावक्कीयः भया जादः भितम् । ज्ञा निष्पि जः ॥ ইত্যেক সময় কৃত্বা ভক্ত: পুভূ-ভি ডোরক। যণ্ডাগ্র্যা বাপি করশা থাস্ গারণা। শস্করক্ষোম্যা সাদ্ধা নৌগ্রণ রংছত তথা। তামু-পাত্রে পুঙিউপ্র ক্রান্থাপপা-मराय ।। भागमा निष्ठेकी क्षत जक्रा ভোজ্য° পুষত্বত:। সংগ্রেতান্ভোজ বিত্বা তু স্বৰণ ভুক্তীত তৎপরণ।। নওল সোমসদৃশ শিবস্যাত্ম নি-(विष्ठ । ইতে।व भुजिङ्ग्र वुड

দান ফল ততঃ॥ বভ্ব সুপুজা माक्षी के भेती जुवान भेती। युजनाः भा श्रुजातम मुभुधा द्वश्र (स्वकि॥ ভবিষ্যাদি ত্রিলোকেশ পুলঞ্চ জ-নযিষ্যাস ৷ ইত্যেব শুবেধিত্বা চ विववाम मूनि उपा॥ कगान अशुवः পার্থ ন্যাপ্যেব ভবোদিত। যাঃ জ্বিবঃ শাচরিষ্যন্তি রুত্তমেভদ্মুখি-ষ্ঠির।৷ জন্ধটাখ্যু প্লবস্থাখ্যু দেব-ক্যাচরিত শৃভ। তাসা সম্ভতি বিছেদে। ন কদাচিন্ড বিষ্যৃতি॥ স্ত্রি-य रिक्साव्यविष्ठ वुउस्माउट मूथ-भुरः। अत्रिन् लाक मुथः जूङ्ग याग्रेडि लिवमन्द्रिशाया ऋङ्गी वुङ भिष् भ्रवणी मामङ (पदः विভाव। इनस्य ह एकः निशात। ভক্তা করোতি কলুষৌঘ বিঘাত দক্ষ সাধী সদা ভবতি শোভন জীববৎসা ॥ ইতি ভবিষ্যপুরাণে बङ्गीवुडक्था नगांधा ॥ 🕈 ॥ मেचद्रागमा द्राणिगी। यथा। ब-निञ मानमी लोडी नाही (पव-কির্বা তথা। নেঘরাগস্য রাগি-(ग्रा ভवडीमाः मूमध्रमाः ॥ ই नकी उदारगामद्रः॥

नंतः क्ली काठीकनः। ইতি भक् हिमुका॥ नवकः॥ नामक्किकः॥

देव । इंडि ब्राजनिर्वणेः॥ भू॰ जिमः ॥ विनामः ॥ **ए मन ।। द्राम भु**धः। इं जिल्मिनी ॥ অত বিনাশস্থানে বিলান:। इेडिवियः (इन्हिन्दुम्हा। काला छनः । यथो। जञ्जारमनिययास काम्रा কাঁগ্রাদ্ব বলং। ইতি হেন্চন্দু:।। লাবানামাপফী। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ ववश्रः ही यनामथ्याख्यिकपूर्यः (छरः। ७८ भर्य)। यः। (ए**रक्रमृन**• २ গ্রিস জ্ঞ ১। ইত্যময়ঃ ॥ প্রিপুস্-ন° ৪। ইতি ভাবপুলাশঃ।। লব-दक १८। इंडि मक्द्र हावनी ॥ न-বস্কলিকা ৬ দিব্য পশেখর ৮ লব ১ গ্রিপুয় ১০ কচির ১১ বারিসম্ভব ১২ তীক্ষপুদ্ধ ১৩ ভূ-कात्र : १८ भी बीशक मुन् : १८ हन्सन পুত্র• ১৬। অস্য গুণাঃ। শীতল হু• । তিক্তবৃ॰। চক্ষুধ্যব্ব॰। ভূক্তরোচন-ত্ব-। বাত পিত্ত কক নাশিত্ব-। তীক্ষর । মূজ ক্ছাপহর্ক । ইতি ब्राङ्गनिर्घण्डः॥ आध्यानानाङ् मृल-मुद्रः । मीशनद्रः । वय्द्रः । हेडि রাজবল্ল**ভ:** ৷৷ অপিচ ৷ লবল্প ক-টুক ডিক্ত লয়ু নেত্ৰহিত হিম ! भीপनः भावनः बह्यः कक शिखान् নাশক্থ।।তৃষ্ণা ছার্মি তথাধ্যান

শ্লমাশু বিনাশযেৎ। কাসং খা সঞ্চ হিত্তাঞ্চ ক্ষয়ণ ক্ষপৰতি প্ৰুৱণ।। ইতি ভাষপুকাশ:।।

व्यवस्य क्रिव्यवस्था इंडिंग्सः अञ्चादनीः।

मवक्किनिका खी मवक्। हैि ब्राजनिर्घण्डः॥

লবহুলতা স্ত্রী পুত্রবিশেষঃ।যথা। ল লিও লবস্থলতা পরিশীলন কো-यन यनगमशेरतः। यथुकतं निकत ৰুয়ন্বিত কোকিলকুজিত অঞ্জস-টীরে ৷৷ বিহরতি হরি রিহু সরস বসংস্ত। নৃত্যতি যুবতিজনেন সম• न थे विद्रहिजनम्। मुद्राप्त ॥ इंजि जगरनवः।। द्वायाचाः नथी विष्णयः व्यवग॰ द्वी ক্ষাররসযুক্তনুব্যং। তত্ত্ शक्षविषः यथा। (वीवईनः ३ रेमः) ে হ্বৰ• ২ বিট• ৩ ঔভিন্ত সামূ-मु १। उथारि। माम् पु यकु नवन मक्कीव विमन्नक उट् । रेमक्कत्वा **হত্রী শীতশিক নানিম্ছঞ সি**ু ফ্জে ।। রৌনক বসুড পাক্য বি एक क् डाक घर । (गोवहाल १क कः एक । इंड्रमतः ॥ (ह्रस्य । यथा । লবে। ২ভিলাবো লবণে। ইভি ठागबः ॥

वदाः शृ निङ्ख्नः॥ दाकनः॥

বিশেষঃ।। রসবিশেষঃ। ইভিমে-मिनी ॥ পृथिवऽशिखनवाङ्काराह्नव-ণ:। ইতি চক্রপাণিদত্তকৃত দুব্য-গুণোপরি শিবদাসীযটীকা ॥ **७८ म**र्य्यायः । मर्हेः २ । जम्र ७गाः । লবণো ক্চিকৃদ্সো হগ্নিদাযী প-চনঃ স্বাদুকর চ লারক চ । রসি-তে। নিতরা় হরাঞ্ পিত্ত শিঙি मानक मनाजि महलाही ॥ इंडि রাজনিয়ন্টঃ।। অপিচ । লবণঃক্লে-मन खेकः भाष्ट्या ही भनः नदः। तिथा कठिकदः भागती मृष्टि भूक-श्दा वयः॥ व्यन्धाः वराः स्था-খনো ৰুচ্য: পাচন: বফ পিত্তर:। शुःखु वाज्ङ्बः कायरेमाथिका गृन्-ভাকর:।। সো হতিযুক্তো হক্ষি পাকাস্ পিত্ত কোঁ% ক্ষ্যাপকৃৎ !! ইতি রাজবল্লভ: ॥ 🗱 ॥ লবণাসূর-भा विवद्गन यथा । भूर्त्व क्छगूर्भ রাজন্ নৈতেশ: সুমহামতি:। লো-नानुष्या १७वरब्बाक्षा सप् नीम নহাসুর:।। স নগু ব্রিফ্রিসম্পল্লো ধ-মেচ দুসনাহিভঃ। বহুমানাচ ক-पुन एख खन्या खुरा वदः॥ र्वः म्वाहिनिष्ठ गराविर्यः गराशु-ভ । দদৌ মহাত্রা সূপীতো বাক্ত रेडजम्बाड स् ॥ यावय मूरिवण्ड वि-

रिभूमं न विकासा मंशामूबः। जाव ह्लः अवरः महारम्भा मान भिष्ठ-তি॥ যুক্ত বৃ। মভিযুঞ্জীত যুদ্ধাৰ বিগতজর:। ত॰ শ্লো ভয়সাৎ কৃত্বা পুন রেষ্যতি তে করণ।।এবং ক্-माबत नज्। ज्य এव सहाम्तः। भू ণিপত্য নহাদেব বাক্য নেতদুৰাচ হ। ভগবন্মন বংশদ্য শ্ল নেতদ-নৃত্তন । ভবেৰ সভত দেব সুৱাণা भीखाता क्रिं॥ उ॰ तुतान मह् (मवः नर्बज्डणिङः भिनः । भुजुः-বাচ মহাদেৱো নৈত্ৰদৰ ভবিষ্য-नि ॥ गाजुः । तिकता वानी मर-পুনাৰ ক্তা শ্ভা। ভবতঃ পুল নে-विक मून (निष्ठक्ष विष्ठि॥ यादर • স্য তে। অবধ্য: সর্ব ভূতানা• শ্ল राउ। ভবिষ্যতি॥ এব॰ মধু বরু **न**क्। (नवार म्गरनक्त ड॰। **७४**न॰ নো ংনুরশেষ: কার্যানাস সূপুত• ॥ उमानज्ञा महा जाना निया बही-নসীতি যা। বি**খা**বসোরপত্যু সা প্যনল্যা॰ মহাপুভা ॥ তস্যাঃ भाषा सङ्गवीर्यं। नन्ता नान माकः ণ:। বল্যোৎ পুভ্তি দুষ্টাত্মা পা नात्वाव मवाहत्र ॥ ७ मूण पू विनी उन्छ म्थ्रा काव जनवि जः। सवः॥

न (भाक मार्शिए नहिन कि किए-<u> द्वी८ ॥ न विहाय हेम॰ लाक॰</u> शुविष्टे। वक्गालयः। भूगः निविभा नवान वद्रः छोत्रा नहावप्रय ॥ म পুভাবেণ শ্লম্য দৌরাজ্যেনার্থন उथा। महाभग्5 लाका॰ जीन् . বিশেষেণ চ তাপনান্॥ আছার: লর্মবানি বিশেষেণ চ তাপদা:। षाहराद्रा होषुडा निष्ठाः वास्ता न-धार उथा।। इदा वल्मह्मानि वि.-र याषु मृगाअजान्। नानुवारीकत প্রতি নিত্য নাহার মাহিকে।। ভদ্ৰুহা রাঘবেং বাক্য মুবাচ স নহা-মূনান্। যাতথিব্যানি তদুংক। ব্যপ-গছত যে ভবং ॥ পুতিজ্ঞায ভদা তেষাং মুনীনা মুপুতেজদাং। স ভূা-তৃন সহিভান্ সর্বানুবাচ রঘুনন্দনঃ ॥ (का रुष्ठा न्वगः वीवः कन्। नः স বিধীযতা । ভরতম্য মহাবাহো শত্মস্য চ ধীমতঃ।। রাষ্ট্রেণৰ নৃ-ক্তন্ত ভরতো বাক্য মবুবী**ং। অহ**-(मन' विध्वतामि ममाः म विधी-যতা।। ভরতস্য বচ: শুদ্ধা ধৈর্য্য श्लीर्गं **मग**न्ति छ । लक्ष्मगदद्र छ उ-**इत्रो स्ट्रा** लोदर्ग नामन ॥ मजुद् खुनुशीषाकाः भुशिलका नदाविलः। क्ठकर्मा गरावार मंध्रामा तयूनन-

न ॥ आर्थित व् भूता म्नत द्रायाः ধ্যা পরিপালিতা। সভাপ হ্র-(य कृदा व्यार्ग्जागनन गुछि॥ পুেষ্যে ন্যি স্থিতে রাজন ভ্যঃ ক্লেশ মাপু যাৎ। তথা বুরতি শতুংঘ রাষ-वः भूने ब्रवुवीट ॥ এवः ভव ब्रू का अट স্থ ক্রিগতা॰ মন শাসন । স বৃ হ্বা নগুসুত লবণ পাপনিশ্যে ।। রাজ্য পুশাধি ধর্মেণবাক্য নে যদ্য विकास। यहा ७ युषा माकाञ्चन् यहि कन्द्रिः नमास्ययः।। उमा मृतः গৃহীত্বা তু ভমা রক্ষ: করোতি হি। ञ जुः भुक्ष माम् व उनागुधविनाः क् उ॰।। অণুবিষ্ট॰ পুর॰ পূর্ব॰ দারি-তিষ্ঠ ধৃতাযুধ:। অন্যথা ক্রিয়নাণে **जु व्यवस्थाः न ভবিষ্য**তি ॥ ততঃ পুভাতে বিনলে তমিন্ কালে স রাক্ষস:। নির্গতস্ত পুরাদ্বীরো ভ क्याहात भुराहिनः ॥ এउनिम-खात वं न छेडीयं। यमुनाः नहीः। তীর্ন নগুপুর দারি ধনুয়াণি রতি-श्रेष्ठ ॥ एटा १क्निवित्र भूरिश क्दकर्या न ताक्तनः। जागह्यङ् সাহসু পুাণিনা ভার নুষ্দ্ন্।। ত তো দদশ শত্যু স্ভিত দারি ধ্তা-যুধ । তমুবাচ ততো রক্ষঃ কিন্নেন 

হসতক্ষ মূহ মূহঃ। শত্রো বীর্যান मलाता (द्रावाम्नुगुकामृह्यः ॥ छ-বাচ চ সুসংক্রদ্ধঃ শত্রমঃ স নিশাচরণ । (याक निहानि मूर्ज्य वनस्युका॰ ত্বশা সহ।। তচ্ত্র। ভাষিত তস্য শতুংস্য মহান্তান:। কোৰ নাহার: খত্তীবু তিষ্ঠ তিষ্ঠেতি চাবুবী ।। অভিতন্ত পুন তেন শত্যেন নহাত্র-न। नद्राः काश्रमः यूक्ता यूकाय म-নুপস্তিতঃ।। আকর্ণাৎ স বিক্ষ্যাণ তত্মনু ধহিনা॰ বর:। স সুনোচ নহা-ৰাণ লবণস্য মহোরসি ॥ উর শুস্য विषार्यग्रम् भ्वित्यम त्रनाजनः। भू-नরেবাগমভূর্ণ নিক্ষাজ্ञ লনন্দ্র ।। শত্র শরনির্ভিয়ো লবণ: স নিশা-চর: 1 পপাত সহসা ভূমৌ বজাহত इवाहनः ॥ ७६ मृनः नङ्ग्विः। হতে লবণ রাক্ষসে। পশ্যতা সর্ব (प्यानाः क्नून) वण मनुगार ॥ হতে তু লবণে দেবাঃ সেন্দাঃ সাগ্ৰ পুরোগনা: । উটু: সুনপুরা<sup>,</sup> বাণী• শত্রু শত্তাপন।। বরদান্ত নহা কাল্লিণ স্তভ্য ননোঘ• দর্শন• হি ন:।। দেবানা ভাষিত শুদ্ধা শ্রো নৃদ্ধি क्ठाछानः। भुकु।वाह सहावाएः भञ्भः পुरठाञ्चवान्॥ हेरा मधूश्री

त्रन्। सल्तारत्य निर्धिज। निर्वणः श्राश्चेष्ठीयु (सर्व (सन्छ दद्रः शदः॥ **छ (एवा: श्री अमन्या वार मिर्डा**व द्राध्य • । ভবিষ্ঠ • পুরী রম্যা শূর-সেনা ন সংশ্বঃ৷৷তে তথোজ্য মহা আনো দিব নাক্কত ভদা। শত্রুয়ো-িপি মৃহাতেলা স্তা• সেনা• সমুপান-্বং।। সা সেনা শীঘু নাগছং শুদ্রা শতুমুশাসন ৷ নিবেশন্থ শতুমুঃ শূাবণেন সমারভৎ ॥ তা॰ পুরী॰ দিব্যসন্থাশা নানা পণ্যোপশো ভিতা । নিরীক্ষ্য পরমশ্রীতঃ পর হর্ষ মূপাগম্থ।। তস্য বৃদ্ধি: সমূৎ शमा निरम्भ। मधुद्राः शुद्रीः। द्राम शामि निदीक्ष्रिक् वर्ष चानम ञा-়গতে।। ইতি শ্রীরামাযনে উত্তরকাণ্ডে এক্ষষ্ট্যাদিসগুত্যভাষ্যায়েভ্যঃসঙ্ক-লিতা। # ৷৷ লবণসমূদুসোৎপত্তি र्यथा। विब्रह्मा मा त्राह्मा युक्ता थ् द्वा वीर्य मस्मायकः। मस्मा वज्य ठेविव धना গন্তৰতী সতী।। তছে। তত্ৰ সূথা-সীনা সার্ভ পুলৈক সপ্তভি:। এক मा इतिगा मार्खः व्नतात्रात्र मुनिर्कः ति ॥ विक्रहात्र शूनः माधी म्यादा-স্ক্র নানসা । এত্রমিন্তরে তত্র নাতু: ক্রেডে জগাম হ।। কনিধপুত্র ন্ত দ্যাক ভ্ৰাত্ভি: পীডিতোভিয়া। ভীত ৰতন্য দৃষ্টা তত্যাল তাং কৃপানিখি:।। ক্রোডে চকার বাল• मा कृत्का द्वापागृहः यतो। भूताकः বাল সা সাধী ন দদশান্তিকে প্রিয়ণ ।।বিললপে ভূশ তর শৃসারাত্ও নানসা। শশাপ স্বসূত কোপাৎ नवर्गामा ভविष्यु । कमान তে জল কেচিৎ নথা দিষ্যন্তি জীবি-नः। भागाश महान् राला क यानु म्हा मही उल् ।। शह्यु ह मही ह्हा ज्युष्वी भ॰ मानाहत्र । शिक्ति निवज যুখাক ভবিষ্যতি পৃথক্ পৃথক্ ॥ बील बील खिछि क्दा छिध्छ ज्थिनः मुजाः। द्वीलञ्चा निर्मा ভিশ্চ সহ কীড়ন্ত নিৰ্জনে ॥ কনি-ধ্যে মাতৃশাপাচ লবনোদো বভু ব হ। ক্ষিষ্ঠ: ক্থ্যামাস মাতৃশা-পঞ্চ বালকান্॥ আৰু শু : থিভাঃ नर्र्व भाजृङ्गान्क वालकाः। मुद्रा दिवद्रन॰ मर्ख भुक्रण श्रंद्रनी उनः ॥ পুণনঃ মাতৃ করণ ভক্তি ন্যুাত্ম-कन्नताः। मधनील ममूनुम्म मध-তস্থ বিভাগশ: ॥ কনিষ্টাদ্রপর্য্য-स्र दिख्न दिख्न मत्न। न्यान्य जुद्रा जिल पंचि पृथ डलार्ग्दाः ।। वाउराक कन भृश्ता मनार्थक ভবিষ্যতি। ব্যাপ্তाः ममु माः मेखिद

সগুদ্বীপা॰ বসুজ্বাং।। ইতি বৃক্ষ-रिवरार्खनीकृषक्षाचाराए । वाष्त्रायः লবণ: ত্রি **ল্**বণরসমূভঃ । ইতি (मिनि ।। वादगुर्यक्रकः ।। खी गशाक्यां उ टावनिक माहा মুতী। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। লবণথানি: জী সাম্রলবণোৎ-প ভিস্থান । उৎপর্য্যাयः। ক্না ২। ইতি হেন্ডন্দু:।। লবণাকরমাত্রঞ্চ **ল**বণত্ণ• ল্লী তৃণবিং**শ**ষঃ।তৎ পর্যাদঃ ৷ লোণভূণ ২ ভ্ণামু ৩ পট্টিত্নক ৪ অনুকাণ্ড ৫। অস্য खाः। मक्रीयद्वः। यसदः। क बागद्व । अखन्द्रदे । अध्यक्षिके রত্ব । ইতি রাজনির্ঘট:।। ज्ञवंग्वयं क्री रेमक्कवं विष्ठः क्रव्यक्ष । ইতি दार्जनियंगः॥ जी मानार्थनवना पि वा वगरधन्ः নিমিতিধনুঃ । ভিদ্বিরণ যথা। रहार जावाज । **न**वगरवनुः वक्तरासिः তা॰ নিবোধ মহীপতে। অনুলিপ্তে मरीशृष्ठि कृष्णकिन करणान्दात्र ॥ (थनुः लवननयीः कृदा (वाडमन्डः ্স:যুতা । বৎস চতুভী রাছেন্র इक्रुभाना क कात्रयथ ॥ स्रोवन ं **मूच म्का**णि शूद्रा (दोभऽगया खण्) ा मूथः ७५२रः ७भा ५डाः क्व

भया नृभा। किलाः भक्तया बाङन् द्वापः गंक्षमय उथा। निःख बङ्गरा क्यंत्रां करने श्रामाती उथा । धिथन मृक्रकाछी চ नवभी उ . মবা: ভনা: । সূত্রপূছা• ভা<u>নু</u>পৃষ্ঠ:• দভারালী প্রস্থিনী 11 কাংস্যো পদোহাণ রাজেন্দু ঘটাভরণ ভূষি তা । সুগর্মপুল্ল ব্লৈম্চ প্রয়িত্ব। বিধানতঃ॥ আছাল্য বজ্ঞাখন বু।-क्रागाय निवास्य । श्रम्भ वाश्व म-काछो राजीभाउँ उपान्य ॥ নক্ত গৃহপীডাক সর্বাল পুদা-नास्ट। विकाय माध्रुवाय जनी-नाय ह शीमरङ ॥ (यह (यहाक्दि-দুবে শো্রিবাবাহিতার্যে । ইদৃ-भाग भूमा ज्या ज्यामर महिल न्-भ ॥ इ. धरा भ्या सम्बद्ध शृह्र (स्था-পবিশ্য চ। ছ এ:কাপানছৌ দেযৌ নুদুকা কর্ণপ্রকে ।। আছাদ্য বস্ত্র-युष्यान मञ्जिषा कनकः मर्दि । প্রোক্তেন বিধানেন স্বশক্ত্যা কন-কেন তু॥ ইমাণ গৃহাণ ভো বিপু ক্ৰুৰূপে ননোশ্ব তে। রসজ্ঞা সর্ব ভূ जानाः **महा**प्यनमञ्जा ॥ कामः কামদৃথে কান। কারধেনো নমে। শ্বর তে। দল্পা ধেনু
 লবণেন একা-হ শৈচৰ ভিষ্ঠতি ॥ স্বয় তিরাত্র'

विष्मुत उरेशव नवनामिना । तर-মেণ শতেনাথ শ্বশক্ত্যা কনকেন ত্ ॥ দল্ভেমা• ৰুগ মাপ্সোতি যত্ৰ দে÷ त्या व्यव्काः। य डेम॰ मृत्या छ छ।। भावत्यवाणि भागवः ॥ गृहारः भविणापाञ्जा कपूरमाकक गह्नि া ইত্যাদি বারাহপুরাণে খেতো পাখ্যানে লবণধেনু নাহাত্ম্য।। यावगममः शुः (लागात्रकातः। इंडि बाजिन्धिकः॥

णदगकातः शुः (णागात्रकातः। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

ञ्जी ननीटिनः।। नीखिः। ইতিনেদিনীশদরত্বাবলেরী।।মহা-জ্যোভিমুতী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ मानार्थन्यगामि-लवगाठनः নিঘিতপর্ভ:। যথা । অথাত: मः भ्वक्रामि नवगावन मूखमः। যৎপুরাতা নরে।লোক পুাপ্নোতি শিৰসংযুক্ত ৷৷ **উত্তনঃ যোডশ দু**৷ नः कडावता नवनाहनः। सथ्रसः भा उनस्थान हर्ज् तथनः य्उः । विख्शासा यथा मका पूर्वाना-দুদ্ধু ন্ত কারযে । চতুথা শেন বি-कञ्चान् भवं जान् कावत्यर मृथक्।। रिक्षान পृर्वद अर्ग्यार वुकामी

न् (वाकशावादितमद्द ॥ ज-द्राः नि कामस्वारी । उद्याद नि-বেশ্যেত। স্ব্যাজ্জাগর ন্ত্রাপি দান মত্র নিবোধত ৷৷ দৌভাগ্য রসসম্ভা হতো হল লকণো तमः। उनाचाकरद्दन हनाः भाहि शिशामरगाउम ॥ यमारमद्रमाः मर्ख (नाटकहै। नदगः विना। श्रि-यक मिराया निंडाः उद्याद मान्ति-शुरा ज्वा। विकूपक ममुक्ठ. যমাণারোগ্য বন্ধন। তমাৎ প-র্বতক্পেণ পাছি সংসারসাগ-द्राष्ट्र।। ञानन विधिना यस मम्।-ल्लवनश्वं उ॰ । উभारनात्क वरम् কল্ল• ভতো বাতি পরা• গতি•॥ ইতি মাৎস্যে ৭৭ অধ্যাयः॥

लवनाक्षिष्ट॰ क्ली नामुमुलदन•। ই**डि** রাজনির্ঘণ্ট:॥

नवनात्रक की लागातकातः। इंडि **त्राक्र**निर्धः।।

वयाखन क्री रेमक्रवः। इंडि ब्रङ्गाना ॥

नरणाय की लागात्रकातः। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ !!

नवरामः भ् नवगममुमः। ইত্য-गदः ॥

नाक अर्थना। ज्हा क्रिया उन्न अर्थाः ॥ व्ययन क्षी (हिन्न । इंडा प्रकार

वरनी जी क्व वृक्ष विषयः। (वाना। इंडि ভाषा। उट्शर्य)। यः। शुरेयाका ২ অগ্রিমা আ ইতি শব্চন্দ্রিকা॥ वदनी खी कनवृक्षविष्णयः। (ना यां इंडि ভाषा। उद्भर्गायः। जूगक्षप्वाः २ मान्तुः ७ (कापवादस्वा) ৪। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ তস্য কল ख्पाः । वृत्राद्धः । मुगक्तिद्धः । **द**फ वाजनागिद्या ३७ द्रावदल्ला 🕠 ৷৷ লবলীফ্র মস্রোশো বাতপিত্ত হরু লয়। ইতি কেচিৎ ॥ লবাক: পু॰ ছেদনদুব্য । ইভুগো-নিকোষ:।।ছে নন। ইতি সংক্ষিপ্ত-সারোণাদিবৃত্তি:।। लवानकः नुः मार्वापिः। ইত্যা-फिकायः॥ निवः वि हिमूबः। ইত্যাদি-

লবিত্রণ ক্লী দারণ। ইত্যমর:।।
লশ ক শিল্পযোগে। ইতি কবিক
লক্ষম: ।। ক লাশযতি লশলো
নৃত্যে শিল্প যুনক্তীত্যর্থ: । ইতি
দুর্গাদাস:।।

(कायः॥

नम्तः क्षी त्रम्नः । उट्भर्गायः । गल्गियः २ गृक्षनः ० व्यविष्टः ८ महाकन्तः ६ तत्मानकः ५ । इउर् मदः ॥ तत्मानः १ त्यहकन्तः ৮

ভ্রম: ১ উগুগন্ধ: ১০। অস্যভ্ণা: । व्यव्यवस्थान्य । एक दे । दिक्ष । কফ বাত নাশিত্ব । অশুচিত্ব : ক্রমি ভূদােগ শােফয়ত্ব । রসা र्नद्धा इंजि जाङ्गियं 🕏 💵 👭 ज्ञित्र । **लम्**नस्र द्रामानः म्यापुः गुगत्का मस्तेषषः। अति छ। त्रह कन्त्र भवानाका प्राप्तानकः ॥ य-দামৃত বৈনতেযো জহার সূরস ত্তমাৎ । তদা ততো ২পত্ত দিন্দুঃ সুরসোনো ৎপতভূবি॥পঞ্চিশ্চ রলৈ যুক্তি। রসেনাল্লেন বর্জিত: । उमामुरमान इंजुरका मुवराभा ७-ণবেদিভি: ।। কটুক শ্চাপি মূলেযু তিক্ত: পৰেষু সংস্থিত:। নালে ক-याय डेफिरक्षा नालाला लवनः मृडः মাবীজে ত মধুর: প্রোক্তোরস স্তদ্-खगर्दिन 🤃 । द्रामान। वृन्ह्राभ वृष्यु। चिष्याकः भावनः अतः ॥ রসে পাকে চ কটুক ভীক্ষে মন্তর-का नजः। ज्यमकानक्ट कर्छ्य छकः भिडान् वृध्यमः ॥ वनवर्ग-করো নেধা হিতো নেত্রো রসাযনঃ ।। इत्मान कीर्रज्य अकिन्त विवक्ष গুল্মাক্চি কাস শোফান্। দুর্গান্ क्षानवनाम जंड नगीवन यान कका क रिखा। महा मान

व्यायाग माजभे दाव मजिनीवः भाषा ७७ ॥ इत्मान मध्न भुन ক্ষ স্ত্যুদ্ধেত মিরন্তর । ই 🧿 🖘 वश्कामः ॥ अ॥ जन्ह । लभूनः काब नयुतः कछिता व्रावता खकः ख नुमूयनः॥ इंडि ब्राइंदल्ल छः॥ लम्बः शृ॰ लम्बः। ইতि मदत्राः। वनी ॥

**াষ ক শিল্লযোগে। ইতি কবিকল্ল** ফনঃ॥ ক লাষ্য্তি স্ললো নৃত্যে শিল্ল যুনজীত্যর্থ:। ইতি দুর্গা-मामः॥

नव य अ न्णृहि। ই िक विक्म्न . कमः ॥ य यः नयुडि नयुडि । इंভि দুর্গাদাসঃ॥

नष क स्पृहि। इंडि कविकन्न-क्यः ॥ यः नयजि नयज । इजि **पूर्णामानः** ॥

वयः भू नर्जकः। इञ्जामित्कायः॥ ল্স ক শিল্পযোগে। ইতি কবি-कन्नफ्रमः॥ क नामग्रि ज्ञानाः নৃত্যে শিল্প যুনক্তীত্যথ:। ইতি <u>ष</u>ूर्गामानः॥

লস শ্লিবি।। ক্রীডে। ইতি কবিকল্প-

ख्या 🕸 हिङ ल म्नरमविनाः । । नमा जी इति पा दिङ हात्रावनी ॥ विभिका जी वाना।यथा।नानाः याः शिह्ना थतुं ज जिका जा-मिका उथा। इंडि भय् उन्तिका ॥ लत्रीका की इक्तत्रनः॥वृद्याःम-মধ্যগরস:। ইতি কেচিৎ।।

े সরঃ। ভগ্নসন্ধানকৃদ্বল্যো রক্তপি 🖟 লম্লু 🕏 ও ড ব্রীডে। ইতি কবি-কলুজনঃ।। কিপি সংযোগাদিলো-(भ नक्। दे ७ नगः। ७ नक्काउ। ইভি দুর্গাদ স:॥

লস্ত: ত্রি শ্লিষ্ট:॥ জীডিত:॥ শিল্প-যুক্ত: ৷ লস্থাতো: ক্ত শুত্যুয়েন नियमः। इंडि लखकनमत्युर्भ-তৌ ভরতক।।

वयकः পু॰ ধনুষোনধ্যভাগ: 1 इंडागद्रः॥

वस्ती भुः धनुः। ইতি मदमाना।। वहितः ) स्त्री महाउत्रक्षः । उ८-वर्त्री 🕽 भर्यायः। উল्লোबः २ क-द्धानः **७। ই**তি ह्महन्तुः भद-ब्रङ्गावनी ह।।

लक् क ए मर्भात ॥ व्यक्त । इंडि কবিকল্পদম: ।। ক ড লাক্ষতি লক্ষ্যতে ঘটা লোক: পশ্যতি। विश्च युक्त करता वी वा । ইতি দুর্গাদাসঃ॥

क्रमः।। লদভি। ইভি দুর্গাদাস:।। | লক্ষণ ক্লী ব্যাজ:।। শরব্য•। ইভি

विविधी।

जक ही बी मणायुक्त था। লাক ইতি ভাষা। ইতি দেদিনী।। लक्षक की लक्षविष्ट।यथा। लक्क क नाम लक्क या विश्व गाम् ना-র্থান্য সংস্কাবতি শক্তম্ভ বভাবেই। তত্র তল্লক্ষক নাম তচ্জি বিধুরণ यहि।। यानुनार्थं मञ्जूबिक रया। ন শক্ষেতিত তদেব তাদুশার্থে লকক যদি আদুশার্থে শক্তিশ্ नाः ভবেट । रेमझका गरुः जुब्रशानि मचिक्कानि लदशामाविव **जुद्दगानावित गङ्गा এ**ः। शङ्गान-यञ्च ভীরানাবসক্ষেতিভাঃ। তৎ সম্বন্ধি নীরাদিশভত্বেন পৃহীত। এব তীরাদ্যস্থ বোধ্যন্তি তর লক্ষকা এব ॥ অপিচ । তদেব॰ विविध लक्ष्मभावडुग्लक्षकः नामा **णि कर्**यार्थानिष्डनान्तिकविश्व নিত্যর্থ: স্যাদেতন্দ্র ভীরাদিল का हा उसा शका दिश्वन । उद्योन । **তী**রান্যনুভবে ভবেদ্ধেতু **স্তদোক্ত** ক্ষেণ লক্ষ্যনাং বিভাগো নত্ত্বে-ভদন্তি ! তীরাদন্ত্রণ বোধণ পুতি **जीतामिन्यक्राद्योग्य भम्छानम्** আগ্রেন হেত্তখা **লফ**কানা মন-नु जावकदाः ७ बता नदा रेम ३५

স্পেদিত্যাদৌ **শ্বে**য়ন দহন मित्नव। गञ्चायाः धाष च्छारही विक्टिंग जीवामिना मार्पानगृशी-ভাস-লগকসৈত্র সন্তম্যথাধেশভূ স্বন্ধবোৰ পুবিস্টত্বানিতি সেন। পু-ক্ ভার্থাবছিন্নলৈ ব পুতায়ার্থসা ব-র্ম্যন্তরে হর্যবৃদ্ধে ব্যুৎ পদত্যা ভী-द्रान्धविष्मविज्ञाः स्वर्थाः वरदाः ति श्वीमानवन्तर विश्वासामारा নচ শক্তবৈগ্ৰ পৰেগ্ৰ আকাশুল-দান্তরোপভাপ্যার্থান্তি স্থার্থ-আি শ্বৰ বোৰং পুতি হেভুৱাগর্ব त्को जकार्थमः भुत्रमः। स्टाः शु िশङी छा स्रो वक्तामा अवद-রাদে রব্বয় বিশেষ্যব্রানপ্রপান্তঃ। জনতিঃ পশুরিত্যাদৌ লক্ষার্থ-যে। আিথোম্বনবোধস্যাপ্যনুভবিক-ত্বাষ্ট। তথাছক্তে রিব ভক্তে রপি ব্রুনে মনুভাবক ভবভ্যেব কাষ্য-তাবছেদকস্য সংস্থাচায় ন ব্যভি-চার:।ইতিশ্বলক্তিপুকাশিকা॥ क्री हिङ्गा नाम। इंडि मिनी॥ मर्भनः। इंडि वक्षयात्रः र्थरमंगर ॥ वक्षार जाररज হমেনিতি লক্ষণ । ভিদ্যবিধা। इंडत्र छमान्गालकः । रावश्त भुरगाजककः । इंकि न्यायम् उ ॥

ম) কর মতে তু। ক্রজিত সমা-খানা তিপান নিয়ামক । লক্ষণ ভূনভিজ্ঞানা তদভিত্যান চ্**র**া। ইভিবোগানেক ॥

बक्तः भुः होभिक्तिः॥ मातमः भक्षी। इंडि गयत द्वारकी।। विकास की सामग्री। इंडिसिनिनी ॥ হংগী। ইতি সিদ্ধান্তকৌমূল্যা-নুগানিবৃতি: !! শক্রসশক্তঃ। যথা । यक्क १ मान्यमान काट भन्यानुः পপত্তিত: ৷ ইতি ভাষাপরিছেদ: ॥ शक्षामा । । । य हे उत्रानी भक्षा-भरमा भागार्थ भ्वाइकाम ह्या-रत। द्यान्यभिक्त संदर्भागुत्रः পণ্ডি হা নৰ পুতিমন্ধীনতে তব লক্ষণৰা ভীৱন্য বোধঃ। সা চ শ-क्रमञ्जक्षा। उथाहि भुवाहक्ष শক্যার্থসম্বন্ধস্য তীরে গৃহীতত্ত্বা-ন্তীরস্য মরণ ততঃ শাব্ধোধঃ।। ইতি নিজান্তমূক্তাবলী॥#॥ অ-পিচ। জহুৎস্বাথাজহুৎস্বার্থা নি क्राधनिकारिकाः। जक्तभा विवि-था छ। छि वक्कक मान्त्वधा।। কাচিজ্লক্ষণা শক্যাবৃত্তিক্পেণবো-. ४ कठ्या कर्ध्यार्थकुष्ठार्छ । यथा जोतदारिना गङ्गानिभनगर। काहिह्क विकालयवृक्ति में

ক্রুব্রিনৈব বা ক্পেণানুভাবক-जाम्बर्धशार्था । यथा मुकादामि-ना नीवयहेड्डास्नि। ह घडेाहिल-मग्रा काव्जिक्क अव्यक्तिके इं তত্ত্রপেণ পূর্ব পূর্ব প্ত্যায়কত্বা-क्तिका। यथा आद्रनामि भुकाद्रन उनामुग पुरागू जातकद्वापय शानि পদস্য। কাচিত্ব পূর্ব পূর্ব তাদু-(প্রণাপুত্যায়কত্বাদাধুনিকী । यथा ঘটত্বাদিনা পটাদিপদস্য। আ-দিনা শক্যসদৃশত্ব প্রকারেণ বো-ধন্ত্যা গৌণীভাগগ্যুতে। যথা অগ্নি নানবক ইত্যাদা গ্রে**সদৃশ**-द्वारिमा अप्राहिशहरा। इंडि भद्रः শক্তিপুকাশিকা।। 🛠 ।। অন্য 🛭 । মুখ্যার্থবাধে ভল্মকৌ ষ্যান্যার্থ: প্তীয়তে। কচে: পুযোজনাদ্বাসৌ লক্ষণাশক্তি রপিতা।৷ ১ ৷৷ কলিকঃ সাহ সিকইত্যাদৌ কলিজাদিশনে। (ममदिरम्यामिकाश यार्थ व्यास्त्र-न् गरा भयना भक्ता दनः गृङ्गन् शुः क्वाहीन भुज्यागयकि। यया छ ग-হ্বাযাণ হোষ ইত্যামৌ গঙ্গাদিশা (प्रा जनगरार/येवाइक दृष्ट शुक्रउ २मञ्जरम् सम्भागीभागि सम्ब সম্বন্ধিন তটাদি বোধ্যতি। সা **णप्र**गालिका या जा विक्य हो। ने ये

রানুন্ডাবিতা বা শক্তি লক্ষণানাম। পূৰ্ত্ত হেতৃ কটিঃ পুসিদ্ধি রেব । উত্তরত গঙ্গাতটে ঘোষ ইতি প্রুতি পাদনাদলভাস্য শীতত্ব পাবনত্বা-ভিশ্যস্য বোধনবাপ পুযোজন। হেতৃ• বিনাপি যুস্য কস্যচিৎ স্তম্ব ক্ষিনো লক্ষণে হতিপুসত্ব: স্যাদত উক্ত কচে: পুযোজনাছেতি।। 🕸 🛭 **७**८७ एक । मृथ्यार्थ (म्र उत्राक्त-পো বাক্যার্থে হর্ম সিদ্ধযে। স্যা-माञ्जाता भु।भामानारमध्याभामान লক্ষণা ॥ ২॥ শ্বেতো ধাবতি। পু-যোজনে যথা। জন্তা: পুবিশন্তি। व्यनत्या हिं स्थानि छि: व्यक्तानि-ভিশ্চ অচেডনত্ত্বা কেবলৈ ধাবন **পু**रव**ण**न कियरयाः कर्ज्ञया २ द्वय भव ज्यारि द्विष्ठ शिष्वय व्याज्यः अश्विता २थाहरः शृक्राहरक আকিপ্যন্ত। পূৰ্বত পুৰোজনাভা-বাদুটি:। উত্তরত্র সন্তাদীনা মতি-গহনত্ব পুযোজন । অত্র চ মুখ্যা-র্যস্যাত্রনো হপুগ্রাদান। লক্ষণ লক্ষণাযান্ত পরস্থৈতবোপলক্ষণ মি-**छ** । इय (मवाक्र स्त्राः । इय (मवाक्र स्त्राः র্থেত্যচ্যুক্তে ।। ঋ ।। অর্পণ স্বস্যু বা-क्रार्थि भन्न म्रान्य निष्कत्य। छेभनः क्रन (इज्जादिया नक्रननक्रमा॥ **ा। क्**ढि भुर्याङ्गन्रया विक्रण वृक्षणः যথা। কলিক: সাহসিক: গকাবা ঘোষ ইতি চ। অন্যোহি পুৰুষ ভটযো বাক্যার্থে ২ব্ধসিদ্ধযে ক লিঙ্গ গঙ্গা শক্ষাবাত্মান মর্পয়ত: 🛚 য়থা বা । উপকৃত• বহু তত্ৰ কিসু-চ্যতে সুজনতা পুথিতা ভবতা পর<sup>্</sup> । বিদধনীদৃশ মেব সদ। সংখ সৃথি-ত মাম ততঃ শরদা শতে ॥ অতা-नूशकादाभीना॰ वाक्यार्थ इन्वयनि-ष्य উপক্তाদयः भदाः आज्ञान মর্গযন্তি। অত্রাপকারিণ পুতি উ-পকারাদি পুতিপাদনান্য্যার্থ বা-**धः विश्व बिश्व ज्ञान्य ज्ञान्य ज्ञान्य क्रां विश्व क्रिया ज्ञान्य क्रां क्रिया क्रिय পकाরाम्ऽ**ठिभयः। ইय मिव क**ছ्८**-সার্থেভুচেতে॥ 🗱। আরোপাধ্যব-সানাভ্যাণ পুতেয়কণ তা অপি দ্বি-থা। তা: পূর্বোক্তা শত্রভেদা লক্ষ-गाः । विवयनग्रानिगीर्गनग्रानग्रजानाः ত্ম্য পুতীতিকৃৎ । সারোপাস্যা-মিগীণ্স্য মতা সাধ্যবসানিকা ॥ ৪।। কঢাবুপাদানলক্ষণা সারোপা য**থা** অশ্ব: শ্বেভো **খা**বতি **অত্র হি** খেতভণবান্ অখে৷ হনিগীণ স্বৰূপ: স্বসমবেত খেত গুণভাদাত্ম্যেন পু-ভীয়তে। পুযোজনে যথা এতে জন্তাঃ পুবিশন্তি অত সর্বামা স্তথারি

भ ्कनिर्द्धभाद माजाभाषः। काने ॥ नक्षान्त्रभा यथा। कनिकः भूकः ষো যুখ্যতি ৷ অত্র পুক্ষ কলিস্থা রাধার্য্যাধারতা সম্বন্ধ:। পুযোজনে ৰথা আযুষ্তি । অভাষ্টারণ নপি ্ষৃত কার্য্য কারণ ভাব সম্বন্ধ সম্ব-ऋ। यु जाना जा। न भुशिया जन। বৈলক্ষণ্যেনাৰ্যভিচারিণাযুম্বরণ পু (याजन । यथा ह ताज नीरय शुक्रव গছতি রাজানৌগছতি ইত্যত্র স্বস্থা-নি ভাব লক্ষণ সম্বন্ধঃ। যথা বা অণু মাত্রে হবযুবে হস্তোয়• ৷ অত্রাব্যুবা-ব্যবিভাবলক্ণ: সম্বন্ধ:। ব্ৰাহ্মণেপি তক্ষামৌ অত্ত তাৎ কর্য্য লক্ষণ: স यकः। हेन्द्रार्थाम् ख्नाम् यभी हेन्द्राः ভাত ভাদথ্যৰূপ:।এব মন্যত্ৰাপি। নিগাণস্যপুন বিষয়স্যান্য ভাদাআ্য পুতীতিকৃৎ সাধ্যবসানা। অস্যা শ্চতুষু ভেদেষু পুরোদাহরণান্যেব ॥ 🕸 ॥ जामृत्मा उत्र जनकाः मुका-ন্তা: সকলা অপি । সাদৃশ্যান্তু নতা ৌণ্য স্তেন যোডশ ভেদিতাঃ ॥ ৫॥ তাঃ প্রেক্তি অষ্ট ভেদা ল ক্ষণা: সাদৃশ্যেতর সম্বন্ধা: কার্য্য কারণ ভাবাদ্য:। অত্র শুদ্ধানা॰ **म्**र्र्बाना इत्र गात्र व । क्रावृ भानान-लक्ष्मा माद्राभा भोगी यथा। এ

ভানিতৈলানি হেনতে সুখানি অত্র **े** उन भद्र खिन जर (श्रुक्त अ॰ गु॰ श्वार्थ मुनामारेयद नार्वनामित्त्र-হেবু বর্ত্তে। পুযোজনে যথা রাজ-ञ्जादायु उट जन्मिषु ह गहरूजू 'এতে রাজস্মারা গছভি। ক্চার্পা-मानज्ञाना नायायमाना (गोनी यथा रे**ज्यानि (रुग**एउ मूथानि । शुराक-प्या ताकक्ष्याता गहिल ! क्रिंगे লক্ষণলক্ষণা সারোপা গৌণী যথা রাজা গৌডেন্দু: क क र लाध्य छ । প্যোজনেগৌরাহীকঃ। রুটো লক্ষণ-बक्षना माथ्यवमाना (गोनी यथा ता का ৰণ্টক শোধ্যতি। পুযোজনে যথা গৌর্জন্ত ॥ # ॥ ব্যক্ষ্য গ্ঢাগ্ড-पाष्मियानुः कललक्षाः । ७। भूया-क्रान्या अञ्चर छन। लक्ष्मभा प्रसिखा छ। भाषाजनक्रभ वाक्रामा गृहागृहउया পুত্যেক দ্বিধা ভূত্বা বোডশভেদাঃ । তত্র গৃঢ়: বাক্যার্থ ভাবনা পরিপত্ন বৃদ্ধি বিভব মাত্র বেদ্য:। যথা উপ-কৃত বহুতত্তেত্যাদি। অগ্টো ২তি-স্পষ্টতথা সৰ্ব জন বেদ্যঃ। যথা উপ-দিশতি কামিনীনা বৌবন মদএব ननिकानि। অভোপদিশভীত্যনেন আবিষ্করোতীতি লক্ষ্যতে আবিষ্কা-রাতিশয় শ্চাভিধেয়বৎ যু টা প্রতী-

যতে !! # !! ধর্মি ধর্মগতত্ত্বেন ক লগৈ্যতা অপি দ্বিধা 191 এতা অ-নম্বরোক্তা: বোডশ ভেদা লক্ষণা: ফলস্য ধ্র্যাগতত্ত্বে ধ্রমিগতত্ত্বেন চ প্ত্যেক দিখা ভূত্বা দান্ত্রিশ-জেদা:। ক্রমেণোদাহরতি। স্থি শ্যান্দকান্তি দিপ্তবিষতো বেল্ল-षनाका घना वीजाः भीकतिनः भ (याम मूह्रा सामन्त्रक्काः कलाः। कामः मञ्ज मृष्टः करोत्र वृष्टिया वारमा श्री मर्बन्मरह रेवाम्ही जु कथः ভবিষ্যতি হ হা হা দেবি ধীরা ভব।। অত্রাত্যন্ত দুংখস*হি* কুৰূপে রামে ধর্মিণি লক্ষ্যে তগৈঃ-বাভিশ্য: ফল া গড়ায়া বোষ ইত ত্র তটাদিবু লক্ষ্যে শীভত্ব পাৰনত্বাদিক্স থ্মস্যাভিশ্য: क्वं ॥ 🗱 ॥ उप्तयः वक्षा (छ-मा **क्षा**तिः सम्राज्य बुरेशः । क्राव-**ঞ্চৌফলেদাত্রি-শদিতিচত্বারি-শ** ল্পকণা ভেদা:॥ 🗱 ॥ কিঞ্চ। পদ বাক্য গভত্বেন প্রভ্যেক ভা অপি দ্বিধা।৮। তা অনন্তরোক্রা:। অত্র **अ**न्त्रज्ञात्व यथा शक्रायाः (घाय:। বাক্যগভত্ত্বেন যথা উপকৃত্ত• বহু-ভবেতি। এব মশীতি পুকার। नक्ता। इंडि माहिडार्माः॥

লক্ষা স্ত্ৰী লক্ষণ দশাযুত্ত সংখ্যা। ইতি মেদিনী।।

লক্ষিত: ত্রি আলেংচিত: ।। দৃষ্ট:

।। অন্ধিত: । ইতি লক্ষ্যতো:
কর্মণি ক পুত্যবেন নিয়মণ ।। লক্ষণাশ্যক ।।

विक्कि उनक्ष्मा की निक्कि उनक्षमा

1 यथा विदिष्ठ गर्मन वर्च वे हिन न
क्षमाश्वाम जारमुक व्ययुक जुमद्रगमाशिक वे देव व ज्याम विक्रिय क्ष्माशिक विद्राप क्षमाशिक विद्राप क्षमाशिक विद्राप क्षमाशिक विद्राप क्षमा क्

লক্ষিতা জী পরকীযান্তর্গতনাবিকাভেদ:। অস্যা লক্ষণ । পুংশ্চলীভাবনিপুণা। উদাহরণ যথা।
যক্ত তেড্ তং যক্ত্যাভদপি বা
ভ্যাৎ। যক্ডবতু তক্ডবতু বা বিফল স্তব গোপনোপায়:॥ ইতি
রসমঞ্জরী।।

विक की विद्रः॥ भूषानः। इंडामदः॥

লম্বণ লী. চিহ্ন । ইতি শব্দর্গ। বলী ।। নাম । ইত্যমরটীকাষাণ ভরত: ॥ শ্রীবিশিঙ্কে তি । ইতি মেদিনী ॥

সারস:। ইতি হেম-বাস্থা: 9]• চন্দু:।। শ্রীরামভাতা। ইতি 🖨 हिनी II ज ह (ब्रावायण व्यापा-ब्रायाः मृशिकागार्छं मनद्रशाङ्काः णः ॥ इन्द्रिष्यभार्थः उत्र हजूर्यम বর্ষপর্য্যন্ত আহার নিদাদি রহি-**७५॰ गथा। এकना ब्रधनायक जी** ত্যা লক্ষণেন চ। স্থাতঃ সর স ভন্ত রন্যে পঞ্চটী ভটে।। উবাচ দীতা হেমন্তে হল সুষাদু নিমল । তথা বব্যঞ্জন রম্য সর্ব रस मुनी उला ।। फलक हरान हरक भी ठारेन शुप्तरहो भूतः। उट्या प्रसी লক্ষণায় পশ্চান্ডড্জে স্বয় পুভু: ।। লক্ষণৰ গৃহীত্বা চ নৈব ভূড্জে कनः बनः। (मचनार रशार्थक जी-তোজারণ কারণাৎ।। নিদা न যাতি ন ভুঙ্কে ব্যাণাঞ্চত্রন্দ । य এर পूक्रा रागी उद्दर्भ রাবণাত্মজ: ॥ ইতি বৃদ্ধবৈবর্ত্তে बीक्कजमथाख ३२६ वाष्रायः॥ वी नाख्यान्मः সুমিতা। ইভি मप्रवादनी।।

লক্ষণা জ্রী খেতকটকারী।ইতি त्राक्रनिर्घण्डेः॥ **मात्र**भी॥ **ए**षशिकः **५:। ই** ि भिरिनी।। (**ग**रस नम्न-ণাৰন্দ ইতি নামু। খ্যাত: । তস্যঃ भर्यायः । भूधकन्ता २ भूधना ० 'ৰাগিনী ৪ নাগান্তা ৫ নাগপত্ৰী ৬ ত्लिनी १ मिक्किका ৮ अमुदिनमूह-मा ৯ शहरा ३०। व्यम् । ख्याः। मध्यद्गा भी उद्गा खोवकाद्नाः णिव्। द्रभायनकत्ववः। वलाव्। जिल्लायणगनद्यः । इति द्राज-নিঘণ্ট: ।। অপিচ। পুঞ্জাকার র कान विम्तृ कि निक्शि महा। नम्रा भू अबननी वस्रम्भाकृ ि र्जर्र ॥ इंडि जारभुकामः॥ 🛊॥ षुरग्रावनकन्ता। माञ् बीक्यन्या ণ সায়েন বিবাহিতা। ইতি নহা-ভারত' ॥

লক্ষী: জ্রী বিষ্পত্নী। তৎপর্য্যায়:

। পদ্মাল্যা ২ পদ্মা ৩ কমলা ৪

ক্রী: ৫ হরিপ্রিয়া ৬ ইন্দ্রা ৭
লোকমাতা ৮ মা ৯ ক্ষীরান্ধিতনযা ১০ রমা ১১। ইত্যমর: ॥ জলধিজা ১২ ভার্গনী ১৩। ইতিশহ্বরত্নাবলী ॥ হরিবল্লভা ১৪ দুপ্রাক্রিতন্যা ১৫ ক্ষীরসাগরসূতা ১৬।
ইতিক্বিক্ল্লভা॥#॥ অথ লক্ষ্মী-

মজাঃ। বান্ত বহি সমাবত বাম নেত্রেন্দু সংযুক্ত । বীজ নেতৎ শ্রিयः (পुक्कः मर्बकाम कल्पुनः ॥ 🛊 ॥ অল্য পূলাপুযোগঃ। পুতঃক্ত্যা-**कि भी**ठेन्यामान्तः कर्या विधाय इट-পদান্য প্রাদি কেশরেষু মধ্যেচ পীঠশকীঃ পীঠমনুঞ্চ ন্যেত। ওঁ मृक्षित्र कीरिंब्र ममरेक्त वृत्रिक्ष उट-कृष्ट्रिः अक्षिता छजः श्रीकमनामनाय नमः। ইত্যাসন বিন্যুস্থ ব্যাদি-न्यामः कर्यप्रद निर्दाम ज्रुक्यराय নম: মুথে নিবৃৎছ কলে নম: হৃদি শূিবৈদেবভাবৈ নম:। ভভঃ করান্ত न्यामो क्रांप्रदा माः वक्षान्यः নন:। 🗐 তজনীভ্যা স্বাহা। শু मध्रमान्त्रा॰ वष्ट्र। इन्त्राप्ति । এव॰ णा॰ वृष्याय नमः ইত্যাদিনা চ न्य-সেৎ। তথা চ নিবন্ধে। অঙ্গানি मीर्घगुक्तिन त्रभावीत्वन कन्नारं । ততো খ্যান•। কাষ্ট্যা কাঞ্চনসন্মি-ভা হিম্গিরিপুথৈ কতুর্ভি গঁ-জৈ হভোৎক্ষিপ্ত হিরপ্রথামূত ঘটে द्वाविष्ठानानाः श्रियः। विज्ञानाः वतः मञ्जूयुग्म मञ्चर श्रेष्ठः कित्रीरिवाङ्क লা কৌমাৰদ্ধনিতয় বিষ ললিতা 

गानरेजः जः गृह्य मञ्ज. शामन अ र्य्যाৎ। ভতঃ পীঠ পূজাণ বিধা व কেশরেষ মধ্যেচ বিভূত্যাদি পীঠ-মলত পূজা• বিধায় পুন ৰ্যাত্বা বাহ-·নাদি পঞ্গুল্লাঞ্জলি দান পর্য্যন্ত° विधाय व्यावद्रभ भृता भादाख्ट । व्यागानि किनाद्रय् नत्था निक्कू ह नाः वृहराय नमः। ইত্যাদিনা সংপ্রা मिय्रलयु भूबीमि उँ वामुरम्वाय नमः । এवः मक्ष्यंगाय भुन्।ग्राय व्यनिकः ष्काय । विषिण्यालयु छ प्रमकाण छ म-निनाय ७ ७ शुन्तर ७ इक के काय। ভতো দেব্যা দক্ষিণে ওঁ শত্ৰ নিধ্যে ननः। ७१ वम्बाहारेय। वास्त्र खं भग्न निश्वरय वसूसरे छ। भञार पुत्र भू-र्बाप्ति 'उँ वनारेका नमः। এব॰ বিম-वारिय कमनारेय वनमानिकारेय वि-ভीविकारिय नाक्षरियं। वजुगानिकारिय । जबहि विन्दारीन् वक्षारी क शृब-(य८। ততো धूलारि विनर्जनाइ॰ কর্ম সনাপথে । অস্য পুরশ্চরণ षारमणक्षा भः। उथा ह। जानून-ক্ষ• জপেরাম্র• দীক্ষিতো বিক্সিতে-न्तियः । ७९ **नर्मुक** जूरुवा**९ कम**् লৈ মণ্ডু রাপ্লতৈ: ॥ জপান্তে জুহুবা-बाखी जिल वी मधुत्राक्षुरेजः। विल्इः ফলৈ ৰ্বা জুত্বামিভি ৰ্বা সাধকো:

खगः।। #॥ वायुव विनिजा विरिष्ठाः र्भाया मक्त्रांकछनः । ठजुवी जाजा का मख कुङ्बर्गकन भुषः ॥ वादुवः **बे**ं। विकृवनिका द्यीँ। माना द्यीँ। মকরকেতন: ক্লাঁ॥ অস্য প্জাদিক भूर्बराषाधाः । **७था** छ । त्रभायाः क न्नारं भीति अधिवातन मुब्दय । क्र्यां भूषागान् उवहा नतन সাধকোত্তম: ।। নিধিভি: সেব্যতে निडाः मृर्खिमिक क्षाक्रिः। शाः त ज् वित्मयः। मानिका भुक्तिम् **छा॰ रिमनिटि स्टोक् फ**र्जुर्ভि र्ग के र्ञ्जुाह्ज ब्राज्ञ समानि वानि-চ্যমানা সদা। इत्ताद्ध र्वत्रमान मः সুজ যুগা জীতী দ্ধানা হরে: কাস্তা 'काह्निज भाविषाज विज्ञा॰ वाम्स महाबामनाः ॥ जम् भुद्रकद्रगः धारण वाक्ष्मा:। उथा ह। जान्म कः इदियाणी कल्पम् अध्याकः रे**रः।** जुल्याम्क्तैनः भृदेव खट् जरुः <u>जुः क्रिट्डन्द्रियः ॥ 🗱 ॥ मञ्जास्त्रः ।</u> नमः कनवास्त्र वामित्रे ठे वय मि-**তি পোকো मणाकतः। उथा ह** निवाक । भीषा यामि विमर्भाखा वुका जानु बंगूकता । वास्त्रिनिः शिया वाक् मन्ः (भारका मनाककः ॥ भीषा नकाइः। याति मं:। तुका

कः। ভানু मः। वमुक्का नः। वास्ति সিন্তৈ বাসিনৈঃ ৷ বহিপুৰা স্বাহা ॥ षात्रा भृजाभुरवागः । भूर्वदः भीठेमनुष्ठः विमाना अयापि नामः क्र्यंतर । बिद्रिम पक्क अवस्य नमः। मृत्थ विजाहेक् नहा नगः। कृति শূিব দেবতাবৈ নম:। তথা চ **नात्रमायाः। यश्य मंद्या दिदा**हेह-নের। দেবতা 🕮: পুকীর্ত্তিতা। ততঃ कद्राञ्चनहारमो। अँ (मरेवह नरमा २३) ष्टान्डाः नमः। धँ शिन्दिन्। नम खर्जन नीज्याः चाहा। ७ विक्शेत्य नत्मा **मण्डाः वय**हे। अँवव्रमारेय नत्ना হনামিকাভ্যা হ । ওঁকমলৰূপা-रेंग नमः कनिष्ठा छा। कहे। अवः ङ्खारिया अँ परिवा नामा कृत्याय নম ইত্যাদি।। তথাচ নিবন্ধে।দেবৈ ভূদয মাখ্যাত পদ্মিন্যে শির ইরি-ত । বিকুপত্নৈ। শিখাপ্রোক্তা বর-मारेय छन्हमः ॥ व्यक्तः कमलक्ना-ধ্যাৰ । আসীনা সরসীকৃছে মিত-मुखी रखाषुरैक विजुडी मान भन्न-বুগাভবে চ বপুৰা সৌদামিনী স-मिछ।। মৃক্তাহার বিরাজমান পৃথু-लाखुक् खरनास्काविनी भाषादः क-भणा कराक विভरित बानमद्शी

পূজ্য শন্ত্ৰাপন ক্রা প্রোক্ত পী-ঠশক্তি সহিত প্টিমন্তা পূজা विधाय भून धंगाञ्चा वाहनामि शक পুল্লাঞ্জলি দান পঘ্যন্ত বিধাযাবর-ণপূজা মারভেৎ। অগ্ন্যাদি চতুষে मिक्कु ठ खें (मरेद) नत्म। कृम्याय ननः । ওঁ পঢ়িবৈর নম: শিরসে স্বাহা। **७ँ विकुभरेक्ट्रा नमः मिश्वारेय वयदे ।** खें दब्रमारेय नमः कष्ठाय छ । खें कमलक्षारिय नामा . श्खाय करे। छठः भूबी मिनलामु भूबीवर वना-क्रांपि भूकारा । उष्टि तिनुषि वजारी क नृष्य । उत्ता थ्नारि বিদর্জনান্ত কর্ম সমাপথেৎ। অস্য शृदक्रद्रभः मणलक्ष्रक्षभः। ख्या ह। দশলক জপেয়প্ত ন্ত্রবিদ্ধি (छन्तियः। मणाः मः ङ्ख्यात्रञ्जी न-धुव्राें जिः महाक्रिः ॥ 🗱 ॥ जव লক্ষী ভোত্র । ইশ্বর ট্রাচ। ত্রৈ-লোক্য পূজিতে দেবি কমলে বিষ্ণু বল্লভে। যথা ত্ব• সুস্থিরা ক্ষে তথা **७**व मयि श्रिता ॥ त्रेथती कमना ৰক্ষী শচলা ভূতি ইরিপুলা। পদ্মা भगावया गम्भट नृष्टिः खः भग খারিণী ॥ ছাণ্টেশতানি নাগানি ज्ञी· मःभृत्र यः भाटेः । श्रिता লম্মী ভবৈত্তম্য পুত্র দারাদিভিঃ সহ।। ইতি তন্ত্রসার:॥ বিফুপুরা-ণোক দক্ষীন্তোত্র তবৈব ১ অণশে ৯ वर्षाय पृष्टेवाः ॥ 🗱 ॥ व्यय मञ्जी পূজানিরূপণ। স্কন্পুরাণে। পৌৰে ঠৈত্রে তথা ভাদে পুলবেষু: জিয়ঃ শি্থ । সিংহে ধন্যি নীনে চ ছিতে मध्युतक्रम् ॥ भुज्यमः भृहरयञ्च-क्यी॰ मृज्ञभाष्क खात्रा मित्र। नाभद्रा-ছে ন রাভৌচ নাসিতে ন ত্র্যহম্পৃ-नि॥ चारण्यात्कव ननरायाः तिङा याक नित्र भारक। जरगामणा ज-थाहेम्याः कमनाः रेनव मृज्यस् ॥ न भूकाराष्ट्र भारती (जीरन न कूर्य रेनव ভাগবে। পূজ্যেত্রগুরা বারে চাপা-रि त्रवि (मान्या<del>ता। ध</del>क्वात्र हि পূৰ্ণাচ বল্লেন যদি অভ্যতে। তত্ত্ৰ প্জ্যা তু कमला धन পুত্র বিবর্জিনী ॥ न क्यं। ८ नुष्य भागि देनव क्यं। षिमर्जन । न घणे। वामराय**ख** व रेनव विकि अमाभरार ॥ भीव हम-मनी मना हिज्ञाक मक्ष्मी उथा। নভাস্যে পূর্ণিনা জ্রেয়া গুৰুবারে বি-শেৰতঃ ॥ আঢক খান্য সম্পূৰ্ণ नामा छत्र १ ज्या ७ । जुगिकि मृत्न नु-स्त्रग मृह्मभाक भुभुकाय ।। (भोरव छ निष्ठेक महार नत्रगामक हिन्द-

় কে। পিষ্টক পরমান্ত্র নভস্যেত্ বিশেষত:।। **ং**ক্ষার স্থাযুক্তা ন ভস্যে পূর্ণিমা শুভা। কমলা প্র-(यखंड मुनर्जन न विम्राउ॥ এ:कन क्मरवारेयव क्यवाः श्रुवरयप्यमि । ইহলোকে সুথং প্রাপ্য পরত্র কেশ 🤄 वं वुरक्ट ॥ श्रायथी भूकरयलकी পশ্চিমানন সংস্কৃতা । গন্ধপুষ্ণ भूमनीम रेनरवन्।। नृश्मठावरेकः॥ गः স্কুদারেতি মৃত্রেণ গন্ধেনাবাহযেদ भो। निय बाउ है जि हा जा। भेरे ब द्रावाह्रयखंखः ॥ ७८७। ध्रानः । হিরণ্যবর্ণা হরিণী সুবর্ণ রজতসূজ १ हन्तुा श्वित्रयो । लन्ती । का उरवर-সমাবহাং II গৌরবর্ণাস্ত দ্বিভূকাং সিতপদ্মাপরিহিতা । বিফোর র ক্ষ:ছলছাঞ্জগটোভা পুকাশিনী श कात्वमाना जना प्रवी न्डा-কালে বিশেষতঃ॥ ততঃ পূজাদিক षर्या थि नन्नी नम हेन्।।। नकीः भगानया भगा कनना 🗟 ধ্'ভি: ক্ষমা। ভৃষ্টি: পৃষ্টি তথা কান্তি ধর্মধা বিদ্যা রমা শুভিঃ।। হরিপ্রিযা **७**था विस्थाः शिया नातायगम् ह । এতাভি: मध्रणां विकीवीबारि नाईरए ॥ नश्ची नात्रायना जाक नामास्त्रन भूगृक्षाय् । विवनक वर्

(वर्षः भृष्ठायखन्नहरः ॥ नःभी-চরিত্রে ৷৷ ন কৃষ্ণাফে রিক্তাযা• मन्त्री चामनीयु छ। स्वरापि छङ्-यास वस्त्रीभृषाः न काइररट् ॥ इंकि कानः निमुका ॥ 🗱 ॥ भी भा-विञ्ञायनग्रयाः नक्षीन्काविध 'ৰ্যথা। তুলারাশি গতে ভানৌ অ: মাবাস্যা॰ নরাধিশঃ। সূত্রে। দে-বান্ পিতৃন্ ভক্তা সংপ্র্যাথ পুণ-ম্য চ।। কৃত্বা তু পার্রণশাদ্ধ দি ক্ষীর গুডাদিভি:। ততো ৎপরাহ্ন नभरय धायरयद्यभाद्य नृभः॥ वाकीः সংপ্র্তা লোক উল্লাভি ক্যাভি-(वडें) जाः । व्ययायाम्। यस ब्राखी रिवाजारम ठजुर्मनी । मूबनीया ख-मा नची विंद्धिया मृथद्राविका ॥ व्यमावान्त्राः यमा (मवाः कार्डिक মাসি কেশবাৎ। অভয় প্রাপ্য मुश्राम कीतामार्ग्यमान्यू ॥ वन्त्री रिनंड। ज्यामुका म्थः मूक्षापूरका नरा । চতুর্গসহসাত্তি বুকা স্পিতি প-ऋक्षा। चाठा विविवद कार्या मनु-বৈয়: সূথসুপ্তিকা। দিবা তত্ত্ব নভো-জব্য মৃতে বালাতুরাজ্জনাৎ।। পু-দোৰ সমযে লক্ষ্মী পূজ্বিত্বা যথা ক্মা দীপবৃক্ষা তথা কাৰ্য্যা ভক্যা দেবগৃহেত্বলি ॥ চতুত্বথ "মাশানেষু

नहीं अईंड मानूबू। वृक्षम्(मर्ष् (गा-প্তের্ চত্তরেষূ পৃষ্টের্চ।। বক্তিঃ পুরিঃ শোভিডব্যা: ক্ব বিক্ষ ভ্নয:। দীপ্ৰালা পরিক্ষিপ্তে প্রদোধে ত मनेष्ठतः। वाकागान् (जाकविदापि) विज्ञा ह वुज्ञिजीन्॥ जनकृष्ठिम ভোক্তব্য নববস্তোপশোভিনা। ব্লি रिक्ष मू रिक्ष विनिधक्क वास्रोव ज् ज कि: जरु ॥ अब नन्त्री भूकायाः भू श्रेरानकारण। नमं एउ गई (एवाना॰ वंत्रमानि इतिशिष्य । यो गाउँ सुर भुभवानाः जा भ ज्याज्यक्ति। II करिका नम इंडातन वाद्रवयः भूक रबर्। भृथद्वाब्याः भुरमास्य व्र सरव-त्रः भूक्षयं वि (य । इंकि क्षुपद्रश् उाट क्रावद्र में भि भूषयं छि। धनराय नमः স্তভ্য নিধি পদ্মাধিপায় চ। ভবস্ক ष्ट भुगानात्म धनधानति मन्नानः য়। ইতি পঠিত্বা জবেরায় নম ইতি जि: भूकाय**्। उ**छा (रवग्रानिषु मीनान् मन्। ८। ७३ मखः। वार् ब्याञी दविष्याञि कमुस्याञ्चि खरेष्य ह। উख्यः नर्बक्राजीयाः দীপো হয় পুতিগৃহতা।। তভো **बा**क्यान् रक्ष्ण (डाक्यिया स्र ভুঞ্। সূথ- সূঞ্। পুত্রে ভবিষ্যো-क्छ कर्ष कर्गाट । यथा मूर्यवाद्व

मश्री

ক্ষ:কালে পুদীপোজ্জলভালায**।** वक् इंन्वक् क वाहा कललयाई-विष्या भूमीन वन्तनः कार्यः वधी मक्ष (इंडरव । (शादाहनाक्ष छः रिक्षव परागापस्य अर्वतः ॥ वन्ती-भूजाम**जः। विश्वतभ**म् जार्यः। न भएम भगावाय मुख । मशविष नमञ्ज्ञा नृथदािक मक्ष प्रभाव-वीकाल भशासात यग्रया पुक्छ उ॰ ক্তণ। সৃথরাত্রি পুভাতে ২৮১ তরে লন্ধী ব্যপোহতু।। যা রাত্রি: সর্ব ভ্তানা॰ বা চ দেবেম্ববঙ্কিতা। স-यट नद्र श्रियायाह मा समास मूरवर লা।। মাতা ত্বং সর্বভূতানাং দেবা-না॰ সৃষ্টি সম্ভবা। আখ্যাতা ভ্ত-लে (पवि সুখরাজি নমো १ स (३ १। निकानम इंडि बिः न्सर्ए। इंडि ভিথ্যাদিভদ্বু•॥ 🛊 ॥ তস্যা উপা-च्यानः यथा । नावम छेवाछ । 🕮 ক্ষস্যাত্মৰ কৈব নিৰ্ন্তণস্য নিৱা-क्ला । माविजी यममपार गुज मृनिर्मातः यनः॥ उप्छानाटकीर्खनः मण्डाः मञ्जानाकः मञ्जाः। प्रयुक्ता শ্ৰেত্মিছামি লক্ষ্যপাধ্যান মেৰ চ া কেনাদৌ পুজিভা সাপি কিন্তুভা इकन वा शुद्रा । जन्छातादकी खंत॰ मजुः वर विनविनाषत्॥ श्रीनादायन

छियोह । मृश्वे द्वारि भद्रा जुक्तन् क्कना भन्नाचानः। (नवी वाबाःम সমূতা বভ্ৰ রাসমগুলে।। অভীৰ जुन्त्वी बागः न्राष्ट्राधनविग्रख्या । यथा बादणदेशीया मध्यः जुल्हित ে ধৌবনা ॥ গেডচম্পক্বণাভা সূথ-मृन्त्रा नत्नाङ्बा । न्त्रं नार्वन रकाष्ट्रीन्म भूजाभूहा निजानना ॥ भ-রমধ্যার পদ্মানা শোভা মোচন लाहना। ना ह प्तवी विदा जुड़ा अहरेमत्वश्रंब्रह्या॥ **म**मा क्रांभा व-র্ণেন তেজসা ব্যসা ত্রিষা। যশসা ৰাসসা সূক্ত্যা ভূষণেৰ গুণেৰ চ॥ মিতেৰ বীক্ষিভেনৈৰ বচসা গম্পে-न ह । बशुद्रिण श्रः द्वरणिव नरयना नुनरयः न ह।। उद्योगान्या महालक्षी मंकिः गा॰मा ह ब्राधिका। ब्राधाको वद्रया-মাস দ্বিভূত্তক পরাৎপর ।। মহা बाक्षी महाहकत्म कमनीयकः ।কৃষ স্তট্টোরবেণৈব দ্বিধা রূপো ৰ ভূ व र ॥ र कि भागक हि जुरका वासा मण ठजूज्यः। ठजुज्जाय विज्ञा भरावकी मार्ग भूता। वक्रा · माद्रक वित्रं क्षिक मृद्धेत वयानि**म**ा ६९वी हाया ह सङ्जी सङ्ख्या का म् जा। दि अबा दाधिकाका एवा गन्दी-কার শত্রু জঃ। শুদ্ধ সত্ব বর্গা চ

গোপৈ গোপীভি রাব্ত।। চত্রু-कक दिव्यक्षे भूगयो भग्नता मह १ সর্বাণ্**শেন স**মৌছো ভৌ কৃঞ্চ নারা-যণৌ পরৌ ৷৷ নহালক্ষীশ্চ যোগেন নারাজ্পা বভূব সা। বৈজ্ঞেচ নহা-লহ্নী: পরিপূর্ণতমা রমা ॥ শুদ্ধ স-ত্বৰ্ৰপাচ সৰ্পৌভাগ্য সংযুতা। (भूदा मा ह भूधाना ह महीमू व्रब-ণীষ্চ।। স্বৰ্গেচ বৰ্গল,জ্বীশ্চ শক্ত স-ম্পৎ স্ক্লিণী।পাতালেবুচ মট্যে-यु द्राजनश्रीक दाहरू ॥ गृहनव्यी गृं(इरयुव गृहिंगी ह कला नया। मण्यद्यक्षा गृहिगाः महंगक्त-सक्ता ॥ गवा॰ शुम्रः भा मूद्रजी F-किना रक्ककामिनी। की बामिनिक् क्ना माञ्जिक्षा भिद्यनीयु हा। (मा-ভাষকপা চন্দে চ স্ব্যনভল মঞি তা। বিভ্ষণেষু রত্নেষ্ কলেষু চ জ-(लत् ह।। न्रियू न्रश् द्वीयू गृह्यु ह । नर्बनाम् यु वाद्य छ।-নেৰু সংস্তেষু চ ।। পুতিমাসু চ দে-ৰানা মঞ্লেষ্ ঘটেষু চ। মাণিকেঃ कुठ मुकानुभाला पुरु मता इता। मनीत्मुष् व कीद्रष् कीद्रष् वन्तान यू छ। वृक्षणाचाम् ब्रम्गाम् नवस्यः ष् वस्तु ॥ विव्यक्षे भूषिठा नापने (मनी नात्रायान हा विजीय वुक्तना

ভক্ত্যা ভূতীয়ে শঙ্করেণ চ।। বিফুনা প্লিতা সাচ ক্ষীরোদে ভারতে মুনে । श्रायञ्जूरवन मन्ना मानरवरेनमुण्ड जर्व उ: ॥ अशिक्ष क यूनी क्रिक न ন্ডিশ্চ গৃহিভি ভবে। গন্ধরাদ্যেশ্চ নাগাদ্যৈ: পাতালেষুচ প্ৰিতা।। শুলাষ্টন্যা ভাদুভদে কৃতা প্জা চ বুন্ধণা। ভক্তা চ পক্ষপর্য্যন্ত ত্রিষ্ लात्कवृ नावन ॥ हिट्छ शीरम **ह**े ভाष्ट्रि ह भूषा अञ्चलवामात । वि ফুনা নিৰ্মিতা প্ছা ত্ৰিষ্ লোকেষু ভক্তিতঃ ॥ বর্ষন্তে পৌষস কান্ত্যা त्यशा मावाक् भाक्ता । मन् खा॰ পূজ্যানাস সা ভূতা ভূবনব্ৰে।। द्वार्डित्मुं भृष्ठिला मा स्क्राह्मित मञ्जा। (करारहरेगद नीर्जन नर्जन সুবলেন চ ॥ প্রুবণোত্তানপাদেন শক্তেণ বলিনা তথা। কশ্যপেন চ मक्किन कर्परमन विवस्ता। श्रियतु-তেন চল্দেণ কৰেরেণৈৰ বাযুনা। য-(भन विक्रिना देहत वक्रांतित भूकिंडा ॥ এवः नर्बंब नरेबं क विन्ति । ल्बि **७। जना। जरें इ**चिंग्राधित्तवी जा ज-श्चनम्ण ध्यक्षिणी ॥ # ॥ व्यक्षितः। नात्रम উবাচ। नात्रायणिनुया ना ह वता दिञ्च श्रेवाणिनी । दिञ्चशे विश्वा ज्रहिती महानचीः ननाउनी ॥ कथः

বভ্ৰ সা দেৱী পৃথিব্যাণ সিন্ধুকন্য-का। कि॰ जन्जानक खदन॰ गई॰ পুলা বিধি কনে।। পুরা কেন স্তা-भी मा उचा॰ व्याथ्यां जूनर्शम। 🖺 नातायण खेबाठ । भूता मुर्वाममः मांशार जुड़े बिक भूबन्तवः। द-ভূব দেব সংবৃশ্চ মর্ত্যলোকশ্চ নারদ ।। দক্ষীঃ স্বৰ্গাদিক• ত্যক্ত্ৰ্। ৰুষ্টা প-রম দু:খিতা। গত্বা লীনা চ বৈঙ্গঠে सरावजागण नात्र।। उपा**र्णाका**ः অ্যু দেঁবা দৃ:খিতা বুহ্মণ: সভাণ 🏾 বুন্ধাণঞ্জপুরফ্ত্য যয় বৈজ্ঞ নেব চ ।। বৈস্বতে শরণাপলা দেবা নারায-ণে পরে। অতীব দৈন্যযুক্তাক্ষ শৃষ্ক-কণ্ঠোষ্ঠ তালুকাঃ।। তদা লক্ষ্মীক कलया भूदा नादायगाञ्चया। वज्य সিদ্ধুকন্যা সা শত সম্পৎ স্বৰূপিণী ॥ তथा मश्चित्रा क्षीरतामः मिता रेमः ত্যগণৈঃ সহ। সংপ্রাপুদ্দ বর্ণ লব্ম্যাদদৃশ্ ভাঞ্ তত্র হি।। সুরাদি-ভেগ বর দক্তা বরনালাঞ্চ বিফবে। म्ति भुजनवम्ना जुडी कीत्राम-भावित्व ॥ (एवा कान)जूदगुरुः वाकाः भाभूक उद्यवार । छाः जञ्जूका व जञ्जूय जर्बक व निद्रार्श-मः॥ इं वृत्राविवर्त नुक्षिथाल ०२ १ ०० व्यक्तारो ॥ 🕏 ॥ वस्त्रा

জ্বাম্য গৃহাণি যথা। য॰ য॰ বঙ্টো ভক্ত দেবো মাতা তাতক বান্ধবং। অভিথিঃ পিত্লোকাশ্চন যানি **७**मऽ मन्तितः॥ निथ्यावानी ह यः শ্যন্নান্তীতি বাচক: সদা। সত্ত্ব, ুহীনন্চ দু:শীলো নগেহণ তস্য যা-🕠 ল্যহ•॥ সভ্যহীন: ছাপ্যহারী মি श्रामाक्ष्रभूनायकः। विधामद्यः कृ তল্বো যোৰ যামি তস্য মন্দিরে ॥ চিন্তাগুন্তো ভয়গুন্ত: শত্রগুন্তো ২তি-পাতকী। ঋণুগুস্তো হতিকৃপণো न গেহ বানি পাপিনা ৷৷ দীকা-श्रीनण (नाकार्खः यन्त्रवीः जीकि-ড: সদা। পৃশ্চলীপত্তিপুত্রৌ থৌ खाः इ॰ रेनव यानाइ॰ ॥ शुःका ना ঞ্গাবীরাম্ব যে। উ্তিক্তে কামত: সদা । मृमुान (जाकी जलाकी जलहर देनव याग्ररः॥ (या मृद्याक् कलहाविद्रैः किलः मधन्यानाय । जीनुयाना-गृष्ट् युत्रा न यामि छन्। मन्दिरः ॥ খত্ৰ নান্তি হয়ে: পূজা ভণীয় গুণকী-र्खन । तार मुकन्ठ भूम माया न यानि जम्र मन्दितः॥ कन्रामत्दन-বিক্রেতা নরঘাতী চ হি**'সক:।** নর-কাগার সদৃশা ন যামি তস্য ম-नित्र ।। यरखाः शहरखाः वा तुकाः ्रवृक्तिः भूतम् । हा श्वा रुद्धम् । नही न क न यानि उत्रा निषद्भा यू कर्मा मिक्कणाशीन गृण्दी: व्यक्त भर्तः। म भाभी भूपाहीनण न यामि তস্য মন্দির ।। মাতর পিতর ভার্য্যা গুরুপত্নী গুরুপ্ণ ত । জনা-थां जिनी कन्। जनना मुग्राक् বান্।। কার্পণ্যাত্মো ন পুঞাতি मक्ष कक्छ मता। उम्गृहामत्र-काकाद्राम यागि जाचानीश्वद्राः॥ मृ-ত্র পুরীব মৃৎস্ত্য যত পশ্যতি मन्त्रीः। यः (माउ जिल्लामन न यामि उम्र मन्दिः ॥ अत्थे उ-পাদশায়ী যো ন্ম: শেতে হতিনি-पुंज: । मक्तामारी मिवामारी न যামি তম্য মন্দির ।। মৃদ্ধি তিলঃ भूति। मञ्जा या २ न अम्ब मूलल्ला । দদাতি পশ্চাদ্নত্রেবান যামি তস্য মনিরে ।। দর্গ তৈল মুজু গাতে विगूब॰ यः अमूरम्हर । नुगम-দাহরেৎ পুস্ল• ন যামি তস্য ননিং-রণ।। তৃণ ছিনত্তি নথরৈ নথরৈ र्विलिथिग्रही । गाव भार भन यम्। म यामि जम्। मनित्रः ॥ मन्ननः दमन यम। मभन क्ष गछक । বিকৃতৌ গাসহাসৌ চ ন যানি তস্য भिक्ता ॥ भख विष्णाभिक्षीयी है गुामयाजी विकिৎ गकः। मूलक्ष्यः

वनरेक्टब न यामि छम्। मन्त्रिः॥ विवाइ धर्मकार्य वा त्या निरुष्टि व कालाङः । मिया रेमश्रुनकात्री (या न যানি তস্য নন্দির ।। ইত্যাদি বুক্ষ বৈবর্ত্তে গণেশখণে লক্ষীচরিতয়াম २० व्यक्तायः ॥ 🛊 ॥ व्यक्तिः व्यक्तः লিন দন্তমলোশধারিণ বস্তাশিন निष्ठ्रवाकाञाचितः। मूर्यग्रामस्य हाः ভমযে চ শাধিন ধিমুক্তি শ্রীরালি চক্ৰপাণিৰ•॥ নিভ্যু॰ ছেদ স্থানা• धत्रिविण्यन शाम्सा तन्नमार्छ-र्मश्रामाबल्लामाइ॰ वजनगणिनका कः क अ मूर्वकाना । (व माका हानि নিদু৷ বিষসনশ্যন পুাসহাসাতি द्रिकः सास्त्र भीति ह वापुः निधन मुलनरर (कन्नरमानि नन्त्री ।। **लितः** मुस्रोठः চরণৌ সুমার্জিতৌ वदाक्षात्मवन यञ्जलाजनः। जन्तः भाषिञ्च मश्रह रेमथून हिङ्गमुग्रहाः निष भानगंडि यह ॥ यम् कमा कृ পুল্পস্য পাণ্ডরস্য বিশেষ**ত:। শি**-द्रमा शार्गप्रमानम् वनन्तः नुष्टिः नाउ ॥ मीलमा लिक्नाहाया हा-याचयहामनमः ह । तककमः ज्या ভীর্থ মলম্খী শুত্র ভিপ্ততি ॥ ইত্যদি गाक्ए**ड ३**२८ वर्षायः ॥ क्ष ॥ यत्र বিশেষে ভস্যা: ছিতি ফল যথা।

(मरा छेष्ट्र: १ कथ्रवम् जगनातः (क्यू স্থানের্বছিতা। পূক্ষাণা কল। कि॰ वा नुबह्छाथ समाछि ॥ घ-ভাত্ৰেয় উবাচ। নৃণা॰ পাদছিঙা लकी विनयः जःभूयहित । जिल्ली স-ছিতা বস্ত্ৰণ রত্নণ নানাবিধণ বসূ ৷ कत्वना एए म हा काउड़ा नड़ी मारिनी। नतात्रथान् भूतरि गुक्-বাণা• হৃদিছিতা।। লক্ষ্মী র্মনীব-তা শেষ্ঠ কণ্ঠছা কণ্ঠভূবণ । অভীষ্ট वकुरादिक उबाल्लय भुवानि छिः ॥ मृडोबः वाकानावना माञ्जामवि-उथा उथा। म्थन हा कविद्य गह-তুদ্ধিসম্ভ । ।। শিরোগতা সংত্য-ন্তি ততো १ना यां मि मंभूय । সেয় শিরোগতা দৈত্যান্ পরিত্য-कवि माम्पु उ॰ ॥ इंडि मार्क्ए थरः পুরাণে দ্ভাত্রেষ্চরিভাষ্যায:॥ 🕬 অথ লক্ষীচরিত। খ্রীস্ত উবাচ। (सक्नृत्व मुचामीनाः बन्नीः नृह्छि কেশবঃ।কেনোপায়েন দেবি ত্ব॰ নৃণাণ ভবসি নিশ্ব।। श्रीकवाह। भूताः পারাবভা যত্র পৃহিণী যত্র চোজ্জুলা । অকলহা বসতি যত্ৰ তৰ ক্ষেবসা-न्। शन्। मूर्गमम्म उख्ना त्रक्षरजाभगः। अमरेकवाज्यः यज তত্র কৃষ্ণ বসাদ্যহ•॥ यः **সমিভাপী** 

্ৰিপুৰবাক্যভাষী বৃদ্ধোপসেবী পুৰ-मर्भन्छ। अह्मभुवाशी न ह मीर्घम्बी छिमिन् महाङ् शृक्रव वनानि ॥ या ধর্মাণীলে। বিভিতেন্মিষ্ণ বিদ্যা-বিনীতো ন পরোপতাপী। অগর্বি डा यक बनानुदागी अभिन् महारू<sup>•</sup> ্পুৰুষে বসামি॥ চিন্ন• স্নাতি জভ• ভুছক্তে পুত্ৰ-পুণ্পা ন কিছুতি। যো ন পশ্যেৎ দ্বিয়ণ নগ্নাণ নিয়ত্তণ স চ নে প্রিয়া ত্যাগা সত্যঞ্গৌচঞ্চত্রয এতে মহাত্যাঃ। যঃ প্রাপ্নোতি ভ ণানেতান্শুজাবান্স চনে প্রিয়: ॥ मर्ब लक्का माक्षा जू जारा अव वि-শিষ্যতে। কালে দেশে চ পাতে চ সচত্যাগঃপুশস্তে ৷৷ নিত্যমান-লকে লক্ষ্মী নিত্য বসতি গোমযে। নিত্যু শত্ৰে চ'পিয়ে চ নিত্যু ত্ৰি: শুল্লবাসসি ৷৷ বসামি পদ্মাৎপল শত্র নথ্যে বসামি চন্দ্রে চ মহেশ্বরে চ। नावाया हिव वृत्रुक्तवाया व-नानि निष्ठ्याः नवमन्तिरद्रम् । वजू-ন্ধরায়া নিত্যক্র বসৌধরায়া নিতি ৰা পাঠ: 🛘 যথোপদিখ্ৰা ওক্ভক্তি-যুক্তা পত্যুৰ্ঘটো নাক্ষতে চ নিভ্যুণ **1** নিত্যক ভুছকে পতিভুকশে वं जन्याः नदीति नियक वनामि ॥ ज़्रिश ह थोता लियवामिनी ह

সৌভাগ্যুকা চ সুশোভনা চ। লাবণ্যযুক্তা প্রিয়দর্শনা যা পতি-বুভা যাচ বসানি ভাসু॥ শ্যামা म्गाकी क्षमभाषाजामा मृद्धः मृत्क-भी मूगिंछ: मुभीना। गर्छीत्रनाचिः সমন্তপঙ্কি ভস্যাঃ শরীরে নি ৰ্ত বসামি ।। যাপাপরকা পিশুন-সভাবা সাধীনকান্ত পরিভ্তবে চ । व्यमक्कामा क्ठविक्षीला छान्: **स्ना॰ (প্**उमूची॰ छ)जामि॥ भूग्नः • প্ৰযুবিত প্তি শ্ৰন বহুতি: महा ख्यामन **ज**नाबीक पृत्रतः পরিবর্জবৈৎ।। চিডালারক মহীনি विक्रि छम् विकक्ष भागा न भारतन ग्ण्या भार कार्भातां जुक **७कः ॥ नथ (करणामकरेक्ट्रव रेनश्**न० भर्व मक्रार्याः। वर्ज्ञत्यमग्रनायिष् (म-কাকী মিষ্টভোজন•॥ শির: সপ্ত্র• চরণৌ সুপ্রিভৌ নিজাক্ষনাসেবন मञ्जल्कालन । अन्यभाषिषु मशर्व रेरथून हित्रभूपक्षा भिष मानवछि वहे। ममाजनीतरकावाउ॰ निर्ख्छी॰ লব্দ চতথা। রাজৌ হিন্তু পলাশঞ্চ किनिष्यः वर्ज्ञरयम् थि॥ स्रगाकामन-या वीम्। अनुका मूक्तभामस्याः । উहिडेन्गमंन भूष्त्रं नानाकाक्ष वर्षाप्ट ॥ भग्नकाक्षाक्रकात्र ह द्राक्षि-

বাসে। দিনে তথা। মানাম্বর স্ববে-শঞ্চ বর্জদেশ শুষ্ট ভারন ॥ পরে-भाषा विंउ वकः स्य भाना भार्याः । আলস্য মবসাদঞ্চ ন জ্য্যাল্লোষ্ট भर्मन ।। मुक्तवाद्ध र येखिन निना शिष्ठेक मनाक । स्रयः वास्मन सूर्कानः পাণিনা নৈব সংস্থাত ।। ভারকাঃ প্রবস্তৌ চ ন পশ্যেদশুটি: পুমান্। (नःकृषुश्रः भव्रद्धीगाः नाखः याखः लिया कत्र ॥ अर्यप्रामान्य धनाकाह्माः পরস্থীণা• তথৈব চ।পরেষা• পুতি-कृतक উদিতার্কে পুরোধন ॥ नथ কণ্টক রক্তৈশ্চ মৃত্তিকাজার বারি-ভि:। वृथा विष्त्रथन ज्यो न अर्थाः श्चमका इरा॥ स्वर (तार् स्वर मान) 'স্বয' ঘৃষ্টঞ্চন্দন'। নাপিতস্য গৃহে कोत्र मकामि रुद्ध मिया। स्य 'দোহ নিভ্যত্রগুথিতকেভি বাপাঠ:॥ 'बिनिन्हा' गगरक दिएनु भाषरया नंडन स्था। পु ভिक्नक्षद्ध र ज्ञीनाः ज्ञ्जा ह मस्यादमः ॥ अघ्ठः माः म भूशकः नग्रिक्त जियस्या। जक्षनाम्यम्बाः চ্চিব শক্রাদপি হরেৎ শ্রিয়ণ।। মক্তি রযক্তঃ পরদারসেবী আগারছীনঃ পরসেবকশ্চ। সন্ধীর্ণচারী পরিবাদ-भीन छ॰ निष्ठत्र॰ मस्यगर॰ जाबामि॥ भगनकाम् भारतन ब्राजिवासा मिरन

তথা। নোত্তরীয় মধঃ সর্য্যাৎ শৃদ্ধ পাদেন ভোজন ।। অশুটি শ্লানবস্তা-क मूर्गका ममुथावद्याः। অভূষণা म-भूशाक न क्यानाजान छन्।। तर्न চ ব্ৰনে ঘাণে তথা করতলে হপি চা भारि भृष्ठि उथा (नव न अर्य)। हन्-লেপন ।। চক্ষু ল গ্ন হত প্ৰো ন্ थना धनकरः। एतिनुः कर्नना ह शाम भ्रष्ठ उथागुरः ॥ गक्तः भूञ्जः তথা তোৰু রহক্ষেব নহোদধিং া পৃহীত পুথন বন্ত্ৰ বৰ্জায়েল কলাচন ।। यजतकः ध्रव्रक ख्या मयार्जनी-त्रजः। जीगाः शानतरका त्राकन् भ-कामि शहरत्र भियः ॥ व्यक्तिनः म-स्मलभुषातिनः महामठेः निष्ठुतवाक्रः ভাষিণ । সূর্য্যাদ্যে চান্তমিতে তু শাবিন বিমুঞ্জি খ্রী রপি চক্রপা-ণিন ।। মহাশঠ মিত্যত্র বস্থাশিন মিতি বা পাঠ:॥ নিত্য ছেদ ভূণানা• ক্ষিতি নশ্ব লিখন• পাদযো রল্লশৌচ• **काक्ट रेजनहीन** दननमिन्छ। **থ্**বস্ধন মুর্জ্জানা । দ্বে সন্ধ্যে চাপি নিদু বিবসনশ্যন গ্ৰাস হাসাতি-(व्रक: चाक् भीर्छ ह वाम्र<sup>,</sup> इंब्रिंड ধ্ৰপতে: কেশব্স্যাপি লক্ষ্মীণা ঐ বন্ধন মিভ্যত্ৰ বৃক্ষ্ণভা ইভি বা পাঠঃ ॥ अवः यः इक्छ निष्ठाः नर्याकानि

ত্বয়ে যা নিশ্চলা যথা।। শ্রীভাষি **ত মিদ• স্থোত্র• পাত ক্**থায় য়ঃ भरोट । . जन्गृष्ट् विभूमः त्रमाः निज्यः ভविज नान्यथा ॥ व्याधिः ভো মুচ্যতে রোগী বন্ধো মুচ্যেই वक्षनार । जाशन खन्य नग्याह **७भः म्**र्यग्रनस्य यथा ॥ इंडि ऋन्र-भूत्राण नम्बीक्ष्मवस्त्राप नन्ती-চরিত্র সমাপ্ত ॥ ाच्ची: ञ्जी पूर्गा। यथा। चुिः সিদ্ধি বিভিখ্যাতা শি্যাসংশ্যাণা-ह वा। लक्षी दी ललना वाशि क মাৎসাকান্তি ৰুচ্যতে॥ইতিদেবী-পুরাণে ৪৫ অধ্যায়ঃ ॥ সম্পত্তিঃ ॥ **मा**जा।। याक्षती वयः ॥ वृक्षिनात्नीः वषः ।। कलिनी वृक्तः। इं जि सि भिनी ।। त्रीजा ।। वीद्रायाविट । इंजि भामत्रवावनी।। इनभामानी।। इ-রিদা।। শ্লী।। দুব্যং।। মূকা। ইতি রাজনির্ঘণী:।। মোক্ষপুাপ্তি:। ইতি চণ্ডীটীকাবা• নাগভউ:॥ दुन्त्रीकासः भूः नातायगः। यथा। नमः कमलान्जाय इत्राय भत्रमाः 🗝 তানে। জগত: পালবিতে চ লক্ষী-'কান্ত নমোন্ত তে। ইতি জন্মান্তনী ब्रुकंशा॥

ह तिभव। जुड़े। जवामि जमाहः विकाश्यामः ।। वाशीतिमा ह ॥ जिकाश्यामः ।। वाशीतिमा वाशीतिमा ह ॥ जिकाश्यामः ।। वाशीतिमा वाशीतिमा विकाशिकामिनः ।। वाशीतिमा विकाशिकामिनः । जिला व्यापा विकाशिकामिनः । जिला व्यापा विकाशिकामिनः । जिला व्यापा विकाशिकामिनः । जिला विकाशिकामिनः । जिला विकाशिकामिनः । जिला विकाशिकामिनः ।। व

वश्ची जानः शृ श्री जान वृक्षः ।

हे जि जान निर्यक्षेः ॥ (ठोर्य) श्रिक्त मा अविद्यास्ति हिंदी । (ठोर्य) श्रिक्त मा अविद्यास्ति हिंदी । (दे । विद्यासी । (दे । विद्यासी । विद्यासी । विद्यासी । विद्यासी । विद्यासी । विद्यासी । हिंदी मा अविद्यासी । विद्यासी । विद्यासी

सक्षीनातायगः भू॰ भालगुगिति(भवः। उत्र) लक्षणः यथा। अकहात हज्ण्डकः वनमालाविज्विज्ञः
। नवीननीत्रमाकातः लक्षीनात्रायगाज्यः। इठि वृक्षतेववर्जभूत्रभणः।
लक्षीन्तिः हः भू॰ भालगुगिति(भवः। उत्र) लक्षणः यथा। हिहकः
विज्ञात्राकः वनमालात्रमित्जः।
लक्षीन्तिः ह॰ विद्यात्वर्वभूत्राणः।
सक्षीन्तिः ह॰ विद्यात्वर्वभूताणः।
सक्षीभिजः भू॰ वाम्र्रम्यः॥ नत्र-

পতি:। ইভি মেদিনী॥ লবসবৃদ্ধ: ॥ পুগ:। ইভি বিশ্ব:॥

লক্ষীপুতা: প॰ কান্দেব: ।। যো-টক: । ইতি মেদিনী ।। **হুশ:** ॥ লব: । ইতি শন্দরত্বাবলী ।।

**ল**ন্দ্রীপুদ্ধঃ পু॰ পদ্মরাগমণিঃ। ইতি হেমচনদুঃ।।

बाक्षीकवाः भू॰ विवृक्कः। ইতি बाक्षिवर्षः।।

লক্ষীবান্ পুণ পনসকৃষ্ণ: । ইতি
শব্দালা ॥ খেতরোহিতকৃষ্ণ: ।
ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

निक्षीवान् जि श्रिकः। धनवान्। তৎপর্য্যায়:। লক্ষ্য: ২ থ্রীল: ১ শ্রিমান্ ৪। ইত্যমর:॥

वाक्वीत्वष्टेः शृ श्रीत्वष्टेः। ইতি ब्राजनिर्विष्टेः॥

লক্ষী**শঃ পু**॰ বিষ্ণু:। ইতি মুঞ্চ বোধব্যাকরণ ।।

नक्षीमनास्वया खी मीजा। ইতি भवत्रद्वावनी ॥

वश्रीमहरूः शृ हन्मुः। **३७ मफ** ब्रज्ञावनी॥

नक्षात्रामः भू दग्राज्यः। ইতি भद्रमाना॥

वकाः क्षी भद्रावश्कानः। उट-शर्यप्रायः। नकः २ भद्रवाः २। ३७४मतः ॥ भुजिकायः ४ त्यपः ६ वि इंडि क्रोशितः ॥ (यथः ५ । हेंडि भक्तकावनी ॥

लक्तरः वि लक्त्यार्याष्ट्रः। इंडि जाह्डिप्रस्थाः॥ मर्भनीयः। इंडि ्लक्ष्याद्वर्थम्भनारः॥

লা ল পুছে। ইভি কবিকল্পজমঃ॥ ল লাভি ৷ পুছো পুছণ ৷ ইভি দুর্গাদাসঃ॥

ना की गुरुषः ॥ मानः । ইতি सिमिनी ॥

লাথ পা শোষালমর্থযোঃ । ইতি কবিক্লুজনঃ ।। খা অললাখং । ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

লাঘ পা ড শক্তৌ। ইতি কবিকল্পদন: ॥ পা অললাঘৎ । ড
লাঘতে। শক্তি: সামর্থ্য । ইতি
দুর্গাদাস:॥

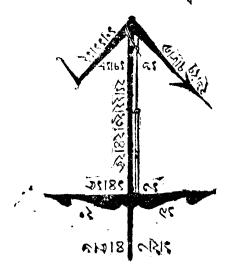
লাঘৰণ ক্লী আরোগ্যণ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ।। লঘুত্বণ । লঘো র্ভাব ইত্যর্থে ফ পুত্র্যেন নিম্নন্ধণ।।

লাস্থল ক্লী স্বনানখ্যাতভ্নিকযাণ্যন্ত্ৰ । তৎপাৰ্য্যাণ: । হল । ২
গোদারণ ৩ সীর:৪।ইত্যমর:॥
হল: ৫হাল ৬ হাল: ৭ শীর: ৮
। ইতি ভরত: ॥ লিক্: । ইতি
ত্রিকাওশেব: ॥ পুস্কবিশেব; ॥

ভালবৃক্ষ: ॥ গৃহদাক । ইভি মেদিনী॥

লাক্লগৃহ: পু॰ কৃবক: । লাক্ল॰ গৃহাতি ব ইত্যথে অল্ পুত্যযেন নিয়ন: ।।

नाक्नाठक॰ हो क्विक्यिंगिक्नां कात्रक्रिविष्णयः । यथा । यथ नाक्रनठक॰ सद्ताप्तयं । नाक्रन पिका यून त्याकु घर ममनिउ॰। पिकापि नित्थि ज्ञानि पितिणाः काष्ठजापिजः ॥ पिक्रिका क्रम् भाना॰ वि वि क्यानि जिक॰ जिक॰। त्याकुःयाण्ड जिक्थित मध्य नक्षाः गुर्क विक॰॥ प्रश्लेष्ठ मथा। नक्षीः प्रश्लेष्ठ सामित्ना ज्य॰॥ नक्षीः र्नाक्रन त्याकुंन्यार क्षिजात्रस्र पिनक्रिक। ইजि (क्यां जिख्नुः ॥



। ইতি | नाक्नप्रः লাস্লমধ্যস্থ-काँहै । नाक्षावत्रकेन देखि जावा । उद्भर्तप्रायः । देना २ । इंडप्रमदः ॥ हेरा १। इंडि मद्रञ्जावनी ॥ नाक्रनभक्षिः जी नाक्रनात्रथा। - नितान इंडि ভाषा। उर भर्यायः । भीजा २। इंछामद्रः ॥ भीजा ०। इंडि भदद्रशावनी॥ षाकृषिकः भुः ज्ञाबद्गविष्टिमः। ইতি হেম্চন্য:॥ लाञ्च निका बी नाक् नीवृक्तः। इंडि मदत्रु वादनी ॥ वाक्विकी को वृक्विवास्यः। वा-क्षिया ইতি বিষলাক্ষিया ইতি চভাষা। তৎপর্য্যয:। অপ্রিশি-

नाञ्चली न् भू वनतामः। ইতি मध-त्रवावली ॥ नातिकनः। ইভाমतः शामिशः। इंडि मद्द्रिका ।।

वाक्र्ली की नाक्र्लाका अभू अ

कन्ध्रमाक दिल्म थः। काँ हिए। इंडि

छाषा। उर्था श्री थः। मात्र नी २

(डाय शिश्रणी ० मक्र्ला रनी ८।

इंडि अवस्था । कन्या ।। शि

खना १ महासार नी ৮ सर्मा शक्षा

२। इंडि अहे। यहः।। कन्या का निर्धा ।।

हंडि द्रां का निर्धिः।।

नाक्रल की शहर। इंडि सम्ब्रीका

वाक्वः क्षी शृहः। इउःभद्रशैकाः नादमुक्तती॥

वाक्ष्वः की शक्षशकाव दिवसमान

(वामागुर्यय विश्वस्यः । वा । क इंडि क स्वा । क प्रश्रायः । शृहः २

वा । वा वा क इंडि क वा विश्व ह ।

हे क असे ।। विष्ठ ते । क वा क विश्व ह ।

वा । में क स्वा । वा क विश्व ह ।। विश्व विश्व ह

नामृतिका छो नृत्तिभगी । है उ

नाक्नी नृ यानद्रः। ইতি निय-हिन्दुका॥ अवजनादीवधः। ইতি
आक्रिवंदेः॥

वाष्ट्र **चन्नि । इठि क**विकत्तः कनः ॥ **इ वाक्ट्राठ । वाक्टि**ः इठि पूर्णामामः ॥

লাজ ) ভদ্ধনে ।। ভর্গে। ইতি কলাজ ই \ বিকল্পজন: ।। দ্বৌ দ্বিভীষ্
দ্বিণৌ। লাজতি । ই লাঞ্জ্যতে ।
ভদ্ধন এবকৈশিৎ পঠ্যতে । ভগো ভর্জন । ইতি দ্যাদাস: ।।

लाजः हो উयोजः। इङिस्मिनी।। लाजः পु॰ আपूउञ्जाः। इङि स्मिनि।।

वाका की जक्ष इ: । इंडि (मिनि)।।
वाका: भू जून ज्हेशनाः। वाछम इंडि थहे हंडि ह जाया।
उद्भर्णायः। जक्ष छ र । हंडामदः
।। वाका ० जक्ष छाः ह। हंडि जनछः ।। जमा खाः। ज्का ह कांडीमात भूत्मह (मनः कक नानिषः।
काम भिरद्याभनानवः। जन्निष्काः।
विदः। व्यदः। नीज्यद्व कः।
वान भुष्डाः। जन्निष्काः।
प्रमा मुख्डाः। जन्निष्काः।
पाह ज्का ज्वाडीमात्र नानिष्ः।

े ज्लाम (रामानभावन द्रक्ष।। उम्र (भरा खर्गाः। कामक्ष्रेनामुग्यद्वाः। क्षा कृषा भागित भी बेला अकिरता ग नी निद्धा है जि जो जवल उशाका। श्राम ह। এ:उ ह दीश्या ज्रेश (उ লাজা ইতি সংজ্ঞিতা:। যবাধ-🌖 यक्त (य ভृष्ठः (छ धानाः भविकीर्विः जाः॥ वाडाण्ठ यव्यानाण्ठ जर्भः ণাঃ পিত্তনাশনাঃ। গোধ্ন যাব-नात्वाथाः किश्विषुकाक मीननाः ॥ তৃফাতীসারশমনো ধাতুশাম্য कतः शद्रः। भन्ताशः विषवाशीनाः বাল স্বির্যোধিতাং ॥দেয় সূ অনারাণাং লাজমণ্ড: সুসংস্ত:॥ ইতি রাজনিঘণ্ট:॥ #॥ তস্য চূর্ণ গুণাঃ। দ্বাক্ষা দ্বাডিন খজুর মৃদি-ष्ठाषु मनकंत्र । लाङहर्न मनधा-काः मडभग महाक्उः ॥ लाजः ह्र्न मुक्काि कलमक्त्रा यशाका সহিত তপণ মুক্ত মিত্যথ: ॥ লাজশক্তণাশ্চ তণ্গুছে। লাজা-নাং শক্তব: শ্রু দি তাযুক্ত। বি শেষত:। ছর্দ্যতীসার তৃত্দাহ विष गृही ङ्वाशकाः॥ हत्रकण्ठ। ं छव अर्भन भिवासी भूरमयः लाज **मृङ्**छि: । जुडा भरेहः कवडरेन कि गमधु मर्कत ॥ इंकि जाव

नुकामः ॥ बाक्ष्य की नाम ॥ हिझ् । इंडि (मिरिनी।। রাগীধান্য । ইতি नाकुनः भूः त्राजनिघंग्डः॥ कृष्टिश्रु खरक नाकुः ्र नीजि ह भाठेः॥ वाहेः शुः (स्माप्टद्रशा वद्धशा इंडि मिनिनी ॥ जीर्वज्यगानि । इंडि मप्तज्ञावनी॥ लाफ ८ क (कार्भ। इंडि कविकल्ल-क्रमः ॥ नाउपि**७ जन**नाउ**८ ।** ইভি দুর্গাদাসঃ॥ লাগঃ 🖘 কথ্ন াা লপধাতো-ভাবে 🍄 পুত্যযেনেতি নিয়ন ॥ লাপ্য ত কথনীয়া লপখাতো: কর্মা ব্যাণ প্ত্যায়েনেতি নিয়ন। ইতি নুপ্রবোধব্যাকরণ ॥ शृ॰ गूलश्वामदिकः वाणि-লাভ: क्रामार्किउ धन । उरमर्यग्रयः। কল ২। ইত্যমর ভরতৌ।। লভ্যু• ত বৃদ্ধি: ৪। ইতি শব্রজাবলী।। भाखि:। ইতি वाज्यापुर्यनर्भनांट ॥ াাভ্য ক্লী বাভঃ।ইতিশ্বর্বা-वनी।। লামজ্জক ল্লী বীরণম্ল । ইত্য-মর: ।। অস্ত পর্য্যায় গুণাবৃশীর नाम मुद्धावती।। डेनीबद्द भीड- हित ज्नितिलायः । उद्भर्गायः । म्नानः २ व्यम्नानः २ निरं ८ निष् ६ इडिकामिकः ५ नीषुः १ मीर्घ मूनः ৮ बनानयः २। व्यम्र छनाः । श्मिषः । जिक्षः । मध्रषः । वाज भिड ज्फ् मारु मुम मृहार्डि तक न्न न्नामरुष्धः । ইতি नाकः निर्विषः ॥

नानन की अउडिएम्हक्त्रणः।

(भूमभूर्वक वानकाष्त्रणः।साहाण
हेि जावा। निर्धकाभरम्य जैभस्मित्र हेर अउडिभाननः। क नानायर भक्षवर्षाण भू अवि अव
रिनाया स्मित्र हिंग कि कि
कन्न के विकासः पूर्णाषामः॥ जथा हि। नान्य वह्या स्मित्र हो।
जिम्हा जाउयमञ् नान्यर ॥
अभिक्ष जाउयमञ् नान्यर ॥
अभिक। नान्यर भक्षवर्षाण पभवर्षाण जाउयर। भूगछ ज्यारिम वर्ष भूधः मिव वषाह्य ।
हेि हानकाः॥

नानमा भ् खी महाक्ष्तिमः।

हेउपदः॥ ॐ८मुक्रः॥ याद्धः।

हेडि सिरिनी॥ स्ताहरः। यथा।

स्ताहरः सोर्हरः मुक्का नानमा

मूठिमाम जू। हेठि हिमहन्मुः॥

লোল:। ইভি নানার্থে সএব ়া वालत्रीक की लिह्ल । इंजिं नम-बज्ञाव्रकी॥ मूथ ভरडें व । ने व जी ় ইভি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। সৃণিকা <sup>१</sup>२ मऽस्तिनी ७। इंड्रमद्रः ॥ मुर्गिक्। 8 मृगीका ৫। इंजि नयत्र द्वावली । दि मूथमादः ७। ইতি রাজনির্ঘণীः॥ नानारिकः वि शुर्ভार्जानम्भी ॥ कार्यप्राक्रमः। ইত্যমরः॥ यः स्रोत-कः काष भुगाम विश्व ज्ञानाय भु-ভো ল্লাট মেৰ পশ্যতি। যাস্চ পুভো: কার্য্যে হক্ষমো হশক্ত স্তৌ वावादिको भूर्वदे किकः। (क-চিত্তু কার্য্যাক্ষম ইতি ভালদর্শিন এব বিশেষণ মুক্তা এক্ষেব লালা-िकमाङ नंजू हाविजि। ভारम-भी कि ह भाठेः वालाहिकः महा-লস্যে পুভুভাবনিদর্শিনি । ইভ্য-करः। ইঙি उँछोकाराः ভরত:॥ আল্লেষণবিশেষে পু॰। ইতি মে-मिनी !। ननाउँ मयु ितनि जि। यथा। **প**। छिन्न नाना हिकी जानि ॥

লালামেহ: পু: পুমেহবিশেষ: ।

যথা। লালাতন্ত্যুত: মূল: লালা

মেহেন পিছিল:। পুমেহ ঠাজিশেয:॥ অসেটাধ্ব:। গুড্চ্যা: যুর্স:

(शारा यथना मर्बस्य हिंडिया हिंदिया চুৰ্ যুক্তো বা বসো ধ্ৰাঞা: সমা-. क्रिक: ।। অপিচ। চন্দুভা বচা র্ব্তা ভ্নিয়া সুরদাক চ। হরিদা-जिविया पादी भिन्ननीम्ब हिक्क ॥ ज्रृषष्ठी भशक्ष प्राचा वर्भ-লোচনা। পুডেবেশ কর্ষমাত্রাণি वर्ष्यारण्डानि वृक्तिमान्।। धानाकः ত্রিকলা চব্যু বিভঙ্গু গজপিপুলী । সুবর্ণনাক্ষিক বেগ্রাব ছৌ ক্ষারৌ न्दर्भवर ॥ अञानि हेक्सावाणि नःगृङ्गीयाट मृथक मृथक्। विकर्ष হতলোহণস্যায়তুঃ কর্যা সিতা ভ-दव । निवाजवृष्टेकर्यः न्यापरक्षी-क्यं क खुनुलाः। विचिना शाकि-रेठ व्ररेठ: कर्च्ना एटिका मूखा ॥ চলুপুঙাভিবিখ্যাতা সর্বরোগ **পুণাশিনী। নিহ**ন্তি বিংশতি । মেন रान्क् हु नदेवियः उथा ॥ ইত্যাদি ভাবপুকাশ: ॥ वृजािः। इंडि नानाविषः (र्यष्म: উৰ্ণনাভঃ। ইতি नानामावः , भुः (रुमहन्मः।। লালিক: । পূ॰ মহিষ:। ইতি হেম-ললিভস্যভাব: ।॥ यथा। श्रीजि छक जनमा या जन-या विद्या विनिध्न मृत स्व त्र वृन्ता-त्रक वृन्त विनिध्न भए नद्या गठ-काननः। शादीः महिष्ठमा विद्या हजूत श्रीजिश्रमाः श्रुद्धाः मः-किशाकत कामनामनश्रम ली-निता नीनाविष्ठीः॥ ইतिनीना-विद्या

াবি: পূ॰ জী পক্ষিবিশেব:।

লাওবা ইতি ভাষা। ইত্যমর ভিরভৌ ॥ অস্য মা•সগুণা:। লঘুত্ব•
। কটুত্ব•। মলবজ্বকারিত্ব•। স্বাদৃত্ব•
শীতত্ব•। ত্রিদোষ নাশিত্ব•। ইতি
রামবল্পভ:॥

नावकः भू॰ नावभक्ती। ७८-भर्यागः। नयूकक्रनः २। ইভি किः काश्रामयः॥

नावनः जि नवर्गमःक्ष्रः। यथा।
मार्लिकः मादिकः मर्लि मंदिन्।
मःक्ष्रः क्रमारः। नवर्गामकान्।
मनकः नाविनक मुम्थिन ॥ ॐमथिन भोम्थिरकः नवर्ग म्यानुनावनः। ইनि ह्मिन्मुः॥ नवनमद्यक्ति ह।। नरम्य न्नी। ইनि द्रञ्चमाना।।

লাবণিক ত্রি লবণেনসংস্কৃত । ইতি হেমচন্দু:।। লবণসংশ্ধি চ।। লবণবিক্রেতরি পু: 11\_লবণপাত্রে লাবা ক্লী। ইতিকেচিৎ 11

क्री लवगद्गा लवगम् वावनाः ভাব ইত্যৰ্থে ষ্ণ্য প্ৰত্যুযেন নিষ্ক্ৰমণ १। (नोन्द्र्य)विष्णवः। उन्। जन्मः यथा। मुकाकलम् हायाया खन्न जु মিবান্তরা। পুতিভাতি যদক্ষেযু ভল্লাবণ্য নিহোচ্যতে। ইত্যুজ্জু वनीवमितः ॥ छथा हि । नीजि ভ্মিভুকা নতি গুণবতা হী রক্ষ नाना॰ धृष्ठि मेम्प्राल्याः निमाया গৃহস্য কবিতা বুৰে: পুসাদো গি-রাণা লাবণ্য বপু**ষ:** মৃতিস্ত মন সা' শান্তি দ্বিজস্য ক্ষমা শব্দস্য <u>দু</u>বিণ• গৃহা<u>শু</u>মবতা: স্বাস্থ্য: সতা॰ মণ্ডন ।। ইতি নব্রত্নান্তর্গতামর-সিॱहः ॥

नावना जिंड के की विवाह का नी ने समुद्रा जा प्रमुखा जा प्रमुख ने प्रमुख वा प्रमुख ने विवाह कि स्वाप्त ने कि स्वाप्

नावा जी शिक्षिविष्णयः। छ्ट्र भर्यायः। नावकः २ नावः ठं ज्ञांवः ४। अक्ष्यां भाग्य ख्याः। भवश्यः। पुष्टिष् । नघूष्यः। इंडि ब्रोबः भिर्यक्तेः॥

नातुः / क्री व्यनातुः । ইতি भद-नातुः / ब्रङ्गावनी ॥

नामः भूः न्डामावः॥ श्वीगाः न्डाः। इडि मदत्रवादनी॥ यूवः। इडि मदहिमुका॥

जानकः ज्ञी मडेकः। महेका ই डि ভाषा। ইতি হারাবলী।। जानकः भूः जाना काती।। मय्तः ।। जनकः। ইতি মেদিনী।। বেই:। ইতি ধরণি:।।

वानकी हो नर्वकी । इंड्राम्बः॥ वानिका । वात्मार्वेनी जी व्यात्मार्वेनी। (वर्ष-निका । इंड्रामबर्गिकायाः द्राय-मूक्रोः॥

वामाः क्षी नृजाः। ইजामाः॥

(ठोर्याविकः। ইউश्वितिनी॥ जाः

दाम्यः नृजाः॥ जाव्यवाम्यः नृः

जाः । ইতি जत्रजः॥ भुःनृजाः

जाः भुः । ইতি जत्री नृद्धाः वामाः

नाद्रमाः हिज ।

नाका

भू• नर्जक्ः। ই**डि भ**द्रः

क्रेड्रांचनी ।।

नाजुर्कः क्ली न्डरः। **है** (ड मदः बहावनी ॥

लामता जी नर्जभी। ইতি শক्ष ब्रज़ावली॥

निक्रमी जी जीजा यथा। त्राघ व उठ हैय॰ जीजा हाइरकण जा क किन्नी। विरक्षा १ वजात्र भाजना जन्नी या कभणाणया।। वात्राप-जाा॰ विणाणाकी विभणा शुक्रवा-खरम। विश्वरिश ज्ञानकी त्राधा द्रम्रावरन वरन ॥ लक्षणः कभणा-मारमा यमाः जा लाककी भजा। जव॰ ज्ञानस्माणा भी खती त्राधि काधिका।। हेकि भारमा खत्रथर ७ १८ ज्ञानस्माण

লাক নিক: পু॰ লক্ষণবাপুতিপা-দক:। ইতি সাহিত্যদৰ্পণ:॥ ল ক্ষণাত্মক বৃত্তি মৎপদত্ব• লাক্ষ নিকত্ব•। ইতি সারমঞ্জরী॥

লাক্ষা জী কেবর্ণবৃক্ষনির্যাসবি-শেষ:। লাহা ইতি ভাষা। তৎ-পর্য্যায়: ব্যাক্ষা ২ অতু ৩ বাব: ৪ অলক: ৫ জনামথ: ৬। ইত্যমর:

नैनक्षा ३० कमिश ३३ कम

वाकारिङ

ব্যাবি: ১২ অলক্তক: ১০ পলাদী ১৪ মুদ্রিনী ১৫ দীপ্তি: ১৬ জন্তকা ১৭ গুলুমাদিনী ১৮ নীলা ১২ চনত্ত্ব

गञ्जभोषिनी ১৮ नील। ১৯ पुरवाम। ২০ পিভারি: ২১ । অস্যা গুণা: ।

क्ट्रेयः। जिक्दः। कवाययः। (स्य

পিত্তাৰ্ত্তিশোফ বিষয়ক্ত বিষমজ্ব-

त्र नामिव्यः। ইতি त्रावनिर्घणः॥

ভগ্ন বিসর্গ ত্রণ্যেষ নাশিত্ব। বল্য-

ত্থ। ইতি রাজবল্লভ:।। অপিচ। লাক্ষা বর্ণ্য হিমা বল্যা বিশ্বা চ

जुरद्रा वद्यः। अनुका कक शिखानु

हिक्का काम जुत भुगूर ॥ तुरागद्रः-

ক্ষত বীসর্প কৃমি স্বস্তগদাপহা । অলক্তকো গুণৈ স্তদ্ধদিশেবাদ্যসূত্র

ব্যাক্তকো ভণে ভন্নাধ্যলে বাধ্যস্থ নাশন:॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥

वाकाउकः भू भवामव्कः। हेि सम्मावा।।

वाकारिजनः क्ली भव्येजनिवाभयः।

वाकामिरिजन निजि थ्याजः। ज
मृदिशः बन्नः वृष्ट् । यथाकनः

ज॰ भुकातः जम्ख्यकाष्ट् । वाका

प्रतिम् निक्षित्रं करेन्न रेखनः विभानः

विजः । जम्ख्यनात्रनार्मन मास्

भीजक्षताभरः॥ ইजि बन्ननाकारेजनः॥ वृष्ट्रम्था। वाकात्रमाहरक

পুছ তৈল্স্য বিপচে ভিষক। ম-

স্তাতক সমাযুক্ত পিষ্টাচাত্ৰ সমাব-

লিক্বা

পেশা শতপুত্রা হরিদাঞ্চ মূর্ণি विष्ठः हरत्रगुकाः । कर्नुकाः वस्त्रभ ब्रामा गर्भगक्ताक मान है।। गुडकी हन्त्र त्क्व भ्यमक म्यान कः। पृ িব্যেরেতৈশ্চ তৎসি**দ্ধ** অভ্যক্ষারা<sup>ট</sup> क्ठानर ॥ विवसाश्रान् कृत्रान् नर्वानात्त्रव भुनमः नरमः। कामः श्वात्रः नुजिन्तायः कञ्नः होर्नक्षः গৌরবং॥ ত্রিকপৃষ্ঠ গুড়ং শ্লং গা-वागाः गुरुम्ख्या । नानानकी পুশমন সর্গুছ নিবারণ।।অস্থি-**ভ্যা॰ निर्धिङ সম্যক্ ভৈল॰ লা**-कारिक गर्ट। इंडि त्र्लाका তৈল। ইতি স্থবোধ:।। नाकाशुत्रामः भुः शक्तिकालाधः। ইতি রাজনিঘণ্ট:।। लाकाशुत्राहनः शृ॰ द्रकलाशुः। তৎপর্য্যায়: 1 ক্রমুক: ২ পর্টিকা ১ প্রভী ৪। ইত্যমর: ॥ দাকাবৃক্ষ: পু॰ কোশানু:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। পলাশবৃক্ষ:। ইভি राद्रावनी ॥ विक्ठ• চুক•। ইতি রা**জ**-निर्घणेः ॥ निषठ: श्र लब्धः । ३७,५वः ॥ বিক্লা স্ত্রী বিক্ষা। ইতি শব্দর্লা ্বদী ॥

বিথিত निया भारत्या । इंडिक्यिक क्मः॥ म निथां ज्यु कि रेज्येकः ा जार विভावना जिलानिमिनि (किट्ट) (उन निशिष्टु: विश्वेम्। **्रिल पिक्क्शिन विकि। निर्धिः** তব্য লেখিতব্য লিখন ইত্যাদি निष्कः। ইতি मूर्गामामः॥ বিথ ই সৃপি।ইভিকবিকন্নদমঃ। ই লিহ্ব্যতে। সূপি গতৌ। ইতি पूर्णामानः ॥ লিখ: পু॰ লেখন•। ইভি লিখ-থাতো: ক পুত্যবেন নিষ্ক্রম॰।। লিখন क्षी লেখন । লিপি:। इंडामत्र हीकायाः मात्रमुन्दती ॥ বিধি লিশি রখণ্ডনীয়া যথা। যস্য যল্লিখন পূর্ব কুত্র কালে নিক্পি-ত । তদেব খণ্ডিসু<del>- রাবে</del> ফ্নাে নাহঞ্চ কো বিধিঃ।। বিধাতু চ ज़ि-ধাতাহ থেষা বল্লিখন কৃত । বু-कामीनाक क मागा न उट थए। কদাচন।। ইতি বুন্ধবৈবৰ্ত্তে ত্ৰীকৃষ্ণ-জন্মথণ্ডে ১৫ অইন্যা: ॥ লিখিত ল্লী লিপিছ।ইত্যমর: ॥ লেখন•। ইভি ভরতা 🛭 লিখিত-পত্রাদৌ ত্রি। যথা। গ্রমাণ লি-থিত ভুক্তি: সাকিণ শেতি বী-র্ভিত। ইতি মিতাক্ষরায়া যাহ্র-

वैद्याः । मृनिविष्णुत्य भ्राया । त् পুরাশর ব্যাস শর্ম হৈথিতা দক ক্লেতমৌ। শাতাত্পে, বলিগ্ৰন্থ পুৰ্মশান্তপুষোজকা: 🛊 ইতি শুদ্ধ-**ज**रबु याद्धवन्नाः ॥ निथा जी भित्रगानित्भवः। यूने 🖍 । जानास्त्र गएउ जानो यहानु मृ-শ্যতে রক্ষ:। তৈ শ্চত্রভি ভবেল্লি-খ্যা লিখ্যা ষ্ড্রিষ্ট সর্বপ: 11 इेंजि न यह निष्का।। লিগ ই গভৌ। ইতি কবিবলুজন: ।। ই निक्राउ। ইতি पूर्नामामः ॥ লিগ ই'ক চিত্তে। ইতি কবিকল্প-क्रमः ॥ ই क निक्रवि नदः जी नशुःगरेकः भाष्मिकः विजः कात्राः जी अर्थः। इंजि. मुर्गामा**मः**॥ ন্ত্ৰী 🔎 ন:। ইতি সিদান্ত-🖈 মুদ্যামুণাদিবৃভিঃ ॥ লিভ: পু• মুর্খ:। ইভি সি**দ্ধান্ত**: कोन्राग्नाहिवृज्धः ॥ जुनुरहणः ।। মৃগঃ। ইভি নানার্থর্জ্মাল।।। निकः जी किन्ना । एकः। इंडा-भद्रः ॥ व्यक्तिमानः ॥ मारङ्काङ-भुक्जि: भू निवम् किंविएनवः। इंजि मिरिनी हैं। व्यानाः ॥ व्यक्तः ॥ প্ৰান্ত 👫 । ইতি ত্ৰিকাওশেষ: ॥ इनिर्धाः । रूपा । यावञा स्मव

্**ধাতূনা॰ লিক্ব•** ৰুটিগত• ভবে**ৎ** ৷ অৰ্থ শৈচবাভিধেষস্ত ভাৰন্ডি ৰ্গুণ विग्रः ॥ देखि जिल्लामिकाकु এटर कात्रिका वर्राथरायाः त्रधूनन्त्रनः ॥ 🛊 ॥ অৰ শেফার্থস্য লিঙ্গস্য পর্য্যায়: । শিশ্ন: ২ শ্বরস্তম্র: ৩ উপছ: ৪ ম-मनाञ्च्याः ৫ कन्मर्भमृष्याः ७ (णकः ৭ মেহন ৮ শেক: ৯ মেটু: ১০ ना' ७: )) युक्तः )२ त्राणन ७। )० वाकः ১८। ইভি শবর্মবলী।। नाक्न ३६ माध्न ३५ (मक: ১१ कामाक्षाः ১৮। इंडि करें। ध्रा ॥ 🛊 ॥ विक्रम् व वाि वास वर्गयुक ৰাধিষ্ঠান নামক বড্দল পদ্ম মস্তি । যথা। মূলাখারে ত্রিকোণাথ্যে ইছা জ্ঞান ক্রিবাত্মকে। মধ্যে স্বয়ম্ভ লিক্স্ত কোটিস্ব্য সমপুভ।।। ত-দাছে হেমবর্ণাভ ব স বর্ণ চতুর্দল । । उम्रक् नि मम्पूर्ण वस्तर शेतकः भुछ ।। वामि लाड याउरान युक्का-ধিষ্ঠান সংজ্ঞক। স্বশক্ষেন পর লি-হু॰ স্বাধিষ্ঠান• ভতে। বিদুঃ ॥ ইভি **७ 🗝 ।। 🗱 ।। अ**न्याविधाक्रिक्**।** पि र्यथा। **পুজनः সর্বভ্**তানা মুপছো २४) जा मूह्राउ । अविज्ञः उथा मुक्र रिवटक भुकाभिजः ॥ इंडि মহাভারতে আখনেধিকপর।।।।।।

क्कानादिङ नङ । मनिदर्ग गरा কাল নন্দীশ পদারণগবং ॥ পদা রাণ নিভ॰ সর্ব' মহাভ॰ সিদ্ধ প্ জিত । মৌক্তিকাভ नी निवंछ क मानिटिं। भुभूबिंडः ॥ यमुरिः मः न्तु राक्तमः अश्रोक यांजुवानीकः। नानादर्भगः नीनः भगाक्रम् अन পুত ।। ইতি বীরমিত্রোদযধৃতকা লোভর:॥ ইতি বাণলিক লক্ষণ' ॥ 🗱 ॥ অথ ভস্য পরীক্ষা। ইত্ত্যে তল্লকণ পোক্ত পরীক্ষাতন্ত্রকো বিদৈ:। ত্রি: সপ্ত পঞ্চ বার বা তুলা সান্য ন জাযতে। তদা বাশ সমা-খ্যাত শেষ পাষাণ সম্ভব ।। ইতি वीत्रशिकामगध्डः ॥ जुलाकत्रगङ তঞ্লেন। অপর তুলাদিষু তঞ্লা-यम्ऽधिकाः जूऽ खरा उल्लिकः गृहिः गाः न्बा भवशार्याः लिक्षकिषिकः **उ**रहामामीनश्काउदि । কিম্বন ম্ভীতি হেমাদুধ্ত লক্ষণকাণ্ড'॥ সপ্তকৃত্ব স্তলাকঢ• বৃদ্ধি মেতি ন হী-যতে। বাণলিঞ্চ নিভি খ্যাত (শষ• नार्यम मुहुरा ।। जि भक्ष वाद्र॰ य-সৈয়ে তুলাসান; ন জায়তে। তদা বাণ সমাখ্যাত শেষ পাষাণ স দ্ৰব•॥ ইতি সূত্ৰস•হিতা॥ নদ্যা• वा পुक्तिशिख्याचिना उन्भवणः

उ । वागिलकः उमा विका गृतः मूथ विवक्ति। इंडि वीत्र विकासिः 👈 ११ 🗱 ॥ तीवनीय वृह्शिक त्रिष्टि त्रिष्टि বৈব। অৰু বাশ সমাধ্যাত মথা ব<del>্যক্ত তথাদিত:</del>। বাণ: সদাশিবো দিৰো বাণো বাণাম্ভরো ২ পিচা তেৰ থমৈ কৃত ওমাৎ বাণলিক মুদা-হত । সদা স্মিহিত ত্ত্ৰ শিব: नदार्थनायक: ।। क्**उ**नुविष्ठः उल्लि ক্ত<sup>°</sup> বাণাখ্যেন লিবেন চ। পক্ষজ**স**্য ফলাকার॰ সণ্ডলস্য সমাক্তি॥ ভুক্তি মুক্তি পুদক্ষৈৰ বাণলিস্ব মৃ-দাহ্ত ।। পদ্ধক্ষকল পদ্মবীজ ।। পদ্বজন্ব ফলাকার স্বস্তুটাও সমা-কৃতি। ইতি ছেমাদুগৃত লক্ষণকা-ণ্ডে পাঠ: ॥ 🐙 ॥ দেবী॰ পুতি 🎮-ववाकाः । भुभन्ते नार्मम् निष्कः পদ্বস্থ ফলাকৃতি । মধ্বর্ণ তথা শৃত্ল॰ নীল• মরকতপুত্ত•॥ হ॰সডি-যাকৃতি পুন: স্থাপনাযাণ পুশাস্যতে । ৰয় সংসুবতে লিঙ্গুণ গিরিভো नगराकत्व ॥ भूत्। वानामत्त्रनाइ॰ পার্থিতো নর্মাত্রী। আবিরাস গিরৌ তত্র লিস্কেণ্ট্র নহেশ্বর:।। বাণলিক নিপ খ্যাউন্নতো হর্থা জ্ঞাতীতলে। অন্যেষা কোটিল क्रानाः भूडत्न यट कनः वरंडटः । ্ভৎ কলং অভতে মতেঁয়া বাণলি रेक्क. भूकसर । ज्या । जागी वा मूर्पाइकी बागी नार्गानी बाह्री ख्या<sup>)</sup>। (वि**रका र शु**करिवा। खब अ इाभा भूबायर ॥ # ॥ भूजाइः যো ইযেলিক নার্ঘদ ভক্তিভাবতঃ ৰ ঐহিক কি ফল ভদ্য মুক্তি <del>ন্তস্য করে ছিতা।। ইতি পুত্যহ</del> বা-ণলিক্প্জাযা: ফল। ইতি যাত্ত বিল্পাহিতা ॥ 🛊 ॥ সংস্থাপ্য 🗐 वानिकः त्रव्यकारिसनः ভवट । রসলিকে ভতো বাণাৎ ফল কোটি ন্দ্ৰণ স্থাত ॥ গুণাস্থ রসলিক্স্য বজু শল্পেতি শঙ্করী ৷ সিদ্ধ**ে**। রসলিক্ষে সুর্রণিমাদ্যাঃ সুসংস্থি-তা: ॥ ইভি স্তস্হিতা ॥ 🗱 ॥ রত্বাত্মযান্তের লিকানি কথিতা-ন্যপি । পবিত্রাণ্যের প্র্যানি সর্ব-কামপুদানি চ।। এতেষা মপি সর্বোণ কাশ্মীরণ হি বিশিষ্যতে। কাশ্মীরাদপি লিজার বাণলিজ্ বিশিষ্যতে ৷৷ বাণলিস্থাৎ পরং না-ন্যৎ পবিত্র নিহু দৃশ্যতে। ঐছিকা-মুম্মিক সর্পপ্রাকরু: পুষছতি ॥ ইভি বাণনিঙ্গ পুশ সা। ইভি কে 📰 त्रथ्थः ॥ 🗱 ॥ निन्तु विक्रभाष्ट् জীৰীয় । কৰ্মশা বাণলিক্ষে ভূপুঞ मात्रकाया जत्र । विभिन्ने भूकिए তিমান্ গৃহভকো ভবেজুবে ৷৷ এক পার্শব্রিতে ধেনু পুঞ দার ধনক্ষঃ। শির্মি স্কুটিতে ব্যাণে ব্যাধি মর্মাণ भिव ह ॥ कि मुलिक्ट एहिं एक वारा विष्मणगमन ज्याद । निष्म ह कर्निका॰ मृद्धे। वशस्त्रिमान् काय्उ भूमान्।। अञ्जाकि विवाश्य जूला-थनानाः कर्या ভरवट !#!! जीका<u>ग</u>ः वक्कीर्यं वाजुनिक् विवर्धायः । অতিজ্ল ঞাতিকৃশ মল্ল: বাভূষণা-न्निजः।: शृशी विवर्क्कायखानृक् उन्ति নোক্ষার্থিনো হিত'। ইতি দুষ্টবাণ-লিঙ্গ লক্ষণ । ইতি হেমাদু:॥॥॥ শুভলিক্ষাহ। অর্থদ ক্রিল লি-क् चना ७ भाक्क का क्रिनः। लघु ता किना अला गृशी विवाहरिय कृति ।। প্জিতবাদ পৃহস্থেন বর্ণেন ভুমারো। পন•। ভৎ সপীঠ মপীঠ• বা মন্ত সংস্কার বর্জিত ॥ সিন্ধি মৃক্তিপুদ লিহ্নু সর্বাসাদ পঠিগা। ইতি শুভবাণলিক লক্ষণ । ইতি বীর নিত্রোদ্য: ॥%॥ বাণলিক্ষেদ্বাবাহ-नामि न कर्स्वाः यथा। वार्शवङ्गानि রাজেন্দু ছিতানি ভূবনত্রযে। ন পু-ভিষ্ঠান সাক্ষার ভেষা নাবাহন ন চ ॥ ইতি ভবিষ্যপুরাণ।। 🗱।। ব্রাক্ষ্যে

विक মৃহ্রেচোথায়য়:মরেছাণলিক্কণ। ্ সর্বত্র জব মাপ্নোতি সত্যু সত্যু ম-হেশ্বর II ইতি যোগসারে ৫ পরিছে<sup>-</sup> भः॥ 🗱 ॥ व्यथ वानिविव्यथ्यानः । उ পুমৰে শক্তি সংযুক্ত বাণাখ্যঞ্চ ম-হাপুভ । কামবাণাব্বিত দেব স नात्रहरूनक्रमः ॥ मृत्रात्राप्ति त्रामाः ল্লাসং বাণাখ্যু পরমেশ্বরং। এবং ধ্যাত্বা বাণলিক্ষণ যজেত্তণ পরমণ **निवः।। यनमा गञ्जभू ह्यारेम्रः अःश्** कामा मन् यात्र । नागागमः ততঃ কৃত্বা বাণলিক্স্ত তোষ্বেৎ।। **ভদিষ্টদেৰয়ে৷ ব্লৈক্য: বিভাব্য বাণ্ডুব:** জপেৎ। ততো জপ॰ সনাপ্যাথ স্ত বেনানেন ভোষযেৎ 1:#1! অথ স্তবঃ৷ বাণলিস্মহাভাগ সংসারাঞাহি-মা॰ পুভো। নম স্তে চোগুরুপায় নম-(ख १वऽक्टरगनरय।। ज•नात्रकात्रिरग ভূভ্যে নম তে সূত্মৰ পধ্ক। পুমতা-य मस्टन्पुाय कालकभाय देव नमः॥ ष्ट्रनाय नम् खर्डाः नम् ख्र (या**गका**-রিণে। ভোগিনাণ ভোগকর্ত্রে চ মো-ক্ষণতে নৰো নমঃ॥ নমঃ কামাঞ্চ নাশায নন: কল্মবহারিণে। ননো ৰিশ্বপুদাতে চ ননো বিশ্বস্থক সিণে ।। वागम्। वज्ञनात्व ह ज्ञावगम्। क्या-**য চ। রামস**্যানু গুহার্থায় রাজ্যায

ভরতস্য চ্যা মুনীনাং যোগদারে চ बाक्त नानाः क्याय छ। नम खंडाः नम सर्काः/नम सन्। नमः॥ अ निहिकान कियुकाय महिमाया-**लियाय ह। जगलियाय महायदिति-**় ণা॰ নিগুহায চ ॥ পরিত্রাণায ফো-গিনা॰ কৌলিকানা॰ প্রিযায চ। জ-লাক্নানা ভক্তায় কলাচাররতায় চ।। হলভক্তায যোগায় নমো না-রাযণায় চ। মধপানপুমন্তায় যো-(गनाय नत्भा नमः । जलनिन्तानु-गाणाय कोलिकानाः সूथाय ह। **स**-न्तरयागाय निष्ठाय मुक्ताय भत्रमाञ्च-নে।।পরনাতারকপায লিক্স্লাতা-काय छ। मरबंधताय महीय निवाय নির্গুণায় চ।। ধ।। ইত্যে তৎ পরম• खश् वागनिक्ना नक्ता यः भरवे সাধকশেুষ্ঠোগাণপত্যু লভেতস: II खवनामा भुनारम यागी यागिद माश्र्या । ब्राज्यार्थिमाः ভবেদু। ज्रुः ভোগিনা ভোগএবচ ৷৷ সাধূনা সা-धन ( एवं को निकाना अन जिल् ় য' য• কান্যতে মন্ত্রী ত• তনাপ্নো-**डि नीनगा। वागनिक्युनारम** সর্বনাপ্রোভি সত্রং। কি মন্ৎ কথগানীহু সর্ব্ব বেৎসি স্লেশ্বর ।। নহাভবে সমুৎপলে রাজ্বারে

क्रावयंत्र। (मणाख्य खर्य भारत मगू) कोतामि मक्कामा। मार्टना **उ**वः রাল্পার ভাষ লভতে ক্চিৎাবাণ लिक्ना माराजाः मारकशार क थिङ भया।। उन्र भूवन भावन नत्त्रा भाक्त भवाश्रु याए। वानिक् अरादाध्यः (याणिनाः (याणजाध्यनः)। কৌলিকানা জলাচায়ে পশ্না শত্রনিগুছে। বেদজ্ঞানা বেদপাঠে রোগিণা রোগনাশনে ৷৷ যো যো নারাধ্যেদেন সর্বণ তলিমূলণ ভ-(त् । इंडि श्रीयागनात **नर्शा**न যোভ্যম পার্বতী শিবসংবাদে বাণ-লিক স্তোত্র° সনাগু• ॥ 🗱 ॥ অথ (दोनुविक लक्षणः । नहीं अगुरूवः द्रोनु नत्नानामा विषयगा**ः।** नहीः ়বেগাৎ সন দ্রিক সংজাত রৌদু মচ্যতে।। ইতি বীরনিত্রোনযঃ।। , সারিৎ পুরাহ সাস্থান বাণলিক সনাকৃতি ৷ তদন্যদিপ বোদ্ধব্যু तोप्तिकः मुथावकः ॥ निर्मातः नर्यराया वागलिक अभाक्छि। उ-मन्त्रमि (दाष्त्रवा निः दोनुः ভবিষ্যতি ৷৷ বৌদুলিস্কণ তথাখ্যা-ত বাণলিম্ব সমাক্তি। খেত রক্ত তথা পীত কৃষণ বিপাদি প্ৰিত ॥ य जारा ८ क् कर्ने वा नर्जा ठियू

निक्तिः। नर्मरा मञ्जवः होषुः वान-लिक् वरीब्रिङ ॥ इंडि द्वीपुलिक नक्रमः। इंडि नक्रम जगृहरमानि ।। 🗱।। व्यथ निवना 🦁 विक् वक्र १। উত্তন মধ্যমধ্ম তিবিষ্ লিক্ মীরিজ। চতুরস্কুল মুৎসেধে রম্য (विषक मुखनः ॥ উखनः विक मा-'খ্যাত' মুনিভি: শান্ত্রকোবিদৈ: । **उनका मध्या (পु**।कः उनक् मध्या মৃত ।। তস্য নহিনা। শিবনাভি ময় লিফ্ প্তিপ্জ্য মহ্যিভি:। **শ**ुरुक मर्वनिष्मच। समार भूजाः বিশেষত:।। ইতি শিবনাভি লিফ্ জক্ষণ । ইতি বীর্নিত্রোদযধূত শি-वनातम मःवामः॥ #॥ व्यथ टेम्ब-লিক্লকণ । সিদ্ধান্তশেখরে। कत मःभूषे मःम्यार्भः मृत्र वेट्हन्तु ভূষিত । রেথাকোটর সংযুক্ত নি-্ৰোন্নত সমন্বিত ॥ দীৰ্ঘাকারঞ্চ य-ল্লিঞ্-বুন্ধ ভাগাদি বর্জিত। লিঞ্-গোল মিতি প্রোক্ত• গোলক• প্রো-চ্যতে ২ধুনা ।। সংমাওস্য ফলা-কার• নাগরক ফলোপম•। কাক-**जिप्त कलाकाद्र** शालिक मिञी-রিত ৷৷ ইতি গোললিক্লক্ষণ ॥ 🗱 ॥ অথার্যলৈঙ্গ লক্ষণ ভত্তৈব। নানা কৌল ফলাকার বুক্ষস্ত বিব-

র্ব। মূলে স্লঞ্ বল্লিক। কণিতা ফল সন্ধিত ।। নালস্য বা ফলা-कातः मार्थः ज्लाकः यक्तावः। नार्थः জুল বর লিক ম্বিবাণ মুদাছ্ত ।। इंड्राविविद् वक्षाः। 🗱 ॥ व्यथ निक् नक्षाः। निकः हि विविधः অকৃত্রিন° কৃত্রিনঞ্চ। তল্লিস্ব• দ্বি• বিধ (জ্ঞয় মচলঞ্চ চলন্তথা। প্-ত্যেক ত্রিবিধ জ্রেয় লিম্ব তদু ভ্যাত্মক ৷৷ প্রাসাদে স্থাপিত निक् महनः उहिनामिकः। ञानि-ত সচল গেছে স্থির লিফ্ম যোজিতে ॥ পঞ্চা তৎ স্থিত। निङ्गः चयसु रेप्तरभान कः। व्यावस्थ লানসং লিহ্ন তেষা লহ্মণ মুচ্যুতে ॥ইভি সিদ্ধান্তশেথর: ॥ আচার্য্য লনবে স্থৈর• স্ব*্*ট্রানহেপর: । रखरेत्व चा॰ वाङः निव्यस्य स्य स ७८ ॥ धननी यम् जन्यांट मञ्जि किनु स्वय छु ॥ इंजि यहै-কম দীপিকা।। 🗱।। নানাছিদু সু-সংযুক্ত। নামাবর্ণ সমস্থিত। অদষ্ট মূল বল্লিক্ষ কর্মণ ভূবি দৃশ্যতে।। **ওলিস্ভ খ**ণয়ুত নপরং লকণ্চ্য ত। ষ্যমু লিঙ্ক মিত্যক্তণ তচ্ব নানা বিধণ নত ৷৷ শহাভনস্তক লিজ্ বৈক্ষা তদুদাছ ত । পদ্মাভদত্তক

বাৰ্ক্য ছ্ৰাভ• শাক নৃচ্যতে ॥ শিরোযুণ্ম তদাণ্নেষ ত্রিপদ যানঃ নীরিত ।। খিন্নাভ নৈর্থা**ত লিক্** বৰুণ কলদাক্তি॥ বাযব্য প্বন্ধ-विल्लक् कोरवद्रस् भरीविजः। कै-শানস্য ত্রিশ্লাভ লোকপালাদি-নিঃসূত্ত ॥ ষ্যমুলিক নাখ্যাত্ত **गर्बणाञ्चित्रणाद्धरिः । ই**তি स्टास् **लिक् लक्ष्म । इंडि मिकास्ट नथ दः** ॥ 🗱 ॥ मृष्ट्री लिङ्गः सर्मिन। स्रास्ट्र তস্য পাৰ্বভি। সৰ্বপাপ বিনিমু ক্তঃ পরে বুন্ধণি লীযতে ॥ এতেষা भूजा कनः उरेवत । विस्मवाहिः লবং মৃক্তিঃ ভক্তবে চানুষজ্ত: । পার্থিক ভুক্তবে শস্তু মুক্তবে চা-চিহ্লিক তথা প্ন:। ছিরলদ্ধী-भूमः (क्रिंगः हेश्मः ब्राह्मा**भूमक उ**र n পুঞ্**জিকর° তানু**° রা**জ নাযুঃ** পুবৰ্জন । ইতি নৎস্যস্কন্হাত-ন্ত্র ।। 🗱 ।। পারদঞ্জ নহাভূত্যৈ সৌ-ভাগ্যায চ মৌক্তিক'। চন্দুকান্ত' মৃত্যজিৎ স্যাদ্ধাটক সর্বামদ ॥ ইতি পদাপুরাণ ।।।।। সর্ফলপুদ। ভূমি ম্ব্য उদ্বদেব हि। অনস্তাদ্য ख्**ञा छ। हो मन्या विमु**र्गुङ्क्लाः ॥ वाद्यो शुकानकाः गर्व दिवास्त्र-

ষাতকারিণ:। নানাবর্ণাস্ক বিজ্ঞেযা व्रोम ग किन्छ क्ला :।। वजाराः माछिकामाण छंडामानि विनिर्मा छ । সর্বকামপুদ পু সা विकः ভাৎকালিক মত ॥ ইতি বীরনি-তোদ্য ধৃত কালোভর:।।।।। গান্ধ: সৌভাগ্যদ লিখে পৌয়া মৃক্তি: नुरायकः। नाना म्तान्त्रः लिकः नाना काम नुसायकः ॥ रिमकजः ख ণদ । লিঙ্গ সৌভাগ্যায় চ লাবণ । উচাটনে তৃ পাশপ্তে নৌলং শত্ৰু क्षयावर्।। जारकालिकः मित्रमुक कृद्वा खळा मगर्याए। इंजिनक्र अगृहयः।।कः। व्यथ् गक्त निङ्•। शक्ः उनुद्राए। कड्द्रिकारा (हो ভाशी **ठजात क्वन्तनग्रह। अक्नम् वर्गः** ৈ চব শাশন। চ চতুঃ সমণ।। এতদ্ব পদ্ধবিশ্ব ক্রা সংপ্ত্র ভক্তিত:। শিবসাযুদ্ধ মাপ্নেতি বন্ধভি: স হিতোনর:। 🗱। পুস্লমযলিঙ্গং যথা। াকার্য্য পুস্ত্রনয় বিষ্ণ হ্যগদ্ধ সন খিত । নবখণ্ডা ধরা ভুক্তা গণে শো ৎবিপতি ভবিৎ ॥ 🕸 ॥ অথ রজোন্য লিস্ক<sup>্</sup>। রজোভি নিখিত• লিঙ্গ• যঃ পূজ্যভি ভক্তিতঃ। বিদ্যা ধরপদ প্রাণ্য পশ্চাছিবসনো ভ-ৰেং।। 🕸।। অথ গোশক্ ল্লস্ণ ।

**একানোগোশক্লিক** কৃত্বা ভক্তা পুপুজাराए । यह न का निर्वादन গোমযেন পুকল্লযেৎ ॥ স্বছেন ভূমি-পতন ব্লহিতেন। শ্ন্যোজ্তেনেতি-बावर ।। 🗱 ।। व्यथ यव (गाध्म नानिकनिक्। कार्याः यश्चि कमः लिङ्गः यव (गाधून मानिजः। 🗐 कामः পुष्टिकामण्ड भूधकाम छन्ह-(य८ ॥ 🗱 । अथ नि जाथ अन्य लिङ्गः । সিতাখণ্ডন্য । লিক্ষণ কাৰ্য্য মা-রোগ্য বর্জন। বশ্যে লবণজ লিঞ্ তাল ত্রিকটুকান্বিত• ॥ ভাল• হরি-তालः। बिक्द्रेकः मधी भिश्नली म-র্চ মিতি পুনিদ্ধ ।। গব্যঘূতম্য লিক্ সংপ্রা বৃদ্ধিবন্ধন । তথা। লবণেন চ সৌভাগ্য পার্থিব সর্ব-কানদ । কামদ তিল পিঙৌত্থ ত্ৰোত্ম নারণে মৃত ৷৷ ভ্যোত্ম সম্বকলদ • গুডোত্ম• প্রীতিবর্দ্ধন• । গন্ধোত্মণ গুণদ ভূরি শর্করোত্মণ मृथ्नुमः॥ वःमाऋ्द्रात्यः व**ःमकदः** গোন্য' সর্বরোগদ'। কেশাস্থি স-स्रुवः विञ्चः **भर्तम**ञ् विनामनः ॥ ক্ষোভনে মারণে পিষ্ট সম্ভব' লিঙ্ক মুক্তন । দারিদুদ জ্ঞােজ্ত পিষ্ট ञात्रयञ्भूमः ॥ मसिम्रकाच्छवः व्य-कः कीर्खि नक्षी मूथनुमः। धानाः

मः धानाजः लिकः कलायः कनमः ভবেৎ ৷৷ পুয়োত্ম দিব্য ভোগাযু मू रेक्ट शबीकलान्डवः । नवनीः তোভব विद्र कीर्डि मोडाग्र বৰ্জন•া দুৱাকাও সমুজ্ত মপম্ত্ নিবারণ। কপুর সম্ভব লঙ্কে চলা বৈ ভুক্তি মুক্তিদা:॥ অযক্ষান্ত চত্ত্-ধা তু জ্ঞেষ সামান্য সিদ্ধিষু ॥#॥ সর্ব নব ভব শুেষ্ঠ তত্র বজু মরি-ছিদি। যনলিঙ্গণ নহাভূত্যৈ সৌ-ভাগ্যায চ মৌক্তিক। পুষ্টিমূল মহানীল জ্যোতি স্তীর সমুদ্ভব ।।। म्भार्मक अलमग्रेटि टिब्बन मूर्याः কান্তজ। চন্দ্রাপীড মৃত্যুজিত স্থা: िकः मर्बकानमः ॥ हन्मुश्री**उ**•हन्मुः কান্ত সিভ্যৰ্থ: ॥ শ্লাখ্য স্ণিজ শত্রক্ষযার্থ নৌক্তিক তথা। যৎ-সলিধানাৎ শ্লরোগনাশ: স শ্ল-নণি:। আপুঞ হীরক জ্রেব রো গছন্মৌক্তিকোন্ডব•। শুভকৃৎ পুষ **न॰** डीर्थ रेवमूर्याः मजूरभंक्ट ॥ नीवः वन्त्रीभुरः (छ्वयः म्हाविकः नः র্বকানদ । ইতি সারস পুহেবিশেষ: ।। #।। মহাভুক্তিপুদ• হৈন• রাজত॰ ভূতিবর্জন । আরক্ট তথা কা স্য भृग् नामाना मुक्तिनः ॥ आद्रकृष्टे॰ পিডল' ॥ ত্রিপু শীশাঘসং লিফ্'

শত্রণা নাশনে হিত । কীর্তিক का नाज विश्व त्राह्म शुद्धियर्छ-না । পৈওলা ভূজি মুক্তার্থা মিশু-कः अर्दामिकारः। निमुक मध्याजुः निर्मिउ । इंठि कार्ट्वा खद्रः॥ 🕸 ॥ পিতৃণা মুক্তযে লিফ' পুজ্য রন্ধত-সম্ভব'। হৈনজ সভ্যলোকস্য প্রা-**श्वरिष्ट श्रमान् ॥ शृक्षरिखी**-মুজ লিক্' পৃষ্টিকামে। ছি মানব:। ইতি শিবনারদ সংবাদ: ।। 🗱 🛭 **जागामिलिक्श्यन्छ क्लीज्रश्र** । ভানুলিস্ব কলৌ নাছেৎ রৈভ্যস্য भौभकमा ह। दक्किन्सन विञ्च শত্র কা-স্যায়স- তথা।। তুপ্তিকাম-স্ত সতত । বিহ্ন পিত্তল সম্ভব । কীৰ্ত্তিকানো যজেন্সভ্য লিহ্ন কা-न। मगुख्य ॥ मजुगादग कामस विक्र वोङ्गय जना। जना भी-नगर जिक्र नागुकाता ९ई(रा९ নর: ৷৷ ইতি মৎস্যসূক্ত মহাতত্ত্রণ ॥#॥ हित्रवाश्री भूम रेहन त्राज उ চৈব রাজ্যদে । পূজাবৃদ্ধিকর রাজ • ভামু মায়ু:পুবর্জন ॥ বিদ্বেষকার-ণ কা স্ত রীভিজ শ্রুনাশন। রোগন্ন শৈশক লিঞ্জ নায্স শতুনাশন ।। অষ্টলৌহনয লিস্ব व्यक्षत्राभक्षयावरः। जिल्लोर्म् म् ख्रुवः

লিঙ্গণ বিজ্ঞান পুতি সিদ্ধিদ ॥ इेंडि लक्ष्मिममहरः ॥ 🗱 ॥ 🗐 शुः म् रज्ञा लिक् भिलाक नइनि किरः। शखुकः धनरः माकामीककः ভোগসিদ্ধিদ ৷৷ ইতি লিঙ্গুরাণ ।। 🚓 ।। গদ্ধপুল্লময় • লিঞ্চ তথামাদি विनिर्मिष्ठः । कस्त्री मस्त्रवः निकः धनाकाद्भी भुभूकत्यर ॥ निञ्च॰ त्या-द्राप्टानायक क्षकाम् क्रूडायर। कांडिकामञ्ज मञ्ज लिङ्ग करूम সম্ভবে ।। খেতাগুক সমুজ্ত ন-श्रावृष्कि विवर्षानः। श्रात्रगाणकिमः विञ्च॰ क्**का** छक नमुख्त्व॰ ॥ यक्ककर्म-**म**मञ्जू ठ•॥ ইতি काला खदः॥ #॥ পার্থিবে শিব প্রাযা সর্বসিদ্ধি-युष्ठा ভবে । भाषात मिवभूका-याः विख्नः कलभी ब्रिजः ॥ सर्नालद्य চ পূজাযা শত্না নাশন মত। नर्विभिक्षीचाता (द्रोरिन) कल उमा हुउँछा । जाम् भूडिः विकानीयार का राज्य ह अनम क्षयः। शक्रायाकः बक्ष था॰ वाकाया॰ (वागवान् छ-বেৎ ৷৷ সুটিকে সর্বসিদ্ধি: স্যাত্ত-था नवका भूष । लोहनिङ রিপো নাশ কান্দ ভমালক্র।। বালুকাযা কাম্যসিদ্ধি গোন্যে বি পুহি সৰ । সর্বলিক্ষ্য মাহাত্ম্য

ধর্ম কামার্থ মোক্ষদ•॥ ইতি মাতৃ-कारভদতক্রে ১२ পটল: ॥ 🕸 ॥ বুন্ধা সংপ্রবেষিত্য লিজ্ লৈলন্য শুভ॰ । তস্য সংপ্রনাত্তেন প্রাপ্ত॰ वुक्क प्रवन ।। इन्द्रनी नगर निक् विकुः मगर्राय मरा । विकूषः ना-প্রবান তেন সো প্ভ্ডুতৈ কপাল-कः॥ क्यांटिकः निर्मणः विकः वक्ला २७। इं (य. जमा। एउन जबकायुः হি প্ৰাপ্ত তেজো বলান্বিত ॥ ইতি यहेकर्यशीशका धृज निवधर्यः॥#॥ পূজ্যেৎ পাথিবে লিঙ্গে পাধাণ লিক্ষকে হ্থবা। স্বৰ্ণলিক্ষে হ্থ বা দেবি রৌপ্যে তামে চ কা স্যকে॥ পারদে বাথ গঙ্গায়াও স্থাটিকে নর-करा १ शि वा । कार्यप्राज्यम (को इ-লিঙ্গে ভমনিমিতিলিক্কে।। বা-লুকানিয়িতে লিঙ্গে গোম্যে বাথ পুত্রযেত। সংস্কারেণ বিনা দেবি পা-ষাণাদৌ ন পুত্ৰযেৎ ॥ ইতি মাতৃকা-ভেদতক্তে ৭ পটল:।। ইতি শিব-निङ्गिर्मानम्वराणि ॥ 🗱 ॥ जथ শিবলিঞ্জ সাক্ষারঃ। সাক্ষারঞ্জ পুর-क्यांनि दिस्मव इंह यच्छावट । हो-প্যক্ত স্থৰ্ণলৈক্ষণ স্থৰ্ণপাত্ৰে নিধায় চ-।। ७ मानूरखान्। ७ लिङ्गः मूक्षभाष्। দিনত্রণ ৷ জ্যন্তকেন সাপবিত্বা কাল

कम् भून्बाय ॥ (वाउःनानानः চারেণ বেদ্যান্ত পার্বতী° যছে । ভমাদুৰোল্য তল্লিস্থ গঙ্গাতোযে দিনত্রয় । ভতো বেংদাক্ত বিধিনা সংস্কার মাচরেৎ সুধী: ॥ পুর্বোক্ত বচনৈ: ফলবিশেষকামন্যা নানা বিধলি দপ্লোকা সাচ প্রা ॥ नित्रः मुनक्तः व्यर्गाखाः बिन्न भवक्र । रेन्छ। होत ভবেष्ठ। वि इधिक **न**जु वर्षन ।। मानशीन वि-नामः नामिश्य ह मिम्क्यः। विखाद हाथिक हीत बाह्रेनामा ভবেছ্র ।। পীঠशेत जु मात्रिम्। नितारीत समक्यः। तुक्रम्ब वि शैल চ রাজ্ঞা॰ রাষ্টঞ্চ नশ্যতি ॥ **७**बाट मई भुगाइन निक् अर्गाट जुनका । इंड्रानिना সূলক্ষণ निक्रेग्रव कनमात्र्व मूक्र ইতি নাত্কাভেদভল্রে ৭ পটল: ॥ # । (म्बू)वाह । इन्दिय ब्रह्स्डा (स्वः मृत्क्षत्रः **मनाभिवः। आका** রো নান্তি দেবস্য কিং ভস্য পূজনে ফল•।। শিব উৰাচ। প্ৰেতে পূজা गर्मानि कराविद्याखि भाई वि ক্দুস্য পরমেশানি রৌদী শক্তি রি-ভীরিতা ॥ রৌদ্বী ভূ পরদেশানি ष्याम् । स्थानिनी ७ (वट् । वर्डाञ

পরনেশানি বুদ্ধ বিষ্ণু শিবাজ্মিকা।। गार्का जिवल या काहेत्रः भिवः (वर्ष्ट) সদা স্থিতা। শক্তি বিনা নহেশানি প্রেবরণ ভস্য নিশ্চিত মা শক্তি সংযোগমাত্রেণ কমাকর্ত্তা সদাশিবঃ l অভএব মহেশানি পূজ্যেছিব**লি**-হ্দক•।। ইতি সশক্তিক শিবলিহ্ন-পূজন ফল্ । ইতি লিসার্চনতক্ষে २ भटेनः ॥ 🕸 ॥ (म्वुरवाह । सिक् পুনাণ দেবেশ কথ্যম মথি পুভো ৷ পার্থিবে চ শিলাদৌ চ বিশেষো য-ত্র যো ভবে**ৎ** ॥ শ্রী**লিব** উবাচ। মৃ-ত্তিকাতোলক গ্ৰাহ্য নথবা ভোক-ष्वरः। এতদন্যমন্ত্রী ত কদাচিদপি পাৰতি॥ ইতি মাতৃকাভেদ ডম্ভে १ भटेन: ॥ 🗱 ॥ चिभित्र। वृक्तिका তোলক গুাছ নথ বা তোলক ঘ্য । ত্রিস্ত্রস্য পুনাণেন ঘটন॰ কার্যে-ष्यः॥ साम्रुष्ठशर्वभागस क्या विकः भुभूक्रायः । मृशानि विषयित भु-মাণ পরিকীর্ত্তিত।। ফলমুক্ত নবা-প্নোতি অন্যথা চেত্তদন্যথা। ইতি ষট্কর্মদীপিকা ধৃত বিশ্বসারতন্ত্র• ॥ # ॥ निष्ट्र (वन्ताः उथा शीर्छ সমস্ত্রনিপাতনাৎ। সমঞ্চিব বি-জানীযাগ্রিদূত্রীকরণ স্থিদ ।। ইতি कारनाखद्रः॥ 🗱 ॥ मृजिकारकारन

1

वाक्तारीनाः श्काकलमा शुभाष्ठदः ं यथा। हजूर्वा भार्थिवः विकः मृर्या ভেদেন পাৰ্বতি। শৃত্ৰ রক্ত তথা भीउ क्कक्ष भव्रत्यवि ॥ मुङ्के उ ব্ৰাহ্মণে শস্ত ক্ষত্ৰিয়ে ব্ৰক্ত মীষ্যতে । পীতন্ত বৈশ্যজাতৌ স্যাৎ কৃষণ न्रुष् भुकीर्खिङ ।। তথা । मृङ्गः हि भार्थिवः निञ्नः निर्माय यस भूक्रप्र 1 সএব পরনেশানি ত্রিবর্গ ফলভা-शुंदि ॥ क्विविस्त वद्राद्राहि दकः নিৰ্মায় পাৰ্থিব । প্ৰয়েৎ সতত यस जिवमं कलमाशुगार ॥ इति उ॰ गार्थिव (हिव निर्माप यस भूक्रायर। न हरियम्। सर्मानि विद्रासन ভাগুবেৎ ৷৷ কৃষণ ছি পার্থিবণ লিঙ্গণ निर्याय यस পृज्ञत्य**ः भ म मु: भत**-নেশানি ত্রিবর্গ ফলভাণ্ডবেৎ।। ইতি निक्षार्भ जस्य ७ भवेन:।। 🕬।। भिना-भी व भारमानि जूलक कलनायक॰ । अञ्चष्टमान (मरविण यदा (इमाद्रि मानकः।। कत्मन (स्वरम्यविन क्न-**बर्ग्य काल्ट । ज्वाट ज्वाब्र** लिए विमाक शत्रामध्ति ॥ श्र<u>ू</u> নাজারণাদেবি ফল বহুবিধ মৃত । ছলাৎ ছল মিতি পাথিব লিখে-তরপর°। মৃত্তিকা তোলক মিতি विश्निष्य हुना था निवा साहिक মরকতাদীনা পঞ্সুত্রীকরণ মূক্ত यथा। निवलिङ्गा यन्नानः उन्नानः দক্ষ সব্যযোঃ।যোন্যগুন্সি যক্ষান• তদধোপি তথা ভবেৎ।। ইতি লিঙ্গ-পুরাণণ। 🕸 ।। লিঙ্গ্র যাদুগ্রিস্তার: পরিণাহে। ২পি তাদৃশ:। লিফ্স্য দ্বিশুণা বেদী যোনি স্তদৰ্জ সম্মিতা।। षदी जाक्षा उच्च म कमाहिम्भ क्विट । ब्रज्ञामि निवनिर्याण मान মিছাৰশান্ডবে**ং** ॥ ইতি ভজ্ৰান্তর• ॥ ॥ विष्रु रू १ शिख यथा। आकामः লিঙ্গ নিত্যাহু: পৃথিবী তস্য পী-ठिका। यालयः अद्दरियानाः लवना-ল্লিক্ নুচ্যতে ॥ ইতি কন্দপুরাণ ।। # ।। लिक् महिना यथा । निव উবাচ । न তুষ্যান্যছিতো প্রাযাণ পুষ্ণ ধূপ নিবেদনৈ:। লিকে ২ ছিত্ত তথাত্যর্থ পরু তুষ্যামি পার্মতি॥ এষ দেবি পূরা কৃত্যে জীনো ২হ• गर्व रेपवरेजः । निक्र दाक्षिक मि-ত্যুক্ত সদেবাসুর কিহরৈ:।। পুষ-हामि रिय॰ (रवि (या मिलिक्) हर्त-রত: । ত্যক্ত্ব। সর্বাণি পাপানি নি-र्जाता प्रकार मान्य ।। यस्य । यस्य-স্কারে। মানেব পুতিপদ্যতে । ইতি বীরমিত্রোদযগুত কন্দপুরাণ !!ঞ্!া मुद्याविष्मायन भूकाहि कन यथा।

বজ্তজলৈ লিকি সুপিত্ৰ মম মা-নবাঃ। লক্ষাণাঞ্চাখনেখানা॰ কল মাপ্নোতি সত্তমঃ॥ সুগন্ধি চন্দ্ৰ র रेन लिंक गालिभा ভক্তिত:। व्या-লিপ্যতে সুরন্তীভি: সুগদ্ধৈ র্যক্ষকর্দ্দ মৈ:।। ইতি ভবৈব।।#।। লিবপ্রা-করণদোব তৎ পূজাফলঞ্চ বথা। विना निकाईन यम् काला गहुडि নিত্য**শঃ।** মহাহানি ভঁবেত্তস্য দুর্গ ভস্য দুৱাত্মন: 11 একত: সর্বদানানি বুজানি বিবিধানি চ। তীর্থানি নিয মা যক্তা লিহ্নারাধন মেকতঃ।। ন লিক্ষারাধনাদন্যৎ পুরা বেদে চত্ র্ম্বলি। বিদ্যতে সর্বশান্তাণা নেব এব সুনিশ্চিত:॥ ভুক্তি মুক্তিপুদ লৈক। বিবিধাপ মিবারণ। পুজিবি ত্বা নরে৷ নিত্যু শিবসাযুক্ত্য নাপ্নু-যাৎ।। সৰ্ব মন্যৎ পরিত্যজ্য ক্রিয়া জাল মশেষত:। ভক্ত্যা পরম্যা विद्यान् लिक भिकः भुभूकरय ॥ ইতি ফন্দ পুরাণ ॥#॥ অখ্যমেধ স হসু।ণি বাজপেয় শতানি চ। মহে-শাৰ্চন পুণ্যস্যকলা॰ নাইন্তি বোড-শী ।। ইতি মৎ স্যস্ক্ত ১৬ পটলঃ।। বছনাৰ কি মৃক্তেন চরাঃর মিদ॰ জ গ**া শি**ব লি**ক্ সমভ**্যৰ্চ্য স্থিত মত্ৰ ন সংশ্य:॥ ইতি লিঙ্গুরাণ ॥॥॥

শিবস্য প্জনাদেবি চতুর্গাধিপো ভবেৎ। व्यस्थियर्गुर्या मर्छाः मस् नाथना भूकनार ॥ स्य॰ नातायनः (भाका यम भाग्नः भुभू द्वारा । यार्ग মর্ত্যেচ পাতালে যে দেবাঃ সংস্থি-তা: সদা ॥ তেষা পূজা ভবেদেবি শস্ত্ৰাথস্য পূজনাৎ। ইতি লিঙ্ক-পুরাণ 🛚 🟶 🛮 অসারে খলু সংসারে সারমেতहতুষ্ট্য•। কাশ্যা• বাসঃ সতা সঙ্গে গঙ্গাম্ভ: শমুপ্তন ॥ इंडि यहें कमरी शिकाशृंड कारणांख-রে নারদবাক্য॰॥ 🗱 ॥ অগ্রিহোত্রা ব্ৰিবেদাশ্চ যজ্ঞাশ্চ বহু দক্ষিণাঃ । (कार्छेऽग्रंभ-শিবলিকার্ছন**সৈ**তে নাপি তে সমা:।। ছিন্ধা ভিন্ধা চ ভূতানি হিত্বা সর্ব মিদ জগৎ। যজেদেব বিক্পাক্ষ ন স পাপেন লিপ্যতে॥ অনেক জন্মসাহসু• ভাূা-ম্যমাণক যোনিষ। ক: সমাপ্রোতি रेव मुक्ति॰ विनालिश्राईन॰ नदः ॥ ইতি কন্দপুরাণ ॥ 🗱॥ বান্ধণ: 🖚-जिया दिना : म्रम् बान पूर्वानकः । পুরুষেৎ সতত । লঙ্গ তত্তরাজেণ সাদর ।। তত্তন্মস্থেণতি যথাথো-গ্য॰ বৈদিক তান্ত্ৰিক নাম মন্ত্ৰেণে-ত্যর্থ: ॥ ইতি বীর্মিত্রোদ্যধ্ত ক্ষ-नत् भूदानः ॥ 🕏 ॥ मूल नुका उथा

मार्था विकृ जि जूवान युतः । कामा-পরি মহাদেবঃ পুণবাখ্যः সদাশি-वः ॥ लिक्राविशे महारम्यी लिक्रः जाकात्रार्श्यतः। उत्याः भुभूकताः ন্নিত্য° দেবী দেব"চ পুঞ্জিতৌ ॥ ইতি विक्नुतान ॥ 🗱 ॥ यथ नात्र नं **नि**विवक् भाशाचाः। कार्राजियंगः महालिकः किलाण नगरत शिरा। তদৈয়ৰ বোডশা শৈকঃ কাশ্যা বিশ্বেশ্বর: স্থিত: ॥ পূর্ণলিঙ্গ মহে-भानि भिववीकः न हानुथा। भिला भाष्य यथा ठळ नन्त्री नातायनः भ রণা পারদস্য শতাংশৈকো বজ্ঞী নারাযণো ন হি।পকার বিফুর্পঞ্ ष्माकातः कालिका स्रगः ॥ (त्रकः **्**निव॰ नकाद्रथः वृक्षक्ंशः न हान्या। পারদ পরমেশানি বুন্ধ বিফু শিবা-ज़ुकः॥ (या राष्ट्रः भातनः निद्धः नवर मञ्ज द्वरायः । व्याकसम्बद्धाः **अ**या प्रिव अकरा यमि भूकार्यः।। में भेरत परने शासिक कि कि में कि कि में कि कि कि में कि कि कि में कि कि में कि कि में कि में कि में कि में कि म তত্ত্বি । স বুন্ধবেত্তা স ধনী স রাজা ভূবি প্জ্যতে।। অণিমাদি বিভ্তীনা নীম্বর: সাধকোত্তম: । 🟶 । अथ भात्रमणिविष्यमिर्मानः विवि:। भारत मिव्नियाल नाना <sup>বিষু</sup>° ,বতঃ পুথে। অত এব মহে

শানি শান্তি স্বস্তায়ন চরেৎ।। পা-রদ শেববীজ হি ভাডন হি ন-कात्ररयः । जाउनाहि उनामः म्या-**खा**फनाषिखशीनजा ॥ ठाफनारमाग যুক্তত্ব• তাডনান্মরণ॰ ভবেং। ইতি মাতৃকাভেদ তত্ত্বে ৮ পটল:।। 🛊 🛭 অথ শিবলিঙ্গোৎপত্তি:। বুদ্ধোবাচ । পুরা ত্বা॰ চঞ্চল॰ জ্ঞাত্বা ত্বদপ্রেন পুকাশিত । ইদানী যোগিন জ্ঞা-ত্বা কথ্যানি ন সংশযঃ॥ অতিভন্ত-মতিগুহ্মতিগুহু ন সংশ্य:।(গা-পিতব্যু গোপিতব্যু গোপিত্ব্যু ত্বযাপি চ॥ শস্ত্রনা গোপিত• তত্ত্বে ভজান্তরে পুকান্সিত । শৃণু তৎ कथ्यामान्। माद्यानाव्यात्रय ॥ भ-गाएने विविधाः मर्गा मया मृह्वा हि नात्रका (क्व कानव क्लिड्राफ शक्कर्ब) यक ब्राक्तमाः ॥ मर्ख खीवनगाः (मुंडा रेमथूनाड्डायाउ नुका। त्कव-ল হি শিব: শস্ত্র দারগুহণ কর্মণি ।। কদাপি ন নন শচকে দৃষ্ট্ৰ। চিন্তাপ-রা: সুরা:। মামেব শরণ জ্ম: সে-न्त्। দেবাসুরাদযঃ ॥ পুণিপত্য স্ত-তি ক্ত্বা উপতমু: সমাহিতা:। (পाठू: भाक्षनयः मार्स ख्याम्ग्रम भानमाः ॥ (नवान्ता छेतूः। छेवा-হিতা ব্य॰ সর্বে ভ্রানপি জনার্দ্দনঃ 1

क्विवन हि न्हारम्या स्वरम्या ন্ধগৎপতি:।। বিবাহে নমন ক্রে ক্যা বা মোহতে শিব:। উপায° চিন্ত্য বিভো সদার: কথমীশ্বর:॥ যেন স্যাজ্জগতা নাথ স্তৎ স্ক্য দ্যানিধে। ইতি শুদ্ধা বচ তেবা॰ ততো বুদ্ধা পুৱাপতি:।। সহ তৈ ৰ্গকডাৰুটে জগাম কমলাসন:। উ-বাচ ত জগলাখ বিষ্ণু কমললো **চन ।। वृत्कावाह । मृष्टा भया भूद**-**শ**्छ मानुवा रेमशुरनाच्छवाः । मर्ख-জৈণা বিনা শস্তু• যৎকৰ্ত্তব্য• বদস্ব নে।। এভিগবানুবাচ। এভি: সহ भहावारहा गहाम खु स**रः निवः**। কৰ্ত্ব্য স্চিত তেন অনুজ্ঞাতৈ ৰ্যথা বিধি ৷৷ কিন্তু তন্মোগ্য নারীস্ত বি-वाहार्थः भुकन्नय । वुष्कावाह । एकः গ্রামহে সরে অনুজ্ঞাপ্য ত হরে। चाला निकि भहाभाषा भुनात्य **ज्**रिव वध् ॥ कन्ता ज्दा महामञ्जू॰ মোহ্যিষ্যতি শঙ্কর•। এব মৃক্ত্বা তু তৈ: সার্জণ জন্মতু বিধি কেশবৌ।। যত্র দক্ষে। নহাতেলা: প্রোচতু: কা-র্য্সাত্মন:। উবাচ দক্ষণ তদ্মুক্তণ তপত্তপ্ত পুৱাপতিঃ।। বুদ্ধা বিষ্ণু **শ্চ সর্ব্ধে ও তপসা (**ভাষধেছিবা•। णाविशंज्य मार्दि कानिका कमरी

भन्नी ॥ शुरू माः वः किमर्थंड ममुर कक्षाः जूदाजद्राः। (एव्यवाह। नीयुः क्रनुः यथा कामः खवजाः भाषान कन । अहिताए उर भुमानामि जडाः जडाः न जःभयः ॥ स्वारा উচু:। ভূত্বা তু দক্ষকন্যা ত্ব॰ শক্ষ-র॰ পরিমোহ্য। অস্থাক বাঞ্ছিত-रिक्ष उट इंक मिक्कि मना निर्दि ॥ **७**ड९ मुन्न वह एउया नित्रीकार कमलाभन । উवाह विद्याशाविद्वा কালিকা জগদী খরী।। দেব্যবাচ। শস্তু রদ্যতনো বাল: কিং সাং সা স্ভোষ্যিষ্যতি। মম যোগ্য পুমা স-ন্ত অন্য•বৈ পরিকল্পণ।। বুক্ষোবাচ। শস্ত: সর্বগুরু দেবে৷ হাস্মাক পর-নেখর:। মহাসভো মহাতেজা: স তে তোষ• করিব্যতি ॥ শস্তুত্ব্যঃ **প्रान्नां छ करा** विरंति **अ**विवेद ! ইত্যুক্ত্বা বুন্ধণা দেবী বাঢ মিত্যাস্থ (ठश्वदी ॥ नकाय मर्नन पदा **उ**वाह উচ্যতা বর:। দক্ষোপি দৃষ্ট্য ভা• দেবী• খন্ন কভূ ধরা•পরা•॥ খরা॰ লয়োদরী• ব্যায়ুচর্মাবৃতকটিখ্লী• । नीर्पाट्शल क्शालाम् क्रयुप्राः वद्रभुषाः ॥ कृ उक् उ। सिवाद्यानः त्यत्व रक्षः भुकाशिकः। एक्किवाह । यम (स वहाराभि दु (एदानामिश

्वाक्रिङ । महीय छनमा **ভ্**दा **नक्त** किन भाइये॥ उत्पर्जुक् कगकावी चाइक्रान गडा छन। (नवजाक ভভো নত্বান্ত্র ভেপে তপো ইর:॥ সন্ত্রীকা পরনাত্মান উপতস্থু র্জগৎ-পতি । পুণেমু স্বস্থুবু ভক্ত্যা পুর্ত্ র্গাদভাবিণঃ ।। দেবাদ্যা উচুঃ। ভগবন্ দেবদেবেশ লোকনাথ মহা-**শব। বয় সর্বে তু সন্ত্রীকা: সৃষ্ট্যর্থ**ণ পারমেশ্বর II অত স্তু**: জ**ক চোদ্বাহু: **जृष्टित्रका यथा ভবে**ে॥ मक्करगर्ह **महाकानी मार्यिक भ**िद्यकीर्सिका । জাতাতে প্রীত্তয়ে শস্ত্রেলা তে যো-गा। न मःभगः ॥ नेयन উवाচ। ভ वजाः भीजस्य मगुक् कदिरद्य गाञ সংশযঃ। উল্মোগঃ ক্রিযতা ক্লিপু विवाहाय मरिमद हि ॥ इंज्रुकास जुद्धाः महर्षे देखात्वन सहाजाना । कृछः कृठ्या गठाः সর्दে ভবন সর্বসুন্দর ॥ रकाय कथरामाजुः नक्दाद्राता-দিত॰ বচ:। ভতে। বিবাছ॰ নিৰ্ম্বৰ্ত্য কৃতকৃত্যা যথা গতা: !! গতা: সন্ত্ৰ बहरमाभि मङ्गा मङ् उमा गृइः। জগাম রেনে সত্যা চ চির• নিভ্র মানস:।। অথ কালে কদাচিত্রু স-ত্যা সহ মহেশ্ববঃ।রেনে ন শেকে ত॰ ्राष्ट्र मञी <u>भ</u>ाष्टा ७व छना ॥ **উ**वाह शीनवा नामा (स्वत्रक अवस्थ्य । जनवमहि नादामि उर छात्र नृहे जरुः ॥ कम्ब माः महारम्य क्लाः क्य सगर्भाउ। विषय) व्हवः छ-न्। ভगवान् व्यख्युकः ॥ विर्फार রমণ চক্রে গাঢ় নির্দ্ব মানস: 1 কৃত্ব। সম্পূর্ণ রমণ সভী চ ভ্যক্ত-নৈথুনা।। উত্থানায় মন শ্চক্রে উত্ত-যো স্তেজ উত্তন । পপাত ধরণী-পৃষ্টেতৈ ৰ্ব্যাপ্ত মথিলা জগৎ ॥ পা-ভালে ভূতলে রগে **শিবলিক। उ**न। ভবন্। তেন ভ্তা ভবিষ্যাশ্চ শিব-লিকা: সংযান্য: ৷৷ যত্ৰ লিক্ তত্ৰ যোনি যাত্র যোনি শুতঃ শিব: । উ-ভয়ে किर (उखानिः निविवकः ব্যুমাষত:৷ ইতি শিবলিক্ষোৎপত্তি कथन भिष्ठि नात्रम्भक्राबाउर्गङ ভূতীবরাত্রে পুথমাধ্যায়ে নারদ বুকা ज वारः ॥ 🗭 ॥ निवित्रभृकारीः मर्खिवा मधिकारत्रा यथा। मारका वा বৈক্ষবো বাপি সৌরো বা গাণপো **२**थवा । শিবার্চন বিহীনস্য **হত:** मिषि र्ज्दर शिरा ॥ यनात्राध्य ह **माः (मिव (या ९**ई(याम्दव**ाडवः ।** न गृङ्गां अशासित मान पड़ा वुष्क्रः भूतः॥ भवनागुमनः (हिव भिष्ठामानि करमण हि। कनानि वदः

ধান্যের পুত্রাণ্যের যথা বিধি ॥ সু নেক সদৃশ চান্ন নানাবিধ নছে খরি। সূপাদিক নহেশানি যদি স্যাৎ সাগরোপন।। যদভ পুন্ন নৈবেদ্য সর্ব বিধাসম ভবেৎ। णिवाईन विशेता यः भूजरयस्व-ভান্তর•ঝ বিশেষত: কলিযুগে স নর: পাপভাগুবেৎ। ইতি উৎপ ভিতত্তে ৬৪ পটলঃ।।#॥ সর্বপূজা সু দেবেশি লিঙ্গপূজা পরণ পদ । লিক্প্রাণ বিনা দেবি অন্যপ্রাণ করে।তি য: ।। বিফলা ভস্য পূজা স্যাদন্তে নরক মাপ্রুয়াৎ। ভমাল্লি-ক মহেশানি পুথন পরিপুজ্যেৎ ৷৷ যদুাজ্য লিঙ্গুজাযা রহিত সতত পূথে । তদাজ্য পতিত মনেঃ বিধা ভূমিসম শৃত ॥ বুকা विष्ठे क्विञ्चा (एवि यपि जिक्नः न भूकायर। उरक्षनार भन्नामानि ত্রয শচ্জাল্ডা নিয়ুঃ॥ শ্দুশ্চ পর-भागि जना म्कत्व खर्ट । मि বাৰ্চনন্ত দেবেশি যঞ্মিন্ গেছে বিব-র্জিত।। বিধাগর্জসমণ দেবি তদ্পৃহ। বিদ্ধি পাৰ্বতি। অয়৽ বিষ্ঠা পয়ে। মূত্র• ভিমিন্ বেশ্মনি পার্ভি ॥ भाक्ति वा विकरता वालि रेगरता वा शत्भवि। याति विकः भुभ्का

थ विन्ते शेंद्र वंद्रान्ति। शण्डापनुः मह्मानि निक्षः शुर्थाः भुभूकत्रः । जनाथा गृबवः मद्यः मिवभूकाः विना भिर्य।। ইতি निकाह्ने उत्क > भूटेनः।।

লিক্ক: পু• কপিতাবৃক্ষ:। ইতি
শন্তন্দুকা॥

निक्रवर्षः शुः किनियंवृक्षः। ই তি

मप्ठिन्पुका ॥ निम्नवृष्ठिकद्रणः।

उत्मोषदः यथा। कर्षे छनः छन्

झाउकः वृष्ट् ठीकन मार्डिनः। वद्य
तिवर्ष्ठ ॥ जिन्न । क्षत्र भाष भतीवान जगतः मधु निश्रनी। जनाभागात्रगन्ना व वृष्ट् ठी मिठ नविनाः।। यदा छिनः निक्रवर्षः भागित्वाद्यर्जनः मूडः। निक्रवाह्यः स्वानाक्ष कर्गरा श्रष्ठि क्ष्ट्रद्र्द्रः।।

इं जि गाक्र उ ५० जन्नाग्राः।।

वित्रविर्धिनी जी व्यशामार्गः। ই**डि** सद्यक्ति॥

লিস্বৃত্তি: পু॰ জীবিকার্থজটাদি
চিত্রখারী। তৎপয্যায়:। ধর্মধুজী ২। ইত্যমর:॥ জীবিকাদি
নিমিত্তক্ত যোবিভর্তি জটাদিক।।
ধর্মধুজী লিঙ্গবৃত্তি র্ঘণ তত্র নিগ্নদ্যতে॥ ইতি শব্রত্নাবলী॥'্

विज्ञानिका की कुंदुम्विकः। उर ॥ विभिः भर्यप्रायः। मीना २। इंडि हाजावनी निक्नी जी नजावित्मयः। शक्ष-छित्रया इंडि हिन्दी जाया। उट-পৰ্য্যায়ঃ। ৰহুপত্ৰী ২ ঈশ্বরী ৩ শি-বৰল্লকা ৪ ৰ্যম্য: ৫ লিঙ্গসমূতা ५ रेन शी १ हिंबकना ४ हा खानी २ निक्का २० (मवी २२ हंखा २२ व्या পন্ত স্থিনী ১৩ শিবজা ১৪ শিববল্লী ३६। यम्या छनाः। कर्तृद्धः। উक्षद्धः । पूर्णक्षज् । त्रभायनज् । अर्वभिक्ष করত্ব॰। দিব্যত্ব॰। বশ্যত্ব॰। রস नियाननवृक्ष। ইकि त्राजनियणः।। বিস্থী প॰ হন্তী।ইতি কটাবর:॥ यगपुत्री। यथा। जानिकी निक्-় বেশেন যো লিফ্ মূপজীবতি । न लिश्रिना॰ श्रत्रापन खिर्यागुरानी .চ গছতি।। ইতি কৌর্মো উপরি-ভাগে ১৫ অধ্যাব: 11

নিপ ঞি ঔশপ ঞ লেপে। ইতি কবিকল্পছনঃ।। ঞি লিখো ২ন্তি। ঔ লেখা। শপ ঞ লিম্পতি লি-ম্পতে চন্দনেন গাত্র• সুথী। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

লিপ: পু: লেপনকর্ত্তা। ইতি লি-প্রাত্যে: কর্ত্তার ক পুত্রবেন নি-ফ্রন্সা। লিপি: দ্রী লিখিতবর্ণ। তৎপর্য্যায়:। লিখিতং ২ অক্ষরসংস্থা:
নং এ লিবি: ৪। ইত্যমর: ॥ লিখনং ৫ লেখনং ৬ অক্ষরবিন্যাস: १
লিপী ৮ লিবী ৯। ইতি ভটাধর: ॥
অক্ষরচনা ১০। ইতি জটাধর: ॥
লিপিকা ১১। ইতি শব্দরত্বাবলী
।। লিখিতপুস্তকাদি। ইতি কেচিদিতি ভরত: ॥

লিপিকর: পু• লেখক:। ইত্য-মরটীকা॥

লিপিকা জী লিপি:। ইতি শদ্-রহাবলী।।

লিপিকার: পু॰ লেথক:। ইত্য-

লিপী স্ত্রী লিপি:। ইতি শব্দ-রহাবলী।।

লিপ্ত বি ভক্ষিত । কৃতলেপন ।
তৎপর্য্যায়: । দিশ্ব । ইত্যান র:
।। বিলিন্সিত ৩ । ইতি শন্ধ:
রত্নাবলী ।। চর্চিত ৪ । ইতি জাটাধর: ।। মিলিত । ইতি সিন্ধান্তকৌমুদ্যামুণাদিক্তি: ।। বিষদিশ্ব ।
ইতি মেদিনী ।।

লিপ্তকঃ ত্রি বিবাক্তবাণঃ। ইত্য; মরঃ।।

लिधिका जि मण्डाय्या विषम्

লিবিক্

ठ वृद्धः च ভि हिट्। इंडि मटक् व्रः मुकावनी ॥ निञ्जा जी ইहा। इंडामदः॥ निश्नः जि नज्ञिहः। उৎপर्यायः । गृथ्नू: २ गर्बन: ၁ ज्यक् ८ नुब: ৫ অভিলাসুক:৬ লোল্প:৭ লো लुङ: ৮। ইতি (इनहन्मु:॥ (मभनकर्जा । ইঙি লিম্পঃ লিম্পখাতো: কর্ত্তরি শ পুত্যুয় নি স্লন। ইতি নুপাবোধব্যাকরণা।। লিম্পট: পু॰ শিল্প:। ইতি হার। वनी ॥ নিমূকবিশেষঃ ह्री বিস্পাক• পাতিলেরু ইতি ভাষা। তস্যগুণা: ।সুরভিত্ব•। স্বাদুত্ব•। নাত্যমুত্ব•। ভক্রোচনত্ব। বাত শ্লেমাহরত্ব

। হৃদ্যন্ত্ৰণ। ছদিন্নন্ত্ৰণ। নাতিপিন্ত-কৃত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ ॥ লিম্পাকঃ পুণ জম্বীরঃ ॥ থরঃ । ইতি শব্রত্নাবলী ॥ লিবিং জ্রী লিপিঃ। ইত্যমরঃ ॥ লিবিকরঃ পুণ লিপিন্রঃ। লিপিণ করোতি ইত্যথে সৃষ্ট ইত্যনেন কর্ত্তরি টপুত্যযেন নিয়নঃ ॥ লিবিক্রঃ পুণ লিপিকারঃ। ইত্য

भद्रिकाराः जानुरीकिः ॥

हज्र्था १ मा मा विश्व व

লিশ শ ঔ গত্যা । ইভি কবি-কল্পড়ন:।। নিশ্ভি। ঔ অলিফ্ৎ লেই।। ইভি দুর্গাদাস:।।

লিয়: পূ॰ নর্ত্তক:। ল্যখাডো: কর্ত্তরি হুব্ পুত্যযেন নিপাতনাৎ সিদ্ধ:। উপধাযা ইত্তমপি। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তি:।।

निरु न क ॐ चारि। इंठिकित-कन्नुक्रमः॥ न क निरु शृक्षाति यहे-शरः। नीति। ॐ श्रानिक्ष्ट। ইंढि पूर्गारामः॥

विका की युकाखः। ইত্যমরः॥
विकि ইতি ভাষা। ইত্যমরভর
তৌ ॥ ভৎপর্য্যাযः। विका २
वोका ० वोका ४ विकिका ६।
ইতি শব্দর্যাবলী॥ পরিনাণবি
শেষঃ। यथा। জালান্তর গতে ভাবি।
यहापुर्गात् রজঃ। তৈ শ্বন
ত্তি ভবৈলিক। বিকা ষ্ট্রিশ্বন
যকারক্বর্গদ্বিভীয়বভীত্যালিপাঠঃ।

सी उयक निवि। इंडिकविकन्न-स्मः ॥ एय नीयक हन्मः मूर्यं। कृतीनः। इंडि मूर्गामानः॥

नी नि श्रिव। ইতি কৰিবল্প দ্বা।। नि निनाठि दाना नारपाः श्रा(श्राठी छार्थः । कर्मादिदकाराः है
निनाठि जनायो निन। नीनः नीनिः। व्ययः व्यञ्ज कृतीसानिः। ইতি
पूर्णामात्रः।।

शी कि पुष्ति। ই छ कि विकल्ल क्याः

। पुष्ति पुष्ति द्वारा। कि लाय्य छि

लय्छ। सिर्मा प्रृति कि लाय्य छ ज्या छ। सिर्मा क्या काराः। स्वाह पुर्व छ लाल्या लंबनाविछ हरना यृष्ठ स्वाहो लोन्य छ। सिर्मा की कि कि लाक्या। हिंछ ने प्रवाही। कि लाक्या। हिंछ ने प्रवाही।

लोहा स्वी।।

লীঢ়: ত্রি আশ্বাদিত:।ইতি লিহ্ প্রান্তো: কর্মনি ক্র পুত্যবেন নিয়ন লীন: ত্রি ল্যপ্রাপ্ত: । শ্লিপ্ট:। লীধাতো: ক্র পুত্যবেন নিয়ন:। ইতি ব্যাকরণ:॥ অপি চ। দি-বাকরাদুক্ষতি যো গুলাস্ লীনং দিবাভীত নিবান্ধকার:। ক্লু-পিন্ন: শরণ: পুপলে নমত্ব মান্ত: শিরসা মতীব।। ইতি সমার-সূম্ভব:॥

जी किनः॥ दिनामः॥ नीना শৃস্বারভাবচেষ্টা। ইতি মেদিনী।। থেল।।ইভি বিষঃ।।#।। অলন্ধপূিয नमागमया बिछिवित्नामनार्थः नि-বন্য যা বেশ গতি দৃষ্টি হসিত ভ-ণিতৈ রনুক্তি: জিযতে সা লীলা । তথা চ। অপুাপ্ত বল্লভ সমা-गम नाविकायाः मथ्याः भूदा २व নিজচিত্তবিনাদবৃদ্ধ্য । আলাপ বেশ গভি হাস্য বিলোকনাদ্যৈঃ প্রাণেধরানুকৃতি মা কথযন্তি লী-লামিতি ॥ প্রিযানুকরণ লীলা । যথা ভেনোদিত• বদচ্চি যাতি তথা তথাসাবিভ্যাদীভ্যনেগ্রাপ। नी-उ य ও শ्लिवि नादी ि नक् नी ना। ইত্যমরটীকাযাণ ভরত: ॥ 🗱 ॥ न। পুকটাপুকটভেদেন দ্বিবিধা। यथा। পुक्रोनुक्री छि नीना সেব॰ দ্বিধাচ্যতে। ইতি পদাপ্-द्रापः ॥ তथा हि । **স**দানীतः भु-कार्गः दि नी नाज्ञिक म रीव्याज া তবৈকেন পুকাশেন কদা চিজ্জগ-**म्ह**रत् ॥ मरेश्व चलतीवादेत कन्मा-দি **স**ক্তে হরি:। কৃঞ্ভাবান্সা-दिन नीनाथा मक्ति दिन जा।। তেষা পরিকরাণাঞ্চ ভ ড ভাব বিভাববে**৫। পুপঞ্**গোচরত্বেন

ना नीना नुकरी मृजा।। वन्राङ् भुक्री चान्नि जाम्मा उपागाः রা:। তত্র পুকট লীলাযামেব স্যা-**छा॰ गमागभो ॥ (गान्न**ल मथू-त्रायाक बात्रकायाक नार्क्निः। या ন্তৰ ভত্ৰাপ্কটা ন্তত্ৰ তত্ত্বৈব সন্তি ডা: ।। ইতি গ্রীভাগবতামৃত• ।। नीनाव ही जी किन्यूका॥ विना সবতী ॥ শৃঙ্কারভাবচেষ্টান্বিতা ॥ (थवाविणिडे।। ইতি नीनाणकार्थ मर्भनाष्ट्राक्षा ভाষরाচার্য্যস্পরী ।। তৎকৃতাকগুন্থ:। যথা।গোদা-বরীতীর নিবাসিনো মহারাষ্ট্রে-শোভবস্য শ্ৰীভান্ধরাচার্য্যস্য গ্ স্কৰ্ত্:সূপুৰা লীলাৰতী বিৱহ विक्रिः। इत्यम्। जाः भरित नी नाः वज्या नीवावजी भिव । इंजि नी-नावजीगुरुमा मक्नाहद्वनात्राकमा টীকাথা ভবেশ: ॥ # ॥ বেশ্যাবি-শেষঃ। যথা। অভিৰূপেণ সশ্প স্থান্ ঘউ যিত্বা বিনাভৃতি**•। ধ্**ৰম্কা-র্য্য মিতি জ্ঞাত্বান গৃহ্যাতি কথঞ্চন ।। যো ৎসৌ সুবর্ণকারশ্চ দরিদ্রো **২প্যথ সত্ত্তান্। ন মূল্য মাদাছে**। শ্যাত: সভাৰ্য্য পদ্ধি সংযুত: ॥ **স**প্তদ্বীপপতি জাঁত: সূৰ্য্যাযুত সন-পুভ: ৷ ইতি মৎস্যপ্রাণে লীলা-

বতীবেশ্যাষা লবণাচলদানেছেদ-खक् वहकंत्र। ख्याविंदकल कर्मनाट । ইতি তিথ্যাদিতজ্ব ।। 🗱 ॥ न्याद-<u>পূ</u>ষ্ঠবিশেষ:। ভস্য দ্বিভীযদ্মো**ৰো** वथा। मुव्राः नामल मुङ्कृत्वा ७१ गनः কর্মাধিক শ্লাঘ্যতে জাতি বিপ্লতি मागला नह भूनः भाष्या विष्णव ছিতি:। সম্বন্ধ: সহজো গুণাৰিভি রয় যত্রাস্ত স্থ প্রীত্ত সারীকা नय (वन्त्रकर्य जनना श्रीनागरनी-লাবতী॥ ইতি মণ্ডনমিশু:॥ नीत्नाम्यानः क्ली (म्ववनः। इंडि ত্রিকাণ্ডলেষঃ।। नीका खी निका। इंडि नदत्रा-वनी ॥ जुक् **पु॰ (लाभ: । यथा ।** मऽस्माः लू क्। क्लीवा८ भव्रायाः मात्रा लू क् স্যাৎ। ইতি মূজবোধব্যাকরণ ॥ লুক্লায়িত: ত্রি अञ्चित्रः। **र**था। অন্তর্ধান লুক্নায়ন মিতি যাবৎ 🛭 यथा खरता ब्रन्जकाल मिणूः निनीय-তে পলাযতে লুক্লাযতে লুক্লাযতी-তি লুঞ্চাপনযনেপি লুক্ লুক্ কাযঃ শরীর• যস্ত্রস লক্ষায়: ততঃ স ইব আচরতীতি হৌ সাধ্যা ইতি কা-वक्रीकाया मगामानः ॥ कमान क

পুত্যথেন निम्नासाय ॥

जूक्यः भू होजकः। ইতির

नुक है क ভावंगार्थ। हैि कित-कन्नक्रमः ॥ है क नुक्षयि । ভा मीखि:। वंगार्था निक्उन हि॰ ना वन मानानि। हैि मुर्गामानः॥

লুঞ্চ অপন্যনে। ইতি কবিকল্পজনঃ
।। সো হলুঞ্চীৎকর্ণনাসিক। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

कृषे २ ७ मीखिश्विहरङ्गः। ই छि
कितक सम्माः ॥ २ अनुष्ट । ७ तनाप्रेट । श्रु छिङ् छिः स्माका मिना
भाजनः भुनर्शननः वा । ই छि पूर्णामानाः ॥

बूरे हे इरडो। हेि कविकन्नकमः॥ हे बुन्हेरिड। हुिड (कोर्य) । हेिड ़ मूर्गामामः॥

লুট ক ভাসে। ইতি কবিকল্পজ্ম: ়া৷ ক লোটযতি ৷ ভাসে। দীপ্তি: । ইতি দুৰ্গাদাস: ॥

नूषे २ % य वित्नाविदित्ना उन्तर्याः
। इठि कविक्स् क्रमः ॥ २ अनुष्ट । य अनुष्ठि । य अनुन्दे अनुत्नावे । य नुष्ठे । वित्नावेः अन्ने क्रिकावः । उज्ज नृष्ठे म् सम्माद्या कृषि (द्राक्ष्मावान्। इठि क्रिः॥ वित्ना उत्म नृष्ठे । उपना उत्म नृष्ठे । वित्ना उत्म नृष्ठे । उपना उत्म नृष्ठे । उपना उत्म नृष्ठे । वित्ना उत्म निष्ठे । वित्ना वित्न निष्ठे । वित्ना उत्म निष्ठे । वित्ना उत्म निष्ठे । वित्ना वित्न निष्ठे । वित्न निष्ठे । वित्न वित्न वित्न निष्ठे । वित्न व

চ লোটভি। ইভি হলাযুধ:। ইভি
দুর্গাদাস:॥

লুট বিলোটবিলোডনযো:। ইভি কবিকল্পদ্দম:।। লোটভি। ইভি দুর্গাদাস:॥

मूठे हे गड़। नम् । त्वय (थाएँ। हेडि किविक क्षमः ॥ हे म्छे । ख्यः । ष्यानमा भन्ती जावः। त्वयः । हो-र्याः। (थार्धः (थाउनः। हेडि मूर्माः मामः॥

लूठे ৯ ७ পুতीघाउँ। ইভিকবি-क्वक्रमः ॥ ৯ অলুঠং। ড লোঠতে । ইভি দুর্গাদাস:॥

লুঠ উপঘাতে। ইতি কবিকন্নন্ধমঃ।। লুঠতি। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ লুঠ শি লোটে। ইতি কবিকল্লড্নঃ

ा नि नुठेि अनुठोट नूलाठे । लाठेः मयक्षी जातः । साता १४॰ स्तिभाक्षीभा॰ नुठेि सन मश्रल । स्ति मुर्गामामाः ॥

লুঠ ক চৌর্য্যে। ইতি কবিকল্পদ্ধঃ

।। ক লোঠবতি । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

লুঠা লী অশ্বস্যভ্মোপুনঃপুনঃশুমোপহনন । লোট। ইতি গডাগডি ইতি চ ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ ।

বেল্লন ২ । ইতি বিকাওশেষঃ ।।

লুঠিতঃ বি মুহুভূবিপরাবৃত্তঃ ।

भुतभाष्ठार्थः भूनः भून ज्र्रां स्वितिष्ठाः २ १ व्यः १ वट भर्यतायः । जेभावृद्धः २ १ इंड प्रमञ्जादक्षः १ । व्यावृद्धः १ विक म्पत्र द्वावनी ॥ व्यभावृद्धः १ । व्यावृद्धः १ ।

वृष्ठ नि मःवृश्वी ॥ स्वर्थ । ইতি
कविक्वक्रमः ॥ नि वृष्ठि अव्
प्रीट वृश्वाफ । ইতি दूर्गामामः ॥
वृष्ठे कि व्यवक्ठाकीर्यं । ইতি
कविक्वक्रमः ॥ म्डानकात्रभुक् िः
देशागाच्चंनाः । एव वृष्ठि । ইতি
यगामो जल्लाभ वृष्ठे । ইতি
दूर्गामामः ॥

नुष्ठे तः भू भाकविष्मयः। निष्ठा इंडि ভाषा। उट्मर्यग्रायः। नामवः २। इंडि भद्मतनुका ॥

मुणे। जी मुठेनः। ইতি काहि८-नदत्रदावनी॥

লুটাকঃ পু॰ চৌর:। ল্টধাতোঃ বাক পুত্যযেন নিম্নন্ন:।।

লুটাকী জ্ঞী চৌরাজ্ঞী। ইতি মূধ্য-বোধব্যাকরণ ।।

नुष्ठेकः जि उउपकात्रकः। नूर्ष्टेत्रा

ইতি ভাষা। যথা। যেটোরা বহিংনা দৃষ্টা গরদা গুনানলুওকা:। সার-নো দৃষ্টা গরদা গুনানলুওকা:। সার-মেযাদনে তে বৈ পাত্যন্তে পাত-কান্বিতা:।। ইতি পাদ্মে পাতাল-থপ্ত-।।

लुर्धनः क्ली लर्ठनः। इंडिकाहिट्णपः ेत्रज्ञावली ॥

नुशे। खी नुरेन•। **३७ काहि८ नम्** ेत्र डावनी ii

न्थेकः श्रृ॰ काकः। ইতি विकाखः भाषः॥

লুঠী জ্রী লুঠ**ন । ইতি কাচিৎ শদ**্ ক্রন্নাবলী।

नुष्ड क होर्थ्य । इंडि कविकन्न-क्रमः ॥ क नुष्ठयंडि । इंडि पूर्णा-मामः ॥

नृष्डिका स्त्री नशावनात्रिनी। ইकि हात्रावनी॥

লুণ্ডী জ্রী ন্যায়সারিণী। ইতি জ্রি-কাণ্ডশেষ:।।

লুথ ই হছে।ইতিকবিকল্পদনঃ॥ ইলুভ্যতে। হছে। ব**ধ ক্লেনী।** ইতিদুৰ্গাদাসঃ॥

न्त श्राम १२ ०० छ हिए। इंडि क्विक्स्क्रमः ॥ श्रा यन्त्र १८ य-नृत्ना १८ ॥ ११ ०० नृष्णि न् स्थाउ । २ यनुष्ट । छ लाछा । ইতি দুর্গাদাস: ॥

नुभ हे त य स्मि। है जि कि विकत्त क्रमः ॥ हे त व्यन्धि व्याप्ति ॥ व्यमाद भूषा हिल्ला मि छ । छ हे छ । त्र । य यूष्ठा जि । यूष्टि व्याप्ति । जारव । भाजः यूष्ठा जि व्याप्ति । द्रवाञ्जनि भूरे हे नंतः । हे जि हमा-यूषः । हे जि पूर्णा हा नः ॥

লুপ্ পু॰ লোপ:। যথা। অভো ভগো ংঘোভ্যে ংবে লুপ্। ইতি মুধ্ববোধব্যাকরণ।।

नुषः क्री होर्ग्यनः। लाउ है छि

थ्राङः। हे छि भद्म द्वावनी।। लाभवि वि । यथा। हक्यानि ज्
धाकः हा खानः वाकाति है। भुधाकः हा खानः वाकाति है। भुसम्मा निन्दनः (हवा भ्रव्याम
विनिष्ठा। हे छि छि यहा दि छन्।।
लूव कि है स्वादः। हे छि इतिक क्षकः।
।। कि न्वाधि न्वाधि। है न्वाहः।
पूषाः भुः वहा था। नन्नि ।। हि भिद्राहि ।।
लूकाः भुः वहा था। नन्नि ।।

লুজ: ত্রি আকাদ্ধী।ইতিমেদিনী ।। তৎপর্য্যায়:। গৃধ্নু: ২ গদ্ধন: ৩ অভিলাষ্ক: ৪ ভৃষ্ণক্ ৫ । ইত্য-

भवः ॥

**लुक्क रू. ब्रायः। हे** छ। प्रदः॥

লম্পট:। ইতিলূক্ষ মার্থদর্শনাথ।।
লুভ শ বিমোহনে। ইতি কবিকল্লফম:॥ শ লু ভত্যাত্মনি কামে চ।
ইতি হলাযুধ:। লোভিতা লোকা।
। ইতি দুর্গাদাস:॥

লুভিত: ব্ৰি বিমোহিত:। বিমো-হনাৰ্থ লুভধাতো: ক্ত পুত্যবেন নিয়ন:॥

नून विभर्गत। ইতি কবিকল্পদ্ম: ॥

स्त्रोजशाजु द्रयः । नूनाभः । ইতি
দুর্গাদাস: ॥

णुणाशः श्रु मश्चिः। ইত্যমরः॥ जुणाशकम्तः श्रु मश्चिकम्तः। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥

লুলাপকান্তা জ্ঞী নহিবী। ইতি রাজনির্ঘণী:॥

লুলি ভ: বি আন্দোলি ভ:। যথা।
প্রেক্লালি ভ স্তর্নলি ভা লুলি ভান্দোলি ভাবিশি। ইভি ভ্রিপুযোগ:॥

লুব তেথে। ইভি কবিকল্লফন:।। লোৰভি। ইভি দুৰ্গাদাস:॥ লুব হি॰সনে। ইতি কৰিবলুক্ষমঃ ॥
সৌত্ৰধাতুর্ব॰। লুকঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

বুৰভঃ প্• মত্ত্তী। ইত্যুণাদি-কোৰ: ॥

লুছ্ ঔ গার্ধ্যে ইতি কবিকন্নজন:

। ঔ অলুক্ষ্ । গার্ধ্য লকুমিছা।

লোহতি ধন লোক: । ইতি দুর্গাদাস: ।।

লু ঞানি ছিদি। ইতি কবিকল্লজনঃ
।। ঞানি লুনাতি লুনীতে লুনঃ
লুনি:। ইতি দুর্গাদাসং।।

क् तः। २१७ पूर्गारानः।।

क् वा जी की दिल्मिकः। माक्यमा

हे वि वा । उट्श्यंग्रायः। उद्धवायः २ व्हर्गनाकः ० मकं देकः ८।

हे उप्रतः॥ मकं देः ६ क् विका ७

विनाविः १ मनकः ৮ उद्धनायः

३। हे वि मदत्र द्वावनी ॥ शिशीविका ॥ द्वागिविष्मयः। हे दिस्मिनी ॥ व्यमप्रत्रेग्रयः। मर्याद्र्यः

२ दृक्षा ०। हे वि द्वाजिविष्टेः॥ उ
द्वागम् निमानाि यथा। क् जानाः

काष्ट्र विष्यामा मूट्शिकः मःथा।

व्यक्षा विष्यामा मूट्शिकः मःथा।

व्यक्षा विष्यामा स्था । क् जानाः

काष्ट्र विष्यामा स्था । क् जानाः

व्यक्षा विष्यामा स्था । क् जानाः

व्यक्षा विष्यामा स्था । क् जानाः

व्यक्षा विष्यामा स्था । व्यक्षा म्यानः

भ्यानः विष्या ह्वा ह्या । विश्वामित्वा नृश्वः
॥ व्यव मुनुः। विश्वामित्वा नृश्वः

वतः कराहिम्बि मखमः। विभिक्तः (काभगामाम गदाणुम्भर किया। चिंगिष्ठमा भूति खमा वनारि (बर-विनुहदः। जभजन् सर्मनास्य स्थ-खाबीवुवहंभः॥ न्छं ज्रा महर्वस ংখনুর্থে স•ভৃতেপি চ। তভে। জাভা ·ন্ত্রিমা ঘোরা **নানাক্রপা মহাবিবাঃ** ॥ তাসামঙৌ কইসাধ্যা বর্জ্যা ভাব-ভ্য এব হি। তত্ত্ব তৃণ মণ্ডলা পুভূত-(याष्ट्रे कष्टमायताः। मोवर्गिक। भुक् ত্যোষ্টাবসাধ্যা:। তাসা<sup>•</sup> সামা-ন্যতো দ•শ লক্ষণ মাহ। তাভি র্দপ্তে দংশকোপ্যপুর্ত্তি: ক্ষতন্ত্রস্য চ। জুরো দাহো **ৎতিসারক্ষ গদাঃ** मुक्रुक जिल्लाय**काः ॥ शि**क्रिका वि-विधाकाता मधलानि महासि ह। শোপা মহান্তো মৃনবো রক্তা: শ্যা-वा कवा खथा॥ जानानाः जर्बन्-তানা নেতদ্ব•শস্য লক্ষণ•। **দ**•শ-কোপ্যদংশনধ্যে প্তিভাব: ৷ দং-শনব্যে ভূ বৎকৃষণ শ্যাবণ বা জা-লকাবৃত ।। দ্ধাক্তি ভৃ**শ॰ পাক**• क्षिर ल्गाथ ज्वानिष्ठः। म्यीविया-ভি লু তাভি স্তদ্ধ নিতি নিৰ্দিশেৎ ॥ (मोवर्गिकामस्याष्ट्रीवमाध्य भूगा-হরা তাসা লক্ষণমাহ। শোথঃ খেতাসিতা রক্তা পীতা চ পিড়িকা

ं श्रृद्धः ाः भागा शिक्ताः **अत्यक्तारः** चार्या हिङ्ग निर्द्धानुरः ॥ 🗭 ॥ **उरमहोत्रशः यथा। तक्रतीयुग्र लखः** হ্ব মঞ্জিষ্ঠা,নাগকেশরৈ:। শীভা-স্থানিই রালেপ: সদ্যোল্তাং বি गानारार्थ। जिन्हा जिल्हा (दा-চনা॰ জন্ত মর্কপুত্ম• **ডথোৎপঞ্চ**া নলবেভসমূলানি গরকং সুরসাং उथा॥ म कलिकः ममक्षिष्ठा मन-ম্ভাঞ্চ শতাবরী । শৃকাটক সম-কাঞ্চ পদ্মকেশর মিত্যপি।। ৰক্ষী कृड्य भारत मार्ना भारता मार्गाह ভৰ্তাণ। সম্যক্ পল্বে হবভীর্ণে চ শীতে ভিমান বিনিঃক্ষিপেৎ ॥ नर्भिद्यणाः ভिषक् (कोपूः कृडत-कः निदाशरायः। वियागि इंडि मु 'র্গাণি গরদোষকৃতানি চা। স্পা শাদ্ধন্তি বিষণ সর্বণ গরৈ ৰূপহ-'তা॰ জুচা॰। থোগজন্তমক কঞ্ না সমাদ বিসংজ্ঞতা ।। ৰাশ্য ত্যঞ্জৰাভ্য**ঙ্গণ পানবস্তিদ্** যোজি-७-। गर्भ की हाथु ल्लामि महानाः বিষভূৎপর ॥ মৃত্যু**পাশছেদি** য়ত°। ইতি ভাবপ্কাশ:॥ ब्अतिः शुः पूषाकनीक्तृशः। ইতি ज्ञाजनिर्घण्डः ॥ **ब्िक्। जी नक्**षेत्रः। इ**डि म**न्।

अञ्चावनी १। ल्नः बि हिमश इेल्डमप्रः ॥ न्मकः भ्• (छप्तिष्धः। भणः। ইভि स्मिषिनी ।। ल्भिः की एकः। इंडि मूक्तापः ब्राक्य्रगः ॥ क्री नाज्ना ३ छ। भद्रः॥ ल्मविष: **भू** वृष्ठिकापिः । ইতি (र्गिष्मः॥ क राधा। (खर्य। इंडिक्दि-कन्नक्रमः ॥ क न्वयि । इं छ पूर्वा-मामः॥ (एवः । इंज्यानद्रः ॥ (नथ्):। इंडि स्मिमी ॥ (लथनकर्जा। उ९-7 शर्यप्रायः । *विशिक*द्रः २ अक्कद्रहनः ৩ অক্ষরচুঞ্: ৪ । ইভ্যনর: ॥ বোল হ: ৫ করকঃ ৬ মসীপণ্যঃ ৭ कत्रभुभीः ৮। इंडि भवत्रवादणी ।। वनी 🔊 । 🕏 🏻 को हो थ्रा ।। 🐲 🛚 । उन्र । ज्ञानि यथा । जर्रामणा-कत्राच्छिः मर्बनाज्यविनात्ररः । লেথক; কথিতো ব্লাক্তঃ সর্বাধি-করপেযু বৈ ॥ শীর্ষোপেভান্ সূ-সংপূৰ্ণাম সমশ্ৰেণগতাৰ সমান্ । व्यक्ताम् रेव वित्थव्यसः (नथकः न तद्रः मृठः॥ উপाय वाकः कण-

ল: সর্বশান্তবিশারদ:। বস্বর্থবকা চাল্লেন লেখক: স্যাভূগ্ৰম ৷৷ বা-ंक्राञ्जिग्रयञ्जूखा रम्मकानि ভাগবিৎ। অনাহার্য্যোন্পে ভক্তো **लिथकः म्याक्**र्युख्य ॥ इंडि माद-(म) २४-३ व्यव्धायः ॥ क्षः ॥ व्यशिष्ठ । সক্দুক্ত গৃহীতাৰ্থো লঘুহস্তো জি जाक्तरः। मर्बनाज्य ममारवाकी भूः কৃষ্টো নাম লেথক:। ইতি চাণক্য সংগ্ৰহঃ !! ৠ !! রাজলেখক লক্ষণ যথা।ব্ৰাহ্মণো মন্ত্ৰণাভিজ্ঞোরাজ-নীতিবিশারদ:। নানালিপিজ্ঞো মেধাবী নানাভাষাসনবিতঃ মন্ত্রোধীমান্ নীতিশালা-ৰ্থকোৰিদ:। সন্ধি বিগৃহ ভেদজ্ঞো वाककार्य्यविष्ठकनः ॥ मना वाक हिजात्वी व्राक्तमिषि मः छि छ:। कार्यप्रकार्यप्रविठात्रकः अञ्ज्यानी कि:उन्द्रिय:॥ अक् भवाभी भूकाजा थर्माखा जाजभर्मित् । ववनामि ত্তি। যুক্তি: স এব রাজলেথক: ॥ न्**लान्य** डी नठड न्लियानद्र ক্ষক:। নূপতে হিতকানেধী স এব ज्ञाकालथकः ॥ इंडि भधाकोम्ही ॥ 🗱 ॥ व्यक्षिक्यं कायरञ्चन कर्खव्युः 1 যথা।লেথকানপি কাযস্থান্লে-খ্যকৃত্যৈ বিচক্ষণান্। স্বর্য্যাদিতি

শেব:। ইতি পরাশর সংহিতাবা ১০ অধ্যায়: ॥

(लथनः ती हर्षनः ॥ जूर्बक्।।

श्रम्भत्रविन्धानः । ইতি मिनी

श्रम्भा जूमो (लथन निरुप्श यथा

। न जूमो विलिथिष्यं भ्रम्भ न श्रुः

खकः लिथि । ইতি यागिनी

छत्य ज्ञीयजारा १ भ्रम्भा धन्न मिन

चा काठ भन्न हम्मन मिन्न थिन।। हिनि

रेड त्रक्षनः (भाकः भन्न ग्राम्भा नि
क्षनः ॥ मकः स्तृ हेः जम्हा धन्ह

प्रक् । मिना ननः मिना । ইতি

ভাবপুকा मः ॥

বেখন: পু॰ কাশ:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:॥ .

(लथनिक: भू॰ (लथशत्रक: ।। भर्तै-श्रुवन(लथक: ।। त्रश्रुवरणथकः । ইতি (मिनि) ।।

(लथनी छी लिथार्ड १ नया। लिथ-नमाधनवस्ता छ८ भर्यायः । वर्ग्ड-लिकार । इंडि हातावली ॥ वर्ग-जूबी ३ कलमः ४ शक्त ब्र्लिका ६ । इंडि ब्रिटायतः ॥ कत्राम्यः ५ हि-खकः १ । इंडि चम्त्र ज्ञावली ॥ ॥ ॥ लिथनी कत्र १ मुख्या छ॰ यथा । वर-चम्हा लिथियर्ग छमा हानि र्ख-

विख्यः। छामुम्हा, जु विख्या छात्व उ९ कायो छात्र ॥ महा वन्नी र्छादिष्ठिष्ठ जूदर्गमा भवा-क्या। वृष्मणमा मृहेश देव सिंख-वृक्तिः भुकायत् ।। उथा व्यागिरिय দেবি পুতা পৌত্রধনাগমঃ। অগ্নি-ম্বৈ শ্চিত্রকাপ্তমবৈ: । রৈভ্যেন বিপুলা লক্ষ্মী: কাণসে,ন মরণ ভ (वर ॥ अक्षेत्र्वभुनाःगन मणाः कृत्वन वाथवा । ठज्रक्वम्ह्रा বা যো লিথেৎ পুন্তক শুভে ॥ **छ उरक्षत्र मः (थ**) जू बन्नायू यां छि रेव फिरन ॥ यथा देवर्ज्यानज्यामि বচনে এই ইবে বিবি নিষেপৌ ত-থাত্রাপ্রাকুল দশাকুলয়ে বিধি: নিষেধ শচত্রস্লে। ইতি যোগিনী তক্ষে তৃতীযভাগে ৭ পটল:॥ लिथनीयः वि लिथा। लिथि उदाः इंडि निथवाडाः कर्यगुनीयनः ত্যথেন নিম্নম॰।। লেথৰ্যভ: જા• ইন্দুঃ। ইত্যমরঃ॥ लिथहातः ) मु भ भवाहकः। (लथः লেখহারক:) হরতি ইভ্যর্থে অণ্ পু-ভ্যবেন কন্ পুত্যবেন চ নিয়ম: । ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী॥ **ा**च्या जी निभिः॥ भिद्धः। ३७ विषिनी ॥

লেথাহা: পু॰ আভালবৃক্ষ:। ইঙি द्राजनिर्घण्डेः॥ व्यथनयाम् जि ॥ লেখিত তি লেখ্যতে যহ। লি-থিত । ইতি ঞান্ত লিখবাতো: ক পুত্যযেন নিল্লম• ॥ লেখ্য ত্রি লেখিভব্য ৷ লেখনীয় । ইতি লিথধাতো: কর্মণি য পুত্য-(यन निञ्जन ।। # ।। व्यवहात्राञ्च क-कियानाम् । यथा। यात्रामि-কেপি সন্থে ভ্ৰান্তি: সংকাৰতে ধ্-ত:। ধাত্রাক্রাণি সৃষ্টানি প আ-क्रामाउ: भूत्रा॥ (नथा कि विवर প্ৰোক্ত ষহস্তান্যক্ত ভথা। অ-সাক্ষিক সাক্ষিন্য সিদ্ধি দেশ-স্থিতে স্থােঃ॥ মৃতাস্ত সাক্ষিণাে যত্র ধনিকর্ণিক লেখকা:। তদপ্য-পার্থ, করণ নৃতে ত্বাধে: স্থিরাশু-যাৎ॥ দৰ্শিত পুতিকালঞ্চ পঠি-जः माविज्ञ यट। (नथाः निषाः) তি সৰ্বত নৃতেয়পি চ সাফিষু ॥ ইতি ৰ্যবহারতত্ত্বে বৃহস্পতি: ॥ 🗱 ॥ जिम्हा माम्ल उ॰ (नशु॰ নিৰূপ্যক্তে। তত্ৰ লেখ্যু দ্বিবিধ । শাসন জানপদঞ্জি । শাসন নিক্সিত। জানপদমভিধীযতে। ত ছ দ্বিবি**ণ । স্বহ**স্তকৃত মন্যকৃত-

ঞ্জি । তত্ৰ স্বহস্তকৃত ন্দাক্ষিক•্

। অন্যকৃত সসাক্ষিক। অন্যো-क्ट (क्लाठाबानुमाखन भाषानाः । यहारू नाद्रमः। व्यथ्य विविदः জ্ঞেণ স্বহন্তান্যকৃত ন্তথা। অসা-किन्ट माकिमह जिब्ब फ्लिंडि তে স্তথো রিভি। ভত্রান্যকৃত্রমাহ । য: কশ্চিদর্থো নিকাত: স্বক্চ্যা তু भवस्था । (वर्षा अक्षिम्टकाः र्ये) अभिन् धनिक शूर्वकः ॥ धनिकाः **थ**नर्गा था शर्था हिन्नगुर्गिः भ ब्रम्भद्र• चक्**रा इेयडा काल्टिन** ভাবদেয় মিতীয়তী চ প্তিমাসং বৃদ্ধি রিভি নিঞাতো ব্যবস্থিত স্ত-মিন্নর্থে কালান্তরে বিপুতিপত্তৌ বস্তুতত্ত্ব নিৰ্ণযাৰ্থণ লেখ্যণ ৷ সাক্ষি মদুক লক্ষণ সাকিযুক্ত ৷ ধনিক: পূরো যমিন্ তন্ধনিকপূর্বকণ খনিক নাম লেখন পূৰ্ক মিতি यावट कार्याः कर्छवाः। উक्र नक्षाः भाकिता वा कर्डव्याः। कर्जा ठ्यट কৃত কার্য্য সিদ্ধ্যর্থ স্থস্য সাক্ষিণঃ । পুৰভত্তি বিবাদেষ মকৃত বাপ্য-লেখ্যক মিতি মারণাৎ।। অপিচ। সমা মাস ওদজাহ নাম জাতি चागावरिकः । मृतुक्षाठातिकाजीय পিতৃনামাদি চিছ্নিত ॥ সমাস-ञ्च ८ मद्रः । नाम टेफ बार्क्ति उपकार

भक्तः भूकः क्रका वा। **अर्घ विसिः** প্রতিপদাদিঃ। नाम धनिकाधमर्ग-যো:। জাতি ব্ৰান্ধণাদি:।। ৰগো-ত্র কাশিপ্তাদিগোত্র মেতৈ: সমা-দিভি শ্চিহ্নিত । তথা সবুন্ধচা-রিক• বজ্যাদিশাথাপুযুক্ত• **৩**৭ নাম বস্থাচঃ কঠ ইতি। আত্মীয পি-তৃনান ধনিকৃৰ্ণিক পিতৃনাম। আদি-গুহণাদ্ব্য জাতি সংখ্যাচারাদে পূৰ্হণ । এতৈ শিচহ্নিত লেখ্য কাৰ্য্য মিভি গভেন সম্বন্ধ:। কিঞ্চ। नभार्ष्ठ २ (र्थ यानीनाम बहरहन नि-বেশ্যেত। মতং মে ২মুকপুএস্য যদভোপরি লেখিত ॥ ধনিকাধ-মৰ্ণযো যে। হর্থ: স্বৰূচ্যা ব্যবস্থিত: ভিমিন্নর্থে সমাপ্তে লিখিতে পণী অ-थमर्गा नामाजीय· चश्खनामिल्ल-থ্যে যদুপরি লেখিত তন্মনামুক-পুএষ্য মত মভিপ্রেত মিতি নিবে-माराष्ट्र भाषा विविध्य । उथा । সাক্ষিণণ্ট ঘহস্তেন পিতৃনামক প্-र्बकः। অতাহ ममूकः माकी विरथयू ব্লিভি তে সমা:॥ ভিম্মিন্ লেখ্যে যে সাক্ষিণে লিখিতা তেপ্যাত্মীয় পি-ত্নান লেখন পূৰ্ক নিয়াংথে অছ-ममुका (দবদত্ত: माकी जि बहरस्र रिनरेककल्मा निर्थन् (उह नमाः मः

भारता खनजण्ड कर्डवाः । यहायः মৰ্ণ: সাক্ষী বা লিপিজ্যো ন ভবতি ত্দা ংখনগোন্তেন সাক্ষী চ সাক্ষ্য-ন্তরেণ সর্বসাক্ষিসমিধৌ সমত লৈ-थारट। यथार नात्रमः। चलित्रिः क्छ अगी यः महार समज्ख म लिथ (यट। त्राक्षी वा त्राकिगात्मान नर्व সাক্ষী সমীপত ইতি ।। অপিচ । উভযাভ্যর্থ্যতেনৈতন্মযাহামুক সূনু-না। লিখি э ত্মকেনেতি লেখকো ২ন্তে ততে। লিখেৎ ॥ ততো লেখ-কো ধনিকাধমৰ্ণিকাভ্যা মূভাভ্যাণ প্রার্থিতেন ম্যামুকেন দেবদত্তেন বিকুমিত স্নুনা এজল্লখ্য লিখি-ত মিত্যান্ত লিখেৎ॥ #॥ সাম্পুত• ষ মৃতলেখ্যমাহ। বিনাপি সাক্ষি-িভ র্লেখ্য স্বহন্ত লিখিতন্ত হৎ। তং পুনাণ মৃত লেখ্য বলোপ বি-কৃতাদৃতে ॥ यस्त्रथ्य শ্বহস্তেন লিং থিত অধনৰ্ণেৰ ভৎ সাক্ষিভি ৰ্বি-नानि भूगागः यृठः बन्नामिजिः। বলোপ বি চ্ ভাদৃতে। বলেন বলাৎ-কারেণ। উপধিনা ছ ল লোভ ক্রোধ ख्य नमामि वक्तान यट कृष्ठ ख्या-দ্বিনা। নারদোপ্যাহ।মত্তাভিযুক্ত खी वान वनारकात क्उक रर। **उरश्रुमानः निथिउः ভर्यामधि** 

কৃত্তমুখেভি ॥ ভট্টেভৎ শ্বহন্ত কৃত্ত• পরহন্ত কৃতঞ্চ যল্লেখ্যু দেশাচা-রানুসারেণ সবন্ধক ব্যবহারে বন্ধক ব্যবহারযুক্ত মর্থ ক্রনাপরিলো-পেন লিপ্যক্ষরাপরিলোপেন लिथा निर्छाजायम भूनः माधूमरिद রেব পাতিষিক দেশভাষ্যাপি লে-খনীয় । যথাহ নারদ:। দেশাচা-ব্লাবিৰুদ্ধ· যদ্যক্তাধি বিধি লক্ষণ·। তৎ পুমাণ মৃত লেখ্য মবিলুগুক সাক্ষর মিতি॥ বিধান বিধি রাধে বিধি রাধীকরণন্তস্য লক্ষণ । গো-প্যাধি ভোগ্যাধি কালকৃত মিত্যা-দি তদ্ব্যক্ত বিস্পাষ্ট যিমা স্তদ্ব্যক্তা-ধি বিধি লক্ষণ। অবিলপ্ত ক্রমাক র অর্থানাক্রম: ক্রমঞ্চাক্রমণি চ ক্রমাক্ষরাণি অবিলুপ্তানি ক্রমাক্ষ-त्राणि यथि छन्विनुष्ठ क्रमाक्रतः। তদেব ভূত লিখিত পুমাণ। রা-जनामनदन माध्नयनियसा श्व-ত্যভিপাশ:। সেখ্য পুসঙ্গেন লে-খ্যাক্ত মপ্তা ত্রিভিরেব দেয় মি-ত্যাহ। अनः (लथ्यक् ज स्मरः भू-क्रेंब जिल्लि (इव जू। यथा माक्ष्णी-দি কৃত মৃণক্ৰিভি ব্লেৰ দেয• তথা লেখ্যকৃত মপ্যাহত্ পুত্র তৎপূত্র জ্রিভি রেব দেয়। ন চতুর্থাদিভি

ব্লিভি নিষম্যতে। মনু পুঞ পৌত্রৈ र्श्वास्य निउद्वास्यवर्गमाक जि ভিরেব দেধ মিতি নিবতমেব। বাচ ম্সৈ্ত্ৰেৎসৰ্গন্য প্ৰাৰ্ট্ণ বিষ্থে মৃত্যন্তর পুত্রা মপবাদশক্ষা মপ-तिज् चिन्द्रक्रम भातकः। उथाहि । প্র লক্ষ্ণ মভিশাষ কাত্যাখনেনা ভিহিত ৷ এবং কাল মতিকান্ত পিতৃণান্দাপ্যতে ঋণ মিতি। ইশ্বং পথাৰ্ক মতিকান্ত কাল মপি পি-তুণা মলি পিতৃণা সম্বন্ধি দাপ্যতে । অত্র পিতৃণা মিতি বছবচন নির্দে শাৎ কালমতিক্রান্ত মিতি বচনা-हुव्धारि माना इंडि नुडीयर । তথা হারীতেনাপি । লেখ্য यস্য ভবেন্ধন্তে লাভত্তস্য বিনিদ্দিশেদি তি৷ অত্রাপি যস্য হস্তে পঞ্নস্তি তস্যূৰ্ণৰাভ ইতি সামান্যেন চতুথা रिट्या **२** मृतनाखा श्लीजि भूः তীয়তে। অত কৈতদাশল্পা নিবৃ ত্যৰ্থ• এতদ্বচন নিতি যুক্ত• ৷ বচৰ-ছযন্ত যোগীশ্বর বচনানুসারেণ যো करीय ।। 🗱 ।। व्यन्तराभवादमाह । আধিন্ত ভূজ্যতে ভাবদাবভন্ন প্ৰ-ধীয়তে। সবন্ধকেপি পঞাৰ্কটে ঋণে ব্রিভিরেব দেয় মিতি নিয়মাদ্ণাপ-क्रवानिष्काद्मवाष्ठ्राष्ट्रवृत्व २११३नः

विकातः भाशाविमगृहारछ। शावहजू-র্থেন পঞ্চনেন বা থাণ ন দীয়তে জা-বদেবাধি ভুজ্যিত ইতি বদতা সবন্ধ-কর্ণাব্যকরণে চতুর্থাদে রপ্যধিকা-রো দর্শিতঃ।। নদ্ভেদপ্যযুক্ত নেৰ ক্লভোগ্যোৰ নশ্যতীতি সভ্য•ী ভদপ্যেভিষিষ সভ্যপবাদ বচনে প্-क्ष वय यिवयम्बर म्याहिक नर्ब भनवम् ।। 🛊 ।। श्रामिक् कः भिर्मिभ्यः-প্য পুক্ত মেবানুসর্তি। দেশান্ত-রছে দুলেখ্যে নষ্টোমূষ্টে হৃতে তথা ় ভিন্নে দক্ষেথবা ছিন্নেলেখ্য মন্যন্ত্র কার্যেৎ। ব্যবহারাক্ষ্মে পণ্রে প-প্রান্তর স্বর্যাদিতি বিধীয়তে। ব্য-বহারাক্ষর্ঞাত্যন্ত ব্যবহিত দে-শান্তরত্বে পঞ্জে দুলেখ্যে দুষ্টানি স্ ন্দিখ্যানানি অবাচকানি বা লে-খ্যানি লিপ্যক্ষরাণি পদানি বা য-बि॰ उद्भार्विथाः उभिन्मुर्वार्थाः नःह कानवत्मन उग्राष्ट्र मनी कि इन्।-দিনা মৃদিতে লিপ্যক্ষরে হৃতে ভক্ষ-রাদিভি র্ভিন্নে বিদ্বিতে দধ্যে অগ্নি-নাছিয়ে দ্বিধা ভূতে সতি দ্বি ভবিতি । এতहार्थि পুত্রর্থিনো:। পরস্পরা-নুমতৌ সত্যা• বিমত্যাস্ত ব্যবহারা-भारत्री (समाउत्रष्ट भाष्यानयनाष्ठा-(शक्या काला माठवाः मुल्लेगाव-

স্থিতেনষ্টেবা পণ্ডে সাক্ষিভিরেবব্য-चहाक निर्गरः कार्युः। येथाङ् नात्रमः । (नत्थाः (मणाच्यानात्यः मीर्गः पृति থিতে হৃতে। সত তৎ कान केंद्रग মসভো দৃষ্ট দৰ্শন মিভি ॥ সভো বিদ্যমানপঞ্চার দেশান্তরহুস্যান্-यनाय कालकद्रगः कालाविध मीखः ব্য:। অসত: পুন রবিদ্যমানস্য প-धमा भूबं रा पुष्टोतः माकिनरिस मं-শ্নি ব্যবহার পরিস্মাপন কার্য্যু । যদা তু সাক্ষিণো ন সন্তি তদা দি-বেরন নির্ণয়ঃ কার্যঃ। অলেখ্য সা-क्किरक रेनवी॰ वावशास विनिर्मि**ः** দিতি অরণাৎ। এতঃ জানপদং ব্যবস্থাপশ্ৰং। ব্লাজকীয় মপি ব্যব-স্থাপএ মীদৃশ মেব ভবতি। ইযা•স্ত বিশেব:। রাজ: ষ্ভত স·যুক্ত• স্ব মু দু। চিহ্নিত ন্তথা। রাজকীয় মৃত तिथाः मर्खिद्यर्थाः मुमाकिमिनि ॥ 🗱 ॥ उथान प्रति द्राह्मकीय • जय-পত্র বৃদ্ধবশিষ্ঠেনোক্ত। যথোপ-ন্যস্ত সাধ্যার্থ সংযুক্ত সোত্তরজিষ 1 সাবধারণক্ষৈত্ব জ্বপত্রক নিষ্যু তে। পাৰ্ছিবাকাদি হস্তাল্ক মূদ্রিক ব্লাজমুদ্যা। সিজে ২থে বাদিনে मन्त्राङ्कियित क्यश्राक निजि।। তথা /সভাসদোপি মত নে ৎমুক

প এস্যেতি বহন্ত দদুঃ। সভাসদ-ক্ষ যে ভত্ত মৃতিশাস্ত্রবিদ: স্থিতা:। यथा (वर्ष) विश्वी उद्दर स्रहरू हः দুররেবত ইতি মনু মরণাৎ ॥ সভা সদাঞ্পরস্পানুমতি ব্যতিরেকেণ ব্যবহারো নি:শংল্যা ভবতি ৷ য-'খাহ নারদ:। যত্র সভ্যোজন: সর্ব: সাধ্যেতদিতি মন্যতে।স নি:শল্যো विवा**रः ग्राट् गणना** छुन्रथा ভবে-দি**তি**।।এত্রচতুম্লাদ্যবহার এব। সা ধ্যেৎ, সাধ্য সর্থ যুচতল্লাদান্তিঞ্চ यः। রাজনু দাঙ্কিতক্ষৈব জবপএফ মিৰ্যত ইতি মুর্ণাৎ॥ যত্র ত হীন-তা यथा। जन्यवामी कियामियी त्नाः পভাতা নিক্ভর: । আহ্তপুপলা-যাঁ চ হীন: পঞ্ৰিখ:মূত ইতি॥ তত্ৰ ন জ্বপত্র নস্তি অপিতৃ হীনপত্র নেব তচ কালান্তরে দণ্ড প্রাপ্তার্থ• बयमः जु भाएन।।य विधि मिकार्थ भिक्ति वित्नवः। त्नशः मत्मत्ह निर्गय निमिखान्याह । जन्मिश्व (वर्थ) শূজিঃ স্যাৎ স্বহন্ত লিখি তাদিভি:। যুক্তি প্রাপ্তি ক্রিয়া চিহ্না সম্বন্ধাগন-হেতুভি:।। শৃদ্ধ নশৃদ্ধঞেতি সন্দি-अम्। (नथामा मुक्तिः स्रय विचि-তাদিভি: স্যাৎ। স্বহন্তেন লিথিত॰ यह्मथाञ्जतस्त्रम मुक्तिः । यमि नम्-

भानाक्रवाणि खरवि उमा मुक्तिः जाि कि जो कि जो कि जो कि जो कि जो कि जो कि লেথক স্বহন্ত লিখিতান্তর সম্বাদা-ছুদ্ধি রিতি। যুক্ত্যা পাপ্তি যু কি পা-धिः। (मण कान भूक्यागाः मुत्याप जरु जम्रकः शुक्तिः। व्यक्षित्मरण ष्यिन् काल ष्या भूक्रवामार्रः मुवाः घरें ३ हे वि युक्तिः। भाषिः ক্রিয়া তৎ সাক্ষ্যুপন্যাস:। চিহ্ন भगाधादग॰ श्रीकादाहि । अग्रुऋः অর্থি পুত্যর্থিনো: পূর্বনপি পরস্পর বিখাসেন দান গুহণাদি সম্বন্ধঃ ৷ আগনো হসৈ্যভাবতো হর্থস্যসন্তা-বিতঃ প্রাপ্ত্যপায়: ৷ এত এব হেতবঃ ।এভি র্হেতুভি: সন্দিশ্ব লেখ্য শুদ্ধি: न्। कि अनुषः । यहा जु (नार्थ) मः **त्नि इ** निर्णय। न जाय**्य उमा जाकि**-ভি নিৰ্ণয়: কাৰ্য্য:। যথাছ কাত্যা-য**ন: ৷ দ্**ষিতে পঞ্জে বাদী ভদাক্র-**ঢা• स्त्र निर्म्म् (निर्धि। नाकिमद्ध**व বিষয় মিদম্বচন ৷ সাক্ষ্যসম্ভববিষ-यस স্বাহীত বচন•। न ম**ৰৈত** কৃত• পথা কৃট মেতেন কারিত। অধ त्रीक्**डा उ९ भ**ध मथ मिरवान निर्न-य ইতি॥ 🗱॥ এব॰ শোধিতে পলে খাণে চ দাতব্যে প্রাপ্তে যদাকৃৎ স্নাম-वर्गनाञ् मममर्थ छना किः कर्डवा

মিভ্যত আহ। **লেখ্যস্য পৃঠে ২**ভি-লিখেদ্ৰভা দভূৰ্ণিকো ধন। ধনী চো-প গত• দদ্যাৎ ষহস্ত পরিচিহ্নিত ।। येनाथमर्गिकः जकन मृगः माजून-गमर्थ खरा भक्तानुगात्रग रसा रखा পূৰ্ক্তস্য লেখ্যম্য পৃষ্ঠে হভিলি-থেদেভাবত্মযাদক্তমিতি।উত্তমর্ণো বা উপগত্ত প্রাপ্ত ধনস্তব্যৈ লে খ্য-म्। भृष्ठे एम्। ए जिल्लिथ ए जावस्य। লক্ষ মিতি। কথ স্বহুত পরিচিহ্নি ७ । यह छ निथि जाक व विद्या ७ । যদোপগত পুবেশপ্রশ স্বহন্ত লি-থিত চিহ্নিত মধমর্ণাযোত্তমর্ণো দ-म् ।। ।। ।। अत्। ज्रुट्य म् एउ । **থ্য কি কর্ত্ত্ব্যমিস্থ্য আহা দ**ভূর্ণ° भारियस्त्रथाः भूषो ठानाः कात्र-যে**। ক্ৰমেণ সক্দেব বা কৃৎ** মু মৃণ-म्दु। भूई क्ड लिथा माहिरारा यमा जु मूर्गामभावश्चिष्ठ व्यथा न-ष्टेर वा जना मुरिका अध्य गर्व निवृज्य মন্যলেখ্য কার্যেদুক্তমণ মধ্বণঃ প্রোক্ত ক্রমেণাত্তমর্ণো বিশুদ্ধিপ-শ্রু অধনর্ণায় দদ্যাদিত্যর্থ: ।। # ।। সসাক্ষিকে ঋণে কৃৎস্নে দাভব্যে কি• কৰ্ত্তব্য নিভ্যত আহ । সাক্ষিমচ ভবেদ্যদ্বা ওদ্যাতব্য সসাক্ষিক । यञ्ज ननाकिक मृगष्ट भूर्वनाकि

नमक्तिव प्राट्य हेडि व्यथाः পুকরণু ৷ ইতি মিতাক্রায়া .वऽवङ्द्राध्यायः ॥ শেখ্যচ্লিকা জী ত্লিকা ইভি मदद्वावनी ॥ লেখ্যপত্রঃ পু॰ তালবৃক্ষ:। ইতি ভাবপুকাশ:৷বেখনীযপণ্ডে শ্লী ৷৷ লেখ্যস্থান স্নী বিখ্যতেয়ত্র আফিস ইভি দপ্তরখানা ইভি চ (मूह्नाया। उट्मर्य)। गुर्वि २। ই 5 भगवा जावनी ॥ লেও জী গ্থং। ন্যাড ইতি ভাষা 1 यथा। উৎসসজ বৃহল্লেণ্ড॰ মৃত্রঞ্চ ভर মাপ হ। ইতি বুদবৈবত্তে 🗐 কৃষ্ড্ৰাথণ্ড ধেনুকাৰুরবধে ২২

িলেপ ঋ ড গমনে। ইতি কবিকল্প ক্ষমঃ॥ ঋ অলিলেপং ৷ ড লেপতে লিলেপে ৷ ইতি দুগদোসঃ॥

्र व्यथ्यायः ॥

লেপ: পূ॰ লেপন ॥ ভোজন ।

ইতি মেদিনী ॥ সূধা । চূন ইতি
ভাষা।ইতি বিখঃ॥

स्मिकः श्रु कालिदिस्थः। द्वाख ₹७ रेषकः २०० लावः। ७८-शर्तापः। भन्नश्यः २ । २७ प्रदः॥ स्मिने ७ । २०० मन्द्रज्ञादनी॥ स्मिश्क्८ ८ । २०० स्वरुक्तुः॥

লেপন ক্লী লেপ:। লেপা ইভি ভাষা। যথা। বৈশাথস্য সিত্তে-शक्क ज्ञीयाक्रय मः जिल्ला। তত্র নাণ লেপযেমুদ্ধ লেপনৈ রাজি-(नाविड॰ ॥ ইडि डिब्रामिडबु॰ ॥ 🛊 ॥ विकुश्रुत्वणन कवाः यश्। वाबाइडेवाहे। मृगू उत्कृतस (रवि লিপ্যমানস্য যৎফলং। সর্বং তৈ কথবিৰ্যানি যথা প্রাপ্তোতি না-नवः ॥ लामयः गृश्च देव ज्या मम বেশ্মোপলেপয়েৎ। ন্যস্তানি ভক্ত যাবন্তি পদানি চ বিলিম্পত: ॥ তাবছৰ সহসাণি দিব্যানি দিবি साम् । यमि चाम् नव्यानि नि-প্যতে মম কর্মসু॥ জায়তে বিপু-লে শুদ্ধে ধন থান্য সনাজলে। দিব্যৈ ৰ্নক্তো দেবি **জশ**দ্বীপাৰ গছতি।। জলদ্বীপ মন্পাপ্যসহসুং জীবতে দশ। মন্ডক্ত শৈচব কাষেত महिया खनवान् मुहिः॥ जनवीः পাৎ পরিভুষ্টো মন কর্ম পরায়ণঃ । রাজাবৈ জাগতে সুক্র সর্ব ধর্মেষ্ নিষ্ঠিত: ৷৷ লেপনসঃ পুভাবেণ মম কর্ম পরায়ণ:। ভক্ত্যা ব্যবস্থিত শ্চাপি সর্বশাস্ত্রাণি গছতে ৷৷ দেবি কার্যতে সর্ব মন চায্তনানি চ 1 কার্যিত্বা যথা ন্যায়• মম লোকায়

শছতি ॥ গোম্বস্য ত্ বক্ষ্যামি ত্ৰুণুম্ব বসুদ্ধরে। গোমযন্ত সমা-नाम् यावाद्यात्कानुगह्नि॥ न भील यनि वा मृद्र गञ्जानयां ला-🖟 ম্য•। যাবন্তি তৎপদান্যস্য তা-बद्धर्य महमूकः ॥ (गामयानियञा हित सर्गालाक नृशियल । এका-দশ সহসাণি একাদশ শতানি চ য়। ততঃ স শাল্মলে দ্বীপে রমতে **চ মুদাযুত:। भानाबाड् প**রিভুষ্টো রাজা ভবতি ধার্মিক:॥ মন্ডক্ত-रिष्ठव जायिक मर्ब धर्मविनाम्बद्रः। व्यथ बारणवर्षाण महिन्दः मुम्ह-বুত: ॥ বহুতে গোম্য সূজ মন-লোকায গছতি। ইতি বরাহপু द्रापः ॥ 🗱 ॥ (म्वीगृरुत्व निम्कनः যথা। দেব্যা গৃহস্ক यः শুক্র গো-भाषनानु (लभाष्य । जिया वा यनि বা পুশ: ষ্মাসন্ত নিরন্তর ॥ म वाजिमीक्षिजान् कामान् (मर्ग) লোকঞ্চ গছতি। ইতি দেবীপুরাণে ८२ ज्यायः ॥

লেপন: পু॰ ভুক্ষনামগদ্ধ দুব্য॰। ইভি রাজনির্ঘণ্ট:॥ লেপী পু॰ লেপক:। থৈকর ইভি ভাষা। ইভি শদ্রত্বাবলী॥ লে-পক্রন্তির লেপবিশিষ্টে চ ত্রি॥ (वनाः वि (वननीयः। (वश्वरः)।
विनवाराः कर्याः। य गुज्रस्व
निञ्जमः॥
(वनार्क्ट भूः (वनकः। ইडि,
(क्यान्मः॥
(वनार्भयो खो काशिन्यिहिङम्बन्
विका। उट्मर्वायः। चञ्जविका-

निका। उट भर्गायः। चक्कनिका-द्रिका २। इंडि (इसहन्तुः ॥ मण्डी की मूणक पुराणिधाजी।

ইভি শব্দরত্নাবলী ॥ লেয: পু॰ সিংহ্রাশি:। ইভি জ্যোভিস্তত্ত্ব ॥

विश्वाः प् निवः। ই ज न् 

त्र त्र विशे । प्रणः । ই ज हि सह न मुः
।। प्रनः प्रवर्ण स्व कर्ष विश्वाः
विश्वाः क्षे गूम् विश्वाः ।
यथा । वकुः विष्ठा त्रि उ॰ कृषा प्राः
विश्वाः क वालाय । प्रार्थ इ॰
गूष्टि यूगवा विश्वाः विश्वाः विश्वाः
विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः
विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः
विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः विश्वाः

न्ताम भूकी खिंठा। इंडि उसमातः।
लाकः भू क्यां। इंडि उसमातः।।
लाक्षेः भू लाक्षे। इंडि प्रमतः।।
लाक्षेः भू लाक्षे। इंडि प्रमतः। इंडि प्रमतः। इंडि प्रमतः। इंडि प्रमतः। महे इंडि थ्याडः। इंडि (इंडिट) इंडि छत्र छः॥ छंट भर्याः। द्वादिणः २। इंडि त्र इत्वायः॥ दक्षिः। वाहेषः। इंडि त्र इत्वायः॥ दक्षेषः। वाहेषः। इंडि त्र इत्वायः॥ दक्षेषः। इंडि प्रमतः।। दक्षेषः। इंडि प्रमतः।। दक्षेषः। इंडि प्रमतः। इंडि प्

शर्जायः। किंदिताष्ट्रकः २। इंडि भद्रमावा।।

লেক্: পু॰ আহার:।ভক্ষণণ। ইভি হেনচন্দু:। ভৎপর্য্যায:। আদন•২রসন•১ মদন•৪ মদি:৫ ।ইভিরাজনির্ঘট:॥

লেহন ক্লী জিস্তাবারসগৃহণ !
চাটন ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:।
জিস্তাবাদ:২।ইতি হেনচন্দু:॥
লেহিন: পুণ টক্ষন । ইতি হেনচন্দু:॥

त्वरः क्री अगुउः। ই छि भपः भाना।। त्वरुगीय जि॥ त्वरुः क्री विक्रभुद्रागः। यथा।

मार माड को मांड ज्या लिक लिये काम खेल्य ह। इंडा हि भाषा-खत्र थए ३८ व्यक्षा गः॥ लिकी की लिकिनी। इंडि ताब-निर्व गः॥ लिक महिनि कि॥ लाक या का ही छो। इंडि किय-कन का मा या व्यक्ता कर । क लाक या ड के कि हु मां हा मा ॥ लाक या ड के कि हु मां हा मा ॥ लाक या ड के कि हु मां हा मा ॥ लाक या ड के कि हु मां हा मा ॥ लाक या ड के कि हु मां हा मा ॥ लाक या ड के कि हु मां हा मा ॥ लाक या ड के कि हु मां हा मा हा मा विचात का विचात का हि दि मा मा था। चे के हु मां हा मा ।।

लाकः भू ज्वनः ॥ जनः। हेन्डान्यः ॥ मधलाक नामानि यथा ॥
ज् ज्वाः म मह रेण्ठव जनण उभ
व्यव । मजालाकण मरिधलान्यः
काख भित्रकी विजाः ॥ हेन्डाप्तिः
भूतापः॥ जिल्हा ज्वांति जुवः
सर्वाक दिलाका निष्ठ महण्या ।
स्कान सभः मजाः मधलाकाः
भूकी विजाः ॥ ज्वांकः भाषित्याः
लाका २ स्त्रीकः ज्वः मृजः ।
जात्या लाका विवि (ज्ञाह्याः
मृक्ष् यथा कनः॥ ज्ञााधिभिष्ठ

্ছণ্নি ন্ততে। ভ্তপতিন্ত সং। বাযু নভাৰে৷ হৰিপতি তেন বাযু নভ স্পতি: ॥ ভাষ্যস্য সূর্য্যাধিপতি **ल्यम मृ**र्यित किव**म्मा**जः। भयाद्याञ्चन রস শৈচব শুহাকা: সহ রাক্ষসৈ: !! **ज्र्लाक वाशिनः मर्खि अस्त्रीक ह**े ब्रान् भृग् । गक्छः मधिकः ऋत्मि क्षा खरेथव ठाचिरनो ॥ व्यापिछाः वनवः नर्स्त ७रेथव ह गवाद्यनाः । চতুর্থে তু মহর্লোকে ভিগ্নন্ত কল্প - वाञिनः ॥ भुकानाः পতিভি: नर्दिः পেব্যতে পঞ্মো মহান্। মনুঃ স ্ৰৎজ্নারাদ্যা বৈরাজক্ষ সূতা জ্বযঃ া) ষঠে তু সংস্থিতা ছেতে দেবা দেব-বিরোধকা:। স্ত্র সপ্তনো লো-কে। ছপুনর্ভববাসিনা॰ ॥ বুদ্ধলো-ক: সমাখ্যাতে৷ হ্পুতীঘাত লক गः। महोजनार **मह्मु**।म उठ উদ্ধৃ • দিবাকর:।। দশ তানি ধ্রুবে যাবদ্দিগুণে দ্বিগুণান্তরে । দশযো कन कार्टे उन्ह भिक् क्षा • शुनः मृ उः॥ ख्यादि निकाशि विद्यालि । ৈশক উচ্যতে। দ্বিগুণেষু সহস্তেষ্ ্যোজনানাং শভেষু চ ৷৷ লোকাভর ्रमरेथरेवक॰ क्षुवामृष्ट्यं विश्वीयरङ । ্দেব দানব গন্ধর্থ ফ্লু রাক্ষ্য পয়-गाः ॥ ভূত विष्णाध्या रेक्टव जाही

**छ (एवर्यान्यः । ७ वृक्षाश्चक्र) म-**খ্যন্থাঃ পরত ভ্রম্যাবৃত্ত ॥ ভড়ো **২**গ্ৰি বায় রাকা**শ**• ততো ভূতাৰি কচ্যতে । ভতো নহাম পুধানশ্চ পুক্তি: পুৰুষ স্তত:।। পুৰুষাদীখ-·রো জ্রেয়ে। যস্য শক্ত্যাবৃত্ত রুগৎ । निर्वामा ভानु (एवःमाः भद्राभद्र তরা মতা:॥ ইতি দেবীপুরাণে ত্রৈ-लाक्राचुरस्य शुरुवि नीमार्षरः यः ॥ 🛊 ॥ निक्পाणः नाः। (वाका যথা। পুলাগতিত্ব ভগবান্ গুণভঃ পুক্ষ্য দেবতা। আধিপত্যেরু শ্-ক্লেষু ন্যযোজ্যত যোগবিৎ ॥ ত্রনান ণামপি লোকানাণ দেবতানাণ দ্বি-কোত্রনা:। চকার শত্রু রাজান रिक्छानाः मिछि भ्रबंधः ॥ भ्रविग्राः কৌশিকো রাজা দক্ষিণস্যাণ যমো **मिनि । वक्षाः शक्तिगाराञ्च উखद्र-**न्धाः नता थनी ॥ 🗱 ॥ भूगप्रवज्ञाः লোকা যথা। এবং বিভঙ্গু রাজ্যানি পুরা প্রোক্তানি যানি চা **লোকা**শ্চ विमर्ध मिवडान् ममावश भृथक् भृषक् u कमाहिए স्यामकामान् कनाः हिष्ठद्विर्वानर्। कम्प्रहिष्विष्प्रविः (म्राजान् कम) हिह्नुनियं नान् ॥ নানাবৰ্ণান্ কামম্যাননেক শভ যো-জনান্। সভান্ সূক্তিনা॰ লোকান

পাবনায চ স-ছিতান্ ॥ ভানুজে যে তপস্যন্তি সৌম্যা স্তারাগণা: সদা। এতে সুকৃতিনা॰ লোকা যে 'भाखाः भूगुकर्याजः ॥ ए वकस्रि नरेशः भूरेगः नमाश्च वद्र मिक्रोनः । স্বদার নিরভা দান্তা ক্ষজবঃ স ভ্যৰাদিন: ৷৷ দীনানুগুছকৰ্ত্তারো বুন্ধণ্যা লোকপ্জিতা: । যোগযু-ক্তাম্ছাত্মানো যান্তি তত্ৰ ভগো-জ্বা: ।। সর্বংসহা: ক্মাযুকা-কোপিতা যে তমোজিতাঃ। এবং निर्याक्षः जनयान् स्रयः (लाकिनिः তামহ:।। পৌষর বুদাসদন মা করোহ পুজাপতিঃ। সর্বে ধ্যায়-দত্তেযুপাবনেষু দিবৌকসঃ।ক্লেফি রে ষেষ্ লোকেষু মৃহেন্দুণাভিপা-• লিডা:॥ ইভি বহি পুরাণে বারা-হপাদুভাবনামাধ্যায়: ॥ **लाककाडा जी अध्वनामीयक्ष**ा

ইতি রাজনিঘট:॥

णु॰ ज्यंतः। ই**छिणस**ः व्याक्तकः भागा।। जनम्यानाहम्यः।।

लाकिहर **भू** वृ**षः। ३७**ऽमतः॥ লোকতুষার: পু কপ্র:। ইতি ब्राजनिर्घणेः॥

লোকনাথ: পু॰ বুদ্ধ:। ইভি ত্রিকা खानवः॥ वृक्षा। ইতি नद्रवृ বলী। বিফু:। ইতি তস্য **সহসু**-नाम (खाखा। भिवः। येथा। अ-किथानः मन् भुखवः म मण्यानाः म লোকনাথ: পিতৃসন্গোচর: স ভীমৰূপঃ শিব ইত্যদীৰ্য্যতে ন जिल्ल याषार्थात्रमः निगाकिनः॥ ইতি সমারসম্ভব:॥

লোকপাল: পু॰ রাজা।ইতি হলা-युथः ॥ रिक्नानः । यथा । इत्न्रा विद्रः भिवृभिष्ठ विश्विष्ठ विकाश **থ্**নিলঃ। খনদঃ শক্ষরশৈচব লোক-পালা: পুরাতনা: ॥ ইতি বহি:-भ्राग्ना ॥

लाकवाक्तदः शुः मूर्य्यः। इंखि बहेा-ध्वः ॥

লোকনাতা স্ত্রী লক্ষী: ৷ ইত্যমর: ৷৷ म्यं । ३७ লোকলোচন: नम्बद्धावनी ॥

(बाकवाश: शु· नर्बाठात्रवर्किंठ: 1 यथा। लाकवाञ्च या वाञ्चि ग-বাশ্যাচারবর্জিত: । ইতি জটা-ধর: ॥

लाकविनायकः भू• गुरुविष्मदः) यथा। ऋन्त्र्यशास्या (य ह आर्य)-ক ত্রাসকাদ্য:। কৌমারা স্তে ভূ-বি জ্ঞেবা বে চ লোকবিনাযকা: ম সহসূ শত সংখ্যাতা মর্ত্যলোক **লো**কেশ্ব

'বিচারিণঃ। ইতি বহি পুরাণ।। লোকবিলুভি: জ্ঞী জন্মু ডিঃ কিয়দন্ত্রী। ইতি কেচিৎ ॥ **लाकायज•** क्षी उर्काडमः। চার্বাক-শাস্ত্র•। ইত্যনরভরতৌ ॥ लाकायिकः भु ठाईाकः। ইতি হেনচল্যঃ !! (बाकात्वाक: शुः স্থনামখ্যাত পর্বত:। তৎপর্য্যায়:। চক্রবাড: ২ । ইত্যমর:॥ (द मासिदीপा: गरी মাবেষ্ট্য প্রাকারবৎ স্থিতে গিয়ৌ লোকালোক ইতি ম্বানখ্যাতে! অন্তর্লোক্যতে স্ব্রিশ্রিভিঃ স্প্ শ্যনানহাৎ ইতি লোক:। তথা বহিঃ সূর্তকিরণাস্পর্শাৎ ন লে। ক্যতে ইতি অলোক:। লোকৃ कीएक कर्यान घडा लाककारनी অলোকশ্চতি লোকালোতঃ। b. ক্র' নহীচক্র- বণ্ডতে বেপ্টযতি চক্র বাড: 1 বডি ড বেপ্টে চ ষণ জ্ঞাপক সিদ্ধস্যানিত্যত্বাৎ ন নুণ্। ইতি ভরতঃ ৷৷

লোকেশ: পু॰ বুজা। ইত্যার:।।
বুজভেদ:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥
পারদ:। ইতিবাজনর্ঘট:॥
লোকেখর: প্৽ বুজভেদ:। ইতি
্ত্রিকাণ্ডশেষ:॥ ভ্রমানা॰ জনা

नाक्षभुङ्ग्ह् ॥

লোকেখরাত্মলা দ্রী বুদ্দশক্তিতেদ: । তৎপর্য্যায়:। তারা ২ নহাঞ্রি: ১ **७कात्रा ८ चारा ৫ ज्ञी: ५ मरनात्र-**মাণ ভারিণী ৮ জ্বা ১ অন্তা > निवा >> थ्युतवामिनी >> ंख्रु। ১১ বৈশ্যা ১৪ नीलमंत्रसञी ১৫ শদ্ধিনী ১৬ নহাতারা ১৭ বসু-খারা ১৮ খননদে । ১৯ ত্রিলোচনা ২০ লোচনা ২১। ইতি ছেমদলু: ॥ লোচ ঋক ভাসি।ইতিকবিবল্প-क्रमः॥ य जनत्नाहरः। जामि ही-ণ্ডৌ। কিন্তু পুৰুষোত্তন শরণদে-বৌ ভাষ ইতি মূর্দ্ধন্য ফলার• মত্রা বচনার্থ নাহতঃ। ইতি দুগানা**সঃ।।** व्यात्र थ ७ वेदक। इंडिपुर्भानानः ॥ वेकः भर्गात्नाहनः भूगिषान नि उ वावट । य अनुत्नाहट । ড লোচতে কাৰ্য্য সুধী:। ইতি मुर्गामानः॥

লোচ ক দ্রী অশু। ইতি জটাধর:।।
লোচক: পু মা সপিগু ।। অফি
তারকা।। কজল ।। দ্রীণা ললা
টাভরণ ।। কদলী ॥ নীলবত্র ।।
নিরুদ্ধি: ॥ কণপ্র: ॥ নৃত্বী।।
ভুশুথচর্ম। ইতি নেদিনী ॥ নি
র্মোক:। ইতি শদ্রহাবলী ।।

দোণার

द्राजिवर्षणेः ॥

ইভি ভরত:॥

- 《লাচন• ক্লী চক্ষ্য ইত্যমরঃ॥ তম্য **मूजाम्**जलकन यथा । वक्रुरिस পদ্মপত্রীভ র্লোচনৈ: সূথ ভাগিন: । মার্জারলোচনৈঃ পাপে। ন্ছারা। **मध्रिक्रेलः।।** क्वाः (करतः न वा **ण्डहात्राकाः नकत्यवाः।** जिल्हा শ্চ লোচনৈ: জুরা: সেনান্যে গঙা (बाहनाः ॥ गञ्जीबाका देखताः मू। म जिनः श्वव्यक्षः। नीत्वार-পলাক্না বিদ্যা**'স: সৌভাগ্য' শ্যা**-বচক্ষৰা ।। স্যাৎ কৃষ্ণভারকা-ক্ষাণা মত্ৰা মুৎপাটন কিল। ম ওলাফাম্ম সাপাঃ ম্যু নিঃয়াঃ ম্যু भी घरनाठनाः ॥ मृकशिका विश् লা ভোগে অল্লাব্ জ্ঞাতি চোমত। । বিশালোমতা স্থিনি দ্রিদ। ·বিষমক্রব: II ই**তি** শাক্তে ৬৬ অধ্যাব: ॥

লোচনহিতা জী তুলাঞ্জন।ইতি রাজনিঘণ্ট: ॥

লোচনা জ্ঞা বুজশক্তিভেদ:। অস্যাঃ शुगानः भर्गायाम् लाक्यताः ত্মজা শব্দে দুপ্তব্যঃ ॥

(लाहनानयः भू हक्त्रागिविष्णयः । उ८ भग्रीयः। याजिमहः २। इंटि ত্রিকাওদোষঃ ॥

(नाण्नो जी महामाविनका। ইতি

(नावमक्षे: भू (नावस्खकः। हेउ।-मज़ज़िकायाः चामी ॥ *(वाप्रवेखकः भुः समृद्धिवि*श्योय**शः।** ক্ৰুজটা ইভি খ্যা**ড: । ক্ষেত্ৰ**য**না**-निक्वि (क्विट । उद्भर्य)ायः । **- थর**। था २ काরवी <mark>२ मीन</mark>ग्रः <mark>९ सप्রः</mark> ৫। इंडापदः॥ (नाहनकंष्टेः ५।

লোট ঝ উন্মাদে। ইতি কবিকল্প-क्रनः ॥ य जनमादे । लादे जि लाकः উचाराजीजार्थः। इजि पूर्णामा**नः** ॥

লেট্ল: পু• অভিলোটক:!ইতি সংক্রিপ্তসারোণানিবৃত্তি:।। লোড খ উন্নাদে। ইতি কবিকল্ল-

क्रमः ॥ १। व्यन्जाउर । इंडि मुर्गामानः॥ লোণভূণ ল্লী লবণভূণ। ইতি রাজ-

निर्घ छै: ॥

লোণা জ্বী জ্বান্নিকা। ইতিরাজ-निर्घ के ।।

লোণার• ল্লী ক্ষারবিশেষ:। তৎ-পর্য্যায়:। লবণোগ্র•২ **ল**বণাকর-क • ० नवगमरः ४ कलक • ६ नवग-काद्रः ७ व्यवनः १। व्यम्प्रधनाः । অত্যুক্তরু । ীকুরু । পিত্রু**জি**: कातिषु । कात्रषु । क्षेत्रझवनषु । । वाज खन्माहि म्वनानिषुक । ইजि ताक्रनिर्यण्टेः ॥

লোণামা স্ত্রী ক্ষুদুামিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

लाउ॰ क्री खिरधनः। उट्भर्यायः
। लाधुः २ । ইতি ब्रेटी धरः ॥
लाधुः २ लाबः ४ नूष्णः ६। ইতি
मद्रवावनी ॥

লোত: পু ন্লী নেত্রাষ্থ ইতি ত্রিকাপ্তশেষ:।। চিহ্ন । ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্যামূণাদিবৃত্তি:।। লবণ ।।
অশুপাত: । ইতি স'ক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তি:।।

লোত্ত॰ ক্লী লোত॰। ইতি শদ্-রত্তাবলী ॥ নেত্রজল•। ইতি সং-ক্লিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ॥

লোখ: পু॰ স্থনামখ্যাতবৃক্ষ: ।
রক্তবর্ণস্য ভস্য পর্যায: । তিরীট:
২ নার্জন: ০ রক্ত: ৪ লোধু: ৫ তিনক্: ৬ । খেতন্য ভস্য পর্য্যায: ।
শুল: ১ শবরলোধু: ২ নহালোধু:
০ শাবর: ৪ । ইতি রত্ত্বনালা ।।
অস্য গুণা: । অসু কফ বাত নাশিদ্বুণ। চক্ষ্যান্ত্বণ। শোথজিকুণ: সরদ্বুণ। ইতি রাজবল্লভ: ।।

বঃ। গালবঃ২ শাবর: ১ ভিরীটা ৪ **जिन्दः ६ भार्जनः ७ । ইভানदः** ॥ वह लाधुभाव लाध है जि चेत्र-তে। ষট্ খেওলোপু ইতি সৃভ্তিঃ। আদ্য পাদঃ খেতলোগ্ৰে শেৰো রক্তলোধু ইতি স্বামী ॥ ভস্য প-র্য্যাৰান্তর॰ যথা। রোধু: १ ভিল্ল-**उक्: ৮ (**उन्**क: ১ का** खकी नक: >● लाधुकवृक्तः ३३ मञ्जतः ३२ इन्डि-রোধুক: ১০ ভিলক: ১৪ **কাওনীল**-ক: ১৫ হেনপুস্লক: ১৬ ভিল্লী ১৭ শাবরক: ১৮। অস্য গুণা:। ক্ষা-যত্ত্ব। শীতত্ত্ব। বাত কফাসুনাশি-वु । ठक्क्ष ४ दु । विष्टृ दु । उब বিশিষ্টো বল্লোপুকঃ। ইতি রাজ-নিঘণ্টঃ।। অপিচ। লোপ্র ভিল্ব ডি-द्रीवेक माराद्रा गानव खथा। दि-তীয়: পড়িকালোপু: ক্রমুক: স্থল वल्**लः** ॥ कीनभाषा वृ**रूरभाः** भड़ो वाकानुनामनः । लाखु गारी वयः भीउ मञ्याः करः भिछन्<u>ए।। क्यार्या द्रक्</u>रभिखान्-গ্বাতাতীসার শোথস্থ ৷ ইতি ভাবপুকাশ; ৷৷

লোপুকর্ক: পু॰ লোধ:।ইতি রাজ-নির্ঘট:॥

লোধু: পূণ লোধৰ্ক:।ভৎপৰ্য্যা- লোপ: পূণ ছেদ:॥ আহলীভাব:।

্লোপামূ

লোপাশ

म्नवारा जात वंक नुजायन निञ्जरमा २ रंगा क्याकत्रेन मट्ड वर्गः नामः। उथाहि। नाम विवि र्यणा। লোপো হস্যে মাডো রিভ্যাদি॥ व्यभिष्ठः। मकरणाञ्जा विविच्यः म्यादनी जाभविदि खथा। जाभ बत्रारम्भारयास्त्र स्त्रारम्भा विधि-र्बनी।। ইঙি पूर्गामानः॥

লোপা জ্রী অগন্ত্যমূনিগরী।ইতি कहें। थ्यः ॥

লোপাক: পু॰ শৃগাল:।ইতি ত্রি-का अभिगः।।

লোপাপক: **मृगावः। इं**डि नद्रभावा ॥

লোপাপিকা मृगानी। ३७ नम्भाना ॥

লোপানুদা জী অগস্ত্যমনিভার্য্যা া ইভ্যনর:॥ লোপয়তি যোবিতা• ক্পাভিধান মিডি লোপাপচাদ্য ন্ আমৃ দুয়তি সুষ্ট: সৃষ্টি মিতি আ-नु न। यन् उठः कचरात्रयः। कि॰ বান মুদ রাতি অমু দুা পতি শুশু-याया (वार्ष अमु मु। (वाशामु मु। लाभा ह। लाभान मुन् कुरेवर जी लाभा जी **ऋ**ष्ठकमनः। ইতি कर्छः ভ্ৰণ•। ইতি ভরত:।। 🗱।। অস্য व्यर्गान भुनाक्न व्याख्यार्यानान

निथार । व्यवतार्यामान स्रो द्भग जि**•** इद्गारणी विश्वानाट । यथाः বুন্ধবৈবর্ত্তে। অপুরপ্ত ভান্ধরে ক-न्।। (भवज्रेज जिल्ल मिरेन: । অর্ব্য-দদু্য রশস্ত্যায গৌডদেশ নি-বাসিনঃ॥ নারসিংহে। শঙ্গে ভোষ্ বিনিক্ষিপ্য সিতপুল্লাক্ষতৈ যুক্ত । मद्भगातन रेव एन्। एकिगाना-মুথছিত:।। কাশপুন্ন পুতীকাশ অণ্নি মাক্তসম্ভব। নিজাবৰণযোঃ পুঞ দন্তবোনে নমো ংস্ত তে ॥ প্রার্থনম্ভ। আতাপি ভক্ষিতাে যে ন বাতাপিশ্চ মহাসুর:। সমুদুঃ (भाषित्छ। यन म स्म १गल्डाः भू-भीमञ्॥ गक्षानिक छ यगन्।।य नम ইভ্যনেন দেয়ং বিশেষানুদেশে সাং मानाञः भाषजार। मिक्समामृथ शि उहे जि गक्का मावित नुरवा गाइन-কত্বিমন্তাদিতি রত্নাকর: ॥ #॥ তংপত্ৰ)র্ঘ্যদান মন্ত্রন্ত । লোপাফু-দু মহাভাগে রাজপ্তি পতিবৃত্তে । ग्रानाघा भया मखः रेमजावकानि-বল্লভে॥ ইভি মলমাসভত্ত্ব•॥

लाभानु पुाभिजः भू॰ व्यवस्त्रम्निः। ইতি পুরাণ ॥

लाभामकः भू म्गानः। इंडि राद्रावनी ॥

বোপাশিকা স্ত্রী শৃগালী। ইতি হারাবলী।

লোগু: ক্লী তেবধন । লোভ । ইত্যমর: ॥

লোগু। জী লোগু। ইভি লব রহাবলী।।

लानः भू व्याकाद्भा। भद्रपृद्यानि **द्यारः । ७८**१योग्रायः । ज्या २ निश्ना ७ वणः ४ म्पृश ६ काङ्क ७ শ সা ৭ গদ্ধ: ৮ বালু। ৯ ইছা ১১ **ज्ै ३२ मरनात्रथः ३०** कामः ३८ षा चिनायः २६ । ইতি (इस्टन्सः ॥ 🗱 ॥ जम् । नक्षण रथा। शतः विखारिक मृक्षे (गण्डी জানতে। অভিলাবো দ্বিজ্ঞেন্ত স লোভ: পরিকীর্ত্তি:।। ইতি পা <
 जियारगणनादि ३७ व्यवगयः ॥ 🗱 ॥ त्र ह तुकारणा १वताब्हा हः । যথা। ভুনষ্য মূভবৎ ক্রোখো লোভ শ্চাধ্র সম্ভবঃ ৷ ইতি নাৎ-(म) मुख्याद्य शिवताम ३ व्यवतामः ॥ 🗱 ॥ म ज् नाम्न काद्रगः यथा। লোভ পুনার বিশ্বালৈ: পুরুষো নশ্যতে বিভি:। তৃষ্ণাল্লোভো ন কর্ত্তন্যঃ পুনাদো ন ন বিশ্বদেশ। ইতি গার্ডে নীতিসারে ১৯৫ অ-श्रायः ॥ अभिष्ठ । जितिशः नद्गः

স্যেশ হার্ন নাশন মাজনং। কাম: কোষ তথা লোভ ভন্মাদেউ প্রয়ণ ভ্যান্তে ।। ইতি প্রভিগবদ্ধীভাষা। ১৬ প্রধ্যায়: ।।

লোভী তি লোভযুক:। ডৎপর্য্যায়:। গৃধ্নু: ২ গর্জন: ১ লুক্ক: ৪
অভিলাৰু সং ৫ তৃঞ্চ ক: ৬ লোলুপ:
৭ লাল ভ: ৮। ইতি জটাধ্র:।।
লিপ্ন: ১। ইতি হেমচন্দু:।।

ৰোভ্য: পু• মৃদ্ধ:। ইতি হেমচন্দু: ।। লোভনীয়ে ত্ৰি।।

लाम क्री लाक्षा है डिक्टी-

ধর: ॥
লোম ক্লী শরীরহকেশ:। তৎপর্যাব:। তন্কহ: ২ রোম ৩।
ইত্যমর:॥ তনুকহ: ৪ তনুকট ৫,
ইতি শবরহাবলী॥ তভুগর্জহস্য
বাঙ্গিমাসি ভবতি। ইতিসুথবোধ:
॥ অশিচ। বঙে নামি চ নারীপাং
বৈদিকে নাধিকারিতা। উদরহ্স্য
বালস্য নথ লোম পুরন্তনাং ।
ইতিমৃতি:॥

त्वानकद्रशी खी ना॰महमा। ইउि द्राक्षनिर्यण्डः॥

লোমকর্ণঃ পৃ॰ শশকঃ। ইতি হেম-চন্দুঃ।। লোমযুক্তকর্ণবিশিপ্টে তি ।। লোময়॰ ক্লাইন্দুলুগুক•। টাক ইতি ভাষাঃ ইতি ভ্রিপুযোগ: ॥ লো মহাভকে বি ॥

(कामभाषः भूः अञ्चादणीयदाकः विष्णयः। भ ज्याप्रण्डमूनियण्दः । ইভি द्वामायगः॥

(नानभारणः जी भूतीविष्णयः। व्यथनाजागवाभूत इंडि थ्याजा। छ्रण्यायः। हम्मा २ मानिनी ० दर्भम्: ८। इंडि (इसहस्युः॥

লোমফল ক্লী ভব্যং।ইতিরাজ নিঘ্টঃ॥

लामविषः भू॰ ब्याष्ट्राहिः। इंडि (इयहन्द्रः॥

লোনশকাণ্ডা ত্রী ককটা। ইতি রাজনিঘণ্ট:।।

লোমশপণিনী জী নাবপণী'। ইভিশ্বচন্দ্রকা।।

লোনশপুয়ক: পু• শিরীববৃক্ষ:। ইতিরাজনিঘণ্ট:॥

লোনশনাজ্জার: পু॰ মার্জারবিশে লোনহর্ষণ॰ বঃ। গদ্ধগঙ্গলা ইতি ভাষা। তথ্যরঃ।। পর্য্যায়ঃ। পৃতি রঃ ২ মার্ব্লাতকঃ লোমহর্ষণঃ

अनुगक्ती ६ मृजनाउमः १ नक्तमा-क्रांत्रकः ७ । ই छ ताक्रनिर्घणः ॥ व्यम् गृद्धनाः। मक्तमार्क्जात्रवीर्यु-ख वीर्युक्ट कक वाज्ञ्हर । कञ्च-(काष्ठ्रवः (नज्ञुः मृगक्षः (चन्नक्समृर । ই छ ভावनुकामः ॥

লোনশা জ্ঞী কাক্তম্বানাংগী।।
বচা ।। শৃতশিদি: ।। নহামেদা ।।
কাসীসং ।। শাকিনীভেদ: । ইতি
নেদিনী ।। অতিবলা। ইতি বিশ্বঃ
।। শণপুত্ৰী ॥ এৰ্বাকঃ ॥ গন্ধনাংগী
।ইতি রাজনিষ্টাঃ ॥

লোমহর্ণ॰ লী রোনাঞ্চ:।ইত্য-মর:॥ भुतानमः हिलाः हाक भूतानार्थितः ।
भात्रमः । भूषाराठा वाग्रामित्या।
२ जूर मूला देव लाम हर्यनः ॥ भूत्रान मः हिलाः लिया हरते वाग्रामा
महामुनिः । ই जि विकुभूतातः ०
वार्ग १ वाधायः ॥ का । म ह वनः
त्रात्म १ व्याप्तायः ॥ का । व्या क्लांवः
मृज्भूता निहर्णा लाम हर्यनः ।
वन्तरामा ज्रमुकाचा निमिष्य २ ज्या ।
वव्या स्था ।। ই जि क क्ल्यूतातः २ १
व्याप्तायः ॥

লোমছং পু• ছব্নিতাস•। ইতি হেমচন্দু:।।

लामानिका की म्नानिका।यथा
। वामानिका मीश्रकिला किथि
कन्नाम्थी ह मा। इंडि विकाशः
(भवः॥

<नानः जि ४क्नः॥ माकाद्वः। इउप्रतः॥

लान। जी जिल्ला।। नन्तीः। इंडि भिन्ने।। हकनाजी ह।।

লোলার্ক: পু॰ সুর্য্য: । যথা । পুলস্ত উবাচ । ততঃ সুকেন্দি বচনাৎ সর্ব এব নিশাচরাঃ । ভেনোদিতন্ত তে ধর্মাণ চক্তু মু দিত্যানসাঃ ॥ ততঃ পুবৃদ্ধিণ সুতর। মগছন্ত নিশাচরাঃ । পুগ্রপৌগ্রার্থ সংযুক্তাঃ সদাচার সমন্তিভাঃ।। ভজ্জ্যোভি ভেজ্সা ভে-বা॰ রাক্ষসানা মহাত্মনা । গন্তু॰ नामक वन म्रारं। नककानि ह हन्तु-মা: ৪ ভত স্ত্রিভূবন ব্রহ্মন্ নিশাচর পুরো হতবৎ। দিবা সূর্য্যস্য সদৃশঃ ক্ষণদাযাঞ্চ চন্দুবৎ ॥ তত: ক্রোধা-ভিভৃতেন ভানুনা বিপুভেদিভি: 1 ভানুভী রাক্ষম পুরু তদৃষ্টঞ যথে: ह्या।। তন্তানুনা তদা দৃষ্ট• কোধা-থ্যাতেন চক্ষ্বা। নিশপাভান্নরাদ্দূ-ष्टेः क्रीनशुन्र इव गुरुः ॥ भ उमानः मभारताकः भूतः नातकरेकरेः । নমো ভবাৰ সৰ্বাৰ ইদমূদৈ র্বীৰত H ভেকা• কন্দিত মাকর্ণ্য চারণা গগণেচরাং। হাহেভুছেজুশুঃ সর্বে रत्र ७ 🕶: প ७ ७ ५२ गे।। ७ हात्र १ वह: **गर्बः मुख्यान् गर्ब**छा २वर्यः। मुद्रा न विषयामान (कनारन) भाउ/उ ভূবি ৷৷ জ্ঞাতবান্ দেবপতিনা সহ-সুকিরণেন ত**ে। পাতিত**• রাক্ষস-পুরু ততঃ জুব্দ জ্বিলোচনঃ ॥ জুব্দ-ৰ ভগবান্ দৃগ্নি ভানুমন্ত স্বপশ্যত । দৃইমাত্র জিনেজেণ নিপপাত তভো **হ**য়রাৎ ॥ ভতো বুন্ধা সুরপতি: मूरितः मार्खः ममज्यार । तमाः **महरू ध्रदावामः मन्दरः द्वति काद्र-**नार ॥ भदा मृक्ष्म ह (मर्दिन नक्ष्म)

ज्वभाषिनः। भूगारः **ज्ञा**काः र्थाय वाद्रागम्या मुनानयर ॥ **ততো দিবাকর**॰ ভ্<sup>ব</sup>ঃ পাণিনাদায শহর:। কূত্বা নামাস্য লোলেভি त्रथ भारताभवर भनः ॥ व्यादा-লিভে দিনকরে ব্রন্ধাভ্যেত্য সুকে-শিনং। সবান্ধবং সনগরং পুন রা-রোপধদিবি॥ ইতি .শ্রীবামনপু-রাণে সুকেশি চরিতে লোলার্ক জ-नन नाम > व्यव्यायः ॥ क्षी ठाव्यती। यथा। লোলিকা क् पु। पडमठायंत्रा ठाक्ती (ना লিকাচ সা। ইতি জটাধর: ॥ लालिजः वि भूषः। त्याना इंडि ভাষা। লুল বিমর্দ্দে অমান্ডাবে ঘ ় ঞি লোল: সো হস্য জাত: ইত্য-• র্থে ইত পুত্যযেন নিষ্ণন্ধ: ॥ লোলুপ: ত্রি অভিল্রা:। ইত্যমর:॥ লোলভ: ত্রি লোলুপ:। ইভ্যমর:॥ লোপ্ত ড সাহভৌ। ইতি কবিকল্প জন:।। উ লোষ্টতে ধান্য লোক:। इंভि দুর্গাদাস:॥ লে। 🕏 🖆 লোহনল । ইতিরাজ নিয়ণ্ট:।। লেখ্র:।ইত্যনর:।। লোষ্ট: পু॰ क्ली মৃত্তিকাথও॰। ডেকা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। লেই: २। ইতি শবরত্বাবলী অমরক 🗓

लाहुं: ७ मनि: ८। ইजि एमः हन्युः ॥ **लाडेन्नः भू॰ लि**ड्रेप्डमनः। ইত্য भद्रहीकायाः खद्रजः ॥ लाईएक्तः प् लाईक्रमाधन-মুদ্মর: 11 মই ইতি খ্যাতে ইতি (क्रिट् । उर्भिग्रायः । विश्वेष्टर-ৰ: ২ লোষ্টমু: ৩ লেষ্টমু: ৪ কোটি-শ: ৫ কোটাশ: ৬। ইত্যমরটাকা। ঃ लाष्टः। ইভি ह्म-**ठन्मः ॥** লোহ• ব্লী অগুক। ইত্যনর: ॥ लाइ: भू ही लोइ।।। बाक्क ॥ সর তৈজস॰। ইতি মেদিনী।। क्षित्र । इंडि রাজনির্ঘণ্ট: ।। 🕸 ।। व्यथ मुख्लाइन। शव्यायः। मूखः ২ মুগুলমশ ৩ দূৰৎসারণ ৪ শি-লাবাজ ৫ অশ্যজ ৬ কৃষিলোহ" १ बाद्र ৮ कृष्णयम २ ॥ व्यथ ভীক্ষুলোহস্য পর্য্যায়:। ভীক্ষ ২ শক্রায়সণ ১ শক্রণ ৪ পিণ্ডেণ ৫ পিণ্ডায়স ৬ শঠ ৭ আয়স ৮ নিশিত ৯ তীকু ১০ খন্ন ১১ मुखब ४२ व्ययः ३० विवायम ३८ চীনজ ১৫। অস্য গুণা:। ৰক্ষ্ত্ৰণ

। উক্তত্ব•। বাত পিত্ৰ

कक नुत्रह भाषु म्ल नाणिवः।

ভীনত্ত্ব ৷ মুখাবিকগণত্ত্ব ৷ ইতি द्राक्षनिर्विष्टः ॥ 🗢 ॥ व्यथ**्लार्**-ুস্ব্যো**ৎখন্তি নাম লক্ষণ <del>ও</del>ণাঃা** পুরা লোমিল দৈত্যানাণ নিহতা-भाः जुरेत बृधि। উৎপद्मानि भती-েরভ্যে লোহানি বিবিধানি চ ॥ বোহো ২ন্ত্ৰী শন্ত্ৰক তীক্ষণ পিণ্ডণ कालायमायमी। ७३ जा मृत्र जार-ক্লের কফ দাহস্য কারিতা॥ অ-স্মদোৰ: সুদুৰ্মন্ধা দোৰাঃ সপ্তাৰ-সস্যত্।লোহ• ডিব্রু রস•শীত• स्थूद्धः जूरद्धः श्वकः ।। क्षकः वयन्तरः চফা্ব্য লেখন বাতল জ্বেৎ 1 কফ পিত্ত গর শ্ল শ্লেথাশ: প্লীহ পাণ্ডুতা:।। মেদে। মেহ ক্ भीन करें उद कि छे छहा पर हि । ষণ্ডত্ব জ্ঞান্য মৃত্যুদ্ণ ভারেৎ कृषुाग म्रावी अकर २ भारीक। নানা ক্লাঞ্চালি তথা পুকোপণ করোতি হল্লাষ মশুদ্ধ লোহ।॥ জীবহারি মদকারি চাযসং চেদ-শুদ্ধিমদসক্ত পুরে। পাটব। ৰ ভৰুতে শরীরকে দাকণা ভূদি क्षाक गह्जि॥ 🗱॥ তত্র সার-(वार्म) वक्ष क्षाक । क्या ভূছিখরাকারাণ্যস্থান্যমেন লেপি-তে।। লোহে সূত্র্যত্ত স্ক্রাণি তৎ

সার মভিধীযভে । লোহ সা-बाख्य इन्डान्गृर्गे मिल्गाइकः ।। अर्फ नहाज्कः वाठः न्तकः পরিণামজ। ছদিকি পীনসং সৈ-ন্ত• স্বাস মাশু ব্যপোহতি॥ 🛊 ॥ অথ কান্তলোহস্য লক্ষণ গুণাক্ষ। মৎপাত্রে ন পুসরতি জলে ভৈলবি-ন্দু: পুভণ্ডে হিন্দু র্গন্ধ• ভ্যন্তভি চ নিক্ল• , তিক্ত তা॰ নিম্বকলং । তপ্ত• দুখা ভবতি শিখরাকারক নৈতি ভূমিণ কৃঞ্চাস্থঃ স্যাৎ সজল চণ্য काउत्वादः जनुकः ॥ छल्यास्त्रार्भः **म्वाम मानवाउ** छ गन्तव । काम-वा भाष क्षांनि क्य काष्ठ मया बारार ।। श्लीकान नमू शिखक रक्हा-পি শিরোক্জ । সর্রানোুগান্ বিজ-या का उत्वाहः न मः भयः ॥ व्वः বীয্যা বপুঃপুষ্টি জ্বত্ত গ্রিষ্ विवर्षाराट ॥ 🗱 ॥ व्यथ कि छै । থাবিমাৰস্য লোহস্য মল মণ্ডর মুচ্যতে। লোহ সি•হানিক। কিউী সি হানঞ্চ নিগদ্যতে ॥ যল্লোহ• যন্গুণ প্রোক্তণ তৎ কিউ নপি ভ-দ্ভণ• ৷৷ 🕸 ৷৷ অথ লোহস্যাশুদ্ধস্য দোৰ মাহ। ৰণ্ডত্ব স্থান্য নৃত্যু: কারি হৃদ্যেগ শুলৌ স্কতে ২শ্ম-त्रीकः। नाना क्षानाकः उथा नुका-

**ाः प**र्याहः रृह्मान म्लूबालारः।। ॥ णथ (नार्ग) (नाय णाउए) ংশাধন মভিধীয়তে । পত্তলীকৃত भंधानि (बाइम्यादी भुजाभायः। নিষিঞ্জেপ্ত ওপ্তানি তৈলে তক্তে চ কাঞ্জিকে॥গোম্এে চ কলথানা॰ ক্ষাযে চ ত্রিধা ত্রিধা। এব লোহ-স্য প্রাণাণ বিশুদ্ধি: সংপ্রাযতে ।। 🚓 ।। व्यथ (लाइम् र भावन विविः। **णुष्कत्वारु ভব• हुर्न• পাতাवग**क्छी ब्रेरेन:। मर्फ्यदा भूटिष्टा पर्डा-(रव॰ भृष्टेबय॰ ॥ भूष्टेखय॰ **स्**रभार्य्याण क्ठांतहिल्लिकात्ररेमः । शुरु वर्षेकः **उत्था मन्त्रात्मव॰ जीक्ना मृत्रि र्ख** दिट् ॥ 🗱 ॥ स्पन्ति । क्विलिफ्वानम নাংশেন দরদং তীক্ষ চূর্ণতঃ । মদ্দ स्य कन्यकामुदिव यांच गुग्रा उउः পূটেৎ ৷৷ এবং সপ্তপুটে মৃ ভূঞ লোহ हूर्ग भवाश्वयाय । माउडा श्नूब्राडा (यागीरेमु: कत्मा १८ना (वाइमा-রণে। কথ্যতে রামরাজেন কৌত্ रुविधाद्ना ॥ म्डकाप्निखनः श कः रखः स्रांग्रह कब्बनीः। हरगाः मग॰ (लोइहूर्न॰ नण्टार कन्यकामु-বৈ:।। যান্যুশ্ম ততঃ পিণ্ড ক্রা ভামুদ্য পাত্ৰকে। ঘৰ্মে ধৃত্বা ৰুবুক-मा भोधा बाहान्यक्षः॥ यान्वयाः

ভবেদুক খান্য রালৌ ন্যসেত্ততঃ। দন্ত্বোপরি শরাবঞ্চ ত্রিদিনান্তে সমূ-क्रांतर ॥ शिष्ट्री ह गालायवज्ञापन्ये বারিতর ভবেখা দাডিমস্য দল **शिक्ष्री उह वृर्खन वादिना॥ उन्तन्नना**-यमम्प्रां महीयाट श्लावरयम् । जा-.जरभ भाषायखड़ भूछिएव भूनः भू-ন: ॥ একবি॰শভিবারৈ স্তন্ মিয়তে নাত্ৰ সংশ্বঃ। এবং সন্থাণি লোহা-नि बर्गामीनारि मात्रायट ॥ # ॥ এবং নারিত লোহস্য গুণা: ৷ লো-হ• তিক্ত• সর• শীত• কবায• মধুর• গুৰু। ৰক্ষ বয়স্য চক্ষুষ্য (লখন বাতল জয়েছ। কক পিত্ত গর শ্ল শোফার্ল: প্লীছ পাণ্ডুতা:। মেদে৷ নেহ ক্মীন্ স্বষ্ঠ তৎ কিউ• ভদ্বদেব হি ॥ #॥ গুঞ্জা মেকা• স-भात्रज्य यावर्म्य नंव त्रक्तिकाः । ভাবল্লোহ সমশীবা দ্বথাদোষা-नवः नद्रः ॥ द्रयाशः जिल्ले उल्ले नावामः दाखिकाउथा। मन् गम द्र-मरिक्व वर्जायाज्ञाश्यवकः ॥ इंडि ভাবপুকাশ: ॥

# লাহপাত্র ভ-ক্ষণ নিষেধো যথা। যদা তু আযসে পাত্রে পদ্ধ মশাতি বৈ দিজ:। স পাপিষ্ঠো ৎপি ভুড্কে ২ন রৌর-বে পরিপচ্যতে॥ ইতি ন্থ্যসূক

ভক্ত ৷৷ অপিচ ৷ অবঃ পাত্রে পবঃ পান পৰ্য সিদ্ধান্ত মেব চ। ভৃষ্টা-रिक मधु ७७ नाविकानाहक · ख्या ।। कलः भूलकः यटकिकिनः **एक्टर** मुनि बर्वीट । ইতি वृक्तिः बर्ख ञीक्कबराथ ७ ॥

(लाह्ककेक: जु॰ मननवृष्ण:। ইতি मद्राम् का॥ लोर्ग्यककेकक ॥ लारकाडः ही व्यवकाछः। हेि त्राजमिर्घकः॥

লোহকারক:। লোহকার: ইতি হলাবৃধঃ ॥

লোহকারক: পু• বর্ণসংকরজাতি-বিশেব:। কানার ইতি ভাষা। **७८ भ**र्य प्रायः । (व्याकातः २ । ३७५-भतः॥ (णाङ्कातः ० व्ययकातः ८ कर्यकातः ৫ कर्यातः ७। इंडि छ-রত রভসৌ।। তব্যোৎপত্তি র্যথা । (गानानानुख्यवायाः देव कर्यः কারো ९୩। ভূৎ সূতঃ। ইতি পরা শরপদ্ধতি: ৷৷

(लार्किडे॰ क्री लार्मनः। ७८-পर्यायः। किउँ २ त्वाइह्र्न ० অযোমল ৪ লোছজ ৫ কৃষ্ণ চূর্ণ ৬ (वाडे॰ १ (वार्मण ৮। चम्रख्नाः । मधुत्रवः। कर्वेषः। डेकवः। क्मि-नाउ गिक्तिम्ल सरह्ल (सर् छन्। लाह्यात्रकः भूः नालिकनाकः।

लाक मानिष्**क । हे** जिल्लाक विर्घण्डः ॥ चलित्र । व्यापम्यन्त्र लाह्न। मवः मञ्ज मूह्राजः १ (बाहिन•हानिक) किछी निःहंक-क्ष निगम् १८७॥ बरका ए॰ यम्खन॰ (गुक् उदक्रि मनि उर्द्या 'ইতি ভাবপুকাশ:।।

बारुपूर्ण ही वार्किषे। वेश्वि ब्राजनियंकः॥

**बाहबः द्वी बाहिक छै:। इंडि** রাজনির্যন্ট: ।। কাংস্যা । ইভি ছে-महन्तः ॥

लाहमावी भू देखाः। इंडि बाबः নিষ্ট: ॥

શૃ• नाबाठः। ইতি (लार्नाल: ত্রিকাওশেষ:।।

लाइन्धः पुः कद्मनि। इंडा मद्रः ॥ लोइमयপृष्ठगुर्क वि ॥ लाइन्डिया जी लोइमयीन्डि-मा उद्भर्यायः। मूर्यो २ इना ० । ইত্যমরঃ।। শূমী । পৃষ্মি: ৫ শূর্মা: ৬। ইতি ভরত: ॥ শ্ব্যিকা ৭। इंडि मदद्रद्वादनी ॥

লোহময়ণ ত্রি লোহাত্মক।।লো-इनिर्मितः। लाइनदार उद्दुशार्थ भयहे भुङ्रायन निष्नमः ॥

**ब्वा**ङ्ग्

ইতি ত্ৰিকাণ্ডলেৰ রাজনির্ঘটো।। मृद्वनाहार्यप्र । इंडि (नार्वः त्मिमिनी ॥ लांहनः कि चंदांख्याक्। इंडा-मद्रः॥ (लाह्गाहकक ॥ লোহবর॰ দ্লী বর্ণ।ইতি বিকাও त्नवः ॥ (कारुप्प्रदेगः भू हेक्गः। हेि (स्मः) 5-W: 11 **ला**हनकव न्नी वर्जलाहः। इंडि ্বাছনিষ্ট:।। মিশ্ভিতৈজসঞ্॥ লোহাখ্য ক্লী অগুক। ইতিরত্ন -भावा ॥ লোহাভিসার: পু' লোহাভিহার: । ইতামরটীকাথা ভরত: ॥ (वाशां जिशांत्रः পু• .শত্রভূতা রা-· জ্ঞা॰ নীরাজনাবিধিঃ। ইত্যনর:॥ महानवभी नीकाया॰ अधानीना॰ নীরাজনে সতি পশ্চাৎ শদ্রধারি-भाः त्राक्ताः यः नात्वारकः निर्मा भुन भुशाना विधिः भुद्यानार भाक्

न लाशा जिहातः। लाहन । 🐃

জ্ঞ ব্য অভিহার: সর্বতোহরণ ন ত্রেতি বহু বুছি:। লোহাভিহার

ইত্যক্তে। বিধি नी রাজনোত্তর ই

ভ্যমরমালা॥ লোহো হন্ত্রী শঙ্ক-

(क लोए इंडि (मिनी।। (नार्।-

ভিসার ইতি পঠভ্যন্যে ভত্র লোহ• **मज• जिमा**र्गाउ नुहानाउ **९७७ व्यक्ताह्नायुवारम निःरण-**(यंग ब्राजन यंक जा नीबाजना नीब-ন্যশান্তু্যুদকন্য অৱনংক্ষেপো ব্র ना नीदांबना का। इंडि खंबड: ॥ পু• ভীর্থবিশেষঃ ৷ (नारार्गनः यथा। यद्रारू উवाठ। मृशु (५वि ठ अखुन रका पु भदि गृहिन। ७३ मन्द्र क्कामि महु कर्माण ग-ভি:।। ভত: সি**দ্দ**বটে গত্বা জি**ল**-व्याजन प्रजः। (सह भएषा वर्ता-রোহে হিমবস্ত সমাশ্রিত।। ওক লোহাৰ্গল নাম নিবাস মে বিধী-যতে। গুহা পঞ্চল। যত্ৰ সম-खाट भक्षरगाकन ॥ मूल छ भूगु যুক্তানা॰ নম কর্মানুসারিণা॰। ভব जिक्षामाइ॰ जामु डेमीघी॰ मिनमा-হিত: ।। তত্ৰ বুদ্ধা চ কদুশ্চ স্ক-त्मिन् क सक्ताः। वाष्टिता वने সবে৷ ৰুদু৷ অধিনৌ চ মহৌজসঃ ।। সোমো বৃহস্পতিকৈব যে চা-त्या व सिरवोकमः । **उचारेकवा**र्ग-ৰ° দ্ৰা চক্ৰ গৃহ্য মহৌজস°।। **उट्टा व्य मानवाः मर्ख कमर**हा **लाकमुख्य•। म**का हिनाइतः कृष्ठा क्षा भाषाक रिक्की।। भज्काहि

্সহস্থাণি শীঘুমের নিপাতিত । এব লোহার্গলেভ্যাসীয়াম মে ড চু কারিত ॥ একধারা পততাত্র ইন্দুগোপক সমিভা। য ভ**্ৰ স**া ক্তে মান সপ্তরাতোবিতো নর: श वुक्तलाकः जमानारः वुक्तना সহ মোদতে। অথাত্র মুঞ্চতে পা ণানছক্ষার বিবজিতঃ ॥ বুদ্দলো। ক' পরিভ্যন্ত্য মম লোক পুপ-দ্যতে। গুছাখ্যানে মহাভাগে ক্লেত্ৰে লোহাপলে ম্যা সিদ্ধি কামেন মর্ভ্যেন গম্ভব্যা নাত্র বংশ-, য:। এডত্তে কথিড ভদে লোহা-ৰ্কাল নিবাসিক: ৷৷ মাছাত্মণ প্ৰা প্রাক্তি ওছা পঞ্চ মহৌদ্দা। মক্ল্যঞ্জ পবিত্রঞ্জ মম ভক্ত সুখা-বহু°॥ ইত্যাদি বরাহপুরাণে লো-হাৰ্যলমাহাত্ম্য বৰ্ণ- নামাধ্যাৰঃ ॥ 🗱 ॥ (वोङ्गीवाक ज्ञी स्त्री ह ॥ ধ্যোহি ব্লী খেডটক্ষণ।ইতিকশ্চি मुाङ निर्घण्डः ॥ ब्लाहिश जी लोहभावः। उद-भर्गायः। थ्यानाम्हः २ थ्याभावः ৩। ইতি ব্রিফাণ্ডশেষ:॥ লোহিত ল্লী রক্তগোশীর্যণা হ ় 👼 ন• ॥ রক্তচন্দন• । ইতি মেদিনী 1 প্রস্থা হরিচন্দে। ত্ণ

**इन्ह्याः ॥** क्षित्रः । ইতি द्वार्षे-निर्धणेः ॥ युक्तः । इति (इन्हन्तुः ॥ लाहिङ: मृ॰ नम्दिल्मद:॥ ভৌম: ।। बक्दर्भः । इंडि (मिनि ॥ द्रा-হিত্যৎস্য:।। মৃগবিশেষ:। ইতি न्द्रकावनी॥ मर्नः॥ नुताखनः। ইতি ধরণি:।। মসূর:। ইতি শব্-চন্দ্রিক।। রক্তাল্:।। রক্তশালিঃ া ইতি রাজনিঘট: 🛭 ব্লভেদ: 🚶 ইভিছেনচন্দু:॥ লোহিতঃ ত্রি রক্তবর্ণযুক্ত:।ইত্য-भद्रः ॥ বোহিতক লী রীতি:। ইতিরাল্প-विर्घकः ॥ लाहिउकः मु भक्तगुरः। है डि শন্ত্রমালা।। পদ্মরাগন্দি:। ইভি (इम्हन्मुः॥ (बाहिउठन्दन क्री व्ह्ना हेउ) मदः ॥ द्रक्टन्त्नकः ॥ লোহিতপুল্লক: পু॰ দাডিমবৃক্ষ:1 ইতি ভাবপ্কাশ:॥ লোহিতমৃভিকা ছী গৈরিক । ইতিরত্ননালা।।রক্তৰণমৃত্তিক।চ।। লোহিতা জী রাগাদিনারক্তবর্ণ। ইতি ফটাধর:॥বরাহকান্তা। ইতি णकः शंनु का 10 ब्रक्तभू वर्मदा 1 **३** जि

ब्राविविचित्रः ॥

• লোহি তাক: প্• মঙ্গলগুই:।ইত্য নর: ॥ কম্পিলক: । ইতি রাজ নিষ্ট:॥

লোহিতানক পু॰ নসল:। ইতি
রাজনির্ঘণী:॥রক্তবর্ণসুথে জি॥
লোহিতাব: ক্লী তামু॰। ইতি জিকাওশেব:॥

लाहिजायमः ज्ञी त्रक्वर्गत्वाह-बालिः। ই जिम्भादाधवाकद्वपः।। लाहिजाकः श्रु विष्णः। ই जि सम्मावा।। (काकिवाः। ই जिस्म म् मिन्का।। त्रक्वर्गज्ञकुर्यक्त जि।। लाहिनी जी त्रक्वर्गाजी। यथा। (त्राहिनी (त्राहिज। त्रक्ता (वाहिनी (वाहिज। मा। ই जिक्कोधदः।।

লৌকায়ভিক: প্ তার্কিকভেদ:।।
চার্রাকশান্তবেক্তা। লোকাষত।
বেজি ইত্যর্থে ফিক পুত্যুয়েন নিয়লো হবং।।

**भाराडम॰ द्री इर्प:।** इंडि (इग

• हन्द्रः ॥

लोकिकः वि लाकवावश्वश्विकः
। यथा । विकित् लोकिकेटिकः
वि यथा । विकित् लोकिकेटिकः
वि यथाका खेथव (छ। निनी छाथाञ्च विद्ध्या भाजात्छ्य। प्रमः
प्रशः।। हेलिकवालवाक्रयाभिकः
व्राह्म श्रूथमभूकद्रनः ।। (बाकाय-

হিত ইত্যথে চ ফিক প্তায নিয়
য়: । ইতি মুখ্যবোধব্যাকরণ ।।
লৌকিকভা জী লোকব্যবহারসিক্ষরণ । শিপ্তাচায়ে হস্য শন্স্য
ভ্রিপুযোগঃ ।।

লৌকিকাগ্নি: পু: অস'ক্সভাগ্নি:।
যথা। ন পৈত্ৰ্য যজ্জিয়ে হোমো
লৌকিকাগ্নৌবিধীয়তে।ইভিশুদ্ধি-ভক্ত্যা

ली ज जैशारि। ইতিকবিকল क्यः ॥ ठजुर्मचत्री । च चलुली-ড । ইতি मुर्गामामः ॥

लोशः शृं लाशः। इंड्रामब्रीकायाः छद्र उः।। म ह नक्षित्यः। यथा
। काकिः > भाखिः २ काष्ठः ७ कालिकः ४ वज्र कः ६॥ सम् अत्याहः
स्विथ मः काद्राः। यथा। मालियर्थाः > উष्ठर्डनः २ सम् छातनः ७
साजभावः ४ नित्यकः ६ मात्रमः
७ मलनः १ कालनः ५ मूर्यःभावः
० मालिनावः >० हर्ननः >> भूकेभावः >२ भाकिनम्रवः >०॥ सम् ।
छ्याः। साय द्वल वीर्यः काममःएदः। द्वामनानिष्ः। (मुठ्ठस्यःमायनद्वसः। कृक्वन्माः ज्ञाः अनाः।
। भाष मृलः मं. स्व भाष् भूदास्
रम् वाय नानिषः। व्यादेष्र्यं। हः

क्कुल्डकः काद्रिष्। नाद्रकष्। खक्ष ॥ (माधिकम्याम्य खाने। সর্বরোগ নাশিত্রণ । মরণনাশি-ত্ব্ধ ।। অশুজন্য তন্য গুণা: । काद्रगार्याग्रद्धः। व्यायुनान्नकद्धः। রোগ হৎপীড়া তৃক্ষা **ভড়তা কা**-त्रिष्**क । ই**ভি রত্নাবল্যাদযঃ ॥**॥**॥ ष्यनार (वाश्नाम पृष्टेवार ॥ लोक्ठावकः भू नवकरछमः। यव নিগতৈ বঁধ্যন্তে। ইতি পুরাণ ॥ व्योरुषः क्री মণ্ডুর°। ইতি রত্ন-याना॥ लोरुजायः भू यम्प्रजालः। राम-न्षिष्ठा ইভি ভাষা। ইভি শদ-চন্দ্রিকা।।লৌহনির্মিতভাণ্ডেল্লী।। ब्लोहजुः जी कठिनी। माजुलोह भाउतिसम्बः। यथा। लोहाजाः ठारुगा लोश लोश जूः कठिनी छु-नि। इंडि मक् हिन्तुका ॥ लोहननः द्वी लाहमनः। ইতি त्राजनिर्घर्षः॥ **(**वोरुमञ्जू: भू· नव्नकवित्मय:।यञ সুনীভি ভিদ্যতে। ইতি পুরাণ ॥ लोश्निर्मिउकीलकण ॥ भोरा जी लोरजः। इंडि मद-**ठिम्का** ॥

लोशाया औ लोरूज्ः। इठि मनः

**ठिम्बुका ॥** . भुः लाहिजः। ३७ (नोश्उ: लाशिउ नदार्थिय मुख्रायन নিয়ৰ ।। লোহিতসমূদ্ধিনি ত্রি।। लोश्जिकः जि लाश्जिर्गज्नाः । इंडि लाश्डिमचा इंदार्ख 'ঈকক্ পুত্যযেন নিম্নদ্ৰণ । ইতি निषास्टकोगुरी ॥ লৌহিত্য ব্লী লোহিতবু । ইভি विषिनी ॥ লৌহিভ্যঃ नम् अमः। ज ह 4. वुकानुधः। इंडि सिमिनी॥ मागदः । इंडि नद्भाना ॥ उत्र । नहिन শেষদ্য উৎপত্তি র্যথা। সগর উবাচ । অনোঘাযা**॰ কথ॰ জ**ক্তে লৌহিত্যো, বুন্ধণঃ সুতঃ । কথ **मा**खनू ভार्यद्यायाः त्रञः म कश्रनाः-সনঃ।। পারজৈণেয় পুশ্রো বা কথ জক্তে পিতানহাৎ। তৎ সর্বণ শ্ৰোত্নিছামি কথ্যস্থ দিকোত্তন।। खेर्र উवाह । मृत्यु न्नमाम् व কথবানি মহন্তর । আখ্যান বু-ন্ধপুএস্য লৌহিত্রস্যে মহাত্মনঃ ॥ इतिवर्ष महावर्ष माछन् नान নামত:। মুনি রাসীমহাভাগো জ্ঞানবান্ সূতংপাধন: ।। তস্য

ভাৰ্য্যা মহাভাগা অমোধাৰ্য্যা

बहानडी । हित्रगुगर्जन्य मुख्य ख्न तृनतानुरमान्डवा ॥ छ्या नावः न रिक्नाममर्थापानानार्वाक २वमर । लाहिन्। बाना नहन नीत देव াগন্ধমাদৰে ৷৷ একদৰ স' তপোৰি-প্রচা নিজপুস্থাদিপোচরে। জপাম-बनमध्रद्ध विवृग् वङ्कलानि ह ॥ ञ्जिबवनात्रं वृक्ता मर्बाणाक लि-ভামহ:। ভ্ৰাৱগান য্ৰাভি আ-নোধা সান্তনো: প্রিয়া ॥ তা॰ দৃষ্ট্রা (५वगद्धां छा॰ युवजी मिल्युमादी॰। स्माहित्ज सम्प्तिमाम् उ**था जून्**वि ভেন্দ্রিः ॥ উনীরিতেন্দ্রিয়ে ভূত্বা জিঘৃফু স্তা॰ মহাসতী॰। অথাধাব खरा वृक्ता मः मूर्या मगनामिनः ॥ शावभावः विधाजातः मृष्ट्यः (भाषा মহাসত'। নৈবং নৈব মিতি প্রোক্তা भर्गमानाः वानीयञ ॥ इस्यकावाह ষ্যভার মমোঘ। ছপিতা ভদা। পর্ণ শাশান্তরগত। দারমাবৃত্য তৎ ক্ষ তাৎ ॥ অকাৰ্য্য নম্যা কাৰ্য্য মুনি-পত্ন্যা বিগহিত। বলাৎ পুমথ্যে চাহ· ভवुषा दाः भाषामाहः ॥ অনোধ্যা চৈব মুক্তে বিধাতুশ্চ ত म। नृभ : (त ७ क क नर ४ उरेमवाण्य শ।ন্তনো মূনে:। চ্যুতে রেভসি ধা-**ভাগি হ'** नवान ममाश्चिः। विद्धाः যাতিপরীতাত্মা জতং বৈ ৰাশুমণ যধৌ ৷৷ গতে বেখসি শান্তনু নিজ মা-শুম মাগত:। আগত্য দৃষ্টা হণ্সা-नाः भरकाखः ७५। जुवि। ८७ कन्ह পতিত ভ্ষৌ বিধাতু জু লনোপম• া৷ অমোধাণ পরিপপুছ পর্ণশালান্তর হিতা। কিমেতদত্র শুভগে পুকৃত্ত॰ म्माउ ज्यर ॥ शक्तिगाक शक् काज (उब कि की मृण । मा তস্য বচনং শুদ্ধা শান্তনুং মুনি সন্ত-नः ॥ ज्यमर्थिएव न्याप्तमान्ता वि-কলানন।। হংস যুক্ত স্থানেন কো-প্যাগভা চত্মুখ:॥ কমওলুকরো ভীক রতি• মা॰ সমধাচত। ওত্তো স্বা ভদ্মি তম্চ উট্ডান্তর লীনকা।। পু্রাব্য ভেন্ন: সংগাতো মথা শাপ ভথাৰ্দ্মতঃ। দক তত্ৰ পুতীকারণ যদি শক্ষেসি শান্তনে।।। ন**হিমা**° ধ্যণা সোচ্ কশ্চিৎ শল্পোভি জী-वर्ष्ट्र । म जम्रा वहनः सुद्धा **स्ट** বুকা। সমাগত:।। ইতি নিশ্চিত্য স্ব-নসা ভদ্র ধ্যানপরে। হভবৎ। দিব্য খ্যানেন ভজ্জাত্বা দেবকাৰ্য্য মুপ-স্থিত।। তীবাবভারণঞ্চাপি হিভাব कगजाः मुनिः। ध्याद्यापर्कः विश्वः यिदा बंधार्या। भिन्न ययुरी ८।। हेन्-তেলা বুকাণ ভু॰ পিৰামোধে মমা-

-জ্ঞযা। হিভাব সর্বলগতা॰ দেব कार्य्यार्थ मिष्यत्य ॥ ভবত্যা निक्रे ব্ৰহ্মা ৰ্যমেৰ সমাগতঃ। ত্ৰা মপু।প্ নহাক্ত্য মাঝ্যা: স সমর্গ্য চ্যা াতে৷ নিজাম্পাদ তত্ত্ব কর্তু মহসি **७** इतः । ७९ सुद्धाः भाषाना दीकः .মমোঘাতীৰ লক্ষিতা॥ শান্ত্ৰযন্তীৰ ্ভ॰ পুাহ পতি॰ নত্না মহাসভী। নান্যয় তেজো খাস্যামি ন চেক্তে বিমনক্ষতা।। অবশ্যু । যদি কৰব্যু পীত্বাত্ব: মথিচোৎসূত্র। তত স্তস্ঞা .वहः भुदा युक्तः उथाकः भाष्टन्ः॥ নুষ্য পীত্বা চ ভত্তেজ স্তস্যা গৰ্জে ्रबुरम्हर्यः । म॰काभिटेजः मास्नुना :(अस्ताञ्ज वृक्षिणः त्रजी ॥ गर्हः पः খানানোঘাখ্যা হিতায় জগতা ত তঃ। তস্যা কালে তু সংপ্রাপ্তে সং-कार्डा बन्मक्ष्यः ॥ उत्राक्ष्र उन य फालि नीलवाजाः किंद्रीरेथ्क् । **র**ন্নমালাসমাযুক্তো রক্তগৌর চ্চ वुकावर ॥ ठञ्ज्बः भग्नविष्ठाधत्र শক্তিধর তথা। শিশুমারশির:ছ 🅶 जून/कारया कल्वा८करेत्र:॥ ७• স্কাতঞ্চ তথা ভূত শান্তনু র্লোক শা-😽: । চতুণা॰ পর্বতানাঞ্চ মধ্যদে- | <<p>
न्य न्यात्राहरू । देवलाम (क्वांखरः द्वां भार्ष्य मिक्षा गम्भारनः। काक्षिः

পশ্চিমে শৈল: পূর্বে সম্বর্তকান্ত্রক ৷তেষা• নধ্যে **ষ**ৰ্য• **লগু• পৰ্বতঃনং•** विष्यः भूठः । कृष्मि ठिववृष्य नि**छ**ाः শরদীব নিশাকর: ৷৷ ত তোয মৃ-ष्ठागः भूञ नामान्य कहिनः स्रयः । क्रमं खन्। मःकाद्रानकद्रात्प्र শুৰূষে ৷৷ অ**থ** কালে বহুভিথে ব্য-ভাতে বুদ্ধশ: সৃত:। ভোষরাশি ষ্কপেণ বৃধ্ধে পঞ্যোজনান্।। ও-यिन् (नवाः भन्नः भन्न हिं छीय इद সাগরে। শীতামলজলে হৃদ্যেদে-ব্য ক্ষাপ্সরসাণ মণৈ: ॥ ভিম্মিরস-রে রামে। জামদম্যঃ প্রতাপবান্। চক্রে নাত্বধা বোর মত্যুদ্র পিতৃ-ब्राज्या ॥ उन्। थानम्। (नाकार ৰ পিতু শ্চাপদেশতঃ। স জগাস मराम ७ वृक्तायाः माठ् मिह्या॥ তৰ ব্ৰাত্বা চ পীত্ৰা চ মাতৃহত্যা• वानावर। वीषी अन्नम्ना कृत्। তঞ্চ জ্বামবভারয়ে।। ইতি কালি-কাপ্রাণে কান্দগ্র্যোপাখ্যানে ৮৪ অধ্যায়: ।। #।। অপিচ। জাত স•-नुउप्रः (मा २**५** डीर्थ मामान्। उ॰ वतः। वीथीः शत्रम्ना क्वा व्यान्य मवारुयः ॥ वृक्षमञ्जाः नृजः ना **২৭ কাসারে লোহিতা**স্থযে **কৈলা**-সোপত্যকাষান্ত ন্যপত্যুক্ষণঃ সূতঃ

**।তেস্যালি সরস ভীর• সমু**ত্থায अश्वतः। कठारत्र मिन न्दी মন্যধৃদ্ধণ: সূত্রণ।। ততো হপরতা-িপি গিরি॰ হেমশৃক্ বিভিদ্য চ। কামকপান্তর পীঠমবাহ্যদমু ছ রি: ৷৷ তস্য নাম বিধি শ্চকে যথ: ৰোহিতগঙ্গক । বোহিত্যাৎ স রসো জাতো লৌহিভ্যাখ্য স্ততো **२** ভবং ॥ স কামৰূপ মথিল পীঠ মাপ্লাব্য কারিণা।গোপ্যন্ সর্বতী-র্থানি দক্ষিণ যাতি সাগর ॥ লাগেব দিব্য যম্না॰ সংত্যক্ত্ব। বু च्नाः मुजः। भुनः भुक् जि त्योहि-**८७**९ गद्धा दास्मारगाजन ॥ टेन्टर्बः मानि निडाहेम्याः (या नरता निय-বেজিयः। স্থাতি কৌহিত্যতো-रिष्यु म गाञ्जि वुक्तनः भारः ॥ टिज्जन्त नकलः भागः णुटिः भूयजभानमः । लोहिङ। ভোग्नियः माङि म रैकवना भवाञ्च याए ॥ इंडिका-निका भूतात ४ वे अध्यायः॥ ল্পী গি শ্লিব। ইতি কবিকলুক্তম:॥ ওপ্ত্যবর্গাদ্যোপখ:। ল্লিনাতি ল্লীন: ল্লীনিঃ। অন্তস্থাদ্যোপধ ইতি রনা-নাথ:। লিঃনাতি। ইতিদুর্গাদাস:॥ ত্বী গিণ গভ্যাণ। ইতি কবিকল্প क्यः ॥ वकाद्राभयः भ नीनाठि

দ্বীত: দ্বীতি:। গি দ্বিনাতি দ্বীন: দ্বীনি:। গিনৈব ক্যাদিত্ব সিন্ধৌ গ করণ স্থাদিত্ব বিকল্লার্থণ। ইতি দুর্মাদাস:।।

বকার: ৷ স চ ব্যঞ্জনস্য উনজি**'শ** বর্ণ:। যবর্গস্য চতুর্থবর্ণম্চ । অ-স্যোদ্বারণস্থান দম্ভ: ও৯ চ। ইতি ब्राक्द्रगः ॥ 🗱 ॥ यवद्रनीयवकाद्रम् শ ফ ব ভ ম বা ইত্যেক পদোক্ত্যা উৎপত্তিস্থান নোষ্ঠ মৃক্ত্যু দন্ত্যু कार्य्यार्थः मस्याभाष्यात्रा ज्ञान्य ন ল সা ব ইতি ভিম্নদে পঠিত-বান্। যথা সংবৃধ্বতি ইত্যাদৌ वकात्रमा अध्यार केत्र म्हादार चन्यातमा भकाला न मार ॥ रिवासकास অস্যোৎপত্তিস্থান• দম্ভ এবেত্যাহ:। অতএব তদ্বি; रकाः भन्नमः भनः इंड्यामी उरेषः বোচারযন্তি। ইতি মুধ্ববোধটা-काया॰ पूर्णानामः ॥ 🗭 ॥ उम्र পর্য্যায়:। বো বাণো বাক্ণী সূক্ষা বৰুণো দেবসংজ্ঞক:। ভোষং লা-স্তশ্চ বামাশো:। ইতি বীজবর্ণাভি-ধান ।। 🗱 ।। অপিচ। বকারে। ব-ৰুণো বাণ: স্বেদ: খন্নীশ্বরো জবঃ। ইতি কৃদুধামলে মত্ৰকোষ:।। #।} **७ म**ऽ सक्षण यथा। वकाद्र हक्-

वाशांकि मुख्नी (बांक् म्यूर्यः। পঞ্চ পুণেম্য বর্ণ ত্রিশক্তি স **हिउ॰ मरा ११ बिदिन्सू महिउ॰** दर्ग भाजामिछद्वमःगुजः। भक्षमिय-गरः वर्गः भी अविदृश्सका मरः ॥ **ठ**जूर्वर्गभुषः दर्गः जर्वजिषि भुषा-যকা বিশক্তি সহিত দেবি ত্রি विन्तृ नहिख नना॥ इंडि काम ধেৰুভজ। #।। কোণএয যুতা। রেথা বৃদ্ধ বিষ্ণু শিবাত্মিকা। মাযা শক্তি: পরা নিত্যা খ্যান মস্য পু চক্ষ্যতে ॥ ইতি বর্ণোজারভন্ত ॥ शा वा माधानः। जन्त् मृज्यः (स्वीः विज्ञाः शक्राक्रमाः। मूक्र भाव। श्रिवपताः तञ्ज्ञाताब्ह्ववाः - পরাণ। সাধকাভীপ্রদাণ সিদ্ধাণ সিদ্ধিদা ' সিদ্ধসেবিতা । এব ধ্যাত্ত্বা বকারন্ত তথ্যন্ত্র দশবা জ रभर ॥ इंडि वर्णाकात्र उद्ध-॥ व रा इवार्थः। इंडि मिनिशा य ही भुष्ठजाः। इंडि सिरिनी।। বঙ্গবীজ। ইতি তক্ত।। यः भु॰ जाडुनशा वागृशा वद्याः। इंडि (गिरिनी।। राष्ट्रः।। मञ्जूतः।। कन्। ११ । वन्यान्।। वन्धः।। बक्गालयः। ইতি मद्दद्वावली।। श्वान् वः ॥ वजः॥ शा म्यान्कः॥ वन्त

मः। ইতি गरिनकाक्षत्रकोकः।। वः वि युगान्।। वृग्रज्याकः । वृग्रम् मद्भ मु विजीवा ठजूनी व-ही वह्रवहनाह्यत्मा १वः। ইতি व्याकृत्रभः।।

বশং পুণ পুঞ্লীবাদিং। তই-नर्गायः। महाजिः २ (भावः ७ के-नन 8 ज्ञान १ व्यक्तिनः ५ जात्रः १ यद्वायः ৮ महामः 🔊। ই छुपन्नः । नियन २० बाजि: >>। ইजि ब-हेषितः।। अनक विम्या जन्म वा পুरिना (मकलक्रमः महासा व न इैंडि जयापिडाः । श्रान विष्णुया বা খ্যাত্ৰস্যাপভ্যধারা বংশ ইতি সূভ্: । বমতি উদ্নিরতি প্রপ্-क्षान् वः मः नामी जि मः। इंड्र **मद्र**ीकाया॰ खद्र छ: ॥ # ॥ ज्न-জাতিবিশেষ:। বাঁশ ইতি ভাষা। তৎপर्य। एक्नावः २ कर्यावः ৩ বুচিসার: ৪ তৃণধুত্র: ৫ শতপর্বা ৬ यवकनः १ (বশ: ৮ মস্কর: ১ তেজন: ১০। ইত্যনর:।। কিন্তুপর্বা )) । इंजि क्रोबितः ॥ वसुः )२ । ইতি শবরহাবলী।। তৃণকেতৃকঃ १३ क्षेत्रः १८ क्षेकी १८ महा-বল: ১৬ দৃচগুন্থি: ১৭ দৃচপত্ৰ: ১৮ धनुकानः १२ भानुषाः २० मृत कार्थः

२)। यम् छनाः। यहात् । क्या-्यव्। किकि डिक्वः। भीउनदः। मूजकृष्ट् भूष्यशार्थः भिक्त राश्यु मानिव्य । इंडि झाझनिर्घण्टः।।।।।। व्यक्ति। यः नः नः नात्र। हिमः चापुः कवारवा विख्रानाधनः।(हरनः ककः निखनः क्षामुका लाचिक्याक्षा क्रिक्रीयः कट्टूः भएकज्ञाम करका धकः नवः। कवायः कष्टक्र सानू विमाही वाङ निष्ठनः ॥ 🐠॥ छः म्बराज मंत्रा क्याः क्यायाः करे পাকিনঃ। বাত পিত্তকরা উঞ্ **বন্ধন্ত্ৰা:** ককাপছাং॥ ইভি ভাব नुकाणः ॥ #॥ भृष्ठावयवः । भिः ঠেরদাঁডাইভি ভাষা॥বর্ণ:॥ইভি विषिनी ॥ वाष्ठ्रज्ञाः । বাঁশী ইতি ভাষা। ইতি ধরণিঃ॥ ইক্:।। সালবৃক্:। ইভি রাজ-निष्कः ॥

বংশক: পূণ্ মৎ স্যবিশেষ:। বাশ-পাতামাচ ইভি ভাষা। ইভি শদ্মালা।। ইক্ষুবিশেষ:। বাশাই ইভি সোমশাড়া ইভিচ ভাষা। ইভি সম্মালা।। অস্য গুণা:। বংশক স্তঃভিব্যক্ষী লঘু দেন্ধক যাপ হঃ। ইভি সাক্ষবল্প ভাঃ।। বংশক স্থা

यणी। र नकरः जी वाकालाद्वीयमानः मूब । यथा। वृषामूबक विख्राङ् विम् ठ्वः ननीविगः। गुग्रहानः वंभक्ष वाङ ज्व भवज्ञा। इंजि संत्रावनी ॥ व नक्श्रद्धाहना जी कनाद्राहना। इंडि ब्राजनियंग्रे:॥ र ने का भू र (स्पूयरः। इंजिज्ञान निर्घणीः ।। বি: সহ শ্বাত:। ত**ে**-কশর: भर्यग्रयः। वीकाः २ वःमाः अ। ইভि (र्गठन्तुः॥ वं मंजा जी वं मात्राह्ना। इंजि नक्त्रज्ञावनी ॥ ৰশ্বত পূৰা: (वर्ष्यवः । इंजि রাজনিঘণ্ট: 11 वन्मवान् क्षी বেণুয়র:। ইক্তি वा क्रिविच छै:।। वः नना निका खी वःभी। इंडि **मद**क्ष्यावनी ॥ ব॰শনেত্র• इक्मूम् । इंडि क्री ब्राक्रिनर्रेन्टेः ॥ ব শপগ্ৰ: नलः। ইভি রাজ: Si. नियार्षेः॥ वानम् मामता ही॥

বংশপএক ল্লী ছবিতাল। ইতি

त्र्म् ।।

বংশপথপতিত ক্লী সপ্তদশাক্ষর
পাদছলেবিশেষঃ। যথা। দিখু
নি বংশপথপতিত ত র ন ত ন
ল গৈঃ ।। নৃতন বংশপথপতিত
ক্রননি জললবং পশ্য মুকলে মৌ
ক্রিক নিবোত্তন মরকতপং। এষ
চ ত চকোরনিকরঃ পুলিবতি
মুদিতো বাস্ত মবেত্য চল্ফুকিরণৈ
প্রমৃতকণনিব।। বংশপথচরিতেতি
ক্রিচিৎ। বংশদল নিতি শস্তো।
ইতি চল্ফোনপ্ররী।।

ৰুশ্দপত্ৰী জ্বী নাডীহিকু: ॥ ত্ণবিশেষ: । তৎপৰ্য্যায়: । বংশদলা
২ জীরিকা ৩ জীর্ণপত্রিকা ৪। অস্যা
শুণা: । সুমধুরত্ব । শিশিরত্ব ।
পিত্ত রক্তদোষনাশিত্ব । কচ্যত্ব ।
পশ্মা: দুঝ্মদাযিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

वःणशीउः श्रु कग्धश्रुवः। ই उ ः बाह्यनिर्वणः॥

वःमभूज्ञा जी नश्रावीण जा। हेिंड अज्ञानिर्घण्डः॥

व मन्द्रक की हेक् ग्ल । इंडि

লাজনিষ্ট:'।৷

বংশরোচনা জী স্বনামখ্যাতবংশ-পর্বছিতত্বেভবণৌ বধবিশেব: া ব শলোচন ইতি ভাষা। তথ-পর্য্যায়:। ত্বক্ষীরা। ইত্যমর:॥ ब·**म**(नाहना ०। ইতি ভরত:॥ তুগাক্ষীরী ৪ শুভা ৫ বাংশী ৬ यः नजा १। इंछि ब्रेज्याना ॥ की : त्रिका ৮। ইভি **भद्मत्र**वादनी ॥ खुमा ৯ खुक्कीवी २० मुख् >> ब भक्ती हो २२ दिनवी २० एक्साइ। ১৪ কমরী ১৫ খেতা ১৬ বংশকপু-ররোচনা ১৭ তৃস্বা ১৮ রোচনিকা ১৯ পিকা ২০ বংশশর্করা ২১। व्यन्। खनाः। क्कव्ः। क्वायवः। মধ্রত্বং হিনত্বং । রক্তশুদ্ধিকা-রিত্ব। তাপ পিত্তোদেকহরত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ অপিচ। ব**ংশ**ণ জা কৃ•হণী কৃষ্যা বল্যা **ৰাদী** চ শীতলা। তৃঞা কাস জুর খা**স**া क्रय भिडामु कामनाः ॥ रुद्धर লঠ বুণ পাণ্ড কবাৰা বাত কৃ <u>ছ</u>-बिट। इंडि ভावनुकामः॥

ব শলোচনা জী ব শরোচনা।

ইতি হেনচন্দু: ॥ অস্যা গুণা: ।

কবায় মধুরা ককা বাতগ্নী ব শালোচনা। তুগাক্ষীরী ক্ষয় খাস

কাসনী সধুর। হিনা॥ ইতিরাজ বল্লভঃ ॥

वःभभकंत्रा हो वःभवाहना। इंडि त्रावनिर्घः।।

वःभणनाका क्षी वीगाम्लः। ই ि रहमहन्तुः॥ वःभनिर्ध्यक्रणनाका ह वःभछनिकः। ज्ञी वामणाक्षत्रशामः वःभइ विलः। इर्म्साविर्ध्ययः। यथा। वम्षि वःभइ विलः करको करतो। विलाम वःभइ विलः म्यानिरेनः लुग्रंध्र यः शक्षमद्राण मृद्गित्रन्। वुः काक्षनाना मि गानणानिनाः कहाद्र मानः म हद्रिः शुनाक् वः॥ वःभछनिक मि इनि । ই ि

**দ'শ**ক্ষীরী জী ব'শরোচনা। ইতি 'রাজনিঘট:।।

ছ (न्तानक्षत्री।।

ৰ'শাগু• ক্লী ৰ'শাল্ভুর:। ইঙি রাজনিষ্টাঃ।

वःगान्वित्रञः क्री वःगवित्रवर्गनः
। उन् भूताभा भक्ष्यक्रभास्तर्भञः
वक्षभविष्णयः। यथा। मर्गकः भुः
जिमगंक वःष्णा सन्स्रद्राभि वः।
वःगान्ववित्रज्ञक्षिञ्ज भूताभः भक्षः
वक्षभः।। ইতি শব্यञ्जावनी।।

**ৰ•শাভ্র: পু**° ব•শস্যান্ধ্র:। বঁ। ংশরকোঁড়া ইতি ভাষা । তৎ- भर्यायः । कत्रीतः २ वः भागुः ७ यवकवास्त्रः ४ । जन्य खनाः । कर्तृष्यः । जिक्षः । जन्नप्यः । कवाः यदः । वयुषः । भीजवदः । भिखाः मुनार कृषुष्यः । किकातिषः । ज्यास्तर्याः निर्धनेष्यः । स्टिकातिषः । जिल्लाः ।

বংশিক ক্লী অন্তক্। ইত্যমর:॥ বংশিকা জী অন্তক্। ইত্যমর-টীকাষা ভরত:॥ বংশী। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

वंशी की मूत्रनी। वाशी है उ ভाষা। ইতি भद्रत्वावनी ॥ कर्य-চতুইয় । ইতি রাজনিষ্ট:।। वंशीवार्षात्राविवद्रगः। यथा। छा-লেন রাজতে গীত ভালো বাদিক সম্ভব:। গরীয় তেন বাদিত্র• তह-তুর্বিধ মুচ্যতে ॥ ভত শুবির মা-নদ্ধ ঘন মিশ্ব চতুরিখা তত ভক্তী গতং বাদ্য বংশাদ্য শ্ৰুবি-त्र ७था।। हर्यादनक मानक घन ভালাদিক• মত•। শুবির• যথা। वःশाथ भात्री मधुत्री जिलित्री শহ্ব কাহলা:। ভোডহী মুরলী वुका मृक्षिका सद्रनाख्यः ॥ मृक्रः काशालिक वन्य कर्यवन्य खशा পর:। এতে শুবির ভেদা**ন্ত কৰি**? তা: পূর্ব স্রিভি:।। বর্ত্ত ল: সরল-रेम्हव भईरहाय विवर्षिजः। देवनवः খ্যাদিরো বালি রক্তচন্দ্রজো ২থবা ।। শ্ৰিখণ্ডজো হব সৌবর্ণো দন্তিদন্ত ম্যো প্পিৰা।রাজত স্তানুজোবাপি लोहतः ग्राहित्का २ थवा ॥ कनिष्ठा-ঙ্গুলি ভুল্যেন গর্ভরন্ধেণ শোভিড:। णिल्लविष्ठाशुवीशन वः नः कार्यंत्र মনোহর:।৷বংশনৈব মতো ংগীতি মতঙ্গমুনিনোদি**ত । ভতে। ୧**নে<sub>।</sub> পি তদাকারা বংশাএব পুকীর্ত্তিতাঃ ॥ তত্ৰভাক্তা লিরোদেশাদধাে দ্বি-মিত মঙ্গলং। ফংকাররন্ধু, সহীত भिष्ठ भक्ष्विभर्तना ॥ भक्षाकृवाभि সংভ্যন্ত ভারর জাণি কার্যেৎ। क्र्यां ख्यानात्रकाणि नथनः यानि कोननार ॥ वन्द्रीवीक जुन्मानि अ-उ।का।कांक भक्त । भाडता ৰ্বন্ধন কাৰ্য্য ৰবাদ্যৈ নাদ ছেতবে ।। সিকুকেন কলা দেখা তেন সুধরতা क्टावर । नकामुला २१० वं मः **अ**ग्राप्तरेककाञ्चलिवृष्ट्रिजः ॥ यउ-कुलानि नामा गाए यावरक्षामणा-कृतः। युः कात्र जात्रत्रकुम्। यायः हक्क वि यखन ।। **उ**त्तर नाम रः नाम । ঝাণিকৈ পরিকীর্ত্তা একাঙ্গু-**भा श्रक्तक वाक्र कर्**तक्वा ॥

অভিতারতরত্ত্বের বাংশিকৈঃ সমুপে ক্ষিতঃ। ত্ৰযোদশাকুলো **বংশো ৎপ**-র:। নিন্দিতো বংশ ত*ভুজ্ঞৈ* ভ্ৰা मधरणाञ्जः। यहानम्, ख्या नत्मत् विकारण १थ कर ख्या ॥ हजात छैं ভ্ৰমা বংশা মভঙ্কমূৰি সম্বভাঃ। मभाकुरणा बहानरम् ननर अकार-नाकुषः॥ बामनाकुषभानस्र विज-यः भव्रिकीर्खिङः। हर्डमेनाङ्ग्लाबि-ভোজ্য ইত্যভিধীয়তে ॥ বুক্ষা কদ্যে রবি বিঞ্: ক্রমাদত্র ব্যবস্থিতা: ॥ নৈবিড্যা প্রৌচন্ডা চাপি সুম্বরত্বঞ্চ শীঘুতা।। নাধুৰ্য্য নিতি পঞ্চামী ফুৎকৃতের গুণাঃ মৃতাঃ। শীৎকার বহুল: স্তরো বিশ্বর: কুটিভো লঘু: ॥ व्यमध्र कः विख्छियाः वर्षमावाः कृटक्छ कमाट । वृथानुरगान वाङ्ग्र रज्ञुङ। गीउवास्त्य ॥ अञ् ৰ্দোষৈ যুঁতো **ৎ**তীব নি**ন্দিতো ৰু-**শিকো মতঃ। স্থানকাদিনযাভিজ্ঞো गमकाराः सुरोक्तः ॥ भी घृहतः কণাভিজ্ঞো বা॰শিকো রক্ত উচ্য-তে। পুমকি ৰক্ষমুক্তিত যুক্তিতে-**७।ऋत्व ७११: ॥ मूङ्गनदः मुस्रद्रः** ष्यक्ष्मी नाद्रग किया। नमस्रगमक জ্ঞান রাগরাগাঞ্চবেদিতা।। ক্রিযা ভাষা বিভাষাসু দক্ষতা গীত বাদনে

াৰহানে চাপি দু:হানে নাদনির্মা ণকৌশল-॥ গাতৃণা স্থানদাত্ব ् छाप्रावाद्यापन- उथा। वाः निकर्मः শুণা ত্রভেম্যা সংক্ষিপ্য দর্শিতাঃ ॥ इंडि मःगीजनात्मानदः ॥ दःणाः वि अवः**न**वाउः। ७८-ं भर्यायः। इलाः २ वीकाः २ । ইতি ত্রিকাওশেষ: ॥ **बक इंड को**हिल्या। गर्छो। ইडि कविक्लक्ष्मः ।। कोविषा भिरु ष्टिनीचारः ष्टिनीकद्राक्षा है বৰুগতে ড বন্ধতে কাঠা স্কটিলা न्यानिज्यः। वक्रांत्र काष्ठ्रः कृतिः ল করোতীত্যর্থ:। ইতিদুর্গাদাস: वकः शुः अनामश्राजशक्तिविर्णयः । তৎপর্য্যাयः। কস্ত্য:২। ইত্যমর: ।। ধারবলিভুক্ ৩ ককেক: ৪ শুঙ্ল বাষস: ৫ দীৰ্ঘন্ধ: ৬ বকোট: ৭ গৃহবলিপিয়: ৮। ইতি শবর্ত্না বলী।। নিশৈত: ৯ শিখী ১০ চন্দু বিহস্ম: ১১।ইডি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ जीवरंत्रवी ३२ जानमः ३० मी-नवाजी 78 मृवाध्यायी 70 निक-नाकः १५ मास्रिकः ११। ইভি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ অস্য নাংসস্ গুণাঃ । শরারি বক কাকাশ্চ দা-ত্যে: প্রনাপহা: । ইভি রুজ্বা-

वनी ॥ अभिष्ठ । इंग्न नावन का-ठाक वक कोक महाद्रिकाः। नम्ही-मुथी मकानमा बनाकान्।: श्रवाः মৃতা: ॥ প্লবন্তে সলিলে বস্বাৎ এতে তমাৎ প্লবা: মৃতা:। জাল-চরাঃ প্লবাচ্চাপি কোশহাঃ পা-'দিন তথা।। মৎস্যা এতে সমা-খ্যাতা: পঞ্ধান্পজাত্য: । আ-न्भा मधुदाः निका खत्रता विद् जारनाः ॥ (भूयानाः निह्ना का-পি সাংসপৃষ্টিপুদা ভূশ। তথাতি-व्यानित्व एउ वि भाषा भवाज्योः ম্তা:। ইতি ভাবপুকাশ:॥ 🕬।। यनामथ्याजशुद्धवृक्षः । उर्भर्गा-यः। निववली २ शानुगठः ७ क काशिलः ८ वमः ६ । इजाबतः ॥ अकाशीला ७ वुकः १ वमुकः ৮ वम्-कः २। इंजि उष्टोका ॥ वकनुष्टः >० मिवमली >>। ইकि मदत्रः-वली ॥ काकणीर्यः ३२ ज्लभूद्रः ३० निवित्यः ३८ काकनामा ३० वन-হউ: ১১ ৰপ্রক: ১৭ রব্রপুয়: ১৮ নুনিতক: ১৯ অগস্তি: ২০ বহুদে-নক: ২১। ইতি রত্নতালা।। অগভ্যঃ २९ भौ युणु झः २० मूनिकमः २८ वुणा-ति: २৫ मीर्घक**नकः** २७ वकन्यः २१ मूबिन्यः २४ । मिछ लीख भीव (वाः

হিত অসুসভেদায় ভূবিপো হগরিং। मधूब मिणित स्राव भुग काम वि-নাপনক ভ্তন্ন:।। তথাচ। অগতি শিশির গৌল্য ক্রিদোব্য শুমা भरू। बनाम काम रेबवर्गा ज्उन्स् वनातरुः ॥ इञ्जि ज्ञाननिर्वण्डः ॥ ञ পিচ। অগন্তি জমুম শীক্ত চাতুর্থ ক্ৰিবারক। নক্তান্ধ্যনাশন ভিক্ত क्यायः कर्षेत्राकि ह ॥ शीनम (प्रया পিত্রমুণ বাতমুণ মুনিভি ম তণ। ইতি **ভाव পুকार्मः।। यम्।इ। वा मक्म।** ह भूब्राभि वक्रभनमार्देष्ठव हि। कर्हे-পাকানি ভিকানি কাসক্ষ্যকরাণি চ। ইতি রাজবল্লভ: ॥ বক: পাশু-প্ৰ**জ্ৰুৰ শিৰাপ**ীডণ্ড সুবুত: । ৰসুক্ত শিবাস্ক্ত শিবেষ্টা ক্ৰমণ্-व्रकः ॥ निवनिद्याः निवाङ्गारः ना স্তুবো রবিস:নিড:। বকোতিশি শির ভিকো মধুরো মধুগদ্ধকঃ।। পিও দাহ কফ খাস শুনহারী চ দীপনঃ। ইতি চ রাজনিঘণ্টঃ।। শি-বনল্লী পাশুপত একাণ্ডীলা বুকো वमृ: । ब्रुका १नुष: कर्षे खिकः कष পিত্ত বিষাপহ:।। বোনিশ্ল ভৃষা হ্বাহ হ্বপ্ত শোথা দুনাশনঃ। ইত্যপি ভাবপুকাশ:।।#।। তালব্যশকার:। ৰথা। শো বান্তো ৰপরো বকঃ। ইতি

बीबवर्गाजियां व ।। करवंद्राः ।। म्राकावित्ययः। स ६ जीवनस्यः। इंखि (बिमिनी।। जब (क्नार नव-গাঁৰ ৰকান্নাদৌ গঠিতো হয়শব্দঃ किन्त व्यवद्योकासाः जन्नरञ्न व्यस्ऽ-इनकादानि नह नक बाजुउता क स्मन य भुडारयम जन् भुडारव म ह जाविजः॥ 🗱 ॥ यद्यदित्ययः। यथा । जन कहन नाउनम हामा ज्यम वालकाः। वकारता वज उनाः मु। बंबाकारगण मृविकाः ॥ ইভি **अ**स्ट्रिका ॥ चन्न विवद्रण रथा । मीर्थक्षे काष्ट्रच्या निवास स-न्न अध्यक्त । जीर्याक् कृता भरहर চুল্যা॰ ৰক্ষজ্ঞ মিতি মৃত॰।। ইঙ্কি रेवरहरू ॥ 🛠 ॥ च मूत्रविष्णवः। भ ह भिकृत्कन **इंडः। यथा। यः यः वट म**-জল সৰে পায়যিব্যম্ভ একদা। গড়া জলাশ্যাভ্যাসং পাববিত্বা পপু জ লং॥ তে ভত্ৰ দদৃশু বালা সহাসত্ত্ सर्वाङ्कः। छख्न वस्त्र निर्छिन्नः गिरद्रः क्छ मिव ठ्रु छ ।। म देव बदका नाम बङ्ग्लिस्द्रा बक्क्षभष्क्। जागल्ड ठद्रमा कृष्ण डीस्ट्रालः **रगुनस्यी** ॥ क्षः सङ्गवकनुष्ठः मृष्ठ्री ब्रामाण्या 🕶 ভঁকা: । বভূতু বিন্দিবাণীৰ বিনা পুদা কিচেত্ৰ: ।। ত ভালুমুল।

् शुरुष्ट मिन्नद्वाशास्त्रम् निटतः स्वस्थात्ताः। व्हर्म मस्या १डिक-साक्ष्णः वक खालन रुखः भून तः काशराज्या जमाभज्यः म निशृशः जूलाया (स्वर्णाः वकः कःममथः मुख्या (स्वर्णाः वकः कःममथः मुख्या (स्वर्णाः वकः कःममथः मुख्या (स्वर्णाः । भूमाय्या वीत्रवयं-स्वर्णाः मान्या ।। देखि श्लिकाश्वरज् २० स्वर्णाः ) व्यर्णयः ॥

ब्किंकिका जी नट्म्यादित्मयः। छट्भर्यग्रायः। दकाही २ । इंडि इत्रावनी।।

ৰকজিৎ পৃ॰ ভীমসেন:। ইভি জি-কাওশেব:।। শ্ৰীকৃষণ্ট।।

वकष्णः भूः वृक्ष्णः। इंडामञ् विकास

ৰকনিস্দন: পু• ভীমসেন:। ইভি হেনচন্দু:।। খ্ৰীকৃষণ্ট ॥

ৰকপুয়: পু॰ বকবৃক্ষ:। ইতি শব্দ রহ্লাবলী॥ অগতিকস্মে ক্লী॥

दकर्खिः भ् वकज्वात्वनिविधः । यथा । भाषिति । विकर्णशान् विजानवृज्जिन मठीन् । देश्जु-कान् वकर्खीः वाद्याखनाभि नाहरष्ट ॥ इजि विकुभूतास ० व्यास्म २৮ व्यक्षायः ॥ जम् नक्ष्यः यथा। व्यक्षिहि निकृजिकः मार्थ

नायनज्यभावः । भारते निर्वातः विनीज्यक वकवृत्ति स्वकाङ्ग् ॥ इति उद्योकायाः श्रीवत्रवाभी ॥ व्यक्ति । व्यक्ति ।

वक्तु जी शृश् सिथ्याविनी छः। वक् वृद्धिः। इति क्रोपदः॥ छन्य जन्म गर्था। ज्याधामृद्धि विक्तिकः सार्थ जायन छ र श्रदः। मर्छा सि-य्यादिनी जन्म वक्तु छ ध्रदा हिन्सः।। इति मानमान्यद्य सन्द्रः॥

বকাচী জ্রী বকচিঞ্চিকান**েস্য: ।** ইতিহারাবলী।।

वकातिः भू श्रीक्षः। यथा। उमा
वकातिः मृत्रालाकवानिनः ममाकित्रमन्दन मह्मकामिनिः। ममीफिरत ठानक मात्र मन्धरेत खबीकाऽ
रागाणानम्जा विमिन्नारतः॥ ইकि
श्रीनागवर्ज २० कस्त २२ व्यव्यापः
वक्षनः भूः सनामध्याजभूत्रवृक्षः।
छ८ भर्यप्रयः। किमन्नः २। ইज्यानः।
। क्ष्मानः २। ইकि छन्न छः।।
वक्षनः ६ मि-इर्किमनः ६ नन्नवनः

७ मी धूगकः १ मृक्षः ৮ मूखनः २। इंडि नदत्रदावनी ॥ जीम्थमशू २० (मारुन: >> नधूनुझ: >२ जूद-ভি:১৩ ভুমরানন্দঃ ১৪ ছিরন্সসূনঃ २० णात्रिकः १५ कत्रकः ११ मी-म छः १४ विमात्रमः १२ ग्रमू झ कः २० धनी २० महनः २२ महा মোদ: ২০ চিরপুল্প: ২৪। অস্যঞ गाः। भी उनद्गाक्तपुद्गाविवासाय-नामिष्। मधूबद्धा कवायद्धा महा-ए। इर्थनायकवृष्म ॥ उ**्ज**मू-मखनाः। कठावः । कीत्राष्टादः । সুরভিত্ব । শীতলত্ব । মধ্রত্ব । शिक्षत्रः । कवायष् । भवामः गुरु-কারকত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ অপিচ। বঙ্গলো নপুগন্ধক সি হ (कनत्रक खथा। यञ्चल खरात्रा शन् कः कर्तः भारक द्राम छकः॥ कक পিত্ত বিষ খিত্ৰ কৃমি দন্ত গদাপ-रः। ইতি ভাবপুকাশः॥ उट क्ल खनाः। वज्रनः मधुदः गाहि मरुरे इंगुक्द्र॰ भद्र॰ ॥ ७८ भूद्र-গুণা:। পদা ক্রাম নপুর শীত। निखक्कामृन्ट। उद्दर वद्य भुः শ্বাগ কত্নারোৎপল পাটল। ইতি व्राह्मवद्गाः॥ ॥ यान्।। शि र्था। विववतः उना ज्या मरमा

लभूगागूथः। आदार हि दानुत्ज ধ্বী সন্তাপযিতু মুশ্যতঃ বা ভঙ ত্তমগুতো দৃষ্টা কোধাখ্যাত দৃশা ষ্র:। মর মালোকযামাস শিশা-গাুচরণান্তিক ॥ আলোকিত জি-নেত্রেণ মদনো দুঃতিমানপি। পুা-দহত তদা বুগান্ পাদাদারভা ककावट ॥ भुम्श्याती व्यव मृद्धात्मा अनुमायुषः । उटमन्ड धनुः (मुष्ठः उद्धागामाथ नक्षा।। यनामी गुडियक डकग्र गृष्ठः सहाः পুভ । স চল্পকতক জাতঃ সুগ্গ-क्षारा खनाक्षिः ॥ नाइड्रान॰ সূভাকার• যদাসীদ্বজুভূবিত•। ড-জ্জাত কেলবারণ্য বঙ্গল নাম-তো নগৈ:।। যা চ কোটী শুভা ছা-मीरिन्युनीलविज्विता। जाजा मा পাটলা রম্যা ভৃষ্রাজিবিরাজি-তা।। নাহোপরি তথা মুষ্টো স্থান **इन्द्रमिन्ड । शक्छनाञ्चका**-তী শশাস্ক কিরণোজ্জ্বা॥ উদ্ব • মুষ্ট্যা অধ: কোট্যা: স্থান বিজন ভূবিত । তথা হত্পূ টা মলী সং-बांडा विविधा मूरन ॥ इंडि श्रीवा-মনপ্রাণে ৬ অধ্যাবঃ॥ कहूका। ইতি রাজ: वस्रमा जी निर्घणेः॥

বৰ্ণী জী কাকোলী। ইতি শদ ठिन्द्रिका ॥ वक्तः भू वज्रतर्कः। ইতি भद्र-রত্রাবলী ম হকেক্কা জী বলাকা।। বাভাব-ক্ষিতশাথা। ইতি মেদিনী।। বকোট: পুণ বকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ: 11 বক্ক ড পভৌ। ইতি কবিকল্পজনঃ॥ ড বক্লতে। ইতি দুর্গাদাসঃ।। ৰক্তব্যঃ ত্ৰি স্বংসভ:॥ স্থীন:।। বচমাৰ্হ:। ইতি মেদিনী ॥ বচনে ক্লী বক্তা । বি থো বজু কানাতি সঃ। ইতি ভরত:॥ ঔচিত্যাৎ বহু বিশিষ্ট বদতি। ইতি মুঙ্গট:।। उद्भर्गायः। वनः २ वनावनः १। इंड्रामद्रः ॥ दमान्यः ८ मधा ८। ইতি জটাধর:।। সূষ্টুবক্তা। ইতি **ख्रु ७: ।। वङ् बायी । इर्ट्युक् ।। ७८ १**र्य)। याहायु कि १र्दे २ বাণ্মী ৩ বাবদুক: ৪। ইত্যমর: ॥ বচন্ধ: ৫ সূবচা: ৬ পুবাক্প। ইতি क्रोवद्रः॥ निखिजः। ইতি मिनिनी ব্জু॰ ল্লী মুখং।ইতৃদ্যর:॥তগর-भूनः। ३७ि **मप**्याना॥ वज्राज्यः । ইভি মেদিনী।। ছন্দোবিশেষ:। हेि (ह्यहन्दुः ॥ उम्र लक्ष्मपारि

যথা। ভবতাৰ্দ্দন্য বক্তু বিবন্ধ কদাচন। তথাে ৰ্যা ৰুপান্তে 🚓 हनर खरधूरनाठार ।। राजुः युगुराः मार्गा महाजा महत्तार्यानुष्टृ जि शहा-ত॰ ॥ অত্র দ্বিরাবর্ত্ত্য ল্লোকঃ পূর-যিতব্য: ৷৷ বক্তাস্তো**জ**• সদা ম্বের• **एकुने (ला८ शवः** कुझः। वस्नवी-না মুদারাতে শেতো ভৃক্ জ श्रादारिहः ॥ ইতি ছल्लामञ्जदी ॥ পু॰ দন্ত:।ইতি ত্রিকাণ্ড-বক্তথ্র: শেষ: 11 বক্তুন্ন: পুণ ব্ৰাহ্মণ:। ইতি ত্ৰিকাণ্ড-শেব: ।। মৃথজাতে ত্রি ।। ব্জু হাল• क्षी মুখবাদ্য । ইভি কেচিৎ।। ত্রিকাণ্ডশেবে মূথবাদ্য বকনাল মিভিলিখিভ ।। वक्रुभिः भ्• वायामञ्जाबनभाव•। ভোবডা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ । उनिकार उनमात्रकः १। ইভি (इगहन्द्रः ॥ বকুভেদী পু ভিক্তরস:। ইতি হেমচন্দু:।। মুখভেদকে ত্রি।। নারক:। ইতি রাজ-বকুবাসঃ পু निर्घण्टः ॥ मूथगक्तम् ॥ বক্রশোধন প্লী ভব্যং।ইতি রাজ-निर्वणेः॥ मूथणुष्किकद्राकः॥ कषीतः । इंडि বজুশোধী পু

' জটাধর:॥ মুখশোধকে ত্রি॥ গ্রন্থানব: পূণ অধ্যমধু। ইভি ত্রিকাওশেষ:॥

বক্র ক্লী নদীবন্ধ:। তৎপর্য্যায:।
পুটভেদ: ২। ইত্যমর:।। বন্ধ: ৩।
ইতি ভরত:।।

भः भरिक्षः। इंडि शिरिनी ॥ मक्लग्रः । ইতি (रुमहन्तुः ॥ কৃদ্:।। ত্রিপুরাস্র:। ইতি ধরণি: ॥ পর্লট:। ইতি রাজনিঘট: ॥ বক্রগভিবিশিষ্টগুহ: ৷ স তু যস্য गृहमान्जर त्रवाधिष्ठज्ञामी-য ত্রি॰শাংশান্তর্গতাদ শাৎ পঞ্চম ষষ্ঠাণশে রবি ভিষ্ঠতি। যথ।। ব জা: স্য: পঞ্চ ষষ্ঠে হকে বৃতি বক্ৰা नगार्था । नवाम मन्याम जाती कायर अञ्का गिडिः ॥ दार्म কাদশে স্যের লভন্তে শীঘ্তা প্নঃ । র'বাহ্নত্য:শকন্তি:শাব্ধেঃ স•-খাত্র কম্পাতে।। ন তুরাশায়ন্তর-স্পূৰ্শাৎ দ্বিভীয়াদি নিৰূপণং ব্লান্থ किन् नरा वाको भीवागी हम् ভাক্তরী ৷৷ ইভিক্সোভিস্তভু: ৷৷ ৰক: ত্রি অন্জু:।বাঁকা ইতি ভাষা 1 **७८ श**र्यप्रायः । व्यज्ञानः २ वृ**द्धिनः** ৩ জিহা ও উর্মিশৎ ৫ স্বঞ্চিত্র ৬ ৰত প্ৰানিজ্ব ৮ **স**্তিল ১ ভ্ৰা ३० (व क्षिण ) )। हेज प्रमाः ॥ वेस्तु व १ हेज मद्म त्र द्वावनी ॥ स्व नजः १५ स्वानकः ११ जम्म तः १४ । हेजि कि । स्वानकः ११ जम्म तः १४ । हेजि कि । स्वानकः ११ स्वानः ११ स्वानः

ৰক্ৰকটা: প্ বদরবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘণী:।। স্টিলকটক ছা। ৰক্ৰকটক: পু• থদিরবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘণী:।।

বক্রথন্ন: পূ॰ করবাল:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

বক্রপূবি: পুণ উষ্ট্রঃ। ইতি ত্রিকা**ও**-শেষ: গ

बक्छक्यः भू॰ मृक्शकी। ইতি **मद-**ब्रह्मदिनी॥

বক্রতাল° ক্লী বাদ্যবিশেষ:। ডৎ-পর্য্যায:। মূখবাদ্য• ২। বক্রনাল মিতি বা পাঠ:। ইতি ত্রিকাও- (শবি: II

बक्जानी जी मूचसम्र । हेिंड मद्युवायनी ॥

ষ্ক্র ভুঞঃ পু: শুক্পকী। ইতি শব্রহাবলী।।

वकत थ्रे: शृ॰ णृहद्यः । े ००० हिए।। वकनकः शृ॰ शिणुनः अक्रणकी। इंडिसिनि॥

ষকনল॰ ক্লী মূখবাদ্য । ইতি মুদুাক্ষিত ত্রিকাণ্ডশেবঃ।।

বক্কনাসিক: পু॰ পেচক:।ইতি ত্রি কাণ্ডশেষ:॥স্টিলনাসাযুক্তেত্রি॥

বক্রপৃদ্ধ: পু॰ জ্ঞী স্বরুর:। ইতি ত্রিকাগুশেষ: ॥ সংলামন্টিল লাসূল্ঞ:॥

ব্রুপুষ্ণ: পুশ্বকবৃক্ষ: । ইতি শদ্ রুত্রাবলী ।। পলাশবৃক্ষ: । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

बक्रवानिधः शुः अक्रुतः। ইতি (स्महन्मुः॥ अप्टिनशृहणः॥

ধ্রকভণিত প্লী স্টিলবাক্য । তৎ পর্য্যায়: । ছেকোক্তি: ২। ইতি ব্রিকাণ্ডশেষ: ॥

बक्ताः शृ॰ शनायनः। ইতি শদ-त्रञ्जावनी ॥

बक्रवाञ्चः भुः अङ्गदः। ইতি जाजनिर्धः॥ अधिनभूहि ही॥

वकवळुः शुः म्कदः। ইতি निष-तक्षावनी॥ श्रितेनम् थिविनाः हे जि॥ वक्रमन्। जी श्रुहिनी क्ष्यः। ইতি वक्रमन्।

বজাগু: ক্লী কবাটবজবৃষ্ণ:। ইতি রয়নালা।। স্টিলাগুভাগণ্ড।। বজান্ধ: পু: হ:স:। ইতি হেন্-

চন্দুং ।। স্পটিলাবয়বে ক্লী ।। ক্রিং ত্রি মিথ্যবাদী। বক্তধাতো

ৰক্ৰি: ত্ৰি মিখ্যাবাদী। বক্ষাতো:
ক্ৰিন্পুত্যযেন নিয়ন: ॥

বজী পা বৃদ্ধঃ। ইতি শব্দরত্থাবলী । বৃক্তবিশিষ্টে জি । যথা।
লগেশো যদি বজী স্যাৎ পু॰সঃ
কার্য্যেষ্ বক্ততা। লগ্নেশে ২ন্ত গতে মর্ত্যে দুঃখাদি ব্যাধিসংযুতঃ।
ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বঃ।

विकाकिः स्ती काकृकिः। यथा।

कानस्मृकन्न उक्षृत्र तुम्मश्राणः।

च्चथ वृद्ध तृर्वाष्ट्र नहिं मृक्षि उद्ध निर्वात।।

क्व किक्ष्ट्र नर्वाष्ट्र नृष्टे कि निर्वात।।

क्व किक्ष्ट्र नर्वाष्ट्र निर्वात।।

क्व किक्ष्ट्र नर्वाष्ट्र निर्वात।।

क्व किक्ष्ट्र नर्वाष्ट्र निर्वात।।

क्व किक्ष्ट्र नर्वाष्ट्र निर्वात।।

क्व किक्ष्ट्र निर्वा न नर्वाष्ट्र निर्वाकुः

व्या क्रमः। न वाञ्चः न ह उद्कीतः

भाउवाः क्व निर्वा विकाकिः।

क्वि किः। इकि मृक्षि उद्धः।। सः।। सः

किकाः। इकि मृक्षि उद्धः।। सः।। सः

किकाः। यथा। वानी वाक्षवाः।

विहेन्नव विमुवा॰ शृष्टेः श्रविष्टेः नजा॰ बन्नमन्त्रभिः स्थार भर्षे वर्षे ज् छ-🕶 বকোক্তিভি:। হ্রীত: সমূপহাস মেতি গণকো গোলানভিক্ত তথা জ্যোতির্বিৎ সদসি পুগল্প গণকঃ পুশুপুপঞ্চোক্তিভি:॥ইতি সি**দা**-ङ्गिद्धाभागे (गानाध्यायः ॥ বক্রোধিকা জী অদৃষ্টরদহাস্য ৷ देवकाम्य । उट्भर्यत्रायः । स्थिउः ২। ইতি হেমচন্দু:।। वर्थ इ मृशि। इंठि कविकन्नक्रमः॥ ই ব্য়ুতে। সৃপি গভৌ। ইভি **मूर्गामा**गः॥ বখ স্পি । ইতি কবিকল্পদ্ম: ॥ ৰথতি। সৃপি গতৌ। ইতি দুৰ্গ।-मानः॥ ব্য ই থঞ্জে। ইতি কবিকল্পদ্মঃ।৷ ই বঙ্গতে। ইতি দুর্গাদাস:॥ **বগাহ: পু· অ**বগাহ:।ইতি মুগ্ধ-বোৰব্যাকরণ ভরত ।। বগু: পু• বকা। ইতি সি**দ্ধা**ন্ত-कोमुम्तामुनामिवृज्धिः ॥ वावम्कः । इंजिन-किश्वनात्राना निवृत्तिः ॥ ব্ব ই ড গতি নিন্দার ফ্রজবেষু। ইতি কবিকল্পছম:॥ই বংঘ্যতে ড বংঘতে । জনে এব কৈশ্চিৎ পঠ্যতে

। इंडि मुर्गाहासः॥

वदः भू नरीवकः। इज्यावतीकाः ষা• ভরত: អ वका जी वन्नाग्जागः। उर्भग्रा-यः। भन्। यन २। इति जिकाश्व-(শ্ব: 11 বঙ্কিলঃ পু॰ কণ্টকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-(শ্ব: !! वक्तरः वि वक्तायथा। क्क्षरः कार्रः । ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণ ।। **विद्ध** क्री **भार्याष्ट्र।उ**र्भर्ग्रायःः। गणूक २। इंडि एमहन्मु: II **विद्धः भू°ङ्गी वाम्**ऽर⊜मः। ইভुऽ-गानिकायः॥ गृहसाक ॥ भार्या-ছি। ইতি সিদ্ধান্তকৌমূদ্যামূণা-**मि**बृज्धिः ॥ বঙ্গ ক্লী ধাত্বিশেষ:। রাণ ইভি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। ত্রপু: ২ রুর্ফ क : ) नाग जी वन : । मृद्यक : १ त्र व्ह : ৬ গুৰুপত্ৰ• ৭ পিচুট• ৮ চক্ৰ**স**•**জ্ৰ•** ৯ ভমর ১০ নাগল ১১ কন্তীর **३२ व्यानीनक ३३ मि:हल ३८ ।** ইতি হেনচন্দু:॥ স্ববেতণ ১৫ নাগণ ১৬ ত্রপু ১৭। ইতি শব্দরন্থাবলী।! ष्यम् ७११:। ७ ङ ३ । भधुत्र ५ । ভেদিন্ত্ব। পাণ্ডব্ব। ক্রমি বাত नानिद्धः। (नथनद्धः। किक्षिः)

পিত্রকারিবৃঞ্। ইতি রাজবল্পভা

ा। जनामूल्लाक मुहैवाणा क সীসক।। দেশবিশেষে পুণ ভূরি। हैं इंदि सिहिनी ॥ म जू शुक्रीसमा-स्वर्गङ्गाविष्णयः । यथा । ज्यक् वका मम्ख्रका অন্তর্গিরি বহির্গি রা:। ইত্যুপকন্যা শাল্পা মাণধ (गानमी: गुाह्याः बन्शमा: म्खाः 11ইত্যন্ত মহাপুরাণ বচন II মা · **ভारतः यथा। जा**द्मिर्गः सङ्ग रङ्गा পবঙ্গ ভ্রিপর কোষলাঃ। কলিছৌ-छाञ्च कि इञ्चा विषर्ভ नवताषयः। ্**ইতি** জ্যোতিস্তত্ত্বস্থ **কৃষ্**চক্ৰবচন• ॥ उन्। मीमा यथा। ब्रङ्गाकद्रः मः মারভ্য বৃক্ষপুগ্রান্তগ॰ শিবে। বহৃ-দেশো ম্যা প্রোক্তঃ সর্বসিদ্ধি পু-🕶 দৰ্শক:॥ ইতি শক্তিসঙ্গমতজ্ঞে ৭ भद्रेवः ॥ बद्भः भू॰ हम्पुवःभीयवित्राज्ञभूधः।

बक्षः भू विम्पूरं भाषयान प्रावस्था । यथा। विनः मृजभागा काळा व्यक्ष विक्ष किन्द्रकाः । मृक्ष भोजा क वालया व्यनभान ख्याक्ष जः। ইতি गारूए ५८८ व्यक्षायः ॥ ॥ वा-र्खाद्यः ॥ कार्भामः। ইতিমেদিনী॥ वक्ष कः क्षी निम्पूरः । ইতি प्रवन्त्रः भाना॥ वक्षम् ब्याद्या वि॥ वक्ष मः भू वार्खाकः। विश्व है जि

विष्णुतक क्षी का गा । इंडि एम्

বঙ্গনের: > পৃণ বকবৃক্ষ: । যথা। বিশ্বনেক: > বহুদেন ভুগভিজ: শুক্রনাশো মূনিজম: । অনলি: জনলীভি ত্রিকাণ্ডশেব: ।। অপিচ । রাজ্তপ্রো মূনিতক রগতি রাজ্যলা ।। অস্য
পুল্ল ভণা: । বাসকস্য চ পুলাণি
বজ্সেনস্য হৈব হি । করুপাকা
নি ভিক্তানি কাসক্ষ্যকরাণি চা
ইতি রাজ্বল্লভ: ।।

वश्रम खी जामिनीविष्णवः। है जि श्वायुषः॥ वश्रामी छि ह नामा छत्रः वश्रामः शुः छित्रवत्राणमा लुद्यः । यथा। वश्रामः शुः भारतः यक्षा मधुः त्वा श्वंक छथा। प्रमार्था माद्यः मिक्र छित्रवश्रद्याः शुकी छिछाः॥ खन्ना थानः। कश्रामिति मिछकत्रः खन्त छश्रानः। कश्रामिति मिछकत्रः खन्त छश्रमी छात्र धिश्वम् मित्रनः खन्त छश्रमी छात्र धिश्वम् दिनः खन्त छश्रमी क्षाप्रकृत्वा नि-विष्ठवष्ठ छञ्जनार्क्वर्तः॥ वाष्ट्रवः प्रविवद्याला शृश्राम नाम मधुः भः। शृश्रवं विनित्याक्रवाः (शास्त्रवः) श्यः मूनिना स्वरः॥ है छि नश्री छ-त्रश्रकः॥

ম্বিতাল । ইছি (হ্মচন্দু: ॥ बकाकी जी रेख्द्रवद्वागम् द्वारिगी। মথা। তৈরবী কৌশিকী চৈব ভাষা -रवनावबी उथा। वकानी किंउ-রামিণ্ডো ভৈর্ব**স্**রেব**লভা:।। ইতি मঙ্গীভদানোদর:।। অস**্য म्बिः। मरनाकानुकास्गक्षिणासी णूकः नथाना श्रद्धशिद्धश्चा । भाष्यः अगात्री कमनीयमुर्खि वंद्राणिकयः শুচি সাফ্যীতা ॥ ইতি সঙ্গীত রত্রাকর: ॥ বঙ্গালী ঔডবা জ্ঞেষা , शृहाः भन्धाम यएक छ। क्। य व हीनाऽ विख्छिगा नृह्ना भुषमा मजा ॥ इंडि मङ्गी उन्मंगः ॥ रहूनः भुः डेकमिकः। कॅर्की हेि ভাষা⊹ইত্যনর: ॥ ন্ত্রী গঙ্গাসোতোবিশেষ:। यथा। ভদ্যা: শ্রেতিদি দীতা চ वष्टकः ज्या र कीर्जिंग । इंडि भद्राना॥ माह्कजुनानवर्शः गङ्गा यथा। এवः मान्यविद्यताः ি**মিস্কৃতন্তী তত**্তিপর তবেগা কেত मानबि वस्कः भुजीहाः विभा সরিৎপতি পুরিশতি। ইতি 🗐 **खागवाउ ६** काक ३१ व्यक्तायः ॥ व्ह 'डे वाहि॥ मल्ल्ला इंडि

कविक्युक्तारः ॥ 'के वका । व्यवे (नम् हेर अहम। न वहार भियः का। े इक्रि रकाव्यः। देखि मूर्गामानः।। क आसामा । इंडि कविनद्य-क्यः॥ जल्ला वस्त्रविष्णवः। ক বাচযভ্যথিলা লিপি মিডি रजायुक्ता है जि मुर्गामानाः ॥ म 🕓 याहि। इंजि.कविकन्न-क्यः॥ व विक 🗟 वक्या। अम्बार-ভিবিভক্তি ন পুযোজ্যা। **ইত্যাল**-ক্ষারিকা:। ইতি দর্গাদাস:॥ বচঃ পু॰ কীব্নপক্ষী। ইতি মেদিনী।। বচঃ দ্লী ৰাক্যং।ইভ্যমর:॥ বচকু: পু॰ ব্ৰহ্মণঃ। ইতি নেবিনী।। वहनः जि वावन्कः। ইভিমেদিনী॥ **मा**त्रिका ॥ वर्जिः ॥ • শঙ্কভেদ:। ইতি শব্দরন্নাবলীয়া মেদিন্যাণ বচতা ইক্তি বরতা ইক্তি ह भार्टः ॥ বচন ক্লী শুগ্ঠী।ইতি শব্দচন্দিকা ॥ वाकुः । उद्भर्यप्रायः । ইद्रा সরস্বতী বান্ধী ভাষা বাণী চ मात्रमा । मित्रा भी का शिद्धाः एस्यी গার্ডেবী ভারতীশ্বরী ॥ বাশাচাঃ বচসাধীশা বাণেবী বর্ণনাভূকা। বচন- ভাষিত গোক্তি ব্যাহারো-विशिक्त बन्धा। वार्युती बन्धना

ातिक भर्यामः भविकिति । क्या ্ছাৰ বৰা বোগ্য ভেৰ উহে। भभीविक्तिः ॥ इकि नमप्रदात्नी া। 🛊।। তৰু বৈধিশ। যথা। বশিষ্ঠ ় উবাচ। বচন ত্রিবিধ শৈল লৌ किक्टेविहरक उथा। गर्ब जाना कि পাজভো নিমলজান চফুৰা॥ অসত্য মহিত পকাৎ সাস্ত भुक्ति मुनरद्रः । मुन्धिः भव् र्वपि निह (उदा॰ कराइन ॥ वालरः পু)তিজনক পরিণান সুথাবছ । দ্যালু র্বর্ণীনক বোধ্যভ্যেব যান্ধবং । শুভিনাতাৎ সুধাতৃল্যু সরকালে সূথাবছ। সভ্যা সারণ হিতকর কচসা শ্রেষ্ঠ মীপ্সত।। बद॰ म जिदिष॰ लिल नीजिमात्र নিক্পিত। কথ্যতা ভিষ্মধ্যে কিং বদানি বাক্য নীপ্লত• ॥ ই**ভি** বুদ্ধবৈবৰ্তে প্ৰীকৃক্ছমখণ্ডে ৪১ ष्यशायः॥ 🗫॥ विভক্তिः। ना जू मार्गि खारिक। यथाः कि दा কৈক কচন ক্ৰমাৎ ক্ৰম্ম স্বা**জ্ঞা** महार । इंडि मुखरवाधवहाकत्रण ॥ क्रनगुष्टी जि वहरनष्ट्रि उ:। इन्छु-अब्रेडिकायाः त्रमाना**यः** ॥ হচনীয়ঃ ত্রি কথনীয়: ৷ ইতি বচ-शहनः कपश वनीय नुजायन

नियम । ৰচনীয়তা जी लाकानकारः। यथा। जनभूता है: (कोनीन विगान বচনীৰভা। ইভিংহগচন্দু:।। বচনেছিত: জি বচনে ডিট্টি र:। .ব**্নছ**া তৎপৰ্য্যায়**া বিধে**য় ২ विनयगुर्श ७ वान्यः ४ । इंड्रेड मजः ॥ वणाः वः भूतियः ७॥ इंडि কেচিদিতি ভরত:।। ব্চনোপক্তা: ्रण् वाकात्रसः । ইতি ভন্নত শব্দরক্ষাবল্যা তিৎ-भर्यत्रायः । উপन्तामः ५ वाह्ययः २ । ইভ্যমর: ॥ वक्षाः॥ मठैः। इंडि श्विमिनी।। वहन्ः पूर् भङ्गायथा। पूर्वि मखः ক্ষুপণ্যুশ্চ বচলু র্জগলু স্তথা। ভর-गुज्य नत्रपुरः मजानियाः सृति द्वि-छानि। इंडि नक्याला॥ क्रमाःगिजिः भू वृरुम्यितः। यथा । बीरवा शक्ताः मूत्र एक बंहमाः. পতীছ্যো। ইতি দীপিকা॥ বচক্ষরঃ ত্রি বচনেস্থিত:। ইতি কেচিৎ 11 वहा जी श्वेषद्वाणवः। वह इंडि

ভাষা। उद्भवतायः । উनुगक्षा २

बज्गुष्टा अशास्त्राभी ६ मञ गर्बिः

কা ৫। ইত্যমর: ।। তীম্ম ৬ ছটিলা १ मक्ना ৮ विजया २ छेगा २० व्रक्षात्री ১)। ইতি বর্মালা ॥ বচ্যা ১২ লোমশা ১৩। ইতি জটা थदः ॥ जुन् ३८। जन्म खनाः। অভিতীক্ষ্ণ। কটুত্ব । উঞ্জু । কফামশুন্থি শোফ বাত জ্বাতি-সার সাদ ভূত নালিব । বান্তি कात्रिवृक्ष। ইতি রাজনির্ঘণী: ॥॥॥ অপিচ। বচোগুগন্ধা ষডগুছা গো-লোমী শতপরিকা। ক্ষুদুপত্রী চ भक्ता बिंदिनाशा ह त्वामना ॥ বচোগুগন্ধা কটুকা তিক্তোঞ্চাবান্তি विक्रिक्ट । विवन्नाध्यान भ्वदी শক্রুত বিশেংধিনী ৷৷ অপমার ুকফোরাদ ভূত জন্তুনিলান হরেৎ । অथ थ्रामानी वहा। भारमीकः বচা শুদ্রা পোকা হৈমব গীতি সা। रेश्यवज्यमिजा जब मृतः रुडि ্বিশেষ ডঃ।। অথ মহাভরীবচা। যুস্য লোকে **স্লীজন** ইতি না**না**-ন্তর । সুগদ্ধাপুগুগুদদা চ বিশে-बाट कक कामनूट। मुम्रद्रस्क्ती ক্ত্যা হ্ৰৎ কণ্ঠ মুখাশোধিনী॥ অ भवा जुगक्का ख्नगुंख रंग्रा (नारक ূনহাভরা ইতি নাম। ভ্লাসুছি: লুগ্রান্যা ততো ধীন গুণা ঘূতা॥ অথ চোপচীনীতি লোকে পুনিজা । তস্যা গুণা:। দ্বীপান্তর বচা কথী তিকোঞা বহিদীপ্তিক্ৎ। বিবন্ধা ধ্যান শ্লগ্নী শক্রুত বিশোধিনী ॥ বাত ব্যাধীনপমার মূমাদ ত-नूरवननाः। वहरभाइंडि विस्मर्दंग ফিব্লখাম্য নাশিনী ৷৷ ইতি ভাব· **প্**कामः॥ #॥ व्यथत्रकः। वहायुर्वः। বাত কফ তৃকান্নী মৃতিবন্ধিনী। हे**ि त्राह्मयञ्ज्ञ छः ॥ कः ॥ व्यन्**रह् । অন্ডি র্বা প্রয়সাজ্যেন মাস মেকস্ত সেবিভা। বচা স্বর্গান্তর• প্রাক্ত **णु** जिथात्रग अभ्युक्त ॥ ठम्मु भूर्याः गुरह भोउ॰ भवस्यकः भरगानि उ॰ । वहाया खटकन कर्गामहानु-জ্ঞান্বি হণ নরণ।। ইতি গাৰুডে:৯৮ व्यवग्रयः ॥

বচোগুহ: পু• কর্ণ:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

বন্ধ । গভৌ । ইতি কবিনল্লজন: ॥ বন্ধতি । ইতি দুর্গাদাস: ॥

বন্ধ ক সংস্কৃতী ।। গতৌ । ইতি
কবিকল্পজন: ।। অয়ং মার্গণসংস্থারে ইতি পুঞ্জ: । মার্গণস্য শরস্ত্র
পক্ষানিনা সংস্কারো মার্গণসংস্থার: । ক বাজ্যতি পক্ষৈ বাণেং
কাপ্তকার: । ইতি র্যানাথ: ।

`মার্গণ স'ক্ষারয়ে। রিতি কশিৎ। ইতি দুর্গাদাস:।।

बकुः भुः क्री इन्युम्।जविश्मयः। बाक् इंडि जावा। उर्भियायः। क्यारिनी २ इन्जिम १ ७ जिनूतं 8 পবি:৫শতকোটি: ৬ ৰক্: ৭ শম্ব: ৮ म्ह्यानिः ৯ यमनिः २०। ३७५ बद्रः ॥ जलीनः >> जिपितः >२ जिर्: >> बङ्ग् >8 नम्रः >৫ मःवः ३७ जननी ३१ वज्रानिः ३৮। ইতি ভট্টাকা।। মন্তারিঃ ১৯ ক্রি-म्मायुष् २० मञ्चाद्ग २) मञाद्रः २२ व्यात्भाजः २० व्यक्षकः २८ । ইতি পুক্ষোত্তন:।। গিরিকণ্টক: ২৫ গৌ: ২৬ **অভো**ল্থ - ২<del>৭</del> নেবভূ জি:২৮ গিরিজ্ব: ২৯।ইতি **শ**দ রত্নাবলী।। **জাম্ববি: ၁**० म् सः ১১। ইতি ক্লটাধর: ॥ ভিবু: ৩২ অধুক্ ၁၁। ইতি ত্রিকাওশেষ:।। 🕸।। अ স্যোৎপত্তি যঁথা। তথেত্যুক্তঃ স त्रविशा छ्यो कृष्ट्या मिवाकत्र । **পृथ** ক্চকার তত্তেজ শ্চক্রণ বিষ্ণো রক-न्नार ॥ जिस्वकारि कपुत्र। वजु भिज्जुन। ठाषिक । रेम्छ। मानव স হ র : সহস্কিরণাতাক ।। ৰূপ ঞ্চ পুভিনঞ্জে দ্বস্থা পাদাদৃতে ম হ্থান শশাকাথ তদুষ্ঠু পাদৰূপণ

রবে: পুন:।। অর্চায় পি ততঃ পাে न किन्दि काइरयर कुहिर। र: कः রোভি স পাপিষ্ঠা গতিমাপ্নেডি নিন্দিতা ।। অস্তরোগ নবাপ্নোতি लाकिमिन् मूःच मःयुक्तः। उमान थयं कामाथीं हित्बद्वाय उत्नवु ह ॥ न कृष्टिर कांब्रायर भारते स्वरम्वम् ষীমতঃ। ইতিমাৎস্যে ১১ অধ্যাযঃ ॥ 🕬। व्यशिष्ठ। शुविष्यः कठेवः मृत्या रेषका माजः भूतम्बः। पप्रामीख् मूच वाण किंगाङ कद्र महर ॥ **उत्पादाः १व मम्**न (भणीः भाभमा वाजाः। मुक्त ग्रुटिक मन् कामाः कत्राजाः बग्रह्य जाः ॥ ততঃ কোপ সমাধ্যাতো মাণসপে-भी भाजक बुः। कहा छ। सर्वेशासाम ७७: मा कठिना जबर ॥ छएकु ना-प्रक्रि वक्रम प्रामा १ वर्षः वक्रम उर्गा শতপর্বাচ **ক্লিশ: স**ংজাতো মাণ-সপেশিত: ॥ ইতি বামনে ৬৮ অ-थ। यः ॥ 🗫 ॥ वृजाज्ययभार्थः प्रधी-विज्ञा इन्त्राञ्चया विश्वकर्मना নিনিত্বজুস্য পুমাণ যথা। এবং क्ठकाविष्ठा मध्युष्टाथस्य खनुः। পরে ভগবতি বুন্ধণ্যাত্মান সময়ন্ करहो॥ यञाकाम् सत्म वृद्धि छख मृक् धुखबद्धनः । आहिकः भन्ननः

যোগ ন দেহ বুবধে গত।। অথে-। (नन्। वज्रुप्रपुत्र निर्मि उ विश्वकर्षण। মুনে: সন্ধিভি কৎ সিক্তো ভগবত্তে क्रमान्विः॥ वृत्त्वा (स्वगरेनः नरेव ৰ্গছেন্দু। পৰ্য্যশাভত । সুষমানোম্-निगरेन द्वित्वाका इर्ययमिव ॥ इंडि শ্রিভাগবতে ৬ ক্ষন্ধে ১০ অধ্যাব: ॥ 🗱। जिल्लां विवादक विश्व यंथा। পु-চণ্ডপবনাঘাতে মেঘেষু স্তনিভেষুখঃ। **बि:** नर्छो कि भिनी या भिना ब्रास्था वा-প্যুদ্মুখঃ ॥ তস্য মাভ্ড্যুণ ঘোরণ विमूर्रे शिवा १वमीमि । ३ हेर्नाङ्गः **কত**ভুধ্ ত বুহ্মপুরাণ ।। মুনেঃ কল্প-ণ মিত্রস্য জৈমিনে শ্চাপি কীর্ত্তনাৎ । বিদ্যুদ্রি ভ্যুণ নান্তি পঠিতে চ পৃছোদরে।। লিখিতে চ গৃহোদরে। है 🧸 १ भाठे: ॥ देविभिनिष्ठ सुमुख्य रिवमम्पायन अव ह। भूलखुः भूल-স্কেব পঞ্চৈত বজুবারকা:॥ ইতি **णुत्रापः॥क्राक्षा त्रज्ञविष्णयः। श्री**ता कें डि डि विश उर्भाग्रामः। इन्मायूषः २ शेवः ७ ভिरुवः ८ ऋलिणः ৫পবिः ७ या जरा १ या नितः ৮ तत्रः ৯ मृष्टः **>० जा**र्भवकः >> विह्यकानः >२ वस्ट. ধার: ১৩ শতকোটি: ১৪। অস্ভণা: । যড়ুসোপেতত্ব । সর্বরোগাপহা-ञ्चकज्ञः। गर्वायम्यनज्ञः। (मोथ्रज्ञः।

। (महमार्ग)कत्रपुरः । त्रजायनपुर्णः ॥ **७** द्विरणाया विषा । बहु विषु ८-भुक्त निका भीमार्याः वध् वर्गनः। यजात डीक्स्यातक मुनामग्रातः नि-यः भिरम् ।। 🗱 ।। ७ म । छ न । छ न का যথা। ভষাত কাকগাদঞ্চ রেখা-कारु वर्न । आधारमिन॰ विन्तू मः बारम सु हिंड ख्या ॥ नी-লাভ চিপিট কক তৰ্জু দোব-ण॰ छ।राक्षर ।। 🕸 ।। वजुम। ठजुर्दैर्ग লক্ষণ যথা। খেত লোহিত পীত মেচকত্যা ছায়া শ্চত্সু: ক্রমাদ্ধি প্রাদিত্ব নিহাস্য যৎসুমনস: শংস-স্তি সভ্যুণ ভতঃ। স্থীতাণ কীর্ন্তি মনু-ख्याः भि्रा निष्क माख यथा मःश्-ত মর্ত্যানা নযথায়প তু কলিশ পথ্য হিত জাত্যত: ॥ 🕸 ॥ তম্য भद्रीका यथा। यट भाषागउल নিকাশ নিকরে নোদ্যুব্যতে নিষ্ঠুরে 🖰 যচান্যোপল লোহমদ্র মুথৈ লেখা ज्ञया छ। इन । । यहान । निज्ञनी न-থৈব দল্যেদ্বজ্বেণ বা ভিদ্যতে ভজ্জা-ড্য হলেশ বদন্তি হশলাঃ শ্লাষ্য महार्घक उर 1 # 11 उम्र वर्गछ-लो यथा। विनुः (मानि द्रमायतिषु वनवानश्रेष्ट्रमिष्क्युपा द्राजन्ज নৃণা॰ বলী পলিভজিমৃত্যু জাবেদ-

क्षिमा। मुद्याकवन निविषस मुख्दा॰ रेवरमा १२ मृद्धा खराद महेवारि रत्र उत्पर कथिए । वज्रुनः वर्णा छ्यः ॥ इंडि द्राव्यनिघंगैः ॥ # ॥ অপিচ। অথ বজুস্য নান লক্ষণ ভণা:। হীরক: পৃ•সি বজো হন্ত্রী চল্দ্রে মণিবরশ্চ সং। স ত শ্বেতঃ মৃতো বিপো লোহিত: ফ্তিষো মত:।। পীতো বৈশ্যে হসিত: শৃদু **শ্চতুর্বর্ণাত্মকশ্চ সঃঃরসায়নে মতো** विशः नर्वनिष्वश्रमायकः॥ कवि বো ব্যাবিবিধুনী জরা মৃত্যুহর: भद्रः। विष्मा धनभूतः (भाक खया (मञ्मा मार्गक्ट ॥ म्रामा नामग्रि ব্যাধীন্ বযন্তম্ভ করোভি চ। পু॰ ন্ত্ৰী ৰপু•সকাশৈতে লক্ষণীয়ানি ল करिः ।। সবৃত্তাः ফল मः পूर्ण (खरजा 'যুক্তা বৃহত্তরা: । পুক্ষা তে সমা<sup>-</sup> খ্যাতা রেখা বিনদু বিবর্জিতা: ॥ **রে**-थाविन्यू मभागूकाः वष्टम्। एउ द्वियः মৃতা:। বডসুা: বট্কোণা:। ত্রিকো ণাক সুৰীৰ্ঘাক তে বিজেয়া নপুণস-কা: ।৷ তেপিসু:: পুৰুষা: শুেষ্ঠা রস বন্ধন কারিণ:।। স্তিয়: স্বস্থি কায়স্য कान्तिः जीवाः मधनुषाः॥ नन् भकाः खुवीर्याः मूर ब्रकानाः भववर्क्किङः । জ্রিয় জ্রীভ্য: পুদাতব্যা: क्লীব ক্লীবে भुर्याकर्य्या मर्खि । मर्बन । स्याः भुक्षा वीर्यप्रकाः। जामुकाः अतः-তে বজু সঙ্গ পার্শ্ব্যথাণ তথা।। পাপ্তা॰ পঞ্রবৃঞ্চ তমাৎ সংশো-ধ্যমারযেৎ ॥ 🗱 ॥ মারি ভন্যবজু-मा खनाः। आगुः भृष्टिः वलः वीर्याः বর্ণ সৌখ্য করে।তি চ। সেবিত সর্বরোগম্ব মৃত বজু ন সংশ্ব:।। इंडि ভारनुकानः ॥ 🛊 ॥ व्यन्तः । व्यव वजुगनना । विक्षुपर्याखरत । বজু মরকতক্ষিব পদারাগঞ্চ মৌ-किकः। इन्द्रनीलः महानीलः रेक्ट्-र्याः गन्नमः ब्हुकः ॥ हन्तुकान्तः सूर्याः কান্ত• স্থাটিক• বলক• তথা। কর্কে-ভর• পুম্মরাগ• তথা জ্যোভীরস•-দ্বিজ।। মাটিক° রাজবর্ভঞ্ তথা রাজমত শৃত। সৌগদ্ধিক তথা গঞ্জ শত্ন বুক্ষনয় তথা।। গোমেদ। ক্বিরাখ্যঞ্জ তথা ভল্লাভক ছিল। ধূলীমরকতঞ্চিব তুত্থক সীস মে-व ह।। भीन् भुवानकरिक्व गिति-বছুঞ্চ ভাৰ্গব । ভুজস্মামণিকৈব তথা বজুমণিঃ শৃভ: ।। ভিত্তিতঞ্চ তথা পীত্ত ভাুমরঞ্চ তথোৎপল। বজাণ্যেতানি সর্বাণি ধার্য্যাণ্যেব ম-शिज्ञा ॥ भूवर्ग नुजिवकानि क्या-রোগ্য সমৃত্বযে।। ইতি যুক্তিকল্প:

छकः ॥ 🗱 ॥ ज्या १ १ जिल्ला म्लामि यथा। विद्या भवीका॰ त्रञा-**नाः वरता नामानु**रहा २ ७ वट । हेन्तुाः म्। निर्द्धि । एउन निरद्धि जू रेज न **শ**ক্যতে।।ইত্যুপক্ষ্য । মহাপুভা-व॰ विदूरिश र्यमाष्ट्र मुनाश्च । वजु পূর্বা পরীক্ষেষ্ণ ততো হ্যাভি: পু-कीर्जुष्ड ॥ जम्माङ्गिलामा निशः পাত যেষু ভূব: পুদেশেষু কথ ঞ্চদেব 1 बब्रुशि वजायुष निर्क्षिगीत्य। र्जवस्त्रि নানাকৃতিনভি তেবু ॥ হৈন মাতক সৌরাষ্ট্রাঃপৌণ্ড কালিক কোদলাঃ। रद्भा उठा: मरमोबीद्रा वक्रमहाहावि-**হাকরা: ॥#॥ আভামু। হিনশৈল**-**জাক্ত শশিভা** বেগ্বাভটীয়া: মৃত্যা: **সৌবীরে তুবি তা**রু মেঘ সদৃশা স্তা সাক সৌরাধুকা:। কালিকা: কন-কাবদাতক চরাঃ পীতপ্ভাঃ কো-ৰলে শ্যামা: পুডুভবা নতক্ৰিষ-य नाज्रष्ठभीजभूखाः ॥ व्यज्रर्थः वयू वर्गडम्ड खनवर भार्त्ययु मम्रक् नम (त्रथा विन्त कनङ्क काकशरक ত্রাসাদিভি ইজিউ। লোকেমিন্ পরমাণু মাত্র মলি যথ বজু কুচি-**मृ**ग्राउ ७ घन् (एव मनाभूषा श्-বিভথ তি ক্লাগুধার যদি।। বংজ্য वर्षयुक्ता (स्वाना मिल शतिगुरुः পোক: ৷ বৰ্ণেভ্যক্ষ বিভাগ: কাৰ্যেগ বর্ণাশুযাদেব ॥ হরিত বিত পীত পিন্ধ শ্যামাতামা: সভাবতো ক-চিরা:। ভ্রি ব্রুণ শক্ত ভূতব্ছ পিভৃপতি মৰুতা ৰকাৰণা: 11 विश्वत्रा भर् अगूर सृष्टिकावमाजः স্যাৎ ক্ষত্রিয়স্য শশ বজ বিলোচ-नाजः । दिन्। मा कान्न करली हल निकानः: मृष्ना (क्षोठ कद्रवाण गमानमीखिः॥ हो वज् बली भृषि-বীপতীনা• সন্ডি: পুডিংগ্টোন ভুসা-र्वजानो। यः म्याब्द्धवा विक्रम उत्र শোণো যো বা হরিদারস সমিকা**শঃ** ।। ঈশত্বাৎ সহাবর্ণানা ভণবৎ সার্হ বর্ণি ह । কানতো ধারযে দাজা নত্ত त्नानार कथक्षन ॥ **अ**थद्वाखन तृ-ত্ত্যাহি যাদৃক্ স্যাদ্র্ণসঙ্কর:। ততঃ কষ্টভরো বজুী বর্ণানাং সম্করো মতঃ ৷৷ নচ নাৰ্গ বিভাগ মাত্ৰ বৃত্ত্য বি-দুষা বজুপরিগুহো বিধেয়: । ওপ বদ্ভণসম্পদাণ বিভূতি বিশরীতো ব্যসনোদ্যস্য হেতু: ॥ এক **মপি য**-স্য শৃঙ্গ বিদলিত মবলোক্যতে বি-শীণ বা। গুণবদ্পি ভন্নধার্য্য বজু শেয়েথিভি ভঁবনে ৷৷ সু, টিভাগ্নি বি-भीन मृज्यामा भवारीयः भृष्ठि क-পেত মধ্যং। নহি বজু ভূতোপি বজু

बाम मिन प्रमाणुन लाजना॰ न अ र्याएः ॥ यरेन्द्रकष्मः क्राउडान्छा-সো যদ্বা ভবেল্লোহিত বণ্টিত।। न उम्र क्रांशिष्यगान गाम् यह के गृ ভ্যো রপি **জীবিভান্ত**।।কোট্য: পা-র্ম্বানি ধারাশ্চ বড়প্টো দ্বাদশেতি চ। উड्क नमडीक्षाणा वड्डमहाक्रका खनाः ॥ यहेरकाढि मुक्क-ममनः सुदे-তীক্ষার বর্ণান্তি লঘু সূপার্থ ম-भिष्ठ (माय॰ । इन्द्रायवाःम् विসৃতি ছবি ভান্তরীক্ষ মেবম্বিশ্ব: ভূবি ভবেৎ সূলভ ন বজু ॥ তীক্ষাগু বিফল মপেত সর্বদোষণ ধত্তেয়: পুযতভন: गरिव वकुः। वृद्धि छः भुिकिन स्म তি यावनायः 🗐 मण्यटमु उपन्यानः গে। পশ্না।।। ব্যাল বহি বিৰ ব্যাঘু তক্ষরাস্ভ্যানি চ। দ্রান্তস্য নিব<sup>্</sup> ৰ্ব্তন্ত কৰ্মাণ্যাথৰ্বণানি চ 🛭 যদি বজু মপেত সৰদোৰ বিভ্যাত্তপুল বিং **ग**िं अक्त्या मिना द्विता यह ন্তি ভ্ৰম্য দ্বিগুণ ৰূপক লক্ষণ মৃশুঙ মূল্য ।। ব্ৰিভাগহীন।ৰ্ছ তদক্ষণেষ ক্রয়াদশং ক্রিপেন্ডোদ্ধ ভাগাঃ। অশীতি ভাগোথ শতা শভাগ: সহসূভাগোল্ল সনান যোগ: ॥ ফ তপ্তলৈ দ্বাদশভিঃ কৃতস্য বজুস্য म्बाः अथमः अपिष्ठः। हालाः कः মান্ধানি মুপাগতস্য ত্বেকাবসানস্য বিনিশ্চযো হয় ।। ন চাপি ভণ্ডলৈ রেব বজাণা ধারণ ক্রম: ৷ অষ্টাভিঃ भव रेन (गोर् देत छ छन । भद्रिक न (गर ।। यनु अर्ब छोन यू कि वजुः उ-রতি বারিণি। রত্নবর্গে সমস্তেপি ভস্য ধারণ নিষ্যতে ॥ অনেনাপি-हि (नारवंश विक्र) विद्यार मृथिउ॰ । ৰম্ল্যাৎ দশম• ভাগ• বজু• লভতি मानवः॥ भुक्षात्मक (मायम) बह्नम्। মহতো ৎপিবা । স্বম্ল্যাছতশো ভागा वजुमान विधीगांज। म्र्हे माय भवकात्र वजुः यहाति मृनाः তে। রত্নানা পরিকর্মার্থ মূল্য তস্য ভবেল্লযু ॥ পূথন গুণ সম্পদা ভুচপেত পুতিবল্ব সমূপৈতি ম দোবণ। অলমা ভরণেন তম্য রাজ্যো গুণছীৰোপি নণি ন ভ্ৰণায।। নাৰ্য্য বজু মধার্য্য গুণবদলি সুতপুসূতি মিছন্ত্য। অন্যত্র দীর্ঘচিপিট হুদ্বা-म्लरेश विस्का**इ।। अयमा भू**इ**द्वारग**-ণ তথা গোনেদকেন চ। বৈদ্য্য স্কৃতি-কাভ্যাঞ্চ কাচৈ শ্চাপি পৃথগ্ৰিং 🛚 । পুতিৰূপাণি স্বৰ্ধি বজুস্য স্পলা-জনা:। পরীক্ষা তেষু কর্ত্তব্য বিঘ फि: यभवीकरिक: ॥ कारवास्त्रथन नावाजि (उदाः कार्यः भद्रीक्राः।

भृषिवता यानि ब्रज्ञानि य চात्र लाइबाउवः॥ मर्वानि विनिथ-चनु उह रेड ने विविधाउ। धक-তা সর্বরত্নানা গৌরবাধারকারণ বজুতাল্বৈপরীত্যেন সূর্য: পরি-চক্ষতে।। জাতি রজাতি বিলিখ डि ব**ज् अ**कविन्ताः । वेर्जु वंजुः বিলিথতি নান্যেন লিখ্যতে বজু• া বজাণি মূক্তা স্বণযোগে চ কেচন জাতথঃ। ন তেষা॰ পুতিবদ্ধানা॰ ভা ভবত্যজ্ गामिनी ॥ ठिर्याक् क्रांच्या (क्यांक्रिंट क्यंक्रियित দৃশ্যতে। তিথ্যগালিখ্যমানানা স। পার্শ্বেল্থপি হন্যতে ।। যদ্যপি বিশার্ণ কোটি: সবিন্দুরেখান্বিতে৷ विवर्णा वा। जनिम धन धाना भू আন্ করোতি সেন্দ্রায়ুখো বজু:।। সৌদানিনী বিষ্কুরিতাভিরাম রা-ক্কা যথোক্ত॰ ক্লিশ॰ দ্ধানঃ। প-রাক্রাকান্ত পরপুতাপ: সমস্ত সামন্ত ভূব• ভুমক্তি ॥ ইতি গা**ৰ**় ডে ১৮ অধ্যাय:॥

ৰুজু ল্লী বাল দ: ॥ ধাত্ৰী। ইতি
মেদিনী ॥ কাঞ্জিক । ইতি ধরণি:

॥ বজুপুশ্ল । ইতি শদর লাবলী ॥
লোহবিশেষ: । স চ বহুবিধাে
ধুখা। নীল্পিণ্ড > অকুণাভ ২

মোরক ৩ নাগকেশর ৪ ভিঙ্কি त्रावर ७ वर्गवजुः ७ रेणवाणवजुः १ শোণবজ্ঞ ৮ রোহিণী ৯ কাকো-ল >> গুছিবজুক >> মদনাখ্য >२ ইত্যাদি। তেবা॰ नामानुबन চিহ্ল'। ইতি পুরাণ ।। অভুবিশে-यः। उरम्यार शन्तामि यथा। भू-রা বধায় বৃত্রস্য বিজ্ঞিণা যজু মুচ্ছ ত । বিন্ধ লিঙ্গা তত স্তস্য গগণে পরি সর্পিতাঃ ॥ তে নিপেতু ঘ্নধানা-ছিথরেষু মহীভূতা । তেভ্য এব সমুৎপন্ন তত্ত্ত্তিষ্ চাত্ত্ৰ গা তদ্বজু বজুলাতত্বাদত্ত মভু রবো-फ्रार । गगनार ज्ञीवंड गमार পগন্ঞ ততে৷ নত ৷৷ পিনাক দ-দ্রানাগণ বজ্ঞেতি চত্রবিধণ। ব-জুন্ত বজুবভিটেৎ তন্নাশ্ৰী বিকৃতি• বুজেৎ।। সর্বাদ্ধের্বরণ বজুণ ব্যাধি বাৰ্দ্ধ মৃত্যুহ্ৎ । ইতি ভাব-পুকাশ:॥

বজু: পু: কোকিলাক বৃক্ষ:॥ খেত লশ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ সেন্ত গুবৃক্ষ:। ইতি ভাবপুকাশ:॥ শুক্ষপুপৌল:। যথা। অনিক-জাৎ স্ভদাযা বজু। নাম নৃপো হুভবং। পুতিবান্থ বজুসূত কাক শুস্য সুতো হুভবং।।ইতি গাক্টে 788 व्यवग्रयः ॥ व्यक्ति । अपूर्व আসীৎ পুথম: পিতৃবজন্মিণীসূ-তঃ। স ক্লিণো দুহিতর মুপ্থেমে মহারথ: ৷৷ তস্যাণ ততো ৎনিক্-🖚। হভূষাগায়ত বলাব্বিত:। স চাপি কৃত্মিণ: পৌত্রী দৌছিত্রো জগৃহে ভত:।। বজ্ স্তস্যা মভূত্ৰস্ত <भोषणाप्तरामविजः ।. <u>भ</u>ुजिताङ् রভ্তমাৎ স্বাহু স্তস্য চাত্মক:॥ ইতি শ্রীভাগবতে >০ ক্ষন্ধে ১০ অধ্যাথ:।।#।। বিষ্কৃত্তাদি সগুবি•-শতি যোগান্তগত পঞ্চশযোগঃ। **छम्डाम्डनवम् छ।** वर्द्धनीया यदा । ভ্যজাদৌ পঞ্চ বিষ্কান্ত সপ্ত শ্লে চ নাডিকাঃ। গও ব্যাঘাভযোঃ বট্চ নৰ হয়ণ বজুযোঃ।। বৈধৃতি ব্যক্তি-भारते ह नमस्यो भद्रिवर्ड्स्य । শেষা যথার্থ নামানো যোগাঃ কা-র্য্যেষু শোভনা: ॥ ইতি জ্যোতি-ন্তবুং ॥ অত্ৰ জাত ফল যথা। ख्नी खन्छा वनवान् महोबाः সদ্র বস্তাদি পরীক্ষক: স্যাৎ । বজাভিধানে যদি চেৎ পুসূতো ৰ-खुाभगः मार्षियु कामिनीनाः ॥ ইভিকোষ্টাপুদীপ: ॥ ৰ্জুক• ল্লী ব্জুক্ষার°।ইতি রাজ-নিৰ্ঘণঃ ।। সহতোভদুহকাৰণত ∥

স্থ্যভোগ্য ৰক্ষত্ৰাৎ ব্ৰযোবিংশ
নক্ষত্ৰাত্মক উপগুহ: । যথা । সূৰ্য্যভাৎ পঞ্চন ধিষ্ট্য জ্বেষ বিদ্যুনুথাভিধ । শ্ন্যঞ্চ ইনগ প্ৰেক্ত ক্ষান । কেতুন ইাদশ প্ৰেক্ত মূল্বাস্যাদেক বিংশ তিঃ
। দ্বাবিংশ তিত্ম কম্প ক্ৰযোবিংশঞ্চ বজুক ।। নিৰ্যাতঞ্চ চত্ৰিংশ মূল্বা অষ্টাবৃপগুহা: ॥ ইতি জ্যোভিত্তত্ত্ব ।।

वशुकक्षिः भू इन्मान्। ই 🤡 (इम्मान्। दे

বজুকণ্টক: পু॰ সুহীবৃক্ষ:। ইঙি জটাধর:।। কোকিলাক্ষক্ষ:। ইঙি রাজনির্ঘট:।।

वज्रुकन्मरः शृ॰ वज्रुक्तः। मक्त्रकन्मरः व्यान् इंडि जाया। इंडि तज्ञ्ञाना वज्रुक्ताना शृ॰ वृष्क्षविष्मयः। उट्ट शर्यत्रायः। (इत्रयः २ (इक्कः २ हकः मध्यः ४ (मवः ६ निम्छोनः ५ मनिष्मथतः १ वज्रुहीकः ৮। इंडि (हमहन्मुः॥

बजुकानिका छी भाषाप्तवी। हेडि (इमहन्दुः॥

বজুকেত্: পু॰ নরকরাজ:। যথা। গতে বশিষ্ঠে নরক: শীঘু॰ বিমাধ সাযুক:।ইত্যুপক্রম্যাইভিযাসী: ন্মতি শুস্য বজুকেতো স্তদা চলা।
দূতক্ষ পুাহিণোৎ য স্ত বাণস্য ন গর• পুতি।। ইতি কালিকাপুরাণে ১৮ অধ্যায়:।।

বজুচর্যা<sup>ল</sup> পু॰ খন্ত্বী। গণ্ডক<sup>ং</sup>। ইতি রাজনিঘণ্টঃ।।

ৰজুজিৎ পু• গৰুড:। ইতি হেন-চন্দু:।।

বজুজ্বালা জী বজুাগ্নি:। ইতি হলা-যুধ:।।

বজুটীক: পু॰ বজুকপালীনানক:
বুদ্ধ:।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।।

বজুতৃগু: পু॰ গক্ড: ।। গণেশ: । ইতি ত্রিকাপ্তশেষ: ।। গৃধু: ।। নশ ক:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।।

बजुरष्डः भू भ्कदः॥ स्विकः। इजिभक्ताना॥

वजुरमनः भू म्बिकः। ইতি हिम-

বজুঞ: পু॰ সুহীর্ক:।ইভানর:॥

वज्रुक्तः े पूर्े मुशिवृक्तः । ইতি भक्तद्वावनी ॥

ষ্ডুপর: পু: ইন্দু:।ইতি হলামুধ: । জিনবিশেষ:। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ:।।

বজুনির্ভোষঃ পু• বজুজনিতশদঃ। ইতি হলাযুধঃ।।

वजुनिर्धायः । वृष्ट्रियायः • भू তৎপর্য্যার:। মূর্জগু: ২। ইত্যমরঃ ।। ছে বজুজনিতশদে । অনেগ্রি সংঘটনাৎ ভগ্ন• সাগ্নি মেঘথণ্ড• বজুমিৰ বজু তৃষ্য সাটোপধুনৌ দ্বয় মিতি কেচিৎ।। ইোসু জ্জী বজু: নিল্লেবে।নিল্লেবঃ সংঘউপ্বনিঃ।ञ্ব-শন্যাখাত ইত্যেকে৷ নিয়েষ শ্ৰুণনি সাটোপধুনিক্ট ইহতু ধুনি রভিপ্রে-**তঃ। শু**হ্ৰা বিষ্ক জঁথু পূখ্য নিনাদ• পরিদেবিনীতি ভঙ্টি:। দ্বিতো হথু রিতি অথু: নিপাতনাৎ দীর্ঘ: । ন্ধুজেরপু ব্লিতি দীঘার্থণ পরস্ত্রণ। किठिकु मीर्च (नहिंख। किठिबि छ।-वया भीर्य भिष्ट्रि । वज्रुमा निह्नाया वज्ञिनः अिलिय 🕽 ह्र्गति य 🕮। निङ्गारमा विम्बन्धः। ইতি ভরতः॥ বজুপাণি: পু•্ইন্দু:। ইভি ভ্রিকাও-

শেষ:।। ব্জুপুয়• ক্লী ভিলপুয়•। ইত্যমর:॥ ব্জুপুয়া জী শতপুয়া। ইভিরাজ-

वजुम्ली की मार्यभगी । ইভি রাজ-

निर्घण्डः ॥

বজুরথ: পু॰ ক্ষ ভিয:। ইতি পুরাণণ।। বজুরদ: পু॰ শ্কর:। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ:।। বজু চুল্যদ্রশ্চ।। ৰজুবল্লী ফ্ৰী অছিসংহারলভা। ইভি হারাবলী॥

ৰজুবারাছী স্ত্রী মাবাদেবী। তৎ-পর্য্যায়:। মারীচী ২ ত্রিমূখা ৩ বজুকালিকা ৪ বিকটা ৫ গৌরী ৬ শোত্রিরথা ৭। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

रज़्वीककः श्रुः वाजाकत्रक्षः। ই जि त्राक्षनिवंग्रेः॥

ৰজুবৃক্ষ: পু• সেহওবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

ৰজুশল্য: পু॰ শল্যকনামাজন্ত:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

ৰজুশুৱলা জী বিদ্যাদেৰী। ইতি হেমচন্দু:॥

वजुम्र्याः भूः वृष्कविष्णयः। ইতি जिकाश्याणयः॥

बबुकातः क्री काति तिस्ताः। उट शर्यायः। वज्रुकः २ कात्र स्व ५ ० विमात्रकः ८ मातः ६ ठन्त् नमातः ५ ध्वाधः १ ध्यकाक्षकः ৮। अम्र ध्वाः। अञ्चाक्षकः। जीक्षकः। का-त्रवः। विष्ठ नेषः। छत्याम् तार्त्वितः देशु सुन भूष्य नेषः। मत्रवृक्षः। ইতি রাজনিষ্ট:॥

बङ्गा जी जुशिङ्कः॥ ७ पृष्ठी। ই छि प्रक्रिती ॥ पृणा। रथा। बङ्गाङ्कण-कत्री प्रकी बङ्गा छात्राणणीयाउ। ইভিদেবীপুরাণে ৪৫ অধ্যায়: ।। বজাক: পু॰ সর্প: । ইভি রাজ-নির্ঘণ্ট: ।। বজাক ইভি বা পাঠ: ।। বজুতুব্যাক্যুক্তে তি ।।

বজান্বী জী গবেধুকা। ইতি শব্দ-চন্দ্ৰিকা ॥ অস্থিসংহারী । ইতি ভাবপুকাশ: ॥

বজুাভ: পু॰ দুক্ষপাষাণ:। ইতি রাজ নির্ঘণ্ট:॥ হীরকতুল্যদীগুনভিজি বজুাশনি: পু॰ বজু॰। ইতি জিকা-গুশেষ:॥

বজাছিশ্ছলা জী কোকিলাক্ব্ফঃ।ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ॥
বজ্রী পুশ ইন্দুঃ।ইত্যনরঃ॥বুদ্ধঃ
ইতিমেদিনী॥

ৰজ্ঞী জ্ঞী সুহীজেদ:। ইতি মেদিনী বঞ্চঃ পু' শৃগাল:। ইত্যমর: । গৃহবক্ত:। ইতি মেদিনী।।

বঞ্চক: ত্রি থল: ।। ধূর্ত্ত: । ইতি মেদিনী ।।

বঞ্চথ: পু• ধূর্ত্ত:। ইন্তুগোদিকোব: ।। বঞ্চনা ।। কোকিল:। ইতি সং-ক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তি:।।

বঞ্চন প্লী পুডারণ । ইতি হেমা চন্দু: ।। তস্য গোপনীযত্ত্ব হথা। বঞ্চন ঞ্চাবমানক মতিনাম প্রকা-শ্যেশ। ইতি চাণক্যসংগ্রহঃ ॥ বঞ্চনা স্ত্রী পুভারণা। ঞান্ত বন্ধাতো ভাবে অন পুভারণা। ঞান্ত নিয়ন্তঃ

না পুযোগো বথা। তে কান্তঃ মূন্যো

দিব্যাঃ পুক্চা হৈনবতঃ প্রং।
কগাভিসন্ধি সুক্তঃ বঞ্চনা নিব
মেনিরে।। ইতি জ্নারসমূবে ৬
সগঃ।।

विक्षितः जि वक्षमाविणिष्ठः। शुः ভातितः। ज्थार्यग्रायः। विश्वनिकः २। ইতি হেমচনুः॥

बक्षुकः बि श्रु अप्रगमीनः। ७६-भर्यप्रयः। धृर्वः २ वक्ष्कः ०। ইতি भद्रप्रावनी ॥

ছঞ্চ ত্র গমনীয় । ইতি গত্যর্থ বনুধাতো: কর্মণি ঘাণ পুত্যুয়েন নিয়ম । ইতি মুধ্ববোধব্যাকরণ ।। বজুল: পু তি নশবৃক্ষ:।। অশো-কর্ক্ষ:। ইত্যুমর:।। বেতসবৃক্ষ:। ইতি মেদিনী।। স্থলপদ্মবৃক্ষ:। ইতি শদ্রহাবলী।। পক্ষিবিশেষ:

বঞ্লজন: পূ অশোককৃষ্ণ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

ৰঞ্লপুৰ: পুণ বেতসবৃক্ষ:। যথা
। বিদুলো বেতস: শীভো বানীরে।
বঞ্জাপুৰ:। ইতি রন্মালা।।
বঞ্জাপি কী বহুদুধাণৌ:। ইতি

হেমচন্দু: 11
বট ত ক বেষ্টে।। ভাগে। ইতি
কবিকল্পজন: 11 বটবতি । ইতি
দুর্গাদাস: 11

वर्ष (वर्ष्ठ। इंकि किविक्सक्षमः ॥ यहे-कि वृक्षः नजा। इंकि मूर्गामामः ॥ वर्षे हे कि वर्षेत्। इंकि किविक्स-क्षनः ॥ वर्षेनः विकागः। इं वर्षे । रू कि वर्षेयं कि वर्षे कि। वर्षे छि हाहे-कः गमाध श्राभा विशाः भन्न स्मानः । इंकि हनायुषः ॥ अयः हनारमी-देकिकिम श्रेशंक । इंकि मूर्गमि-इा-म्यः। इंकि मूर्गामामः ॥

বট ম উক্তো। ইতি কবিকল্পদা:

। মে বট্যতি। ইতি দুর্গাদাস: ।।

বট ই স্তেয়ে। সৌত্রয়ণ। ইতি

কবিকল্পদম: ।। ই বণ্টক: । ইতি

দুর্গাদাস: ।।

वहे: शृ॰ वृक्कविष्मयः। वर्षशक् हेंडि ভाषा। उर्पर्यशयः। नऽ-श्वाधः २ वर्षार् १। हेंडि वृक्षनाथः ८ यम्पुरः ६ । हेंडि व्यवज्ञाववी।। ब्रक्कवः ५ वृक्षी १ कर्मकः ५ धुनः २ क्लिबी २० विवृक्षावामः २२ खाखीबः २२। हेंडि क्लिब्रः।। क्लिबः २० खा-

MIS GIVEN

लाखत्र उप्रयाः स्वाप्रभवनात्रे পামে। সঙ্কেত ব্যুদ্দানে তু ভা-खीबाथाः वहेः इसः। यावकागाः **ज्जीयक दो मुकात म** क्कक ॥ ख्र्यं व निवंदे (मुंह शक्ष्म वि वर्षेक बरे। मध्यक करोक्रे की-मार्थाउटे मध्यः ॥ मतार्थवटेकः নান নবন• পরিকীর্ত্তিত•। আশা-यहे॰ सङ्गार्मुष्टे॰ स्नामः मुख्यायकः ॥ অশোকাখ্য বট• শেষ্ঠ মেকান-न गृहाङ् छ । नामरकि विविधे रम् ४ দাদশ পরিকীর্ভিত।। নাম বৃক্ষ-बहेरेक्षव खरगान्यम मः छकः। नाम ব্দুবট শুষ্ঠ চত্র্শ মুদাহ্বত।।। डिविताकीः वर्षे ब्याउः भक्तमा নীরিত। সাবিত্রাখ্য বট শুঠ সংখ্যা ৰোড়শ নিৰ্মিত ৷৷ ইতি বুজনগুলান্তরে বোডশবটানি ৷ ইতি নারায়ণভউক্ত বুজভক্তি-विनामः ॥ 🦀 ॥ कशष्टः । किए ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী॥গো-বা: ।। ভক্ষ্য । বড়া ইকি ভাষা।। सामा । देखि (रूमहन्तुः ॥ িত্ৰ গুণ: । বেটে ইতি ভাষা । हेि अमिनी ।।

-6 ्राप्त अस्यक्षः १३ शहरा १४ वराहाक ३३ ज्त्री २० वकावा जः २) यक्त छकः २२ भाषात्रारूनः २० नीवः २८ मिकारुकः २१ वङ् পাদ: ২৬ বনস্পতি: ২৭। খাস্য न्छनाः। कवायञ् । सभ्वज् । नि-**শিরত্ব•**। কফ পিত্ত জুর দ**ৃহে তৃব**। মোহ বুণ শোক নাশিব্ৰঞ্চাইতি রাজনির্ঘট:।। অপিচ। বট: শী-তো ভৰু গুৰ্হি কফ পিত্ত বুণাপ হ:। বর্ণ্যে বিদর্গ দাহম্ম: কথাযো যোনিদোষ্ঠু । ইতি ভাবপুকাশ: ॥ # ॥ न ह क्नुस्तर्भः। यथा । अवय উहु:। कथः प्रयाश्वय वरही গো বান্ধণ সনৌ কৃতী। সর্বেভ্যো-পি তক্ত্য তৌ কথা পূজ্যতনৌ ক্তৌ।। স্ত উবাচ। অখথ ৰূপো ভগবান বিফুরেব ন সংশয:। কৃদু-ৰূপো বট স্তদ্ধ পলাশো বৃহ্মৰ शश्क् ।। हर्मन म्यार्म स्मिवामु **छि दे** भाभर्ताः म्डाः । मृःचाभद्यावि मुद्रानाः विनामकात्रिको पुरः ॥ ইতি পান্মোন্তরখণ্ডে ১৬০ অধ্যা-यः।। जनार भवान नक पुरे वाः ॥ 🗱 ॥ वृक्षमञ्ज्वान्त्राङ्गद्वीग् व-हेम छ क रयाउन दनानि यथा।

करिषदाः यदेगाक्तनाता अञ्जाहात

পিষ্টকভেদ:। বডা of o ইতি খ্যাত:। ইত্যমর ভরতৌ ॥ অস্য ভণৌ। বিদাহিত্ব । ভৃষা काब्रिवृक्ष । इंडि द्राह्मवल्ला ॥ অপিচ। মাধাণা পিপ্তিকা যুক্তা লবণাদু ক হিন্ধু ভি:। কৃত্বা বিদধ্যা-ष्ठिका॰ खा॰ रिखलायु भारतहरिनः ॥ विणुष्का वहेका बला। वृष्ट्रेगा वीर्याः বর্জনাঃ। বাভামবছর। ৰুচ্যা বি-**শে**ষাদর্দিতাপহা: ।। বিবন্ধ ভে-िनः (भूष्यकादिए। २७)भिन्ति-ভা: ৷৷ সংচ্ৰ্ণ্য নিক্ষিপেত্তকে ভৃষ্ট• कीत्रक हिन्दू है।। नवन छब वहे-कान् मकलाने भि मब्ज्रायर । मूक-ल खब वहें का वनकृष्मु हिना एकः ॥ विवक्षकृषिमाशी ह सूचानः भव-নাপহঃ। রাজ্যক্তথাতি রোচিন্যা शावना जान्स जक्तर्य ॥ **#** ॥ অথান্নিকাবটক:। অন্নিকা॰ স্বেদ-यिदा जू कालन मह मर्फायट। ज भीरत क्ठ मः सारत वर्षकान् मञ्ज-থেজন:।। অল্লিকা বটকা স্তে ভু क्छा विश्वभूतीभनाः । यहेकम् खीनः न्दिं द्वाउ २ निष्ठ मम निष्ठाः ।। #।। অথ তক্ৰট≉:। নুদ্ৰানাং বটকা স্তক্তে মজ্জিতা লঘবে৷ হি-जाः। म·कात्रज्ञभुजात्वन विस्तात्।

সমনা হিতা: ॥ 🛊 ॥ व्यथ मायतः **ढेक: । यायागाः शिक्टिका हिन्नु** লবণাদুকি সংস্তা:। তথা বির-চিতা বল্লে বটিকা: সাখুশোষি-ভাঃ॥ তালিতা বপ্ততৈলেতা'অ-**थ**वा जूनुष्विह्जाः। वृहेकन्। व्हेन যুক্তা জ্ঞাতব্যা কচিদা ভূশ।।#॥ व्यथ समाखविः। समाखकविौ (क्वया भूरदीकविष्वाध्या । वि-শেষাৎ পিত্তরক্তমী লম্বী চকথি-ভা বুरिशः ॥ 🛊 ॥ व्यथं मृत्तविका । মৃদ্বানা বটিকা তদ্দুবিতা সাধি-তা তথা। পথ্যা ৰুচ্যা ভতো नदी মুদ্দপ্রণা মৃতা ॥ ইতি ভাব-भुकाणः ॥ 🛊 ॥ अष्टेमायकगद्भि-गागः। यथा। मण्डकास मायः न्तार माला भाव हजुडेयः। ही-শাণৌ বটক: কোণ স্তোলকো দু-খুণক স:॥ ইভি শব্মালা॥ ব্টপত্র: পু॰ সিতার্জক:। ইঙি द्राजनिर्घरिः॥ वर्षेण्या की जिन्द्रमानीनुष्रवृकः । ইতি রত্নালা ॥ व्हेन श्री श्री भाषागर ज्ही विष्णयः। ভৎপর্য্যায়:। ইনানী ২ ঐরাবতী ৩ গোধাবতী ৪ ইরাবতী ৫ শ্যানা ७ थ्योक्नाभिका १। यम्। खगाः।

হিনত্ব। গৌল্যত্ব। নেহ ক্ষু বিনাশিত্ব<sup>।</sup> বলদাতৃত্ব**। ব্**ণহস্ত ত্ব। কিঞ্চিদীপনকারিত্বঞ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ অপিচ। বটপঞ্জী ভূ কথিতা মোহিন্যৈরাবতী বুধৈ:। ৰটপত্ৰী ক্ষাথোঞ্চা থোনি মূত্ৰ-গদাপহা।। ইতি ভাবপুকাশ:।। **ब्हेंबः भ• अ**ल्लाः॥दि≹ः॥**म**ঠः॥ होतः ॥ **ठक्षनः । इ**कि भपत्रज्ञा-वनी।। वहेबामी भू॰ खी यकः। ইতি ह्म-চন্দু:।। বটহৃক্ষবাসকর্ভরি তি ।। भु॰ ब्रद्धः। इंड्रामब्रधी বটাকর: काषा॰ वामाण्यः॥ बी बक्कः। एषि रुठि বেটে ইভিচ ভাষা। ইতি পুরাণা। ोवविष्णयः। रथा । নামচৌরে। বটাবীক: সন্ধিচৌর-स हाबकः। इंडि णपनाना।। উপজিহ্বিকা। यथा। ত্রা উপজিব্রিকেৎেপাদিকা চ বটি-काफ्रिका पिती। ইতিহারাবলী॥ क्षी दही। वडी इंडि ভाষा । उद्भग्रायः । निष्ठनी २ । इंडि नम्हिन्त्वा।। यथ विविवादिष्रः। বটকা অথ কথ্যন্তে তল্লামা বটি-ক। বটা। মোদকো গুটিকা পিণ্ডী

खरा वर्षि खर्थाठारा ॥ (नश्वर् সাধ্যতে বহুৌ গুড়ো বা শর্করাথবা । গুগুলু বা ক্ষিপেত্তত্ত চুণ ভ দ্বিদি-ভা বটা ৷৷ তত্ৰ বহি সিংদ্ধ ভড়াদৌ । अर्य) प्रविद्धि जिल्ला वृधि । श्रुग्नुना বটী । দুবেণ মধুনা বাপি ভটিকা। কারফেঘধ: ॥ সিভা চতর্থণ দেশ बहीयु दिख्ला ७७:। हूर्ल हूनममः कार्याः ಅशूनु मधु उৎमनः ॥ उ९-সম চূর্ণসম ।। দুবন্ত দিওপ দেয় स्मानत्कयु डियय्रेतिः। <u>म</u>ुव॰ **ठ**छुर्छन মিতি বা পাঠঃ॥ দূব• দূবরূপ• দূব্য• ।। কর্মপুমাণা ভন্নাত্রা বল• দৃষ্টা পুযু-ভঙ্গত। বল নিভি কালাদে রপুঞ্স-**জ**ক্ষণ । ইতি ভাবপুকা**শ:** ॥ # ॥ ব্যঞ্জনোপযোগিদ্ব্য । অস্যাপি ব-ডী ইতি ভাষা। যথা। মাষাণাণ পি-ঠিকা হিঙ্গ লবণাদু ক সংস্তা। তথা বিরচিতা বজে বটিকাঃ সাধু শোবি-তাঃ।৷ তালিতা স্তপ্ত**ৈলে**তা **অথ**বা সুপুলেহিতা:। বটকস্য গুণৈ যু ক্তা জ্ঞা **ত**ব্যা কচিদা ভূ**শ**া। **জ**ম্মাওক**ব**+ টী জ্বেষা পূৰ্বোক্ত বটিকা গুণা। বি-শেষাৎ পিত্তরক্তমী লখী চ কথিতা বুপৈঃ।।মৃদ্ধানা বটিকাত ঘদুচিতা সা-ধিতা তথা।। পথ্যা ৰুচ্যা ততো লঘ্বী মুদ্দপ্রণা মৃতা।। ইতিভাবপুকাশঃ

विशे जी विकि। ই उ जाव पूका जः ॥ वृक्क विष्णवः । उर भर्यत्रायः । निष्णवः २ यक्क वृक्षः २ मिकार्थः ६ विकः द यम ता ४ ज्विणी १ की त्र कार्षः । प्रमुत ज्ञा । क्या यवः । मध्तवः । मिनित्रवः ।

विग बि बब्धः। इन्यानः॥ बहु: भ् भागवकः। यथा। बहुः भुन ब्रानवरका जिक्का महाभुष्ममा छकः। ইতি হেমচন্দু:।। বুন্ধচারী। যথা। बहु वंगी वुक्क छात्री। इं जि मपत्र द्वा-वनी ॥ अने बर्वे विकः। यथा। अर्थु-क्शर्नः (महानाकः मुक्नामः ऋहे-श्रदेश अध्या वर्षे भी य्वस्ता भीर्य-বৃস্তক ইত্যাপি।। ইতিচ শবর্গা-वनो ॥ वानकः। यथा । वानका भानता वानः किल्लाद्रा वर्हे दि ভাগে। ইভাগি শবরত্বাবলী।। **ব্টুক: পু** বালক:। ইতি শব-ब्रङ्गावनी ॥ टेंडबर्वावरमयः। यम् मञ्जानि र्यथा। উद्धादमहिकः (एस माभनुषाद्राः उथा। मक्षयः भून (र्डश्डः वर्ड्रक्ष ममुद्धादय ॥ এक-বিংশত্যক্ষরাত্মা শক্তিক্দো ম-

হানন্যা হ্লা অস্য প্ৰা ৷ পুডি:-क्ठाहि नुरगायामास विधाय भी-ठेन्यात्र अर्थाट । यथा । वर्षादि व्यतिश्वर्यग्राञ्च (५१६ विनामा स्वान-मिन्राञः अर्थ्याट । यथा निव्रति उ वृष्ट्र नाज १ १ वर्ष नमः । मूर्य गायकी हन्तरम नमः । कृषि बहुक-ভৈরবায় দেবতায়ৈ মন:। ভতেঃ म्र्डिन्यामः । (शुः (ताः देणानाव नत्मा २ क्ष्रेराः । (कुः (वः ७८-পুজ্বায় নম স্তর্জন্যো:। হ্রু॰ বু• অ-বোরান নমো মধ্যমযো:। ভ্রি॰ বি॰ वागरत्वाय नामा १नामिकरगः। हु॰ दः जाराजाजाय नगः कनिष्ठरयाः। भून खखरङ्ग्वीिखः भित्रा वहन ङ् দুহ্ পাদেব তত্ত্বীকাদিকা স্তত্ত্ব্যু-डी न्राम्यः। उत्याष्ट्रं भागकाताः দীচ্যপশ্চিমেষু মৃথেষু চ তান্ন্য-সেৎ। তথা চ নিবন্ধে। অঙ্গুলী দে-হবক্তেব্ নৃত্তী ব্যাসন্থা পুরা। সং ত্যাদি পঞ্চ হ্যাচ্য শক্তিবীজ পুর:-সর । বকার পঞ্জুরাট্য মীশানা-नियु (याक्रविष् । **७७: कद्रात्र**न्त्रास्त्री । তল্পা। ওঁ হু। বা অঙ্গাভ্যা नम इंड्रापि। उँ शुः वाः श्रवाय नम इंड्रानि ह। यज्नीर्घ वीक्षष्र्यन अर्था ८ । उथा व निवक्त । यज्नीर्य

যুক্তৰা শক্ত্যা ব্ৰাৱেণাপি ভছভা । অঙ্গানি জাতিযুক্তানি পুণবাদ্যেন कझरयट ११ # ११ छछा ध्रान १ छम्। ষ্ঠান ভিষা প্রোক্ত সাভিকাদি পু (७२७:। माद्विकः यथा। वत्मः वानः মুটিক সদৃশ জণ্ডলোডাবি বক্তুণ रिवाकरेल नंवमित्यः किकिनी न् शुद्रारेम्यः। मीछाकाद्रः वियम वमनः সুপুসন্ধ জিনেত্র° হস্তাব্লাভ্যা• বটুক मनिणः भ्वराखी प्रधानः ॥ ३॥ **এব॰ ধ্যাত্বা।। রাজস॰ यथा। উদ্য**ু ভাস্কর সন্মভ তিন্য্ন রকাস্ক্-রাগসূজ মেরাস্য বরদ কপাল-मञ्चर भूवर प्यानः करेत्रः। नीव গুীব মুদার ত্বণশত শীতা শু চ্ডোজ্জ্বল বন্ধকাৰণবাসস ভয **रुद्र॰ (५व॰ जन।** ভावर्य ॥ २ ॥ जानमः यथा । श्वायमीनामिकासः শশিসকলধর মুওনাল মহেশ দিশ্বস্ত্র পিস্কেশ ডমক মথ শৃণি चङ्ग मृला ভ्यानि । नागः घषाः कः পাল° করসরসিক্টে বিভূত• ভীম-দ্'ষ্ট্র' সপাকল্প' ত্রিনেত্র' মণিন্য বি **ज**त्र कि विकिशी न्श्राष्ट्र। ॥ ३॥ माः ত্বিক ধ্যান নাখ্যাত নপমৃত্যু বিনা-শন-। আযুরারোগ্যজনন নপবগফ লপুদ•॥১॥রাজস• খ্যান মাথ্যাত ধর্মকামার্থসিজিদ•।২।ভামস• শত্ৰু-শমন ক্ত্যাভ্তগদাপহ ।।৷০:৷ এব ধ্যাত্বা মানসৈ: সংপ্জ্য শঙ্কুছাপন क्र्यंत्राष्ट्र ।। कः ।। व्यन्तत्र भूकायव्यः । ध्यांध्यांहि छि: कुछ भी छ नक्क শোভিতে। ষট্টোণান্ত জিকোণছে ৰেগ্ৰম পদ্ধন্ত সংযুতে।। ততো মূলেন मूर्जि मक्ष्मा नृबंवट शादावाह-নাদিক স্ব্যাৎ। তত্ত্ৰ ক্ৰম:। মূলেন সদ্যোজাতমজেণাবাহন । মূলাদি বামদেবেন স্থাপন । মূলেন সামি-**४**५%। याद्याद्रिश मिस्ति। स्वर-। स्वर-। शुक्राचे । या निम् पु। शुक्रमंन । केमा । নেন বন্দন মিভি বিশেষ: 11 ভত: কৰ্ণিকায়া দক্ষুকোণেযু ইশানাদী-ন্ যজেৎ। ততে।ব্যোম পক্ষদেলেৰু অসিতাস্থাদি ভৈন্নবান্ যজেৎ। অ-সিতাকে। ৰুক্ শত্ত: কোধোন্মত্তৌ চ ভৈরবৌ। কপালী ভীষণ শৈচৰ সংহারোপ্টোচ ভৈরবা: 11 এতৈ রপ্ত ভৈরবৈ দ্বিতীযাব**রণ । ততঃ** ষট্কো-ণেৰু হ্ৰাণ বাণ হৃদযায় নম ইত্যানেন भूकाराया। उठ: भूबीपि छाकिनी वाकिनी वाकिनी काकिनी नाकिनी काकिनी भाजिनी शुजान (पर्वी शुजान् **উমাল্** धान् कपुर्यान् नावृकान्-वान् मकिए। यह । छाष् छष्

মুখীপুগ্রান্ অধো হধোমুখীপুগ্রান্। তম্বহি রপ্তপত্রেবু লোকেশান্ বটুক-क्नान् न्डरर । उद्घरिः न्रवं उ বুক্ষাণীপু প্রায় নমঃ। এব মীশানে नारमञ्जीभूभाय। উত্তরে विक्वी भू भाष। अनित्व कीनात्रीभूभाष। পশ্চিমে ইন্দ্রাণীপুগ্রায়। নৈর্থতে भश्वावश्वीभू श्राय । यात्म । वाहाशी-পূলায়। অনলে চানুঙাপূলায়। তথা চ নিবন্ধে ৷ বুন্ধাণীপুঞ্জ भृद्धं गारम्भीभू ध रेम खद्र । रेवसवी भू चरु भोषा (को गात्री भू च गानि-ल।। इन्तुागीनु अकः ज्यः निक्ता পূর্যেত্ত**ঃ । মহালক্ষীসূত**ে প कामुक्का किला अबहर्य ।। वाबा-शेनू धकः यारा । हा मुखानू ध मान-ल । उद्दर्श्निमिक् ह । (इज्रुकः) ত্রিপুরান্তক বেতাল বহিছিল্ বরাল কালান্তক একপাদ ভীম-ধ্বপ• অচল চাটকেশ্ব**র•** পূজ্যে**ৎ**।। ভংতাযোগিনী**সহিত দিব্যযোগীশা**ঃ য নমঃ। এবং যোগিনীসহিতান্তরী হ্ম যোগীশায় নমঃ ৷ এবং যোগিনী-সহিত ভূমিধ্যোগীশায নন:। ঈ-শানাগ্ন নিখতিযু প্ছয়েৎ।। 🕸 ॥ অস্য পুরশ্রর নেকবি শতি লক্ষ-জাপঃ ৷ বুৰ্ণ লক্ষ্ণ জপেন্ম <del>অ</del>' হবি

য্যাশী জিতেন্দ্রিয়**া তদ্শাংশ**• **नु**जून्याजित्व र्यपुत्र गः युरेजः ॥ #॥ व्यथं विवासना । लूर्वः विष्यः पूर्णाः मबाजाधा विनः हमा। मानांसः পলল সৰ্প লাজচ্বানি শক্রা:॥ छ । मिक्कुत्रमा भूरिण मधुर्किः भित्र-भिन्दिः। कृत्वा कवलभावाष्य (**ए**-ব॰ প্রাণ্ডক্বর্জনা।। রক্তচন্দ্র পু-স্লাদ্যৈ নিশি তথ্যৈ বলি হরেৎ। যভা। অনুচনাক্ ম**জ হ**ভা রাজ**স**• भुष्धिरीति उ॰ । विणि भुषान **गग**य तिन्गा भई रेमन्यकः॥ निर्वत्रयः **इलिएइन व**र्षेकाय विभिन्ने वी:। वि-म डियह बुनामा वि**लयखः उथा नृशीः**  শত্রপক্ষস্য ক্রিরিং পিশিত্রকৃ **दित्य दित्य। ज्ञान्यत्र गरेनः मार्कः** সার্যেয় সমন্বিত: ॥ বলি মস্তো १य गाथाा ७: मर्खियाः विषयभूमः । অনেন বলিন। হুটো বটুক: পর-ষৈন্যক্ৰ 🛚 সৰ্বল্পণেভ্যো বিভ**লে**-हानियः कुलनानमः । এवः क्रउ পরবল ফ্রিডে নাত্র সংশয:।। ইভি ভত্রসার: ।। 🗱 ।। অথ বটুক-ভৈরব ভোত্রং ৷ কৈলাসশিখরাসী-न (मदरमय जगन्छकः। मास्र द পরিপণুছ পার্বতী পরনেখর ।।। গ্রীপার্বভূগোচ। ভগবন্ সর্বধর্মজ্ঞ

जंबनाजागमारिष्। ज्ञानमूकाद्रगः मञ्ज नर्वनिष्किनुष मृगाः॥ नर्वः ৰাক্ষৈব ভূচানা হিতাৰ্থ বাঞ্চিত মধা। বিশেষ তস্ত রাজ্ঞা বৈ শান্তি भूडिभुगाधनः॥ अञ्चन्त्राम कर्तन्त्राः न वीजन्याम नमन्दि । वङ्गर्सन (मरविष्य मम इर्थविवर्क्षन्।। **श्री छ**ग-वानुवाह। मृश् (हिव सहामृख मान-मुखात्ररङ्कुरु । मर्दम्य श्रुम्ममनः अञ्चल ुनिदईन ॥ व्यथमातामि (त्रा-গাণা• জুরাদীনা• বিশেষ**তঃ। নাশ**-ন ফুতিনাত্রেণ নস্তরাজ নিমণ্লুিযে ॥ গুহরাজ ভ্যানাঞ্ নাশন স্থ বজন । সেহাদক্যানি তে নস্ত্র **जबनाद भिभ• लि**या। जर्सकागः র্থন- মন্ত্র- রাজ্যভোগপুদ- নৃণাণী भुगव॰ भूर्ब गृहायं। प्रवी भूगव भूषाः त्र< ॥ वृद्धेकात्य**ि** देव शकासाश দুজারণায চ। স্ক্রঘ• ততঃ পশ্চা-षहुकाय भूनः किल्ल ॥ प्रवी भू ণব মুখ্তি । মন্ত্রাজ বিনং প্রিযে। मञ्जाकात निमः प्रति देवरणाकाः স্যাপি দুলভ ।। অলুকাশ্য মিম মৃত্র• সরশক্তি সমৃত্বিত: ম্যরণা-দেব মন্ত্রস্য ভূত প্রেত পিশাচকালা विनुविष्ठ ভयार्खा रेव कालकनारिव श्रुकाः। भाठेष। भाठेरयद्याभि भूक-

যেদ্বাপি পুস্তক ॥ নাগ্নি চৌর ভয• वानि गुरुद्राबज्यस्था। न ह सादी-ভয• ভসঃ সর্বত্র সূথবান্ ভবেৎ ॥ ष्यायु द्वाद्वागा सियर्गाः भूञली-প্রাদি সম্পদ:। ভবন্তি সতত তস্য भुखकमाणि भूजनाए।। श्रीभार्व-ভুরাচ। য এষ ভৈরবো নাম আপ দুজারকো মতঃ। ত্বয়া চ কথিতে। দেব ভৈরবঃ কল্প উত্তমঃ।। ত**দ**্য না**ম** সহসু।ণি অযুতান্যৰু দানি চ। সার মুজ্ত্য ভেষা॰ বৈ নামাপ্তশতক বদ ।। # ।। बी छगवानुवाह । यस मःकी-र्खाराम ७० मर्ब मुळे निवर्र्ग । मर्वान् কামানবাপ্মোতি সাধকঃ সিদ্ধি মে-व ह ॥ मृगु (रुवि भुवक्र)ाचि छित्रव-ন্য মহাত্মনঃ। আপেদুজারকদে।হ-ৰামা**ঙ্গত মুভ্ম**ণ ৷৷ সর্বপাপহর• পুণ্য সহাপেছিনিবারক। সর্বকা-मार्थतः (नवि मादकानाः मुथाव**रः** ॥ (म्हास्नामनेकित भूवं सर्गाट সনাহিত:। ভৈরব মৃদ্ধি বিন্যস্থ वनारि जीमम्भन ॥ याङ्मा ज्ञा-भुषः नऽमऽ वहत्व जीक्षहर्मनः । (क्षः-ত্রপা কর্ণযো মধ্যে ক্ষেত্রপালং ভূদিং ন্যসেৎ ॥ ক্ষেত্রাখ্য নাভিদেশে চ क्षेत्राः नदीषनाणनः। जिल्लं मूर्सा বিন্যস্য জন্নয়ে। ব্ৰক্তপাণিক ।। পা;

मरवा (मंबरमरवर्णः नर्बाःच वर्षेकः ন্যসেৎ। এবং ন্যাসবিধিং কৃত্বা তদ-নন্তর মুক্তম• ॥ নামাষ্টশ তক্ষ্যাপি-हाला १नुष्टुतुमाञ्खात्र्यात्रमात्रात्रा নান খ্যিক পরিকীর্ত্তি:।। দেবতা কথিতা চেহ সন্ডি ব ট্কভৈরব:। ধ र्यार्थ कान (भारक्षयू विनियानः भूः की खिंठ: ॥ 🕸 ॥ 🤡 रेज द्रादा ज्ञना-থক ভূতাত্মা ভূতভাবন:। কেতদ: ক্ষেত্রপালক ক্ষেত্রক্ত: ক্ষত্রিয়ো বি· द्वारे॥ ग्रामानवात्री साःत्रामी थर्नः त्राणी मथाउक्ट । त्रक्लः भाग<del>णः</del> নিদ্ধ: সিদ্ধিন: সিদ্ধসেবিত: ॥ ক রাল: কালশমন: কলা কাগতন: কবি: ৷ ত্রিনেত্রো বহুনেত্রণ্ট তথা পিক্ললোচন: ॥ শ্লপাণি: খর-शानिः कहानी ध्रमुलाहनः। अ **जीक रेर्जद्राता जीक ज्ञाना (या** णिनी**প**िः ॥ धन्ति। धन्हात्री ह ধনপ: পুতিভাববান্। নাগহারো নাগকেশো ব্যোনকেশ: কপালভূৎ ।। कालः कशालमाली চ कमनीयः क्लानिष्:। जिलाहरनाकृलस्य ব্রিশিথী চ ত্রিলোকপাৎ।। ত্রিবৃত্ত ন্যনে। ডিস্তঃ শান্তঃ শান্তজনপুশঃ। बहुत्का बहुत्कणण थहाक्वत्रधात्रकः য় ভ্রাধ্যক্ষ: পশুপতি ভিফুক:

পরিচারকঃ | ধ্রেটি দিগমুর: শৌরি र्हात्राः भा अलाहनः ॥ भुणान्यः मा-ष्ठिरः मृकः मक्द्रिश्यवाद्यवः । অ-हेम् बिं निधीण क उदान क्रक् उरमा-भयः ॥ यहावातः कवावातः मर्भयु कः ममीनिथः। ভূধরে। ভূধরাধी-শো ভূপতি ভূধরাত্মকঃ॥ কল্পাল-थात्री मूखी ह व्यानगरका भवी छवा-ন্। জ্স্তনো মোহন: স্তম্ভী নারণঃ (काडन खरा।। मूक नीवाखन्त्र-খ্য দেছে। মুগুবিভূষিত:। বলিভুক্ বলিভ্তাত্মা কামী কামপরাক্রম: ৷৷ সর্বাপত্তারকো দুর্গো দুষ্টভূতনি-(र्व जः। काभी कनानिधः काउः कारिनोवनकृष्टनी ॥ महनिष्ठिणुः (रा रेवर्)ः भुजविषः भुजाववान्। ১০৮। অস্টোত্তরশত নাম ভৈর-বন্য মহাত্মন:।। মধা তে কথিত॰ দেবি রহ্স্য সর্কানিক ৷ য ইদ পঠতি (ভাত্ৰ• নামাইশত মূভ্ৰ• ॥ ন তস্য দুরিত• কিঞ্চিম রোগেভ্যে ভয় তথা। ৰ শত্ভো ভয় কি किट नार्यां के मानवः के हिट ॥ পাতকানাণ ভয়ণ নৈব পঠেৎ স্তোত্ৰ मनन्धीः। भातीख्य ताज्ज्य उथा होत्रानिक ज्य ॥ छेटमाजिक म्राशात उथा दः प्रश्न पर्णात । वस्त ह उथा वाद्यं भारेट खांब नगहितः॥ मर्ख भूगमनः यास्ति खगोर खत्रवं की र्खनाट । अकामन সহসুদ্ধ পুরশ্চরণ মুচ্যতে ॥ ত্রিস-क्षा थः शार्थिप्पवि मध्यम् मज्ञ नजः न्मु छ:। त्र तिष्वः भाशु यापिक्षाः मूर्व अभिन मान्यः ॥ वभामान् छू बिकामञ्च **म ब**ञ्चा लाज्ज भरो• । রাজা শতু বিনাশায জাপেঝাসাই ক পুন: ।। রাজৌ বারত্রযঞ্চিব নাশ যতে ব শাত্রান্। জপেন্সত্রয द्वार्ट्डो द्वाञ्चान वन्न मानरय**् ॥ ध**ना-थी ह मुडाथी ह नादाथी यस नान-ব:। পঠেদ্বারত্রয় যদ। বার নেক। তথা निर्णि॥ धनः भूञाः खया मात्राः न् शाश्च याद्यात्र मन्ययः। (द्रागी द्या-গাৎপুম্চ্যেত বছ্কোন্চ্যেত বন্ধনাৎ 11 ভীতো ভয়াৎ পুমুচ্যেত দেবি **স**া ত্য ন সংশ্যঃ। যান্ যান্ সনীহতে कागाः खाः खानात्याठि निन्ध्रिः॥ অপুকাশ্য মিদ ওছা ন দেয় যস্য कम्राहिट । मट इलोनाय भाष्ट्राय ঋজবে দস্তবভিন্নতে।। দদ্যাৎ স্তোত্ত भिनः भूगाः मर्वकामकनभूनः। धाः ন বক্ষ্যামি দেবস্য যথা খ্যাড্রা প ঠেনর: ॥

১৯ জুজ সুটক সকাশ **मह्मा**हिळाबह्म । अ**हेवाह** बि

নমন চতুৰ্বাহণ দ্বিবাহক।। ভুনঞ্ (मथन (पर मग्निवर्ग निकास्कः । দিগম্বর জ্যারীশ বটুকাথ্য ম-হাবল ৷৷ থট্টাঙ্গ মসি পাশক **ण्टरिक्**य ख्या भूनः । उमक्क क-भानक वत्रमः जूबगरुथा।। मीनकी-মূতসকাশ নীলাঞ্জনচয্পুভা । **म श्रे। कद्रालयम्बः नृ**भुद्राऋमञ्**षि**जः ॥ আত্মবর্ণসমোপেত সার্নেষ্ স-मन्जि । भाषा कालट मृत्रः श्रुटः नर्वान् कामानदाशुयाय ॥ এতह्य **७७। (**रवी नामाद्वेश अनुड्य । रे**ङ**द्रवाय शुरूष्टे। जूट स्वयेष्कव म-হেশ্বরী।। ইতি বিশ্বসারোদ্ধারত-স্থে আপদুদ্ধারকল্লে ভৈরবস্তবরা-कः मभारतः ॥ 🗱 ॥ यथ वर्षे करे 🗟 दव কবচ•। ঐতিভরব উবাচ। দেবেশি দেহ রক্ষার্থ কারণ কথ্যতা পুরু । মিু্যন্তে সাধকা যেন বিনা শ্মশান ভূমিষু ॥ রণেষু চাতিঘোরেষু মহা-বাযু জলেষু চ। শৃঙ্গি মকর বজুেষু জ्वािमव्यािष विद्यु॥ श्रीतम्ब्रवाह। कथयानि मृग् भाञ्ज वर्षास्त कवठ॰ শুভ ৷ গোপনীয় পুষ্ট্রেন নাত্রা-রোপন যথা।। তস্য ধ্যান ত্রিধা (পुञ्जः माब्रिकामि পुভেদত:। সা-ব্ৰিক রাজসঞ্চৈৰ তান্স দেব তৎ

मृगू ॥ वत्मर वाल॰ मृहिकमम्म॰ ष्ट्रश्लास्त्रामि वक्ः पिवशक्री नंवमिनियः किक्किनी नृश्वारेम्डः । मीक्षाकातः वियमवननः मूनुमनः वि-নেত্র• হস্তাব্রাভ্যা• বটুক মনিশ॰ **मून** थाज्ञी मधानः ॥ ३॥ उम्राज्ञाः স্করসন্মিভ ভিন্যন রক্তা**ক** রাগ-সূত্র মেরাস্য বর্দ কপাল মভ্য **म्ल॰ पथान॰ करेतः।** नीलगीव मू-मात्र ज्वन**णउः** भीजाः मृह्र । ब्ब्वनः ৰন্ধুকাৰুণবা**সস**• ভয়্হর• দেব• नना जावत्य ॥ २ ॥ श्वतत्यभीना दि-कान्डः मानिमक्लधदः मुख्यालः बह्न प्रियु भिन्न (कन उनक মথ শ্ণি॰ খ্র শ্লাভযানি। নাগ॰ घ छ। कभाम क्रमत्रमिक्टि र्वि-**ডু उ॰ ভीমन•ध्रु॰ मर्शाकन्न•** वित्वब• निमय विनमः किहिनी न्श्राष्ट्र ॥ २॥ 🗱 ॥ व्यम् । बहु करे खब्र वकवे छन्। নহাকাল থবি রণুষ্ট্প্ছন: এবিটুক ভৈরবো দেবতা বংবীজং ভ্রীং শক্তি রাপদুদ্ধারণাযেতি কীলক নম স-র্যাভীষ্টসিদ্ধ্যথে বিনিযোগ: । উ শি-রো মে ভৈরব: পাত্ ললাট ভীষণ ঙথা। নেত্রে চ ভূতহ্ননঃ সারমে-यानूला ज्यवो॥ ज्ञनाथम स्म कः लो करणाली (भुजवाहनः। नामाः

পুটো তথোগ্টোচ ভমাক: সর্বভূষ-ণ:।। ভীষণাস্যো মমাস্যঞ্চ শক্তি-रुखा गनः गम्। ऋस्तो देन **ड**ाद्रिशुः পাত্ৰাহ্ অত্শবিকন: ৷৷ পাণী क्णानी त्र भाजू मुखमानाधात्रा क्र·। वकः छ्ल • उथा माउः कान-ठात्री खन· मन ॥ উদর্ঞ্চ **म मে** ज्रेष्टेः ক্ষেত্রেশঃ পার্যন্ত তথা। ক্ষেত্রপা-ল: পৃষ্ঠদেশ ক্ষেত্ৰাখ্যোনাভিত স্ত-था॥ क्टी॰ भारभोधनामक बहुत्का লিঙ্গদেশক । ওদ রক্ষাকর: পাতু উक् ब्रक्शकब्रः मना॥ कान् চ घृष्ट्रा রাবো জঞ্জ রক্ষতু রক্তপঃ। গুল্লী চ शानुका मिकः शामशृष्ठः भूत्रयतः ।। আপাদ নত্তককৈব আপদুদ্ধারণ ख्या। मस्मादा महाभाषा कभ्दा ধবলে। গুক: ॥ পাতৃ মাণ বটুকো (मर्वाटे छत्रवः मर्वकर्षम्। भूर्वम्। म-निकारका मिलि तक्ष जुनईरा ॥ আশেষ্যাঞ্চ কৰা: পাতু দক্ষিণে চণ্ড ভৈরব:। নৈখাত্যাণ কোধন: পাত্ মামুম বস্তু পশ্চিমে॥ বাযব্যা । নে-कभानी ह निज्यः भाषाय मूद्रश्वतः । ভोषा। रे जत्रवः भाज् छत्रम्याः हि-শি সর্বদা ॥ সংস্বারভৈরব: পাত্ **ब्रिमामानाः गर्ययः। উ.**ष्व शा-তু বিধাতা বৈ পাতালে নন্দিকো

विजुः॥ मर्प्ताकाण्यः नाः भाषा भर्बरका (स्वरमविकः । वागस्यवा হ্বত প্রীতো রণে ঘোনে তথাবত্ ॥ काल उरभूक्यः भारु इल পাতু গুক: সদা। ডাফিনীপুএক: পাতৃ দারা ख वाकिरी गुङः ॥ পাত্ৰাফল: হা ভাতুন্ শি্যা নে **गडडः** गिद्रः । लाकिनी भूशकः পাত্ পশ্নধানলা তথা।। মহা-काला १वज इ.धः रेनगः विका-वटे ज्यदः। ब्राज्यः ब्राज्यः शा-गाट रेजदारा जी जिल्लादकः ॥ व कार्शनस्य यद सान वर्षि ३ कव क्ति ह। उर मर्बः तक व्याप्त व यकः मर्वत्रकृष्टः ॥ ७७९ वन्द মীশান তব মেহাৎ পুলাশিত। নথ্যেব॰ নরলোকেযু সরেভূতঞ मृश्विषः॥ यरेय करेय न ना अवाः कबरहणा नुमलं छ। न (मयः शत मिरवाजा: क्षाराजाम मक्त ॥ मा ननाठि निविष्य**्रः भ**रेव जु क्षा **ভ**रविष्कुव•। व्यक्ति कव्रहा**ण**न রক্ষা কৃষ্ব। দিজোভনঃ॥ বিচরন যত্ৰ জ্ঞাপি বিশ্লৌথৈ: প্ৰাপ্যতে ন স:। মজেণ মুনতে যোগী কবচং যন্ন র ক্ষিত: ॥ তথাৎ সর্ব পুররেন দুল হ' পাপচেত্রনা'। ভুর্জে রম্ভা- पुरि वानि विशिद्ध विविवद शुरू (छ। ॥ श्राह्मस्य नार्टरामानि सन् म्माटेमानि निष्ठामः । मन्तुरस्था-छि भु छावः वि कवहम्याम्य वर्तिङः ॥ नत्मा छित्रव स्त्वाय मात्र छ्छाय वि नमः । नम दिस्ताक्रमाथाय मा-थनाथाय वि नमः ॥ ইछि विश्व-माद्धाप्ताद्र छद्ध छानमुक्ताद्र छन्न छित्रव छित्रवीमः वास्त वर्षुक्ति छत्नव-कवनः सम्राञ्छः ॥

বট্করণ ল্লী উপন্যন । ইতি ত্রিকাগুশেষ: ॥

বঠ ই ভ একচরে।ইতি কবিকল্পজন: ।। এক কতৃকি চরণা । ই
বঠ্যতে । ড বঠতে ৌর শ্চোরা
থিতৃ একশ্চরতাত্যর্থ: । ইতি
দুর্গদোস: ।।

বঠ ছৌল্যে। ইভিক্বিকল্পন: ॥
ছৌল্য নিহ্নামর্থ্য: । বঠিভ
দাভা দাত্র সন্থ: স্যাদিত্যর্থ: ।
ইতি দুর্গাদাস: ॥

বঠর: পু॰ মূর্য:। ইত্যুণাদিকোন:॥

অষষ্ঠ:। ইতি হেনচন্দু:॥ শ্রুকার:॥ বক্র:। ইতি সংক্রিণ্ডসাল
রোণাদিনৃত্তি:॥

वठेद्रः वि गठेः॥ गृन्तः। ইভি विकादःगदः॥ रेख है क विज्ञारण। ইতি কৰি-কলুক্রম:।। ই ক বণ্ডবভি। অবং কৈ-শিচন পঠ্যতে। ইতি দুর্গাদাস:।। दछ इ ७ (वाई॥ विजाग। इंडि कविकल्लकमः ॥ हे वश्राज । उ বণ্ডতে। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ व्याद्राह्त। (नोबवाजूद्रकः। इंडि कविक्ल्रफ्यः॥ वस्त्री। वस्त्रि मा । ইতি দুর্গাদাস:॥ व्ड वे जी गृरुह्ड। मूर्पा है वि ভাষা। ইত্যমর: ॥ তৎপর্য্যায়: । গোপানসী২।ইতি ভটীকা সা-**ब्रमुन्सबी ॥ हन्तुमानिका ၁** क्छी-গার ৪। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।। চন্দুশালাচ বডভী স্যাতা পুা-जारमृषानि। ইতি श्रीधदः ॥ (थः वायाः वउरञी हुउ।। इंडि क्पुः॥ वस्त्री हन्युनालि शुनानासी চ নওপে। ইতি কোবান্তর ।। শু-দ্ধান্তে বড় ভী চন্দ্রশালে সৌধা<sup>-</sup> क्रियान। इंडि ब्रह्मः ॥ बुदा-ভাগি বডভিঃ। তা॰ কদ্যাঞ্চি দ্ভবন বডভাবিতি মেঘদুত: ।। বডভি: বডভী বলভি: বলভী চেতি চাতৃৰূপ্য নিতি বৃ**দা:। ই**তি ভরত: 11 वछ। जी विवः।यथा।करत्वनाथ विकः न् जागः। है उपनः।।

· বশ্টক বা তালৈ যুক্ত যন্তাপ্ত্ৰণ পিড়া 'পিড' চূৰ্ণ বটো বডা। ইতি শদ্-ठिम्मुका ॥ বডিশ দ্লী মৎস্যধরণার্থ বক্ত-লোহকণ্টকবিশেষ:। বঁড্শী ইভি ভাষা। ভৎপর্য্যায়:। মৎস্যবেধ-च•२। **इंड्राभद्रः ।। वित्रम•** ७ विष्ठ-শী ৪ বডিশা ৫। ইতি ভরত: ॥ रिलमी ७ मटमार्यधनी १। इंडि ভট্টাকান্তর•॥ ৰলিসী ৮ বলিস• ৯ বরিশী ১০ বলিশি: ১১ । ইতি व्यक्तज्ञावनी ॥ मध्माराज्यनः ३२ । केंकि कहे। प्राः ॥ বডিশী জী বডিশ। ইতি শঘ-ब्रुडावनी ॥ ব্দু তি বৃহৎ। ইত্যনর:॥ অস্য ভাষা বড়॥ বণ শ্বা শদে। ইতি কবিকল্লন্দন: 11 স্বা অবীবণৎ অববাণ । ইতি **पूर्णामात्रः** ॥ বণ্ট ত ক ভাগে ৷ ইতি কবিকল্প-জন: ॥ বণ্টবৃতি বৃণ্টাপ্যতি । ইভি দুর্গাদাসঃ॥ वन्छः भू जागः॥ नाजमृष्टिः॥ इंडि (हम्हन्दुः ॥ अक्छाहारः । ইতি नद्गाना ॥

क्षेः चू॰ व्यक्तावादः॥ धर्वः॥ ब्रुडागृथः। ইতি মেদিনী।। वर्धद्रः भू॰ इनिकाद्रब्द्रः॥ इह तन्तर माङ्ग्ला। कत्रीयरकावः॥ ठा-জস্যপল্লব• ।। পযোধর: । ই**তি** মেদিনী ॥ ভত্র ওপ্তবকারাদৌ গ-ণিভোষ । কিন্তু বঠিত একচরে ইত্যমাৎ অরচ পুত্যযেন নিয়ম द्वार मन्त्रवकाद्वारमी विथिजः ॥ वर्शनः भू भृतगूष्त्र।। (नोका।। ध-निब । इंडि (मिनि (इमहन्द्रण ॥ বণ্ড: পু॰ অনাবৃতনেদু:। ত**ং**প-र्यायः। मुक्तमा २ विन्यकः ० नि-পিবিষ্টঃ ৪। ইতি হেমচন্দুঃ।। ত্রি হস্তাদিবজিত:। বেঁডে ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী ॥ বণ্ডা দ্রী পাণ্শুলা। ইতি মেদিনী।। व वा नामाः। उर्भागाः। ৰা ২ যথা ১ তথা ৪ এব ৫ এব ৬ ১। ইত্যমর: 🛚 । বত ব্য খেদ:।। অনুকম্প।।। স-रहारः ॥ विययः ॥ **वामञ्**रा । ইভ্যমর: 🛚 वञ्चः भूः कर्नभूद्रः। कर्नस्वगः॥ শেখর:। শিরো ভূষণ°। ইতি মে-मिनी ॥

वज्थः शृ मूनिज्यः। ইज्रुवाहि

रकावः ॥ वष्ः भुः (स्वनिमी।। मञ्जाक्।। পড়া: 11 অক্সিরোগ: 1 ইভি मःकिथमात्रागानिवृज्धः॥ বভোকা জ্রী অবভোকা। ইভাসর-টীকাৰা• ভরতঃ ॥ वर्म क्री रकः। इंडामदः॥ वर्मः भुः वर्षः॥ (गानिम्ः। वाङ्क ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। শকৃৎ-করি: ২ তর্ণক: ৩। ইতি বৈশ্যবর্গে नानार्थ ठामद्रः॥ भूञारिः। वाहा ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী॥ वटमक क्षी भून्नकामीमः। इंडि ष्ट्राज्ञनिर्घण्डेः ॥ বৎসকঃ পু॰ ফটজঃ। ইত্যমরঃ॥ इन्पृय्यः । इंडि ब्राजनिर्घणः ॥ ৰৎসকবীজ জ্লী ইন্দুয়ব:। ইতি ब्राजनिर्घणः॥ **द**्यकामा क्वी द्यां ज्ञितानिनी-भारा **७८ भ**र्यायः । वट्मना २ । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ পুঞাদিকামা-जी है।। বৎসভর: পু• পুাপ্তদমনকালগব:। দোমানে বাছুর ইতি ভাষা। তৎ **श**र्य)ायः । एम्। २ । ३७।मृदः ॥ मूर्नान्तः ७ गफि: ८ । ইতি दाजः विघण्टः ॥

वरमञ्जी जी व्रवादमर्गव्यश्जी ত্বেনকল্পিতা ত্রিসাযণী গৌ:। যথা काउप्रावनम्ब । भगविष्ठन्याः भूष्या যুথে চ ৰূপবান্ স্যাৎ তনলফ্ড্য ग्य मूच्या कठामा दरमञ्या छ। শ্যালস্ক্ত্য এন যুৱান পতি বো দদানি তেন ক্রীডম্বী করথ পূিষেণ भागः माछक्रम्या मृजगा वाररणाः (यन मिन्या मान्य इंट्याङ्येयद খচোৎস্জেরনিতি। খাগর্যস্ত (হ বৎসভর্ষ্যো বোযুদ্মাক্র এন যুবান পতিং স্বামিনং দদানীভূকিং প্রা র্থানি তেন বৃষেণ সহ ক্রীডম্ভীঃ থেলন্ত্য ক্ষরথ ভূমথ ছে বৎসত (या। गृग मिल मानः नाम्य सञ्च वि-ষধা ভবিষ্যথ কিন্তু ম্যাত্যক্তব্যা: 1 ব্য ব্যস্তা ব**েলভর**ীগাঞ্চ **ভ্যা**-ान द्रायाल्याराय थन मगृष्ठा माः গুলনুবা লপুড়খব্যাপকেন ইযা ष्यस्तर मयस्य ज्ही जवानः नु-ভগ লোকস্য প্রিয়া ইতি সম্মদে-ম ইতি ভবিষৎসামীপ্যে বর্জ-্নান ইতি পাণিনিম্বর্ঘান্ডবিষ্য मर्थ्य दर्जभानः ॥ 🗱 ॥ द८ मञ्जी রিশেষণতি মৃতি:। অগ্তো লোহিতা পত্নী পার্ঘাভ্যাণ নীল-পাওরে। পৃষ্ঠতন্ত ভবেৎ ক্ৰা

ব্ৰভন্য তু নোকণে ॥ ভাসা वयः भूगानः यथा। जिहायनी जिन র্ধন্যাভি: সুরূপাভি: সুশোভিতঃ । সর্বোপকরণোপেতঃ সর্বশস্য-हाता महान ॥ उँ८ मृश्वेत्वरा विधा-'(नन गुजि सृष्ठि निषमीनार । इंडि শুদ্ধি अञ्जू वृत्यार मर्गावहातः॥ ৰ্থসনাভঃ পু° বিষ**ৃক্ষ**বিশেষঃ। ইত্যনর:॥ সতু স্থাবরবিষভেদ:। शाया यथमान् नज्जि हिनि छ बर्मनानः १७९ म हिन्स एट ব্য়িতি বন। বংসদ্য নাভিব্লিব ৰংসনাভ: কঃ অনিত কেতি ন বৃ-ক্ষিঃ অবং নিজুবারপ এসদৃশপ এ:। ইতি ভরতঃ।।ঞ।। তৎপর্য্যাযঃ। অ-मृ छ॰ २ वियः ० উगुः ८ मस्त्रोषदः ৫ গরুল ৬ নারণ ৭ নাগঃ ৮ন্ডৌড়ক্ ১ পাণহারক ১০ স্থাবরাদি ১১। অস্য গুণা:। অভিন্যুরত্ব। টি-কহু। বাত কফ কওক্ক্সনিপাত নাশিত্বণ পিত্ত সন্তাপকারকত্বঞ। ইতিরাজনিঘট্য।।#।। অস্য ৰ্জপ निक्षण यथा। भिज्यात अन्त् পগ্ৰো বৎসনাভ্যাকৃতি স্তথা। যথ পার্শ্বেন তরে। চৃশ্বির র্থংসনাভ: স ভাষিতঃ॥ उन्। नानान्। रंगा रंशा । दिषः भागरतः (भाकः दावाधि

ह विकामि ह। आर्यंगः वाष्ठ ककः इत्यागवाहि मेनावरः ॥ वऽवाि ज्ञक्षणकायवऽ। श्वन्यक् शाक्त्रम्य मिलां कद्रभः विकामि छन्नः (नायग्र शृंकिः मिलां विकामि छन्नः (नायग्र शृंकिः मिलां कद्रभः भीतः । आर्यंगः अधिकायः। भावरः अधिकायः। भावरः अधिकायः। भावरः अधिकायः। विकामि द्रभावनः ॥ उत्तव युक्तियुक्तः जू श्रान्ति द्रभावनः । यागवाहि जिल्लावमः वृञ्चनः वीर्यः वर्षः नः ॥ या मूर्खना विष्य श्रमुष्क (छ मूर्गः भीना विष्यायमः । ज्ञानियः भूरयाः विष्यायमः । ज्ञानियः भूरयाः वर्षः (नाष्यिष् । भूर्याकारयः ॥ इति ज्ञावभूकाणः॥

ৰথসগত্তন ক্লী ভাৱতবৰ্ষস্যোত্তরে দেশবিশেষ:। তথপৰ্য্যায়ঃ। কৌ শাদ্বী ২। ইতি হেমচনদ:।।

विश्वभावः मु श्रिक्यः ॥ वल-(स्वः । यथा । वृन्तावनः (गाव-क्वनः यम्नामुलिनानि । वीक्ष्याः भीमुख्या भीजी ज्ञाम मायवरया-न्भा। এवः व्रक्षोकमाःभीजिः य-हर्ष्टो वाल (हर्ष्टिः । कलवारिकः सकारलन वर्ष्मभारतो वज्वजुः । हेि श्रिकागवर् २० ऋक्ष २२ व्यवग्रायः ॥

व८ मद्रः भूप बारमभागाज्यकरोतः । व्ययनद्वराञ्चककः। उर्भागाः । मञ्दमदः २ वयः ० रायनः ८ শরৎ ৫সমা ৬। ইত্যমর: ॥ শ-त्रमा १ वर्ष ৮ वित्र**यः अ अ**श्वर २० । इंडि नप्रज्ञावनी ॥ 🛊 ॥ वुडवक्र বিবাহে চ বৎসর পরিকল্পন নাহ द्राठार्य**ाः। आधानभूर्व** (मरक भुनृ-তিপূর্ব সদান্যে তু ॥ সৌর সাব-ন নাক্ষত্ৰ চান্দুভেদেন চতুৰ্বিধাে वर्मतः। यथा । চ্ডোপনযनामित् ব্যগণনা সাবনেন শুভাশুভগণনন্ত সৌরেণেতি সিদ্ধং। সাবন সম্বং-সরেণ একদিনাধিক বৎসরো না-क्षत्वा ভवडीडान्या (र्डम: ॥ नोत्रस পक्ष्यश्चे (ध्विज्ञिण उपिते ৰ্ভব্তি। যথা। নেধাদীনা মহ্বৃ-नरः याः मधा हे हन्तुकः। ३५४। ज्ञारीन। मध्रे मध्र हन्तुकन्छ लि-(थंडं इ: ॥ ७१৮ ॥ हान्स्वर मह्या-श्री द्वारणभारेम खंदि । भवभा-স পাতে তু ত্রযোদশ্যাসৈ র্ত্বতি । তথা চ শুক্তি:। দ্বাদশনাসা: স-स्थार कृष्टि अर्याम्यामाः म ষৎসর ইতি। ত্রযোদশেত্যধিমা-সে। ফুতিঃ। যমিনকে দ্বাদীশকত যব্য ইতি। যব্যোমাস ইতি। যুব্যা নাসাঃ ৰয়েকঃ সম্বংসর ইতিশত अश्रम् कृता यवा स्रातक मदाया नाम বৰ্ষ পৰ্য্যানতোক্তা। ইতি নলনাস ख्वु॰ ।। # ।। जथ विष्टे मस्टमत গণনা। শকেন্দুকাল: পৃথগাক্তি २२ मः मणाकः नन्ताशियूरैगः ४२२) সমেতঃ। শরাদু বিশ্বন্ধ ১৮৭৫ ছ **७: गनमः यह**्याविनक्षाः भुक्वा मरयादाः ॥ वर्षवज्ञ यरह्यः मूर्यिऽः স•পূর্য্য থোর্মিভি: । ৬০। হত বুংৎ-ক্রমত: থাগ্রি ছতে ংশে মাসকাদয: । अन्।र्थः। भरकन्तुकानः भक्ता-काद काल:। পৃথক্ সাকৃতিমঃ ২২ ছাবি শত্যা প্রিতঃ। শশান্ধ নন্ধা-িবযুগৈ বেকনবত্যধিক শতদ্বযাধিক *চ*তৃঃ সহ*ৈ*ুঃ সমেতো **হ**ন্ধঃ । শরা-ি ব'ৰন্দুছভঃ **পঞ্চস**গুত্যধিকাষ্টা-াশাঠৈ গাঁৱ**ে সংখ্যা হন্ত্ৰ শ**-্ৰত ভাৰতা ছ্ত: কৰ্ত্তব্য:।সলব্ধ: शृहंभ हादः भारत्र आदिना सक्तिमः **थ**)या यु**डः कार्य्यः। यश्चे ग्रश्लाय श**् म्हारिया ६ इ: भृईवट यष्ट्राज्ञ उ व्यक्त महाविभाष्ट्रे भू छवा स्यः। এकावः শেষে পুভব: ছ্যান্যবনিষ্টে বিভ-वाहिः। वर्षवज्ञेष्ठ ग्रह्म वर्षाजिति-ক্ত শরাদিববিন্দৃত্তাবশিষ্ঠ তৎ म्र्रिंग ब्रान्म जिः मः भृगं (शार्षिजिः

ষষ্ঠ্যা ক্তে ব্যুৎক্রমত ইত্যুনেন ষষ্ঠি হাতাৰিতা অন্ধা দণ্ডা: ষ্ঠি হাত লন্ধা শকে থাগ্নিছতে ত্রি শঙা হতে ২বশিষ্টা অংশকালব্ধা মাসাঃ সু। ব্লিতি। পুভবাদি বর্ষাণ্যুপক্রমঃ । चारत ज्विःमि जित्रां की विजीया বৈক্ষী মৃভা। তৃতীয়া ক্ৰুদৈবভগ শ্রেষ্ঠা মধ্যাধমা ভবেৎ॥ঞ্চা ভবিষ্ঠ পুরাণে টেভরব উবাচা ষষ্ট্য**দ** কথ-যান্যৰ কুরা: সৌম্যাক্ষ যে প্রিযে। म तट मंत्र क ज॰ मूथा भु ख्वारि व-রাননে ॥ বহুভোষা তথা মেঘা वक्षमा। ह स्मिनी । वक्षभीता ख्या गावा व्यादि (द्वाग दिविक्कि जाः ॥ भुगाडाः भार्थिशरेक्टव भुज्रव পরিকীর্বিতাঃ ৷ ১ ৷ সূ ভিক্ষণ ক্ষেন-মারোগ্য সর্বে ব্যাথি বিবর্জিতা: ॥ পুশান্তা মানবা শুত্র বহুশাস্যা বসু-ন্ধরা। হুষ্টা স্কুষ্টা জনাঃ সর্বে বিভবে চ ৰ্বাননে ॥২॥ বোগা বহুবিধাকৈৰ भनुष्ता वाकि अञ्जताः। मर्व এव न्तर्भाति भूक वर्ष वदान्त ॥ ।।। উন্মত্তঞ্চ জগৎসর্ৱ• ধন ধান্য সমা-জল। নিত্যেৎসবঃ পুলাবৃদ্ধিঃ পু-নোদে জাযতে প্রিয়ে॥৪॥ नीরো-গাশ্চ নিরাবাধা মানবা বিগতদ্বিবঃ । व ्कीवा खया गावः भाकाभाजा

वज्ञानत्न ॥ १॥ निज्ञा उत्तर कगए-সর্ব ধন যৌবন গর্বিত i অঙ্গিরসি পূজা: সর্বা নিত্যেৎ সাহা ব্রাননে য়েড**াস্ভিক্-ক্নেন্ন্রোগ্য বর্ষা** কাল সুশোভন । শস্যবৃদ্ধি বি-कानीयार श्रीमूर्य मृतविमाउ॥१॥ वङ्कीदा उथा गावा धाना क वन-বত্তর•। জায়ন্তে সর্বশস্যানি ভাবে वर्ष वद्रान्ति ॥ ৮ ॥ गर्हार्यः कायरङ সর<sup>-</sup> ঘৃত তৈল রসাদিকণ। পুজানা-प ज्विवृद्धि गृं नि मध्यमात्र मुख ॥ ।। निञ्च दिः नर्दणम्यानाः सद्या খাতরি কীর্ত্তিতা। ইক্ষু ক্ষীর গুড়া-मीनाः भुवलद्वः वहानस्य ॥ २०॥ সুভিক্ষ (ক্ষম নারোগ্য কার্পাসস্য सहार्घ छ।। नवनः सनुगवाद्यः देखदा मूर्व ड॰ भिर्य ॥ ३३॥ मृ जियः कान बारताग्रः भुषाञ्चाः भाषिदाः भिर्ष ৷ ভক্ষরোপহত বিত্ত বহুধান্যে वद्रानत्न ॥ १२ ॥ ताष्ट्रे छत्र क पूर्जि-ক্ষণ ভস্করৈ শেচাপপীড়ন। জানীয়া দ্বিগুহু ঘারে পুয়াথিনি বরাননে श >>॥ कायत्व मईनम्यानि त्निकः नी निक्भमुदा। वादगः नधु गद्यकः सहार्यः विकास श्रिय ॥ ५८ ॥ काः मुदाः मानि गुप्ताम्ह माङ् गाया ख থৈব চ। নহাঘা জায়তে সর্ব বৃষে চ ज्दवन्ति ।। ১৫ ॥ ठ१को सूद्ध सा**वा**-শ্চ অন্যায় বিদল প্রিয় । মহার্ঘণ হ্লাযতে সর্ব্ধ চিত্রভানৌ বরাননে ॥ ७५ ॥ जिञ्जः (क्रम बाद्राग्रः विश्वक निक्रे भूपुर । व्यवहादा छ-(वट श्रुष्ट: मर्जानी (नवभूकिए ॥ ১৭ ॥ অতিবৃদ্ধিক জাবেত ধান্য-স্যাথ পুপীড়ন । শস্য ভবতি সা-মান্য দাকণে সুরবন্দিতে ॥ ১৮ ॥ वरुणमानि जायस गर्वस्य मु-व्याहरन। भोत्रार्ध्ने नाहिरम्हण ह পার্থিবে নাত্র সংশ্যঃ ॥ ১৯॥ দুর্ভি-ক্ষণ জায়তে হোৱে সর্বোপদুব সং-যুক্ত । অনাকৃষ্টি: সমাখ্যাতা ব্যযে সন্বৎসরে প্রিয়ে ॥ ২০ ॥ উদ্যাতা বর্ষণে মেঘো জল নৈবোপজাযতে। गहार्ध नर्व जिन्नत्वं नर्वस्य वदानत्न ॥२)॥ कानुवाः भानि मुद्रान्छ कञ् भाषा खरेथव ह। मुल छ कागड मुद्धः कगरेष मद्यशिष्ट्रिण ॥ २२ ॥ অনগ্রপুবলা লোকা ধান্যৌষধি পু-शीउन । काया मानूष कर्ड वि-द्राविनि न मः मरः ॥ २० ॥ मर्दाः পুরাঃ পুপীড্যন্তে ব্যাধি: শোকক জাযতে। শিরে। বক্ষো ৎক্ষিরোগা; শ্চ পাপান্ধি বিকৃতে জনা:॥२८॥ উপজ্ত জগৎসর্ব তন্ধরৈ মূবি: रिकः थरेगः। भीष्रिजाक भुबाः मर्वा **(मणडका: थात्र शि**ष्य ॥ २० ॥ जू-ভিক্ষ ক্ষেম নারোগ্য শস্য ভব তিশোভন•। বহুক্ষীরা স্তথা গাবো नन्तन नन्त्रत शिख ॥२५॥ जन्न তোয়া তথা মেঘা বর্ষন্তি খণ্ডনণ্ড-(ल। नण्डि সর্বশস্যানি বিজ্ञবে। নাত্ৰ সংশ্যঃ॥২৭॥ ক্ষৃতিয়া ক তথা বৈশ্যা: শূদাুুুুুুুু नहे नर्खकाः। शी-ডিতা তে ব্রারোহে জয়ে সর্বে ন ञःশयः ॥ २৮॥ मद्रागकः उषा দেবি দাহ জুরসমন্বিত । অভিভূত• জগৎসর্ব• নন্মথে সুরবন্দিতে।।২৯ ॥ जुर थाना क्राया (पवि नवनगा **মহার্ম্য ব্যবহারাশ্চ নশ্যন্তি দুমু**ি (थ पूर्य थाः भुकाः ॥ ०० ॥ शीफार সর্বাস্যানি দেশে দেশে শুচিমি-(७। (इनलाइ भुकाः नर्वाः कीयास्त्र ना**व म॰मगः॥ ७**२॥ उऋ**द्रिः भा**-র্থি বৈ শৈচৰ অভিভূত নিদ• জগৎ ৷ অর্ঘা ভবতি সামান্যো বিলম্বে তু ख्य· मह् ॥ २ ॥ विषमञ् · नग সর্ব বিরোধে ভ্য সংপ্রব। বিকারী সর্বতো হপাযোমম বাক্যন্ত নান্যথা 11 20 11 कृष्टिवर्षे अब्द्धित्रा (मा अ-हिनम ७ नः । पूर्जिकः भवंती वार्ष **ब्रावशास्त्रा विश्व**रंगः॥ ०८ ॥ मूर्जि

कः बाया अर्वा (यिनी प्राजिः প্রিয়ে। প্লবে প্লবন্তি ভোষানি পীডি-**छ। मा**नवा ज़ुवि ॥ २० ॥ मृदर्ग क्ला थान्यानि बगर् मर्दः मूर्णां छनः । ব্ৰাহ্মণা বণিজ: স্তষ্টা: সুভিক্ষে শুভ-কৃৎপূিষে ॥ ১৬॥ সৃভিক্ষণ ক্ষেম-মারোগ্য তৃপ্তা গো বাহ্মণা: প্রিযে। সুস্থিতা: শোভনে ব্যে পুজা: সর্বা: मुलाहरन ॥ ७१ ॥ विषमञ् • छन्। সর্ব ব্যা**স্থল স**মূদাজ্ ত ৷ জনানা • জাবতে ভদু কোবে কোব: পরস্প-র• ৷৷ ৩৮ ৷৷ সর্বত জাযতে ক্ষেম্• जर्दमम्। भशार्वजा। विश्वावरत्रो व-রারোহে কার্পাসস্য মহার্হত। ॥ ৩৯ ॥ भार्षि रेव व्<sup>र</sup>भ रेमरेनप्रफ नम-रिखः थलनलल । भूभी छार बनाः সর্বে ভষভীতাঃ পরাভবে ॥ ৪০ ॥ তৃণধান্যানি পীড্যন্তে গ্রীম্মে বর্ষতি বাসব:। প্লবকে পীডিতা: সর্বা: भूका**क मू**त्रवन्ति ।। ८) ।। कारास সর্বশস্যানি সুভিক্ষণ নিৰুপদুব । (मोग्रहिंडे ड्विमाजा कालिक ह जुड• वरहर ॥ ८२ ॥ जुडिक• (कम নারোগ্যে সুখঞ্চ নিজপদ্ব । সৌন্য-मृष्टि ভবেদালা भोग्रा भाषाः भुः कीर्ज्जिञ ॥ ८० ॥ তোयभूर्गा ভবে-ब्याद। वर्षा ह नित्न मितन । निक्न-

क्वाक वाजानः नर्वनावाद्रत नित्य ॥ ८८ ॥ वामावा वर्षा एपवि (मान চাথওনওলে। অহিছবে কান্য **স**রে বিরোধী কৃষিনাশক্ৎ ॥ ৪৫ । **অভিভূত জগৎসর্গ ক্লেশে র্ব**হুবি-रियः शुर्य। भाक्टिः कलमारेहण পরিবারিণি শোভনে ৷৷ ৪৬ ৷৷ নিম্ল-ভি: নৰ্বশন্যানা সৃভিক ভবতি शितः भुगाथिन कलाम्गाती क-লদো নোদতে পুজা।। ৪৭॥ নিয়-खिः गर्नगामा गर्नगा गर्ना-ষ্তা। যুত তৈলসন যাতি আ-नत्म नन्दि भुका॥ ८৮॥ (का-দুবা: শালি মুদ্দাক্ষ প ডাভে বর-ৰণিনি ৷ সন্বৌৰ্থানি খান্যানি রা-करन निष्ठद्राः शुक्राः । ८२॥ पूर्णिकः জাঘতে ঘোর• ধানে)বিধি পুর্পাতন । অনলে চ সমাখ্যাত নাত্র কাষ্যা বিচারণা ৷৷ ৫০ ৷৷ দে**শভক্: সু**দুর্ভি क्र नवामाए कथवाम। इ. । शिक् লে চাৰুপদাকি দুর্ভিক নমনা-७६६ ॥ ७३ ॥ भागमहिष्यु। विनन्तु ন্তি যে চানেঃ নট নৰ্ত্তকাঃ। বাসবো ৰৰ্যতে দেবি শস্যঞ্চ ন হি জাবতে॥ **िल अवंश भाषाति कार्शामानाः** মহার্যতা। গো মহিষ্য: সুবর্ণানি का ना जामुन्द्रान्य व ।। उ -

नर्द पार्वि विकीय कर्डव्या शानाम-ক্ষয়:। তেন ধান্যেন লোকো হয়। নিস্তরিষ্যতি দুর্দিন ৷৷ পার্থিবা মো-यका मीनाः कावगुरक भुभी फिजाः ।। ৫২।। ভোষপূর্ণা: मृञा मেঘা বহু-শস্যাচ মেদিনী। নিষ্ঠুরা: পার্থিব। 'रमवि जिक्कार्थि ह वज्ञानरन ॥ ६५ ॥ অল্লভোষা ঘনাশ্চৈব কীটকাঃ পুৰ-লা: নৃতা:। বিক্দা: পাথিবা দেবি রৌদুে সংবৎ সরে প্রিয়ে।।৫৪ ॥ मुर्ভिक• सथ्रम• (भुक्क• व्यवहादा। न वर्ङ्ट । ভবেষৈ মধ্যম। वृष्टि पू-মতৌ সমুপছিতে॥ ৫৫॥ সুভিক জাযতে লোক: সর্বোপদুব বর্জিতঃ । পুাণিনা॰ জাহতে হর্ষো দূলদুভৌ বরবর্ণিনি। ৫৬॥ নহিষী গো হির-ণ্যাদি ভাযু কাংস্যাদ্যশেষতঃ। ত**ং** अर्बर (मर्वि विकीय कर्खावा। शाना म-ঞ্যঃ।। রক্তে সংবৎসরে দেবি ক্র-वृक्षि नंत्राधिशः । भानवाः क्रूब्राह-ষ্টাশ্চ সংশ্ৰামে ন জযো ভবেৎ।। ৫৭ ॥ দুর্ভিক্ষণ মরণ রোগো খানেটা-ষধি পুপীডন । পাপরোগো ভবে-দেবি রক্তাঞ্চে ২নরবন্দিতে 🛭 **৫৮॥ (द्रारण) मद्रण मूर्जिक्कः विद्या-**থে। বহুসংসল:। ক্রেছে তু বিষনং नर्बः नमाथाञः इद्यन्तित ॥ ७२ ॥

মেদিনী চলতে দেবি সর্বভূত চরা **८द्रः । (रूग्ड्यः**क पृर्ভिकः करि अन्भीयां नुका ॥ भोतां हु भाग বে দেশে দক্ষিণে কোঞ্চণে তথা। मुर्ভिक्क कायां वात्र वात्र काय मन्दर मात्र लिए।। (कोमुनी हमनाराज्य यमूना नर्षाता उदि । विक्रशायाः रेन-হ্মবে চাপি বিনশ্যতি ন সংশয়:॥ **त्रिः इवः भध्यात्रणः कावञ्जतः उ** रिथव ह । क्षरय क्षर विश्व मर्दाणि नान्। था वद्रवर्गिन ॥ ७० ॥ 🗱 ॥ कार्डि कारि हारभवर्षां यथा। वताइ-अंश्विडायाः । नक्कां वि अस्ति र ম্বত্ত বা থেন বাভি সুররাজনজী। **তৎস**ণ্ড্ৰণ বক্তব্যণ বৰ্ষণ মাস ক্ৰমেন্ रैनव।। वर्षानि कार्डिकारीनि चाएः याम् अवयानुत्यानीनि । क्रमण जि ख्क शक्तम मंस्रा मुशास्त्रक विरक्त १० ११ नक्षात्वन धक्षून्यमाननक्षावन । व्यास्त्रयः क् विका। शक्षनः काञ्चनः বর্ষণ। অন্ত্য নাখিনণা উপান্ত্যণ ভা-দু'॥ অন্ত্যোপান্ধ্যে ত্রিভৌ ক্রেযৌ কাল্লুনক্ষ ব্ৰিভো নতঃ। শেবা নাসা षि जा छिया: कृष्डिकारि वावश्या॥ एव एव विकासि जात्रागा॰ भूर्ग भारतीन्तु ञःक्र । भागा रिक्त वाहरया (क्रिया বিক্রি: ব্যান্ত্য সন্তবা: ॥ ইতি স

कर्वनकाखाइ ॥ भूनभार्वन्तुनक्छ वाकाज्या भूर्वदहरन श्लोनंगानीणा-जः। यथा नामानाः (भोर्ननाम्।° क्डिकारिमस्झाट कार्डिकारियः ভথা বর্ষাণামলি গুরো: কৃত্তিকা-मावरञ्चामय अञ्चकाट कार्जिकामिन्द्र তেন কৃত্তিকা রোহিণ্যো রেমতর-म्बिन् छात्र। त्राखान्तर १नाउत्रमा छ कार्जिक वर्षः। এवः भार्गभीयानि। অত্ৰ ৰ্ষৰ্য ঘটক্ষো নক্ষ্ত্ৰে। ব্লে-ক্তর্মিন্ত'গ্রে ওক্ র্ম্যতর্মি-ন্ত্ৰেড ভঙ্গ কা গতি ব্লিভি চেৎ কার্ত্তিকোত্তর• মার্গশীর্ব• তত: পৌ-ৰ নিভ্যাদি জনাদ্গভি রিভি ॥ क्वानि ह। भक्रोनलाभकीविक গোপীড়া ব্যাধিশোকক। বৃদ্ধিস্ত রক্তপীত সমূমানা কার্ত্তিকে বর্ষে ॥ १ ॥ भोत्य शक् भ्यावृष्टि मृ-गाथू नव जाउ किन्ह नगुनानः। ব্যাধিভয় মিরৈ রপি ভূপানা कावरङ रेवत्र ।। २ ॥ मूछकृष्कारः भाषा निव्खरेवताः भन्नम्भनः ज्-পা:া ছি ত্রিগুণো খান্যার্য: পৌ-প্তিক কর্ম পুসিদ্ধিক্ষ।। ৩।। পিতৃ न्जा नितृषि भाष शर्मक नर्वे ভূতানা । আরোগ্য বৃত্তি ধান্যার্ছ

जम्मारमा विख्वााङ्क ॥ ८॥ काल्यान बार्ष विष्णां कृष्टि कृष्टि किय ब्हेति मन्त्रानि। (दोर्डागः भूम-सानाः भुवना (महोत्रा नृशास्कांगुः: रा ७।। रेठाज मनरा वृष्टिः निष्यमभः ক্ষেম মবনিপা মূদব: । বৃদ্ধিক কোৰ ধান্যস্য ভবতি পীডাচ ৰূপবতাং । ৬।। বৈশাথে ধর্ম পরা বিগভভ্যা: প্রুদ্ধি: পূজা: সন্পা:। यकः ক্রিয়াপুর্ত্তি নিল্পতি: সর্বশস্যানাণ १: १ ॥ कि । हे जा जिल्ला के विश्व में भी শে্ধা নৃপা: সর্ধর্মজা:। পীডাত্তে খান্যানি চ হিত্বা কঙ্গুশানীজানি।। ৮।। व्यावात कायः च चम्रानि इ िष्टि तनाज। याग क्मिन सपाः শস্ব্যুণ্ড ভবন্তি ভূপা: 11 ৯ ॥ শ্ৰুবেণে ব্যে ক্ষেম কাম শ্ৰুম্যানি পাক মুপ্যান্তি। ক্ষুদুা যে পার্থি বা ভে পীড্যন্তে যে চ ভড্ডকা:।। 🕻 • श ভाদুপদে वीक निञ्जलि याजि পূর্বশস্থে। ন ভবত্যপরং শস্যং कृति मुल्कि विष्ठ पूर्लिकः॥ ३३ য়। আখযুজেপ্যজ**সু**• পত্তি জ**ন**• भूगृषिजाः भूबाः (क्रमः। भूगिष्ठयः প্রাণভূতা সর্বেবামথ বাহল্য ॥১২ 🔃 ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ॥ 🗱 ॥ সমা-न्। मि शक्ष्वर मद्रा यथः। भक्षः

दाए ११६ जिः (भवार नमाम्। मितु वर्मद्राः। मणदीमानून्द्राक छ-(थानान्वका मजाः॥ जन्य जदानि क नमूक विक्थापा खाद । नष्ट সরে তথা দান তিলস্য তু মহা : ফল। পরিপ্রে তথা দান যবা-नाक हिटका खगाः॥ इमा भूर्व १व-वजानाः धान्यानाक्षानून्वरकः। উ· मः मध्यमात्र मानः त्रक्रजम् मर्गः कन ।। (क्यांकिर्विष्णुं क्यं मध्यां পুভবাদেশ্চ সম্ভব•। উচু স্তদ্ধৎ स्राम्याम् वर्षानामि सञ्चवः ॥ हेक्रामध्राट । खक्नश्राखागगन-नार । भुजवारिः । भुजवारिवर्षः ষঙ্টে:। ইতি মলমাসভত্ত্ব•।। ব্ৎসরাস্তক: পু৽ काञ्चनभागः। ইতি রাজনিঘণ্ট:।। ত্রি স্বেছ্যুক্ত:। তৎ-ব্ৎসলঃ পर्यायः। त्रिकः २। ইত্যমরः॥ वर्ञनः भुः मृक्षाद्राहितमद्रमास्र-र्गजतमितानायः । जटमब्रायः । বাৎসল্য । ইক্তি ভটাধ্র: ॥ বৎসলা জী বৎসকামাগৌ:৷ইভি (रुगठन्तुः॥ बर्भारतः भु वृकः। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট: ॥

🏻 व्यापनी जी ७५ ही। हेड अब इः ॥

বৎসাক্ষী স্থা গোডুষা। ইতি। জটাবর:॥

वन हे ७ नुज्जिबानयाः। हेजि कविवद्गक्रमः ॥ অভিবাদো नम-কার:। ই বন্ধ্যতে। ড বন্ধত গুৰু লোক:। নমন্ধরোভি ভৌতি বা ইত্যৰ্থ:। ইতি দুৰ্গাদাস:॥ বদ ঐ বাচি।ইতি কবিকল্পদাঃ।। ঐ উদ্যাহ। ইতি দুগাদাস: ॥ क वाक्नान्सणायाः। इंडि कविकन्नक्रमः ॥ क वाप्तरेजि । স-(न्त्रामा व्हनविष्मयः॥ अयमाञ्र-(नमिहीर्ड)रक। ইতি দুর্গাদাস:।। वर कड वाक्मान्समायाः। इंडि कविकन्नक्रमः॥ अ वन्छि। उ वन-তে। অথমাত্মনেপদীত্যন্যে। ইতি ইতি দুর্গাদাস:।৷ वनः वि वङा। ३७/मद्रः॥

বদ: ত্র বক্তা। হত্যের: ।। বদন ক্লী নুখা। ইত্যের: ॥ বদনাসব: পুল অধ্রমধু। ইতি ভূরিপুযোগ: ॥ বদবিং ক্লী ক্লা। ইতি সিদ্ধাস-

वर्गातः व्यो कथा । इंडि निकास-वर्ग्गो (कोमूनी ।। विन्नर्गण्ना वर्गात्र निर्माणिक खर्गात्र वर्गाः वि वर्गानाः । इंडानब्री-का नाव्रमुन्त्वी ॥ वर्गानाः वि वस्तुषः ॥ वस्नुवाक् । ইভ্যনর:॥

विषानः क्री कनविष्णवः। वाषान् देखि ভाषा। छ८ भग्रायः। मूकनः २ वाखेविदिः ७ निर्धानमः ॥ ॥ व्यम्प छनाः। छैकवः। मूकिकादिकः वाख्यदः। छक्षः। मूककादिकः । देखि द्राक्षनिष्णेः॥ व्यभि ।। वाखाना वाखेवद्रीम्प्रासिद्धानम् कन छथा। वाखान छैकः मूक्तिका वाखाः मूकक्ष्छकः॥ वाखानम-छा। मूक्तक्ष्छकः॥ वाखानम-छा। मूक्तक्ष्छकः॥ वाखानम-छ। मूक्तक्ष्छकः॥ वाखानम-छ। मूक्तक्ष्णकः॥ वाखानम-छ। मूक्तक्ष्णकः॥ वाखानम-ह। शिक्षाक कक्ष्य (मुक्ति द्रक्वि निर्ख विकादिनाः। देखि छात-

वनावः भू भएम। विश्वाः। ताव्यावि इंडि डावा। उएभगायः।
भागीनः २। इंडि द्विका अम्बरः॥
इत्रक्ति। उपमानियानिषः यः
था। भागीन द्वाहिडावारम्। नि
गुक्ती इत्र कत्रायाः। इंडि ननूः॥
वमानकः भू भागीननएमाः।
इंडि जूदिभुषाणः॥

বদাবদ: ত্রি বক্তা। ইত্যমর: ॥
বর্ঃ ক্রী প্রা।। নারী।। সুবা।
ইত্যমর:॥ শারিবৌষধি:॥ শটী॥
নবোঢা।। ভার্য্য। ইতি নেদিনী।।
ভরতন্ত্রিকেন অনুরকোষ্টীকাষা:

পবগী বিবকারা দি বন্ধপাতুনা নিয়াদিতো হয় শব্দ: । মেদিনী
কোষকারেণ তু অন্তঃস্থ বকারা দি
শব্দ মধ্যে পরিগণিত: ।। # ।।
পিতৃগৃহভোজনানন্তর স্বানিগৃহ
ভোজনে অস্যা দোষো যথা ।
ভূত্তা পিতৃগৃহে কন্যা ভূততে
স্বানিগৃহে যদি। দৌভাগ্যা ভাষ্য
তে তস্যা: শপন্তি স্বানা্যিকাঃ।
ইতি ক্লাবোচন ৷৷ নববপ্বাগনন
দিন পব ী বিবকারা দিবপুশব্দে
দুষ্টব্যা ৷৷

ৰপুজন: পু' যোবিৎ। ইতি ত্রিছাও: শেষ:।।

ব্ধূটশ্যন ক্লী গ্রাক্ষ: । যথা। বাতাগন গ্রাক্ষ: ন্যান্ত্র্টশ্যন স্থা। ইতি ত্রিকাপ্তশেষ: ॥

বণ্টী স্ত্রী সুষা। ইতি ত্রিকাণ্ড শেষ: ।। সুবাসিনী। ইতি হেম-চন্দু: ।। অল্লাবপূ: । ইতি হারাবলী বন সম্ভূতিশন্ধযো: । ইতি কবি-কল্পছম: ।। বনতি। সংভ্তি: সে-বনং । ইতি দুর্গাদাস: ।।

খন উন্ন ব্যাপ্তৌ। ইতি কবি-কল্পজনঃ॥ উবনিত্বাবত্বা। মপুবন যতি। নিত্বেপি অস্যঞৌজ্বভাল ত্যাদিনা কেবলস্য ভূখ বিকল্পনাৎ সোপসর্গ সৈয়ব নিত্য ভুষ: ।
বন্যতি বান্যতি । ব্যাপ্তি ব্যাপার: । অযন্ত কণ্মেবৎ ক্রিযানাত্র
ইত্যন্যে। ইতি দুর্গাদাস: ।।
ন দ উড যাচে । ইতি কবিবল্পফ্য: ।। দ ড বনুতে । উ বনিত্বা বন্ধা
। ইতি দুগাদাস: ।।

ন কি উপকৃতিশুদ্ধ:ঘাত শব্দো-পতাপেষু। ইতি কবিকল্লজন: ॥ কি বানযতি সন্যতি। অয়ং কশ্চি যনন্যতে। ইতি দুর্গাদাস:॥

क्री खी বহুৰ্ফযুক্তস্থান । ভৎপর্য্যয়ঃ। অট্রবী ২ অরণ্যুণ ৩ বিপিন°৪ গছন• ৫ কানন৽ ৬ ৷ ইঠ্যুমরভরতৌ॥ দাব: १ দব: ৮ অটবি: ১ ভীৰুক্ >০ ঝাট >>> গুছিন ১২। ইতি শব্দরত্রাবলী॥ শত ১০ সমজ ১৪ পুান্তর ১৫ বিক্ত॰ ১৬। ইতি জটাধর: ॥ का-ন্ত'র• ১৭। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। 🗱॥ গৃহসমীপকর্ত্তব্যবন• যথা। শিবি-রাভ্যন্তরে ভদ্যু স্থাপিতা তুলসী नृगाः। धन भूधभुषाबी ह भूगापा হরিভক্তিদা ॥ পুভাতে তুলসী मृद्धी सर्गानकन नाउर । नान जी যুথিকা জন্দ মাধ্বী কেতকী তথা ।। নাগেখর মৃল্লিকা চ কাঞ্ব বলল শুভা। অপরাজিতা চ শু छमा (उवा मूम्यान भी श्रेष्ठ ।। भूर्ब চ দক্ষিণে চৈব শুভদ নাত্ৰসংশ্যঃ । ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে এক্ষরমথণ্ডে २०२ व्यक्तायः ॥ # ॥ मशूद्रायाः ह्यामण वनानि यथा। त्रमार मधुवनः नाम विष्णु हान मनूखमः । उपृष्ट्री मनुष्का (पवि नर्दान् कामानवाशुः যাৎ ॥ বন ভালবনঞ্চৈব দ্বিভীয় বন মুক্তন । তত্র স্নাত্মা নরো দেবি কৃতক্তেয়া হি জাযতে ॥ তৃতীय॰ अगूपः नाम वनः हिरवाखमः ख्या। তত্র গত্বা নরো দেবি ক্রক্ত্যো হি জায়তে !৷ একাদশী কৃষপক্ষে মা-সি ভাদুপদে হি যা। তত্র মাতো ন-ता प्रिव क्षूप्लाक मशीग्र ।। b-তুৰ্থ- কাম্যকবন বনানা বনমুত্তম। ভত্র গত্বা নরো দেবি মম লোকে ম-ছীনতে।। বিমলস্য চ ছণ্ডে তু সর্বৈঃ भारिभः भूग्रहाउ । यस भुगुकाउ भागान् मन लाकः न गह्रि॥ भकः ম॰ বহুলবন॰ বনস্থান মনুস্তম॰। তত্র পত্ন। নরোদেবি অগ্নিস্থান স গছতি 11 यमूनायाः शाद्र शाद्र (हवानाम-नि मूर्न छ । অভি ভদুবন नाम वर्षः वन मनुबमः॥ छव गद्या छु वनूर्य मख्राका मर्भवायमः। उद्यनमः भू

ভাবেণ नागलाक ग गहि ॥ স গুমন্ত বন ভূমে থাদির লোক্বি-শুক্ত । তত্র গত্বা নরো,ভদু নন লো-ক স গছতি !৷ নহাবন চাষ্ট্ৰমন্ত गरेहर जू मम लियः। जिमन् शादा लू मनुरका इन्मुरवास्क मशियल ॥ লোহজ ব্বল নাম লোহজাগ্ন ब्रिक्किछ । नवमञ्ज वन (पवि महा-পাতক নাশনং।। বনং বিল্ববনং নাম দশন দেবপ্জিত। ভত্ৰ গড়া ভূ মনুজো বুজালোকে মহীযতে।।একা-দশন্ত ভাণ্ডীর যোগিনা প্রিয়নুত্ত-मः। जम् मर्मन साख्य नाता गर्लः ন গঢ়তি ॥ ভাণ্ডীর সমনুপাপঃ বনানাণ বনমুক্তন্ণ বাসুদেবণ ততো-मृष्ट्वे। भूनर्जां न विकारण ।। वृन्तादन॰ षामणयः व्यत्या भद्रिव्रक्षिछः। यम-চৈব প্রিয়ণ ভ্রেন মহাপাতক নাশনণ ॥ वृन्तादमञ्ज शाविन्तः स भन्द्रि বসুন্ধরে।নভেষনপুর• যান্তি বৈজ্ঞ• श्रान्य यू नंताः ॥ इंडि वाताः मथू-ब्राडीर्थवनहार नक्दर्गनः नामायायः ।। 🗱 ।। वनविष्णाय मद्रा कलः गया। যদেব কথিত পুণ্য মধা বুন্ধমুখা हु। ७९। ७९ मभगुः ভবেন্তमः। यतः (१)श्यात्रयू ह ॥ व्यत्रभानि शुवक्काः नि उथा हित्वायद्राणि ह। रेमक्व

।। উপলাবৃত মারণ্য জঘুনার্গো হথ পুষর । হিনবাস স্ততো হরণ্য উত্তম: পরিকীর্ত্তিত:।। নবয়েতে-श्वद्रागुर् यस भागम् भद्रिजाहर । বৃদ্ধলোকাভিথি ভূঁত্বা স যাতি পরমণ পদ । ইতি, দেবীপুরাণে चार्त्राग्रवद्र**भूमः ना** ॥ 🕸 ॥ चार्राण्ड वर्गनीयानि यथा। खंद्राला १ इर् द्वारङ्ख्यूथ निः हान्त्या क्रनाः । শুক কাক কপোতাদ্যা ভিল্ল ভল্ল भवाषयः ॥ উদ্যানে वर्गनीयानि यथा। উদ্যানে সর্রণিঃ সর্ব ফল পুয় লভা ফমাঃ। পিকালি কেকি হ সাদ্যা: ক্রীডা বাপ্যবৃগস্থিতি: ॥ ই**তি** কবিকল্পভাষা• ১ স্তব**কে** ৩ সমুন•॥

वन क्री कला। निवामः।। व्यानदः । ইতি মেনিনী।। পুসুবণ । ইতি (इन्डन्द्रः॥

वनकम्ली जी काष्ठकम्ली। ইতি क्राजनिर्घफेः॥

यमभूत्रमः ॥ ध्राभी-वनकः मः कन्तः। इंडि द्राजनिर्यणः॥

यनकार्भाभी जी दरनाच्हदकार्भाभः। তংপয্যায়ঃ। ত্রিপণা ২ ভারদালী ০ বনোক্তবা ৪। ইতি রত্নগালা ॥

म अकात्र भुः रेन्त्रियः अक्काक्ष्यः ॥ यनरकाष्टिः जी यन जयम्त्री। उर्ः शर्य)। वर्किनका २ कनकर्वणा ৩। ইতি কোৰান্তর•॥ वनागावदः ٩ţ٠ व्यायः । इंडि (किंटि ॥ বনগোঃ জী গব্ধ:। ইতি ব্লাজ-

निर्घणेः ॥

वनहन्दन द्वी चन्छक् ॥ दिवहाक् । ইতি বিশ্ব: ॥

বনচন্দ্রিকা जी मिलका। इंडि त्राक्रनिर्घिः ॥

ব্নচম্পকঃ পু॰ বনজচম্পকপুল্প-वृकः। ७० १ र्यायः। वननी १: २ (ह्नाञ्चः ७ मृक्नातः ८। व्यम्) न्ध्याः। कर्षे द्वः। उक्षद्वः। वाञ कक्ष नामिष्यः। वर्ग्यद्यः। ठक्ष्याष्यः। तुग-রোপণত্ব । বযস্তম্ভকারিত্বঞ্চ । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

वनहागः भुः अवगुहगनः। ७८-शर्यप्रायः । এডकः २ मिम्बाह्यकः o । ইতি ভিকাওশেষ:॥ শ্কর:। ইঙি শব্দনালা॥

वनकः क्री व्यष्टुकः। इंडि सिमिनी।। ব্দজঃ পু॰ মুস্তকঃ।ইতিমেদিনী। গজ: । ইতি বিশ্ব: ॥ বনশ্রণ: । ইভি রাজনির্ঘণ্ট:॥

বনজা জী মুদ্ৰপণী। ইতি মেদিনী

॥ अद्रगुकार्शामी ॥ वत्तारशाहकी ॥ अयंगक्षा ॥ गक्षभण्या ॥ कि(भ्या ॥ वेन्द्रः । इंडि द्राक्षनिर्यन्ते ॥
वनकीदः भूः वत्ताक्त्रकीद्रकः ।
वर्षायः । वृद्द्रशाली २ मृष्यभणः ० अद्रगुकीदः ८ करः ६ ।
अप्रक्षाः । कृद्रः । भी उद्यः ।
व्रन्ताभिद्रकः । इंडि द्राक्षनिर्यन्ते ॥
वनजिकः भूः इदी उकी । इंडि
भद्दमाला ॥

বনতিক্তা স্ত্রী বনতিক্তি না। ইতি রন্নমালা॥ বনতিব্রুকা স্ত্রী পাঠা। ইত্যমরঃ॥

व्नाष्ठाक्का छ। भागाः १२०) भन्नाना व्नमः भू॰ भ्याः। ইতি শন্মाना ॥ वनमा उति जि॥

वनम्मनः श्रुः व्यवगुप्तमनः। इंडि वाक्रिमिणः॥

वनहीशः श्रु वनहम्लकः। ইতি রাজনির্ঘট:॥

বনধেনু: পু॰ গ্ৰথী। ইতি রাজ নির্ঘটঃ ।

বনপল্লবঃ পু? শোভাঞ্জনমূকঃ ।
ইতি জটাপর:।। অরণ্যজপ এঞ্চ ।।
বনপাংশুলঃ পু॰ ব্যাপঃ । ইতি
শব্দরহাবলী ।।

यनिश्रशी जी वरनास्त्रविश्रमी। स्थाप्तर्थायः। मृत्रविश्रमी २ कृ দুপিপুলী ৩ বনকণা ,৪ । অস্যা গুণাঃ। কটু হুং। উঞ্চন্তুং। ভীক্ষত্ত্বং। ৰুচ্যন্ত্ৰং। দীপনত্ত্বং। সা আনা গুণাট্যা। শুষ্কা স্বল্লগুণা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

বনগুয়া **জী শত**পুয়া। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

বনপূরক: পু॰ বনধী জপূরক:। ইতি আজনির্ঘণী:।।

ৰনপুিশ ল্লী বৃচং। ইভি রাজ-নিঘণ্টঃ॥

বনপ্রিয়: পু॰ কোকিল:। ইত্য-নর:॥ অরণপুরমাত্রে ত্রি॥ বন্তচিকা জী জনবলা। ইতি

বনভদ্কা স্ত্রী ভদুবলা। ইতি কেটিৎ।।

वनजूक भू अयरजीयशः। इंडि भद्रात्मुका॥

वनमञ्जी खी वत्नाक्तवमञ्जा । इंडि मध्यक्रवावनी ॥

বনন জিকা জী দংশং। ইত্যনরং।।
বননালা জী প্রীকৃষ্ণস্য নালা।
তৎ স্বৰূপণ যথা। আজানুল নিনী
মালা সৱজু জন্মোজ্লা। নধ্যে
জুল কন্মান্যে বনমালেতি কীর্ত্তিতা। ইতি শ্মালা।।

বনমালিনী স্ত্রী দারকাপ্রী।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ বারাহী।ইতি (मिनि ॥

वनमानी भू खिक्कः। इंडामतः॥ वनमूक् भू. (मदः। इंडि ममज्ञः। वनी॥

वनमूमः श्रः मृष्टिकः। ইত্যमतः॥ তৎ शर्यप्रायः। वत्रकः २ निण्एकः २ व्यानकः ८ थेथे ६। ইতি হেম-हन्मुः॥ व्यागः व्यनप्रश्राय छानो मृज्य है मञ्चाहक न्यस्ति। मृष्टित्यो॥ वनमूमा जी मृज्यनो। ইতি बाज-निर्यण्यः॥

ৰনম্ভ: পু॰ মেবং। বন জল মূজ বন্ধ অনেন। বন মুঞ্চি ইভি বা মনীযাদি:। ইভামরটী কাযাণ ভ রভক্ত জীম্তশন্ব্যুৎপত্তি দশ নাৎ।।

वनमूर्कका जी कर्करेण्यी। इंडि बाकनिर्थणः॥

बनस्यामः जी काष्ठकरनी। ३७ ब्राजनियंग्मः॥

বনরঃ পুণু ব্যনর:। ইতি ভরত-দ্বিক্পকোষ:॥

বনরাজঃ পু॰ সি·ছঃ। ইতি শদ্ব নালা॥বনস্যুৱাজা চা।

वननन्त्रीः जी करनी। ইভি রাজ-নির্ঘট:॥

वनवर्वतः शुः कृषाक्षंतः। ইভित्राजः

निर्चण्टः ॥

वनवर्गत्रका खी व्यत्नगुष्ठवर्गती। वनवावूड हैं डि जावा। उट मर्गायः । मृगिक्षः २ मृगुममकः ० मावा-(द्वली ४ विवयः ६ मृगुशः ७ मृख-भण्यकः १ निपालः ७ म्याकहाती अमृवक्षः २०। व्यमगुष्टगाः । उक्षप् । मृगिक्षपः। भिणात वाहि क्ष्यः प्रगित्रप्रभग्पत्रका । हैं डि ज्ञाब-नियंकः ।।

বনবল্লরী স্ত্রী নিঃশূেণিকাতৃণ্ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

वनवस्त्रिः भू॰ मादान**णः। ইতি** (इन*ठन्तु*ः॥

বনবাসন: পূ• খউাস:। ইতি ভিকাপ্তশেষ:।।

बनवाजी नुः अव छना भोवधः॥

श्रुक्क वृष्णः॥ वाजा शिकन्तः॥ नाः

न्यानीकन्तः॥ नीन सश्चिकन्तः॥

देखि जाजनिष्णः॥ वनवाजकर्खः

जि जि ॥

वनवीकः ) भूः वनवीकभ्रवः । वनवीककः ) ইতি त्रास्तिर्घणः ॥ वनवीकभ्रवः भूः व्यतगुकाउवी-सभ्रः । ज्यभर्गायः । वनसः २ वनवीककः अवनवीकः ॥ व्यज्ञात ॥ शक्षाम् ॥ वर्गास्त्रवा १ (स्वम्की ।

বনহা

ব্যাগ্র:। ইতি মেদিনী॥

भीडा a (हदमाभी २० (हरवड्डी २) भाज्बिक्का ३२ शहनी ३० महा क्ला 281 जन्म खगाः। जन्नुवः। कर्रेषः । छेक्षषः । किन्निषः । বাভামদোষ কৃমি কফ খাস না निव्या ३७ ब्राजनिर्घणः॥ বন্দুজাকী জী বৃহতী। ইভিরাজ-निर्घणैः ॥ বনবুহি: পু নীবার:। ইতি ছেম-ठन्मः॥ वनमूक्द्री हो कशिक हु:। देख वाजिविष्टेः॥ चावगुरवाही ह॥ वनम्बनः भुः वरमाख्योलः। वनः अन है जिल्ला । उर्भिया । जिल्लानाः २ वनाः ० वनकन्तः B षाद्रग्रम्ब्रगः ৫ वनकः ७ (य उन्द्रगः 4 वनक्षुलः ৮। अन्। खनाः । क्राव । क्रूव । उक्ष व । क्षि **€न्त्र म्वा**मिरमाय महाद्राइक ना-**निवृक्ष**्डेि ब्राव्यमियं**ण्डेः** ॥ বনশৃষ্ণাট: পু॰ গোক্ষুরক:।ইত্য-गद्रः ॥ वनमृक्षारेकः पूर शास्त्रकः। ইঙি

त्रावनियकः॥

রনশোভন লী পদ্ম । ইতি শদ

চন্দুকা॥ বনস্যশোভাকর্ত্তরি ত্রি

वनमङ्गेः भूः ममूदः। इंडि भूष-क्ष्मिका।। অর্ণ্ড**ন**ংহ**ভি: ।** বনসমূহ: পু॰ खर्भर्गामः। वन्तर र विकामनः॥ বান্যা ৩। ইতি শব্দলাবলী।। कवाजग्रहण ॥ वनमहाकिनी जी वनकार्भामी। इंछि नद्रज्ञावनी ॥ मृगः। ইতি भदः পু **इन्द्रिका ॥ वनवाजिनि जि॥** दन्हा जी अथ्यीत्कः। इंकि ब्राजनिर्घण्डः॥ হনস্পতিঃ পু• বিনাপুল্ল ফলিজনঃ ॥ वृक्तभावः । इंडि समिनी ॥ **इ। नी वृक्षः। इं छि द्राक्र निर्यण्डः ॥** वनहिंदु। भी अद्रगुङ्गहिंदु। 1 छ्टभग्रायः। (मानी २ (मानिका ७ बनाबिडी ८। चन्या छनाः। करूँ इ॰। लोवादः। कठादः। छ-कव्। ही भनव्य। हे जि जानः নিঘণ্ট: 11 কাশভূণ । ইতি প্ ব্নহাস: ত্রিকাগুশেষ:।। জন্দব্ক:। ইভি রাজনির্ঘণ্ট:॥ বনহাসক: পু॰ কাশভ্ণ•। ইঙি **मक्**द्रज्ञावको ॥ ब्रन्थां भू॰ शक्तमार्जातः॥ रक्षकः॥

ব্ৰালি.

বদেচ

বনাথু: পু• শশ্ক: । ইতি ত্রিকা-ওংশয: ॥

বনাথুক: পুণু নৃদ্ধাইতি ত্রিকাও শেষঃ।।

জনাজ: পু॰ বনছাগ:। তৎপর্যায: । ইডিক: ২ শিশ্বাহক: ৩ পৃষ্ঠ-শৃহ:৪।ইভি হেমচনু;।।

বনাটু: পু: বর্ষণা। নীলমক্ষিকা। ইতিশব্দকো।।

বনামল: পু• কৃঞ্পাক্ফল: । ইতিশ্দনালা।।

বনালু: পু॰ কোশামু:।ইতি রাজ-নির্বন্ট:।।

वनायः शुः (नणविष्णयः। यथा । श्रवा शयक वानायु वनायु यं मूर्गाञ्च-छः । ইতি শদর বাবলী ॥

বনাযুকঃ পু॰ বনাযুদেশোন্ডবহো-টকঃ। অস্য রূপান্তর॰ বানাযুকঃ। ইঙিশহরত্বাবলী॥

ৰনারিষ্টা জী বনহরি দু। ইঙি রাজনির্ঘণ্ট:।।

বনার্চঃ: পু॰ পুল্লজীবী। নালা-কার:। ইতি জটাধর:॥

चनामुका खी वन छवा मुकि । ই छि द्राजनिर्धि ।। जन्माः भर्या प छ-तो जेन्द्र मास्म मुद्रे (वर्षे ।। द्राविका खी इ छिमू छी। यथा । वसुवस्नाहिनःशाद्या इतिम्छी व-नानिका। ইতি शादावनी ॥ वनामुयः न् (मानकाकः। ইতি জটাখরः॥

वनाहितः श्रुः म्क्तः। ই ि जि-का श्रुण्यः॥

ৰিনঃ পূ॰ অগ্নিঃ। খনি ক্ষি অজিঅসি বসি বনি সনি ধ্বনি গুছি বলিভ্যান্চ।ইভ্যানেন বনধাকো পূর্বানুবৃত্ত ই পুভ্যাবেন নিম্লন্ধঃ। ইভি
সিদ্ধান্তকৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ।।

বনিত: ত্রি যাচিত: ॥ সেবিত: । ইতি নেদিনী ॥

ৰনিতা স্ত্ৰী জাতরাগদ্ধী।। স্ত্ৰীসা-মান্যং। ইতি মেদিনী।।

বনী জ্রী বনং। ইত্যমরটাকাৰাং ভরত:।।

ञ्जलः ।।

वनी श्रु वानशृष्टः । यथा । शृह
त्मधी भजवमञ्जरा द्वी हि स्वाल्याः

यह्म वनी वयाम् भग्रामारेक द्वा
श्रद्भ वनी द्याम् भग्रामारेक द्वा
श्रद्भ वनी द्वा ।

वनीकः वि याहकः । इत्यान्तिकाः

नाज्ञ मुन्द्रती ।।

বনীযক: ত্রি যাচক:। ইড্যমর:॥ বনেচর: পু: অরণ্যচারী। যথা। বনেচরাণা বনিতা স্থানা দ্রী গৃহোৎসঙ্গ নিষক্তভাস:। ভবঙি । যত্রৌবধ্যো রজন্যা মতৈলপ্রা: সূরত পুদীপা:।। ইতি জনারস ম্রুবে ১ সর্গ:।।

ब्राकाः भ्ः वष्त्रत्रानः। ইতি त्राकनिर्धणः॥

दरनमर्द्धः भू अभनवृक्षः। ३७ त्रज्ञभावा ॥

बानकुषु। स्त्री कब्रक्षः। ইতি बङ्घः भाषा॥

वरनास्त्रवा छी वनकार्शामी। ইতি द्रवृक्षाना॥

বনৌকা: পু॰ বানর:।ইত্যমর:॥ বন্দকা জ্রী বন্দা। যথা। বন্দাকা শেপরী সেব্যা বন্দা চ বন্দকেষ্য তে।ইতি ভরতপূতহট্ট:॥

বন্দথঃ পু• স্তোতা ॥ **স্বত্যঃ ॥** বন্দিধাতো রথ পুত্যযেন নিয়নঃ । ই**তি সিদ্ধা**ন্তকৌনুদী ॥

वन्तनः क्री वहनः। इकि मद
हिन्दुका।। भुगानः। म जु (वाफमधां छक्त । भुगानः। म जु (वाफमधां छक्त । भुगानः। म जु (वाफयथा। भाष्मां छत्र थए भिव भावंदी मधां प्राप्ता । जाहाः जु देवस्वः
(भुं छः मञ्ज हकाक्षनः स्द्रः। धात्राः (हाक्ष्वं भू भुगाः एम खागाः
भित्र गुरुः।। षहनकः हता धानः

**७ ज्ञाम याद्र १: ७ था । की र्खन: <u>भ</u>्द**े गरेक्षव वनत्वः भाषरभवनः ॥ जर्-পান্দোদকসে,বাচ ভন্নিবেদিত ভো-कन । उद्दीयानाक ज रजवा बादणी বুতনিষ্ঠতা ৷৷ তুলসীরোপণ বিক্ষো र्पियप्त्रकार मार्किनः। ভক্তिः दा-ডশবা প্রোক্তা ভববন্ধবিমুক্তযে ॥ ইতি হরিভক্তিবিলাসে ১১ বিলাসঃ বোডশোপচারপ্রান্তগতশে-ষোপচার:। যথা। আসন স্থাগত। পাদ্য মহা মাচমনীযক মধুপর্কা-চমন সান বসনাভরণানি চ। গন্ধ-भूष्त्र धूनिशा रेनर्वरा वन्तन তথা।। ইত্যাহ্নিকতত্ত্বে আচারচি-खामिशः ॥ 🗱 ॥ व्यथं यनस्यः । भूगः (यम्थ माश्राकः उत्रमाकः भूमर्भः (यर । नाटेर भुष्तिभुगामक भुनीक ভগব্য়িতি।। তদুক্ত মেকাদশে 🕮 ভগবত। । खरेब कहाव**रेहः (खारेबः** পৌরাণৈ: পুাকৃতৈ রপি। স্বত্বা পু-সীদ ভপবল্লিভি বন্দেত দণ্ডবং।। অথ পুণাম বিধি:৷ কালিকাপুরাণে া যঃ শ্বৰণ গদ্য পদ্যাভ্যাণ ঘটিতা-ভ্যা॰ नमक्रु जि॰ । मित्रा मे १ भार याः क्वा वाङ् ड्राक्ष शत्रश्रातः ॥ পুণন্ধ পাছি মামীশ ভীত মৃত্যু मुर्शावीयः। किकागरमः। (कार्छ)। भेक्ताक बानुज्या मुद्रमा निद्रमा-मृत्रा। यनमा वहमा हिन्छ भुगाया **२**श्चेत्र सेत्रिज़ः॥ सानुच्यादिकत नाः হুভ্যা॰ শিবসা বচসা থিযা। পঞ্চা-क्कः भुगामः न्यार भूकामु भुवद्रा বিমাবিভি॥ গৰুড দক্ষিণে কৃত্বী क्र्यांबर भृष्ठां वृषः। व्यापाक **जु**राभाः जीन् मकः म्हरिकाथिकाः ন্।। তথা চ নারদপঞ্চরাত্রে। স कि॰ वीका इति॰ ठाना एकन् स শুক নেব চ। দ্বি চতুর্বি॰শদথ বা চ-जुर्विः चलुक्किकः॥ नरमञ्जूषः मथवा **७ हर्कः मर्दथा नरन्या।** विक्षर्याः ख्रा (एवाई) एणनास्य भूग्यमः ধুসূদন । স্থানাপেক্ষা न কর্ত্তব্যা ই-डे। ही विकास खाराः भ म्वाही मृडे भूड॰ हि भूठि **मर्ब॰ भूकी** विंड• ॥#॥ অথ নমস্কার সাহাত্ম্য । নারসি॰. **(रु । नमकादाः मृट्ठा रुक्टः मह**य-ক্রেযু চোভন:। নমস্বারেণ চৈকেন नद्रः भूछ। इद्रि॰ वुरबर ॥ काल्त । দণ্ডপুণাম প্ৰকতে বিফবে ভক্তি-ভাবিত: ৷ রেণুসংখ্য বসেৎ স্বর্গে শতমগ্রন্তর নর: ।। তবৈব প্রীকৃষ্ণ नात्रमञ्चारम्। भुगम्। मध्यक्रम्। म-মৃক্ষারেণ যো হর্রেৎ।। স যা॰ গতি ম্বাপ্নোতি ন তা৷ ক্রতুশতৈ রূপি

া নমস্কারেণ চৈকেন নরঃ প্রো হ রি॰ বুরেৎ।। ভত্তৈব শিবোমাসণবা-দে। ভূমি মাপীড্য জানুভ্যাণ শির আরোপ্যবৈ ভূবি। পুণমেৎ যে। হি দেবেশ সো শ্বমেশ ফল লভেৎ ॥ তবৈবান্যত্র। তীর্থকোটি সহসা-ণি তীর্থকোটি শতানি চ। নারাবণ भगानम् कलाः नाई छ (वाउभीः ॥ শাঠে:নাপি নমকার করত: শার্জ-ব্বিৰে। শতৰমাহ্জিত পাপ॰ তৎক্ষণাদেব নশ্যতি ॥ রেণুভগিত গাত্রস্য কণা দেহে ভবন্তি বে। **ভাব**-षर्व जञ्जुानि विकुल्लाक महीयरङ ॥ বিষ্ণুখন্মোন্তরে। অভিবাদ্য জগ-রাথ কৃতার্থ চ তথা ভবেহ। নম: স্বার ক্রিয়া ভস্য সর্ত্রপাপ প্রাশি-নী।। কানুভ্যা॰ চৈব পাণিভ্যা॰ শি-त्रमा व विवस्ताः। कृष्। भूषाम् प्रवि**ग्र गर्बा**न् कामानवाश्चराद्याः वुकाश्रवाण । यनानिनिधनः (एवः দৈত্য দানব দাৱণ•। যে নমন্তি নর। নিত্যু ন হি পশ্যন্তি তে যুম্া যে **জনা জগতা॰ নাথ•** নিভ্যু• নারায্ণু দ্বিজা:। নমস্তি ন হি তে বিংফা: ছা; नामनाञ्ज्याभिनः ॥ नात्रमीय । अन কোপি কৃফস্য সকৃৎ পুণামো দ-**मायत्मवावज्रेज नं ज्याः। हमा ४**- মেধী পুন রেভি জন্ম কৃষ্ণপুণানী ন भूनर्चवाये ॥ ७किमू(शामरय । वि ফো দ্ভপুণামার্থ ভক্তেন পততা ভূবি। পাভিত্ত পাতক কৃৎসু নোভিষ্ঠতি পুন: সহ॥ অপি পাপ॰ षूत्राठाद्रः नद्रः ए९ भुगछः रुद्र । নেক্ষন্তে কিল্করা যাম্যা উলুকা স্তপ-नः यथा।। ञीविकुभूद्रात्। ञीयमन्। निज्ञ छोनुनामान । इति ममद्रग ণার্চিতান্ত্রি পদ্ম• পুণমতি যঃ পরমা-র্থাতা হি মর্ত্য:। তমপগত সমস্ত পাপবন্ধ বুজ পরিক্ত্য যথাগ্নিমা क्रांत्रिकः ॥ वृक्षरेववर्त्त्व । भवनागठ ब्रक्काराम्। उ॰ क्रिमी मः भूगम खि ए নরা:। ন পত্তি ভবামুধৌ মুট° প তিতানুদারতি যা তানসৌ।। অপ্রম ক্ষক্ষেচ বলিবাক্যে। অহে। পুণামা-य क्छः जगमामः भूभन ज्ङार्थ तिर्धा नगारिङः। यः साक्नारेन ত্তুত্ম পুক্ষা ২নরৈ রলক্ষা পূর্বাপসদে হসুরে হর্পিত:।৷ অভএব নারাযণ-ব্যুহন্তবে। অহে। ভাগ্য মহে। ভাগ্য मरहा जागाः न्नामिनः। (वयाः इ-'রিপদারাণ্যে শিরে। ন্যন্ত যথা তথা श किथ नाव्रजिष्ट श्रीयामान्त्री। ভদ্যবৈ নারসিংহদ্য বিক্ষো র্যাত **८७ जनः। नुरामः (य नुदर्व** छ उठा। भिन नत्यः नमः॥ ভবিবেগভরে 🕏 बनाधनुन्माक्। वित्का (मेंव बनका-कु र्जनार्धन जगरभाउः ॥ भूगामः य भुक्षवं छि एउवा मिल नरमा नमः। ইত্যাদি॥ 🗱॥ जथ नुगामनिङ्य ভা। বৃহন্নরদীয়ে ভু ব্কোপাখ্যা-नाइत्स्य । अक्षा न नरमष्य विकल শর্মকারিণে। শবোপম বিজানী: बाट कमार्किमिश नालाश्रट !! किश्र পায়ে। বৈশাখমাহাত্ম্যে যম বা-হ্মণ সংবাদে। পশ্যন্তো ভগবদার मागणञ्जभित्रहर•। चक्षा ७८ **প्**• भागामि याखि (७ नद्रकोकन: ॥ 🕸 ॥ व्यथ नमकाव्रनिषिकानि । विकृष्-ভৌ জন্ম পুভৃতি বৎকিঞ্চিৎ পুমা-म् देव धर्म मारुदार । मर्ब • जिङ्क-वाद्राष्ट्र। वज्जभावृज्दमञ्ख रशनद्रः পুণণেত না'। খিত্রী স জাযতে মুর্খঃ সপ্তজন্মনি ভামিনি ॥ কিঞ্চান্যত্র । जार्गु भृष्ठि वामजारग मभीरभ गर्छ-মন্দিরে। তপ হোম নমস্বারান্ ন-জ্য্যাৎ কেশবালয়ে।। অপিচ। न-ক্জুনৌ নিপতিতো ন শক্ত: পুণমে-बार्टः। উত্থাবাত্থায় কর্ত্তৰ্যু দণ্ড-वर भुगिभाजनः॥ एकः भुमिक्तगाः वर्गाट इन्ह्या चगवला हरतः । माड्राक् वनस्नाः ॥ इंजि इतिज किविवारम ৮ विवामः ॥ श्रा थ-नारनमकात्रभाषः भुगामभाषः ह मुक्केवरः ॥

ন্ত্রী ভোরণ । ইত্তি व्यत्भावा ছলাযুধ:॥ রস্তান্তস্তুত্তববেঙ্কি-जामूश अद्रिष्ठिमाला । यथा । **स** य्राहनत्रभाषाः (या द्रञ्जाखेसुः भूम्भा बरेनः । চ্ उत्का खरेनः প टिन जीगत हक्तानिनः॥ यूगानि প্র সংখ্যানাং স্বর্গে তসেয়ৎ-সবো ভবেৎ। পুজ্যতে বাসবাদ্যৈ শ্চ ক্রীডতে চাপ্পরোবৃতঃ।। ইতি হরিভক্তিবিলাসে ১৩ বিলাস:॥ ব্দ্ৰমালিকা স্ত্ৰী বহিদ্বারোপরি শুভদামালা। যথা। তোরণাছে जू मक्ताः साम वन्तनमा**लिका।** ইতি হেমচনদঃ।।

दन्तना ज्वो स्वितः। उर्भर्गागः। সমীচাই। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥ (हाम ज्याना जिलकः। यथा। अन শান্যা মাছরেন্ডেম শুচা বাথ শু दिन वा।वन्द्रनाः कात्रराखन नि-র: কগ্রান্সকেষ্ট ।৷ কল্যপ্রশ্যেতি माञ्जन यथानुकनायागडः । ইडि তিথ্যাদি তত্ত্ব লিখিষ্বচৰণ।।

्र नामानि कीर्वयन् भारको जाक | यक्तनी जी निष्टा ।। कीराजुः ।। वही ॥ याष्ट्रपकर्म ॥ इंडि मिनि 11 कृष्टि भूखरक वही ज्ञान कही বাচনৰৰ্গ স্থানে নাচলকৰ্ম ইভি চ পাঠ:।। তত্ৰ ভুপবগী ব বকারাদৌ লিখিতো হয় শব:। কিন্তু বৃদিড नुउऽज्वितारया द्रिउऽमार व्यनहे <u> भुज्य निम्नमदाद अग्रह वकाः</u> द्राप्ते विथिजः॥

> दन्हनीयः जि उदनीयः। दन्हाः। ৰন্দিভব্য: । বদধাতো ব্ৰণীয় পু-ভ্যযেন নিম্লম: ॥

পু• পীতভ্সরাজ: ৷ वन्सनीयः ্ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

বৃন্দ্রীয়া জ্রী গোরোচনা। ইতি ত্রিকাওশেব:॥

वन्सा जी ্ব্কো**পরিবৃক্ষঃ।** বাদু ইতি পরগাছ। ইতি চ ভাষা ৷ ज्दर्भागः। वृक्षामनी २ वृक्षक्रा ৩ জীবন্তিকা ৪। ইত্যুমর:।। বন্দা-কা ৫ সেখরী ৬ সেব্যা ৭ বৃদ্দকা ৮ । ইতি ভরতধৃতহয়: ।। বন্দক: ৯ नीनवल्ली >०। ইতি ब्रञ्जभाना॥ বন্দাকী ১১ পরবাসিকা ১২। ইঙ্কি **म**दत्रद्वावनी ॥ विमिनी ১० भूधिः नी 28 वन्ता २६ शब्रश्रहा २५ शः রালুয়া ১৭। ইতি শব্দন্তিৰা।।

नতাবিশেব:।। ভিক্কুকী। ইভি || (मिनि ॥ अम्याः भर्यप्रायास्त्र**ः** खनाक वन्तिक मास मुक्ठेवाः॥ বৃক্ষোপরিবৃক্ষ: । बन्ताकः वाँमा इंडि हिन्मी जाया। उट्भ र्य्यायः। भाषभङ्ग २ मिथत्री ० ভকরোহিণী ৪ বৃক্ষাননী ৫ বৃক্ষ क्हा ७ कामतृकः १ रेमथत्री ৮ কেশৰূপা ৯ ভক্কহা ১০ ভক্সা अक्रमाननी ३२ कामिनी ३० छक्जूक् ३८ महामा २० डेननी २५ । অস্য গুণাঃ। তিক্তব্ব॰। শিশি-ব্ৰত্ব । কফ পিত্ত শুমাপহত্ব । वण्डारिमिक्षिर्षः। वृष्डुः। कः ষাযত্ত্ব• । রসায়নত্ত্বঞ্চ । ইতি রাজ-निर्घण्टः ॥ अभिष्ठ । वन्ताकः ना দ্ধিম ডিক্ত: কৰাৰ মধুরো রসে। भक्ताः करू वाजामु ब्राक्ता दुरा বিষাপহ:॥ ইতি ভাবপুকাশ:॥ বন্দ।। ইতি ভরত<sup>.</sup> जी বন্দাকা **श्उर्**ः ॥ वन्ता। इंडि भद-वनराकी खी

র রাবলী।। বন্দাকঃ ত্রি বন্দনশীল:। তৎ-পর্য্যায:। অভিবাদক:২। ইত্য-অবং ॥ অভিবাদযিতা ১। ইডি

মর: ।। অভিবাদ্যিতা ৩। ইঙি

म्बर्गावनी ॥

यन्ती

विन्तः स्त्री व्याक्ष्ठेमसूष्रागवादिः।
कथनी इति ভाषा। उद्भग्यायः।
भू गुरुः २ उभगुरुः ,० वन्ती ८।
इति मस्यद्वावनो ॥ (माभानकः)
इति मस्यद्वावनो ॥ (माभानकः)

विन्तृगुहः . शृ व्यागुर्यस्व व ।
गात जिनकः । यथा । वन्ति गृहिः ।
ख्या वाजि अञ्ज्ञागाक काति । ।
जन्य वाजिने रेण्य म्लाना (त्राशस्मत्रान् ॥ वन्ति गृहि । ।
देश्वन वाजका ण्याने व व । ।
देश्वन वाजका ण्याने व व । ।
देश्वन वाजका । व्यागिता गृथा गात्र ।
द्वाश स्व । व्यागिता गृथा गात्र ।
स्व जा गात्र (जनकान् । इस्तु । ।
क्व क्व क्व ज्ञा (जनकान् । ।
क्व क्व क्व ज्ञा (जनकान् । ।
क्व क्व ज्ञा व । ।

বন্দিটোর: পু॰ বন্দিগাহ:। তৎ-পর্য্যায:। নাচল: ২। ইতি হারা-বলী।। বন্দীকার: ৩। ইতি ত্রিকা: গুশেষ:॥

विन्तिभाग्नेः भू ञ्चित्रपृष्टः। उट-भर्यप्रायः। (ভागावनी २। ইঙি बिकाश्रम्भयः॥

বন্দী জ্বী বন্দি:। ইত্যনরটীকা: যাণভরত:।।

ब्राकाएतर्याजाकीवी,र्यंश-॥ **भिञ्जिकाद्रकः। ७८ श्वय्रायः। स्र** ভিপাঠক:২। ইত্যমর:।। নাগধ: ৩ মগধ: ৪। ইত্যন্যে। ইভি ভটী-কাযা ভরত: ৷৷ অস্যোৎপত্তি র্যথা। ক্ষব্রিষাদ্বিপকন্যাযাণ স্তো ভবতি জাতিত: ৷ বৈশ্যামাগধ विरम्हो बाज विश्वास्त्रवामुखी॥ इंकि मानत्व २० व्यवशहरः॥ 🕸 ॥ শুজোভরমধ্যৈ শক্তিভোদানস্যা-कद्रांग निज्हा यथा। वन्हि छ्रोक्टव मर्थि। इमार्थिए । इममर्थिछ:। ষদি তত্ৰ ন দদ্যাত্ত বিফলা শক্তি-**ভো ভবেৎ**াৰন্দিনে: বীৰ্য্যন্তোতা-র:। অর্থিত: সন্ বনি এভেগ १ म॰ न দদ্যাৎ শাক্ষ বিফল ভবেদিত্যর্থঃ ৷৷ সূতাঃ পৌরাণিকাঃ প্রোক্তা মা-গৰা বংশশংসকাঃ। বন্দিন ত্তমল-भुकाः भुषायमम्माक्यः ॥ हे-जुरिकः । देश्यः मुख्याखाखानाम निरवश**्मारक** वनिरुश्कृतिराज्या দানাকরণে নিন্দাশুৰণাচ শুক্ষাৎ পূৰ্ব॰ তদৰ্থ• ভোষ্যাদিক• উৎ-সূত্রেৎ। ইতি শান্ধতত্ত্ব ।। ৰন্দিগুাহ: बन्तीकात्रः র্নিনেলচোর ই**তি ভাষা। তৎপ** র্য্যাথ:। মাচল: ২ পুসহ্নটোর: ৩

চিল্লাভ: ৪। ইতি ত্রিকাওশেষ: ॥ जी बन्त्रा वन्ता। इंडि नम्-চন্দ্রিকা॥ গোরোচনা। ইতি ভাব-পুকাশ: !! वन्मु॰ क्ली कन्यानः। इंडि निष्कास्र-क्रीमूर्गामूलारिवृज्धिः॥ ত্রি **পू**छकः । ইত্যাদि-কোব: !! वन्तर ही चुन्। इंडि ब्राजनिर्यणः॥ ৰন্য: ত্ৰি বনোভুত:। ইতি নেদিনী वन् १: भू वनम्द्रभः॥ वादाशीकमतः ॥ দেবনলঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ द्धी वन्रा বনসন্হ: ৷ ইত্যমর: ৷৷ कवमः हिंड: । ইতি मिरनी ।१ मुद्गर्भगो ।। गानानक के ही।। एछ। । निर्म्या। जम्मुखा। गन्नभ्या। ইতি রাজনিঘণ্টঃ। বন্যেপোদকী স্ত্রী লতাবিশেষ:! वनभूँ इं इंडि जाया। उट्पर्यश्रायः । यनका २ वननाञ्च ग ७। जन्म গুণা:। ভিক্তত্ব•। কটুত্ব•। উঞ্চত্ব•। রোচনত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।। वृनः भू॰ जामी। जानी। इंडि निषाष्ट्रकोमूनग्रमूनानिवृज्धिः॥ वन 'छे क पूजे मुख उसवी हा-প্রো:। ইতি কবিকল্লফম:।। ঔ

বপ্তা। ঞ বপতি বপতে। ডু উপ্রি-

ম॰। মুণ্ডো মুণ্ডিতকরণণ। বপতি মন্তক নাপিত:।বপতি তন্ত্ৰ ড-স্ত্রবাযঃ। যদি বপতি কৃষাণঃক্ষেত্র भाजाम्। वीजः। इंछि मूर्गामानः॥ বপঃ পু কেশমুগুমণা বীজবপন । ইতি বপধাতো ভাবে ংল্ পুত্য এ্থন নিষ্ক্রন• ॥ वनन ही (कनमुखनः।। वीजादाः नः। ইতি मिरिनी ॥ নাপিতশালা। ইতি जी (रुमहन्तुः॥ बी हिंदु ॥ (यहः। इंडा म्बः ॥ বলিলঃ পু॰ পিতা। ইত্যুণাদি (कायः ॥ वनुः हो नदीद्रः। इंडामद्रः॥

वशः क्री भवीतः। इउप्रदः॥

नुभक्षक्षिः। इठि मिस्नी॥

रश्ःमयः भू भवीतस्त्रमयाजूः।

इठि ताकनिर्धिः॥

रशूनः भू (स्वजा। इठि भन

র্বাবলী।। বুপুৰা জী হুবুৰা। ইতি ভাব

दशुषा छ। इतृषा। २१७ ७१० • भुकाणः ॥

বুপুষ্টমা জ্রী পদ্মচারিণী। ইতি কটাধর: ॥

वर्षों भुः कनकः। ইভি मिनि ॥ क्विः। ইভি क्रियतः॥

वश्वा वि वालकः। इंडि सिर्मिनी। वनुः ही न्ः पूर्णनगद्भभद्रिथाया-উজ্তমৃত্তি কান্ত্পবদে যদুপরি প্রা-কারে। নিবেশ্যতে তং.। তথা চার্থ-माजः। था उार्क्उ मृहा वर्षः का-রযেৎ ভস্যোপরি প্রাকার মিভি। তৎ পर्यायः । हयः २ । ইত্যমর-ভরতৌ ।। মৃত্তিকান্ত্রণ: ৩। ইডি भदत्रज्ञावनी ॥ महावरत्रा यथा । মহোদ্যানা মহাবপুা তডাগ শতশোভিতা। পাকার গৃহ স-म्राधा निक्तुरम्। दामदावञी॰ ॥ म-হান্ বণ্ডো যস্যা:। প্রাকারাধার ভ্তা ক্তিমোছিতা ভূমি ৰ্পুস•-জ্ঞা। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৫ অংশে ২০ অধ্যায়: ॥ 🛊 ॥ বপতি বীজমত্র। ক্ষেত্ত ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাय:। (हराद्र: २ (कवः ७ । इंड)नद्र-ভরতৌ ॥ निष्कृष्टेः ८ বनकः ৫ বা-জিকা ৬ পাটার: १। ইভি কটা-थतः ॥ द्रगुः॥ ७हेः। ইতি मिन् नीक्द्र (इम्हान्सु) ॥ भीमकः। ইতি एम-

हन्तुः ॥ द्रशुः भू॰ जाजः। ইভি মেদিনী ॥ भूगकातः। ইভি বিখः॥ পুজাপতিঃ । ইভি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ॥

মজিগা ইভি রাজ निर्घक्तः॥ .

विनु: भू किवः। वशवार्जाः किन् পুত্যবেন নিয়ম:। ইতি সিদ্ধান্ত (कोमून्याभूगानिवृक्तिः ॥ मूगजिः ॥ अयु पुः। इंडि अ कि श्वनात्रागानि-वृखिः ॥

वनी जी वन्योकः। इं छ इनायू यः॥ ववः भः वकारभक्रतगान्नगं उनुषम করণ। ভস্যাধিপতিরিন্দু:। তত্র विश्वितानि यथा। (भोक्षिक श्रित শুভানি ব্বাথ্যে। ইকি চ্যোতি-স্তব্ৰুগা অত্ৰ জাত ফল•। ব্বাভি খানে জনন হি যস্য শ্রো **হ**ডি: ৰীরে। মনুত্র: কৃতী স্যাৎ। পদ্মা ল্যা ভগ্নিল্যে নিবাস করেছি নিত্যু সুবিচক্ষণ: স্যাৎ ॥ ইতি কোষ্ঠাপুদীপঃ ॥ দাক্ষিণাত্যমতে चामा भदमा भुव्यवकातः शव-গী য: শেষবকারো হন্ত্যন্ত:।।

গভ্যা । ইভি কবিকল্পদমঃ॥ বকারাদি: ওঙ্গুৰগ চতুর্থোপথ: । বভুতি। ইতি দুর্গাদাস:॥

বম ণ জুটু উদ্দিরি। ইতি কবি-कन्नफ्रमः ॥ वकात्राप्तिः। १ (वसजुः ववमञ्:। याना ज् वठट कार्याः विधायक मूट्य क्रिया किमान न शते | विभाः जी नुहर्फिका। इन्हान हा

ম্ভেবেমু**ক্ষ** কেচিঙ্গধিরমিত্যা*দি* সা-খনায তৎস্ত্রে দম্ভ্য বকারাদিবর্জ-নস্যানিত্যতা স্বীদর্ঘন্ত। কেচিৎ भून वंगीतकाज्ञानि धाव्यत्र मभार-ন্তি ইতি পুলপন্তি। জ বাম: বম:। উ বমিত্বা বাস্ত্বা। টু বমথ:। উদ্ধি-রি বাস্তৌ।বমতি অন্ন মজীর্ণবান্। ष्मस्रविभि (को ज्व स्व हेउ)।-फिना (कर्**लम**) दुच विकन्ननाथ সোপসর্গস্য নিভ্যু হুর: ৷ বন্যভি मामः॥

বম: পু: জ্রী বমন:।ইভি বম-থাতে। রচ্ পুত্যযেন নিয়ন্ন•। ইভি मिक्षाष्ठरकोमुम्यामूनामिवृज्जिः॥

বনথু: ্বমিঃ।। হস্তিশুগুনির্গ; পু• **७ जनकना। ७९ भर्यायः। कत्रमी-**कब्र:२। इंड्रागब्र:॥

क्री हर्षन ॥ अर्पन । इंडि মেদিনী।। আহুতি:। ইতি বিশ্ব:॥ শণঃ। ইতি রাজ-ব্মনঃ निर्घणः ॥

वगनी खी জলোকা। ইতি রাজ निर्घणः॥

বমনীযা জী মক্ষিকা৷ইভিরাজ-निर्घण्डः॥ वमनरयारग्र वि ॥

व्यथं हर्ष्याधिकातः। उत्र हर्षि वि-नुक्षे अधिकृष्ठे निमानः भूवंबाणः সংশাপ্তি কাহ। অতিদুৰৈ রতিনি रिका ब्रह्रोहा संवरेग ब्रिश । जाकारन চাতিমারৈশ্ব তথা সাল্ম্যেশ্ব ভো-कतिः ॥ व्यानाक्त्रयद्धशाहिणार-कीर्गाट कृतिरमायजः। नार्यग्रम्माशम সত্ত্বাথা তথাতিফত মশ্নত: ॥ দুঙি र्पारियः भृषक् मरिबं वी जिट्मालाः কনাদিভি:। বী**ভ**ৎসৈ হেঁতৃভিশ্চা रेना जुक गृथक्षिमात्र वनाथ।। व्यामार व्यममाक् भवाष्मार । व कीर्नाट यथा क्रिठा एकाट। आश-ममद्वायाः भूष्टि गर्छायाः। चरेना वी जिटरेम विकृरेख (ईज्जि: धृगी काब्रिजिः अनिष्ठे भूदग म्लानंन मर्मन **७क्र** न्यारेन क्टक्लिमाड के क्रु नी-षा मूथावहिष्कुष्ठ॥ 🗱॥ পূर्वज्ञन बार । ङ्झारमाम्नाद्रद्वास्थे ५ भूरम-का ववगामाजा। (बर्या १मंगात ठ ज्मा वनीना भ्रतनक्रा ॥ 🗱 ॥ इर्प्यः नामानाज्यक्रण मारु। हारय-भाननः (दिश व्रम्यमञ्ज्ञानः । নিৰুচ্যতে ছৰ্মি বিভি দোষে৷ বৃজু• भुषाविज: ॥ ছामरन् भूत्रयन् अझ-**७% तः अक्टिशः अ**म्यन् अकाः नि भौ ७४न्। वकुः भुधाविष्टः वकुः

भु जिद्याविजः (माबः इ कि निक्ठ) रङ ll # 11 वाजकाया **जरून मारू !** इटलार्थ नीज मुश्लाव नीर्व मा-ভ্যব্রিকাস স্বরভেদ ভোদৈ:। উ-हात्र नम भूवण मरकन विहिन क्षः अनुकः कवायः॥ क्टाह्ण ठाः ল মহতা চ বেগেনার্ভো হনিলা-ছৰ্দ্যতীব দুংখং। কষায়ং ক্ষায়র-ञः। मृत्थः मृत्थमिव ছर्मयञ्जा 🛊 ॥ পিত্তজা মাহ। মুর্চা পিপাসা মুথ-শোষ নৃদ্ধ ভাবকি সন্তাপ তমে। ভুমার্জ:। পীত ভ্লোক হরিতক তিক্ত ধূমুঞ্চ পিত্তেন বনেৎ সদাহণ ॥ 🕸 ॥ ककबाबार । जन्द्रामाभाधु-য্য কফপুদেক সভোব নিদু৷ ২কচি গৌরবাভঃ। স্নিশ্বং ঘনং স্বাদু কফা। कि मृद्धः नत्नामस्या ५ त्रक्कः द-(बलु॥ मरहाय दृष्टिः॥ **#॥ जिल्हा**-ৰজানাহ। শূলাবিপাকাকতি দাহ তৃক্ষা স্বাস পুনোহ পুৰলা পুলক্ত• । इम्बिंखिरनायास्त्रदशाञ्च ने व शा-ल्मुाक ब्रज्जः दमछाः नृगाः मार ॥ 🗱 ॥ আগন্ত জানাহ। অসাত্ম।জা **চ क्**भिजामका ह वी छ< मडा सोर्ड्-मका ह्या हि। भा भवशी उत्थ दि-ভাবকে দোষে। हुए थेन व राथाक नारि ॥ এতাः পঞ্চাগন্তজত্ব লাম্যাদেকৈর অভএব সা <mark>আগন্তরা</mark> भक्ष्मी विভावरिंद चनुवद्गरिंद ॥ कः ।। उनम्याना**र । कानः थारन**। जुद ख्का हिका रेविष्ठि अस्य ह। इत्याग उमक्रेष्ठव (द्धया भूग्म क्रमुवाः॥ रेविष्ठिष्ठ विक्ठिष्ठिष्ठ । अभाका **२**व जमः॥ यामगारहेनव जनकाः थ। महानि चामरमहाकि।। कः।। वः नाद्याः नाद्याकारः। क्रीनमः वा ছদি রভিপুশক্তা সোপদুবা শো-বিভক্পযুক্তা। সচন্দ্ৰিকাণ ভাণ भुवाममाध्याः भाष्याः हिक्दिः (मर निक्भमुवाक ॥ महिन्द्रका मः यूत्रशिह्विन्तुका श्रु जायुक्त ॥ 🛊 ॥ অথ চদে ভিকেৎসা। আনাশ-যোৎক্লেশ ভৰা হি সন্ধা শুৰ্ট্যে ম-ভা ল'খন মেৰ ভদ্মাৎ । বিধীয়তে **মাক্তিলা কিনা জু সংশাধন বা** কফ পিত্ৰ হারি ॥ অত্র ছদ্যী শব্द: ॥ 🗀 इन्डाट कीखानक भीउ ছ न्तिः भवनमञ्जवाः । सूम्राम**लकप्रा** क्। जन्निक: मरेनक्षव:।। क्षीद्रापकः अभित्रभा कीव्रमा छैनक ॥२॥ छः खुठी विक्वा निष शाहीरियः कृषि उ॰ अवः । शिविद्यधुग्उः (छन इपि র্মাণ্ডি পিত্তকা।। ৩॥ হরীভকীনা॰ ह्नक विश्वामाकिक मन्यूउन वादी- मागी क्र दिया इपि : मीयु नि বৰ্ততে ॥ ৪॥ বিডক্ব ত্ৰিফলা বিশ্বা हुर्न **मधुगुङ नि**दिए । दिख्य क्षत শুগ্ঠীৰা চূৰ্ণ বা কফজা বনি ।। প্লব কৈৰন্তী মৃক্ত। ভডভঞ্জী ইভি লো-क् ॥ द ॥ भिट्ठां दाजे कन नामान् শর্করাণ্ট পলোনিতাণ। দল্প মধু नवकानि बड्द भविवम् ह।। वा-नमा गालि उ॰ भी उ॰ इडि इफिं जि দোৰজাণ ॥৬॥ ভডগ্যা ব্লচিক্তণ হস্তি হিন॰ মধুসমল্লিত। দুর্নিবার। মালা इদি • ত্রিদোষ জনিতা• বলাৎ।। १।। धन। नवक् गब्दक्नक्र क्राधमञ्ज वाङ लियक घन हमस्य शिश्रकीया॰ । চুণানি মাক্ষিক সিতা সহিত্যনি-লীড়া ছাদ্দ নিহন্তি কফ মাক্ত **शिउडां जा ।। अना दि**हुन ।। ৮ ॥ व्ययःथ वद्भनः मुद्धः मधः निद्यांत्रिङः काल। उज्जनः भानगाः वा इम्हि জয়তি দুজয়া।। ১॥ পথ্য ত্রিক थानग्रक जीवकागाः ब्राह्मा विरुत्। सथुन। ना**णरगर्हाफ्रीस क्**ठिक जिस्ता-**यद्राः ॥ २० ॥ विवृद्**का रूफ्डा **वा दाथः कोष्ट्रन म**न्यूठः । हिम्दि कि দোৰজা হস্তি পপ্লটি: পিভ্জাণ ख्या ॥ >> ॥ व्यामुाक्टि विन्निग्रः नीजः नमधूनकंतः। निरुन्। ए क्रि

ভীসার বৈশ্বানর ইবাহুতি ॥ নি-य्र काषः॥>२॥ कषानुभन्नव म्उ লাজরজ: সংযুত্ত শীত্ত। শম্যতি মধুনা যুক্ত বনি মতিসার ত্যারি मुगुं।।।ऽऽ॥वीज्यमञा क्राउरेम तिरिष्ठे (मेर्) इम्बाः करेनः । नहुरैन त्रामजा• ए पि ॰ करगर गारेजा। तः भाषा/जा।।)।।। क्मि रुपुागदकः ন্যাৎ বিমিণ কৃমি সমুদ্ভৰাণ। ভত্ৰ **७** वर्षा (मायः क्रियाः स्र्याटः চিকিৎসক:॥ ২৫॥ ইতি ছর্দ্যধি-কার:। ইতি ভাবপুকাশ:।। পু॰ অগ্নি:। ইতি মেদিনী।। थुर्डः। ইতি শবরহাবলী ॥ ত্রি বাভঃ। ব্যনকৃত্বভা ইতি মুদ্ধবোধব্যাকরণণ।। ব শ:। ইতি শহরত্বা-वनी ॥ বন্ধীক্টঃ পু• বন্মীক:।ইতি ছেন-ठमुः ॥ ব্য ড পভ্যা•। ইতি কবিকল্লছন:॥ **७ वराउ। ३७ मुर्गामानः ॥** ব্য• ত্রি অমদাদি:। আমরা ইতি ভাষা। अञाह्यमा व्यापाल क সি কপো হয়•। ইতি ব্যাকরণ•।। वयः क्री शकी॥ वानग्रामः। इंड्र मद्रः॥ योवनः। इंडि सिनिनी

॥ ॥ वर्षाविष्णत्व कर्जवतानियशी रेन्नन्तर २ ७५७ विम्रानाः स्रोवस्य विवरेगविगाः। वार्खक मूनिवृजी-नाः (यारगनार्षः जन्जुकाः ॥ ইঙি ब्रघूराम ) मर्गः ॥ 🛊 ॥ व्यभिष्ठ । পুৰমে नाह्यिं । विष्णा विजीय नार्क्किंड॰ धन• । ज्जीरय नार्क्किंड॰ পুণ্য চতুর্থে কিং করিষ্যতি ॥ ইতি চাণক্তু ॥ # ॥ বযোবিশেষা-ণা নিষমা যথা। কৌমার পঞ্চ-नाकान्तर लोगखाः मनाविधा কৈশোর মাপঞ্চশাৎ যৌবনঞ্চ ভতঃপর•॥ ইতি পুাযশ্চিত্ততত্ত্ব-পৃত্তবচন ।। 🗱 ॥ অপিচ ! আষো-**ডশান্ড**বেদ্বাল স্তব্দণ স্তত্ত উচ্যক্তে । বৃদ্ধ: স্যাৎ সপ্ততে ক্দ্ধ • वरी যান্নবতে: পর•।। ইতি ভরত-श्राम् जि: 11 # 11 व्यन् हि 1 वाल 5° বৃদ্ধি বঁযো ৰূপ চক্লু স্তৃক শ্ৰোত্ৰরে-ভসী। দশকেন নিবৰ্ত্তন্তে মন: সর্বে निषुरागिष्ठ॥ इंडि महाजावड ॥ বয:স্থ: 📵 যুবা। ইতি হেমচন্দু:॥ ব্যস্থ: ত্রি যুবা। ইত্যমর:॥ ব্য-সি গৌবনে ভিঙ্গিত ইতি বয়স্থ: ড: निপाতा विमर्गम। वा लुक् वयः छ-ण्डा। वयः शक्तिन वाक्यापने वरग योगनमाज्ञकः। इंजि विषः। इंजि

ুভরত: ॥

वयमाः श्रुः मभानवयकः। छ८-शर्वायः। मिथाः २ मवयाः २ । ইত্য-स्त्रः ॥

ব্যস্যা জী স্থী। ইত্যমর: ।।
ব্যুন• ক্লী জ্ঞান•। যথা। হস্তাগাছে
রচ্যতি বিধি• পীঠকোদ্থলাদ্যৈ
শি দু• হার্ডনিহ্তব্যুন: শিক্যভাণ্ডেযু তদ্বিৎ। ইতি প্রভাগবতোও হার্ডার দ্বালাদ্যা শিক্যভাণ্ডেযু অন্তর্নিহিতদধ্যাদে। ব্যুন• জ্ঞান• যস্য স:। ইতি ভট্টাকাবা• প্রীধরস্থানী।।

ব্যুন: পু॰ দেবতাগার॰। ইত্যু ণাদিকোৰ:।।

বযোধা: পু• সুবা। ইভুগোদি-কোৰ:॥

वर्यावकः ही जीनकः। ইভি রাজ-নির্ঘণ্ট:।। षत्र ७ क वेरक्ष । इंडि कविकन्न-क्यः ॥ त्रारकाणषः वत्रयंखि । इंडि मूर्गामानः ॥

वतः क्री बक्रुमः॥ मनाक्श्रियः॥

हें अप्रतः॥ उथा । वतः श्राणी
खाळा न व निम्विनात्मञ्चित
कि वंदः स्त्रोनः कार्यः न व ववनम्

कः यमन् अः। वदः क्रीवः जावाः नवः

भावका जिम्मनः वदः जिम्माः

निष्यः न व भावधनानाः हि इद्राः॥

कृष्ठि वामनभूद्रातः ६५ व्यद्रायः॥

ददः व अनाक्श्रियः। यथा। मना
भिष्ठे वदः क्रीवः किविमान् छम्वाः

यः। ইতি मिनिनी ॥

विः शृ वद्गा । उर्थिशा । व् वृद्धिः २। इंडामद्रः ॥ व्हा विद्वेत । भार्थनाविष्ण्य इंडाना । इंडि इंद्रः ॥ प्रवावृद्धः । प्रविभवा-णार्या विद्याः । उर्द्धाः । प्रविभवा-कि दिवार् उर्द्धाः प्रविद्याः म व्यत्ना मजः। इंडि इंद्रा । जामाजा ॥ विद्यः । इंडि भिन्नी ॥ क्ष्युवृः । इंडि भेपद्रद्वावनी ॥ शिटः। इंडि (इस्रम्पुः ॥

বর: ত্রি শুেষ্ঠ:।ইভ্যমর:॥ বরক ক্লী পোতাছাদন । ইভি হারাবলী॥ থৌতাথৌত সাধারণ वकः । इकि नव द्रष्टावनी ।।

वद्रकः भू॰ वनमूतः। इकि एकः

छन्तः॥ भर्त्र हैः। इकि द्राव्य निर्मणेः

॥ ज्यमानुर्राणः। इनकतः २ ककः

० वृत्र भूष्ट्र । व्यम्पर्राः। व्यक्तः १ ककः

१ वृत्र भूष्ट्र । व्यम्पर्राः। व्यक्तः । वाकः

शिव्य मित्र प्राप्तः। इकि द्राव्य । वाकः

शिव्य मित्र प्राप्तः। इकि एकः

हन्तुः॥

वद्र हन्तः।

वहाँ: शुः इःमः। ইতি (यिनिनी।।
कीहेरित्यः। (वालठा ইতি ভाषा।
। उप भर्यायः। गर्ह्वाली २ वहाँ। ०।
। ইতামরः॥ गर्ह्वाली ॥ वहली ७।
ইতি कहाँ। वहाँ। वहली ७।
कृत्वर्वण २। ইতি वाङ्गिमण्डः॥
वहाँ। क्रि. संग्रह्मी। वहला। देठाः
भदः॥ क्रमुश्वीकः। ইতি ভाषा
भूकाणः॥

वत्रमें की रंगी। इंडि मिहनी।। शक्षाली। इंडि जिज्ञा खण्यः।। व्यक्ति। की समूखतीनः। उर

भर्गायः। द्युष्टे । व्यवग्रं स्थाः । मध्यद्वः । त्रिषदः । अखिलाः कः काश्रद्धः । क्यायदः । भीज्यदः । स्कृषः । अत्यादः । व्यनिनाश्रदः दृक्ष । देखि ভादशुकानः ॥

वद्भगः ली कन्यापिवद्रगः॥ (बर्डनः। इंडि यिषिनी ॥ भूजनापि । इंडि भद्दज्ञादणी।। 🗱।। जथ वद्रगवि-ধিঃ। তেখা নাচার্য্যাদীনা হোম भार्या कर्यां । स्थायात्र छाट भूर्व मानउपर्धः रजनातन सगः वर्गः कार्यः। मान वाहनानात्रस्य वद्रेण तुष्ठ भूमारभव् यक्रमानः भुजीवार । ইতি হরিশর্মগৃত কাত্যায়মস্ত্রাৎ । ভত্র বৃক্ষবরণ পূথ্যভঃ। ক্ল্যো-ডিপ্টোমে। বুন্ধোদ্গাত্ হোত্র-ধ্যুয় ভ্যাদি কনদৰ্শনেনান্যত্রা-काङ्करा मृष्ठेभद्रिकस्त्रनाया न्यायऽ-ত্বাং। সুপতি সোপান পুভ্তবো হপ্রেব ।। বরণত্ত। গল্পাদি দান-दात्रा भीजि गृटभाषः कर्यकद्रभाष পুরণ। তত্র চ। সর্বত্র পুরুষ্থে। দাতা গুহীত। চ উদয়থ:। ইতি वहनार यवमानमा नाबाथन वा-ठायामीना मूम्ब्यथदः भुजीयरा। বরণবিধিমাহ কাত্যায়ন: ৷ আ **जन मारु** या**र जा**श्च्यानास महिंगितामा खरस मिछि। जामन निर्माणानीय मण्डालाहर माथु जानासा मिछि। माथुर मारम इंडि लुखिरहन ॥ जहिंगितामा खरस मिछि लुखिरहन ॥ जहिंगितामा खरस मिछि लुखिरहन मामर्थाए। इंडि इदि लगा। इंडि मण्या। इंडि मण्या। इंडि मण्डाद जाने स्वकादानि मामा एमिनीमा लगा। किस जाना हिंगि हो। किस जाना हिंगि हो।

वद्भगः शृ•् भुक्तातः।। वक्षभग्रमः।
इंडामतः।। উद्धेः। ইভি স্থান।
।। म॰क्रमः। भीटका देश्व छाषा।
देखि स्वायुषः।।

বরণসী জ্বী বারাণসী। ইতি শব্রহাবলী॥

বরণা জী নদীবিশেষ:। ইতি
শব্দরত্বাবলী। সাভু বারাণসুড়েরসীনা। তস্যা উৎপত্তি র্যথা।
হরিক্রাচ। মহেশ্র শুণ্যেমাণ
মন বাচণ কলমনাণ বুদ্ধহত্যাক্ষযক্রীণ শুভদাণ পুণ্যবিজনীণ।।
যোহসৌ পুল্লান্ডলে পুণ্যেমদণশপুভবো হব্যয়:। পুযাগে বসতে
নিভ্যাণ ক্ষেণান্ডস্য বিনিহাতা স্ব

तिहता। विनुष्ठा वत्रायाखातः मर्बन्धान्द्रा मूं छ। ॥ मवाप्तना हिन्
छोषा ह स्राम्न तिर्छात विनुष्ठा ।
उ उ उ क मित्र रम्हि लाकम्
राष्ठ्र व क्वरः ॥ छाछाः मरदा जु
रा रम्भ स्र रम्भवः रागमायिनः। विलाम्ह भू छवः छोर्थः मर्बन्धः
भागम् न स्माः न त्रमाछला। छखास्त्र नगती भूगाः न त्रमाछला। छखास्त्र नगती भूगाः चाहाः छाणिताः
मामः भूगास छवरछ। नगः। ইछि
रामरम ० स्वरायः ॥

বর গু: পু: অন্তরাবেদি: ॥ সমূহ:
॥ মুখরোগ:। স তু বুণ ইতি বযসফোডা ইতি চ ভাষা। ইতি নেদিনী ॥ তন্মতে পবগী যবকারাদি রয় কিন্তু অন্তঃত্বকারাদি তু
ক্রাভো রৌণাদিক অন্তন্পুত্য
নিদ্ধান্ধদ্য বিথিত:॥

दब्र ७ इः भू॰ भा उक्र विषः। शिख-ब्रहाश्वनः इकि ভाषा। योवनक-देकः। वष्मकाषा इकि ভाषा। वर्ज् नः। गान इकिथाजः। इकि भिन्नो॥ ভिज्ञः। इकि एक्सन्तुः ।। भिन्नोकाद्यनायः भवनी विषः कावानो निष्जः। किछ एह्सः

চন্দেণ বৃঞ ধাতু নিয়ন্বং অস্ত্য-ञ्चकाद्राक्ती भद्रिगनिजः ॥ वद्रकः वि विभाषः॥ ভरमणमः ।। কৃপণ:। ইতি শবরত্বাবলী।। ञी नाविका।। वर्षिः॥ मञ्जल्पः। इंडि (मिनी।। ৰরভালৃ: পু এরভব্ফ:। ইভি ত্রিকাওশেব:।। বরভিক্ত: পু॰ অট্রবৃক্ষ:।ইতি त्राक्रनिर्घणेः ॥ वद्रिङ्का जी भारी। याकनाहि ইতি ভাষা। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ वद्र एकदी खी (द्र गुका नाम गक्ष मृत्र) । इंडि नद5न्द्रिका ॥ বরবা জী হতিকক্ষরজ্ঞাকাছ म्डो हेडि थ्याजा। उद्भर्यायः। **চ্ষ** २ कक्ष्मा**० कक्षा ८ ॥ हर्मा तरकः** । ७१ १ १ । मञ्जी २ रख्टी अव्हारी ८ एक १। इंडामन इन्हां ॥ ার হৃতঃ পু॰ নিমৃত্কঃ। ইতি রহ্ন गांगा।। (मुष्ठब्ह्रक क्री।। ব্যস: ত্রি थ जे द्वेराजा। ७८-भगंत्रायः। **भगक्त**कः २ । **३७,५४३ः।।** সম্বল্ধ: ১ বাশ্টিভার্থদ: ৪। ইতি मफ्रज्ञावली ॥ भूममः । इंडि (मिमिनी।। व्यव्यक्ता जी कन्त्रा। इंडि (मिनी॥

আদিত্যভ্ৰত।। ইতি রাজনির্ঘণীঃ ।। অখগন্ধা। ইতি ভাবপুকাশ:।। व्यक्ताञी ह।। वतः राष्ठजुथी जी नायम् क्षठजुथी। তদ্যা গোরীপুর্যা। যথা। ভবি-ব্যোত্তরে মাঘশুরূপক্ষ মধিক্ত্য ৷ চতुथी वज्रना नाम उम्रा॰ भोजी সুনৃজিতা। সৌভাগ্য মতুল সং-र्य्याट भक्षम्याः 🖹 द्रिश लियः ॥ ইভি ভিখ্যাদিতত্ত্ব• ॥ वज्ञराजः भ् गृक्षविष्मवः। ख्रे-**न**ह इंडि हिन्ही डाया। उट् পर्यं।-यः । ज्योत्रहः २ घात्रमातुः ७ थ-রছদঃ৪। অস্য গুণৌ। শিশিরত্ব•। রক্পিতপুসাদনত্বঞ্। ইতি ভাব-পুকাশঃ ॥ दत्रभगार्थाः भः क्षीत्रकक्षुभीवृकः । ইতি রত্ননালা ॥ বরপুদা জ্ঞী লোপামূদা। ইভি হেনচন্দু: ॥ বরদাতরি ত্রি॥ **वत्रकतः भुः ना**तिक्तित्रकः। ই**ि** भद्रिका॥ उएकल (मुश्कल ह क्री॥ वब्रम्थी जी त्रिन्कानामगञ्जूवार। ইতি শব্চন্দ্রিকা॥ वद्रम् वः देवधानुषः । देखि (मिनि ॥

ह्यी हक्तभरी । हाङ्गलिया वद्रध्वा ইতিভাষা।ইতি শব্চন্দ্রিকা।। ভৰ্ত্তা i ইতি হেম-চন্দু: ॥ বরণকার্যাতা চ ॥ ব্রক্চি: পু कविदिश्मयः। ७९-পৰ্য্যায়:। পুনৰ্বসু: ২। ইতি ত্ৰিকা-গুশেষঃ ॥ স চ বিক্রমাদিত্যরাজ-সভাস্থ নবরবান্তর্গত রব্ধিশেষ:। যথা ৷ ধরু রব্রি: ক্ষপণ কামর সিংহ শস্কু বেভালভট ঘটকর্পর কালি-मानाः। খ্যাতৌ বরাহ নিহিরৌ নৃপতে: সভাষা রহ্নানি বৈ বরক চির্নব বিজনস্য।। ইভি নবরত্ন ।। दब्रमः मृ खी वब्रहेः। (वान्रहा ইতি ভাষা। যথা। বিষসৃক্ষী ভূঙ্গ-नद्याला ॥ ব্রল্ক: ত্রিকাওশেষ:।। বরপাণ্ডে ত্রি।।

রোলো বরল স্তৃণষট্পদ:। ইতি চম্পকবৃক্ষঃ। ইতি दब्रमा जी इंजी। इंडि मिनी॥ তত্র পবগী য বকারাদৌ পঠিতো-या। वद्रहे। ह।। वब्रली क्षी वद्रहै।। इंजि कहें। ध्रा শ্বশ্বভায্যা। चत्रव< मना अो ইতি শদ্মালা॥ ब्दर्वर्विनी स्त्री चज्राखगासी। उर

পার্য্যায়:।বরারোহা ২ মত্তকাসি-

নী ৩ উত্তমা ৪। ইত্যমর: 11 মন্ত-कामिनी ৫। ইতি ভরত: ॥ लाक्षा ॥ इत्रिमा ॥ (त्राह्मा ॥ क्लिनी ॥ जाधीखी। ইতি মেদিনী॥ গৌরী ॥ अत्रमञी ॥ बन्दीः । इंडि भद-तज्ञावनी ॥

वबवाञ्लीक ज्ञी अरुमा ३ छ। ५ छ। होका ॥

বরসু**দ্ধঃ পু॰ শিবঃ।ই**ভি ত্রিকাও (শ্ব: 11

ত্রী ফল জিক। ইভি মেদিনী ারেণুকানামগন্ধ্ব্য•াইভিশ্দ-हिन्दुको॥ ७५१ ॥ (मना ॥ दुक्ती ॥ विषक्षा भागे ॥ इति नु। । ইতি রাজনিঘণীঃ।। শ্রেষ্ঠা চ ॥

বরাক: পু॰ শিব:। ইতি মেদিনী ।। যুদ্ধ । ইতি হেমচন্দু:।।

ব্রাক: ত্রি শোচনীয:। ই**ভি মে**-क्तिया। अवद्र:। इंडि **मफ्**याना॥ वताऋ॰ क्ली बढकगा खरा हेउ।-মর: ॥ গুডবুক্ ॥ যোনি: । ইঙ্কি ত্রিকাওশেষ: ॥ শেষ্টাব্যবে লী। তদাকে তি॥

বরাস্বঃ পু॰ হন্তী।ইতি ত্রিকাণ্ড-(णवः ॥ विक्ः। यथा । সুवर्गवार्गा **ट्याक्श वदाक कन्त्राक्**री ! ইতি ভগ্য সহসুনামস্তোত্ত ॥

दत्राङ्क ही ७५५क्। इंडामद्रः॥ শুেষ্ঠাব্যব্যুক্তে ত্রি।। ব্রাঙ্গনা জী অভিশুশন্তাস্যুক্তা-জ্রী। যথা। শির: সপুত্র॰ চরণৌ সুপুজিতৌ বরাজনাসেবন মল্লভো জন•। অন্মশাধিত্ব মপর মৈথুন• वित्रभुवक्षाः निय मानविष्ठ वहे॥ ইতি লক্ষীচরিত্র।। বরাঙ্গরপোপেত: ত্রি শুেষ্ক্পযুক্ত: । जून्तव इंडार्थः । उट्भर्गायः । **त्रि**•ह्नु•इननः २। इंड्रिन्नः ॥ ন্ত্রী হরিদা। ইতিরাজ-वद्राञ्ची निर्घण्टः ॥ ददाकी भु चम्रत्व मः। ददाक् ঞ্চামুবেত্তস• ইতি বা পাঠ:। ইতি **त**ञ्चाला ॥ (णुष्ठाक्यु कि ॥ বরাট: পু• কপদক:। ইতি রাজ निघरिः।। ब्रब्धः। यथा। ब्रब्धः गुला बद्राही ना। इंजि खीकाएँ द्रञ् কোষ:। ইত্যমরটীকাষা ভরত:॥ ब्रहार्टेकः शृ क्षी कशर्मकः। कि इंडि ভाषा । ইত্যনর: ॥ তস্য সংখ্যা ভেদেন সংজ্ঞাভেদ। যথা। বরাটকানা দশকদ্বয় যৎ সাকা-কিনী ভাষ্ঠ পণ শতসু: ৷ তে যো-**७**म मुन्न इवावनाम् । मुरेन उर्था ৰোডশভিশ্ব নিষ্কঃ॥ ইতি লীলা

বতী।।#।।অপিচ। তামুক: কার্বি-ক: পণঃ। ইতি যাজ্ঞবদ্ধাবচনেন ও-প্রাঃ পঞ্চাদ্যনাবক তে বোডশাং ক্ষ: কর্ষো হস্ত্রী। ইত্যমরসিংহো-ক্তেন চ অশীতিরত্তিকাপরিমিত: তামুে পণশব: সঙ্কেতিত: সচ তা-বৎসাখ্যকৰব্লাটকৈ লভ্যতে ইতি ব্রাটকেম্বলি তথা ব্যবহার: 1 এ-তম্লক ভবিষ্য মংস্তিশ্ৰামা র্বচন যথা। অশীন্তিভি র্বরাটকৈঃ পণ ইত্যভিধীয়তে। তৈ: যোড-रेनः भूद्रागः मार्गुक्ठः मथ्डि स তৈঃ॥ ইভি পাুযশ্চিত্ততত্ত্ব ॥ 🗱। তেচ দক্ষিণার্থ বিধীয়ন্তে। যথা। হত মশোতিয় দান হতো যজ স্ত্রিকিণঃ। তমাৎ পণ কাকিণী ৰা ফল পুস্ন মথাপি বা॥ পুদ-म्यार मिक्कार राज्य उरा म मकः লো ভবেৎ। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ।। वज्ञाहेकः शुः ब्रड्झः॥ शन्मवीबः। ইতি মেদিনী।। বরাটকরজাঃ পু• নাগকেশরবৃক্ষঃ ।इंडि मद्याना॥ श्री क्लफ्कः। इंडा বরাটিকা गतिकायाः खत्र छः ताकानिर्घणे का। जुह्वाहिका ह । यथा । भ्यात्म मू-बार्ड (यन (उन गक्षा व्याधिका Ì ইব্যুন্ডট:॥

ब्रागः भू इन्मः। इति बिकासः (मयः॥ बङ्गवृक्तः। इति मम-ब्रह्मविणाः

वज्ञाननी जी कामी। यथा। कामी वज्ञाननी वाज्ञाननी मिवनुत्री हजा । इंडि एश्महम्मुः॥

वद्राहन॰ क्ली द्राजाहनः। ইতি भद्रः চন্দ্রিকা।।

वज्ञा जिन्नः भू॰ ज्ञान्त्व उत्रः। इंडि ज्ञान्न निर्विष्टः ॥ (ण्रुष्ठ ना ना ह ॥ वज्ञा मुः भू॰ कञ्ज नर्यः। क्ज्ञा मु इंडि वा भार्रः। इंडि ज्ञान्ज ॥ ॥ वज्ञाज्ञ क॰ ज्ञी श्री ज्ञान् । इंडि (इन-हन्मुः ॥

वज्ञाद्धाः अर् इस्तुराद्धाः । स्थ-वद्धाः । इति विश्वः ॥ वद्धाद्धाः जी जेन्द्रभाजी । हेन्द्र-भज्ञः ॥ किः । हिन्दि (हमहन्मुः ॥ वद्धानिका जी पूर्णः । हिन्दिका अर्थः ।

বরাশি: পু॰ স্থলবন্তং। মোটা-কাপড্ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়: । স্থলশাটক: ২। ইত্যনর: ॥ বরা-নি: এ স্থলশাটক: ৪। স্থলশাটি-ক: ৫। ইতি ভটীকায়া: ভরত: ॥ স্থাপটাক: ৬। ইতি শহরহাবলী

शवज्ञानि ११ ज्ञीविनिष्ठि करिषदः॥ वज्ञाननः ज्ञी ७५ लूजः। इति नदः भाना॥ उत्तराजनकः॥ वज्ञाननः लूः विज्ञः॥ बाज्ञभानः॥ इति विषः॥ वज्ञानिः लूः ज्ञानारिकः॥ अज्ञवज्ञः

বরাসী জী নানবাসঃ। ইতি **শন্দ**্ নালা।।

। इंडि ध्र शि:।।

वद्गारुः भू॰ भभुविष्मयः। वद्गी ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাবঃ। শুকরঃ ২ মৃষ্টি: ৩ কোল: ৪ পোত্রী ৫ कितिः ७ किंग्रिः १ म्ब्री ৮ वानी ১ ভরবোমা ১০ কোডঃ ১১ ভ্রারঃ ১২। ইত্যনরঃ।। কিরঃ ১৩ মুন্তাদঃ ১৪ নৃথলাঙ্গল: ১৫। ইতি জটাধরঃ ।। ज्लनामिकः ১७ म्बायूयः ১१ वकवकुः ১৮ मीर्च**ः ১३ व्यार्थ**-निकः २० ज्किट २) वङ्मुः २२ । इेंडि मफ्त्रज्ञावनी ॥ **य**म्यभा•मः স্য গুণাঃ । বৃষ্যন্ত্রণ বাভয়ুত্বণ 🕻 বলবর্দ্ধনত্বঞ্চ। ইতি রাজবন্ধভ:।। বৰ্মনূত্ৰত্ব ৷ বিৰূক্ষণত্বঞ্চ ৷ ইতি **उ**रेवर शारीखद्रशा अन्।८ म्कद्र-শব্দে দুপ্তব্যুণ ৷৷ 🕸 ৷৷ তন্মাণসং বি-करव न (स्य॰। यथा। नाजकाऽ॰ रैन(वर्गार्थ च्हाम्ब्रजा महियी

कीत्र वर्कायटा निकाय मेटना वः ব্লাহ মাণসামি চেতি। ইত্যাহ্নিক ভত্তুপ্ত বিষ্ণুস্ক ॥ 🗫 ॥ বরাহ্মা॰-न जुद्दा विकुश्वामि निरम्भा यथा 1 वात्राह উवाह। जुक्<sub>।</sub> वात्राह्मा॰. সন্ত যো বৈ মামুপসর্গতি। পতন॰ তস্য বক্ষ্যামি মথা ভবতি সুন্দরি शताताहा स्मवर्गात ज्वा ज्वत তে বনে। ব্যাধো ভ্রা নহাভাগে সমা: সপ্ত চ সপ্ত ে:।। ক্মি ভ্ৰি সমা: সপ্ত ভিষ্যত তস্য পুষ্ণে। অথোটৈ মুবিকো ভূত্বা বৰ্ষাণাঞ্চ চতুদশ। একোৰবি॰শ ৰয়াণি যাতু थानक बायाज। मझक काष्ट्रेवर्यान জায়তে ভবনে বহু ॥ ব্যাসু জি'শ তি ব্যাণি জায়তে পিশিতাশনঃ। এষ সংসারিতা গড়া বারাহানিষ-ভক্ষক:।। कायां विभूत भिष्क ्यान जानरङ ख्या। श्वीतम्बर-इः गुड्डा नर्तनम्प्र्वक्वन ॥ नित्रः সা চাঞ্জলি কৃত্বা বাক্যঞ্চেদ মুবাচ হ ৷ এতাম পরম গুছ তব ভক্ত जुथावरः ॥ वादाह्माः मञ्कास यन मूठांखि किल्विषा । वादाङ উবাচ। ভব্নত্তি মানবা যেন ভিৰ্য্যক্ **जः** সার সাগরা । গোম্যেন দিন नक कराहारत्व मध देव।। भानीय ह

ততো ভূকা ভিঙেৎ সপ্তদিন ভঙঃ। অকার লবণ সপ্ত স্কুভিন্চ তথা ত্ৰয:।। তিল্ভকো দিনান্সপত স্পত পাষাণভক্ষক:। পৰো ভূজ্বা দিন• मल काद्रायह कि माजानः ॥ माड माउ भताः क्षा चक्कात्रविवर्किः छाः । हिनात्नारकानशकानहस्त्र उ ক্তৰিক্ষঃ ॥ পুনুক্ত: সর্বপাপে-ভ্যঃ সসংজ্ঞে। বিগতজ্ব:। ক্হা ভু मन कर्माणि मन लाकाय गहुछि ॥ ইতি বারাহ্মাণস ভক্ষণাপরাধ পুা-যশ্চিত্রণ। ইভিবারাহপুরাণণ॥#॥ वनावत्राह्मा ना कः माक्षात्री विहिउ॰ । যথা অশুভীত দুব্ৰৌ হারীত:। মহারণ্যবাসিনক বরাহাণ তথেতি । এवश्व विवहत्त्व अगुन्ना मृक्ताः-শেতি ব**শি**ষ্টোক্ত খেতাখেত্যা व्यविञ्च । कन्न उक्स । भाषि नियु-ক্তানি যুক্ততযেতি। বিফ্পাসকস্য नर्वथा निरम्यः। यथा बाद्रार्ह ज्या-वद्याकाः। ভূकु। वद्राश्माः मस यस माम्लमर्लाउ । वदाहिन्सवर्धान **लूदा देव हद्राउ वरन । इंड्राका**म-नीजबुः॥ 🗱 ॥ याद्धवन्नुः। इति-ब्रासिन देव मामः भाषामन ह वदः मद्गः। सारमा कादिगाकोत् जुमानः नि हाग भाषं रेजः ॥ अन द्योद्रव ৰোৱাহ **শলৈ** মা িস ৰ্যথাক্ষম । মা -ৰ বৃদ্ধ্যাভিতৃপ্যন্তি দৰেনেহ পি-जामंशः॥ ইতি শाषांउदुः॥#॥ बिस्थात्रवजात्रविष्णवः। यथा। साय-্ড্ৰুবউবাচ বিশ্ব পুৰা: স্থাস্যন্তি প্ श्वि जावट मुलयार्गत मग्ना जन्ता উদ্ধরণে যত্ন• দক। ইতি শুদ্ধা বুদ্ধা ভগবন্ত খ্যাতবান। খ্যায়ত স্তম্য माना विवद्राट अङ्गुष्ठभुमार्गा वद्रा হপোতো নিরগাৎ। সচ আকা শঙ্ক: সন্ ক্ষণমাৰেণ পৰ্তোপমে। বভূব। ত॰ বিষ্ণু॰ মন্ত্ৰা বুন্ধা ভৃষ্টাব। লচ তেন স্ততঃ পুল্যাণ্বজ্জনধ্যে পুবিশাঃ দস্তাগুেণ পৃথী মৃদ্ধতঃ নিজ ধারণশক্যা সংস্থাপ্য অন্তর্হিতে। বভ্ব। ততঃ পৃথিব্যা রাজা স্বায়ন্ত্র মনু রাসীৎ। ইতি জ্ঞীভাগবতমত ।। #।। তদবভারকভূক হিরণ্যাক্ষ ববো যথা। বরাহপর্বতো নান্ यः পুরা হরিনিমিত:। স এব ভূতো ভগবানাজগানাসুরান্তিক ।৷ তভ-**ण्डनम् প্**ठीकाण मगृङ्गाह्य मुखम• । সহসারে তত শ্চক্র সূর্য্য বহি সম-शुक्ता (या दिक्छे: मूद्रन्युगा मन-ন্তো ভোগিনা মলি । বিষ্ণুর্থো যোপ-বিদ্যা থে। যভ্তে। যজ্ঞকর্মণা ॥ विष्य युष्पा भुजारमन मदनश्चा मिरदी- কস:। আজ্ঞানহর্ষিভি দ্ব নশুক ष्ठि मुशाङ्खः ॥ ততো रिम्डा<u>प</u>्रक्रेः **भूत्रानः भइ मूजमः।** वरकुन मध्यो (वर्णन विक्रिभन् रेम्ड)कीविङ ॥ ভতঃ সংব্ৰক্তন্যনো ছিব্ৰণ্যাক্ষো ন-ছাসুর:। কোযন্ত্বিত বদন্ রোধা-माद्रायन मुरेनक्ष ।। चादा इक् शिनः দেব॰ হিত॰ পুক্ষবিগৃহণ। শত্ৰ ठकार/७कद्र° (रवानामर्खिनानन॰ ৷৷ ররাদ্র শত্র চক্রভ্যা• তাভ্যা यमूद्रमूबनः । স्यंतिनमुन्तमा र्वार्थः পৌৰ্নাস্যা মিবাদুদঃ ॥ ভতো হি-ब्रगाक्रमुथाक मर्ख ममापुरन् रिन ত্যগণা: সুরেশ॰। নিহন্তকামা: স-हमा दहारे गृही उ मद्या वन ्र्न-मर्भाः ॥ डिं वंश्वासारिमायन मरिञ्च रिनंज्यानूरित मीनवशृक्षरिवन्ह । नामो हहाचानू इत्नर है। देव (मर्थः সূত্रী देव मन्दर्शाष्ट्रिः॥देवज्य खटा **ৎসৌ ন্বরাহ মাহবে নিপাত্যামা-**, ज क्षा ज्वाची । **मकि । यथा** विद्रुर ত নাশু হজে পুরর্যমানোপি গিরি• जुरमधः ॥ न इन्यासा गम्यानु-মেয: প্রোবাচ দৈত্য ন্বরাহমূর্তিঃ। পুজাপতে:সেতৃ মিম্ নিহ্ভ্যুজে-ह क बिख यथा नूरतन्तुः ॥ वलः नना-नाम् भरेत ब्राइवः विनामि विगा-

ম্যুক্ মেব মাজৌ। দৈত্যা ভ্ৰযা সা-क मर्डा हि (हवान् श्उयकी वान् मू-ন্যোপপ্লান্ ॥ সংস্থাপ্যিব্যামি ন मः मर्या २व रिरक्तान्तु दर्भः इनू सर শনীপে।। এব ব্ৰুবতি বাক্যন্ত বি-क्षा वंक्रमाशा<u>ज्य</u> । म वाल्माज-मूर्वा गर्वभुरुवन ब्रामा नानवा-শ্চাপি সমরে ময তারপুরোগমা:। উদ্যতাযুৰ নিজিংশাঃ সর্বে তং সমৃ भामुबन् ॥ म जाउ।मारनाजिवरेन र्दि रेजाः मनायूर्यामारेजः। न हहान বরাহ্ম মৈনাক ইব পর্যত:।। ক্রো-খন-রক্তনযন: শন্ত্র চক্রধরে। ছরিং। ব্যবৰ্ষত স বেগেন ব্যাপু বন্ সন্থতো **मिणः ॥ ७**॰ जयातामुद्धन्युनाः वर्षः भानः नञ्चला । अवगः मरु गक्तर्व खरूर् बंधुम्हन ॥ ही था गिम्हन खाद्र॰ मर्भनीय जूमर्भन॰ । जूदर्ग द्विपु পর্য্যন্ত বজুনাভ ভবাবহ ।। নেদে। **९ थि मञ्जा कथितिः मिकः मानव म** স্তুবৈ: ॥ অদিতীয• পুহারৈস্ত ফুর-পর্য্যন্ত মণ্ডলং। সুশ্বাম মালা বিজ-ত কামগ কামৰপিণ।। চক্ৰমূদ্য-ম্য সমরে বারাহ: স্বেন তেজসা। চিছেদ বাফু শ্চকেণ ছিরণ্যাক্ষস্য क उथा।। न हिम्या विभिन्न न शुक्रिका हानवः। कवकदे श्रिजः

সংখ্য বিশাথ ইব পাদপ: 🛭 তভঃ ছিত্তীস্ব শির স্তস্য ভূমাবপাক य८ । हित्रसय कचाँठिक स्माद्राः **ण्क्रि**वाखन ॥ हित्रगा**क राउ** रेमक्या (य (भाषा रेक्टव मानवाः । **मरस्** তস্য ভবাৰুন্তা জগ্ম রার্ভা দিশোদ-भ ॥ इंडि विक्रि भूत्रानः ॥ 🕸 ॥ व्यथ বরাহাবভারকারণ সরভরূপি ম-शापवकर्जुक उहबी द्रनाम का वि-लाका मधिन मधि यमा काना-গ্ৰিনা ভদা। অনম্ভ: পৃথিবীণ ভ্যক্তৃ। বিক্ষোরন্তিক মাগত: ৷৷ তেন ত্যক তু পৃথিবী ক্ষণমাত্রাদধোপতা। ত-তো বরাহৰূপেণ নিম্মাণ পৃথিবীণ काल।। मग्ना॰ ममूष्यात्राम् न्रयाख्य সলিলোপরি।বরাহোপি ম্বরণগড়া লোকালোকাহ্যয়ণ গিরিণ।। বারা-হা। সহ রেনে স পৃথিব্যা চাক্রপ-যা। স তথা রমনাণস্ত সূচিরং পর্ব-ভোত্তমে ॥ নাবাপ ভোষ লোকে-শ: পোত্রী পরমকামূক:। পৃথিব্যাঃ পোত্রি ক্পায়া রম্যস্ত্যা স্ততঃ সূতাঃ ॥ এया काउ। विकामुक्ता (उया॰ मा-शानि रेव भ्मा । पूर्व खः कराका शादः नर्ब बर महारनाः ॥ न रेडः भूषः পরিবৃতো বারাহো ভার্য্যা ম্বা 1 त्रम्मान खरा काय्क्रामः देन्दामनः

বিকা। ইত তত্ত প্রশূতি: ক্রীড-ডি: পোৰ্ভি ভদা। লগতি ভব ख्यानि मरीः कन्नुज्वन्ख्या।। एखा বদবগণাঃ সূর্বে সহিতা দেবয়েনি-'ভি: 1 শকেশ সহিতা মস্ত্র' চক্র: সম্যক্ জগব্দিত ।। ততো বিশ্চিত্য ংও সর্বে শকাদ্যা মুনিভিঃ সহ । **भद्रग्रः भद्रगः ब्र**ण्म मीद्राय**ा म**बः বিভূণ। ত সমাসাদ্য গোবিদং বাসুদেব॰ জগৎপতি॰। পুণম্য স-र्ख जिन्मा स्रष्टेृत् र्गक्उध्वज्ञः॥ (प्रता **উচ্: । नम एड (एव (ए(वण जग**ू কারণকারণ। কালমক্পিন্ভগবন্ भुषानभूक्वाषाक ॥ इंडि इता দেবদেবে। ভূত ভাবনভাবন:। সে বৈদু দেবগণৈ ৰচে তান্ সৰ্বান্ মেঘ-🕋 নিশ্বন: ।। 🗐 ভবানুবাচ । বদর্থ মা-পতা যুবং বছো ভব মুপস্থিত । যঞ ৰদ্বা মথাকাৰ্য্যণ তদ্বেবা তুৰ্ণ মূচ্যতাণ া। দেবাউচু:। শীর্য্যতে বসুধা নিভ্যুণ ক্রীড়বা যজ্ঞ পোক্রিণ:। লোকাশ্চ সর্বে সংক্ষা নাপুবস্ত্যপশান্তিতাং ম ইতি তেষা• নিগদতা• শুবাবাক্য• क्रवार्मनः। উবাচ मञ्जद्र (एव व्यूका-ণঞ্চ বিশেষতঃ ৷৷ যৎকৃতে দেবতাঃ नर्वाः नुबाम् नकवा हेगाः। नुष्तु-বন্তি মহদু:খং শীৰ্যতে সকলং জ

গং ৷৷ বারাহণ ভদহণকাৰণ ভ্যক্তু-भिहाभि नद्भा नियम नक ७८ **७)क् (बहरा) निर्म नकाउ ॥ खु॰** ভ্যান্তবন্ধ ভৎকাৰ ব্ৰাত্ম শক্তরা-षुना। प्रभागप्रायस (जाना के व्यक्तन् यात्रका मूद्यः ॥ जान्यायुक्त छन्। দেবাঃ শক্ষরো হন্ত পোত্রিণ । ব্লব্ধ-यनायाः जःजर्गाट विशागाः मात्र-ণাত্রথা। কাষ: পাপকরে। ভূত ত ত্যক্তু মূহতে ধুনা। প্রাথকিকৈ কপেতৈ য়ঃ পুষ্যক্ষিত্ত মহণ ভতঃ ম চরিষ্যামি তদর্থ মে তমুর্যন্থেন পা-ত্যতা । পুজাপাল্যা মন সদা যা হি সীদত্তি নিত্যশ:।। মৎকৃতে পুত্য-হণ তমাৎ ভ্যক্ত্যে কাষণ পুলাকৃত্তে । শ্রীমার্কণ্ডেয় উবাচ। ইত্যুক্তৌ বা-जुरम्यान जमा ह वृक्षणकरहो। द्वरा यर्थाकः उद कार्य) निजि (गाविन्तः মূচতু: ৷৷ বাসুদেবো হপি তান্ সর্বা-, ন্ বিস্জ্য ভিদশা॰ তদা। বা**রাছ**॰ তেজসা হতু<sup>•</sup> স্বয• খ্যানপরো ভ-ব< ৷৷ শনৈ: শনৈ র্যদা তেজ আছর-ত্যেৰ মাধব:। তদা দেহন্ত বারাহ° मबुरीनः वाबाय**छ ॥ तुन्नामा जि**न দশাঃ সর্বে মহাদেব মুমাপতিং ! অনুজ্যু তথা তেজ আখারু মর नामान ।। उठः मदि रेर्न्दगरेगः दः

ৰ ভেলো ব্ৰপুলে। আদপে তেন ৰলবান সোভীৰ সমন্ত্ৰায়ত।। ততঃ সুরভরগী স তৎক্ষণাদ্বিরশো হত বং। উদ্ধাধো ভাৰত ক্ষাষ্টপাদ युकः मृर्ভत्रवः ॥ दिवक्षायाकताः हारः नाष्ट्रवीक्रकविष्ठः । উष्ट्र वदारकायस वक्षरयाद्यन विस्वः ॥ **লকাভ** বিভূত: পার্ম্মে বর্জমান স্তদা च्दर । जगागाङ छङ्ग मृक्षे। का-बाषावड मक्षत्र। ॥ त्रृव्उः कनका श्यात्र जात्रमृः काश्रमृहिजाः। छे-हिक्किभू सः यूगभर भाजवारेड मंश्रवाः ॥ ७७ स्थनुशातन नत्रज्ञः क्षे भ्रष्ठः। जिद्या वनू বঁরাহন্য পাত্রথামান তব্দলে।। ত পাতবিয়া পুথম সুবৃত্ত কনক ख्या। वात्रक क्षेप्राम्य जिल्ला ভিত্বা ৰবান হ ॥ ত্যক্তপুৰ্ণাস্ত তে সর্বে পেতৃ ভোষে মহার্ণবে। कलनदः विज्यानाः कालानलम মর্চিব:।। পতিতেষু বরাহেষু বুদ্ধ। विकुर्व उथा। मृद्धे (वं विश्व गानामू: পুনরেৰ সমাগতা: ॥ ইতি কালি কাপুরাণীযাঞ্জীবিংশত্ নত্রিংশা-খ্যায়াৎ সংস্কলিত:॥ व्यारः भ् विकृः॥ सानरजनः॥

**श**र्ब उप्डमः॥ मूखा। ইতি भिरिनी

श जिल्लाइ: ॥ यात्राशिकनः ।
इंडि त्राक्षित्रं ॥ अक्षेत्रण्यीलाडगंड कृ पृषीलितिलाव:। यथा।
शक्ष्यां वक्षाः (जोत्या) वद्राष्ट्रं कृष्य व्य ह। स्तृष्ट कर्मकृष्ट नात्री ख्रुत्रक ख्या।। हत्स्तृन्यु भ्यायाः भञ्ज यवाक्षक गंडियान् । खामाञ्च स्मान्नो ह छ्व दीलाएणाहेिः ॥ इंडि ल्यम्भावा ॥

वज्ञाहकनरः श्रु वाजाही। हैं छ ज्ञाहकाछ। छी वाजाही ग्रुक्तः। हे छि मक्त्रज्ञावनी।। बताहकाली श्रु म्र्युमिनिमुझ वृक्तः । उर्युग्यः। म्र्युग्यर्खः २। हे छि हाजावनी।।

वजारका जो क्ष्मितिस्यः ।
हेि सम्माना ॥ स्ट्रिग्रायः ।
मान्नानुः २ ममना ० नक्नातिका
८ वजार्नामा ६ वन्ता ५ स्वजी १
छिक्कमिका ४ नमन्नानी २ गछकाना १० थिन्ती १० । हेि जङ्गमाना ॥ निक्नानुका १२ अलिनकाजिका १० क्रालिनः १८ गछकाजी १६ ममीहरा १५। हैि गुएस्वतः ॥ वाजारी । हामाजान् हैिं
स्वारा । हैिं मूर्जिः । हैं अपन्न-

চীকাষা ভরত:॥

दबाहनामां भ्रः वादाहीकनरः । इंडिणक्यांना ॥

बदाहिका जी क्लिकहु: 1 हैं जि द्वाक निर्धिष्ठ: 11

वजारी को जुमूखा॥ म्कज्ञकमः । ইতি রাজনিঘণ্ট:॥

বরিবসিত: ত্রি উপাসিত:। ইত্য নর:।।

বরিবস্যা জী শুলুযা।ইত্যমর: ।। বরিবস্যিত: ত্রি উপাসিত: । ইত্যমর: ।।

ব্রিশী জী বড়িশী। ইভি শব্

ৰবিষণ লী বংসর:। ইতি শহ-রব্বাবলী।

র্রিবাঃ জীভূন্ন বর্ষাঃ। ইতি ভরত ভিরুপকোবঃ ।।

বরিবাপ্রিয়ঃ পু• চাভকপক্ষী। ইভিশন্দরত্বাবলী।।

ৰ্রিষ্ঠ॰ ক্লী ভামু॰। ইভ্যমন্ন:॥ মরিচ॰। ইভি মেদিনী॥

বরিষ্ঠ: ত্রি অ্যমন্যোর্ডিশ্বেন-উক্:। ইতি ব্যাকরণ ।। বর্তম: । উক্তম:। ইতি মেদিনী ॥ বহু: । ইত্যক্ষ:।।

ব্রিষ্ঠ: পু তিভিরিপক্ষী।ইঙি

(मिनिनी।। नाजक्ष्णः। ই ि जांब-निष्णेः ॥

वित्रिष्ठा जी व्यादिष्ठाङ्का। ইडि त्राजनिर्घणः॥

বরী শ্রী শভাবরী। ইত্যনর:।।
স্থ্যপুরী। ইতি ত্রিকাঞ্জেব: ।।
বরীযান্ ত্রি শুেঠ: ।। বরিধ:।।
অতিযুবা। ইতি মেদিনী।।

वत्रीयान् भू विश्वष्ठारिमश्चितः भः जिर्थागास्त्रगं ठाडे । हणायाः । छव का उकलः । हा ठा हथानः मूज्द्राः मूदणः मद्कर्षकर्ता मधूत च जावः । नद्या वलीयान् धनयान् कनाष्ट्राः रथारगः वत्रीयान् यहि दक्षकात्यः ॥ हेजि क्षां डी भूहीणः ॥

वजीवर्षः भू वनीवर्षः। ইত্যमञ् होकायाः जमानाथः ॥ वजीयुः भू कामः। ইতি विकाशः स्मयः॥

वक्षेः भू द्वह्वाञ्चित्त्वः । यथा। भूनिन्ता नाष्ट्रना निष्टेतः भवत्रा वक्षे । ञ्षेः। नाना ञ्रिलाः कित्राञाण मर्द्धा द्वह्वाञ्यः ॥ इञ्जिष्ट्रमहम्मः ॥

वक्षः भू॰ ज्ञाडाङाङिविष्मयः। वथा। त्रज्ञक म्हर्यकात्रम्ह नही व-क्ष्ड এव ह। किवर्ख (सह ज्ञिलाम्ह সভিতে চাত্যজা: মৃতা: ॥ এবা।
জীগমনাদৌ দোষো যথা। এতেবান্ত জিয়ো গড়া ভুক্তা চ গুতিগৃহ্য
চ। পত্ত চুজ্জানতো বিপ্যে জ্ঞান
নাৎ সাম্যন্ত গছতি॥ ইতি প্যাযশিত্ত ভুষ্ত ষমবচন।। আস্যোৎ
পত্তি যথা। কৈবৰ্ত্তস্য চ কন্যায়া।
লৌভিকাদেব সৌচিক: । সৌচিকাৎ লৌভিকাজ্জাতো নটো
বক্ত এব চ॥ ইতি পরাশর্পজতি:॥

धक्षाः मृ (सर्वजितिभयः। म ह কল্যপ্রসাক্ষদিভিনারপর্যাণ জা-**७:। ७मा वर्षनाः श**र्गाः ज्ल বান্মীকী পুপ্ৰৌ স্বাতৌ । ইভি **शि**ंगवंडनंड ॥ त ह बनावि পতিঃ পশ্চিমদিক্পাল্শ । ভং পর্ব্যায়: । পুচেতা: ২ পাশী ৩ যাদসাণপতি:৪অপুতি:৫।ইড্য মর:॥ যাদ:পতি: ৬ অপাণপতি: १। इंडि उजीकायाः ভরত: ॥ क्षर्कः ৮ (महनामः ) ब्रावण्यतः )• शब्खयः ३३रेएं छारमयः ३२ जीवना-বাসঃ ১৩ নন্দ পালঃ ১৪। ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी।। वादित्वामः २० म ७नी ঠে রাম: ১৭ সুথাশ: ১৮। ইতি किरायुत्रः ॥ इता निर्मार्थाः

प्तो अगः श्वादिषि ये**ष**ि रेप भीवंशकतात्व। अंच वान्यामण्ड क्यां मुख बड़ारि निर्मिष्ठ । वि-जूब इंग्नेन्धंइ॰ एकिलनाज्य भूषः ॥ वात्मन नागभाषास्त्र धात्रः रंड॰ मूर्डानिन । मलिल॰ वाम मी-ভোগ॰ কার্যেদ্যাদসা॰পতি॰ ॥ वाम जू का द्रायकृष्तिः मकिश शुक्रद्रः भूछ । नारेग निर्वि र्यादम् छ : न-मरेपुः পরিবারিত ॥ क्रेव्व वर्ग (मव- भुजिष्ठाविधिनाईरगर । भुक्त তৎ পুঞ্। ততো ধ্যান পুসন্ববদন (मोम) विश्व**ल**ासम्मूमविङ । म-ৰ্বাভরণ সংযুক্ত সৰ্বলক্ষণ লক্ষিত ॥ किव्रोगः भी छोलः (जोरेनाः भीनः যন্ত মৰছিত । লাবণ্যাম্**তধারাতি** ন্তর্পান্ড মিব পুজা: ॥ রাজহংস সং মার্কতে পাশবাগুকর শুভ । পুর-ब्रारेम्। में रेगः मर्र्बः ममछाट भद्रि-वाविछ ॥ भोगी कान्ना हान्गड॰ নদীভি: পরিবারিত । নাগৈ যা-দোগণৈ যুঁক্ত• বুদ্ধাণ মিব চাপর•॥ সৃষ্টি সংহারকর্ত্তার নারাযণ মিবা-পর । ইতি ধ্যাত্বা প্রয়েৎ।। বরুণ মন্তোদ্ধারন্ত ভবৈব। অস্টাবি•শান্ত বীক্ষেন চতুদশন্বরেণ চ ৷ অর্জেন্দু विन्पृयुक्तन भुगवाफी भिष्ठ न ह।

তেন ওঁ বৈ ইতি মক্ত: ii পুতিমাযা 🏻 श्चिष्ठि॰ कृष्वान्त्रुनरवन निरवादरये । পুজবেদ্বর পুক্লাদৈর: সালিধ্যু পাশ মু দুষা।। স্থিতি॰ পুতিষ্ঠা॰।। নিবোধ-বেৎ অন্তৰ্গভাষ্ট মৃষ্টিভ্যাণ নিবো-ध मुमुा॰ मर्नारयः ॥ नमकात्रमञ्जूष । বৰুণো ধবলো জিছ্যু: পুৰুষো নিম্ন-পাধিপ:। পাশহতো মহাবান্ত স্ত-স্মৈ নিত্যু নমো নমঃ॥ ইতি জলা-नारवाद्मर्गं उत्तुः ॥ 🗱। क्ट्ठेर्र्थः अमु क्रभनीयमञ्जा यथा । भूक्रतावर्ख देक र्भि देशः श्लावयन्तः वजुक्षत्राः । विमूर মুজ্জি তসমন্ধা তোকা আন নমাম্য-**হ• ।। যস্য কেশে**ৰু জীম্ভো নদ্যঃ नदीक्रमित्रु। क्राको नमूना फ-দ্বার স্তম্মে জোফাত্মনে সম: ॥ ইক্তি य्यादा मानरेम क्ष्महादेव ईक्प मा-রাধ্য মূলন<del>ত্রণ</del> জপে**ং। পু**জাপক্তি र्थाव खुष्ट्रभ्रष्ट्रानिता वकारणा (मवछा এতাবদান্ত্র মভিব্যাপ্য সুবৃষ্ট্যর্থ জ-পে বিনিযোগঃ। মজ্রস্ত গুৰুমুখাৎ জ্ঞেব:। স যথা। ওঁ বৃষ্টিরিহানাব্য স্করবো মক্তাস্প্রী গছবশাপার দুরা দিব গছত তেনো বৃষ্টিমাবহ । ইতি মজস্য সহসুদ্ধপানম্বরণ সুক্ \$মতী বসুমতী ভবতি। অত্র সন্দে-रहा न कार्य्यः ॥ श्रा मञ्जाखद्र· । कूई·

লক্ষীণ তথা নাযাণ তেন হুঁ জীঁ হুঁশি ইতি ত্র্যক্ষরমন্ত্রণ নাভিমাত্র**জন**-मरथ्र भुविना यपि क्रनाउ उरा অনাবৃ**ঙি**' হরতি মহাবৃঙি ভ্ৰতি । অষ্টসহসূদ্ধঃ সংখ্যা চতুর্গণা তে-न দ্বাত্রিশেৎ সহসূত্রপ:। দিন-ত্রবানস্তর• চতুদিনে ভ্রপসমাপ্তি: ॥ নভিনাবজলে স্থিতা জপেমঞ্জ পুসন্ধী:৷ বসুসহসুণ জপেয়ঞ্জণ ত্রিদিন• ক্যাপ্য হত্নতঃ॥ অথবা। ষট্ महमु करमिका उप उपा वृद्धि र्खद्र शुन•। इंजि यहेकम्पं **नीशिका ॥ #॥** পুস্তকান্তরে বং ইতি একাক্ষর মজ্রো-পি জপ্যত্ত্বেন লিখিত:।। 🗫 ।। নহা-পাতকিনো দণ্ডখন গৃছীত্বা রাজা-বৰুণায় পুতিপাদ্যেত। যথা। না**र**-দীত নৃপঃ সাধু মহাপাতকিনো ৰ-<del>ন</del>°। আদ্দানস্তল্পোভাত্তে**ন দো**-বেণ লিপ্যভেয় অপ্সূ পুবেশ্য ভং म् ७ वक्गार्याममान्त्य । मुङ ব্ভোপপনে বা বান্ধণে পুতিপাদ विष्या देखा मध्यम् वक्ला ब्राङ्खाः দপুষরো হি স:। ই**শ:** সর্বস্য জগ**়** তো ব্ৰাহ্মণো বেদপারগ: ॥ ইভি मानत्व 🛪 ज्यागः ॥ 🗱 ॥ सनाम-প্যাতবৃক্ষ: । তৎপর্য্যায়: । বরণঃ ২সেতু: ৩ তিক্তশাক: ৪ লমারক: ৪।

ইত্যমর:।। অশ্মরীম্ম ৬ সেত্ক: 🕈 বরাণ: ৮ শিখিমণ্ডন: ৯। ইতি **भद्र**बुद्धात्मी ॥ (श्रेडवृक्क: २० (श्रे-**७**क्म: >> माधूव्कः >२ उमानः ১৩ মাৰতাপহ: ১৪ ৷ অস্য গুণা: । करू दुः। উक्षद्वः। तक्रामाय भी छ वाडर्द्रद्रः। त्रिक्षद्रः। मीপनद्रः। विमु विद्रागिक दुक्ष । ই छि जाक নির্ঘণ্ট:।। অপিচ। বৰুণ: পিত্ত ला (ज्ही त्रय क् हान्य माकः ভান্। নিহন্তি ওলা বাতাসু কিমী॰ (कार्का गिनी भनः ॥ कवार्या मधु ব্ল স্তিক্ত: কটুকো কক্ষকো লঘু:। ইতি ভাবপুকাশ:॥ অন্যह। वस-(ग) श्विल म्लाया (छमी (हारका-<শারীহর:। পুল্ল· বৰুণজ· গুাহি পিত্রমু• আমবাতজিৎ।। ইতি রা-ক্রলভঃ।। 🛊।। জল॰। ইতি মে-क्ति।। मूर्ग्यः। इंडि वियः॥ বফ্ণাবাজা জী মৃদ্যু । ইত্যুমর:॥ वक्गानी जी বৰুণপত্নী। ইতি कदेश्यतः ॥ वरूब॰ क्ली উद्धरीयवञ्च•। वृशाः কৰ পুত্যথেন নিয়ুন্ন•। ইতি সি-चाउकोमूम्रामूनामिव्जिः॥ স'ভক:। ইতি স' किथनातागारिवृज्धः ॥

বর্কর1

বৰূথ লী ভনুত্ৰাণ । ইভি হেম-চন্দু: ॥ চৰ্ম ॥ ইভি মেদিনী ॥ ভত্ৰ প্ৰণী ব্ৰকাল্লাদৌ গণিভো ইয় শন্ধ: ॥

বক্থ: পু॰ পরপূহরণাভিবাত।
রক্ষার্থণ রথস্য সমাহবদ্দাবরণ
কাদি দুব্যুণ তথা তথপর্যায়:।
রথগুপ্তি: ২। ইত্যুমর ভরতৌ।।
রথসংক্তি: ০। ইতি কটাপর:।।
বক্ষিনী স্ত্রী সক্ষুম্ণ। ইতি রাজ্যা

বরেণ্য: ত্রি পুখান:। ইত্যমর:॥ বরেন্দ্রী জ্রী গৌডদেশ:। ইতি ত্রিকাগুশেষ:॥

বরেশর: পু॰ শিব:।ইতি শব্-রত্নাবলী।।

वःब्राष्टे॰ क्ली सक्वकशृञ्जः। ইতি सम्बन्धाना॥

বরোল: পু॰ জ্রী বরট:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

বর্কর: পূ॰ যুবপশু:। ইত্যমর:॥
নেষশাবক:। ইতি তউীকাষা॰
ভরত:॥ পরিহাস:॥ ছাগ:।
ইতিমেদিনী॥
বর্করাট: পু॰ কটাক্ষ:॥ তকণাদি-

*क्*काइरखनथक्कउ:।३७िमिरिनी।। वर्गः न्त्रु॰ बङ्घाञीयमम्हः। समानः ধর্মিভি: পাণিভিরপুাণিভিকপল-ক্ষি ড॰ বৃন্ধ•।যথা কবর্গ:। অত্র কত্ত্ব খত্ত্বাদিনা বিজ্ঞতীয়ত্বেপি স্থানসা-ম্য মস্তি। ইত্যমর ভরতৌ ॥ গৃছপ-तिएहर: । यथा । मर्ला वर्ग **প**तिएह-**भाइ। जार्यायाक मः गुरुाः! উहामः** পরিবর্ত্তণ্ট পটল: কাণ্ড মব্রিযাং॥ স্থান পুকরণ পর্জিকঞ্গুস্কা यः॥ ইতি ত্রিকাগুলেবং॥ সমানা-ऋषयम्। भूद्रमः। एट् नयं।। स् जिः ২। যথা। সমদ্বিগাতঃ কৃতি ক্চ্যতে २७ ज्ञाला अवर्गा हिखान निष्ः । ৰষোপরিষ্টাচ তথাপরেক্ষা ন্ত্য-कुान्डा मुस्मार्या भूनण्ड द्वाणिः॥ খণ্ডৱয়স্যাভিহতি দ্বিনিমী তৎ **थ** ७वरिर्गकायुका कृत्रि वी । ইश्टी-नयू गुः शि वशः कृष्ठिः भागि हेम। বর্গেণ সমন্বিভো বা।। উদাহরণ।। সথে নবানাঞ্চ তুর্দশানা বুছি ত্রিহীনস্য শতত্র্যস্য। পঞ্চোত্তর-স্যাপ্যযুত্তস্য বগং জানাসি চেম্বর্গ विधानमार्गः॥ इंडि मीनावडी॥ **ह्यानाः वर्षा** ৰগোত্তম: মেৰ কৰ্মট তুলা মকর রাশীৰাণ नुष्या २ णः। हिन्नागः वर्षा

বৃষ সিংহ বৃশ্চিক অন্তরাশীনাং र्थाट मिथून कन्ता धनु मी न ब्रामी: নাং ন্বমো হংশাচ। যথা। চরাণাং পূথমে চাংশে স্থিরাণা পঞ্মে তথা। নবমে দ্ব্যাত্মকানাঞ্চ বর্গো-ন্তম ইতি মৃত:।। অপিচ। রাশী-ना विशेषनदाः । यथा । यन বাংশস্ত রাশীনাং বর্গোত্তম ইতি **ग्उ:। ই**তি জ্যো**ভি**স্তত্ত্ব• ।। वई ड मीखी। इंडि कविकन्नक्रमः॥ উ বৰ্চতে। ইতি কবিকল্পক্ষম:॥ वहः ही क्षणा विशा (उक्तः 1 ইতি মেদিনী।। वहकः शुः क्री विश्वा इंडामद्रः॥ वहबी भू हन्मुः। यथा। त्राहिन्ता मञ्ज्यहा वर्ष्ट्यी एवन हन्सुमाः । ইভি বহি পুরাণ।।। वहां भू हन्मुन्यः। इंडि सिपिनी ॥ व्यन्ताह । द्वाहिनामञ्चवहाँ व-ईबी (यन हम्मुभाः। इन्डारम् ।विहान भूद्राण मर्गान्कीर्खान मञीपहरू ভগ্রাপনামাধ্যাय: 11 वर्ष्कन॰ क्ली हि॰जा॥ जानः। ইভি মেদিনী ॥ মারণ•। ইতি ছেমচন্দুঃ विक्तिं कि छ। इन्ह्या द्वार क भुजारम्न नित्रमः। यथाः व्यवकाः

ভঞ্চাবধৃত সরোষ বিস্ববাদিত। গুরো রপি নভোক্তব্য মন সং-কার বজ্জিত।। ইতি কৌর্মে উ-পরিভাগে ১৬ অধ্যায়:।।

बर्क्कनीय॰ वि वर्क्कनरयाग्राग्राज्यकः वुः। वर्जनीयामः यथा। ब्राजामः नः র্ত্তকামঞ্চ তক্ষে হন ক্ষত্রকারিণ:। गनामः गनिकामक यञाम्य वः ৰ্জ্জবৈৎ।। চক্ৰোপদ্ধীবিরজক তক্ষ-র ধৃজিনান্তথা। গান্ধর্ব লোহকার। म म् अवाम विवर्द्धाय ।। अनान চিত্ৰকৰ্মান্ন বান্ধ্ৰে: পতিত্ৰস্য চ । পৌনর্ভবহাত্রিকযো রভিশন্তস্য চৈৰছি।। সূবৰ্ণকার শৈল্য ব্যাধি: छन्राज्यम् ह। हिक्टिनकन्रहिः वामः भू क्वा मा खिक्मा हा। खि न नास्त्रिकरया द्रमः (हव्छानिनहरूम) চ।সোমবিক্রথিনস্চান্ন শ্বপাকস্য বিশেষভ:।। ভার্য্যাজিভস্য চৈবা-ম বন্য চোপপতি গৃহে। উৎসৃ क्षेत्रा कर्मग्रमा खेलावाहिश्राजा-जिनः ॥ ज्ञाडुामक त्रःवामः भ खाबीवमा हैव है। ब्लीवमाउडा-সিন শ্চান্ন মন্তোমন্ত্ৰস্য চৈব হি॥ ভীত্তস্য কদিতস্যান্ন মবক্র্ইণ প विकिछ। वृक्षवियः भागक्तः मा बाबः मृखक्त्रा हु ॥ वृषाभाक्त्रा हिनामः नानामः यन्त्रग्रहा चनु नुकानास नानामः यन्त्रग्रहा चनु न हि ॥ कन्त्रमः निर्मायन नस् निक्रिन स्था । रने शामः यहेका-मक जिनकाममः स्मिन हा। निक्रमु-कननम्रामः निर्मायन अधिन पिष्य-न्यायः निम्यान्ति । श्रद्धा तनि न रवायः निम्यान्ति । श्रद्धा तनि न रवायः निम्यान्ति । श्रद्धा तनि न रवाक्ताः स्मायान्ति । श्रद्धा तनि न रवाक्ताः स्मायान्ति । स्वाक्ताः । स्वाक्ताः । स्वाक्ताः स्मावि म जम्यान्ति किन्त्रिं ॥ हेवि भिक्रम्नुताल हेनित्र ।। हेवि भिक्रम्नुताल हेनित्र ।। हेवि

वर्ड्याः जि वर्ड्यनीयः। यथा। व्यवःश्रदः भृगृत्र दः वर्ड्यावर्ड्याः भृतिकियाः। (ভाक्त्र ममः श्रगुर्धिकः द्वर्थाः । ज्वः कित्रमः हिन्छः।। व्याप्तराभागि । व्याप्तराभागि ।। व्याप्तिक व्याप्तराभागि ।।। व्याप्तिक व्याप्तराभागि ।।। व्याप्तिक व्याप्तराभागि ।।। व्याप्तिक व्याप्तराभागि ।।।

বর্ণ ত ক স্তুতিবিস্তার শুলামূদ্য জি मीलान। इन्जिकविकन्नम्माः॥ वर्ग-ষতি বৰ্ণাপয়তি কবি:স্তৌতীত্যথ: । বর্ণয়ভি ভন্তু বিস্তারয়ভীভ্যর্থঃ। বর্ণবাত পুতিমাণ শুক্লাদিবর্ণাণ করো-ভীত্যর্থ:। বর্ণযতি উদ্যুদ্ধদীপ্যতে विज्ञर्थः । मृङ्गाम्यज्ञुङ्कि मीभरन ইভ্যাপ পাঠ:। ইতি দুর্গাদাস:॥ বৰ্ণ ক বৰ্ণে। ইতি কবিকল্লছন:॥ क वर्गयञ्जि। अयु किन्धमनग्रञ। वर्गः भूझारिकिया। ইতি पूर्गारामः वर्गः क्ली ब्रह्म्यः। इंडि (इम्हम्मुः॥ कां जि:। मा ह द्राञ्चणः क जिरा रिक्ना : म् मूक्का अवासू -शांकि यंथा। यहा जगवान् शुक्व ৰূপেণ সৃষ্টিং কৃতবান্ ভদাস্য শ-ब्रीवार চত্বারে। বর্ণা উৎপদা: <u>।</u> মুখতো বান্ধণাঃ বাহুতঃ ক্ষবিধাঃ উক্তো বৈশ্যা: পাদত: শূদু৷ জা-তাঃ। এতেবাং বর্ণানাং খ্যাঃ শা-স্ত্রেষু নিজ্পিতা: সন্তি। তত্র বা-कानम्या डिठाएड । व्यथ्यमः यज्ञमः मानत्कि । जीविकाज्यः यशा-পন যান্ধন পুতিগুহুম্চেতি। ১। क्विरम्। ज्या धर्माः। अथ्रयनः यजनः मानकः। भुकानाः त्रकः १ः कीविका । २ । दिन्तरम् ज्याश्रमाः

। व्यवप्रवनः यजनः मानकः । ठउत्पृष् बोविकाः। क्विः गात्रक्रनः वािनः काः कमीरकि । १। म्मुना जू वुका कव विणाः णून्या वर्षा केवि-का हा । हा बाजाना व्यान्य हजु हे य तरहा ७वि । वुक्ताता शे श्रः वान भुद्रः नन्यामी ह। छञ छेननयनानस्तरः नियमः कृञ्चा त्या अत्राः निविधी-ছিত্বা সাঙ্গবেদাধ্যয**ন করোভি স** বুন্ধচারীত্যচ্যতে। ১। সাঙ্গবেদা-**খ্য**থন সমাপ্য যো দারপরিগৃহ্ণ কৃত্বা স্বধর্মাচরণ করোভি স গৃহস্ উচ্যতে।২। পুঞ মুৎপাদ্য যো বন वाम॰ कृषा व्यक्ष्ठेभहा कवाहि छ-ক্ষ্যিত্বা ঈশ্বরারাধন করোতি স-वानপुर উচ্যতে। ৩। यः मर्बः शृ-হাদিক ত্যক্তা মুভিতমুণ্ডো গৈরি-करकोशीनाहामनः मुख्य क्रमुख्युक् विजूद जिकावृद्धि निर्मान जीए वा श्रिदा (कवण भीश्रदादा**धनः फ**र्हा-তি স সন্যাসীত্যুচ্যুতে। ৪। ক্ষত্রিয বৈশ্যযোদ্ধ পুথমাশুমত্রয় বিহিত । मृ पूरेमाक अव गृहामुमः। वेसद्राः তাধনন্ত সর্বেধাণ বর্ণানানাশুমাণাঞ্চ नाषात्रा धर्मः। उद्यक्ष्यः यस्त्र विकृ পাসক: স বৈঞ্চৰ উচ্যতে ৷ শিবো-भामकः रेनदः। पूर्गापि मङ्ग्रभामकः

्नाकः। गूर्रांप्रभागवः (भोतः। ग-ा**र्यानानाहरका गा**पशंख्य केहारहा ूरिक मुद्रावार्थमुकामः॥ ॥ ॥ य निर्मा । अस्वादान । नर्गारिक्षति िक्क जुळा: बावस्वाविधः। वि-ः मुहिरु प्र दबन पहर्यन उचक वहां महित ्रम्भा रहक राहक राक राक राक्शमः - अखिन्दः। व्यक्षाननः हाद्यानः वह কৰ্মাণি ছিজোভাষ।। দান নধ্যম-बख्डा धर्मः कविष रिनात्याः । मुख खथा क जियम। क्विरेर्गाम। नाम। · তে ॥ मृनुरेषद हिकाजीनाः मृपूरागाः धर्ममाधनः। काककर्ण खथाजीतः **नाक्**यरक्का **१ नि १ य** ग्रें ३: ॥ जिक्का ५-ৰ্য্যাথ সুশুৰা গুরো: ৰাধ্যায় এব চ । मक्तांकर्याशिकार्याक याची २व॰ वुक्तठाद्रिगः॥ मर्खिया मानुमागास ৰৈবিধ্যন্ত চতৰ্বিব । বুল্লচাযু। পঞ্ र्वारम रेनिश्रका दुक्तउर भन्नः ॥ গো হথীতঃ বিধিবদ্বেদান্ গৃহস্থ।-শুন মানুজেৎ। উপস্থাণকো জে-या रेनिश्चरका सद्रभाष्ट्रिकः ॥ व्यम्स्या **ৎতিথিশুশুবা যক্তো দান** সুরার্চন• া গৃহস্কা সমাসেন ধর্মো ২য় দ্বি-क्षत्रख्याः॥ উपार्भानः माध्रकः गृ হছে। দ্বিধো ভবেৎ। সটুমভরণে युक्तः नाव्यका श्रमो गृशी ज्या

ৰণানিৰীগুগোক্তা ত্যক্তা ভাৰ্য্য धनामिकः। अकाकी यस विहात ए छ-माजीनः म भोक्तिकः ॥ ज्यो गृत कनानिष् बाद्याय सन এव छ। म-मिजारमा बचानग्रयः शामा २यः दन-বাসিন:॥ তপ তপ্যতি যো প্রণে যজেদেবান জুহোতি চ। ৰাধ্যাবে চৈব নিরতো বনছ স্তাপলো মত: ।। তপসা কৰিতো হত্যৰ্থ যস্ত ধ্যাৰ-পরে। ভবেৎ। সন্যাসীহ স বিজে-যো বাৰপুস্থাশুনে ছিতঃ॥ যোগা-ভ্যাসরতো নিত্য মাক্ক্জু জিতে-নিদুষ:। জ্ঞানায বস্ততে ভিচ্ছ: (পু।-**5**503 भारत्मिकः ॥ यसुद्धात्र उ द्भव म्याभिक्रज्ञा सहामृनिः । मगुक् ह मगमणतः न मानी चिक् क्ठारा । रेडक मुख्य मोनिज তপোধ্যানে বিশেষ**ত:। সন**্ত জ্ঞান বৈরাগ্যুণ ধর্মো ২বণ ভিন্ধুকে-মত:।। জ্ঞানসম্যাসিন: কেচিৎ বেদসন্যাসিনো হপরে। ধ্র্যসন্যা-जिनः (किटिधिविदः भाद्रामिकः॥ যোগী চ ত্রিবিধো জ্রেয়ো ভৌতি-का भाक वर ह। उजीयाना-भी (भारका यागमृद्धिममान्उः ॥ পুথনা ভাবনা পূরে নোক্ষেত্রফর ভাবনা। তৃ গ্রীষে চান্তিনা প্রোক্তা

ভাৰন। পারমেশ্রী.॥ धर्मा८ मः ছায়তে মোকো অর্থাৎ কামোভি-काया । भृतृत्वक नितृत्वक विविधः क्य रिविषक ॥ उद्यान भूवे निवृत्त न्तराट भुवृद्धका शिरम्वक्ट। क्रमा मः (मा प्या पान मत्नात्ना २ न्। म এ दह ॥ जार्जव कानमूरा ह जीर्थानुम-রণ ভথা। সভ্যুণ সম্ভোষ আন্তিক্যুণ ख्या (इन्द्रियनिगु**रः ॥ (**मवजान्ध) ছন প্রা বাজানা বিশেষত:। व्यक्ति। नियवाति व सरिभाना म-ক্ষ্ডা। এত আশুনিক। ধর্ম। তা-তুৰণ্য বুৰীম্যতঃ। পুৰাল ভাগ বা-**জ্বানা ন্ত হান** ক্ৰিবাৰতা ।। ङ्गान रेमन्तुः क जियानाः नःग्राप्तः युलनाविनाः । देवन्तरानाः माक्उः স্থান ধংগ মনুবভুৱা ।। গান্ধ ई শুদুজাতীনা পরিচারে চ বর্ততা । इंडि गाक्ट ६५ वद्यागः ॥ 🛊 ॥ অন্যান্ত । ব্ৰাহ্মণস্য ত বক্ষ্যানি শৃণু कर्म दमसदा । यानि कर्माणि अदी ত মন ভক্তিপরায়ণঃ॥ ষটকর্মনি-'রতো ভূমা অহন্ধারবিবর্জিতঃ। লা ভালাভ পরিত্যন্ত ভিক্ষাহারে৷ जिल्ला ।। भग क्या मगायुकः रिलम्बन्धन विवर्जिकः। माखानूमात्री ম ব্যক্ত। ন বৃদ্ধঃ শিশুচেতনঃ।। এত-

দ্বৈ ব্ৰাহ্মণ: কৰ্ম একচিত্তে। জিতেন্দ্ৰি-যঃ। ইষ্টাপূর্জ সকতে স মামেতি वमुक्तत्र ॥ कजियानाः भुवक्तानि ন্ম কর্মসু নিষ্ঠতা । যানি কর্মাণি দৰ্বন্তি ক্তিয়া মধ্যসংস্থিতা: ॥ দানশ্রক কর্মজ্ঞো যজেবু জলল: भू िः। मम कर्मम् (मदावी अङ्कात বিবর্জিড: ॥ অলুভাষী গুণক্তক নিত্যু ভাগবভপ্রি:। গুরু বিদ্যান **म्**याजा। ७श्करमंत्र अन्ति **७: ॥ ७-**जुज्यानाहि जनलः लिनुत्न्यन दिव-জিত:। এতৈ গু ণৈ: সমাযুক্তো যো-না॰ বুজতি ক্জিণ:।। ভজতে নম-যো নিভ্যু নন লোকায় গছতি ৷ दिनाग्रनाष्ठ श्वक्रानि सन कर्यम् নিষ্ঠতা ।। যানি কর্মাণি সকতে মন ভক্তিপথে স্থিত:। এতৈ গুণৈ: স্বধর্মেণ লাভালাভবিবজিত: খতুকালাভিগামী চ শান্তাত্মা মো-হ্বজিত:। শুচি দঁকোে নিরাহারে। মন কনারত: সদা॥ গুরুসংপ্রকো नि**ठ**९॰ युक्का ভक्तानुद**्मनः**। दि-**भ**)रञ्ज्वछ भःयूक्ति। या नू कर्यानि-করেবেৎ ॥ তস্যাহ্ ন পুণশ্যানি স চ মে ন পুণশ্যতি। অথ শূদুস্য वक्ष्यामि कर्याणि मृतू सायवि ॥ यानि कर्याणि क्ञा ज् मूल्या मञ्

ব্যবস্থিত:। দম্পতী মম ভক্তৌ যৌ মম কমপরাযণী।। উভৌ ভাগ-বতৌ ভক্তৌ মৎপরৌ কমনিষ্ঠিতৌ ৷ দেশকালৌ চ জানাতি রজসা उभरमाज्ञिज: ॥ नित्रहस्वातयुका-ज्या व्याजित्थारा विनीजवान् । भू-দ্বানোতিপ্তাত্মা লোভ মোহ বৈবর্জিত: ॥ নমস্কারপ্রিযো নিত্য नम विश्वावादिष्ठः । म्मूकर्यानि म (दिव य ७व॰ म ममाहाद्रद ॥ ত্যক্তা থাবিসহসাণি শৃদুনেব ভক্কা-ম্যহ । ইতি বারাহে বিধিকযোঁৎ-शिखिनामाध्यायः ॥ 🗱 ॥ व्यश्रद्ध । সুকেশি কবাচ। বিপ্রাণাণ চা-তুরাশুন্য বিস্তরান্মে তপোধনা:। আচক্ষপ্ব'ন নে তৃপ্তি: শৃণ্বতঃ পুতি-বিদ্যতে ॥ ঋষয উচু:। কৃতোপনয नः मगुक् वुक्क गर्दा छात्रो वमन् ॥ **७** अ था। २ म । य खक कथानान॰ निमानय। सार्वारयार्था २ गुनुस्य। স্থান ভিক্ষাটন স্তথা।। গুরৌ নিবে म् । उहार् भनुद्धाउन निकामः। शर्यार्थ काम (नाकाणः मन् क भू-**जुःभभारमः ॥ उ**जनकृष्ठः भरटेहिव তৎপরীভ্য নিতঃশ:। অবাপ্য স-कवान् (वरान् भाजः भाषा खाता मुर्थार ॥ उट्या वद्राम् न मन्। म्छ

त्राव पिकगाञ्जः। गार्वञ्जानुमकाः मल गार्य्याण्यमाण्यर ॥ वान-পুস্থাশুনঞ্চামি চতুর্থ স্বেছ্যা বসেৎ । তথৈব চ গুরো র্গেছে ছিজো নিষ্ঠা भवाश्वरार ॥ खात्रा त्रजात ७८-भूधः उद्याप्त निरंगत्यर । अवः जय ि म्जु। न विजः भानक रेक्टे ॥ উপাব্ভ ভত ভ্ৰমাৎ গৃহ্ছ। শু-भकाभाषा । जनमानन्ताः कन्त মুদ্বহেত নিশাচর।। মুকর্মণা ধন वक्। পि ङ्प्तिवाडिथीनिन । नगुक् সংপ্রীণযেন্ডক্ত্যা সদাচাররতো দ্বি-कः ॥ गार्ड्डाः तुक्त हर्या क्ष वान नुइः ত্রাশুনা:। ক্তরিবস্যাপি গদিতা য আচারা দ্বিল্লস্য হি ॥ বৈখানস-षः गार्वञ्च याण्यविष्ठगः विणः । गार्श्र मूखमः (दकः म्मूम) कनः माठ्य ॥ सानि वर्गामुद्याकानि धः मांगीर न राभाय८। या राभयंडि ত্রস্যাসৌ পরিস্প্রতি ভাস্কর:॥ ইতি বামনপুরাণে ১৪ অধ্যায: ॥ 🗱 ॥ भूनक । 🗐 छेबं छैवाह । वास्त्रन ক্ষতিয় বিশাং শ্দুগোঞ্যথা ক্রমণ । ज्ञकाशुनना जुड़ा मृतू धर्मान् म-(यापिकान् ॥ मानः मम्ब्राष्ट्राज्यःज-(फ्रान् गरेडः चाध्यायडर भरः । নিত্যোদকী ভবেছিপু: ক্ষান্তারী

**ग**र्तिगुरु ॥ वृद्धार्थः याज्ञत्वहान्।ानः न्यानव्यांभायख्या । वर्षार भुक्ति **पुरा**तान मृङ्गार्थाम्याय**ा विकः** ॥ मूब्रार्था८ मुक्तः मुख्यः नग्रारवानार्जिः (उ) १एथा यमा उमाद । है डि उपे। का॥ नईलाकिङ्ङ वर्गामाहिङ कम्। विश्व मन्द्रभाष् म् वाक्षारम्। खन् ।। गृहि द्रांष **ष्ट्राह्म जगर्मि ल्या हिन**ः। পতাবভিগন: পল্যা: শস্যতে চাস্য भाषित ॥ ३॥ मानानि मन्त्रासिहाः (उ) दिक्छि: क्वियानि हि । यः (कह विविधि यें रिक्त ब्रिशीयीं के मान र्षित ॥ भद्धाकीरता महीत्रका भूत-রা ভদ্য জীবিকা। ভদ্যালি পুথমে करम् भृषिवीभित्रिभाणनः ॥ भृतिकी পালনেনৈব কৃতকৃত্ত্যে নম্নাধিপ:। **ख्वडि नृशरक द्रःमा गरका य**क्वारि कर्यगाः॥ मुक्षानाः नामनापुाछ। नि क्षेत्राः भित्रभावनारः। भारत्याकाः ভিনতালোকান্ বর্ণসংক্ষারকো নৃ भः॥२॥ भागूभानाः वानिकाक क्विक मनुरक्षयत । दिनागय जीविः কাং বৃদ্ধা দদৌ লোকপিতামহঃ॥ **उन्। भाषायन याखा मान्धर्यम्ह** भगाउँ। निजा निमित्रिकारीना मनुष्ठानक कर्णगा ।।। विकासि

गण्णाय कर्य डावर्था । उन भावन । कर्व विकरित्र द्वानि धरैनः कास-खंदन वा ।। मानक मम्। ८ मृत्मान भा करेडिंड यांबर्गि। निजामिकक नर्ब देव मृष्ट बहि उ छन ह। है स **जुउ**ग्रहि छद्रभाषाय **मार्स्वाक भ**ं দ্বিশৃই:। শতুকালাভিগমন স্বলা রেবু মহীপতে।। দেশা সমস্তভ্তেবু **डिडिका नाडिगान्डा । मर्डा** मिठियंनायात्मा मक्त नियुवारि **छा॥ विकारण्डा उपा उन्न**कार्भ-गाः नात्रभत् । अनेज्या ह जामानी वर्गामा॰ केषिका खनाः।। चानुसाः ণাঞ্চ সর্বেধা মেতে সামান্যলক্ষণা । एगा खंबानकर्मा के विनामीनी निमान मृत्।। काञ कर्या विकासा। कः विष्णिकेयां उथानितः। ताडीन् मा ह विल्यां क ल्यों ने वर्ष नहिंड-যোঃ। শামথ্যে সক্তিভ্রাজ্যমূভা ख्या मिनिशर्थितं। उत्स्तांनिषि कं र्खेरा न मर्याए कर्मन करें । हिंडि তে কথিতা রাজন্ বর্ণ ধর্মা। মধী তব । धर्मगाणुनिनाः नम्राग्युक्छ। स निणान्य ॥ 🗱 🕮 🕏 ई छेवा है। वार्षः কৃত্তাপন্যনো বেদাহরণ তৎপর:। ध्यांगरह वरत्रकृष वृत्रवाती नमा হিতঃ।। শৌচাচারবভা তর কার্য্য

শুশুষণ ভরো:। বুতানি চরতা গ্রা-হা বেদাক কৃতবুদ্ধিনা ॥ উভে স দ্ধ্যে রবিণ ভূপ তথৈবাণ্নিণ সমাহি-**७:** । উপভিষ্ঠেত্তথা **স**র্য্যাদ্গুরো ब्रभाडियामन ॥ ছिতে তিঠে बुद्ध-দ্মাতিনীচৈরাসীত চাসতি। শিব্যো গুরৌ নৃপশ্রে পুতিক্ল ন সংভ ख्या (अरेनरवाकः भरटेखम नान्)-চিত্ত: পুরস্থিত:। অনুজ্ঞাতঞ্চ ভি काम भन्नीयाम्ख्यना ठठ: ॥ व्यव-গাছেদপ: পূর্বমাচার্ব্যেণাবগাহি-छा:। त्रभिक्जनौरिकः ठात्रा कनाः क्ला मूलानाय ॥ गृशीजगुश्चातः 🖫 ততাংনুক্তানবাপ্টব। গার্হ-ছ। भावरम् । शुक्ति। निम्नम्थक् नि-**ञ्च्िः ॥५॥ विधिना ठाछमाद्रस्य धनः** পূাপ্য রকর্মণা। গৃহস্কার্য্য খিল• वर्गाफ्नाव निक्कः ॥ निर्वालन शिवृमाई र्योद्ध (प्रवाः खथा डिथी ন্। অষৈ মুনী শ্চ স্বাধ্যায়ৈ রপত্যে: ন পুৰাপতি•।।ৰলিকৰ্মণাচ ভ্তানি बार्मालामधिन कगर। भाषा-**डि (बाकान् भूकरवा निष्ठकर्यप्रम**् ব্ৰিজ তান্।। ভিক্ষাভূজণ যে কেচিৎ गिर्विवारे वृक्षादिशः । (उभारेखव পুতিষ্ঠমে গার্হস্যু তেন বৈ পরু ॥ (वरार्वनकार्य) १ जीर्थनानाय ह

পুভো। অটন্তি বসুবাণ বিপা: পৃথি-वीनमनाय हा। अनिक्ठा स्नाहा-ता रख भाग· गृशस्त्र (य । **उ**चा॰ भृष्ट्यः महियाः भुजिशासानित्रय ह ।। তেষা॰ স্বাগতদানাদি বক্তব্য सः পুর॰ বচঃ। গৃহাগতানা॰ দদ্যাই শ্य-नामन (ज्यातन ॥ व्यक्तिय यंग्र ছগ্নাশো গৃহাৎ পুতি নিবর্ততে। ज हज्ञ हुइ ३ ठरेख भूगुआहार गः हिं ॥ অবজ্ঞান নহক্ষারো দয়ে: ৈৰে গৃছে সতঃ। পৰিতাপোপধা-তৌচ পাক্ষ্যঞ্ব নশ্ম্যতে ॥ যস্ত্র সম্যক্ করোভ্যেব গৃহস্থ: পর্মণ विधिः। সর্বন্ধবিনিমূক্তো লোকা नाल्लाजानुख्यान् ॥ वयः निव्रिगः ब्राबन् क् उक्छ्रा गृहामुनी । शूध्ययु ভाष्ट्राः निक्षिभा वनः गहि भरेह-ব বা ৷৷২ ৷৷ পর্ণ মূল ফলাহার: কেশ শ্মশু, জটাধর:। ভূমিশাথী ভবেক্তর भूनः नदीि विष् न्री। वर्ष काण व्यानः वर्गाः भित्रधातास्त्रीयकः। তদ্বশ্রিষরণ স্থান শন্তমস্য নরেশ্বর মদেবতাভ্যৱন হোম: সর্বাভ্যাগত भूकन । जिका विलिश्रानक भरा भना नामध्य ॥ वन्राम् एन गावाः ণা মভ্যক্ কান্য শন্যতে। তপন্য: **७**ण बाह्यम् भी छाका हिन्दिः

3/1

क्षु**ञ** ॥ यत्त्रु ङा॰ नियं**ङ**ण्डर्य∫ा॰ दानः शुक्र कारत भूनिः। स महक्राधिवास्ता-यान् जरगरलाकाः मा भागान् ॥।।।। চতুর্থ কাশুনো ভিক্ষো: প্রোচ্যতে या मनीविज्ञिः। उत्र अक्तन गम-তো নন শ্রোত্ নৃপার্হসি ॥ পুঞ দুব্য কলভেষ্ ত্যক্তস্মেছে। নরাধিশ। हजूर्य नामुगङ्गनः गाहिमिध् ज नट-नद्रः॥देवदविकाः छ। तब्र मर्दानाः इस्रानदनीপতে। भिजापिषु मामा रेभवः সম্ভেষেব **জন্ত**ম্।। জরাযুজা **७जारीनाः वाद्यनः कगान्धः कृतिः।** युकः सवी उन पुरहः सर्वमङ्गाः क বৰ্জ্বেৎ।। এচরাত্রস্থিতি গুনি পঞ্চরাত্রছি ভি: পুরে। ভথা ভিঠে-ष्यथा श्रीं ७ (इंत्या वा नाम) काय তে।। পুাণযাত্রানিমিত্তঞ্চ ব্যক্তারে जुङवद्धात । काल भुगखवर्गानाः ক্রোধ তথা দর্প মোহ লোভাদ্য-ण्ड (य । তা॰स्र (मानान् পরিভাজ্য **ग**तितुष्ट् निर्मासा ७१४८ ॥ श्राप्तयः সর্বসত্ত্বেভা। দত্ত্বা য শ্চরতে মুনি:। নভস্যসর্বভূতেভ্যোভযমূৎপদ্যতে ক্চিৎ॥ ক্রাগ্রিহোত্র সম্রীর সং-স্থ শারীর মগ্রিঞ্মুথে জুছোভি। विनुस्र रेज्यानगरे अर्थिन किना

গ্নিনা॰ স বুল্লভিম লোকান্।। চিতা-গ্নীনা॰ অগ্নিচিতা মিত্যর্থ:। চিত্তা-শ্বিনা ইভি বাপাঠ:। ইভি ভট্টাকা।। নোকাশুম•য শ্চরতে যথোক্ত শুচিঃ সুসকল্লিত বৃদ্ধিযুক্তি:। অনিদ্ধন॰ क्यां जि दिव भुगान्तः म वुक्तत्वाकः শুৰতি দ্বিজাতি: ॥৪॥ ইতি বিফুপু-রাণেও অংশে ৮। ৯ অধ্যাযৌ ॥‡॥ পুকারান্তরেশ তেষা মাদিসৃষ্টি র্যথা **। ভত স্তেজোম্য দিব্য পদ্ম সৃষ্ট** স্বযন্ত্রবা ৷ তমাৎ পদ্মাৎ সমভব-षुष्का (वष्यस्या विधिः ॥ भुकाविमः র্গ বিবিধ মানসে। মনসা হসূদ্র। অস্ক্ড্রাক্ষণানের পূর্ব বুক্ষা পুজা-পতি: ৷৷ আত্মতেলোভিনিহুঁভান্ ভাস্করাগ্নি সমপুভান্। ততঃ সত্যঞ্চ থর্মাঞ্চ ভপে। বুন্ধ চ শাখত।। আ-চারক্ষৈবশোচঞ্চ মর্গায বিদধে বিভূ: । (हर हानव शक्तका दिख्डामूब्र मन হোরগা:। यक রাক্স নাগাট পিশাচা মনুষা তথা।। বাহ্মণা: ফ-विया रिक्णाः भूमाक न्शनख्य। যে চান্য ভূ**ডস**ংঘানা বৰ্ণা স্তাংক বিনিৰ্মামে।। ব্ৰাহ্মণানা দিভো বৰ্ণঃ ক্ষ ত্রিযাণাঞ্চ লোহিত:। বৈশ্যস্য পীতকো বর্ণ: শূদাণা মসিত তথা।। মান্ধাভোৰাচ। চাতুৰ্ণস্য বৰ্ণের

यमि सर्गा किछकारछ। সর্বেবাং খলু बर्गानाः मृन्गुरङ दर्गमङ्गद्रः ॥ कामः জ্যোধা ভ্ৰথ বোভ: শোক শিস্তা জ্ঞা শুনঃ। সরেষা ন পুত্রতি ক্মাদ্রণা বিভক্তে ৷৷ বেদ মৃত্ পুরীবাণি শ্লেখ্যা পিত্ত॰ সন্দোণিত॰ ৷ তনু: করতি সর্বেবাণ কমাদ্রণো বিভজ্ঞাতো। জন্মানা মসংখ্যোগ স্থানরাণাঞ্চ জাতযঃ। তেষাং বিবিধ বৰ্ণানাৰ জভো বৰ্ণবিনিশ্চয়ঃ ৷৷ না-রদউবাচ। ন বিশেষোত্তি বর্ণানা-नकं वुक्तभयः जगर। वुक्तना भूवम् 🕏 হি কর্মভি র্বভা গভা। কাম खाग निया र्ड काः काथनाः निय সাহসাঃ। ত্যক্তবধ্যা বকাক। স্তে ভিকা: কণ্ডাতা:॥ গোভের र्खिः नगाङ्य भीजाः क्षानुकी বিনঃ ৷ স্বৰ্মালানু ডিগ্ৰন্তি তে ছিজা বৈশ্যতা॰ গভাঃ ॥ হিংসান্তপু या लुकाः मद भयागकीविनः। कृ काः म्नोहनित्र जुट्टी एउ विकाः म् मुजाः गजाः॥ इत्जारेजः कर्याज ৰ্ব্যস্তা দ্বিদ্ধা বৰ্ণান্তর গতা:। ইত্যে তে চত্তুরা বর্ণা যেষা ব্রান্ধী সর बिछी।। विश्वि वृक्षना भूई ला ভাৰজ্ঞানতা গতা: ৷ ব্ৰাহ্মণা ধৰ্ম তক্ষা ব্ৰহ বেবাং ন নশ্যতি।।

বুক্ষৰান্নযভাগ নিভ্যুণ বুভানি নিধ্-मार ख्या। वृक्ष हिव शहर मृष्टे रंगन জানন্তি ভদ্বিদ: ॥ ঋবিভি: (स्व তপদা मृद्धारङ हाभात भीतः। व्या-**क्रिक्रममुख्**ङा वुक्रम्लाक्ष्या वा याः ॥ अर् वृष्टि यानत्री नामः धर्मः ভক্তপদাৰণা:। #।। মারাভোবাচ । ব্রাহ্মণ: কেন ভবতি ক্ষতিযো বা बिरजाखनः। दिमातः मूम्कः (न्दर्य बाउदर्भापि ए रेख अभ्यादिः अ-कृतः मुक्तिः। (वराश्वरयनमम्भन्नः वर्ह्-मुकर्पमविक्रिजः ॥ (मीहाहाद्रशस्त्रा নিত্য বিষসাশী গুক্পিয়:। নিত্য বুতী সভ্যরতঃ সবৈ:বান্ধণ উচ্যতে ।। সভ্য দান মথো ৎদুছে আনৃশং স্যুণ কৃপা ঘৃণা । তপক্ষ দৃ**শ্যতে** যত্ৰ স ব্ৰাহ্মণ ইভি মৃত: ৷৷ ফণ্ৰন্ধ সেব-(७ कर्च (वनाध्यममभ्युज: । नामा-দান বহি যস্ত স বৈ ক্ষত্রিয় উচ্যক্তে ।। বিশাত্যাশু পশ্ভাগ ক্ৰাাদান क्तिः मुक्तिः। (वनाष्ठ्रयनमण्यमः म বৈশ্য ইতি সংজ্ঞিত: ॥ সর্বভক্ষ্য-রতি নিত্যু সর্বকর্মকরে৷ ২শুচিঃ ৷ ठाक्तवम खुना जातः **न रेव म् मु हे** डि মৃত: ॥ শৃদু হৈব ভবেল্লক দ্বিক रित्व न विरुध्छ। न देव भूरम्। अवहूर्म्।

वाक्षान ह वाक्षनः ॥ माक्षाला-বাচ। কে ধর্মাঃ সর্ববর্ণানাও চাতু ৰণিস্য কে পৃথক্ ৷ চাত্ৰণ্যাশুমা-ণাঞ্চ রাজধর্মাক্ত কে মতা:।। নারদ উবাচ। অক্রোধ: সভ্যবচন সস্থি-ভागः कमा उथा। भुकनः (सर् मा-तियु (मोठ मामाह अव हा। वार्ड्स বং ভৃত্যভরণং ন বৈতে সার্বর্ণকাঃ 1 বান্ধণস্য তুযোধর্ম ক্ত তে বক্ষ্যা-भि (कवल॰ ॥ समस्यव महादा**क थ** र्यनाष्ट्रः भूबाजनः। बाब्यायाज्यमः निष्ध्व छबं कर्म ममानाउँ ॥ उ॰ **চেৰিত মুপাগছেঘর্তমান স্বর্মাণ।** व्यवद्यां विक्यां नि मां छ नुक्रान তর্পিত ।। স্বর্গ ভোপেত্য সন্তান मथ रम्यान्यक्व ह। मःविच्छानि ভোক্তব্য খন সন্ডি রিভীষ্যতে॥ পরিনিষ্ঠিতকার্য্যস্ত **याय**शास्यदेनव वाकाः । वर्गाननामवा वर्गारेच-ৰো বুঃক্ষণ উচ্যতে॥ #॥ क्रजिय-महानि या धर्म उ॰ एक वक्कामि नार्थिव। पर्मामाका न गारा व वर्ष छ न ह याकाय्ट ॥ नाव्यानावका বীত পুৰাক পরিকা**নকে** ই 🕞 ट्यान्यका प्रश्नावस्य शत् वयाष्ट भारकिय-॥ त्य जुक्कृष्ट शीवानाः भुजवंडक शार्षिकाः। य जू गुष्

বিষেতার তে তু লোক মিউ৷ বৃপী ॥ অবিক্ত শরীরে। হি সংগরীবি নিবভতে। ক্তরিখন্য তু ওৎকর্ম নোভ্যত্র বশংপুদে ॥ ক্ষত্রিবাণা-ময় ধর্মো নিণী তো মুনিভি: পর:। नामा क्षा उमा कि कि द्वारका मम् विनिगुहार ॥ मान मध्यम राज्जा রাজ্ঞা কেমো হভিধীবতে। তমা-<u> মুক্তা নহারাজ যোজাব্য প্যাশী-</u> লিনা I: পুজা: যেষুচ থমেষু স্থাপ: যেত মহীপতি:। ধর্ম্যাণ্ডের হি ক-মাণি কার্যেৎ সতঁত পুজা: !! পি রমাণ সিদ্ধি মাপ্রোভি নৃপতি: প-विभाजनार । वर्गामनामना वर्गान रैमाखा त्राजना डेहारङ ॥ # ॥ रेद-**णामा ह श्वकानि या श्या वर्षः** जयजः। मान मन्तरमन (नोठः यञ्ज-ण धनमक्यः ॥ भानस्य भम्म् বৈশ্য: পিত্বদ্ধর্ম নজ্জ্যন্। বিকর্ম **छस्रतम्मार कर्या एर म ममाठात्रर.** ॥ ब्रक्स म हि छिना दे महर्म् मर्वाषु बार। नुकालकि विदेवनाम मुद्दे। गुलिस्स नुकाश हा हो गाना ह हाएउ ए गर्भा गर्भिक हुआता खना वृत्तिः शुनकामि यह उरमान **गबीवम**्।। बन्नात्मकाः शिवर्षस् ने जाह निश्नः खर्द्यः। वदाह नः

खन जाम जया मृत्क्रिक समुद्र ॥ मन्त्रानाः नर्ववीकानि এवा मासूर नती ভৃতি:। न ह रिमार्गर कानः স্যান্ত্রক্ষেয় পশ্নিতি ॥ বৈশ্যে **त्रक्षां नात्रिन व्रक्षि उत्याः कथ्थन** । #।। म् मुम्राभिश् या धर्म छ॰ उ বন্ধ্যামি ভূপতে। পুরুপতি হিব-र्गानाः नामः भूपु नकल्लगरः ॥ उत्रा-हु मुन्त वर्गानाः भन्निहर्यता विषीयछ। उत्राः मृगुर्गरेक्य महत्मूथ मया-প্রমাত। শৃদু এতান্ পরিচরেত ত্রীন্ वर्गाननुशूबनः। मक्ष्याः क क्रवीं उ का उ मृषुः कथकन।। भाभीयान् हि श्वन लक् वरण सर्गामुत्रीयमः। ता-क्का वा मभनुक्काउः कामः कही छ शामिकः॥ उम्र वृद्धिः भुवक्रामि যह তস্যোপজীবন । অবশ্য ভর शीरमा हि वर्गानाः भूमु छेहारङ ॥ ছ धः (वर्डन सोनीत मूगानष्ठ)कनाः नि ह। याज्यामानि (प्यानि भूमुाव श्री इहा द्विरा ॥ व्यवार्य । विश्वीर्गः नि वननानि विकालि छि:। भूपुरियव नुष्मयानि छम्। धर्माधनः हि उर ॥ মশ্চ কশ্চিদ্ধিতাতীনাং শুদুং শুশু-चू बायुरबर। कन्नरह १मा जु उनाङ वृं जिः धर्मिविष्ना बनाः ॥ (मयः नि-६७। **९२** नजाय छर्डायो वृष पूर्व-

লৌ। শৃদ্েণ্ডন হাতব্যে ভর্তা ক-স্যাঞ্চিদাপদি॥ অতিরেকেণ ভর্ত্ত-বেগা ভক্তা দুব্যপরিক্ষয়ে। ন হি स-गढि म् मुम् । जर्जु हार्य। धरा हि मः ॥ डेक खरानाः वर्गानाः यक्त सम् ठ भार्थित । साहाकात्र वयष्कारती मद्धः मृत् न विराउ ॥ उमाह् पुः भाक्यरेख यां जाय न **म प्रा** भूर्गनावम्यी माङ्ः भाक्यक्रमः मक्किगाः ॥ **# ॥ श्रीनाद्रम उे**राठ । हेमानी मानु माशक वर्ध वक्तामि ভ্নিপ। वृक्षवर्गम्यन जावर मृतू नर्वाधिवामन ॥ गद्धा एकगृष्ट् । न-(बड़ा नदस्व) छक् मूहि:। तुराम-(राज् भाषाजः निर्वतः १३९ छव नाविष । उठ उम्राज्वरा निज्र মধ্যেত্রব্য নরাধিপা। সদা বিচারঃ माज्ञमा **एक्नामा जिल्लामा । ज**-माञ्जानाननकानि ब्रानः रेपवजः ভावना ॥ वाल्वन (यन (कमानि जुडि: मन्डि: मनागम: । ममार्ख-বিদ্যো ভরবে দক্ষিণাণ প্রতিপাদ্য **छ।। #।। गृहानुयः उट्डा ग्रह्म्खः** त्रा त्राड्या मधितुष्यन् । उष्रश्र्ट **म** नवाः कन्। जूनीनाः वर्षातिशेः ॥ व्यनकः वाहिनीः (जीन)। जूठकिः वाः शियम्राः। गृहिनाः सुवामा

পুল্য পূজা নতিথি যদ্য গেহালি-বর্ত্ত 🛮 স যাতি নরকং ঘোরং পুণ্যুং छ्रिय भुनायं हु ॥ भुष्यः बागउः शृह्माजनकाशि अः मिल्यः। शाः म्यक सञ्चलकंक मम्यार भुगिजनूर्वः कः॥ मञ्चादक श्रियानाशः कर्यता-**छिन महाञ्च**ः। ভোজनक यथान कि काद्रयम् जिथि॰ नृष ॥ (म्वाक পিতরকাপি গুীয়ন্তে ২কিথিপূজনে **৷ আতিথ্যসদৃশং কর্ম গৃহস্থানা ন** विन्धाउ।। यम्। निजाः व्हि जि नी खि সো ২ভিথি: পরিকীর্ভিড:। সর্বা শুনাণা মধিকো গৃহাশুন উদান্তঃ: ।। যমাভিমিন্ সমাযাভি ভিকার্থ बानुवा खयः। शिक्रत्वाहंनः कार्याः शृहिना मूर्थामहु ।। # ।। वानलु স্থাশুন বক্ষ্যে তৃতীয় জগতীপতে ৷ বানপুছাশুন• গছেৎ কৃতকৃতেয় ग्रामुमार ॥ जनात्रग्रकणाञ्चानि यम्बोका म धर्मावट । উष्ह द्रिकाः পুর্ভিত্ব। পছত্যকরসাত্মতা ।। সুত্তে ভার্য্যা পরিণ্যস্য বন গছেৎ সহৈব বা। শাস্তঃ শুদ্ধান্তরাত্মা চ नर्बज्जिहाजबजः ॥ চরিতবুক্ষচ-য্যস্য ব্ৰাহ্মণস্য বিশাম্পতে। কর্ত্ত ्वागीर दार्जनु कथाउ म्निश्व रिवः ॥ टिक्कार्र्वशासवीकातः शुक्तव ইহ নোক্ষিণ:। যত্তান্তমিহশায়ী-স্যানির্য়া রনিকেতন: ॥ যথোপল-ন্ধ জীবী স্যান্মনি দান্তো জিভেন্দ্িয:। निवाणीः न्यायः नर्वमत्या निर्याला निर्द्धिकातवान्।। विख्की धनभूशामी বিতৃষ্ণ: কৰ্ণ: সদা। সংসার **ৰপ্ন**-ব্দীক্ষ্য ক্ষান্ত: সন্তইনানস: ॥ প্ৰ मून कनाशाती बनामी वायुर्ভाबन ন:। নিরাহারো হথবা শুদ্ধে। হহ: र्नि**म॰ उभ चा**हरत्र ।। ७४॰ **अ**र्हन् মহাভাগ ব্ৰহ্মণ: সিজি মাপুযাৎ । # ॥ ठडुर्थ नाण्न वाका मुकि সোপাन स्वव हि। खद्धाः भुद्धाः भागाम्। जिक्कः मःन्यामर्थ्यविष् ॥ विहाद अकला भृशी नहामी मा ष्ठ উৎসুক:। यागाच्यात्रद्राठा नि-**७)॰ धर्मानक्ष्य७८ शतः ॥ धर्माधर्मा** বিহানো বা ভিক্ষুকঃ সিদ্ধিনাপু যাৎ । ইতি পাদ্মে স্বৰ্গথণ্ডে ২৫ । २७।२१ जवरायाः।।इ।। यनर् नात्रः িশ্হপুরাণে ৫৯ অধ্যায়ে মার্কণ্ডেয-পুরাণে মদালসোপাথ্যানে ক্র্ম-भुद्रारा २ । **७ व्य**व्यार्य हम्**डे**व्यः ॥ পু• গজচিত্রকম্বল:। হাতির-युन् इंडि ভाषा । उৎপर्गायः । भूदिनी २ वाखन्नन ० भनित्यामः

न्द्र भेषः ए भषा ७। इंडामद्रः ॥ भारविनः व निविद्योगः ५ वर्षः रा इंडिं खेत्रेडः ॥ मूलारिः । त्रेक इंडिक्रांडः। म ह दल्वित्वायवा। (यंकः ) माजुः २ ध्रीतः ७ क्षे 8 পীতঃ ৫ হরিতঃ ৬ রক্তঃ ৭ শোণঃ ৮ जबनः र भारतः २० भारतः २२ स्मुः १२ भित्रमः १० वर्षे देः १८। ইতি চামর: ।। গর্ভহ্বালকস্য बाह्य मानि बार्गा खब्छि। ইडि मूर्यायाः ॥ यमः ॥ खनः ॥ चिनः । इंडि मिरिनी ॥ यूगे ॥ दुङ ॥ ক্পণ।। অঞ্চরণ।। ভেদ:।। গীত-क्रमः ॥ हिबं ॥ जानविलियः ॥ व्यक्तांगः। इंडि (रुमहन्तुः॥ বৰ্ণ: পু॰ ক্লী ভেদ:।। ৰূপ॰।। অ-

भन्द्रश्राशः। १७ (२२० मुः॥
र्मः भू की जितः॥ क्रमः॥ क्रमः॥ क्रमः॥ वित्रभा ॥ इति स्मिनी
॥ क्ष्मा वर्गक विविधः। धुन्याञ्चरका
स्क्रम्याञ्चरक । स्रम्याञ्चरका
स्क्रम्याञ्चरक । स्रम्याञ्चरका
स्क्रम्याञ्चरक । स्रम्याञ्चरका
स्क्रम्याञ्चरक । स्रम्याञ्चरका
स्वाधित विद्यपति स्वाधित स्वाधि

मक्त्रं रकार्याक श्रुति क भूग निंड वर्षाट कन्नावगारिक के द्योजि छन। म्लाशस्त्रं विश्वगिष्ठं भ-क्रायां ज्यूमाक मृत्रवंदेश । इंडि जिंका ॥ क ॥ जन्य ज्वनी स्व नव् यथा । अखनीज्उननानी नक्षियं गूरभयूषी । विशासकनेनी (पर्वी भव वृक्षयक्तिनी।। विष्या-वि नवर्गायां नकानवर्गकिंगी । **७**निजा मर्बगाखन क्खनी भद्रार-ৰতা।। বিখাত্মনাপবুদা সা স্তে मखमय॰ खगर। এक्षा श्रीका मन किः मर्ववियनुवर्खिनी ॥ जिनुद्रव बन्नान् (नवी वुक्तानीनाः वयः वयः । इेठि সারদাভিলক:।। অস্যার্থ:। विषात्मि हम्मुम्याद्मिक्या । बिह-দারি শদিতি ভ্তলিপি মস্ত্রমযী। পঞ্চাশদিতি মাতৃকাম্যীত্যৰ্থ: 1 সর্বগাত্তেণ সর্ববর্ণেন গুণিতা পর-স্পার মিলিতা সভী মজম্য জগৎ স্তে পুকাশয়তি ইত্যৰ্থ:। মূলা-शांत्र नर्नदर मुखनीच्छा नाजी वर्ज्य उद्मशुक्रायिष्वामियः मुख्नी । मर्वविष्यजूष्डियानामानार न-দার্থ রূপোভয়পুতিপাদিকেতি সূ-চিত । ত্রিপুছর নিতি জ্যেষ্ঠ মধ্য म कनिश्राप्त जीर्थवरः। यद्गानिज

উपाङानुपाछ नगाशादान्। इंडि ভট্টীকা। ৠ। অপিচ। বিচত্তারি শ ভামূলেগুণিতা বিখনাযিকা। সাপু-সূতে হওলিনী শদ্বুক্ষমধী বিভঃ॥ শক্তি ততো ধুনি স্তমামাদ স্থমা मिरवाधिका। जला शर्खनमु खला বিন্দু স্তমাদাসীৎপরা তত:।। ইতি नावनाया माठायंत्राः ॥ मूल मूलाः খারে দিচত্বারি শতা গুণতা বিশ্ব-নাধিকা জগুলিনী অনেন ক্রমেণ অ-কারাদি সকারান্তা দিচত্বারি শ-দাআ্বিকাণ ভূতলিপি মন্ত্রাত্মিকাণ বর্ণমালিকা• সূতে ইত্যন্ত্রয়: 11 ক্রম-মাহ শক্তি মিতি সা স্ত্ৰিনী **শক্তি॰ সূতে ততঃ শ**ক্তে ধ্নি রা-नी पिछ (याजना। उटा धुरन ब्रि-ত্যাদি জ্ঞেষণ। অযঞ্চ ক্রম: সর্বান करबार भरही (क्कर: । उब मह्न भू-विष्टे। हिह्किम्प्रवाह्या भून दाका महा रेगव ज**ुंजुविडा द्र**कानूवि জা সতী ধৃনিশদ্বাচ্যা অক্ষরাবস্থা रेनव ज्ञा २नृविका नामगद्भवाह्या व्यवाङावङा रेमव उनः शुह्रवीधान-বোধিকাশনবাচ্যা সৈব তদুভব-भार्ष्यामः (कंन्युमयवाह्या । উक्रक शरार्थाम्एमं । ইहामकिवानाम्य-ষ্টো জ্ঞানশক্তিপুদীপকঃ পুংকপি-

ণী চ'লা লক্তি: কিনাখ্যা সৃত্ততি পুजूः। अभारवय विष्णुः ज्ञानाष्ट्रत्रय-তঃ পরাদ্যাথ্যে ভবতি। পশ্যন্তী मध्या वाही विश्वती नम्बन्न छः। তত্ৰ পরা মূলে পশ্যন্তী স্বাধিষ্ঠানে मध्या इत्य रियन्त्री मृत्या उहुक्र नमार्थाम्या मृक्षा अखिनी नर्वा ছ্যোতি মাত্রাস্বর্গিণী। অশ্যেত্র विवना जमानुत्रह्ळू अन्तर्गामिनी ।। खर॰ পুकामा भगाडी जुजुनावाणि-**ठा ভবেट। मिर इट मञ्जूष्ट नाम**; নধ্যমা নাদক্ষিণী ॥ ততঃ সংজল্প মাত্রাস্যাদবিভক্তোদ্ধ গামিনী।সৈ-বোর: কণ্ঠ ভালুস্থা শিরে৷ যাুণ রদ-श्रिजा॥ किस्नाम् लोशिन्ध् ज मर्दर्ग भद्रिगुरु।। भद्रभुभक्षकननी (मृाब-गुाका जुरैवथबी।। इहा छान किया-আ্বাসে তেজোৰপা গুণা আ্বিকা। ক্র-নেণানেন সৃজতি স্বত্তনী বৰ্ণমালি-কাণ। অকারাদিসকারাস্তা দ্বিচত্ত্বা-রি শদাব্মিকা । পঞ্চাশদারগুণি-তা পঞ্চাশ্ৰণমালিকাশা সূতে তথ্ ণঁতো ভিন্না: কলা ক্দুাদিকান্ ক্ৰ-মাৎ। ইতিভটীকা।। অস্ট্রো স্থানানি বর্ণানা মুর: কণ্ঠ: শির তথা। জিস্তা-म्लक पञान नामिकोशी ह जानुका ।। ইতি लिकाम्ब ।।।।। किए। वपा

ভবন্তি দেহাত রমী পঞ্চাশদক্ষরা: ৷ ভেদা যেন পুকারেণ তথা বক্ষ্যামি छङ्डः ॥ मभीदिजाः मभीदिन मृनु न्नात्रज्ञनिर्भं जाः । ब्राक्तिः भुषास्त्रि व मान कथा विज्ञानविज्ञाः ॥ ऐटिहा ক্মাৰ্গণো বাবু ক্দাত্ত দক্তে ম-ब्रः। नीटि र्शंका श्नुराख्य ब्रिजः ভিৰ্য্যগাগভ: ॥ অভৈক দ্বি ত্ৰি সং-খ্যাভি মাত্রাভি লিপব: কমাং । नगुक्षन रूप मीर्घ श्रु ७ म॰ छ। **७**व-ন্তি ভা: ॥ অ কারেকারযোর্যোগাদে-कारता वर्ग इवश्रुक । जरेनावाकात्र ध्यारान महारेनकात्राक्षत्रः छथा ॥ উ চারযোগান্তসৈয়ৰ স্যাদোকার:: खः बदः। उरमायोकाद्रयाणन न्तारोकादाखाः सदः ॥ मक्राफ-রা: মুর **শুড়োরে। মন্তা: সর্বার্থ সা**ং व्हाः। ৯वर्ग वर्गरया वंडिक में रैव नगुक् भुम्मीएउ ॥ विन्तु नगीञ्च নে ব্যক্তি ন্**ৰসাে রজপা বদে** । क्छा बु निः मद्रन् मर्गः भारया एठा जा ক্ত: পর:।। নখর: সর্গ এব স্যাৎ (माह्याम: भागकल इ:। म मर्ग: (भू-विज: कर्छ वायूना कारि नीवरय८॥ বৰ্গম্পাৰ্শন মাত্ৰেণ কং স্বরম্পাৰ্শনান্তু থ'। তোক গম্ভার সম্পর্শাৎ গ (वी ए क विश्व उ॰ ॥ विश्व छ। ल्वा थः ।

সোম্মা শাণ চবর্গঞ্চ যাণ তথা 1 क है दिक नकाइक मुक्क रंगा रहन ভবা ॥ ৯ ভবর্গ লসানোষ্ঠ্যানুপুপ-ध्यान मः क्रकान्। मस्त्रीक्षाच्याः वः क उत्तर भागा भगान् मभोद्रायर । इंडि नुभक्षमात्र ० भवनः ॥ সর্গে। বিসর্গ এব নখরে। বিকৃতঃ (माह्याम: मकाब्रक्त भ: উद्यारमा २४: भुरवस्यानी वातः महाविज्ञान्यः। এবং পাণকো বহিনিৰ্গননশালী বাযু र्दः महार मध्य छेहु। मः (माहु। मः । न्। १ का वाया का नामा कि नाम कः। इंडि उड़ीका।। श्रा व्यवनं कवर्ग र विमञ्जन याः कछेताः। । इतर्व हवर्ग रामा उपन्यत्राहा रा अवर्ग हे-বৰ্গ রবঃ মুর্জন্যা: 1 ৩ ৷ ৯বৰ্ণ ভবৰ্গ व्य मा एड्याः। ८। উवर्ग भवत्र्याभ-ध्यानीया ७४७: । ६। व्यान्ए । ४: १५। এ ये क्थेर जानावरी। १। ५ छ क्छोछो।।। ইভিশিক্ষাসূত্র।।।।। व्यशिष्ट। यन्छञ्चः जर्बङ्ख्यु वर्गा-চার বিধিণ শিবে। তব স্বেহামছে-শানি তদদ্য কথ্যানি তে ॥ পঞ্চা-শনাত্কাবর্ণোচারণ ওক্তো ২-छात्रर। य व हर्षु जू नू यु मु यारी वर्गाः भुकीर्खिङाः ॥ य य राः कर्थ-তো (छ्वा) खानू उ महू यणाः ख्ठाः

। ২। খ টুরসাস্ত ম্বন্যা: ৩ দভ্যা ১ ভূ লমা মতাঃ। ৪।। উ.পব স্চোষ্ঠ স ভূ হাঃ ৫ স্থানানি কথিতানি তে। बिल्मवः कथयान्। स् (श्राहार्याः कः ় গুড়: হরা:।।পার্বণ জিহ্ববা মৃদ্ধ্র ১ चयः किञ्च म्डबः। गूथ्यानाकाला वाह्याः क्रकात्रः क्षेचाउद्यः ॥ व्य क्षत्रवयमारगारम ভरवटः भूर्वप्रा खरः। भराष्ट्रास्य दगम्। मः रशाम वू मु ७ र्घरशाः ॥ जनमञ्जाम नः যোগে য়ো রন্যত্র তংথব্যতে । যোঃ শুক্তিন্ত তিরোভূগ ধরবৎ শুক্তিতাং युष्य ।। भिया वीस्त्र मकात्र म। एणुः ভি: পরমেশ্বরি। ছশু ভিশ্চ রাদি ভূগৌ তথাদিছে তু চলু তি:।৷ সহসু **ब्रे**ड्राप्ती नम <del>खे</del>रेग्र बाक्रा इंड्राप्ती ह। द्रिकाम्टिक उम्राप्त वा इकाद्र अभवाष्ट्रका । वर्शः कुम इक्तारित । কিন্তু বৈজ্ঞাত্য মাশ্ৰিত্য স্কুট॰ নাজ্ৰা-স্য বাচ্যতা॥ চু তুর্ব্যধুনি মাপ্মোভি यानिए भद्राभवति। वाश ३७॥ দৌ। পু চতুৰ্থ ধ্বনি॰ যাতি বাদিছে তু বিশেষতঃ॥ আহ্বান মিত্যাদৌ । वाहित्स्रभाष नाहित्स रैवकाञाः बन्नराह्यका । शुङ्काम बाह्याय दे-ত্যাদৌ। মাদিছে ভে চ মস্যাপি नात्रिकाम्लवाहाका ॥ 🖰 ७ १ न मा

विन्यू नानिकाम्बद्धाः युडाः । यकाः त कृ ज्जीयदः भगारो मर्बना तुः (कर्।। (कर्वाराविभ उथा व्यन्धव क्षेत्राज्यः। नामिक् नत्यानुष् बद्राया गांडवर्गाक ॥ भुनः न्नान है-**छ्यारि । वर्णा खद्म यु छ एर्या ईक** बिद्यापिवाहाल। रिवजाला मिल ভবান্তি গুরোরেব সমভ্যমেৎ ॥ আদিরেফস্ত সংপ্রোক্তো দৃশে রন্যো বুজেদ্তা ৷ এব জ্ঞান্ব। মহেশানি পঠেৎ স্তোহ জপেরবে ৷৷ কবচঞ महिणानि नामाथा क्लमाश्रुयार । ইতি পুপঞ্সারে ৩ পটলঃ॥ঞ্চা অ-পিচ। হুম্বরেষ্প্রোক্ত: পরোদীর্ঘ: क्यापिया। नियनकियया एउ मुर-विन्तृ मर्गावमानकाः ॥ विन्तुः भूमान् র বি: প্রোক্ত: সগ,শক্তি নিশাকর: ৷ बतागा॰ मध्रगः यस उहजूकः नभू॰-मकः॥ विना च्रेत्रस्थ नात्रायाः जायः তে ব্যক্তি রঞ্জন।। শিবশক্তিম্যান্ পুাছ ভনাদ্ণান্মনীবিশ: ॥ কার-ণাৎ পঞ্ভানা মুভূতা মাত্কা ধ-তঃ। ততো ভূতাক্সকা বর্ণা: পঞ্চ পঞ্বিভাগত:॥ বাযুগ্নি ভূ হলাকা-नाः १९६१ न झि १२ व क्या ८ । १९६०-ट्रुबाः नकरीयां विन्तृष्ठाः निक्ष मञ्ज वाः ॥ शक्षणः कारयः व क व जः

হান্তা: সমীরিতা:। ইতি সারদা।। शा वक्तरमृष्टिकादन• यथा। याचा-সিকেপি সন্যে ভ্ৰান্তি: সংজাযতে যত:। ধারাক্রাণিস্টানি পরাক **ए**। नाउः भूता ॥ ইंछि क्यां ठिखानु वृक्ष्णि ।। वर्गामध्यम् कात्रस्र छः खहर्ष मुद्देवाः ॥ #॥ वर्णनामानि यथा । ভক্রসক্ষেত বোধার্থ মাজ্ত্য ভ**জ**্ শান্ত্ৰতঃ। বৰ্ণনামানি কভিচিৎ ব-क्रांमि विदृषाः मूर्यः ॥ उँकारता বৰ্ত্তল ভাৱে। বামশ্চ হংস কারণং। शकाम्यः भुगवः अख्यः विम्रूणकि क्रिरेनवज् ॥ अर्बबीरवार भारकण्ड **अक्र**परवा धुन जिकः। जाविजी जि শিথো বৃদ্ধ ত্রিগুণো গুণছীবক: ॥ আদিবীক বেদসারো বেদবীল মতঃ পর ৷ পঞ্জিমি জ্রিক্টে চ বিভবে ভবনাশন: ৷৷ গাযতী বীজপঞাংশৌ मञ्जविष्ठा भुमृः भुजुः। व्यक्तवः मा-ज्काम् महानामि ब्रोबङ (माक्रामी।। ७२ ॥ यः श्रीकर्शः मूखणण न नारिकक्माजिकः। भूर्णाम्त्री मृष्टि भिष्ये जातवाः श्रियवमः॥ सङ्ग वाकी वाजुपारवा शतनः (कनावा **২মৃত°। কীৰ্ভি নিবৃত্তি বাগীশো নর**-কারি হরো মৰ্থ।। ব্রহ্মা বামাদ্য (का द्व्यः क्त्रमः श्रुपवाम्यकः। युकाः

ণী কামৰূপশ্চ কানেশী বাশিনী বিষ্ ৷৷ বিশ্বেশ: শ্রীবিক্ষকটো পুতিপত্তিথি রংশিনী। অর্কমঙল बर्गाम् ] वाक्षनः कानकर्षिन ॥ णः ।। आकात्रा विक्यानस्त्रा भीचंहारग विनायकः। क्षीद्राप्तिः शरगपण शास्त्रा मीर्घाम्य वृज्जको ॥ भूहश्र একজো কদ্যে নারায়ণ ইভেশ্বর:। প্রতিষ্ঠা মানদা কান্তো বিশ্বান্তক গ-জান্তক: ॥ পিতানহে। দ্বিঠান্ডে: १ড়: ক্রিয়া কাণ্ডিশ্চ সম্ভব:। দ্বিভীয়া মা<sub>ন</sub> नरा काणी विद्यवाकः करका विरल् ।। মরান্তকক্চ হৃদ্য মঙ্গুটো ভগম: विभी ॥ वा ॥ है: ज्बा भानावी বিদ্যা চন্দু: পূবা সুগুহাক:। সুমিত্র जुन्स्त्रा वीत्रः (काठेत्रः काठेत्रः भगः ॥ जुभरवता भाषव खिंड मंकरनजक নাসিকা। শান্ত: কান্ত: কান্দিনী চ कारमा विद्वविनायकः ॥ तिशाला ভরণী কদে৷ নিত্যা ক্লিমা চ পাৰকঃ ॥ है: ॥ दे जिम्बि मंदामाया ला-नाकी वामलाहन । भाविनः শেখর: পৃষ্টি: সূভদা রল্পণজ্ঞক: ॥ বিষ্ণু ৰ্লন্ধীঃ পূছাসশ্চ বাণিশৃদ্ধঃ পরাপর:। কলোত্তরীযো ভেক্তা র**ভিশ্চ পৌ**প্রবর্জন: ।। শিবোত্তম: **नि**वा ज्**डि फ**जूथी विन्म्नानिनी ।

रिक्कवी रिक्सवी क्रिन्छ। कामकना मः नामका ॥ भावकः त्कावेतः कीर्छि र्भाइनी कानकात्रिका। अध्यन्तुः उ-क्जनी ह भाखि जिलुबजुन्सदी।। देः।। **ष्टः नद**्यात्वर्जाकी ज्ञः क्लान-वाहकः। अन्दारमा मक्कर्नः यज्-विद्या साहनः निवः ॥ डेगुः नुङ् शृं जि विकु विचकर्या नाहत्वतः। न जून क्टिका मुष्टिः भक्तमी विक्रिताः সিনী।। চেটিকাছানে চেক্ষিক। ইভি ৰা পাঠঃ ॥ কানহঃ কামনা চেলো भारिनी विश्वस्थारी। अर्रेमः अपि-লা শোৰু পারদ্বীপো কৃষো হর:য়া फ्टेम् इंडि सङ्घिरभाटेः॥ উः॥ ঊ: কণ্ঠকো রভি: শান্তি: কোধনো म्यूम्नः। कामद्रावः अरबण्णः মহেশে। বামকর্মকঃ ।। কণ্ঠকছানে কণ্টক ইভি বা পাঠ:।। অধীশো रिजद्रवः मृत्या मीर्घरवाना मद्रवजी । বিলাসিনী বিম্নকর্তা লক্ষণে রূপক-र्यिनो।। सरावित्राचनी यक्षा चर्छ। जुः कान्। इद्वकः। डिः॥ थः भू भी र्षम्थी ৰুদ্রে দেবমান্তা ত্রিবিক্রন:। ভাব-ভূতি: किंवा क्वा व्रिक्ति नानिका ধৃত:।। একপাদশিরো মালা মও-व। नाडिनी कवः। वर्गः कमवाना भिर्वा निवृद्धि र्गननायकः॥ রোহিণী

निवर्डी ह भूगीलिविष्ठ मधनी । মেব: ছানে মেব ইভিচ পাঠ:। খাঃ ।। श्रः कारवा २ ডিথিশো বাণী বা-मता ११मा २थ 🕮 १ कि:। उष्मु मूर्शी निणानाथः भग्रनाणा विनद्वेशेः ॥ শশিনী মোচিকা শ্রেষ্ঠা দৈত্যমাজা পুতিষ্ঠিতা। একদন্তান্ত্রে মাজ হরিতা নিপুনোদ্যা ॥ সাতা ভাবে भाया इंडि वा भाठे: ॥ (कामन: শ্যানলা নেখী পুতিষ্ঠাপতি রইমী। বুন্ধণ্য মিব কীলালে পাৰকো সন্ধ-কৰিণী।। মিৰ্ছানে মবেতি বা পা-र्रः ॥ द्वाः ॥ तः इतिः श्रीभवः मृत्या मिषा प्रमा करका विष्टा (एवरवानि र्मकगरका वरहणः कोड कमुको ॥ ৰছেশ ছাৰে বাহগ ইতি বা পাঠঃ ।। विषयपात्रा मीर्याङ्खा मरहान्तुः। नाक्षाः भद्रा। हन्तिका भार्थिती ধুমা ছিদন্ত: কামবন্ধন: ॥ শুচিমি-তা চ নবমী কান্তি রাবাতকেশব: ৷ চিত্তাকৰিণী কাশক ভৃতীয়মলসু-क्रती ॥ हिंखाकविती द्यारन हिंखाकर র্ষিণী ইভি বা পাঠ:।।৯:।। ३काরঃ कमना इर्वा क्वीक्ला गधुबुछ: 1 সূজা কান্তি বামগণ্ডো কৃদুঃ কামো-দরী সুরা। শান্তিকৃৎ স্বতিকা শক্তো बारावी (नानूरना विर्८ ॥ ननशी

সূস্থিরো মাতা নীল পীতো গলানন: ! । काभिनी विश्वषा काला निज्या मुखः শুচি: কৃতী ৷৷ বিশ্ববাস্থানে বিষয়া ইতি বাপাঠ: ।। সূর্য্যে ধৈর্য্যাকর্ষণী চ **अकाकी मन्**ष्रभूम्:। ३:।। अकादा বাস্তবঃ শক্তি বিন্টীশোষ্টো ভগণ মকং। সৃক্ষা ভ্তো হন্ধকেশী চ জ্যোৎসা শুকা পুনর্দন:।। ভূত স্থানে শৃত ইতি বা পাঠ:।। ভবং क्छान क्या थीत्रा कड्डा मर्बमगूख्यः । বহি বিষ্ণু ভঁগৰতী সগুলী মো-हिनी वत्रः ॥ त्याविमाधात्रमञ्जिष ত্রিকোণা ইশস•জ্ঞক:।। সন্ধি রে-কাদশী ভদা পদানাভ: স্বাচল: । এঃ॥ ঐ লক্ষাভৌতিক: কান্তা বাষ वी भाविनी विज्या मका मास्मात-র: পুজে। ২খরে। বিকৃতমুখ্য পি ॥ ক্ষনাত্রকো জগত্যোনিঃ পর: পর-িবোৰক্থ। জ্ঞানামূতা কপদ্দী ্ৰি: পাঠেশা ধ্মি: সনাতৃকঃ ॥ বিশ্র। লোহিতা রাজ্ঞী বায়ুবো ভৌতিকাসন:। মহেশ্বরো দ্বাদশী চ বিমলক সরস্বতী ॥ কামকোটো वामकान् वः नुमान् विकया करे।। अ: ।। ওকার: সত্য পীযুষৌ পশ্চিমা-ল্য: শুভি: ছিরা। সদ্যোজাভো मानूपरदा भाववी भीवज्ञकः ॥

বূৰ্ণ

व्यान्तरायनी हाष्ट्र मस्त्रा वाची र्वानी मुशी विकः । छिष्यमाप्रमंक छी दुः दिक्वारमा वसुवाक्वतः। भूगवारमा বুকস্ত মজেশ: সর্বস্কা। এবো-দলী দীর্ঘনাসা রতিনাথো দিশযুরা ।। ব্রৈলোক্যবিজ্ঞ পূক্ষা পুরি হী কাদিকবিণী। ও:।। ঔকার: শ-ক্তিকো নাদ তেজসো বামজভ্বক:। मन्त्रक गुर्विणक णक्त्वर्गः जमाणि-वः ।। অधारउष्ठ कछिएष्ठी मक्सर्गः नवर ही। बाद्धा हा क्यू मूथी मासा ব্যাপিনী পুকৃতঃ প্য: 🛭 অন্তা জা-লিনী ব্যোষা চতু শৌ রভিপ্রিয়:। নেত্র মাত্রাক্ষিণী চ জ্লোমালিনি-কা ভৃত্য: (ব্যোমা স্থানে রোমা ইতি বা পাঠঃ॥ ঔঃ॥ অঙ্কার শক্ষ্যো-मस्या यदिका मनस्क्रकः । अपूर्नः খিমুখী পুীতি বী জযোন ব্ৰধ্বঃ ।। দন্ত ছানে দন্ত ইতি বা পাঠ:।। ॥ शतः चन्त्रो शुमारीनः (मामविन्तुः कवानिधिः । चक्रुंत (क्लुंजना नामः भूर्ग पूर्वहतः भिवः ॥ भित्रः भञ्ज নরেশত স্থদু:খপুর রক:। প্রিমী त्रवं नुष्यः कन्ता हत्र वियम् विः ॥ অমৃতা কৰিণী শুন্য বিচিত্ৰা ব্যোম क्लिनी। किमाद्रा द्राजिनामण क् विकारित वृष्ट्रमः ॥ षः ॥ षः कथेरकी

মছাদেন: কলা পূর্ণানৃতা হরি: । ইছা ভদা গণেশক রতি বিদ্যামুখী भूथ•॥ द्विविन्तृ द्रभना सामा १ नि ক্ষোে দুংখস্চক:। দ্বিজিহা: কণ্ড-ल वकुः मर्गः **मक्ति** निमाकद्रश्चा भूनत्री भूगणानछ। गणनात्था महर শ্বর:। অ:॥#॥ ক: কোধীশো নহা-কালী কামদেব:পুকাশক:। কপালী। **তেজস: শা**ন্তি বাস্দেবো ক্লথা ২ন वः॥ চক্রী পুরাপতি: সৃষ্টি দক্ষ ক্ষো বিশাস্পতি:। অনন্ত: পার্থিবো িবিন্দু স্তাপিনী পরমাত্ম চ:।। দক্ষস্ক-्च इरान म्यः हृद्यो है 5 वा भाठे:॥ वर्गामुक मुखी वृक्षा नथारम्। छः শিবোজল । মাহে খরী তল। পুয়া মহল শ্চরণ তর: ৷৷ নিভ্যা কামে-यंत्री मूर्याः कामकाला गरजन्मुकः। শ্রিণ রনগো রক: অস্না পরমা-जाकः।। कः॥ थः भुष्ठः कामक्शी क कि विद्रिः मत्रको । আকাশ बिन्दियः मूर्गा ठञीण खालिबी धकः য়া শিখ্তী দন্তজাতীশঃ কফোণিৰ্গ-क्छा यरि । भूना क्रानी कन्ता-भी मूर्नकर्ता ९ बतामतः ॥ मुज्जादाग **ठ** जिल्हा कनावशकात शहको ।। थः।। (ग। (गोर्जा (गोर्ज्ञात्वा गङ्गा ग्राम्या (गान्यवयदः । नान्ये

लक्ष उ**का गां**था गङ्गई: नईगः मृं-তি:।। সর্বসিদ্ধি: পুভা ধুমু। দ্বিজা-খ্যঃ শিবদর্শনঃ। বিস্থাত্মা গৌঃ भ्षगुभा वालवक जिल्लाहमः ॥ शी-**७॰ नद्रश्र्वी विम्रा (ज्ञागिनी नन्त**् নো ধরা। ভোগবতী চ হৃদয• জ্ঞান• बालकादा लयः।। लय ज्ञान नद्र ইতি বা পাঠ:।। গ:।। घ: খন্নী ঘু-ঘূরো ঘণী ঘণ্টীশ জিপুরান্তক:। ৰাযু: শিবোক্তন: সত্যা কিন্ধিণী ঘোর নাযক:।। মরীচি র্কণো মেখা कानक्षी ह माञ्चिकः । नारमाम्ब्रा জ্বলমূল মনেশো হনন ধুনি: ॥ विद्याकाविना मः इं कागाथाः मनवामयः । यः ॥ षः भन्नी रेভद्रव শ্বে বিন্তু স: শিশুপুষ:।এক-क्षु। एक्नव्यः थर्भाद्रा विषयम्गृहा।। কান্তি: শ্বে তাহ্বযো ধীরো দিজাত্মা-জ্বালিনী বিষৎ। নত্তশক্তিক মদ-নো বিশ্বেশী চাত্মনাযক: ॥একনেত্রো सङ्गनत्नतः। पूर्कतः चन्तुना य**िः** । **र्णितरवाया नीलक्छे: कारमणी हम-**या मूरको ॥ उ: ॥ ह: शृहः द्व। इती बागी हाञ्चणिकः मुम्मिनः। हर्ष्यम् ७-ध्रता ज्दा महियाठात्रमश्विनी ॥ ভূত্বা স্থানে ভৌম ইতি চ পাঠ:।। একৰূপো কৃচি: কূৰ্য ক্যামুণ্ডা শীৰ্ষ-

दालुकः। वासवाह म्लमाया ठनुम्-ভিৰক্পিণী ॥ দ্যিত্ৰ দিনেৰ চ बच्ची ज्ञिञ्याकाहनः। हन्सनः हन्तुः মা দেব শেচভনো বৃশ্চিকো বুধঃ।। (दवी (क्रेम्थहाचा (कोमात्री भू**र्व**-कलूनो। अनक् भिथना नायू (मेनिनी **ठ** मूनावजी ॥ इ: ॥ इ: मृन्त्वः जूब् মাচ পশু: পশুপতি মৃতি:। নির্মল **जबन बङ्ग ज्ञा**जा विनामिनी ॥ এলনেত্রক ব্যলী দ্বিশিরা বাম্প र्भतः। शाक्षां लाक्षी वाम काम-यखा महालिवः ॥ याजा निनाहतः পাযু বিশ্বতঃ স্থিতিশদ্কঃ। ছঃ॥ कः भारता दानद्रः भूनी (ভागरा दिः ৰুষা স্থিরা। ললদেবো জয়ে। জেতা धाउको मूम्थी विजुः ॥ मासामत्री मृज्धिः णाया मूनु छ। कर्जुका धरा। मीर्यदाङ् कि इंग्ना नन्ती (उजा: সুরাধিপ:।। জবনোবেগিতো বামে। शानवाकः **मराञ्चकः। ऋषाक्रछ**ः चित्रा (बगी ठारमाना मनविञ्चल: ॥ कः ॥ त्या वस्त्रात्री छत्त्रा वज्यावायू সত্যঃ বডুমতঃ। অজেশো দু।বিণী नारः भामी किञ्चा कलः प्रिजिः॥ विज्ञात्क्रत्स् । धनुर्रेखः ककरणा नाष-कः लकः। मीर्चवाङ् वरणा तन माकः नित्कः मूठकवः ॥ मूम् (था नई जा

ज्या वान् विकरे। अठम अवः। कवारुः-निश्वा वामा अन्नुनीमस्त्रभर्वकः ॥ মক্ষ্যাউহাসক প্রাথাত্ম ব্য क्षनः चत्रः । यः ॥ क्षकारत्रा दगधनी क्यि। कछनी मथामा विष्ट। विो-भाती नाग विक्डानी नव्याञ्चलनय-त्रा वकः॥ कखनी ज्ञात कखनी মথদ স্থানে সুখদ ইতি বা পাঠঃ !! नर्दिण চ্রিভা বৃদ্ধিः त्रगाञा वर्दद्र-धुनिः। धरेर्याकशास्त्रे मुमूर्स्यो विद्रज्ञा ठन्मत्वश्रद्धी ॥ वृष्टि श्रात निष्टः सर्ग স্থানে সগ ইতি বা পাঠঃ ॥ গায়নঃ भू ब्रधना ह दागाया ह वदाकिनी। कः॥ हे हेकातः क्लानी ह स्नामवाः (अहती श्वनिः। मुझ्रान्ता विनना भृथी रिक्थवी वाक्नी नवः॥(मामवा शान (जारमण इंजि इंहि८ शार्ठः ।। मका-क्कार्कान्युक बद्रा ভ্তि: श्वर्वर: । বৃহস্পতি ধনু শিত্রা পুমোদা বিমলা কটি:। রাজা পিরি মহাধনু মানিজা। जुम्(था मक्रा है: 11 र्टः म्त्रा मञ्जः त्री वीकः भागिनी लाक् ली क्या। यन-জো ननराना जिल्ला जूनक घ्राक: जू**धा** ॥ বর্ত্ত লঃ জওলো বহি রম্ত চন্দু । म ७वाः । मक्रकान्य छात्र एत्य छ-(का) वृष्ण्युनिः॥ এकशास्। विज्-जिल्ह बनाहे नर्व भिक्कः॥ व्याप्ता

निवनी विकुर्भाइला गुमिनीः मनी ı रो: ।। **क** ।। ७: श्रृं कि मीक्का निन्त-किंशिनी (याणिनी श्रियः। (कोमात्री শস্কর জ্ঞাশ জ্বিবকো নদকো ধুনি: া দ্ৰহো জটিলী ভীমা দিজিহ্ব: भृषिवी मञी। कात्रगितिः क्रमा काः স্তি নাজিঃ বাঙী চ লেচেন•॥ জটি-লী হানে জটিল ইতি কান্তি স্থানে শান্তি রিভি বা পাঠঃ।। ডঃ।। 🛊 ॥ ए। एका निर्वयः श्रः वं। याङ्क नामनाम-श्वतः। अर्जनात्रीश्वत्र (खाय भीश्वती जिमिथी नवः ॥ राख्डमा मनःमयत ইভ্যত্র যজ্ঞেশে৷ খনদেশ্বর ইভ্যাপি शाठेः ॥ स्क्रानाजूल मृनः नि किरएका विनायकः। शुहामा जित्व-द्वा अब्हि निर्शंशा निर्दास धुनिः ॥ शु হাস। হানে পুহাস ইতি বা পাঠ: ॥ विष्मणः भाविनी वृक्क भाविनी ক্রোডপূছক: ৷ এলাপুর জ্বাজা চ বিশাখা শ্রী র্মনো রতি:।৷ তত্ন স্থানে खुक्ड इंडि वा भाठे:॥ हः॥ 🗱।। भा নির্ত্তণ রতি জ্ঞান জম্ভন: পক্ষিবা-रनः। सरा णास्त्रा नदक्षिए निक न। यागिनी नियः॥ विश्व (कारे वी (मुखि अमृष्क (बीधनी मछा। विलाखा बान्वी विशास मक्ताना-कूल मूथ ॥ माष्यः महिनी वीष्त्रा নারায়ণক নির্ণয়:। নুখ **স্থানে নথা** ইতি বা পাঠ:।। ৭:।।#।। ত: প্তনা হরি: শৃধি: শক্তী শক্তি জটী ধুলা । বামক্ষিক্ বামকট্টোচ কালিনী ম-ধ্যকর্ণক:।। হরি স্থানে হবি: ইতি বা পাঠ: ৷৷ আষাটী তণ্ড তমুন্দ কা-নিকা পৃষ্ঠপৃত্তকঃ। রত্নকণ্ট শ্যাম-মুখী বারাহী নকরো হকণা।। আ-याही ७७ जुन्न ज्ञान वादा ह ঢান্ত জুদুশ্চ ইতি রত্নকশ্চ স্থানে রত্নকণ্ঠ ইতি বা পাঠ: ॥ সুগতো **९क** गूथा तुष्क बानुन्छ कि: ७ शृहकः। शक्ता विश्वा सक्ह अ कानुदाश ह সৌরক:।। বুজা ছানে বৃদ্ধ ইতি সৌ-ब्रक द्यार रेमिविक इंडि वा भाटे: ॥ अयंखि भूनाका जाङि त्रनक् भरना-जुद्रा। जः॥ 🗱 ॥ थः श्रिताभी सहा-गुन्धि गुन्धिगुन्धाः ज्यानकः। निनी শিরসিলো দণ্ডী ভদুকালী শিলো-हराः ॥ कृष्मा वृद्धि विकर्मा ह मकः नामाधिरा १मद्रः। वद्रमा (ज्ञागमः किला वामजान् द्रापा २नलः ॥ क्रका वृद्धि विकर्पा ज्ञान क्रष्टा वहि र्विकना इंভि वा शाठे: ॥ (बालोक) क्छियिनी अञ्: भद्रहानु। विमाद्रकः । लालो इंड्राहि शान लालान्ड-विनी मूर्खश नवहन्तु क्वाक्को हैं डि

वा भाठेः॥ थः ॥ 🗱॥ (मा २ मी भा থাতকি ধাতা দাতা দল কলত্রক।। प्रीन<sup>•</sup> क्वानक मानक ङक्तिप्राहरनी थता ॥ माञाम्यः ज्ञान मानामन् ইতি বা পাঠ: ॥ স্যুদ্ম যোগিনী স-म्राः मुख्या वामस्यक्षकः। काञ्यायनी শিবা দুর্গ। ল'বনা নাত্রি কগুফী ॥ वाधन। ज्ञात मधन। कश्वकी ज्ञात কণ্টকী ইতি বা পাঠঃ॥ স্বস্তিকঃ স্ব-টিলা কৃপ: কৃঞ্চ শেচানা জিতেন্দ্রি यः। धर्माञ्चामस्य वन्त जुमा वन्न मृ Dक्षना ।। वर्मक् र इ। तम् क्यं हर वह क्षाप्त वह इंडि वा शार्टः ॥ इति पूर পুর মত্রৌ চ দক্ষপাণি স্ত্রিরেথক:। मः॥ 🗱॥ (वा धनार्था कृति ञ्रापुः শাখতো যোগিনী প্রিয়:। মীনেশঃ শত্মিনী তোয়ু নাগেশে। বিশ্বপাব-নী।। ধনার্থ স্থানে ধনাখ্য ইতি বা भाठे: ।। विवश वद्भग हिसा निज যুণ্ম• প্রিযোনভিঃ। পীতবাসা ত্রি-वर्गा ह बाजा बर्च श्रवक्यः ॥ बद्रगा চিন্তা স্থানে ধরণী চিত্রা ইতি বা शाठेः ॥ मन्दर्भा (याहर्मा वड्जा বজুতৃতা ধর॰ ধরা। বানপাদাকুলে भू ल (काक्षा मूत्र भूद्र खदः ॥ म्यानाः ख्या दीर्घहड्डा ह श्रात्मा श्रमकाः **१ थ्:।। #।। (ना ग**क्छिंनी क्रमा (नो द्र वीक्षी विश्वशावनी । स्वयक निवन তা নেত্র• দন্তরো নারদো হস্তান: 11 বাৰুণী স্থানে বৰুণা ইতি বাপাঠঃ!! উक् ठाभी विवश्र का वामनानाञ्चल मुं थ: । रेवन:उर्य चिंठ र्वज्ञ उत्रि বালি রাগম: ॥ বামনো জালিনী দীর্ষে। নিরীহ: সুগতি বিষৎ। শ-ন্দাত্মা দীর্ঘঘোণা চ হত্তিনাপুর বে-চকৌ ৷৷ গিরিনাযক নীলৌ চ শিবে नामि प्रशासिकः। नः ॥ 🗱 ॥ 🗠 প্র প্রিয়তা তীক্ষা হোহিত: পঞ্চ-নো রমা। গুছা कर्डा निशिः (শব: কালরাত্রি: সুবাহিতা।। তপনঃ পা-व्यनः भाजा भगारद्वपु निद्रक्षनः । সাবিত্রী পাতিনী পান বীর তাবুা ধুনুধর:।। পালন স্থানে পাবন ইতি ভৰু স্থানে ভন্ত ইতি বা পাঠ: ॥ मक्क भाषा (जनानी मुद्रीहिः भवनः শনি:। উদ্ধীশ॰ জয়নী স্বয়ো প্লস॰ রেখাচ নোহক: ৷৷ জন্তু স্থানে কা-ন্তা ইতি রেখা হানে রেবা ইতি বা পাঠ: ৷৷ মূল৷ দ্বি ভীয় মিন্দুাণী লো-काकी गन जाजानः। जाजानः जात আত্মক ইভি বা পাঠ:॥ भ:॥ 🕏 ॥ कः नथी पूर्णनी धुमा वामणार्था जनाफ्नः। जग भाषः मिथा (द्रो प्री क्टकाद्रः माथिनी लियः ॥ উमा

विश्वभः कान ऋतिनी जिन्न भावत्को া পুলযাণ্নি নী লাপাদে৷ ২ক্ষর: পশু लिङ: लेली ॥ कू ८ काद्मा यानिनी ব্যক্তা পাবনো মোহবর্জন:। নিয়ু-व्यवागर्कातः भ्यामा ग्रामनीः कः ল ।। ব্যক্তা স্থানে ঝঞ্বা ইতি পু-याग झात भुयान इंडि वा भाठे: ॥ कः॥ शा (व। वनी ज्यादा मार्का घ-র্যরীলোচন প্রিয়া। পুচেতাঃ কলসঃ পক্ষী স্থলগণ্ড: কপদ্দিনী ।। পৃষ্ঠব•-(भा ज्या माजूः निश्विवाद्दा यूग-क्रद्रः। मृथ्विनम् वंनी घरो। याष्त्रा जिल्लाहनिल्यः ॥ मूथविनमु इ।त মুথবিন্দু রিভি বা পাঠ:।। ক্লেদিনী ত পিতা ভ্নি সুপনিন্দু বলিপুিয়: ৷ সুরভি মু থবিফুক্ত সংহারো বস্ধা-বিশ:॥ সুপনিন্দু ত্থানে সুগদ্ধিকে वि वा भाठे: ॥ यश्री भव्रक (भागे ह भारका गगन भुछ। भूबीयाहा मध्यविष्यो भनिः षञ्ज जृजीरको ॥ ব:।:।। ভ: ক্লিন্না ভূমরো ভীমো বি-শ্বমূর্ত্তি নিশাতব । দ্বিরণ্ডো ভ্রবণো ন্ব॰ যজ্ঞস্তুসঃ বাচক: ।। নিশা-ভব স্থাৰে নিশাভয় ইতি বা পাঠ: নক্ষত্র ভুমণা দীপ্তি ব্যো ভূমি: পগো নভ:। নাভি ভুবু॰ মহাবাছ विषम् विवाधकः ॥ वयः सात

ভগ ইতি বিতাওক স্থানে বিমূর্ত্র ইতি বা পাঠ: ॥ পুাণাত্মা তাপিনী বজুা বিশ্বৰূপী চ চন্দ্ৰিকা। ভীনসে-नः मुधारमनः मूर्था मागाभूतः इतः ॥ वज्जु इशास कर्ना इंडि जुथ छात्म মুখ ইতি বা পাঠ:॥ ভ: ।। 🗱 ॥ **ম:** কালী ক্লে**লত:** কালো নহাকা-लामहाष्ठकः। रेक्न्रः शे वस्था हन्त्री व्रविः भूकववाककः ॥ वम्या छात वस्तरा हेडि वा भाः । काल छानु। कया (गया विचरा मीधम छकः। कठेद्रक जुनामान नक्षीमालागुव-क्षाने ॥ भीक्ष इरान मीलू इंडि या পাঠ:।। বিষ' শিবে। মহাবীর: শ-শিপুভা জনেখর:। পুমত্ত: প্রিযু क्तुः महात्वा वश्चियखनः॥ माउ-क मालिनी विन्तुः भूववा छ রথো वि-য়ং ৷ রথ স্থানে মথ ইতি বা পাঠঃ ।। रः ॥ #॥ (ग। वागी वसूषा वासू र्वि-কৃতি: পুক্ষোভম:। যুগান্ত: শ্ব**সন:** भी खा भू माहिः भागित्मवकः॥ युगाः ম্ভ স্থানে যুগাভ ইতি বা পাঠ:॥ भाइ। जुरमा केंद्री लाला वायुरवशी य-भक्ती। महर्षनः क्रशा वात्ना क्रर-য॰ কপিলা পুভা।। আগ্রেয়া ব্যাপ-কা স্ত্যাগো হোমো যান পুমা সুখ । हुछः महायदी धून महानूषा मून्-

থেশ্বরী।। পুনা স্থানে পুভাইতি বা পাঠ: ॥ বুগাজা মলযো মাতা হ जिनी ज्लिनायकः। (जनमः (भाव-का मीता धनिष्ठानक्रविन्ती ॥ प् গাত্মা হানে বিগাত্মা ইভি তেনম স্থানে যেমন ইতি ৰা পাঠ:।।মেঠঃ সোন: পজিনানা পাপহা পাণসং-জ্ঞক:। মেষ্ঠ স্থানে সেষ্ট ইভি বা भाठे:।।य:।।#॥ द्वा द्रकः काविनी (तकः भावक खाजामा म उ: । भुका শা দশনো দীপো রতকৃষা পর বলী ৷৷ স্বোদ্ধস স্থানে স্তেজন ইতি রতক্ষা স্থানে রক্তক্ষ ইতি বা भार्ठः ॥ जुकाङ्गामा मजिः मूर्य्यः। খাত্রক্ত: পুকাশক:। ব্যাপকো রে-वडी नामः अक्राःगा वश्चियखनः ।। দাস স্থানে দান মিতি জ্ঞাণ ञ्चात्म मक्का॰म इंछि वा भाठे:॥ **উ**ः गु.तथा ज्वाराखा (वरकर्श भवा भू-इ। १ कृष्ठिः मृगत्वा दुक्षणदणः गायका धनः।। (वनकर्शना न। ज्ञात বেদকশ্চপলা ইতি বা পাঠঃ ॥ 🗐 कर्र উग्ना ऋनरः मुखी विभुद्र मुन्द्रश्री । সবিन्तृ र्यानिका ज्ञाला दिलाला বিশ্বতোমুখী। এলৈল ছানে এ (मान इंडि वा भाठे:।। तः॥ 🕸 ॥ न क्तुः भूउना भृथी माधवः मकवा

हकः। वनान्यः शिनाकीत्मा वर्गाने का मा नम छकः।। माधव हार्न মাধ্বী ইতি বা পাঠঃ॥ খন্নী নাদো म्ंज (मवी नवग वाक्गी भाजः। **लि**था दानी किंदा माठा जामिनी : कामिनी लिया॥ मृज ज्ञात मृष মিতি লবণ স্থানে মরণমিতি বা भाठे: ॥ जानिनी (विभनी नामः भुमु। इ: (नावता इति:। विचाजा मत्त्रो वली (हर्ल) (सक् र्गित्रि: कला त्रमः॥ मख ज्ञान ममु ३७ कना ञ्चात क्या इंडिया भाठे:॥ नः॥ 🕸॥ বো বালো বাৰুণী সৃক্ষা বৰুণো মে-मन जिला श्री मा क्विनी वहः कलमधुनि वाहकः ॥ वह ज्ञान ब्रक्ष इैंडि कलमधूनि झारन कनमन्त्रित ইতি বা পাঠ:।। উৎকারীশস্ত না বীতো বজা রিক্সাগর: শুচি: ! ত্রিধাতু: শঙ্কর: শ্রেষ্ঠো বিশেষো য-भगारनः ॥ वः ॥ श्रा णः नवुष्ठ का-মৰূপী কামৰূপে। মহামতি:। সৌ<sup>.</sup> थानामा समारतान्ति शिक्रिश वृष-কেতন: ৷৷ বৃষয়: শ্যন: শাস্তা সুভগা विद्भविक्ति। मृजुर (भरवा सहाव-न्त्री मंहिन्दुः जनकोनिनी ॥ वाङ् र्रुंशा विषष्टकुः ऋपनका हुणः थनः । वात्नाकः मुख्यीकाचा काश्वः

कन्तान वाहकः ॥ इन्त्र ज्ञान हिन भा इंखि वां भाठेः॥ मैंः ॥ 🕸 🛭 यः শ্বেভো বাস্দেৰক্ষ পীতা পুক্তা বি-नायकः। नक्रमधी वानव एः (मुर्छाः गर्डिदमाहनः॥ भीठा द्यात भीटा ইতি পুজা স্থানে শুদ্ধা ইতি বা **नाठेः॥ नत्सारत्यः यत्मोत्क्रमः का**-मधुक् कामध्मकः। मूबी कथा वृत्याः नज्ञा सक्छक्ताः शियः निवः॥ का মধ্নক স্থানে কালধ্নক ইভি বা भाठेः॥ भूग्राजा कठेवः कारवा मजा वक्का विमातिनी। कनकछ। मध्य **ভि**मा तृकाञ्चा भनन्ः भिवः॥ यः ॥ शा (त्रा रु मः त्रमा विकृ छ वीन म्हन्तुम छकः। बगदीषः मक्निना-मा (भारु॰ विশवजी ज्लः॥ স্বশা স্থানে সুজন ইভি মোহ স্থান সো হ° ইতি বা পাঠ:॥ পুকৃতি রীম্বরঃ শুকা পুভা খেতা সলোজ্ঞ্য:। দ-क्र भारत म् उ॰ व्यक्ती भव्रभाका भः রে। २ कतः ॥ স্বপা চ ওণেশে। गीः कनकरथा व्रकान त्री। भागाम्। क भुद्राप्तिवी विश्वीः (भारत) व्हित्रपुर পুঃ॥ দূর্গোক্তারিণি সন্মোহাজীবো मृर्डिमंताइतः। पूर्णङादिनि ছात्न দুর্গো ভারিণী ইতি সন্মোহাৎস্থানে সমোহ। ইতি মনোহর স্থানে ম-

নোযৰ ইতি বা প ঠি: ॥ স: ॥ #॥ হ: শিবো গগন হ'সো নাগলোকো ৎষিকাপতি:। নস্লীশো অগৎ-পুাণ: পুাণেশ: কপিলা মল:।। মল স্থানে মত ইতি বা পাঠ:।। পরমা-আআজা জীবো ববাক: শান্তিদো **২স্ব:। মৃগো ভ**গে। কণা স্থাণু: জুট কূপবিরাবণ: ॥ যবাক স্থানে বরাক ইতি হঙ্গন স্থানে হঙ্গুল ইতি জুট-কৃপবিশ্বাবণ স্থানে ক্টকো পরিবা-রণ ইভি বা পাঠ: ।৷ লক্ষ্মী মবিহর: শম্র: পুাণশঙ্কি র্বলাটন্ধ:। মকোপ वाद्रगः म्ली हिडनाः भामभ्द्रगः ॥ মবিহর স্থানে হরিহর ইতি স্বকো-প স্থানে সকোপ ইতি বা পাঠ: 🛭 মহালক্ষী: পর নাদে৷ মেঘনাদেঃ ছরি ম্র্ডা। বিন্দু দুর্গা প্রিয়া দেবী भवनात्मध्यः भूगान् ॥ मक्कना-मः अनामञ्जः मात्यादेः (भागम्-**७व**ा। इः॥ #॥ वः नृथी विभवा। মেয়ে। হনন্তো হব্যবহা সিতা। ব্যা-পিনী শিবদা কেতৃ র্জগৎ, সারতর্ रठेः॥ त्यो म् जानी ह त्वरार्थः ना-(द्रा नाजायणः खरणा कठेरद्रा नक्ताः । পীতা শিবেশো হনস্মালিনী।। ল: ।। ‡।। ক্ল: কোপ স্তবুক: কালেঃ ककः मञ्चकः भवः। नृतिः हा दिः

खबुक झान खघ्क है कि कक्ष झान ব্যক্ষমিতি পর জ্ঞান প্য ইতি বা পাঠ: ॥ পরাত্মা ক্রোধ স'হা 🖔 রৌ বলান্ডে' নেৰুবাচক:। সর্বাঙ্গ: সাগর: কাম: সংযোগান্ত্য জ্রিপুর-कः ॥ वनाउ ज्ञात ननाउ है कि সর্বাঙ্গ ভাবে সর্বাগ ইতি বা পাঠ: ৷৷ ক্ষেত্ৰপালে৷ মহাক্ষো: ভোমাত্ काভানলক্ষঃ। মূথ ক ব্যবহানন্তা কালজিন্তা গণেশ্বর:॥ हाया भू अन्ह मन्याद्धा मनयः 🕮 र्वांनाहेक:। क्षः ॥ 🗱 ॥ इंडि नन्दनः ভটাচার্য্য বির্কিত বর্ণাভিধান नगाथः ॥

বর্ণক॰ ল্লী হরিতাল। ইভি রত্ত भावा।। गाजानुत्वभनरगगाः भि क्टे घृष्टे वा म्गिक्तिपुवाः । इन्तायः ॥ हन्द्रनः। इंडि मदत्रद्वावनी ॥ वर्गकः भुः ली विल्लभनः॥ हम्सनः । इंडि (बिनिशे। वर्गकः भू खी शिङ्गल श्रि उाल काठ नीनोकारिः। ইত্যমর ভরতৌ वर्गकः भुः ठात्रमः। ইতি মেদিনী॥ मखनः। ইতি मदत्रज्ञातनी ॥ পু॰ অবেরপ্ত:। ইতি ত্রিকাপ্তশেষ:॥

দুজোনায়া মহাতেজা যুগান্তক: ॥ । বর্ণক্লিকা জ্ঞী নস্যাধার: ॥ য**থা** । यमीथानी यमियणि (यं लाक्षुं दर्ग-কুপিকা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।। বৰ্ণসারকঃ ত্রি চিত্রকার:। ইতি नद्राता॥ वर्भाषाधः भूः वाक्षाः। ইতি बि का खानवः॥ वर्गाकार्थः वि बनगारभाकान्त्रमंवर्गः। পারিভাবিক হীনবর্ণকর্তৃক পা-রি ভাবিকক্রেজান্তকন্যাবিবাছ নি-(बरा थथा। भीन कर्कं हे वृष्टिक विश्राः मि रु जुना धनुः कविय উক্তঃ। সম্ভ নরম্বয় মেষ বিশ: স্য র্মানর ব্যাজী কখিতা হ্ররজাতিঃ ।। বর্ণজ্যেষ্ঠা চ যা নারী বর্ণহীন क-यः भूगान् । उत्या विवाद मृजुः न्। यथानामाज नःगयः ॥ ইতি ছ্যোভিস্তত্ত্বে বৰ্ণজোটন• ॥ বৰ্ণতুলিঃ জ্রী লেখনী।ইভি শদ্ इज्ञावनी ॥ वर्गञ्जिका जो লেখনী। ইতি श्वावनी ॥ ্বৰ্ণভূলী জী লেখনী। ইতি ত্ৰিফা-अम्बरः॥ वर्गन क्री कानीयक । इंडि बहा-ध्रतः।। वर्गमा छति जि ॥ বর্ণদারী জী হরিদু। ইতি রাজ-

निर्घणेः ॥ वर्गराज्याः वि॥ वर्गमृतः भू विभिः। उर्भर्गगः । (वर्थ: २ वाहिकशातकः ३ वस्ति মুখ:৪। ইতি ত্রিকাণ্ডশেবঃ।। : वर्षधर्यः भुः क्षी द्वाक्तशक्किय दिन्। मृद्रानाः कर्रवाः कर्म। छत्रथा। यजनः याजनः मानः वाकागनः शु **जिश्हः। अवशाशनः हां व्यवनः व**हे-कर्यानि हिकालगाः ॥ मान मध्र-यन यद्धाः वयः क जिगरेनमाऽस्याः । मर्ला युक्तः क्रजियम्। कृषि र्विनाः-স্য শস্তে ৷ শুশুৰৈব ছিলাতী नाः मृषानाः वर्गमाधनः। काक कर्म ज्ञाजीयः भाकराद्धा १ मि-थर्गङः॥ क्रमा स्या प्रा मान म-লোভ স্ত্যাগ এব চ। আজ্জবং চানস্থা চ ভীর্থানুসরণ ভথা ॥ সভ্যুণ সম্ভোব আন্তিক্যুণ শুদ্ধা চে-निषुयनिश्रहः। (पवजा छ। हनः भूषा ব্ৰাহ্মণানা বিশেষত:।। অহি সা श्चियवाहित्व मरिमम्बर मकक्ष्म । সমাসিক মিম খ্যা চাত্রণে **९**वृवीम्नुनिः ॥ शुकाशठाः वाम ণানা শৃত স্থান ক্রিয়াবভাগ। इत्तान रेमनुः का वियानाः मः गुर्मानः श्वनवाधिना॰॥ देवनाताना माक् उ॰ शानः वयमं मन्बर्डाः । गान्नर्वः

**ण्**मुबाठीना॰ পরিচারে ভূ বর্রভা॰ ॥ इंडि कोर्स्य २ व्यक्तायः ॥ 🛊 ॥ অপিচ। মার্কণ্ডেয উবাচ। হারীত <del>खानुवाहाथ ठेउद्भव॰ हामिटा मु-</del> निः। णृक्षु मुनयः मार्व धर्मान् व-ক্ষ্যামি শাখভান্।। বৰ্ণানা নাশু-মাণাঞ্ বোগশান্তঞ্ সত্তমাঃ। य-জ্জাত্বা মুনযো নিভা মুচাতে জ-चवक्रनार ॥ वाक्रमाः वाक्रारिनव উৎপদ্ধ। दुष्याः युजः। उत्रः धर्याः भूवक्रामि छ॰ यागुः एम सिव চ।। কৃষ্ণসারো মৃপো যত্র স্বভাবা-खु পুवर्खाठ । ভिष्मिन् (माम वमन् ধর্মণ জৰুতে ব্ৰহ্মণোভন: ॥ অ-ধ্যাপন চাধ্যমন যজন যাজন ख्या। मानः भु छिगु रिक्त कर्म वहे ক মিহোচ্যতে ॥ অধ্যাপনঞ্ ত্রি-বিশং ধর্মার্থণ চাত্ম করিণণ ৷ শুশুষা কারণঞ্চেতি ত্রিবিখণ পরিকীর্ত্তিত ॥ निया मन्। ज्ञाना वालि मृन्। एक यज মানবে। তত্র বিদ্যান দাতব্যা প্রু-যেণ হিতৈৰিণা।। যোগ্যানধ্যাপয়ে-हिरान् यञ्जानिक ह याजय । বিদিতান পুতিগৃহানিছেদগৃহধর্ম-পুসিদ্ধযে ॥ বেদ গেবাভ্যসেগিত্য भूको (मर्ग नगाहिछ:। यहाव्यक्तः যথাশক্যা দদ্যাদ্বিভানুসারত:।।

निजाः निमिखिकः धर्याः कर्या प्रयी भूगञ्जः। ७३ मृत्यारेकव यथान।।-য মতন্দ্ৰ: ৷৷ সায় প্ৰাত ৰূপাসী ত বিধিনাগ্নি ছিজোত্তম:। কৃত্রা-नः शुक्रवी उ रियश्यात्वः पित्न पितन ॥ অতিথিঞাগত ভক্ত্যা পুষ্কেষেছজি-ভো গৃহী। অন্যানপ্যাগতান্ বিপা-न् भूकत्यमविद्याथञः ॥ समात्रनित्रः ভো নিভ্যু পরদার বিবজ্জিত: । সত্যবাদী জিতকোধঃ স্বধ্মনির (ठ) च्व ।। व्यक्संनि ह मः भूष् भुनार रेनव द्वाहरय । भिया ह-छा॰ वरम्बाह॰ भद्रत्माकाविर**द्राधि**-नी ।। এव धर्मः ममुम्हि हो वृष्क्रामा नभाम जः । धर्मा स्वतः यः अर्गार স যাতি বুন্ধণঃ পদং ॥ 🗱 ॥ হারীত উवाह। कवादीनाः भुवक्रानि रथा वनगृत्रमः। (यन (यन भूवर्क्ड विधिना कृ जियान यः ॥ त्राका ह क् वियरेण्डव भुका धर्म्यन भानत्य । क्र्यजामधायनः नमाज्य युगयुष्टा य-थाविधि॥ पर्भाष्मानः विकाश्याख्या थर्मावृष्टि ममन्त्रि: । (पर व्याक्षण छः क्रक भिज्कार्याभन्न खबा ॥ धर्मान रिव कराकाङ्की अवर्यामा विवर्जायर। উভ্যাণ গতি মাপ্নোতি ক্ষ্ত্রিযো হেব মাচরন্॥ #॥ গোরক্ষ ক্ষি

वानिकार अंग्रीकिल्गा यथाविधि। मानः थया यथा मक्ता विक्रमुम् ষণ তথা।। লোভ দস্ত বিনিমূক্তিঃ সত্যবাগনস্থক: । খদারনিরভো माष्ठः পরদারবিবজ্জিত: ॥ धरैन विभान मम छ। इं। यद्धकारन प्या-िछ:। **अनु**म बः ऋत्यांषु वार्ख ॐ (मरुभाउनार ॥ यद्धाक्ष्यम मा-নানি অর্থ্যানিত্য মতন্দ্রিত:। পিতৃ-कार्याक उरकाल नात्रिम शहन उथा ॥ এउदिमात्रा कर्याकः स्थ-र्य मनुष्ठिष्ठ ३:। এ उपारम वाना ख मुकः न्याद्याव नः भयः ॥ 🛊 ॥ वर्ग-खरमा मृत्याः कर्गाट मृतः भूरकः তঃ। দাসবৎ ব্ৰাহ্মণানাস্ত বিশেষেণ नमान्द्र ॥ व्याहितः भूमाता मा क्षि वृक्षार्थ मामुर्य । भाक यञ्ज विधानन यकारम्यान छन्ति छः ॥ मूमुागाः मानिकः कार्यः वननः न्याय वर्खिनाः । शाद्रगः कीर्वक्कम्य विश्राहिश्रेखाकन । चनारत्र्यु রতিশৈব পরদার বিবর্জ্জিত:।। পু<sub>ং</sub> রাণশুবণ বিপায়ারসি হস্য প্জ-नः। उथा विभुनमस्रात्र खणा मजः **दित्न दित्न ॥ अञ्जा अञ्चादगः देव्य** द्राग (हर विवर्क्जन । रेप्य **क**र्द তথা শ্দুে। মনোবাক্কায়কর্মভিঃ।!

স্থান মৈন্দু নবাপ্যোতি ত্যক্তপাপ: পুপুণ্যকৃৎ। ইতি নার্রাবিংহে ৫০। ७८८ व्यवपारियो ॥ क्ष्मा। व्यनप्रहा सनाः लामावाह । मान नथ्यान याउडा ः जुष्क्रभम् अत्यानिष्ठः । यस्या नानः कजुर्लाखि धर्म खम्याभन विना।। বাজনাধ্যয়নে ২ক্ত স্তথা পুত্ৰ পুতি-गुरः। এड८ मनाक् मेमाथााउः विভय हामा जीविका॥ मान सक्षा-যন যক্ত: ক্ষত্রিধস্যাপ্যয়ণ ত্রিখা। খৰ্ম: পোক্তঃ ক্ষিতে ব্লক্ষা শস্ত্ৰাজী-वुक्त की विका ॥ सान सुश्रुवन यङ्का বৈশ্যস্যাপি ত্রিবৈর সং। বাণিজ্য शामुभावाक कृवि रेकवामा जीवि का।। मानः यद्ञा १थ भूतुं या वि জাতীনা জিধা ন্যা। ব্যাখ্যাত: শুদুখর্মো হলি জীবিকা ক কর্মজা n তদ্বদ্বিজাতিশৃশ্বা বোৰণ কৰ दिकरेगः। दर्गधर्मा खुरम (भाकाः শুংতা মাশুনা জ্বং ॥ ইতি মার্ক-<u>ध्वानुदारा महालमानुनामनाध्या</u> यः ॥ 🛊 ॥ व्यभद्रकः। द्वाक्रणा द्वकः যোনিছ। যে স্বক্ষণ্যবস্থিতা:। তে अगुल्लमजीवियुः वर्षेकर्माणि यथाकः भः ॥ ज्ञानान मन्यानः यकनः या-सनः उथा। मानः পুতিগৃছ टेम्प्य वर्षे हर्यागुष्कमनः ॥ स्था छ कर्यना-

मग्र डीनि कर्यानि छीविका। याङ् নাধ্যাপনে চৈব বিশুদ্ধান্ত পুতিপুহঃ ত্রেষ্টের্নির রাজিলাৎ ক্ষ-ত্রিয়া পুতি। অধ্যাপনা যাজনঞ্চ ভূ-जीयण भुटिगुरः।। रेवणाः भुडि छ-रेथरेवरङ निवार्डद्रिमिङ স্থিতি:। न তৌ পুতি হি তান্ধর্মান্মনুরাহ পুরাপতি: ৷৷ শরাস্তভূত্ব ক্রস্য বণিক পাশু কৃষি বিশাঃ। আজীবনার্থণ धर्मञ्ज मान सव्ययनः यज्ञः॥ (तमा-ভ্যাসে৷ বাহ্মণস্য ক্ষতিয়স্য চ রক্ষ-णः। वार्डा करेग्रंव वि**म्यान**। विमि**र्छा**-नि स्रक्यम् ॥ अजीव छ यत्था क्रिन वाकाः (यन कराना। कीरदर का जिब ধর্মোণ স হাস্য প্ত্যুনন্তরঃ ॥ উভা-ভ্যা মপ্যনীব•স্ত কথ• স্যাদিতি চে-फुरवर। कृषि भावक नाञ्चाय की रव-দৈশ্যস্য জীবিকা<sup>ণ</sup> ॥ বৈশ্য**ৃ**ন্ত**াপি** জীবাস্ত বুলকা: ক্ষরিযোগি বা। हि ना भाषा भवाषीना कृषि य-ত্নেন বজাহে ।। কৃষি সাধিতি মন্ত-ত্তে স। বৃত্তি: সদ্বিগহিতা। ভূমি• ভূমিশ্যাণ শৈচৰ হন্তি কান্ত মযো-मूच ।। इन छ वृद्धिवकना । ए छा काउ। धर्म रिनशुनः। विदेशना मुक्तः তোদ্ধার বিক্রেয় বিত্তবর্জন।। স-র্বানুসানপোহেত কৃতামঞ্ তিলৈঃ

अ**रः। जन्**यस्या नदग्रेक्षत्र शन्यस्य।। (य ह बानुषाः ॥ नयंक डाख्य द्रञ्जः শাণকৌয়বিকান চা অপি চেৎ भु। तत्रकानि कवा ग्रम उत्थोषवीः ! অপ: শত্ৰ· বিষ· মা·স· সোম· शकाः क जवणः। क्वीतः व्योष्ट्र परि ঘূড• তৈল• মধ ভড• জশান্।৷ **जातिपाः म्ह भग्न** बर्तान् मः हिनम्ह दयाः नि ह। यन्तरः नी जिक्ष वाकाक जर्बाः रेम्हकन्नकाः खथा ॥ कामगुर-शामः क्षाण्ड स्यत्मव क्षीवनः। विक्रीगैठ छिलान् मुखान् धर्यार्थ মচিরস্থিতান্॥ ভোজনাভ্যঞ্জা-मानाव्यमगुर अकात्र जिला। क् মিভূত: শ্বিষ্ঠায়া পিত্তি: সহ মজ্জতি।। সদ্যঃ পত্তি মাংগ্ৰন नाक्ष्या नवरान ह। कारहर मूरी-ভৰতি বাহ্মণ: ক্ষীরবিক্ষাৎ ॥ ইতরেষান্ত পণ্যানা বিক্রয়াদিহ কামত: । বুল্কাণ: সপ্তরাত্ত্রেণ বৈশ্য ভাব॰ निग्रहाउँ ।। त्रमा त्रीम निमा-তব্যা নত্ত্বেব লবণ• রসৈঃ। কৃতামঞ্চা-কৃত্তন্ত্ৰন তিলা ধান্যেন তৎ সমাঃ।। कीर्वरम्खन ब्राह्मनाः मर्स्नामानगः व्यक्तः। नर्द्धव ब्रायमी॰ वृद्धि मुख्यि মন্যেত কহিচিৎ।! যোলোভাদধ-(न) काछा की (वनुरक्षेक्यं छि:।

ত রাজা নির্দাক কুরা ফিলু মেন পুৰাদদেশ ৷৷ বয়া ধ্বামী বিভাগে ৰ পারকঃ হনডিতঃ। পরব্যেণ জী-বন্হি সদ্যঃ পত্তি জাতিজঃ ৷ বৈ-(महा रकीयन् सम्पर्धन मुख्युन्तरीका वर्खस्य । यमारक्षमभागंग्राणि निव-র্ভেড চ শক্তিমান ॥ অ্পন্ন বংশ্চ भान्तवा॰ भूं हु: कड़ु • विकवाना॰ । शूध দারাত্যবং পাপ্তো জীবেত কাক্ ক-र्या 📴 ।। देकर्य 😇 भूठ ब्रिटेंड भू-<u> भुष्राच विज्ञा उपः। जानि काङ्ककः</u> ৰ্যাণি শিল্পানি বিবিধানি চ। বৈশ্য-বৃত্তি মনাভিগ্ন ব্ৰাহ্মণ বেপথি ছি-छ:। অবৃত্তিক্ষিত: मीन्धिम धर्म সনাচরেৎ ॥ সর্ব 🦭 পুভিগৃত্বীযা-ष्ट्राञ्चन खुनगळ्डः। भविकः ह्या ही-ত্যেত্ৰ ধৰ্মতো নোপপদ্যতে ॥ নাধ্যাপনাআজনাদ্ধা গহিতা দা-পুতিগুছাৎ। দোষো ভবতি বি-भुभा ज्वाम मना हि छ ॥ जी-বিভাত্যয়নাপনে৷ যোলমন্তি যত ন্ততঃ। আকাশ নিব পঞ্চেন ন স **भारभन विभ**र्टा यहीयर्ड: मुख् হন্ত নূপাসপ্রভূজিত:। ন চালি-প্যত পাপেন জুৎপুতীকার মাচরন্ ॥ खनाः म निष्ट्यारङा ६ छः १ यो १ म विष्ठक्षाः। शागामाः भवित्रकार्थः

মালেরে। ন লিপ্তরান্য ভরহাজ: क्षरार्ल्ड न भावा विकल रत्। वः श्री गाः भु जिल्लाह वृद्धा अल्लानकाः তলা: ৭ ক্ষার্ভিচার মভাগাদি-ম্বানিতঃ স্বজাননী । চণ্ড লহস্তা मानाय वर्णावयं विष्ठक्रनः॥ शृष्टितुः राज्याक्रमाषा उरेथवावतानमानि। প্রতিগৃহ: পুত্যবর: (পুত্র বিপুষ্য পহিতঃ।। যাজনাধ্যাপনে নিত্যু কি যেতেস ফ্ ছাত্মমাণ। পুতিসুখন্ত জি যতে শুদ্দিপ্তভুক্মনঃ৷ জপ ছো-े ब्रोभएउरमा याचगायप्रभरेनः कृ ড°।পুঙিগুহ্নিনিত্ত ভ্যাগেন ভ शतमवह।। सिरवाक्शशामकी छ वि পুে৷ জীবন্যত ওতঃ ৷৷ প্তিপুছাছি णः (गुना॰ उठा भुष्धः भुमगुरः।। भीम खिः इत्या निहु छि थनः वा शृ থিবীপতি:। যাচ্য: স্যাৎ স্নাভকৈ र्वि रेनु द्रिष्टिमःख्याग मई छ ॥ ज कृ उक्ष कृ उ। ८ (भवाद्मी ब्रजाविक নৈব চ ৷ ছিরণ্য খান্য মলঞ্চ পূর্ব পূর্ব মদোববং ॥ সপ্ত বিত্তাগনা ধ न्या। सार्वा ना जः करवा कयः । शुर्वाः গ: কম্যোগত সংপ্রিগ্রু এব চ।। ৰিদ্যা শিল্প ভৃতিঃ সেবা গোরফণ বিপণিঃ ক্ষিঃ। ধৃতি ভৈক্ষণ জ্পী इष् रूम कीय-१२ ज्यः ॥ ताकानः

ক্ষত্রিয়া বালি বৃদ্ধি নৈব পুয়োজ-(यट। कान्य थन यजार्थ प्रमाट भाभोयस २ जिलाः॥ ठउथ मारः দানোপি ক্রিবো ভাগ মাপদি 1 পুজারক্ষন্ পর শক্তা কিল্বিষাৎ পু जिग्ठाउ ॥ स्वत्य। दिक्रय सन्। নাহবে দাবে পরাত্যুথ:। শতের रिवणान्किङ्ग ४०० नाक्तरयविन॰ ম ধান্যে ২৪ন বিশাং শৃল্প বিংশং **ক**।বাপণাবর•। ক্রেপে দরণা: শূ-দাঃ কারবঃ শিল্পিন স্তথা।। শৃচুন্ত वृद्धि माताद्भम् कव माहास्थान्य रि। প্রিনা বাল্যপারাধা বৈশ্য প্রে-जिजीविष्य ॥ इगार्थ गृज्यार्थस्। বিপানারাধ্যে ভুসং। জাত্যাক্রণ শব্দা ৰাখ্না কৃতক্তাতা II विनुश्मिरेवव मूम्मा विभिष्ठे कर्य कीर्नुष्ठ । यम्(जा २न)विश्वक्ट ভন্তবভাষ্য নিয়ুল•া৷ প্রল্পা ভস্য टि वृंखिः यत्रहुषान्य**या**हे**डः। म**् किकार्यका मानाक लेगागक **भ**ातगृह•॥ উहि**ष्ट गनः मा**ठवाः ही-र्गानि वननानि छ। श्रुवाकरिक्तव था-न्याना॰ जीली टेम्हव श्राह्म ।। न শৃদে পাতক কিঞ্ছিৎ নচ সাফার মহতি। নাস্যাধিকারো ধংঘতি न थया ८ शुक्तिभवन ॥ धार्मञ्जव छ

**ধ্**মজা: সভা<sup>,</sup> তৃটি ননুষ্ঠিতাঃ । ' मखवर्कान मूष्रा छ भूगा भाः भाभी दि । । यथा उथा २ मब् उ मा ভিষ্ঠত্যনসূধকঃ। তথা তথেনকা মুঞ্চ লোক প্রাপ্নোত্যনিন্দিত:॥ শক্তেনাপি হি শ্দুণ ন কাৰ্য্যে थनमक्यः। मृत्यु हि धन मामान्। বান্ধণানেৰ বাধতে।। এতে চতুণা॰ বৰ্ণানা মাপদ্ধৰ্মা: পুকীৰ্ত্তিতা: । যান্ সমগুণনুতি ছল্ডো বুজন্তি পর মাণ গভিশ।। এষ ধর্মবিধিঃ কৃৎস্ন শ্চাতুর্বণ্যস্য কীত্তিত: । অত:পর• পুৰক্ষ্যামি পুাৰ্যান্চত্তবিধিং শুভং ।। ইতি মানবে ধর্মশান্তে ভ্ওপো ক্তায়া সংহিতায়া দশমো ২ব্যা यः।। 🗱।। व्यन्। ८ वर्गमायः मुक्टेवाः ॥ বৰ্ণন• क्री ् छ<न• ॥ विखन्न**ग•** ॥ मुक्रानिवर्गरयाङ्मः ॥ मीलमः। ইতি वर्गधाटा जात १न६ भुजारम निज्ञमः ॥

বর্ণনা জ্রী গুণকথন । তৎপর্য্যায়: । ইডা২ স্তবঃ ০ স্তোত্র ৪ স্তুতি: ৫ নুতি: ৬ স্লাঘা ৭ পুশ সা ৮ অর্থ-বাশ: ১। ইতি হেমচন্দ্র: ॥

বর্ণনীয় তি বর্ণ্য বর্ণিতব্য । ইতি বর্ণধাতোঃ কর্মণি অনীয় পুত্যয়েন নিষ্কুমণাঞ্চাবর্ণ্যানিপদার্থানি যথা

। অথ বৰ্ণ্যানি কথ্যন্তে তানি যানি कवीश्वरेतः। महाकाष्य भुवृ छितु भु वस्त्रवु वविक्रात ॥ त्राका त्राकवर्ष् পুরোহিত জনারামাল্য্য সেনাধি-भाः (मण गाम भूती मदा १ कि नितिष्कानाम्। द्वाराणुनाः । माखा দূত রণ পুষাণ মৃগযাখেভিদ্বিনেক্ मया वीद्रारहा वित्रहः खयश्रत सूत्री পুষ্ণাম্ব **থেলা রত•।। ইতি** কবিকল্প: **ल डायाः ) खराक ७ ऋ**युगः ॥ वर्गणांज क्री विज्ञकाव्रमानीनामि द्रागम्याभादः। यथा। मिल्लिका वर्ग পাত্র• স্যাৎ তৃলিকা লেখ্যক্রি-का। इंडि मद्माना।। বর্ণপুষ্লক: রাজতক্ণীপুত্র-**M.** বৃদ:। ইতি রাজনিঘট:॥ वर्गनूत्री जी উट्टेकाञ्जीनुत्रवृकः। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ दर्भभुगारन क्ली अधक। इंडि द्राज-निर्यण्डः ॥ বৰ্ণনাতা স্ত্ৰী লেখনী৷ ইতি হারা-वनी ॥

শদ্রত্নাবলী।।
বর্ণনালা জ্রী জাতিমালা।। অক্ষরশ্রেণী। তব্র সংক্ষতবর্ণাঃ ৫০ জপমালাবাংও ্ব্রেজীযুর্ণাঃ২৬।

বর্ণমাতৃকা জ্ঞী সরস্থতী। ইতি

कत्रामीयाः २०। हिर्क वर्षा इङ्गीयाः २२। ज्यादवीयाः २৮। भात्रभीयाः ०७ । जूबकीयाः ०० । कणीयाः ४)। शिक् वर्षाट इंयु-नानीयाः २८। वाष्टिन्(मणीयाः २२ । उह् अर्थाट उनका की याः २७। ज्ञान्रमणीयाः २१। इर्ष्टालरमी-याः २•। जाजाद्वीयाः २०२। <u>वृ</u>द्धाः (मणीया: >३। हीनरमणीयवर्गा: म-षाञ्चकाः उह्दम्भःथ्याः ৮०००० ॥ 🗱 ॥ व्यकादामिक्ककाद्वाखवर्ग-क्रिक्नकामक्त्रभगाना। यथा। मन्द्रमात्रमं हिजायाः **मार्क्मगरेज** मीला माज्कारेनीः करमकरेकः। मिन्मूरेकः मार्डवर्रम ब्रस्थंबनकर्यां ।। जामि कृ ह् हूं जू भू यू मरवा रही वर्गाः भुकीर्खिजाः । व्यकादासिवर्गान् मिविमृन् भु ভ্যেক কৃত্বা শত সাজপ্য অকা-ब्राहीमा॰ कवर्माहीनाकः वर्गानाः **अ**डिमवर्गः मानुशातः क्षा न्र मूहार्ये। मखक्रमः कार्येः। चारनन পুকারেণাঙৌভরশতসংখ্যা জ-পোভবভি। অন্তৰ্যন্ত্ৰন মিভুগে लक्ष्या अविन्तुः वर्ग सूहार्यः शः काग्रज्ञ॰ सल्यान्त्रीः। व्यकात्राः रिक्कातास विन्तूयूक विভार<del>।</del>

চ।। বর্ণনালা সমাখ্যাতা অনু-लान विलानिका। क्वांतर (म-ৰু মেবাত্ৰ তত্ৰ মন্ত্ৰণ জপেন্নহি।। ইতি নারদীযবচনাৎ।। পুকারান্ত-त्र· विन्युष्क्रयद्व। अनुरनाभविरनाः মেন বৰ্গ: ইকবিভেদতঃ । সংস্তে-শান্তরিভান্ বর্ণান্ বর্ণেনান্তরিভান্ मन्न ॥ अर्येशवर्गमयी भाना अर्व তন্ত্রপুকাশিনী । চরমার্ণ সেক-ৰূপ° লম্ভ্ৰন• নৈবকার্যেৎ ॥ ইক্তি• **उत्रमादः ॥ जभिष्ठ । जन्ताम** विरवासन कुछरा दर्गमावरा। चारि नाड नारि गांड करमन পরমেশ্বরি ।৷ ক্ষকার প্রকল্পক वह्नराम कराइन। ইতি मूखमाना-ভন্ত ॥ বৰ্ণরেখা) স্ত্রী কঠিনী। ইতি ত্রিকাও-বৰ্ণলেখা । শেষ:।। वर्गाणिका की कठिनी। इंडि ब्रङ्ग-माना॥ বর্ণবভী জ্রী হরিদু। ইতি জটা-भन्नः ॥ दर्गिबिन्तिः छै जि ॥ वर्गवित्वाफकः भू॰ स्नाकत्स्वनः॥ निक्तिहोतः। इंडि (मिनी।। পু মিশ্বিভৱাতি:। বর্ণসকর: **छिह्तद्वन॰ यथा । वज्**तु व्कारी वक्तान्त्रा व्यक्तनकाठयः। युक्ताः

वार्मिष्ट काजाः क्ञियकाउरः॥ फेक्रमणाह रिम्याम् भारकः म्मू কাত্য:। তাসা<sup>•</sup> সহুর কাতেন ব ज्यू दर्गमह्याः ॥ गाम नामिज नीनाक उथा (मारक म्नादो। ठा-শ্বি পৰ্ণকারে চ তথা বণিকলা ज्यः ॥ बीबाङ्गान ভावा ইতি **भूलवञ्चात्म क्वत्र इंछि 5 পार्टः ॥** देखाव माराः वित्नुन् मर्म्माः 🖟 পরিকী ভিতা:। শুদুাবিশোস্ত ক द्वारा १वःधा रेवणा विषयानाः ॥ विश्वकर्या ह मृ पुष्याः वीयाश्वानः ह-কার স:।। ততো বভুবু: পুঞান্চ नरेवर्छ निन्न मंत्रियः ॥ मानाकातः कर्मकातः न्युकातः स्विन्तकः। स्र ম্রকার: ক'সকার: যডেতে শিল্পি না বরা:॥ সূত্রধার শিচত্রকর: च-র্ণকার স্তথৈব চ। পতিতা স্তে वुक्षभाभारकाउत वर्गमहाज्ञाः অজাত্যা ইত্যত্ৰ অ্যাল্ক্যা ইত্যপি गाठे: ॥ वर्षकाद्रः वर्गकोर्येश <u>वाष</u>ाः ণানা ছিল্লোভ্য । বভ্ব সদ্য: পতিতো বুদ্ধশাপেন কর্মণা ।৷ সূত্র-ধারে৷ দ্বিজাতীনা• শাপেন পতি-তো ভূবি। শীঘুঞ্ যজ্ঞকাঠঞ্চন দ দৌ তেন হেত্না ॥ ব্যতিজ্ঞাণ চি-ত্রাণা সদ্য শিচত্রকর তথা ৷ পতি তো বুন্ধুলাপেন ব্ৰাক্ষণানাঞ্চ কো-পতঃ ৷৷ কল্চিছণিক্বিশেষ্ক স नर्गाट वर्ग कादिनः । वर्गछोर्यगिष দোৰেণ পভিতো বুক্ষশাপত: ॥ व्यवदेशिक मृत्याः विजवात्रम् वीर्याउः । वज्वाजालकाकातः श-**তিতো बा**द्रस्थितः। अपेशिकः-कात वीर्याए अञ्चकात्र मा (याविजि । বভ্ৰকোটিক: সদ্য: প**তিতো** গ্ হকারক: ।। ছন্তু কারস্য বীষ্যেণ স-দ্য: কোটিক বো**ৰিভি। ৰভ্ব ভৈ**-লকার**শ্চ দ্**টি**ল: পঞ্জিভা** ভূবি॥ मर्डः क्विर्यवीखान द्रावन्यम् যোষিতি। বভূব তী**বর শৈচৰ পতি**-তো জারদোষত:।। তীবরস্য তু বী-য্যেণ তৈলকারস্য যোগিতি। ৰ ভ্ৰ পতিতো দ্যু র্লেটক্ষ পরিকীর্জি णः॥ (वह छीवद्रकन्याया॰ क्रम्या-নাস যারান্। নাল্ল নল্ল নাতর্ঞ **७**उ. (कालक कन्त्रशा कन्त्र झात कनन्त्र इंडि वा भाठेः ॥ व्यान्नगाः শুদুৰীৰ্য্যেণ পতিতো জারদোৰত: 1 সদ্যে বভূব চাণ্ডা**ল: সর্থমাদ্ধ**া নো হশুচিঃ। ভীৰরেণৈৰ চাণ্ডাল্যাণ চযা চারো বভূব হ। চর্মকার্য্যাঞ্চা-গুলাৎ না'সছেণী বভূব হ।। মা'-সচ্ছেদ্যা ভীবরেণ কোঁচক্ষ পরিকী

र्खिड:। (काँ। द्विषास्त्र किवर्खार का-खातः भत्रिकं खिंउः॥ महा का खान कन्यायाः व्यविविर्यिपः व्यानक । वः ভ্বতু ভৌ'দ্বৌ পুণ্রৌ হট্টিক শৌণ্ডি কৌ তথা।। হয়িক শৌতিকাবিত্য ब मूखी रहि जानी इंडानि नार्टः॥ कार्मा रुष्टिकन्यायाः नम्य काला नवीर्याजः। वज्रः नकन्याक जुडा বনচরাশ্চ ভেমলেটাভীবরকন্যাযাণ গঙ্গাতীরে চ শৌনক। বভূব সদ্যো या वाला गक्राभुधः भुकी छिंछः॥ गक्राभुधमा कन्यायाः वीर्याप तम् ধারিণঃ। বভ্ব বেশধারী চ পুগ্রো युकी भूकी बिंजः ॥ रेवन्या जीवत्रक-न्यायाः मन्तः मुखी वज्व र । मुखी याविठि विभाग खल्मो कुक भ भूकी-र्डिड:॥ क्ष्मार कद्रनकन्त्रायाः द्राः **জপু**গ্রোবভ্ব হ। রাজপুগ্রাম্ভ কর-गारांगवीजि नुकीखिंजः॥ क्रम्भी र्ग्या रिन्धायाः रेकरतः পরिकीर्ति छः। करनो जीवव्रमः मगाक्षीवत्र भठ পুনীর্বিচঃ॥পুকীর্বিচ ইত্যত্র পতি-তো জুবি ইতি বা পাঠ: ॥ ভীবর্য্যাণ ধীবরাৎ পুগ্রে। বভ্ব ব্লক: শ্ত:। রজ্যা তীবরাছাপি কোদালী চ বভূব হ ।। নাপিতাদ্বোপকন্যাযা• সৰ্বী তৃষ্য গোৰিতি। ক্ষুণ্ৰান্ত্

व वतावण वनवान् मृगिक् नकः ॥ **ीवद्राट मूलीकन**शयाः व ज़्दूः मक्षः शुधकाः। उ कलो इष्टि मःमर्गाः षञ्त मंत्रातः त्रका ॥ त्राक्तना मृति-वीर्याप्र अरजाः भूथम्यामस्य । स्ट-সিত শ্চাদরে জাত: ক্দর স্তেন কী-बिंडः ॥ छम्मोऽ विभुज्ना भः তিতো পতুদোৰত:। সদ্য: কোটিক जःजर्गामध्या कगजीरल ॥ क्रम वीर्याप्त विष्णाया मृत्जाः भूथमवा मह । जा उ: भूषा महारम्। ईनवाः मह খনুদ্দর: ॥ চকার বাগতীতঞ্চ ক্ষ্মি-যো বারিত স্তথা। তেন জাত্যা স প্রক বাগতীত: পুকীর্ত্তিত:।। ক্ল এ वीर्यात मृषाया मृज्रासायन भाभ-**७:। वनवरक्या मूबछा क वर्ड्य (स**हि. জাত্য:।। অবিদ্ধকর্ণাঃ জুরাক্চ নি-र्ख्या ज्ञानुर्ख्याः । (मोहाहाज्रविद्री-नाम् मुक्तरी पर्याविक जाः॥ (यहार व्यविन्यकन्यायाः (कालाकाठि ई ज्-व र । जालार स्विन्तकन्यायाः भंद्राकः भद्रिकीर्डिङः॥ वर्गमङ्द দোষেণ বস্ত্ৰ্যুষ্ট শঠজাত্য:। তা-সাং নামানি সংখ্যাশ্চ কোবা বক্তু**ং** षिक क्रमः॥ रेतरम्। श्विनीव्यमा-রেণ জাতক বিপুযোষিতি। বৈদ্য-वीर्याप म् मृत्या वज्यू इंहरवा बनाः

॥ उ ह गुामाखनका क नाजीविष পরায়ণাঃ ৷ তেভ্যান্চ জাতাঃ শুদ্রা-ৰাণ তে ব্যালগু।হিণো ভূবি। ইতি वुकारेकवर्र्ख वुकाशर्थ ३० व्यक्षायः ।। # ।। यशिष्ठ । यश हिंकि हिं वि ছড়িঃ পশুধর্মো বিগহিত: । মনু-ব্যাণা নপি প্নোক্তো বেণে রাজ্যু পুশাসতি।। সমহী মথিলা ভুঞৰ द्राक्षिभ्वदः भूद्रा। वर्गानाः मक्दरः চক্রে কামোপছতচেত্রম: ॥ ততঃ পুভৃতি ধোমোহাৎ পুমীতপতিকা• ক্রিয়॰। নিযোজ্যভ্যপভ্যার্থণ ভ॰ विगर्रेष्ठि भाष्यः ॥ 🗱॥ वाञ्चनः क-धारा दिना ज्ञासा वर्ग विकाखयः। हजूर्थ अकबाजिस **म्**रम् नासि जू न-क्यः॥ मर्ददर्शम् ज्वाम् भद्गीम् ত্যোনিষ্। আনুলোম্যেন সমূত। बाउत एक्या छ १व एउ।। खी वृनस्त्र का जा मू बिरेब क्र भाषि जान मुजान । मन्मात्नव जानाञ् माज्रानावि-গহিতান্।। অনন্তরাসু জাতানা॰ বি-ধিরেষ সনাতনঃ। দ্বে কান্তরাসু জা-जाना॰ वर्षां विन्।। विन्।। विवि ।। ব্ৰাহ্মণাৎ বৈশ্যকন্যাধা ময়টো না-भ काया । नियामः म् मुकन । । यः পারশব উচ্যতে॥ ক্ষপ্রিযার্ দু ক न्।। वा क्वाहात्रविश्वतान्। क्व

শুদ্বপু জন্ত কগো নাম পুকাযতে।। বিপুস্য ত্রিষু বর্ণেষু নৃপতে বর্ণথো র্ছ-(याः। देवनात्रमा वर्ष हेठकम्मन् वरख-তে १পসদা: মৃতা:॥ 🗱॥ ক্রিয়া দিপুকন্যাযাণ স্তো ভবতি জাতি-छः। विनात्रामागश्रवाहरो ब्राह्मवि-প্রাঙ্গনাসুভৌ॥ শুদুদাযোগবঃ क-ला हलालं काथरमा न्नाः। देवनाः बाबना विशाम् बायस वर्गमक्दाः ॥ এकास्टर चानूलामशाम्बरकारग्री यथा मृत्जो। क वृतिपश्को उष्ट भुाजित्वारम्। अब्बनि ॥ #॥ भु-আবে ধনন্তরজীলা: ক্রমেণোক্তা দিঃ क्रमनाः। जाननस्त्रनात् च भाज्रहा-वार शुरुक्तात ॥ वाक्षनामू गुक्ना-যা মাব্ৰো নাম কাষ্তে। আভী-রো ২ম্বটকন্যায়া মাযোগব্যান্ত স্থি-युनः ॥ व्यारयागवण काला ह हथा-न काथ्या नृगाः। भाजित्नास्तरम कायस मृतामभमना द्वयः॥ देवः माज्ञागव रेतरहा क्षायाय म्ड এব ভূ। পুতীপ মেতে জাগন্তে প-; রেপ্যপ্রদা জ্রয:॥জাতো নিবাদা-চ্দাৰা জাড্যা ভবতি পুরুষ: 1 म्मुङ्बाङा निवाम्गङ म वि बः কুটক: মৃত:॥ কন্তু জাত ত্তথোগা-यां प्रभाव हैं कि की खें। उत्तर

হকেন ত্বস্থা মুখ্পরে! প্রেণ উচ্যতে ॥ দ্বিজাত্যঃ সংগ্ৰেষ্ডনগভাবুভা॰ স্ত যান্। তান সাবিজীপরিভুঠান্ ে ব্রাভ্যা ইতি বিনি দিশোং ॥ ব্রাভ্যা बु बाग्रं विश्रं भाषा पूर्व कथेकः। चा रस्रताहिशास्त्री ह भू स्रवः শৈথ এব চা৷ বল্লে৷ মল্লাম্চ রাজ-ন্যাৎ বাভ্যানিছিবি রেব চ। নটক করণ শৈচব খশো দুবিড এব চ।। विमारा बु का यर जुरा जाए। मूथमाठा-য্য এব চ। কাক্ষশ বিজন্ম। চ মৈত্র: সাত্বত এব চ ।। ব্যক্তিচারেণ বর্ণানা नविष्ठाविष्ट्रात्व ह । स्कर्माणं ज्रा-(गन कायाल दर्गमक्ता:॥क॥ मकीर्ग (यान्याय जू नुजित्नामान्त्नामकाः । व्यत्त्रान्। वे जिवकाक जान् भूव-कत्रामात्रणयुक्तः॥ जूत्वा विदानक्क रेक्टर हजालक नदावमः। मागवः ক্ষত্ত্বাতিক তথাযোগৰ এব চ ॥ এতে वह मम्मान् वर्गान् बनयि छन যোনিষু। মাত্রাত্যা পুস্যন্তে পুব द्रामृह र्यानियु॥ यथा क्यानाः वर्गानाः स्या द्वाजामा सायरा यानस्या ८ ষ্যোন্যান্ত তথা বাহ্যেম্বৃপি ক্রমাৎ ॥ তে চাপি বাহ্যান্ সুবহৃ• স্ততো-প্যধিক দূষিতান্। পরস্পারস্য দারে वु क्रमयञ्जि विशर्किजान्॥ 🗱॥ यरेथव

म्पा वाजानाः वाष्ट्र बन्धः भूग्यक । তথাবাহ্যতর বাহ্য কাতুবণে পু সূত্ত।। পুতিকূল বর্ত্তনানা বাছা-বাহ্তরান্ পুনঃ । হীনা হীনান্ भुमृग्रास वर्गान् शक्षर्तमव चु ॥ भु-সাবনোপচারক্ত মদাসং দাস্ত্রীব-না সৈরিজু বাগুরাবৃত্তি সূতে দ **ज्रुत्र**ागत्व ॥ भाष्यव्यक्त दिल्ल्हा মাধ্ক সংপুস্যতে। নুন পুশ সত্য-जुन् या चन्हा जाए। २क्लाम्य ॥ नियामा भागवः मृत्य मामः (नोकर्म জীবিনা। কৈবৰ্ত্ত মিতি যা প্ৰাহ্ত রা-र्या। वर्डनिवाजिनः ॥ मृजवज्ञज्दम् ৰারীয় গহিঁভালাশনাসূচ।ভবভ্যা-यागवीय्युष्ठ कािक्शेनाः भृषक्व-यः॥ कात्रावद्या निषामाञ्च वर्णाकात्रः পুস্যতে। বৈদেহকাদন্ধনেদৌ বহি-गुर्न गुिन्यो। हथानार भाषु-সোপাক স্তৃক্সারব্যবহারবান্। আ-शिक्षका निवासन रेवस्य । सब কাযতে ॥ চঙালেন তু সোপাকো भूव वात्रमन वृखिमान्। भूक्षमाः डा-या भागः मना मक्तनगर्हितः॥ नियारखी जू हजाबाद भूधनहरी ৰসাযিন । শালানগোচর স্ত ৰাহ্যানামণি গহিত ।। সন্ধরে জা-ত্য স্ত্রো: পিতৃ মাতৃ পুদর্শিতা:।

পুছনা বা পুকাশা বা বেদিভব্যা: खकर्षा जिः।। #।। खङा जिङ्गानस्त्र काः ষট্সুতা দিলখমিণ:। শূদুগণান্ত স ধর্মাণ: সর্বেপধু সজা: মৃতা:।। ত পোৰীজপুভাবৈস্ত তে গছন্তি যুগে यूर्ण। উৎকর্যঞাপকর্যঞ্জ মনুষ্ঠে: ষ্বিহ জন্মত:॥ শনকৈন্ত ক্রিয়ালো-शाहिमाः क्षाधियकाउयः। व्यवदः গতা লোকে বান্ধণাদর্শনেন চ।। পৌণুকা শ্চোডু দুবিডাঃ কায়োজা क्तवनाः मकाः। भावमाः भक्तवा की नाः किंदाजा रद्रशः चणाः॥ यूच বাহুৰ পজ্জানা যালোকে জাতযো-विशः। (मह्वाह कार्य)वाहः मार्व (ड मगुरः म्ञाः॥ (र दिकाना मणमः দা যে চাপধৃ সজা: মৃতা: 1 তে নি-निरे उ वर्ष्ययू विकान स्विव क्या छिः ।। #।। ज्ञाना मधनात्रवा मध्छा-ना किकिट्नि छ। विदन्द काना जी कार्याः नागशानाः विशक् शयः॥ मटः न्यादा निवासाना• **उद्धि खार्याग**ः वन् । विकास हुक् मन्ग्ना भावना পশৃহি•সন।। ক্ষ্যুগুগুকুসানান্ত-विलोकावधवस्रमः। धिश्वामाः हः र्ध्यकार्यः (विभानाः जाञ्चवाहनः ॥ **হৈত্যজনশাশানেষ্ শৈলেষ্পবনে** ষচ। বসেযুরেতে বিজ্ঞানা বর্ত্তানঃ

य कर्या ভि:।। #।। চণ্ডাল খপচানাস্ত বহি গাঁমাৎ পুতিশুষ:। অপপাত্রা-क कर्डवडा धन भिषा थे गर्म छ।।। বাসা•সি মৃত চেলানি ভিন্নভাণ্ডেযু ভোরন ৷ কার্ফাযস নলন্ধার: প্র-রিবুজ্যা চ নিত্যশ: ॥ নতৈ: সম্ধ मिन्दिर भूकं रिवा वर्षा भागवत् । वऽव-शादा निथ (खवाः विवाशः मम्रेनः সহ ৷৷ অয় মেবা॰ পরাধীন দেয় স্যান্ডিনভাজনে। রাভৌন বিচ-রেযু তে পামেষু নগরেষু চ।। দিবা চরেযু: কার্য্যার্থ চিক্সিতা রাজশা-**जिः। ज्यवाञ्चवः भवरिक्व** निर्श्तवयु ब्रिडि ङ्ि।। वर्गाःक इन्तः न-**छ छ॰ यथा ना छ॰ नृशास्त्र**या। वश्र वाताः ति गृहीयुः नयप्राका छद्रगानि চ।। বর্ণাপেত মবিজ্ঞাত নর ক-লুৰ্যোনিজ । ভাষ্যক্প মিবানা-र्याः कर्या जः स्त्र विভावत्य ।। व्यनाः র্য্তা নিষ্কুরতা কুরতা নিষ্ক্রিযাত্মতা: । शुक्रयः वाक्षयश्रीर लाक कल्य যোনিজ'॥ পিত্ৰ্যু বা ভক্তে শীল• माञ् (वी खयरमव वा। न कथक्षन मू-र्य्यानिः পুक्छि॰ या॰ निष्ह्छि॥ क्ल मृत्याभि काउमा यमा मा-অোনিসঙ্কর:। সংশ্বত্যের ভট্টাল॰ নরো হল্ল মপি বা বহু ॥ বত্ত তে

**२** शंविषु आं कायस्य वर्गम्यकाः। द्रा श्चितः मह उपाष्ट्रः किनु भव विन-मा जि ॥ व्रीक्र नार्थि गवार्थि वा (मह-ত্যাগো १नुभक् उ:। क्रीवाला जुर्भ পত্তৌচ বাহ্যানাণ সিদ্ধি কারণ ।। অহি•সা সত্য মস্তেশ শৌচ মিন্দ্রিয নিগুহ:। এত সামাসিক ধর্ম চা-जूर्वाणं १ वीचान्ः ॥ शा म्मायाः वा-ন্ধণাজ্জাত: শে্বসা চেৎ পূজাবতে । অশেষান (भूषत्री का जि॰ गहज्रा-मध्याव्यार ॥ म्पूर् वाक्राजाः বেভিব্ৰাহ্মণ শৈতি শৃদুভা। ক্ষপ্ৰি-যাজ্জাত মেবন্ত বিদ্যাধৈশ্যাত্তথৈব ह ॥ अनार्यायाः ममूर्भाद्याकः गालु वम्हवा । वाक्रगा नन्त्रनार्याः खू (न्य स्र कि कि कि कि वि তো नार्या सनार्याया सार्यामार्या खरवम्थरेन: । बार्जानानार्गा माः र्य्याया मनार्य्य इंडि निक्तयः॥ डात्-ভাবপ্যসংস্কার্য্যা বিভি ধর্মো ব্যব-**প্** ভিলোমভ: ॥ সুবী क्रोंकर मृत्काख काउ॰ मन्त्राठ यथा। उथार्यऽ।-ভ্জাত আর্য্যাযা সর্ব সাকার ম হতি।। বীজ্ঞমেকে পুশংসন্তি ক্ষেত্র मत्तर मनीविषः । वीकाक्षत्व उरेथ বান্যে তত্ত্বেগস্ত ব্যবস্থিতি: ৷৷ অক্ষে

তে বীজনুৎসৃষ্ট নন্তরৈব বিনশ্যতি । अवीक्रके मिश (क्षवः (कदलः इ-ওিল ভবেৎ॥ यमाद्वीज পূভাবেণ ভিৰ্যাপ্ৰাধ্যা প্ভবন্। প্ৰিভা-**শ্চ পুশস্তান্ড তথাদ্বীজ্ঞ পুশস্যু** তে॥ व्यनार्यः नार्यः कर्याप नार्यः-कानार्यं। कियाना । जन्तु वार्या वुवीन काजा न मध्यो नामगाविकि ॥ इंडि मानत्व २। २० अक्षारयो ॥ ৰণসি: बन्। इंड्रागाहि-(काराः॥ বর্ণা জ্রী আঢ়কী। ইতি হেমচন্দু:।। বৰ্ণাঙ্কা জ্ৰী লেখনী। ইতি শদ্ ब्रञ्जावनी ॥ दर्गाष्टेः भुः गायनः॥ हिजकतः॥ জ্ৰীকৃতজীবন:। ইতি মেদিনী।। বর্ণাত্রা পু: শব:। ইতি ভটাধর:॥ বর্ণার্ছ: পু॰ মুদ্ম:। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ষ্ণ্। ইভি নিদ্ধান্ত-क्री रकोगुरी ॥ विविकः भु (तथकः। रेणा। ति থকে ২ক্রপ্রা: সুগ্দ্দে জীবক চঞ্বঃ। বর্ণিকো লিপিকর শাক্ষ-त्रन्याम विभि विविः ॥ ३७ (इम्हन्दः॥ जी कठिनी। यथा। विथ-ৰণিকা

न्याः कर्षिकाशि न्यार करिन्याः

मिन वर्तिका। इंडि हादावनी ॥
निमः। इंडि बिकाश्रम्पः ॥
काक्षनम् उंटिकर्यः। यथा। वर्तका
काद्रात १ की जु हन्मर्ति ह विष्म्मः
ति। द्वा नि नि नि की मान्टि
कर्य काक्षनम् ह। इंडि सिनिनी ॥
वर्ति के खिन्न । इंडि दोक्न ।
वर्तिनी की हित्रमा। इंडि दोक्न निर्मिण्टः ॥ वनिजा। इंडि दोक्न हिन्मुः॥
वर्तिनी की हित्रमा। इंडि दोक्न हिन्मुः॥
वर्तिनी की वर्तिका। इंडि दोक्न हिन्मुः॥
वर्तिनी की वर्तिका। इंडि दोक्न हिन्मुः॥
वर्तिनी की वर्तिका। हिज्जकद्रः॥
वर्तिनी की वर्तिका। वर्तिनाट (न.

বুক্ষচারী। যথা। বণী স্যাৎ লেথকে চিত্রকরেশি বুক্ষচারিণি।
ইতিমেদিনী॥ বর্ণসম্বন্ধিনি তি ॥
বর্ণু: পুণ নদবিশেষ:। ইত্যুণাদিকোষ:॥ আদিত্য:। ইতি সংক্ষিন
গুসারোণাদিবৃত্তি:॥

वर्जक क्षी वर्खालाइ। विम्ति इंडि ভाषा। ইভি হেনচন্দু:।।

ৰৰ্ত্তকঃ পৃ• পক্ষিবিশেষ:। ভারই ইতি ভাষা।! অশ্বস্যক্ষুর:। ইত্য-মর:॥

बर्खका जी वर्खकभक्ती। इंछामङ-

টীকাষা॰ রাযমুসট: il বর্ভজ্মা পু॰ মেঘ:। ইভি শঘ-মালা।।

वर्जन॰ क्ली वृज्जिः। ইত্যমরः॥ সাধারণবর্তুল•। ইতি শহরত্বা-वणी॥

वर्खन॰ ब्री जी ज्वनावा।। उक्-भीठः॥ कीवन॰। ইতি मिनि।। वर्खनः भु॰ वामनः। ইতি मिनि। ॥ वर्खिको जि। ইত্যमतः॥ वर्खनिः भु॰ भूदंदिणः। ইতি जि-काश्यमवः॥

বর্ত্তনী জী পেষণ ॥ পছা:। ইতি শব্দরত্নাবলী॥

वर्खमानः भुं भुर्यागाधिक वृशे
ज्वकानः । इति नियायिकाः ॥

ज्ञथ्यान् ज्ञि । ज्ञाः भर्याः

रयो । ज्ञानुकाः २ ज्ञानुकाः २ ।

इति व्राक्षनिर्यः ॥ दियाक व्रगम
रव्जा ज्ञावका भिव्रममा छि वर्छः

मानः कानः । यथा । महाजाव्रकः

भेति । मजू हर्ज्दियः । यथा । भुः

व्रखाभव्रक्षः मामीर्ष्या वर्छमान

महज्विथः ॥ क्रामिशा वर्छमान

मानः न थामि ज्ञामि भुविखः

मान्याः न थामि ज्ञामि भुविखः

मान्याः मान्याः निवर्ष्यि हर्ज्यः

। इंक् स्माद्राः की एडि उपानी उन कीउनाजार ११ भूसकी जाना वृक्षो वर्जनानदार। भईका छिक्र-छि निजानुरुद्धार । किक भई তানা ছিতত্বে বর্ত্তমানত্বেপি ভূত ভবিষ্ৎকালাভ্যা॰ সংশ্ববিবক্ষ-যা পর্বতা তত্ঃ স্থাস্যন্তি ইভ্যুপি স্যাৎ। সামীপ্যো দ্বিষ:। ভ্ত-नामीला यथा। करा नागाजानि ইতি পুশ্নে অধ্যেদাদে ईर्डमान द्वाट अया २३ मागहामि इंडि আগতোপি বদতি। ভবিষ্যৎ সা মীপ্যে যথা। কদা গমিষ্যসি ইতি পুশ্ৰেপ্ৰাৰ্হণ গঢ়ানি ইতি গমন ক্রিয়নাণোদ্যমো২ পি বদতি। ইতি मुखरवाधिकायाः मूर्गामानः॥ वर्डकृष्टः भू॰ वहीर छनः॥ काकनी उः ॥ कवावहैः। इंडि (मिनी।। बात-नानः। यथा। यजी गुष्टिरुद्रा হ্মাত্যো ঘাঃস্থিতো বেত্রবারকঃ । (नोः नाश्विका वर्डक्रका गर्बाछ। দপুৰাসিনি॥ ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ॥ वर्ख्य**ार॰ क्री लो**रुविर**म**यः। विদ् রি ইতি ভাষা। ইতিকেটিৎ। তৎ পর্য্যায়: । বর্ত্তক্রি ২ বর্ত্তক ৩ (लाइमक्रद्र 8 नीलक १ मेल (लाइ अ नीलक १ वर्खालाइक ৮। অস্য গুণা:। কটুর্ণ। তিক্তর্ণ। শিশিরত্বণ। কফ দাহ পিত্তনা-শির্ণ। মধুরত্বণ। পিত্ত দাহ শন্ন-র্ঞা ইতি রাজনিঘট:।।

বক্তি: জী ভেষজনিৰ্মাণ ৷৷ নযনা-

खनः॥ लथः॥ गाजानुलभने॥
मीभम्मा॥ मीभः। ইতি নেদিনী
।। आ। वर्डिविष्मर्ता यथा। कठकंनऽ
कलः मञ्जः मिक्तवः जुउदगः वहा।
रक्ता जनाखनः क्लोनुः विस्त्राः।
नि मनः मिला॥ अवाः वर्डि इंडिकामः छिमितः भहेलः छथा।
ইতি गाक्रफ ५०० स्थुउवः॥
वर्डिकः भूः भक्तिविष्मयः। दहित ইতি हिन्दी स्था। उद्युवकायः॥
वर्डिकः र वर्डी १ गाञ्चिकायः॥
वर्डिकः र वर्डी १ गाञ्चिकायः॥
वर्षिकः र वर्डी १ गाञ्चिकायः॥
वर्षिकः निर्मायः विर्मे भूष्टिमः।
उद्युविद्युवद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्युविद्

বর্ত্তিক। জ্রী বর্ত্তকপক্ষী। ইত্যানর:

। বর্ত্মনি বর্ত্ত ইত্যাচ্ বর্ত্ত: ।

স্বাথে ক: বর্ত্তক: । ভার ইতি
থ্যাত: । বৃতি লতিভ্যাণ তিক:

বর্ত্তিকা জ্রীলিকা। বাট্ভার ইতি
থ্যাতা । নামন্ব্য নিদ নিত্যার
দীপিকা। বর্ত্তিকতি জ্রিয়া শীত্ত্ব

পুতিবেধার্থণ দ্ববোকপাদান মিতি भाषवी। क्रमाज्य भूमणंनार्थ निजि রাযমুষ্ট:। ইতি তড়ীকা সারসু শরী।। সাচ বটেরপক্ষী ইতি না-মু খ্যাজা। অস্যা না'স ওপা:। बर्डिका मधुद्रा क्का क्क भाक्ड নাশিনী। ইতি রাজবল্লভ:।। অ बण्की। इंजि ब्राबनिर्घणेः ॥ वर्जिः । বাতি ইতি শলিতা ইতি পলি-তা ইভিচ ভাষা। ইত্যুণাদিকো-यः॥ 🗱 ॥ त्रा लक्षविषा। यथा। পদাস্যভবা দর্গর্ভস্যভবাথবা । भावजा वास्त्री वाशि कवाकाः বোক্তবাথবা। বত্তিকা দীপকৃত্যে যুসদা পঞ্বিধা মৃত। ॥ ইতি काविकाभूबारा ५৮ व्यर्गायः ॥ বর্ত্তিক: ত্রি वर्खन्**मोनः । उ**ৎ-भर्यायः । बर्खनः । ইত্যমন্তः ॥ বন্তী। ইতি ছেমচন্দু:।। ধর্ত্তিব্যমাণ: ত্রি ভবিষ্যৎকালাদি: ।। বর্ত্তনপুগেভাবাশুগ:।ইতি রাজ िर्घफेः॥ बर्खी जी बर्खिः। ইত্যমরটীকা।। ∢डीं वि বর্ত্তিফু:। ইভি হেন-हन्पुः ॥ वर्ड्न वि शानवस्र। उरनर्गायः । निख्युः २ वृद्धः ०। ইত্যমतः॥ | वर्जा की शशाः। ইত্যनतः॥ निवः

মণ্ডলাধিত ৪।ইতি শবরত্বাবলী ।। भा मन्मूर्गण्डं रखानि यथा। मन्दूर्ग गंडिंग्डानि मूच शरान्त् पर्णगाः। हकावहरे जिनक मृष्ट्र भूरे भाग-काः ॥ चावर्खः कमछ। ल्ञागृहः ছ अभ्नकः। बानवान मही-बान ठर्षेकः भागकारगः॥ ॥ বৃত্তানি যথা। বৃত্তানি বাহু নার্ছ ক্ষম ধ্যিল মোদকা:। রথাক লাবক কল্প ছান্তি ছান্তাওকাদ-यः ॥ कर्नशाम जुजाशामाक्ष्टे-ठाभ घढाननः। मूजिका भतिथा यागन इत्र जुगाहरः ॥ इंडि कविकन्ननजागा २ (भूबखबरक ७ **क** मून ।। वड्नः क्री ্গুঞ্জন•। ইতি রাজ-निर्घणः॥ बर्कुनः भू कनायिताभवः।वार्हु-न।। ইতি ভাষা। यथा। कलायमऽ जाया (जना जिन्ति) वर्जु (माइंगी । ইতি শব্মালা ॥ बर्जुना जो उक्नाठी। ऐरकाद-বাঁটুল ইতি ভাষা। ইতি হারা-বৰ্ণা ॥ बङ्गी श्वी गन्निशृली। इंडि द्राविनर्घणः॥

ছদ:। ইতি মেদিনী ।। বৰ্জানি: স্ত্ৰী পদা: । ইভুগোদি-কোষ: ।। .

दर्ख क शृक्षिहित्साः। ইতি कवि कन्नक्रमः॥ क वर्ष्विछ। व्वक्रिश विडादिव शृक्षिहित्साक शाठापि-हे निष्पावमा शाठेक्ष्रापित्का त्क्र व्रविडाङा वाष्यिछ। त्वन क्रा-हिट त्क द्रशास्त्री वर्षाक हेडामा व्यात्व हेडापि व्यमा ज् वर्षात्व हेडापित्वमः। हेडि पूर्गा-पामः॥

वर्षः क्षी जीनकः। इति (हमहम्पुः॥ दर्षः पूः वृाक्षणयक्षिका। इति क्षेत्राश्चरः॥ पूर्तिः॥ (हमः। इति वर्ष्वराष्ट्रवर्षनारः॥

रक्ष हः भू॰ त्राक्ष गरिका। इंडा-नदः॥ भ्राक (इन्ति ह जि ॥ रक्ष किः भू॰ ष्ट्री। इंडानदः॥ रक्ष की भू॰ वर्ग महत्र का जितिस्मयः । वह इंडि हिन्सी जाया। ज्य-भर्यायः। ष्ट्री २ वर्ष किः २ उक्षा ८ मृज्यादः ६ द्रथकादः ५ द्रथकदः न का ४ उद्दे ৮ का ४ उक्ष कः २। इंडि

मध्यक्षावनी॥ वर्षानः क्षी (इन्नः॥ वृष्तिः। हेडि (मिनित्री॥

বি यिर्किषुः। ইত্যমর:॥ वर्षनी बी यहो। इंडि सिहिनी॥ मभार्क्कनी। इंडि (इमहन्तुः ॥ मनानभादिवानयः। वम्ना इंडि ছ वि। । यथा । व्यालुः जी कर्वती পারী বর্জনী চ ললন্তিকা। ইতি জ-টাধর: ॥॥॥ প্রভিষ্ঠাদিকর্মণি তৎ পুৰোজন যথা। পুতিষ্ঠা যস্য দেৰ-म। उराथाः कलमः नाम्यः। ঐ-मान्।। भूकारम्यास्य अस्तिति ह वर्षनी।। कलमः वर्षनीकिव गुरुान् বাবোয়তি তথা। আসনে তানি नर्राणि भुगवाथाः कालम्खरः ॥ স্ত্রগারি রহুগর্ভ বন্ধবৃশ্মন বেপ্টি-छ। मार्को विशे गक्क विशे न्वारार क्लन ७३:॥ (५वड क्लाम भ्डा) वर्षना वज्र मूखमः। वर्षना जू नमायुक्तः कलमः ज्ञामरयसन् ॥ दर्बनी॰ थात्रया निक्षत्रगुर्छ। धात्र-বেৰতঃ। অভ্যৰ্চ্য বৰ্জনী জ্ফ্ৰেণ্ছ-ণ্ডিলে দেব মৰ্চ্যেৎ ॥ ইতি গাৰু-(५८४ व्यथ्रायः ॥

< क्षंगानः পু॰ এর গুর্ক:। ইত্য-মর:।। পশুভেদ:।। শরাব:।। বিষ্টু:। ইতি মেদিনী।। জিনবি-শেব:। তৎপর্য্যায:। বীর:২ চরম-তীর্থকৃৎ ৩ নহাবীর:৪ দেবায্য: ৫ व्यक्काउनम्पनः । ইতি एक्स्टम्पुः
॥ धनिनाः गृहितिष्मयः । यथा ।
चित्रका वर्षानाक नम्पावर्त्वामः
या १११ ह । ইতি হলायूथः ॥ चन्नामथाउपमः । यथा । शुक्ताः
नामथाउपमः । यथा । शुक्ताः
नामथ ष्माणो ह वाद्यम्भी भोज
वाहकाः। वर्षाना उपमानिश्च शुन्
श्वातिष्यामयापुषः ॥ ইতি क्याः
िख्य कृष्णहकः ॥

বর্জনান: পু: শরাব:। ইতি ধরণি: বর্জনানক: ত্রি বৃদ্ধিবিশিষ্ট:। শ-রাব:। ইত্যমর:।। স্বার্থে ক পুত্যথে এর গুবৃক্ষশ্চ।।

वर्ष्णाभन• क्री नाषीहरून•।**यथा**। অর্জরাত্তে বসোধারা পাত্যেদ্ভ ড সর্গিবা। ভতে। বন্ধাপন বদ্ধীণ নামাদে: করণ মম।। কর্ত্তব্য তৎ-क्रनामाखी भुजार नवभीमित । यथा सम उथा कार्य्या जगवजा मरहा८मवः ॥ वर्षाभनः नाडी-(हमनः। ইতি তিথ্যাদিতञ्जुः॥ ৰি পুস্ত ।। ছিন্ন ।। পূরিত। ইতি মেদিনী॥ ব্দিঞ্ঃ জি বৰ্দ্ধনশীল:। তৎ-পর্য্যায়: । বর্জন: ২। ইত্যমর: ॥ চর্মা ইত্যুণাদিকোষ:॥ ली वक्ती स्रो हर्माइब्द्रः। वही इंडि ভাবা।তৎপর্য্যাক্ষ্য নজু ২ বরভাবা।তৎপর্য্যাক্ষ্য নজু ৪ । ইতি
ভরত: ।।
বর্গ: ল্লী ক্পা ইতুগাদিকোবঃ ৷৷
বর্ফ গভ্যাণ। ববে । ইতি কবিকল্লক্যাং ৷৷ বর্ফতি । ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷
বর্মা ল্লী ভনুত্রণ। ইত্যমরঃ ৷৷
বর্মাকটকঃ পুণ পর্পটঃ ৷ ইতি রাজ্ঞনির্ঘন্টঃ ৷৷

वर्णकवा जी मधना। हामात्रकवा हेि जाया। हेि नद्रज्ञावली ॥ वर्णा नुः क्वबियम्। नक्विः। यथा । नयां छ॰ वाक्रानात्राह्यां छ॰ क-बियम्। ह। ७४ मामा छकः नाम नुमल देवमा मृपुरयाः ॥ इंडि শাদ্ধতত্ত্ব্ত শাতাতপৰচন ॥ विर्माः भू भएमऽविष्मयः। वानि ইতি ভাষা। অস্য মা•স ৩ণাঃ। **७कद्रः। व्याद्रः। क्वायद्रः। ब्रङ** পিত্ত নাশিত্বঞ্। ইতি রাজবল্লভঃ বৰ্মিত: ত্ৰি ব্মযুক্ত:।কৃতস্মাহ:। उ८ भर्यायः । ममकः २ मञ्जः ० দ • শিতঃ ৪ কূচ কছ ট. ৫। ইত্যমরঃ ॥ উচক্ষট: ৬। ইতি সূভ্তি: ॥ ব্যুব: পু মৎস্যবিশেষ: 1 বা-নিৰূব ইউ ভাষা। অস্য **না•স**-ख्याः । वाज्याणिषुः। त्रिकषुः।

পুৰ্দোৰ নাশিত্ৰ । ইতি রাজ-বল্লভ: ।।•

्वर्ष्युः ্পুথান । ইত্যমর:॥ (मुक्तः। ইতি মুদ্ধবোধব্যাকরণং॥ वर्ग्धः भु॰ कामरम्बः। ইভিমেদিনী॥ वर्षा जी गिडियता। ইडामद्रः॥ কন্যা। ইতি মুধ্ববোধব্যাকরণ ॥ नीनमिकका। इंग्रु-वर्षभा मतः।। नीलाकात्रवर्गा मक्किकः वर्सना । ভণভণিয়া ইতি খ্যাতা। মল্লিকা: খ্যাযা॰ ইভ্যেকে। বরিভি বণতি বর্ষণা। বুণবণভণ শদে পচাদিত্বা-मन् जान्। किया वृगी उन् जिम्वाः ভদতে ইতি বৃঙে। বিচি বর।বণ তে রণি বণা ভতঃ কর্মধার্যে বর্ষণা । ইতি ভটীকাষাণ ভরতঃ।। वर्बत्रः क्षी श्रिकृषः॥ भीक्ष्ठम्पनः॥ বোল। ইতি রাজনিঘণী:।। বর্ব: পু॰ পানর:। সচনীচরাডি: । কেশ:। বাবরী ইতি ভাষা ॥ চক্রল:।। দেশবিশেষ:।। ফঞ্জিক। र इंडि (यमिनी ॥ वृक्षविष्णयः। कालवावुरे देखि ভाषा । ७८-भर्यायः। सुमूधः २ भद्रमः ० क्ष বর্ষরকঃ ৪ সুকল্মজঃ ৫ গন্ধপত্রঃ ৬ প্তগন্ধ: ৭ সুবাহক: ৮। অস্য **७**गाः। कट्टेवः। উक्षदः। সूगक्तिदः 🏻 । বান্তি বিসর্গ বিষ বুণোষ নাশি-ত্বক। ইতি রাজনিঘণ্টঃ ॥

वर्षत्रकः क्री हन्त्रस्तः । उदशर्यप्रायः। वर्षद्राव्यः २ त्यं उवर्षत्रकः
२ मीजः ८ मृगक्तः ६ शिखादिः ५
मृत्रज्ञिः १। यम्प्रख्नाः। मीजनदः
। जिङ्कदः। कक् माक् ज शिख क्षष्ठ
क्षृ वृत नामिदः। वित्मया पुकरमाय जिल्लकः। ইতি द्राजनिर्यकः।।
वर्षत्रा जी शृज्ञ जिल्लाः। माकर्ण्यः।
३ जि स्मिनी।। सिक्कार् जमः।
३ जिस्तत्र द्रावती।।

वर्षता वर्षता कु पूर्कि विश्व । वर्ष्ठे वर्षता वर्षे कु पूर्कि विश्व । उर् भर्यता । वर्षे वर्षता व ज्वी । उर्भ वर्षता व ज्वी । व्यक्ष्मका । वर्षता । व्यक्ष्मका । वर्षता क्ष्मका । वर्षता कर्मा । वर्षता कर्षा । वर्षता । वर्

विवाशकः। ইতি ভাবপুকাশः॥
वर्षत्रीकः श्रू॰ वृष्णागयिक्षेकावृक्षः॥
वर्षत्रीकः श्रू॰ वृष्णागयिक्षेकावृक्षः॥
व्यक्षणिक्षञ्जाः। ইতৃशामिकावः॥
व्यक्षणिक्षका । वावृहेकुणनी ইতি
ভाषा। ইতি শব্द मिनुका॥ महाकाणः। ইতি হেনচন্দুः॥ তর
প্রণী ব্বকার।দৌ পঠিতো হ্য॰
কিন্ত মেদিন্যা॰ চর্চরীকশব্দস্যাব্যর্থ:॥

वर्षिः भू धमातः। इज्यानिकायः॥ यत्र्वतः भू तृक्षविष्मयः। वादना इजि छाषा। छर भर्यग्रायः। यूगना-कः २ कप्टान् ० जीक्षकप्टेकः ८ त्यागृहः ७ भर्विकीकः ७ नीर्य वर्षः १। दक्षास्यः ৮ मृत्वीकः २

वर्वा खी वर्बती। ইভি শদ্চন্দ্রিকা॥

খ হুং। উঞ্চত্বং। জক্ষ কা**সাম র**ক্তা-ভিসার পিত্ত দাহাশো নাশিত্বঞ্চ । ইতি রাজনির্ঘটিঃ।।

वर्षः भुः क्री वृश्विः ॥ कष्ट्रवीशाः भः॥ वर्षः ॥ इउप्रतः ॥ कष्ट्रवीशः ॥ इिं अस्ति ॥ ययः ॥ इिं एक्स-हिन्तः ॥ अ॥ यथं मश्चिशासाः वर्षे वर्षसः ॥ उव कष्ट्रवीशम्य नवस्यं वि-ভাগো यथा । यञ এव क्षाः मश्च जूरवाद्यीशा कष्ट्रभूकः भान्यवि सम

ক্রৌঞ্চ শাক পুষর সংজ্ঞা:। তে-খা॰ পরিমাণ পূর্বমাৎ প্রমাদু ভরোভরো যথাস-খ্যা দিওণনা-নেন বহিঃ সন্তত উপকুপ্তাঃ। कात्रारक्त्रामार मृत्राम घ्टाम कोदार प्रविम् श्लाप मृत्काराः न-**छ जन५**य:। मछ दोन পরিখः ইবা-ভ্যন্তরন্বীপস্থানা একৈকশ্যেন য-থানুপূৰ্ব সপ্তখলি বহিন্ধ পৈষু প্-থক্ পরিত উপকল্লিডা: । তেষ্ भून जंशाखारियु वस्त्रि शैभाक वर् नृत्डानाञ्चकानाग्नीर्ध्धन्निक्ष ४३३-বাহু হিরণ্রেতো ঘূতপৃষ্ঠ নেধা-তিথি বীভিন্থার সংজ্ঞান্ যথা-**ज॰**१थार्रेनेटेककियासक स्मक स्मवा-বিণাতি নির'ব। তম্য হ বা এতে (म्राकाः । भिरावुख हार कर्या का **ৼনুস্ব**্যাছিলেশ্বর• । গো নেমিনিলৈ-क्रकाहाया॰ मून् मखदाबिधीन्।। ছায়া গুন্ তনো নিরস্যন্। জু সং-স্থান কৃত্ত যেন স্বিদ্ধির বনাদি ভি:। শীমাচ ভূত নিব্ তৈয় দীলে দ্বীপে বিভাগশ:।। এবং পিতরি मः পুरुख उरन्णामान वलनान बाद्मीख्ना बहुबीमोकमः भुटा छेत्र-मवद्ययात्वक्षाः भर्यप्रवाभाव । **जम्भन्छ।** जगवानामिशूक्**यः न**म-

नि गायडी॰ প्रविक्ति नानाक्षद्रम মভিযাপয়ামাদ ৷ তদ্যা মুহ্বা-श्रिज्ञान् म द्राज्ञवर्ग्य यात्रीर्था नान्ति किः भूक्ष इत्रियार्यणावृ त्रमाक হির্থায় জ্ব্রু ভদাশ কেত্যাল সং-ळान् नवभूश्रानजनगरः। चाशीधुः সুতা**ন্তে মাতু রনুগু**হাদৌৎপত্তিকে নৈৰ সংহননবলোপেতাঃ পিত্ৰা বি ভক্তা আত্মতুল্যনানানি যথা বি-ভागः अधूषीशवदानि वृजुज्यः । य-ক্মিনব্রস্থাণি নব্যোজনসভ্সা্যানা-নি অষ্ট্রভি মর্য্যাদাগিরিভিঃ সূবি-ভক্তানি ভৰম্ভি। এষাং নধ্যে ইলা ठुट॰ नाया अध्यत्वयं यम्। नाल्या-মবস্থিত: সর্বত: সৌবর্ণ: জলগিরি-द्राह्मा (सक्षी भाषान मनुषारुः क ণিকাভ্ত: অবল্য কন্ল্সঃ মূর্চ্চন ছাত্রিংশং সহসুগোলন বিভভো মৃ লে ৰোডশসাহসু• তাৰতান্তভূ'-ম্যা পুরিষ্টঃ ৷ উত্তরোভয়েণেলা र्ज भीवः (धंडः म्यवान् इंडि ত্ৰবো ব্ৰন্যক ছিব্নখ্য **জৰূণা ব**ৰ্বা णाः नर्यामाणित्यः भागायञा উভ-यणः कारब्रामावधरश विमञ्जूरशः कर मृथव औक इनः भृदंबाए भृवं **या** पुरुषा उद्यक्त मा भाषिका । । न देशया अवाङ्गिष्ट । अवः मिक्ता

নেলাবৃত• নিৰখো ছেমকুটো ছিনা-नय इंजि भागायजा यथानीनाम-यः। व्ययुज्याक्रातारमधा रुत्रिवर्ष কি-পুক্ষ ভারতানা যথাস থ্য । उरेथरवनाव्ड मनात्रन भृदिन ह भाग । दहस्या र नावानी व्यविषय । ষিসহসু॰ পপুথতু: কে সুমাল ভদা-चरवाः मीमानः दिनशाल । ভा-त्राज्याध्यान् वार्य महिरहेणाः म-विवहतः। स्वाया सक्व नुष्टा दि-নাক খ্রিস্ট খাবভ: ক্টক: কোবু: সংখ্যা দেবগিরি র্থায় মুকঃ খ্রীলৈলো **(बन्ध**रहे। मह्हरन्तुः नाब्रिश्चादाः विज्ञ)ः শুক্তিখানুক্ষণিরিং পারিপাতো দ্রো-ণ চিত্ৰসূটো গোৰ্জনো রৈবভক্: कञ्ञानीत्वा शाकामृथ हेन्त्कीवः কামগিরি রিভি চান্যে শভসহসূ मः रेगना (उषाः निउष्णु ज्या नहा নদ্যক্ষ সন্ত্যসন্থ্যাতাঃ। এতাসা ম পে৷ ভারত্যঃ পুজা নামভিরেব পুন ছীনা নাজানা চোল সৃশন্তি। চলুক শা ভামুপণী খবটোদা কৃত্যালা रेवरायत्री कारवर्षी (दक्षा नयसिनी শকরাবর্জা তক্ষভদা কৃষ্ণবেল্লা ভীন-तथी लारावत्री निहिंक। शलाकी ভাপী রেবা সরসা নর্যাণ চর্যার তী व्ययः (नानण्ड नाम गर्नन्मी विमः

भृति चंतिज्ञण। विशासा कोशिकी नन्ताकिनी यमूना मद्रश्ली मृणवजी গোনতী সর্যুরোঘবতী ষধ্বতী স **%व**ठी मूर्यामा मठक महत्तुं जागा মক্ৰুধা বিভন্তা অসিক্লী বিখেতি महानम् । अभिशासक वार्ष भूकरिय ল্কড অভি: শুক্ল লোহিত কৃষ্ণবৰ্ণেন **बा**ब्राज्ञन कर्माण मित्र मान्य नावकः গভযো বস্থ্য আত্মন আনুপূর্বেণ नर्बाद्यद मर्खियाः विधीयसः। यथा বৰ্ণবিধান মপাবৰ্গশ্চ ভবতি ৷৷ ১৷৷ ঞ্চা৷ वाजः श्रक्षां नाः भुमान वकः ণ সংস্থানতো বর্ষবিভাগ উপব-ণ তে। প্লক্ষা জন্ব পুমাণো দীপা খ্যাতিকরো হিরণাষ উত্থিতো য-ত্রাণ্নি ৰূপান্তে সপ্তক্ষিস্থ:। তস্যা-ধিপতি: পুিযুবুতাআজ ইধাজিহা তং षील॰ मधदर्वानि वि**ভक्तः म**धवर्व নামভ্য আত্মজেভ্য আকল্য্য স্ব্য মাজ্যযোগেনোপররাম।অশিব ব্য-সংস্ভদুং শাস্ত কেন নম্ভ নভ্য মিতি বর্ষাণি। তেযু গির্থে। নদ্যক সপ্তিবাভিজ্ঞাতা:। মণিক্টো বজু-কুট ইল্ফুসেনো জ্যোতিয়ান্ সূবর্ণো ছিরণ্যগ্রীবো মেঘমাল ইতি সেতু रेणवाः। अक्ना रूजना आक्रीत्रत्री সাবিত্রী সূভাতা পদ শুরা সভ্যস্তার

जिमहामग्रः॥२॥॥॥ श्रक्ष जनी त्निक्तुत्रस्मारम्नावृत्त्वा यथा उषा षीलानि नान्यता हिस्ट्विनानः সমানেন স্রোদেনাবৃতঃ পরিবৃদ্ধে। यव हरेव मान्यनी श्रकायामा। छः দ্বীপাধিপতিঃ প্রিবুান্নজো যজ্ঞ-বাহ: স্বস্তেভ্য: সপ্তভ্য ভলামানি সপ্তবর্ষাণি ব্যভৱশা সুরোচন সৌ-मनमा त्रमनक एत्ववर भादि जुन মাপ্যায়ৰ মভিজ্ঞাত মিতি। তেযু वर्षामुखा नम्। म मोक्षवा किन्छा-छाः। जूबनः भठभ्रतः वामस्यः चन्तः ज्यूनः शृह्यवः मर्मुन् द्रिजि। अनुमठी निनीवानी नदः ञ्जी अरु त्रजनी नन्ता त्रारक्षि॥ ० ।। 🛊 ।। এव॰ সুরোদাছছি তাদ্দি ।: नभारतमात्र म्राजापन यथा भूर्वः ज्ञनदीला यश्चिन् ज्ञनेख्या (५४-কৃত স্তদ্বীপাখ্যাপনো জ্বান ইবা-পরঃ সুশন্নরোচিষা দিশো বিরাজ-ষতি। ভদ্দীপপতিঃ পুৈষ্বুতো রা-জন্ হিরণ্যরেতা নাম স্ব দ্বীপণ সপ্ত-ভ্যঃ শ্বপুশ্লেভ্যে যথাভাগ বিভ-জ্য স্বৰণ তপ আতি ছে। বসু বসু দান দৃঢক্চি নাভিভপ্ত সভ্যবুত विश्रुनाम (मवनाम् छ) (खराः वर्षयू भीमागिद्रायाः, नम्प्रका जिङ्काजाः

সংখ্র। বজ শততুঃশৃহঃ কপিল শিচ-जक्रो (५वानीक छेक् रहामा पुरिका इंडि। त्रजबन्धा स्यूबन्धा भिव-বিন্দা শুত্রবিন্দা দেবগর্ভা ঘৃডচুগুতা মন্ত্ৰমালেতি ৷৷ 🕏 ৷৷ তথা বহি: क्विक्वीरमा विकाः समारान की রোদেন পরিত উপকৃপ্ত:। বৃতো यथा अभद्रीला शृखाहन। यश्चन् ক্ৰৌঞ্ৰামা পৰ্যভৱাজো দ্বীপনাম নির্বর্তক সাজে। ভঞ্জিলপি পৈুযুর্তো ঘূতপৃষ্ঠো ৰামাধিপতিঃ যে দ্বীপে বং ৰ্যাণি সপ্ত বিভক্ত তেবু পুএনামসু मक्षमक्षामान् वर्षभान् निरम् । सर खगवान् खगवजः भव्रमकन्राभ यः শস আত্মভূতস্য হরে শরণারবিং न मुनबगाम । जाजा मधुकरहा भ्यम् हः मुदामा जुनिक्का लाहि-ভানে৷ বনম্পতি বিভি মৃতপৃষ্ঠসূতাঃ । ८७वा॰ वर्षाभव्रयः महिश्व वर्षाभा-ভিখাতা: শিল্পে বৰ্জনানে ভোচন উপবৰ্ষণো নৰেং নদনঃ সুৰ্যভোভদু ইতি। অভযা অমৃতৌদা আর্য্যকা র্ভার্থবভী রূপবঙী পথিত্রবভী শুল্লে जि ॥ दश # ॥ अव• भन्न खाद की · রোদাৎ পরিভ উপবেশিতঃ শা-क्वीला वाजि नज्ञक्रावनायामः मनात्व दक्षिमाखारस्य भन्नी उः।

যিমিন্হি শাকে৷ নাম নহীকৃহ: স্বক্ষেত্র ব্যপদেশকঃ। যস্য হি মহা-সূরভিগন্ধ তত্ত্বীপ মনুবাসহতি। ভদ্যাপি পৈুষরুত এবাধিপতি নামা মেধাতি**থি:। সোপি বিভন্ন্য স**প্ত-বর্ষাণি পুএনামানি ডেবু স্বাত্মজান্ नुरद्राकव मत्नाकव विभाग वृत्रा-নীক চিত্ররেফ বহুরূপ বিস্বাধার मः जान् निवान। विन जीन् ययः छः গ্ৰভ্যনম্ভ আবেশিভমতি স্তপোৰ-ন• পুরিবেশ। এতেষা• বর্ষমর্য্যাদা-शिद्राया नम् उन्ह जल जरिलव। देना-न উक्ष्म्राच्या दवा छम्: च छादचारः সহস্সোতা দেৰপালো মহাৰস इंडि। बन्धा आयुर्म। উভयम्ब्रिब-পরাজিভাগঞ্পদী সহস্মৃতি নিজ-ষ্ভি ব্লিভি॥ ৬॥ ঞা। এব মেব দখি-মণ্ডোদাৎ পরতঃ পৃষ্করদ্বীপ স্ততো-দ্বিগুণাযাম: সমন্তত উপকৃপ্ত: সং 1-নেন স্বাদ্দকেন সম্দুেশ বহি রাবৃতঃ । उद्योभगरथा मानस्माखद्रनारेमक-এবাৰাচীৰ পরাচীৰ বৰ্ষযো মৰ্য্যাদা-हत्ना श्रृ उत्याहात्नाहु । यञ जू हडम्यू निक्कृहदादि भुदानि लाः कशालानाः। यहुशति द्वार मूर्यप्रवय-স্য মেকু পরিকামত: সমুৎসরা-অুক চক দেবাহোৱাৰাভ্যা পরি-

निज्यः नूर्वनिष्यविनः । कम्बुद्यील মহাদেব• যম্ভন্তি শতত• শিব•া।#॥ उथा कि भूकार विभागानवा एम-निवाः। मन्वरं मह्नुनि नीविड श्रक्राडाबनाः ॥ यद्यक्ति जञ्जः (मः . व॰ ठलुम् किं ठलुम् थ॰। धारन सनः সমাধাৰ সদা বা ভক্তিসংযুতা: ।। 🕸 ।। उथा ह इतिवर्ष १ शि भर्। व्रज्ञ निष्ठाः। मन्पर्यन्त्रना कीवडीक्त्रमाणिनः॥ छव नादारणः দেব বিশ্বযোনি সনাতন েউপা-সতে সদা विष्णुः भानवा विष्णु ভावि-তাঃ ৷৷ তত্ৰ চন্দুপুত্ত শুড়ুত্ব শুজায়-िकनिर्यालः। विभानः वामूरम्वमः भातिकाञ्चनाम्बिन्।। ह्यूबाब मः (नोभम्) हजुरखात्रन मःयूजः । श्ना-कारित्र मंगानि यू कि जूगक्क अभुम्भ ।। माहिक बंखरेन यूकः (प्रवाध গ্ছোপন । ৰণপ্তম্ভ সহসৈত সর ত: সমলস্কৃত ৷৷ হেমসোপান সং যুক্ত। নানারহোপশোভিত। দি-ব্যসিংহাসনোপেত সর্বশোভা স भन्नि छ॰॥ मह्याज्ञिः बाद्भागीरेव र्न দীভি শোপশোভিতং। নারায়ণ गरेत्रः मुरेष (बिराधायन छ८ गरेत्रः॥ यागिकिक मनाकीर्गः श्रायक्तिः भू क्र १ इति। खर्ण्डः मञ्ज भीज

र्यमाजिक माध्य ॥ जन एवा पि-ক্ষেৰ্স্য বিক্ষো ব্ৰমিচডেক্স: াপ্লা-कानः नर्वकानस्य यस्यानः नुसर्व-তে ৷ শাবস্থি হৈ বৃক্তান্তি বিলাসি त्वत वामान्नमाः । जित्वात्वीयनमाः निन्धः मना मधनख्यभद्राः ॥ सः॥ इवाव् अध्यवं बद्कनद्रजानि-नः। बर्तारण जरुजानि वर्षानाः देव-श्रित्रोयुषः ॥ 🗱 ॥ जात्राज जू जियः **পূ**रमानामां क्याः পुकीर्खिजाः। नाना (एवाईरन यूका नान। कर्णाणि अर्वरङ ।। भन्नमानु र्यंड॰ (ज्वाः मंड॰ वर्वाणि जुबुजाः। नवरवाकन जाहमु वर्ष मिष्ट नुकीर्खिष्ठः ॥ कर्षाकृमि व्रियः विन् नद्राण याचिकाद्रिणः। यह-(स्तु। यगरः त्रशः मूक्तिमान्क शः ৰ্বত:৷৷ বিদ্বাস পারিপারক সপ্তাত্র ष्ण পর্ব তাঃ। ইন্দু ছীপঃ কশেক্ষা :-खाम्वर्ण गङ्खिनान् ॥ नागदीश खवा मोरम्या गन्नर्व खुव वाकनः । অযন্ত নবম ভেবাং দ্বীপক্ষ সাগরা-বৃতঃ।। যোজনানা সহসূত দীপো **१वः मक्षि**णांखतः। भूर्वं किताञा खन्। एक निष्य वर्गा ख्या । वा-ऋगाः कविया दिन्। म्ला म्मू স্তথৈৰ চ। ইছ্যায়ধ বণিল্যাভি ৰ্বৰ্ড-्बराज मानवाः॥ मुबर्छ भावना नम्

**भाइंत्ज**रे**ज**़ा विनिःमृजाः । **भ**ाउक कन्तु जामा ह नद्रयू यंगुना उपा ॥ ইয়াবভী বিভন্তা চ বিপাশা দেনি-ক। ছত্:। গোনতী ধৃতপাপা চ ् बाङ्गा ह मृत्रम् श्री।। कोनिकी ला-হিতা চৈৰ হিমৰৎপাদনি:সূতা: ১ विष्मृष्ठि व्हिष्मञी वुउद्मी जिविष् उथा।। भर्गामा वन्त्वा हिवं महानीत्रा भरनाद्रमा। हर्माई जी जथानूना दिहि-শাবেত্ৰবভ্যপি।।শিশু: শশিন্যপি তথা পারিপাত্রাশুযা তথা। নর্মদা স্রসা শানা দশার্ণা চ মহানদী ॥ मन्ताकिमी हिक्क्ष्री जामना ह नि-শাচিকা। চিত্রোৎপলা বিপাশা চ बाक्षना वाङ्वाहिनी ॥ हिनव**८ शाः** দলা নদ্যঃ সর্বপাপহর। নৃণাণ। তা-भी भरगको निर्विक्ता भी खाना ह सङ्गाने हो।। (वन्नः देवज्रानी देवव वनाः का ह अभव जी। (जाया हिन सर्। গৌরী দুর্গা চান্ত:শিলা তথা।৷ বিন্ধ্য नाम्यून्जास नराः भूगाइनाः म् ভाः। श्रायञ्चा विभामा **চ** नन्तः गा मन्द्रगामिनी॥ क्या भानानिनी रेहव अविका वः नकाद्विगी। मुक्ति-মংপাদসংজাতা: সর্বপাপহরা নৃ ণাং ৷ আসাং নৰুগ্ৰন্যত শতশো षिजलुक्याः। मर्वाः भागस्याः भू-

भाः मानमामापि कषामू ॥ ভাষিনে क्रक्शका म्युर्ह्णाम्या कराः । भूरवं (एणाहिकारेण्डव कामक्श-निवानिनः ॥ अपुाः कलिक् मगशा দাক্ষিণাভ্যাক সর্বশঃ। তথা পরা-স্তাঃ সৌরাষ্ট্রা: শূদুভিরা স্তথাবুদা: .॥ यानका यानवारेण्य भाविभाज নিবাসিন:। সৌবীরা: সৈল্পবা ছ্ণাঃ भालाः कन्धनिवाभिनः ॥ युना वामा ख्यामधाः भावमीका खरेषव ह। আসাং পিৰম্ভি সলিলং বসন্তি স্-রিতা॰ সদা।। চত্ত্বারি ভারতে বর্ষে যুগানি কবযো ধ্রুগন্। কৃত॰ ত্রেডা দাপরক কলিকান্যরনকৃচিৎ।। যা-नि किंग्लुक्यान्धानि वर्षाभुरश्ची सङ्-ৰ্যঃ। ন ভেষু শোকো নাযাসোনো-खिगः क्छियम् ।। मुङ्गाः भुका निद्रा-ভক্ষাঃ সর্বু:খবিবর্জিভা: 1 রমন্তে বিবিধৈ ভাবৈ: সন্ত্রাশ্চ স্থিরটোব-না: ।। ইতি কূর্মপুরাণে ৪৪ অখ্যাযঃ ৷ অপর
 বামনপুরাণে ১০ অধ্যা (य मुक्केबुर ॥ 🗱 ॥ श्रु ज्वानि वश्चि-বর্ষাণি বৎসরশব্দে দুষ্টব্যানি। তত্ত্র यक्षिया भूका। परवा। मन्दर-সর পুনাণেন দেব্যঃ কৃত্বা পুরো হি ভা:। यहेवता विधिना ভাত স-बंगान शुनिष्किषाः॥ सङ्गाज्य कि

নাশায মহারিপু বধায় চ**া মহাভু**্য দ্যকামায মহাসিজিফলায চা৷ भूकरगञ्जाकाम् वीः विश्वेषा भद्राम-भारी। अञ्चान कृ जा भीषा यक রক্ষ পুহোন্ডবা ।। সমুৎসর মহা-দোষ জন্ম মুপমর্মন। কেত্রা **শ**নি রাহ্তো ভৌমার্ক সিত ভানু<sub>॰</sub> काः॥ भगरयत्यक्रमानम्। (पवी (रू)-भव्र उत्र ह । मधनामि विदासन म-क्षात्राना डिरवहरिनः ॥ हन्तु मञ्जूनं भू यार्कक्त तज्ञा जिल्लीनः। सक्ता মক্ল খন্তে বিধিনা প্জিত। মুনে।। উৎপাত ক্ষোভ নিৰ্ঘাত বিকৃতানা শনায় চ। কথ্যানি নহাপাক্ত শৃণু-(मुक्मनाधूना।। शामक्ता विक्रया छ-मा निवा नाडि श्कि: क्या। यकि বৃদ্ধানতি: বিদ্ধি স্তঃ: পুঠি: শ্রিয়া উगा।। मीछिः काडिः यं भा वन्त्री রীম্বরীতি পুকীর্ত্তিতা। বিংশতা **ए**गाखमा (२व): अव्चाववाविह-তা:।। পুথন সংস্থিত। বংস সর্ব निष्क भुराविकाः । २० । वाक्ती क খাবতী শাক্রী অজিতা চাপরাজি ত। ॥ करही मानमी मारा दिछि: स्थि जा विस्मारूनी । भवना को नि की भोती विभवा वान डाल मा।। व्यक्षजी किंगा पूर्ण। ताबना इन्डि

বাৰুনা। মধ্যভাগে স্থিতা দেব্যো যুগানা মশুভাপহা:।। ২০ ॥ কা-नी बोनी कशानी ह घणे।कर्गा म যুব্বিকা। বহুৰূপা সুৰ্ব্বপা চ ত্ৰিনে-তা রিপুহাম্বিকা।। মাহেমরী **স**া भात्री ह रिक्शी मूत्रभृक्विजाः। रैव-वश्ली उपा (घाद्रा कदानी विक-টাদিভি:॥ চিচ্নি চেতি খাতুখা (एव) द्वायाकाविणुनाः। श्विज-वता म्निर्ण्ड महामन्माधिकाः ।। २० ।। जिल्लानुत गक्क रक्क द्राकागी। नृजाः । ভाবकाना-मुगाः कार्य। मुवा कन कन भुनाः ॥ भुरख। कणः ममखा वा कर्बवा। मूनिः नदम । व्यथन । यूगाङ्गारक नक्ष भक्ष **भुभ्**षिजाः ॥ इंजि प्रवी-भुद्रात मःवट्मद्राप्तवडा विः मः जिविधि नामाध्यायः ॥ वर्व नवी जी विक्षिका। ই डिट्स-

वव हवा जा विश्व हो। इंडि (इस-हन्दुः।।

वर्षत्कजः पुः ब्रक्तभूनर्गता। इंडि ब्राक्षनिर्घण्डः॥

वर्षाकायः भू॰ रेपवद्धः। इंडि न्यद्भव्यविशासामः। ইंडिन्यस्-नावाश

ব্ৰ্ষজ কি বৃ**ঃ জাত ॥ বৎ** সর-জাত ॥ জমূৰীপজাত ॥ দীপা শ

কাত ।। নেঘু রাত । ইতি বর্ষ শক্ পূর্বজনধাতো র্ড পুত্যধেননিল্লমণ। दर्यन क्ली वृष्टिः। इं ७ मप्तक्रावली दर्यनिः स्त्री वर्खनः॥कृष्टिः।ईंबुुाः गाहित्कायः ॥ कञ्:॥ वर्षनः। इंडि न किथनाता ना पिवृक्तिः॥ বর্ষপর্বত: পু॰ বর্ষবিভালকগিরি: । यथा। हिनदान् (इभक्षे क नि या (नक (इव ह। हिन्दः करी ह শৃঙ্গী চ সংগ্র: ३ বর্ষপরতা: ॥ ইভি श्रावनी ॥ दर्घभाकी नु আমুাভক:। ইতি (रुगम्युः॥ दर्वभूझा खी महारवीना । इंडि ब्राज्जनिर्घणेः ॥

वर्षालुषः भू ठाउक्भकी। इंडि बिकाअम्मयः॥

বর্ষবর: পু॰ বত:।খোজাইডি ভাষা।ইড্যমর:॥

বর্ষকৃষি: জী জন্মতিথি:। ইতি
মার্ত্রাখ্যা দশনাৎ। অথ জন্মতিথি কৃত্যু:। তন্মলমাসে ন কর্ত্ত্রু: চান্দুমাসীয়ত্বেন সাবকাশত্বাং । নচ তস্য সৌরমাসীয়ত্বু:
তথাত্বে তন্মাসে তরিথে: কদা
চিদপুণপ্তী তদ্বর্যে তৎকৃত্য লো
পাপত্তে:। নচেপ্রাপত্তি: প্রিস-

बरमद्रष्ठिवानाए । यथा वुक्त गू-त्रानः गर्गम्छ । नरिर्वम्छ कद्मारियान त्रारे अंक्षणभागि छि:। अक्रान्या न विशाक नृजनीयाः नुयञ्जः ॥ य নক্ষত্ৰক পিতরৌ তথা দেবপুজাপ-ভি:। পুভিসম্বৎসরক্ষৈব কর্ত্তব্যশ্চ बह्हा भवः ॥ त्राटिक खिनत्राटिकः । পুলাপতি বুঁকা।। তথাচ ভত্তিথিম-विक् छ। जिला घ बी जिल मायी जि-লহোমী তিলপুদ: । তিলভুক্ ভি-वरानी ह बहेडिबी नावजीवि ॥ মক্ৰপাণিভি: অভিপ্ৰোথসিদ্ধি **ৰ্মক্ল**ণ তক্ষেত্ত্যা গোৱোচনাদি-कमि मङ्बः उम ध्उल्गूनाहि नानि द्वि डार्थः। उथार क्रेंडारि-ञ्चामानी। ७७ मूक जिलानम्याञ्जयः পুছেশ্চ বন্ধন । গুগুলু । নিম্ব সিদ্ধা र्थः मूर्वा (गादाहनायुक्तः॥ मःभूकः ভान विष्यानी मङ्घि भार्थायिकः । हिन्न बीवी यथा पुः (छ। छविवतामि **७था मूम् ॥ क्याम् वि**ख्वाःरेम्ब्व नियायुक्तक नर्मना मार्काख्य म-हा जाग मलक ना उकी वन ॥ आय्-तिष्ठेर्थ मिक्षार्थ समाक वदामा उर्व ॥ सनक्रबा क्षित्र सनक्रवः व्याचिन्। দ্যন্তৰ্গত জন্মকালীন নক্ষত্ৰ । নাম-कद्राण ज्या रर्भनाट वक्कानाग बुक्त-

পুরাণোক্ত পুণবাদি নমোন্তেন মা-रेन्य প्रकायियानाह । उरुकारन यन-ক্ষতায় নম ইত্যুল্লেখ্যশাঞ্চাধ্য मर्गानस्त्रः भागाम् मटमानुताः गः। অर्घाः भाराक्तिक**डा मधुभकः** भूरयाजरय । भारतानखद्रः मर्घामा-रु बद्रामि रु भुद्रागः । भामप्रेक्षेव जून कीयया हर्जुर्वार्वाः भुमानारयः । क्-ভীষষা পুৰুষস্কীৰ তৃতীয়্যা ঋচা । উভयक्रमेन्स्नाहिहाविकः ॥ इंडि গ্রীদত্ত:।। #।। শ্রীপতিব্যবসারনি র্ণযে। নবাম্বধরে। ভূত্বা প্রযেষ্ট চি-द्रायुष्। उथा। विज्ञा कि विण स्रो-मार मृत्का वित्रकीविनः। भाकर्षधाः নরে। ভক্ত্যা পুরুষেৎ পুষত তথা।। खर्डा भीर्घायुष वाता तान द्वापि । क्ष विषा । श्रुद्धामक इन्मछ वि **छ**। यन नथा हत्य ।। त्रास्मा व शक्य इ: भः। **छित्र को वि ना ए**ठग्या **८। (पुरि**न व्यथ्याना। 🛊॥ उथा। सनकव कर्मा ভিषि भागा मञ्जूडायद्याः। यश्चीक मिश्र छाउन वर्षि वर्षि भूगः भूगः॥(याः গি যাজ্ঞবল্পঃ ধ্যান্মোরাযণ নিত্য স্থানাদিষ্ট কথাস্। তদ্বিশে। রিতি अख्डित द्वायाम<sup>™</sup> शुनः श्रृनः॥ गाय-जी देवस्थवी (कृष) विक्**षाः अध्य**तनाः य देव। भुगारायः सम्बद्धः। म ह न जः।

**उद्याध्याः भद्रमः भरः मरः मरा भर्मा**ङ्खि সুর্ব: দিবীব চফু রাততম্ ॥ বামন পুরাণ । সর্বমঞ্জ মঞ্জ্য বরেণ্য বরদ শুভে । নারাধণ নমস্ত্ত্য সং र्बक्यांनि कात्राय्ट ॥ 🛊 ॥ अकन्ना-कद्राण निन्तामाङ् छविष्ठानुद्रामः। मक्त्यन विना झाजन् यटकिस्टि च কতে নরঃ। ফলকাল্লালুক তস্য वर्षम्यार्कक्षा अत्वर्धाः वृक्षभूत्राः ণং। পুণবাদি সমাযুক্ত নমক্ষাক্লান্ত কীৰ্ত্তিত। স্বনাম সৰ্বসন্তানাণ মজ্ৰ इंड्राडिशीसरङ॥ यानरेनव विश्वासम गञ्जभूरञ्ज निर्वष्ययः । একৈকস্য পুসহীতি যথোদিষ্ট জনেন তু।। गक्तभूष्रमावः भाषाभाषात्राम्।मसु বেয়া মন্ত্ৰাছড়গুণ পুোক্তণ ভক্ত্যা লক্ষণাত্তর•। ভক্তি মৃ**ন্দ্র সমেত**-ন্ত কোটি কোটি গুণোত্তর ॥ সর্বত্র कःयाश्रामणकः मिक्नगमि ब्रिह-বেং। তথোপদেষ্টারমপি পুক্রযেষ্ট **७**(७) ७कः। न भूका(७ ७क यंद নরৈ স্তত্রাফলা ক্রিয়া।। ইতি নৎ-স্যপুরাণৰচনাৎ ॥ # ॥ ততঃ কর্মা-नस्तर जिलाशानस भूबि उपनवजा-নানভি: কায্য: ৷ একৈকা দেবতা রাম সম্দিশ্য যথা বিধি। চভুর্থ্য-छिन धर्मा छ नामा ह न्यावा दिना ॥

(रागपुरा मरेशरेककः भाउमः शास्त रहान्तरण्ट। **इ**ि विक्ष्यं पांखन मर्न নাৎ। এবং ছোনে যাহান্ততা চম-खन्। बाहा यनात बुङ्गा ध्राय न् रेव मञ्चाप्तरजाः। इंजि मृत्तः। व्यमञ्जो ज्रास्त्रीभूत्रामः। (हात्साः गुरुषि भूबायाः मजगरहास्त्रः छ বেং ৷ অস্টাবি শতি রঙী বা ব্থা **শক্তি বিধীয়তো#। কান্দে। হাওন**ণ ৰথকেশানা । মৈপুনাগ্বান মেৰ চ। व्याभियः कलश् क्षिनाः वर्षतृत्को विवर्क्कार्यर ॥ अधानः अधुगननः। क्लर भिजाब मस्त्र भिजि वृहिष् शाठे:। अक्त पृष्य । वर्ष्य क्षे अम-रित्।। का व्राप्त्र न्द्र। भृत्व क्रम् नि न॰-कारको मारक कद्मित्व उथा। अन्त्र माज्ञार्मान हेव न द्वारापुरुवादिगा।। জন্মনি প্এজন্মনি। জ্যোতিবে। স্না-ष्वा अस्तित्व जियः शतिक्त्रन् श्रा-প্রোত্ত্যভীপ্তা শূব মৎস্যান্মাচ্য ভাে বিভাগ দদভাে হপ্যাযু শিরণ বৰ্দ্ধতে। শকুন্ খাদতি বশ্চ ভস্য রিপবো নাশ॰ পুথান্তি প্ররণ। ভুষ্ট্রে ষৰ নিরামিক স হি ভবেজ্জান্তরে প ওড: ॥#॥ मी शिकायाः। बद्यकः युक्त यकि इस्माल यम्। श्रुत इस-তিথি ভবের। ভবস্তি তদ্বৎসর্যম্ব

গাবলৈক্ত্য স্থান স্থানি ভস্যা। ক্তান্ত স্জায়ে বারে যস্য জন্মতি-थि छंददः। अनुकरवागमः नुपश्ची বিশ্ব স্তস্য পদে পদে॥ কৃতান্ত হ कर्याः भनिभक्षरयाः ॥ उत्र ह-ह्यो यश्च मानः गुरु विश्व मूत्रः ईनः। গুহানুদ্দিশ্য হোমে৷ বা গুহাগাণ शुी जिमिছ जा ॥ सो द्वाद्वरण चिंक मुका (एया नृष्क जुकाक्षन ।। मुद्रा-भा भी वहा क्षेष्ठ रेनात्वर तकनी द्रर । मही हम्लाक मृखक महो विविश्तः म् **डः ॥ द्रज**नीष ग॰ इदिन्। मारू इदि -पुछि। अउवाः भक्तमीनाः गुरुवः ह কষানাব্যব গুছণে মৎ স্যুপুরাণ বি-कृशर्याखद्राया खवा मर्मन ८। उपा-থা। এষা॰ পত্রাণি সার।শি মূলানি इस्म्यानि ह। এव यानीनि हानशनि কৰাযাপ্যোপণ: মৃত: ।৷ আযুরেদো-ক্তা পরিভাষা। অঙ্গেপ্যনুক্তে বি-হিত্ত মূল ভাগেপ্যনুক্তে সমভা विष्या।।#।। তত্র क्रमः। তিলোঘর্ত্ত-नः। ভिलयुक्तकालन नानः। नवरञ्ज **পরীধান•। গুগুল্ নিম্ব সিদ্ধার্থ দ্র্রা** গোরোচনাত্মক জন্মগুন্থি দক্ষিণে পাণৌবধ্বীৰাৎ।গুৰু দেবাগ্নিবিপ্ৰাণ্ড প্রনীযাঃ। সমক্ষত্র প্রনীয় । অব ह। इस बाजी मुदना बद्रीरव। मृन-

भित्रा नशुःनि नहार। भूःनि ह भून र्बम् भूरवेत्रे। यूकं एडी जियाः लि-याः। इँछ्यत्वेव जिक्नविर्गयः ॥ 🕏 ॥ অগ্ৰনক্তাদীনা গোপৰ নাছ বিফু श्वर्षाखद्र । (गां भरवद्धान्य नक्क व धः ननातः गृष्ट् मेवः। भुष्ठा त्रेभः नमानक उन्। मुक्तिविक्य यट ॥ ध-नमात्रः वनामुक्षः। भवाः छिपुः॥ निः उत्ती नुकानाँकः मूर्य्या गणनाँक मार्कः ७ यम् मृजनीयः । उज भार्यन नत्त्रो। विद्रकीयी यथा पु॰ (छ। छ-विष्णामि उथा मूर्त । स्थवान् वि ত্তবাংকৈব শ্ৰিযাযক্ত সৰ্বদা। মা-ৰ্ক ওণ মহাভাগ সপ্তবন্ধান্তভীৰন। আন্রিষ্টার্থ সিদ্ধার্থ মন্মাক বর ে। ভব। ভতো ব্যাস প্রশ্রামা-श्व (। य कृष विव शुक्लाम **हन्म वि डो**-चन्तर त्रमीयाः । **यक्षांत्र भूवनी**या েলোক্যে যানি ভূতানি ছাবরা नि उद्गानि है। वृक्ष विकृ**ष्टिरः नार्ब**र রক্ষা স্বস্থ তানি মে। ইতি নৎ-अऽभुद्राभीय• **द्रकार्थ• भर**ठेट ॥ **₩** ॥ निज् माज् नामगुर्ग कमस विसू नुजाराम् (सरः। यथा। कृष्णाणि वजू (नवम् भारते बगुः मञ्जः। रन-वक्राक भशावाञ् वंगाप्त्रम्थाय-बान्।। अवका महमुख शिठू गाँउ।

পৌরবেণাতিরিচাতে। ইতি মধ্বচ-ति लिखु द्रामकर। रहे महमु भाजू रगी बन मूकः छर (मायगनमार्थः। व्यक्त मन्त्र। मृत्व कृति भूवस बॉर्फ्डा बाजू ब्रह्मिजा हैंजि। वी-(छ्डा गरंगीयः॥ 🕸 ॥ खंड मूच खिल পানে ত্মম:। সভিল ওডসংমি-শু মঞ্জলার্জমিত পথ:। মার্কণ্ডের वद्रः नहा भिवामग्रागूव्यक्ति ।। षाज रेविमरकञ्ज मञ्जनार्थ म् मारम-त्रभाषिकातः। वद्याजित्थः भासक ব্ৰহ্মপুরাণীযত্ত্বাৎ পৌর্ণমাস্যন্ত মা-नारतः ॥ 🚓 ॥ बनाजित्थ क्डय सिनवाट्य ज्ञासवी श्रुद्धांगः । यूगा-म्त्रा वर्ष वृष्किक मछनी भाई जीलुंगा । द्वार करण भीकार्ड न उब जिलि-युग्न जा ॥ यमुष्य कमा जिथि येरि স্যাৎ প্র্যা তদা জন্মভসংযুতিব। ष्यत्रका रुवे पिनष्रयंति न्क्रा পর। যা ভবতীহ বরাৎ।। ভ নক-वः। भववहनः वृष्ट्याक्षमार्ड(७भि। **न्**र्वाष्ट्र डिश्वि नकेय नाड अतर॰ লক্ষ্যতে। নকৰে থাঙিতে যেন স্থা-छः कान्छ कर्मनः। नक्षं कर्मान्।-ৈৰে ভিশিক্ষা ওথৈৰ চা। ইভি বৃ-হুস্পতিবটনাথ । খণ্ডিতে খণ্ডদ্বয गुर्क राम नक्क वर्था अने विश्विका-

णः शृष्धः। नक्षत्र दिद्ध छ दोषाय भ मार्कः अयो। उपक्रत् माराज्ञाः वः विश्वास्यः गएत द्रविः। यश्चिम् दिन्ति भविता उपक्रतः दिनः ग्र्डः । इति विश्वादिन वृः॥

विशः की जूनि बनामश्राउषकः। ख्टनर्गायः। भावृह्रि । इन्प्रायः য় ঘনকাল: ৩ জলাণ্য: ৪ শুবৃট্ ৫ (सरागमः ७ मनाकतः १ १ हेकि मदब्रावनी ॥ शुव्या ৮। इंडि बिकाश्रामयः ॥ ज ह सङ्कः (मोत्र-नुष्राज्ञामुमामाष्याञ्चकः । जा-বাচাৰিমাসচত্ত্তীয়াজ্য হল্ছ। আ-म्रामा भुवानः। येथा । उन उन (म) रेमानिज्ञावृक्तुः मध्य **माध्य** শ্চ বাসন্তিকাব্জুঃ। শুক্রক শুচিক্ত रेगुचाव्जुः। अविश्वमूमन्यनः एर-वानाः दिनः। वेखाक नखनाः বাৰ্ষিকাবৃত্যু:।ইৰক উৰ্জ্জ**ক পার**-मावृज्ः। नहाक नहनाक रिमः ম্ভিকাবৃত্:। অ**থৈ**তদ ক্ষিণাখন দে-বানা রাজি: ৷ ইতি মলমাপতভু-ধৃতালু,ভি:১৷ শেষস্য পুমাণ ওত্ত চাতুর্মাস্ত্রপ্রতিন্যনশ্চ বথা। বা-রাছে। আবাঢ শুসুর্দশ্যা পৌ-শ্মাস্যা ম্থাপি বা। চাতুর্মাস্য बुजाबस्यः सर्गाद कर्क है मःकस्य ॥

অভাবে ভূ-ভূত্বার্কেপি মক্তেশ বি यम॰ बुक्ती । कार्खिःक मृह्मसामण्डा॰ ৰিখিবছে সমাপ্ৰেৎ ম চতুৰ্ধা-পি হি ভটার্ণ চাতুর্যাস্য বুক্ত নরঃ । কর্তিক্যাণ শুদ্লপক্ষে ভূ দাদল্যাণ ख्ट **नग**ाभायट ।। कः ।। बाटामऽ । চতুরো বার্ষিকান্ সাসান্ দেবস্যো-न्यानमाविष्यं मन्बर्दा ভবে विज्रुः भव्या ७७ विवक्तनार ॥ टिन्ममा वः र्व्छनारम्य मून्द्रायः भूकायरः ॥ **কটুভৈলপ**রিভ্যাপাৎ শত্ৰাশ: পুরুষতে।। **লভতে স**ন্ততি• দীর্ঘা• হাগীপাৰ নভক্ষন্। সদা মুনিঃ नमा (याणी मधुमाः नम् वर्ड्डनारः ॥ निदासि भी क्लाक्सी विकृ ७ ऊक काग्र । এकाल्राभवारमने विकू लाक भवाश्रुयार ॥ बाद्रशावश ब्लान्नाक गङ्गान्नाम हित्य हित्य ॥ **जाच्यवर्ध्धनारकामी** त्रक्रकश्रेक कायाउ । घृउछत्रगाट जुनावगृ **मर्बः न्निषः बशु र्खायरः ॥** कवाउताः পাৰু মতিমান্ বহুপুএশ ভাষতে। नस्म नात्रायगीरयं कि केश्वान न के कनः ॥ भाराज्यिनस्नाहित्का र्ल-(उसारानेक कन ॥ अवशाहि वुरेडः भार्थ जुडिमाशां रुक्ताः ॥ 🚓 ॥ भने ध्रमपात्रः । हेरः वृष्टः

ময়া দেব গৃছীত পুরত শুব । নিৰিহ্না সিদ্ধি মাপোত পুসমে ত্বি কেশ্ব।। গৃহীভেমিন্ বুতে (मय यम् अनुर्ग वृद्ग मुखा । उत्य **७३** जन्मूर्गः दृ भुजामास्ज्ञनाः र्पन।। #।। ममाश्वी ह। इन वुछ। भया (हर क्ड॰ भीरेड) उर भुखी। न्।न मण्रांछा याज् प्रभुमा मास्त्रभार्यन ॥ 🛊 ॥ व्यव्यव विज भविक्डा काठेकगृशः। अक्ट्राबः বলেদ্গামে নগরে পঞ্চরাত্রক । वर्वारख्यान्य वर्वाम् भागाः छ-তরো বসেৎ।। এতদশক্ত বিষয়।। উত্বৃ° বার্বিকাভ্যা° মাসাভ্যা° ৈ বৈক্সানবাসী ইতি শশ্বে।কে:। ইভি ভিপ্যাদিভত্তুণ।। 🛊 ॥ বর্ষন্তৌ वर्गनीयानि यथा। वर्षामु घन निशि या रंगगभाः शक् कम्तालाक দৌ। জাতী কদম কেতক বঞ্চানি-ল নিমুগা হলিপুীতি:।। ইতি कविकल्लकाया॰ > खबरक ७ इन-म्यः ॥ বর্ষা: শ: পু: মাস:। ইতি ত্রিকাও-শেব: 11 वरप्रधायः भ् महामञ्कः। इंडि ब्राक्रनिर्घण्डः॥ वर्षाकः भुः भागः। ই 🦁 हादाः 🛚

वनी॥ भूनर्वा । इंडि भक् दर्वाकी जी ब्रज्ञावनी ॥ वर्षाख्यः भू ब्रक्तभूवर्मवा। इंडि द्राक्रनिर्घन्छैः॥ वर्षाकार्छ जि ॥ ব্বাভূ: পু: ভেক: ট্ড্যময়: না · इन्द्रुरगानः। इंडि ब्राह्मनिर्घन्तः ॥ ভূলতা। ইতি মেদিনী।। वर्षाञ्च जी भूनन्व। इंडिश्मिरनी ॥ ভেকী। ইতি ভরত্তত্ত্বপর্ত্তা-कद्रः॥ वर्षाञ्चत्व वि ॥ दर्शाञ्जी जी (छकी। इंडामद्रः ॥ भूमर्वता। इंड्यन्नमाना जास निक वर्षात्रमः भूः मय्द्रः। ইভিকেচিৎ॥ वर्षास्त्रःभावन्युष्ठः भू॰ हाजकभक्षी । ইভি কেটিৎ।। বর্ষারাত্তঃ পৃ• বর্ষাকালীনকাতি:। इंडि भृ निक्र म गुरु हो द्वारा । ভ ब्रङ: ॥ व्याहिः श्र मक्लगुरः। इंडि मद्रद्वावनी ॥ वर्षानकारिका क्षी भूका। इंछ्ऽ-মরটাকাষা ভরত:॥ वर्षावमानः भू भद्र८कालः। इंडि त्राकनिर्घके।। वर्षिकः जि वर्षामञ्जन्ति॥वर्षमञ्जन । वर्षाणदार वर्षणदाह भारत

ফিক পুত্যযেন নিয়ম<sup>•</sup>।। विविष्ठः ত্রি অভিশযবৃদ্ধ:। অধ্য নযো রতিশবেন বৃদ্ধ: ইভ্যর্থে বৃদ্ধ शान वर्षाएएण है हु हु हुए नि व्रव: 11

ववीरान् वि अजित्सः। उ९-नयंग्रयः। मनभी २ नग्रयान् ७। इंड्रायद्वः ॥

वपूर्वः जि वर्षगकर्जा व्यवसर्जा र्क् क शुक्रायन निश्चमः॥

वयुकामः भू वर्षणणीवासयः। हेजिकोषदः॥

বর্ষেক্তঃ ত্রি বর্ষাকালজাতঃ॥বং नवबाजः। मधगुड वर्यमस्नृर्वकः জনধাতো র্ড পুত্যযেন নিম্নন: ।। वर्षाननः भू॰ स्वचार्नना। করকা। ইত্যমর:।।

বর্ঘ লী শরীর ॥ প্রমাণণ ইত্য-মর:।। পুমাণ মরোমতি রিতি साभी। इंग्ला इंडि ভরउः॥ अ-**डिमुन्दराक्**डिः। ইडि समिनी।। वर्षः क्ली भन्नीतः। इंडि धिक्न-কোৰ: 11

वर्शक वरमा। मीखो। इंडिकवि-। कन्नक्रमः॥ (इस्कान्यः। क वर्र्याज वर्रिवृक्षा क्री हजी। इंजि विकाज-। **इंडि पू**र्णानामः ॥ः

বর্হ ড শৈষ্ট্য। ইতি কবিকল্পদমঃ বহিপ্স॰ লী পুছিপর্ণ। ইত্যনরঃ ए

॥ ड वर्रंड धनी (मुक्तः म्याहि-ত্যર્थ: ॥

বর্হণ দ্রী মধ্রপিছ। ইও।মর:। গুছিপর্ণ। ইতি ভরত: ॥ পশ্র ॥ हैं जि मद्भवावनी ॥

वर्रुंग क्री भाषा । इंडि भाषा बड़ा-वनी॥

वरिः भू अग्निः। इंडि मिनी।। षीश्रिः। ইত্যুণাদিকোবঃ।। বজ্ঞ:। इंडि (एमहन्मुः ॥ हिडकः । इंडाऽ-मद्रः ॥

বহিঃ প্ ল্লী জ্শ:। ইতি মেদিনী।। वर्शिः ज्ञीः गुष्टिशर्भः। इंडि मद्-ब्रङ्गावनी ॥

বর্হি:পত্রণ ব্লী গুছিপর্ণ। ইত্য-मत्रहीकारा॰ ভत्रजः॥

वर्शिः मुद्दा मु॰ व्यक्तिः। ইত্যম तः।। वर्श्टिक ज्ली वर्षिक । श्रीरवद्ग । हेठा-मद्रखद्रा ।।

বৰ্হিনসুমণ দ্লী গুছিপর্ণ। ইতি मद्राम्का ॥

वर्ङ्गः भू॰ भग्दाः। ইত্যমद्रः॥ वर्शिवाहनः भूः कार्खिकयः। इंडि रनायूष: ॥

वर्शिक्षंग्रिः (रुमहन्तुः ॥ वर्ष्म् थः भ् एक्का। इन्जान हा। वर्षित्यां भुः वश्चिः। हेळाप्रवः॥ वर्धिषमः भः भिज्गगविष्णयः। यथा। व्ययङ्गानण्ड यङ्गानः नि उत्रा तुष्मनः भूजाः। यश्चिमाञ्चा वश्चिरामा দ্বিধা তেবা॰ ব্যবস্থিতি:।। ইতি (कोर्प्य >२ व्यवग्रयः ॥ व्यनित्र। অপসব্যু ভত: ক্রাসব্যু জানু চ ज्ञाता वर्षावाजाः खवासीम्यान् क्दिगाम खरणाग्रामान् ॥ मूकानि নো বাহৰদ আজ্যপাণ স্তৰ্গেত্ত-তঃ। তৰ্গছে পিতৃন্ ভক্ত্যা সতি-रनामकान्मरेनः ॥ मर्जनानिस दि ষিনা হস্তাভাগ তর্নবেক্তঃ। णा किहर शिव्ययाजिएसार रियालिक्गामि अञ्चलिक्यमा नः। उरम् ।। कव्रवानः ननः (मोन) यम नर्यानग उथा। अप्ति बाजाः (नामभाक विविधः नक्ष नक्ट ॥ इंडि इस्मागन तिनिष्टिन विभिटेडेकाञ्जनिविधानार। इंड्रा হ্লিকতত্ত্ব ॥ बर्शिक्षणः পঞ্চি। ইভি 7 (भाहिष्यममयम्भनार ॥ প্ৰছিষ্ঠ লী জীবেরণ। ইত্যমর:।।

प्रविद्धः। ইতি

प्रविद्धाः। ইতি

प्रविद्धाः। ইত্যানর:।।

विद्धाः। ইত্যানর:।।

विद्धाः। ইত্যানর:।।

विद्धाः। ইত্যানর:।।

विद्धाः। ইতি

प्रविद्धाः। ইতি

प्रविद्धाः।।

प्रविद्धाः। ইতি

प्रविद्धाः। ইতি

प्रविद्धाः।।

प्रविद्धाः। ইতি

प्रविद्धाः। ইতি

प्रविद्धाः।।

प्रविद्धाः। ইতি

प्य

विषयः भू॰ अक्षेप्तम्भगतातागार्डर्गः जगनतागिविश्मयः। यथा। वनाः अवगयञ्जूबद्यस्माथः करतादः अवगद्धः निवार्य्य। छः अवं विष्वाः भूजिवार्य्य वीर्यः विष्ठक्वनीयः वनः यः वहिष्ठ।। स्थाः व्ययं गनरतागागः किकिर्मा। क्षेत्रारमञ्जूष्ट्यारेक् खंदेक् निम्रादि क्षान्छः। किकिर्-जक निक्रित्रमास् सम्मान्न मः भाग्रत्रर्थ। कृष्यः हम्राह्म हादी पुष् निम्न जाक्ष्यं कनिक्रकः॥ द्रवीजकी क्षयाया वाह्रित्या भाक्किक मःयुङः किन्ना जिविया हाक भाठे। मृद्या किन्यकाः।। गाम्य कृषिजाः भी जाः कर्ष्यकाः।। गाम्य कृषिजाः भी जाः कर्ष्यकाः विद्या कर्ष्यकाः विद्या कर्ष्यकाः विद्या कर्ष्यकाः विद्या कर्ष्यकाः विद्या जार्थनः ।। कर्षा व्या ।। व्या ।।

वन्यिकः जि (विश्वकः। इक्तिम्यः। वना जी सनामधारकोमधिवरण्यः। वान्यकिकारियाना इक्ति काम। । । । । व्यक्ति क्ष्याः। स्वति क्ष्याः। स्वति वन्यक्ति क्ष्याः। विश्व वः। स्वाग्यति वन्यक्ति वन्यक्ति व्यक्ति विष्णि विषणि विष्णि विषणि विष्णि विष्णि

**२** ह् वना । वन्त्रम्याः माध्यद्वा-ন্তীত্যচি বা । ইতি রাযমুদ্টকৃত वृष्ट्रभाष्ट्रप्रत्य भवगी यवकात्रा-पि त्रस्त्रभ्यवकात्रापित्मध्यः ॥ 🚓 ॥ বিদ্যাবিশেষ:। যথা। মজ্র গ্রাম গৃ-राग दः वना मिठवनाः उथा। न শুমো ন জুরোবাতে ন ৰূপস্য বি-. शर्य। यः ॥ न ह मुखः भूम खः वा धर्य-থি**ব্যন্তি নৈ**ৰ্থাতাঃ । ন বাস্থোঃ সদৃ**শো** বীর্য্যে পুথিব্যা মস্তি কশ্চন।৷ ত্রিষ্টু-লোকেষু বা রাম ন ভবেৎ সদৃশ खर। वना मिंडवनारिकर भठेंड छा-ত রাঘব।। ন সৌভাগ্যে ন দাক্ষিণ্যে ন জ্ঞানে বৃদ্ধিনিশ্যে। নোত্তরে পু-ভিবক্তব্যে সমো লোকে ভবানঘ।। এ अधिराधाय वास न जात्र म-ন্তুশ স্তব । বলা চাতিবলা চৈব স-ন্মজ্ঞানস্য মাভরৌ ॥ ক্রু পিপা-শেন তে শ্বাম ভবিষ্যেত নরোত্তম া বলা মতিবলাঞ্চৈব পঠত ভাত ज्ञायव ॥ विम्याष्ट्रय स्थीयात्न यण-শ্চাথ ভবেন্দুবি । পিতামহসুতে-ছেতে বিদ্যে ভেল্প:সম্বিতে ॥ পুদাতু তব কাজ ছে সদৃশ ন্তু ছি भाषित । कामः वस्थाः गार्व प्रः যেয়তে ৰাজ সংশযঃ ৷৷ তপসা সং ভূতে চৈতে বহুৰূপে ভবিষ্যত:। ख्खा द्वारमा कनः म्णृष्ट्वा भूमध्यमः नः मृहिः ॥ श्रुडिकगुष्ट एउ विषरः महर्ष्य खाविखाद्यनः । विषरामम् पिछा द्वामः मृणुष्ट खीमविक्रमः ॥ इंडि द्वामायल वान्मीकीय वानः कार्थ्य २२ मर्गः॥

वनाकः भू 🔪 वक्बाजिः । इंडि বলাকা জ্রী 🕽 ভরত: ॥ ক্ষুদুৰক: कािः। ইভি সারসুন্দরী॥ ७९-পर्य्यायः । विসक्षिका २ । ইত্য-मद्रः ॥ विमक्शे ७ वनाकी ८ । इंडि नम्ब्रज्ञावनी ॥ काद्रायि-का ७ विक्विका ७। इंडि कहा-ধর:।। বলেন শক্ত্যা দুর মূর্জনক্তি वित्व ब्ल मध्रवा बलाकाम्य कि छ्याकन् वलाका। इंडि রायम् <del>ब</del>हे-কৃত বুংৎপত্তিদ্বয়েন প্ৰগী ঘ্ৰকা-व्राप्ति ब्रस्तर्थवाद्यापि कायः नदः ॥ #॥ अन्। मा नख्याः। वायुना-मिव्। त्रिथाव्। मृष्टेमलव्। व्या ত্ব । রক্তপিত্তহরত্ব । হিমত্ব । ইতি রাজবল্লভ: ॥

वलाङ्कः नुः (मदः ॥ मृखकः । इंडामदः ॥ भईडः ॥ रेम्डावित्न-वः॥ नागवित्नवः । इंडि (मिन्नी॥ क्रिक्कमा (वार्वकवित्नवः । यथा। माम्द्रिक नामदः माद्रिकामा पाककः । जूत्रकाः लिवऽ मृग्रीक भिष्ठभृत्र वणाहकाः॥ ইভি क्रिकः अल्पयः॥

বলির: ত্রি কেকর:। ইত্যমর:।। বলিশ• ক্লী বডিশ•। ইতি শব্দকর্।; বলী।।

.विनिषः २ जी विष्णः। ইडि णयः विनिषे १ ब्रङ्गावनी ॥

বলীক॰ ক্লী পু॰ লম্বিত্ণোৎকরঃ।
ছাঁইচ্ইতি ভাষা। ইত্যমর ফটাধরৌ। অস্য পর্য্যামঃ পটলপুনন্ত শদ্দে দুষ্টব্যঃ।।

वल्कः क्री शम्यस्यः ॥ शक्किवित्मः

स्व श्रुः। इडि निष्माञ्चरकोसून्।

स्वामिवृद्धिः। উपाहिरकायकः ॥

वल्वः जि वलवान्। वल्णकार

स्वाह्रिः। इडि नुष्यवायवाक्रवाः ॥

वस्र भवनी य वकात्राहिरद्वि उ
जाविशिङ्गाम्बद्धिनः॥

वन्न क ভाষণে। ইতি कविकन्नकमः
। क वन्नयितः। ভाষণ कथनः।
ইতি দুৰ্गাদাসः।

ৰণ্ড়° ক্লী বহুল: ॥ শদু: । ইতি মেদিনী শন্মগুলাবলে) ।। খণ্ড়ু । ইতি বিশ্ব: ।।

वदः भ् भिकात्वादुः। हेि

ब्राकनिर्घनः॥

भूगत्कः। ইতি রাজ-निर्घणः ॥

वस्काः भुः ज्ञ्बित्कः। हेि ब्राब निर्घक्तः॥

वक्षन॰ क्री ५०॰। ডान्टिनि इंडि ভाষ।। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

वक्षणः श्रु क्री वृक्क देव। वाकव इंडि ভाषा। उर्भर्यायः। पुक्र वसुः ७। इंडाबद्रः ॥ द्वा ८ द्वा ८ द्

(ठाठ• ५ (ठाम**क• १ म**लू॰ ৮ ছल्ल ক ১ছল্লি: ়০ ছল্লী ১১ চোত্তক

>२। **३७ मक** इङ्गवनी ॥

वन्ना जी मिनावन्।। ইতি রাজ निर्घणेः ॥

बक्षानाषुः প্ পরিকালোগু:।

ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।

बक्षवान् भु॰ ग९माः। ইতি विका-अल्परः ॥ वन्नगरक जि॥

বল্লিলঃ পু॰ কণ্টক:। ইভি শদ্-

ब्रञ्जावनी ॥

वक्षाः। इंडि भक्-

बम् उ॰ ही हेन्द्रिका ॥

বল্ল গভৌ। ইতি কবিতল্লকম:।।

বন্তি। মধ প্ল ভগভাবিতি ভট

मझः। ইতি पूर्णापानः॥

वस्तरः जी अं उगमनः।। वङ्गादगः।

र सुनि

वस्रधार्जा जात्व स्निहे भुजारयन निव्यम•॥

क्षी पंडानिका। नागाम् इंडि ভাষ।। তৎ পর্য্যায়ঃ। অবক্ষেপণী ২ রশিন: ৩ সশা ৪। ইতি হেন-

ठन्मः ॥

वितृष्ठः क्री व्यथमऽविष्णवश्यमः । তরু বেগেন বিক্ষিণ্ডোপরিচরণ। इंड्रम**ब्रब्बर**ो ॥ गमन ॥ वङ् ভাষণঞ্চ !!

ছागः॥ मृन्स्द्र छ। 夕. इंडि भिषिनी ॥

বলক• ही ठन्द्रनः ॥ विभिनः ॥ পণ ॥ ক্চিরে ত্রি । ইত্যুদ্ধ ।। তত্ৰ প্ৰগী হ্ৰকাৱাদৌ লিখিতো-२गः भरः। यबाভिञ्ज छबानिः

থিতত্বাদত্র লিখিত:॥

বল্লপ এ: वनगूमः। ই कि मदः **इन्मिका** ॥

वल्लना जी वाष्ट्री॥ शक्किविरमवः । (ग्वम्। भर्य)। यः। ठकविश्वा २ मि-

वाका ७ निमाठबी ४ रेबबिनी ए দিবাৰাপা ৬ মাণসেঙ্ঠা ৭ মাত্বা-

रिगी ৮। ইভি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

वल्लाका जी टिनमायिका।यथा । বল্লুলিকা মুখবিষ্ঠা পরোকী তৈ-

লপাযিকা। ইতি (হমচন্দু:।।

বল্ল ড ভক্ষণে। ইতি কবিকল্লছম: ।। বল্লতে অন্ন লোক:। ইতি দুর্গা-দাস:।।

বলুন ক্লী ভক্ষণ। ইতি ছেমচন্দু:। ৰল্মিক: পু ক্লী বল্মীক:। ইতি শদ্ৰজ্ববেলী।।

বল্মিকি: পু॰ ক্লী বল্মীক:। ইত্য-মরটীকাষা• ভরত:।।

বল্মীক: পুণ দ্লী উধীকাকৃতমৃত্তি-কান্তপ:। তৎ পর্য্যায:। বামল্র: ২ নাস: ১। ইত্যমর: ॥ ব লাক: ৪ বাল্মীক: ৫ বাল্মীকি: ৬ বাল্মিকি: ৭। ইতি ভটীকাষা ভরত:॥ পু গলক: ৮ শক্রম্জা ৯ ক্মিশৈলক: ३०। ३७ भद्रज्ञावली।। । उमृ-खिक्या (मोठनिखार्था यथा। विकु-পুরাণ । বন্মীক মূবিকোৎখাতা। ম্দমন্তর্জলা তথা। শৌচাবশি-क्षा- (गहाइ नाम्म्याह्मभञ्जूदाः ॥ व्यष्टः भाग्यभगकः श्लार-थाञा॰ न कर्मभा॰। ইত্যাহ্নিका-हात्रज्ञुः ॥ 🗱 ॥ (प्रवश्रु जिष्टायाः न्नानाट भूबं निम्नादावनाष्ठ्रर्थः खम्बिकया कालनः यथा। वन्ती-ক মৃত্তিকাভিস্ত গোমযেন সুভম্ব-ना। कालरार जिन्निमःन्यार्भ (मा-यानामूनमाख्याः क्षाः वन्त्रीकम् नाः मिन्नाम मखिति स्वान्यामामार्थं मखानाम् स्वानाम् स्वानाम् याविकार्या विकार्या विकार्या विकार्या विकार्या विकार्या विकार्या विकार्या विकार कार्या विकार । उपा नानः यथा। नाभार्ये पूर्वनः (एउ॰ उत्रायः भक्षिरेष त्रिण । भक्षान् दिः भक्ष्ये भिक्षे क्रिया विकार भविका वित्र प्रमान् विकार विकार भविका वित्र प्रमान् विकार विकार मान् विकार विकार मान् विकार मान्य मान् विकार मान्य मान्य मान् विकार मान् विकार मान्य म

वन्त्रीकः शुः वान्त्रीकिम्निः॥ द्वाः গবিশেষ: । ইতি বিশ্ব: ॥ অপ बल्पीक द्वागमः नक्षनः । गुीवाः-नकका कर भागतिला गरको गरव वा बिভिद्रिव (मारेष: । गुड़ि: म वन्त्रीकवरकियागः कातः कानः रैगव गडभुवृद्धः ॥ मृरेथ ब्रामरेक স্তুতি তোদবন্ডি বিসর্পবৎসর্পত্তি চোৰ তাগৈ:।বশ্মীক মাহু ভিৰক্ষো বিকার নিমুত্যনীক চিরন্ধ বি-(मरा८ ॥ गुीवा क्कारिका। या मः ऋतः। कका वाङ्गूलः। ग**नः** कश्चेः। वन्त्रीकविष अध्यम भुष्विनिथवञ्ज मु ছত্ত্বমবগাদম্লত্বকস্চ্যতে। নিষ্কৃত্য नीकः उनहादायाग्रः॥ अथ ভন্য চিকিৎনা। শঙ্কেণোৎকৃত্য

বদ্মীক কারাগ্রিভ্যা: পুসাধ্যেৎ । विशासनाङ्ग्रीकारकन (भाषयिद्या চ রোধ্যে
। दन्योकः
ভবেদ্यः সঃ নাতিবৃদ্ধ নন্মজ । ভৰ স• শোধন কৃত্বাশোণিত মোক্ষণেৎ ভিষক্।৷ সল্থিকানা মূলৈশ ও फ्हा नवरान ह। **याः बवङना म्** रैल क पश्चीभ्रेल खरेशव. ह ॥ नाः-भाग्रेवः मन्विवः मक्षिरेणुः नुरलभरर । मृतिकक मुर्शिकः क डियक् उ म्भवाइरयट् ॥ भवः তদা বিজানীযান্তী: সর্বা হথা ক্রমণা অভিজ্ঞায় গভী শিহ্না পু দিহুগুম্ভিমান্ ভিষক্।। **সংশো**-ধ্য দৃষ্ট মাংসানি ক্ষারেণ পুতিসা-द्रारं । तुनः विशृक्षः विद्याप রোপযেমভিমান্ ভিষক্।। মनः **मिणाण उलाउ म्रेज्यणाध्य 5-**ন্দ্ৰৈ:। জাতী পল্লব ভক্তৈশ্চ নিমৃ তৈল• বিপাচেং ৎ ॥ বল্মীক• না-শবেত্ত দি বহু हি দু বহু বুণ ৷ পা निभारनाभित्रिक्षानु हिर्देषु वंद्यनि-द्रावृष्ठ ॥ वन्त्रीक र८ मानाक স্যাদ্বর্জ্য তবি জ্বিজানতা। ননঃ-**मिलाम्यः रेडनः । इंडि ভा**व-लुकाणः॥ বন্মীকিঃ পু॰ বন্মীকঃ।ইভিশন্ব- ∥বল্লভপালকঃ

यांना ॥ दन्पीकनीर्यः क्षी (मुख्यः। इंভि ब्राजनियंग्रेः।। वन्मीक्षे 🎒 दन्मीकः। इंडि (इन-**इन्मः** ॥ वल्राल। ७ क ल्मिश्राः। इंडि वन्ति कविकद्गम्भः ॥ वन्त्रमश्ज व्यववन्त्रवर। इंडि मूर्गामानः॥ বল্ল ড সংৰব্নগে। ইতি কবিকল্ল-হৃম:॥ ভ ? ল্লাভে খন পোকঃ স •-ৰূণোভীভ্যৰ্থ:। ইভি দুৰ্গাদাস: ॥ वलः भू ख्ळाड्यभविमानः। यथा। বল্ল স্থিভঞ্জে। ধরণঞ্চ তে ২ংষ্টা । इंडि नीनावजो ॥ दिख्छा। इंडि रिवर्डकभद्रिकाया ॥ मार्बर्स्छा । यथा। (गाध्मिषि उत्याचि ज क-থিতা ভঞ্জা ভয়া সার্ছেয়া বলোঁ বল্লচভষ্টবেন ভিৰ্জাণ নাবে৷ মত শুচুতু রিজাদি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ বীণা। ইভ্যমরঃ।। जी সল্লকীরুক্ষঃ। ইতি রাজনিঘটঃ।। वल्लाङः भुः प्रविज्ञः॥ व्यश्रकः॥ **সল্লক্ষণ ভূরঙ্গন:। ইতি মেদিনী** । वज्ञ जि श्रियः।। अश्रकः। हे-ত্যমর: ৷৷ অধ্যক্ষো হত্ত গ্রাধ্যক্ষঃ । ইভি यानी ॥ ত্রি

ভরত: ।।
বশগা জী বশীভ্তা। ইতি শদ্ব রত্নাবলী ।।
বশয়দঃ জি বশাবদতি য: । আয় ত চরবাক্যবক্তা । ইতি মুখাবোধ ব্যাকরণ: ।।

বশা জ্রী বন্ধ্যা।। সূতা।। যোষা।। জ্রীগবী।। করিণী। ইতি মেদিনী।। বন্ধ্যাগবী। ইত্যমর:॥

वमार्ग्यकः भू मिमुशादः। **३७** मद्मद्रञ्जवी ॥

बणाभागी शुः **अक्रुदः। ইতি শद**् भाषा ॥

েশি ক্ল**ি বশিদ্ব°।ইতি শদ** অলা।।

বাশক জি শ্নুগেইভানর:॥ বাশকা জী অগুক:।ইভিশ্ব চলিকা।।

বশিত। জী বশিত্ব । ইতি*ছেম* চলুঃ॥

ৰশিহ্ণ ক্লী আযতত্ত্ব। শিব্দ্যাতৈত্বৰ্য্যান্তৰ্গ তৈত্বৰ্য্যবিশেষ: ॥ বথা
। অনিমা লবিনা পুৰ্ণিঃ প্ৰাকান্যণ
নহিনা তথা। ই শিহ্প বশিহ্প
তথা কানাবশাবিতা।। ব শিহ্বণ
হাতত্ত্ব্যে বেন স্বতত্ত্ব শ্বন্তি।
ইত্যন্ত্ৰটীকাৰাণ ভরতঃ ॥

বিশিনী জ্রী শ্নীবৃক্ষ: ।। বন্ধ। ।
ইতি শন্চন্দুকা।।
বিশিরং ক্লী সামূদুলবনং । ইত্যমর: ।।

विनद्धः भुः गजभिश्ननी । ইত্য-भद्रः॥ हव्यः । ইতি द्वाजनिर्यकः ॥ व्यभागागः । ইতি मिनी ॥ वहा । ইতি শব্हिम्मुका ॥

ৰশিষ্ঠঃ পু॰ স্বনানখ্যাতমুনি। তৎ পর্য্যায:। অক্ষুতীজানি:২।ইতি (इमहन्मुः।। অক্ষতीनाथः ၁ वा-শিষ্ঠ: ৪। ইতি শব্রস্থাবলী ॥ স তৃ বৃদ্ধণ: পুাণাজ্ঞাত:৷ তস্যভার্য 1 কৰ্মকন্যা অকল্পতী। পুল্রাংসপ্তর্য যঃ। ইতি খ্রীভাগবতনত ॥ অ-পি চাবশিষ্ঠশ্চ তথোজ্জাযা সপ্ত भूवानकी कन्ट। कन्याक भुखद्री-কাক্ষাণ সর্বশোভা সমন্বিতা ।। রজোগাত্রোজু বাহুশ্চ নক শ্চানব তথা। সূত্রপা: শুক্র ইত্যেতে সপ্ত-भूधा ग्रहोडमः ॥ नर्स् **उ**भिष्यनः পোকা: নর্বে যক্তেয় ভাগিন:। অ্যজ্বানশ্চ যজ্বানঃ পিতরো বৃক্ষণঃ जुडा: ॥ इंडि (भीर्ष्य 🔀 व**र्**प्राय: ।। 🕸।। विवादक्षरयाः भुधः। यथा। ইঙি পৃষ্টা নরেন্দ্রেণ কথ্যতা লিতি ভূপতে। বশিষ্ঠ চোদ্যালাসু: স- - महा एक जलाधनाः ।। मूनिणिः
ल्बिङः (मालि स्थाष्ट्रमानमः। (याग माझाय मूहितः रेग्जातक्ति ताजावानः। चनाहः। मिडातक्ति ताजावानः। चनाहः। मिडातक्ति ताजावानः। चनाहः। मिडातक्ति ताजावानः। चनाहः। मिडावक्तिया रेग्ठव व्यक्तियातः व् निष्ठा नाम विमुन्जाः॥ अञ्चलकान् व् विष्ठानाः च् जा एक्कानरेग्वव ज् ।
च्यक्षात्वात् ममाध्यात् व्यक्ति। मान्
नमाः मुजाः॥ इञ्चि विश्व मुतात् व् च्यक्तिविष्य वात्रास्थान् ज्ञात्।
ध्यायो ॥

वणीकत्रनः क्ली मनिमाखीवंदेवत्राय-श्रीकृतनः। इति ভत्र छ क्रिवेद्धाः।। खन्य भर्यायः वणकियाणस्य पु-श्रेदाः।। इत्यायस्मीवधानि यथा । तुष्णमश्री वहा अष्ठः लियम् नागरक णतः। पर्वाश्चा मन्यु छः खीनाः मस्या उपणाः। श्रे नाजावनारयिष्ठ श्राह्म। उप्लाः पीयाउपम्यान्याः। महात्रा प्रवाशः। श्रे हति हति श्राह्म। ।। ।। (गापन्तः हति छानक्ष मन्यु छः काक्षित्र्या। हुनं कृत्वा यम्। श्रिद्धाः प्राप्ति म वणी खत्यः। । श्रेष्ठः वं हम्याः मन्यः स्वृना महर्श्यसः ह । श्रेष्ठकार्ण (यानिर्ण्याः श्रुक्रायाः। प्राप्ति स्वर्णा । श्रुक्रायाः। नृरिक्षय नीरनाथ भन समृत्रकः। ख-ডেন ধুপযিত্বা ত রাজদ্বারে প্রিয়ো ভবেৎ ॥ ৪ ॥ শ্বেতাপরাজিতামূল পিষ্ট রোচনযা যুত্ত য' পশ্চেরি-नक्तिव वनीवर्याम्नावस्य ॥ ७॥ কাকজিন্থা বচাঙ্গুগ নিম্বপত্ৰ সঙ্গ-স্কুন• । আত্মব্লক্ত• সভাবেয়° বশী-ভবতি মানব: ॥৬॥ ওঁ নম: সর্থ-সর্ব্বেভ্যা নম:। সিদ্ধা সরু সরু স্বাহা। সপ্তভি ম জ্বিত কৃত্বা কর্মী-রস্য পুল্লক । জ্রীণামগ্রে ভাূমদের ক্ষণাদৈ সা বশা ভবেৎ।। ৭।। বুক্ষ-म श्री वहा भ धः मधुना जह (भ षरिष्ट । अङ्ग्लिशाह विनिष्ठा नानाः ভर्डात बिहु छि ॥ ৮ ॥ मृन • जयस्य । वङ्क छ • ব্যবহারে জযপুদ•। ৯। ভৃসরাজস্য ন্লন্ত পিষ্ট শুক্রেণ সংযুক্ত। অক্ষি-ণী চাঞ্জযিত্ব। ত বশী সর্য্যালর ক-ল ৷৷ ১০৷৷ অপরাজিতা শিকা দদ্যা-बीलार भन नगन् अः। अष्टनन शुरानाह वशीकद्रश मुख्यः॥ ३३॥ চতুঃৰপ্তিকলাঃ প্ৰোক্তাঃ কামশাস্ত্ৰে वनोकदाः। वानिक्राम्यान् श्वीनाः क्रवायंत्रारम् बन्धीकद्राः॥ ३२ ॥ द्राठ-ना नामभुद्धानि दिल्लभुद्धः श्रियक्दः । ऋक्ष्म॰ हन्त्रस्थित जिन्नक्षम जग- **अक्रुमक শ**ञावती । जिल्लो अलन স-যুক্ত যোনিলেপাৎ বশো নরঃ॥ ১৪ ॥ নিম্বকাণ্ডস্য ধ্পেন ধ্পযিত্বা ভগ• জ্রিয:। সুভগা স্যাৎ সা চ ক্দু পতি দাসো ভবিষ্যতি ৷৷ ১৫ ৷৷ মা-हिया नवनी उक्ष मध्य मध्य दिया। সৌভাগ্য ভগলেপাৎ স্যাৎপতি র্দাসো ভবেত্তদা ॥ ১৬ ॥ পঞ্চ র-ক্তানি প্যাণি প্থগ্নাত্যা সমাহ **दिए। व्रक्र्मन मगा**युक्त माञ्चतः ক্তসমন্বিত ॥ পুয়েণ তু স পিষ্ট্ৰাচ রোচনাথা• সনেকত:। জ্রিথা পু•সা কৃতো কৃদু তিলকো হ্য বশীকর:।। ১৭॥ বুদ্ধদণ্ডী তু পুস্লেণ যানে পানে वभोकतः॥ ১৮॥ ७ त्र॰ गमलउए স্বাহেতি। অ্যণ গণপতে মস্ত্রো ধন विन्तानुनायकः। इस मन्ट मन्दूक জপ্বা বন্ধা শিখা তত:।। ব্যবহারে ङ्यः স্যাচ শত জাপ্যান্থা পূ্য: ॥ ৯॥ তিলানান্ত য্তাকানা• কৃ क्षामा॰ कृष् रहाम्रायट । अक्षां उत्र-সহসূত্ত রাজা বশ্য জ্রিভি দি নৈ: ॥ २०॥ श्रीकात्रः भविभर्गकः श्राउः भूगं)भगम्। छि । छी गाः नवारि वि-ন্যস্য বশ্যতাং নযতি প্রং।।২১॥ যন্ত জুহ্যাদ্যুত শুচি: পুযতমানস: । मृष्टिमाव्य मना उम्र वनमायाञ्च যোষিত: ॥২২॥ মন:শিলা পঞ-কঞ্চ সপোষ্টোচন হস্কুম•। এভিঃ ক্তেচ ভিলকে সদা জীবশতা মি-यार ॥ २०॥ महप्तता ज्वताकः সিভাপরাজ্ঞিতা বচা ৷ ভেনৈব ভি-লক কৃষ্বা ৰৈলোক্য বশতা মিযাৎ ॥ २८ ॥ গোরোচনা মীনপিত্ত মা-ভ্যাঞ্চ কৃতবর্ত্তিকাণ। यः পুমাণ স্তি-লক । স্ব্যাদ্বামহন্তকনিষ্ঠ্যা ।। স-করোতি বশ সর বৈশোক্য নাত্র সংশ্य:। ২৫। গোরোচনা মহাদেব খাৰুশোণিতভাবিতা। ততঃ ক্তাह তিলকান্মানবং যং নিরীক্ষতে। ত-**१९ म**र्ब<sup>,</sup> तना॰ क्यांग्राचाञ कार्या। वि-हा**द्र**णा॥२५॥ नारगचद्र**क रेन**रहायः जुक् भडक हत्रीउकी। हन्दन का ह স্ফোল। রক্তশা লিসমন্বিতা॥ এতৈ ধূপো বশকর: অরবাণ ইবেন্ডর ॥ २१॥ त्रिकारन महाराव भाईजी লিঘশকর। নিজশুক্র গৃহীত্বা তু वामङ्ख्य वः श्रुमान् ॥ कामिनीठ-রণ বাম বিলেথ স স্যাৎ ব্রিষাঃ श्रियः। २৮॥ रेमञ्जवक महारम्व भाः রাবতমল মধু। এভি লিগুছ লি-यः रेव कामिनीवमक् खरवर ॥ २०॥ भूग्नानि भक्षत्रकानि गृशीमा गानि कानि छ। उ धुनक श्रिगक्क श्रवानः (एकःयागडः॥ व्याननं निश्वनिक्रमः) काभिनी वण्डा नियादा ३०। इंडि गाक्ए १४०। १४७। १४३ व्यक्षायाः ॥ 🕸 ॥ व्यथानाट जः-পুৰক্ষ্যামি বশীক্ষণ মুক্তমণ। যেন বিজ্ঞানমাজেণ মন্ত্ৰা: দিক্ষ্যন্তি ত্ क्कार ॥ भुडिमा॰ काद्रयापहित् পলেন রজভদ্য চ । পলার্জেন মহেশানি সাধ্যম্য প্রতিমাণ শিবে ॥ হরিভাল পলাজ্ঞ হরিদা हुर्नक **उथा । गर्ड** कृदा मार्क-হস্ত তত্র নিঃক্ষিপ্য সুন্দরি ॥ র-জা**সন তত্র দত্তা** বিশেভদ্বতমা নস:। চত্দিকি নহেশানি পভাকা বিনিবেশযেৎ ॥ রক্তাসনে চোপ-বিশ্য প্রাম্যে জপনারভেং। পূ জায়া নিয়ম দেবি জানীছি নগন নিদ্নি॥ ভিলপ্ণ ঘট তত্ৰ স্থাপথে ভৰ দেশিকঃ। পুণেপুডিষ্ঠামস্ত্ৰেণ भागान् मः शागरयष्ट्रपः ॥ व्यथः कृ द्वा भू कथिया भू वाल मालया करण । দশসাহসুরাপেন পুযোগার্হো ভ বেৰত: ॥ পুণৰ প্ৰসূচাৰ্য মাধা वीक कि जीयक । का दु दल्ला किनी যুক্ত বানকর্ণেন্দু ভূষিত ৷৷ ততো রক্তপদ বুয়াছাম্ভে ভদনভর । माध्याम ७ ७। नामा वस्तान्य

**७८ भर्नः ॥ व**िकायावि माञ्जा कारणप्रभगरमुकः। प्रभाःभापिशु-भारान (कामामी क मनाहाद्वर ॥ প্রাতঃস্থাত্ব। হবিব্যালী শুটি ভূত্বা জিতেন্দ্ি:। প্রাতঃকাল সমার-ভঃ জপেম্ব্যু দিনাব্ধি॥ জপে স্ মাপ্তে দেবেশি হংনদিনে দিনে শতে । জাতীপুল্লস্য হোমেন বশ্যেমাত **সংশ**যং॥ কপূর নিশিুতৈ স্তেঃবৈ স্ত-র্পাবেৎ পরদেবতাং। প্রংপুণব মৃদ্ধু-**७) চাম छा॰ প্**বদেৱ ড:॥ তপ্যাম y-प्रिजायास भज्ज जानीहि मुनहित । অনেনৈব বিধানেন সংতর্গ্য পরদেব-তাং॥ নিব্ধিঃ পুষোগাদ্ধেবেশি ছাব-তে নাত্র সংশ্য:। অভিযেকং ভতঃ व्यर्गाट मह्दवि भागवला ।। भूगवः থ্য মহেশানি চাম গ্রাণ তদনন্তরণা অ-ভিষিঞানি তৎপশ্চাৎ ক্র্যন্তনা-ভিবিঞ্চযেত।। उদ্দেশাংশন দেবেশি বালাণান ভোলযেন্তন। এবং কৃতে মহেশানি বশীকরণ মুক্তন॰ ॥ জা-যতে নাত্ৰসন্দেহ: সভ্যুণ সভ্যুণ ন সংশযঃ। কামত্ল্যক নারীণাণ রি-প্ণা॰ শমনোপম: ॥ যাবজীবিত-পর্য্যন্ত মারবাণ ইবেশব্রি। জায়তে নাত্র সন্দেহঃ সত্যু সুরগণাছিতে ॥ 🗱 ॥ খেতাপরাজিতান্ল পেব-

(यापुष्ठमायूञः । नाउनामिखनः কত্বা ভিলক কার্যেবত:।। বশ-যেয়াত সন্দেহ: সত্য সত্য ম-(रुषात्र । हन्द्रभूर्यो । यनि वृथा उना नियुम्ब जागुरवर्था ब्रक्तवरक्षण ठामू ণ্ডা॰ ভোষথেদ্ব হুব হু । সুবর্ণ দ ক্ষিণা দেয়া বিক্তানুসারত: প্রিযে ॥ আদ্যন্তে মহতী প্রা স্ব্যা-जम्या वद्रान्यन । शक्षात्नभुर्यारमः ণ রাজান বশ মান্যে ।। তব শুীত্যৈ মহাদেবি কথিত ভুৰি मुर्ल ङ । **ই**তি বৃহন্দী **ल उखः** ॥ বশীভ্ত: তি বশ্যতাংপ্ৰাপ্ত:। অ বশো বশো ভবতি ইত্যৰ্থে দ্বিপু-ত্যযেন নিয়ম: ॥ গছপিপ্লৰী। ইভি বশীর: करेगध्यः ॥

क्री ल्वक्। ইতি भद-**চ**न्मिका॥ বৃশ্য: ত্রি আযন্তভা গড:। তৎ-

भगायः । भूत्यः २। इंडामदः ॥ বশ: ০। ইতি শবরত্বাবলী।।

বশ্যকা স্ত্রী বশগান্ত্রী।ইতি শদ্-ब्रज्ञावनी ॥

भर्यायः । दणगा २ दणाम्या ३ वण्डका ८। इंडि नय द्रजावनी ॥

বংখ। ইতি কবিকল্লফন: ।। বৃষ্তি। ইতি দুৰ্গাদাৰ্স: ।।

वं (एरवारम्ग्रक्शविख्रा-ব্যট্ পনজ:। ইভ,মর:।। মাহা শূৌবট্ वोषद् वषद् स्था अञ्च शक्षमदा (नवहविमात विक्रिम्थल्खी वर्ड) खि। (प्रवाय इविरवामान (प्रव**र**-विमान उव (मवा इन्मुम्यः। अब পি ভরে। দেবতা ইতি মৃতে স্তেপি দেবা:। হবিদান ইত্যনেন এতে মস্ত্রা ইতি সূচিত । ইতি ভরত: ॥ वयहेकातः भू (नरवास्मम्)करागः **। তৎপ**র্য্যা**য:।দেবযক্ত:** ২ আহ্ন তি: ৩ হোম: ৪ হোত্র ে ইভি (इंग्रहन्द्रः॥

ব্যট্কৃত কি ছত। ইতামর:।। वार्यो इन्छ यक्षवाः उर मार्थिषु वषर्कुड । इंडि भदत्र ज्ञावनी ह।। বন্ধ ড গভৌ। ইতি কবিকশ্ 🖦 ।। किलि वहे। ए वद्धाः । इंडि मूर्गा-

वश्वरः ইত্যমর টীকাষা রাশমুন্দট ধ্ত नाक्ट्रीयनः॥

ৰশ্যা জ্ঞা বশীভূভানারী। তৎ- বিষয়ণী । জ্ঞা চিরপুস্তা গৌঃ। ই-ব্য়বিণী ∫তামরঃ।। ব্য়তে পরিকা-মৃতি বৃক্ষৰ শ্চিরকালীনবংসঃ वकना ইতি খ্যাতঃ। वह উ গতৌ
नाशीं जि व्ययः वहर एवं करायता
वट्न ইতি কোষः তদ্মোগাट वहिर्माण दिकाका मिलि हैन। वहरनीठि भार्छ गांज्याज्या मिना भा
मामिषाट नः नमामिष्माभी भा मुष्य
मूष्ठी गांदिष्ठ वह्निगीं जि मूर्ष
न्यमास्य गम्मिः हः। ইতি उष्टी
काराः जज्ञाः।।

বস ক স্নেহ ছিদোশ্চ। ইতি কবি কল্লজন: ।। স্নেহ ইহ প্রীতি: । ক বাসণতি বন্ধু: । চকারাৎ বধে চ । ইতি দুর্গাদাস: ।।

বস য উ ইর স্তয়ে। ইতি কবি-কল্লফন: ।। য বস্যতি । উ বসিত্ব। বস্তু। । ইর অবসৎ অবাসীৎ অব-সীৎ। অমাৎ পুষাদিত্বালিত্য ও ইত্যন্যে। স্তম্ভ ইহু নমুতারহিতী ভাব: । যোবস্যত্যরিন্থিতি হলা-যুধ: । ইতি দুর্গাদাস: ॥

বস ঐ ঔ নিবাসে। ইতি কবি-কল্লজন: ॥ ঐ উদ্যাৎ। ঔ অবাৎ-সীৎ। ইতি দুর্গাদাস: ॥

বস ল ড ভ্তৌ। ইতিকবিকল্ল
জনঃ ॥ ভ্তিরিছ আছাদনপূর্বক
ধারণা ল ড বস্তে লোকঃ বস্ত্রণ।
ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

বস ৎক বাসে। ইতিকবিকল্লজন:

॥ বস্থতি। ইতি দুর্গাদাস: ॥

বস্তি: ৄ প্রী বাস: ॥ যামিনী ॥

বস্তা ∫নিকেতন । ইতিমেদিনী ॥

বসন প্রী বস্তা । ইত্যমর: ॥

ছাদন । ইতি মেদিনী ॥ নিবা
স: ॥ জ্রীকটাভূবণ । ইতি শক্বরল্লাবলী ॥

বসন। জ্রী জ্রীকটীভূবণ । যথা।
সারসন সারশন বসনা বশন!
তথা। বসন বল্লনঞ্চে জ্রীকটীভ্ষণে ভবেৎ।। ইতি শব্রন্থাবলী।।

 উবাচ ৷ করিষ্যে , ২হ• তব বিভো বচনাদ্ধরমোহন ৷ কিন্তু যোধি-পাহাস্ত্ৰ নে ভতঃ কাস্তা ভবান্ সূজ া ময়া সংমোহিতে শম্ভৌ য্যা ত-भाग्राम् साहनः। कार्याः भरनात्रमाः कामा अभिरम्भग (लाकज्य ॥ छा-নহ• ন**হি পশ্যানি ব্যাতস্যানু**মো-হন ৷ কর্ত্তব্য মধুনা থাত ভ্রবোপা-यः उत्रः त्रक् ॥ मार्क(ध्य উवाह । **এव॰ वारिनि कन्मर्लि शाजा लाक**-পিতামহ:। ক্যা সংমাহনীযো হ্য নিতি চিন্তা• জগা**ন হ** ॥ চিন্তা-বিষ্টস্য তস্যাথ নিংখাসো যো বি-নি:সূত:। তুমাদ্বসন্ত: সংজাত: পু-স্লুবাত বিভূবিত:।। চ্তাঙ্করা স্তৎ কলিকাণ বিভুজুমরসংছতি। কি-শুকান সারসা রেজে পুফুল ইব পাদপ: ॥ শোণ রাজীব সন্ধাশ: ফুল্লভামর**সেক্ষণ: । সন্ধ্যোদিতা** খণ্ডশশি পুতিমাস্য: সুনাসিক: ॥ শান্ত্ৰহ্ৰণাৰ ভা শাগ্ৰাম হ্ৰ ঞ্চ মুৰ্জ্জ: । नक्षाः भूगानि नम्भः न अनहर মণ্ডিতঃ ॥ পুমন্তবারণগতি বিস্তীর্ণ क्रमञ्जाः । भीन्युनायञ्ज्ञः कः रोतकत्रयुग्पकः ॥ भृत्रखाक करी कड्ड: कष्टुगीरवामञा मकः। गृष्टक्रजुः भीनवकः मःभूगः महनकरेगः॥ छा-

দৃশে ২৭ সমুৎপন্নে সম্পূর্ণে জসু-भाकतः । वत्वो वायः अभुद्रज्ञिः भाम-পা অপি পুদ্মিতা:।। পিকাক্ষ নেদুং সতত পঞ্চন নপুরশ্বা:। পুফ্ল भगा अভदन् **সর**স্য: यह भूक्षद्राः া৷ ইতি কালিকাপরাণে ৪ অধ্যাযঃ ॥ 🗱 ॥ रुद्राभार्तिकाल अत्र अयो-ণি যথা ৷ মধুক্ত স্কতে কর্ম যত্মন্ত-স্য বিমোহনে। তৎ শ্ণুর মহাভাগ निडाः जरमाहिङः भूनः॥हम्भकान् (कमात्रानामान कक्नान् भावेलाः छ-থ।। নাগকেশর পুলাগান্ কি শুকান্ (कडकान् वकान्।। नाववी मिल्लिका भर्भातान् अक्वकाः ख्रथा। উৎ कु-**लग्ि उ**ञ्च यब ७६७ रेव इतः॥ नद्राः मुख्यकृत्वभया नि दी क्यन् स-वरानितः। मृगिक्ष कृउदान् रङ्गा অতীব শঙ্করাশুন ।। লতা: সর্বাঃ সুমনসো নৃতনাজুর সঞ্ ः। वृक्कानु, চিব্নভাবেণ বেষ্ট্রযন্তিম তত্র চা। ভান্ वृक्षाःकाकन्योवाः रेडः मृगित्तिः जभी बरेनः । मृष्ट्रा का सवना या छ। न তত্র মুনি রপুতে। তদ্নণা অপি লো--(कम नानाकारिकः मूल्माक्रीनः। ब्रमः (छम्र भुद्राः भिका (य (य हानि छ-(भाषनाः॥ न जम्र भूनत्रया जि मृष्टे॰ নোহ্স্য কারণ । ভাব न সকতে

कान कालाच प्रति मंद्र ।।। 🕏 🥱 कांनिकालंतार १ अंद्यारः । अ। वमाउ वर्षनीयानि यथा। जूतः (छी (बाला) (काफ़िल बाला छ मृत्रिक) **ठि उ**क् मत्नान्छिनः। उन्हीउद भुष्मव्याग्यक्षती जुण्दत्वादाः ॥ इंडि क्रिक्ल्ल जायाः भ्यम् खनकः ॥ 🗱 ॥ सङ्गाना छर्ग ७ वि छीर द्वार इ। যথা।রাগাঃ যাড়র উ প্রোক্তারা নিশ্য জ্রিশানের ত। ভৈরবোগ ব राउण्ड महे माबारण खाथकाहि ॥ छम्। **श**क्कावित्तु १था । जास्त्र লিভা চ দেশাখ্যা লোলা পুথন মঞ্জরী। মন্দারী ভেক্তি রাগিণ্যো वनद्यम् सनाम्याः ॥ सम्य ध्रामः दणः **गि**च**िः र**र्शहयद**क्ष्मः भूक** ন্থিক চ্ঙল গল্ডবেশ। ভুনন্মুদা যাল্যনো জন্তি ন**তখনভ: স ব্স**-इप्राणः । अस्य भारजनस्या युपा । ी एक्नाः स्वात् छ गादर माह-रतः इत्यः। उत्तव्य द्यागमः गान रूक भने विভि:। इति सङ्गीत-भारमान्द्रः ॥ कन माधारङ ज्मा य ५ (५.११)। ग्था। लाखनी ३ गमकी ২ গঠাজরী ৩ গৌড গরী ৪ ধানক লী ৫ দেনশাখাও।। হনু নেতে হি व्यानवागन् अनायाता हम्ताक्षी

পুত্রাঃ। কিন্ত তেষা নথ্যে বিভা-সস্থানে ছিলেলে ইভি লিখিত া সোনেশ্রনতে ভদ্য বড়া গিল্যো यथ।। (मभी ) (मविगती २ विहासी ৩ টোডি মা ৪ ল লিভা ৫ হিলে।-লী ৬ ॥ তল্পতে অন্য রাগন্য द्राणिगीमश्चिम् दमञ्जूणानम् गयः। ইতি मङ्गीडमाञ्च॰॥ 🕸 🛚 । ভावविष्णयः। यथा। जरमञ्ज १-कर्व मक्तन्म जिल्लाः। त्रिः তালো বসম্বত জগজুম্পো ২থ गाक्ति ब्रिड्यामि ॥ त्राव्हाल কর্ত্তব্যে নগণো নগণ স্তথা। জগ-कुल्य छक्टेन्हरका विज्ञासाम्रक्ष थ-वन ।। है कि सङ्गी करास्मान द्राः।। বসমুকঃ (मार्गनाकभूरजनः। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ ।৷

বসম্বস্মঃ পু॰ বৃক্ষবিশেষঃ। যথ। । বসম্বস্মুমঃ সেলুঃ শ্যিতো দ্বিজ-স্থাসিকঃ। ইতি শক্ষালা।।

বসন্তল্প নুনাকর: পু॰ 'ঔষধ্বিশোষ:
। যথা। পুরাল রস মৌজিকাস্থর
নিন্দ চত্ ভাগভাক পৃথক পৃথক
থ স্তেরজত হেন জো দ্বঃশাকে।
অযো ভূজগ রস্কা বিলাবজ বিন্
নদ্যাথিলঃ শুভেহনি বিভাব্যেৎ
ভির্ণিদ প্রিয়া সপ্তশাঃ ॥ দুবৈ

वृष निष्णकृष्टिः कगण गान जीशु. || श्रुकिः भगः कर्ना कन्त्रक मंग्राप-रेजनना जुल्हितः । दमत्रसमूमाकः রো রসপতি ছিবলো ২শিত: সম-रु गम्झ ज्याद किल निकान्शारिन विगर्भः রয•॥ ইতি বৃদ্ধযোগতরঞ্জিণী॥ -वमन्द्रधार्यों भूः (काक्नि:। इंडि (किंटि ॥ खी বাসন্তীলতা। ইতি व्राक्रनियंग्डेः।। दमञ्जिक भी ठञ्जर्मगाकाद्रभाः महत्नाविष्यः॥ श्याविष्यः । যথা। ক্রেশ বসন্তভিলক তভ জা জ গৌ গঃ ৷ ফুল্ল বসন্ততিলকং **जिनकः** वसान्। नीनाभद्रः भिकः হল কলনত রৌতি। বাত্যের প্ শ্লনরভি মল্যাদ্বিতো যাতো হ রি: স মথুরা বিধিনা হতা: মা: !! **ইতি ছল্নোমঞ্জুরী।:\*।।'ঔষ**ৰ্বি (मातः। यथा। अकाद्रल एक्न रेम দ্বৰ বিশ্ব শক্ত চূৰ্ণ করন্তাসভিত मिष्टिम भी छ। रेनवर भुद्धा क्छ श्रुव र्थरकः श्रुक्त राज्य तम् তিলকৈ রপি ওল্লুকল্লু।। ইতি গুল্ত- 🔄 রব্বাবল্যা গুরুত্রোগচিকিৎ সা ।। বৈদঃ वसंब्रम्डः भुः वाजुक्तः ॥ कि रूषः ॥ शक्यक्रामः। इति भिष

(मिरिन्) ।। वमस्त्री की शाहिनीतृकः !! माधः वीनजा। ইতি मिहिनी।। यशिकादी া। পিকী। ইতি রাজনির্যণ্টঃ।। আন্তৃক্ষ:। ইঙি मद्याला ॥ दमलमथः भः कामस्यः। इंडि इलाग्यः ॥ वम। छी नाःमणु जनशा वृतिसम्बः । ইত্যবঃ ।। साः मधारियो । इंडि রাজনিঘটঃ॥ অन्। विवत्। (समः भारत मुधेवाः ॥ শিশুমার: । ইতি बिका श्रम्भायः ॥ ্বসন । ইত্যুণাদি-(कावः॥ বসির• ্লী সামুদ্ৰবণ।। গজ-**लिश्रनी। ইতি ধ**রণ্যম টৌকে। दिनिञ्जनिः। ইতি দ্বিৰূপকোষ: 11 क्षी ब्रद्धः ॥ धनः। ইত্যনরঃ ॥ 'বসু वृत्क्षीयथः॥ भागमः। इंडि भिनि ॥ হাটক । ইতি বিশ্বঃ ॥ জল । इं जिल्ला खरको मृत्रा मुना पितृ खिः॥

91\*

वक्वकः ॥ व्यन्नः ॥

র শ্মি: । গণদেব তারিশেব: । ইত্য

खंदः ॥ महाद्वेमःथ्राजः । दया ।

विद्या श्रुतक लामक निक्रोकता ॥ 'নিলো খনলঃ। পুত্ৰেত পুভাসক বসবো ২ছৌ কলাৎ স্ভাঃ॥ ইতি ভরত:॥ माफा विजीयमधीन वर्ष মন্ত্রে অসিজ্ঞা পত্ন্যা বস্তিক-ন্যাজন্যানাস। তাঃপুজাপভিভেগ मखवान्। धर्याय मणा। जामाः ना মানি।ভানু লয়। কলদ্ যানি বিশ্বা সাধ্যা नक्षुठी वसु म् वृत्ती सक्ष्मा । णानाः नत्था वत्ना ब्रह्मी वनवः श्रुचा यथा। (मान: श्रुन: युत: यर्क: অ 🖫 দোষ: বাস্তঃ বিভাবস রি 🤡 ।। (দুৰ্বস্থা ভিন্ত্যা পত্ন হৰ্ষ। (माक जगहराः मृधाः। )। भूग नः উद्धर्गाः हो भूषो मर्मायः शुरकाष्ट्रवरण । २ । बुतमा वात्रानाः পরঃ পুঞ্জাত। অর্কস্যবাসনাযা॰ खर्चा**नगः भूधाः। ८। यदा** वस्ताः র্যায়াণ দুবিণক্ষেয়া পুঞাঃ (৫) দোৰস্য শৱৰ্য্যা॰ শিশ্মান্তে। হুৱে **त्रः** । ७ । वास्त्रा द्राव्हित्रम् । विश्वक्या। दिश्वक्याः भू अ भारत् (या मन् त्रज्य। विषय गायता गरनाः नुष्ठाः । १ । विভावस्या क्वाराः ত্রযঃ পূলাঃ বৃষ্টে রোচিযাতপ না নান:।৮। ইতি খ্রীভাগবতনত। ॥ 🗱 ॥ भठाउद्ध यही दनदायथा । धंदः २ धुतः २ त्यागः ० मादिजः ৪ অনিবা: ৫ অনবা: ৬ পুত্রে: ৭ পুভাगः ৮। ইতি মহাভারতে मानवर्णः।।व्याशिकः। व्यालाः भुत्रकः (मामक रत रेक्टवानित्या १ मनः : भुवृत्यक भुजानक दशदा शही পুकीर्ভिङाः/॥ याशनाः गुट्या देव **७:७**१: **मुनः मार**डा घृनि ख्या। यु-বস্যুপ্থে। ভগবান্কালো লোক-পুকালনঃ ৷ সোমস্য ভগবান্ বর্ণ বর্চধী থেন জাবতে। ধ্রস্য প্রো দুবিণো হুতে। হব্যবহ তথা।। ম্-নোহরায়াঃ শির্স: পাণে ৩থ রমণ তথা ৷ অনিলস্য শিবা ভা-র্য্যা ভদ্যাঃ পুঞ্ প্রোভ্যাঃ 🛚 অবিজ্ঞাতগতিকৈর ছৌপুলাব-न्तिमा **ड्**। यशिष्यः स्वातस् শরস্তার ব্যজায়তা। ভদ্যা শাথো विष्णाचिष्ठारेनगरम्ह क्षेद्रशः । প্ৰায়স্য বিদুঃ প্লং বাধি নামা চ (स्ववः।। ह्यो भूट्यो (स्ववः प्राज्ञः। क्रमावाडी मनी विली। वृह्ला उन्ड ভণিনী বরজী বুক্ষচা রিণী ৷৷ পুভা-লস্য তুৰা ভাৰ্য্য বস্নাম**ইমৰ**্য চ । विचक्षीः सङ्ग्राज्य उपार कः জে পুজাপ ভিঃ ॥ ইতি বহিংগুরা-(त कमाशीय भूजामण बाबाद, एड

कोर्चि १८ स्वरायक ॥ इ. । सालुः । त्राका । इ. । सिनी ॥ चनाः । विशः । इ. । सार्षः । हिल स्वरायकी ॥ श्री उपूत्रः ॥ तृष्यः । शृक्ष विशः । इ. । शृक्ष विशः । विशेष विशः । स्वर्णे विश्व विश्व

यगुः जी मीछिः॥ वृष्कोवष्। इंडि भागतज्ञावनी॥

ৰ্যু তি ম্ধুরং॥ শুদ্ধ•। ইভিছেন-চন্দ্রং॥

বনু ল লী সাম্ভ রিলবণ । ইত্য-নর: ॥ পা•শব• ॥ বাজ্ক• । ইতি রাজনিবলৈ:॥

वन्तः गुः शक्त्कः। ইত্যনরः।।

भिवग्नी। ইতি নেদিনী।। পুল বিশেষঃ। সতুপেত রক্ত ভেদেন হিবিধঃ। ভৎপর্যায়ঃ। বসুঃ ২ শৈবঃ ০ বকঃ ৪ শিব্যন্তিক। ৫ পাশুপতঃ ৬ শিব্যতঃ ৭ সূরেইঃ

৮ শিবশেখর: ১। অস্যত্তণা:। কটুত্ব•।ভিক্তত্ব•। উষ্ণত্ব•। পাকে मीठदः। भीপनदः। অজीर्गवाऊ-গুলানাশির্• । খেতস্যরসায্নর্-थ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ বসুকীটঃ পু॰ যাচকঃ। ইতি হারা-वनी ॥ वमृहिम्। जी सहारमनावृक्षः। इंडि इन्नावा **त्राक्र**िष्ठेण ॥ বসুদঃ পু• সবের:।ইতি ধনদশদ-मर्मनार ॥ धनमाउद्गि खि ॥ বসুদেবঃ পু॰ ত্রীক্ঞ**জন**কঃ।তৎ-भर्यप्रायः। यानकपुन्तु िः २। इंड्रान মর:॥ শ্র: ৩ কৃঞ্পিত। ৪। ই 🧍 5 **मद्रद्रावली।। यगः विवद्रगः वर्षा।** नात्रायण्डेवाह। क्लाउट्या वस्टा व-শ্চ বেৰমাতা চ দেবকী। পূ**ৰ**ণুণ্য ফুমনৈর সংপাপ শ্রহরি সূত্র । (त्वभीकामात्रियायाः वसुम्हः ल। ম্ছ্লেভূ**ু ৷ তুস্য জন্ম নি দেব**শ্চ दारयामाम मुन्तु 📴 ।। आनकक्ष নহান্তঃ: ভীহরে র্জনক্ষ ড ু। সম্ভঃ পরাতনা স্তেন বদস্ত্যানক मनम् जिन्।। इजि दुस्तरेवराई श्रीक्ष-जन्मचा ७ १ घरता वः दङ्गि**रा १७** ॥ বনুদেৰত। জী ধনিগানক্তৰ।ইতি (रमम्पः॥

বস্দেব ভঃ পু: জিক্ষা: । ইতি হেনচন্দ্র: ।: বস্ধা জী পৃথিনী। ইত্যানর: ॥

বস্ধা জী পৃথিনী। ইত্যনর: ॥ বস্ধাথজনুরিত। জী ত্থজনুরিক। ।ইতিরাজনিহ'টঃ।।

, বসুধারা জ্রী জিনশ জিবিশেষ:। ভৎপর্যাম:। ভারা ২ মহাজ্রী: ১ ওলারা ৪ মাহা ৫ জ্রী: ৬ মনোর-মা ৭ ভারিনী ৮ ছয়া ৯ খনভা ১০

भा पं अध्या प्रक्रिया ते स्वा ते व्याचा विद्या के ज्यानिया है अपूर्व विश्वा के स्वा के स्व विश्वा के स्व विश्व के स्व के स्व विश्व के स्व के स्व विश्व के स्व व

माना। वृष्तिभाष भूवं कर्डवा छ-दिवाद्यवम्द्रभाक अखाना ग्छ-धावा। यथा। इत्तागभविभिष्ठे काडायनः। अखानग्रा वर्ता थी-वाः मधानग्रानग्रा के कावरा ८ भक्षवाद्यान वा नः किनियाः न छा द्वाः। धान्यानिक भाषार्थः

তৃত্য স্তদনু শুজাদান ম্পক্ষেৎ।। বসো শেচদিরাজস্য বসো ধারা। নিতি বসোধারাদিপাতেনেত্যাদি

हिंद्या ७ व मना विष्ठः। यउँ। भि

· मर्गनाथ यानुक् सभारमदेनव भुर्याः

**गः कर्त्राः ।** ইতি माञ्च उक्तुः ॥ 🕸 🛚 । সামগানা তৎপাতন মক্তে হথা। যদ্ধটো হিরণ্ডস্য যদ্ধা বাচা গ্রান্ত । সত্যস্তুস্ণো বর্গতেন মাদং স্থ कामिन ॥ अ॥ युक्तवा॰ रथः। उत्ताः পবিত্র মৃদি শতধার কলো: গবি-**ত্র মসি সহসুধার॰ দে**বভু সবিতঃ পুনাত বলোঃ পৰিত্ৰেণ শভ্ধারেণ সুত্রা কামধন্ধ। ইতি শান্ধপুযোগ-उनुः॥ ॥ अरग्निनाः यथा। यशनः **म्हत्र या**ष्ट्रश्री जृति शाद्र भगवश्री ঘৃতপুদাতে সূক্তে শ্চিবুতে ৷ রাজন্ত यम्। यम्। ভ्वनम्। द्वापमी स्राम रेत **७ शिक्षि ७॰ रक्ष**मुक्**ड॰। ३**१ ञ्चल ইন বনৰনে ভগায়ঞ্জনা অভিচাক-मीनि। यद मारः द्वाय छ यद र ज्ञा পঠতে ঘৃত্ৰঃ ধারা নগুনপ্লুবপত্তে १२३ वृज्यजी ज्यनानामिकिश्लाः; दी लिथी मसम्राय मुल्लामा नाता-পৃথিবী বল্ণস্য ধর্মণা বিদ্ধতিতে অঙ্গরে ভূরি রেভসা ৮৩১ শভধার म् सभीकामान विक्षिण्ड कि

তর কক্থানা অভিনদন্ত পিছে। কুলাস্থেত রোদসী শিলুত নড্য

বাচ । ৪। শা হধার । বাসু হক্ষ-হিশ ন্চফুবেস্তে গ্ভিচফাতে হবিঃ

। त ह भूगिष्ठ भूगा हि सम्बद्धि

मृतूष्ट्र मथसातः। ৫। वरमाः भवि-অম্সি শতধার বুদো: পবিভ্রম্সি সহসুধার দেবস্তা সবিতা পুনাতু। বসো: পরিত্রেণ শতধারেণ সূত্রা কা-अक्षुक । ७ । जूकानिन्द्रात जि॰ न्-থিব্যা বৈশ্বানর মৃত আজাভমর্মণ कविः नुमाक गिरुषिः क्याना मानः লাঃ পাত্ৰ জন্যন্ত দেবাঃ স্বাহা। ৭। **ইত্যেকৈ মঁজৈ স**প্তয়তধারা দ-দ্যাৎ। ইতি কালেদিঃ । 🗱।। বি (भयवम्याता यथा। नृत्ना या वहरङ ধারা মানাৎ সর্পি ন সা শভা। नाधिका मनुरङ विशु पूर्डिक कवि-কারিকা।। তুট্যতে বছনানা যা শন-তে চ ভ্তাশন। সবর্ণা কেন্বর্ণা চ খার। **রাজ্যবিবৃদ্ধ**ার ।। সম্ভ**তা প**া ততে নাত ভৰোতীৰ চ পাৰক । তংলাভি নৃপরা**ুঞ্** বসোধার৷ ন जः नयः ॥ मर्गञ्ज बह विस्ताः कृति কটি বিবজিজ 5°। শস্যতে চ ব সোধারা যা সপি গব্য প্জিতা।। षा जानाए गटलाङ वा (इंडिव)-স্ত সংশাভন•। যুত ক্ষেদু গ্ৰো-शादा मद्दशीषा निवादिनी ॥ वन-দুব্যু ঘৃত্যাজ্য মনৃত হবি লামি-कः। जम्र भात्रा सना (न्या यत्मा धांत्र। हि ना भुड़ा ।। रुमना चर्महा

(मन माकन व महावाना। मया व বিষ্ণুনা শক্ত কদুেণ চ সংস্থায়।।। আত্মানঞ্চ স্বৰূপেণ ধারাযান্ত পু-পাদিত । দেবী সামিধ্য মাথাতা সর্কানপুদাযিকা ৷৷ তমালু নপি রাজেন্দু বসোর্থারা॰ পুগাত্য । **নাড: পর্তর**ণ পুণ্ডণ বিদ্যতে নৃপ সত্তম।। বসোধারাপুদানস্য একা-ह मिश यच्हात्य । नृत्रिभायुषका-মেণ পুল রাজ্য জিগীযুণা ॥ দেয়া খারা সদা বৎস রিপ্নাশায বদ্ধি-ন্ন্। দুব্যাভাবে ঘৃতাভাবে নৃপ **७**क्यतरक ভरम ।। यहि । । वहरड খারা ভদা ছিদু ন বিদ্যতে। মহা আশ্বিন মাসে ত অষ্ট্রমী নবনীয় চ া কার্ত্তিক্যা• মাঘ চৈত্রে ত চিত্রা-যা রোহিণীয় চ। বৈশাখ্যস্ত भूराख्या हैनाष्ट्रा (नाष्ट्रमा भाउ-म ।। आया हमामी (इग्र अर्थनी পূর্ণিমা নভে । নভস্যে রোহিণী दरम हर्र्गा छामभी नित्न।। मः ক্রান্তিষ চ সর্বাস গুড়া শৌর ভ্রা-সু চাচনদু স্র্যোপরাণেষু পুভিষ্ঠা যক্ত শ্বনি।: শক্তোচ্বে প্ৰাতৰ্যা ভলপুর।ভিষেত্রে। মার্পে যুক্ত-নিবান্ধ ত শভে বাকে। ত দশ্র।। পুহূত্ত্ব গমগের খারা দেব্য:

**णु**ंचावहाः। এव॰ (या वाह्यकाः ताः <del>नाक्र</del>मृष्टिन कर्मागा ॥ उम्र छः সিন্ধ্যতে সর্বা সনাগা সহসাগরা । ইতি দেৱীপুরাণে বসোধারানান Oc ञ्यथायः ॥

বসুমর। জ্রী পৃথিবী।ইত্যের:।। वमूनागः न् अशि:। इंडि मद ब्रङ्गवनी ॥

বসুনতী ক্রী পৃথিবী। ইত্যমর:॥ वमुद्राहिः क्री यज्जः। वरमाक्टः म जाया विज्ञातन इम् भुजायन নিম্লন্ত । ইতি সিদ্ধান্তকৌমূদ্যা मुला मितृ जिः ॥

বসূলঃ পু॰ দৈবতা। ইতি ত্রিকাণ্ড (भाव:॥

বস্ত্রেষ্ঠ লী কপ্যা ইভি রাজ नियंग्डेः॥

बमुरमनः भू॰ कर्गताहः। इंछि बि কাওশেষ:॥

वमृङ्ली जी अस्टब्रभूत्री। इंडि नक्याना।!

বসূহউ: পূ• বকবৃক্ষ:। ইতি রত্ন माना ॥

বসূহউক: পু॰ नद्रभावा ॥

वम् के जा माझिवनवार । इंडि वस्त्राक्षा की अन्नगक्षा इंडि वान (२१६ मु: ॥ वक्षूमः । इंडि

দ্বিক্পকোষঃ ।।

বস্ক ড গভৌ। ইতি কবিবল্লছম:।! मन्डामका इंडि मुर्गामिक्शा विभि-वक। मृद्धन। सथ। ইতে (कि विशि वहे। ७ वऋछ। ইভি দুর্গাদাস:॥ रकः **१९॰ अष्ऽदमारः। ই**डि ভ्दि-शुरुषागः ॥

दक्षयः भुः अञ्हायत्नावट्नः। इंडामबढीकाणा॰ बारमुञ्चिः॥ वक्षमभी खी हित्रभूम् जात्गी: । ই । अवही काया॰ जायसू क्छैः।। अ न्। मुक्षछ्गाः। वक्षयिन्। खिए।-यमः उर्भागः दलक्ष भगः। इंडि ভাবপুকাশ:॥

বক্ষরাটিক। জ্রী বৃশ্চিক:। ইতি श्रवावनी।।

বস্তু ড ক ববে। ইতি কবিকল্লছনঃ ।। क ए दछ । তে। গভি হি॰ দা যা-চনেম্বিতি রনানাথ:। ইতি দুর্গা-मामः॥

वसः भुः छागः। ইडामदः॥ বস্তুক॰ ল্লী কৃত্রিমলবণ । ইঙ্কি (रुमग्नु: 11

वकत्कः। ইতি वयकर्षः श्रः मानत्कः। ইতি রাজনিঘণ্টঃ 🔢

निगं छै।।

वस्ताना की वस्ताना हैं जि वस्तान की वस्ताना हैं जि वस्तान किया वस्तान वस्तान का स्वान । क्रिया वस्तान वस्तान वस्तान का स्वान वस्तान क्रिया । है उप्तान ।।। वस्तान क्रिया क्रिया । है उप्तान ।।। वस्तान क्रिया क्रिया । वस्तान । विकास क्रिया क्र

ৰস্তি: পুণ জ্ঞা নাভেরধোভাগ:।।
বজস্যদশা।ইত্যমর:।। বতে আহাদ্যতি মূল্ঞাশ্বপূট্ণ বস্তি:। বস
লঙ্কুটো বস্তি প্লিক্তি কর্নালা।।
ইতি ভট্টাকাষাণ ভরত:।। গ্লা।
অথ বস্তি বিহি:। বসি বিধানুবাসাধ্যো নির্হ্ণ ততঃ পর:। য:
ক্রেই দিয়তে স স্যাদনুবাসন
নামক:।। ক্ষায ক্লার তৈলৈ যোঁ
নির্হ: সনিগন্যতোবন্তিভিদীবিতেম্মান ভ্লাহন্তি বিভি মূত:।।
বস্তিভি: মূগাদীনাণ মূল্ঞাশগৈ:।।
ভ্লানুবাসনাথ্যে হি বন্তি র্যাংসা।
হল্ল কথ্যতে। ভানুবাসন ভেদশ্চ

भाजा विक क्रीव्रिजः ॥ शनस्यः তস্য নাত্রা তথাদক্ষণি বা ভবেং। অনুবাস্যস্ত কক্ষ: স্যাত্তীক্ষাণ্ডি: কে-वनानिनी ॥ नःन्वात्रास ऋशेत्रा-(बारी कृष उर्धानती। नाञ्चानती-नान्वाम्याः म्य ब्रह्मीर्गामाम ज्ख्यू-তা:।। শেথে মুর্চ ংকচি ভয স্বাস काम क्षया ठूबाः। (नवः कार्यः) भूतः नीहि धाउँ इंकदिगु जि: ।। नेतन ৰ্দ স্থৈ বিবাণ গৈ মণিভি বা বিধীয়তে । (नबः नाष्ठी । उथाठ विश्वभूकारण ৷ নেত্ৰণ পথি গুণে বস্ত্ৰে তক্ষ্লে বি-(काठान। (मञ्ज वस्त्र ठ नाउ) १६० (न-তো নেভরি ভেদ্যবদিভি ৷৷ একবর্ষা-खु यद्वयः यावद्यानः यख्यनः। एट्या षामणक यावचान महा हमःनि ত ।। ত उ: भन्न । बाम्म कि न्न भेटेन র্নেত্রদীর্ঘতা। মুদ্ধ হি দুণ কলায়াভণ ছিট্র• কোলাস্থি রন্ধুক• ॥ "খা **স**•-খ্যু ভাষেত্ৰ সুকু গোপুছ সলি ভ• ॥ मृत्व इतः। ७७: कमार কৃশ । মুদ্রাই দুদ্দি পুষালে বেবং कत्मन बहुषाय द्वार नवराय छाङ्क दर्शाय (ऋषः। आजुद्राक्ष्ठभारनन भूटन छूनः विदीय छ । कनिष्ठिक। भवी भार मागु ५ छिका मूथ ।। भः विशासा ६व छोन, । उन्नान

कर्निक (इंड कार्य) जागाहर्य गर । कर्षिका भवासि कर्षवर् । कर्षिका ह्याकाहा खनाविकायः भुविनात्। विनी कर्गिक्छ । कृषि हा का ब्रह्मा ९ কৰ্ণিকেভি কথ্যতে । শেষদেভত্ত विख्य वस्वय विधान हः ॥ गृगाक শুকর গবাং নহিষদ্যাপি বা ভ বেৎ। বস্তি ব্লিভিশেষ:। মূত্রকো ৰস্য বতিস্ত ভদলাভে 🦻 চমাজ: ॥ কৰাৰ ব্ৰক্ত: সমৃদু বস্তি সুঞ্চো দুটো-হিতঃ। বুগবস্তেন্ত নেত্র স্যাৎ পুঞ্ मशेष्युताबिजः॥ मृहिन् ग्युनक নালিকা পরিণাহিচ। শরীয়োপ-हयः वर्गः वन भारताग्र भायुषः। अ-ক্তে পরিবৃদ্ধিঞ্চ ব্স্তি: সন্ত্রপা সিতঃ। দিবা শীতে বসন্তে চ সেই विष्ठः भूतीयक ॥ शीया वशः गद्र कारन द्वारको महाप्रमूदामनः। नहा-ভিল্পি নশন ভোলধিরারুর স (१८ ।। सम् नृहीक जनत्र हिंदा লেছ পুগোজিত:। দ্বিধা ভোজনে বতৌ চ। ৰাকা ভুক্তবলো হত্যত্ত বলং বর্ণঞ্জ হাপাতে । যজামুহ ন তো হস্ত ভোজযিত্বাদ্বাদ্যে । যুক্ত মুহু যথে। চিত মুহু ভোজ্যু (ভার্যিক। ইত্যর্থ: । হীন্যারার্-(ञी दशी ना िकाणेका दो खालो ॥

অভিমাত্রী তথানাহ ভ্রমতিসার-কারকৌ। উভৌবন্তী জন্তাসন निक्शायो। উख्या माट शीनः ষ ট্ট ৰ্মধ্যমা স্যাৎ পলৈ জ্বিভি:।। शनवर्यन शीना म्यापुळा माळानू-वामत्न। 🗱 । व्यथ (मुह्दछि: । শতাত্ত্বা সৈম্ববাভ্যাণচ দেয়া সেহে ठ हर्नकः । एकारकालन मधास्त्राः यहे हजु वंग गायरेकः ॥ विद्यहः নাৎ সম্ভরাত্তে গতে জাতবলায় চ । जूकामायानुवामग्रय याँछ (बंद्या **१न्दामनः ॥ अथान्दाम्यः च छ। ङ** মঞ্চান্ত্ৰেদিত শ্ৰৈ:। ভোজ্যিত্বা যথা শাস্ত্রণ কৃষ্ঠণ চণ্ডমণণ ভঙ্গ 🔢 উৎमृष्टोनिव विज्ञः (राहर्टर (मु-**হবস্তিনা। উ**क्षाष्ट्रश्विम**ङ** উक्षाणुना সু।পিত । সুগুদ্য বামপার্শ্বেন বা-নজ্বাপুদারিশ:। স্ব্যিতাপরজ্ব-मा (नवः निष्क छार नामर ॥ छे-জু'বভিচুথ দূৰৈ স্থানহভে**ন ধা**-वराष्ट्र । श्रीफराष्ट्रिक्शितिय सर्ध्य বেশেন ধীরধী:।। ভৃষ্টা কাস ক্ষবা-मी • क विकास न का द्रारा । जि•-শ্রাজানিতঃ কালঃ প্রোক্তো ব-ত্তে ন্ত পীড়নে।। ততঃ প্ৰিছিতে ন্নে: ই উভানো বাক্ শত ভবেং। यजानूनः कवावर्ङ वर्णाएहारिक्या

যত ৷৷ এয়া নাত্ৰা ভবেদেকা সর रेंबरेवय निक्ष्यः । निरम्रायास्ययः পুণ্সা মঙ্গুল্যা ছোটিকাথ বা ॥ **७ इक्टाइ। द्राश्चरः** वा दाह्या (ज्रयः सृ **छा दृरेषः । लुमाब्रिकः मर्बगादि** यंथा वीयां भुमर्गाठ ॥ व्यष्टवी यां (मुहारि। जाउरयखनाया (इन- डी-खीन वाद्रान् भरेनः भरेनः । शु.हाः কৈচৰ তথা শোণী শয্যা ঞ্চিৰাং ক্ষিপেত্তত:।। স্থিচো শৈচন স্বপা किंडा। भ्रवेडाउए हुयः। भगाक পাদত স্তম্য জীন্ বারানুৎক্ষিপে-ভঙঃ।। জাতে বিধানে তৃ ভঙঃ **স্**ৰ্য্য। विष्ठाः यथा मूथः। मानिनः मन्द्री ষক্ষ মেহঃ পুত্যেতি যদ্য তু ॥ উপ-দুবং বিৰা শীঘুং ল লভাগনুবালিতঃ েউপদুবস্থানে উষ চোষাবিতি স্ मुख् भाटेता कीर्याम मथ मामादा स्मार्क जुडाः एड शूनः। वाय्मः (उः) कराष्ट्र काय॰ मीखा ग्रेष्ठ गता यनि ॥ অনুবাসিভাষ দেব মিতরে ২হি: সু त्थानकः। श्राना मुठी क्यायः दा গ্ৰেছ ব্যাপত্তি নাশনং।। সুখোদক মুক্ষোদক ৷ ব্যাপ ভি ব্যাখিঃ। খনে न विधिना यङ् वा गछ वाश्वी नदा शि वा। विषया वष्ठय (खया माछ हिन्द निक्रणाम् उन्न भूषामा विकास

যেদ্বস্তি বড্ফণৌ। সমাশকো দ্বিতী-यञ्च मूक्षु इ मनिनः इत्य ।। वनः বর্ণঞ্চ জনযেৎ তৃতীয়স্ত প্রোজিত: । চতুর্থ পঞ্মৌ দত্তী সেইষেতা। दमाम्बी ॥ यक्षा भाष्मः (मृह्याञ मधाना (यम এव है। अञ्चला नव्यः **म्हाशि म**ड्जान्छ यथाकन ॥ यथा-জন মিতি বচনাৰষ্টনো হছি স্নেছ-त्य । এ ए मुक्र गठान् (मायान् वि-खनः जात् जात्रराट्या हिखनः **अक्षा**-ममनिवमाथिका विख्या अञ्चापमा-श्चामकान वर्छ। ना॰ (या निरंबत्त । म मक्का वाला २ थमा द्राय उरल्हा र्मत्रभुछः ॥ क्षांग वल्याकाम (जुङ्बंखि॰ पित्न पितन । प्रशाहिकरा ख्यात्य नगुप्रवाय च्या अहाराश (मुट्श रङ्गा । किकाशाः भी घेकाः च म्म : १ ११: । ञ्रम । ५ व १ द्वा १ व १ द्वा ख्य निक्रः शिकानाः भरानावः शु-শন্তে। স্থ বা যদ্য তৎকাল। মেহে। নিগতি কেবল:॥ তস্যান্যে। ংলুভারো দেখো নহি শ্রিকুভি ভি তি। রিহুতি রিংগ ডিগ্রভি দত্ত ্ণ্ৰেছ্ ইভি শেষ:।। অশুজন্য নলোন ब्रिजु॰(स्:इ) निकियमा भूनः। जमाव (यहनाध्यात्न मृतः शामनः हायत्ड ॥ भक्षभार छकद्य उब रम्यामि

**करुगः। छोक्षः जीक्ष्मोयरेष** यूका कनदुर्खि हिंडाथ दा॥ यथानत्नान-(गा वायू र्याल । जुल्ल का गर्छ। उथा विद्यहन म्म्राट जीक नमा हन्न-न्याज्या रामा (नामनुब अर्था) १ स्ह বস্তি বিনি:মৃত:। সর্বো হল্লে। বা वृत्त्वा हो क्षामुरमक्ष्यः न विकासला । অনাবাত বৃহোরাতে মেছ স **(भाषी**न शंद्र**ः)** (द्वश्वश्वावनाया**र** नान्नः (दृश्यः) विवीगत्त ॥ अप्रहाद्रश्य भूजीक जागी वृष्णाक छोदियः। শভাবরী সহচর- কাকনাসাং প (ना चे छा॰ ॥ यव नाया छनी (काल মলখাৎ পুস্ভোন্মিতাৎ। চতু-ব্রেণি ২স্তুন: পক্ত্র দ্রোণশেষেণতে न ।। পড़ि उनाएक (भरिष) भै व নিধিঃ পলোমিতৈঃ। অনবাসন নে ভদ্মি সর্বাত বিকারন্থ।। পুত্তি कः कद्रछः । (दोहिषः (द्राहिष इंडि मुक्त इंगिविष्मयः। काकनामा कीयाक्षेत्रोठी । भूम् उ॰ भनवर ॥ क्रियुक्ति व्याथम् स्वाध्यः विस् कर्यानः। मृषि छा । अगुमारयन छ। भि किट वा छ मुमु छाट।। मगूनारम व নুচিত নেআদি সামপুরা। পানাহা-র বিহারাশ্চ বভিঞ্মাণি ক্ৎস্মাণ। (पूर्भान नदाः कार्या नाव कार्या

विष्ठाद्रभा ॥ 🗱 ॥ अथ निक्हनस्टि বিধিঃ। নিজহবস্তি বঁহুধা ভিদ্যুত কারণান্তরৈ:। তৈরেব তদ্য নানানি क्ञानि सूनिश्वक्रोदः ॥ काद्रभाष्ट्रोतः **नगरा**यिकाद्गर ७ दिनः । विद्यास পর নাম প্রোক্ত নাস্থাপন বুবৈঃ। **ষ্ঠানস্পেনাদেবে ধা**ত্না স্থাপ ন ন হ ।। নিক্হ স্যু পুমাংক পুস্তঃ भारताख्यः भवः । सर्वानः भ्ष्य-फिक्षे: होनक कड़ता ख्रयः।। शब्द (**ण्** क्षे । অভিনেশে। ९ क्रिक्टेरनायः क्ष তোরক: কৃশ তথা। অল্লিষ্টাদোষ: व्यनुष्ट्रिक्षेत्रायः। वन्ता खाष्ट्रामन ইতি থাবং। ফ্রোরম্ব: উর:ফ ত वान्। याधान हिन रिकार्भः साय স্থাস পুপীড়িত:। গুরশোফ।তিসা-রাভোবিস্ঠী ক'ঠ সংযুক্তঃ।। গভি नी मधरम्ही ह नाष्ट्राभाग हत्ना-मती। वाजव्याशायुमायार्ड वाजामृ-धियगज्ञत ॥ मृहा ज्यापत्राना इ ম্এক ছাশ্মরীষু চ। ব্জাস্মরনন্দার্ भुभार्ष्यु निक्षर्गः॥ मृत्व श्लाभार क्षुारम साजस्यविधिववृधः । उँ সৃষ্টানিলবিমাত্র স্থিক বিল মভো-জিত ৷৷ নব্যাহে গৃহনধ্যে চ যথা रगागाः निक्रहरर । मिश्वः सन्तरकः । বিশ উফাযুস্পিত । সেহব্ত

िधारिन वृक्षः व्यर्गिमिक्शनः। डा-**তে নিৰ্বাহ্ন চ ভতো ভ**বেদুৎকটকা गरः ॥ जिर्धमङ्ख्यावय ५ करा-গন্নেছ্যা। অত নুসূর্বনাত্রশন্দে रेन उपनि (वाबिजः। निक् भुज्याः **गमनकारमा मृ**ष्डिमाञः। अस्यागठ• मूर्डां ज निकरः भाषीन इंद्रि । निकरेश दाव मिलमान काब मृजास रिमक्तरेवः ॥ यभः क्रत्यन गर्हे छ विष् পিত্ত কফ বায়বঃ। লাঘবঞোপজা-ষেত সুনিক্ত তমাদিশেৎ।। বিবি-क्र अ यम अष्टि: निष्य डा व्याधिनियु इः। আস্থাপন (मृह्वत्स्त्रुगः मग्र-খ্যনে তুলক্ষণ।। বিবিক্তভা দৰে। यसनिः नद्रभः। अस्म विविश यूळ्याः मिक्र विखिनानित् । विशेष वा ত্ হীয়া বা চতর্থা বা যথোচিত।।। সম্ৰেছ একঃ পৰনে পিত্তে ছৌ গয-সা সহ ৷ ক্যায কটুকা নূতা কফে ভফ স্থাে হিতা: ৷৷ পিভ শ্বেমা िनाविष्टेः कीत युष द्रोनः कमार। িক্হ•ভোজবিহা চ <mark>ডত ও মন</mark>ুবা-भार । भूषभादमा वृक्षमा वालमा চ नृष् (ई छ । विख छोक्षा भ्रुवृक्ता हि (७४१: र्नाप्यनावृषी ॥ मनामूट-ক্রেশন প্র নধ্যে দোষহর তভঃ। शन्धार मः न्नीयक मन्। एउ

বিচক্ষণ: ।। এর গুরীজ মধুক পিপু-जी रेमक्तद॰ वहा। इश्रुषा कनकन्न**ः**ह বস্তি ক্ৎক্লেশন: মৃত: 🛭 ইতু,ৎক্লে 🏴 न विष्ठः ॥ 🗱 ॥ 🖷 जाञ्चा संधूक• विनु को देख कनाम व ह। मका छि-ক: সগোম্ত্রো বস্তির্দাবহর: মৃত: ॥ ইতি দোষহরবন্ডি: ॥ 🕸 ॥ প্রিय-क्युर्भकुक गुरु। उरेषव ह ब्रमाञ्जन । সক্ষীর: শস্যতে বস্তি দোষাণা শ-মন: মৃত: ৷৷ ইতি শমনবস্তি: ৷৷ 🗱 🛚 🕻 ত্রিফলাকাপ গোন্ত কৌৰু কার স মাযুতা: 1 উধকাদি প্তীবাষা বস্ত-যো লেখনা: মৃত্য:।। উষকাদি পুতীবাদা: উষকাদিশণবিশেষচূর্ণ भू (क्षभा:। ३७ (वर्षनवस्य:) कः।। वृष्ट्रपमुष्ठ निःकृतिथः करेन् ग्रंधृत्रोक र्यु छा:। निर्मिनी म द्रामा (भठा वस-(गा वृष्ट्रा: मृजाः ॥ इंडि वृष्ट्रावः खयः ॥ अः॥ वनरेशंऽदावर्ंः • • ज् मानानी शृञ्जका ख्वाः । अवाद श्री नाद्रार्का। स्मल् वङ्गादः। कीद निका कोर्युका नामा शिहित ग॰ জি जा: ॥ याकाद्रोज्न कि विदे ये की (मया विष्ठकारैन: । चाक्रभूगन: । जेब्र-ভু নেষঃ এণঃ কৃষ্ণমূগঃ। মাত্রা পি-ছিল বন্তীনা পলৈ দাদেশ ভি মতা॥ इंडि পिছिनावस्यः॥ 🕸 !! पदासी

रिमञ्जवमहाकः सहनः भुमृख्वियः । বিনির্থ্য ততেঃ বল্যাৎ স্নেহস্য পুসৃতিত্রয়ণ ৷৷ একী ভূতে ভতঃ স্লেহে क्लमा भुभृष्ठिः क्किश्यः। भःगृहिंख ক্ষামন্ত চতুঃপুসৃভিস'মতে ॥ গৃ ক্লীৰাছ ভদাবাপ মন্তে দ্বিপুস্তো-ब्रिड•। किथा विश्वपुरम्पाष्ट्र िक्ः হু স্পলে৷ ভিবক্ ৷৷ এবং পুকল্পি তো विक्त कीममनुमुखा छारट । বাতে চতুঃপল ফৌদু দদগ্ম স্থে रुमा रहे**नन** ॥ नित्त हजुःनन क्कोन् (मुरु मन्। ८ नवायः। क क जु यहें नवा को पूर किल ए सु হ• চত:পলং।। ইতি নিক্তমাতা।। **ঞ**া এর গুড়াথ তুল্যা লা মধু তৈল া প্রাপ্তক । শতপুত্রা প্রাজেন সৈ-द्यवा**र्क्षन ज**न्युङ । **मध्रेङ्किक ज**न्न জ্ঞো হৰ বন্ধি দাক্বিলোডিত: ॥ ध्यामा खन्म कृषि श्ली इ मालामावर्ड नः भनः । यद्यवर्गः ब्रोटेक्टव वृष्यु। मी-भन कृष्ट्ः ॥ सव**ेजलिकविसः** ॥ 🕸 । क्षोपुष्का कोत्र रेडलानाः भुमृ-जि॰ अमृत्रः ভবেए। इश्वारेमञ्जवाः कारणा विदः म्याब्याशनः शवः॥ याशनः मात्रकः। याशनविष्ठः॥॥॥ এরওমূল নিষ্কাথো মধু তৈলং সসৈ-क्वः। এष गुलन्नत्थाविष्ठः भव्छ। পিপ্ললীফল:॥ যুক্তরথবস্তি:॥ #!। **পक्षम्यम**् निद्याथ रेखनः मागिका भथ। ममरेक्षवः मग्रेशास्त्रः मिक्षविष्ठ রিভি মৃত: 🛭 সিদ্ধবস্তি: 🖰 🗱 📔 मान मारकारिकः अर्यतिप्रवाद्यश्च म-কীৰ্ণতা॰। বৰ্জযোপর॰ সৰ্ব মাচ-রেৎ সেহবস্তিবং ৷ 🕸 ৷৷ অখ্যেতর-বস্তি বিধি: ৷ অত:পরং পুরক্ষ্যামি বস্তিমুন্তর সংজ্ঞিত। নির্হাদুন্ত-(द्रायमाङ्गान्डद्र मः ऋकः॥ द्राः দশাক্লক নেত্ৰ নধ্যে চক্তক-ণিক। মালভীপুয়বৃন্তাভ ছিদুং সর্বপনির্গম ।। পঞ্বি শতিবর্ষাণা মধোমাত্রা দ্বিকাধিক। তদ্দ্ধু প লমাত্রা চ শ্বেহস্যেক্তা ভিষ্পুরে: ।। অথ স্থাপনশদ্ধস্য ত্প্তস্য স্থান ভোজনৈ:। স্থিতসঃ জানুমাজেণ भीठि २ दिया भनाकया ॥ तिकाया নে ঢ় নাৰ্গস্ত ভভোনেত্ৰণ নিযোজ্যেৎ । गरेनः गरेनः घृ का कारक य पुत्रस्त् **९**ञ्जानि यहे।। उट्डा १४शीफरग-ছন্তি শনৈ র্নেত্র বিনির্হরে । ততঃ পুত্রাগতে স্থেহে সুহ্বত্তিক্রান্ হিত: ॥ জীণা॰ কনিষ্ঠিকাস্থল। भ्या अर्था प्रभाक्ष्य । मूलः भूरद-শাং যোজ্যঞ্যোন্ত শচত্রস্বলং ॥ ष्ठाकृषः ग्वमार्ग ह मृक्षानजः विरयाः

क्राय । भ्वकृ ह् विकारत्यु वानानाः (ज्ञमञ्जूषः ॥ भरिन निक्रमा मार्थिः সৃশ্ব নেত্র বিচক্ষণে:। মাল তীপুর বৃষ্ডাভ নেত্ৰ নিত্যক্ত বাৎ পুন: স্ক্ শব্যভিধানে বালানা ততােপিনে ত্রস্যসূজ্বভা বোধনার্থণ। যে।নিমা-পেঁৰু নারীণা সেহ নাতাছিপালি দা ॥ মূত্রমার্গে পলোমানা বালানাঞ্ विकार्यिनी । উन्नानीय खिरेग म-म्हार उन्न कारेन विष्कारः॥ अनु ভ্যাগছতি ভিষক্ বস্তাবৃত্তর্ম•ভ্তি-তে ! ভ্যোবস্তি বিদ্ব্যায় স যুক্ত। त्यादरेन ई रैनः॥ कल दक्षिः विषयाः দ্বা শোনিমাণে দৃত ভিষয়। সতৈ িনি অভা প্ৰা: শোহনদুৰ্স:-ं ठा 🕆 मञ्चारम उचा र छो एएत भ उ॰ विमाजनः । क्ये हे एकश्वः लय भागा रही अस्यम बाध मञ्जूषात বভৌ খনিন খানে বৃত্তি বৃত্ত শুলিন पन्नवारमा व उः मुक्काः श्रामा दीन मार्चना कवः । हन्मान्ख्य বভিন্ত নোটাো দেছিনা বৃচিৎ ॥ गराएडला विद्यानि व्याशस्कत এব চ। मस्य क् उन्नम फाना नमानाः 🛚 सृङ्व उना ॥ अ ॥ अथ क । व जिं । । বিধিঃ। মৃত্য ল্যাক্ত ওবে কিন্তু। भूका साब्धेन में जा। नव पुनर्डिनी

বর্ত্তি: ফল্বর্ত্তিক সা মৃত্যা !। ইতি ভাবপুরাশ: ।। বস্তিকমাঢ্যঃ পু•্ অ'ইউবৃক্ষ: ।

पाउक्तमात्ताः स्तुः च ६६० वृद्धः । ज्विते हिन्द्यात्ताः । वृद्धाः । ज्विः रहे। दल्लिक्सात्ताः (दिने वः (दिने-वः कृतः। हेजि सद्दिन्तुः हो ।। दल्जिमवः क्षी मृजः। हेजि (हम-हन्दुः ॥

বস্তু ক্লী দুব্য: । যথা । বুদ্ধন্ব্য:

(স্ত্রীপিক: স্যাৎ সজু: দুব্যঞ্চ বস্তু হ

। ইতি ।। পদার্থ: । যথা । কাব:
পদাথে: গম: স্যাৎ সজু: তত্ত্ব:
বস্তু হ । ইতি হ ক্রি গাওলোষ: ।।
জগতি অস্তুপ্ত: ভাষো হভাবশহ।
ইতি ন্যা:শাস্ত্র: ।। স্তিকানন্দ্রমানুদ্ধা ইতি বেদান্তন্ত্র: ।।

वस्त्राकः हो वास्त्रः। ই शिल्पसत्रः।-वलो बाकां सम्बोकः॥

ৰভূগ ভী খে∋5লীশাব .ইভি লাহ•িহটো॥

रखाः भ्री शृष्ट् । हे अम्बः ॥
रखाः भ्री भित्रवानाम् भ्रयक्रकार्भाः
भामिनियां स्टब्स् । काँश्व इंडि जामि । एट्यायः । आह्यानः र वामः ० ६ व्या ६ व्यानः ६ व्यानः शृकः ७ । वे कानः । विष्ट्यः १ रमुख्यः ৮ व्यक्तः २ कर्षाः ३ भार्षकः ३३ किम्मूः ३२ । इंडि कराध्यः ॥ वाजन >> घिठ्य >8 (পাত > > हाह > > वाम > > । इंडि सप्तज्ञावनी ॥ 🗱 ॥ खन्र **পরিধান বিধি যঁথা । ভৃগুঃ । বি**জ-(का १ नु खे बीयक नः का बड़ अव ह। । শ্রৌত আর্ভ তথা কর্ম ন ্ম ক্চি-स्रापनि ॥ दिक्षः भूशीयानाभ-ষ্ঠক ह:। তথা সা পরীধানা ছহি:। **कका निवका छ। मुद्री ভবে८। सृ**ि: । বামে পৃষ্ঠে তথা নাভৌ কক্ষত্রয মুগজ্ড । এভিঃ কলৈ: পরীবত্তে থে। বিশুর সাখুছি: স্তঃ ॥ বৌধায-नः। नार जो वृङ्क यञ्च नाष्ट्रारम् ७ ভান**ী** ৷ অন্তর্মীত পুশান্ত তদচ্মি युक्तमा अत्याः ॥ भूक्तजाः । मणा-भार हो मुख्यहराया मृख्यः। मन्त्राय কর্মণি কংখ্নীভি। উত্রীয়ধার भ जामदी उद्या वथा वरहान ষীতঞ্ ঘার্যাতে চ দিকোন্তনৈ:। ख्या अकार्यहरू रहामुख्याहामनः শুভ•া। ইতি মতে:। অত্ৰ যথা দ্বি জোন্তমৈঃ সহ্যাদ নৰ্ড্যাদিনা উপ-बीड॰ धार्यहरू छथा छेखताहामन म পি হিজোডিগৈ হিতি পুদর্শনমাত্র'। প্রাপ্তক্ত ভূতব্দনেন নাহেধাণ দিবস্ত্র ভা পুর্তাতে: লোনফর: এ মঞ্ছো

সো ভবতি তম্য উত্তরার্ভেন পুছা-म्य**ीठ । ই**ङ्गाङ्कि कङ्गा 🛊 ॥ वान्यात्रवात्रवाः। यथा। कान्यः य-नामा सारया भवार्य गुः नुक्षंः । व्ययप्रादियमः भाषा निर्यागायतः ধারণা। ইতি রাজবল : া 🗴 🛚 অপিচ। মুক্তেদ্যানভন্ত সন্তন্ত্রেশ তন্মার্জন । কাভিপুদ শরীর দ্য कथ्या (मायनान्यनः ॥ (को (वयः हि-ত্রবজ্ঞ রক্তবন্ত্র তথের চাবাত (भूपार्व उड भी उजाल विधान-(य८ ॥ कोरवय॰ भङ्गान्यः छमद्र -वद्धकः।। स्वदुः मुन्नी छः निड्यः 🗫-याय' दश्च मृहु १८७ । छन्दा दर्यम्यः-কালে ভঢ়াগি ল্যু শগ্য: জ্যা ক্ষা-যা কোড়গী ইভিলোকে৷ ক্ষায়রাগ इक् वा मुद्रु मुज्य वज्र मीजा-তপ নিবারণং। নচোঞ্চ নচ বা শী-ত॰ ভত্ত ব্যাস ধারণেছে।। যশস্য कामा बायकाः ज्ञानसानन्तवर्षानः । खुडा, वन्नोकद्गः क्डा, नवः निर्मा**न** नवज्ञः ॥ काष्युः कारनाम्रीभकः। কদাপি ন জনৈঃ সচ্ছি ধার্য্য মলিন ন্মরং। ভার কণ্ড ক্রিকরং প্রান্য-वश्चीकृत• शत्र•॥ यहारी ब्रामाज। দারিদু বা। ইতি ভাবপুকাশঃ।।#॥ व्यथ् नरवद्धशदीयान दिन ॥ वृक्षाः নুরাধ বসু ভিষ্য বিশাধ হস্ত চিত্রো-ন্তরাণ্মপবনাদিতিরেবতীযু। জন্ম क कीव वुध भूक हितार मवाही খার্য্য নব বসন মীশ্বর দেবতাঙ্কী।। ইতি চ্যোতিস্তব্ধ ॥ 🕸 ॥ অপিচ। अूर्यं। ठान्नथनः युगः मनिस्ति (न्नभः সদা ভূমিকে । বস্তাণা বহুতা বুং जुब्रख्दो विक्रागनः जम्मकः। नाना (ভाগयुक: शुरभाम मयन मिवा) व्य-না ভার্গবে শৌরে সূতঃ খলু রোগ শোক কলহা বস্ত্রে ধৃতে নৃতনে। ইতি कर्यालाहनः॥ 🗱 ॥ व्यमः कातमः-रगाग निविक्तिनानि यथा। मनत अक्न यश्रीषु हाम्माऽ। <u>भ</u>ाष्ट्रवामात ৷ বস্ত্রণোণ ক্ষারসংযোগো দহত্যা-সপ্তম• দল•॥ ইত্যাহ্নিকাচারতত্ত্ব• ॥ 🕸 ॥ जम्मानकन । यथा। वारमाम-শ্চনদ্ৰালোক্য মধিসালোক্য মখ-দ:।ইতি শৃদ্ধিতত্ত্ব ।। 🗱 ॥ অপিচ । দ্বিজানাং যে ত্সততং শৃভবন্তপু-मा नद्राः । रञ्जगक्षयुठः शञ्च। (छया॰ जुबन मोउनः॥ इंडारम्। वङ्गिशुः রাণে **কাল**ির্মলোপাখ্যাননামাধ্যা-यः।। #।। তেন विकु भूका विश्वि र्यथा । पुक्व शर्छिकीरययं वाद्य कालामः কাদিভি:। বাসোভি: পূর্বেদ্বিষ্ণু সৃশুভৈ রাজানঃ প্রিথৈ:॥ইতি তবৈব

कियायागनामाध्यायण ॥ छम्गुइन विधि यंथा। विकुषस्याञ्चत्रः । वज्रः मणाञ्ज मा मम्राट् शतिवाव उथा भून:। आकृत्याभानको यान माक्टेश्व ह भामृत्क ॥ ಈ॥ उम्हा-বিপতি ৰ্যথা। ভবৈব। বাৰ্হস্পভ্যু মৃত বাস: সৌম্যানি রজতানি চ। পক্ষিণক ভূথা সর্বে বাযব্যা: পরি-कीर्बिजाः । उर्नुटिग्रम्यायिकः ন্ত যথা। হারীত:। মণি বাসো গবাদীনা পুভিগুহে সাবিভ্যঞ্জন-रुमुः ज्ञालि । यहेमरुमुः वाह्रास-রসহসু•। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ।। 🗱 ।। অপিচ। শ্রীভগবানুবাচ। কার্পাসং काञ्चलः वालुः (कोषडः वज्र भिषाटः 1 **ভৎ পূৰ্ব** পূজ্যিন্দ্ৰৈৰ মক্ত্ৰৈ দেবাৰ চোৎস্তেৎ॥ নিৰ্দশ্য মালন্য জীৰ্ণ ছিল্ল গাত্রাবলিস্কিত। পরকীয়া বাখুদষ্ট শ্চিবিদ্ধণ তথোষিজি ।। উপ্তকেশং বিধৌতঞ্চ শ্লেম্ম মূত্রাদি मुविकः। भुमान (मवजान) मह रेमरव रिनात्वा ह कर्मानि॥ वर्ड्डांग्ट नान-शारमन यक्कामायुन्यसाकतन। मान-যোগেন ইভ্যত্র স্বোপযোগেন ইভি কৃচিৎ প্তকে পাঠঃ॥ উত্তরীযো-खत्रामको निकारना यामकनकः ॥ পরিধানক প্রৈক্তান্যসূতানি

शुर्या बर्य । मानवञ्च नीमात्रकः ভবৈষাতপৰারণ ।৷ বৃদ্ধিত পুস্তকে শাণবস্ত্র মিত্যক্র মণিবজ্রমিতি পা-जानामृहेरय। शजाका युक्त म्लारमी সূতে॰ বত্ৰ॰ পুষোজয়েৎ ॥ আন্)ভা-বরণাদৌচ ভদ্মিনা শস্তভোগি চা इक् को वनवद्यक महन्ति है। लू-শস্যতে ৷৷ পাঁত• তথৈব দৌষে<sub>ন</sub>• বাসুদেৰায় চোৎস্চেৎার ক্রন্ত কম্ব-**ल म्हार निवार भव्रमाञ्चान**ा वि **ठिब॰ मर्बरम**रवर्डिश स्वीरङ्ग २ मु॰ निवंदररः । कार्भामः मर्वराङम् हर्गाट मर्खिछा धव ज् ॥ रेनकाश्व-इकः मन्त्राब् वाम्पिवाग (इनकः। उथा निकाडब्रक्छ निवाय विनि বেদযেৎ ।৷ নীলীব্ৰক্তস্ত যদ্বস্ত্ৰণ তত मर्वज विविश्वज्ञिङ । रेमरव रेशरक (वा भाषारम वर्ड्डाय डिव्ह क्रमः ॥ मीनीबकः भूमामाकु (या मन्त्राह्य-ফাবে বৃধঃ। নিম্নলা ভস্য ভৎপূজা ভৰা ভৰতি ভৈৱৰ।। বিচিত্ৰে বাস নি পুন লাম নীলীবিরঞ্জিত। বস্ত্রণ मन्। बाकारमें देव। बानारेबा कु कमाह-न।। विभागः ताकाणा यवट (मः ৰানা॰ বাসবো যথা। তথা ভূষণ बरगंतु वस मूखन मूहारङ ॥ वरसन

ত্রাগতে লজ্জা॰ বস্ত্রেণ ত্রাগতে ত্ব। বস্ত্রাৎ স্যাৎ সর্বতঃ যিন্ধি শ্চতুর্র্ন পুদঞ্চ তৎ ॥ ইতি কালিকাপুরাণে ७৮ व्यवतायः ॥ 🗱 ॥ ब्राङ्या समा व**ञ्चाहानिङ म**तीब्र॰ कर्ल्बुरः। गुथा। नवेमा सक्ला बङ्ग धावस्य सङ् मृत्या । अवजाहानिकः गाजः न दि-(भूजाः भूममार्ये ॥ इंडि छोज्य ৮৯ ज्यागः॥#॥ नीवरञ्जः পत्रि-वाग विक्नू इन निष्याक्षा यथा । वा-ब्राङ् छेवाह । ভ्विटा नीलव**ट्स**न र्या हि मा गृशमलि । वर्षाणाक শত পঞ্চ ক্ৰি ভ্লিস ভিছতি ॥ তস্য বক্ষ্যামি স্শোণি অগরাধ तिरमाधनः। भागमिङ उ॰ दिन्नानाः ক্ষি যেন মৃচ্যেত্ত কিল্বিষা**ং** ॥ বু**ত**॰ ठान्द्रायन क्या विविष्ट **४ व ग**ना। ম্চ্যতে কিল্বিষাৎ ভ্মে এব মেত-मनः मयः ॥ इंडि वाद्वारः नीत्वतः ज्ञभदीवानभागकि खनामाध्यायः ॥ ॥ विकन्ति तकाञ्चभतीथान-निरम्(था गथा। वादाङ् । वेवाह। द्रकः বস্ত্রেণ সাম্ভাগো হি মা মুপসপতি ৷ তস্যাপি শ্ণু স্শোণি কর্ম সংসার (माक्न १ ।। রজয়লা मृ नाती यु রজো যত্তং পুবৰ্তত। তেনাসৌ রজসা-ग्श्रा कर्मासायन जानउः॥ दशनि

বস্ত্র

দশ পঞ্চিব বসতে তত্র নিশ্চযঃ। রজো ভূবা মহাভাগে রক্তবন্ত্রপ द्रायनः ॥ भाषकितः भ्वक्रानि ভস্য কাযবিংশাধন । যেন শুধ্যন্তি रेव ভূনে পুৰুষা: শাস্ত্ৰবৰ্জ্জিতা: ॥ একাহার ভতঃ কৃত্বা দিনানি দশ अक्ष ह । वायु रक्का फिन्जी नि फिन (गकः कवाणनः।। এवः म मूह्य ভূমে মম বিপ্রিয়কারক:। প্রাযশ্চি-ভ॰ ততঃ কৃত্বা মমাসৌ রোচতে সহ।। এতত্তে কথিত ভূনে ব্লক্ত-ৰত্ৰবিভূবিত । পুাৰশ্চিত্ত নহা-ভাগে मईमःमाद्रायाक्षनः ॥ ইতি ভবৈৰ রক্তবস্ত্রপরীধানপায় শিচ্ত ।। #।। পরিখত কৃষ্ণবস্ত্রস্য বিফ্পা ननित्यत्य। यथा। यः शुनः कृष्वतः न गन क्यांनवानाः। (ति क्यांनि क दी उ जमारेद भड़न भृता घृता বৈ পঞ্চন্ত্ৰ্যাণি কাষ্টভক্ষণ্ড জায়তে। सम्बक्क हो निरंशांनिक हु खीनि **४ श**-ঞ্চানসগছতি সংসার মন কর্মা পরায্ণ: , পারাবভশ্চ জাথেত নব্ ব্যাণি পঞ্চা। জাভো ন্যাপরাধে ন সিতঃ পারাবলো ভূবি। ভিপ্তত ন। পার্যেষ্ বিবাহণ প্রিপ্তিঃ।। ণ্ডাগিভে পুঞ*্চি:স্সং*সার ार । स्वानी व **इट गिवः** 

কৃষ্ণবস্ত্রাপরাবত:। সপ্তাহণ যাবকং ভুক্তা বিরাক্ত শক্তুপিণ্ডিকা। বীণি পিণ্ডান্ ত্রিরাজ্রন্ত এবং মুচ্চেত 奪-नियादा। य अञ्चन विशासन (मवि-কন্মাণি কার্যেৎ। শুচি ভাগরতো ভুরামন মাগানুসারক: । নস গছড়ি স সার মন লোকায গছতি। ইতি তত্ত্বৈ কৃষ্ণবস্ত্ৰপদ্মীধানপায়লিও ॥ 🗱 ॥ পরিস্থ তাষৌতবন্ত্রস্য বিষ্ণু-कर्या इर्गनियाया रथा । वादाङ् উবাচ। বাস দা ন চ ধৌতেন যো **নে** কর্মাণি কারণেৎ। শুচি ভাগবতো ভূত্বা মন নাগানুসারক: ৷৷ ভস্য দোবং পুরক্ষ্যামি অপরাধং বসুক্ত **রে। প**তন্তিধেন সংসারং বাসসো-**টিষ্টকারিণ:।। দেবি ভূত্বা গজোঝ ভ** স্তিষ্ঠত্যেক নরে। ভবি **টেপ্ট**েচক ভবেজ্জন জন চৈক খর স্তথা।।গো-भागु (त्रक कचा रिव कचा हिकः इय छ -था। भावक रेक्टकबन्ना रेव भूरणा 🥯 বতি চৈকত: ৷৷ সপ্তজন্মান্তর : পশ্চা-ন্ততো ভবতি মানুষ: ন মন্তক্ত গুণ জ্বল্ফ ম্ম কর্মাপরায্ণ:।। নিরা-পরাখে দক্ষণ অহস্কারবিবজ্জি-তঃ। ধরণুরোচ। শুত্র মেতৎ পুষ-ज़िन यकुगा **नग**नाक्**छ । मः नाद**॰ वागाहिङ (यन गहिङ भानवाः॥

পুাযশিতঞ মে বুহি সর্বকর্ম সুখা वरः। किल्वा ८ एम मुक्छ उर कर्ण পারায়ণ: ॥ বারাছ উবাচ। শূণু ত **ख्रिन (म (रुवि कथ)मान॰ मयानश्य।** প্রায় শিচন্ত পুরক্ষ্যামি মম ভক্তিপ ব্লায়ণঃ।। যাবকেন দিন জীণি পি ণ্যাকেন পুন স্ত্রয়:। কণভক্ষে। দিন बीनि भाषस्मन दिन्जय्।। এवः कृद्धाः মহাভাগে বাসসোট্টিকারিণ:। অ-পরাধ ন বিদ্যেত সংসারঞ্চ নগছতি ।। ইভি ভতৈৰ অবৌভবাসঃ পরিধা न भाराक उनामाधायः ॥ #॥ अथ পরিহিতপরকীয়বস্তাস্য বিষ্ণুপূজাদি করণে পাুয়শ্চিত্ত। বারাছ উবাচ। **বঃ পার**ক্যেণ বস্ত্রেণ নারপ্রেন নার वि। পু। यन्छि छी भूमा सूर्यः मम कर्यः শরায়ণ:॥ করোতি মন কর্মাণি স্পৃ **ষ্টাতে না' ভন: জি** ভঃ দেশে বৈ জা **মতে দেবি ব্যা**ণি ত্রীণি সপ্ত া। হীন णारिन कार्यं ठिक्कच दमझः त्र । भूर्थ क कार्यने एक व सक्क रेक्ट का যতে ॥ তস্য বক্ষ্যামি সূশোণি প্রা-যশ্চিত্ত নহৌজসং। দেন গছতি সং সার নম ভক্তো ব্যবস্থিত: !৷ অষ্ট ভক্ত ভতঃ কৃত্বা মম কর্মগরায়ণঃ। মাধস্যৈ তু মাসস্য শুকুপঞ্স্য दारणी ॥ १७८४ छन। णाय ७ व कार्खा मार्खा बिट्जिन्न्यः। यनन्ऽ-মানসো ভূত্বা মন চিন্তাপরায়ণ:॥ পুভাতাযান্ত শর্ব্যাণ উদিতে চ দিবাকরে। পঞ্চাব্য ভতঃ পীত্রা শীযু• মৃচ্যেত কিল্বিখাং ৷৷ য এতেন विश्वातन शुर्याक्टड भगाव्यत् । गर्नेभाभविनिम् रिका गम (लाकाय গছভি॥ ইতি বারাছে পরকী বস্ত্র-পরীধানপুষ্য শিচক্তনামাধ্যায়: া 🛠 🛚 🖠 কাঞ্চননিমিতবজ্ঞপুমাণ যথা। যা-বৎ কাঞ্চনবস্ত্রাণা বাছিকা গোপ-কন্যকা:। কাশ্চিত ছানযু; শীঘু• যত্ত हन्दावनी मुना ॥ इंडि र्केरवरर्ड **এ**ক্ষজন্মথণ্ডে২৮ অব্যাদ:। 🛊 ॥ আসন বসন শালা জালাপত্য কমগুলু:। আজান: শুচি রেতানি ন পরেবা॰ কদাচন॥#॥ ঈষদ্ধৌতাদি-বস্ত্রস্য পশ্চিমাগুদিপুসারিতবস্ত্র-मा ह व्यायो उत्र गया । देशको उ॰ खिया (बोड· यक्बोड· ब्रह्मकना जू। व्यथोउ॰ उधिकानीयाम्ना मिक्न পশ্চিমে।। ইতি কর্মলোচন ।। 🕸।। मठ/उभाः । भागगुगुमगगुशा (थो-छ रञ्जः भुमाद्रायर । शन्तिमाशुः पिकारातुः भूनः भूकावनार मुहि॥ व्यवाणुः मना वृक्कवर्।। #1 भूति छाः । बर्ग (बोज्जन कर्डव्या किया धर्म्या বিপ**িচতা। ন চ রাজ**কথৌতেন নান্তিতন ভবেৎ কুটিৎ ॥ পুঞ মিত্র কলত্রেণ স্বজাতি বান্ধবেন চ। मानवर्णन याष्ट्रीठ रट अविव मि-তি ছিতি:।। 🗱 ।। স্থানোত্তর॰ উ-कीय वज्रमा शागाजुः यथा। उँकीय ধারণ শিরোজলাপন্যনায়। তেন তদনভর• নধার্য্য•। তথা নহাভার-ত। আপ্লুত: সাধিবাসেন জলেন চ সুগদ্ধিনা। রাজহংসনিভং পাপ্য देकीयः मिथिनानिंउः॥ इनक्य निभिन्तः रेव (वष्टेयामान मृक्ति । শিথিলা পিঙ্ত অগাচবদ্ধ ।। # ॥ নিবিদ্ধবস্তাণি যথা। ভারতে। ন স্যতেন ন দক্ষেন পারক্যেণ বিশেষ-তঃ। মৃষিকোৎকীণ জীর্ণেন কর্ম স য্যাদ্বিচক্ষণ: ।। নার সিংহে। ন রক্ত नुल्भ वारमा न नीलक श्रूमामः रहा। भवाक्क प्रभाशीन वर्द्धारमञ्जर বুৰঃ। উত্তৰণ উৎকট ব্লক্তবিশেষণ। আচাররত্রে উশনা। দশাহীনেন बाइन खर्गांट कर्यान्यकावकः । विषुषस्या उत्त । वञ्चः नान्।शृष्ठः धार्याः न इङ्ग् गिन्न ख्या। जीर्न याश्रामिका (य उ. श्रामुः भगत् उ. ।। উপানহ॰ নান্যধৃত• दुक्तमृदक्षशाः इत्य । न की वंभ नवचात्मा अत्वह বিভবে সতি ৷৷ঞা যোগিযাক্তবল্পঃ । সু।ত্বৈব বাসসী ধৌতে অদ্লিক্ষ প तिथाय ह। शुक्काल्याक् सृक्ष्डिक रुखो भुकानएउडउ: ॥ অভাবে থৌতবস্ত্রাণাণ শাণ ক্লৌমাবিকানি চ। **স্ত**পো যোগপউন্না দ্বিগাসা যেন বা ভবেৎ।। অধ্যেত্তন চ বস্ত্রেণ निठा निमिखिकी किया । अर्दन् ফল• ন চাপ্নোতি দত্ত• ভবতি নিৰু-ল ।। সভপো (নপাল কয়ল:।। ঞ্চা! তপণাৎ পূর্বণ স্থানবন্ত্রনিল্লীডন-নিষেধাে যথা। নিস্নীডয়তি য: পূর্বণ সানবস্ত্রন্ত তর্পণাৎ । নিরাশা স্তস্য গছন্তি দেবাঃ পি তুগণৈঃ সহ।। #॥ বাবালি:। স্থান কৃত্বাদুবাসংস্ত বি-ন্ত্ৰ স্কৃতে যদি। পুগোযানত্ৰং क्षा श्रनः मुध्यन मुख्या । 🕸 ॥ नामु (मक्क वजन शति मध्या कथ-ঞ্ন : হারী ভঃ। আরু ঞ্চ সপ্রাত হত মপি শৃদ্ধ মিতি ৷:#৷৷ মদনপা-রিজাতে পারস্কর:। একঞ্ছোসো ভবতি তমেনাজরার্জেন পুচুাদযতী-তি। ইত্যাহিক্তর্°। #। স'কা; न्धारमो बद्धनिङ्गी छन निरयक्षा दथा। ষ্ট্রি:শন্মত্রনিগ্রে। সংক্রান্তাণ शक्षत्माप्रक दानम्। माखवामत्र । বস্ত্রণ ন পীড়েবেডর ন চ ক্ষারেণ

যোজনে । ইতি ভিথ্যাদিত হুণ। বস্ত্রস্থিন ক্লী ছপ্রণ । ইতি তি-কাপ্তশেষঃ।। বস্ত্রগৃহঞ্য।

বস্তুগৃহ্° ক্লী বস্ত্ৰনিৰ্মিত্তশালা। তাঁৰ ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যদ:। পটবাপ: ২ পটন্য° ৩ দূব্য° ৪ স্থল°৫।ইতি ব্ৰিকাপ্তশেষ:।

বন্ত্রগুন্থি: পু॰ পরিধানবন্ত্রসংগুল-নং। তৎপর্য্যায়:। উচ্চয়: ২ নীবী ১ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।।

ষক্রপঞ্জনঃ পু• কোলকল:।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

বস্ত্রপূত্রক। ন্ত্রী বন্ত্রনিফিতিপুত্ত-লিকা।ইতি শব্দমালা॥

বভ্রত্বশ: পূ• সাক্ক ওবৃক্ষঃ াইতি রাজনির্ঘট: ।।

বস্রভূষণা জী নজিগা। ইতি রাজ-নিঘণ্টঃ ৷৷

বঙ্গোনিঃ জী বসনেৎ পতিকারণং। যথা। ত্বক ফল জমি জোনা:
শি বস্ত্রগোনি মশ জিসু। ইত্যনরঃ।
বারঞ্জনঃ প্রস্কুট্রঃ। ইতি রাজনিহণ্টঃ।।

वयः क्षी (वजनः॥ ग्लाः॥ वननः। । पृताः। इकि विषः॥ धनः॥ गृजिः । इकि (इस्टन्द्रः॥ जुन्। इका अवग्रीकायाः द्रामानुषः॥ वनः शृ॰ गृनाः। इञ्जातः॥
वन्नाः त्री क्षेत्रिकः। इञ्जिल्यग्रज्ञावनी॥
वन्नाः जी नायुः। इञ्जातः॥
वर्षाकनाताः जी इन्पूर्वी॥ इन्द्रग्रिशाः करवत्रभाः।
इञ्जिरुमान्यः॥
वर्षः इक्षाः विश्वाः इञ्जिक्वितन्न-

বহ হ ক ভিন্ধ। হাত কৰিবল্প-জন: ॥ ই ক ব•হ্যতি। ভ্ৰিৰ দীনৌ । ইতিদুৰ্গাদাস: ॥

वह अअले भागत। इंडि কবিকল্পজন:।। পাপণ নিহু ঞ उ-স্য ৰূপ । ঐ উহ্যাৎ। ঞ বহৃতি বহুতে ভারে পানং জনঃ পাপ্য-ঠীত্যর্থঃ। ঔ অনাক্ষীৎ। অর্থান্ত-द्ध व्यक्तगरका २२०। यथाः जहः मः রিঘহতি দীমনি বস্ত্রতীতি নৈষ্-ধে। নন্দা নক্তহতি গজতি বা-রিবাহঃ। ইতি নহানটেছে। ব্যা-হ রকণ পুক্ষা স্তাতো জাতাঃ সহ-সুশঃ। ইভাদি কিন্তাথ মেট্যো-षिक वहनाजुः स्ताउ दर्गम्य শরণদেথী। বস্তুতন্ত্র বন্ধাদ্যন या अद्वारण रवा छ। जि इस्टिनार शक्ति-छः। दवाङ् हेति हःखीलुः । गम। छु বাহ ও যাত্র ইড্রাও গণড়ভা-নিভ্যত্ত্বাৎ পর্টেমপদ্রি ছঃ , এ-

নেকার্থবাৎ সূসাব ইত্যর্থ:। অথ বা বৰ ইত্যাহ ইত্যেৰ ব্যাখ্যান° l इंভि मुर्गामामः॥

वरुः भू व्यक्तन्त्रमः। इंडा নর: ॥ হোটক: ॥ বাকু:। ইতি গেৰিনী।। পদা:। ইতি ত্ৰিদাও (मानः। ततः। इति (हगाल्यः॥ वाकः भू द्यः॥ भाष्टः। इतु

াদিকোষঃ 1

বছতিঃ পু॰ বাযু:। ইত্যুণাদি-কোষ:। শৌ:॥ সচিব:। ইতি (विकिमे ॥

वरु जी निषी। इंडि किहिए।। বহত: পু॰ পথিক:।। বৃষভ:। ইতি নেদিনী॥

বহন ল্লী হোড : জড়ী ইতি ভাষা । ম্থা। ভরণো ভেলকে বারিরথো নৌ স্তরিক: প্লবঃ। ছোড স্তরান্দ্র इटा विद्व वार्वः भूगाम् ॥ ইতি বিসাও**শেষঃ** ॥

্চ 🏸 🕫 বাশু:। ইতি নিন্ধান্ত ্টা চন্দ্ৰভাগ বৃত্তি।। বালে তি। Berginson: H

दहस्यकः हैं। स्टब्हन्तनः। इंडि डाक्रांबर्धकः ।।

ायम्त्री। इंडि বহলচক্ষু: त्रजुभाना ॥ शृष्टकः छात् । नन्ती-वृत्का (भयण्की उथा (भयविणी-जिका। हक्कईश्ल हक्कुक सिप्-मृत्री गृहक्याः॥ ইउऽलि शाठेः॥ বহলত্বদঃ পু॰ খেওলোয়:। ইতি রাজনির্ঘণীঃ ॥

বহলা স্ত্রী শতপন্না। ইতি রাজ-निर्घन्छै: ॥ कृतिला । इंडि ভाব-পুকাশ: ॥

বহা জী নশীংইডি হেন্দ্ৰুঃ॥ বহিঃীব্য বাহ্ণ। ইত্রের:॥ विहः कर्षे हतः शुः वल् दः। इंडि ব্রিকাও শ্ব:।।

বহিতঃ ত্রি ভাবহিতঃ। ইতি দিক-পাকোষ: 11

विश्वः ही (१७३१ उट शर्व) १४:१ वार्विः २। ३ ७ (जना धरणयः ॥ विष्वकः ही टन्यानः गया। সাংবাজিক: পোড়ধাণক মান্ত্ৰা ত্ৰ• বহিত্ৰক• ৷ বেন্ত্ৰিড় খন্ৰ• (भाजः (भाजभास्म) स्टिंग्, कः । ইতি হেনচন্দুঃ

খাল পা পোটা। ইতি হারা বিহিন্ন স্থা চোরণ টিডারেল। মধী চন্ত্র বিশ্ব হতি **হেনচন্দুঃ। বহির্বারপুকো**ঠি বিশ্ব হিন্দু রাঘছি: পুলেক্ষ্ট । তংলা সং भूषाणः २ भूषण ० विकास ইত্যমর: ۱۱

বহিত্ত: ত্রি বহির্গত: বহিংশকপূর্বক প্রাপ্তর্থ ত্বাতো: কর্তরি
জ প্তঃযেন নিয়ম: । যথা । পক্ষ
বিষয়িতা বহিত্ত সাধ্যবিষয়িতা
ষটিত ধর্মাবিছিন পুতিবধ্যতাশালি সংশয়: পক্ষতা । ইতি জগ্
দীশ: ॥

ষহিনূথ: ত্রি বিল্থা: । যথা ।
নর সংস্কাচার্যপুত ইশানসংহি
তালা: । শৈবো বা বৈক্ষবো বাপি
লো বা স্যাদন্পুজ্ক: । সরং প্
জাললা ছাড শিনুৱা ত্রিবহিনুথ:
। গাঁও তিব্যানি জুং ।

**ম**্শ্রিক, তা আইটোইডি **ছেম**। চন্দুঃ।

रारुष्कः शु•्विी्ठक्र्यः।≷डि जाजनियंकेः॥

विद्यः भू िळ हा । जहार जहार का । पृथा । याही न निः किरमा । जहार न न किरमा । जहार का ।

ৈচৰ বিভূম ভূম শোভনাঃ। অব-ज्ञथाह्यनीयो पक्षिणात् स्टेथ्व ह ॥ व्यवाहार्य्या गाईभडा इत्डारङ मण वद्भावः ॥ व्यत्मि ब्रन्धाकानि यथा। जाजाका तक्ष मेर्कित (द्वरक: (नुरुक खर्था। शाद्रका वस्त्रकरेण्ठव मावकार्याण मध्या ॥ व्याभकः भा-বককৈব শ্লেশকো দশন: মৃতঃ 🔃 🧩 🛭 भात्रीत्रञ्बरक्षः ज्ञानानि यथा। दङ्क त्या (नायमुख) यू अंग्लीपा मन (महिनः । (मायमृध्ये)। रुषा । বাত পিত্ত কফা দোষা দুষ্যাঃ সঞ अध्याउदः । ইতি সারদা ভলক: ।। 🗱 ।। তত্র নিধিত্ব কর্মাণি যথা। नामुख्या रशि भविष्ठतिर न प्रयान की खरगहरीन । नहाबि कहा शक्ती-मान (नाभन्ध)। न्यः कृष्टि ।। न हिनः भारकः अर्यशास्त्रास्यन न स्त्य-দ্বধঃ। অশ্লৌন নিঃক্ষিপেদ ্বা না ডিঃ প্रणगरगद्धशा । न वङ्गि मश्रिक्शा-रेम कु नायशामाति तु थः। स्थाप्ति रेनव হাত্ত স্পুশ্রাপ্স ির ফেছে।। बाल किएला गायाम्य व मृ र्लग ह কৰ্মনিত কলোক বিচাৰ দিয়া ডিং **নুখা**-ন প্রভাগত এইডি**ৌ র্টেপরি-**ाक्षा १८ सम्भागः **॥ १। जामार**ः শুক্ত মহাভাগ পরিপূর্ণ মনো মন । অধুনা শোভ মিছামি বছে ক্ৎ-পত্তি মীপ্লিভা॰ ॥ সূত উবাচ । একদা সৃষ্টিকালে চ বুক্ষান্ডন হেখ-**द्राः । (अ उ**घीशः यगुः नर्स्व पुष्टेः বিষ্ণু জগৎপতিং॥ পরস্পরঞ্চ সং ভাষা• কৃত্বা সি•হাসনেষু চ। উষ্ঃ সর্বে সভামধ্যে সূর্ম্যে পুরতো হরে: ॥ বিফুগাতোভ্রবা ন্তত্র কা-**बिन्धः क्यवाक्वाः । ७**व न्**ड**्र-ন্তি গাযন্তি বিফ্গাথাশ্চ সুম্বর•।। ভাসাঞ্চ কঠিনা শ্রোণি কঠিন স্ত-नम ७ न । मिस उ॰ नूथ शत्रक मृही वुका मकामुकः ॥ गता निवाद्यनः করু • ন শশা হ পিতামহঃ । বীর্য্যু॰ भभाउ प्रहार वज्ज्या वात्रत्रा विज्ञः ॥ उषीर्या राज्यम विष्ठः भुष्ठधः का-भञाभिजः। कोत्रारम (भूत्रयामान मङ्गीत्छ विद्रास्त्र विष्याः बनामुत्याय श्रुक्यः श्रुक्वन् वृक्ताउक्रमा । উवाम বুদ্দণ: ক্রোডে লজ্জিতস্য চ সংসদি ॥ এত্নিলন্তরে কাই। জলাদুখায স द्वः। भूगमः वकागा (मवान् वानः) নেতৃ সমুদ্যতঃ ৷ বালো দ্বার বুলা। गः वः इ । कि कि কোবাচ **জগতা**• বিশাতা লক্ষ্যা-ছিল। বাল চস্য বরে ধ্রা চকারা-

কৰ্ষণ ক্ষা।বৃক্ণত সভামধ্যেত চিক্ষেপ পু**জাপতি:।। পপাত** দুর<sup>ু</sup> (ठा (नर्दा) वक्रा मुईल उथा। मूईा॰ সংপ্রাপ মৃত্তবৎ কোপদৃষ্ট্যা বিধে-রছে৷ ৷৷ চেতন কার্যামাসমূত-দৃষ্ট্যা চ শক্ষর:। সংপ্রাপ্য চেতন॰ তত্র তমুবাচ জলেশ্বর:॥ বৰুণ উবাচ । বা**লো জলে স**মুক্ত্তো নম পুলো य-भोक्षिकः । अरु ग्रीदा याम्यानि বু**ন্ধ। মা॰ ভা**ডবেৎ কথ•॥ বুন্ধো-বাচ। বাল हः শরণাপলে। মৃথ্ বিফো মহেশ্বর। কথ দাস্যামি ভীতঞ্চ ক্রন্ত শর্ণাগত ।৷ শর্ণা-গত দীনার্ভ যো নরক্ষেপণ্ডিতঃ ১ পচ্যতে নির্যে ভাবত যাক্চন্দু দি-वाक्रदेश । 🕏 ज्या बंडन मुद्रा शृह्-म। मधुमूरनः। डिवाट सर्वछङ्खः সর্বেশশ্চ যথোচিত।।। ভগনান্বাচ । मृक्षा मुकानिनी (मुानिः वीर्य) धाजुः পপাত তথা বজ্ঞাপে । । । । । । । । । ক্ষ্ণীরোদে নির্মাল জলে । ভতো বভূ-ৰ বাল চ ইন্মতো বিধিপু এক: ।কে-ত্ৰজক্ষ সূতঃ শাত্ৰে বৰুণস্থাপি গৌ-ণত:।। মহাদেব উবাচ। যে। বিদ্যা-শো নসম্বন্ধো বেদেযু চ নিক্সিতঃ। শিষ্যে পুলেচ সমতা চেতি বেক विरमा विनूः ॥ भव्यः ममाजू वकरणः

विमाक्ष वानकाग ह। भूटा विवाञ् बिक्कि निषंत्र वक्षामा ।। विकृ ৰ্দ্যাত বালায় দাছিকা শক্তি মলু-णाः। मदश्या ञ्डामण विद्याल 🖟 বহুণেৰ চ ।। বিহুম্চ দাহিকা॰ শ-कि पाने ज्या भिवाक्ष्या। यक्र विष्ठाः क वकाण इत्रमालाः प्रताष्ट्र-**द्रा**॰॥ क्रिएफ क्षा ह छ॰ वाल॰ हुट्य भाषया मुतः। ইতি वृक्तरेवर्स्ड शिक्षः জন্মথণ্ডে বহু ছেপত্তিনাম ১৩০ অ-ধ্যায়: ॥ 🗱 ॥ তদাছনিবারণীয शामि रुधा। भाग पुरेमक्षर एका वि-দ্যুদ্ধোচ মৃত্তিকা। ভ্যানলিপ্ত• যাৰেশ্য নাগ্ৰিন ৰহাতে নূপ।। ইতি নাংশের রালধ্যে কাফরকানাম १२० व्यस्तातः । ६ । अ गरिवक् अः ख्टमाखिक १था। यमीय में नाउ षख द्वार्ष्ट्वे राज्य निहिक्षाः न मीलप्रज চেক্ষৰণৰ সভাই: পীড়ভে দূপৈ: । পুজু वह भग माम वा उथा खंका-পি কিঞ্ন। পাদাদ ভোরণছা**র**• নৃ পবেশ্ম লুর:লায• ৷৷ এডানি যত্র **দ**ং হাঙে তত্র রাজভব॰ ভবেৎ। বিদ্যুদ ভাবা পুৰস্থান্ত তত্ৰাপি নৃপতে ভঁয• ॥ পুৰণ্টাৰ গ্ৰিজো যুক্ত ভক্ত বিদ্যান্স-राख्या । विनार्यः । वेशु विकास मृत শ্যান্ত মূল স্বতি ।। বিরালোগো

বিভ শাত প্রেখাঃ স্মণাহিতঃ [ निष्णिः की बद्काणाः नर्यरेशस युट्डन है। सम्ब्राट म्यर्ग्य उथा बिला-ভ্যো গাকৈব বস্ত্ৰাণি তথা ভূবঞ্য। এবং কভে পাপ মপৈতি নাশং যদ্ধ-শ্লিবৈক্ত্যভবং দিজেন্দু ॥ ইতি ভ-হৈবান্ড হশান্তিরপুথৈক্ গ্র্ণ নান २०७ व्यवतयः ॥ 🗱 ॥ मृथनास्या যথা। শাহলত্যে দক্ষিণাগ্রি স্তব্ধ-व इवनीयकः। এতে रश्वद्धाया मु-শ্যাংশেশাংশ্যাপসদ প্রয়।।ইতিব-হিপ্রাণে গণভেলামারগুললাঞ্চ বজি বিপুলধাগনন-বিষেধাে মথা ৷ (घो चिल्लो विल्लो ह मलाइडा) গু চুশিষ্যবোঃ ৷ হুলু ৷গে চ ন গন্তব্যু• বুজাহ্ভ্যা পদে পদে ॥ ইতি 🖘 র্মা-लाइमः ॥ 🕸 ॥ अभिष्ठ । माजू-नाक्षणा बहुता वं प्रभग ८ नाशुप्रा में ব্ৰাকাণবে। ন গুড় **শ**ষ্যালা রন্জ্যা ত বংশধাৎ। ইতি ভিখ্যাদিতত্ত্ব-ष्ट्रा इन ।। अ।। यथ दङ्खिन ।। नान्यमा बनाः गृक्ष जलोताः छज পেষ্টে । হস্তৌ তু লেপ্টেড্রন গ্র্-वित्रस्र गृहनः॥ मान्यवीत्रमः॥-দায় খরমূত্রে িধাম ড॰ । অগ্না-গারে জিপেভেন অ্রিভ্রন ন্তন• ॥ वादनी छैरवः श्च नखु अन्यः।

সহ ৷ ৩ডিকা· কার্যেত্তেন ততো | বহি নীপক: হ্যি প্ৰিপেন্নী । এৰ নেত্ৰ-भूरगारान चार्यसञ्चन गुस्न । मू विक्रिमी निका खो वहरम्या इंडि জীতক বচালুক্ত মরীচা নাগর। তথা। চরি ব্লাচ ইন॰ সদ্যোদ্ধি বিক্লিনামা পু॰ চিত্রক: ॥ ভলা-खाया ज्वाना विष्ट्या (गादा-हना ज्यदाबः ह्रं क्षा घृठ मन रेविशानी खी कहामा त्री । इंडि । स्दिष्टानुष्ठ भीदा भागावाज्या रम्बरेव छथा।। ॐ भग्न**सञ्जनः ऋ**क । इंडि ाद्राफ २५७ श्रामः॥ यक्तिक्की धी मार्जायक्री। शाह-ফল ইতি ভাষা। ইতি শব हिन्तु ।।। यक्सिकाक्षः क्री माशालकः। ইडि রাজনির্ঘণ্ট: ॥ यक्षिणकः यकद्भः । इंडि मयहिन्द्रका॥ ৰহিগভঃ পু॰ কশ:। ইতি শক্ বিহিনিতঃ পু॰ বাযু:। ইতি শক विष्युका ॥ বব্লিগভা

भाय हिन्दुका ॥

রাজনির্ঘট:॥

ই ভি ব্লাজমিঘণ্ট। ॥

ইতি ভাবপ্কাশ: 🛚 🖠

नुः अम्यः। हेडि व्यक्तवादनी ॥ ब्राङ्गिर्छः॥ ७कः। ইতি द्रव्याना॥ बङ्गाला ॥ বিয়েশ্য়ী জ্রী ধাতদী। ইতি রাজন্যত:।। বিহ্নিভোগ্য ক্লী ঘৃত। ইতি শব্দ-हिन्द्रिश ॥ বিছিন্ত: পুণ গণিডারিলার্ক্ষঃ ইতি জটাধর:॥ অপ্রান্তঃ। ইতি রাজনিঘণ্ট: !! विज्ञातक की डल। हैटि मक्-विन्त्का ॥ हिन्दु हा ॥ खी भगीत्कः। इंछि वङ्गित्रजाः भुः भिवः। ইতি হল।-यथः॥ ৰাহ্ৰচকা জী কলিকাৰীবৃদ্ধ:। বহিনোহন লী কা'ম্যুণ। ইতি ब्राक्तिर्घिः॥ বিহ্নজালা জী ধাতণীবৃক্ষঃ।ইতি বিহিববৃং জী বাহা। ইতি শব-ब्रह्मवनी ॥ दक्षित्वनी खी अभित्यनीकृषः। विह्नित्वः ही त्राकारणणः। ইिक - मप्रशिष्ट्र हो ॥

বল্বিল্লন: 😷 সর্ভার্স:। ইতি। ভিল্পতশেষ:।

ৰিহুৰীজ লী রাধীলণাইভিত্তা ॥ নিপুক•। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ वर्गः। इंडि (इय्हन्मः॥ उत्म्यारः পত্তি যথা। একদা সর্ব দেবাক সন্ধঃ স্বৰ্গ সংসদি। ভত্ত কৃত্বা চ न्ड १६ गायक श्रुद्ध मानगराः ॥ विन লোক্য রম্ভা॰ সুশ্রোণীণ সকামো বিহ্নিরের চ। পলাত বীয্যু চ-हार वज्जा वाममा उथा।। উত্ত-(इ) वर्गभुक्ष क उद्घ कि खा कुल -भुजः। करान दक्षरायान म मूरमक র্যভূব হ ॥ হিরণ্যরেডস' বহিং প্রবৃত্তি মনীষিণঃ। ইতি তে কথি-ত পর্ব কি ভূগঃ শ্রেভ্নিছাস।। ইতি বুদ্দবৈষর্ভে আতৃফজন্মথণ্ডে হিরণ্যোৎপত্তিনাম ১০০ অধ্যাশঃ

বজিশিথ কী জস্মুণ।ইডামর:।। জ্জনগাইতিরাজনির্ঘট:॥

বহিশিথর: পু॰ লোচনস্তক:। ইতিশ্বরহাবলী॥

বৃত্নিশিখা জ্রী কলিনী।ইডি ধর-ণিঃ।। কলিকারী।। ধাতকী।ইডি ক্লাজনিহণ্ট,।।

বল্লি জেদ: পুণ চিত্রক:। ইত্যা বংক্ষাজ। সর্বাধন

বঙ্গিথঃ পু॰ জীরক:।ইতিরাজ-নির্ঘণ্ট:।। বাযু:।ইতি ব**্নিম্**জ-শহদর্শনাৎ।।

বহা শ্লী বাহন । ইতি হেনচন্দু: । শক্ট । ইত্যুণানিকোৰ: ।।
বহা শ্ৰী মুনিপত্নী । ইত্যুণাদি-

বছা জ্রী মুনিপত্নী।ইত্যুণাদি-কোষ:॥

বক্ষ রোবস:হত্যো:। ইতি কবি-কলুজন:।বক্ষতি।ইতি দুর্গাদাস: **रकः** क्षे अव्यविष्णयः। म छ हरः যোপরি কঠাদখোভাগঃ।বুক ইতি ভाষা। उৎপय्यायः। (क्राप्तः २ ভূজান্তর• ৩ উরঃ ৪ বংস-৫। ইত্যের:।। অহ্নঃ ৬ উৎসঞ্চ: ৭। ইতি জটাবর:।। বক্ষণ ৮ গণপ ঠ-ক ৯। ইতি শব্দদ্ধা। অপিচ। व्यथ् वक्षक दिशा मा मा निर्देश दिक्षः ञ्चल अप । ইতি **भव**्यावनी ॥ তস্য শুভাশুভলক্ষণ যথা। আর-वानमनवकाः महा८ शीरन ब्राकाः ভি কভিড়িত:। বক্ষোভি বিষ্ণৈ निवः माञ्जग निवन खणा। इंडि गाक्ए ५५ वर्षाः ॥

।ক্ষণ° ল্লী বক্ষঃ। ইতিশক্ষ চিন্দুকা॥

ৰংক্ষাজ॰ ক্লী <mark>তৰঃ।ইতিশহ</mark>া রহাবলী।। বক্ষোক্ত : পূ॰ স্তন:।ইতি ত্রিকা। ওক্ষেম:।।

বা ক সুথাগুিগভিসেবাসূ। ইতি কবিকল্লন্দন: ॥ ক বাপয়তি। ইতি দুর্গাদাস: ॥

বা ল শননহিংসবো:। ইতি কবিং কল্লজন: ।। ওঠ্যাদিরপ্যথমিতের-কে। গনন মিহু বাযুকত্ ক নেব। ল বাতি বাযু:। হিংসনং সূচন মিতি চত্যভূ জ:। ইতি দুর্গাদাস:।।

বা ব্য বিকল্প:॥ উপনা॥ বিতর্ক:

॥ পাদপ্রণ•॥ সমূচ্য:। ইতি
মেদিনী॥ এবার্থ:। ইতি বিশ্ব:॥
বা: ল্লী জল•। ইত্যমরঃ॥

বাংশঃ ত্রি বংশস্বস্থী।বংশস্যা য নিত্যর্থে ফপুত্যবেন নিয়নঃ।। বাংশিকঃ পুং বংশীবাদকঃ। ইতি ভটাধরঃ।।

বা•শী ত্রী ব•শরোচনা। ইতি রাজনিঘণ্টঃ॥

বাঃকিটি: পু॰ শিশুমার:। বারো-জলস্য কিটি:শ্কর:। ইতি কেচিৎ

বা:সদন ক্লী জলাধার:। ইতি ত্রিকাওশেব:।।

বাক' ত্রি বকসম্বন্ধি। বকস্যেদ॰ ইত্যর্থেঞ্ পুত্যুয়েন নিম্নমণ।। বাক্ জ্রী বাক্যণ।। সরম্বতী। ইত্যু- यतः॥

বা**দল•** ক্লী বলককল•। অস্ত শুণা:। বাদল• মধুর: গাহি দত্ত স্থৈত্বর• পর•। ইনত রাজ-বল্ল ড:॥

वाक्षीतः श्रू महालकः। इत्याप्तः त्रद्वावली ॥

বাক্ছল জী বাক্যব্যাল: । যথা ।
বচন বিষাতো হর্থ বিকল্পোপপভ্যা হল । তালবিষ । বাক্ছল ।
। সামান্যহল । উপদার্যলক্ষ ।
অবিশেষাভিহিতে হর্থে বজুভিপুষাদর্থান্তর্যাল্যন বাক্ছল ।
১ ৷ সম্ভবতো হর্থস্যাতিসামান্য-

যোগাৎ অসমূভার্থ কল্পনা সামা-न इन ।। २ ॥ संग्रविक स्निमित **व्यर्थमञ्जादनित्यव**ं উপচারছ**ল॰** ॥ ।। ইভি গোডমসূব ।। শ্কৈ कार्थ भाषाताथ उर्दश्याक भष मा मञ्जा वर्षास्त्र उार भग्रकः कन्ननशा म्यगाजिधान वाकङ्क बक्ष १ यथा (नशालामाग्राजायः नवकत्रणवद्यार । हेंकुहरू व्यक्त **२**मऽ वर्म°श्वाः कष्णाः ॥ ५ ॥ সংমান্যবিশিষ্ট সম্ভবদর্থাভিপুা-বেণ উক্তস্য সামান্যযোগাদসম্ভ वम्र्थकन्नन्या मूब्रशाज्यानः मानाः नाह्रला यथा। वाकाणायः विमान চরণসম্পন্ন ইত্যক্তে ব্রাহ্মণত্বেন বিদ্যাচরণসম্পাদ সাধ্যতি ইতি কল্লফিল্বা পরো বদতি স্বতো ব্রা-হ্মণত্ত্বেন বিদ্যাচরণসম্পৎ ব্রাভ্যে ब्रा**ভिচারা**ৎ ॥ २॥ मिक्कि वाः क्रनारका द्विक उन्न वृज्जा यः शुन्ति-(यथः त्र डेशहाद्रह्मः । यथा । মঞা: কোশন্তি ইত্যত্ৰ মঞ্চন্থা এ ব কোশন্তি নত মঞ্চাঃ । এবং অহং मि । इंडि मं क्रा भूगुक यमुका দুৎপন্ন স্তুণ কথা নিত্য ইতি প্ৰতি (यासा २९)भागब्रह्मः। ७। इंडि ख्डोका॥ ।। श्रा श्रामा श्रामा विश्वयं वि

वारम्य वाक्श्रः नावभीमितः श-ण जी ज्यागानान भारमाभार्था-सशीयरा ॥ ইति वावशात्रज्ञः ॥ वाकभितः भू वृह्म्यतिः । ইति भक्तञ्ञावनी ॥

বাক্পতিঃ ত্রি উদ্দামবচন:।ইভি त्रागम्बद्धः । ध्यनवरम्यान्। सि পটুক্তন:। ইতি ভরত:।। ষ**ুদ্ধ**্র बाकात्रहकः। इंडि मात्रम्निती ॥ भर्वे वहनः । इंडि भरायं को मुनी ॥ वाक्वाक्वनः। इंडि नीवक्रेः॥ उৎপर्गायः। वागीमः २। ३७% भद्रः ॥ व्यनवर्ष्णाम्यवहाः ०। इंजि करिषद्र: ॥ वाग्यी वाग्य दी-বদুকো বাচোয় জিপটু তথা ৷ বা-গীশে৷ বাক্পভিশেভি ষড়েভে मृष्ट्रेवकति॥ ইতি শব্রহাবলী॥ वाक्षाक्ष्याः ही अश्रियवात्का-চারণং। তভ্ সঞ্বাব্যসনাম্বর্ত-वात्रनिविद्यायः। यथा। गृगयाकाः खिनः भानः वाक्भाक्ष्यार्थपृष्रा। দপ্তপাৰ্য্য মিত্যেতজ্জেয় বাস-নসপ্তক।।ইভিছেমচন্দু:।:\*॥ ভ ল্লকণ নারদেনোক্ত । দেশ জাতি अवामीना नार्काण न/अभगुउ॰ । यस्ठः भुजिक्षार्थं वाक्षाक्ष्य उन्हाउ।। (मनातीनाः वारकान

नाय में गूज । উहि जीवन मारका-শः नऽङ्ग भवरुऽ छत्रु छय्युक्क यूट-প্তিক্লার্থ• উদ্বেগজননার্থ• বা-ক**্ত** ভদ্বাক্**পা**ক্ৰা; কথ্যতে।।**ঞ**।। **७**न। ह मख**ाव्र** जन्मार्थः निष्ठ्रासि ভেদেন ত্রৈবিধ্য মভিধাণ ভলক্ষ-ণ ভেনৈবোক্তা। নিধুরাশ্লীল তী-বুত্বান্তদপি ত্রিবিধণ মৃতণ। গৌর-वानुक भावमा मरखानि महार क्याम्थ्यः ॥ नाष्क्रभः निष्ठद्रः (ऋग नच्चीनः नृ**क्ष्म**ग्यु**डः। প**डः ৰীয়ৈ ৰূপাকো**শৈ ভীবু মা**ছ মনী-বিণ ইতি ॥ 🗱 ॥ তত্ৰ নিষ্ঠরাকোশো खन विषय मखनाइ। मजान-**छ्यान्या (उरिक न्यंनास्किन्य** রোগিণা । ক্ষেপভ্রোতি চেদ্দ-अंद्रः भगाः केंबररायम् ॥ कान्यम शायदा थक्क मनायाशि उथा दिव**ा** তথ্যেনাপি বুঃন্দাপ্যেদ্ভ কা খাপণাবর্মিভি ধঝ্রুবচন• ভদ্ভি-मुर्व ख वर्ग वियम । यमा भूनः मुखा দ্ৰো নাত্ৰাধীন শপন্তি তদা শতং म धनीया इंडि (ड्रॉन(दाक •। मा ड-**র: পিতর**° জাবা: ভাূারঃ- সুহাদ• **७कः। व्याकात्र**सन् मा उ॰ मालाः ल **ञान्दः अनम्बद्धा दिख्य । अहा** भाषताध्युमाञानिषु एक्षू जि-

श्रद्वाधाराक स्वायायाः म्ळेबुःशा∉श **ञ**न्नीनास्म्यान मध्याह। ञडिश-ন্তামি ভগিনা মাতর স্বাভবেভি ছ । শপন্তদলপয়ে দুক্তা পঞ্রি॰-मा किक प्रमा। पा जुगयन कार्याः বৰ্ণ জাত্যন্তরাহরৈ:। পুর্ভিলো-ন্যাপবাদেষ ছিত্তণ তিত্ত। দ্যা:॥ वर्गाना मानुः लात्मात्रन उमान कार्छ হানিত: ১৯ ৷ মন্: শভ বাকাণমা-क्**ण**ऽकविरया र ७ मई जि:रेदर**ण**ऽ।-**श**ुर्क**ण उ**॰ (घ व) मृ मुख वश सई ि ॥ **भक्षाम द्वाञाला मखः क** दिगत्राः जिमा गत्न । विद्या महाम क्षेत्रका-भहित घारणका मगः॥ वाङ् भीवा निक मिक्क विमारण वाहित्क म्यः। भाडा उपिर्धितः भारता ना-সা কর্ণ করা দিয়ু ॥ অশক্তস্ত বছ-राव मखनीय: भगान म**मा** ७ था শক্তঃ পুতিভূব দাপ্য: কেনাৰ তস্য ভু ॥ পতনীযকৃতে কেপে मत्था मदाम नाइनः উপপাতक য্কে তু দাপ্য: পুথম্সাহস: ।। विविध् नृशास्त्रामाः (क्षेत्र छैल्म সাহস:। মধ্যো ভাতিপ্পানাং नुष्या गान (रण्याः !! इंडि बिडाक्ता ॥ **क्षा** वारुणाव्**य**ऽ व्या जित्राणमनिख, यं पुल्या कित्या-

ভানে গুভিপুসবো যথা। স্বাং ।
পুভা ভিযোগঞ্চ কলহে সাহযেষ্

চাবাক্পাক্ষ্যে শস্ত্রান্পিহারেষ

চ যথা পূর্বহপানেনাজ্ঞঃ শ্
ভ্রেণ হতঃ ইভাপরাবাভাবায় পু
ভাভিযোগ স্বা্হ । ইভি ব্যর্হারভভ্ন।।

ली शनमगुनायः। इंडि বাক্য• ব্যাকরণণ ৷৷ ভিডভ্ডেম: ৷৷ সুবস্তুচ্য: ॥ কারকান্বিতা ক্রিয়া। ইত্যমর:॥ ইছ শুভিলোকযো স্ত্রিবিশ্ব নিক্-ক্ত বাক্যমূক। ভিড সুবন্তযোক্ত-য: সমুদায: কারকাল্বিতা ক্রিয়া চ বাক্যা তিড় শব্দেন ভিবাদীনি সাশীতি শতসংখ্যকানি বানানি উচ্যন্তে। এবং সূপ্শব্দেন স্যাধী (न)कवि॰मां कि क्**ठाइ । इन्हा**९ পর यः শুগতে লভতে হসৌ পু ভ্যেক অভিসয়ত্ব নিত্যভূদ্ৰ উভগোর**পি স**মুধ্যতে। অত্র তি-एउ मम्हा यथा। भः छ ভवछ পাকো ভৰতি ইত্যৰ্থ:। এবছা ন্দ্-ज्ञात्व । जुद्वज्ञात्व । लुक्-তিসিদ্ধ নিদ হৈ নহাজানা । খা ত্বর্থ: ক্রিা কারকৈ: কর্ত্রাদিভির-दि **अ सहाकार्थ। का**त्रकादिया **य**ा विउद्देश किया कारकागाः आका- ্লাবোগ্যভা সমিধি বশাৎ ক্লেয়ণ তি इ मुदष्ठ या जात १ भ मयका-র্থতা বোধ্যা অসম্বদ্ধার্থস্যাপুযো-পাৎ অতএব পরস্পরাভিম্মৃকঃ পদসন্হো বাক্য নিতি বৃদ্ধা: ! कात्रका निजा किया यथा । (मयम-ভো গ্ৰান• গছতি। ইতি ভট্টাকা-या॰ ভद्रजः ॥ 🗱 ॥ বাক্যম্বরণ মাহ। বাক্য স্যাৎ যোগ্যভাকা দ্ধাসত্তিযুক্ত: পদোচ্য:। বাক্যো-हर्या महावाका मिन्थ वाका हि-ধা মত।। উক্ঞ। স্বার্থবোধ সন্। স্তানা নহাহিত্ব ব্যপেক্ষ্যা। বা-ক্যানা মেকবাক্তব্ব পুন: সভ্য জায়তে ইতি॥ অত বাক্য যথা। শুন্ত বাসগৃহ নিত্যারি। মহা-বাক্যু যথা। রানায়ণ নহভোরত द्रघुवः माप्तिः । इंडि मा इंडाप्तर्भ-(१२ शक्तिः।। 🗱।। अनिगवा-का जायन निष्याथा यथा। न हि॰ স্যাৎ সর্বভূতানি নান্তঞ্বদেৎ কৃতি । নাহিত নাপুষ বাক্য ন স্তেনঃ স্ব্যাৎ কদাচন।। ধ্বং। পাষ-ভাদিভি ভাষণ নিষেধাে যথা। পাষ্ডিনো বিক্মস্থান্ বানাচা-द्राः खरेशव ह। शक्षदाखान् शामु-পতান্ বাজ্যাত্রেণাপি নার্ঘেৎ ॥

ইতিকৌমে উপব্লিভাগে ১১ অধ্যা यः ॥ 🛊 ॥ শু ভাশু ভ বাক্যানি যথা। নৈব রাজ্যেন মহতা ন বৈ বার্থস্য রাশিভি:। পাপ্তে জ্ঞানকথন পরলোকসূভাবিত ৷৷ ৰ্গাপবর্গ निकार्थ ভाविउ॰ यू माना जनः। বাক্য মনিবরৈ: শান্তৈ ভদ্মিজ্ঞেয়ণ সূভাবিত ।। রাগ ছেবান্ত কোধ काम ज्यानुमात्रि य८ । वाका नि র্য হেতুত্বাৎ ভদভাষিত মুচ্যতে ।। স স্ত্তনাপি কি॰ তেন মৃদুন। **मनिएउन वा। यविष्ठा द्वागवारक**्र ন সংসার ক্লেশছেতুনা 🛭। যৎ भुद्धा बायर भूगाः द्रागानीनाक সংক্ষয:। নিক্দ্ধ মপি তদ্বাক্যু বিজেয় মতিশোভন ৷৷ ইতি विक्शित्राणि दिक्षवश्या मुक्तिबुक नामाध्यायः ॥

বাগর: পু॰ বারক: ॥ শাণ:॥ নির্ণয: ॥ বাডব:॥ বৃক: ॥ মুমুক্ষু: ॥ পঞ্জি: ॥ পরিত্যক্তভ্য: । ইতিহেন্য-দু:॥

ৰাগাক: ত্ৰি আশাহন্তা। যথা।
আশাং বলবতীং দত্বা যো হৃতি
পিশুনোজন:। সজীবাসোপি বাগাক জ'ণো দানুস্ত দাত্রি॥ ইতি
শক্ষালা।।

বাগাশনিঃ পু• বুদ্ধ:। ইতি শব্-ब्रङ्गावनी ॥ ৰাগীশ: ৰ্হস্পতিঃ। ইতি भवत्रज्ञावनी ॥ বাগীশ: ত্রি বাক্পতি:। সৃষ্টুক্জা इंडि यावट् । इंडामद्रः ॥ जी नवस्त्री।यभाष ৰাগীশা ৰাগীশা যস্য বদৰে লক্ষ্মী ৰ্যস্য চ वक्किन । यम्पार्ख क्रस्य मधि ত• নৃসি॰হ মহ• ভল্লে॥ ইতি 🕮-बन्धागवञ्चीकामाः श्रीषद्रयामी ॥ বাগীপ্তর: পু॰ মঞ্চোব:। ইঙি ত্রিকাণ্ডশেষ:।। বাচামীশবে তি॥ यथा। कृषामन कर्ने देव मधु रिजन अभिन्छि। कथ्व। भामः युवा माह নরো বাগীখরো ভবেৎ ॥ ইতি गाक्र ३३५ वशायः ॥ সরস্থতী । ইঙ্কি वागीयत्री खी ত্রিকাওশেষ:॥ বাশুলী জী সোমর 🗐। ইত্য-মর: 11 বান্তণ: পু॰ কর্মরক্ষ:। ইতি শব্দ-भाषा ॥ वाखद्रा जी मृगवक्षनार्थकालविष्णः

ষ:। ইত্যমর:॥

वार्खितकः नुः वृश्यः। वार्ध्वया

म्गारीन् वक्षां वि यः। ইত। भवः।।

बाह्यमः भू॰ श्वाकि विश्व है जि किका छाण्यः ॥ अ अध्या निकाद १॰ यथा । को यया । कि उप्या निकाद १॰ यथा । को यया । कि उप्या निकाद १९ को स॰ क्ष्म के प्रमुखी । ता का । व्याप्रायः ॥ बाह्य जि । है जि स्थान । ॥ का खूलमा का । है कि स्थान ॥ ॥

্ত জ্লদাতা। ইভিশ্বনালা।। বাগুলিক: পু॰ ভা•ূলদ:। ইতি তিকাওশেষ:।।

ৰাখ্য• ক্লী ওলাধ্যো। ইভি ক্লিকা-ওশেষঃ।।

ৰাণ্দু&ঃ পু• বুছেঃ। ইভি ভটা ধরঃ॥

বাগ্রন্থ: ত্রি বাচাদোষযুক্তঃ। যথা
। বাগ্রাব দুপ্তাশ্চ তথা দুপ্তি শেচাপ
হতা তথা। বাসসা চাবধুতানি
বজ্যানি শাজকর্মণি।। ইতিশাজ
তত্ত্বাঞ্চাতদম ভক্ষণপুর্যাশ্চিত্ত
। তর শন্তঃ। বাশ্দৃত্ত ভারদ্ভ্রণ
ভারনে ভাবদ্ধিতে। ভুজ্নক বাস্বাংঃ পশ্চাৎ ত্রিরারস্ত বুতী ভাবিৎ।

ভত্র স্থাদশপণ। দেখা: । ইতি পুথিশি ভবিবেক: ।। বাংগেত। জ্রী সরস্থ নিংলা। প-ঞাশলিপিভি বিভক্ত মুথদো: প-মধ্য বক্ষস্থলা ভাষা মালি নিব-জ চন্দ্র সালা মাপীনতৃত্বস্থনী । মদ্। মৃক্ষণণ সুধাচ্যকলসং বি-দ্যাঞ্চ স্থান্থলৈ বিভূপা বিশ্ব-পুভা বিন্যনা বাংগুবতা মাশুলে ।। ইতি ভক্তসার: ।।

বাণ্যেবী স্ত্ৰী সরস্বতী। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষ: ॥

বাণ্মী তি বকা। ইত্যনর:া পটু: া ইতি মেদিনীয়া

ৰাখন পু• সুরাচার্য্য: । ইভি মেদিনী।।

বাগ্যঃ ত্রি বাগ্রিদুঃ। ইতি শক্ষ মালা॥ নির্বেদঃ॥ কল্যঃ। ইত্যা কলঃ॥

বায়ত: বি বাক্সেণ্যত:। যথা।
গুত্যেক নিগত কাল মাল্লনোর
ত্যাদিশেৎ। পাশশিচন্ত মুপার্থা
ো বাল্লত জ্লিমবন স্প্রেশিৎ।।
ইতি পুশশিচন্তত বৃধ্ত শল্লীবাধি
ভ বচনং।

ক্ষণঃ পশ্চাৎ ত্রিরাত্রন্ত বুতী ভা বাহানঃ ত্রি আশভ্যাদিনা বাচ। বেংয়া এতদভ্যামে বুতী যাবকেন । বছতি যঃ। ইতি সিল্ধান্তকৌনুদী ॥ राइः: পু॰ मगुष्गः। ইভি ত্রিকাও শেষ:॥

বাছায়ণ ত্রি বাক্যাত্মক । যথা। ম্যুর স্ত জ ভূগৈ লান্তৈরেভি দশিভি त्रकृद्रिः । मन्छः वाष्ट्रायः वश्रधः বৈলোক্য মিব বিষ্ণুনা।। অপিচ। পদ্য পদ্য মিতি পুাহু রাজ্ময় দ্বিবিধ বুধা: । পুৰুক্ত লক্ষণ পদ্য গদ্য সংপ্রতি গদ্যতে ॥ भन्तुः यथा। भन्तुः **ठ**जुञ्जनी छह বৃত্ত আতি রিতি দিধা। বৃত্ত মক্ষর সংখ্যাত জাতি মাত্রা কৃতা ভ (वर्षा सम राष्ट्रंगमः वृज्तः विष-নক্ষেতি তপ্রিধা। সন্ সম্চতু-হ্লাদ ভবত্যৰ্দ্ধসন পুন: ॥ चाहि उजीगटवामा भार उर्या। দ্বিভীয়বং ৷ ভিন্ন চিক্ল চত্য়াদে िषदः পরিকীর্ভিতः ॥ গদ্যং यथा । অপাদঃ পদনভানো গদ্য তভু ত্রিখা নত। চূর্ণকোৎকলিকাপ্যায বৃত্তপদ্ধি পুভেদত: ॥ অকঠো-त्राक्कद्र· यञ्जनभात्रः हुर्नकः विदूः। **७ क्षि रेवश्चर्बी ७ इन्।** श्रन्धः श्रन्धः **७तः** ७१४८ ॥ ७४७/८कविकाः भायः समामाद्यः पृताक्षत्रः। वृद्धिः কদেশ নম্বরাস্ভগরি পুনঃ মৃত• ॥ इंकि एल्लान अही ।। 🛊 । वाध्यव

পাপাৰি যথা। পাক্ষ্য মনৃতক্ষৈব পৈশ্ন্যঞাপি সর্বশং। অসম্ভ পুলাপক বাজায় স্যাহতুর্বিধ ॥ ख्या शक्ष वहन मश्रवामः शिशु-ন্য মন্ত॰ বৃথালংপো নিছ্র বচন• ইতি वाद्ययानि वहे। श्रद्धवाः (म् न জাতি স্ল বিদ্যা শিল্পক্প বৃত্তা-চার পরিছদ শরীর কর্মজীবিনাং পুত্যক্ষদোষ্বচন প্রক্ষণ। হয়।-ন্যুৎ কোধ সন্তাপ ত্রান সংজন-ন বচ:। পক্ষ তह বিজ্ঞে । হ-ছান্য ভথাবিধ।। চফ্ ম্যানিভি बृक्षाकः हाञ्चानः त्राक्षान् ह। পুদাশানিন্দ্ৰ ছেষাৎ পক্ষায় বিশিষ্যতে ॥ তেয়। মেব প্রক্ষ-বচনানা পরোক্ষ ন্দাহরণ অ भवारः । धक नृभाउ वज्ञू छाठ् মিত্র সকাশে অথোপঘাতার্থানে: যোপাখ্যান পৈশুন্ত । অনূত ছিবিধ অসভ্য মসস্বাদক্ষেতি। দেশ রাষ্ট্র পুসঙ্গার পরার্থ পরিক-ज्ञनाट। नर्भ शाम भूमकाह ভार-ণ॰ ব্যৰ্থভাষণ ।। গুহুল্বা (নধ্য সংজ্ঞানাং ভাষণং নিধুরং বিদ:। যদ্ন্যন্থা বচো নীচন্ত্ৰাপংসো মি<sup>-</sup> थुनाभुयः ॥ ইতে । दे । विक्तिसमा मु-छेदाकात्रा जायनार । इर ठामूज ठ

क्ष भन्धः भुक्तिभग्रः ।। भूमः भया निनतनः शुत्रः भानिन्तनः। अब ठजुर्बिश यं द्विश्वरया द्रविद्याशः। मः মক্ষত্বাসমক্ষত্ব ভেদানাদরেণ পা-ক্ষ্যাপবাদযো রৈক্যাৎ নিধুরস্য পক্ষান্ত ভাবাছ। অসম্বন্ধুলাপ **व**्रथं ভाष्यायाः श्रयं प्रायद्वानार्थास्रः **त्र । ইতি তিথ্যা**দিতত্ত্ব ॥ বাদ্মতী জ্রী নদীবিশেষ:। যথা। হিনাদে বঙ্গশিখরাৎ প্রোদ্ভতা বাল্মতী নদী। ভাগীরথ্যা: শত-গুণ পৰিব। ভদ্ধদ। মৃ হ।।। ভব স্থাত্বা হয়ে লোকানুপস্থাপ্য দিব-স্পভে: । ভ্যক্তা দেহ• নর। যাপ্তি নন লোক ন সংশয:॥ ইতি বা রাহে গোকর্ণমাহাত্ম্যে জলেম্বর-नाङ्जाऽवर्गननानाध्यायः॥ বাদ্মথী जी मद्रश्रु । ইতি কেচিৎ 11 বাহাথ ক্লী উপন্যাস:। ইত্যমর:।। **न् म**्मः विष्मवः। वाष्टा ইতি ভাষা। অস্যগুণাঃ। স্বাদুদ্ধু•। 😎 क्षु । सिक्षा । स्मायान ५ । বাত পিত্ত নাশিত্বঞ্। ইতি রাজ বলভ:॥ বাচংয়নঃ পু• ন্নি:।ইভানর:।।

मोन्दु ही। इं अ तक्ति वि छत्र छ:

वाठकः शुः भदः। यथा। भारत শব্স বাচক:। ইত্যনর:॥ দ্বে বা-চকে। পুক্তি পুত্যু দারেণার্থস্য বাচকো গৰাদিক্ল: শাস্ত্রে ব্যাক্ত রণে ভর্কাদৌ চ শব্দ উচ্যতে। লো-কে তু সাক্তো ২সাক্তঃ শব্দ 🕏 চ্যতে। বক্তীতি বাচক: ৭ক:। ইতি ভরত:।। उৎপর্য্যায:। यथा । भः का जिलारो विजय जिथान वा-চকো ধুনি:। হা**স: স্হরি**তঞ্জি ত্রিকাওশেষ:॥।।। কথক:। পুরা-गातिभाठे हः। यथा। वाकाभः वाह-কা বিদ্যান্ত্রান্য বর্ণত্র নাদরাত্য শু-ত্বান্যবৰ্ণজানুজন বাচকামরকং বু-**লে** ।। তথা দেবার্চা মগুত: কৃত্বা ব্ৰাহ্মণানা বিশেষ তঃ। গুছিঞ্চ শি-थिनः अर्थाषाठकः अक्नन्त्र ।। পুন র্ধ্বীত তৎস্ত্রণ ন মূক্ত্বা ধার-থেৎ কৃচিত। হিরণ্য রজভ গাল্ড তথা কাংস্যোপদোহনাঃ !! দত্বা তু বাচকাযে**ছ শু.চস**্যাপ্মোতি ভৎ ফল । কা পে গ্লাপদোহনাঃ কা প্র ক্রোডাঃ । বাচকঃ প্রিভো যেন পুসমা স্তম্য দেবতা: ৷৷ তথা জ্ঞা-ত্বা পর্য সমাপ্তিঞ্চ পূজ্যেদ্বাচক• বুখ:। আত্মান ন্পি বিক্রীয় য इरहर मकन कर्णा ख्या विरम है मण्ड॰ मान्ड॰ ग्लाहाका शह॰ ख्या। कमन्नत ममानुकः तम् जाव ममिन्ड॰ ।। वृद्यमानः मना उप्यः गुन्न।र्थः कृष्मः मान्न। वाक्षणानि-यु मर्विष् शुन्नार्थः हार्भयम् ॥ य व्यः वाहरमनुक्तम् म विर्लू। वाम छेहारा उप।। मधन्नत ममानुकः कार्णिकार्ण विमान्नार्छ। शुन्नम्यः म्जनान् महीन वाहरम्बाहरका नृश् ॥ है छिष्यानि छन्नः ॥

বাচন লী পঠন।। কথন। যথা।
শ্বেনানন্চিত্তেন পঠিতব্য প্র
যত্ত্বতান কার্য্যসক্ত্যনসা কার্য্য
স্থোত্রস্য বাচন ।। ইতি বারাহী
শুব্রণ বৃত্ত পুনাণের যজ্মান পুতী
যাৎ। ইতি কাত্যায়নসূত্র ।।

বাচনক ল্লী পুছেলিকা। ইতি হারাবলী॥

বাচসাম্পতিঃ পু• বৃহস্পতিঃ। ইতিশব্যহাবৰ্দা।।

বা স্থাতিঃ পূণ বৃহস্পতিঃ।**ইত্য** ্বরংয়

বাচা জ্রী বাক্। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ।।

বাচাট: ত্রি বালাল: ইত্যমর: । বাচাল: ত্রি বল্সংসিতভাষী । ख्ट शर्वप्रावः। बन्नाकः २ वाहारैः ७ । इज्यमतः ॥ स्वत् खाविश्वात्र खन्नाकार्य खर्या व इर्ष्ट वाहारहे। वाकार्या बन्नाकः सुद्ध वाहारहे। वाकार्या बन्नाकः सुद्ध वाहारहे। विज्ञानाकः शर्यप्रार्थ (वाशान्तिकः । निज्ञ भूगन्न वाहाना। मूश्विष्ठ अत्र य शे॰। इति मूत्राति विक्र खन्माकः खत्र जः।।

বাচিক॰ ত্রি বাচাক্ত । যথা।
শরীর নৈ: কর্মনাবৈ বাতি স্থাবর তা॰ নর: । বাচিকৈ: পদ্মি মৃগতা॰ নানসৈ রস্কাজাতিতা॰ ॥ ইতি
প্রাথশিচন্ত তল্ক ।। অপিচ। কাষিক৽
বাচিকলৈ বনানসং যার দুস্ত ভাত্র তাং ॥ ইতি শাস্ত্রপ্রাণে সূর্য্যভাত্র।। ইতি শাস্ত্রপুরাণে সূর্য্যভাত্র।। ইতি শাস্ত্রপুরাণে সূর্য্যভাত্র।। অন্য । কাষিক নানসঞ্চ নমস্কার হিল্লা আচার্য্যেণ কথং বাচিকো নমস্কার: কৃত: । ইতি
মঞ্জবোধটীকাষাণ দুর্গাদাস: ॥

वाहिकः श्र्॰ वाक्यात्रसः। यथा।

जानाशकः विनाशकः जःनाशकः

श्रुनाशकः। जन्नाश्याः २भनाशः

कारम्भ कार्निकः॥ व्यः

शरम्भकः। कीर्खिजा वहनात्रसः

म्वर्मानी मनीविज्ञः॥ देशुङक्ष्यः

নীলমণি:।।
বাচিকপঞ ল্লী লিপি:।। সংবাদপঞ্ । ইতি কেচিৎ ।।
বাচিকহারক: পু লেখনং। ইতি
কিকাগু:শ্য: ।।
বাচোয় কি: তি বাগ্দী। ইত্যনরটা চাষাং রামাশুম:।।
বাচোয় কিপটু: তি বাগ্দী। ইত্যমর:।।

বাচ্যু বি স্বং সিত্ত ॥ হীন ॥ বচনাৰ্ছণ। ইতি মেদিনী ॥ শক্যণ। यथा। न हाल्च वल्जा छा भ्रा গাণা বিশিষ্যতে। বাচ্য বাচক ভাবে। १य मक्ष भाषानि नप्तर।। विजेखक रभाक्ष भाक्षा यहाभाः ল্লৈ: পুষজ্ঞতে। তথাপি বাচক **স্ত** দ্য জ্ঞায়তে **শ** ফ্টাঙ্গব**্য। ই**তি মলবাসতভুষ্ত ভউবাভিক্ৰচন ।। গপিত। অর্থো বাচ্যুণ্ড লক্ষ্যুন্ড ব্যঙ্গ, শ্চতি ত্রিখা নতঃ। এযা খ-ৰূপ মাহ। বাচ্যে হর্থোভিধ্যা (वार्ष्ण नाक्कृत नक्ष्या नजः। ব্যক্ষ্যো ব্যঞ্জন্যা ডাঃ যায় স্তিমূ: শद्मा শক्रयः॥ ইতি माश्रिका-मर्लागर भदिएहरः॥ वाह्य क्री शुक्तिशाहनः॥ मृयगः।

ইতি ধ্রণি:।।

3 কানে। ইতি কবিকল্প-ক্ষম:।। ই বাশুতে। ইতি দুর্গাদাসঃ বাজ লী ঘৃত ।। যুক্ত ।। আংল ।। वाति। इंडि (मिनी।। পু॰ শরপক:। ইত্যমর:॥ নিম্বন: || পক্ষ: || বেগ: | ইতি (मिनि ।। मृनिः। ইতি विश्वः ॥ वाकारभय॰ क्री भुः यागविष्मयः। ইত্যমরভরতৌ ॥ সতু শ্রোত সপ্ত म छाडर्गंड भक्षमयागः । यथा। অগ্নিষ্টোমো হত্যগ্নিষ্টাম উক্ষ্যঃ (वाफ्नी वाहरभगक । इंड्राय वायनमृत्रः ।। ञनः (भो अद्गीत (न्ह-ভি সপ্তশাগা:॥ বাছভোৰ্ছা 🖣 🤫 বাছপেয়হাগঃ: इंजि भदद्वावली।। বাজসনেশঃ পু• জনমেজগকুরবে-मार्थगुन्नः। मञ्रेबणम्यायन मार्थाः एइसः। इंडियटम् अभूतानः।। वाक्रमत्वर्गं भू रक्ष्विभावशा আৰ্ফনেণ সৰ্ভ শ্ৰু বাজসনে নিন: ৷ ইতি ঘহাতন পরিগৃছীত वडनाट यञ्चार्धन विविदेशक क्यां अ याः। इंडि मनमाम उद्गा जी বাজিগন্ধা यथगका। इंडि इन्याना ॥

वानकः । इंडि

वाजिए दः

ब्रुवाला ॥

বাজিদন্তক: পু• বাসক:।ইত্যমর:।। বাজিন• ল্লী আমিক্ষানন্ত।ছানা-রজন ইতি ভাষা।ইতি হেমচন্দু-ত্রিকাণ্ডশেষৌ।।

বাজিনী জ্রী অখগন্ধা।।ঘোটকী।। শেষস্য পর্য্যায়: 1 বড়বা ২ বা**নী ৩** भूमृका 8 वार्डवी द। व्यम्ताः क्रीत ख्नाः। यशकोत्रस् क्कान्नः वर १॰ मीপन॰ लघु। (मङ्रेक्ट्यं)कद्र॰ বল্য গৌরব কান্তিকৃৎ পর ।। #॥ उप्रविख्याः। अश्वानिव म्याग्रवृतः क्याय क्कार्डि मूई। मयशांत्र क् ক্ষণ। বাভ:ল্পদ• দীপনকারি নেত্র-দোষাপহ• তৎকথিত• পৃথিব্যা• ॥ 🗱 ॥ ভন্নবনীত গুণা:। আশবন্ত নবনীত স্যাৎ ক্ষায় কফ কাস-बिट । हज्क्षाः क्ट्रेकस्थासः भीयः ঘাতাপহার কং॥**≄**॥ তদ্যু<mark>ত ওণা:</mark> ৷ অস্বা সপিত্ত কটুক• ন্থুব্ৰ**ঞ্ ক্**ৰা-चक् । देवसी भनतः मृहां शात्र वा ভালুদ গুৰু।। ইঙি রাজনির্ঘটঃ।। शाः अभिता वाःकाकः वजवाकीः র' বল্য' শাথানিলাপছ্৽। অমু• करे वय सामू गर नितमक उथा ॥ ইতি ভাবলুকাশ: ॥

वाकिष्धः शुः यद्वानतृकः। ३७

भक्ठिन्त्रिका।।

বাজিভক্ষ: পু• চণক:। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট: ।।

বাজিভোজন: পু• মুদ্র:।ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট: ।।

বাজিমান্ পুণ পটোল:। ইতি রত্ন-.মালা।।

বাজিশালা স্ত্রী ধোটকগৃহং। আ-স্তবল্ ইতি আরবীভাষা। তৎ-পর্য্যায়:। মন্দুরা২। ইত্যমর:॥ বাজী পুং ঘোটক:॥ বাণ:॥ পক্ষী। ইত্যমর:॥ বাসক:। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

বাজীকরণ• क्री वीर्यातृष्किकद्र । ইতি রাজনিষ্টঃ ৷৷ বাজীকরণদুব্য-म। लक्ष्ण भारु। यमुवाः भूक्षः षर्ग्राट दाजिवट मूत्र उक्तनः। उ দাজীকর মাখ্যাত মুনিভি ভিষ **का॰ वरिहर । #ा अब भूमक्र**्रिक् वामा वक्षा मध्या निहासकार। ক্লীব: স্থাৎ সুরভাশক ভড়োব: ক্লৈৰ্যমূচ্যতে।ভয় স্মুধ্বিপণ্ণোক্ত নিদান তস্যক্ষ্যতে ॥তৈ তৈ ভা रिव ब्रक्तरेष्ठान्तु ब्रिःश्या भंग'म क्वर् छ। ধুজ: পত্জ্যতো নুণাং লৈব্যং সমু-প্রাণতে ৷৷ ছেষ্ট্রীসংগুযোগাই হৈব্যু ভন্মান: खुउ•। তৈ ত্তৈ

ভাবৈ ভব শোক ক্রোধাদিভিঃ। অ 🖐 करितः क्रम्याहिटेडः मूःथमदार । ক্ষতে পীড়িতে অস্বস্থীকৃত ইতি যা বং। ধুজ: শিশু:। পত্তি ত্য়মুতি । मःभुरमारमा रिम्थूनः। आ कर्हे हा-ে স্লোষ্ণ লবণৈ ব্লতিমান্ত্রোপসেবিতৈ:। **পि खा**हुककारण मृष्टेः द्विताः जनार পুদাযতে ॥ কছুকাদিনাভিমাত্রেণ পুৰ্জেন পিত্তেন শ্ক্ৰণ্ঠ দগ্ধত্বাৎ ক্লৈব্য• ভবতি। পিত্তজনেতদ্বিতাৰ• ॥२॥ अভिव्यासभीत्वा (या मह বাজীক্রিনারতঃ। ধৃজভঙ্গ নবাপ্নো-**তি স** শুক্র কম হে তুক• ৷৷ শুক্রক্ষয়**জ**• তৃভীয় ।। ৩॥ নছ ভামে দুরোগেণ চ তুৰী ক্লীবতা ভবেৎ।।৪॥ বীৰ্য্যবাহি-শিরাছেদামেহনানুষতি ভবেৎ। ৫। विनः क्ष्मिन्या नितावाषुक्र র্য্যতঃ । বঙ্গল্লৈব্যং মৃত্যং তত্ত্ব শুক্র **उ**म्र निमिडक ॥ यनिनः भृष्ठेमः भू क्षम्। कृत्रानमः कामार मक्ति-তস্য।মনসঃ বুক্ষচর্য্যতো নিরোধাৎ ক্লৈব্যু• ভবতি। ৬॥ জন্মপুভৃতি যৎ-ক্লৈব্যু সহজ তজি সপ্তন্য। ৭॥ व्यमाधाः द्वितामाञ् । यमाधाः मः **रुज**॰ द्वित्राः सम्बद्धनात यख्या । नर्याह्रमाट वीश्वाः स्मिद्राहिमाट ।। 🕸 ।। व्यथ 😭 । मा विकिट्गानाः

। বাজীকরণ বিধিনাহ। নরো বাজী-করান্যোগান্ সম্যক শুদ্ধৌ নিরাম-यः। मक्ष अष्ठः भूक ही क वर्षामृष्ट्व स (वाज्यार ॥ नह रेव (वाज्यान दोक् সপ্তত্যা: পরতোন চ। আযুদ্ধানো नद्रः खीजिः मःरयागः कर्जुनईजि॥ क्य वृद्धां अदः नाम्य (वादा का जी-व मूर्जयाः। অকালনরণঞ্ স্যান্ডজ-७ छिय मनुष्या । विनामिना मर्थव-তা ৰূপ যৌবনশালিনা। নরাণা। বহু ভাৰ্য্যাণা• বিধি বান্ধীকরে৷ হিতঃ ॥ इविद्राणाः द्विद्रः मूनाः ज्वीणाः वा ल छ। शिष्ट्ठाः । याविर भुमकार क्योगानाः क्रीवाता मनुद्रवनाः ॥ হিতা বাদ্ধীকরা যোগাঃ প্রীত্যপত্য বলপুদা: ৷ এতেপি পুষ্টদেহানা• (मव्राः काचार्राशक्या ॥ 🕸 ॥ वा-জীকরাণ্যাহ। ভোজনানি বিচিত্রা-ণি পানানি বিবিধানি চ। বাচঃ শূো-ত্রাভিরানাশ্চ জ্বচঃস্পর্শ সুখাবহাঃ॥ यामिनो (मन्द्रुडिलक) कामिनी नव-বৌষনা। গীত শুোত্রন্নোছারি তা-ष्टा यन्ति । युक्तः ॥ यक्का यन्। छ। ৰূপাণি চিত্ৰাণ্ডপ্ৰনানি চ। মনস-শ্চাপু <u>ভীবাতে। বাজী</u>স ব'ভি মানব• ॥ माक्कोक क्षाञ्चयु भावर (नाष्ट्-চ্ने भथा मिनाजजू वि**उन** घ् जानि

লিছেৎ। একাগু বিশ্বতি দিনানি গদাৰ্দ্দিভোপি সোৎশীতি কোপি त्रभारयः भुभाग य्यव ॥ गवाः विकार বৎসানা সিদ্ধ<sup>°</sup> প্রযাস পায়স। গোধুনচূৰ্ণঞ্ তথা সিতা নধু ঘৃতাবি-ত।। ভুকু। হ্ৰাড জীৰ্ণাপি দশ-দারান্ বুজভ্যপি।#। অথ রসালা। म्बार्काटक भीयतम् मधुद्रः थ्खनः ठन्मुनु।:उ: भुञ्च कि मुश्रम् शक ए विषः भुष्ठेत महजूर्यायकान्। अला-মাৰ চতুষ্টৰ মরিচত: কর্ষ লবঙ্গু ভথা ধৃহা শুক্লপাট শনৈঃ করতলে ताद्मध्य विमुविषय ॥ मृष्डाए ন্গনাভি চন্দন রস স্পৃষ্টে ৎগুৰাজ্ব পিতে কপুরেণ সুগন্ধিক তদখিল 🤊 স'लाए। अ'इ।भायर । सम्रार्थ ম্থরেশ্রেণ রচিভা ছেষা রসালা স্বদ ভোকু র্মথ দীপনী সৃথক্রী কান্তেব নিত্যু প্রিয়া ॥#॥ গোক্ষরে। ফুরবীজানি বাজিগন্ধা শভাবরী। ग्यनी वानतीवीक यही नागवना-বলা ।৷ এষা চূর্ণ দুঝসিদ্ধ গব্যে-নাজ্যেন ভজিত। সিত্যা মোদক। কৃত্বা ভক্ষ্য: বাজীকর: পর: ৷৷ চূর্ণা-प**ॐ**७० कींद्र॰ घ्ठ∙ ह्र्नमन॰ श्रृठ•। अञ्चल हिन्दर थन शास्त्र शिवन বথা। বাজীকর।ণি ভূরীণি সপৃহ্য রচিতো যতঃ। তমাৰহুষু গোগেষ্ যোগো १य॰ পুররো মত: ।। রভি-वर्ष्ट्राना (भारकः ॥ अ। शिश्रमी व्यव-ণোপেতে বস্তাত্তে যৃতসাধিতে। ক-ছপস্যাথ বা খাদেন্তেত্ বাজীকরে ज्ण ।। 🗱 ।। भूग पिक्वारमणाजः रणशालाचान ज्म कर्जरवहर ম• জলযোগতো **ন্**দূতর স**ংহট**ঃ চ্ণীক্ত ৷ ভচ্ৰ পটশোখিত বসু-গুণে গোশুজ দুখে পচেৎ গব্যা-**ब्राञ्जलि म** युटिनिविष्ठ हरता-জুলার্জাণ সিভাণ ॥ পর্ব্ব ভজ্জ্ল-নাৎক্ষিতি পুডিনংহে ড স্মন্ পুনঃ পুক্ষিপেৎদণ্যাত্ত তদুদাহরামি বছ-ला पृक्षापद्रार्थ जिल्लाः। अला ना-गवना वना महभना जा जीकनानि-*ক্ষিকা* জাতীপত্ৰ সূপণ্ৰ চিত্ৰক যুত্ত• ভছ বুচা সংশুত ।। বিশ্ব। বীরণবারি वाजिमवजावाःभी वजी वानकी पुष्का সেকর গোক্তরাথ মহতী। থজুরি কা ফীরিকা। ধ্রোঞ্ **সকসেকক** नगतूकः मृशाहेकः क्षेत्रकः शृथीः কাথ যবা নিকা বরটিকা মাণ্মী নিং সি মেথিকা।। কদেৱেত্র বিদারিকা-थ म्यनी भग्न भक्ता उथा कब्दि॰ ফরিকেশর সমরিচ গুরস্য বীজ নবং।বীজংশাল্ম ল সম্ভবংকরিকণা

ৰীজক্ষ রাজীবজ প্রেতণ চন্দ্রন মত্র रक मि ह औन छ न्दें सं नम ॥ সর্ঞ্জেতি পৃথক পৃথক পলনিত্ত• স-চূৰ্ণ্য ভৰ ক্ষিপেৎ স্ত্ত বন্ধ ভ্ৰ · **জঙ্গ লোহ গগণ** সন্মারিত স্বেচ্চ-या। कनुत्री घनमात्र हुर्ग मिल ह भू।-छ यथा भुकिल्य भक्ताम्म जु भारकान् विब्रह्यिष्टितृ भूगांगान्य ॥ ভান্ ভোক্তাতি সদ। যথানলবল• ভূঞ্জীত নাম্ল- রসং পূর্ব মন্নদিতে গ-তে পরিণতি<sup>®</sup> প্রাণ্ডাজনান্ডক্ষয়েৎ । নিভ্যুণ শ্রীরভিবল ভাখ্যক নিন• यः भूगभाकः छटा म माहीर्याः বিবৃদ্ধি বৃদ্ধ নম্যো বাজীব শক্তো র-(डो। पीछा १ बनवान् दनी दिव्र হিতো হাষ্ট্র: স পৃষ্ট: সদা বৃদ্ধোগো-शि गुरवव (माशि क्हितः भूर्लन्मुवर मुनरदः। रम्खा यष्ट्रेखा। यखनि রন্ধশরা ে। তলান্ধাে পঞ্চাশৎ-পল্মিতাং। সংহিতাঃ সুশুভাদ্যাং। नागवला ध्वमक्त्री ख्वथ् ी इंडि চ লোকে। বলা বহং वियात उन्धा गृल दुक्। চপল। পिপ্ললী। डाठी-পত্ৰ হ' জাইপত্ৰী। বিশ্বা শুঞী। বী-इतः এडमा मूलः डेमीतः गाञ्चः। वाजि ज्ञक्तवाना। नाविनः गूछकः। दद्रा जिक्ना। वाःमी वःमाद्राह्मा

। वज्री भे जावज्री। वानज्ञी कलिक हू खम्या वी**कः गाञ्**। इक्क् द्रः (काकि-লাক্ষ: তস্য বীজ। গোক্রুরস্যাপি বীজ। মহতীখজুরিকা ছোহারা। को विकाकी बी। भृथीका का ववी मन-दिवना इंजि (नारक। व्यक्तिका व्यद्रिय ইতি লোকে। শালুক নেষা कन्मः नाषीककारया वजारिका। मांभी द्वीयाः भी। यितिः (भीकः। शक्कर्वशः ন্ধা অখগনা তস্যা মূল। 🖺 সংজ্ঞ विवक्रः। चननातः कश्रः। विवश्राः ণান্ পলপুমাণান্। রতিবল্ল ভাখ্য-भूगभाकः॥ 🛊 ॥ এउधिन् जिवला छ यि भूनः मभाक् थुत्रामा निका शकु-রস্য তুবীজনর্ক করভা যাসো ংধি (भाष ख्या। मनाज्य नकः उथा थ-সফলত্ত্বাপি নিঃক্ষিপ্তে চ্ৰিছা বিজয়া তদা স হি ভবেৎ কামেশ্বর: न ज्या ॥ महाकारमध्यः ॥ 🛊 ॥ द्र-কপিত্রাধিকারোক্তঃ খণ্ড স্বয্যাও-কো মহান্। রক্তিপতাদিরোগগো নহাবাজীকর: মৃতঃ।। 🗱।। পকু:মুস্ত রসে দ্বোণে বিতা নাচকসংমিতা• । युज्युङ्गिषः पत्रामागद्रमः भः व'रेक'॥ मितिष्ठः अउखानामः शिः भूनी विभावाधिकः। **म**िवन्। **एक पदा गर्व (मक्ब काइ**त्रर ॥

भारत जारा भारत मार्क मंद्रमर्व्या भुवानायर । वृर्गात्युवाः किलाखन घनीज्**उवजातिएज ॥ धानाक॰ की**-त्रकः भवः চিত্ৰकः মুস্তকः বৃচ্। বৃহজ্ঞীরক মপ্যত্র গুছিত নাগকে भद्रः ॥ এলাবীজ लवक्षः भृथक् জাভীফল• পল•। সি**দ্ধ• শীতে পু**-मन्त्राह मध्नः ऋउवद्ययः ॥ ভक्कर्यः ভোজনাদ্রাক্ পলমাত্র মিদ্ নর: । অথবা নিয়তা নাত্র মাত্রা খাদে-ष्य्थानल ।। भानतः (भवनाहम) वा-জীব সুরতে ভবে**ং। সমর্থো বল**-বান্ পৃষ্টো হৃষ্টো নিত্যু নিরাম্য: ।। গৃহণী । नामारयरम्य क्या श्वाम म-রোচক। অনুপিত্তঞ্চ পিত্তঞ্চ রক্ত পিত্ৰ পাওুডা∘া বৃহজ্জীরক• মা नागरेदना। यामुलाकः॥ 🗱॥ 🎮 ম্বতি পোক্রচুণ- ছাগকীরেণ সা-ধি ড সন্ধু। ভুক্ত ক্পেষ্ঠ সাজ यब्बनिङ ञ्लूयारमन ॥ मुन्यानि **ठन्त्रनाहिन्छ इन्ह्रनः इक्डइन्ह्रनः। श** खक् गथ कालीयाधक क्काधकि ह া দেবজম: সমরল: পদ্মক তুণি কো হলি চ। কলুরো মৃগনাভিশ্চ লভাকস্তরিকাপি চ ॥ সিহুদ্র: জন্ধ-নং নব্যং জাতীফলক নত্ৰ চ। জাতী-भवः जवक्ष मृत्यिना सहकी ह मा ধা কল্বোলফলক ত্বক্চ পত্ৰক নাগ-কেশর । বালকঞ্চ তথোশীর মাণ্ স্বী দাক সিতাপি বা॥ মুরা কপ্রি-क म्हानि लिल्वर खुनुगुरुक । (त्र-खका ह नियक् क भीवारमा खत्रुन्-ख्या।। नाका नथक बानक थाउँ ने অসুম তথা। গুল্পিপর্ণঞ্চ মঞ্জিষ্ঠা ত-গর• সিক্থক• তথা ৷৷ এডানি শাণ यानानि कहीक्छ। गरिनः शहर । তৈল পুস্মিত সম্যক্ এতৎ পা-ত্রে শুভে ক্ষিপেৎ 🏿 অনেনাভ্যক্ত-गावस वृष्काणीि সমোপি यः। শুভূো ভবতি শুক্রাচ্যঃ স্ত্রীণামত্যস্ত দুৰ্ল ভ• ॥ বন্ধ্যাপি লভতে গৰ্ভ• य-ণ্ডোপি তক্ণায়তে। অপুত্র: পুত্র মাপ্রোতি জীবেচ শরদাং শতং ॥ চ-न्त्रापि सहारेजन द्रक्र शिखः क्रयः जुत । नारु भुष्यन (नोर्गक्त) कि है। कञ्चः विनामस्यर ॥ १४ ४**३१ व क**म् **३७ (**वारक । कानीय॰ कनन्नक ই**ভি লে**।কে।লভাকতুরিকা মুষ্ক-माना इंडि लार्लं । त्रक्षालकलः স্যাভাবে জাতীপুয় গুগ্ছ । তদ-लाভেপি ल्राङ्गः गाञ्। नाकिमि-ত। माक्रिनी। निलय एत इंडि লোকে। শ্রীনাসঃ গুণুরী ইতি লো-কে। গুছিপর্ণঃ গঠিবন্ ইতি লোকে

। चनीजिमाः चनीजिवार्विकः । **ठम्मना** हिरेड़न ।। # ।। वीकानि কী**শ**বদ্ধা: স্বডব মিতানি স্বেদযে-इनकि:। शुष्ट (गाज्यमुष्य भूषः यावम् अवन्गाहः ॥ जुगु इ जानि ह क्षा मृद्धः मः (প्रयाखानि। পि क्षिक्या नयुविष्का कृद्धा गरवा श-हिराक्ता विख्निः मक्त्रेग वा ব্রটিকা: সংপত্ন্ম লেপ্যা:। ব্রটি-কা মাক্ষিক মধ্যে মজ্জন যোগ্যে থিলা: স্থাপ্যা:॥ পঞ্টক্ষ মিতা-खास मायः शुक्रिक जक्रायर । व्यानन भी यु मुनवी त्या यण्य नार পতিতথ্য: ৷৷ সোপি প্রাপ্রোতি मूत्र मामर्थ। मिन्ड वाकिवट । नात्न मृम् किष्ट मुवा वाकी क्र अद्रशा वान्द्रीविका ॥ 🕸 ॥ चाकात्रकत्रज्ञा मुश्री नवगः अस्तृभः क्गा। का डीक्न का जिनू झ र हन्त नः कार्यिकः भृथक् ॥ ह्र्गर्यमहि ফেণন্ত তত্ৰ দৰ্যাৎ পলোন্মিত। সৰ্মেকীকৃত মাৰমাত্ৰ ক্ষৌদুণ **७क्टर** ॥ मुक्**उग्रकद्र** भू-मा-भिन्नानन्तकात्रकः। नात्रीणाः श्री ভিজনক সেবেত নিশি কানুক: ॥ ইতি ভাবপুকাশ: ॥

जाठ बिविधा यथा । উপাय्विय-यिगी कनविषयिगी वा। कनः जुनः দু:থাভাবন্দ। তত্র ফলেছাণ পুতি कनञ्जान काद्रगः। उभारयहाः <u> भु</u>जि ইष्टेमाथनजा ज्जान• काव्रन• । ইতি সিদ্ধান্তমূক্তাবলী ॥ ७८-भर्गायः। ইहा २ काङ्का ७ म्यू इ। ८ ইহা ৫ তৃট্ড লিপ্সা ৭মনোরথ:৮ কাম: ৯ অভিলাব: ১০ ভর্ব: ১১। **३७**७मनः ॥ व्याकाङ्का ३२ कान्तिः ১০ ग्राठ्यः ४८ (मार्मः ४८ व्या-जिनायः १५। इंजि भद्रद्वादनी ॥ कक् ७१ क्षिः ১৮ मुडिः ১৯ (मारुल २० हन्तः २) । इंडि क्रिवाध्यः ॥

व्यविष्ट्रमः भारतेश्वीमान् ध्राष्ट्रा **प्त**-वी मतम् जी । णुङ्काञ्चत्रध्रता (पवी । শুদ্রাভরণভূবিতা ।। বাঞ্চি क-লমাপ্মেতি সলোকে নাত্ৰ সংশ্যঃ । ইতি বুদ্ধা স্বৰ**ণ পুাছ সরস্বত্যা:** স্তবং শৃভং॥ ইতি তত্রসার:॥

वाकिनी जो वाक्नीयानाती। उट পর্যায়:। লঞ্জি হা ২ ফলতুলি হা ৩ । ইতি ত্রিকাওশেষ: ॥ বাঞ্নীয নাতে জি॥

ন্ত্রী আনুব্রিভণবিশেষ:। বাট: পু॰ নাগ:।। বৃতিস্থান । ইতি

मिनी ॥ अभिन। मूथः निः मद्राः वार्षे भानीनार्वश्रेको वृज्तिः। इजि एक्सन्मुः ॥

ৰাটশূহ্বলা ক্ৰী পথরোধকশৃহ্বলা। ভং-পর্য্যায়:। লফ্রা ২ । ইভি হারাবলী।।

বার্টিকা স্ত্রী বাস্ত্যাবাট্যালক:।

ইন্ডি শব্দর্মাবলী॥ হিস্পুপত্রী।

ইতি শব্দদিকা॥

शही जी वाहे। लक्ः। इंडि मप्-ब्रज्ञावली ॥ ऋषी ॥ वास्त्र । इंडि (मिनि ॥ भाषभाष्यां गाः। वास्तुः জ্ঞীবেশ্ম ভূৰ্ব টী বাটিকা গৃহপো-छकः। ইতি শব্রজাবলী।। #।। छम्। वक्रभारि यंथा । विश्वकाक् ক্ৰাচ। (क (ठ वृक्का: শুশাস্তান্চ নিবিজ্ঞাশ্চাপি কেচন। ভদু। ভদু-अना कालि जान् वस्य कगृह द्रा। কেষামন্ত নিযুক্তঞ্চ লিবিরঞ্চ শুভা-म् ड॰।। दिन्नि इन्ड जल छुन् गः म् इक वर পुड़ा। हाद्रागक ग् रागक पाकाताना भुमानक ॥ ভদুপুদশ্চ কো বৃক্ষো দিশি সত্ৰ भुव बंद । कि॰ भुभाग गृहागास शुक्तानाः जगन्यता ॥ सक्तः **জসুনোদ্যান• দিশি জ**ত্র তরে৷ স্ত-থা। পা গার কি পুমাণক পরি

थानाः मुद्रापत ॥ बात्रानाक गृहाः गाथ পुरकात्रागाः भुसागकः। कत्रा কস্য ভরো: কাষ্ঠ পুশস্ত পিবিরে-পুর্ভো ৷৷ অমঙ্গল বা কেয়া বা সর্বণ भाः वक्तुमर्शम ॥ 🗱 🗐 छगवानुवाः চ। আশুনে নারিকেলণ্ড গৃহিণাঞ্চ धंनशुमः। मिवित्रमा यमीमात भूर्व शूम् एकः ॥ मईब मक्वाईफ उक्ताका मानाइतः । त्रमान्कः পূর্বমিন্নৃণাণ সম্পৎপুদ স্তথা।। সু-**७**शुरुण्ड गर्बे गुत्रकारता निणामव । বিল্বশ্চ প্ৰসংশ্চৰ জন্মীরো বদরী उथा।। भुका भूरण भ्वं यन् पिकान थनम् छथा। जम्लर भूमम्ह मर्बे व य-(उ) वि दखाँ उ गृशी ।। अध्यक्षण पा. ডियः कर नामा उक ख्या । वन्नु नुष-क পূर्व यन प्रक्रिश भिजप ख्या !। সর্বত্র শৃভদশৈচব ধনপূত্র শৃভপুদঃ। र्घभृता खवाकक मक्किल ल्लाकस्य তথা ৷৷ **ঈশানে সুখ**ৰ**ৈচ**ৰ সৰ্ত্ত देवदः निमान्य । मृहंब हल्लाकः শু:দ্ধা ভূবি ভদুপুদ ওঁথা ॥ অলা-युक्तानि बन्नाखः नायाधुक मूकाः মুক্তঃ। খজুরী কক্ষটী চাপি শিবিরে মঙ্গলপুদাঃ ॥ বাস্তু মঃ কারবেল্ল-চ বার্ভা**সশ্চ শুভপুদা:। লতা**ফলঞ্চ मु छन गर्ब गर्ब निक्ठ ।। भुन

ন্ত ক্ৰিত কারে৷ িষিদ্ধঞ্চ নিশা-न्यः। 🗱। वतः । वृद्धः। निविषाः 🍽 -ित्त्र नगत्रिक ह ।। वर्षे। निविष्कः শিবিরে নিত্য ৌরভয় ততঃ। ন-गात्रषु भुभिषाण मर्ग्नाथ भुगाम छः था।। (इकाद्मा जिन्निजी वृक्षा य ত্মাত্ত॰ পরিবর্জধ। শরেণ ধনছানিঃ স্যাৎ পুজাহানি ভবৈৎ ধুরং॥ শি-বিরেহতি নিষিজক নগরে কিঞ্চি দেব চান নিষিজ্ব: পুলিদ্ধশ্চ নগরেষু তথা পুরে।। বাট্যা মভিনিবিদ্ধান্চ প্রাক্ত স্ত পরিবর্জাবে । খর্রক **ডহুল্চৈব নিবিদ্ধ: শিবিরে তথা ।।** ন নিষিদ্ধঃ পুসিদ্ধান্ত গানেষু নগরে ষ্চ। বৃক্ষণত চণকাদীনাং খান্যঞ মঙ্গলপুদ॰ ॥ গুনেষ্ নগরে চাপি শিবিরে চ ভথৈব চ । ইক্ষ্ফুক্ষ শুভদঃ সন্তত শুভদ স্তথা।। অ শোকণ্ট শিরীষণ্ড কদহণ্ট শুভ-भुषः। कदी इतिन मुख्या मुख्य कार्युक खबा। इंडीलबी ह मुख्ता পুনমেষ নগার্য চাং ন বাট্যা ভাদুদা निकार क्य हामण ही युवर ॥ अह ॥ গ্ৰাম নহি শুভদ ম্খানাঞ্ভ रिषद है। कन्यतान शृहेहर्ष्यु नमार वास्त्री হ্যাপনকারিণাং । ন শুভশুদ মন্যে-ষা মুছ্মকারণ পর । বানরাণা নরাণাঞ্ পর্মভানা প্রাম্পি ॥ হরুরাণা স্থালানা মার্লারাণা ম-ভদুক । ভেটকানা শ্রুরাণা স (विवाकामुज्यूमः ॥ क्षः॥ ज्ञात চাপি পূর্যমিন্ পশ্চিমে চ তথোত্ত-রে। শিবিরস্য জল ভদু মন্যত্রাশু **७ भिव ह ॥ १॥ भी एवं भूएक मधानक** न अर्य्याचानितद्व॰ वृथः। ठजुत्राम् गृह कादा गृहिना॰ धननाधनः।। मीर्घ পুস্তঃ পরিমিতো নেত্রাফেনাপি স্-হত । শ্ন্তে রহিত ভদু শ্ন্ত শ্ৰাপুদ নৃণা ।। পাস্থ হওদ্যাৎ পূর্ব দীর্ঘে হস্তত্রয় তথা। গৃহিণা শুভদ ভার প্রাকারস্য গৃহস্চ ॥ न शष्रापराण कर्डवर्रः किथिः मूर्गाः থিকে শুভ•। চতরস্ভ চন্দ্রেখ• শি-विञ्च भक्षाशुक्ता अ अमुक् मृत्री विशः निवितः भक्षाशुमः। अञ्मूमः म्यं। त्वयः भा छा स्म ७ देवत ह । स।। শিবির ভিড়েরে ভদু জাপিতা তৃল-भी नृशाः। धन शृद्य सुमाबी ह लुगाः দা হারি ভলিবা ॥ পুভাতে ভলগী• मृष्टे। सर्वरामकनः काउट । मान ही युष्यका अन्तरभाषको (कडको उदा ॥ नारमध्यः मह्यका ह काक्ष्मः वस्रवः শুভ'। অপরাজিতা চ শুভদা ভেষা मुम्तान भीञ्जिङ ॥ भूख ह मिक्ल

চৈব শুভদ• নাত্ৰ সংশযঃ। #। উদ্ধৃ (बाउ**ण**हरखरङ्गा रेनवः ऋर्यग्रमगृहः गृशी।। উक्द रिम्मिडिश्खनाः गु कातः न म् ज्रुषः। #। স্ত্রধারः তৈ-व्यकात्र अर्गकात्रक श्रीत्रकः ॥ वाही मूल गुममारा न कर्गाट सामन वूष:। वाकान कविम रेवना मर-भूमुः गपकः भूजः॥ जर्छः देवस्रः भूझकातः झाभारय मिविता छिक । 🕸। পুছে চ পরিথানান শ 🌣 🤊 ন্ত পুশন্তক।। পরিত: শিবিরাণা-ঞ্ গম্ভীর দশহন্তক। সঙ্কেতপূর্ব-ককৈব পরিখাছার নীপ্সত ।৷ শ-ত্রে৷ রগন্যু নিত্রশ্য গম্য মেব সুথেন চা # শোল্মলীনা তিম্বিডীনা হিন্তালানা ভবৈষ্ঠ ।। নিয়ানা সিদ্ধবারাণা॰ উড়ম্বরাণা মভদুক॰। পুত্রাণা বটানাঞ্চাপ্যের গুলন ম-বাঞ্চণ ৷৷ এতেষা মতিরিক্তানাণ শিবিরে কাপ্ত মীপ্লিত। নৃক্ষঞ্চ বজু-**रुउकः मृत्राउ। वर्ड्डा**यम् ४: ॥ भूडा দার ধন হন্যাৎ ইত্যাহ কন্লো দ্ৰবঃ। কথিত লোক শিক্ষাৰ্থ স্ক্ काष्ट्रे विना भूबी । माजकार ठाभा धुना ग्रह वट्न यथान्थः। इंडि दुक्तरेववर्ष धिक्षयम्बर्धः २०२ ज्ञानः ॥

বাটী ত্রি রেপ্টিতছ বভাগ:। ইত্য-মর: 🛭 যজ্ঞবাট মূপস্ত্য ইতি রামভদোকি:। বাট: পছা ইতি वंश्वः। वार्ति। वृष्ति द्रिष्ठि मधुः। বাট বাট চ। ইতি ভরত:।। वाष्ट्री शीर्यः भुः इटक षेव्कः। इंडि ब्रञ्गाला ॥ বাউক লী ভৃষ্টবব:। ইতি শব-**ट**न्दिका ॥ বাট্যশুল্লী জ্রী বাট্যালক:। ইতি **त**जुशाला ॥ वाष्ट्रेत जी वाष्ट्रा**नकः। ३७ि ब**ङ्ग माना ॥ वाम्रानः भू॰ वाम्रानकः। ३७ भवत्रज्ञावनी ।। ক্ষুপ্ৰি**শেষ:** । वाष्ट्रानकः शू॰ বাডিযালাইভি ভাষা। তৎপর্যা য:।শীতপা ही ২ বাট্যা ০ ভদ্মে। मनी 8 वला व वाही अ नवशा 9 वाहेशनी ৮ वाहिका २ । इंडि नक्द्रवादनी।। अम्प्रश्रीग्राखंडद्र॰ खनाक वला भार्य पृष्ठेन्ताः॥ वाहेग्रजी की बाहेग्रनकः। इंडि मदद्वावनी।। वाफ या ए याञ्चारव। इं कि कवि-কল্পদমঃাখ সৰবাডখা উবাডটে (बाह्धः याञ्चातः मुन्धः वेसकः

न•। ইভেড়কে। ইতি দুর্গাদাস:॥ বাড: পূ॰ বেষ্টন । ইতি শব-भावा॥ वारः क्री व्यक्तियः॥ भुक्तिकः।। ইত্যমর: ।। বাঢ় মিত্যব্যযমপী-তি বৃদ্ধা:। ইতি ভরত:॥ বাঢ়ে ত্রিষু দৃঢ়ে প্লীব মনুনত্যা **মথ**ত্রিষু। ইতি নানার্থরত্ননালা॥ বাণঃ 🦖 শরঃ। ইত্যমরঃ।গো-खनः ॥ रेप्रजारङ्गः ॥ रक्रवनः ॥ ইতি মেদিনী॥ অগ্নি:। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষ: ।। কাণ্ডাব্যব:। ইতি विष: ॥ जुन्नुक्ष: । ইতি রাজ নির্ঘণ্ট:।। কবিবর:। ইতি ধরণি:।। व्यन्। ८ भवनी यवकात्रारमो मुष्ठेवाः॥ वाभम्यः। उ 4. পর্য্যায়:। বেমা ২। ইতি ছেন ठन्मः ॥ বাণপুর লী বাণরাজপুর । তৎ-श्यंत्रवः। (एवीरकाष्टेः २ काष्टीवर्षः উষাবন॰ ৪ শোণিতপুর॰ ৫ ≀ ইতি ত্রিকাওশেষ:।। আগ্নেয় ৬ উमायन १ (का छेत्री भूद र ৮। इंडि **मद**ब्रावनी ॥ वानभूषा छो मद्रभुष्य। ইতি রাজ नियंग्डः ॥

বাণ ভট্ট:

M.

গুন্থকারবিশেষ:।

यथा। नन् सङ्गनः कथः किगरङ वक्ताविष्ठुक्तः विष्ठुक्तार श्रा-রিপ্লিড সিদ্ধি রিভি চেন। বাণ-ভটাদে মঞ্জলে সত্যপি গুহুন্মা-**छाजार भाषाको मह्नाजा**त-नि मगाछि मर्मग८। इंडि मुक् (वाधिकायाः मुर्गामामः।। २ वाद्रगः ७। ইতি শব্রত্বাবলী।। हालकः ८। इंडि श्रायलो ॥ বাণসূতা স্ত্রী উষা। ইতি শদ্-ब्रञ्जावनी ॥ ৰাণহা বিফু:। ইতি **হেন**-প• ठन्मः ॥ वाना जी भ्• नील विष्णे। इंड्र-वाना जी वानमूल। इंडि सिरिनी॥ বাণারিঃ পু॰ বিষ্ণু:। ইতিকেটিৎ।। धनः। इछि इना-বাণাশুয়: युष: ॥ त्री धनुः। ইতি হলा-वागाभन• यदः ॥ वािः छी वश्रनः। इंडाप्रदः॥ বাপদও:। ইতি (হনচন্দু:॥ वानिनी जी नडकी।। एकः।। মৰস্ত্রী। ইতি হেমচন্দু:॥

বাণী স্ত্রী সরস্বতী। ইত্যমর: ।। বচন• ।। বপন• । ইতি শব্দর্মা-বলী ।।

वाङ छ क गिडिस्नियरमाः मूर्थ।
इंडि किविक्सक्रमः ॥ व्यवनाष्ट ।
ज्यार्थाः । द्रमानाथस्त्र गिडिसूथ
(स्वर्या दिडि मद्या गिडि सूथः
गिडिसूथः । वाङ्यि भाष्टः वाङः
गिइष्टः सूथ्यडीडार्थः । ইड्याह ।
सूथस्मवन्या दिखि कीमद्राः। ইडि

বাত: পু: পঞ্চ্যান্তগত্ত্ত্ভ্ড:। বাতাস ইভি ভাষা। তৎপর্য্যায:। शक्काक्: २ वायू: o शवमान: 8 म হাবলঃ ৫ পবনঃ ৬ স্পর্শনঃ ৭ গন্ধ-বাহ: ৮ মক্ৎ ১ আশুগ: >০ খ-সনঃ ১১ মাভরিখা ১২ নভয়ান্ ১৩ মাৰুতঃ ১৪ অনিলঃ ১৫ স্মী-द्रगः ১५ जगर भागः ১৭ मगोतः ১৮ **স**राग**তি: ১৯** জीवन: ২০ প্ৰদ**শ্ব:** २) उत्रभी २२ পु ङक्षनः २० शुधा-बन: २८ जनवङ्गनः २७ धूननः २७ লোটন: ২৭ খগ: ২৮। অস্য শুণা: । देव इञ्चाल घुना भी उद्गाकः कदः। नृष्यद्ः। मः छ्वानकदः। স্তোককারিত্বঞ্চা তদ্য কোপকা द्रवः यथा । साध्यातसम्बनः । **माज्कानः। अभवाङ्कानः। भू** ভূষকালঃ। অন্নজীর্ণসন্যশ্চ। ইতি त्राजनियंग्डः॥ 🗱 ॥ त्रागविष्णयः। यथा। व्यथं वाज्वताश्रक्षिकातः ভত্ৰ বাভব্যাধীনা• সামান্যতো বি-পুকৃষ্ট निषानानप्राष्ट्र । क्याय कर्षे ভিক্তক পুমিত কক্ষ লগ্বনত:। পুর: পবনূজাগর পুতরণাভিঘাত भुभिः॥ श्यापनभगाख्या निषुत-नाह थाजुक्कया भनामि त्रभथात-ণাৎ মদন শোক চিন্তা ভবৈঃ। অতি-क्षञ्जासाक्षरा गमक्ञाञिमाः **मक्र**यामञीव वसनाम्गा सञ्चितितः हबादामञ: ॥ श्रायाद्रश्रमाय दिन-ক্ষণাদো স্তীয়া-শ্যো জঁর। মঠি-গতে থশিতে শিশিরসাজকালে **ৎপি চ। দেহে সোতা** দি বিজ্ঞানি পূরবিত্বা নিলো বলী। করোভি বি বিধান রোগান সর্বাকৈক স্পণ্শু যান্।। প্ৰিভঞ্চাত্ৰ বৈপয়াভ্যে প্ৰো-পদর্গ তৈন অণরিনিত নিত্যর্থ:। পুক্ষেণ নিত নত্যল্প বা লম্বন অ ভিপরাণ শাল্যাদি। কভিচিদলা নি ন্বান্যপি বাতলানি। যত অহে । ७ : तन्नाणायाः । नीवाद खिशुदेः স্ত্ৰিচণক শ্লাৰাক মুদ্ৰাচকী বি-झाराण ग**ञ्छकण व्यवे। मध्य**ाः

ক: কোদুব: ॥ এতে বাঁচৰরা ইতি (भवः। नीवातः शुजाधिका छीनी ইতি লোকে। বিপুট: যসারী। স-ভীন: কলায়ঃ। নিল্লাবে। রাজমায়:। ি বোডা ইভি লোকে। নসপ্তক: নোচ ইতি লোকে। ব্রটা ব্রটিকা বর-देत्र हेिं ब्लाक् । सङ्ग्रकः सम्ब्री इंडि लाक्त। भुद्रःभवनः भुग्राडः । আমতঃ আমেন মার্গবেরণাৎ। ষত উক্ত∙। বাধোৰ্দ্ধা ভুক্ষ যাৎ কো-পো মার্গস্যাবরণেনচেতি ৷ পথো-দসমযে বর্ষাসূ। করা মতিগতে **হলি**তে ভুক্তে হতীবজীৰ্ণতা**স্থতে**। (त्रह् (मुख्यामीक्यानिना मःश्रास्त्रि ৰুক্তা। কৰাবাদিভিহেত্ভি বঁৰ্বাদৌ সমধে হেতুভ্তে বলী অনিজঃ পু ৰুদ্ধো বাযু: করোভি বিবিধান্রো-গান্। তে রোগা: কথ্যন্ত। 🕸। 🍽 রোগুছো ২ল্লকেশত্ব• জ্স্তাত্যর্থ৽ হ-नुशुरुः। किल्लाखास्त्रा भरगरवः नि মিনবৃঞ্ মূকতা।। বাচালতা পুলা-পশ্চ রসানা মনভিজ্ঞতা। বাহির্য্য कर्ननामण्ड मार्गञ्जवः उथापिंउः॥ মন্যান্তস্থ্যেত্র গণিতো বাহুশোযো-পৰাহুক:। চৰিতা হৈব বিশ্বাচী উ জুবাত উদীয়িত: ॥ আধ্যানঞ্ প্র্যাথান বাতাগীনা প্র্যুখীন।।

ত্ণী চ প্তিত্ণী চ বহি বৈষম্যমেব চ।। আটোপ: পার্যশূলঞ্চ ত্রিকশ্-লা তথিব চ। মূভ্দ মূত্রলা মূত্র-নিগুছে। মলগাটতা। পুরীবস্যাপ্-ব্ভিক্ষ গৃধুদী চ ততঃ পর:।। কলা-পথঞ্জতা চাপি খঞ্জতা পঙ্গুতা তথা। ক্ৰোষ্ট্ৰীৰ্যক খল্যে। চ বাত-कणेक अव ह।। भाषक्षां भाषमाइः আক্রেপা দণ্ডকাভিন্ন:। বাত পি-ख क् जात्क्र अथा म् खान जानकः ॥ অভিযাতকৃতাক্ষেপ আযামো দি-विष: भृ उ:। व्यास्त्रक उथा बारको ধনুর্বাডশ্চ হ্লুক:।। অপতভোপ-ভানশ্চ পক্ষায়তে। হ খিলাক্ক:। কম্প স্তম্ভো ব্যথা ভোগে ভেদশ্চ সুরণ তথা।। রৌক্ষণ কার্শ্যঞ্চ কা-क्ष्रं (मंडाः लाग्नाकः इर्वनः। य-স্মদেশি হস্বিভূপ: শিরাসকোচ এব চ। অঙ্গশোষশ্চ ভীকরু মোহ শচ্চলচিভতা ৷৷ নিদানাশ: যেদনা-শো বলহানি তথৈব চ। শুক্রফ্যো রজোনাশো গর্তুনাশঃ পরিশুন:॥ এত এবাশীতি সংখ্যা রোগা গে-(शन बहिड: । याडवताबीडि नामा-নো মুনিভিঃ পরিকীর্ভিতাঃ॥ 🛊 ॥ এত এব শিরোগুহাদয এব। যোগেন বাতেন। বাভাদ্বা ব্যাধি বাভব্যাধি রিভি নিক্জ্যা ভদা বাতজ্বাদিয়-পি পুসস্ব:স্যাদত আহ কচিতঃ পু-निष्कि उ: ॥ निद्रागुराम्या १मी-তি রেব বাতব্যাধিসংজ্ঞা পুলিদ্ধা न जू वाउक्दबाम्यः ॥ **#** ॥ **यथ** वी-ভব্যাধীনা সামান্য চিকিৎসামা হ। মধুর লবণ সামু স্থিক নস্যোক निमा ७क व्रविकत विख स्वम मछः र्भगानि । महन जलम (मकाञाक সংমূদনানি প্জুপিত প্ৰমান শা-স্ত মেতানি হযুৰ্য:। ইতি ভাবপুকা-শ: ।। # ।। অপিচ। বল পৃষ্টিকরা ণ্যেব বাযুবীজ নিশাময়। ভোজ-নানন্তর সদ্যো গন্ন পাবন তথা ॥ (इतनः विज्ञानमः मन्यस्त्रन रिनथुन । तृष्तकी गमनरेष्ट्य मनः म ন্তাপ এর চ।। অভিকৃক্ষ মনাহার । যুদ্ধ কলহ নেব চ। কটুবাক্য ভং শোকঃ কেবল বায়কারণ ।। স্বা জ্ঞাখ্য চক্তে ভজ্জম নিশাম্য ভ-(होरद्भः। 🗱। भक्त्रञ्च। कनरेकव সবীক্র শর্করোদক ।৷ নারিকেলো-मकरेक्षव मम्रास्त्रकः मुश्लिकः। माः হ্যন্ধি মিষ্টঞ্ কেবলং বা সশৰ্ক রণ। সদ্যঃ প্রুপ্রিভাল্প সৌবী-तः भी उत्पापकः। शकुरेडमितिसाः यक जिन्दे जनक (क्वनः ॥ नायनी

**ভাল ଏ**ङ्क्ति मछ मामलकी पृव•। শীতলোঞ্চোদকস্নান- সুস্নিম্ব চন্দন-<u>দুব॰ ।। রিঞ্চপদাপত্রতল্ল॰ স্রিঞ্চ</u> ব্যৱনানিল•। এতত্তে কথিত• বৎ-(म जाए)। वाजनुवाननः ॥ वायव-স্ত্রিবিধা: পু•সা• ক্লেশ সম্ভাপ কাম-জা: ৷৷ ইতি জী বুন্ধবৈবৰ্ত্তে বুন্ধখণ্ডে ১৬ अवतायः ॥
। अन्तरः । विद्यादिः নন্থ শেঢ়ানাক পাটলা পারিভদুক । পুসারণ্যুগন্ধা চ বৃহতী কণ্টকা-রিকা॥ বলা চাতিবলা রামা খদ•-ষ্ট্রাচ পুনর্ণবা। এরও শারিবা পণী শুড়ুচী কপিকছব:।। এষা দশপ-लिकान् ভागान् काथरय मिलल হ্মলে। তেন পাদাবশেষেণ ভিল• পাত্রে বিপাচযেৎ।। আজ্ঞ বা যদি বা গব্যং ক্ষীরং দত্ত্বা চতুর্গুণং। শ-ভাবরী রসঞ্চৈব ভৈলভুল 🕾 পুদা-প্ৰেছ ॥#॥ দুব্যাণি যানি পেষ্যাণি তানি বক্ষ্যানি তहुन ॥ শতপুয়া দেবদাৰু শালপৰ্ণী বচাগুৰু: ৷৷ স্বন্ধ भा°मी रेमस्रदक्ष शलासकः श्रुनर्गता । পানে নসের তথা ভ্যঞ্জ তৈলনে-उर मुमानारार ॥ कहुन नार्स শ্লঞ্গওনালাঞ্নাশ্যে । অ-প্রমারণ বাভরজ নাগুমাংশ্চ পুরা-न् ভবেৎ ॥ शब्द मश्चर्ती विन्तार

किः भून मानुषी निद्। अधानाः বাওভকানা জ্ঞানা নৃণা ख्या ॥ टिन (मंडिंट शुराज्या) **সর্বাত**বিকারিণা । পুনশ্চ । शनवर रेमक्रवक मुठी विजक भ-क्षकः। शक्षभुष्टः ज्ञात्रनानः ठिल् পুস্থ পচেত্তত: ॥ গুহুগৃহ্য প্লব श्लीह मर्बवाजविकात्रन्ट । इंजि গাৰুডে ১৯৮ অধ্যাদ: ॥ वाउकः অশনপণী'। ইত্য-M. न्द्रः ॥ वाउक्मं की नक्ष्किया। भर्मनः। यथा। वादाह उवाह। म्मुना নেন মে ভ্মে বাতকর্ম পুমুঞ্তি। **এব : हि भु**क्रमा गुक्ता वाउभी ডিত মানস:॥ নিঞ্চিকা পঞ্বর্ষ। णि बीणिवर्षाणि भूषक: । श्वा रेहव बीगिवर्षाणि कृष्मा देव कायरछ नव ॥ এষু বৈ ভাপন দেবি নেহন মম শংসতি। যো বৈ শাস্ত্রণ বি-জানাতি মম কর্মপরায়ণ:।। শুদ্রা ৰাক্য ভগৰতো পুত্ৰুবাচ বস্ত্ৰ-রা। 🗱। ধ্রণুবোচ। অতল । লভ-**তে পাপ**ণ তব কর্মপরায়ণ:। ত**স**্য

**(हद मुथाथाय विश्वकिः वक्क्यईनिः** 

॥ বারাছ উলাচ। শূণ কাৎস্কের্যন নে দেবি কথ্যমান- মধানধে। অ

পরাধ নিম° কৃত্ব। সম্বরেদ্যেন ক-र्याना ।। यावरकन मिन जीनि नरकन **ट भून खरः। कर्ग टेव्हर उटः क्**ड्रा স চ নে নাপরাধ্যতি॥ সর্বশঙ্কা• পরিত্যন্ত্য মম লোকায় গছতি। এভত্তে কথিত ভদে মৰুৎকর্মা-भद्राभिनः ॥ मायरिक्य छारेक्य বত্তথা পরিপৃছিত•। ইতি ব<mark>রাহ</mark>-পুরাণে মক্ৎকর্মপুষ্য শিক্ত ।। বাভক্তি তি বাভরোগযুক্ত । তৎ পর্য্যায়:। বাতরোগী২। ইত্যমর:॥ গঙ্গস্ত্রাপোভাগ: वाञ्चञ्चः भः । ইতি ছেমচন্দু:।। বাতকেজু: পু: ধ্লি।ইতি ত্রিকা अर्च्यः ॥ বাতকেলি: পু• কলালাপ:॥ বি-ড্গদন্তক্ষতঃ। ইতি মেদিনী।। বাতগানী পু• পক্ষী।ইতিকেচি**ং**॥ বাতগুলা: পু॰ বাতৃল:।যথা। বাতুলে৷ বাতগুলা: স্যাহারবাযু र्जिनाचकः। वाक्शानिनः भाविषाः বাসন্তে: নল্যানিল: ॥ ইতি ত্রি-কাওশেষঃ॥ রোগবিশেষঃ। ভস্য नितानाति छंनानाय मुद्रेवाः ॥ বাভগ্নী ञ्जी मानभगे।। यथ-গন্ধা।। শিন্ডীক্ষুপ:। ইতি রাজ-निर्घणेः॥

বাতত্লা স্ত্রী আকাশোদ্ধীযমানসূত্রণ । বৃডিরস্তা ইতি ভাষা।
তৎপর্যায়: । বৃদ্ধসূত্রকা ২ ইন্দু
ত্লা ৩ গুলিহাসা ৪ বাশকফা ৫
নক্ষর ৬। ইতি হারাবলী।।
বাতধ্র: পুণ নেঘ:। ইতি শন্দ্রনালা।।

বাতপিত্তজন্ন লী শ্লরোণবিশেষ:। তস্য ঔষধ যথা। নাতুলুঙ্গ্য নির্যাস গুডাজ্যেন সনবিত্ত । বাতপিত্তজন্লানি হুন্তি
বৈ পান্যোগত:। ইতি গাক্ডে
১৮৮ অধ্যাম:।।

বাতপুত্র: পু॰ মহাধূর্ত: ॥ ভীমসেন: ॥ হন্নান্। ইতি মেদিনী ॥
বাতপোথ: পু॰ পালাশবৃক্ষ: ।
ইত্যমর: ॥

বাতপুনী: পুণ স্ত্রী বাতন্গ:।
বাওট্ছরিণ ইতি ভাষা। ইত্য
নর:।। নদল:।। অখ:। ইতি
সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তি:।।

বাতফ্রাঅ• ন্নী পুপুসং।ইতি ভ্রিপুদোগঃ।।

বাজনজঃ পু• ব্জেন্গ:। ইতি জটাধর:।।

বাতনগুলী জী বাত্য। ইতি ঞি বাও শযঃ।। বাভম্শ: পূশ্ বাভপুনী: । ইভ্যা

বাত্রক্ত• ক্লী রোগবিশেষ:। ভস্য विशुक्षे निमान नाए। व्यवनाम कर् ক্ষার সিংখ্যাকাজীণভোজনৈ:। ক্লিম শুষাস্জান্প নাংস পিণ্যাক ম্ল-किः ॥ अन्य गाम निम्नाव णा-कापि भनलक्षु जिः। पश्राद्रनान সৌবীর শুক্ত তক্র সুরাসবৈ: ॥ বিৰুদ্ধাধ্যশন ক্ৰোধ দিবাম্বপুাতি: काध्देतः। श्रायमाः मुक्तमात्रागाः नि থ্যাহার বিহারিণা।। ভূলানা সু-থিনা চাপি পুসপ্যেঘাতশোণি छ। इद्यासिक्षिण्ड नामुजन्द विनाक्यः मःविनाक्यानगा॥ 🗱॥ ক্ষারো যবক্ষারাদি: প্রেজীর্ণভো-জনৈঃ অজীৰ্ণায় ভোজনৈ:। **অতি** নাত্র ভোজনৈ রিভ্রথ:। ল্লিডাদীনি মা-সম্বিশেষণানি। ুল শটি-তণশুৱ নাতপেশে:বিতণ অম্বূজ মৎস্যাদিমাংসং ৰ আনুপং গৌ-ডাদি পূৰ্বদেশজ মাণ্যণ। পিণ্যা-ক ভিলন্দি:। মূলক পুসিজনে ব। নিয়াবঃ বেঃতাশাক । শাক भवणाकः। यामिमाप्तन तृषा-कारीनि कनभाकानि गृश्ख । পলল শটিডবাদি দেবরহিত

মিপি মাণ্যা বতে লেম্ণিত পুকো-शास्य । भहिकानि जु ना भ वि শেষতো বাভশোণিত পুকোপ-(१९ । वाजनानः नकान्यकरः। णुक• मक्षान (छपः। (मोर्वेद्रः मः হ্মানভেদ:। ভক্রণ চতুর্থাংশ জ-ৰাযুক্তণ বস্ত্ৰপূতণ দখি। সুরা সন্ধান-(७४:। यात्रवः त्रक्षान(७४:। वि क्षः कीत्र मध्यामि। अधामनः। অজীণে ভুজ্যতে যত্ত তদখ্যশনন্চ্য-তে। অতিজাগরো নিশি। প্রায-শঃ বাহুল্যেন। সূত্রমারাণা॰ অল্ল-ভব্লকাযব্যাপারাণা। অথব।। মি-খ্যাহারবিহারিণা । অযথাহার विश्वाजाः वृतानाः मृथिनाकः त्रक**ृष्का। इन्छात्यारिष्ट्र गंह**ल: य-তো বাণু বিবছতে ক্ষির্ঞাধো গ इ**छ। रछ**। रय छेन **लक्ष्मानि। न**-ভ্যামপ্রভিচলত:। অশুত: বিনা-श्रवः। विसाहः निम्नाव कलाः जर्यश्र मा ाहि। जाविहास्थलका १ मःविषाद्ध २ मनः यमः जुल्कः বিদধ্যে তদুপরি ভ্ঞানস্ত্রের্থ: 1 অধ্যশন নৃজ্যপ্যেত্ৰচন বিদ্ধা জীৰ্ণভোজনস্য বিশেষভো হেতুত্বা-র্থণা পশ্চাৎ বাতশোণিত পুরু-**११**) रिकासनाच्यः । এक्ष्माः कात्र-

ণানা॰ নধ্যে কেনচিদ্বাযুঃ কেনচিদ্ ख्यमि श्रवाराष्ट्र ॥ अ। अ श्रीष्ठि মাহ। কৃৎসু রক্ত বিদহত্যাশু **उह मुक्टे॰ जुन्छ॰ शामरया की**यर जुर् ख्ट मंश्रकः वागुना म्विटन खटे-পুৰেল্যাদৃচ্যতে বাতরক্তণা পূর্বো-कि (ईजुन्धिः कृथमः भगसः व्रकः বিদহতি অত্ত দহধাতু রবিবক্ষিত কর্মক:। তেন বিদহুতি বিদ্ঞা ভব-তীত্যর্থ:।তঃ দুষ্ট রক্ত । সূত্র অ বোগত ৷ পাদযো শ্চীযতে সঞ্চিত ভবতি। ভদ্ৰধির• দ্বিতেন মহেত্বা-যুনা সংপ্তাং মিলিডা বাতরকা উ চ্যতে। ননু চৈত্তস্য সংপাধি ক্জা সৃশুতেন। শীঘু রক্ত দৃষ্টি মাযাতি ভঃ ৰায়ে। মাৰ্গণ সংক্ৰিয়াশ বাত:। कुष्का २७। र्थः नार्गादाधारम वायू-রভুঃদ্রিক দ্যযেদ্ক মাশু।। অত পূথন রক্তন্য দৃষ্টি রভো রক্তবাত-মিতি ব্যপদেষ্ট্র মুচিত ভবত্যত আহ। তৎপাবল্যাদিতি। তস্য বাতস্য দোষত্বেন প্রাধান্যাদাতর-ক্ত মিতি ব্যপদিশ্যতে ॥ৠ। পূৰ্বক-পনাহ। বেদো ২৬)র্থণ নবা কার্শ্যণ স্পাণ্ডেত্ব ফতে হতিকক্। সদি **শৈথিল্য মালস্যু: সদন্ পিডকো** म्गमः ॥ जानु कङ्घाक कर्रे। म इन्ड

भागक्रमित्र् । निर्छामः सुद्राः ভেদে। গুক্তব্ব সুপ্তি রেব চ ।। কণ্ড: ক্ষিত্ৰক দাহো ভূৱা নশ্যতি ठाम हृ । टे १वर्ग्यः मखा**ला ८ १** छि द्वाजाम्क भूवं नक्षण ॥ अः॥ जन থাধিক্**তবাতস**্বাতর্ক্স্লে**ল্** মাহ। বাতেধিকে হধিক তত্ৰ শ্ল স্কুরণ তোদন ৷ শোখন্য রৌক্ষ কৃষ্ণর শ্যাবত। বৃদ্ধি হান্য: ॥ ধ্ন-न्। ऋ नि मक्षीना॰ मक्षाका १ऋगुरहा **ৎ**তিকক্ শীতদ্বোনুপশ্যৌ স্তম্ভ বেপথু সপ্তবং ॥ তত্র পাদযোঃ শ্-ল।নিক ম**ধিক•** ! যত আহু স্<mark>লু</mark>ক্ত । गण्यां विद्यो (उपार छ। पुरापा को एए तरकारके वा उत्राक्तन श्राप्ता वि-ভা সহ সৃষ্টিঃ স্পর্শাক্তরা।। 🗱 🛭 এবি দ্রক্ত বাতরক্ত মাহ। রক্তে জ্যাতে খুলিজুক্ **তোদ স্তামু কি**ল े विकास कर के के किस मन বৈতি কণ্ডুংক্লেদ সন স্বিতঃ।। ক্ষা **অ**ন থিক পিত্ৰ ভদাব্য পিত্ৰে বিদাহণ **मःगाहः** (६.सा गृहो यम छुम। 🔭 **र्णामहद्भः द**्वारः स्थादशास्त्रे ए (नाक्डा ॥ विनाइ क नामायन (राष्ट्रदेश । एक व्याह् गुनुष्टः । शिन डान्युत मृतुराक्षी चल**ा मञ्**र व्यक्ति हडाए । वृष् ह ॥ १४ 🗍

দাবিতিশেয়ঃ ৷৷ ২০ গ্রিম্ক্ফ **उतार।** व्यक्ति (स्विक्ति) खकला नः প্রিপ্র দীতভা ক্রাব্যঃ शानत्या (त्रव। या चार रुक्षुकः । কণ্ডুৰন্তৌ বেদশীতো সংশাথৌ পী-ने उद्यो (स्यामू (क्षे वृहा क ! । 🗱 !। অতিক্রিয়নাণ কাতরভাল্য উপাদ্-বানাহ। অম্বপ্নরোচক স্বাদ মাণস-কোথ শিরোগুহা:। মৃট্চ মন্দ্রক্ ত্কাজুর মোহ পুকোপন্য । ছি-क्वायाङ्ग्य वीमर्भ भाग (जार जून ब्रमाः । **अक्र**नीदङ्गा रङ्गे पा**र** म्बीगुक्राक्षिक्षा भाष्या मार्थः मार्थः मार्थः श्चानमः ॥ अ। अभाषापुर्विक् नार । बीड क्षाति इटी॰ सार् रेनकिन वालि गए। चक्टरप्राशहूव॰ याभाः भाषाः माधिक्शमुवः ॥ এংদোষানুগ সাধ্যা নবং যাপ্য चित्रायक । जिलायक अशाधाः म्राष्ट्रिष म्र दशहराः। # । অथ वाज तकना र्वित्य मारा বাজ শোণিতিনো রক্তা মুখ্যম্য ব-हरन महर् । यहाह । सहरामाह मया (मापः मधास्तः । ेपा क्ष भार (द्याप्य कर्षा १०००) निकार । इस चुरेन विशेष कञ्चाधनगदिन।। अष्टिक विकास

ভি র্বা দেশাদেশান্তর ্ডা 🦈 **क्ष्मात्मन उर्जावा को** विकास ভরঞ্চ য় ।। গন্তৌর• খপ্তি ভন্তু• कन्न- भावि- भिद्रायगार्। त्रार्थंन **ন্যা॰ক বাভো**ন্থান্ ধ্ব্যাদ্বার রয়-किंकः ॥ विविधान् वा उद्याधान् दा মৃত্যু বাত্যবশেষিত ৷ রক্ত অব্যা-खडः मिषाखर शुमालम, निर्हादर ॥ বিরেচযেতু পিতাদৌ নে্ছ্যুকৈ বি-রেটন: ৷ বাহু নালেপনা ভালু প-**द्रिरक्तिभनाष्ट्रेनः ॥** विस्तृत्वास्यः পনা শ্ৰেহ্পানৈ গম্ভীর নাচভাৰে क्तियात्रश्रक काराक वहायान है। यू-न उथा॥ कर्षेक छत्र जियानि व दनास्त्रो চ दब्ह्लेट । भुद्राना यव গোধু**ন শাল**যঃ **বস্তি**কা তথা ৷৷ তো জনার্থে রসার্থে তু বিদ্ধিরাঃ পুত দা হিতাঃ৷ আঢকা শ্চণকা মুদ্ধা ন ভূরাঃ **সঙ্গল**থকাঃ । যূষার্থে বহুস পিয়া: পুশস্তা বাতশোণিতে॥ সু নিজ্ঞক বেজাগু॰ কাকনাচী শভাব রী। বাস্তকোপোদিকাশাক• শাক• সৌবচল তথা ৷৷ ঘৃত নাংল রসৈ पृष्टिः भाक मट्म्या ह साभास्य ! হিতো গোধুন চূর্ণৈক ছাগকার ব্ তপু তৈ: ॥ বেপস্ক ভিলা ভ্রা: शिष्टाः शयशि विवृ जाः । क्षि

शेष्ठनी कि दी वर्जनान करेन द्रिश ॥ मृक्षिलिक्षेः भूरलिलः म्याब्बिङः भः বনশেং িতে॥ 🗱 ॥ গুড়ুগীক্বথে ক-জ্বাজ্যা। অপ্যক্ষণ ঘনণ সূত্ৰণ। বাত-রত॰ নিহন্ত*ণশ্* হাস্ত**ং হরতি দুতর**• । ७५ भेष्ट । 🗱 ।। जुनाः भरहः म्बर्हास कनामा ठज्**डे**य। भा-म्लायः क्यायस लामूकः प्रापक खथा ॥ जिन्दे ज्वाह्म क्रान्त का जान छिन्ना जियक्। वक्त्राराति छ-हिंदाः नगुक्कक्षीक्रिकः भरहरः ।। मिक्किश मधुकः क्षष्टः जीवनीयगन खथा। এलाधक ह मृत्रीका मां भी न्याध्वरथा नथी ॥ इरत्यः भावनी বেগ্ৰমণ স্থির। তামলালী তথা। শ্-হী শ্যানা শতাহা। চ বিঞ্জান্তা চ প্রক । নাগ্রেশর বাল বৃক্ প্রাক্ষেত্রপল চল্মণ। এ**তানি ক**-্ৰভূপি কথিতানীত্ কোৰি**দৈঃ** ॥ भारत र छ। एक श्ननारन व टेंड**न (स-**ভাষিষেদিশ । বাতর জ॰ ৩ দুক্ত ार्श्वासाय नामस्य ॥ धनाः श्रान्यदयः द्वीपार गार्जमर वाक शि**ड**ः নং। । ব্দ ব ও কজালান শিরঃ ক म्यार्षि जागवान् ॥ इन्तावनकृजान् বেংঘ্ৰে গুড়**ী গৈল মূভ্য•। ইতি** তত্নিংলা: ইভি ভাবপুকাশা:॥

मुडा इंडि ভाষा । इंडि नम् | हिन्तुका । वायुकात्रक छ ।। व्यक्तिका ।

বাতরকারি: পু॰ পিভন্নীলভা। **धमक हें डि जारा । हे** डि मफ **চ**न्दिका ॥

বাভরক্ষঃ পু॰ অখপ্য:1ইতি শদ ब्रज्ञावनी ॥

বাতরথ: পু॰ মেঘ:। ইভি ত্রিকা-अःभवः॥

বাতরায়ণ: পু• উন্মন্ত:॥ নিষ্কু-(याजनभूक्यः ॥ काखः ॥ कत्र-পাত্র ।। কৃটঃ ।। পরস ক্রম:। ইতি भिनि ॥ मद्रलक्ष्मः। इंजि भद्र-ब्रञ्जावनी ॥

वाउकवः भू॰ वाज्नः॥ উৎকোচः ॥ শক्रस्नुः। ইতি মেদিনী॥ বাভরোগ: পু॰ বাযুব্যাখি:।তৎ-भर्यप्रायः। वाजवप्राधिः २ व्याज्यः ০ অনিলাম্যঃ ৪ । ইতি রাজ-

निर्घण्डः ॥ বাতরোগী<sup>ন</sup> তি বাতরোগযুক্ত:। ७८ भर्यायः । वाउकी २ । **इ**ज्य

गद्रः ॥

মিতপাত্র'। তৎপর্য্যায়: । কাষ্ঠ-लोही २। हे<sup>ं</sup>छ बिका अल्पायः ॥

वाउत्रक्षः भू व्यक्तत्कः वस्त्र वाउलः भू व्यक्तः। इंडि भद-वाउनमधनी क्षी वाउगा इंडि ভূরি পুযোগ: ॥

বাতবান্ঁ ক্রি বাযুযুক্তঃ। বাতো-বিদ্যতে ৎস্য ইভ্যর্থে বন্তুপুভ্যবে-ं **न** –িয়ুম: ॥

वाउरेवज्ञी , शू<sup>•</sup> वाजानः । ইঙ্ बाक्रनिर्घण्टः॥ वायूनाओ जि॥ বাভব্যাধি: পু· বাতরোগ:। ইঙ্ডি त्राक्रनिघंषः॥

वाउमीय क्ली विखः। ইতি दाव-निर्घणेः॥

বাভশোণিত ল্লী বাতরক্তরোগ:। ইতি ভাবপুকা**শ:**।।

বাত্ৰহ: ত্ৰি অচ্যন্ত্ৰাযুত্ত: 1 यथा। বাভাসহো বাভসহো বা-তুলো বাতুলো ৎপি চ। ইতি শব-ब्रङ्गावनी ॥

বাতসার্থি: পু॰ অগ্নি:। ইঙ্তি কেচিৎ ॥

বাতক্ষর: পু: আঁকাশস্ভাগ-বিশেষ:। য'ত্ৰ বাযুৰ্ব হতি। ইতি (किंहिर ॥

বাতজিঃ পু॰ কাগলোহোভযনি- বাতহাঁ তি বাতমঃ৷বাসুনাশকৌ-य**दः। ইভি বৈ**দ্যকः ॥

্বাভাট: পু স্যাসার:। ইতি

ত্রিফাওংশব:।। বাতম্গ:। ইতি **नद**ब्रदावनी ॥ বাভাণ্ড: পু• হুদ্ধরোগবিশেষ:। **७ मऽ लक्क १॰ यथा ।** वृष्टी नृवश्य-দ্বায়ু: শ্লেশ্মণা যস্য সংবৃত:। তৃস্য মুষ ক্লভ্যেকো রোগো বা ভাও म•छ्कः॥ इंडि मायवक्रतः॥ বাভাদ: পু॰ ফলবৃক্ষবিশেষ:। वानाम इंडि थ्याउः। उट्भर्यायः । বাতবৈরী ২ নেত্রোপমফল: ৩ वाजामु: ८। यभा खगा:। উकद्भः। সুরিধরে । বাতমুর । শুক্রকারির । গুক্ত্ব্ধ। অস্য মজ্জ্গা:। মধু-**द्रद्र**। वृष्णद्वः। विखानिवाशश्रद् । त्रिकद्वः। उकद्वः। कककात्रिद्वः।

বাতাপিঃ পু•ু অসুরবিশেষঃ। সহ হুদেস্য ধমনৌ পর্যাণ জাতঃ৷ অগ-স্ত্রেন ভক্ষিতঃ। ইভি শ্রীভাগবত নত।। কলাম্বরে তু বিপুটিভেঃ निःहिकावाः का उ: । यथा । निः-হিকানা মথোৎপনা বিশুচিত্তে শ্চত্দশা। শাবঃ শ্বলগাত্র ব্য कः मानु खरेषव ह ॥ इन्हा नम् চি শৈচৰ বাতাপী হৃসূপো জিকঃ।

রক্তপিত্তবিকারিণাণ শুেষ্ঠত্বঞ্চ ।

ইতি ভাবপুকাশ:॥

क खथा।। র' হু (জ্ঠিশ্চ ভেষা• বৈ **চन्द्र म्**र्ग्राभुश्वमंगः। ইত্যেতে সি:-हिकानू धारित द्रान मृतामनाः॥ ইতি বহি পুরাণে কাশ্যপীযবংশঃ ।। অন্যয় । বিপুচিত্তি: সৈ হিকে-यान् मि॰ श्काया मङी बन । शि-রণ্যকশিপো র্যে বৈ ভাগিনেয়া ख्याम्म ॥ **४८ मः** मन् ४ दः ज-**ন্দে। তমো** বাতাপি রেব চ। ইন্ন ला नमू हिरेक्टर थ न्मः का अन স্তথা। নরক: কাল্যাভন্চ সর্নাণ खर्षित है। कन्नवीर्याण्ड विच्यारका पनुवः णविवर्षानः ॥ इंजि माध्रमा ৬ অধ্যাশ:॥ বাতা পিছিট পু॰ অগস্ত্যমূনি:। ইতি হেমচন্দু:॥ वाजाभिमृह्मः । भू व्यवस्थाः। इंडि বাতাপিহা । ।

वाजासाना खी कयुत्री । इंडि भद्याना ॥ বাতাঘন ল্লী গৰাক্ষঃ। ইত্যারঃ ।। তেন পরবাধানিষেধাে যথা। পরবাধা ন স্বীতি জল বাতায়-नामि जिः । कात्र यिद्। ज् वर्षा १ काक अभार न दक्षार ॥ इंडि কৌর্ম্ম উপরিভাগে ১৫ অধ্যাশঃ া হরবল্প: কালনাভো ভৌনশ্চনর ৃবাতাহন: পু• বোটক:। ইভি ত্রি

বাতিক

काश्रामयः ॥

বাতায়ু: পু হরিণ:।ইত্রসর:॥
বাতারি: পু এর গুল্ফ:।ইতি
শব্রহাবলী।। শত্রলী। ইতি
শব্রন্দু দা ।। পু এনারী।। শে
ফালিকা ॥ যবানী ॥ ভাগী ॥
সুহী ॥ বিড দ:॥ শ্রণ:॥ ভল্লা
তক: ॥ কত্কা । ইতি রাজ
নির্ঘট:॥

বাতালী ন্ত্ৰী বাত্যা। ইতি ত্ৰিকা গুংশৰ:।।

বাতাশ্বঃ পু॰ স্লীনাশ্বঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। হযোত্তমঃ ২ জাতও ১ অজানেয়ঃ ৪। ইতিত্রিক ওশেষ্যাঃ

दा**डामहः जि** टाह्यः। ই**डिणद** हङ्गवनी॥

दािकः नृष् वायः। यथा। वािकः वांग्रंक्षा ठः श्रवनः नवत्न १निकः। इठापद्रक्षीकायाः जद्र ठथ् ठ नास्त्राक्षः॥ नृष्धः। हन्द्रः। यथा । वािक द्राप्तिका (मान्याः। हिक द्रज्यः॥

वाजिकः शृः वासकवतिहः। यथा।

राधिकः वाज्यः। वतिहासिः रेशजिकः विजनस्यः। (स्विष्कः (स्वयः

भःक्षः समृद्यः नामभाजिकः।।

रिक्रसार्विक्षेतिः।।

বাতানা

বাতিগঃ পূ• ভণ্টাকী ॥ ধাতুবা-দিনি ত্রি। ইতি মেদিনী ॥ বাতিগমঃ পূ• বাভাসঃ । ইতি

বাতিগম: পূ• বার্ডা**স:**।ইতি শদরত্বাবলী।।

বাতিঙ্গন: পু• বার্ভান্স:। ইতি ভিকাণ্ডশেষ:॥

বাভীয• ক্লী কাঞ্জিক•। ইতি শব্দ চন্দ্ৰিকা।।

বাতলঃ পূ• বাভ্যা । ইভ্যমর-টীকাযা•ভরত: ॥

বাতল: ত্রি বাতবিকারাসহ:॥
উন্নতঃ। ইত্যমরটীকাযা ভরতঃ॥
বাত্লি: ত্রী তকত্লিকা। বাদুড
ইতি ভাষা। ইতি হারাবলী॥

বাতৃলঃ পু॰ বাত্যা। বাতাসহে ত্রি। ইত্যমর: ॥ বাত্যা বাতসন্-হ: অত্র জনখনাদি গোরথ বাতা-দিতি উল: । বাতা ংশ বাত-বিকারাসহ:। বাইযা ইতি খ্যাতঃ । অত্র গোতৃগেক্যাদিনা উল: বা-তৃলঃ। বাতে নিন্নীতি ভূলে ভূষো-কারবানপি বাত্লঃ। বাতৃলো বা-তৃলাপি স্যাদিতি দির্পকোবঃ॥ উন্ধান্তিপি বাত্লঃ। ইত্যমন্ত্রী-কামাণ ভ্রভঃ॥

বাতোনা জ্রী গোভিন্ন্যজ্প:।ইতি রাজনিঘট:।। বাযুহীনে জি।। বাত্য জ্ঞী বাতসমূহ: । যথ। । আস্থিনী চ বাতালী স্যুৎ বা ত্যা বাতন্তলী । ইতি ত্রিকাতি শেষ: ॥

বাৎসক ল্লী বৎসসমূহ:। ইত্য নর:॥

वारमनाः पुः त्रमिवामयः। यथा । वाद मन्। माञ्जी छ तस्मी मृद्धा ব্লঃ কৌ শিক: মৃত: । ইতি ত্রিকা । শান্তে বাহ্মণ এব সাৎ প্রীতে मानः लुलिनिः। (प्यति मुह স্থায়ে হি समाम वर्गल स् তা ৷৷ নধরে রাখি গজেনা হাসে ৷ স্যান্নধনস্ব:। স্থীকৃথা হড়তে জ্ঞেয়ে। বীরে চারণ গোব্যা: ॥ ककरन दर्भ कृष्णि कि है नाम्यास রৌদকে। গোবদ্ধনো হতিমন্ত্রক ख्यानक উपाइत्।। उनिह्नन्। দযো ছত্ৰ বীভৎসেপবিকীৰ্ত্তিতাঃ াবুজস্থা নিষ্ঠা জেষা আলম্ব विভावकाः॥ ইত্যুজ্वनीवमिः ॥ 🗱 ॥ द**्मनम**ुভादि क्षी ॥ বাৎসাপুত্র: পু॰ নাপিডঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥

বাৎস্যঃ প্ মুনিবিশেষং যথা। বাৎস্যান্ত্রিকারনারৌর্চ্য

यस जीर्भव यामस्यात्रशुव्य भ्रवद्राः
। इंक्)हाइककुः॥
वाध्यायमः भृः मनिविष्णवः।
चथ्यश्रीयः। मन्द्रस्यशः र भिक्वः
वाः ० सानी ४। ইकि जिकाख(भ्रायः।

दानः शुः यथार्थतास्यहार्वाकाः! यथा। विकिनी त्याः कथा बद्धा वा-म सञ्जीवार्य मायाः । इति इते। ध्रा ।। অস্য লক্ষণ যথা। পুনাণ তক नाव्यालालाञ्चः भिकाखादिक्कः পঞ্চাব্যবোপপনঃ পক্ষপুতিপক্ষ পরিগুছো বাদ:। ইতি গোড্য-সূত্র ।। # ।। অপিচ। সর্গাণা নাদি तचक मध्रेष्ठवा**र म**ब्जू न। यथ्रा-जातिम्। दिन्। नाः वानः **প्रम्छा**-मह् ॥ इंडि छनदर्नेडाया ३० अधागः॥ भ्वरुषाः वाहिनाः म-মুদ্ধিন্যোবাদ জন্ন বিক্তগ্রাখ্যা স্তি-मुः कथाः भूनिका खानाः नएए वा দোহ। যত্ৰ দাভাগিপ পুনাণত ন্তর্ভাচ হলক্ষঃ ত্রাপ্তেপরপক্ষ न् लडा कि निगु इस्ति म्या छ न-राष्ट्र) मार्य। यव (कुक्तः स्रशकः छ। প্ৰাতি অন্তল্ভ ছল জাতি নিগুই স্তানৈ স্তংপক্ষ দৃষ্ঠিন তুম্বপা-क ज्ञालक ना विज्ञानान कथा । তত্ত্ব জল্ল বিতত্তে বিজিগীয়নাণযো
বাদিনো: শক্তি পরীক্ষা নাত্ত্র ফলে
। বাদস্থ বীতরাগ্যো: শিষ্যাচার্য্যযো রন্যযোর্ তাত্ত্ব নিরূপণফল:
। অতো হসৌ শুেগজান্দ ছিভ্তি
রিত্যর্থ: । ইতি তন্তীকাষাণ শ্রীধরষানী ।।

বারক: বি বাদ্যকর: ॥ বক্তা ॥ বদধাতো: কর্ত্তরি ণক পুত্যবেন নিয়ম:॥

বাদন ক্লী বাদ্য । ঞান্তবদধাতো ভাবে ২নট্ পুত্য যেন নিয় ম ।। বাদর ত্রি কার্পাসনির্যাত্তবজ্রাদি। বাদরাযা: কার্পাস্যা জাত ইত্য র্থে ফ প্ত্য যেন নিয় ল ।।

বাদরস্থ: পু॰ অস্থপ্র্কঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥

বাদরা জ্রী কার্পা**সী। ইতি শব্দ**্র রত্নাবলী।।

वामतायनः ) अन् व्यामामवः। ইতি वामतायनिः भममत्रद्वावनी ॥

বাণরিকঃ ত্রি বদরচ্যনকর্ত্তা। ব-দর• চিনোভীত্যথে ফিকপুত্যুয়েন নিয়ুয়ঃ ।।

वाहन क्षी मधूरिका। ই**डि मद** हिन्दुका॥

दाहदाकी शृ॰ जिना छनः। उ

वामी

भर्षत्रायः ( व्यार्ट्डः २,। ইতি ह्यः हन्द्रः ॥

বাদান লী স্থনানথ্যাত্তল। ত্ৰাদান লী স্থানথ্যাত্তল। ত্ৰাদ্ধি নুম্প্ৰাপ্ত । ব্ৰাদ্ধিকারিত্ব। বিভাগি বাজবল্লভ: !!

वामान्यः जि वमान्यः। वक्षुमः।

इेडि छत्र उहिब्स भरकायः ॥

वारानः भू मू मू मुग्र छनः । (वा 
बानि इेडि छाता । उद भर्य प्रायः ।

महमूर छुः २ । इेडि एक् महन्युः ॥

वार्षिः जि विद्यान् । इंडु गारि
कार्यः ॥

বাদিত্র° ক্লী বাদ্য°। ইত্যমর:।। বাদির° ক্লী বদরীসদৃশ্যসূত্মকল-বৃক্ষঃ। ইতি শব্যব্যাবলী।। বাদিরাট্<sup>ল</sup> পু॰ মঞ্ঘোষ:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

वानि**णः बि ना**धुवानी । ই**डि** शक्तिशासा । वानी जि वका ॥ अथी । विवान-

कर्छा। कतियानी इंडि भातमाः ভाषा। यथा। अভाभटाः कर्डवाः बाह् काठतायनः। अथ १८८ भु-डिज् नेष्ठि वानत्याभान्त वानिनः । अतिकृत्वा निनम्तास्त्र नम्तास्त्र-जाय (वजनः॥ वानिना जाया-

वाहिनः উভরবাहिनण्ह।। अयः বিবাদাশকৌ পতিনিধি মাহ না त्रमः। অर्थिना अ॰नियूक्कावा भुड़ा থিপুছিতোপি বা। যো যস্যার্থে विवरु ७एग र्जयभन्नाइएगे।। **जरवा दीनि शु** जिवामिताः ॥ का-**छ** । यन्य भावरा एखर शब्र मात्राভिपर्या । अछका छक्रा रिव्य कन्याङ्बनमृष्या ॥ शाक्ष्यप्र क्रेकरण न्भामाङ खेशव ह । প্ৰতিবাদী ন দাতব্য: কৰ্ত্তা তু বি বদেৎ স্বৰণ ॥ 🗱 ॥ ভ্ৰাক্ৰাদীতৱস্য **शक्छि उत्र**ह मखनीयञ्ज माञ्चा-ব্লং। যো ন ভ্ৰাতা পিতা বাপি ন প্রো ন নিযোজিতঃ। পরার্থ वानी मखाः मा। वारकारवष्ट्र विदुतन्।। नात्रमः। পूर्ववामः পतिः ত্যজ্পোন্য নালয়তে পুলঃ। বাদ-भ क्रमगाक् छित्या की नवाभी भ ति मद्रः। १६। भुडाधी यहि कन्छिटका-ল পার্থাতে সলভডে ব্রথী ত কালা পুর্যান অথিভুমের হন্যাদি তি তেন কালোন প্ৰাথনীযঃ। ত-দাহ। পুত্রগৌলভতে কাল অ হ' সপ্তাহ নেব চ। অখী তি পুৰ্বে यन्कानः उ९ क्षापित शेयाज।। कृति भुगुर्थी कानः न न उठा। या ऋवसुरः । मार्म एउप भाक्यर গোভিশাপাত্যযে জিয়া ৷ বি-वाष्ट्र अप्र अन् कालान् । वह যা সূত:।। 🕸 ।। অথ ভাষাপাদ:। তত্ৰ ভাষা মৰূপ মাহতুঃ কা-ত্যায়ন বৃহস্পতী। পুতিজ্ঞাদোষ নিমুক্তি সাধ্য সৎকারণাবিতা। নিশ্চিত লোক সিজ্ঞ পক্ষ প क्कविरमा विषुः ॥ यद्गाक्कवः शुक् তার্থো নি:সন্দিক্ষো নিরাস্বল:। বিরোধিকারণৈ মূক্তো বিরোধি **প্**ভিরোধক: ॥ यहा (ব্রুবিয়িখ: প-कः कन्नि : भू बंदानिया । प्रमान ভৎপক্ষ সম্বন্ধ পুতিবাদী তলে-खद्गः ॥ नादरहनाशि । भादस वध-বহারাণা॰ পুতিক্তা সন্দাল্ভা। ভদ্ধানৌ হীয়তে বাদী তর স্তামু-खादा खाद ।। 🗱 ।। उ हाथनमा ह বৃহস্পতি:। ন্যাৰিফ পূৰ্ণফ• **जावहारी विल्लाव्ययः।** य हम्।-एडवर गावट भुडाधी नडानांब-(थो।। इंजिद्यात्रात्र छव्।।।

বাদ্য প্লী বাদ্য ভি প্ৰতিভি হয়।
বাজনা ইতি ভাষা। ভথপেইটাই: ।
বাদিত হ আছোল্য ৩। তত্ত তু বিশ্ব থথা। তত্ত বীণাদিক বাদ্য নান্দ্ৰ মুবজাদিক । বিশ্বাদিক ভ मुन्धिद का भाजा जाना दिक घन ॥ ইত্যমর:।। ইদ॰ ততাদি চতুর্বিধ॰ **ठ**ञ्: श्रुकातः वान्तानिमस्बय वा-চ্য । ইদ চভূবিষ বান্য বাদিত্র। कि हिनामकः। वाह्य मिञ्जनस्यः भुथगान वित्मवाशान इंडि किन क्षानयः। कृताना न विष्णेष्यः। ইতি छ®ेकाया• ভর उ: ।। अः ।। व्यथ वा-দ্যানি। তালেন রাজতে গীত। ভঃলঃ বাদিত্র সম্ভবঃ। গরীয় স্তেন ব্যক্তির তছত্রিধ মূচ্যতে ।। তত॰ শ্বির মানজা ঘন মিত্মা চতুরিবা। ভভ• ভত্ৰ:গভং বাদ্য• বংশাদ্য• শুশির তথা ৷৷ চর্মাবনন্ধ মানদ্ধ ঘন• ভালাদিক• মত• ৷৷ 🗱 ৷৷ ভত্ৰ ত-**७ यथः। जना**वनी तुक्रवीना किन्नजी वयुक्तिनी। विश्वकी वलकी (जार्था চিত্র। জ্যোষবতী জয়।।। হুন্তিক। ল द्विका कृषी भादकी भदिवापिनी। बिग्ने भ उठन्त्री ह नक्राचीशे ह ए--सदी ॥ ॐउदबी शिनाकी ह निव-कः मुद्रम ख्या। भरादाव्रश्रहणक कृत्। २थ भद्रमध्यः। क्रिलारम् भवुमानि (वालकानि ठठ छत् ॥ 🕸 ॥ व्यनावरी यथा। कनिष्ठिका পরিধর্জি নব্যছিলেণ সংযুতঃ। দশ-दश्चिमित्वा मञ्चः चाभिन्ना देवत्वा

**২**থ বা ॥ অধ: করভবান্দ্রে ছত্রা-বল্যাভিশোভিত: ৷ নবাস্লাদ্ধ-শিংদাপরি চন্দু। জনি ।। নি-বেশ্য চৃষিকা ভদালাবৃথগু নি-বেশযে**ে। দ্বাদশাস্কুল বিস্তার**• দূচ-পক্ব মনোহর । ভূবিকা বেধ মধ্যে-न मर्डिहरम् ज् निर्मिजाः ॥ अनातू মধ্যগা ডৌবী কৃত্বা স্বল্লান্ত কাঞ্চি কা । তথা স বেষ্ট্য তন্মধ্যে কাহি-का॰ जुगनयखंडः॥ यथा मामिक-লালাব্রস্কিশ্চ করভোপরি। প-कार्नियु मः ठाङ्गालाव् सन्नाक বন্ধ্যেৎ।। কেশান্তনিৰ্ঘিতা পউন-থী সূত্র চ্তাথ বা। সমা: সূলা দূচা তত্র তত্ত্ব দেয়া বিচক্ষণৈ: ।। এত लक्ष मः रागगान्यानावनी भुकी-র্ত্তিতা। বিন্দুনা ন সমূপেত॰ তুম্ব॰ निःकिना वक्ति ॥ नवागानानि কাভ্যাঞ্চ বাদ্যা দক্ষিণ গাণিনা।। তারে মন্তে বাবে চ ত্রিস্থানে বি-नमू तिष्ठाउ ॥ जूबीमून ममु८ পভ বামাস্টেন ধার্ধেশ। ভত তাভিন্ত मदा छि: स्त्रवा कि विवीय छ।। जि-স্বরো দক্ষিণঃ পাণি রাম স্তর চত্ঃ-খরঃ। অলাবণ্যাণ স্থিতা ক্রেণাঃ সপ্ত মড্জাদেশ হরাং। রাগব্যক্তি যথা ব্লাগে ভবেৎ যত্ত্ৰাদি ভেদতঃ । অ'শ ন্যাস বিভেদায় তথাত্রাপি विश्रीरक।। इय मनाविभी (भूकि। मनः শ্বণ রঞ্জনী। পুত্যক্ষা সারদা দেবী বীণারূপেণ সংস্থিতা।। ইত্যলাবণী ।। অন্যেষা॰ লক্ষণ॰ বিস্তরভযানো-क्ति। # ।। मूमित यथा। वःमा १थ পারী নধুরী তিত্তিরী শন্ত্র কাহলা:। তোডशे मुत्रमी वक्षा माञ्चका खत्रना-खरः॥ मृत्रः कानानिकः वःम फ মাবংশ তথাপর:। এতে শুশির ভেদাস্ত কথিতা: পূর্বশ্রিভি: ॥ वङ्काः नतन रैक्किन बेरिनाम विव-र्জ्जि**ड:** । रेवनवः चाहिरत्न। वाशि **त्र**ङ्ग्निरङ्गा २०वा ॥ 🎒 थ ७८ङा ২থ সৌবর্ণো দন্তিদন্তমযো হপিবা । রাজত স্তামুহো বাপি লৌহজস্ম-টিকো **হথ** বা ॥ কনিষ্ঠাঙ্গুলিতল্যেন গর্ভরন্ত্রেণ শোধিত:। শিল্পবিদ্যা भ्वीतन वंशः कार्या मताङ्कः॥ বংশেনৈৰ মভোপীতি মতঙ্গমূনি-নোদিত । ততা ধন্যেপি তদাকা-রা বংশা এব পুকী ভিতাঃ।। তত্র ভ্য-ন্ধা শিরোদেশাদধ্যে দ্বিমিত মঙ্গু-**लः।** क्८कावबकुः सबीं उ भिज-মক্লিপর্ণা॥ পঞ্চাঙ্লানি সং-ত্যজ্য তাব্দুজ্বাণি কার্যেৎ। হ র্য্যান্তথান্যরন্ত্রাণি সন্তম খ্যানি কৌ भवार ॥ वाति वीक्रजुन्तानि भः ভাজাজাজ মঙ্গল। প্রান্তবোর্ষন-न कार्याः चन्नारेना नीनाइज्य ॥ मिक्क (क्न कवा (तया (छन मुबद छ। ভবেৎ। পঞ্চাङ्गुःलायः वःमः न्याः प्रतिकाञ्चल विश्विष्टः ॥ **य** अञ्चलानि नाग्राम्यावम् द्वानमञ्जूनः । सूट-করে তাররন্ধ্রন্য যাবদজ্লি মন্তর।। তদেব নাম বংশস্য বাংশিকৈ: প-विकीछाउ। अभाक्ता घाकूनण ত্রাস্বুল শুত্রস্ব:॥ অভিভার ড-त्राज्न वाः निर्देशः ममुलिक्षि उ:। ब-यामभाञ्ज्ला वीशाभवः। निक्ताः। वःশञद्देखः खया जधरणाञ्चः ॥ महानन ख्यानत्ना विकास १थ জয তথা। চত্বার উত্তমা বংশা ম-তস্মুনি সম্ভাঃ।। দশাঙ্গুলে। ম্-रानत्ता नन्त अहार नाञ्चः। घा-मभाञ्चानस विषयः शतिकीर्सि ত:।। চতদশাস্ত্রনিতো হ্র্য ইত্য ভিধীयতে। दुका काला द्रवि विकृः ক্রমানত ব্যবস্থিতা: ।। নৈবিড্য (পाछ । हालि मू रद्र द्रक भी यु छ।। माव्यं। मिकि नकामी फूट क्रिय গুণা: মৃ সা:।। শীৎকার বহুল: स-(क्षा विश्व द: कु छेट्छा चयु: । अमधूत्रा-শ্চ বিজ্ঞেশা: ষড্দোষা: ফুংকৃতে क्रमार ॥ वृषा भुर्यागराञ्चा र म-ত। গীত বাদনে। এভি দেঁবে যুঁতে। **হ**তীব নিন্দিতো বংশিকো নত:॥ স্থানকাদি লযাভিজ্ঞে। গমকাচ্যঃ मु हो कदः। भी युरुष्ठः कवा ভिष्ठा বা শিকো রক্ত উচ্যতে ৷৷ পুমুক্তি ৰ্বন্ধমুক্তিশচ যুক্তি শেচভ্যস্লের্গণাঃ। मृहानदः मुबद्रदः व्यक्ती मावन ক্রিয়া।। সমস্ত গমকজ্ঞান• রাগ রা-গাঙ্গ বেদিতা। ক্রিয়া ভাষা বিভা-यात्र रक्षा शीज वारत ।। यञ्चात চাপি দুঃস্থানে নাদ নিৰ্মাণ কৌশল॰ । গাতৃণা॰ স্থান দাতৃত্ব॰ তদ্বোষা-ছাদন তথা।। বাংশিকস্যগুণা এতে भया मःकिना मर्लिजाः ॥ इजि वंभाः ॥ #॥ कारुवा जी नियमः। ভোডरी ग्रमी वृक्षा ইভ্যেতে চ ব্রিযাণ সপ্তম্বরাণাণ নাভি রিব মর-नाजिः ज्ञियाः वर्छछ । ইতরেষाः विख्रज्ञाक्षाकु ।। 🗱 ।। व्यानवः यथा। जानस्त सर्पनः (भूगन् ह ত্যক্ত ভরতাদিভি:। অপি চ। মুর: জ পটহ ঢক্কা বিশ্বকোদর্পবাদ্য° প-ণব ঘন সৰুজা লাবজান্ত্ৰ ত্ৰিবল্য:। कद्रठे कम्रठे (चर्द्री महाद अफ्रू इंक् क्वा यानम मूबनी याली पूदनी (को खि नाना ।। उनुक् हेन्कि मङ्कः अधनी

স্তঙ্গুনামা রণ মভিঘট বাদ্য• দু<del>ন্দ্</del>-ভী চ রক্ষ। ব্রচিদপি চুচুকীম্যাৎ দদুরি চাপ্যপাস্থ পুকটিত মন্ব-क्षं वामामिन्यः कगठाः ॥ जिभूत মথন কৰ্ত্ত ভাগুৰে তৎ পুযাণে তত নথ শুশির ঞানজ নিত্যা ঘনঞ। 🛊 । मर्ननः थापितः (मुर्क्षा श्रीनः म्रा-मन् पाक्षः। त्रक्ठन्त्नः हा वारम्। ग**ीतक्रिक कहरिकः ॥ मार्क्ष** रख शुः भागस्त रेमर्घ। भमा विशेषरङ। बरदा-দশাস্ত্ৰ বাম মথবা দাদশাস্ত্ৰ ।। দক্ষিণঞ্চ ভবেদ্ধীন মেকেনাৰ্জাঞ্জ (लन वा। कद्रशानक वहरना मरश्र रेंड व भृषु र्खत्यः ॥ यद्मामीत्मा खत्यः শेख उहर्य कद्रगः भेजः। मृखिका निर्मिटरैक्टव मृहकः পরিকীত্তি उः ॥ পাত্তবেৎ খর্লিণ বাদ্যণ মাদনার্থ-ঞ্চ মর্দলে। বিভৃতি গৈরিক ভক্ত । কেন্দুকেন চ সংমতং ৷৷ যদ্বা শিপীট-ক দেয় জীবনী সত্ত্ব মি**শ্রিত** । স র্ব নেকত্র পিষ্টন্তলেপ্ন: খরলি ৰুচ্য-তে।। বামাসেs পূরিকা॰ কৃত্বা**লেপ**॰ मन्त्राह मकित्। এवः नमनकः (शा-ক্তঃ সর্বাদ্যোত্তমো মতঃ।। অস্য अः (याग भागामः) गतः वामः) व (णाः **ততে। এउদকে वीजकार के मलमर्खा-**কুল বিদু: ।। 🗱 ।। তথিছোতে নি তি

ত্তেশাং পাচৰণ। মৃত্ত্ব সাঃ। থোং 🛚 **দ**ং ঢেং বিহুট স্তন্ধী ভাকং দং দং (थागः विधि॥ थर्वा विः नः गरेः मः থা কট পাটা মতা অমী। তথি॰ থো চে তকু ধী দো দ দ দ বিগণা ভত্ত- তবি ৷ ভহু ত খ খিদো ভিধি পাঢ় থাওে ভ্ৰুফ ক্ৰম:। #। তথা চ যতি নানে পাঢ়খণ্ড:। দুগতথেজা দুগভথেজা পো ধো ধিক ভাধিকা থোজা থোজা তক ততা ধিকা থোডা দুগত তাখি ধি ধিধিকততা কডনা থোধিক থোজা পোতা দুগ-ভঙা দুগভঙা দুগভঙা ধি। ইতি যতিমানপাচখণ্ড: 🕦 🗱 🔢 যতি রোটা পারছেদো গলরো ক্পক ধুক। গলপ: সারিগোণী চ নাম-শ্চ কথিত। তথা।। পুহরণ বৃদ্দ नकः भुवका घामण म् छाः। यथा। দ পাত ইভ্যেকতাল্যা যতি: ।। क।। उउवाराः यथा। माः उत्था **उधिक उधिक मः था मः था (थाधि** থোধি ভত্ত ভত্ত থবি থবি দিশ্যা• निनाता है हैनिक है है निक उन्हें अ ভদ্টন্স খ্ৰটন্স খ্ৰটন্স ভণিন্দি छितिनिति हार हार हर हर हीर हीर हर **७। ७था । इ**र्डिगडवान्तर ॥ #॥ ष्यवाहम वामा यथा । मः थाउः

দ পাত: বিকি বিকি দিল দ পাতঃ । इंड्रदाह्मवान्त्रः ॥ 🗱 ॥ शक्रतः वाष्ट्र यथा। (थाकरि क नक ए॰ ডে গথো গথোস্ক টেক্ক থোগ ভকি থিক্তকি থিক টেম্বন থি থি কটভক (थाक उदि करें उद्ग क उत्था गउन्नी। । ইভ্যেকভাল্যা॰ গৰুর: ॥ 🗱 ॥ क् भक्रवारा यथा। उक् थिक उक ধিকু থবিভকি থবিভক্কি ধিক্ল দং थाउ: । ইতি क्शकवार्/ः ॥ 🗱 ॥ পুর মবাদ্যা যথা। তত্ত্ব ভত্নট বিহু বিক্টু । ইতি নিসাক তালে প্রকঃ ॥ #॥ भन्ता यथा। उदिक्ति विक-उक उधिगल गर्था था (ए उथा টেঞ্ন। ইভ্যেক ভাল্যা॰ গলপ: ।। 🚓 ।। माद्रिरगानी यथा। (थाक টেঞ ডক্ল ধিক্ল ভকাধক ভকথো হ-**हेक्ष्म रहेक्ष्म (थागकक(था: । इंडि** भूषमथ ७:॥ इ। हिन्य थाः वित्याहः টেঞ টেঞ দক্ষ ভগদক্ষ থিকু ভিনি-দকুদ• গদ॰ গথে। গথোক ভক্ত ভক্ ধিকত ধিকত খোচেঞ বোটেঞ খ-টেগলখোগ গল খোগ খোহট গে' টগে থোহটঞ ইত্যস্য ছন্দন । ইতি সারিগোণী।। 🗱 🛚। নাদে। যথা । দাংকার ত্রিভয়ং পর্বং দাং খিগি-তি ভত জ্বয়। দা দা । ধিক ত্র্যা যত্র

ইতি নাদঃ শচীপুব:।। ইতি নাদঃ ।। 🗱 ।। कड मानम नावतः भूकः ক্ট বিনির্ফাতে। সপ্তয়গুন্ম বা দ্যু করিভ তদিহোচ্যতে ॥ ছত मानकाट शिंडिसान यथा। उडिउ ভত্তত কল্পি ভক্লি দিদ পিগনখো ধিগনখো থিকু খিক ধিকু থিকু ধিক নিগ নগমি থো থো ধি ধি ধি: দা मा विकृत्या त्यात्या इत्याह निक থো নঞিথো থোহু থোহু ডেচি ডেচি থোছ থোহ ওটি তটি তটি গী গী• ধগি ধ<sup>া</sup> তত তথে তথে তত তগি ভীঞ্চী খোল খোল খোল থোগ গথো গথো ভত্তাতা। ইতি अधनमानाः कथिङ सन् জিভাঃ। পুতিজ্ঞান ভাগের শা क्वर्ग स्वाम उ:।। गक्त ईष डिना श्रह मुर्देणी जामा नर्दान । मर्द्यात्रक्ष नार्थक कञ्चित्र भुक्षी मृद्धा ।। ।।। পুত্রণ ধ্যা। থেগেকা ভিদ্ধিবাধা গড়ীন গোলৰ প্ৰাগ দিক্সিক ভিত্ন बिक्छे*ः*। इंट्युक्न खान्याः भू**र्**बणः । अभवात्रः विस्वार उत्यवस्य निवार भिगम् १८ छ। यथा । छित्राचा मिका हो । क उन्नः। ३७ हन्द्रनभाक्षा क्लाह्य विक्यानण है। बची हार्च है। बची । জোলাট। কলিকা তৈব গোঢ় 🚉 📗

सुत्रक **उथा ॥ जला**नुक्रवान्तर (सहवारा । सर्वाः खर्यार्गाकवा वासमुत्था वामभाजुल मकिनमूथः। ग्तक एक्षेप्रभाकृत दाम मूथः मध-मणाकृत पश्चित्रम्थः। समन सुत्र-खार्या द्रयः (छतः ॥ **६ ॥ यनः यथा** । খনরক্ত বিশ্বক্তঞ্চ দ্বিবিশ্ব ঘন-বাদ্যক । গীতানুগ মনুরক্ত বি-রক্ত• ভাল্ল-শুণ• ।। কর হা**ল: কা•**-স্বাধা জাগ্য টি.খ শ জিলা। ক-ব্রিকা পটিবাস্থাই পটিবভোবক **যর্য-**ब्र• । बङ्गा छाबन्ध म**छो इ क**डंवुई कत है उत्ता । बाही बाउ मुनीत्नुग क विश्व व न जिल्हा महा। बायारणा-কৰা নৰৌ শৱকা স্বাধিনিমিতৌ। गय ग्यो जगकाको उन्नास इन জ্ঞ ও টুটো ৷ পদ্মিনী পঞ্চদ্দৌ वज्ञान्त्राः इष्क् गजित्वो। कहानाः বুলো বাদেটা পাটে অনটি শ**রিতি।।** পদা ভাষাদশাবৰগ্ৰাম কক্ৰবো-विष्ठ । यदशक्ष क गञ्जी वः मर्राष्ठ ह ব্ৰন্ত দে।। বিষ্তি বভ্লি। নিশ্ৰ ररजानिक खडा गृहाका नदा-নেশেত পিৰণিস্মলাভৃতি ।। খ-खाद्रोतिशेष अक्षाणा विनिः बिंड । र दक्क स्थार म्यापा स्थित म्युत्रवृति ।। यन। निजा विज तक

हर भूक भरशहत•। काण्योदानि ॥ **স**ग्छु है । जान माल संनी येपः॥ भूगाम • मकिनं जान खा छ। श्रीनक वामकः। अही उ उपनृषः कार्याः छः क्द्रन अपूर्व विष्टः ॥ वामश्यश् छ। ् वन्। संशुमः मधिनास्तिः। जियं। পুঞ্জিণ ভালস্য পরিব্যুংশেন ভাল-(यथ ॥ डाजारनी वामरगरेहव প्लड भीयं वय फरेंड: । इंडिं कब्रडान विः मयः। कर्नी यनविरमयः। উক **द्रम्म ध**न विष्मात्य। ६ १ छ द्रवामाञ्च ल र-निकः। अभिष्याः नकाः विखन ভरासाङ।। ♦ । क्रांभ व डा. **ভा**राणः काजिन्सः विद्योरन्स्याः । জাত্রত্যা নাগু হিত্ত লক্ষ্ণা ভদ-दा विशे ॥ कृष्य हैनिहिंगीण পুরেরে।ত্রহে।এলবে।তত শশি-ब्र साम तः सम्बर्ध यमभक्त्याः॥ य दामयमनः था । ज निक (भोता निकी শু তিঃ। তভং বাদ্যন্ত দেবানাং গন্ধ इं ाक्ष् भोवितः॥ जान्कः द्वाकः সাৰান্ত বিষয়াণা ধৰু বিদুল। নি काव डार्ट (शिविन्मः मर्डासवामः) क्रिटो ।। याविष्ठ वान (छ। छ। निवास ব্লাবণযো যালি। ভাষতে গ্লাভবন্ শেৰাঃ ফ্লুখাড়া সক্রে ॥ জ ॥ কিন্তু। লি লাল ভূমকপান তোন-

रवन वरन नवारव मधनार मुद्रन । **बर्डकरि**कालि कि इन्हेंबें ना পঞ্চশদীভি কণার বারঃ । বুদ্ধে रिनन्धानाः (या रुएकात्र बदः न সি•হনাদঃ। ভভাদিভি রেভি \*১-जुर्खि दंदिरा कम्ना शिक्नोरक शक्षणकी बाह्य सज्दा निः इसाः (एन गर् वान्। शक्विष छवजी-**७**७थं: ॥ इंडि मःगीडनात्नामद्रः ॥ #॥ विष्णुग्रह वामानदा यनाः यथा। जान्त्राभशदेव विस्टिष प् उ-क्षांब्राडिएक्टरेनः। शीउवानिज न्-उत्तरेन्द्र (**अप्र**ायाष्ट्राङ न्**ल । लुग्र** লাভিষু গোৰিনদে গীত নৃত্য রবো-क्लिला। ज्यानकानकान जंका (जाव. याहुड सर्वापः। (यवाः नविखः रिकः चंक्रो मार्कमामुभावशिवः ॥ छा-বিভেল ভগবান বিভাগনা ভাতিমত• ফল-। বেৰ কমনি দক্তাৰা ভেষা সংঘাতি সভবৈঃ।। তে:বিভোতি-नकान् कानान् शुक्ति जनार्ननः॥ २७ विङ्गुबाल किलामानामाः द्वारक्षा क्षा स्टब्रु (क्रिया वाहर विविध्या १०७: शुन्तास स्रोत्धानः र्• शीडवातिक ग्रेनिश मर्गका• लाका पृष्क हेन° गल गुहाराद≪ ॥ ইতি ব্যৱহে গৈলোচাঁ ছাগ্নাৰ্ট

वार्ग्र जांचा क्षेत्र क्षेत्र

বাধ ঝ ড বিহতৌ। ইতিকবি-কল্লজন:॥ ঝ অববাধ্ । ড বাধ-তে। ইতি দুর্গাদাস:॥

वादन॰ क्ली वाषा। ইতি भक्त ब्रा-वणी॥ वाषा खी शीजा। ইত্যনরঃ॥ नि- (वधः। ইতি (इस्मान्नमुः ॥ वाध्काः क्षी विवाहः। ইতি जिन्नाः अल्पायः॥

বাধ্: পু॰ বহিত্র•। ইতি শদ্-রত্নাবলী।।

वाधीनमः भू॰ वासी नमः। थन्नी । ं ইতি হলাगृथः॥

বান জি শুদ্ধকল। ইত্যমর:॥ শুদ্ধ । ইতিমেদিনী॥

বান লী স্যুতিকর্ম।। কট:॥ গতিঃ
। ইতি নেদিনী ॥ জলসংপ্লুতবা তোমি:॥ সুক্সা ॥ সৌরভ:। ইতি হেনচন্দু:॥ গোক্ষীরজণতব ক্ষীরণ। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ বন-সমৃদ্ধিনি ত্রি॥

वान पृष्टः शुः नष्क वृष्टः ॥ शः लाम वृष्टः ॥ ज्ञीयाणुगः । इंडि विश्वत्म पित्रो ॥ श्राः भू श्राः मुद्दे शाम व् वनवा गः कृषा अक्षे शहः कला हि छक्ष यिद्रा अश्वता द्रां तनः करता छि-यः अ वान श्र्यः ॥ अ व हि विषः । अश्र अर्थः पर्छा मूर्था लक्ष्यः । इंडि श्री छा गव जन्यः ॥ उन्न प्रस्मा यथा । छन् वव व । अद्य छा । यथा न ।। यः श्रां १यः वनवा निनः ॥ उन स्वार्धि । द्राः यु यु व्हा प्रदान् क्ष्मि हि । साब्रारग हिव निवरता বন্স্ তাপমো মতঃ ৷৷ তপসা ক র্ষিতোভ্যর্থ• যস্ত খ্যানপরো ভবেৎ। সন্যাসীহ স বিজেযো বানপুস্থাশু নে স্থিত: ৷৷ ইতি গাৰুডে ৪৯ অধ্যা यः ॥ 🗱 ॥ व्यक्ति । याद्धवन् । उवा् ৷ বানপুস্থাশুম বক্ষ্যে তৎ শৃবস্ত মহর্যথ:। পুত্রেষ্ ভার্য্যাং নিংক্ষিপ্য वन गरहर मरेहर वा।। वानभूत्रा বুক্ষচারী সাণ্ডি:সোপাসন: ক্ষ<u>ী</u> 1 অফালকৃষ্টনামী ক পিতৃদেবাতি থী তথা।। ভূত্যা স্ত তর্পবেৎ শা্মা क्रोालामञ्जाजान्। मान्यः ज्ञिषः বণস্নাথী নিবৃত্ত•চ পুতিগুহাৎ ॥ স্বা-थ्यायवान् थ्याननीवः সর্বভূতহি-তে রত:। অহে। নাসস্য য্রাণবা হ্বর্যাদ্বান্নপরিপুহ• ॥ কৃত্যু• ত্যজে-দাশ্বযুদ্ধে নহেৎ কাল• বুতাদিনা। পক্ষে নামে ত বাদীয়াদভোল্থ-লিকো ভবেৎ ॥ চান্দাৰণী স্বপেড্ মৌ কর্ম স্বয্যাৎ ফলাদিনা। গ্রীন্মে **পঞ্**াগ্নিধ্যস্থা ব্যাসু স্থালে-**ল**া: ৷৷ আদ্বাসাস্ত হেমন্তে যো-পাভ্যসাদ্দে নেং । ইতি গা क्र ३०२ वशाय: ॥ अ ॥ शून-রপি। জটিব নগ্নিছাত্রিব ভূশব্যা-किन्याद्र । वत्न वामः भाषा मूनः নীবার ফলবৃত্তিতা ৷৷ পুতিসিদ্ধারি-বৃত্তিশ্চ ত্রিয়ান বুভধারিতা। দেব-তাতিথিপুদা চ ধর্মো হয় বনবা-**जिनः ॥ इंडि शा**क्छ २५७ व्यक्षायः ।। 🕸 ।। অন্যह । বানপুস্থাশুন ধর্মণ তে বক্ষ্যামোবধার্য্যতা । অপভ্য সম্ভতি দৃষ্ট্বা প্রাজ্ঞা দেহস্য চাব-তি ।। বানপুস্াশুন পছেদালানঃ শুদ্ধিকারণ ৷ ভত্রারণ্যেপভোগেন তপোভি कादा दर्भनः॥ ज्ञा भग्रा বুল্লচৰ্য্য পিভূ দেবাভিথি ক্রিধা। হোন জ্রিষ্বণম্নান জটাবল্পল্ধারণ ॥ वन्रायुक्तित्वविद्धः वानशुक्त वि-थि खुन्। ইতি वामान 78 अव्यायः । अः ।। व्यभद्रकः । त्राम छेवाह । এব গৃহাদুমে স্থিত্বা দিতীয় ভাগ भागुषः। वानभुष्टाशुनः गरहर ज-দার: সাগ্রিরেব চ ।। নি:ক্ষিপ্য ভা-ব্যা পুত্রেষ্ পছেছন মথাপি বা। দৃষ্ট্বাপত্যস্য চাপত্যু জজ্জনীকৃত-विश्व:।। मूल्लभक्त मा भूबं। इ भूम-তে চোত্তরাবণে। গঙ্গপারণানিন না স্তপ: স্ব্যাৎ সনাহিত: ॥ ফল মূলানি প্রাণি নিত্য মাহার মাহ-রেং। যদাহারে। ভবেত্তেম প্রয়েং পিত্দেবতাঃ ৷৷ প্জযেদতিথিং নি-ত্য মুত্বে চাভ্রহেৎ সুনান্। গ্রা- भारानीय वान्तीयारही गुनान् न-মাহিত: ॥ इটাক বিভ্যানিত্য नथ রোমাণি নো ভ্যজেৎ। याप्राः य॰ मर्बना सर्यप्राय नियहहार मन् ড:।। অণুহোত্রন্ত জহুবাৎ পঞ্চ-यक्तः नमाग्द्रद्र । मुन्द्रेत विदिष त्यं रिशः भाकम्न कलन जु॥ हीत्र বাসা ভবেন্নিভ্যু স্নাযাৎ ত্রিষ্বৃণ मुि:। मर्बड्डानुकम्भी मार प्र তিগুছ বিবহ্ছিত: ॥ मर्ग्मन भोगं-মাসেন যজেত নিযত॰ ছিলা: । शक्किक्षेत्र मावत देव ठाउँगामता-নি চাহরেএ।। উত্তরায়ণঞ্চ ক্রমশো। मक्क महायन (नव ह। वाम छ नाइ दि ां रिधा मुनितिस सममाक्राहर ॥ भू-রে:ডাশ• তক্তির বিশ্বিমির্ব-(भए मृथक्। (न्दर्भ ड) मह उषा द्वा বন্য নেধ্যভর ছবি: ॥ শেষ সমূপভ্ঞীত লবণঞ্চ ম্বৰণ কৃতে। বৰ্জ্ঞায়ৰু মা•সাদি ভৌমানি ক-রণানি চ II ভৃস্তৃণ• **শিগুরুকৈ**ষ শ্লে-শ্মাতকফলানি চ। ন ফালকৃষ্ট ম-শ্ৰীয়াৎ উৎসৃষ্ট মলি কেন্চিৎ 11 ন প্রানজাতান্যার্ত্তো বা পুল্লাণি চ ফলানি চ। শ্রাবণে চৈব বিধিনা ব-ङ्गिः भद्रिग्द्रः यन।॥ न करश्ट मर्ब ज्ञानि निर्वतन्तः निर्वत्या चरदः

। ন নক্ত কিঞ্চিদ শ্লীযাৎ রাজৌ ধ্যা-নপরে। ভবেৎ।। জিভেন্দ্রিয়ে জিভ-ক্রোধ ভত্তজানবিচিত্তক:। বুদ্ধ-চারী ভবেমিত্য নপত্নী নপি সংশৃ. (४८ ॥ यञ्च भङ्गा दनः भङ्गा रेमथुनः কামত করে। তদুত তস্য ল্প্-ত পাৰ্যক্ষিত্তী ভবেৎ দ্বিজ:।। তত্ৰ যো জায়তে গরে। ন সংস্থাশ্যা দ্ব-জাভিভি:। ন ছে বেদাধিকারো দ্য ভৰু মপ্যের মের হি 🛭 অধ্যল্যী ত **गडड॰ गा**विजी जभडे ९ भद्रः। मद्र-ণ্য: সর্বভূতানা স্মিভাগপর: স্-मा ॥ পরিবাদ । মৃষাবাদ । निमुख (मार्मि वर्ड्सार । এका गू व नाकडः म्राट (भाषिक जाः ज्यि मान्तर।। ম্গৈ: সহ চরেলাস তৈ: সহৈব চ-न वरम् । भिनायाः भकदायाम् শ্ৰীত সুসমাহিত: ৷৷ সদ্য শুক্ষা-लाका वा महार भागः अधिका-शि वा। वद्यामनिहरण वा महाद সমানিচয় এব ১४॥ নক্তঞ্চান্ন সম্-শ্বীয়াৎ দিবা বাহ্ত্য শক্তিতঃ। **ठउ:कालिकिका वा मग्राथ मग्राधा-**ष्यक्षेत्रकालिकः ॥ ठानुग्रय विकारेन-वं मुक्त कृष्क व वर्ज्जिय । भाक भाक्त मन्त्रीयाट यवातः वृथिजाः उषा॥ भृज्ञ न्व करेन वीशि (क्वरेन

इंडिए८ मरा । बाडाविकः स्रगः भौरेर्ग रेवंशान्त्रमण्ड इडः॥ ज्यो वा भविवार्खं उ खिरश्रहा भुभरेर प्रिनः । স্থানাসনাভ্যা॰ বিহুরেৎ ন বৃচি-**रिक्**र्य) मृष्ट्रमृरक्ष्ट्र ॥ ग्रीरम् । नक्ष्य नाः শ্চ স্যান্বৰ্যায়ভাবকাশিক:। আদু-বাসাস্ত হেমন্তে ক্রমশো বর্ত্তবৃ•স্তপঃ ।। উপশ্ৰা ত্ৰিষবণ পিতৃদেবা॰ শ্চ তর্পায়েশ্র। একপাদেন ভিষ্কেত মরীচীর্বা লিবেৎসদা।। পঞ্চাণ্নি ধুন পো বাস্যান্ত্রপ: সোমপো ২ থ বা। **ग**यः পिय्ट मूक्कु भक्कि क्यम पक्ष जु (गान्य ।। भीतंत्रतं भाना वा नहर क्टि वं वर्ज्यः मता। त्यागान्ता সরস্তো বা স্যাক্ষরাখ্যাথী ভবেৎস হা 🛭 অথর্বন্দিরসোপেতো বেদান্তা-**ভ্যাস তৎপর:। যনান্ সেবেত স ७** इ॰ नियमाः का भा उन्तियः ॥ क् काबिनी माखदीयः भूत यद्धानः वीजवान्। ज्यवाद्यीन् मभाद्राभा भाज्ञिन य्वानउ८ श्रद्धः ॥ व्यनीः द्र নিকেত: স্যান্দ্রি মেঁ।ক্ষুপরে। ভ-বেৎ। ভাপসেম্বেব বিপেুৰ্ যাত্ৰিক• रेजकमारुप्तरा। गृरुप्तिष्रृ हात्मु দ্বিজেষ্ বনবাসিষ্ ৷ গ্রামাদাজ্ত্য বা-শ্বাযাদষ্টে। গ্রাসান্ বনে বসন্।। পুতি-ण्य भू दिरेनव भागिना **मकत्वन** वा।

বিবিধা শ্চোপনিবধ আত্ম সংসি-कारय कारण ।। विन्ता विरमधान् माविजी॰ बनाधाय॰ छरेषव ह। बहानुष्टानिक्कामी वर्ग्रापनणः नष्टथा।। यशिभूत्वम भन्तावा वुकाः র্পণবিধৌ স্থিত:। যে ভু সম্যাগি-म माण्यः निव माण्यस्त्राभवभूक्ष নাশন । তে বিশন্তি পদীমখর। পর• যাস্তি চৈব জগতোস্য সংস্থিত তি।। ইতি ক্র্পপুরাণে উপরি ভাগে २७ व्यथ्रायः ॥ अ॥ व्यन्द्रः विष्टुः भूद्रात्पञ्च• (भ 🛪 ञष्ठात्य मुश्चेव्र)• 💵 वा तः शुः छो चगामश्राज्यम्। वान्त्र ३७ जाया। उ८ भर्यायः। কপি: ২ প্লবক্: ৩ প্লবগ: ৪ শা-षामृगः ৫ वलीमूथः ७ नकं हैः १ কীশ: ৮ বনৌ না: ১। ইত্যমর: ॥ मर्कः २० क्षतः २२ भूतकः २२ পুৰণ: ১০ পুৰস্ম: ১৪ পুৰস্ম: ১৫ গোলाञ्चः >৬ किम्थानः ) १ मिष्णागः ১৮ इद्रिः १३ **७**३-मृगः २० नगाउँनः २७ वाजी २२ यम्भाकः २० विलिश्वः २८ । इंडि भषत्रद्वावनी ॥ किथिः २५ माना-বৃক: ২৭। ইতি কটাধর:।। े भु॰ की बिर्कः। **इं**डि বানর প্রিয়: इद्रामाना ॥

ज्ञाषु भव्रमायजनः श्रृष्ठः ॥ (५व-তা: পিতরো নাগা গন্ধর্বা যক্ষ রা-क्षित्राः। भणु भक्षि मनुष्राण्य मः मु যন্তি জলাশয় ।। ক্ৎসু তার্যতে ব শ পশ্য খাতে জলাশযে। গাব: शिविङ्गिनीय भनुष्याः **भण**व ख्या ।। भद्रम्(डो डडारगव् जलिवः यम्) ভি**স্ততি। অগ্নিষ্টোম ফল**ণ তস্য পুব দন্তিমনীবিণঃ !! যেষাণ শিশিরকা-লে তু পানীয় পুতিতিষ্ঠতি।বাজ-পেয়াতিসভ্ৰাভ্যা•ফল•বিন্দন্তি না नवाः । बन्दछ देव श्रीएम जू मिलनः খস্য ভিষ্ঠতি। রাজস্থাখনেধাভ্যা• म कवा ममूलामु (छ ॥ छडागः **म**ः विश्वानाः बोवनस पिवानिः। उ मा८ महीजान। व८म उडाम मिह-কার্থে ॥ কৃৎমু ছি ভার্যেদ্ব **শ** পুরুষস্য ন সংশ্य:। সাবভীর: কৃত: क्यः मण्युज्ठ बन खणा।। यमः ষাদুজল কুপে পিবন্তি সভত জনাঃ । म नः द। विद्राङ्ग। लाकः पर्वविद्रः বি নোদতে॥ পীরৈবেক্রসং ক্রির• पि मधु मुद्रामव । जावर निभामा **(नारेপिक गा**वरखाय न भीयरक ॥ कीविष्ठ চায়য়्रश्चि दियमानि वर् ন্যপি। তৃষিত স্তোযরছিলে। দি ননেক ন জীবতি ॥ তথাদ্বতি 🖟

যো নিভ্যুণ পানীয়ণ প্রাণিনা মিহু। স দদাতি নর: প্রাণান্ মাভ্রেছত্র ज्ञाना भागना नाट अव नाम নান্যদান হি বিদ্যুতে। তথাদ্বা-পীশ্চ কুপাংশ্চ ভডাগানি চ কার-(यट् ॥ अवृक्षानि इ विशुर्धि यही-(हर (भुगमाञ्चनः । मुझ शत्रनिः পানম্ভ য: কার্যতি শব্জিত: ॥ সংতারষতি ভ্যোপি দ্বিগুণ তস্য ৰৈ ফল'। ইতি বহ্নি পুরাণে ভডাগ বৃক্ষপ্ৰ শা নামাধ্যায:॥ वाणीरः भू ठाउकभक्षी। इंडि ত্রিকাওশেব:॥ वाभार क्री व्यक्षीयथः। ইত্যমর:॥ ৰপনীযে বাপীভবেচ ত্রি॥ वाम॰ क्ली थनः। इंडि स्मिन्नी॥ वायुकः। इंडि क्रोधदः॥ वामः बि वहुः॥ পुत्रीभः। मवः॥ ইত্যমর মেদিনীকারে .. অধনঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌ মূদ্যামূণা দিবৃত্তি: ॥ 🗱 ॥ বানহঠেন জলপান ভোজ-ननिरुष्या रथा। हाद्री छः। न शि-বেন্ন চ ভুঞ্জীত দ্বিদ্ধ: সব্যেন পা-निना। रेनक इस्डिन इ कवा म्राप्ता-বজ্জিত পিতে।। ইতি আহি-কতভুং।। অপিচ। **ন বাম**হস্তে-নোক্ষ গ্ৰেছভেশ বা জল निख्यान्तृभन्ण्मा नाञ्च (य्रजः मन्यू-भ्राहर ॥ इंडि कोर्प्य २६ वन्यायः ॥ कार्या वृक्ष-रागः ॥ कार्या यामः कार्या वृक्ष-रागि मान्म मन्त्रानि जुक्रयः । कृर्जा मया स्मार्थनाय ठाडाकानि भूवर्जकः ॥ इंडि कार्निकाणुद्रारा ११ व्यव्हायः ॥

বাম: পু॰ ছর:॥ কামদেব:॥
প্রোধর:। ইতি মেদিনী॥
বামদৃক্ জী নারী। ইতি রাজনির্ঘ-ট:॥

वामाप्तवः शृ शिवः। ইত্যমরः॥ वामनः भुः पिक्वितिहः॥ इमः। ইত্যমর:।। অঙ্কোঠবৃক্ষ:।। হরি:। इंडि तिरिनी॥ विस्थाः शक्षमाव-जात.। जम् श्रीषु नीवा यथा। **শিদাশি**ৰ উৰাচ। পুত্ৰাদস্যসূ তো যজ্ঞে বিরোচন ইতীরিত: । তস্য পুগ্ৰো মহাবাহু বলি বৈখা-নরপুভ: ॥ সতু ধর্মবিদা॰ শুেষ্ঠ: जडाम भी किएडिन्म्यः । इरद्रः লিয়তমো ভজে৷ নিত্যু প্র্যারতঃ मृहिः॥ म जिद्वा मकलान् (पदान् সেন্দু। • চ সমকরণান্। তিলোকান্ স্বলে স্থাপ্রাজ্য চক্রে মহাব-व:।। ইন্দুৰ্দি তিদ্শা স্তম্য কিন্ধ-রা: সমুপছিতাঃ ৷ ভুগুরাক্যু সুর-

পতি॰ मृक्ष्वी उम्र भिजार्ष्मि उः ॥ কশ্যপো ভার্য্যা সার্দ্ধ• তপ স্তে পে হরি॰ পুতি। অদিত্যা সহ **थ**र्माञा भरगातुञ मनिष्ठः ॥ कर्ह-যামাস দেবেশ পদ্মনাভ জনার্দ্ধ-ন । ততো বর্ষ সহস্থানি তেন মুক্ প্জিতো হরি:।। তথৈবাবির ভূত-न्। (रव्या सर् ननाउनः । उ॰ मृह्य জগতামীশ হ্র্বনিভ্রচেত্রনা ॥ পত্ন্যা সহ নমস্ত্য ভুষ্টাৰ চ দ্বিজো-खनः। कम्मुल डेवाछ। नस्मा नमस्य नश्चीम मर्बद्ध जगनीयत्र। मर्वाज्यन् **गर्वापदमा मृश्चि मःहात्र** कात्रक ॥ ইত্যাদি স্ততিভি: সম্যক্ সুন্নানে। महर्षिगा। श्राह गञ्जीद्रया वाहा भदिः जुः हो बनाएंनः ।। मनुः होमि विक শুে । इया ज्ङ्रा नगर्ह जः। वतः त्-গীয় ভদু•তে করোনি তন বাঞ্ছি।। **७3: পार श्वीकमः जा**र्या मह कणात्रः। त्रु अबु । सम (मर्विण मः शु ।-প্য ত্রিদশাণ হিতা।। **স্**কর বলিনা रित देवलाकाः निष्क्रिंतः वनारः। इन्द्रम्यायब्राबा ज्वा উপেन्द्र है जि নানতঃ ।৷ যেন কেনাজ্মনার্গেণ বলিং निष्क्रिं आय्या। देवलाका भन भुञाय (प**रि ग**काय भाष छ॰ ॥ ३-ত্যুক্ত স্তেন বিপ্ৰেণ তথে স্যাহ জনা-

फ्नः । मःख्यनान खिराँ । छोत বান্তরধীয়ত ৷৷ এত্যিমন্তরে কালে কশ্যপদ্য মহাত্মন: । অদিত্য গৰ্ভ্ৰনাপেদে ভগবান্ ভ্ৰভাবন:।। ইতি পাদ্মো ভরথণ্ডে ৪৮ অব্যায়: ॥ #। शिलिव उँदाह। अथ दर्यम হসুন্তে সর্বলোকমহেশ্বর•। অদি তি জনিয়ামাস বামন বিষ্ণু মচ্যত।।। শ্রীবৎস কৌ**ন্ধভো**রস্কণ পূর্ণেন্দু স मृनामुजिः । मृन्दद्रः भूखद्रीकाकः অভিথর্তর হরি ॥ বটুবেশধর (मवः मर्दायनाष्ट्राशाहतः। (मथना-জিনদভাদিচিছেনাল্কিত মীশ্বরণা ত দৃষ্ট্বা দেবতাঃ সর্বে শতক্রতুপু-রোগনা:। স্তত্ত্বা নহর্ষিভিঃ সার্জণ নমক্ষকু মহি। ততঃ পুসলে। ভगरान् (পादाऽ मुद्रमखनान्। किः कर्डवाः भया वाना उद्युवी अ भूरताः ভराः॥ ७७: পুহ हो जिन्मा सम्हः পারমেশ্বর•। অ্যানি কালে বলে র্যক্ত<sup>,</sup> ব্ভতে নৰুস্থন। **পুথন: দানকালো ९**৭॰ ভদ্য দৈত্যপতে: পুভো। যা-িত্বা ত্রিদিব লোক তত স্তু দাত্-म*ीन* ॥ इत्रुक्त खिन**ेनः गरे**वं द्रा-জনান বলি॰ হরিঃ। যাগদেশে সনা-সীৰ মুবিভি: সার্জ নহাবৈ:।। অ ७, ११ वर्षे मही महत्नात्याव देन-

ত্যরাট্। অভ্যাগত স্বয় বিষ্ণু ম-हाहर्य **স**मन्निज: ॥ शृज्ञयामात्र विश्व-না নিবেশ্য অসুমাসনে। পুণিপত্য नेरक्छ। भाइ गर्गरमा गित्रा ॥ ध-निग्रायि क्उक्**उ**ग्रा शिय नकन॰ कीविजः मन । ज्ञानहिविज्ञा विर्भुन्त কি· করোনি তব প্রিয়•॥ আগতো· नि यम्थं पुरमागृज्ञिना विकालगा उर भुषहानि (उ भोशुः तुहि (व वि-দা॰ বর ॥ ভতঃ পুজ্ঠ মনস। ভমুবা-চমহীপতিং। শৃণু রাজেনদু বক্ষ্যা ম **ম**মাগমন কারণ ॥ অগ্নিস ওস্য প্-থিবী দেহি দৈত্যপতে নন। নন ত্ৰিবিক্ৰণ পাদ মহী সংঘাত্ম र्हिम ॥ मर्खिया स्मय मानानाः ज्ञा দান মনুভ্য•। যো দদাতি নহী• ब्राह्मन् विश्वायाकिकमाय रिना यक्ष নাত্র মথবা স ভবেৎ পৃথিবীপতিঃ । न ज्यिनान अनुभार विश्व गिर বিন্যতে ॥ তফাভ্নি॰ মহীপাল भुगह रेजभर मन । अउनसमर्शः দাতু মা বিশঙ্ক মহীপতাে৷ জগএয পুদানন্তৎ মম ভূপ ভবিষ্যতি। ততঃ পুক্ষৰদন তথেত্যা**হ নহীপতি:।। ज्या मही भूगान्छ द खु॰ दारन** विधान छः। छ॰ मृक्ष्वी रेम छ। ब्राह्मान• তদা তস্য প্রোহিড: । উপনা

च्युरीषाकु भा द्राहन् हीग्डा• मः। शे। अय विकृ: भारताना त्या परिवः भः भूंबिर्छा मृभा। यक्षिष्या महीः नर्बा॰ उडः शुंखु निहागडः। उ सामही न पाउदा उत्म बाकन् ्र म्हाजात्न।। व्यन्ध्रमर्थः भुयहस्र वहनाः ন্মন ভ্পতে। ততঃ পুহসঃ রাজা-भी उ चक शाह देवर्ग्या भी उ-रि वामूरिवम्। भूगाः मर्बः क् छः सरा । जारा चरनात्रात्राष्ट्रः विकृ: चरामवा-গতো যদি॥ ভদ্যার্পথামি রাজ্য कि की विज्ञ भक्तम। ज्यानरेय পুৰ্যামি ত্ৰীন্ লোকানপি মাচির॰ ॥ ইত্যক্রা ভূপতি স্তস্য পাদৌ পু-काना जिल्डाः। वाक्ष्रिः भूमानी ভূমি॰ বারিপ্র্ব বিধানত:।। পরি-गीय नमक् छ। पद्मा दिव मिक्निगा वम्। উবাচ ত॰ বটু• বিশু• পুছবেণাম্বরা-জ্মনা ॥ ধন্যোষ্ট্রপৃহীতো ম তব দত্ব। মহী • দিজ। যথেষ্ট • তব বিপ্ৰে-न्तु उपगृहान बही भिमा ।। शकामर कां विजीनाः सकानन रही ४ द्वाः । जनागद्राक मधीलाः मरस्वामूबः मानुषाः॥ शारितक्व शुक्रव। वि कम् अथुभूषनः । উवाद्य का रेवक्टाः রাজ ি করোমীতি শাখত।।। তত্রবৈক্রন দপ নীশ্বস্থা মহৌ

करः। त्रयाञ्च मिश (मवाना नृषीः ণাঞ্চ নহাত্মনাং।। নবজু নপি শক্যং न्। ए दुक्ताः महारूम्। ह। उर भरः পৃথিবী সর্বা মাক্রন্য গিরিজে শৃতে ॥ অভিব্লিক সমভবৎ শভ্যোজ न मायजः। पित्राः ठक्क् पंता ज्या रिन्छ।द्राख्ड मनाउनः॥ ज्या मः . मर्भवागात्र खरु क्ष क क नार्यनः । **उ**िषयक्ष (५वम) मृष्ट्री रेम्टिंग-খরো বলি: ৷৷ পৃহর্মত্ল লেভে मानना मुनि त्रिश्च उः । मृक्ष्वी (एकः न-মফ্ত্য স্তত্ত্বা স্ততিভি রেব চ।। পুা-इ गम्भम्या वाहा भुइर्खनास्त्राजाना । খন্যোমি কৃত ক্ত্যেমি দা॰ দৃষ্ট্ৰ। পরমেশ্বর ।। লোকত্রন মমৈবৈতৎ गृहान मधुमूरन। व्यथ महियादा विक् विंठीय भन्मवाय ॥ उष्ट् भुमावगानाम वुक्तलाकास मह्राउः । সনক্ষ পুহোপেত সর্বেব স মাৰ্ত ৷৷ পাদেনাপরিপূর্ণো ২ভু দ-ছুরে: স শুভাননে । তঠ: পিতা-নহো দৃষ্ট্বা চক্ৰ পদানি চিহ্নিত• ॥ श्रीभाषः (प्रवापयमः) इषमः जुन-চেতদ।। ধন্যালীতি বদন্ বুকা। गृहीद्वा यः कम उन् ॥ ज्का भु ক্ষাল্যামাস ভব্র সংস্থিত বারিণা। वाक्षा ग्राच्यानायः उत्रा विष्णाः

প্ ভাবত: ৷৷ ভত্তীর্থ মেকশিখরে পুাপতদ্বিনল জল । জগত: পাব-नार्थाय हजु फिंक्कू भुवाहिख ।। जी-তাচালকনন্দা চ বঙ্ফু ভূদাযথাক-মাৎ। পুসকাদিদ মাখ্যাত গঞ্জা-জন হানুত্রম•॥ ততো নারাযণ: 🕮 🛚 মান্ বলে দৈত্যপতে: পুভু:। রসা **उन' मू ड• (नाक• शुम्राहो ভ**क्रवट-भणः ॥ मर्ख्या मानवानाक नागा-ना॰ याम्भा॰ भाजः। ब्राह्मान्य व লিঞ্কে যাবদাভ্ত সংপ্লবং॥পুতি-গৃহ্য বলে লোকান্ বটুবেশন দৈত্য-रा। महिन्द्राय पति श्रीखा कानाः লি বিফু রব্যয:॥ ভতো দেবা: স-ाप बी: **अयगण्ड सर्होकमः। जुधे**यः क्षा विकास भूजना साम् बहु jo. ৮ চন্দ্ৰপা ভল্ল**ুপ॰ (ভয়া<sup>°</sup> স**ন त्यानाय वि । मः भूडामान जिल्ले রভর্ষান যদৌ **হ**রি: ॥ই**তি পাদ্মো** खार्था ७ ६२ व्यक्षायः ॥ **#॥ ७६व**-তারপুকারাভর• यथा। नाরদ উবা-D। मान्त्रु उ॰ जगवान् विकु खिलाः ক্যাক্রমণ বগু:। করিষ্যতি জগৎ यागी वाल वंक्तन भी थंद्रः॥ उ एक ये॰ পূর্বকালেপি বিভুরাসীৎ ত্রিবিক্রম: । कन्म। वा वद्यनः विकुः क्खदा छह भ वर ॥ भूवन्त्र छेवाह । सुयञाः

কথ্যিষ্যামি যোষ প্রোক্ত জ্রিবিং क्रनः । यश्चिन् कारल मञ्जूद यक्ष तः ঞ্চিতবানসৌ।। আসীৎ ধুন্ধু ব্লিডি খ্যাতঃ কশ্যপস্যৌরসঃ সূতঃ । দন্গর্ক্ত সমৃজ্তো মহাবল পরাক্র-भः ॥ म मनाद्राष्ठ्र वद्रमः वुकागः **७१माम्**दः। अवस्यद्भः मूरिदः मरिदः প্रार्थिय न जू नात्रम ॥ जबतः उन्। D भारां ७ ७१मा शक्षा फाउः l পরিতৃষ্ট: সচবলী নির্জ্জগাম ত্রিপি-ষ্টপ॰।। চতুর্থস্য কলে রাদৌ জিল্বা रिदान् नदानवान् । श्रुकः मक्द মকরোৎ হিরণ্যকশিপৌ সতি । ভিমিন্কালে স বলবান্ হিরণ্জ-শিপু ততঃ। চচার মন্দ্রগিরৌ দৈত্য ধুরু সমাল্লিড:॥ ততো ংস্-রা যথাকান বিহুর্ডি ত্রিপিষ্টপে ৷ বুন্ধলোকে চ ত্রিদশাঃ সংস্থিতা দুং-**থ: স**ংযুগা: ॥ ততো হলান্ বুক্ল अस्ति निवाजिनः भुक्ष b श्रुक्त विकि-জানুবাচ হ। গুলেন দৈত্যা ব্যমপুজ-স্যাসদো বিজেতু জিংশান্ সশকান্ ॥ छ धूक्तुवाकाञ्च निममा रेनजाः প্রোচুর্ননো বিদ্যুক্তি লোকপাল। গ-তি বঁধা থান পিতানহাজির সুদু-র্গমো হ্য পরতো হি নার্গঃ।। ইতঃ **महर्मे** ब्रह्माबन्दिया ह्यास्का म-

**ইনাম মহ**ৰ্ষি যু**ষ্ট**া গেষাণ হি নাসা-প্ৰনোদিতেন দফ্তি দৈত্যা: সহ-**সেক্ষিতেন ৷৷ তেবা॰ বচন না**কণ্য शुक्तः (भावाह मानवान्। गन्तकामः म সদন• বুন্ধণো জেতু মীশ্বরান্।। কথ-স্ত কর্মাণা কেন গম্যতে দানবর্যভা:। কথ তত্ৰ সহসূাক: সংপাগু: সহ रेमवेखः ॥ ८७ धुक्तुना मानवनमुाः भ् ষ্টাঃপ্রোচু র্বচো প্রিপণাকর্ম তল ব यः विद्यः णुक छह्व छ। मः मगः ॥ दिनः **७**शना॰ वहने॰ सुन् शुक्तु रेर्न छ। नुरहाः **रिउ.। भन्ह** मृक कि कर्य क्ट्रा **ব্ৰহ্মসদো পতি:।। ত**ভোমৈ কথ**া**-भाग रिन्ड्राहार्याः कलिन्यः। म-ক্রম্য চরিত জীমান্ পুরা বৃত্তরি পো: কিল। শক্রঃ শতস্ত পুণ্যানাং कज्ना मक्षय भुद्रा। देन छ नम् वा-জিমেধানা• তেন বুকাসদো গতঃ॥ ভঘাক্য দানবপতি: শুরা শুক্রন্য বীর্যান্। বস্তুণ ভুরগমেধানাণ চ কার মৃতি মুত্তমাং॥ আমজ্রগ্রহাং जुत्र छ्कः मानवाः महाश्रानु खनान् । श्चावात संक्षाह • स्टेडिड क्षेप्रसिक्ष मः मिकिटेनः ॥ जान्यसाक निषय का-क्छाभाषाक छश्काः। भ्याप्या (म-বিকা যত্ৰ গস্থা পাচীন বাহিনী !! সাহি পুণ্যা সরিৎশুগ্র সরনিজি-

कत्री निवा। बनः शाहीन मात्राहर वाकित्मवान् यकामत्रः ॥ इन्धः मू द्रा-विवरून निमन्त्रामूबयाककः । वाष्ट মিত্যবুবীজ্ঙো নিধ্য: সংদিদেশ **नः ॥ ७८७। धुक्नु (र्मविकाया: शाहीत्व** পাপনাশনে। ভার্গবেন্দ্রেণ শুক্রেণ वाबित्मवाय नीकिन ।। ज्ञा रशि थ्यन गरी गरेनवा व्याष्टा मिनः থ বিদিশক প্রা:।তেনোগুগঞ্নে मिवन्शृत्मन सक्षद्वी वृक्षत्मादक नः रखा। ७ शक्त नावाय जुदा दिवना कानउ थुलू॰ इयस्पदिशिक उ॰। उउ: भारतिशः भारतिः कार्मिनः कृताः नभा-ক্রা জগতঃ পরায়ণ ৷৷ পুণম্য বরদ • (मवः भग्नाना का कनार्यनः। (भाष्ट्रः अर्ख मृत्रगंगा ভ्यंगम्शम्या गिद्रा ॥ ভগবন্ দেবদেবেশ চরাচরপরাধ্য । বিজ্ঞান্তি: শ্রুযতা॰ বিষ্ণো সুরাণা-মাভি নাশন।। গুজু নামা সুরপতি বলবান্ বলবৃংহিত: । শুক্রস্য নত-মাস্থায় সোধনেধার দীক্ষিতঃ ॥ শত॰ ज्ञाञ्चा जिल्लामा तुकादगाक॰ मशामुदः । जाद्यापु निह्छि वनी বিজেতু-"ভিদশানপি ॥তথাদকাল-হীনন্ত চিত্তযন্ত্র জগদ্ভরে। উপাধ মথবিধৃ শে ভবানে। যেন নিব্তাঃ ॥ भुद्धा भूदानाः वहनः जनवासपूर

भूरनः। मदाख्यः महावादः (भूष्या-মাস সোথ ভান্॥ বিস্কা দেবতাঃ नर्वा ज्वादा (कज् भरामूब । वकः नाय मिक्किक मधुक्ता त्रवृत्रमा देव।। **ডতঃ স** ক্ষা ভগবান্ বামন কপ भीश्वतः। (नरु कृदा निवालश्व कार्छः याप्तिकाहाल ॥ क्रगाचाड्यः खाया-मञ्ज्याकुरुकाना यम्ह्या । म्रहेशय रिम्ळालिका रिम्टेळा महारेनाः सूत्रर्थि-ভি: ॥ ভত: কর্ম পরিত্যন্ত্র যজি: য• ব্ৰাহ্মণোত্তমাঃ। সমূভার্বিতু• বিপু মূদ্বন্ত সমাসলা: ৷৷ সদ্স্যা যজনানান্চ পার্ত্তিন্চ নহৌত্তন:। নিমজ্জমান মুদ্ধভূ • সর্বে ত• বামন• षिकः ॥ ममूखार्यः समुहः সর্ব এব হি। কিমর্থণ পতিতোসীই কেন ক্ষিপ্তোসি বা বদ।। তেৰা মা-क्लं व्हनः कम्मनाता मूह मुहः। পাহ ধুৰুপুরোগা ভান্ শ্রুযতা মত্র कात्रणः ॥ कुष्काणा खनवान् वामी८ পুভাস ইতি বিশ্বন:। তস্য পুঞ षयः बाउः मन्मभुद्धः मूम्ःथिउः॥ **ত**म्य (कारका मन जांजा कनीयान-পর স্তৃহণ নেত্রভাল ই🍽 খ্যাতো ছেয়া প্রাভা ততো হসুরা:।। মন নান পিতা চক্ৰে ইতি ভাগো ২তি-कोजुकाट । ७७: कालन मरुजा

আবংশা: স পিতান্ত: ৷৷ ডসেটার্ক (रहिक क्षा गृहमावा मनागठी। ততো মযোক্ত: স ভ্ৰাতা বিভন্নামো গৃহ• বয়•॥ ভেনোক্তো নৈব ভৰভেঃ বিদ্যতে ভাগ ইত্যহ•। স্বরু বামন খঞ্জানা॰ ক্লীবানা॰ শ্বিত্রিণাম शि ॥ উমত্তানা তথাস্থানা প্ৰভাগো ৰ বিদ্যতে । এব মুক্তো ম্যা সেঃ ९४। किमर्थः रिणञ्काम्गृहार ॥ धना क **ভाग मर्शमि नाइ॰ न्यार्यन (कन देव** । ইত্যক্তৰতি বাক্যে হসৌ ভুাতা মে কোপ সংযুতঃ।। সমূৎক্ষিপ্যা-ক্ষিপদ্বদ্যা মস্যাংমামিতি কারণাৎ । মমাস্যা॰ নিমুগাযান্ত মধ্যেচ পু-व्राज्या गजः॥ कालः मञ्चर मद्रार्थाज्य যুশ্মাভি রিহ চোজ্ হ: ৷ কে ভবস্তক্ষ স•প্ৰাপ্তা: সন্নেহা বান্ধৰা ইব॥ (ত वानन वहः मुद्दा ভागवा विक न छ माः। (नाहु पिंडानिङ नाई वाम-নার্থ করণ বচ:।। ইতি 省 জানাণ বচ-ন• শুত্বা দৈত্যপতি বঁচঃ। প্ৰাছ দ্বি-क मनाभी जियाविमहिन देव धनः॥ ভন্নাক্য দানবপভে: শুলা দেবো ६० वामनः । भारामुब्रभिकः धूकुः यार्थिमिकिकव वहः ॥ सारावणा-नि हि जावा डि्गाउ यमा मम्मरः। **७**म्डाक्मम् १५ ख. किनान्। न

ক্রিব্যক্তি ॥ নম প্রনাণ মালোক্য गानकक कन्द्रयः। मः भ्यह्य रेत-(छ)न्तु नाधिक ब्रिक्टिं क्रमः।। **ইত্যের মুক্তে ব**চনে মহাল্মা বিহুস্য रिन्ड्यादिनेज्ञिः सक्षिक् । श्राप्ताः फिर्डन्स्य भरवर जनायना म ना-ন্যু জগৃহ্ছেচ কিঞ্চন।। জন্ত্রে তো-य भरवक्का मखः मङ्गामृत्यरम् १ वि **जु र्यमदी। हत्क उत्का वह**िषकुः बिलाली विविक्रम क्र नम्हण ক্তি:।। কৃত্বা তু জ্প° দি**ভি**জা॰•চ रदा भूगमा हवी न् भूषमकत्मगा नहीं नहेरिया महिला महानंता बहाद द्वाक्त भडीन गुंजाः॥ जुरः अनाक जित्नाधिवाम लामार्क ये-रेषः त्रञ्जिञ्जिः नञ्:। (मरवा দ্বিভীয়েন জগাম বেগাৎ ক্রমেণ দে-বলিুগলোক মীশ্বর:॥ ক্রমণ ভৃতী য় ন যদাস্য পুরিতে তদাভিকো পাদ্রগৃদ্বম্য। পপাত প্ঠে ভ-গবাং জ্বিক্ৰমো মেৰুপুমাণেৰ ভূ विम्राह्या। १ ज्ञा वा मुल्लादन मान-বোপরি ারন। বিংশভোজনমা হ্শী ভূমি ভ্ৰাফীক্ল।। জলো रेनजार नार नाजा जमा। नुक्तिया বেগতঃ 🖟 বংশিকা**ভিব্ই**য়া **তা**ণ र्वा विश्वपुर्य ॥ ७७: मर्गः সহসাকো বান্দেৰপুসাদত: ।
সুরাশ্চ সর্বে তৈলোক্য নবাপুর্নিক্পপুরা:।। ভগবানপি দৈত্যেন্দু॰
পুক্ষিপ্য সিকতার্ণবে।কালিন্দ্যা॰
ক্প মাধায তত্রৈবান্তরধীয়ত ।।
ইতি বাদনে ৭৫ অধ্যায়: ।।

बाननः जि व्याठिक पुः। छ० পर्यः। यः। नऽइ २ नीष्टः ० थर्यः ८ युवः १ । इंडानवः॥ यन्ष्टः ७ यनायजः १ । इंडि जिल्लास्तः॥

वासन्तवः क्षी मीर्घ मेकातः। यथा।
सेरणा देखानत्र इः णणथत्र विजनकासन्द्र पुद्धा वीकास क्षम् सन्।
क्षिणकि कर्राक का निर्कर स्य कणिखा इंड्रामिक मृत्राचारसावः।।
वासन्तरः भूः बन्धीकः। इंड्रम्बः।।
वासन्तरमा खी खीर छनः। वास्म
कास्भी क्षाकृत युगाः। इंड्रसदः।।

বামবেধশ্দ্ধি: জ্রী ষরাশ্যপেক্ষযা দ্বাংশ চত্থ নবন গৃহজ্য বিক্দ্ধোপি চলুঃ যদি শুক্র শনি স্বল জীবার্ক যুক্ত গৃহাৎ সপ্তন গৃহে ভিষ্ঠতি তদা নরাণাং অভিলমিত ক্লমাতা তব্তি। যদি তৃ সিত শনি ক্ল জীবার্ক যুক্ত গৃহাৎ দশন গঞ্মাইন গৃহে ডিষ্ঠতি তদা

নরাণা বরাশ্যগেক্ষ্যা যথা সং था अडेन नक्त विजीय गृहागा-পি চন্দু: পুচুর ফলদাতা ভবতি। যথা। সিত শনি হজ জীবার্কান্ত इन्द्र् नंत्राणाः वाय मृथ नवमस्थाः পীষ্টদাতাথ তেষা•। খ সূত নিধ নগ ক্ষেত্যু পুত্রার্থগোপি পুচুর **म्ड कल॰ म्याहामत्वस्य मूकिः॥** বামবেধত্বঞ্চ দূগ্ৰজন্মেতি এবমত্ৰে-তি বক্ষ্যমাণ বচনা ভ্যামেকার্থত্বা-(हा ४) ।। ॥ अथ मिक्ति त्व वानः বেধ কথন। লাভ বিক্রম থ শতুষ্ জ্ঞি: শোভনো নিগদিতো দিবা বর:। খেচ**রে: সূত তপো জলা**-छ रेग वंत्रकिन्ति यमि न विश्वतर**ण** ए। एन बचा दिशु ला छ थ जिश **75-म्याः गञ कलशुम उमा। या-**ত্মজান্ত্য নৃতি বন্ধু ধর্ম গৈ বিধ্যতে न विवुरेष यंति शुरेशः ॥ विक्रमाय রিপুগ: শুভ: হুজ: স্যাত্তদাস্ত্য সুত १मं रेग: यरेग: । क्रम विका इनगृन द्रभारमी किन्छ धर्मघृणिना न বিষ্যতে ॥ স্বান্থ শত্র মৃতি থাযগঃ माला का खरा न थल् विशुरु यमा। आजाब जि नवकाम्। रेनश्रन भुास्तरिंग विविधिक निक्रिक्तिः ॥ श्वाय वर्ण जनय मृत्रन श्विटा नाकः नायकभूरताहिन: मुनः। तिश्व त्रक्रु थ कल जिरेग येता विश्वास्त गणन-চातिन्नि निष्ट् ॥ आमुन्डाष्ट्रेम उर्राभ वृत्यायरमा विष्क आमुक्तिम्हणान-नः मृनः। निष्नास जन् कर्म धूर्म थी लान विति महक्ष्य (थारितः॥ हेनि क्यानिस्खुः॥

वाना छी नामानाछी। इंडानद्रः ।। मूर्गा। यथा। वानः विकक्ततलन्छ বিপরী হস্ত গীয়তে। বামেন সুখনা দেবী বামা তেম মভা কুষৈ: ॥ ইতি रिवी शुद्रात 8৫ श्रव्याय: II 🛊 II অপিচা বালান্ত বাল্য দাক্ষিণ্য ভাবাভ্যা নিপ প্রয়েশ। শাশান ভৈরবীণ দেবী মৃপুতারাণ ত**থেব চ**।। উট্টিষ্টভৈরবী চড়ী ভারা ত্রি-পুরভৈরবী । এতান্ত বানভাবেন যজেগ্রিপুরভৈরবী<sup>।</sup>।। সর্গত্র পিতৃ (मवारमी यमान्तवी ज मिक्न । (मवी व मिक्किया यमा खमार मा-ক্ষিণ্য সুচ্যতে ॥ या পুন: প্রামা-ना जु (पंवामीनान्ध भूबंजः) यक्त-ভাগ স্বয় ধরে সা বামা ভূ পু-কীর্ত্তিতা।। ইতি কালিকাপুরাণে ११ ज्या

वाभागतः भ् जागतियाः। यथा। भक्षजङ्गः थनुसकः भ्राप् **জ**লবোষিত•। বামাচারে। ভবে-। ন্তত্র বামা ভূবা যজেৎ পরাণা ই-ত্যাচারভেদতত্ত ॥ 🗱 ॥ তদাচার-वजाः नद्रकगमनः यथा । चर्षम त्रहिला विशा (वशान)(मविनः मना । ভুষ্টাচারাশ্চ বামাশ্চ ভে যান্তি नव्रकः धुनः ॥ इंडि वृक्षरिवदर्खं शुः क्जिथाख २८ व्यव्यायः ॥ 🗱 ॥ उट भुत्रः मा यथा। हजाता स्वि वनाः দ্যা: পশুভাবে পুঠিষ্ঠিতা:। বামা-म्। ज्यय व्याष्टाक्रा निरंद्य वीरत भुः ভিপ্তিতা:।। ইতি নিত্যাতক্রণ।। 🕸 ॥ अर्धि ड्रा (का (वर्ष ड्रा) रिवमन्दर सङ्ट। दिक्यापूछनः रेगदः रेमवाम्बाक्त मुख्यः ॥ मिक्गामूखः भ वाम वामार मिषाष मुखम। সিদ্ধান্তাদুত্তম কৌল কৌলাৎ প-ব্লভন্ন• নহি।। ইতি হ্বলাণ্বতজ্ঞে ২ খণ্ডণ ৷৷ ঞ্চ ৷৷ ভদাচারযুক্তস্য নিবিং क्षक्यानियथा। न मन्त्राट वास्त्रा महु नहारित्र कथकन। वामका-(ना वाकारण कि मन्त्र मान्त्र न **७क्स्यर्।। क्षा। उ**रम्करन्ना यथा । क्लाम्डामणी । यवामव नवनाउउ বুল্লেণৰ বিশেষতঃ। তত্ত্ব গুডাদু-क प्रमार जायू वा विमृद्धमधु॥ দেব্যাস্ত দক্ষিণে ভাগে চক্রপার্শ্বে

नित्वहरार । ७ उपुराह म् मून्त्रा नात्मुबाख करावन ॥ देवमाना मा-ক্ষিক শুদ্ধ ক্ষতিবস্য তু সাজ্যক । ব্রাহ্মণস্য গবা॰ ক্ষীর॰ তামেু বা विमृत्जबाधु ॥ नातिरक्रलामक का-त्मि मर्खिषाः पुरुश्माधनः । # ॥ कविय रिकारशास शोडी मादी ह দাতব্যা ভত্র ভধাে রধিকারাৎ ভদ ভাবে অনুকল্প বিধান । তথা চ। গো-क्कीब नाकारा प्राट मुवा भाकाक वाङ्बः। विनात्रक साकिकः मुवतः म् मु: रेशक्षेत्रां दिकः भूनः ॥ (जन म् मू-न। नान्कन्नः ॥ 🕸 ॥ व्यवार्गत्व । कवा॰ क्रीतः घ्उ छापु मधु रेमात्रगरेगदः-ব ৷ পৌয় তক্তব ধান্যসম্ভব তক্র নির্মিত ।। সহকারভব দেবি ত্রিবিধণ বহুভেদকণ ৷ মাদকণ ধর্ম मः जिमादक्षं भामी । मुलाइत ॥ জ্ঞানেন সংফ্ড ওভ মহাপাতক নাশন । তদ্মানে পাতকাভাবে। দি व्यञ्चाव विवयम्।॥#॥ नाकन्त्रकन्-ল রন্য দুব্য সেব্য ছিজাভিভি:। व्यभारकद्वाष्म्र(विण वेक्वदः (भव्)-उ वृद्धः ॥ अउन क्वियानि जन्नः মাদক দুব্য সেব্য মাদক্ষ্য পাপ হেতৃকত্ব্যুক্ত । তৈরবভল্পে। মদ্য ना न विना दूप यू कि कि अ

লসাধন । শক্তৈয় দত্বা ততঃশেষ श्वदाय अभियमस्य ।। अन्नुब्हा॰ मू জ্বিকৃত্বা শেষ মাজানি যোজাবে । (उन क्क बियामीनाः मूथ। मात्र व्यक्षिः कादः। न भारन। यनु भीषा भीषा পুন: পীড়া পতিত্বা চ মহীতলে। উত্থায ह পूनः भीदा भूनक्कं य न বিদ্যুতে ॥ ভক্ত চতুর্থাশুনি পর• ॥ 🗱 ॥ ভদুৰ চকরণে জাতিচিন্তা॰ ন স্ব-ৰ্য্যাৎ। মদিরায়া নৈথ্নে চ জাতি-চিন্তা॰ ন কার্যেছ। এতেষা॰ শোধ-নস্যাবৃশ্যকত্ব•। তথাচ। সংশোধন मनाहर्ये छोतू माराष्ट्र माधकः। याः हार्ग्य निष्किश्वानः मार कृषा छ विक मुन्ददी। माराषु मूर्थानुकद्भवु l!#|| তথা স্লপ্জায়া মস্যাবৃ**ল**্ডক ख् । उथार । मध् मश्म दिना पिति ञ्चल्याः नगाः दिः । बद्यास्त्रः ष्यथनाः माहि (भाषनः । माः मछ ত্রিবিধ ভেরণ জল খেলর ভূচর । মা সন্ত ত্রিবিখ প্রোক্ত দেবতা श्री डिकाबकः ॥ मर्माकः जितिषः व्हित উन्निग्धन मक्ष्मः। উन्ननः ত্রিবিখ নুৎস্যু শাল পাঠীন রো-हिंड ।। भूबीय कफेरेक ही न रेड-हाक रहीन यू उ। (१४)। भ्रीजि-

कब्रोक्षव मधामः उष्टजुर्विषः ॥ क्क-मुगि जानि मर्दाि अध्यानि विमू र्वाः॥ 🗱 ॥ ज्ञ्ज मा नकः। ला भिवाच व्वारभाय (भाषाकार्रे म् গোন্ডব॰। নহামা॰সাইক॰ প্রোক্ত• प्तवञा श्रीजिकाद्रकः ॥ 🕫 ॥ नाः-माजात वानुकन्नः। ममयागात । লবণাদুক পিণ্যাক ভিল গোগুন गांवकः। लाग्नकः गराप्ति गाःन পুভিনিধি: श्रृङ: ।। 🕸 ।। श्रू मृ जु ঘিবিধা। জলার্ণবে। ক্ষর• মণ্ডলা-কার॰ চন্দু পদানিভ॰ শ্ভ•। চাক্ शक गरमाञ्जाति श्वकंत्रारेम्य श्रुति-जः॥ भूकाकाला स्वजाया मूरेनुवा পরিকীর্ত্তিরা। ভানলে। ভুইখান্যা-निकः साद् हर्स्ीयः भुवन्तर्र । তেবাং সংজ্ঞা কৃতা মুদ্রা মহানোদ भुमायिनी ॥ 🗱 ॥ उत्थाः भावनञ्ज ষ্ঠতা তাত্তে। ওঁ পুতদ্বিক । রত্যানি मा'मः। वाञ्चक मिलामि भीनः। ভিঘিকো রিভ্যাদি মুদুর ॥ৠ। অপ শক্তিশোধন। তত্ৰ ভাবচ্ডামনৌ । यही भि उसना महार मिकिहा-निः भुकायाः । उदक्था मुदगः (इद जार उउन गमन यि । ज क्वी-नः कथः परिव भूजप्यः भन्नभागनीः । 🗐 क्रान् । मः माधन नुनाहर्य् । 🗷

কৌলিক ভস্তে। অভিষেকান্ডবেह-দ্ধি র্যান্ত্রসোচার বিন্দুভি:। বলা-দ্বা যত্নভোবাপি অভিষেক সনাচ রেং।। শ। অভিষেকমন্ত্রন্তা আদৌ वानी॰ नगूहार्या जिल्लारेय नगुष्क (त. । नमः नमः नमूहार्यः ইनाः শক্তি ভতো বদেখা পবিত্ৰী স্বৰু भकारत मन निष्यः कंक शिर्य। विक्षितागाः मगृहार्यः मुक्तिमञ्चः मू-(त्रचित्रा। उत्रा: कर्त १एउम्बुक्ता) মাযাবীজ সমদ্ধরে**।ইতি শক্তি**। শোধনা ॥ 🗱 ॥ ভতঃ শোধিত দুব্য মর্ঘ্যে ক্ষিপেৎ। খ্রিক্রমে অর্ঘ্য বি (थो। পূর্বশোবিত দুব্যন্ত ভাগুনৈব চ সংক্ষিপেৎ। স্বত্তত্ত্তে। আ म्। मृत्र मर्घाभाज निः किभा भूयः **७: मृवी:। ६७ (गाला** फव म्वाः **य**गञ्जम्म ७थः ॥ व्यर्गः मदा बर्ह्णानि नर्दनिक्षीश्वरत्रा ভবেৎ । ज्वथा हार्घ। मान्य (याणिनीनाः ভবেৎ প্রিय: ॥ মহাযোগী ভবে-(फ्रिक् भीठेनुका लिए कई रैयः। ভৈরবভজ্ঞে। পঞ্চমাৎ তু পর• নাত্তি শাক্তানা স্থ নোক্ষ্যো: 1 (कवरेन: नक्षेत्र वीनि निष्का ভব্তি সাধকঃ ৷৷ তেন পঞ্চ ম-कार्त्रिन भूषा कर्डगा। ইতি তম্ব- वारमानः

मात्रः ॥ वामाशीष्ठनः शृ शीनूत्कः। इंडि भद्रान्त्रका ॥ क्री বানাক্ষি वागठकुः ॥ मीर्घ-देकातः। यथा। कश्त्रः मध्यभाष्ठ यद्र পदि द हिं छ । सन्तु वा मा कि यु क वीबल माज्य उधिनुबर्ब ব্ধু ত্রি:কৃত যে জপন্তি। ইত্যাদি-কপ্রাখ্যভাত্র•॥ বামাক্ষী खी वामालाहना। इंडि (र्निजनः।। खी বানিকা **हिल्का । यथा ।** বস্ত্যন্ত চণ্ডিকা দেব্যা বানিকা মূ-र्ख्यः य्उाः। लक्ष्यास रामिका मुर्खि क्का पश्न रेडब्री ॥ नाग्न-দাহ পুর্গাম মনিরেষ্ করোত্য-ण । **ज**भ्किं । महानची (र्रह-म्या जाञ्च भूकरएट ॥ वारेष्ठववी সরস্বত্যা বামিকা মূর্ত্তি রীরিতা। ভদ্যা মন্ত্রণ পুরা প্রোক্তণ শল্পবর্ণা जू मा मृठा ॥ इंडि का निका भूता-(१ ११ व्यथ्रायः॥ বানিল: ত্রি দাস্তিক:।। বান:। ইতি নেদিনী।। वाभी खी मृगानी॥ वजवा॥ ब्रा-

সভী।। করভী। ইতি মেদিনী।।

ত্রী

नादीविष्णयः। वा-

भ्यो जुनहारो डिक यम्राः। इंडि मक्तिवाष्ठ्राकद्रगः॥ সমূহ:। ইতি শব ए निमुका ॥ বাপদণ্ড:। ইতি वायम् ७: ভর্তিদ্বিপকোষ: 11 বাযন ল্লী পিষ্টকবিশেষ:। তৎ-পর্য্যায়: । বুভোপায়ন ২ পুছেণ क : ১। ই ভি ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥ ञ्जी উত্তরপশ্চিমদিক্। वागवी ইতি ভটাধরঃ॥ वायुत्रमञ्जिमिगामि । वागवाः बि যথা। বিশ্বযুণ্মনুপক্তম্য গৰাক্ত-त्य। यायबाञ्च· रेनर्थ उञ्चः न गृही याट कषाइन। इंडि डिब्धा पिछडु॰ বাৰদ: পু॰ অগুক্তৃজ্বঃ। এবাসঃ। কাকঃ।ইতিনেদিনী।শেবস্যেৎ-পত্তি যথা। অক্ণস্য ভার্য্য শ্যেনী বীর্যাবস্তৌ মহাবলৌ। সম্পাতিক জটাযুক্ত পুভূতৌ পক্ষিসভ্ৰমৌ॥ जन्मां डि डॉनयन् गृथान् काकाः পুঞা জটাযুষ:। ইতি বহি পুরাণে বারাহপুাদুর্ভাব: ॥ #।। অস্ত্র काकि नार्भमा काइगः यथा। भाकं ণ্ডেয় উবাচ।গতে তু ভরতে তমিন্ রান: কমললোচন:। লক্ষণেন সহ ভাৰা ভাৰ্য্যা দীত্যা দহ॥ শাক

মূল ফলাহারে। বিচচার মহাবনে । একদা লক্ষ্য মৃতে রামদেব: পু-ভাপবান্।। চিত্রকুটে বনে দেশে रेवरमञ् अञ्चयान्त्रिः। সুষাপ স্ मूर्बंध ७७: काका पुराचारान्।। সীতাভিনুথ মভ্যেত্যবিদদার **স্ত** नाउत्र । विरायं। वृक्त माक्श हि-তো १८मी वायमाध्यः ॥ ७७: পु-वूष्का द्वारमा श्रमी मृक्षा द्वान-স্তরণ। শোকা বিষ্টাম্য সীতাণ তা-मूवाह कमलाक्षणः।। किमिषः छ-নান্তরে ভদুে তব রক্তস্য কারণ । ইত্যক্ত্বা সাচ ত॰ শ্রাহ ভতার• বি-ন্যান্ত্রি তা।। পশ্য রাজেন্দ্র বৃক্ষার্থে বায়স॰ দৃষ্ট চেপ্টিত। থেনৈত চুক্-ত কর্মাসুপ্তে ত্বি মহামতে॥ রা-মোগি দৃষ্টাত কাক তিমান্কোধ মথাকরোৎ। ঐবিকাক্ত শনাদায বুন্ধান্ত্রেণাভিমন্ত্রিত ॥ কাক মু-দ্দিশ্য চিক্ষেপ সো হভ্যথাবন্ড-यान्विः। সজिन्द्रमा मुखा बाह्रम् ইন্দুলোক বিবেশ হ ॥ রাগান্ত্র भुक्वन मीथ जम्यान् भूवितिम वि। विक्जिर्थक (करवान्तु। (करेव: मरेबी সমল্বিতঃ ॥ নিদ্রাম্য । ত॰ দুই॰ वाघरम्याभकाविषः । छलासी नर्द्धारेवञ्च (नवामाकाष्ट्रिष्ट् उ:।।

भूनः (मार्डिड) त्रामक त्राकानः
भूतः गढः। ज्राह्म त्राम महावा(हा खद्धानाम्भकात्रिणः।। ইতি
तुन्छः म भूग्रु त्रामः कमणालाहनः
। ज्ञानाचाय ममाख्याय ख्राक्तिनकः
भूग्रु त्मा। उठा जीविम मृश्रेष्मिन्
तम्प्रताक्षा महान् कृष्ठः। हेजुङ्कातमो सकः त्व त्मक मुखाय मखवान्।। खद्धक त्व त्मक ख्रु एकाक्रि ममः ययो । उठः भुङ्कि
मर्खिषाः काकाना त्मक त्व्वा।।
हिक्कुरेस्तकन भूणाहि (हजुनातनभार्थित। हिक नद्गमिः हभुद्रात्। ६०
ख्रायः॥

ৰাযসারাতিঃ পু• পেচকঃ। ইত্য-নরং॥

বাধসাদনী জ্রী মহাজ্যোতিযুতী
। কাকতৃণ্ডী।ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।।
বাধসাস্থা জ্রী কাকনানা।। কাকনাচী।ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।।
বাধসী জ্রী কাকোড়ম্বরিকা ।।
কাকমাচী।ইতি নেদিনী।। নহাজ্যোতিযুতী।।কাকনানা।। কাকতৃণ্ডী।ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।।

वायरमञ्जः ११ काणः। ইতি রাজ-নির্ঘট:।।
वायरमानिका छो कारकानी। ইতি भेषत्रञ्जावनी ॥ वागरमानी खी कारकानी। इंडऽ-सतः॥

উত্তরপশ্চিমকোণাধি-वागुः भू প্রভি: ।। বাতি য: । বাতাস ইতি ভाষা। उर्भर्यायः । धननः र স্পর্শন: ৩ মাতরিয়া ৪ সদাগতি: ৫ श्यनचः ७ गक्तवरः १ गक्तवारः ৮ অনিলঃ ১ আশুগঃ ১০ সমীরঃ ११ माक्ड: १२ मक्ट १० क्राय-পাণ: ১৪ সমীরণ: ১৫ নভম্বান্ ১৬ বাতঃ ১৭ পাবনঃ ১৮ পাবনানঃ ১৯ **नु ५% न: २०। इंडामद्रः॥ अङ्गर-**नुगाः २) थयामः २२ वाष्टः २० ধূলিধুজ: ২৪ ফণিপুিষ: ২৫ বাতিঃ ২৬ নভ:পাণ: ২৭ ভোগিকান্ত: ২৮ স্বকম্পন: ২৯ অফ্ডি: ৩০ কম্পল-শ্বা ৩১ শসীনি: ২৩ আবক: ৩৩ रुद्रिः ०८। ইতি मदद्रञाननी ॥ বাস: ৩৫ সুথাশ: ৩৬ মৃগবাছন: ৩৭ সার: ৩৮ চঞ্জ. ৩৯ বিহুণ: ৪০ পুरुष्णनः ४) न जः खतः ४२ निषा-সক: ৪০ স্তন্ন: ৪৪ পৃষ্ঠা প্রি: ৪৫। ইতি জটাৎর:।। 🗱 । সচ সৃষ্টি काल याकामाङ्जाउ:। यथा। ত্যাদা এত্যাদাত্মৰ আকাশ: সংভূত আকাশাদ্বায়ঃ। ইত্যাদি रिङ्खित्रीय <u>गु</u>ष्टिः ॥ 🛊 ॥ 🗟 १९४८ 🏲 -দ্বাযু রদিতে: পুত্রা:। তে সংর্ব অ-**शुकाः। इत्मृत (एवद्दः शुक्तिणः।** भावीबाडवाङ् (ङ्प्निम्भाषा। यथा । প্রাণ: ১। ভস্য কর্ম বহির্গনন•। অপান: ২। তস্য কর্ম অংখাগনন 1 वर्रामः ७ । उत्तर्भ क्यां व्याञ्क्षनः পুসারণাদি। সমান: ৪। তস্য কর্ম অশিত পীতাদীনাং সম• ন-यन । উদান: ৫। उत्राह्म कर्य উर्क्नु-ন্যন । উদ্লারেনাগ ৬ আখ্যাত: क्र्म १ डेबीनान म् डः । क् ब द्रः ৮ ফুৎকরো জ্ঞেযো দেবদৰো ১ বিজ্ ञ्चत्। न बहा जि नृ उक्षा भि भई-ব্যাপী ধনঞ্জয়: ১০। ইতি ভাগ वञ्घोकायाः ञ्रीभव्रवामी ॥ 🗱 ॥ অন্য । দ্বিভীয় মাক্তো ভূত। द्वगर्वाञ्चक विभुज्ञ । म्ल्र्डेवा **म**िष्ठक विष्ठु ख्वाधिरे विष्ठ ।। ইতি মহাভারতে আখমেধিকপ-र्च ।। 🗱 ।। उन्र छनाः । यथा । वार्या ब्रनियमण्यामा वार्डान म्र-তন্ত্রতা। বলং শৈঘুঞ্চ মোক্ষ কর্ম চেপ্তাত্মতা ভব: ॥ ইতি মহা-ভারতে নোক্ষধর্ম:।। 🕸 ॥ অনিয়ম-ण्यार्थः। यन्कामी उर्ण्यार्थः । वाद-ञ्चान । वाणिन्मियणानकानि २।

**च** उद्ध डा। गमनाको ७। दन• ८। रिमयुः ৫। भाकः मूबारिः ७। कयो। উৎক্ষেপথাদি ৭। চেষ্টা স্থাস পু-খাসাদি ৮। আত্মতা পুণেৰ<sup>্</sup>পণ চিদ্বাধিত্ব ৯। ভবঃ। জন্ম মরণে ১০ । इंडि उड़ीका ॥ 🗱 ॥ न्याप्यस्ट অস্য গুণাদি যথা। অপাকজানুফা-শীতস্পাঁস্ত প্ৰনে মত:। তিৰ্য্যগ্ৰ-भनवात्नरञ्जयः म्लोमी विक्तः॥ পূৰ্বনিত্যতাদ্যক্ত দেহব্যাপি ত্ব-निन्त्यः। भागापिस महावाय नर्याः ন্ত বিষয়ে। মত:।। ইতি ভাষাপরি-(इप: 11 #11 वायू॰ निक्र भया अशा-কল ইতি। অনুফাশী তস্পৰ্শস্য প্-থিব্যানপি সত্ত্বাৎ অপাক্ষ ইতি। व्याविक्रणार्गम् क्वामावि**न म**-ত্বাৎ উক্তমনুঞ্চাশীত ইতি। এতেন বায়ে বিজাতীয় স্পাৰ্শে দৰ্শিত: 1 ওজ্জনকভাবছেদক বাযুত্ত্বনিতি ভা-वः। এষ বাगुः म्यामि **विञ्**कः। वागु हिं न्यामं मद धृष्ठि करेन्य ब्रन्-মীয়তে। বিজ্ঞাতীয় স্পর্শেন বিলক্ষণ শব্দেন ত্ণাদীনা• ধৃত্যা শাখাদীনা• কম্পনেন চ বায়ে। রনুমানাৎ। তথাচ वायू न भुडाक खपाशु वक्तारा । वायू निंटिता १निटिता वा भवमानू क्ला निष्ठा उत्ता १निष्ठाः मभः

বেতক। সোলি ত্রিবিখঃ। শরীল্প-न्मिय विषय (जमार । अञ महीद्र-ম্যোনিজ পিশাচাদীনা । দেহব্যা পীতি। শরীরব্যাপক স্পর্শ গ্রাহ-क भिन्तिय वृक्। उह वायवीय क्शाहियू मस्या न्यानं रेमात वाक्षकः चार । व्यक्त अर्थित निवास वाक्षक वाजन वाजन्य। विषयः मर्म ষতি পুাণাদি বিভি। যদ্যপ্যনিভ্যো बायू महञ्बिधः जम्रहाञ्चिषाः भा-ণাদিনা ইভুক্তি মাকরে। তথাপি সংক্ষেপাৎ অত্ত তৈবিধ্যমৃক্ত পুাণ-खुक का क्षापि नाना ज्ञान वना ८ মুখ্নিৰ্গমাদি নানা ক্ৰিয়াবশাচ না-ना अंखाः वंडठ इंडार्थः। इंडि সিদ্ধান্তমূক্তাবলী॥ #॥ তস্যেৎ-পত্তি র্যথা। পুলস্ত্য উবাচ। পুরিশ্য कठेत्र॰ मुख्सा रिम्डा माजुः भूतन्ततः । मन्दर्भाष्ट्रभूथः वामः किनाउः-কর' মহৎ ॥ তেনৈব গর্ভ্ত দিতিজ বজুেণ শতপর্বণা। চিছেদ সগুধা तुकान् म करतार मृविस्त्रः ॥ माका-পি পাছ মা মৃঢ় ক্রম্বেতি সংঘর-1 इर छ। व मुक्का है हित्क क॰ जूग निहाइ क সপ্তধা ৷৷ তে জাতা মক্তো নাম দে-বা দিভ্যা: শভক্তো:। মাভ রেবা भहारत्न वन वीर्यं भूतक्याः ॥ ই**ि**  वामत्न ७৮ व्यवप्रायः ॥ 🛊 ॥ यमभी ভবতা প্রোক্তা মকতো দিতি সম্ভ-वाः। ७८ (कन भूई भामन् दि भकः मार्गिन कथाजाः।। भूनखा छेवाह । শ্ৰুষতা পূৰ্ব মকতা মুৎপত্তি কথ-যামি তে। স্বায়য়ুব সমারভ্য যা वश्रवृष्ठद्रः ष्ट्रिष्टः ॥ सायञ्ज्यमः भूत्रा **e ভূমনো নাম পিুযবুত:।ত**স্যাসীৎ नवता नाम भूध दिखलाकाभू कि-ভ: ৷৷ খ মূৎপদাতাথ স কামচারী সম॰ মহিব্যা বসুমান পুঞ্জা। র-রাম ভর্গ সহ কামচারী ভডো-**ৎম্বরাৎপাচ্যবতাস্য শুক্রণ।। পতি**। ভি: সমনুজ্ঞাতা: পপু: পুষর সং-স্থিত। ত॰ শুক্রণ পার্থিবেন্দুস্যম-न,माना उनाम् छ। भी छमा जिन শুক্রেণ পার্থিবেন্দ্রোন্ডবেন চ। বৃশ্ধ-তেখো বিহীনা তা জাতা: পত্ৰ্য ত্ত-পৰিনাং ৷৷ সুষ্ঠু: সপ্ততন্যাং স্তে ক্-দন্তো হথ ভৈরবং। ভেষাং কৃদিত শদেন সর্বনাপ্রিত জগৎ ৷৷ অ-थाकगाम जगवान् वृक्तालाकार नि তামহ:। সমভ্যেত্যাবুৰীদ্বালান্ नाक्रथुः महावलाः॥ ग्क्छा नाम गृयः दि ভविष्ठाक्षः विष्ठद्राः। ইতেऽ-ৰ মৃক্তা দেবেশো ব্ৰহ্মা লোকপি ভা-মহ: ।। তানাদাধ বিষ্টারী না স্তা-

**७**ष्टुःश• भुब्ज्वान्यान्निः विविस्य र । তেচাপশ্যন্ত ক্ষয় স্ত ছিত্তা ভাবিতা खथा॥ তा॰ মৃতা॰ अवरया मृष्ट्री कडे॰ कारेडि वाहिनः। भुकग्र बहु नना हालि मेथाबायस मात्रकाः॥ उ ह মাত্রা বিনা ভূতা ক্কদু স্তান্ পিতা-মহ:। নিবার্যিত্বা কৃত্রান্ লোক-नार्था नक्षुगान् ॥ ( द्वव ज म) । स्वर ক্ষাতা মক্তো হমী তপোধন। 🕏 । भृगुव की खंशिवप्रामि ठाक्ष्यम्प्रास्टर মনো: ॥ আসীমান্ধীতি বিখ্যাতো তপদ্বী সভ্যবাক্ শুচিঃ। সগুসার-বিম্নার্থণ ভস্য ভপসো দেবাঃ সংপ্রে ব্যবৃধ্। সা চাভ্যেত্য নদীতীর॰ ক্ষোভ্যামাস ভাবিনী ॥ তভো ২স্য পাচ্যবচ্ক সপ্ত সারস্বতে **জ**-লে। তা॰ চৈবলগ**লপ**ন্চা॰ মূনির্মা-স্কনিকো বধু ॥ গছালভ্জেতি ম্টে ত্ত্ব- পাপস্যাস্য ফল- মহৎ। বিপ্ৰ--স্থিষ্যতি হ্ৰো ভবতী• য**ন্ত স**•স-ि।। এवः मधु। अवि: श्रीमान् क्रगा-মাথ স্বমাশুন । সরস্বতীভ্যঃ সপ্ত ভ্য: সপ্ত বৈ মৰুতো ভবন্। এতে তবোক্তা মক্তঃ পুরা যথা জাতা विषष्ठा थि कहा महर्ष। (यवा॰ मुख

লম্মনি পাপছানি ভবেছধর্মাভূগেযো মহাদৈ।। ইতি বামনে মকতোৎত্তি न्।म ५२ वर्षायः॥ स। वन्।इ। वडः পর পুরক্যামি মক্তোগ্রীন্ পিতৃন্ गुहान्। भावारश निवहरेक्टव उँवहः न वह खथा।। विवहः भुवह टेक्टव भित्रवाष्ट्र खरेषव हा व्यस्त्री कि वारकारक भृष्डमार्गविठाविनः ॥ মহেন্দু পুবিভক্তার। বক্ত: সপ্ত कीर्खिजाः । # । সूर्याशिक भूषि र्नामा रेवपूर्डः भावकः मृडः॥ नि র্মথ্য পচমানো ২শ্নি দ্রয়ঃ প্রোক্তা ইমে १ গুয়:। অগ্নীনা পুত্র পৌতা চ চত্ত্বারি শশবৈব তু। মক্তামলি স (र्बंगा विष्क्रियाः मध मधकाः॥इंडि (मवी भूद्राण कालव।वड् नामाया-यः ॥ 🛊 ॥ ঊनशकान्यायु नानानि যথা। একজ্যোতিষ্ঠ ছি:ৰ্ক্সাতি স্ক্রি জ্যোতি র্জ্যোতি রেন্ । একশকো দ্বিশক্ত তিশক্ত মহাবল:।। ই-ন্দুক্দ গভাদৃশাক্ষ ততঃ পতিস ক্ৎপর:। মিতক সংমিত কৈব সুনিতশ্চ মহাবল:।। শত জিৎ স ত্যি ছিব সুষেণঃ সেন জিন্তথা। অন্তিনিত্রো হনমিত্রশ্চ পুরুমিত্রো হ্পরাজিভ: ॥ খাড্র খাড্রাই স্চ भर्छ। ह भक्रा धुतः। विधाद्राम नाम छथा (एवएएवा महावदाः ।। त्रेनृक **শ্চাপ্যদ্ক্ষ**শ্চ.এতে দশ মিতাশিন: াব্তিন: পুসদৃক্ষণ সভরণ মহা-**যশা:।। ধাতা** দুর্গো ধিতি ভীমি স্তু-ভিযুক্ত ত্বপাৎ সহ:। ঘূতি র্যপুরনা (य्रा २थ वामः काभा ज्ञाय। विद्राह ৷৷ ইভ্যেকোনাশ্চ পঞ্চাশন্মক্তঃ প্ र्बन खताः। इंडि वङ्गि श्रुवात गत-(छम् नामाध्रायः ॥ 🗱 ॥ वार्या विकादरहरू यंथा। व्यायामामणञ र्भार भुगउनास्त्रार क्रयाब्दाः গরাৎ বেগানাঞ্চ বিধারণাদতি-শুর: শৈত্যাদভিত্রাসভ:। কক ক্ষার কৰায় ভিক্ত কট্টক রেভি: পু-কোপ বুরেৎ বাযু স্থারিবরাগনে প রিণতে চামে হপরাহে পি চ।। #।। তস্য লক্ষণ । সাধ্যান স্তম্ভ রৌক্ষ্য সুটন বিমথন ক্ষেত্তে কম্প পু'তাদা: क्ष्रेषु शावनात्री मुनक विज्ञान ञ् म म्ल भू छनाः। भाक्षाः कर्न-নাদো বিষয় পরিণতি ভুস দৃষ্টি श्राक्षा विणाननाइ डेनानि प्रशन মনশন তাড়া পীড়নঞ্চ নামো-মানৌ বিষাদে৷ ভুন গরিসদন জ্ঞ্<u>ঞ</u> ণ রোবছরে বিক্ষেপাক্ষেপ শোষ পূহণ শুন্ধিরভা ছেমন বেপ্টনঞ্চ ৷ বৰ্ণ: শ্যাবো হক্লো বা ভৃতপি চ ম

হতী স্বাপ বিশ্লেষ সঙ্গা বিদ্যাৎ कर्मागुम्नि नुक्लिड भवनः मार कवारया द्राना है।। क्षा व्यन्त है। वहन-বিরসতা স্যাঘর্চস: কর্মাত্ত্ব ভব্তি वश्रव कार्णाः द्राजि निमानिवृज्तिः। ত্বচিচ পৰ্যতা স্যাৎ স্যাচ বৈৰ-ম্যমশ্লে রিভি পবন বিকারে লক্ষণ• (পु।क (भउ९ ।। 🗱 ।। उम्) भुगम-ত। काद्रनः। यथा। क्षः भीत्ना लघुः সূক্ষ कला २० विभन्नः थद्रः। वि-পরীতভূণৈ দুঁ বৈয় মাৰুভ: সংপু-শান্যতি॥ স্নিজ্ঞাঞ্ স্থির বৃষ্য বল্য লবণ স্বাদ্ধু তৈলাতপ সু:নাভ্যঞ্জন विख भाष्म भित्रा मञ्जूश्याम्पर्य-বৈ:। স্থি স্বেদ নিক্ছণোপশন্ন: স্নেহোপনাহাদিক পানাহার বি-হার ভেবজ মিদ বাত পুশান্ত नष्टा # ।। अ जु जिस्म विश्वान निना ह उन्। हर भूकाश भूणमानि यथा। श्रीरमा मकीया वागः भावृहि काल भूक्षभाठि । भाराराभमनः যাতি স্বযমেব সমীরণ: 11 শরৎ-काल वमा ह भिन्नः भार्ष्टो কফঃ চেব কোপ শমানেরায়া বিহা-बारा**द्र (म**वरेन:॥ समारेन र्य छ।काला लि विभव्नीटें विभग्नागः॥ #॥ न ह भागाति छात्न भक्षविषः । यथा ।

लिङ भक्ः ककः भक्रः **भक्**रा भन्या उतः। दायूना यञ नीया उठ वर्षास्य (भववर ॥ वायू कायू र्वन वायू वीगृ थीं जा नित्रीतिगा । वागू विश्व-भिष् সর্ব পুভুর্যযু: পুকীর্তিত:॥ বাহ্য নওল চক্রেষ্যথা রাজা পুশ স্যতে। তথা শরীর মধ্যে ২পি বাযু त्रकः भात्र। विज्ः ॥ वायुः शुागानि ভেদেন সচ পঞ্বিধঃ সৃতঃ। হৃদি भारता छार भगानः ममारमा नाजि-अथ्रगः॥ উদাनः क्शेरम्राम जुव्यानः সর্বশরীরগ:। যো প্রিলো রক্ত-সঞ্চারী স প্রাণো নাম দেহধৃক্।। সো ২ন্ন পুবেশযত্যন্তঃ প্রাণা কৈ-বারলয়'ত। স্পিতঃ স্কৃতে রো-शान किक्सप्रान्यकितानिमा। छेमा-া মান ৰ ভৃস্ব<sup>্</sup>ষ্**লৈতি পৰনোত্ত**-মং : তেন ভাষিত গী**তাদি বিশে**-বের্লি পুরন্তে।। উদ্ধৃতিত্ব গতান্ রোগান্ করোভি ছপিভ চ স:। व्याम পक्षामगठतः ममात्मा १ व नश्यवान्॥ अञ्चः भठि उद्धाः भ विकातान् विविनक्ति मः। छल्मानी সাদাভীসারান্ অপিত চ করে৷-**তि मः॥ भक्षामयस्या ६ भानस्य का-**লে কর্ষতি চাপ্যথ:। বাত মূত্র পুরী-ষাণি শুক্র গর্ত্তার্ত্রণনি চ।। জুদ্ধ 🕆 🖟

জ্কতে রোগান্ ঘোরান্ বভি ওদা-শুযান্। সর্বদেহচরে। ব্যানো রস **ज**ह्याहरनाम् ५७: ॥ (यमा मृक् जादन-শ্চাপি পঞ্চধা বেপ্টযত্যপি। কুল্পশ্চ व्यक्त द्वागान् श्राय**णः गर्दारर**ः গান্।। শুক্রদোবা: প্রেহাশ্চ ব্যা-নাপান পুকোপজা:। যুগপৎ स-পিতা শ্চামী দেহং হনু রসংশ্বঃ ।। 🗱।। তৎ পুক্তিকস্য লক্ষণ যথা। অল্লকেশ: কৃশোক্কো বাচাল শচল মানস:। আকাশচারী স্থপুষু বাত-পুকৃতিকো নর:।। 🕸 ॥ প্রাণাদি প-ঞ্বাব্না যথাক্ম স জান্তর্মাহ। প্রাণো হপান: সনান শ্চোদান ব্যা-तो ह वायवः। नागः क्षंण्ह क्कदा। (मवराखा थनअयः ॥ **± ॥ शु**ानस अ्षता वायु वंद्वानामधितः भुड्ः। নিত্য মাবাপয়েৎ সর্বান প্রাণিনা মুরসি স্থিতঃ ৷৷ নি:খাংসাছুঃসক: কৈর প্রাণে জীবং সমাশ্রিতঃ। পু-नात्राञ्रक्षता वायुः नुकाला शाहर ख्या ॥ भागरयुगिष्य भर्या८ প্রাণিনাণ প্রাণধারক:। প্রাণনণ জ-ক্তে যমাৎ তমাৎ প্ৰাণঃ পুকীৰ্ত্তি-जः ।। भारता हि जगवान् देनः भा-ণো বিফু: পিতানহ:। প্রাণেন ধার্য্য-তে লোকঃ সর্ব পুর্ণন্য জগৎ ॥ इिन्त्रियानि भुवर्खेष्ठ यावट भागानि-লে হৃদি। নাষ্ট্রন দৃশ্যতে সর্বণ ত-मार नागड तकारर ॥ दक्तताका যথা শ্যেনা গতো ইপ্যাক্ষ্যতে भूनः। अनवक् ख्या क्रीवः भागा-**भा**तिन कृष्ठाउ ॥ अलानयः स्था হার॰ মনুজানা যুচো খ্রমঃ। শুক মূত্র বুজে বায়ু রপান তেন কীর্ত্তিতঃ ।।।।। পীত ভক্তি সময়ত রক। পিত্ত ভক্তিমান স্মান্থতি গা-ত্রেদ্রমান লাল লাক্ ভঃ।। স্লামো নগ্ৰিম্মীপঞ্: কোষ্টেচ বাতি নৰ্ব ভ∷খন• গৃহাতি পচভি কিরেচয**ি** মুঞ্তি ॥ 🕾 ॥ স্পন্দেরত্যধর• বক্তু• নেত্রগাত্র পুকোপণ:। উছেত্রয়তি মর্মাণি উদানে। নাম মাত্তঃ॥#॥ वज्ञात्वा दिनान्यज्ञञ्च वज्ञात्वा वज्ञाधि পুকোপণঃ। প্রীতে হিনাশকশ্চায वार्ष्कात्राहरू उथा।। 🛊 ॥ वा-युना जानानि। निव्रता नानिका-পুান্ত নুদান স্থান মুগ্ৰে। নাভেঃ शाहरुवा यावहशानम् श्रुकी विंडः ।। भद्रीव्रव्यागरका व्यानः भागः **गवन नायकः।** डेप्नाख नाग इंड्रुऽ-कः कूपांकाचीनान हिन्दा। क्रतः ক্ষুধিতে চৈব দেবদন্তো বিজ্ঞিতে। খনঞ্বভিতো নেঢ়ে মৃতস্যাপি ন 🛚

मूक्षि ॥ ज्ञादाधि उठ उम्रा बागरउन्प्रिय (गाठद्राट । 🕸 ।। उट-সাহোহাস নি:খাস চেষ্টা খাতুগ-ভি: সমা:। সমো মোক্ষে গতিন-जा॰ वारयाः कर्माविकात्रज्ञः ॥ इंजि जूथदाष: ।।कः।। जथ दिशुववायुखनाः । পुश्वारका मधुतः कारता विद्यानिह करतः एकः । दित्रम् (गोत्रदोकानि করোত্যপ্ষোষধীষু চা। ভগ্নোৎপি-श्चे का जारि। यु ताग चेग्यू माहक्ट । স্মিপাভজ্ব খাস ত্বনেবাশে বি-ষ ক্রমীন্।। কোপযেদানবাতঞ্ঘন-म चा ७ का द्रभ ।। 🗱 ।। मा कि स्भा मा-क्छ। वन्। कक्षाः मभायाजकः। सञ्जूत भाग नाशी ह कवायानुत्रामा लः যু:।। রক্তপিত পুশমনোন চ মাক্ত कालनः। गञ्जनानि की हाना । इन-कः नापकात्रकः ॥ अ॥ ना कित्ना वि दशु वर्ग बनारवाग्र विवर्ष्णनः। कया-यः (नायनः ऋर्य)। (दाहरना दिनास्त नवूः॥ अभाः नघुद् विमम्रोमञ् रिवमनाकात्रकः। मर्बमुखाय्यिकवाक পুভাব রস বীর্য্যক্ৎ ॥ दुगम खा-পণ স্ভাচ্য দাহ শোথ ত্বাপহ: ॥ 🗱 ॥ 'छे ब्राता माक उः त्रिप्सा म्-मु यावुद अव ह। क्यायानुद्रमः भी उः जर्तारायमुकालनः ॥ की कर

বিষাৰ্ত্তানাং হিতো দাহ ত্ৰাপহ:। শীতাধিক: সনীহার: সবিদ্যুৎ স্তন यिज्ञ नान्।। #।। विश्ववायू त्रनायूष्ऽः भागिनाः रेनकामायक्ट । नर्बर्जु নিন্দকো হন্তা ক্ত্যোৎপাত পুর:-जतः ॥ # ॥ वऽजनवायुख्याः । म् ৰ্চা দাহ ত্ৰা ৰেদ শুমগ্ৰো ব্যজ-নানিল:। তালবৃষ্টনযো বাত জি<sup>-</sup> साय भगता वधः॥ वः भवऽजन-জো বাতো কক্ষোফো বাভগিত্তদ: । বালব্যারন মোজস্য সঞ্চিকা-দীন্ ব্যপোছতি।। মাযুরা বস্ত্রজা বৈত্র। বাতা দোষত্রযাপহাঃ। ইতি রাজবল্লভ: ।। # ।। অপচি । তত্র বাংযাঃ স্বৰ্প মাহ। দোৰধাত ম वानीनाः (नका भीवुः मभीव्राः । व्र-**জোগুণনয: স্ন্নো কক্ষ শীতো লঘু** শ্চল: ॥নেতা স্থানান্তরে প্রাপ্যিতা भीयुः वाभुकात्री॥व्यन्ताहः। उँ८नाः হোচাস নি:খাস চেষ্টা বেগ পুবর্ত্ত নৈঃ। সম্যক্গত্যা চ ধাত্না মিন্দ্রি यानाक भारितः॥ जनुगृङ्गा अविकृ তে। इतरयन्तिय विख्यूक् । त्राकार्थन ম্যঃ স্ক্ষো কক্ষ: শীতো লঘু শ্লঃ ।। खात्रा मृषु र्यागदाश मःरयागाषू-ভगार्थकृष् । माइज्राउहमा गुङ: শীতক্ৎ সোনসংশ্ৰাৎ॥ বিভাগ-

कद्रशाहायः अथानः (नाय मःशुर्हः। পক্ষাশয কটা শক্ত্বি শো্ৰাছি স্প-ৰ্লনেন্দ্ৰ ।। স্থান বাতস্য ত্ৰা-পি পকাধান বিশেষতঃ। একো বা-যুঃ পিত্তবশাঘান স্থান কর্মভেদৈঃ পঞ্বিখ: ॥ 🗱 ॥ তেষা॰ বাযুনা॰ नामान्यार । উদান স্তদনুপুাণঃ স মানো হপান এব চ। ব্যানকৈতা নি नामानि वार्याः ज्ञानभुर्छप्छः ॥ ॥ অर्थानानानीना॰ ञ्चानानऽार । কণ্ঠে হৃদি তথাধস্তাৎ কোষ্ঠ বাহ্ন-र्मनामारा। नकानिम महीत्र श्लो ক্রমেণ প্রনো বসেৎ।।।।। অথওে-षा कर्याणाइ। उताना नान रख्यु মুপৈতি প্রনোত্তমঃ। তেন ভাষিত गीजामिन्द्जिः स्रिक्त मः ॥ উদ্ধৃ' হতু গতান্ রোগান্ বিদধাতি विष्मषञ् । (या वायुः भागनामारमो সুথ গছতি দেহধৃক্ .. সো ২ ম भुरवणगञ्जः भुग्गाः कामावनम् তে। পুरमः सक्छ मुरेश हिङ्गा यामारिकान् गरान् ॥ आमनकाः শ্যচর: সমানো বহি সংগত:। সো হয়॰ পচতি তজ্জা॰শচ বিশোবান্ বিবিনক্তি হি।। তজ্জানিত্যাই অ-मकान्। क्रम भन म्बानीन् स्थक्कः (द्राञीकार्थः ॥ म मुस्था विज्ञानाः। •

কাপ্তশেষ: !!

তিসার গুল্মান্ করোতি হি। প কু।শ্যালয়ো হপান: কালে কর্যতি চাপ,য়ং । স্থীরণঃ শক্রুত্র শুক্র गद्धार्डवामः थः । कुष्वस्र अकंष्ठ (ज्ञागान् (घाजान् विख अनामुगान् ॥ णुकापाय भूमिशाण वर्गनाशाः न भूकाभजान्। मह। क्टन्याहरू-চরে৷ ব্যানো রস সংদহনো যতঃ॥ মেদাসক্ শাবণকাপি পঞ্ধা চেষ্ট-যভ্যপি। গভ্যপক্ষেপণোৎক্ষেপ नियायात्रयगापिकाः ॥ श्रायः म-र्दाः किरा उभिन् भू विकाः नहीं রিণা । পুস্যক্র চাছহন প্র ণঞ্চ বিরেচন•॥ ধারণঞ্চেতি পঞ্চৈ-তা শেষ্টা পোকা নভৰতঃ। কুদ্ধঃ স সকতে রোগান্ পাুয়শ: সর্ব দেহগান্।। যুগপৎ ফপিতা এতে (एइ॰ जिन्हु) त्रमः मयः । (एइ॰ ভिन अयु भातरययु दि अर्थः। ইতি ভাবপুকা**णः**॥ **वागुएकजुः खी ध्विः। ই**তি हात्रा-वनी ॥ বাযুগঙঃ পু॰ অদ্বীর্ণ:।ইতি ত্রি-কাওশেষ:॥

वायू ७ न्यः भू व अभा ज्यः। इंडि

ত্রিকাণ্ডশেষ: ॥

বায়পুত্ৰ: পু ভীম:। ইতি ধন छाः॥ इन्मान्। यथा। इन्मानः अनामृत् कांगुन्धा महावनः । ইতি তস্য দাদশনানস্ভোত্র ।। वायुकन ही मक्षनुः॥ कत्रका। ইতি মেদিনী।। বাযুভক্ষ্য: পু॰ সর্প:।ইভিরাজ; নির্ঘণ্ট:।। বাতভক্ষকে তি ॥ বাযুরোষা জী রাতি:।ইতি জটা-थ्रः ॥ वायूर्बजा न् আকাশ:। ইতি भद5न्मिका ॥ বাযুবাহ: পু॰ ধুন:। ইতি হেন-ठन्मः॥ वायुवाहिनी जी वायुनकातिनी-**मित्रा। इंडि देवराकः**॥ वायुषः भूः भू भू भू भू भू वायुषः। काल-বাযুষপোনা ইতি ভাষা ৷ তস্য खनाः । वाय्रवा वृः इरमा द्रयाः म-ধুরো ধাত্রদান:। ইতি রাজবল্লভ: বাযুসথ: পু॰ অগ্নি:।ইতি ভরত:।। বাযুসথা পু॰ অগ্নি:। ইত্যমর:॥ বাগুম্পদ ল্লী আকাশ:। ইতি धनक्षयः ॥ वात् क्री कलः। इंडामतः॥ वागुनाकः भू । तथः। ইতি जि । वाज 🗐 । मनिवाभाजः। ইতি

ह्महम्मुः॥

সম্হ:।। অবসর:। ইত্যমর:।। স্ব্যাদিবাসর:।। ছার: ।। इतः।। अतुर्कः।। क्रनः। इंडि (मिनि ।। # ।। अथ वाद्रांभाः मः-क्छा । চর: সৌম্যো গুৰু: किल्लु। गृमू: णूका इदि धुर्वः। णविक मा ৰুণোক্তেযো ভৌন উগু: শশীসন: ।। চর ক্ষিপু: পুষাতব্য পুবেষ্টব্য मृमु भुदेवः। साक्षारिगुन्छ या**ज्**वाः क्राधिय डांगकाङ्कि छः ॥ नृशां छि ষেকো হগ্নিকাৰ্য্যঞ্চ সূৰ্য্যবারে প্রশ-স্যতে। সোনে তুলেপ যানঞ্জ-यं।हित शृहािक ॥ रेमनालठाः শৌৰ্যুদ্ধ শস্ত্ৰাভ্যাসঃ হুছে তথা । সিধ্বি কাৰ্যক্ষ মন্ত্ৰক্ষ যাত্ৰা চৈব বুংধ খ্তা।। পঠন দেবপূজা চ बखाम् (। छद्रश<sup>•</sup> छद्रो । कन्। । मन गङारतारुः मुक्क नाड**् न**गरः ত্রিবা।। স্থাপ্য গৃহ পুবেশশ্চ গ-জবন্ধঃ শনৌ শূভঃ ৷৷ ইতি পাক্ডে ७२ व्यव्यायः ॥ 🕸 ॥ सावननिनव-षात्र भूद्खिः मृथ्गाप्याविष (त्रव। भूगंऽनिकारि । मृठकानि **পরি**ছে (मा मिन नामास्त्रा ख्या। म्यान গুছভুক্তিশ্চ সাবনেন পুকীৰ্ভিডা ॥ অত্র দিনাবিপদ্য রব্যাদে ভৌ

गुः दिनः वात्रक्रभः भावनगगरना-ক্ত• ব্যবহারোপি তাদ্গেব। তিথি-বিবেকেপি। ভবতু বার যোগে ব্যস্ত তিথে গুহণ ওস্য দিনদ্বয়ে ২সম্ভ বাদিত্যক্ত। সাবনদিন মাছ সুর্য্য-निकान्तः । উन्यारनान्यः ভाना ভৌম সাবন বাসরা:॥ ভৌমেতি পিতাদি দিনব্যাবৃত্ত্যর্থ'। যত্ত্ব রেখা পুর্বাপরযো রিভ্যাদিনা জ্যোতিষে বারপুবৃত্তি ক্কা তজ্যোতি:শা-স্ত্রোক্ত কাল হোরাদি জ্ঞাপনার্থ মিতি জ্যোতিস্তাত্ব বছ্ধা বিবৃত । रेनवाल्यम नर्वम् (नाम्यः मर्वमा म-ত:। উर्याउननाथाः हि দর্শনাদ-र्मन द्रायः। रेग र्गव मृन्गुर छ जासान् স তেখা নৃদ্ধঃ মৃতঃ ।। ইতি বিষ্ণুপু-রাণাৎ স্বন্দশন গোগ্য কালাদেব বারঘটক কর্মাস সূত্র কাল:। ইতি জ্যোতিস্তন্তু• ৷৷ # II কৰ শোভন-वाताः। व्रविः भारमा सङ्गलम्ह वृर्धा জাবঃ দিত: শনি:। এতেয়া॰ নান-তো বারা: বিখ্যাতা: সর্বকর্মসু।। **गिट्यन्त दू**व कीताना॰ वादाः मर्देख শোভনাঃ। ভানু ভূষত নন্দানা॰ শুভক্মসূকেম্বি।। ইতি জ্যোতিঃ भागदः ॥ 🗱 ॥ व्यथं वात्रविना । ক্ত মুনি যন শর মুখল রামভূর্

বারবেলা ন শুভাশুভ কার্য্য কর भाग।। वार्वावना ।। कालमा (वला ব্রিতঃ শ্রাকি কালানলাগাপুথ या गर्जनम्। मित्न निमाया मृजु বেদ নেত্র নগেষু রামা বিধুদভিনৌ **। कालावला । इंडि क्यांडि** उदुः॥ 🗱 ॥ ज्या वर्कादुः यथा । ब्रावी वर्जा: ठठ: शक्ष भाग मध ष्य • उथा। अर्ज य ह प्रयोक्षिय वर्ष বাণ তৃতীযক।। গুরৌ সপ্তাষ্টক। চৈব ত্রিচত্তারি চ ভার্গবে ॥ শনা-वाम् । अक (भाषक भारत वर्डियर ॥ 🗱 ॥ द्रावी यष्टं विष्यी (वपः अ कवाद्भ विजीयकः । वृत्य मध खदो পঞ্চ ভূগুবারে ভূতীযক ।। শনা বাদ্য তথা চান্ত্য রাত্রো কাল বিবর্জাবেৎ। ইতি সারসংগুহঃ ।। 🗱 ।। अथ जीना॰ भूषमञ्जूष वाया॰ वाद्रकव॰। व्यानिट्या नि-ধ্যানায়ী মোনে চৈব পতিবুতা । (वन्त्र) बङ्चवादा ह वृत्य (भी-ভাগ্য যেব চ ॥ বৃহস্পতৌ প্রি: গ্ৰিশন্ শক্তে পুগ্ৰাতী ভবেছ। माने वक्ता जु विद्या भूषमधी রভাষলা।। ইতি ম্প্রেশ কৃত লাগ্ৰ-গুহ: ॥

ভाস্করাদিযামার্দ্ধে। পুভবতি হি | বারক॰ ক্লী কপ্তস্থান॰।ইতি হারা-বারবেলা ন শুভাশুভ কার্য্য কর | বলী ॥ হ্রীবের॰। ইতি হেমচন্দু: ॥ বারবেলা ॥ কালস্য বেলা বারক: পু॰ অথবিশেষ:।ইতি বিশ্ব:॥ অথগতি:॥ নিষেধ্কে ত্রি যো গজেনদু। দিনে নিশাযা মৃত্

> বারকী পু॰ শতু: ॥ চিত্রাশ্ব: । পর্ণাজীবী ॥ প্রোধি: । ইতি নেদিনী ॥

> বারকীর: পু॰ শ্যালক:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥ বারপাহী॥ বাড-ব:॥ যুকা॥ বেণিবেধিনী॥ নীরা-জিভহ্য:। ইতি নেদিনী॥

> বারক্ষ: পু॰ পক্ষী।ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ:॥

বারক: পৃ॰ খরাদিমৃপ্টি:। মূট্ ইতি বাঁট্ ইতি চ ভাষা। ইতি পিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যামূণাদিব্ভি:।।

বারট॰ স্লী ক্ষেত্র°। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ:।। ক্ষেত্রসনুহ:। ইতি শব্দ-রলাবলী।।

वात्रते खी रु.जी। ইकि एक प्रमुः॥ वात्रतः बी शुक्तियथः। ইकि त्र-मिनी॥ रुखवाततः। ইकि करे। धतः ॥ श्रामनका लवात्र निरस्थायथा । न प्रव खण् विश्वानः मीममान्छ वाद्रत्यः। न माजानः भूमः स्मा-भद्रनिन्मा थ्यक्रत्यः। ইकि त्रो-

यद्रः ॥

র্ম্মে উপব্লিভাগে ১৬ অধ্যায়ঃ॥ বারণ: পু• হস্তী। ইত্যমর:॥ বা ণবার:। ইতি শব্রত্নাবলী।। वात्रगवुषा खी कम्णी। इंज्यानद्रशा বারণবল্লভা জ্বী কদলীবৃক্ষ:। ইতি ত্রিকাওশেষ:॥ वाद्रवनी जी वाद्रावनी।कानी। ইতি হেনচন্দু:॥ বারত্র॰ ক্লী চর্মাবন্ধনী। ইতিকেচিৎা। वात्रवृषा छी कम्ली। इंडि मद-त्रज्ञावनी ॥ वात्रव्या खी कम्ली। इंडि भदः द्रवादनी॥ দ্ৰী জনৈ:সৎকৃতা বারমুখ্যা বেশ্যা। ইত্যমরঃ ॥ বারস্থার• ব্য পৌন:পুন্য• ৷ যথা । বার্যার মুহ: **শখ্দিতি শ**দ্-ब्रञ्जावनी ॥ वाद्रला खी वद्रहा ॥ **रः** भी। इंडि (इमहन्मु: 11 वात्रजीकः भुः वनुष्ठा। वादुई इंडि थाउः। इতि ममहदादनी॥ বার্যিতা পু পতি:।ইতি হলা-युष: 11 वाद्रदश्ः जी वादम्था । ইতি (र्गठमुः॥ বারবাণঃ পু• ল্লী বঞ্কঃ। ইত্য 🏻

বারবাণিঃ পু॰ বংশীবাদকঃ। ইভি ত্রিকাওশেষ: ॥ উত্তনগাযক: । 考 ७ न पत्र ज्ञावनी ॥ धर्माध्यकः॥ সমূৎসর: ৷ ইত্যজ্যপাল: ৷৷ এত-चाउ भवगी याहिः॥ বারবাণি: জ্রী বেশ্যা। ইতি ক্রি-কাওশেষ:॥ वात्रवाणी जी वात्रम्था। इंडि भक्त्रज्ञावली ॥ বারবিলাসিনী স্ত্রী বেশ্যা ৷ ইতি भवजुन्नवनी ॥ वात्रमृन्स्त्री जी (वण्डा । इंडि श्वावनी ॥ বারসেবা জী বেশ্যানা কমঃ।। তাসাংগণ:। ইতি জটাধর:॥ বারস্ত্রী স্ত্রী বেশ্যা।ইত্যমর:॥ পু॰ সমুদুঃ। ইভি বারা:নিধি: भद्रद्वावनी ॥ বারাণসী ত্রী নোক্ষদাপুরীবিশে-यः। वनात्रम् इंजि हिन्ती ভाषा। তৎপর্য্যায়ঃ। বরাণদী ২ কাশী ৩ শিবপুরী ৪। ইতি হেমচন্দুঃ ॥ জিতুরী ৫ তপস্লী ৬ বর-ণদী ৭ তীর্থরাদ্ধী ৮ কাশিকা ৯ ৷ इंडि नद्द्रवावनी ॥ उन्। मा-श्वापु । यथा। के अत्र के वाह। भन्नः

ভহ্ তম (ক্ষত্ৰ মন বারাণদী পুরী । मर्खिषा (सव ज्ञानाः मः मात्रार्गव তারিণী ॥ ওত্র ভক্তা মহাদেবি ম-দীয়া বৃত্ত নাশিতাঃ ৷ নিবসন্তি না ু হাজান: পর• নিধ্ম মাছিতা:॥ উত্তম• সৰ্ব গীৰ্থানা• স্থানানা মুক্ত: मक य८ । ज्ञानाना मुखय ज्ञान অবিমৃক্ত পুরু মন।। স্থানান্তর প বিত্রাণি ভীর্থান্যায়তনানি চ। শ্ম-শান সংস্থিতান্যের দিব্য ভূমিগতা-नि ह ॥ ज्वांकि तेन म नग्न मखदी-(क ममानगः। अमुका उद्यभागि। নুকাঃ পশ্যন্তি চেতসা ॥ শ্মশান নেভদ্বিখ্যাত মবিমূক্ত নিভিশুভে । काला जुङ्गा बगरिनः मः इद्राम्। ब भून ति॥ (मवीम नर्बछ्याना छ। ন পুষ্ভর মন। মন্ডকা ন্তর গছন্তি মামেব পুবিশন্তি তে ॥ দত্ত **इ.स. इ.स. १५४ ७ १४ छ** क्**रक** ग्रा **थ**ान मध्यमः द्वानः मर्बः उवाकस्यः ভবেर ।। क्यांख्य महत्युंचू यर शा-পণ পূর্বিঞ্চিতণ। অবিনূক্তণ পুবিষ্ঠ-ন্য তৎ দৰ্ব• বুছাতি ক্ষয়• ॥ ব্ৰাক্ষণাঃ क्वियारिकातः मृत्या स्वर्णसङ्बाः । खिर्या ल्लाहाक ख हारने। सन्दीर्धाः भाशयानयः ॥ कीनाः भिशीषा-का रेन्डव (य हार्स्य भूग श्रीकृतः।

কালেন নিধন প্রান্তাঃ স্বিসুক্তে वद्राग्ता हन्तु।क्रियोवय अःका म-হার্বভ বাহনাঃ। শিবে মম পুরে (मित कायास उज मानवाः ॥ नावि-মুক্তে মৃতঃ কশ্চিনরক যাতি কি निवी। देखबानूगृशेका कि नार्व या-. ন্তি পরা পতি ।। মোক সুদুর্লভ মত্ত্বা সংসারঞ্চাতিভীয়ণ । অশ্মনা চরণৌ হত্ত্বা বারাণন্যা॰ বসেমর: ॥ দুর্ল্লভা তপসা চাপি প্তস্য পর-নেশ্বরি। যত্র ভত্র বিপন্নস্য গতিঃ मः मात्र (माक्ष्मी ॥ शुन्नामाङ्कार उ (श्उत्रन रेमलन्यु निम्नि। यभु-বুলা ন পশ্যন্তি মন মাধা বিমোহি-जाः॥ अविसुकः न शण्यां अस्। (य তনসাব্তা:। বিমূত্র রেডসাং নধ্যে (उवाः वानः भुनः भूनः ॥ इन्।मा-নোপি या विद्यान् वस्त्रिष्टिम् भेटि-রপি। স্থাতি পর্মণ স্থানণ যত্র পত্বা ন শোচিতি।। জন্ম মৃত্যু জরা-, যুক্তণ পরণ যান্তি শিবালয়ণ। অপুন ম্ব্রণানা হি সা গতি মোক্ষকাল্লি-ণা ॥ বা পূপ্যকৃত কৃত্য: স্যাদি-তি ন্ন্যন্তি পণ্ডিতা:। ন দানৈ নঁ ত-श्रांভिশ্চ न यदेख मांशि विमुया II পুাপ্যতে মতি বংক্টা যাবিমূজে जु ल छार छ। नाना वर्गा विवर्गाण्ड

ठाखानाम्। ज्विश्वजाः॥ किन्तियः भूर्नरम् । य विभित्धेः भाउरेक खथा l ভেষজ• <del>প</del>রম• ভেষা নবিনুক্ত• विषु वृंधाः॥ श्रविम्ङः शर्रः उद्धान মবিমৃক্তি পর পদ। অবিমৃক্ত। পর• তত্ত্ব মবিমুক্ত• পর• শিব• ॥ क् इ। रेव रेनिशिकी मीका सविम्राङ दम डि (य। (उदा॰ एट भद्रम॰ छ।-नः दरामारस्य भवः भवः॥ भुराभः नि वः भूगाः हि स्थाला २० हिमा লয:। কেদার: ভদু কর্ণঞ্জ গ্রা পু-स्र (भव ह ॥ अक्.क्व कर्रकारि र्वर्षना मृत्याक्ष्यनः। मृत्याप्रक बहु।यः का हाम्य र मुख्यः।। भूजाः ষ বিষয়েশান গোরণ ভদুকর্ণক। l এতানি পুণ্যস্থানানি হৈলোক্যে িশুভানি তু**।৷ন যাস্য**ন্তি পরানে कः वाद्रापम्याः ख्या मृजाः। वाद्रा-ণস্যা• বিশেষেণ গঙ্গা ত্রিপথগানি-নী।। পুবিষ্ঠা নাশ্যেৎ পাপ• জন্মা-ন্তরশকৈ: কৃত । অন্তর শুভগা গঙ্গা শাদ্ধ দান ওপো জগ: ।। वुकानि नर्व क्रियट वाज्ञानन्त्राः সুদুলভ । যজেও জভ্যামিত্য দ-माञ्चहंगरञ श्मतान् ॥ वायू ७कः क সতত বারাণস্যা জিতো নর:। यि भारता यमि माठा यमि दा यः

र्थिता नदः॥ वाद्रावनीः समाभागः পুনাতি সকলং নর:। বারাণস্যাণ মহাদেব শেষ্টান্তি হবন্তি বৈ॥ সর্ব পাপ বিনিম্কা তে বিজেয়া গণে-খরা:। অন্যত্র যোগ জ্ঞানাভ্যা• সম্যাসাদ্থ নান্যতঃ 🗓 প্রাপ্যতে তৎপর জান সহসূতির জন্মন:। বে ভক্তা দেবদেবেশ বারাণস্যাণ বসম্ভি ৈ ৷ তে বিন্দন্তি পর নাক্ষ নেকেনৈৰ ভূজন্ন। যত্ৰ যোগ ख्या ड्यानः मृङ्यि (द्वाक्तम डक्समा II **অ**िमुक्तः उनामानः नागन्नःहरू পোবন । জ্ঞানজ্ঞানাভিনিষ্ঠানা পর্মানন্দ নিমুত্তা ।। যা গতি বি-হিতা মুক্ত সাবিন্ত নৃত্স্ত। বানি চৈবাবিনুক্তস্য দেহে ভুক্তানি क्ष्यमः॥ भूत्री वात्रागमी (उड्डाः ञ्चात्रराज्या श्रीका भूजा। रव माकान्यशास्त्रा (महास्त्र सगरी व র: 🛚 ব্যাচষ্টে তারক বুন্দ ত্রিব হা-বিমুক্তকে। যত্ত**্পর**তর তত্ত্ব-বিমুক্ত নিতি শুক্ত ॥ একেন কমন। (प्रिव वाद्रापन)। जनाशनुगाए । जुनत्वः नाज्यित्वः ह क्राय हिव মূর্জনি ॥ যথাবিমুক্ত মাদিতে। বা-রাণ**ন্যা॰ ব্যবজ্ঞিত । বা**রণাা তথা চাস্যা নধ্য বারাণসী পুরী ॥

ভবৈ ন ছিত ভদু নিভামেন। বিমুক্তক। বার/৭ম্যা: শাসং স্থান• ন ভূজ ন ভবিষ্যতি ।। যত্ৰ নারা্য-त्या प्रदेश विश्व विष्य विश्व विश्य विश्व विष **७० (२वा: স**गक्षत्री: अ यस्कृत्रग রাক্ষসা:।। উপাসতে নাণ সভত। (प्रदारतः निजामहः। महानाज-কিনো যে চ যে চ বৈ পাপক ভনাং॥ বারাণসী সমাসাদ্য তে যান্তি গ-রনা॰ গতি॰। তফা অন্ফ বিবশো वरमरेष एदगा छिकः। वादा पम्याः नः शास्त्राज्ञान वज्ञ विमुठ्छ।। কিন্তু বিহ্বা ভবিষ্যতি পালৌঘ হত চেডসং। যথা নারায়ণঃ শ্রেষ্ঠা দে বানাং পুক্ষোত্তনঃ ॥ যথেশ্বরাণাং গিরিশ। স্থানানাং বৈ তদুত্তমং। रैयः मभाताशिष्ठा कृतः পृत्रंभिष्यद হুম্নি।। তে বিন্ধ্তি পরং ক্ষেত্র स्विमुक्त• श्विवाचय• । (य स्ववृद्धि **अना कालः** वम्छि ह भूबी विभागा তেষাণ বিনশ্যতি কিপু নিহান্ত চ পাতক। আচক্ষ্ মিনং স্থানং সে বিত শোক্ষকাল্পি ।৷ মৃভানাঞ্ नुनर्हम न ज्या ज्वनागदा। ज-ম্বাৎ সর্বপুষত্মেন বারাণস্যাও বসে-মর: ৷৷ শোণী বাপ্যথ বাযোগী भाभी वा भुगुक् इमः। इंडि कोर्प्य

२৮ व्यथायः॥ अ।। व्यन्हा वाही-भनी नाम भूबी भक्ताजीत्व मरनाकत्व । वजनाया खणा वास्म गंखा हाला-कृष्डिः नमा ॥ स्रयः वृषयुक्त उद নিত্য বসতি গোগিনা । স্বা প্রীতিকরে৷ যোগী স্বয়ণ চাপ্যাত্ম-हिडकः॥ विषर् इ। मा भूबी निज्रः **ভर्मरयाग दलाफ्टा। मिव्यः कानः** দদাত্যেষ ভত্র যো সি্যভে জন: ॥ उत्य चयः महात्तवः मःमात्र गुचि মুক্তযে। স ভূত্বা পরনো যোগী ग्ड छब ভবाস্তরে ॥ সূল: =रेनद নির্বাণ মাপ্রে।তি মারহা সমঃ। যো-গযুক্তো নহাদেব: পাৰ্বত্যা সহি-उ: जना।। (नव शक्तर्व यक्तानाः মানুষাণাঞ্চ নিত্যশ:। জেয়ে। হর: পুকাশক ক্ষেত্ৰ তচ পুকাশিত।।। ন ভত্র কামদো দেবো ন চিরাছ প্শীদতি। আরাধিত শির্ণ ভক্ত্যা निर्द्यागाय भुनीमित ॥ भोर्यप्रानिय-জ্জিত। সাতু পুরী তত্র ন পছতি। যোগ স্থান মহাক্ষেত্ৰ ক্লাচিদ্পি **ना**क्त्री ॥ जामम॰ यूवरयाः (क्व-निनः वाद्यागमी जू ये । कथिउः নাভিদ্রে চ বভতে ২মরসভ্নো।। इंडि कालिका भूदारा ৫० अधायः ॥ 🗱 ॥ 🛠 ॥ व्यथ का नीयां वा विविः।

স্ত উবাত। যাত্রা পরিক্রমণ বুছি कनानाः श्विकामग्रा । यथार् সিদ্ধি কামানা সভ্যবভ্যা: সুভো मम ॥ वशम উवाह । निभामय নহাপুাক্ত লোনহর্ষণ বৃদ্মি তে। যথা পুথনতো যাত্ৰা কৰ্ত্তব্যা **যা**ত্ৰি-कि मुंहर ।। महन भारते मन्त्राय চক্রপুষ্করিণীজলে। সন্তর্গ্য দেবান্ সপিতৃন্ ব্ৰাহ্মণাংশ্চ ভপৰিন: 11 वाहिष्ठाः पुनेभनीः दिक्षुः मखनानिः म इयद्र । नमकृष्ठ ७ ७ । गहिर मुष्टे पूर्णिविनायकः ॥ ज्ञानवाणी मूभार्यमा निमायमा छाउ। १ई-বে**ে।** তারকে**শ॰ সমভ**ার্চ্য মহা-কালেখর ওত:।। ওত: পুন দভি পাণি নিভ্যেষা পঞ্চতীর্থিকা। দৈন-ন্দিনী বিধাতব্যা মহাফলমভীপ্ সূতি:॥ 🗱 ॥ ততোবৈখেশরী যাত্রা कार्या नर्वार्थ निष्करम। दिनलाएछ-मानाक कार्यत याजा भुरञ्जः॥ ক্ষাণ পুতিপদণ গুাপ্য ভ্তাবধি रथाविशि। অথবা পুতিভ্তঞ্ কে-ত্র সিদ্ধিনভীপ্নুভি:॥ তত্তত্ত্বীর্থ কৃত সুনে স্তভলিস্ কৃত। ছন: । নৌ-নেৰ যাত্ৰা স্বাণ: ফল প্ৰাপ্নোতি যাত্রিক: ॥ উঁকার পূথম পশেয়ে म्टाम्यार्थ्याः कृष्णारकः। विभि-

ষ্টপ নহাদেব° ততো বৈ কৃত্তিবাস-अ· !! द्राञ्चभकाच हत्नुम• (कनाद्रक **ত** ত। द्राप्त प्रदेश वीतिमः গছেৎ কামেশ্বর॰ ততঃ।। বিশ্বকার্মা-শ্বরঞ্চাথ মণিকণী স্বরণ ভতঃ। অ-বিমুক্তেশ্বর• দৃষ্ট্বা ভতো বিশ্বেশ ম-ৰ্চাৰ্থ ৷৷ এষা যাত্ৰা পুষত্নেন কৰ্ভব্যা ক্ষেত্রবাসিভি:। যস্ত ক্ষেত্র মুবিত্বা-পি নৈতা॰ যাত্রা॰ সমাচরেৎ।। বিম্বা স্তাপে ক্রাব্যান্ত ক্লেরোটাটন স্ত-काः। 🚓।। ञ्रष्टायञ्च याञान्ता कर्छ-वता विध्नान्य ॥ म्हानः भावजी-শক্ষ তথা পশুপতী শব:। গহেশো নৰ্মদেশক গভন্তীশ: সতীশ্বর:।। অপ্তন স্তারকেশত পুত্রপ্তনি বিশে-यकः। मृण्यात्यञानि जिङ्गानि न-হাপাপাপশান্তবে।:#।৷ অপরাপি শ্ভা যাত্রা যোগক্ষেমকরী সদা। সরবিয়োপহজ্রী চ কর্ত্তা, ক্ষেত্র-বাসিভি:।। শৈলেশ পুথন বীক্ষ্য वद्रभात्रानभूवंक । यान्छ नक्रन कृद्। मुष्टेवाः मञ्चामध्यः ॥ स्री व-'ভীর্থে সুস্নাতঃ পশ্যেৎ স্বনী'ল শী-श्वद्र•। माजा मन्ताकिनीजीर्थ पुष्ठ-(व)। मध्यमञ्जदः ॥ **भरम**ुक्तिवगु পদ্ৰ্যাখ্য তৰ ভীৰ্থকৃতোদক:। প ঞ্চুডুৰুদে স্নান্বা জ্যেষ্ট্সনি ভ**তো** 

**२**ईरंग्ट ॥ हजुः भगु पु क्ला ज् प्राचा **(**हर ७८३) १६(४**८ । (हर** म्राशु जु যা বাপী ভত্রোপস্পর্শনে কৃত্তে ॥ শুক্রেশ্বরণ ভড়ঃ পশ্যেত্তৎক্পবি-शिकामकः। मखशाक नद्रः ग्राज्ञा ব্যায়েশ পূজ্যেন্ত তঃ ॥ শৌনকেশ্বর **সণ্ডে ভূ স্থান ক্রা ভতো ২**ছবেৎ l अपूर्वण° सहा जित्र• क्दा राजा भिमा॰ नतः॥ कृष्टिम আয়তে ভ্यः **ञःशास्त्र मृः**श्याण्यत् । समात्रज्ऽ প্রিপদ যাবৎ কৃষ্ণা চতুর শী।।। এতে ক্রেণ কর্নণালেকেলাযভনা-निर्देश हिमा थाका नह दु कु न ভূষো প্রভিজায়তে ॥ 🗱 ॥ আন্য যা वा नुकर्ख रिवाकामभागज्ञा । ष्यीदु ऋ ७ मृगाठः शत्मा मि श्री श्रु शे **শ্বর•।। উর্দীশ• ত**কোগছেওভস্ত **নজনীশ্বর**া আঘাট্টাশ ভতো দৃষ্ট্রা ভাবভূতেখর ७७: ॥ वाक्वीम ন্থালে: গ্র ভত্ত ত্রিপরাম্বন । ভতো নন:পুকানেশং পুভিকেশ ম্থে বুজেখা। মুদাল্দেগর তবাং ভিলপরেপর ভতঃ ৷ ব্যাত্রকাদশ বিস্থানা মেষা কার্য্যা প্রয়তঃ। ই-मा याबा शुक्रवाला क्षुव शुक्ष যামর: 1 ঞ ৷ অত:পর• পুরক্সমি लोदीयाजा रन्छमा ॥ म्हनम

ज्ञीयाया॰ या याजा दिवन्**किता।** गालुकाडीर्थ नुदाय ज्यनिमी विकाः वुष्त्रर ॥ (कार्श्वामाः नदः माजा काक्षा॰ को बी॰ मगईतर । भोजागुरभोती मःभूकत द्धानदाः भागः कृत्जानरेकः ॥ **७७: शृ**काद्य-গৌরীঞ্চ তত্রৈবচ কৃত্যেদক:। সুন্ধো विमानगत्रायाः विमानाक्तीः उ-ভো বুজেৎ ॥ সুদ্রাভো ললি ভাতীর্থে व व जामहर्यकुडः। ब्राज्ञा च्यानी जीर्थ कु खवानी: भित्र मूखरार ॥ নক্লা চ ভতো হভাৰ্য্য বিন্দুভীৰ্থ-कृ जामरेकः । उठा गहिस्सावसी॰ हित्रवाची ममृद्धार ॥ देगाः राजाः নর: কৃত্বা ক্ষেত্রে হিমিম্কিডমনি ! ন দুংখৈ রভিভূষেত ইংামুত্রাপি जबहिर ॥ क्ष ॥ वर्गार शुक्तिः চতুথী হ পূজা॰ বিশ্বেশিতঃ সরা। गुःश्रु १७ । उन्प्रणाप्पः वि या-দকা মূদে 🛭 ভৌনে ভৈরব যাত্রা চ कार्याः शाउकशाविधी । व्रविवादा রবে যাঁত্রা॰ ষষ্ঠা। বা রবিসংযুজি॥ তথ্যে রবিদন্তন্যা সর্বিয়োগশা-ख्या । नदन्ता सथ दा यहता हजीया-वा भ जावरा।।क।। अउग्रना याजा रेव कर्खवा। প্রিবৎসর । প্রাতঃ न्नान विशायासी नदा भक्ष दिनायः

कान्।। नमकृषाथ विष्यणः दिख निर्दाण में अर्था । अर्थु इम्र याजाः हि कद्रिया श्योधनाष्ट्रया। गृही-ত্বা নিষ্মঞ্চেতি গত্বাথ মণিকর্ণিকাণ । नाजा (मोतन हागड) मनिक्गी न महर्ष्य ।। कञ्चलाञ्च उद्भी नारगी वामुकीमः भुगमः ह। भर्बाउमः छा मृष्ट्री गङ्गाकमेव मन्त्रथ ॥ **७७**स निवाः म्थ्रे। ब्रामक्ष्यतः ততঃ। ততো বৈ সোমনাথঞ্চ বরা-হঞ্চ ভতো বুজেৎ ॥ বুন্ধেশ্বর• ভতো নত্ত্বা নত্ত্বাগন্তীশ্বরু তত্তঃ । কশ্য পেশ নমস্ত্ত হরিকেশবন স্থা। বৈদ্যনাথ ভতো গড়া ধ্রুবেশ নথ বীক্ষ্য চ। গোকংর্শিণ ভঙো হভ্য-हा हाहेरकण मरथा वुरब्र ॥ यश्च *(*क्रश्रक्तरणथ मृष्ठ्रिति कीक्ष्मश्र বং। ভাবভূতং ততো নত্বা চিত্র धवतः छठः ॥ हिवदःहाः भूगः মনাথ ভব: পাশুপর্ভাশর । পিতা-নংহেশ্বর• গত্বা ততস্তু **কলসেশ্বর•।।** हरमूनञ्च वीदारमा विद्यामा श्ली শএব চ। নাগেশ্বরে। হরিশ্চল্দু শ্চি-स्थामितिनायकः ॥ (मनाविनायकः শ্চাথ দুষ্টব্য: সর্ববিমূল্থ। বশিষ্ঠ बामारति ह मूर्जिकशदबादुर्छो ॥ म्हेरवते यञ्चः कामातः सङ्ख्य विनामाने । भीनाविनायकः नायः কৰণেশ॰ ভতো বুজে ।। জিসদ্ধ্য-(णा विणालाको शर्याणा विश्वता-ন্ত্ৰা। আশাবিষায়ক শ্চাথ বৃদ্ধা-দিত্য স্ততঃ পুন:।। চতুর্বক্রেখরণ লিক্ বুন্ধেশস্ত ততঃপর• ৷ ডভো মনঃ প্রাশেশ ইশানেশ ভভ:পরে ॥ চণ্ডী চণ্ডীশ্বরৌ দৃশ্যৌ ভবানী শ ক্ষরে তত:। দুণ্টি পুণম্য চ ভরে। ताबदाक' भनहर्षर ॥ नाक्नीन खाडा ६७)ई। उठ स नम्नी धरः। পরার্ণেশ মথো নত্বা পরদূব্যেশ্বরু তত:।। প্তিগুছেশরক্ষাপি নিয়ল-কেশ নেবচ। মার্কণ্ডেমেশ মভ্যন্ত্র তত অপ্রবেশ্বর !! গকেশোর্চ্য ख: ठा ड्वानवाला भान ममाठाद्र । मन्त्रिकणः उद्यक्षणः सङ्काः (नार्थद्रः ७ ७:॥ म् ७ मानिः सर्वे मान् त्याक्तमः भूगामञ्जू ३: । अ**त्रञ्**षु-শ্বর• নত্ত্বা অভিমৃক্তে প্রণ ততঃ ॥ বিনাগকা' স্ততঃ গঞ্জ বিশ্বনা**ণ ত**-ভো ব্রেছ। ভভো নৌন বিস্ক্রা-थ नक्षान मुनीद्वार ।। अनुग्रमः याज्यः यथावम्यनायाक् जा । न्रनाः ভিন্নি ক্রয়া শক্তেঃ প্রীযতা নন্যা বি-ভু:॥ ইতি নজা সমহার্য ক্লণ বৈ-মুক্তি মণ্ডপে। বিশান্য বাবাভ্তবন

िञ्चाभः भूगुराबदः॥॥॥ मःभूषिऽ॥ বাসর• বিষ্ণে বিষ্ণুভীর্থেব্ সর্বত:। कार्या। याजा भुगाइन महाभूगा म-मृक्तरय ॥ नवम् ।। शक्षर न ।। क्ष स्ता खञ्च जबहायर। मृथ तमुशिनाठः ত্ত্বেন ভবেদস্য পূজনাৎ।। শুল্লা পূর্ব মিমা যাত্রা: কর্ত্তব্য স্থার্থবাসিভি:। शर्बत्रिश विष्णायन कार्यः। याखाण अर्डेड: ॥ न वक्षुः **रिवमः अ**र्यग्रह বিনা যাত্রাণ ক্ষুচিৎ কন্তী। যাত্রাদ্বয়ণ পুষত্বেন কর্ত্তব্য পুতিবাসর । আ-দৌ স্বৰ্গভব্নক্ষিণ্যা স্ততো বিশ্বেশিতু ভূবিং। যস্য বন্ধ্যুৎ দিনং জাতং কা **শ**্যা• নিব্সতঃ সতঃ॥ নিরাশাঃ পি-ভব্ন স্তস্য ভিমিলেব দিনে প্ভবন্। न मक्षेः कालमर्ला न मखी मृज्या-भू.हे•॥ म मुष्टे खब निवरम विस्था**ण।** यद (निक्कः। मई शिष्यु मारी म न इंगाजा वादाद नह ॥ मनिक्गी छ যঃ সাতো যো বিশ্বেশ নিরৈক্ত। সভ্যু সভ্যু পুন: সভ্যু সভ্যু স-**७** १ भूनः ।। मृत्मा वित्ययात्रा নিভ্যু॰ স্থাভব্যা নণিকর্ণিকা। ব্যাস উবাচ! সূতক্ষান্দ্রিন শুদ্ধা কাশী: गाश्या गडमः। नःता न नितरः यां कि क् इाभाग्यमह्मुः ॥ इंडि द्यानीथए७ ३०० व्यथायः॥

বারাণসেয়: ত্রি বারাণসীজাত:। বারাণসী শদাৎ ঞেয় পুত্যয়েন নিম্লয়:।।

वात्रामन क्ली बलावातः। छ८-भर्यग्रयः। वाःमहन २। इंडि बिकाक्षण्णयः॥

বারাহ: পুশ নহাপিগুীতকবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ বরাহ এব বা-রাহ:॥ ভৎসম্বন্ধিনি ত্রি॥

বারাহকণী জ্ঞী অশ্বগদ্ধ। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥

বার।হপত্রী জী অশ্বগন্ধ। ইতি রাজনির্ঘটঃ।।

वाबाहाको जी पत्नीवृष्णः। ইতি
ভাবপুকাশः॥

वाजाशे की वुकान्यान्य के मान्कास्वतं क्रां क्

বিশেষ:। যথা। বারাছী যমুনা গঙ্গা করতোঘা সরস্বভী কাবেরী চন্দুভাগাচ সিন্ধু ভৈরব সাগরা: পশুসান বিধানাথ সাগিধ্য মিছ-कन्नय ।। **इंडि व्**रमन्तिक्**यत्र**श्वा-ণোক্ত দুৰ্গাপূজা পদ্ধতি:॥ #॥ वदार्पियम् निकः। यथा। यक्त বারাহ মতুল ৰূপ যা বিভুতো इतः। णिकः भाभग्रययो ७व বারাহী• বিভুতী তনু•।। ইতি চণ্ডী ॥ অপিচ। বারাহ্ ৰূপিনী দেবী। म्राक्ष्य वसुक्र वा मुख्या सु পুভা শৃভা বারাহী তা নমা भाइ॰॥ इंडि वृश्तानिस्तियत शु-রাণোক্ত দুর্গাপ্জাপজ্তি: ॥ 🗱 🗓 বরাহক্রান্তা। চানালু ইতি থ্যাতঃ । उट्मर्य्यायः। वियुक्रमनिषुरा २ ঘৃত্তি: ১ বদরা ৪ । ইত্যমর:॥ গৃঞ্জি ৫ ৷ ইভি ভরত: ৷৷ শুকরী ১ ক্লোড্ডন্যা ৭ বিস্তুক্ষেনকান্তা ৮ दहारी २ कोभादी २० जिल्छ। ১১ বুলপুলী ১২ জেড়ী ১০ কন্য ১৪ गृष्टिका २० माचलाडी २५ मृहत्रक-न्तः २१ काएः २४ वनवानी ३३ ब्हिल्लानः २० वन्।: २० लग्जः २२ मझाबीर्ग्यः २० मस्मियः २८

वीदः २१ वाक्षीकमः २४ मूकम्हकः २० वृश्विरुष्ठा २० वृश्विरुष्ठा २० वृश्विरुष्ठा २० । व्यम्भा छनाः । जिङ्कद्वः । कर्षृद्वः । विष्ठ किष्ठ विष्ठ विष

दार्त की कला। ইত্যमतः॥ दी(१तः। ইতি (इस्कान्द्रः॥ मिदिला(व जम्र निर्विधियो। केणान काणि भृविद्यम् भिक्ति क ज्ञान काणि भृविद्यम् भिक्ति क ज्ञान काणि भृविद्यम् भिक्ति क ज्ञान काण्य स्व क ॥ २७ दुक्तः विवर्ष्व विक्षा क्ष्या था २०२ व्य-ध्रायः॥ क्ष्या कनकी काषा वर्गनी-यानि यथा। कनकी काषा वर्गनी-यानि यथा। कनको काषा वर्गनी-यानि यथा। कनको काषा वर्गनी-व्याविक्ष्य मृण्या क्ष्य क्ष्या नि गाराविक्ष्य मृण्या क्ष्य क्ष्य का क्ष्य क्षिक क्षय काषा २ उपरक २ क्ष्यूय ॥

भयदक्ताः २० वदास्कन्तः २७ ॥ वाजिः की वाक्॥ मप्रची॥ नजः

वक्षनी ॥ इछिवक्षनज्ञिः॥ वन्तिः । कंजिपीकि जाया । इठि (पिरिनीः कः द्राष्ट्रन्यकः स्टूरी ॥

বারি ফটক: পু॰ শৃঙ্গাটক:। ইতি ভটাধর: ত্রিকাওশেষক্ষা।

বারিকর্ণিকা দ্রী থমূলী। পানা ইতি ভাষা। ইতি শব্দরত্নাবলী॥

বারিকপ্র: পূ•্ ইল্লিশমৎস্য:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

वातिशतः भ् भ्यादेकः। ইতি
भवतावनी॥

वादिञ्चतुकः भूः भृङ्गिष्ठकः। ইতি ভিকাওশেষः॥

বারিক্রনিঃ পু• জলৌকা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

বারিচত্তর: পু• স্বস্তিকা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:॥

বারিচরঃ পু॰ মৎস্য: । ইতি ধন-স্তাম: ।। জলচরজস্তমাত্র চা।

বারিচামর জ্লী শৈবাল:। ইতি ত্রিকাওশেষ:।।

বারিজ লী দুেণীলবণ ॥ গৌর-সুবর্ণ ॥ পদ্ম ॥ লবঙ্গ । ইতি রাজনির্ঘট:॥

वातिकः श्रुः भद्धः। ইতি हमः हन्द्रः॥ भप्रकः। ইতি भद्रभावा॥ वाति उद्यतः श्रुः (यपः। ইতি শদ भावा॥ भूर्याः। यथा। यक्त भवातिगी॰ हिमा भागिनाय निकासूयः।
म॰क्का॰ ভार्याः। भी विभवी॰ ভायहा वाति वस्तिः।। ইতি भार्कएथयभूत्राणः॥

বারিত্রা স্ত্রী ছণ্ড:।ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষ:।।

वाबिषः क्षी वाला। ইতি শব্রজা-वली।।

वात्रिषः भु (नघः॥ मुखकः। ইত্য-स्रतः॥

वात्रिविः शृ॰ त्रमुद्दः। ইতি **भय**ः त्रञ्जावली ॥

বারিনাথ: পু॰ বকণ:॥ সমুদুঃ॥
নেঘ:।ইভিকেটিৎ।।

वाजिनिधः श्रु नगू मृः। ই ि শ
यज्ञावणी।।

বারিপথিকঃ ত্রি জলপথগানী।
বারিপথ গছঙীত্যথে ঞ্চিক পুত্যযেন নিয়নঃ।।

বারিপণী জী সম্ভিক। ইত্যার:

। অদ্যা গুণা: । বারিপণী হিনা

তিক্তা লঘী বাদী সরা পটুং। দো
যুহ্যকরী কক্ষাশোণিতজ্বশোধকৃৎ ॥ ইতি রাজবল্লভ: ॥
বারিপালিকা জী থুম্লিকা। ইতি
শুদ্দালা॥

वाविभुवारः भू निर्वादः। ইতি । कोगषदः॥ वाति भुनी जी वाति भगे । इंडि णक्या गा।। বারিবদর। ত্রী প্রাচীনামলক । হেনচন্দু:।। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।। বারিবাহ: পু বারিবালক প্লী খ্রীবের । ইতি 📗 ইত্যমর: ॥ श्रावावनी ॥ বারিভব॰ ক্লী শোুডোঞ্জন•।ইতি ক্রয়ানলী।। द्राजनिर्घण्टः ॥ বারিমসি: পু॰ মেঘ:।ইতি ত্রিক:-গুলেষ:॥ বারিমূক্<sup>ট</sup> পূ॰ মেঘ: । ইতি শদ র গ্রেম ।। উশীর । ইতি রাজ-রত্নাবলী ।। নিহণ্টঃ !। বারিন্ল জ্রী বারিপণী। ইতি বারিসম্ভবঃ প্ যাবনালশরঃ। **न**क ३ द्वावनी ॥ বাণিবেং প্ ভেলক:। ইতি বারী ন্ত্রী গলবন্ধিনী।। কলসী। बिहा अभागः॥ বারিরাশিং পু॰ সমূদু:। ইতি বারীট: পু॰ হতী। ইতি শদ্ ত্রিকাণ্ড:শ্বঃ॥ निर्धिः ॥ बलबार्छ जि ॥ 🕠 🎝 हन्तुः ॥ ध्यः ॥ ইতি ভূরিপুষোগঃ।। - ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। वातिवत क्षी कत्रार्फ्रकः। इंकि वाका क्षा कला। हेकि ताका

वादिवल्लं जा जी विनाती। इंडि ब्राजनिर्घणः॥ वाद्रिवामः भू भौखिकः। इंडि वातिवारः भू (भरः॥ भूखा। বারিবাহন: পু॰ মেঘ:। ইতি শ; বারিশ: পু• বিষ্টাইতি ত্রিকাও-শেষ: 🗓 वात्रमञ्जव क्षी नवस्।। (मोरी-ইভি রাজনিঘণীঃ।। ইতি ধরণি:।। বারিক্ছ॰ ল্লী কনল । ইতি রাজ- বারীশা: পু॰ সন্দুঃ। ইতি হেন; বারিলোনা পু বৰণা ইতি ছটা- বাক: পু বিজ্ঞান ই ডি काहावनी ॥ वाबिवनन ही भुाषीनानलकः। वाक्ठेः भू थिः। अञ्चारा । निर्यण्टः ॥ वक्नमप्रक्षिनि जि । यथा
। भन्तिम भूप्रमुख्यः वाक्नम् भूभन्गारः । উख्रवन जू जल्लाहे । यो

बाक्ष जूजन ज्वारः ।। উज्यव
ख्या यास्मा वाक्रम निर्मनः मूजः
। श्रक्षम्भाख्याः ।। देनि मार्मारः ।।

ज्यायायः ॥ इति मार्मारः ।।

वाक्नक्यं ही डलाम्यथननामि। তস্য শ্ভাশৃভ কালাদি যথা। य-भ উवाठ। भूमित मु छनक्ष व हन्तु **ভার। বলৈ** যুঁতে। সদৃত্ 🗷 ভবে দাৰ কালে তলিন্ বিধি: মৃত: ॥ **ज**म्हा जु क्र कखु: मः भूनं ख त्रातात्रथः । कर्कार्वे नूधनाङ्ख भोथाः ज् मकत्र जत्र ।। मीत যশোর্থ লাভন্ত মন্তেচ সুবহৃদক । বৃষে চ নিথুনে বৃদ্ধি বৃশ্চিকে নিক্জল ভবেহ ॥ পিতৃত্পিস্ত कन्यायाः ज्वायाः मञ्ज मक्छि:। সিংছে মেৰে খন নাশ জলস্য ब কতে ছিজ।। তথা চৈতেৰু লগ্নেষু वाक्ष कर्य (नाहिष्ट्। इंडि व-হিপুরাণে বাকণারাম পুডিষ্ঠা नामाध्रायः ॥

ৰাকণি: পু• অগস্ত্যমূনি:। ইতি ভিকাওশেষ:॥

বাৰণী জী সুরা।। পশ্চিমদিক্। ইত্যমন্ন: ॥ শতভিষানক্ষত্র: । ইতি হেমচন্দু:॥ গণ্ডদুর্রা। ইতি (मिनि ॥ हैन्द्रवाक्नी ॥ पूर्वा । ইতি রালনির্ঘণ্টঃ ॥ শতভিবান-क्षवयुक्तिवक्षवत्यामणी। यथा। ऋनर পুরাণে। বাৰুণেন সমাযুক্তা मार्थी कृष्ण अयामनी। गक्रायाः यि वास्त्रिक मूर्यायुक्तीकः ममा ॥ বাৰুণ শতভিষা। শনিধার সমাযুক্তা সা মহাবাৰণী মৃতা। গঙ্গায়া খদি লভ্যেত কোটিসুর্য্য-शुरेशः नमा।। भू ज्ञाग नमागूक। भारती भाउ जिया यहि। सहा सरह-তি বিখ্যাতা ত্রিকোটি সলমুদ্ধ-রেৎ ॥ অত্র সংজ্ঞাবিধে: সার্থক-ত্বায় নিমিত্তত্বেন মাস পক্ষ তিথ্য-লেখানন্তর মহাবাকণী মহামহা-वाक्गावृह्मभनीय। उन हिन्द নাসি ক্ফেপকে ত্রেয়েদশ্যা তি-(थो महावाक्णाः महामहावाकः न्। यथा यथः अत्याकाः। न हाता। ज्ञान अईडिया नार्या करन्तु नड-ভিষা• গতে। সপ্তজন্ম ভবেযু স্তা দুর্ভগা বিধবা প্রুব•॥ ইতি। ত্রযোদ-শ্যা• ত্ভীযাযা• দশম্যাঞ্ বিশে-य छः। भूमु विहे क्विविवाः नान॰

नाहत्त्रयूः कथकन ॥ इंडि পुरहरङा কাবালি বচনাভ্যাণ স্ত্রীণাণ শূদান भीनाक ज्ञान निष्यय इं**डि** वाह्यः l ভোগাৰ জিবতে যত্ত স্থান• যা-দৃছিক নরৈ:। তলিবিদ্ধ দশ-ম্যাদৌ নিভ্য নৈমিত্তিকে ন তু॥ ইতি ছেমাদ্রি ধৃত বচনেন রাগ-প্রাপ্ত স্থান এব নিষেধাৎনক্ষত্তে পি তথা কল্পনাৎ। আত্র ত্রযোদ-न्याः भूनीयाः भूबी इ उद्गकात নক্ষতাদিসত্ত্বে পরদিনে পূর্বাহ্লে তিথি नक्षव लाखिल न्दीपन এব মান। রাত্রাবৃপি বারুণ্যাদিষু शक्रायाः मानः। पिता ज्ञाःजो ह अक्रायाः गक्रायाधः भुगक् छः। ব্লাত্বাখনেধন পুণ্য গ্হেপুঞ্ত ভজ্জলৈ:।। ইতি বুন্ধাণ্ডপুরাণে भागानाजः भुजिभुभवाद । इजि তিথ্যদিতভুং॥ 🛊 ॥ বৰুণ প্ৰেরি-**७** वृन्तावनञ्च करग्रु उक्तकार्रे विनः मृड दवास्य भीख वाक्ती। यथा । পরাশার উবাচ। বনে বিচরত **তস্য স**হ গেলৈ মহাত্মন:। না नुषद्वाक्ष**णमः (णयमः ४३**०) ध् **७: ॥ निञ्चारिटाङ्कार्यः म्य** का-র্য্যেণান্বী বিচারিণ:। উপভোগা

।। অভীষ্টা সর্বদা यम् अमित्र दु॰ মহৌজস:। অনম্ভস্যোপভোগা-. য তস্য গছ মূদে শুভে ॥ ইতৃ কা বাৰণী (তন স'মধান মথাক-त्राट। वृन्तावन वरनाटभन्न कर-चु छक्ष का है रहा । विष्ठत्र व्यापः বোপি মদিরাগন্ধ মুক্তমণা আণ नः॥ ७७: कम्याट महमा मम् थाताः म वाक्वी। পতन्ती वीक्रा रिमाख्य भुषायी भन्नमा॰ मूम॰ ॥ পপৌ চ গোপ গোপীভি: সমবে-(छ। नुकादि छ:। छेशशीयभावा ण-विक गीठ दाम्य विमातरेमः ॥ ইতি বিজ্পুরাণে ৫ অংশে ২৫ व्यथायः ॥

वाक्गीवल्लाः भ् वक्गः। ইঙি भक्ताना॥

বাৰুণ্ড: পু॰ ফ্ণিনা রাজা। ইতি নেদিনী।। তন্মতে প্রগাঁবাদি:। শিস্ত বৃধাতো: উগুপুত্য্য নিয়ম-ত্বাৎ অন্ত্যস্থাদৌ লিখিত:।।

वाक्खः भू ही भारमक्शाजः॥
भारत्वन्यः॥ क्षत्रमाः। इतिस्मिनी
वाक्छी जी भाद्रभिछी। इति
भारति।।

र्थ मडार्थ वर्काः शुःह वाक्षी । वाद्यन्तु ज्ञी दिमविर्मवः । इंडि

भंदत्वा ली। यथाः शुष्ठाः माः गथ (भाःते व वाद्यन्ते (गोजनाः एकाः । वर्षानान व ्यत्विश्व शुः (शुप्रावित्याक्यापुषः ।। ইতি (ष्याः विश्व वृः ।। अधुनः ताक्षणाशे नाम-क (स्टॅलकरमणः ।।

বার্ণিক: ত্রি লেখক:। ইতি শক্
নালা॥

বার্চঃ পু॰ হংসং। বারি চরতী ভ্যথেডি পুভ্যবেন নিয়নঃ। ইতি নধাবোধব্যক্রিণং।।

বার্ত্ত লী অসার ॥ আরোগ্য । ইত্যনুর:॥

বার্ড: ত্রি নিয়াম্য:। ইত্যমর:॥

যুত্তিশালী।ইত্যুদ্ধপাল:॥

বার্ত্তক: পু প্রিক্রিশেষ:। বটের
ইতি ভাষা । যথা । বার্ত্তকো
বার্ত্তক শিচত্র স্ততো প্ন্যা বর্ত্তকা
শ্ব্রা। বর্ত্তকোগ্রিকর: শীতো জুর
দোষত্রযাপক: ॥ সুক্রচ্য: শ্ব্রুদো বল্যো বর্ত্তকাল্পণা ততা:।
ইতি ভাবপুকাশা:॥

वार्ता छी मूर्गा। यथा। श्रश्मात शानगाप्त्रवी क्षिकचां छ काउटा ८ । वर्जगद्धाद्व ग्रामा श्रि वार्ज भा वव शीय छ ॥ इंडि (हवी श्रुगण ८८ श्रमाय: ॥ वृद्धिः ॥ क्ष्ममूजिः ।

ইত্যমর:।। উদত্ত:।। বাতিজ্প:।। क्रगानि। इंडि मिनी।। বার্ত্তাকঃ পু॰ বার্ত্তাঙ্গঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষ: ॥ বার্ত্তকপক্ষী। ইতি ভারপ্কাশ: 11 বার্ভার্কী<sup>ত</sup>পু॰ বার্ভা**স:। ইত্য**নর-वार्खाकी ह्यी वृष्ट्छी। इंडि छाव-পুকাশ:।। বার্ত্তান্ত:। ইভ্যনর:।। द्धी वाज्यः স্ৰান্থ্যাত ফল-दृक्षः। বাশুন ইতি ভাষা। তৎ-भर्यायः। हिक्न्वी २ **त्रिः ही ၁** छ-को भी 8 मुझक्यिनी ए वार्जाकी ७ বাৰা ৭ বাভিষ্ণঃ ৮ বাৰ্লানঃ ১ नाकित्तृः २० हाइस्याप्यः >>। ইতি ভটাধনঃ।। বার্তির: ১২ বা-ভিগন: ১০ বছাক: ১৪ বছাল: ১৫ ष्यातः ३५। इंडि भवतद्वादनी ॥ कर्ववृद्धाको २१ क्छाबुः ३४ क्छे-প্রিকা ১৯ নিদ্রাল: ১০ নাংসক-कशारत बृडाकी २२ मह्यात्रिकारत हिक्कना २८ क्छेकिनी २৫ मङ्जी ২৬ কট্ফলা ২৭ নিশ্বণফলা ২৮ नीनकना २२ व्यक्ति। ३० माह-শুষ্টা ০) বৃত্তকলা ৩২ নৃপ প্রিংকলা oo । व्यन्ता एनाः । करूषः । कः

हाब् । ग्यूबद् । शिखनाणिद् ।

বলপুষ্টিকারিত্ব। ছদ্যত্ব। গুক্-पुः । वारत्रयू निन्ति उप्पः । ইতি त्राजनिर्घणैः ॥ व्यभिष्ठ । वन्नुपुरा মাৰ্ভনাশিনী চ শুক্পুদা শো-ণিতবৰ্দ্ধিনী চ। হল্লাস কাসাক্চি নাশিনী চ বার্ত্তা**ল রেবা গু**ণসপ্ত-যুক্তা।। সা বালা কফবাভগ্নী পঞ্চ সক্ষারপিত্তলা। সদাফলা তিদো-ষ্মীরক্তপিত্ত পুসাদনী॥ অঙ্গার পত্ন বার্তাহ্য: কিঞ্চিং পিত্তকরী মতা। কফ মেদো হনিলহরা সরা ল্ঘতরা পরা ।৷ ইতি রাজবল্লভ: । यस्ह । वृष्ठाकः साम् जीक्कारमः ফটপাক মপিত্তল। দ্বুর বাত বদা-স্থা 🖓 🖓 বিশ্বাক্তিক স্থান্ত প্ৰাক্তি কফ পি ভুষু ্দ্ম পি **ভ**্নর **গুড়া**। ংগৰু পিত্তল কিঞ্চিস্পারোপ-িলাভিত্ৰ ।। কফ মেদো হনিলা-न्त् २७,७ न्यू **री शनः। छत्रिय हि** শু দুখা সভৈল লবণান্বিত ।। অপর পেতব্স্তাক জক্লটাওস मः ভবে । उनमः मृ विष्णवि हिउ शीनक भूबं उ: ॥ हेि जाव-পুকাশ: ॥ यार्डाञ्चः भुः वार्डाकी। ইতি ত্রি

কাওশেব: 11

भर्यायः । (एत्रिकः रः गृष्णुक्वः 5 मुनिधिः ८ यथार्च्यनीः ৫ व्यवमर्गः ७ মন্ত্রবিৎ ৭ চর: ৮ স্পাশ: ১ চার: ১০। ইতি হেমচন্দ্র:॥ वार्डावरः भूः धानाउख्नारमर्थाः র্ত্তাণ্বহৃতি য:়প সারী ইতি ভাষা । उ८ भर्यप्रायः। दिविधिकः २। इंडप्र-নর ভরতো ॥ বার্ত্তি যঃ পুণ পুব্ভিজঃ। হর: ١ ইতি ত্রিকাওশেষ: ॥ বৈশ্য: ॥ বর্ত্তিকপক্ষী। ইতি রাজনির্ঘট:।। वार्डाकी। इंडि मदत्रवावनी।। वाबिकः क्षी डेकाम्कर्ककार्थ-वाकीकातकगुष्टः । यथा । উकान्-ক্তবুৰকাৰ্থ চিন্তাকারি তু বার্ত্তিকণ । इंडि (इन्हन्मः॥ বার্তিন জ্রী পক্ষিবিশেষনাবটের ইতি ভ্ষা। তৎপর্য্যাথঃ। বিষ্ণু-निकीर। इंडि हाबादनी।। वार्व्यः श्रु अर्द्धनः। ইडि जि-কাণ্ডশেষ: ॥ জয়ন্ত: ॥ বৃত্যুগ্র ক্ষিনি ত্রি। वाप्तंत्रः क्षां कृष्णवावीकः॥ पिकः পাৰভশন্য। কাকচিঞ্চা।। ভারতী । इति (विभिन्ने।। कविष्ठः।। खण् ়ে আমুধীজণ ইভি বিখঃ ॥ बार्छायनः श्रु॰ शुत्खकः। ७९- वार्षानः हा मूचिनः। हेण निरिनी বাজু বি

॥ उद्याउ भवनी वाहिः॥ लु (मनानन्ता। मा.जू मन्। दाद:। इंडि (महिनी।। ্বার্দ্ধক লী বৃদ্ধসংঘাত:॥বৃদ্ধস্য ভাব:॥वृक्षम् कर्म। ইতিমেদিনী॥ वार्षमुः ही ্বৃদ্ধাবস্থা। **৫**ৎপ र्यायः। वार्षक २ वृष्टवः ० आवि-র•৪। ইতি ফটাধর:॥ वार्ष्ठः भ् मगुपुः। ইতি बिकाखः শেব: 11 बार्क डव ही पुगी नवगः। इंडि ब्राक्रनिर्घणेः॥ वाक्ष्रीयः भू॰ वृष्णाकीयः। ইত্যনরः

বাজুবিক: পু॰ বৃদ্ধিলীবী। লভ্য-ভুক্। বাডিথোর ইতি সুদথোর ইতি চ ভাষা। তৎপর্য্যায়:। স नीमकः २ वृष्णाकीयः ७ वाष्ट्र्याः ८। इंड,भद्रः॥ उम्, वक्कन यथा। সমর্ঘ ধান্যাদায মহার্ঘ যঃ প্-যছতি। স বৈ বাজুবিকো নাম ছব্য কব্য বহিষ্কৃত: ।। ইতি মৃতি: ॥ उम्र वृक्षिगु इनियसा यथा। भनुः । जानी जिल्लागः गृङ्गीयार भागादाक् विकः भंजार । दिकः **जिं** वा गृङ्गे वाट मडा धर्म मन् मात्रन् ॥ द्विकः भटकः शृङ्कारना न ভবত্যৰ্থকিল্বিষী। শতকাষাপণে বাজ্ঞীন

६भी ভিভাগ বি-শভি: পণা: । विकः भूत्राभवषः। अविविधः नियम মতিক্রম্য অনাপদি স্বয় মন্যন্ধা-ता वा चाइल्लान त्या वावहत्र**ि** তদৈয়ৰ পুৰ্যাশক্তঃ। আপদি তু ষ্য করণে নিয়মাভিক্রমে চন (राय:। ইতি পাयणि खविदकः। ইত্যাহ্নিকডম্বৃ•া

वाष्ट्रियाः क्री शानावर्षनः। इंडि ত্রিকাওশেষ:।।

वारकार की पुनिन्ववन । इंडि ब्राक्षनिर्घणः॥

বাৰ্দু॰ ল্লী জ্ঞী চৰ্ম্যবজ্ঞা। ইত্য-मब्दोकाराः बायमुब्देः॥ বান্ধ্বী নসঃ नुः गएकः। गुडाब

ইতি ভাষা। যথা। বান্ধী নস স্তেক। চরো গণোৎসাহण গওয়:। ইতি ত্ৰিকাওশেষ:॥

বাজী গদ: পু॰ পশুবিশেষ:। যথা । बिश्लवः जिनित्यक्कीनः (खंडः वृ-क्षमकाপ डि॰। वाश्वी नमः (भाहा-তে হ্পৌ হ্ব্যে ক্ব্যেচ স্ৎকৃতঃ ॥ भिक्किविष्मयः । यथा । नील-গুীবো রক্তশীর্ষ: কৃঞ্পাদ: সিত इरः। राष्ट्रीनमः महार शक्कीत्मा মম বিষে। রতিপুর:।। তেষা विनान कल । यथा । त्राञ्च-

ৰ্জ্জু (নসম) চ। তৃণ্ডি নাপ্নোতি বৰ্ষা-ণা শতানি ত্রীণ নৎ পূিবা।। ন श्यागाक यहानाः क्षितः भंउ-বার্যিকী । ভৃপ্তিমাপ্রোতি পরমা **ना**म्न कश्दित खथा॥ इंडि का-विकाभूदारा ७७ **अ**ध्यायः ॥ **%** ॥ ভন্মাণদেন পিতৃ তৃপ্তি র্যথা। বা-ধ্রীণসামিষ লৌহ কালশাক তথা মধু। দুহিত্রানিষ নন্য হযদ। **छ• उ**९ऋत्वान्हरिः ॥ व्यन्छ**ञा•** পুঃছন্তি ভৃদ্তি গৌরীসূত তথা। পিতৃণা নাত্রসন্দেহো গ্রামাজ **ह भू** भक्त ॥ इंडि भार्काख्यभुद्राति मुकान्नायायः ॥ विविधः दि ন্দ্ৰিকীণ শেত বৃদ্ধন্জাপতি। বাধী ণসন্ত ভ পাত্র্যাক্তিকা: শা-দ্ধকর্মণি।। রক্তপাদো রক্তশির। রক্ত গ্রে বিহক্ষ । কৃষ্ণে বর্ণেন চ **७**चा भकी वाधीं गतमा मडः ॥ লৌহা রভভাগ:।। নৌহিত্র খসু-নিত্যাহ রপত্য বৃহিত্ ভিলা: । কপিলানা ঘৃতকৈৰ ধৌছিত্ৰ নিতি काइता । (कोडीमुक: मन्यवर्षा-ঢ়াজঃ। ইতি ভটীকা।। वार्डिः भू असीतः। ३७ कि কাওশেষঃ॥

ভস্য তুমং সাস্য মাবিস রা- | বার্মাণ লী বর্ম নমূহ:। ইতামর-**होका मात्रमुन्दती** ॥ বার্মিণ লী ব্যিসন্হ:। ইত্য-भविषेकायाः स्रामी॥ वास्क् भू (भयः। ইতি भदत्रः বাৰ্যু দ্ভৰ - ङ्লी পদ্ম । ইতি ধন-क्षयः॥ जनः ज्ञ जि ॥ वार्याः वि वादिमयक्ति। वादिणः का८ का भुजायन निम्नमः॥ वाद्यगीय• ত্রি वात्रायाग्रः। व्कवारणाः काजामनीयभुजारयन निञ्चम ॥ বারা শি: পু॰ সমুদুঃ। ইতি भुद्रागः ॥ বাৰ্ষট: পু• বহিৰ•।ইভি ত্ৰিহা-श्रम्यः ॥ वार्वना जो नीनीनांकका। इंडि শবরহাবলী॥ বাৰ্ষক নী সুদ্যাকৃতপ্**থিবীদশ**্ ভাগান্তগতভাগবিশেষ: ৷ যথা ৷ ममया विज्ञान (क्व नक्त्रार পৃথিবী निमाः। ইক্ষান্ধ র্জ্যেষ্টদা-यासा गप्राप्तमानवाधवान्।। (का-ষ্টবে বার্ষক ক্ষেত্র রণবৃষ্টির্বভূব হ । इंडि विङ्गाहाल मागदानाः भ्रानाष्रायः॥

निश्चमः ॥

वार्यकानवी जी नृषकानुकन्ता । श्रीवार्था। यथा। यथा श्रवाद श्रवः कृषः खल्यः वार्यकानवी । इंकिः शास्त्राखद्रथा ७५१ सद्यागः॥ वार्षिकः क्षी कारमाना। इंकि सिनी॥

वार्षिकः जि वर्षण्यः। वार्षिकः।
इिल्सिनि।। वर्षाकात्वा ख्वन्यः।
वार्षिकी जी जारमाना । इिल बार्षिकी जी जारमाना । इिल बार्षिकी जी जारमाना । इिल बार्षिकेः।। वर्षकृष्ठेवप्रकानिः। यथा। मब्द कात्व महालृह्या क्रिय-एक या ह वार्षिकी । जम्मा निय-ख्याहाज्याः भिष्ठेवप्र ममाहि-दिकः।। इिल मार्कः ख्यालुद्रानः।। वार्षिला जी क्रवका । इिल मम्

বার্যিলা স্ত্রী করকা। ইতি শব-চন্দ্রিকা॥

বাৰুকিঃ ত্ৰি বৰ্ষণশীলঃ। বৃষ্ধাতো এ প্ৰিপুত্যয়েন নিম্ননা বৃষ্ক: ততঃ

ৰাথে ফি পুত্যয়ঃ।।

वाईड॰ ही वृङ्डीकन'। ইडा-नदः॥

वार्ड्मूथः शू॰ कत्रामकः। ইতি न्यसः त्रज्ञावनी॥ वृज्युथत्राक्षमञ्चिति जि वार्ड्युथिः शु॰ कत्रामकः। ইতি

ত্রিকাওশেব:॥

বার্হপাত॰ ত্রি বৃহপোতিসয়ন্ধি। বৃহপোতেরিদ॰ ইভ্যথে ফ পুভ্যবেন

वाईम्लाडाः शृ नास्तिः। यथा।
गाहाप्तवापाईछः गाहृगावापी
जू नोगडः। नियायिक सुक्क शाप्तात्यागः नाःथास काशिनः॥ दैवत्मिवकः नातिने न्यादिका नोकायिकः
स्व नास्तिः। प्राद्दीतिका नोकायिकः
कर्माटकः। प्राद्दीतिका नोकायिकः
क्रिक्ट वर्ष्ठा ठार्किकाः॥ ইडि
क्रिक्ट ।। वृङ्ग्लाडिनस्किनि जि॥
वार्काः क्री बनः। ইडि (इस्टम्पुः॥

বিত্তপুদ লিস্ব স্থাটিক সর্থকা-মদণা ইতি তিথ্যাদিতভূণ।। বাক্ষী জী জীবিশেষ: । ইতি

মহাভারত ॥

वृक्षमञ्चिति वि । यथा । वाक्री

वालकः श्रु॰ क्षी शाजिकार्यः॥

अञ्जीयक जि। इंडि मिनी॥

अञ्जीयक जि। इंडि मिनी॥

अञ्जीर्थान्डवानिशवनी य वाकाता
को मुद्रेवानि॥

বালব: প্রু ব্বাদ্যেকাদশকরণাভর্গতিঘিভীয়করণ:। তত্র জাত ফ লং। কার্য্যস্য কর্ত্তা স্বজনস্য ভর্তা সেনা পুণেতা স্বল্পীলযুক্ত:। উ-দারবৃদ্ধি বলবান্ মনুষ্য শেঘা-ল্যাখ্যে জননং হি যুস্য।। ইতি কোষ্টাপুণীপঃ।। বার বিরুদ্যদ্বিত্র । কৌনাদি ।।

1 ইত্যমর: ।।

বাল্পল তি বল্পনির্মিত । বল্পন ন্যেদ ইত্যথে কি পুত্রবেন নিয়মণ

वान्नभी जी मिहता। ইতি ত্রিকাও শেষ:॥

বাল্মিকি: পু• বাল্মীকমুনি:। ইতি দ্বিল্পকোষ:।।

वान्मीकः शृः तामायनकर्त्तां मृनिः। छर्श्यतायः। श्राह्युक्तः र वान्मी-किः १ कविष्युष्ठेः १ स्रभीवनः ५ यन्ति १ १ इ.ज. विकाश्रम्परः॥ कविः ४ स्वान्युक्तिः २ । इ.ज. कविः ४ स्वान्युक्तिः २ । इ.ज.

বাল্মীকিঃ পু॰ ভ্গুবংশীযস্নি বিশেষঃ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ । যথা। রাবণান্তকরো রাজা রঘূণা॰ বংশবদ্ধনঃ। বাল্মীকি র্যস্চারত। চক্রে ভার্গবস্ত্রমঃ।। ইতি মাৎ-স্থো ২২ অধ্যায়ঃ।।

বাবদূক: ত্রি অভিশ্যবচনশীল:।
তৎপর্য্যায়:। বাচোযুক্তিপটু: ২,
বাগ্মী ০ বক্তা ৪। ইত্যমর:॥
বচত্র ৫ সুবচা: ৬ পুবাক্ ৭। ইতি
ভাটাবর:॥

চন্দ্রকা।।
বার্ট: পু• বছিত্রণ ইতি শব্দরত্নাবদী।।
বাব্ত যাড উ স•ভক্তো।। বরণে।
ইতি কবিকল্লদ্য: ॥ যাড বাবত ৫

ইতি কবিকল্পজন: ॥ য ও বাবৃত্য তে। উ বাবর্তিহা বাবৃত্বা। সণভগ ক্রি: সেবন•। ইতি দুর্গাদাস:॥ বাবৃত্ত: তি কৃতবরণ:। ইত্যমর:॥

ততো বাবৃত্তমান। লাবিতি ভটিঃ।।
বাশ পাঙ্য শাল । ইতি কবিকল্লনঃ।। শন ইহ ডিরশামেব।
তিরক্ষাং বাশিডং কৃত নিত্যন
নাং । যঙ্বাশ্যাত পক্ষী। পাজববাশং । উদ্বাশ্যনানঃ পিতরং স
রাম নিতি ভটৌ। অনে লার্থান্নদাল্পানার্থঃ। বাসিতং সূর ভীকৃতে
। জ্ঞাননাত্রে খ্যালাবে বাসিতং
বল্পবৈতি।ইতি বিশ্লুকাশাদেস্ত্যান্তোযম্পাতি।ইতি ক্যাদাসঃ।
বাশা প্রী বাসকঃ। ইতি শন্ধ-

রহাবলী।। বাশি: পু• অগ্নি:। ইত্যুণাদি-কোৰ:।।

वार्णिका छी वागकः। ই**डि मद-**इज्ञावनी॥

বাশি э॰ ক্লী পশুপক্তাদীনাংশকঃ । ইত্যনর: ॥ বাশিত: ত্রি সুর তীক্ত:।ইড্র- বায়িকা মর টীকাষাণ স্বামী।। পর্য্যাহ বাশিতা স্ত্রী স্ত্রীমাত্রণাকরিণী। বরী ৪ ইড্রনর:।। প্রত্রী বাশিত্র: ত্রি বশিষ্ঠসম্বন্ধী। বশিষ্ঠ- ভটীব

স্বেদ ইত্যর্থে ফ পুত্যযেননিয়মঃ বাশিষ্ঠা জ্রী গোন্ডীনদী। ইতি হেনচন্দুঃ॥

বাশুরা জ্রী <mark>রাজি:। ইত্</mark>গাদি<sup>-</sup> কোষ:॥

दाणु॰ क्ली सन्मित्र•। ठउ्छथः।ইउ स्मिनी।।

वाणुः भुः पित्रमः। ইতি गिपिनी ॥ वाञ्चः भुः উग्पाः। (नाष्टः। ইতি भिपिना । अनुः। ইত্যমরः॥

বারক: পু॰ ন। রিষ:। নটিনাশাক ইতি ভাষা। যথা। নারিষো বা-য়কো নাষ: শেতো রক্তশ্চ স মৃত: । নারিষো মধুর: শীতো বিষ্ট্রী শিতনুদ্ধক:।। বাত স্লেমকরো রক্তপিতন্দ্ধিনারিত । রক্ত-মাষে। গুকু নাতি সক্ষারো মধুর: সর:।। শ্লেম্বল: কটুক: পাকে ষ্ব-ল্লােষ উদীরিত:। ইতি ভাষ

বায়ক। ত্রী হিজুপগ্রী।ইতি শদ-রন্থাবলী॥

প্কাশ: 11

ায়িক। ত্রী হিন্দুপত্রী। তৎপর্য্যায়: 1 কারবী ২ পৃথী ১ কবরী ৪ পৃথা ৫। ইত্যমর: 11 ত্বক্পত্রী ৬ বায়ীকা ৭ কর্মরী ৮। ইতি
ভটীকা।।

বারী জ্রী বাগ্লিকা। ই**ভি শদ**্ রত্নবলী॥

বাল্লীকা স্ত্রী হিন্দুপত্রী। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ রাঁধুনী ইতি থ্যাত-শ্চ। অস্য গুণা:। কটুত্বং। তীক্ষত্বং । উফত্বং। কৃনি শ্রেমা নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভ:।।

বাস ত ক উপদেবানা । ইতি কবিকল্পজন: ।। উপসেবাত গণ-শুরাধান । অববাসম্বস্ত্র চন্দ্র: । ইতি দুর্গাদাস: ।।

সিঃ পু॰ পৃহ। ইত্যমর:।। বস্ত্রণ
। ইতি ভটীকা।। অবস্থান। ইতি
হেনচন্দু:।। বাসক:। ইতি শন্দ্রন্তর্লী।। সুগদ্ধি:। ইতি বাসবাদ্বাদর্শনাৎ।।ঞ্চা জানবিশেষে বাব্যান্যাচ। বেদাহণ ভাত বালাপি কাব্যাণান্ত গতাগতি। ক্রোধে
চৈবাভিবাদে বা বেদ চালি বলাবলং।। শিব্যস্যাশিব্যক্তে হিন্ন
ক্রব্যং বুভূষতা। তমাৎ সন্ধার্ণ

বৃত্তেষু বাসে। মম ন রোচতে ॥ शृष्मा ए नाजिनमञ्ज वृद्धना-ভিজনেন চান ভেষ্চবসেৎ भुाकः (मुगार्थी भाभव्किष् ॥ যে ত্বেব নভিজানন্তি বৃত্তেনাপি জনেন চ। তেষু সাধুষু বস্তব্য স বাস: শুেষ উচ্যতে ॥ ইতি নাৎ-স্যে ২৮ অধ্যায়:।। 🕸 ।। অপিচ। ধার্মি কৈ রাবৃতে গ্রামে ন ব্যাধি বহুলে ভূশং। ন শুদুরাজ্যে নিব সেৎ ন পাষগুজনৈ বৃতে ॥ হিম-বদ্বিদ্ধ্যযোশ্ব্য পূর্ব পশ্চিমযো: भू छ । मूकु। ममू मुर्गा (मंग नान)व নিংসেৎ দ্বিজ:।। অর্জকোশায়ণী-কূল' বর্জবিত্বা দ্বিজো ভদঃ। নান্যত্র নিবসেৎ পুণ্য নান্ত্যজগুমেস্মি ধৌ ।। ন সংবদের পতিতৈ ন চ-खारिन नं शृक्करिनः। न मृर्थि नी विविश्व नारेश नाष्ट्रावनायि-ভি: ৷৷ ইতি কৌর্মে উপরিভাগে : ৫ अव्यायः ॥

বাস: ব্লী বক্ত । ইত্যমর: ॥ প্রারুশ্ব । ইতি রাজনির্ঘটি: ॥

বালক: পু॰ বৃক্ষবিশেষ:। বাকস ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায:। বৈদ্য আতা ২ সিংহী ৩ বাসিকা ৪ বৃষ: ৫ সটকৃষ্: ৬ সিংহাস্য: ৭ বাজি-

দতক: ৮। ইত্যমর:।। বাশা ৯ वाणिक। २० वृष्णः २२ व्यव्यक्तियः २२ বাশক: ১০। ইতি ভট্টাকা॥ वामा ३८ वामः ३६ वाकी ३५ दि-मार्भिकी ११ माङ्भिकी १४ । इंडि नद्रज्ञावली ॥ वात्रका ১৯ मिःर्भा २०। इंडि क्रायदः॥ সি হেকা ২১ ভিষড্নাতা ২২ ব-जामनी २० जि॰ इंगुथी २८ कछी-व्रवी २० मिडक्गी २५ वाजिम्डी २१ नामा २৮ পঞ্চगुथी २৯ मि इ-পত্রী ১০ ম্গেন্দ্রাণী ১১। অস্য खनाः। ठिक्कच् । करूच्। भी তত্ত্ব । কাশ র্ক্তপিত্ত কামলা कक रेवकना कृत चान क्रग ना-শিত্तक ॥ उर भूद्मखनाः । कर्नुभा-কিন্তু । তিক্তন্ত্ব । কাস ক্ষমহর-ত্বক। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। তর্শাসচ। বাসকো বাসিকা বাসা ভিষড্মা-তা চ সি হিকা। সি হাস্যোবা किम्छः म्यामार्धेक्या १वेक्यकः॥ चारिकाया वृष्या नामा निःइशर्गन्छ স মৃত:। বাসকো বাসকৃৎ **ষ**র্য্য: কফ পিত্তাসু নাশন:॥ তিক্ত स्ত **वद्रा**का इत्ता वगुः भी**उ** स्डिं হৃৎ। খাস কাস জুর **ছ**র্দ্দি মো**হ** विश्वकागायः॥ इति जावभुकाणः

lt # 11 गानाक्विणवः । यथा । मताहरता ६६ कन्म न नहाक नन्म-न এব চ। চত্ত্বারো বাসকা: প্রো-ক্তা: শঙ্করেণ ম্বণ গুরা ৷৷ কেষ্-क्षित्राज नानान्य भ्रथक् । दि-(नारमा वद्रमरेक्य नन्मः अगुम अय-চ। চত্বারো বাসকা: প্রোক্তা গীত वाम्य विभावरेमः ॥ इंडि मङ्गीङ मायाम्ब्रः॥

वामकर्गी जी यद्धनाना। इंडि मद्रद्वावनी ॥

वामकमञ्जा जी चीराहिनायिका (छरः। उम्रा वक्र १ यथा। अर्र-নে পি্যবাসর ইথা নিশ্চিত্য যা সুরত সামগ্রী• সজীকরোতি সা वानकमञ्जा। वानका वानदः। অস্যা শেষ্টা মনোর্থ স্থীপরি-হাস দুতীপুশ্ব সামগুীবিধান মার্গ-विष्णाकनामयः ॥ नुका वानकनः ব্জা যথা। হারণ গুরুতি তারকাতি ক্চিরণ গুথাতি কাঞ্চীলতাণ দীপণ ন্যস্যতি কিন্তু তত্ৰ বহুল গ্ৰেছ ন पांख भूनः। शालीना निज्ञि वामः কস্যরজনৌ কামানুক্পাঃ ক্রিবাঃ সাচি মেরমুণী নবেটি সুসুখী দ্ রাৎ সমুদ্বীক্ষ্যতে ৷৷ মধ্যা বাস চ-नब्हा यथा । मिल्ल ममिक् क- बानगृह ती गर्खागात । देउा-

রোতি সত্কাৎ কল্লার হার সূত্র• চিত্ৰ প্ৰেক্ষণ কৈতবেন কিমপি দ্বা-तः ममुबीकारा । गृङ्गाउगा खत्र प नवः नहहत्री ज्वाजिशीया निया-দিঅ' পদাদ্শ: পুতীত্য চরিত' ম্মেরাননো হভূৎ ম্মর: ।। প্রৌচা वानकमञ्जा दथा। कृउ॰ दश्रि ভূষণ চিহ্মরধোরণী ধূপিতা কৃতা শयनमित्रो क्रमूक्वी दिका मझ-जि:। अकात्रि इतिगी मृगा **अ**वनेः নেত্য দেহত্বিষা সূত্ৰৎ কনক কে-**७की अमूमकान्ति** पूर्विन ॥ मः (नात्रथण यथा । आवर्या त्रक्रा দৈধি ভূগে। বিরহ পল্লব:। অদৈ-তে চ মিত্রীত ন স্যাদন্যোন্য वीक्रगः॥ भव्रकीया वामकमङ्जा যথা। খশু; স্বাপ্যিতু ছলেন **চ তিরোধরে পুদীপাস্তরান্ ধরে** সৌধকপোত পোত নিনদৈ: সা-ক্ষেত্রিক চেষ্ট্রিত। শখৎ পার্য বিবর্ত্তি গ্রাহ্ম লাভক লোলং ক-(পাল हु। ठि दाशि दाशि कता युक् भिष्विया उन्नाष्टिकः नामाजि ॥ ইতি রসনঞ্জরী।।

বাসকা জ্রী বাসকবৃক্ষ:। ইতি किराध्यः ॥

মর: ॥ ছে গৃহম্প্রভাগে শ্যন গৃহে চা গৃহান্তগৃহে ইভ্যেক নির্বাভত্বাৎ গর্ৱ ইবাগার• গর্ত্তা-গার•। বাসায গৃহ• বাসগৃহ•। বা-সবেশ্মাদি চাত্র। ইতি ভরত:॥ গৰ্দ্দ ভঃ। ইতি শব-বাসতঃ ब्रङ्गावनी ॥ বাসতেথী স্ত্রী রাত্রি:। ইতি ত্রি কাণ্ডশেব: 11 বাসন ক্লী ধুপন'।। বারিবানী ।। ব্স্ত্র•। ইতি মেদিনী॥ বাসঃ। ইতি শব্রত্নাবলী II জ্ঞান° I ইতি ধর-णि: ।। निक्तभाषादः । यथा । या ऋतन्।:। जाविभी साभ नित्क প জড় বাল ধনৈ বিনা৷ তথোপ নিধি রাজন্তী শোকিয়ানা ধনৈ রিছ।। উপনিক্ষেপন্ত বাসনস্থ सनाथाग्य **म**मु मु॰ यहिशीयाउ । ইতি নারদোক্ত:।। বাসন নিক্ষে পাধারভূত সস্টাদিক সমৃদু গ্রন্থ্যদিণুত । ইতি ব্যবহারতত্ত্ব ॥ বসনসমৃদ্ধিনি ত্রি॥ বাসনা জা পুত্যাশা॥ জ্ঞান । ইতি মেদিনী॥ মৃতিহেতু:। তং পর্যাশঃ। সংকারঃ২ ভাবনা ৩। ইতি জটাধ্র:।। বেহারাবুদ্ধিজন্য নিখ্যা সংস্থার: ৷ ইতি ন্যাণ্শাত্রণ

॥ मृति। स्था। वमजुन्धे। महिं यु ज्या अस्त । वाजु विम नि-वारमि वामना छन मा मृजा।। है जि प्रिवी शृजात हिंद व्यथा । । । वामजः भुः छेट्टः। है जि प्रिनि ।। वामजः भुः छेटः। है जि जिन्दे ।। भनन क्ष्मा । मृतः। है जि जिन्दे ।। भनन क्ष्मा । है जि मद्मा ।। वामज्ञः। है जि मद्मा ।। वामज्ञः। है जि प्राम्नाः। वामज्ञः। है जि मद्मा ।। वामज्ञः। है जि प्राम्नाः। वामज्ञः। है जि प्राम्नाः। वामज्ञः। क्षि वामज्ञः। वि वाजुमग्रिः। वामज्ञः।।

वामलिकः जि विम्यकः। यथा।

वामलिकः (किलिक्ता विद्यानका विम्यकः। इिल ह्मिन्पुः॥

वामली जो माथती॥ यथी। इेलि

कालिका। भाषेता। इेलि विश्वः॥

कालिका। भाषेता। इेलि विश्वः॥

कालिका। भाषेता। इेलि विश्वः॥

कालिका। भाषेता। इेलि जिकाजावनी २ मय् मवः ० म्वमलः ६

कामम् । विभागी भाषेता। भूमलिकाविष्यः। विभागी । भूमलिकाविभागी । भूमलिकाविभागी । भूमलिकाविभागी । भूमलिकाविभागी । भूमलिकाविभागी । भूमलाविभागी । भ

थिन्द्रास्त्राद्रिः। मन्द्रम्पानापन-দাযিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ নব-মল্লিকা। নেবারি ইতি হিন্দীভাষা । যথা। নেপালী কথিত। তজ্জৈ: স थना नवरानिका। वामडी भीउना লঘ্বী ভিক্তা দোষত্রবাসুদ্ধি ।৷ ইতি ভাবপুকা**শः।।**≉।। অথ ব্যসন্তो দুর্গা পুলা পুনাণ । তত্র ভবিষ্যপুরাণ । মানরাশি স্থিতে সুর্য্যে শ্লুপক্ষে ন-ब्राधिन। मध्यी मण्यी यावट न् জ্বেদহিকা• সদা।। ভবিষ্যোত্তরে। চৈত্রে নাসি সিতে পক্ষে স্থম্যাদি দিনতাব। প্রযেদিধিবদুগাং দশা म्याक विमर्जयर ॥ कान कोमुम्या জাবালি: ৈত্রে মাসি সিতে পক্ষে मधनामि मिनवर्य। भुडर्य द्विविदेव मु रेवा वंतककारीय खया ॥ नानाः विरिधण्ड यनिङ व्यविरिङ प्राधिव-ह्यि रेजः। विध्वा छत्ररेगः भाषं भ-উৰম্ৰাদিভি স্তথা।। এবং নঃ **স**ক্তে भूडा॰ वर्ष वर्ष विथान छः। वेश्नि ভান্ লভতে কানান্ পুল পৌলা-দিকান্প।। ইতি। অত্র ভবিষ্যপু-वात विक्शनम मामगय महा-তাৎ ভবিষ্যপুরাণ বচনে মীনরা শ **४७ इंडि भीन**ए तनगहस् हास्तु-মালীয় ভি**থিপর•া** মৌররব্যারজ

द्ध कराहिट मधनारि विश्वज्ञा-লাভাৎ তদ্ধ্য তৎক্ত্য লোপ: স্যাৎ। নচেষ্টাপত্তিঃ। ভবিষ্যপরা-(१ मनाभाराभागाना कावानि-বচনে বর্ষে বর্ষে ইভ্যুপাদানাচ্চ নি-ত্যব্ব॰ । এতদ্বিনৃত কালবিবেকে। এব॰ জাবালি:শ্যবচন পরাদ্ধে পু-धारिका कनम्दराट कामाक । ততক্ষ কান্যত্যা প্রনে কৃতে প্-সঙ্গান্নিত্যসিদ্ধি: ।। সিতাইন্যান্ত हिज्ञमः भृद्य खल्कानमञ्जूदिः । जालांकि त्रि यः अर्याट माखना-নেন প্জনা। ন ত্ৰ্যা জায়তে শো-কো রোগো বাপ্যথ দুর্গতি:। ই**তি** कालिकालुद्रान वहनार (क्वलाक्षेभी) কল্ল উক্ত: । চৈত্ৰনাস ন্ধিক্ত্য । नवन्ता शृक्षरयाम् वी निश्वानुत-मर्पिनी । अख्मा खक कछ्त्री धृशाम धुक छलं रेगः ॥ मगरेन मुहिल्डिक বিজয়াখ্য পদ লভেৎ ॥ ইত্যানন (करन नवर्भी कन्न एकः। बर्वञ् । ज् नात्रहीयन्डा पुक्तरााङा गुाछ।। विष्णय युव (वाधन পुक्तिया ना सि বোধিভাষা বোধনাসম্ভবাৎ। ইতি भाक्विवृजः। (श्रामानिककः भूर्बः वङ्ख्डिय गिठि निक्। ইতি দুর্গ , ८-नविदिवकः॥ 🗱 ॥ श्रांतिहा 🔊 नावायन है वाह। भूवा खंडा जा ला-लाक कृष्ट्यन भवना खंना। जन्-भूका मध्यारम ह भी दिन वानम-खंला। मध्रेक हे ज्या यू (क विकी-य विकूना भूवा। छोजव काल जा मूर्गा युक्तना भूगि महरहे।। इंडि युक्तिवर्र्स भुक्डिथए ५० व्य-थायः।।

वामरगागः भू ह्र्न । इंडामदः॥

रह्म वादित्र इंडि थाराउ। भिद्रमा

रक्कार इंडाना । ह्र्नार रभूगार ह्र्नार ह्र्नार ह्र्नार वारम

मूद्र हेर्ना विक वामरगागः । इंडि

उँगेकारा छत्र :॥ उर्णार भ्रापः
। भक्क ह्र्ने २ भ्रोवाम २ ह्र्ने क ।

इंडि भद्र द्वावनी ॥

वानतः श्रुः क्षी हितनः। इंडानदः
॥ नागशुष्डि हिन्। इंडि सिहिनी॥
वानवः श्रुः इन्दुः। इंडानदः॥
वानवी क्षी वानमाञा। यथा।
वानमाञ्चा मडावजी वानवी गक्षका विका। यो क्षनम् क्षी हिन्दुः॥
कन्दुः॥

বাসসজ্জা স্ত্রী নাবিকাভেদ: । যথা। খণ্ডিভোৎকৃতিতা লক্ষা ত- था (नुषि उच्ज्रंका । कषशासविज्ञा वाममञ्ज्ञा साधीन च्ज्रंका॥
व्यक्तिमा विकामा देखा को वस्तका।
भाग्नामञी ॥ इंजि को वस्तका।
व्यम्भाः विवद्रभः वामकमञ्ज्ञा नाम
पुष्ठेवाः॥

বাস। স্ত্রী বাসক:।। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

বাসাগার লী বাসগৃহ । তৎপর্যায়:।ভোগগৃহ ২ কন্যাট: ৩
পত্নাট: ৪ নিছুট: ৫। ইতি ত্রিকাওপেষ:।।

বাসি: পু॰ ছঠারভেদ:। বাইস ইতি ভাষা। ইত্যুগাদিকোষ:।। বাসিকা স্ত্রী বাসক:। ইতি শদ-রত্নবলী।।

বাসিত ক্লী কত। ইকিমেদিনী । জ্ঞানমাত্র । ইতি ংস্কন্দুঃ।। খণরবঃ। ইতি বিশ্বঃ॥

বাসিত: বি সুরভীক্ত:।তৎপর্য্যায:।ভাবিত:২।ইভ্যমর:॥
দ্বেসুগদ্ধিপুল্লাদিবাসিতদুব্যে।ভাব্যতে প্রাপ্ততে ভাবিত ভুক্ত
প্রাণ্ডৌ কর্মণি ভ:।বাস সৌরভ- করোতি ইতি ঞ্যন্তাৎ কর্মণি
তে বাসিত । ইতি ভটীকাবা
ভরত:॥ জলাদৌবাসিত:।ইতি

বাস্কে

निषद्भावनी ॥ थ्याउः ॥ वज्र-বেপ্টিত:। ইভি ধরণি:।। জ্ঞীনাত্রণ। করিণী। বাসিতা खी ইত্যমর:॥ শুক্লবি:টা। ইতি वामिनी জী भक्ठिन्तिका ॥ ङ्गी ৰুধির । ই**তি হেন** বাসিই• D=4: 11 বাসিষ্ঠ ত্রি বসিষ্ঠকৃতযোগশাস্ত্রা-দি। বসিষ্ঠেন কৃত মিত্যাদ্যর্থে ফ भुडारयन निम्नमः॥ विमिष्ठमयक्ति ह

শ্ৰী उक्ती। वाहेम इंडि খ্যাতাত্র•। ইতি ত্রিকাগুশেষ: ॥ বাসু: পু॰ নারাঘণ:।ইতিত্রিকাও শেষ:।। শ্রীনিবাসো হপ্যজো বা-সুঃ। ইতি ভটাধ্রক্ত।। বিশ্বক্পঃ ।। भूनई मूः। इंड्रागानिकायः ॥ বাসুকি: অহিপতি:। তথ-পর্য্যায়: । সর্পরাজ: ২। ইত্যমর: ।। वामुत्कयः ७ । ইতি শব্রত্বা-वनी ॥ उरमहा८भन्ति यथा। नुद्र-সা জব্জিরে সর্পাণ স্তেষাণ রাদ্যা ভূ ভক্ষক:। বাসুকি শৈচৰ নাগানা গণা: ক্রোধতমোধিক:। ইতি ব ক্লিপুরাণে কাশ্যপীয় বংশঃ॥ वामुकिः। इंडि বাসুকেয়:

मक्तर्वावनी ॥

ু বাসুদে

जी भनभाषियी। বাসুকেযস্থ সা ইত্যমর:॥ वामुरहवः भुः बीकृकः। इंछानद्रः॥ **७८भ**र्यायः । वमूप्तवज्ः २। इंडि (रुमहन्तुः ॥ जद्राः ७ मूज्तुः ८ वामू जुमुः ৫ वज्य हि ८ ७ वस्विन्तूः ৭ পুরিশৃক্ষ: ৮ পুরিভূদু: ১ গদা-गुबः २० मार्जः २२ वजुः २२ (नाहि-ভাক্ষ: ১৩ পরমারীক্ক: ১৪। ইভি **न**प्याना॥ अन्। ८क्ष्णाप पुष्ठ-ব্যং।।ৠ শ্রীকৃঞ্শরীরস্য নিভ্যন্ত্রণ যথা। শ্রীসনৎ স্পমার উবাচ। ভদু বো মুনযঃ শশ্বভপসাং ফলমীপ্লি-छ । क्षम। जनमञ्जू । निववी मः স্য নিম্নলে।। সাম্পুত সম্পল বস্চ দর্শন পরমাতান: ৷ ভক্তানুরোধা-দ্দেহস্য পরস্য পুকৃতে রপি।। নি-, র্গুণস্য নিরীহ্স্য সর্ববীজ্ম্য **তে** জস:। ভারাবভারণাথৈব চাবিভ্-তস্য সাস্থাত।। শ্রীকৃক উবাচ। শরীরধারিণ শ্চাপি জশলপুশ্ন মীপ্সিত। তৎ কথা লশল পুশ্বা ম্যি বিপুন বিদ্যুত্তে !! সন্থ স্নার উবাচ। শরীরে প্রাকৃতে নাথ সন্ত-

> তঞ্চ শুভাশভে । নিতাদেছে ক্লেম বীজেশিবপুশু মনর্থক । শ্রীভগবা-

> নুবাচ। যো যো বিগুছ্থারী চ স চ

তে বিপু তা॰ নিত্যা৽ পুকৃতি৽ বিনা ।। जन्दक्षात्र উवाह । त्रक्रविन्तृ-দ্ভবা দেহা তেচ প্ৰাকৃতিকা: স্ **छाः । कथ॰ नु**क्छिनाथमऽ वीब-न्य भाक्ष्य वर्षः ॥ महवीक्रम नर्दापि र्वा भ र र प्राप्त में स्वरं **ज**र्खिया भवजात्रानाः जुधानः वीक মব্যয়ণ।। কৃত্বঃ বদন্তি বেদান্দ নিত্যুণ নিভ্যা সনাতন। জ্যোভি: স্বর্পা পর্ম পরমাআন মীশর ।। মাব্যা ज्ञखनरेक्षव भारय**णः** निर्श्वनः शद्रः । भुवम्खि ह (वमाक्षा ख्या (वमविमः পুরো। ত্রিকৃষ উবাচ। সাম্পুত• वामुप्रद्वारः ভक्कवीर्य्याभुजः वनुः াকথ ন প্ৰাকৃতো বিপু **লি**বপুশ্ব-भनिञ्जिन ॥ सम्बन्धन देवाह । বাস: সর্নিবাসক বিশ্বানি যস্য लाममू । उम्र (५व: भन्नः वृक्ष বাসুদেব ইতীব্লিত: ৷৷ বাসুদেবেতি ভন্নান বেদেষু চ চতুষু চ। পুরাণে শ্বিতিহাসেধু যাত্রাদিষু চ দৃশ্যতে।। ब्रक्वीयाभाषा एकः क्र तरह নিক্পিত:। সাকিণো মূন্য কাত্র খৰ্ম: সৰ্বত এব হি ॥ সাক্ষিণো ন্ম (वनाफ द्रवि हत्सु) ह जाष्पुछ । इंठि वुक्तरेवरार्ड बीक्ष्क अथएउ

৮१ व्यथ्रायः ॥ #॥ उन्। नाम वृद्ध-**প** खि:। **मर्द**बारमे ममञ्जूक दंभजुः-ৰেতি বৈষত:। ততঃ স বাসুদেবে-তি বিদ্বন্দি: পরিপদ্যতে ॥ ইতি विकुर्नुद्रात > अश्म २ अव्यायः ॥ অপি চ। সর্বাণি তত্র ভূতানি বস-ঙ্কি পরমাত্মনি। ভূতেম্বলি চ সর্বা-ज्ञा वाम्र्रिव छठः मृठः॥ शांख-ক্যজনকাযাহ পৃষ্ট: কেশিধুজ: পুরা । नामव्यार्थ्या मनष्ठम् वामू (स्वम् তৰু হ: ৷৷ ভ্তেষু বসতে সোম্ব র্স-স্ত্যত্র চ ভানি য়ং । ধাতা বিধাতা জগতা॰ বাসুদেব স্ততঃ পুভুঃ 🛭 ইতি ভবৈব ৬ অংশে ৫ অধ্যায:।। 🗱।। व्यम् व्यक् भुउद्ध मञ्जा यथा। वी-बस वामूरमवमा भूरेत्रव भुजिभामि-**७॰। ७२३ मखः त्राह्ममु हाम्मा**-ক্ষর মূচ্যতে॥ ওঁ নমো ভগবতে বা-जुरम्याय रेव भरः। अत्र मञ्जः उरेथः তস্য বাসুদেবস্যকীর্ভিত ॥ অস্য পুত্যক ক্পন্ত দ্ধিবামন সক্তক। ভস্য মন্ত্রণ নরশেষ্ঠ শস্ত্রনা ভাষিত मृग्।। उँ नामा विकाद न्द्रः भरः তम्। नुकीर्खिङ । भम्छ मुद्रभछ-(य ठळूर्थ) छ भश्यक ॥ स्रोहा छ॰ इत्यामनः नुष्ठाः देवस्यः मणः। मखबय खपा (यह वीक भुजाक म-

खकः ॥ म भ्वा (प्वकायस्य न म ख्या **१ जिजा**ये छ । नर्ब छ बद्र छ-স্বোক্ত: ক্রমোপাহ্য: পুপ্রনে।। তিযু মত্তেষু চ বুখো বিশেষ শৃণু ভূপতে । क्षा वीक्रमञ्जमः भूषमः मृगु चू পতে।। পূর্ণচল্ট্রোপন: শুল্ল: পঞ্চি-রাজোপরিছিত:। চত্ত্র: পীত बेरेड जिन्हिः मःवीज्यमञ्जूष्य ॥ मः ক্ষিণোদ্ধে গদা পত্তে ভদখে৷ বিক-চাযুজ ৷ বানোজ্বে চক্র মত্যুগু পত্তে হব: শত্র মেব চ।। এবিৎসবক্ষাঃ সতত কৌস্তভ হদি চাভূত।। **খন্তে কক্ষে হুংখা বানে ত্**ণীর• বাণ-পুরিতে ৷৷ দক্ষিণে কোবগা খন্ন ন न्हकः जन्मद्रान्ननः। भीर्य किद्रीहेः **जारिताञः कर्नाताः स्टब्स्यरः ॥ व्या** জানুলম্বিনী চিত্রা স্বর্ণমালা গল স্থিতা । দখান দক্ষিণে দেবী শ্বিয়ণ পার্ষে তু বিভুত্ত।। সরস্বতী। বানপার্ম্বে চিন্তবেদ্বরদ • হরি । মন্ত্ৰস্য বীজৰপন্ত কথিত তব পা-र्थित्।। हान्णाक्त्रमञ्जा क्षे म-नार मृत्य (म। नीलार भनरन শ্যাম• তথৈবচ চতুভ্জি॰।। দক্ষিণো-एक कि उ. भग्न गराकायः भूटान (यर । दारान मठक मजुले मृष्यु লাহ্রঞ্চ বিভূত<sup>,</sup> ।। চিন্তবেদ্বরদা দেবং

गर्व मन्द्र भृर्वदर्। अक्षाम्भाकतः महामह भुंडह्ममह ह विखद्गः॥ मृनू রাজনবহিতো দারিদ্যু ভয় ভঞ্জন• । भूर्णनम् अमृणः कामः मूक्षवञ्चः वि-विष्ठरयथ् ॥ कत्र विविष्ठरयद्वारम् शी-य्वाभूबिङ घटे । मध्यमथ्यमःयू-क पिक्त वर्गाकन ॥ भगावन গত॰ (५व॰ हन्तुम् खन्मस् १गः। मुक्न-वज्रधनः (हवः भूमानाम्वामनः मना ॥ ঈरकानमनायुकः जिलाकिणः ত্রিবিক্রম°। চিম্ভবেদ্বরদ দেব স ৰ্বকামফলপুদ• ॥ ইতি কালিকা-भूद्रात ४२ व्यवप्रायः॥ स्रा खरमप्रायः পত্তি যঁথা। ততন্ত দশমে মাসি विश्वो वुक्तकं मक्छ। अक्षेत्रता मर्फ-রাত্রো চ ভস্যা• জাতো জনার্দ্দনঃ॥ ইন্দীবরদল শ্যাম: পদ্মপত্রাযতে-क्षनः। ठजुर्ने हः मुन्दत्रात्नः दिया-ভরণভূষিত: ৷৷ এবিৎস কৌৰভো-রস্কে: বনমালা বিভূষিত: 1 বস্দেব-স্যজাতো ংসৌ বাসুদেব: সনাতন: ।। ইতি পাদ্মোত্তরথণ্ডে ৬০ অধ্যয়: ॥ 🗱 ॥ তস্য চতুখা মূৰ্ভি যথা। এ-कारमन बगर क्रमुः व्याभा नाताः যণ: স্থিত: ৷ চতুর্দ্ধাবস্থিতে৷ ব্যাপী जल्ला दिल्ला श्रावा।। এका जग-বতে। মূৰ্ভি জ্ঞানৰূপা শিবামলা।

বাসুদেবাভিধানা সা গুণাতীতা मूनिइना॥ दिञीया कानम छाः ন্যা ভামসী শেষস**'জ্ঞিভা। নিহ**ু **ভि স**কলा • काल रेवक वी शत्रभा তনু: ৷৷ সন্ত্যেদুক্তা ত্তীযান্যা नुपूर्वि ह मध्यि । बगर স্থাপথতে সর্ব সা বিষ্ণুপুক্তি ध्रुवा ॥ ठजुर्था वामू (प्रवम्) मृर्बि वांकी नूम छिं । ताक भी हो-निकषाच्या शुक्रुती मृष्टिकात्रिका ।। য: স্বপিত্যথিল হল্বা পুদুগ্রুন नर পुजुः। नात्रायगाथ्या तुकाः मो भुकामर्गकरता हि मः॥ या ना नाजायगञ्जूः भुदृश्चाथा जूनी-अद्राः। उदा मः (माह्र विषयः म-(प्रवामूत्रभानुषः ॥ रेमव मर्ब छ-গৎসূতি: পুকৃতি: পরিকীর্ত্তিতা । বাস্দেবে। হ্যনন্তাত্মা কেবলো নির্গুণো হরিঃ॥ পুধান পুক্ষঃ কাল ভদ্ব এন মনুত্তমণ। বাসুদেবা-ত্মক নিত্য নেতৎ বিজ্ঞান মুচ্য-তে ॥ একবেদ॰ চত্তন্নাদ॰ চতুর্দ্ধা शुन ब्रह्मा । विट्यम वामूप्मरवा श्लो भुमृत्या इति त्रवायः॥ इंडि क्र्मभुद्रात् ८৮ व्यव्यायः॥ वानुरम्बिश्यक्षत्री खी भञादती। ইতি রাজনির্ঘট: ॥ একৃষ্পপুষ বাস্তবোষা ত্রী রার্ত্রি: । ইতি

কারিণী চ॥ বাসুপ্রা: পু॰ জিনবিশেষ:। ইতি (रुगठन्युः॥ বাসুভদু: পুণ শ্রীকৃষ্ণ:।ইতি **শব্দ** गाना॥ বাসুরা জ্রী জ্রীমাত্র•॥ কারিণী॥ त्राबिः॥ ভृभिः। ই**ভি (२** महन्पुः॥ বাসু: স্ত্রী নাট্যোক্তৌবালা। ইত্য यद्रः ॥ वामोकः क्षी वामगृहः। यथा। গর্ত্তাগারে ২পবরকো বাসৌকঃ শयनाम्मारः। ইতি (इमहन्तुः॥ क्ली यथार्थ ज्उ । यथा। বাস্তব• থর্ম: প্রোজ্বিত কৈতবো হত্ত পর-নো নির্মাৎসরাণা সভা বেদ্যুণ বাস্তব মত্র বস্তু শিবদ তাপত্রযো নুলন। ইত্যাদি জ্ঞাগবতে পু थभक्राक्ष > व्यथ्यानः॥ वारुषः श-রমার্থভূত বস্ত। यদা বাস্তব শ-(पन वस्राना शःभाः कीवः वस्रानः শক্তি মাথা চ বস্তন: কাৰ্য্য জগচ ্তৎ সর্ব• বস্তেব ন ততঃ পৃথক্। ইতি ভক্তীকাষা• শ্রীধরমানী॥ বাস্তবিক তি পরমার্গভূত বস্ত। বাস্তব মেব ইত্যৰ্থে বাস্তব শন্দাৎ ফিক পুত্যংখন নিগ্লমণ।।

ত্রিকাণ্ডশেষ: ।। কিন্তু বাস্তবা উষা ইতি নামন্বয় মিতি সাধুপাঠ: ॥ বাস্তব্য: ত্রি বাসকর্তা । যথা । বসে স্তব্য: কর্ত্তব্রি ণিচ । বসতীতি বাস্তব্য: । ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥ বাসযোগ্যশ্চ ॥ বসতৌ পুণ ॥ বাস্ত্র ক্রী বাস্তৃকশাকণ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট: ॥

বাস্ত পু• ক্লী গৃহকরণযোগ্যভ্নি: । তৎ পর্য্যাयः । বেশ্ম ভূ: ২। ইত্য মর: ॥ পোত: ৩ বাটী ৪। ইতি কটাধর:।। বাটিকা ৫ গৃহপোতক: ७। इंडि मफ्द्रजावनी ॥ वास्त করণ পুনাণাদি यंथा। **শ্রি**হরিক বাচ। বাস্ত সংক্ষেপতো বক্ষে। গৃ-क्राफी विद्यनाणनः। क्रेगान (का-गामात्र छ। श्वामी जिनाम राज्य ॥ झेनात ह नितः भारते तैन র্থাতে হয়্যনিলে করে।। আবাস वाजरवण्यारहो भुरत्न शुास विवक्-**अत्य ॥ भागानात्राम मुर्लियु (मदा-**वय मारेष् ठा हा जि॰म जू मुद्रान् दा-হো তদন্তশ্চ ত্রযোদশ ॥ ইশ শৈচ-वाथ भर्जान्तरा खगसः कलिनाग्यः। সুৰ্য্য: সভ্যো ভূশ শৈচৰ আকাশো বায়ুরেব চ॥ পূবা চ বিতথী শচ্ব পৃহক্ষেত্র য্মাবুভৌ। গন্ধর্বো ভৃষ-

রাজক মৃগঃ পিতৃগণ স্তথা ৷৷ দৌ-वाद्रिका २० मूर्गीवः भूग्नरस्ता-গণাধিপ:। অসুর: শেষ পাপৌ চ রোগো ९হি ম্খ্য এব চ ॥ ভল্লাটঃ সোম সপৌচ অদিতিক্ষ দিতি তথা। বহি ৰ্ছাত্রি•শদেতে তু ত-म्ख म्ठजूबः मृत् ॥ केमानामि ठजू-ষোণ সংস্থিতান প্রবেদ্ধ:। আ-श रैकवाथ माविखो झर्यो कृ छन् रेथव ह ॥ मरबा नवशामा तुका छ-म्राष्ट्री ह मनीश्रशान्। (एवाप्तरकाः खद्रात्वजान् भूबीको नामजः मृनु॥ व्यर्गभा निवजा हित विवसान् वित्-ধাধিপ:। মিত্রোথ রাজ্যক্ষাচ তথা পৃথীবর:ক্রমাৎ॥ অষ্ট্রম শ্চাপবৎ সশ্চ পরিভো বুন্ধণ: মৃতা: । ঈ শানকোণাদারভ্য দুক্তে যো বংশ উচ্যতে ॥ আগ্নেয়কোণাদারভ্য ব'-শো ভবতি দুর্জরঃ। অদিতি হিম-वडक बर्डक इन बर ।। नामिका কারিক। নাম শক্রাদ্বন্ধর্বগা পুন:। वास्तरान् প्रविद्या गृहशुत्रामः क्रुद्धत्य ॥ महत्र छ।: शुत्र छ: कार्य)• पिणाद्यगाः सङ्गनमः। क्ष नि-গ্নণে যেন প্রতঃ সত্রমগুপং ॥ गक्षभूम्रगृरु कार्या रिम्मानाः भः উদ-যুত্ত। ভাগু। গারঞ্চ কৌবের্য্যা।

(गाष्ठागात्रक वायत्व ॥ উपगानुः যঞ্চ বাৰুণ্যা• বাভাযন সমন্বিত• । সমিৎ জলেজনস্থান নাযুধানাঞ্ নৈৰ্থতে ৷৷ অভ্যাগতাল্য রম্য শ্য্যাসন সপাদুক । তোযাগ্নি দীপ সভূতৈঃ যুক্তি দক্ষিণতো ভ (व८ ॥ गृहाखद्रानि সর্বানি সজলৈ: कम्लीग्रहः। शक्षवर्तन्त्र अनूरिनः শোভিতানি পুকল্লয়েৎ ॥ পুাকারণ **छ**व्वि पंगार **शक्**रु भुगान ३: 1 এবং বিষ্ণা**শুন• স**র্য্যাদ্বনৈ শ্চোপ-वरेन यूं उ॰ ॥ ठजुःबश्चिमामा वास्तः প্ৰাদাদৌ সুপ্জিত: ৷ মধ্যে চত্ इत्ता वुका विश्वना खुर्ग्रभावयः ॥ कर्ल हेहराथ शक्तामा खथा स्वाः नुकीर्डि**ाः । (उ**च्छ्यान्युडयुडः मार्का व्यत्मान दिशनाः मुद्राः ॥ চত্ঃষষ্টিপদে দেবা ইত্যেব পরি-ক।ভিতা:। চরকী চ বিদারী চ প্-**७**ना भाभद्राक्षमी ।। देशानाह्या ख्या वारम् (मवाम्। (इज्काम्यः। হেত্ক স্ত্রিপুরান্তক্ষ অগ্নি বেঁতাল-को यमः॥ अधिकिन् कानक्स कः রালোহোকপাদকঃ। ঈশান্যা• ভী-নৰপত্ত পাতালে প্ৰেভনাযক: ॥ আকাশে গন্ধনালী স্যাৎ ক্ষেত্ৰপা लाः खथा यहार । विद्यात्राचिर्ञः

দীর্ঘ• রাশিদ্বারন্ত কারহেৎ।। বসুভি र्ভागमुक्तिक (भवाकामाय मानि-(मर । भून छिनिङ महा छ अंक ভাগন্ত ভাজবেৎ !! যছেব ভজবে मृक्षः ভारेग क्र्जा वायः ভारा । অক্ষণ চতুর্গণ ক্ত্বা নবভি ভাগ হা-ব্লিত•।। শে**ব** ন•শ• বিজ্ঞানীয়া**ৎ দে**-বলস্য মত• যথা। অপ্তাভি গুণিত• পিণ্ড॰ বঙ্কিভি ভাগ হারিভং ॥ য-हिषञ्ज ভবেজ्জीव भव्रगः ভৃত হা-রিত । বাস্তক্রোডে গৃহ । ফার্যাৎ ন श्रुष्ठ मानवः महा।। वामशार्य्यन अ-পিতি নাত্র কার্য্যা বিচারণা। বি:इ कन्ता उत्तायाक हातः मुख्यम् । खत्र ॥ विरक्ष वृश्चिकाको महार शृर्व पिक्त शन्त्रियः। द्वातः पीयार्ख বিস্তারণ ছারাণ্যপ্টৌ স্তানি চ॥ সু-তল্লে পুষ্যনীচত্ত্ব সুধান সূত্র ভূব-१ । भू भ्रम्भिक्ष (त्रोष्ट्रंग वीर्य्यः मः ক্ষিণে তথা।। বন্ধো ২০জ দানু বৃ দ্ধিঃ প্রলাভ সূত্ভিদে। ধনদ নৃপপী-ডাদ মর্থমু রোগদ জলে।। নৃপভী-তি মৃতিাপত্যা অনপত্যঞ্গ বৈরিদণ । অর্থদ॰ বাথহান্যের দোষদ॰ প্র মৃত্যুদ॰ ॥ ছারাণ্যত্তর সংজ্ঞানি পূর্ব দ্বারাণি বঘ্যহে। অগ্নিছীভি বঁচ্-কন্যা খন সন্মান কোপদ ।। রাজ্ম

কোণদ পূর্বে কলতো দ্বার মীরিত । देगानामी जत्दर भूर्व जाराया-को जुनक्षिरमा रेनर्थ अगरने शकिः म नहार बायवहारती जू हा खरत । অইভাগে কৃতে ভাগে দারাণাঞ্চ कनाकन ।। जायय क्षक न्यायाः প্রাদৌ স্যাদুড়ুম্বর:। গৃহস্য শোভ-नः (भाक देनात रेठव भान्यविः॥ পূজিতো বিশ্বহারী স্যাৎ প্রাসাদস্য গৃহস্য চ। ইত্যাদি গাৰুডে বাস্ত-বান লক্ষণ ৪৬ অধ্যায়ঃ ।। পা-लान लक्ष्वस शामामगद्म मृष्टेवाः ।! 🚓 🛮 অপিচ। খাষ্য উচ্চ। পু। ना म ভवनाधीना॰ निरदः । विखदामृ প। স্বৰ্য্যাৎ কেন বিধানেন কশ্চ বাস্ত ক্লান্তঃ।। সূত উবাচ। ভ্গু রুত্রি र्ज्ञा १ १ १ विश्वकर्मा यम ख्या । नाजः सा नश्रक्तित दिभानाकः भुद्र-न्त्रतः।। वृक्षा अवादा नन्त्रेणः (नो नकः। गर्ग এव ह । वाशुरम् वा १ निकः দ্ধক্ষ তথা শুক্র বৃহস্পতী॥ অস্তাদ-শৈতে বিখ্যাতা বাস্তশাস্ত্রোপদে-শকঃ৷ সংক্ষেপেগোপনিস্তু বন্মৰ তে হৎ সঙ্জিপিশা।। তদিপানী পুৰ-क्काबि वाए नाख समृख्यः। नृता হালবধে যোগে যোরৰূপস্য শুলি নঃ ৷৷ লগাটমেদসলিল নপভড়ুবি

ভীৰণা ৷ করালবদনা ভল্লাৎ সমু फुड॰ **সমূ**न्दग॰॥ शुननान मिदाका-শং সপ্তদ্বীপাং বসুন্ধরাং। ততো **২ন্ধ**কানা• ক্<mark>ষি</mark>ব্ন মপিবৎ পতিত্ত• ক্ষিতৌ ৷৷ তেন তৎসমরে সর্বণ প-ভিত্ত যশ্মহীতলে। তথাপি ভৃষ্ডি नगम खर्फ् कुन जमा यमा ॥ जमा শিবস্য পুরত তপ শক্তে সুদাকণ । ফুধাবিষ্টন্ত তজুত মাহরু জগ-তा॰ वर॰॥ उठ: काल्यन मस्राष्ट्री ৈ রব স্তম্য চাদরা<ে। বর• বৃণীয় ভদু• তে যদভীষ্ঠ• তবানঘ !৷ তমু-বাচ ভতো ভূত বৈলোক্য শুসন क्कमः। ভবामि (एतएएत्म छएय-ত্যুক্তঞ্চ শূলিনা।। তত স্তৎ ত্রিদিব॰ সর্ব ভূমণ্ডল মশেষতঃ। মদেহেনা खबीयक विकास भाभट खुवि ॥ **धी**-ত ভাঁতৈ স্ততো দেবৈ বুৰ্ন্ধিণা বাথ শ্विन।। দানবাসুর রক্ষোভি রব-ষ্টক্র সমন্ততঃ। যেন যহৈব চাক্রান্ত স ভবৈবাভবৎ পুনঃ। নিবাসাৎ সর্বদেবানা বাস্ত ব্লিড্ডাইটেডা। অবষ্টলেন তেনাপি বিজ্ঞপ্তা: সর্ব-(मवजा: । भूतीमधुः मुद्रा: नार्व যুশাভি বিশ্বলীকৃত:। স্থাস্যানি किः यनाशात्र भवश्रेक मार्थामुथः। **टटा** वृत्राति छि: (शुक्तः वास

भर्षा ज्या विनः ॥ जाहाता वि-श्वरहवारम नृन मित्रान् ভविष्ठां । বাজ্পশমনো যক্ত স্তবাহারো জ-বিষ্যতি ৷৷ এব মুক্ত স্ততো হাই: স वाञ्च ब्रञ्चवना । वाञ्च यक्तः सृञ ন্তমাৎ ততঃ পুভৃতি শান্তযে ॥ ইতি মাৎস্যে বাস্তভূতোন্ডবো নাম २२५ व्यव्यायः ॥ 🛊 ॥ नृञ छेवाह । অথাত: সাপুৰক্যানি গৃহকাল विनिर्गर। यथा कानः मृङ छाषा সদা ভবন মারভেৎ ৷৷ চৈত্রে ব্যাধি মবাপ্নোতি যো গৃহ• কারবেলর:। বৈশাথে ধন রজানি জৈঙে মৃত্যু ত থৈব চা৷ আষাঢ়ে ভূত্য রত্নানি পশু-वर्क्त भवाशुयार । भावत्य ज्ञाना-७क शानि जा मुनार उथा॥ नजी नात्म। २ थयू (ज विन्त्रार कार्जिक ধন ধান্যক । মার্গলীর্ষে তথা ভক্ত পুষ্টে ওক্ষরতো ভয়ণ।। লাভঞ্ वल्ला विन्हानिः भाष्य विनिर्ह्धिः শেৎ। ফাল্লুনে কাঞ্চন পুণ্রানিতি कानवन म्ड ॥ अधिनी द्राहि-नी मून मुख्दाख्य रेमन्द्रवः। श्राजी হস্তানুরাধা চ গৃহারন্তে পুশস্যতে ॥ আদিত্যভৌম বর্জন্ত সর্বে বারা: শুভাবহা:। বজু ব্যাঘাত শ্লেষু ব্যক্তীপাতাতিগওযো: ॥ বিষ্ণুস্ত গণ্ড পরিঘ বর্জ্জণ যোগেষু কার্যেৎ । त्यु माज्य भाष्ट्रामु भाषार्व श्किक्षिपुर्शिश ।। उथा रेरद्राज नावित्व मृश्र्वं शृष्ट माद्राज्य । চন্দ্রাদিত্যবল লক্ষা লগ্ন শুভ নি-ब्रीकि उ॰ ॥ स्टाम्सायामि कर्डवा म-नाज भित्रवर्क्तियः । भ्रामारमञ्ज মেব স্যাৎ কূপ বাপীযু চৈব হি॥ পূर्वः ভূমি॰ পরীক্ষেত পশ্চাদ্বাস্ত পুকল্লযেৎ। খেতা রক্তা তথা পীতা क्का हिवानू भूवं भः ॥ विश्वारमः भ-न्याउ ज्ञि द्रजः कार्याः भद्रीक्षणः। বিপ্রাণাণ মধুরা মাদা কষাযা ক্ষত্রি-यम् ।। कषाय करूका उद्देश म्-দেষ শদ্যতে।রত্নি নাত্রে তু বৈ গর্জে त्रुनुनिष्ध उ नर्बठ: ॥ घ्ठ माम শরাবস্থ কৃত্বা বর্ত্তি চতুষ্টবং। জ্বাল-(यर ज्निजीकार्थ न्र्वं उरमर्व मिष्यथः ॥ मीखाः भूर्बाः गृश्लीयाः ष्वर्गाना सन्भूई मः। वाखः नाम्हि-का नाम मीপ্रएठ नईउस्र यः ॥ শুভদ: সর্বিণানা প্রাসাদেষু গৃহেষু চ। রব্নিমাত্র মধো গর্ভ পরীক্ষ্য খাতপুরণে ॥ অধিকে শ্রেষ নাপ্নো-তি নুগৰে হানি: সমে সম। হলকৃষ্টে **২০** বা দেশে সর্ববিজ্ঞানি বাপয়েৎ ৷৷ ত্রি পঞ্চ সন্তরাত্রেণ ধ্র রোহন্তি

ভান্য প। জ্যেষ্ঠান্তনা কনিষ্ঠা ভূর্ব-হন্দ্রীয় হরা নতা ॥ পঞ্চাব্যোষ্ধি-कर्ताः अबीकिया ह सहस्य । अ কাশীভিপদ কৃত্বা রেখাভি: কন-কেন ভু॥ পশ্চাৎপিষ্টেন চালিপে)ৎ ज्ञालाए। जर्डाः। मन श्रीः যতা রেখা দশ দৈবোত্তরাযতা: ॥ সর্বা বাস্তবিভাগেষু বিজ্ঞেয়া নব কা নব। একাশীতিপদ ক্ষা वास्त्रिंद भर्ववास्त्रम् ॥ भरसान् পূজ্যেদেবা স্ত্রিশৎ পঞ্চবৈশ্ব ভূ । দাকি:শদাহত: প্র্যা: প্র্যা कान्न ज्ञायाम्य ॥ नामञ्जान् शु-বফীগ্রনি স্থানানি চ নিবোধত। ই শানকোণাদিষু তান্পুত্ত যেজ-विवा नद्र: ॥ मिथी हिवास शर्जन्य। क्रमसः स्विमायुषः । म्यं। भरक्री ज्न रेम्प्रव जाकाला वायु (द्रव ह ॥ প্ষাচ বিভথ কৈব গৃহক্ষত যনা-বুভৌ। গন্ধরো ভূকরাজক মৃগঃ পিতৃগণ শুথা ৷৷ দৌবারিকো ২থ সুগুবিঃ পুশ্লদন্তো জলাবিপা:। অসু র:শেষ পাপৌচরোগো ংহি মুখ্য এব চ ॥ ভল্লাটঃ সোম সপৌ চ আ **मिठिक मिठि छथा।** दहि र्घाजिका দেতে তু ভদন্ত শ ভুর: শূণ ॥ ঈশা। নাদি চত্ছোণে সংস্থিতান্ প্রয়ে

দ্যথা ৷ **আগ ৈ**ধ্যাথ সাবিত্যো জ-(या ভদু खरेषव ह ॥ मस्या नवशहा বুন্ধা তস্যা**ষ্টোচ সমীপগান্।** সাধ্যা रैनकाञ्जत्रान् विष्ठा**८ भू**र्वाष्ठान् नाम-ত: শৃণু ।। অর্থ্যমা সবিভা চৈব বিব-স্বান্ বিবুধাধিপ:। মিত্রো ২থ রাজ-যক্ষা চ তথা পৃথীধর: মৃত: ॥ অ-ষ্টম ত্ত্বাপবৎসস্ত পরিতো বুন্ধণ: মৃতাঃ৷ আপ শৈচবাপবৎ সশ্চ পর্জ্য न्या **२**न्नि पिंछि छथा।। भिक्तिनाक्ष বর্গোয় মেব॰ কোনেয়ুশেষতঃ। ত-মধ্যে তু বহি বিশ্ৰৎ দ্বিপদা স্তে তু मर्बठः ॥ व्यर्गा চ विवसाः क भिनः পৃথीপর তথা। বুন্ধণঃ পরিবৌ দিফ্ ত্রিপদা স্তে তু সর্বতঃ।।#।।বংশানি-मानीः वक्षानि अजूनिम भ्यक् भ्यः ক্।বায়ু যাবৰথা গ্লোগাৎ পিতৃভ্যঃ শিথিন পুন:।। মুখ্যাক্ত্শ মথো-শেষাৎ বিতথ যাবদেব তু। সুগুী-वामिषि यावर ज्ला: भर्जना (मः ব চ ৷৷ এতে বংশাঃ সমাখ্যাতা: কুচি-দুৰ্ভ্জিয় এর চ। এতেষা• যস্ত সম্পা-**७: १५॰ २४७ मन्ड७:।। २**ग्यं हेट-তৎ সমাখ্যাত ত্রিশ্ল কোণগঞ্চ यः । उद्धनाम जू वर्जानि जूना विदिय मर्दना ॥ कीलाहि छानया-ভানি বর্জনেঅন্নতো নর:। সর্বত

বাস্ত নিদিষ্ট: পিতৃবৈশ্বানরাযত:।। মুর্জন্যগ্রি: সমাবিষ্টো মুথে চাপ: স-माहिडः । भृथीश्रता श्र्यामा हिव তযো স্তাবদধিষ্ঠিতৌ ॥ বক্ষ: ছলে हाभवर्भः भृक्ष**ीयः जना वृदे**थः । निवासी मिंडि शब्दिन्। माखि १मि-তি क्रयस्टको ।। সর্লেন্দু। বংশ সংস্থৌ চ প্রনীযৌ পুযরুতঃ। সত্যরোগা-म्य उद्याखाः भक्ष व भक्ष व ॥ ক্রুশ্চ রাজ্যক্ষা চ বামহত্তে সমা-স্থিতৌ। সাবিত্র: সবিতা তদ্বন্ধত্ত॰ मिक्किन भार्निएको ॥ विवस्रानिष भिन ত্রশ্চ জঠরে সংব্যবস্থিতী। পুষা চ পাপ যজা চ হস্তযো মণিবন্ধনে ॥ ভথৈবাসুর সোমৌ চ বামপার্শ্বে সমাস্থিতী। পার্শ্বেত্ দক্ষিণে ত षविटयः नगृहक्ष**ः** ॥ উर्त्ता १र्याः নাদুপৌ জেথৌ জান্বো গন্ধর্ম পুয় को। बङ्घाया जृंख मृग्रीको ग्निकाङो দৌবারিকো মৃগঃ ৷৷ জয় শক্রৌ তথা নেদ্রে পাদযো: পিতর স্তথা। মথ্যে নবপদে। বুক্ষা হৃদযে স ত্ পূক্ত্যতে।। हज्ःबश्चिभारा वास्तः भागाम वुक्तना স্তঃ। বুন্ধা চত্য়দ তত্র কোণেয়র্জ পদা স্ততঃ।। বহিষ্কোণে তু চাঞ্চৌ তু সার্চ্চাভিয় সংস্ক্রিয়া:। বিংশ **ত** हिंभमा किया ठजुःवश्चिभाम

म्ठाः।।#॥ गृहात्रास्त्र जुकञ्जः याः ম্যক্ষে থত্র জায়তে। শল্যস্থপনয়েত্ত। ত্র প্রাসাদে ভবনে পপি বা ৷৷ সশ-वार जगर जमार नवार मुखरायकः । হীনাধিকাকভাবা॰ ন্ত সর্বথা তু विवर्ड्डार्य ।। नगत्र गुम तर्मकृ नर्व विवर भुकन्नय्य । हजुः नानः ত্রিশালম্ভ দ্বিশাল কৈকশালক।।। নামত স্তানি বক্ষ্যামি স্বৰূপেণ দ্বি জোত্তমাঃ। ইতি মাৎস্যে একাশী-जिनम्याञ्च निर्णया नाम २२१ व्यथ्रा-য: ॥ 🗱 ॥ সূত্র উবাচ। চতু: শাল। পুৰক্ষ্যামি স্ক্পানামত তথা৷ চত্:-**मान॰ घ**य घाँदा द्रन्तिन्तः **সर्दौ**ठानु-খে।। নামা তৎ সর্বচোভ্দু শুভ (एव न्भान्य। भक्तिमहात्रहीन्छ নন্দ্যাবর্ত্ত পুচক্ষ্যতে।। দক্ষিণদার-হীন তদ্দ্বিনান মুবাহত । পূর্ব षात्रविश्रीनष्टः सरिः, नाम विन् ত ।। কচক চোত্তরদ্বার্বিহীন তৎ পুচক্ষতে। সৌন্যশালা বি-হীনন্ত ত্রিশাল প্রাক্ত তথা। किंगवृष्टिकद्रः नृगाः दह्रश्रूध कलः भूरः। भावया भूबंगा श्रीनः भूक्षञ মিভি বিশুক্ত ॥ ধন্য যশস্য নাযু-ব্যংশোক নোহ বিনাশন । চল্লী ज्यानाया होनः विभाषः भागवा ज् र्थः ॥ जनक्ष्यकत्र न्ना अर्वे गाथिः खवावरू । **होनः श**क्तिया यसु পক্ষয় নাম তৎ পুন:।। মিত্র বন্ধু मुडान् इडि उथा मर्न ख्यावहं । यान्या भन्नाच्याः भानाच्याः थन चानः कणपुरः॥ क्या वृक्षिकः व মুণা॰ তথা পুএফলপুদ॰। যম॰ সূর্য্যঞ্চ বিজ্ঞেবং পশিংহাভের শাল **कः**॥ ब्राजात्ति ज्यसः नृताः अलक्षयः कत्रक उट । উरक् भूदि जु माताः ছে দণ্ডাথ্যে যত্ৰ তদ্ভবেৎ ॥ অকা লমৃত্যুভযদ• পরচক্রভযাবহ•। ধ-ন্যাখ্য যান প্রভিন্ত শালাভ্যা यिष्ट्रिमानकः ॥ ७६ञ्च ७ यमः नृगाः পরাভব ভ্যাবহ। চ্ল্লী পূর্বাপ-ব্লাভ্যান্ত সা ভবেৎ মৃত্যুস্চনী॥ বধ বন্ধায় শব্রাণা মনেকভয়কারক• । কাচ মুত্তর্থান্যাভ্যা• শালাভ্যা• ख्यमः नृशाः ॥ मिक्तार्थ वर्क्काः व-र्क्जानि हिनानानि नना वृरेश: ॥ #॥ অথাত: সণ্পুৰক্ষ্যামি ভৰন পৃথি-বীপতে:। পঞ্লুকারণ তৎ প্রোক্ত गूडगानि ्विष्डन**ः ।। यक्षां**खतः হস্তশত বিস্তার শোভনে। নত:। চত্সুন্যে বিস্তারো হীয়তে চাষ্ট ভि: करेत्र: ॥ एठथां माधिकः रेनर्घाः পঞ্ছপি নিগদ্যতে। যুবরাজস্য

বক্ষ্যামি তথা ভবন পঞ্চৰ ॥ বৃদ্ধি: **বিদ্তু ত্তথাশীতি হীৰ্যতে ভত্ৰ বিস্ত-**त्राट। बार्णन ठाधिकः रेमर्घाः शकः-স্থপি নিগদ্যতে !৷ 🛠 ৷৷ সেনাপতে: পুৰক্ষ্যামি সদা ভ্ৰনপঞ্ক। চতুঃ विश्व विखाता यहिः विश्व ही-या ।। शक्षावा अतु देन घं । क्षेत्र व जा-গেনাধিক ভবেং। 🗱 ৷ মন্ত্রিণা মুখ वक्रामि उथा ভवन भक्षकः॥ हजू শতুর্ভি হীনা স্যাৎকরষষ্টি: পুরি-ख्रत । अक्षाः स्मिना धिकः देवर्धाः भः **क्षत्रनि निगम् (एउ ।। इ. ।। जामहाना-**ত্য লোকানা॰ বক্ষ্যে ভব্ন পঞ্চক । **हजादिः मंडि**था हो ह हजूर्डि हो या उ कमार ॥ ठजुर्थाः नाधिकः रेनर्घाः न-ঞ্ষেতেষু শস্যতে। 🕸। শিল্পিনা• क्कुकीनाक रेवणानाः गृह शक्षकः॥ অস্তাবি•শৎ করাণান্ত দ্বিহীনা• বি: স্তরেণ তথ। দ্বিভণ দৈর্ঘ্য মেবোক্ত• मध्रामाञ्चरभव जु॥ 🕸 ॥ मृजकर्या छि-কাদীনা বক্ষ্যে ভবন পঞ্চ । চতু-र्थाः ना विकः रेमर्घाः विखाः ता चान-শৈব তু ॥ অধ্যৰ্জ করহানিঃ স্যাৎ বিস্তারাৎ পঞ্চসু ক্রমাৎ : #। দৈবজ্ঞ **७क रेवम्यानाः म**ङाखात्र शूरतायमाः ॥ তেষা মপি পুরক্ষ্যামি সদা ভবন পঞ্চক । চত্ত্বারি শচু বিস্তারাচতু-

ि हो रीं उ कमार ॥ शक्षाबाउव् रिर्घ ; व व शाराना थिक । जिल्हा । 🗱 । ठजूर्वर्ने मा दक्षामि मामानाः गृह्भः करु।। দ্বাত্তি-শক করাণাস্ত চতু ভি হী যতে ক্রমাৎ। আষোডশা-দিভি পর ন্ন মন্ত্যাবসাধিনা ।। দশাংশেনাইভাগেন ত্রিভাগেণাপ शाहिकः। श्रिष्कः रेष्यं भिज्याञ् ব্রা ক্ষণাদেঃ পুশস্যতে॥ সেনাপতে न् भग्रामि गृहरेम्याखाद्वप छू। নৃপবাসগৃহ• কার্য্য• ভাণ্ডাগার ভথৈব চা৷ সেনাপতে গৃহিদ্যাপি চাতুর্ণিস্য চান্তর । বাসকোব গৃহ কার্য্য রাজপ্জ্যেষু সর্হণ।। অন্তর भुखवागाक यंगिजू मूर्व भिवाउउ । ভথা ছন্ত শতাদ্ৰীক্ গদিত বন-বাসিনা॰ ৷৷ সেনাপতে নূৰ্পস্যাপি সপ্তত্যা সহিতেবিতে। চতুর্দশ হ-ত व्यारम भाषा न्यामः भुकी खिंठः ।। পঞ্জি॰শজ্তে তফান্ অনিন্দ: সমুদাহত:। তথা ষট্ত্রি:শদ্ধস্তাভু স্থাঙ্গুল সন্দিত: 11 বিপুস্য মহতী भाना न रेमर्घाः भद्राजा ভारवर । ममाञ्ज्वाधिका एवट क्वविरम्। বিধীয়তে ॥ পঞ্জিশৎ করা বৈ (म) १ जूनानि ज्यामम । जाव क्रिन्न मूमुम् गुजा शक्षममाञ्चेतः

৷৷ শালাযাৰ তিভাগেণ যস্যাপু বীথিকা ভবেৎ। সোফীশ নাম **उदास्त भन्दाहारवाह्य अर्वट्या शा**-र्थाया वी'शिका यव मावश्चेस सम्हा-তে। সমস্তাদীথিকা যত্ৰ সুস্থিত। তদিহোচ্যতে ॥ শুভদ সর্ব মেতৎ न्याद हाजुर्वर्ग्य कर्जुर्विषः । विख-রাৎ বোডশো ভাগ তথা হত চ-তুষ্ট্য ।। পূথমে। ভূমিকোছায উপ-विश्वेष शुरीया । चामनाःमन नर्वानु ভ्रिकानु उत्पाहुयः ॥ প-শ্বেষ্টকে ভবেডিভি: বোডশাংশন विखद्राट । मानत्वन विकल्नः ज्याट তথা মৃন্ম ভিভিকে॥ গৰ্ভনানেন মানন্ত সৰ্ব বাস্তযু শস্যতে। গৃহবা-जगऽ भक्षामम्हार**म**ि त्रकृतिः॥ সংযুক্তা দ্বার নিষ্কস্তো দ্বিভণশ্চো-हुर्या ভবেং। घात्रणाथामु वाल्वा मू हु।य॰ कत्रमियारिङः। अकरणः সর্বাস্না॰ পৃথাত্ব॰ শস্তে বুধৈঃ। উদুষ্বোত্তরাঙ্গে চ তদজার্জণ পুবি-खोतः॥ इंजिमाट्सि वास्रविष्णाम् शृङ् नान निर्णय नाम २२৮ व्यष्ठायः ।। #॥ সূত উবাচ। অথাতঃ সণপুৰ-ক্ষ্যামি শুম্ভমান বিনির্ণণ। কৃত্বা স্ব ভবনোছু।य॰ সদা সগুগুণ दृशः॥ वानीकाञ भृश्दः मापर्गं नव-

**ও**লৈঃ **মহ।** ক্চক শ্চভুরসু: স্যাদ-श्चेारमा वड्ड डेह्यरङ । घिरड्डः (वा-**उनान्स घारनानुः भुनीनकः। मध्य** পুদেশে য: স্তড্টো বৃদ্ধ ইতি गृड:।। এতে পঞ্ गहाउद्धाः भु-শন্তা: সর্ববান্তযু । পদ্মবল্লী লতা-कार्य। পध्रम्भन क्लिडा ॥ उग्रम्। नवमाः भन शम्बन्धा खङ्गा । **समुब्रा ज्वा (श्वाका शेना (का-**পত্লা ততঃ ৷৷ ত্রিভাগেণেহ সর্ব্র **ठ**ञ र्जाराग वा श्रुनः । श्रीनः श्रीनः তুর্থা শাত্তথা সর্বাসূ ভূমিযু ॥ বাস-शिश्वान मर्खियाः भूरताम मिकारान তা # । দারাণি ত প্রক্যামি পুশ-ন্তানীহ তানি তা। পূৰেণে<del>ন্দু</del>° জয়ন্ত ঞ্ ঘার॰ সর্বত্র শস্যতে। যাম্যঞ্ বি-उथरिक्षव मिक्कान विम् ब्रु थाः ॥ श-कित्म भूम्रवं उक्ष वाक्ष्य भूभमाः তে। উত্তরণ ত্ভলাট পৌন্যঞ্ मुज्र • ज्वरा अथा वास्त्र मर्बन (वदः मात्रमः वक्तियः । मात्र ज द्रथाया विष्क ज्लार मर्चम्वामयः॥ ভুকণা দোৰ বাহুল্য শোকঃ পঞ্চে ন জাগতে। অপনারে। ভবেল্ন। कृभव्यथ्न महंना॥ वाषा भुमुवल न महाद कीत्मना पुंचम सुदय । বিনাশে। দেব্জানিঘে ভান্তেন প্রী

হতো ভবে**ং** ॥ গৃহভতু বিনাশঃ गार गृह्त ह शृह् कृष्ड । यान-ধ্যা বস্তরৈ র্ন্তিজে গৃহিণী বন্ধনম্ভবেৎ ॥ তথা শস্তভ্য- বিদ্যাদন্ত্যজ্ঞসং श्रह । উहु । दिख्ना । ज्यि ত্যক্তা বেধোন বিদ্যুতে॥ ব্য মৃদ্রা-हिट्ड हाद्र डेग्रामा गृह्मिथिनाः। 'बरक्ष निहिट्छ विन्हार**, क्व**नाने' विष्ठक्राः ॥ भानाधिरक ब्राज्ञ छयः नी-চে **ভক্ষরকো** ভয়া দারোপরি চ য দ্বার ভদম্ভক মুখ সমূত।। আধান মধ্যদেশে ত অধিকো যস্য বিস্তর: । वजुन्ड नकिंग् मार्था नामा। जन् বিনাশনণা তথান্যপীডিত দ্বারং ব-**ल्लायकत्र ऋदुर्। भ्ल**षात्र• ७था-नाज नाधिक (भाषन सुरद्धा अस **এপিণ বল্লীভি মূলদারন্ত শোভ**-যে । প্ৰযেচাপি ভলিভ্যু বুলিনা ठाक्राञाररेक:॥ **#**॥ खवनमऽवर्रेः भूर्ख निदारण मार्चकानिकः। উ पुत्रद्र ত্তথা যামে। বাৰুণে পিপ্লল: শুভ:॥ প্লক শ্চোতরতো ধন্যে বিপরীত खुनिषाय । कणेकी की तहक क था-जबः नक्षा क्यः॥ ७वः श्विः পুছাহানি দ্রভি ক্রশ: স্না।ন हिन्स्राम्बि छान्न्यान्स्यत्र झान-(यर मुजान्।। भूबागात्माक दलन

भंभी जिलक हम्भकान्। माफिमी পিপুনী দুক্ষা তথা সমূম মণ্ডপ॰॥ ক্ষীর পুগ পনস জমকেওকীভি জা-তী সরোজ শতপত্রিক মল্লিকাভি: । यहाद्रिक्न करनीरन शाहनाञ्च যুঁক্ত• ভদত্ৰ ভবন শূৰ্য মাতনোতি ।। ইতি মাৎসের বাস্তবিদ্যাসূবেধণ विवड्ड (ना नाम २२२ ज्यादायः॥॥॥ সূত উবাচ। উদগাদিপ্লব॰ বাস্ত স मानिमात्रम ख्या। भत्रीकः भूर्वद क्र्यां अरु अरु हार विष्ठक १: ॥ न দেব ধ্র্ত্ত সচিব চত্ত্রাণা সমীপত: । কারবেন্ডবন॰ প্রাক্তো দুংথ শোক ভय॰ य**७: ॥ ত**স্য পুবেশা ক্রবার उरमहारमार गुडुः मुडः। পृष्ठः भृष्ठजन्न मव्यावर्डः भूमम्याउ ॥ অপসব্যোবিনাশায দক্ষিণে শীৰ্ণক खथा। मईकाम कला नृगाः मम्मूर्णा নান বামতঃ॥ এবং পুবেশ মালো ক্য যত্নেন গৃহ নারভেে । #। অথ नष्टमात भूर्व मूड्दं मूख वकारा॥ র্বোপরি শিলা ক্রা সর্বীজস भन्दि डा॰ । हर्जुर्छि तुर्कित सम्रः व ज्ञानकात्र भृष्ठिउः॥ मृङ्गामत्रदतः শিল্পী সহিতো বেদপারগৈ:। স্থা-शिक विनामि उद्य नाही विवि সমন্তি।। नानाक्ष्ठ कलात्भठः

বক্ত ভাষ্য সংযুত । বুক হোষেণ वारम्यन गीउ सक्त निष्ठिनः ॥ भा-युत्र । ভোজ্যে षि भूगन् । हा यस्त्र स्थु-मर्लिषा। वाखाम्मरञ भुजिकानीहि মস্ত্রেণানেন সর্বদা॥সূত্রপাতে তথা कार्य। भव अरखान्त्य भूनः। षात्रं वस्ताहुरा उद्दर भुरवन मनरा उथा ।। বাস্তপশম্বে ভদ্বৎ বাস্ত যজ্ঞ স্ত পঞ্ধা। ইশানে সূত্রপাত: স্যাদা-्याय खञ्चात्राभगः ॥ भूमिकाक सः ৰী ত বাস্তো: পদবিলেখন । ত-ब्बर्नी मधाना है व उथा मू ४ छ मिन-ণে।। পুবাল রত্ন কনক ফল পিষ্ট क्छादर । मर्दवास विভागियु भाग्र म्लाहितिवाश्याम्।। न ভ्याक्राङ्ग কাষ্টেন ন শস্ত্ৰ নথ চৰ্ঘভিঃ।ন চ সা-श्किभारतन कृतिहास भूरतथाय ॥ এভি वित्विधि उ॰ सर्गार मृथ (भाकानगामिकः। यहः गृह्लुरवणः माहिनी उजामानथार्थ ॥ उग्र স্ত্রাদিকে ভদ্ধ শুভাশুভ ফলোদ-য॰।#। আদিত্যাভিমূখ রৌতি শ-बनः शक्यः यमि॥ ज्लाकानः ग्र् শেদক গৃহভরু: সমাজান: ৷ বাস্তু-(क उद्यक्तानीयामत्रणण) **७**यणुरः ॥ শঙ্কনানস্তর । যত্র হস্ত য়ে স্থাপদ-खु:त्र । उरङ्ग मसुवः विन्<u>राख</u>ब भना विष्यानः ॥ शुमार्यप्रात मृत्व ভূষগোমায় বিলল্পিড। ভত্ত শল্য विकानीशर थर्जनाम ह रेज्यत ॥ यही मास्य २० विद्यारण मधुव • (व्रीडि वायमः। धन छज विकानीयाम् व স্বাম্য বিভিতে ।। সূত্রছেদে ভবেমৃত্যু र्वतिषः कील इत्थामृत्य। अनादा-যু তথোমাদ কগালেষ্চ সম্ভূম: ।। कष्ट्रभाला ह कानीयांटे भू काना खीय वास्त वि । ग्रज्ब ग्रम्। পি বিনাশ: শিল্পি সম্ভুমে।। হস্ত স্থানে চুঃতে হ্বান্তে শিরোরোগণ বি-निर्फिल्ट । अञ्चाशशात गर्रमः व्यवमानि क्या ज्य ॥ मृजुः স্থানচ্যুতে স্বস্থে ভণ্নে বন্ধ বিদু-রুপা:। করসংখ্যা বিনাশে তু नाण गृहभाउ विंमू: ॥ वी छोषि বিহীনে তু ভূতৈভো ভয় মাদিশেৎ । পুৰ্যাক্ষণেন বিন্যস্য স্তন্তে ছএ वित्वनत्ययः ॥ ७७: शुप्तकित्वनान्यः ब्राह्म र उम्राह्म विष्टक्षाः। ययाह्य-কর॰ নৃণা॰ যোজিতান্যপুদক্ষিণ।। त्रकाः वहीं उ यह्न उत्झाशमृत নাশিনী । তথা ফলবতী শাখা স্তম্ভোপরি নিবেশ্যেৎ ॥ পুাগুদক্ श्लवन कार्याः विम्थन्त न कार्रार्थ। শুমুষা ভব্নয়াপি ছার্ম্বা **মণ্হ**  स्था ॥ निष्याः जननाभः महार नह जञ्चर्कारगर्ग्र॰।यनि जञ्चर्कारगरम् जर्बिक विवर्षायः।। भूर्वि वर्षि उ॰ वाञ्च अर्थ)दिवाशि रेव जमा। मकि-ণে বন্ধি ড॰ বান্ত মৃত্যবে স্যাল্প-শ-यः ॥ शम्हामृष्यस्य यद्यास्य उपर्थक्रय কারক। বন্ধাধিত তথা সৌতে वङ्गद्धभक्षत्रकः ॥ व्यास्यय यव वृष्टिः महाखरश छ्यम खुर्वे । व-র্জিত রাক্ষ্যে কোণে শিশুক্ষ্যকর• ভবেৎ।। বৰ্দ্ধাপিতন্ত্ৰ বায়ব্যে বাত-ব্যাধি প্রকোপক্ৎ। ঈশানে জু পু-कारु।नि वीर्छो সद्दर्कि जना ॥ 🛊 .1 ঈশানে দেবভাগার তথা শান্তি-गृहः ভবে । महानमः उथात्यत्य তৎ পার্শ্বেচোত্তর• হল•।। গৃহস্যো• **शक्रतः नर्बः निर्थाउ ज्राशायन्त्रः।** বন্ধস্থান বহি: স্বর্যাৎ স্থান মণ্ডপ त्व ह ॥ थन थान। ११ वायरवा कर्म-শালা ভতো বহিঃ। এবম্বাস্ত নি-तिनः ग्राम्गृश्बर्दुः मुखावशः॥ इंडि माट्सा वाञ्चविष्ठा गृहिन-र्भाया नाम २०० व्यक्तायः ॥ # ॥ मूं উवाह। अथाउ: मः भुवक्ताः मि नार्बाष्ट्रवन मुखम । धनिष्ठा न-ঞ্জ ত্যক্তা বিষ্ট্যাদিক মতঃ গরু ॥ ততঃ সাহৎসরোদিঙে দিনে যা

यासन वृषः। भूथन वित भ्षाङ **স্**ৰ্য্যাৎ বৃক্ষাৰ সৰ্ব্যায় প্ৰেন্তিরেণ পতিত গৃছে দাক পুলস্যতে। অ-न्या न भुजः विम्यान्याम्याभन्ननिः भाउत्।। कीत्रवृक्षाक्तव **राक् न**ं গৃহে বিনিবেশ্যেৎ ৷ কৃতাধিবাসং विश्रेग द्रनिनानन शीफिड ।। गजा-বভগ্নঞ্চ তথা বিদ্যুদ্মির্ঘাত লীডিত• । अर्धभूदः उथा माक जग्नम्दः उ-रेवव ह ॥ हिड्ड (म्वानस्यार्भमः ন-ী সক্ষত ভথা। শ্ৰশান কৃপ-निवयः उडागापि मम्ख्यः॥ वर्छः-रिट नर्वथा माक यभी हि विभूताः শ্রিय॰। তথা কণ্টকিনো বৃক্ষামীপ নিয় বিভীতকান্।। শ্লেম্মাতকান্এ **न** उक्त वर्क्त एट गृह कर्या । অশন শাক মধুক সৰ্জ শালা: मु जादकाः ॥ हन्तनः भनमः धनाः সুরদাক হরিদুকা। ছাভ্যামেকেন বা স্ব্যাৎ ত্রিভির্বা ভবন শ্ভ।। दङ्जिः काब्रिजः यत्राप्तानक खयमः **खादर । और कर भिःभभा धन्।** খ্ৰীপণী ভিন্দুকী তথা ॥ এতা না नामनायुका कराहिहु इकाब्रिकाः। अर्ग्सनः भनम उद्दर मद्रवार्क्त्न श-দ্মকা: ।। এতে নান্য স্নাযুক্তা বা-खकार्या मूज्यूनाः । उक्रहान म-

হাপীতে গোধা বিদ্যাদ্বিচক্ষণঃ ।। माञ्जिष्ठ वर्षा एक: मार नीत्व मर्भ विनिर्फित्यः। अकृत् महरे বিদ্যাৎ মুক্তাভে শুক মাদিশেৎ ॥ কপিলে মুষিকা বিদ্যাৎ থায়াভে জ-नेमामित्मर। এविषयः मगद्धं उन् क्क्रियवास्त्रकर्माना। भूबं कि वस गृही-याथ निभित्तः भन्नरेनः मूरेजः। 🚓 । **व्यास्मिन खनिएउ रिरार्घ १ क्षेत्रियं इरज** তथा।। यह्य भाय छ॰ विদ্যাদষ্ট ভেদ॰ বদানি ব:।ধুজো ধুনক্চ সি:হক্চ খা ব্ব: খর এব চ।। হস্তী প্রাহ্রণ্ট পূর্বা-দ্যা: করিশেষা ভবস্ত্যমী। ধৃত্র: সর্ব-মুখে। ধন্য: পুত্যগ্রারে। বিশেষতঃ ॥ উদমুখো ভবেৎ সি:হ:পুশ্লুখো বৃষভো ভবেৎ। দক্ষিণাভিম্থো হন্তী সপ্তভিঃ স উদাহ্তঃ।। একেন ধৃদ্ধ উদ্দিষ্ট স্ত্ৰিভি: সি•হ উদাহতঃ । পঞ্চত ব্ৰত: প্ৰোক্তে বিকো **१ष्टा** । उत्प्रदाहेखनः कृञ्जा विम्रामाणिः विष्ठकानः। मध বিংশদ্জৃতে ভাগে পাফ্ বিদ্যাদ্ধি-চক্ষণ: ॥ অইভি ভাজিতে দক্ষে যাম্ভ্র সব্যামেতঃ। ব্যথাধিক। न कवी ज राजा मायकब स्थार ॥ আয়াধিকে ভবেছান্তি রিত্যাহ ভ গৰান্ ছারিঃ। ক্রাগুভো ছিলবর।

नथ भूर्गक्छ । मध्यक्र जागूमल भुष्ठ ফলোপশোভে । দত্ত্বা হিরণ্য বস-নানি তথা দিজেভ্যো নাস্ল্যুশা ন্তি কিলখায় গৃহ• বিশেষ ॥ গৃহেশক্ত ह्मित्रविविना विवक्यं अर्यप्राट श्रा-नार वास नगरन ह विधि र्य डेक: 1 **मडर्भा**रट विकरतान्य छक्का छा-জ্যৈঃ শুক্লাম্বরশ্চ ভবনং পুরিশেৎ **मध्यः ॥ इंडि भाटाम्य वास्त्र वि** म्रानुकीर्खनः मनाधः २०) वाधायः ॥ 🗱 ॥ व्यन् । व्यथ् वास्त्रमृक्तिः । তত্র স্থাননির্বাঃ। নদী শ্মশান শৈলানা॰ বনস্য নিকটে তথা। ন ৰান্ত কৰ্ম সন্থী ভন্দদ্য নগরান্তবো: ।।≄।। ७ॿ ि ६विलंबः। ब्राक्नशनिन वङ्गीनाः यसन्। मिल (यण्यनः। ना-ब्रम्भ काबरयमाजा जी कगुरार क यभुरः ॥ उषाष्ट्र । ভোগः कीर्ভि র্থন রোগ: ছিরতা চ ভবঃ ক্ষ্য: । দাহ ইভ্যেব কথিতো দিশি বাস্ত ফলোন্ডব:॥ ভোজে চ। यहादा का-যতে রাজা তস্য লগ্নস্য যঃ পতি:। ষা দিক্ ভস্য নৃপ ওস্যাণ বাস্ত্রিম্ভণ সমাচয়ে 🖭 এবঞ্জ সভাধিপতিকে মেবলগ্র জাতস্য জুপতে:। **জ্**জা-ধিপতি কালা দক্ষিণস্যা মপি বান্ত ন্তুষ্ঠিতি।। পর্শরস্তা হদ্শা- জনিতো রাজা বাস্তু শুস্তু ভদিলে । এতেন স্থ্যাদি জনিত্স্য নূপভে: श्र्वामि मिक्कृ वाञ्च कद्रशः । एउन শুকু দশায়া- জাতস্যাহ্নেয্যা মপি ন मूर्य जि ।। 🗱 ।। जथ नक्ष ग• । वास **क**-र्याग्रहीनावः नगः नृतिक मृखि हः । পুरुष्टरक् श्लान तमा तमा वृत्का-পশোভিত•।। बन्धी फीह: ऋशा-ভীতি ধননাশো **২**ভ্যসূন্তা। স-ম্পদ্দি রিভি পোক প্রাদিকস-ভा· क्**ल• ॥ उथाहि পু**वन सन्। জন্মলগ্নেন দিক পশ্চাৎ রাজ্ঞা• বা-স্তপ্লবো নতঃ। এতেন সূর্ব্যাবিপত্তি **ज्ञानःः काउम् नृभारतः** म्यं।-षिभाष्ठः भूतिगाः भणाए भणिन প্লবোপি ন দুষ্যতি॥ অন্যে তু। যদ্দে শাজনিভো রাজা ভদিশোগু প্লবে মত:। এতেন ওক দশাজাতস্য নৃ-পতে: দক্ষিণ প্রবোপি ন দুব্যতি॥ অন্যত্ত । বুদা ক্ষতিব বিট্ শূদাঃ भूबीरि रिश्युर्ग कमार । वास झ-বন মিছন্তি নিজ সম্পত্তি হেতবে 🛭 নীতিশান্তে চ। বাস্ত কর্ম নৃপঃ হ-र्याष्ट्रणवरेषित्राण मिलि। मीर्घा दा চত্রসূ৷ বা বাস্তভ্নি মাহীফিতাং ॥ এতথো लंकन ७ वह एक वर महात्र यथा। ११। यथ यान । ब्राधनात्य-

न न्পिं वीखावसः मनाहरतः । बारा जनः मूथ मृःथ मीठ जी তি শ্চয়: ছিব্ন: ॥ ইত্যঙ্গৌ বাস্ত না-মানি রাজকাতৈ রনুক্রমাৎ। অ नाव वृ। बनानाः मही छ व् पंथाया রম্ভ এব হি। রামকাভৈন্ত তাবন্দি বাস্ত অর্য্যান্মহীপতি: ॥ সুরশা-ছুন্দ সংখ্যেন রাজ পটেন ভূপতে: 1 वास कर्य नमात्रास्त्रा धन धाना क्रयभुरः ॥ এত্যো রপি পূর্বদ্যা-थानः। दाबह्या अवानि वास পত্তন নিষ্যতে। তস্যাপি পূর্ববন্মা-ন মিতি ভাগুরি ভাবিত ।।।।। অথ দোষ গুণী। পরনিমিত বাস্তহো ন ভিঙ্কি চিরং নৃপ:। ন সুখায় ন श्रमीय उत्तमा ज्वि कायर ॥ व्यन् ত্রাপি। রাজান্যবীর্য্য পুত্যাশী পর বান্তক্তভিতি:। ন সুথায় ভবে म्ना॰ यथा भद्रगृष्ट् गुरुः ॥ यः स-নিৰ্ঘিত বাস্তছো নিজলগাদি স•-যুতঃ। বিচারি তপুরো রাজা স চির॰ স্থমশন্তে॥ অন্ত্রাপি। রাজা अवाञ्वीयगारा निक निर्मित वास ভাক্।স চিরু তন্তে সৌখ্য ৰগৃহ-(ञ्) गुर्का यथा।। \$।। यथ कान:। বর্ষান্ত ২ ভূচনিতে শুক্রে কেন্দেু সূত্র ख्रो मूट्डे। वाखक्यं **न**नाव छ•्। णुक हन्मुकि ज्विष्क ॥ शुरुगुकी यः সন্য: কর্ত্তব্য তত্ত্ব বৈ শুভে। বাজা-রম্ভ: কার্য্য: শৃত সম্পত্তি কামিনা রাজ্ঞ।।।ইতি বাস্ত যুক্তৌ বাস্কুদেশেঃ ॥ #॥ व्याप्रवाः यथा। यनारु वाञ्चः व अन्।। यामि हरेख फर्जू र्डि: म्रान प्र ७ (खरेनव माभरयः । (क्रामा ७-যক্ষরে। ভব্য: শোককৃদ্বিজয়: শুচি: ।। বংশকৃৎ পাপকারী চ বিকারী শোভন: শিব:। স্বপ: কামদো थ्या (थो(ग)) थनश्त्र छथा ।। थनमः मूथक्ष हा वारहे। श्ट्रीम्म की र्ख-जाः। उप्यथा। आयान भद्रिशाहा-ভ্যাণ যো হল্পপণ্ডো হতিকায়তে ৷ উনবি শতি হৃতে ভাগে শেষেণৈত। यथांकन ।। क्लिन महार्थ मः मि छ র্ভযকারী ভযকর:। ভব্যো ভোগ• পুসৰতে শোককৃষ্কু নাশ,নঃ ৷৷ বি-জয়: হ্বজতে বৃদ্ধি: শুটে: সর্বস্থ বছে । ব॰শকৃৎ ছাক্তে ব॰শ॰ भानकाती व्यवाभशः ॥ विकाती **জ**কতে দু:খা শোভন: শুভনাব-(इट । निवः मर्वार्थ मिरेका माट জ্বপ: সত্ত্রনাশন: !৷ কাম্বের হভীষ্ট ला जः नहाद ध्रम्। महि अर्थनः। পৌনেঃ ধর্মাতিঃ সৌথ্যু দু:খ ধ-नहात जावद् ॥ धनाम धनना छः

म्राट मृथक्ट मुशकात्रकः । ইতি সংগ্ৰ:।। ভোজস্তা দণ্ডনান ত-रिथव किन्छ युक्ति बन्ता। चनमायः ভো দ্বিভগৈ তৈ: শৃভাবহ শতরমু এব নববাস্ক শিষ্যতে। কিন্ত্র দণ্ড মিত দণ্ড সম্মিত: পুকরোতি বাস্ত ব্রতিসৌখ্য সম্পদ্ ॥ উষ-ज्ञा वालू मा क्रिमा खर मि अहि निस्ति ত। ত্রিকোণো ব্রুলো দীর্ঘো যব মথে। বৃহন্মথ:।। তথা ডম্ক রূপ-শ্চ সর্পাকার স্তথৈব চ। ছিল্লে। ভি মো মধ্নিন্দো ব্যজনাভ শত্মুথ: । विभएषा जनमात्री ह तृक्षमायी তথা পর:। গজশগুকৃতি শৈচবো-भम्ाः भन्निकीर्हिणः॥ वास् थाः ७ মহাদোষা হেয়া স্তমাদিচকাণ: 1 চত্রসুঃ শভোদীর্য স্তল্য: পুা**ড: স** बाल्विडः ॥ स्मारेष विश्वीतम विष्क যো বাস্ত খণ্ড: সুখাবছ: । ইতি ষ্ ক্তিকল্পতরে ী বাস্তুযুক্তিঃ ॥ 🗱 ॥ তত্র कालनिर्गयः : रेवनाच नावगायाः মার্গ ফালুন কার্ভিকা:। সুপুশস্তা গৃহারস্তে গরীপুএ সন্জিদাঃ।। শু-ক্লপক্ষে ভবেৎ সৌথ্য কৃষ্ণে চ ভব তে ভ্ৰণ। আদিত্য ভৌন বৰ্জ্জ मर्स्य वाजाः मुखावराः ॥ उथान्। ब । পূর্ণিমাদ্যস্থনী यावट भूद्यामा বৰ্জ্জবেদ্গৃহণ। উত্তরাস্যান সন্ধী 🤡 नवनप्रक्ति ठञुर्षभीः ॥ अभावामप्र-हैंगी गावट शिक्यामा विवर्क (यट। नवमप्राप्ति उथा यगम्। यावट শৃত্ল চতুদ্দি।। বজু ব্যাঘাত শ্লে চ ব্যক্তীপাভাতিগগুযো: । বিষ্ণুস্ত গগুয়ে। শৈচব গৃহারম্ভ ন কার্যেৎ ।। আদিত্যদ্ব রোহিণী নৃগশিরে। **জ্যেষ্ঠা ধ**নিষ্ঠোত্তরা রেবত্যাথ ম্-যানুরাধ হরিভি: শুজৈ: মভাবাদি-जि: 1 (जोन)। निवास १थ भाभः রহিতে যোগে বিরিক্তে ডিথৌ বি-স্টিভ্যক্তদিনে বদন্তি মুনযো বেশ্মা-रि कार्यः मुङ्शा म**्**म्रानुद्राति । हन्द्राप्तिकः वलः लक्षा लग्नः मुख नित्रीकिष्ठ-। खञ्जाहायामि कर्डवर मन्। ज जू विवर्क्क एए ॥ जिथिनी ताहिनी मूल मूखदावय रिमन्दर। मां इंडानूबारी ह वास्कर्मि শস্তে ॥ তথাচ । ব্ৰিভি ক্সিভি র্বেশ্মনি কৃত্তিকাদ্যৈ রশেষ পুঞাপ্তি ধনানি শোকাঃ। শত্রো ভ্রণ রাজ ভয়ঞ্চ মৃত্যু: মুখ পুরাসক্ষ নর পু-ভেদাঃ ॥ নাশ-দিশন্তি মকরালি জলীর লগে নেষে খটে খনুষি কর্ম-मु मीधमूब । कन्। अर्थ मिथ्नरक ধুবমর্থ লাভো জ্যোতির্বিদ: কলস नि र व्ययु वृक्षि ॥ ना रार्क वजु সম্পাতঃ কোষহানিক শীতগৌ। মৃত্যু র্মুন্ধরাপুণ্রে চন্দুজে শুভ স म्भरः ॥ जीत वर्षार्थ कामाक मू ভোৎপত্তিস্ত ভার্গবে **শ**নৈশ্বরে তৃ-मातिमुा ताशावज भूवर्वा ॥ #॥ व्यथ अरवनकानः । मृत्य र्वारम (कन्मुरेग सिंधनरेग: शारेश जियका-যগৈ: র্ল্লণে কেন্দুগতে হথ বা সুর শুরৌ रिन्छिय भूष्कुर २भि वा । সর্বারম্ভ ফল পুসিদ্ধি কদযে রাশৌ চ ভর্তু: শুভে স্থান্য স্থিরতোদ্যে চ ভ-বন কাৰ্য্য পুৰেশোপি বা ৷৷ পৌ-কে ধনিষ্ঠা অথ বাৰুণেৰু স্বাৰম্ভ বৰ্জে बिषु हा खद्भष् । अभी १ हत्सु मुङ বাসরে চ তথা বিরিক্তে চ গৃহপুবে-শ:॥ তিথি রারক লগ্নাদি সমা-রয়ে যথোদিত । পুরেশেপি গৃহ স্যান্থ স্তথা জ্যোভির্বিদো জনা: ॥ 🗱 ॥ व्यथ हात्रः। निक्हातः वास्त খণ্ডান চতুর্দার নারভেৎ। একদার দুংশারণ চত্তারণ দুরাবরণ !! ত্রিদ্বার নেব নৃপতে ৰাভ্ৰম্ পুলস্তে : দ্বে নৃথ্যে তত্ৰ চান্যৎ স্যাদমুখ্য মি তি নির্ণয:॥ রাজদারস্তু ভবৈকো य-মদার তথা পর:। অপদার• তথা-

नार मानिजि हात्रमा निर्नयः ॥ ব্ৰহ্ম ক্ষতিয় বৈশ্যানাং প্ৰাণ্ডদক্ প-िक्टिंभः क्रमार । मूथावात्र मिक-ণস্য পর • তস্যাপি দক্ষিণে॥ বল-বদ্বৈ বৈরিম্থ্য দ্বার মিত্যন্য সমা-ত । রাজদারে ২ন্য ভূপানা ° শি-क्षेनाचा भूरवणरायः ॥ याजा भुनार পরাণি রাজদারেষু কার্যেৎ। যম-बाद्र हिनाकर्य बिय उन्ह भुविनन॰ ৷৷ নি:সারণ মৃতানাঞ্ দুষ্টানাঞ্ নি-বন্ধন । অপদারে হ্বরোধ্স্য গম-নাগমন ক্রিবায়ারাছে বিলাস যাত্রা ठ नर्गे छात्रा भूतिसनः । कः। व्यथः शुष्ठीव्रनिर्णयः। गरैक तर्छन्। मनू-জৈ রলহ্যাঃ পুাচীর থঙা দ্পতে ভবস্থি। রাজদণ্ডোমতা: সর্বে প্রাচী-द्राः পृथिवी जूकः । विःमाछ एउ जु **श**कारम् शार्षस्याः शक् शक ह।। श-শ্চাৎ পঞ্চ চ বিজ্ঞেয়: পুচী**রা:** পৃথিবীভ্না। সর্যপুত্তে ত্বাবরণো नाम भाषीत डेठाउ ॥ भुजिभुकात স সংখান ছার নাভিন্থস্থিত । **তত্র জ**যাখ্যন্য शीर्घन्य वासूथ धन्य নিৰ্বঃ। ভদ্যগা। রাজত্থান্তরে পঞ্ ब्राबद्यात्र गरीभाउः। ब्राह्म ७ वस्य সাৰ্দ্ধ জবদারে পুতিপ্রিতাঃ॥ অদা-त्र ब्राह्म आर्ष्क श्राहीबाः भृषिवी-

भटिः। এ१॰ दात्रस्टि स्थान मधाः নে ভিন্নি ভিষ্ঠি ॥ রাজহুল দ্বং जार्क भाषात्म जयवासुनि। शतिनाः হে পঞ্চ রাজদণ্ডা ডিগ্রন্ডি নব্যতঃ॥ রাজপ্টাভিধানেন স্থান মেত্রি-गम्राउ । अभिन् गृहः नृशः कृद्वा मृहिद्रः मृथ्यमुख ॥ व्यक्तानार पञ्चरटा द्राका रया १ नाव गृह नात ভেৎ। সো চিরাৎ মৃত্যু মাপ্নো-ভি রোগ শোক ভব তথা।। যম দণ্ডোদযদভৌ কেনাহতি ৰূপপ্লব: । (य চানে) वास्त्र (मायाः गुः। स्र নে দোষাশ্চ যে পুন: ॥ ন স্পৃশ্যতে রাজপউ স্তৈঃ সলৈ র্গক্ডো যথা। षिखगामि রভো श्री महार कमा-फुक्रांकि वासुयू ॥ द्रांबह्य निष्ठ (भारतः भागीख खन प्रायको। #। অথজ্যাখ্যুস্য চত্তরসুস্য বাস্ত খণ্ড নিৰ্ণয় ম রাজদ্বারে হি প্রাকারা রা-ভছ্পান্তরে নতা:। যমদারে সার্জ রাজহুপ্রান্তরে চ যে নৃপাঃ॥ অপদারে द्राह्मश्र<sup>®</sup> बिठा याद्रस्त्रिज्ञः श्रुनः । অৰাৱে ভূপতে ভসঃ রাজদভ্রণ-স্তার। এবং ব্যবস্থিতে স্থানে মধ্য-মে তৎ পুদৃশ্যত। আঘানে রাজ-ছ্মাণিচত্বারি পরিণাহত:॥ রাজ-ह्रों अन्न नारान ब्रायहर अनाल्यः। व्ययक्ष मक्षरमा जामा दाएया र्जव-তি শোভন:।। অস্মিন্ গৃহং নৃপঃ ক্রা স্চিরণ পাতি মেদিনীণ ৷ অ-मिन् विकय वृक्षिक (भीथ)क ममवा-পুৰাৰ ৷৷ যোৱালা দন্ততো ২ন্ত্ৰ विन्याद्रञ्च मनाहरद्र । य উল্কো রাজদণ্ডোয় তস্যেদ স্থান পঞ্ক ॥ গজো ব্যাব্রুণ্ট সিংহণ্ট মূগো ভূ-ক্ষো যথা ক্রম•। সিংছে সিংহাসন• ञ्चानः वहारष्ट्र महा८ बात्र मनिह-त• ॥ भरक याजानय• अर्याए मृश्य কেলি নিকেতন ৷ ভুমরে হন্ত:পুর<sup>ে</sup> ষ্ঠ্যাৎ ক্রমেণ পৃথিবীপতে: ॥ তেন मध्यास्य भिः शामनः भीर्घम्य हजु-त्रमुरेकः। उब ভবिষ্যোद्धतः। स्न-यापि हान्तु जाउन। नृभाउः मु। इन् क्रमार । घारिनव गृहान् व्यक्तरे তেবा॰ लक्ष्म मृगुजः ॥ সुनन्तः म-र्बाटास्तु। ভবেता नानतीनुंश उषा । वितारण विवासण विद्या वि-भव उथा।। इञ्: किवा र्जाया दीवा बामरेगाउ अभी बिंडा: 🗱। श्रीयवा॰ वक्रगानि । यष्येवारवाहाराज नानः তস্য তেনৈৰ বল্পনা রাক্তঃ স্বহস্ত **मिक्छ भीर्घ मर्इड निःक्विल**्य। जारासन मुन्हतः मार व्राडहरेख **क गक्षाः। भदिगार ठल्**णिक

রাম হৈও: পুতিষ্ঠিত: ॥ অস্যাধি-দেবতা ভৌনো রক্ষতীদ॰ বসৃদ্ধরা । দ্বারাণি বিংশতি শ্চাস্য রক্ত চিত্রাবৃতানি চ।। রক্তপ্টাব্তো গেহ: नकलार्थ भुनाषकः । व्यव স্থিত্ব নহীপাল: সুচির পাতি ति मिनी ।। मीर्य ७) मुझ १० इंडि जुम्पतः ॥ 🗭 ॥ (को ज्ञाकरखावा-যানে পরিণাহে তথৈব চ। ইভায় সর্বভোভদু: শুক্র শ্চাস্যাধিদেবতা ।। मानवा ब्रक्ककारैकव भूका। एउ চাত্র বছতঃ। চতুর্দশাস্য দ্বানি কৃষ্ণ চিত্রাবৃতানি চ ।। পীতপ্উ।-বৃতো ছেষ সর্বানিষ্টবিনাশনঃ। অ ত ভিজ। মহীপাল**: সরান্শ**তুন্ िक्डिं ॥ भीर्घः २**)। शु**ङ्-२०। ইভি সর্বতো ভদুঃ॥ৠ॥ অপ্তকোণো ভবেন্ডব্যঃ কোণো হস্ত চতুষ্টব:। রাজহন্তোমত:কার্য্যে বৃধশ্চাস্যাধি (स्वजा।। तक्षका वसवण्डासा भू জ্যা স্তেত্র পুষর জঃ। অস্টো দ্বারাণি চাষ্য স্থাঃ পীত চিত্রাবৃত্তানি চ॥ পীতপ্টাবৃতোছেষ সর্বানিইবি-নাশনঃ। অত্ত ভাতা ক্ষিতিপতি ন রিষ্টে রব্দৃদ্যতে ॥ রাজদণ্ডো ভবে-फीर्घः भुगत्र ताजश्यकः। ताजः হন্তে রাজহন্তে পুকোধান্ তত্র কার-

(यट ।। व्ययः नामतीमृत्था नाम हन्तु ण्डाम्याधिरस्य । नक्षवालाकः প্রেরা হত্ত স যমাদস্য রক্ষক: ॥ দাবি**·শ**তিস্তদারাণিদীর্ঘেদ**শ তথা** खात । जनाव नीर्घ कर मार पु-সরে এক মেব চ।। দীর্ঘ দ্বিত্তবে দশ দ্বারাণি পুসর দ্বিত্যে এক কৃত্বা षि उरा थरा २२ कात्राणि ॥ मुक्त हि-ত্রেণ সহিত: শূক্লপটেন শোভিত:। गर्बार्थ मारका ब्राड्या॰ वास्त्री विब-यवर्षनः।। भीर्धः >> भुष्ठः >०। इंडि नामतीयुथः ॥ 🗱 ॥ भीष्यं ज्राया द्राज হস্তাঃ পুনরে দ্বৌ পুডিঞ্চিতৌ। বি-নোদ এষ দ্বারাণি ত্রিংশংকো ঠদ্ব• ভবেৎ ৷৷ রক্তচিত্তেণ চিত্রাঙ্গো রক্ত-বস্ত্রোপগৃহিতঃ। অত্ত স্থাতা নর-পতि ভবৈৎ कीखि भुजाभवान् ॥ স্র্য্যাবিদেবতা চাস্য র अकाः **স্ক**-व गुहा: ।। तीर्घ: ၁> भुङ् : २० ।। # ।। मीर्यंग द्राजम् ७ किं भूमाद द्राज-श्खाको। विनाम এय ाहानि छदा-**ति: मन्नुशा विहु: ।।** शक्क विह द्रभाजाः শ্চান্য পুকোষ্টত্রিত্রয় ভারে । চিত্রপদ্মেন শাম্মেন চিত্রবাঞ্জণ শো-ভিত:।। দর্ভিক্ষশননো ভ্রেষ **শস**্থ সম্পত্তিকারক:। তত্র স্তিত্বা নর-পতি: পুচর সুথনগুতে ॥ দীর্ঘণ

८) भुष्ट• २० । इंकि विवासमृह• । ॥ ॥ चारणहंखाः भुनात मीर्घ हो। রাজহন্তকৌ কথিতৌ। বিজয়ে দ্বাদ-**ण खरन हात्रा**णि मुरुक्षंय भूमानाव।। मूर्या वित्व वा ठामा तक की न वि-হৰ্বাট্। অক্ণাস্তোজ চিত্রাকে। অৰণাম্ব ভূষিত:।। তত্ৰ ছিত্ৰা নরপতি: কৃৎসা শাতি বসুদ্ধরা।। भीर्घ २) भुङ् १ २ ॥ ॥ वागाम ब्राह्मर छो हो शुभरत द्राह्मर छकः। শতঘারোপসহিতঃ পুকোষৈ দশি-ভি যুঁত:॥ দিক্পালা রক্ষকাকাস্য **छज काम**्राविस्तवका। नानावर्णन চিত্ৰেণ বসনেন বিভূষিত: ৷ অত্ৰস্থিত ত্বা নরপতি: সুটর সুথ নমুতে। যিমনাজ্যে প্তিষ্টেড বিমলো গৃহ भखगः ॥ দूर्ভिकः नाव कार्ये त-खरा नक विश्वतः। न द्वारणा ना**णि (लाक्क रेन**(वाट्लाड ड्य इथा ॥ ইত্যাদি গুণ বাহুল্য মন্যত্র কথিত ब्रिशः। मीर्य २०० मुख् २००॥ 🗱 ॥ আ্যাম পরিহাণাভ্যা॰ রাজ্ঞ: যো-ডশ হস্তকঃ। দ্বারাণি বোডশৈবাস্য **७**क द्रम्याधित्वका ॥ तक्षिका प्र ৰতা চাস্য শুলুবল্পৈ বিভূষণ। অত ছিত্ৰা নরপতিঃ সর্বার্থান্ ভূবি সা-धरर ।। नीर्यः ११ मुझः १७। इंडि

वकः ॥ 🗱 ॥ व्यायास्य वाकप्रशः महार भुगात ह उमक्रकः। मण भु-কোষ্ঠা ঘারাণি শনি রস্যাধিদেবতা ॥ शिषाठा ब्रक्कका फाम्य नीलवङ्घाः **বিভ্ৰণ। নামায় কেলি রাখ্যাতো** ভব রোগ বিনাশন:।। অত্র স্থিত্বা নরপতি: সূথ বিজয়তে রিপ্ন। भीर्यः २०० भूष्टः ८० ॥ 🕸 ॥ त्राज-ছ্ন্তেন কোণঃ স্যাদেব কেলি ক্চ-তুর্দশ। চতুর্দ শৈব দ্বারাণি রাহু-त्रम्याधिरम्वजा ॥ नक्कक्षत्रा त्रक्कान स्त नानावर्गाभवाषिकः । व्ययः कयः পুক্তিত: সর্ব ত্রৈব জ্বাপুদ: ॥ আ-यास ब्राइह छः न्यायः भद्रिभारह-क्षे इखकः। नाना क्रमः ऋषी क्रमा वीद्धानाम जयशुम्हा। वृष्ट्रणाठि र्मव-, ভাস্য রক্ষকা \*চাস্য খেচরাঃ। বি-চিত্ৰবসনোপেতঃ সৰ্বকামাৰ্থ দায়-कः ॥ नीर्घः ১) भुष्टः ৮। ইতি वीतः ।। 🗱 ।। (य। यम्र) भरिष्ठा दर्भ ख्या স্যান্থাপিচ।রাজহন্তান্তরে **প**• ঞ্চানরা: স্যুর্যহীভূজা• ॥ চন্দ্রো-লি দর্পণে হস্ত উপরি ক্রমতো ন্য-নেৎ।পতাকাপুজ যুক্তাত গৃহ র**ক্ষ**-করক্ষা।।। ছত্রসূক্ত গৃহ রাজ্ঞা। विटक्डग हकवर्जिना । এषा निय-भः भवदः। इंडि हाम्महिङ्गानि গৃহাণা কথিতানি বৈ। বিম্বৈগ্তা नि नृপতি গ্ হারম্র म गाठति ।। ইতি সিংহাসন স্থান মিতি রাষ্ট্রন্য भछ हर। ইতোন্যে চিত্ত**হ**ৰ্যাৰ্থা: প্ৰা-नाराः পृथिवीजूबः ॥ बनग्जामः (या (यत्न) (उदाः नास्ति विनिक्तयः। चक्रच (गरु मः एक्) (या नृशिवः मुख हिडन: ॥ म हिंद्र• भृषिवी॰ माखि नर्बार्थान् नाध्यङ्गाला । (या वा उट.) পর পেহস্তে। দুর্মোহাৎ ধরণীপ-তি: 🛭 ন চিরণ পাতি বসুধাণ ঘোরণ রোগঞ্চ বিন্দ্তি। মলগ্রপতি মি-बन्ध गृहवाद्या न पृष्ठि ॥ 🕸 ॥ भद्रकः । श्रीवकमा विশुक्तमा दुका काउ पंशक्रातः। मूर्गाञ्च स्थल माजिन वमाजा मीखिमहिथाः॥ शृ-হাণে ধারবেদালা ভদ্জু বজু বা-वन । वाष्माञ्च । मृह्यू **म**नि विन्तारमा विष्क्राया नव म् ७३८ । विणुक्शीवकन्यारमा विषयः अन নোপরি ৷৷ তেন সর্বাণি নশ্যন্তি অরিষ্টানি নহী ভূচাং। ভোজোপি। वास्रवाखा श्रुक्तनाः नार रवारेवी ৰ্নামভি: ষ্কৈ:। যুন ছারাৎ সনা-রভ্য যাব্দদার মিষ্যতে॥ তদ্মথা । মত্য ভঁথ: স্থির শ্চণ্ডো ধনং বিভব এব চ। বীর স্থাপশ্চ ইড্যাঙী বাস্ত

ভাগা यथाक्रम•॥ यम देनर्सं छ ट्यारमः म वायू यक्कम महन्ताः। इत्मु वङ्ग রিতি প্রোক্তা বিভাগানা নধীখরাঃ ।। মৃত্যে কারালশ সর্য্যাৎ ভয়স্থা-(न ह शब्य: । श्रि: त नहहत्रान् दः क्षिट हाल वाकि शकाम्यः॥ श्रान थान।। दिक॰ द्राक्षः विख्य काव রক্ষণ । রাজপতে ভবেদ্বীরো তা-পে কশ্চিন্নরালয় ।। প্রাচীর পুডি-ভাগান্তে ইতি ভোজন্য সম্মত্রণা ইতি যুক্তিকল্লতরৌ রাজগৃহযুক্তি: ॥ 🗱 ॥ वास्त्र भाष्मि नियम। शृष्ट् মানেন নিৰ্ণয়ঃ। তত্ত্ৰ বাস্ত প্লব ল क्र-१ ।। भूर्बञ्जरवा वृक्षिकरत्रा धनह-শ্চোত্তর প্লবঃ। দক্ষিণো মৃত্যুদো বাস্ত ৰ্জনহা পশ্চিমপ্লবঃ॥ কোণে রেখাদ্ব কৃত্বা মধ্যে রেখাদ্ব उथा । अनान कागाना द्रशा ए-किगारिम पुंका ख्या ॥ नाठामातः নামণিশ্চ নাপতাকাপি নাধুল:। না ऋद्याप्ति नीविज्ञाता नाहित्वा नाजि-চিত্ৰপূক্।। নাত্যছো নাতিনীচো বা ना भुकीर्व भुकीर्वकः। ना धाकु नी गवाक्ष क नेटिकात्नक बाज़ जाक्।। नियसास नहीन्तुनाः मदमल्या হেত্তবে। ইতি রাজগৃহযুক্তি:।। 🕸 🛭 व्यत्मुवास यथा वास मातन नियमः

।। ধুজো ধূন স্তথা সিংহঃ খা ন্যো गर्मां । गङ्गः। काक ইত্যে गमिता दास झानगर निर्णयः ॥ अगुरणा जूथ मन्त्रि यूग्नक विशवान्त्रातः। এव মন্ত্ৰাপি ৷৷ বুজে বিভূতি বিপদ্ফ धूरा नि १ वर्षा गः मृनि मर्बना-मः। বৃষে সুথ গর্ম ভতে। বিনাশো গজে ধন• কাৰূপদে চ মৃত্যুঃ ৷৷কোণ-রেখা কোণশুচি: সুথ সম্পত্তি না-শিনী। পূর্ব পশ্চিমতো দণ্ড উদ্যা-খ্যঃ সুখাবছঃ ॥ দক্ষিণোত্তরতো দ-ণ্ডো বংশহা যনদণ্ডকঃ। গৃহাণি পা-**उ**रयक्षीनात्नयाः मञ्जत्रशास्त्र ॥ 🛊 ॥ এक। (ठफ्किए भावा (वठ मिक्किप প দিনে। তিসু শেৎ পূর্বতো হীনা শ্চত্ত:শাল• সুখাবহ•॥ পশ্চিনাস্য ধুজে বেশ্ম সিংহে ত্রহাখ শুভ । **भू**ई।वय॰ तृष छ। नि मक्षिणा जिमूथ॰ গলে।। পদাঘাত: পরিখাঘাত: পথা **घाउ खरेश्व छ। ज**नस्तारमा वृक्ष्रमाः (वारनाया इंट्याय मानयः॥ गहुजा॰ भरठालमा मुद्राः यसि (त्राप्ति । পদাবাতো নাম দোব: পুল পৌল থনাপহঃ ॥ পরিখার ওবে। র্যাতো बारुताः श्रुटिविभाताः । श्रिश ঘাতো নাম দোৰঃ **স**ল বীৰ্য্য ধনাপ-रः ॥ পথাঘাতো नान मान याचा- তো বাস্তনঃ পথঃ। স হন্তি ভোগ• বংশঞ্চ ভদ্য ভেদ নতঃ শৃণু ॥ এক मार्गः मुथः मर्गाट विभयः मन বৰ্জনা ত্ৰিপথ কলনাশায় সৰ্বনা म फठ्झाथ ॥ खवाहेता भन्नवाहेता क्ष य खिश्रे ि जनाभरः । उपनार्या जनामायः महायम् क्षि भनम्भारः ॥ अबि मान मूरिययर्ग मृजुरद्वण छ-यानगाः। এতে জলাশযে দোষাः প्रवीपि पिक्क छ कारा ॥ ॥ भा भवा स বৃক্তোদোৰ: জল সম্পত্তি নাশন: । वर्क्डायट शूर्वाठा २ प्रन्थं श्लेकः দক্ষিণত স্তথা ৷৷ঐশান্যাণ রক্তপুস্ল-क व्यास्त्रियाः की द्रिन ख्या। यञ ভত্ত স্থিতা বৃক্ষা বিল্প দাডিন কেশ-রা:॥পনসানারিকেলাশ্চ শুভ• হ্ন-इंडि निक्रयः। निका नीनी शनाका শ্চ চিঞ্চাথে ভাগরাজিভা।। কোবি-मात्रफ नर्बज नर्बः निष्ठि मञ्जः । #। পৃহপাতৰ নিছভি ৰাগৰ্য म्रुशत क्रमार । श्वीपिय भित्रः কৃষা নাগ: শেতে ত্রিভি জ্রিভি:॥ ভাদুবিদ্য द्यानभार्यन उग्र काउ গৃহং শুভং। তত্র পুনাণং। বামি হন্ত পুনাণেন জ্যেষ্ঠপত্নীকরেণ বা । পৃহাভান্তরস'স্থান নাপ্যেদভিডে ৷ नबः।। क्षा। उव नानान्। नक्ष्यः। গৃহ ভূনি সমাহত পিওপদ বসু लाहन तमु गरेष र्छन्ड । त्रवि ভ্ষর ত্রি:শৎ যোগ হুত ভবনায वाय शिक्षि अक्षभर ।। এका मी कि গুণে হস্তে দ্বিবা**ণৈ**ক হ**তে চ** তে। यिष्मुग्ग्र मञ्जल्ज निष्धः महार मः র্বেশ্মন:।। তন্ত্রা। ধূলাদি গেহ সংস্থানে গৃহমান শুভাবহণ मीर्घ जानुः भन्नीगारक् मेख हिना-क्रुलिवरः॥ इमः भूय कनः (गरुः व्वञ्चातं भुशीक्षितः। मीर्घ यह পুসরে পঞ্চতস্যে হকুলযো হপি চ।। इस. भ्य कनः (गरु गंजञा-त भूकी खिंड । मीर्घ बरगामण छ बाञ्चनयरेकक विन्त्रक्तिः ॥ भूमत्र श्रे त्र्य कन· गङ्यात गृह· वि-मु:। ই डि हार मंकः (भ्रांकः गृश-गाः मर्बज्ञान छ।। भवः गृशः नमाहर्यः গৃহস্থ শুভ মিছতি। #। ভোজস্ত । আয়ান পরিণাহাভ্যা থো ২ক্ক পিণ্ডো বিজানতে । যেন কেনাপি চाह्मिन (भाषनीयः न इवाउ ॥ এক দ্বি পঞ্জ সপ্তানি শূভান্যন্যানি চান্যথা। আযান পরিণাছাভ্যাণ সার্ভাদশ হস্তক ।। এতন্তু নঙ্গল । नान गृश् नृथ विवक्तन । जायान পরিণাহাভ্যা পার্দ্ধ হত্ত চতুর্দশ

॥ इर क्यनक नाम गृह मणिड कात्रकः। जागाम शविगाहान्। **नार्ष्व र**खास्र (वाउ**ना** ॥ इत• हि न-র্বতোভদু স্বানিন: সুথকারক । আ্যাম পরিণাহাভ্যা• সার্ছাষ্টাদ-শ হস্তক ।। কল্যাণ নাম বেশ্মেদ धन धान्। मूथशुरः। आशाम भन्नि-गाहा**ड्या॰ नार्खिव**ः**गंडि ह**छक•॥ ইদ হি সুথদ নান ভৰু: সুখ বিব-खन । सरा यकिन सूमिक्ट गृह श-**११क** न ए ५० ॥ न ८७ यू ङ् १ न नियनः नर्दिख्यानि कात्रस्ट । ज्ञानः भा-नक (नावाक स्य (भुक्तिस नया ক্ৰমাৎ।। তদ্বিচাৰ্য্যগৃহ• ক্ত্বা গৃহস্থ: সুথ মশুতে। অজ্ঞানাদথ মোহাদ্বা (यान)या गृह भाहाद्र ॥ म वियोप-তি নশ্যেত তম্যকীর্ত্তি: স্বলং বলং ॥ 🗱 ॥ श्राहीद्रानाः न नियमा गृहः ङ्गानाकः विम्राउ। यथा वास्त यथा मिकि भागितानुहरयम्गृशी ॥ गृश-। द्वारिया यथा न महार उथा भाषीत्र কল্পন। ইতি যুক্তিকল্পতরৌ গৃহ-युक्ति: ॥ # ॥ # ॥ व्यथ वास्रगान नुमानः । विष्ट्रः । इज्ध्यि भरः বাস্ত সর্বদেব গৃহ পুতি।একাশীতি পদ বাস্ত মান্য পুতি নি'জদ' ।। অগু তঃ শোধ্যেদ্বান্ত ভূমি॰ যদ্য

পুরোদিতা : ৷ চতুর্হত দিহন্ত বা | ৰলাম্ভ বাপি শোধ্য চ।। সুসম্ঞ তদা ক্ত্বা সদাৰ্ছন ততো ভবেৎ। পু-রোদিতা• ব্রাহ্মণাদি ভেদেন পুশস্ত ব্বোপপাদিতা•॥#॥তথাচমৎ-न्। श्रुतानः। श्रद्धात्रि मात्व गर्त्व रेव অনুলিপ্তে চ্সর্ল:। ঘূতনানশর। **वष्टः** क्षा वर्खि ठ उष्टेयः ॥ ज्ञानस्य जु भतीकार्थः भूर्बः उ**९ मर्ब** मिष्ट्राथः । भीखा भूबाहि गृङ्गीयाट वाख्ना न-नु भू वंणः ॥ वास्तः मम् षित्का नाम मीलाएउ नर्व छ। हि यः। मू उनः नर्व वर्गानाः भागाप्तयु ग्रह्युह ॥ वास्त কৰু ররল্প নাত্রে গর্ত্তে তবৈ স্থা পিতে আম শরাবে পূর্যাদ জনেণ वर्खि ठ छुष्टेय॰ कृषा गवाष्ट्र छना भूगा वर्खि ठ ठुडेय॰ भुद्धान(यर। छ ञ भा-চ্যা॰ দীপ শিখাযা উজ্জ্বত্ত্ব তদ্বা-ন্ত বান্ধণস্য পুশন্ত। এবং দক্ষিণা-নি দিশি শিখাযা স্তথাত্বে ক্ষত্রিযা-**(२:। সর্বশিথা সমত্ত্বে সর্বর্ণানা: স** বাস্তদেশ: পুশস্ত:। জলান্ত মিতি তু মৎস্যপুরাণ পরিভাষিত পুা गार भरते।। 🕸 ॥ ख्या ५ माट्सिता शूक्याथः श्रिकः मन्। न ग्रह (रा-यरः ভবেৎ। भागापः प्रायरः भवाः ভবেদ্যাৰজনান্তিকা। পাুনাদ ভ

वनामीनाः निर्वमः विख्वाहर । स-र्ये। ८ किन विधातन कण वास करा श्वः ॥ वृज्यक्षात्राणाणीनामः जिथानामामिशनाट क्लामरया गृश् छ। পामाप्त्रिय भव महार क्ष বাপীষু চৈব হি। ইত্যভিধানাচ কৃ-शाहावशि।:#II वास्त्रभूक्**वणः।कण**ऽ পস্য গৃহিণী তু সি'হিকারাহু বাস্ত उनगा वकी इनर। भूबरका इति निक् खककाद्रा रेमवरे अद्भवता निभाजि-তঃ॥ৠতথা। চৈত্রে ব্যাধি মবাপ্নো। जि रग गृह• कातरयम्बः। देव**णा**र्थ थन तञ्जानि हेबार्ष्ट मृज्य मराश्रुयार ॥ আষাচে ভ্তারলানি পশুবর্জ মবা-शूराए। मादा भिवना ७ इनि ভাদুপদে তথা।৷ আখিনে পত্নীনাশঃ न्। कार्जिक धन्धान्। मार्ग-শীর্ষে তথা ভক্ত পৌষে তক্ষরতে। ভयः॥ मार्घ जाग्न ज्यः विन्तार का-ঞ্চন কালুনে সূতান্। শুক্লপক্ষে ভ-(द८ (भोथ) कृत्क उक्षद्र (जा छयः॥ অশ্বনী রোহিণী মূল মূতরাত্র সৈ न्तवः। याञी रुखानुद्राषः 5 श्राद्रः য্তে পুশস্যতে ।। আদিত্য ভৌন ব-ब्ह्रां **उ गर्स** वाताः मुजावशाः। वङ्गुः ব্যাবাত শলে চ ব্যতীপাতাতিগণ্ড-याः।। विषयु गण्य शतिय विष्क्रिन वर्ष

বোগেষু কারয়েৎ। খেত নৈত্রেয় গা ऋर्बिवृध्किर्भेहित् १ मि ।। उथा বিজ্ঞানাবিত্তে মুহূর্ত্তে গৃহমারভেৎ া চন্দুটিত্যে বলং লগ্নং তথা শভ নিরীক্ষিত ॥ প্রাসাদে প্যেব মেব স্যাৎ কুপ বাপীযু চৈব হি। ঐন্দৰ **ञ्गनितः॥ 🗱 ॥ जूर्ल्ज मध्यः। (त्रो**षः শ্বেতশ্চ নৈত্রেয় স্তথা শানকট: মৃতঃ । সাবিত্রণ্ট অবস্তুণ্ট গান্ধর্ব: হ্বত্তপ স্তথা ৷৷ রৌহিণশ্চ বিরিঞ্চিশ্চ বিজ-(रा रेनर्अं उ ख्या । मारहत्नु। ब्यन-रेक्टव वर्षः शक्षमम सृखाः ॥ (उन দ্বিতীয় তৃতীয় সপ্তনাষ্ট্ৰন নবনৈকা-দশ পঞ্মান্যতম মূহূর্ত্তে খেতাদৌ वास कर्ण कर्ग्याट । हिजानि कनस নরগৃহে দেবগৃহে তু পুতিষ্ঠাকাল ব-मार उरकाल भित्र गुरु: ॥॥॥ उथा চ কল্লভারৌ দেবীপুরাণ ৷ যস্যদেব-স্য য: কাল: পুতিষ্ঠা ঘুদ্ধ রোপণে । गर्डाल्द्रिनिवान्तारम मुख्र सम् পূজিত: ৷৷ যস্যদেবস্য পুতিষ্ঠা বৃদ্ধ রোপণে यः काल. मुख्य सम्। गर्खा-भूत्रभिवानप्राम गृशात्रास्य म कावः প্রিত ইতি।। 🗱।। পুরিষ্টা কাল 🏗 भारमा। हिटा वा कानुस्न वालि रिकार है वा माध्य उथा। भाषि वा महरितानाः भुविष्ठा मूखमा खरवः।।

পুাপ্য পক্ষ• শুভ• শূন্ন মতীতে চো-खद्रायत। भक्षमी ह विजीया ह जु-ভীবা সন্তমী তথা।। দশমী পৌর্ণ-मामी ह उथा (मुक्षा जरगामणी । আসু পুভিষা বিধিবৎ কৃতা বহু क्ना ভবে ॥ भुजिशामग्रहाय । নাঘে বা ফাল্লনে বাপি চৈত্ৰ বৈশা-थाया द्रशि। देज्रिक्षाचारकाया द्राशि <u> भ</u>ुकिष्ठा मुख्या खरार ॥ कल्लब्रह्मी দেবী পুরাণ। মহিষাসুর হস্ত্রাক প্রতিষ্ঠা দক্ষিণায়নে । 🗱 ৷ জ্যোতিষে । গুরো ভূগো রস্ত বাল্যে বার্দ্ধকে मि-इरम छात्रो। छद्यां सिट्डा मणा-হে ত বক্লি জীবাপ্টবি। শকে।। পূর্ব রাশাবনাযাতাভিচারি গুরু বৎস-রে। পাগাশিগন্ত জীবস্যচাতিচারে ত্রিপফ্রে॥ কলাদ্যন্তুত সপ্তাছে बीहाङ्ख्या मिल्लूहरू शोषानि**क** চতুর্ঘাসে চরণান্ধিতবর্ষণে ॥ একে-नाङ्गो टिकस्ति विञीयन पिनजरय। · তৃত্রীয়েন তৃ সপ্তাহে নাজ্ল্যানি বি-वर्काराया वुठाइस भूटि। ४० गृहा-রম্ভ পুবেশনে। পুতিষ্ঠারম্ভণে দেব কুপাদে: পরিবর্জুহে ।। 🛊 ॥ মৃতি-সাগরে। উত্থাপাতে চ ভ্রুন্সে অ-कानवर्ष गर्ड्सिछ। वङ्गत्कर्मात्मार-भारत गुरुश हन्तु म्योरयाः॥ भूया-

ণস্ত ত্যারেখ শূদু: সপ্তরাত্র নতংপরি । वाक्रमः क जिल्ला रिक्ना छ एक कर्च विदाबकः॥ मृमु छ।कु। है हर-রাত্র• ভতঃ কর্মা সমাচরেং। পরা-শর:। পুযাণে সপ্তরাভ্রন্ত ভিরাভ্রণ বুতবন্ধনে। একরাবে পরিভ্যন্ত্য वर्गाए भाषिगुरु गुरु ॥ #॥ मटम्रभूद्राण । नवगुरु नथः क्दा ভত: কর্ম সমাচরেৎ। অন্যথা কল-দ পু সা न कान्य बाया इहि ।। নব্য বৰ্দ্ধমান ধৃত বচন । পিত্ভ্যো वृक्ताय वृक्तिभाषा नदा जनकिनः। ক্র ভ্ত বলি ঞেব সংপ্রঃ বাস্ত (मर्जा: ॥ अक्रिल वाख्यांग गृ-হোৎসর্গযো: করণে সক্দেব বৃদ্ধি-मुष्तः कन्नगीयः। गनमः कियमारा তু মাতৃভ্য: প্রন সক্থ। সক্দেব ভবেৎ भाक्त भारती न পृथगातिषु ॥ ইতি ছন্দোগপরিশিষ্টাৎ ॥ 🗱 ॥ माट्रा । উहालाहार्थ उद्गद्धा वाळ्णायुम्। भाव्रमः। जाहार्यः। ভবেলিত্যু সর্থদা দোব বজ্জিত:॥ দেবীপুরাণ: প্রাসাদে চচতুঃযঞ্জিরে: কাশীতি পদ গৃহে। চত্রসুীকৃতে ক্লেত্ৰে চাষ্টধা নৰ্থা কৃত্তে॥ কোণে রেখা ততো দত্বা নব ভাগান্ পুক ল্লন্থ। ইশ: কোণাৰ্জতো ভেষ:

পর্জন্য: পদ সংস্থিত:॥ দ্বিপদস্থো জ্বযন্ত চ শক্ৰ: স্যাদেককোপ্তগ: 1 ভাস্বরক পদো ক্রেয়ো দ্বিপদ: স-ত্য উচ্যতে॥ ভূশ: পদস্থে: জ্ঞাত্র-ব্যো ব্যোম চৈব পদাৰ্জ্ব । ভূতা-শন: পদাৰ্ছে তু প্ৰাচ পদ সংস্থি-তঃ।। বিত্তথো দ্বিপদো জ্ঞেয়ঃ পদৈ-करहा गृहक्षा :। दिवस : श्रीतक-श्चि गन्नार्वा विश्वप्रशिक्तः ॥ जृङ्ग-কৈকপনো জ্রেয়ো নৃগশ্চাদ্ধপদ-স্থিত:। পিতরো ২র্দাদে জ্রেযাঃ श्राम (मोवातिक खथा।। मुनुरिवा हि शाम (छ्यः शाम छः भू झम्छकः । প্রসাণ গভি রেকস্থো ২সুরো দ্বি-शन न·छ्छि: ।। (भायरेक्टकशामा জ্ঞেय: পাপো হর্জপদ উচ্যতে। রোগ শ্চার্জপদো জ্রেয়ে নাগ-শ্চালি পদেছিত: ৷৷ দ্বিপদে বিশ্ব-कर्या जु उझाठैः भरमः ख्रिडः । याक्त थद्रः भारत क्किया नागजा ज् দ্বিপদস্থিত:।। পাদস্থা 🕮 মঁহাদে-বী দিতি শ্চাদ্ধপদস্থিতা। আপান্ত शाह मः इ: महाहाभव भः भहि **७: ।। ठजुञ्जनस्थ। विरक्षिय "চा**र्धमा मध्र भृर्दगः। माविक्स भारा छ्व-য: সাবিত্রী পদস-ভিতা।। ভতো विववान् दिख्छय क उत्क मंद्रा न -

স্থিত:।ইন্দু শ্চেন্দু।ত্মজ শ্চোভাবে-কৈক পদ স•জিতৌ।। মিত্র শ্চতুল্লদ শৈচৰ পশ্চিমে চ ব্যবস্থিতঃ। কৃদু কৈকপদো জ্যেয়ে রাজবক্ষা পদ-ছি তঃ॥ ধরাধরশ্চ বিজ্ঞেয উভরে চ চতুয়দে ৷ চতুয়দ শ্চতুর্হন্তে৷ মথে১ জ্যেং পুজাপতি: ॥ দেবতানুচর। বাছে নর্বে চান্ত তথা সুরা: ৷ এব• भूगृश काशानि तक्षनाभूग्री (निन-কঃ ৷৷ এতেয়া নেব দেবানাং বলিং দদ্যাত্ত কানিক•। ব্লসেতি পঞ্চবর্ণ রজোভি:। তথা চ শারদাণা । উক্তানা মপি দেবানা পদান্যাপ্র্য্য পঞ্চি:। রঙ্কোভি তৈ র্যথোক্তে ভ্যঃ भागनाम वंति-इत्तर्भाख्याभीः ত হরিদা চ্র্ণ স্যাৎ সিত তণ্ডল मञ्जरः। जमुञ्ज हुर्ग सक्नाः क्कः प्रश्न भूषाक्कः ॥ विदापि भणकः महास মিত্যুক্ত বর্ণপঞ্চক। স্যাৎ পুলা-ক ভত্তখান্যে ইত্যমরোক্তে: ভৃত্তু• অ-পকৃষ্ট । প্ৰ্যা মণ্ডল বাহে তুপ্ৰা-एयप्राप्तिक क्रमाए। क्रन्त रेक्टव वि-माती ह व्यर्गाना भूखना ख्या ॥ कञ्च का नानद्राक्ताम्। निनिभिक्ष क द्रकः नि । मधन कदशामाययाः मा-लगान नभील मर्ख भृष्ठाः॥ णा-লগুনে শিলারপী বত্র ভিছতি কে

**भ**वः। उञ्च (प्रवामूता यक्ना जुवनानि চতুর্দশ।। ইতি পদাপুরাণ বচনাৎ। **छंबादारुन दिमर्क्कान बर्छः। भाग-**गुात्व छारुद्ध ह नावाइन विनर्द्धत । ইতি ৰচনাৎ। তদসম্ভবে ঘটাদি জলে। পুতিনাছানেয়প্সু আবা-হন বিসজ্জন বজ্জ । ইতি বৌধা-यन वहनाए।।अ।। अयाः विरम्य विन र्मर माणुतान (मवी भूत्राना छ। मू-कालीकानीस्टर्म नं वाविक्यर**ः**। ইভি ন লিখিডঃ। কিন্তু মৎস্যপু-রাণোক্ত পাৰস বলি দী যতে। ড था ह। भागमः वाशि मा उद्युः सनाना সর্বতঃ ক্রমাৎ। নমস্কারেণ মজেণ পুণ্বাদ্যেন সর্বভঃ॥ অভএব প্রাণ্ড-ক্ত শারদা বাক্যে পায়স মাত্র মু-ক্ত তেন এষ পায়স বলি: ওঁ ইশা-नाय नमः । इंड्राहिना लुखागः । ন চ বাচস্পতি নিশোক্ত মমুক দেব-ভাবৈ এব পাযস বলি ন্ম ইত্যাদি। ,পুণবাদিনন্ফারান্ত ম্বনান ক্প নত্র মধ্যেদেযপুবেশস্যাযুক্তত্বাৎ। তথা চ বুন্ধপরাণ। ওঁ কারাদি সমাযুক্ত। नबकाबाङ कीर्छिङ । सनाम नर्द न-জ্বানা মজ ইত্যভিধীয়তে।। দেবী-পুরাণ । এব ভূতগণানাস্ত বলি (र्न-यस कामिकः। এ जान् भूभूक्रायाप्त-

বান্ হশাপুল্লাক্ষতি বুবিং ৷৷ এবং পুণুৱিতা দেবা: শান্তি পুষ্টিপুদা নৃণা । অণ্জিতা বিনিম্ভি কারুক। স্থাপক তথা।। এতান্ পুণ্জবে-(प्रवान् यम भूज्ञाकरें खथा। অত্ৰ পুপ্জায়া নিত্যত্ত্বাৎ বক্ষ্যনাণ মৎস্যপুরাণ বচনে হোমানভরং ব विमानाह वरवः कामादार भृषा (क्रामानस्त्रः विनानाठाद्रः। उथा চাৰুক্স ভানে তথা ক্ৰ্য্যান্বাস্দেৰ-স্যু পূজন । শূ্যাক পূজন ক্র্যা-षामुप्तवगनमा । गक्तार्था भूझ रिनर्दिम् ४ थ्लारेम् ३: जूदजन्द्रम १ ७७: সংপ্রয়েৎ তিমিন সর্বলোক ধরাং মহী ।। সূত্রপা পুমদা ত্রপা দিব্যা-**खद्ग** कृषिठा । श्रादा जागईय-দ্বেণ পরিভন্তা- দ্বিভাননা ।। ততঃ भ्रनाम माज्जन मर्दापय गयः रुदिः। श्राद्धा मर्रह एउउ यक्ष्मास नद्रः পর•॥বুক্ষ ভাবে ততো বিদ্বান্ **স**ং র্যাদাধার মক্ষতি:। তৃষ্মিন্ সং-জ্বাপথেৎ অন্ত্ৰণ বৰ্জন্যা সহ পূরি: ত । হৈন বা রাজত পাল মূন্যক वा मृष्ट मूल । সর্ববীকৌষধীযুক্ত সূবর্ণ রক্ষতান্বিত ।। বুক্ষস্থানে ততো मञ्जी कलमः ज्ञाभा भृक्षरार । उ নিং শচতুম থং দেবং প্রাজেশং নত্র

বিগ্ৰহণা গদ্ধৈ: পুল্লেশ্চ ঘ্লৈশ্চ বৈ-(वरेन्द्रः सूम्याहरेत्र। एटा मधन वाक्ष जु नुजीठाा॰ नामायः इजः ॥ व्याठार्र्या गृश् मञ्जादः तुकामीः खर्भायः नूतान्। भाषामः उर्भागः দ্বিদান আহুতীনা শতেন চা! ইত-রান্দশভি দেঁবানাহুতিভি: পুত-र्भाष्ट । जजः भूषमा विद्धाना क् ष्रादेव अखिवाहन ॥ भुगृश कर्कत्रीः गगाया थनाष्टः शुरक्षितः। भूव गाः র্গেণ দেবেন ভোষ খারেণ কার্যেৎ ॥ পূর্বৎ তেন মার্গেণ সপ্তবীজ্ঞানি वाभाष । जाद्र छु॰ एउन भार्मि তস্য থাত্স্য কার্যেৎ ॥ ভতো गर्खः थानगास्य इसमान भूमागतः । চতরস্থল মাত্র তদধঃ খন্যাৎ সুসন্মিত ॥ গোম্যেন পুলিপ্যাথ वन्त्रत्व विरविशवः। मस्य पद्मा कु পুয়াণি শুল্লান্যক্ষত মেব চ !৷ আ-চার্য্য: প্রাল্লথো ভূত্বা ধ্যায়েদেবং চত্মুখি । তুর্য ন**ঙ্গ** হোষেণ তুল্ধ । **धाव द्रावन है।। अर्घाः मन्त्राट सुद्र-**শুেষ্ঠ জন্তুতোবেন মন্ত্রবিৎ। পুগৃহ্ ককরী তান্ত তৎ থাত প্রযেজ্জ-लि:॥ मर्वतन मगायुक्ति विभरेतकः সুগিষ্ধিভি:। ভিমিন্ পুষাণি শ্লানি পুক্ষিপেদোমিতি यत्रन्॥ छमावर्खः পরীক্ষেত দধি ভক্তান্বিত কিপেৎ । मूड माम्सिक्गावर्खं श्मूख वा भ ভবেত্তভঃ॥ वीरेजः मानि यवा-मीना गर्स छ भ्रायस्ट:। कि ত্ৰজাভি: পৰিত্ৰাভি মৃ<sup>\*</sup>ডি গৰি• পু-পুরবেৎ।। এবং নিষ্লাদ্য বিধিনা বা खराग॰ मूदाखम । मुदर्ग॰ गाक वज्रक व्याहार्य्याय निरविषय ।। इ खत्रानी नाभीन् स्थानस्य अपवासि স্বাহান্ত ভত্তদান ভিঃ। তথা চ বিষ্ণু খর্মোন্তরে। একৈকাণ দেবতাণ রাম সমুদ্দিশ্য যথাবিধি । চতুর্থ্যন্তেন ধর্মক্তো নামা চ পুণবাদিনা॥ ছোম-দুব্য মথৈকৈক শত সন্ধ্ৰন্ত হোম**্** বেৎ। শতসন্ত্ৰ্য মিতি পূৰ্ব্বোক বচ-नानुमाद्रिप वाख्यारगठद्रभद्र ॥ मृष्डि:। बाहावमात जूहरा८ धाः ৰন্বৈ মত্ৰদেবতা । হোম দক্ষি ণা সম্পুদান মাহ ছলেবাগপরিশি-क्षे । दुक्त ए मिक्किना (मया यव या भः दिकीर्ज्जा। कर्यास्य २ नुहानानायाः भूर्णभाजारिका ভবেৎ ॥ विष्धाः (कोब मना क्लिक्शिक्शक इता छ-विट । अय (कृष्ट्रच्यः अर्य) । न दिया পুতিপাদযেৎ ৷৷ অন্যো যজমানভি মঃ। উভয• বুদাকর্ম (হাতৃকর্ম চ। উপস•হারে বাস্ত যাগ নিতি শ্রুতে:

जक्त वारका (उरेनरवारहाथ माठव-ঙি। অত্র মিলিভামিলিভ দক্ষিণা-म्बनाथ् कन्नजात्रजगुरा।क्षा भाष्ट्रामु । ভতঃ সহৌ যথি স্নান বন্ধমানস্য कात्रयथा (पवी भूत्रागः) कालक इ-भ जी भूरबारिक्यान् मक्तिकः १ई. (१८। द्राक्षणान् ভाक्षियञ्च जू न्डा गीठामि कात्रययः।। भागामः कात्रः (यिष्विवान् गृरु वालि मत्नारुव । कार्याञ्च भक्षा वि दि दिन्दे हिन রথাপিবা॥ হোনাত্তে ভক্ষ্য ভো-रिकार्क वास्त्र याण विनः हरद्र । ইতি মৎস্যপুরাণে হোমান্তে বলি বিধানাৎ অত্রাপি হোম কৃত্বা ব-ল্যাদি পাুভদিত সর্বকর্মকরণাচার: ॥#॥ অত্ৰপুদাপতি নানাগ্নিঃ। পু-ভিগ্নায়া লোহিতক বাস্ত্র যাগে পু-জাপতি:। জলাশয পুতি সাধা বক্ ণঃ সমুদাজ্তঃ।। ইতি মৎস্যসূক্ত-বচনাথা একাশীতি পদবাস্তবাগে न र मा भू द्वाप । जूमा थिका द्वा । भक्षः गंति। विश्ववेदाः भन्नीकिषा जू (म-চযে**ং ।** এकामी जिन्न कृष्। (ब्र খাভি: কনকেন ত্ ॥ পশাল্পেস ন চালিপ্য স্ত্ৰেণালোড্য সর্বতঃ 1 দশ পূৰ্বাযতা রেখা দশ হৈবোভয়া-যতাঃ।। সর্ধবাস্ত িভাগে তু বিজ্ঞে-

যা নবধা নব। পঞ্গব্য নজনাহ শর:। গায়ত্রাদায় গোন্ত্ গন্ধ-ছারেতি গোম্য । আশ্যায়েতি ট ক্ষীর•দধিক্রাব্রেতি বৈদধি। তেজো-র্স তি ঘৃতঞ্চিব দেবস্যত্বা স্বশোদ-कः। अवधी द्राष्ट्र काठ्यायनः। वीकः यः भानत्या मृता (गाध्याः अर्वना-खिलाः । यदा (कोषधयः मञ्ज दिश-দো দ্বন্তি ধারিতা:।। ব্রীহি: শরৎ পङ्गान् । वश्चिकाथुः। भान्य। हर-মন্তি নাঃ। দশেতি বাস্ত মণ্ডল বাষ-ব্যে উপবিশ্য প্রাভিন্থো গুৰু: উভর্ন্যা নারভ্য দশরেখা: পুাম-थी यंथामिकिन क्यां १ । अव रेन-প্ত্য নুগবিশ্য পশ্চিমতঃ পূর্বাপ-त्रगा माणा खत्रायका (त्रथाः क्र्य)। ८ कनक मनाकारिना। कृत्रान्त छा-সাং নামানি। শান্তা যশোবতী কান্তা विभाजा भागवाहिनी। भंडी भूमन मा बन्हा मुख्या ज्या। इज्जा म्। म्मद्रथाः। श्रिगा मृत्ञा नची विভ্তि विमना श्रिया। जया কলা বিশোকা চ ইডা সংজ্ঞা <del>দ</del> শোতরা: ॥ ইত্যম দশরেথা: ॥ একাশীতি পদ' কৃত্বা বাস্ত কৃৎ সর্ব वाञ्चयु । भन्छ।न् भृद्धरयरम्यान् बि·मेर अक्रहेमें जू। हाबि·मे

দ্বাহ্য ড: প্ৰ্জ্যা ক্ৰাড প্ৰ্ডা-मण। नामञ खानि वक्तग्रामि छा-नानि ह निर्दाष (म ॥ देणान कार्गा-षियु **जान् भू**कत्यह विशान छः। शिथी रिवाय भर्द्धात्रा क्यसः जनिमा युषः॥ সूर्याः जाउता ज्न रेक्टव या-.কাশো বাযু রেব চ। প্ৰাচ বিভগ-रिक्टव गृहक्के यमावुर्को ॥ गङ्गार्की ভ্সরাজশ্চ মৃগঃ পিতৃগণ তথা। দৌবারিকো হথ সুগ্রীব: পুরুদম্যো জলাধিপ: ৷৷ অনর: শোষ পাপৌ চরোগোহি মু খ্য এব চ। ভলাট: সোম সপৌ চ অদিভিশ্চ দিভি ख्या ॥ विश्वाबिः मास्टि इ उन्ड শচত্র: শৃণু। ইশানাদি চত্যোগ म- इ जान् भूकारमृषः ॥ व्यान रेम्प्र-वाथ मावित्वता अया कपु खरेशव ह। गर्य। नदभरि बुक्ता उम्हारही ह नगी-शगाः ॥ मर्दारनकान्द्रतान् विष्णा भूदीम्यायायञः भृगा व्ययंत्रा निव-তালৈৰ বিৰম্বান্ বিবুষাধিশঃ!৷ মি-जा २थ द्राक्रयक्षा ठ उथा भृशीयदः ক্রমাথ। অ**ন্তন ক্যাপ**ব্র সক্ষ পরি তো বুল্লণ: মৃতা: ॥ আপ কৈবাপ-वर्मक शब्द्धानात्र पिंडि ख्या। পাদিকানাঞ্চ বর্গো হয় নেবং কোণে-ষ্ শেৰত:।। তমধ্যে তু বহি वि भा-

দ্বিপদা তে ভু সর্বতঃ। অর্ঘ্যমা চ विवसाः क भिवः भृशीधव खणा।। বুক্ষণ: পরিতো দিফ্ট্ ত্রিপদা স্তে তু जर्ब डः। এव भिष्ठि यथा के नानका-েকোষ্ঠ চতুষ্টবে অন্তব্ছিতৈককোষ্ঠ-সহিতে দেবতা পঞ্চ নেব নাগে্যা-**मिकार** पत्रभी अर्थः । निक् भूर्वा मि रिक्षु। 🗱। वः नानिमानीः वक्ष्मानि वर्निम भ्षक् भृषक्। वायुः यादः তথা রোগাৎ পিত্ভ্য: শিথিন পুনঃ।৷ মুখ্যাভূশ মথো শোষাদ্বি-**७थ॰** यावस्तव जू। जू ग्रीवाहिनिङि॰ যাবভূকাজ্জবন্ত মেব চ ।। এতে ব॰-माः ममाथ्राठाः कृतिब्ब्ह्रितं वर ह । এতেবাং চৈব সম্পাতঃ পদমাধ্য সম গুৰা।। মৰ্ম হৈ তৎ সমাধ্যাত্ৰ• ত্রিশ্ল কোণগ চ হৎ। শুল্ল ন্যা-(मय्वर्क्क) नि जुलाविधियु मर्बरा॥ की लाहि हो भवां जानि वर्क्ड यू य পিত্বৈশ্বনিরায়ত: ৷৷ মূর্জন্যগ্রি: স মাবিষ্ঠো মুখে চাপ: সমাশিত:। পৃথীধরো হর্যানা চৈব স্তনযো স্তাব-বিভিতৌ ॥ বক্ষস্থলে চাপব্ৎস: প্জনीय खथा व्रेवः। निजया पिंडि পজ্জন্যে শোভে দিতি জয়স্তকৌ ॥ जल्लेन्द्र। वंश्म मंख्यो ह भूबनीकी

পুगज्ञः। (माम मूर्य)। स्य छद्यहाः স্থো: পঞ্চ চপঞ্চ।। ক্দুশ্চ রাজ-য়ন্ত্ৰ। চ বামহস্ত সমাশ্ৰিতৌ। সা-বিত্র: সবিতা তদ্বন্ধস্ত দক্ষিণ মাণ্ড্র-ভৌ ।। বিবয়ানথ নিত্রশ্চ জঠার **স**্ ব্যবস্থিতী। প্ৰাচ পাপ যক্ষাচ হস্তথোর্মাণিবন্ধকে ॥ তথৈবাসুর শে*•* ষৌচ বামপার্শ্বে সমাশ্রিতৌ। পার্শ্বে **जू प्रक्रिए। उद्य दि उथ: अग्रक्र ठ: ।। উर्द्धः** यंभात्रुरभो एक यो जारा नंक व श्रुव्नको । बद्धाया ज्ञ मृश्रीको कः **ট্যা॰ দৌবাद्रिका मृगः।। क्यः শ**क ख्या (म्युक्तान्याः निष्द ख्या। मर्त्या नवनामा वुक्ता क्रमर्य म जू भूबारा । চর नीक विमातीक भूज-नाः भाभद्राक्ष्मीः । कॅमाय्यानि কোণেৰু নওলাদ্বাহুতো যজে ॥ পিতৃভ্য ইতি পিতৃগ**াদারভ্য ব**ং হ্লি· যাব্ৎযো ব**েলঃ প্রসারিত স্ত**দ্ব-দায়তো বাস্তপুক্ষ:। অমুপো বক। गः। প্রকः পুরদন্ত:। তথা। পুদ-किंग्स बदी उवारसः भरवित्व-থন । কোষ্টানা লিখন পুদক্ষিণ कार्याः। उषा। उर्छनी मधामा हैव ভথাজুষ্ঠণ্ট দক্ষিণঃ। পুৰাল রত্ন কনক ফল পুষ্লাক্ষতেদক।।। স-রঞ্জ বামভাগেয়ু শন্ত পদবিলে- थान। 🗱। उथा। वाखी भन्नी किएउ नमान् वास्तरह विष्याः। वास् পশ্মন স্বৰ্গ্যৎসমিতি বলিক্ষ্ণী ।। बीर्लाकात्र उत्थान्तात उथा गृ-স্নিবেশনে। দ্বারাভিবর্জনে তদ্বৎ পুলোদেযু গৃহেষু চ।। বাত্পশনন ष्ट्यग्राट भूईरमव विष्ठक्षनः । এका मीजि भरः (नथाः (नथरेक वास शिष्टेकिः॥ रहाम जिल्लायान कार्याः का ए इस भूगानक। अ। विश्वकर्या । थाउ। दिक ভदिएा भी शैन (धनु ধনক্ষয:। বক্রস্তে ভূ সন্তাপো ন রণ ছিন্নবেথলে।। নেখল। রহিতে শোকো হু থিকে বিভঙ্গ ক্ষয:। ভা-র্য্যাবিনাশক স্বস্তু প্রোক্ত যোন্যা বিনাকৃত ৷৷ অপত্য গ্ব সন প্রোক্ত ছও বং বণ্ঠ বৰ্জিত। বশিষ্ঠ স হিতাযা । তথা । সন্যক্ পরী-কৈচ্ব কর্ব্য শুভবেদিক। এব বিধ সভাসম্ভবে ক্রিয়াসার:। সভ নেব্যিখ নন্যাৎ স্থাপ্তল বা স্মা-<u> न</u>्यय । २८ मा भूद्रावः । यतः कृषः **िटेन उद्दर मिन्छिः की व्रिम** सुरैवः । शानारेमः थान्ति द्वाशानार्शाः एन्नद्र मञ्जूदिः ॥ जन्म मृद्यी मरेगर्नाः পি মধু সার্প: সম্পিটিত:। কার্য্যস্ত भक्षि विं दि विद्ववीरेण द्रथाशिव।

॥ হোমান্তে ভক্ষ্য ভোজ্যৈক বাস্ত-দেশে বলি হয়েৎ। অত্র হোমে **मञ्जानाङ्** विक्षूषार्याखद्रः । वात्या-ল্লাভন মজেণ যজে গৃহদেবতা । বাস্তোল্পতেন বাস্তোল্লতিদৈবতেন नक्ष्राञ्चन । बलिम्बाक नायमः প্রাগেব লিথিত ৷ ৷ শু ৷ বুক্ষস্থানে ত-**७: अ**र्य)ामामुरम्दम्। भूमन निज्रा-नि। সূবर्न गां वञ्ज यूग माठार्याय নিবেদযেৎ। ইত্যন্ত মত্রাপি বোধ্য° ॥ क्लुडार्रो भएमानुबागः। उडः সংস্থাবিধিসান যজ্যান্স্য কার-(यट । विका॰क भ्वायक्तका (य-চান্যে गृह्गाग**ाः** ॥ এ ज्वायुन्नः मन क्दा कर्म नमाहरत्। भागान ভবনোদ্যান পারস্তে পরিবর্ত্তনে॥ भुत्रत्यम् भुत्तरमयु मर्वरमयाभन्-ত্তা। ইতি বাজ্পলমন ক্রা मूखि (वष्टराय ॥ इंडि मूट्म)-পুরাণে উপক্রমোপসংহার্যো র্বা-স্তুপশননত্বেলভিধানাৎ বাসূপ**শ**-মন কৰ্মণো নামধেষ ইতি ভেনৈ-(वाल्लयः मर्दामायागनुडाय इंडि भुः ७ क वास्त्र महत्वायाश्रामान कनः मःकल्ल जु उनुरत्नथः कार्यः। এতত্পার ভ্র পুবেশান্তরমিম-बन्नाः कर्खदाः। व्यावनात्रवस्य सुमानः शुर्तगरवाकः । ইতি श्री द्रघ्नन्तन ভটाচार्य्यदिद्रिष्ठः वास्त्रधागठकः नमाक्षः ॥

বাস্ত হ॰ ক্লী বাস্ত্ হশাক•। ইত্য-মরটীকাষা• ভরত:॥

বাস্ত্রকী জী চিল্লীশাক। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

वायुकः क्री भाकविष्मयः। (वजुरा ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়:। বাস্ত ২ वास्रकः ७ वमुकः ८ वस्रकः ৫ हिनः মোচিকা ৬ শাকরাজ: ৭ রাজশা-ক:৮ চক্ৰ ভী ৯। অস্য ভণা:। गर्व द्रा गुणी उल द्रा का द्रद्रा भारतद्वः। जिल्लाविज्ञकुः। (द्राठ-় নর্ব। জুরহরত্ব। নহার্শসাং না-**मनद्रशमन मृब मुक्तिकात्रिद्व**थः। ইভিরাজনির্ঘণ্টঃ॥অপিচ।বাস্তৃ ह॰ वासकः ह मार कात्रभवक माः করাট্। তদেব তু বৃহৎপঞ রক্ত न्याद्गीखवास्त्रकः ॥ नुगयाना यव मर्था ना ए या दर्भाक मंडः मृंडः । বাতুক দ্বিতম• স্বাদু ক্লার° পাকে कर्षे ५ 3 ।। मी भन भाइन क्रा वयू गुक वनशुरः। नदः श्लीहानु लिखामु किम (मायवराणशः॥ ইতি ভাবপুকাশঃ॥

वारखय॰ जि विष्ठिमधिक ॥ वेख-

সম্বন্ধি ॥ বস্তুসম্বন্ধি ॥ বাস্তুসমৃন্ধি । বস্তি বস্তু বস্তু ৰাস্তু শব্দেভ্য:ফেষ পুক্যযেন নিম্নমং ॥

বাব্যেল্পতি: পূ॰ ইন্দু:। ইত্যমর:॥ বাস্ত্র: ত্রি বস্ত্রাব্তর্থ:। ইত্যমরঃ ॥ বস্ত্রসম্বন্ধী চ॥

वाद्यः जि वाजि ठि५ छि यः। वाजि भद्भ इयादाछ। छ भुछ ऽरयन निज्ञमः॥

বাস্ণঃ পু॰ উম্মা।। লোহ॰। ইতি কেচিৎ।। মূর্দ্ধণ্যমধ্য ইতি সাধু॰ পাঠঃ।।

বাস্পেয়: পু• নাগকেশর:। ইড়ি রহুমালা॥

वाङ् अ ड यहा । इंडि किविद्यन् क्रमः ।। अ व्यवाह्य । ड वाह्रंड । ववाह प्रकः भुक्षा छठा छाजाः महमूनः इंड्रािन मिक्कार्थ मा-श्रािन्छ वह्याज् मान्त्रंट वर्गान-मान्नार्गात्वो। वछ्ड्छ वह्वाम् अ-मान्नार्गात्वो। वछ्ड्छ वह्वाम् अ-मान्नार्गात्वो। वछ्ड्छ वह्वाम् अ-मान्नार्गात्वो। वछ्ड्छ वह्वाम् अ-मान्नार्गात्वो। वर्षा हुन्याय् व्वाह् अ ड यहा हेड्रियाय भन्ना-क्वा विठ्राह्याय भन्नोय्युणं। व्यथ् वा वव हेड्राह् हेट्युव व्राथ्यानः। हेडि मूर्गानाः।!

(घाठेकः ॥ পরিমাণa 753 विल्मयः । इंडामदः ॥ वथादः । क्षा भूत्रक्षक मुष्टिः व्यउत खह जुडेग । हदातः अपनाः भुष्र कजुः शृष्ट् नथाएकः॥ व्यष्टाएका ভবেৎ पुराता विष्मानः मूर्न छेठाउ । नार्क मूर्ला ভবেৎ थात्री (इथार्य) গোণ্যুদার্ভা॥ ভামেব ভার জা-নীযাৎ বাহে। ভার চতুষ্টয়ণ। ইতি ভরত: ॥ চতুর্দশ ভেদাৎ সংখ্যা ন্যথাত্ব। তথা চ। চতুরাঢকো पुगः (वाफणपुगा थाद्वी। वि·-শতিদোণঃ জন্তঃ দশসন্ত্রো বাহঃ । इंडियामी॥ #॥ जुकः ॥ त्यः॥ ॥ वागः। इंडि भरत्रद्वावनी ॥ व হনকর্ত্তরি ত্রি।।

वाहकः वि वहनकर्खा वहित्यः।
हेठार्थं १क भूठारयन निम्नमः॥
वाहिषम् भू॰ महिषः। हेठानद्रः॥
वाहन॰ क्री हेठाप तथा मानिः।
छ भर्यायः। यान॰ र यूगाः २ भद्रः।
हाहनानि यथा। विष्णु वृक्ष सिरेव
(मेरेव ब्रियंड मा जगन्नभी। निड (भूर्छ। महार त्वा वृक्षा माहिङ भक्ष्यः॥ इति ई ते छ विरद्धारा।
बाहनानि मरहोक्षमः। यम् छा। वा হনবৃদ্ধ তেষা॰ যমান যুদ্যতে।। ত-মাঘ্ৰ্যন্তৰ ক্ষা বাহন্ত্ৰ গতা-खयः । यश्चिन् यश्चित्रहानाया भी ণাভি সভত শিবা।। তেন তেনৈব ৰূপেণ আসনান্যভ্ৰন্ ত্ৰয়:। ইতি कि निकाभुद्रात ७१ व्यथ्यायः॥ 🕏 ॥ (पर पानवानाः वाक्नानि यथा । शुन्छ। উवाह । भृगृष्ठ कथि-याभि नार्द्या मिल नात्रमः। वा-रनामि সমাসেन একৈকস্যানূপ্-वंगः ॥ कमूहछउला १ भन्न मह কাষ মহাগর। খেতকর্ণ মহা-वीर्याः (नवज्ञाकमा वारुनः ॥ (द्रो-पुनेतः मञ्जरः जीमः कृष्णर्गः सता-কবং। পৌপ্তক নাম নহিষ ধর্ম ब्राह्म । ब्रम्भानम मञ्जू उ॰ শ্যাম জলবি স জ্ঞক। শিশুমা-র॰ দিব্যগতি॰ ৰাহ্ন॰ ব্ৰুণস্য চ।। त्रोपुः नक्षेष्ठकाकः रेनवाकात्र নরোত্তম । অধিকাপাদসমূত वारुन धनम्मा जु॥ अकाममा-नाः कृषाणाः वाह्नानि नहामूत । गन्नदान्य नहावीर्या जुन्नरान्ताः সুনাকণা: ।। খেতানি সৌরভে-यानि व्यानुशनुक्रवानि ह। द्रथः ह-न्तुभन कार्छ॰ महत्रु इ॰मवाइनः ॥ হ্যেটে রখ বাহাক আদিত্যা

মুনিদভন। জঞ্জরছাক বসবো যক্ষাশ্চ নরবাহ্না: ॥ কিল্লা ভূ कगाका इयाकाने उथायितो । শারকাধিডিতা বুকান্ নক্তো ঘো-व्रम्भनाः ॥ **मूकाक्याम्य क**राया পল্লৰান্চ পদাতিন:। আক্ছ वाङ्नारमध्य वानि वान्यवाखः माः॥ अञ्च निर्वयू क्टि। युकाय जुशस्रोऽनः। #। नात्रम উवाठ । शेक्डिंगि मुद्रातीना॰ वास्नानि सङ्गागुरन । रेरच्याना॰ वाङ्नारन्य व रथावहळू नर्मा। भुनया छ বাচ। শৃণুদ্ধ দানবাদীনা॰ বাছনা नि षिजाउन । कथ्यवग्रानि उ ত্ত্বে বথাবৎ শ্ৰেত্ত্ব মহসি॥ অ-क्षकमा प्राच्या युक्तः (मुधः भारत वा-জিভি:। কৃষ্বর্ণ: সহ্সার স্থিনল शिविमानवान् ॥ भुञ्जाममा त्रार्था मित्राः (य उवरेर्नर्याखरेनः । **উ**ञ् নান তথাষ্টাভি: শেতক্মন্য: শুভ:॥ বিরোচনম্য তু গঙ্ক: সম্ভ-मा जू जुबस्यः। कञ्चमा जू द्राया-किर्त्त्यां स्टेयः काक्षनमिष्टिः ॥ শস্তু কর্ণস্য ভুরগো হ্যগীবস্য সং ঞ্জর:। রখো ন্য্স্য বিখ্যাতে। मुन्मुरङक्त मरहाद्रगः ॥ **न**युव्रम् विगाना २ ज्यापः मह्या मृत्राः

ধিপা: । ইতি শ্রীবাননপুরাণে ৯ অব্যায়ঃ।। বাছশেষ্ঠ: পু• অখ:।ইতিরাজ-নির্ঘণীঃ।।

বাহস: পু॰ অজগর:। ইত্যমর: ।। বারিনির্যাণ•।। সুনিধগ্রহ•। ইতি নেদিনী।।

বাহা ক্রী বাহ:। ইত্যজনপাল দ্বিক্পকোষৌ।।

বাহাবাহবি ব্য° বাহুৰুদ্ধ । হাতা-হাতি ইতি ভাৰা। ইতি ঘূধ্ববোৰ: ব্যাক্রণ ।।

বাহিক: পু•ু চন্ন:।। গোবাহ:। শক্টাদি। ইতি ধরণি:॥ ভার-বাহকক।।

বাহিত্য' ক্লী গজস্মুন্যাংখা ভাগঃ । ইত্যমরঃ ॥

বাহিনী ত্রী সেনা । নদী । সেনাভেদ: । ত্রথা । গলা: একাশী তিঃ
। রথা: একাশী তিঃ । অস্বা জিচভারি শদ্ধিক শত্র্য । পদাতিকাঃ পঞ্চাধিক চতাশত । সমুদাযেন দশাধিকাইশত বাহাঃ
সন্ত্র হস্যা । ইত্যমর ভরতৌ ।।
বাহিনীপতিঃ প্ সেনাপতিঃ ।
ইত্যমর: ।। সমুদুঃ । ইতি শন্ধা

वाशिकः भूः (मण्डमः। उट् शर्यायः। शृक्षेतः २। ইতি হেম हन्मुः॥ अर्खिक आठिः। आहे देठि ভाষা। यथा। তত্র বৃদ্ধः পুরাবৃত্তাः कथाः कि कि कि एका ज्ञाः। বাহীক দেশ ম দু। क अट সমন্ বাক্যমবু वीट्॥ श्रक्षाना कि जु यक्षाना न मीना य श्वता श्विताः। ভান स स्वाका न श्वता श्वाः। ভान स स्वाका न श्वता श्वाः। ভान स स्वाका न श्वता श्वाः। ज्ञां न श्वता वाहीक। एक्षा गुल्वः स्विन्ति छ ।।। हेठि स्वा जाद्व द्वां श्वति २०० ख्यायः॥

दाए: भू॰ कक्कादयाञ्चलागुभर्याखाः दयदः। रथा। ज्क वाएः भूति छो। एन दिजानदः॥ वरुजानन वाएः नाम्मी जिलेग। घिक वार्त्वा १ रखः। वार्त्वा १ ख जुकायाः भूगान्। इजि मारगानदः। खियाः वार्त्वा छ। वार्त्वा वार्त्वा जुका वाष्ट्र (नीर्त्वा एनावा ह प्लाः भूगान्। इजि ह्याः वार्त्वा वार्त्वा जुका वाष्ट्र (नीर्त्वा एनावा ह प्लाः भूगान्। इजि ह्याः वार्त्वा वार्त्वा जुका वाष्ट्र (नीर्वा वार्त्वा वार्त्वा जुका वार्त्वा वार्त्व वार्त्वा वार्त्वा जुवालः। यथा। मूथः वार्त्व भूवाल् ह प्रमः मर्खिन्तु यानि ह । दक्क वृत्व वार्त्व ज्यां ख्व नाद्वा परा

**হ্**ব্যুখঃ।। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৫ অণ**শ** ৫ व्यव्यायः ॥ वाङ् भूवाङ् छ अर्भंत-স্যোদ্য থে। ভাগৌ। ইভি ভট্টাকা ॥ यन्। भवगीय वकादाहि वाइ-শহে पृष्टेवाः ॥ क्षा जना मृजान्ज नक्रा यथा। निर्मारनी देवत ज्याली লিঙ্ঠো চ বিপ্লো ভুজো। আজান लिशिनो वाङ्कृत्छो भीनो मृरभश्वत ॥ निःसानाः जानाः इसी (मुर्छ) করিকরপুভৌ। হস্তাস্থলয় এব সুত त्रायमी विविजाः मुजाः ॥ (मधावि-নাঞ্চ দ্আঃ মৃত্ ভূরোনা চিপিটাঃ म् जाः। ज्लाक्षीि नियाः मु र्नेजाः मुह र्वाङ् द्रष्ठमा ।। कलि छुन्छ-कता निःचा वराष्ट्र जूनरकरेत र्थन । মণিবলৈ নিগ্ঢৈক সুলিপ্ত শভ স-क्ति जि: ॥ नृषा श्रीतः कद्राह्मः मण-দৈ ধনবজ্জিতাঃ। পিতৃবিভবিহী-নাত নিয়াৎ করতলায়রা:।। ল॰ वृदेख रेफव विदेशक धनिमः भन्निकी-र्ভिजाः। (প्राक्ता नद हरा जादा दि-यरेन दियमा नद्राः ॥ करेद्रः कद्रज्रेल रेक्टव नाकारिङ बीचबा खेलः । পরদাররভাঃ পীতৈ ক্লৈ নি:যা নরা মৃতাঃ ৷৷ তুষ তল্য নথা: ক্লীবাঃ ब्हाइटिन मुहिटिन नंद्रीः। निःसाम्छक-নথৈ গুৰুদ্বিশৈ: পর্তক্কা: ॥

छारेन् ज्ना धनाएगाक जक्रेष्ठः भगरेव खर्था। अङ्गुष्ठ म्लरेबः (भुव)। न्यामीर्घाञ्जल পर्दकः ॥ भीर्घायुः जुछग रेक्टब निर्थरना विद्ववाकृतिः । घनाकृ विष्ठ मधन खिर्मा (द्रथा क যস্য বৈ।। নূপজে: করতলগামণি-ৰন্ধে সমূল্যিতা: । যুগমীনান্ধিত-करता ভरिट मञ्जूरित नद्रः ॥ वः জুকোরাশ্চ ধনিনাণ নৎস্য পুছনি-ভা বুধে। শহ্বাতপণ্ড শিবিকা गजभाषाभा न्त्र ॥ अभ्राक्रु-শপতাকাভা মৃণালাভা নিরীশ্বরে । দামা ভাশ্চ গৰাচ্যানা॰ স্বস্তিকা-ভা নৃপেশ্বরে ॥ চক্রাসি তোমর-थ्नुः सञ्चा छ। नृপতে: कत्त्र । छे हू-খলাভা যক্তাচ্যেবেদীভা কাগ্নি হোত্রিণি ৷৷ বাপী দেব স্বলাভাক ত্রিকোণাভাশ্চ ধার্মিকে। অঙ্গুষ্ঠ মূলগা রেখাঃ পুঞাঃ সূজ্বাশ্চ দা-तिकाः ॥ भूपर मिनीगङा (त्रथा क विधान्त्राभिनी। **ग**ठायुरक क-क्छ ছि मेरा एक्छा ७२ ॥ नि:-सान्ध दछ । अं। मिंदू वा निष् वृक्तिः क्रिनः। इंडि शाक्रा ५५ व्यथ्रायः ॥

বাত্মূল লী ভুজদ্বস্থাদ্যভাগ:
ক্লিক্ইতি বগল্ইতি চ ভাষা।

ए८ १ र्यु। यः। ककः २। ই छ। नदः ।। जुजाकारेतः २ मामू नः ८ य छि-্ক:৫ কক্ষা ১। ইতি হেমচন্দু:॥ वाङ्णः भू कार्खिकमामः। इंड्र मदः॥ भाकामूनिमृतः। ইতি ह्मः **ठन्द्रः ॥ # ॥ अथ कार्जिक गार्**नः, অ্যণ। নারদ উবাচ। কার্ভিক্স্য তু भाशाबार भाममा बक् भर्शम । भूबं· कार्जिः नाशञ्जाः यथावट বজু মহসি॥ বুকোবাচ। সাধুপৃষ্ট• ত্ব্যা পুত্র লোকোদ্ধারণ হেডবে। कथरामि न अन्तर् छु॰ अस्मा ना-স্তি বৈঞ্চব:।। এক তঃ সর্বতীর্থানি সর্বে যজ্ঞা: সদক্ষিণা: কার্ভিকস্য চ মাসস্য কোট্য:শং নাপি বিভু তি॥একত: পুষ্রে বাস: সক্ষে-ত্রে হিনাচলে। একতঃ কার্ত্তিকা **২ন্ন সর্বপুণ্যাধিকো মত: 🛚 স্থ**ণানি (मक्जून)। नि मर्दरानान रिक्डः। এ हुड: कार्डिका वट्य गर्दरा (क-শবপুৰ: 11 কৃত্বা কোটি সহসাণি পাপানি সুবহুন্যাপ। নিমেষাজেন नर्वाि विवयः यान्नि कार्न्धिकः। इट्किक्षिट अकाउ भूगा दिया-मृद्धिका कार्डिक । एएकर छ বেৎ সর্ব সভ্যোক্ত তব নারদ ॥ उमा क्या न शमाति मञा नुकः

তবানধ। সোপান ভূত স্বৰ্গস্য मानुष्र नाभा मूर्ल छ। उथाजाः न मगान्यां यया न मगानि उः भूनः । मृञ्जालाः भाषा मान्याः कार्जिकाक हार्रम यः ॥ धर्म धर्म-· ভূতা• শুে**ঙ স** মাতৃ পিতৃ ঘাতক: । कार्जिक थम रेव मानः नवनारमधू हाउमः ॥ भूगामाः भव्रमः भूगाः शावनानाक शावनः। जिमन् मारम **बर्गाः नाम्याः निम्याः अप्रा**। অত্র শ্রামানি দানানি ভোজনানি वुञानि **छ । जिलाशन् श्वित्रागा**नाः ব্লজত ভূনি বাসমা।। গোপুদানা-नि अर्ब उ अर्ब आदन नात्रम । व्याका-गानाक (य कन्ता) पाना छि विधि व মরা:॥ দানানা ফল মেতেষা পুা-পুৰু স্তে বিধানত:। তানি দানানি गृङ्गान पितिरमुताः॥ १८ किथिए कार्जिक मन्तर उन्नरेकर ख्या क्उ॰ । उनक्य कन॰ (जा-क्छ॰ विकूमा लाककर्ज्ञा॥ व्यागाः साक्षण हेव कार्जिक मानि रेयः। কৃত। অখনেধাদিক প্ণ্য তৈক পুষ্ঠে ন সংশবঃ ॥ ভষাত্মত্বেন বি (भुन्मु कार्जिक नामि भीगछ। यद-किषिए कार्जिक मंज दिक्म मिना भानतेवः ॥ इठ• मञ्ज्य वित्युन्यु छ- প শৈব তথা কৃত। ওদক্ষণ লভ ष्ठ (७ मम् । ।। यथा नतीना विर्भुन्तु रेमलानारिक्य नात्र-म। जैनशीनाक विशुष्यं क्राया नित्वा-ननम्राउ॥ उद्दर कार्डिक्नाम जु यः किष्किमीयाञ मुन्। न उन्नाञ्जि ক্ষযোবিপু পাপ যাভি সহস্থা।। उबाद मर्व भूगाजून कर्मा गनमा-গিরা। পাপ• সনাচরেন্নৈব কার্ডি-क् विक् उ९भवः॥ ज्ञानामा यनि वा क्वानामू इंड॰ (यन रंट क्ंड॰। তত্ত্বস্য নশ্যতি ক্ষিপু• বাযুনা পাণ-नावा यथा ॥ मःभाधः कार्डिकः मृष्ट्री भन्नाचः यस दब्हिंदर । नितन দিনে স কৃ চুস্য কল প্রাপ্রোত্যসং-भयः ॥ भुवृद्धानास ज्ञानाः का-र्जिक निराम कृष्ठ। व्यवनार विकु রপত্ব প্রেরতে মুক্তিদ শুভ ॥ न कार्जिम्मामा मारमा न कृष्डन সনং যুগং। ন বের সদৃশং শাস্ত্রং न डीर्थ शक्या मना।। न চाम्न नन रान न नूथ जार्या नन । ন কৃষেস্ত সমণ বিস্তণ ন লাভ: সুরভী मभः॥ न उर्ला १नमरेन छन्। न मभाद शत्राभा खरः। न ह श्रामा प-যাৰুল্যোন জ্যোতি শংকুৰা সমং। न ज्ली बनना ज्ला। न नी धिस मुख

विना। न कार्जिक मामा मामा वि-कवानाः भियः जना ॥ व्यव्यवन कल्पव्यस्त भामः नात्भानत्रश्चियः । **ভি**र्याश्वानि भवारशां **अ**र्वध्य বহিষ্ত: !৷ দুল্ল ভি॰ বৈষ্ণব জ্ঞান मूर्ज्ञ । दिक्षवी कथा। मूर्ज्ञ । दिक् वी भीका पूर्ज (ভा कागत खणा।। पू-र्झ ङ किशना मान मूर्झ ङ काइ-वीबन । मूझ (जा रेवकरवा विर्मा मूल ७ नीनासाकनः॥ मूल ७ शू-ষ্করে দাৰ• দুল্ল'ভা: কার্ভিকে তিলা: । দূল্ল ভো জাগরে। বিফো: পক্ষযে। কভযোরপি।। দুল্ল'ভা কার্ভিকে বি-भृ घार**भी इतिराधिनी ।** पुल्ल छ। भागकी भूका मुख्य छ। जनमी मूरम ॥ मृद्ध' ङ कार्खिक द्वान मृद्ध **ङ ना**षू वनरनः। भाजगुः। मिलाभूका पूर्व जा जुनिश्क्ता। मजुमुगा नशी यव मुख ভा मान **गा**निनाः। यन गोनवजी कन्या मूझ जा मन्या श न्या । मूझ ভা জননী লোকে পিতা চৈব বিশে-বত:। দুল্ল ভি॰ সাধুসমান দুল্ল ভো थार्थिकः जूउः ॥ मूल्ल रेजकामणीः लाक मन्यो मञ्चिक्तं । भक्तः দ্বয় বুত বৎস অয়নে দক্ষিণাত্তরে ॥ मूल ७ रेवकरव मान नाच मान निश्वाल । रिकाशियात जु भानीय

निक्षन (भीव माचर्याः । वाक्षनाः मृल्ल ७ विभू मृल्ल ७ जीर्थामदन ॥ न्यारयरनाभाष्ट्रिंड दिख पृह्म ७ व्यंवदर्कनः। मृह्म ७ वट्त मुव्रानाः পাত্রে ষ্ৎ পুতিপাদিত ॥ পাতা-ণামপি তৎপাত্র সদাচার্ক্রিয়া-ব্বিতং। সংপ্রাপ্য কার্ত্তিকং মাসং विमूथा (र जनार्यत्न ॥ (उदा॰ रम-পুরে বাস: পিত্ভি: সহ নারদ। ইতি এপাদ্যোত্তরখণ্ডে কার্ত্তিক-भाहारकाऽ ১>८ व्यथ्रायः ॥ 🗱 ॥ বুক্ষোবাচ। কার্ত্তিগ্রস্য তু মাহা-जा। भून (तर मृत्य मार्य माना मून নিশাদ্ল নথান কামানবাপ্ল্যসি ।। বু চাৰ৷ মিহ্ সৰ্বেধা মেক জন্মানুগণ कन । कर्ल्डा इक्षुतुरस्त्राक • **मठ** জন্মানুগ• ফল•॥ আশ্বিনস্য সিতে পক্ষে একাদশ্যাণ দিজোত্তম। বৈ-करेव रिकंव॰ धर्मः भुष्याञ्चा २मा বিধীয়তে ॥ যাবৎ কার্ত্তিক শুল্লস্য (भोर्गमाभी जिथि चंदर । जाव-দস্যবৃতস্যোক্ত সম্যুগাচরণ বৃধৈ: ।। অন্যথ। তুক্ত। বিপু বুত নেতৎ भूमृह्म ७ । कार्यं अने फार भूया इन কাত্তিকে তু বিশেষতঃ।। ত্রি শদি-नानि भूगानि विभुभी छिक्दानि देव । কার্ত্তিকস্য বুত বিপু শ্রীবিষ্ট্

পুতি কারণ ॥ ভদর্জ ভীশ্মস্য वुं उ॰ गृत जू हिकंद्र॰ शद्र॰ । श्रुगुः পঞ্চিন প্রোক্ত দত্ত ওয়ৈ চ विक्वना ॥ नरता वा यि वा नाती र्थ-कर्छ रिक्षत दुखा मिरन मिरन ় **২স**খ্য ফল• ভবেত্ত**সৈ**য়ব কার্ত্তিকে॥ অত স্তৃণ বিধিবৎ পুত্র বৈফবণ বুত্ত मूखमः। श्रीमारमात्र उष्टेष्यः भूष्मक्य সমাহিত: ॥ উজ্জে মাসি মুনিশুেষ্ঠ পাতঃকালে তথামলে। গোয়-দেপি জলে নান স্থৰ্মণ পাপিনা মপি ৷৷ ইতি পাদ্মেউত্তরখণ্ডে ১.৫ व्यव्यायः॥ #॥ वृत्कावाठ । शुद्रान শূৰণ যত্ৰ সংহতি দ্বিজসভ্ৰম ৷ তে-যাণ করস্থিত। নৃক্তি বিদ্যুতে নাত্র সংশ্यः॥ কার্ত্তিকে নাসি যো ভক্ত্যা **স**র্ধ্যাদ্রাহ্মণ ভোজন•। পুত্যহ• বিষ্ণু ভূপ্ত্যর্থ° স যাতি ভবন• হরে: ।। कार्जिक मानि यः वर्ष्याट जिल তৈলেন দীপক<sup>।</sup> অহোরাভান্যূ নিশুে৪ স যাতি পরমণ পদশা কা ব্রিকে মাসি যোদদ্যাৎ পাদত্রাণ দ্বিজন্মনে। দদ্যাদ্বত্রান্বিত বৎস যন নৈব স পশ্যতি ।। ব্ৰক্তাপ वीज या प्रमार ज्वि देव दान ণায ভু। স যাতি বুদ্দানন পুন রাবৃত্তি বজ্জিও ॥ তাদ্লক্ষৈব যো मन्त्राष्ट्र अभूगः विश्विष्ट्रिक । शक्ष-वंद्याक भाष्ट्रां ि जुक्का (जागान् भाषात्रभान् ॥ किन्मिन्छः (या म-मृत्राष्ट्र (प्रव्यक्तार्थ भामत्राष्ट्र । वि-भूग्य (वम्विमृत्य भूतन्मत्रभृतः तु-क्तिष्ट्र ॥ नात्रित्कव्यक्ताः वर्ष्ट्र मव-व्यक्ष म मक्तिगः । (या मन्त्राध्यनः विमृत्य म मध्य भू श्रव्यान् ज्यय् ॥ इंजि भाष्यः भू श्रव्यान् ज्यय् व्यक्षायः ॥

বাহুল্য প্লী বহুত্ব । বহুল স্য ভাব ইত্যথে ফ্য পুত্যু যেন নিম্নন ।। বাহু বার: পু শোনান্ত কর্ফ:। ইতি রাজনির্ঘট:।। অন্যৎ পর-গী য বকারাদি তদ্ধে দুষ্টব্য ।। বাহত প্লী যান । যথা। যান যুগ্য ত পঞ্ বাহত বহু বাহন ধোরণে। ইতি হেনচন্দু:।।

বাহা: ত্রি বহুনীয়: ॥ বহি: । বাহির ইতি ভাষা । যথা । অপবিত্র: প্র বিত্রোবা সর্ধাবস্থা: গতোপি বা । য: মারেৎ পুগুরীকাক্ষণ স বাহ্যা-ভাষর: শুচি: ॥ ইতি মৃতি: ॥ বাহ্যেন্দ্র: পুণু বহিরিন্দ্রি: । তথ্যা। চজ্যু: । জিল্লা। নাসিকা। ত্বক্। শ্রোত্রণ। এতদেকৈক গুণা: । যথা। এতে জুলীন্দ্রিয়াহা। প্রথ

ইতি ভাষাপরিছেদ:॥ वाञ्चिकः भू वाञ्चीकरमभः। इंडा-মরটাকাষা॰ ভরত:॥ वाङ्गिरः ) ज्ञी बकुनः॥ हिक्रु। वाङ्मीक १३७। मद्रामा मिनीकरद्री ॥ भू<sup>०</sup> (मणाजिमः । दलथ् ইতি আরবী ভাষা॥ তদ্দেশজাত-(घार्टेकः । ইত্যমর্মেদিনीকরৌ ॥ পন্ধর্ববিশেষ:। ইতি শব্রত্না-वनी ॥ वाक इ काह्या इंडि कविक्त्रक्रमः॥ इ राष्ट्रि । नम्या भारतेरेनरदष्टे निष्क्षी इंपनुवस्त्रा (वर्ष्यृहाद्गपछ-मार्थः। इंडि उड़ीकासाः मूर्गामानः नि गुरुः ॥ नियागः ॥ পদপূরণ ।। নিশ্চয়: ॥ অসহন ।। হেতু: ॥ অব্যান্তি: ॥ বিনিযোগ: ।। देवम्थं:।। भवि जवः।। मुक्षः।। य-বলম্বন ।। বিজ্ঞান । ইতি মেদি-নী।। বিশেষ:।। গতি:।। আলম্ভ: ॥ भाजन । इंडि भद्रव्यावली ॥ উপসর্গবিশেবঃ। অস্যর্থাঃ। বি-বিশেষ বৈক্ষ্য নঞ্থ গভি দা-स्य । इंठि मध्यत्यावहीकायाः मुन्ना

मागः॥

म्मां अन्यकाः। वारेश्रेक्किन्त्- । विः शु॰ खी भक्ती। ইত্যমরः॥ য গ্রাহ্যা গুরুত্বাদৃষ্ট ভাবনা ॥ বি:শ: ত্রি বি:শতে:পূর্ণ:। ইঙ্তি निकाउमुकोमी ॥ বি শক: ত্রি বি শতি:। ইতি সি-कान्डकोग्नी॥ বি॰শ ডিঃ जी मःशादित्मवः। বিশ ইতি হৃতি ইতিচ ভাষা। यथा । विष्मञ्जान्ताः नरेनकञ्ज সর্বা: সংখ্যে সংখ্যায়ে। সং-খ্যার্থে দ্বিক্তত্ত্বে স্ত স্তাস্ চানবতে: ব্রিয়: ।। ইত্যমর: ।। তদ্বাচকানি । ক্লাবণবাত্: ১। অস্থলি:২। ইভি কবিকল্পলতা।। নথ ৩। ইতি সং-কৃত্যমূক্তাবলী।। বিংশতিকঃ ত্রি বিংশতিষোগ্যঃ यथा। नःथ्यायाकक् न्यामार्शिय হর্থে। বিংশতি ত্রিংশন্ত্যাং কণ্ স জ্যা। আভ্যা কন্ স্থ व्यमः ङायास पुन मृतः. । विः**म**-ক:।স°জ্ঞায়ান্ত বি•শতিক:।ইতি সিদ্ধান্ত ৌমুদী ॥ বিংশভিতম: ত্রি বিংশ: ৷ ইভি সিদ্ধান্তকৌমুদী।। বিশৌ পু॰ বিশ্বভিঃ। ইতি সিদ্ধা छकोम्ही ॥ विक क्री नम्।: भून् वावात्माः क्रीव.

। यथा। की द्वः नम्धः भून् जायाः

**छन्दिका**॥

গোক্সু:। ইভি विकक्षिः मद्भावा।

वृक्षराज्यः । वॅदेह् বিকল্পতঃ পণ 'ইতি ভাষা। उৎপर्यायः। ऋष्-कफेकः २ जुनावृक्षः ० शु छनः ८ व्यायुनाट १। इडाबद्रः ॥ मुहाकः ৬ মধপণী । ই ি রত্নালা ॥ কণ্টপাদ: ৮ বহুফ্লঃ ৯ গোপ-खान्द्री २० मुनाक्रमः २२ **म्**नूकनः ३२ महकाष्ठः ३० यङ्गीयनुकालान-পঃ ১৪ পি ভারং ১৫ হিমক: ১৬ প্তঃ ১৭ ছিইণী ১৮। অস, গুনঃ । অনুন্ধরত্ব । পাকে ২ ভিন্নধর-न्। वधुन्। मीलनन्। कार्याः मु श्रीक् नामिवः। भावनद्यः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ অলিচ। সঞ্চ यञ्ज्यक क क्षेत्री ब्राह्मार नि । विकक्ष उक्त शह नवत नवत्ना-ষ উৎ।। ইতি ভারপুরাশ:॥ অভিংল। । ইতি

विक्ष आ রাজ নর্ঘটঃ ॥

विषठ: भुः क्षणाः॥ (कजुः। ইঙি विभिनी ॥

निकाः वि निकलिणः। इंडाप्रतः॥ तिमान्।। इंडि त्रिमी॥

পেগুব: পালন বিকাট্টিত শক্ষা বিকচা জ্রী নহাশাবণিকা। ইতি ब्राक्रनिर्घक्तः॥

> विकद्दः जि कहत्र हि उ:। मुक्क कहः । ইভি শৃভি:॥

> विकरे: शुः विद्यार्रेकः। इंडि मदः बद्दावनी ॥ **मात्रक्छ्कः । ই**डि রাজনির্ঘণ্ট: 11

> विकृष्टेः जि विभागः॥ विकृतानः । इंडि (मिनी ॥ मुन्हद्रः । इंडि विष:।। मखदः। ইতি ধরণি:।। विक्ठ:। ই ि जिका अल्य यः॥ विक्रे। जी मायापिकी। माह हो-षारवीत्करः । उर्भर्यायः । मा-

बीधी २ विमुशाः ७ रजुकाणिल 8 বজুবারাছী ৫ গৌরী ৬ পোত্রির্থা १। ইতি कि हा अलगः ॥

বিকণ্টক: পু॰ যবাস:।ইভিভটো-थतः ।। तृक्वि: **गयः ।** ७८ शर्यायः । **गृह्कनः** २ गुझ्याः **० वान्रूक्टेकः ४** গোক্ট ম: ৫ কাক্নাসঃ ৬ ব্যা-युशारः १ यनकनः ৮ शर्काक्लः २ वनएगः ১० यद्य छनित्वा छवः ১১ मिन्द्रक्षाः ३२ शुक्रिकाः ३० इति। क्नः ३३ छनिङ्क्नः ३४ । व्यम् खनाः। कथारदः। कहुदः। উकदः । कृष्टित्रवः । मीलनवः। कक-हाजिङ्गः। दञ्जलक्षिशयकद्वः। ইতি বাজনির্ঘণ্ট: ॥

विकथन की मिलामाधा यथा। न्नाश भूग मार्थवादः माजू मिष्राः

বিকত্থন । ইতি হেমচন্দু:॥

বিকম্পিতঃ ত্রি বিশেষেণকম্পবি-শিষ্ঠ: ৷ বিপূৰ্বক কম্পধাতো: ক পুত্যবেন নিম্নম: ॥

রোগঃ। ইতি শব্দ-বিকর: ठिन्त्का ॥

ত্রি ভ্যানক:। ইতি বিকরাল: विकरेनदार्थ (बिमिनी।।

विकर्नः भू पूर्यादनभक्तीयम्दः। যথ। অশ্বত্থামা বিকর্ণক সৌন-मिल जियुष्यः। अस्ति। চ वहवः भूता মদার্থ ভ্যক্তজীবিভা:॥ ইতি ভগ বদ্দীভাষা > অধ্বয়ঃ ॥

नावच्छाम्भः । विकर्षिकः शु इंडि (इमहन्तुः ॥

विकर्तनः भू॰ भूर्यतः॥ अर्कर्षः। ইত্যমর:॥

विकर्णकृष् जि निविषक्षकर्णकाती। यथा। न जाकी नृপতिः कार्य्या न काकक झमीनाती। न भुाजिरा ন লিক্সফে। ন সংস্কৃত্যো বিনির্গতঃ ।। नाष्ठ्रशीता न वक्तव्या न ममूर्ग विकर्मक्टान व्ष्का न मिणुर्निका नारत्या न विकल्लिमुयः ॥ इति । विकल्लः शू॰ ज्रास्तिः। कन्ननः। इति

भागत ৮ व्यवप्रात्य ५५ (माकः ॥ विकर्यकृष्ट निविध्वकर्यकात्री। इंडि , হলুকভউ:॥

विकर्णञ्चः जि निविष्ककृष्। यथा। भाषिखरना विकर्माष्ट्रान् विष्णान বুভিকান্ শঠান্ ৷ হেতুকান্ বক-वृङी क वाद्याखिशानि नाई (य८॥ ইতি বিফুপুরাণে ৩ অংশ ১৮ व्यथ्रायः ॥

বিকৰ্ষ: পু॰ বাণ:। ইতি ত্রিকাণ্ড-(শ্ব: 11

विकर्षन क्री आकर्षन। विशृह्वकृष-ধাতো রনট্ পু ত্যয়েন নিয়ন।। বিকল: ত্রি বিস্তৃল:। ইতি জটা-ধ্র:।। স্বভাবহীন:। ইতি ভরত:।। विकलभागिकः भू बजावशीनभा-नियुकः। यथा। स्रिन विकल्लानि-कः। ইতি হল।यूथः॥

विकला खी अजुशीन। हेि नद ब्रज्ञावनी ॥

বিকলাক: ত্রি স্বভাবতোন্যনাক: । তৎপर्यप्रायः । व्याभाग ७: २ । ইত্যনর:॥ পোগও: ৩ অস্হীন-क: 81 इंडि भद्रवृश्वनी ॥ विकली खी अंज्हीन। इंडि नंप-ब्रङ्गवनी ॥

मिनि ॥ विविधकन्नः । म ह षितिथः। व्यविञ्चः। ঐहिक्षः। সোপ্যাকাঙ্কা বিরহে যুক্ত:। তথাচ ভবিবেঠা ফৃতিশাস্ত্রে বিকল্পস্ত আ काङ्काभूत्रा भिष्ठ ॥ इहादिकाल्ल ं रुष्टेरनायाः। यथा। भूगागद्वाभुमा-ণত্ব পরিভ্যাগ পুকল্পনা। পুত্যু-ब्जीवन शानिजा। भूरजाक मर्छ দোৰতা ॥ বুহিভি খলেত যবৈ ৰ্যজেত ইতি শুণতে। তত্ত্ব বুছি পুযোগে পুতীত্ত্তবপুনাণ্য প রিভ্যাগঃ। অপুতীত য্রাপামা-१ अतिकन्ननः । इम्छ भूर्वयार भृथक् वाकाः व्यनाया ममुह्रायि यागिमिक्तिः मा। या अ अ वि-कल्न न উভयः भाजार्थ इंज्रुकः। পুযোগান্তরে যবে উপাদীয়মানে পরিত্যক্ত যব প্রামাণ্যোজ্জীবন• স্বীকৃত য্বাপামাণ্য হানি বিতি চত্বারো দোষা:। এবং ব্রীহাবপি চত্বার:। ইভ্যপ্তৌ দোষা ইছাবিক-ল্লে : তথাচোক্ত• ৷ এব মেবাষ্ট দো-(वाशि यमुीहि यव वाक्रायाः। वि-কল্প আশ্রিত স্তত্র গতি রন্যা ন বি-দ্যন্তে ইতি। একার্থত্য। বিবিধ• कन्नारञ इंडि विकन्नः। उमार-ষ্ট্রদোষভিয়া উপোষ্য দ্বে তিথী ই-

ত্যত্র ন ইছাবিকল্প: কিন্তু ব্যবস্থি-তবিৰুল্ল:। ইত্যেকাদশীতকু ॥ বিকশ্বর: ত্রি বিকাসী। ইত্যমর-**ढोकाया॰ जब्र**जः ॥ बी মঞ্জিধা। ইত্যমর-होकाया॰ द्रायमुब्बद्धः ॥ ना॰मद्राः हिगी। इंडि ब्राबनिर्घणेः॥ বিকল্বর: তি বিকশ্বর:। ইত্যমন্ত্র টীকাবা ভরত:।। বিক্স: পু॰ চন্দুঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-(শ্ব: 11 বিক্স। দ্রী মঞ্জিধা।ইত্যমর:॥ विक्रिंड॰ बि म्लानाम्यानार्वि-শ্লেষ:। তৎপর্য্যায:। উজ্জান্তিত ২ উজ্ঞেত মিত ৪ উনিষ্তে ৫ विनिष् ७ डे बिष् १ डे बी लि उ ४ বিজ্ঞিত ১ উদ্ভুদ্ধ ১০ উদ্ভিদুর• ১১ ভিম্ব ১২ উদ্ভিম্ব ১০ হসিত 28 विकस्तर 26 विकडः 25 व्यारका-ষ' ১৭ ফ্লে• ১৮ স'ফ্লে॰ ১৯ ফুট• २० উদিত २७ मिल छ २२ मीर्न २० मू हि उ २० डें ८ फ्झ २० शुकु-ল্ল ২৬। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ বিকশ্বর: ত্রি বিকাসশীল:। তৎ-পর্য্যায়:। বিকাসী ২। ইত্যমর: ॥ বিকসতি কসজ্গতৌ দন্ত্যান্ত: যা-

যায ভাস কসেতি বরে বিকশ্বর:।

বিকাস: মুটনে ব্যক্তাবিতি দন্ত্যান্তে ধর নি: ছিলেশটে বরত্র জলাশযোষিতা মুদা রমন্তে কলভা বিক
খরি: ৷ পুগীযতে দিদ্ধগণৈশ্চ যোবিভা মুদা রমন্তে কলভা বিকশ্বরৈ:
৷৷ ইতি মাঘ্যমকেশি দন্ত্যবন্ত্ব৷৷ কষবধে মূর্দ্ধন্যান্ত ইত্যম্য ক্ল মিতিকেচিছ ৷৷ কশ শদ্দে ইত্যম্য তালব্যান্তম্য ক্লমিতি কেচিছ ৷
ইতি তট্টা মাঘ্য ভরত: ৷৷
ক্ষরা জ্ঞী রক্তপুনর্মবা ৷ ইতি

द्राजनिर्द्धः॥ বিকার: পু॰ পুক্তেরন্যথাভাব:। **७८** शर्यप्रायः। शतिशानः २ विकृतिः ৩ বিক্রিণা ৪। ইত্যুদর:।। বিক্ ভ্যা৫। ইতি ভরত:।। কেচিত্ত পূ र्बन्धः भुकृष्टिश्वः मझन्। विकास य থা কান্তস্য বিকারে। ভন্ম:মৃৎপি-ওল্য ঘট ইতি। পরস্বন্য বিকার নাত্রে যথা মুখস্য বিকৃতি: ক্রোধ রক্তা। কাগ্তস্য ভষ্ট। ইতি ভর इ: ॥ রোগ:। ইতি মেনিনী ॥ विकालः शृ देशवरेशवाहिकर्यान-বিৰুদ্ধকাল: ৷ বৈদাল ইতি ভাষা । ७९ भर्यायः। भायः २ निनानः ० भागाइ: ८ भाग १ । इंडि भद র্ত্নাবলী ৷৷ উৎসবঃ ৬ বিকালকঃ

৭। ইতি ত্রিকাণ্ডলেব:।। বিকালক: বিকাল:। ইতি **%** ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ বিকাশিকা জী মানরজ্য। তা মী। তাঁৰী ইতি ভাষা। ইতি বিকাও শেय: ॥ विकामः शुः बहः॥ शुकामः। है-ত্যমরটীকাষা ভরত: ৷৷ বিকাশো বিজনে শ্বুটে। ইত্যুদ্ধয়: ॥ विकाणन क्षी विकाण: 1 विश्व कामृद् रीखो इंडामार व्यक्ते भु-ত্যথেন নিস্লমণ।। বিকাশী ত্রি বিকাসশীল:। ইত্য নরটাকাযা রাষ্মুক্টঃ :: विकासी विकासभी वहा इंडर-মরটীকাধা ভরত: ॥ বিকাসী তি বিকম্বঃ। ইভাগ্র:!! विकित्रः . भृ• भक्षी। इं**७**७३:॥ কুলঃ। ইতি ত্রিকাপ্তশেষ 😗 পূজা-কালীন বিয়োৎসারণার্থ ক্ষেপণী-যতণ্ডলাদি:।যথা। ফডিভি সপ্ত 'इक्षान् विकित्रानामाय। जाशनर्गं छ তে ভূতা যে ভূতা ভূবি সংস্থিতা:। যে ভূতা বিশ্বপূর্তার তে নশ্যন্ত শি-বাজ্ঞগা।। ইতি বিকিয়েৎ। যুগা।

লাজ চন্দ্ৰ সিজাৰ্থ ভয় দূৰ্য স

णाक जाः। विकिता इंडि शनिहाः

সর্ব বিয়ৌঘনাশকা: ।। ইতি ভত্ত ञातः॥ অগ্রিদধাদীনা পিওদান । যথা। অস<sup>.</sup>ফ্ত পুনীতানা<sup>.</sup>ংযা-গিনা॰ স্ল্যোষ্ডা । উছিষ্ট• ় ভাগধেয়ণ স্যাদজ্তেরি বিকিরণ্ট য়: ॥ व्यनिष्ठ । नियनिर्वानद्रहिछः ষ্ট্ৰ শুদ্ধ বিধীয়তে। স্বধাবাচন লোপোত্র বিকিবস্ত নলুপ্যতে ॥ ইভি শুদ্ধেতবৃং ॥

विकेबिन क्री विष्कृतना ।। विक्नि সন•।। বিজ্ঞান•। ইতি কৃষাত্বর্থ मर्मनार ॥

পু• অর্কুফ:। ইত্য-বিকীরণঃ यद्रः ॥

বিকীর্ণ: ত্রি বিক্ষিপ্ত:। ছডান ইতি ভাষা। যথা। অথ সা পুনরের বি-**ञ्जुल। वस्**यालिक्सन धूसब्दनी । বিললাপ বিকীৰ্ণনুদ্ধতা সমসুংখা निव अवंजी इनी ।। इंजि कनाव-সম্ভূবে ৪ সগঃ ।

विकीनंद्राम<sup>न</sup> ही (ङोरणय॰ 1 इंडि রাজনির্ঘণ্ট: ॥

विकीर्गम छ 🏻 🛱 😻 । इंटि রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

ত্রি হর্ষনাণঃ। ইত্য-বিস্বর্গাণঃ नद्रः ॥

বি**षमुः পু॰ চন্দুः। ই**ভুগোদি-∥বিকৃতী জ্রী রোগ:॥ডিব:॥ বি-

কোব:।। বিজ্ঞান পু॰ ইক্সাল্রাজপুল:। यथा। देवतमञ्ज्ञाता ज्ञानी हिन्द्वा-बः পृथिवी পতिः। उत्र । भू य म उ-ঞাসীদিসক্ষি র্জ্যেষ্ঠ উচ্যতে ॥ সো হযোধ্যাধিপতি বীর স্তস্য পঞ্চশ মৃতা:। ইতি বহিল্পুরাণে সাগরোপাখ্যান নামাধ্যায:।। বিকৃণিকা खी नामिका । ইডि (र्गठनः।। বিকৃত ত্রি বীভংসণা রোগিত 🖰 ॥ অস স্কৃত । ইতি মেদিনী ॥ বিকৃত° ল্লী বিকার: ৷ তস্য লক্ষণ• । যথা। হ্ৰী মানেষ্যদিতি ৰ্যত্ৰ নো-চ্যতে শ্বংবিৰক্ষিত। ব্যক্তাতে চে-श्रेरेगरवमः विकृष्टः अधिन वृक्षाः ॥ इंजुड्जुनभीनम् विः ॥ शुख्याम्य-ষ্টি সংবৎসরাভগত চতুরি শব্র

**চ। गर्दाः शुकाः शुशी**ख्याख द्याविः শোকশ্চ জায়তে। শিরো বংকা **২ফি রোগাশ্চ পাপাদ্ধি বিকৃতে** জনা:।। ইতি জ্যোভিস্তন্ত্ৰ•।। বিকৃতি: জ্রী বিকার:। ইভামর: ।। বিকৃতি ডিম্র রোগযো রিভি বিশ্ব: 11

া **যথা।** ভবিষ্যপুরাণে ভৈরব উবা-

कातः ॥ मन्त्रानिः । ইতি ছেম-চলুः॥

বিকৃষ্ট: ত্রি বিশেষেণ কর্ষিত:। আ-কৃষ্ট:। বিপূর্ব ক্ষধাতো: ক্ত পু-ভ্যাংখন নিয়ম:।।

विकिनी खी भिवेबिं: ॥ किन्व-क्किंग। ইতি ध्रविः ॥ महीक्षभ निवम्य भिन्नी। यथा। मूर्यम क्वा-मही विह्य वीमु ब्राकान स्व ह। मीक्षिरण वुष्मिषः साम ইर्छ्य अ खनवः क्रमार ॥ मूवईना छरेथ सा-या विकिनी हाभन्ना निवा। याहा-दिन ख्या मीका ब्राहिनी ह यथा-क्रमः ॥ मूर्यमिना निवाः भर्द्या क्रमः ॥ मूर्यमिना निवाः भर्द्या क्रमः ॥ मूर्यमिना निवाः भर्द्या क्रमः । मूर्यमिना निवाः भर्द्या क्रमः । स्र्यमिना निवाः भर्द्या क्रमः । स्र्यमिना निवाः भर्द्या

वित्काकः भू वकामूब्रभूवः। म ह
किल्पास्त्व इन्छः। यथा। किल्पास्ताः
कि वित्काकान्त्राः गमाभागि यू वाः
भिन्नः । यूय्य विभान विकृत्विकाः
नाः कनयन न्याः । वकामुब्रमः
भूत्वो लो नद्यात्रो भन्नान इतिः।
न्याः किल्पाः मःगुय्य नयुरेकहन्
वार्था।। न्याः भनाभूकाद्व ह्
निवास्मः नृष्ये । क्वाः । क्वाः ।
रभवन्ताः मृत्ये । क्वाः ।

র্মহাভূজ: । নন্দকেন শির স্তস্য বিকোকস্যাদ্ভিত পুভু: ॥ ইঙি কল্পিরাণে২১ অধ্যায়: ॥ বিকোষ: ত্রি কোষরস্থিত: । নি: স্কোষ: । ইঙি পুরাণ ॥ বিক্র: পু' করিশাবক: । ইঙি ত্রিকাগুশেষ:॥

বিক্রম: পু॰ বিষ্ণু:। रथा। ঈশ্বরে। বিক্ৰমী ধন্বী নেপাৰী বিক্ৰম: ক্ৰম: । ইতি বিফু সহ্ সুনাম ভোত্র।।। भागेंग्राजिक्षयः । उद्भगेंग्रायः অভিশক্তিতা ২। ইত্যমরভরভৌ ॥ कान्त्रिगाबः । ইতি त्रिन्ति ॥ বিক্রমাদিত্যরাজা। যথা। ধুনুস্তরি **ক্ষপণকামরসি•হ শ**হু বেভাল ভ-উ ঘটকর্পর কালিদাসা:। খ্যাতৌ বরাহ মিহিরৌ নৃপতে: সভাযা• রত্নানি বৈ বরকচি নঁব বিক্রমৃষ্য ॥ ইতি নবরত্রশ্লোকঃ ॥ চরণঃ ॥ শক্তিঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ পুভ-বাদিষপ্তিসংবৎসরান্তর্গত চতর্দ্দশ ব্য'। যথা। জাঘতে সরশ দ্যানি (यिमिनी निक्ष्णमुदा । नदगः मधू গৰ্যঞ্চ মহাৰ্য্যু বিক্ৰমে প্ৰিয়ে 11 ইভি জ্যোতিস্তৰু 🕕

বিক্রমাদিত্য: পূণ স্বনান্থ্যাতো-রাজা। সচ উজ্জানীদেশাধিপ- जिः मद्दक्डी ह । उट्भर्गायः ।
माहमाद्यः २ मकातिः ० । इंकि
कोग्यतः ॥ ज्या विवत्न पाकिः
मट् भुडिनका कथायाः पृष्टेवाः ॥
विक्रमार्कः भू विक्रमाहिडाः ।
देकि किट ॥
विक्रमी भू मिन्दः । ইकि वाजविक्रमी भन्नी मिन्दः । यथा । देश्वाः विक्रमी भन्नी मिन्दाः । यथा । देश्वाः विक्रमा भन्नी मिन्दाः । यथा । देशवाः विक्रमा भन्नी मिन्दाः । यथा । देशवाः विक्रमा भन्नी मिन्दाः । यथा । देशवाः विक्रमा प्राचाः । यो । विक्रमा विक्रमा स्वाः । यो ।

विकयः भू॰ विकयनिकया। विश्वनः
इण्डि जावा। जर्रशंग्राः। विभवः
२ । इज्यादः॥ विभवनः ७ भवनः ८
१ इज्यादः॥ विभवनः ७ भवनः ८
१ इज्यादः॥ विभवनः ७ भवनः ८
१ इज्यादः॥ विभवः॥ व्यादः ६
१ भवादः । इज्जि करेग्यदः॥ व्यायः
विक्रिकविह्छ नक्ष्वानि यथा ।
यम। १ भकानि इज्जान भूदः (मोकानि
विक्रियत् विक्र्यत् भुभवाः। विज्ञानि ।
विक्रयत् विक्रयः॥ इज्जिलानिः
विक्रयत् विक्रयः॥ इज्जिलानिः
विक्रयत् विक्रयः॥ इज्जिलानिः
विक्रयत् विक्रयः॥ इज्जिलानिः
विक्रयत् विक्रयः॥ क्षाः। क्षाः विक्रयः
विक्रयत् विष्णः॥ क्षाः। क्षाः। क्षाः। व्याः। व्

व्राक्षः । शाजुबयरम्याभिविष्टारः एकः ন বৃদ্ধিনাপু যাৎ।। অতএর বৃহস্প-**डि:। गृहत्कवारिकः** कीदा उन्र মূল্যাক্ষরান্তি। পঞ্ কার্যতে यनु करालथाः उम्हाउ ॥ करा বিক্রবে সম্য বিশেষাভ্যন্তরে প-\* हाडाभारिमिकिः । यथा सनुः । की दा विकीय वा किस्किट याना हा-নুশযো ভবেৎ। সোম্বর্দশাহে ত-पुराः मन्त्रारिष्टवामनीय वा। विश्वान क्छवर्द्धारक्ति उद्गभद्गः। यथा याद्ध-বল্পান দলৈক পঞ্চ সপ্তাহ নাস ত্র্যু-शर्खनामिकः। वीकारमा वाश् द्रञ् क्री (राष्ट्र भूष्माः भद्रीकृषः॥ अव वृश्याजिः॥ याजाद्वीक् भगु एन-यञ्च यनि म जाया क्रिट । विक्र हः **পু**ভিদেযন্ত কেতা ग्ला गवाञ्च-यादा। व्यञ्च छप्ता भन्नी कन कालादे । কাত্যায়ন:। অবিজ্ঞাতম্ভ য়ৎ ক্রী-ত দুষ্ট পশ্চাদিভাবিত। ক্রীত তৎ স্থানিনে দেয় পণ্য কালে २नाया न जु॥ काल भाखक भन्नी-ক্ষা কালাভ্যম্বরে। পরীক্ষিতে তু বৃহস্পতি:। পরীক্ষেত স্বদ পণ্ড• व्यत्अवाक श्रम्भंत्य । श्रदीकिंड॰ वङ्गाजः गृहीस्। न भून खुरहार ॥ ষ্মত্র বিশেষণতি নারদ:। ক্রীত্রা

म्लान या पुराः मृद्धीउः मनाउ क्यो । विक्रिज्ः भुजिएम्यः ७९ **७** श्रिक्क अ. ।। विञ्रीय **হ**হ্নি দদৎ ক্রেতা মূল্যাঞিশাণ **ण मारुदार । दिख्य छ তৃতীयि** 🕄 পরত: ক্রেতু রেব তৎ।। আহরেৎ দদ্যাৎ বিক্রেত্র ইতি শেষ:। দ্বিত ণ কি: শা শস্যা যাজ্ঞবল্পঃ। রাজ रिन्दानघाट्यन नाग्य एमाव छेनाः গ**তে। হানি** ৰ্বিকেতু রেবাসৌ যাচি **७**म्। भूगहुजः ॥ नात्रमः । উপङ्-ন্যেত বা পণ্য দক্ষেতাপ হ্রিষেত বা । বিক্রেত্ রেব সো **ং**নর্থো বিক্রীবা স•পুষছত: ॥ দীযমান ন গৃহাতি ক্রীত পণ্যন্ত য: ক্রয়ী। সএবাস্য ভবেদ্বোষো বিক্রেডু র্যো ২পুষছতঃ ॥ ইতি পায়ণ্টিভতভু ॥ # ॥ অপিচ। ন্যাসং কৃত্বা পরতাথিং কৃত্ব। বাধি করোতি চ। বিক্রয়ণ বা ক্রিয়া ডব্র পশ্চিনা বলবভ্রনা ॥ ন্যাসণ কৃত্বা আধিণ করোতি আ-**ধি**• কৃত্বা বা বিক্রথ• করোতি। বি-ক্রহগদ মভু ধু সক্ত্বাৎ দান ল-ক্ষ্যতি তত্ৰ পরাকিষা সিংগ্রভার্থ: । এ १६७ विष्क इताका संद्रगानिना व्याभ्रनुष्कादा विक्रयमात्न उट कर्कु তল্য শ্বত্ব জননাৎ তত্ৰ তৎ ক্ৰেতৃ

পুতিগৃহীত্ভ্যা মাধ্যুদার: কার্য্য:। ইতি। তত্র চান চ স্থাব্রস্যুসন্ ভস্য গোত্র সাধারণস্য চ। নৈকঃ वर्गां करः मानः भद्रस्थात मुख्ः বিনা।। বিভক্তা অবিভক্তা বা **স্পি**-ত্তাঃ স্থাবরে সমাঃ। একো স্থালঃ नर्वज मानायमन विकाय ॥ इंडि ব্যাসব্হনভ্যোনেক্স্য দান বৃদ্ধক্-বিক্রয়াধিকার: ইতি বাচ্যু যথেপ্ত विनियागाईइक्षणम् अनुमा प्रवान স্তর ইবাত্রাপ্যবিশেষাৎ বচনঞ্চ স্বাণ भिष्वन मुझ् छ भू एव गाइद्र विक-यानिन। अर्जेुञ्च विद्यातात्रवर्णे उद्यान-নাৰ্থ নিষেধ্ৰূপ নতু বিক্ৰাদ্য **নি**-য়ত্যথ মিতি দাযভাগ: ॥#॥ এবঞ্চ शावत्त्र विकत्या नान्ति अर्यग्रामाधि মনুজ্ঞথা। ইতি স্থাবর্গ্য কেবল विकय भुजिरवद्यार अवः ज्ञि यः পুভিগ্হ ভৌভ্যাদি वहरन मान शु-শানা দর্শনাচ বিক্রযেপি কর্তব্য সহির্ণ্য মুদক দল্গা দানক্ষেণ স্থাবর বিক্রয় ইতি বিজ্ঞানেখর:। বস্তুতন্ত স্থাবর বিক্রয় নিষেধে অ-বিভক্ত স্থাবর বিষয়ঃ। তত্তাপি যদি বিক্ষণ বিনা অবস্থিতি নভবতি ত-দা বিক্ৰয়: কর্ত্ব্য:। পূর্বপুক্ষা জ্জিত ন্ষ্টোত্মারে বিশেষ্যতি নিতাক্ষরা-

**याः। ज्ञादबः** विश्वतिका यन्त्रीन वश मिक्किं उर । यम हुए में अन् भारीत् न मान नह विक्यं दे अपित । अम्प्राण-वार भार । এ हा शि श्वादत स्वंत শাৰাধ্যৰ বিক্ৰণ। আপত্কালে अद्वेदार्थ धर्नार्थ ह वित्नवजः॥ **ইভিদাযতত্ত্ব•**।।#॥ দুব্যবিশেষ বি क्य निरम्(का यथा। मृजिः। विकी १न् মদ্য নাংসানি হাভক্ষা চ ভক্ণ । স্বল্গন্যাগন্ন শুদুঃ প্ততি **७**९क्ष १। किनिवाकीत भारान ব্ৰাহ্মণী গদনে। বেদাক্ষর বি চারেণ শ্দু ক্ষা গুলভাণ ব্রেৎ 11 কালিকাপুরাণা। বিজ্ঞা সর্ব বং ख्नाः वर्षम् भूत्वा न भावज्ञाक्। न्धु हर्ष युद्धाः लाकाः उद्भा माः जक পक्षा ॥ मनुः। जम् । अप् जिल्लाह्न जाक्या चव्लन हा ब्राइन म्मी ভवि गुक्ताः कीव বিক্ষাৎ ॥ অশক্তৌ ভেষ্ডস্যাৰ্থ यक्ताः इति । यन्। यन्। वन्। विक्रिया जिला धार्मिन ज्यन्ताः॥ ইভ্যাহ্রিকভত্তু।। গবাং বিক্রবকারী চ গবিলোমানি যানি ছ। তাবছর্য-সহস্থি গ্ৰাণ গোষ্টে ক্ৰমি ভবৈৎ ।। ইতি যমবচম-।। গোবংখা ইবাজ্য भःयाक्र भावनार्याञ्च विक्याः। उ

ডাগারাম মারাণা মপভ্যম্চ বি-करः॥ ভशहास्यमानान नगप्रा-नाथ विक्यः। इँड्यामि म्रान्त्य 🖒 অব্যায়ে উপপাতকন্ধ্যেগণিত ।। विक्रया क्री विक्रयः। यथा। यना-হি শকালি হুতাশ প্রা নেষ্টাঃ ক্রয়ে বিক্রয়ণে পু**শস্তা:। পৌঞ্চা**ণ্ড্র চিত্রা শত বিন্দু বাতাঃ ক্রে হিতা বিক্রয়ণে নিষিদ্ধা: 11 ইতি জ্যো-তিঃদারসংগুহ:॥ বিক্ৰযিক: পু॰ বিক্রেতা। ইত্যু-गतः ॥ विक्यी वि विक्यकर्छ। इंडि मद्रज्ञावनी ॥ विकाष्ट क्षी रेवकाष्ट्रमाः। इंडि वाजनिय्छः॥ বিক্রান্ত: পু॰ শূর:। ইত্যুমর:॥ मिन्दः। ইতি नाकि विर्यणेः॥ বিক্রান্তিঃ জ্রা অখণতিঃ। তৎ-পर्यायः । भूनायिष्ठः २ । इंडि ত্রিকাওশেষঃ।। বিক্রমশ্চ।। বিকাষিক: বিক্রেন্ডা। ইতি (इगठनिः ॥ বিক্রিয়া জী বিকার:।ইত্যমর:।। বিক্রীতঃ ত্রি কৃতবিক্রন:। रथा। বৃহস্পতি:। নাপ্তিক শৈচৰ জকতে

তদ্ধন জ্ঞাতিভি: বক। অদত্ত

ভ্যক্ত বিক্রীত। কৃত্বা মৃণ লভতে ধনী॥ ইভি পুাৰশ্চিত্তভত্তু ॥ বিকুষ্ট• ত্রি নিধুর•। ইতি হেম· বিক্রে হা ত্রি विक्रयकर्खा । ७८-পর্য্যায়:। বিক্রযিক: ২। ইত্যমর: ।। বিক্রথী ১। ইতি শব্রপুথবলী।। বিক্রাথিক: ৪। **ইতি হেনচন্দু:** ॥ विक्किय॰ वि विक्वययाग्रामुवार । ख्र भर्यायः। शनिख्राः २ **११**९७ ० । इंड्रमद्रः ॥ विक्रयरगाग्रारगः গ্যানি যথা। ইদন্ত বৃত্তি বৈকল্যা-ज्याका अर्थ रेनमून । विदेशना মদ্ধতোদ্ধার বিকেষ বিভবর্জন ।। সর্বান্সানপোহেত ক্তামঞ্ जिताः मह। यभारमा लदगरेक्षव भगता (य ह जान्याः ॥ मर्थः ভান্তব-ব্লক্ত শাণ ফৌলাবিকানি চ। খণি েৎ স্যুৱরজানি ফল মূলে তথৌৰধীঃ।। অপঃ শক্ত বিষামাণ্ডা সোমা গন্ধাণ্ড স र्जनः। क्रीतः (क्रोनुः पदि घृउः তৈলং নধু ওড়ং **জশান্।। আর** न्ताः क नम्न नहीं म र छिनक वयाः नि ह। यस्तुः नीविक्षः वाः-ক্ষাত্ম সর্বাতীশ্চকশফাত স্তথা।। काम न्रामा क्रांच यरामव

বিখ্যাতি
ক্ষীবল:। বিক্রীণীত তিলান্ শুজান্ ধর্মার্থ সচিরস্থিতান্।। ইতি
মানবে ১০ অধ্যায:।।
বিল্লব: ক্রি বিস্থল:। ইত্যমর:।।
বিল্লিয়: ক্রি জরসাজীর্ণ:।। শীর্ণ:।।
আদু:।ইতি মেদিনী।।
বিখ: ক্রি গতনাসিক:।ইতি ভর:
তদ্বিলপকোষ:।।
বিখনা: পু: বুন্ধা। যথা। ন খলু
গোপিকানন্দনো ভ্রানখিল দেহিনা মন্তরাল্যক্ । বিখনসার্থিতো বিশ্বভন্তবে স্থ উদেবিবান্
সাত্তাঃ ললে।।ইতি শ্রীভাগবতেচ ক্রে ৩১ অধ্যায:।।
বিখ: ক্রি গতনাসিক:।ইতি ভ্র

বিখ: ত্রি গতনাসিক:। ইতি ভ রতধিকপকোষ:॥

বিখুর: পূ॰ রাক্ষস:। ইভি ত্রিকা-গুশেষ:।। টোর:। ইভি সংক্ষিপ্ত: সারোণাদিবৃত্তি:।।

বিখ্য: ত্রি গতনাসিক:। ইতি কেচিৎ।।

বিশ্বাভঃ ত্রি খ্যাত্যাপনঃ। বিপূর্ব খ্যাধাতোঃ ক্ত পুত্যয়েন নিয়নঃ॥

বিখ্যাতি: জ্রী কলিছি:। সুখ্যা তি:। বিপ্রখ্যাগতো: ক্তি পুত্র-বেন নিয়ম।। বিথ্যাপন জী ব্যাখ্যান। বিপ্র ঞান্ত খ্যা খাভো রনট্ পুত্যবেন নিম্নদ্ন।

বিথু: ) ত্রি অনাসিক:। ইতি হেন-বিথু: ) চন্দু:॥ ছিন্ননাসিক:। ইতি শব্দরভাবলী।।

বিগণন ক্লী স্থণসূক্তি:। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষ:॥

বিশত: বি পুভারহিত:। তৎ পর্য্যাথ:। নিমুভ: ২ অরোক: ৩। ইত্যমর:। বীত: ৪। ইতি ক্দু:॥ বিশেষেণপত:। ইতি হেমচন্দু:॥

বিগত এক: ত্রি ত্রিরহিত: ৷ বিগত৷ এ র্যস্য ইতি বছবুীইো ক পুত্য-

যেন নিয়ম:॥

विशवार्त्वता खी शक्षशकामार पर-छ उष्ट्वं नितृत्वत्रक्वः । उट-शर्यप्रायः । निद्धनी २ निद्धना ० निद्धः नी ४ निद्धना ६ विक्नी ५ विक्ना १ । ইতি শদ্ম ब्रुवारनी ॥

 व विणिष्ठेम्णाञ्चाता कीवक्षश्रक्ता उत्मानिश्विकः शत्रभाञ्चात्वरः । ইতি ভেদকোপাধি বিশম এব জी-वम्ण भार्त्रभाञ्चानि नयः । यथा घटा-काणमा इटे विगम এव णुक्क चा-काणमा उम्र नयः । निक्रणतीताव-हिस्तिम्याञ्चाता कीववाव हेलि निक्रणतीत नाण এव शर्यप्रविष्ठाः भाक्षः । हेलि मुक्तिवाकः । हेलि

विगन्नकः भुः इक्षृपीवृक्षः। ইতি द्राजनिर्घणः॥

বিগদ্ধিকা জ্ঞী হপুৰা।ইতিরাজ-নিঘণ্টঃ।।

विगर्रगः ) ही निग्तनः । ७ द्वनः । विगर्रगः ) इंडि विभूर्व काउन्द गर्रथाः डा तन्द्रे भुजारयन अन् भुजारयः न ह निश्चमः ॥

বিগৰ্হিত: তি নিন্দিত: ।। নিধি**দ্ধ:**। ইতি বিপূৰ্ব গৰ্হধাতো: ক্ত পুত্যযেন নিয়ম: ।।

বিগলিত: ত্রি স্থলিত: । যথা।
বিগলিত বসনং পরিজ্তরসনং ঘা
ট্য জ্বন মপিধানা। কিশল্যশা
যনে পক্ষরন্যনে নিধিনিব হর্ষ
নিধানা। ইতি গীতগোবিনে ৫
সর্গা।

माञ्चरना तरভरित जेलाविविष्ण- विगापः वि ज्ञाठः। अवगाहिठः।

विन्दं गाह थालाः कं भुजायन निश्चमः ॥ विगान॰ ली निन्हा। ইতি হেম ष्ठमुः ॥ विशाहमानः वि विरवाछनकर्छा ॥ व्यवगाइनकर्छ। विशृत्रगाह्या-তো: শান পুত্যবেন নিয়ন: ॥ বিশুণ: পু• গুণবৈপরীভ্যবিশিষ্ট:। यथा। यथा नता ननाह है (नय॰ মাতা তথা মম। বিগুণেম্বলি পু-গ্ৰেষু ন নাভা বিগুণা ভবেৎ ॥ इं जि नार्का खय शुद्रात रेववयं ज म-नुष्ठवाय्यायः ॥ विग्णः वि गर्हिजः॥ **७**७:। इंडि (मिनि ॥ বিশুঃ ত্রি শতনাসিক:।ইত্যমর:॥ विशुरः भू नतीत्र ॥ युक्त ॥ বিত্তার:। ইত্যমন:।। বিভাগ:। ইতি মেদিনী॥ বাক্যভেদঃ। স তু भयाभवाकुः। **७८ श**र्यायः। विख র: ২। ইত্যমর:।। দেববিশৃহকর-गातिभुगानः अगूर्जिनास मुष्टेवाः॥ विगुरः भू क्षी यूषा । इंडामबः॥ विगुहावतः ही मृष्ठः। इंडि मफ-हिम्का॥ বিঘটিকা **ত্রী পল•। ইতি** রাজ-

निर्घणेः॥

বিঘটিত তি বিশেষেণ চালিত। বিপূৰ্ব ঘট খাভো: ক্ত পুভাবেন শিক্ষু**ক**°। ইতি রাজ विघम• ही निर्घण्डः ॥ পু॰ ভোজনশেষ:।ইড্য दिघम: নর: ॥ দেবপিত্রতিথিভর্বাদি ভুক্তন্য শেষ । ইতি ভরত:॥ या श्रद्धः। इंडि नय्त्रवादनी।। বিষাতঃ পু॰ ক্লী ব্যাঘাতঃ। আ-याजः। यथा । वृष्टि वर्षः अधिवारः **২বগাছাবগুহো সমৌ।ইত**গ্ৰরঃ॥ विषाञी बि निवाबकः॥ वाउकः। विधा अभवाहिन भुजारयन विभूत्र হনবাতোগু হাদিত্বান্নিন্পুত্যযেন वा निम्नमः॥ विष्यः भू वाषा इः। उरभगागः । व्यस्त्रायः २ भुज्र्हः २। हेज्र-মরঃ॥ কৃষপাককলা ৷ ইতি শব্দ চন্দিকা।৷ শেষার্থে অনরে অবিশ ইভি পাঠ:॥ रिवृक्तकाती जि शाजमभनः॥ विशा তী। ইভি নেদিনী।। গণেশ: ৷ ইতি विद्यनायकः भू मद्रद्वावनी ॥ विद्यमाणकः) भूः गार्भः । 🚟

विश्वनाणनः **र्रे णक्त**ङ्काली ॥

বিমুরাজ: পু• গণেশ:।ইত্যমর:।। विद्वविनायकः . शू॰ গণেশ:। ইভি কাশীখণ্ডঃ 🛭 विश्वहाद्री न भू॰ গণেশ:। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষ:।। বিমুনাশকে ত্রি।। বিশ্বিতঃ তি জাতবিল্ন: বিশ্বনস্থ জাত ইত্যৰ্থে বিমুশদাদিত পু-ত্যযেন নিম্ননঃ ॥ বিয়েশ: গণেশ:। ইতি मद

ब्रङ्गावनी ॥

বিষ্ণেশবাহন: ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

বিশ্বেশানকান্তা খেতদুর্বা । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

বিহ্ন: পূ॰ অশ্বপুর:।ইতি ত্রিকাপ্ত শেব: 11

বিচ ইর লি ধ ঔ ঞ পৃথক্ত্বে! ইতি কবিকল্লজন: ।। ইর অবিচৎ । व्यरिकीट। नि क (वरविक (व-विक्कि मूर्याए शिख डः भृथक्म्या দিত্যৰ্থ: । বিজ ইতি জান্তো যঃ সএবহাস্তোপি পঠ্যতেকস্যচিদনু-রোধাৎ তেন নিজাংথরেণু রিভ্য-ना वृत्वी विज्ञन्द्रशिववाना गुरू ণাৎ থের্গুণ:। ধ ঞ বিনক্তি বিজ্জে । বিবিন্ঘা দিব: সুরান্। ইতি পृषक् करत्रामी जुर्थः । 'ঔ विका।

ইতি দুর্গাদাস:॥ विष्ठिक : भू॰ नज्ञी भुष्डिमः॥ स-দনকর্ক:। ইতি মেদিনী।। विष्ठयन क्ली मार्गनः। ইভামর:॥ বিচৰ্ছিকা রোগবিশেষ:। वि-द्धी क इंडि ভाषा। उर्भर्गायः। কছঃ ২ পাম ২ পানা ৪। ইত্যমর: ॥ অপিচ। বहुः कहः भाम भाग। भानतारम विष्टहिको । इंडि मक्-ब्रङ्गावली।क्शा छरमोषश्च यथा। कद्र-वीतः ज्ञताबः नवनः संध कर्क है। । চত্ত্ণেন মুত্রেণ পচেক্তিল হরে: खाः। शामाः विष्ठिकाः अर्ध म-ভাঙ্গান্ধি বুণানি বৈ॥ ইতি গাৰুডে २৮१वर्षायः॥अ॥ व्यन्धा मन्नीहः ত্রিবৃত সঙ্গ হরিভাল মন:শিলা । (मत्रमाक इतिरम् (ध क्रंश्र मा भी ठ ष्टन्त्न ।। वि**णाना** कत्वीत्रक्ष अर्क क्षीत्र मक्र भन। वयाक कार्य-কো ভাগো বিষস্যাৰ্ক্ত পল• ভবেৎ ॥ भुष्टः कष्टुकरेडनम्य लाम् व रहे खा भारत । मृर भाव लोइ भा-ত্তে বাশনৈ মূৰ্দ্বিনা পচে আ পানা বিচচিকা চৈব দজ বিয়েটকানি চ । অভ্যন্তেন গুণলান্তি কোমলভুঞ্চ জাযতে ॥ পুস্ভান্যপি থিতাণি टेउलनातन मुक्तवर। हिल्लाथिः

ত মপি খিত্ৰ বিবৰ্ণ তৎক্ষণান্ত (यट् ॥ इंडि गाक्ए ১৯৮ व्यथ्रायः । 🗱।। স্বল্প স্থাবিশেষ:। যথা। এক: জ্ঠ মৃত পূর্ণ গ্রচ্ম তত: মৃত **৷ তত কর্মানল**ংপ্রোক্তণ তত ক্ষাপি विष्ठर्हिका॥ विशासिकाञ्जिषा रेमव পামা কছন্তভ:পর।। ততো দক্ষ চ বিয়োট: কিটিমঞ্চ ভত:পর•॥ ভ ভশ্চালমক প্ৰোক্ত শতাক্চ ত-**ভ:পর** । ক্নুদু স্ঠানি চৈতানি ক থিতানি ভিষ্ণুরৈ: II সক্তু: পি ডকা শ্যাবা বহুসুবো বিচর্চিকা। পিডকা ক্রুদুপিডকা। দাল্যতে ত্বক্ থরা কক্ষা জানে। তের্বা বিচ-চিকা ৷৷ পাদে বিপাদিকা জ্বেঘা স্থান ভেদাদ্বিচর্চিকা। দাল্যভে विषार्याउ । किविष्ठिर्विकार्जा বিপাদিকাণ ভিন্নমাহ: ৷ ইতি ভাবপ্ৰাশ: 11

विष्ठलः जि चाछितः। विश्रव ष्टल ষাতো রল্ পুত্যযেন নিয়ম: ॥ বিচলিত: ত্রি স্থলিত:।পতিত:। विপूर्व व्यक्षाराः क भुजारयन নিয়ম: 11

विष्कृतः भू भश्चितः। इंडामदः॥ নিপুণে ত্রি। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ বিচক্ষণা জ্রী নাগদন্তী।ইতি রাজ- | বিচার্য্য বি বিচারিতব্য । বিচার-

निर्घण्डः ॥ विष्ठकः जि विभनाः। ইভি जिका छ-শেষ:।। বিগতচক্ষৃবি ত্রি।। বিচার: তব্বনিণয:। ইতি ব্যবহারতত্ত্বা। সন্দিশে বস্তনি পু নাণেন তত্ত্ব পরীক্ষা। ইতি গোষী-हम्मः॥ भुभारेग व्रथं भवीक्षणः विभन র্শমাত্র মিভিকেচিৎ।ইতি ভরত: ।। उ<भर्गायः । उर्कः २ निर्नयः ०</p> গুঞ্জা ৪ চৰ্চা৫। ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেব: ।। সংখ্যা ৬ বিচারণা ৭। ইত্যমর:।। চৰ্ছন•৮ সংখ্যান•৯। ইতি ভটীকা ।। বিচারণ ১০ বিতর্ক: ১১ বুগ্রহ: )२ गृहः >o डेहः >৪ विजर्कनः >c । ইতি नमत्रवादनी ॥ भूगिधानः ১৬ সমাধান· ১৭। ইতি **ब**টाधवः॥ विष्ठावण द्वी বিচার:। ইতি শব-ब्रजावनी ॥ বিচারণা ত্রী বিচার:। ইভ্যমর:। মীমা'সাশাত্র'।ইতি হেমচন্দু:।। विष्ठाद्वभीय जि विष्ठार्या । विश्रवं ঞ্যন্ত চরধাতো রনীয় পুত্যবেন

ৰিম্লমণা শাস্ত্ৰণাইভি হেমচন্দুঃ॥

भर्यराय: । विमः २ विखः **७ । ই**ত্য-

বিচারিত: ত্রি কৃতবিচার:। তৎ-

नद्रः ॥

नीयः। दिन्दं हत्र वाट्या क्रीडाट य नुडारवन निम्नमः॥ विहानः वि व्यङ्ख्यः। व्यख्यानः । ইভি ছেমहन्मुः॥ विहिः नुः को वीही। उत्रवः। इंडामत्र हीकायाः ख्युडः॥ विहिक्टमा की मत्नहः। इंडा-मतः॥

विवितः क्ली कबू त्रवर्गः। ই जि मक् त्रज्ञावनी ॥ उद्यक्ति जि ॥ व्याक्तर्यः । यथा। विवित्र सिर साथ्याङः छ-भवन् छवडा समा (हव्या क्तिज्ञ माहाज्याः त्रक्तवीकवथान्तिङः ॥ ইতি हिवीसाहाज्याः॥

विध्विकः भृ जूर्बर्कः। ইঙি वाकनिर्धिः॥

বিচিত্রদেহ: পু॰ মেঘ:।ইভি শব্দ চন্দ্রিকা।। আশ্চর্য্যশরীরে নানা-বর্ণদেহে চ জি।।

বিচিত্রবীর্য্য: পুণ চন্দুবংশীযরাজ-বিশেষ:। স চ শাস্তনো দাসকন্যা-যাণজাত:। ভস্যক্ষেত্রে সভ্যবভ্যা-জ্রয়া ব্যাসো প্তরাষ্ট্রণ পাণ্ডুঞ্জ-ন্যামাস। ইতি জ্ঞান্যবভ্যত।। বিচিত্রবীর্য্যস্: জ্ঞা সভ্যবভী। ইতি শন্ত্রভাবলী।।

বিচিত্রা

जी मृश्गर्वाकः। ইতি

त्रावनिर्यक्तः॥

र्मनार ॥

বিচিত্রাক্থ: পু॰ মযুরং। ইন্ডি শদ্ : রত্নাবলী ॥ ব্যাঘুঃ । ইন্ডি শদ্ : চন্দ্রকা ॥ আক্ষর্য্যশরীরে ত্রি॥ বিচী জ্রী ভরক্ঃ। ইন্ডি ছির্পা: কোবঃ॥

বিছ ক জিবি। ইতি কবিকল্লফম:।। ক বিছ্যতি। জিবি দীপ্টো। ইভি দুৰ্গাদাস:।।

বিছ শ গভৌ। ইতি কবিকল্পদ্দ।

॥ বিছাযতি বিছাযতে আযম্ভবাদুভযমিতি বোপদেব:॥ পক্ষে বিছভি। শ বিছতী বিছন্তী। ইতি দুর্গাদাস:॥

বিছনকে: পু॰ ঈশরসদাপুভেদ:।
ইত্যমর:।। বিশিষ্ট শুন্দে। হজিপ্রাযো হত্র বিছন্দক:। কিম্বা বিশিষ্টেছা নির্মিতো বিছন্দক: ঢবেকাদিতি ক:। এবং লক্ষণ মুপন্যস্তং
সাঞ্জেন যথা। উপযুর্গের যদ্দেহং
ভদ্বিছনদক সংজ্ঞক:।ইভিভরত:॥

विहर्षकः भू विहम्तकः। इंडामत्र-**होकायाः ज्ञायम्बद्धः ॥** विहाय॰ क्री भिक्षिणा हाया। इंडा ম্র: ।৷ সমাসে ব্স্তার্ভাৎপরাছায়া ক্লীবে স্যাৎ। সা চেৎ বহুনা সম্ব क्षिनी जारा । यय मुनाइत्रिक्ति । বীনা পক্ষিণা ছায়। বিছায় । - ইত্যমরটাকাযা• ভরত: ।। ছাযা

विहायः भु भिनः। इंडि यास्वर्रा हारा भद्र हीकारा छत्र उ: ॥

विहि छि: जी व्यक्तागः॥ विट्हमः

ব্লহিতে ত্রি॥

॥ भाराजनः । इंडि (मिनी ॥ **ছिनः** ॥ विना**णः**। ই**डि** जिकाछः শেব: ।। অক্হার: ।। গেহাবধি। **ইভি হেমচন্দু:** !! আকল্লকল্পনাল্লা-शि विहि खि: का खिला यक्ट । है-जुङ्खानीनमणिः॥

বিছিম: তি সমালক্ক:॥বিভক্ত:। इंडि (मिर्मि॥ ऋदिनः। ইंडि (इन्डन्मः॥

विष्ह्मः भुः विष्यागः। विद्रहः। (जनः। यथा। कालः कर्त्राजिक-লন সচ ভেদ করোভিচ। সর্বণ कानक्ष्ठः भाउ र्छिनः मःभीननः नृगा ।। इंडि तुक्तरेवरा डे कि क्ष-

काञ्चायाः काञ्चविरह्राः मञ्जामि जि-রিচ্যতে । ইতি বুন্ধবৈবর্ত্তে গণ-পতিখণ্ড: ॥

বিচ্যুত: ত্রি বিগত:।। বিপূর্ব চ্যু পাতো: ক পুত্যবেন নিল্লম: ॥ বিক্ষরিত: । বিপ্র চ্যুত থার্তো: ক পুত্যযেন নিষ্ণন্ধ: ।।

বিচ্যুতিঃ खो विरयागः। यथा। সোপি বৈশ্য স্ততো জ্ঞান ববে নির্বিল মানস:। মনেত্যহ মিতি পা**জ: স'ক** বিচ্যুতি কারক' ॥ ইতি মার্কণ্ডেষপুরাণে দেবীমা-হাব্য্যু ॥

বিজ ইর লি ঞ ঔ বেকে। ইতি कविकन्नकमः॥ (वक इंडि विहि-র্লি ধৌঞ পৃথক্ত্বে ইভ্যস্য ঘঞি क्रभः। इत व्यविष्य व्यविष्यी । লি ঞ বেবেক্তি বেবিক্তে মুর্থাৎ প-**७ 3: পৃথক্ म्यां मिड**़ी। 'से दि-का। ইতি দুর্গাদাস:॥

বিজ ঈ ধ ও ভীকম্পে। ইঙি कविकन्नकमः॥ के अविश्व। ध विन-ক্তি। ইতি দুর্গাদা**স:**॥

বিন্ধ ড ই শ ও ভীকস্পে।ইঙি কবিকল্লজমঃ॥ ড শ বিদ্যতে। ঈ ও दिशा हावायी। इंडि म्यामामः॥ अग्रथ(ও) ০০ অধ্যয়:।। অপিচ। বিজন: ত্রি निङ्क्तनः। তৎপর্য্যায়ः।

विविज: २ हम: ७ ि मनाक: 8 त्ररः ৫ উপा॰मू ७। ইত্যমর:॥ विजनन क्री भुगवः। ইতি एक्प हर्नुः विक्रिलिन क्री श्रद्धः। यथा। श्रि-इल नाए विक्रिल भरः मा-(मा नियम्बद्धः। ইह्वायुक्षः॥ विक्रमा जि काद्रकः। दिक्षकम् বিশিষ্ট:। ইতি লোকপুসিদ্ধ:॥ विषय: প• क्यः । ३७,४त्रः ॥ व्यञ्ज्नः। इंडि मिनिनी ॥ वृजा-इंट्रिश छ।।। जिनवन्तरम्वः।। विमा-नः। ইতি হেমচন্দুः॥ यमः। ইতি नप्रिनिष्का ॥ कञ्चिन्यः । यथा । ততঃ কল্পিশ্চ পদ্মায়াণ জয়ে৷ বিষ্ণয় এবচ। ছৌপুগ্রৌ জনন্যামাস'লো-কথ্যাতো নহাবলো ॥ ইতি 🗐 कन्निषुद्रात् ३० व्यव्यायः ॥ रेडद्र-ववः भीषकञ्जबाङ्गभू थः । ज कामी-রাজ: খাণ্ডাবনকর্তা চ। যথা। সুমতে রভবৎ কল্প: সুতঃ সত্যস্য फिल्पिः । दिक्शम्य छवम्याचि ৰ্গাধে খিত্ৰোংভবৎ সূতঃ ৷৷ তেঙ্বাণ কল্পে। হ'ভবনুজে। কল্পান্ত বিজ্ঞান **২**ভব**ং**যো বিদ্বিত্য লিভি সর্বাণ পাথিবান্ ভূরিতেজসায়া শক্রস্যা-নুমতে চক্তে আগুব শতবোজন। यथ मन्त्रमाठी सम्मय भाष्ट्रभूयः

**अञ्जलकान् ॥ व्यावहन् अव्यान** পুতি জ্লনস্য মহাত্মন:। ইতি कालिकानुतारा रेख्यववःभान्कीन র্ভন• ৯০ অধ্যাयः ॥ বিফুন্চরবি-(मयः। यथा। विकृत्वता मध्य पु-**ठ**७ कर विक्रगापनः। इंडि न् लि-क्रमःगुरह जत्रजः॥ विकारकञ्जदः भू त्राक्षवाक्ष्रञ्जी! ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষ: 🛚 । বিজ্বন্ধঃ পু• পঞ্চলতমৌক্তিক-हातः। ইতি ह्म्म्युः॥ विजयनम्बः शृ॰ इक्षाञ्चवः भवताजः विष्मयः। उर्भियायः। जयः २। ইতি হেন্চন্দু:॥ विख्यमम्बः পু॰ ঢক্কা। জয়ঢাক ইতি ভাষা। ইতি ত্রিকাগুশেষঃ॥ द्धी ভিথিবিশেষ:। সঃ বিজ্ঞাদ**শ্মীতিখ্যাতা।ত**ৎকৃত্যু मूर्गामायपृष्ठेवाः ॥ উनामशी। ইতি (मिनि।। मा जू (गाउभकन्ता। यथा । ভানাগভা॰ সঙী দৃষ্টা জযা নে-কা মুবাচ হ। কিমৰ্থণ বিজ্ঞা না-গাজ্জন্তী চাপরাজিতা। সংদেব্যা বচন শুদ্ধা উবাচ পরমেম্বরী।। গতা নিমব্রিতাঃ সর্বান্থে লাতা-মহস্য ভাঃ।। সন্ধ পিতা গৌত-

त्न नाजा हालान्त्राथ्या। इंडि

वामनलुजार 8 व्यक्तायः ॥ कानि-का भूदारम ५१ व्यव्हारमध्या ११%॥ বিশানিভোপাসিতবিদ্যাবিশেষ: 1 यथा। विन्ता नरेथनः विजयाः जयाकः রক্ষোগণ কিপু মৰিক্ষতাত্তা। व्यव्यानिनए गाधिमूला यथाविन घा उधिकान् युधि या जुधानान्॥ इंजि ভिডि: ॥ 🗱 ॥ मूर्गा। ইভি হেমচ-न्मुः॥ তথাচ। বিজিত্য পদ্মনামান रिष्ठ। রাজ भ स्वायल । विख्या (उन স। দেৱী লোকে চৈবাপরাজিতা।। इंडि (स्वीनुद्रार्ग ८৫ व्यक्ताय: ॥॥॥ যনভাষা।। হরীতকী। ইতি জটা-थ्रद्रा वहा। इंडि त्रज्ञनाला ॥ क्रयन्त्री ॥ (मकाविकाः। मञ्जिष्ठाः। भगी-ভেঃ ॥ অগ্নিছ: । ই**তি** রাজ-निर्घण्डः ॥ सामकनुव्यवित्मयः। ভाष् ইতি সিদ্ধি ইতি চ ভাষা। তৎ-পर्यायः। देवरनाक्रितिक्रया २ च्या ৩ ইন্দা**শন** ৪ জয়া ৫। ইতি শব চন্দ্রিকা।। বীরপত্রা ৬ গঞ্জা ৭ চ-भन। ৮ অর্থা ৯ আনন্য ১০ হ-र्विभी ३३। व्यमग्रख्याः। कर्तृद्यः । কষাযত্ব•। উষ্ণত্ব•। ভিক্তত্ব•। বাত **ক**ফাপহত্ব•ঃ**স**•গ্রাহিত্ব•≀বাক্পুদত্ব৽ । वन/दः। भिषाकात्रिदः। भुष्ठती-পনবৃঞ্চাইতি রাজনিঘট: 🕦 অ

পিচ। ভঙ্গাগঞ্জা মাতুলানী মাদিনী বিজ্ঞা জ্যা। ভঙ্গা কফ্ছরী ভিক্তা পুঁাহিণী পাচনী লঘুঃ।। তীফ্মেঞা-निखना भार यर वाप्रक्रिविकी । ইতি ভাবপুকাশ:।। অন্যচ়। শকাশন তু তীক্ষোঞ্চ মোহক্ৎ क्षिनाणम-। বল নেধাগ্রিকৃৎ শ্লেখ দোষহারি রসাযন ।। জাতা ন-न्दत्र मञ्जाङ्जलनिः भीग्यक्तभा পুরা ত্রৈলোক্যে বিজযপুদেতি বি-ङ्या जिस्त्रजाङ्गिया। (वाका-নাণ হিতকান্যথা ক্ষিতিভলে প্রা-छ। रोतः काममा সর্বাতক্ষবিদাশ रुयंजननी रेगः (সবিত: সর্বদা ।। ইতি রাজবল্লভ: ॥ 🗱 ॥ অপ্টনহা-द्यारमाञ्चर्ग उद्यारमी विष्मयः । यथा । অब विजयातुष्ठ । तुक्त शृहात । यहा जू मृह चाममा। न म्व म्या **ভবেং। उमा मा जू महान्**ग्रा म्राम-শী বিজয় মৃতা।। তস্যা॰ স্নাভ: সর্বতীর্থে স্থাতো ভবতি মানব:। मः भूक। वर्ष भूकायाः मदनः कन মশু তে ৷৷ একজপ্যাৎ সহসুস্য এপ্ত अप्रात्थां ७ मर्यनः। मानः मर्म् গুণিত তথা বৈ বিপুভোজন ॥ হোন স্ত্রোপ্রাস্ক সহসু গুণি-छा ভবে। अथ वुङ्विष्ः।

আংশী গুৰুণ নমফ্ত্য ততঃ সহল্প गाउदार ॥ मत्रभाक्षत्र प्रति भी বর্ণ রচযেভরা। সকল্পজঃ। দা-দশ্যাহ নিরাহার: স্থিত্বাহ মপরে ্হহনি।ভোক্ষ্যে ত্রিবিক্রমান**ন্ত শ**র ণ মে ভবাচ্যুত।। সোপবীতন্ত্ৰ ক लमः भू बंद ८ ज्ञाभरमञ्जी। भाजः তদুপরি ন্যস্যেক্তামুণ বৈণব মেব বা ।। ভত্রোপবেশ্য সংস্থা**প্য দেব**ণ বি-भार वन्तरेनः । वानिनाः मुञ् व-भन पर्शाइञक शाम्त ॥ वाम् দেবাখেতি শির: প্রীধরাযেতি বৈ মুখ । ক্ফাদেতি চ কণ্ঠ বৈ বৃষ্ণ: শ্রিপত্তযে ইতি ॥ শন্ত্রান্তবারিণে वाङ्क एक ह बता भकाय देव। कवी भारियामद्र (यपु: विद्याका क्रम्माः य ह।। ज्ञधन हाई।यहिहान् मई। वि পত্তে ইতি। সত্তান্ত্রনে ইতি পদা **विव मङ्गानि भूज**स्य ।। मञ्ज हक গদা পদা শাফ শার বিভ্রেভে । গৃহাণার্ঘ্য ম্যা দত্ত শাক্ষ্পাণে ন মোস্ত তে ॥ ইত্যয়ণ পূর্বৎ কৃত্বা धून हीलो ममना ह। य्उनक नु धानानि रेनरवन्तानि निरवन्त्य ॥ ভাষুলাদীনি দ্বাথ কৃত্বা জাগরণ নিশি। পুতে গ্রাহার বিত্বেশ পুরা-

शादिन त्र मुद्र मश्कक। यादा-द्रः ठाक्नरः क्षा मर्व (मोथ्) भूमा ख्र ॥ इंडि भूग्रि खुठः मर्बः म्द्रा ठार्घः भूखायः हि। मुक्ता दि-भूग (बाद्धिया मृथः शाद्वा मा-ठाद्ध ॥ खाम् गामि तृष्माङ्कि या माद्विया तुङः। उमा मर्ब-तुख्छ। २मा माद्वा मिदिन ठाउ।। इंडि बिह्नि इंडिकि दिनामा २० दिनामः॥

विजयामध्यी जी রবিবারেশূল্ল-शकीयामधभी। यथा। मुङ्गभक्तमा नथन्। न्यंताता यमा जत्र। সপ্তনী বিজ্ঞথা নাম তত্ৰ দত্ত মহা-ফन·। ইতি তিথ্যাদিতকু·॥ 🗱 ॥ অথ বিজয়েৎ সব বিধি:। রখ মা-(त्राभा (मरवर्णः मर्वाणकात (मा-ভিত॰। সাসি ত্ণ ধনু ৱাঁণ পাণি॰ নক্তঞ্রান্তক ।। স্বলীলয়া জগ্রাতু মাবিভ্তি রঘ্ছহ । রাজোপচা-রৈ: শ্রিরামণ শমীকৃষ্ণভল্গ নযেৎ ।। সীতাকাম্ব সমীযুক্ত ভক্তা-ना मञ्चक्द्रद्र । व्यह्रिया मनीवृष्क महर्षिक माश्ररमा उक मजः। শ্মীশ্মযভেপাপ শ্মীলোহিত কণ্টক।। ধরিত্র।জুন বাণানাং রাং भगः श्रियवाहिनी ॥ कत्रियामाना

या याजा यथा काल मूथ नया। তত্ৰ নিৰিত্ন কত্ৰী বৃণ ভব শীরান প্জিতা।। গৃহীবা সাক্ষতা মাদু(॰ শনী মূলগতা মৃদ। গীত বাদিত্র নির্ঘোষৈ স্ততো দেব গৃহ নযেৎ ।। रेकिन्हिन्रेक छज ভाবाः रेकिन्ह-স্ভাব্যঞ্চ বানরৈ:। কৈশ্চিদাজ মৃ-থৈ ভাব্য•কোশলেন্দুস্য তুষ্টযে।। নির্জিতা রাক্ষসা দৈত্যা বৈরিণো জগভীতলে। রামরাজ্যু রামরা-ৰাঙ রামরাজ্য মিতি বুরন্।। আ-নীয় স্থাপয়েদেবে নিজ সি হাসনে जूथः। उठा नीवाका (मर्विणः श्रु-ণমেদ্রও বক্তবি॥ মহাপুসাদ ব ज्ञापि धात्रायोद्यक्षयेः मर । ইতি **শ্রীবিষ্ণুধর্মোক্তানুসারেণ ব্যলেখ্য** য•॥ বিধিঃ শ্রীরাম বিজযোৎসব-স্যোৎসবকৃৎ সন্তাণ। সীতা দৃষ্টে তি रनुमद्याकाः भुन्ना करतार शुन्ः ॥ विकयः वानरेतः मार्कः वामरत হিমান্ শনীতলাৎ। ইতি 🗐 🗟 🧟 ভক্তিবিলাসে ১৫ বিলাস: ॥ বিছয়িন তি বিভিল্। ইত্যমুর টাকাযাণ রাষমুক্ট:॥ विजयी वि जययूकः। यथा। वजुः পঞ্জর নামেদ থো রামকবচ পde । त्र वित्रायुः मुधी शूधी विनशी

বিজয়ী ভবেৎ।। ইতি তন্ত্রসার:।। বিজর: তি জরারহিত:।বিগভাতরা যদ্যৈতি বহুবীহিসমাস নিয়ুল:।। বিজল ভি বিজিল। ইভি হেন-ठन्द्रः ॥ निर्जनकः ॥ विजन्नः भु॰ वाक्रविष्मयः। यथा! ব্যক্তবাস্থ্যা গৃঢ় মান মু দুছেরা-णगा। अयिष्ठि करे। क्लांकि विंद्र-त्ना विष्वा<sup>•</sup> मजः॥ इज्जब्ब्ननी-व्यम्पिः॥ বিজাত: ত্রি বিজন্ম। ইতি লোক श्रीमद्धः ॥ বিজাতা জ্রী काठाभठा। यथा। বিশাতা চ পুজাতা চ জাতাপত্যা-**পুসূতিকা। ইভি ছেম**চনদু: ॥ বিজাতীয়ঃ জি বিভিন্নপর্যাক্রাস্তঃ। यथा। शुायिक खाबिका जीया खा-मृक् भाभ विनामनः। इं भाष-শ্চিত্তভূত্ব ।। বিশেষজাভিবিশি-है:। यथा । भूवारहानामिमारनय न विकाल्डाक मकियान्। তल्वि যত্নবতা ভাষ্য মণুষ ব্যতিরেকযোঃ ॥ এষ কার্য্য কারণ পুরাহো নাদি-मान् व्यनानिः। विकाञीययु ज्ला-िक्षु अक्षा जिनान् न श्वा हः । অনুযব্যতিরেকয়ে৷ স্তদ্রে নিয়বরে নিয়তাত্ব নির্বাহে যুত্রবতা ভাব্য

যত্ন: করণীয়: বৈচাত্য মিতি ভাব: ∦ বিজিতঃ । বহি সামান্য পুতি বিজাতী-(याकम्मान्तरस्क्रजेव कात्रगः। इति रविषात्रीयस्त्रुमाञ्जलिहीकाः।। विकिगीयः जि कर्यहः। ইতি नि-कान्डकोमूरी ॥ বিজিগীয়া স্ত্রী স্বোদরপ্রণাশক্তি নিমিত্তকনিন্দাত্যাগেছা ৷ ইত্য-নরটীকাযা॰ রমানাথ:॥ ব্যবহার: ।। কশ্চিৎ পুকর্ষ:। ইতি ভবৈৰ ভরত:।। বিজ্ঞবেছা চা। विक्रिगीयाविविद्धिंडः ব্রি मुमद्राधीनः। ७८ भर्गायः । व्यामू नः २ अम्ब्रिकः २। इंड्यानः ॥ বিজিগীয়া ব্যবহার: কশ্চিৎ পু কর্ষোবা তেন বিবর্জিতো বিহ্নানা-

यः क्वन मुनद्राधीनः छब हादि মৌ বর্ত্তে ইত্যর্থ:। জিগীবা জে ভ্মিছাযাণ ব্যবহার পুকর্যযো:। ইতি মেদিনী।। তত্র স্বোদরপ্রণা শক্তি নিনিত্তক নিন্দাত্যাগেছ৷ বিজিগীয়া তথা ব্লহিতে দ্বয় মিতি त्रभागायः । इंडि ७ छो कायाः छ ब्रङ:॥

विकिंगीयः जि कायहामीनः। रथा । কেন্তু মেষণশীলশ্চ বিজিগীযু রিভি ফ্ড:।ইতি শ্দ্মালা।।

ত্রি পর । জিতঃ । यथा । श्राणिनाः भीववजाः नद्रागाः সদৃত্তিভাজা বিজিতেনিদুযাণা এবং বিধানা মিদমাযু রত্র চিন্ত্যুণ সদা বৃদ্ধমুনিপুৰাদ: 11 ইতি মল-নাসতভূ ॥

বিজিতা পু• পৃথক্॥ ভীত:॥ ক-म्लिजः। ইতি বিজ शादुर्धनमानाः।। বিজিতি: স্ত্রী विकयः। यथा । ক্ষিতি বিজিতি স্থিতি বিহিতি ুবুতরত্যঃ পরগত্যঃ। উক্ ক্রপ্রু र्छक मुधरु यूधि अत्रयः स गति-वन ॥ इंडि म छी।। বিজিন• বিজিল। ইত্যমর-ত্রি

**होकायाः ज्ञायमुञ्जहः ॥** विजिलः वि देव अत्रमत्र अनामि । তৎপর্য্যায়:। পিছিল ২। ইত্য মর: ।। বিজ্ঞানি ত বিজ্ঞিন ও विकान १ द उक्तन ५ नान भीक १ ! ইতি বাচম্পতি:। বিজিবিল ৮ বিজল : ১৷ ইতি হেমচন্দু: ৷৷ পাক ৰূপরসাসক্তে ব্যঞ্জনে ভু ভবেৎ ত্রয় । তৈলপাক সুস স্কারে পুযস্ত মুগস ফু ত ।। পিছিল । লালসী-কঞ্চ বিজিন বিজ্জিলক তথ ! इंडि मदत्रद्वावली ॥

বিজিবিল বি ি বিজিল । ইতি

বিজ্ঞান

एमहन्मुः ॥

বিজিম্ম: ত্রি বক্ষ:। স্টিল:। ইতি

(किंदि ॥

विक्रुवः शृ॰ भान्यवीकनः। इंडि बाक्षनिर्यकः॥

বিজ্স্ত্রণ ল্লী জ্স্ত্রণ ॥ বিকসন । ইভি কেচিৎ ॥

বিজ্মিত লী চেই।।ইভিমেদিনী বিজ্মিত: তি বিক্ষর:।ইভি

(निमिनी।। कुञ्जायुक्कण ॥

বিজ্জন ত্রি বিজিল। ইভারের টীকালা রাধনুস্ট: ॥

বিজ্ঞান লী বাণং। যথা। পত্র-বাহো বিকর্ষো ২থ তীরং বিজ্ঞান শাযকে। লোহনালস্ত নারাচঃ পুসরঃ কাগুগোচরঃ।। ইতি ত্রি-কাপুশেষঃ॥ বিজ্ঞিলং। ইতি হেম-চন্দুঃ।।

বিজ্ঞিন• ক্লী বিজিল•।ইঙি শব্দ রহাবধী॥

বিজ্জুল° ক্লী বৃচ• 1 ই**ভি রাজ**-নিঘণ্টঃ।।

বিজ্লিকা জী জ তৃকা। ইতি রাজ-নির্ঘট:॥

विकः बि भूवीनः। इंडामहः॥

व्यम्भवर्गायाः निभूगणाम् मुद्धेन्ताः
॥ भाष्ट्राहः। इंडि द्रावनिष्णः॥

বিজ্ঞবৃদ্ধি: ত্রী জটামাণসী। ইতি শব্দদিদুকা॥

খ্যাতঃ। ইত্যুসরঃ।। বিজ্ঞান• की ज्ञानः॥ कर्य। इंडि (मिनि ।। कार्यापः । इंडि (इम-**हन्द्रः ॥ (मार्क्ष क्षी द्धान मन्द्रव** ৰিজ্ঞান শিল্পাস্থ্যাঃ। ইত্য-मद्रः ॥ विष्मायन मामारनाम जावः বোখে। ব্যক্ষে। बुक्तिः निन्नः हि॰ वारि भाज वाक्रावारि। वाक् শিল্পে শাল্ডেচ যাধী: সাজ্ঞান• বিজ্ঞানক্ষোচ্যতে এয়া বিশেষ পু-वृज्ञिः। अन्य घटे भटे। हो या शीः সাপি জ্ঞান বিজ্ঞানকোচ্যতে। এব। সামান্য পুরুত্তি:। মোকে ধী জ্রান বিজ্ঞানঞ্চ যথা। জ্ঞানা-মূক্তি ব্লিতি। সা যাচিতাচ বিজ্ঞান• তৃষ্ঠা ঋদিং পুষম্বতি ইতি। অন্যত্ৰ যথা। তত্তান মস্তি সম্ভস্য জন্তো বিষয় গোচরে ইতি। ঘটত্ব প্রকা-ব্লকজ্ঞান মিতি।যে কেচিৎ, প্রাণি নো লোকে সর্বে বিজ্ঞানিনো মতা ইতি। বুন্ধণো নিত্য বিজ্ঞানানন্দ ব্ৰপদ্ধাৎ ইতি। এবং চিত্ৰজ্ঞানং ব্যাকরণজ্ঞান ঘটপটবিজ্ঞান মি-ভ্যাদিক পুযুৱ্যত এই। ভদ্বিগ-त्न गकजानामि नपंतर गकजार

শদে হি গৰুডে পঞ্চিনাতে চব-र्स्छ। भाक्त इंडि निमिन्न मक्ष्मी भाक निमंद्र भिन्नभाद्धरा शे ৰ্জ্ঞাৰ মুচ্যতে। ভগিমিন্ততো ২ন্য निभिष्डः राष्ट्रसाधीः मा विकान 'मिडि (केटि । (भाक्त विषया भा-क्ष्म कना थी उद्धान व्यव्धा विद्धा **ন•। ক্বান্যত্র ইত্যাহ শিল্পাা**জ্রযো রিভি কেচিৎ। অববোধ ইভাধ্যা-इंडा भाक विश्वत श्वतादा थी क्टांन बनाव वहें लहा कि विकान শিল্পাজ বিষয়ে বিজ্ঞান মিতি কেচি**ৎ। জানাতে র**মট্জ্ঞান• বি विषः विक्र लः वा उद्यानः विक्वानः। ইত্যমর টাকাযা॰ ভরত:।। 🗱।। छबु बुाक्रगमा नक्रगविष्णयः । यथा। क्रमा ह्या ह विद्धानः भन्धः ὰ কৈব দম: শম:। অধ্যাত্ম নিভ্যভা জ্ঞান মেতদ্বাদ্ধণ বক্ষণ ।। জ্ঞান विজ्ञानया नंकनः यथा। हजुर्षनाः ना विद्याना शत्रा ह यथार्थ ড:। বিজ্ঞান মিতর বিদ্যাদ্মেন খর্মো বিবর্জতে ।। অধীত্য বিধিব-षिरा। वर्ष रिक्षवाभन छ। ५ वर्ष কার্য্যানিকৃত্ত শেচন তবিজ্ঞান মি-युर्ड।। यया म (एरवा छगवान् विष्ठाउ यव विष्ठाउ । সাক্ষাদেব 🏿 विष्ठे

মহাদেব শুজুজ্ঞান মিডি কীর্ন্তিত ॥ इंडि क्लियं उनिविचान ३८ व्यथायः ॥ বিজ্ঞানপাদঃ পু• (वस्वतामः । ইভি কেচিৎ ৷৷ विकानगरकायः भु क्टार्विन्-থৈ:সহিতাবুদ্ধি:। ইতি বেদান্ত-माइ: ॥ বিজ্ঞানমাত্র: পু বুদ:। ইতি (इन्हन्मः ॥ विक्छानिकः जि क्छानविश्विश्वः १ विद्धः । इंडि विद्धानिक भद्र-টীকাষা ভরত:॥ বিজ্ঞাপন লী (दाधनः। कानान ইভিভাষা। বিপুর্ব ঞান্ত জ্ঞাধা-তো द्रवर्षे शु अरयन निष्ममः ॥ विकाधिः जी विकाशनः। विश्र ঞাৰ জ্ঞা ধাৰোঃ কি পুভাগেন निञ्जभा ॥ নীয় । বিপূৰ্ব জ্ঞাধাতো যা পুত্ত-যেন নিল্লম ।। বিজ্ঞানর লী **ठक्: मुङ्गाक्रक**ः । इंडि (क्रिंट् ॥ ন্ত্ৰী পঙ্কি:। ইতি বিঞ্জোলী ত্রিকাওশেষ:।। णाकाला। यत। इंडि कवि

कन्नकमः ॥ (विक्रिः) आकाणः किन्कम् नेॐ(छ। सनः समः। ইতি मूर्गामामः॥

विहे: श्रुः विज्ञः। इंडाअद्रः॥ काम् काम्हद्रः ॥ ध्वः। इंडि खद्रछः ॥ कामख्यक्रात्काविषः । इंडि द्रममञ्जदी ॥ भर्वछविष्मदः॥ न-वर्राख्यः॥ थिषद्रविष्मदः॥ मृवि-कः। इंडि भिष्मि॥ नाद्रश्रृकः। इंडि भष्माना ॥

বিটকঃ প্ জী কপোতপালিকা।
পাৰ্বার্থাপ ইতি ভাষা। ইত্য
নর: ॥ ছে সৌধাদিষ পুান্তে কাপ্তাদিরচিতে পৃহপক্ষিতানে । কপোতান পাল্যভীতি কপোতপালী
চাং বণ্ইতি বণ সার্থে কঃ কপোত
ইত্যপলক্ষণ পক্ষিনাক পালি
কেভিবোধ্য । বীন্পক্ষিণ ইক্ষযতি
বপ্লাতি বিটক্ষণ টকিক বন্ধে ষণ্ বিশেষণ টক্ষযত্যভেতি বা অল্
ঘঞ্ বা। ইতি ভরতঃ ॥

विष्ठेक्षकः शुः ही विष्ठेकः। इति भवत्रद्वावणी ॥

বিটপ: পুংক্লী শাখ্যপল্লবসমূদায়: । তৎপর্যায়: । বিস্তার: ২ । ইত্যা নর: ।। তম্ম: । ইতি মেদিনী ।। শাখা ।। পল্লব: । ইতি শন্দর্ম: বলী।। মৃষ্ধক্রণান্তরণ। যথা। বিট-পদ্ভ মহাবীক্য মন্তরণমূদ্ধকত্রণ । ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

বিটপ: পুণ বিটাধিপ:। পারদারিকশ্রেষ্ট:। ইতি মেদিনী ৷৷ আদিত্যপত্র:। ইতি রাজনির্ঘট: ৷৷
বিটপী পুণ বৃক্ষ:। ইত্যমর:।৷
বট:। ইতি রাজনির্ঘট: ৷৷

विष्ठे निष्यः पु॰ मूम्बर्कः। ই 🤡

ৰিটমাক্ষিক: পূ॰ খাতৃবিশেষ:। তৎপৰ্য্যায়:। তাপ্য: ২ নদীজ: ০ কামারি: ৪ তারারি: ৫। ইতি হেনচন্দু:॥

বিটলবণ ক্লী বিড্লবণ । **ই**ভি কেচিৎ ॥

বিটিঃ ন্ত্রী পীতচন্দ্র-।ইতি শব্দ মালা॥

বিট্<sup>ন</sup> পু• বৈশ্য:।। মনুজন ইত্য-মর:।। পুবেশ:। ইতি বিশ্ব:।। বিট্ জ্রী বিষ্ঠা। ইত্যমর:।। কন্যা। ইতি বিট্পতি শব্দ দর্শনাৎ।।

ৰিট্কারিকা জী পক্ষিবিশেষ:।
তৎপর্য্যায়:। স্বণদী ২ গোরাটী ০
গোকিরাটিকা ৪ । ইতি ভূরিপুযোগ:।। বিট্নারিকা ৫ । ইতি
হারাবলী ।।

विदेशिक्तः भुः विश्वातम्भिक्तथिनि तः । अयावावना इंडि ज्ञाया । छरः भर्यायः । ज्ञात्तिमः २ । इंड्युः मदः ॥ इतिस्मः २ ज्ञानसमः ८ । इंडि भक्त द्वावनी ॥ मित्रसमः ८ कानककः ५ ज्ञातिमम् वः १। ज्ञमु छ्याः । क्वायज् । ईक्षप् । मूथ म-छ्यमाम् क्ष् विष स्मया कृति क्ष्ठ त्र गुरु नामिष्कः । इंडि ज्ञात-श्वामः ॥ त्राक्षनिर्यत्मे ज्ञान-र्यायो ज्ञातिसम् मस् मुद्धेरत्रो ॥ विदेहतः भुः गुन्नाम्बतः । इंड्युः मतः ॥

বিট্পতি: পু• জানাতা। ইতি জটাধর:॥

বিট্সারিকা স্ত্রী পক্ষিবিশেষ:। গুণাসালিক্ ইতি ভাষা। ইতি জটাধর:।।

বিঠর: পু• বাগ্মী। ইতি সংক্ষিপ্ত সারোণাদিকৃত্তি:।।

বিড আক্রোশে। ইতি কবিকল্পদ্য: ।। বেডতি শত্রু বলী। ইতি দুর্গা:
দাস: ।।

বিড॰ ক্লী লবণবিশেষ:। বিট্লুণ ইতি ভাষা। যথা। পাক্য বিডঞ্চ কৃতকে ছবং। ইত্যমর:॥ দে স মুদুতীরাসমভবাং লবংমৃত্তিকাং পাচযিত্বা নিস্নাদিতে লবণে। বিট্-লবণে। ইতি কেচিৎ। কৃতকে কৃ-ত্রিমে। পাক্য বিডলবণযো ভেঁদে ৎপি কৃতকত্বাৎ ঐক্য মিতি স্বামী । পচ্য**তে ইতি পাৰ্চ**ণ। ডু **গ**চ ঞ-বৌ পাকে হস্যা:সা ব্লিভি ম্যুণ্ চ জোর্যিতীতি ক: পাকেন নিস্নাদিত মিভি ঞ্চ্যো বা ৷ বেড়ভি ভিনন্তি বিড• বিডাক্রশি ইজুডত্বাৎক:।ইডি ভরত: ॥ ভৎপর্য্যায:। বিড্গন্ধ ২ कानन्य । विख्नवन । इंडि রত্নালা।। দাবিডক ৫ খণ্ড ৬ কৃতক ৭ কার ৮ আসর ১ সুপা-का. १० जन्मवर्ग ११ वंक् १४ क्बिमकः ১১। অস্য खनाः । উक्कृ । দীপনত্ত্ব । ক্চ্যত্ত্ব । বাভাগীৰ্ণ শুল গুলা মেহ নাশিব্ধ । ইতি ব্লাজনিঘণ্ট: ॥ অপিচ। বিড' **স**-ক্ষার মৃজুবিং: কফ বাতানুলোমন । উদ্ধৃ • কফ মধোবাত সঞ্চারযে-দিত্যর্থ:। দীপন ব্যু তীক্ষেঞ্চ क्क क्ठा व्यापि ह। विवक्ताना ह বিষ্টমুক্দগৌরব শ্লনুৎ ৷৷ ইতি ভাবপুकामः॥ অन्धः। विष्ठः वदः **ग**मु एक्सि वाङ्ग वंन विवस्तनः। मन-वाजाम विश्वेष्ठ मृनारिंग विवक-নূৎ।। ইতি রাজবলভঃ।।

বিডাল

विष्ठतः भू ही बनामश्राकीवयः। **७८ श**र्यायः। (यहा २ व्यासाया ० চিত্ৰভণুলা ৪ ভণুল: ৫ ক্ৰিমিম্: ৬ । ইত্যমর:।। রসায়ন: १ পাবক: ৮ ভন্মক ৯। ইতি জটাধর: ॥ रेवनुः ३० (भाषा ३) ७७नुः ३२ । इंडि भक्तज्ञावनी ॥ कडेंग्रे॰ ১० চিত্ৰতভুল ১৪ ক্ৰিমিশ্ন ১৫ কি-भिणवुः १५ गर्पछ ११ किवनः ১৮। ইতি রত্নমালা ॥ বিডঙ্কা ১৯ কৃমিহা ২০ চিত্রা ২১ তণ্ডুলা २२ **७७ूमीयका २**० वाडाद्रिज-खुना २८ जस्त्री २० मृगगामिनी ২৬ কৈরালী ২৭ গস্ত্ররা ২৮ কাপা-नी २२ वद्रामुः ७० हिज्बेबीका ७४ बहरू की २२। यमा छनाः। करू दः । উक्षद्व । लघुद्व । वाज क्कार्ल शियान्त्राक्ति जुाडि क्यिपाय विनामिष्कः। ইতি द्राजनिर्घणेः॥ ইষব্রিকত্বণ। ক্রিমি বিষনাশিত্বঞ । ইতি রাজবল্লভ:॥ বিডঙ্গণ কটু তীন্দ্রোঞ্চ কক্ষণ বহ্নিকরণ লঘু। শ্লাध্যানোদর শ্লেম ক্রিমি বাত বিবন্ধনুৎ ৷৷ ইতি ভাবপুকাশ: ৷৷ বিডম্ব: ত্রি অভিজঃ । ইভি (मिनिनी।। विष्यन क्री क्री व्यनुकद्रगः।यथा।

নবেদ কশ্চিডাগব শিচকীৰ্যিত ত (वरुमानम्) नृगाः विष्यनः। न य-म् किष्पियाजासि कर्रिकिष्ट्र-ষ্যশ্চ যমিন্ বিষমা মতি নৃ'ণা॰।। ইতি শ্রীভাগবতে ১ ক্ষন্ধে ৮ व्यक्षायः ॥ भुजाद्रगः । यथा। बन् কর্ম চ বিশ্বাত্মন্নলস্যাকভূরাত্মন: বিডম্বন ।। ইতি তবৈব।। विष्ठिश्विष्ठ॰ **बि क्**डविष्ठश्वना। उ९-भर्यायः । वाखः २ जा**नवः** ० দুর্গত: ৪। ইতি শব্দালা।। বিডারক: পু॰ বিডাল:।ই**ভিশম**-ब्रङ्गावनी ॥ वि**डानः भू॰ নে**এপি**७:। ই**जिमिन-নী।।নেত্রৌবধবিশেষঃ।ইতি ভাব-**পुकाणः॥ यनामथा। उनम्**। विल्ली इंडि हिन्ही जाया। उट अयंगयः। ওতু: ২ মার্জার: ৩ গ্রদ শক: ৪ আখ্ভুক্৫। ইত্যমর: ।। বিরাল: ৬ विनानः १। इंडि उड़ोका॥ मी-धाकः ৮ नऊक्री २ बार्कः २० বিডারক: ১১। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ ত্রিশস্তু: ১২ জিস্থাপ: ১৩ মেনা-দ: ১৪ সূচক: ১৫। ইতি জটাধর:।। म्षिकात्राजिः ১५ मालावृकः ১१ भाषावी ३৮ मीछालाहनः ३२ ।

বিডাল

ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।।

বিডালক ক্লী হরিভাল । ইভি হেমচন্দু:।।

বিডালক: পৃ বিডাল:॥ নেত্ররো-গস্য ভবিধবিশেষ:। যথা। অথ বিডালকবিষি:। বিডালকো বহি-**র্লেপোনেত্রে পক্ষা** বিবজিতে। তস্য মাত্রা পরিক্তেযো মৃখালেপ বিধা-नर् ॥ मूथातिला यथा। अङ्गन-স্য চতুৰ্থাংশা মুখলেপঃ কনিষ্ঠি-কঃ। নধ্যমস্ত ত্রিভাগ: স্যাদুত্তমো **হন্ধাঙ্গুলো** ভবে**ে॥ স্থিতিকালো**-পি ভস্যোক্তো যাবৎ কল্পোন শৃ-ষ্যতি। তেনাপি গুণহীন: স্যাত্ত**্** था म्वयञ् ज्ञः॥ न यथा। यश्री रैगद्रिक मिक्र्य मादी छारैकाँ: म भाःभौकः। जनभिष्टि वंशि व्लंभः সর্বনেত্রাম্যাপহ:।। তার্ফ্যু রসা-ঞ্জন । রসাঞ্জনেন বালেয: পথ্যা বিশ্বদলৈ রপি। বচা হরি দা বিশৈ র্বা তথা নাগর গৈরিকৈ: ॥ ইতি ভাবপুকা**ল:** ৷৷

বিডালপদ: পু॰ তোলকছবপরি-মান । বথা। তোলৌ দৌ পিচু র-ক্ষশ্চ সুবর্ণ কডবগুহ: । বিডালপদ ক্ষোচি পানীতল নুডুম্বর ।। ইতি শদ্মালা।। মার্জারচরণে শ্লী।। **ৰিড্**ল

বিডালপদক ক্লী কর্মপরিমাণ। ইতি বৈদ্যকপরিভাষা।।

विजानी जी विषाती। **इंडि त्राज** 

বিডীন ক্লী খগগভিবিশেষ: ।

যথা। ডীন পুডীন মৃদ্ধীন সংডীন
পরিডীনক । বিডীন মবডীনঞ্চ নি
ডীন ডীনডীনক ।। গভাগভ পু
গভিত সম্পতাদ্যাক পক্ষিণা ।
ভিগভেদা: পক্ষিগৃহ ক্লাথো
নীড মক্সিয়া ।। ইতি ক্লাধর: ॥

বিডুল: পু॰ বেতসবৃ**ফ:। ইতি** হেনচ্ন্দু:॥

विष्डाकाः मू॰ इन्द्रः। ইত্যমরः॥ विष्डोकाः मू॰ इन्द्रः। ইতি ভর-তীযদ্ধিক্পকোষः॥

বিউ পু॰ বৈশ্য:। যথা বিট্ বিড্ বিশো বিশঃ। ইতি মূপ্ধবোধব্যা; করণং।।

विष्य ची विक्षा इंडि विष्णकारि-णय पर्णनार ॥

বিড্গন্ধ লী বিড্লবণ । ইবি রত্নমালা।।

বিড্ন: ত্রি বিগ্রাজাত:। বিষ্শত্ম পূর্বক জন ধাতো ড পুত্যুয়েন নিয়ন:॥

विङ्गवन क्री विङः। विदेनुन् हेडि

ভাষা। ইতি রত্নমালা।। বিড্ররাহ: পু: গুন্ন্স্কর:।ইতি ফটাধর:।।

বিত স: পু॰ বীত স:। মৃগপঞ্জিণ গা॰ বন্ধনোপকরণ । ইত্যমরটী কাথা ভরত:॥

বিভণ্ডা ত্রী স্বপক্ষ হাপন। পর-পক্ষর্যনাস:। ইত্যমর ভরতৌ।। কদ্বীশাক:॥ শিলান্ত্র্য:॥ করবী রী।ইতি মেদিনী॥ দদ্বী। ইতি হারাবলী॥

विज्ञ कि विख्ञ ॥ वीशा दिवाहर । इंज्र मद्र ज्ञ मद्रार्थ हम्मार्थ हम्मी ।। विज्ञ कि श्रु क्ष विख्य द्र । विश्र् क्ष व्याद्र । विज्ञ कि श्रु क्ष विख्य विश्र विज्ञ कि श्रु के विज्ञ के । विज्ञ के विश्र के श्रु के । विज्ञ के विश्र के । विश्र के ।

বিতরণ জী দান । ইত্যনর: ॥
বিতর্ক: পু উহ:॥ সংশ্য:। ইতি
নেদিনী ॥ জ্ঞানসূচক:। ইতি শব্দ রহাবলী ॥ # ॥ আছে। উতাহো কিমুত কি কিমু উত এতে বট্ বি-কল্প বিতর্কার্থে। যথা স্থাণু রাহো পুক্ৰ:। ইতি আহো দুম্বাদি চ।
বিকল্পে বিসাযেশ্যহো ইতি ৰুদু:।
কিন্ হুমান্ত উত্তুম্বাদি।চকারাৎ
উতাহোমিৎ আহোমিদিতি চ
যথা ভারতে। উতাহোমিদ্ধবেদুালা নল: পরপুরঞ্জয:।ইতি আহোমিমুথ মিতি ভারবৌ। ইতি
ভরত:।।

বিতর্কণ• ল্লী বিভর্ক:। ইভি শব্দ-রত্নাবলী।।

বিভদ্নি জ্রী বেদিকা। ইতি **শহ**-রত্নাবলী।।

বিতর্দ্ধি: ন্ত্রী বেদিকা। ইত্যমর:॥ বিতর্দ্ধিকা দ্রী বেদিকা। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

বিভন্ধী জ্রী বেদিকা। ইত্যনর: টীকাথা• ভরত:।।

বিভল জী পাতালভেদ: যথা।
অতল নিভলকৈ বিভলক গভস্তিম্ । তল সূত্ৰ পাতালে
পাতালা হি তু সপ্ত বৈ ॥ ইতি
শব্দব্ৰাবলী।।

विङ्खिः भृ खो विङ्ख्यकिनिधा-कृष्ठः। विगट इष्डि ভाषा। छट-भर्यप्रायः। हाम्माकृषः २। ইङ्य-भर्यः॥

कन्न वि उर्कार्थ। यथा आगू ब्राह्म विजान क्री वृज्जिदिर्भिषः। इंडि

मिनि ॥ व्यवज्ञतः। ইভি विश्वः॥ ॥ विजानः शुः क्री कजूः॥ विखादः॥ উল্লোচ:। টাঁদোযা ইতি ভাষা। ইত্যনর:।। অস্য পর্য্যাব শচনদ্য-**जिनम**त्य मुष्ठेवाः ॥ বিতান: ত্রি তৃছ:॥ মন্দ:। ইত্য सदः॥ भूनाः। इंजि ध्रानी ॥ বিভানক: পু: ক্লী চন্দ্রাতপ:।ইভি नद्यां वा ॥ বিতানক: गाउव्कः । ३७ ब्राकनिर्घकः॥ विजानम्लकः क्ली উनीवः। इंडि द्राक्रनिर्घणेः॥ বিভূষ লী সুনিবাক। ইত্যমর: ।। रेणवालकः। इंडि (मिनि)।। বিত্য ক थानाकः ॥ ज्यः। ইত্যমর:॥ जानवभी। इंडा-বিত্যক: विजुमा ) जी ज्यागमनकी। इंडि বিভুলিকা সাজনির্ঘট: ॥ বিত্ত ক্ত্যাগে। ইতি কবি-কল্লদমঃ।। বিভয়তি। বিভাপয়তি । ইতি দুর্গাদাস:।। বিত্ত॰ ক্লী খন•। ইত্যমর:॥ বিত্তঃ ত্রি বিচারিতঃ॥বিজ্ঞাতঃ। বিদ ড ক ঞ চেতনাখ্যান বাস-ইত্যমর:।। লক্ষ:। ইতি ভটাকা 📗 বাদে। ইতি কবিকল্পদন:।।চেতনা

যা রামাশুন:।। विखनः बि धनमाजा। विख मना তি বইত্যৰ্থে ডপুত্যবেৰ নিয়ম্না৷ विक्तिः जी विठाद्रः॥ नाजः॥ मः म्रावना। इंडि मिहिनी ॥ ज्ञानः। ইতি হেমচন্দু:॥ विख्निः श्रु क्रावद्रः। यथा। पुः বুন্ধা হরিহর সংজ্ঞিত স্থৃমিন্দুে। ্বিভেশ: পিতৃপতি রঘুপ: সমীর: । (मास्मा श्री गंगन मही ध्रामि-ক্পঃ কি স্তব্য সকলতর স্ক্রপ ধান: ॥ ইতি মার্কণ্ডেয়পুরাণে অ-দিতিক্ত স্থ্যস্তব:।। विबयः बि बामगूकः। विপ्ई बमः ধাতো: ক পুত্যযেন নিয়ন:।। विजामः পू॰ ভयः। विপ्रव जमः ধাতো ভাবে ঘঞ পুত্যবেন নিম্ননঃ ীবিৎসন: পু• বৃষভঃ।ইতিশদ<sub>ি</sub> ठिन्तिका।। विथ अ ७ याहा इंडिकविकन्न-জনঃ।।বেথতে।ইতি দুর্গাদাসঃ॥ বিথুর: क्षितः ॥ त्राक्तमः । इंड्रागाहित्कायः॥ বিখ্যা স্ত্রী গোজিস্থা। ইতি শব্-हिन्द्रिका ॥

জ্ঞান । বাদ: হৈ ৰ্য্য । ক ভ বেদ -याज भाज श्रीतः कानाजी अर्थः। বেদযভে স্বার্থণ লোক: আখ্যাতী-ত্যৰ্থ: ৷ বেদবতে তীৰ্থে সাধু ৰ্বসতী ভ্যৰ্থ: 1 বেদযভে বৃক্ষ: ছিব্ন: স্যা-**दिखार्थः । अ (वहर्यक (वहर्यक)** কেচিত্ৰ বাদ॰ ন পঠন্তি। চেতনা ভানে বেদনেতি পঠিত্বা বেদযতে वृक्षः व्यथा इंडार्थः। इंड्रामार-द्रञ्जि । ज्ञाह भरत्यभम ग्रम्। ন্মানা জিতা॰ স যত্নেন নিবেদ্যিষ্য-ভ ইতি নিবেদন করো ভীত্যর্থে (को সনাদধতে। ইতি দুর্গাদাস:।। ৯ শ প ঞৌ আভে। ইতি कविकन्नक्रमः॥ २ व्यविष्टा भ न 🕮 বিন্দতি বিন্দতে। ঔ বেত্তা। ইতি पूर्गामामः ॥

বিদ ড বৌ শীমাণসে। ইতি কবি-কল্পদ্দাঃ ॥ শীমাণসো বিচারণ । ড ধ বিস্তে শাস্ত্রণ ধীরঃ। ঔ বেক্তা। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

विष् य छ ७ जात । इठि कितकन्नफ्रमः ॥ जातः मञ्चा म ह्या स् विष्ठामाने उत् । य ७ विष्ठाः विष्णुः
। छ त्व । इठि पूर्णामामः ॥
विष्ट च मछो। इठि कविकन्नफ्रमः
॥ च त्व । इठि पूर्णामामः ॥ বিদ্ধাঃ ত্রি নাপর:।ইতি ত্রিকাপ্ত-শেব: ।। নিপুণঃ । ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ ।। পণ্ডিত:। ইতি শন্দ-রত্নাবলী॥

विनयाजा जी विनयाया विनया ভাব ইভ্যর্থে তা পুভ্যবেন নিম্নমা। विषया जी भन्नकी याष्ठर्भ उनायिका-(छर: । यथा। ७४। विषया विका-তা जनहा चनुमवाना मुक्ति भुन **क्ठीना॰ পর**कीयाया (मेर्वास्ट्रजादः । অস্যা লক্ষণং। বাক্কৌশল্যক-षु । ना ह विविधा वाश्वित्या किया विनन्धा ह। श्रुथमा यथा । निवि-ডত্তন ত্নাল মল্লি বল্লী বিচকিল ব্লাজি বিরাজিভোপক্ঠে। পথিক সমুচিত তথাদ্য তীবে সবিভয়ি তত্র সরিভটে নিবাস: ॥ ঘিতীযা यथा। मामाय ভবनवारभ वन्त्री মপ্নেতু মাদিশতি। ছেনন্তে হ-विभाकी शयनि अठातः विनिक्त-পতি।। ইতি রসমঞ্জরী।।

কর্ত্তরি ক পুত্যবেদ নিয়ম: ॥
বিদংশ: পুং অবদংশ: । ইতি
রাজনির্ঘণ্ট: ॥
বিদথ: পুং যোগী /। ক্তী । ইতি
মেদিনী ॥

विम:

প গুড:। বিদধাতোঃ

विषन् जि शिखाः । विषयाः ।

गिज् भुजारम्न निम्नमः ॥

विषयः क्री विश्वमात्रकः । क्रिगेमनः
मा इंजि ज्ञाया । इंजिमफ हिन्दुका॥
विषयः भूः विषयः । कार्रेन इंजि

रिष्ना इंजि ह जाया। ज्ञर्भियः ।

मान्नाः १ विष्नाः । इंजानाः ॥

मान्नाः १ विष्नाः । इंजानाः ॥

मान्नाः १ विष्नाः । इंजिमफत्रज्ञावन् ॥

विष्ठः भुः जी क्रिश्चिनगाः ।

পু• স্ত্রী **ज**्डिननगद्गः । ইতি হেমচন্দু:॥ স তু বঙ্গদেশস্য দক্ষিণপশ্চিমে বর্ত্ততে অধুনা বড-নাগপুর ইতি খ্যাত: ॥ 🗱 ॥ **অথ जीम मुजाबलाकरेन: मक्ल कर्ज् गर्** उत्तर मः। कि जि मश्रन मश्र नायिजः नगद्रः क्खिन मञ्जूषा य-(यो।। इंडि भूबं नियत्थर नर्गः॥ বিদর্ভন্না জ্ঞী অগন্ত্যপত্নী।তৎ-পৰ্য্যায়:। কৌশীতকী ২ লোপামু-দা ৩। ইভি ত্রিকাওশেব:॥ দম-যন্তী। যথা। ধৃত লাঞ্ন গোমযা-**ঞ্চল বিধু মালেপন পাওর বিধি:** । ভুম্যজ্যুচিত বিদর্ভলানন নীরা-क्रन वर्ष्कमानकः॥ इंडि भूदं रेनवर्ष ২ সর্গঃ॥ কৃদ্মিণী চ॥ विष्डंबाजः •ु• विमर्खसमाधि<u>-</u>

প্রি:। ভুস্য নামান্তর ভীমরাজ:

। য**থ**। শরোপতভোগি ভূ**শ**• রস পুভু বিদন্তরাজ তনুজা ন্যাচত। छ। जड़। मून् मर्य ह मानित्ना वद्गः ভ্যজন্তি ন জ্বেক ম্যাচিত বুক্ত। ₹ ि भूर्व रेनय(४ ) मर्गः ॥ म जय-ত্যরিসার্থ সার্থকীকৃত নানা কিল ভीম ভূপতি:। य स्वाभा विषर्ভ्य পুভু হসতি দ্যামণি শত্ৰ ভত্-काः। ইভি পূর্ব নৈষধে ২ সর্গ: ॥ ন্ত্ৰী বিদর্ভসূক্র: मगर्डी। यथा। বিদর্ভসুক্র: স্তন তুক্ষ তাপ্তথে ঘটা-নিবাপশ্যদল তপস্যত:। ফলা-নি ধ্নস্য ধ্যানধোমুখান্ সদা-ডিনে দোহদ ধুপিনি ক্রমে॥ ইঙ্কি न्द्र रिवर्द > नर्गः ॥

া। দাডিনকল্কঃ।। বংশাদিক্তপাত্র বিশেষঃ । ইতি ক্লীবলিক্ষসংগুহে অমর ভরতৌ।।

বিদল: পু॰ রক্তকাঞ্চন:। ইতি
শব্দরত্বাবলী।। পিউক:। ইতি
শব্দিকা।।

বিদলা জী ত্রিব্ । ইতিরাজনির্ঘটঃ॥ পত্রশূন্যা। যথা। বিশীর্ণাবিদলা ভুষা বক্র। স্থা। ত্রিধাক্তা।
কৃমিদপ্তা চদীর্ঘা চসমিধো নৈব
কার্যেৎ॥ ইতি তক্র•॥

विषा जी ज्ञान ॥ वृष्तिः ॥ इंडि भिष्ति ॥

विहासः भूः गमनानुमिनः। स्था।
क्रिनः वा हम्भकवनः ग्रह वा छिष्ठ
मून्हि। क्रिनः गृहक साम्यामि विः
निष्ठेः कार्य्य मिन्छ स्म ॥ विहासः
हि मःश्रीन्या क्रिनः माः भूगाः
बल्ला इन्द्रि वृक्षदेवदर्श्व क्रम्याः
विद्रासाः भूनि विक्षवाक्यः॥

বিদার: পু॰ জলোছাস: ॥ বিদা-রণণ ইতি মেদিনী ॥ যুক্ণ। ইতি ইতি হেনচন্দু: ॥

বিদারক লী ব্রুক্ষার । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: !!

विनात्रकः भू जनमध्य छ उउकः निनादिः। उद्भर्यायः। कृभकः २

। इंडामदः॥ बलवक्षकः। इंडि म-स्वज्ञावली ॥ मूक्ष्मपादो बला-वद्यानार्थः गर्छः । इंडि मर्बस्वः॥ অভএव क्षा इंव क्षकाः। म्रद-मिडाम्म क्षा इंडि वा। विमावय-छीडि विमावकाः। बलाप्तर्गडास्त्रक्ष मिलाम्या १ ज्ञानात्माकामि वि-मावकाः, क्षकाः। इंडि मान्नः। वस्त्र्वाज्ञः। इंडि छवडः॥ (मावपः) क्षी विस्तरः॥ (छमः।

विराद्रभः क्ली विष्ठशः॥ (छनः।
इंडि स्मिरिनी॥ माद्रभः। इंडि नयः
तञ्जावनी॥

विषात्रभः भृ जी यूषः। ইতি (मितनी।।

বিদারণ: পু• কর্ণিকারবৃক্ষ:। ইতি শব্দিকা।।

विमादिका जी भाषभगी । ইতি भददद्वावणी।।

বিদারিণী জ্রী কাশ্ররা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।

विमात्री क्षी मालभी । ই उ भिर्मा । ज्याद्या ७: । उट-भर्याय: । क्षीत्र मुक्ता २ इक्ष्णका ७ काञ्ची ८। इज्याद: ।। विमातिका ६ सामूकन्ता ७ भिजा १ मुक्ता ४ मृगालिका २ व्याकन्ता २० विजाली २२ व्याद्विका २२ ज्या ७। २०

साम्बजा ४८ भएकक्षे ४० वादिव-লভা ১৬ গদ্ধকলা ১৭। অস্যা ওণা:। মধুরত্ব•। শীতত্ব•। গুকত্ব• । সুধর্ব। অসু পিত্তনাশির। क्क का ति पुरा शृष्टि वन वीर्य। वि-वर्षनद्भः । ইতি রাজনিঘণ্ট:॥ विषात्री वाठ शिख्यी वृष्ठा वन्त्रा त्रभायनी। इंडि त्राज्ञवल्लान्डः ॥ #॥ षष्ठारम भुकात क्रेप्रागाङ्ग् उ द्रागिवर्भयः। यथा। व्यथ विनात्री মাহ। সদাহ ভোদে স্বৰ্ণ সূতামু-**मड**र्गःव भूजि वीणीर्गना•म•। शि-खन विष्णांषरत विरात्नी भार्थ· বিশেষাৎ সতু গেন শেতে ৷৷ পা-ৰ্খ বিশেষাৎ স তু বেন শেতে। স প্ৰবো যেন পাৰ্শ্বেন বিশেষা-দ্বাহুল্যেন শে**ভে ভ**িষন্ পাৰ্খে সা विराबी ভविত इंडार्थः। इंडि छा-বপুকাশ:॥ অস্যা শ্চিকিৎসাদি **त्राङ्गीभाक् मु**ष्ठेवार ॥ विषात्री वि विषात्रगकर्छा। वि शृर्द দু পাতো: কর্ত্তরি ণিন্ পুত্যুখেন निश्चमः ॥ বিদারীগন্ধা জ্রী শালপণী ৷ ইত্য

ক্রকচপাদ:। ক্ক

মর: ॥

লান:। ইতি হারাবলী।।

বিদাক:

विराहि क्री मारु जनकमुव्या जना শুণৌ। পিত্ত মৃত্যুকারিছে। ইতি রাজবল্লভ: 11 विषिक् की पिल्मार्गश्रा यनि নিৰ্পতি বাযু ঈশানকোণ চতুষ্টৰ• ৷ उ८ भर्यायः। अभिष्ण २। इठा-मत्रः ॥ शुरिक्०। ইंडि क्रीयदः॥ विक्तिभः ८। इंडि मदवद्ववि॥ कागः ৫। इंडि ब्राजनियंकैः॥ विकिक्ठवः भू र्तिपादशकी। इंडि मफ्टिन्द्रिका ॥ विषिठ॰ जि व्यवगङ्गा इंडामद्रः॥ অথিত । ইতি নেদিনী।। উপগনঃ । ইতি শবরত্বাবলী॥ বিদিত: कविः। ইতি ब्रह्मे-7 ध्रतः ॥ शिख उ: ॥ (या गी। 210 इंडि भंदत्रावली श्खाक्कद्रायान-না চ ॥ ম দু।ক্ষিতমেদিন্যা॰ হেম-চন্দেচ বিদথ ইতি পাঠ: ॥ বিধীর্ণ: ত্রি কৃতবিদারণ:। চেরা ইতি ভাষা। যথা। পিতরউচু: । শুজোনি নো ২ধিবভূজে পুস ভ॰ ভন্জৈ দঁভানি ভীর্থ সমযে প্যপি-विज्ञामू। उत्मापतामय विभीनं বপাদ্ম আছ্তিমৈ ননো নুহর্ষে

**ংথিল ধ**র্মগোপ্তে ॥ ইতি জ্বিসন্ডা-

गर्छ १ ऋक्ष ৮ অধ্যायः॥ অপিচ। অদ্বীপে ক্ষিপতী সমস্ত জগতী
সন্তোক শোকামুখৌ রাখা সম্ভূত
কাল রালল নসৌ চক্তে তথা ক্রলনে । যেন স্যান্দননেমি নির্মিত
মহাসীমন্ত দ্যোদিদ হা সর্বণ
সহ্যাপি নির্ভর মত্দুরাদ্বিনিণ
ভূবা॥ ইত্যুজ্জুলনীলমণিঃ॥

বিদু: পু• গজন্ম দ্রম্বয়নধ্যভাগ: । ইত্যমর: ॥ জানম্ভি। ইতি ক্রিয়া-পদ° ॥

বিদুর: পু॰ নাগর:॥ খীর:॥ কৌরবাণা॰ নজী। ইত নেদিনী॥
জ্ঞাতরি জি॥ ইত্যমর:॥ #॥
বিদুরোৎপত্তি র্যথা। ক্ষেত্রে হপুজম্যবৈ ভ্রাতুর্মাজোক্তো বাদরাযণ:। ধ্তরাষ্ট্রঞ্চ পাণ্ড্রফ বিদুর্ক্ষাপ্যন্ধীজনৎ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে
১ক্তার্কং বধ্যায়:॥

বিদুল: পু• বেডস:॥ অম্বুবেডস: । ইত্যমর:॥ গন্ধরস:। ইতি রত্ন মালা॥

বিদুষী স্ত্রী পণ্ডিভান্ত্রী। ইভি মুগ্ধ-বোধব্যাকরণ•॥

বিদুমতী ত্রি পণ্ডিতবতী। যথা। দেটা র্বাচম্পতিনেব পদ্মগপুরীশে-ষাহিনেবাভবদ্মেনৈকেন বিদুম্মতী

বসুমতী মুখ্যেন সংখ্যাবভা । ইতি বোপদেবপুসংশা।। বিদ্: পু বিদু:। গ্ৰহ্মস্তবোৰ্মধ্যা। ইত্যমরটীকা।।

বিদ্র তি অভিদ্রস্থদেশাদি !

যথা ৷ নাসানপ্তৌ তব জলধরোৎকঠ্যা শুষ্কঠঃ সারস্বো হসৌ যুগ
শতনিক ব্যানিনাযাতিক্ দ্লুং !
আন্তা তাবন্নব জলকণা ভাজনত্ব
বিদ্রে বর্ষারম্ভ পুথম সমযে দাকণো বজুপাতঃ ৷৷ ইতি চাতকাস্টক ৷৷

বিদ্রগ: ত্রি অতিদ্রগস্তা। বিদ্রে গছতীত্যথে ড পুত্যযেন নিয়ম: ॥ বিদ্রজ লী বিদ্রদেশজর নুং বৈ-দ্র্যানণি:। অতিদ্রজাতে ত্রি॥ ইতিকেচিৎ ॥

विष्त्रथः श्रु द्राक्षविष्णसः। यथा।
भारतास प्रकाश्यात्र हाप्रणाण्याः
कान् भृत् । त्रववान्श्राप्तवण्य त्रवः
विष्युक्षां विष्त्रथः॥ भिजवान् भिजत्रवण्याः भिजविष्यः विर्वान् ।
भिजवारः भवहाण्य प्रकाश्य भत्याः भूजाः ॥ ইতি গাক্তে ৮१
व्यक्षायः॥

विम्ब्रज्भिः जी विम्बरम्भः। यज विम्र्यप्रमि कट्भम्पराज । यथा । ख्या पृश्चित प्रज्ञाः स्वित्ती स्तृ द्र विपृष्यः क्री

भू जाम श्रम् कारम । विपृत्त ज्ञी

नेवस्म स्वाप्त जिल्ला हे स्वाप्त स्व

বিদ্যক: ত্রি কামুক:। তৎপর্য্যায: । विज्ञः २ व्यानीकः ७ वर्ष्णुङः ८ कामरकिनः ৫ भीठेरकिनः ५ भीठे মর্দ্ধ: ৭ ভবিল: ৮ ছিদুর: ৯ বিট: ইভি ত্রিকাগুংশব: ॥ চাটু-বটু: ১১ বাসম্ভিক: ১২ কেলিকিল: ১० रेवहानिकः १८ शुहानी ५৫ भीजिपः ১৬। ইতি एमहन्तुः॥ भव्रनिन्हाकवः। इंडि भिहिनी॥ **७८**भर्गायः। थनः २ द्रक्षकः ० অভীক:৪ কূর: ৫ সূচক: ৬ কণ্ট-ক: ৭ নাগ: ৮ ম্লিনাস্য: ৯ পর-দ্বেবী ১০। ইতি শব্দনালা॥ চতু-র্থানায়কান্তর্গত নায়কবিশেষ:। ত भ) लक्षण यथा। अञ्चानि रेवक्रिङ् র্হাস্যকারী বিদূষকঃ।অস্যোদাহ-त्रनः यथा। जानीय नीतकमूथीः मा যনোপকণ্ঠ মূৎকণ্ঠিতোমি **জ**চ **ক**-শ্বুক মোচনায়। অত্যন্তরে নৃত্রকা-রি বিদ্যকেণ পু1 ১ন্তন স্তব্দণ **স**ঞ্জু -ট কণ্ঠনাদ:॥ ইতি রসমঞ্জরী॥

বিদ্ৰণ ক্লী বিশেষেণদ্যণ ৷ বি পূৰ্ব ঞ্যন্ত দূৰ্যাতো বনট্ পত্য-যেন নিম্লম ৷ ৷

विरम्भः भू॰ भद्राम्भः। रम्भाष्ठतः। यथा। जामीठकामाञ्जलतः
विरम्णामीठमुद्रतः स्मार्टः
मुक्तिः। ইতি मुक्तिञ्जुः॥ जन्रहः।
काठिजातः সমর্থানা॰ কি॰ দুর॰
व्यवगायिना॰। কো विरम्भः সবিम्याना॰ कः भद्रः श्रिगवामिना॰।
ইতি চাণক্যং॥ जन्र९ रम्भाष्ठद्रः
भारम मुद्रेवऽ॰॥

वित्तरः शुः बनकान्यज्ञिभः॥
कायम्ता वि। इजि स्विनी ॥ इ॥
निनि द्रावमा वित्तरस्य काद्रगः॥
यथा। अन्नार्धं उट्या यट्ड विनः
है म्हानमितः। छः मृद्धे। ज्ञानिः
भूग्रं भुजाशाटामि भार्थित॥
यमाखमार स्राप्यः द्याः वित्तर्भः
स्रु ज्वित्राम्। इजि वङ्गिभूद्रातः
मूर्य्यः मानार्धाश्चारः॥

বিদেহা জ্রী মিথিলা।ইতিছেন. চন্দু:॥

বিদ্ধ: ত্রি ছি দুতি:। ই ত্যমর:॥
কিপ্ত:॥ সদৃশ:॥ বাধিত:। ই তি
মেদিনী ॥ তাডিত:। ই ত্যম্ব;
পাল:॥

বিদ্দকর্ণ: পু॰ বিদ্দক্ণী । ইতি ভরতদ্বিসকোষ:॥

বিদ্ধকর্ণা স্ত্রী বিদ্ধকণী । ইতি ভরতদ্বিৰূপকোষ:।।

বিজ্বকর্ণিকা জ্রী বিজ্বকণী ইভি শব্দরত্বাবলী।।

বিদ্ধকণ জি বৃক্ষ বিশেষ:। আকনাদি ইতি ভাষা। তৎ পর্য্যায:।
পাঠা ২ অম্বস্তা ৩ স্থাপনী ৪ শ্বেষ
সী ৫ রসা ৬ একাপ্টালা ৭ পাপচেল ৮ প্যাচীনা ৯ বনতিক্তিকা ১০।
ইত্যমর:॥ অবিদ্ধকণ ১১ অবিদ্ধারণ ১২। ইতি তত্তীকা।। আবিদ্ধাকণিকা ১৩ বিদ্ধাকণিকা ১৪।
ইতি শন্বন্ধাবলী ॥ অন্যৎপাঠা
শান্দে দুষ্টব্য• ॥

विमानाः जि वर्जनानः । इंडि जटमद्गीकायाः ভत्रडः ॥ विमा जी मूर्गा। इंडिमद्रञ्जा-वनी ॥ गनिकादिका । इंडिमद्

চন্দ্রকা। জ্ঞান । তত্ত নোক্ষেধী:। ইতি জটাধর: ॥ পরনোত্তম পূক্ যার্থ সাধনীভূচা বিদ্যা বুক্ষজ্ঞান কপা।ইতিনাগোদ্ধীভউ:॥ নত্ত:। যথা। শারদাযা । ভাতঃ বিষ্ৎসন

খন• শ্বেতো মদিনি ইদ্বয়•। অষ্টা-

ক্রী সমাখ্যাতা বিদ্যাম্ছিব্ন-

र्फिनी ॥ विश्वभादा । शुगवाम्ताः ब-পেছিদ্যা মাযাদ্যা বা জপেৎ স্-थीः। गरियमर्जिनीयखः॥ मणाकः-রী সমাখ্যাতা বিদ্যা ত্রিভূবনেশ্বরী । পুণবঞ্চ তথা মাষা ভবেদ্বিদ্যা পুন ৰ্দশ ।। কাম• পুণব মিত্যুক্ত• ভবে-विष्ठा भून फॅम । पूर्णामञ्जः॥ वादी-कारत यहा विषत्र वागीनाव शुहाः यिनी । कामान्त्रा व यना विन्त्रा मः ৰ্বকাম পুদাযিনী॥ তার মাযাদি-কা বিদ্যা ভোগ নোক্ষৈকদাযিনী। यदीकान्ता ভবেबिन्ता छद्यीद्यनाक् কল্লনা।। অন্তৰ্ণামন্তঃ। ইতি ভ-জ্বসার: ॥#॥ শাস্ত্র হাই:-म्मविधः। यथा। भिका ) कड्नः २ ব্যাকরণ ৩ নিক্কু ৪ জ্যোভিষ ৫ हन्तः ७ अ। १४ मः १ यङ्क्तिः ৮ नाः मर्तरः २ व्यथर्वर्तरः २ भीगाःमा ১১ ন্যায়: ১২ ধর্মশাস্ত্র• ১০ পুরাণ• ১৪ আযুর্বেদ: ১৫ ধনুর্বেদ: ১৬ গা-ন্ধৰ্যবেদ: ১৭ অৰ্থশাস্ত্ৰ° ১৮ 1 यथा विक्षूभूद्रायः। अङ्गानि (वरा-**म्हजादा भीभा•मा** न्याय विखदः। ধর্মশাস্ত্র• পুরাণঞ্ বিদ্যাহ্যেতা 🖦 जुर्मम ॥ जायुर्वामा अनुर्वामा गा-

ন্ধৰ্গৈতি তে এশ:। সৰ্থশান্ত্ৰ॰ চ-

जुर्ब विमाश्हार्मिव जाः॥इजि

भुगरिक्डिड्ड् ॥ # ॥ नीठाम-भूउन्तर्भा विष्ठाः भूषा यथा। भूषः খান: শুভাণ বিদ্যা মাদদীভাবর৮ मिन । व्यन्तामिन भव्रः धर्मः ज्ञी-ब्रञ्च<sup>•</sup> मुद्ध्**लामि ॥ इं**जि मानत्व २ · व्यर्थप्रायः ॥ 🕸 ॥ विष्ठा शुःमा•ना यथा াযে বাল ভাবান্ন পঠন্তি বিদ্যাণ যে যৌবনস্থা অধনা অদারা:। তে শোচনীযা ইহ জীব লোকে মনুষ্য ৰূপেণ মৃগা শচরন্তি ॥ ভোজনে (ভাজন চিন্ত न सर्यप्रहाञ्जरमदकः । সুरुत्र मिन विদ্যার্থে বুজেৎ গৰ্ড (दगदान् ॥ (य दाल ভादाम भठेडि বিদ্যাণ কামাত্রা যৌবন নষ্টচিক্তা: । তে বৃদ্ধকালে পরিভ্যমানাঃ স-न्त्रशानाः निनित्त रथाद्वाः ॥ মাত। বৈরী পিতাশত বালে। যেন ৰ পাঠিত:। সভা নধ্যে ন শোভন্তে रु न माथा वरका यथा ॥ विना नाम অকণ কণ মধিক পুছ্ম মন্তর্জন विम्या माधू जनिश्या मुहिक्त्री विम्या ख्क्या छकः । विष्ण वक्रुबनार्डि नामनकती विम्रा भन्न (मवका বিদ্যা ভোগ্য যশ: সংলাগতিকরী বিদ্যা বিহীন: পশ্যা গৃহে চাভ্যন্ত-ति मुर्वे । वातः हिद जू मृन्ते एक । वान (णय॰ इत्रीयक विम्ता न क्विएड)

भरितः॥ इंजि गाक्ए ১১०। ১১৫ व्यथ्यारयो ॥ 🕸 ॥ व्यथ् विन्त्रा नान-कन । यस (हवा) शृष्ट् निडा वि-म्रामानः भुवर्ख्ययः। म ख्वरः मः সর্বলোকানা পূজ্য: পূজাপদ বু-(इट् ।। विन्तानान भ्वक्तानि (यन जुषां भाजतः। विभारत मीयरत যেন বিধিনা ত॰ শূণ্য ন: ।। সিজান্ত মোক্ষশান্তাণি বেদান্ স্বৰ্গাদি সাধ-কান্। তদস্পানীতিহাসানি দেখা খৰ্ম বিবৃদ্ধয়ে ৷৷ পাৰুড বালভক্ৰঞ্ ভূতত্তাণি ভৈরব । শাস্তাণি পঠ-नाष्ट्रानार भाउत्रः कलपा नृगाः ॥ **জ্যোতিষ• বৈদ্যশা**স্ত্রাণি কলা কা वु अञागुजः। नानानाद्वागु मा-প্রোতি গন্ধর্ব লভতে পদ ।৷ বি-म्ताराज्या वर्जराज लाएका श्रमीश्रम् वृद्धाय। ज्यादिन्। जना (नया नृष्टी-मृष्टे कनार्थि**डिः ॥ मही**मानक (गा-দান হৈন বস্ত্র তিলাজল ৷ ধান্য मीशामनान्ध सहामानानि मान्यू।। ইহাত ক্ষীয়তে দান দীপদান ন-রাধিপ। বিদ্যা বৃদ্ধি মবাপ্নোভি দী यमानाणि निजानः ॥ अःकाहाः तप ভূদান দক্ত ভবতি ভূমিপ। নহি-তিষ্বিদ্যতে ভূপ দেহ পাতাদনম্বরণ।। विन्।ानीन न उद्दर्ग अक्षा मण्या

ভবেশা শতধাকোটিয়া গছেদিহা মুত্র চ পারণ। রাজ্ঞা তক্ষর দা-यारित्र र्डल दङ्कि महीमृरेभः। मर्बनाः নানি খ্রীয়ন্তে বিদ্যা কেনাপি খ্রীয়তে ।। বিদ্যা দানাৎ পর॰ দান॰ ন ভূত॰ न ভবিষ্যতি। विদ্যা দানেন দানানি निरु जूला। नि वृष्किमन्।। विमा। এव **পর॰ মন্যে যত্তৎ পদ মনান্য•।** मृत्रमु भराउ छकि छक्र। धक মুপাসতে॥ স চ বিদ্যাগনান্ বক্তি বিদ্যা পুস্তাশ্রিতা নূপ। বিদ্যা বিবে-ক বোধেন শুভাশু ভ বিচারিণা।।। विनाउ मर्वभागाधि समाविना शता मं जा।। विन्तानाना **शतः** ना নান ভূড়ান ভবিষ্যতি। যেন দভে-ন চাপ্মোতি শিবং পরন কারণং।। বিদ্যা বিচারতভুক্তা রাজ্ঞ: সন্মার্গ গামিনঃ। ভুঞ্জতে হপি হিভোগানি গছন্তি পর্না॰ গতিং ৷৷ অস্ত্রজা আ পি या भाभा की उर गृश बाकरेंगः । সা বিদ্যা কেন মীয়েত যস্যা: কো-ন্য: সমোপিন।। জুরেণ **স্ক্রের**ণ **হ**স্তি শর্ষপেণ ত্রস্মণা মক্ষিকাপদ্মা-ত্রস্য বিষম্য বিষমা গভি:।। এব॰ বিশ্বণ বিশ্বিণ বৎস বিদ্যা নত্ত্ৰ প্তা-বত: । জীর্য্যতে ভক্ষিত্র পণ্ডি ख्याबिन्। भदार भद्रा॥ न हि वि-

দ্যা হল জাতি ক্ল পৌৰুষ পা ত্ৰভাণ। যশতে সৰ্বংলাকানাণ পঠি-. जा जेन का ब्रिका॥ ज्रेड म् शेडा वि-धुष्ठा म्हा वा सङ् श्रम्रोगः। विम्रा উত্থাপয়েৎ বৎস অন্ত্যজন্যাপি হুৎ স্থিত। ।। সর্বেষা মেব বৃদ্ধানাং विन्धावाका हि मान्धा । वायावृ-क्का शि मृपाणा विभाना अनवान् य उ: ॥ क्क बियाना छ वी खंग विशुर्गः ণাং শাত্রপারগ: । বিত্তং বন্ধু বঁষ-**ৈচব তপো** বিদ্যা যথোত্তর ।। প্-জনীয়ানি সার্হ্বাণ বিদ্যা তেষাণ গ্র রীয়সী: গুকু শুসুয়য় বিদ্যা পুস্কলে-ন ধনেনবা ৷৷ বিদ্যুখা**লভ্যতে বিদ্যু** চতুর্থা নোপলভাতে। **য: কৃৎস্নান্ত** बर्शे मह्याट्यक् छ १८४४ का स्थन ।।। **य यमग्रायकः श**्कृत उत्या**शनि-**শেৎ কুটিৎ ৷ এবং বি'ধা নহা-ভাগ विष्णाग क् नवित्ः॥ मःकः-भागह विखादाखम्या सान कृषः भूग ॥ 🗱 ॥ 🗟 তাড়ীপত্রজে সঞ্চে সমে পত্র সমঞ্চিত্রে। বিচিত্রক বিপার্শ্বে চ চৰ্মণা• সবটী কৃতে ৷৷ রক্তেন অথ কৃষ্ণেন মূজানাবন্ধিতেন চ। দৃঢ সূত্র ছাদশ সাহ্সী সংহিতা মূপলেখ-(र्८। प्रांठि ठा चियुकाय न याजि

**পরমাণ গভি•।। পর্বো**ত্তর প্লবে দে-(म সর্ববাধা বিবজ্জিতে। গোন্যেন मूर्वितव वर्ग्याचा अनकः वृथः॥ हर् ৰ্যন্ত পুনাণেন শুভঞ্চ চত্যসূক তস্য মধ্যে লিথেৎ পদ্ম পিত রক্ত রজা-रिज्ञि: ॥ मर्बर्डकमरेयः शृक्षेत्र जूब-যেৎ সর্বতো দিশ ৷ বিতান দাপ যেমুদ্ধি শভচিত্র বিচিত্রিভা ৷৷ পা र्थ उ: निउरिक्त स नगुक (माजाः भुकन्नरार । कन्मरेक ब्रक्तिन्तु क मः न रेन कामरेत्र खथा।। घन्छ। किव्हिनि শদৈশ সর্বত্র উপকল্ল্যেৎ। তস্য बार्य। न। त्यव्य खाः नागम् छ मयः म् छः ॥ অধ: কল্চিল্লিবদ্ধন্ত পাশ্বভো হ-রি দন্তিভি:। শোভিত॰ দৃঢ়বন্ধেন वकः मृख्य वृक्षियान्।। उत्मराक्ष् विनारमाप्तवाः भूखकः विधिकः শুভ•। অলেখ্য মপি ভবৈৰ প্ৰয়ে ছিবিনা ততঃ॥ নিৰুদ্দকৈ স্তথা পয়ৈঃ क्रमि की है विवर्कि रे हः । हन्त्रत्मन म-ना उब अयना हाक तुनस्य ।। युलक ख्युन् (१४) जुत्रक्षांख्य निर्मुख्। मीलमानाः उथा हारगरेम:वन्। वि বিবং পুন: II খাদ্যং পেয়াবিত• (नश् (ठाय) काशि निद्वत्दर । **প্র**মেদি**শিপ** লা॰ स्त (লাকপা-लान् यथा कन्।। कन्धाः जियक्त मः।

প্র্যা: মাত্র: কল্ল্যেছ ডা:। পুস্ত कं एव एवी क विशागा मिक्ना ख्या ॥ चनक्रा रेव्य माख्या म्भ॰ भोत्रांक भूबायर । उथा मःशृब-(यह ८ म (ल थक ॰ धर्म जा गक ॰ ।। इन्स লক্ষণ তভুক্ত সৎকবিং মধুরম্বরং । পুণষ্ট মারতে গুন্ত শেষ্ট্র পুস্তক लिथकः ॥ नाजिमस्ड विहिता नं भू-क्षि न ठ कर्क लिः। न निर्मागद्रीक र्व रेर्न विथयहिव भुष्ठकः ॥ भुात्रस्म পঞ্জাকানি পন: শাভিন্ত কার-(यट । द्राखी जागद्गण व्यर्गाट म-र्वारमकः भुक्त्रायर ॥ नरे ठाइन क र्गान्छ प्रवाशः कथन मञ्जूवः। भुजृा-(य পृष्ठारशास्त्राका॰ खञः मर्ब॰ विम-জ্জামেৎ।। একান্তে নুমনক্ষেন বিশুরো-न फिरन फिरन। निझाक्रा विविनातन সক্ষেচ শুভবাসরে ৷৷ ততঃ প্রোক্ত विधिना जुनः পृङाः भुकन्नरर । তথা বিদ্যা বিমানন্ত সপ্ত পঞ্চ ত্রি-ভূনিক ৷৷ বিচিত্ৰ বস্ত্ৰ শোভাচ্য मुंड वक्षा विक्षितः। कांद्रद्र সর্বভোভদু কিন্ধিণী বরকাণ্ডিত।। हर्न रेप : फीरेलुफ इन्हा हामब्र म-ণ্ডিত । ভবিদ্বপ নমুৎ কিপ্য नु गतः ठन्स्याध्यः ॥ जूत्रकः ख्रुन् বং স শকরা নধুনি শিত। পূর্বং भूबरयए সर्वान् कन्। जी विकाशीतः বান্ ৷৷ তথা ত॰ পুস্তক• বন্তে বিন্য-সেদিবি প্জিত। এবং কৃত্বা তথা চিন্ত্যা মাতর: শ্রীযতা মম।। य-সৈয়ৰ শৃল্প ভছান্ত্ৰণ পুত্তে পুরি বি कन्नरपट । তथा जनियनः न्कााः नर्व माञ्चार्यभात्रगाः॥ मिरव्उ धः त्रा मुर्था विक्षप्रमानतामगाः। सरुः তা জন সংঘেন রথস্থ বাদ্য বাহনৈ: ।। भुषारेन बीलि उत्त्रयः यम्। (ह्वम) অ•শঙ্গ। সামান্য• শিবতীর্থেষ্ মা-তরো ভবনেষু চ।। তিমান্ পুজা ত था कृषा (मर (मरवन म्लिना।। अम र्भारा भुगमा भाजदः भीराजाः **मम। मराध्यय युक्जाय विर्धारान**ः রতায় ।। বিদ্যা সংগৃহ যুক্তায় সর্ব-শাস্ত্র কৃ ভাশুনে॥ তেনৈব বর্ত্ত যস্ত ভদ্য ত বিনিবেদ্যে । লগদ্ধিত। य देव नाष्ट्रिः मक्तायाः वाहरयख्या। তেন তোথেন দাভার মৃদ্ধিলি সম-जिविक्षराए । वद्रामञ् **७७: भद** মুদ্বার্য্য জগত গুথা ॥ এবং কৃতে মহাশান্তি দেশস্য নগরস্য চ। অ-নেন বিধিনা যস্ত সর্বাধাঃ শন্তিচ ।। व्यत्नन दिधिना यस विम्यामानः श्र-যৃহতি। সভবেৎ সর্বলোকানা দ শ্নাদ্ঘ্নাশ্নঃ ৷৷ মূতো পি গছতে |

ञ्चानः तुक्त विकृ नमञ्जू उः। मक्षमूर्दाः পরান্ বংশানাত্মনঃ সর্ব এব চ।। উদ্ধৃত্য পাপ কলিলাদ্বিফুলোকে মহীয়তে। যাবভং পত্ৰ সংখ্যা-ন মক্ষরাণি বিধীয়তে ।। ভারৎ স विकुलाकिषु की उठ विविधः मू-থৈ:। তদা ক্ষিতি• সমাযাতো দেব্যা ভক্তিরতো ভবেৎ ৷৷ সমস্ত ভোগ-সম্পন্নে বিদ্বান্ স'জায়তে **সলে। বি**ৃ म्यानान भुजादन याग नाजः मरनः म्यिम ॥ व्याचा विखानुकालन यः भु-यह ि भानदः। অশাঠ্যাৎ ফল মা-প্রোতি সভ্য: সভ্য: ন সংশ্য:॥ ব্রি-या वात्नन विधिना विन्ता मान कृष्ण॰ লভেৎ। ভর্ত্বানুজ্ঞযা দত্ত• বিধবা বা তমুদ্দিশন্।।#।। বিদ্যার্থিনে সদা দেয় বস্ত্ৰ নভ্যঙ্গ ভোঙ্কন । ছব্ৰিকা উদক দীপ যমাত্তেন বিনা নছি।। লেখনী ঘটন• তীক্ষ মসি াএম্ভ লে-थनी । मञ्जा जू म जर उरम विम्ता एान मनुख्यः ॥ शृष्टकाखद्राः मदा ७८ भूमारा मुल्लाङ्का विन्तानान মবাপ্নোভি স্ত্রবন্ধন্ধ বুজিজন্ ॥ পত্রকামাসনক্ষৈর দণ্ডাগ্রন ম্বার্লার वा। विम्याशाज्य माञ्चा १८० एउन তি রাজ্যদে।। অপ্তান: েত ভার্টদানে। **म्खः विरागित**ासमा र्जुबर गुरुख

ক্ষেত্ৰন্ত মৰ্গৱাজ্য ফল পূদা।।। যস্য ভূম্যা• স্থিতাে নিত্য• বিদ্যানান• পু বৰ্ত্তে। তল্যাপি ভবতে শ্বৰ্গ তঁৎ भुं जावानदाविश ॥ उत्राट मर्ह भुः यञ्जन विन्ता (नया जना नरेतः। इङ् কীর্ত্তিমবাপ্নোতি মৃত্যে যাতি পরা• গতি ।। ইতি দেবীপুরাণে বিদ্যা-मान गहाजागा क्वाधायः ॥ #॥ व्यभिष्ठ। मनवाशी सभा कन्ता ज्ञि-मानक उटममः। ज्यिमानाम्मः **७**१॰ विन्त्रामानः वि**निय**हरू ॥ यथा **সুরাণা॰ সর্বেধা॰ রাম**শ্চ **প**রমেশ্ব ब्रः । उरेथव नर्बमानाना निम्ता দানভ দেহিনাং ॥ রাজস্য সহসুসঃ नगुनिष्ठेमा यू क्व । उट क्व • লভতে বিপ্রো বিদ্যাদানেন পুণ্য-वान् ॥ जर्बनमा ममाभूगीः जर्बनः ত্নোপশোভিতা•। বিপাষ বেদবি-मृत्व नहीं क्दा मिन्गुह ॥ य कन वज्ज विर्भाविम्। निम्। नाम ७८ कनः। किनानाः नर्मु ममाग्राल्य यर कनः॥ उर कनः সমবাপোতি পুত্তকস্য পুদানতঃ। যাবঃ পাতক তেন কৃত জন্মতে-রপি।। তৎসর্ব নাশ্যত্যাশু বিদ্যা-দানেন ভোছিজ। থর্মোপদেশ যঃ वर्गाः नाञ्च जादा जू विकाद ॥

কৃৎসাং ধরিত্রী যো দদ্যাৎ উভযো ख नग कन । विम्यानाग भ ব্ল॰ দান॰ ন ভূত• ন ভবিষ্যতি॥ যেন দত্তেন চাপ্নোতি শিব॰ পরন কার-णः। विम्ता ठ <u>भ</u>्याक ल्याक सर्व थर्म भुनायिका॥ उच्चाहिन्। जना रिया পश्चित धार्मि कि वि कि:। আত্মবিদ্যা প্রদাতারো যে ভবস্তি जना मूरन ।। न भून खिलि नित्रयः भुः বিশন্তি সুনিশ্চয়ণ। বিপ্রায় প্রস্তক• দত্ত্বা ধর্মশাজস্য চ ছিজ।। পুরাণস্য ह (या मन्त्रार म (म्वज् मवाश्रुयार। नाञ्च मृष्टेता जगर मर्बः मृनुउक्ष मृ जामूड ।। जमार **मा**ञ्च भुराद्व मन्त्राष्ट्रिशाय कार्खिक । विमविन्ता-क्ष (या प्रमाट म्रालं कन्नव्यः वरम् ॥ আত্মবিদ্যাঞ্চ যো দদ্যাৎ ভস্য সম্ব্যান বিদ্যুতে। জীণি ভুল্যপূদা-নানি ত্রীণি তুল্যকলানি চা। শাক্ত काममुषा (धनू: भृषिकी देव भाष जी । यथकिकिथ कार्जिक मज्ज विकृ मुफ्तिणा मानरेवः ॥ उपक्रयकः नज-🧿 वृद्यनानाम्बिष्मय ७: ॥ इंश्लाक বহুন্ভোগান্ভুক্তা যাতি শিবাল-য॰ ॥ ইতি পাদ্মোত্তরথণ্ডে ১১৭ व्यथायः ॥ 🕸 ॥ व्यथं विमातस्त्रः **मिनामि । विक्**थार्याख्या । मञ्जास्थ

পঞ্নে বর্ষে অপুসুগুে জনার্দনে। ব-श्री • नुजिनम्दिक व वर्ष्क्षिय । उथा है भी॰ ॥ विका॰ शकरणीरिक्द मोवि ভৌম দিন তথা। এবং সুনিন্চিতে काल विम्याब्रञ्ज काब्रयं ।। भूः किरिदा इदि • लक्षी • (प्रवीकाशि मः রস্থতী ৷ স্বিদ্যা সূত্রকারা ভাষ্ট স্বাঞ্চ विन्ताः विष्णय**ः** ॥ नगरः वङ्क-পায বিষ্ণবে পরমাত্মনে। **খাহেত্**ড-त्न रुति विः भूजत्य । ভদুकाला নয়ে। নিভ্যুণ সরস্বত্যৈ নমে। নম: । त्वम (वनाष्ठ (वनाक्त विन्त्रा ज्ञाब-**ভ্য**এ। हा। साहि तुक्क भूदानी (व ন চক্রিঃ পুঞ্রেৎ ।। 🕸 ।। লিখন বি-विभाश नित्रवृद्यापः। मुख् नक्षत रिवरम मुख वादि हिनगुरह। लश-यर भ्डा (रविणान क्रु वृक्त बना र्फ्रनान् ॥ প्रइं ६ युक्ता ज्ञा विशि-(छ। (लथकाखनः। नित्राक्षा इस বাহ্বোশ্চ মসীপত্রাবধারণে ।৷ মৎ-न्रश्रुद्राग्यः। भीर्खारभञान् मुनञ्जू र्गान् अस्मुरीगठान् अभान्। अर ঞ্রান্বিলিথেম্স লেখক: সপর: ञ्जः । नाषीयी उठानुतृत्वी भनुः। কথিরে চ সাতে গাত্রাৎ শস্ত্রেণ চ পরীক্তে। ক্ষিত্রসূব বিনাশন্ত্রেণ घन्ड बारविशा **गीलिकायाः। व**घु **চর শিব মূলাধোনুথ বৃষ্ঠ পৌফ শ**-শিষু চ ছরিবোধে শুক্র জীবার্কবা-রে। উদিতবতি চ জীবে কেন্দুকো-(१यू (मोरिम) द्रभठेनित वर्ष्कं भार्ठः (र८ शक्तापा। भरन भाविकाउ । विन्ताद्रास्य ७कः (मुक्ता मन्त्रामी ভ্ঙ ভাস্ক:রो। নরণ শনি ভৌমা-**ভ**्राभविष्ठा वूथ(भाभायाः ॥ विष्ठाः রম্ভ: সুর গুঞ্চ সিত জ্ঞেম্বভীষ্টার্থ দাবী করু শ্চাযু শ্চিরমপি করোভ্যু भूगान् मध्यमा १७। नीहात्राः लो ভবতি জড় পঞ্চা ভ্মিপুণ্লে हायान्याविन ह मुनयः की खेयर छ। व মাদ্যা: ॥ রবে গুরে। ভূগো লীঞ্ল उटाइ १८क १नीमा वृष्का छ। एई-কেন্ডু শুন্ধোচ বিদ্যারম্ভঃ পুশস্য-उ॥#॥ वृह्णानिः। शुक्ताना खक् রাসীনো বৰুণাভিনূখ 🖛 শু । অ-या गर्यह नुषय विज्ञानी जिं: नुन् किछ । । । । स्या भुदान । साव्यायम् ত্রবোভেদা বাচিকোপাণশু মানসাঃ । 🗫 । **नि**वश्यम् । त्रःकृत्वः शुक्**उ** बीटिकार्यः भिषामानुबन्धः।(मण्डा-वामू। भारेयण वाधराय न खकः म्-তঃ॥ আদিঃ গুড় করণ।দিঃ। 🕸। ন-नित्रभूत्रापः। भूषां ज मक मः सारात क्याध्यञ्जितिज्ञानगः। विज्ञानगः उ-

फ्रिकाठे नगाउ॰ ॥ 🛊 ॥ नगाए वाहका बीश्वे॰ क्र्याएन दिहक्ताः। সুশুত সুৰুভ ভ্যাদন্ত ব্যাখ্যা ভু निज्ञाता ।। (बाकः भुवर्डजाः भर्ग **त्राजा हा स्व नरा ज**री। धर्मवान् धन-ं अंग्लेखा ७क का छ निदान्यः॥ 🗱॥ ই তি প্রোচ্য যথায়াত গম্ভব্যঞ্চ বি-ভাবিতৈ:। শিষ্যৈ: পরস্পার শাস্ত্র-**6 इनीय॰ विहक्तरेगः ।। कथा वस्त्र भू**-**गःक्**न नानावतः थतानमञ्जितः। युक्ति-ভিক মরেদ্ব্যাপ্যাণ চিক্রৈ ক্চাপি **याः क्टेंडः**। अवः शितः नित्न वताः था। भृत्या मिराजा नद्रः। अ। विकृ-পুরাণ ৷ পুরৈ রখ্যাপিতা যে চ তে পতন্তি খভোজনে। 🗱। সূত্রউবাচ। भागनुःशेनमः नद्रगः विमा नजः যথা কাপুৰুষস্য হল্তে। ন তৃপ্তি-মুৎপাদযতে শরীরে অন্ধস্য দারা ₹ व मर्भनीयाः ॥ 🗱 ॥ विष्युतापः । যো গুৰু প্রযেষিত্য ত্স্য বিদ্যা **भुजीवि। उ**रभुजाति गमार ज शुाल् छ मर्वमम्बरः। 🗱। प्रवीमाः। সন্ধ্যায়া গৰ্ভিতে নেখে শান্ত্ৰচিন্তা করোতি যঃ। চত্ত্বারি তস্য নশ্যন্তি চायु विन्ता राला वला। #11 अधी-ভস্যার্থিনে দান নাবশ্যক তথা চ मुजि: । याषी उप्रार्थि । विर्पाः

नभुगहर न कार्य)हा नहार (भुगत्न) म्रात्र भावृगुया८ है जि। #। उद्गानका व्यव्याशासन व्याच्या विविध्यार्ज-ণেন চ সম্ভবভীভ্যতো ধীমন্ডি র্নি-বন্ধঃ ক্রিয়তে ৷৷ 🗱 🛮 তথা চ বিস্ফুপু-त्रानः। भागिना मूलकात्राय रामत्वर পরত চ। কর্মণা মনসা বাচা তদেব মতিমান্ ভজেৎ ॥ বৃহস্পতি রপি । অজ্ঞানতিমিরোপেতান্ মনেছে-পটলাবিভান্। নিরামধান্**যঃ সক**্ **७ माजाञ्जन मनाक्या ॥ इंस् की-**ব্রিং রাজপূজা• ল ভতে সন্নতিঞ্চ সঃ৷ ৰামাসিকে তু সময়ে ভ্ৰান্তি: সংলা-एउ यजः ॥ शाबाकतानि क्ट्रेनि भवाक्रानाउः भूता । डेशप्रक्षान्-মন্তা চ লোকে তুল্যফলৌ স্ভৌ।। वदकः। कत्वावानान्त्राम् द्वारि (मृ।-ণাচার্য্যে ওক: কৃত: অতোগুত্তক-र्जु: मूज्रा॰ धकादः। यथा भराः ভারতে। অরণ্য মনুসংপ্রাপ্য কৃত্রা (मान भक्षेत्रयः। अभिमाहार्यः) वृज्धि-🖚 পরনা মাছিত তথা।। ইম্বত্তে যো-গমাতছে পরং নিশ্চয় মাগত:। 🗱 🛚 শত্ৰ লিখিভৌ।ন বেদ মনধীভানা<u>°</u> বিদ্যানধীবীভান্যত্র বেদাঙ্গ ফাতি-ভ্যঃ ৷ অঙ্গানি চ ৷ শিক্ষা কল্পে: ব্যা-क्रन १ हल्मा (ब्राजिय निव ह ।

विष्णामा

নিক্জঞ্চেতি চাঙ্গানিবেদানা গদি ভানি ষট্। মৃতিস্ত ধর্মসংহিতেত্য नदः ॥ #॥ नियामा छक्यू अनिव মাহ লঘু হারীত:। একমপ্যক্ষরণ यञ्च ७कः मिर्बा निर्वारय । भृषि-व्याः नाखि उपूर्यः यम् द्वा सा १न्-गी **ভ**रदर ॥ #॥ नन्ति भूदागः। युण्ठ শুত্রান্যত: শান্ত্রণ সংস্কারণ প্রাপ্যবৈ मृत्। यनामा जनायर की विं खाताः স বুন্ধছ। ভবেৎ ॥ বিষয়েছ তথা নৌঢ্যাঘোপি শাস্ত্র মনুত্রম । স বাতি নরক ধোর মক্ষণ ভীমদর্শ नः।। 🗱 ।। অতএर गृश्ञानीनामि भुन द्रथायन नाष्ट्र जाभखनः। यया विन्त्रया न विद्यार्थं भून द्वावार्यं লুপেত্যসাধ্যেদিতি॥ৠ। বিফুঃ। य-क विन्ता भागाना उया की वट न ह স। তস্য পরলোকফলপুদা ভবতি স**শ্চ বিদ্যু**য়া পরেষা• য**েশা** হন্তীতি १#१ (नवनः। इष्ठे' मख सबीजः यद्वि-নশ্যত্যনুক্তিনাথা শ্লাঘানুশোচনা-ভ্যাঞ্চ ভগ্নতেলো বিভিদ্যতে॥ ত-मानाजाक्डः भुगाः वृथा न भन्निकी-र्खःय८ । अन्कीर्खनः कथनः । भाषा भुषाः ना । अनुष्णाहनः धनवऽरयन थः শ্চাত্তাপঃ। ভাগতেত্তা: ফলজনক শ-क्तिश्वा । वृथा ब्रक्तानिनुरवाङ्गनः

विना ॥ 🛊 ॥ विक्यामृत्य ভविष्ठ পুরাণ । উপাধ্যাযস্য যো বৃত্তি . দত্বাধ্যাপয়তি ঘিজান্। কিন্নদত্ত• ভবেত্তেন ধর্ম কানার্থ নিছ্তা।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব• ॥ विम्राघनः 🕽 🗟 विम्रायाश्राजः। विर्पाष्ट्रकृ: 🕽 इंडि व्याक्रवण ॥ विम्डामनः **পু** जूजवृक्षः। ই डि नद्याना ॥ विष्णापाठा वि विष्णापानकर्छा । যথা। অম্বাতা ভ্যব্রাতা পদ্দী তাত তথৈব চ। বিদ্যাদাতা জন্ম-माञा भरेकाल भिजादा नृगा ।। ইতি বুদ্দবৈবর্ত্তে বুদ্দখণ্ডে ১০ অ-খ্যায়:।। অপিচ। নচ বিদ্যাসমো वक्तू नीखि कन्षिष्ट छाताः भवः l विन्यानाजुः भूधनात्रो उৎमानी নাত্র সংশয: ॥ ইতি বুছবৈবর্ত্তে গণপতিখণ্ডে ৪৪ অধ্যানঃ 🛭 🖠

विन्डानानः क्ली व्यव्हाननः॥ भू्रेडकनानः। यथा। विनिष्ठ उँवाह।
विन्डानानः भूवक्न्डामि याथाछथ्राखवाधूना। छथा (नयः कनः यह
छहुनूत्र नृरभाखमा। भूराह्य भूछ
नक्षर्व मछभः मुछ (विन्कः। हजूत्रुम् विज्ञानः वा कृद्धा छर्वाभरनभरयः ॥ शामरयरनाभनिर्छ जू

পুত্নপুাকর শোভিতে। তত্র ন্যস্যা-**স**ন• দিব্য• দিব্য গন্ধাদি বাসিত।।। স-সাগ্য পুত্তক তত্ৰ ধৰ্মশান্ত্ৰম্য थीन छ। वाञ्चनान् त्वतः जः ज्नूनीन् हत्नरा लक्कन भावगान्।। (नश्य ্বা ত্ বহেন তৎ সমক্ষণ শুভাক্ষ-दिः। हन्तु भूर्य्याभद्रारम वा भःका-स्रापन वामात्र ॥ भूरवाङ्गि उर मू नःग्बा रजानहात ज्यरेगः। घृठ-(वन्। यु छ॰ ब्रिट्स मेन्डाट खनवरंड छ-তঃ ৷৷ শাস্ত্র সন্ভাব বিদুষে বাচকে ভিপুিষ বদে । ভहाञ्च मृत्रुजा निजा कनाना नामग्रहाथ।। माजू खमाखन्छायः कनः उद्दृत् ज्लाउ । यट भूगा मर्बजीयांना विधिवन्य জতা॰ তথা॥ তৎপূণ্য॰ সমবাপ্নো-जि विविवहाउद्यमः भूगान्। किमलाः नाः महरम् । मन् । १ एउन यर कनः ।। তদুাজন্ সকল । লেভে ধর্মা শাস্ত্র-পুদাৰক:। পুরাণ ভারত বাপি ब्रामायन मथानि वा ॥ मद्या यर कत बाल्यां व व व नर्दि ग्राम रिथः। (पवाना मानाय निष्ठाः धर्म भाजाि यः भूगान् ॥ व्यस्राभयि थर्याञा उत्रा नान कनः मृत्। धन ज्ञि श्रिवगुरानाः सारनन यस्वाभु उ ॥ कन ७९ नकन द्रावन्

निउं। कावाशकमा ह। या २थी-তে ধর্মশাক্রাণি দেবানা পুরতো **থনিশ•।। দ্বিজো বীপ্লুরথার্থানা** भिव भिवाईि धुवः। भाउकथाव र्या (वमः (वमाकः नाज (भव वा।। পৃথিবীদান তুল্যু স্যাৎ ফল• **७मः न्लाउमः। मारेन र्थानि दि**-**ज्**रिकाननीञ्च र्थमं ज्रुर नदः ॥ विखन পृथिवीमानाट कल उना **७**(वज्ञ्न। (या ज्ञ. भटेमानानाः करत्राज्जनू निन॰ नृश ॥ म यक्ककल-मामल्ड मानाहामन (ভाङरेन:। वि (वरका कीविज मीर्थ धर्य कामार्थ मम्भरः ॥ मर्बः (उन ड्राव्ह्रडः শাস্ত্রাণা পোষণে কৃতে ৷ বাজ-(भेष महत्रुमा मगागिष्ठमा एट कनः॥ उट कनः मभवाद्याङि विन्तानाममः भयः । जमात्स्वा-লযে নিত্যু ধর্মশাক্রম্য বা শুতে: ॥ भठेन॰ कांब्रयमुक्तिन् यमीहिक्य নাত্মন:। গোভূ হিরণ্ড বাসা॰ मि भरनान्याजनानि ह ॥ भुउउदः তেন দ্ভানি ভব্ভি নূপস্ত্রম । ধ্-ৰ্দাধৰ্মণ ন জানাতি লোকোয়ণ বিদ্যু-या विना॥ उत्राट मरेनव वर्माञाम् বিদ্যাদানরতো ভব। ইতি বঞ্জি-भूबारण विष्ठामाननामाध्यायः ॥

विम्डारियी छी जिन्दा उभारिया लुर्गजरम्वीविष्णयः । इंजि (इम-চন্দু:॥ সরস্বতী চ॥ विष्ठाधन क्षी विष्ठगायक्किंउधन । यथा। विन्तासन माह काउत्रायनः । डेभनऽरख जू यझक्तः विम्या भग भूर्वक । विन्ताधनस छिहन्तार विज्ञाण न निर्याज्ञस्य ॥ मिय्रा-मार्जिका अभार जनिस्थ्रम् निर्वया । चड्डानमः मनावाताः लकः भाषायना इयर ॥ विमाध নস্ক তৎ পাত বিভাগেন পুযোজ (सर । भिल्लाय नि हि स्त्या १ ग॰ म्लापहाधिक ज्दर ॥ भन निव्रभा यहाता विकास मुख ক। বিদ্যাধনন্ত তদ্বিদ্যাৎ ন বি-ভাল্য বৃহস্পতি:।। यन ভব্নে ভদু মুপন্যস্যতি ওদা ভবত এব নবৈডদেয় নিজি পণিত যাত্রা পন্যাসং নিন্তীর্য্য লভতে ভন্ন বি-ভाष्ठुः ॥ नियानवानिखार वार्षिकाउः यक्षमानाप्रिक्शिया **नहाः धनः न शृ**िशुश्नकाः (दछन क्षाज्ञ । एथा यटकिषिष म्। भूत् निर्छार्त रभाविक यमि ঝশিৎ পরিভোষাদ্দাতি। ত থা যো হৃষ্মিন্ শাত্রার্থে অমারণ

সংশ্য মপন্যতি ভষ্মৈ ধন মিদং দ্য मामीजुरमञ्चित्रा मः मय मननीय यह्नकः। उथा वाहिता द्वाहमत्नह न्याय कद्रगार्थ मागउरयाः मम्यूष्ति-क्रांपन यहास यक्षां नाहिक । তথা শান্তাদি পুকৃষ্ট জ্ঞান সম্ভাব্য यथ পुভिगुशामिना नकः । उथा শাস্ত্রজ্ঞান বিবাদে অন্যত্রাপি যত্র व्यविषयाना अवान विशास नि-क्किं ३) यहास । जरेशक अन् (मरा বহুনা মূপপ্লবে গেন প্রস্থাৎ বল্লব্রং । उथा भिल्लामि विम्रागा विकास मू-वर्गकादादि उद्मिशः। उथा मृह्य-নাপি পর • নিজ্জিত্য यल्लका তৎ সর্ব নবিভাজ্য মিওরৈ:। তথাদ্য। क्वाहिट विमुया लक्त मर्ड्डक्रेमाव स्राउदाया गि**छि। भूममंनार्थस्र** কাজ্যবনেন বিস্তারিত নিতি সাধ-ভागः ॥ ना**तमः । व्**रुचि विज्या-জ্ঞাতু যো বিদ্যা মধিগছত:। ভাগ-विम्याथनाख्याट म वाज्ञामुरजा १ शि भन्।। विज्यामि छ । वहन नि-দেশান বহব:। यদি বিদ্যা মভ্য-স্যতে৷ ভাতৃ: স্টুয় নপরো ভ্রা**তা** चथनवाय महीतायामाङ्गः महर्ज-रिं उपा अधिकारिक विषय ধিকার:। অশুতো নৃথ:। ভল্ভক

भिजाकदा मीलकिकाम् काज्याः যন: ॥ পরভক্তোপ্যোগেন বিদ্যা भाषानाज्य या। ख्या वसः धनः যন্ত্র বিদ্যালন্ধ তদুচ্যতে 🛚 অন্যত: পিতৃ মাতৃ হল ব্যতিরিক্তাৎ। অত্র विल्मयंयि अवग । नाविष्ठानाञ्च रेवरनान (एए॰ विमाग्यन कृतिया गनविन्धिविज्ञानास्त (एयः रेव्एम)न তদ্দন ।। করেলোরভ বিদ্যাপদ্ম-ভাভ্যাং মুছৰুকে। তেৰ সুক্ৰি म्राधिकविम्रान्त । ११% व 🐃 नविन्ताविन्धाः । १८८४ । १९५० । পुत्र विस्मिष्य कि । लाग विनोज বিদ্যানা ভুাতৃণা পিত্তো ংপি दा। (भीर्य) श्राधः यधिकः विजा-काः उवृह्याजिः ॥ अत्य स्त्रत्व পি**ডান্হ পি**ত্ৰ্যাদিভ্য: **পিত্ত** এব বা শিক্ষিত বিদ্যানা ভাুকু गा यदिना (नीर्ग) नाध धन छ-দ্বিভন্নীয় মিভি কল্পভক্ রহাক-রৌ। ইতি দাযতভু॰॥

विन्ताधतः शृ (५वरषानिविश्णयः।
इञ्जातः॥ विन्ताः गञ्जाधिकः यत्रां भागति भागिः। शृञ्जाविः।
कानक्षी (थहतः। इञ्जि खत्रकः॥
खरमाष्ट्रभञ्जादि र्या। दिकि वं
क्रांति वृंग्रिः विद्याकः मञ्जाता

गरैनः। তেवा नू शामिजारन्तरान्र महागम्बर्च नायकाः॥ उेट्लानिङाः **भान रेख** वर्ष विकाला युक्तमूर्यानाः । বিদ্যাধরেশরা স্তে তু খেচরাঃ কান্-ठावितः ॥ हित्रगुरतामा कशिलः नृत्नामा माधव उथा। इन्म्रकङ्क शिकात्का नार रेक्टर महारवः ॥ गर्ग इत्जाव मामिल एव ज्ञासादि म्रावाहरत । भिवा ह मुनना रेक्हव जा जा मिल क विभावा: 18 श्रूनरम्हार णाक्षणनाम विष्ठा मोननमः गनः। बोर्ड वंत्राख। श्रयः लाखा विन्ता-ধরগণৈ গ্রিভি:।। এভ্যে খনেকানি-জাতানি হ্যবরাম্বর চারিণা । লে:-কেম্মিন্ গণশ স্তানি মজ্রবিদ্যা বিচা-त्रिगा ।। विष्ठाध्या खथान्। शि वि-म्यावन मनदियाः। ই**छि वहि शू**-ব্লাণে কাশ্যপীয় বংশঃ।। # ।। যো-ডশরভিবন্ধাভর্ণত চরমবল:। ত-म् जन्मण यथा । नार्यत डिक्नुग॰ ধৃত্বা করাভ্যাণ তাড্ধেৎ পুন: । कामरयमि ईब कामी वस्ता विम्ता-ধরে। মতঃ ॥ ইতি রভিন্তরী ॥ दिरशवान् विरागिविभिद्धेः । 13 विन्ताभयाए व ज् ल् उत्यन विश्वमः বিশুক্তাত। ত্রা কলিকারীরক:। ইভিরাজনিঘটা।। তডিৎপুভাচ।।

বিদু জিল্প: পূ রাক্ষসবিশেষ:।

যথা। অগ্নিকেতৃশ্চ দুর্জর্যা রশ্মি
কেতৃশ্চ বীর্যাবান্। বিদু জিল্পো
দিজিপ্রশ্চ সূর্য্যশাত্রশ্চ রাক্ষস:।।
ইতি রামাযণে উত্তরকাণ্ডে ১০
সর্গ:।।

विमुख् जी मक्ष्या। ইভিনেদিনী॥ विष्मुगाञ्च या । जर्मर्युग्यः । শম্পা ২ শভহুদা ৩ হ্ৰাদিনী ৪ ঐরাবতী ৫ ক্ষণপুতা ৫ তডিৎ ৭ (मोनाभिनी ४ ठक्षना २ ठनना २० । ইত্যমর:॥ বীপা ১১ সৌদান্নী ১২ विवभीनिका >० मर्ब्यु: >८ चित्रः পুভা ১৫ সৌদামনী ১৬ অছিরা ১৭ মেঘপুভা ১৮ অশনিঃ ১৯। इंडि नदद्वावनी ॥ ठठूँना २० व्यविद्राद्वाविः २३ द्वाथा २२ नीवा-ঞ্জনা ২০। ইতি জটাধর: ॥ সা চত্রিধা। যথা। অরিষ্টনেমিপত্নী-না মপত্যানীহ যোডশ। বহুপুঞ স্য বিদ্য শচতসো বিদ্যুত: মৃতা: ॥ ইতি বিঞ্পুরাণে ১ অংশে ১৫ व्यथ्रायः॥ ठउरम्। विमृ उञ्च । वा-छाय किंग विमुखाउभाय हि लाहिजा। भीजा वर्षाय विष्क्रिया मुर्ভिकाशामिजा ভবে**८ ॥ इं**जि জ্যোতি:শাল্রে পুসিদ্ধা:। ইতি ভট্টাকা।।

विमुद्ध जि निञ्जुनः। ইতি মেদিনी
विमुद्धिकणः भू॰ त्राक्रमविष्मवः।
यथा। म काण जिनी॰ कन्या॰ ज्या॰
नाम महाज्या॰। উদাবহ দমেধাज्या वर स्मृत महामिजः॥ म जम्या॰
कन्यामाम (हजी त्राक्षम भूक्षवः।
भूज्य॰ भूज्यवजा॰ (मुंदिश विमुद्धिकण
मिजि मुजः॥ ইতি त्रामायदा छैन ज्वत्रवाद्धि मर्गः॥

বিদ্যুৎ প্রিয়ণ স্ত্রী কাণস্যণ। ইতি হেমচন্দুঃ।।

विमृज्ञुन जि विमृज्ञिसिन छै:। विमृज्ञ हसार वज् भुज्जार्यन नियमः॥ विमृज्ञाना जी अक्षेक्षत्र भाम हत्माः विस्पानः। यथा। त्या त्या त्या त्या विमृज्ञाना। वात्मा वल्ली विमृज्ञाः ना वर्श्णुणी मक कानः। यश्चिमाः ला वर्श्णुणी मक कानः। विमृज्ञी। ला स्वाप्ताना वर्षायाजा ना विमृज्ञाः ना ॥ ইতি मुज्ञत्वायः॥

বিদ্যুন্মালী পু• রাক্ষসবিশেষ: । যথা। বিদ্যুন্মালী নাম কশ্চিদ্যুক্ষ-সোমাহেশ্বর: তথ্যৈ ক্রেণ্সৌবর্ণ विमान एख जा श्का भृष्ठ । वा ज्यान विमान भीष्ठा । वा जि विला भि व स । जा जा श्किंग निक (ज्ञामा मृद्धि व्या जिल्लान मिला जा जा मृद्धि व्या जिल्लान मिला जा जा मृद्धि व्या जिल्लान जा जा मृद्धि व्या जा का मृत्र । व्या का मृत्र । व्या का मृत्र । व्या का मृत्र । विष्ठ जा मृत्र । विल्ला जा मृद्धि विल्ला । विषय वा न्या मृद्धि विल्ला । व्या का मृत्र । विल्ला ना मृद्धि विल्ला । विषय वा मृद्धि वा मृद

विषु शी हिनु । ই छ मफ निषु का विषु कि शु (ता गिरित मिर । छ ८ - अर्थ ता गिर ते पर स्व शु हिं । छ । इस्त मिर है । इस्त मिर है । इस्त मिर है । स्व मिर है । स्व

कारमानाकृतामाथा विद्राव (जितार्थः। যতো বুণশোথে দোষাণামস্থি স-মাশুৰ নিৰ্মো নাস্তি। হোর বুণ-**শোথা**দাৰু १ । আযত • ही र्घ • ॥ #॥ যদ্বিত্ব: বিবৃণোতি। পৃথগেটেষ: স-नरिकक करजरामाम्बा उथा। বগ্নানপি হি তেষান্ত লক্ষণ সংপূচ-ক্ষ্যতে ।। 🛠 ।। তত্র বাতিকস্য লক্ষণ गारु। वृत्का १क्ला वा विषत्मा ভূশ মত্যৰ্থ বেদনঃ। চিত্ৰোত্থান পুশাকশ্চ বিদুধি স্বাত সম্ভব: ॥ বিষ্মে৷ ভূশ॰ ফণ নল্ল: ক্ষণ নহান্ ।চিত্রোত্থান পুপাকঃ। চিত্রৌ নানা-रिस्रो উদ্ধন পুপাকৌ यम्। मः।। পৈত্তিকমাছ। পঞ্চেড্যর সলা-णः भागारवा वा जुत्र नाश्वान्। कि-প্রোত্থান প্রপাক চ বিদ্বিঃ পি खमस्रदः ॥ 🗱 ॥ द्विष्यक्**मारु ।** শরাব সদৃশঃ পাড়ঃশীত রিঞোল্ল-(वमनः। हित्राच्यान भूभाकण वि-দ্ধি: শ্লেম্ম সম্ভব**: ॥ তনুপীত সি**-তাশৈষা নাসাুবা: ক্নশো নতাঃ । 🕸 ।। সালিপাতিক নাহ । নানাবর্ণ কলা সুবে। ঘাটালো বিষমে। **মহা**-ন্। বিষম পচ্যতে বাপি হিদুধিঃ সালিপাতিকঃ।। নানা অনেকবিধা । বৰ্ণা: কৃষ্ণ রক্ত পাত্রপা:। क्ष:

ভোদ দাহ কণ্ডাদিকপা:। সুাবা: তনু পীত সিতা যস্য। ঘাটালঃ ঘা-है। क्काहिकामान्डि इंडि घाहाल: । অভুট্ইভাগু ইভার্থ:। বিষম: नि শ্লেষভ: । বিষম পচ্যতে চাপি চিরাচির গভীরোক্তানোদ্ধার্ভিভে-(एन विषमः यथाम्।। ख्या भाग्राख्या ॥ 🛊 ॥ অভিবাতজস্যাগস্যো: স॰-शासिन्द्रकः नक्षा नार्। टिउ रिउ ভাবৈ ব্লভিহিতে ক্ষতে বা ২পথ্য কারিণ:। ক্ষতে। আ বাবু বিস্ত: সরক্ত পিত্ত নীরবেখা জুর স্থাত দাহত জায়তে তল্য দেহিনঃ। আ-গন্তবি দুধি ছোষ পিত্ত বিদুধি লক্ষণঃ ।। रेड रेड डाॅरेवः काष्ठ लाइ भाः বাণাদিভি হতে যথা রক্তসুবোন ভবঙি তথাভিহতে ক্তে কৃতে বা ৷ অথবা খন্ন শুলাদিভি: ফ্রাডে যথা রক্সাবো ভবতি তথা ক্ষতে কৃতে ক্তোমা অৰ ফ্ত শ্ৰেন হত মাৰ মৃত্যুত। তেনাভিছত ক্ত-থো রপুন্ম বাযু বিমৃত। অভিহ-(তা অভিবাতাৎ ক্ষতের ক্রম্বাৎ **अभिएउन रा**ष्मा भूम् छः सेंब्रहरू **(काशरर)। अ** ।। इक्कार्यार्थ। कृष **(मृहोन्ड: भारत अ**धिकार प्रकार জুয়: ৷ পিভবিদুধি নিস্তু রভবি

দুৰি ক্চ্যতে ॥ #॥ অধিষ্ঠানবিশে÷ रयन लिक्विरामयरवाश्यिज् मा छ। छ-द्वान् विमुधीनारः। चाच्यद्वानज-স্জু • বি দুধীন্ পরিচক্ষতে। গুর্মা-ত্ম বিৰুদ্ধান্ন শুৱ শাকান ভোজনাৎ ॥ অতিসঞ্চীয় ব্যায়ান বেগাঘাত विनाहि जि: । भृथक् मञ्जूष वा (ना-ষা: হ্লপিতা গুলারপিণ ।। বল্মীক-वट्मम्बद्धा गन्धः ऋ बन्धि वि मृथिः। ७-(ए विश्वमाश्रमाञ्चा करको व कप-(या उथा 🗈 वृद्धायाः श्लीक्स यक् 🗷 क्ति वा क्षासि वाश्रश्व। (यशा हि-इनि जानी गए वाश्विष्णक-रिनः ॥ न छुत्र वा भि**लिजा वा मगू मकः** ভদুল 🤊 🗆 🗱 ৷ স্থান বিশেষেণ ৰূপ-বিশেষ মাহ। গুদে বাত নিরোধস্ত বঙ্গে কৃ ह्। न्नग्बछ। । ना छ।। हिका তথাটোপ: সক্ষে মাৰুত কোপ-ন ।। কটা পৃষ্ঠ গৃহ স্তীবে। ব ক্লণো-व्य ह विषुरत्रो। वृक्तरयाः भार्थ मः-কোচ: প্লীহ্ৰ: শ্বাস নিরোধন ॥**স**-ৰান্ত পুগৃহ স্তীবে৷ হৃদি কাসণ্ড জা-নতে। স্বাসে। যকৃতি ছিক্কা চ ক্লোন্নি (ललीग्राक्त भगः॥ 🕸 ॥ जावनार्श-লাত্। নাভে কপরিকা: পঞ্। যাস্ত্র-জ্ব নতরে **ত্বখঃ।অধঃ <u>সু</u>তেষ্ জীবে**-। ুতেষ্দ্ধ • ন জীবতি॥ নাভে ক

**পরিজাবুক্কাদি জাতা:।** যান্তি সুবন্তি উष्कृ मुथार । इंडद्र वन्त्रा किः। অধ: গুদাং । নাভিজ ড্ছাভ্যাং মার্গাভ্যা•। তথাচ হারীত:। উদ্ধ্ भु जिल्ला मृथा मता गा॰ भुवर्त्त छ २ সূক সহিতো হি প্য:। অধ: পুভি-**ষেষ্ ত্ পা**য় মাগাদ্বাভ্যা পুবৃত্তি खुरु नाভিজেয়ু ॥ 🗱 ॥ স্যধ্যত্বাদিক। भारः। व्यवः मुख्यू की विज् मुद्धः ষুদ্ধ 'ন জীবতি। হ্নাভি বৃত্তি পর্য্যা-य उत्रु जिसम् वाक् उः ॥ कीरव कराहि भूक्रा (न उद्भव कराउन। হ্বন্নাভি বস্তি পর্য্যাবে প্লাই ক্লোমা-দিজাতেষু ৷ বাহ্যতঃ শস্ত্র বৈদ্য ব্যা-भारत्र जिल्लायु शुक्यः कलाहिए बी(वर । इ अद्भव इमाजि विख्कियू তথা ভিন্নেৰ্ন জীবেৎ। হৃদাৰীনাং মর্মার্থ । অতএব ভোজ: । অসা-খ্যো নুৰ্মাজা ত্ত্ৰেখ: পাজে৷ ২পকৃশ্চ বিদুবি: ৷ স'নপাতোগ্যিভোপ্যেব• পান্ব এব ছি বস্তিজঃ৷৷ হাজ্জোনাভে র ধোজক সাধ্যা ন্যা স্মীপতঃ। অ-পত্ন শৈচব পত্ন শচ সাধ্যে নোপরি না ভিত:॥ আধ্যান বন্ধ নিয়ন্দ ছ দি হিক্। ত্যাবিত । ক্রাশ্বাস স্মা-युक्त वि पृथि नामायमद्रा ॥ #॥ यः-क्विद्वीनाः नाथानाष्ठ्र नार्। नाथा विषुषयः १४७ विवब्ह्याः नाः লিপাতিক:। আম**ণপ**ত্ব বিদ্ধার্ তেষা॰ শোথবদাদিশে । শোথ-वट वक्कामान वुनत्नाचदट ॥ ॥ ॥ অথ বিদুধে শ্চিকিৎসা। জলৌ হা পাতন শভ সর্ফালপি বিদুধৌ। মৃদু র্বিরেকো লঘ্না বেদ: পিভোত্ত-तः विना ॥ अभङ्ग विनुश्तो गुळाराषुग (माथवःनोषवः। वाज्य म्लकोस र्वा वमः रेडन घ्डान्दिंडः ॥ मुखास्म বহুলে: লেপঃ পুযোজ্যে বাতবিদু-(व) । यव (गायुन नुत्तक भिटें छे. त्रारकाज क्वानस्य ।। विन्। यस्त क्वान-নৈব ছবিপঙ্ক বিদুখি:। পৈত্তিক• विद्विरिवन्तः भूनिद्याः मर्लिवायु-**िडः ॥ भगरम्यानीत मधुक हन्म् ने** मुंक (भविकि:। भगभागमानकार्यद्वाद व्यव की दकारका दो खना चिकार । उन्।। जनाः । जयगङ्गाणाः ।। शक् वत्रन करहर घ्ठ विर्मुत (नगरर । शित्वम। बिक्नाक्षण बिन्ट कन्ना-क् म यु उ'।। हे डिका मिकडा (वा ह-ক্রিউ গোসভ্তা সহ। মূত্রৈঃ সুংখা-रेक जिल्ला सम्हरू एत्या वि मुवि ।। मणगूनी कवारयण मामुह्म घृष्ठ-न हा (नाथः दुवः वा कात्कन नन्तः श्रिव्यव्यथ् ॥ शि छ दिमुबिद् म-

विष्राप्त

र्द्धाः किरा निরवानयजः। विमुत्थो व শनः ऋर्यप्रमुकाऋछ निमिख्याः ॥ ब्रङ्ग्यत मञ्जिष्ठ। निष्णा मधुक रेग-तिकः । कीरद्रग वि**मुखो** लाला র্কাঙ্গন্ত নিমিত্তকে ৷৷ কৃঞালালী বিশালা চ ধামার্গবৃদ্ল তথা 1 পীত ছেতে নিহন্ত্যাশূ বিদুধি কো-श्रेमञ्जरान् ॥ शामार्गव कलः (कायाः **ত** কীফল• ।। শ্বেতবৰ্ষাভূবে। নূল<sup>,</sup> মূল বকণকস্য চ। জলেন কুথিত। পীত মন্তর্বির্ধিল্ৎপর ।। গাবতী विकत्ता निम्न कर्तृका सध्क नगः। बिव्८ शहिल म्लाच्या ह इाताः नाः পृषक् পृषक्।। মস্রালিভ্রমান मन्डाट अव कृत्या घृ ठाड्यायट । विमुवी खन्म वीमर्ग माह (बाह जुद्रा-পহঃ।। তৃমুই। ছ দি হৃদ্যেগ পিত্তা-স্ক্সন্ত কামলা:। বায়টাৎ। শিগু-মূল জলে ধৌত পিষ্ট বস্ত্ৰেণ গা-वन्द। उनुमः मधुना भीदा इछ। छ বিদুধিং নর: ।। শোভাঞ্জনক নিযু (र) विञ्च रेमक्षत् अःगुडः । रुग्धाप्त-বিদুৰি জভো: পাত: পাত নিবে-विजः।। निवृंदः क्षाथः। ই ि वि पु-ধ্যধিকার:।ইতি ভাবপুকাশ:॥ বিদুখিনাশন: পূ' শোভাঞ্নরুক্ষ: । ইতি ত্রিকাওশেষ:।।

विमुदः भुः भवायनः। इंडामद्रः॥ वृक्षिः । इंडि स्मिनि ॥ निन्ता। इंडि भपत्रद्वावनी ॥ ऋत्रगः । ।। ৴বীক্য ভাৰ্ विद्यादः भूः विद्युदः। विभूर्वे कक्षाः তো র্হঞ পুভাবেন নিল্লম: ।। विमाविज वि भनायिक । यथा। वि দুৰ্বিতে ভ্ৰগণে জ্বস্ত ত্ৰিশিরা ভ্য ষাং। ইতি শ্রিভাগবতেবাণ্যুদ্ধ।। विक्र उ: बि नाश्रुवी नावग्राहिः। তৎপর্য্যাयः। বিলীন: ২ জ তঃ ৩! ইত্যমর:॥ পলাবিতশ্চ ॥ বিজ্ঞ মঃ श्. भुवानः॥ बङ्ग्कः। ইতি মেদিনী।। কিশলম:। ইত্য-जयभानः॥ বিজ্যলতা জী নলীনাম্পন্<u>ধদ্</u>ব্যা। इंडामद्रः ॥ বিজনলভিকা জী নলিকা৷ ইভি ज्ञाकनिर्धिः॥ विष्ट्कः जि वेषम्ताविषान्। ইতি মুধ্ববোধব্যাকরণ ॥ বিদ্বন্তন: ত্রি অ্যমেষ্যমতিশ্যেন বিদ্বান্। ইতি ব্যাকরণং ॥ विष्वज्ञः वि व्ययमनयात्रजिभाषम विषान्। इंडि व्याक्रवणः॥ विष्ठाप्रभीयः जि विष्ठ-कन्नः। इंडि ब्राक्ड्र ।।

विष्ठात्माः वि विष्ठ्यः। ইতি

सुक्षताथवाकत्रगः॥

विषान् वि व्याद्यविष्ठाः शुक्तः॥

गिष्ठिः। ইতি भिर्ति।॥

विष्ठिः भूः भवः॥ विष्ठ्यक्वि।

विण्ठ्यक्विष्ठाः क भुजारयन

निष्ठमः॥

विर्ण्यः भूः विद्रजा। उर्भ्यागः॥

विद्रवः र विद्रायः १। ইजानदः॥

रैवज्रज्ञ १। हैि करेशब्दः ॥ दिवस्तः ৮। हैि भद्रज्ञाः ली॥ विद्यकः जि विद्युष्ठे । दिसक्खं । विद्यासकः । देवती । विद्युष्ठीि विभूतं दिस्याउन पंत्र भुजायन

निष्ठमः ॥

व्यम्भागः ८ (वयः ৫ मम ह्यः ७

विष्यपा की विषयः। विण्नं दिष चाउा क्रावे शु गुरुषम निष्नमः।। অভিচারকর্মবিশেষः। তস্য বি হিতদিনাদি যথা। স্যোদয় সা নারভ্য ঘটিকাদশক ক্যাৎ খা তব: সুয়র্বসম্ভাদ্যা অহোরাক দি নে দিনো। বসম্ভ গুল্ম বর্ষাক্ষ শার-জেনম্ভ শৈশিরা:। হেনম্ভ: শান্তি-কে প্রোক্তা বসম্ভো বশ্যকর্মণি।। শিশির স্তম্ভান জ্রেষো বিজ্বেষ গ্রীমা ইরিত:। পৌর্নাসী মন্দ

ভানু যুক্তা বিদ্বেষকর্মণি॥ বশ্য भूरबंद्र नथा।इ विषयाहाहेन ७था। माडि भृष्टी दिनम्यास्य म-क्याकात्व व मात्रभः ॥ व्यर्गाह उम्रन कार्याः इर्यक्र वृन्धिकारत् । (ष्वर्षाष्ट्राष्ट्री दिकः कर्य इत्नी दि वा-जुलान्य ॥ 🕸 ॥ जुरजान्य नियम गार्। बनः गाडिवियो मनु वाम्। विक्ष्य करीविजः। सम्राप्त मृथिवी **ण**ष्ठा विष्वत्य (वृश्यम् कीर्खिउ शाक्षा। **पिडियममाइ। यात्म। त्रक्रमि वि-**ष्विषः भाष्टिः वाक्ग वाय्रव। 🛊 । নক্ষত্র নিয়ম মাহ। বিদ্বেবোচাটন विक्स वायुर्यात्म ह कात्रस्ट ॥ #॥ व्यथ विष्वमनः विष्कृ भित्था विष्वमः ণং রিপো:। করণীষং মহেশানি য-দুক্ত মালিনী মতে॥ অন্যোন্য যু**দ্ধ** भन्द्रञ्ज कविरठो भगद्र ग्रहो। **उ**-मीय नथात्राञ्जीन धूलि नामाय जाय-कः। धृणिना তেन विष्वय छाउना-দ্ভিজাযতে ৷৷ # ৷৷ পরস্পর• ব্লি-পো বৈর নিত্তেণ সহ নিশ্চিত। নহিষাখ প্রীষাভ্যা গোন্তেণ भवानि(थ् ॥ यम् नाम उत्गाः দী বু• বিদ্বেষ্ণ পরস্পর•। রক্তেন মহিষাখেন শ্মশান বস্ত্ৰকে লি-(थ्रा। यम। नाम ज्याजम। काक-

शिक्षण (निधिन् । तिष्ठेति हिं के विश्वण (किश्वण (तिकन्दि स्वन्धः ॥ शिक्षण (तिकन्दि स्वन्धः ॥ शिक्षः । यहित्या विश्वण ।।

विष्वयो खी खीविष्णयः। यथा।
विष्वयो ज्याकना ज्याकि हिन्
वानना। जमा । द्वा जनया वाजानयकात्र भूकाणकी ॥ देकि नार्करक्षयभुद्धारा मृश्याह्य । देकि नार्करक्षयभुद्धारा मृश्याह्य । देकि नार्करकी
विष्ययो जि विष्वय विभिद्धेः। देवित्री
। विष्वय भूका । विष्वय विभिद्धेः। देवित्री
रन्न निद्ययः॥

विश्व न विश्व । इंडिक विकल्ल कर्नः
।। विश्व विश्व न । न दिश्व डिद्या
डिज्य । ज्ञान कार्य द्वार डिज्य कद्वरा
१ शत्रुषः । विविष्ठ डिज्युक दिखा
। इंडिज्य ।। कर्यव्य । इंडि
हुर्गाका ।।
विश्वः शुः विश्व न । इंडिज्य ह्या ।

भुकातः॥ (वधनः॥ व्यक्तिः। हैंडि ভत्रउष्ठ त्रज्ञाङ्यो॥ विधवनः क्ली कम्मनः। विभूई धूधाःडा जीद व्यनम् भुडारयन नियमः॥

জ্রী মৃতভত্কা। তৎ-विश्वा পর্য্যায়:। বিশ্বস্তা ২। ইত্যমর:॥ জালিকা ৩ রগু ৪ যতিনী ৫ যতিঃ ७। इंडि मदद्भावनी ॥ उन्।ः कर्न्राकर्न्यानि यथा। विक्: । মৃতে ভত্তরি ব্রহ্মচর্য্য তদলারোহ-ণ বা ইতি। বুক্ষচৰ্য্য নৈপুন বৰ্জন॰ जास्वामि वजनका यथा भूरहजाः । उ।स्वाब्धक्षन रेहर काम्प्रः পাত্রে চ ভোজন । যতিক বুদা **ठात्री ठ** दिववा ठ तिवर्ज्जावट ॥ অভ্যঞ্জন আন্বেদোক পারি-ভাষিক ॥ মৃতি:।একাার: স-मा कार्या। न इजियः कनाउन । পर्वतः भाषिनी नाजी विषवा शाः তবেৎ পতি।। গদ্দুব্যুস্য সংস্তা-(ग) रेनव कार्व्य खया शुनः। उर्शनः পুত্যহ•কাৰ্য্য ভৰু: স্বশ ভিলো-मरेक: ॥ এउड़ उनग भूध (भी-আন্যভাব ইতি মদন পারিজাত: ॥ रेवनात्थं कार्डिक मास्य दिल्मय नियमकाद्र । मानः नानः जीर्थः ৰাত্ৰা• বিফো নামগুহ• মুহুঃ।।ইতি णुक्तिउद्धः॥ #॥ व्यनिष्ठ। द्वाकानी शिंडिहीन। या जित्विम्नानिशी मना । এফভক্তা দিনান্তে সা হবিষ্যান রতা সদা॥ न খত্তে দিব্য বস্ত্রঞ্চ शक्ष पुरा भूरे उनकः। मुक्क ह-न्मतिक्षत नद्भ निन्मत्र ज्यान ॥ **ভ**্যক্তা মলিনবন্ত্রা স্যান্নিভ্যু• না-ज्ञागन माद्र । नाजायनमा (मयः 晔 সক্তে নিত্যমেব চা। তল্পানো-**ছারণ• শাখং স**ক্তে **হনন্য ভ**-ক্তিত:। প্রত্রাঞ্চ প্র্য সদা পশ্যতি ধ্যতি: ॥ নিষ্টান্ত ন চ ভুঙ্কে সা ন স্বৰ্যাদ্বিভব বুদ্ধ । একাদশ্যা• নভোক্তব্য• কৃষ্ণজন্মা-क्षेत्री पिरन ॥ श्रीत्रायम् । नवस्राक শিবরাতৌ পবিত্রণা। অবোরাশা कः (भुष्ठायाः ठन्तु स्वंत्रा भवागत्याः ॥ जुद्देन्ताः भन्निज्याद्याः जूद्याः পরমেব চ। তাদুল- বিববাত্রীণা यञीना॰ बुक्कादिना॰ ॥ सम्रासि नाक (गानाः नः नद्राज्याः माः) শুক্ত র ক্রশকে নস্তঞ্ করার পর্ণ নেব চ।। অলারু চভুলিকারা वर्ज्जनीया ह रेंछ द्विशा भर्य। भर्य। क्ष विनी नाबी विषा। भाउराए भाउः ॥यान भारताइगः कृद्। विषवा नत

ক' বুজেং। ন অর্থ্যংকেশ সংক্ষা র' গাত্র সংক্ষার মেব চ।কেশবেণী জটারূপণ তংক্ষোরণ তীর্থ ক' বিনা । তৈলাভ্যক্ষণ ন স্বী তি ন হি প-শাঙ্গতি দর্পণে।। মুখঞ্চ পরপুণসাঞ্চ যাত্র। নৃত্যা মহোৎসবণ । নর্ত্তকণ গায়নকৈর স্বেশণ পুক্ষণ শুভণ।। ইতি বুক্ষবৈবর্ত্তে প্রিক্ষজন্মখণ্ডে ৮০ স্বর্গায়:।।

বিধা জ্রী বিধিং।। পুকার:। ইত্যমর:।। ক্ষজি:।। গজান:॥ বেতন:।
ইতি মেদিনী শদ্রত্বাবল্যো।।
কর্মা ইতি হেমচন্দু:।। বেধন:।
ইতি ত্রিকাওশেষ:॥

বিধাঃ পুণ বুন্ধা। ইত্যুণাবিকোৰ:
বিধাতা পুণ বুন্ধা। ইত্যুনর: ॥
কান্দেব:। ইতি নেদিনী ॥ নিদ্রা
রা। ইতি রাজনিঘণ্ট: ॥ ভ্রুন্নিপুত্র: । তাস্য ভার্য্যা নেককন্যা
নিষ্তি:। তাস্য পুত্র: পুনা:। তাস্য
স্ত: বেদ্শিরা: কবিশ্চ । ইতি
ভাগবতমত ॥ য় ॥ বিধাত্
বিভিত্রাগতি যথা। ক স উনাচ।
ত্নেন পর্বত হন্ত শক্তো থাতা
চ বৈবত:। কীটেন সিংহ শান্দ্রিল নাশকেন গজ তথা।। শিশুনা
চ নহাবীর নহান্ত ক্লুদুজন্তভি:।

ম্বিকেণ চ মার্ক্তার মণ্ড্কেন ভূ-कक्रमः ॥ এवः জন্যেन জনকः ভ (क्वरेगव ह डक्ककः। विज्ञाना ह कलः नष्टेः वङ्गः मुद्र ज्रान ह ॥ পীতাঃ সপ্ত সমুদ্যুক্ত দ্বিকেনৈকেন कर्ना । बाजू गीं विविद्या ह पूर र्क्छगा जूरनबर्य ॥ **३७ि वुक्स**रेवव-(वं ञीक्षक्रमण्ड १ व्यव्यायः ॥ 🦚 ।। অপিচ। ভলন্দন উবাচ। সম্বন্ধো হি বিধিবশো নমে সাধ্যো বুলাধিপ। পুলাপতি যোঁগকর্তা जमरा जार (यव हा। का कमा भन्नी कन्ता वा वतः (हा वा मनाचनः ॥ ক্র্মান্কপ ফলব: সর্বেধা কারণ विदि:। ভবি তব্য क् ज कर्य जर-(माध्- कु: डो कु: ।। अन्। श्वा निद्य-लः जब भनी नरमहासहस्मा यथा। ব্যভানু পুিয়া খাত্রা লিখিতা চেৎ সূতা নন।। পুরা ভুতৈব কো বাহণ क्तिनात्नात्रन निवार्यप्र**७। इंछि <u>व</u>ुक्त**-বৈবর্ত্তে শ্রীকৃষ্ণন্দ্রমথণ্ডে ১৭ অব্যা-यः ॥ 🗱 ॥ व्यन्धः । ज्यारा सायः কামুকীনাং শাপভাক্ পাপভাক্ ি গৃহী।বুক্ষাজগদ্বিবাতালি ন বির कः कन बदान्।। ত্যাগে দোষ उৎ ু ক্লাচিনামাক ত্যক্ত যোষিতা। ॥ 🗱 ॥ व्यथत्यः। बाउप्रुः (यन पुः-

थार्खाया १ व मनि निक्छ ।

ज मान थि जु मर्का न विधाज मन भू जुः ॥ इ जि तु मरिवर्र्ख किक्ष मथर् ७० स्वरायः ॥ ॥।
स्वा मन्त्र मन्त्र विधान कर्म कर्म । द्वी स्वा । द्वी स्वा ह विधान ह रनो द्वार किन्त्र ।

गान भने। द्वी मासादो जिल्लाक विद्या ।

ह जिल्लाक मन्त्र भू मासादो ।

मासाया ।।

বিধাতৃত্: পু॰ নারদম্নি:। ইডি ত্রিকাগুশেব:।।

विकाश्यम्यः ॥
विधावायः भू भूग्रं (माञा। यथा।
दिधावायः भू भूग्रं (माञा। यथा।
दिधावायः १ इति मयह स्मुका।।
दुक्षाग्वयः । उप्यशः । हर्ज्यमभूग्रेत्र दुक्षा ७३ हिन चर्ठ हिन चर्ठ ।
उद्यम्पानितनः कन्न जिल्माकल्म दुक्षा ७८का माला छवछि ।
७३ हिम ब्राह्मभारम दुक्षाः मल्यका ।
यथाहिम ब्राह्मभारम दुक्षाः मल्यका ।
यथाहिम ब्राह्मभारम दुक्षाः मल्यका ।
यथाहिम व्याद्धः । उत्य भक्षाम्य वर्षा वर्ष्वे । वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा । वर्षा भूगा ।
यथाहि वर्षा वर्ष

বিধানী স্ত্রী পিপ্লা। ইতি শক্
চিন্দুকা।। বিধানকনি । যথা।
গতাস্না বাহু পুকর কৃত কাঞ্চী
পরিলসনিত্রা দিগুলা । বিভূবন বিধানী জিন্যনা । শাশানহে তল্পেশ্বহদি নহাকাল সরত
পুযুক্তা ভা ধ্যায়ন জননি জড় চেতা অপি কবি:।। ইতি তল্পসারে
কপ্রাখ্যজোক।।
বিধান কী বিধিং। ইতি ক্টাপেক

বিধান ক্লী বিধি:। ইতি জটাধর:

। করণ । ইতি নানার্থ বিধি শব্দটীকাষা ভরত: ।। করিকবল:।

ইতি হারাবলী ।।

বিধানক॰ ক্লী ব্যথা। ইতি শব্-রত্নাবলী॥ বিধানবেন্তরি ত্রি॥ বিধানগঃ পু• পণ্ডিতঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী॥

विशायकः जि विशानकर्जा। विशि-ज्जाभकः। विभृत्यं शाक्त शाक्ता नंक भुष्ठपुर्यम निञ्जगः॥

বিধানী ত্রি বিধানকর্তা। বিপূর্বক ধাঞধাতোর্ণিন্পুত্যযেননিয়নঃ। বিধাব্য লৌ কম্পন ৷ বিপূর্ব ধু ধাতোর্ঘ্যণ্পুত্যযেন নিয়ন ৷ ৷৷ বিধিঃ পুণ বুক্ষা।৷ ভাগ্য ৷৷ ক্রমঃ

।। বিধান । ইতদের: ॥ কাল: । ইতি মেদিনী ॥ বিধিবাক্য ॥

পুকার: ॥ নিযোগ:। ইতি হেন-**ज्युः ॥ विकुः । इंडि इनायूथः ॥** কর্ম। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।। গুজা-म॰। ইতি कोटाधनः।। विम्रः। ইতি व्राजनियंग्डः॥ यारगाभरम्मकगुष्टः। ইতি ভরতপ্তকোষ:॥ ষদ্বিসূত্র लक्ष्मान्तर्गडलक्ष्मगिवासः। यथा । সংজ্ঞাচ পরিভাষা চ বিধি নিযুম এব চ। অতিদেশো প্রিকার শ্চ विष्विः भ्वनकारः॥ व्यभाष्यभागः का विधि:। म जू विविध:। वर्लाए-भारनकाभा २ जावक्षभ्रक। वार्लाट পাদনৰূপো যথা সহর্ণেঘ্ ইত্যাদি: । অভাবৰূপো দ্বিবিধঃ। নাশো নি-(वश्कभका नामविधि यथा। (वाः (भा श्म्या भाषा विज्यामि । निः रवधविधि यथा। नाङ्गा २७ इंड्रा-रि। সামান্য প্রাপ্তন্য বিশেষাব-थाরণ नियमविष्तिः। यथा। ब्राह्म-विः मूलि ইত্যদি। অন্যধ্যাস্যান্য-बाद्राभग मजिएमविधिः। यथा । रेनिहरू रेगाहि । **প्**र्वमृबस्टि उ পদস্য পরস্ত্রেষ্পজ্তি রধিকার-বিধি:। স তু ত্রিবিধ:। সি:ছাবলো-কিতাখা চ মণ্ড্কপুতি রেব চ। গঙ্গাশুত ইতি খ্যাতো অধিকারা ত্রখো মৃতা:।। বি হাব্লোকিতো

যथा। বাবগোর্দ্ধান্তে ইত্যমাৎ দায়ে ইতি পদস্য খাক্যগিত্যন্তের্পস্থি ভি:। মণ্ডুকপ্লু তি যথা। টাভিসঙে 'ডুসীত্যুমাৎ অত ইতি পদস্য আ-ক্তিম ভবি ইত্যৰোপস্থিতি:। গ क्षामाञा यथा। तः ति छ बन् ইত্যমাৎ লে ব্লি**তি পদস্য ত** দ্ধিত পর্য্যন্তেষূপস্থিতি রিতি। এব-, था कार्यी कार्याः निमिखक विजिः সুত্ৰ মুদান্তত। কদাচিৎ কাৰ্য্যি কা र्य्याज्याः कृष्टि कार्यः निमिखः ।। যদ্য নিৰ্দিশ্যতে কাৰ্য্যণ স কাৰ্য্যী গা मिला यूरेश: । किया **य**ङ् उटकाः য্য মাদেশ পুত্যযাগম।। যমাৎ পার পারে যামিন্ ভানিমিত্ত দিখা-म 🗝 । या बाल्हालाञ्च मर्खि**रा म**नु-বুক্তিঃ পরে ভবেৎ ॥ ইতি। এবঞ্চ व रुद्रकः विविच्यः न्याम्बद्रकः वि-वि र्वती । পুত্रमान्त्रि कार्याञ्च বহিরস্থ মুদাত্ত ৷৷ পুক্ত্যাশ্রিত कार्याः नाम्हाद्रक् विकि शुवः পুক্তে: পূর্ব পূর্বণ স্যাদভরস্ক্তরণ তথা।। সাবকাশবিধিভ্যঃ স্যাঘলী नित्रवकाभकः। कन्। विख्य कार्यः **স্যপ্রমে পরত তথা।।** সম্ভবেদ্বি याया यन। म ভारद मारका मकः। जामि हि विदया यमा भन्न ।

হি সংভবেৎ।। স প গুড়গণৈ ক্জো বিধি মিরবকাশক:। তথা সামান্য कार्य्या । विश्वकिकविधि र्वनी ॥ वहरवा विषया यम्। म भाभान्।विधि र्ভरद् । उन्नः म्याधियर्था यम्य म বিশেষবিধি মত: ॥ আগমাদেশ-वा चांचा वनीयानागामा विधिः। পুকৃতি পুত্যযঞ্চাপি যোন হন্তি স वागमः ॥ वाप्तम উপघाठी यः পুক্তে: পুত্যয়স্য বা । সকলে-ভ্যো বিধিভ্য: স্যান্থলী লোপবি-धि खथा ॥ व्यान ब्रह्मातम्यस মরাদেশে। বিধি বঁলী। ইতি মুগ্দ-वाश्वराकद्रग होकाचा॰ मुर्गामानः ॥ 🗱। অথ বিধিতেদাঃ। তত্ৰ কশ্চিৎ शुधानविधिः। म जु ब उः कवार ज-ক্রিয়া বোধক:। যথা। যজেত স্বর্গ कार इंड्रापि। किष्णप्रविधिः। म जू बङ: कनस्टु ि ताया॰ कथ बिड्याक्षण्यामाः विधायकः। यथा । ইডো यज्ञां इंड्रामि॥ कन्मि भुरयागविधिः। म ज् यावम्य गुक किवादगदकः। यथा। गावस्य युक्रः यरक उ विलक्ष यर्गकान इंड्रानि॥ किष्ठिम्छन् कनविदिः । ज जुजा-কাল্পা নিব্তৌ স্থিক কলাৰ পুঞ্ कमि ७१विथिः। यथा । शास्ताः

হেনাপঃ পুণ্যেৎ পশুকান ইত্যা-मि:। भुवान विविक्त विविवः। उे**र**-পত্তি নিযোগদেতি। তত্তাৎপ-ভিস্ত কর্মান্ত্রকপবোধক:। যথা-व्यात्यवाष्ट्रीकशात्वा व्यमावाम्यायाः পৌর্ণমাস্যা ঞাচ্যতো ভবতি ইত্যা-कि। निर्याभक चर्मकामाराधिका-রি বোধক:। যথা। যুগ্জামোণ্ডেত ইত্যাদি। অঙ্গবিধিন্ত কাল দেশ কর্ত্রাদি বোধকত্তথা অনিয়ত এব। शुषानाक्वविष्या विषयाभाष्य भा প্তিভ্যা• ত্রৈবিধ্য•। তত্র অপ্রাপ্তি তো দ্বৈবিধ্যণ। তত্ত্ৰাপ্যভাগুলান্তী व्यभूईविधिः । भक्तरः । २भुारधी নিয়মবিধি:। বিধেয় ত**ং** পুতিপ कर्याः भारते भदिभद्गाविविः । অতএবোক্ত । বিধিরত্যন্ত মপুর্ভৌ নিয়ম: পাঞ্চিকে সতি ৷ তত্ৰ চান্যত্ৰ চ প্রাপ্তৌ পরিস্মন বিধীংতে।। তত্র পুধানস্য বিধিভেগে যথা ৷ অহ-রহ: मद्या मुलाभी ठ ইত্যাদি র প্র বিষি: ৷ অত্র বিধেয়ল্য সন্ধ্যাদে: শাত্রকো রাগতো ন্যাযতো বা ক্চি-मभाजाखः। उषा याजी ভार्याः-मुलयाए इंड्यामि निवमविधिः । विदियम् ভार्वाि श्यनम् द्रागः णः भाषायि ज्ञाना ग्राया शक-

(छ। १भु११४: । उथा । (भु१६३-७) মা•স• ভুঞ্জীত ইত্যাদি: পরিস্খ্যা-বিধি:। বিধেষস্য প্লোক্ষিত মাণস-ভক্ষণস্য তৎ প্রিপক্ষ্য্যাপা-ক্ষিত মাংসভক্ষণস্য চ রাগতঃ পা-ণ্ডে:।। অঙ্গন্য বিধিভেদো যথা। भाइरीयशृक्षाया गर्धम् । गूलवरम् इंड्रापि द्रभूर्वितिषिः। अब दिर्धय-স্যোপবাদস্য এতদন্য শান্ততো রাগতো ন্যায়তো বা কুচিদপুঞ্যে;। তথা শাুদ্ধে ভূঞ্জীত পিতৃসেবিত निजानि र्नियमविधिः । दिरश्यमऽ শুজিশেষ ভোজনস্য রাগত: পাণ্ডা বপি রাগাভাবাৎ পক্ষতো ২পা-থে:। তথা। বৃদ্ধিশাদ্ধে প্রাতরান-ব্রিতান্ বিপান্ ইত্যাদি: পরিসংগ্লুর বিধি:। অত্র বিধেয়স্য পাত নিম্ভ্র-ণস্য তৎপুতিপক্ষস্যপ্রদিন সায়ণ निमञ्जनमा ह भाईनवम्यायकः भारध ब्रिकि मृत्व कमारूद्रगः। ইकि धर्मः मीलिका।।ऋ।। न्यायनट विधि र्यथा। পুরুত্তি: কৃতি রেবাত্র সা চেছাতো य उक्त मा। उज्जान विषम खगा বিধি ভদ্ভাগকোথ বা ৷৷ বিধিয়ন্য জ্ঞানাৎ পুৰুত্তি দুশ্যিতে সাইছাত: ि हीर्याञः िकीर्या ह कृष्टि माध्य-(বৃষ্টদাধনবৃজ্ঞানাৎ ভচ্জানস্য

বিষয়: কাৰ্য্যত্ত্ব• ইপ্টসাধনত্ত্বঞ্চ বিধি রিভি প্রাচীনমত ।। ৰমত মাহ ভজ্জ্ঞাপকো হথ বেতি ইপ্টসাধ-नदानुमानक चालाजिनाया वि वि भुज्रयार्थः। ইতি হরিদাসীय व्यमुबाक्षविः ॥ 🕸 ॥ व्यक्षितः। আশ্যত্ত্ব সম্বন্ধেন পুত্যবোপস্থা-পিতেষ্টসাধনত্বান্বিত স্বার্থ পর্পদ ষটিত বাক্যত্ব বিধিত্ব। নীমাণ সকমতে ইপ্ট সাধনত্ব কৃতিসা श्राप्त्रक भृथक् विश्वार्थः। इंडि गराः ধর ভউাচার্য্যকৃত বিধিম্বরূপ:॥ विधिनमी<sup>र न</sup>शुः अम्माः। ইতামরः॥ বিধিদেশক: পু॰ সদস্য:। ইতি **न**पत्रज्ञावनी ॥ विधिव८ वर्ष यथाविधि। विधानुमाः রেণ। যথা। ভোষয়েৎ সতত ভা र्याः विधिवः भागिभी फिजाः। ইতি কালিকাপুরাণে ১৯ অধ্যায়ঃ ॥ # ॥ অপিচ। সন্ধ্যা নুপাস্য विधिवट विन्नुभवाष्ट्रभार्ड्स्यट । ইতি শিবরাত্রিবুতকথা 🛭 🏶 🗓 অ-नाइ । পূজ্যেদুদ্ধ विकृषक कर् বম্বাত্মক শিব । ব্রভোপবাসৈ र्विधिव८ भुष्कया 🛭 विम८ अतः ॥ ইতি মৎস্যপুরাণে যোগমাহা<sup>.</sup> बार 89 अवरायः॥ # ॥ व्यवस्क

। ইতি नक्षत्र भक्षे मूलाष्ट्र वि-षित्र प्रयः। मर्द्रान् कामानवात्याः তি विक्षालात्क मर्द्राद्र । ইতি ভবৈর ৫১ অধ্যায়ঃ ।।

विश्रः भुः हन्मुः।। विश्वः।। कभूतः । इंडि मिन्नि ॥ वृक्षा । इंडि भदत्रवादनी ॥ द्राक्षमः। इंडि বিশ্ব: ॥ আযুধ: ॥ বাযু: । ইতি न'किश्वनाद्मानानिवृज्तिः ॥ 🗱 ॥ **ठन्तुम् द्वारभावञ्चा उ**९कलाहि-ण्ड यथा। इन्द्रमः द्वारणवद्या छ-বন্তি শৃণু তা অপি। ত্রিয়ু ত্রিষু চ श्रक्षम् अधिनाहि वनामाइः।। পুবাসস্থ পুন নষ্ট নৃতাবস্থ জয়া বহং। হাস্যাবস্থ লতাবস্থ কী **जावञ्च• ज्वाञ्च छ• ॥ कम्मावञ्च•** मुञ्चावञ्चः हाम्मावञ्चनः ভবে**८।** পুরাসো হানি মৃত্যুক্ত যশো হা-সোরতি: সুখা। শোকে। ভোগো জুর: কম্প: সূস্থাবস্থা ক্রমাৎ ফল• । জন্ম ছ: সক্তে তৃপ্তি দিতীযে নান্তি নিবৃতি: ।। তৃতীযে রাজ-সন্মান চতুর্থে কলহাগম । ধন ধান্যাগন: বঙ্চের্ডি: প্রাচ সপ্ত-भा अक्षेत्र भागमान्तरः नवस्य क्लिमनक्षयः । मन्यास कार्यानिञ्च-खि ध्रंव (मकामा**ण क**रा।। हामाणन

णणारङ्ग नृष्ठ्र (রব न जाणायः 1 ইতি গান্ডে ৬১ অধ্যয়: ॥ 🛊 ॥ **ठलुन।** क्य वृद्धि काइन॰ रथा। ব্লোবাচ। রাজা চানুনভী হৈব क्रिविधा मूर्णिया स्टा । मिनीवानी बर् रेन्टव बनावात्रात्र विश्वव कू ॥ ष्यमा नाम इत्व द्रिमा कन्द्रलातक পুতিষ্ঠিতা। যন্মাৎ সোমো বনত্য-স্যা ন্যাবাদী ততঃ স্তায় পুরো-रिङ क्वां क्रिय (शोर्वज्ञान्त्र) निमा-করে ৷ পূর্ণিবান্যতী জেবাপকা-ত্রিত ভাকরে। যুমাতা মনুম-ন্যন্তে দেব**তাঃ পিত**্তিঃ **সহ। ড**় यारन्गर्छी भाग भूगिना भूथमा स्-**छा ॥ यसा भारत्यात्र ज्**रते। श्रांत्रसू-म् । काइनः। वृत्रभ्यान्य। द्वानः স্তরানুষ্তি প্রিয়া। রাকান্তা মনু মন্যন্তে দেবজা: পিত্ভি: সছ । **ब्र**ञ्जनारेहर इन्दुना ब्राट्मिक कराया **२**तुत्रम् ॥ निर्वादानी जुलाव्छ क्रीवः শেষো নিশা চরঃ। অনাবাস্যা• বি-শ ठाकं गिनीवानी **उठ:** स्ठा॥ **प (रुजि (काकिस्मानाज) य: कानस** नगाभाउ। उदकास म ऋ। (त्र्या रिव अभावास्त्रा स्कृ: यृ ३। ॥ अनुभ-**छा ग**वाः कार्यत भिनीवान्ताः अङ् থিন।। এভাসা বিরলঃ কালঃ জনা-

ত্রেতি জহু: মৃতা॥ কলা: ধোড় সোনস্য শুক্লে বর্জবতে রবিঃ। অনৃ-(उनागृक· कृष्य भीयाज रेमवरेज: ক্রমাৎ।। পুথমাণ পিবতে বহি র্ছি जीया • भवनः कना • । विष्यत्व य छ्-তীযান্ত চতুথী ন্ত পুজাপতি:।। পঞ্-মী· বৰুণশ্চাপি ষ্ঠা· পিবতি বান· वः। मध्मी म्यर्या पित्रा त्मर्वाष्ट्री তथा हमी ।। नवभी क्कनकम् शिवजीन्द्रः कलामिशा मध्यमी । मद्य-उ म्हाशि कृषा अकारमी कना ।।। मानभी ख दना॰ विक दंगन कर जरगा-मभी । চতुर्यभी भाषा जिल्ला कवा । পিৰতি নিত্যশ:॥ ততঃ পঞ্চনশী-ঞ্চৈব পিবন্তি পিতর: নলা । কলা-दिनारक्षा निद्यो छः भुिक्षः सूर्ग्यय छ-ल ।। यमाना विभाउ द्रास्ती यमा বাশী ভঙ্গ: মৃড়া। পূরা হা বিশতে চার্ক: নধ্যাহ্রে তু বনস্পতি• ॥ খ भवादः वि**ण्डा**श्च बत्यानि वावि-महातः। जाभः भुविष्ठेः (मामन) (भवया कनरेयक्या॥ ज्न छन्। न जा বৃক্ষা নিয়াদযভি চোষণী:। তথে। ষ্থিভিত গাব শ্রন্ত্যাপ: পিব-ভিচ।। তদকানুগত গোভঃ ফী রত্ব মুপগছতি। তৎক্ষীর নম্ত॰ **ज्**दा मञ्ज**ञ्ड• विकाटमः ॥ स**ा-

ছাকার ব্রট্কারৈ জুপ্রস্ত্যাহ্ত্যঃ ক্রমাৎ। হত মগ্রিষ্ঠ দেবায় পুন: (माम विवर्षायर ॥ अव म कि की य-তে সোম: ক্ষীণ ক্ষাপ্যায়তে পুন:। তমাৎ সুর্য্য: শশাস্কস্য ক্ষা বিধে বিভু: ॥ ইভি দেবীপুরাণে চ-न्युः कव वृष्तिः ॥ 🕸 ॥ वुरकावाठ । যদয় বদতে লোকো বালিশভান্ন হানতে। তদহং সংশ্বক্ষ্যামি চন্দু সূর্য্যোপরালিক ।। যদি সভ্যময় গুন্ত ন্তেজোরাশি দিবাকর:। তৎ কথা নাদরস্থেন রাহু ন ভন্মসাৎ কৃতঃ ৷৷ অথবা রাহুণাক্রম্য শত্রু-वकुः भूतिमा उः । ७८ कथः मणीन ৰ্ন্ত ক্লৈঃ শতধান বিখণ্ডিত: ॥ বিমু-क क भून पष्ट खरैयवाथ खन खनः। न চাৰ্গাগহ্ত তেজো ন জানাদ্প-সারিড: !৷ যদি বা ছেষ নিম্নীত: ক-थः भी भु उरता २ जव । छमा म (छ-জনা রাশী রাহো বঁকু গনিষ্যতি ॥ ७कार्थः मर्बास्तानाः सामः मृ ष्टेः यम् अवा। ठबङ्गम् उक्षानि म-क्षु ७॰ मूर्ग्य (ङ्कमा ॥ भिवस्त्रभूमय॰ দেবা: পিতর চ স্ববান্ত। । ত্রযঞ্চ ত্রিশতক্ষৈব ত্রয়ন্ত্রি•শত্তথৈর চ।। ত্র-यक जिमक्त्राक (प्या: (मान नि-বন্তি যে। রাহো রপ্যমৃত ভাগ্য

भुद्रा मृष्टे• सगर्या ॥ **उ**त्राखपुाङ्-রাগত্য পাত্ নিছতি পর্যমূ। উদ্ধৃত্য পার্থিবী ছায়া মদুকোরা স্তমোম; য:। পাত্মিছন্ তত শেচনদু মাছা-मयिक ছायया। भुद्ध ह हन्तु मर्स्डर-তি কৃষ্ণে পর্বণি ভাক্তর•॥ সুর্য্যমণ্ডল সংস্তু চন্দুনেব জিঘা সভি । ত মাৎ পিবতি ত রাহ স্তন্মস্যা-বিনাশ্যন্।৷ অবিহি॰সন্ যথা পদ্ম• निवि जुमादा मध्। हमुद्ध नम्ड॰ তম্বতেদামূহ রশুতে॥ চলুকা-তে মণি যদভিছিন ক্ষরতে ক্ষণাৎ। क्षत्रविश न शियात्र (उज्जमा रेनव मुड्या यथा मृर्यमितः मृर्यमृद्-পাট্য পাবক শুভ । ন ভবত্যস্থ-श्रीतानि एकमा रेनव मुह्य ।। এবং চল্দুক স্ব্যুক্ত ছাদিতাবপি রাহণা। ৰতেজসা ন ম্পুতে নাক্ হীনৌ বভ্ৰতুঃ ৷৷ পৰস্বথ চচন্দুস্য मानिका कन गाक्**छिः। (मान्। रि**न বত সংযোগাৎ ছায়া যোগাছ পা-থিবাৎ ॥ রাহোশ্য বর লক্ষাদৈ পু-कारतम्ब नामी। यामार काला भःभारि वर्भः मृक्षे ह भी र्या। बाक्गारम्य करत् कीत्र॰ उर्थन्तुः ক্ষরতে ২মূত•। পিতেব সূর্য্যো দে-বানা পোনো নাতেব লক্যতে !!

यथा माजः छन भीदा कीवास मर्व कडवः। शीद्वामृठः उथा मामार् ভূপ্যন্তে সর্বদেবতাঃ ॥ সন্ত্রত সর্ব (याशियु उथायः ऋत्राउ मनी॥ उ॰ ক্ষরত বথাভাগ মূপজীবন্তি দেব-ं **ডাঃ**।। তলিন্ কালে সনভে**ু**তি র।হ त्रभावकर्याः । मर्व गर्राः जागक **পাদ পাদার্ক্তিন্র চা। আক্রম্য পা**-र्थिवी ছाया यावजी हन्मू मखन । শৃত: স ভাগে৷ রাহোস্ত দেবভাগা-ख (गरकाः॥ ज् छि विवाय (नवानाः ब्राह्मः भर्वगउम् । । हल्तु। न कः-य नायां डि (डिज्ञमा रैना मूठ्रां डि ॥ जिथि ভागाक गावलः भूनस्य वर्तः পুনাণত: ৷ সর্হায়াজ্ত: কাল স্তাবানেৰ পুকীর্ত্তি হ:।। অভো ব্লাহ ভুল: সোম: সোমাদৃদ্ধি দিবাকর: । পর্বকালে স্থিতি স্তেব বিপরীতাঃ भून: भून: ॥ अ**ङ** म्। १यरङ बाङ् बङ्कः **वहाँग ভा**ऋतो। ताल् त्र कुक म•ङ्गा-ন: সোম মাছাদ্য তিষ্ঠতি॥ উদ্ধৃত্য পার্থিবী ছায়া ধুমমেষ ইবো-व्यि**ड:। हन्तुम**) यहवेडका ब्राङ्ग ভাক্ষরস্য চাম নামাবখণ্ডিড তস্য रेकवनारः वतामनीक् उः। कल्लम य-থা বস্ত্ৰ: শূল্পপ্ৰসূপছন্যতে ॥ একো-फिल्मथ महत्रा ब्राङ्गा हन्तुमा ख्या | विद्वत की भूविरक्षयः। इंडामद्रः।।

। भुकानिङ उपरित्र भुनः मुक् **७तः ७**तर ॥ **त्रा**ल्युकः ७त्वदः विर्यानः हन्तुमक्षनः। त्राङ्गा हाः मिछो वानि मृधाहनु मिवाकरत्रो॥ বিপা: শান্তিপরা ভূৱা পুন রাপ্যা-भगवि उ॰। अतः न गृश्**उ म्**र्युः **"हन्तुना खब गृश्र्ड ॥ अनुशा ख**॰ न भगाष्टि मान्या ना महक्ष्यः। कगटमायाहन हिंडट गुइन हन्तु मृर्ग्याः॥ इड्याप्तः प्रवीभूदाः। शुरुविवसः ॥ 🗱 ॥ विरक्षा (पंव-পিত্রান্যমকারণত্ব রাজয়ক্ষাদি-काরণভ্ঞ कालिका भूत्राण २०।२) व्यश्रायत्या मुश्चिवाः ॥ বিধু 5: ত্রি ত্যক:। ইত্যমর:॥ किन्त्रिष्ठण्ड ॥ विवृद्धिः द्वी कष्णनः। विशृद्धे धू ধাতো: ক্রি পুত্যবেন নিয়ম।। বিধুনন লী কম্পান। ইতি জটা-धद्रः ॥ বিধুন্তদ: পু॰ রাভ:।ইত্যমর:॥ বিসুপঞ্জরঃ পু॰ খন্নঃ। ইতি শদ-गाना॥ विवृश्या जी हन्द्रभन्नी।यथा। माक्कागता विष्कृतिया। इंडि की-

যান্তর ।।

বৈকল্যণ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।। विश्रवः जि विकलः। इंजिलिंगि॥ विथुत्रा जी द्रभाना। इंडि (मिनी বিপ্ৰবন• की কম্পন•। ইত্যনর:॥ কম্পিত ।। ত্যক্ত । বিধৃত ত্রি ইতি হেনচন্দু:॥ क्षी कम्लानः। विभ्रवं ध्. थाटाः कि नुजुरयन निव्वतः।।। विधूनन क्री कम्मन । उट्भर्य। यः । विशूवन २ । इंड्रामद्रः ॥ विश्वन **၁। इंडिमद**র द्वावली ॥ বিধ্নিত তি কন্সিত। বিপ্র ঞ্জ ধু ধাতো ক্ত প্ত্যযেন নিয়ন• विवृত क्री विष्णायगवृत्र । यथा। অথাবক্ষ্য বিল্বাহ লোট্কান্ত কৃ-शाहिना । উদস্তবালা উত্তি: ४ए० । বিধ্তনেহন:।। ইত্যাহ্নিক তত্ত্বণ ।। विरक्ष्यः बि विवाज्'मकाः। वाकाः रः ! ७८ भर्यायः । विनत्ार्हो २ ব্চনেজ্ভ: ৩ আশ্ব: ৪। ইত্য-मतः ॥ विभिक्तमायायविषयः । यथा। अन्दाम्। मन्द्रा ज्न वित्यय ग्रीद्राष्ट्। न य्वकाणारः कि ঞ্চিত **স্বা**টিত পুতিভিন্নতি ॥ ইত্যেকাদশীতত্ত্ব ॥ অণিচ। পু-নাণান্তরাদলিছিত কর্ম পুখন• बूब्बो न विवशी छवि णनारमव उत्र कर्मन डैश्डिंड द्विज्ञानि दियं विद्यं कर्मन शृंकादो मूर्कि छटकान की विनः कर्माधिकादाट शुनानास्त्र नज्जाद्यनाविद्यय्वाः खिथ्जाविर्छनः । ইতি ভिथ्जानिः छन्नुः।।

বিধেযতা স্ত্রী বিধেষত্ব । বিধিষ্কন্য বোধবিষযত্ব । যথা। যথা বুস্কর । ধাদিযু পাপান্য নিষিক্ষ ভযোপযু-ক্ত বুক্ষেণাদি জ্ঞানে দৈগুণ্য তথা গঙ্গান্ধনাদিযু পুণ্যম্য বিধেয়তা-বচ্চেক গঙ্গাদি জ্ঞানে দৈগুণ্য । ইতি পুায় শিচন্ত ভল্ত ।।

বিন্তু শঃ পু বিনাশঃ। যথা। ছরিতে রেশো হ্নুত্পে: শস্ত্রনা
ন তিভিশ্চ বিধ্বাসঃ। কপিলে শী
যুগনত্ব শ্লেছধুশো ২থ দুর্ভিক্ষা।
ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বা

বিনতঃ ত্রি পুণত:।। জুগুঃ।। শি
ক্ষিত:। ইতি নেদিনী ।।
বিনতা স্ত্রী গক্ডমাতা।। পিটকাভেদ:। ইতি মেদিনী ।।
বিনতাসূন্য পুণ অক্ণা:। ইতি হেনচন্দুঃ।। গক্ডখ্য।।

বিনদঃ পু॰ বিন্যাকবৃক্ষঃ। ছাতি-যান্ ইতি খ্যাতঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্ৰিকা।। বিনমুক লী তগরপ্র । ইতি রাজনির্ম নি। বিনয় তি বণিক্॥ ফিগু:॥ নি-ভূত:॥ বিজিতেনিদুম:। ইত্যুদ্ধ পাল:॥

শিক্ষা।। পুণতিঃ। বিনয়: পু इंडि सिनिनी।। #।। यथ विनय পুস শা। বৃদ্ধা শ্চ নিত্যঃ সেবেত विशान् (वस्विमः भूषीन्। (उट्डा হি শিক্ষেৎ বিনয়ণ বিনীভাল্মা হি নিত্যশং।। সম্পুশি বশ্পাণ क्रगांट पृथितीमाज मः भवः । व-श्या १विनयाकुडी द्राजानः गः পরিহুদাঃ ॥ বনস্থা শৈচব রাজ্যা নি বিনশাৎ পুডিপেদিয়ে । ইতি म् ना भवारम १५७ वयागः ॥ कः॥ न्धः। गथा। यखा शृर्धना**का**तस्यः দ্মন্ত নিয়ত স্বাৎ স দেখে ভাক। পদ্যান: সোগ্যসংকারী পূর্বে তৃ विनया अनः॥ इन्डि नाव्रहत्वनः। उट् ल्हारभक्ष्या भद्रम्या भ्रम् क्लाक्रवहार्भाहकम्हालि रन्न म् ७ दियायकः । युगमः नःभूव छ त अधिक मधा जात नाह मनव। পাক্ষ্যে সাহসে চৈব যুগপৎ সং-পুবর্ত্তযো:। বিশেষ পেচন লভ্যে**ত** विनयः म्या मन ख्रायाः ॥ विनया

দগুঃ। ইতি ব্যবহারতজ্ব ॥ বিনন্পাহী নি ব্যনেহিতঃ। ইত্য-নরঃ॥

বিনযস্থা ত্রি আজ্ঞাকারী। তথ্য পর্য্যায়া। বিধেয়া ২ আশুরা ৩ বচনেস্থিতা ৪ বশ্যা ৫ পুণেয়া ৬। ইতি ছেনচন্দুঃ।। বিনয়া জ্রী বাট্যালকা। ইতি নেদিনী।। বিনশনা ল্লী ফকেকেকা। তত্ত হস্তি-

নাযা উত্তরপশ্চিমে বর্ত্ত। ইতি
ক্রিকাণ্ডশেষ: 11 বিনাশাশ্চ 11
বিনষ্ট: ক্রি নাশাশুশ: 1 খু সবিশিষ্টা।
যথা 1 শিখী বিনষ্ট: পুক্ষো ন নষ্ট:
1 ইতি বিশেষব্যান্তি চীকাশাং
মথুরানাথ: 11 পতিত: 1 যথা
নারদ: 1 বিনষ্টে বাপ্যশারণে পিত্যুপ্রত্প্তে 1 বিনষ্টে পতিতে
1 ইতি দাযভাগ: 11

বিনতি: ত্রী বিনাশ:। ইতি বিপূর্ব নশ বাতো তাঁবে জি পুত্যনেন নিয়না। ইতি সিশ্ধান্তকৌনুধী॥ বিনস: ত্রি পতনাসিক:। তৎ-পর্য্যায:। বিশু: ২ বিথ্য: ৩ বিনা-সক:৪। ইতি জটাধর:॥ বিনা ব্য বক্জন। তৎপর্য্যায:।

বন। ব্য বজ্জন । তৎপর্য্যায় । পৃথক্ ২ অভরেণ ৩ খতে ৪ হিকক্ ৫ নানা ৬ । ইত্যমর: ।। বিমাক্ত• জি ভ্যক্ত• । ইতি জি কাণ্ডশেষ: ॥

বুজ:।। গনেশ:। বিদায়ক: इंडामद्रः॥ गक्षः॥ विषः॥ धकः १ इंडि (मिनिनी।।
शिवनियकग्राताः यथा। गाव्हरमा विकारका हो **वि**ट्छायो विनायको । ইতি वङ्गि পুরাণে গণভেদ নামাখ্যায়: ॥ 🕸 ॥ विनायकरमहारमञ्ज र्यथा। भुका পাল উবাচ। কথা গণপতে র্জন্ম মৃত্রিমন্ত্রণ সভ্য। এতার সংশ য॰ ছিন্ধি ও উক্ত ব্যবস্থিত।। মহাতপ। উবাচ। পূর্বা দেবগণাঃ मार्ब याषगण उरमादमाः। कार्यप्रा-রন্তে যথা প্রাপ্তাঃ সিদ্ধি তে চন भःभयः ॥ मन्नार्गाविश्चित् रथा সিধ্যম্ভ বিঘুতঃ ক্রিয়া:। অসৎ কারিধু সর্বেধু তদ্বদেব মনিমুত:।। ভতো দেবা: সলিতর শিস্তথামা-সূ রোজদা। অসৎকার্য্যেষু বিশ্লার্থে পর্ব এরাভাগজ্বন্ ॥ ভত তেবা॰ তদা মত্ৰ- স্বৰ্ষতা- ত্ৰিদিবৌকসা-1 বভুব বৃদ্ধির্গননে কৃদু• পুতি মহা-মতে ৷৷ তে তত্ৰ কৰু মামস্ক্র কৈ: लान निलय छक्। छेष्ट्: निवय भर्द्ध <u>भ</u>्निभा ७ भूदः नद्र• ॥ ५२वा-

**উ**ष्ट्रः । एव एव स्थापिय भूव-পাণে ত্রিলোচন। বিহার্থ মবিশি-ষ্টানা• উৎপাদ্যিত্ মর্হসি।। এব-मुक छना (मरिव र्डदः भद्रगया मुना । উমাণ নিরীক্ষ্যামাস চফুবানি-মিখেণ হ।। দেবানা॰ সন্নিধৌ তস্য পশ্যতো মা॰ মহাত্মন:। চিন্তাভূ-ছ্যোল্ল মুর্ত্তেন্তা দৃশ্যতে কেন ছে-তুনা।। পৃথিব্যা বিদ্যতে মূৰ্জ্তি রপা• মূর্ত্তি স্তথৈব চ।তেজস: শ্বসনস্যাপি মূর্ত্তি রেষা তুদ্শ্যতে॥ আকাশস্য কথ নেতি নত্বা দেবো জহাস চ। জ্ঞানশকি: পরান্দৃষ্টা বদৃষ্ট বেগা-ন্নি শন্ত্রনা। যচ্চেক্তি বুন্ধণা পূর্ব শ-র রম্ভ শরীবিণা । যদ্বাপি হৃদিত **তেন দেবেন পরমেণ্ডিনা ।। এ**ভৎ কার্য্য চতুষ্কেণ পৃথিব্যাদি চতুর্ম্বলি। মূর্তিমান্তি তেজ্বী হস ১: প্রমে-भारता ভा**नरन् दिण**ः। शहरमि গুণৈ যুক্তি: সাক্ষাত্রদু ইবাপর: ॥ উৎপন্ন মাত্রো দেবানা থোবিতঃ मः भुरमा इयन् । कान्छा भीन्छा उथा मूर्ख्या कालग ह महाजावान्।। ७ १६४। পরন কপ জনারস্য নহাত্মন:। উনানিমিষ নেত্ৰাভ্যাণ ভ্ৰমপশ্যভ ভाমिनी ॥ उ॰ मृक्षा व्यशिष्ठा (म्व खीव्रकाल ममन्विः। मद्या समात ক্পন্ত শোভন মোহন দৃশা ॥ ততঃ শশাপ ত দেবো গণেশ পর-(मश्रत: । अभाव गळवञ् खु श्रुण्यः क्काठेद्र खथा ॥ ভবিষ্যতি তথা সংৰ্ণ ক্পৰীতগতি ধুবিং ৷৷ এবং শশাপ **७**॰ (एव खीवुरकाशमभिन्नः। धुनुन् **শরীর মৃ**ংখায ভতো দেবো ক্ষান্থি ख: 11 यथा यथारतो न भन्नीत्र मान्रः পুনো তি দেব ব্ৰি**শি** থান্ত্ৰ পাণি:৷ তথা তথা চাঙ্ক জহাচকাস জল ক্ষিতৌ अ'न्रिशंड॰ ख्यात्रि ॥ विनायका त्न-क्युथा गहाम्या खनान नीनाञ्जन निमनानाः। উত্তস্ क्रि विविधाञ्ज रुषा उउछ (५४। मनमाञ्चलन ॥ কিমেতদিত্যভত কর্মকারী ছেক: कात्राजानु जिनः नशह । कार्याः मू রাণা কৃত মেত্রদিষ্ট ভবেত্তথৈত পরিত হত তথা দিবৌকসা চি-🞖 य जा॰ उथा ज् विनायकै: 🖘। क् ভিতা বভূব। চত্মূ থ স্চাপুতিমো বিমান মাৰুহ্য থে বাক্য মিদণ জগা-म ॥ धन्त्रास्त्र (मदा भुद्रनायत्कन जि-लाहरनमान्ड अभिना ह ॥ जानून् হীতা: পরমেশ্বরেণ সুরদ্বিষা বিঘু কৃতা নভৌচ। ইত্যেব মৃক্ত্ব। পুপি ভানহ ভানুবাচদে ব ব্রিশিথান্ত্রপা

ণিণা য তে বিভো ব জু সন্ দ্ভব: পুভু বিনাথকা নাম বসন্ত্রিমে ৎনুগা: 1 ভবন্ত্রথাস্যাত্মবরেণ চাম্বরে দ্ব্যা চ-তুইস্ত শরীরচারী।। আকাশ নেত-ष्ट्या वाविष्ठः द्या हित्का वन्छाः তে পুगाडाः । পুভু ভববপুতিমা-ख्रशानिना इमान् हि हारिख मूवद्राः मह দেহি ॥ ইভ্যেব মৃক্ত্বাধিগতে পিতা-মহে ত্রিলোচন শ্চাত্মভব জগাদ। বিনাযকো বিহুকরো গজাস্যো গণে-শনানা তুভবস্য পুগ্র:।। এতে চ সর্বে ত্বপথান্ত ভৃত্যাবিনাথকা: জুর-म्मः शुरुखाः। উहु या मानामि विवृद्ध দেহা: কার্য্যেষ্ সিঞ্জি· পুতিপাদয-ন্তঃ॥ ভবা॰চ বেদেষু তথা মথেষু কার্য্যের চান্যের মহানুভাবাৎ। অ-গুেষু পূজা লভতেন্যথা চ বিনাশ-বিষ্যস্থ কাৰ্য্য সিদ্ধি । ইত্যেব মূ-ক্তো পরনেশ্বরেণ সূর্বৈ: সন্ কাঞ্চন क्छ म·रिष्टः ॥ ब्हेल खबा माविज-ষিক্ত গাত্রো বরাজ বাজেন্দু বিনাধ-কানা ৷ দৃষ্ট্বাভিষিচ্যমান তুদেবা স্ত गगनायकः।। ७<u>१ वः भ</u>ुगजाः महर्वे जि म्लाखना महिर्या। 🗱।। (हवा डेहू: 1 নম তে গছবকুবে নম তে গণনাযক। বিনাযক নম স্তেম্ব নম স্তেচগু বিক্র-ম ৷৷ নমে৷ ২ন্ত ভে বিমুকর্ত্তে নম ভে

সর্পমেথল। নম তে কদুবজ্রোপ পু-লম্ব জঠরাশ্রিত। সর্বদেব নমকারা-मिविष्यः स्वकं मर्बना॥ এवः खं छता দেবৈ মহাত্মা গণনাযক: ! অভি-বিক্ত ন্ত ক্দেণ লোমস্যাপত্যতাং গতঃ ৷৷ এতচতর্তাণ সম্পন্ন গণা-ধ্যক্ষস্য পার্থিব। যত ততোফ নছ-তী তিথীনা পর্যাতিথি:।। এত-न्। य खिलान् जका। जुका गग-পতি॰ নৃপ। আরাধ্যতি তন্যাশু जूगाज नाव मानगः॥ यत्मज्य भवेटा खाब गरेण उर मृत्याख्या । তন্য বিহান জায়ন্তেন পাপ॰ সর্যু शान्य ॥ इंड्यानि वाद्याहर विनायः ে। ९१ छि नी सावतायः । #ा दिनाः यकमा नागाञ्चकत्ञाजः यथा । 🗐-विक्युक्वाह। शामा (नक्ष्यक्ष ह्र-इद्यः विद्वनाय**रः। वाद्यानदः** मूर्शकर्नः गजवजुः छर्गुकः॥ नागाहेकार्थः भुधना प्राचा इब्रीपुर्य। खाः वाताः नावज्ञक नविष्कृतः পরে।। ভ্রানার্থবাচকো গশ্চ ৭৮১ নির্বাচকঃ। তবোরীশ পর वुक्त गरामाः धुननानारः। ३। वक मानः शुरानार्थः मधन्व वनवाहकः। दणः शुथानः गर्वगारतकरः नगी-ग्राइ॰ ।। २ ॥ हीनार्थदाहरको एइण्ड

রম্ব: পালনবাচক: ৷ পরিপালক• ७ मीनाना (एत्रयः भूगमान) इ ।। 🔊 ॥ বিশক্তিবাচকো বিহ্নো নাযকঃ খণ্ডনার্থকঃ। বিপৎখণ্ডনকারন্ত ন-मामि विश्वनायकः ॥ ८ ॥ विकृतिख-क रिन्दिन्त र्यमा वासामत्र भूती। **शिका मरेखण्ड विविदेश वीन्म नामा**-**पत्रक उ**ं।। ६ ॥ जुलाकाद्वी ह उद कर्गा विध्वाद्रगकाद्र । मण्यमा-मानकाली ह जूर्नकर्न नमामाइः॥ ७॥ विक्भूजाम शुज्जक रम्षि ग्नि म खकः। जन्न खन्मु व कु युक्तः शह व कुः ন্নান্যহ• ॥ १॥ **ওহ্স**্যাগ্রেচ জা-তো হয় মাবিভূতি। হরগৃছে। বলে গুহাপুল দেব সর্দেবাপুল্লিভ• ॥ ৮॥ এउशानाहिक मुला नामार्थ मध्य ३ भद्र । भू धम् भम्। व्यत्र ह **उम्**किंग वृथा स्या। এटः। या है-ক জোক নামার্থ সংযুক্ত শুভ । ত্রিসন্ধ্যু: পঠেনি ত্যু স সুখী স ৰ্বতো জধী।। ভঙো বিছা: পলাবন্তে বৈনভেষাত্রথোরগা: ৷ গণেশ্বর পু-সাদেন নহাজ্ঞানী ভবেদ্ধুবং ॥ পু-আথী লভতে পুঞ ভাৰ্য্যাথী বি-शूना॰ जिय॰। महाकुछः क्वीन्यू = इ বিদ্যাবাংশ্চ ভবেজ্বং ॥ ইতি বুক্ষ-বৈবর্ত্তে গণপতিখণ্ডে ৪৪ অধ্যানঃ॥

🗱 ।। व्यम् कद्र व्यथा। नाइम प्रदाह । न॰मात्र (माहतम्यामः) कवहम्। भू काপ তि:। यायि मूनसण्ड वृश्छी (मरवाः वासानतः अवन्।। धर्मार्थ काम (ना क्षिय विनियागः भुकी खिंडः। मर्ख-্ষাণ ক্ৰচানাঞ্চ সাৱভ্ত মিদণ মুনে ॥ ওঁগোঁ গৈঁ খ্ৰী গনেশাৰ দ্বাহা মে পাতু মস্তক। দ্বাত্রি:শদক্রো ম ত্রে। লগাট । মে সদাবতু ॥ ওঁ ঠুঁ। ক্লীঁ 🕮 গমিভিচ সভতং পাতৃ লো চন•। তারকা•পাতু বিঘেশ: সভ**্** ভ· ংরণীজলে ॥ ওঁ ব্রাঁ জীঁ দ্লী নি ি সতত পাত নাসিকাণ। উপৌণ গা সুপ্রবাদ আছা পাড্রধর মন।। म्याः म्ह जानकाः विद्धाः भाज वि (वाफ्नाक्षतः। अञ्जीः वासानद्राताः তি মাহ। গণ্ড সনাবভ্॥ ওঁগা গণ **गञ्जननारपठि याहा कक्ष अ**रावजू । খ্রী• ন্নী• খ্রী মিতি কল্লান• পাত वकः इनक गः। भारते भारते भरा **भाजू म**र्दाय॰ विष्नु नेष्नुक्ट ॥ भुक्ता नासामद्रः भाव बारायाः विद्वनायकः। मिकल भाजू विद्व শো নৈৰ্খত্যান্ত গজাননঃ॥ পশ্চিমে পার্বভীপুণ্ডে৷ বাযব্যা• শঙ্করাত্মজঃ ৷ ক্কম্যাণ্শ স্চান্তরে তু পরিপূর্ণ जनगर ह ॥ येथाना विकरस्य

হেরম্ব: পণত চোদ্ধ ভ:। গণাধিপো-२९। १। ज प्रवंश्काण मर्वजः॥ **অপ্নে জাগরণে চৈব পাভুমে যোগি**-নাণ গুৰু:। ইতি তে কথিত বৎস नर्बरखोध विगृहः॥ गःनात्र साः হন নান কবচ পরমান্ডত। খ্রী ক্ফেন পুরা দত্ত পোলোকে রাসম-**७:न ।। वृन्तावत्म विभी छाय मञ्**र দিনকরাত্মন্ত্র। মথা দত্তঞ্চ ত্ত্যঞ্চ रत्य कर्या न नाम। नि ॥ नद्र॰ दद्र॰ সরপ্ছ্য সর্ব ন কট ভারণ । ভক্ मण्डा विधितः कवनः शाहरमञ्जयः ॥ करं वा मिक्स नाही जानि विष्ट्र वं गःभागः। अधाय महताति बाकर्य महानि ह ॥ गुरस्सु तदइ-न्याम् क्या॰ गर्शतः (वाउमी॰ । हेन कव्छ मञ्जादा रा ज्ञाहरूदा-बाह्याण उनक् मुक्खानि न मखः निष्कितावकः। ইंडि नुकारेववर्ध्ध गण-প্ৰভিগতে গণেশক্ৰচণ নাম ১৩ অ-ধ্যান:।। হু।। অথ বিনাদক শান্তি: । যা জ্ঞবন্ধ উবাচ। বিনাযকো**প**স্-क्षेत्र। **लक्ष्मानि निर्वाद्य ।** ब्राक्ष्य-গাহতে ২ভাগ্- জল- মুণ্ডা-৮চ প-माजि॥ विनन। विकनावसः न भी-দক্ত ননিভতঃ। বাজা বাজ্য জ্মা-রীচ পতি• পুঞ্ঞ ওরিনী।। নাগ্ন-

হাৎ ৰপনন্তস্য পুণ্যেহ্নি বিধি প্-র্হক । গৌরসর্যপ কল্পেন সভ্যে **६नार माद्रि ७**मऽह।। मह्ये विष: मर्ब-শক্ষি বিলিগু শিরসত্তথা। ভদু।সনো-शविष्ठेमा बिखवाना दिखान् मुलान् भा मृखिका॰ (ब्राह्मा॰ मञ्चान् सम्बन् চাপু নিক্ষিপেৎ। যা আজ্তা হেক वर्ति के जुर्जिः कलरेन कु मार ॥ वर्ष ম্যান্ডুছে রক্তে স্থাপ্য ভদ্যসন छथा। महमुक्तिः भाउषातः शिविः পারণ কৃত ॥ তেন ত্বা মভিষিকা-মি পাৰমান্য: পুনম্ভ তে। ভগস্ত ব কণো রাজা ভগ• সূর্য্যো বৃহস্পতি:।। छग मिन्तु क बायू क छग नश्चर्या **इम्:। य**ख कार नूको जागाः भीः मा यह मूर्वि । यहार कर्तरा ক্লক্ষ্যেরাপ স্তৎ মুম্ভ তে সদা স্থাত স্থ স্বার্যপ•ত্তৈল শুবেন্টেডয়রেণ ভ ॥ जुल्यागृष्कि ज्ञान् बत्यान नि গৃহ্চ।। মিডক সংমিত কৈব छथा भानकहे कहाः । स्याखा হাজপুত্রা শেতভ্যন্তে স্বাহা সমরি-**ि** ।। मन्ताहरुव्राय मूर्ल जना নাভীয্য সর্থা:। ক্তাক্তাণ স্তপু **जाः " श्वा** श्वा निष्य । श्वा চিত্র• সুগন্ধিঞ্ সুরাঞ্চ ত্রিবিধা মপি । मूनकः भूतिका भूभा खरेथरेवद्रश्ख

काः भुकः॥ पवि भारम ममक ७५ পিষ্ট সমোদক । এতান্ সরানুপা-হত্য ভ্ৰো ক্রা ততঃ শির:॥ অ-ধিকা মুপভিষ্ঠেচ দদ্যাদর্য্য কৃতাঞ্জ-निः। मूर्वा मयगशुरिक्षण भूधक्रम् छिः রম্ভত:।। কৃত স্বস্ত্যমন চৈৰ পুৰ্থেব-দ্বিকাণ সতীণ। ৰূপণ দেহি যশো-(रहि ७१॰ ७१९७ (रहि स्न॥ नुधान् (महि निय° (महि अर्बकामा॰ **ण्ड (रिह्) (स । द्राञ्चणान् (ভाइ) एट्** नाम्हार मृङ्गवज्ञानुरन्तरानः ॥ वज्र यूपा खात्रा परिहासामा भूका गुरुश ख्या । (भूयः कर्म्य कवः विन्तार **जू**र्य) हिन द्राज: उथा ॥ ইতি शाक्राउ २०० **व्यव**धायः ॥ 🗱 ॥ व्यथ भागणा-মজ্রা:। পঞ্চান্তক্ শশিধর বীক্স গণপতে বিদু:। পঞ্চান্তকো গকার: **ংখ্যানন্ত গণেশ শব্দে দু∂্যু• ৷ অস্য** পুরশ্চরণ চত্ত্রক্ষরপ:।। 🕸।। অপ ্মহাগণপতিমন্তঃ। নিবন্ধে। 🗐 🜱-ক্তি মার ভূ বিমু বীজানি পুথন বদেৎ ছেন্ত গণপতি পশ্চাৎ বরান্তে বর-म॰ भमः ॥ डेकु। मईकनः म श्ख वन नान्य टेह्रयः। यञ्चादिः मञ्जू **রোय॰ তারাদে**।। सन् श्रीतिष्टः।। जू-वीक्रमारः। मृण्डिश ना मानी विन्तू যুক্ত ভুবীজনীধিত। মৃতি গ্ৰারঃ।

**सा॰ज॰ लकात्रः।।कः।। व्यज्ञः ध्रानः।**न षत्र न्न मार्थ मीनाः मार्त्रिक् द्र माप्र्यो १ उद्योहि (योज भर्यप्रः सम्प्रसाक्ष **टमविज•ा। अन्तात्र शांत्रिका**ठानि कन्नवृक नडावनः। উक्त तज्ञहा-বাভি রক্ণীকৃত ভুতল। উদ্যদি মকরেন্দুভ্যা মুদ্ভাবিত দিগন্তর।।। ভাষ্য মধ্যে পারিজাত নব রত্নম্য ম্মরেং.। প্রতুভি: সেবিত বছি রনি 🎮 • পুীতি বর্জন ।। তস্যাবস্তান্মহা-भीछे द्रांहरङ माङ्काबुर्छ । यह কোণাম্ব ক্রিকোণস্থ নহাগণগতিং व्याद्वर ॥ एखीन्द्रावन भिन्द्रुष्ठ भक्त हाय कित्वक द्रमाना लिक्ट निष्या जनग्रद्या साङ्ख्या महरू। বীজাপুর গদা ধনু জ্রিশিথ্যুক্ চক্রা-ব্লুপালে। পল ব্ৰিছাগু স্ববিষাণ গণ্ড क्लमान् इरेड ईइड॰ ভड़ा।। गख लापि गलकान भूत्रवालम्यानमान् । बिद्रकान् कर्नजालाज्याः वाद्रयसः बुरु मुक्तः॥ कदागु ष्ठमानिका स ख्रुबकु विनिःम्रेंजः। রত্নबेर्यः श्रीत युष्ठः जायकः सम् विख्वाः ॥ वानिकः মুঙ্গটোপেত• রহাভরণ ভূ'বভ-। অস্য প্র চরণ চতুর্লফ্রপ: ॥ 🗱 🛚 । অপিচ। শক্তিকৃত্ব নিজ বীজ ম रागननिक बरहर । एड मधि दध् প্রোক্তো মন্তোয় ভাদপাক্ষর: II व्यम् ब्रानः। मुकालोद्रः सम्गतः मुथ हम्पुरूष जित्नज इरेड: बीरेय र्षवञ मद्रविन्दृाक्ष्णो द्वद्वक्षसः। यः करायाः गर्रामबक्त उक्कानधि-গাণে দেঁব্যা যোনৌ বিনিহিত করণ রত্রমৌলি॰ ভলামি। অস্য প্রক্ষ-ा वक्षा ।। क्षा वजा खत्र । चक्रि क्ष निक वीख वर्णमानय ठेवयः। ভারাদ্যো মনুরাখ্যাতোক্দুসংখ্যা-क्रवादिङः॥ यम् धानः। इत्डि র্বিভূত নিক্ষণ্ড বরদৌ পাশান্তুশৌ **शृक्षद्र रशृक्षेत्रशृमसावद्राक्ट् सनरा** लिक्षे धृतागु ग्ण्मा। महामा**र**हा वि. ध् अञ्जूषा विनयनः हन्सु। ऋंह्छ । कवा রক্ত• হন্তিমূখ• মরামি সতত• ভো-গাতিলোল বিভু ॥ অস্য পুরশ্চ-त्र**ाः लक्**ञरक**णः॥ क्षः। व्यथ** (ङ्ब्रप মত্র:। স চ উকার যুক্তো গকার: স্বিন্দ: প্রাবাদি নমোন্ত শচতুরক্ষ-ब्रः। विरक्षा। **প**ঞ্চান্তকে। विन्तूगुरका दाम्दर्ग विज्विज्ः। जात्रानि क्रया-खार<sup>,</sup> (इंड्स बनु ब्रीबिज:॥ठजूर्वर्ग-ব্যানে নৃণা॰ চজু ৰগ ফলপুদ:। অস্ত ध्यानः। युक्ता काक्षम नील करन्युः ग्न हारिय जित्वजादिरे नागारेमा ইরিবাছন শশিধর হেরম মর্কপু-

বিনাশঃ

विनष्टः। ७८ मर्गापः

छ। मृश्र मान मजी जिल्लामक ब्र-দান্টক্ণ শিরোকাগ্রিকাণ নালাণ মুদ্দর মন্তুশ তিশিপক দোর্ভি र्प्रथान कर्जा। व्यग्र मुब्रम्हजन বিলক্ষ সংখ্যক্ষসং॥ জ্ঞা সঞ্জা-छत्र । ग॰ किशु भुआहमार इए । তথাচ निदक्षि। সম্বর্ভকো নেত্র यूज: পাर्त्धा वह्यामत्न क्षिजः। भुजारनाय क्षाञः ववीकात्। र भाक्षतः।। यत्र। श्रावः। श्रामास्-भी क्यून**ा॰ विवागः** एथ्ट सम् তাহিত বীজনুর: ॥ রক্ত ব্রিনেল खन**ानु भोषा शाद्वाङ्क**ला रू ভিমুখে। ২বতাম:। অস্য পুরশ্চ রণ वक्षञभः॥ 🚓 ॥ অথ হরি-मागराण मजः। शकाङ्का ध्वा সংস্থে। বিন্দু ভূষিত মন্তক:। এ মা-ক্রাে মহামস্ত: সর্বকান ফনপু-मः॥ श्रान्छ। **र**बिम्। छ॰ ठञ्बाङ्॰ राबिनुवनन विज्ञु । शामाज्ञम ध्वः (तदः (यातकः मन्डाम्ब हे।। আন্য শুরুক্রণ চতুর্ক্রণ: । ইতি ভজ্রসার: ॥ গক্ডপন্নী। ইতি विनाशिका द्धी

भद्याना ॥

**त्रा**क्षनिर्घक्षः ॥

ओ

विनाक्श

ত্রিগর্ণিকা। ইতি

। स्वर्णन २। इंड/नद्रः ॥ इन्हें ३ । যথা। এষা ঘোরতনা সন্ন্যালোক ছশুইকরী বিভো! ইতি শ্রীভাগ-वंड• ॥ इक्षुण्डिज्यारं दिनाः वर्ज्य 🗷 🗟 🥮 थद्रचानी ॥ **बि विनामकर्डा।** वि প्रवंक नमधाउन नंक পুত্যयन बिश्रदः ॥ বিনাশী ত্রি বিনাশকরণশীল:। वि প्रवे नण धाउ। विंन् भुजायन विज्ञवः ॥ বিনাশোলুখ জি পঞ্চাইতামরঃ ॥ बाष्पान्य ७ ॥ বিনালক: ত্রি গতনানিক:।ইভি ह है। इंबर । বিনাছ: প্ কুপানন পিধানক:। इंडि भद्रज्ञावनी ॥ ेरेचीलिङः। ३७ ত্রি বিনিলুঃ भवगाना ॥ निष्प्राविष्ठण ॥ विनिमुद्ध की भुरवाय:। इंडि रहम-**हन्मुः ॥ निमात्र हि उद्धः ॥** विनिषाउः पू॰ निषाउः॥रेपवा-षिवात्रमन । इंडि स्वितनी ॥ अवः मानः। इंडि (इमहन्पुः॥ বিনিন্য: প্ পরিদান । পুতি-मान । इंडिमान द्वावनी ॥ वसकः

। इंडि भद्रभावा ॥ यथा। विकरेष-र्णाः विनिमरेष मंद्या (मानाः मथारः क । यु उ र ठान्मु (यग अर्थ) विश्व मा-ক্ষাৰধী ভাবে 🔡 ইতি শাবশ্যিত্ত ভতুপ্ত গোভিলবচন ।। ্বিনিযোগ: পু॰ ফলেমপ্ণ। ইতি (र्भ जन्मुः ॥ विनियाजनः। यथा । অনেদেন্ত কর্ত্ব্য বিনিযোগ: প্র-कीर्बिजः। ইত্যাহ্নিকতৰু ॥ विनियाजिङः जि दिनियुक्तः। विनि পূৰ্ব ঞান্ত যুদ্ধ খাতো: ক পুতায়েন विश्वमः ॥ বিনিধ্ত: তি দূরবছ্যাচলিত:। যথা। ততো দেবা বিনিধ্ভা ভুঞ্চ-রাজ্যা: পরাজিতা:। হৃতাবিকারা স্ত্রিদশা স্তাভ্যাণ সর্বে নিরাক্ডা: ॥इंडि मार्क(७:११६वीमाराजाऽ॥ विनिर्वरः भू नाष्ट्रभगविष्णयः। यथा। भरना मञ्जा ७था भारना गरहा यानक वीर्यावान् । विनिर्द्धशानयः रैक्टर इंग्सा नाजायला द्यः॥ भू ভূশ্চেতি সমাখ্যাতা: সাধ্যা: দা-দশ পৌৰ্বি হাঃ। ইতি বহিপুৱাণে कानाः भीयवः मः।। खरत्र विख्या বিনিবৃঁত্ত: ত্রি সমাগু:। নিষ্ণুম:। वि निद्र्भृईक व्उधाराः क भु-७)(यन निश्चम: ॥

বিনিগ্ত: ত্রি নিবৃত্তিবিশিষ্ঠ: 1 काष्टः। निव्रष्टः। वि नि भ्रवेक वृष्ठ থাতো: ক্ত পুত্যবেন নিষ্ণম:।। विनिष्ट जि विनद्वेः। वि नि शृर्वक হনধাতো: ক প্ত্যায়ন নিয়ম:॥ বিনিজিপ্ত: ত্রি বিনিজেপাশ্য:। পরিত্যক্ত:৷ বি নি পূর্বক ক্ষিপধা-ভো: ক্ত পুত্যযেন নিয়ম: ॥ विनोज: जि विनयान्निज:।विनयह শান্তভ: म'काद्र: ইन्त्यियया वा । **७९ भर्यायः। निङ्ठः २ भृभि्ठः** क । ইত্যমর ভরতৌ ॥ क्रिट्टिन्प्रः॥ অপনীতঃ। হৃতঃ॥ নিভূতঃ। ইতি ध्यपिनीकात्र (स्यव्यक्तान्ते।। व्यिधः। हेड।हर्मादाः॥ क्उर ७:। हेडि ग्रिडि:॥ বিনীতঃ পু॰ সুবহাখঃ। তৎপর্য্যা-यः। नाष्वाशी २ । इंडापद्राः॥ जुष्टेवारुवणीलकः १। इंडि मदः इञ्जावनी ॥ यशिक्। इंडि स्मिनी ॥ দমনকৰুখা: ॥ শিক্ষিতবৃষ্তা: रि:। इंडि द्राजनिर्धिः॥ বিনীভক পু क्ली विनीভক। পর-ম্পরাবাহন । ইত্যমর টাকাযা। बादमञ्जे ।। विनीयः भू॰ दन्ः। ই छ मुखरवाय-व्याक्त्रणः ॥ नानः। देखि निषासः কৌনুদী।। বিনেতা পূ॰ দেশকঃ।। বাজা। ইভিনেদিনী।।

বিনেযঃ ত্রি নেতব্য: । বি প্র্রনী খাতো র্য: পুত্যংঘন নিম্নম: ॥

কৌতৃহল•। ইতি वित्रामः di. **হ্লাব্ধ: ।। ক্রীডা । ই**তি ভূরি शुर्यागः ॥ चालिक्नविर्णवः । ব্দলক্ষণ ৰূপা। নায়কে। নাধিকা। या मिक्किनशामः दामशाम्या स **ब्रद्धारहरण चुरक्षिणशास्य वाग** পাৰ্যা নাযিকা ম্থাদেশে নিখাণ্ वक्ति वक्तः ७ ७ ७४ मञ् प्रायमः শ্লিষতি ভং। ইতি কান শাস্ত্রণ। त्राजगृहितत्ययः। यथा। नीधि जता **রাজ হস্তা: পুসরে** ছৌ পুডিজিটো: वितार वर बाजानि जिल्ला का के **ছ**ব॰ ভবে< ॥ ইভি ৰুক্তিকল্ভক: शाचानरेनाळ गृहान् वरकः। (अधाः লকণ মগুডঃ। সনন্দঃ সর্বতোভ (पुः) ভবের নান্দীন্থ তথা। বি (नामक विवानक विकरण विवन छथा। त्रकः किल र्जाया वीत्रा দ্বাদীশতে পুকীর্ত্তি হা:॥ ইতি ভ-বিষ্যোত্তরপুরাণ ॥

विन्तुः भू बनक्ता। उटभर्यायः । भृष्ट २ भृष्ठः ० विभुद्धे ८।

है जा भवः ॥ भ्वष्ठि व विभू है ७। ইতি ভট্টীকা।। হয়ক্ষভবিশেষ:।। . ভাবোমাধা ।। ৰূপকার্থপুকৃতি: । ইতি মেদিনী॥ জ্ঞানশীল:। ইতি मक्तद्वावनी।। अनुवादः। यथा। विन्मू विवन्स् भाः वो वार्गे कमाम् ৰী সংজ্ঞৌ স্তঃ। ইতি মুধ্বনোৰ ব্যা-করণ।। অপিচ। শিধো বহি সমা-যু:ক্ত। বানাঞ্জি বিন্দু ভূবিতঃ । **এ**-কাক্ষরে। মহানস্তঃ শ্রীস্র্য্স্য পু-কীৰ্ত্তিত:॥ ইতি সূৰ্য্যক্ৰচণ॥ 🛊 ॥ विन्तू ५ १ वि यथः । महिनानमः ति ज्वाद्य भ एकाद्य **भद्रासम्बद्धाद्य ।** वातीष्ट्रांक उरका नामा नामा विन्तू भग् छतः।। ইতি मात्रनाधिन(क) भ)नः।। यभिष्ठ। यामीषि**न्तृ स**ः < इ: नारत नानाह कि: अमुख्या। भारक या महिलाभी हिंदू था अहमा-কলা।। নাদালৈর সমুৎগরো **অর্জ**-विन्तू र्गरहश्वति । अपन्तं जिउर वि-म्मृत्न्रा उन्ने अनंश्रुणी ॥ इंडि बांद्वकाउट्य > भटेनः ॥ दिनर् র্নাদো বীজ মিতি তস্য ভেদা: স মীরিতা:। বিন্যু: শিবাত্মকো বী-कः मुक्ति नीव छाया प्रियः॥ मगकः ষ: সন্থ্যাত: সর্গাস বিশারদৈ: । इंडि माद्रपांडियकः ॥ व्यन्धः ।

বিন্দু: শিবাস্থাক তথ্য বীজ্ঞ শক্ত্যা-ত্মক মৃত । তবো বোগে ভবেল্লাদ ভাভ্যো জাতা জিশক্ত্য: ॥ ইতি ক্রিবাসার: ॥

विन्तः विः छाउ। हेरुभितः॥ - भाराहरुक्षग्णावः॥(विन्डवऽः - । हेरि भयत्रद्वावनी॥

विन्मुव्यकः पुर स्गरज्ञतः। इंडि णव्यक्षावन्ती ॥

বিন্দুছাল ল্লী ছন্তিশুণ্ডোপরি-বিচিত্রবিন্দুসন্হ:। ইতি ছেন-চন্দু:॥

निमुबान कः द्वी गजन प्रश्वादिः हिन्दु विम्नु न न्द्रः । एट अर्थ प्रश्वः । निमुकः २ । इंड प्रमुक्तः ।। निमुक्तः ।। खाउँ वा निम्नु व्यक्तः । इति वा वा निम्नु व्यक्तः ।।

বিন্দু ভক্তঃ পুণ অক্ষ:। ইতি হারা-বলী ।। তুরস্ক:। যথা। বিন্দু ভক্তঃ পুনান্ শারিকলকে চ তুর স্ক্রে। ইতি প্রগাধ্বাদৌ স্নে-দিনী ।।

बिन्नृभधः भू॰ जूर्बर्कः। ইতি ब्रह्मावा॥

বিন্দুরেথক: প্ পক্ষিভেদ:। ইতি শুদ্চন্দুকা॥

विन्तु गद्रः द्वा मद्मावद्रविष्णयः । स्था । ष्या गुज्जद्भग देकलामः निवः मादी विवि गिति । गोत्रस भई उ শুেষ্ট হরিতালময় পুতি ॥ হি-इग्र मृत्रः मुमहान् मिरव्योवधिम-বোগিরি:। তস্য পাদে মহদ্বিয়ং नतः काक्षनम म छ ।। त्रमाः विन्तृ-সরো নান যত্র রাজা ভগীরথ:।গ-कार्थि म उ दावर्षि क्वाम दङ्गाः ननाः॥ रिवाः यामाञ्जि स्म भूर्व গলাভোয় পরিপ্লভা:। ভত্ত বি-नथगा (रवी नुषमञ्ज नुष्ठिष्ठिजा।। সোমপাদাৎ পুস্তা সা সগুৰা পুভিভন্ধতে। যুপা মণিম্যা ভন চিত্ৰয়ক হিরপ্রবাং।। তরেই। জ-তুভি: সিদ্ধ: শত্র: সূরগণৈ: সহ: । पिरान्धाराभथ खब नक्षवाराष्ठ মণ্ডল ।। দৃশ্যতে ভাষর। রাভৌ (रवी जिल्ला जुना। जन्दीकः দিবপ্থৈৰ ভাৰবিত্বা ভৰণ গভাঃ॥ ভাষ্য স্বাঙ্কে প্ৰিভা সাক্ষা (राग भारता। जन्मा (य विन्स्तः কেচিৎ ফুকাষা: পতিতা ভূবি॥ क् उच्च रेड विन्तु रुद्र खरडा विन्तु-नद्रः स्ड॰। इंडि स्टरिंग्र २०) व्यव्यायः ॥

বিদ্ধপত্রী জ্বাপহা। বেল:
শুঁটা ইভি ভাষা। ইভি শদচন্দ্রিকা॥

दिक्षमः भू॰ हन्दुः। ইতি बिकाए (मयः॥

বিদ্ধাঃ পু<sup>•</sup> গর্বভবিশেষ:। ইত্য-भद्रः ॥ वराषः । इंडि (मिनी ॥∰॥ বিদ্যাপরত্স্য নিমুশৃস্কারণ য থা। নারদ উবাচ। কিমর্থ মৃদু• ভগবানগন্ত্য তা নিমুশ্রণ কৃত-वान् महर्षिः । करिय वृष्ठ (कन ह-কারণেন ন ভদ্বদয়াখিল সত্তৃত্তে।। পুলস্ত্য উবাচ। পুরা হি বিন্ধ্যেন দিবাকরস্য গতি মিক্দ্বা গগনেচ রস্য। রবি শুত: সম্ভেব• সমেত্য হোমাবসানে বচন বভাবে॥ স भागाजाङ्क विवर्षे जाः। स्कः ञ्च मयुष्कत्रपः स्नीन्त्। पत्र पानः মম ব্যানীবিত চরামি যেন ত্রি-**मिर्द जुनिवृज्धः ॥ ইथः मिर्दाकद्र** ৰচো গুণসঙ্গযোগি শুন্ধা তদা কলসজো বচন বভাষে। দান দদামি তব যন্ত্ৰ-সাত্মভীষ্টণ নাথী भूगां विश्वाया सम किंग्डाम व ॥ শুরা বচে। মৃত্যবং কলসোভ্রস্ত প্রাহ পুভুঃ কর পুটি পুণিধায় মৃদ্ধি । এবোদ্য মে সিরিবর: পুরুণদ্ধি भागः विक्षामा निम्नकद्राप जगवान् যতম।। ইতি রবিবচনাদুবাচ হে-্ষ্ৰনা কৃত নিতি তৰি ন্যা হি

নীচ শৃঙ্গণ। তব কিরণ ক্রিতো ভ-বিষ্যতীতি মহীধ্রো মম হি শরণ সমাগতস্য কা ব্যথা তে ॥ ইত্যেব गृङ्ग कनामाज्यस मृर्यप्रक मःस्य বিনম্য ভক্ত্যা। জগাম সংভ্যন্ত্য হি म् ७कः वि विक्याहलः वृक्षवभू संह-र्विः ॥ गद्या वहः भाह मृति संहोधः यास्त्र महाञीर्थवद्गः मुनुगुः । तृ-জোপ্যশক্তন্ষ তবাধিরোচ্ ওমা-फ्रवान् नीठ उरत्रास्त्र **मर्गः ॥ ই**ত্যে<del>द</del>-भूकि। भूनिमखस्मन म नीहम्ब सुः ख्दन् मही थुः । अभाकमहानि म-হ্যিমুখ্য: প্রোল্লন্ত্র্য বিদ্ধ্যুণ দ্বিস ष्टाङ् रे**ननः** ॥ रातम ब्राम विकास বুলামি মহাশুম ধৌতবপু: সূতী-र्थाए। जुला न उत्ति कृत् दक्षि उत्रुक् ন চেৎ শশ্চিষ্ঠেছ্ নুৰক্ষ্যা তে ॥ ইত্যেব মুজ্ব। ভগতান্ জগান দি**শ**• म यानी महमाध्यीकः। आक्रम् তক্তো স হি তাং ভদাশাং কালে বু-कांगाब यहा सुनीनम् ॥ उबानुन॰ রন্যভর হি কৃত্বা সংশৃদ্ধ জাধুনদ ভোরণান্ত । ভত্রাথ নিঃক্ষিপ্য বিদ-র্ভ পুত্রী স্বমাশুন সৌন্য মূপার গান।। খভাবৃতৌ কার্য্যপরে। হুগ-স্ত্যে নিভ্যুণ তদা স্বাশুম মাবসংসঃ । শেষঞ্চ কাল। স হি দণ্ডকন্থ তপ

শচারামিত কাভিনাম্নি:॥ বি-ব্যোপি দৃষ্ট্ৰাথগনে ম**হাশুন বৃদ্ধি** ন যাত্যের ভরাজ্যহর্ষে:।। নাসে নিবৃত্তে **୧**ভিনতিং নিধাৰ স স•-স্থিতো নীচতরাগুশ্স:। এব ত্বগ ख्यान महाहलन्तुः म नौहण्या-হি ক্তো মহর্ষ।। তদ্যোদ্ধ শ্বে মুনি স•স্তুতা সা দুর্গা স্থিতা দানব শাসনার্থে। দেবাক সিদ্ধাক ন-হোরগাশ্চ বিদ্যাধরা ভূতগণাশ্চ সর্বে। সর্বাপ্পরোভি: সহিতা দি-বানিশ॰ কাভ্যায়নী॰ ভজু রপেভ-শোকা:। ইতি বামনপুরাণেদেবী-মাহাত্ম্যে ১৮ অধ্যায়: ॥ 🕸 ॥ আ-ৰ্য্যাবৰ্ত্ত: লুণ্যভূমি ম্ব্যুণ বিশ্ব্য হিন মাগধো:। ইত্যমর:॥ বিদ্যাস্য পশ্চিমে ভাগে ম**ং**স্ডুক্ পতি<sup>.</sup> তো ভবেৎ। ইতি প্রাচীনা:॥ विकारक्षेः भू॰ व्याखामूनिः। ইঙি ত্রিকাওশেষ: ॥ বিদ্ধ্যবাসা<sup>ৰ</sup> পু• ব্যাডিমূনি:।ইতি (इग्ठन्मुः॥ विकायामिनो <u>जी</u> पूर्णायथा। जः হ্মাছে পি তা পৃহ বিদ্ধা বেগা-ব্দেগান হ। তত্র গত্বা তথোবাচ

তিপ্তৰাত মহাবনে ॥ প্ৰানানা

भूदि नीय। थ्याञा द्वः विकारवानिः

নী। তত্ৰ স্থাপ্ত হয়ি দেবী দত্ত্বা **সি·হক্ষ** বাহন·॥ভবানরারিহজ্ঞী-তি शुक्ता **मर्ग ग**वाश्च याए । ইडि वामत्न ७) व्यथुगयः ॥ 🕸 ॥ व्यन्तुह ঘোরো মহাভট:। অদ্যাপি তক্র সাবাসা তেন সা বিদ্যাবাসিনী ॥ ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ অধ্যাयः॥ ব্যাডিমুনি:। ইতি विकार्यः भू क्रोध्यः ॥ বিষ্ণ্য জী লবলীবৃষ্ণ:।ইভিমে-দিনী।। অুটি:। এলাচি ইতি ভাষা । इंडि इ्मिटन्युः॥ विक्रावनी खो বাণরাজনাতা। ইতি পুরাণ ॥ विक्यावनी भू यः भू॰ वागद्राजः। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥ विक्यावनी मुड: বাণরাজ: 1 4. ইতি জটাধর: ॥ विठादिञ: ॥ शासः । বিখ: ত্রি **इे**ड)मद्रः ॥ ज्हाउः ॥ १५७: । ইতি বিশ্ব: ॥ विनाउः वि क्ठविनामः। यथा। সদুব্যা শুণগুদ্ধিতা সূকৃতিনা স্থক্ষণা• জ্ঞাপিকা স্থ্যানান্য বিশেষ নিত্য নিলিতা ভাব পুক-

र्षाञ्ज्वना। विस्था वंकनि विधना

কৃতিনা সিদ্ধান্ত নুকাবলী বিন্য স্তা মনসোমূদ বৈতনুতা সংঘ্ ক্তিরে-বা চির ।।ইতিসিদ্ধান্ত নুকাবলী।। বিন্যাক: পুণ বিদ্ধান্ত নাতি যান ইতি ভাষা। ইতি শন্দ-চিন্দুকা।।

পু॰ স্থাপন•11 রচন•1 विन्यानः गथा। ज्ञानागरव। रेक्टरव ज्। ঐককবৰ্ণ মুলার্য্য মূলাধারাছিরো **२** छक्। নমোন্ত নিতি বিন্যাস আন্তর: পরিকীর্ত্তিত:॥ অপিচ। **७गान्यका नरनात्वा वा न**दिन्ह र्विन्मु विर्क्षि**ः। भक्षामद**र्ग विन्धाः স: ক্রমাদুক্তো মনীবিভি: ।। ইতি ভউ:। ইতি ওন্ত্রসার:॥ অন্য । शृष्ट्य निश्विनाया विद्धः रया न ह मखबर । विणुक्त ही तक न्यात्मा दिएवरः जन्दनाभद्रि॥ ७-न मर्दाणि नण्डि चित्रिष्टानि स्रो-ভূজাণ ৷ ইতিযুক্তিকল্প তক্ষ: ৷৷ কিঞ্চ । তথা কবিত্তথা কিন্তা তথা ব্নিত<sub>ি</sub> হাচ কিং। পদবিন্যাসমাত্রেণ ব্যা নাপজ্ত यनः॥ ইত্যুক্তট:॥

বিপ ক কেপে। ইতি কবিকল্প-জনঃ ॥ ক বেপথতি । ইতি দুর্গা-দানঃ ॥

বিপঞ্চিকা জী বীণা।ইভিশ্ব-

बद्भावनी ॥ জ্রী বীণা। ইত্যমর: ॥ विशक्षी 'কেলি:। ইতি মেদিনী ॥ বিক্ৰথ:। ইত্যনর:॥ বিপণি: পু জ্রী পণ্যবিক্রয়শালা। **ই** ७ इलायुष: ॥ २ छे: । ইভ্যান্য ॥ বিক্রযার্থ পুসারিত নানাদ্ব্যাযাণ বণিগ্ৰীথ্যা বাণিযাবিখী ইতি বা-জার ইতিচ খ্যাত্যয়া নিতি কে-চিৎ।। হউনগুপ:। ইভি েচিৎ হউমধ্যন্ত পণ্যবিক্রব্বীথী ইতি কেচিৎ। ইতি ভরত:॥ তৎ-পर्यायः। भगुवी थिका २। इंड्र-गतः ॥ जालाः ७ लगुवीयी 8 পণ্য ৫। ইতি ব্লভদ:।। নিষ্দ্যা ৬ বণিক্পথ । ইত্যনরদত্তঃ।। বিপণ ৮ বীথী ৯ ৷ ইতি কোষঃ॥ नियम्। विश्वितः श्वार्वीशः ज्ञा-श्री खथा। श्रीदिक्यभावाया॰ ভ্বেদেত চুত্ইব াা ইতি শব-द्रष्टावनी ॥ विभिनः भगुवीधाः ভবেদাপণ পণ্যবো: 1 ইতি ম্-मिनी ॥

বিপণী পু• বণিক্ ! ইতি জটা-ধর: ॥ বিপণী স্ত্রী ৼউ: । ইতি দ্বিল্প-

(कावः॥

वागए। विभए। বিপত্তি: जी ইত্যমুর: 11 যাত্তনা 1 ইতি মেদিনী ।। যথা। ভৃগুৰু বাচ। শুক্তং সৰ্বং সূব-**শে**ष्ठं भारतारी र्वहन• मृत्। न काउ-রোহি নীতিজ্ঞো বিপত্তৌ চ কদা-চন: ॥ সম্পত্তি র্ব। বিপত্তি র্ব। নশ্ব-রা স্থাক্রিণী। পূর্ষক্র্যাযভা চ ষ্বৰ কৰা তথাে রপি।।ইতি বৃক্ষ रेवदर्ख नुकृष्डिथए७ ०८ व्यव्यायः ।। বিনাশ:। यथा। यित्रानाशास्त्र ভানৌ বিপত্তি যাত্তি মানবা: । তেষা তত্রৈব কর্ত্রব্যা পি ওদালো-मक किया।। ইতি भवयात्र ठबु॰।। বিপথ: পু॰ নিন্দিতপথ:। তৎ-পর্য্যায়ঃ। ব্যধ্বঃ২ দুরধ্বঃ ৩ করপ্ব। ৪ কাপথ: ৫ ৷ ইড্যারঃ ৷৷ স্ব পথ: ৬ षाज्यभर्थः १ व्यथमिष्ठदेवा ५। इ**ि नप**त्रज्ञावली ॥

विभए के खी दिश्व । इंड अबड़ा। विभए की दिश्य । इंड अबड़ी का या बावमुक्ट ॥

বিপলঃ ত্রি বিপদাকাস্তঃ। ইতি
নেদিনী। নষ্টঃ। ইতি শান্রত্বা
নলী।।

বিপন্ন: পূ॰ সর্প:। ইভিনেদিনী।। বিপন্নীত: ত্রি বিপর্য্য:। উলট। ইতি ভাষা। তৎ পর্যায়:। পুরিসব্য: ২ পুতিক্ল: ৩ অপনব্য:
৪ অপষ্ট: ৫ বিলোমক: ৬। ইতি
ভটাধর: ॥ পুসব্য: ৭ পরাচীন
৮ পুতীপ: ৯। ইতি শব্রত্নাবলী ॥ বোডশবল্লার্গত দশমবল্ধ: । যথা । পাদনেক মুরৌ
ক্রা দ্বিতীয়া কচিসান্ত্রা । আন
বিদ্যান্ত্রা বিপরীতন্ত্র
বল্ধক:॥ ইতি রতিমঞ্জরী ॥ আপিচ। পাদনেক মুরৌক্রা দ্বিতীযাংক্রমান্ত্রা ব্যানিন্যা: কামবেৎ. কামী বৃদ্ধ: ম্যাদ্বিপরীতক্তঃ॥
ইতি অরদীলিকা॥

বিপরীতা জ্রী কামূকী।ই**তি ধন**-প্রেম: ॥

বিপর্ণক: প্ পলাশবৃক্ষ:। ইতি
শব্চনিদুকা।।

বিপর্য্য: পু ব্যক্তিক্রন:। তৎপর্য্যয়:। ব্যক্ত্যাসঃ ২ বিপর্য্যাস:
৩ ব্যক্ত্যয়: ৪ । ইত্যনর:।। বিপর্য্যায়: ৫ । ইতি ভরত: ।।

বিপর্য্যায়: পু॰ বিপরীতম্যন• ।

অন্যস্যান্যজ্পগুছ্ণ । ইতি ভরতঃ ।। বিপর্য্যায়ে জল নাস্তি ন

জল রণ্ড পিত্রনোঃ । ইতি সলাচার্য্যকারিকা ॥

বিপর্য্যাস: **পু**• বিপারী**তমাস**ন•। বিপর্য্য:। ইত্যমর:।। विभवाः जि भाषनीयः। विभूतं भ्या<u>र्</u>डा र्य भुडारयन निम्नमः ॥ विश्राणी भू वृद्धाजितः। ইতি হেম-ठन्मुः ॥ বিপশ্চিৎ ত্রি পণ্ডিত:। ইত্যমর:॥ **পু॰ भ**जूः। ইত্যমরः॥ विभाकः भूः भवनः॥(स्रमः॥ कर्म ণো বিসদৃক্ফল। ইতি মেদিনী ॥ পরিণাম: ॥ দুর্গতি:॥ স্বাদু:। ইতি (रुमहन्दुः॥ बाजिः॥ चायूः॥ ভा-গ:। ইতি সমুনাঞ্জলি:।। 🕸 🛭 बाटेरत्रनाधिना रयानाट यमूरमञ्ज রসান্তর । রসানা পরিণানান্তে স বিপাক ইতি মৃত: ॥ ইতি সৃশুত্র: ।। অপিচ। মিপ্ত: কটুণ্চ মধুর মশ্লে। **ংগ্ল: প**চ্যতে রস:। কটু তিক্ত কৰা: यानाः भाकः महार भाषनः कट्टेः ॥ তথাচ বাখুট:। ত্রিধা রসানা• পা-कः म्यार साहत कर्षे काजाकः। श्री-यः भारत वीहिः सान् त्रस्रविभाकः ।। निवाकवाया मञ्जाका। मुठी কটুক মধুর পাকেত্যাদি:।। 🗱 🛭 অথ বিপাকানা গুণাঃ। শ্লেখ্য-কৃন্মধুর: পাকো বাত পিত হরো নত: ৷ অমুন্ত স্কতে পিত্ত বাত

শেষাগদাপহ: ॥ কটু: করোতি
পচন কফ পিত্তঞ্চ নাশ্যেৎ ।
বিশেষ এষ রসতো বিপাকানা
নিদর্শিত:॥ইতি ভাবপুকাশ:॥
বিপাদ্
বিপাদ্
রী বিপাশানদী। ইত্য-

বিপাঠ: পু॰ বাণঃ। ইতি ত্রিকাও; শেষ:।।

विशानिका जी शान्तमाहै:। इंडऽमहः ॥ शुष्ट्र विका । इंडि मदः
माना॥ #।। देशानिकः शानिशान्त
माना॥ #।। देशानिकः शानिशान्त
माना॥ #।। देशानिकः शानिकः शर्थः प्रवानिकः शर्थः प्रवानकः हिङ्॥ विशानिका वाज्यः मान्यका । इंडि
मान्यकदः॥ य्याः महिद्याः॥

বিপাশা ত্রী নদীবিশেব:। ইত্যনর:। পুএশোকাদেব গলে পাশং
বজ্ব। পুবিস্তং বশিষ্ঠং পাশছেদাং
বিপাশিতবতী বিমুক্তপাশং কৃতবতীতি বিপাশাঞি: কল্যাদে রিতি পাশং বিমোচ্যতি ইত্যর্থেঞি:
পচাদিত্বাদন আপাএবং কিপি বিপাট্।ইতিত্তীকাষাং ভরত:।।
গ্লাঃ সিল্লন্দ্যা: সুশীতং লঘু স্বাদু
সর্বাম্যমুং। জলং নির্মালং দীপনং
পাচনঞ্চ পুদ্তে বলং বুদ্ধি মেধা-

বিপৃষ

যুষ্ঞ !! ইডি র জেনির্ঘটঃ !! পাশ-বহির্জাত জি। ইতি ধ্রণিঃ !!

विभिन• ही दशाहे छात्रज्ञः॥ विभूनः बि ह्ह्याहे छात्रज्ञः॥

थगादः। इंडि (निमिनी।।

विश्रुवः शुः (नक्शिक्त्रज्वद्रः। इंडि (निमित्री ॥ स्टान्कः॥ हिमा-हवः। ইंडि ध्रविः॥

विभुनत्रमः भुः हेक्ः। हे जित्कि हराः विभुना खी भृषिते । यार्ग्रहन्तः (छपः । हे छि (इन्डन्द्रः ॥ व्यक्ता

नक्षणानि यंथा। श्रथा। श्रिश्र क श्रना मुश्रमणा क्षय्यक्रभणा ह। गीनुप्रभीनुष्णीक्ष आर्थानीकि

ण्ड नवशार्या। मः बङ्का शनवय नाः पिमः मकनत्या र्वत्या उविक शाहः

। যস্যা স্তা॰ পিঙ্গলনাগো বিপুলা মিতি সমাখ্যাতি॥ পু॰সা॰ কলি

कानवाानश्ङानाः नास्ताभश्ङ ब्रह्मानि । बीर्यं विभूजा नृत्य हर

म्हार (गाविन्हाचा मञ्जूषा ॥ इंडिइल्हामञ्जूषी॥

विश्वामुदा खी शृहकन्या हिङ बाजनिर्धियः॥

বিপূষ: পু॰ নৃঞ্জ:।ইভি নৃষ্বোৰ ব্যাতরণ•॥ ২খা। বসানা• বল্ল শুদ্ধে বিপূৰি: কৃত্যেখলা•। মান বিপুক্

না নজন পিণ্ডা ভা॰ দণ্ডিনী নঞ্জি-নাস্তরা•। ইতি ভটিঃ॥

विश्वातः भू॰ व्यथकातः। उट-भर्यप्रयः। निकातः २। इज्प्रयः॥ थनीकातः। इजि घःभी॥ जितः कातः। ইजि (इस्टन्दः॥

বিপুকার লী ত্লবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘট:॥

বিপূক্ত: ত্রি তিরস্ক্ত:। তৎ প্রায়ায়:। নিক্ত: ২। ইতি হেন চনু:॥

বিপুকৃতিঃ স্ত্রী বিপুকার:। বি পুপূর্বক কৃ থাতোঃ ক্তি পুত্যুদেন নিয়বা॥

णूष्व विश्रयः क्ष्ययनाः। मा विशुक्षः जि म्तः। ই उद्यायूषः॥

विनुव

विशुक्षेकः जि मृतः। ইত্যার:॥ विशुक्तित्तः भूः मृत्रुन्नः। यथा। मृত্তীবাচ। অভবদন্পুনাশ্চ বং শো খ্যাতা মহাসুরা:। विशुक्ति जि भुषाना তে শতং তীবুপর। ক্রমা:॥ ইতি বহি পুরাণে কাশ্য-পীযবংশ:॥

वि**পুতিপ**ভি: द्वी विद्नादः। यथा। পরস্পারণ নন্ধ্যাণাণ স্বার্থবিপুতি-शिव्य । वाकामग्रायाद्यावश्वश्रानः ব্যবহার উদাহত:।। ভাষোত্তর ক্রিয়া সাধ্য সিদ্ধিতি: ক্রমবৃদ্ধি ভি:। আকিপ্ত চত্র•শস্ত চত্রা-দভিধীয়তে ॥ ইতি নিতাক ब्रायाः व्यवहाद्रगाज्का ॥ 🗱 ॥ दिक्ञि:। रथा भूथगास्तार का-ত্যায়নসূত্র। শব্দে ধ্বিপুতিপভি রিতি। পুতিনিছিত দুব্যে শুক্তশ मः প्राकाः। मात्रम्या तृष्का शुः ভিনিধ্যুপাদানা **मदा छत्र नु**र्गा-গে দুৰ্যান্তর বৃদ্ধি পুসঙ্গা । ই ভ্যেকাদশী**ত**ভু° ॥ বিশুভিসার: পু• বিশুভীসার:।

ইত্যনরটাকাষা রাধনুসট: ॥ বিপুতিষিদ্ধ তি নিধিদ্ধ । ইতি স্তি: ॥ বিপুতীসার: পুং অনুতাপ:। ইত্য মর: ॥ ৌকৃত্য: ॥ অনুশ্য: ॥ রোষ:।ইভিমেদিনী ॥ বিশ্দহ: পুং ফলমুলাদিশয়দব্য:

विशुष्यः शृ॰ क्लग्लामिण्यम्बर्

বিলুপুথ: পুণ পলাশক্ষ:।ইতি
কৈচিৎ।। বাহ্মণবল্লভে তি। যথা
। রামণ লক্ষণ প্রক্ষা রযুবর সী:
তাপতিশ সুন্দর । কাহ্মৎ হণ কক্রাম্যণ গুণনিধিশ বিপুপু্যণ ধার্মিকশাইতি রাম্যণ ।।

বিপুৰাণ ল্লী পলাধন । ইতি কেচিৎ।।

বিপুযুক্তঃ ত্রি বিশ্লিষ্ট:। বিভিন্ন:। ইতি কেচিৎ ॥

বিপুষোগঃ পুণ বিপুলন্ত:। ইত্য-মর:॥ বিরংহা বিসংবাদে। বা। ইতি মানী॥ রাগিণো বিছেদ:। ইতি সূত্তি:॥

বিপ্লন্ধ: তি বঞ্জি:।ইতিহেন-চন্দু:॥

বিশুলন্ধ। ত্রী স্বীযাদিনায়িকাভেদ:
। ত্রন্যা লক্ষণ কথা। সংস্কৃত নিকেতনে প্রিমনবলোক্য সমাঙ্গল হুদ্যাবিপুলন্ধ।। অন্যাক্ষেপ্তা নি-রেদ নিশ্বাস স্থীজনোপাল্ড ভ্রম মূর্ছা চিন্তাশুপাতাদ্য:।। স্ক্রা মুধ্বা বিপুলন্ধায়থা। আলীভিঃ শপথৈ

বিপুল इत्तक कभरेंडे: ऋत्छामत्र नीज्या শ্ন্য তত্ত নিরীক্ষ্য বিক্ভিত্যান পুঞ্জিত ন জিতা। ন্যস্তা: কিন্তু ন বোঢ নীরজদৃশা স্ব্যোপকণ্ঠে ক্ষা ভাষ্যভঙ্গ কদম ডম্বর চমৎকার च्या म्हेयः । का भवता विभूवका যথা। সঙ্কেত কেলি গৃহ মেত্য নিরীক্ষ্য শূন্য মেণীদৃশো নিভ্ত नियमिडाधदायाः। श्रकाक्षद्रः व-চন মৰ্ক্ বিকাশি নেত্ৰণ ভাস্ল মৰ্জ कवनीक् उ स्मव जिल्लो ॥ 🗱 ॥ भू-शनु। विभुवका यथा । म्नाः स्छ-গৃহ• নিরীক্ষ্য স্কটিল• বিজ্ঞাত

চেতোভব দুতী নাপি নিবেদিতা नह हती भृष्ठाणि त्या वा उदा। म ট্রো শঙ্কর চন্দুশেখর হর শ্রিকণ্ঠ শ্লিন্ শিবতায়দ্বেতি পরস্ত পক্ষ জদৃশ। ভগস্য চক্রে স্তুতি:।।‡॥ প-त भीया विभुवका यथा। पद्मा विर्यु ভূषक मृष्ट्वि **ठत**भावृह्मह्य बद्धा নদী মঙ্গীকৃত্য ধনান্ধকার পটল• ७२॥ न म्ष्टेः श्रियः। महाभावन যা তথা চ পরি ড: পাথোধরে গ-ৰ্ব্জতি কোধাকান্ত ক্তান্ত মন্ত্ৰম-হিষ ভাষ্যা দৃশৌ যোজিতে ৷৷ #॥ जानाना विश्रुवाका यथा। कशहे-ৰচনভাজাকেনচিদ্বারযোগা নকল

বিপুলা

तिकारमाधीविकका विक्रांजी। ইতি ভর্নি করিন ভূস্বিফিগুড়-क्कू र्रमां विका अन्त ह्नामाकः লিষঞ্জঃ॥ ইতি রসমঞ্জরী॥ विश्रुवायुः शृ॰ विश्वयानः॥ दक्षनः॥ বিপুযোগ:।। বিছেদ:। ইত্যমর:॥ स्कात्रत्रमञ्जनः। यथा। नामात्न्र-, তানি শৃস্থারে কৈশিক: শৃচি কছ্ফু-नः। मञ्जातमा विभुवञ्चक उम्र ভেদ দ্বয়ণ ভবেৎ।। ইতি শব্দরত্না-वली।। मृक्षाङ्गाक्षितः। यथा। যুনো রগুক্তযো ভাবো যুক্তযো র্বাথ या मिथः। ज जीक्षी विक्र नाही ना-

ম্রে: বিজেব: সম্রোগোন্নতিকার-कः। ইञ्राङ्क्ष्णनीवनिनः॥ বিপুলাপ: বিরোধো জি: 1 910 ইত্যমরঃ ।। পরব্চনবিরোধিব্চনা বিপুলাপঃ। অন্যোন্যবিবদন নিতি বাবে । যথা একো বুতে আগতা কল্যাণীতি অন্যোব্রতে নছীতি।

भनवारिश्च। शुक्र्याट्य ॥ म विभुल-

जुवस्थु मह्याज मरेवि उक् मन् नुषाकित्रगविद्य भएना मृगाक्ष्याः। यूरना स्मृङ् बिविषटा वेषरन वज्तुः

তথাভাদা জহার সর্বাননং: ৷ একঃ

সিদ্ধান্তব্রাধ্শরাজি গভাগভানী-তি ॥ विकक्षः भूनात्मा विभूना-

नात्रमुन्दती॥ ७८ भर्यत्रायः। फिम्नः

পঃ ঘঞ। বিরোধে উক্তি বঁচন বিরোধোক্তি: । ইতি ভরত: ॥ তানর্থকবাক্য। ইতি হেনচন্দু:।। বিশুলোভী পু• কি•কিরাতবৃক্ষ:। ইতি রাজনির্ঘট:॥ বিপুশ্রিকা জ্রী দৈবজ্ঞা।ইত্যমরঃ॥ विभियः भुः अभवाषः। उर्भगीः यः। मसुः २ वानीकः ० व्यागः ८। ইতি হেনচন্দুঃ॥ অপিয়ে ত্রি ॥ विशुह्रे श्री विन्तः। इंडापदः॥ বেদপাঠে বিপুৰো মুখনিৰ্গত জল বিন্দবো বুলাবিন্দব উচ্যান্ত। তে-শুদ্ধা:। যথা। মক্ষিকা বিপুষ শ্বা-या (गो द्रायः मूर्य) त्राच्या । त्राह्या ভূৰাযু রগ্নিশ্চ স্পার্শ নেধ্যানি নি-দিশেৎ। ইতি শুধ্বিতত্ত্বে মনুবচন ।। 🕸 ।। আচমনকালে নুথনিগঁত। বিপুষোন উছিষ্টজনিকা:। যথা। (नाहिक्षे: कर्बाङ मूथ्या विभुष्यात्रः नगछि याः। मखरम् अन्तर्भु किञ्चाः স্পাৰ্ল হন্দুচি ভবেং ॥ ই**ভি** কৌর্যো উপরিভাগে ১০ অধ্যায়ঃ।। বিপোষিত: ত্রি পুরাসিতঃ।বি **नु नृ**ईक वमशा**ाः क नु**कुराय

विश्वयः ॥

विश्वतः भृ भद्रञ्जातिष्ठवः। ইতি

२ फनद्रः २। इंड्रागद्रः ॥ वाजकल-ंহ:। ইতি স্বানী ॥ न् वयमान्नु उगिः। বিপ্লাব: বি পূৰ্ব প্লুখাতো ঘঞ পুভাগেৰ निञ्जमः ॥ विश्व है जी विश्व है। विन्युः। इंडा नविकायाः वानामुनः॥ विश्लु ७: बि वामनार्खः। ७८ भर्या-यः। পঞ্জু ३ र राजनी ०। ইতি (इमहन्मुः॥ विकलः जि निर्दर्शकः। छ८ शर्रायः । মোঘ•২ ব্যথ•৩ : ইভিডটাধ্রঃ।। বিফলা স্ত্রী (कड़)। इंडि ब्राज-निघकः॥ विवधः भुः भर्यग्राहातः॥ शर्गः। ইত্যমর:।। পরিত আহিুতে ধনৌ পর্য্যাহারো ধান্যত গুলাদি:। মা र्गः भर्गः (ठो विवरधो वीवरधो ह। বিগভো বধো হস্মাদিতি বিবধী। বধো ছনন গমন মত্ত্ৰতি চ বিব-ধ:। নিপাতনাৎ পক্ষে বে দীর্ঘত্তে ঠীবধশ্চ। ইতি ভরত: ॥ ভাব: । इंडि विश्वामिति।।। বিষয়ঃ পু॰ আনাহরোগঃ।ইত্য-মর:।। অথ তস্য চিকিৎ সা। ত্ল্য कात्र कार्यपुष्ट उपावर्डरती॰ ভরত: ।। রাইাদু।প্রেব: । ইতি

किया । त्यानार क्षिष्ठ क्षेत्र जिल्ला कारिन क्षिण क्षेत्र । विवृद्ध क्षेत्र क

বিবিধ: তি নানাপু হারণ। হথা।
সএকদা বনং গড়া হ জা চ বিবিধান্পশ্ন। নাংসভারণ বছন গেছং
অধিবং গন্ত মূদ্যত:॥ ইতি শিবরাতিবৃত্তকথা ॥

विजूदः भूः स्वः। ইङ्ग्यद्रः ॥ भुष्ठिः। ইতি भिनि ॥ हन्तुः। ইতি स्वायुषः॥

वित्रुषानः भू• व्याष्टार्ग्यः॥ भश्चिः ॥ (दवः। ইতি সাঞ্চিত্তদারোণা-दिवृद्धिः॥

বিবোধঃ পু• অনবধানতা। ইতি কেচিৎ ।। পুৰোধশ্চ ।। বিবোধন° ক্লী পুৰোধন°। যথা।
ত্টাৰ যোগনিদা ভা নেকাগু হৃদযভিতঃ। বিবোধনার্থায় হরে ইরিনেএক্তাল্যা॰॥ ইতি দেবীনাহ্জ্যু॰॥

বিভক্তঃ ত্রি শুগুরিভাগঃ। বিভি मः। পृथक्। यथा। तृङ्ग्या ७:। পিত্রা সহ বিভক্তা যে সাপত্র্যা বা गरहानद्राः। बधनाङाभ्य (य (७वा॰ লিত্তাগহর। ব্র তে ॥ অনীশ: প্রজঃ পিজ্যে ভাড়ভাগে বিভক্ত-জঃ৷ বিভক্তলো বিভাগান্তর গ-র্তাধানেৰ জাতঃ ॥ 🕸 ॥ অপিচ । ব্যাস: ৷ ভাতৃণা• জীৰভো: পিৰো: সহবাসে। বিধীয়তে । ভদভাবে विछ्ळाना धर्म (ख्या विद्रष्ट ।। विज्ञानाः चराज्यस्य दिस्किक-ম্গরণাভ্যাত্র ধ্যত্বৈ ভছ্জি রিত্যর্থ: ।। বিভক্তা **অবিভক্তা বা** সলিভাঃ ভাবরে সমাঃ। একো-হুনীশঃ সর্বত্র দানাধ্যন বিক্রয়ে ॥ অপিচ। দান গুহণ পথম গৃহ-ফেত্র পরিগুহা:। বিভক্তানা পূ-धुक् (ऋगाः भाकवर्षाभन्व)याः॥ নামিত্ব পাতিভাব্যঞ্চ দান গু-হণ মেবচ। বিভক্তা ভ্রাতর: স্ব-যুর্গ নাবিভক্তা: পরশার ।। বেবা

(मठा: किया (नारक शुवर्डा**ड चय**-कुठ: । विভক्তानवगाह्यू (र्लथ्) मः পাঙ্রেণ ভান্।। ইতি নারদ বচ-नानि। 🕬। उथा। 🔄 जूना नथ मण्य-ভ্যো: পিতু: পূত্ৰস্য চৈব হি। পুাতি-ভাব্যমূণ সাক্ষ্যমবিভক্তেন তৎ .म् उ॰ ॥ ইতি राज्जवङ्गुवहन॰॥ 🟶 ॥ ভথা।বিভক্তো য়: পুন: পিতা ভাতা চৈকত্র সংস্থিতঃ। পিতৃব্যেগাথ বা শ্রীত্যা স তু সংসৃষ্ট উচ্যতে॥ ইতি নৃহস্পতিবচনে <u>ৰেষা মেব হি পিতৃ</u> ভুত্ পিত্ৰাদীনা লিতৃ পিতাম-ংগপাজ্জিত দুবেলাব ভক্তব মুৎ-শব্তিঃ সম্ভবতি তএব বিভক্তাঃ সতঃ পরশার প্রত্যা প্রকৃত বি-যম্মধ্ন° ভত্তবাপি ইত্যেকমিন্ কার্য্যে একগৃহিকপত্রণ স্থিতা: जःम्धाः । नद्दनवः क्षाागः धनः স'সৰ্গ মাৰেণ। নাপি বিভক্তানা। श्रीजिপ्रवंगाजिमकान विना॥ #॥ তথা। বরুনা মবিভক্তানাণ ভোগণ रैनव शुराभारयः । इंडि काउप्रायन বচন । তথা । ভাতৃণা মবিভক্তা-ना (मरका धर्मः भुदद्धः । विভाग সতি ধর্মোপি ভবেভেষা পৃথক পৃথক্।। তথা। ভ্রাতৃণা নবিভ

कानाः यमुर्थानः ज्वर नर्। न তত্ৰ ভাগ বিষম পোতা দদ্যাৎ कथकन।। ইতি मन् वहनः।। छ।। उथा। কাত্যাধন:। অবিভক্তে মৃতে পুৰে ভৎ সূত কক্থভাগিন। স্বীঠ জীবন বেন লক্ষ নৈব পিতামহাৎ ॥ লভেতা॰**শ॰ স** পিৰ্যু• চ পিতৃ-ব্যাৎ ভস্য বা স্ভাৎ। তথা। বিষ্টঃ। পিতৃ বিভক্ত। বিভাগানস্ত (द्राष्ट्रभन्नम्) विভागः मृष्टुः ॥ # II অপিচ। অবিভক্ত বিভক্তানা স্থ ল্যানা॰ বসতা॰ সহ। ভূযো দাযবি-ভागः महाहाहजूर्यानिक श्रिकिः॥ ইতি কাত্যাখন ৰচন• ৷৷ অবিভক্তা-ना॰ अहत्य हाः मः मृष्टानाः व। शुन বিভাগে৷ ভাতৃ তৎ সুত তৎ সূত भर्गां अव उरम् अह जूर्था भिवर्सः তে। ইভি। তথা। অবিভদ্দ স্থা-বর• য়ৎ সর্বেধা মেৰ ভজ্ঞাবৎ ৷ বি-**७क्र• इगवद्ग• शाख• नात्मामरिर्याः** ক্ষাচন।। ইতি যনবচন । এতানি व्हनामीन मायङबु शृञ्जनि ॥ 🟶 ॥ অপিচ। অবিভক্তা বিভক্তা বা क्युरः भाषा गरिन्दिकः। भवामु ह ভথান্যত্ৰ নাধিজার: পৃথক্ বিনা ॥ ইতি শুদ্ধিতভু•।।ঞ। অন্যচ।বহুবঃ मु। र्यरा भूधाः निज् द्वकव वामिनः

भार्सवास मङ कृदा (कार्रिश्तेव जुयद कृड•॥ मुत्यान वाविज्ञत्कन मोर्स (द्वेव कृड• ज्ञात्वः । देखि मुक्षिज्ञु•॥

বিভক্ত । পু॰ বিভাগানস্তরণ গ ঠোধানেন জাত: । যথা । বৃহস্প-তি: । পিত্রা সহ বিভক্তা যে সা-পত্ন্যা বা সহোদরা: । জ্বন্যজা-শ্চ যে তেষা' পিতৃ ভাগহরাস্ত তে ।। অনীশ: পূর্বফ্ল: পিত্রেঃ ভাত্-ভাগে বিভক্ত :: । যথা খনে তথপে পি মুক্তা শৌচোদক্রিয়া: ।। ইতি দায়তত্ত্বা।

বিভক্তি: জী বিভাগ:॥ স্যাদি:
ত্যাদিক:। ৰথা। সংখ্যাত্ত্ব্যাপ্য সামান্য: শক্তিমান্ পুত্যবস্ত্ত ব:। সা বিভক্তি দ্বিবা প্রেক্তা সুপ্
ভিডে চেতি পুভেদত:॥ সংখ্যাভাবান্ত্র জাত্যবিছ্য শক্তিমান্য:
পুত্যব: সা বিভক্তি:। সুপ্ ভিড্
ইতি ভেদাদ্বিবা। ইতি শক্ত

विভन्नभैरं वि विভाङ्गः। विভा गरागाः। यथा। यद्ममः भूरगाः कनार्दः भूडकामि उग्र्थामिनिः मरु পণ্ডিভাদিভি न विভन्नभैरः। ইতি দায়ভক্তः॥ ভন্তনাহ্যः। वि भूर्व ভष्णपाठा त्रीय भुउत्रयन निज्ञमः॥

विख्यः भू॰ ध्रनः ॥ (जाकः ॥ वेध्रयं । इडि भिनि ॥ भुख्यानि
विश्वेभः ये श्रमाष्ठर्गं विशेषवर्षः ।
यथा । खिवराभ्द्राणा । रेख्द्रय छेयात । जुङ्किः क्मि भाद्रागाः
अदं वाति विवर्षिं जाः । भुगाः ।
भावता ख्रव वद्यनगा वम्बद्रा ॥
स्था खर्षे। बनाः मद्वं विख्य व वद्रान्ता इडि (ब्राजिख्दुः ॥
विद्या स्री किवरः। हिन्द (व्यावन्सः

বিভা ত্রী কিরণ:। ইতি হেমচন্দু: ।। পুকাশ:।। শোভা। ইতি রাজ-নির্ঘট:।।

বিভাকর: পু॰ স্ঠ্য:।। অক্রফ:।।

চিত্রকর্ফ:। ইত্যমর:।। অগ্নি:।

ইতিমেদিনী।।

বিভাগ: পুণ ভাগ:। অস্য পর্য্যান্থ: অংশশব্দে দুপ্টব্য: ॥ অস্য লাক্ষণ থথা। একদেশোপান্তলৈয়ৰ
ভূহিরণ্যাদাবৃৎপদ্মস্য মন্ত্রস্য বিনিগমনাপুমাণাভাবেন বৈশেষি;
ক ব্যবহারানহঁত্রম অব্যবস্থিতস্য গুটিকাপাতাদিনা ব্যঞ্জন বিভাগ:। বিশেষেণ ভজন মন্ত্রালান্থান বা বিভাগ:। ইতি দাবভাগাঃ। মাঞ্চা অবিহাগো হুর্থস্য

গিত্রাস্য পুত্রৈ র্বত্র পুরুল্পাতে দায ভাগ ইতি পোক্ত তদিবাদপদ बूरियः ॥ इंडि नाजमरण्यः ॥ भूर्व স্থানিস্বন্ধোপরমে সম্মানিশেষাৎ **जब**िक्ता॰ नर्बधन श्रुम्**उम्र स**ञ्मर গুটিকাপাতাদিনা প্রাদেশিক যত্ত্ব ব্যবস্থাপনং বিভাগ: ॥﴿। অপিচ। কাত্যায়ন:। জীব্দ্বিভাগে ভূ পিতা নৈক। পত্ৰা বিশেষ্যেত্। নিৰ্ভাজ-যেৎ নচৈবৈক মক্স্মাৎ কারণ বিনা ॥ 🕸 ॥ উক্তকারণশ্নের ত্নারদঃ। ব্যাধিভ: স্পিডিশ্চিব বিষ্যাস্ক চেত্ৰ:। অব্ধা শাল্রকারী চ ন বিভাগে পিতা পুড়: 11 🕸 🛭 বিসূত্র রজ্ঞায়া মের মাত্রি পিতান্ত্ ধন বিভাগ মাছ বৃহস্পতিঃ। পি-ত্রো রভাবে ভাুতুণা• বি**ভাগ: ন•**্ भूरिक्छ:। गानु निव्राख **त्रक्षति की**-यक्ताविष्यमार्काक्षायनाहाया-স্ক্রাল্যঃ। বিভাগশ্চে**ং গিতা স**র্য্যা-িত্য বিভয়েৎ সূতান্।জ্যেষ্ঠ বা শ্ৰেঠ ভাগেৰ সৰ্বে বা সুগ্ন সনা শি-মঃব্রা অপিচ বেবল:। অবিভক্ত বিভালেদা জলানা বসভা সহ । खरा रायदिकागः महासादकुर्था-দিভি ছিডি:।। বিফু:। পিভৃবিজ লে বিভাগানত্তরাৎশল্প বিভা-

গ• দদ্য রিভি। গোত্র ভাগ বিভা-গার্থে সন্দেহে সমুপস্থিতে। গো এজৈ শাপরিজ্ঞাতে হল সাক্ষিত্ব मर्श्**छ।। ইতি भ**ङ्गवहनः।। ইতি **দা**य ত खुः॥ 🕸 ॥ जानान्य धर्मावहिषा-না মেব বহুনা• পরস্পার বিক্**জ ভ**÷ দ্যাপ্য ধর্ম পুকারেণ পুতিপাদনং হি বিভাগ:। ইতি শুদ্ধবিবেক-**ही काया• औकुक्ष उर्कान ऋषः ॥ नऽ।-**য্মতে চতুর্বি-শতি গুণান্তর্গত গুণ दिष्मयः। स जिविधः। यथा। भदा হেত দ্বিতীঃ স্যাৎ বিভাগো হপি दिया ভरवर । এङकार्याख्य द्या-रन्। घन कर्ष्यान्डवः शबः॥ विचा-গজ তৃতীয়ঃ ম্যাভূতীয়োপি ছিখা ভবেৎ।ছেড্ৰমাত্ৰ বিভাগোণ্থ ছেত্ৰ ছেতু বিভাগজ:।। ইতি ভাষাপার-ছেন:।। 🗱 ॥ বিভক্ত পুভ ः কারণ বিভাগণ নির্পেষ্ডি বিভাগ ইতি এককর্মেতি। উদাহরণস্ত। শ্যেন শৈল বিভাগাদিক পূৰ্বৎ বোধ্য তৃঠীয়ে বিভাগজ: কারণনাত্র বি-ভাগজন্য: কারণাকারণবিভাগজ-ন্যুশ্চতি আদ্য স্তাব্ৎ যত্ৰ কপাল কৰ্ম ভতঃ কপাল্দশ্বিভাগ তঃ-ভো ঘটারম্ভ ক্লংযোগনাশ ভতো ঘটনাশঃ ভত ভেন এক কপাল

विভागिन मकर्यनः कनानम्। (ए-শান্তর বিভাগো জন্যতে তত উত্তর দেশ সংযোগ: ভত: কর্মনাশ ইতি । नठ एक कर्म रेगव कथः (मनास्त्र বিভাগো ন জন্যতে ইতি বাচ্য• এ-কন্য কর্মণ আরম্রক সংযোগ পু-তিদ্বন্দি বিভাগজনকত্বস্যানারস্ত্র-ক সংযোগপুডিংগ্নিবিভাগজনকত্ত্ব विद्याधार व्यनुधा विकनर करन ष्येत जत्र भूमकार जन्नाचितर অনারম্ভকসংযোগপুতিদ্বন্দিবিভা-গ• জনযেত্তণা আরম্রক সংযোগ **शु** जिविक्ष वि जो ग॰ न कनरय । नि काद्रविভारंगरेनव पुरानामा म् র্বণ ক্রো দেশান্তরবিভাগো ন জ-ন্যতে ইন্ডি বাচ্যু স্বারম্ভক সংযো-গ প্তিবন্ধি বিভাগবতো অব্যব্দ্য সতি দুব্যে দেশান্তর্বিভাগাসম্ভ বাৎ যত্ৰ হস্ত ক্ৰিগণা হস্ততক বি-ভাগ: তত্ত: শরীরেগিবিভক্তপু-ভ্যায়ে ভব্তি তত্র চ শরীর তব্দ বি-ভাগে হন্ত ক্রিয়া ন কারণ ব্যথিক রণত্বাৎ শরীরে ত ক্রিণা নান্তি অ वयविकर्माणा यावनवयवकर्म निय-ভত্তা । অত ন্তত্র কারণাকারণ বি-ভাগেন काय्याकार्य्यविভागा बन्ध তে ইতি অভ এব বিভাগো গুণান্তরু

অন্যথা শরীরে বিভক্তাবিভক্ত <u> जुज्राया न जार जजः मःयागः</u> নাশেন বিভাগো নান্যথাসিদ্ধো ভৰতি৷ ইতি সিদ্ধান্তমূক্তাবলী 🛚 বিভাল্য ত্রি বিভজনীয়ণ বিভা गार्शः। यथा। जला विभी छ विन्ताः শৌৰ্য্যপুণ্ডন্ত ৰম্বিভ- বিভান্ত্য **जन्**रणाजिशा मिल्लियनि हि धर्मा ংয' মূল্যান্দ্রাধিক ভবেথ। প-র পিরস্য ফলজ বিদ্যা দ্যুত পু-ৰ্বক। বিদ্যাধনন্ত ভৱিদ্যাহাবি-ভাৰ্যু বৃহস্পতি:া৷ তথ**্ৰে**ীৰ্ত্য ভাষ্যাধ্ৰে তোভে যত্ত বিদ্যাধ্ৰ ভবেৎ। ত্রীণ্যেতান্যবিভাচ্যাবি **भुगाए। रण्ड रेश**्कः॥ इंडि नाः যভত্ত ॥

বিভাওক: গুণ মুনিবিশেষ:।স্তু অব্যশ্সপিতা।ইতিরামাযণ ॥ বিভাগী স্ত্রী আবর্ত্তকীলতা।ইতি রাজনির্ধন্ট:॥

বিভাত• দ্লী পুত্যুৰ:। ইভি শন্ধ-রন্থাবলী।।

বিভান: পুণু পরিচয়ঃ॥ রনস্যো-দীপনাদি:। ইতি মেদিনী॥ ত লাকণানি র্যথা। বিভাবেনানুভাকে ন ব্যক্তঃ নঞ্চারিণা তথা। রসতাঃ

মেতি রভ্যাদি: স্থায়ী ভাব: স চে खना ।। विভावानरया वक्कारख । বিভাবাদীনা যথা সংখ্য কারণ कार्य) महकाद्वि व्य कथ वयाना म-পি রসোদ্ধোধে কারণত্ব মিত্যুচ্যুতে । কারণ কার্য্য সঞ্চারি ক্রপা অপি হি লোকত:। রসোদ্বোধে বিভা-বাদ্যা: কারণান্যের তে নতা: ।। সভাবাশ্চ বিভাবাদে দ্বঁযো কেক স্যু বা ভবেৎ । ব্রটি ভ্যন্য স্মা কেপে তদা দোষে। ন বিদ্যুতে।। বিভাবাদিপৱামশ বিষয়ত্বাৎ স চেত্রসাং। পরানন্দ্র্যত্ত্বে সয়ে-দ্যত্ত্বাদপি সুট ।।ঞ্চা। অথ কে তে বিভাবানুভাব ব্যভিচারিণ ইত্য-∡পকাথা॰ বিভাব মাহ। রভ্যাদু।-দ্বোধকা লোকে বিভাবা: কাব্য লাট্যযো:।যে ছি লোকে রামাদি-গতরতিহাসাদীনা• উদ্বোধকার-शानि जीजाम्य खबर कार्त्य ना-রট্য চ নিবে**লিতা: সম্বো** বিভাব্য-ন্তে আস্বাদান্ত্র প্রাদুর্ভাবযোগ্যাঃ ক্রিগন্তে সামাজিক রত্যাদিভাবা এতি রিতি-বিভাবা উচ্যন্তে। আ-ব্যম্পাদীপনাথ্যে ত্ৰু ভেদা-वूर्ज म्राजी। इंडि माहिका मर्गाः ।।

विভावन की ) शलकाति विश्व । विভावना की ) महिवनाकाति । उं । पिन्त कार्य । पिर्य क्षा श्री । यथा। विভावना विनाद्ध । पे कानू क । यथा। विভावना विनाद्ध । पे कानू क निम्ल कार्य । प्रकान कार्य । पे कानू क निम्ल कार्य । प्रकान कार्य । प्रकार कार्य । प्रकार कार्य विश्व । प्रकार कार्य । प्रकार कार्य विश्व कार्य । प्रकार की विषय कार्य कार कार्य कार कार्य का

विভावती जी त्राजिः। इञ्जातः॥
इतिमा। व्रज्ञेनी ॥ वक्रवाविट ॥
विवाहवज्ञमुखी। इठि स्मिनी ॥
स्मोथर्य्जनित्रञ्जी। इठि अस्त्रज्ञावनी॥ स्माव्कः। इठिक्रामा।
विভावमः श्रु मूर्य्जः॥ वर्ष्व्यः॥
वन्ताः॥ विज्ञकव्कः। इञ्जातः॥
वन्तुः॥ इतिक्र्यः। इठि इमवन्तुः॥

বিভাবিত: ত্রি বিচিম্বিত:।। বিশে বেণ উৎপাদিত:।। বিশেবেণ পা-পিত:।। বিনিশুমিত:। ইতি ঞ্যন্ত ভূথাতো: ক্র পুত্যবেন নিম্নম:।। বিভাবা ক্রী বিকল্প:। যথা। দ্বো বিভাষণো মাধ্যে বিধি নিঠ্য: ।
ইতি নৃধ্ববোধব্যাকরণণ ॥
বিভিন্ন: ত্রি বিভক্ত: ॥ বিদীর্ণ: ।
যথা। গদা পরশু থ্যক্ত চক্র তোমর শাযকৈ: । বিভিন্ন বেদনা যা
হি ক্ষ্যা সাপি নিজ্জিতা॥ ইতি
ইতিহাসসমূহয: ॥

বিভী**তক:** ত্রি বৃক্ষবিশেষ: ৷ কছে-ज। इंडि ভाषा । उट्शर्यतायः । অক্ষ: ২ তৃষ: ১ কর্ষকল: ৪ ভূত-বাস: ৫ কলিজন: ৬। ইত্যময়: ॥ कन्नवकः १ मध्रुष्टः ৮। ইতি রহ্ন মালা।। তৈলফল: ৯ ভূতাবাস: ১০ **স**ञ्चंक: ১১ বাসম্ভ: ১২ কলিবৃক্ষ: ১৩ বছেডकः ১৪ হার্য্য: ১৫ विষয়: ১৬ অনিলয়: ১৭ কাসয়: ১৮। অস্য গুণা: । কটুত্ব॰ । ভিক্তত্ব• । ক্ষায়ত্ব ৷ উক্তব্ব ৷ ক্ফাপহ্ব ৷ १ व्यक्ताद्वः । श्रीलञ्चद्वः । दि-**नाक् मध्रपुर्वः ॥ उत्तर**ङ्खाः । তৃষ্ণা ছদ্মি কফ বাতহরত্ব**া ল**ঘু ত্ত্ব । মধুরত্ত্ব । মদকারিত্বঞ্চ ॥ ত रेखनल्याः। सामूष्यः। हिमप्रः। .কেশ্যব্রুণ। গুকুরুণ। পিত্তানিলা-र्खिना निष्यः । इंछि त्राक्षनिर्यण्टः া। 🗱 ।। অপিচ। অথ বিভীতক নায়ানি গুণাক। বিভীতক ক্রি- लिकः म्यारकः कर्यकल ख्रयः। क-লিজমো ভূতবাস তথা কলিযুগাল-यः ॥ विञ्जी उकः सामू भाकः कषायः কফ পিত্তনুৎ। উষ্ণবীৰ্য্য হিমস্পৰ্শণ ভেদন কাসনাশন ।৷ কৃষ্ণ নেত্ৰ-हि उ॰ (कन्न)॰ कृभि रेवश्वर्य) नानन॰ । বিভীতমজ্জা তৃট্ ছৰ্দ্দি কফ বাত-**रु**द्धाः वयुः ॥ कवारमा सम्कृत्राथ ধাত্রী মজ্জাপি ভুদুণাঃ। ইতি ভাব-भुकाणः ॥ # ॥ व्यन्धः । विज्ञे**ड**॰ ভেদি তীক্ষোঞ্চণ বৈশ্বৰ্য্যণ ক্ৰিমিনা-শন । চক্ষ্য স্থাদুপাক্ঞ ক্ষায়ণ কক পিত্তন্থ।। ইতি রাজবল্লভ: 🛚 🗱 🗓 ञामु किन्छमञ्जाद्रभः যথা। পূলস্ত্য উবাচ। ভতে। গতেষু দেকেয়ু বুন্ধলোক পুতি দ্বিন্ধ। তৈ-লোক্যু॰ পাল্যামাস বলি ধর্মান্ত্রি-**७: म**रा॥किन छरा धर्मयुङ• कग-দৃষ্ট্রা কৃতে যথা। বুন্ধাণ শরণ ভেজে স্বভাবস্য নিবেধনাৎ ॥ পু-ণিপত্য ভ্যাহাথ ভিষ্যো বুন্ধাণ শীশ্বর । মম স্বভাবো বলিনা না-শিতো দেবসত্তম।। ত॰ প্ৰাহ ভগ-ৰান্যোগী ৰভাবে। জগতোপি হি। ন কেবল• হি ভবতো হৃত স্তেন ব<sup>.</sup> লীযুসা II পশ্যাদ্য ভিষ্য দেবেন্দু° বৰুণঞ্চ সমাগত। ভাষরোপি হি मीनवः भुवात्तां हि वनावतः ॥ देखाव भूका कि विज्ञात मृद्धाः । मिनान् मृद्धाः । मिकामीन् विज्ञाक्तवनः गजः ॥ देखि वामतन् २१ व्यक्षावः ॥

বিভীষণ: পৃ• রাবণভাতা। ইতি রামাযণ• ॥ নলভূণ• । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ॥ ভযানকে তি ॥

বিভীবিকা জী ভযপুদর্শন । যথা

1 কৃষা শক্ষ বিভীবিকা কতি
পয গানেষু দীনা: পুজা: মথুন্তো
বিটলল্পতৈ কপহতা: কৌণীভূজতে থিলা: ৷ বিদ্বাংশা ২পি বয়
পর ত্রিজগতা সর্গন্তি ব্যাপ
দা মীশ স্তৎ পরিচর্গ্যান গণিতো
বৈ রেষ নারাষণ: ৷৷ ইতি শান্তি
শতক ৷!

বিভূ: পু॰ পুভ: ॥ সর্গত: ॥ শ-হুর: ॥ বুদ্ধা । ইতি মেদিনী ॥ ভূত্য: । ইতি ক্রিকাণ্ডশেষ: ॥ বিফু: ।ইতি শব্দালা॥ ব্যাপক: ॥ নিত্য: ॥ অর্হন্ । ইতি হেনচন্দ্র: ॥ দুচ: । ইত্যজ্ঞাপাল: ॥

विज्ः जि नर्वन् जन रहा नी। नत्र म नरु वृदान्। न जू व्याजा हिः। यथा। व्याद्यानितृषा हु विश्वास्त क्षेत्र । विज् तू क्षि क्षेत्र । विज् तू क्षि हिः। बुष्तिस्त विविधा में जा ॥ ইजि जावा-भिति हिनः ॥ विज् ति जि विज् व भित्रमण्ड वृत्र कुः । ই जि भिषासम् कावनी ॥ काम थाजा मिणाः मर्व-गडजुः भद्रमः सहर । ইजि जास्।-भिति हिनः ॥

্বিভ্তি: खी व्यनिमाप्तिकमञ्ज्या। **७८भ**र्यतयः। ভূতি: २ ঐत्यर्यतः **७।** ইত্যমর:।। শিবপ্তভম।। অস্য **ब्बित्र ग्रामियाति यहेश्कादः देव**े ভব• বিভ্ড্যাদি পদত্রব• বাচ্য• কেচিত্ৰ বিভৃতি ভূতি বিতি ধ্ব• শাস্ত্রত ভন্মনি অনিমাদ্যষ্টকে তু ঐশ্বৰ্য্য নিত্যাহু:। বিভবত্যন্য। বিভূত্তি: ক্তি: ভবতে: ক্তি: ভূতি: বিগুহণ মন্যোপসর্গ নিরাসার্থণ ঈশ্বর গুণ ঐশ্বর্য্য তাবে ফ্যঃ অনি-भारि विधिगारि। उथा हन व्यवसा-লঘিমা প্রান্তি: প্রাক্ষাম্য মহিমা ভথা। ইশিত্বঞ্বশিত্ব**ঞ্চ তথা** কানাবশাধিতা ইতি। অনুত্ব মনি-मा (यन भ्राच्या ज्या विष्य डि। व-যুত্ত্ব লঘিমাথেন বাযু রিব লঘুত-রো ভবতি। পাপ্তি রভীঞ্জিত পা-পণ পাকাম্য নিছানবিঘাতঃ। ম-হিমা মহ ৰু যেন চতুর্দশভ্বনান্য-স্যোদরে বর্ত্তম। ইশিব্ পুভূতা

যেন স্থাবর জন্মাদি ভ্তান্যাদে শ হারীণি ভবস্তি। বশিশ্ব• স্বাত্ত-ত্র্যুণ দেন স্বতন্ত্র শরেতি। কানেন हेह्या व्यवनाविजुः छाजुः भीव **अग**ऽकामावणायी जीखा गुरापि-ত্বাবিন্ ভদ্য ভাব: কামাবশাবি-**छ।। ग**र्वानन्तस्य व्यत्नकार्थञ्चा-জাত্না মৃতি রিছ ি ৪৬ গ্রেঃ। व्यवनायी मन्त्र मुद्रा हे । ইতি ভরভ:।। 🗱 ।। অপিস। 🕮 -ভগবান্বাচ।পরাৎপরতর তভু भवः वृक्षिक भवायः। निकासम्मः দ্ববং জ্যোতি রদ্ববং তমসঃ পরং ।। ঐত্বর্য্য তদ্য যদ্মিঙ্য বিভৃতি রিভি গীযতে। ইভি কৌর্মে ১ व्यश्रायः॥

विज् िवामणी जी युजितिणयः।
यथा। निन्तिकथंत उवाह। भृष्
नात्तर वक्षणीन विद्या वुजिननुजन्
नः। विज् ज वामणीनान मर्वभाष
निम्तनः।। कार्जिक हिन विभाष्य
नार्गमीर्थय कालुदन। जायारह वा
मणनप्रास्त मृत्रायाः वधुजुद्धदः॥
कृद्धा मायस्तरिः मञ्जाः गृङ्गीयाः
विधनः वृथः। वक्षामणाः निद्यक्षः
तः ममज्रहं जनाप्तनः॥ व्याप्ताः
विधनः युक्षः। वक्षामणाः निद्यक्षः।
विधनः युक्षः। वक्षामणाः निद्यक्षः।

বিভো। তদবিল্লেন নে যাতু সাফ-ল্য: নধুস্বন ॥ ভতঃ পূভাতে চো-থায় কৃত্রানজপ: শ্চি:। প্র-(यट शुखदीकाकः भूज्ञगान्।नृत्न-शरेनः ॥ विভূতিদাय नगः शामाव-(भाकाय ह कान्नी। ननः भिवास्य जुन विश्वनृर्द्धय नमः करि।। क-न्तर्भाग नरमा मिष्टु मानिज्याय नमः করৌ।। দামোদরাবে ভূগ্রব বাসু-**प्तियाय ह छानो। भाववा**या छि छात्रय॰ क्षेमु ८ क्षिएं नमः।। श्री बदाय मृथः किमान् किमवासि नाब्रमा शृष्टि **मार्क्षद्रारवि मुवली ह च्या**सुरव ।। খনায়া শ্রু চক্রাসি গদা পরশু-পাণয:। সর্বাত্মনে শিরো বুন্ধন্ নন हेर्ङ्याङ्ग्हिर्द्ध ।। य**्म**्र यू**्**भवा সংযক্ত হৈমণ ক্রা তু শক্তিত:। উদদ্ভাসনাযুক্ত মৃশুত: স্থাপথে-দ্বিভা:।। গুড়পাত্রণ তিলৈ যুক্তণ সিতবক্সভিবেষ্টিত । রাভৌ জাগ-व्रगः व्यंग्रापि जिल्लामकथापिता ॥ পুভাতাবাঞ্পর্যগ্রা ব্রাহ্মণার জ-টুঘিনে । **সকাঞ্চনোৎপ**ল॰ দেব• (भाषकञ्च नित्वत्यः ॥ यथा न मू-চ্যাসে বিক্ষো: সদা সর্ধ বিভূতিভিঃ । ७था मा नुकातल्यमू:थमःनाद्र-সাগর্য ৷৷ দশাবতার্রপাণি

পুতিমাস ক্রমান্ত্রমে। দ্ভাবেম ডতো ব্যাস মুৎপলেন সমন্বিত ॥ मन्।ादिव मना यावट शायखान **ভिरुद्धारिए ॥ मगरिश्रदः राथा** मक्ता वारण वारणी नद्र: 1 नः বৎসরাম্ভে লবণপর্বতেন সমন্বি छा॰ ॥ भयाः मन्त्राम् निष्मुष्ठ खत्राव श्मद्रमःयूडाः । गुामकः मक्तिमान् **मम्यार (क्व मा इत्र**शान्**उः।।** खकः। नः भृष्ठ विधिव८ वञ्चानकात्रज्यरैगः ৰ অন্যানপি যথাশক্ত্যা ভোৱাযত্ত্বা विकाखनान्॥ उर्भयमञ्ज (गामारेन ब्रनाब धनम्बन्धः । यन्नविखा य-থাশভ্যা স্তোক সেকে সমাচরেৎ া। য'চাতিনিরঃ পুৰুষো ভক্তিমান্ भाषवः পुछि। शुद्धाहनविधातन म व्यार्गाष्ट्रभवष्यः। व्यानन विश्विना-यञ्ज विज्ञिनामनी वुकः ॥ अर्था । স পাপ নিমুক: পিতৃণান্তার্থেছ ত । জন্ম । শতনাহসু । লোক ক্ষলভাগুবেৎ ॥ ন চ ব্যাধি ভবৈত্ত-भार न नाजिनु १ न वक्तनः । देवस्थाता दाथ रेगरवा वा जाव इज्ज्ञ सनि कसनि া যাবদান সহস্থা **শতম**ান্তার त्रः ভবেर। ভাবৎ मार्ग वामकुकान् ভূপতিক পুন ভবেৎ।। ইতিনাৎ-(मार्क्ट व्यव्यापः ॥

বিভ্ষণ ল্লী আভরণ । ইউ দের:।। বিভ্যা ল্লী শোভা। ইতি হেম-্চন্দুঃ।। আভরণ্ড।।

বিভ্বিত: ত্রি অলস্ক্ত: । যথা।
বিশ্বরত্বাংশুবিভ্বতাক্স শিক্তা
ভবে হেমমধে সুরন্যে। সুথোপবিষ্টা মদনাক্ষনাশনা জগাদ বাক্যা গিরিরাজপুঞী।। ইভি ক্ষা
শের নীলক্ঠান্তোতা।।

विज्ञः जि ध्वः॥ शृष्टः। विश्वं

ज्याताः ज भुजारम निम्नः।।
विज्य जि विज्ञितः। धार्यास्थानः

न्याकर्ता। यथा। ठण्डं व्यः। धार्यास्थानः

कर्मा कर्त्रावा कर्मा मृद्धिं उः। महात्र कर्रात्र कर्रात्र कर्रात्र कर्मा कर्म कर्मा कर्म कर्मा कर्म

বিভূম: পু॰ হাবভেদ: । সতু জীণাণ শৃস্থার ভাবজজিয়াবিশেষ: । ইত্যনর: ॥ নন রাণ হর্ষ জনিত বিপব্যাসো বিভূম: । ঘথা অন্যমিনিত্ত
নানসাদুখাযান্যত্র গনন প্রাারক্ষকথা নাক্ষিপ্য স্থ্যা সহালপন মুদ্ধৈ হঁসিত কোধৌ পুল্লাদীনাণ যান্ত্রা সহসৈব তৎপরি-

ত্যাগঃ। বস্ত্রা ভরণ নাল্যানা মকা त्रप**ड: थंखन**् नानन्छ। यपूक्तः। কোধ: মিতঞ্জ অস্নাভরণাদি याह्न। उष्दर्क्तनक महोसद विनश्वः नकः। वाकिशः) काञ्च यहनः मा-প্রন্ স্থীভি নিষ্কারণোত্মিতগত• বদ বিভুক্ত তথে॥ ইতি। চিন্তুক্ ত্ত্যনবস্থান· শৃঙ্গারাদিভূনে৷ ভবে-দিত্যন্যত্র চা। তথান্যত্র । বিভু ন জুর্যা কালে ভূষা স্থানবিপর্য্য-यः। यथा। শুদ্ধাगाञ विहः कान्त ম্সমাপিত ভূষ্যা। ভালে 🕈 জন• দৃশোলাকা কপোলে তিলক: কৃত: ্যা ইতি। যোষিতা ধৌবনজো বি-কারো বিভূম:। ইত্যেকে॥ বিভা ষ্ঠি বিভূম: ঘঞ। ইতি ভরত:।। অপিচ। বল্ল ভ পুাপ্তিবেলাযাণ ম-দনাবে**শ স**•ভুমা<। বিভুমো স্থার भानग्रानि ज्याञ्चानविभर्ग्यः ॥ इंजुड्वननीनम्पिः ॥ 🛊 ॥ जाहिः ા ફેઝિ (સવિનો ॥ (**મા** છા ॥ **স**•**म**-यः। ইতিহেমচन्দुः॥ ভূমণः। ইতি **नद**त्रञ्जवनी ॥

तिजुमा खो यार्ककृतः। ইতি শক-त्रज्ञावनी।। तिजुहें । जि जनकातारिनारीशः तिजुहें । भीनः। उद्भर्शसः। जुन জিফ্: ২ রোচিফ্: ৩। ইত্যমর: ॥
বিভান্ত: ত্রি বিভ্নযুক্ত:। বি পূর্ব
ভুনধাতো: ক্ত: পুত্যুবেন নিয়ন:॥
বিভান্তি: ত্রী বিভ্রম:। ইতি বিভূনশক্তীকাবাণ ভরত:॥
বিমত: ত্রি বিক্সন্তিবিশিষ্ট:।
বি পূর্ব মন ধাতো: ক্ত পুত্যুবেন

িনিয়ম: ।। বিননক: ত্রি বিমনা: । বিনিগৃহী-ত মনো হস্যেতি বহুবী হুর্থে ক পুত্রুযেন নিয়ম: ।।

বিমনা: ত্রি চিন্তাদিব্যা**স্লচিন্ত:।**তৎপর্য্যাব:। দুর্মনা: ২ অন্তর্মনা:
৩।ইত্যমর:॥ দু:খিত্রনানস: ৪।
ইতিশ্বরত্বাবলী॥

वेमयः भू॰ दिनिमयः। ই**ङि (रु**म-*ठन्*पुः॥

विमर्घः भू कालक उर्कः। काल-काम्निया इंडि डाया। इंडि द्रञ्च-माला ॥ विमर्घनः। इंडि नम्-द्रञ्जवली॥

বিমর্দ্ধ কং কং চক্রম্দ:। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

विनम्बन क्री व्यक्ष्मानिमम्बन । उट् शर्यप्रयः। शविमनः २। इंड्यामतः ॥ दिमम्बः २। इंडि व्यक्षत्रज्ञादनी ॥ दिल्लायन मर्मनक्ष्म ॥ विभएमां थिः भू॰ भर्म नाड्डा उम् गन्ना दिन एम् । यथ गत्न भिन्न भामी भाना हान्नी भन्न यास्मा देवे छः ॥ हे जि सम्बद्ध वा वणी ॥ विभागन क्री भाना मं । विष्ठ कं । यथा । विष्ठ कं : म्रामुझ्यन भन्ना । भागा विभागन । यथ्राहान छकं छहा १ मृगान । एम प्रा ॥ हे छि एक्स हन्युः ॥

विभयं: शृ विहात्रगा। इंडि करी-थत्रः॥

বিমল ক্লী ভারছেমদিধাক্ত ।
ভক্তপরসবিশেষ: । ভৎপর্যাব: ।
নির্মাব: ২ বছং ৩ অবলং ৪ বছধাভক্ত ৫ ৷ অস্য গুণা: ৷ কটু ছং ৷ ভিভক্ত । ভুগোয বুণনাশিত্ব: ৷ রস
বীর্যাদৌ ভূল্যত্ব: ৷ বেধে ভিন্নবীর্যাকত্বক্ষ ৷ ইতি রাজনির্যাট: ৷৷
বিমলং প্রাপ্ত না ইতি কেল

विननः श्रू॰ अर्हन्। ইতি हिन-हन्तुः।।

বিগল জি নির্মাল । ডৎ পর্য্যায়: । বীধু ২। ইভ্যমর: ॥ পুবত ৩। ইতি শব্দরত্বাবলী॥ চাক: । ইতি ভবৈব ॥

বিমলদান ক্লী নিত্যনৈমিতিক-কান্যদান ॥ ঈশ্বরপুণিনার্থদানঞ্চ । यथा। निज्रः निमिखिकः काग्रः
विभवः मान भीविछः। अहन्रहनियद किकिफीयछ रनुभकाविषः
। अनुफिण्ण कवः छट महाद नुष्कः
गाय छ निज्रकः।। यञ्ज भारमाभः
णारिष्ठ ह मीयछ विम्याः कवि।
निमिखिकः छमुफिष्ठः मानः मिछः
वर्मार्थः यद भुमीयछ। मानः छट
कामह्मार्थाछ भ्विछ र्षम् हिस्रः
किः।। हिज्ञा मञ्जूर् कि मानः छविभवः म्युः।। इिज्ञ गाक्ष छ।
वर्षायः।।

विभवभिः भु मु किः। इंडि ब्राजनिर्धणः॥

विनला छी मछला। हामाइक्षा
इंडि ভाषा। इंडामइः ॥ जूनिएडपः। इंडि मिनिते ॥ पिर्वे । जुन्दा
यथा। यथाथा विमला कार्या। मुख्य
हाइन्त् वहुंमा। मुङ्गक्षम् ज्वाद्यानी
ह कमछल्क्द्रा वद्रा॥ नावामन
ममाक्षा (चंडमानाहाद्रा कर्ण्द्र मह
हिंडा॥ मिडलक्ष्य (हारनन द्राष्ट्री)
यून् न विक्ति। इंडि (पवी न्द्राप्त
मद्द्र मद्राप्त जा विडी विदि गाडिकाविषिः॥ #॥ जनाह। न्वाप्त

कर्निकामस्या दाजुरस्वछ नायकः । বিমলা নাষিক৷ তদ্য বাসুদেবস্য कीर्विजा॥ इंडि कालिकाभूबारा be व्यक्तायः !! # !! व्यभद्रश्व l উৎকলে নাভিদেশঞ্ বিরম্বাক্ষেত্র উচ্যতে। বিমলা সামহানেবী জ-**गनाथस्र रेड**त्यः ॥ इंडि उच्च प्रा-मर्गा ७३ भीठे निर्गयः॥ विभवाञ्चकः) जि.निर्मनः। ইত্যमत विमनार्थकः ) हीकायाः द्वायम् अहेः ॥ विगलाप्तिः भू मजुङ्गपर्यजः। ইভি ছেমচন্দ্ৰ: 🔢 বিমাংসঃ পুং অশুদ্ধমাংসং৷ তত্ত্ পফুরাদিনা স। ইতি কেচিৎ।। বিমাতা স্ত্রী মাত্সপন্নী। সংমা इंडि ভाषा। या कनीयमुशि नमः স্যা। যথা মৃতি:। মাতৃ: পিতৃ: कनीयाःमः न नय्य वसमाविकः। नमकुर्ये। ८ खर्ताः भन्नीः जाउँकाः ষাণ বিনাতরণ।। মৃত্যর্থ দারে। জ্রি (या ननम्)। वृक्षाण वयमा शञ्रु (बः ব তা:। যত: পত্য র্থসা তা জিয়ো বৃদ্ধা অ 3: কনিপ্তা অপি নমস্যা:। ইতি নলনাসতজ্ব ॥ ॥ বিমাত্ ব্লফো নিবৃত্তাবলি পিতানহ খন-विज्ञान कर्लवादः। यथा वृह्माजिः

৷ পিত্রোরভাবে ভাতুণা বিভাগ:

मण्युम्भिकः। नाव् निक्रक तक्षमि कीवरकाद्रिम मम्मारका। व्यव माक् श्रदः विनाव् श्रद्ध निश्च श्रद्धार-श्रद्ध मछावना कोन्यार । इंकि मायकवः।। स्ना। व्यम्भा व्यन-भिद्धः यथा । स्मान्त्र कुाव् कि विकार्ण कियमारा नार्व श्र्यम्मारमा मा-व्यशः । ममाः महाद्विती माका इंकि वहनाबाव्शम्मा बननीश-त्रवार न मश्रद्धीनाव्शत्र मिन्। त्रवार न मश्रद्धीनाव्शत्र व मिन। मक्ष्वम्म पूर्व (गोनवान्श्रम् रवः। इंकि मायकाशः॥

বিনাত্র: প্ নাত্সপত্নীপুত্র:। ভৎপর্য্যায়:। বৈনাত্রেয়: ২ । ই-ভ্যমব:।। বৈনাত্র: ১। ইভি জটা-ধর:।।

विभानः भू क्री प्रवेज्ञथः। उदशर्यायः। विश्वासयानः २। ই ज्ञानतः
॥ सार्वर जीसगृरुः।। विष्ठितः।। याः
नमावः। ই जिल्लिनी ।।
विभार्गः भू समाष्ट्रिनी ।। क्रमधः
। विश्व मृज्ञथारुः। र्यक भुज्ञरयन
निज्ञमः॥

বিম্ভ: তি বিশেষেণ মৃক্ত:। যথা। যে হনেঃ হরবিন্দাক বিমুক্তনানিন ভুগ্যস্তভাবাদবিশুদ্ধ বুদ্ধয়:। আ কৃষ্ট্ৰণ পরণ পদে ততঃ গভ ন্ত্যধো নাদ্ত যুম্মদন্ত্র য়: ।। ইতি শ্রীভাগবতে ১০ ক্ষন্ধে ১৪ মধ্যায়:।। ভ্যক্তঃ। বি পূর্ব মুচ্ধাতোঃ ক্ত পু-ভ্যায়ন নিয়ন্তঃ।।

বিস্কি: জী বিমোচন ৷৷ মোক্ষ:

1 বথা ৷ পিত্যনসে দিবি যে চ
ম্রা: ব্যাভ্তা: কান্যকলাভিদ
জৌ ৷ পুদানশক্তা: সকলেপ্লিডা
না বিস্কিদাযে ধনজিদ হৈত্য

।৷ ইতি পুষেশিত ভত্ত্ব ৷৷

ৰিমূথ: ত্রি বছিন্থ:। বির জ:।

যথা। সাগমৈ: কল্লিতৈ স্তৃণ ছি জ

নান্নছিন্থান্ জ্বা। নাঞ্পো
প্র যেন স্যাৎ সৃষ্টি রেষোত্তরোভরা।। ইতি পান্মো ভরথংগু শিবং পুতি বিষ্ণু বা গ্যা।

বিমুদুঃ বি পুফুলঃ। ইতি ছেম-চন্দুঃ।। মুদুারহিত শচ।।

বিমোচন জ্লী দ্রীকরণ ॥ বিমুক্তি:
। বি পূর্ব মূচধাতো রনট্ পুত্যুয়েন
নিস্তম্ম ॥

वियाहन क्ली दिवि छी कहन। वि नूर्व मूह्याटा द्वनिष्ठ भुक्तारम निम्नमः॥

विरमाह्य बि साह्युकः। मृत्रः
। यथा। जावन्य जिवतनात्राको नहानायाविरमाहिरको। উक्तवाहो

বরোমন্তো বি্যতা মি**তি কেশ**ক ।। ইতিদেবীমাহাল্য্য: ।।

विस्माक्षणः क्ली विस्माहनः। शक्ति-छ। जनः। यथा। यः धर्मकामार्थ वि-मुक्ति कामा ভन्नस्त देशेः गठि मा-श्रु विस्मानिया क्राज्शितः इ नव। विक्षानिया क्राज्शितः इ नव। किक्षानिया क्राज्शितः इ नव। किक्षानिया क्राज्शितः इ नव। क्रिक्शानिया क्राज्या क्रिसाक्षणः।। ই जि क्षिष्णागवर क्राज्याः।।

वियः ही भुडिविषः॥ कम ७ लूः। इंडि मःकिलमाद्भागापिवृडिः॥ বিধিকাফল•া ভেলাস্চা ইতি ভাষ।। ইতি মেদিনী।। শেষস্য পর্য্যায়:। তৃণ্ডিকেরী ২ রক্তফলা ৩ বিধিকা ৪ পীলুপণী ৫। ইত্য-মর:।। ওটা ৬ বিদ্বী ৭। ইতি রকুমালা॥ বিশ্ব ৮ বিশ্ব ফ ১ বিষ্কা ১০। ইতি শব্রভাবলী া অস্য গুণ:। পিত্ত কফ ছ र्फ বুণ क्लान क्ष्रमाणियु । ই उ ताक বল্লভঃ॥ অপিচ। বিধী রক্ত ফলা তুন্নী তণ্ডিকেরী চ বিশ্বিকা। ওপ্তো। পমফলা পোক্তা পীলুপণী চ ক-থ্যতে॥ বিদ্বীফ ন॰ স্বাৰু শীত॰ গুঞ্ পিত্তাসু বাতজিৎ। শুস্তুন লেখ-न क्रा विवक्षाधानकात्रः ॥ ইভি ভাবপ্কাশ:।।

म्यं हम्मुम् थवः। इंड्राभवः॥ विषः भू क्कंनामः। इंजि सिन्नी विश्वकः ज्ञी हम्पुमूर्य्यभ्रखनः॥ वि षिकाकन । इंडि भद्रद्वावनी ॥ বিষজা জী বিধিকা। ইভি শদ-ब्रङ्गावनी ॥ विष्ठे: नर्यशः। ইতি नद **हिमुका** ॥ বিবা জী বিবিকা। ইতি শদ-ब्रष्टावनी ।। বিশ্বিকা জী বিশ্বণ। ইত্যমর:॥ চন্দ্র স্ঠ্যমণ্ডল । ইভি শদরত্বাবলী ।। বিধী জ্রী বিশ্বিকা। ইতি শব্দর্ভ वनी ॥ বিষু: জ্রী ওবাক:।ইভিকেচিৎ।। বিখে। 🕏 🤰 📭 বিদ্বাবিবগুগৌ যস্য। বিষৌপ্ত: ﴿ ইতি মুক্ষবোধব্যাকরণ ॥ বিষहারী পু• চিল্ল:। ইতি শদ-সালা॥ আকাশগানিনি তি ॥ বিষ্ৎ ক্লী আকাশ । ইত্যমর:॥ जो सूर्गगङ्गा। इंडाऽ-वियम्गश्रा यतः ॥ ञ्जी বিষদ্ধতি: অন্ধকার:। ইতি ত্রিকাওশেষ: ॥ नुः ग्याः। ই 🧟 श्रा বিষয়ণি:

वनी॥

विवयः भू॰ मःयमः। ইত্যমतः॥ দু:খ•। ইতি साभी ॥ वियाजः जि निर्लब्जः। इठामतः॥ वियामः भुः भःयमः। ইত্যমরः॥ ত্রি বিযোগবি**শিষ্ট:**। বি বিযুক্ত: পূর্ব যুদ্ধ থাতো: ক্ত পুত্যবেন निश्चयः ॥ विरागः भू विष्ट्रमः। उर्भर्गा-য:। বিপুলম্ভ: ২ বিপুযোগ: ৩ বিরহ: ৪ ৷ ইতি হেমচন্দু: ॥ বিযোগভাক্ ত্রি विष्हमयुक्त: । যথা। বিযোগভাজোপি নৃপস্যপ শ্তা তদেব সাকাদম্তা শুমা-ননা পিকেন রোবাকণচক্ষা মুহুঃ षर्क তাহ্যত চন্দু বৈরিণী।। ইতি रिनयशः ॥ বিযোগী পু॰ চক্রবাক:। ইতি শব্-हिन्तुका॥ विरयाभगुरक कि॥ বিগোজিতঃ ত্রি বিযোগপাপিতঃ। বি প্র ঞান্ত মূর ধাতো: ক্ পুত্য-যেন নিয়ুম:॥ বিরক্ত: ত্রি বিরাগযুক্ত: ৷৷ আনন্-রক্ত:। যথা। জ্ঞাননিঙো বিরক্তো বা নন্ডকো বানপেক্ষক:। স্বলি-कानामु ा॰ छ। क्वा हात्रपविधिरणा-চর: ৷৷ ইতি জ্বিভাগবতে ১১ ককে ३४ व्यथायः॥

বিরক্তা স্ত্রী দুর্ভগা। ইতি বিকাপ্ত বিরক্তা: স্ত্রী
শেষ: ॥ অননুক্লা । যথা। যাণ
চিত্তথানি সভত নিয় সা বিরক্তা
সা চান্য নিছতি জন সজনোন্য রত্নালা॥
সক্ত:। ইত্যাদ্যভটঃ ॥

ব্যাতিনাত

বিরক্তি: জী বিরাগ:। যথা।
দেহো গুলু র্মন বিরক্তি বিবেক হেতু বিভূৎ ম সঞ্জু নিধন সভতাত্ত্যদর্কা। ভত্তান্যনেন বিম্যানি যথা
ভথাপি পারক্য নিভ্যবশিতো
বিচরাম্যসঙ্গ ।। ইভি শ্রীভাগবতে
১১ হ্লব্ধে ৯ সধ্যায়:।।

বিরস্থ• ক্লী কন্ধুই•। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

বিরচিত: ত্রি বিশেষেণ রচিত: ।
নির্মিত: । যথা । এব প্রীলহন্নতা
বিরচিতে প্রীনমহানাটকে বীর
প্রিয়তরামচন্দু চরিতে পুত্রুদ্ধৃতে
বিক্রম: । ইত্যাদি মহানাটক ।।
বিরম্ভমা: পু সত্তুগদি ইত্যা
বিরম্ভমা: পু সত্তুগদি ইত্যা
বিরম্ভমা: পু সত্তুগদি ইত্যা
বিরম্ভমা: পু সত্তুগদি ইত্যা
বিরম্ভমা: পু সত্তুগদি শিষ্টা ।
তৎপর্যায়: দ্বাতিগ: ২ । ইত্যা
মর: ।। বিগতে রজ স্তম্সী যেষা
তে রজ স্তুর্মোণা দ্বা
তে রজ স্তুর্মাণা দ্বা
নিষ্ঠা: সাক্ষাৎক্তবুদ্ধাণা দ্বী
নুক্তা ব্যাসাদ্যো দ্বাতিগা উচ্যা
স্তুর্ভা ব্যাসাদ্যো দ্বাতিগা উচ্যা

বিরজাঃ ন্ত্রী বিশতার্ক্তবা। **ই**ভি জটাধরঃ।।

वित्रका जी किनियानीक्कः। इंडि, बङ्गाला॥ **म्र्बा। इंडि** हाबावली ययाञ्ज्ञाञा । यथा । উৎপद्याः পিতৃকন্যায়া বিরজায়া মহাব-णाः। य**ि र्यगा**जिः सर्गाजि द्रा-যাতি: পঞ্মো লুক:॥ ভেষা• यः যাতি: পঞ্চানা নহাবল পরাক্র-**मः । इंडि क्लिर्म्म २० अध्यायः** ॥ 🗱 ॥ 🗐 কৃষ্ণ মথী । সা রাধাভ-বাত্ত্যকুণা সভী সরিদুপাত ব**ে। তস্যা: স**প্তপুত্রা: সপ্তস্মু-मुष्य ভবन्। यथा। এकमा রाधिः কাসার্জ্ত গোলোকে শ্রিহরি: স্বয় । বিজহার মহারণেঃ নির্জনে রাস-भेखरन ॥ कृषा विश्वातः श्रीकृष **खा म**मृष्ट्री विशाय ह । शाशिकाः বিরজা মন্যাং শৃস্থারার্থণ এগাম হ ॥ मृक्ष्री ह बिहाब सुर्गः विकशाव তথা সহ। তথাসক শ্রীহরিঞ রত্ত্রমপ্তপ সংস্থিত । দৃষ্ট্রাচ রাধি-कानग्राण्ठ ठक् खाक निरवपन । ज-গাম সহসা দেবী ত রত্নগুপা মুনে ॥ দ্বারে নিযুক্ত দদর্শ দ্বার পা-ল মনোহর। ত মুবাচ ক্বা দেবী वक्र शक्क (वाहना ॥ मूत्र॰ शह शह

দূরণ রভিলম্পট কিন্ধর। কীদৃশীণ मरभवाः काञाः मुक्कागि उर भुः जित्रक्शा मुद्दा (कानाइनः भेद्रः) গোপিকানা হরি: स्य। জ্ঞাত্বা চ काणिजाः द्राक्षा मस्यानः हकात्र ह i। वित्रका त्राधिकाणमार व्यवसानः रुष्ट्र द्रिश । मृथ्वे। त्राक्षाञ्चराञ्जी ना बहो भागान्छ यानउः ॥ महा ন্তত্র সরিদুপণ তছরীর বভ্ব হ।। व्यायक वर्जु नाकात्रः उया शाला-क स्व ह । कार्कियाक्रन विश्वीर्ण **अ** एक जिन्द (सव ह ।। दिर्धा मण्डन চাক নানারত্রকর পর। রাখা রতি-गृरु॰ गञ्ज। न पष्मां रुद्रि॰ मुत्न।। विद्रः জাঞ্চ সরি দুপা দৃষ্ট্যগেহ জগাম সা । श्रीकृत्या विद्रजाः मृक्षे। मति पुनाः लिया॰ न जी॰ ॥ छेट्टि क्राम वित्रकाः **जीवन नीवनामाम्यव । द्रुगा विना** इ मु इरग कथ की वाभि मून्सित ॥ नम्रिष्धाञ्लाको पुः ख्व मूर्खिनञीः সতি। পুরাতন শরীর তে সরি-पुन मञ्दमि ॥ बनानुःथाय हानः ছ বিধাৰ ভনু ন্তৰং। আজগাম হ-त्र त्रगुः माकामास्य मून्त्री ॥ भः माउ नापनाथक भगा ही वक रक्ष या। जाक क्षत्रकी मृद्धी (नुस्ता-<u>एका॰ बग्र्भिखः ॥ हकात्रानिकः ।</u>

ন তুৰ্ণ চুচুয় চ মূছ নুহিঃ। নাৰা পুकात मृक्षात विभन्नी ठारिकः भृजूः ॥ ब्रह्मि (भूषमी: भूगम्) हकात ह **णूनः भूनः। विव्रका ना व्रका**युक्त। ध्वा बीर्या मामाधकः ॥ मामा वज्व **তবৈব ধন্য গর্ভবর্তী মতী। ত**স্থৌ তত্র সুথাসীনা সার্দ্ध পুলৈচ্চ সপ্ত-जि:॥ अकरा इतिना मार्छ वृन्तात-(१) मृनिर्कतन। विज्ञहात्र भूनः माधी শৃকারাসক্ত মানসা।। এত মিন্নন্তরে তত্র নাতু: ক্রোড জগান হ। ক: নিষ্ঠ পুঞ্জ স্তম্যাক্ষ ভ্রাতৃভিঃ সীডি-তো ভিযা।। ভীতঃ শ্বতন্য• দৃষ্ট্বা ত ত্যান্ত তাং কৃপানিধিঃ। ক্রোডে চ-कांत्र वालः मा क्ष्मा त्राक्षागृहः ययो ॥ भुरवाया वाल मा माधी न मनमाञ्चिकः श्रियः। विननाश ज्**म**• তত শৃস্বোত্থনান্স।।। শশাপ স্বসূত কোপাৎ লবণোদো ভবিষ্য-তি। শশাপ সর্বান্ বালা ক্ষ যান্ত মৃতা রসাভলং॥ শুদ্ধা বিবরণং সর্বে भुजपू र्वत्रगीटन । मधदीरम ममू-দ্বাক্ত সপ্ত তম্ভূ বিভাগশং॥ কনিষ্ঠা-ष्काभर्याष्ठः विकाश विकाश मूरन। वाद ণেক্ষ্ সুরা সপি দিখি দুধ্ব জলার্ণবাং॥ এতেষাঞ্চ জল পৃথ্যা শস্যার্থ ভবিষ্যতি। ইতি বুন্ধবৈৰ্থে একৃষ্ कश्रथाखराज्यभारो।। इसा कंगमा श्राह्मकः। यथा। उद्याद्य ना नित्रम नकः विद्राह्मकः उत्राद्धः। विभवा ना महादि क्षमाथकः रिन्द्रदः।। हेि उत्प्रह्मामारो ७० भीठेनिर्नदः ।। इसा उद्याद्यामाने ०० भीठेनिर्नदः ।। इसा उद्याद्यामाने वर्षविद्यामाने नविद्याद्यामाने विद्याद्यामाने विद्याद्याप्य विद्याद्याप्य विद्याद्याप्य विद्याद्याप्य विद्याप्य विद्याद्याप्य विद्याद्याप्य विद्याप्य विद्याद्याप्य विद्याप्य विद्य विद्याप्य विद्य विद्याप्य विद्य विद्याप्य विद्य विद्याप्य विद्याप्य विद्याप्य विद्याप्य विद्य विद्याप्य विद्याप्य विद्य वि

াবরকা: ) বিরঞ্জি: ) বিরকা জ্লী বীরণত্ণ । ইতি শব্দ রভাবেলী ।।

বিরতঃ ত্রি নিবৃত্ত:। যথা। আত্ত বিদ্যো মূনে জাতো ভ্রাতৃ স্ত্রাতো নিজৈ ভ্রাৎ। বিরভ্যে ২ন্তর্হিতো দুষ্টাছোকাদ্রামেশ বারিত:।। ইতি মধ্ববোধব্যাকরণা।।

বিরতি: জ্রী নিবৃত্তি:। তৎপর্য্যা-য:। আরতি: ২ অবরতি: ৩ উপ-রাম: ৪। ইত্যমর:।। উপরম: ৫ বিরাম: ৬। ইতি ভরত:।।

বিরল• ক্লী দধি। ইতি রাজ-নির্ঘটঃ॥

বিরল: ত্রি অবকাশ:। ফাক্ইডি ভাষা। তৎপর্য্যায:। পেলব: ২

তনু: ৩ । ইত্যমর: ॥ বিরল্ভানুক: তি বক্লজানুবিশিষ্ট: ।

उर्पर्यायः। नुकुः २ नुकः ७। इंडि ह्महन्मः॥

वित्रमपुरा क्षी भूक्ष्यवाधः। यथा। यदाध क्षिका मुनारित्रव ज् क्षड-मिक्किन। वित्यभी छत्रमा ह म्याट भा भूक्षा वित्रय पुरा ॥ इंडि कहें।-यतः॥

वित्रशः भूः विष्ट्रतः। छ८ भर्यश्रायः। विभूवाञ्चः २ विभूरयागः ७ विरवागः ८। ইতি (इन्हिन्तुः ॥ ॥ । वित्रस् वर्गनीयानि यथा। छाभः। निष्यामः । हिन्ना। (मोनः। कृषाक् छ। व८-मत्र उत्पा ताकि देवर्ष्णः। ज्ञागत्रगः। भी उत्त उत्पा जाकि देवर्षः। ज्ञागत्रगः। विकल्लव्य छ।।

বিরহিণী জ্রী ভ্তি:। ইতি শব্দনালা। বিছে বিশিপ্টা নারী। বথা
। রতি: পু সো বিরহিণী শিব: জ্রী
বিরহী চিরণ। ঘথো ঘথোশ্চ সংপ্রাপ্তৌ কিং বভ্ব ঘথো: সুখণ।।
ইতি বৃক্ষবৈধর্তে শ্রীকৃষ্ণ জন্মখণ্ডে
৪৬ অধ্যায়:॥

বিরহিত: তি ত্যক্ত:। বিহীন:। যথা। অভিভ্তঞ্চাবনত ত্যক্ত স্ত স্যাৎ সমুজ্মত । হীন বিরহিত ঘুত মুৎ সৃষ্ট বিধুতে অলি 11 ইতি জটাধর: ॥

বিরহী পুণ বিরহবিশিষ্ট:। বিযোগ গী। যথা। বিহরতি হরি রিহু স রসবসন্তে। নৃত্যতি যুবতিজনেন সনং স্থি বিরহি জনস্য দুরম্ভে।। ইতি জয়দেব:।।

विद्रागः भुः व्यन्द्रागः। द्रागम् नुः। यथा। विषयम्बिन्द्रशासा भानस्मा भन উচ্যতে। তেম্বে হি विद्रासा हि निर्मानुः सम्हाङ्डः ॥ ইতি পুৰ্যাশ্চিত্ত তত্ত্বः॥

विज्ञागार्शः जि विज्ञागरगागाः । उद्भर्गरायः । विज्ञान्तिकः २ । इजि रहमहन्तुः ॥

वित्राजः भू वित्राहे। यथा। हेन्तुः हो वहनाबुक्तुः शन्तवा नव्यमञ्जवाः । खबत्त्वा व्यानमञ्जूका विद्राह्म खुः नत्मास्त एक ॥ हेकि वामत्म ५० व्यवग्रायः॥

वित्राक्षमानः वि ही छि विभिद्धेः ।
यथा । करे। करे। ह मास्त्रभाष्ट्रमधिः
विष्णिनियंत्रो वित्वाय वे विवस्नती
वित्राक्षमानमूक्ष्मि । श्रमक्षमक्षम क्वाय नार्रभ छे नावरक किल्णातः हम्मु मायद्व त्रिः नुक्तिका मार्थमा हो छ काणी थः छत्रावगक् छ छावः॥ विज्ञानिकः जि (माक्तिः। नीशः।
यथा। व्यकीव निर्मानः मातः मूर्यः
काम विनिन्तकः। भित्रकृष्ण नाविके श्रीत्रकः विज्ञानिकः॥
हेि वृक्षविद्यक्षं ग्रामिक्शिकः।
व्यक्षायः॥

विद्याहें भू. क जियः। ইত্যুनद्रः॥ স্লশরীর সমস্থ্যপছিত চৈতন্য। ইতি विशासमातः॥ #॥ महा-विद्राष्ट्रशिख र्यथा । श्रीनाद्रायन উবাচ। অথ ডিয়ে। জলে ভি ইন্ यादिष वुकारा। वयः । छतः म का-লে সহসা দ্বিখা ভূতো বভ্ব হ ॥ ভন্মধ্যে শিশু ত্মকক্ষ শতকোটি রবিপুভ:। ক্ষণ রোজ্যমাণচ ত ক্ষ: পীডিড: ক্ষ্বা ।। পিতৃ মাতৃ পরিত্যক্তো জলমধ্যে নিরা-भूगः। तुक्ता ७ मः यनात्या (या हरू भाक्षित्रनाधाव ॥ ज्लाट ज्ला-তম: সোপি নামা দেবো নহাবি-ब्राहे। भवमानु र्यथा मृज्याट भवः স্লাতথাপ্যসৌ ॥ তেজসা বো-ডশাংশো য: কৃষ্ণস্য পর্মাত্মন:। আবারো ২স থ্য বিশ্বানা মহান্ विक्षुण्ड श्वाक्षः॥ शुरुठाकः लाः নক্পেষু বিখানি নিথিলানি চ। उम्राणि (उदा॰ म॰थ्राक क्ष्मा

বক্তু न हि क्रमः ॥ সংখ্যা চেদুৰসা भिष्ठ विश्वानाः न कराइन । वुका विकृ मिवारीनाः उथा मःथ्रा न বিদ্যতে।। পুতিবিখেষু সম্ভোবং বুক্ষ विकृ निवारयः। भाजानामुक्तानाः কান্ত বুন্ধাণ্ড পরিকীর্ন্তিত।। অত উদ্ধেতি বৈষ্ঠো বুন্ধাণ্ডাছহি রেব চ। স চ সত্য হার্পণ্ট শখ্মারায-ণো यथा॥ অত উদ্ধৃ গোলক: नकाम (काहिरगां कार । निज्रः नज्रम्बनगण यथा कृष ख्यानायः ।। मध्बीम मिडा भृथी मधमानद्र **म**•यू जा। जैन नका म पून बी नाम•थ्ऽ শৈলসমন্বিতা ॥ উদ্ধৃ • মুর্গাঃ স্ব लाका वुक्तलाक मगदि गः। भा-তালানি চ সপ্তাধ কৈবে বুক্ষাও भिव है।। जेक्द्रिश्वाया ज्वाका ভুবর্লোক স্ততঃ পর:। ততঃ প-त्र<sup>क</sup> मर्लाका जानालाक उठ: পর: 🛚 ভত: পর স্তপোলোক: সত্য লোক নত: পর:। তত: পরে। বুদ্দলোক उপ্তকাঞ্চন নিৰ্মিত: ॥ এব সর্ব কৃত্তিমঞ্চ ধরাভ্যন্তর মেব-**চ। उ**धिनात्म विनामक मर्द्धशः (भव नात्रन ॥ कलतुषु म्वर अर्वः বিশ্ব সংব মনিত্যক । নিত্যৌ বৈ-क्षे (गालाको मछ्रो मचनक्

बियो ॥ পुভিলোমকৃপে वृद्धां ७ পুত্যেক মস্য নিশ্চিত ৷ এযা স স -খ্যান জানাতি কৃঞ্চো হন্যস্যাপি কা কথা।। পুভোকা পুভিবুদ্ধাণে বুদ্ধ विक् निवारयः। छित्रुः कार्वेतः तृ द्रागा**क मःथ्याः मर्द्र भूकक। नि**-গীশালৈব দিক্পালা নক্ষত্রাণি গু-कामयः। जूवि वर्गाक वज्जादा। ९१९-(या नागा क्रताह्याः।। व्यथ काला ह त्र विद्रारे छेर्जु मृद्धा भूनः भूनः । ডিয়াম্বরঞ্জ শ্ন্যঞ্জন দ্বিতীয়ঞ্জ কঞ্চ-न।। विष्ठा भवाभ क्कृत्यु क्कि। क्रांक्राम D श्नः श्नः। क्वानः शाना उना দধ্যে কৃষণ পরমপূ 🕫 যা ভতে। দদর্শ ত্তৈব বুক্ষজ্যোতিঃ সনাতনং । नवीनकननम्पामः विज्ञः भीज-वामनः॥ निषाः गुत्रलीहरः ७-ভানুগুহকারক । জহাস বাল-क छ। हे । जनक भी अब ।। वतः ত্তীয় দদৌ তুষ্টো বরেশ: সনযোচি-ত। মৎসমে। জ্ঞানযুক্তণচ ক্ষুৎ **लिलाना** दिव्हें जः ॥ युक्ता क्षान•-श्यानिवारा ज्य दएम वयादि । निक्रामा निर्ख्य रेक्टव नार्खियाः वद्र-দো বর: ।। জরা মৃত্যু রোগ শোক পীডাদিবচ্জি:তা ভব। ইত্যুক্ত্বা চ मक्कर्ण महामञ्जः युष्क्रवर ।। बिः

क्रक पुषकान (वरागन वर्त नर्त । । পুণবাদিচতুর্ধ্যন্ত কৃষ্ণ ইত্যক্ষর। षर्गा विक्रिकाराञ्ज निष्ठेक महिवान হর পর । মন্ত্র দত্বা ভদাহার क्त्रयामाम म भुजूः ॥ भुगुजाः मद्यहः ' শুত্ৰা নিবোধ কথ্যানি তে। পুতি-बित्त्रयु यहेम्राविष्ठाः प्रमाजि विकाद-জনঃ ৷৷ তৎ বোডশাংশ -বিষ্থিণে৷ विरकाः भक्षम्भग्रदे । निर्छन्ग्राः জ্মন শৈচৰ পরিপূর্ণভ্রমস্যাচ।। নৈবে-(म)न ह क्कमा नहि किक्षिट भूया: कनः। यम्यम् मनाजि रेनरवम् १० योग (एवाय (या जनः ॥ म ह थाम जि उ९ अर्बः लखी मृष्टेत श्रेन ड्रिंट । उक् মজ্র বর দ্ব। ত মুবাচ পুন হিভ:॥। बब्र मनाः किमिष्ठेष्ड उत्म वुहि मरा-মি চ। কৃষণস্য বচন শুত্রা ত মুবাচ मरावितारे॥ अपरक्षा वालक खब বচন সমযোচিত। **শ্রীমহাবিরাড**় वाह । वद्गः भ पुर्भमाञ्जाल **ভ**क्ति र्जवञ्जनिक्ता। महरू शावः मायुर्व्य क्रुगः वा जूहितः हि वा ॥ जुः ভজিযুক্তো যো বালে। জীবন্মুক্তশ্চ সম্ভত। বৃদ্ধ ক্রিছীনো মূর্থ ক্র জী বমপি মৃতে৷ হি স: ৷৷ কিন্তজ্ঞপেন **७१म।** यङ्क्ति भूषात्म ह । कृष ভিকিবিহীনস্য মুখস্য জীবন বৃথা

॥ (यनाजान। की विजन्ह उत्मव नहि ननारा । यावराजा महीस्त्र २ खि তাৰ্থন শক্তিসংযুক্তঃ ৷৷ পশ্চাদ্যা-**डि গতে ত यान् न यह जा क** म करः । স চ ত্বাঞ্চ মহাভাগ সর্বাত্ত্বা পুক্-তে: পর: ॥ (यहामयक नर्स्वराज्य) বুন্ধক্যোতিঃ সনাতনঃ। ইত্যুক্তা বা-লক ভাৰ বিৰৱাম চাৰান্তৰ। উবাচ कृषः পुजुः कि॰ मधुद्राः मुं ७ मृनतः রী । 🗐 কৃষ্ণ উবাচ। সুচির স্ভির তি । युषारु **५ ७** ७ ७ ७ ५ । युक् ণো হসংখ্যপাতে চপাত তেন ভ-বিষ্যতি ।। অংশন প্ৰভিবুক্ষাণ্ডে ত্বঞ্চ ক্ষুদু বিরাড্ভব। তথা ভিপদ্মে বুন্ধা চ বিশ্বসূচ্চা ভবিষ্যতি ॥ ললা-हि तुक्त गरेक्टव अमा रेक्टकाम रेक्टव कु। শিবাংশেন ভবিষ্যন্তি সৃষ্টিস্ঞার-गाय रेव।। कालाशिकम् (खाञ्चरका वि-**"थम' हा** इ का द्रक:। भाउ। दिक्षण दिवधी कृ हा रणन ভदिवा । म-ভক্তিযুক্ত: সতত ভবিষ্যসি বরেণ स्म । श्वातन कमनीयः भाः निक्तः দুক্স্যসি নিশ্চিত ।। মাতর কমনী याक मन वकः इवञ्जाः। यानि লোক তিঃ বৎসেত্যক্তা সো ২স্ত-वधीयञ ॥ भदा चलाक वृक्षाण **गहतः म** উवाह इ। मुक्षेत्रः मुक्रूमी-

मण्ड म॰इस्रिक उटका॰॥ श्रीकृक উবাচ। সৃষ্টি· সৃষ্টু· गह व**्म ना** छि পদ্মোদ্ভবে। ভব। মহাধিরাল্লোম-क्ल कू मुन् । विष मृत् ॥ गह वर्भ स्राहित वुक्त जाला खारा ख्व। व्याप्ति व सहाजान स्वक স্চিরণ তথাঃ ॥ ইত্যুক্ত্বা জগতাং না र्था विववास विधि खडः। क्रगान বুহ্মা ত॰ নত্না শিবশ্চ শিবদাযক:।। মহাবিরাল্লোমকূপে বুস্ধাণ্ডে গো-লকে জলে। বভ্য চ বিরাট্ ক্ষদ্যে বিরাড শেন সাম্পুত ৷৷ শ্যামো যু-বা পীতবাসাঃ শ্যানো জলতল্পকে। वेयकानाः भुननारना विषवानी जनार्फन: ॥ उद्याजि कमत्व वृक्ता व ज्वकमलाच्छवः। मःज्यभग्रम् ७क **ब्लाम यूगलकका।। नाउ॰ जगाम** দণ্ডস্য পদ্মনা ভস্য পদ্মন্ত:। নাভি-ক্লস্য চপ্মস্য চিন্তা মাপ পিতা छव ॥ अञ्चारत शुन ब्रागङ्य मस्त्री रुष्टेः भराष्ट्रकः। उत्ता परणं क्र मुख कारणन क्विडिक्क्सा ॥ मधान জলতল্লে চ বুক্ষাণ্ডে গোলকাবৃত্তে ॥ यहामक्ष्य वृक्षा ७ ७ ७ ७ ८ পরমেশ্বর। 🗐 কৃষ্ণ ঞ্চাপি গোলে। ক গোপ গোপী সমন্বিত।। ত সংস্থ বর• প্রাপ ততঃ সৃষ্টি ঞকা-

র স:। বভ্রুবুজিণ: পুরা মানসাঃ ननकाम्यः॥ ততো कृमुः कभावा-ष्ट मिवाःरेमकारम मृजाः। वज्र भाजा विकृष्ठ कृ दुम्य वामभार्य डः ম চত্তু অশ্চ ভগবান্খে ভদ্বীপ নি· বাসক্থ। ক্ষুদুস্য নাভিপদ্ম চ वुष्ता विकुः अभक्तं ह।। बर्गः वर्ज्य পাতাল ভিলোক সচরাচর । এব সর্বণ লোমক্পে বিশ্বণ পুত্যেক মে-ব চ।। পুতি বিখে জু দুবিরাট বুন্ধ বিষ্ণু শিবাদয:। ইত্যেব কথিত। বৎস একৃষ্ণ কীর্ত্তন পরণ।। সুধদণ भाकर नाव कि ज्यः (नाज मि-इमि ॥ इंडि वुक्तरेवदार्ख भुक्डि-थएउ २ वर्षायः ॥ आ साय खुरमनुः া যথা। গতেষু তেষু সৃষ্ট্যর্থণ পুণামা-বনতা নিমাণ। উপযেনে স বিখা-ত্যা শতক্ষা ননিদিতা ।। সমূভূব তথাসার্দ্ধ মতিকামাতৃরো বিভূ:। नवङ्जाः ठकाम (एवः कमाला एत्रमः न्द्रिया यावहक् नज् दिवाः यथा-ন্য: প্ৰাক্তো জন:। ততঃ কালেন নহতা তভঃ পুগ্ৰে। ভবমনুং।। স্বাৰ सुव इंडि थ्यांडः म विद्रांडिंड नः मु.उ॰। उद्गुल ७१ जामान्यामधिनू-ক্বৰ উচ্যতে।। বৈরাজা যত্র তেজা-তা বহুব: শংসিত্রুতা:। স্বাষ্ট্রবা

বিরাল

गराजागाः मध मध उथा भारत्।। ৰায়েচিবাদ্যা: সর্বে তে বুক্ষভু नाः **चक्रियः। छे**ब्रिम्पूर्या खबल्पवा॰ दः मधामा १वृना ॥ ইতি মাৎসে ৩ অধ্যায়:॥ दिवार्धः भूः रमनिवत्नयः। इंडि व्यक्तद्वावनी ॥ उत्प्रकीयद्वाद्या। ব্বা। অত্র শুরা নহেয়াসা ভীনা-क्क्नि सभा यूथि। युगुधारना विद्रारे क ব্দপদশ্চ মহারথ:।। ইতি শ্রীভগ-वरगीजायाः > व्यव्यायः ॥ विद्राहेक: রালপউ:। ইভি (रुगठनमः॥ वित्रावेबः भू वित्रावेदम्मीयशेत्रकः । তৎপর্য্যায়:। রাজপউ: ২। রা-জাবর্ত্ত: ৩। ইতি হেমচন্দ্র: ॥ বি রাটরালকাতে বি।। বিরাণী <sup>শ</sup>পু• হন্তী। ইতি **শদ্মালা** दिद्राधः भू রাক্ষসভেদ:। यथा। লক্ষণস্য তু ভদ্বাক্য শুত্রা রামণ ততো বুৰীৎ। পিতানে ভূৎ সূপ র্জন্যে নাতানে চ শতক্ষতা॥ বি वाध इंडि या याङ প्थिब्रा॰ नई त्राक्षमाः। उँ८म्ब्रुभ्मना समाः भनारवजाः भन्नाद्मार्थो ॥ उह्य রাম মাহেদ লক্ষণ: কি পুর্তীক্ষ-(म । हेर्जुङ्गः लञ्चरमा वीव्र व्यानमा

**मून्डबनुः॥ উৎস**সর্জ শর॰ হোর॰ कामराखाभमः ७७:। ७ हतीतः মহাকায় ভিত্ত্ব। পাতাল মাৰি-শ<।। পপাতাশু গতপুাণ: সফে-ন ক্ষির বমন্। ওতো হসৌ রাম **बार्डिन शुक्षित विन्यानिजः॥** जुनूक नाम शक्त ई: शुक्तिक्षा द्राक-সী তুন । অভিশাপাদছ । বোর भारका रेव भूवत्यन रेव ॥ भूजामाना नः न भवा शुविष्याः शुनः शूनः । यहा हामद्रशी द्राभा ভবিষ্ঠতি মহাবল:।। শাপস্যান্তা ভবিষ্যু ত্তে তেন রামেণ সংযুগে। পুসাদা-खर मुक्कारं गमियामि समान-यः ॥ इंडि विज्ञात्म जूर्मनथा कर्पनामिका८कर्डन नामाधायः॥ विद्राधन क्री পীডা। ইতি শদ্-ब्रद्भावनी ॥ বিরাধান ল্লী পীডা। ইতি শম্-ब्रङ्गावली ॥ विवाधानशिकिक भाटेः॥ শেষ:। নিবৃত্তি:। विद्याय: वित्रि । उट् भर्य। यः । यदमानः ২ সাভি: ৩। ইতি জটাধর:॥ মধ্যুণ ৪। ইতি ত্রিকাগুশেষ: ।। পর্বণা-ভাব:। ইতি ব্যাকরণণ।। বিরাল: প॰ বিডাল: ৷ ইভামর: होका ॥

**लू॰ जदः। इ**डामदः॥ विद्रावी जि विद्राविणिष्ठेः। वि ब्रावा विराउ शमाजि हेन्नुजा-ষেৰ নিয়ম:।।

वित्रिक्तः जि क्डवित्रकः। यथा। দূর্বিরিক্তস্য নাভেম্ভ স্তর্নতা 🕶 किन्वकर्। भूबीय वाउनक्रक কণ্ডু মণ্ডল গৌরব ।। ইতি ভাব-পুকাশ:॥

विविधः भू तुका॥विष्यः॥ निवः । ইতি नदब्रावली ॥

বিরিঞ্চন: পু•ুবুক্ষা। ই**ভি হেন**-व्यः ॥

विविक्षः भू• **नि**वः॥ विक्षुः॥ वि-ধাতা। ইতি শব্রজ্বাবলী।।

বিরিক্ক: পু॰ স্বর:। ইতি মুক্ষবোধ-ब्याकद्यनः ॥

বিৰুদ্ধ: ত্ৰি বিরোধবিশিষ্ট:। যথা। বিৰুদ্ধৰ্মসম্বাযে ভ্যসা স্যাৎ गधर्मकद्य• । ই**ভি জৈ**भिनिস্**य•** ॥ বিৰুদ্ধ ওক বাকস্য বদত্ৰ ভাবি-**७**॰ नया। ७९ क्षच्चतुः दूरि (इव মৃতি তত্ত্বভূৎ স্থা।। মৃতিভল্পে श्रुभागान्य विकक्षः वङ् ভाविछः। खनानमानुदारमन उत्हारा धर्म দৰ্শিভিঃ॥ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ॥ বিক্তা: ত্রি অন্ত্রিত:।। জাত:।

इंडि (यपिनी ॥ भारत्राह्गविभिक्टैः । यथा। जन्नाः डिज्गाः भूदा मि व्रिलो कथ्न (मार्जनी नीनाम्न भूम विकामित्रामा वीत्रमा **विश्व**य-রণ। ইত্যাদি মুরারি:।। विक्ष क्षे निष्यनीम्नः। इंडि

ब्राङ्गिर्घिष्टः॥

বিৰূপ: 'ত্ৰি **ছ**ৎসিত:। ছৰূপ:। যথা। বিৰুপোন্ম**ত্ত নিশ্বানাম্বত**্ৰ-मा भूदेक हि स्ट । भूतक मान মালাভ্যা মনুগুৰ উদাহত: ॥ ইতি রামভর্কবাণীশ:।। স্বার্থে কে বিৰূপক্ষ া

বিৰূপ: পু॰ সংযোগাতপুল:। যথা । जाजाः सुन्दाः नृकः खगः स्दा गश्यनाः । मुम्बिक विदालक সভ্য: শাস্ত্রার্থ পার্যা: 😬 ইতি কালিকাপুরাণে ৯০ অং, यः॥ বিৰূপা .ভী দুরালভা॥ অভিবিৰা । ইতি ব্যক্তনিঘণ্ট: ॥

विक्रभाष्मः भूः निवः। ইত্যমরः॥ कृत्जिरः। ইতি बहायतः॥ उत्र পুরী সুমেরো নৈর্থতকোণে বর্ত্ততে । यथा। उथा हजूर्थ दिशुरगरेनर्भ-তাধিপতে: मु.जां। नामा कृष्णविजी নাম বিৰূপাক্ষস্য ধীমতঃ॥ ইতি वादारह क्रुगीजा ॥

বিক্লিকা জ্রী স্ব্রপা। যথা।
নাম্মাং পরিবিন্দ্স্তিন যজ্ঞান তপাংসি চ। ন চ শুদ্ধে কনিপ্তস্ট
যাচ কন্যা বিক্লিকা।। ইত্যুদ্ধাহভক্তু

বিৰূপী er. कार्वज्ञः। ইভি রাছনির্ঘণ্টঃ।। ছক্পবিশিষ্টে জি।। বিরেক: मनाजिपः । उट्-পর্য্যায়:। রেচন ২ রে কঃ ৩ রেচনা 8 विद्याहन १ ६। इंडि मदत्र वावली ॥ भुकन्तनः ७। ইতি द्रञ्चाना ॥ विद्रिष्ठक: ত্রি (ब्रञ्कः । विद्वकः कात्रकः। भाग्नकः। भवास्वरकः। জোলাব ইতি আরবী ভাষা। বি পূর্ক রিচ্ পাতো বুন্ পুত্যবেন निम्रमः। इंडि रेक्सुकः॥

विद्राहन की विद्राहर । इंडि मफ् प्रद्रावनी ॥ उटकाबर भेषधा यथा। रती की मनख्डा नधुना महर्श विज्ञा। विद्राहनकती कर्नू छवजीडि न मः मणः॥ जिक्ना हिज्रक हिज्र उथा कर्रे हदारिनी । छेक्छ स्र ह द्रा । एष छेडमछ विद्राहन ॥ अ-शिहा जिक्ना वहत्र माक्ना शिल्ल-नी ह विद्राह्न । रती क्की सा यभीता नामध्य विद्राहक्ट । इंडि शास्त्र ५ ११ १८०० स्वार्श ॥ अ।

व्यन्।इ । व्यथं विद्युष्ठनविश्वः । श्रिश्व विसाय वाखाय मन्त्राट सम्प्रान्तिः চन·। व्यवासम्। द्वः मुखा गुह्नी· ष्ट्रागराय ककः ॥ मन्तान भीत्रवः वर्ग) ब्ह्रनरयहा भुवाहिका । अथ বা পাচনৈ ব্লাম বলাস পরিপা-हरवर ॥ व्यन्तानान्त्रियक कार्या माथन॰ मीनाराष्ट्रयः। चाठारारक পুণসংকটে ॥ পিত্তে বিরেচনং गुक्कामारगाम्ब्रं गरम उथा। छैन-রে চ তথাগ্নানে কোঠশুদ্ধৌ বিশে-यजः ॥ प्राचाः कपाहिर व्यभाष्टि জিত। लहुन शाहरेनः। (भावरेनः শোধিতা যে তুন তেবাং পুন ক্জ वः॥ वाला वृष्का ज्य निकः क उ कीला जगित्र :। भाष ख्याई: স্ল 🕫 গব্ৰিনী চ নবজুদ্দী।। অংশাগ রক্তপিতী চন বিরেচ্যা বিজ্ঞানত। । नवशुम् का नाजी ह सन्तः शिक्त समा-उपि।। भन्यार्षिउक बक्कक न विः রেচ্যা বিজানতা। জীর্ণজুরী গর-व्याखा वा उन्नकी जगनादी॥ अर्गः পাণ্ড্দর গুছি হুদ্যেগাকচিপীডি-छा:। यानिरवाग भूमशाई धना প্লীহ বুণাদিতা:।। বিজ্ঞান্ত হুদি বি-স্ফোট বিস্চী হ'ছ সংযুতা:। কৰ্ণ না-সা শিরো বক্তু ওদ মে দ্রান্যান্তিয়ঃ

।। श्लीर (नाथाकित्रागार्डा: कृभि ক্ষারানল। দিঠো:। শুলিনো মূত্র-ঘাতার্তা বিরেকার্হা নরা মতা: ॥ বহুপিত্তো মৃদু: প্রোক্তো বহুলো-মাচ মধ্যম:। বহুবাত: ক্রর কোগো पूर्वित्त्रऽाः म कथारङ ॥ मृघी भाजा म्(नो (कार्ष्ठ म्युरकार्ष्ठ व स्थाना। ক্রে তীক্ষা নতা দুবৈ। মৃ দু মধ্যা ম-**ीक्टेकः॥ मृनु मृश्का भय म्ह**ळू टेड-**লৈ রপি বিরিচ্যত।মধ্যম** জ্রিব্তা-তিক। রাজবৃকৈ বিবিচ্যতে ॥ ক্র: नुक् भयमा (इसकी दी पड़ी क ना दि-जि: 1 हक्षुरेजन भाव खेरेजन • 1 वाक-तृष्णः धनवरम्त्रा। (इसकी बी काकः । मङ्गीकनः वृष्ट्यश्रीकनः अग्रान উলি প্ৰ**সিদ**া নাৰে।ন্তন্য বিৱেক-अ गरवर्गः कयः। जिला। (वरेन িশাভভি অব্যাহীনোক্তা দশবে-গিকা। দ্বিপল• শুেঁও মাথ্যা**ত**° ম-थामक भनः खरार। भनार्षक कः यायागाः कनीयस्र विद्यहनः ॥ कन्न भारकष्र्वानाः क्यं मधुराकाऽला**रुउः।** क्यंबग् भवा वाभि वर्या (ब्रागान्) পেক্ষযা।। পিভোত্তরে ত্রিবছর্ন দুন काकाथानि छि: भित्र । धिक्रना ক্বা**থ** গোমূত্রৈ: পিৰেৎব্যোষ ক্ফা फिंठः॥ बित्द रमयत मुधोना पूर्व

নীয়: পিবেমর:। বাতাদিতো বিরে: काय काक्षानाः व्यवन वा ॥ अत्र ७-তৈল' ত্রিফলাক্বাথেন দ্বিভাগেন বা। যক্ত পীত প্ৰোভি ৰ্বা ন চিব্লেণ বিরিচ্যতে ॥ শী যুমেব বিরিচ্যত ইত্যৰ্থ:। ত্ৰিব্তা কোটল বীজ পি-পুলী বিশ্বভেষজ। সমৃদ্বীকারসং क्षिपु॰ वर्षाकात्म विद्युष्ठन॰ ॥ जिन्-फूबाल जा मुख नकरबामीहा हन्त्-ন । দুক্ষাস্থ্না সপ্সাস্ত্ৰ শীত व र घना छाए। । छेरी छा वाना। यनाजुरय महि । शिश्ननी नागद्र॰ সিকু শ্যামা ত্রিত্ত । সহ।। লিহাৎ কৌদুণ শিশিরে বসন্তে চ বিরেচনণ मारामा क्षमा है। बिव्डा मक्ता ज् न्। गुीयकारन विद्युष्ठनः॥ अভ्या মরিচংশুগ্রী বিভশামলকানিচ। পি-श्रनी निश्ननीम्न वक्षण मुख स्मव চ।। এই নি সম ভাগা ন দ্বী তৃদ্ধি खना चरवर। जिन्डा हेलना रक्तिमा यः **एछना वाज भ** मंत्रा।। नश्ना सामकान् कृ द्वा कर्यशाबान् श्रुमागणः। এकिकः जकत्यर भा जः भो उक्षान् शिरवङ्कः ল ।। ভাৰদ্বিচ্যতে জন্ত ৰ্যাবগুঞ্চ ন সেবতে। পানাস্থার বিহারেষু ভবে विर्यञ्जभः भना ॥ विरम कृत स-न्तानि भाञ्च कात्र जनम्बान्। मुनाम

ষষ্ঠ যক্ষার্শো গলগণ্ডোদর ভুমান্।। বিদাহ প্লীহ মেহা শ্চ যক্ষাণ নয-नामयान्। वाज्ञात्रागाः ख्याध्यानः নুত্রকৃ हु। বি চাশারী ।। পৃষ্ঠ পার্যো। क् बधन बह्माम्ब्रक्ब ब्राय्या मः **७७॰ मीलनाम्या॰ भ**लिङानि भु-**ণাশ**যে**ে। অভ**যামোদকাছেতে র नायन वद्राः मृजाः । অভযামোদ-কোরসায়ন:।। 🛊 ।। পীত্বা বিরেচন भी उक्तेलः म· मिठ्र ठक्कृषी। मूगिक् किकिमाञ्चाय जात्रूनः भीनायबद्धः॥ নিৰ্বাতস্থো ন বেগা॰শ্চ থার**ে**ম শ যীত চ। শীতামু নস্শেৎ কাপি কোঞ্নীর পাবেমুছ:।। বলাসৌ **ষ**ধ পিত্তানি বাযু বাঁতে যথা বুজে**ং।** রে গাত্তথা মলা পিত্রা ভেষ্তা চ কচে। বুজেখ্যা দূর্বিব্লিক্ত**স্য নাভেস্ব** তন্ত্ৰ **স**্ফি শ্লক্ৰ, প্রীয় বাভ नक्षक कञ्च मञ्ज भीत्रवः॥ विना-हि! २कि ब्राध्यान जुन मू निम्ह जा-यछ। ७ : भूनः भाजीनः (मुहिन्: भक्ता সংস্থিত রেচবেৎ।। তেনাস্যেপদ্ বা যান্তি দীন্তাণ্নি লাঁয়তা ভবেৎ। বি (त्रक्ना) किर्याणन मूही कु स्ना छ। मना ह ॥ मृन व का उर्याणः ना আপ্স ধারণ সন্ধিভং। নেদে।নিভং জলাভান রভঞ্চি বিরিচ্যতে॥

ভস্য শীৰাঘুভি: সিজ্য শরীর• ত खनायुन्धिः। नथुनिरेम् उथा मीडिः कात्रयम्बननः मृमु ॥ मङ्काद्रष्ठः कल्ला म्या भोवीद्राकन वा। निष्टे। নাভি পুলেপেন হস্তাতীসারমল্বণা भोतीब्रह गरेव ब्रास्मः शर्व दी व्हिची क् उ॰। (भोवी द्र॰ मक्तान॰। बाकः की-त्र· त्रमकाभि विद्यतः शातिन· उथा। **णालि : रि**डे किला अन्रेत दी-পি ভোজ্যেৎ। বর্ত্তিশ্ব লাব বিকির কপিঞ্জলক ভিভিরা: ।। চকোর ক্র-করাদ্যাশ্চ বিষ্কিরা: সমুদাছ্তা:। কপিঞ্জল ইভিখ্যাভো লোকে ক-পিশতিভির: 🛭 ক্রকর: কএর ইভি লোকে। হরিণ স্তাম্বর্ণমূগঃ। শী-रैजः मःगाहि जिपू तेयाः सर्वार मः शुष्टन• ভिषक्। लाचरव मनमस्रेष्ठी-यन्तामः गएउ श्निला। नृविविकः নর জ্ঞান্তা পাচন পায্যেলি। के निव्याणाः वनः वृष्कः श्रुनामा व-क्लिलेखजा।। शाजुरेख्यं। वयरे हर्यं। ख्रापुष्टन (भवनार । भुवाक (भवाः শী তামু (সুহাভাস মহীণতা।।। ব্য-বাষ দৈখুন চৈব ন সেবেত বিরে-**ठिउ:। मालि यश्चिक मून्गरिन**। येवा-গু ভোজ্বেৎকৃতা ।। কল্বাল বিষ্কি-द्वानाः वा **द्रोमः ना**त्नामनः हि**७**ः। হ রিশেন হর হ ব্রবাতাযু মৃগ মাতৃ
কা: ।। রাজীব: প্যত শৈব জদ্বালা
সর ভাদয: । ইতি ভাবপুকাশ: ।।
বিরেচন: পু॰ পীলুবৃক্ষ: । ইতি
রাজনির্ঘট: ।।

विद्रकः भू॰ नत्माञः। ইতি धनः क्षयः॥ द्रिकमृन्यः।।

বিরেভিত: ত্রি শব্দিত:। বি প্ র্বাহ রেভ থাতো: জ পুত্যুয়েন নিয়ম:॥

विद्धाःकः क्ली हिन्दः। ইতি ত্রিকাও শেষः॥ স্থ্যকিরণে পুং। ইতি হলাযুধ:॥

विद्धाननः भ् भूर्यः॥ श्रक्त्कः।
हे अप्रदेशः॥ श्रङ्कान्ड नयः॥ श्रद्धाः।
हे भूरः। हे अप्रिनी ॥ द्वाहि अहः
वृष्णः॥ (म्यानाक्रभु जन्मः॥ घ् उव्यक्षः। हे अप्रिनी विर्वाहे ॥

বিরোচনসূত: পু• বলিরাজা। ইতি তিড়াওশেষ:।।

ভিযোগিত্ব'। ইভি চিন্তামণি: ॥ সাধ্যাসমানাধিকরণ্য•। ইতি দী-থিতি: ॥ #॥ বিরোধকরণে দোষো যথা। অথ পুঞ রেণকা সা কৃত্বা স্থেহাৎ ৰবক্ষসি। উবাচ কিঞ্চি-ছচন পরিণাম স্থাবছ া৷ অবি -तार्था खवास्त्री ह नर्वमञ्ज मन्-वः। विद्यार्था नामवीबक मह्या-शर्व कात्रभः ॥ व्यक्तिंद्यः। विद्या-थण नाक्रेंगः क्वितिः जन्। शु-ভিজ্ঞা চৈষা কর্ত্তব্যা মদীয়া বচনা শৃণু ॥ ইভি বুদবৈশর্ভে গণপতি-খণ্ডে ২৯ হাধ্যায়: ॥ জ্ঞা অপিচ । ন স্ব গ্রান্থভৃতিঃ সার্ঘ্যা বিরোধণ ব-স্কৃতি ভথা। শাজান: পুরিকুলানি পরেবাং ন সভাচরেৎ ॥ ইতি কৌ-র্ম্মে উপব্লিভাগে ১৫ অখ্যায়ঃ॥#॥ প্রভবাদিষপ্তিস•বৎসর\*ৢর্গভত্রয-ক্রি·শবর্য•। যথা ভবিষ্যপুরাণে। ভৈরবউবাচ। বিষমস্থ-জগৎ সর্ত্ব• বিরোধে ভ্যস**প্রব•।** বিকারী **স**-ৰ্বতো হপাথো মন বাক্যন্ত নান্য-থা। ইতি জ্যোতিস্তভূ•।। #।। অ• নৈক্য:। বিপরীভার্থ:। যথা। শুভি মূতি বিরোধে তু শুতি রেব গরীয় সী। অবিয়োধে সদা কার্য্য স্থার্ত্ত• বৈদিকৰ**ে সতা।। ইতি ফৃতি:।।** 

विद्याधन क्ली विद्याधः। ইত্যুমর:॥ বিরোধনী জ্রী বিরোধকারিকা। **यथा। विद्याक्ष व्य**क्षक हान्। संस्था-ত্যো: প্রীযমাণযো:। বগুরা: সুজ-मा शिखाः श्रेखः मात्रागरेकक या া৷ বিরোধিনী সা তদুক্ষাণ স্বর্বী ত विवक्षी। इंडि मार्क् अग्रतात দু:সহবংশোৎপত্তি: II · বিরোধী পু॰ শত্র:।ইতি হলা युषः॥ পুভবাদি यश्चि मध्य मद्रा-ন্তৰ্গ ক্তৰ্যোবি শবৰ্ষ। যথা ভবিষ্য পুরাণে। ভৈরব উবাচ। অনগ্ন পু वना लाका शास्त्रीयथी भूभी छन्। कायरक मानुरम क्रष्टे॰ दिखाबिनि न-**मः म**गः ॥ इंडि क्यांडिस्यु ॥ বিরোখবিশিষ্টে ত্রি ॥ বিরোধোক্তি: জ্রী পরবচনবিরোধি वहनः। उद्भर्गायः । विभूनाभः र বিরোধনাক্ ৩ ক্রোথোক্তি: ৪ পু-लाभः ६। इंडि नप्तज्ञावनी।। ্ত্রা। ইতি কবিৰুল্ল-क्यः॥ ज्ञितिह जाहाम्यः। भ বিলভি বস্ত্রণ লোক: পরিদ্ধাভি ইত্যৰ্থ:।বেলিতা। অয•িকন্টিম-मन्राउ। ইতি দুর্গাদাস: ॥ विषा क्षी हिनु । इंडामदः॥ ७३। । इंडि (मिनी।।

উहि: मुवाइय: । इंडि (यिनिनी ॥ (वजनः । ইভি শদ-विम्का॥ विनकाती शु॰ म्यकः। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট: ।। গর্ভকারকে ত্রি।। नथाः। यथा। मरधा **९**वनगुः विनगुः संश्रासा **१० क**हेः কটি: 1 ইতি হেমচন্দু: 11 জন্মলগ্ন-। यथा। গোচরে বা বিলগ্নে বা যে गुरा ब्रिष्टिम्हका:। भूजरयङान् भू-যত্নেৰ প্ৰিতা: নৃগ্: শুভাবছা: ॥ (गाठ्य स्वामाऽभक्षया यसाक-माशि। विनाय कम्बाय । इंडि স'কারতভুং ॥ মেষাদিলগুনাত্র•। यथा। मुज्यूकार्कवाद्य व मृमुक्कि-পুপুবেষ্ চ। मुख्यामि विवाध চ শুভ শান্তিক গৌতিক।। ইতি দী-शिका॥ मः नाम वि। यथा। विनम् न जियाः नाषा वियु ना सामाना नः কে। ইতি মেদিনী।। বিলজঃ ত্রি লজারহিতঃ। নি-र्लेक्तः। यथा। जनय गठ नित्नाण-শৈশ্বে সৌখ্যভাগী ন ভবতি कन्नजानी योदान व्याधियुक्तः । জনযভি সূত নেক' নিৰ্ণয় নাশবি-ত্বা চপলমতি বিলক্ষ্য: জুরকর্যা ব্চেল:॥ ইভি জ্যোতিৰে পঞ্ম- স্থানস্থ রবিফল ।। বিলপন প্লী বিলাপ:। ভাষণ । বিপূর্ব লপ ধাতো: অনট্ পুত্য বেন নিয়ম ।।

विनम् भू नम् । (गोनः। यथा

(मवी मृद्रातः । व्यकातः भाष्य दा

कातः ठीर्थमान्नः छथा नदेः ।

भूतिश्र द्रव मना कार्यः कर्खवः

निञ्डर्भनः॥ निश्रमानः छड मः

सः निञ्गका छिमूर्स छ। विन्या

रेनव कर्ख्रा न ह विन्नः ममान्द्रद्र
॥ ইতি পু। यान्व खड्ड इनुः॥

ा इंडि शूर्याक्ष उडुः।।

विवादनः क्ली जानीपुः। इंडि विवास्य क्लीकार्याः चत्र उः।। शुक्र वादि क्लिक्ष क्लिक्ष

नाः वरानाः उदारिकाः मञ्जाः। ইতি মধু: ৷৷ সাঞ্জে: ফ তা মধ্যযনে বৃত্তি পুযোগার্থে তু মধ্যমা। नि -ষ্যাণা মুপরোধার্থে বিল খ্রি**ভা• স**-माठात्रद्या ३७ (वस्य) वश्रा । नृष्ठ) গীতাদৌ চ পুতেরক মবসর বোধা-र्थः कश्चे त्रज्ञामि विलयनारः। विलय-ম্ভে কর চরণাদয়: প্রত্যেকণ গতিবি-শেষ পুদর্শনাযাত্রেতি বিলম্বিত । **ল**বিত্ত সুংসনে ধ্রৌব্য গভ্যদনার্থা-দিতি আধারে ক্র:। ভাবে ক্র: ইতি মৃঙ্গট:। ইতিভব্নত:।। বিলয় গমনশীলপশু:। তদ্মথা। দ্বিরদ খন্ত্ৰেষ্ট্ৰ মহিব গো গৰ্য চনৱ ব-রাহা:। ইভি রাজনির্ঘণ্ট:॥ বি**লম্শ**ক্ষাদিন্ পুত্যুযেন নিম্নন্ন: ৷৷

বিলম্বী ত্রি বিলয়বিশিষ্ট:। ইতি
বিলম্বশন্দিন্পুত্যযেন নিয়ন্ন:।।
বিলম্ভ: পু: অভিদান:। তং.পর্য্যায:। অভিসজ্জন:২। ইত্যমর:।।
বিলয়: পু: পুল্য:। ইতি শন্দ্র

বিলল। জ্রী খেতবলা। ইতি রত্ন-মালা॥ ব

বিলবাস: পু• জাহকজন্তঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

विनवाजी न भू जर्भः। इंडि भय-द्रजावनी॥ विनगरः भू नर्गः। ই छि मस् इङ्गादनी ॥

विनमन वि विनामयुकः। यथा। दुक्रमुमुता विनमः कनाः। अञ् वन भिया मूबरेवित्रनः। इंडि इत्माः मेखती ॥

বিলক্ষ: ত্রি বিদ্যোগিত:।ইত্যার:
বিলক্ষণ ক্লী ছেতৃশ্ন্যাস্থা। নি
স্থােজনস্থিতি:। যথা। বিলক্ষণ
নত স্থান যক্তবেলিগ্রুযোজন ।
ইতি ভাশুরি:॥ইত্যার ভরতৌ
॥ ভিলে ত্রি। ইতি কটাব্র:॥
বিশেবলক্ষণযুক্তঞ্ছ।।

विवाक्षण की मगुरित्मवः। यथा
। मट्मुमूद्राण। जामोठास्मृ
छीरयद्गि मगुर्गः प्रमु हिवक्षणः।
काक्षनः भूक्षयः उद्दर्ध कवा भूम्न
नम्भित्रः। मःभूक्षु विक्रपाणागुः
नानास्त्रण स्थाः। व्रवार्मणागुः
कर्स्त्रा प्रमा ह किलवा मूला।।
विक्रपणानेः भूक्षित् काक्षनः
(भूज भूषिक् जिक्षाः भूक्षः कवा
वस्त्रगुजः मगुर्गा माद्राण्ड स्थितः
विक्रपणानेस्त्राम् मगुर्गः प्रमुर्गः।
हेलि मूक्षिज्युः।।

विवाशः भू श्रनुरमाहरनाकिः । ७९. १४ व्यापः। भित्रदेवनः २ । ३७ ४-

शतः ॥ व्यक्षितः । कन्तनारमे विना-भः नाष्टः भित्रप्तन भिजानः । देखि मद्गत्रावनी ॥ विनारभा मूः-थकः वतः । देखाक्कृननीनमिनः ॥ विनानः भूः यञ्चः । देखि भद्मतिनु -का ॥ विजानः । देखानः ॥ देखाना

विवामः भ् इावरजनः। इठाः भदः॥ नीना । इठि भिन्नो ॥ जीनाः विवामानयः मृङ्गाद्रजाव-काः किया श्विमस्यस्माहारस्य । भियमभीभ गमान यः स्नामन ग-

মন বিলোকনের বিকারো হকমাচ কোধ মিত চমৎকার মুথ বিক্ন-ন• স বিলাস: । তথা চ। যো বল্ল-ভা• চানুগতো বিকারো গত্যাসন

স্থান বিলোকনেয়ু। তথা খৃত॰ ক্রোধ চনৎকৃতী চ বিক্ননঞান্য গত॰ বিলাস:।। তথান্যত্র। তাৎ-কালিকো বিশেষস্ত বিলাসে। ২স্থ

ক্রিযাদিষু। তাৎকালিকো দ্বিতা-লোকনাদি ভব:। ইতি ভরত:॥

#॥ অপিচ। গতিস্থানাসনাদীনা॰ মুথনেত্রাদি কর্মণা॰। ভাৎকালি-কন্ত বৈশিষ্ট্য॰ বিলাসঃ প্রিয়সঙ্গ-

कः। ইত্যুজ্জ্লনীলনণিঃ॥ #॥ অ-ন্যাঃ। যদুপং তদভেদেন শ্বৰূপেণ

বিরাজতে: আক্ত্যাদিভি রন্যাদ্ক্

न उत्स्काञ्च क्लकः ॥ न विलामः
चा॰म इंडि ध्रेख (छम्ह्य॰ शूनः ।
छव विलामः । चक्ल सन्तर्राकातः
यङ्ग्र छाठि विलामः । शुर्यगाञ्चमभः मेळ्रा न विलामा निगन्राउ ॥ शत्रम्यद्रामनाथ्छ (गाविन्त्न्त्रयथा स्व । शत्रम्यः ॥ चा॰
माः । ठाम्स्मा न्रम्मिकः (या वऽनक्कि चा॰म हिति । मक्षर्यगिम्
र्या म्रामि र्यथा छङ् चन्ताम् ॥
इंडि छागवठाम् उ॰ ॥

বিলাসকানন লী জীডাবন ।
বিলাসবিপিন । যথা। যদীয় হল
তো বিলোক্য বিপদ কলিন তেনথা জলোদ্ধ তগতি: । বিলাস
বিপিন বিবেশ সহসা করোত্
হশল হলী সজগতা ।। ইঙি
ছন্দেন গুরী ।।

বিলাসনন্দির ক্লী ক্লীডাগৃহ। ইতিকেচিৎ।।

विलामवि च्यानमः बि ल्वाः। इंडि

विनातिनी खी नाती। इंडिबाक निर्धितः॥ विनाता। इंडिबन्छ्यः॥ दिनाता पु॰ ভোগी॥ व्यानः॥ क्कः॥ व्याः॥ हन्तुः। इंडि स्मिरिनी ।। स्मानः ।। इतः। ইতি भक्तज्ञावली ।।

विनीनः कि भाशपुरी कारश्काितः
। छ । भर्गायः । विक्व इः २ क्छः २
। इग्रमः ॥ विन्निष्ठः । विरम्भावननीनः । यथा । कदारमा जुरहे नन्
भिषिति गेरृमा जिल्ला विनीनाः
यः मग्राः नियज मराध्यः छर्रथिदेनः । इजि जमा प्रामान् विज नि
क्रानाम किन्जिया विज्ञा विज्ञा । इजि

हान्ति अद्वी ॥

विल्यन क्षी (लयन। वि भूईक লিথ বাজে রনট্ পুত্রবেন নিল্লন ्लाभः। विभूर्धक **6**10 निश्र थ। छ। र्घ भ् भु छ। एव निव्रशः বিলেপন ল্লী গাত্রানুলেপনযোগ্য পিষ্ট• ঘৃষ্ট• বা সুগন্ধিদুব<sub>ে ৷</sub> তৎ-পर्यायः। गाबानू (लगनी २ वर्खि: ၁ বর্ণ হ॰ ৪। ইত্যমর:॥ ছে গাঝানু-লেপন্যোগ্যে বর্ত্তিতবিলেপনে । वर्गकारिषयः घुष्टे ठन्त्वारि विला-পনে। ইতি কেচিৎ। বিলিপ্যতে হ্নেন করণে হ্নটি বিলেপন 1 ইতি ভটীকাষা• ভর**ত: ॥ স**ন্ধু-भाषित्मालनः । **उ**०० यंगयः । **ज**-মাল্ড্র: ২। ইতি চ সংকীর্ণবর্গে-

বিলোম

অমর: 11

विष्त्रणनी जी । यवाण्ः ॥ मृत्वणजी । इंडि स्मिनी ॥

বিলেপী জ্রী ববাগৃ:। ইত্যমর:।।

অন্ন• পঞ্চণ্ডণে সাধ্যা বিলেপী চ

• চতুৰ্গুণে। নগু শ্চতুৰ্দশগুণে যবাগৃং

বড্গুণে ২ন্ত্ৰাসি।। ইতি বৈদ্যকো

কোভেন ইহু নাদৃতঃ। ইতি ভটী

काया॰ ভরত: ॥ অস্য গুণা:। विरम्भी ভর্দনী লঘ্বী গুনহিনী ক্ষু-

তৃষাপহা। ইতি রাজবল্লভ: ।। বিলেপী তি লেপনকর্তা। বিলে

शयि यः ই छऽर्थि निन् शु**छ**ऽरयन

निद्मनः ॥

বিলেপ্য: পু॰ যবাগু:।ইতি লব-রহাবলী।। বিলেপনীযে ত্রি।। বিলেবার্সা পু॰ সর্প:।ইতি শব্দ-

त्रजावणी ॥

বিলেশয়: পূ' সর্প:। ইত্যমর:॥

মূষিক:। ইতি জটাধর:॥ গোধা॥
শশ:॥ শলকী। যথা। গোধা
শশ ভুজস্বাথু শলক্যাদ্যা বিলে

শ্যা: ৷ বিলেশ্যা বাতহরা মধুরা রসপাকযো: ৷৷ বৃংহণা বন্ধবিম্ত্রা

বীর্য্যোষণ **অপি** কী র্ত্তিতা:। ইভি ভাবপুকা**শ:॥** 

বিলোকন লী ন্ত্ৰী আলোকন। । বিলোম

वि भूर्स (लाक् शाला त्रनिष् भुष्ठु-(यन निश्चमः ॥

বিলোকিত ত্রি আলোকিত । বি
পূর্ব লোক ধাতো: ক্ত পুত্যুংখন
নিমুম্ব । ৷

বিলোচন॰ ক্লী চজু:। ইতি জটা-ধর:।। দর্শনক্ষ।।

বিলোটক: পু॰ নলমীন:। বালি: যামাছ ইতি ভাষা। ইতি শদ্-চন্দ্কা।।

विराणाजन क्षी सञ्चन । व्यारणा-जन । यथा । द्वाधिका मधिविरणा-जन व्यारणाजन करे किस्सा स्टूबर

ष्वजा। यागून ७० निम्न मछन। ना बनाम मिनाक् विह्नार।।

इंडि इन्सामञ्जूती ॥

বিলোডিত লী তক্রণ।ইতিরাজ; নির্ঘটঃ ॥ আলোডিতে বি ॥

বিলোপঃ পু॰ বিশেষেণ লোপঃ। বি পূর্ব লুপধাতো র্যঞ্পুত্যুয়েন

নিয়মঃ।। বিলোভ: পু• বিলোভন•। বিশে-

ষলোভ: । বি প্রক লুভ ঘাতো র্ঘঞ্পুত্যযেন নিয়ন: ।।

বিলোম° ব্লী অরঘ্টক:। ইতি
মেদিনী।।

বিলোমণ ত্রি বিপরীতণা তৎ-

পর্য্যায:। পুতিক্ল ২ অপসব্য o व्यमश्रुवः 8 वामः a नुमवाः ७ পুতীপ ৭ পুতিলোম ৮ অপ্ঠু ১ । ইতি হেমচন্দ্র:।। সব্যং ১০ বি: লোমক ১১। ইতি জটাপর:।। ુ બું કીબ: ॥ ગર્ન: ॥ বিলোম: পু বৰুণ:।। স্বন্ধুর:। ইতি মেদিনী।। বিলোমক: পু<sup>•</sup> বিপরীত:। ইতি किंगिथ्रः ॥ বিলোম জিহা: रुखे। ইडि ত্রিকাওশেব: 11 विलाभवर्गः भू বর্ণসঙ্করজাতি:। ইতি মৃতি: ।। विलामी खी जामनकी इंडिसिनिनी विलानः बि हक्षनः। यथा। कानि বিলাস বিলোল বিলোচন খেলন জনিত মনোজ । ধ্যাযতি মুধ্বপ্ त्रविक॰ मधुमूरनवरनमद्वाद्यः ॥ ইতি শ্রীগীতগোবিন্দে ১ সর্গ: !! विल्ल की वानवानः। यथा। व्यवः ঘটাৰটো তুল্যো তল্ল• বিল্ল• তল ঞ্চ তথ। দ্বিজ পুপালবাল। স্যাথ क्नातः भाष्मुमर्पनः। ই**ভি** जि কাণ্ডশেষ:॥ হিঙ্গু:। ইতি শদ-**हिन्द्रिका** ॥ विल्लग्ना खी वादाशीकनः। इंडि नद्ठिन्द्रिका॥

विल्लमः खी शुम्करणशुधा। यथा।

मश्रम् अपूर्वित्र मान्य मान्य मुक्क द्वा । विल्लम् प्राम्य प्राम्य प्राप्त का विका क् क् प्रमृः ॥ इकि णक् ब ज्ञावणी ॥ विल्ल क्षी विल्ल क्री विल्ल क्षी विल्ल

বিল্ব: পূ• ফলবৃক্ষবিশেষ:।বেল্গাছ इंडि ভाषा। उৎ भर्ग्रायः। भाषि-लाः २ रे**ण**ल्यः ७ माल्वः ८ 🗐 क-ল: ৫। ইত্যমর:।। মহাকপিত্য: ৬ গোহরীতকী ৭ পৃতিবাত: ৮ অ-তিনঙ্গ্য: ৯ সহাফল: ১০। ইতি ब्रुवाना॥ नन्धः ১) क्रांश**कः ১**२ भावार्षः २० कङ् हास्तः २८ रेमन-পত্র: ১৫ শিবেষ্ট: ১৬ পত্রশ্রেষ্ঠ: ১৭ ত্রিপত্র: ১৮ গদ্ধপত্র: ১৯ লক্ষ্মীফ-लः २० शक्रकनः २) मृत्र ्र**रः** २२ ত্রিশাথপত: ২৩ ত্রিশিথ:২৪ শি-বজ্ম: ২৫ সদাফল: ২৬ সত্যফল: ২৭সূভ্তিক:২৮ সমীরসার:২৯। षा भारक न खनाः। भध्येषु । इत्। व । कवायद्वः। छक्द्वः। भिख क्क জুরাতিসার নাশিত্ব'। কৃচিকারি-जुः। मी शनज्ञकः। व्यत्र) गृल्हशाः। बिरमावद्यद्यः। नध्यद्यः। वयुद्यः। বান্তিনাশিত্বক। অস্য কোনলফল

खनाः। जिल्ला । खक्र इः। मःग्रा हिद्रा मीलन्द्रका अम्। अक्कन खनाः। मध्यद्वः। खक्दः। कर्दः। जिक्द • । केवायद्व • । उक्द • । न• शाहित्। बिरायनानित्क। इंडि ় ব্লাজনির্ঘণ্টঃ॥ #॥ অপিচ। শ্রীফল স্তবর স্তিক্তো গ্রাহী কক্ষে। হণ্নি পি छ ह्र । वानः (भूग्रहात्रा व्रला नव ক্ষণ্ট পাচনঃ॥ ইতি ভাবপুকাশঃ ।। 🗱। किछ। विन् वान कवारवाकः পাচন বহি নীপন। সংগাহি তি ক্ত কটুক ভীম্ব বাত কদাপহ ॥ পङ्ग मृगक्ति मध्य मृद्धिय गुाहि (न) यन । काल मु अ ति शाक्ष स्था खाः गमूनाइ उ:।। विद्यादनाइ म (छार्या विल् मामः खाना बद्रः। कक् वा जाम পিত্তন্নী গুাহিণী বিল্পেষিকা।। ইতি রাজবল্ল ভ:।। অন্যন্ন। কাঞ্জি क म इंडिंग विल् भी मन्तीलन भात । इंडि रेवर आक्षा वित्वार-भन्यामि यंथा। विलामि भावन भ र্য্যাৎ শুভ ভষদ মন্যথা। গ্রীকৃক্ষা-न (द्राभारार भक्ष यकि मर्गामर्गराउ ॥ ভূগো लक्षीक या (धन् (गीक्षणा সা গতা মহী । তদ্মোম্যভবে বিলঃ গ্রীক ভুষাদভাষত।। নি व्राकृष्टिः भिंडः मृथ्वे। (कार्यन महा

**७७:। म**धा मा উपया प्रिवी मर्ब ভোগ্যা ভবাধ্যম ৷৷ তত্ত: সংপুণতা ভाना भारेमवः ভवज् निर्वि । निर्व-ত্ব- সর্বলোকেশি স্রাসূর নমস্তা ॥ भाजा पुः नर्बालाकाना भवनानाः বিশেষত:। এব মাত্মবশা॰ কৃত্ম শাপ মোক ম্যাচত।। বর দদৌ চ त्र। कामः भाग (माक्र भूमः नृशा कीवाको दः गृगात्ह्र मह (गाडि র্ধনেন চা৷ বসম্ব মথনে যাব্ৎ ততো বিষ্ মবাপ্নাসি। পতি ত্ব সর্ব लाकाना॰ भूकाः (मुक्ठ॰ महावनः ॥ তস্যবক্ষঃস্থিতা ভদুে দুষ্টা ত্ব॰ বিচ-রিষ্যমি। লোকভোগ্যা চ ভ্তি ত্বাদন্ত/জেষু নৃপেষু চ।। ন জাতি ব न (मोर्य)। दिन (वणा न मुं न मिंड)। ভবিষ্যতি যদা চেহ চঞ্চলা জলবি-न्मृत्रः ॥ विनृत्कः निृगः मास्र। स्रत-र्यानि ভবিষ্যতি । সর্বপ্লোভন भ्यां अ (स्वाकारता मत्नात्रमः ॥ # ॥ वाह्नाः नर्बलाकानाः हिनानाणः সদান্ণাণ যে চ পাপা দুরাচারাঃ শ্রি ভরে। শ্বেকারিণ: ।। তে ত্বীচ্যা-দি নরকে পাত্যন্তে বুক্ষণো দিন । সুদু:থিতা ভবিষ্যন্তি নরা দুষ্ক্লিন: সদ।।। তত্ৰ দেশে ভ্যুণ নিত্যুণ চিরুণ রাজান জীবভি। নচ দুবাপতি:কশ্চি-

दिनुवृक्तमा (इनकः ॥ किया यव বিছেদ: সপুত্ন ফলিন স্তরো:। অনা বৃষ্টি ভয় ঘোর তিমান্ দেশে পুজা যতে।। ইতি বহি পুরাণে বামনপু। मूर्जाव नामाधागः॥ #॥ मठास्र उरम्राट्मिख यथा। मिवउवाह। মাত: সমুদুতন্যে মামাছিল্লি ভন্ भव्र•। य एउ ছिम खरना वारमा जा-যতাং পুনরেব স: 🛭 জ্ঞাতাতে পর ना ङिकः भूर्व (खन मरनात्रथः । यक ছিল তনো দৰো মল্লিক্ষোপরি তে শুভে।।সে। ২ন্ত বৃক্ষ: ক্ষিন্ডৌ পুণ্যো नाम्। शिकन इठाउः। मूर्खिमाः खव रिव ভिक्ति वृक्तः श्रीकन नामकः॥ प्र की र्रा कि डा वासा यावहन्तु रिवाकात्री। म छक् यंत्र रेव लिख भद्रमः मृश्रिया ভविद् ॥ उद्भव्य ণৈব নে পূজ। ভবিষ্যতি ন চান্যথা। वर्ग मूका भूवालाहि भूशागुन्यानि **ह धुः।। श्रीक महर (वाल म) कना**॰ नार्डि (कांडिका॰। यथा म औकन ভक र्यथा गङ्गाङ्गनः मन ॥ **उथा প्रि** यङमः विश्व विश्वः बिक्वह्रमः। ইত্যক্তঃ স তথেত্যুক্ত্ব। মহেশোন্ত-र्पाय मथि॥ कथानामाइनाकृत्व वृक्षः धीकनकार्षिकः । इंडि व्रक्षर्भभूतात >० व्यव्हायः॥ 🗱॥

দেবুবোচ। বৈশাখ শুক্ল**পক্ষ**য় তৃ তীযাযা• সথি ত্বয•। জাতো বৈ 🗐 ফ**ন ত**ৰ ৰ্মাহাত্ম্য **তম্য কথ্যতে**॥ জাতে তু 🗐 ফল তন্নৌ দেবা: সর্বে স वामवाः। वृक्षा नात्रायण णहाणि (एव পর্য়: সমাগতা: ।৷ দদৃশু: স্নিক্ষবিট-প॰ ত্রিপথ্রৈ মৃ দুলৈ যু তি॰। দী প্রনা-ন তেজসৈব শিবৰূপ শিবপুদ ।। পুণেমু: সিষিচ্ স্তত্র বাসঞ্চকু: সুথা-দ্বিতা:। তদুক্ষণায ভগবানুবাচ বি-कु ब्रवायः॥ विकृ क्वातः। व्ययः नाम। विन इंडि मान्द्रः विकन खथा। णाञ्जि। फाथरेमल्यः निवः भूगः मिविश्वः ॥ (मवावाम खीर्थेशमः भाभवः (कामनहृपः ॥ कार्या विकय नामा চ विष्णु ज्ञिनयत्ना वद्रः॥ ध्रुमुा-कः मुद्भवर्गक मःयभी मुख्यास्वकः। ইত্যেক বিংশতিং নামাং দখা খুষত-क उमः॥ ॥ धनुः म उकाम। ग्रा॰ थकागु छीर्थ मुह्राउ । जासा ज्ञ उथा जीर्थ मं उडीर्थ क्य मिशा উদ্ধৃ পত্ৰ হরো জ্ঞেয়: পত্ৰ বাম্ विधिः स्रयः। यहः मिक्का भवकः ত্রিপত্র দল নিত্যুত।। অস্য हাবাঞ্চ প अक वहाराम भागा म्प्राम् । इत्र-उ वहुनामायुः शमा न्यामार भिय• হরেৎ ।। পদাপ্র সহসুস্য ফল

প্র সমাপি চ। দর্শনে পুণতৌ স্পাৰ্শ স্থান সমাজেনে তথা ॥ পূ क्रत हरान मात्र क्रमाग्र खानुभीत्र-বেং। বিলুবৃক্ষ মহাভাগ নহেশন্য जना शिषः ॥ शिवनर्भनक জ्यांजिः भुत्रीमाधिमूञाखन । नद्र अःउन मः ত্ত্বেণ পুফুলাক্ষ: পুগে শুভে।। পুপ **म्याट मामियः भागाट भूगामा अप-**नन्द्र । ७ नमा विनु उद्गत महा भः इद्रक्लिए।। भक्षानि ममाक्रानि व्यक्ष निवर्षर। मस्त्रभावन माः वृत्र मश्रोतिः शुरामा कृती ।। म বৈফ্রোমতো ভক্তঃ মনে পু্যভর: **श**दः। शिवश्वक बाज्द शियम्प्रण मराउद्या। रण्यामि द्वाः मराभाभ नक्षान् (म शुगाणव । (मवव्कवत শুেষ্ঠ স্থানম্ভে সুননোহর ।।ক্রীডন্ত্যা গত্য বিৰুধা মাৰ্চ্জণে তৎ পুসীদ নে । मःख्यानि दिव्य मः एणक्षञ्ज्यः म्राबद् ॥ मरगामयङ्कतः भाजःमः भारव न जुरियम्बः। एँ मनाय 🗐-क नाय नत्ना मणि ब्रक्तेतः॥ म-ख्या भ्वायिष्यः काशहिक क्यां छः থা। পুণ্যবৃক্ষ নহাভাগ মাল্র 🗐 ফল প্রভাম মহেশ পূজনার্থায় তৎ পতानि हित्नामुहः। मस्त्रनातन চিনু্থাদ্বিল্পত্রাণি ভক্তিত:॥ প

काष्ठ घारणी नायः सव्याहा जिब-कान इ:। भाषा अस्या न कर्त्तवता নৈবারোহেতথা তক্।। বর মাক্-श् विनुयाम नाथा ज्ञान क्विट । খণ্ডিতৈক শিব: প্রু: পলে র-रिन्रष्ठ थिउटिः ॥ यद्यानानस्दरः वितृशधः भग्रं विड॰ ভरवर । भू-का अञ्चन देवे (नवाः भ्वा नामाने (दो विना ।। विल्ववृक्ष्ववन यक मा कु वात्रागनी भूती ॥ शक्षवित्रक्रमा यज **७** जि. १९ १ वर्षः । मध विलुः ক্ষনা যত্ৰ তত্ৰ দুৰ্গায়তো হয়:। একে। विन् उक र्यं ठंड में सु ग्रंग नह।। विनुक्का यज मण उज मास्र गरिः সহ। এভান্যক্তানি ভীর্থানি দেবা: नर्र्व नकन्नरेगः॥ यञ वाह्याः शृहस्-স্য কোণ ঈশাননানকে। জাযতে গ্ৰিফলতক্ত ন তত্ত্ৰ বিপদ: ক্বচিৎ ॥ भूर्वनाः मुथरः न नाम्यक्तित य-মভীতিহা। পশ্চিমে চ পুজাদাণী ব্কো বিল্ব উদাহত:।। শাশানে চ নদীতীরে পুান্তরে বা বনান্তরে। বি-कृत्क उलः (পुंकिः गिक्तीवेहनः मुधीः॥ न मध्रभु।क्तन वृक्षः छ।भः (यट ञीकनाश्वकः । रेमवाव्यमि शुकारयञ् छम्। शिववमर्हरय् ॥हि-ত্রাদি চতুরো মাসান্ শস্তবে পরনা- তানে। দত্ত স্যাদ্বিল্পগৈক লক-(धनु जन जुड़ा: ।। मध्यक्त कारण (य मर्ज्या विलु : जुर्ग क्रिन । रेजः সুমেক গিরিবর: কৃত এব পুদক্ষিণ।। ন ছিন্দ্যেৎ শ্ৰীকলতক ন দহেৎকাঠ নেব চ। বিনা ব্ৰাহ্মণযজ্ঞার্থণ পতি তো বিশ্ববিক্ৰণী।।পশ্ববিশ্ব সমূদ্যৃষ্ঠ' या धरा मृष्ट्रियानवः। यमाधिका-রো নাত্র স্যাৎ হৃতঃ পাপোপপা **७रेकः ॥** दिल्लशक्षः कवाः वीजः ज्यो প্রিত মীশ্র:। স্বণ গ্রাতি শি ব্লসা বৈষ্ঠ্য ভ্ৰয শক্ষিত:॥ চৈত্ৰাদি চতুরো মাসান্ সিঞ্ছেদ্বিতক ক্তী । যথা সিংখ্যা ভবে हुक उपा তৎ भागान् नहा जुमा महादः। नदीन বিশ্বপথাথী ভূক্তি নুক্তিপুদাযক:।। क्तिमानगात यव दिन्। नात्या माक শ্ব:। ভত্তাক্ষ্যো বিলুবৃষ্ণ: স্বর্ণ বৃক্ষ উদাহ্তঃ।। কামকূপে কামত-कः कान्या मुक्त ख्यापिमः। काकी পুরে পুর: পোক: গ্রিফলো ২ক্ষয भुगामः॥ (छिभ छीर्थविष्णवाः मूर ন্তীর্থেম্বপি সদাত্রলা:। দেব্যবাচ । **এভ**ম্মিদ্ধের কালে ভূশস্তু রাগভ্যবৈ-স্থি। বুদ্ধণা বিফুনা পলৈ: পূজিত: ভ্রিফলৈ রভ্ৎ॥ ততঃ সর্বে যথা

স্থান জন্ম র্মারাযণাদ্য:। কথিভো २य भया नत्था। विन्तृवृष्ण खक्खमः॥ व्ययः दाः मःश्याकः मिवटक कवा পুণ্য নিচয়: পবিত্র: শ্রোতব্য: শুরণ-রমণীয়: খলু সভা। শিবে বিক্ষো **ख्टिनाश्चर्या उनाद्यः सूननमाः सू**-সেব্য: সংপাঠ্য: প্রভবতি শিব্দ্যা-পি নিকট:।। ইতি চ বৃহত্বর্মপূরাণে विदृष्क भाषाजाऽ॰ ১১ व्यद्यायः॥ऋ॥ তন্ত্ৰমতে তদ্যোৎপত্তি ৰ্যথা। দে-ব্যুবাচ। কথা সা বিষ্ণুবনিতা বিশ্ব-ব্কোবভ্ৰ হ।জ্যেতীৰপণ নদণ শ পুर্থিত। तुकामि जिः समा ॥ তত্ৰ নে ধনুগুহাছাণী সর্বেষাণ পূিষ-তা॰ গতা। বিফো রতিপুষা নিত্ত मा ज्थ महस्रो महा॥ जाम्क् श्री-তি ন লক্ষ্যাঞ্চাযতেকেশ্বস্য চ। इंडि हिलाभद्रा नन्त्री रंी शिल्य यन्तितः ॥ शुष्ति यक्षि**क् भि**काउः उभ एउरम २ डिमाक्न । उथा भि যদি নৈবাভূৎ কৃপা মে পরমেশ্বরি॥ उना मा वृक्षकालन हिला निय-পুৰা নতী। গশ্ৰৈ: পুরু: ফলৈ: बीरेयः भूबयामात्र मन्नजः॥ (काढि বৰ্ষ নহাদেৰি ভতো নে হনুগুহো ९ जदः । उत्तिवानुगुरहरेनव विस्था र्वकः श्रिडाख्य ॥ जीनव भवतः

भानि विभूवभाग मरेनव हि। खउछ | । সता। नर्वभीवे नय॰ उडु नर्व-कांद्रशास्त्रवि जुनुत्भग इति भिया। विषय अस्। न जारहर भाक्ष्र भरेदर भूकरराना भा मण्डका माजू । वि न ह गद्या जारहर लिए ॥ লা শিবে। অত তঃ বৃক্ষমাশ্রিতঃ তিষ্ঠানি চ দিবানিশ ।। সর্ব হার্থ । কাশীপুরসমণ তত্তু ভত্ত भारा (पवि मर्वाप्यम्यः मना।। 🕮 ।। १० छाउँ प्यक्ति।। किसमा (काहि-বৃক্ষঃ পরনেশানি অভএব ন সংশা । থেন কাদীবাদেন কি॰ প্রিয়। यः। 🗱।। ७८ करेल ख८ भूज्य र्वा ७८ । 🕫 भूत्र ቖ विश्वतालाम 🦙 गरे-भोटे यं: भुभूकत्यर। उर काष्ठ हन्स नः।। आ। उप्तान विश्व रंथा । भ मा वा নৈ ৰ্বাপি সমে ভক্ত: সমে পুষ: ॥ যদি বা পুষ্ল ফল নেই মধোনুখ । তৎ কাষ্ঠ চন্দন ভালেয়ে ধারুয়তি যথোৎপন্ন তথাদেয় বিলুপগ্রাণ্ড সমুমাৎ। তত্তনুং শিববুদ্ধা সান ধোমুখং।।মাতৃকাতজে ৫৫ পটল:।। মেদেবী गुमादि ।। অত স্ত চন্দ্ৰ প্ৰশিবউবাচ। শৃণু দেবি পুৰক্ষ্যামি দেবি ন ধারুয়তি কশনে। তৎ পত্রণ বৃহস্যুণ ত্রিজটাত্মকণ।পত্রণ বুজ্মযুণ তৎ পুসূন বা কদালি ধার্যেয় হি। দেবি অভূত বর্বর্ণনি ॥ 🕮 শৈল বিল্বন্লে নছেশানি প্রাণা স্ত্যজ্ঞতি বিল্বব্যেজাত: শ্রিকল: শ্রীনিকেতন: या नदः। कृतुप्तरहा **ভरद८ म**ठ्यः। विक्षुभी जिकव्रेष्टकवान भी जिकदः পাপকোটিযুভোপি সন্॥ ইতি সদা।। বুন্ধ বিফ শিবা: পংগ্রহক र्यागिनी उड्ड भूईथ एउ ६ भेरे म ।। 🕸।। অপিচ। বিশুবৃক্ষণ তথা দেবি ভগবান্শকর: ব্য॰। বিলুত্ক **७**टन क्षिद्धा यिन शानाः स्टाइबर मू ধীঃ॥তৎক্ষণামোক্ষ মাপ্নোতি 奪 ন্তস্য ভীর্থকোটিভি:। যত্র বুক্ষাদয়ে দেবা শুষ্ঠন্তি শক্তিছেতবে।। বিদ্ वृक्ष अला आने यनि विधानिभूति ত•। তদেব শাস্কর• ক্ষেত্র॰ সর্বতীর্থ-

মীপে সচ চার্জিল বিশ্ববৃক্ষো যদি मक्तिकारी। व्हन्य छ वङ्गः मार পাত্রে বুন্ধপদ• পি্যে॥ বিজটাপত্র-किक्कन इत्र वा एति महर्रि । कि-বল্যা তদ্য তেনৈব শক্তিপূজা বি-শেষত: ॥ পাণ্ড॰ পুয়ু॰ ফল॰ তোৰ্ रेन्दिमा धूम मीमकः। मद्वा यम् ফল পুান্ত ভন্মত কোটিখণ ভ-त्य ॥ मरेबं ब्रह्मिका प्रिव विकरी त्मक मर्भागः। रेकदण्यातः। एति रेकद

मारगारः जाः यक्शाः वि रैकवनारमः ज्ञानः धर्म कामः लुए। वजुशीन मिनः (निर्. পুৰাদ্বাঞ্ডিত ফল ।। সবজে তে ন্যন বজাঘাতেন পাৰা **उमाह माध्यक्तमुन वजु**रीन• माशाय ॥ #॥ विस्था यान गृशिद्धा (या माह्ट नर्हा। व्राक्तिस्थः भागुभाउ ख्या॥ भू। दिगी। मक्क्यार्स्य ह बिनार्था व थ्छो ছ अ सर शामी वात्रो मन विका छ ।।। ।। ইতি জ্ঞানভৈর বতক্তে শিবপা বিবর্ণঃ ত্রি र्वे अ निवास ५ भ्रोतः ॥

विवृश्यिका हो भूक्षविवृथ्छ । विवर्छः भुः अमुनायः॥ व्यापत र्डन বেলশুঁঠা ইতি ভাষা। যথা। কফ का। इंडि ब्राजनिघंकः॥

विदा जी हिज्यभाषा है जित्राकः নির্ঘণ্ট: ॥

विवष्मानः बि दिवास्कर्जा। वि निम्नवः ॥

বিব্ৰঃ পু॰ পর্যাহার:। সত্থান্য

**७७वारिः ॥ गार्गः। भ**ष्टाः । हे ত্যমর ভরতৌ ॥ ব্রীহি তৃণাদে: পার্য্যাহরণ । ইতি বামী।। উপরি-তোবদ্ধ শিক্য স্বন্ধ বাহ্যকাপ্ত । কাব ইতি খ্যাত। ইতি ভানুদী ক্ষিত: ॥ ভার: । ইতি মূক্টপূ**ত**-विश्वः ॥

গ্রহণানম্বর গমনফল । যথ বিবধিক: পুণ বৈবধিক:।ইত্যমর-বাণ গৃহাত্বা যো গছেৎ সর্বা টাকা সারসুন্দরী।। দ্বি মবাপু যাৎ। উদ্ধৃ সুদশ বিবর ক্লী ছিদু । ইত্যমর: ॥ দোষ:। ইতি মেদিনী ॥ নাহেশরী রক্ষেৎ পৃষ্ঠে চ শ্ল ধ বিবরণ লী ব্যাখ্যা। ইতি হলা-यूथः ॥

নপার্শ্বে পুরাপতি: ৷৷ চন্দু সূর্য্যে বিবরনালিকা ভ্রী বেণু: ৷ ইতি

नीहः । इँछ्यत्रः ॥ मिन्ह ॥

া। নৃত্যু । ইতি বিশ্ব: ।। বাতানশ্লমী গুছিণী বিল্পেষি- বিবর্তন ক্লী পরিভুনণ । বি পূর্বক বৃতধাতো রনট্ পুত্যযেন নিয় म ।। বিব**শঃ ত্রি অ**বশ্যাত্মা॥ অরি**ষ্ট-**मुश्रेवीः। ইতিমেদিনী॥ (व या मन-্মরণ সূচিত লক্ষণেন দূষিত বুজো शूर्व वनशालाः भान भुकारयन । विकक्ष विश्विषाः धन जामम মরণ খ্যাপক লিস্থ নরিষ্ট ৷ ভেন ्रमुष्टे। शो यंमा म उथा । ইতামর: টীকাথা• ভরত: ॥

विवस्त की . मूर्य्यनगत्नी । इंडि सम्बन्धाः

विवसान् भू भूग्रः॥ व्यर्कवृक्षः॥
इंड्रामद्रः॥ प्रवजा। इंडि प्लमिनी
॥ व्यक्षः॥ इंडि सम्बद्धावनी॥
देववच्डमनुः। इंड्राह्मयः॥

বিবক্ষা জ্রী বক্ত্মিছা। সনন্ত বচথাতোর পুত্যবেন নিয়না। যথা।
বিবক্ষা বশাৎকারকাণি ভবন্তি।
ইতি ব্যাকরণটাকা ॥ শক্তি:।
যথা। পুক্ত্যর্থোপি থালু চদুদ্দিশ্যাস্য বিশেষণা। সংখ্যয়া তুল্য
নাতিত্বাদ্বিবক্ষাণ পুপদ্যতো। ইত্যেকাদশী চক্তা।।

विविक्तिकः जि वेक्क् भिष्ठेः॥ समस्य विविक्तिकः जि वेक्क् भिष्ठेः॥ समस्य।। स्वाध्यार्थः। यथा। जिलाप्त्यशकाः याः संश्वाया विविक्ति छत्तुः युक्तः । अनुलाप्त्यशका संश्वा न । ववः किन्छ। इति न । ववाहार्यः। इति छ। कार्यो छकुः॥

বিবাক: ত্রি বিবেচনকর্ত্তা। যথা।
অথিপুড)থিনো রচন বিক্জাবিকর্ম সভ্যৈ সহ বিবিনক্তি বিবেচ্যভিবাবিবাক:।ইতি নিতা
ক্ষা।।

विवादः भुः विक्ष्का वाष्टा विवादः । সচ ধন বিভাগাদি বিষয় ন্যায়া-मि:। ইতি ভরত:।। ত**ে**পর্যায:। ব্যবহার: ২। ইত্যমর:।। খাণাদি-न्যाय: ১। ইতি জটাধর:॥ ঋণাদি-माय कलार्च म्राया ईल्डब्रम्। वा। বিবাদে৷ ব্যবস্থার চ্চ দ্ব্যমে ভ্রমিণ-म्राउ।। ইতি শব্দরত্বাবলী।। 🕸 II माजामिना विवासनिष्यथा यथा। আচরেৎ সর্বধর্মণ তদ্বিক্দন্ত ন-চাচরেৎ। মাতা পিত্রতিথীভূটে विवादः नाहरद्र गृशी॥ इंडि गाः ৰুডে ৯৬ অধ্যায:।। # ।। অষ্টা-**मण** विदामञ्जानानि यथा । (उदा মাদ্য মৃণাদান নিংক্ষেপো হ্রামি বিক্য:। সমুয চ সমুত্থান দত্ত-ল্যানপকর্ম চ il বেতনদৈয়ব চাদা-न ग विषक्त वा जिक्सा । क्रय दि-ক্যানুশযো বিবাদঃ স্থানিশাল-(याः ॥ त्रीभाविवामधर्यं क शाक्-(य) मुख्वाहितक। खब्क माहम-ঞৈৰ জীসংগুহুণ নেৰ চ।। জ্ৰী পু•-धर्मा विভागक मृत्र माञ्च (नव **छ। भन्ना**नाञ्चासरैष्मजानि व्यवसात्र স্থিত। বিদুঃ ॥ ইঙি মৃনুঃ ॥ অ-স্যাৰ্থ: ৷ স্বধ্নস্যান্যজ্মিলপণ্ৰা পো নিক্ষেণঃ। অম্বাদিনা চ

ना॰ कियानुष्ठान॰ । एउन्। धन-স্যাপাত্র বুজ্ঞ্যা জোধাদিনা বা शुरुनः। कर्यकात्रमः ভ্তে त्रमानः। কৃত ব্যবস্থাতিকম:। ক্রমে বিক্রমে চ কৃতে পশ্চাৎ যা বিপুতিপত্তিঃ । यानि अणुलालाया विवामः । गुागारि मीगा विभुजिপिडिः वाक्शाक्युः चाकाननाि দণ্ডপাক্ষ্য তাডনাদি। শ্তেশ निक्रदिन धन गुरुगः। **नारुनः পু** সহ ধনহরণাদি জ্রিয়াক্ত পরপু-ক্ষ সম্পর্ক:। ত্রীসহিত্স্য পু-त्मा धर्मवावञ्चा। रेशञ्कानिधनमा विভागः। मृष्ठः अक्षारिकीषा। আহ্য পণব্যবস্থাপুর্বক পঞ্চি भिषापि भागि (याधनः। ইতি सः द्यक्टिक

विवामानूग**ः जि** विवामकर्छा । यथा। विवासान्गठः भृक्षे। सम्ब ख्ट भुषञ्चछ:। विहातयि **एना** সৌ প্রাহিবাক শুত: মৃত: ॥ ইতি মিভাক্ষরা ॥

বিবাদী ত্র বিবাদকর্তা। যথা। व्यमुख्या ह यः किन्द्र सर्याए भाक्रां विवासिनाः। इति वात्रहाः রভত্ত্ব ॥

कृत्जा विक्रयः। जञ्ज्यविभागीः | विवादः भूः मात्रभित्रगुदः। ७०-পर्यग्रयः । উপयमः २ পরিণयः ၁ উदार: 8 উপयाम: ৫ পাণিপीড-न ७। इंड्रानद्रः॥ माद्रकर्य १ कद्र-शुरः ৮। ইতি শব্রত্বাবলী।। পা-ণিশুহৃণ ১ নিবেশঃ ১০ পাণিকরণ ১১। ইতি ভটাধ্য:।। স চাষ্টবিধ:। यथा। वाष्क्रा विवाह चाह्य तीय-তে শক্ত/লফ্ডা। ওজ্জ: পুনাতুভে-यजः প्रक्यात्मकविःगाजिः॥ यङ्ग-श्चायिद्धिक रिस्द भागायार्थे छ । लाः যুগ। চত্দশ পূথমজঃ পুনতি। ত্তরজন্চ ষট্।। ইত্যুক্তা চরতা• धर्मा नइ या मीया १ वर्षान । न कारः शावस्य छन्नः व इन्धारा मह সহাত্মনা ॥ আসুরো দুবিণাদা-नार गाञ्चर्यः समगान्त्रियः। दाक्रः मा युष्पद्रतार लिणाह इन्यका-ह्नार ॥ इंडिराक्डब्स्यः ॥ 🗱 ॥ অপিচ :গৃহীতবিদ্যে গুৰুরে দত্ত্বা ठ ७ विक्शिक्षाः। गाईक्र मिहन् ज्भाव अयंत्रामतात्र भद्रिगुइ॰॥ व-रिवं (त्रक्छनाः ज्वार्य)। गृहरङ्गिछनः স্বৰ• ৷ নাডিকেশা নকেশা<sup>°</sup> বা নাতি কৃছা• ন পিঞ্লা• 🛚 নিস-ৰ্গতো প্ৰিকান্ধী আন্যুনান্ধী নপি নোছাৰ্থাঅবিশুজা সরোগা বা-

স্ল্জা॰ বাভিরোগিণী॰ ॥ ন দুষ্টা॰ দুষ্ট বাচাটা বাঙ্কিনী পিতৃ নাত্ তঃ। ন শাশু ব্যঞ্জনবতীণ ন চৈব পু क्षाक्षिः॥ न घर्षतस्त्राः कानवाः क्रा॰ काकश्वता नह। नानिवरक्षकः াণ তৰ্ভুত্তাক্ষী নোষ্ঠ্ছেৰ্য: ॥ य-স্যাশ্চ রোমশে জন্ত্র গুল্পৌ চৈব ত-(थाम्राजी। क्ली यम्रा इमन्त्राक **গ**প্তায়া স্তাঞ্চ নোদ্বহেশ। নাতিক क्कह्वि॰ भाञ्जकद्वका सक्राक्ताः। ष्याभीन इंड भाराक न कन्या गृहः रुष्यः ॥ न वामनाः नाजिनीर्धाः নোদ্বহেৎ সংহতক্রবং। ন চাতিছি मुन्नभाः न कत्रालम्थीः नद्रः॥ ११४० না মাতৃপকার পিতৃপক্ষার সভ भी । गृष्ट् श्राप्ताव्य १ कन्त्रा न नार्यः न विधिना नृष्या बुद्धिता देवत छरेषः বাবঃ পুাজাপত্য তথাসূর:। গান্ধর্র ब्राक्तरमी वात्नी रेशमाह महाश्वरमा **२१न: ।। এতেবা॰ যস**্থো হর্মে। বর্ণস্যোক্তো মনীবিভি:। স্বরীত দারাহরণ তেনান্য পরিবর্জযেৎ।। স ধর্মচারিণী প্রাপ্রগার্হস্ত্র সহি-**७ उ**या। मन्दर्क्त्रनाट्याञ्चरमा গৃঢ়ে মহাফল।। ইতি বিষ্ণুরাণে 🗢 ञ राम 🕽० व्यवतायः ॥ 🕸 ॥ व्यन्तह । याङ्गवन्। उदाह । मृद्यु मृन्त्या

थर्यान् गृष्ट्यन्। यज्युजाः । खद्राव **চ थनः** सञ्चा द्वाञ्चा ह जस्तु छ या।। ज विश्व एक दुका हरिया सक्ता किय मुद्दार्थ। अनन्। প्रतिकाः काष्टा न-मिंखा यवीयमी ॥ व्याद्वामिनी ভু। হৃমতী মসমানার্য গোত্র জাণ। প-क्यार मध्यामृष्ट् नावृष्टः निवृ-ত তথা।। দ্বিপঞ্চ নব বিখ্যাতাৎ **(**णाविशाना॰ महात्रवाट । जर्नः শ্রোত্রিয়ো বিদ্বান্ বরদোষা বিভোন চ।। যদুচ্যতে বিজাতীনা শুদুদা-রোপস'গুহ: 1ন তথ্য মত° ২মা-ভৰায় জায়তে ম্ব্যা। ভিসে। বর্ণা-नुश्र्वि (घ उरेषका यथाक्रमः । द्राः কণ ফতিৰ বিশাং ভাৰ্য্যাং বাশু দুজ-चनः।। वारवाता विवार जार्य भीयः তে শক্তালফ্ডা। তজ্ঞ: পুনাত্যু-खरक: नृहसातकविःमकिः ॥ य-छ**ङ्ग**यज्ञिक रेस्व मानायार्यस (गा যুগণা চত্দিশ পুথমজ: পুনাত্যন্তর তশ্চ বট্ ।। ইত্যুজ্য চরতা ধর্ম। गर या भीया १ र्थान । म कायः शावरमञ्जूः यः नागानाजाना मह।। व्यामुद्धा मुविशामानाथ गास्तर्यः मन-यात्रिथः। त्राक्त्म। युक्त रत्राट. रिममाठः कन्यकाह्यायः ॥ ठवादा वाकानमान्। रुषा गास्तर्व द्राक्तो

। ब्राड्ड खथानू (ब्रा रेवामा) मूर्यु ठास्त्र 🛚 स्त गर्हितः ॥ भाषिगुष्यः गवर्गामु शृशी अ का जिया भारा । विभाग भू जार नारम्याखरान ठागुलभानः॥ পিতা পিতানহো ভ্ৰাতা সন্ধল্যা कननी उथा। कन्रानुमः भूईनात्म भुक् ७ इ: भद्र: ॥ य भुरह्न সমাপ্যোতি ভুগহত্যা মৃতাবৃভৌ। এবামভাবে দাত্ণা কন্যা স্বৰ্থ্যাৎ चयः वद्रः॥ मक्ट भुनीया कन्। হর॰ স্তা• চৌরদগুভাক্। অনুষ্ঠা• হি ত্যজন্ দণ্ড্য: সূদুষ্টাণহি পরিত্য-জেৎ।। ইতি গাৰুডে ৯৫ অধ্যায়: 11 # 11 जभद्रकः। यम उवाह 1 कन्याः (य जू भुयहिंख यथा में क्या चलकृ जा॰ । वुकारियाः विकासुरे वुकालाकः <u> युक्र छि ।। कन्यानान्छ मर्र्वदाः</u> দানানা মুভ্রমণ ফ্রডা। মহাভ্যাপি সমৃদ্ধানি গো হজাবিক ধ্নান্যত:॥ जीभयक मत्मभानि अवानि श्रीत-वर्द्धावट । शीन क्काठियु भाष ७ মূনে উদ্বেগকারিণা•॥ছন্মা**ন্য সদা**-বাচ্য হিত্তি সৃষ্টি জনানি চ। যস্যা-ৰ্ম্ভ ন ভবেভূাতা নচ বিজ্ঞায়তে পি-**७**।।। (नाभयरह ७ ठा॰ श्राञ्जः भूजि-কা ধর্ম শক্ষ্যা। চতুর্ণা মপি বর্ণানা। প্রেত্যচেহ হিতায় চ।। অঠাবিমা-

न् मनारमन क्षी विदाशक्रिरवाष्ठ । वात्कार रिव खथा हार्यः शाकाशकः ख्यानुतः ॥ नाम्नार्व। त्राक्तन टेन्ध्व रिभणाठ काष्ट्रेरमा १९मः । शुजापर চাৰ্চবিত্বা চ শুক্তশীলবতে স্বৰণ II *দ* म्राट्कन्रा यथान्याय द्वारक्या वर्षः পুকীর্ত্তিত:। ১। যজ্ঞে তু বি**তত: স**-ম্যুত্তিকে কর্ম সর্বতে ।। অলহ্নত্ত্য ज्या मान देनद्या क्या: भूभनाउउ । ২। এক গো মিথুন দে বা বরাদা-माय ययां जः ॥ कन्यामान्छ विधिव-मार्खा थ्याः न উচ্যতে । ৩। সংহা-ভৌচর ভাণধর্ম নিভি চৈবানুভাষ্য जु ॥ कन्त्रा भुरान म डाई। भाकाभ-ত্যো বিখি: মৃতঃ । ৪। জ্যাভিভ্যো দুবিণ দত্বা কন্যাধৈ হৈব শক্তিতঃ।। कन्राभुवानः साह्न्त्रावामुद्रा धर्म **উ**ट्राउ । ६ । इह्यान्त्रान् अत्या-गाएकन्यायाक वज्रम्य ह ॥ भाक्तर्वः यञ् विष्डारा। विध्नाः काममकतः 1৬। হয় জিয়া চ ভিত্না চ পুসহ্ क्रे जी॰ गृश्य ।। इंद्री॰ किया उर्व রাক্ষসো বিধি *কচ্য*তে। ৭। সুগুা ब छ। त्र हः कन्।। ह प्रना नीवर छ यू या ॥ न भाभिष्धा विवासानाः देशसा-इः পুথিতো २४मः। ৮। পঞ্চানাঞ্ ज्या थ्या चार्यणी विकाउन ॥

ियमाठ महासुद्र टेन्डव न कर्ड(द्रो क्याज्य। ठलुना मिल दर्गामा स्मय धर्मः भवा छनः।। পृथ्या यहि वा शिन्। कः र्खवा। नाव म भवः । कनाः व ज् शुक्षि यपाणका यनकृषाः ॥ , বিবাহক' লৈ সংগ্ৰান্তে যথোক্তে স-দূশে বরে। জনাৎ ক্রম• কতু শ**ত** शनुभूषं बाजीं छ।। भूता कन्।। शुरामछ शिख्यः कुशिखाग्याः । विमुकाः गर्वनाः शरकः वृक्तः गर्वः पुष्क छ । छ । दुराका । छ विवासन यह वना॰ भुष्य 🕒 । दुक्तवाक॰ तुष्धिषु वृक्तारितः भूषिकः भूतिः । विरव्भ कु विदास्त्र यस दन्। भूगहरिक्ष विकास पात्र **क्यान**) वर्ग ब्हाक्य १ (३), शायार्खंग विवा-स्व यस क्या भूकि। धार्व **ला २ मामान्य प**्रिकाण लक्ष्यकिकः া৷ শুল্লেৰ মত্ৰা মে, কন্সং ডাং পা काट नगागहरम्द । म िप्रेट्राक **श**हरेका की छाउँ काल सकता ॥ क शत्रु। कार्यकामाः भ्वतं म गठ ७ वृद्ध । बुद्धारमा विराधिम दुन्ज (जाजा भरा उत्तर ॥ का अवाः <u> युक्तारकाया मञ्ज्ञान् मूथमञ्</u>रा । অথ ভুঞ্জতি যো দোহাছজ্ব। সা ন तक दुरहराक्षा अधुकाराक करा-

या॰ न जुळीयार कराइन। मिर् बन्। मुथः पृक्षे किमर्थ मनुर्णाः 💱 ॥ महामञ्ज समाकीर्गामासि 🗇 🤫 वकास्तरः। जीर्ग खुः ऋहं 👙 💍 **गतः वर्ग गवाञ्चर्रामा। इन्तराहर**ि भूतारा उपागवृक्ष भूमाणामा । यः॥ अ॥ विवाङ्काल भिष्युत्तकः न (माणाजाता यथा। भर्मिक्ट हराइ । न नर्णयुक्त वहन हिन्छि न 🚉 वाजन् न दिवाहकारलः। भुष्या । गरीयनाभशास भक्षाम् छान्। 🕫 🖯 शाञकानि ॥ इंडि माध्यक्ष 👀 अवग्रयः ॥ । । विवादः रविवाति यथा। निवा**रक्ष मान मु**जुल्ला कृष्याः जु वरी त्रवाः। (एवे) यन्त्री क स्टाइन का वाज मद्भा वर्षा । इंडि 🚉 द **ल्लाना गा॰** ३ सन्दर्भ ० सन्दर्भागा। অথ বিনাড়োজ দিমানি। ডঞা-माणि मुक्ति र्यथा। सुगुक्रायानकः णुल्लि विवासका नाम अवस्था विदान रह साविजा हम्मुसकेष्ठ भृषि व्-गোবিতোঃ॥ ন ভত্কি জিলারায় ভর্ত গোচর শুলিক:। যাকোলাহ গর্ত্ত মুখ্ব্যাপ্রোভি ভংকসং ॥ भारा । ज्ञा अभयार गुरा विन वार (माजाय (क्यू ग्नय: गुज भानि-শিভি। আধানতঃ পুভৃতিতঃ সন-

वटमात्रषु (भाक खाया न मू नपस বিলোমবর্ষে॥#॥ অযুগ্মে দুর্তুগা না-রী যুগ্মে চ বিধবা ভবেৎ।ভমান্নর্ভা-দ্বিতে যুগ্মে বিবাহে সা পতিবৃতা।। नामवराम्क् नयुग्रवर्ष यूग्र ह মাসত্রয় মেব যাবং। বিবাছ শুদ্ধি भुवनन्धि महर्व वाष्ट्रमहानत्या काहा-जिवि हम्मानार ॥ गुग्माम (क्यू ग् ব্রেরপি জন্মনাসাৎ নাসত্রয় বি-वहरन भव्रमक मुक्तिः। भारः ममञ मूनरमा विषरम जू वर्सि मामज्यापृशः রিত: থলু জন্মমাসাৎ ॥ ≉॥ রাজ⁻ भार्जः ७। भाक्ता । यु विवाहियु कन्ता न वद्गारम् । र नगानाः भूनम् १एउ हिज शोष विविद्धिंगः॥ कन्ता সংবরণে হস্তোদক বিধৌ। দম্পত্যো র্ঘি নবাষ্ট রাশি রহিতে দারানুক্লে इरवो हल्मु हार्क इकार्कि मूक विशु তে মধ্যে ২থবা পাপযো:। ত্যক্ত্বা চ ব্যতিপাত বৈধৃতি দিন বিপ্লিঞ্চ রি ক্তাণ তিথি কুরা হাষণ চৈত্র পৌষ রহিতে লগ্না শকে নানবে॥। ধ্যা যো-गविष्णाय (मायविष्णयानाइ द्रञ नावायाः। ऋत्वारह्रमा व्यवीकार्ड **প**রিষে স্থানিঘাতিদী। বৈধৃতৌ বি थवानात्री विवनाट्गाजिग अत्क ॥ न्यावारक न्यादिन घाक: (भाकार्छ।

इर्वान उथा। मृत्व ह तुन म्व मार গণ্ডেরোগভয়• তথা।। বিষ্ণস্তে 🔊 প্য-· হিদ•**শ:** স্যাৎ বজুকে মরণ• ভবেৎ । এতে বৈ দাৰুণা: সর্বে দশ যোগা: भूकी खिं**डाः ॥ 🗱 ॥ व्यायनायनः ।** উদগ্যনে আপ্র্য্যনাণে পক্ষে কল্যা: ণে নক্ষত্ৰে চৌডকৰ্মোপন্থন গো-मान विवाद्याः। विवादः **भार्बकालि**-ক ইত্যেকে ইতি। আঘাঢে ধনধান্য ভোগ রহিতা নষ্টপুজা শাুুুুরণে বে-শ্যা ভাদ্পদে ইবে চ মরণ রোগা-দ্বিতা কাৰ্জিক। পৌষে পুেতৰতী वियागवङ्का हेठा मामामानि অন্যেয়েব বিবাহিতা পতিরতা না-त्री मम्बा उपद्या रहा मृश्य न ह দক্ষিণাথনে তিথৌ চ রিক্তে শাশ-নি ক্ষয়॰ গতে। রাজগুত্তে তথা যুদ্ধে **পিতृ**गाः भागमः नार्य का अस्त्रीत ह यो कन्ता नान्क्ल भुडीक्काउ ॥ व्यञ्जिल्लोह। ह या कन्त्रा व्यत्न थर्म विद्राधिनी। अविभुक्षाि मा (ए-या हन्मुन १४ तन जूं॥ व्ययन तम्रा-खत्रमारिनो मकत्र याजि ভाक्षतः। রাশি কর্কটক পুাপ্য জ্বতে দ-ক্ষিণায়ন ॥ ইতি বিফুপ্রাণোক্ত-স্য চ্ডাদাবন্নস্য পরিগ্রহ:। দি-ननानामि (वार्ष जू शिकाञाम्यन

পরিগৃহ: ॥ 🕸 ॥ সার্ত্তকালিক ইত্য-**স**্ববিষয় মাছ ভুত্মব**ল ভীমে। পুত্ णुष्ति नदणुष्ति॰ ण्**षि॰ मानायनर्जुः मिवनाना । णर्दाक् मनवार्वाज्या मूनरः कथरडि कन्रकानाः॥ ७७८ পারস্ত বিজ্ঞেয় মঙ্গিরো বচন থথা । कालाजारय ह कनायाः काल-**रि**गरिया न विष्ठ ।। भलभात्रापि कानानाः विवाहारम्। भुगञ्जलः । भु नः भु जि मरा (रायाट मई रेरव **হি ्**ब्बं) **अ।। क् अ**हिश्वानः ।। বাপী কৃপ তডাগ যাগ গমন ক্ষৌর शु जिक्षावुं छ॰ विष्णामन्ति ब्र कर्नावथ-ন মহাদান বন সেবন । তীর্থ-স্থান বিবাহ দেবভবন মন্তাদি (मर्वक्रभः । म्रद्रोभव किकीवियः भ-**রিহরেদন্ত গতে ভার্গবে ॥ 🗱 ॥** বৃ-र्माक्रमार्ज्छ ॥ नर्वाण मुख् क ৰ্মাণি স্বৰ্য্যাদস্তণগতে সিতে। বিবা-হ• মেথলাবন্ধ• যাত্রাঞ্চ পরিবর্জ্জ (य८ ॥ याजात्कि इकारता वहना-স্তরোক্ত পুাতিয়িক নিবিদ্ধকর্মান্ত র• সমৃছিনোতি ॥ বালে শুক্রে বৃদ্ধে শ্কে নষ্টে শুক্তে জীবেনষ্টে। বালে कीरव वृष्य बीरव निःशामिरकः छ র্বাদিতে ।। তথা মলিমুচে মাসি नुवाधार्य, जिधाद्राय । वाशी कूश

**उ**जागानि कियाः श्राधिन छ। জেৎ।। অভীচার গতে জীবে বক্তে চৈব বৃহস্পতৌ। কামিনী বিধ্বা প্রোক্তা তমাত্তৌ পরিবর্জ্জবৈৎ ॥ অভীচার• গভো জীব: পূর্বভ• নৈব गह्छि। ममहादिश कर्यानि रेनव छः विव न·हिर्छ।।क।। (५वन:। वात्न বৃদ্ধে ভথৈবান্তে জ্বাতে দৈত্যন-ব্ৰিনি। উদ্বাহিতাযাণ কন্যাযাণ দ-ম্পত্যে রেব নাশন ৷৷ প্রাভদ্গতঃ শিশুরহ জ্রিভয় সিভ: স্যাৎ প্র-শ্চাদ্শাহ নিতি পঞ্দিনানি বৃদ্ধঃ ।পাক্ পক্ষ মেব কথিতোত্র বশিষ্ঠ গগৈ জীবন্ত পক্ষ মপি বৃদ্ধ শিশু विंवर्काः॥ 🗱 ॥ व्यटाष्ट्रामाङ्को द्वान् জমার্ভণ্ডঃ। বালে বৃদ্ধে চ সন্ধ্যাংশ চজু: পঞ্জি বাসরান্। জীবে চ ভार्गत रिव विवाशामियू वर्ड्साट n বক্রে চৈবাভিচারে ত্রিদ**শপ**তি গুরৌ দেব পূজ্যে চ সুপ্ত গুরাদি-**ত্যে १**क्षिमारम पिरमकद्रद्रिली वा ক্পভৌ চৈত্ৰ পৌষে। বিষ্ট্যা কে-তৃদ্ধে বা শরদি সুরগুরৌ সিংহ म ह स्वार्क वर्षा नाल्या कि हा। ঢ। সুনিষ্ত মরণ দেবকন্যাপি ভ-र्जुः ॥ 🛊 ॥ मुक्त मधिक्छ। রাজ-गार्ड:७। वाल ह पूर्विंगा नाही वृष्त

নষ্টপুজা ভবেৎ।। নপ্টেচ মৃত্যু মাপ্রো-তি সর্ব নেতদ্ভরাবলি।। সিংহে গু রৌ পরিণীতাপতি মাত্মান মাত্মজা-ন্হ**ভি।ক্ৰমশ জি**ষু পিতাদিযু বশি ष्ठ भनामयः श्राङः॥ छत्त्रो एति ए न বিবাহ নাহু হাঁথীত গৰ্গ পুনুখামুনী-न्तुः। यता भवादी भवन गुङा न्तरी जरा ज करन्यावहनः वन्न हि ॥ 🕸 ॥ व्यक्ति ना अपः। यया गामः शतिः **ভ**্যাগ্য यस। সি:হে গুঞ্ ভ্রেহ**া ত**ু मार्क्त कनाको छोछ। मूल्या मून्यि **জবেং** ॥ জ।। হারী সঃ। অভীচার• পতে হীৰে বৃষে বৃশ্চিক সম্ভাসা:। यक्किवाशानिक स्वार एक वा-**लान गुलात्माक्षा क्षा ५ छ। विद्यानको। अ**डीशाद्धः गटिकीत्व दृत्य वृष्णिक करन ন্ত্রংশঃ ভেত্র চোলাহিতা করে সং-পুণীৰাৎ স্বৰ্ধণ ৷৷ঞা সন্বেভটো মুদ্যাণ ভীমপরাজনে। যদাভিচা র<sup>•</sup> সুররাজ্যজী করে।ভি গো সন্ম**থ** भीनने एड। न गांखि छान्य राशि भूर्व রাশি শ্ভাব গাণিগুহণ বলিষ্ঠ: ॥ म जेजात भएज की व जित्रतारणी व भ हिएक। उचन पूष्राक काला वन्छ। अवाष्ट्राः ॥ नाभी कृत च्छागापि निषिद्ध मिन्हरग छात्रो। मक्रहरङ् इ उदकार्यः न मात्रः काल

লোপজঃ।। যজু। কন্যা বৃশ্চিক মে-ষে নম্মথে চ ক্ষে ব্যে। অভিচা-. (ब्रिं कर्खेब्र) विवासानि यूरेवः मना । ইত্যেতদম্ল দৈতনিগ্ৰেপ্যুক্ত। ॥ 🗱 ॥ री शिकायाः। जित्कान जारा ঘনলাভ ব্লাশৌ বক্রাতিচারেণ গুড়ঃ शुया जः। यहा जहा शुक्त मुख्य विन-গ্লেছি ভাষ পাণিপুছণ বশিষ্টাঞ্চা (नवीभवागः। सक्त्राङ्। यहा जीता वर्ष्डायर भक्षमाः भक्ता (मारवप्रभि চ ভাগেষু বিবাহ: শোভনো নভঃ िस । (जानवाडाः । (व) जचवारम म् अर्च गाजा अर्गमा (बद् शक्ष १८८८ । सून च छाक ६न <del>ल</del>ूध नामा क्षापा कि स्काद्य बद्दनानि ॥ আছে। 👉 গুৰহতে হশিষ্ট দলাইী छ गार्गः करूपः एना**एः। इ.स. थाः** मान क्या ज्ञाल तेला होता ,वेवा-ए कार क्षेत्र एक एक ए जि**लिक**-गमृह्रशाचार वात व्हानः नर्ववस्ता दर्बन । উवास्थ्य समा-ब्रीता॰ डच ११८न भूगमाः छ ॥ 🕸 ॥ क् अविद्यासारी । इद्यासम ह भू-वाहत वनाह्य ह यस्तान्य । बन्ह জন্মরাশৌ চ কন্য ছি গ্রুসম্ভতিঃ ॥ 🕸 ॥ भर्मः । रेक्रास्ट नाम उथा भारमं (क्षीत्र भदिनय जुउ । (कार्ष्ठ-

পুত্র দুহিত্তোম্চ যত্নতঃ পরিবজ্জ'- | (य् ।। अब (इं) ४५ मामि गर्द्ध वा इ. ত্বা। তথাচ। জন্মাসি ন চ জন্মভে **७था रेनव अ**द्धानिवरम श्रि कात्ररथ. । ज्ञाना गर्छ ज्य भूध कनारमा किं (४ मानि न ह का इ मझन ।। अब कच्यामामा शृध्याखमा निरम्धः हिं। क्षेत्रारम जु हि। क्षेत्र अरमाजि वि শেষ: ॥ কৃত্তিকাস্থ রবিণ ভ্যক্ত্ব। किर्राष्ठ (इ.) इत्र कात्रायट । उटन (वयु ह माज्य दिनानि मन वर्क्स्य 🗓 🗱 ৷ রেবত্যভর রোহিণী মৃগশি-রে: নূলানুরাধা মঘা হস্তা স্বাভিযু छो व वश्र नियुद्ध मुराध्य भाषितुइः । সপ্তাষ্ট্রান্ত্যবৃহিঃ শুভৈ ক্তুপতাবে-कारण वि विश्व क्रुरेब अति व व उद्देश-नं कु कृत्यो यः ४ अङ **ा ४८ ॥ ॥** ॥ জ্যোতি বিহিত্নক্তাৰ্ধিক চিতা শুবণা ধনিষ্ঠা অধিনী নক্ষত্ৰ পার-क दि कि यथा। स्मार्याः शानि गृ क्रीयाट वियु विवृद्धद्रामियु॥ উखद्र-क् म्लन्धानिबस्या इत्रायामानिबस्या-ত্তর ভাদুপদ।দিত্রযেষু নবসু নঞ্জে। त्रि**ठ)र्थः ॥** # ॥ ভीমপরা ⊊মে । পূ ৰ্বাত্ৰয়ে বিশাখায়া শিবাদ্যে ভ চ-**लुहेरय। উठा ठाम् ७**८द९ कन्ता दि-**थ**वारा विवर्क्क (यू ॥ विक् नारम् ।

ত্রিকে চিত্রে জ্যেষ্ঠায়া॰ জ্লনে যনে। এভি র্বিবাহিতা কন্যা ভবত্তেগ্র সুদু:থিতা।। এবঞ্চ পারস্করোক্ত• यजूर्द्धि विषय माभिष्ठिय चा वा-**थ्यः ॥ 🕸 ॥ व्यात्मः नया ठ**ळ्ळाला নৈশ্ৰস্যাদ্য এব চ। ব্লেবত্যন্ত চতু-ভাগে বিবাহ: প্রাণনাশক: ॥ # ॥ কর্ণবেধে বিবাহে চ বুত্তে পুণসবনে उथा। भागान वान्। वृद्धायाः दिख् मृकः विवद्धारिष्ट् ॥ विश्वकंत्र । जिथा ३ ८ वर्षे ५ वर्षे ४ क ३ म्हा ३० निविष्ण ३२ रेड २१ काल्या ३३ श्चीमण २४ विष्ण २० जिथा: 1 ইষ্টোডুনা স্থ্যযুতোডুনা চ যোগাদ-ন্ শেদশযোগভন্ন:।। কর্মকালী-ন নক্ষত্ৰ সূৰ্য্যভূজ্যমান নক্ষত্ৰযো र्जिन्त यमि शश्चम्याम् । नाउन म॰-খ্যা ভবতি তদা ন কর্মযোগ্য মি-ত)র্থঃ। সগুরি শাধিকত্বে সগুরি -শতি নপহায় শেষাৎ ফল অন্য-थिक मन्यानूममाखः॥ 🕸॥ जम-वाम्स । याम्रभारम क्टिं गूर्य वू द्रीयाः मः अनुष्ठि । विठीयस ठ्-তীয়ন্ত বিশরীত মতো হন্যথা। 🕬 वाङ्गार अद्यान्य । जान्याः लान ठेखाः **ण** ठेख्याः । । দ্বিতীযেন তৃতীয়ন্ত তৃতীয়েন দ্বিতী- यकः॥ 🗭 ॥ च्याविव थ र्ज्जू त्रावधः । তথাচ রত্নবালা। একা মূদ্ধ্ গতা॰ ত্রযোদশ তথা তির্য্যগ্রতা: স্থাপ-থেৎ রেথ। শ্চক্র মিদ বুধৈ রভি· হিত খাজ্জুরিক তত্ত ত। ব্যা-ঘাতাদি ভুম্জিভিত্ত কথিত ত जिक (त्रथाष्ट्रायाः मूर्य)। हन्द्रन त्रा शिं(था निगिष्ठा मृकशाउ व कार्गनः॥ व्याघाजारीजि व्याघाज গোগ সংখ্যাক্ত জ্রযোদশাক্ষণ। তথা b इंडामीन बक्क वानि (प्यानी डा. र्थः ॥ 🕸 ॥ अथ मधननाकारवदः । দীপিকাযা°। কৃত্তিকাদি চত্ঃসণ্ড রেখা রাশৌ পরি ভুমন্। গুছশেচদেক-রেখাছোবেধ: সন্তশ্লাকজ: ৷ সন্ত সপ্ত বিলিখেৎ পুরে থিকা স্তির্য্যগৃদ্ধ मथ क्जिमारिकः । (वथरापरिज জিভা সম্ব্রিভ চৈক রেখণ খণেন বিধ্যতে ॥ 🕸 ॥ বৈশ্যস্য চতুর্থে শে শুবণাদৌ লিপ্তি না চত্তক্ষে চ। অভি জিভান্থ খেচরে বিজ্ঞেয়া রোহিণী विका।। विधिकाम् ७:।। 🗱 । यन्।ः ममो गथमनाक जिम्नः भारेभ द्र-পালৈ রথবা বিবাহে। রক্তা-শুকে रेनव जू (वाहमाना भामान ज्य-**ज्**यमा ज्याजि ॥ 🕸 ॥ व्यम्प्रायया-रमा यथा ब्राजगार्ट ७। विष्णुमिष्य-

ন হতস্য পত্রিণা মৃগস্য মাংসং শু-়ভদ॰ ক্ষতাদৃতে । যথা তথাতাপুড় जुलाम এव अमूबिला श्वाजुलमं শুভাবহং।। 🗱।। অথ পঞ্চলাক চক্র•। উদ্ধৃ 'রেখাস্থিতা: পঞ্চ তিয্য ক্ পঞ্চ তথৈব চ। ছে ছে চ কোণযো রেথে সাভিজিৎ কৃত্তিকাদিক ॥ শস্ত্ৰকাণে দ্বিতীয়ে তু লেথযেৎ স-वंकणी । क्रिन सिंब मेर्या (मेरिम) र्नक्ष अदिवद्धारिया नद्वा भारत চ্যে দোৰায়ে চসগুৰুলাককে 1 তে সর্বে পুভবস্ত্যত্র নামা পঞ্জলাককে ॥ अथ ठकानुःय कन्छिट शामत्वथ ইহেষ্যতে॥ 🗱।। তদুক্ত' রত্ননালা-যাং। কৈশ্চিত্তত্তাপীষ্যতে পাদবেধ ইতি। ইতি পঞ্শলাক কে।। 🛠 🛭 तज्ञानाराः। अभः चारण गुरुत-শ্মি রবনীসূনু ভ্ঠায় ভকঃ ষষ্ঠ• **छाद्वेग मर्केड्ड भूताला रुखि मू**हे॰ बद्धा । भणार मध्य भिनाहरस নবন• রাজ, লিড: পঞ্চন•। দ্বাবি•-শ• পরি শূর্ণ নৃত্তি কড প: সন্তাড্যে-মেতর্থ।। নত্বাপাতো থ্য॰।। 🕸 🛚 ।। भाभार मधनभः भनी यमि खादर পাণেন যুক্তো ২থ বা । যত্নার প: विवक्क (ए॰ मनिमाठा मार्याश्यः ক্থ্যতে। যাত্রাযাণ বিপাদো পুছে

**जू** उ वदः (कोद्भिषु द्भारगान्छ्र वानु ;- ) हार् विषवा वुटि ह गर्ना भूनक शुःकर्माति॥ अ। व्रवि सन्त क्रकाः ক্রান্ত মৃগাস্কাৎ সপ্তমণ ত্যুরেৎ। বিবাছ যাত্র। চূডাসু গৃহকর্ম পুরে-भारत ।। यानिवर्षयः ।। अः ॥ मृत ত্রিকোণ নিজমনির রগোথ পূর্ণো মি-दर्क भीरागृहताय उन्नीकिता বা। যানি কবেধ বিভি ভানপছাতঃ **मायान् (माया ध्रः: मृ**ङ्गतनकवि ধ বিধরে॥ 🗱॥ ভোজরাজ:। 😩 य प्रतिकारणाणा निविधः मुखार्थ भो जागा मुज्युमः महार दिवदवह मा डाक्टेमद्राणि **म**ण्डः (मार्ययु क्श्हूः খ শুসঃ করে। তি ॥ রবিশুদ্ধিঃ ॥ 🗱 ॥ कन्। नक्क व मूरको म्। विवाशः मूछ-ক্য়ণাণ ণশান্তভু বিশুদ্ধ্যাভু যাতা श्राह्मा अवास्यः ॥ 🗱 ॥ विम्राध्रतीः বিলাসে। পু•সা মক: মৃতো যোনি যোষিতা মমূতদ্যতি:। অত: পু॰ যোষিতো. শতং বল মর্ক শশাক্ষজং মালোচর শুজাবিন্দ কন্যায়া যত্নতঃ मृज वीका। जीगाकित्राक भूगः **भिरेष ब्रन्टेन ब्रांश विवारुः ॥ 🕸 ॥** ছি গীয় প্রাক্গত: পুভাবর: ত্র रगामणाहार भव्र इः मुल्भूमः। न জন্ম সন্ত ব্যয় র্জুগ তথা করে।তি

পু॰সা মণি তাদৃশ• ফল•॥ তথা ত্রবোদশাহাৎ পরত:।। 🕸 ।। ত্রবো-मणिनानारकी मण यु ध्रानीम्छः॥ मार्खः रिनक्षः भीजाः मू सामस्मका-मण • जमः। भोतिः भागाधिक • दर्य • নাসানটো বৃহস্পতি: ॥ ভবনার্ছণ ভ্छः (मीरम्)। यातृष्माम् जाः क-ण ।। \*।। कक्षे वु अमिरके नमु र्न তথা শেষভাগগাঃ ॥ 🕸 ॥ লগ্নে **७८ भक्षांन ज्**र्यो नवान मणाम ज-था। एक ज्ंछ दी का यहा दिवा ह বৰ্জতে শুভ ।। অয় মেব সুভহিবুক (यागः ॥ 🕸 ॥ (गायू नि विविधां । वमछ सूनरा नर्त्र, विवाहा पितक-হেনতে লিশিরে পুযাতি মৃদ্তাণ পিণ্ডীকৃতে ভাকরে: গুীম্মে ংদ্ধা-স্তনিতে বসম্ভসনযে ভানৌগতে দৃ-শ্যতা॰ স্ফ্রেচান্ত মুপাগতে চ নি-यङ भावृहे भंतर कामायाः ॥ 🕸 ॥ वाः यहा नास्ति विमुख मन्यान्ति वा-কা॰ ভব্ৰ শুভা॰ বদম্ভি। লগ্নে বিশু॰ ष्क गिंठ वीर्येऽगुरक शाधुनिका रेनव क्न विषर्ख ॥ 🕸 ॥ नामिन् गुरा न डिथरमा न ह विक्टि वाहा अकानि নৈব জনযন্তি কদাপি বিমুণ। অব্যা-হত:সভত মেব বিবাহকালে যাত্রা-সু চাষ মুদিজো ভ্গুছেন যোগঃ॥

॥#॥ नार्ल (गाव् वरयारम भु छवि । विश्ववा नाघनारम उरेषव भूषायूर्धन যৌবনেন সহিতা স্বস্তে স্থিতে ভা-ऋतः विभार्थ मृथना शुक्रा धनवजी क्रिंग्रहे भाउ यीनमा जायाहि धन था-ন্য পুত্ৰ বহুলা পাণিগুছে কন্যকা ।। 🗱 ।। विवाङ्भिटेट्न । व्राष्टा धनुषि ह ष्मनही ७८ भूबीएक मञी छ। भारत-**कछः॥ #॥ (জ्याजि: माद्रम•**शूरह । বিবাহে তু দিবাভাগে কন্যা স্যাৎ পুএবজ্জি'তা। বিবাহানলদক্ষা সা নিয়ত স্থামিঘাতিনী।। 🕸 ।। নহা-ভারতে। রাজৌ দান ন শ সভি विना চा उपमिक्ताः। विम्राः कः न्ताः विकाशृक्षा नीभ समः পुरिश्वाः । 🕸। ব্যাসঃ। রিক্তাসু বিধ্বা কন্যা मर्ग्भ क्ला महाविवाहिका। भरेन-**क**द्रनित्न हिन यमाद्रिक। जिथि र्छः বেং। ভিমান্ বিবাহিতা কন্যা পতি **স**ञान विक्रि जा ॥ 🗱 ॥ स्वृज्ञिः । थर्माः-र्थ काम (माक्षाणाः नाजाः मः भाछि **१ ७वः । भर्तोक्त**प्रस्त भूव स्यव कद्रगुरार ॥ इत्। मनुः। व्यवता-काकी भागानाकी इन्म दाइन शाबिनी । उन् लान (कम ममनाः म्बकी मुद्दार्ट खिया। #॥ माजा-**७१: । इःमग्रनाः** स्ववर्गाः मधु

शिक्ष लाहनाः। जाम्मीः वद्राध् कन्याः गृरुष्टः मूथ त्यस्य ॥ 🗱 । । ভবিষ্যে। পুতিপ্ঠিততলা: সম্যুক রক্তান্তোজ সমন্বিयः। তাদৃশা শ্চর-ণা ধন্যা যোষিতা॰ ভোগবৰ্দ্ধনা:।। পুতি ছিতে। ভূমো লগ্ন: সম স্তলো হধো ভাগো বেষা তে তথা ।। # !! মনু:। নোদ্বছেৎ কপি লা॰ কন্যা• नाधिकाकी न त्राणिनी । नालामि-কা॰ নাতি লোম্নী॰ ন বাচালা॰ ন পি-क्लाः ॥ नक वृक्त नरी नामीः नास्तर शर्व उनामिकाः। न शक्का हि रेलु याः नानी॰ न ह जीवन नामिकाः ॥ 🕸 ॥ পুতিপুসৰ মাহ মৎস্যাক্ত। গলা চ যমুন। হৈব গোনভী চ সরস্বতী। নদীয়াসাংনাম বৃক্ষে মালভী তুল-সী অপি ॥ রেবতী চাশ্বিনীভেষু রোহিণী শুভদা ভবেৎ॥ # .. কৃত্য-চিত্তামণৌ। নেত্রে যস্যাঃ কেকরে शिक्षल वा महामहःमीना महाव ला-लिक्ना ह। क्ला यम् । गल्याः সংমতাথা নি:সদ্ধিশ্বাণ বন্ধকীণ তাণ वन्त्रि ॥ 🗱 ॥ नन्तित्कश्वत्रशुद्रारा 🖡 महामा मुरकमी जनुरलामदाकी मु-कः मूनीना मूगिकः मुम्छा। विभी विभव्या यनि शक्षकाकी अल्बन शी-नालि दिवाहनीया॥ धृष्टा अन्छ।

यि ि शिक्षाकी (लाम्। जमाकीर्ग नभाक्यं छै: । भाष्य ह नुष्ठा यहि রাজ কন্যা হুলেপি যোগ্যা ন বিবা क्नीया ॥ **#** ॥ हात्री **उ: ।** उमार **ज** ल नक्क विद्धारना भभना वद्यर া নক্ষত্ৰোপপল্লা॰ নডৌনক্ষত্ৰহীনা॰ ।। 🕸 ।। नाजी नक्षज नाङ् ऋत्राद्रायः। অখিন্যাদি লিখেচুক্র সর্গাকারণ ত্রিনাতিক । তত্র বেখবশাজ্জেয বিবাহাদি শুভাশুভ ৷৷ ত্রিনাডী तिथ नक्ष मिन्। मूर्ग्यूरगाङ्का । श्खन्द्र म्ल वाक्नाः প्रबंखापुनमा ख्या ॥ यात्राः भोत्या छक् र्यानि শিত্রা নিত্র জলাস্থ্রণ। খনিষ্ঠা চো-खद्राजुमा मध्याको व्यवस्थितः ॥ 🕸 ।। कृंखिका द्राहिनी मरला गया স্বাতী বিশাখকে। উত্তরা শুবণা পৌষণ পৃষ্ঠ ৰাড়ী ব্যবস্থিতা:॥ #॥ व्यक्षां नि नाडी (वश्यकं यष्ट हि **छीरक•** क्रमार । यामग्रामि ज्यंग्र ज्र्ग्रंक कृ खिकानि विविदेककः।। এবः निक्रीकरपाइदः कन्। माख्य शूद গুরৌ। পণ্য শ্রী স্থামি মিত্রেযু দেশে गुराम भूरत ग्रह ॥ # ॥ এकना जी ख ধিষ্টানি যদি স্থ র্বর কন্যযো:। তদ। विषः विज्ञानीयाः छर्तामियु उरेशव ह ॥ पुकरे यमा असक उमा असक

ভো ব্যধ:। পুণষ্ট• রঘভ॰ যস্য ভস্য नामकांजा वरम्य।। घरणा जन्म छरणा र्विश्वा घरणा नीम जरणा छथा। नाम कश्चर्या (वंद्या न कर्खवा) कर्नाहन ॥ এइनाडी श्रिडा हिट महाट छर्ड नामाय ठाञ्चना । उन्नामाछी व्यासा वीक्ष्मा विवारह मु ७ भिह्ना॥ #॥ शुष्ट्राष्ट्रा (वश्वा चर्च मध्राना-ए जिया ज्या। शृक्ष्ता की वर्षा क न्। भि्यल नाज मः गयः।। এकनाछी স্থিত। যত্ৰ গুৰু শব্ৰিক দেবতা:। তত্ৰ ছেব ক্ষ মৃত্যু ক্মেণ ফল মাদি-শেৎ॥ পুভু: পণ্যাঙ্গনা নিত্ৰ দে-(मा गाम: भूद: गृह:। এकनाछी गः তা ভব্যা অভব্যা বেধ বিজ্ঞিতাঃ ॥ 🗱 ॥ পুতিপুসব মাহ জ্যোতিষে। अक्द्रामा। पि यारम जूनाफी (मा-(वः न विराउ। न रथा। अक्रवारमो D मन्त्राडा: मुंड मार मममधाक । চতুর্থে দশমে চৈব তৃতীয়ৈকাদশে उथा।। 🗱 ।। সমগুহণাছিষম সপ্ত-কে দোষ:। তথাচ। যোটকে সপ্তকে तिय जुला यूग्रा हायो उथा। मि<sup>.</sup>इ यही मना बरक्ती मृद्धि उजानुबी: ছিব: ॥ 🗱 ॥ 🔊 পতিব্যবহারনির্ণ-य ॥ मूक्षिकावित्र यात्रा उन्हा বলে বশ্যরাশৌ বা। অপি নাড্যা-

দি বেখে ভবতি বিবাহো হিতার্থায ॥ 🗱 ॥ त्राज्ञभार्ज ७ । न त्राज्ञ रगाण গৃহবৈরিতা চ ন ভারশুদ্ধি ন গণ্ড यः जार । न ना छीत्नाया न ह वर्ग मुङ्कि र्गर्गापय एउ मुनरमा यम छ ।। 🕸 II রাজযোগন্ত একরাশ্যাদি যোগ এব ভবৈৰ নাড্যাদি পুতিপুসবাৎ। 🗐 প্তিরত্নালাযা ।। অথে ভাজ क्रिविषक व्यञ्जातानमुक म् विक শ্চাখু: গৌজনশ স্ততোপি **মহি**ধী व्यायः भूनः भोवजी। व्यायानी म्य ব্দক্তরৌ কপি রথোরভু ঘষ বানর: সিংহো ংখো মৃগরাট্ পশুশ্চ কর-টী যোনিশ্চ ভানা মিয়ণ।।গো ব্যাঘু• গজ সি হ মধ নহিষ বৈপঞ্চ বভু রগ বৈর বানর মেষকঞ্চ সুমছত্ত-দ্বদ্বিভা**লোন্দুক্। লোকানা। ব**্যব হারতোন্যদ্পি চ জ্ঞাত্বা পুরত্বা-**क्ति∙ क्रच्याख्या न्रश ভৃত্য**যো **রপি** সদা বর্জ্য: শুভস্যার্থিভি: ॥ মকর मान्छ निथ्न कन्। कलामी म्रा न्तु भीतो ह। वृषञ जुरन शन भा रहो कदा है धनुषी ह निज विरक्षो ॥ य-ডপ্টকাবিভিশেষ:॥#॥ অরিষডপ্টক নাহ। মকরঃ করি হল রিপুণা কন্যা **ए**रवंग भरू व्यं छन्या। कर्छि घर्छी वृष धनुशी वृण्णिक निथूरन ठातिविरदी

॥ 🕸 ॥ यिष कन्याष्ट्रीय ভर्जा ভर्जुः ষষ্ঠে চ কন্যকা । ব্যন্তক বিজা-नीयादिक्कंट॰ जिम्हें जिल्ला जिला। 🗱 🛚 ।। পূংসে। গৃহাৎ সূত গৃহে সূতহ। চ কন্যা ধর্মো স্থিতা সুত্রতী পতিব-लाजा है। वि वापरमा धनगृत्व धनक्। চ কন্যা ঋপ্কে স্থিতা ধনবতী পতি-বল্ল ভা চ।। 🕸 ।। ষডপ্টকাদৌ তারা-नियम मार जीमशत्राक्रमः॥ (मी হৃদ্যে হ্যুভযো ৰ্ঘযো রূপি তয়ে রৈ-কাধিপত্যে পিবা তারা ষষ্ঠ সুমিত্র भिज म्हन (क्यार्थ मन्त्रव्यक्ति। यहै-কাপ্তে নব পঞ্চনে ব্যুয় খনে যোগে চ পু• যোষিভোঃ প্রীত্যাফু: মুখ বৃদ্ধি शृष्टिজनकः कार्य्या दिवार छए।।। 🗫 ।। भर्गः। सहनः जाता दिखाः। গুছ রিপুভাবে চিয়েণ। রোগাদি নরনার্য্যোঃ ষট্কাপ্তকে ৈ ্র মবশ্য• ভবেদাশু॥ 🗱 ॥ वतानः। रेगबाहि যোগেপি ষডপ্টকাদৌ তারা বিপৎ भुकाति रेनरनाथाः। वब्बा विवा-হে প্ৰবাড়তো হি প্ৰীতিঃ পরা ভন্ম নৃতারকাসু॥ নক্ষত্র মেক থদি ভিন্ন শি ন দম্পতী ভত্ত সুথা লা ভেতা । বিভিন্ন মৃক্ষণ যদি চৈক व्रामि उना विवाहः मुङ लोश्रामारी ॥ अक्का ह यहा कन्या ब्राह्म की ह

यहा खदट । धन गुज्र की नादी मा-ধ্বী ভত্ প্রিয়া সদা ।। যডগ্রকে গো নিথ্ন পুনেষ কাম্য সর্প্ত নব পঞ্চকে তু। ছি দ্বাদশ্যথ্যে কন-কান্ন ভামু• বিপাৰ্চন• হেন চ নাডী **एनारव ॥ # ॥ मद्रगः नाउ**हारव कः लरः यট्काष्ट्रक विপত्তि दी। यन শত্যতা ত্রিকোণে দ্বি দাদশে চাদা-রি দু• ॥#॥ কৃত্য চিন্ত্যানণৌ। হস্তা স্বাতি শুতি মৃগশির: পুষ্ট নৈতাখি ভানি পৌফাদিত্যে জন্ত রিহু বুধা (रव **ग**॰क्डानि ভानि । পূর্বান্তিসু: শিবভ ভরণী রোহিণী চোত্তরাক পুार्च में ब्रीह्य मृष्ट्रगंग न्न (नंड) মুনীন্দুাঃ॥ চিত্রাশ্লেষা নিখতি পি-তৃ তে বাসব বাসবর্জ শকাশ্লের उंदक्त पद्भाक्षं ठ द्राकाशानानः ॥ 🗱 ॥ क्लगार 🏻 भिजः। सञ्जल চোত্তনা পুতি ৰ্যধ্যনা দেব নান্বে। দেবাসুরে কনিষ্ঠা চ মৃত্যু র্যানুষ রা-क्रान ॥ 🕾 ॥ बाक्रमी ह यहा कन्त्रा मानुवक वादा जावर । जना मृजू र्न पृत्रस्था निथनषु रूषाशिया॥ 🕸 ॥ রাজমার্ত্তে। যদি স্যাদাক্ষ্যো ভ र्जा कन्यका गानुषी जत्य । विदास् সুথ্যাপ্নোতি বৈপরীত্য বিবর্জন (य ।। क ।। युक्तकवारीन । (एन।

জয়ন্তি गुष्क्रन সর্বথা নাত্র সংশ্य:। वक्ताः गानुषाभाकः मःशुरम नि-भव्या मृजिः ॥ 🗱 ॥ किर्क्ति भी ना नार्या विशाः कथाः भिः इ जूना इयाः। रिना। गुणां असाथाः न्मा वृष गृणाञ्चाः ॥ 🗱 ॥ सर्वाः भविष-यिष्टि भुः क्वितिया नव जाग् जत्र । বডাশুযো ভবেদ্বৈশ্য স্তিসু: শ্দে পুকीर्ভिजाः ॥ 🗱 ॥ वर्गम् 🔊 🗗 गा नात्री शीनवर्गक यः श्रुभान्। गश्-ত্যপি হলে জাতা নামৌ ভর্ত্তরি রজ্যতে।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ।। 🗱 ।। व्यन्तर देवार्गादम पुष्टेवाः ॥ यथा। भरिनक्षत्र मितन रेव्य यमि द्वि-

विदाहिउ: शुः छी क् ठविवाइ: । ক্তা **তিথি** ভবৈ**ৎ। তমি**ন বিবাহি: তা কন্যা পতি সন্তান বৰ্দ্ধিতা।। অপিচ। বিফু ভাদ্যে ত্রিকে চিত্রে (कार्रक्षाया॰ क्वेंचान यान । अ**ভि** বিবাহিতা কৰ্যা নিভ্য মেব সুদু:-খিতা ৷৷ ইতি জ্যোতিত্ত হু• ৷৷

विदाशः श्रु জামাতা। ইতি কে: চিৎ॥ বিবাহযোগ্যে তি॥ বিবিক্তণ ত্রি পবিত্রণ ৷৷ বিজনণ ৷ ইত্যনর:।।অসম্পূক্ত:।। বিবেকী। इंडि सिमिनी।। বিবিক্তা জী দুর্ভগা।ইতিত্রিকাও; (भर: ॥ मू मृाक्षिष्ठभूखरक विदिका। । ইতি পাঠ: ॥

বিবিশ্বণ 'ত্রি নানাপুকারণ। ইত্যা নর:॥

विवीजः शृ ज्ञिति न्यः। यथा।

সম মেষা विवीजिश श्रित्र व्या हु ।

মহিষা সম! विवीजः পুচ্রত্নকাঙো রক্ষমাণ: পরিগৃহীতো ভ্পুদেশ তদুপ্যাতেপী তরক্ষেত্রসমাদ্র মেষা মহিষ্যাদীনা বিদ্যাৎ। ইতি মি ভাক্ষরায়া স্থানিপালবিবাদপুকরণ ।।

বিবীতভর্গ<sup>®</sup> পু• বিবীতভ্যামী। ইতি মিতাক্ষরা।।

वितृका जी मूर्जगा। ইতি ভূরি-পুযোগঃ॥

বিবৃত তি বিস্তাইতি মেদিনী।। বিবৃতা জী ক্ষুদুক্ণেদ:। ইতি মেদিনী।।

বিব্তাক্ষ: পু॰ জরুট:। ইতি হেম চন্দু:।।

বিকৃতি: স্ত্রী ব্যাখ্যা। বি পূর্ব কৃ
ধাতো: ক্তি পুত্যুয়েন নিম্নমা।।
বিবরণ । যথা। শক্তিপুহু ব্যাকরণোপনান কোষাগু বাক্যাম্ব্যবহারত্ত । বাক্যস্য শেষাৎ বিকৃতে
র্বস্তি সানিধ্যত: সিদ্ধাপদস্য কৃ-

षाः॥ ইতি মলমাসতভু॰॥ विवृद्ध कि हिन्छः। यथा। विवृद्ध नार्थः कृष्टिवात्र हावः नमूष्वहहाक निउधत्रमाः। यामनुगन्नश्रवनिष्ठः তাল পোপাস্নানৃত্য মনন্দেও ।। ইতি ভঙ্টি: ॥ বিবৃত্তণ ভির্য্যক্-চলিত পাৰ্য যত্ৰ। ইতি ভটীকা। खी বিবৃত্তা कृ मुक्रायुनः । यथा । অথ বিবৃত্তানাছ। বিবৃত্তাস্যা : ম-**হাদাহ: প**ক্ষোডুম্বরসল্লিভা: । বি-বৃত্তা মিতি তা॰ বিদ্যাৎ পিত্তো-ত্থ পরিমণ্ডল ।। পরিত: শোধ-বতা।।। অথ তস্যা দ্যিকিৎসা। বিবৃত্তা মিন্দু বৃত্তাঞ্গদৰ্ভী জাল-গৰ্দ্দভ । পৈত্তিক্ষ্য বিদর্পস্য ক্রিংয়। সাধ্যেৎ ভিষক্ ।। পাকে ত भाषरयमाङ्य भारतः मंध्राख्य-জৈ:। ইতি ভাবপুকা**শ:** 

বিবৃত্তি: ত্রী চক্রবজ্রনণ। ঘূর্ণনণ। বি পূর্ব বৃত্ত ধাতোঃ ক্তি পুত্র্যেন নিয়ুম।।।

विरविकः शु॰ श्रद्धश्रावरावृद्धा व-स्वस्त्रस्य निष्ठयः। शुक्छि शृद्धया विज्ञासन ज्ञान इक्तरम् । इंडि ज्वजः॥ उৎश्वरायः। शृथशाञ्च-जा २ । इज्यादः॥ विरव्हन ० । इंडि मद्यञ्जावनी ॥ शृथशावः । ইতি ধরণি: ।। বিবেকো বস্তুনে: । ভেদ: পুক্তে: পুক্ষস্য বা । ইতি জটাধর: ।। জলদুে।ণী ।। বিচার: । । ইতি নেদিনী ।।

বিবেকিতা জী বিবেকির:। বিবে কিনো ভাব:। যথা। যৌবন: ধনস শান্তি: পুভূত্ব মবিবেকিতা। একৈ-ক মপ্যনথায় কিমু তত্র চতুষ্টয়ং।। ইতি হিতোপদেশ:॥

विरविकी नृष् (प्रवासनद्वाक्षभू था। यथा। (प्रवासना १ श्रि कि निमा कि निमा कि निमा माने माने कि निमा माने माने कि निमा माने कि विका स्था । सुनना वसूपान कि अवधुण यवनः कृति। नीत्वा विरविकी छाउ विस्ता कि निमा कि का निमा कि निमा कि का निमा कि निमा कि का निमा कि का निमा कि निमा कि निमा कि कि निमा कि

বিবেচক: পু॰ বিবেচনকর্তা। বি বেচযক্তি য ইত্যর্থে নক পুত্যংশন নিয়ম: ।।

বিবেচন ক্লী বিবেক:।ইতি শব-রহাবলী॥

বিবেচনীয়ঃ ত্রি বিবেচ্য: । বিবেচি । ভব্য: । ইতি বি পূর্ব বিচ্যাতো

র নীয় পুত্যমেন নিয়ম: ।।
বিবুদ্ধ তি বিৰুদ্ধবক্তা। যথা।
যোন ভাতা পিতা বাপি ন পুণ্ডো
ন নিযোজিত:। পরার্থবাদী দ গুঃ:
স্যাৎ ব্যবহারে বু বিবুদ্ধ। বিবুদ্ধ বন্ বিৰুদ্ধণ বুরন্। ইতি ব্যবহারতত্ত্বণ ॥

বিবোটা<sup>ী</sup> পু• বর:। পভি:। ইতি হেনচন্দু:॥

বিবেকঃ পু• জীণা শৃকারভাব-জা ক্রিয়া। ইত্যমরঃ।। অভিমত-বস্তু প্রাপ্তাবলি গর্মাদনাদর: সা-পরাধন্য চ সংযমন তাতনঞ্ বিবোক:। যদুক্ত। গর্বাভিনানা-দিষ্টেপি বিদ্বোকো হনাদরক্রিয়া। তথা। অভিমত বত্পজ্তাবলি 😎 गर्बामनाम्य खनु।:। সুলতি পূিবস্য হৃদ্য সংব্য তাড়নময়ন্ত বিরোক: ৷৷ ইতি ভরত: ৷৷ বি-*(दाक चुिंगार्द्दंग यस्त्र निरंग्रिश)*-नारतः। न जुता स्य वागाल मंथि-ত। गगनाभियू ॥ इंडि भाजनुनस्त्री ॥ ইষ্টেপি গর্ব মানাভ্যা॰ বি-(बाकः मार्गनानदः । ३७। ब्लुब नी वनिश्वाः

বিশ ঔ শ পুরেশে। ইতি কবি-বল্লফন:।। শ বিশতি। ঔ অবি-

निर्घण्टः ॥

ক্ষৎ। বিবেশ কশিজ্জটিল স্ত পোবনা।বি পরা জি পরি ব্যব ক্রী নিবিশেত্যাদিমাত্মনেপদ বিধানে পি ভর্ত্তরক্ষে নিবিশতী ভ্যাদি-তি রঘৌ কেবলাৎ শতৃ পুত্যয়ণ বিধাৰ পশ্চাদুপসৰ্গ যোগাদিতি मूर्यदेवृत्तिः । निष्णयः ইश উপमर्ग প্তিৰূপকো বা ৷৷ যুখ্যা দ্বিখ নিদ্ সর্ব তস্য শক্ত্যানহাত্মন: হেমা-দেবোচ্যতে বিফু বিশ্বাভো: পু. विभागिकि भूतात विक भय-वुष्टभारनाट मुर्खन्त्राः खाय निजि কে চিৎ ভট্টিস্তা । তালব্যান্ত**সৈ**য়ব সর সম তত্ত্বাে ইতি দুর্গ:দাস:।। বিশাণ ক্রা ন্ণাল। ইত্যুমরটীকা-যাং রাজন**স্ট**ঃ ॥ विभक्षी भु वनाका। ইতি রাজ निघ्छे:॥ বিশল্ধ: ত্রি শল্কারহিত:। বিগ তা नका यम्। वरु वृोहिः॥ বিশঙ্কট: ৰি विभावः। ३७/ नवः॥ বিশদ: পু॰ শ্বেভবর্ণ:। ইত্যমর:॥

বিশদ: ত্রি বিমল:। ইতি হেন-

শুলুগুণযুক্ত:। ইত্যনর:॥

ठन्दुः ॥ वाकः । इंडि स्मिनि ॥

বিশ্য: अ·শयः। यथा विषया विभाग रेम्हर भूर्वभक्त खर्था खत्रः। নির্ণয শ্চেতি পঞ্চাঙ্গ শান্তে ৎবি-कद्रनः भृष्ठः ॥ दिष्रया विहाताई বাক্য় । বিশযো হস্যায় মথো ন वा इंडि म॰ गयः। इंडि डिल्यानि-তত্ত ।। সাশ্য:। ইতি কেচিৎ।। বিশ্যা তি সংশ্বী।ইতি বিশ্ব-मदार्थनमंगर ॥ विশवः भू दशः। इंड्रमबः॥ বিশরণ লী নারণ। ইভি হেন-D=W: 11 বিশ্ব্যঃ ত্রি শ্ব্যুরহিত:।যথা। সশল্য: স সন্ঘূৰে লক্ষ্ণ: পর-বীরহা। বিশলেয়া বিক্লঃ শীঘু মৃদভিধন মহীতলাৎ ॥ ইতি শ্রিরামায়ণে যুদ্ধকাণ্ডে >< সর্গঃ॥ विभागाक्रवर्ग जी अवधिविद्यायः। यथा। পृत्रस् कथिए । या श्रा বীর জাম্বভা ভবা দক্ষিণে শিখ-রে জাতা॰ মহৌষ ধ মিহান্য।। विश्वलाक्रवनी श्रमा भार्याक्रवनी **তথা। म॰**कीदक्कभी' बीत मक्कारी-क मरशेववी: ।। इंडि क्रामारण वान्यीक (य गुष्तका (७ २०२ नगः॥ বিশয়রা **জী প**লী ৷ ইতি রাজ ৷ বিশলাক্ং कुः दिनायाम्कः।

বিশাথা

श्वामानी जिथा जः। उर्था । यः। याका एकः र मदन्नः ० ज्या नामः ८। इति उत्तराना ॥ याद्याः जः द या न्या हित्यः ७। इति नम् नित्या । विन्या जी अपूरी ॥ यानिया नृकः ॥ मसी । इत्या निर्या । विक्या । विन्या । विन

শস থাতোঃ ক্ত পুত্যবেন নিয়মঃ
। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুনী ।।
বিশস্তঃ ত্রি অবিনীতঃ। ধৃষি শসী
বৈবাত্যে। এতৌ নিষ্ঠায়া নবিন্যে
এবানিটো স্তঃ। ধৃষ্টো বিশস্তঃ। অ
ন্যত্র ধর্বি জঃ। বিশস্তিঃ। ইতি

সিদ্ধান্তকৌনুধী।। বিশস্তা পু• চাণ্ডাল:। ইতি স•-ক্ষিণ্ডসারোণাদিবৃত্তি:।।

বিশাকর: পু॰ ভদুচ্ড:। লস্কামিত্র ইতি ভাষা। ইতি শব্দ চন্দ্রিক।।। বিশাথ: পু॰ কান্তি:ক্য:। ইত্য মর:॥ ধরিমা॰ বিত্তপ্তরেণ পান সংস্থাম॰।ইতি ভরত:॥ বাচক:।

ইতি মেদিনীকর ছেনচন্দ্রী ॥ প্নর্বা। ইতি রাজনির্ঘট: ॥

বিশাথজ: পু: নারক্ষ:। ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ বিশাথজাতে ত্রি ॥

বিশাথল: ক্লী যুজ্জকালে মধ্যে বিন্যন্তপাদঘৰ:। যথা। বিশালান্তর
বিন্যন্তে পাদ্যুগ্ম বিশাথল: ।
ইতি শব্দালা।।

বিশাথ। জ্ঞী কঠিলক:। ইতি মে-

रिनी ॥ अधिनाति मधिना अ নক্ষরান্তর্গত যোড়শ নক্ষর• ৷ তৎ পर्वतायः । द्राषा २ । इंडर्नद्रः ॥ বিশাথে ছে। **প**ত্ন্যোর্মধ্যুগত স্তত্ত্র अ्रोवः প्लवरमञ्जरः। विशाशस्या र्य-ধাগত: সংপূর্ণ ইব চন্দুমা:। ইতি রামায়ণ ॥ অত্তর্ব দ্বিরু মুচিত্ত কিন্ত এই ভারাপেক্ষ্যা এক বচন নিহে।ক্তা। ইতি ভরত:।। তস্যা ক্রাণ ভারেণা হার চভুত্তারান্য• । ইতি মূহ্রচিভামণিঃ ॥ তোরণা-কৃতিনি পঞ্চ ভারকে তারকেশ ব-দনে বিশাখভে। তন্বি যান্তি বিনু-ধাধুমধ্যণে জন্ততো রস ভুজাঃ कलाः পূिरय ॥ म॰। ०। २५। इंजि কালীদাস কৃত রাজি লম্নিরূপ-कगञ्चः ॥ व्यम् । विश्वत्य 🕶 🗝-কাগী। ইবং নিশ্বণান্তগতা। ইতি

বিশালা

ক্যোতিস্তন্ত্ব । । । তত্ৰ জাতকলং
। সংনেত্ৰকো বিবিধ ক্ৰিয়ায়া সুবৰ্ণকাৱৈ ৱপি সখ্য নেতি । যস্য
পুস্তৌ চ ভবেৎ বিশাখা সখা
ন কস্যাপি ভবেৎ পুস্তঃ ।। ইতি
কোষ্টীপুদীপঃ ।।

विणायः भू भूष्ट्रिकाहीनाः क त्मन णयनः। यथा। উপणाया वि-णायणः भर्यताय णयनार्थको । हे उत्रत्रः॥

বিশারণ ল্লী মারণ। ইতি ছেন-চন্দুঃ॥

विणात्रमः वि विषान्॥ शृशनः।

३ अप्रतः॥ शृशिकः। ই अञ्चरणानः॥
वनी॥ (णृष्टः। ই अञ्चरणानः॥
वन्रतः भू दे जित्राक्षितिर्दे ।।
विणात्रमः जी कृष्मुतान् ।। ই अ

विभानः जि व्रथा ই छ प्रमः ॥

विभानः शृ मृग (छ मः ॥ श्रीकः
(छ प्रः । ই छि (म पिनी ॥ मृश (छ प्रः ।
।। वृक्ष (छ प्रः । ই छ भ प्रम ज ज्ञावनी ॥

विभान छ जी श्रीकः । छ थ श्री ।
श्री शाहः २ । ই छ प्रम जः ॥ स्रामान ।
विभान जुः । ই छ भ प्रम ज्ञावनी ॥

विभान जुः । ই छ भ प्रम ज्ञावनी ॥

विभान जुः । ই छ भ प्रम ज्ञावनी ॥

। ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।। বিশালত্বক্ পু॰ সপ্তপর্মকঃ ইত্যমর: ॥ বিশালপণ্ড: পু॰ কাসাল: ॥ ত্রি

বিশালপথ: পু॰ কাসালু:॥ খ্রী-তাল:।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥ বিশালফলিকা স্ত্রী নিমাবী।ইতি রাজনির্ঘণ্ট:॥

विणाल। छी हेन्द्रवाक्गी। हेन्द्रमतः ॥ विणाला करु वान्धी तम् 
केष्ठह्रता मता। हेन्द्रि ताक्षवल्लानः ॥
फेन्द्रियो। हेन्द्रि ताक्ष्मी ॥ फेर्शाकिश्वी। स्ट्रन्द्र्वाक्गी। हेन्द्रि तान्धिः ॥ किर्यविष्णयः । यथा ।
मूख्य क्ष्मानवामक मर्वे शैर्थय्य क्ष्मानाः वित्रकार ज्या ॥ हेन्द्रि न्यानाः वाल्या मथा एकः न्यानाः वाल्या मथा एकः न्यानाः वाल्या मथा एकः न्यानाः वाल्या मथा एकः न्यानाः वाल्या स्त्रिक्षानाः वाल्या स्त्रिक्षानाः वाल्या स्त्रिक्षानाः वाल्या स्त्रिक्षानाः वाल्या स्त्रिक्षानाः । हिन्द्रिक्षानाः ॥ हिन्द्रिक्षानाः ॥

বিশালাক্ষঃ পু॰ হর:॥ গড়ড:॥ সুনেত্রে ত্রি। ইতি নেদিনী॥ বিষ্ণু:। ইতি কেচিৎ ॥

বিশালাকী জী বরস্ত্রী। ইতি বিশ্ব:।। নাগদন্তী। ইতি রাজনিঘণ্ট: ।। পার্বতী। যথা আদিজান লে।

ঈশ্বর উবাচ। প্রুব মাদ্য সমৃচ্ছত্য भाषावीहः मनुष्दाद्र । विणालाः को भर एउं इपड मञ्ज मुकादर ॥ जड्डाक्रदी महाविष्ठा जड्डेनि-দ্ধিপুদা শিবে। পুসঙ্গাৎ কথিতা विष्ठा विल्लाका मुर्झां । शिर्य ॥ খ্ৰিরস্যা নছেশানি সদাশিবো মহাপুড়:। প'ক্তিশ্চ ছন্দ: কথি-७ विभानाकी ह (म्वडा ॥ मिकिः পুণৰ মিত্যুক্তণ লজ্জাবীজঞ্চ ৰীজ-कः। धर्मार्थ काम माक्ष्यु विनि रगगः भुकीर्खिङः॥ यद्दन्यात्र कः ब्रन्धारमो यथायम् जिथीयाञ । यङ् भीर्य ङाङ्का वीरङ्गन भूगवारम् उन कन्न থেৎ।। মূলেন ব্যাপক ন্যুস্য ধ্যা-(याप्त्वी॰ भन्नाः निवाः । धारव (पर्वी विनानाकी उधकाश्वम পুভাণ।। দ্বিভুলা ময়িকা; চণ্ডীণ খ্যু খর্পরধারিণী । নানালক্ষার **সূভগা•রক্তায়রধ্রা• শুভা•॥** সদা (बाउभवबी या॰ भुमन्नाम्या॰ बि लाहनाः। यू अभावायकीः त्रन्धाः পীনোমতপযোধরা<sup>»</sup>।। শিবোপ রি মহাদেবী• ভটা মুস্কট মণ্ডিকা• । **শ**ত্রক্ষকরী দেবী সাধকাভী ষ্টদাযিকা॰।। সর্বনৌভাল্যজননী॰ गरामण्यरभूमाः माद्रर । वरः ||বিশিখ: পু॰ শরবৃক্ষ:।ইতিরাজ-

वतादा भशास्त्री मूनहारितः नुन् बस्य ॥ भूतम्बन्नाल जु वर्ग वकः कार्भः मुधीः। यञ्जमासु সনাবাহ্য পুতিষ্ঠাণ কার্যেন্ডভ: ॥ ত্রিকোণ ঞাষ্ট্রপ এঞ্চ ততো বৃত্ত স-मानित्थर । हजूत्रमुः हजुर्नात (म-ব॰ মণ্ডল মালিখেৎ।। ভত্ৰাবাহ্য यकाप्ति । जर्दाजो काग्र जन्मती া বিশালাক্ষী বিশালাস্যা হথা-বিখি পুপূজ্যেৎ।। ত্রিকোণান্ত র্ম-হাদেবী সংপ্র্য মাত্র: ক্রমাৎ । भक्रकाकी विक्रभाकी द्रकाकी ভেলোচনা।। একনেত্রা দ্বিনেত্রা চ কোটরাক্ষী ত্রিলোচনা। এতাঃ প্ৰ্যা নহেশানি প্ৰাণেষ্ট্ৰথো-गिनी:॥ शिक्सामि करमरेगर अ क्षेत्रिक्षयक्षिणीः । ठलुद्राम् म-शासिव (नाकशानान सम्हर्ष्ट ।। छन्नहि रेक्टव बङ्गाम्।।न् शृह्य-ভাগ্যহেতবে। ওতো হথাশক্তি कथ्वा भूरवह ममाठाइए ॥ इंडि ভজনার:॥#॥ চতু:ষ্টিযোগি-नाष्ठर्गत्यागिनीविष्णयः । ইতি <u> पूर्णाई। शक्किः ॥</u> व्यद्धाना । इंडि বিশালী भी

त्राक्रनिर्घण्डः॥

নির্ঘণী: ।। বাণঃ । ইত্যার: ।। তো-মর: । ইতি মেদিনী ।। শিথা-রহিতে ত্রি । থথা । বিশিথো থনু পারীতী চাক্ত কর্মান ভংক্ত । ইতি যুতি: ।।

বিশিখা ত্রী খ্রিত্রী॥ র্থ্যা॥ নালিকা। ইজি যেদিনা॥

বিশিপ॰ ক্লী মনিরে । ইত্যুণাদি কোব:॥

বিশিষ্ট: ত্রি যুক্ত: । যথা। হস্তা
নক্ষত্র গঙ্গার্কণ গুণদ্বন বিশিষ্ট দ
শনী বিধে র্যক্ষিন্থনি তল্লাভ স্তত্র
স্থানং । ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বে আর্ত্র ভাটাচার্য্য লিখনং ।। বিশেষেণ শিষ্টশ্য।

বিশিষ্ট: পু॰ বিষ্ণু:। যথা। বিশি ষ্ঠ: শিষ্টকৃৎ শুচি:। ইভি ভণ্য স-হণুনানভোত্ত ॥

हमुनामरखाङ्॥
दिनिश्चोद्विष्ठवादी जि शुक् जिल्लरागा जिंगार्ज्विल निर्मि ज्या छ ।
वृञ्च द्ववादी । जम्म मज्य यथा ।
भूद स स्वरिजिला शुक् जिः किस्
ज्यानिकः नुक्त मण्य दिक्क वर्ष ।
हैन्यः नुक्ता जक्ष वर्ष किर्मे जन्म ।
दिन्यः नुक्ता जक्ष वर्ष निर्मे अस्व जायम्भिः।।।। श्री क्व वर्ष दिन्य वर्ण ।
यम्भिः।।।। श्री क्व वर्ष दिन्य वर्ण ।
यम्भिः।।।। श्री क्व वर्ष दिन्य वर्ण ।

। वृद्धित गठाः भुठाक्षािकिकः
विश्वः वृक्षि बाद्धािणि छः। यथा
द्रद्धः द्रव्धः व्याद्धाः नाट मर्गदट भुठिनि । उथा द्रुक्ष व्याद्धाः नाट मर्गदट भुठिनि । उथा द्रुक्ष व्याद्धाः नाट विश्वः वस्त्र वस्त्र प्रमुठिनि । भूकृ । द्रिक्षः वस्त्र वस्तु भूठिनि । द्रिक्ष वृक्षानाट महस्र नास्ति। खब भूनापः माद्गी द्रिक्ष वस्त्र महद्धाः । हार्या कृष्ठनायाः उस्ति ।।

तिनीर्गः वि नृष्ठः। यथा विनीर्गः विष्ठणा छुदा वका छूला विश्व कृछाः । कृषि पूर्श्चाण भीर्घाण्य स्वित्व देनद कात्रस्य ॥ इंडि उक्तमात्रः॥ विनीर्गर्शः भूर निष्ठकृष्णः । इंडि द्राक्षनिर्घणः॥

िणुका वि दि स्थित मुक्त । उट् भर्या । উक्क् ला २ िमल ० विन्तर । उक्क ला २ िमल ० विन्तर । उक्क ला २ िमल ० विन्तर । उक्क ला १ विज्ञा । विज्

साउरेल वृंद्धः ध्रम्यरेन मंहर शुक्तः।
।। विश्व भन्म राश्वाक माकामाः
च्याः महक्तकः। इति छन्नः।। च्याः
गर्धामः रिजानाः। च्यकान्नानि (वाः
उभवनाम् मिवन्त्र् स्वाउभवन कमस्य कर्षम्य न्याः च्याः
स्वाउभवन्य स्वाउभवन्य स्वाउभवन्य स्वाटि सन् ज्याः।
इति उद्धमानः॥

বিশুদ্ধি: ত্রী সম:।। শোধন:।
ইতি বিশ্ব: ।। সর্বন্দর্যগুলাদেযা
বিশুদ্ধি শুলু তার্যো: । ইতি
ভ্যোতিষ:।।

বিশ্র্ল: তি শ্র্লারহিত:। অ-বদ্ধ:। বিগতা শ্র্লাফস্ডেবছ বুীহি নিয়হ:।।

विलियः भू भु (छहः । भुकातः ।
इति को (ध्रः ॥ व्रक्तिः । इति

रम्महन्तुः ॥ दिवकः । इति स्वान्तः ॥ महममाथान्तरं अभार्थः ।
वनी ॥ महममाथान्तरं अभार्थः । यथा । पृत्रः अभा स्वा । स्वा । पृत्रः अभा स्वा । यथा । व्रा अभा स्वा । यथा । पृत्रः अभा स्व । यथा । व्रा अधा स्व । यथा । प्रत्रः । यथा । प्रत्रः । यथा । प्रत्रः । यथा । प्रत्रः । यथा । विल्याः ॥ इति चामाभित्रः । यखा । विल्याः ।

धर्वे भवितीनाः ह्युन्रभर्यः आनाः উত্তদব্যব ভেদাৎ পরস্পারভেদ:। পরমাণুনাং ভেদকো বিশেষ এব म जू चलवर द्यावृत्तः । एउन जब বিশেষভিন্নাপেফা নান্তি ইভার্থ:। ইতি मिषाइम्ङाविषः॥ # ॥ ष्यवदात्रभूरञ्हः। यथा। दिल्पयः थ्या उभाषाबः विना भगास्य दर्न-নং। গতে মূর্য্যেপি দ্বীপছ্। স্তম শ্বিদ্বন্তি তৎকরা:॥**১**॥ বিশে**ষ:** मांशि यम्। কং বস্তুনেকত্র বর্ণ্য**তে** । অন্ত বহিং পুরং পশ্চাৎ সর্ব দি-णाऽणिरेमव (म ॥ २ ॥ किक्षिमा-রম্ভ্রাতা হশক্য বস্তুত্বর কৃতিশ্চ স:। ত্রা পশ্যতা মধা লক্ষ कन्न-वृक्त निर्द्रीक्षण ॥ ७ ॥ इं७ हन्द्रा-(লাক:।।

বিশেষ কং কুং ক্লী লালাটক্ততি-লকঃ। ইভ্যমরঃ॥ ভিল্ফবৃংক্ষে প্ । ইভি রাজনিঘটঃ॥ বিশেষবি-ভরি তি। ইভি মেদিনী॥

विश्विक रहता है। ठठ यश्चिक वा-इग्रंथ प्रक्षक वा। इंडि श्विव उद्धः ॥ मा कु जिन्न क्ष्यु नाना विरहत्त इठ-ना। इंडि स्वानक्षतीय शक्षण्याः दिश्वाष्ण्यायोगेका वार्याः॥

विरमद्याः भू वृक्तापियहेकः॥

क्लािं हिन्दु हैयः ॥ स्त्रः ॥ साजाविक्रुवेषः ॥ व्यन्धः ॥ ज्ञावना ॥
मानः । इनि जासालितिहिनः ॥
विश्विविधः लू॰ व्यन्नविस्यकविषिः
। यथा । ज्ञथा मामानः कार्यः हिन्दा विवर्षा यमः मानि विश्वि विविद्या । वहरवा विसर्वा यमः मानि विश्वि विविद्या । वहरवा विसर्वा यमः मानि विश्वि विविद्या । वहरवा विसर्वा यमः मानि सर्वा यमः मिनिः ।
स्विधि स्वाः । इनि मूर्गानामः ॥
मामनः विश्वि व्यान्। इनि स्विः ।।
विश्वि विव्यान्। इनि स्विः ।।
विश्वि विव्यान्। इनि स्विः ।।

सम्बन्ध की विश्वपंत्रभर्मः। मञ् खनामिः। यथा। नीत्वाद मन नि-जामि।। विश्वपंत्र मनुष्ठाद ख-तन। छात्यन छात्र मनुष्कीमि-जि। जिन्यजि जन्मभनार्थः मृथक् करताजि हेजि जिन्म । नामा-श्विः गार्जन मार्गः। विश्वपंत्र मृष्ठे भिवः जिन्यजि। जिन्क जामृष्ठे भिवः जित्यजि। जिन्क जामृष्ठे भिवः जित्यजि। जिन्क जामृष्ठे भिवः जित्यजि। हेजि विश्वपंत्रम जिन्कर्या जिनः। हेजि मृक्षराष्ठ-गोकायाः मूर्गामामः॥

বিশেষব্যান্তি: জ্রী ব্যান্তিভেদ: ।
তল্লক্ষণ যথা ৷ পুভিযোগি ব্যান্তিক্ষণ সমানাধিকরণাত্যস্তান্তাবাপুতিযোগিত্ব ৷ ইতি চিন্তান্ত্যান্তি

क्शामित्रज्हेयः ॥ त्र्रः ॥ साजाः | विष्णिति छ॰ जि जिम्। वऽविहिमः। विक्षुवेषु॰ ॥ व्यम्ष्ठेः ॥ जावना ॥ हिजिकताथदः ॥

বিশেষোক্তি: স্ত্রী অলঙ্কারভেদ:।
তল্লক্ষণোদাহরণে যথা। কার্য্যাজনির্বিশেষোক্তি: সতি পুর্ল কারণে। হৃদি স্থেহ ক্ষযো নাড্ৎ মরদীপে জ্বত্যপি ॥ ইতি চন্দু।লোক:॥

বিশেষ্য: जि धर्मिनहार्थः। म ह দুব্যাদিঃ। বিশিষ্যতে যঃ। ঘট প-**টापिः ॥ ভाসমानरेविश्व**रानुरया-গী। অস্তলক্ষণ যথা। ভাস-मानरेविन्द्रेशनृत्यागिष् असि ह ঘট ইতি জ্ঞানে ঘটাদৌ তৎ তত্ৰ हि जाममानदेशमञ्जा घर्ष घरेषु-(याः मञ्जूक उपनुरमाभिज्ञा घटे।-भी मङ्गर। अनुर्यागिष् मिश म-ৰূপসমন্ধবিশেষঃ প্ৰতিযোগিত্ব মনুবোগিত্বভাতিরিক্ত প্রার্থ ই-ত্যপ্যেকদেশিন:।ইতি কণাদ:॥ বিশোক: পূ॰ অশোকবৃক্ষ:।ইভি द्रावनिर्घण्टः ॥ (माक्द्रश्टि जि ॥ म्हीरृक्षः। ইতি বিশোধনী बी রাজনির্ঘণ্ট:।। ञ्जी নাগদন্তী। ইতি विष्णाधिनी ब्राज्ञनिघंषः॥ विष्णावि ने वी क ली क्यभानः।

ইত্তি কেচিৎ 🛚 विन्नः शुः मोश्रिः। विद्यमिश्यो हेज्यः । त्यानिक मण्यः ॥ त्यानाः। हेजि जाः बार न स् श्राप्तन विद्वतः। हे जि मूक्तवादीकायाः वर्गातानः ॥ विम्नुगन क्री सानगा है छि मन्द्रक्षाः

वली ॥ বিশুর: তি অনভ টাটশভায় <sup>ট</sup> विश्वतः ॥ ष्यत्र्यः । इति (रूमः 📗 हन्दृः।। गानः। इन्डि स्मिति ॥ जी **मु**क्षा**मरवा**म বিশ্বনবেচে। (७२: । रथा । बीया जितिसा गृह्मा-

মধ্য পুগলাচাভণা অথুরিত ৌবনা মুগা। সা চ ভ্রাভগৌবনা , षाञ्चा अधीरना ह । रेमव अन्तर्भा । অজু। ভগ পরাধীনরতি র্বলেচা। रेगव कनत्या का अलुगा विश्वा-नरवाहत अन्। (फ्रेंश किया मरना श्या **काल गार्नतः** नवविज्यातः गरीश 5। विश्वतरवात स्था। দর্ম দ্বিত নেত্র পাণি নীবী নিয মিত বাহু চ্তোজ্বুখ্ৰলং । কর-

বিশ্ব: পু॰ বিশ্বান:। ইতি ভরত দ্বিকৃপকোলঃ ॥

त्रभवक्षती ॥

কলিত জ্যুত্তন নবেটো যুলিডি

স্বীপ হাপত্য ক্ৰয় ফুলঃ ॥ ইতি

বিশাব

| विदुद्धः भुः विश्वामः। ইত্যমরः।।

ि क्ति।। वर्षः। हेकि विकः॥

शिकान्डःोगूरी ॥ গতিঃ । ইতি বিশ্বাস জী দান<sup>া</sup> ইত্যবর:॥

ত্রি শুভিযুক্তঃ।বিপ্রক विश है:

পাৰ্থতে। ভ প্তাবেৰ নিয়ন: ॥ - বিশুপরি: की विद्यागः। वि भ्रश्च

শুন খাতোঃ ক্তি পু গ্ৰেম নিয়মা

॥ जीर्थनित्मयः । यथा। जाकम উवाह। পूरी है ब्ह्यानी नाम उच्छा॰

বাদো হি যে নদা। ক্লিংশিদ্থ

কালেন গতেছে বিক্রভিরে ॥

उम्पारण चिश्वक दिल्ला याहरका বেদপারশঃ। বিশ্ববি তীর্থসাহা-

खाः भारमः म पित पित ॥

यग्र गवन बाद्यन वम छिछ हिर

ছিত। না ন'জা চ শু, না তথ বি-

मुालिक मधानय ॥ वाजायाया म-

श्वाञ् जगरभामी कनायनः 1

বিশাসং জ্বতে তত্র তেন বিশাতি

সাভিজ্ঞা। ইতি বারাহে বিশাভি नाक्ष्याः नानाधायः ॥

বিশান: পু• বিরাম:।ইভি ভরত

তিক্পকোৰ:॥ অস্তল:। तिमा-

মো বলকৃত বেদ শুন্দিৎ যাল্য-

দঃ শতঃ। ইতি র ধারলতঃ ও

বিশাবঃ পু॰ অভিশুলিছিঃ। ইত্য-

गद्रः ॥ মৃত্র: ইতি সংক্ষিপ্ত বিশি: পু-সারোণাদিকৃতি:।। - খ্য়াতঃ। ইত্যনরঃ ॥ ক্রি জ্ঞাত:।। স'জ্ঞ্চ:। ইতি বিশ্ব:।। বিশুভি: জী বিখ্যাতি:। বি প্র मु, वारजाः कि পু जुरयन निव्नन। ॥ भू· विषद्भः ॥ অংবাগ: । বিশ্লেম: इंडि (निमिनी।। विष्य क्री खगए। इंडि मिनी। শুগ্রী।। বোলা। ইতি রাজনিঘণ্ট:।। পু॰ গণদেবভাবিশেষ:। ইভ্যমর: ॥ বসু সভ্যে জতু দকৌ কাল কামৌ ধৃতি: সকঃ। পুরুরবা भाष्टाण विष्यानदाः भूकी बिजाः ॥ ইতি ভরত:॥ # ॥ ইথিশুছে कर्जू मंकः मर्ख्या नामरीन्त्र रमुः । निभिन्डिक कान कामी काम्य **ह धूदि (लाहरनी ।। भुक्तद्रवा मा**ष्ट्र-वाक भाईल ममूराऋछो। इंडि স্তি:।। তে তু ধর্মাৎ দক্ষকন্যা-याः विधायाः बाजाः । इंडि मा८-(म∫@ अध्रायः।।#।। नागद्रः। ইতি বিশ্বঃ ॥ ভূলশরীরব্যপ্ত পহিতচৈ-তন্য । ইতি বেদাস্তসার:।।ধ্যা প तिमानविष्णयः। यथा। ७३१ यनु-বতি তোলো দশন্ন ওন্তন্তেগল•

বিখা বিংশপল প্রোক্ত দিব্যু (काहिन्थन हि उर्।। रेमन काहि खना बुक्ती विश्वाः मञ्जाम रुद्ध-বাঃ। ইতি জ্যোভিশাভী।। বিশ্ব: ত্রি সকল•।ইত্যন্তরঃ॥. বিশ্বক্ষ: পৃ॰ মৃগ্যাজশলজ্বুর:। इंडामतः॥ थानः। इंडि मिनिनी ॥ विश्वकृष्णः जि थलः। इंडिस्मिनी॥ বিশ্বকৰ্মজা ) স্ত্ৰী সূৰ্য্যভাষ্যা। সংজ্ঞা বিশ্বকর্মসূত। । ইতি শবরত্বাবলী ॥ विश्वकर्या १ न्यंतः॥ (नविभिन्नी। ইত্যমর:॥ ভৎপর্যায:। ভৃষ্টা ২ বিশ্ব কৃথ o দেবদৰ্ম্ম কি: s। ইণ্ডি **(इ**न्हन्तुः ॥ मुनि(डरः । ইতি मि-दिनी ॥ म भू जावमा वरमाः भू धाः। यथा। दिवकणी भुजाउमा भूछः শিল্প পুরাপতিঃ। প্রাসাদ ভবনো-म्यान পুভিমা ভূষণাদিৰু॥ ভডা-পারান কুপেয়ু মৃত: সো ২মর-বৰ্ছকি:। ইতি মাৎস্যে ৫ অধ্যা-यः ॥ 🗱 ॥ व्यन्। शु 🗷 १ वृ १ व मा विषुः भू अ मृषि: नार्रा जु (एव**ल:** । विश्व-कर्या भुजानमः विष्णाङा एवर-र्षाकिः ॥ इंडि गाक्ष ७ वशायः ।। 🛊 ।। মপিচ। বৃহস্পতেন্ত ভগি-নী বরস্ত্রী বুক্ষচারিণী। বোগসিদা জগৎক্থন্ন নসক। বিচরত্যুত।।

পুভাসস্য তু ভাৰ্য্য সা বস্না ম ষ্টমস্য তু। বিশ্বকর্মা মহাভাগ **खम्रा॰ का**छ्ड महान्धिः ॥ कर्छ। শিল্প সহসাণা ভিদশানাঞ্বৰ্জ किः। ভूषगानाक मर्दादाः कर्जा **नि**ल्लव**ा॰** वदः॥ यः अरख्या॰ वि মানানি দেবভানা চকার হ।. মনুৰ্য়া শ্চোপজীবন্তি য্স্য শিল্প-नश्जानः ॥ इंडि विक्षुताल > व्यक्तायः ॥ व्यन्तादी (भाक्ति विश्वकर्याः निय युद्धा ह যোগবিং। দ্বৌধাতা চ বিধাতা চ পৌরাণৌ জগভঃ পতী॥ ইতি ব ङ्गि भुद्रारा भव्यक्तिमा नामाध्यायः॥ द्धी বিশ্বকা शक्षाविद्यो। यथा। गञ्चारिज्ञी जूरनवर्षे। विश्वका जन क भूगे। इंडि श्रातवनी ॥ বিশ্বকৃৎ विश्वकर्या । इंडि **9**]• (स्महन्द्रः॥ বিশ্বকেতু: পু॰ অনিক্দা:। ইত্যা বিশ্বসদ্ধ: পু॰ পলাপু:। ইতি রাজ-बदः ॥ विश्वक् वर गर्बछः। इंडरमङ्गी मा।। বিশ্বক্শেনঃ পু• বিফুঃ।ইভঃমর-টীকাষা• ভরতঃ॥ এলোরশননুঃ। বিভগোগুট পু• यथा। भनु जू: ७: नृ उ उपट () हिंउ व्हिट्।। नावर्भ बुकार्न् र्यन्: एकः ॥ अजूक 🖟 🛮 द्राजित्यं हैः ॥

পত্যামা চ বিশ্বকশেনো মন্ তথা । षाञीजानाथका टेक्ट स्नवः পরিকীর্তিহা: । ইতি মাৎস্যে a अवतायः ।। জ ।। বিফো নির্দান न (वाद्री (हर्वजा। यथा। निर्मान)-থারী বিফোন্ত বিস্থকশেন কত্ত जुङिः। भार ठक भरा भागि री र्घ শালু, জড়ীবর: ।' রক্ত পিক্লবর্ণন্ত সিতপদ্যোপরিছিত:। প তৃতী य ऋताखिन मःयूरठा विन्मुरवन्त्रना॥ की खिंड उम्र महाया (उन उ॰ भ ब्रिभृकायट । विमर्क्तन उथा वि-(क. देवनान्धाः शतिव द्वायाः । इंडि কালিকশুরাণে ৮২ অধ্যায়: ॥ विषक्षमना द्वी लिबसूर्कः। इंडि तिहिट् ॥ दिश्वगः भुः वुक्ता। ইতি (इन्हिन्तुः॥ विश्वनक्ष क्वी (वानः। इंडि द्राञ्ज-নির্ঘণ্টঃ ॥ निर्घ॰টः ॥ বিশ্বগদ্ধা প্রী।ইতিশন্ **हिम्मका ॥** विष्युः ॥ रेजाः। ত্যোনামভবিষ্যভি। ভত্তর দেক বিষ্ফুদিং জী হসপনী। ইঙি

विषयागुः शुः गई छाराजिलवनः। অন্য ওপা: । বিশব্দে রস্প্র शामिताः रेनकामाय १८ । रा 🗐 বিহ্লে হয় ভ্ৰেদে পাও ্ঃ गतः। ३७ द्राज्ञः लागः । বিষড় ত্রি সর্বজ্ঞানী। দিন नक्षि इंडार्थ दिल् शुरुप्तन विज्ञामः ॥ विषक्रतः भुः हास्या देखितःहिया। বিষক্তে গ্লী सङ्ग्रामविष्णयः। থথা। নংস্টেরা**চ। অথাত: স**ং-পुरक्तावि बङ्गान रमुख्य । বিশ্বঃক্র হিটি খ্যাত সর্বপাতক नालनः ॥ ७शनीयमः भूकनः বিশ্বচন্দ্রন্ত কারণে ে ৷ শেষ্টি পল नहर्जुं उद्दर्धन जु नद्या ।। ज न्।। एक कि के ना विषठक मु शास र । यन्। वि मट मलामृष्ट्रं व-भारताथि निवास्तर**्।। (याउना** प्र॰ ७७ भ्रकः ज्विलगः**धे**नात्**छ**। লভিপান্ন স্থিত বিষ্ণু যোগা ব্ড চত্ত জান শন্ত চক্রস্পার্শে जु (मराधिक मनाकृष्टः । विजीवा-মলাণ ভগত পূৰ্বতা ভলশাবিন াশনি ভৃত্বশিষ্ঠ চনুকা কাশ্য श अव प्राच माः क्या द्वार्ण नद्रशिद्धा ५५ ताननः। द्रारमा

রাংক্ত রামশ্স বুদ্ধা বল্লী চ তে দুল্ া তৃঠাযাব**রণে গৌ**না মাতৃভি গঁছ-লি মুভা। চভাৰ্য হাদপানিভাগ বে-मा महात वर्ड।। भक्त भक्त एर नि राष्ट्र रेम्हकाम्रहेम् व ज्याकः गायाह्यः यक्षं मिन्याञ्चा खरेश्व । गध्य २द्यानि मद्यानि म्य-बागनि व कार्रास्य। अनुतान्तराना **प्तितान् विन्तरमम्ब्रेश्य श्रनः ॥ उज्ञा-**পুক্ষবং শেষ সমন্তাৎ পরিমল্ল-বেৎ। পাৰ্ডিনগুপ সভার ভ্রণা-हारनारिक ॥ विचठक छटः **म**-र्गाए कृषाहिन जिल्लाभि । छ-षाद्यापण धानग्रामि इनाम्य वर्षा-मगः ॥ लूर्नमञ्जाहे देक्य वदानि विदिधान है। माल्युक् कन इड्ना-नि रिजान हानि यद्भाव ।। अला মঙ্গল শাহেনে লুভেঃ শুলাবার। গৃছী । ছেনোৰিধাসনাঙে ভূ গৃহী**ত জ**ন नुसः १६ वि: ११ **३व मु**ज्ञात्वरम् **जः विः** कृषा जुला दिवा । नियम विवस्त्र या-বেভি বিশ্বচক্রাল্পনে নমঃ ৷৷ পর-मानकद्या वु॰ शास्त्र नः शासदर्फ-নাং । তেনোম্য নিবং শ্রমাং স-দা পণ্য স্থি ধোলিনঃ ॥ হাদি ভঞি-**७**गाजीतः विधिष्ठकः नगागः इः। पात्रुक्तव रिष्णक हक्तरहा ह

মাধ্ব ।। অন্যোন্যাধারকপেণ । বিশ্বচক্রাত্মা পুণনানি স্থিতাবিষ্ঠ । বিশ্বচক নিৰ যমাৎ সৰ্ব পাপত্র পর ।। আগৃধ ঞাখিবাসঞ্জ ভবাদুজর मा मिजः। क्षा इंज्यानच्छा व राग प-म्राट दिश्वहक समटमदः ॥ विस् ক্ত: সর্বপাপেভ্যা বিষ্ণুলোকে ম হীয়তে। বৈশ্বগুলোক মাসাদ্য চ-ত্র্বাহু: সনাতন: ৷৷ সেব্যতে ২প্ল রসাং সাবৈ ডিঙেং কল্লশভত্রয়ং। श्रामहाथ यः क्रांट विच्छक ন্দিনে দিনে। তল্যায়ুৰ্ম্মতে নিত্য লক্ষীণ্ট বিপুলা ভবেং। ইতি স কল জগৎ সুরাধিবাসং বিভর্তি য ত্তপনীয যেডেশার । হরিভবন মপাগত: স নিজৈ ভির মধিগম্য নন্দ্যতে শিরোভি: ৷৷ অসুদর্শন-তा॰ भुषाडि भावा र्गम्भगृम्मंन **ज्यक्ष काभिभीनाः। मजुब्यान (क** भावानुक्षणः कनक जूनर्भन नान न-প্রদাপ: ॥ কৃতত্ত্ত দুরিতারি যোডশার পুবিতরণ পুবরাকৃতি • নরারে:। অভিভবতি ভবোদ্ভবা নি ভিত্না ভব নভিতো ভবনে ভ वानि जृगः ॥ इंजि माध्या भश मानान्कीर्छन विশ्वठक श्रामानिः (का नाग २००) व्ययागः॥

বৈশ্বচক্রাআনী পূণ বিফুং। যথা।
ননো বিশ্বন্যায়েতি বিশ্বচকাল্মনে
ননং। পরনানন্দ্রাপি ত্বং পাহি
নং পাপকর্ণনাৎ॥ ইতিনাৎস্যে
২৫৯ অধ্যায়ঃ।।

বিশ্বতঃ ব্য সর্বতঃ। ইত্যমন্ত্র-টীকা॥

विश्वस्तवः श्रं गंगस्तवज्ञाविरम्यः
। इज्याननिका ॥ विश्वस्त्यो कञ् म्हा नर्नामिश्चित् विमुद्धो । नि ज्याननिज्यमास्म वनुम्ह्यो इ रेगल्क ॥ नवामानञ्चल हिर्दो काम कालो महेनव हि । स्त्रा कम्याग्छ मूर्यं मुह्ल इ धूनि क्राग्रं मुहल्क । श्रृ व क्रांग्रं मुहल्क । श्रृ व विश्वस्ता इ श्रृ विश्वस्ता । श्री विश्वस्ता स्त्री इत्रग्दर्का। श्री

ব্লক্চান্সলিয়া ইতি ভাষা। ইতি क्षरितः॥ नागवना॥ अक्गनुञ्जः দণ্ডোৎপত্ম:। ইতি রব্ননালা।। ত্রি সর্বত্যমনকভা। বিশ্বদু/ড বিশ্বক্ সমন্তাৎ অঞ্জি গছজি বিষ্দুত্সৰ্ভোগানী নুৰ্দ্দ্ৰ ন **थ**ु: जानवु मस्याशीखुरक । ই ত্যমরভরভৌ ॥ दिखवादिगी की পृथिवी। ইতি (FEC 11 विधनाथः भूः निवः। इंडि नद ब्रज़ावली ॥ विष्यभनी ही ज्याननी। इंडि ब्राजनियं है: 11 िष्याः श्रुष् विष्याशास्त्रकर्छ। । म जु ११५८७ थर्म । ইতি मूक्य वाय-बहाङ्गण ॥ विषद्धी भू अधि। हमुः। हेि (रुमहन्तुः ॥ (५वः ॥ विश्वकर्या। हेि मः किश्वभारताना पिवृद्धिः ॥ म्र्याः। इंडि मद्रद्राणी ॥ বিশ্ববোষ: পু• বুদ্ধ:।ইতি ত্রিকা-ওলেব:।। বিশ্বভ্: পু॰ বুদ্ধভেদ:।ইতিহেন-ठन्मः ॥

বিশ্বভেষজ নী শৃথী। ইত্যমর:।।

বিখভোলা: পু• সর্ভুক্।বিশ্ব

नम भूब ह जुज्यारका होगाहिक অনি পুভ্যবেন নিয়ম:।। विश्वमना जी व्यक्तिला। यथा। काली कड़ाली ह मत्नाजवा ह जु-लाहिका देव ह धू गुरुना। मुलन क्षिनी विশ्वयमाहित्या १८५१ करिछन দিয়া: কথিজা নুনীলৈ:॥ ইভি अस्याना॥ दिषद्धाः म् दिष्ः। हेनुः। हेडि (मिनिनी। रिषस्या भी প्यिते। हेन्द्रशा অস্যা বুংশ্রের ইবা । বিশ্বন্তর। ভদ্ধরণারে বিভাগতর প্রধান প্রিবী भूष्कराष्ट्राहिछ्डङ्गाः, कामान ॥ ই'ত বুহুবৈৰতে পুক্তিখণ্ড ব व्यव्यागः॥ বিখনঃ প্ বানুঃ।ইজিকেতিথা বিশ্বরূপঃ পু॰ বিষ্ণু:। ইভি হেন-हन्यः । विश्वक्षभवः ह्री वृक्षादक। इंडि রাজনির্ঘটঃ ॥ বিস্থরেতা: পু॰ বুন্ধা। ইতি ছেন-हन्मुः ॥ বিশ্বভাচনঃ পু॰ নাডীচশাকঃ। যথা। কেচুক পেচুলী পেচুনাড়ী-চো বিশ্ববোচন:। ইতি ত্রিকাও-

শেষ: !!

সর্বজ্ঞ:। বিশ্ব । বিশ্ব তা ন্ত্রী বিধ্বা। ইত্যনর:॥ M. विकि इडोर्श दियमम পूर्व विम

খাতে। রন্পুত্রখন নিয়ম:। যথা । बिख न हेरन्ता तृष्कणुनाः चित्र नः

्राषा विश्वदिषाः स्थि न सारकात **९** ६ छेरनिमः स्र छि (न। दृष्ट्रणि छ छ

थाजू। इंडि यजुर्जिन चिख्याहम-गबः॥

विधगरा खो चार्कि ज्विमयः। यथा। (क्षिः निया ह मधाः

र्জिञ्चा खा का कीखिंदाः । कानी कदाबी मृश्डि। धुनुदर्गा महनाखरा

। तुलिक्नी तिसम्हा मण्डा खाया गुराक् हा:। इंडि बड़ी प्रसा

दिश्वमाद्र ेश्ली एकदिएमसः। इंडि

भूगिषा ॥ বিশ্বসারক ল্লী বিসম্বক্ষঃ। ফণ

दनमा इंडि छ. हा। इंडि मफ **छन्मिका** ॥

विष्वितः बि विष्ठः। इंडि गूकः

(वाधवातकातः ॥ विषम्कं भुः वुका। ইडामदः ॥

বিষতঃ ত্রি জাত্তবিশাস:। ইতি

(यक्ति ॥ न विष्टत्मितिष्ड तिभुष्य नाजिदिभुष्यः । विभूति

नाजा मुर्भक्ष ग्यामिन नित्य **डि**।।ইडि भाक्ष ३३६ मस्त्रायः ।। বিশ্বামি

বিশ্বস্থা জ্ঞী শতাৰ্থী।ইতিরাজ-

बिर्धिः॥

বিশ্ব। জ্রী অতিবিবা।ইত্যনর:॥ শতাবরী। ইতি রাজনিঘণ্ট:॥ পি:

थ्रजी। इंडि मफ्ठिन्का॥

বিশ্বচৌ জী অপ্লারেবেশ্ব: 1 যথা। উর্বশী নেনকা রক্তা নিজু-

भिषा इलबुरा। विश्वाही ह शृंडाही ह পक्हूज जिलाखना ॥ ভानून-

**७**/वना दही घारणाञ्चत्रमः ण्डाः । इंडि दङ्खि भूद्राल गग्डिम नामा-

प्रायः ॥ विश्वाचा<sup>न</sup> भू॰ विष्टुः। यथा। ह**म** 

কর্মচবিধাত্মনেলগ্রাকর্ত্রাত্মনঃ । टिर्वाड् मृषिष् यानःस् उन्छाड

বিডয়ন ।। ইভি আভাগবতে ১ काज ৮ वधायः॥

वियावायाः भू (त्रठा । देखि

निषाइकोगूरी॥ दियानिकः मु व्यविदित्नवः।

**एटल**र्गायः । नाधिकः २ । इंडि विकाश्रामयः॥ विमास्याजी ७

णाः ४ : ६ को निकः ६ । इंडि

হেনচনদুং॥ গাৰিভ: ৬। ইতিশব্-हरू वियो ॥ उत्मार मिख रथा।

र्कान मुक द्वारा हुई। पूर्व

স্বক ভৃতঃ। অ্থাজগান মতিমান্ मुषा॰ षृष्ट्री सम्बद्ध है।। प्रम्था श्री ७॰ **ज**नार्ज,न॰ ज्खः (एवंगनाहिंड• । প্রবিদ্বা সনাসীন ওস্তু ভৌ ক্তাঞ্লী ॥ ভতো ভৃতঃ সুষা• सीधा॰ मृशीक हेर गतुवी । वद्र॰ वृशीय माम्यामि वाक्षिकः वद्रवर्शिन ॥ অদেয় দুয়র বাপি যত্র তে ব-র্ত্তে স্পৃহা। তত: সত্যবভীপুত্র। **७१** जानायभाद्रभः ॥ वाज्र्ष বীর মতুল পুত্র বর ম্বাচত। স रेठव मिखुजुरेक्वि ভূষা ध्यानशत **ভদা।। বিশ্ব মাবর্ত্ত্য মনসা বত্না** শ্বাস সসজ্জন:। তল্য নিশ্বাস বাভাত্ত নিঃসূত্ত বৈ চক্দ্বয়ণ।। ত रिम/**इ**९ দ্বিত্য দত্ত্বা ভূগু স্তা নি म भवुवी e । हरू हर गृहान द द न বে সভ্যবতি শ্বৰণ।। স্নাত্বা পাভৌ খতৌ মাতা তদা ত্বঞ্চ করিষ্যথ:। আলিস্যাপ্থতৃক্ণ তে মাতা পুং-**ज**रनाय रेव ॥ ठक् मात्रक्तकः (ठमः সা ভোক্ষ্যতি সুত স্ততঃ। বৃঞ্চৌডু-युद्धकुकु मनाशिक्य मिछ हरू।।। ভোফ্যস্যেতেনপুঞ্জ ভবিষ্যতি भनाजनः । এर मुङ्गा ভ्छ गाउा ষথেছ সাপি সংমুদ ॥ অবাপ মাত্রা সহিতা ভর্রা পিত্রা চ ভা-

विभी। अथ ज्ञानिहत्व रुख्य भा-लिक्राइकक हका। **जन्य अ**-ভ্যবতী ভদ্যা মাভা কল্লু• সিভ• চৰু•। পরিবর্ত্তন্ত ভং ধ্যাত্বা দিব্য-ধ্যানো ভৃগু মূ'ি:।। অথাগভ্যসূ-ষা তান্ত বচন ক্ষেত্ৰ নবুৰী । বিপ-र्याय सुगा ভদु वृक्षाणिक्त कर्माणा। তথা চক প্রাণনে চ ভক্রেদন্তে ভবি-ষ্যভি । ব্রাহ্মণ: ফ্রিযাচার স্তব পুলো ভবিষ্যতি ॥ ফলিষো ব্রাফা-ণাচারো মাত ত্তে ভবিতা সূত:। ইভুজো ভূ**ৎ**ণা সাধীতদা স**ত**্যবতী ङ्ङ ॥ **भूनः भूमान्यामात्र (भौ**ट्या মেন্ত্রিভি ভাদৃশঃ । এব মন্তিভি প্রেক্ট। স তবৈবান্তর্মধে ভূগুঃ ॥ जाय कारन मुड नीश यमनाप्र গাবিজা। সুসুবে জননী ভস্যা বি-শ্বামিত্র• তপোমিধি• ৷৷ যমদ্য়ি স্ততো বেদান্ চতুর: পুশে মাচির• । প্রাদ্রাসদ্ধনুর্বেদঃ হৃহ তফিন্ ম-হাত্রনি।। বিস্বানিত্রোপি সকলান্ विसानि उथाहिबाट । धनार्वनः তথা কৃৎসু বিপু শ্চাভ্তপোধনঃ ॥ काकुनामान (उक्क वी यमन वि र्य-হাতপা:। বেদৈ তপোভি: সমুনী-नठाकायह मूर्याय ।। इंडिका निका भूदारा ৮৪ अध्ययः ॥

विश्वामिङ्गितः नुः नादिरक्नः।॥ इंडि मदद्वांवनी॥ বিশ্বারাট্<sup>ল</sup> প্• বিশ্বেষ্রাজতে য:।। বিশ্বেষা রাট্রাজা ইভি বা। ়ইতি মন্ধবোধব্যাকরণ ॥ विश्वविषु: भू॰ गञ्जबंट छन:।। निर्णि **छो। ইতি নেদিনী।। অ**ভ্রাজো ह्याति वद्धाती मृग्धवही खथा क्षः। इसः मुक्छः बारिकव गृषद्वाः क म-হাননাঃ॥ বিস্বাবসু: কৃণানুষ্ঠ গ स्रोर्दकानामा गनः ॥ इति वङ्ग প্রাণে গণভেদনামাধ্যায়:।। বিস্থান: পু जागः। उर्भ ٠,١٠ र्यायः। विश्वद्धः २। २७ (६३) ।। আখাদ: ৩ আশুন: ৪ ৷ ইভি मद्दु व्वी। 🕏 ।। व्या 🤊 भूमार বিখাসৈ: প্ৰযো নশ্যতে ত্ৰিভি: । তথালোভো ন কর্ত্ত্য: পুযাদে। न न विश्वान्य ॥ ना 🗐 या न भरः व्यर्गा म मुथी वृक्ष्याक्षितः। তলিক ফ্লাড় বিখাস: পুৰুষ: স জিতে নিৰুষ: ৷৷ ইতি গাক্ডে নীতি नाइत ३:७ व्यक्तायः ॥ यम् या-বাংশ্চ বিশাস শুস্য সিদ্ধিশ্চ তা বতী। এতাবানিতি কৃষণ্যে পু ভাব: পরিগীয়তে॥ ইতি ভতৈব २०३ षद्वायः ॥ न दिनुस्मर्दिन्यः

एक विश्वरंख ना जिविश्वरंगर । विगामा ज्य ग्रू भन्नः म्लाम् शि निकृष्ठि ॥ ইতিচ গাৰু ছে ১৯ অध्रायः ॥ ॥ । नियनाक्ष नतीनाक्षः
मृद्धिनाः भञ्जभानिनाः। विद्यासाः
निव कर्षवः छीय ब्राह्मकृत्वयु हः॥
न विश्वरंगम् विश्वरंग निवक्षांभि
न विश्वरंगर । कराहिर स्रिश्वरं मित्रः छक्षरायः भुकामस्य ॥
हेठि हानकृतः ॥

বিশ্বাসবাতক: তি বিশ্বাসংস্থি-য:। বিশুম্ভ নাশক:। যথা। ন ভা-রা: পর্বতা ভারা ন ভারা: সগু সাগরা:। নিন্দকা হি মহাভারা ভারা বিশ্বাসঘাতকা:।। ইতি কলংলাচনা।।

विश्वपत्वाः भुः खिनः॥ भुः खारवः
। इंडि मः किछ माद्राधानि वृद्धिः॥
क्रञ्ज मं क्षा वमूः मड्यः कामः काम ख्या धुनः। (द्राठक म्हामुवारेम्हव ख्या धुनः। (द्राठक म्हामुवारेम्हव ख्या हात्म्य भुद्धद्ववाः। विश्वपत्वा ख्वा हात्म्य भुद्धद्ववाः। खवस्त्राट मम् मर्बेख भूक्षिणः॥ इंडि वङ्गिभुद्रात् गवस्त्रम्याः॥ स्वावः॥ खन्यक्षियमान्य मुद्धेव्यः॥ विश्वपाः ) भुः मिवः। इंडि मन् विश्वपदः ) द्रज्ञावनी ॥ कामीक्षः मङ्गाप्तवः। यथा । मुद्धेवीर्थक् সংশो म मर्ब थाखा॰ ब्रादाल म ह । विषः शु॰ क्ली विषः। उल्भिष्ठाः । स्मिन्दर्भान्छ यः माउ । विष्य प्राप्त । विष्य श्राप्त । प्राप्त । विषय । प्राप्त । प्

বিষ উ সেচনে। ইতি কবিকল জন: ॥ উ বেষিত্বা বিষ্ট্বা। ইতি দুর্গাদাস:॥

বিষ' ক্লী জল । ইত্যার:।। পদ্ম কেশর । ইভি ভটীকাবা দ্রুট: ।। বোল ।। বৎসনাভ: ।। সানা ন্যবিষ । ইভি রাজনির্ঘট: ॥ জ্ডে: ২ গরল° ৩ । ইভ্যান: ॥ আছেন ৪ অনুত্ত ৫ গরুর ৬ कानकृष्टें १ कनाकृषः ৮ श्रावि-मु > त ब्रङ्ग्बिक २० नी वा >> গর• ১২ ঘেরে• ১৩ হালাহ্ল• ১৪ হলাহল ১৫ শ্কী ১৬ ভূগর ১৭ । ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। জাঙ্গলা ১৮ ভীক্ষণ ১৯ রদঃ ২০ রসাঘন ২১ গর: ২২। ইতি জটাধ্র:।। জঙ্গ-व २२ जाञ्चन २८। ই**ভি म**म्-द्रज्ञावनी ॥ काळानः २<u>०</u> वर्-मना छः २७ भूनी भनः २१ (मो क्रि-কেয়: ২৮ বুদ্ধপুত্র: ২৯। ইতি द्रव्याना॥ उत्क्रारथा। शु<sup>र्</sup>न ক্লীবে চ কাকোল কালফূট হলা-रुवाः। भोजाञ्जितः भोक्तिकाया বুক্ষপুত্র: পুদীপন: ॥ দানদো বৎসনাভশ্চ বিষভেদা অসী নব । ইতি পাতালবর্গে অমর:।। 🕸 🛚 ।। অপিচ। বিষ: ক্ষেডো রস স্তীত্রণ गद्राला २थ इलाइन: । द९ म-নাভ: কালকুটো বুক্ষপুত্র: পুণী-ननः ॥ मोत्राष्ट्रिकः ब्लोव्हिक्काः कारकारणा मात्रामांश ह। अश्-हृत्या (भवणृष्ठ अष्ठ वाल्क नन्त-नाः ॥ रेकद्राव्यका रेक्नद्रका म- (गोबार्क: शङक कपरिनो ॥ अरहाः। লন্যর: কালিক: শ্কিকো নগুলি-कुकः। इत्मा बाङ्ग बिद्ध विद्ध विक् भिक्ष (गोल्याः ॥ मूख्का मायव শ্চেতি ভাবরা িষজাতবঃ । ইতি (रूमहन्सुः ॥ क्र.॥ अथ विषम्। मान লক্ষণ গণা:। বিষণ তু গরলং ক্ষেড खबराखनानुनारदा**र । दर्मना**७: সহারিদ: সক্তর্গত পূর্দীপন: ॥ मोत्राष्ट्रिकः मृक्षकक कानकृष्टे उ रेथव ह। इ। लाइरला वुक्त भूर्यः विय (छरा खभी नव !! 🗱 !! उज वट मना-ভস্য স্বৰূপ নিৰ্বাপণ। সিদ্ধুবার-সদৃক্ পথো বৎ সনাত্যাকৃতি ভথা । यथभार्यं न उद्गा वृधि इंटमना ভ: স ভাষিত:॥ 🕸॥ অথ হারিদু স্য স্বৰূপ। হরিদ্যু তুল্য ন্লো থো হারিদু: স উদাত্ত:। 🕸। অথ जिल्हामा स्कृति ॥ यम्श्रुधिः न कुर्वित्व भूर्ववश्यः न जकुकः॥#॥ व्यथ भूभीभनम्। यक्षणः। भूभील लाहिरका यः नगुक्ती छिमान् एइन शु :। यहारा इकतः भूदिः कथि-छः न भुनीभनः । कः।। अथ नी-**द्वाञ्चिकम्य स्वत्रः। मुद्रा**ञ्च नियस्य यः महार म मोब्राक्ष्रिक डेव्हाड

।। 🗱 ।। व्यथ मृज्कमः स्कलः। यिमन् (गाण्यक दक्ष पृक्षः छ-বিভি লোহিত । স শৃক্ক ইতি **्गा**का मुव्यञ्च विशाहरेमः ॥ 🕸 ॥ ष्यय कानकृष्टेन। सक्तमः। (हवासूब-রণে দেবৈ হ'তসঃ পৃথ্মালিন:। দৈ-ত্যদ্য ক্ষিরাজ্জাত স্তক্ রখ্ং ন-ঘিত: ॥ নিৰ্বাস: কালকুটো **হস্য** মুনিভিঃ পরিকীর্ত্তিভঃ। সোহিদ্রে मृङ्खारात काका मनाय ভारर ॥ 🗱 ॥ व्यश्वादाहनम् अक्र भ॰ । গোস্তনাভফ্লো হছ ভালপ্র ছব ত্তথা। তেজসা যস্য দক্তে সমীপ-का क्याक्यः ॥ व्याप्ती श्वादाहाल। **फ्रियः किधिकाया॰ हिमान्य ।** দক্ষিণান্তিভটে দেশে কোৰণেপি চ জায়তে।।জ।। অথ বুজপু এস্য स्क-গণ। বৰ্ণতঃ কপিলো য: স্যাৎ তথা ভবতি সারক:। বুক্ষপুণ্র: স বিজ্ঞে-या जायर वनगहता। अ। वाक-ণ: পাণ্ডর তেষু ক্ষত্রিয়ে লোহিত্ত-পুভ:। বৈশ্য: পীতো ৎসিত: শ্দু বিষ উক্ত ক্ষতৃৰ্বিখঃ॥রসায়নে বিষ• विभु॰ क्वजिय॰ (मह्भुडेर्य। रेवणां)॰ क्षेत्राणाय गुरु मध्याघदाय हि ॥ 🕸 ॥ जथ विषम् । छनाः । विष• প্ৰাণহর প্ৰোক্ত ব্যবাধি চ বিকাসি

চ। আগ্ৰেৰণ বাত কফ হন্দোগৰাছি मनावर्• ॥ # ॥ व्यवायि नकन কায গুণব্যাপন পূৰ্বক পাকাগমন-শীলা। বিকাসি ওজা শোষণ পু र्बकः गांत वन्न मिथिलीकद्रवनीलः। আগ্নেৰ• অধিকাল্ল**-শ**া যোগবাহি नः नर्ग खनुगारकः। यहावरः उत्रा গুণাধিক্যেন বুদ্ধিবিধ্বংসকং ॥ তদে -ব যুক্তিযুক্তণ তু প্রাণদায়ি রসায়ন।। যোগবাহি পর বাত শ্লেম্বাজিৎ সন্নিপাতহ্বৎ ॥ যোগবাহি ত্রিদো यमः वृ•ऋगः वीर्यद्ववनः। (य मूर्छना विषय २ मूरक्ष (७ मूर ही ना विष्माव-নাং।। ভনাবিব পুগোগেষ শোৰ विदा भूवाहर्यं ॥ अ॥ अत्यान বিবাণাণ নিৰূপণা। অৰ্কক্ষীরণ সু হী ক্ষীর• ভথৈব কলিছারিকা। কর বীরো ২থ ধুসুর: পঞ্চ চোপবিষা: মৃত্যা:।। উপবিবা গৌণবিষা:। এ য•েগুণা সত্ৰতত্ৰ দুষ্টব্যা:॥ অপিচ। ष्यकं की बर सु भी की बर ना कनी क **द**वीदकः। ९क्काहिएकसा वयुदः ग (श्वाभिविकाउगः॥ এতেयाः, नाय न किन्छ । छन। खब मुहेन्ताः ॥ अः। অথ বিৰাণা শোধন বিবিচা গোল হত্তে ত্ৰিদিন স্থাপ্য দিয়া ভেন বি-

भाग्रीक वामि।। (य १६०१) भद्राल প্রোক্তান্তে সু। হীনা বিশোধনাৎ। তমাদিষ প্ৰোগেষ শোধ্যিত্বা পু-याहरर ।। इंडि जावनुकाल शृर्व-খণ্ড:।।#।। অথ বিষাধিকার:। ভত্র विषम् देविषः भार्। ज्ञावदः जन्मः কৈব দ্বিবিধা বিষ মুচ্যতে : দাগাধি-ষ্ঠান মাদ্যন্ত দ্বিতীয়ণ ষোডলাশূ্ৰুং ।। 🕸 ।। ভাবেরবিষদ্যদশাশ্রান:হ । मूल॰ পঞ क म॰ পृझः द्वर की ब॰ সার মের চা নির্যাসো ধাত্র ফালঃ शासन्। मुना मन्।। उन्या । ग्-লবিষ কর্মবীরাদি ১। প্রতিষ্ दियभिक्षिकाति २। कन्नारंषः कः ক্লেটিকাদি ৩। পত্নবিষণ কেতাৰি 8) कृक लाव निर्याम दिया ६ १००० ञ्जानीनि ६१५। १ । इसे हार्विक द्वार হ্যাদি ৮। ধাত্রবিশ গ্রীভালাদি **३। कम्मविषः वट्यमाः सङ्ग्राहिर** 170 । अ। जन्मविषम् (माएमा-मुतानाक । पृष्टि निषाम पर्हातक नथ म्ब गनानि छ। भूकः नाना मुथः ल्लार्नः जन्म कार्यमध्यि उः।। छमा-ष्ट्रि পि छ मृकानि एम यहे इस्मा मुगाः ॥ उत्यथा। मृष्टि निषाम विया मि-ব্যা: সর্পা: ১। দণ্টোবিয়ঃ ভৌমা: जनाः २। इ. 🗟: नथिवादशयुग्धयः ।

মূত্রপুরীষ্থিব। গৃহধোথিকাদ্য: s t | मुक्किविया स्थिक्तनरः ३। जानादिया উ हिंदेशाम्यः । वावाः नाम ग्रावः भूदीयार्ख्य भूक मुख मन्न भ न है। लामावमिष्ठ छन भूतीयदिया भिष्ठ शीर्यः त्यः १। अञ्चितियाः मर्लान्यः ৮। शिख्विया नञ्ज मू मार्गस्यः ৯। শুক্ৰিষা ভুমরাদ্য: > ।। জ্বা श्ववदिवाणाः भाषान्।नाः काः খ্যাণ্যাহ। ভাবরস্ত জুরু হিন্তা দন্ত इर्षः गनगुरः। (कन हरोक्ठि चान मुहीक अकट अविय ।। 🗯 ।। ज्याभूग (छारन विशिधानाः वियागाः काः যাণ্যাহ। ভত্র ন্লবিষস্য কার্য্যনা-र। छेलाक्षेन॰ मृत्तिवित (मारः भून-शन सदद्र का श्री श्री श्री कार्य নাহ ৷ জন্তু ৷ বেপন আমো নৃণা शक्षविरेष उदिर । 🗱 । क्नविषम्। काना नार । सक्षानायः कविदेव দাহো বেৰক ভোজনে। গ্ৰা-नियम्। कार्यामान्। ज्यादः श्रम्भवि रिव भू प्रताखान मूहन उथा। अ। एक् मात्र निर्धाम निर्वाणाः कार्यप्रा-भारता पुरुषात नियाम विरेष क পায়ুকৈ ভবন্তি হৈ। আন্যান্যোগ্রা भाक्षा भित्राङ्क वक्षनः मुवाः ॥ इ.। इ. । विवास कार्य नार्। कि নাগম: মীর্থিন জিন্তুদো ডক্জি-ख्डा। अ। धार्जुवय कार्या नाह। खटनी उन- **था**ङ विरेष न हो नार्ण्ड ভালুনি। পুচ্বেণ কাল্যভৌনি বি-यालाञानि निर्मिष्ट ॥ वजनि म्यामीनि विषाणि नव कालपा शिनि कानास्त नातभाग । 🚓 । कन्य-विषम् कार्यामार। कन्तकान्तुन्तिः ৰ্য্যাণি যান্যজানি ব্ৰেদেশ। স-बीए। समित कमील उन्होंन हम-जि छ रैन: ॥ खारतः उद्देश का श कृजिम काशि शहिषा मान्त्र निक्-ত্তি ভৎ সর্হণ গুলৈ ক্ষেদ্রশাভি যুব্তণ ।। 🕸 ।। তान् मण्डलानाञ् । दाकः बुक्षः उथा वीङ्गः मुख्य मान्य प्रदासि চ। বিকাশি বিশদটের লম্পাকিচ (उ एण। अः रेंडर्स रेंग विचन्त्र कार्यं)-बाइ। उत्मेकार लाभरव वाय हो। কাৎ গিত্ত সংশাণিত টেকুলল-তি নোছ্যতি নুম্যন্ধা শ্লিবজি হি ।। শরীরাব্যবান্ সৌজাৎ পুরিশে-बिकाबा ि ह। আশ্রাদাশু ৫ জডि रावानार भुकृष्ठिः इस्तर ॥ विका-मिजार क्रमशीं लायान् थाउन् मजानालि। অভিরিচ্ড বৈশ্বরা-मृन्धिविधनाक प्राथाया । । । । । तः हाविभाविक्राच्याः हिम्पराठ

চির•।। #।। বিবলিপ্ত শক্তহতস্য লক্ষণ মাহ। সদ্য: পাক যাতি यम् क्रुंड॰ ७९ मृत्वम्कः भठाउ চাপ্ট জিলা। ক্ফীভূত ক্লিয় মত্যর্থ পুতি কভান্ মা'স' শীৰ্য্তে যস্য ठानि॥ ज्या आभी नार म्रहं ठ यम् दिका विका छः समूष्रः व्यवः **म्हिट्टा विकासिकातित्र क्रांत्र**ी মিত্রৈ দঁত্ত: ক্ষেডো বা বুণে যস্য চা পি। পচ্যতে চাপ্যভীক্ষণ পুনঃ পুন: পাক মেতি। তাপো বহিস্ত-**జ**తा। हाट्या **२** ब्राइट्स । क्र्याहि-ভাৰ ক্ষত কর্পদ বোধাব্য । शुारयण ब्राजामीना मझारमी मजरवा বিষণ দদতি ॥ 🗱 ॥ তেখাণ জ্ঞা নাৰ্থ লক্ষণ মাহ। ইঙ্গিতজ্ঞে। ম-न्यापाः वाक्ष्ठश म्थरिक्रैजः । कानीयाधियनाञात्र मिछ वि रेफ्रः **म्य वृद्धिमान्।। न एमाजुरखद्र॰ शृष्टि।** বিবক্ষু র্মোছ মেতি চ। অপার্থ বহু সংকীৰ্ণ ভাষতে চাপি মূচবৎ ॥ व्यक्तीः (माहिरामुद्यी विनित्थर পুহসেদগি। বেপথু শাস্য ভবতি ত্ৰন্ত শৈচকৈক भীক্ষতে ॥ বিবৰ্ণব क्ति भागण गरेथः किकिहिनखि চ। আলভেত সক্দীন: করেণ চ निक्षाक्शन्।। निधियाम् तनहादि

वी ऋउ ह भूनः भूनः । वर्डाउ दि-পরীতঞ্চ বিধদাত। বিচেতন: ॥ ই-ঙ্গিত মভিপায় সূচক আকার:। মৃথবৈকৃতি॰ মূথবৈবর্ণ্যাদিঃ । এভি र्लि दिः वक्षमारिः। न ममाञ्जाखद्र॰ পৃষ্ট: श्रीयामe कर्यक्रिक व्याप्ता-हार। जःकीर्गः अम्रुहेः। जयब्रवायु-জনিত পর্ব ব্যাথাপনোদাযাঙ্গুনীঃ रक्षावेरस्ट । <u>भ</u>ुक्रमट व्याक्ठाव-পি । ধ্যাম: দ্জ্সমান্বর্ণ:। আ-লভেৎ স্পৃংশৎ। বিপন্নীত যথা न्धारस्य वर्ष्ड ।। 🕸 ।। জঙ্গন वि-यागा॰ भामान्याना॰ कार्य्य नाह । নিদা তন্দা ক্লমণ দাহণ সংগাকণ লোমহয়ণ । শোথীঞ্চবাভিসারঞ্ **জ্**কতে জঙ্গ• বিষ• ॥#॥ জঙ্গনেষু ভীক্ষতরত্বেন সর্গানাহ। বাত পিত্ত কফাত্মানে। ভোগি মণ্ডলি রাজি-লা:। যথা ক্রমণ স্মাখ্যাতা দৃত্ত-রা দ্বন্দুক্পিণ:॥ ভোগিন: ফণিন: । তেচ বিশ্বতি:। মুণ্ডলৈ বিহিধৈ-শ্তিত্রা: পৃথবো মন্দ্রগামিন:। যট্তে মগুলিনো জেনা জ্বনাক সমা বি-বৈঃ।। স্থিক। বিবিধ বর্ণাভি ভির্য্য-গৃজ্ব ঞ্চ রাজিভি:। বিচিত্র। ইব যে ভান্তি রাদ্ধিলা স্তে হি তে ২পি ষট্ ॥ এতে যথা ক্রন• বাত পিত্ত ফকা-

ত্মান:। দ্ব্যন্তর:: দ্বে অন্তেরে ভেদৌ যেষা তে ছাড্রা: ৷ যথা ভোগিনো म् अलि ভ्या का जाः हे जाहि ॥ **%** ॥ ভোগি পুভৃতি কৃতদংশ লক্ষণ ভেদ মাহ। দংশে। তোগিকৃত: কৃক: সৰ্ব বাত বিকার নূৎ। পীতো মণ্ড-লিন: শোথো মৃদু: পিত্ত বিকারবান্ ।। রাজিলোথে। ভবেদশে: স্থির শোথক পিছিল:। পাওঃ সিঞ্চ **९ डिमान्गुम्क् मर्ब** (न्नुयाविकाद-वान्॥ 🗱 ॥ प्रभविष्मय काववि-**म**िष्ठ म्डेम्यामाथ्य भार । অশ্বর্থ দেবায়তন শাশান বল্মীক সন্ধ্যাসু চতুত্বথেষু। যামেঃ সপিত্রেঃ পরিবর্জনীয়া খক্ষে নর। মর্মসূথে চ দষ্টা: ॥ যামের ভরণরা । পিত্রের मधायाः। नादी कत्राभाः विव मानू হুন্তি সর্বাণি চোফে দ্বিগুণী ভবন্তি । উष्क উग्रमःखाला। #। पार्दी-কর লক্ষণ মাছ। রথাক্ল লাক্ল চুপ্র স্থান্তিকাজ্শ ধারিণঃ। জেনা मादी कद्गाः मनीः क्रिनः नीधुगा भिनः॥ 🗱 ॥ व्यन्तिष् (यय विव भा শু মারক ভবতি ভানাই। অজীণ পিক্তাভপ পীডিভেষ্ বালেষ্ বৃদ্ধে ষু বুভূক্ষিতেষু। ক্ষাণে ক্ষতে মেহি नि षष्टगुष्ट काक वाल गर्ह्य की वृ চাপি !৷ শব্রফতে যস্যন রক্ত মক্তি রাজ্যো লভাভিশ্চ ন সংভবস্তি। শীতাভি রন্ডিশ্চ ন রোমহর্যো বি-বাভিভূত• পরিবর্জ্জযেক্ত• ॥ জিহা়. মুথ° যস্য চ কে**শশা**ভো নাসাব-नारण नक्षेड्यः। कृषण द्रकः श्वयथुक्त मःग्ना हत्ताः ज्ञिन्नजुक्त म वर्क्जनीयः॥ (कममाजः व्याकर्यनार া নাসাবসাদ: নাসাথা নতত্ত্ব। কণ্ঠ-ভঙ্গ: গুীবাধারণাশক্তি: ৷ হয়েঃ স্থিরত্ব° হনুদ্বযন্তম্ভ:।।ऋ।। অপরঞ্চ। বৰ্ভি ৰ্ঘনী যুখ্য নিরেতি ব্জুাদুক্ত• मुर्विन् क्विमान यम् । मः क्षे निना-তা॰ শ্চন্তরশ্চ পশ্যেমস্যালি বৈ-দ্যৈ: পরিবর্জনীয়: ॥ বর্ত্তি: ফৃধিরস্থ• । ब्रक्तः अ्रवम्क् भवन्त्र यम्। यम्। নাসা মুখ লিঙ্গ গুদাদিভ্যো ব্লক্ত• সুবেং।। উন্মন্ত মত্যৰ্থ মুপদ্ৰত বা হ্ নহুরু বাপ্যথ বা ৰিবর্ণ। সারিষ্ট মত্যুর্য হবেপিনঞ্ছ জহাানর তস্য ন কৰ্ম স্বৰ্য্যালয়ে অভ্যৰ্থ মূপজভং বা জুরাভিসারাদিভি রভিশ্যেনাপ-জ্জ । জীনশ্বরণ বক্তুমক্ষমণ। বিবর্ণণ क्ष्वर्णः। नाबिष्ठः नानाज्ञापियु-ক্ত°। অবেগিন• বেগে৷ বিষ্বেগঃ ল-ছব্নি ইভি লোকে ভদুহিত°।#। ञ्चावद्र कन्नम दियानव कीर्नजामि-

डि: कार्ति भ्योदियम छा व छ-छ। छनाइ। क्षीर्नः दिष्योषेष मृः বিত্ত• বা দাবাগ্নি বাতাত পশোষি-ভয়।। হভাবভো বা গুণ বিশুস্থী 🗝 বিষ• হি দ্বীবিষতা ন্পৈতি॥ জীৰ্ণ• অভিপুরাণ ৷ বিষয়ৌষ গ্রেছিড विषद्माञ्ज द्भावशीज ही ग्रहीनीक् ত। স্বভাবতে। বা গুণ বিপুহীন अञ्चातात्त्व मणानाः खनानाः गर्या विजाति खन श्रीनः ॥ ऋ॥ मूचीविः ষস্য কার্য্যাহ। বীর্যাল্ল ভাবাল निপा उरयख ककान्ति उ॰ वर्य छगान-বহ্নি। তেনাদিতো ভিন্ন পুরীববর্ণো विगन्त देवत्रमायुङः शिशामी ॥ म् हा। जुन शमन वायुनिक विष्ठ है-নানো ধরতি মাপুষাদা। ন বিপা-তদেৎ ন মার্যতি। কফাণ্ডি॰ ক किन मन्तीकृठीका मिखाः । दर्य **७**गानुविक्त करकताल्ल मीम्लातीय**८** পাকাচির মাস্থ্যি ৷ ভিলপুরীষ্থর্ণঃ ভিন্নপুরীষো জওমল: ভিন্নবর্গশ্চ। विष्ठिनामा विक्षाः एष्टाः वर्वन् মৃছাধীন্ ব্যাধীন্ গভতে॥ 🗱 🛚 হা।-न विष्णयशिष्ट मृसीविष्य लिक्सि-শেষ নাহ। আনাশবহে কফ বাত ন্মোগী পঢ়াশযন্তে হ-িল পিত্তরো-গী ৷ ভবে**ৎ সমুদ্ধ ও শিরোস** করিক। বিলুন পঞ্চ যথা বিহুঞ্যা সমু-षा अभिताक इः (क भाः अप्रक वि-চ রোলাণি যস্য সং। এতদলি লি-कः भद्वाभवस्य मृयीविस्य (बाह्यवतुः ॥ স্থির রসাদিয়থ তত্মথাকান্ করোতি খাতৃ পুভবান্ বিকারান্। ७९ म्वीविव । ग्थाकान् जुन्। क वशिश मगुष्पणीयाकान्। 🗱 । प्यी-বিষ্ম্য পুকোপ সম্য মাছ ৷ কো-**श**न्त भी जानिव मुस्तियु ङाङ्याभू भूर्वः मृग् उम्रक्षणः। छ। जिलिः **७मा ७मा** मृसे¦ियना भूईक्**श** मार । निर्मे ७ १५३४ विष् स्रि क (ज्ञाय इर्थ।वध्यवाज्यमः। वित्युषः गा-बरेण रिनाः। इर्यः छामाकः। छ। क्रमगर्। उउ: क्रबाज्यममावि-পাকা বয়োচক• নণ্ডল কোটছন্ম। गाः जक्ष भाषि भनाकि भाषः न् हां • उथा हिन्दं स्थाठिमात ।। मृी-বিষ• খাস ত্ৰী জুৱা **শ্চ স**ৰ্য্যা**ৎ** भुव्धिः कठेदन। हालि। व्यवनरः অলে ভুক্তে পুগ ফলেনেব মদ: অ-विभानः। अः। यज्ञमः गृवीवियः छ-**११न दिकाइराज्य भाष्ट्र।** ज्ञेबार स न। या नरवा वर्षा न। ना ना न न न। ९ क-পতिह सुक् । गाप्तरा मगुक्तन-(१५ **५४** छा॰ छान् विकाशाण्य ५२

পुकाद्रान्।। अनार म्वीदिवः। छाः छान् विकातान् विभर्भ विस्कृष्टि। मीन् । #। দৃষী বিষশ্য নিক্তি নাছ।। मृति उ॰ (मण कालाञ्च॰ मिताश्रीश्च त ভীক্ষা:। যমাৎ সংদ্ববেদ্ধাতৃ। · छमा ९ मृषी विषः मृ उ ।। (मन: व न्शारिः। काला पूर्विनारिः। अम॰ হলতা তিল মস্রাদি। ধাতুদ্য कदाष्यीविषः ॥ # ॥ म्वीविषना माराज्ञारिक मारु। माध्य माञ्चर-ত: সদ্যো যাপ্য সম্বংসরোবিত'। म्वीविव समाधाः मार कीनमाः হিভ সেবিন:।। #।। কৃত্রিম॰ বিষ॰ षिविधः । এकः नविषः म्योविष স-জ্ঞ-। অপর মবিষ- তদেব গর স জে। তথা চ কাশ্যপস ছিতা या । म रया गद्रक विविध विजीयः विष भूष्ठाः । मूर्याविषद्ध मिदव ন্বিষ পর উচ্যতে।। সংযোগজ ক্তিন বিষণ। ছিতীম স্বাভাবিকাৎ । ত । ভি বিশেশ। ক। ত এ দুবী বিশ মভিধায় গর দর্শবিত্যাহ নৌ ভাগ্যার্থ স্তিয়: স্বেদ রজো না नाक्कान् भनान् । भवुभुद्वाः क পরান্ পুষ্ট্ভাগ নিশ্ভান্।। 🕸 ।। গরকার্য্যনাহ। তৈ: স্যাৎ পাণ্ডু ক্শোল্লাগ্রিজ্র কাস্যোপজাযতে

। सर्मभूषमनायामः इखामाः (भा-थम् खुदः ॥ इटेब्र॰ गुइनी (द्वागा যক্ষা ওল্ম: ক্ষ্যো জুর: ৷ এবছিবস্য চান্যস্য ব্যাথে লিহ্নঞ্ছ জাষতে॥ তৈ গ রৈ:। (यদ রজ: পুভূতিভি:। জুর: শ্চাস্যোপজাযত ইতি অপা-কাৎ। মর্মপুরমন মর্মব্যথা। ক্ষ্যো ধাত্ক্যঃ ॥ 🗱 ॥ ল্ভানা জন্তবিশে-যাণা মুৎপত্তি স খ্যাকাহ। যমা-**झ्न॰ ज्१॰ श्राधा मृत्नः श्रु एक विनरः** ব:। তেভ্যো জাতা স্ততো লৃতা ইতি খ্যাতান্ত বোডশ:॥ তত্র সৃশুত:। বিশ্বামিত্রো নৃপবর: কদাচিদ্যি স-ভ্ৰমণ ৷ বশিষ্ঠ কোপযামান গত্না শুনপদ কিল ॥ জপিতস্য নুনে खम् वाष्ट्रांट्य (सम्विन्हदः । অপতদৰ্শনাদেব হুধস্তাতীবুবৰ্চসঃ । नृत्न ज्ल महर्ष छ (धनुर्थ मञ्जू-ভেপি চ॥ ততো জাতা স্থিমে ছো-রা নালা ক্পা **মহাবিষাঃ। তাুসা**-महो क्ष्रेमाधा वर्जा खावस्य এव হি।। তত্ৰ তৃণমণ্ডলা পুভূতবো 🕏 कश्चमाद्याः। स्मोवर्गिका भुज्उरया-ষ্টাৰসাধ্যা:।। 🗱 ।। তাসাং সামা-न्याना• म•<del>••• व</del>क्कणनाङ्। उन्छि र्नः 🕃 **मःশকোপ্য: পু**रुखि: ऋउपराठ । জ্বোদাহে। (ডিসারশ্চ গদাঃ স্কুশ্চ

ত্রিদোষজা: ॥ পিডকা বিবিধাকারা মণ্ডলানি মহান্তিচাশোথা মহাছো मृत्रावा ब्रकाः मात्रावा कवा ख्या ॥ সামান্য সর্লু হানামে হৃদ্ শেস্য ল ক্ষণ-।দ-শকোপ্যঃ দ-শমধ্যেপৃতি ভাব:। দ भनाश जू यटक्ष भा ব• বা জালনাবৃত•॥ দঝাকৃতি ভূ**শ•** পাক কেন শোথ জুরান্তি। দ্বী বিবাভি ল্ তাভি স্ত দই মিতি নি-फिल्म् ।। 🗱 ।। भी वर्शिकान्या २ 🕏 🖯 বসাধ্যা: প্রাণহরাস্তাসা বক্ষণ মা-হ। শোথ: খেতা সিতা ব্লুকা পীতা বা পিড়কা জুৱ:। প্রাণান্তিকো ভবে-फारु: श्वाम हिक्का **नियागुरु: 11** व्याध्योविष लक्ष्ण भारा । जार--শাছোণিত পাণ্ডু নওবানি ভ্রো হক্তিঃ ৷ লোমহ্রশ্চ দাহ্শ্চাপ্যা-श्रूम्वीविषार्षिट्ड ॥ 🗱 ॥ श्रागङ्ब নুষক বিষকাৰ্য্য নাহ। নূর্। সংশোপ বৈৰণ্য ক্লেন শব্দা শুভি জ্বা:। শি রেভিকর লালাস্ক্ ছ দি কাসাধ্য भूषकार ॥ अञ्चलात्थाव भूषकाः কারো বোদ্ধব্য ইতি তজ্ঞান্তরে॥#॥ क्कनाममध्या लक्ष्म भारा । (भाः থস্য কাষ্য মথ বা নানু। বর্ণত্ব মেব চা মোহোথ বর্গসা ভেদে। দপ্তস্য कृ हवा गरेकः ॥ 🗱 ॥ वृश्विकविष्मा

लक्षण भार। मरुज्यादिवासी ह ভিনৱীবোদ্ধ নাশু চ। বৃশ্চিকস্য রিষণ যাতি পশ্চাৎ দ'শোবভিষ্ঠ-তে ৷ ৠ৷ অসাধ্য বৃশ্চিক দষ্টস্য ল-क्रम बाह्। मधी २ मारिया छ इन् घान রসনোপহতো নর: ৷ মাণসৈ: পত-क्ति त्र अर्थं (वष्टनार्खा कहा अर्न्।। व्यगारेश व् किरेक खरा स्मरानुत्-खः। इतारिय्गर उ: इनारि कार्य রহিতো ভবতি। অভ্যর্থ বেদনার্ত্ত **३७**, दुर: ।। # ।। क्ष ।। क्ष ।। क्ष न । भार । विमर्गः यग्युः म्ल जुतः इमि तथानि ह। नक्तन करों ज मंहि म् भरेकवावणीर्याखा क्षां की है-िरम्यः। क्षा উहिदेक् प्रथमः वक्षा নাখ। ক্ৰুৱোদোটি**ছেন ভ**দ্ধলি-(क्) ज्यार्खिसन्। पढेः मीरकाप-কেনেব সিক্তান্যস্থানি মন্যতে ॥ কৃষ্ণরে:না অধিকতরকৃষ্ণরোমা 1 উहिটकः भगिनिकीवेदिरमयः॥ 🛊 ॥ সবিষ্য গুৰু দুষ্টন্য লক্ষণ মাহ। এकर द्वापितः मृनः मक्बः भीजः कः मञ्हे। मनिष्टु मृष्टिमान् परक्षा मर्थुरेकः मिरिष संबद्ध । अकर्ष्ट्धाः र्फिड: चजावारिकरेयव मः श्रेया म-ষ্টো ভবতি।। 🕸 ।। নৎন্য বিষশ্য कार्य) भार । मूट्यास मृदियाः

বিষ

**ज**युर्गिरः (भाषः कृतः उथा। 🛊। डालीकार्विषकार्य। मार । कथु (भाष जुद गृही जित्वा बली-कनः। स्यूर् ब्रिडिएनयः॥ #॥ श्-হগোধিকাবিষকার্য্য লক্ষণ মাছ। বিদাহ খবপু তোদ পুষেদ গৃহ-গোধিকা:। স্বযুর্গ রিভি শেষ:॥ # 11 **শঙপ**री विष्कार्य) मारू 1 हर-শে ষেশ কজ দাহ স্ব্যাৎ শত भरी विषः। भ**उभरी शिका**ई ইভি লোকে।। #।। মশক বিষকার্য্য মাছ । क्षुमान् मणोक दीयहाथः न्। चान्रविष्नः। 🗱 । अभाष्यभाक लक्षण भारु। व्यमाध्य की वे महुण भ मार्। भगकक् उः। वामार्थः की है नम्म॰ बनारिष्ठः की हि न् जानिः क्**ड**॰ यद काड॰ उदम्म (वरन॰ । स। यक्किका मः मजा एक्ना भार जन्रः नः माविनी नागवा नाइ गृहा জ্বাनि । পিডका मक्किका मण्या-তাস ন্ত স্থাকাশুক্ত ॥ তাসা মিত্যাদি। তাষা সৃশ্ভোক্তানা ষ্যা॰ মক্ষিকাণা॰ মধ্যে স্থাকিন नामी भी घु॰ भागः इत्र छी छ। थः।। 🕬।। व्यावादि विवागा कार्य भार । চত্য়ান্ডি দ্বিপান্ডি ৰ্যানখৈ দিন্তৈ শ্চ থৎ ফ ত॰। স্যতে পচ্যতে তত্ত্

সুবতে জ্বয়ত্যপি।। চত্য়ান্ডি ব্যা-शुक्तिः। विभाष्टि र्वनमान्याहिः ভি:। স্যতে সূন• ভবতি॥ #॥ বি-(वाज्ञिउम्। नक्षण नारः। नुमन्दि। য' পুকৃতিস্থ খাতু মদাভিকাম' সম म्ब विदेक । भुमन वर्णिनुग हिन्त किष्ठे॰ रेवान्यावगह्मस्वयः सनुष्यः ॥ পুদরদোষ্ণ পুকৃতিস্থদোষণ শেষ• जूगम• 11 # 11 # 11 व्यथ विवागा• চিকিৎসা। তত্ত স্থাবরবিষস্য চি किट्मा । ञ्चारात्रग विरवगार्खनद्र॰ याञ्जन वागराय । वगरनन नमः ना-ন্তি যত ভদ্য চিকিৎসিত।। বিষ মত্যৰ্থ মুফঞ্ ভীক্ষ্ণ কথিত যতঃ । या अवंदिष गुरू: भद्रिष्कस्त **नोउनः** ॥ 'खेक्प्राद्विक्प्राद्वित्माक्त বিষ পিত্ত পুকোপদেশ। বানিত निहस्त के माही उत्तन हत्त्व हा। প।য্বেম্পু সর্লি ভ্যা॰ বিষয়ু॰ ভেষ্-क क उ । (जाकु मम त्रम निराट চর্বযেমরিচানি চ।। যন্যযুস্য চ দোষস্য পশ্যেজিকানি ভ্রিশ:। **उम्र उरम्रोयरेषः अयंग्राह्मित्रही** उ **र्टिन:** किया॰ ॥ मालगः वश्चिका रे**ण्ड**-ব কোরদ্যাঃ প্রিয়ন্তবঃ। ভোজনার্থে वियार्खानाः शिखाः शृहेय रेमझवः॥ প্रिक्ट कन्नुः। मून इक्ष १ पूजानि

বীজক্ষেতি শিরীষতঃ। গবাং মূত্রেণ স পিষ্ট লেপাদ্বিষ্ঠর ভবে ॥ म्योतिवार्खः मुनिक मृष्यु · চायण (नाविजः। भागरयम्भमः मूर्यः) मि-मृर्वीविवाशङ्गा शिञ्जनी श्रा-**गकः** भाःभी लाषु (भना भृवर्हिका । मद्रिष्ठ• वालक• टिन्ना ख्या कनक গৈরিক ॥ কৌদুযুক্ত: ক্ষাণো হয় দুবীবিৰ মপোহতি। ধ্যামক রোহিব । তদলাভে উধীর দে-য•। কনকগৈরিক° সোণাগের ইতি লোকে। অভ্যন্তমারক ॥ 🕸 ॥ অথ জঙ্গবিষস্য চিকি**ংসা। অ**ং ভয়া রোচনা স্বস্ত মর্কপুত্র ড-থোৎপলা। নল বেডস মূলানি গরল সুরসা তথা ৷৷ সকলিক সমঞ্জি মনস্ত 🗫 শতাবরী । শ্ জ্বাট্রাঞ্চ সমস্বাঞ্চ পদ্মকেশর মি ত্যপি ॥ ৰত্বীকৃত্য পচেৎ সর্পি: भाषा मन्त्राहर्ज्थन । जनाक् भाक् বভীর্ণে চ শীতে ভিমান্ বিনি:ক্ষি পেৎ ৷৷ সর্গিস্তল্য ভিষক্ কৌ-पु• क्ठब्रक्ष• निधाशरय<। विवागि হস্তি দুর্গাণি গরদোব কৃতানি চ ॥ স্পৰ্শান্ধন্তি বিষণ সৰ্বণ গৱৈ ৰূপ-হিতা বুচা । যোগজ স্তমক কণ্ডু না সসাদ বিস জ্ঞতা ।। নাশ্य

ভ্যঞ্জনাভ্যঙ্গ পান বন্তিযু যোজিত । मर्भ की हाथु न् जामि मक्षाना विध-হৃৎপরণা মৃত্যুপাশছেদিঘৃতণাঞ্চা খভুরস্য শিফা পেযা ক্লীরেণ প-রিপেবিতা। অক্ষোঠ ব শ্রজা চাপি श्वविषयी **প्**वज्ञ जः।।#।। त्र बनीयुग्र श∙ ত্তক্ষ মঞ্জিষ্ঠা নাগকেশরৈ:। শীতামু शिष्टि द्वारत्नभः मरम्। त्वा विना-भारय**् ।। 🕸 ।। बीव्रकम**्र कृ**ठ: क**ह्हा ঘৃত সৈদ্ধৰ সংযুতঃ। সুখোঞা মধু না লেপো বৃশ্চিকস্য বিষ্ হয়েৎ ॥ गक्तमाघाय मूनिङ স্থ্যাবর্ত্বসং তু। বৃশ্চিকেন নরে। বিদ্ধঃ ক্ষণান্ডব-তি নির্ন্বি:।। ইতি বিবাধিকার:। ইতি ভাবপুকাশ:।। 🕸।। 🕸।। পা-ব্লিভাষিকবিষা যথা। ন বিষ্ বি-ষ নিত্যাহ ু জাৰ । বিব নুচ্যতে । দেবস্থাপি যত্ত্রেন সদা পরিছরে-ভঙঃ।। ইভি কৌর্যে উনারভাগে ७० क्योपः ॥ ७ ॥ अभिष्ठ । मुद्र-ধীতা বিষণ বিদ্যা অজীর্ণে ভোজ-न विष । विष लाही महिनुमा বৃদ্ধান্য ভক্ণী বিষণ ॥ বিষণ চণক্র-মণ রাভৌ বিষা রাজ্যে ২নুকুল-তা। বিষ দ্রিযো ২ প্রন্যহ্ন দো বিষণ ব্যাধি রবীক্ষিত: ॥ ইতি व्यक्रा ॥

विवन्धे कि । विवासिक्य इंडि इक्तिस्कः॥ नीलक्षरः 🔻 🗆 विषकन्तः 9. রাজনিঘণ্টঃ ॥ ओ **्ष्की।** इंडि अप **हिन्द्रका**॥ विषया**ी भुः मित्रीय**म्मः। ইতি শব্দাল।।। বিষনাশকে তি।। শিগীষকৃক্ষ:। ইভি भाष्ठिनिक्ता ॥ यवानः ॥ वि जी তকঃ। ইতি রাজনিঘটিঃ।। চম্পক कुकः। इंडि अमेषियः ॥ वियनाणः क जि ॥ 🗱 ॥ दिए भिष्ठधानि यथा। अनुक्वाह । हा स्टाइपनि विषयानि यानि धार्याणि उच्छा । खगनानि সমাচজ্ভানি ধ্রভৃতাঘর॥ ন্ৎ-স্য উবাচ । িল্বাচকা এবক্ষাত্র° পাটনা ৰাছ্লিকাষণা। জ্বিপণী শলকীযুক্তা নিষ্কাথ্য প্রেক্ষণ পর়• ৷৷ সবিষ্ণ প্রেক্ষিত• তেন স্ব দ্যো ভবঙ্ঠি নিহিব•।১। যবসে-क्षत भानीय दक्क नयः)। नत्नाहन ॥ কবচাভরণ ছঞ বালব্যমন বে শানী ৷ শেলঃ পাটল্যতিবিষা (गाभी ভाগी भूरपंता।। अहना-न्यस्त द्वर्किशय द्यः भागितः। अर म्डमठे डघट (शाक्रनः दियः

ाभनः।।२ वाका शिक्षु बिक्षेत्र ला लग राजाका। भगदेत मधन ুক্ত। বক্তশিতেন কল্পিচা।। নিখ-ভেল্লোবিষাংছ॰ সপ্তরাত্র• মহীতলে াডভঃ করা মণি (হ্মা: বজ্বা **হতেন** शाब्राय्य ॥ ज 🐃 🐉 जित्र (छन ज-দ্যে ভবতি নির্বিখ । ৩ মনো জলু॰ णभी शृञ्च - पर्कार्य। रेज्य कर्यकाः ॥ কলিতা জন্ত নজিলা: লিভেন শুলা কল্পিডা:। শ্নো গো: কপিলাল-ক্ত সৌম্যাথ্যেয়। হপরে। হগদ: ॥ বিষ্ক্তিৎ পর্ন কার্য্য মণিরত্বঞ্ পূৰ্ববং। মুষিকা উত্সা হাপি হয়ে वका दिया शहा ॥ इस इस्त्रण गांभी मिछिडी बजनी मधुना मधु। जन्म ত্বক্ সুরসং আকাছপিত্ত পূর্ব-ক্তবি॥ বাদিতাণি গতাকাক পি-ষ্টি রেভৈঃ পুলেশিতাঃ। শুদা দৃষ্টাথ চাঘাৰ নদ্যে ভবতি নির্বিষ্ট ৪৫৪ ত্ৰাহণ পক্ষৰণ মজিটা রজনী-ধ্য॰। স্কেলা তিল্ডা পত্ৰ॰ বিড্জ মিন্বাৰণী ॥ মধক দেতস কৌ দু॰ গোবিবাণে নিধাপটে । উন্সাদু-কাগুন মাত্র পুত্তত বোহযেত্তথা ॥ বিষ•ভুক্ত• কাল্যতি নিৰ্নিষ্পি न (नायक्ट १५। नज् मज्जरामा-পেত॰ শর্মপা এমবাজ্বি: ॥ সুবর্ণা

তন্ধর তরো: সসুনৈ রজ্জ্নস্য তু। প্রলো বাসগৃহে হন্তি বিষ• স্থাবর ढक्रमः।। न **उब की**हाः मविषा न मः দুরি সরীসূপাঃ। ন ক্ত্যা কর্মণ ভ্র ধুপো হ্য॰ যত্র দহ্তে। १॥ কল্পি-रैंडक ज्न कोत्र भनाम क्रम वहरेन: a मूरेबेलवाल् मुद्रमा नाकुली ७७ मी: योकः ॥ दाषः भावी प्रकार्थयं का কমাগীযুকৈ বৃভিঃ। ৮। রোচনা भ**ा (ने भारती इस्त्रोम खिनाका**न्हः ॥ विदेश में वाष्ट्राङ महाइ नद्र नाही न्मित्रः। २ । होर्नर्रहिपा निष्ठि हा किंगिही कर नियुरेहः॥ मिक्षः निर्विः ষ্ঠা মেতি গাত্ৰ সৰ্ব বিষ্দিতিৰ 1>০ | শিরীষ্স্য ফল প্রা পুরু ত্ত্ন্ল মেব চা। গোন্ত ঘৃটো श्रुगतः सर्वकर्यकद्रः सृष्ठः । ১० । । 🗱। এ इवीब सरशेषवुः শ्व हाउः পর॰ দ্বিজ্ঞ ।। বন্ধ্যাকর্কোট দী রাজন্ বিষ্ণুক্রান্তা তথোৎকটা। শতন্দী শতानकी दला माठा शाही जिका ।। भाषा भिष्ठ निका हिन्द उथा म अवक्षा हया। ऋष्णकमिनी या ह বিশালী শত্র্যুলিকা।। চণ্ডালী ছ-ব্যিচভালা গোচভালী চ গায়ক।। द्रका दिव महादक। उथा वहिंग धा ह या।। (काराज्यी नक्य(वः

পিয়ালা শুভ লক্ণা। বারণা চ পণক্ষাত তথা বৈ গন্ধনাললী।। ষ্টপ্ৰৱীচ শিলীক্ৰীচ সেমলী বং-শ ভালি । হত কালী মহাখে-ভা খেতা চন্দ স্থিকা 🗈 বর্জাটঃ পারিভিছ্% এখা টেন ফিলবারিকা । कीशसन्त्रा कार्या गर्भ भागद्र का हिनी । विषय । । ज ना जाना **ख्या** ह रोक्क मा का कि ब्रीब्री बहाबे*ी, १.* च जना का ॥ মণ্ডুক 🗐 বাহাছী যে তথা তণ্ডু नोगरक जर्भाकी नवता दुव्की वि-খৰপ। সুখ্রী।। রজগেছা বৃদ্ধি বরী তথ: শল পেহা চ বা । পত্রি-का छ। हिंगे देवत बळनाना गरही यथी।। उपानण ह बल्हाक गाउ हिजा भागितिका। कारकानी कींत्र-কাকোলী পীলুপণী ঔষেব চা। কে-मिनी वृश्विकाली ह यहाराया म ভাষরী। তথা গর্ডাবগাচ জাল-अवृहिनी छथा।। इ.ज्याहार श्राज्ञ नी যাচনহাভূমি লভাচ যা। উন্দাদি-নী সোমরাজী সর্বরজানি পার্থিব।। বিশেষাহারকভান্যক নিটপক্ষণ বি শেষতঃ। ভীবজাতাশ্য হণ্য: সংর্ थार्गा जिल्लवङः। क्राजिक्षामुम्ह ব্শার্থাক কৃত্যা বেডার মাশানাঃ

সম ভ্ৰাঃ॥ সৰ্প ডিৰিৱি োমায় 🎚 বক্ত মণ্ডকজাৰ্চ যে। সিংগ ব্ৰঘ্ **धर्र मार्ड्डांद्र घी 'श**ान्द कहारा । কুপিঞ্জনাজ ে প্ৰতি লভিবেষ্ ভবাশ্চ যে (ইভে) ব্যক্তি লাভ লৈ কপেত্রে দু বিখ্যক সবৈ ৰণ্ বিষদ প্লী পুল্লানীদ ৷ ইতি मृजुः द्वाद्विष्टः नक्षात्रः भृतुद्धः॥ । सहिका ॥ इंडिमार्ट्सि २०२ कथायः॥ विषम् है। खी मर्श्वकावी। इंडि विषय्नी जी हिनारगाठिका। इंडि बिका গুলেষ: ।। ইন্দুব ক্ণী ।। दिवश्यकः প্র মর্প:। ইতি শক্-दनवर्दविका ॥ यस्त्रक्ता ॥ ज्यान 🌷 हिन्सका ॥ 🖰 भना ।। রক্তপুরণ ।। হ রিজা ।। বিষদর্শনগৃত্যক: পু॰ চকোরগক্ষী वुष्किकाली ॥ स्टाक्डाः। २/५ 📒 । ३/७ (एम) जुः ॥ রাজনিঘণ্টঃ ৷৷

दिষ জিল্তা: পুশু দেবতাডবৃষ্ণ:। ইতি 🏸 রাজনিঘটা: ॥ इन का ।

**রহা:ली।।** विषक्षपुरकः।।

दिगञ्ज क्री मृत्राच । १७ मझ 📗 हिन्तुका ॥ **ब**ङ्गदकी ॥

दिवा: जि विवारणाहा। रथा। 🖟 ইতিশাদনালা।। ইতি বিশি্বনাকেণ্ গোলেগালে | বিখনাশন: প্ শিরীঘচ্ফঃ । ভারতে ১০ খন্ডে ১৯ মন্টারঃ 📭 🖁 ভি শক্ষান্দ্রিকা ॥

া বিশেষান্নর নাগাশ্চ গো খরে।ই 🛊 বিষয়তা স্ত্রী জড়তা। যথা। জাড়াুু सोर्थाः विवास्त श्वनामः गामा विषय छ। इंडि (स्याहन्यः।

विष्ठिन्मुः शू॰ कावस्ववव्सः। इंडि ब्राजनिर्देशास्त्रीयुः। इंडि ভাৰপুকাশ: ॥

র॰ নুরজ্িড॰। রাজাবনে তথপ্তক 🐪 রাজনির্যট: ॥ শুলুবর্ণে পু॰। ইত্য-

इत्याना ॥

रिष्ठाः शुः काइस्त्रवृक्तः। इंडि

वियवतः प् नर्गः। इंड्यादः ॥ বিষয়ুর: পূ॰ মহিষঃ ইতিশন বিবধর্মা প্রী ক্লক্ষা। কাল-एना इंडि डाया। इंडि नद-

्वियथाञी खी कदण्कादम्निशद्धी।

বিন্দ্রায় হে। দিয়ে। ভর্নং রাচ 🍦 ইতি ছারাবলী। বিধনাশকে 🗷 । हिन्दाना मृतिक पारा । इं ७ छ। दिवस मिनो जी अर्भद का मी। विवन्द शृः (न्यानाकर्कः। ইতি
न्यानित्वा।।
विवन्तः क्षी भीनशन्तः। ইতি
नयाना।। विषयुक्तश्रुद्धः। भनक्षा
देवि ভाषा। देवि इञ्चाना।।।
विषयुक्तः शृः भनन्द्धः। भनक्षा
देवि ভाषा। देवि इञ्चाना।।।
विषयुक्तः शृः भनन्द्धः। ইতি
ভावश्रुकाणः।। विषयुष्पञ्चक्रमण्डः
नाद्वागः। ইতি কেচিছ ।।
विषভिषक् शृः विषविष्टः। ইতি
ह्मान्दः॥

বিষভু**লস্ব: পু**ু বিষ্কু**লস্ব: ।** ইভিকেচিৎ ।।

বিষমণ ত্রি অসমানণা যথা মনুঃ ভুততুগা মবিভক্তানাণ যদুঃখানণ ভবেৎ সহ। ন তত্র ভাগণ বিষদণ পিতা দদ্যাৎ কথঞ্চন।। ইতি দায়তন্ত্রণ।।

বিষমণ লী পদ্যম্য ত্রিবিধবৃত্তান্ত গত্রুভবিশেষ:। যথা। পদ্য চল্টুলি ত্রুলি ত্রুলি জাতি রিতি দিখা । বৃত্তমক্ষর সংখ্যাত জাতি আঁত্রা কৃতা ভবেং ।। সন মর্জমমণ বৃত্তশাকি ত্রোদণ ভবত্যজ্বমণ প্র: ।। আদি স্ত্তীয্বদ্য্য পাদ ত্র্যা । জিতীশ্বং । ভিন্ন চিক্লা চতুল্লাদণ

विवाद शर्व विविद्ध ॥ इंडि ह
विवाद अर्था। पूर्य खरकः ॥ अ॥

विवाद जिल्ला के कि विश्व विश्व । उन्

का अराम अर्थ के जाल महिल्ला कि विश्व । विश्

विषयः वर्षे कार्यात्रानिः। म ज् त्ययः विश्वतः ि वरः ज्वा धरः क्ष-छण्ण। रथा। वृद्धाः २थ (मोमुःः गुरुष्या रवनः । जत व्यत्र क्षा-व्यक्त नामस्याः (भगागस्या नमी कमणः भूषिष्ठाः॥ के ि व्याक्तिः खदुः॥ धः॥ जाविरण्यः। यथा। ठजूर्वियः भितिष्क्रयः छावाः कद्याः नामकः। भूगः थुखः मम रेण्ड्य वि-वम रेण्ड्य कथा। वा ठजूकः गर्गाः भूग्थि धः विक्रृह्यः छकः। यश्यक्र मस्य (७३य छण्णा विष्यं ज्वाद्धाः। देखमहृषः वृत् मश्रह्मदृष्णः। देखः

वदः ॥

विवयज्ञदः भू ज्ञद्रद्रागविष्णयः। खन्। विमानकथन् श्रिकाः मण्या थि भारु। (मार्या शङ्गा श्ट्रिंड मञ्जू ভো জুরোৎসৃষ্টদ্য বা পুন:। ধাতু মন্যতন পুল্প্য করোতি বিষন ज्ञुद्ध ।। व्यवसर्थः । ज्ञुद्धाः मृष्टेनः জুরেণ ভাক্তসা। সলিক্ষ্ট লক্ষণ মাহ।দোন: অল্ল জুর মুক্ত্য ৰ ল্লোপ। বিপুক্ষ্ট হে ত্ নাহ। অ-হিত নাহার বিহারাদি ভেন স ম্ভ **চ: স**ণ্গুৰ্ণো জাত: অন্যতন পা जु द्रम ब्रक्तानिक भागा मूचियः भूनः विषमज्ञः कात्राजि । ज् রোৎসৃষ্টস্য বেভি বা শবেনেতি বোধ্যতে। পুথমতোপি বিষয়-জুরো ভবতি। যত উক্ত•। আর-ञ्जाबियाना य खिन्जा मिक । शानू দুষ্যিত্বাক ধিষমজ্ব করোভীতঃ (পক্ষাধামাহ। সন্তত রসর জছ: সতত রক্তবাতুগঃ। দোষ: ক্ছো জ্বং পু সাং সোন্যেদুর পিশিতাং শ্রি:॥ নেদোগত স্ত্রীয়ে ২হি अञ्चि मञ्जग**ठः भूनः। ऋ**ाँ॥ ছাতর্থক থোর নম্ভক রোগদ-করে।। অন্তক্ত অন্তক নিব ারক षाट । 🕸 ॥ विषमकुशम् मामानः बाक्न माह्। यः महारति। अस्

কালাদ্ভীতোঞ্চাভ্যাণ তথৈৰ চা বে-গভ শাপি বিষমো জুর: স বিষমঃ म् जः ॥ यस्त्रीयकार कालार महा-দিভঃস্যায়নর্থ:। যথা বাতিকো জুর: ज्ञश्रीहिनानि रेशिखरका एम हिनानि रिल्ला चारण मिनानि माया-ণাণ পুৰেল্যে বাতিক শতভুৰ্দ্দশ দি-नानि लिखिका विःमिक मिनानि লৈগ্যিক শচভ্বি-শভিদিনানি স্যাৎ ভথা বিষমজ্বো নিয়ত কালং ব্যাপ্য ন স্যাদিত্যর্থ:। শীতোক্ষা-জ্যা• গুণাভ্যা• স্যাহা বেগত কা-লি বিষমঃ কদাচিদ্পি বেগবান। क्लाहिन्नि माख्रदशः। अ। विवय-জ্যসঃ (ভদানাহ। সম্ভত: সহতে। ए(न)म्। लुडीयक ठड्यं(को । खब अग्रुजम। लक्ष्ण गाङ् । मधाह्या म्याह्या बाम्याङ मधार्थ वा । महरूता (गा १विमनी मित्राट **महरू**: স নিগৰ্যতে ॥ বিফল্লা বাতিকাদি (उदार । जन्नजा रेन्द्रअर्थान । व्य-विज्ञाती व्यन्ति छात्री।। 🗱 ॥ नजू মুক্তান্বশ্বিত্ব বিষম্ব মিতি বিষম লক্ষণ তদত্ৰ ন ঘটত ইতি কথন্য িবনেৰু পঠ্যতে। ঘটত এৰ ইতি ন দোমঃ। যত উক্ত চরকেণ। বিসর্গ शानत्म कृष्ट्वा निवरम १वाक नम्भा । দুর্লভোপশম: কাল॰ দীর্ঘ মপ্যনু-বর্ত্ত।। যত্ত্ খরনাদ:। জ্রা: পঞ্ ह (य (भाकाः भृबं अउउकारयः। চত্তার: সম্ভত• হিত্তা জ্ঞেয়া স্তে বি ব্মজুরা ইভি ৷৷ ভট্লিরেণ ভ্যাগাভি नार्यना 🕸 ॥ म उउ लक्ष्य भार । অহোরাত্রে সততকো ছৌ কালা-বনুবর্ত্তে। ছৌকালৌ অহনে।ক **কাল**॰ রাত্রাবেক কাল॰।যতো দো খাণা নহোরাত্রে পুডেরক ছৌ ছৌ পুকোপকালৌ। যতউক্ত- বাশুটেন 1 বলো প্লো ব্লাজি ভূকানা নন্ত মধ্যাদিকা: ভ্রমাদিতি। 🕸। অ **ब्रिपृष्ठ वक्त सह। अ**स्तिपृष्ठ खुरहाबाबारम्कशनः नुवर्खाङ । এককাল বোষাপেক্ষণা এককাল भिश्व श्रिकीय॰ भूषिमकात्व ज्ञुति हुत দোদহিতে: ।:১৯ । তৃতীয়ক চতুর্থক (या र्वाक्षण सारु। ज् ीयक छ्जीरय-**इ** ठजूर्थिइ ठजूर्थकः । ज्ञीरा २क्कि हेड्यागमन पिन॰ गृही पा। एक উক্ত॰।দিন নেক মতিক্রন্য যে। ভ বেৎ স তৃতীযক: ৷ দিনঘ্য ত্বতি ক্রম্য যঃ ন্যাৎ স হি চতর্থক ইতি ।। जाबार तृषान मुख्या २क स्थान বিভাগেন যথা সংখ্যা করে।তি হি। माठ्यान पूर्व वर्ष ४ हर्ष र शूल

পকান্ ॥ অহোরাত্রাদহোরাতাৎ স্থানাৎ স্থান প্রপদ্যতে। দোষ আ-মাশ্য° পুাপ্য করোতি বিষমজ্ব° ।। व्ययभर्थः। व्यामानारगात्रः क्रेन्सि-র: সন্ধা: পঞ্ কফ স্থানানি এবু তিষ্ঠন্ দোষে। যথা সংখ্যা সভতা-দীন্ করোতি। তত্রামাশযে জিডো দোষ: সভত করোতি ঘৌ কালৌ অহোরাত্রে কালদ্বয়ে দোষ পুকো-**शा<।** इतरय छिल्डा (म. य जागा-শাৰ নাণতঃ অনেগু,য়° করোতি। साख त्राव यादाण्य सागाउ। टा दो पाय कालकालो अक सन् कारण क्रमाय छिष्ठ छ। शहसिकासाः শ্য ইতি। কণ্ডে জিতো দেশবা ২-হোরাত্রাৎ জ্দধ মাধাতি। তৃতীযে দিনে আনাশ্য মাগত ভগুকোপ कारनः ज्जीयकः जुद्रः सरद्राजि । এককাল• ন ত ছো কালো ৰভা-বাং ৷ এবং শিয়ঃস্থিতো দোবো থহোরাভাৎ কণ্ঠ নাযাতি। ততঃ भुन द्राहाना जा प्रय भाषा कि हर्ष मित्र व्यादाणग्यागङ्घ स मुक्तिश কালে চতুর্থক জুরা করেছে। এক কাল• ন ত ছৌ কালৌ স্বভাগদেব ।। कः।। ननु सायत्र गण्यन कः स्व

নিজস্থান গমন ক্রনাৎ কথং তৃতীয **ए** जुर्थ दिवस्पा जुर्जागमन । উচ্য-(छ। (नारम) हि शुक्ता**ल भ**न्नरम (तगरख्या वाघताए सञ्चास (तग দিন এব যাতি। যত আহু। দোষ: - পুকোপকালে হি বেগবন্ধেন লাঘ-বাৎ ৷ বেগবাদর এবায় স্বস্থান মভিগছতি ৷৷ সন্ধিযু স্থিতঃ পুলে-প॰ করে। তি। সন্ধ্য শ্চামাশ্যেপি সন্তি ভেষু ছিত: পুলেপক সর্বনা करब्राञ्च। 🕸 ॥ निवृद्धः भून द्रायाः **তি** विषया निगरक मिरन। सं काव॰ কারণ ভত্ত মন্তে ন্রনিপুঞ্কাঃ ।। স্থভাবস্য কারণত্বে বফস্থান বি-ভাগ নিরপেক্ষা শত্তুর্থকাদি বি-भर्ग्या व्याभ कृताः सम् काला ভবন্তি। অধিশেতে যথা ভূমি বীজ কালে পুরোহতি। অধি-শেতে তথা থাতু দেয়েব: কালে পু-জ্প্যতি॥ সূজ্যভাপ্যহ। ন চাপি वियत्ना (मक् न कमाहिट भूग्कि ) । গ্লানি গৌরব কার্ম্প্রেভ্যঃ স যমান্ন পুন্চ্যতে ॥ বেগে তু সন্তিক্রান্ত গতো হ্ব বিভি ল্ক্যুতে ধার্ত্ত ब्राष्ट्रा जीनपुरः लोषा इत्याशन ভ্যতে ৷৷ 🗱 : বিলেবেম কুলি-यक्षा, बद्धा २ दि । कर्न भिडान

গ্রিক্পাহী পৃধাদাত কফাত্মক: ৰ বাত পিভাছিরোগ্রাছী ত্রিবিধ: স্যা-क्ञीयक: ॥ बिक्शुाही (वननया जि-क॰ गृङ्गाि ইভার্থ:॥ #॥ नन् कक পিত্তাত্রিকগাহী বেদন্যা ত্রিক ব্যা-পী ত্রিকস্য বাত ছান তৎ কথ তৎগৃহীতৌ পিত্ত কফৌ অন্য স্থান-গত্বেন দুর্বলত্বেন দুর্বলৌ বেগং ছবে-তে। উচ্যতে দোঘাণা স্থান নিযমঃ ন ভু সপিতানা । ভথা চ সুশু হ:। জণিতানা হি দোষাণা শরীয়ে পরিধাবভি। যত্র সঙ্গ: স বৈভণ্যা-দ্যাধি স্তব্যেপজায়তে।। এবং অন্য স্থানগত্ত্বেন চতুর্থকোপি বাচ্য । वाउ करना जाकः शृक्षां वाष्या शृष्ठे॰ ব্যাপ্য ভবঙি ইভার্থ:। যুগ্লোপ-কর্মণ্যবিষয়ণে চেতি স্ত্রেণ পঞ্মী ॥ 🗱 ॥ কফেল্বেস্য ব্যক্তোল্বস্য চ চতর্থকস্য লক্ষণ মাহ ৷ চতর্থকো मण्या च च चाद हिरिश हुत: । ভট্রাভ্যাণ ল্লৈ আৰু: পূর্বণ শিরসো হনিল সভবঃ॥ শ্লৈম্বাকঃ লেন্মে-ল্বাঃ তথা অনিল্সাভ্রঃ ব্যাডে, দু-णः। यहकारीमाः जिस्सयक्तारः। ेकक ठहरकत। गुग्यमः जातमाः তেন পঞ্চদুর বিদ্নজ্বা: ইতি । शुक्ता गुर्गात्मक (मायकाः छि-

দোৰতা অপি ন ভবন্তি ইতি জৈজা-টঃ। পূর্ব পূথম জল্লাভ্যা ব্যথ্যা জত্ত্বে ব্যাপ্য পক্ষাৎ সকলং শরীরং ৰ্যাপ্নোতি। এৰ মূল্বণ ৰাভজাত: भित्रमः भूबं वाष्या भित्ता वामा जकनः भद्रीद्रः व्याल्याञ्चेज्यस्या বিষমজুর এবান্য শতুর্থক বিপর্য্য যঃ। অছি মজ্জগতো দোষ শত্র্থ कविशर्यप्रशः ॥ अन्यः मञ्जानि श क्षकामभन्न क्षज्यंकविभयं।यारथ।। ज्वतः (मानि विषमज्वत अव । म कि॰ ধাতৃত্ ইত্যপেক্ষাষা মাহ অত্যী ভ্যাদি।। 🟶 ।। ভস্য চতুর্থক বিপ ৰ্য্যস্য লক্ষণ মাছ। স মধ্যে জ্বর-যত্যহ্রী আদ্যন্তে চ বিমঞ্চতি। চ-তুর্থক বিপর্য্য ইত্যুগলক্ষণ । ञडानि विপर्य्याशि वाष्त्रवाः। যথা অহোরাত্রে দ্বৌ কালৌ মুঞ্জি শেষ সর্ব মহোরাত্র ভিচ্চতীতি সতত্বিপর্য্যয়: । অহোরাত্রে এক• কাল মুঞ্তি শেষ সর্ব মহোরাত্র তিষ্ঠতি ইত্যন্যেদ্যুদ্ধবিপর্য্যয় । ন ধ্যে একং দিন• ভুরয়তি আদাবন্তে চ দিনে মুঞ্জি ইভি ভৃতীয়কবিপ-र्ग्यः। এতে विषमज्जा উপলক্ষ **दाः অন্যে রাত্রি** জ্রাদ্যোপি বিষ নভুৱা বেংজব্যঃ । এখা। সমৌ বাত

करको रमा भीग । लखना ति हिनः । **द्वारको भू**।या जुद्र ख*्र फ्*दा **हीन क**न कत्र। जु॥ श्रारम वाच्ला, न॥ म-स्वारीनाः भी अनुबंद्य मारु भृबंद्य ह एक ज्ञाह । पुक् छो (ल्लामानिको) শীত মাদৌ জনযতো জুরণ। তথোঃ পুশান্তযো: গিত্ত নন্তর্দাহণ করোতি চ। শীত শীত সহি ত পুশান্তযোঃ পুশান্ত বেগথো:। অন্ত: অভ্যন্তরে। করোত্যাদৌ তথা পিত্ত• ত্বক্স্ত্• দা-হ নতীবচাতিমান্ পুশাস্তে ত্বিতরৌ জক্ত: শীত মন্তত: ।। অন্তত: হস্ত भारामिकः ॥#॥ भी अ**मि मा**शामि জুরয়ো জ্রিনোবজন্ত্র মাহ। দ্বাবেতৌ मार भी जामी जुदरी मः नर्गाकी स्-(ठो । नाक् नूर्व खर्याः कक्षः मूथ मार्याउद्या १ शद्रः॥ मः मर्गाको मा-विभाजितो। कष्ठैः कष्ठेमाधुः॥ 🗱। বিষমজ্যবিশেষানাহ। বিদপেল ब्राम (नाष्ट्र भूषा भिष्छ वार्वञ्चिन তে। তেন। জ- শীতল দেহ চা-र्क्ष्युकः भुकायर ।। यन द्राम विन एक वाहात्रक त्राम मुख्य १ मध्य (मुग्र পিত্তে চ ব্যবস্থিতে দুষ্টে স্থিতে তেন হে ৰুনা শীতলং কফেন উঞ্চ পিন্তে ন অৰ্দ্ধত্বি চাৰ্দ্ধনারীশ্বরাকারেণ ন-इ.न इ। काद्म व।। काद्य पृष्ठे॰ यमः।

পিত্ত শ্লেখ্য। চাণ্ডে ব্যবজ্ঞি । তে-। भाषाकु भारतिहरू भी उत्तर क्षा न मयाः॥ व्यञ्ज इङ शामादनी। कार्य শ্লেমা यहा দুষ্টঃ পিত্ত ক্ষান্তে ব্যব-**হিভঃ। শীভদ্ব' তেন গাত্রেস্যাদু**ঞ ञ्च"इंख भारत्याः ॥ 🗱 ॥ विषगङ्गव-বিশেষস্য পুলেপকস্য লক্ষণমাহ া পুলিম্পান্তির গাত্রাণি ঘর্মেণ গৌর-বেণচ। মন্দ্রজুরবিলেপী চ স্থী**ড:** স্যাৎ পুলেপকঃ। ৌরযেণ উপল-किन्छः। सन्दर्वत्र विष्याभी सन्द्रादश স্য জ্বস্য সদা সম্বন্ধো হস্যাত্রীতি মন্দ্রুর বিলেণী অবং বিষম্ভুর:। ভথা চ স্মুক:। প্ৰেসকাথ্যো বি ৰমঃ পুৰাং লেশাৰ শোষিণা মিতি ॥ 🗱 ॥ व्यथ विवयज्ञाताः नामान् 🛚 विकिट्मा । खुबाक विवनाः मार्ख **স**লিপাত সমুদ্রবা:। অংথান্ন্য্য स्रायम् (७ म कार्य) । धिकिस्राय अ।। विवस्मज्ञथ कर्ज्य) मृष्ट्य प्राथक (नाः-अन्। शिक्षारेक वन लारेन क नामरय-धिवगज्ञद्रभाका का निस्कः भारति न স্য পত্ৰ কটু ধরে। হিণী। পটোল সারিবা মৃত্ত পাঠা কটুক রোহিণী।। नियः शाहीलः विकन। मृष्टीका नुष्ठ বং সকৌ। কিরাততিক নমূচা চ-न्म् न॰ विश्व ভिषक ।। अङ्ग्रान्सक 🕆

নুস্ত হজালোক স্বাপনাঃ। ক্যায়াঃ मामन्डाम् भयः भक्षविष युद्रः ॥ কালিস্ক: ইন্যব:। ব**্স**ক: স্ট-<sup>\*</sup> कः। हन्त्र भव ब्रक्टन्त्रः। क्षा-যা: পঞ্চ। পঞ্চিষ্ সম্ভত সভতা-(न) मु। इ ज्ञीय हर्ज्यक क्षण । । # II महादना मृत महोयशा छा। कृ। या নিহন্যাছিষ্যজু**র হি : শীত স**হ-ম্পাণ পরিদাহ যক্তা বিনাশ্যেৎ বি-তি দিন পুযোগাৎ।।#া ফু দুন্ত। नागत्र भुकदारितः कृष्ठः न दारः कक মাক্তোভার। স্থাস কাসাক্চি পাখিকগড়ার সদা তিদোব পুভবে णि **শস**(তে। कु मुनि।। क्षा कु मुन् তাপদাক চন্দ্ৰৈ হা নৈ ভূনিম্পৰ্শ-ট পটোল পৌষরৈ:। তিক্রা কলিঙ্গ भिष्ट्रमा टामरेक मंहोयष जार्गि विज्ञतिः भौगः॥ मृठः शिरट मृर्ह फिन॰ क्षाय॰ निरुखि तृष्कपृद्ध गृ गु-শীত। স্থাসন্চাক্তি দাহ নলু-ণ ভূষা হলি কাস মতীব **শ্ল**কণা আনাহ হিলাদিযু সলিপাতে এল-शुष्ट जिन्न भिल्लाक्षायाः। दृह्८-क्षुनि दिवसङ्ख ॥४। गुरुमः वक २ छुठी विस्थीयथ कडीका**त्र वृः यः।** भीजः जक्षा हुर्षः जनस् (यहहुद्रव क्षि। क्षा जिल्लाच्या मार्यक काहा

লসুন সেবিতঃ প্রাতঃ। বিষমজ্য নপহরতে বাতব্যাধীনশেষা<sup>৽</sup>শ্চ 🕴 ॥ 🛊 ॥ कालाकाकी जू मछछा विषम-জ्व नानिनी। मधुनाष्ट्राख्या नीषा श्वाम् विवयज्ञान्।। कालाजाजी भगदेवना इंडि (नारक। ना ह कि কিড্ঠা ওডতুল্যা কর্ষমিতা ভক্ষণী-যা। #। পীতো মরীচ চ্র্ণেন ভ্লসী-পত্রজো রস:। দুে।ণপুস্পীভবো বাপি নিহন্তি বিষমজ্বান্।। 🕬।। অন্তাৰাঃ শত চূর্ণ বাসসা পরিশোধিত। পৃথক্ষোডশভাগা: সূত্র ওঁড মাঞ্চি क जिन्दाः॥ यथान् । जक्रायान् । ল্লাহো হিত নিতাশনঃ। নাস্য কশ্চি फ्रांत्रधार्थिनं बद्धा পनि उ॰ न ह। न জुद्रा वियमारेनव स्महनानिवातककः ।। নচ নেত্রগতা রোগা: পর নেতদু जायनः ॥ मिथाकद्रः जिल्लायनः भू रगागापनाऽ वृक्षिमान्। की (वहर्यनः **७• मागु•** ररेथवामि जि**क उथा**।। छ-**फ्**ठीक्ट्यः ॥ **%** ॥ ज्यान्नमा**रु** । ठक মাংসং প্রোমাংসং দ্ধি মাংস ম থাপি বা\মান **মা সঞ্চ** ভুঞ্জানো মূ চ্যতে বিষমজ্বাৎ॥#॥ অগ্নিবে**শ**শ্চ । সূর। সমগু। পানায ভোজনে চর ণাযুধা:। ভিত্তিরা বিষিকা: পথ্যা: अकृषे। विवशक्षत्र ॥ इत्र भाष्ट्र गृह

পকুটা:। জক্কটা বনস্ক্রটা:। বিদ্ধি-রা: বর্ত্তিকা লাব বিগির চকোরা-দ্যাঃ।। 🗫।। অথ সম্ভতাদীনাণ বি-শিষ্টা চিকিৎ সা। ত্রাযন্তী কটুকানন্তা সারিবাভি: শৃত• জল•। সম্ভতাখ্যে জ্বরে দেখ বাতাদীনা নিবৃত্তযে 🛭 অ-নন্তা দুরালভা॥ #॥ পটোলাক বিষা তিকা সারিবাভি: শৃত• জল•। স-স্ততাথ্যে জুরে দেয় বাতাদীনা নি-বৃত্তবে।। ব্যা বৃহদ্দ্যী এর গুর্ৎপঞ বিটপা তদলাভে দন্তীচ গুাহ্হাসমা-न अगदार ॥ शा भागितनमुग्रानसा পথ্যারিষ্টামৃতা জল•। কৃথিত• ত-জ্জল• পীত• জুব্ন• সন্ততক• জ্বেৎ॥ অনন্তা সারিবা। অরিষ্ট: নিয়:। ভল• বালক ।।ঞা দুক্ষা পটোল নিযাত্ত भाकास्र दिक्ना भृष्ठ । इन कन्नः शित्वहीयु मत्नापूर क्विमास है।। भन ক্রাহ্যঃ ইন্দুয়বঃ।#াকর্মাদাধারণ ভ ক্তাতৃতীয়**ক চত্**থকৌ। ভিষ্**লা প্তি**-কর্ত্তব্য বিশেষোক্ত চিকিৎসিতৈঃ ॥ উশोतः हन्सनः मुखः छড्ही धानऽ নাগর। অন্তুসা কৃথিত পেয় শর্ক ता मधुर्याकि**७**।।।#।। जुरत ज्ञीयक পূ॰সা॰ ভৃঞা দাহ সমস্থিত। অপা-बार्ग क्रों। क्रोंग (वास्टिंड: मर्खः তস্তভি:।।বজুা বারে রবে স্তর্ণ জুর•

**२** छ তৃ **डो यकः । #।** ছिद्रा তामनको দাক শিবা বৃষ মহৌষধৈ:॥ সিতা মধু যুত: ক্বথে শচত্র্থকহর: পর: । **ছির। শালিপণী (ভানলকী ভ্**ধাকী । শিবা হরীভকী। বৃষো বাসা।।ঞ্চ। অগন্তি পএস্য রলেন নস্যুণ নিহন্তি চাতুর্থক নু পুবীর্য্য:। শিরীষ পুস্তুস্য নিশাদ্বযাস্য কল্পেন বা তৎ ঘৃত সং-যুতেন।। ভৎ নস্য°।:#।। জ্বস্যবে-পকালঞ্ চিন্তুযন্জুর্য্যতে তু যঃ। ত-<गाउँ दे उन्हरें वालि वियय नाम-বেৎ মৃতি• ৷৷ 🗱 ৷৷ সন্ততঃ বিষমকা-পি ক্ষীণস্য সূচিরোত্থিত । জুর• সভোজনৈ: পথ্যৈ জুরিয়ে: সমুপা-চরেৎ ॥ #॥ সভতাদি বিপর্য্যা-ণা বিষমজ্বাণা চিকিৎসা সত-छारीमामिव कर्खवरा । भीठाङि-ভূতে পুৰুষে স্ব্যান্থীতহরী কিয়া । দাহাভিভূতে তু বিধি॰ বিদধ্য-फाइनाणन ॥ आहामरेन ईट्डेरें র্গুক্ভি:কয়ুলাদিভি:। তুল্বভ্যা ন-হাশীত শীতাদি জ্রিণো হরেৎ॥ তুলবন্তী ভ্লাই ইতি লোকে॥ 🕸 🛚 ত স্তনাভ্যা দ্পীনাভ্যা পীৰরো क निज्यानी। युर ज गांप ना विस्क-ত্তেন শীত পুশাল্যতি॥ কাভাস্ সত্ম সংজাত তথ্য শীতে নিবারিতে

। প্রভ্লাদ॰ চাস্য বিজ্ঞায় পৃথক্ তা॰ কারবেৎ জ্রিয়•॥ ভতো দাহে তু স• জাতে পত্রৈ রেরণ্ড সন্তবি:। শীঙ্ক-লৈ ধারিতৈ দেহে দাহ তস্যাপনো-परिष्ट ॥ अ॥ जानकः मुक्किका हुर्नः তুল্য তত্তোভথোর পি। নবনা সঞ্ जुःथः म्याट सर्प्ययः कन्यकामुरैवः ॥ তভূসংশুষ্ক মুপলৈ ব নৈঃ গ্রূপটিঃ भार । भीउ उहुर्नसहूर्न खुआ নাত্ৰ• শিতাযুত•॥পুভাতে ভক্ষযে-खन यां भी अञ्चत्रक्रय । वां डि র্ভবতি কস্যাপি কস্যাপি ন ভবত্য-পি।। একেন দিবসেনৈব শীতজুর-रुत्रः भद्रः । सप्ताङ्ग मस्य भयाः শিখরিণী ভক্তক চা৷ 🕸 ॥ শীক্ত জুরে ভূউভিরুষ্ট্রণ । এলা **জাতী**-क्ल (द्यान विकला भीतक घनः। সবিডঙ্গ সিতাযুক্ত চূর্ণ শীতজ্ব-রাপহণাঞা।কাযহানাস্দী ভিক্তা ব্যস্থা পুর চোরকৈ:। সহদেবা বচা करिः मीउरेगः ध्भ लिभरेनः॥औड द्वारोष्ट्रेयः शिष्टे वंदन कात नःयु-তৈঃ। সামু রিপাচিত তৈল মভ্য-ङ्गाही उनामन ।। कायञ्चा शत्रि उकी । নাপলী রায়।। ভেদসাই ইভি লোকে। বহস্থা গুড়গী। পুরে। ও পুলু:। চোরক: ভটিউর। ওদ-

वारङ गविवन। সহদেবা उद्ख्या। क्षाता यदकातः। का भ्यानि धूनः (नभनः डिन्ए ॥ कः॥ अञ्चना जू भवानि विष्ठ ज्यो निकाभाष्ट्र। দাহাদি জুরিশো দেহে তানি প্রা-ণি ধার্যেত।। ভেন নশ্যতি দাছো **९**म। जुब रेम्हरवाशमान। जि। नार **मा**न्डि यहा रेगे छा गुङ्गा निवाः র্যেৎ ॥ ৠ॥ জব্মচক্র চলক্র পি মে थवा मदम हन्त्य हन्त् तिव्यापना । বন লভেব ভক্ত প রিবেষ্ট্রবেৎ প্রল দাহ ৰিগীতিত মলনা।। চন্দুঃ ক-প্র:। তদক সহ সংজ্ঞাত শৈতিয় দ্ৰাছে নিবারিতে। প্রান্ত্রবঞ্চাস্য বি खाय जा जी मश्रवस्ट **लुनः॥** भूवहिका बागत अठ मूत्रा लाका নিশা লোহিত বৃত্তি লভি:। নিদা হরেৎ যড়গুণ ভক্র পঞ্**তৈল**ণ জ্বণ माह जमति उक्ष ॥ यहे उक्तरे उनः 1 🗯 🛚 ब्राद्या नागद ज्रंड ठन्मन वि भा बडेज्ञास्य कृषण वना नाका रेमक्षव माद्रिया मधुद्रमा (मयक द्वाशी ७८क: ৷ লোশীরাগুৰি ফেন রৌহিষ জলৈ বৈলা পচেৎ যড়খনে তক্তে ওচুন व्यञ्जूत मृज्जत माहामि भी आणि कः ॥ ठन्स् न सब (भड़ेश सहुत्रमा न्वा। (दाशीज हः । दाहिति इंडि

(मारक। (ब्रो हिष (ब्राहिम हें डि ज्-ণবিশেষঃ। জল বালক । মহাফট্ ভক্তিল ।। 🕸 ॥ পদ্মকোৎপল-কলার মৃণাল বিষ পৌরুরৈ:। জম্-पानीत मिक्किश भग्न रेगितिक करें-करेनः॥ भातिवाहर माध्राय की-রী থড়্র মস্তকৈ:। ধার্ত্র) শতাবরী युक्तिः कृष्य कान् भूषाकिरेजः ॥ লাকার্য প্র: শ্লু নভ্ভি: নছ্-क। জिरेकः । शङ्गरे ७ व निम॰ चूछु॰ দাহজুর হর° পর•।। আক্ষারসারিঃ পৃথক্ হৈল ত্ল্য:। পদ্মকাদিকৈ-লং॥ স্থানপকে প্রঞ্জীত শ্লে-प्यज्ञहरी किया। ब्रुजिटे। (भा-শৃঙ্গণ বিডাল বিটোর গম্য নির্মোকঃ । यरनकल ज्डेकिल्मारी वः मह्यू मु ियाला ।। वंड रव समूत्र हन्त इ-गनक द्यामानि अर्थभाः अराः । হিন্দু গৰান্তি ন্রীচাঃ সমভাণা শ্ৰেন্ত সংশিষ্ঠা: ৷৷ ধুগন বিধিনা শন্বভ্যেতে সর্বান্ জ্রাঘিষত ৷ গুহডাকিনী পিশাচ প্রেড বিকারা-नय॰ श्भः॥ क्षमुङ्की कविषात्री । ভূতকেশী জটামাণনী । কৃদুনিৰ্মাণ लार क्षुनियाला श्रुमारि। सर्वठ-न्मः भग्रश्ह हन्तुकः ॥ भार्भादा भूभः ॥ क्षः॥ स्थानः भानुहद्रः (स्वः)

अगावृगन भी यतः। भ् बयन् भूगवः শীঘু• মুচ্যতে বিৰমজ্ৱা**ে॥ সো**- . **यः** উगामि त्रस्छिः। नानुष्रः नः ন্দ্যাদিগণ সহিত। পুষতঃ পৰি-ত্র: ॥#॥ বিফু সহসু নৃর্জান চর। চরপতি বিভু । স্তব্যান সহসেণ জ্রান্ সর্বান্ ব্যপোছতি ।৷ সহ जुम्बीन निञ्जि जङ्ग्णीः वंडालि বেদাভিছিত নোশ সহসুণ ভার তোক্তেনেত্যर्थः॥ 🕸॥ जुत्रभग्राण দেবতাত্বাৎ পূজা কাৰ্য্যা। যত षाच दिरहरः। जीर्थायजन स्वान खक वृ**ष्ट्वाभग**र्भ रिक्षः। मुक्कमा भू खोन फा**लि महमा मा**ग्राठि जुद्रः ।। তीर्थः अधिङ्क्षेः जलः । आगञ नः रिवाधिष्ठिः शुक्रवाखनाकव গ্রীশৈলাদি॥ 🗱॥ নিম্বশশ্র বরা (व्यायः कवानी जवनक्यः। का-রো দিশৃ হি রামে যু ত্রিন ত্রে কন-(मा २ मकाः ॥ महामकीकृडः চুর্ণ পুভুগে ভক্ষবেমর:। একাহি-ক ছ।ছি :ছ তথা ত্রিদিবসজ্ব ।। চাভূথিক• নহাঘোর• সভড• সড **ও· হি** বা ॥ ধাতু ছঞ্চ ত্রিনোবো-•থ• জুর• হ'ন্ত চ মানব•।। নিয়াদি দুৰ্ণ:ইভি বিষমজ্র।বিকার:।া#।। ইতি ভাবপুকাশঃ॥

পু॰ শিবঃ। ইতি হা-विषग्नगगनः द्रावनी ॥ विषयन्त्रः श्रु नर्भशत्रकः। वानिवा ইতি খ্যাত:। তৎপর্য্যায়:। बाङ्ग-नी २। ইजि क्रोयद्रः ॥ वियमभय ) जि विषमानागङ। বিষমকপ্য•) ইভি সিদ্ধান্তকৌনুদী॥ विष्मण्यी ) जी शक्तराकुनी। বিষমর্ঘনিকা ∫ ইভিরাজনিষ্টাঃ।৷ विषयविज्ञागः भुः व्यवस्थाः मः। যথ।। যত্তুতির এব বিভাগ ন্থ্বস্তে তত্ৰ বিষম্বিভাগাভাব মাহ মনু:। ভ্ৰাতৃণা মবিভক্তানা॰ यमुर्थान ज्यद मह। न एक ভাগ বিষম পিতা দদ্যাৎ কথ-**ध्वन। ই**তি দাযতঞ্জা। বিষম্ভ: ত্রি অসমানস্থিত:।ইক্তি (क्रिट् ॥ উপপ্লাদেশছ:। यथा नात्रमः। অপाथ व्यवहात्रक मृत्जा मात्नामात्था वुठी विवसङ्गण्ड ना-

ব্যবহারত ভু॰।। বিষমশিষ্ট: পু॰ দোষবিশেষ:। স চ অনুচিতশাসনক্প:। নহ-বৈষম্য:। যথা। অত্ত কামত এব চান্দায়ণ তওক্যুয়ো বিষমশিষ্ট-

(मध्या न हिजासाख्यसम्भः॥ वि-

यम् । উপপুরদেশ হা:। ইতি

ন্ধেৰ ইচাবিকল্লাসম্ভবাৎ কানত শ্চান্দ্ৰাষণ অকানত ভণ্ডক্ ছু॰। ইতি প্ৰায়ণিচভত্তভ্তুণ।।

दिषगायुदः भुः कानरहतः। ইতি হলायुदः॥

বিষনাক্ষ: পু॰ শিব:। ইতি তি কাওংশয:॥

বিষমীয়ণ ত্রি বিষমানাগত। ইতি সিজান্তকৌমূদী॥

বিষন্তি: পু॰ ফুপবিশেষ:। বিষ গোড়ি ইতি কড নিক্লে ইতি চ হিল্মী ভাষা। তৎ পর্য্যায়:। কে-শমুপ্তি: ২ সুন্তি: ০ রণমুপ্তি: ৪ ফুপড়োড়মুপ্তি, ৫। অস্য গুণা:। কটুত্ব-। তিজত্ব-। দীপনত্ব-। কফ বাত কঠানব রক্তপিতাদি দাহ নাশিত্ব-। কচ্যবৃঞ্চ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্ট:।।

বিষন্ত্য: পূ॰ জীবজীবপক্ষী।
চকোর ইভি খ্যাভ:। ইভি জটা
ধ্য:।।

বিষয়: পু॰ চক্ষুর। দিপু। ছঃ। म ত্ ক্প শব্দ গন্ধ রস স্পান্ধপা:। তথ পর্য্যায়:। গোচর: ২ ইান্দুযার্থ: ৩॥ দেশ:॥ আশ্য:। ইত্যমর: ॥ 
।। কাম্মতে কিত্যপ্তেলো বাধুনাণ বিষয়া হথা। তক্ষ কিতি

ৰ্গন্ধ হেতুন্না ৰূপবতী নভা । ষ্বিবস্তুরস্তত্র গ্রোপি দ্বিদ্বো মত: 11 স্পর্শ স্তম্যাপি বিজেয়ে। হানুফাশীত পাকল:। নিত্যা নি-ত্যা চ সা ছেখা নিত্যা স্যাদ্ণু-লক্ষণা।। অনিত্যা তু তদন্যা স্যাৎ সৈহারখব যোগিনী। সাচ ত্রিখা ভারে হেছ্ ইন্দ্রিখ বিষয় স্ত-था। (वाभिशासि अंदरफ्र हेन्द्रिय॰ ভাগ লক্ষ**ে** । বিষয়ে হাণুকাদিন্ত বং 😘 উপাছ্ডং ৮ৠ, ২৭: শু--পশে, জলে নধুর শী**তলৌ** । सुठ ७ ब पूर्व दृष्ठ भाग्मिशिक सुमा হুত•া, নিজ্যভাদি পুথমবৎ কিন্তু দেহ ম্লোনিজ । ইন্দ্িশ রস্মণ निक हिंगामि वियाया म छः ।। 🕸 ।। স্পার্শ উষ্ণ স্তেজসম্ভ স্যাদুলা শুকু ভারর•ানৈমিত্তিক দুবস্বস্থ নিত্য-**छानि जु न्र्ब**हर् ॥ है। न्यूयः नरमः व-💲 স্থিপাদি বিষয়ে। মতঃ 🗱 অপা-ক্রান্ফাশীত স্থান্ত প্রনে নতঃ ॥ ভির্ত্যপ্রমনবানে কডের : ক্পার্শা-দি লিঞ্ক:। প্রবিমত্যভাদ্যক্ত॰ (नक्वतानि कुणि न्यूगः ॥ भागा-িন্ত মহাবাৰ পৰ্যভো বিষ্ধাে ন-ভঃ: হতি ভাষাপারছেজঃ ।। 🕸 🛚 । বিহ্য ইটিড ! ভোগসাধ্ন বিষয়ঃ

। मर्दानित क् कार्याः व्यम्धादीनः | दिविधि क्ली हैन्द्रियः। इंडिस्निमिश य ह कार्याः यहपृक्षादीनः उजन्ताः दिविधी जि दिविधामङः। इंडि **ভোগ• সাফাৎ** शहाश्वरा अन्य-ত্যেব নহিবীজ পুষোজনা ভ্যা•বি না কস্যচিদুৎপত্তি রন্তি তেন 🖖 **্ৰপুকাদি বুন্ধাণ্ডান্ত লহ** দেব বিধ-· যো ভবতীত্যৰ্থ: : ই<sup>তি</sup> নিজাৰ . **गुळादणी ॥ #** ॥ चिछ्ले बारे 🕾 . **इंटि ७३**७४ शकाः॥ भग्रङः॥ **শुकः। ই**ज्रुलग्रहयाधाः॥ जन-शरः। ইতি व्यक्ति। काषापिः। **ইতি শদ**রজ্বলী।। निवायकः। रथा। दिणाया हि विष्णयार्थः সিনোতের্বন্ধ উচ্যতে। বিশেষেণ भित्ना शे जि दिष्दरात्वा नियान-कः ॥ इंडि ७७ हादिका ॥ 🕸 ॥ वाद्याभाभ्यः। यथाः माद्राभाः न्ता जू राजात्को विवयी विवय ख्या । विष्णुषः कृष्टना आन् रा **ন্যাৎ নাধ্য**বদানিকা ৷ হথা গৌ র্বাহীক:। ইতি কাব্যসুকালে ২ **ऐह्नानः**॥ विषयाकानः ही छन्।। हे छ द्राकः নিঘট: ॥ दिवधार्थी भू॰ जाका । देवविकन करः॥ इन्द्रियः ॥ कारतन्तः । वि यानकन्त्यः। ३१७ (वर्गनी ॥

(मिलिनी ॥ विषयी पु॰ नृशिष्टः॥कामाप्तवः॥ বৈষ্যিক:॥ ইভি নেদিনী॥ ঘুনি:। ইত্যরবপালঃ। আরোপ্যমাণঃ। যথা। বিষয়তঃ কৃতেন্যানন্ সা महार मारादमानिका। विरुरिशा আরে:প্যমাণেন অন্ত: কৃতে নিগী-র্ণে হন্যমিন্ আরোপবিষ্থে স্তি সা স্যাৎ সাধ্যবসানিকা। ইতি কাবাপুকাশ: 11 বিষ্মপা ন্ত্ৰী অভিবিদা। ইভি ब्राङ्गिर्घण्डेः॥ द्धी বিহণ। ইতি শদ্-छन्तिका ॥ बी रेन्द्रगक्ती। हैंडि दिघलठा श्राक्रविद्येः ॥ विविवित्रा की विष्युभन्यः। ইঙি विवरिवन्धनान ही काया छत्र उ: ॥ वियरिक्ताः भुः दियह्मख्यवङा। ওবা ইতি খ্যাত:। যথা। বিষ-विष्ठा॰ दिखि अधीरक वा विष्टीव-हाः क जुलालावाहिद्वाहराभन वृष्तः। वियमा रेवह। मिष्टिक्ट नवः ইতি বা। ইতি ভরতঃ ॥ ডেংপ-र्यातः। ठाक्तिकः २। ३० प्रतः॥

हाङ्जिङः ७ नखन्तुः ४ कोणिकः ৫ক্থা ুসম: ৬ চক্রটি: १। ইতি करे। दब्रः ॥ व्यानगुष्टी ৮ बाक्ष्वाः ৯ জাক্লি: ১০ অহিতুণ্ডিক: ১১ ब्रानगुारु: )२ गाक् फिक: )o । इंडि नदब्रद्वावनी ॥ বিষ্বৈবিরণী निर्विया। ইতি बी রাজনির্হণ্ট:॥ विवनाल्कः भू॰ भगाकनः। व्यम्। গুণাঃ। গুৰুত্বুণ। বিষ্টস্তিত্বুণ। শীত-**ण**पुषः। ইতি द्राजवल्लाञः ॥ श्यिम्कः भूः ভূম্বোল:। ইতি ্রপুযোগ:॥ বিষশ্লী পু•্ভ্লরোল:। ইতি श्रवावनी ॥ বিষস্চক: भु॰ हरकाद्रभक्ती । ইতি হেম5ন্দু:॥ विषम्का भू ज्यातानः। ইতি विका अप्ययः॥ বিষ্ঠ্নী জ্ঞী অপরাজিতা॥ नि र्बिषा। इंडि ब्राजनिर्धिः॥ विषक्तः जि गत्रणनामाकोषधारिः । यथा। ७ ट्रुँ जः। मत्जा २यः इत তে कृत्र मर्व वृश्विक इ॰ विष्। शि श्रुणी नवनी उक्ष मृत्र्यवद्गक रेमञ्जयः ॥ मन्नी इन्हें क्ष हुं के स्वा भारत विन श्द्र । जिल्ला हेक क्षेत्र

नाह (लभाइ विषनात्मा ভবেছिय । পারাবভস্য চাক্ষীণি হরিভাল• মন:শিলা। এব যোগো বিষ হন্তি रिवन एउथ इत्वाद्र गान् ॥ रेम स्वव॰ वृश्यन हुन मिय मथाका मण्यूकः। বৃশ্চিক্স্য বিষণ হস্তি লেপো খ্যণ বৃষভপ্প ॥ ইতি গাৰুডে ১৮৬ ञ्यायः ॥ व्यिङ्डा ) की सननारम्बी । इंडि विषङ्बी 🖣 मस्त्रज्ञावनी ॥ विषश की (मवनानीना । निर्दि-ষা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। বিষা দ্রী অভিবিষা।ইত্যমন্ত্র: 🛭 বুদ্ধি:। ইত্যুণাদিকোষ: 🛭 বিষাজ্ব: পু॰ লল্যান্ত। ইড়ি ত্রিকাওশেষ:॥ वियाग क्री अरशेषवा। गन्नुम्बर ॥श्खिपष्ठः। ইতি भिनित्रो ॥ (का-वरष्ठः। ইতি एध्यहन्तुः॥ खा (मम्क्री। इंडि বিষাণিকা द्रज्ञमाना ॥ भाउना ॥ ५ई हेण्ट्री ।। স্মাবর্ত্ত নী। ইতি ব্রাজনির্ঘণী:।। বিষাণী জী ক্ষীরকাকোলী॥ অজ-मृत्री। इंडि भिमिनी।। वृण्डिकाली । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ তিভিডী।

इंजि मक् हिन्द्रका ॥

वियास

वि उब

विवासी मु॰ रखी। मृति रिकान इति दाक्ष विकेश यकः १८ प्रवर्षे विषयः । पृत्यः विषयिः भू सम्बद्धिनातः ॥ िव पर भू व्यवस्तातः। रक्षा विधायः भू अनः। इति भय-बाएर होर्न्ट वियामावनामः। इद्वापनी । विवन्**डमृत्य वि**।। मारमादिए। अ। वैजिरहर्वानमुः ॥ दियानम् । दी । जन्नाजकः । इछि बिरारण के भगानी नजा है जि । भवति कुना। द ेन्द्रिः।।

बिहानमः शुः नर्भः।ইভিশক্ত শহলিকাণা ভরতঃ॥ নানালুপ॰ 1177

िन्तु या जानाः। इंडि विनुस्ट া ইতি রাণাশুনঃ 🛚

बिया व ए॰ निका देखि एएय- विवृतः पूर विवृतः रखा। विवृ ্লেল । নিয়মাশকে বি <u>।।</u>

नाम दिला शहन दिल्ल उपमान-বিলানে প্ৰুক্তাইত তীতি বিলাহ অলিড্ডির পদ-লোপ শাস্ত্রনার রিতি পালা-বিব্যালয় হল ইন্দুলক্ষী। নি তিলুকেন গল্প ইত্যান্ত্ৰীকা-

李维明 1

पाः खाउटः ।

বিধা (ইভিরবেদিই): , সাংক্র বিধার বিধার বি भिन्न इति जानकात, १ वर्ज वित्यक जी सिनुदक्ष रेजानप्रतिकाः भागा। भेगपहन होते हारा हो है। भवतिषुका ॥ नर्भ एउटिएक । इंडिडनुबाफा त

्रित्र• ही भवादिन्तिरकातः। एट अर्थ्यरः । विनुदर २ । हेन्छु-ान्य व ८ । हेन्जि **म**पन्न हारमी ॥ रियार्गः भू मर्भः। इति अदः विद्यः छ। इति हानामुनः ।। রহারগাঁ। দিব্ভারে গ্লী । 🕴 দিব্ধঃ ৭। ইভিমুদ্ধঃ ॥ তভু हिन्द्रात । स्वर्षक्रिक विवाह । जिल्ली कृषा हाल

বিষাল্য । বিশ্বিষ্যা । ইতি । ইতা । বিষ্যা 🗢 । বিষয় 🛪 🔞 इस्त नवंगीः ॥

বিষ্যাঃ পুশু স্বর্থাইতি শ্রেন্ নেষ্ড্রান্ডলভাডী। হথা ।

গোল মধ্যে তথাপরা: ৷৷ ইভি তিথ্যাদিভত্তু•।। #।। তে ত মহা-वियुव बणविष्व नामच्डा॰ करमण **'খ্যাতে। যথা। বিষ্বাভ্যা॰ ব**ং **जद्रः ज्ञाहित्रि नद्**विहाः २७ । । নহাবিযুৰ নাখ্যাভ কৃভিভি रिण्डब हिङ्क्षिडा छथा भाष्ट्र विषयः क्रवामाधिन हिङ्कि । इंडि नम्द्रज्ञादनी। 🗱। विवृवाद्रञ्ज কালে৷ যথা। নৃগসংক্রান্তিতঃ পুরু• পাশ্চাতার দিনান্তরে: একবর্ষে ১৩: পঞ্জলনান ক্রেণেত।। ষ্ট্রাপ্তি दर सद्गातक िया स्थापयन द्रावः । अः हक् शक्ष दिन ना नाइस्तः। करार । वुटक्तिभगत्र दहर भा मृत्यान द्राव धुवि । ककि साहस ल उद्दर्शिका प्रक्रियायन ।। य বনা-শহনেণৈৰ বিষুকাঃ <mark>ন্ত্ৰণ- তথা</mark> । রবিদ কান্তিতো দেব তুল্যো রভিত: পুন:। বিষুক্ত নীন কন্যা-र्ष्व (इकाक्षीम्न **मका**यरक। निम-यानाय भीगाकात्ययाकः भावि কং শতে ॥ ভতে। ব্যার্ছ পর্য; ভ মশীতি: পল ভাঙিনী। নিথন। জ• চতন্ত্রি শৎপদানা বর্দ্ধতে জ্র-बार ॥ कई है। प्राप्त यह विश्वार यि-हार्बाउ हा**मी उक**ा कना। <del>पांड</del>

দ্বিনবতি: ক্রমাৎ তুট্যতি বা**সরে** ৷৷ कन्यार्कापुक्रनीयानः (वाष्युः भूर्व ক্রমেণ ছি। দিনে দিনে ভাগছারা-त्रानः (वाष्ठः हिवानित्नाः ॥ এ% सान कु रहे। ठुक्ति भाम वि र्गः । यद्वश्चि वट्मद्राप्तवः ७७: স্যাৎ ৰেভিশাংশকে॥ পুন স্তন্ত্ৰৎ मद्याः खद्य अवः मध्यमानिक । ইভি জ্যোতিস্তম্বু॰॥ 🗱 ॥ অন্চু 🛭 ন্ব সংক্ৰত: পূৰ্ব পাশ্চাভারা मिनाउद्भ। माভिल्याम् प्रान्तवास्तर-न विष्णाहस्तुषः चाद्यः ॥ द्राधाः भ-हिस्य सोखि हिस्स मध खिली मह । নিষ্কার্জ্রণ ভল্ল কর্ণ গ্রেণ দি-বানিশালো ভভঃ পুডিভিন্ন েলা সপাদ ত্রিপলাল্মিকা ৷ হর্জতে নেষ বিখাংশ পৰ্যান্ত হল মাৰ্যতঃ ॥ তथा हैक्रुष्टाडमयंडि॰ ात्नान ত্রিপলান্থিকা। ভাদুগাবাচপর্য্য-छ भोलक भूनिका भका॥ ठठः করটে বিস্থা শপর্যন্ত পুত্রছ জ-गाए। जभार भणभारान (वणा-ত্ট্যতি নিশ্চিত ॥ তাদ্ভাদ্যত-প্যান্ত পাদোন ত্রিপ্লাত্মি মা। তাদৃগাখিন শেঘান্ত হরনেত্র প-वाज्यिका॥ दिवासान मेख या है खाङ। द्वारकः श्रुमानकः । रेवनाः

शासी मिवानानः द्राजिनानः जुलाः सिष् ॥ यहेवडिवर मद्रास्तवः छ छः महार हाममाः मक्त । भून छहरः मद्राः छहर छ छ क्राममामिकः ॥ इंडि मर्क् अपूकावनी ॥ विद्वर ली विद्वरः। इंडिमद्रः ॥ विद्वरान्। ॥

বিষয়ে: পু• সন্তবি•শভিযোগান্ত প্রপথন্যোগঃ। শুভক্ষাণি ওসঃ ৰ গুণ্ড নপ্ত স্তাজ্যাঃ। যথা। ভ্যানে शक्ष ेक सु नश्र भाग ह ना फिका: াল ও ব্যাঘাত্রে: বট্চ নব হর্ষণ ৰজুশো: ॥ বৈধৃতি ব্যতিপাতৌ চ अभाखी भविषक्षींगर । इंडि मर क् गुमुकारली ॥ 🗱 ॥ उत्र जाउ-क्न । विषयुत्यात्या यनि कन कारण कार्या बटाचा मन्ड छ-দানী । সন্তুং কলবাত্মত্র সৌথ্য ब्रह्म गृहभेऽ नियां । दिश्यो सग-থ্। ইতিকোষ্ঠাপুশীপঃ॥ 🗱॥ दिखात्रः॥ शु जिबक्तः॥ क्यकाक श्राप्तकाः ॥ (विशिवाः विकास्तिः । ইতি মেদিনী।। বৃক্ষঃ ! ইভ্যন্তবঃ।। অর্গলা। ইতি ভরত:।।

বিষ্ণ্তী পু• অগলা। যথা । তদ্বিষ্ণ্ডা **২**গল• ন না। ইড্য मत्ताको कनावेषात्रगराष्ठः जगंनः एउकाम् ७ इति थाउः ।
छ कनावेः विष्ठञ्ञाति द्रमिक् इति गुरामिद्धात्रेन् छिषक्षे अगुः क्षात्र बार्णकथन स्नड्ट दिष्ठ-क्षात्र बार्णकथन स्नड्ट दिष्ठ-क्षात्र बार्णकथन स्नड्ट दिष्ठ-क्षात्र बार्णकथन स्नड्ट दिष्ठ-क्षात्र विश्व मून्नाठः। दिष्ठ क्षा यक्तनिव्यवस्थः। देव छुछः । इति मुक्तेः॥ दिष्ठ क्षात्राण्डस् नात्र विद्यात्र भू विवक्त्याः। कः भागेष्ठ भू छात्र । इति स्मिनि कर्मनाट विषय हिन्नाठः। इति

বিষ্কল: পু॰ পু।মগুণ্র:। ইঙি রাজনির্ঘট:॥

विद्याः अ भागी । इन्छापतः ॥

विद्याः जिल्वित प्रयुव एक् छान्यः।

व्यानम् । दिक्ष व वर्गः भुजन काक्वान्याः। व्यदः भी न प्रयुवाः
सम्याग (इन्छान्यः।। इन्छि व्याकः
वल्लानः।। अ। अथ विद्याः।। विव्याः
वर्गाः। अ।। अथ विद्याः। व्याकः
वल्लानः।। अ। वर्षमा व्याविकः
विव्याः। विविद्याः। व्याकः
व्याक्ति विद्याः। विविद्याः समुनाञ्चवाः।। विविद्याः। विविद्याः समुनाञ्चवाः।। विविद्याः। विविद्याः विद्याः।
व्याक्ति विद्याः। विविद्याः

। सनित भगेरवया देखि भारक । विद्या न्युताः मीखाः सन्तराः कर्षेणाकिनः। नवात द्याः दिस्स रशः भथाः छ चयाः स्वाः ॥ देखे जावभुकामः॥

বিষ্টা ভি পুৰিষ্টা। বিশ্বয়তোঃ ক্তপুত্যযেন নিয়ম: ॥

বিষ্টপত ক্লী ভ্ৰন । ইত্যাসং ॥ পিওপণ পিউপ:। ইভি ভট্টা দান্তে ৰূপদ্যত ॥

रिधेष्ठः 💇 भुडिदक्तातारा বিশেষ: । ইভি মেটিনী । ম ভ वारविद्यानः। ७गः वकः । यार् **। আফে শ**ূলা হিলিফে এন্ড স্ত ता विक्यः विकास पार्व साब सम्पान । व देखा पान र सरास्था । वाष्ट्रा । स्विलाद्धः। अत्यः भ्रह्मः व कः নে নিউড সঞ্জা সুসা কি क्षामिक्त पृष्ठे समूब विक्रमः स्त्राः महत्त्वाक या रथायः अववन 🕶 ्रि.मः अयः दिकादः जाना स्वारक के प्रवासक धानार भार । ७ विव ७ ४७ तम्म प्राच च राष्ट्र शुडिषात्रम (षादा विश **৯**য়ে আললি দুল ল'ব। **চক্**র• ए८३५ उन्यात विराडनकृ॥ वि∙ 🛚

ম্বাভন প্ৰাৰ্তিঃ এঞাল পাণ্ড मयस्य भारत हाइ को की क লীৰ মুলে প্ৰোম্ভ্রা শক্তে িক্ষা খাসাক পশ্বাদানের ভর ও **७थानतमाङ्गि ह वक्तगानि ॥** शहास्त्रात सह्यस्यायः । प्य-লদোজানি আংমান বাভনিয়ো-वारीति। का जानस्थानावर्धना िविध्याम स्वासुख्य कि किरमाञ् थियाः । अधारानः जाना विकिथना। यावारा व नि :बार्यान्य क्षात्रकं विके **घटः।** ए,र्याक ज्या स्टार्स वर्षि के हानू-लावर ॥ विल्लाङ महत्व ङ् बिन राम्यल्लाहेर : क्राह्मिक म्ह्राप्त ारण पाला पाँउ दिला वर्षः । ্ৰটি: মূজ্ৰতি: ৪ মলাৰালাণ জ**ি**- इंग्रीय पालि वडाट निवार । मण्डणी रावसाङ्गाल क्या वा राष्ट्र छात्र । अ দুরশা কও লগা পুরনোতা হ তথ্য श्वाद एयवीक्रीड (२१दर थिन) বেড়া লগ্নীকৃত• ৷ সৈতা গিমরদং খ্যানা ভালতের মধানি বাল নাম-देवन भूजदी अ सूकत्हान्यती वि বিং ৷ ভুলুটোলোডাছ লেখ্ বেংং स्ति भुजस्य ॥ वनाविष भुवक्षीण मधीदास्तान् विदीन् ।

विजनीत्रावरतारवारचा मुक्ष्रेष्ट मृ শো র্জান্য স্থ্যাৎ সুথেন তস্যাগ্রে कथा कथाः श्रियाः । ছिक्काञ् ঘাতজে ভীক্ষা বাণ নন্যার্ক্ল দশীকঃ ॥ পুবর্ত্তবেৎ ক্ষুত্ত সক্তণ স্লেছ স্বেদৌ . পুশীলযেশ। তীক্ষণ মরীচারাজিকা-দি। উদ্ধারস্যাবরোধে তু দ্রৈহিক। ধ্ম মাচরেৎ ॥ ছর্দ্দিনগুছ সংজা-তে ব্মন গ্লন্থন ছিত। বিরেচন চাত্র মত• তৈলেনাভ্যঞ্জন• তথা II বস্তি শুক্ষিকরৈ: সিন্ধা চতুর্গুণ জলা পনঃ। আবারিনাশাৎ কুথিত পী **७**वचः भुकानजः ॥ तमस्ययुः श्रिया नार्गाः शुक्कारायर्जिनः नतः। उन्हाः ভ্যকোৰণাছক নদিৱা চরণাযুধ: !! শালি: পয়ে নিক্ছণ্চ হিত্ত মৈযু ন দেব চ। ক্ষুদ্বিভাত সন্ভূতে রিখ মুদে তথা লঘ।। ৰচ্য মল্প হিত खकाः भग्नः (मवाः न्भिक् य<u>र</u>। ত্যা বিধা**ত স**ণ্ভূতে শীতঃ নর্বো-বিধি হিতঃ॥ কণ্র শিশির• হল্ল• शिरवरज्ञायः भरेनः भरेनः । शुप्रया भ व् ज भारता विभागः भद्रभोतः नः ॥ निमृद्धगदिषाखात्यं लिदः क्रीद्र भिडायङ । जुदारुम ज्ला रहाव हिजाः े (मुख लियाः कथाः ॥ 🖶 ॥ वाखानित्वयदियाङ्कविष्यः 🛚

ना मुमावर्खानाः विकिৎ मा मिडियाप ক্ষাদি স্পিত বাত জনিত্স্যো-**मावर्खमा किक्टिमा माञ् । हि**ङ्ग माक्षिक मिक्क्तिशः भिष्टि र्वर्डिविनि মি হা॰। ঘৃতাভ্যক্তা॰ গুদে ন্যুস্যু षूरावर्डविनाणिनी ।। क्ववर्डिः॥ यमन शिश्रमी अक्ष वहा लोबान्ह गर्मभाः। ७५ कीव्र गमावृक्ता कृतव-र्खि विष्टामिखा।। सनस्य नामियर्जिः ॥ 🕸 ॥ খণ্ডপল• ভিবৃতাক্ষ: কৃষ্ণা-कर्वः घरता क्टूर्नः। नुराशाह्यकाना स-भूना विভाजभनकः नात्रा जिद्या**ः।**। अजन्तात भूबीरक (मय॰ दिरेक्क क দাবর্ভে।মধুর• নরপতি যোগ্য• চূর্ণ नाताहकः नाता॥ नाताहक्षे ॥ 🕸 🛭 সব্যোষ পিপ্ললীমূল তিত্তভী চ তিত্রকং। তদুর্ণ ওড়েসংমিলু ভক্ষ-(ए९ भाउकिष्यंड: ॥ अउम्बज्ज-क्षेत्रः माग्ना वना वर्गाग्निवर्ष्टमः । উत्ता-वर्ड श्लीर खन्म (माथ माजामगः **পर•॥ ७५। हेक•॥ ३ ॥ म्नक•** मुह নাদু ক বৰ্যাভূ পঞ্নুলক । ক্ত-মাল ফল• চাপ্সু পজ্বা তেন ঘৃত• शहरा। उर भीजः नगरर किशु-ন্দাবর্ত্ত মশেষতঃ। পঞ্নুলক নত্র वृह्र । मुक्षग्नकामाध्यः ॥ #॥ प्यथ व्यानाइना हिक्टिना। पुन्र

कावन कार्य।दामुमावर्डह्वी कि যা•৷ আনাছেপি চ **স**হী ভি বিশে-ষ শ্চাভিধীয়তে॥ ত্রিবৃৎ কৃষণ হ রীতক্যো দ্বি চতু: পঞ্চভাগিকা:। ख्डिन जुन्छ। विविध शतस्त्रानाश बुद्धन• II वर्खि जिक्हे रेमस्त मर्यभ गृरुष्म अर्थ समस्य नः । सथुनि গুড়ে বা পক্টৈ নিছিতা স্বাঙ্গু প রিমাণা:।। বত্তিরিय দৃষ্টফলা শ-নৈ: পুণিহিতা গুদে ঘৃতাভ্যক্তে। व्यानारहामावरखों न्यमयिक कठेत्र• ख्या खन्म ॥ विकरेकान्यावर्जिः ।। #।। ইভি ভাবপুকাশ:।। বিষ্টৰ্ম্মী ত্ৰি বিষ্টম্ভৱোগজনক:। यथा। विष्णा धत्रवा चक्या विष्टे ন্ত্রি সৃষ্ট মাকতাঃ। ইতি রাজবল্ল-ভ:।। বিষ্টম্ভরোগবিশিষ্টশ্চ।। विश्वेत्रः भू॰ विष्ठेभी ॥ पर्ভगृष्टिः॥ भीठाम्यामनः। इ अप्रद्रः ॥ व्याप्ति-না জশাসনাদিগুছ:। ইতি ভরত: ॥ 🗱 ॥ विश्वेत्र नक्षण मारु । विश्वेत्र स সাৰ্দ্ধ দ্বিত্তয় বামাবৰ্ত্ত বলিতাখো-মুথাগু। অসংখ্যাত দর্ভা:। তথাচ গৃহাদণ্যুহ:। উদ্ধ্ কেশে। ভবে-দুক্ষা অয়কেশন্ত বিষ্টর:। দক্ষিণা वर्ज्यका वामावर्ज्ज विष्टेदः इंडि॥ इल्हागभित्रिणिष्टे । मर्ज

সংখ্যানবিহিতাবিষ্টরাস্তরণেয়পি
। এবঞ্চাপঞ্চাশন্তি ভবেদুকা ভদছেন ত্বিষ্টর:। ইতি যদি সন্লং
তদা শাখ্যন্তরীয় । এতেন বিষ্টরে
পঞ্চবি শতিসংখ্যা ভবদেব ভউোক্তা নিরস্তা। এবং বিষ্টর গৃহণ
হস্তাভ্যা মপি যদুক্ত ভদপি নিরস্ত ।। যত্রোপদিশ্যতে কর্যা কভুরিস্থ ন চোচ্যতে। দক্ষিণ স্তত্র বিজেয়: কর্মণাং পারগ: ক্র:।
ইতি ছন্দোগপরিশিষ্টাৎ। ইতি
সংস্থারুতভুং।।

বিষ্টরশ্বা: পু॰ বিষ্ণু:।ইত্যমর:।। বিষ্টরা স্ত্রী গুণ্ডাসিনা।ইতিরাজ নির্ঘট:।।

বিপ্তক্ষ। স্ত্রী স্বর্ণকেতকী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। বিপ্তাক্ষ্য ইতি চ কুচিৎপাঠঃ।।

বিষ্ঠার: পু: ছলেন বিশেষ:। যথা বিষ্ঠার: পড় ক্রিছল:। ইতি যত্ত্ব-পুকরণে দুর্গাদাস:॥

বিষ্টি: স্ত্রী বেতন বিনা হঠা দ্রারোদ্ব হনানিল্লেশ:। বেগার ইতি
খ্যাত:। তৎপর্য্যাব:। আজু: ২।
ইত্যনর:।। হঠান ভৃতিক: লেশো
বিজাতকপো বিষ্টিরিতি ভউবানী
।। দ্বেবেতন মন্তরেণ কর্ম করণে কর্ম

काबिन (ठ ड)(न)। विष् कर्य करत्। বিষ্ঠি: খ্রিষা মভূতি কর্মণীতি ক্রু: । इंडि छंत्र डः।।।।। (व डन•।। कर्म । इंडि स्मिनि ॥ जन्। ॥ वर्षन । ইতি বিশ্ব:॥ প্রেয়ণ । ইতি হে-भवन्तुः ॥ 🕸 ॥ मा व छन्। ववारम् إ कारण क्रावाडर्गड मध्य क्राव शक्षिकायाः उन्तरा व्यक्तः मृतरः । यथा। यव वालव कोलव टिडिन গর বনিজা: সবিষ্টয: সপ্ত। শঙ্গনি চত্য়নাগাঃ কিন্তুমুক্ত পুরাণি কর ণানি ॥ শুক্লাদি ভিথিশেষ জাৎ পঞ্চনে তত্ত্বরীয়কে। আদ্যন্তার্জাৎ क्रान्य मु द्रश्चावृद्धा ववामयः ॥ একাদশ্যা শচতুর্থ্যাশ্চ শেষাজে শুন্লপক্ষকে। অপ্তমী পৌর্ণমাস্যো-क भ् बीरक विष्टि बी बि छ।।। क् क পক্ষে তৃতীযায়া দশন্যাশ্চ পরা-ৰ্জতঃ। সপ্তন্যাশ্চ চতুৰ্দশ্যাঃ পূ-ৰ্বাচ্চে বিপ্তি সম্ভব:॥ বিহায বিষ द्योनु। विश्विः **मर्बब व**र्ड्ड्य । বিপ্তিশোষ ত্রিদণ্ডে হি পছে কার্য্যণ कवावरः ॥ 🗱 ॥ कर्ममुकाला । नाए। स भक्ष वहनः गलक खरेशका বক্ষো দলৈক সহিতা নিয়ত চত-সু:। নাভিঃ কটিঃ ষডথ পুছলতা চ তিসে। বিষ্টে প্রুবিণ নিগদিতোক্ত

বিভাগ এষ: 11 মুখে কাৰ্য্যপুত্তি ভবিতি মুরণ• চাথ গলকে ঘন্মানি র্যাদস্যথ কটিভটে বুদ্ধি বিলশ:। किंव नी जीरमान विजय मथ भूरह ह জগদু: শরীর ভদাবা: পৃথগিতি कलः প्रम्नयः ॥ मन् यम् मृति जिथि यूग सण लिव छन याथाज्ञ ভिषियू न्दीएप्राः। 78। ৮। १। २८। ८। २०। २२। ७। व्यावा**ङ दि-**ভি রেব। পৃঠে শুভদা পুরভুশুভ**দা** ।। পূর্বায়্যাঃ পূর্বায়্যাদি দিল্লখী ভবতি ইত্যৰ্থ: ॥ # ॥ একেন ছীনা দ্বিগুণা তিথিস্ত সপ্তাবশিষ্টণ করুণ্ণ ववामि । भृद्धं भाव (भाव समः दि-**म्मा**रव। धिमार्खना ठन्द्र विदर्जि ३। ह ।। কিন্তুর সংজ্ঞ করণ পুদিষ্ট মা-रि खिथ् ब्राहि मन्त्र मरेन्व। छेशा-छ। (मान मञ्जिष्य मार्ग भूर्ब छन् জুরাদপরে চ নাগ: ॥ 🕸 ॥ ইন্দু কল্লজ চিত্ৰাৰ্য্যন ভূ শূিষ: স্বন্য ৰবাদে: । ক**লি** বৃষ ফণি মাক্তা: পত्यः सञ्जाहिः ॥ ववाम्यदिल কথন• ॥ 🕸 ॥ পৌপ্তিক হ্ছির শুভা-নি ব্বাখ্যে বালবে দ্বিজহিতান্য-পি কর্ম। কৌলবে পুমদ মিত্র বি-ধান• তৈভিলে শুভনভাশুযকর্ম :: গরে চ বীজালুব কর্বানি বণিজ্যাপ হৈ হাঁ বিণক্ ক্রিয়া চ। ন সিদ্ধি
মাপ্রাভি কৃত্ত বিষ্ট্যাণ বিবাভিযাতানিব্ কর সিদ্ধি: ॥ মন্ত্রৌষথানি শহনৌ চ সপৌপ্তিকানি গো
বিপুরান্ত্য পিতৃকর্ম চতুন্ধদে তু।
সৌভাগ্য দাকণ কৃতি প্রুর কর্মানাগে কিন্তন্ন নান্নি শুভপৌপ্তিক
মক্লানি ॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বং ॥
বিষ্ঠিল ক্রি দ্রস্থানং । যথা । বি
স্ক শনি পরিভ্যা: স্থলায় । এভ্য
স্থলাস্থলায় যাং স্যাৎ । বিষ্ঠলং
সপ্তলা শমিষ্ঠলং পরিষ্ঠলং । ইতি
সিদ্ধান্তবৌনুদী ॥

विशेष खी विविष्णुकारतरणाम्सत्त 

किष्ठि या। जर्म् भर्यायः। जिहातः

र व्यवस्तरः ७ व्यम्न १८ व्यक्तरः ७ व्यम्न १८ व्यक्तरः

गृथः ७ भृतीयः १ वहंस्यः ५ विहे २० । इंडि कहाथतः ॥ ज्यम्थः २० पृर्वः २२ कलः
२० मनः १८ । इंडि व्यक्तरः वर्षी ॥
किस् १८ भृजिकः १७ । इंडि जाकनिर्विष्टः॥ अ। उप्पर्मनित्यस्या यथा
। न नशाः जिय भीरक्षा भूक्यः वा न व कमावन । न व मूजः भृतीयः वा न व कमावन । न व मूजः भृतीयः वा न व कमावन । न व मूजः भृतीयः वा न व कमावन । न व मूजः भृतीयः वा न व स्वात्यक नाभ्य विज्ञ नाहत्य । नाहिष्टेः मःविष्णसिक्तः न नदः यान नाहत्व ॥ इकि कोर्या छै-भविकार्ग १६ अवश्यः॥ सः॥ छ-पूर्मिविषानः भूतीय भुक्तिःकृत्र स्वत्या पृष्टेवाः॥

विकु: भ् व्या:। इंडि मदमाना ॥ শুদ্ধঃ॥ বসুদেবতা। ইতি ধরণী ।। क्ष्मं नाञ्चकर्ञ् मृनिविश्नयः। रथा । मन्जि विक् साद्रीज राज्जवास्ता-শনো হঙ্কিরাঃ। যমাপত্তম সমূ-র্ত্তাঃ কাত্যায়ন বৃহস্পতী 🛚 পরা-শর ব্যাস শন্ত্র লিখিতা দক্ষ গো-তমৌ। সাতাতপো বশিষ্ঠশ্চ ধর্ম-শাস্ত্রপুযোজকাঃ॥ ইতি যাজ্ঞবল্ল্য-স হিতা।। 🗱 ॥ বুদ্ধণোত্ত পবিশে-ষঃ। ভদ্য ব্যুৎপত্তি র্যথা। বেবে-ঙি ব্যাপ্নোতি বিশ্ব॰ ব:। তেও ভি সিঞ্চতি আপ্যায়তে বিশ্ব মিত্তি বা। বিষ্ণাক্তি বিযুনক্তি ভক্তান্ মাযাপসারণেন সংসারাদিতি বা । বিশক্তি সর্ব ভ্তানি বিশন্তি সর্ব ভূতানি অৰেতি বা।। হয়াহিখ-মিদ• সর্বণ তস্য শক্ত্যা মহাত্ম-ন:। ভেমাদেবোচ্যতে বিফু বিশ-भारताः भूरवन्यनार ॥ इंडि विकू **शुज्ञानः। ইত্যমন্ন চীক্ষাः ভর**া!

खरणर्यत्रायः । नात्रायमः र क्यः o देवदार्थः । विश्वेत्रण्याः e माद्या দর: ৬ হারীকেশঃ ৭ কেশব: ৮ भाषवः रु खन् २० हिन्छातिः ३५ পওরীকাক্ষ: ১২ গোবিন্দ: ১৩ গ-ৰুডধুকঃ ১৪ পীতান্তরঃ ১৫ অচ্যতঃ 28 मार्क्श 29 वित्रक्रितः 28 ज-নার্দ্দনঃ ১৯ উপেন্দু, ২০ ইন্যাবরজ: ২১ চক্রপাণিঃ ২২ চতভূজিঃ ২৩ প-ঘ্ৰাভঃ ২৪ নধ্রিপুঃ ২৫ বাস্থেবঃ २५ विविक्रमः २१ रेमवलीबन्समः २५ শৌর:২৯ গ্রিগতিঃ ৩০ পরবোর नः १५ वनसानी १२ दिन्सुनी ६० सम्भावाजिः ३३ व्यायाक्षकः ८० वि শস্ত্রাঃ ৩৬ কৈটভজিৎ ৩৭ বিশ্ব ৩৮ बिक्टनमानुनः २०। इस्प्रमाः॥ প্রাণপ্র্ব: ৪০ বৃহি: ৪১ শভ-दाना ४२ गराभुकः ८० अक्ष्र्यः ६३ জণয়াথ, ৪৫ বিশ্বর্ণ: ৪৬ সনাত্র: ৪৭ নহান্দঃ ৪৮ রাহু ভেদী ৪৯ বাননঃ ৫० मिरकी बंगः ७३ श्रीनिवागः ६२ ष्यात्रः ৫० वामः ৫३। ই 🧸 🕫 हो। यदाः ॥ 🏝 হরি: ৫৫ কংশারি: ৫৬ নৃহরি: ৫৭ বিভ: ৫৮ নবুজিৎ ৫৯ ন্থস্দনঃ ৬০ কান্তঃ ৬১ প্রুবঃ ৬২ খ্রীগর্ভঃ ৬৩ আকর: ৬৪ আনান ৬৫ আধর: ১৬ খ্রিনিকেতনঃ ১৭ খ্রীকান্ত: ১৮ খ্রীশঃ

७२ गुड़: १० मुद्रकी ६ ब्र: १५ जनि-भाः १२ भनाध्यः १० नन्ता बाजः १८ নর সিংহ: ৭৫ ইয়েশ: ৭৬ গোপাল: ११ नक्तनस्तः १७ नहक्ति १३ नागगर्डः ४० गिष्ठितः ४) किठा-बिबः ৮२ अउधाना ৮० मणविन्तः ৮৪ भूनर्बनुः ५৫ जानितन्तः ५५ 🗐 -वद्गारः ४१ मर्मुकमाः ४४ विशाट ৮৯ উজুদেবঃ ৯০ ছরি: ৯১ গুরু 🚉 22 राष्ट्रिक 20 व्यक्ति है नुष्य र 28 व्यक्त माबिः २२ ननारमानी २५ मृतः २१ हान्त्रम्थ्यः २৮ (हत्याः २० **भ**-जावजी २०० कानतमंत्रिकः २०३ (धनुकाद्धिः ३०२ (नाम्भिकः ३०० বি রিক্টিঃ ১০৪ ধরণী ধরঃ ১০৫ বছ-मुर्खा २०५ वक्षमानः २०१ एडाननतः ১০৮ ব্ৰান্তক: ১০৯ ন্থারশ: ১১০ दांबदम्मः ३३३ ब्रन्थिः ४३२ वृदा-किन: ३३०१ देखि नद्वज्ञावनी ॥ ভিকঃ ১:৪ দাশার্ছ: ১:৫ অন্ধিশন-नः ১১७ हेन्स्राम् जः ১১१ नद्रायगः ১১৮ खन्भयः ११२ गञ्जश्लवः १२० जान-चुक:)२)यङ्बिन्तुः )२२न्नास्त्र**न**,)२० বিভূ. ১২৪ মার্জ: ১২৫ ছিন: ১২৬ স্কৃ (सापक: )२१ इज्: )२४ वम्: )२२ मः ভাৰত ১০০মঞ্জকেশী ১৩১ৰজ্ঞা ১৩২ (द्या: ১০০ পুরিভূজ: ১০৪ আয় ुः

১০৫ পাঞ্জাयनः ১০৬ সুवर्गविनदः। ১৩৭ বিৎস: ১৩৮ দেবকীস্নু:১৩১ (गारभन्दः 18) (गावर्ष्कनथतः 18) यमुनाथ: ১৪২ शमाज्य ১৪৩ मार्क ভূৎ ১৪৪ চক্রভূৎ ১৪৫ শ্রীবৎসভূৎ ১৪৬ শন্ত্ৰ ১৪৭॥ ঋ॥ অস্য বধ্যা-দ্যো যথা । মৃধু ধেনুক চানুর প্তনা यमवाङ्किनाः। कालत्मि इग्गीवः **ण**कठोति है किंदे छाः ॥ क**ः**मः (किंण माली माल रेमन्त दिवित द्वाइवः । হিরণ্ডকশিপুর্বাণঃ কালীবো নর-কো বলি:॥ শিশুসাল ক্ষাস্য বধ্যা रिवनरञ्चन वारुनः। माञ्चा २मऽ भाक्षक्राना २कः औवर्ता २मिस मन्द्रकः ॥ शहा कोश्मानकी ठानः नाक ठक मुर्गनः। मनिः मान्छ কে। হত্তে ভূজমধ্যে তু কৌস্ত ভঃ ॥ ইঙিংহমচনদু: ॥ # ॥ ভন্য শ জনা-मानि शास्त्राख्य १४८० व्यक्तास সহসুনামানি চ নহাভারভীয় শাং खिलई शिष्ट्रेयानि ॥ 🗱 ॥ व्यम् न (जा दर्नक यथा। **यत्र**मान् प्रक्रिशिक উপান্ত্য চান্ত্য মেব চ। বাদ্দেয়ো यदः कारमा छ्निक्ष्वा यथाक्रमः॥ भूगव छए निहिट्युड्ट इँ मिं जू विकि मञ्जलाः। नावायण ख्या दुक्ता दिकुः भिष्ठा दबारबादे ॥ निङ्का ৰণ হরি দুভা নীল স্যানললোছি-তা:।মেঘাণ্নি মধু পিক্সাভা বর্ণতো नेद नायकाः ॥ 🕸 ॥ ञ्रमाञ्चानि एउ-या गखर्गा क यथा। क हे घ न गक्यान माञ्ज थ वक मुम्मन थ : ठ : क : घ : गनारन्वी र्र : न : म : क्रशः শন্ত্ৰণ।। য়ণ টণ ভণ হণ ভবেদ্বীশ্চ গা জা বা সঞ্চ পুষ্টিকা। ধা বা সা दनगानामाहीवरमः मः मः नः छ-বেৎ। ছ ত প কৌস্তভ: প্রোক্ত শ্চানন্তে। হৃহ মের চ। ইত্যস্থানি यथारयाग (एत्रह्दन) देव मण ॥ 🚓 ॥ গৰুডে হযুজসক্তাশোগদা চৈবাসি-তাক্ ডঃ॥পৃষ্টিঃ শিরীষপ্রাশ্ভা ল-স্থাঃ কাঞ্চনসন্ধি লা। পূর্ণচল্দু ভিডঃ শন্ধ: ৌজ্ভ ত্তৃণদুর্তি: ॥ চক্র• ग्रांगरमाड क्रिट्म: बन्त म-লিভ: ৷ পঞ্বৰী মতা মালা হাৰ্ছো মেলসলি ভঃ।। বিদুদুপাণি চাত্রা-ণি যানি নোক্তানি বণতঃ ৷ ইতি গা-कष्ड 🔀 व्यवहायः ॥ 🕸 ॥ ७२८ জ-गट्यानगांति येथा। इत्हार्यनगर চান্যক্ষণ উস্থৈর ধীনভঃ।চত্ত্র থঃ ज ভगवान् क्षगं मृशी भूदछे छ ॥ সৃষ্টঞ্চ পাতি সকলং বিখ্যায় চান্ত্র-ভোমুখ্য সভাগুণ মগাদ্ভা 🔍 विष्यप्रवः याः ॥ यहभाव ६२० দেব: সর্বাত্মা প্রমেশ্বর:। তমো-ख्नः সমাশ্রিষ্ঠা কৃদু: म॰ ছরতে জ· गट।। একোপি সম্ভাদেব জিধা-भो नगविष्ठः। नगं त्रकानय खेल निर्छापाणि नित्रक्षनः॥ এकः मन् मः ্দ্বিধা চৈব ত্রিধাচ বভ্ধা পুন:। ত্রিখা বিভজ্য চাত্মান বৈলোক্যে সংপ্ৰবৰ্ত্ত ।। সৃত্ততে বীক্ষতে চৈব পুসতে চ বিশেষত:। যমাৎ সৃষ্ট্রা-नृग्राठि युमाउ ह भूनः भूकाः॥ खनाजाकद्वारियालाका खमारहकः न डेहारङ । অशु विद्रगागर्द्धः म भाषुक्**कः मनाउनः ॥** वाषिद्। मानिराराया भावजाञ्जापजः मृजः। स्तरवयु ह सहारम्या सहारम्य है जि অৃত:।। পাতি যমাৎ পুজা: দর্বা: পুরাপতি রিতি খ্ড:। বৃহত্বায় মাতো বুকা পরত্বাৎ পরমেশ্ব:।। विभिज्ञानभाउषाज्ञानीस्तः भाति ভাষিত:। ঋষি: সর্বতগত্ত্বেন হরি: शर्दश्दा यजः ॥ अन्रभाषा চানুপ্রাৎ ৰয়ন্ত রিভি স স্ত:। নরাণা ম্যন যুমাৎ ভ্যালারায়ণঃ মৃতঃ II হ্র: ন·সারহরণাঘিভর্চ हिर्म क्ट्र**ड। ভगराम् म**ईदिखाः নাৰবনাদো মিতি মৃত: 🛭 সইজ: मर्व दिछ। नाहुनाः नद्गरम् यङः।

**णितः न्यो**शिर्माला रत्याविष्टुः नर्द গভো বঁত:।। তারণাৎ সর্বদু:খানা• ভারক: পরিগীযতে । বহুনাত্র কি-मृत्किन नर्बः विकृत्यः कगर ॥ इंडि कोर्पि ८ अक्षायः ॥ #॥ य-পিচ। মৎস্য উবাচ। মহাপুল্য कानाबु अवसामीखरमानयः। शु-*দু*গু নিব চাতর্ক্য মপুক্তাত নলক্ষ-१ ।। অবিক্রেয় মবিক্রাত কগৎ স্থাসুচরিফু চ। ততঃ ষ্যমুরব্যক্তঃ शुक्तः भूगाकर्मागाः ॥ वाञ्चयामः তদখিল পাদুরামী জনো নুদ:। যো २औ नित्यः शरता वाळामर्थं ज्ञायान् मनाजनः ॥ नाद्रायम इंजि श्राजः স এব স্বৰ্য মুদ্ধভৌ। স্বশ্বীরাদ্ভি-ধ্যায়ন্ সিসৃজু বিবিশ্ব জগৎ ॥ অপ এব সমর্জাদৌ ভাসু বীজমবাস্-ক্ত। তদেবাও সমভবদ্ধেম কপ্য ন্ধ নহ্ৎ ॥ সম্বংসর সহসেণ স্ঠ্যায়ত সমপুত। পুরিশ্যান্ত ম-হাতেভা: স্বৰ্থেবাজ্যসম্ভব:॥ প্-ভাবাদপি ভদ্ব্যান্ত্যা বিষ্ণুত্ব মগম্ৎ পুন: ॥ ইিভি মাৎস্যে ২ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ अत्र जिल्हा मृह्या रथा। স্টি জি ভালতরণাৎ বুন্ধ বিফু শি-বাজ্যিকাঃ স সংজ্ঞা বাতি ভগবা-ন্ এক এব জনাদনঃ 🏿 বুক্ষত্বে সূজতে

চৈব নিফুত্বে পাতি নিত্যশং। কৃদুত্বে চৈব সংহর্ত্তা একোদেব স্ত্রিধা স্থিতঃ ।। म এव সৃষ্ঠা: न ह मर्गक्ली मधव পাতা সচপাল্যতে চ। বুন্ধান্যব-স্থাভি রশেষমূর্ত্তি বিষ্ণু র্বরিষ্ঠো বর-(मा व्यव्याः ॥ इंडि वङ्गित्राणः नर्गानुभानन नामाश्रायः ॥ 🗱॥ नात्रायगम्। मृर्जिविष्माया यथा। (या **९८मो नात्रायराग (एव: भन्नाट्भन्न** তরোন্প। তস্য চিন্তা সমুৎপ্রা मृश्टि॰ भूकि नद्याखग्।। मृक्षे। (एग॰ महामृष्टिः भावनीया र रेयत ह। कर्म কাণ্ডন্তু মূর্ত্তেন কন্তু 'নৈবেহ শক্যতে ॥ তমাৎ মৃত্তি পূজান্যেকা॰ যया भाषा भिष्ठ• जत्र । এवः हिन्न उ खन्य न दा जिस्या विद्या । शुक् সৃষ্টিলাভ॰ রাজন্ বৈ মূর্ভিমত্তৎ পুরে। বভৌ। পুরে। ভূতে তত্ত স্তমিন্ দে-(वा नावायनः सन्।। भुविभाष्ठः पन-শাথ বৈলোক্যে ভদ্য দেহত:। **७** : मखाद्र जगवान् यत्रहानः शू-ब्राड**न• ॥ বাগাদীনা• ভত স্ত**ষ্ট**: পা**-माउत्रा भून इंद्रः। महंछः भईक्डी ত্ব- সর্বলোকনমফুত: ॥ ত্রৈলো-का भूरि भाषा ह जब विकः नगडनः । (मदानाः सर्वता कार्यः) कर्वराः तु ছণ স্তথা 🛭 সর্পভাইণ ভবত তব পুক্তিছে। বভুব হ।। বিফু রপ্যপ্রনা প্রাণ বৃদ্ধি সমার স পুভু:। তদা স•চিন্ত্য ভগবান্ যোগনিদ্যু• মহা-তপা: ॥ তম্যা স সংগ্ৰেগ্য ভগবান্ इन्दिवार्था ख्वाः भुकाः। याजा श-রেণ রূপে**ণ ততঃ সু**দ্বাপ বৈ পুভু:।। তস্য সুপ্তস্য জঠরা মহৎ পদ্ম বি-নি:স্ত । সপ্তদ্বীপবতী পৃথী স-সমুদা নকাননা।। তসঃ মূলসঃ বি-खाब' भा जान उन म-ख्रिउ•। कर्नि-কাষা তথা মেক তন্মধ্যে বুন্ধণো ভব: ॥ এবং দৃষ্ট্র। পরং তস্য শারী-রস্য ভু সম্ভাণ। মৃণ্ড ভছরীরছো वायु बंधुनम मृष्ट ॥ व्यविन्त्रा विकटएक्षनः भञ्जातामा धात्रम । व्यक्तानहरूमार्थाय थनः (जब उथा করে ।৷ কাজচক্রনয় বারে কি ক জু ধার্যাচ্যুত । অধ্বর্যারহাতার্থ॰ গদা॰ ধার্য কেশ্ব ৷৷ নালেয়• ভূত-মাতা তে কঠে ভিইত সৰ্বহা। গ্ৰী-वर्म कोस्राजी क्रांभी क्रमुपिका ছলেন ছ।। নাক্ত ন্তে গতি বি রিঃ **गक्जा• उ**व कीर्जि**ड:** 1 दिखाक्ऽ-शामिनी (नवी बच्ची (उच्च नना भि-যা ৷৷ দ্বাৰশী চ তিথি শুক্ত কাম-ৰূপী চ জাবতে। মৃত্যাশনো ভবে-

শস্ত দ্বাদশ্যাণ তৎপরাবণঃ।। বর্গ वाजी म छवज् भूमान् जी वा विष्मः ষতঃ । এষ বিষ্ণু স্তব্যখ্যাতো মূর্ক্ত या (एव पानवाः ॥ इन्डि भान्डि भ-ब्रीद्राणि मृबस्तान्यानि हाज्यनः। यूण यूर्ग मर्द्रागयः (यहात्व भूक्रा श्यः ॥ न शैनवृक्ता वकत्वता मनुरवतायः কদাচন। ইতি বারাহে পরাপর-निर्णय नाभाष्यायः ॥ 🛊 ॥ বুন্ধ বিষ্ণু শিবানা মেকত্ব॰ যথা। ততো বুন্ধা শরীর তৎ ত্রিধা চক্রে মহেশ্বরঃ। **जुषात्रहावनाहाञ्चा जिल्ला जिल्ली**-ক্তণ ৷৷ ভদ্জ্ব<sup>'</sup>ভাগ: সংলাভ শ্চতু বক্ত শত্ভ্জ:। মুটিকাভু সম: कारः मुद्धः न ठन्मु (मध्दः ॥ देग खा वृक्षकारय मृष्टि**णकि॰** न्याया-कर्र । यर भवाज्वर मुश्रावृक्षः कारा लाक वृष्या श्रिजिमालिः निका॰ मागा॰ भुक्छ्याथ्या॰ न्याः **জ**য**়। মছেশে** বৈষ্ণবে কাষে জ্ঞান শক্তি निका॰ उथा ॥ श्रिडिकर्ज ভব্দ্বিঞ্ রহ মেব মহেশ্বর: 1 সর্ব শক্তি নিযোগেন সদা ভদুপতা নম ॥ षाउणकि उथा कार्य गञ्जरात म न्यायाबद्धाः च अकर्त्वा ज्वह्सुः न এৰ প্রনেশ্রঃ ॥ অত স্ত্রিষু শরী-রেষু ৰখনেব পুকাশতে। জ্ঞানক্ষণ

পর জ্যোতি রনাদি র্ভগবান্ পুরুং।। সৃষ্টি ছিত্যম্ভকরণাদেক এব মহেশ্ব-র:। বুন্ধা বিষ্ণু: শিব শেতি সণ্ডৱা-मान नृषक् नृषक्।। या उ उ বিধাতা চ তথাই নলি ন পৃথক্। এবং শরীর কপক জ্ঞান মুমাক নম্ভরাৎ ॥ ইতি কালিকাপুরাণে ১২ व्यथ्रायः ॥ 🗱 ॥ व्यन्त्रहः। खनाजीयः न जगवान् व्यालकः भूकवः भवः। অনম্ভভোগশাধী চ্যুন্নভিক্মলাদ্ ভূ<।। विकृष्क न ह (गाविन्स के य রশ্চ সনাতন:।। য স্ত ংবেদ মহাত্মা-ন'স জীবন্মুক্ত উচ্যতে॥ ইতি বাম-नभुद्रात ८२ ज्लायः ॥ 🕸॥ (७२ श्राह्मनुरमाक्षकः यथा। भूवञ्च छेटाह । ভক্তিণ তম্যাথ সংচিন্ত্য নাগস্যা-(गाघमभान: । श्रीजित्रामखविष्ट्यः শার চক্র গদাধর:॥ সামিধ্য কলুয়া-নাস ত্রিন্সরসি কেশব:। গক্-ডস্থে। জগন্নাথো লোকাধার স্ত**পো**-वमः ॥ गाहगुष्ठः गहान्मुः उ॰ उक गु। इ॰ बनानगृर । উज्ज्ञहाद्वारभु-भियाजा उत्रमा प्रशूज्हमः॥ ङ्ल-क्र मात्रगामात्र गुार् हाक् ग मार्यः । (बाक्क या बाज नार माल भारत छ ३ শরণাগত।।। ज हि (स्वलमालिन चू व् गंकर्रगखरः। ग्रारुष प्रशम्स.

ক্ঞান্তর॰ পাুপ্র দিব ক্তঃ।। গ জোপি বিষ্ণুনা শৃষ্টো জাতো দিব্য বপু: পুমান্। ইভি বামনপুরাণে৮১ व्यश्रायः।। #।। व्यम् भव्यः भूकां हि র্যথা। অথ বক্ষের মহামন্ত্রান্ বি-काः नदीर्थनाधकान् ॥ रना नः মারণাৎ সম্ভো ভবান্ধে: পারমাশ্রি-ডা:।। ভার॰ নম: পদ• নুষাৎ নরৌ দীর্ঘ সমন্বিভৌ। প্রনা নায্ মন্ত্রো-য় পাক্তো বস্বক্ষর: পর: 11 🗱 11 অস্য প্রাপুযোগ:। প্রাত:ক্ত্যা-ि न्रानाउ॰ कर्य क्दा भूकाम ७-भ भागका रिक्षवाहमनः **स**र्यताट তত্র্থা গৌতমীযে। কেশবাদ্যৈ खिनिः भीदा बा न्। भुकानारर করৌ।। দ্বাভ্যা নৌটো চ সংমূজ্য ছাভ্যা মৃদ্যানুখ ভত:। একেন হ 3· পুक्रानः शाहावनि खेथकडः । प्रः (भारकारकन मूर्खान उठ: म-ক্ষ**াদিভি:। আস্য নাশা** ফিণ্•ি শ্চ নাভূয়েক ভুগ্নৌ ক্রমা**ং।**স্শে-एव॰ ভবেদাসমূলक रेवक्षवानुरय ॥ : এব নাচনন কৃত্বা সাক্ষায়ারাহণো ভবেৎ।কেশবাদযস্ত কেশব নারা-যণ মাধ্ব গোবিনদ বিষ্ণু মধুসুদন তিবিক্রম বামন জীধর হৃষ্টেশ পদ্মনাভ দামোদর সক্ষরণ বাসু

(एव भुप्रशामिकक भुक्रवाख्याक्षाः) ক্ষজ নৃসি হাচ্যত জনাৰ্থ উপেন্দু হরি বিফবং॥ বাক্যন্ত পুণবাদি কে-শবায় নম ইভ্যাদি। তথাচ**। স ठ**ञ्थी नभारेष्ठण्ठ नामा विन्र श्र्ट मूरी: II का उड: मामान्यार्घा-**प्ति मा ठ्**कान्ड॰ कर्य विश्वाय किन्नविकीः र्खानिगामः अगार । यमा स-ব্যাদি ন্যাস:। শিরসি পুজাপত-যে খবৰে নমঃ। মুখে পাৰ্যতী हुन्ह्रम ননঃ। হদি অর্দ্ধলস্থীহরয়ে দেবতা-रिय नमः ॥ ऋ॥ ७ ७: कब्राव्यनप्रास्त्री। ত্রী অঙ্গুড়াভ্যা নম ইত্যাদি। ত্রী क्रयाय नम इंड्यानि । उथाह (भी-তমীশে। ঋষি: পুজাপতিশুন্দো গা-বতী বেদতা পন:। অজ্ঞলন্ধী হরি: পোক: ত্রীবীজেন বডক্ষণ।। #।। **उटा शानः। উरा८ भू**रम्राउन শতক্চি তথ্যস্মাবদাত পার্যব-त्मृ कलि मू उसा रिव्याखा ह रृहे• । নানার ভ্রাল্লসিত বিবিধাকল্ল না-পীত্রস্তা বিষ্ণু বলের দুর কম্ল कोत्मामकी॰ हक्रभाषि॰॥ #॥ वर॰ ধ্যাত্বা ন্যমেশ। হথ।। তাং কেশ্বায कीटेर्छ। नमः जनभरते । दर्गानुष्यः मः र्षा **इन्तु**ान् भूतका दिखानि ५ भनि। ८ শৰ্ক সাগ্ৰার:। আং নারাধণায

कारिष्ठ नामा मूला । इंग्नायताय जुरेश्वे प्रत्या एकत्वा । दे शावि-नत्य शुरेक्षेत्र नत्या वायत्वत्व । উ विकार शुरु । एक कार्ग । छ । नशुमृष-নায শাস্ত্যৈ বামকর্ণে 1 খা তিবিক্র-बाय कियारेय मक्तनामानुरहे। आ वामनाय प्रयास्य वासनामानुरहे । ৯ প্রথবায় নেধায়ৈ দক্ষপণ্ডে। ३ क्वीकिणाय इस्रोटेय वामगर्छ। अन्यनाज्ञाय मुक्तारेय ५८%। 🗗 मास्त्राय न 📆 रिय व्यथ्रत । ও বাসুদেবায় লক্ষ্যৈ উদ্ধৃ দিন্তপ-ক্তৌ। ঔ॰ সঙ্কৰণায় সরস্বত্যৈ অ (बादछभङ्को। चः नुपूत्राय नीः ৈত্য মন্তকে। অঃ অনিজ্জায় রুজ্যৈ मूर्थ। कः ठकित् जयारेय। थः गिर त्न पूर्वारेय । गः मार्किंश **পু**ভारेय । ঘ• খল্পিনে সত্যাথৈ : তে॰ শাল্পনে চ-खारेव मक्क कद्र मृत्र मक्त प्राप्त यु । छ॰ হলিনে বাবৈছা ছং মুয়লিনে বিলা-সিনৈঃ। জ॰ শূজিনে বিজয়ায়ৈ। বাং शामान विद्यक्षारेया अ॰ अर्क्ड्यमान विचारि वासकत्रम्य सञ्जादिय । है। मुकालराय विभवतिय । टे॰ अन्तकाय कृत्वात्रास्य १ फ॰ स*्न*स्य **ब्टि**ड १ **ए॰** নরায় খাজ্যোণ নর হজিতে সমূল্যে मक्तभारम्य नदाशुरक्षु। ७ रङ्ग

य मुक्ति। यः कृकास दूरिका। मः म-**७**ऽ!य ज्रेडऽ। **४**॰ माञ्जाय मरेडऽ। न भोद्राय क्रमारेय वामभारम्ब अक्षाश्यक्षु । भ॰ म्बाय ब्रमारेय पक्रः शार्य। क॰ इनार्मनाय উमारि वाम-भार्त्य। य॰ जृत्रहाय द्विपिरेन्ड शृर्ष्ठ । ভ॰ বিশ্বমূর্ত্তবে ক্লিন্নাবৈ নাভৌ। ন॰ दिक्शाय जूनारेय छेन्द्र । य॰ द्वरा-जान नुकरवा खमाय वमुवदारिय क्रि । র॰ অস্গাতানে বলিনে পরাথৈ पकाः ला। लः गाः माञात वलानुः काय भद्रायशारेय कब्दि । दः स्मर व्याचारन बनाय मृत्रादि वाना रन। **ण॰ ष**ञ्जाञात वृषद्वाय सक्तारिय श्रापि नक्कवता य मञ्जाञान व्याय भुद्धारेय इतिक वामकता । সং শূকাত্মনে হংসায পুভাগৈ হ<sub>ৃ</sub> मामि मक्क भारत। इ॰ भागाञान व-बादाय निनारिय क्रांकि वामशारकः ल कीवाजान विभवाय व्यामाधारेय क्षामु । एतः । कः काषा जात ग्रिः হাৰ বিদ্যুতাৰৈ হৃদাদিমুখে ! ইতি न्।रम् ॥ ७था । व्योजभीय। क्तिनवाहि द्रयः न्यात्मा न्याननाव्वव বেহিনাং। অচ্যতত্ত্ব দদশত্যেব স ত্যু সভ্যু ন সংশ্যঃ ॥ মাভ্রার্ণ সমুদ্রার্য্য কেশবাৰ ইতি মারেৎ: কী- বিৰ্ব্য চ নমস। যুক্ত মিত্যাদি ন্যাস भारत्र ।। (कणवाय ७७: कीर्डिं) কান্তৈ্য নারাযণাষ্চ। ইত্যাদ্যগস্ত্য স-হিতা ৰচনা ৱায়ণ ক্রমঃ। ন তু কে শব কীর্ত্তিভ্যাণনম ইতি। তথা ভূক্তি मुक्ति भिष्ठ्ठा व्ययः न्यात्रः कर्द्रयः শ্ৰীকাদিক:। যথা। শ্ৰী• অ•কে-मावाय कीरे खें। नम इंड्राप्ति। उथा ह গৌতনীয়ে। এবং পুবিন্যসেম্যাসং লক্ষ্মী বীজ পুর:সর•া সৃতি• ধৃতি• মহালক্ষ্মী পুলগ্যান্তে হরিতা বু (क्र ॥ # ॥ ७७ खबुन्याम भीठे-न्याम अयारिन्याम विक्शानः न्यानान् वर्गार । उच्नानाम्यस পৃত্বগৌরবভিষা নোক্তা:॥#॥ ততো श्वारायः । छेन्। ए. काघि निवाकत्रा-ভ মৃদিশ শৃত্ব গদা পদ্ধর চক্র বিভুত মিন্দির৷ বসুমতী সংশোভি পার্শ্বরণ।কোটীরাঙ্গদ হার হওল ধর• পীতাম্বর• কৌস্তভোদীগু• বি-শ্বধর• স্ববক্ষসি লসৎ শ্রীবৎস চিহ্ন• ভজে। 🗱 ৷ এবং ধ্যাত্বা মানসৈ: স ম্কু, শহুস্থাপন স্ব্যাৎ 1 তত্ৰ বৈ क्व भावः भोजभीय। जानुभावस বিপুর্ষে বিফোর ডিপ্রিয়ণ মতং। ত থৈৰ সৰ্বপাৰাণ্য নৃখ্য শহ্ন পুকী-ब्दिरा। मृथ्यावक उथा (भाकः

बर्ग वा ब्राज्ञ उथा। भक्षभाउ॰ रुद्धः मुष्यः नान्यञ्ज निर्याक्षरिय ॥ 🗱 ॥ देनविष्ठामात्ने जू उदेवव । ऋर्त বা ভারুপাত্রে বা রৌপ্যে বা পক্ষজে मला। जागमक नुक्तम । रेट्रागुः রাজত কাংশ্য ভামুং সৃন্ময মেব্রা । পালাশ• জ্বিহরেঃ পাত্র॰ নৈবেদের कन्नरम्बु थः ॥ भुत्र कत्र गठ निमुकायाः । সূবর্ণে রাজতে রৈভ্যেইত্যাদি ॥ 🕬 **उड: नामान्यभी**ठेभूकानस्तर दिम्-লাদি শক্তি সহিত পীঠমন্বস্তুণ পু-জাং কৃত্বা পুন খ্যাত্বা মূলেন কল্লি-छ मृद्धावावाह्नामि भक्षभुञ्जाञ्जलि দান পর্য্যন্ত বিধাষ আবরণ পূজাং वर्गाए। अग्नामि ठजूषात्रमु मिक् B ଓ क्षानाय क्षयाय नमः हेडा-দিনা পূজ্যেৎ।। #।। ততঃ কেশরে যু भूर्तापि अ नमः न नमः (माः नमः না নমঃ রা নমঃ য নমঃ গা নম: य॰ নম: । ততো ছলেষু পূর্বা-**क्तिक उँवामुक्त्वाय नगः। ७द॰** जक्रवंशाय भुषुःनाय व्यनिक्षाय । অগ্নাদি কোণদলেষ্ ওঁ শান্তৈয় নমঃ এবং শূিবৈ সরম্বভৈত্ত রভৈত। ভতঃ পত্রাগ্রেষু প্রাদি ওঁ চক্রায় নমঃ এবং শত্ৰাৰ গদাবৈ পদ্মাৰ কৌস্ত ভाय मूयलाय शङ्गाय वनभालार्य।

তদ্বিশ্রে ও পক্তাধ নম:। দক্ষি-(१ ७ भन्न विक्य नमः। वास्य छ भन्न নিধ্যে নন:। পশ্চিমে উত্জায় নমঃ। অগ্নিকোণে ওঁ বিহাৰ নন: ৷ নৈৰ্থতে **७ जार्यप्रीय नमः। वायुक्ताल ७** ः मूर्गारेय नगः। द्रेगातः ७ (सन्तरेन) নমঃ। এবং সর্বত। তছহিরিন্দুদি ন্ वजु भी • क भूजियदा धूश मीलो मदा रैनायम् ५ मम् ५ १ । । । यथा रिनायम् ५ নানীয় দেবতাথৈ মূলেন পাদ্যার্ঘাচ**্** मनीय पद्मा कि जि मत्या रेनरव-ष्ट्रा मः (भाषा) ठकम मुगः ভित्रकार যমিতি মন্ত্ৰেণ দোষ সন্হুণ সংশো-ষ্য রনিতি দোষ সাদহা বাসকর দৌধধারাভিপূর্ণ ব নিতি নৃত্তেণ অমৃতীকৃত্য মূলমন্ত্র মউধা জপেত । তভো ব মিতি ধেনু নুদ্ধান্তী-কৃত্য গরপুরাভ্যা• সংশ্রু কৃতা-क्षविः मन् इद्रिः नुष्यर्थः। अगु মুখতো মহ: পুমবেদিতি বিভাব্য चाराष्ठ गृज महायं। निरवान। कलः मन्त्रार । उटा मूल मूहार्यं। এउ रिम्न(वन्त्र जामुक (मयजारेय नमः। उठा रेन(वर्)' इछा छ। मृख् छ। उ নিবেদ্যানি ভবাত জ্যাণেদ হবি হঁরে ইতি নৈবেদ্য সমূপ্য অনুক-দেবতাথৈ এতজ্বল মন্তোপন্তরণ

गभी छि डल रदा वागक्छ शु। भ मुप्ता श्रमण्ड मिक्क ग्रह्म भूषी-नि नुषुः शुक्लाराट । अ । यथा ওঁ পুণোষ ৰাহেতি কনিষ্ঠানানিকে चक्षिन अभीरिट । ७ वामानाव चारुठि उद्धंगे मध्राम अक्रंअ म्भानंत्य ॥ ७ वतानाय चार्हिक यधामानाम अङ्ग्षिन स्पर्नारट । **७ डेनानाव बार्ट्ड उ**ब्ह्नी मच्छ मानामा অङ्ग्रंधन म्मार्थर । अँ यमानाय साइंडि महीक्नी इस्-ষ্টেন স্পার্শাংখ । ততো অক্টাভ্যা यवाधिकागुः अभूमा (द्रो नमः भद्रा-य अन्तराज्ञात अनिक्काय निवस्त्र कल्ल्यामीजि रेनर्वमुगु भूमर्मा মূল মূচাৰ্য্য অমুকদেবতাং ভৰ্পৰা-নীতি চত্দ্রা সংতর্গ্য অমুকদেব-**टारेष अञ्ब्लन नम् अलिशानम्त्री**-**डि इल मन्दा जाठयनीयाहिक ह-**न्तराक्षा देवकाव जू देनदवन्तर नारन সর্বত্রায় মেব বিধিঃ। ততঃ লামা-ন্য পূজাপদ্বস্তুক্ত ক্রমেণ বিসর্জ্ঞ-नाउ॰ कर्य मनाभएरः।। अमः। भू-রক্রেণ যোড়শলক্ষ্ জপ:। তথা-চাবিকার লক্ষণ পুজপেঅনুমেন॰ ननाहिउ:। उद्यमाः मः नद्रसिटेक कुल्यामधुराञ्चे एक: ॥ इंकि एक:

লার:।। মৃত্যক্ত বিষ্পুলা আহিক छत्नुत्मो मुष्टेवता ॥ # ॥ जना नमः कात खरकना मिक यथा । मृज উবাচ। মুক্তিহেতু মনাদ্য**ন্ত** মজ ম क्क्य मव्ययः। (या नत्मर् जर्दालाक **ল্য ননস্যে জাযতে নর:।! বিফুনা** ननत्र मरिष्ठ जः विक्तानः मर्दगः भुकुः াপুণমানি সদা ভক্ত্যা চেতসা ছ मगानय ।। (गा २४ खिश्रमः नयमः) পাশ্চীশ: শুভাশ্ড । ত সর্বসা किनः विकः नगरमः भवः सथवः ॥ সাধ্যেনাপি নমস্কারপুযুক্ত শচক্র-লাণযে। সংসার তৃণবগাণা মুদ্বেজ-নকরে। হি সং॥ কৃষ্ণে মুরজ্জলথরে। দরচাকৃত্য লোকাধিকারিপুক্ষে পরনে হপুনেযে। একোপি চারু গুণমাত্র কৃত পুণাম: সম্য: স্থানক ন্নপি শোধ্যিতু সমর্থ:।। পুণম্য **म** अव छ्यो नमकारत । याई (य । স যা• গভিমবাপ্নোভিন ভা• ক্রতু **শতে রপি॥দূর্গ স**ারকান্তারাক্ পার মভিধাবতা॰। এক: কৃষ্ণ⊹ম∹ স্থারো অন্তি তীরস্য দেশক:॥ আ-সীনোবা শ্যানো বা তিষ্ঠন্ বা যত্ৰ ভত্র বা। নমোনারাযণাগেভি মন্ত্রে ह-**म्यद्रां ७**दंद ॥ नाद्रायत्वि मद्दा হুন্তি বাগতি বশবর্ত্তিনী। তথাপি

নরকে ঘোরে পতন্তীতি কিমন্ড হণ।। চত্তমুখাযু যদি কোটিবক্ত্ৰো ভবে-মর: কোপি বিশুদ্ধচেতা: ৷ সর্ম্বে खनाना मयुरेङक (मण- वरमञ्ज वा ८५-ববর্ষ্য বিক্ষো: ॥ ব্যাস্কাদ্যা মুনহঃ সর্বে স্তবন্তো মধুসুদন । মতিক্ষ্যা चिवर्डाष्ट्र न भावितर **७१क**या**८** ॥ व्यवस्थानी रमाय की डिंट मई-পাতকৈ:। পুযান্ বিন্চ্যতে সদ এ **সি•হ**ত্রস্তৈ মৃ<sup>্</sup>গৈ রিব ।। সক্<sup>তু</sup> চুরি-ত থেন হরি রিত্যক্রদ্বণ। বক্ষঃ পরিকর স্তেন নোক্ষায় গনন-পুতি ॥ স্বপ্রেপি নামমূতি রাদিপু॰সঃ ক্ষন করোত্যক্ষযপাপরাশি পূ-ত্যক্ষতঃ কিং পুন রত্র পুংসাং সংকী ব্ৰিতে নাগ্ৰ জনাৰ্দ্দনস্য।। নম: कृ-ষ্ণান্তু তানন্ত বাসুদেবেক্যুদীরিত । গৈ ভাব ভাবিতৈ বিপুন তে গনপুর• रयः॥ नेमायानः इनः वद्धः खन्ना ভাস্করোদযঃক্ষোন্তি: কলে স্তৃথীঘ-স্য নামসংকীর্ত্তনং হরে: ॥ কু নাক-🤧 ৪গনন পুন রয়োভি লক্ষণ । 🖫 জপে। বাস্দেবেতি মুক্তিবীর মন্ত্র-ন॰।। গছতা। দুর মধান তৃকা মু ई 🗷 চেভসাং। পাথেয়ং পুঞ্জরীকাক্ষং নামসংকীর্ত্নামূত ॥ নম ইতেরে (या त्राडफ्ङ: मुष्या दि उ: । उ-

महाकारण ज्याहाकः चेत्राक्रमहा-शिल्मोनक।। ज्ञात मर्गरष्ठमा नि-ৰ্বিচেষ্ট্ৰেক ভেষজ । ক্.ফভি বৈক্ষৰ • মন্ত্র জপ্ত। মক্তো ভবেমর: ।। ধ্যা-যন্ কৃতে যজন্ যজৈ জেতাশা ছা পরে হর্যন্। যদা প্রাভি তদাপ্রোভি कालो जनको र्डा (कणवः ॥ न्वः उट करे जान् म मथ वानु। भिक्षित्र 📭 । রোগাধারা ন সা জিন্তা যা ন বক্তি হয়ে গুণান্।। সক্ষেত্রেণ কিং ভস্য কাশ্যা বা শান্তিকেন বা। ভিন্তাগ্রে বর্ভতে যস্য হরি রিভ্যক্ষরদ্বণ।। বিজ্ঞাত দৃষ্কু চ সহসু সমাবৃতোপি শূেষ: পরস্তু পরিশাৃজ্ব ন ভীক্সমান: । স্বপ্রান্তরেপি কিল যোলিভ্য॰ ন পশ্যেরায়ণ স্তুতিকথাপরনোন न्याः ॥ इजामि गाक्षा नातायनः **ভ** জ नमकः व नाम २०२ व्यथायः ।। 🗱 ।। সূত উবাচ। আসার ভূতে **স**ং সারে সারমক বিনিদিশেৎ। অ जातात्वद (वाक्ष्म) जात्रभात्राद्य-क्रि:।। मन्। ए भुक् । मृत्क । यः भू স্থাণ্যপ এব বা। অহিত স্থাভনা হৈবতেন সর্ব∙ চরা∵র• । নাতৃব**ং**প⊹ রিরক্ষন্ত সৃষ্টি ল ছার করেছে। যো ম প্রয়তে বিঞাত বিদ্যাদুদ্ধবা-छकः ॥ यजः भुवृद्धि ज्ञानाः यन

সৰ্ব মিদ তভং। ৰক্ষাণা ভমভ্য 🕏 🗸 निक्षिः विनरस्डि मानवाः ॥ नद्राक न-চ্যতে যস্ত যমেন পরিভাষিত:। কি॰ च्या नाहित्जा (पवः (कणवः (कणि-नामनः ॥ উरक्तनाम्। जात्वन पुर्वाः ना महिंड: भुड़:। या प्रांडि सकः लाक म ब्रगाकि नहाई छः।। न उर করোতি সা মাতা ন পিতা নাপি वाञ्चवाः । यट करताति ऋषीरकनः **गडहै: नुष**गहिंज: ॥ दर्शन्याहा**द्र**-বতা পুৰুষেণ পর: পুনান্। বিষ্ণুরা-রাধ্যতে পছা নান্যস্তত্তোষকারক:।৷ न मारेन विविध्य में टिंड नंशुरेझ नाजू-নেপনৈ: ৷ ভোষ মেতি মহাত্মাসৌ यथः ভক্ত : कमार्चनः ॥ সম্পदिन्धर्यः মাছাত্র্য জ্ঞান সন্ততি ক্রমণা । বিমৃক্তে কৈ তাল ভ্যুণ মূল মারাখৰ• হরে:॥ গুণানৈ স্তব্যতে বিফুরেড-রৈ পরমণ ধনণ। অন্যথা বা বিশো যেণ ক ও মহিত মহতি ॥ ইঙি গাক্ডে প্রাস্ততি: ২০০ অধ্যায়: ।। 🗱।। সূত উবাচ। আলোক্য বহু শাস্ত্রাণি বিচার্য্য চ পুন: পুন: 1 इन्दिकः भूनिय्वनः (४) ह्या नातायणः সদা।। কিং তস্য দানৈঃ কিং ভীর্ষিঃ কি তপোভি: কিমধুরৈ: যো নিভ্যু स्थायरक (एद॰ नाजायन ननन्धीः ॥

ষ্ঠিতীৰ্থ সহসুদেষ প্টিতীৰ্থ শতানি 🏻 চ। नादायग लुगामग्र कला नाई हि ষোডশী॰ ॥ পুাযশ্চিত্তান্যশেষাণি । শুভিঃ ॥ ধ্যানেন সদৃশ॰ নাতি শেশ-তপঃকফাদিকানি বৈ । যানি ভেষা মশেষাগা॰ কৃষ্ণানুমারণ॰ পর॰ ॥ কৃতে পাপেন্তাপো বৈ যস্য পুণমঃ পুদায়তে। পুয়েশ্চিত্ত ভ ভগৈতক হরিসংঅরণ পর ।। মুহর্ত মিপ या श्वारयद्यात्रायम मङन्मुङः । সোপি তদ্ধতি মাপ্মোতি কিং পুন खट भद्रायनः ॥ जागुट अन्न मुष्राध्य (याग उम्र ह (यागिन: । या काहि-মনসে। বৃত্তি: না ভবত্যচ্যুতাশু-याए॥ উত্তिष्ठनिभञ्जिक् युक्तम् रेव বিবসং তথা। ভুঞ্জন স্বপংশ্চ জাগুছ গোবিন্দ মাধ্ব মরেশা হে ছে ক-মাণ্ডিরত: স্থ্যাচ্তি জনামনে। এবা শাস্ত্রানুসারোক্তি: কিমনৈ র্বহু ভायिटिः ॥ ध्रान भिव श्रादा श्रामी খ্যান মেব পর<sup>্</sup> তপঃ। খ্যান মেব প র শৌচ তন্মাৎ ধ্যানপরো ভবেৎ ।। नाजि विरक्शः भन्नः (शुपः उर्णा-নানশনাৎ গরং। তন্মাৎ পুধান মজ্বোক্ত বাসুদেবস্য চিন্তন ॥ य দুৰ্লভ পদ পুৰ্গ্যে মনসো যন্নগো हत्। उनभाजार्थिङ शास्त्रा पना-कि वशुनुतनः ॥ **भूगाताय वर्त्रकाः** 

कर्म भुष्ठ। त्व डाधु त्वयु र । स्वद्रना-स्व उद्यक्ताः मः भूगं म्यानिङ ধন পাপকর্মণা। আগামিদেছ হেত্ৰা॰ দাহকোপ্যেষ পাবক:॥ विनिद्यमनभाषिस गुक्ति भरेवव दन्य-নি। পাুপোতি যোগী যোগাগ্রিদক্ষ কর্ম্ম হয়ে **୧**চিব্লা**ং**।। যথাণ্ড কল্প ড-শিথ: কক্ষণ দহতি সানিল:। তথা চিত্তজিতো বিষ্ণু যোগিনা সর্ব-কিল্বি• ।। যথা গ্ৰিদাছাৎ কনক ন-পদোব• পুজাযতে । স•শ্লিষ্ঠ• বা-সদেবেন মনুষ্যাণাং তথা মৃন:॥ গ জ্যান সহস্যু পৃষ্তস্থান কোটি-য়। যৎ পাপ বিলয় যাতি স্তে ন ল্যুতি তজরৌ ॥পুরণাধান সহসৈু**র** য়ত পাপ নশ্যতি ধুর । ক্ষণনা-ত্রেণ ভৎ পাপ• হরে র্ধ্যালং পুণ-শ্যুক্তি ॥ একমিলপ্যক্তিক্রান্তে মৃত্ র্ভে ধ্যান বজ্জিতে। দস্যুভি র্মথিতে-নেব যুক্ত মাক্রন্দিত ভ্শ।। কলি পুভাবো দুষ্টোক্তি: পাষ্ণ্ডানা ত-থোক্তবঃ। ন ক্রেরন্মন স্তম্য যন্য চেত্রসি কেশব:।। সা তিথি তদছো-রাত্র স যোগ: স চ চলুমা:। ল্ল তদেব বিখ্যাত যত্র পুষার্য্যতে হরিঃ ॥ সা হানি ত্রমহছি দু সাচান্ধ জড-

भूक छ।। यमुङ्र्ड किन वान्-(मरवा न हिन्न) एक ।। किलाः क् छ-যুগ ওস্য কলি স্তস্য কৃতে যুগে। হাৰ-যে যস্যগোবিনের যস্য চেতসি না-চ্যুত: ॥ यम्यागुंठ खेशा भ्रष्टि गहुउ ় স্তিষ্ঠতোপি বা। গোৰিনের নিযত• চিত্ত কৃতক্ত্য: সদৈব স: II বাসু-दिरत भारत। युगा जलाहा नाहिन हिंचू । जम्राष्ट्रद्रारमः रेमख्य (नरवन्तु द्वा-দিক ফল ।। অস ত্যজ্য চ গ। ইত্ মতপ্ত। চ নহৰুপ:। ছিন'ৰ্ভ বৈঞ্চ বী নাযা কেশবার্লিত মানস:॥ क्रमाः अर्वे छ कुष्क्षयु नयाः मृत्येषु **मानताः। मृ**नकः धर्मानीत्वयु (गीः वित्न इत्यक्षि । श्रात्यक्षात्राः यगः (हदः म्वाना निय् ह कर्यम् । न्त्री-যশ্চিত্ত হি সর্ব্য দুফ্তস্যেতি विक्षु उ॰ ॥ वा ७ (खया॰ हय (खया॰ **হ্সত** স্থেষা পরাভবঃ। যেষা নিন্দী वतन्।।। इत्यक्त कनार्यनः।। कीं । शिक गणनाक रही जन्मु उ চেত্তসাণ উদ্ধৃ মেব গতিং মন্যে কিং भून र्ज्जानियाः नृगाः ॥ वामुप्तव छ-क्हारा नाडिमीडा न घर्मना। नद ক্ষার শমনী সা কিমর্থণ ন সেব্যক্তে ।। ন চ দুর্রাসস: শাপো ব্জুঞাপি সচীপভেঃ। হন্ত সমর্থে৷ হি সংখ

হৃদ্গতে মধুসুদনে ॥ বদত ভিঙ-(जान)हा (सहरा कर्णज्वं जः। ना-প্যাতি যদা চিন্তা সিদ্ধাণ মন্যে চ থারণা° ৷৷ খ্যেয়: সদা সবিভূমগুল-**मध्यक्षी नादायगः अद्रमिकान**न मितिष्ठै:। (क्यूब्रवान् कनक ऋ छन-वान् किद्रीष्ठी हात्री हिद्रण्ययवश्रु-ষ্ তশঃ চক:।। 🗱।। কি মত্র বহু-(बार्किन युग्नाक नधुना इति•। यात्र-তাহনিশা বিষ্ণু মশেষ দুরিভাপ-হেং ৷৷ ন হি ধ্যানেন সদৃশং পবিত্র মিহ বিদ্যতে। শ্বপাকেম্বুপি ভুঞ্জা-ন: পাপ নৈবাত্র লিপ্যতে ॥ যদা-চিত্ত সনাসক জভে। হিব্য গোচ-ति । यमि नातायरण (भारवः का न মুচ্যেত বন্ধনাৎ ॥ পুত্যস্তমিত (जर यद **म**खानाब मरगाहत । বচসা নাত্মস বেদ্যু তজ্জান বুল্ল-স'ক্তিভ ॥ ভকান্যা ধারণ্যা (যা-शिता यांखि तम लयः। अभाव কৰ্মণো পে)তে বান্তি নিবীজিতাং দ্বিজা:॥ ইতি গাৰুডে ধ্যান স্তুতি: २०३ व्यव्यायः ॥ 🕸 ॥ उन्। माहा-আ্য যথা। সূত উবাচ। বিফুচিত্তো **ভবেজ্ঞ उ: यहाउ न्यार महा।** তনেবৈষ্যতি মৃক্তিব মাত্মান হরি-७८ भन्नः ॥ उम्रानः यव (भाविन्तः সা কথা যত্ৰ কেশব:। তৎ কৰ্ম यखन्याय किंगरेना ईल्लाखिटाः। সা জিহ্ব। যা হ'র স্থৌতি ভট্টিত্ত' যত্ত্ৰদৰ্পিত । তাবেব কেবলৌ খ্লা (घरो यो उर्श्वाकरतो करतो ॥ পুণান নীশস্য শির:ফল বিদু স্ত महनः भागिकनः पिरवोकमः। यनः ফল তদ্ভণ কর্ম চিন্তন বান্ত গো विन्त ७१ छवः फनः ॥ मिक् मन्तत মাত্রোপি রাশি: পাপস্য কর্মণ:। **८कमा वर देवला भामामा मूर्व**ताथि द्विव নশ্যতি ।। যৎকিঞ্চিৎ স্বতে বর্ম পুক্ষ: সাধুসাধুবা। সর নারাগ ণে ন্যস্য ছার্রলাপ ন লিপ্যতে ।। তৃ নাদি চত্রাস্যান্ত ভ্রগ্রন চত্ विष्। চরা इतः जगर সর्वः भुमछः লাব্যা ভব ॥ যিশিল্য ভবতি নঁ যা। তি নর ক বার্গালি যদ্ভিরনে বিছে। য্ত্র নিবেশি গ্রাহ্মনসে। ব্রাক্ষোপি। বোকোল্লং চ্যুক্তণ চেত্রি সং-স্থিতো ভডবিয়াং পুংসাং দদাত্য-ব্যবঃ কিঞ্চিত্রণ দুরিত। পুষাতি বি वय • उदाहाउ की दिंख।। महडा প্ৰাপ্ত প্ৰাপ্ত যেন ক্ৰীতো হথিল धुन । उन्। विकाः भुनाएन इह কশ্চিৎ পুরুষ্যতি॥ অগ্নিকার্য্য জ পা স্থান বিফো ধ্যানক প্রন। गन्जः मृःरथानरषः भातः कगूर्रयंक ভবন্তি তে ৷৷ রাষ্ট্রস্থ শরণ রাজা পিতরৌ বালকস্চ। ংশশ্চ সর্ব নত্যানা॰ সর্বস্থ শরণ হ'র: ॥ त्य नप्रस्ति कशन्त्यानिः वामुप्तवः जः নাত্ৰ- । ন তেভ্যো বিদ্যু**তে ভীর্থ** · यविकः मृनिमञ्जम ॥ जनगरन न् जान अयेग्रल साथाय (स्व **ह । ७**॰ সমুদ্দিশ্য গোবিনদ খ্যান নিত্য মভন্দিত:।। শূদু৽বা ভগবভক্ত নিবাদে স্বপচ তথা। দ্বিজ্ঞাতি সন্থ ন্ন্যেন হাতি নরক নর:।। আনরেণ যথা স্তৌতি ধনবস্তু ধনে-इया। उथा वृक्षिक कर्डात का म ग्राहर्ड दक्षनार ॥ यथा काउवरना ब'ङ्का पंश्वाप मिले कार । उथा-বিশ্বঃ মূভো বিশ্বু যোগিনা সৰ্ব किन्दियः ॥ भूभीखः भवं उ॰ " एमा-भ्याचि भूगाप्तयः। उष्ट शाशानि সর্বাণি যোগাভ্যাসরত নর ॥ য্স্য যাবাংশ্চ বিশ্বাস স্তস্য সিদ্ধি-শ্চ ভাৰতী। এভাৰানিতি কৃঞ্ম্য পুভার: পরিনীমতে॥ বিদ্বাদপি (गाविन्त्• प्रस्थायः शकः अहन्। শিশ্পালোগত ওড়ু কিং পুন ভৎ-भरतारमः ॥ व्ययः १६८वः स्नुन वन्तुः 

६१५८७ **कावपावमाईयरक रूजि**॰ ॥ ইতি পাক্তে বিফ্মাছাল্ব্য ২৩৫ व्यवागः ॥ 🗢 ॥ जगः भारतास्क शानाति कृतः , क्रांत क्षणः मृत्य नाम रैनरवष्रभारत इतः। शास्त्रक्ष নিৰ্মাল্য মন্তকে যদ্যদো ২চ্যত:॥ रेशदर् भग्न जननी विभिन्न विश्न य छः भारक वः भिष्ट । या श्या তি নিত্যু পুরতো মুরারে: প্রাপ্নো-ঠি দুপেুন্যুলা স ভক্তি ॥ হত্যা क्छि यम् छित्रु न**क्ष्म गुलभी । उद्यक्ष भा**न (मारकः रेनरदन्तुः वस्त्रामाभाग मृतिः **छ**• छत्राना मञ्बरा।। इ**डि भा**ष्या-खब्रथाख :० यद्यायः। 🗫॥ छम्य ना ন্না॰ বৃ ৎপান্ত যা যথা। পৃথিব্যবাচ । জাতেষ শেষ। ভবসি তথালেয়েয়ে। হিদ্য ক(ভিডঃ ) ব্যসনেৎপত্তি যু क्ष्य वृक्तनम् वक्षापित् ॥ यद्यान हु एम ज्ञाना स्याप की ज्ञान र हाउ:। व्याप िन्त काक वन-বর্ণ নেব চ।। নিগ্যু হ্রদে য-বাভিষাজারি রিছে।চর্লে। স্থান যদি ভূতানি বল্বাবদ্সা শূ্য। ।। চিরেণ বল্যা দেব তথায় লি স্বা **७नः ।** रामा ज्यापरण (एवा मनग শ্চেগুতেরম.), ন তে ৩৪• দ্ববিগছ 🔞 ७ नामड कृष्णा 🖂 व वर्षायाम म

मन्द्राम क्लु:काहि महि द्रामा ७-या वृगक बदाह विक् इंडि भुकी खें। · स्त । दिष्टेसक द्या मर्ड काट हा-বর জঙ্গমণ ৷ জগছিষ্ট মুনাট্টেব বিঞ্-র্বেতি পুকীর্ক্তানে। বিষ্টভা তিষ্ঠান निजा देवलाका महबाहब ॥ म-যক্ষর নর সনহন্ত পদগ । ব্যাপ্য ত্বামেব বিশতে ত্রৈলোক্যুণ সচরাচরণ।। তমাধিফু রিভি প্রোক্তঃ স্বযমের স্বয়ের।। নারা ইত্যুচ্যুক্ত আপ: খবিভি স্তম্দ শিভি:।। জ্ব-খন ত্ৰা ত্ৰ পূৰ্ব তেন নারায়ণঃ ब् उ: । युरम युरम अन्हा॰ गा॰ दिखा বিন্দসি ভভুত:॥ গোবিন্দেতি ভ-তো নামা পোচ্যমে খ্যিভি তথা। হ্য কাণীন্দ্রাণ্যাহ স্তৰু জ্ঞান বি-শারদা:।। ইশিত্বে বর্তমে ছেখাং হ্বিকেশ ভথোচ্যসে।বসন্তি ত্বি ভূতাৰি বুক্ষাদীৰি যুগক্ষযে।। ত্বং বা বস স ভূতেষ্ বাসূদেব গুদুচ্যসে। সহার্যদ্সি ভূতানি কল্লে কল্লে পুনঃ পুর:।। তভঃ সম্বর্ধণঃ পোক্ত স্তন্ত্র-द्धानिक्षाहरेनः। भूकृ एक्न न ७ छ-ভি সংদ্যাসুর রাক্ষ্সাঃ॥ পুতিদুর সর্বধ্যালা॰ পুদুরে স্তেন চোচ্যতে। নিরোধো বিদ্য**েত যনামতে ভ্**তেষু কশ্ন: ॥ অনিক্জ ন্ত ড: (পু। জ:

পূর্বমেব মহবিভি: । ইতি মাৎ-স্যে ২২২ অধ্যায়: ।। 🗱 ।। বিফু লোক গমন কারণ যথা। কর্ম ভোগী সকাম: স্যামিয়্বামে৷ নি-ৰূপদুব:। স যাতি দেহ ত্যক্ত্ৰাচ शहः विष्या निज्ञानयः ॥ शुनद्रागः ম্ন নাতি তেষা নিষ্কামিণা স তি। যে সেবন্তে চ দ্বিভুজ কৃষ্ণম। আন নেব চ।। গোলোক তে নরা-यान्ति हिवाबिश विश्वातिगः। (य ह নারায়ণ ভক্ত্যা সেবন্তে চ চত্তু-क्ष•ारिवद्रश्रे• याजि एउ मर्खि मिवा-ৰূপ বিধারিণ:। সকামিনো বৈঞ-বাদ্দ গড়া বৈদ্বপ্ত মেবচ ॥ ভারত পুনরাবান্তি তেষাণ জন্ম দ্বিজাতিষু ় কালেন ভে চ নিষ্কামা ভবন্ত্যেব ক্রমেণ চা। ভক্তিঞ্চ নির্মালাণ বৃদ্ধিণ ভেভ্যো দাস্যতি নিশ্চিত। হরি-ভক্তাক নিয়ামাঃ ষ্থ্য রহিতা দিজা:।। তেপি যান্তি হরে লোক। क्रमाफुकि वलाम् ए।।। ইতি वुका বৈবর্ত্তে পুকৃতিখণ্ডে ২৪ অধ্যায়:।। विक्षक की मुवनानक क। यथा। উপোষ্য দাদশী পুণ্যা বিষ্ণু क्षाक्रण मःयूजाः । এकारम् । छवः णुष्यः नद्रः शास्त्राज्य**म म**यः । **ইভি ভি**থ্যাদিতভু° ॥

विकृष्णाः शृ भ्वति । उटशर्यायः । विक्छछः २ मृश्वः ०
वह्नःशृष्टेः ८ जनवामः ६ वृष्टवन्तः ५ भीर्घश्राः १ इति श्रियः ৮ ।
व्यम् छ्वाः । भष्त्रद्वः । निन्नद्वः
। शिख नार् नाक्रद्रद्वः । क्वाद्वः
। महर्शनकादिष्धः । ইতি दाजः
निर्वेष्टः ।।

বিষ্ণুকান্তা জী অপরাজিতা। ইত্যনর: । অপরাজিতায় অন্যা জ্প-,
জাতি: । তৎপর্য্যাব: । হরিকান্তা
২ নীলপুয়া ৩ অপরাজিতা ৪ নীলকান্তা ৫ স্নীলা ৬ বিকান্তা প
ছদ্দিকা ৮ ৷ অস্যাগুণা: । কটুত্বা ।
তিজন্তা বিষদোষ
নাশিন্তা ৷ শেধাকারিন্তা ৷ পাবনিন্তা ৷ শুভদন্ত্রা ইতি রাজনির্যাটা !!

विक्ष् छन्छः भू वाष्ट्रगायनमूनिः।
यथा। विक्ष् छन्छ स्न को छिन् ज्ञानत्का प्रामिताङ्गः। वाष्ट्रगायत्ना मन्तनागः भक्षिनः सामिनाविभा हे जि जिका छत्मयः॥ विक्ष्
कन्तः। हे जि ज्ञा जनिर्य छै।।
विक्ष् छन्छ को ज्ञानिर्य का ।

ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ॥ ক্রিম্মান্ত কী ক্রিম্মান্তিকে। স্বয়

विकृग्र॰ की विकृमन्तिन। उस

श्रुतः । देखि (इन्हन्मुः ॥ दिक्गृह-॥ कद्रभ कृता यथा। या द्वेष्ठका ज्ञान-कु॰ यः अर्थ)दिवक्यः गृष्ट् । न उत्र । ফল সম্পত্তি বঁকু শক্তেতে কেন চিৎ।। ইভি ছবি ভক্তি বিলাদে ১৯ तिलामः॥ रेग्स (पवालगः वित्याः मृजि पाक्रमण क् उः। काद्रारम्सः য॰ বালি শূণু ভদ্য ফলং নুনে ॥ অহ্ন্যহ্নি োগেন যজতো ফয়-হ।ফন•। প্রাপ্নোতি ভৎফন• বি: रका र्यः काद्रयात्र मान्त्रनः ॥ **ज**ना-না শত নাগানি সন্তীত তথা শ उ॰। कांद्ररय स्कृतवसाय नगर। हा তলেকিতা। ।। সগুজন্ম কৃত পাপ। ञ्चल्ला यनि वा वस्त् । विदया **बाल**य বিন্যাস পুরেম্রাদেব নশ্যতি 🛚 🗎 मध् न। कम्हारा विक र छम्। ज्रुट গৃহ-। পুটিষ্ঠাণ সম্বাপ্নোতি স नद्रः माश्रःवाकि ही ।। भूमश्रापतम ভূভাগে পুশস্ত ভবনং হয়ে:৷ কা-ब्रय्डाच्लान् लाकान् म नदः ल् তিপদ্যতে ॥ ইষ্ট লানাঞ্চ বিন্যালে। যাবদ্বয়ণি ভিষ্কতি। ভাবদ্বয় সহ-সাণি ভৎকর্তা দিবি সংস্থিত: ॥ िकीर्खा त्रांभ कृक्शमा सनिरवः शुः गुकाबिपः । नवगु क्य गायः **তि** পাপ• জন্ম শতোভব• ৷৷ যে খ্যান্-

**छि यना** त्छ।। कविष्यानि स्व गृ-रु । (उधा विनीय उभाभ भूई-जगणाटा छद ॥ (य १न्यामिख क्कमा कियमागः इति गृंशः। जि-शि भाभविनियुं का विकवः (लाक মাপুয়: ।। কনিষ্ঠ মধ্যম শূষ্ঠ कातियञ्जा इत्त्र शृहिः। अर्थक देव-ফাৰ লোক মোক্ষণ লভতে জ-মাহ।। সমতীত ভবিষ্যঞ্জলা-ना नयुक नतः। विकालाक नय-**छ।। मु** कात्रविद्या श्रत शृंकः॥ म्-ञ्जाभाः यट कनः विश्वा वाकिताः धानि ि मं रेवः । भानाउ उट সুথেতিব নিবেশ্য ভবন হরেঃ !! যে হতাভিমুখা: শ্রা গো বি-পু। १थं ब्रगाबिद्ध । न ७९ क्व म-নাপ্রোতি কার্যিত্ব। ছরে পূর্হে ॥ প 👣 🕏 ति छ॰ त्रवाः भक्षभामान यायुकः। कात्रविद्या इति शाम शूक-शाशा बुखिदिर ॥ नाकनार्कः সহসেুণ শভেমাছেন বা হরে:। जून। कन ममाथा। उ उनी श्रद দরি দুযোঃ ॥ পতিত পত্যানস্ক তথাৰ্জপতিত তথা। সমূজ্ত एत थान षिरु १ क्न माश्या ।। इंडि विक्स भूबारण रेख्य कियायाः, त्म व्यान्नामन वामाष्ट्रायः॥

বিকুচক জী হতত্বেধামযচক বিশেষ: । যথা। বিকুচক করে
চিক্ল সর্বেষা চক্রবর্তিনা । ভব ভারব্যাহতো যস্য পুভাব জিদশৈ রপি॥ ইতি বিফুপুরাণে ১ অংশে ১০ অধ্যায: ॥ রেথান্তরানাসল রেখান্য চক । ইতি ভট্টাকা॥ সুদর্শনচক্রঞ্ব।।

विकृ उनः क्री अधिनी समात्रकृ छ **প**क्टें उत्त विष्मयः । यथा । मानीयः বিষ্ণুতৈলক্ষ মর্বিদ্যেন বিনির্মাত।। ইতি বুন্ধবৈবৰ্ত্তে গণপতিখণ্ডে ১৩ व्यक्तायः ॥ 🗱 ॥ व्यथः बन्नविकृरेखः ण । भानभगी भृत्तिभगी वना गातक उल्नाः। वत्र ७ म ५ म्-লানি বৃহত্যো: প্তিক্ষ্য চ ॥ শতাবরী সহচর• পচেদেতৈ: প वाचिरेड:।रेडन नुइ॰ भरग नद्वा গব্য: বাজ চতুর্গণ ।৷ অস্য হৈ-जना भक्ता मृत् वीर्या मकः भन्नः। বাতার্ত্তা নর নাগাশ্চ পীল্বা দৃঢ় ত নুব্চ:॥ হৃৎ পার্শ শ্লে বাভানে গলগণ্ডে হদিতে ক্ষ্যে শর্করাশ্ম-রি পাণ্ড্র কামলান্ধাবভেদকে॥ क्कीरानिमृत्य २०७ हास्को ह छत्र। बर्ड्स রিতে হিত । জীণা নশ্বরীণাঞ্ गर्छ **डिकंब॰ भन्न** ॥ এडम्बन

तः रे**उनः** विकास भित्रकीर्खिङः॥ **७७नः शात्रक्रउपुनः।** वृहरङ्ग वृंश्जी कणकार्याः। शृखिका नारी করঞ্জ:। সহচরো বিণ্টী। অত্র ক্বাপান্তরাভাবাৎ ক্ষীরস্য চতুর্ণণ জল• কশ্চিদ্দাতি ৷ স্বরসক্ষীর সা-क्ला: भारका शख्रितः कृष्टि । कनः हजूर्सनः उब वीर्यप्राधानार्थ मा-রপেৎ।। ইতি পরিভাষা বলাৎ।। কুচিদিতি পাঠাৎ ক্বাথান্তর রহিতে क्विवन्धीद्राप्ति महिङ रेडना दिना-কে জ্ঞাতব্য ন তু সর্বত্র ৷৷ এলা চ-न्तन बरूमा ७ क् मुद्रा करहान मा भी मा। श्रीवामम् न गुष्ट्र भनं मान्ट् क्लोनीथु:जानीत्र स्नाकस्त्र नथ शू-**डि लिन जनग्रह्मणी नवसानिकः** । शक्त मुक्त भिष्ठ श्रुप्तय मधिन 🗟 विक्टिनारिषु ॥ 🕬। यथ नुरुद्धिकु-তৈল। জলধর মশ্বস্কা জীবকর্য ভ को मही।काकाली की ब्रकाका नी कीवडी मध्राष्ट्रिका ॥ मध्रिका (पव-माय भग्नकां इक टेमलवः। मांभी **्रिला दुरु अ**श्चर ब्रङ्ग इन्ह्रेन देशनाज**ः** ॥ মজিটা মৃগনাভিচ্চ ে ভাল্ন ब्बद्धमः। भगो ब्रन्तुक ११ किन्द्र गु-ष्ट्रक नथी उभा।। अडिया लिनि-रिक जोरेग रिखननाति । ७२,७ १० ।

**भा**ंडावबी बन्नमयः मुक्कका**नि मयः** ভবেৎ ॥ विक्टेंडगवब॰ (णुक्रः नर्बराउविकात्रगुर । উन्नु वाट्यः विष्युपर्याः शृ॰ माञ्जविरामयः। यथा ছধোবাতে অজ্বিপুহ এব চ।। শিরোমধ্যগতা যে চ মন্যান্তয়ে ় গলগুছে। যস্য শ্ব্যতি চৈকাঙ্ক। পতি যঁস্যুচ বিস্থলা।। যে বাত পুভবা রোগা যে চ পিত্ত সমৃদ্ভ वाः। **गर्वाः खानामग**र्गाम् गूर्यः ন্তম ইবোদিত: ॥ ইতি ভৈবজ্য ब्रङ्गावनी ॥

বিষ্ণুদৈবত• **〉 জি** বিষ্ণু বিষ্ঠাতৃদেব-विक्षुरेत्वजुर<sup>्</sup>) जाक**ः। यथा।** बुर्जाः পকরণ সর্বা কথিতা সর্বাদৈক **७** । गृश्छ मई रित्व छ। यह नुकः ছিলোভ্যা: ॥ ভজ্জেব বিফু रिनवजाः मर्बः वा निक्रुरेमवजः। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব বিফুধর্মোত্তর ব हनः ।: **नु**विभानक्षवः । इति (का)। তিয•॥

विक्टेमवज्या जी अकामणीजिथिः ।। दारमी डिथि:। यथा। अकारमी দ্বাদলী চল্যোক্তা এচক্রপাণিনঃ । ত্রেদেশী স্বক্ষ্য শিব্যোভা চতुर्पणी ॥ इंडि मृटिः ॥ এका-मणी गलारियाव हामणी गानु (भाष यूर् । न हाल दिदित्नाणः স্যাদুভযো দেবিতা ছরি: ৷ ইতি ভিখ্যাদিতভ্তু• ॥

। বুন্দচারিকাণ্ডে ভবিব্যপুরাণ । অষ্টাদশ পুরাণানি রামস্য চরি-**७॰ ७था। विकृ**षर्गानि माजानि শিবপ্রমান্স ভারত।। কার্ফ্যঞ্চ প-ঞ্মো বেদো যমহাভারত মৃত। নৌরাক ধর্মা রাজেন্দু মানবোক্তা নহীপতে ৷৷ জযেতি নাম এতেয়া• পুৰদন্তি মনীবিশঃ। জ্বত্যনেন স•. সার মিতি জব ভতদ্শুন্থ:। ইতি जिथ्या मि छङ्ग ॥ 🗱 ॥ विम्या विल्या विल्या । यथा। ञातान ज्ञक्षा हिन्तुञ्च विकू-थर्माथा विराया। महीन् भजून् वि-নির্জিত্য তাঞ্চ বক্ষের ।। भारत्या जीनुरना करबी करत्व क्रा থোরসি। মৃথে শিরস্যানুপ্রাদো-कादामि विनिर्फिल्मि ।। उन्या নলেবণাযেতি বিপর্য্য মথাপি বা । কর্ন্যাসং ভত: স্ব্যাৎ দাদশা-क्त्रं विमुखा ॥ भूगवामि वकाद्रांड बज्बाङ्क अन्द्रभृ। नारमः क्रय उँ काद्र नकाद्र भभ मूर्जन।। सा-কারস্ত ভ্রুবো র্মাধ্যে শিখা নেত্রাদি মৃদ্ধক:। ওঁ বিকাৰে নগ ইতি ইন° वज नुमारुद्धरः। व्याद्यानः भद्रयः

श्वारारहिष यहेमांकि 🤊 यु ठ॰। समः त्रकाः उठः स्याग्नरम् वि र्ज **ल**वज् ॥ बिविकत खबा कारण छ লে রক্ষতু বামন:। অটব্য: নর-সি-হন্ত রানো রক্ষত পর্বতে ॥ ज्यो त**क** जू वादाहा रुग्या ना রাশণা ২বতু। কর্মান্তাচ কা ম্পিল্যদন্তো যোগান্ত রক্ষত 🕕 र्यभीता (एवजाया: स्मात्रा भ-क्तवृज्ञाए। नाद्रालान्। हंभए भा-याथ कृष्यं। देव देनशंद्यः जना ॥ ধন্ত র রপথ্যান্ত নাগঃ ক্রেখেব-मार भिन्। यक्तवाकावनः कालाब्यारमा ज्वानाह बक्क जु॥ বুজ: পাষও সংঘাতাৎ কল্পির-ब्राट करनः मनः। भागान्यस्रः मित्न विकः भा उ नातायामा १वज् ॥ मध्र। हानदाङ्क ह नायः त्रः कञ् भारतः। इतिकनः भुत्तास **२**वडार शृज्य श्वडाब्बनार्पनः॥ धिश्रता १वामकतात भन्मना-(ज) निमान्तरक। ठक (कोल्यानकी वागाः इष्ठ महा क द्वाक्रमान् ॥ मञ्जमदन्द्र मञ्जूष्ठाः मास्यः रेव गः क्छ उथा। वृक्षी निष्य ननः भागान् भाग्र भाषं ( ज्यमा: ॥ (मरिय: निर्दि यूराभनः मना नर्दव भाछ |

নাং। বিদিক্ষ্ দিক্ষ্ চ সদা নরনিংহ শ্চ রক্ষত্ব। এ জারবনাণশ্চ যং যং পশ্যতি চক্ষ্বা। স
বশী সাহিপাপ্মা চরোগান্মকো
দিবং বুছেএ॥ ইতি গাক্ডে ২০১
অধ্যায়ঃ॥

दिक्षार्या इद हो ज हि जावित्न-य:। ত্র পুশুকর্তা জনমেরযসূত:। वकादः (नोनकानि अवगः। उत २०० वृखाचा उप्गूख पुष्ठत्याः ॥ বিফ্পজর জ্লী বিফারবচবিশেষ: । यथा । भुवक्तामाधुना (बृङ्हि-क्व. १क्षतः म् छ। नमा मन-ত্তে গোবিন্দ চক্রণ গৃহ্য সুদর্শন।।। शाह्या द्रक्ष मा विष्या द्वा मह শরণ গতঃ। গদা ফৌমোদকী পৃছ পদানা ভাষিতদুয়ত ॥ या-मा अक्ष मा दिएम ए मह শরণ গত:। হল নাদায (সীনন্ত नः (उ পুक्रवाउम ॥ পুজीहतः রক্ষ নাং বিষ্ণে। ভবস্তু শারণাগ-ভ াপঞ্জন্য তথা শল্প শার্ক काभीत भक्षयः।। नैर्यं यक्ष माः विष्का आह्मगाः यक्कन्कत । ठर्म স্ব। শত॰ গৃহ্ খরু চন্দু দন• उथा ॥ रेनवाज्याः साक तक्त्य मित्र स्-उं न्रकण तिन्। देव छ ए छ । भू गृद्य

पः जीवरम कर्णज्यम ॥ वासवताः व्रक्त मा॰ (एव व्ययणीर्य नमाञ्च (छ । दिनाउंगः मभाक्श व्यवद्गीत्क জনাৰ্দন।। মাণ দ্বণ রক্ষাজিত সদা নম তে হন্ত্পরাজিত। বিশালা: ক্ষণ সমাৰুহ্ রক্ষ মাণ ত্বণ রসাত্র ल।। অक्পात नम खडा महामीन नमाञ्च তে। कत्र मौर्याष्ट्रीयु मह्ययु তথাপ্তভূজপঞ্জর॰।। কৃত্বা দ্ব॰ র क भा (त्व नम एड श्क्रांडम। এ उमू क॰ जगव जा विक्षव॰ लक्षत्र॰ नरूट ॥ भूता तकार्थ की त्यान काञ्जायन्त्रा मिल्लाखन्। यता मा ना गयामात्र मानवः महिवासूद्रः ॥ हानव वक्तिकक उथान्।न् मृतक एकान्। ইতি वानत्न ১१ व्यव्यायः ॥

विक्ष्यमः की व्याकाणः। इंडाप्यद्रः
।। कीद्रामः । इंडि मिनि ॥
शवाः। इंडि स्मिन्नुः ॥ विक्षाः
इतिः। यथा। व्यशुगु शूर्णाश्वद्रम्
कीनार्णयाछि (इंडवः। यञ भद्राः
न रणान्छि उद्यक्षाः श्रद्रमः श्रद्र

বিষ্ণুপ

চরাচর । ভাব্যঞ্চ বিশ্ব নৈত্রেষ তদ্বিকো: পরম পদ । । দিবীব চক্ষুরাতত বৈত্ত তমহাজ্মা । বিবেক জ্ঞান বৃদ্ধগুতদ্ধি বিক্ষো: পর পদ ।। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ২ অংশে ৮ অধ্যাশঃ ।।

विकुभनी जी भन्ना। इंडामद्रः॥ व्यम्याः काद्रगः यथा। नात्रम छेवाठ । কলে: পঞ্চসহসাদে সমতীতে সুরেশরী। কু গতা না মহাভাগ **छ**त्म व्याथ्याञ् सर्वम ॥ नावाय्न উवाह। गञ्चा अब्रम् जी लब्बी रेन्छ-তা স্তিসে। হরে: প্রিयা:। তুলসী সহিতা বুন্ধন্ চত্যু: কীৰিতা: म्पुरञो ॥ नाजन छेवछ । वज्व ना म् निर्मुष्ठ गङ्गा नाजायनिश्या। अ-হোকেন পুকারেণ তল্ম ব্যাখ্যা-**ञ् मर्शम।। नाबायन छेवाछ। भूबा** व ज्व (गालातक शका मा पुवक-পিণী। রাধা কৃফাঙ্গ সভ্তা ভদ্--मा उर सक्लिनी ॥ पुराविधाज्-দেবী সা ৰূপেণাপুতিমা ভূবি 1 मा मकामा क्कमारच सम्वास म-লজ্জিত।।। পুফ্লবদন। হয়। মব-मक्त वालमा। गृहिं डा পुड्कालः ণ পুলকান্ধিত বিগুহা॥ এত্রি-मस्य তव विमुज्याना ह ब्राविका ।

शानी विः मरकारि वृज्ञ कारि চন্দুসমপুভা ॥ কোপেন রক-পদাস্যা রক্তপদ্মজলোচনা। সু-চাৰু রাগ সংযুক্ত মোষ্ঠ কম্পায়তী क्वा ॥ তাঞ দৃষ্টা সমুত্ত জৌ ক্ঞ: नारत পूर्वकः। উত্থায गन्ना महमा সংভাষাঞ্চকার সা॥ স্শল প: রিপপুছ ভীতাতিবিন্যেন চ। ধ্যানেন শরণাপর। ত্রীকৃষ্ণ চরণা-মুজে॥ তত্ত্পদাহিতো বিষ্ণু ভী-ভাবৈ চাভ্যা দরে। বভ্ব ছির **চিত্ত। সা সর্বেখ**রবরেণ চা। উদ্ধৃ नि·शामनञ्चाक द्वादाः गङ्गा नहमा ना। এ अविषय दात्रा द्वारी क गरी ल भूवाह मा।। (कम भूगतम कनारि স্মিতা বুমুখাৰুজে। পশ্যপ্তী স ম্মিত পার্যে সকামা ব্রুলোচনা।। जुकाशीयाः जनित्रीक्या मकायः ज মিত:সর।।ম যি জীবতি গোলোকে **च्**ठा मृद्धि त्रीम्भी ॥ प्रायदिवकः मृब् खि वाद वाद करवामि **ह**। ফ্না করোনি পুশ্ন চ ন্ত্রীলাতি: त्रिक्षमानमा ॥ मःगृष्ट्यमाः निया भिष्ठाः भारताकाम् गह नम्भ है। व्य-ন্যথান হি তে ভদু ভবিব্যক্তি বুজে প্রব ।। ইত্যেব মৃক্তা সা রাধারক্ত পক্ষলোচনা। গঙ্গাং বক্তু সমা-

রেভে ন্যাস্যাণ লজ্জিতাণ সতীণা গঙ্গা রহুস্যু বিজ্ঞাব যোগেন সি-দ্ধযোগিনী। তিরোভ্য সভামধ্যাৎ चजल• भुविरवना जा॥ द्राष्ट्रारगब বিজ্ঞায় সর্বতাবস্থি ভাগ্য ভাণ্য পা-**ন· করু · সমারেভে** গণ্ডাং সিজ-(यागिनी।। गञ्च। त्रस्माः विकाय যোগেন সিজ্বোগিনী। শ্রীকৃষ্ণ চ-রণান্ত্যে:জ• বিবে**শ শর**ণ• যথৌ ॥ (गालाकरेक्ट रिञ्च छे॰ युक्तालाका-रिक॰ उथ**ा ममना ब्राधा मह**ेव**ेनव** গঙ্গা া তুলা বিজু **শি**বাং **५५ ः । ्जु निठाक्द्राः। मन्दर्श** ্ৰত হত ব্**বাঃ াসদ্ধা তপৰিনঃ।।** ा ा ा अभिनेत्र म्याङ्ग्यः भूकवर्शक ७ ल्बाः । **मर्ख् शूलगू (गादिन्म**' নংইশা পুকৃতে: পর• II বিজায় **ত**-मिल्यायः जानूवात मुद्दा बः। 🕮 ভগবানুবাচ। আগতা: সূমহাভা-गा गक्रान्यन कात्रपाट । गक्रा मह-রণান্তোজে ভযেন **শরণ** গতা।! ब्राप्त भाग्न भाज्ञ सिह्डी मृक्ष्या भाग्न मिथानजः। मान्याभीनाः ब रेङ्कृत्। যুবং অকত নিভিযাং॥ ঐক্কস্তবচঃ শুন্ধ। সন্মিত: কমলোক্তব:। তুষ্ঠাব সর্বারাধ্যা• তা• রাধা• 🗟 কৃষ্ণ পু-জিতা ৷৷ বজুৈ শতুভি: সভ্য ভ

ক্তিনমুখ্যকন্ধরঃ। ধাতা চতুর্ণা ধে माना मूबाह हजुबाननः ।। शका जुमक স•ভূতা পুভোশ্চ রাসমগুলে । ফু वर्षा पूर्वक्या ना मूक्राः महत्र खद्रार । कृष्मा ना ह द म ना ह दूर-्कन्तामम्भी जिया। इसाज शुरुवः ক্ত্বা করোতু পুদ্ধন তব ॥ ভবি-बाजि निज्यमा रिकार्धन महरू खू कः। वुकारा। वहनः शुक्तः श्रीहका র চ সন্মিতা।। বহি বঁড়া সাক্ফ भाराक्ष्र नथागु छ:। छेद्रिव सःवृङ् **भाश उत्श**ेखकाक पर्या **डे** वाम (डागानवाभ उनिधे) इस्त-छ।। उद्धार दक्षना कि छ र इ। পিতঞ্চ কম্ভলৌ । কিঞ্চিদ্ৰবাৰ শিরসি চন্দার্জে চন্দ্রশেশরঃ।গঙ্গা। रेय द्वादि शराखः शरासे कमाला-प्छवः ॥ गञ्च। **छ। त्यव म भृ**क्ष दि ष्ठिं नुगयो मजी। (गानाक ह স্থিতা গস্থ বৈষ্ঠে শিবলোককে ৷৷ ব্ৰন্নলোকে তথান্যত্ৰ যত্ৰ পুরা স্থিতা। ভবৈষ সা গতা গন্ধা চা জ্ঞথা পরনাত্মন:।। নিগ্রা বিফু পাদাব্লাৎ তেন বিফ্পদী শৃতা। इंडि बीवुक्तरेवदाई भूक्डिया अग (क्षामान्योगनः १ व्यवधायः ॥ 🕸 ॥ বৃষ কৃশ্চিক নিংহ সম্ভ ন ভারে।

यथा। ভविष्ठ मार्न्य क्यांजिख्यू । धन् मिथुन कन्ताम् भीतः ह यऊ শী হয়:। ব্য বৃশ্চিক সম্ভেষু সিণছে বিফপদী মৃতা।। অপিচ। এইঞ্ य उभी छ। दिश्वकाण व्यवस्थानः व्यर्बाक् (याउन विष्क्रिया नाउडः পক্ষ যে ডশ। কাল: পুণ্যার্ক সংক্রান্তে বিদ্বন্ডি: পরিকীর্ত্তিত:॥ ইভি শাভাভপীয় দিবা বিফুপদী বিষ্ণ । অভএব জাবালি বৃহ্ছপি। (धी । भूगताया॰ विकृत्रमां भूतक् পশ্চাদপি যোড়শ। ভত্ত স্থানাদি ফল। অয়ন কোটি গুণিত। লক্ষণ বিষ্ণুপনীযু চ। ষড়শীতি সহসুদ্ভ ষ ডশীত্যা নুদাহত ।। ইতি তিখ্যা-**मिउन्द**•॥

दिस् भरीठक की कि शिश्वा गुरु । या का मुक्त का निम्म के कि निम्म के मुख्य के निम्म के मुख्य क

বন্ধন লাভ এব চ। ঐশ্বর্য্য রাজ-পুজা চ অপমৃত্যু রিভি ক্রমাৎ ॥ ইভিজ্যোভিস্তত্ত্বু ॥

विकृष्डिः जी जगदर्भवा।यथा । স্ত উবাচ। বিষ্তৃ ভক্তিণ পুৰক্ষ্যা মি যথা সর্ব মবাপ্যতে। যথা ভ-ক্ত্যা হু রি স্তয্যেত্তথা নান্যেন কেন-চিৎ।। মহত: শেুবসো মূল পুস ব: পুণ্য সন্ততে:। জীবিত্স্য ফ্ল' चानू ननाठि याद्र १ रहाः ॥ जज ইত্যেষ বৈ ধাতু: সেৱাযাণ পরি-कीर्खिंग:। जमार मिवा दुरेश: পোকা ভক্তি সাধন ভ্যসী ৷৷ তে **७का (नाकनाथम) नाम कर्याहि** कीर्ज्य । मुक्षचानुनि अःहर्याट বে চ হাই তন্কহা:।। জগদ্ধাত্ र्याष्ट्रभमा भिवा छ। हब्रशावायाः। इंश् निज्ञिकाः अयुर्ः निका (य विकवास (उ॥ भुगाम भूर्वक का-ख्या (या वस्तरेष्ठकृत्वा क् न: 1 उ-एक जनवार मनाः भूका याकान् (बारनः॥ उरकथा मुवत्न श्रीजिः স্বরনেতাস্থবিকিগা। যেন সর্বাত্ম না বিফৌ ভক্ত্যা ভাবো নিবেশি ত:।। বিপ্রেম্বীশ্বর দৃষ্টিক মহাভা-গবতো হি স:। বিষ্ণোশ্চ কারণ নিত্যু ভদন্ম দন্তবৰ্জিত ॥ ব্য ম-

ভাৰ্ছনকৈব যো বিষ্ণু চোপজীবভি । ভক্তিরইবিধা ছেষা यश्चिन् স্লেছে-পি বৰ্ত্ততে।। স বিপেন্দ্ৰো মূনি: 🕮-মান্স জাত: সচ পণ্ডিত:। ওমৈ দেয় ততো গাৃহ সচ প্জ্যো যথা হরি:।। **মৃত: স**·ভাবিতোদ্যা**পি**, প্ৰিভো বা ছিলোভম:। পুনাতি ভগবভক্ত তপসোপি যদৃছ্যা ৷৷ পুণভাষ পুণন্নাষ তবামীতি চ যো वरम्या अ छयः अर्ब छ्टाख्या मन्त्रा-দেত্রুত হরে:।। ম**ত্র**াজি সহসেু-ভ্য: मर्दावनाष्ठ भाद्रगाः। मर्दाव-मान्नविध्कार्गा विक्रन्तका विभिन ষ্যতে ৷ ঐকান্তিকাক্ষ পুৰুষা গছন্তি পর্মণ পদে। একান্তেনাসমে৷ বিফ্ र्यमारियाः भन्नायमः ॥ उमारिका-ভিন: পোক। স্তভাগ্বত চেত্ৰ:। প্রিযাণা মপি সর্বেষাং দেবদেব্স্য मृश्चियः ॥ व्याष्ट्रम् मना यमः ভক্তি রব্যভিচারিণী। যা পুরি রবিবেকানা বিষযেম্বনপাযিনী। বিশ্রু সংমরত: সা মে ছদযায়োপ-সর্গতু ৷৷ অন্তর্গভোপি বেদানা**• স**-র্বশাস্ত্রার্থবেদ্যাপ। যো **ন সর্বে**শবে खक उ॰ विष्ठार भूकवाधमः ॥ নাধীত বেদশাস্ত্রোপি ন কৃতাপ্বর সংস্তর:। যো ভক্তি বহুতে বিষ্ণৌ

তেন সর্ভ: কৃত: ভবেং ।। যজ্ঞানা: জত মধ্যানাং সরেষাং পার্গা অ পি। ন তাং বাস্তি গতিং ভক্ত্যা যাং যান্তি মুনি সত্তম।। यः কশ্চিদ্ধেঞ বোলোকে মিখ্যাচারোপ্যনাশুনী। পুনাতি সকলান্ লোকান্ সহসাুণ मुद्रिताष्टिः ॥ (य नृमःमा पृत्रः আন: পাপাচাররতা তথা।ভেপি याछि भद्रः ञ्चानः नादारग भद्रायः भाः ॥ मृत्रा जनार्म्नात **ভক্তि यं रिन्**वा-वाजिजादिनी। उना किरद दर्श সূথ দৈব নিৰ্বাণ হৈতুকী ॥ ভুা-ন্যভাণ ভৰ সংসারে নরাণাণ কর্মা पूर्गभा । इष्ठावनायाना (श्राका ভिक्ति खुरहे। जनार्यनः॥ न मृश्ना**उ** छनान् रिक्यान् (**ए**क्ष्मक्स) हकियः। न নরে। বধিরে। জ্ঞেনঃ সর্বধর্ম বহিষ্ **७:** ॥ ना न न की खिं छ विद्या यंत्रः পু:সোন জাযতে। শরীর পুলকো ভাষি ভভবেৎ জণপোপম ॥ য্মিন্ মৃতে ছিজশে্ঠ মৃত্তি রপ্যচি त्राफ्टवर । विद्यो निविध ननमान किः পून व्िन क्वयः ॥ अशुक्ष মভিবাক্ষ্য পাশহন্ত বহতি যমঃ কিল তম্য কর্ণনূলে। পরিহর মধু-जूरन भूभमान भूजू वह मन्रम्भाः न देखनामाः ॥ अभि ए८ भूमुनः

চারো ভজতে নামনন্ডাক্। সা-ধ্রেব স মন্তব্যঃ সম্প্রেবসিতো হি স:।। কিপু ভবতি ধর্মাত্মা শখ ছান্তি নিবছতি। বিপ্রেন্দু পুতি-জানীহি বিফুভকোন নশ্যতি॥ ধ-র্মার্থ কামে: কিন্তুস্য মূক্তি শুস্ত করে ছিত।। সমস্ত ভগতা। মূলে यम्। ভক্তिः ছिद्रा इस्त्रो ॥ रेनवी-খেষা গুণন্ধী হরে মাঘো দুরত্যুষা । তমেব যে পুপদ্যন্তে মাযা মেতা॰ ভরন্তি তে।। কিবদারাধনে পুশো নিষ্যতে হরিমেখন: । ভক্তিরা-वाधः (७ विक मान्य खास्तायकः इतः ।। न मारेन दिविदेश में रेख में शुरेश নানুংলপনৈ: । তে।ব মেতি মহা-আলে। বথা ভক্ত্যা জনাদন:।। স সার বিষর্ক্ষস্য দ্বে ফলে ছান্ডো-পনে। কদাচিৎ কেশবে ভক্তি স্ত-ভক্তি র্বা সনাগন:॥ পরেষ্ পুয়েষু कालय (जारव युक्ट मार्क)यु मरेन-व সৎসু। ভতৈ)কলভেঃ পুৰুষে পুরাণে নজ্যৈ কথা ন ক্রিয়তে পুষ-ছঃ। আয়ে টযভি পিতর: পুনৃত্যন্তি পিতামহা: িকেবো হনৎ জলে জাতঃ স নঃ সন্তার হিষ্যতি ॥ অজ্ঞা-নিনঃ সর্বরং সন্ধিক্ষিপত্তি যে পা-शिरनाभि भिष्काल सुरगाधनाम्।।

। মুক্তিণ গতাঃ অরণনাত্র বিধ্ত পাপা: ক: সংশ্য: পরমভক্তিম-ভা॰ জনানাং ॥ লরণং তং পুগমা (य ४) ानर्याणविविद्धिं गः। (छिन মৃত্যু মতিক্রম্য যান্তি তদৈক্ষক পদ• ॥ ভবোদ্ভব লেশশভাহত ख्या निर्विष्कृषितिस्य वहरेकः न থৈ:া নিষম্যতা• মাধ্ব মে মনো-एग खुरष्युणाको पृष्ठ कि वक्ष নে।। বিফু রেব পর বুদ্দ হুভেদ মিহ পঠাতে। বেদ সিজাত মা-र्लियु उ॰ न जानिष्ठ माहिजाः॥ বৃষ্ঠি কৃদি স্বাভ্নে চ ভ্যান্ ভবতি পুমান্ জগতো হস্য সৌন্য क्षाः। किंछि वजन मिछित्रस्याः আনো হয়: কথণতি চাক্টণৈব মানপতে: ৷৷ ইতি গাৰুডে ২০১ व्यव्यायः ॥

विष्याया खी मुर्गा। यथा। नावम छेवात । मुर्गा नावायगीणाना वि-यृगाया णिवा म भी। निछा मछा। छगवडी मर्बागी मर्बम्बा॥ य धिका विकवी भोती भार्व भी ह मनाजनी। नामानि क्षेथुव्याकानि खुड़ानि मूछनानि हा। व्यर्थ व्याप्त थ नाम महान्य महिन्दा निष्ट्रिक व्यक्त। दुन्दि वास्तिहार खुड़ व्यक्ताक मह मगडः ॥ मात्रायः छेवाः । मृक्षे भाषाः भूता मृश्चे विक् ना भत्रमानाः ना। भाष्ट् भाष्या विश्वः विक् माः या ह की र्ख् छ।।। हे छि युक्ति वर्षः खं भुक् उथर् ७ ८८ मध्यायः ॥ व्यक्ति ह । वृक्षावाह । विकृ भाषा हु ७ क्ष्मान् भहामायाः क्षम्ययीः। नाम् । भः-भाष्ट् के छी महार मध्छ। माविज्ञाः भाष्ट के छी । उमार हुः विकृ नावाः विश्व भिन्। एथ उथ्य मुद्दाः हुः काः विश्व भिन्। एथ उथ्य मुद्दाः हुः काः विश्व भिन्। एथ उथ्य मुद्दाः हुः काः विश्व भिन्। एथ उथ्य मुद्दाः काः

निकानुद्राशि ६ अथुन्यः ॥
दिश्यमाः १० व्यापमानुद्धः ।
न क किनिजा । यथा । तदन
जेवाह । व्याप्ता वनवजी नायी नद्याम्यं प्रयो मूजा। विज्ञः नाजद्राम्यं प्रयो मूजा। विज्ञः नाजद्राम्यं प्रयो मूजा। विज्ञः नाजद्राम्यं प्रयो मूजा। विज्ञः किन्
द्राप्ता विद्राप्ता प्रयो मूजः किन्
द्राप्ता माखा मूजि मजीश्राज ॥
दिविह्या द्राम्य हर प्राप्त द्राम्यः मुखः । विद्राक्त विक्ष्यम्यम् द्राम्या प्रयो । विद्राक विक्ष्यम्यम् व्याप्ता ।

विकुत्रथः भू गक्छः। ইङ्ग्यद्रः॥ विष्णाः मान्त्रका।

विकृता छः न् निवीकि मुखाः। यथा । रेल्रवनाशु जिघारजन मुह्ल স-স্থা মুপেণ্বি । রাতো বো ধন্ বিষ্যা তি বিষেণবো বধ্যা। ইভ্য-गुरुष्शं विक्रमा गुरुविकृता ॥ ভনানার। বিফরতে। লোকে च्याजि गिवयाजि। न मामाहा भश्चांग भश्चात्रात्रा भश्न য়। ইঙি 🗐 ভাগৰতে ১ স্কল্পে ১২ ष्यशायः ॥

विकृतिको की विकाशको। ইতি ত্রিকাগুশেষ:॥

বিফুণলভা দ্রী ত্লদী। ইতি ब्रोकिनिर्दर्धः ॥ सन्दीः । यथा । टेब লোক্য গুজিতে মাড: কনলে বি युगला छ। यथा पु सरना काक তথা ভব মধি ছিব্ন।।। ইভি ভক্র-जातः॥ অशिमिथावृक्तः। इंडि **भ**क्ठिक्का॥

विशुवाहनः भूः गक्ष छः। ইতিছেন व्याः ॥

विकृदाहाः भूः गक्छः। ইछि भरद्रवादनी ॥

विद्याद्धः भुः ष्टर्शनमः। ইত **নরঃ॥ ধনুর্গ্ণস**্ধান ইলগতা বি इतः। कुत्र भिन कुराने हिला एक ।

স্টেৰ্ধাবোদেতি নিপাতঃ ৷ িয়া सु तथार जा क्षणः विकास का मिना শাকি চ যত্বাৎ বিক্ষারো দন্ত্যগো ামুদ্ধনি যুখ শচ। ইতি ভরত: ॥ नदः ॥

ব্রি हिः मु: । इज्रागानि-্ৰিয়ঃ (कावः॥

বিযুক্ ব্য পরিত:। সর্যত:। ইভ∫⊓ब्र: ॥

বিয়ক্ ল্লী বিয়াং।ইতি শক্রয়া-ৰলী ॥ বিশ্ব॰ অঞ্চি ইত্যৰ্থে তিলিখ্য ॥

বিয়ক্দেন: পুং বিঝু:। ইতানর: ।। विकासियीन। शही । यथा । निर्याण। शादी वित्यः स विश्वक्रमन শ্চতভূজ:। শ্ব চক্র গদাপাণি भीर्घणाणु, कं हो एतः ॥ द्रक्त शिक्-ল**্ণ্ড দিতপদ্মাপ্রিভিত: ।** প তৃতীয়: যরান্তেন সংফুভো বিজ্ঞু (नम्बा ॥ कीर्डिङ उप्र मस्डा হয় তেন ত পরিপ্রহে । ইতি कानिकानुदारा ४२ जन्यायः ॥ व्याप्तभागनः। यथा। उउक्त भिकः भादर्शः दुलामृत् संबुः या इः। या दूण अञ्यामा ह विज्ञक्रमाना मन् उथा ॥ इंकि नाटामा २ मधापः ॥

विश्वक्षत्रमिश्वया क्वी दाद्राशी।

हामाद्रशाल् इंडि डाया। इंडिंग् मद्रः॥ लक्षीः। दिव्वक्ष्यत्मा विष्ण् स्वराण्या॥

विश्वक्रात्म। जी शुक्कः। इठा-महाः॥

বিষ্ণন ক্লী ভোজন। ইতি জটা ধর:।। শদকরণ । যথা । বিষ ণতি বীণা। ইতি মুদ্ধবোধন্যা করণণা

বিষ্ণুড<sup>়</sup> তি সর্বভোগানী। বিষ্ণ গঞ্জ। ইভ্যনর: ॥

বিস্থাণ: পু• ভক্ষণ•। ইতি ছেম-চন্দ্র:।।

বিদ ক্লী মৃণাল । ইত্যনর: ॥ বিদ্যক্তিকা ন্ত্রী বলাকা। ইত্য-মর: ॥

বিসন্ধৰ্য নী কনল। ইতি রাজ নির্ঘটঃ।।

বিদস্কট: পু॰ সিংস্ঃ।ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ইসুবীবৃক্ষঃ।ইতিরাজনির্ঘট:॥

বিসজ নী পদা। বিসং নৃণাল। ভ্ৰমাতভাৎ॥

विभनाजिः शृ॰ श्रीमानी ॥ श्रमान जग्रः। ইতি ত্রিকাওশেষः॥ বিশ্পুস্ন লী পানা। ইভাগরং॥

বারাহী। বিস্থাদ: পু• বিপুল্**ন্তঃ। ইত্য**াঘা। ইত্য-

ি বিসরঃ পু॰ সমূহ:। ইত্যমর:॥ : পুসর:। ইতিনেদিনী॥

विजर्गः भुः मानः॥ छा। मानः নির্গন: । বিসজ্জনীয়: ।। স্থ্যস্যা-यग्राज्यः। इंजि मिनिभी।। भाषाः । ইতি হলायुषः ॥ विস्थैः । ইতি भद्रज्ञावनी ॥ विश्मयमृद्धिः। रथा । পুক্ষানুগৃহীতানা মেটেষাং বা স্বান্ধ:। বিদর্গো হ্ধ স্বাহা-রো বীজাদ্বীজ চরাচর া ইতি 🗐 ভাগবত ।। 🗱।। বিসজ্জনীবস্য পর্য্যায়: ৷ অ: সর্গে, রুদনা বক্তুণ विमर्गण विविन्तृकः। बाद्यार्खन्तु बर्खनावा कथा दाशी नराशिवः॥ **अ**न्हार्यत **उद्गी**या ह विश्व**मा उक्ना** भन्ना। इं ७ वी जर्ना जि**श**्राक्षा অপিচ। আ: কণ্ঠকো মহাদেন: क-ল প্রান্তা ছরি:।ইছা ভুদাু গণে-শশ্চ রাত বিদ্যানুখী সূখা।। দ্বি विन्तु **अभना (भारता ५ निक**रका मु:-থ শৃতকঃ। বিভিন্তঃ হুওলা বজুঃ भर्णः माकि निमानबन्धा मुन्तबी मु-খশ। দন্ত। গণনাথো নহে হর:। ইতি वीकदर्गा जिथाना इतः । 🕸 ॥ जन्र-ह। विमर्गः मर्ग माथ्यात्वा विगिधि-

यय माननः। व्यनिक्ष्या मह्मानि कानाङ्कालि द्रभालि छ ॥ इङि वर्गाञ्चित्रनः॥

বিসহ্জন লী দান । ইত্যমর: ॥
পরিত্যাগ: ॥ সংপ্রেষণ । ইতি
নিদিনী ॥

বিসর্গ: পু॰ রোগবিশেষ:। তৎ-পর্য্যায়:। বিস্পি: ২ সচিবান্য: ৩। ইতি রাজনির্ঘণ্ট:।। ভত্র বি-পুকৃষ্ট निषान अधार निकक्ति ঞাহ।। লবণামু কটুঞাদি সেবনা-দোষকোপত:। বিসর্গ: সপ্তথা **एछर: मर्ब ५: পরিসর্পণা**ৎ ॥ আদিশবাচরকোক্ত হরিত শাক শিশুক পুভূতীনা• গুছণা 🛊 🛚 **मध्याद्व॰ विदृ**र्गा**ङ । नृथ**क् बय ক্সিভি শৈকে৷ বিস্পা দ্বন্দু**জা জ্ৰ**বঃ । বাতিক: পৈত্তিকশৈচৰ কফ্জ: সামিপাভিকঃ। চত্বার এতে বীস र्भा वक्ष्यास्य बन्दृ का ख्रयः। व्याद्यः যো বাত পিতাভ্যা• গুছাখ্য: কফ বাভন্ত: ।। যুদ্ধ কর্দমকো ঘো-র: স পিত্ত কফসম্ভব:। 🕸। বি-সর্পাদোষ দ্য্যাণি সংগৃহ্যাহ। র क विभीका जुन्मा में पृष्य ला-वा खरगा भनाः। विनर्भागाः मः মুৎপভৌ হেতব: মগুরাতব: ॥

ত্রযো মলা: বাত পিত্ত কফা:। (मायाः म्यका ইত।र्थः । जनावा দোষা মলা ইত্যত্র পুনক্তি দো-(य। ९गिवरा९ ॥ # ॥ वाजिकना লক্ষণমাহ। তত্র বাতাৎ পরীস-পো বাতজ্ব সমব্যথ:। (শাফ যু-'রণ নিস্তোদ ভেদাযামার্ভি হর্ষ-वान् ॥ भन्नीमर्ला विमर्नः । वाज-জুর সমব্যথ: শিরো হৃদ্ গাত্রোদর শূলাদি যুক্তঃ। ভেদঃ বিদারণেনেব ব্যথা। আযাম: আকর্ষণেনের ব্যথা ॥ 🗱 ॥ रेभिंखिक माष्ट्र । भिंखाणुङ-ত:। ফতগতি: শী ঘুপুসরণ শীলঃ ॥ 🖶 ॥ শ্লৈ আৰু মাহ। কফাৎ কণ্ডু: যু হ: স্লিপ্ত: কফজ্র সনানকক্ ॥ #॥ সামিপাতিক মাহ। সমিপাত স-মূত্যক সর্ব কপ সমন্তি:। 🗱। বাত গৈত্তিকস্যাগ্নিবিস্পাথ্যস্য চল-ক্ষণ নাহ। বাত পিত্ত জুর ছদি मृहां **डी** नात्र ७ ए ज़ुरेगः । अशि ভেদাগ্রিসদন তমকারোচকৈ যুঁ তঃ॥ করোতি সর্ব মহঞ্চ দীগুজারাব-कीर्नद्र । य॰ य॰ मिन्न विजन्ने क সংসপতি ভবেৎ স স:।। শাদ্রা, স্বারাসিতো নীলো রক্তো বা স্প-**हीयाउ। अ**शिहक हेद क्लिंहिः भीयु- গড়াৎ জভঞ্চ সং॥ মর্মানুসারী বী ञर्भः ज्यामरङाज्यिन खडः। य्याप তাক্ হরেৎ সংজ্ঞা নিদাক খাস भीद्रायर ॥ क्षित्राक्ष मःगाठा वङ्ग মীদৃশী বভতে নর: । ক্ষচিছ্মা-রতিগুন্তো ভ্নিশ্ব্যাসনাদিষু। চে श्रेमान छड: क्रिंशे मत्ना (एक् नम् च्ह्या । मृः भुरवार्या २ मृ एक निमु १ সোগ্নবীসর্প উচ্যতে ॥ স্কেটিঃ উ-পচীয়ত ইত্যুবঃ। মর্মান্সারী হ-मयानमत्री। हात्रद् वीमर्भ हेळात्रयः । क्याः क्काः। स्रेयस्य उद्भः **खु॰ (পুর্যে**শ। মনোদেহসম্ভবা॰ নিদা মরণৰূপা। অশ্বতে পা-প্রোতি ॥ 🛊 🛭 বাতশ্রৈ 📆 ফ্র विमर्भ भार। कर्यन क्याः श्वता ভিত্বা তা বহুবা কফা। ব্লক্তা বা বৃদ্ধ ब्रक्तमः द्वक् **लि**बा न्नायू **भा•नग•**॥ দ্ববিদ্বা তু দীঘাযু **বৃত্ত** স্থল মরা-অনা । গৃন্থীনা ছক্তে মালা ব্ৰক্তানা° তীবুকগ্লৱা•॥ শ্বাস কা-भाग्र रेवत्रम्य (भाष हिद्धा विम जुरेगः। भार रेवर्गा मूई। क जका-क्ष महीन यूँ जः ॥ इंड्रायः गुहिबीमः পো বাত শ্লেম্য পুকোপ জ:। কফেন चर्छ्न्छिन প्रवािश सर्जू मुष्टः । ভেনায• বাভল্লেম্মিক:। ভ• কক্• |

বহুধা ভিত্বা ব্ৰক্ত বা দ্যযিত্বা ই ভার্যঃ। ত্বগাদিক মিতি ব্লক্তবি-(भयग॰ ॥ # ॥ भिडे लेबियक कर्म-মাখ্য বিদর্পমাহ। কফ পিত্ত জুরা ख्या निष्। **उन्द्रा नि**द्राक्षा। य-क्रावनार विष्कृत भुवातारवाहक जुगाः॥ गृहांशि कानि (जंदन रेक्ट्रा॰ निनामिनुव भोद्रवः। आस्मान्यवः শন• লেপ সূেতিসা• চ বিস্পতি II नुरियभाभाषय शृहस्मकरमण नहीः ভিক্ষ। পিডকৈ রবকীর্ণেভি পীত লোহিত পাণ্ডুরৈ: ৷৷ সিংজা সিডে1 মেচকাভো মলিন: শোফবান্ ও কঃ। গম্ভীরপাক: প্রাজ্যোম্মা ব্লিম: ক্লিষ্টা বিদীয্যতে॥ পক্ষত্বক্ শীর্ণ-भा•नम् अधिमायु नितागनः। **न**व-गिक्षक वीजर्भः कर्पमाच्या मुणिष्ठि ত।। স চ সর্গতি একদেশ মিত্য-ম্যঃ। পিডকৈ: পিডকাভি:। অ-বকীর্ণ: ব্যাপ্ত:। অসিতঃ কৃষ্ণ:। (नठकः क्रक्षः। প্राज्याग्रा প्-हुद्राया। । स्पृष्ठेः द्विषावनीर्याट**ङ** ल्थः मन्नाद्मा ভविक विकीर्याः চ। পङ्क्क् कर्मनवर्गाञ्ग्यञ मः। শীণ্মা॰স: গলিত্মা•স:। অভএব স্পাষ্টসুয়ে শিরাগণঃ ।। 🗱 ।। সালি-পাতিক মাহ। সমিপাত সন্থস্ত

সর্বরূপ সম্বিত: । 🗱 । ক্ষৃত জঞ্ বিদর্পমাহ। বাহুছেতো: ক্ষতাৎ कुषः मद्रकः शिखभीद्रयम्। वीमः প মাৰুতঃ স্ব্যাৎ স্বত্থসদূশৈ **िक्ड: ॥ (मृतिहे: लाथ कृत**कका माहाम्यः न्यावरनानिङः। वाञ् **হেভো: শ**স্ত্রপূহার ব্যালম্ভ নথা-म्रागस्ट हाः। म्रावरमानि छ व् <u> मुदर्गत्रकः ॥ # ॥ উপদুবানাহ ।</u> জुद्रा छी नात वमशू छ्न्या॰ नरतन क्ल-মা:। অরোচক বিপাকৌ চ বিশ र्भागा मूलपुरा: ॥ 🕸 ॥ भाषादामि-ক মাহ। নিধ্যন্তি বাত কফ পিত্ত কৃতা বিমৰ্পা: সর্বাত্মক ক্ষতকৃতক্ষ ন সিদ্ধি মেতি। পিত্তাত্মকোঞ্জন বপুশ্চ ভবেদসাধ্যঃ কৃ দ্বাশ্চ মর্মসূ ভবন্তি চ সর্ব এব ॥ পিত্তাত্ম কোঞ্জনবপু: পিত্তর: সন্কজ্জল वर्षः । সर्वे बवामाद्या ज्यामा ॥ 🗱 ॥ অথ বিসর্পস্য চিকিৎসা। বিরেক বননালেপ সেচনাসু বিমোক্ষা:। উপাচরেঅ্থাদোষ বিদর্গাননবি माहि जि: ॥ द्वाम नी वाट शवः षाक ठन्म भः भवुकः वन्।। घृठः क्रोः র্যুভো লেপে' বাত্রীসূর্প নাশন: ।। চল্ন মত রকং গাছা। কসেক मृद्धारेक भग्न छत्नुः गरेणवरेणः

मार्भन कर्न रिम्छ। वद्यान्द्रिः পিত্ত কৃতে বিসপে লেপে৷ বি-**ধেয: সঘূত: সুশীত: ।।**≉।। ত্রিফলা পদ্মকোশীর সমস্ব। করবীরক। নলমূল মনভাচ লেপঃ শ্লেম্য বিস-প্হা॥ সমকা লজ্জালু:। বাত পিত্ত পুশমন মগ্নি বীসর্পণে হিত্ত। বাত শ্লেম্মহর কর্মগুন্থি বীসর্পণে হিত । পিত্ত শ্লেখ্য পুশমন ছিত কর্দন স জ্ঞাক।। ত্রিদোষজ্ঞিয়া স্বর্যাৎ विमर्ल जिमलाभशाः ॥ श्री निर्द्रीय यञ्जी बाज हनसरिवला बारजी इतिहास्य कश्वादिः। (लाला मणाञ्चः मध्उः পুযোজ্যো বিসর্প জন্ত জুর শোথ-হারী।। নত তগর । চন্দ্র মত্র রক্ত গুাহু•। দশাস্কোলেপ:।। 🛊 🛚 ।। পরিষেকা: পুলেপাশ্চ শস্যন্তে প-ঞ্জুলৈ:। পদ্মকোশীর স্থুক। हन्हरेनना वित्रशंशा ज्ञिष वात्रा কটুকা পটোল ফলত্রয়ণ চন্দ্রন নিম্ব-সিল্জ:। বিসর্প দাছ জুর শোথ কণ্ড় বিস্ফোট তৃষ্ণা বনিছ্ৎ ক্যায়ঃ ॥ इक्षानि यानि अभी वि बुध्यू বিবিধেষ্ চ। বিসপে তানি যো-জ্যানি সেকালেপন ভোজনৈ: 🕬! করঞ্জ সপ্তম্ভ লাল্লীক মু হার্ক দু-कानन जुक्तारिकः। रेज्न निर्मा

मूब विरेष विंशकु विमर्श विरक्षि विष्ठहिंकाम् ॥ कब्रक्षान्टिजन ।। #া হঠাম্য স্কোট মসুরিকোক্ত **हिकि** एका न्यान्य इदि हिन नीन्। नर्वान् विकादान् भजित्माष्य थी-মান্ বুণ কমেণোপচরেদ্রখোক। ॥ ইতি বিসর্গাধিকার:। #। ইতি ভাবপ্কাশ: !!

বিসর্পণ ল্লী পুসর:।ইত্যমর:॥ তন্ত বুণ বিটপাদে বিসর্পণ । ইতি ভর 5: 11

বিদর্পি: পু' বিদর্প:।ইডিরাজ-निर्घण्डः ॥

বিসল ক্লী পদ্লবঃ।ইতি ত্রিকাণ্ড-(\*14: 11

বিসার: পু॰ মৎস্য:।ইত্যমর:॥ विमातिनी छो মাৰপণী । ইতি

রাজনির্ঘণ্ট: ॥

ত্রি পুসারিত:। বি বিসারিড: পূর্ব ঞান্ত স্থাতো: ক্ত পুত্যবেন निश्चमः॥

বিসারী তি পুসরণশীল:। ড**ে** পর্য্যায়: । বিসূত্বর: ২ বিসূমর: ৩ পুসারী ৪। ইত্যমর:॥

বিসিনী জী পদ্মিনী। ইত্যমর:॥ মৃণাল। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ !!

বিস্রিত•

करे। वदः ॥

বিসূত্ত ত্রি বিস্তৃত। ইত্যমর:।। বিস্ত্র: তি পুসরণশীল:। ইত্য-गद्रः ॥ विमद्रगः। গতিবিশেষः। विमृद्धा नमः। विभृद्ती नमी । বিস্ত্র তৈল মিভ্যাদি। বিসর-তি বিসূত্বর: সূ গভৌ শ্বরপসূজী-ণিতি ক্রপ্রস্তন্পিতি তন্। ইভি ভরত:॥

विम्यतः जि शुमत्राभीनः। इंड्र-मद्रः॥

বিসৃষ্ট: ত্রি নিক্ষিপ্ত:। ইতি জটা-ধর:।। বিশেষেণ সৃষ্টশ্চ।।

वियः भुः क्षी (रु.ग्रा०कः। याणी-তিরভিকা পরিমিত মূর্ণ । ইত্য-नदः॥

विखद्गः शृ॰ भद्मग्रविखादाः २७९० मद्रः ॥ वाक्षुनथः ॥ दिखादः ॥ পुषयः। इंडि सिनिने।। भीठेः॥ সমূহ:। ইতি শব্রত্নাবলী॥ বিস্তার: পু• বিট**প:।।** বিস্তীর্ণ**তা।** ७८ भर्गायः । विगुरुः २ वृग्रमः ७ ।

ই হ্যমর:॥ শুম্ব:। ইতি মেদিনী ॥ বিন্তীৰ্ণ: ত্ৰি বিপুল'। বিন্তত•। यथा। বিস্তীর্ণে বিকট বড় दिना-

ल विभूल भृथ। इंडि करेश्वर: ।।

क्षी अनुजाभः। इंडि विखीर्गभर्गः क्षी मानकः। इंडि

भय्हिन्द्रका॥

বিস্তঃ ত্রি লদ্ধবিভার: । ড< পর্য্যায: । বিস্তা ২ ততা ১ । ইত্য নর: ।।

বিশান্ত: ত্রি সুম্পন্ত:। যথা। বিশান্ত নজত শান্ত মান্ত কার সমাযুক্ত রস ভাব সমাযুক্ত রস ভাব সমাযুক্ত রস ভাব সমাযুক্ত লা ইতি তিথ্যাদিত জ্ব ॥ বিশ্বার: পু ধনুর্গুণশ্ম:। ইত্য নর:॥ অস্য বিবরণ মূর্জ্ব গা বিশ্বারিত: ত্রি পুকাশিত:॥ তার পুকাশিত:॥

ज भुजारम निद्यमः॥
विद्युतिणः वि सृर्जिनिणिशेः॥
विद्युतिणः वि सृर्जिनिणिशेः॥
विद्युतिणः। विथा। त्रक्त त्रक्ते कृणान्यक्ष
त्रक विस् तिर्विक्षणः। विश्वितः।।
विद्युतिसः शूः विद्युत्ति स्प्रमाः॥
विद्युतिसः शूः विद्युत्ति स्प्रमाः॥
विद्युतिसः शूः विद्युत्ति स्प्रमाः॥
विद्युतिसः शूः विद्युत्ति ।।
विद्युतिसः शूः विद्युत्ति ।।
विद्युतिसः शूः विद्युत्ति ।।
विद्युतिसः शूः विद्युत्ति ।।
विद्युतिसः श्रिक जावा। उद्युतिसः। विद्युतिकः । विद्युतिकः ।।
विद्युतिकः । विद्युतिकः विद्युतिकः ।।

विष्ठेक १। इंडि इच्चे मा । सादेनः

৮ (मु:है: २। इंडि द्रावनिर्धिः ॥

তম্য বিপুক্ষীনদান পৃত্তিকাণ সপ-প্রান্তি মাহ। কট্নু তীল্লেফ বিদা-हि कक कार्रेब बजीगीशामना छेल-क । उथर्ड (मास्य । विभन्न (११ क्-भाष्टि (नाषा भवनामयस्य।। पुठ मा-শ্রিত্য তেরক্ত মাংসাজীনি পুদুষ্য D। धातान् अर्बन्धि विश्वादीन् मर्ब-জ্র পুর:সরান্।। অতুদেবেণ অভূ-হেতুক শীভোকাদীনা নভিযোগেল । পাতুচিতাহার বিহার বৈপরীতে১-न पुरु बाल्विड्र दिरमुग्हान् कर्वडी-ভার্থ: ৷ জুরপুর:দরান্ জ্রপূর্বান্ ॥ 🛪 ॥ क्षमभाष्ट् । ञात्र एक नि जाः স্মেটাঃ সজ্ব। রক্তপিত্যাং । কু-চি**ং স**র্ভ বাণেকে বিক্রেটা ইতিতে মৃতাঃ ার জাপক্ষাঃ এতেন সর্বেগু বিল্যোট্যু র জপিত্তযোঃ পুথান কা-রণত্বা বথা দূলেধু বাভস্য তথা বাতানুগতি রুপি বোছবুটা। তথা চ ভোকঃ। যদা রক্তঞ্ পিতঞ্ বাতে-নাৰুণত প্ৰচি। অ্বিক্ষনিভান্ एक्षीन् वक्षः नर्दा रस्यात्। #॥ বাতিকমাহ। শিলোক ন্ শুল ভূবি-४ छुत ठ्रे शर्वरङ्ग्न । **म** क्रार्श-তা' চেতি ৰাত বিস্ফোট লক্ষণ । শূল মত্র তোদর্শেণ।। 🕸।। পৈডি-ক নাহ। জুর দাহ ক্লা পাক: সুব স্তৃফাসমৃদ্বিত । পীত লোহিত বর্ণঞ্চ পিত্ত বিস্ফোট লক্ষণ ॥ ক্জা দিত্রয॰ ফ্লোটেষু ॥ 🗱 ॥ বাত পৈ-ত্তিক মাহ। বাত পিত্ত কৃতো यस ভত্ত সুগ্ৰ জীবুবেদনাঃ জৈনিভ্যা গৌ-রব॰ কণ্ডু র্ভবেদ্বাত বলাসজে।। 🕸 🛭 निख रेन याक गार । क्षु मीरश জুর শূর্দি জায়তে কফ পৈত্তিকে 🗱। সামিপাতিক মাহ। মধ্যে নিম্লে। भेड (छार: कठिन: बहुगाकवान्। **ज्ञान माइ ज्**वा स्माइ हर्जि न्ही। क्डा जुड़ा: ॥ भूगारमः तम्यु यद (मा १न। सम्म जिल्लामकः । त्नाः হো বিপরাভদ্রানা মূর্চ সর্বা। ख्वानम्मु हा । 😤 । वक ह न । ह । दिक्तिकताक ब्राक्तम रेल डिट न्ह হেতন। গুরু ফল স্থারক্তার-ক্তিপ্ৰ বিভিন্ন । । ন তে সিদ্ধি भगायात्रि भरेका यागमरेज अशि। পৈত্তিকেন চ ছেতন। পিত্তস্য ছেত্ ৰা কই।বিনায়ক্তস্য পিত্তস্য তুল্য ত্বাৎ নচ ভে সাধ্যা:।। এ:ত চাই বিধা বাহ্যা আন্তরে পি ভবেদ্য । ত্মিমন্ত ব্যথা তীবুং জ্রুব্রজাভি कायरङ ॥ उम्मिन् विश्वारं अवश्रुष ব্যানল্য বহিগ্ডি:। ডত্র বাভিজ विष्यादे किया कार्या विषानका १.४।। 🛚

উপদুবানাহ।তৃট্ৰাস ঘা সসক্ষো-थ नारु विज्ञासन जुजाः। विमर्श सर्स-সংয়োধা স্তেষা মুক্তা উপদুবাঃ॥মা•-**ञग**्रकाथः सा॰जग्र, णठिखदुः। सर्बः সংরোধো মমব্যথা। ভেবাং বিস্নো-हेकाना । अ। (किहि श्रृवाना वक्क-ণান্তর• পঠন্তি। হিক্লা স্থাসো ৎকৃচি खुका बाक्साफी इ दिवाशा । वि**मर्न** জ্ব হ্লাস। বিয়েটানা মূপ্দুবা: ॥ क्षा नामुज्यिक बाङ्। अकरमाया-थिङः नावतः कृह्मात्यत हित्ताय-ভঃ। সর্বর্পাহিতো ঘোরে। হ্সা-त्याः च्युरं **श्रम्**दः॥ ऋ॥ अथ विस्तः। টিলা চিক্রি**ৎসা।** বিস্ফোটে **ল**ম্ভুন• কা-यं, न्यमः लथ्र (जाजमः। यथारमा-य बनः बीकाः भूगुक्षताः विद्राहनः ॥ 🕸 ।। कीर्यः भावि येवा र 🖺 समृत्रा শ্চাটে গ্লী তথা। এতান নানি বিয়োল र्फे क्ञिनि मृन्या दुतन्। **स**ः।। ৰে পাইন্লোট রাম্লাচ দাৰ্ট শীর• मृतःबा**डा । अ**ञ्जे **यान**/कः सुख लवा॰ दाथ॰ शिल्मवः॥ विद्याहे।-शालप्रशास्त्र सरीवर निविखकान् । 🕸 । দুক্ষো কাষ্ট্র থড়ের পটো-बाहिष्टे बागरिक ॥ कहुँ वा बाज मुष्परिर्यः रेलिखिक मिनिङ घृडः । ভ্ৰিম্ব সব্চা বাগা বিক্লেন্দু সং

वर में जः ॥ कि हु । प्रतिवा गाउँ ॥ क्क: इ स्थाक मृज् । अः। किताज-ভিক্ত शांतिष्ठे यद्वेशाखाखन वामरेकः ।। পটে ল পপটে শীর ত্রিফলা कारेजान्तिः। कृथिटेड बाहणाञ्च-ख नई विरद्धां नामन ॥ 🕸 ॥ वि দ্বোটব্যাধিনাশায় তওলায়ুদ পে-**बिरेड:।** वीरेज: बहेज वृक्षम्। व्य-প: কার্য্যে ভিজানতা ।। 🗱 🛭 ছিন। পটোল ভূমির বাসকাইট পর্ল है है। थलिया मृदेशः दार्था इडि तिरत्, हे ः इतः । 🗱 ॥ हन्दरः नाः शम्बद्ध माधिक छल्नीयकः। नि রীষ বহুল ভাতী লেপ: স্যাদা-क्वाम्यः ॥ ऋ ॥ **डेट्लनः हन्त्वः** लायु मुनीय • नार्तिका घ्रय । कलन लिक्षे (लालन यु हेराहार्खिना**ल**न ॥ 🕸 ॥ भुधकीवम् नब्जानः कल शिक्षेः भूजि महार । कान । मुन्ते । दि-यहाँ है। सन्ता इन्तारमत्वस्यः॥ कक्षापृष्ठिः धवापृष्ठिः वर्गपृष्टिः मा भाग्द। यन्तः (मृतिकः खानुः नूधः জীবে। নিনাশনেত।। ইতি বিস্লো हेकदि लदः । इंडि ভारलुकाणः । জে। প্ৰতি। মরীচা তিবৃত্ত স্বস্তু इद्धिष्ठावा भरः शिवा। (स्वताक श्विष्तुष अक्ष गांभी ह हन्त्वः ॥

विणाण। कत्रवीद्रक्ष व्यक्कीद्र अ-ক্ৎপল'। এব।ঞ্কাৰ্যিকো ভাগো विषम्यार्ख्यमनः ज्यार्था भूष्ट् कः টু ফ ৈলস্য পোনুত্রেষ্টগুণে পচেৎ। মৃৎপাত্তেলৌহপাত্তে বা দনৈ ল্-ष्वीमा भएट ॥ भागा विव्हिता रैठव मझ विरम् छेकान छ। अन्छ-কেন প্রশান্তি কোনলভ্রঞ্জায়-তে ৷ প্ৰুতান্যপি খিতাণি তৈ-विनातन मुक्तरार । हित्राधिक মপি শ্বিত্ৰ বিবৰ্ণ তৎক্ষণাৎ 😅 (वट् ॥ 🕸 ॥ व्यशिष्ठ। जुनिष्ठ निय विकना भर्न रिष्ठ मुख् सन । পটোল নুস্তকাভ্যাঞ্ বাসকেন চ नाणस्य । विक्षिकिकानि वाङानि নাত্র কার্য্যা বিচারণা।:ইতি গাভ্--ডে ১৯৮ অখ্যাবঃ । 🏶 ।। বিয়োট-कम् चक्ना यथा। (वृ.हाः ण्यावा-কণা ভাষা বিজ্ঞাঃ সূত্র স্বয়ঃ । ইতি ভাবপুরুশে:।।

विश्वयः श्रु आफर्याः । उदशर्यायः । श्रामः । रही ० । हेन्डहतः ॥ स्वाद्याद्य श्रामः मुद्रेद्यः ॥
स्वाद्याद्य विश्वयद्यादिकारमः गद्दर्व
देनवेडः । श्रीक्वर्या वेद्य (याकाक्रिमानस्य भन्नः ॥ हेन्डि कारइन्त्याः शर्यापद्वः श्राह्य उन्। वि

মাণস্থাবিভাবাত্মকত্বাৎ । ইতি **७ द्र ७:** ।। 🚓 ।। ७ म) लक्ष्म • । यथा । विविध्ययु भरार्थियु (काक्त्रीमा-তিবত্তিৰু ৷ বিস্নার শ্চেতসো যস্ত ন বিষয় উদাহ্নত: ॥ ইতি সাহিত্য मर्श्रा पर्यः । ইতি सिनि ॥ जल्महः। इंडि भदबद्वावनी ॥ বিমাধান্বিত: ক্রি বিমাধযুক্ত: ৷ আ-क्वर्यादि**ष्यिक्षः। उ८ श**र्यायः। वि-नकः २। इंड्रेमदः ॥ भू· व्यक्तः ।। भक्तर्यः বিমাপন: नगत्रः ॥ कामरहदः । ইতি मिहि-नी।। विद्यायनण्डा বিন্মিত: ত্রি বিন্মধান্বিত:। যথা। **महाপाणुभ**जान् मृङ्घे। तम्थाय मः ছেশ্ব:। সংপরিয়ন্ত ব্যক্ত ভে शुराम् याः≅धत•॥ ७७ उर**क्**उः ७म॰ मृष्ट्व। मर्बगराश्वदाः । मृविञ्चि তা ত্তদা সম্ভঃ কিনিদ চিন্তুয়ন্নিতি ॥ विचिजा॰ खान् गनान् मृक्षे। रेम-वानि (यांगिनायदः। भुाक् भुक्म) (मार्यमा म्लाभागि गराधिभः॥ বিন্মি তামীগণা দেব সর্ব এব মছে-শ্বর। নহাপাশুপতানা হি যৎ द्या निक्रनः कृष्ठः ॥ ইতি বামনে ७८ व्यथ्रायः ॥

বিঝিতিঃ

ओ

মিধাতো ভাবে কি পুভাবেন निव्यक्षा॥ বিয়্ত: ত্রি সরণাবিষয়:1 उৎ-পর্য্যায়:। অন্তর্গত ২। ইত্যমর:॥ বিষ্ঠি: জ্রী বিষয়ণ । বি পূর্বক মূ বাজো: ক্তি প্ত্যুয়েন নিম্ন না ম বিসু• क्षी व्यानगित्ता इंडामद्रः॥ ইদ চিতাধ্যাদিগলে অপকুমা স গন্ধে ইত্যন্যে। ইতি ভরত: ॥ বিসুগন্ধা জ্রী হপুৰা।ইতিরাজ-নির্ঘণ্ট:॥ পু॰ হরিভাল । ইতি বিদুগদ্ধি: एमहन्मु: ॥ বিসুক্ত: ত্রি বিশুক্তা। ইত্তি কেচিৎ।। विषामः । भूगतः। **₩**. ইত্যমর: ॥ পুণয: পরিচয়: শৃঞ্চা-রপূর্থনা বা। পরিচ্য পুর্ণনিশেঃ **পু**गयः পরিকীর্ত্তি:। ই'্সরমা-লা ॥ পুণয: ক্রীডাপারভন্ত্র্য । ইতি রমানাথ:॥ ইতি ভট্টাকাযাণ ভরত: ৷৷ কেলিকলছ: ৷৷ বধ: ৷ ইতি হেমচল্দু: ।। विमुद्धी वि विश्वाणी॥ भूगवी। विमुख्य नदाम्ख्यार्थं निन् भु गुरस्न নিল্লম:॥ বিদ্যা छी छत्रा। इंडानद्रः॥ वियात्रपः। वि भू इं विन् । जी रुभुषा। इतिहाइ विर्णेः॥

विमुत्रः बि विख्ठः। विभूईक 🏿 সুধাতো: ক্ত পুত্যবেন নিয়ম: ।। পক্ষী। ইত্যমর: ॥ বিহ্গঃ वानः ॥ সूर्युः॥ हन्द्रः। इंडि नय-त्रज्ञावनी ॥ गुरुः। इंडि ध्रती ॥ পকী। ইত্যমর:।। विङ्क्ष: वानः ॥ (भवः ॥ हन्द्रः ॥ भूर्गः। इंडि नम्बद्धावनी ॥ विङ्क्यः পু॰ পক্ষী।ইত্যমর:॥ ন্ত্রী ভারগপ্তি:। বাঁক विङ्क्रभा इंडि ভाषा। इंडि मदत्र द्वावनी ॥ विश्यदाबः 912 গৰুড:। ইতি र्नायुषः ॥ বিহঙ্গিকা জ্রী ভারগঞ্জি:। নাক ইতি ভাষা। ইত্যমর:॥ বিহ্ৎ জ্রী গর্ক্তোপঘাতিনী গৌ:। **ইতি স**-किछमाद्रागांदिर्खिः॥ विष्ठः बि विरम्यिग इठः। विन ষ্ট:। বি পূর্বক হন পাতোঃ ক্ত **जु**ड्डायन निज्ञमः ॥ विष्ट्रन श्ली विष्टः ॥ विश्ना ॥ ত্লপিঞ্ল:। ইভি মেদিনী।। विश्वः भूः विरयागः। ই**छि ए**ला-यूथः॥ विरुद्रभ क्षी विरादः। वि भूईक क् दारका तनहें भुकारमन विज्ञमः॥ विरुमिड॰ ही नश्पाराग्यः। हेड्य-

नदः ॥ विश्वः वि वृश्वमाः। ইउप्रदः॥ পণ্ডिতः। ইতি मिरिनी ॥ विकन्नः ॥ भए भू। इंडि मद्रद्वावनी ॥ বিহা ষৰ্শ:। ইতি সিদ্ধান্ত-45 कोमुम्ता मूर्गामवृज्धिः॥ বিহাপিত क्षी দান। ইত্যমর:॥ विश्वायः की शृ॰ व्याकामः। इंटऽ-भद्रः ॥ বিহাযা: "পু॰ পক্ষী। ইত্যন্**র:।।** বিহাযস॰ ত্লী পু॰ আকাশ:। ইত্য-नत्रहोकायाः नथूरत्रणः ॥ বিহাযস: পৃ• পদ্দী। ইত্যমর• **धोकायाः खद्रउः ॥** বিহায়সা ব্য আকাশ: ৷ ইভ্য-মরটীকাষা নগুরেশ: ॥ (হুম: ठन्मु**क** ॥ বিহার: পু• ক্রীডার্থ পদ্ভ্যাণ গমন । তৎপর্য্যায়: । পরিক্রম: २ । ইত্যনর: ॥ ভুমণ ॥ ऋकः॥ ली**ला ॥ जू**गजालयः । इंडि (मिनि।। विन्तुत्त्रथकभक्षी।इंडि **म**फ्ठिन्तुका ॥ दिख्यन्तः । इंडि मक्राला॥ विरात्री वि शक्तिक्मी। विरातः कर्जा । विशाद नदान्छ। एथं इन्

शुउरयन निश्रमः ॥

বিহিত: ত্রি বিধেয়: । যথা । বি হিতস্যাননুষ্ঠানাথ নিন্দিত্স্য চ সেবনাথ । অনিগুহাছেন্দুিযাণাণ নর: পতন মূছ্তি ॥ ইতি পুাষ্ শ্চিত্ততত্ত্ব ॥

বিহিতি: জ্রী বিধানণ। যথা।
ক্ষিতি বিজিতি স্থিতি বিহিতি
বুতরতথা: পরগতথা:। উক কক্ষু
র্তক দুধুবু বু ধি সরবা: সনরি স্বলং
।। ইতিদ্ধী।।

विश्रीनः वि विश्लिष्य श्रीनः । यथा

। (वाण नाम विश्रोता यः भुग्रनएत्वि भार्बजीः । (माण्डिताच् जुः
नाःशाजि नवकक भुभनातः ॥
इंजि जन्म माद्रः ॥ जुःकः । यथा ।
विश्रीन क धरेन मारेबः भरेभ वामाय
व्यवनायन माल्यानात्वा मृःथी निब्राख का जवक्षिः । इंजि मार्कर्षः
यभूबार्ग (मर्वीभाशाञ्चाः ॥

বিভূত নী স্ত্রীণা যাভাবিকদশা লঙ্কারান্তর্গ তাল স্কারবিশেষঃ। যথা । লীলা বিলাসো বিছি বি বি বি। কঃ কিলকিঞ্চিত ।। মোউ। নিত স্কুটনিত লিভি বিভূত তথা।। বিভূম শেচত গ্লন্থারাঃ স্ত্রীণা যাভ ভাবিকা দশ। ইতি হেমচন্দুঃ।। বিভূতি: স্ত্রী বিশেষেণ হরণ ।।

विष्णस्य वनार्कातः । वि भूर्व

कृषात्याः कि भुक्रस्यन निज्ञमा ॥

विरक्ष्येः भु॰ विरक्ष्येन । वि भूर्व

क्ष्ये साठा बन् भुक्रस्यन निज्ञमः॥

विरक्ष्येन जी कि ना ॥ नर्ष्यन ।।

विरक्ष्यन । क्ष्ये सिनी ॥ विवास

বিস্থল: ত্রি ভ্যাদিনাভিভ্ত:।
বাঙ্গধারণাশক্ত:। তৎপর্য্যায:।
বিশ্লব:২।ইত্যমর:॥ বিলীন ।
ইতি হেন্চন্দু:॥

বিক্ষত: পু॰ বিশেষেণ ক্ষত:। বি পুর্ব ক্ষণধাতো: ক্ত পুত্যবেন নিয়ন:॥

বিক্ষাব: পু॰ শদ:। ইত্যমর:॥

কাস:। ইতি স্বানি কলিক্ষো। ইতি
ভরত:॥

বিক্ষিপ্ত: ত্রি ত্যক্ত: বি পূর্ব ক্ষিপথাতো: ক্রপুত্যযেন নিয়ম:॥ বিক্ষীর: পুণ অর্ক্ক:। ইতিরাজ-নির্ঘট:॥

বিক্ষেপ: পুণ প্রেনণ ভাগে।
বিক্ষেপন । যথা। নৈর্তা নিষ্
বিক্ষেপ নতীতা ছাধিক ভুবা।
ইতাদ্যান্ত্রিকাচারতত্ত্বা। অদিতীয় বস্তুনবশ্বনেন চিত্তস্যান্যাব্লয়ন । ইতি বেদান্তনার: ॥

विक्ष्मभाकिः श्वी मायामकिः।
यथ।। तञ्जुञ्जानः सान्ठत्रङ्जो स
माज्जा मना मिक मुख्जावगठि। अवः
खञ्जान सनि सान् ठाञ्जान उथा
विक्ष्म्भान् । सम्बद्धावगितिका।।
देशि विकारमात्र ग्वाविनी हो स्वा।।
देशि विकारमात्र ग्वाविनी हो स्व।।

ৰীক: পু॰ বাযু:।। পক্ষী। ইত্য ণাদিকোষ:।। মন:। ইতি সংক্ষি প্ৰসাৱোণাদিবৃত্তি:॥

বীকাশ: পু রহ: ।। পুকাশ: । ইত্যার: ।।

বীয়া ত্রী শ্কশিষী।। গতিভেদ: ।।
নর্ত্তন: । ইতি হেন্চন্দু: ॥ অখ
গতিভেদ: ।। সন্ধি: । ইতি শব্দ
রহাবলী ।।

বীচি: পুত্রী তরক্ষ:। ইত্যমর:
। স্বল্লতরক্ষ:। অবকাশ: ॥ সূথা
। ইতি মেদিনী ॥ অল্ল:। ইতি
হেন্দ্রন্দু: ॥ কিরণ:। ইতি জটাধ্য: ।।

वीठी जी वीजिः। इंडामबजीकाणाः

ভরত: ॥

वीधी उत्रश्रः भु• न्याग्वित्भयः। স তু শো্রে শব্দ্য উৎপত্তি কা-द्र १ वर्ष । यथा । वीठी उद्रक्ष न्।-যেন ভদুৎপত্তিস্ত কীর্ত্তিতা। কদম্ব গোল্ড ন্যাধাদুৎপত্তি: কস্যুচি-মতে।। ইতি ভাষাপরিছে ।। ননু मृत्काम् । वाह्यास्याद्याद्याद्या শ্বোতে কথ মৃৎপত্তিরিভ্যত আহ । वीठी जि जाए। मदमा वहिम्म मिगव हि:म। **२**न्धः **मद** खरेनव म-বেন জন্যতে তেন চাপর শুদ্যাপক এব জনেণ শো্রোৎপরে। গৃহত ইতি। কদ্ব ইতি আদ্যুশ্ব।-प्रमिक्क मममदा उर्शनाङ **डि** म्हात्म मम्मदा डेट्शम् । स्ड ইতি ভাব:। অমিন্কল্লে গৌরবা-দুক্তি কস্চিন্তে ইতি। ইতি निषाष्ट्रमुकावनी ॥

जि॰ क्ली काइगः॥ म्बाः। ইउऽ गदः॥ स्रुद्धः॥ अज्ञाधानः। ইडि गिनिशे॥ मञ्जा। ইउ द्वाजनिर्धः गोः॥ गिनिउनित्मयः। यथा। देद-गामकः यद भूतम् विवृत्क द्विष्ठिः ठ॰ मद भूक्ष्यग् माःथ्ऽाः। व्यञ्जाऽ क्दम्मऽ उत्मक दीज भव्यक भीमाः गनिजः इ व्यन्तः॥ भूर्वः (भूगुकः ব্যক্ত মব্যক্ত বীজ প্রায়ঃ পুশা নো বিনা ব্যক্ত যুক্ত্যা। জ্ঞাতু শক্যা মন্দ্রীভি নিঁ গ্রন্থ স্মাত্তমাদ্বল্লি বীজ ক্রিযাঞ্চ ॥ ইতি ভাক্তরাচার্য্য বিরচিতে সিদ্ধান্তশিরোমণৌ বী-জগণিভাখ্যায়স্য প্রথম দ্বিতীয় শ্লোকৌ।। 🕸 ।। নত্ৰ: । যথা । অথ ज्वत्यवीयद्धः। नत्रनीः भा २१ भाकाता वामत्वार्क्षव्मुवान्। वीः জ তৃদ্যা: স্মাখ্যাত সেবিত : সিদ্ধিকাঙ্কিভি: II নস্বলীশো হ कातः। यशे (त्रकः। वामत्मव भी-कात्रः। व्यक्तं हान्तु। १नु श्वातः। शैः॥ 🗱 ।। व्यव्य श्रीषा वीषः । क्री नत्मा जग বতি মাহেশ্বরি অন্পূর্ণে স্বাহা। 🗱। व्यथ विश्वृहे। वीजः । 🗐 इने क्ली । #। पत्रिष्ठावीज । ७ भुँ हँ (थ ह ए क जी रू क ट्रीँ क है। #। व्यथ निज्या दीजः। वेँ ह्रीँ निज्य क्रिल सम्पुर्व चाहा। 🗱 । वजुः भुखादिगाः । अँ क्ट्रीं निष्ठा द्विस মদদুবে স্বাহা। #। অথ দুর্গাবীজ॰ । ७ हीं पूँ पूर्वारिय नमः। 🗱। म-हित्रार्षिनी वीजः। ७ महित्रपर्धिन स्राहा। 🗱। करनुर्गावीकः। ७ मूर्ग मुर्ल अक्रि शिहा । का मृणिनी वीजः। जुल जुल म्लिनि मुहेशुङ्

क् किं बाहा। 🗱। वानी थनी वी छ॰ । वन वन वायानिनि चारा। 🛊 । পারিজাতসরস্বতী বীক্ষণ। ওঁ হী क्षिं अं शें अवस्टित नमः। #ा गत्भ वीजः। गँ। 🗱। (हत्रस्र वीजः। ওঁগুঁনম:। #। হরিদুাগণেশ বীজ । भ्रँ। नकी वीकः। 🗐 ँ। 🗱 । सहा-वस्त्रो वी**बः। ७** अः ट्रीँ टीँ हीँ ड्रीँ कगट भुम्रेड। नमः। #। मूर्य। वीकः। **७ँ घृ**गि मूर्यं आहिखा। # । श्रीवान वीजः। রা॰ রামায नमः। জাनकी-বল্লভায হুঁ স্বাহা। 🗱। বিষ্ণু বীজ• । 👸 नमा नाब्रार्गाय। 🗱। 🗐 कृषः বীজা। গোপীজন বল্লভায স্বাহা 1 # । বাস্দেবস্যা ও নমো ভগতে वामूरिवाय। 🕸। वालरगाभालम।। **७ँ क्री॰ क्**काय। लन्दी वामूरम्बन्छ। एँ क्रीँ क्रीँ बीँ बीँ नक्की का मुस्तवाय नगः। 🗱। मधिवामनभ्। 🥴 नरमा বিফবে সুরপত্যে মহাবলায স্বাহা । 🗱 । इयगुीवन्या । 🥸 উদ্ধিরৎপুণ-(वामीय मर्बवागीयात्रयत्र मर्बादान স্থাচিন্ত্য সর্ব বোধ্য বোধ্য ৷ # ! নৃসি হস্য। উপু বীর নহাবিষ্ণু জ্লন্ত সর্বতোমুখা। নৃসিংহা ভীষ-१॰ जुरु मृजुर मृजुर नमामाहर ॥॥॥ नत्रहत्रि वीजः। या ड्री॰ क्ली॰ इ॰ कहै। 🖘 ! इति इतम्। 👸 है। एहे। 🖟 শক্তর নারাবিণায় নদঃ (ছীণ উ 🗱। বর।হৃদ্য। ও নমে। ভগবতে-বরাহ্রপায ভূ ভূবি: ৰ:পত্যে ভূপ ভিত্ত্ব দেহি দদাপয় স্বাহা। 🕸। **िवित्रा । हो १ । कि । मृ**ञ्जाक्ष्र म । अ जू नः। #। पिक्तान् विवीकः। उ ননো ভগবতে দক্ষিণাম্ভবে মহা• **मिथा॰ পু**यह याहा। #1 हिसामिश वीकः। ब्रष्टम ब्रय ७ • ७ • । 🗱 । नीलक्छेन्। (भू। नी॰ टेः। नमः **लिनाम। का १५३ म**ा क्यू कहे 1#।(क्वशानम्। ७ क्वों क्व-शालाय नमः। ॐ। वहेक्टे छत्रवस्ता ওঁ হী বট্কায় আপদুদ্ধরণার জ্ব ष्ट्रकाय ही । 🕸 । जिलुहायाः । स्मद्रिः। स्नदलद्रीः। स्मद्रोः। 🗱। नम्परभुरारेखद्रब्धाः । इनदेवः । হসকলগ্ৰী°। হসরোঁ।ঋ় কৌলেশ रिब्द्रवराः। मर्थेदः। मक्कवदीः। সহরৌ । #া ভংবিধু সিনীভৈর वतः। इरिगं। इनकबद्री । इस्में 🗱। मकवानिधिमा हेल्डस्वताः। महेर् । गरुकलद्रीः । भएरो । 🗱 । ढिछन्तुः डिब्रव्याः । मेर्ड् । मक्यकुँ । महर्षोः। अ। कारमध्रेती रेडवर्गः । नहें । सदलके । निक्रक्तिः समर-

**দুবে সহরোঃ ৷ ভ**া বট্ছটাটভ**র**⁻ व्याः। ७ वनकम्रोहें। ७ ३ नकम्री । **उत्रमकमस्थाँ । # । निट्यारेड्ड-**वाः। **रम**कमद्रोउँ। रमक्मद्राडी रुगक्वब्राजीं। 🕸 । रुपूरे 🗟 द्रव्याः । इमथ्यत्वँ। इनकलद्रीँ। इस्मीः । 🕸 । ভ্रमেশ্বর ভিরব্যা: । হদৈঁ। হসকলছी॰। इस्तोः। #। সকলেখ-र्याः। मरेरः। महकनद्रीः। मरहोः ।%। ত্রিপুরাবালাযা:। ঐণ ক্লীংসৌ: । 🗱 । नरक्षाेेे रानायाः । 🛎 ही (स्रोः । इति । इत्रकबद्वी । इत्रोक्षा रमोत्र रमक्यती र समात्री : 1 # 1 অন্নপূর্ণ ভৈষব্যা:। ওঁ হ্রী• ঞ্জী॰ ব্লী॰ নমে৷ ভগৰভি নাছেশ্বরি অন্নপূর্ণে बाहा। 🗱 🕮 विम्यायाः। क अर्रेष ছুী। হসকহল হু। । সকল হাঁ। #। ছিলনস্তাযা:। 🕮 🚊 হু । এ বজু रैवाकाञ्जीस्य हूँ हूँ कि साहा। अर भागायाः। की॰ की॰ की॰ हू॰ हू॰ हो। हो। मिक्ता कालाक की। की। की हैं हैं शें ही बाहा। #। एश्काणिकायाः। की॰ की॰ की॰ र् रू ट्री ट्री खद काविति की की की हूं हूं ही ही बाहा । 🗱 । ভদুकाल्याः । ही॰ ही॰ ही॰ क् रे ही ही क्यकारिया ही ही

क्ली॰ रू॰ रू॰ द्री॰ द्री॰ बारा। # । শ্মশানকালিকাযা:। ক্রীণ ক্রীণ ক্রীণ হৃ হৃ হৃ । হৃ । শালানকাল কী की की रू रू ही ही सारा। #। महाकालाः। जी॰ की॰ की॰ स् र् हो। हो। महाकानि की। की। की। क् कृ ही ही साहा। 🗱। जादायाः । श्री बी क् करें। #। हर आगुन्त भारतः। ७ जुः कः निवाय करे । का बार्क समाः। ७ व्री ही वर् बार्कान्य करे बाहा। **का उरिश्व** श्रांशांनिन्तः । **अ**्विञ्चाशांनिनी भन्थीरनवी वहा शिलाहिनी ही हैं: ठैं: ठैं: । 🗱। ख्नावज्याः । ध् ध् बाहा। #। जनुकानाः। (हो। कालि यहाका निकित किलि कहे बाहा। 🗱। 🗟 हिडेगरनमन् । 🥞 क्षिभाठि विश्व साहा। 🛊 । ধনদাবা:। ধং ছী: ী: দেবি ব্লক্তি-लिए बारा अ। भागानका विका-যা: । ঐঁ হুঁ। আঁ দ্লাঁ কালিকে ঐ\* हाँ बी क्षी। कावगनायाः। उँ ह्रीँ বগলামূথি সর্বদৃষ্টানা বাচ মুখ **उत्रय बिल्ला** की नग की नग कुर्याः नामय ड्री॰ उँ चाहा। #। वर्गः পিশাচ্যা:। ও কর্ণপিশাচি বদাতী-खानागडणम् ही । सहा। सः।

नक्षायम्। का ही बी । 🛊। ভারিণ্যাঃ। জীঁ নীঁ কৃষ্ণ দেবি 🗐 की॰ ञै॰। का नात्रश्रुख वीज॰। ञै॰ । 🗱। काल्यारन्याः । 🗗 🗐 🗐 • को विकारिय नमः । 🗱 ! मूर्गायाः । मृ॰ । 🚓 । विभानाक्राः। 🤏 ट्री॰ विनानरिका नमः। 🚓। शोर्याः । ड्री॰ भोद्रि कनुमित्र । वारमचद्रि क् कर् बहा। 🛊 । बुक्क 🕮 मजः। हीं नमा वृक्षणी दाखिए ब्राज-পুজিতে জবে বিজয়ে গৌরি গান্ধারি **बि** जुवनमक्षत्रि नर्च नः क्वमक्षत्रि मध्यीनक्षवनक्ति मुख्क पूर्यात द्रात क्ष्रिश्चाक्। का देन्तुम्। दे॰ इन्तुाय ननः। #। शक्उम्। किन उँ बाहा। #। विषङ्का विशेषः। थः थः। #। वृश्विकवियहद्रवीद्यः। ওঁ সরছ মু:। ওঁ ছিলি ফি নি চিলি श्यु:1 ७ हिनि हिनि हिनि हिनि ন্ধঃ। বুন্ধণে ফুঃ। সর্বেভ্যোদে-(तक्र सु:। #। मृषि विवहत्रदीकः । उँ लाँ याँ ठे॰। ज्यागमहिन्तु काया॰ 'अंग॰ गा॰ ठेः। का म्वकनाम-মজা। ওঁ সরণে ফু: অসরণে ফু: বিসরণে ফু:। এতরা স্ত্রণ লগন্থেত-সৰ্বপ পুক্ষেপাৎ মূষিক নাশে: ভ-विष्ठ । 🛠 । लूजा विष्ट्र २ 🖼 : ।

**७ हो॰ हो॰ ह**॰ कहर ७ याहा धरा इर कृष् । अ। मईकी देविष्ट्र বীন্ধ । জ নৰে ভগৰতে বিশ্বক गद्र नद्र इन इन इ॰ कर् श्राहा। 🛊 । সূত্রন্তর মৃজ্ঞঃ। ওঁ মর্মথ মন্মথ वाहि वाहि नायानत मुक मूक ৰাহাণ ওঁ মুক্তা: পাশা বিপাশা क मुकाः नूर्यात द्रणायः। मुकः नर्व ख्याम्गर्ज এएक कि मात्रीष्ठ मात्रीष्ठ **बाहा ।** कटाया जने/टाजनाक्षेताजन बन मजिएखा (मय॰ भीषा मूर्य পুৰ্বৰা ভব্তি। ३३। হনুম্তঃ। হ॰ रन्गरः कृताञ्चकाय छ करे। 🛊 । वीद्रभाषनम् । इः श्वननम्नाय बाहा। 🖾। जच बापू भरी। उ ৰমো ভগবতি চামুণ্ডে ব্ৰক্তবাস-সে অপুভিহতক্প পরাক্রমে অ-মুক বধাৰ বিচেত্ৰসে মাহা। আদুৰ্ ब्रज्जभारतेनाव्यः मगु मुगानिनी नभी-তটে উষর ভ্নৌ বা দক্ষিণানুখ छक् वाष्ट्र कालट । यावट भरे: मू-ষ্যৃতি ভাবৎ পুাণা: শুষ্যন্তি শত্ৰো: । 🖟 । শ্মশানভৈরব্যা: । শ্মশান-ভৈরবি নরক্ষিরাছি বসা ভক্ষি সিদ্ধি মে দেহি মম মনোরখান্ भूबय छ॰ क**ि बाहा। क्ष। जान**। ্লিলস্যাঃ । উন্মো ভগৰভি জালা:

मानिनि गृषुग्राभिद्रिक्छ रू कहे बारा। 🗱। नराकान्याः। 🥸 (कुः ট্রে: কো: পশ্ন গৃহাণ ত্ क हे चारा। स। अथ निगछ वन्ननः भाक्तनग्रा ७ नम अस्य निर्श्रास जिग्नाखरका सम्मयः विरवेखा वक्तः মেত থমেন দত্ত তস্যা স্বিরা नाउरमः नारक चारवाः वा शेवद्रः । अ। अप हिरिन्छः। उ हिहि विधि वाखानि महावाखानि समू-कः (म वणगानर बाह्य । 🛠 । ৰাম্বৰস্য । ও ভাষ্মক যজানছে সুগদ্ধি পুষ্টিবৰ্জন উৱাৰক মিব वसनार म्राजा मूकीय माम्जार । 🗱। व्यथ मृठमः जीवनी मञ्जः। हों उं छ ता उं ज् ज्वा सः बायक यकामार मृगक्ति श्रि-বৰ্জন উৰ্বাক্ত মিৰ বন্ধনামত্যো स्कीय माम् अट हो। ७ बु नः ও' ভূ ভূবিঃ ষঃ। ইত্যাদি ভঙ্ক-याद्रशाञ्चाकर्यनामितीकानि वाल्लाऽ जगाव जानि। \* ' \* !। बिक्यमा नर्बावङात्र वीजवु यथा। मानव छै-वाछ। अथ्ना क्कक्त खु॰ भद्रिश्नं ভন: হবং। সংইবা ম্বভারাণা वीकक्षाः मनाजनः ॥ इंकि दुक्तरेव-रार्ड िकमञ्जूथाख २२ व्यथ्रायः॥ वीबकः भुः बाजूनुस्कः। ইতি वीबनामनः भुः छल्लाउकः। ইতি क्रोधितः ॥ त्कविष्णयः। विक्रशाः भाव इंजि हिन्ती बाया। उद-भर्यप्रायः । भीउभातः २ भीउभा-नकः ७ वक्कभूत्रः ६ भियकः ৫ সৰ্জ্ঞক: ৬ আসন: 👊 অস্যুন্ডণা: । वर्ष वीनर्भ विवासक् एमकिनि **त्रियाम् भिन्न गामियः। प्**राप्तः। কেশ্যন্ত্রণারসায়নত্ত্ব ৷ ইতি ভাবপুকাশঃ।। वीरत क्री।। वीक्राकाषाः । भूः भगावीकाषाञ्चरः ৰীৰকোষঃ 🕽 ক্ৰিকা। ফোঁকলঃ ইতি থ্যাতঃ । ইতি ভরত: 📊 ড<-পर्यप्रायः । दब्राहेकः २ । ইञ्जानतः ॥ কৰিকা ৩। ইতি জটাধর: ॥ বা-রিসব্ল: ৪ শৃকাটকঃ ৫। ইভি मयब्रद्वावली 😃 वाकीकन्नगः। ইভি वीकक्ट ही রাজবির্ঘণ্টঃ ॥ भाष्ट्रानः। इंडि बीकगर्छः नु রাজনির্ঘণ্ট:॥ বীত্রগুপ্তি: জ্রী শিল্পী।ই**তি** রাজ निर्घण्टेः ॥ वीकथानाः क्री धानाकः। इंडि ब्राह्मनिर्घण्डः॥

वीकान क्री वाजना। वसा। कारक

कीदक्षीत्वह भू•। ইতি সারুষত:॥

ब्राक्रनिर्घणैः॥ বীজপুল্ল ক্রী यक्वकः॥ सहनः বৃক্ষঃ। ইভি মেদিনী।। वीक्रम्बः भू फनम्बः। ইত্যमद्रः ॥ টাবালেবু ইতি বঙ্গভাষা। বি-कोत्रा है कि हिन्ती जाया। उट-. পর্যায়: । বীজগুর্ণ: ২ পূর্ণবীজ: ৩ সূকেশর: ১ বীলক: ৫ কেশরায়: ৬ माजून्यः १ मून्द्रकः ৮ क्टकः ১ वीककणकः ३० बरुषः ३३ मस्त्रत-इनः १२ भूबकः १० (ब्राहनकनः १८ । जमा कन खाः। जम्नुः। कर्नुः दुः। উकदुः। श्वाम काम भवन गमनदः। कश्रेणायनकत्रदः। नयू-षः। इत्रदः। भीननदः। क्रि-कादिङ्गः । भारतज्ञः। आध्यान গুল্ম ক্র্যোগ প্লীহোদাবর্ত্ত না**লি**-ज्•। विवरक श्रिकायाः म्ल हर्म्छाः ঞ্ শস্যৰ্ঞ ৷ ইতি রাজনিঘট: ॥ 🗱 ॥ व्यनिष्ठ । वीबभूत्रकनः सान् রসেল দীপন লঘু। র**ক্তপি**ভ **रुत्र' क**श्चे किन्द्र। ऋत्य (**मा**धक' ।। थाम कामास्टि रवा क्रा क्रा হর প্ত । তডেদ মধু কর টী। रथा । वीजभूता २भन्नः (भूगत्का मधूरका मधूमक हो। मधुकक्क हिका

बाबी बाहनी भी उना छन्। । রক্তপিত্ত ক্ষয যাস কাশ হিস্তা ভুনাপহা॥ ইতি ভাবপুরাশ:॥ ৰীজপূৰ্ণ: (ছानदः। इंडि बङ्गाना ॥ वीक्श्व:। ইতি बाज-निर्धकः॥ বীত্ৰপে শিকা अो ण अ:काव: । है । इन्हिन्द्र ।। বীজফলক: दीकण्बः। इंडि **त्रा**जनिर्घण्टेः ॥ বীজনাত্রা জী পদাবীজং। হথা। পদ্মাঞ্চণ পদ্মধীত্রঞ্চ কণিকা ধীক্র-बाज्का। इंडि इातावनी ॥ ত্রি षणमञ्जयः । ইত্য गतः ॥

वीकक्रः शृ॰ भानानिः। यथा।
स्वति। प्राप्ता स्वति। स

বীজ্যেন লী জ্যপাল। ইতি রাজনিম্নী:।।

বীজবপন॰ ক্লী ক্ষেত্রে বীজস্য ক্ষেপণ । তুমা দিন॰ দীপিকা-যাং। পূর্বালি যান্য ক্লি শিত্র্যা

শিবান্যভেষু রিক্তাষ্টনী বিগত চ-न्तु छिथि॰ विशय । घः दानि शा मगूनरय विश्वकार्किवास भारतन्त् (याग कद्राविषु इत्र नुवा इ: ॥ इ-ल भुवा इवसी खवनागा विधिः मृ-তঃ। চিত্রাযাঞ্চ শুভে কেন্দে ছির यगन्छान्य ॥ (श्यवाति विलि-छम्। वीजामात्रवा मृहिः। इन्तृ॰ िएउ निवायाथ चय॰ मूछि जय॰ व-(भर ॥ क्ञा हात्याम्। (भार माइ॰ ন র্কা হাইমানস:। পাছাথ: কল-मः गृश् इंगः मञ्ज मूनीत्राय**ः ॥ ज्** रे वम्कात मील रङ् भूग्न कल পুদে। নন তে মে শুভ॰ নিভ্যাক্যি॰ মেধা॰ শুভে প্রভারোহত সর্বশ-न्यानि काला (मवः भूवर्ष छ । कर्ष-काख खरखन्।। शानान ह श्रान ह बाहा॥ উछा वीजन्न स्रेजन (जा-क्तरः वास्रवैः भए । ीक्षः भरः পুৰোপত্য ভীর্থেন। বথ ক্রিটিড:। কনিষ্ঠায়াঃ পশ্চাৎ পুত্ৰপত্য লা-বপন ৷ ছোন ভর্পণে পাছাপভ্যেন জ্যাদিতি। হোম তর্পণে কাল হোম শনকাদি তর্পণে।গরাশর:। विषात्थ रुभनः (णुष्टः भवानः (ज्ञाः हिगी द्रायो । व्यक्तः शद्रश्मित्रयमः न জাতু শাবণে শ্তং।। জ্যোভিষে।

প্রভাদুপদা ম্লারোহিণ্যভরফ ল্পুৰী। বিশাখা শতভিষা বাথ ধা-न्यानाः (द्राधारा बद्धा । मामाञ्चा द्रक्रनी॰ नीली॰ शूध (रेख वियूक्तऽ-তে। খ্য' জাতে পুন তে দ্বে পাল यन् रेनव पृष्ठि॥ व्यादास्य गृहः मख्य वा भाश्य अर्थन मावनन् ৷ পরাভব রিপু র্যাতি সসাধন थनक्षयः ॥ निमा नीकी शलामाक **চিঞ্চা শ্বেতাপ**রাজিতা। কোৰি-দারশ্চ সত্ত্র সর্ব্য নিমুন্তি মঞ্জ ।। নিশা হরি দু।। কোবিদারকো ब्रक्का**थः ॥ (ह्यास्त्र**म। तृक বীজ্ঞ স্থান্ডো মন্ত্রেণ রোপারে 🔍 🔻 বস্বেতি সুশীতেতি পুণ্যদেতি ধরেজি চানন তে শুভগে নিত্যু ফ্টো ২্যা বর্জ তা নিজি। ইজি জ্যোভিস্তভু? 🛭

বীজরত্ন: পু॰ নাষ্চলায: । ইতি হেনচন্দু:।।

বীজবৃক্ষ: পু: অসন:। ইতিরাজ নির্ঘট:।।

বা ফালুনে বাপি সর্ববীজানি সং-**भुः हर । माध्य राज्य जान्य प्रान्** द्वान ভৌ চোপনিধাপথে ॥ তত্ত পুটিকা॰ বজা শোষ্ফের পুনঃ পুনঃ । इ। भागह भुशक्ति यथा ज्विक न म्लूष्णर ।। भीना भूग ह माण्यू-ष्टे॰ वृष्ट्या हाल एउए यट । वर्जनी-य ज्या दीज रू महाद की हे म-मित्रिकः।। १६।। याम्याहि अनुति বিশাখ প্রা নাছেন্দু পিত্যেতর-रेजः भुजारशासान्यानि जाजाशन तियू मछ गृग छित हा**क गृरहार**-যেষ।। সৌন্যাদিতি ন্যা জ্যেষ্ঠা ত্র্যন্তরেষ্ঠ করেযে । মীনে **ল**্লে শুভে চন্দ্রে নিধন জ্র বজ্জিতে।। ক্ষেপ্তব্য কোষ্টকে ধান্য গর্গো ব-एडि नर्दरा। धननाय नर्दालाक হিতায দেহি নে খান্য আহা॥ मम देशीय देशामवी नर्वाणाक विवष्टनी कामक्लिण धाना ए एहि স্বাহা। লেখ্যিত্ব। ইন° নত্ৰ**েখা**-ন্যাগারে বিনিক্ষিপেৎ।। পুরাণ-সর্ধে। মন্ত্র লিখিত্বা পত্রে চ न(थ) धानामा धात्राय । भवक धान।तारमञ्ज ग्विकामि निरृज्य ।। দক্ষিণ দিখুবি গমন স্পাদভিন वानु नातीयु । व्ययमिन मना क- नाना॰ न वृत्था तृथवामत स्वर्गाट्या । विवृद्धत्र त्ववडाः थिनिष्ठा वा-क्षियु ह । अटिय यहेमू विद्ध्यिः थाना विवः विद्या वि

**বীজস্: জী প্**ঞী।ই-ভিছেন⊹ চন্দুঃ॥

বীজা ব্যু বীজেন। যথা। বীজেন কহু কৰ্ষতি বীজাকরোতি। ইতি সিজাড়কৌন্দী।।

বীজাকৃত ত্রি উপ্তকৃষ্ট । ইত্য নর: । দে বীজেন সহ কৃষ্টে ক্ষেত্রে । বীজেন সহ কৃত কৃষ্ট হীজাকৃত । ত্রীয় সম্ম বীজেতি ডাচ্। আদো কুপ্ত পশ্চাৎ কৃষ্ট উপ্তকৃষ্ট । ইতি ভরত: ।।

বীজ দ্রু॰ লী বৃক্ষাদু• টেড রাজ নির্ঘণট: ।।

বীর্না পু পিতা। ইতি হেমচন্দু: । বীর্নবিশিপ্টে তি।।

বীজোদক• ল্লী করকা। ইতি জি কাণ্ডশেষ:।।

বীছোগ্ডিচক জী বীজবপনজন্য শুভাশুভজ্ঞানার্থ সপাকারচক।

यथा । न्यंत्रजामुबगः छाभा खिना-ডে)কান্তরক্রমাথা মুখে ত্রীণি গলে वीि जानि चारण ज्रात ॥ भूरह চত ৰহি: পঞ্চ দিনভাচ ফল ব-(१८। वरान हाइक विद्यार गन-(क ९क्षात्रक खथा ॥ উদরে খান্য वृक्षिः महार भूहि बानक्षा छ-বেৎ। ইতি রোগভয় রাজ্যে চক্রে বীজোণ্ডি সম্ভবে॥ স্র্য্যভাৎ স্র্য্য जूबानान नक्षवार। विनाएप्रका-खत्र क्यां कि यम् अधिन्। वि স্তদাতা নারভ্যগণবেৎ। ত্রিনা-ডীয় অশ্বিনী ভরণী কৃত্তিকায় দত্ত্বা রোহিণী वहिः कार्या मृगणिवन व्याम्। भूनद्रम् नाडीयु पद्मा भूरवता খ্যা:। চোচক' শস্য শ্ন্যভা।। के उयः। অভিবৃষ্টি द्रनावृष्टिः भन्न-ভা ম্বিকা: থগা:। পুত্যাসলাক রাজান: যড়েতে ইত্য: স্তা:।। ইভিজ্যোভিস্তন্ত্ৰণ ॥

वीब्धः जि यम्ब्रिक्नाहिर्म्बाख्यः
। उर्भिश्चारः । स्वमः ख्वः २ ।
इञ्जिदः ॥ वः म्युः ० कोव्यक्यः ॥
स्वाजः ৫ । इञ्जिम्बद्धावित्वी ॥
स्वीनः ७ स्वाऽः १ स्वाख्यः ৮ ।
इञ्जिद्धाः ॥

) जी जाष्मवन्त्री। देवि वीर्षिका रिकिट्या मुमब्बीक्उठाष् ]ল । পানেরবীডা ইতি ভাষা। ইতিকেচিৎ ॥ ন্ত্ৰী বিদ্যুৎ।ইতিমেদিনী॥ चनानश्राज्यानुः। उर्भर्यायः। **ब्ह्न**ी २ दिशकी **७। मा**जुमध ভক্তীযুক্তা চেৎ পরিবাদিনী ৪। ই চ্যমর: ॥ ধুনিমালা ৫। ইতি কটাবর:॥ বঙ্গমন্ত্রী ৬ বিপঞ্চিকা १। ইতি भक्तज्ञावनी ॥ वायव ভী ৯ কণ্ঠক্ৰিক। ১০ । ভডেবা यथा। निवम् वीना नशी > मन्य-ত্যা: কছপী ২ নার্দস্য মহতী ৩ গণানা পুভাবতী ৪ বিশ্ববিদো: वृह्जी ৫ जबुद्धाः कवावजी ७ हा-खानानाः कर्खानवीना हाखानि का हु १। उन्धाका ही ना॰ ना ना हि यथा। उभाः कावः (कावश्रकः। ভদ্যা নিবন্ধন উপনাছ:। তদ্যা म् ७: भुवानः । उन्।: भाष्ठवक কান্ত কলভ: পুনেবকক। তস্যা মূলে বংশশলাকা কলিকা কুণি কাপি চ। তদ্যা বাদন কোণ:। ইতি হেমচন্দান্য:।। অস্যা বিব त्रण वान्यान म्छेवा ॥ णुः वीगाञ्च जानावृः । वी उ जयः ये भारखः

পরিকাষ্ট । ডৎপর্য্যাবঃ । পুরালঃ ২। ইভ্যমর:॥ वीगान्वमः भू छेभनारः। ইडि

राद्रावनी ॥

वीभावामः जि बीभावामकः। उद পর্য্যায়:।বৈণিক:২। ইত্যমর:।। नुः वीगावाम्यक्रां। वीगावामकः ইতি শবরত্বাবলী।।

বীণাস্য: পু॰ নারদ:। ইতি জটা-थवः ॥

বীত॰ হী অসারহস্ত প্র•। যুদ্ধা-क्रम मिठार्थः। ইত্যমর:॥ अङ् শক্ষাইভিমেদিলী !!

বীত সং পু॰ ন্গপক্ষিণা বন্ধৰো-পাদরণা ইত্যমর: ৷৷ মৃগপাঞ্চি-ণাং বিখাসছেভো: প্রাবরণং । ইতি মেদিনী॥

বীতঃ ত্রি শন্তি:।ইতি ছেনচন্দুঃ ।। গভ:। বিপূর্ব ইন ং ভা: कुः **পু** ত্রে ।

বীতদম্ভঃ ত্রি ত্যক্তদম্ভঃ। ডৎ-भर्यप्रयः। व्यवद्धनः २। इंडि करे।-थद्रः ॥

वीजनः भू क्रभार्यद्वरायथा। क्कछ कन्नवानशः क्कभाव्ये ज् वी उसी। इंडि (इनहन्मः ॥

অক্রঃ পেশলো দক্ষো দক্ষিণঃ ক্রমিণায়রঃ । বিদ্বত্যো বীতভ যঃ পুণাশ্রবণ কীর্ত্তনঃ ।। ইতি তন্যসহসুনামস্তোত্রণ ।। তরাগঃ পুণ বুদ্ধঃ । ইতি

বীতরাগঃ পু॰ বুদ্ধঃ । ইতি

তিকাণ্ডশেষঃ।। বিগতরাগে তি।

যথা। দুঃখেষনুদ্বিগ্নমনাঃ সুখে
মু বিগতস্পৃহঃ । বীতরাগ ভষ

ক্রোধঃ স্থিতধী মুনি রুচ্যতে ।।
ইতি ভগবক্ষীতা ।।

বীতশোকঃ পু॰ অশোকরকঃ। ইতি শব্দবালা।। বিগতশোকে ত্রি।।

বীতিঃ স্ত্রী গতিঃ।। দীপ্তিঃ।। প্রজনং।। অশনং।। ধাবনং। ইতি মেদিনী।।

বীতিঃ পুং যোটকঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥

বীতিহোত্রঃ পু॰ অগ্নিঃ। ইত্যনরঃ। সৃষ্টিঃ। ইতি মেদিনী ।।
বীথিঃ জী বীথী। যথা। পদ্ধি
বর্গ গ্হাঙ্গেষু বীথি বীথী চ
বীথিকা। ইতিরক্তকাষঃ।।
বীথিকা জী বীথিঃ। ইতি শব্দ রক্তাবলী।।

বীথী ত্রী পঞ্জি। গৃহাঙ্গণ।।
নাট্যরপকঃ।। বর্জ্ব ইভি নে

किनी ॥ 🕸 ॥ अथ वीथी । वीथा। মেকে। ভবেদক্ষঃ কশ্চিদেকে। ২ত্র কল্পাতে। আকাশ ভাষিতৈ রুক্তৈ শিত্রাণ প্রত্যুক্তি মাশ্রিতঃ ।। मृष्ठरयकुति म्झातः किक्षिन-नगन तमानि ॥ मूथ निर्वर्ण সন্ধী অর্থ প্রকৃত্যে। হথিলাঃ। किन्छिन् जुङ्खा मधारमः १४८मा व। गुन्नात दल्ल बाका मगाः देव-শিকী বন্তি বহুলত্ব ৷৷ 🕸 ৷৷ অ-मा। अत्यापन। कानि निष्कि गिछि ননীযিণঃ। উদযাত্যকাবলগিতে প্রথম্ব ক্রিগত ছলে ৷৷ বারেল্য-ধিবলে গণ্ড মবস্যন্তিত নালিকে । অসৎপ্রকাপ ব্যাহার মদব নি চ তানি তু ॥ 🗱 ॥ ভ্রেছিবাতা-কাবলগিতে প্রস্তাবনা প্রস্তাবে সোদাহরণ° লক্ষিতে।। ॐ।। गि-থো বাক্য সমৃদ্ধত প্রপঞ্চো হা-স্যক্ষতঃ। যথা বিক্রমে ईশ্যাণ। বডভীস্থ বিদূযক চেট্যে। রন্যো-ना वहन॰ ॥ ३॥ जिशंड॰ मामिटन-কার্থ বোজন প্রশৃতি সামাতঃ। যথা তত্রৈব রাজা। সর্বাক্ষিতিভূ-ण॰ नाथ पृकी मर्वाक्रमुकती। त्राम। त्रामा वनाटछ चिन् मध। বিরহিতা স্বদা 11 নেপথেয় ত ত্রৈব প্রতিশক্ত রাজা কথণ 🖫 ষ্টেত্যাহ। অত্র প্রশ্নবাক্য মে-বোত্রবাক্যত্বেন যোজিত ৷ ন-টাদি ত্রিত্য বিষয় নেবেদ মিতি কশ্চিৎ ॥ 🕸 ॥ প্রিয়াতৈ রপ্রিয়ে ৰ্বাক্যৈ ৰিলোভ্য চ্ছলনাৎ ছল॰ । ৰথা বেণ্যা॰ ভীমাৰ্জু নৌ। কৰ্ত্ত। দূতে ছেলানা ভিজুম্য শর্ণো-দ্দীপনঃ সে। হভিমানী রাজ। দঃশাসনাদে গুরু রনুজ শতস্যা-সরাজন্য নিত্র°। ক্ফা কেশো-ভনীয ব্যপনখন পতুঃ পাওব। यमा पामाः काटल पुर्याप्रायाना **২নে কথযতু ন** রয়া দ্রুট্ নভা-গতৌ স্বঃ।। অন্যে স্বাহ্ন ক্রনং কিঞ্চিং কাৰ্য্য মদিশ্য ক্সাচিৎ । উদীৰ্যাতে যদ্ধচন বঞ্চন। হা-मा दायक्षा क्षा वाटकनि री-স্য সম্বন্ধে। দ্বি ত্রি প্রত্যক্তিতে। ভৱেৎ।। দ্বিত্রীত্যুপলক্ষণং যথা। ভিক্রো না॰স নিষেবন॰ প্রঙ্গরুষে কিন্তেন সদ্য° বিন। সদ্যঞ্চাপি ভ-ব প্রিয়ণ প্রিয় মহোবারাঞ্চণাভিঃ **সহ।** বেশ্যাপ্যর্থ ক্রচিঃ **স্কত স্ত**ব ধন॰ দ্যুতেন চৌর্ব্যেণবা চৌর্য্যু॰ দ্যতপরি গ্রহে।পি ভবতে। নফীস্য কান্যা গতিঃ ॥ কেচিৎ প্রক্রান্ত

বাক্যস্য সাকাষ্ক্র স্যৈব নির্বৃত্তি র্বা-ক্ষেলি রিত্যাহঃ। অন্যে চানেক-मा अनुरेमाक मुख्दः ॥ 🚌 ॥ ७-ন্যোন্য বাক্যাধিক্যোক্তিঃ স্পৰ্দ্ধ-যাধিবল॰ মত॰ । যথা মম প্রভা-বত্যা° বজুনাতঃ। অস্য বক্ষঃ ক্ষ-<u>(परिनव निर्मथा भत्यानया । नी-</u> লযোগ্যলযিয্যানি ভূবনদ্বয় নল্য বং ।। প্রদ্যুদুঃ । অরে রে অসুর।-शमन जनगुग। रङ्थनारशन মম খলু ৷ অদ্য প্রচণ্ড ভূজনণ্ড স-মিগতোর কোদও নিগলিত কা-ও মৰুহ পাতৈঃ। আজা**ং সমও** দিতিজ সভজোকিতেয় কেনী ফণেন পিশিতাশন লোভনীয়। ।। 🕸 ।। গঙ॰ প্রস্তুত সম্বন্ধি ভিন।-র্থ॰ সত্তরং বচঃ। যে বেণা। রাজ। যে অধ্যাগিত্র ভব চিত্রাজ্জ-ঘন হুলস্য পর্যাপ্ত মেব করভে৷-রু মমোরু যুগু। । অনন্তরণ প্রবি-শ্য কণ্টুকী দেব ভগ্ন ভগ্ন মিত্যা-দি। অত্র রথকেতন ভদার্থ॰ বচন মক্তসার্থে সহদ্ধে সহদ্ধণা গ্লা। ব্যাখ্যান॰ স্বরুদোক্তন্যান্যথাব-স্যন্দিত° ভবেৎ। যথা ছলিত রামে সীতা জাদ কাল কথু উ অন্ধা এণ গত্তবং তহিং সো রা-

णा विभवन भनाविनद्यानवः । অথ কিনাবাভ্যা° রাজোপজী: বিভ্যা° ভবিতব্য° ৷ সীতা জাদ-সো जुशांग॰ शिमा नवः। कियाव-যো রযুপতিঃ পিতা। সীতা সাশ-কং মা অগ্নধা সম্বৰণ কথ ভুৱাৰণ স অলাজ্জে এব পুহ্বী এতি ॥ৠ। । প্রহেলিকৈব হাস্যেন যুক্তা ভব-**তि ना**निका । मयत्रगकायुर् खद्ग॰ প্রহেলিক।। যথা রত্নাবল্যা॰। সু-সঙ্গতা দহি জত্মক দেতু ম° আ-অদা সে। ইধজ্জেব চিউদি সাগ-রিক। কম্মকনে অহ° আঅদ। সুসংগ চিত্তকল অস্ম। ভাত্র স্বং রাজ্ঞ ক্তে আগতেত্যথা সংক্ ण्डा ।। क्षा जन्द शन रिशी यहां का মসমদ্ধ° তথে।তর°। অগ্রুতো-পি মূখন্য পুরে। যত হিত॰ বচঃ। **ত**वामाः यथा गग था जावणाः 1 थमूगुः महकाइयही मवत्नाका সাননৰ অহে। কথ নিহৈব। অ-লিকূল মঞ্জুল কেশী পরিনল বহু-লা রসাবহা তথ্যী। কিশলযপেশ-লপাণিঃ কেণকিল কলভাযিণী প্রিয়ত্যা মে ৷৷ এব নসম্বন্ধোত্ত-রেপি। তৃতীয় যথা বেণা দু-র্য্যোধন প্রতি গান্ধারী বাক্য ।

🕸। ব্যাহারো যৎ গরস্যার্থে হা-मार्ला छकतु वहः । यथा गाल-বিকাগিমিত্রে। লাস্য প্রযোগা-বসানে মালতী নিগ্ৰ মিচ্ছতি विमृषकः गामत्व छेशतमा गूधा গনিষ্যাসি। ইত্যুপক্রমেণ দাসঃ। বিদূষক প্রতি আর্য্য উচ্যতা• য স্তথা ক্রমভেদে। লক্ষিতঃ । বি-দূষকঃ গউম॰ বন্ধণ পূআভোদি সাই মাএ লম্ব্রিনা মালতীক্ষয়ত ইত্যাদিনা । নাযকস্য বিশুদ্ধ-নাথিকা দর্শন প্রযুক্তেন হাস লোভ কারিণা বচসা ব্যাহারঃ 11 क्षा (नाया छना छना (नाया यद्य मृ। म्मिन हि उ९ 1 क्रांसन যথা। প্রিবজীবিততা ক্রৌর্য্যণ নিমেহত্ব॰ ক্তমতা। ভূষ স্তদ্দর্শ-নাদেব মনৈতে গুণতা॰ গতাঃ। তন্যা স্তদ্ৰূপ দৌন্দৰ্য্য° ভূষি**ত°** যৌবনশ্রিষা। সুথৈকাযতন জা-ত॰ দুঃখাবৈব মনাধুন। ॥ এতানি চাঙ্গানি নাটকাদিষু সংভবস্ত্যপি বীখ্যা মবশ্যু বিধেষানি নিষ্প-ফতব। নাটকাদিয় বিনিবিষ্ঠা-ন্যপি ইহোদাহ্নতানি। বীথী চ নানা রসানাঞ্চাত্র মালাকপত্যা হ্নিতত্বাদ্বীথীয়া যথা মালবিকা।

ইতি সাহিত্যদৰ্পণঃ ॥ ঋ ॥ শ্ব-र्यागमन १४१ । यथा । नागतीयाः खतावीथी अकवीथा**न्छ मक्ति**रग উত্তে আধাঢ় মূলন্ত অজবীথ্যদ-যা স্ত্ৰয়ঃ।। অভিজিৎ পূৰ্বতঃ স্বা-তী নাগবীথাতরা স্ত্রয়:। অশ্বিনী কৃত্তিকা যাম্যা নাগবীথ্যুত্তরাঃ স্তাঃ।। রোহিণ্যাদ্রা মৃগশিরে। নাগবীথি রিতি স্মৃত। । পুষ্যাঙ্গে-ষা পুনৰ্বসো বী থি রৈরাবতী স্থৃ-তা।। তিসুস্ত বীথযো ছেতা উ ত্তরো মার্গ উচাতে। পূর্ব। উত্তর-ফল্গুণ্যে। র্ময়া শৈচরাবতী ভ-বেৎ 11 পূর্বোতরে প্রোষ্ঠপদে গোবীথী রেবতী স্মৃত। । প্রবলা চ ধনিষ্ঠা চ বারুণঞ্চ জরকাবে ৷৷ এতাশ্চ বীথ্য স্তিসো মধ্যমে। মাৰ্গ উচাতে। হস্তা চিত্ৰা তথা স্বাতী নাগবীথি রিতি স্মৃত। ॥ বিশাখ মিত্র পৈত্রশ্চ নাগ বীথি রিহোচাতে। মূল পূর্বোত্রাযা-ঢা বীথি বৈশ্বানরী তথা ৷৷ স্কৃতা স্তিসুস্ত বীথ্য স্তা মার্গে বৈ দক্ষি-ণে বুধৈঃ। ইতি নাৎসো ১০১ অধ্যাযঃ।। ৠ।। অপিচ। উত্তরণ যদগস্তাস্য অজবীথ্যাশ্চ দক্ষিণ **৷** পিত্যান° স বৈ পস্থা বৈশ্বান- 🛭

রপথাদ্বহিঃ ৷৷ তত্রাসতে মহাত্মা-ন ঋষযো যে হগিছোত্রিণঃ। ইতি বিক্ণুপুরাণে ২ জংশে ৮ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ তত্র জ্যোতি শ্চক্রে বীথী-ক্ৰমো বাযুনোক্তঃ। সৰ্বগ্ৰহাণাণ ত্রীণ্যেব স্থানানি দিজ সভ্যাঃ। স্থান॰ জারদাবে মধ্যণ তথৈরাব-ত মুক্তরণ ৷৷ বৈশ্বানরণ দক্ষিণতো निर्फिक्ट भिरु छल्डः । छमित মধ্যমোত্তর দক্ষিণ মার্গত্রষণ প্র-ত্যেক॰ বীথি ত্রয়েগ ত্রিখা ভিদ্য-তে। তথাহি ত্রিভি হ্রিভি রশ্বি-नामि नकदेव नीववीथी वज-বীথি ঐরাবতী চেত্যুত্তর মার্গে বীথীত্রয়ণ। আষতী গোবীথী জারদাবী চেতি বৈষুবতে মধ্য-भार्ल वीथीजयः। अक्रवीथी मृ-গবীথী বৈশ্বানরী চেতি দক্ষিণ মার্গে বীথীত্রয়ণ। তদুক্তণ তত্ত্রৈব । অশ্বিনী কৃত্তিকা যাম্য। নাগ-বীথীতি শব্দিতা। রোহিণ্যার্ড্রা মৃগশিরো গজবীথ্যভিধীযতে । পুষ্যাঞ্চেষে তথাদিত্যা চৈরাবতী স্তা। এতা স্ত বী-থ্য স্তিদু উত্তরো দার্গ উচ্যতে ॥ তথা দে চাপি ফল্ণুন্যৌ মধা চৈব।ৰ্যভী মতা। হস্তা চিত্ৰ।

তথা স্বাতী গোবীথীতি তু শ-<u> কিতা ॥ জ্যেষ্ঠা বিশাখানুরাধা</u> বীথী জারদাবী মতা।এতাস্ত বীথ্য স্তিসূে৷ মধ্যমে৷ মার্গ উ-চ্যতে ৷৷ মূলাষাচোত্তরাষাচা ্ অজবীথীতি শব্দিত। । শ্রবণঞ্চ ধনিষ্ঠা চ মাগী শতভিষ স্তথা ।। বৈশ্বানরী ভাত্রপদে রেবতী চৈব কীৰ্ত্তিতা। এতাস্ত বীথয স্তিসূে। দক্ষিণো মার্গ উচ্যতে।। যাস্যা ভরণী। আদিত্যা অদি-তি দেবতাকা পুনৰ্বসূঃ। মাগী মৃগবীথী। এবং স্থিতে অগস্ত্যা-मूखत गर्जवीथााञ्ज मक्निन<sup>०</sup>। কিন্তু অগস্ত্য নিৰুচ বৰ্তিনে। বৈশ্বানর পথাদ্বহি বৈশ্বানর-বীথী° বিহাৰ মৃগবীথীমাত্র° পিতৃ্যান নিত্যর্থঃ। ইতি তটী কাযাণ শ্রীধরস্বামী ।৷ বীথ্যস্কঃ ত্রি নাটকভেদঃ ৷ ইভি হেমচন্দ্রঃ ৷৷ অস্য বিবরণ বীথী শব্দে দ্রফব্য় ॥ বীধু॰ ক্লী নভঃ।। বাবুঃ।। অগিঃ । ইতি সংক্ষিপ্রসারোণাদিবৃত্তিঃ বীধুঃ ত্রি বিমনঃ। ইত্যমরঃ।। বীনাহঃ পু॰ কৃপস্যমুখবন্ধন°। ইতানরঃ ॥ অসা কূপসা যমুখ

বন্ধন যেন মুখ বধ্যতে তত্ৰ বীনাহঃ নান্দী পট ইতি খ্যাতঃ । বিশেষেণ নহুতে কৃপমুখ ম-त्मन वीमाङः। मश (क्ये वस्त्र যঙ সনীষাদিত্বাৎ বে বা দীৰ্ষঃ विनाइः । वीनाइः कृशगूथवन्न পট ইতি সাস্বঃ। ইতিভরতঃ।। বীপা স্ত্রী বিদ্যুৎ। ইতি শব্দ-तञ्जावनी ॥ वीका <u>खी जिया छन प्रदेश</u>र्य १०-পদ্যাপ্র্মিচ্ছা। यथा। মুক্তি র্ন-র্ত্তে ২চ্যুতোপাস্তি ভূত ভূত মতি প্রভুঃ। ভক্তো বিভুমতি প্রাজ্যে গোবিন্দ মভিতিষ্ঠতি ।। অচ্যুতোপাস্তি॰ ঋতে মুক্তি র্নग্যাদিত্যর্থঃ। প্রভু রীশ্বরঃ ভু-ত ভূত অভি সৰ্ব প্ৰাণিষু অস্তি हेठार्थः । वीक्षायाः अयुक्रमा পদন্য দ্বি ভাবঃ। ইতি মুগ্ধবোধ **हीकायाः मूर्गामामः ॥** ত ও ক শৌর্যো ইতি বীর কবিকল্পদ্রশঃ ॥ ঙ অবিবীরত। भौरा नुषामः । ইতি पूर्णापामः বীর° क्षी শৃঙ্গী ॥ নডঃ । ইতি মেদিনী ।। মরিচং ।। পুদ্ধরমূলং ।।কাঞ্জিকণা। উশীরণা। আৰকণ

। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। বীরশ-

ব্দোমেদিন্যাণ প্রগী য বকারা-দৌ দুফোঁপি বীরধাতো রস্ত্যস্থ-বকারদৌ দশনাদত্র লিখিতঃ ॥ বীরঃ পু॰ শৌষ্যবিশিষ্টঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। শুরঃ ২ বিক্রান্তঃ ৩। ইত্যমরঃ ।। গণ্ডীরঃ ৪ তরস্বী ৫ । ইতি জটাধরঃ।। ₩11 জিনঃ।। নটঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। বিষ্ণুঃ। যথা। বীরো ২নস্তো ধনঞ্জযঃ। ় ইতি বিফুসহশ্রনাম।। শৃস্পারা-দ্যক্টরসান্তর্গতরসবিশেষঃ ৷ তৎ পর্য্যায়ঃ ৷ উৎসাহবর্দ্ধনঃ ২ ৷ ইত্যমরঃ ॥ উত্তন প্রকৃতি বী´র উৎসাহ স্থাযিভাবকঃ। মহেন্দ্ৰ দৈৰতো হেমবৰ্ণো ২য° সমূদা-হ্নতঃ।। উৎসাহ বর্দ্ধয়তি ইতি উৎসাহ বৰ্দ্ধনঃ নন্দ্যাদিত্বাদনঃ । দান ধর্মাযুদ্ধেষু জীবানপে-ক্ষোৎসাহকারী রসোবীরঃ৷বী-রযন্তে অত্র বীরঃ ৷ বীরতঙ্কত্ শৌর্য্যে যঞ্জ ক্ষীতত্তবৈব স্থা-দ্যতে ইতি সর্বরস লক্ষণ ক-টাক্ষিত । ইতি ভরতঃ ॥ 🕸 ॥ তান্ত্ৰিকভাববিশেষঃ। যথা। ত-ত্রৈব ত্রিবিধণ ভাবণ দিব্য বীর পশু ক্রমণ। দিব্য বীরেকজণ প্রোক্ত॰ সর্বসিদ্ধি প্রদাযক ।।

ইতি রুদ্রজামলে ১১ পটলঃ ॥ অপিচ। ভাবস্তু ত্রিবিধঃ প্রো-ক্তো দিব্য বীর পশু ক্রমাৎ শু-রবশ্চ ত্রিধা চাত্র তথৈব মন্ত্র দে-বতা।। ইতি তত্ত্বৈব ৬ পটলঃ।। অন্যচ্চ। পশুভাব হি প্রথমে দ্বিতীযে বীরভাবকণ। তৃতীযে দিব্যভাবঞ্চ ইতি ভাবত্রয়ণ ক্র-মাৎ ।। আদে দশমদণ্ডেন প-শুভাব মথাপি বা। মধ্যাহ্রে দ-শদঙেন বীরভাব মুদাহৃত ॥ সাযা*ক্ষে* দশদণ্ডে তু দিব্য ভাব॰ শুভপ্রদ॰।। ইতি চ তত্রৈব ১১ गरेनः ॥ अनाका । जनाव॰ পশুভাব॰ বৰ্ষষোডশকাবধি । ততশ্চ বীরভাবস্ত যাবৎ পঞ্চা-শতো ভবেৎ ৷৷ দ্বিন্টীয়াণশে বীরভাব স্থৃতীযে দিব্যভাবকঃ। এব॰ ভাব ত্রযেণের ভাব মৈক্য• ভবেৎ প্রিয়ে ৷৷ ইতি বামকে-শ্বরতন্ত্রে ৫১ পটলঃ ॥

বীরঃ ত্রি বীরাচারবিশিষ্টঃ 1
যথা 1 সলাচার রতো বীরঃ সলসন্দী সদা ভবেৎা। সমিদাসেবন° সর্য্যাৎ সোমপান° মহেশ্বরি 1 সর্ব্যা স্বরুতে দেবি বীর
শেচাদ্ধত মানসঃ 11 দিব্যস্ত দে-

বতা প্রায় শ্চন্দনাগুরু লেপনেঃ । রক্তচন্দন গন্ধৈশ্চ সুদিশ্বো নাত্র সংশ্বঃ।। ভঙ্গাঙ্গ ধূসরো বীর উন্মত্তবদিচেন্টিতঃ । সুরা-পাণরতো নিত্য॰ বলি পূজ। প-় . রাযণঃ ।। নর শ্ছাগশ্চ মহিষো মেষঃ শূকর এব চ। শশকঃ শল্ল-কী গোধা খড্গী সন্মী দশস্ম্-তাঃ ৷৷ বানরশ্চ খরশ্চৈব গজা-শ্বাদি বিহঙ্গমাঃ। ইত্যাদিভি র্ব-ल मीतः शृक्रस्य स्वर्धे प्तर তা॰।। সিদ্ধ মন্ত্রী ভবেৎ বীরে। নবীরো মদ্যপানতঃ। কলে। তু ভারতে বর্ষে লোক। ভারত বা-সিনঃ ॥ গৃহে গৃহে সুরাণ্পীত্বা বর্ণভূষ্ট। ভবন্তি হি। ইত্যুৎপ-ত্তিতন্ত্রণ ॥ 🕸 ॥ কলে) তদাচার নিষেধো যথা। দিব্য বীর মযে। ভাবঃ কলো নাস্তি কদাচন। কেবলং পশুভাবেন মন্ত্ৰ সিদ্ধি ৰ্ভবেশ্ণা ।। ইতি মহানিৰ্বাণ-**তন্ত्र°।। 🕸 ।। ত**्यूनीयः ।। বরাহ-কন্দঃ।। লতাকরঞ্জঃ।। করবীরঃ ।। অজ নঃ। ইতি রাজনির্ঘণীয়া। যজ্ঞাগিঃ। ইতি বীরহাশক**bोकागा॰ जत्रठः ॥ উजतः ॥** সুভটঃ। ইতি মেদিনী।। শ্রেষ্ঠঃ 🏿 বীরতরাসন° ক্লী আসনবিশেষঃ

। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।। বীরকঃ পু॰ করবীরঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ বীরজযন্তিকা স্ত্রী রণেবীরাণাণ ন্ত্যণ। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ॥ বীরণ ক্লী উশীরতৃণ । তৎ পর্য্যায়ঃ। বিরণ ২ কটায়ন ৩ । ইতি শব্দরত্নাবলী ।। বীরতর॰ ৪। ইত্যমরঃ ॥ বীরভদ্র° **৫।** ইতি ৰুদ্ৰঃ।। অপিচ। স্যাদ্বীর-ণ॰ বীরতরু বীরঞ্ব হুমূ**লক**॰। বীরণং পাচনং শীতং স্তম্ভন• ল-যু তিক্তক গামধুর জুরনুদান্তি মেদজিৎ কক পিত্তহ্ৎ। ত্ঞা-সু বিষ বীদৰ্প কৃচ্ছ দাহ ত্ৰণা-**११**० । बीत्रनमा जू मृन॰ मा। पू-শীর মভয় তথা। অম্ণালঞ্চ সেব্যঞ্চ সমগন্ধিক মিত্যপি॥ উশীরং পাচনং শীতং স্তম্ভনং लयु ठिक्कक । भयूत कुतक्षा-छि ममनू कि लिखनू ।। ज्-यामु विष वीमर्श मार कृष्ट् ब-ণাপহ°। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ বীরতর° ক্লী বীরণ°। ইত্যমরঃ বীরতরঃ পু॰ শরঃ। ইতিভূরি-প্রযোগঃ 11

। यथा । मृमू (कामल मार्खीर्ग) সংগ্রাম পতিতং হি যৎ। জন্ত ব্যাপাদিত বাপি মৃত বা নর মাসন° ৷৷ গৰ্ৱচ্যুত॰ স্বচ• বাপি নারীণা॰ যোনিজা॰ স্বচ্ । সর্ব সিদ্ধিপ্ৰদ দেবি সৰ্বতে৷ ২তি সমৃদ্ধিদঁও।। স্বচওবা ফৌবনস্থা-ना॰ अर्यगिषीत्रज्तामनः। ३७ মুঙমালাতন্ত্রে ৩ পটলঃ ॥

বীরতরুঃ Z° ज्ङ्क् नित्कः। ইত্যমরঃ।। কোকিলাক্ষ্কঃ। रेिं तज्ञमाना ॥ विन्। खत्रकः ।। ভল্লাতকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ वीत्रभर्भ क्री मूत्रभर्भ। हेि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

বীরপত্নী স্ত্রী বীরভার্য্যা। ইত্য-यतः ॥

বীরপত্রা ন্ত্ৰী বিজয়া। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

বীরপানু ক্লী বীরাণা শ্রমনা-**শार्यभान । यथा । तीत्रभान छ** যৎপান বৃত্তে ভাবিনি বা রণে । ইত্যমরঃ ॥

বীরপুষ্পী ञ्जी मिन्धृत्रभूष्मी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

বীরভদ্রঃ পু॰ অশ্বমেধাশ্বঃ ॥ বীরশ্রেফঃ।। বীরণ । ইতি মে-∥

দিনী ।। শিবগণবিশেষঃ। ত-স্যোৎপত্তি ৰ্যথা। ইত্যাকৰ্ণ্য ম-হাকালঃ সম্যক্জ্ঞাস্বাসতীব্যয়• । সত্য॰ মুনে সতী দেবী তৃণীচ-ক্রে স্বজীবিত॰।। জোষণ স্থিতে মুনৌ তত্ৰ তন্মহাকাল সাধসাৎ । ৰুদ্ৰ শ্চাতীব রৌদ্রো ভূৎ বহু কোপাগ্নি দীপিতঃ।। তত স্তৎ ক্রোধ জাদক্ষে রাবিরাসীমহা-দ্যুতিঃ ৷ প্রত্যক্ষঃ প্রতিমাকারঃ কাল মৃত্যুঃ প্রকম্পানঃ॥ উবাচ চ প্রাণ**ে** ভূমুঞ্জীণ মহতীণদ-ধৎ। আজ্ঞাণদেহি পিতঃ কিন্তে করবৈ দাস্য মুত্তমং ।। ব্রহ্মাওং মেক কবল॰ করবাণি স্বদাজ্ঞযা ইতি প্ৰতিজ্ঞা॰ তদ্যেশঃ শ্ৰুত্বা কৃতমমন্যত। কৃত ক্তা মিবাত্য-ন্ত॰ ত॰ মুদা প্রত্যুবাচ হ। মহা-বীরোসিরে ভদ্র মম সর্বগণেদ্বি-হ।। বীরভদ্রাখ্যয়। হি ত্ব॰ প্রথি-তি॰ পরমা॰ ব্রজ। স্বরু মে সম্বর॰ কাৰ্য্য॰ দক্ষয়জ্ঞ ক্ষয়॰ নয় ॥ ইতি কাশীখণ্ডে ৮৯ অধ্যায়ঃ॥ বীরভদ্রক॰ ক্লী বীরণ । ইতি জটাধরঃ ॥

বীরভার্য্য। স্ত্রী বীরণব্লী।ইত্য-स्तुः ॥

বীরদে

বীরমাতা স্ত্রী বীরজননী। তৎ-পर्यायः। वीत्रमृः २। ইত্যমतः বীররজঃ ক্লী সিন্দূর । ইতি **त्राक्रिमर्थन्छेः ॥** वीत्रम्यश्वान्छ ॥ বীররেণুঃ পুণ ভীমসেনঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ বারবতী স্ত্রী মাণ্সরোহিণী ! ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ वीत्रवष्म। खी वीत्रजननी । ইতি জটাধরঃ ॥ वी त्रवाष्टः पु॰ विक्टः। यथा । বীরবাহু বিদারণঃ। ইতি তস্য সহসূনাৰতে ত্ৰি° ॥ বীরবিলাবতঃ পুণ শূদ্রজব্যেণ-**ट**ा क हैं। यस । बीबविश्राव-<u>লে জৰুল ধলৈঃ শূজননাহি-</u> তৈঃ। ইতি হেসচন্দ্রঃ॥ **বীর** বৃক্তঃ পু॰ ভন্নাতকঃ । ইত্য-মরঃ। অজুনিকৃকঃ। ইতি হেম-**ठ**खः॥ विद्याखतः । **३७ ताज**-निर्वर्नेहा। वृक्तित्भयः। प्रिथान ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। বীর-

81ইতি রহ্রমালা ।। বীরসুঃ স্ত্রী সীরমাতা । ইত্য- | মরঃ ॥ বীরসেন° ক্রী আৰকবৃক্ষঃ ।

তরঃ ২ বৃহদাতঃ ৩ অশারীহরঃ

বীরা

ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। বীরসেনঃ পু• নলরাজপিতা। ইতি নৈষধ•।। বীরসেনজঃ প• নলবাজা।

বীরসেনজঃ পু॰ নলরাজা। ইতিনলোদযঃ॥

বীরহা পু॰ নফাগ্নিবান্ধণঃ ।
ইত্যমরঃ ॥ বস্যাগ্নিহোত্রিণঃ
প্রমাদাদিনা কারণান্তরেণ বা
অগ্নি নফো নির্বাণঃ স্যাৎ স
বীরহোচ্যতে। বীরমতি শোর্যাণ
কারমতি ইতি বীর তঙ্ক তু
শোর্যা ইত্যমাৎ চুরাদি ঞিঃ
প্রেরণে ঞান্তাৎ পচাদানি বী
রো বজাগ্নিং ত॰ হতবান্ ইতি
কিপি বীরহা । ইতি ভরতঃ ॥
বিকুঃ । যথা বীরহা মাধ্বো
মধঃ । ইতি বিফুসহসুনাম ॥
বীরহন্তরি ত্রি ॥

বারহন্তার ত্র ॥
বীরা স্ত্রী মুরা ॥ ফীরকাকে।
লী ॥ তামলকী ॥ এলবালুক।
॥ পতিপুত্রবতী ॥ রস্তা ॥ বিদারী ॥ দুগ্ধিকা ॥ মলপূঃ ॥
ফীরবিদারী ৷ ইতি মেদিনী ॥
পুস্তকান্তরে মুরাস্থানে সূরা বিদারীস্থানে গস্তারী ইতি পাঠঃ॥
কাকোলী ॥ মহাশতাবরী ॥
গৃহকন্যা॥ব্রান্ধী ॥ অতিবিষা ।

यित्र। ॥ ইতি রাজনির্ঘণীঃ ॥ সি॰শপাবৃক্ষঃ। ইতিরত্নমালা।। বীরামুঃ পু॰ অমুবেতসঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বীবারুক স্ত্রী আকক। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বীরাশণসনণ ক্লী অতিভয়প্রদা-যুদ্ধভূমিঃ। ইত্যমরঃ॥ বীরাসন ক্লী ভিত্ত্যাদ্যনাশ্রি-ত্যোপবেশন । যথ। । দিবানুগ-চ্ছেত্র। গা স্তু তিষ্ঠমূদ্দু ও রজঃ शिद्द । शृभाषिषा नेगक्षा রাত্রো বীরাসন° বসেৎ॥ ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্বে মনুঃ॥ অন্যক্ত **१ এक পाम मरेश**किन्मन् विनारम-দুরু সংস্থিত । ইতর্ম্মিন্ তথ। পশ্চামীরাসন মিদ বিদুঃ। ইতি ঘেরওসংহিতা ॥ वीतिनी खी विनिकृती। यथा। উপষেদে বীরণস্য তনযা॰ দক্ষ ঈপ্সিতা । বীরিণী নাম তস্যাস্ত অসিক্বীত্যপি সত্তমাঃ । ইতি কাূলিকাপুরাণে ৮ অধ্যায়ঃ॥ বীরুৎ স্ত্রী বিস্তৃতালত। তৎ-পর্য্যাষঃ। গুলিনী ২ উলপঃ ৩ । ইত্যমরঃ ॥ বীরুধা ৪ । ইতি শব্দরত্রাবলী 🛚 প্রতানা ৫ কক্ষঃ 📗

**৩। ইতি জ**টাধরঃ ॥ বীরুধা স্ত্রী বীরুৎ।ইতি শক सञ्जावनी ॥ বীরেশঃ পুর্ণবিঃ। যথা৷ অথ ত্রযোদশে মাসি স্নাদ্বা ত্রিপথ-পাস্তদি। প্রতাষ এব বীরেশ্ণ यात्रमायां ि म पिकः ॥ ইতি বীরেশ্বরস্তোত্রণ।। বীরেশ্বরঃ शु॰ भश्रात्मदः। यथा । তিলান্তরোগি নো কাশ্যাণ ভূমি লিঞ্চি বিন। ক্ষচিৎ। পর্ বীরেশ সদৃশ° ন লিম্নত্ত্বাশু সি-क्तिनः ॥ धर्मान क्षार्थनः সন্যক কামদ মোক্ষদ তথা। যথা বীরেশ্বরং লিঙ্গং কাশ্যাং নান্য-ত্তথা ধুবং ৷৷ ইতি কাশীখণ্ডে ১০ व्यक्षायः॥ বীরোজ্বাঃ পু হে । কর্ত্ত। যথা। অভ্যুদিতাভিনিমুক্তী বীরোজ্বো ন জুহোতি यः । ইতি হেমচব্ৰঃ॥ বীরোপজীবিকঃ পু॰ অগ্নিহো-ত্রমুপজীবিক। যস্য। যথা। অ-গ্নিহোত্র চ্ছলাদ্যাঞ্চাপরে। বী-রোপজীবিকঃ। ইতিহেমচন্দ্রঃ।

ক্লী চরমধাতৃঃ। তৎ-

পর্যায়ঃ ৷ শুক্র° ২ তেজঃ ৩

বীৰ্য্যণ

রেতঃ ৪ বীজ ৫ ইন্দ্রিয ও ।। **३७ मन्**षावर्ण व्यमतः॥ वीर्याः শক্তিঃ। সাচ পৃথিব্যাদীনাণ যঃ সারভাগঃ ভদতিশ্যৰূপা। সা দিবিধা চিন্ত্যাচিন্ত্য ক্রিয়া হে-্তুম্বেন। তত্র চিন্তাক্রিবাহেতু র্য। জব্য রসাদীনা স্ব স্ব কর্ম্মণ সভাব সিদ্ধা শক্তিঃ। শুচিন্ত্য-ক্রিযাহেতুশ্চ প্রভা পরপর্য্যায়ঃ l জব্যাণা° রসাদ্যননুকাপ কার্য্য করণ শক্তিঃ। উক্তঞ্চ। ভূত প্রভাবাতিশযো দ্রব্যে পাকে রসে স্থিতঃ ৷ চিস্ত্যাচিস্ত্যক্রিযা হেতু বীর্য্য° ধন্বস্তরে শ্রত° ॥ ইতি চক্রদত্তোপরি শিবদাসী-यहीका ॥ 🟶 ॥ शतवीर्याम-রপাতদোষো যথা। পরবীর্যাণ যদ্দর° কামতো ২কামতোপি বা। অহল্যে যাতি দৈবেন তদু-পায়ণ নিশা ময়।। অকামতো ন দুষ্ঠা সা প্রাযশ্চিত্তেন শুদ্ধ্যতি া কাম ভোগেন ত্যাজ্যা সা কর্মা ভোগেন শুদ্ধ্যতি ৷৷ পিতৃপাকে দৈবপাকে পূজাযাণ নাধিকারি-নী। ষষ্টি॰ বর্ষ সহসু।ণি ক্ষয়ণ কৃ-ত্বা স্বকর্মণঃ।। প্রয়াতি ভোগ দেহ॰ সা তস্যান্তে পাপ কর্মাণঃ

ì ইতি ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্তে <del>শ্ৰী</del>কৃঞ্জন্ম-খণ্ডে ৪৭ অধ্যাযঃ।। 🟶।। অতি-শযশক্তিভাগুৎসাহঃ। ইতিস্ব-र्गवर्ण अमतः ॥ कर्मम् मूकतः প্রত্যয়ঃ উৎসাহঃ। ইতি মধুঃ । কর্মসু দৃঢ ষত্নকারকো ভাব উৎসাহঃ। ইতি রমানাথঃ॥ কর্ম্মদু প্রত্যয় উৎসাহ ইতিন-যুন নিন্দঃ। অশক্যে বলে দ্যিম উৎসাহইতি কেচিৎ। স উৎ-সাহে|অতিশ্যশক্তিভাক্বীৰ্য্যণ । অতিশ্বিতো অধ্যবসায়ে। বী-র্যাণ সাধবীর্যা মিত্যর্থঃ। বীর্যা। স্ত্ৰীচ বীৰ্য্য° বীৰ্য্য ইতি কোষা-ন্তর॰ ইতি ভরতঃ॥ৠ॥ दল॰॥ প্রভাবঃ । ইতি নানার্থে অমরঃ ।। তেজঃ। ইতি মেদিনী।। চেতঃ ।। দীপ্তিঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। বীৰ্যাজঃ পুং পুত্ৰঃ। ইতিকেচিৎ वीर्यावान् जि गा॰मनः। ইতি मजत्रञ्जावनी ॥ वीर्यायुक्तम्छ ॥ वीर्यावृक्षिकतः क्री अक्ववृक्षि-কারকৌষধাদি। তৎপর্য্যায়ঃ। বৃষ্য° ২ বাজীকরণ° ৩ বীজ-কৃৎ ৪। ইতি রাজনির্ঘনীঃ॥ वीर्या खी वीर्याः। इंग्रामत्रही-কাষাণ ভরতঃ ॥

বীবধঃ পুণ পর্য্যাহারঃ । পরিত আহ্রিতে ২সৌ ধান্য তণ্ডুলা-দিঃ ।। মার্গঃ । পস্থাঃ । ইত্যমর-ভরতৌ ।। ভারঃ । ইতি শব্দ-রত্নাবলী ।।

বীবধিকঃ পু॰ স্ত্রী ভারবাহকঃ। ইতি কেচিৎ।।

বীহারঃ পু॰ মহালযঃ। সতু বুদ্ধ মন্দির॰। ইতি শব্দমালা।।। বি-হারঃ। ইত্যমরটীকা।।

বীক্ষঃ পু॰ স্ত্রী দৃষ্টিঃ। বিপূর্ব ঈক্ষধাতো রল্ প্রত্যযেন নি-ষ্ঠায়ঃ।।

বীক্ষণ ক্লী বিশেষেণ ঈক্ষণ ৷
দর্শণ ৷ বিপূর্ব ঈক্ষ ধাতে। রনট্
প্রত্যযেন নিষ্পারণ ৷৷

বীক্ষাপন্নঃ ত্রি বিস্মযাপন্নঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।৷

বীক্ষিতঃ ত্রি বিশেষেণ ঈক্ষিতঃ।
দৃষ্টঃ। যথা। পাপক্ষেপ্রশ্না লগ্নে
তু পাপ সংযুত্ত বীক্ষিতে। তথৈব চাষ্টম স্থানে রোগিণাং মরণং
দিশেৎ !! ইতিদীপিক। !!

বীক্ষ্য ক্লী বিস্ময়ঃ ॥ দৃশ্যং । ইতি মেদিনী ॥

বীক্ষ্যঃ পু॰ লাসকঃ।। যোটকঃ। ইতি মেনিনী।। দর্শনীয়ে ত্রি।।

বুগ ই ত্যাণে। ইতি কবিকল্প-জনঃ॥ ই বুজাতে। ইতি দুর্গা-দাসঃ॥

বুট ই ক ফিত্যা । ইতি কবি-কল্পজ্ঞনঃ।। পঞ্চনস্বরী । ই বুন্ট্য-তে ক বুন্ট্যতি। ফিতি হি শা।। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

বৃ ঙ গ সংভ্যক্ত)। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ।। সংভক্তিঃ সেবনং। ঙগ বৃণীতে : নৃ ্ত হি বিস্থা কারিণং গুণলাভা হব্যেব সং স্পাদঃ। ইতি দুর্গালাভঃ !!

বৃ ঞ বৃতৌ । ইউ এটিক । জনঃ ॥ ঞ বরতি ফ চাইচিচ দুর্গাসঃ ॥

বৃ ন গ ঞ বৃতে। ইতি কবিকল্পদ্ধান ক বৃতা। ইতি কবি
বল্পদ্ধান ক বৃতাতি বৃণ্তে

বল্পদ্ধান সংগ্ৰেতি ইত্যাদৌ
নানুস্থার্স্য মকারঃ । ওপ্ঠান্থাচচ বৃব্ধতীত্যাদৌ ঋদিরণাবিতার্। নচ দন্তাস্য কথমোঠ্যকার্যা মিতি বাচ্যং যতঃ স্বভাব।
দোগ্যম্য বকার্স্য ওপ্ঠাকার্য্য

স্বাভাবিক মেব ক্ষচিলন্ত্য নধ্যে পাঠঃ নহেক বৰ্ণদ্যোভয় স্থানং সম্ভৰতি। ইতি দুৰ্গাদাসঃ ॥ বৃণ্ছণঃ ত্রি পুক্তিকারকঃ। যথ।। সংখাবো বৃংহণো গুরুঃ। ইতি শক্তন্দ্রকা ।। वृष्टिञ क्री रुखिगर्क्कमः। उ९ পर्यागः । कतिगक्किंठः २ 1 ইত্যমরঃ ॥ বৃ কণ্ড আদানে। ইতি কবি-কল্পক্রনঃ ॥ ঙ বর্কতে । বরী-বৃক্যতে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ বৃকঃ পু॰ জক্ধুরপ্রশাণহরিণম-জন্তুবিশেষঃ ৷ বোঁষ ইতি খ্যাতঃ । হুণ্ডার ইতি ছিন্দীভাষা। তৎ शर्यायः । काकः २ द्रेशाम्भः ৩। ইত্যমর: ।। বৎসাদনঃ 8 বিরুক্ ৫ গোবৎসাদী ৬ ছাগ-ভোজী ৭ ছাগলাত্রী ৮ জনা-শनः २। ३७ ताक्रनिवं•छेः॥ কাৰুঃ। ইজাণাদিকোষঃ॥ বক-वृक्ध। ইতি समत्रज्ञावनी ॥ भृ-গালঃ। ইতি হারাবলী।। ফ-জিষঃ !৷ অনেক্পূপঃ II সরলজ-বঃ। ইতি ভর্তধৃতর্ভসঃ॥ জরুরঃ । ইতি বৃকদ লঃ পু (इनाज्यः ॥

বৃক্ধূপঃ পু॰ নানাসুগদ্ধিদ্রব্য-क्ठेमभाजािष्युभः । उ९भर्या-যঃ। কৃত্রিমধূপকঃ ২। ইত্যমার া। বকধূপঃ ৩। ইতি ভট্টীকা।।। সরলবৃক্রসঃ । টারপিন্ ইতি ভाষা। তৎপর্যাষঃ। পাষসঃ ২ শ্রীবাসঃ ৩ শ্রীবেষ্টঃ ৪ সরলজ-বঃ ৫। ইত্যমরঃ ।। বৃক্ধূর্ভঃ পু॰ শৃগালঃ।। ইতি श्रावनी ॥ বৃকা স্ত্রী অম্বষ্ঠা। ইতি রত্ন-गाना।। বৃকারাতিঃ পু॰ সন্ধুরঃ।ইতি শक्राना ॥ বৃকারিঃ পু॰ সন্ধুরঃ। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥ বৃকাকী ত্রী ত্রিবৃৎ **। ইতি রত্ন**-गाना।। বৃকী ন্ত্ৰী পাঠা। ইতি রাজ-निर्घकः॥ বৃকোদরঃ পু॰ ভীমসেনঃ। তৎ পর্যাবঃ । ভীমঃ ২ মরুৎপুত্রঃ ৩ কিন্মী রনিসূদনঃ ৪ কীচক-निमृतनः ৫ বকনিসূদনঃ ७ हि-ডয়নিসূদনঃ १। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।। বক্বৈরী ৮ মারুতিঃ ১ । ইতি জটাধরঃ॥ অস্য ব্যুৎপত্তি ৰ্যথা। কথাসু ভীমসেনেন প-

রিপৃষ্টঃ প্রতাপবান্। স্ববা পৃষ্ঠ-স্য ধর্ম্মস্য রহস্যস্যাস্য ভেদকৃৎ ।। ভবিত। স তদা ব্ৰহ্মন্ কৰ্ত্তা-চৈব বৃকোদরঃ। প্রবর্ত্তকে। ২স্য ধর্মদ্য পাণ্ডুসূনু মহাবলঃ ॥ য-স্য তীঙ্গ্রে। বৃকো নাম জঠরে হ-ব্যবাহনঃ। ময়। দত্তঃ স ধর্মা-ত্মা তেন চাসৌ বৃকোদরঃ ॥ ইতি মাৎস্যে ৬৫ অধ্যায়ঃ ৷৷ বৃক্ণ ত্রি ছিন্নণ। ইত্যমরঃ॥ বৃচ ঈ ধ সৃতৌ।ইতিকবিকল্প-क्रमः ॥ त्रे वृकः। ४ वृণकिः । বরীবৃচ্যতে । বর্জনার্থে। ২য মিত্যেকে। ইতি দুর্গাদাসঃ।। বৃজ ল ও ই ত্যাগে। ইতিকবি-कब्रक्रमः ॥ मश्रमवती । न ७ বৃষ্টে। ই বৃঞ্জাতে। ইতি দুর্গ।-मानः॥ বৃজ ও ল ঈ ত্যাগে।ইতি কবি-कब्रक्रमः ॥ मश्रमत्रती। न ७ বৃক্তে। ঈ বৃক্তঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ বৃজ ঈ কি ত্যাগে। ইতিকবিকল্প-जन्भः ॥ त्रे वृक्तः । कि वर्क्कयि বৰ্জ্জতি। ইতি দুৰ্গাদাসঃ ॥ বৃজ ঈধ বৃতৌ।। ত্যাগে। ইতি कविकब्रफ्रमः ।। में वृक्तः । ध वृन-॥

ক্তি। বরীবৃজ্যতে। ইতি দুর্গা-मामः ॥ বৃজন ক্লী পাপ। ইত্যুণাদি-কোষঃ ॥ আকাশ°। ইতি সি-দ্ধান্তকৌ মুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ নিরাকরণ° ৷ ইতি সংক্ষিপ্তসা<del>'</del> রোণাদিবৃত্তিঃ ॥ বৃজনঃ পুঁ কেশঃ।। স্বটিলে ত্রি । ইত্যুণাদিকোষঃ।। বৃজিঃ স্ত্রী ব্রজভূমিঃ। ইতি কেচিৎ 11 বৃজিন॰ ক্লী পাপ॰।ইত্যমরঃ॥ রক্তচর্মা।। ভুগ্ন°। ইতি হেম-ठक्दः ॥ বৃজিনঃ পুং কেশঃ।। স্বটিলে ত্রি । ইতি মেদিনী ॥ বৃণ দ উ ঞ ভকে ৷ ইতি কবি-कब्रक्रमः ॥ म क वृत्वां ठे वर्ता-তি বৃণুতে বণুতে । উ বর্ণিত্বা वृषा। ইতি দুর্গাদাসঃ।। বৃত ক দীপ্তো। ইতি কবিকল্প-দ্রুমঃ ।। ক বর্ত্তয়তি। ইতি দুর্গা-मामः॥ বিকল্পদ্রুমঃ ৷৷ ঙ বর্ত্তে ৷ উ वर्ভिष। वृज्य। वर्षमाष्ट्रि। वि-ব্ংসতি। ১ অবৃতৎ। ইতি

. पूर्शामात्रः ॥ ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ ।। য ও বৃত্য-তে। উবর্ত্তিত্বা বৃত্ত্বা। সম্বক্তিঃ সেবন । ইতি দুর্গাদাসঃ।। ষ্ডঃ ত্রি কৃতবরণঃ। তৎপর্য্যায়ঃ । বৃত্তঃ ২ বাবৃত্তঃ ৩। ইত্যমরঃ ॥ আবৃতশ্চ ॥ বৃতপত্ৰা স্ত্ৰী পুল্ৰদাত্ৰী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ वृज्धि ञ्जी त्वरुनः। তৎপर्यायः । বরঃ ২ । ইতামরঃ ॥ প্রার্থনা-বিশেষঃ। ইত্যন্যে। ইতি ভরতঃ ।। বরণ । ইতি মেদিনী ।। গো-পন°। ইতি শব্দরত্নাবলী।। বৃতিঙ্করঃ পু॰ বিকঙ্কতবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷ বৃতিকারকে ত্রি वृद्ध॰ क्ली চরিত্র॰।। পদ্য॰। ই-ত্যমরঃ ।। যথা। পদ্য॰ চতুম্পদী তচ্চ বৃত্ত॰ জাতি রিতি দ্বিধা । বৃত্ত মক্ষর সংখ্যাতং জাতি র্মা-ত্রাকৃতা ভবেৎ ॥ সম মর্দ্ধসমণ বৃত্ত॰ বিষমঞ্চেতি তল্রিধা। ইতি ছন্দোমঞ্জরী ॥ বৃত্তিঃ। ইতিমে-দিনী ।। বেদ্যবাধিত্য্যাচারন্য পরিপালন । ইতি বৃত্তাধ্যায়ন-

র্দ্ধি শব্দ টীকাষাণ ভরতঃ।।

বৃত্তঃ ত্রি অতীতঃ।। দৃঢঃ।। বর্তু-লঃ।৷ কৃতাবরণঃ। ইত্যমরটীকা ।। অধীতঃ।। মৃতঃ । ইতি মেদি-नी ॥ 🗱 ॥ जथ वृद्धवङ्गि । বৃত্তানি বাহু নারঙ্গ কন্ধ ধমিল মোদকাঃ। রথাঙ্গ লাবক কঙ্গৎ श्रक्षित्र खां एका मयः ॥ कर्ने भाग ভুজাপাশাকৃষ্টচাপ ঘটানন । মুদ্রিকা পরিখা যোগপট হার मुगामयः ॥ 🗱 ॥ मः পূর্ণগর্ভবৃ-ত্তানি যথা। সংপূৰ্ণগর্ভবৃত্তানি মুখ পদ্মেন্দু দর্পণাঃ। চক্রাবহ-উ তিল্ক মৃদঙ্গপুট শাযকাঃ।। আবর্ত্তঃ কমঠো লূতাগৃহণ ছত্র মপূপক । আলবাল মহী জাল **ठर्माक॰ मानकामयः ॥ ইতি क-**বিকল্পলতায়া ২ শ্লেষস্তবকে প্রকীণ নাম ৩ সসুমণ।। কূর্মাঃ। ইতি রাজ-বৃত্তঃ পু• নিৰ্ঘণ্টঃ ৷৷ বৃত্তকর্ক টী স্ত্রী ষড্ভুজা।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ 11 वृङगिक्षः क्ली भागवित्मकः। তস্য লক্ষণ যথা। ভবত্যুৎক-লিকা প্রায়ণ সমাসাচ্যণ দৃঢ়াক্ষ-तः। वृदेक जिल्ला मस्ता < वृज्ज-গন্ধি পুনঃ স্মৃত ।। তস্য উদা-

रत्रं यथ। जय जय जनार्कन সুকৃতি জন মন স্তডাগ বিকস্বর চরণপদ্ম পদ্মন্যন পদ্মা পদ্মি-নী বিনোদ রাজহণ্স ভাসুর-যশঃ পটল পরিপূরিত ভূবন জ-र्त । रत कमलामनामि वृन्मात-ক বৃন্দ বন্দনীয় পাদারবিন্দদ্বন্দু নির্ম্মুক্ত যোগীন্দ্র হৃদয মন্দির বিতমু নিরঞ্জন জ্যোতিঃ স্বৰূপ নাথ নাথ জগনাথ মামনবিধি ভবদুঃখ ব্যান্সল° রক্ষ রক্ষ । ইতি চ্ছন্দোমঞ্জর্য্যাণ ৬ স্তবকঃ॥ বৃত্তগুণ্ডঃ পু॰ তৃণবিশেষঃ। তৎ পৰ্য্যায়ঃ। বৃত্তঃ ২ দীৰ্ঘনালঃ ৩ জলাশ্রয়ঃ ৪। দ্বিধায়ণ একঃ স্থূলঃ দিতীয়ে। লয়ুঃ । অসা গুণাঃ। মধুরত্ব॰ । শীতত্ব॰। কফ পিত্রাতিসার দাহ রক্তনাশিত্রণ । তেষা॰ নধ্যে স্খূলতর্দ্যাধিক গুণস্থ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বৃত্ততঃ ব্য বৃত্তেন। যথা। অ-তিগ্রহাব্যথন ফেপেল্কর্ভরি তৃতীবাষাঃ । অকর্ত্তরি তৃতীয়া-স্তাৎ বা তসিঃ ম্যাৎ ৷ অব্যথন॰ অচলন ৷ বৃত্তেন ন ব্যথতে বৃত্ত তে। ন ব্যথতে। বৃত্তেন ন চল-তীত্যর্থঃ।ক্ষেপে। বৃত্তেন কিণ্ডঃ

বৃত্ততঃ ফিপ্তঃ। বৃত্তেন নি**ন্দিত** ইতাৰ্থঃ। হীষমান পাপযোগা-**फ** ≀हीयगान পাপयूक्जामकर्खति তৃতীবাস্তাদ্বা তিনঃ। বৃত্তেন হী-যতে বৃত্তেন পাপঃ বৃত্ততঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী॥ বৃত্ততঙ্লঃ পু॰ **শাবনালঃ।ইতি** রাজনির্ঘন্টঃ ॥ वृद्धनिकाविका ही नथनिकावी । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বৃত্তপণী স্ত্রী মহাশণপুষ্পিক।।। পাঠা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ वृत्त्रभूष्मः भूः भितीयः॥ कमयः ।। वानीतः ॥ ऋककः ॥ मूलातः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ वृद्धक्व° क्वी मतीष्ठ°। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥গোলদন্মাত্রং वृद्धक्तः पू॰ माफिगः॥ वमदः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বৃত্তফল। খ্রী- বার্ত্তাকী॥শশা-ঙুলী। আমলকী। ইতি রাজ-निर्घन्छेः ॥ বৃত্তসলিক। ত্রী শ্রেভার্কঃ॥মো-मिनी । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ **।।** বৃত্তবীজঃ পু॰ ভিঙা। ইতি রাজ-निर्चन्छे ॥ ¶ वृद्धवीकका द्यी शाधुद्धक्वी । বৃত্তান্ত

ইতি রাজনির্ঘন্টঃ 11
বৃত্তবীজা স্ত্রী আঢকী 1 ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ 11
বৃত্তস্থঃ ত্রি বৃত্তে তিগুতি যঃ যথা 1
তুরীষো বন্ধহত্যাযাঃ ক্ষতিয়স্য
ব্যে স্মৃতঃ 1 বৈশ্যে হন্টমাংশা বৃত্তস্থে শূদ্রে জ্রেষ স্ত ষোড়শঃ
11 ইতি মনুঃ 11 বৃত্তং যথা 1 শুরুপূজা ঘৃণা শৌচং সত্য নিজিয়
নিগ্রহঃ 1 প্রবর্ত্তনং হিতানাঞ্চ
তৎ সর্বাং বৃত্ত মুচ্যতে 11 ইতি
গোপাল পঞ্চানন কৃত স্মৃতিসংগ্রহঃ 11

বৃত্ত। ত্রী ঝিঞ্চরিফাবৃক্ষঃ॥ রেগুকা॥ প্রিযক্ষঃ॥ মাণ্সরোহিণী
। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥
বৃত্তাধ্যযনর্দ্ধিঃ ত্রী ব্রহ্মবর্চ্চানরুষ্য পরিপালন বৃত্তণ ব্রতগ্রহণ পূর্বকণ গুরুনুখেন বেদাভ্যাসো অধ্যযনণ। তথাে ঋ দ্বি
স্তৎ পরিপালন কৃত তেজস উপচযো ব্রহ্মবর্চ্চসণ স্যাৎ। ব্রহ্মহস্তি রাজেতি অং। ইতি ভরতঃ॥
বৃত্তান্তঃ পুণ সংবাদঃ। তৎপর্যায়ঃ। বার্তা ২ প্রবৃত্তিঃ ও উদন্তঃ ৪। ইত্যমরঃ॥ শ্রুতিঃ ৫ ।

বৃত্তি

ইতি জটাধরং ।। উদস্তকঃ ৬। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। প্রক্রিয়া ।। কার্ৎ স্ন্যু ।। বার্ত্তাপ্রভেদঃ ।। প্রস্তাবং । ইতি মেদিনী ।। অব-সরং ।। ভাবং ।। একান্তবাচকঃ। ইতি বিশ্বং ।।

বৃত্তিঃ স্ত্রী জীবিকা। ইত্যমরঃ।। বিবরণ ।। কৌশিক্যাদি।! প্রব-র্ত্তন°। ইতি মেদিনী।। বিধৃতিঃ। ইতি ধরণিঃ ৷৷ ৠ ৷৷ কৌশিক্যাদি বৃত্তযো যথা। শৃঙ্গারে কৌশিকী বীরে সাম্বত্যারভটী পুনঃ। রসে রৌদ্রে চ বীভৎসে বৃত্তিঃ সর্বত্র ভারতী ৷৷ চতদ্যে বৃত্তয়ে হে-তাঃ সর্বনাট্যস্য মাতৃকাঃ। ইতি সাহিত্যদর্পণে ৬ পরিচ্ছেদঃ ॥ 🗱 ॥ বৃত্তিহরণে দোষা যথা। শ্রীনারাষণ উবাচ। স্বদ্তাণপ-রদত্তা° বা রদাবৃত্তি° হরেতু যঃ **।** স কৃতন্ন ইতি জ্রেষঃ ফল॰ তৎ শূণু ভূমিপ ।। বাবত্তো রেণবঃ সিক্তা বিপ্ৰাণাণ নেত্ৰ বিন্দুভিঃ ৷ তাবদ্ধ সহসুঞ্চ শৃতপোতে স তিষ্ঠতি।। তপ্তাঙ্গারঞ্চ তদ্তক্ষ্যণ পানঞ্চ তপ্তমূত্রক॰ । তপ্তাঙ্গারে চ শ্যন তাডিতে। যমকিক্ষরৈঃ ।। তদন্তে চ নহাপাপী বিপ্তাযা॰ জাষতে কৃমিঃ। যথিবর্ষ সহসাবিদেবমানেন ভারতে।। ততো
ভূমিবিহীনশ্চ প্রজাহীনশ্চ মানবঃ। দরিদ্রঃ কৃপণো রোগী
শুদ্রো নিন্দা স্ততঃ শুচিঃ।।
ইতি বন্ধবৈবর্তে প্রকৃতিখণ্ডে
৪৯ অধ্যায়ঃ।।

বৃত্তিস্থ: পু• সরট: । ইতি রাজনির্ঘণ্ট: ।। বৃত্তৌ তিগুতি ত্রি ।।
বৃত্তের্ধারু: পু• ষড্ভুজা। ইতি
রাজনির্ঘণ্ট: ।।

বৃত্য ত্রি বরণীয় । বৃতধাতোঃ ক্যপা বৃঞ্জ ধাতোশ্চ ক্যপ্ তুক্ প্রত্যুষাভ্যাঞ্চ নিষ্পান্ধ । ইতি নিদ্ধান্তকৌমুদী ॥

বৃত্তঃ পুশ অন্ধকারঃ ।। শত্রুঃ ।।
দানববিশেষঃ । সতু স্বস্কৃপুত্র ই
ক্রেণ হতঃ । ইত্যমরঃ ।। মেঘঃ ।।
পর্বতবিশেষঃ । ইতি মেদিনী ।।
ইন্দ্রঃ । ইতি বিশ্বঃ ।। শকঃ । ইতি
সিদ্ধান্তকৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ ।।
বৃত্তবিদ্ধান্ত
চন্দ্রঃ ।।

বৃত্রভোজনঃ পু॰ গণ্ডীরঃ। সমঠ
ইতি খ্যাতঃ। ইতিশক্ষচন্দ্রকা।।
বৃত্রহা পু৽ ইন্দ্রঃ। ইতামরঃ।।
কৃত্রারিঃ পু৽ ইন্দ্রঃ। ইতি হলাকৃত্রারিঃ পু৽ ইন্দ্রঃ। ইতি হলাকৃত্রারিঃ পু৽ ইন্দ্রঃ। ইতি হলা-

মুধঃ !!

বৃথা ব্য নির্থকঃ। তৎপর্যায়ঃ

। মুধা ২ ব্যর্থকং ওঅবিধিঃ ৪ ।
ইত্যমরঃ !! যথা। অদপ্ত পানিং
কো গ্রামো অদাসীকক্ষ যদগ্
হুণ। অনাজ্য ভোজনং যার্চ বৃথা
তদিতি মে মতিঃ !! ইতি বহিংপুরাণে প্রেতোপাখ্যান নামাধ্যায়ঃ !! অপিচ ! বৃথা বৃষ্টিঃ সমুদ্রস্য তৃপ্তম্য ভোজনং বৃথা !
বৃথা দানং সমৃদ্ধস্য নীচম্য স্কৃতং বৃথা !! ইতি গারুডে ১১৫
অধ্যায়ঃ !!

বৃথাজন্ম ক্লী নির্থকজনন ।
যথা। বৃথা জন্মানি চন্বারি বৃথা
দানানি ষোডশ। তান্যহং সংপ্রবক্ষ্যামি যথাবদন্পূর্বশঃ।
অপুত্রস্য বৃথাজন্ম ধর্মবাহ্যানরাঃ সদা। পরপাকং সদামন্তি
পরতাপ রতাশ্চ যে।। ইত্যাদ্যে
বিহ্নপুরাণে দানাবস্থানির্গর নামাধ্যায়ঃ।। অপিচ। যৈ ন প্রভং
ভাগবতং পুরাণং নারাধিতোযৈঃ পুরুষঃ প্রধানং। মুখে ছতং
যৈ ন ধরামরাণাং তেষাং বৃথা
জন্ম নরাধ্যানাং।। ইতি পুরাণং
বৃথাদানং ক্লী নিম্কন্দানং। তৎ

ষোডশবিধণ। যথা। দেব পিতৃ বিহীন॰ যদীশ্বরেভ্যঃ সদোষতঃ **৷দত্বানুকীর্ত্তনাকৈব বেদাগ্নি ত্র-**তত্যাগিনে।। অন্যাংশাপার্জ্জি-ত॰ দান॰ ব্যর্থ॰ ব্রহ্মহণে তথা। ' 'গুরবে ২নৃতবক্তা যঃ স্তেনায পতিতায় চ ৷৷ কৃতদ্বায় চ যদ্দত্ত° সর্বদা ব্রহ্মবিদ্বিষে। পাচকাষ্চ সৰ্ব্যা বৃষল্যাঃ পত্তমে তথা ॥ পরিচারকাষ ভূত্যায় সর্বত্র পি-**শুনায় চ ইত্যেতানি তু রাজে**-ন্দ্ৰ বৃথাদানানি যোডশ। ইতি বহিপুরাণে দানাবস্থা নির্ণযনা-म्थायः॥ जनाकः। नगयमा-গ্ৰেন যদভ্ত তৎ সপ্তবিধ মপি পুন নাপহর্তবাং। যৎপুন র-নাবেন দত্ত তদদত্ত ধোডশ গ্রকার মপি **প্রত্যাহর্ত্তব্যমেব**। ইত্যর্থাদুক্তণ ভবতি। নারদেন চ।দত্ত° সপ্তবিধ° প্রোক্ত মদত্ত° ষোডশাত্মক°। ইতি প্রতিপাদ্য मखामखरगाः अकाश विवृज्। পণ্য মূল্যণ ভৃতি স্তুষ্ট্যা শ্লেহাৎ প্রত্যুপকারতঃ। স্ত্রীসূল্গান্গ্রহা-र्थकं मञ्ज मानवितमां मिनुः ॥ অদত্তম্ভ ভয ক্রোধ শোক বেগ ৰুজান্বিতঃ। তথোৎকোচ প-॥

রীহাস ব্যত্যাস চ্ছলবোগতঃ।।
বাল মৃঢাস্বতন্ত্রার্ত্ত মতোন্মন্তাপবজ্জিতং। কর্ত্তা মমেদং কর্মেতি প্রতিলাভেচ্ছ্যা চ যৎ ॥ অপাত্রে পাত্র মিত্যুক্তে কার্য্যে বা
ধর্ম্মসংহিতে। যদ্দত্তং স্যাদবিজ্ঞানাদদত্ত মিতি তৎ স্মৃতং।।
ইতি মিতাক্ষরা।।
বৃথামাণসং ক্লী দেবপিত্রনুদ্দিষ্ট-

বৃথামাণসং ক্লা দেবাপত্রনুদ্দিন্দমাণসং। তদ্ভক্ষণে প্রেতন্ত্রণ ভবভি। যথা। বৃথারেভা বৃথামাণসো বৃথাবাদী বৃথামুভিঃ। নিদকো দিজদেবনাং স প্রেতো
জাষতে নরঃ।।ইভি বহ্নিপুরাণে
প্রেতোপাখ্যাননামাধ্যায়ঃ।।
বৃদ্ধং ক্লী শৈলজ নাম গন্ধজ্বব্যা
। ইত্যমরঃ।।

বৃদ্ধঃ পু॰ বৃদ্ধদারকঃ। ইতি রা-জনির্ঘণ্টঃ।।

বৃদ্ধঃ ত্রি গতযৌবনঃ ।। প্রবৃদ্ধঃ

।। পণ্ডিতঃ । ইতি মেদিনী ।।
আদ্যাস্য পর্যাবঃ । প্রবৃদ্ধঃ 
স্বিরঃ ৩ জীনঃ ৪ জীর্ণঃ ৫ জর
ন্ ৬ । ইত্যমরঃ ।। ষাত্যাবঃ ।
জর্জরঃ ৮ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।
প্রলিতঃ ৯ । ইতি জটাধরঃ ।।
বৃদ্ধগঙ্গা স্ত্রী নদীবিশেষঃ । বৃদ্ধি

গঙ্গা ইতি খ্যাতা। যথা। অস্তি নাটক শৈলে তু সরোমানস স-মিভ'। যত্র সার্দ্ধি শৈল পুত্র্যা জলক্রীডা॰ সদা হরঃ॥ সরুতে নরশাদূ ল স্বর্ণগঙ্কজ শোভিতে। তস্য পশ্চামধ্য পূৰ্ৰ ভাগেভ্যশ্চ সরিত্রষণ। অবতীর্ণ প্রযাত্যেব দক্ষিণ° সাগর• প্রতি॥ তস্য প-শ্চিমভাগে তু নদী দিক্করিকা-হ্বযা। দিগ্গজাঃ ক্ষেত্র সংজা-তাঃ তেন দিক্বরিকা স্মৃতা।। ম-ধ্যভাক্ষৎ সৃতা যা তু শঙ্করে-ণাবতারিতা। বৃদ্ধগঙ্গাস্থযা সা **जू भटक्र व कलाना यिनी ॥ या निः**-সূতা পূৰ্বভাগাত্তস্মাদিমরিবরা নদী। স্বৰ্ণ গ্ৰীবেতি বিখ্যাতা সা গঙ্গা সদৃশী ফলে ু।। ইতি কালি-কাপুরাণে কামৰূপ পীঠ নির্ণয नाग ४२ अशायः॥

বৃদ্ধকাকঃ পু• কাকবিশেষঃ।
দাঁডকাক্ ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। ব্ৰোণকাকঃ ২ দগ্ধকাকঃ ৩ কৃষ্ণকাকঃ ৪ পৰ্যতকাকঃ ৫ বনাশ্ৰয়ঃ ৬ কাকোলঃ
৭। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ।

বৃদ্ধত্ব ক্লী বৃদ্ধস্যভাবং। তৎ-পর্যায়ং। স্থাবিরং ২। ইত্যানরং

।। বাৰ্দ্ধক্য ৩ বাৰ্দ্ধক ৪। ইতি मक्तत्रशावनी ॥ 🗱 ॥ वानगारम রবধি মাহ সুশ্রুতঃ। বযস্ত ত্রিবি-ধং বাল্যং মধ্যমং বাৰ্দ্ধকং তথা ৷ উনষোডশবর্যস্ত নরো বালো নিগদ্যতে ॥ ত্রিবিধঃ সোপি দু-क्षानी मुक्तामानी उथामजूक्। मुक्षानी वर्षश्यां छ॰ मुक्काकानी শরদৃষে ॥ তদুত্তর স্যাদমাশী এবং বাল স্ত্রিধা মতঃ। মধ্যে ষো-ডশ সপ্তত্যো র্মধ্যনঃ কথিতো বুধৈঃ ৷৷ চতুর্ধা মধ্যমণ প্রাহ্ন যুবা দাত্রি॰শতো মতঃ । চত্বারি॰শৎ ममा याविष्ठिष्ठिषीयगामि शृतिङ ॥ ততঃ ক্রমেণ ক্ষীণঃ স্যান্দাবস্ত-বতি সপ্ততিঃ। বীকা দীতাদি শব্দেন রসাদি সর্বধা মি ক্রিয় ব-লোৎসাহ। উচ্যতে । ফীণঃ সর্ব-ধান্বিভ্ৰিষ বলোৎদাহৈ হী নঃ। **ততম্ভ সপ্ততে कर्कृ॰** कीनभाजू त-माफिकः ॥ क्यायमारनिक्यय वनः ষ্টীণরেতা দিনে দিনে । বলী প-লিত খালিত্য যুক্তঃ কর্ম্মসু চাক্ষ-मः ॥ काम श्वामानिज्यः क्रिटकी বৃদ্ধো ভবতি মানবঃ। বাল্যে বি-বৰ্দ্ধতে শ্লেষা পিত্ৰণ স্যান্মধ্যনে-িধিক ।। বাৰ্দ্ধক্যে বৰ্দ্ধতে

বৃদ্ধদা ৰিচাৰ্ট্যোতদুপক্ৰমেৎ। উপক্ৰ-| নেৎ চিকিৎসেৎ। তন্ত্রান্তরে তু । वालाः वृक्ति न्छवि त्र्या प्रशृह-किः एक विकासी। वृक्तिः कार्यः ন্দ্রিয° চেতো জীবিত° দশতো · হূদেৎ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। বৃদ্ধদারকঃ পু॰ বীরতাডককৃকঃ । ইভি ভরতঃ ।। বিদ্ধডক্ ইভি বীজতাডক। ইতি চ বঙ্গভাষা। । বিধার। ইতি হিন্দীভাষ।। তৎ পর্য্যায়ঃ ৷ ঋকগন্ধা ২ ছগলান্ত্রী ৩ জাবেগী ৪ জুসঃ৫। ইতামরঃ । খ্যাগদ্ধ। ৬ ছগল।জ্মী ৭ ছগ-ল। ৮ অন্ত্রী ৯ জ্ব। ১০। ইতি তট্টীকা।। ছগলী ১১জুবকঃ ১২ শ্যানঃ ১৩। ইতি জটাধরঃ ॥ বৃযাগন্ধ। ১৪ ছগলান্ত্রিক। ১৫ । इंडि भक्तत्रवावनी ॥ मीर्यवान्-ক৷ ১৬ ছাগলান্ত্রিকা ১৭ বৃদ্ধঃ ১৮ কোঠরপুশী ১৯ অজান্ত্রী २० वृक्षमांक २३। अञ्चास्टात কোঠরপুশী ঋনে বৃদ্ধকোটর-পুষ্পীতি পাঠঃ। অসা গুণাঃ।

গৌল্যন্থ°। পিঞ্চিলত্ব°। কফ ব।-

ত কাসাগ্যদায় নাশিল্প ৷ বল্য-

ত্বঞ্ছ। ইতি রাজনির্ঘটঃ॥ অন্য-

फ। রমাযনে। বৃদ্ধদারঃ শোখ।

বৃদ্ধরা বাতানবাতজিৎ। ইতি রাজ-বলভঃ 11 वृक्षमाङ क्ली वृक्षमाज्ञकवृक्षः। যথা। বৃদ্ধদারু দ্বত গৌল্যত পি-ক্সিল॰ কফ বাতনুৎ।বল্য॰ কা-मामानायम् विठीयः यद्यवीर्या-**म॰ ॥ ইতি রাজনির্ঘক্টঃ ॥** বৃদ্ধনাভিঃ ত্রি 'উন্নতনাভিঃ। গোঁডনাভিযুক্তব্যক্তিঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। তুঙিলঃ ২ তুঙিভঃ ৩ । ইত্যমরঃ॥ বৃদ্ধপ্রপিতামহঃ পু• প্রপিতাম-হতাতঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ তত্র কন্যায়াঃ সপিওতা নাস্তি । যথা। তেনারা গণ্ডনে বৃদ্ধপ্র-পিতামহে সাপিণ্ডাণ নিবর্ত্ততে ইতি প্রতিপাদিত । অতএব প্র-পিতামহ ভূাত্রা **তৎ সন্ততিভি**ঃ সহ সাগিওাভাবাৎ কন্যা জ-নন নরণবো স্তেষাণ সপিণ্ডা-শোচ নাস্তি কিন্তু সমানোদক নিমিত্ত মেবাশৌচ মিতি। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ॥ বৃদ্ধবলা গ্রী মহাসনস। ইতি

রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

বৃদ্ধরাজঃ পু॰ অল্লবেতসঃ। যথা।

অভায়ে। বৃদ্ধরাজশ্চ দ্বাবেতী

তত্র কীর্ত্তি। ইতি কেচিৎ।।
বৃদ্ধবাহনঃ পুণ আমুবৃক্ষঃ। যথা।
সুপকোবৃদ্ধবাহন ইতিকেচিৎ।।
বৃদ্ধবিজীতকঃ পুণ আমুাতকঃ।
ইতি শব্দমালা।।
বৃদ্ধশ্বাঃ পুণ ইন্দুঃ। ইত্যমরঃ।।
বৃদ্ধসণ্ডঃ পুণ বৃদ্ধানাণসমূহঃ।
তৎপর্য্যায়ঃ। বার্দ্ধকণ ২। ইত্যমরঃ।।

বৃদ্ধসূত্রক° ক্লী ইন্দ্রত্ল°। বৃদ্ধিরস্তা ইতি ভাষা। যথা। বৃদ্ধসূত্রত তিলাত রিন্দ্রত্ল° ননীযিণঃ। গ্রীমহাস° ব°শকফ° বাত
তুল° নর দ্বু দে ॥ ইতি হারাবলী ॥

ৰৃদ্ধা স্ত্ৰী গতমে বনা। বুডী
ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। পালিক্নী ২। ইত্যমরঃ। পলিতা ৩
। ইতি ভরতঃ।। স্থবিরা ৪ নিজ্ঞলা ৫ জরতী ৬ গতার্ভ্রবা ৭।
ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। তদবস্থাকালো যথা। আষোডশান্তবেদ্বালা তরুণী ত্রিংশতা মতা। পাস্থপঞ্চাশতঃ প্র্রোচা বৃদ্ধা ভর্মতি
তৎপরং।। ইতি কালিদাসঃ।।
শ্রুণিচ। বালেতি গীয়তে নারী
যাবদ্বর্মাণিষোডশ। ততস্তু তরু-

ণী জ্ঞেয়া দ্বাত্রিণ্শদ্বৎসরাবধি ॥ তদুৰ্দ্ধ মধিৰাতা স্যাৎ পঞ্চাশ-দ্বৎসরাবধি। বৃদ্ধা তৎ পরতো জ্ঞেয়া সুরতোৎসব বক্জিতা।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ 🕸 ॥ ত-স্যাঃ সম্ভোগে দোষো যথা। বালা তু প্রাণদা প্রোক্তা যুবতী প্রাণহারিণী। প্রোটা করোতি বৃদ্ধত্ব° বৃদ্ধ। মরণ মাদিশেৎ ॥ নিদায শরদে। বালা প্রোটা বর্ষ। বদন্তযোগ। হেমন্তে শিশিরে যোগ্যা ন বৃদ্ধা ক্ষাপি শন্যতে ।। নাৰ্ত্ত্যৰ বোডশাঘ্য ত্যাঃ গরতো ন চা সাম সময় **ম**্বঃ দ্রীতিং সংগ্রাহার জন্ম **হতি ৷৷ প**ঞ্চৰঞ্জ, প্ৰজ্ঞান লাই ক প্তদপ্তিভঃ পুনান্ াবেভৌ ন প্রসূবেতে প্রসূমেতে বিপর্য্য-या था देखि ता अवला छः ॥ 🗱 ॥ শুষ্ক মাণসং স্ত্রিয়ো বৃদ্ধা বালার্ক স্তরুণ° দধি।প্রভাতে মৈথুন° निज। नगः नाग्रतानि यह ॥ ইতি চাণক্য°।। 🕸 ।। অঙ্গৃঙঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ নহাশ্রাব-ণিক। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বৃদ্ধাঙ্গুলিঃ দ্রী হস্তপাদযোঃ-স্থলাঙ্গুলিঃ। বুডাআঙ্গুল ইতি

ভাষা।তৎপর্য্যায়ঃ। অঙ্কুষ্ঠঃ ২ বৃদ্ধা ৩। ইতি শব্দরত্নাবলী।। रृक्षिः खी अक्रेरगास्त्रं ठ 🕃 यथ-বিশেষঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। যোগ্যা २ ঋक्तिः ७ मिक्तिः ८ वश्वीः ৫। ে ইত্যমরঃ ॥ পুষ্টদা ৬ বৃদ্ধিদাত্রী ৭ মঙ্গল্যা ৮ শ্রীঃ ৯ সম্পৎ ১০ আশীঃ ১১ জনেন্টা ১২ ভূতিঃ ১৩ মুৎ ১৪ সুখ ১৫ জীবভঁটা। ३७। जमा छनाः। सिक्ति वृक्ति क মধুর। সুস্লিগ্ধা তিক্ত শীতলা। রুচি মেধাকরী শ্লেম সন্ঠ ক্রি-নিহর। পরা।। প্রযোগেঘনযো-রেক॰ যথালাভ॰ প্রযোজ্যেৎ । यज यमाञ् भिक्तिः माम्वय মপ্যত্র যোজ্যেৎ ॥ ইতি রাজ-निर्घ•िः।। अकि वृक्ता। क़८-পত্তি লক্ষণ নাম গুণাঃ । ঋদ্বি বৃ ক্ষিশ্চ কন্দৌ দ্বৌ ভবতঃ কো-ষ্যামলে। শ্বেতলোমান্বিতঃ ক ন্দো লভাজাতঃ সরন্ধকঃ ॥ স-এব ঋদ্ধি বৃঁদ্ধিশ্চ ভেদ মপ্যে-তযে। ক্রবে। তূলগ্রন্থিসমা-ঋদ্ধি বামাবর্ত্ত ফলা চ সা॥ বৃ-দ্বিস্ত দক্ষিণাবর্ত্তফলা প্রোক্তা মহষিভিঃ। ঋদ্ধি ৰ্যোগ্য° সিদ্ধি লক্ষ্যে বৃদ্ধে রপ্যাহ্বয়। ইমে।।

খাদ্ধি বল্যা ত্রিদোষমী শুক্রলা ম-ধুরা গুরুঃ। প্রাণৈশ্বর্যাকরী মূচ্ছা রক্তপিত বিনাশিনী।। বৃদ্ধি গর্ত্ত প্রদা শীতা বৃত্হণী মধুরা স্মৃতা। ব্যা পিতাসু শমনী কত কাৰ্স क्यां शरा ।। तां छ। मेशा रेवर्ग रेड যতে। ২য মতিদূৰ্ল্লভঃ। তক্ষাদস্য প্রতিনিধি গৃহীয়াত্তদ্গুণ ভিষ-क्।। मूथाममृभः প্রতিনিধিঃ ॥ 🛊 ॥ এতস্য প্রতিনিধি মাহ। মেদ। জীবক কাকোলী ঋদ্ধি দ্বন্দ্বেপি-চাসতি । বরী বিদার্য্যশ্বগন্ধা বা-রাহীশ্চ ক্রমাৎ ক্ষিপেও।। মেদা মহামেদা স্থানে শতাবরীমূলণ জীবকর্ষভক স্থানে বিদারীমূলণ कारकानी कीत्रकारकानी स्राप्त २भगकामृनः शक्ति वृक्ति छात्न বারাহীকনণ গুণৈ স্তত্ত্ব্যাণ ক্ষি-পেও। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ 🗱 🔃 নীতিবেদিনাং ক্ষয়াদি ত্রিবর্গা-ন্তর্গত বর্গবিশেষঃ। ইত্যমরঃ।। নীতিবেদিনা নীতিশাস্ত্রজ্ঞানা ক্ষয়াদিভি স্ত্রিবর্গঃ ৷ অন্যেষাম্ভ ধৰ্মকানাৰ্থঃ পূৰ্বনুক্তঃ ৷ অন্ট-বৰ্গ দ্যাপচযঃ ক্ষয়ঃ ৷ তদ্যৈবো-পচযো বৃদ্ধিঃ। তস্য নোপচযো-नाशाश्रहमः स्नः। अस्वर्गा

যথা। কৃষি বঁণিক্পথো দুৰ্গণ সেতুঃ সঞ্জর বন্ধন । কন্যা কর বলাদান দৈন্যানাঞ্চ নিবেশন ।। অষ্টবর্গঃ স্মৃতো রাজ্ঞ। মিতি खत्रकः ॥ **#** ॥ वर्ष्कनः । ७९ भर्या-यः। ऋाजिः २। ইতানরः ॥ বিষ্ণস্তাদিসপ্তবি শতিযোগান্তর্গ-তৈকাদশযোগঃ । তত্ৰ জাত-ফল° ষ্থা। প্রসতিকালে যদি-**বৃদ্ধিযোগো নরঃ সুভোগো** বিন-যান্বিতশ্চ । ধন প্রযোগ গ্রহণেয **मत्का विठक्षनः मा** क्य विक्र-যাভ্যা॰ ৷৷ ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ 🔃 🗱 🛚 कना छत्र । मूम 🗦 🗇 ভाষা ।। অভ্যুদयः ।। সমৃদ্ধিः । ইতি মেদিনী ॥ স্বগুরোগঃ ॥ र्र्यः। ইতি হেমচন্দ্ৰः।। সমূহः। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা ।। শৈলেয়ণ ।। ধন॰। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। 🕸 🛭 বৃদ্ধিগ্ৰহণ নিষমে। যথা । অশী-তি ভাগো वृक्षिः महाग्रामि गामि সবন্ধকে । বৰ্ণক্ৰমাচ্ছত দি ত্ৰি চতু পঞ্চক মন্যথা।। মাসি মাসি প্রতিমাস বন্ধক বিশ্বাসার্থ য-দাধীয়তে আধি রিতি যাবৎ। বন্ধকেন সহ বর্ত্ত ইতি স্ব-ম্বকঃ প্রযোগ স্তামিন্ সবন্ধকে

প্রযোগে প্রযুক্তন্য দ্রব্যন্যাশী-তিতমো ভাগো বৃদ্ধি ধর্ম্যা ভ-বতি। অন্যথা বন্ধক রহিতে প্র-যোগে বর্ণানাং ব্রাহ্মণাদীনাং ক্র-নেণ দ্বি ত্রি চতুঃ পঞ্চক শত ধর্ম্ম্য° ভবতি । ত্রাহ্মণে ২ধমর্ণে দ্বিক॰ শত॰। ফাত্রিযে ত্রিক॰। বৈশ্যে চতুষণ। শূদ্রে পঞ্কণ। মাসি মানীত্যেব। ছৌ বা ত্রযো বা চত্বান্নোবা পঞ্চ বা দ্বি ত্রি চতুঃ পঞ্চাঃ দ্বি তি চতুঃ পঞ্চা অস্মিন্ শতে বৃদ্ধি দী যত ইতি দি ত্রি চতুঃ পঞ্চক শতে। তদন্মিন বু-দ্ধ্যা যত্ লাভ শুলাকাপদাদীয়-ए हैं इक्ति कन्। हैय॰ वृक्ति मीनि মাসি গৃহত ইতি কালিকা। ইয মেব বৃদ্ধি দিব্যগণন্য। বিভক্তা প্রতিদিব্সণ গৃহ্যাণা কাযিকা ভবতি। তথা চ ন ্রদেন। কাবি-কা কালিকা চৈব কারিভা চ তথা পরা। চক্রবৃদ্ধিশ্চ শান্ত্রেষু তস্য বৃদ্ধি শ্চ**তৃ**ৰ্দ্বিধা ।। ইত্যুক্ত্ৰোক্ত**ং।** কাষাবিলোনিনী শশ্বৎ পণ পা-দাদি কাষিক। 1 এতিমা**স° সূ**ব-ন্তী যা বৃদ্ধিঃ সা কালিকা মতা॥ বৃদ্ধিঃ সা কারিতা নাম যণিকে-न चय॰ क्ड।। टृ.क রপি পুন ব্ क्कि

শ্চক্রবৃদ্ধি রুদাঙ্গতেতি ৷ এহীভূ-वित्नयत्नन वृत्कः श्रकातास्त्र মাহ ৷ কান্তারগাস্ত দশক সা-মুদ্রা বিংশকং শতং। কান্তার ম-রণ্য° তত্ত্র গচ্ছন্তীতি কান্তারগাঃ েষে বৃদ্ধ্যা ধনং গৃখীয়া অধিক লাভার্থণ অতিগহনণ প্রাণধন বি-. নাশ শঙ্কাস্থানং প্রবিশন্তি তে দ-শকি শতি দদুঃ। যে চ সমূজগা-স্তে বি'শক" শভ° মাদি মাদী-তোব। এতদুক্ত ভবতি কাস্তার-গেভ্যে। দশকং শতং সামুদ্রেভ্য-শ্চ বিংশবং শতং উত্তন্ৰ আদ-**मा**९। गृजविनासमाि **भ**क्षिण স্বাৎ ইতি ॥ ও ॥ ইদানী° কারি-তা॰ বৃদ্ধিনাহ। দল্য ৰ্বা স্বকৃতা॰ বৃদ্দি॰ দৰ্বে সৰ্বাসু জাতিষু । সৰে ত্রাহ্মণাদ্বো ২ধুমুলা অবন্ধকে **স**-বন্ধকে বা স্বকৃতা॰ স্বাভ্যুপগতা॰ वृक्षि॰ गर्वाम् कां जिष् मनुः। क চিদক্ভাপি বৃদ্ধি ভ্ৰতি যথাছ নারদঃ। ন বৃদ্ধিঃ প্রীতিদত্তানা॰ मामनाकाद्वित्र। कि ६ । अमी-কারিভ নপু জুঁ বৎসরার্ছাদ্বিন দ্বিত ইতি ৷ যাত বাচিতক পৃথী-ম্বা দেশভিরং গতভং প্রতি কা-ত্যাৰনেনেকে? ! যে। ষাচিত্ৰক

মাদায তমদন্ব। দিশ° ব্ৰজেৎ। উ-দ্দৃ প্রত্ব পরাত্তিস্য তদ্ধন প্রক্রি মাপ্লুযাদিতি। যশ্চ যাচিতক মা-দায যাচিতোপ্যদন্ধ দেশাস্তরণ যাতি তঁ॰ প্রতি তেনৈবোক্তণ। কৃ-তোদ্ধার সদস্ব। যো বাচিতস্ত দি-শ° ব্ৰজেৎ। উৰ্দ্ধু° নাসত্ৰয়াত্তস্য **ज्ञनः वृक्षि माध्यामिछि। यः** পুনঃ স্বদেশে শ্বিত এব যাচিতো যাচিতকং ন দদাতি তং যাচন-কালাদারভ্য বৃদ্ধি দাপযেদ্রাজ। । যথাহ। স্বদেশেগি স্থিতে। যস্ত ন দদ্যাদ্যাচিতঃ ক্ষচিৎ!ত ততে। কারিতা॰ বৃদ্ধি মনিচ্ছন্তঞ্চ দা-প্রেদিতি। অনাকারিত বৃদ্ধে-त्रशदोरमा नात्रम्परनाङ्गः । शना যুত্ত্য ভৃতি ন্যাসে। দণ্ডো যশ্চ প্র-কল্পিতঃ। বৃথাদানাক্ষিক পণা ব-ৰ্দ্ধতে নাবিবক্ষিতাঃ ৷৷ অবিবক্ষি-ত। অনাকারিতা ইতি।। 🕸।। অ-ধুন। জ্ব্যবিশেষে বৃদ্ধি বিশেষমা-হ। সন্ততিন্ত পশুস্ত্রীণাণ। পশূ-না॰ দ্রীণা॰ সন্ততি রেব বৃদ্ধিঃ। পশুনাং স্ত্রীণাং পোষণাসমর্থস্য তৎ পুক্তি সন্ততি কামস্য প্রযো-গঃ সম্ভবতি। গ্রহণঞ্চ ক্ষীরপরি-**हर्गार्थिनः । अधून। अयुक्रमा** 

জব্যস্য বৃদ্ধি গ্রহণ মন্তরেণ চির-कालाविञ्चा कमा जवामा कि-**ষতী** পরাবৃদ্ধি রিত্যপেক্তিত আ-হ। রসস্যাক্ট গুণাপরা। বস্ত্রধান্য হিরণ্যানা॰ চতু স্ত্রি দ্বিগুণা পরা 11 **রসস্য তৈল ঘৃতাদে বৃ**দ্ধি গ্রহণ মন্তরেণ চিরকালাবফ্রিতস্য স্ব-कृठ्या. वृक्ष्या वर्षमानमार्थे छना বৃদ্ধিঃ পর। নাতঃ পরু বর্দ্ধতে । ভথা বস্ত্র ধান্য হিরণ্যানা যথা **সংখ্যণ চতুন্ত**্ৰণাঃ ত্ৰিগুনা দ্বিগুনা চ বৃদ্ধিঃ পরা। বশিঠেন তু রসস্য देव थना मूकः। विश्वनः श्रितनाः ত্রিপ্তণ° ধান্য° ধান্যেনৈব রস। ব্যাখ্যাতাঃ পুষ্ণমূল ফলানি চ। তুল। যৃত ত্ৰিত্য নফ গুণ নিতি। মনুনা তুধান্যস্য পুষ্প মূল ফলা-लीनाक्ष शक्ष छ । प्रात्ना শদে লবে বাছে নাতিকানতি পঞ্চতা নিতি। শদঃ ক্ষেত্রকল° পুष्ण मृल कलानि । लाउ। पार्य।-ना व्यतीरकभामि। वारका वनी বর্দ তুরগাদি। ধান্য শদ লব বা-হ্ম বিষয়া বৃদ্ধিঃ পঞ্চগুণত্ব নাতি ক্রামতীতি। তত্রাধনর্ণ যোগ্যতা-বশেন দুর্ভিক্ষাদি কালবশেন চ ব্যবস্থা দ্রম্ভব্যা ৷ এতচ্চ সকৃৎ প্র-

যোগে সক্দাহরণে চ বেদিতব্য । পুরুষান্তর সংক্রমণেন প্রযোগা-ন্তর করণে তব্মিদেব বা পুরুষে অনেকশঃ প্রযোগান্তর করণে সূ-वर्गानिक॰ दिव्छगामाजिकंगा शृ-ৰ্ববদ্ধতে। সক্ৎ প্ৰধােগেপি প্ৰ-তিদিন॰ প্রতিমাস॰ প্রতিবৎসর• বা বৃদ্ধান্য়ণে ২ঘনৰ দেষস্য दिवश्रमा मस्याद । शृक्षात्रृठत्-দ্যা সহ দৈওণ্য মতিক্রম্য বৰ্দ্ধত দৈ গুণাং নাভ্যেতি সক্দাহ্নতা। সকৃদাহিতেভাপি গাঠোন্তি। উ-शहरार्थ॰ श्रमुङ॰ स्रता॰ **अभीन॰** তদ্য বৃদ্ধিঃ স্থ**িদ বৃদ্ধি দৈ গুণ্য**ণ নাত্যেতি নাতিক্রামতি । যদি সকৃদাহিতা সকৃৎ প্রযুক্ত। পুরু-ষান্তর সংক্রমণাদিন। প্রযোগা-ন্তর কর**ণে দ্বৈ**গুণ্য মত্যে**তি সক্**-দাহতেতি পাঠে শনৈঃ শনৈঃ প্র-ভিদিন° প্রতিনা**স° প্রতিবৎসর°** বাধনৰ্ণালাহ্নতা দ্বৈগুণ্য**ু নাত্যে**-তীতি ব্যাখ্যেষ°। তথা গৌত-মেনাপু;ক্ত॰। চিন্নস্থানে দ্বৈগুণ্য॰ প্রয়োগদ্যেতি প্রয়োগদ্যেত্যেক বচন নির্দেশাৎ প্রয়োগান্তর কর-ণে দৈ গুণাতি জনো ২ ভিপ্ৰেতঃ। চিরস্থান ইতি নির্দেশাচ্ছনৈঃ শ-নৈ বৃদ্ধি গ্রহণে দৈগুণ্যাতি ক্র-মো দর্শিতঃ। ইতি নিতাক্ষরা।। বৃদ্ধিকা স্ত্রী ক্ষিনামৌষধণ। ইতিশব্দমালা।।

বৃদ্ধিজীবিকা দ্রী ঋণদানজী-বিকা।তৎপর্য্যাবঃ। অর্থপ্রয়ো-গঃ ২ স্বীদ° ৩। ইত্যবরঃ॥ কলাম্বিকা ৪। ইতি শ্রুরত্না-বলী॥

বৃদ্ধিদঃ পু॰ জীবকঃ । শুকর-কনঃ । ইতি রাজনির্যকটঃ ॥ বৃ-দ্ধিদাতরি ত্রি ।।

বৃদ্ধি প্রান্ধি ক্রি আভাদিবিকপ্রান্ধি নানি বৃদ্ধি প্রবিত্তবৃদ্ধি প্রান্ধি প্রবিত্তবিশেষকং ৷ জাত পুত্র মুখ দশনাদে বৃদ্ধি প্রান্ধি । পূর্বাভিমুখেমু দক্ষিণোপরীতিমু মধু যব
বদরযুক্তাঃ পিঞাঃ দেবতীর্থেন
নগস্কারান্তেন দক্ষিণোপচারেণ
কর্ত্তব্যা দক্ষিণজানুগৃহীয়া ওঁ
অদ্যান্মনীযামুক বৃদ্ধে অমুক
সগোজুলা মন্মু পিতৃপিতামহ
প্রপিতামহ নাতামহ প্রমাতামহ বৃদ্ধপ্রমাতামহানাং অমুক
শর্মণাং সগন্ধীকানাং নানীমু-

থানাণ শ্রাদ্ধে কর্ত্তব্যে বসুসত্য সংজ্ঞকানাং বিশ্বেষাং দেবানাং শ্রাদ্ধণ সিদ্ধান্মেন যুস্মাসু মধা ক-ৰ্ত্তব্য মিতি দেব ব্ৰাহ্মণামন্ত্ৰণ । ওঁ করিষ্যদীতি তেনোক্তে ইখ-নেব মাতৃ পিতামহী প্রপিতাম-হীনা॰ দেব ব্ৰাহ্মগামন্ত্ৰণ । তত ওঁ অদ্যামুক সগোত্রায়া মৎ প্র-পিতামহা অমুকা দেব্যা নান্দীমু-थाः आक्रि निकासन युगानू म-য। কৰ্ত্তব্য নিতি প্ৰপিতানহী বা-**ন্ধানন্ত্রণ° । করিষ্যসীতি তেনো-**ক্তেইখনেব মাতানহ্যানি ব্ৰাহ্মণা মন্ত্ৰণ । দেব পিতৃ সৰ্বদেব ত্ৰান্ধণ শ্রাদ্ধ করণানুক্তাপন । আসনে ওঁবিশ্বেদেবাস আগত শৃণুতাম ইম॰ হব॰ এদ॰ বৰ্হি নিষীদত। ওঁ বিশ্বেদেবাঃ শৃণুতেমণ হবণ যে মে ২ন্তরীকে য উপদ্যবিষ্ট যে অগ্নি জিহ্বা উত বা যজত্রা আ সদ্যা-श्विन् वर्शिष भामयक्ष । उँ जाश-ष्ट्रं इे वित्यत्पवावाइन॰ ग-ন্ধাদি দান অচ্ছিদ্রাবধারণ বাচ-ন॰। ততঃ প্রপিতামহী প্রভৃতী-না মনুক্তাপন । আসন আবা-इन॰ गन्नामिनानभा । अष्टिपान-ধারণ বাচন । ইখ পিতানছ।

মাতুঃ । ততঃ প্রপিতামহাদীনা-। মনুজ্ঞাপন মাসন মাবাহন গ-ন্ধাদি দানং। এবং বৃদ্ধপ্রপিতা-**মহাদীনা॰ অনুজ্ঞাপনাদিকরণ**ণ **। ও**ঁ বসুসত্য সজ্ঞকেভ্যো বিশ্বে-ভ্যে। দেবেভ্য এতদন্ধ° সঘৃত° স-शानीय॰ मवाञ्कन॰ मवनतः मनवि প্রতি সিদ্ধ বির্জিত ননঃ। ইতি অন্নকল্পন ।ওঁ অসুক গোত্রে মৎ পিতামহি অমুকা দেবি নান্দীমূ থি **এতদম° স্বদর**° সদধি নসঃ। এব॰ মাতামহ প্রমাতামহেভ্যঃ। ইতি গারুডে ২২৩ অধ্যায়ঃ।৷ৠ৷৷ অন্যচ্চ । তৃতীয় মাভ্যুদ্যিক॰ বৃ-দ্ধিশ্রাদ্ধণ তদুচ্যতে। উৎসবানন্দ সম্ভারে যজ্ঞোদাহাদি মঙ্গলে॥ মাতরঃ প্রথম• পূজ্যাঃ পিতর স্ত-দনস্তরণ। ততো মাতামহ। রাজন্ বিশ্বেদেবা স্তথৈব চাাপ্রদক্ষিণো-পচারেণ দধ্যক্ষত ফলোদকৈঃ। প্ৰাল্নখো নিনযেৎ পিণ্ডান্ পূৰ্ব-য। চতুরো যুতান্।। সম্পন্ন মিত্য-ज्यानत्य मन्यानर्घाः वत्या वत्याः । যুগা দিজাত্যঃ পূজ্যাঃ বস্ত্র कार्खस्रतामिना ॥ जिलार्थस य-दिः कार्या नामीगमानुशृर्वकः। **মঙ্গ**ানি চ স্ৰাণি বাচধেৎ দ্বিজ-‼বৃধস⊹নঃ পু° মনুষ্যঃ । ইতি

পুদ্বান্।। এবং শূদ্রোপি **সা**-यानाः वृक्ति आक्षश्रम्बन्। सम-कारतन गरधन क्रयोगियां बरान বুধঃ ৷৷ দান প্রধানঃ শৃতঃ স্যা-দিত্যাহ ভগবান **প্রভুঃ। দানে**-ন সর্বকামাপ্তি র**স্য সংজাযতে** যতঃ ॥ ইতি মাৎস্যে **সাধার**-ণাভাূদ্যকীর্ত্তনো নাম ১৭ অ-शायः ॥ विष्ठात्रस्य आक्राव्यक् শ্রাদ্ধবিবেকে চ দ্রষ্টব্যঃ।। ব্দ্ধোকঃ পু॰ বৃদ্ধবৃষঃ। তৎ-পর্যায়ঃ। জ্রদাবঃ ২। ইত্য-मतः ॥

वृष्णाकीयः जि वृष्णापकीयी। তৎপর্য্যায়ঃ। বাৰ্দ্ধ্যিঃ ২ বাৰ্দ্ধ্ ষিকঃ ৩ স্বীদঃ ৪ স্বীদিকঃ ৫। ইতি শব্দরত্বাবলী।। স্বাধুঃ ৬। ইতি জটাধরঃ ৷৷

বৃধ ক দীপ্তো। ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ ।৷ ক বর্দ্ধয়তি। ইতি দুর্গা-माभः ॥

বৃধ উ ও ব ন বৃদ্ধে। ইতি কবি-কল্পদ্রনঃ।। উ বর্দ্ধিদ্বা বৃদ্ধা। ঙ বৰ্দ্ধতে জনঃ। ব বহু স্যতি বি বৃৎসতি ৷ ৯ অবৃধৰ ৷ ইতি **जूर्यानामः ॥** 

বৃন্দাব

সিদ্ধান্তকৌসুদ্যাসুণাদিবৃত্তিঃ ৷৷ | वृधमानुः পু॰ পুরুষঃ।। প**ল**।। কৃতিঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ।। বৃধ্যণ ত্রি বর্দ্ধনীয় । বৃধ্ধাতোঃ ক্যপ প্রত্যযেন নিষ্পন্ন॰।। বৃন্ত ক্লী ফলপুষ্পাপত্রাদি র্যেন-ধাৰ্য্যতে তৎ। বোঁটা ইতি ভাষা । তৎপর্যা यः। প্রসববন্ধন॰ ২। ইত্যমরঃ॥ ঘটীধার।॥ স্কচাত্রণ 1 ইতি মেদিনী ।। বৃন্তাকঃ পু° বার্তাকী। ইতি শব্রজ্ञাবলী।। বৃত্তাকী স্ত্রী বার্ত্তাকী। ইতি রাজনির্বিটঃ ॥ বৃত্তিতা স্ত্ৰী কটুকা**।ইতিশক**-**চ**न्जिक। 11 वृन्म॰ क्री **সমূহঃ। ইত্যমরঃ**॥ বৃন্দঃ পু॰ দশাৰ্বুদঃ। শতকোটি রিতি যাবৎ। ইতি জ্যোতিষণ।! অস্য নামান্তর মহার্দঃ ॥ वृन्ना जी जूनमी। इंजिनक-রত্নাবলী॥ জলদ্ধরপত্নী। অ-স্যা বিবরণ° তুলসীশব্দে দ্রষ্ট-वा॰ ॥ द्लनात्रताष्ट्रकनग्रा ॥ त्रा-ধাষোডশনালান্তর্গতনামবিশে-ষঃ। এতদ্বিরণ বৃদাবনশকে দ্র**ষ্ট**ব্য॰ ॥

বৃন্দারঃ ত্রি মনে।জ্ঞ । ইতি नक्रांना ॥ বৃন্দারকঃ পু॰ দেবত।।ইত্যমরঃ ।। যূথপাতা। যথ।। বৃন্দারকঃ সুরে শ্রেপ্তে মনোজ্ঞে যূথপাত-রি। ইতি ভরতধৃতব্যাডিঃ।। বৃন্দারকঃ ত্রি মনোজ্জঃ।। শ্রেষ্ঠঃ । ইতি মেদিনী।। তন্মতে পব-शी यानिः ॥ वृन्नात्रको किश মখ্যৌ। ইত্যমরঃ।। বৃন্দাবন ক্লী স্বনামখ্যাততীর্থ । তন্নাসকারণ যথা। শ্রীনারায-ণ উবাচ । পুরা কেদারনৃপতিঃ সপ্তদ্বীপপতিঃ স্বয়ণ। আসীৎ সত্যযুগে ব্স্থান্ সত্যধ্র্যরতঃ সদা।। স রেমে সহ নারীভিঃ পুত্র পৌত্রগণৈঃ সহ। পুত্রানিব প্ৰজাঃ সৰ্বাঃ পাল্যামাস ধা-র্মিকঃ॥ কৃত্বা শতক্রতু॰ রাজা লেভে হিন্দ্ৰত্ব মীপ্সিতং। কৃত্বা নানাবিধং পুণাং ফলকাঙ্কী ন চ স্বয়ণ ৷৷ নিত্যু• নৈমিত্তিকণ স-ৰ্ব॰ শ্ৰীকৃষ্ণ প্ৰীতি পূৰ্বক॰। কে-দার তুল্যো রাজেন্দ্রো ন ভূতো ভবিতা পুনঃ ৷৷ পুত্রেষু রাজাণ স॰ন্যস্য প্রিষা ত্রৈলোক্য মো-হিনী। জৈগীযব্যোপদেশেন

জগাম ভপদে বন্ া৷ হরে রৈ-কান্তিকো ভক্তো ধ্যায়তে সন্ত-ত হরি ৷ শশ্বৎ সুদর্শন চক্র मिं यूष्मिरिशी मूटन ॥ চिর° তপ্ত্যা নৃপশ্রেষ্ঠো গোলোকঞ্চ জগাম সং ৷ কেদার নাম তীর্থ° তত্ত্বাস্না চ বভূব হ ।। তত্ত্রাদ্যা-পি মৃতঃ প্রাণী মদ্যো মুক্তো ভ-ৰে ধুবং। কমলাংশা তস্য ক-ন্যা নাম্না বৃন্দা তপস্বিনী।। ন ব-বে সা বর কঞ্চিৎ যোগ শাস্ত্র বিশারদা। দত্ত॰ দুর্বাসসা তস্যে হরে মন্ত্র॰ সুদুর্লভ॰ ।। সা বিরক্ত। গৃহ॰ তাজ্ব। জগান তপদে বন॰। ষ্ঠি॰ বৰ্ষ সহস্ৰাণি তপ স্তেপে সু-**নিৰ্জনে ॥ আ**বিৰ্বভূব ঞ্ৰীকৃষ্ণ স্তৎপুরে। ভক্তবৎসলঃ। প্রদান বদনঃ শ্রীমান্ বরং বৃদ্বিত্যুবাচ সং ॥ দৃষ্টৃ। সা রাধিকাকান্ত॰ শান্ত॰ मून्त विश्रशः गृष्ट्राः मण्डाश সা সদ্যঃ কামবাণ প্রপীডিতা।। সা চ শীঘু॰ বর॰ বত্তে পতি স্তু॰ মে ভবেভি চ। ওমিত্যক্ত্ব। চ রহসি চির° রেনে ত্ব। সহ।। সা জগাম চ গোলোক° কৃষ্ণেন সহ কৌতু-কাৎ। রাধা সনা সা সৌভাগ্যাৎ গোণী শ্রেষ্ঠা বভূব সা॥ বৃন্দা

যত্ৰ তপ স্তেপে তত্ত্ব কুদাবন স্তৃণ্য বৃন্দা যত্ৰ কৃতা ক্ৰীডা তেন व। यूनिभूत्रव ॥ 🟶 ॥ अथानारकः তিহাসঞ্চ শৃণুষ বৎস পুণ্যদ । যেন বৃন্দাবন নাম নিবোধ কথ-যামি তে ।। স্বশ্ধজ্ঞস্য কন্যে দ্বে ধর্মণান্ত্র বিশারদে। তুলসী বে-• দবত্যে) চ বিরক্তে ভবকর্মণি।। তপস্তপ্তা বেদবতী প্রাণ নারায-৭° পর্ং। সীতা জনক কন্যা সা সৰ্বত্ৰ পরিকীর্তিতা॥ তুলদী চ তপ স্তপ্তা বাত্মাণ কৃষা হরিণ গ-তি॰। দৈবাদুর্বাসসঃ শাপাৎ প্রা-পা লংখাসুরং পতিং ৷৷ পশ্চাৎ দ্ৰোপ ক্মলাকান্ত কান্ত ম-নোহর°। তস্যাশ্চ তপসঃ স্থান॰ উদ্দিত্ত্ব তুপোধন ৷৷ তেন বৃন্দা-दन॰ नाम প্রবদন্তি মনী चनः। \*।। অথ বা তে প্রবক্ষ্যামি পরং হেত্ব-खद्ग॰ मृगू । यिन वृक्तावन॰ नाम পুণ্য ক্ষেত্রঞ্চ ভারতে।। রাধা যো-ডশ নায়াঞ্চ বৃন্দা নাম শ্রুতৌশ্রু-ত । তস্যাঃ ক্রীডাবন রম্য তে-ন বৃদ্যাবনং স্মৃতং 11 গোলোকে প্রীত্তে ত্যাঃ কৃষ্ণেন নির্মিত পুরা। ক্রীডার্থ ভূবি ত**নায়া বন**ণ বৃন্দাবন॰ স্মৃত॰ ।। ইতি ব্ৰ**ন্দাবৈব**-

র্ত্তে শ্রীকৃফজন্মখণ্ডে কৃন্দাবন প্র-खावः ১१ वधायः ॥ 🕸 ॥ जय বৃদ্রাবন বর্ণনং। ঈশ্বর উবাচ। গুহাদ্গুহ তর হৃদ্য পরনানন্দ কারণং। অত্যন্তুতং রহস্যানাং র-হ্সাত পর্নত পরত ।। দুর্লভানাঞ্চ পরমণ দুর্লভণ নোহনণ পরণ। সর্ব শক্তি ন্ব॰ দেবি সৰ্বস্থানেষু গো-পিতে ৷৷ মান্তা স্থান মূর্জন্য বিকো রভান্তর্জভে । নিভাণ বৃ-मावनः गांव उमाः धारावि मः-श्चिक ॥ भूगतक मुद्रेशक्यां निका यांगन रदाद । रेनकक्षी छान-শাংশং স্বয়ং বৃন্দাবনং জুবি ৷৷গো-লোকৈশ্বর্যাঞ্চ যৎকিঞ্ছিৎ গোলে-লে তথ প্রকীর্ত্তিত । বৈদ্রগাদি বৈত্তব॰ যৎ দারকাযাণ প্রকাশ-যেৎ।। যদুক্ষ পরনৈশ্বর্যা নিত্য वृक्तावना अयः। जन्ना ६ देवरना-কানগো তুপৃথী ধন্যেতি বিশ্রুত। ৷৷ যৎ স্যান্যাথুরকং ধাম বিক্ষো-রেকান্ত বল্লভ'। স্বস্থান মধিক॰ নানধেন মাপুরমণ্ডল ৷৷ নিগূচ পরমণ স্থানণ পূর্যাভ্যন্তর সংস্থি-ত । সহসু পলকমলাকার মা-পুর মঙল ।। বিফুচক্র পরিভূ। ম-দ্ধান বৈক্ষব মদ্ভুত। কৰিকা পত্ৰ 🏽

विखात॰ तर्मा क्य गीतिछ॰॥ अ-ধান দাদশারণ্য মাহাত্ম্য কথি-ত॰ ক্ৰমাৎ। ভদ্ৰ শ্ৰী লোহ ভা-ণ্ডীর মহা তাল খদীরকাঃ। বহুল॰ জমুদ কাম্য মধু বৃদ্ধাবন তথা ।। দাদশৈত। বনে সঙ্খ্যাঃ কালি-न्गाः मञ्ज शन्तिय। शृद्धं शक्षव-ন॰ প্রোক্ত তত্রাস্তি ওছা মূত্রনণ ॥ মহাবন॰ গোললাখ্য॰ রম্য॰ ম-ধুবন॰ তথা। পূর্বে তু পঞ্চ ভদ্রা-দ্যা স্তালাদ্যাঃ সপ্ত পশ্চিমে॥ অন্যচ্চোপবনং প্রোক্তং কৃষ্ণক্রী-ড। রসত্তল । কদম খণ্ডিক নন্দ বনং নন্দীশ্বরং তথা !! নন্দ**নানন্দ**-খণ্ডঞ পালাশাশোক কেতকং ৷ সুগন্ধি মানুন কৈল মমূত ভো-জন इनः ॥ मूथ्यमाधनः वर्म-रतन (भाषायन । न्यामपूर्क দ্বিগ্রামণ চক্রভানুপুর্ণ তথা ॥ मिक्कि विश्वपादिक्षय वानकी उक्ष ধূযরণ। কেমুজ্জমণ খরে। বীর মুৎ-সুকঞাপি নন্দন ।। ইখ মেব বনে সঙ্খ্যা স্ত্রি॰শচ্চোপবন॰ স্মৃত । পূর্বোক্তণ দাদশারণ্যণ প্রধানণ ব-ন মৃত্য়ণ ৷৷ তত্তোত্তরে চতুর্থঞ্ব-नक भगूताक्र । नानाविध तम-कीषा नाना नीनामयद्रनः॥

**मल विष्येक विखात तरमा क्रम** মীরিতে । সহসু পত্র কমল গো-ঙ্গলাখ্য মছৎপদ ।। কৰিক। ত মহদ্ধাম গোবিন্দ স্থানমূত্য । তত্ত্বোপরি স্বর্ণপীঠে মণিমণ্ডপ মঙিত ৷৷ তত্ৰ তত্ৰ ক্ৰমাদিক্ विषिक् पनिभीदिछ । यपन न কিণে প্রোক্তণ পরণ গুফোতমো-ভন•া৷ তন্মিন্দলে মহাপীঠি নিগমাগম দর্গম ৷ যোগীত্রৈ রপি দুষ্পাূপণ সর্বাত্মা যচ্চ গো-**क्रनः ॥ फिञीयः मन गा**रभयः তত্রহস্য দ্বিধা তথা। নিঙ্গঞ্জক স্বর্ডী বীরস্বটীরে) তদ্দলে স্থিতী ।। পূৰ্বদল তৃতীয় যৎ প্ৰধান স্থান মুচ্যতে ৷৷ গন্ধাদি সর্বতী-ৰ্থানা॰ স্পৰ্শাচ্ছত গুণ॰ ভবেৎ ॥ **ठ**जूर्यमन रेगमान्ता॰ मिक्कभीर्छ-প্সিত প্রদণ। কামযমূতনা গোপী তত্ৰ কৃষ্ণ পতি॰ লভেৎ ৷৷ বস্ত্ৰাল-কার হরণ **তদ্দলে সমুদাহ্বত**। উত্তরে পঞ্চমণ প্রোক্তণ দলণ সর্ব দলোত্তম° ॥ দ্বাদশাদিত্য মত্রৈ-व मनक्ष कर्निकामगः। वायवाञ्च দলং ষষ্ঠ° তত্র কালীহুদঃ স্মৃতঃ ॥ দলোভ্ৰমোত্ৰমঞ্চৈব প্ৰধানস্থা-নযুচাতে। সর্বোত্তম দলং শ্রেষ্ঠ॰

পশ্চিমে সপ্তমণ দলং ৷৷ যজ্ঞপত্নী গণানাঞ্চ তদীপ্সিত বরপ্রদেশ অ-यामूतमा निर्दाण ठटक जिलम प-শিতং ৷৷ বন্ধমোহন মত্রৈব দলং ব্ৰহ্ম হৃদাবহ°। নৈশ্ব ত্যান্ত দল• প্রোক্ত মন্টমণ ব্যোমধাতন ।।। শঙ্থচূডবধ স্তত্র নানাকেলি র-সঙ্গণ। শ্রুত মন্টদলণপ্রোক্তণ বৃ-ন্দারণ্যান্তরস্থিত°।। শ্রীমদ্বন্দাবন° थना यम् नायाः अनिकालः। निव-লিঙ্গ মধিষ্ঠাতা দৃষ্টো গোপীশ্বরা-ভিধঃ৷৷ তদ্বাহ্যে ষোডশদলং শ্ৰি-या शूर्वः जनीतिञः। সर्वाम् निक् य९ (প্राक्ति शामिक्शामयथा-ক্রমণ।। মহৎ পদ । নহদ্ধান প্র-ধান॰ ষোডশ॰ দল॰। প্রথমৈক-দলং শ্রেষ্ঠ মাহাক্সাং কর্ণিকা সমে ৷৷ তিমিন্ মধুবনা প্রোক্তণ তত্র প্রাদুরভূৎ স্বয়ণ চতুর্ভুজে। মহাবিষ্ণুঃ সর্বকারণ কারণ ।। তত্রাধিষ্ঠিত তদ্দেবং মুনিশ্রেষ্ঠ স-নাতনং। দলং দ্বিতীয় মাখ্যাতং কিঞ্চিল্লীল। রুসস্থলণ ।। খদিরার-ণ্য মত্ৰৈব দলঞ্চ সমুদাহ্বত । সৰ্ব শ্রেষ্ঠ দল॰ প্রোক্তণ মাহাদ্য্যণ ক-র্ণিকাসম॰॥ তত্র গোবর্দ্ধনে র-ম্যে নিত্যানন্দ রসাশ্র্যে। কর্ণি-

কাষাণ মহালীলা তল্লীলা রসগ-হ্বরে ॥ যত্র কৃফো নিত্য বৃন্দা-কাননদ্য পতি ভঁবেৎ। কৃষ্ণো গোবিন্দতাণ প্ৰাপ্তঃ কিমনৈ্য ৰ্বহু ভাষিতৈঃ ৷৷ দলং তৃতীয় মাখ্যা-় . ত॰ সৰ্বশ্ৰেপ্তোত্তমোত্তমণ । চতুৰ্থ দলমাখ্যাত মহাদ্ভুত রমস্ব ।। হরি র্যস্য পতিঃ সাক্ষান্নিত্য গোবৰ্দ্ধনঃ স্বয়ণ। কদম্বখণ্ডী ত-তৈব পূর্ণানন্দ রসাশ্রয়ঃ ।। স্লিঞ্ধ॰ क्रमा॰ थिय॰ त्रमा॰ मनक्ष मनूप।-হৃত । নন্দীশ্বর দল রম্য তত্র मन्मानयः याजः ॥ कर्निका मन মাহাল্যা॰ পঞ্চন দল মূচাতে। অধিষ্ঠাতাত্ৰ গোপালো ধেনুপা-ল স্ততঃ পরণা দলং ষষ্ঠং যদাখ্যা-ত॰ তত্র নন্দবন॰ স্মৃত॰ । সপ্তম॰ वन्ननात्रगः मनः त्रगः अकीर्जि-তং ৷৷ দলাফীমং তালবনং তত্ৰ ধে-न्वधः ख्राञः। नवभः क्रमूमात्रभाः দল॰ রম্য॰ প্রকীর্ত্তিত ॥ কাম্যা-রণাণ দলণ হৃদ্যাণ দশমণ সর্ব কা-রণ । ত্রন্ধ প্রদাদন তত্ত্ব বিষ্ণু বৃন্দ প্রদশিত।। কৃষ্ণ ক্রীডা রস স্থান' প্রধান' দল মুচ্যতে। দল নেকাদশং প্রোক্তং ভক্তানুগ্রহ-কারণং ॥ নির্বাণং সেতুবন্ধস্য না-

না রসময স্থলত। ভাগ্রীর দাদশ मनः वनः त्रगाः गता इतः ॥ कृषः ক্রীডা রস স্তত্র শ্রীদামাদিভি রা-বৃতঃ। ত্রযোদশদল॰ শ্রেপ্ত• তত্র ভদ্ৰ বনং স্মৃতং ৷ চতুৰ্দশদলং প্ৰোক্ত॰ সৰ্ব সিদ্ধিপ্ৰদ॰ স্থলণ ৷ শ্ৰী-বন তত্ৰ ৰুচির সর্বৈশ্বর্যাস্য কা-त्रव ।। कृषः नीन। भय मन 🕮 কীর্ত্তি কাস্তি বর্দ্ধন । পঞ্চদশ দলং শ্রেষ্ঠং তত্র লৌহ্বনং স্মৃতং ।। কথিত ধোডশদল মাহান্ব্য কৰ্ণিকা সমণ। মহাবনণ তত্ৰ গী-ত॰ তত্ৰাস্তি গুহু মুক্তম॰॥ বাল-ক্রীড়া রস স্তত্ত্র বৎসপালেঃ স-মাবৃতঃ। পূতনাদি বধ স্তত্র যম-লাজ্জুন ভঞ্জন॰।। অধিষ্ঠাতা ত-ত্র বালগোপালঃ পঞ্চমাব্দিকঃ । নায়। দামোদরঃ প্রোক্তঃ প্রে-মানন্দ রসার্গবঃ II দল° প্রসিদ্ধ মাখ্যাত॰ সৰ্ব শ্ৰেষ্ঠ দলোত্তম॰। कृष कौषा ह किञ्जदी विश्वतम्ब মুচ্যতে।। সিদ্ধ প্রধানণ কিঞ্জন্বণ দলঞ্চ সমুদাহ্নত• ৷ 🗱 ৷ পাৰ্ৰত্যু-বাচ। বৃন্দাবনস্য মাহাত্মা॰ রহ-স্য° পরমন্তুত°। তদহ• শ্রোতুমি-চ্ছামি কথযস্ব মহাপ্রভো।। ঈশ্ব-রউবাচ। কথিত তে প্রিযতমে

গুহাদ্গুহ্ তমেত্রিমণ।। রহস্যা-ना॰ तरमा॰ य९ मूर्झजानाथ मूर्झ-ভ । ত্রৈলোক্য গোপিত দেবি দেবেশ্বর সুপূজিত॰।। ত্রন্ধাদি বা-ক্ষ্তিত স্থানত সুর সিদ্ধাদি সেবিত । याशीकानि मूनीकानि मना ठ-দ্ব্যান তৎপর°।। অপ্সরোভিশ্চ গন্ধৰ্বৈ মৃ ত্য গীত নিরন্তর । 🕮 यषृन्गावन॰ त्रगा॰ शृन्।नन्म त्रन।-শ্রষণ ।। ভূমি শ্চিন্তামণি ক্তোয মমৃত॰ রস পূরিত॰ । বৃক্কাঃ সূরজ-মা স্তত্ত সুর্ভি বৃন্দ সেবিতাঃ॥ जी नश्रीः शुक्तरमा विक् उपन्याः শ সমুদ্ভবঃ। তত্র কৈশোর বয়সং নিত্য মানন্দ বিগ্রহু॰ ॥ গতি না-ট্যি° কথা গাম° স্মিত বক্তু• নির-ন্তরে । শুদ্ধ সহৈত্বঃ প্রেন পূর্বে दिंकरें उपना अयः ॥ शृर्ववि সুখে মগ্ন॰ ক্ষুরত্তমূর্ত্তি তথায়॰ । প্রমত্ত কোটি ভূঙ্গাদ্যৈ কূজৎ-কল মনোহর ।। কপোত শুক সংগীত সুমন্তালি সহস্**কং।** ভূ-জলশতু নৃত্যাদ্য**ু সকান্তা মোদ** विज्ञुमः ॥ नान। वर्टनंक अमूरिम স্তদ্রেণ্পরিপূরিত । সুক্ষিশ্ব সৌ-রভাঞাত স্থীকৃত জগত্রয় ।। মশ্বারত **সংসিক্ত বসভ্স**্তু॥

সেবিত ৷ পূর্ণেন্দু নিত্যাভ্যুদয় সূৰ্য্য মন্দাণ্শু সেবিতং ॥ অদুঃখ সুখ বিচ্ছেদ॰ জর। মরণ বজ্জিত॰ ৷ অক্রোধ গতমাৎসর্য্য অভিন্ন মনহংকৃতং ।। পূর্ণানকামৃত্রসং পূর্ণ প্রেম সুখাবহণ। গুণাতীত্ণ পর॰ ধাম পূর্ণ প্রেম ব্রে বৃক্ণ।। यब वृक्षामि शूलदेकः (धामानरा-শ্রুবর্ষিত । কি॰ পুন ভেল । य-ক্তৈ বিষ্ণু ভক্তিঃ কিলুনতে।। গোবিনাজ্যি রজ স্পর্শাহিত্য বৃ-নাবন॰ জুবি। সহস্দল পদস্য वृन्नात्रभाः वताविकः ॥ यमा ग्यानं-ন মাত্রেণ পৃথী ধন্যা জগত্রযে। ওহাদ্ ওহতমং রম্যং মেধ্যং বৃন্দ্র-বন স্থিতং ৷৷ অক্ষরং নিত্যমানন্দং (गाविन स्नान मवायः । (गाविन দেহতো ২ভিন্ন° পূৰ্ণবন্ধ ুখাশ্ৰ-য° ॥ মৃক্তি স্তত্র যতপাশাভ্যা-হাত্ম্যুণ কিমুচ্যতে ৷ তস্মাৎ সর্বা-ত্মনা দেবী হাদিত্ব স্বরু তদ্বন ॥ বৃন্দাবন বিহারেযু কৃষণ কৈশো-র বিগ্রহণ। অন্যারণোযু স্থানেযু বাল্য পৌগণ্ড যৌবনং ॥ কালি-भी मक्दरानामा कर्निकायाः थ-लिकन । नाना निर्म्बान शशीत<sup>°</sup> জলসৌরভ মোহনং ৷৷ আনন্দা-

**হত** তিমিশ্র মকরন্দ ধন।লয°। शरमाथ्यनारेनाः जन्देय नीन। বর্টেণঃ সমুজ্জুলং ৷৷ চক্রবাকাদি . विरुटेश ऋंखू नाना कनवरिनः। শোভনানণ জলণ র্ম্যাণ তর্জা তিমনোহরণ ৷৷ ভদ্যোভয তটী-র্ব্যা শুদ্ধকাঞ্চ নির্মিত। গস্বাকোটী গুণঃ প্রোক্তো হত্র म्याभा वहाछकः ॥ कर्निकायाः কোটিগুণো যত্র ক্রীডা রতে। र्तिः। कालिकी क्विक्कि মভিন্ন সেক বিএহে ॥ ইতি পা-অে পাতালখনে ও ১ অধ্যায়ঃ॥ गुनावतनस्तः पूर शिकृषः। यथा : यशद्यन्द्रकृ डिंब का <mark>धायः बक्</mark>षा-দিভিঃ স্*রেঃ* । গুণত্রয় মভীত° **ত**° বলে কৃন্দাৰ্নেশ্বর° ।৷ অপি-**চ।** পুরুষঃ একৃতি শ্চাদ্যৌ রাধা বৃন্দাবনেশ্বরো। প্রকৃতি বিকৃ-ভিঃ সর্ব্ধ বিনা বৃন্দাবনেশ্বরং । ইতি পালে পাতালখণ্ডে ৯ অ-धायः॥ क्षः॥ अनाका यना नि-ভ্যঃ স্বয়ণ কৃকঃ সচ্চিদানন্দ বি-গ্ৰহঃ। যগ্নাং গুণানাং শীলী তু ভগৰছেন্দ সংস্ক্রিতঃ॥ নিত্যধা-মা গুণাতীভঃ সাক্ষাদৃন্দাবনে-শ্বরঃ। অসে। প্রকট লীলাযাণ

বাসুদেবো ভবৎ প্রভুঃ ॥ গো-গীনাং কাম পূর্ণায় নিত্যানাং রমণায় চ । গোপালানাং বি-নোদাম স্বয়ং নন্দসূতো ভবৎ ॥ ইতি পাদ্যোভরথণ্ডে ৬৭ অধ্যায়ঃ॥ বৃদাবনেশ্বরী দ্রী রাধা। যথা।

নাবনেশ্বরী দ্রী রাধা। যথা। রাববদ্বে ২তবৎসীতা রুকিনা কৃষ্ণ জন্মনি । সাক্ষারাধীস্ত বি-জেষা প্রাকটোনের পার্বতি।। বৃষভানুসূতা যাতু নিত্যানন্দ স্বরূপিনী । গান্ধর্বিকান্ত লীলা-যাণ শ্রীঃ শ্যাসা কৃষ্ণ বল্লভা।। বৃন্দাবনেশ্বরী রাধা সাক্ষাৎ কৃ-ফাত্মকা পরা। ইতি পাদ্মোত্তর খণ্ডে ৬৭ অধ্যায়ঃ।।

বৃন্দিষ্ঠঃ ত্রি অযমনযোরেষা বা অভিশ্যেন বৃন্দারকো দেবো মুখ্যো বা । ইতি মুশ্ধবোধটী-কাষা দুর্গাদাসঃ।।

বৃশীষান্ ত্রি বৃশিষ্ঠঃ অষমন-যোরেষাণ বা অভিশ্যেন বৃন্দা-রকঃ ইত্যর্থে ইয়সু প্রত্যযেন নিম্পন্নঃ ইতি ব্যাকরণণ 11

বৃশ ইর্ষ বৃত্যা । ইতি কবি কল্প দ্রুষ । ইর্ অবৃশৎ অব-শী (। অস্মাৎ পু্যাদিস্বাহ্যিতা

ও ইভানো। ম বৃশাতি বর॰ কন্যা। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ বৃশঃ পু॰ উন্দুরঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী॥ বাসকঃ। ইত্যমর-টীকাষা<sup>•</sup> ভরতঃ ॥ বৃশা স্ত্রী ওষধীবিশেষঃ।ইত্যু-ণাদিকোষঃ 11 বৃশ্চিকঃ পু॰ শূককীটঃ। শুষা-পোকা ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ॥ তৎপर्यायः । मृककी वेकः २। **ইতি শব্দ**রত্নাবলী।। কীটবিশে-ষঃ । বিছা ইতি ভাষা। তৎ-পর্য্যাযঃ। অলিঃ ২ দ্রোণঃ ৩ বৃশ্চনঃ ৪। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। দ্রুণঃ ৫। ইতি শব্দরত্নাবলী।। পূদাসঃ ৬ অরুণঃ १ অলী ৮ । ইতি জটাধরঃ।।#11 বৃশ্চিক বি-ষস্য লক্ষ্ণ মাহ। দহত্যগ্নি ব্লি-বাদৌ চ ভিনত্তীবোৰ্দ্ধ মাশু চ । বৃশ্চিকস্য বিষণ যাতি পশ্চ।-দ্দ॰শোবতিষ্ঠতে ॥ অসাধ্য বৃ-শ্চিক দফীস্য লক্ষণ মাহ। দ-কৌ ২সাধ্যৈস্ত হাদ্যাণ রসনো-পহতো নরঃ। মাণ্ট্যঃ পতদ্ভি রত্যর্থ° বেদনার্ত্তো জহাত্যশূন্ ॥ অসাধ্যৈ বৃ শ্চিকৈ স্তেষা মে-বানুবৃত্তঃ। হৃদাদিষূপহতঃ হৃ-

দাদি কার্য্য রহিতে। ভবতি 1 অতার্থ॰ বৈদানার্ত ইত্যন্বযঃ ॥ 🛊 ॥ অস্য চিকিৎস।। জীরকস্য কৃতঃ কল্পে। যৃত সৈদ্ধব সংযুতঃ । সুখোফো মধুনালেপাদৃশ্চিক-স্য বিষণ হরেৎ।। গন্ধ মাঘু।য় মৃ-पिछ मृशावर्छ प्रवाग **छ।** वृश्वि-কেন নরে৷ বিদ্ধঃ ক্ষণান্তবতি নি-ৰিষঃ।। ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ।। 🛊।। অথ বৃশ্চিক বিষহর মন্ত্রঃ ৷ ও সর ऋः र ७ हिनि मिनि हिनि স্ফুঃ ব্ৰহ্মণে স্ফুঃ সৰ্বেভ্যো দেবে-ভাঃ ক্ষুঃ। ইতি তন্ত্রসারঃ॥ #॥ মেষাদি দাদশরাশ্যস্তর্গতাফ্মরা-শিঃ ৷ অস্যাধিষ্ঠাত্রীদেবতা বৃশ্চি-কঃ। বিশাখা শেষপাদানুরাধা জ্যেষ্ঠা সমুদাযেনৈতজাশি ভঁব-তি। স চ শীৰ্ষোদয**়, শ্বেত**বৰ্ণঃ। জলরাশিঃ । উত্তরাদিক্গতিঃ। কফ প্রকৃতিঃ।জলচরঃ। বহুপু-ত্রঃ। বহু স্ত্রীসঙ্গঃ। চিকুতনুঃ। বি-প্রবর্ণ•চ11 অস্য বিশেষসংজ্ঞাঃ 1 भोगाः। अञ्चना । युवाः। मनः। স্থিরঃ। পুদরঃ। সরীস্পজাতিঃ। আম্যঃ ॥ তদ্রাশিজাত ত্রতাদৃ-শো ভবতি। মৌনী। মন্দগতিঃ। कृপानुः। बतृष्तिः। नीष्ठमञ्जन्छ।

ইতি বৃহজ্জাতকাদযঃ॥॥॥ छ-। লগজাতফল°। বৃশ্চিকোদয স°-জাতঃ শোষ্যবানতি দুষ্টধীঃ i ভবেদ্বিজ্ঞান সম্পন্নে। বিগ্ৰহী স্ভগঃ সুধীঃ ৷৷ ইতি কোঠীপ্র-🕠 দীপঃ ॥ 🗱॥ ওষ্ধীতেলঃ। ইতি पिनि ॥ शालिकः॥ शालः । ইতি নংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ॥ न अनुकार ॥ कर्स्न है ॥ शाप्य কীটা ীতি ভরতঃ ॥ অগ্রহা-रवतानः। श्री मात्मकती ॥ বৃশ্বিত্রিয়া স্ত্রী পৃতিকা।ইতি अक्रमाला ॥ বৃশ্চিকণী গ্ৰী আথকণী।ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ।। বৃশ্চিকা স্ত্রী ফুদ্রক্পবিশেষঃ! তৎপর্যাयः। নখপণী ২ পিচ্ছি-লাও অলিগত্রিকা ৪ ৷ অস্যা গুণাঃ। পিচ্ছিলর । অমুত্র । ण छत् का मिलाय गानिक्थ। **इंভि** द्वाजनिर्धक्टेः 🛚 বৃশ্চিকালী জী মুপবিশেষঃ। বিহাটী ইতি ভাষা। তৎপৰ্যা-यः। বৃ্তিপত্ৰী ২ বিষহী ৩ না-भष्टिका ४ महाप्रकृति ६ जनहा ৬ কালী ৭ উট্টু ধূ সরপু ছিকা ৮। 1 ইতি রত্নমালা II বিবাণী ১ 🛚

নেত্ররোগহা ১০ উদ্ভিকা ১১ অলিপণী ১২ দক্ষিণাবর্ত্তকী ১৩ कालिका ३८ जागगावर्छ। ३৫ দেবলাঙ্গুলিক৷ ১৬ করভী ১৭ ভূরিদুগ্ধ। ১৮ কর্কশা ১৯ স্বর্ণদ। २० यूक्षानन। २३ की त्रवियानिक। ২২ ভাসুরপুষ্পা ২৩। অস্যা গুণাঃ। কটু স্বং। তিক্তস্বং। হৃদ্ধ-ক্তুশুদ্ধিক।রিষ্ণ। রক্তপিত বি-বন্ধারোচকাপস্ত্রণ। বল্যস্ঞ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ অপিচ। নৃ-**\*** किकाली विवशी जू कान गांस-তনাশিনী। ইতি রাজ্বল্লভঃ।। বৃশ্চিপত্ৰী স্ত্ৰী বৃশ্চিকালী।ইভি त्र्वगाना ॥ বৃশ্চীরঃ পু॰ শ্বেতপুনর্ব।।ইতি त्रवगाना ॥ বৃষ উ সেচনে !! প্রজ্নৈশ্যে । ইতি কবিকন্মদ্রসঃ।। উ বর্ষিত্ব। वृक्षे। इंडि मूगामानः॥ वृष के ७ थक्र देन एगा। ३० क-विकन्नक्रमः ॥ क ७ दर्यगः । অসং পঞ্চমস্বরানুবন্ধো লেংক अमकृतः गृषीि (स्यः। ঞ্যন্তে-ভाः मईक निर्णाम् मान्युमायि-করাৎ। নচ প্রাচামন্রোধাৎ পাঠ্য ইতি বাচ্য । তুর্হি অনুফ্ ব্যক্তো কৈ ও বন্ বঞ্চনে ৷ বৃত ক ও দীপ্তো ৷ দিব ক ও পরি-কু জনে ৷ কদি বর্দ্ধে ৷ বৃষ ক ও শক্তি বন্ধে ৷ জসক্ বধে ইনাদ-রে ৷ ইত্যেষামন্তানামপি পঞ্চন স্বরানুবন্ধাপত্তেঃ ৷ বস্তুতস্তু এ-ষাণ পঞ্চন স্বরানুবন্ধঃ প্রাচীন পঠিতোপ্যনর্থঃ ৷ অতএব রমা-নাথোপি এষা মুদনুবন্ধঃ পূর্ব পঠিত ধাতবো ইথান্তরেষু চুরা-দ্যঃ স্যূ নম্বেতে পৃথন্ধাতব ইতি জ্ঞাপনার্থ ইত্যাহ। প্রজনো গ-র্ভগ্রহণ এশ্য মৈশ্বর্য়ণ ৷ ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷

বৃষণ ক্লী বর্হণ ইতি শব্দমালা।।
বৃষণ পুণ পুক্ষগবং। এঁড্যা ইতি
ভাষা। তৎপ্যায়ং । উক্ষা ২
ভক্ষং ও বলীবর্দ্দং ৪ খবভং ৫
বৃষভং ও অনজান ৭ সৌরভ্যাং
৮ গৌঃ না ইত্যমরং।। শৃদ্ধী ১০
কঙ্গদান ১১।ইতি শব্দরত্বাবলী
।। শিখী ১২ গন্ধমৈপুনং ১৩ পুস্কগবং ১৪। ইতি জটাধরং।।।।।
অস্যলক্ষণ উৎসর্গবিধিশ্চ যথা
। মনুক্রবাচ। ভগ্যন শ্রোত্মিচ্ছামি বৃষভ্স্য চ লক্ষণণ। বৃষ্ধোৎ
সর্গ বিধিধ্ধৈব তথা পুণ্যক্লণ

মহৎ ।। মৎস্য উবাচ । ধেনুমা-দৌ পরীক্ষেত সুশীলা॰ লক্ষণাস্থি-তা॰। অব্যঙ্গা মপরিক্লিষ্টা॰ জী-বৰৎসা মরোগিণী ৷৷ মিশ্ধবর্ণা নিগ্নপুরা॰ নি**গ্নশৃঙ্গা**॰ তথৈব চ । মনোহরাকৃতিং সৌম্যাং সুপ্রমা-ণা মনুদ্ধতা॰ ।। আবর্ত্তৈ দ্দিকিণা-বট্ৰ্ত্ত দক্ষিণতশ্চ সা। বামা বৰ্ত্তৈ বাসতশ্চ বিস্তীৰ্ণ জয়না ত-থা।। মৃদূ সংহত তান্যোষ্ঠীণ রক্ত জিহ্বাণ সুপূজিভাণা অশ্যাব দীর্ঘ স্ফুটিতা রক্তজিহল তথা চ যা॥ অসু|বাৰিলনেত্ৰ| চ সকৈ ৱবির-देन पृ देखः। देवपृत्री यशुवदैर्वभव জলतूषुम मिरिजे ॥ तक भिरेक শ্চ নয়নৈ স্তথ। রক্তকনীনিকৈঃ। সপ্ত চতুৰ্দ্দশ দন্তা চ তথা ঢাশ্যা-মতালুকা।। যডুগ্গতা সুপাৰ্শ্বোৰ পৃথু পঞ্চ সমাযতাঃ। অফীযত শিরো গ্রীবাধরাজন সূলকণা।। মনুরুবাচ । ষডুয়তাঃ কে ভগব-ন্ কেচ পঞ্চ সমাযতাঃ। আযতা-শ্চ তথৈবাকৌ ধেনূনাণ কে শু-ভাবহাঃ॥ মৎস্য উবাচ। উরঃ পৃষ্ঠ শিরঃ জক্ষিঃ শ্রোণী চ বসূ-ধাধিপ। ষড়্মতানি ধেনূনাণ পূ-জযন্তি বিচক্ষণাঃ ৷৷ কর্ণ নেত্র ল-

লাটঞ্চপঞ্চ ভাস্করনন্দন**। সমা**-যতানি শসান্তে পুচ্ছু সান্ন। চ স্ক্রিনী।। চত্বারশ্চ স্থা রাজ্ঞে-ব মক্টোমনীষিভিঃ।শিরোগ্রীবা-যতা ক্ষেতে ভূমিপাল স্মৃতা দশ তসাঃ সূতি পরীক্ষেত বৃষতি লক্ষণান্বিতং। উন্নত স্কন্ধ কলদ সৃ-জুল लूल कश्रव ।। गराकं ठिउ है স্বন্ধ বৈদূর্য্যমণিলোচন । প্রবা-ल गई मुनाब॰ मुनीर्घ शृथ्वान-ৰিং!! নবাফদশ সংখ্যৈ ৰ্বা তীক্ষ্যা-গৈ ৰূপনৈঃ ভাতেঃ। মন্ত্ৰিকাক-শ্চ মোক্তব্যা গৃহেপি ঘনধান্য-দং ৷৷ বৰ্গত ভাসু কপিলে৷ তাক্ষ-ণদ্য প্রশাসতে। খেতে। রক্তশ্চ কৃষ্ণশ্চ গৌরঃ পাটল এব চা। ভ-ত্রিন স্তামু পৃষ্ঠশ্চ সবলঃ গঞ্চকা-লকঃ। পৃথুকর্ণো মহাক্ষনঃ প্লগু রোমা চ যো ভবেৎ ৷৷ রক্তাকঃ কপিলে। যশ্চ রক্ত শৃঙ্গতলো ভ-বেৎ। শ্বেতোদরঃ কৃষ্ণপৃষ্ঠো বা-হ্মণস্য প্রশস্যতে ।। সিশ্ধ রক্তেন বর্ণেন ক্ষত্রিয়স্য প্রশস্যতে। কা-ঞ্চনাভেন বৈশ্যস্য কৃষ্ণেনাপ্য-স্তাজন্মনঃ ॥ যস্য প্রাগায়তে শৃ-ঙ্গে ভু মুখাভিমুখে সদা। সর্বেষা মেব বৰ্ণানা স চ সৰ্বাৰ্থসাধকঃ

॥ गर्ड्झात्रशामः क्लित्ना धनाः কপিল পিঙ্গলঃ। শ্বেতো মাজ্জার-পাদস্ত ধন্যো মণিনিভেক্ষণঃ।৷ ক-রটঃ পিঙ্গল শৈচব শ্বেতপাদ স্তথৈ-ব চ । সৰ্ৰপাদ শিরো যশ্চ দ্বিপা-দ শ্বেত এব চ॥ কপিঞ্জল নিভো ধন্য স্তথা তিত্তিরি সলিভঃ ৷ আ-কৰ্ণ মূলাৎ শ্বেতস্ত মুখং মস্য প্ৰ-কাসতে।। নন্দীনুখঃ স বিজেযো রক্ত বর্ণো বিশেষতঃ ৷ শ্বেতঞ্চ জ-ঠর॰ যদ্য ভবেৎ পৃষ্ঠঞ্চ গোপতেঃ ॥ খ্যভঃ স সমুদ্রাক্ষঃ নতত ञ-লবৰ্দ্ধনঃ। মল্লিকাপুষ্পচিত্ৰস্ত ধ-ন্যো ভৰতি পুঙ্গবং ॥ কমলৈ ৰ্ম-গুলৈ শ্চাপি চিত্ৰো ভৰতি ভাগ্য-দঃ ৷ অতসীপুষ্পবর্ণস্ত তথা ধন্য-তরঃ স্মৃতঃ ॥ ৠ। এতে ধন্যা স্তথা ২ধন্যান্ কীর্ত্তিষিষ্যামি তে ২নঘ । কৃষ্ণ তাল্লোষ্ঠ দশনা ৰক্ষ শৃত্ব শকাশ্চ যে।। অব্যক্তবর্ণা হুস্বাশ্চ ব্যায়ু ভস্ম নিভাশ্চ যে। ধ্যাক্ষ গৃধু সবর্ণাশ্চ তথা মৃষিক সন্ধি-ভাঃ ॥ স্ঠাঃ কাণা স্তথা খঞ্জাঃ কেকরাক্ষা স্তথৈব চা বিষম শ্বে-ত পাদাশ্চ উদ্ভান্ত নয়না স্তথা।। নৈতে বৃষাঃ প্রমোক্তব্যা ন চ ধা-য্যা তথা গৃহে। মোক্তব্যানাঞ্চ ধার্য্যাণাণ ভূযো বক্ষ্যামি লক্ষণণ ॥ 🗱॥ স্বন্তিকাকার শৃঙ্গাশ্চ মে-ষৌষ সদৃশ স্বনাঃ। মহা প্রমাণা-শ্চ তথা মত্তমাতঙ্গ গামিনঃ ৷৷ ম-হোরস্কা মহোৎসাহা মহাবল প-রাক্রমাঃ। শিরঃ কণৌ ললাটঞ্চ বালধি শ্চরণানি চাা নেত্রে পার্শ্বে চ কৃষ্ণানি শস্যন্তে চন্দ্ৰভাণ্সি চ ৷শ্বেতান্যেতানি শস্যন্তে কৃঞ্স্য তু বিশেষতঃ।। ভূনৌ কৰ্যতি লা-ঙ্গুল॰ প্রলম্ব স্থূল বালধিঃ। পুর-छोषूमाराञ नीन वृष्णका श्रामार्गः **তে।। শু**ক্তিধজ পতাকাভা যেষা° রাজী বিরাজতে। অনদ্বাহশ্চ-তে ধন্যা বিত্ত দিদ্ধি জ্বাবহাঃ ম প্রদক্ষিণ নিবর্ত্ততে স্বয়ণ যে বিনিবর্তিতাঃ । সমূরত শিরে। ত্রীবাধন্যান্তে যুপবর্দ্ধনাঃ। রক্ত শৃঙ্গাপ্তনয়নঃ গ্রেত্রণো ভবেন্দ্র-पि । गरेकः थवान मपृत्म नि खि ধন্যতর ভতঃ ৷৷ এতে ধার্য্যঃ প্র-যত্নেন মেভিব্যা যদি ৰা বৃষাঃ। ধারিত। যদি বা মুক্তা ধন ধান্য বিবর্দ্ধনাঃ ॥ চরণানি সুখণ পুচ্ছণ যস্য শ্বেতানি গোপতেঃ । লা-ক্ষারস স্বর্ণাশ্চ ত্রমীল নিতি নিৰ্দ্দিশেৎ॥ বৃষ এব স মোক্ত-

ব্যে। ন স ধার্য্যো গৃহে ভবেৎ। তদর্থ নেবাচরতি লোকে গাথা পুরাতনী ॥ এফব্যা বহবঃ পূত্রা যদ্যেকোপি গয়াণ ব্ৰজেৎ ৷ গৌ-तीया शुष्तद्खार्याण नीलया वृ-ষ মুৎসূজেৎ।। এবং বৃষণ লক্ষণ সংপ্রযুক্তং গৃহোদ্ভবং ক্রীত মথা-পি রাজন। মুক্তা ন শোচে-মরণ মহাত্রা মোক্ষে মতিঞ্চাহ মতোভিধাস্যে ॥ ইতি মাৎস্যে বৃষভ লক্ষণ নাম ১৮১ অধ্যা-যঃ ॥ 🕸 ॥ জলপানাথ মাগত व्यमा निवातरन प्लारमा यथा । গবা॰ তৃফাভিভূতানা॰ পানার্থ মভিধাবতা॰। অন্তরাযো ভবে-দাস্ত স ভবেদুশ্বঘাতকঃ।। ইতি কর্ম্মলোচন ।। ৠ।। তা ।। দানবি-বি র্যথা। বশিষ্ঠউবাচা মথেশ্বরো দরিদ্রো বা করে।তি বিধিনা নৃপ । দান॰ সৰ্ব গুণোপেত॰ তচ্ছণুন যথা তথং ৷৷ ভারাদি ত্রিপলা তঞ্চ বৃষণ কৃত্বা বিধানতঃ ৷ যুতণ ধেন্বা-থ ব। দদ্যাচ্ছক্তিতে। নৃথনত্তম ॥ বন্ধবা ধেনবঃ প্রোক্তা বৃষা স্তা-বস্ত এব হি । হরাবেতে নিযো-জ্যাঃ ম্যু ইরাব চ তথা বৃদাঃ ৷৷ স্বভিবেভিতো রাজন্ ভিলপা-

ত্রাণি নিত্যশঃ। সর্বপাপ বিনা-শाय मीनाछ नृश मखन ॥ शामं-যেন সমালিপ্য যব বস্ত্র সমাকৃতে ৷ বৃষণ হেমমষণ ভত্র রৌপ্যাণ বা ় - রত্নসংযুত্ত ।। তদ্য নীলমধ্যৈ শৃ দৈ মৌজিকাকিণ্যখোরদাঃ ৷ দাত্রি॰শচ্ছভ বজুাণিবিক্রমেঞি मुरामिको ॥ मात्रक्छी विनिर्हि-ফী কণৌ চৈবাস্মকৌ মতৌ। প-ঘরাগদ্য বৈ পাদাঃ খুরা রৌপ্য-নযা তথা।। রাজতান্যস্য রোমা-ণি ক্ষৌনবস্ত্রেণ কয়লং। পটেন পুক্ত মূদ্দিষ্ট পর্বেষা মপ্যয়ং বি-বিঃ ॥ বৃষণৌ ক্ষাটকস্যাপি লি-দে गनिः প্রকীর্তিতঃ। যথা দেনু खथान षुान् मूदर्भग ठ् काइररथ **৷৷ সৰ্বাসাং ফল মাঞ্চোতি ধেনূনা**ং वृषভপ্রদঃ। রাজ্ঞঃ সবিভবাদা-ন॰ ভক্ত্য। যঃ প্রতিপাদযেৎ ॥ বৃ-যভস্যাপাশক্তৌ হি তদনস্ত ক-ল॰ স্মৃত । নিঃস্বো বাপ্যেব দেব॰ হি কৃত্ব। ত্ৰত মতক্ৰিতঃ ॥ ত্ৰ-**क्ल॰ স**মবাপোতি স্বন্ধদানান্ন म॰भरः। ইতি বङ्गिপুরাণে वृष-मानाशायः ॥ 🕸 ॥ उपान र न॰ यथा। कन्यामानः वृत्वायनर्गः তীৰ্থসেবা॰ শুত॰ তথা ! যে স্বৰ্ধ-

ন্তি পৃহস্থাস্ত ন তে তদিষযোগ-গাঃ ॥ ইতি তাত্রেব কন্যাদান-नागांशायः ॥ 🕸 ॥ अशिष्ठ । ब-**ला**वह । न्यगादी महालाय यू-বানৌ লফণান্বিতৌ। হেনশৃঙ্গে। শকে রৌগো সবস্ত্রৌ পূজ্যেলুনে ।। শিবোনাং পূজ্যিত্বা ভু ভদ্দিনে। যঃ প্রবচ্ছতি। শিবভক্তাৰ বিপ্রা-य ताहिशाल वा मृत्येन वा ॥ न বিযোগো ভবেত্তন্য মূত পত্নী প-তেঃ কৃতঃ। বাতর্ণ্ছস বৈমানৈ গ্যজ্জিবপুরং ম্বিজ্ঞা তত্র ভো-গা॰ শ্চির॰তৃকু৷ ইহজা গত্য জা-যতে। সন্দো ধন ধান্যাভ্যা॰ পুত্ৰ বিত্র সমাঙ্গলঃ ৷৷ যো বা রত্ন স मायुक्त (भायूभः भूक्रद्रग्रन। প্রয়চ্ছতি শিবোনা চ প্রীমেতা ভাবিতায়নঃ।। স সর্ব পাপ দূঃ-খাত্যা॰ বিমৃক্তঃ ক্রীডতে সদ। । ইহলোকে ভবেদ্ধন্যে। দেহান্তে পরমণ পদ• ॥ ইতি দেবী পুরাবে भातञ्ज्ञ द्यामाधायः ॥ 🕸 ॥ শিব বৃষ কারণ ফথা। ঐকিন্ত উবাচ ৷ অথ গৰ্বাবিতে। ৰুদ্ৰো रु अ॰ बिপूत पूज्न॰ । पञ्च। गगनि সংহৰ্তা সৰ্বেষাং জগত। নিতি ॥ কে। ২য় প্রস্বদৈত্য ইতি

गञ्च। यत्यो तृष् । विश्वाय मृतः य-দত্ত সদীয় কবচ পর ।। চির रक्य नगतः वर्ष त्यकः निवानि-শং। ন জোগ জেতুং **কং শক্তো** (को गत्मी गमदत्र मन्। ॥ शृथिवता-थ त्राः क्षा मिट्यात्वा गायया প্রিষে। অত্যূর্দ্ধ সমুদ্রস্থে প-ঞ্চাশৎ কোটি যোজনণা উত্ত-*হ*ৌ শঙ্কর স্তুর্ণ<sup>,</sup> হস্ত<sup>,</sup> দৈত্য° জ-গৎপ্রভুঃ। জ্বান সুফিনা রুজে। দানবেশ্রু° প্রকোপতঃ 11 বজু-সৃষ্টি প্রহারেণ সল্যে। মূর্ন্ত্। নরা-প সঃ1ফাণন চেতনাং প্রাপ্য কো-शालानद शूक्रवः ॥ भिदः नयान মুভোল্য পাত্যামাস ভূতলে । তদাহ° কলবা শীঘ্ৰ° বৃহৰ**ণণ** বি-धार है। गरान भक्त शृक्ष वि-যাণাত্য। মুক্তজন°। দদৌ তাঁসে य करा ये ये गृत गहिगर्मन ।। মযা দত্তেন শূলেন জ্বান ত্রিপু-র॰ হরঃ। মামেব দর্প হস্তার॰ তু-ফীব ব্ৰীডিতঃ পুনঃ ॥ তত্যাজ শ **ষ**রো **দর্শ°** বিশ্ববীজ° ততো বিভুঃ । জ্ঞানানন্দ স্বৰূপশ্চ নিৰ্লিপ্তঃ স-र्व कर्मामू ॥ ততে। ছ॰ বৃষকপেণ ব-হামি তেন তং প্রিবং। মন প্রিয়ত मा नाडि जिलाक मू निवाद-

পরঃ ৷৷ ইতি ব্রহ্মবৈবর্ত্তে শ্রীকৃষ্ণ জন্মখণ্ডে ৩৬ অধ্যায়ঃ ৷৷ 🗱 💵 মেষাদি দ্বাদশ রাশ্যন্তর্গত দ্বিতী-যরাশিঃ। তৎপর্যায়ঃ। তাবুরিঃ ২। অস্য বিশেষস°ত্তা। সৌম্যঃ -। जङ्गना। मुक्ताः। निमः। स्थितः। পুষরঃ। অয়॰ চত্তা। ৭। নিশাসু-थागः। निवावनाः। हुवाशः। मिक्किनिस्पि छिः। निकाशाः। शृ-ঠোদযাখ্যঃ। অসামির্ভাত্রী দেব-তা মৃধঃ ৷ কৃত্তিকাপাদত্রধ রো-হিনী সমূদায় নৃগশিরোর্দ্ধে**নৈত**-জাশি ভব্তি। স**চ শীতল স্বভাবঃ** । সুন্দরভূমিস্বামী। বাতপ্রকৃতিঃ। শ্বেতবৰ্ণঃ **। বৈশ্যজাতিঃ ।** মহা-শব্দকরঃ ৷ মধ্যমন্ত্রীস**ঙ্গ**় মধ্যম-সস্তানশ্চ।। এতদ্রাশিক্ষাতএত।-দৃত্তবতি । দাতা । বাগ্দুঃস্বরঃ । নির্ভয়ঃ। পরদারাভিলাষী। ইতি বৃহজ্জাতকাদযঃ।।ৠ।৷ এতছঃশি-জাত কলং। স্থিনগতিং সুগতিং ক্মনীয়তা প্ৰশনতা ছি নূণা মু-**পভোগতা॰। বৃষ**গভোহিনগু ভূ-শ गांपिশেৎ সুকৃতিনঃ কৃতিন॰চ সুখান্যপি॥ 🗱॥ ভন্নংজাতফল॰ । বৃষ্ণগে ভ**েজ**া ভিক্তভঙ **बियस्तः। ७भी द्ी १भी ल्**कः

শূরঃ সর্বজনপ্রিয়ঃ।। ইতি কো-ষ্ঠীপ্রদীপ।। 🕸 ।। চতুর্বিধ পুরুষ-यर्था शूक्क वित्यवः। छमा नक- १० यथा । वक्छन वक्ष्यकः भीषु-.**কামো নতাস্ক**ঃ। সকল রুচির দে-**হঃ সত্যবাদী** ৰূযো ২ৰ° ॥ ইতি রভিমঞ্জরী।। 🕸।। একাদশমন্বন্ত-রীমেশুঃ। যথ।। রুজপুত্রন্য তে পুতान् वक्ताच्सादाकाण्यना छ। म-ৰ্বত্যঃ সুশৰ্ম। চ দেৱানীকঃ পুরু थल्या भवदका मृताब्क आक दः भूद्रक खन्ता । विश्वनाः का-নগা। নির্ম্পাণ রুচব **স্তদা।! একৈ**-ক ্রিশক ক্তেষাং গণা**শ্চেন্স**শ্চ देव वृद्धः। দশগ্রীবো রিপু স্তদ্য ত্ৰীৰূপী **যাত্**যিষ্যতি ॥ ইতি গা-**রুতে ৮৭ অধ্যায়ঃ।।** ক্ষা ।। শ্রন্ধঃ।। শৃঙ্গী ।। উত্তরপদস্থ শ্চেৎ গ্রেষ্ঠিঃ ॥ মৃষিকঃ॥ শুক্রলঃ॥ বাস্তস্থান-ভেদঃ। ইতি মেদিনী ॥ বাসকঃ । इंडि विश्वः ॥ शिक्यः । इंडि ত্রিক।ওশেষঃ ।। শত্রঃ । ইতি জ টাগরঃ ॥ कामः॥ वलवान्। है-ত্যনে দাখকোষঃ ॥ ঋষভনানৌ-रकः । ३७ तुःक्रनिर्म**े**हः॥ बुङक्षी क्षी अप्तर्भन। मूप्तर्भन-ওলংং ইতি ভাষা। ইতি রব্ধ-∥

गला।। বৃষণদ্ধা স্ত্রী বস্তান্ত্রী।ইতিরাজ-निर्घक्डः ॥ বৃষচক্রণ ক্লী ক্ষিকর্মোক্তবৃষা-কারচক্রণ। যথা। বৃষ্চক্রণ বৃষা-कातः भवीत्यत् मःगृङः । निथि-ন্ধা বিন্যদেন্তানি বৃষনামৰ্ক পূ-र्बकः ॥ गुशाकि कर्न मीर्यय मु-ঙ্গে হৃদ্ধে দ্বিকণ দ্বিকণ। জীনি পৃঠে দ্বয়ং পুড়েছ ২টো পাদে তুদরে ত্রিক॰॥ হলপ্রবাহ বী-জোপ্তি প্রায়ন্তাদি দিনক্ত্ । যদদেয়ু ভিত্ত° ভস্মাদ্বফো সর্ব॰ শুভাশুভে।। আসে। হানিঃ সুখণ নেত্রে কর্ণে ভিক্ষাটন তথা। শীৰ্ষে ধৃতি স্তথা শৃঙ্গে সৌখাণ ऋत्म চ मझनः ॥ शृत्त्रं क्खे॰ শুক্ত ভূমঃ পাদে সুখণ क्षि। इंकड्याशांविषः প্রাক্ত বৃষচক্রণ ফলণ বুধিঃ ॥ ইভি জ্যোতিস্তত্তৃ ৷৷ বৃষণঃ পু॰ অওকোষঃ। ইত্য-गर्दः ॥ उमा लक्ष्म यथा। युन निष्म। पत्रिजः माष्ट्रिः स्थाकन् ষণী ভবেৎ। বিষদে ন্ত্ৰীচঞ্চল। বৈ নৃপঃ স্নাদৃষণে সমে।।এলখ व्यदमं २ नायू निष्यवा। यनिजि

ভবেৎ। অপিচ। জলান্ত এক। 🔻 বৃষণো বৃষমাভ্যাণ চলঃ ক্রিয়াণ। 🛚 সমাভ্যা॰ ফিতিপঃ প্রোক্তঃ প্র-লয়েন শতাব্দবান্ ॥ ইতি গা-ৰুতে ৬৩। ৬৫ অধ্যাযৌ।। व्यनभः पू॰ इक्तमारघा हेकः। ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ वृष्णुम् क्ली रेखमाधनः । रेवि জটাধরঃ ॥ বৃষদ শকঃ পু॰ বিডালঃ। ইত্য-गदः ॥ বৃষধজঃ পু॰ শিবঃ।ইত্যমরঃ॥ হেরম্বঃ।। পুণ্যকর্মা। ইতি বিশ্বঃ বৃষধাজনী ত্রী নাগরমুস্তা।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। বৃষনাশনঃ পু॰ বিডস্কঃ।ইতি मक्यांना ॥ वृष्ठशिक्षः भू॰ युद्धः ॥ निदः । ইতি কেচিৎ ॥ বৃষপত্রিকা ত্রী বস্তান্ত্রী। ইতি ताजनिर्घकिः॥ বৃষপণী জ্রী আখুপণী । ইতি तञ्जाना ॥ वृक्तवित्भवः १ शूत्।-তী ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। দধ্যালী ২ চক্ৰাঙ্কী ৩ সুদর্শনা ৪। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বৃষণৰা পু॰ শিবঃ ৷৷ দৈত্যভেদঃ ∥

॥ ভূঙ্গার বৃক্ষঃ॥ কশেরঃ।ইতি বিশঃ। वृष्ठः पुः वृष्ट्या ८ अर्थः ॥ देव-দভী রীতিভেদঃ। ইতি মেদিনী ॥ আদিজিনঃ। ইতি হেমচঞ্ৰঃ ।। कर्वत्र सुरु ॥ अवज्यास्मीयश्र इंजुनामिटकारः ॥ 🕸 ॥ त्री-শব্দে আতিদেশিকগোহত্যায়া অলিখনাৎপ্ৰসন্ধাৰত লিখ্যতে । গানাহার॰ প্রস্বর্ত্ত পিবত যে। নিবার্যেৎ 1 যাতি গো विश्वरम्। गरेश भार्जाक व-তেতু সং ৷৷ দঙ্জৈ গা স্তাডযয় **ए। या वि**ध्या नुदवाइनः । দিনে দিলে গৰা॰ হ্ড্যা॰ল ভতে নাত্ৰ সংশ্বঃ।। নদাতি গোভ্য উচ্ছিন্ট॰ ভোজনে ৰূধবাহক॰। ভোজ্যেদ্হবাহান্ন স গোহ-ত্যা॰ লভেন্ধুব॰ ॥ ব্যলীপতি॰ যাজ্যেন্যে। ভুঞ্জের° ভস্য যে। নরঃ। গোহত্য। শতকং সোপি লভতে নাত্র সংশ্যঃ ॥ পাদি দদাতি বক্লো যোগাঞ্চ পাদেন তাড়যেৎ ৷ গৃহণ বিশেদধ্যেতা-জ্মিঃস্বাস্থা গোবধ মালভেৎ ৷৷ যে। ভুঞ্জে ২মিগ্ৰ পাদেৰ শেতে निश्वाञ्चि तत्र छ। मृत्यानत्र छ

বৃষভা

**দ্বিভোঁজী স গো**হত্যা° লভেৎ | ধুবং ॥ অবীরান্নঞ্চ যে। ভূঞ্জে यानिकीवी ह जाकनः। य खि-সন্ধ্যাবিহীনশ্চ স গোহতাং লভেদ্ধুবং॥ পিতৃংশ্চ পৰ্বকালে েচ তিথিকালে চ দেবতাঃ। ন সেবতে ২তিথিণ ষো ছি স গো-হত্যা॰ লভেদ্ধুব॰॥ স্ব ভর্তুরি চ কৃষ্ণে বা ভেদ বুদ্ধিণ করোতি ষা। কটুক্ত্যা তাডয়েৎ কান্ত॰ স গোহত্যা॰ লভেং ধ্ৰুব॰ ॥ গো নাৰ্গণ খননং কৃত্বা দদাতি শস্য মেব চ। তড়াগে চ তদূর্দ্ধে বাস গোহত্যা॰ লভেৎ ধূব॰ ॥ প্রাযশ্চিত্ত॰ গোবধস্য যঃ করে|-তি ব্যতিক্রমণ। অর্থ লোভাদ-**থক্তানাৎ স গো**হত্যা° লভেৎ ধ্রুব ।। রাজকে দৈবকে যত্ন। क्लाश्वामी गा॰ न शानस्य धानुः খ॰ দদাতি যে। মূচে। গোহত্যা॰ **লভতে** ধুব°।। প্রাণিন॰ লঙ্গ্রযে-দেয়া হি দেবার্চ্চ। ননলং জলং। নৈবেদ্যণ পুষ্পা নয়ঞ্চ স গোহ-ত্যা॰ লভেৎ ধু ३॰ ॥ শশন্বাস্তী-তি যো বাদী নিখ্যাবাদী প্রতা-तकः । (मयस्मिमी श्रमः **प्रमित्र** গোহত্যা॰ লভেৎগ্রুব৽৷৷ দেবতা 🎚

প্রতিমাণ দৃষ্ট্যা গুরুণ বা ব্রাহ্মণণ সতি। ন সন্ত্রুমান্নমেদেয়া হি স গোহত্যা॰ লভেৎ ধ্ৰুব॰ ৷৷ ন দ-দাত্যাশিষ কোপাৎপ্রণতায় চ যে। দ্বিজঃ। বিদ্যার্থিনে চ বি-দ্যাঞ্চ স গোহত্যাণ লভেৎ ধ্রুবণ ৷৷ গোহত্যা ব্ৰহ্মহত্যা চ কথিতা চাতিদেশিকী। यथा अञ्च मृर्ग्र বক্তাৎ কি ভূষঃ শ্রোতু মিচ্ছ-সি ॥ ইতি ব্ৰদ্ধবৈৰ্ত্তে প্ৰকৃতি-थए७ २१ यशायः॥ শিবঃ । ইতি বৃষভগতিঃ **পু•** श्रात्रावनी ॥ শিবঃ । ইতি 2º বৃষভধুজঃ কেচিৎ 11 ব্যভানুঃ পু॰ সূরভানপুত্রঃ। সচ রাধিকাপিতা। যথা। সুচ-ন্ত্ৰো বৃষভানশ্চ ললাভ জন্ম গোন্ধলে। পদাবত্যাশ্চ জঠরে বসুভানস্য রেতসা ।। জাতিস্ম-রো হরে র শং শুক্লণকে যথা শশী। বৰ্বদ্ধানুদিন॰ তত্ৰ ব্ৰজ-গেহে ব্ৰজাৰিপঃ ॥ কলাৰতী কান্যজ্ঞে বভূবাষোনি সম্ভ-বা। জাতিমর। মহাসাধী সুন্দ-त्री कमनाकना ॥ कानाऋड्ज নৃপশ্রেষ্ঠো ভনন্দন উরুক্রমঃ। স তা• সংপ্রাপ ষোগান্তে যজ্ঞ-স্ও সমুখিতা ।। কৃত্বা বক্ষসি त्राष्ट्रस्य यकाखारेय माने गूमा । মালাবতী স্তনং দম্ব। তাং পু-পোষ প্ৰহৰ্ষিতা ৷৷ দদৰ্শ নন্দঃ পথি তা॰ গচ্ছস্তীঞ্চ মুদায়িতঃ। নন্দউবাচ। শৃণু রাজেন্দ্র বক্ষ্যা-মি বিশেষ কেন° শুভ°। সম্বন্ধ° ঙ্গরু কন্যায়া বিশিষ্টেন চ সা-স্পূত ॥ সূরভানসূতঃ শ্রীমান বৃষভানে। ব্রজাধিপঃ। নারায-ণাণশো গুণবান্ সুন্দরশ্চ সুপ-ঙিতঃ ॥ কন্যা তে ২যোনিস॰-ভূতা যজ্ঞপণ্ডসমুদ্ভবা ৷ ত্রৈ-লোক্য মোহিনী শাস্তা কমলাণ শা কলাবতী ৷৷ সচ ধোগ্য স্তদ্দু-হিতু স্তদ্যোগ্যা তে চ কন্যকা। ভনন্দন উবাচ। সম্বন্ধো হি বি-ধিবশো ন মে সাধ্যো ব্ৰজাধিপ । প্রজাপতি র্যোগকর্তা জন্মদা-তাহমেৰ চা৷ বৃষভানপ্ৰিষা ধা-ত্র। লিখিতা চেৎ সূতা মম। পু-রা ভূতৈব কো বাহণ কেনান্যে-ন নিবার্য্যতে॥ নৃপানুজ্ঞা মুপা-দায বজশ্রেষ্ঠো বজ্ঞ গতঃ । গত্বা দ কথ্যামাদ সূরভানস্য সংসদি॥ সূরভানশ্চ যত্নেন ন-।

দেন চ সমাদর । ময়য় থোঁ জ্যামাস গর্গ ছারা চ সম্বর ।। বৃষভানো মুদাযুক্তঃ প্রাপ্য তা-স্থ কলাবতী । রেমে সুনির্জনে রম্যে বৃবুধে ন দিবানিশ ।। ত-যোঃ কন্যা চ কালেন রাধিকা সাবভূব হ। দৈবাৎ শ্রীদাম শা-পেন শ্রীকৃষ্ণম্যাজ্ঞ্যা পুরা ।। তা-যোনিসম্ভবা সা চ কৃষ্ণপ্রাণা-ধিকা সতী । ইতি ব্রন্ধবৈর্ত্তে শ্রীকৃষ্ণজ্মখণ্ডে ১৭ অধ্যামঃ ।। বৃষভাসা স্ত্রী তামরাবতী । ইতি বিকাওশেষঃ ।। বৃষভাকী স্ত্রী ইন্দ্রবারুণী । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। ব্যচক্ষ্যি ত্রি ।।

বৃষভাক্ষী স্ত্রী ইন্দ্রবারুণী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বৃষচক্ষুষি ত্রি ॥ বৃষযঃ পুং আশ্রযঃ । ইতুণাদি-কোষঃ ॥

ব্যলঃ পু॰ পৃঞ্জনঃ। শূড়ঃ।।
চন্দ্রগুপ্তরাজঃ। বাজী । ইতি
মেদিনী ।। অধার্মিকঃ । ইতি
জটাধরঃ।।

বৃষলাত্মজঃ ত্রি অধার্ম্মিকজাতঃ
। ইতি কেচিৎ ।৷ শূদ্রোন্ডবশ্চ ।৷

কৃষলী স্ত্রী পিতৃগৃহে অবিবাহিতা রজস্বলা কন্যা ৷ যথা ৷ অত্রিকাশ্যপৌ ৷ পিতৃর্গেহে চ ষাকন্যা রজঃ পশ্যক্তসংস্কৃতা ৷

বৃষাম্ভ

ভ্ৰুণহত্যা পিতৃ স্তদ্যাঃ সা কন্যা व्वनी सृञा।। रेजूमारुक्षः।। স্থপতি॰ পরিত্যজ্য ষা পরপতি-गामिनी। यथा। य वृषः या श-রিত্যজ্য পরবৃষে বৃষাযতে । বৃ-∙ •ষলী সাহি বিজেয়ান শৃদ্ৰী বৃ-ষলী ভবেৎ।। ইতি কাশীখঙঃ ॥ শূদ্রীচ ॥

বৃষলীপতিঃ পুং বৃষলীবিবাহ-কর্ত্তা। যথা। যস্ত তা॰ বরুযেৎ कन्गा॰ बान्नात्वा ख्वानपूर्वनः । অশ্রাঙ্কেয় মপাঙ্কেষণ তং বিদ্যা-দৃষলীপতি॰।। ইত্যুদাহতত্ত্ব॰॥ यि गृजा॰ बर्ज वित्था वृष-দীপতি রেব সঃ। ইতি ব্রহ্মবৈ-বর্ত্তপুরাণ ॥

বৃষলোচনঃ পু॰ মৃষিকঃ।ইতি হেমচন্দ্রঃ।। বৃষনযনে ত্রি।। বৃষবাহনঃ পু॰ শিবঃ। ইতি কে-हिंद ॥

বৃষশত্রঃ পু॰ বিষ্ণঃ। ইতি ত্রি-কাওশেযঃ ॥

বৃষসৃকী পু॰ ভৃঙ্গরোলঃ। ইতি শব্দমালা 11

वृषमान्त्री न्यो क्यो रेग्यूकी। रेग्या देश ।। বৃষেণ জন্ধু মিচ্ছন্তী গৌঃ। ইতি ব্যাকরণ ।। তথাচ। লন্ধণ ॥ বৃষান্তকঃ পুং বিষ্ণুং। ইতি শব্দ-

সা বৃষস্তী মহোক্ষণগৌ ব্লিবা-গমৎ। মন্মথাযুধ সম্পাত ব্যথ্য-মানমতিঃ পুনঃ ।। ইতি ভটিঃ ।। বৃষা ন্ত্রী মৃষিকপণী । ইতামরঃ॥ কপিকচ্ছঃ। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ।। वृषां भू॰ इन्द्रः ॥ कर्नः ॥ त्वणः नाञ्जानः ॥ मुः थः। ইতি मिनि-नी ॥ वृषः ॥ (शावेकः । देखि ट्याञ्खः ॥

वृषाकभाषी जी नचीः॥ भोती । ইত্যমরঃ।। স্বাহ্।। ইতি ভরতঃ ॥ শচী। ইতি স্বামী॥ জীবন্তী ।। শতাবরী। ইতি মেদিনী।। वृषाकिनः पू॰ विकृशा निवः॥ অগ্নিঃ। ইতি মেদিনী।। ইন্দ্রঃ। ইতি বৃষাকপাষীশবদর্শনাৎ ৷৷ বৃষাকরঃ পু॰ মাষঃ।ইতিরাজ-निर्घिष्ठः ॥

বৃষাঙ্কঃ পু॰ শিবঃ॥ সাধঃ॥ ভ-লাতকঃ।। ষঙঃ। ইতি মেদিনী।। বৃষাস্কজঃ পু॰ ডমরুঃ। ইতি শ-क्तव्रावनी ॥

বৃষাঞ্চনঃ পু॰ শিবঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ 11 বৃষাণকঃ পু॰ শিবঃ। ইতি ত্রি-

কাণ্ডশেষঃ।।

त्रज्ञावनी ॥ ব্যাযণঃ পু॰ চটকঃ। ইতি হার।-वनी ॥ शिवन्छ ॥ বিডালঃ। ইতি বৃষাহারঃ পু• श्वावनी ॥ বৃষী<sup>ন</sup> পু॰ মযূরঃ। ইতি শব্দমালা वृषी खी खिना नगामिया-সন । ইত্যমরঃ ॥ বুষোৎসর্গঃ পুং শ্রাদ্ধাদৌ বৎ-সতরীচতৃষ্ট্যসহিতত্ত্রিশূলচক্রা-ক্ষিত বৃষত্যাগঃ। তস্য বিধি যথ। । কালবিবেকেপ্যশ্নিপুরাণ । এ-কাদশাহে প্রেত্স্য যস্য চোৎ-স্জ্যতে বৃষঃ। প্রেতলোকণ প-রিত্যজ্য স্বর্গলোকণ স গচ্ছতি।। আদ্যশ্ৰাদ্ধে ত্ৰিপকে বা ষষ্ঠে মাসি চবৎসরে। বৃষোৎসর্গণ্চ কর্ত্তব্যো যাবন্ধস্যাৎ সপিওত।।। সপিগুকিরণাদুর্দ্ধণ কালো ২ন্যঃ শাস্ত্রচোদিতঃ। যস্য প্রেতস্যে-তি সামান্যতঃ শ্রুতঃ পিতৃভি-শস্যাপি বৃষোৎসর্গঃ প্রতীয়তে ।। ঋ।। অথ বৃষোৎসর্গণ ব্যাখ্যা-স্যামঃ ৷ কাৰ্ভিক্যা**॰ পৌৰ্ণমাস্যা**ণ রেবত্যা মাশ্বযুজ্যাণ দশাহে গ-তে সম্বৎসরে<sup>°</sup>২তীতে বেতি । অত্র মৃত তিথি মাদায সম্বৎসর 🎚

গণনা দশাহবদিত্যবিরোধঃ ৷ একাদশাহ ইতি আদ্যশ্ৰাদ্ধ ই-তিচাশোচাস্তাদ্দিতীযদিন ,পর• । অশৌচাস্তান্ত্রিতীয়ে ২ক্লি শ-য্যা॰ দল্যাদ্বিলক্ষণা॰। কাঞ্চন॰ পু-রুষণ তদ্বৎ ফল বস্ত্র সমশ্বিত ।। সংপূজ্য দ্বিজ দাস্পত্যং নানাভ-त्रग ज्र्यरेगः । वृरया**ः मर्गम्**ठ क-ৰ্ভব্যো দেয়া চ কপিলা শুভা॥ ইতিমৎস্যপুরাণেনৈকবাক্যস্বাৎ ॥ প্রেতব্ষোৎসর্গে বৃদ্ধিশ্রাদ্ধ• ন কর্ত্তব্যং । নার্বাক্ সম্বৎসরা-ছৃদ্ধি বৃষোৎসর্গে বিধীয়তে। স-পিণ্ডীকরণাদূর্দ্ধণ বৃদ্ধিশ্রাদ্ধণ বি-ধীয়তে। ইত্যুশনসো বচনাৎ ॥ 🗱 ॥ বৃষ লক্ষণ মাহ কাত্যাय-নঃ। অব্যক্ষো জীববৎস যাঃ প-যস্বিন্যাঃ সূতে। বলী। একবর্ণো षिवर्ता वा वा वा मामखेका-সুতঃ ॥ যূথাদুক্ততরো যস্ত সমো मश्र পরানুৎসৃষ্ট স্তার্যেদৃষ্ণ॥ অষ্টকাসূতঃ অফ্টকাসু জাতঃ। কাসধেনু প্রভৃতিযু মৎস্যপুরাণ । চরণানি মুখ পুচ্ছ যদ্য শ্বে-তানি গোপতে। লক্ষোরস সর-नंभा उ॰ नील गिछि निषिद्याः।।

বৃষ এব স মোক্তব্যোন সন্ধার্য্যো গৃহে বসন্। তদর্থ নেষা চরতি লোকে গাথা পুরাতনী ৷৷ এফব্যা বহবঃ পুত্ৰা যদ্যেকোপি গৰাণ ত্ৰ-জেৎ। গৌরীম্বাপ্যুদ্ধহেন্ডার্যাণ . तीलना वृष गूष्मृत्ज्रष्।। 🗱 ।। दष-সতরী বিশেষয়তি। অগ্রতোলো-হিতা গত্ৰী পাৰ্শ্বাভ্যাণ নীলপাও-রোপৃঠতশ্চ ভাবৎকৃকা বৃষভস্য চলোকণে ক্লো বৈধকৰ্মাৰ্থ মণ্ড-প छ विकास मूकः इयमी र्यापकः রাত্রণ নবেন চিত্র বক্ত্রেণ বিতা-ন' কল্পবেদুধঃ৷ অত্র চাশুক্ল বাসাঃ শুচি ভূ স্বা ব্রাহ্মগান্ স্বস্তিবাচ্য চ । কীর্ত্তবেদ্ধারতক্ষৈব তথা স্যাদ-ক্ষয়ণ হবিঃ।। ইতি দানধর্মস্থ বৃ-হোৎসর্গ প্রকরণীয় বচনাৎ অ-ক্ষয হবিষ্টুকামেন স্বস্তিবাচনা-নন্তর॰ ভারতনামোচ্চারণ॰ কা-য্যাণ যদক্লা সক্রতে পাপণ ভ্রাহ্মণ স্ত্রিজ্ঞারে শ্রন্। নহাভানত মা-খ্যায় পূৰ্বাণ সন্ধ্যাণ বিমুঞ্জি । ইত্যাদিপুরাণোক্ত প্রাত মহা-ভারতোচ্চারণবৎ রাচদেশীযা-স্তু বিরাটপর্র পাঠযন্তি। ভবিষ্যে ৷ বৃষোৎসৰ্গশ্চ দ্বিবিধো জীবতো ব। মৃতস্য চ। ইত্যুপক্রম্য । অনু- 🏽

জ্ঞাণ গৃষ্ক চ পুন গণেশণ পূজ্বে-দ্বটে । গ্রহাণ্টেশ্চব যজেৎ প-শ্চাৎ বিষ্ণু॰ সংপুজ্যেৎ ততঃ।। **इत्नाग**शतिनिर्छे । गानाना-যাণ প্ৰণীযাগ্নিণ সণস্কৃত্য ব্ৰীহি ত-খুলান্। অগ্নি পূষেক্রেশ্রেভ্যো নিৰ্বপেৎ পাযসং চৰুং ॥ গোশা-नाया मिठि श्रयानकन्नः। तृष्ठ ইত্যুপক্রম্য। উৎসুক্তব্যো বিধা-নেন শ্রুতি সৃতি নিদর্শনাৎ 1 প্রাণ্ডদক্ প্রবনে দেশে মনোজ্ঞে নির্জনে বনে।। সঙ্কল্পানন্তর য-জমান এব প্রথমণ ত্রন্ম বরণাদি-ক॰ স্ব্যাৎ তত্র ব্রহ্মবরণ প্রথ-মতঃ। জ্যোতিকৌমে ব্রন্ধো-দ্যাতৃ হোত্ৰধ্যা ইত্যাদি দৰ্শ-নেন। গৃহসংগ্রহে । দ্যুতে চ ব্যবহারে চ প্রব্রতে যক্তরশাণি । যানি পশ্যজ্যুদানীনাঃ কর্তা তা-নি ন পশ্যতি ॥ একঃ কর্মনিযু-ক্তঃ স্যাৎ দ্বিতীয় জন্মারকঃ তৃতীয়ঃ প্রুষাৎ প্রশ্ন ভতঃ কর্ সমাচরেৎ ॥ বরণানন্তর পশ-ভিকা॰ সমাপ্য যথা বিধিনা চক্ল-পাকঞ্চ কৃত্বা চরুহোমণ সর্য্যাৎ। ততঃ স্বিফি কৃদ্ধোম মহাব্যাহ্বতি হোমৌ কার্যো) ৷৷ঞা৷ ততঃ বৃষদ্য

দক্ষিণে পার্শ্বে ত্রিশূলাক সমুল্লি-খেৎ। বৃষাহ্হসীতি সব্যে ২স্য চ-ক্ৰাঙ্ক মপি দৰ্শযেৎ 11 তপ্তেন প-শ্চাদ্যসা স্পান্টৌ তাবেব কার-বেৎ ৷ অথৈন° কলসস্থাভি রস্তি-রেকো বৃষেণ বা।। সৰৌ ষধি সু-গন্ধীভিঃ স্নাপযেদ্বৎসিকা অপি ৷ পরিধাপ্যাহতে শুক্লে বাসসী হেমপউক ॥ সত্য মিথ্যা বৃষা সোম সামভ্যা॰ শিরসি ন্যদেৎ। ততো বৃষ বৎসতরীণা মলস্কারা-**मिक॰ मन्ना विन् वन्नन निर्मिछ** ষূপে. উপযূপে চ বন্ধ্বা এন॰ যুবা-ন॰ ই তি মন্ত্র॰ পঠিস্বা বৎসতরী চ-তুষ্ট্য সহিত বৃষ তত্তৎফল কা-মী অদ্যেত্যাদি বাক্যেনোৎসৃ-জেৎ॥#॥ততো যূপাদিমুচ্য বৎ-সতরী চতুঊষ সহিত বৃষ দৈশা-ন্যা॰ চালযিত্বা প্রার্থযেৎ।যথা। ন খাদেৎ পরশস্যানি নাক্র্যমেৎ গৰ্ভি ণীঞ্চ গাণ। ধৰ্ম্মোসি ত্বণ চতু-স্পাদ শ্চতসু স্তে প্রিয়া স্ক্রিমাঃ। চতুৰ্ণাণ পোষণাৰ্থায় মযোৎস্ফী স্তৃযা সহ 11 দেবানাঞ্চ পিতৃণাঞ্চ মন্য্যাণাঞ্ধ যোষিতঃ। ভূতানা॰ তৃপ্তিজনন। স্তৃষা সাৰ্দ্ধণ ব্ৰজস্তি-মাঃ।। নমে। ব্ৰহ্মণ্যদেবেশ পিতৃ

ভূতৰ্ষিপোষক। দ্বযি মুক্তে ২ক্ষ-যা লোকা নম সম্ভ নিরাম্যাঃ। মা মে ঋণোস্ত দৈবো ২থ পৈত্ৰো ভৌতো ২থ মানুষঃ।ধর্ম স্তু॰ ত্বৎ-প্রপদ্দস্য যা গতিঃ সাস্ত মে ধ্রুবা ॥ যৎকিঞ্চিৎ দুদৃত কর্ম লোভ. মোহাৎ কৃত ভবেৎ। তস্মাদুদ্ধ-ত্য দেবেশ গিতুঃ স্বর্গ প্রযচ্ছ মে ।। যাবস্তিতব লোমানি শরীরে স-ন্তবন্তি চ। ভাবছর্ষ সহস্রাণি স্বর্গে ষাদো ২স্ত মে পিতুঃ।। ইতি নৎ-স্যপুরাণোক্ত॰ পঠেৎ। তত আ-চারাদৃষপুচ্ছগলিতোদকেন ব্রশ্ন-পুরাণোক্ত তর্পণ সর্য্যাৎ। ততঃ প্রকৃত দক্ষিণাণ কৃত্বা কর্মাকার্যি-তৃত্যো দক্ষিণাণ দদ্যাৎ। ইতি ব্যোৎসৰ্গ তত্ত্ব॰।। 🟶 ।। 🕾 ।। কার্ত্তিক্যা॰ কার্ত্বেৎ পূজা॰ যা-গণ দেবীপ্রিয়ণ সদা। গোৎসগন্ত প্রকর্তব্য নীল বা বৃষ মুৎসৃ-জেৎ ॥ সর্বযক্ত ফল প্রক্ষ প্রাপ্ন-यानविठात्रयन्। मनूक्रवाठ। अश्व-মেধ সমণ পুণ্যণ বৃষ্ণোৎসর্গাদবা-প্যতে৷ রেবত্যাঞ্চাশ্বিনে মাসি কার্ত্তিক্যা॰ কার্ত্তিক্স্য বা ॥ গো বিবাহোথবা কার্য্যো মাঘ্যা॰ বৈ ফাল্গুনে ২পিবা। শিবোমা মঙ্গ-

লঞ্জৈত্রে ভূতীযাযাও মহাফলও।। অশ্বখোজুমরী বাগণ বিবাছ বি-ধিনা ভবেৎ। সতোরণ ভবে-ভীর্থে উৎসর্গো গোঙ্গলে ২পিবা ॥ চতম্যে বৎসিক। ভদ্রা দ্বৌ ধা সুত্তবতোপি বা ৷ বৎস্তু সর্বান্ধ সংপূৰ্ণ কন্যা সা বৎসিক। ভ-বে<া৷ অলংকৃত্য যথাশোভ मू॰मर्गः कातरमगून । विवाह মেক বৎসীক নীলেন ভবতে স-দায়াবৃবেণ অশ্বনেধস্য যাগস্য ফ-লদা যক॰। জাবেরন্ বহবঃ পুত্রা गरमारकाणि शयाः बरक्षः ॥ य-জেম্বা অশ্বনেধেন নীল° ব। বৃষ-মৃৎসৃজেৎ ৷ রোহিতো যস্ত ব-র্ণেন শঙ্থবর্ণ খুরো বৃষঃ।। লাফূ-**लानिव्रमरेन्हर म देव गीनवृ**यः স্মৃতঃ। অঙ্কিস্বোৎসৃজ্যতে পূর্ব॰ পাঞ্চাল॰কৃতা সর্বতঃ ॥ তভেন বামত শ্চক্রণ যাম্যে শূলং স্থা-লিখেৎ। ধাতুনা হেম তারেণ व्यायमिनाथ विक्रस्य ॥ धवः কৃত্বা অধাপ্নোতি ফল॰ বাজিম-খোদিত । যমৃদ্দিশ্যোৎসৃজেৎ বৎস° স লভেভাবিচারণাৎ 11 যথা শিবোমজা অচ্চা পূজিতা সৰ্বকামদা। এবং দেব ত্ৰয় যফু।

অনন্ত॰ লভতে ফল॰।। মঙ্গলা-বিহিত যক্ত যক্ত গোদানজণ ফলণ সহসু ক্রতব স্তেন বৃযোৎ-সর্গাদবাপুষাৎ ৷৷ ইতি দেবীপু-तारन शृङ्जिविधिनामाधाराः॥ বৃষ্টিঃ স্ত্রী মেঘাজ্জলবিন্দুপতন• । তৎপর্য্যায়ঃ। বর্ষণ ২। ইত্য-মরঃ ॥ গোগৃত ৩ পরামৃত 8 বর্ষণ° ৫। ইতি শব্দরত্নাবলী। তৎকারণ যথা। অমৃতাদি ত্র-যে যত্ৰ ভবন্তি সৰ্ব খেচরাঃ। তদা বৃক্তিঃ ক্রমাজ্জেয়া ধৃত্যর্ক বসু বাসরৈঃ।। ইতি স্বরোদযঃ ।। 🛊 ।। অপিচ। ক্রবন্ত পরমার্থঞ্চ किमिन्छा वृष्ठि त्त्रव ह। मूर्या दि-জায়তে তোষণ তোষাৎ শস্যা-নি শাখিনগা তেভ্যোৎশানি ফ-লান্যেব তেভ্যো জীবন্তি জীবি-नः। मृर्गा श्रस्थ नी तक काटन তস্মাৎ সমুদ্ভবঃ॥ সূর্য্যো মেঘা-দযঃ সর্বে বিধাত্রা তে নিকপিতাঃ । যতাবেদ যো জলধরো গজশ্চ সাগরো মরুৎ।। শস্যাধিপো নৃ-পো মন্ত্ৰী বিধাত্ৰা তে নিৰূপিতাঃ । জলাঢকানা॰ শস্যানা॰ তৃণা-नाक्ष निक्रिकि ॥ अरक श्रक ২স্ত্যেব তৎ সৰ্ব° কল্পে কল্পে যুগে

ষুগে । হস্তী সমুদ্রাদাদায করে-। **। जन गैकिठः ॥ ममाम्यनाय-**তদ্দদ্যাদ্বাতেন প্রেরিতো ঘনঃ । স্থানে স্থানে পৃথিব্যাঞ্চ কালে কা-লে যথোচিত ।। ঈশ্বরেচ্ছ্যা-বিভূকি ভূণি ভূত প্রতিবন্ধক।। ভূত• ভব্য• ভবিষ্যঞ্চ মহৎ ক্ষুদ্রঞ্চ মধ্যম ।। ধাত্র। নিক্সিত কর্মা কেন তাত নিবাৰ্য্যতে । ইতি ত্রদ্ধবৈবর্ত্তে শ্রীকৃক্জন্মখণ্ডে ২১ व्यक्षायः ॥ 🐲 ॥ व्यामनवृष्टिम् চকানি ষথা। মযুর। স্তন্যিত্নাণ শব্দেন হৃষিতা নুহঃ৷ কেকা যন্তি প্রতিবনে সতত বৃষ্টি সূচকাঃ॥ মেঘোৎসুকানা মধুর শচাত-কানা॰ মনোহরঃ। শুষতা মতি-মন্তানা॰ বৃষ্টি সন্নিধি সূচকঃ ॥ গগনে শক্তচাপেন কৃত সাম্পুত মাস্পদে । ধারাসার শরৈ স্তাপ চ্ছেত্ত॰ প্ৰতি ধথোনাতঃ ॥ ইতি कानिकाभूद्रारभः अधायः॥ বৃষ্টিফল যথা। পতিব্ৰতায়া ব-চনামোকাচ্ছতি দিবাকরঃ। সূ-र्यापय विना टेनव ज्ञानपाना-**मिकाः क्रियाः ॥ नात्य विरुत्त**न-ঞৈব ক্ৰত্বভাবশ্চ লক্ষ্যতে । নৈ-বাপ্যায়ন মস্মাক বিনা হোগেন

জাযতে ৷৷ বয নাপ্যাযিতা মর্ত্যৈ যজ্জভাগৈ র্যথোদিতেঃ। বৃষ্ট্যা-मिनानूगृङ्गीत्म। यर्जान् मण्णामि সিদ্ধযে ॥ নিস্গাদিতাস্বোষধীষু মৰ্ত্য। যজ্ঞৈ ৰ্যজন্তি নঃ।এষা॰ বয়॰ প্রযক্ষানঃ কামান্ যজ্ঞাদি পূজি-তাঃ ৷৷ অধো হি বর্ষাম ব্যুণ মর্ত্যা-শ্চোৰ্দ্ধ প্ৰবৰ্ষিণঃ। তোষবৰ্ষেণ-हि यय॰ इवि बॅटर्सन मानवाः॥ स्य **২শ্মাক° ন প্র**যক্তন্তি নিত্র। <mark>নৈ</mark>-মিতিকীঃ ক্রিযাঃ। ক্রতুভাগণ দু-রাত্মানঃ স্বয়ণ যে হলান্তি লোলু-পাঃ 11 বিনাশাষ ব্য° তেযা° তোৰ সূৰ্যালি নাক্ৰতৈঃ। কি**তি**-ঞ্চ সংদূষয়ামঃ পাপানা নগকারি-ना॰ ॥ पृक्ठेट्यामि त्माद्वन ट-**ষা॰ দু**দ্ধৃত কারিণা॰ । উপ**সর্গাঃ** প্রবর্ততে মরগায সা । রগাঃ ॥ ষেচাস্মান্ প্রীণ্যিত্য তু জুঞ্জন্তে শেষ মাজানা। তেষাং প্রাদ্বয়ং লোকান্ বিতরাগো মহাজানা গা ইতি মার্কণ্ডেষপুরাণে পতিব্রতা মাহাত্ম্যনামাধ্যাবঃ।। 🍪 🛚 অথ বৃফিজলগুণাঃ । গগনামু তি-দোষন্নণ গৃহীত হৎ সুভাজনে। বল্যু রসালন নেধ্যু পাত্রাপে-ক্ষি চ তৎপ**র**ে ৷৷ দিবার্ককিরণৈ

क्ष्रे॰ म्ल्ये मिन्क्देत निनि । অৰক মনভিষ্যন্দি তত্ত্ব্ব্যুণ গগ-नायूना ॥ वयामु हत्रिख घटेनः म-হোরগা বিষতি কীট লূতাশ্চ । তদ্বিষ জুষ্ট মপেষ° খজল মগ-স্ত্যোদযাৎ পূৰ্ব॰ ॥ কালেন পক্ব॰ নিৰ্দ্দোষ সগস্ত্যেনাবিষীকৃত° । হংসোদক নিতি খ্যাতং শারদং বিমল' জল' ৷৷ ইতি রাজবল্লভঃ ॥ 🕸॥ অথ তস্য ভেদাঃ। পানী-যং মুনিভিঃ প্রোক্তং দিব্য• ভৌ-ম মিতি দিপা। নিবাণ চতুর্বিধণ প্রোক্তণ ধারাজণ করকাভবণ য়া তোষারঞ্চ ভথা হৈন° ভেষু ধার° গুণাধিকণ।। 🗱।। তত্র ধারস্য ল-ক্ষণ গুণাশ্চ। ধারাভিঃ পতিত° তোৰ গৃহীত ক্ষীতবাসমা। শিলামাণ বসুধামাণ বা ধৌতা-যাণ গতিতণ চ য়ৎ ৷৷ সৌবৰ্ণে রাজতে তামেু ক্ষাটিকে কাচ-নিৰ্ম্মিতে। ভাজনে মৃন্মযে চাপি স্থাপিত॰ ধার মূচ্যতে ৷৷ ধার-নীর তিদোষম মনিদেশ্য রসং লঘু। সৌমা॰ রসাঘন॰ বল্যা॰ ত-পণ্ হ্লাদি জীবনং ॥ পাচনং ম-তিকৃমূष्ट्। उद्धा माश्यम क्रमान् । তৃফা॰ হরতি তৎ পথ্য॰ বিশে- 🛮

যাৎ প্রাবৃষি স্মৃত ।। 🟶 🛭 অথ ধারা জলস্য ভেদে। ধারা জ-नक्ष विविधः भात्र मानूष (छन-**७: । ७** जा**भ भा**गू प्रत्या र्न-ক্ষণ গুণাশ্চ। আকাশগঙ্গা স-यक्ति जलगामाय मिश्शजाः । মেষৈ রন্তরিতা বৃষ্টীঃ স্বস্থীতি বচঃ সতাং ৷৷ গান্ধ মাশ্বযুক্তে মাসি প্রায়ে। বর্ষতি বারিদঃ। স-**ৰ্ব**থা **তজ্জল° দেয° তথৈ**ব চরকে বচঃ।। স্থাপিত॰ হৈমনে পাত্রে রাজতে নৃমধে ২পিবা। শাল্যমণ যেন সংসিক্তং ভবেদক্লেদি বর্ণবৎ **॥ তৎ গাদ্র° স**র্ব দোষত্ব° জ্রেব° সামুদ্র মন্যথা। তত্ত্ব সঁকার ল-वन ७ छ मृष्टि वना १२० ॥ वि-मुक्ष मिर्वा शिक् भर्व कर्म्म मू গহিত । সামুদ্র স্বাশ্বিনে মাসি শুণৈ গাঙ্গবদাদিশেৎ !৷ যতো ২গস্তাস্য বিপ্রয়ের রুদ্যাৎ সক-ल॰ জल॰। निर्म्मल॰ निर्दिय॰ स्नामृ र्थकन भागति। यन ॥ 🕸 ॥ ততএবাহ। ফুৎকার বিষ বাতে-न नागानाः त्यानातिनाः বৰ্ষাসু সবিষ তোষ দিবা স-প্যাশ্বিন বিনা 11 ইতি ভাব-প্ৰকাশঃ 11

বৃঠিমী স্ত্রী ভূপপর্ণিক। । গুজ-রাটীএলাইচ ইতি ভাষা ৷ ইতি শক্চন্দ্ৰিকা ৷৷ বৃষ্টিনাশকে ত্ৰি বৃষ্ঠিজীবনঃ ত্রি দেবমাতৃকদে-**मः ।** ३७ ( १ राजकः ॥ वृद्धि জীবনং যদ্য সঃ ॥ বৃষ্টিভূঃ পু॰ ভেকঃ।ইতিহারা-বলী ॥ বৃধিভবে ত্রি ॥ পু॰ মেযঃ। ইত্যমরঃ॥ याप्यः । ३७ भक्तज्ञावनी ॥ কৃষ্ণঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেবঃ॥ বৃষ্ণিঃ ত্রি পাষ্ডঃ ৷৷ চঙঃ ৷ ইতি শব্দরত্বাবলী। वृक्तिगर्नुः पू॰ बीक्कः । देखि श्रादावा ॥ বৃষ্য° ক্লী বাজীকর°। ইতি রাজ-निर्घन्छेः ।। বৃষ্যঃ পু॰ মাষঃ। ইতি হেমচক্রঃ বৃষ্যঃ ত্রি শুক্রবৃদ্ধিকারকৌষ-ধাঁদিঃ। ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ।। বৃষ্যকলা ত্রী বিদারী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বৃষ্যগন্ধ। ত্রী বৃদ্ধদারকঃ।ইতি শব্দরহাবলী।। ব্যাগদ্ধিকা দ্রী অভিবলা।ইতি त्राङ्गिगिर्यन्छेः ॥ नृश्यदिल्ल 🏖 विमाती। ইভি 🛚

त्राजनिर्घन्छैः ॥ वृष्ण। ङ्वी श्रष्टिनाटमीयथः। ইতি রত্নমালা।। শতাব্রী।। আম-लकी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। বৃহ ই কি দ্বিষি।ইতি কবিকল্প-দ্রুনঃ ।! সপ্তসম্বরী। ই বৃংহ্যতে । कि वृ॰रुषि वृ॰रुषि । हैवि मशानामः ॥ वृष्ट्र इत् ४८न ॥ श्राप्ति । इंडि कविकन्नफ्रमः ॥ हेत् ज्यृह् । অবহী ৭। ধনঃ শব্দঃ। ঋদ্ধি व् किः। ३०ि मूर्गामामः॥ तुर हे ४८न !। भएको । **मश्रम**यती । ই বৃংহ্ডে । ববৃংহিরে গজ পত্ৰঃ। ইতি নামঃ।। আয়নে-পদ॰ প্রানাদিতি বল্লভঃ 1 ধন-শ্চেতি হস্তি কর্তৃকঃ। কৃংহিত করি গজিত মিত্যম**্**নণ্ছাৎ। বৃ॰হিত॰ করি গর্জাযা॰ শব্দম।-ত্রেপি কথ্যতে। ইতি শব্দমহার্ণ-বাৎ। কলাচিদন্যকতৃ কোপি। তেন ঞীহ্য চরিতে সিণ্ছ বৃণ্ছিত নিতি বানভট প্রযোগঃ ৷ ইতি जगानामः॥ वृह - वृष्को। ইতি কবিকন্পদ্রসং ।। বহুতি। বৃহি ধুনর্দ্ধ্যো রিত্য-নেনৈবেফীসিন্ধে ২স্য পাঠো

1.2

বৃত্ত বুবল বর্জনার্থঃ । বিষ্ণ করে নেরেক সিদ্ধে তত্র ঋ-দ্বি এছণ পরত্রান্বৃত্ত্যর্থ মেব। অংশ ধাত্ঃ কৈশ্চিমমন্যতে । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

বৃহ শ উ উন্যমে। ইতি কবিকন্মক্রমঃ।। শ বৃহতি। উ অবহীৎ। জবৃহৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

বৃহজঞ্ঃ পু॰ মহাচঞ্শাকঃ। ইতিরাজনির্ণটঃ॥

বৃহচ্চিত্তঃ পু॰ ফলপূরঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

বৃহত্তব্ধ পু॰ চিস্কটনৎসাঃ। ইতি জটাধরঃ॥

বৃহজ্ঞীনতী স্ত্ৰী বৃহজ্জীবন্তিক।
বৃক্ষঃ তেৎপৰ্য্যায়ঃ । পত্ৰভদ্ৰা
২ প্ৰিয়ঙ্করী ৩ মধুরা ৪ জীবপুক্তা ৫ বৃহজ্জীবা ৬ যশক্ষরী
৭ ৷ অস্যা গুণাঃ । বহুবীৰ্য্যদাতৃত্বণ ভূতবিদ্রাবনত্বণ ৷ বেগাদ্রমনিষামকত্বণ ৷ ইতি রাজনির্ম্বলীঃ ।
বৃহড্টক্কা স্ত্রী চকাবিশেষঃ ৷ ম্থা

বৃহতী

। বৃহজ্চক্কা তু তেরী স্ত্রী পুমান দুন্দুভি রানকঃ । জগভঃ প্রতি-পতূর্য্য মানকঃ পটছো স্ত্রিয়াণ ।। ইতি জটাধবঃ ।।

॥ ইতি জুটাধবঃ॥ বৃহতিক। স্ত্রী উত্তরীমবস্ত্রণ।ইত্য-মরঃ।। বৃহতী। ইতি রল্নাল।।। বৃহতী স্ত্ৰী কুজবাৰ্তাকী। ব্যাসড ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। মহ-তী ২ ক্রান্তা ৩ বার্ত্তাকী ৪ সিণ-হিকা ৫ দলী ৬রাফ্টিকা ৭ স্থল-কণ্টা ৮ ভণ্টাকী ১ মহোটিকা ১০ বহুপত্রী ১১ কণ্টতনুঃ ১২ কণ্টালুঃ ১৩ কট্যালা ১৪ ডো-রজী ১৫ বনবৃত্তাকী ১৬। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। সি॰হী ১৭ প্রস-হা ১৮ রক্তপাকী ১৯ লতাবৃহ-তিকা ২০। ইতি রত্নমালা ।। অসা। গুণাঃ ৷ কটু স্ব॰ ৷ ভিক্তস্ব৽ । উক্তরণ বাত জ্রারোচকাম কাশ গ্রাস হুজোগ নাশিত্বগু । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ 11 অপিচ 1 বৃহতী পাচনী সোফা গ্রাহিণী বাতনাশিনী। ইতি রাজবল্লভঃ ॥ 🗱 ॥ महठी । हेळामदः ॥ উ-তরীযবস্ত্রণ।। বারিধানী।। বাক্ ।। কণ্টকারী। ইতি মেদিনী।। ष्ट्रिलाएडमः। मञ् नवाकत

পাদঃ। যথা। উক্থা ২ত্যুক্থা তথা মধ্যা প্ৰতিষ্ঠান্যা সুপূৰ্বিকা ৷ গাষত্র্যফিক্ অনুষ্ঠুপ্ চ বৃহতী প॰ক্তিরেব চ ।। ইত্যাদি। তদ্ভে-দানাহ। নবাক্ষরা যথা। ভুজগ শিশুসুতা নৌমঃ। হুদতট নি-কটকোণী ভুজগ শিশুসূতা যা দীৎ শেমুররিপু দলিতে নাগে ব্ৰজজন সুখদ। সাভূৎ ॥ যুতে-ত্যেব॰ শস্তু প্রভৃতিযু পাঠঃ । ভূতেত্যেব মাধুনিকাঃ পঠন্তি। স্যান্মণি মধ্য চেন্ডমসাঃ। কা-লিয় ভোগা ভোগ গত স্তন্মণি মধ্যক্ষীতরুচা। চিত্রপদা ভো-নন্দসূত শ্চারু ননর্ত্ত স্মের মুখঃ ।। সজরৈ ভুজিঙ্গ সঙ্গতা। তর-লা তরঙ্গ রিঙ্গিতৈ র্যমূনা ভুজ-**ঙ্গ সঙ্গতা। কথ মেতু বৎসচা**র-क म्हलनः मरेमव তा॰ श्राः ॥ ইতি ছন্দোমঞ্জরী ॥ বৃহতীপতিঃ পু॰ বৃহম্পতিঃ। ইতি **ट्याञ्यः** ॥ वृह्द जि मह्दा हे छामद्वः॥ वृह्दकः वि वृह्द। वृह्दमकाद কণ প্রত্যযেন নিষ্পদঃ।। বৃহৎকনঃ পু॰ গৃঞ্জনঃ। ইতি | বৃহৎপারেবত॰ ক্লী মহাপারে-রত্নমালা ।! বিষ্ণুকশঃ । ইতি 🌓 বত । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ 🗵

द्राकिनिर्घन्छैः ॥ বৃহৎকালশাকঃ পু• শোথজি-शः। वृश्यकालकामुक्तिया देखि ভাষা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ বৃহৎকাশঃ পু॰ খড্গটঃ। খাগ্ডা ইতি ভাষা। ইতি হারাবলী।। বৃহৎস্বকিঃ ত্রি তুন্দিলঃ।ই**ত্য**-यतः ॥ বৃহতালঃ পু॰ হিস্তালঃ। ইতি রাজনির্যন্টঃ ॥ বৃহত্তিক্তা স্ত্রী পাঠা ৷ ইতি রাজ্র-निर्घकः॥ বৃহত্তৃণঃ পু<sup>•</sup> বংশ্যাইতি শব্দ-চব্ৰিক। ॥ বৃহত্ত্বক্ পু॰ গ্রহনাশনবৃক্ষঃ। ছাতিযান ইতি ভাষা । ইতি त्रव्यान।।। वृह<পত्रः *पु*॰ হস্তিক<sup>ন</sup>। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ বৃহৎপত্রা স্ত্রী ত্রিপর্নিকা।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বৃহৎপাটলিঃ পু॰ ধুস্তুরঃ।ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। বৃহৎপাদঃ পু॰ বটবৃক্ষঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিক। 11

वृश्यानी पूर् वनजीतः। इंछ ॥ রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ वृरू भीनः भू भराशीनः। इंठि

রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

বৃহৎপুল্গী স্ত্রী ঘণ্টারবা।ইছি ্জটাধরঃ ॥

পু॰ চচেণ্ডা। ইতি বৃহৎফলঃ ताङ्गिर्विष्टैः ॥

वृरुष्कना खी कर्वृज्यी॥ मररू-জ্বারুণী।। স্বসাঞ্চী।। মহাজ-

ষুঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। व्यमभः भुः गण्भकः। हेवि

শक्छिका॥

वृह्मक्षः पुं ऋकाकतः। काम्-রাজা ইতি ভাষা । ইতি শব্দ-

চন্দ্ৰকা 11

व्रापन। खी कृतना। रेठि রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

वृहमगृहः पु॰ काबरामभः। मञ् বিন্ধাপৰ্বতন্য পশ্চাৎ মালব-(मनमा निकट वर्ड .७। इंडि হেনচন্দ্রঃ॥ ত্রিকাওশেষে বৃহ-

मधर्रेजि लाउँ ॥

বৃহদ্যোল° ক্লী শীর্ণবৃত্ত°।তর-মূজ ইতি ভাষ'। ইতি শব্দ-

<u> চिखिक्। ॥</u>

वृश्मनः भू॰ शिष्ठिकारनाधुः॥ ॥

বৃহ্য

रिछानः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ वृश्कन॰ क्षी महानात्रन॰। তৎ शर्यायः। श्लिः २। ইতি **बिक**ि

**७८**भयः ॥ वृश्छणितिका औ मूर्गा। हैि मक्नाना ॥

বৃহন্তানুঃ পুণ অগিঃ 11 চিত্রক-বৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ॥

वृह्फ्यः भु॰ हेलाः॥ यञ्जनावः। मखितिस्थिः ॥ मागतमाः ॥

নদীবিশেষে স্ত্রী। ইতিকেচিৎা। বৃহদ্যাবী পু॰ ক্ষুদ্রোলূকঃ।ইতি ब्राजनिर्घकः॥

বৃহদক্ষঃ পু॰ পটিকালোধুঃ।

ইতি রাজবল্লভঃ ॥

বৃহদাতঃ পু॰ অশারীহরঃ। দে-ধান ইতি ভাষা। ইতি রত্নমালা বৃহদারণী স্ত্রী মহেন্দ্রবারণী।

ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ 11 বৃহদ্বীজঃ পু॰ আসুভকঃ। ইতি শক্তন্ত্রিকা ॥

বৃহয়লঃ পু॰ নহাপোটগলঃ। ইতি নেদিনী ।। অজ্নঃ । যথা

1 পার্থঃ কিরীটী গাঙীবী গুডা-

কেশো বৃহম্লঃ। অজুনঃ ফা-ল্পুনো জিকু বিজয়ক্ত ধনঞ্জয়ঃ

।। সব্যসাতী সুভদ্রেশঃ শব্দভে-

দী কপিধজঃ। বার্তাম শচাপি বীভৎসু রিতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ অপিচ। অজুনঃ ফাল্গুনঃ পা-র্থঃ সব্যসাচী ধনঞ্জযঃ। রাধা-বেধী কিরীটোন্সী জিক্ষু শ্বেত-হযো নরঃ।। বৃহন্নলো গুডাকে-শঃ সুভজেশঃ কপিশ্বজঃ 1 থী-ভৎসুঃ কণ্জিত্তস্য গাণ্ডীবং গা-ণ্ডিব॰ ধনুঃ।। ইতি হেমচক্রঃ।। বৃহন্নলা জ্রী অজুনঃ।ইতি মে দিনী।। দাদশবর্ষ বনবাসানন্তর মজ্ঞাতবাসে বিরাটভবনে বি-রাট কন্যায়া নৃত্যগীতাদি শি-ক্ষার্থ॰ গ্রীক্লীব বেশেনার্জুনে। বৃহয়লেতি নায়া খাাতে৷ ২ভূৎ । यथा। अर्जून উवाठ। गायानि न्ञागाथ वोषयागि ভটোञि নৃত্যে সশলো ২িম্ম গীতে। স্ব-गुलुद्धारेय श्रीमिय गा॰ यग॰ ভবামি দেব্যা নরদেব নর্ত্তকঃ॥ ইদন্ত ৰূপ° মম যেন কিন্তব প্ৰকীৰ্ত্তবিদ্বা ভূশ শোক বৰ্দ্ধ ন॰। বৃহ্নলা॰ না॰ নরদেব বি দ্ধি সূত্রণ বা পিতৃ মাতৃ বৰ্জিতাও ।। বিরাট উন্দের্গ দানি তে হন্ত বরু কুম্মতে স্ ভাঞ্চ **নে নৰ্ত্য বাশ**ে চাৰ্থীয়। 🎚

ইতি মহাভারতে বিরাটপর্ব ॥ বৃহস্পতিঃ পু॰ অঙ্গিরসঃ পুত্রঃ। স চ দেবানাও গুরুঃ ধর্মাশাস্ত্র-প্রযোজকঃ নবগ্রহ মধ্যে পঞ্চন-গ্রহশ্চ। তৎপর্যায়ঃ। সুরা-চার্য্যঃ ২ গীষ্পতিঃ ৩ ধিষণঃ ৪ গুরুঃ ৫ জীবঃ ৬ আঙ্গিরসঃ ৭ বাচস্পতিঃ ৮ চিত্রশিখণ্ডিজঃ ৯ । ইত্যমরঃ ॥ উত্থ্যানুজঃ ১০ গোবিন্দঃ ১১ চারুঃ ১২ দ্বাদশ-রশিঃ ১৩ গিরীশঃ ১৪ নিদিবঃ ১৫ পূৰ্বকল্ গুনী ভবঃ ১৬। ইতি জটাধরঃ ॥ সুরগুরুঃ ১৭ বাক-পতিঃ ১৮ বচসাপতিঃ ১৯ ই-ক্রেজ্যঃ ২০ দেবেজ্যঃ ২১ বৃহ্-ভাষ্পতিঃ ২২ ইজ্যঃ ২৩ বাগী-শঃ ২৪ চক্ষাঃ ২৫ দীদিবিঃ ২৬ द्याप्तर्भक्तः २१ आक्रालखनः ২৮ গীরথঃ ২৯। ইতি শব্দরত্না-বলী ।। স চ পীতবর্ণঃ । ঈশান-কোণ পুৰুষ ভ্ৰাহ্মণজাতি ঋথে-রাশি পুষ্যনক্ষত্র বস্ত্র পুষ্পরাগ-মণি সিন্ধদেশানা॰ অধিপতিঃ। उङ्ग्लगतीतः। शब्रुः। ठङ्-্র জ্যা অক্ষ বর কনগুলু দওধা-রা। অন্যাধিদেবতা ব্রহ্মা। প্র- তাধিদেবত। ইক্রঃ। সূত্র সূর্য্যা-স্যঃ। অন্ধিরে। মুনিণুত্রঃ। প্রাতঃ কালে প্রবলঃ। শুভগ্রহঃ। দেব-। गृरसामी। वृक्षः। त्रकः प्रवामी । বাত পিত্ত ককা য়কঃ। বণিক্ কর্মকর্তা। অঙ্গিরো গোত্রঃ। ইতি গ্রহ্যাগতজ্বানবঃ॥ 🕸॥ ত-দার জাতফলণ। নৃপেন্দ্র নূজী নৃপ-লব্ধকামো বিদ্যা,বিনোদী চতু-রঃ প্রগল্ভঃ। আচার্যাপূজ্যো। মধুরস্বভাবে। বারে ভবেদেব-গুরো মনুষ্যঃ ॥ ইতি কোষ্ঠীপ্র-যথা। মহেন্দ্র উবাচ। কথং বা দেবকর্তু শ্চ সিদ্ধানা থোগিনা গুরোঃ। মৃত্যুঞ্জযস্য শস্তোশ্চ গু-ৰূপুত্ৰে। বৃহস্পতিঃ ।। ততো জ্ঞা-নী মহাদেবঃ কথং শিষ্যো গুরোঃ পিতুঃ। ব্ৰহ্মোবাচ। কথেয় মতি-গুপ্তা চ পুরাণেযু পুরন্দর । ইমাণ পুরা প্রবৃত্তিঞ্চ কথযানি নিশাম-य ॥ गृতवरमा कर्माः नायान्वार्या অঙ্গিরসঃ পুরা। ব্রতং চকার ম-দ্বাক্যাৎ কৃষ্ণম্য পর্মাত্মনঃ ॥ ব্রত॰ পুণসবন নাম বর্য মেকণ চকার সা। সনৎস্নারো ভগ-বান্ কারবামাস তা॰ বত॰ য স্বেচ্ছাময়ঃ পর° ব্রহ্ম ভক্তানুগ্র-হবিগ্ৰহঃ । তদাগত্য চ গোলো-কাৎ পরমান্ত্রা কৃপামষঃ 11 স ব্রতানশনক্ষীণাও তাসুবাচ কৃপা-নিধিঃ ৷ প্রণতা॰ মাশ্রুনেতাঞ্চ বিনীতাঞ্চ তথা স্কুতঃ 11 শ্রীকৃষ্ণ উবাচ। গৃহাণেদ॰ যুজ্জকল মম তেজঃ সময়িত । ভুজ্ফ মদ্বর-পুত্র স্তে ভবিষ্যতি মদণ্শতঃ ৷৷ পতি গুরুশ্চ দেবানাণ বৃহতাণ জ্ঞানিনা॰ বরঃ। পুত্র স্তে ভবিতা সাধি মদ্বরেণ ভরিষ্যতি ।। মদ্বরেণ ভবেদেয়। হি সচ মদ্বপুত্রকঃ। ত্বলার্ত্তে মন পুত্রোষণ চিরজীবী ভবিষ্যতি ॥ ব্রজে। বীর্য্যজ শৈচ-ব ক্ষুত্রজঃ পালক স্তথা। বিদ্যা মন্ত্ৰ সূতানাঞ্গৃহীতঃ সপ্তমঃ সু-তঃ।। ইত্যুক্ত্ব। রাধিকানাথঃ স্ব-र्लाक्क घरयो भूता। शिक्कवत-भूट्यायः छ। नी मूत्र छङ्गः ययः॥ মৃত্যুঞ্জয় মহাজ্ঞান শিবায় প্র-দদৌ পুরা। দিব্যং বর্ষ ত্রিলক্ষঞ্চ তপংকত্রে হিনাল্যে ॥ সুযোগ জ্ঞান মমল° তেজঃ স্বাদ্যা সম° পরণ স্ব শক্তি বিষ্ণু মারাঞ্চ স্বাণ-শঞ্চ বাছন প্ৰত 11 স্বশূলঞ্জ স্ব-কবচ॰ স্বযন্ত্রণ দাদশাক্ষরণ। কৃ-

পামযঃ স্তুত স্তেন শ্রীকৃষ্ণশ্চ প-রাৎপরঃ ৷৷ শিবলোকে শিবা সা চ विक्यांचा निविधिया। निक नीतायनरमाय॰ टिन नीतायनी স্থৃত।।। তেজঃসু সর্ব দেবানা॰ সাবিভূত। সনাতনী । জ্যান দৈত্যনিকর° দেবেভ্যঃ প্রদদৌ পদে ৷৷ কল্পতিত্ত দক্ষকন্যা চ সা মূলপ্রকৃতিঃ সতী । পিতৃযজ্ঞে তনুং ত্যক্ত্ৰা যোগেন সিদ্ধযো-গিনী ॥ বভূব শৈলকন্যা স। সাধীচ ভত্নিন্দ্যা। কালেন কৃষ্ণ তপসা শঙ্করণ প্রাপ শঙ্করী ।। শ্রীকৃফো হি গুরুঃ শস্তোঃ প-রমাত্মা পরাৎপরঃ। কৃষ্ণস্য বর-পুত্রোয॰ স্বয় মের বৃহস্পতিঃ।। অতো হেতোঃ সুরগুরুঃ গুরু-পুত্ৰঃ শিবস্য চ। ইতি ব্ৰহ্মবৈব-ৰ্ত্তে প্ৰকৃতিখণ্ডে ৫৬ অধ্যাযঃ।। বৃহস্পতিচক্রণ ক্লী নৃণাণ শুভা-শুভজ্ঞানার্থ বৃহস্পতি সঞ্চার-কালীন নক্ষত্রাদি সপ্তবিংশতি নক্তব্রক্ত নরাকারচক্রণ যথা । শীর্ষে চত্বারি রাজ্য॰ জলধি র-পি করে দক্ষিণে চাপি জৌখাণ চৈকণ কণ্ঠে বিভূতিণ মদন শর-নিত॰ বক্ষসি প্রীতিন॰হ॰। পাদ-

স্থাঃ ষট্ চ পীডা॰ পুন রপি জ-লিধ বামহস্তে চ মৃত্যু॰ নেত্রে ত্রীণি প্রদদ্যঃ মুখ মথ নিজভে বাক্পতেঃ সংক্রমক্ষাৎ ।৷ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বু॰ ।৷

বৃক্ষ ও বৃত্তো। ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ

॥ সপ্তমম্বরী। ও বৃক্ষতে বরং

কন্যা। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

वृक्कः पु॰ श्वावत्रयानिवित्यवः। গাছ ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যাযঃ। মহীরুহঃ ২ শাখী ৩ বিটপী 8 পাদপঃ ৫ তরুঃ ৬ অনোকহঃ ৭ স্টঃ ৮ সালঃ ৯ পলাশী ১০ দ্রুঃ ১১ দ্রুমঃ ১২ অগমঃ ১৩ ৷ ইত্য-মরঃ ॥ অগচ্ছঃ ১৪ বিষ্টরঃ ১৫ মহীরুট্ ১৬ স্পচিঃ ১৭ স্থিরঃ ১৮ কারস্করঃ ১৯ নাঃ ২০ অগঃ ২১ **স্টার ২২। ইতি শব্দ**্ধাবলী ॥ নিটপঃ ২৩ জ্বজ্ঞঃ ২৪ বন-স্পতিঃ ২৫ অদ্রিঃ ২৬ শিখরী ২৭ স্ঠঃ ২৮। ইতি জটাধরঃ ৷৷ সঞ্জঃ ২৯ জিতিরুহঃ ৩০ অ-জ্মিুপঃ ৩১ ভূরুহঃ ৩২ ভ্জঃ ৩৩ মহীজঃ ৩৪ ধরণীব্রুহঃ ৩৫ ক্ষিতিজ্ঞঃ ৩৬ শ'লঃ ৩৭৷ ইতি त्राजिगिर्यक्षेः॥ 🕸 ॥ 🖭 यष्ट्-জाত यथा। जत्रकाला जन

वीका मृतका खृश्यतामयः। श-र्वस्थानय रेकृष्णाः ऋऋजाः मः ह्मकी मुथाः ॥ भानगामरम। वी-**जरूराः म**॰मृष्ट्जा ख्नामगः । স্যু ৰ্বনস্পতিকাষস্য ষডেতে মূ-্ল জাত্যঃ॥ ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ সংস্বেদজাপি বিজেব। বৃক্ষ গো পশু জন্তবঃ৷ ইত্যন্নিপুরাণণাঞ্চা৷ **७ फुथ** पर्का यथा । श्री ७ गरान्-বাচ। আশ্রমে নারিকেলশ্চ গৃ-হিণাঞ্চ ধনপ্রদঃ। শিবিরস্য যদী-শানে পূৰ্বে পুত্ৰপ্ৰদ স্তৰুঃ।। সৰ্ব-ত্র মঙ্গলার্ছক তরুরাজো মনো-হরঃ ৷ রসাল বৃক্ষঃ পূর্বসিম্বৃণাণ সম্পৎপ্রদ স্তথা !! শুভপ্রদশ্চ সৰ্বত্ৰ সুৱকাৱে। নিশাময়।বিলু-শ্চ পনস শৈচৰ জম্বীরো বদরী তথা।। প্ৰজাপ্ৰদশ্চ পূৰ্বিমান্ দ ক্ষিণে ধনদ স্তথা। সম্পৎপ্রদশ্চ সৰ্বত্ৰ যতে।হি বৰ্দ্ধতে গৃহী॥জম্বু-বৃক্ষশ্চ দাডিয়ঃ কদন্যামূ।তক স্ত-था। रक्ष्यनम्ह शूर्वियन मन्दिन মিত্রদ স্তথা।। সর্বত্র শুভদ শৈচব ধন পুত্র শুভপ্রদঃ। হরপ্রদে। গু-বাকশ্চ দক্ষিণে, পশ্চিমে তথা।। ঈশানে সুখদ কৈচব সৰ্বত্ৰৈবং নি-শান্য । সৰ্বত্ৰ চম্পকঃ শুদ্ধো।

ভূবি ভদ্ৰপ্ৰদ স্তথা।। অলাবূশ্চা-পি সন্মাণ্ডো মাযায়ুশ্চসুকাসুকঃ । थक्क ती कर्क है। हालि निविद्य **मञ्जलक्षमा ॥ वाख्रुकः काরবিলু-**শ্চ বার্তাঙ্গশ্চ শুভপ্রদা। লতা-ফলঞ্চ শুভদ সর্বণ সর্বত্র নিশ্চি-ত॰।। 🗱।। নিবিদ্ধবৃক্ষা যথা। প্র-শস্ত॰ কথিত॰ কারো নিষিদ্ধঞ্চ निशामय। वनावृत्क। निविक्त भठ শিবিরে নগরে পিচ।। বটো নিষি-দ্ধঃ শিবিরে নিত্যুণ চৌরভয়ণ ত-তঃ। নগরেষু প্রসিদ্ধশ্চ দর্শনাৎ পুণ্যদ স্তথা।। হেকারো তিস্তিডী বৃক্ষো যত্নাত্ত॰ পরিবর্জ্জবৈৎ । শরেণ ধনহানিঃ স্যাৎ প্রজাহা-নি ভবেদ্ধুব ।। শিবিরে ২তিনি-যিদ্ধশ্চ নগরে কিঞ্চিদেব্চ। ন নিষিদ্ধঃ প্রসিদ্ধশ্চ নগরেষু তথা পুরে॥ বাট্যা মতিনিবিদ্ধশ্চ প্রা-জ্ঞ স্ত॰ পরিবর্জ্জযেৎ। খজ্ঞু রশ্চ ডহু শৈৰে নিষিদ্ধঃ শিবিরে তথা ॥ ন নিষিদ্ধঃ প্রসিক্ষ+চ প্রানেযু নগরেষু চ। বৃক্ষণ্ড চণকাদীনা॰ थानाथः गञ्जनथानः ॥ आरम्यू न-গরে চাপি শিবিরে চ তথৈব চ। ইক্বকশ্চ শুভদঃ সম্ভত শুভ-দ স্তথা !৷ অশোকশ্চ শিরীষশ্চ

কদস্বশ্চ শুভপ্রদঃ। কচ্বী হরিজা শুভদা শুভদ শ্চাদ্রক স্তথা ৷৷ হ-রীতকী চ শুভদ। গ্রামেষ নগরেষু চ। ন বাট্যাণ ভদ্রদা নিত্যণ তথা চামলকী ধুবং৷৷ ইতি ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্তে শ্ৰীকৃকজন্মখণ্ডে ১০২ অধ্যায়ঃ।। অপিচা অপুত্রস্যা চ পুত্রস্বং পা-দপা ইহ সৰ্বতে। যত্নেনাপি চ রাজেন্দ্র অশ্বখারোপণ সরু ৷৷ স তে পুত্ৰ সহসূৰ্ণাণ কাৰ্য্য মেকঃ করিয়াতি। ধনী চাশ্বখবৃক্ষেণ অ-শোকঃ শোকনাশনঃ ৷৷ প্লকো যজপ্রদঃ প্রোক্তো নিয়শ্চাসূপ্র-দঃস্তঃ। জযুকী নাকদা প্রোক্তা ভাষ্যাদা দাড়িদী তথা ৷৷ ডুম্বরো য়োগনাশায় পলাশো বন্ধদ ত্ত-থা। অর্কপুষ্পা রোপকাণাণ নি-ত্যুণ তুষ্যেদ্দিবাকরঃ ॥ শ্রীবৃক্ষঃ শঙ্করো দেবঃ পাটলাযান্ত পার্ব-**ी। नि**॰मशाया मश्मत्रमः **म**त्न গন্ধৰ্ব সত্তনাঃ।। বিভীতকে দাস বৃক্তি বঁজলো দাস্যদ স্তথা। অ-পত্যনাশক স্তালো বঙ্গলঃ সল-বর্দ্ধনঃ ৷৷ বহুভার্য্যা নারিকেলী জাক্ষঃ স্বাসস্করঃ। রতিপ্রদা তথা কেলী কেতকী সৰ্বনাশিনী ॥ প্রতিষ্ঠাণ তে গমিষ্যন্তি যে ন-

রাঃ প্রক্রোপকাঃ। ইতি পাচ্ছে সৃষ্টিখণ্ডে বৃক্ষারোপণ নাম ২৬ অধ্যায়ঃ ॥ ৠ॥ অস্য রোগণ ফ-लः। यम উবাচ। বৃক্ষ গুলা লভা বল্ল্য স্তৃক্সার। স্তৃণজাতযঃ । য-ডেতে বৃক্ষ জাতীয়া স্তাসাণ ক্লো-পে ফল॰ শৃগু॥ যঃ পুনান্ রোপ-ষেদৃক্ষান্ ছায়া পুষ্প কলোপগা-ন্। সৰ্ব সন্বোপভোগায় স্বাতি পরমাণ গতিও।। ছাষা পুস্পোপ-গা॰ স্ত্রি॰শৎ কল পুষ্প ক্রমাণ স্ত-থা।রোপযিত্বা দশানাুণ্স্ত নরে। ন নরকং ব্রজেৎ ৷৷ দেব দানব গ-ন্ধৰাঃ কিমরোরগ গুহুকাঃ ৷ পশু পক্ষি ননুষ্যাশ্চ সংশ্রযন্তি নুদা क्तिगान् ॥ शूरेणाः मूत्रगणाः मर्त्व ফলৈশ্চ পিতরঃ সদা। ছুস্যা মে মনুষ্যা স্ত পশু পক্ষি মৃগা স্তথা।। পুষ্পোপগন্ধান্দ কলোপগন্ধান্ যঃপাদপানোপযতে মনুযাঃ। স-মৃদ্ধদেশে বরবেশ্য বেদ্যা° লভে-দধিষ্ঠান বর° স বিপ্রঃ।। তক্ষাৎ সুবহবো বৃক্ষা রোপ্যাঃ শ্রেবো-ভি বাঞ্চতা। পুত্রবৎ পরিপা-ল্যাশ্চ তে পুত্ৰা ধৰ্মতঃ স্মৃতাঃ ॥ কি॰ ধর্মা বিষুধৈ ম'ভৈটঃ কেবল স্বার্থ হেতুভিঃ। তরুপুত্র। বরু

যে তু পরাথৈঁকানূবৃত্তযঃ।। পত্র ·পুষ্প কল চ্ছায়া মূল ব**ন্ধল দা**রু-ভিঃ। পরেষা নুপজ≢ন্তি তারযন্তি পিতামহান্ ॥ ছেতার মপি স॰-প্রাপ্ত ছাষ। পূষ্ণ ফলানিভিঃ। .পূজযন্ত্যেব তরবে। মূনিবদ্বেষ ব-র্জিতাঃ ৷৷ পিতরু নোপহিৎসন্তি জন্। জবিণ লে ভতঃ । তার্যন্তি ह ति नगक् नवनगाविशामाय-কাঃ॥ তন্মাত্তে পুত্ৰবৎ হাপা। विविविष्कुष्ठभूत्रव । विदेषः शिकु মনুয্যাণা মভোজ্যাঃ স্যূ র্যদা স-मा ॥ জলकृ ८ तृक्रद्वाशी यः थ-তিগ্রাহারুচি দ্বিজঃ ৷ এতে স্বর্গা-**ন্ন** হীয়ন্তেয়ে চান্যে সত্য বাদিনঃ ॥ ইত্যালো বক্লিপুরাণে তডাগ वृक्त अन्भा ना ग्वायः ॥ 🕸 ॥ অপিচ। ভূনিদানেন যে লোকা গোদানেন চ কীৰ্ত্তিভাঃ। তে লোকাঃ প্রাপ্যতে পুর্ভিঃ পাদ পানা॰ প্রবাহণে ৷৷ অশ্বর্থ মেক॰ পিচ্যদি মেক° ন্যহোধ মেক° দশ পুষ্পজাতীঃ ! দে দে তথা দাডিম মাতুলিঙ্গে পঞ্চামুবাগী নরকণন যাতি ৷ যথা সুপুত্রঃ স্ব-লসুদ্ধরেদ্ধি যথাতিকৃৎসান্নিষ্ম-প্রবন্ধাৎ। তথাত বৃক্ষাঃ ফল পু-

তা ভূতাঃ স্বং স্বামিনং নরকাদু-ষ্ণরন্তি ।। গোকর্ণ উবাচ । ইন্ধ-নাৰ্ফ যথা নীত মগ্নিহোত্ৰ ত-দুচ্যতে ॥ ছাযা বিশ্রাম পথিকৈঃ ত্বগাদী স্চ ঔষধার্থন্ত দেহিনা ॥ উপন্দর্ষন্তি বৃক্ষস্য পঞ্যজ্ঞঃ স উঢ়াতে। গৃহ কৃত্যানি কফীনি ফুজজন্ত গৃহ। স্তথা ।। সত্ৰ নিৰ্বৰ্ত-ন॰ প্রোক্ত॰ ভিক্ষা পত্রৈঃ সমা-কৃতা। ফলন্তি বৎসরে মধ্যে দ্বি-वातः भाजनामयः ॥ माय्यमतः পিতু মাতু রূপকারণ ফলৈঃ কৃতণ । এবং পুত্র সমারোপ্যা এবং ত-खुविरम। विमुः ॥ ইত। मि वाजार পুরাণে গোকর্ণ মাহাত্ম্য নামা-शायः॥ 🕸 ॥ अटप्ला वृका यथ। । অশ্বংখা বটবৃক্ষশ্চ ন চ্ছেতব্যঃ কদাচন ৷ ন চ্ছেতব্যা বিলুবৃক্ষ উদুম্বরশ্চ কদাচন ৷৷ কর্মাণ্যাশৈচ ব যে বৃক্ষা ন চ্ছেতব্যাঃ কদাচন। ইতি চ বারাহপুরাণে ত্রাহ্মণদী-कामूब॰ नामाशायः ॥ 🕸 ॥ तृ-ক্ষোৎপাতা যথা। পুরেষু ষেষু দৃশ্যন্তে পাদপা শৈচব রোদিতাঃ । রুদন্তো বা হসন্তো বা সূবন্তো व। वशृनुमान्।। অরোগ। व। विन।

বাত॰ শাখা মুঞ্জ্যথ ক্রমাঃ। कनः भूषाः उथा कात्न मर्गय-खि विश्वमाः ॥ পূर्वादञ्चाः मर्भः যন্তি ফল॰ পুষ্পা• তথা ভবেৎ। ক্ষীর প্রেহণ মদ রক্ত মধু তোষ সুবন্তি চ ॥ গুঁশান্তারোগাঃ সহ-সা শুষা রোহন্তি বা পুনঃ। উ ত্তিগ্ৰন্তীহ পতিতাঃ পতস্তি চ ত-থোমতাঃ ৷৷ এবং বক্ষ্যামিতে বন্ধ-ন্ বিপাক ফল মেব চ। রোদনে ব্যাধি মভ্যেতি হসনে দেশ বি-ভূম• ।। শাখাপ্রপতনে স্বর্যাৎ সংগ্রামে যোধপাতন । বালানা यत्र अर्गाषानानाः कन पूर्णि তা।। ৰরাফুভেদ॰ সরুতে ফল পুষ্প মনন্তর । ক্ষয়ণ সর্বত্র গো-**ক্ষীরে স্নেহে দুর্ভিক্ষ লক্ষণ**া। বাহনাপচয় মদ্যু রক্ত সংগ্রাম मानित्य । यथामुत्व ভবেদ্যाधि র্জলম্বাবে ন বর্ষতি ।। অরোগণ শোষণ জ্ঞেষণ ব্ৰহ্মন্ দুৰ্ভিক लकन । शुरुष्यू मः अदह्य स् বীষ্য মন্ত্ৰঞ্চ হীষতে।। উত্থানে পতিতানাঞ্চ ভয় ভেদকর ভ-বেৎ ৷ স্থানাৎ স্থানস্ত গমনে দে-শভঙ্গ স্তথা দিশেৎ ৷৷ জুলৎ-স্বপি চ বৃক্ষেষ্ রোদৎসু চ ধ-

নক্ষয়ণ। এতৎ পূজিত বৃক্ষেষ্ সৰ্ৰ° রাজ্জে বিপদ্যতে 11 পুল্পে ফলে বা ৰিকৃতে রাজ্ঞো মৃত্যু• তথা দিশেৎ। অন্যেষু দৈব যু-ক্তেষু বৃক্ষোৎপাতেষু মন্ত্রিতঃ।। আচ্ছাদযিস্বাত বৃক্ষণ গন্ধমাল্যে বিভূষযেৎ। বৃক্ষোপরি তথা ছ-<u>ख॰ ऋग्रा</u>९ शांत्रश्रमाख्य ॥ শিবমভ্যর্জবেদ্দেব**° পশু ঞাম্মে** নিবেদায়ে । শু.লভ্য ইতি **য**-কোমা কৃষা রুজ জপেত্তথা।। মধাজ্য যুক্তেন ত্ পাযসেন সং-পূজা বিপ্রা॰ শতুরশ্চ দদ্যাৎ। গীতেন নৃত্যেন তথাৰ্চনেন দে-ব॰ হর॰ পাপবিনাশহে<mark>তোঃ।।</mark> ইতি মাৎস্যে ২ন্তুতশাস্তি **বৃ**-ক্ষেৎপাতপ্রশ্যন নাম ২০৬ অধ্যায়ঃ ॥ ৠ॥ অথ বৃক্পপ্রতিষ্ঠা । ভীম্ম উবাচ। পাদপানা वि-षि॰ बन्धन यथाविख्यतावा । বিধিনা যেন কর্ত্তব্যুণ পাদপো-দ্যাপন° বুধৈঃ II যে চ লোকাঃ স্মৃতা স্তেষা॰ তানি চৈব বদস্ব মে ৷ পুলস্ত্য উবাচ।পাদপানা বিধি॰ বক্ষ্যে তথৈবোদ্যান ভূমিষু। ত-ডাগ বিধিবৎ সর্বণ সমাপ্তিণ জ-গদীশ্বর ॥ কৃত্ব। মণ্ডপ সণ্ভারণ

শাদ্বা প্রায়ত মানসঃ। পূজ্রযেদ্রা-ক্ষণণ তদ্বদ্ধেন বস্ত্রানুলেপনৈঃ।। मरबो यथु परिकः मिकाना नाश्रुष्ट विভृषिতान् । वृक्षामादेला त्रनः কৃত্য বাসোভি রভিবেষ্টয়েৎ ॥ সূচ্যা চৈব তথা কাৰ্য্যণ সৰ্বেষাণ কৰ্ণবেধনণ। সণ্ডলঞ্চাপি দাতব্যণ তদ্বদ্যে শলাক্ষা।। ফলানি স-প্ত চার্ফৌ বা কলধোতানি কার-ষেৎ। প্ৰত্যেক সৰ্ব বৃক্ষাণা বেদ্যা• তানধিবাসযেৎ ॥ ধূপস্ত গুগগুলু শ্রেষ্ঠ তামুপাত্রৈ রধি-ষ্ঠিত'। সৰ্বান্ধানাভূতঃ কৃত্বা शक्ष महाविद्यायरिनः ॥ ऋडान् ৰু পূৰ্ব কুন্ ভাপ**ৰিব**⊨ভ**তী স্বয**° १ शृद्धां वहा किन एक ह अर्गा ाण्ट्रिक নিমন্ত্ৰণ ৷৷ মধা চ লোকপালা-ন। নিজ্ঞানীনা॰ বিধানতঃ ! दन-স্পতে রধিবাস দেবং কার্য্যণ দ্বি-জাতিভিঃ ৷৷ ততঃ শুক্লাস্থরধরঃ সৌবর্গ কৃত্রশেখরা । স্বর্গ শু-अर् का भारताश्र भाग प्रता-ष्णु उना निनी ।। शविष्यी । दृष मधा। দুৎস্কেকা। गुतब्रुथी । ত-তো ২ভি:খেকসম্ৰেণ বাদ্য সমল গীতকৈঃ ॥ খণ্ড সামাথৰাণাণ ধারণৈ রভিভ ভংখা। তৈ•চ জ- ॥ উত্তঃ সংস্থপন প্রস্থাদ্রান্ধণ পুঞ্জ-वः ॥ শুক्राश्वतथतः শুদো यजना-নঃ স্বয়ণ জপেৎ ৷ গোভি বিভিন্ন-**७ः मर्वानृषिक छ मगाहिष्टः ॥** रूपमृद्धिः मक्षेरेकः त्रश्रुनीरेयः পবিত্রকৈঃ। বাসোভিঃ শযনী-रेयन्ड मञ्जालकत शामूर्रकः ॥ की तामिटेय बॅनि॰ ममामयाविक-ন চতুষ্টৰণ। হোমশ্চ সপিয়া কা-র্যো যবৈঃ কৃষ্ভিলৈ রপি ॥ প-লাস সমিধঃ সস্তা শুতুর্থেক্লি ত-থোৎ সবঃ। দক্ষিণা চ পুন স্তত্ত্বৎ শ্রেষ্ঠা তত্রাপি শক্তিতঃ ॥ यत्त्र-मिये **তग॰ किश्विलल मा** मग९-मतः। जाठार्का हिन्छनः मञ्चा धा-ণিগত্য ক্ষমাপ্ষেৎ !! জনেন বি-विना यञ्च *पर्याभृत्का* न**रः** नृहा । স্থান্ কামানবাগোতি তত্ত-দানতা নশ্বতে।। যশ্চৈক মপি রাজেন্দ্র বৃক্ষণ সংস্থাপযেদুধঃ। লোগি স্বৰ্গে বসেজাজন্ বাবদি-ন্দ্ৰ শতত্ৰব ।। ভূত ভব্যা °দ্চ ম-नूका॰ खात्ररामा ग॰निञान्। **श**र्ना॰ मिक्ति गारक्षां **१** शूनता-वृद्धि मूर्झ छा॰ ॥ य हेम॰ मृनूयाझि-ত্য॰ শ্রাব্যেদাপি মানবঃ। সো-পি সংগূজাতে দেবৈ ব'নলোকে

নহীযতে।। ইতি পান্ধে সৃষ্টিখণ্ডে २७ व्यशायः ॥ \*॥ तृक्टष्ट्रमत्न দোষো যথা। তস্মান্ন চ্ছেদ্যেৎ বৃক্ষান্ সূপুষ্প ফলিতান্ কদা । यमीटक् जन्तृ किश्व धनवृ किश्व শাশ্বত ।। সন্নিধৌ দেবতানাঞ্চ শিলৈফক চিত্তাপি। ছেদিতা **८** इत्याद्याकान् गतक वृष्टि कृ-দ্ভবৈঃ ॥ নৃপহানি *ভবেচ্ছী*য়ু° চিঞ্চাবৃক্ষে নিপাতিতে। সন্নিযো-भी करा गांछ भीगाव्यक नि পাতিতে।। তস্মান চ্ছেদযেদ্বৃক্ষণ দেবতাধিষ্ঠিত ক্ষচিৎ। বাপী কূপ তভাগানাং ছেদনে রোধনে কৃতে ৷**৷ সলান্যাসলতা**° বান্তি নরাণা॰ সূদ্রায়না॰। ত্রু॰১ एक्तरक्लञ्ज तृकान् हारामूनी-তলান্।। অসপত্র বনে যোরে পীজতে খমকিস্করেঃ । নগরে।-পবনে কৃক্ষান্ প্রমাদান্ধি ছিন-ত্তি यः ॥ म গছেমরক নাম জ্ञन॰ রৌজ**দর্শিন**॰ । বিল্যাদি शानन॰ क्याष्ट्रिंड॰ ज्यम मना-থ।।। শ্রীবৃক্ষান্রৌপষেৎ পঞ্চ র मि खगाम शैय**्छ। ই**खारिना व-ক্লিপুরাণে বারুণারানা প্রতিঠা-धायः ॥ क्ष ॥ जय नृकारम् १११

নক্ষত্রাদি ৷ শতভিষা মূলণ বি-**माथा मृगमितः উত্তরকল্**श्वनी উত্তরাষাটা উত্তরভাদ্রপৎ রো-হিণী হস্তা পুষ্যঃ রেবতী চ।। 🛊 ।। রাজমার্ভণ্ডে ৷ প্রাজেশ শ্রবণো-ত্তরাদিতি মঘ। মার্ত্রগু তিষ্যাশ্বি-नी लोकान्कमत्री हमः भविछ-ষা স্বাতি বিশাখা তথা 1 জীবা-র্বেলু সিতেন্দুনন্দন দিনে বারে স্থিয়স্যোদ্যে শ্স্যান্ত বপনে ভবন্ডি লবনে শস্তে তিথৌ রো-পণে ৷৷ ঞ ৷৷ হেমাস্তমা বৃক্ষবীজ• ষ্ণাতো মন্ত্রেণ রোপবেৎ। বসুধে-তি সুশীতেতি পুণ্যদেতি ধরেতি চ ।। নম স্তে সূত্রগে নিত্য॰ ক্র-মোৰণ বৰ্দ্ধতা নিতি।। 🗱 🛚 অথ বৃক্পপ্ৰতিষ্ঠা নক্তাণি ৷ প্ৰাঃ অ-শ্বিনী জ্যেষ্ঠা পূৰ্বফল্ গুনী ধনি-ষ্ঠা মৃগশিরঃ স্বাতী আর্জা ম্যা রোহিণী মূল হস্ত। রেবতী অনু-রাধা এবণা পুনর্বসুশ্চ। তথাহি । পুষ্যাশ্বি শক্ত ভগদৈবত বা**স**বে-यू ह्यानित्नभ यथ (ताहिनी मृन হস্তে। পৌক্ষানুরাধ হরিতেযু পু-নৰ্বসৌ চ কাৰ্ব্যাভিযেক ভরু ভূ-তপতি প্রতিষ্ঠা ॥ 🕸 ॥ অথ বি-হিত তিথ্যাদিঃ। ভবিষ্যে। প্রতি-

বৃক্ষভ

পচ্চ দ্বিতীয়া চ তৃতীয়া পঞ্নী 🏻 তথা। দশনী ত্রযোদশী চৈব পৌৰ্ণমাদী চ কীৰ্ত্তিতা।। সো-মে। বৃহস্পতি শৈচব শুক্রশৈচব তথা বুধঃ ৷ এতে সৌম্যগ্রহাঃ েপ্রোক্তাঃ প্রতিষ্ঠা যাগ কর্মণি।। ইতিজ্যোতিস্তর্ণ ॥

বৃক্ষকঃ পু॰ ফটজবৃক্ষঃ। ইতি রল্লালা।। বৃদ্দনাত্রঞ্।।

় বৃক্চরঃ পু॰ বানরঃ। ইতি ধন-क्षमः ॥

বৃক্ষজ্ব কী বছুনা বৃক্ষাণা • | বৃক্ষকহ। ত্রী বন্দা। ইতামরঃ।। ष्ट्रांश । यथा । वृक्ता वृक्ट्या-বহুত্বে তু বৃক্ষজ্ঞাৰ মিতি। ষষ্ঠ্যা-**\***ছाया वहुनादः मिछि क्वीवन्नः । ইতি স্ত্ৰীনপুণ্যকলিম্বনণ্ডহে-ভরতঃ !!

বৃক্ষধূপঃ পু॰ শ্রীবেষ্টঃ। ইতি রাজনির্ঘ•টঃ ॥

বৃক্ষনাথঃ পু॰ বটবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।।

व्रवृक्षः। ইতি বৃক্পাকঃ পুণ শক্চিন্দ্রক। 11

বৃক্ষকোটর । বৃক্ষভবন° ক্লী ইতিশব্দচন্দ্রিক।॥

বৃক্ষভকা স্ত্রী বনাকঃ। ইতি∥

বৃক্ষায়

ভাবপ্রকাশঃ ॥ বৃক্ষভিৎ) স্ত্রী বাসী। ইতি হেম-বৃক্তিদ্∫ চহাঃ ॥

वृक्तरञ्जी थु॰ वृक्षाननः। त-श्रामि इंडि छाया। १ इंडामतः ॥ টকঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

वृक्गर्सिका क्षी जन्नविश्वासः। কাঠ্বিডাল ইতি ভাষা । ইতি কেটিৎ 11

বৃক্ষসৃদ্ধুঃ পুং জলবেতসঃ। ইতি শক্চজিক। ॥

অনৃতশ্রব।।ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।। • र्व। ছाय। तृक्षकाय। तृक्षकाय॰ । | तृक्षतां किल। क्री वामा छारानिक।-গেহোপবন॰। ইত্যমরঃ॥

> वृक्षाननः पू॰ वृक्षर्छिनी। त-হানি ইতি ভাষা। ইত্যনরঃ॥ अश्वयद्भाः ॥ भश्वष्ठ्वः ॥ क्ठी-

तः । ইতি মেদিনী II शियानः I ইভি ধ্রণিঃ ॥

वृक्षामनी खी वना ॥ विमाती-কদঃ। ইতি মেদিনী॥

वृक्षािक इक्ष्य क्षी आविष्रमः। वृक्षामिकएक॰ रेडिमा**मगा**ना॥

वृकास की महास । उउनी-

তিখ্যাত । ইতি রাষমুঙ্গটঃ॥ ম-হাদা। ইতি ভরতাদ্**ষঃ।। অয়ল**- रेंि जानूषीिकिजामयः ॥ ७९-

পর্যায়ঃ। তিন্তিডীক ২ চুক্র

৩। ইতামরঃ ॥ অন্নশাক॰ ৪ চুক্রায়ণ ৫ তিত্তিডীফলণ ৬ শা-কান্ন॰ ৭ অন্নপূরণ ৮ প্রান্নণ ন রক্তপূরক॰ ১০ চূডাম্ল• ১১ বী--জান্ল° ১২ ফলামুক° ১৩ অন্ন-वृक्षः ১৪ অমুকল ১৫ রুगासः ১৯ জেগ্রায় ১৭ অতায় ১৮ जञ्जवीक° ३२ हुक्क्क्ल° २० १ **जना छनाः।** क देवः। क्यायवः 1 উষ্ণত্ব॰ 1 ককাশ স্ত্রকা সনী-রোদর হৃদ্যাদাদি গুলাতিসার ত্রণদোষ নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ॥ অপিচ। বৃক্ষান্ল নাম মশ্লোক্ষণ বাতম্বণ ককপিত্তল। পক্ষম গুরু সংগ্রাহি কটুকে তু-বর॰ লঘু ॥ অস্লোক্ত রোচন॰ ৰক্ষণ দীপনণ কফ বাতকৃৎ। তৃষ্ণাশো গ্ৰহণী গুলা শূল হা-দোগ জন্বজিৎ ॥ ইতি ভাব-প্রকাশঃ !! বৃক্ষায়ঃ পু॰ আনু।ভকঃ। ইতি শব্দচন্দ্রকা 11 বৃষ্ণার্হা স্ত্রী মহামেদা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

সটা।ইতি সারসুন্দরী।। চুক।। 🏿 বৃক্ষালযঃ পু॰ পক্ষী। ইতি শক্দ-याना ॥ वृक्षावामः पू॰ वृक्षदकार्वे तवानी। ইতি কেচিৎ 11 वृकाअरी पू॰ कूट्याल्कः। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ বৃক্ষোৎপলঃ পু॰ কর্ণিকারঃ। ইতি রল্ননাল। ।। বু गि এ বৃত্যা । ইতি কবিকল্প-फ्रमः ॥ मि अ वृशां वृशीरव। বূৰ্ণঃ ৰূৰ্ণিঃ। ইতি দুগাদাসঃ॥ বে 'ঐ ঞ' স্যা:ভা। ইভি কবিকক্ষ फनः ॥ भूगेट छडम*ान*ः। के **ख्या ९ । ७**३ वर्गा वर्गा वर्ग **ত** जुरायः। ইতি দর্গ । দাসঃ ॥ বেকটঃ পু॰ বৈকটিকঃ। মংস্য-ভেদঃ। ভেক্টী ইলি ভাষা॥ युव। । ইতি रैमिमिनी ॥ विमृषदः । ইতি শব্দরভাবলী ॥ তত্র প বগী য বকারাদৌ লিখিতঃ। বেগঃ পু॰ প্রবাহঃ!তৎপর্য্যায়ঃ । ওয়ঃ ৩ বেণী ৪ ধারা ৫। ইতি হেমচন্দ্রঃ ৷৷ জবঃ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ৷ র॰इ॰ ७ তরঃ ६ त्रयः ৫ मानः ७। ইতালরঃ॥ মহাকালকলণ ইতি मिनि ॥ (ब्रङः । रेडि (र्नाट्यः ॥ मृबविकामिनियनशद्धिः ।

यथा। म्यनामत्यारकी त्वनाशः সংস্কারো মরুতো গুণাঃ! অফৌ স্পাশাদয়ে। কাপণ দ্রবে। বেগশ্চ তেজসি !৷ স্পর্শাদযোক্টো বে-গশ্চ ডবম্বঞ্চ গুরুত্বক । ব্পণ রস স্তথা ক্ষেহ্যে বারিণ্যেতে চ-ভুর্দশ ॥ ইতি ভাষাগরিছেদঃ 11 कः ।। दिशशांत्र नित्यत्था यथा । বেগরোধ ন কর্ত্তব্য মন্যত্ত ক্রোধবেণতঃ। ইতি আহ্লিক-তত্ত্বপৃত বিফুধর্মোত্তরবচন॰ ॥ অপিচ। স্বভাৱতঃ প্রবৃত্তানা॰ ननामीना॰ जिजीविषुः। न त्व-भागादरम्कीतः कागामीनाक **धात्रत्य** ॥ हेि त्राज्यसङ्गा বেগনাশনঃ পু॰ জেখা ট্রভি भक्तज्ञावली ॥ বেগসরঃ পু॰ বেগগামিহ্যঃ। তৎপর্যায়ঃ । বেসরঃ ২ অশ্ব-তরঃ ৩। ইভি হেমচক্রঃ॥ বেগিভঃ ত্রি বেগবিশিষ্টঃ। মুথা । জায়র্বেদীয়ে। ন বেগিতো श्रामिकिः मा९ नाकिका मा-ধ্য মামষ্ণ। ইক্যাক্লিকতত্ত্বু॰॥ द्विम्द्रियः पुर बिकातीमृगः। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

ইতি ভরতঃ ।। সংকারবিশেষঃ । ॥ বেগী ত্রি বেগবান্ । তৎপর্য্যা-गः। জঙ্গাকারিকঃ ২ জাজ্যিকঃ ৩ তরস্বী ৪ দ্বরিতঃ ৫ প্রজবী ৬ জবনঃ १ জবঃ ৮। ইতামরঃ ॥ শ্যেনপক্ষী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ। বেচা জী मृना । विकि निर्धे अ পৃথক্ষে ইত্যসাৎ অন্ তত স্বাপ্। যথা। বেচা মূল্যঞ্ বে-**তন॰। ইতি হলা गू**धः ॥ तिकानी जी मागताकी। रेठि শব্দচজ্রিকা 11 বেড॰ ক্লী সান্দ্রবিচ্ছিয়চন্দন৽1 ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ন্ত্ৰী নেক। ইতি হেন চন্দ্ৰ ॥ বেডীভি হৃচিৎ পাঠঃ ॥ বেচমিকা দ্রী রোটিকাবিশেষঃ । यथा। नाच लिक्किया পূर्नज-ভা গোধুম চূর্তঃ ৷ রচিতা রো-টিকা দৈব প্রোক্তা বেচমিক। वृदेशः ॥ ভবেদেएनिक। वना। বৃষ্যা রুচ্যানিলাপহ। । উষ্ণা ম'ভগণী গুৱী বৃ'হণী শুক্রলা পর॰ ॥ ভিন্ন মূত্র নল। স্তন্য মে-मः পিত কৰপ্ৰদা। গুদকীলা-ৰ্দ্দিত শ্বাস যকৃৎ শূলানি নাশ-বেৎ ॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ दिन श्रां क निनामत्न ॥ वानिका- দান গনন জ্ঞান চিন্তাসু।ইতি ক্বিকল্পজনঃ।। ঋ অবিবেণৎ।

এ বেণতি বেণতে। নিশামন

চাল্পুফ্জানং। বাদিত্র মুরজাদি ভস্যাদানং বাদিত্রাদানং।
বাদিত্র বাদিত্রবিষয় ক্রিমাইন
ত্যাকে। হর্থঃ ইত্যেকে। ইতিদর্গাদাসঃ।

বেণঃ পু॰ বর্ণদন্ধরজাতিবিশেষঃ । সতু অষষ্ঠ্যা॰ বৈদেহকাজ্জা-ण्डः । स्था। देवताहरूकन घ्यर्छा। মুৎপরে। বেণ উচাতে । ইতি यांनरव ३० व्यक्तांचः॥ ७॥ ज-ভাৰুবীৰ সুৰ্ব্যৰ-শীৰ চতুৰ্বনূপঃ । মতু পুখুরাজপি**তা। য**থা বি-মুন্নাৰে। সৎপুত্ৰেন তু জা-रहन ल्लानि जिमिक गर्गे। পুনারে। নরকাজাতঃ স তেন नुसर्विता ॥ ভেन मूপूछ्व। মৃ**তবেণ দক্ষিণহস্ত ম**ন্দ্ৰ জ্বা**তে** ন পৃথুন। ইতি শুদ্ধিতভু॰॥ বেণিঃ খ্রী প্রোষিতভত্কাদি-ধার্য্যকেশরচনাবিশেষঃ ৷ ইতি ভরতঃ ।। বিরহিণীব**দ্ধক**চঃ । ইতি জটাধরঃ ॥ তৎপ্রান্থ। धार्यानः २। देणमदः॥ विनी ७ थारनी है। रेटि जन्ड ॥ (दिनि কা ৫ । ইতি শক্তমালা ।। জলসমূহঃ । ইতি জটাধরঃ ।। যথা
প্রথাগে গঙ্গা বনুনা সরস্বতী
মেলনং ত্রিবেণী ।।
বেণিকা স্ত্রী কেশবন্ধনবিশেষঃ ।
ইতি শক্তমালা ।।
বেণিবেধনী স্ত্রী জলৌকা। ইতি
ত্রিকাওণেয়ঃ ।।

বেনিমাধবং পু॰ প্রযালস্পাষা-শম্মচত্ভুজিলেন্ডারিশ্যেং । ইতি লোকপ্রলিজঃ ॥

रिनी खी थ उनी। हुड वह विक्री ইতি ভাষা **৷ ইতি** ভরত**া।** তৎ-পর্যায়ে। বেণিশকে জন বঙ্গা। দেবতাভবৃক্ষঃ। ইত্যানরঃ।। (ম-बी ॥ अवारः । देखि हराज्यः ॥ नहीं दिल्यः । ३७ (मिन्सी ॥ তসা। উৎপত্তি র্যং । পৃথ-রুবাচ। কুকা বেণো ভটাদ্র-याक्ति विक्शितः शृहा । व-ণিক শরীরাৎ কলছা নিরস্তা কথিতা দ্বয়া।। প্রভাবস্তু তথো নদ্যোঃ কিহা ক্ষেত্ৰদ্য তদ্য বা 1 **তল্মে কথ**ষ সৰ্বজ্য বিষয়েষা হল্ৰ गरागम ॥ मात्रन छेदात । कुल्य কৃষ্ণতনুঃ সাকাদেনী সাকাল-হেশ্রং। তৎ সহম প্রভারের

नानः रकुः ठठ्यं 🕸 ॥ ७९१नि তৎ সমূৎপত্তি কীর্ত্তবিষ্যামি ত गृन्। ठाक्यमाख्त शृर्वः ননে। দেবপিতামহঃ ॥ সহুদ্রি-**िथरत तथा यजनीयाणा**ण १७व९। म कृष्ठी राज्य महाद्रान् भैर्बटनवगरेन वृंडः॥ युक्त रहि হরাভ্যা॰ হি তলিবরেং, শিখরং यट्यो । ज्थानद्या मृजियना मू-হূর্ত্তে ব্রহ্মদৈরতে ॥ ভদ্য দীক। विधानाय मनाजः हक् जाप्रधाः ৷ অগ জেটা সন্নাং পত্নী নাচু-माश्वन द्वीश्वताः ॥ या गरेन दाय-। ষৌ তালং জ্ঞ বিশ্ গুৰাত হ। **ভৃ**গুৰুৰান ! বিজ্ঞোপনা হয় হৃতা **माश्रासाटि** य सि इत्तर । यत् श्री তিক্ৰমে চৈব ক। গ্ৰাম বিষ্টি कथः॥ विकुक्तवाष्ठ। नायां छि ८०० স্বরা শীয়ুণ গামত্রাত্র বিধীয়তা। এষাপি ন ভবেদন্য ভাৰ্য্যা কি॰ शृगकर्यान ॥ नात्रम छेवाछ । এन যেব হি ৰুজোপি বিষ্ণুবাক্য মম-ন্যত ৷ তচ্ছত্বা স ভূপু ৰ্বাক্য° भारती॰ जयान समा ॥ निदन्ध म-ফিণে ভাগে দীক্ষাবিধি মথাক-লোখা যায়নীলাবিধি তম্য কি ধে শ্ৰকু মু'নীশ্বরাং ॥ ভাবদভ্যা-

यत्यो তত্র স্বরা যজ্জস্থলে নৃপ। তত স্তা॰ দীক্ষিতা॰ দৃষ্ট্ৰা গাৰ্ত্তী• ব্ৰহ্মণা **সহ।। স**গন্ধী সা গন্না ক্ৰো-शब खता वहन गडवी थ। ऋता-বাচ ! অপূজ্যা যত্ৰ পূজান্তে পূ-জ্যানাঞ্চ ব্যতিক্রনঃ। ক্রীণি ভর ভবিব্যন্তি দুর্ভিক্ষণ মর্পণ ভব্য ।। यतायान कनिर्छय छविष्ठः म-নিবেশিতা। তত্মাৎ সর্বে জড়ী-ভূতা নদীৰূপা হি নিশ্চিত ।। ই-যঞ্চ দক্ষিণে ভাগে হ্যুপবিষ্ট। ম-पामत्व। उत्याद्मारक मन। प्रा তনুকপাস্ত নিম্নগা।। নারদ উ-বাচ। তত স্তৎ শাপ মাকর্ণ্য গা-যত্রী কম্পিতাধরা। সনুখাবাশ-शक्तरेव दीर्यामाशि छा॰ खता॰ া। গাৰ্ল্যাচ । তব ভৰ্ত। যথা बका गगालाम उथा चनु । तृथा শ্পসি যক্ষাআ° ভব ন্বন্সি নিল্ল-গা।। নারদ উবাচ। ততে। হাহ। কৃতাঃ সর্বে শিব বিষ্ণু মুখেশ্বরাঃ । প্রণম্য দণ্ডবৎ ভূমে। স্বরাণ তত্র विकिञ्ज्य १ ।। (मवा के कुः । (मवि শপ্ত। বষণ সর্বে ভ্রহ্মান্যোপি ভ্রয়া ২ধনা। যদি সর্বে জভীভূতা ভ वियादम। २० विश्वभाः ॥ उत्र।-লোক ত্রয়ণ চৈত্রৎ বিনশ্যতি চ

নিশ্চিত । অবিবেক কৃত স্তস্মাৎ 🕴 শাপো ২য° বিনিবর্ত্তাণ ৷৷ স্বরো বাচ ৷ নার্চিতো হি গণাধ্যক্ষো ভবন্তি র্যৎ সুরোত্তমাঃ। তস্মা-দ্বিদ্ব সমুৎপন্ন মবোধ জনিত খলু ৷৷ নাপি মদ্বচনং ছেতদসভ্যং খলু জাযতে। তস্মাৎ স্বাণ্টেশ জঁডীভূতা যূষ॰ ভবত নিমগাঃ॥ আবামপি সপক্লো চ স্বাণ্শাভ্যা মপি নিম্নগে। ভবিষ্যামে। ২ত্র ভে। দেবাঃ পশ্চিমাভিমুখা বহে ।। নারদ উবাচ। ইতি তম্বচন॰ শ্রুত্বা ব্রহ্ম বিফু মহেশ্বরাঃ। জড-**ৰূপাভবন্নদ্যঃ স্বাণ্শেনৈ**ব তদা-নৃপ ৷৷ **তস্মাদি**কু রভূৎ কৃষণ বে-ণী দেবে। মহেশ্বরঃ। ত্রন্ধা কন্ধ-দ্মিনী চান্য। পৃথগেব বভূব ভু॥ ইতি পান্মোত্তরখণ্ডে ১৫৬ অধ্যা-यः ॥ 🕸 ॥ অন্য**চ্চ । স**রস্বতী র-জোৰপা তমোৰপা কলিঙ্গজা। সত্ৰপা চ গঙ্গাত্ৰ নযন্তি বন্ধ নির্ন্তণ ।। ইষণ বেণী হি নিঃশ্রেশ-ণী ব্ৰহ্মবৰ্ত্ব প্ৰযাস্যতঃ । জন্তো ৰিশুদ্ধ দেহস্য শ্ৰদ্ধা শ্ৰদ্ধাপ্তস্য চ ॥ কাশীতি কাচিদবল। ভূব-নেষু ৰুঢ়া লোলাৰ্ধ্ধ কেশব বি-লোল বিলোচনা চ। তদ্ধো বূ'গ-

ঞ্চ বরণাসি রিষণ তদীমা বেণী-তি যাত্ৰ গদিতা**ক্ষয শৰ্শ**ভূনিঃ। ইতি কাশীখণ্ডে ৭ অধ্যায়ঃ॥ বেণীরঃ পু॰ অরিষ্টবৃষ্ণঃ। ইতি শন্চন্দ্রিকা ॥ বেণীসংহারঃ পুং ভটনারাষণ-কৃতসপ্তাহুযুক্তনাটকবিশেষঃ। তত্র দুর্য্যোধন কতৃ ক জৌপদী किशाकर्यगाविष उपधानखतः তস্যা বেণীবন্ধনপর্যান্ত বিবর্ণ মস্তি। তস্যায মাদ্যশ্লোকঃ। নিষিক্ষৈ রগ্যেতি লু লিত মকর-**ন্দে। মধু**ক্রিঃ করে রিন্দো রস্ত-শ্জ্রিত ইব সহিল মুললঃ। কি-থতা॰ বিদ্ধি॰ বে। নৰন বুছৰা गगा সদमः अञ्जीनः भूष्मानाः হরিচরণযে। রঞ্জলি রয় ।। त्वनुः भू॰ वन्भः। 🕏 मतः॥ ব॰শী। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ নৃ-পৰিশেষঃ। ইতি মেদিনী।। বে-ণো রুৎপত্তি র্যথা। বেণু র্যঃ শৃণু ত॰ বিপ্র তবাপি বিদিত॰ তথা। দ্বিজ আসীচ্ছান্তমনাঃ কৃত শা-ন্তপনাদিভিঃ ॥ নাম। দেবত্র-তো দান্তঃ কর্মকাগুবিশারদঃ ৷ অবৈক্ষব জনব্রাত মধ্যবত্তী ক্রি-

বাপরঃ ॥ একদাপি ন শুশ্রাব

ৰজেশো ২স্তীতি ভূপতে। তস্য গেহ মথাভ্যাগাছেদান্ত কৃত নিশ্চযংগ্য মন্তক্তঃ কোগি পূজাণ य जूनमीमन वातिन।। कृठवान्छ গৃহে কিঞ্ছি ফল মূলণ ন্যবেদ-य ।। न्नान वाति कन किक्षि 'তবৈশ প্রীভা। দলৌ সুধীঃ। অ-শ্রেদ্ধানিত কৃষা সোপাগৃহাৎ ছিজয়নঃ ৷৷ তেন পাপেন সং-জাতণ বেণুদ্ব মতিদারুণণ ৷ ভেন পুণোন তদ্যাথো মদীয় প্রিয়তাণ গ্ৰন্থ ভাষন। মো হপি বাজেব বেডুৰতে বিলক্ষ্যত। যুগত্ৰন্ত **ए** विकास हा साम हा अक्षा है । **ভি !!** ইতি পাৰেনুপ হেলে ফাও ১ व्यशायः ।

त्तर्कः क्री एवा । इंडि ह महन्द्रः ॥

বেণুকর্মরঃ পু॰ করীরবৃক্ষঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥

বেণুজঃ পূ• বেণুযবঃ। ইতি राजिनिवंकिः॥

বেগুহাঃ পুং বেগুবাদকঃ ইভা-यत्र ॥

বেণুন॰ ক্রী মরিচণাইভিরজ্ন মালা।। বেণক্স মিতিচ পাঠঃ।। বেণুশত্রী জ্রী বংলপত্রীবৃদ্ধ।। ৭ ভরণ ৮ মূল্য ৯ নির্বেশঃ ১০

তৎপর্যাयः। सिङ्गुशनी २ नाषी ৩ হিঙ্গুশিরাটিকা ৪। ইতি রত্ন-याणा ॥

বেণুষবঃ পুঁ বংশকলং বাশে-त्रठान् देखि छाया। उद्शर्यगरः । বেণুজঃ ২ বেণুবীজং ও বংশ-জঃ ৪ বংশতত্বঃ ৫ বংশধান্য ७ व मार्दः १। यमा खनाः । ককত্বণ। ক্যাযত্বণ। কটুণাকি-ष्ठ°। বদ্ধমূত্রস্ব॰। কক্ষর্ত। বাত পিত করম্বরণ মারক্ঞ ৷ ইতি রাজনির্যুক্তিঃ ॥ অপিচ ৷ তদ্য-राष्ट्र **म**ता ककाः क्यायाः क्तु-পাকিনঃ। বাতপিত্তকরা উচ্চা বন্ধসূত্রাঃ কফাপহাঃ ৷৷ ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ ৷৷

रवनुवामः भू॰ रेवनूकः। **ই**ছি त्रज्ञभावा। ॥

(दर्दीक॰ क्षी (दर्यदः । हे**ठि** রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

বেতঃ পু॰ বেত্রঃ। ইতি রাজ-निर्य•छेः ॥

त्वजन॰ क्ली कर्भाविक्ता। माहि-ন। ইতি মজ্রীতি চ ভাষা । ভৎপৰ্য্যায়ঃ ৷ কৰ্মগ্যা ২ বিধা ৩ ভৃত্য। ৪ ভৃতিঃ ৫ ভ**শ্ম ৬ ভর**ণ্য°

পণঃ ১১ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ বিষ্টিঃ ১২ । ইতি জটাধরঃ ॥ জীবনোপা-যঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। আজীবঃ ২ জীবন° ৩ বাৰ্ত্তা ৪ জীবিকা ৫ বৃত্তিঃ ৬। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ।। ৰূ-প্য°। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা॥ বেতসঃ পু॰ লতাবিশেষঃ ৷ বযসা ইতি ভাষা। ইতি ভরতঃ ।। তৎ-পর্য্যায়ঃ ৷ রুখঃ ২ অভুপুষ্পাঃ ৩ दिलनः ८ मीजः ७ रानीतः ७ বঞ্লঃ ৭ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ প্রিযঃ ৮। ইতি রত্নমালা।। গন্ধপুষ্ণঃ ৯ রথাভুঃ ১০ বেতসী ১১ । ইতি শব্দরञ्जावली ॥ निচ्लः ১২ দী-র্ষপত্রকঃ ১৩ কলমঃ ১৪ মঞ্জরী-ন্মুঃ ১৫ সুষেণঃ ১৬ গদ্ধপুষ্প-कः ১१। जमाञ्चनाः। खात्मक-টুক'। শীতক'। ভূত রক্তপি-ত্তোন্তবরোগ লগুলোষ নাশি-দ্বঞ্চ ইতি রাজনির্ধন্টঃ ॥ অ-পিচ। বেডসো নমুকঃ প্রো-ক্তো বাণীরো রঞ্জন তথা। অ-ভূপুষ্পশ্চ বিদ্যুলা রথঃ শীতশ্চ কীৰ্ভিতঃ ॥ বেতসঃ শীতলো माङ लाशाली खानितः भेनान । হত্তি বীসপ কৃচ্ছাসূ পিতাখা

ি কফানিলান্ ॥ ইতি ভাব-

প্রকাশঃ ৷৷ বেতসামঃ পু॰ অম্লবেতসং। ইতি জটাধরঃ ॥ বেতদী স্ত্রী বেতসঃ ৷ ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी ॥ বেতধান ত্রি বেত্সলতাবহুল-দেশঃ। ইতামরভরতৌ।। বেতালঃ পু॰ দারপালকঃ। ইতি শক্রারাবনী ॥ ভূতাথিষ্ঠিতশ-বঃ। ইত্যমরঃ॥ সলভেদঃ। ইতি ভরতঃ ৷ দিব্যণ,দিপ্রিংশ্যঃ ৷ ষথা। সগর উবাচ। কোমৌ ভৈরৰ নাসাভূৎ কো বা বেতা-ল সংজ্ঞকঃ। কথং বা তৌ শরী-রেণ মানুষেণ গণাধিপৌ ॥ অ-ভূতা দ্বিজ শার্দ্দি **তথে** বদ मश्चाम्ता शिक्षेत्रं उताह। मृनू রাজন্ প্রবক্ষামি মশ্কা**লস্য** ভূঞ্জিণঃ। ভৈরবস্যাপি চরিত॰ বেতালস্য মহাস্থনঃ ॥ সোসৌ ভূগী হরসুতো মহাকালোপি ভগজঃ ৷ তাবেব গৌরী শাপেন সমূষ নরযোনিজৌ ॥ বেতাল ভৈরবো জাতো পৃথিব্যাণ নৃপ-বেশ্নি। ইতি কালিকাপুরাণে १६ वशारः ॥ ॥ जिला ५१-खाति यथ। 1 **ओत्तत्राता** । य-

देवत भानूषी मृर्जि तियः वृषछ-কেতন। বিশামি তেত্র বচনা-দৃৎপাদ্য সূতদ্ব্য ॥ প্রবিবে-শ ততো দেবী স্বয়ু তারাবৃতী छत्ने । मश्राप्तर्वांशि छमान्नि কামার্থ॰ সনুপঞ্জিঃ ॥ ততঃ া সাপৰ্যাবিষ্টা দেবী তারাবতী সতী। কাম্যান প্মহাদেব স্বয-মেবাভবন্দা।। তক্ষিন্ কালে ২ভবলার্ত্তঃ কাপালী চাস্থিমা-ল্যধৃক্। কামাবদানে তদ্যান্ত সদ্যোজাত সূত্ৰ্য ।। ভাভব-মৃপশাৰ্দূল তথা শাখামৃগানন॰ । অথ তারাবভী দেবী সূতৌ দৃষ্টু। ফিতিস্তিতৌ ॥ ভূমৌ ম-লিন বেশেন মন্যন। সমুপাবি-শ্ । ভর্ত্ত রাগনন শশ্ ক জ্ফন্তী ভগ ভাষিতং 11 অথ কণ্ডাছাভাগেঃ স রাজা চক্র শেখরঃ। প্রাদাদ পুঠে আগ-চ্ছদুষ্টু ভাত্ৰবভীণ তদা ।। দ-দৰ্শ পতিতাং ভূ:মী মুক্তকেশীণ নিরুৎস্বাণ। সুতৌচ পতিতৌ ভূনৌ চন্দ্র সূর্য্য সম**প্রভৌ**॥ वानदारमा म ममृत्म शमृत्का-ভ॰ বৃষ্ণা চ। ততঃ স রাজা ন্য-গদৎ ত॰ মূনি॰ প্রহসমুদা ॥ পালষিষ্যে শন্তুসূতে যথা ল ভ্যাণ সদৈব হি ৷ কিল্কেতে মুনি শাদূল স্থাপক্ষি ৷৷ ঔর্ব উবাচ ৷ ভত স্তথো র্যান চক্রে নারদো বচনামূপ ৷ জ্যো-ষ্ঠো ভৈরব নামাভূৎ বীরঃ প্র-ল্রো ভ্যম্বরঃ ৷! বেতাল সদৃশঃ কৃষ্ণো বেতালো হভূত্তথাপরঃ ৷ ইতি চক্রে ত্যো নাম দেবর্ষি ব্রাণে ৪৯ অধ্যায়ঃ ৷৷

বেতালভটঃ পু॰ রাজবিক্রমাদিত্যস্য নবরত্বাস্তর্গতরত্ববিশেষঃ ৷ যথা ৷ ধরস্তরিঃ ক্রপণকামরসিণ্ছ শঙ্কু বেতালভট ঘটকপর কালিদাসাঃ ৷ খ্যাতৌ বরাহ মিহিরৌ নৃপতেঃ সভাষাণ রত্নানি বৈ বরক্রচি নব বিক্রমস্য
৷৷ ইতি নবরত্নশ্লোকঃ ৷৷

বেক্তা ত্রি জ্ঞাতা। বেক্তীতি বিদ্ধাতো স্তৃপ্পতাযেন নিষ্পন্ধঃ।।
বেক্তঃ পুং স্বনামথ্যাতবৃক্ষঃ।
তৎপর্য্যায়ঃ। বেতঃ ২ যোগিদ্ধঃ ৩ সুদ্ধঃ ৪ মৃদুপর্বকঃ ৫।
স তু পঞ্বিধঃ। তেষাং গুলাঃ।
শীতলত্বং। ক্যায়ত্বং। ভূত গিদ্ধান্ধ্

তস্যাগ্রণ বেতাগ ইতি খ্যাত । ।
তদগুণাঃ। দীপনস্বং। রুচ্যস্বং।
তিজ্ঞস্বং। পিত্ত কফ নাশিশ্বঞ্চা।
তৎফলগুণাঃ। বাত পিত্ত নাশিস্বং। অমুদ্ধাং। ইতি রাজ্যবালাং বেত্রাস্ব্লাক্ষে দুফ্বাণা।
বেত্রকীয়ঃ তি বেত্রসমূহযুক্তদেশাদিঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌ
মুদী।।

বেত্রধরঃ পু• দারপালঃ। ইতি হলামুধঃ।। যধ্টিধারকে ত্রি।। বেত্রশারকঃ পু• দারপালঃ। ইতি জটাধরঃ।।

বেত্রবতী স্ত্রী নদীবিশেষঃ। ইত্যসরঃ । সা তু সালবদেশাৎ কালপীনাম নগরে যমুনাযাং মিলিতা ।। বেত্রাসুরমাতা । যথা ।
বেত্রবত্যুদরে জাতো নামা বেত্রাসুরো ২ভবৎ । ইতি ব্রাহপুরাণুং ।।

বেত্রহাঁ পুণ ইন্দং। ইতামরং॥ বেত্রবেতী স্ত্রী বেত্রবেতীনদী। মথা। তত্রান্যা দধতে জলং সু-মধুরং কান্তিপ্রদং পুর্ফিদং। বৃ-ষ্যাণ দীপন পাচনং বলকরংবে ত্রবেতী তাপিনী।। ইতি রাজ-

তস্যাগ্র° বেতাগ ইতি খ্যাত° । । নির্ঘণ্টঃ ।। তদগুণাঃ । দীপনস্ব° । রুচ্যস্ব° । । বেত্রাসন° ক্লী বেত্রনির্ম্মিতাসন° তিব্দুস্ব° । পিত্ত কফ নাশিশ্বঞ্চ ।। । তৎপর্য্যায়ঃ । আসন্দী ২ । তৎফলগুণাঃ ৷ বাত পিত্ত না- । ইতি হেয়চম্রঃ ।।

> বেত্রাসূরঃ পু॰ বনামখ্যাতাসরঃ । তদ্যোৎপত্তি র্যথা। মহাতপা উবাচ ৷ আসীদ্রাজা পুরা রাজ-ন্ সিমূৰীপঃ প্রতাপবান্ । বা-রুণাংশে। মহারাজাসে। হরণ্ডে তথসি স্থিতঃ।। পুত্রো মে শক্র-নাশাম ভবেদিতি নরাধিপঃ! এবং কৃতসভিঃ সো ২থ মহতা তগদ। স্বকং ॥ কলেবরং স্থিরে। ভয়। শোষ্যামাস সত্ৰতঃ । প্ৰ-জাপাল উবাচ। কথং তস্য হিজ শ্রেষ্ঠ শক্তেগাপকৃত তবেৎ। বেনাসে তিছনাশায পুত্ৰ বি-**ছ্ন্ ব্ৰতে স্তিঃ। মহা**ুপা উ-বাচ। সো খন্য জন্মনি পুত্রো **২ভূ**ৎ **দ্বয়ু** বঁলবতা॰ বরঃ। অ-বধ্যঃ সৰ্বশক্ৰোয়ৈ রপাণ ফেনে-ন নাশিতঃ।। জলকেনেন নি-रिञ खिलास गवाश्वया । शृन ৰ্বন্ধান্বয়ে জাতঃ সিদ্ধুছীপেতি সংক্তিতঃ ।। স তেপে পরমং তী-ব্র শক্র বৈর মনুস্মরন্। তভঃ কালেন মহতা নদী বেত্রবত্রী

শুতা।। মানুষ কাপ মাস্থায় সা-লন্ধারা মনোরম°। আজগাম ষতে রাজা তেপে পর্মক ত খঃ ॥ তা॰ দৃষ্ট্। কপ সম্পন্ন।॰ न রাজ। জুদ্দমানসঃ। উবাচ কাসি সুশ্রোণি সত্যং ক্থম ভা-মিনি II नमूखां हा अङ् **क**ल्लन-তেঃ পত্নী বরুণস্য মহাত্মনঃ। নায়া বেত্ৰবতী পুণ্যা স্বা নিচ্ছ-ন্তীহ আগতা ॥ সাভিলাষা॰ পরস্ত্রীণ যো ভজমানাণ বিদর্জ-বেৎ। স পাপপুরুষে। জ্ঞেযো ব্ৰন্মহত্যাঞ্চ বিন্দতি॥ এবং জ্ঞা-দ্বা মহারাজ ভজ্মানা ভজ্স मा । এব मुख्य खरा ताका मा-ভিলাষোপভুক্তবান্।। তস্য স-দ্যো ২ভবৎ পুত্ৰো দ্বাদশাৰ্ক সমপ্রভঃ। বেত্রবত্যুদরে জাতো নামা বেক্রাস্রো ২ভবৎ ॥ বল-**বানতিতেজ**স্বী প্রাগ্রেজাতিষঃ পতি ভবেৎ। স কালেন যুৱা **জাতে**। বলবান্ দ্চবিক্রমঃ ।। মহাবোগেন সংযুক্তো জিগায চ বসুদ্ধরাং। সপ্তদীপ্রতীং প-শ্চামেরপর্বত নারুহন্ ॥ তত্তে-ল্রুণ প্রথমণ জিগ্যে পশ্চাদরিণ যন° ততঃ। ইতি বরাহপুরাণে

দেব্যোৎপত্তি নামাধ্যায়ঃ।।
বৈত্রী পুণ দারপালকঃ। ইতি
হেমচন্দ্রঃ।। বেত্রবুক্তে ত্রি।।
বেথ ঋঙ বাচে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ।। ও বেথতে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

विषः पुः विष्ः। यथ।। विषा विषयिषयाद्या विषाद्या विष-বিৎ কবিঃ। ইতি বিক্তৃসহসূনান স্তোত্রণ। বৃত্তণ ইতিমেদিনী।। ক্বচিৎ পুস্তকে বিত্ত মিত্যপি পা-र्ठः ॥ यङ्गात्रः । ইতি नानार्थतः ত্রমালা।।মীনশরীরাবচ্ছেদেন ভগবদাক্যণাইতি ন্যায়শাস্ত্রণা ধর্মাব্রক্ষপ্রতিপাদকমপৌরুষেয-বাক্য°। ইতি বেদাস্তশাস্ত্র°॥ ব্ৰহ্মসুখনিগতধৰ্মজ্ঞাপকশাস্ত্ৰ॰। ইতি পুরাণ ॥ তৎপর্য্যায়ঃ। শ্রুতিঃ ২ আশ্লাষঃ ৩। ইত্যানরঃ ।। ছুন্ট ৪ বন্ধ ৫ নিগমঃ ৬। ইতি শব্দরত্নাবলী।। প্রবচন প। ইতি জ है। इतः ॥ 🗱 ॥ (वनमा श्रामू-ৰ্ভাবে। যথা । কদাচিৎ কথ॰ সৃক্যামীতি খ্যামতে। ব্ৰহ্মণো মুখ চতুষ্টযেভ্য শ্চদ্বারো বে-माः थामूतामन् । **यथा। এक**वि॰-শতিশাখাত্মক ঋক্ ১ শতশা-

ধারাক যজুঃ ২ সহসুশাখাময সাম ৩ নবশাখাম্য অথর্ব ৪ ৷ ইতি পুরাণ ।। অপিচ। শ্রীমা-ক্তেখ্য উবাচ। তত্মাদগুদিনি-ভিন্নাদ্ৰুদ্ধণে। ২ব্যক্তজন্মনঃ । ঋ-চো বভূবুঃ প্রথমণ প্রথমাদদনা-মুনে ॥ জবাপুষ্পনিভাঃ সদ্য স্তেজোৰাপা হৃদ'বৃতাঃ। পৃথ-ক্ পৃথিখিভিদাশ্চ রজোকপা ম-হাত্মনঃ ।। यজু॰िम দক্ষিণাছজু।-मनिवक्षांनि कानिष्ठिः । यामृक বর্ণ তথা বর্ণান্যসংহতি চরাণি বৈ ॥ পশ্চিমণ যদিভো ৰ্বক্তুণ ব-ক্ষণঃ পরমেষ্টিনঃ। আবিভূতি।নি সামানি ততঃ জন্দ সিতান্যথ ॥ অথর্বাণ মশেষেণ ভূঙ্গাঞ্ছনচন-প্রভং ৷ যোরাঘোর স্বরূপণ তদা-ভিচারিক শান্তিমৎ ॥ উত্তরাৎ প্রকটীভূত॰ বদনাত্তত্ত্ব বেধসঃ । নুখণ সত্ত্বতমঃ প্রায়ণ সৌম্যাসৌম্য স্বৰূপৰ আখচে। রজোগুণাঃ সত্ত্ব-বজুবাঞ্চ গুণো মুনে। তমো গুণা-নি সানানি তনঃ সত্ত্ব মথর্ষসূ !! এ-তানি জুলনানানি তেজদাপ্র-তিদেন বৈ । পৃথক্ পৃথগবস্থান° ভাগ্নি পূৰ্ব নিবাভবৎ ৷৷ তত স্ত-দাদ্য থভেজ ওমিত্যুক্ত্ব্যভিশ-

স্যতে। তস্যানুভাবাদৃক্তেজ স্ত-মাণসাবৃত্য সংস্থিত।। যথা ষজ-ৰ্ম্মব॰ তেজো যক্ত সায়া৽ মহামু-নে। একত্ব মুপযাতানি পরতেজ-সি সংশ্রয়াৎ ॥ শান্তিকং পৌর্টি-কঞ্চৈর তথা চৈবাভিচারিকণ। খ্র-গ।দিযু লষ॰ ব্ৰহ্মণ ব্ৰিত্ৰখ ত্ৰিগ্ৰখা-গৰৎ ৷৷ ততো বিশ্বমিদ সদ্য স্ত-মোনাশাৎ সুনিৰ্মল°। বভাব-তীব বিপ্রর্যে তির শ্চোর্দ্ধ মধ স্ত-থা।। তত স্তন্মওলীভূত ছান্দসণ তেজ উত্তমণ। পরেণ তেজসা ব-**ন্ধ**ন্ একত্ব নুপগন্য তৎ ৷৷ আদি-ত্য সংজ্ঞা মগমদাদাবেব যতো <u> ২ভবৎ।বিশ্বস্যাস্য মহাভাগ কা-</u> রণ ঞ্বায়ায়ক ॥ প্রতি ম্ধ্য-ন্দিনে চৈব তথা চৈবাপরাক্লিকে । ত্রয়ী তপতি সা কালে ঋণ্বজুঃ সাম সংজ্ঞিত। ॥ ঋচ স্তপস্তি পূ-बीद्ध मधाद्ध ह यजुः नि देव । মামানি চাপরাঙ্কে তু তপস্তি নু-নিসত্তন।৷ শান্তিক পান্দু পূৰ্বাহ্নে যজুঃস্বনূচ পৌষ্টিক°। অপরায়ে স্থিত নিতা নানস্বেবাভিচারি-ক॰।। সৃষ্টে চ ঋত্বাবো ব্ৰহ্মা স্থি-তৌ বিফু ৰ্যজুৰ্ম্মষঃ। রুজঃ সামম-যোজে চ ভস্মাত্তস্যাশুচি ধনিঃ

**11 তদেব° ভগবান্ ভাস্বান্ বে**-দাত্মা বেদসংস্থিতঃ ৷ বেদবিদ্যা-**ত্মক শৈচব** পরঃপুরুষ উচ্যতে ॥ সর্গ স্থিতাস্ত হেতুঃ স রজঃ সত্ত্ব দিকৈ গুণৈঃ ৷ আশ্রিত্য ত্রন্ম বি-ষ্ণাদি সংজ্ঞা মভ্যোতি শাস্বতঃ ॥ বেদৈঃ স বেদ্যঃ স তু বেদমূর্ত্তি রমুর্ত্তি রাদ্যো ২থিল বিশ্বসূর্ত্তিঃ। বিশ্বাশ্রয° জ্যোভি রবেদ্যবর্ন। ধর্মাবদাতঃ পরমঃ পরেভ্যঃ ॥ ইতি শ্রীমার্কণ্ডেযপুরাণে সূর্য্যনা-श्राका मृत्या ८ পতি नामाशायः ॥ 🌣 !! অন্যক্ত। অফাবিণশে পু-নঃ প্রাপ্তে হৃদ্মিন বৈ দাপরে দ্বিজাঃ। পরাশরসূতো ব্যাসঃ কৃষ্ণ দ্বৈপায়নো ২ভবৎ ৷৷ স এব সৰ্ব বেদানাং পুৱাণানাং প্ৰদ-শ্কঃ। পারাশর্যো মহাযোগী কৃষ্ণ দৈপাযনো হরিঃ॥ আরাধ্য দেব মীশানং দৃষ্ট্রা সায়ং ত্রিলো-চন ৷ তথ প্রসাদাদদৌ ব্যাদো বেদানা মভবৎ প্রভঃ ৷৷ অথ শিষ্যান প্রজগ্রাহ চতরে। বেদ-পারগান্। জৈনিনিঞ্সু মন্তঞ **বৈশম্পায়ন মেব চ ॥ গৈল॰** তে-যাণ চতুৰ্থঞ্চ পঞ্চমণ মাণ মহাম্নিঃ ৷ ঋধেদ শ্রাবকণ গৈলণ প্রজ্ঞাহ মহামুনিঃ ॥ যজুর্বেদ প্রবক্তারণ বৈশস্পায়ন মেব চ। জৈদিনি॰ সামবেদস্য শ্রাবকণ সো ২ম্বপদ্য-ত ৷৷ তথৈবাথৰ্ব বেদস্য সুমন্ত সৃষি সত্তমণ। ইতিহাস পুরাণানি এব-ক্তু॰ মা মযোজয়ৎ ॥ এক আসী-দ্যজুৰ্বেদ শুঞ্চতুৰ্দ্ধা ব্যক্ষয়ৎ । চাতুর্হোত্র মভূদ্যশ্মিণ স্তেন যজ্ঞ মথাকরোৎ।। অধ্বর্যাব যজুভিঃ স্যাদৃণ্ডি হোত্রণ দিজোত্তমাঃ। ঔদ্যাত্র°সানভি শ্চক্রে ব্রহ্মত্বঞ্জা-প্যথৰ্বভিঃ ॥ ততঃ স ঋচ উদ্ধৃত্য ঋথেদ॰ কৃতবান্ প্রভুঃ। যজু॰ষি চ বজুৰ্বেদ॰ নামবেদঞ্চ সামভিঃ॥ একবি॰শতি ভেদেন ঋধেদ॰ কৃত-বান্ পুরা। শাখানান্ত শতেনাথ যজুৰেদ মথাকরে বি ৷৷ সামবেদ॰ সহসেণ শাখানাঞ্চ বিভেদতঃ । অথৰ্বাণ মথো বেদ° বিভেদ নব-কেন তুম ভেদৈ রফীদলৈ ব্যাসঃ পুরাণ কৃতবান্ প্রভুঃ। যো ২য নেক শ্চতুষ্পাদো বেদঃ পূৰ্ৰণ পু-রাতনাৎ ৷৷ ওঁকারো ব্রন্ধণো জা-তঃ স দোষবিষশোধনঃ। বেদ-বেদ্যো হি ভগবান বাস্দেবঃ সং নাতনঃ ৷৷ স গীয়তে বরো দেবো বো বেদৈন স বেদবিৎ। এতৎ **প**রতর• ব্রহ্মজ্যোতি রানন্দ মুক্ত-ম• ৷৷ বেদবাক্যোদিত তত্ত্ব বা-**मुरम्व॰ পর॰ পদ॰ । বেদ**বেদ্য মিদ বেভি বেদ বেদ পরো মুনিঃ ।। অবেদ॰ পরম॰ বেত্তি বেদনিৡঃ সদেশ্বরঃ। স এব বেদে। বেদ্যশ্চ তমেবাশ্রিত্য মুচ্যতে।। ইত্যেতদ-**ক্ষর•বেদ্য মোক্ষার॰ বেদ মব্যয°।** অবেদঞ্চ বিজানাতি পারাশর্ব্যো মহামুনিঃ।। ইতি কৌর্ম্মে ৪৯ অ-ধ্যাবঃ ॥ 🛊 ॥ বেদাধ্যয়নপাত্র॰ ৰথা। ব্যাস উবাচ। এবং দণ্ডাদি-ভিষুক্তিঃ শৌচাচার সমন্বিতঃ। षाशृत्वा १थायनः व्यगाषीकना-পো গুরো শ্মৃখ ।। নিত্য মুদ্যত-পাণিঃ স্যাৎ সাধাচারঃ সুসংষ্তঃ ৷ আস্যতা মিতি চোক্তঃ সন্নাসী-ভাভিমুখণ গুরোঃ ।। প্রতিশ্রবণ সম্ভাবে শ্যানো ন সমাচরেৎ। নাসীনো নচ ভুঞ্জানো ন তিষ্ঠ-त्र পরাজ্ব ।। नीष्ठः भयामनः চাস্য সর্বদা শুরু সন্নিধৌ। শু-त्रा स्ट कक्विरिया न याथकीय-त्ना ভবে९ ॥ त्नामाश्दत्रममा নাম পরোক্ষমপি কেবলং ৷ নটে বাস্যানুসৰী ত গতি ভাষিত চে-ষ্টিত ।। গুরো র্যত্র পরীবাদে। নি-

ন্দা বাগি প্ৰবৰ্ত্ত**ে। কণ্টো তত্ত** পিধাতবো গন্তব্য বা ততো ২-नाजः ॥ पृतरक्षा **नार्करयत्नन** ন জুজো নান্<mark>তিকে স্ত্রিষাঃ। নচ</mark>ৈ-বাস্যোত্তর° ব্রুয়া**ৎ স্থিতে নাসী-**ত সন্নিধে।।। উদসম্ভ দশান্পু-ষ্পা॰ সমিধোস্যাহরেৎ সদা। মা-ৰ্জনং লেপনং নিত্য মঙ্গানাং বৈ-मयाहरत्र ॥ नामा निर्माला न-যন॰ পাদুকোপানহাবপি। না-क्वारनमामनकामा हायामीन देव কদাচন ৷৷ সাধ্যেদস্তকাণ্ঠাদীন लक्षशत्य निर्वारय । जनानु-চ্ছনগন্তব্যু ভবেৎ প্রিযহিতে র-ण्डा। न शास्त्रिशावरमनमः मनिया-নে কুদাচন। জৃট্ডিত° হ**সিতকৈ**-ব কণ্ঠ প্রাবরণ তথা ৷৷ বর্জ্জবেৎ সন্ধিধে নিত্য মবস্যেটন মেব-চ। যথাকাল মধীযীত যাবন্ধ বি-মনা গুরুঃ।। আসীতাধো গুরো-ৰ্দতে ফলকে বা সমাহিতঃ। আ-मत्न भयत्न यात्न तेनत जित्री ६ कथक्षन ॥ शावल मनुशारवल ग-চ্ছন্ত মনুগচ্ছতি। গোশোন্ট্ যা ন প্রাসাদ প্রস্তরেষু কটেষু চ।। আসীত গুরুণা সার্দ্ধণ শিলাফল-ক নৌষু চ। জিতেন্দ্রিयঃ স্যাৎ

সততং বশ্যাসাক্তোবেলঃ শুচিঃ ৷৷ প্রযুক্ষীত সদা বাঢ়ে মধরা হিত-কারিণী । গন্ধ মাল্য রস ক-ন্যাণ শুক্তণ প্রাণিবিহিণ্সনণ ॥ অভ্যঙ্গ ঞ্চাঞ্জনোপানচ্চল্রধারণ নেব চ ৷ কামণ লোভণ ভষণ নি-জা॰ গীত॰ বাদিত্র নৃত্যক॰॥ আ-তর্জন॰ গরীবাদ॰ স্ত্রীপ্রেক্ষালভ-ন স্তথা। পরোপঘাত পৈশুন্য॰ প্রধত্ত্বেন বিবর্জ্জনেৎ ৷৷ উদস্বস্তু॰ সুমনসো গোশকৃষ্ত্তিকা দ্বশা-न् । आह्दत्रम्यायम् थानि टेडक-ঞ্চাহার নাচরে ।। কৃতঞ্চ লবণ সৰ্ব॰ বৰ্জা॰ পয়্য বিতঞ্ যৎ। অ-নৃত্যদূশী সতত ভবেদ্গীতাদি নিস্পৃহঃ॥ নাদিত্য॰ বৈ সমীক্ষেত नाष्ट्रतम्ख्यावनः ॥ এकाख म-শুচিন্ত্রীভিঃ শুদ্রান্ত্যে রভিভা-ষণ ৷৷ গুৰুচ্ছিফ্টিণ ভৈষজাৰ্হণ প্ৰ-ভূঞ্জীত ন কামতঃ। মলাপকর্ষণণ স্থান পাচরেছিল কথঞ্চন ।। ন স্থ-র্যানানসং বিপ্র গুরে স্ত্যাগে ক-থঞ্চন। মোহাস্বা যদিবা লোভা-ত্ত্যক্তেন পতিতো ভ:বৎ ॥ লৌ-কিক॰ বৈদিক্ঞ'পি তথাধ্যাত্মিক মেব বা ৷ আদদীত ষভো জ্ঞান॰ তন্ন ক্রন্থেৎ কদাচন ॥ গুরে। র- পাবলিপ্তস্য কার্য্যাকার্য্য মজা-নতঃ । উৎপথপ্রতিপন্নস্য মন্-স্ত্যাগণ সমত্রবীৎ ।। গুরে। গুরোঃ সন্নিহিতে গুরুবদ্বতি মাচরেৎ ৷ নচাবিস্ফ গুরুণা স্বান্ গুরুন-ভিব্নিবেৎ ৷! বিদ্যাগুরুদেত-দেব নৃত্য বৃত্তি স্বযোনিষু। প্র-তিষেধান্নচাধর্মা হিজ্ঞপোপদি-শৎস্বপি ৷৷ শ্রেষঃ স্বস্তুরুবদৃত্তি নিত্য মেব সমাচরেৎ। গুরুপুত্রে-যু দারেষু গুরো শৈচব স্ববন্ধুযু।। বালঃ সমানজন্মা বা শিষ্টো বা यक्ककर्माणि । ज्यागाणयम् % कृतु-তো গুরুবন্মান মহতি॥ উৎসা-पन॰ वा गाजाना॰ ऋगटनाष्ट्रिके-ভোজনে। ন স্বর্গাদ্ গুরুপুত্রস্য পাদযোঃ শৌচ মেব চ ৷৷ গুরুবৎ প্রতিপূজ্যাস্ত সর্বণা গুরুর স্তথা। অসবণাস্ত সংপূজ্যাঃ প্রত্যুত্থানা-ভিবাদনৈঃ৷৷ অভ্যঞ্জন॰ স্নাপনঞ্চ গাত্রোৎসাদন মেব চ। গুরুপল্ন্যা ন কার্য্যাণি কেশানাঞ্চ প্রসাধনণ ৷৷ গুরুপত্নীন্ত যুবতীং নাভিবাদ্যে-ত পাদযোঃ। अदी उ तसन जु-মাবেষো ২হ মিতি চা ক্রবন্ ৷৷ বি-প্রো ২স্যপাদগ্রহণমন্বহঞ্চাভিবা-দনং। গুরুদারেষু স্বীতি সতাং

ধর্ম মনুস্মরন্ ॥ মাতৃস্বসা মাতৃ-লানী স্বশ্ৰু শ্চাথ পিতৃঃস্বসা ১প্র-পূজ্যা গুরুপত্নী চ সমা স্তা গুরু-ভার্যায়া ভ্রাতৃভার্য্যোপসংগ্রা-হ। স্বর্ণাহন্যহন্যপি । বিপ্রস্য তূপসংগ্রাহা জ্ঞাতি সম্বন্ধি যো-ষিতঃ॥ পিতু ভঁগিন্যা॰ মাতৃশ্চ জ্যাষদ্যাঞ্চ স্বদর্যাপ। মাতৃবদৃ-ত্তি মাতিষ্ঠেন্মাতা তাভ্যো গরীষ-সী ৷৷ এব মাচারসম্পন্ন মাত্মবশ্য মদান্তিক° ৷ বেদমধ্যাপযেদ্ধর্মণ পুরাণাঙ্গানি নিত্যশঃ।। তথা চি-রোষিতে শিষ্যে গুরু র্ক্তান মনি-किंगन्। इत्रत्छ पूष्क् छ॰ छमा भि-ষ্যদ্যৈব॰ ততো গুৰুঃ ৷৷ আচাৰ্য্য পুত্ৰঃ শুশ্ৰষু জ্ঞানদো ধাৰ্মিকঃ শুচিঃ ৷ আপ্তঃ শক্তো ২র্থদঃ সাধু রখাপ্যাদশ ধর্মতঃ।। কৃতজ্ঞ চ তথাজোহী মেধাবী শুভকৃমরঃ । আপ্তঃ প্রিযোগ বিধিবৎ যড-ধ্যাপ্যা দ্বিজাত্যঃ ॥ এতেযু ত্রন্ধ-ণো দান মন্যত্র তু যথোদিতাৎ 1 \* । বেদাধ্যয়নবিধি র্যথা । আচম্য সংষ্ঠে নিত্য মধীষীত উদগ্রখঃ ৷৷ উপসংগৃহ্ন তৎপাদৌ वीक्रमाणा छत्का मूथः। जिसीव ভো ইতি ব্রুয়াদিরামো ২স্ত্রিতি

চারমেৎ।। প্রাক্ ভূতান্ পয্যু পা-সীনঃ পবিত্রৈ শৈচব পাবিতঃ 1 প্রাণাযামৈ স্ত্রিভিঃপূত স্তত ওঙ্কা-র মহতি।। ত্রাহ্মণঃ প্রণব॰ স্বর্যা-मट्ड চ विधिविष्ट्रिकाः। ऋर्याम-ধ্যাপন॰ নিত্য॰ স ব্ৰহ্মাদীনি পূ-ৰ্বতঃ ।। সৰ্বেষা মেব ভূতানা॰ দে-ব শ্চক্ষুঃ সনাতনঃ। অধীতানধ্য-যদিত্য ৰান্ধণাদ্ধীয়তে ন্যথা ৷৷ অধীষীত ঋচো নিত্য॰ ক্ষীরাহুত্য। সদেবতাঃ।। প্রীণাতি তর্পযন্ত্যে-ন॰ কামৈ স্তৃপ্তাঃ সদেবতাঃ ।। য-জূ॰সাধীতে নিষত॰ দধ্ৰা প্ৰীণা-তি দেবতাঃ। সামান্যধীতে প্রী-ণাতি ঘৃতাহতিভি রয়হণ ৷৷ অথ-ৰ্বাঙ্গিরসো নিত্য মধ্য প্রীণাতি দেবতাঃ । ধর্মার্থঞ্চ পুরাণানি মাণ্টেন ন্তর্পয়তে সুরান্ । অপাণ সমীপে প্রয়তো নৈত্তিক বিধি মাশ্রিতঃ। গাষত্রী মপ্যধীষীত গন্ধারণ্য° সমাহিতঃ ৷৷ সহসু পর-মা॰ দেবী॰ শতমধ্যা॰ দশাবরা॰। গাযত্ৰী° বৈ জপেন্নিত্য° জপ য-জ্ঞঃ প্রকীর্তিতঃ ।। গাযত্রী ক্ষৈব বেদা॰শ্চ তুল্যা তোল্যৎ প্রভুঃ । একত শ্চতুরো বেদান্ গাযত্রী-ঞ্চ তথৈকতঃ।। ওঙ্কার মাদিতঃ কৃত্বা ব্যাহ্নতী স্তদনন্তরণ ৷ ততো **২**ধীযীত সাবিত্ৰী মেকাগ্ৰঃ শ্ৰদ্ধ-যাম্বিতঃ ।। পুরাকল্পে সমুৎপন্ন।-ভূ ভূবঃ স্বঃ সনাতনাঃ। মহা-ব্যাহ্বতয়ঃ স্তিসুঃ সর্বাশুভনিব-হ্ণাঃ।। প্রধান॰ পুরুষঃ কালো ব্রন্ধ বিষ্ণু মহেশ্বরাঃ। সত্ত্ব বজ স্তম স্তিসুঃ ক্রমাদ্যাস্ত্রয়ঃ স্মৃতাঃ য়া ওকার স্তৎ পর° ব্রহ্ম সাবিত্রী স্যাত্তদক্ষরণ। এষ মস্ত্রো মহাভা-গঃ সারাৎসার উদাহ্বতঃ।। যো **২ধীতে ২হন্যহন্যেতা° সাবি**-ত্রী॰ বেদমাতর°। বিজ্ঞাযার্থ॰ ত্র-ন্ধচারী স বাতি পরমাণ গতি॰।। গায়ত্রী বেদজননী গায়ত্রী লো-**কপাব**নী। ন গাযত্র্যাঃ পর° জ-প্য॰ এতদ্বিজ্ঞায় মুচ্যতে ॥ শ্রাব-ণদ্য চ মাখদ্য পৌৰ্নাদ্যা দ্বি-জোত্তমাঃ। আষাচ্যাণ প্রোষ্ঠপ-দ্যা॰ বা বেদোপকরণে স্মৃতঃ ৷৷ উৎসূজ্য গ্রাম নগরণ মাসান্ বি-প্ৰোহৰ্দ্ধপঞ্চমান্। অধীয়ীত শু-চৌ দেশে ব্রন্ধচারী সমাহিতঃ। পুষ্যে তু ছন্দসাং স্বৰ্যাদ্বহি রুৎ-मर्क्कराष्ट्रिकः। याच श्वन्तमा जू প্ৰাপ্তে পূৰ্বাহে প্ৰথমে ২হনি ৷৷ হন্দা স্বাদ্ধ মথো জপ্যাৎ শুক্লপ-

ক্ষে তু বৈ দ্বিজঃ। বেদাঙ্গানি পু-রাণানি কৃষ্ণপক্ষে তুমানবঃ।।ৠ! ইমান্নিত্যমনধ্যায়ানধীয়ানো বি-চক্ষণঃ। অধ্যাপনঞ্চ স্বাণো অ-ভ্যস্যন্নপি যত্নতঃ ৷৷ কর্ণশ্রবে ২নি-লে রাত্রো দিবা পাণ্শু সসূহনে। বিদ্যুৎ স্তনিত সর্বেষু মহোক্ষানা-ঞ্চ সংপ্লবে।। আকালিক মনধ্যায মেতেম্বাহ প্রজাপতিঃ। এতান-ज्यामिकान् विमाग्यमा आमूक्का-शिषु ॥ তদা विদ্যাদনধ্যায यन्-তৌ চাত্ৰ দৰ্শনে। সজ্যোতিঃ স্যা-দনধ্যায়ঃ শেষে রাত্রৌ যথা দিবা ॥ নিত্যানধ্যায় এব স্যাৎ প্রানে-ূ; ষু নগরেষু চ। ধর্ম্মনৈপুণ্যকামা-না পৃতিগন্ধেযু নিত্যশং ৷৷ অন্তঃ শ্বগতে গ্রামে বৃষলস্যৈব সন্ধি-ধৌ। অনধ্যাযো রুদ্যমানে সম-वार्य জनमा ह ॥ উদকে मधा রাত্রে চ বিন্মৃত্রস্য বিসর্জ্জনে। উ-চ্ছিষ্টঃ শ্ৰাদ্ধ° ভুক্তৈব মনসাপি **ন** চিন্তবেৎ ।। প্রতিগৃহ্য দ্বিজে। বি-দানেকোদিস্টস্য কেতন । ত্র্য-হুণ ন কীর্ত্তমেদ্রুক্ষ রাজ্যে। রাহো-भ मृত्रक ॥ यावरमका छम् छ-স্য ক্ষেহো লেগশ্চ তিষ্ঠতি। বি-প্রস্য বিদুষো দেহে তাব্দুন্ধ ন

কীর্ত্তমেৎ ॥ শ্যানঃ প্রোচপাদ-শ্চ তথা চৈবাবশক্থিকঃ। না-ধীৰীতামিষণ জগ্ধা সূতকালাদ্য .মেব চ ।। নিরাহারে বাণশব্দে স-স্ক্যায়ে। রুভযো রপি ৷ অমাবাস্যা চতुर्मत्नाः शीर्गमास्मीषु চ 11 উপাকর্মণি চোৎসর্গে তিরাত্র° **ক্ষপণ স্মৃতং।** অষ্টকানু দ্বহোৱা-ত্র মৃত্বভাসু চ রাত্রিযু।। মার্গশী-ধে তথা পৌষে মাঘমাসে তথৈব **চ। তি**শ্রে। २४ठेकाः ममाथाणाः কৃষ্ণকেষু সূরিভিঃ ৷৷ শ্লেখাতক-मा छ। यायाः भागात गंधकमा ठ 1 क्लां किलि नारधाय° क्लांविला-র কপিথযোঃ।। সমানবিদ্যে তু মৃতে তথা সব্রহ্মচারিণি। আচা-র্য্যে সংস্থিতে বাপি ত্রিরাত্রণ ক্ষ-পণ স্মৃত ।। ছিজাণ্যেতানি বি-প্রাণাণ ষেখনধ্যায়াঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ । হি॰সন্তি রাক্ষসা স্তেষু তস্মাদে-তানি বজ্জধেৎ ৷৷ নিত্যকেনাস্ত্য-নধ্যায়ঃ সন্ধ্যোপাসন এব চ। উ-পাকর্মণি কর্মান্তে হোম মল্লে ত-থৈব চ ৷৷ একামৃত মথৈকণ বা য-জঃ সামাথ বা পুনঃ৷ অন্টকাদ্যা-স্বধীষীত মাৰুতে চাতি বাষ্তি॥ অনধ্যাযস্ত নাঙ্গেষু নেতিহাস

भूतान्याः। न धर्मनात्त्रघत्मम् পৰ্বস্বেতানি বৰ্জ্জযেৎ ॥ 🟶 ॥ এষ ধৰ্মঃ সমাসেন কীৰ্ত্তিতো ব্ৰশ্বচা-রিণাণ বন্ধণাভিহিতঃ পূর্ব মৃষীণাণ ভাবিতাত্মনাং ৷৷ যোন্যত্ৰ ঙ্গৰুতে যত্ন মনধীত্য শ্রুতি দ্বিজাঃ। স-সংসূঢ়ো ন সংভাষ্যো বেদব ছো দ্বিজাতিভিঃ।। ন বেদপঠি মাত্রে-ণ সম্ভকো বৈ ভবেৎ ৰিজঃ।পাঠ মাত্রাবসন্বস্তু পঙ্কে গৌরিব সীদ-তি।। অধীত্য বিধিবদ্বেদ॰ বেদা-র্থ॰ ন বিচার্যেৎ। স সান্বয়ঃ শুদ্র কল্পঃ পাত্ৰতা॰ ন প্ৰপদ্যতে ৷৷ প-ঠিম্বাতান্তিক বাস কর্ত্ত নিচ্ছ তি देव खुदबाः । युक्कः शतिष्ठदेतरम्बन ন শ্রীর বিষোক্ষণ° ৷৷ গত্বা বন° যে। বিধিবজ্জহূযাজ্জাতবেদসং । অধীষীত সদা নিত্যং শক্ষনিঠঃ সমাহিতঃ ৷৷ সাবিত্ৰীণ শতৰুদ্ৰীয়ণ বেদান্তা শ্চ বিশেষতঃ ৷ অভ্য-সেৎ সতত মুক্তো ভশ্মনান প-রায়ণঃ ৷৷ এতদ্বিধানং পরমং পুরা-१ (विमागित्म ममागित्स्तिष्ठः वः । পুরা নহর্ষি প্রবরাভিপৃষ্টঃ স্বায-ষ্ঠুবো ষমনুরাহ দেবঃ॥ এতনী-শ্বর সমীরিজ্ঞ নরে৷ যো ংনুতিষ্ঠ-তি বিধি° বিধানবিৎ। নোহজাল

**মপহায সে**। মৃতো যাতি ত**ে**। পদ মনাময়ণ শিবং ॥ ইতি কৌ-র্ম্মে উপরিভাগে ১৩ অধ্যাযঃ ॥ 🟶 🛚 । অথ ঋগ্বেদস্য সংহিত। । বিভেদ প্রথমণ বিপ্র পৈল খাগ্বেদ . প্লাদপণ। ইন্দ্রপ্রমিত্তযে প্রাদাৎ বাস্কলায় চ সংহিতে ৷৷ চতুৰ্দ্ধা স বিভেদাথ বাস্কলে। নিজ সংহি-তাণ ৷ বোধ্যাদিভ্যো দদৌ তাস্ত শিষ্যেভ্যঃ স মহামতিঃ ৷৷ বোধ্যা-গ্নি মাতৃরে) তদ্বৎ জাতুকর্ণ পরা-শরে। এতিশাখাস্ত শাখাযা স্ত-गा। তে জগৃহ ৰ্ননে ॥ ই**ন্দ্ৰপ্ৰনি**-তি রেকায় দাহিত্য প্রয়ত ততঃ । गाष्ट्रक्ष॰ महासान॰ हेनडबर।-ধ্যাপযন্তদা।। তদ্য শিষ্য প্রশি-ষ্যেভ্যঃ পুত্রশিষ্য ক্রনাম্বনৌ । বেদমিত্রস্ত শাকল্যঃ সংহিতাণ ত। মধীতবান্।! চকার সংহিতাঃ পঞ্চ শিষ্যেভ্যঃ প্রদদৌ চ ভাঃ ৷ তস্য শিষ্যাশ্চ যে পঞ্চ ভেষা॰ না-मानि त्म मृनु॥ मुलात्ना (गाथन्-रेम्हद राष्ट्रगाः मानीय এव ह । रेगिनिवः शक्षम म्हामीरेयरज्य मु-মহামতিঃ।। স॰্তাত্তিত্য ঞ্জে শাকপূর্ণিরথেতরঃ। নিরুক্ত মক-রোভদ্বজতুর্থ॰ মুনিসত্তম।। ক্রৌ- ||

(क्षा देवलांनिक खद्दमनाक क म-হানতিঃ। নিরুক্তকৃচ্চতুর্থা ২ভ-দ্বেদ বেদাঙ্গপারগঃ।। ইত্যেতাঃ প্ৰতিশাখাভ্যো হনুশাখা দিজো-ত্তম। বাস্কলি শ্চাপরা স্তিসুঃ সং-হিতাঃ কৃতবান্ দ্বিজঃ ।। শিষ্যঃ कानायनि भागा खुठीयम् उट्या **জবঃ। ইত্যেতে বহুচাঃ প্রো**ক্তাঃ সংহিতা থৈঃ প্রবর্ত্তিতাঃ ।। ইতি বিষ্ণুরাণে ৩ অংশে বেদ্বিভ-क्ति नीम 8 अधायः ॥ क्षा यज् र्विদमा मर्श्टा यथा। यङ्गर्विम তরোঃ শাখাঃ সপ্তবিৎশন্মহাম-তিঃ ৷ বৈশস্পায়ন ন্যান্যো ব্যা-সশিষ্য শ্চকার বৈ । শিষ্যেভ্যঃ প্রদলৌ ভাশ্চ জগৃহু স্তে ২পানু-क्रमा९॥ याद्धावकास ठमा ज्-দুক্ষরাত সূতো হিজ । শিষ্যঃ প-রমংশ্বজ্যে গুরুবৃত্তিপরং সদা।। ঋষি যোঁ খন্য মহামেরোঃ সমাজে নাগনিষ্যতি। তৃস্য বৈ সপ্তরাত্র-স্তু ব্ৰহ্মহত্য। ভবিষ্যতি । পূৰ্বমেব মুনিগণৈঃ সময়ো ২য়ণ কৃত দ্বিজ ॥ বৈশস্পায়ন একস্ত ত॰ ব্যতি-ক্রান্তবাণ স্ততঃ। সম্ভ্রীয়ণ বালকণ সোথ পদা স্পৃক্ত মহাত্যৎ॥ স শিষ্যানাহ ভোঃ শিষ্যাঃ ব্ৰহ্মহ-

ত্যাপহণ ব্রত। চরধ্ব মৎকৃতে সৰ্বে ন বিচাৰ্য্য মিদ॰ তথা।। অ-থাহ যাজ্ঞবন্ধ্য স্তৃ' কিনেভি ৰ্ভগ-বন্ দিজৈঃ।ক্লেশিতৈ রলতেজো-ভি শ্চরিযোহ নিদ॰ ব্রতং ॥ ততঃ करना ७३३ थार गांडविका ग-হামতিং। মূচ্যতাং যৎ স্বৰাধীতং মতো বিপ্রাব্যন্যক । নিডেজ-সো বদস্বেতান্ য স্তু॰ ত্রামণ পু-ৰুবান্। তেন শিষ্টোণ নাৰ্থোন্তি ম্মাজ্ঞা ভলকারিলা ৷৷ যাজ্ঞব ক্যা স্ততঃ প্রাহ্ ভক্তৈত্তের মধ্যেদি-ভং৷ মনাপ্যলং স্বয়ধীতং যলহা তদিদ পিজ ৷৷ শ্রীপরাশর উবাচ । २ इ. जुः। इ. विज्ञान्तानि यक्षशानि चलु॰िन महा छुई विश्वा मरानी छ-टिश्र यस्पी ह स्वच्छ्या मूनिः॥ य-जुःचाय विम्कीनि **राक्तरकान** বৈ দ্বিজ। যগৃহ **স্তিতিরা ভূম**। তৈত্তিরীয়াস্ত্র **তে ততঃ ॥ ত্রন্ধহ**-তা! বৃত্ত চীৰ্ণ গুৰুণা চোদিতৈ ন্তু বৈঃ। চরকা**ধর্য্যব ত্তে ভু চ**-রণাশ্বনি সভ্রন। বাজ্রবন্ধ্যাপি মৈত্রের প্রাণাধান পরাষ্ণঃ। জু-स्रोव अवन्धः भूवीः यद्भुःसानिन ষ॰ গুভঃ।। শ্রীবাজবন্ধ্য উবাচ। ননঃ নবিত্রে দারায় মূক্তে র্মিত- ∥ তেজসে। ঋষজুঃ সাম ভূতায ত্র-যীধামবতে নমঃ ৷৷ শ্রীপরাশরউ-বাচ। ইত্যেব মাদিভি স্তেন স্তৃষ-মানঃ স্তবৈ রবিঃ। বাজিকপধরঃ প্রাহ ব্রিষভা মভিবাঞ্চিত ৷৷ যা-জ্ঞবন্ধ্য ভতঃ প্রাহ্ প্রণিপত্য দি-বাকরণ যজুবি তানি মে দেহি যানি সন্তি ন সে ওরৌ ॥ এপি-রাশর উবাচ ৷ এবদাতভা দদৌ करेंग रक्षि जगवान इदिः। ভ্যাত্যান সংজ্ঞানি যানি বেক্তি **ग उ**म्*छन*ः ॥ यङ्ग्नि रेग तथी-ভানি ভানি বিশ্রৈ ছিভোত্তন। বাজিন তে নযাখ্যাতাঃ দূর্ব্যো ২শঃ নো ২তাবদাত॥ শাখাতে-দাস্ত তেষাণ বৈ দশপঞ্চ বা-জিনা । কাণাদ্যাঃ সুমহাভাগ যাজ্যকা প্রবর্তিতাঃ .. ইতি শ্রী বিকুপুরাণে ৩ তংশে বাজিনা-मार्थानि॰ ৫ अशायः ॥ # ॥ সানবেদস্য সংহিতা যথা। সাম বেদতরোঃ শাখা ব্যাসশিষ্যঃ স জৈমিনিঃ। ক্রমেণ যেন মৈত্রেয বিভেদ শৃণু তথ্ম।। সুমন্ত স্তস্য পুলো ২ভূৎ সুদ্বানপাস্য বৈ সু-তঃ ৷ অধীতবস্তা বেকৈকা° স°হি-তা॰ তৌ गহানুনী।। সাহ**সু**॰ স**॰**-

হিতাভেদ॰ সুকর্ম। তৎসূত স্ততঃ । চকার তঞ্চ তচ্ছিষ্যৌ জগৃহ্লাতে মহাত্রতৌ । হিরণানাভিঃ কৌ-শল্যঃ পৌষ্যঞ্জিশ্চ দ্বিজোত্তমঃ। উদীচ্যাঃ সামগাঃ শিষ্যা স্তম্য প-ঞ্শতাঃ স্তাঃ 11 হিৰ্ণানাভা-তাবতাঃ সংহিতা যৈ দিজোত্তম । গৃহীতা স্কেপি চোচ্যস্তে পণ্ডি-তৈঃ প্রাচ্য সামগাঃ ৷৷ লোকাক্ষিঃ अथिन देशाव अदी फिलीअ नि खथा । পৌষাঞ্চিশিয়া স্তত্তেদৈঃ সং-হিতা বহুলীবৃতাঃ॥ হিরুণানাভ শিয়, শ্চ চত্রি শতি নংইতাঃ । থোৰত কৃতিৰ মান্দী শিৰোজ্যঃ সুনহানতিঃ॥ তৈ শ্লাপি সামৰে-লোংসৌ শাখাতি বহুলীকৃতঃ। 🗱।। अथर्व (दारगा मः २७। यथा। অথৰ্বণা মথো বক্ষ্যে সংহিত্যানাং **ग**गूफ्रियः। अथर्दरदानः म गूनिः ग्-भन्न त्रिक्णाकिः ॥ शिया मधा-প্যামাস ক্রমণ সোপি তদিবা । কৃষা তু বেদদশীয় তথা পথ্যা-य मख्यान् ॥ दममभंगा भिया। স্তু মোদো বন্ধবলি স্তথা। শৌ-ক্ষায়নিঃ পিপ্ললাদ স্তথান্যো মু-निवजनः॥ वशामावि वयः मि-याः कृञ रेय विक म॰हिठाः।

জ।জলिঃ अगूमामिन्छ छृछीयः শৌনকো দ্বিজ।শৌনক স্তদ্মিধা কৃষা দদাবেকান্ত বভূবে। দ্বিতী-যা॰ সংহিতা॰ প্রাদাৎ সৈন্ধবায়ন সংজ্ঞিনে।। সৈদ্ধবা সুঞ্জকেশাশ্চ ভিন্নবেদা দ্বিধা পুনঃ ৷ নক্ষত্ৰক-ন্ধ্যে বেদানা॰ সংহিতান। ভথেবচ ll চতুর্থঃ স্যাদঞ্চিরসঃ শান্তিকল্ল-শ্চ পঞ্চমঃ শ্রোঠা শ্চাথর্বণা নেতে সংহিতানাং বিকল্পকাঃ। ইতি বি-ষ্পুরাণে ৩ অংশ ৬ অধ্যায়ঃ।। রঞ্চাবেদে। হরে র্বাক্ সাবিত্রীবে-দ্যাতা প্রতিষ্ঠিতা। ত্রিগুণ্ঞ ত্রি-বৃৎসত্ত॰ তেন বিপ্রাঃ প্রতিষ্ঠিতাঃ ॥ দশ্ৰহিতঃ সংস্কৃত। যে ব্ৰাহ্মণা दक्षवामिनः। ভত্ত বেদাশ্চ **লো**-কানা ত্রবাণা নিহ পোষকাঃ ॥ यङ्काशायन मानोमि ठभः साधाय সংযমৈঃ। প্রীণযন্তি হরিণ ভক্ত্য। বেদ ভন্ত্ৰ বিধানতঃ ॥ ইতি কল্কি-शृतार॰ २ अधायः ॥ **३॥ विली**-ক্তকৰ্ম্মকৰ্ত্তব্য যথা। শ্ৰাতি স্মৃ-তি সদাচার বিহিত° কর্ম্ম কেবল° ৷ সেবিতব্য॰ চতুর্বনৈ ভজজ্ঞিঃ কে-শবং সদা ॥ অন্যথা নির্যুণ যাতি সমাৰ্গ গণ সেবনাৎ। অতো বেদ-

বিরুদ্ধার্থণ শাস্ত্রোক্তণ কর্ম্ম সংত্য-জেৎ ॥ ইতি পালোতরখণ্ডে ১৭ विशायः ॥ 🕸 ॥ विमानातात्नी-কিকাচারে। বলবান্ যথা। পার্ব-ত্যুবাচ ৷ কেবল বেদমাশ্রিত্য কঃ করোতি বিনিণ্যণ। বলবান্লৌ-কিকো বেদালোকাচারঞ্চ ক স্ত্য-জেৎ্যা ইতি ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্তে গণপতি-খণ্ডে १ অধ্যায়ঃ।। ৠ।। অথ বেদ-স্য স্থিতিকালঃ ৷ কলে ৰ্দশসহস্যু-ত্তে যযৌ তাজ্জা হরেঃ পদণ। বৈ-ক্ষবাশ্চ পুরাণানি শঙ্খানি শ্রা-দ্ধ তপণ ৷৷ বেদোক্তানি চ কৰ্মা-ণি যযু স্তৈ সার্দ্ধ নেব চ। হরিপূজ। হরে নাম তৎকীর্ত্তি গুণকীর্ত্তনণ য় বেদাঙ্গানি চ শাক্রাণি যযু স্তৈঃ সাদ্ধি মেব চ। সত্ত্বঞ্চ ধর্ম্মঃ সত্যশ্চ বেদাশ্চ আমদেবতাঃ ৷৷ ইতি ত্র-**ন্ধবৈবর্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ৬ অ**ধ্যায়ঃ ।। 🕸।। আযুর্বেদস্যোৎপত্তি লক্ষ-ণে যথা। যদ্ধক্ত্রেভ্যঃ পঞ্চসংখ্যাগ-তেভ্যোবেদাজাতা ঋগ্ যজুঃ সা-ম ভেদাঃ। আযুর্বেদে। ২থবিবে-দ শ্চেতি কণাদঃ ৷৷ আত্তে বে-দঃ পঞ্চমো বৈদ্য ব্যাখ্যো বেত্তা কশ্চিত্তস্য নাস্তে মহেশাৎ ৷ ত-স্মান্ধাতাধ্যৈত তস্মান্তুরাযাট্ ত-

স্মাজ্জ্ঞাস্বা বক্তু মহামি শাস্ত্রণ।। ইতি গূঢবোধঃ॥ হিতাহিত• সুখ॰ দুঃখ মাযু স্তম্য হিতাহিত । মান-ঞ্চ তচ্চ যত্ৰোক্ত মাযুৰ্বেদঃ স উ-চ্যতে ৷৷ ইতি সুখবোধঃ ৷৷ঞ্চাঞ্চা **ठ**ञ्दर्गनाना॰ विवत्न । यथा । य-থাত শ্চরণবূাহ॰ ব্যাখ্যাস্যামঃ। তত্র যদুক্তণ চাতুর্বেদ্যণ। চত্বারো বেদা বিজ্ঞাতা ভবস্তি ৷ ঋগেদো যজর্বেদঃ সামবেদো ২থর্ববেদ-শ্চেতি। তত্র ঋথেদস্যাকৌ হ্রা-নানি ভবন্তি। চর্চাশ্রাবকঃ ১ চর্চকঃ ২ শ্রবণীষপারঃ ৩ ক্রম-পারঃ ৪ ক্রমরথঃ ৫ ক্রমজটঃ ৬ ক্রমশটঃ ৭ ক্রমদওশেচতি ৮ ৷ চতুম্পারায়ণ মেতেষা । শাখাঃ পঞ্চবিধ। ভবন্তি। আশ্বলাযনী ১ সাংখ্যায়নী ২ শাকল ে বান্ধলা ৪ মাণ্ডুকেয়া শ্চেতি ৫। তেয়া ম-ধ্যযন । অধ্যায়। শ্চতু যক্তিঃ। ম-ওলানি চ দশৈব তু। একর্চ এক-বৰ্গস্যাদেক\*চ নবক স্তথা। দ্বৌ বগৌ দে ঋচৌ জেযৌ ত্রীণি ঋচ শত• স্মৃত৽ ৷৷ চতু ঋ চ৽ সমাখ্যা-ত যট্ সপ্তত্যত্তর শত । পঞ্চে দাদশ শতান্যফাবিংশোত্তরাণি চ।। শতত্রয়ণ যড়র্কঞ্চ সপ্তপঞ্চা-

শদুত্রণ। সপ্তর্ক নেকান্নত্রি॰শ-দুত্তর॰ শতমেককণা৷ অফর্চ্চাঃ প-় **ঞ্চপঞ্চাশদ**ৰ্গাঃ স্যু নাধিকোত্তরাঃ । বর্গাণা॰ পরিসংখ্যাত॰ দ্বে সহ-**স্রে যজুত্তরে ॥ সহসু মেক** সৃক্তা-' না॰ নির্বিশক্ত বিকল্পানা। দশ **সপ্তসু** পঠ্যন্তে সংখ্যাতং বৈ পদ ক্রমণ।। একশত সহসূণ বা দিগ-ঞ্চাশৎ সহসাৰ্দ্ধণ। এতানি চ চ-जुर्फण वाशिक्षानाः । इंडद्रियाः পঞ্চাশীতি ক্রমকালে ভূ বেস্টব্য॰ । চতুক্তিশেৎ সহস্যুণি দ্বিখঙা-না॰ সহসাগা॰ দ্বাত্রিশাৎ ষোড-শোতরাঃ চলারিংশৎ সহস্যাণি দাত্রি॰শত ঞাকর মহসাণি। খাচা॰ দশসহস্থানি ঋচা॰ পঞ্চশ তানি চ। খচা নশীতিপাদ শৈচ-তৎ পারাষণ মূচ্যকে ৷৷ এক ঋ-टिक्वर्गम्ह এकम्ह नदक ख्या। দৌ বগৌদ্বে ঋটো জ্বেযৌ ত্ৰীৰ্ণি ত্রীণিশত ভ্রথা।। সহসূ মেক॰ সূ-ক্তানা॰ গঞ্চানা॰ শতমান বি॰শ-তিঃ। সপ্তকানা॰ দ্বেচ সপ্তোত্তরে শতে । চতু ঋচে ত্রীণি শতানি ষট্কানা ত্রীগাষ্টি রফকানা ॥ 🗱 ॥ যজুর্বেদস্য যডশীতি 🥣 দা ভবন্তি। তত্র চরকাণাম্ দাদ-

শতেদা ভবস্তি ৷ চরকাঃ ১ আ-হুরকাঃ ২ কঠাঃ ৩ প্রাচ্যকঠাঃ ৪ কপিষ্ঠলকঠাঃ ৫ ঔপমন্যাঃ ৬ वार्केनकठीः १ ठातार्गीयाः ৮ বারাষণীয়াঃ ৯ বার্ত্তান্তবেয়াঃ ১০ শ্বেতাশ্বরাঃ ১১ শ্বেত। শেততর। ইতি বা পাঠঃ। মৈত্রায়ণীয়া ১২ শ্চেতি। তত্র নৈত্রায়ণীয়ানাম্ সপ্তভেদা ভবন্তি। মানবাঃ ১ দুন্দুভাঃ ২ চৈকেষাঃ ৩ বারাহাঃ **৪ হারিদ্রবে**য়াঃ ৫ শ্যামাঃ ৬ শ্যা-মায়নীয়া ৭ শ্চেতি ৷ তেখা মধ্য-यन मत्की। राष्ट्रः महमानाशीठा শাখাপারে৷ ভরতি ৷ তান্যের দ্বি-গুণান্যধীতা পদপারো ভবতি। তান্যের ত্রিপ্তণান্যধীত্য ক্রমপা-রো ভবভি। ষডস্পান্যধীত্য ষড্জ-বিন্তবতি। শিক্ষা ১ কল্পো ২ ব্যা-করণ ৩ নিরক্ত ৪ ছন্দোও জ্যো-তিষ ৬ মিত্যঙ্গানি ৷ তত্ৰ প্ৰাচ্যো-দীচ্যা॰ নৈখাত্যা॰ নিশ্বতিঃ। তত্ৰ वाजमानाग् मथनमाजना ভবন্তি। জাবালাঃ ১ ঔ্তবেষাঃ ২ কাণাঃ ৩ নাধ্যন্দিনাঃ ৪ শাপী-যাঃ ৫ তাপায়নীয়াঃ ৬ কাপালাঃ ৭ পৌণ্ডুবৎসাঃ ৮ আবটিকাঃ ১ পানাবটিকাঃ ১০ পর্যাবটিকা- পি পাঠঃ। পারাশরীযাঃ ১১ বৈ-ধেষাঃ ১২ বৈনেষাঃ ১৩ ওছে-ষাঃ ১৪ গালবাঃ ১৫ বৈজবাঃ ১৬ কাত্যায়নীয়া শ্চেতি ১৭। প্রতি-পদ মনুপদ ছন্দো ভাষা ধর্মো মীমাণ্সা ন্যায় স্তর্ক ইত্যুপাঙ্গানি । উপজ্যোতিয়ণ। সাঙ্গলক্ষণণ। প্রতিজ্ঞানবাক্যং । পরিসংখ্যা । চরণবাহু ৷ শ্রাদ্ধকল্পঃ ৷ প্রবরা-धायका भाखा क्रिक्ट मण्या-নঃ। আগনঃ। হততং। পার্যান্। হোত্রক°। পার্য্যান্হোত্রক ম-পি পাঠঃ। পশবঃ। উক্থানি। কুর্মালকণ মিতাফীদণ পরিশি-कीनि। प्र महत्मु भटा नृतन মাল বাজগনেধকে। ইত্যক্ত পরিনংখ্যাত মেতৎ দকলং স-শুক্রিয়া এহাত্চ পরিসংখ্যা-ত॰ ত্রাক্ষাঞ্চ চতুর্গুণ । আদাবা-त्रजा (एम. छ॰ जन वा**क्ठि शू**र्व-কং ৷৷ বেদ মধ্যায় এতেষাং ছো-মান্তে তুসমারভেৎ। তত্ত্ব তৈত্তি-রীষকাণ্যম্ দ্বিভেদা ভবন্তি। ঔ-ক্ষ্যাঃ ১ খনধ্যোপি পাঠঃ । খা-ভিক্রেয়াশ্রেভিত ২।তত্র পাণ্ডিকে-যানাম্ পঞ্চেদা ভবন্তি। আপ-उदी > दोशायनी २ मट्यायाणी

৩ হিরণ্যকেশী ৪ ঔষেধাশ্চেতি ৫ ঔধেষী চপাঠঃ। তত্ৰ কঠানা-স্তৃপগান বিশেষাঃ। চতুশ্চত্বারিণ-শত্যুপগ্ৰস্থান্। মন্ত্ৰ বান্ধাৰে ধ্ৰ-দ স্ত্রিগু**ণ** যত্র পঠ্যতে। যজর্বে-দঃ স বিজ্ঞেষঃ শেষাঃ শাখান্তরাঃ भृ**ठाः ॥ \* ॥ मामत्वनमाथिन** সহসূতেদ আসীৎ ৷ অখিল স্থা-নে কিল ইতি ভাষ্য সম্মতঃ। অ-নধ্যাবেদধীয়ানান্তে শতক্রতু ব-জেূণাভিহতাঃ প্রণক্টাঃ। তেযাণ व्यवकामगम् तायनीया वामृताय-<u> गैगा वार्खा छत्या आक्षना भव-</u> ৰ্ণভেদ। প্ৰাচীনযোগ্য জ্ঞানৰো-গ্যা রাণায়নীয়াশেচতি। তত্র রা-ণাৰনীয়ানাম্ নবভেদা ভবস্তি। त्रावायनीयाः । भाष्ठेगर्यायाः । শাবাযনীযাঃ ইতি শাঠ্যসুগ্র্যাঃ ইভিচ পাঠঃ। সাম্বলাঃ। সাত্যসু-দ্ভবা ইতি বা পাঠঃ। মৌদালাঃ। ইতি তু ভাষ্যে নাস্তি। খলুলাঃ । महाथनुनाः। नाक्रमाः। (की-थुगाः। (गीउगाः। टेकिंगिनीया-শ্চেতি ৷ তেখা মধ্যমন মকৌ সাম সহসূৰ্ণি সামানি চ চতুর্দ-শ অফৌশতানি। দশেতি দশ-সপ্তসু বালখিল্যাঃ সমূপর্ণপ্রে-

শ্যঃ। ফচিৎপুস্তকে নবতি দশ-তি বালখিল্যঃ স সুপর্ণপ্রেক্যঃ ইতিচ পাঠঃ। এতৎ সামগণ স্মৃ-७॰॥ 🗱 । अथर्वत्वनमा नवत्छ-দা। ভবন্তি। পৈপ্ললাঃ। দাস্তাঃ। ·**প্রদান্তাঃ।** স্নাতাঃ। স্নৌতা। ইতি চ পাঠঃ। সৌত্লাঃ। ত্রন্ধদাবলাঃ। শৌনকী। দেবিদশতী। চরণবি-দ্যাশ্চেতি। দাতা প্রদাতা ওঁতা বন্দদীপশী বেদশী ইতি ভাষ্যে-নামান্তর । তেষা মধ্যয়ন পঞ্ কল্পানি ভবস্তি। নশত্রকল্পো বি-ধানকল্পো বিধিবিধানকল্পঃ সংহি-তা শান্তিকল্পশ্চেতি। সর্বেয়া মে-ব বেদানা মুপবেদা ভবস্তি ৷ খা-(थननापूर्विनः। यङ्क्तिमा धन्-র্বেদ উপবেদঃ। সামবেদস্য গান্ধ-ৰ্ববেদ উপবেদঃ ৷ অথৰ্ববেদস্য শ্-ত্রশাক্তাণি ভবন্তি ॥ 🕸 ॥ ঋধে দস্যাত্রেযগোত্র॰ ব্রহ্মদৈবত্য॰ গা-यव॰ इन्मः । सारधामा तन्त्रवर्गः পদ্মপত্রাযতাকঃ সুবিভক্তগ্রীবঃ সঞ্চিতকেশঃ শাশ্রুমেতবর্ণঃ দ্বি-त्रज्ञिन°यूठः ॥ 🗱 ॥ यजुर्त्त्रमम् ভারদাজগোত্রণ রুজদৈবতণ ত্রৈ-कुँ छ छ । यजुर्विमः क्रा मीर्यः क्लानी ठामुवर्वः काक्ष्न-॥

ন্যনঃ আদিত্যবর্ণো বর্ণেন প্র-क्षातंत्रिमांबः ॥ 🗱 ॥ मानत्वन-স্য কাস্যপগোত্র॰ বিফুদৈবত্য• জাগত ছনঃ। সামবেদো নি-ত্যসূথী শুচিঃ শুচৌবাসী শুচি-বাসাঃ ইতিচ পাঠঃ। ক্ষৌমী শনী ইত্যপি পাঠঃ। দান্তী চন্মী দণ্ডী কাঞ্চননয়নঃ আদিত্যবর্ণো বর্ণে-न यफत्रज्ञियांवः॥ 🗱॥ व्यथ्रद्रत-দস্য বৈজানগোত্রণ ইন্দ্রদৈবত্যণ আনুফুভ ছনঃ। অংৰ্ববেদ স্তী-য় শ ওঃ কৃষ্ণঃ কামৰূপী ক্ষুদ্ৰক-শী হেবসাধ্যাঃ ক্ষুদ্রকর্মিদেব-সাধ্যা ইতি বা পাঠঃ। সবিএহাঃ गकनराः मृद्धि भानतः मनानर्कुः ফঃ গরব্রিয়ান্য**েচতি নবরত্নি** মাত্রঃ। গ্রন্থান্তরে বিশ্বাত্মা বিশ্ব-कर्या स्थाराशी। आख्डा म হানীলোৎপলবর্ণো বর্ণেন দশর-ত্নিমাত্র ইভি চ পাঠঃ।। 🟶 🛚 অথ ধ্যান । ধ্যাযামি স্বা॰ পদ্মপত্রায-তাক্ত সঞ্চিতকেশত ব্ৰহ্মদৈবত্য गानाः। भारताः सार्यन गात्वय গোত্ৰ॰ রুকাবৰ্ণ॰ শাশ্রুলোম প্রমা-ণ' ৷৷ বন্দে রে.জ' ত্রৈফুভণ ভাসু-বর্ণ ভারদ্বাজ্য রুক্মনেত্রণ কৃশা-कः । यकुर्दिमः भीर्य मामिछावन्

কাপালীন পঞ্চারত্নিমাত্র গা 🗱 🛚 য ইদ॰ দৈবতং কপং গো ত প্রমাণ ছন্দো বর্ণ বর্ণযতি স বি-দ্যা॰ লভতে স বিদ্যা॰ লভভে । জন্ম জন্ম বেদপারে। ভবতি অ-ব্ৰতে৷ ব্ৰতী ভবতি অপ্ৰয়তঃ প্ৰ-যতে। ভবতি অবন্ধচারী বন্ধ-চারী ভবতি জাতিশ্মরো জায-তে ৷৷ ঋ ৷৷ ষ ইদ॰ চরণব্যহ॰ প-ৰ্ষসু শ্ৰাবযেন্দ্ৰিজঃ ৷ ধৌতপাশা শুচি বিপ্রো ত্রন্ধ ভূবাৰ কন্পতে 11 य देन॰ চরণব্যুহ॰ आक्वकारन मना পঠে । जक्य मन्त শ্ৰাদ্ধণ পিতৃণা মূপতিষ্ঠতি।৷ যো ২ধীতে চর্ণবূাহ° স বিপ্রঃ প-ঙ্কিপাবনঃ। পাব্যত্যখিলান্ পূর্বান্ পুরুষান্ সপ্ত সপ্ত চ ॥ য ইমা বিপুলা দেবা অমৃতত্ত্বঞ্চ গচ্ছতি। লোকাতীত মহাশা-ত অমৃতর্ঞ গচ্ছতি ।। গচ্ছ-ত্যো° নম ইত্যাহ ভগবান্ ব্যা-সঃ পারাশরীযো ব্যাসঃ পার।-শরীযঃ। ইতি ব্যাসরচিত চর ণব্যহ॰ সমাপ্ত॰ ॥ বেদগর্ত্তঃ পুণ ত্রহ্মা ৷ ত্রাহ্মণঃ ৷ ইতি হেমচব্দঃ ॥ বেদগুপ্তিঃ দ্রী ব্রাহ্মণাদিকত্

কবেদরকা। ইতি কেচিৎ।। বেদন॰ ক্লী। অনুভবঃ। তৎপর্য্যা-বেদন। দ্রী\ যঃ। সম্বেদঃ ২। ই-ত্যমরঃ ॥ জ্ঞান॰ ॥ দুঃখ॰। ইতি (मिनिनी।। विवाइः। यथा। भा-ণিগ্রহণ সংস্কারঃ স্বর্ণাসূপদি-শ্যতে ৷ অসবণাস্বয়ণ জ্ঞেষো বিধি রুদ্বাহ কর্মাণি 11 শরঃ ক্ষ-ত্রিববা গ্রাহ্ণ প্রতোদো বৈশ্য-কন্যবা। বসনস্য দশাগ্রাহ্যা শু-জযোৎকৃষ্ট বেদনে ॥ ইতি মা-नत्व ७ ज्यायः ॥ 🕸 ॥ পी-ণীতি। সমানজাতীয়া**সু গৃহ**-মাণাসু হস্ত গ্রহণ লক্ষণঃ সংক্রা-রো গৃহাদি শাস্ত্রেণ বিধীয়তে । विकाञीयाम् भून क्रश्नानाम् বিবাহ কর্মাণি পাণি এইণস্থানে অয মনন্তর শ্লোকে বক্ষানাণো বিধি জ্রেবঃ। শর ইতি। ফ-ত্রিবয়া পাণিগ্রহণস্থানে ত্রাহ্মণ-বিবাহে ত্রান্ধণহস্ত পরিগৃহীত কাত্তৈকদেশে। গ্রাহ্ণঃ বৈশ্য-য। ব্ৰাহ্মণ ক্ষত্ৰিয় বিবাহে ব্ৰাহ্ম-ণ ক্ষত্রিয বিধৃত প্রতোদৈকদে-শো আহঃ। শূত্রযা পুন দ্বিজা-তি ত্রয় বিবাহে প্রাবৃত বসনদ-শা আহা। ইতি সল্লুকভটঃ॥

**जिम्मिन्**कः पू॰ मास्तिकः। ইতি। किरोधनः॥ वृक्ष 🕫 ॥

विनगांत्रभः भू॰ विनविखा। द-भाउनी। यथा। ठळवाकाः भद्र-षील इ॰माः महिम सानतम । ়ে**তে ২**ভিজাতঃ সরুদেত্রে বা-ক্ষণা বেদপার্বাঃ ৷৷ ইতি শ্রাদ্ধ-তত্ত্বে পিতৃগাধা॥

বেদমাতা স্ত্রী পাষ্ট্রী। যথা। যোহধীতে হুহনাজনোভা পা-বিত্রীণ বেদগাতরণ বিজ্ঞানার্থণ ব্রন্ডারী স্বাতি পর্নাণ গতিৎ ।। भाषञी॰ दिल्ल ननी॰ भारजी॰ (लाकशायमी॰ । म भाष्याः পরুং জ্প্যং এতহিতাৰ নূচা.ত মাইতি কৌর্মে উপরিভাগে ১৩ अक्षारः ॥ क्षा मुगा । नया । ত্রন্ধিঠা বেদনাভূত্বাল্যাংতী চ রণাগ্রজা। বেদেশু চরতে যদ্রা-ত্তেন সা ভ্রমচারিণী।। ইতি দে-वीभूतार १८ अशायः ॥

বেদবতী ত্রী জশপ্বজরাজ্বন্য। সাজন্মান্তরে সীতা। যথা।বহি 🍴 রুবাচ। স্থ্রণ গছে তপ্রেন দেবি পুকরক মপুনদে । কৃত্রা তপ-স্যাণভাৱের স্বৰ্গ লক্ষী ভবিষ্যতি

**ফরে ত**পঃ । দিব্য° ত্রি লক্ষবর্যঞ্ স্বগলগী বভূব হ।। সাচ কালে-न ज्या चळ्ळ ७ मगु ह्या। का-मिनी পाएदामाक (छोशनी छ-পদা নজা ৷৷ কৃতে যুগে বেলবতী সশধজ নৃত্য শুভা। ত্রেভাষা রামপত্নী সা সাঁতেতি জনকান্স-জা।। ভচ্ছায়া জৌপদী দেৱী দ্বাপরে জ্পদাত্মজা। ত্রিহাব-নীভি সা প্রোক্তা বিদ্যমান যুগ जरम ॥ इंडि उनारेयवर्र्ड अकृ-তিখণ্ডে ১২ অধ্যায়ঃ॥

र्वित्रवासन्य की वाक्तवार यथा। (य। (वन (वमवमग॰ मनग॰ हि সম্যূগ ভাক্সাঃ স বেদ মপি বেদ কিমন্য শাহ্রণ। যত্মাদতঃ প্রথ-ন নেতদ্বীত্য ধীনান শাস্ত্রান্ত-রস্য ভবতি শ্রবণে ধর্যকারী॥ ইতি সিদ্ধান্তশিরোমণৌ গো-नाशायः॥

(बनवामः श्रु° जान्नभः । हेि শব্দরত্বাবলী ॥

तिमदि**ष् भू** विक्धायशात-দে। বেদবিদব্যকে। বেদাঙ্গে। বে-দবিৎ কবিঃ। ইতি তস্য সহসু-নামস্ভোত্র॰ ॥ বেদজ্ঞে ত্রি ॥ ॥ সাচ তহচন প্রাপ্তভগ্য পূ-। বেদব্যাসঃ পু॰ মুনিবিশেষঃ ১ তৎপর্যায়ঃ। মাঠরঃ ২ দৈপাযনঃ ৩ পারাশর্যঃ ৪ কানীনঃ ৫
বাদরায়ণঃ ৬ ব্যাসঃ ৭ । ইতি
হেমচন্দ্রঃ। কৃক্ষদ্বৈপায়নঃ৮সত্যভারতঃ ৯ পারাশরিঃ ১০ সাত্যবতঃ ১১ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ
।৷ বাদরায়ণিঃ ১২ সত্যবতীসূতঃ
১৩ সত্যরতঃ ১৪ পারাশরঃ ১৫ ।
ইতি শব্দরত্নাবলী ।৷ অস্য বিবরশং ব্যাসশব্দে দ্রফব্যং ।।
বেদাগ্রণী স্ত্রী সরস্বতী ৷ ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

ক্লী শ্রুত্যবয়বয়ট্প-বেনাসং কারশাত্র । তদ্মথা। শিক্ষা ১ কল্পঃ ২ ব্যাকরণ ৩ নিরুক্ত ৪ ক্লোতিষণ ৫ ছন্দঃ ৬। যদুক্তণ। শিক্ষা করে। ব্যাকরণ নিরুক্তণ জ্যোভিষা<sup>°</sup> গণঃ । চন্দোবিচিতি ব্লিত্যোতঃ য**ডঙ্গে। বেদ উচ্যতে** ॥ ইতি। তত্র অকারাদি বর্ণানা॰ স্থল করণ প্রাযত্ন বোধিকা অ কু এহ বিদর্জনীয়াঃ কণ্ঠা ইত্যা-দিক। শিক্ষা। যাগ ক্রিয়াণা মুপ-(मनः कन्नः। मायुगकाचाथाा-नः द्याकद्वः । वर्गायसा दर्ग-বিপৰ্য্যযশ্চ ইত্যাদিন। নিশ্চযে-নোক্ত নিরুক্ত। গ্রহণাদিগণন শাস্ত্র° জ্যোতিঃ ৷ শ্রুতি ছন্দসা° প্রত্যাযক°শাস্ত্র° ছন্দোবিচিতিঃ ৷ ইত্যমরভরতৌ ।।

বেদাদি রু প্রন্তং । যথা ৷
বেদাদিবীজং ১ বেদাদি ভুবনেশীথু শ্রীবীজং ডেযুতং ভৃগুং ৷ হারুষিত্বা বদেয়াপ্তং শুক্রন্য চ ষডফরেং ৷৷ ও স্থাঁ শ্রী শুক্রায় ৷
ইতি রুত্রজামলং ৷৷ বেদাদিবীজং হুঁ বীজং শ্রীবীজং ত্রিকেতনং ৷ শক্তি বীজং রুমাবীজং
মাষাবীজং সুখাকরং ৷৷ ইতি রাজরাজেশ্রীতত্রং ৷৷

বেদান্তঃ পু॰ উপনিষ্থ ৷ ইতি
হেমচন্দ্রঃ ৷৷ সতু বেদব্যাস প্রনীত দর্শনশাস্ত্রবিশেবঃ ৷ অস্য
নামান্তর॰ উত্তর মীমাণা ৷ তত্র
চন্ধারে৷ অধ্যামাঃ ৷ তেমু ব্রহ্ম
নিরূপণ ৷ তদ্বিরূপণ যথা ৷ অব্যক্তাদণ্ড মতুদণ্ডাদুক্ষা ততঃ
প্রজাসর্গঃ ৷ মাযাম্যী প্রবৃত্তিঃ
সংস্থত ইষণ পুনঃ পুনঃ ক্রমশঃ
৷৷ মাযাম্যোপ্যচেতা গুণ কর্প
গণঃ করোতি কর্মানি ৷ তদ্ধিষ্ঠাতা দেহী সচেতনোপি ন করোতি কিঞ্চিদ্পি ৷৷ য্দদ্যেতন
মপি সন্ধিকটক্ষে ভ্রামকে ভ্রমতি

**ल**िर्°। जन्दकत्रन ममृश् (कि-फेंठि চिमिधिष्ठैं उट एम्टर ॥ य-**ছ**ৎ সবিত্য্যু দিতে করোতি ক-र्मानि জीवलाका १४०। न ह তানি করোতি রবি ন কার্যতি র বিমৃচ্ছিত্সা চৈতন্য বোধি-তদ্যেহ। পূরুষাভিমান সুখ দুঃ-থ ভাবনা ভবতি মূচস্য ॥ কর্ত্ত। ভোক্তা জটাশ্মি কৰ্ম্মণা মুত্ৰনা-দীনাণ ইতি তথ্যভাব বিমলো-ভিষ্কাতে স্বলোপ্যালা ॥ না-নাবিধ বৰ্ণানা বৰ্ণান ধতে ষ্থা-মলক্ষাটিকঃ । তদ্বদুপাধে গুণ ভাবিত্স্য ভাবং বিভু ধতে ॥ খ-চ্ছতি গহ্ছতি সলিলে দিনকর বিশ্ব॰ স্থিতে স্থিতি॰ যাতি। সন্তঃ-করণে গচ্ছতি গচ্ছত্যাত্মাপি ত-षित्।। ताष्ट्र तमृत्गािशियथा भ-শি বিশ্বস্থঃ প্রকাশতে জগতি। সৰ্বগতোপি তথাত্বা বুদ্ধিস্থে৷ দৃ শ্যতা মেতি ৷৷ আদর্শে মলরহি-তে ষদ্বদ্ধপ॰ বিচিনুতে লোকঃ। আলোক্ষতি তথাত্মা বিশুদ্ধ বু-দ্ধৌ স্বমানান ৷৷ সর্বগত তৎ নিরুপম মদৈত তচ্চ চেত্সা গ-ম্য° । যদুদ্ধিগত° ব্ৰহ্মোপলভা-

তে শিষ্যবোধ্য° তৎ 11 বুদ্ধিমনো হংকারা স্তন্মাত্রেন্সিয়গণাঃ স ভূ-তগণাঃ। সংসার সর্গ পরিরক্ষণ ক্ষমাঃ প্রাকৃতা হেষাঃ ॥ ধর্মাধ-**(ऋ)** मृथमुःथं कन्नन। ऋर्ग नत्रक्व।-সশ্চ । উৎপত্তি নিধন বৰ্ণাশ্ৰম। ন সন্তীহ পরমার্থে ।৷ মৃগতৃক্ষাযা রজাণ ৷ তৈমিরিক চন্দ্রমূগবৎভাু-**छ॰ निर्थिल॰ জগজপ॰।। यह** क्लिन-করএকো বিভাতি সলিলাশযেষূ সর্বেষু ৷ তদ্বৎ সকলোপাধিদ্বন-ঙ্গিতে। ভাতি পরমান্না।। খনিব ঘটাদিঘত্ৰহিঃ স্থিত ব্ৰহ্ম সৰ্ষ পিঙেষু । দেহোহ মিত্যনাত্মনি वृक्तिः ग॰मात वक्ताय ॥ मर्वविक-দ্মন হীনঃ শুদ্ধো ২বৃদ্ধো ২জরো ২মরঃ শান্তঃ। অমলঃ সকৃদ্বিভা-তক্ষেত্ৰ আলা খবদ্যাপী।। র-সকাণিত শকরিকা গুডখণ্ডা বি-कृতरमा यदेशरवरकाः। ठमनवञ् ভেদাঃ পরমান্ত্রন্যেব বহুৰূপাঃ ৷৷ विद्धाना खर्गानि थान विद्रा है एन-হজাতি পিণ্ডান্তাঃ। ব্যবহারস্থ-স্যাত্মন এতে ২বস্থাবিশেষাঃ স্যুঃ ৷৷ রজা॰ নাস্তি ভুজন্বঃ সপ্ভব॰ ভবতি হেতুনা কেন। তথ্যসূত বিকলভাতি রবিদ্যান সভ্য নিদং ।। এততদক্ষকার॰ यहनाशना श-তা ভান্তা। ন বিদন্তি বাসুদেবং गर्राज्ञानः नज्ञा मृजाः॥ थानान्त-नस्ट (छोम झालान भिष्टका छा-লদিব। সংহরতি বাসুদেবঃ খবি-তূত্যা ক্রীডমান ইব।। ত্রিভি রে-ব বিশ্ব তৈজস প্রাটেজ ক্তৈ রাদি মধ্য নিধনাথৈঃ। জাগ্ৰৎ স্বপ্ন স্ **শুপ্তি ভূ**মভূতৈ শ্লাদিত তুর্বাণ **৷মোহ্যতীবাত্মান**ং ক্যাৰ্যা ছৈ-ত্ৰাপয়া দেবঃ। উপলভতে স্বয-মেব॰ গুহাগত৽ পুরুষ মাতান৽ ৷৷ জুলনাদ্ধুমোদাতিভি বিবিধাকৃ-তি রয়রে যথা তাতি । তদ্বদি-কোঃ সৃষ্টিঃ স্ব মায্যাদ্বৈত বিস্ত-রো ভাতি ৷৷ শাস্ত ইব মনসি শা-ন্তে হৃদ্টে হৃদ্ট ইব মূচ ইব মূচে। ব্যবহারভো ন পুনঃ প্রমার্থত ঈশ্বরো ভবতি।। জলধর ধমো-দ্যাতিতি ৰ্মলিনীক্রিয়তে যথ। ন-গগনতলং। তদুৎ প্রকৃতি বিকা-রৈ রপরামৃকঃ পরঃ পুরুষঃ ॥ এক शिम्राणि ह घटे वृगानि भवा।-বৃতে ঘটাঃ শেবাঃ। ন ভবস্তি ম-লোপেতা ষদ্বজ্জীবোপি তদ্বদিহ ॥ দেহেন্দ্রিযেযু নিষভাঃ কর্ম গু- 🏻

ণাঃ জৰতে স্বলোগার্থ॰ 1 নাহ• কৰ্ত্তা ন সমেতিজ্ঞানতঃ কৰ্ম্ম নৈ-ব ব্রাতি ।। অন্সরীরেণ *কৃ*ত॰ হর্ম ভবে যেন দেহ উৎপন্নঃ। তদৰশ্যুণ ভোক্তব্যুণ ভোগাদেব करमा २मा निर्मिक्टः ॥ आक् জ্ঞানোৎপত্তি চিত্ত যথকৰ্ম হয়-ন শিখি শিখালীত । ীজ মিব मरन एक्ष° क्या मनर्थ° न उत्तर-छ।। उद्योगभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष्ट्रभाष् মাণ কর্ম হতদ্পি। বিষয়তি কর্ত্তার পুষ্করপর্ণ যথ ারি।। বাজেহ মানসৈ রিহ্র সংক্রি-যত ইতি বুধাঃ প্রাহঃ একে.পি नार (मशा॰ कर्छ। ७९ वंशा मिया 11 क्यांक्न वीजनाम - ज्या दिन!-শোন চাত্র সন্দেহঃ। বুটেলুব ম-পগত তমাঃ সনিতের বিভাতি ভা ৰূপঃ।৷ যদ্বদিখীক৷ তূলং প্ৰনো-দ্দৃত দশদিশো যাতি। ব্ৰহ্মণি তত্তুক্তানাত্তথৈৰ কৰ্মাণি ততুৰি-দং।। ফীরাদুদ্ধত মাজাণ কিপ্ত॰ যদম পূৰ্বতানিন্। প্ৰকৃতি গু-ণেভ্য স্তদ্বৎ পৃথক্ কৃত শেচতনো-शाचा ॥ धनमय नामा गर्न· নিৰ্দূৰ যথা তনঃ সহসা তওঃ। বা-হাভ্যান্তরচারী দৈশ্বব ঘনবৎ

ভবেৎ পুরুষঃ।। যদ্বদেহে । ২বম-বা মৃদেব তস্যা বিকার জাতানি। তদ্বৎ স্থাবর জঙ্গন মদ্বৈতং দ্বৈত বন্তাতি ৷৷ একস্মাৎ ক্ষেত্ৰভাদ-হবঃ ক্ষেত্ৰজাতযো জাতাঃ৷লৌ-. হগতাদিব দহনাঃ সমস্ততো বি-স্ফুলিস্ক কণাঃ **।৷ তে** গুণসঙ্গন দোষাদ্বদ্ধা ইব ধান্যজাত্যঃ স্ব-ভূষ্ণে। জন্ম লম্ভতে তাবদ্যাবন ক্তোন বহিনা দক্ষাং॥ ত্রিগুণা চৈ-তন্যাত্মনি সৰ্বগ**তে ২বস্থিত৷ খি**-লাধারে। স্বরুতে সৃষ্টি মবিদ্যা সৰ্বত্ৰ স্পৃশ্যতেত্য। নাত্মা।।রজ্বাণ ভুজঙ্গহেতৌ প্রভব বিনাশো য-থা ন স্তঃ ৷ জগদুৎপত্তি বিনাশৌ ন চ কারণ মস্তি তদ্বদিহ।। জন্ম विनागन भगनाभगन गरेनः मक বৰ্জিতে। নিত্যং । আকাশ ইব ষ্টাদিষু সৰ্বান্ধা সৰ্বভোপেতঃ ম কৰ্ম শুভাশুভ জনিতঃ সুখ দুঃ-থৈ বন্ধো ভবত্যুপাধীনা । তৎ সংসগাছদ্ধ শুস্কর সঙ্গাদতস্কর-বৎ ৷৷ দেহ গুণ করণ গোচর স-ঙ্গাৎ পুরুষস্য যাবদিহ ভাবাঃ। তাবন্মাযাপাশেঃ ন°সারে রুদ্ধ ই-ব ভাতি॥ মাতৃ পিতৃ বান্ধব ধন-ভোগ সংমূচঃ। জন্ম জরা মরণম-॥

যেচক্ৰ ইব ভ্ৰাম্যতে জন্তুঃ!লোক ব্যবহার কৃতাং য ইহাবিদ্যা মুপা-সতে মূচাঃ। তে জনন মরণ ধর্মা-ণো শ্বান্ত মত্রেত্য খিদ্যন্তে॥ হিন रकन नुषुष। इत जलमा धृरम। य-থা বয়েঃ। তদ্বৎ স্বভাবভূতা মা **যৈষা কীৰ্ত্তিতা বিক্যোঃ ॥ এব**° **দৈত বিকল্পা**ণ ভূম স্বৰূপাণ বি-মোহিনীং মাষাং। উৎসূজ্য मः কল॰ নিস্ফল মদ্বৈত॰ ভাবযেদ্ৰু-শ্ব।। যদ্বৎ সলিলে সলিল ফীরে ফীর॰ সমীরণে বাষুঃ। তদ্বভুন্ধণি বিমলে ভাবনযা তন্মযন্ত্ৰ মুপযা-তি।। ইত্থ॰ দৈত সমূহে ভাবনষ। ব্ৰন্ত্য মুপ্যাতি। কো মোহঃ কঃ শোকঃ সর্বং ব্রহ্মাবলোক্যতঃ ।। বিগতোপাধি ক্ষটিকঃ স্বপ্রভ যা ভাতি নিৰ্ম্মলো যদ্বৎ।চিদ্দী-পঃ স্বপ্ৰভ্যা তথা বিভাতীহ নি-রুপাধিঃ ।। গুণ করণগণ শরীর প্রাণৈ স্তন্মাত্রজাতি সুখ দুঃখৈঃ। অপরামৃষ্টে। ব্যাপী চিদ্রপোষণ সদা বিমলংগ দ্রুষ্টা শ্রোতা যুাতা স্পর্শায়িতা রুস্যিতা গ্রহীতা চ ৷ দেহী দেহেন্দ্রিযধীবিবর্জিতঃ স্যা-ন্ন কর্ত্তাসে।।একে। নৈকত্রাবস্থি-তো মহৈশ্বর্যাণ যোগতো ব্যাপ্তঃ। আকাশ বদখিল মিদণ ন কশ্চিদ-প্যত্ৰ সন্দেহঃ। আইম্মবেদং সৰ্বং নিষ্কল সকলং যদৈব ভাবযতি। মোহ গহনাদ্বিযুক্ত স্তদৈব পর-মেশ্বরীভূতঃ 11 যদ্যৎ সিদ্ধান্তা-গম তকেষু প্রভূমন্তি রাগান্ধাঃ। অনুনোদাম ভত্তেষা সৰ্বাত্ম-বাদি ধিযাং ৷৷ সৰ্বাকারে৷ ভগবা-নুপাস্যতে যেন যেন ভাবেন। ত° ত ভাব ভূমা চিন্তামণিবৎ সন ভ্যেতি ।। নারাষণ মাল্লান° জা-ত্বা সৰ্গ স্থিতি প্ৰলম্ হেতু । সৰ্ব-ত্তঃ সৰ্বগতঃ সৰ্বঃ সৰ্বেশ্বরো ভব-তি ৷৷ আত্মত্ত স্তরতি শুচণ্ যত্মা-বিদ্বানবিভেতি স্তর্লিড**ং। স্**-ত্যোরপি মরণ ভয়ণ ন ভরত্যন্য-**দ** ভর° ল্ভ ন্ডস্য ॥ **ফ্য বৃদ্ধি ব্**ধ্য যাতক বন্ধন নোকৈ বিবজ্জিত নিত্যণ। গরমার্থতম্ব মেতৎ যদ-ভোন্তেদনৃত সর্গা এবং প্রকৃ-তি পূরুষ বিজ্ঞায় নিরস্ত কল্পনা-জালঃ। আয়ারানঃ প্রশন প্রশা-স্থিতঃকেবলী ভবতি।। নল কদলি বেণু বাগানশ্যন্তি যথা স্বপুষ্প মা-সাদ্য । তদ্বৎস্বভাবভূতাঃ স্বভাব-তা॰ প্রাপ্য নশ্যন্তি ৷৷ ভিন্নে জান অক্টো ছিয়ে সংশ্য গণে শুভা শু-

ভে ক্ষীণে ৷ দক্ষে চ জন্ম বীজে প-রমানন্দ॰ হরি॰ যাতি 🛭 মোক্ষস্য নৈব কিঞ্চিদ্ধামান্তি ন চাপি গমন মন্যত্র। অজ্ঞান্যয্তান্থে র্ভেদো ষ স্ত॰ বিদু র্মোক্ষণ।। বুধৈব মসত্য নিদ॰ বিষ্ণো মাথাত্মকণ জগজ্জ-গ॰। বিগতদ্বন্দোপাধিক ভোগা-সঙ্গে ভবেচ্ছান্তঃ ॥ বুধা বিভ-ক্তাণ প্রকৃতিণ পুরুষঃ সণসার ম-ধ্যগো ভবতি। নিম্ক্রঃ সর্বকর্ম-ভि রমুজপত্র° যথ। সলিলেঃ 11 অশ্বন্ ৰদ্বা তদ্বা সংবীতো যেন কেনচিচ্ছান্তঃ। যত্ৰ কচন চশা-ষী বিমূচ্যতে সৰ্ব ভূতাত্মা॥ হয-মেৰ শতসহসাণ্যথ সরুতে ভ্রন্ধ-যাত লক্ষাণি ৷ পরমার্থবিন্ন পুণ্ডৈ ৰ্নচ পাগৈঃ স্পূশ্যতে বিঘলঃ 11 মদ কোপা হর্ষ মৎসর।বৃষাদ ভয পরুষ বর্জ্য বাধুদ্ধিঃ। নিস্তোত্র ব্যট্কারো জ্ড ব্দ্বিচরেদগাধ-মতিঃ।। উৎপত্তি নাশ বৰ্জিত মেব॰ পরমার্থ মুপলভ্য । কৃত কৃ-তাঃ সফলজনঃ সর্বণত স্তিষ্ঠতি যথেষ্ট॰ ॥ ব্যাপিন মভিন্ন মিখ॰ সৰ্বাত্মান বিধৃত নানাত্ব । নিরু-পম পর্মানন্দ যো বেদ স তন্ম-যো ভবতি।। তীৰ্থে শ্বপচগৃহে বা

নফ্য্তি রপি পরিত্যজন্ দেহণ । জ্ঞান সমকাল॰ মুক্তঃ কৈব-ना॰ यां इंडरमाकः ॥ श्रूगायं তীর্থসেবা নির্যায় শ্বপচ সদন নিধন গতিঃ ৷ পুণ্যা পুণ্য কলঙ্ক-. স্পর্শাভাবে তু কিন্তেন।। বৃক্ষা-গ্রাচ্যুতপাদো যদদনিচ্ছনরঃ-ক্ষিতৌ পততি। তদ্বদ্ গুণ পুরু-যজ্যে **২নিচ্ছন্নপি কেবলীভব**-তি ৷৷ পর্মার্থ মার্গ সাধন মার-ভ্যাপ্রাপ্য যোগ নপি নাম। সু-রলোক ভোগ ভোগী মূদিমনা মোদতে সুভূশণ।। বিষধেষু সা-ৰ্বভৌনঃ সৰ্বজনৈঃ পূজাতে য-থা রাজা । ভুবনেষু সর্বদেবৈ ৰ্যোগভূষ্ট স্তথা পূজাঃ ৷৷ মহতা कालन गर्न यानुयाः প্রাণ্য যোগ মভ্যস্য : প্রাপ্নোতি দিব্য-মমৃত যত্তৎ পর্মণ পদণ বি-কোঃ ৷৷ বেদান্তশাস্ত্র মখিল বিলোক্য শেষো ২থিলাধারঃ। আর্য্যা পঞ্চাশীত্যা ববন্ধ পর-মার্থসার সিদ°।। ইতি শ্রীশেষ-নাগ বির্চিত প্রমার্থসারণ সমাপ্ত 11

বেদাধিপঃ পু॰ বেদানামধিপতিঃ

যথা ৷ ঋথেদাধিপতি জীবিা

যজুর্বেদাধিপঃ সিতঃ । সামবে-দাধিপো ভৌমঃ শশিজে। ২থ-র্ববেদরাট্ ॥ ইতি জ্যোতিঃ সা-রসংগ্রহঃ ॥

বেদাস্তী<sup>ন্</sup> পুণ বেদাস্তশাস্ত্রবে-ভা। তৎপর্য্যাষঃ। ব্রহ্মবাদী ২। ইতি জ্বটাধরঃ।।

বেদারঃ পুং ক্কলাশঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।

বেদাভ্যাসঃ পুঁ বেদানুশীলনং
। স চ পঞ্চিধঃ ৷ যথা দক্ষঃ ৷
দিতীয়ে চ তথা ভাগে বেদাভ্যাসো বিধীয়তে ৷ বেদাভ্যাসোহি
বিপ্রাণাং পরমং তপ উচ্যতে ৷৷
বক্ষয়ক্ত পরং ক্রেফঃ যুদ্দ সহিতণ্চ যঃ ৷ বেদ্যীকরণং পূর্বং
বিচারো হভ্যসনং জপঃ ৷ তদ্দানঞ্চৈব শিষ্যেভ্যোবেদাভ্যাসো
হি পঞ্চ্যা ৷ শঙ্খ লিখিতৌ ৷ ন
বেদ মনধীত্যান্যাং বিদ্যা মধীযীতান্যত্র বেদাক স্মৃতিভ্যঃ ৷
ইত্যাহ্লিকতত্ত্বং ৷৷
বেদি ক্লী অয়প্ঠা ৷ ইতি শক্ষচন্দ্রিকা ৷৷

বেদিঃ দ্রী পরিষ্তাভূমিঃ। ই-তামরঃ॥ পরিস্কৃতা যজ্ঞার্থণ প-শুবন্ধনায় যজ্ঞপাত্রাসাদনায চাহিত সংস্কারা ভূমি র্বেদি রু-চ্যতে ৷ সাচ ডমরুকাদ্যাকারা-পিঞ্জিকা ৷ বেদয়তি নিবাসয়তি দ্রব্যজাত বেদিঃ। বিদ ও ক ঞ চেতনাখ্যানে বাসবাদে নামী-তि देश (विकि ही (विकी है। ইতি ভরতঃ ।। অঙ্গুলিমুদ্রা। ইতি মেদিনী ॥

বেদিঃ পু॰ পণ্ডিতঃ ৷ ইতি নে-**मिनी** ॥

বেদিকা স্ত্রী মঙ্গলকর্মার্থণনি-র্দ্মিতবেদিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। বি-**७िकः २ । इ**ञामद्रः ॥ विज्की ৩ বেদিঃ ৪ বেদী ৫ ৷ ইতি ভটী-का ॥ इव जात्रामाञ्चनानि मधा-इ विकिथां। भियांभातांकी काश्चेषि हजुष्किकाया मिठारना। দারু পরিবৃতা চতুরসূ। বিশ্রাম-ভূ বিতর্দ্দি রিত্যপরে। সুম্ভ সংল-গ্ল পীঠিকা বিতর্দ্দি রিতি কেচিৎ **৷ মঙ্গল্যান্থন মধ্যস্থ চতুন্ধিকেতি** কেচিৎ ৷ মঙ্গলস্থানাৰ্থণ নিৰ্শ্বিত বেদিকেতি কৈচিৎ ৷ অশুভ বিতর্দ্দযতি বিতর্দিঃ। তর্দ্দহিংসে নায়ীতি ইঃ। বেদিকা সাহচ-ৰ্যাৎ স্ত্ৰী ইদন্তত্বাৎ গকে ঈপ্ বিতদ্ধী চা বিতর্দ্দিঃ কাঠ লো- 🏿 বেদোক্তঃ 🏻 ত্রি শ্রুতিক্ষিতঃ 1

হীস্যাদিতি রত্নে। বিতর্দি রপী-তি মধুঃ ৷ বিদন্তি বিদ্যুতে বা অস্যা মিতি বেদিঃ পূৰ্ববদিঃ স্বার্থে কঃ। অতএব বেদি র্বেদী চ। ইতি ভরতঃ ॥

विषका जी जिल्ली। देव হেমচন্দ্ৰঃ 11

বেদিতঃ ত্রি জ্ঞাপিতঃ ৷ ঞাস্ত বিদ্যাতোঃ ক্ত প্রত্যযেন নি-क्रा इहिंद

বেদিতব্য• ত্রি বেদ্যণ জ্ঞাত-ব্যং ৷ যথা ৷ আর্য্যং ছন্দ্রুল্ট দৈব-ত্য° বিনিযোগ স্তথৈৰ চ ৷ বে-দিতব্য॰ প্রয়য়েন ব্রাক্ষণেন বি-শেষ্তঃ ৷৷ ইতি তিখ্যাদিত হু॰ ৷৷ বেদিতা ত্রি জ্ঞাতা। তৎপর্য্যা-यः। विमूतः २ विन्तुः ः। ইতি ट्याञ्चः ॥

বেদী পুণ পণ্ডিতঃ ৷ ইতি শব্দ-রত্নাবলী।! ত্রন্ধ। ইতি কেচিৎ ॥ জ্ঞাতরি ত্রি ॥

বেদী স্ত্রী বেদিঃ। ইত্যমর্টীকা-ষাণ ভরতঃ ॥ সরস্বতী । ইতি भक्रांना ॥

বেদীশঃ পু॰ ব্ৰহ্মা ইতি ত্ৰিকাণ্ড-শেষঃ 11

ষথা। বেদোক্ত মেব স্বৰ্বাণো নিঃসঙ্গো হপিতু মীশ্বব্ৰে। নৈ-ষৰ্ম্যাণ লভতে সিদ্ধিণ রোচনা-র্থা ফল শ্রুতিঃ।। ইতি মলমাস-তত্ত্বুণ।।

বেদোদনঃ পু॰ সূর্যঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

বেদোদিতঃ ত্রি বেদোক্তঃ ৷ যথা

! বেদোদিতানাং নিত্যানাং কর্মাণাং সমতিক্রমে ৷ স্নাতক ত্রতলোপে চ প্রাযশ্চিত্ত মভোজনং ৷৷ ইতি মলমাসতত্ত্বং ৷৷

বেদাণ ত্রি বেদিতবাণ । যথা।
ধর্মঃ গ্রোজ্বিত কৈতবাত্র প
রমো নির্মাৎসরাগাণ সতাণ বেদ্যাণ বাস্তব মত্র বস্তু শিবদণতাপত্রযোগ্যুলনণ । শ্রীসন্তাগবতে
মহামুনিকৃতে কিয়া পরে রীশ্বঃ সদ্যো হৃদ্যবরুধ্যতেত্র কৃতিভিঃ শুশ্রমিভি স্তৎক্ষণাৎ।।
ইতি শ্রীভাগবতে ১ ক্ষত্রে ১
অধ্যায়ঃ।।

বেধঃ পু॰ বেধন°। বেঁধা ইতি
ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। ব্যধঃ ২।
ইত্যমন্ত্ৰঃ। গভীরতা। গহরা
ইতি চাডা ইতি চ ভাষা। যথা।
গণিয়া বিস্তারণ বহুষু স্থানেষু॥

তদ্মৃতি ভাজা। স্থানক মিত্যা সম মিতি রৈবলৈর্য্যে চ বেধে চ া ক্ষেত্ৰ ফল° বেধ গুণ° খাতে ঘন **হস্ত সংখ্যা স্যাৎ।** ইতি লীলাব-ত্যা পাতব্যবহারঃ ॥ ৠ ॥ অথ मश्रमनाकरवधः। कृत्रिकानि চ-তুঃসপ্ত রেখা রাশৌ পরিভূমন্। গ্রহশ্চেক রেখাস্থে বেধঃ সপ্ত-শলাকজঃ ॥ ইতি দীপিকা॥ৠা অথ খজু রবেধঃ ৷একা মূর্দ্ধ গতাণ ত্রবোদশ তথা তির্য্যগ্রতাঃ স্থা-গয়েৎ। রেখা শ্চক্র মিদ° বুরৈ রভিহিত থার্জুরিক তত্র তু।। ব্যাঘাতাদি তু মূৰ্দ্ধি ভন্ত কথিত তত্রৈক্য রেখাস্থযোঃ সূর্য্যাচন্দ্রম-সো মিথো নিগদিতা দৃক্পাত এ-कार्गनः॥ ইতি রন্নমালা॥ #॥ অথ যুতবেধঃ। পাপাৎ সপ্তমগঃ শশী যদি ভবেৎ পাপেন বা সং-যুতো যত্নাত্ত পরিবর্জ্যেৎ সুনি-মতো দোষো হয় কথাতে।।।।।।। অথ যানিত্রবেধঃ। বরি মন্দ স্প-জাক্রান্ত মৃগান্ধাৎ সপ্তমণ ত্য-জে । বিবাহ যাত্র। চূডাসু গৃহ-কর্মা প্রবেশনে ॥ ইতি রত্নমালা ।। क्षा वाम मिकन (वर्षी वामरवश्व শব্দে জফব্য়ে) ৷৷

বেধক° ক্লী ধান্যক°। ইতি রাজ-নির্ম্বন্টঃ।।

বেধকঃ পু॰ কপূরঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।। অমুবেতসঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। বেধকর্ত্তরি ত্রি।।

বেধনিকা স্ত্রী মণিশঙ্খাদিবে-ধনোপকরণ ৷ ভোমরী ইতি ভাষা ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ আক্ফো-টনী ২ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ লাক্ফোট-নী ৩ ক্ফোটনী ৪ বৃষদংশিকা ৫ ৷ ইতি ভরতধৃতবাচম্পতিঃ ৷৷

বেধনী স্ত্রী হস্তিকর্ণবেধনাস্ত্র°। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। মেথিকা। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

বেধমুখ্যঃ পু॰ কচূরঃ।ইতিরা-জনির্ঘনীঃ।।

বেধন্থ্যকঃ পু॰ ছরিজাবৃক্ষঃ।
কাঁচাহল্দি ইতি খ্যাতঃ।তৎপর্য্যায়ঃ। কর্বুরকঃ২ জাবিডকঃ
৩ কাল্পকঃ ৪ কাল্যকঃ ৫। ইত্যমরভরতৌ ।।

বেধন্খ্যা স্ত্রী কস্তৃরী ৷ ইতি রা-জনির্ঘণ্টঃ ৷৷

বেধসং ক্লী ত্রান্ধতীর্থণ অন্ধুষ্ঠ-মূল্ণ ইতি শব্দচন্দ্রকা॥

বেঘাঃ পু॰ ব্রহ্মা ৷৷ বিষ্ণুঃ ৷ ইত্য-সরঃ ৷৷ সূর্য্যঃ ৷ ইতি শব্দরত্মা-

বলী ॥ পণ্ডিতঃ । ইতি বিশ্বঃ ॥ শ্বেতার্কবৃক্ষঃ। ইতি শব্দচন্দ্রি-কা।। অনন্তপুত্রঃ। যথা। ইক্ষ্বা-ঙ্গ ৰ্জ্যেষ্ঠদাষাদো মধ্যদেশ মবা-প্তবান্ । সুদ্যুম্বস্য প্রতিষ্ঠানণ ত-স্য পুত্রঃ পুরুরবাঃ ॥ নরিষ্যতঃ শুকাঃ পুত্ৰাঃ শাকং ক্ষত্ৰ নুদা-হুত । নাভাগস্যায়রীষো ২ভূৎ স ক্ষত্ৰণ পাৰ্থিবণ ততঃ ৷৷ কোষ্ট-ধ্ব বার্ষকণ ক্ষেত্রণ রণবৃষ্টি র্বভূ-ব হ। শৰ্যাতে মিপুন স্ত্ৰাসীদন-স্তো নাম বিশ্রুতঃ॥ সুকন্যা না-य কন্যা চ ষা পত্নী যাদ্বস্য চ। অনন্তম্য চ পুত্রো ২ভূৎ বে-ধো নাম মহাপ্রভুঃ ॥ আনর্ত্ত বিষয়ে তেন পুরী দশস্থলী কৃ-তা। ইতি বহ্নিপুরাণে সাগরো-পাখ্যান নামাধ্যায়ঃ।।

ৰেধিতঃ পু<sup>্</sup> বিদ্ধঃ । ছিদ্ৰিতঃ । ইত্যমরঃ ॥

বেধিনী দ্রী রক্তপা। জোঁক ইতি ভাষা। ইতি শব্দরত্না-বলী।। মেথিকা। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

বেধী ত্রি বেধকর্তা ৷৷ বেধবিশি-ফঃ ৷ বিধধাতো র্ণিন্ প্রত্যাযেন বেধ শব্দাদস্ত্যর্থে ইন্ প্রত্যাযে- ন চ নিশামঃ ।। অম্লবেতসে পু॰

1 ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

বেধ্য॰ ক্লী লক্ষ্য॰ । ইতি জটাধরঃ ।। বেধনীযে ত্রি । যথা ।

ঘটকর্ণোৎপত্তি নাশস্ক্য ভানোঃ
ভক্তা। সমেপি চ ৷ কর্ণোর্বেধ্যে
ন দোষঃ স্যাদন্যথা মরণণ ভবেৎ ৷৷ ইতি মলনাসতত্ত্ব॰ ৷৷
বেনঃ পু৽ প্রজাপতিঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ ৷৷

तिका खी ननीतित्मसः। ইতি

मिकाछित्नामुनामूनामिनृज्ञिः॥

तिक हूं स ७ हत्न। ইতি कित
कक्षप्रमः॥ हनः कम्लमः। हूं

तिल्पुः। स जित्तिल्पः। छ ति
लाठ तायूमा वृक्षः। ইতি দুর্গা
माসः॥

বেগঃ ক্লী অনবদ্যং । ষথা । স্যা-দ্বল জ্যোতিষোঃ ক্লীবং বচো বা-চ্যথ ধাতৃয়ু । মেদো বেপো ২ন-বদ্যে ২থ সভাষাঞ্চ সদো ন না ।। ইত্যুণাদিকোষঃ ।।

বেপথুঃ পু॰ কম্পঃ।ইত্যমরঃ॥ বেপন॰ ক্লী কম্পন॰।ইতিশব্দ-রত্নাবলী॥

বেমঃ পু॰ বাপদঙঃ যথা বি-পদঙঃ পু৽সি বেমা বেমো না

বেম ন দ্বোঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ।।
বেমা পুণ ক্লী বাপদঙঃ। ইত্যমরভরতৌ ।।
বেরণ ক্লী শরীরণ ।। বার্ত্তাকঃ।।
কন্ধুমণ। ইতি মেদিনী ।।
বেরকণ ক্লী কপূরণ। ইতি হারাবলী ।।

বেল ঋ চালে। ইতি কবিকল্প-দ্রুগঃ ॥ ঋ অবিবেলৎ । ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

বেল ত ক্ কালাথে । ইতি কবি-কল্পজনঃ । কালার্থঃ কালোপ-দেশঃ । অবিবেলৎ । কাল মিষ-ভ্রমাগণকঃ এতাবভী বেলেতি কথিতবানিত্যর্থঃ । ইতি দুর্গা-দাসঃ ।।

বেলং ক্লী উপবনং। যথা। অপোপাভ্যাং বনং বেল মারামঃ
কৃত্রিমে বনে। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
বেলা স্ত্রী কালঃ। তৎপর্য্যায়ঃ।
সময়ং ২ ক্ষণঃ ৩ বারঃ ৪ অবসরঃ ৫ প্রস্তাবঃ ৬ প্রক্রমঃ ৭ অস্তরং ৮। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। তৎপরিমাণানি যথা। অক্ষিপত্ম
পরিক্ষেপো নিমেষঃ পরিকীর্তিতঃ। দ্বৌ নিমেষৌ ত্রুটি র্নাম দ্বে

ल् ही जू नदः सृठः ।। हिनदः ক্ষণ ইত্যক্তঃ কান্তা প্ৰোক্তা দশ क्रवाः। मनकाश्राः किला नाम তৎ সংখ্যা স্যাক্ত নাডিক। ।। ষটিকে দে মুহূৰ্ত্তঃ স্যাতৈ স্ত্ৰিণ-শত্যা দিবানিশ । চতুৰি শতি বেলাভি রহোরাত্র॰ প্রচক্ষতে।। मृर्र्यापियापि विख्डरया गुर्ह्छा-ना॰ क्यः मना । शन्तिमानकः রাত্রাদি হোরাণাণ বিদ্যতে ক্র-মঃ ॥ জেবৃ° পিত্রা মহোরাত্র° পক্ষে কৃষ্ণ দিতাদিতৌ। ত্রি॰শ-তা চ দিনৈ মাসো দ্বিমাস ঋতু রুচ্যতে।। ভবেদ্দিব্য মহোরাত্র° বড্ভি রুত্তর দক্ষিণে। বর্ষণ ছা-দশভি ৰ্যানৈ ৰ্যলমাস স্ত্ৰযোদ-শঃ ৷৷ ইতি বহ্নিপুরাণে গণভেদ नागाधायः॥ अ॥ गर्गान। ३-**ा** ज्ञान । ज्ञान ज्ञान । ज्ञ জলবিকারঃ ॥ অক্লিউমরণ ॥ রাগঃ ৷৷ ঈশ্রস্য ভোজন ৷৷ रेञि प्राप्तिनी ॥ अब প्रवर्गी य বকারাদৌ লিখিতঃ ৷৷ রাগস্থা-নে রোগঃ ॥ বাক্ ॥ বুধস্ত্রী। ইতি বিশ্বঃ ৷৷ দন্তমাণ্সণ ৷ ইতি रावावनी ॥ বেলাকূল॰ ক্লী তামলিগুদেশঃ।

বেলস্ত যথা। বেলাকুল॰ তামলিপ্ত॰ তা-गिलशी जनानिका। इंडि जि-কাওশেষঃ ৷৷ বেলিভুক্প্রিয়ঃ পু• সৌরভযু-ক্তাসুঃ। যথা। রসালে ত্বতিসে-রভে। মহাকালশ্চ কিম্পাক উৰ্বটো বেলিভুক্প্ৰিয়: । ইতি শব্দরত্বাবলী।। বেল ঋ চালে ৷ ইতি কবিকর-फ्यः ॥ ॥ व्यविद्यल् । ज्ञानः मक्ष्नन<sup>।</sup> উদ্বেলভুজবলি কম্ব ঝনৎকারঃ কণ বার্যতা । গ-তাবিত্যেকে। ইতি দুর্গাদাসঃ।। ক্লী পু॰ বিডঙ্গঃ। ইত্য-ৰেল° মরঃ ।। গমনে পু॰। ইতি বেল-ধাৰ্থ দশনাৎ।। বেলজ की मित्र के जमत्रा रवल्लन° क्री 'जूरगे जश्रमा न्र्रेन° । তৎপर्गायः। नूर्रनः २। इंडि ত্রিকাওশেষঃ ৷৷ রোটিকাদি নি-ৰ্মাণাৰ্থ সূল বৰ্তুলকান্ঠবিশেষঃ । বেলন্ইতি ভাষা । ইতি ভাবপ্রকাশঃ 11 रवलंगी जी मानामूर्व। देखि त्राक्रनिर्यकः॥ বেল্লন্তরঃ পু• বীরতরুঃ। যথা।

বেলন্তরে৷ জগতি বীরতরুঃ

প্রদিদ্ধঃ শ্বেতাসিতারুণ বিলোহিত নীলপুষ্ণঃ ৷ স্যাজ্জাতি তুল্যাসস্মঃ শমি শৃষ্মপত্রঃ স্যাৎ
কণ্টকী চ জলদেশজ এয বৃদ্ধঃ

। অস্য গুণাঃ ৷ বেলস্তরে৷ রসে
পাকে তিক্ত স্তৃঞ্চ৷ কফাপহঃ ৷

মূত্রাঘাতাশ্বজিৎ গ্রাহী যোনি
মূত্রানিলার্ত্রি জিৎ ৷৷ ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷

বেলহলঃ পু॰ কেলিন¦গরঃ। ইতিজটাধরঃ।

বেলিং জ্রী লতা। ইভিসন্দরভ্রা বলী।

বেলিক থ্যা ত্রী নৃক্ষবিশেষ<sup>ঃ 1</sup>
বেল স্ঠা ইতি ভাষা । যথা ।
মক্তমালা বেলিকখ্যা বিলপত্রী
জুরাপহা । ইতি শব্দ চন্দ্রিকা । ।
বেলিত° ক্লী গমন° । ইতি মেদিনী ।।

বেল্লিতঃ ত্রি *স্*কটিলঃ ৷৷ কম্পিতঃ া ইত্যমরঃ ৷৷

বেবী রক্ষ লুঙ কান্তিগতিব্যা-প্তি ক্ষেপ প্রজন খাদনে ৷ ইতি কবিকল্প দ্রুমঃ ৷৷ র বৈদিকঃ ৷ ক্ষ অবেবযুঃ ৷ বহুল গুল্পনীতি প-রুক্ষেপদে অনুস্ সিদ্ধে রিত্যন্ উস্ণুক্ষস্ঠ্যা মিতি গুণঃ ৷ লু ঙ বেবীতে। ইতি দুর্গাদাসং !!
বেশঃ পু॰ অলন্ধাররচনাদি কৃতশোভা। তৎপর্য্যাবঃ। আনজঃ
২ নেপথ্য॰ ৩ প্রতিকর্ম ৪ প্রদাথন॰ ৫ ৷ ইত্যারঃ ৷৷ বেষঃ ৬ ৷
ইতি তটীকাষা॰ ভরতঃ ৷৷ বেশ্যাগৃহ॰ ৷৷ গৃহ্মাত্র॰ ৷ ইতি বিশ্বাদ্বিনী ৷৷ প্রবেশঃ ৷ ইতি বিশ্বাদ্বর্থদর্শনা ৬ ৷৷

বেশকঃ পুণ গৃহণ ৷ ইতি শব্দ রত্নাবলী ৷৷ বেশকারকে ত্রি ৷৷ বেশদানঃ পুণ সর্যাশোভা ৷ ইতি শব্দচন্দ্রিকা ৷৷

বেশ্যারী পু॰ ছলতপস্বী।ইতি
শব্দরত্বাবলী।। বেশ্যারকে ত্রি
বেশস্তঃ পু॰ কুদ্রসরোবরঃ।
ইত্যমরঃ।। অগ্লিঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ।।

বেশরঃ পু॰ অশ্বতরঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ।।

বেশৰারঃ পু॰ বেসবারঃ। ইত্য-মুরটীকাবা॰ুরাষমুস্টঃ।।

বেশীজাত। স্ত্রী পুত্রদাত্রীলত। । ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ ।।

বেশ ক্লী গৃহণ ইত্যমরঃ।। বেশকলিকঃ পুণ চটকঃ। অস্য মাণসগুণী। সন্ধিপাতনাশিস্থণ। অতিশুক্রকারিম্বঞ্চ। ইতি রাজ-বলকঃ।।

বেশাকূলঃ পু॰ চচেণ্ডা ৷ ইতি রাজনির্ধনটঃ ৷৷

दिश्वनक्रवः श्रूः गन्नगृषिकः।
यथा। विकः मादिश्वनक्रवं निव् क्रा व वालगृषिका। गन्नमृशी ग-न्नगृशी गितिका माफ्ट्रक्रमती॥ इवि भक्तज्ञावनी॥

বেশ্বভূঃ ন্ত্রী গৃহকরণযোগ্য-ভূমিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। বাস্তঃ ২। ইত্যমরঃ॥

বেশ্য° ক্লী বেশ্যালয়ঃ। ইতি মেদিনী।

বেশ্যা স্ত্রী টুণ্ডুকাবৃক্ষঃ আকনাদি ইতি ভাষা ৷ ইতি শব্দচন্দ্রিকা ৷৷ স্বনামখ্যাতনারী ৷
খান্কী ইতি ভাষা ৷ তৎপর্য্যাখঃ ৷ বারস্ত্রী ২ গণিকা ও ৰূপাজীবা ৪ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ বেষ্যা ৫ ৷
ইতি তটীকা ৷৷ ক্লুড়া ৫ শালভঞ্জিকা ৬ ৷ ইতি জটাধরঃ ৷৷
বার্যাণঃ ১০ ভণ্ডহাসিনী
১১ ৷ ইতি শব্দর্য্রাবলী ৷৷ লজিকা ১২ বন্ধুরা ১৩ ক্লড়া ১৪
কামরেখা ১৫ বর্ষটা ১৬ ৷ ইতি

শব্দমালা।। সাধারণজ্ঞী ১৭ প-ণ্যাঙ্গনা ১৮ পণাঙ্গনা ১৯ ভুজি-ব্যা ২০ বারবধূঃ২১। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।। ভোগ্যা ২২ শ্মরবীথিকা ২৩। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ তদ্যা লক্ষণ গমনফলাদি যথা। পতি-ব্ৰতা চৈকপত্নী দিতী<mark>ষে স্বলটা</mark> স্মৃতা। তৃতীযে কৃষলী জ্ঞেষা চ-তুর্থে পু॰শ্চলী স্তা।। বেশ্যা চ পঞ্চমে যতে যুগী চ সপ্তমে ংষ্ট মে। তত উদ্দে মহাবেশ্যা সা-স্পৃশ্য। সৰ্বজাতিষু ॥ 🗱 ॥ যো দিজঃ সলটাসচ্ছেৎ বৃষলীণ পুণ-শ্চলী মপি। যুঞ্জীণ বেশ্যাণ ম-হাবেশ্যা° অবটোদ<sup>্</sup> প্রয়াতি সঃ ।। শতাব্দ॰ সলটাগামী ধৃষ্টাগা-মী চতুর্গণ। যদ্ভণণ পৃণশ্চলী-गामी (वनागामी खा. केंक ।। যুসীগানী দশগুণ বশেতত্র ন **স**ুশযঃ । মহাবেশ্যা গামুক**ন্চ** ততঃ শতশুণ ভবেৎ ৷৷ তদেব স-ৰ্যগামী চেত্যেব মাহ পিতামহঃ ! তত্ত্বৈব যাতনা॰ ভঙ্জে যমদূতেন তাডিতঃ ৷৷ তিতিরিঃ সলটাগামী धृष्ठीशामी ह वायमः। कार्किनः शू॰म्हनीगांगी (वनांगांगी वृक ত্তথা।। যুঙ্গীগানী শূকরশ্চ সপ্ত-

জন্মসু ভারতে। মহাবেশ্যা গাসু-কশ্চ জাযতে শাল্মলি শুরুঃ।। ইতি ত্রন্ধবৈবর্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ২৮ অধ্যায়ঃ !!#!! বেশ্যাগমন পাপণ প্রকীর্ণকণ। তস্য প্রাযন্চিত্রণ। তত্র সম্বর্তঃ। পশু বেশ্যাভিগমনে প্রাজাপত্য° বিধীয়তে। তেন বে-শ্যাগমনে প্রাক্তাপত্য°। তদশ-ক্তৌ ধেনুরেক। এতৎ সকৃদ্যা-মনে। অভ্যাসে তু। চান্দ্রাযণেন চৈকেন সৰ্বপাপ ক্ষয়ো ভবেদিতি আপস্তম বচনাক্রান্তায়ণণ। ইতি व्यायन्धि जित्वकः ॥ 🕸 ॥ जन-ज्ञानिकः निविकः। यथा। पू॰क-লামঞ্চ যে। ভুঞ্চে পুশ্চল্যাজীব कीवनः। खालाम मान वर्षक्ष ला-লাপণ্ডে বদেদ্ধুবং ॥ তাডিতো যমদূতেন তন্তোজী তত্ৰ তিষ্ঠতি **1 তত গ্রিজন্মনি ভবেৎ কৃ**ক্ষবর্ণঃ পশুঃ শুচিঃ ॥ ত্রিজন্মনি ভবে-চ্ছাগ স্ততো ভবেৎ সুদুঃখিতঃ ! তত শচকুঃ শূলরোগী ততঃ শু-দ্ধঃ ক্রমেণ চা৷ ইতি ব্রহ্মবৈবর্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ২৭ অধ্যায়ঃ ॥ 🟶 ॥ অপিচ ৷ পুর্শ্বনামঞ্চ যে৷ ভুঙ্জে বেশ্যায়ঞ্চ পতিব্ৰতে । তদ্ৰুজেত্ৰু ৰিজো যো হি কালসত্র° প্রযা- ∥

তি সঃ ৷৷ শতবর্ষণ কালসূত্রে স্থি-ত্বা শূত্রো ভবেদ্দ্ধুবং। তত্র জ ন্মনি রোগী চ ততঃ শুদ্ধো ভ-বেদ্দিজঃ ৷৷ ইতি তত্ত্বৈব ২৮ অধ্যামঃ ॥ ৠ যাত্রাকালে ত-ना नर्गन ७७। यथा। धन् র্বৎস প্রযুক্তা বৃষ তুর্গ রথ। मिक्गावर्खविद्ध मिवासी श्रन সম্ভা দিজ নৃপ গণিকা পুষ্পমা-লা পতাকা। সদ্যোগাণসং হতে বা দধি মধু রজত কাঞ্চন শু-क्षभागाः मृख्री अष्य। शिवा कल মিহ লভতে মানবো গছকামঃ ।। ইতি সমন্প্রদীপঃ ॥ विनामिनः पूर विनाममूहः। ত थर्गागः। तिमानातः २। ইতি শব্দমালা ॥ विनागार्गार्थाः पु॰ शीर्वपर्मः। इंडि ट्याट्सः ॥ বেশ্যাজনসমাশ্রয়ঃ পু॰ বেশ্যা-লযঃ ৷ তৎপৰ্য্যায়ঃ ৷ বেশঃ ২ ৷ ইত্যসরঃ ৷৷ বেশ্যাশ্রহঃ ৩ পুরু ৪। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। বেশ্য॰৫।

ইতি জটাধরঃ ॥

বেশ্বরঃ পু॰ অশ্বরঃ। যথা।

বেশরো ২শ্বতরঃ খরঃ। ইক্তি

ज्तिथरगांगः ॥ विकाखरनस

বেশর ইতি পাঠঃ ৷৷ विषः भूः तिभशः॥ विभाजना-প্রায়ঃ। বেবেন্টি ব্যাপ্নোতি অঙ্গ বেষঃ গচাদিস্বাদন্ মূর্দ্ধণ্যাস্তঃ। বিশস্তি নযনমনা স্যাত্রেত্যাধা-রে যঞি বেশ স্তালব্যান্তশ্চ। ইতি ভরতঃ ।। দ্বে দারিকাণা° নিবাসস্থানে। বিশতি ঘূনা॰ মনঃ কামুকো বা ২ত্ৰেতি বেশঃ শৌ-বিশ প্রবেশে ঘঞ্জ ৷ নেপথ্যে গৃ-হ্মাত্রে চ বেশে৷ বেশ্যাগৃহেপি চ। ইতি তালব্যান্তে রভদঃ।। গৃহমাত্রে গণিকাষাঃ সন্মণি বে-**শো ভবেজু তালব্যঃ। তাল**ব্যো মূর্দ্ধণ্যো হলস্করণে কথিত আচা-বৈঁয় রিভ্যুষ্মবিবেকঃ। বেবিষ্ঠি ব্যাপুৰন্তি জনমনাণ্দীতি ঘঞি বেষো মূৰ্দ্ধণ্যাস্তোপি ইত্যেকে। ততু ন হৃদ্য° মূৰ্দ্নণান্তেষু সৰ্বত কোষাদাবনুপাত্তত্বাদিতি মুঙ্গ-টঃ। ইতি চ ভরতঃ॥ বেষণঃ পু॰ কাসমর্দ্ধঃ। ইতি হা-त्रावनी ॥ अत्वर्गभः॥ বেষণা স্ত্রী বিতৃন্নকবৃক্ষঃ। ধন্যা ইতি ভাষা। ইতি রত্ন মালা।। বেষবারঃ পু॰ বেসবারঃ ৷ ইত্য-মরটীকাষা॰ রাযসুস্টঃ।।

বেষ্ট ও বেন্টে। ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ ॥ ও বেষ্টতে। ইতি দর্গা-দাসঃ ॥

বেষ্টঃ পু॰ বেষ্টন । ইতি শব্দ-মালা ।। শ্রীবেষ্টঃ । ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ ।। নির্যাসঃ । আটা ইতি ভাষা । ইতি বৈদ্যক ।।

বেষ্টক ক্লী উফীশঃ। ইতিশ-ব্যুত্মাবলী ।। নির্যাসঃ। ইতি শব্দমালা ।। প্রীবেষ্টঃ। ইতি ব্যুক্তনির্যুক্টঃ।।

বেউকঃ পুঁ প্রাচীরঃ। যথা প্রা-চীনা বেউকৌ কৃতিঃ। ইতি হেসচন্দ্রঃ।। সম্মাঞ্ডঃ। যথা। সমাঞ্জকঃ পুশাবলো ঘনবাস-শ্চ বেউকঃ। ইতি হারাবলী।। শ্রীবেউঃ। ইতি রাজনি ভিটঃ।। বেউনকারকে ত্রি।

বেষ্টন° ক্লী কৰ্শস্থ্নী। উফী-যঃ ।। মুন্সটঃ ।। বৃতিঃ। ইতি মেদিনী ।। গুগ্লুলুঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্ৰিকা।।

বেষ্টনকঃ পু° রতিবন্ধবিশেষঃ।
যথা। উর্দ্ধগ° পাদ নেকঞ্চ ভু-জাস্তরৈ বেষ্টবেদ্ঘদি। কাস্তক-ক্ষাশ্রিতা° নারী° বন্ধো বেষ্টন-কঃ স্মৃতঃ।। ইতি রতিমঞ্জরী।। বেউনবেউকঃ পুণ রতিবন্ধবিশে-।
মঃ 1 যথা 1 উর্দ্ধুণ পাদদ্বশং নার্যা ভুজাভ্যাণ বেউযেদ্মদি 1
করাভ্যাণ কণ্ঠনালিঙ্গ্য বন্ধোবেউনবেউকঃ 11 ইতি রতিমঞ্জরী 11
বেউবংশঃ পুণ কণ্টকিনঃ 1 বেডুবাঁশ ইতি ভাষা 1 ইতি শন্ধ-.
চক্রিকা 11

বেউসারঃ পুঁ
শূ শ্রীবেউঃ। ইতি
রাজনির্ঘনিঃ।

বেষ্টিত॰ ক্লী রুদ্ধণা লাশকঃ।। করণান্তরণ। ইতি নেদিনী।।

বেন্টিতঃ ত্রি নদী প্রাচীরাদিনা বেন্টন কৃতঃ (বেডা ইতি ভাষা তিৎপর্যাবঃ (বলবিতং ২ সং-বীতং ৩ রুদ্ধা ৪ আবৃতং ৫ () ইতানরঃ ()

বেষ্ণঃ পু॰ পানীমণ।ইত্যুণাদি-ুকোষঃ।।

বেস ঋ ইভৌ ৷ ইতি কবিকন্ধ-ক্রমঃ ৷৷ ঋ অবিবেসৎ ৷ বিবেস-তুঃ ৷ ইভৌ গত্যাণ ৷ ইতি দুর্গা-দাসঃ ৷৷

বেসন° ক্লী দিদলচূৰ্ণ । যথা ।
দালয় শ্চণফানাম্ভ নিস্তমা যন্ত্ৰপেহিতাঃ । তচ্চূৰ্ণ বেসনং প্ৰোক্তণ পাকশান্ত্ৰবিশাৱদৈঃ ॥ ত-

দটিকাগুণাঃ । বটিক। বেসন-স্যাপি ক্বথিতাবাং নিনজ্জতি । কুচাা বিষ্টমুজননী বল্যা পুট-কুরী স্মৃতা ॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ বেসরঃ পুং অশ্বতরঃ। ইতি হে-নচন্দ্রঃ ।

বেসবারঃ পু॰ ধন্যাকসর্বপাদিপিফঃ ৷ বেসার ইতি বাটনা
ইতি চ খ্যাতঃ ৷ তৎপর্যায়ঃ ৷
উপক্ষরঃ ২ ৷ ইত্যমনঃ ৷৷ বেষবারঃ ৩ ৷ ইতি ভরতঃ ৷৷ বেশবারঃ ৪ ৷ ইতি মুক্ষটঃ ৷৷ ব্যঞ্জনবিশেষঃ ৷ যথা ৷ নিরস্থি পিশিত॰ পিকি সিদ্ধ গুড় ঘৃতান্বিত॰
৷ কৃষ্ণা মরিচ সংযুক্ত বেসবার
ইতি মৃতং ৷৷ অস্য গুণাঃ ৷ বেসবারো গুরুঃ স্নিস্ধাে বলোপ্র্যুব
বর্দ্ধনঃ ৷ ইতি রাজনারাতঃ ৷৷

বেহ ঋ ও যত্নে। ইতি কবিক্দ ক্রমঃ ।। ঋ অবিবেহৎ । ও বেহ-তে বিবেহে। ইতি দুর্গাদাসঃ ।। বেহৎ শ্রী গর্গ্তো প্যাতিনীগৌঃ । ইত্যমরঃ ।। অনৃতৌ বৃষোপগ-মনাদিবশাৎ যদ্যা গর্গ্তাতে। ভবতি সা। বিহন্তি গর্গ্তু॰ শশ্বৎ বেহৎ। হনলৌ গতৌ বধে কিপ নিপাতঃ। ইতি ভরতঃ ।। বেহারঃ পু॰ স্বনামখ্যাতদেশঃ। যথা। বেহারে চৈব শ্রীহটে কো-শলে শবকর্ণিকে। অফীদশভু-জাকাৰ্য্যা মাহেন্দ্ৰে চ হিমালযে ।। ইতি মৎস্যসূক্তে ৫০ পটলঃ॥ বেল্ল ঋ চালে। ইতি কবিকল্প-प्रमः॥ ॥ व्यवित्वङ्ग ८ । श्राप्तन्-বন্ধঃ বেদেযুচ্চারণ ভেদার্থঃ। চালঃ সঞ্জন গতাবিতোকে 1 ইতি দুর্গাদাসঃ॥ বৈ ও শোষে ৷ ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ ৷৷ বকারাদিঃ ৷ বাষ্তি ৷ ও বাণঃ ৷ ইতি দুর্গাদানঃ ৷৷ रेव वा॰ পामপূরণ। यथा। जू हि **চ স্ম হ বৈ পাদপু**রণে। ইত্য-यतः ॥ मत्याधनः ॥ অनुनयः। ইতি মেদিনী ॥ বৈশতিকঃ ত্রি বিংশত্যাক্রীতঃ ৷ বিংশতিক শব্দাদন্ প্রত্যায়ন নিষ্পায়ঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী दिवक्क डः शृष् वृक्कवित्मयः । বৈঁচ্ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। বৃতিস্করঃ ২ শ্রুবাবৃক্ষঃ ৩ গ্রন্থি-वः ८ सामु मन्देनः (८ सायुशाद ৬ কণ্টিকারী ৭ বিকন্ধতঃ ৮ । ইতি শব্দরত্বাবলী।। 

र्श्याज्यः ॥ বৈকর্মঃ পু॰ বাৎস্যমুনিঃ।ইতি निकां छको गूनी ॥ বৈক্সিকঃ ত্রি বিক্সেন্ডবঃ 1 বিকল্পশকাৎ ফিক প্রত্যযেন निष्यं हाः ॥ रेवकवा॰ क्ली विकवप्र॰। विक-লস্যভাব ইত্যর্থে ক্য প্রত্যুবেন निष्पन्न ॥ বৈকৃষণ ক্লী তিৰ্যায়কোলিখিনা-ল্য°। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ বৈকক্ষক॰ ক্লী উরসি তির্য্যক্ উ-পৰীতবৎ কণ্ঠাৎ ক্ষিপ্ত মাল্যণ ৷ इंजामतः ॥ বৈজ্ঞঃ পু॰ কৃষ্ণঃ।। ইন্দ্রঃ। ইতি মেদিনী ॥ সিতার্জকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। অস্য ্রংপত্তি র্যথা। বিজ্ঞায়া অগত্যং বৈঙ্গ-ঠঃ বাহ্বাদ্যত ইতি শিবাদিয়াৎ কঃ। চাক্ষ্স্যান্তরে দেবে। বৈ-স্ঠঃ পুরুষোত্তমঃ। বিঙ্গপায়া মসে। জজ্ঞে বৈঙ্গপ্তে দৈবতৈঃ সহেতি বিক্পুরাণ°।। কিয়া **স**-श्रेटा गरा क्रश्ने भाषा। क्रिंटिश-টন বৈকল্যালস্যে সেমক্তাৎ-সরো রিতি অঃ। বিবিধা স্কণ্ঠা

মায়া বিদ্যতে ২স্য বৈজ্ঞ কি

কার সংযেতি অন্ত্যর্থে কঃ। বিফু गश्मुनाम जिकाया॰ भक्ताहार्याः স্ত্রাহ বিবিধা স্বন্ধা গতেঃ প্রতি-হতি স্তদ্যাঃ কর্ত্তা ইতি বৈলপ্তঃ ৷ জগদারম্ভে বিশিষ্টানি ভূতানি পরস্পার॰ সংশ্লেষন তেষা॰ গতি॰ প্রত্যবধ্বাদিতি বা বৈদ্বপ্তঃ মাষা সংশ্লেষিতা ভূমি রক্তি ব্যোয়া চ বাযুনা ৷ বাযুশ্চ তেজদা দাৰ্দ্ধণ বৈল্পস্থ ততো মমেতি শান্তিপ-র্ধণীতি। ইতামরটীকাষাণ ভরতঃ ।।।। অপিচ। স্বর্গ জডঞ্ বিশ্বी-য° বিশিক্টঞ্চ করে।তি য। বিজ-ত্তা° প্ৰকৃতি° বেলা শ্চন্ধারশ্চ ব मां छ जाः ॥ छना बारान जन्मान তন্যা॰ জাতঃ স্বস্ট্যে। পরিপূর্ণ-ভन° एक रेवक्रिक विमु वृक्षाः॥ अः। अना नात्मा गङ्गाः। यथा । तीन नीतायशांगछ मूलक मध-मृष्य। क्या (क्याद क्यादा इता देवेळ्ळे वायन ॥ इंट्याकामणाना-यानि शर्छम। शाहिरयन्तनि। ज्ञ কোটি মহ্সূাণাং পাতকাদব্যচ্য-তে ॥ ইতি तुकारेवतः छीकृकः-জगश्रद्ध >>० व्यवायः ॥ भारक-ত্যু॰ পারিহাস্যু॰ বা ক্তোভু॰ হে बन त्नव वा । देवक्र भी नाम शह्न

মশেষাঘহর॰ বিদুঃ 11 ইতি শ্রী-ভগতে অজানিলোকানাধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ विकृषानिवस्यवः। তवर्न ন॰ যথা। উপরিক্টাৎ িতে রক্ষৌ কোটয়ঃ মৃত্য ্রিন্তিত । সৃত্যাদু-পরি বৈজ্ঞতি ধোজনানাং প্রমা-. ৭তঃ ॥ ভূর্টোকাৎ গরি সংখ্যাতঃ কোটি রক্টাদশ পুভো। যত্রাস্তে শ্ৰীপতিঃ সাক্ষাৎ সর্বেষা মভয-थमः ॥ देवन्धाम् छदा देवाचा-লোকঃ ষোডশকেটিয়ঃ। তির্বা-গের মহারাজ কৈলাসাখ্যস্ত প্র ৰ্বতঃ ॥ পাৰ্বতা। সহিতঃ শন্তু ৰ্ব-ত্ৰান্তে স্বগণৈ ৰৃতিং। ইতি পালে স্বৰ্গপত্ত ৬ অধ্যাৰঃ।।ঞ্চা তাগিচ l অন্ত॰ শাস্ত॰ নিতা ননত**৽**প-রন॰ পদ॰ 1 हित्रगाय॰ নোক্থন• वकानक मुश्हियः ॥ अत् भावि গুণোপেত তদিকোঃ পর্মণ পদ । ধলাত্ব। ন নিবৰ্ত্ততে তদ্ধাম প-রন॰ হরেঃ ৷৷ নহি বর্ণবিতু॰ শকা॰ কল্পকে।টি শতৈ রপি। অপিডাট্ मन्दरः उनुमान धानि देलवरेज्या জ্ঞানেন শাস্ত্র মার্গেণ জক্ষাতে (याभिश्रम्देवः । ७९ इ। न मूश-ভেন্তেব্য মব্যক্ত ব্ৰহ্ম সেবিনাণ।৷ শ্রীশাজ্যি ভতিসেবৈকরনাভো

গ বিবৰ্জ্জিতাঃ। মহাত্মানো মহা ভাগা ভগবৎ পদসেবকাঃ ৷৷ ত-দ্বিভোঃপরমণ ধাম যান্তি ত্রন্ধ সু-খপ্রদ । নানাজনপদাকীর্ণ বৈ-**স্ঠ**° ভদ্ধরেঃ পদ° । যে কার্টর শ্চ বিমানৈশ্চ সৌধৈ রত্নমধ্যৈ যুভি ৷ তন্মধ্যে নগরী দিব্যা সাবোধ্যে-তি প্রকীর্ত্তিতা ৷৷ চতুর্দার সমাযু-ক্তা হেমগোপুর সংযুতা। চঙা-**मिम्रातशारेल ख अ**गुमारेमाः भूत-ক্ষিতা।। চণ্ড প্রচণ্ডে। প্রাগদারে যাগ্যে ভদ্র সুভদ্রকৌ। বারুণা। জয বিজয়ৌ সৌস্যে ধাতৃ বিধাত-(तो ।। अगुणः अगुणाक्र×७ शुख्ती-কোথ বামনঃ ৷ সন্ধুকর্ণঃ সর্বনি-**জঃ সুমুখঃ সুপ্রতিষ্ঠিতঃ ।। তিমান্** বন্ধ বিনিমূক্তিঃ প্রাপ্যত্তে সুস্-খ° পদ° ৷ য° প্রাপ্য ন নিবর্তন্তে তন্মান্দে উদাহতঃ ৷৷ দোকু পর॰ পদ॰ मित्र यम् ७॰ बिक्नुनिस-রং। অক্টর• পরমণ ধাম বৈজ্ঞ। শাশ্ত পর ।৷ নিত্যঞ্ পর্ম-ব্যোদ দৰ্বোৎকৃষ্ট° দন।তন• । পর্যায় বাচকান্যম্য পর্গু ধালে৷ **২চ্যুতস্য হি॥ ইতি পাল্বে উত্তর**-খ্যেও ২৯ অধ্যাयः॥ क्षा खनाफ **। অভঃপুর নিবাসিন্যঃ সর্বলক্ষ্**ণ

ভূষিতাঃ। ভাভিঃ পরিবৃতো দেবঃ শুশুতে পরমঃ পুমান্ ৷৷ এব॰ বৈ-স্পঠনাথো ২সৌ নাথতে পরমে পদে। তদ্ব্যহ ভেদাল্লোকা॰ <del>\*</del>চ ব-ক্যানি গিরিজে শুভে ॥ প্রাচ্যাণ বৈজ্ঞ লোকস্য বাসুদেবস্য ম-নিরণ আগ্রেক্যাণ লম্বীলোকস্ত বাম্যা॰ সংকর্ষণালয়ঃ ৷৷ সার্রস্ত-স্তু নৈখাত্যা॰ প্রাদ্যন্নঃ পশ্চিমে তথা। রতিলোকস্ত বাযব্যা॰ উ-निछा र्गनक्षज्ञः॥ धेनानगः শান্তিলোকঃ স্যাৎ প্রথমাবরণ স্মৃত° ১১1 কেশ্বকীৰ্ত্ত্যাদি লে¦-কা দ্বিতীয়াবরণ তথা ৷৷ ২ ৷৷ **মৎস্য কূর্ম্মানি** লোকস্ত ভূতীয়া-বরণ° পর° । ৩ । সত্যাযুতা নন্দ **দু**ৰ্গা বিদক্ষেন গজ<sup>্</sup>ধনাঃ ॥ শ-জ্থ পদা নিধী লোক। শতু্থাব-রণং সৃতং ৷ ৪১ ঋগ্যজুঃ সামাথ-बीटगा लादानियु बर्थ्यू हा। या-বিজ্ঞা বিহুগেশনা ধর্মনা চ সুখ-স্য চাপঞ্চনাবরণ° প্রোক্ত মক্ষ্য° नर्व योदायः॥ ७॥ मञ्ज्य ठङ गल। পদ্ম খাদ্য হল তথা। নৌষ-লঞ্চ তথা লোকাঃ সর্বশক্রাজ্রসণ যুতাঃ ৷৷ যঠমাবরণং গ্রোক্তংশ-अञ्चिम्य नक्षयः। ७। এन्य शावक

যাম্যঞ্চ নৈখ্যতি বরুণ তথা।। বাষব্য লৌষ্য গৈশান সপ্তম **गूनिजिः ग्राठः।** माशा गक्तमाना **टि**न्छव रम छाटना छ मिटवीकमः॥ নিত্যাঃ সর্বে পরে ধায়ি বিশ্বেদে-বা স্তথৈৰ চা তে বৈ প্ৰাকৃত নাকেস্মিন্ন নিত্যা স্ত্রিদিবেশ্বরাঃ <u>।। তেনাহ বিচ্যা মাথে ন সঞ্চিন্ত্যা</u> ইতি বৈ স্মৃতিঃ। এবং পরং পদৈ নি তৈয় যুঁ ক্রৈ র্ভোগ পরায়ণেঃ ।। দিব্যাভি র্যাহিষীভিশ্চ রাজতে বিফু রীশ্বরি। ন তদ্ভাসযতে সূ-ৰ্য্যোন শশাকে। ন পাবকঃ ॥ যক্ষায়া ন নিবর্ত্ততে যোগিনঃ শংসিতব্রতাঃ। দ্বৈক্রমন্ত্র নি-ষ্ঠা যে তে বৈ যান্তি তদব্যয়ং ॥ न (विष युक्ताशायदेन नं (वरेष नं ব্ৰতৈঃ শুভৈঃ। ন তপোভি র্নি-রাহারে ন চ সাধন কর্মভিঃ।। একেন দ্বৰ্মপ্ৰেণ তথা ভক্ত্যা ত্বন্যুষা। তক্ষাম্যু॰ শাশ্বভ॰ দি-ব্য॰প্রপদ্যে বৈ সনাতন॰॥ ইভি পাদ্যোত্তরখণ্ডে ৩০ অধ্যায়ঃ।। বৈক্ত॰ ক্লী বীভৎসরসঃ॥তদা-লয়নে মাণ্স শোণিভাদৌ ত্রি। ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ॥ তথা । বিকৃত বৈকৃত্ঞ ग্যাত্ত বৈ-॥ কৃত্য মূচ্যতে। ইতি ভরত দ্বিক-পকোষঃ ।।

বৈকৃত্য° ক্লী বীভৎসরুসঃ।। তদালয়নে ত্রি। যথা। ত্রিষু ৰ্বাভৎস বিকৃতং বৈকৃত্যং বিত্ত ন্তথা। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ বৈক্রান্ত॰ ক্লী মণিবিশেষঃ।তৎ পर्याय छटनो । देवका छटक्ष्य विकाखः नीष्ठवज्जुः भवज्जुकः। **लानामः कूजन्रनिम॰ जी**र्वन জুঞ্চ গোনসঃ ॥ বজুাভাবে চ देवकान्छ॰ व्रम वीयामितक मन॰ । क्य क्षे वियमक भूमिन मूत-मायन ॥ दिल् ए वजुमामृ-**শ্য° বজুবদ্রন** বীর্য্যক**া ত**ং। প্যভাবে বজুস্য গ্রাহণ বৈক্রান্ত मुख्य॰ ॥ बङ्गाकात्र्वरेयव अभ-श र्वाय मर्व तामानाः। य-দ্বিক্রান্তি॰ ধত্তে তহৈক্রান্ত॰ বু-ধৈ রিদ॰ কথিতং ॥ ইতি রাজ-निर्यक्टें ॥

বৈধরী ত্রী বুদ্ধু্যখিতকণ্ঠগতনা দকপবর্ণঃ ৷ যথা ৷ মূলাধারাৎ প্রথম মুদিতো যস্ত তারঃ পরা খ্যঃ পশ্চাৎ পশ্যন্ত্যথ হৃদযগো বুদ্ধি যুঙ্মধ্যমাখ্যঃ ৷ বক্তেঃ বৈ-খর্যাথ রুরুদিযো রস্য জক্তোঃ

সুসুয়া বন্ধ স্তস্মান্তবতি পবন প্রেরিতো বর্ণদংহঃ ॥ ইতাল-স্কারকৌস্তভঃ ॥ অস্যার্থঃ। যস্ত তারো নাদঃ বর্ণৰূপঃ স নাভি-क्रा मृजाधाता अथम मूमय-প্রাপ্ত শ্চেৎপর ইতি আখ্যা সং-জ্ঞ। যদ্য তথাভূতে। ভবতি। অ-থানন্তর সএব হৃদয় চিত্ত গ-ত শ্চেৎ রোদন সমযে নাসিকা দ্বারা যথাকথঞ্চিৎ ভবতি। রুক্ত-দিয়ে। জন্তে। নাসা নধ্যস্থিত স্-সয়া নাড্যা বদ্ধঃ। তথাচ নাসা घारेत्रव यथाकथिंश्य नाम स्रबः পঃ প্রত্যক্ষ স্তবতীত্যর্থঃ ৷ তক্ষাৎ বৈখরী দশাপদাৎ নাদাৎ পব-ন প্রে রতো বর্ণসমূহঃ বহিঃ সু-ৰ্ষোণ প্ৰত্যক্ষ বিষধে। ভবতী-ত্যথঃ ৷ পরাপশ্যন্তী দশাপয়স্য তু যোগিন। নেব প্রত্যাক্ষে ন তু সর্বেষা মিত্যপি বোধ্য । ইতি ভটীকা ॥

তি । বিশান বৈখানসং পুং বানপ্রস্থং। যথা। বানপ্রস্থো বৈখানসো ২গ্রহং। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষং।। বৈশুণ্যং ক্লী বিশুণদ্বং। বিশুণ-স্য ভাবং। যথা। যাত্রাপবর্ত্তে-যুগ্যং বৈশুণাৎ প্রাক্তক্যা চ। তত্র স্বামী ভবেদ্দণ্ড্যো হিংসায়াও দ্বিশতও দমঃ ॥ ইতি মনুঃ ॥ বৈচক্ষণ্যও ক্লী বিচক্ষণত্বং ৷ বিচ-ক্ষণস্য ভাব ইত্যর্থে ক্ষ্য প্রত্য-যেন নিষ্পান্নও ॥

বৈচিত্র্য ক্লী বিচিত্রতা। বিচিত্র-স্যভাব ইত্যর্থে ষ্ণ্য প্রত্যবেন নিষ্পন্ন ।।

देजननः पू॰ श्रमवमामः। ७९%व्यापः। मृजिमामः २। ইতাमतः॥
देजपछः पू॰ ইक्तश्रामामः ।
हेठामतः॥ ইक्तश्रकः। ইতি ग्रम्मः॥
देजपछिकः जि श्रणकाशाती।
हेठामतः॥

বৈজয়ভিক। স্ত্রী জয়কীবৃক্ষঃ।। পতাক। ইত্যমরঃ '. এগ্নিমস্থঃ । ইতি রাজনির্যণ্টঃ।।

বৈজযন্তী ত্রী পতাক। ইত্যমরঃ । জযন্তীবৃক্ষঃ । ইতি মেদিনী । অগ্নিমন্থবৃক্ষঃ । ইতি
হেমচন্দ্রঃ । পঞ্চবর্ণমধী জানুপর্য্যন্ত লম্বিতা মালা । যথা ।
উপগীয়মান উদ্যায়ন্ বনিতা
শৃতযূথপঃ । মালাণ বিভূদ্বৈজযন্তীণ ব্যচরন্ মণ্ডযন্ বনং ।।
ইতি শ্রীভাগবতে ১০ স্কন্ধে ৩১

অধ্যায়ঃ।। বৈজ্যিঃ পু॰ মধ্ব।। সতুজিন-চক্রবর্ত্তিবিশেষঃ । ইতি হেম-

**टिक्** शा

देवजिषक जि विजयमधित । े इंडि मिक्का छटको मूमी ॥

दिकिक॰ क्षी भिगुरेजन॰॥ रहज़ः । ইতি মেদিনী ॥ आशां। ইতি শব্দমালা॥

বৈজিকঃ পু॰ সদ্যোৎক্রঃ।ইতি মেদিনী ৷৷ বীজসম্বন্ধিনি ত্রি ৷৷ বৈজ্ঞানিকঃ ত্রি নিপুণঃ।ইত্য-

न्द्रः ॥

বৈ জালবত । ক্রী দুঝী চারবিশে-যঃ । যথা । যস্য ধর্মাধজো নি-ত্য শক্রধজ ইবোচ্ছিতঃ । প্র-চ্ছন্নানি চ পাপানি বৈজাল । নাম তদ্বত ।। ইতি দানসাগরে যমবচন ।।

বৈডালব্রতিঃ পু॰ অঙ্গনাদ্যভা-বাৎকৃতব্রহ্মচর্য্যঃ ৷ ইতি জটা-ধরঃ ৷৷

বৈডালত্ৰতিকঃ পু॰ ছন্মতপস্থী। তৎপৰ্য্যায়ঃ। ছন্মতাপসঃ ২ স-ৰ্বাভিসন্ধী ৩ । ইতি ত্ৰিকাণ্ড-শেষঃ।। তস্যা সংভাষ্যত্বং ষথা। প্ৰায়ন্তিনো বিক্ৰম্মস্থান বৈডাল- অতিকান্ শঠান্। হৈতৃকান্ বকবৃত্তী শ্চ বাজাত্রেণাপি নার্চ্চযেৎ ।। ইতি বিষ্ণুপুরাণেও অংশে ১৮ অধ্যায়ঃ ।। যস্য ধর্মাধ্বজোনিতা পুরধ্বজ ইবোচ্ছিতঃ
। প্রচ্ছমানি চ পাপানি বৈডাল নাম তদ্তা ।। তদ্বান্ বৈডাল্রতিকঃ । ইতি তট্টীকা ।।

ল্ডাতকঃ। হাত তড়াকা।।
বৈডাল্ড্রতী পুণ ভণ্ডতাপসঃ।
বিডাল্ডপ্রী ইতি ভাষা। যথা
। ছদ্মনা চরিতণ তচ্চ ত্রতণ রক্ষসি
গচ্ছতি। অলিঙ্গী লিঙ্গবেশেন
যো লিঙ্গ মুপজীবতি।। স লিস্পিনাণ হরেদেন স্তির্যায়োনো চ
জাযতে। বৈডাল্ড্রতিনঃ পাপাঃ সর্বধর্ম বিনাশকাঃ।। সদ্যঃ
পতস্তি পাপেষু কর্মাণ স্তম্য তৎ
ফলণ। পাষ্ডিনো বিকর্মাস্থান্
বামাচারাণ স্তথ্যের চা। পঞ্চরাত্রান্পাশ্তপতান্ বাল্লাত্রেণাপি
নার্চবেৎ। ইতি কৌর্মে উপ-

রিভাগে ৫ অধ্যাষঃ ।। বৈণঃ পু° বেণুজিবী । বেণুশব্দা-দণ প্রত্যযেন উকারস্য লোপে-ন চ নিষ্পায়ঃ । ইতি সিদ্ধাস্ত-কৌষ্দী ।।

পাষ্ডিনোবিকশ্বস্থান্ বৈডাল- । বৈণব॰ ্ক্লী বেণুকল । ইত্যমরঃ

। বেণুসম্বন্ধিনি ত্রি।। বৈণবঃ পু• উপন্যনে বেণুদ্ওঃ। তৎপর্যায়ঃ। রাস্তঃ ২ । ইত্য-মরঃ।।

বৈণবিকঃ ত্রি বেণুবাদকঃ। তৎ-র্যায়ঃ। বেণুধাাঃ ২। ইত্যমরঃ।। বৈণুকঃ ৩। ইতি শব্দরত্নাবলী।। বৈণবী স্ত্রী বংশলোচনা। ইতি রাজনির্ঘণটঃ।।

বৈণিকঃ ত্রি বীণাবাদকঃ। ইত্য-মরঃ 11

বৈণুক ক্লী গজস্য তোদনদ্ও । ততু হস্তিচালনার্থ লৌহমুখব -শদগু ৷ তৎপর্য্যায় ৷ তোল্র ২ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ বেণুক ত ৷ ইতি ভরতঃ ৷৷

বৈণুকঃ পু॰ বেণুবাদকঃ। ইতি শব্দরত্মাবলী।।

বৈণুকীয় তি বেণুসম্বন্ধীয়। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥

বৈণ্যঃ পু॰ পৃথঃ। সতু সূর্য্যবং-শীষ পঞ্চমরাজঃ। ষথা। আদি-রাজঃ পৃথু বৈণ্যো মান্ধাতা বৌ-বনাশ্বকঃ। ইতি জটাধরঃ।।

বৈত সিকঃ ত্রি মাণস্বিক্রেতা। তৎপর্য্যায়ঃ। কৌটিকঃ ২ মাণ-সিকঃ ৩। ইত্যমরঃ।। কৌটকি- কঃ ৪। ইতি শব্দরত্নাবলী ।। মৃ-গপক্ষ্যাদি বন্ধনোপায়ো বীত-সঃ তেন চরতীতি বৈতংসিকঃ । ইতি ভরতঃ ।।

বৈতনিকঃ ত্রি বেতনভুগ্ভৃত্যঃ1 তৎপর্যায়ঃ। ভৃতকঃ ২ ভৃতি-ভুক্ ৩ কর্মকরঃ ৪। ইত্যমরঃ ॥ रेवडब्रिनः ) खी नद्रकिषम् । हे-বৈতরণী 🔰 ত্যমরঃ ৷৷ বি**তরণেন** দানেন তীর্য্যতে বৈতর্ণী ক্ষঃ यिजुामी १ (को देवछत्रिक । অটবি পটি ঘাটী বৈতরণার্চি শুগী রিতি হুস্বান্তেযু রু 🖘 । ত-তোপি পাচ্ছোণাদীতি না ঈপ্ বিৰুদ্ধণ তর্ণণ বিতর মস্তীতি বৈতরণীত্যন্যে। বিত-রণৌ বিসূর্য্যে পাতালে ভবা বৈতরণীতান্যে । বিতরণি বি-নৌকা তরণ শূন্যেতার্থঃ স্বার্থে ক্ষে বৈতরণীত্যেকে। সিদ্ধু নদী । নারকা জন্তবঃ প্রেতা নদী বৈতরণী স্মৃতা। ইতি ত্রিকাণ্ড॰। ইতি ভরতঃ।। #।। স∣ নদী দু-ৰ্গন্ধা তপ্তজলা মহাবেগা অস্থি কেশ রক্ত পরিপূর্ণা যমদারে বর্ত্ততে। যথা। নদী বৈতরণী नाम पूर्णका क्षितावहा। उक-

ভোষা মহাবেগা অস্থি কেশ। তরঙ্গিণী ॥ ইতি প্রাযশ্চিত্তবি-तिक शृं रामिश विष्ठ विष्य অদ্যোৎপত্তি র্যথা। নার্কণ্ডেষ উবাচ **। ততো ব্রহ্মাদযো দেব**াঃ সর্বে তে শঙ্করান্তিকণ । গদ্ব। হরণ সংস্মূহঃ সাংসার্ব্যা যোগনায্যা ॥ শনৈশ্চরোপি ভূতেশ মাসাদ্যা-ন্তহিত স্তদা। বাষ্পবৃষ্টি॰ দুরা-**४**र्या भवक्र शाह नाय्या ॥ यहा न नामकषाम्यान् मन्नात्रिक् भकं-জঃ। তদা মহাগিরৌ ক্ষিপ্তা বা-স্পা স্তে জলধারকে ।। লোকা-লোকস্য নিকটে জলধারাহ্বযো গিরিঃ। পুদ্ধরদ্বীপ পৃষ্ঠস্থ স্তোয-সাগর পশ্চিমে।। স তু সর্ব প্রনা-ণেন মেৰুপৰ্যত সন্ধিভঃ ৷ তস্মিন্ विनाखवान् वाष्ट्रान् न धर्वुः कम ঈশিতুঃ।। বিদীৰ্ণ স্তৈস্ত বাস্পৌ-ষৈ ভূমমধ্যে ২ভবদ্দুত । তে-ৰাস্পাঃ পৰ্বত॰ ভিত্বা বিবিশু স্তো-যসাগর ।। সাগরোপি গ্রহীতু তান শশাক খরানতি। ততস্ত সাগর মধ্যে ভিত্বা বাস্পাঃ স-মাগতাঃ ৷৷ তো বেঃ প্রাগ্ভবাণ বেলা॰ স্পাৰ্শমাত্ৰাদ্বিভেদ তা॰। বিভিদ্য বেলা॰ তে বাস্পাঃ পু-

कत्रघीण मधागाः ॥ नमी देवजः রণী ভূষা পূর্বসাগরগা ভবন্। জলধারস্য ৰেগেন সংস্থাৎ সা-গরস্য চ ৷৷ অবাপ্য সৌম্যতাণ কিঞ্জিদ্বাষ্পা স্তে নাভিদন ক্ষিতি°। স্বদ্বাস্প ব্যাঙ্গলা পৃথী বিদীর্ণা স্যা-মচেচ্ছনিঃ৷ অবজগ্রাহতে বাস্পণ সোপি কৃষ্ণো ২ভবদ্ধঠাৎ।শনৈ-শ্চরেণ তে বোচু মসমর্থেন লো-তকৈঃ।। ক্ষিপ্তে বিদারিতঃ সো-সৌ জলধারো মহাগিরিঃ।বিভি-দ্য পৰ্বত॰ শয়ে৷ ৰ্ৰাস্পা স্তে সাগ-র॰ যযুঃ।। বৈবস্বত পুরদ্বারে যো-জন দ্ব বিস্তৃত। অদ্যাপি তিষ্ঠ-ত্যপগা হরলোতক সম্ভবা ৷৷ ভি-স্বা বেলাণ ততঃ পৃখ্বীণ বিভিদ্যাশ্ত তরঙ্গিণীণ । চক্র বৈতরণী নাস্না পূর্বসাগরগামিনী ।। নান। যান বিমানেন নজৌণ্যা স্যন্দনেন চ ৷ তৰ্ভু॰ শক্যা সাতু নদী তপ্ততোষা বিভীষণা ৷৷ দুঃখেন তা॰ তু পৃথি-বী বিভৰ্ত্তি মহতাধুনা। সদা চো-ৰ্দ্বুগতৈ বাজে বিক্ষিপন্তি নভ-শ্চরান্ ॥ ত্স্যা উপরি নো যা-ন্তি দেব। অপি ভ্যাদ্ধর। যন-দার স্মাবৃত্য যোজনদ্য বিস্তৃ-তা ।। নিম্ন° বহতি সংপূর্ণা ভীষ-

যন্তী জগভ্ৰষণ। ইতি কালিকাপু-রাণে ১৮ অধ্যায়ঃ ॥ 🟶 ॥ পিতৃ-কন্যা। যথা। অযজ্বানশ্চ যজ্বা-নঃ পিতরো ব্রহ্মণঃ স্মৃতাঃ। অগ্নি-স্বাক্তা বৰ্ছিষদে৷ দ্বিধা তেষাণ ব্য-বৃত্বিতঃ ৷৷ তেভ্যঃ স্বধা স্বধা যজ্ঞে মেনা॰ বৈতরণী॰ তথা । ইতি কেৰ্ম্মে ১২ অধ্যায়ঃ॥ ৠ॥ আস-भगृजुकाल रेवज्रनीगवीमान॰ ষথা। আসন্নস্ত্যুনা দেযা গৌঃ সবৎসা চ পূৰ্বত্। তদভাবে চ भी दिका नर्त्रका कार्रवाच देव ।। তদা যদি ন শক্ষোতি দাতু° বৈত-রণীঞ্চ গাং। শক্তোন্যো ২রুক তদা দম্বা শ্রেষো দদ্যামৃত্স্য চ ॥ शृर्वतस्त्रम् कानिना। अञ मृ-তস্য চেতি শ্রবণাদেকাদশাহে ২পি বৈতরণীদানাচারঃ। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব° ॥ 🕸 ॥ বৈতরণী গো-দানানন্তর প্রার্থনা মন্ত্রো যথা। যমদারে মহাযোরে তপ্তা বৈত-রণী নদী।তাঞ্চ তর্ভু॰ দদাম্যেনা॰ কৃষ্ণাণ বৈতরণীঞ্চ গাণ।। ইতি তৎ প্রযোগঃ॥ অন্যৎ মুমূর্শ-ব্দে দ্রফব্য° ॥

বৈতসঃ পু॰ অম্লবেতসঃ। ইতি জটাধরঃ।।

বৈতানিকঃ পু॰ শ্রোতহোমঃ। যথা। মরণাদেব কর্ত্তব্য সংযো-ला यमा नाभिना। मारामृक् মশৌচ॰ স্যাদ্বস্য বৈতানিকো বিধিঃ ৷৷ ইতি শুদ্ধিতত্ত্বুণ ৷৷ বি-তানসম্বন্ধীয়ে ত্রি। বিতানশ-কাৎ ক্ষিক প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ।। বৈতালিকঃ পু• বোধকরঃ। ইত্য-মরঃ।। দ্বে নিশান্তে বোধকার-কে ৷ বিবিধো মঙ্গল গীতি বা-माापि कृठ छाल भकः তেন ব্যবহরন্তি বৈতালিকাঃ ঢযে-कामिछि क्षिकः। निशास्त्रः नि-বেদযভো যে নৃপণ বোধযন্তি জাগরযন্তি তে বোধকরাঃ সৃঙ্গ-ফ ইতি টঃ। ইতি ভরতঃ।। খে-ডিতালঃ । যথা । বৈ<sup>্</sup>লিকঃ পুমান্ খেডিতালে বাধকরে ত্রিষু। ইতি মেদিনী।। হেমচন্দ্রে তু পাঠান্তর॰ যথা। বৈতালিকঃ খড্জতালে মঙ্গলপাঠকেপি চ ॥ বেতালসম্বন্ধিনি ত্রি॥

বৈত্ৰক° ত্ৰি বেত্ৰসম্বন্ধি ৷ বেত্ৰ শব্দাৎকণ্প্ৰত্যযেন নিষ্পান্ধ ৷ । বৈত্ৰকেষঃ ত্ৰি বেত্ৰসম্বন্ধীযঃ । বেত্ৰকশব্দাৎ ক্ষেষ্ প্ৰত্যযেন নিষ্পান্ধঃ ৷৷ বৈদঃ তি পণ্ডিতসম্বন্ধী। বিদ্ শব্দাৎ ফ প্রত্যযেন নিষ্ণায়ঃ।। বৈদগ্ধ কী বিদগ্ধস্বং। যথা। বৈদগ্ধ মপি বৈদগ্ধী। ইতি ভর-ত দ্বিক্সকোষঃ।। বৈদগ্ধী স্ত্রী ভঙ্গিঃ। যথা। ছলং মিষঞ্চ বৈদগ্ধী ভঙ্গি শেচ-ভনিমীলিকা। ইতি ত্রিকাগু-শেষঃ।। বৈদগ্ধাং ক্লী বিদগ্ধস্য ভাবঃ।

বৈদগ্ধা° ক্লী বিদগ্ধস্য ভাবঃ। বিদগ্ধশব্দাৎ ষ্য প্রত্যবেন নি-প্রান্থ।।

বৈদর্ভ ক্লী বাক্যবক্রত্ব। ইতি মেদিনী । বিদর্ভসম্বন্ধিনি ত্রি ।। বৈদর্ভঃ পু॰ বিদর্ভদেশীযরাজঃ। সতুদমযন্তীপিতা ভীমদেনঃ। রুক্মিণীপিতা ভীমকশ্চ ।। বাক্য-বক্রিমা। ইতি ধরণিঃ।।

বাক্রনা। হাতধরাণঃ।।

বৈদভী স্ত্রী কাব্যরীতিভেদঃ।

ইতিমেদিনী।। যথা। রীতি মাহ
। পদসংঘটনা রীতি রঙ্গ সংস্থা
বিশেষবং। উপকত্রী রসাদীনাও
রসাদীনা মর্থাং শব্দার্থ শ্রীরস্য কাব্যস্যাত্মভূতানাও। সা
পুনঃ স্যাচ্চতুর্বি ।। বৈদভী চাথ গৌডী চ পাঞ্চালী লাটিকা
তথা।। সা রীতিঃ। তত্র মাধুর্য্য

ব্যঞ্জকৈ বঁ দৈ রচনা ললিতাত্মি-কা। অবৃত্তি রন্নবৃত্তি ଶ বৈদভী রীতি রিষ্যতে॥ যথা। অনঙ্গ ম-क्न जूर रेजामि। क्रफिरुशर। অসমস্তৈক সমস্তা যুক্তা দশভি र्ख रेनम्ह रेवमजी । वर्ग विजीय বহুলা স্বন্ন প্রাণাক্ষরা চ সুবি-বেষা।। অত্ৰ দশগুণা স্তমতো-ক্তাঃ শ্লেষাদয়ঃ । ওজঃ প্রকাশ-रैक बेरें विका जा जबतः भूनः॥॥॥ সমাস বহুলা গৌডী যথা। চঞ্চ-ভূজেত্যাদি। পুৰুষোত্তম স্ত্ৰাহ। বহুতর সমাসযুক্তা সুমহাপ্রাণা-করা চ গৌডীষা । রীতি রনু-প্রাস মহিম পরতন্ত্রা স্তোভবাক্যা **চ।। वर्टर्नः त्मरियः भून र्वरयाः म**-মস্ত পঞ্চষপদো বন্ধঃ পাঞ্চালিকা মতা। দ্বযো বৈদ্ভী গোড্যোঃ। যথা। নধুরয়া মধুবোধিত মাধবী মধুসমৃদ্ধি সমেধিত মেধ্যা। মধু-क्ताञ्चनया मूङ्क्यामधनि ভृতा नि-ভূতাকর মুজ্জগে ॥#॥ ভোজস্তা-হ। সমস্ত পঞ্চষপদা মোজঃ কা-ন্তি সমন্বিতাণ মধুরাণসুস্কমারাঞ্চ পাঞ্চালী॰ কৰযো বিদুঃ ॥ৠ॥ লা-টী তু রীতি বৈৰ্দভী পাঞ্চাল্যো র-ন্তরা স্থিতা। যথা। অয় মুদয়তি মূজাভঞ্নঃ পাল্লিনীনা মুদ্যগিরি वनानी वान गमात भूष्ण । वित-হ বিধুর কোক দ্বন্দু বন্ধু বিভিন্দন্ ঙ্গপিত কপি কপোল ক্ৰোড তামু ख्या॰िम ॥ कन्छिमार । मृमूशम সমাস সুভগা যুক্তৈ বঁটো নঁচা-তিভূষিষ্ঠা। উচিত বিশেষণ পূরি-ত বস্তু ন্যাসা ভবেলাটী ॥ 🕸 ॥ অন্যেত্বাহুঃ। গৌডী ডয়র বন্ধা স্যাৎ বৈদভী ললিতা ক্ৰমাৎ। পাঞ্চালী মিশ্রভাবেণ লামী তু মৃ-मुज्धिः **भरिमः ॥ क्**ठिकू वक्कारमाो-ठिত्यापनाथा वहनामयः। वङ्का-দীত্যাদি শব্দাদ্বাচ্য প্রবন্ধৌ বচ-নাদীত্যাদি শব্দাষৃত্তি বণৌ ৷ তত্ৰ বক্ত্ৰোচিত্যাদ্যথা। মন্থায স্তাৰ্ণ-বাস্ত ইত্যাদি ৷ অত্র বাচ্যস্য ক্রো-ধাদ্যব্যঞ্জকত্বেপি ভীমদেন বক্তৃ-ত্বেনোদ্ধতা বচনাদ্যঃ। বাচ্চ্যে-চিত্যাদ্বথোদাহতে। মূদ্ধব্যাধূ-যমানেত্যাদৌ ॥ 🕸 ॥ প্রবন্ধৌচি-ত্যান্দ্রথা। নাটকাদৌ ব্লোদ্রেপ্য-ভিন্য প্ৰতিকূলদ্বেন ন দীৰ্ঘ সমা-मानयः। এव माथायिकायाः मु-कारतिशि न ममृग वर्गामयः। कथा-ৰাণরৌদ্রেপি নাত্যস্ত সুদ্ধতাঃএব মন্যদপি জ্বেয°। ইতি সাহিত্য-

দর্পণে রীতিবি বেকো নাম ৯ প-রিচ্ছেদঃ ॥ 🗱 । অগস্তাপত্নী । ইতি শ্পরত্রাবনী ॥ দম্যন্তী। যথা। বৈদভী বিপুলানুরাগ ক-লনা সৌভাগ্য মত্রাখিল ক্ষৌণী চক্ৰ শতক্ৰতো নিজগদে তদ্বুত্ত বৃত্তক্রনৈঃ। কিঞ্চাস্মাক নরেন্দ্র-ভূ সুভগতা সম্ভূত্যে লগ্নক দে-বেন্দ্রাবরণপ্রসাদিত শচী বিশ্রা-ণিতাশীৰ্ষচঃ॥ইতিউত্তরনৈষধে ১৫ সর্গঃ।। রুক্মিনী । यथा । देर দ-ৰ্জাঃ সতু সন্দেশ নিশ্ম্য যদ্ন-ননঃ। প্রগৃহ পারিনা পারি॰ প্র-হদন্ দ্বিজ মত্রবীৎ।৷ ইতি শ্রীভা-গবতে ১০ স্কন্ধে ৫৩ অংগ্ৰাফঃ ৷৷ रैक्नन क्री जिक्कूकमार गयानि-পাত্রণ। যথা। পাত্রহ ারবালা-वू मृत्रायानाति देवननः। इंडि জটাধরঃ 🛭

বৈদলঃ পুণ পিষ্টকঃ । যথা।
পূপো ২পূপঃ পিষ্টকঃ স্যাদ্ধৈদলো বিদলোপি চ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। বিদলো দালি স্তন্নিশ্বিত পিষ্টকো বৈদলঃ। তদ্যুগাঃ। বৈদলা গুরবো ভক্ষ্যা বিফুট্টি সৃষ্টমারুতাঃ। ইতি রাজবল্লভঃ।।

रेरिक्कः पू॰ (वनञ्जाभाषः॥ विजास्कि वि। यथा। विकिरी তান্ত্ৰিকী সন্ধ্যা যথানুক্ৰম যো-গতঃ। ইতি তন্ত্রসারঃ॥ বৈদিশ্য° ত্রি বিদিশাযা অদূর-্ভব॰ নগর॰ 1 ইতি সিদ্ধান্ত-क्रियूमी ॥ देवमूषाः क्ली विमूर्याञावः।विषम् শব্দাৎ ফ্য প্রত্যযেন নিষ্পন্ন ।। दिव मूर्वा॰ क्री मिनिदिश्वाः। म जू क्रःशीठवर्यः। वश्मूनीया देखि হিন্দী ভাষা। অস্য দেবতা কে-जुः । ज ९ भर्यायः । वानवाय-জ' ২ ৷ ইতি হেমচন্দ্ৰঃ ৷৷ কেতৃ-রত্ন॰ ৩ কৈতব॰ ৪ প্রাবৃষ্য৽ ৫ অভূরোহণ ৬ খরাব্দাস্কুরকণ ৭ বিদূররত্ন॰ ৮ বিদূরজ॰ ২। অসা গুণাঃ ৷ অগ্রত্বং ৷ উষণ্ড্বং ৷ কফ বাযুনাশিত্ব। গুলা শূল প্রশন-নত্বণ ভূষিতঞ্চেৎ শুভাবহত্বঞ্চ । ইতি রাজনির্যন্টঃ॥ অপি চ। মুক্ত। বিদ্রুম বজে্ব বৈদুর্য। স্ফটিকাদিক°। মণিরত্ন° সর• শীতং ক্যায়ং স্বাদু লেখনং 🗓 ठाकुया॰ शात्रवा उक्ठ **পाপालश्री** বিনাশন । ইতি রাজবল্লভঃ ॥ %।। তচ্ছাযলকণ যথা। এক॰ ।।

বেণুপলাশ কোমলরুচা মাযূরক-গ্রিষা মার্জারেক্ষণ পিঙ্গলচ্ছবি-জুষা জ্ঞেষণ ত্রিধা চ্ছাম্যা। यक्ता-ত্র° গুরুতা° দধাতি নিতরা° শ্নি-শ্বস্তু দোষোষিত° বৈদূৰ্য্য° বিশদ° বদন্তি সুধিযঃ স্বচ্ছঞ্চ তচ্ছোভন॰ ॥ তमा जलकन यथा। विष्ण्य मृष्टिनागर्जः नयु बक्षः मक्षठः। मजामः পরুষः क्रुगः देवमूर्याः मृ-রতা॰ নযেৎ।। তৎ পরীক্ষা যথা । घृष्टे॰ यमाञानाश्रद्धः श्रद्धामाः নিক্ষাশ্মনি স্ফুট° প্রদর্শযেদেত-দৈদ্ধাণ জাতা মুচাতে ॥ ইতি तार्कानर्ष-छः ॥ 🛊 ॥ मृठ উবाচ ু বৈদূর্য্য পুষ্পরাগাণা কর্ব্বেত ভীমকে বদে । পরীক্ষাণ ত্রন্ধণা প্রোক্তা॰ ব্যাদেন কথিতা॰ দ্বিজ ॥ কল্পান্তকাল ক্ষুভিতামূরাশি निर्ा प कल्ला फिलिक गा नामा थ। বৈদূৰ্ব্য মুৎপন্ন মনেক বৰ্ণ শো-ভাভিরামণ দূর্যতি বর্ণ বীঙ্গণ ৷৷ অ-বিদূরে বৈদূর্য্যস্য গিরে রুত্তঙ্গরো-ধসঃ। কাম ভূতিক সীমান মনু-তদ্যাকরে৷ ২ভবৎ ৷৷ তদ্য না- निर्वासिक्तः सुमहाखनः । অভূদ্তরিতো লোকে লোকত্রয বিভূষণঃ ৷৷ **তদ্যৈব দানবপতে** 

निनमानुका थावृष्ट् शरवाम वत-দৰ্শিত চাৰুৰূপাঃ। বৈদূৰ্য্য রত্ন মণ্যে। বিবিধাবভাস। স্তম্মাৎস্ফু-जिङ्ग निवर। हेव **मश्र**ुव्ः॥ **१**ण-রাগ মুপাদায মণিবর্ণা হি যে ক্রি-তৌ। সৰ্বাণ্স্তান্ বৰ্ণশোভাভিবৈ-দূর্য্য মনুগছতি ॥ তেযা॰ প্রধান॰ শিখিক ঠনীলং যদা ভবেদেণুদল প্রকাশণা চাযাগ্র পক্ষ প্রতিমঞ্জি-ষে। যে ন তে প্রশস্তা নণিশাস্ত্র विक्तिः॥ शुनवान् रेवमृर्य्य मनि ८र्या-জয়তি স্বামিনং বরভাবৈগ্যঃ ৷ দো-ষৈৰ্ভিভা দোৱৈ <mark>স্তস্মাদ</mark>্মত্নাৎপ-রীক্ষেত ৷৷ গিরিকাচ শিশুপা-লৌকাচ ক্ষটিকাশ্চ ভূমি নির্ভি-নাঃ। বৈদূর্য নণে রেতে বিজাত-যঃসন্মিভাঃ সন্তি॥লিখ্য।ভাবাৎ কাচ॰ লঘু ভাবাকৈইপালক বিদ্যাৎ। গিরিকাচ মদীপ্তিস্বাৎ স্ফটিক বৰ্গোজ্জ্বলত্বেন।। যদিন্দ্ৰ-भीनमा महाखनमा मुदर्ग मण्या-क्लिতमा भृला । उत्मव रेतमृया মণেঃ প্রদিন্ট॰ পলদ্বোমাপিত গৌরবন্য ॥ জাত্যস্য সর্বেপি ম-শেস্ত যাদৃক্ বিজাতবঃ সন্তি স-মানবর্ণাঃ । তথাপি নানাকরণা-নুমেষ ভেদপ্রকারঃ প্রমঃ প্র-

मिकेः ॥ मूर्थाशनकान्छ मना दि-চার্য্যো হুয় প্রভেদো বিদুষা ন-রেণ ৷ স্নেহ প্রভেদো লঘুতা মৃদু-ত্ব॰ বিজাতি লিঙ্ক॰ খলু সাৰ্বজন্য॰ া৷ সশলা সশলৈঃ প্রযুজ্যমানাঃ প্রতিবদ্ধাঃ প্রতিসৎক্রিয়া প্রয়ো-গৈঃ। গুণ দোষ সমুদ্ধব॰ লভস্তে মণযোষ্যান্তর মূল্য মেব ভিষাঃ।। ক্রমশঃ সমতীত বর্ত্তমানাঃ প্রতি-বদ্ধ। মণিবন্ধকেন যত্নাৎ। যদি নাম ভবস্তি দোষহীন। মণয়ঃ ধ-**७७**१ माश्र्विछ मृनाः ॥ आक-রান্ সমতীতানা মুদধে স্তীর স-মিধৌ। মূল্য মেতমণীনাস্ত্র ন স ৰ্বত্ত মহীতলে।। সুবৰ্ণো মনুনা य-স্তু প্রোক্তঃ যোডশ মাধকঃ। ত-স্য সপ্ততিমো ভাগঃ সংজ্ঞাৰূপ**্** করিষ্যতি ৷৷ শাণ শচতুর্মান নানো মাষকঃ পঞ্চফলঃ। পলস্য দশ্-মো ভাগো ধরণঃ পরিকীর্ত্তিতঃ।। ইতি মানবিধিঃ প্রোক্তো রত্নানা• মূল্য নিশ্চযে। ইতি গাৰুডে বৈ-দূর্য্যপরীক্ষা ৭৩ অধ্যায়ঃ ॥ 🕸 ॥ অন্যাচ্চ। সিত্ত ধূনুসকাশ নী-**শ**९क्रकमिত॰ ज्यवे । विमृर्या নাম তদ্রত্ব° রত্নবিদ্ধি রুদাহৃত°।। বন্ধ ক্তিব বিট্ শূদ্ৰ জাতি ভে-

দাচ্চতুৰ্ৰিধণ। সিতনীলো ভবেদ্বি-প্রঃ দিতারক্তম্ভ বাহজঃ।। পীতা-नीनञ्च रिक्याः मार् नीन এवः হি শুদ্রকঃ॥ 🕸॥ অথ গুণাঃ। নার্জারনযনপ্রখ্যণ রসোনপ্রতি-ম° হি বা। কলিল° নিৰ্ম্মল° ব্যঙ্গ॰ বৈদূর্য্য দেব ভূষণ ॥ সূতার॰ <mark>খন মত্যচ্ছ॰ কলিল॰ ব্যঙ্গ মেব চ।</mark> বৈদূর্য্যাণাণ সমাখ্যাতা এতে পঞ্চ মহাগুণাঃ।। তদ্মথা। উদ্দার্দ্ধি-ব দীপ্তি° যে। ২দো সুতার ইতি গদ্যতে। প্রমাণতার্য়ণ গুরু যৎ ষন মিত্যভিধীয়তে।। কল্ঞাদি বিহীনণ তদতাচ্ছ মিতি কীৰ্ত্তিতং। ব্রহ্ম শদ্রণ কলাকার শ্চঞ্চলো যত্র **দৃশ্যতে॥ कलिल॰ नाम उ**खाद्रः সর্বসম্পত্তি কারকং। বিশ্লিফীসম্ভ বৈদূৰ্য্যণব্যঙ্গ মিত্যভিধীয়তো৷ৠ৷৷ ককর কর্কশ তাসঃ কলফো দে-হ ইত্যপি। এতে পঞ্চ মহাদোষা বৈদূর্য্যাণা মুদীরিতাঃ ॥ শর্করা-যুক্ত মিব যৎ প্রতিভাতি চ ককরণ 1 স্পশেপি চ যত্তজ্জ্বেণ ককশ**্** বন্ধনাশনং ৷৷ ভিন্ন ভ্রান্তিকর স্ত্রা-मः म ऋर्गा९ अनमःकयः। विक्र-क्षवर्णा यमारिक कलकः क्रय का-ব্লকঃ।। মলদিগ্ধইবাভাতি দেহে। দেহ বিনাশনং ৷ জয়তি যদি সুবর্ণ ত্যাগ হীনো যদা বা বহুবিধ মণিহারী ভূপতি র্বা যতি র্বা !
দংদপি ধৃতদোষণ জাতু বৈদূর্য্য
রক্ন প্রতিশত ফলৰূপঃ পাত
মেধ্যত্যবশ্যণ ৷৷ ইতি যুক্তিকল্পতরো বৈদূর্য্যপরীক্ষা ৷৷ অন্যৎ
গরুডপুরাণবৎ ৷৷
বিদেহঃ প্রথা বিক্রা ইত্যেবে

বৈদেহঃ পু॰ বণিক্। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ।। নিনিরাজপুল্রঃ। অস্যোৎপত্তি র্যথা। অপুল্রম্য ভস্য ভূভূজঃ শরীর মরাজক ভীরব স্তে সুনমঃ অরগ্যাণ মমস্টুং। তত্র চ সমারো
জক্তে । জননাজ্জনক সংজ্ঞাণ
চাসাববাপ। অভূদ্বিদেহো ২স্যা
পিতেতি বৈদেহঃ। মথনামিথি
রভূত্স্যোদাবসুঃ পুল্রো ২ভবৎ
। ইতি বিফুপুরাণে ৪ অংশে
নিমিবণশ কথনণ নাম ৫ অধ্যাযঃ।। তস্য বিদেহ নাম কারণণ
নিমিশকে দ্রেইব্যণ।।

বৈদেহকঃ পু॰ বণিক্।ইতামরঃ
। শূজাৎ বৈশ্যাসূতঃ। ইতি
নেদিনী।।

বৈদেহিকঃ পু॰ বণিক্। ইত্য-মরটীকা সারসুন্দরী।। বৈদেহী স্ত্রী রোচন। । সীতা । বণিক্স্ত্রী । পিগ্গলী । ইতি নেদিনী ॥

বৈদ্যঃ পু॰ পণ্ডিতঃ ৷ যথা কা-ত্যায়নঃ। নাবিদ্যানান্ত বৈদ্যে-न प्रय॰ विष्णाधन॰ क्विट । স-মবিদ্যাধিকানান্ত **দে**য° বৈদ্যে-ন তদ্ধনং ॥ বৈদ্যেন বিদুষ। । ইতি দাষতত্ত্ব ॥ বাসকবৃক্ষঃ । ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। আযুৰ্বেদ-বেত্রা। স চায়গ্রজাতি শ্চি-কিৎসা বৃত্তিশ্চ। তৎপর্য্যায়ঃ। রোগহারী ২ অগদক্ষারঃ ৩ ভিষক্ ৪ চিকিৎসকঃ ৫। ই-ত্যমরভরতৌ ॥ সুফী ৬ বিধিঃ १ विषान् ৮ आयूर्विनी २ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। স চতুর্বি-ধঃ। রোগহরঃ ১ বিষহরঃ ২ শ-ল্যহরঃ ৩ ক্রত্যাহরঃ ৪ ৷ ইতি মহাভারতে রাজধর্মঃ ॥ অ-স্যোৎপত্তি র্যথা। বৈদ্যো ২শ্বি-নীঙ্গনারেণ জাতশ্চ বিপ্রযো-ষিতি । বৈদ্যবীর্যোণ শূজাযাণ বভূবু ৰ্বহবো জনাঃ ৷৷ তে চ গ্ৰা-ন গুণজ্ঞাশ্চ মন্ত্রৌষধি পরায-ণাঃ ৷ তেভ্যশ্চ জাতাঃ শূদ্রাযাণ তে ব্যালগ্ৰাহিণো ভূবি 🗓 শৌ- 🎚

নক উবাচ ৷ কথ ব্ৰাহ্মণ পত্ন্যা-ন্তু সূর্ব্যপুত্রো ২শ্বিনীসুতঃ। অ-হো কেন বিপাকেন বীৰ্য্যাধান চকার সং ।। সৌতিরু**বাচ । গচ্ছ**-ন্তী" তীৰ্থ যাত্ৰাযাণ ব্ৰাহ্মণী• স্প-রুনন্দন। দদর্শ কামুকী॰ কান্তঃ পুষ্পোদ্যানে মনোহরে ॥ ত্রা নিবারিতো যত্নাৎ বলেন বল-বান্ সুরঃ । অতীব সুন্দরী**॰ দৃ**-ফু। বীর্য্যাধান চকার সং।। দ্রুত তত্যাজ গৰ্ত্তণ সা পুষ্পোদ্যানে মনোরমে। সদ্যো বভূব পুত্রশ্চ তপ্তকাঞ্চন সন্ধিভঃ ৷৷ সপুত্ৰা স্বা-মিনো গেহ॰ জগাম ব্রীডিতা ত-मा। स्वामिन॰ कथ्यामाम यन्त्रा-দৈবাদি শঙ্ক ট॰ 11 বিপ্রো রোষে-ণ তত্যাজ তঞ্চ পুত্রণ স্বকামিনীণ । সরিদ্বভূব যোগেন সা চ গো-দাবরী স্মৃতা ॥ পুত্র চিকিৎসা পাঠযামাস যত্নতঃ ৷ শাস্ত্রঞ্চ নানা শিল্পঞ্চ শক্রঞ্চ স্বয়ণ সার-বিনন্দনঃ ৷৷ বিপ্রশ্চ জ্যোতির্গণ-নাৎ বেদনাচ্চ নিরস্তর । বে-দধর্ম্ম পরিত্যক্তো বভূব গণকে। ভূবি ।। ইতি ব্ৰন্ধবৈৰ্ত্ত <mark>ব্ৰন্</mark>ধ-थर७ ३० व्यथायः ॥ क्ष ॥ नत्रक-ভোগান্তে বৈদ্যজন্ম যথ। । यः

করোত্যপহারঞ্চ দেব ব্রাহ্মণযো র্থন॰। পাত্যিত্ব। স্ব পুরুষান্দ-শ পূরান্ দশাপরান্ 11 यय॰ যাতি চ ধূমান্ধণ ধূম ধান্ত সম-বিতে । ধূমক্লিফৌ ধূমভোগী ব-সেত্তত্ত্ব চতুৰ্গণ।। ততো মূষিক জাতিশ্চ শতজন্মানি ভারতে । ততো নানা বিধাঃ পক্ষিজাতযঃ ক্রমি জাতযঃ ৷৷ ততো নানা বিধা বৃক্ষ জাত্যশ্চ ততো নরঃ। ভা-र्याहीता व॰महीनः भवता वा-ধি সংযুতঃ॥ ততে। ভবেৎ স্বর্ণ-কারঃ স সুবর্ণবৃণিক্ ততঃ। ত-তে জবনসেবী চ ব্রান্ধণো গণক স্ততঃ ।। বিপ্ৰে। দৈবজ্ঞোপজীবী বৈদ্যজীবী চিকিৎসকঃ ॥ 🟶 ॥ অপিচ। লাক্ষা লোহাদি ব্যাপা-রী রসাদি বিক্রমী চ যঃ 1 স বাতি নাগবেষ্টঞ্জ নাগৈ ৰ্বেক্ষিত এব চ ৷৷ বদেৎ সলোম মানাব্দ॰ তত্ত্ৰৈব নাগদ॰শিতঃ। ততো ভবেৎ স গ-ণকো বৈদ্যশ্চ সপ্তজন্মসু।। গো-পশ্চ কর্মাকারশ্চ রম্কার শুতঃ শুচিঃ ৷ ইতি ব্ৰহ্মনৈবৰ্ত্তে প্ৰকৃতি-খণ্ডে ২৮ অধ্যায়ঃ ॥ 🕸 ॥ রাজ-देवनामा लक्षनः यथा। পরः পারः গতো যঃ স্যাদফীঙ্গে তু চিকিৎ-

সিতে। অনাহার্য্যঃ স বৈদ্যঃ স্যা-দ্ধৰ্মাত্বা চ স্বলোকাতঃ ৷৷ প্ৰাণা-বার্য্যঃ স বিজ্ঞেষো বচনং তস্য ভূভুজঃ । রাজন্ রাজ্ঞা সদাকা-र्याः यथा कार्याः शृथग्रुटेनः ॥ ইতি মাৎস্যে ১৮৯ অধ্যাযঃ **॥** # 11 मां माना रेवना नकन यथा। চিকিৎসাণ স্বরুতে যস্তু স চি-কিৎসক উচ্যতে। স চ যাদূক্ मनी हीन छा मृत्यां शि निशमा उ ॥ তত্ত্বাধিগত শাস্ত্রার্থো দৃষ্টক-র্মা স্বয়ণ কৃতী। লঘুহস্তঃ শুচিঃ শূরঃ স্বচ্ছোপস্কর ভেষজঃ ॥ প্র-जुा ८ श मार्च वायमायी প্রিয়য়দঃ ৷ সত্যধর্মাপরো যশ্চ रिवान केमृक् अभगारः ॥ मृखे-কর্ম্মা দৃষ্টা পরেণ ক্রতা চিকিৎ-সা যেন সঃ। স্বয়ংক্তী স্বয়ং চি-किৎमा जगनः। नष्रछः मि-क्षिमक्करुः॥ 🕸 ॥ निविक्व देवरिना যথ। । স্টেলঃ কর্কাঃ স্তরঃ গ্রা-মীণঃ স্বয়মাগতঃ। পঞ্চ বৈদ্যা ন পূজ্যন্তে ধন্নন্তরিদন। অপি ॥ কৰ্কশঃ অপ্ৰিয়বাদী। স্তৰ্নঃ সা-ভিষানঃ । গ্রামীণঃ ব্যবহারাচ-जूतः ॥ <a>॥ जथ देवनामा कर्मा</a> আহ। ব্যাধে শুজু পরিজ্ঞানণ বে- मनायाम्छ निश्रहः। এতদ্বৈদ্যাস্য বৈদ্যত্ব॰ ন বৈদ্যঃ প্রভু রাযুষঃ ॥ অস্যায়মর্থঃ ৷ ব্যাধেঃ সম্যক্ প-রিচযঃ। ব্যথা শান্তিকরণ বৈ-দ্যস্য কর্মা। নতু বৈদ্যঃ আযুষঃ প্রভূরিত্যর্থঃ। অপরে **ত্বেব॰** ব্যা-চক্ষতে।ব্যাধে স্তত্ত্ব পরিচযঃ। বেদনাযাঃ শান্তিকরণঞ্চ ৷ এত-**८** एक देवनामा देवनाञ्च न किञ्च বৈদ্য আযুষঃ প্রভু রিত্যর্থঃ ॥ৠ॥ অথ বৈদ্যান্যন দূত্স্য লক্ষণ ৷ य स्टिकि समक मात्मवु॰ यावि **पृठः म दशा**रकः म ह यापृक् স্মূচিত ভাদ্গত নিগদ্যতে ॥ দূতাঃ সূজাতধো ২ব্যস্কাঃ পটবো निर्मण सम्राध्य मृथिता **२४ क्** যাৰটোঃ শুভু পুষ্প ফলৈ যুঁতাঃ ॥ मङ्गाज्यः मृद्धकोष्ट श्रङीव নিশি সঙ্গতাঃ । ভিযক্ত° সমযে প্রাপ্ত। রোগিণঃ সুখহেতবঃ ॥ সজাত্যঃ রোগিস্যানজাত্যঃ। যদ্যা॰ প্রাণমরুদ্বাতি সা নাডী জীব সংশ্ৰিত। ॥ 🕸 ॥ অথ দূত-হাত্রায়া॰ শঙ্গন বিচারঃ 1 বৈ-লাখানাৰ দূত্যা গছতো রো-নিশ হতে। ন শুভু° সৌদ্য শ-क्न अलीखंड मूथांतर्॰॥ **এ**দी-

প্ত মগ্নিঃ।। দূতো রোগী চ রিক্ত হস্তো বৈদ্য° ন পশোৎ। তথাচ । রিক্ত হন্তো ন পশ্যেত্রু রাজা-ন° ভিষজ° গুরু°। 🗱 1 অথ षायुर्विमा॰ श्रामुखानः। ख्वामी ব্ৰন্ধ প্ৰাদুৰ্ভাবঃ । বিবাতাথৰ্বদ-**र्वय गापृर्विष**॰ প্রকাশবন্। স্বনা-য়া সংহিতাং চক্রে লক্ষ্যোক্রম-যী মৃজু॰।। তভঃ প্রজাপতি॰ দক্ষ• मक॰ मकल कर्मामू । विधि धी नी-त्रिवः मान्न गायूट्बन मूलानिमः ॥ 🗱।। অথ দক্ষ প্রাদুর্ভাবঃ। অথ **म**कः क्रियामकः मर्द्धाना दम-भागुयः। (वनगामाम विचा॰एम) मूर्वाण्यो मूत्र मख्यो ॥ 🕸 ॥ व्यथासिनी मुख् श्राम्बीर । मन ক্ষাদধীত্য দস্যৌ বিভেন্ত্ সংছি-ত্ৰ' স্বীযাণ ৷ সকল চিকিৎসক লোক প্রতিপত্তি বিবৃদ্ধবে ধন্যাণ ॥ স্বয়ন্ত্রঃ শিরশ্ছিন<sup>,</sup> ভৈরবেণ ৰুষাথ ত**্। অশ্বিভ্যা**ণ সংহিত তস্মাত্তে) জাতৌ যজ্ঞভাগিনে)॥ দেবাসূর রণে দেবা দৈতৈয় র্যে স-ক্ষতাঃ রুতাঃ। অক্ষতা স্তে ক্যতাঃ मरामा प्रमु । ভाग मखुङ । यह ९ ॥ व-জ্বিণো ংভূদ্জনতত্তঃ সদস্যভ্যা• চিকিৎসিতঃ। নোনানিগতিত শচ

**দ্র স্তা**ভ্যা মেব সুখীয়কঃ ॥ বি-শীর্ণা দশনাঃ পুষ্ণো নেত্রে নষ্টে ভগস্য চা শশিনে৷ রাজয়স্মাভূ দশ্বিভ্যাণ তে চিকিৎসিভাঃ ॥ ভা-প্ৰ শ্চ্যবনঃ কানী বৃদ্ধঃ সন্ বিফ্ল-তি॰ গভঃ। বীর্ষ্য বর্ণ স্বরোপেতঃ ক্লতোংশ্বিভ্যা॰ পুন যু বা ॥এতৈ-শ্চান্যৈশ্চ বহুজিঃ কর্ম্মভি র্ভিয-**জা॰ বরৌ। বভূ**বত্ ভূ**শ॰ পূজ্যা**-विकामीना॰ मिटवे कमा॰ ॥ 🕸 ॥ অথেক্ত প্রাদুর্ভাবঃ। সংদৃশ্য দসু-যো রিন্দ্রঃ কর্মাণ্যেতানি যত্নবা-ন্। আযুর্বেদ॰ নিরুদ্বেগণ তৌ य-ষাচে শচীপতিঃ।। নাসত্যৌ সত্য সন্ধেন শক্ৰেণ কিল যাচিতে।। আযুর্বেদ' যথাপীতং দদতুঃ শত মন্যবে ॥ নাসত্যাভ্যা মধীত্যৈষ আযুর্বেদ॰ শতক্রতুঃ। অধ্যাপষা माम वर्नात्वय अग्थान मूनीन् ॥ 🗱 ॥ अथात्विय आपूजातः। अ-কদা জগদালোক্য গদাসল মিত-স্ততঃ। চিন্তধামাস ভগবানাত্রে-বে। মুনিপুস্বঃ ।। কি॰ করে। মি হু গচ্ছামি কথং লোকা নিরামযাঃ । ভবন্তি সাম্যানেতান্নশক্ষোমি नित्नीकिञ्॰॥ मयाल् तर **म**ञार्थ॰ যভাবে। দুরতিক্রমঃ। এতেষা॰

मृश्यंत्वा मृश्यं नमाशि वृमस्य १-ধিকং ৷৷ আযুর্বেদং পঠিষ্যানি নৈ-রুজ্যায় শরীরিণা॰ । ইতি নিশ্চি-ত্য গতবানাত্রেয স্ত্রিদশালয় ।। তত্র মন্দির মিন্দ্রস্য গত্বা শক্ত্রু **पतर्ग मः। मि॰शमन मगामीन॰** ख्यनानः भूद्रर्सिज्धः ॥ ভाসयस्रः দিশো ভাসা ভাস্কর প্রতিমণ দ্বি-या। णायूदर्वन महाठार्याः निःत। ধার্য্য দিবে কিসা ।। শক্র স্ত ত নিরীক্ষ্যেব ত্যক্ত সিংহাসনে। য-যৌ। তদুগ্রে পূজ্যামাস ভূশুণ ভূরিতপংরুশং 11 স্বশলং পরিপ-প্রস্কৃতথাগমন কারণ 1 স মৃনি-র্বজু নারেভে নিজাগমন কারণণ ।। দেবরাজ ন রাজাসি দিব এব যতে। ভবান্। বিধাত্র। বিহিতে। যত্নাত্রিলোকী লোকপালকঃ॥ ব্যাধিভি ব্যথিতা লোকাঃ শোকা-ঙ্গলিতচেতসঃ। ভূতলে সন্তি স-ন্তাগণ তেষাণ হর্ত্তুণ ক্লগাণ সরু ॥ আযুর্বেদোপদেশণমে স্বরু কারু-ণাভো নৃণা°। তথেত্যক্তা সহসূ।-ক্ষো ২ধ্যাপয়ামাস ত॰ নু নি॰॥ মু-নীন্দ্ৰ ইন্দ্ৰতঃ সাস্ব মাযুৰ্বেদ নধী-ত্য সঃ। অভিনন্দ্য তনাশীর্ভি রা-জগান পুন মহী ।। অথাত্রেয়ো

সুনিশ্রেষ্ঠো ভগবান্ করুণাপরঃ। স্বনায়া সংহিতাং চক্রে নরচক্রা-নুকস্পয়।। ততো ২গ্নিবেশণ ভে-ডঞ্চ জাতৃকর্ণ পরাশর । ক্ষীর-পাণিঞ্চ হারীত মাযুর্বেদ মপাঠ-ষৎ।। তন্ত্ৰস্য কৰ্ত্ত। প্ৰথম মগ্নিবে-শো ২ভবৎ পুরা ৷ ততো ভেডা-. দয় শ্চক্ৰুঃ স্বং স্বং তন্ত্ৰণ ক্নতানি চ ।। প্রাব্যামাসু রাত্রেয় মুনি বৃ-ন্দেন বন্দিত । শ্ৰুত্বা চ তানি ত-স্ত্রাণি হৃষ্টো ২ভূদত্রিনন্দনঃ॥ य-থাবৎ সূত্রিত তন্মাৎ প্রহৃষ্ট। সুনযো ২ভবন্। দিবি দেবর্ষযো দেবাঃ শ্ৰুত্বা সাধিতি চাক্ৰবন্॥ 🗱 ॥ অথ ভরদ্বাজ প্রাদুর্ভাবঃ । একদ। হিমবৎ পার্শ্বে দৈবাদাগ-ত্য সংগতাঃ। মুনযো বহব স্তা°**শ্চ** নামভিঃ কথ্যাম্যহু ৷৷ ভরদ্ধা-জে মুনিবরঃ প্রথমণ সমুপাগতঃ । ততো হঙ্গিরা স্ততো গর্গো মরী-চি ভৃগ্ঞ ভার্গবৌ ॥ পুলস্ত্যো ২-গস্তি রসিতো বশিষ্ঠঃ সপরাশরঃ ৷ হারীতো গোতমঃ সাণখ্যো মৈ-ত্রেষ শচ্যবনোপি চা৷ ষমদগ্রিশ্চ গাৰ্গ্যশ্চ কাশ্যপঃ কশ্যপোপি চ 1 নারদো বাদদেব ক মার্কণ্ডেষঃ ক্পিগ্ৰলঃ ॥ শাণ্ডিল্যঃ সহ কৌ- खिनाः भाकरायः मर्गानकः। আশ্বলায়ন সাংক্তেটী বিশ্বামি-ত্রঃ পরীক্ষিতঃ ৷৷ দেবলো গালবো ধৌম্যঃ কাপ্য কাত্যাযনাবুতৌ। কান্ধায়নো বৈজবাপঃ স্থানিকো वामतायिक ।। हित्रभाक्षक त्या-কাকিঃ শরলোমা চ গোভিলঃ।। देवशानमा वालिशिला खटेशवादना মহর্ষবঃ। ব্রহ্মজ্ঞানস্য নিধ্যো य-মস্য নিষমস্য চ ॥ তপস স্তেজ-मा मीखा वृषमान। देवावयः। मू-খোপবিষ্টা স্তে তত্ৰ সৰ্বে চক্ৰুঃ কথা নিমা॰ ॥ ধর্মার্থ কাম মো-ক্ষাণাণ মূল মুক্ত কলেবরণ। তত্র সৰ্বাৰ্থ সংসিদ্ধ্যৈ ভবেন্দ্ৰদি নি-রাময়ণ ৷৷ তপঃ স্বাধ্যায় ধর্মাণাণ ব্ৰহ্মচৰ্য্য ব্ৰতাযুষা । হৰ্দ 🗯 প্ৰ-সূতা রোগা যত্র তত্র চ সর্বভঃ ॥ রোগাঃ কাশ্যকরা বলক্ষযকরা দেহস্য চেফাহরা দৃশ্যাদীব্রিয শক্তি সংক্ষয়করাঃ সর্বাঙ্গ পীড়া-করাঃ। ধর্মার্থাখিল কান মুক্তিযু মহাবিদ্ন স্বৰূপা বলাৎ প্ৰাণানা-শু হরস্তি সন্তি যদি তে ক্ষেমণ জ-তঃ প্রাণিনা॰।। তত্তেষা॰ প্রশায়ায **কশ্চনবিধি শ্চিন্ত্যে**। ভবন্তি ৰুঁধৈ র্যোগে রিত্যভিধায় সংসদি ভর- দ্বাজণ মুনিণ তে ২ক্রবন্। দ্বণ বো-গ্যো ভগবান সহসুন্যনং যাচ-স্ব লন্ধু॰ ক্রমাৎ আযুর্বেদ মধীত্য ষ॰ গদ ভ্যান্য ক্রা ভবামো ব্য°॥ ইখণ স মুনিভি র্বোটগ্যঃ প্রার্থি-তো বিনয়াश्विटिः । ভরদ্বাজো मूनिट्यरके। जगाम जिम्मानसः ।। তত্রেন্দ্র ভবন॰ গদ্ব। সুরুষি গণ मधाग॰ । मृक्वान् वृत्रहातः দীপ্যমান মিবানলং ॥ দূটেকুব স मूनि॰ थाइ जगवान् मधवा मुना। ধৰ্মজ্ঞ স্বাগতং তে ২থ মূনিং তং স্বগুজ্বৎ ৷৷ সোধিগ্ৰা জ্যা-শীর্ভি রভিবন্য সুরেশ্বরণ।ঋষী-ণাংবচনং স্মাগ শ্রাব্যত সভ্নং ।। ব্যাধ্যো হি সমুৎপদাঃ সর্ব প্রাণি ভবন্ধরাঃ ৷ তেষাণ প্রশন-নোপায়ে যথাবছ ক্র মহসি ॥ ত-মুবাচ মুনি॰ সাজ মাযুর্বেদ॰ শত-ক্রতঃ। জীবেদ্বয় সহস্যাণি দেহী নীরুঙ্ নিশ্ব य ।। সোনত্তগা-র॰ ত্রিক্তন্ধ সাযুর্বেদং মহামতিঃ। যথাবদটিরাৎ সর্ব° বৃব্ধে তল্প-না মুনিঃ ।। তেনামুঃ সূচিরং লে-তে ভরদ্বাজে। নিশ্রমধণ । জন্যা-নপি মুনী॰ শচক্রে নীরুজ: সুচি-রাযুষঃ ৷৷ তত্তত্ত জনিভজান চ-

ফুষা খবযো ২খিলাঃ। গুণান্ জ-ব্যাণি কর্মাণি দৃফ্ট্রা তহিধি মা-শ্রিতাঃ ॥ আরোগ্যে লেভিরে দী-र्घनायू रूठ मूथ मध्यु छ॰। आयू (र्ब-(माक विधिनात्नात्रि मुग मूं नत्या यथा।। 🟶 ।। जय हत्रक প্রাদুর্ভাবঃ ৷ যদা মৎস্যাবভারেণ হরিণা বেদ উদ্ধৃতঃ। তদা শেষশ্চ তত্রৈব বে-**দ॰ माञ्च गर्वा छ्रवान् !।** अथ्बा छ-গত॰ সম্যামুরেদঞ্লন্ধবান্। একদা স মহদৃত্ত জকু চর ইবা-गडः ॥ তত্র লোকান্ গদৈ প্র-স্তান্ ব্যথ্যা পরিপীডিতান্। স্থ-लियु वरुषु वाधान् मियनानाः \*\* ह मृखेवान्।। তान् मृख्वीं वि नयायक স্তেষা॰ দুঃখেন দুঃখিতঃ। অনন্ত শ্চিত্তযামাস রোগোপশম কার-ণং ॥ সঞ্চিন্তা স স্বদং তত্র মুনেঃ পুল্রো বভূব হ। যত শ্চর ইবা যা-তে। ন জ্ঞাতঃ কেনচিন্সতঃ ॥ ত-স্মান্তরক নানাদৌ বিখ্যাতঃ ক্রি-তিমওলে। স ভাতি চরকাচার্য্যো दमनगा॰८भ। (यन ध॰रम। ब्रजा॰ কৃতঃ। আত্রেবসা মুনেঃ শিষ্যা অগ্নিবেশাদ্যো ২ভবন্ ৷৷ ম্ন্যো বহুব স্তৈশ্চ ক্তুত তন্ত্ৰণ স্বকণ স্বকণ

1 তেষা° তন্ত্ৰাণি স°ক্ষৃত্য সমাহ্ন-ত্য বিপশ্চিতা ৷৷ চরকেণাত্মনো নায়া প্রভোষ চরকঃ কুতঃ। 🕸 🛚 🗎 অথ ধন্বন্তরি প্রাদুর্ভাবঃ ৷ একদা দেবরাজস্য দৃষ্টি নিপ্তিতা ভুবি । তত্র তেন নর। দৃষ্টা ব্যাধিভি ভূশপীডিতাঃ ৷৷ তান্ দৃষ্টা হদ-ষ॰ তস্য দ্য্য। পরিপীডিত । य-দার্জনযঃ শক্রোধন্বন্তরি মুবা-চ হ ৷৷ ধয়ন্তরে সুরশ্রেষ্ঠ ভগবন্ किश्विमुठाटा । यारगा जवि ভূতানা মুপকারকরো ভব ॥ উ-পকারায় লোকানাণ কেন কিণ ন ক্তুত পুরা। ত্রৈলোক্যাধিপতি বি-ফুরভূয়ৎস্যাদি কগবান্॥ তস্মা-जु॰ পৃথিবী॰ याहि काभी गरधा न्-পো ভব ৷ প্রতীকারাষ রোগাণা মাযুর্ত্রনং প্রকাশয ॥ ইত্যুক্তা সুরশাদূ লঃ সর্বভূত হিতেঞ্চয়। সমস্ত মামুযো বেদং ধন্বন্তরি মু-পাদিশৎ ৷৷ অধীত্য চাৰুষো বেদ নিজাদ্বস্তরিঃ পুরা। আগত্য পৃথিবী॰ কাশ্যা॰ জাতো বাহুজ বেশ্মনি ৷৷ নাম্না তু সো ২ভবৎ খ্যাতো দিবোদাস ইতি ক্ষিতৌ। বালএব বিরক্তো ভূচচারচ মহ-ত্তপঃ ।। যত্নেন মহত। ব্ৰহ্ম। ত॰ 🏽

কাশ্যা মকরোমৃপণ। ততো ধন্ব-ন্তরি র্লোকেঃ কাশিরাজো ২ভি-ধীযতে।। হিতায দেহিনা° স্বীয সংহিতা বিহিতামুনা। অয়ং বি-দ্যার্থিনো লোকান্ সংহিতাং তা-মপাঠয় ।। 🗱 ।। অথ সুশ্রুত প্রা-দুর্ভাবঃ।। অথ জ্ঞানদৃশা বিশ্বামি-ত্র প্রভূতষো হবদন্। অষ° ধন্নস্ত-রিঃ কাশ্যা॰ কাশিরাজোয নুচ্য-তে।। বিশ্বানিত্রে। মুনি স্তেষু পুত্রু সুশ্রুত মুক্তবান্। বৎস বারাণসীণ পচ্ছ তা॰ বিশেশরবল্লভা॰॥ তত্র নায়া দিবোদাসঃ কাশিরাজো-স্তি বাহজঃ। স হি ধন্বন্তরিঃ সা-ক্ষাদায় ৰূদবিদাণ বৰঃ ৷৷ আযুৰ্বে-দ° ততাে ২ধীত্য লােকোপক্বতি হেতবে। সৰ্বপ্ৰাণিদয়। তীৰ্ণমুপ-কারে। মহামখঃ ।। পিতু ৰ চন মা-কণ্য সুশ্রুতঃ কাশিকাং গতঃ ৷ তে-ন সাজি সমধ্যেতু মুনি সূনু শত যবৌ ৷৷ অথ ধন্বন্তরি° সর্ব বান-প্রস্থানে স্থিতং। ভগবন্তং সুর শ্ৰেষ্ঠ° মুনিভি ৰ্বহুভিঃ স্তত° ।। কাশিরাজণ দিবোদাসণ তে ২প-শ্যন্ বিন্যান্বিতাঃ ।। স্বাগতঞ ইতি স্মাহ দিবোদাসো যশোধ-নঃ ৷ সশল॰ গরিপপ্রচ্ছ তথা গ- মন কারণ ।। তত স্তে সুশ্রুত দ্বা-রা কথ্যামাসু রুত্তর । ভগবন্ মানবান্ দৃষ্ট্বা ব্যাধিভিঃ পরিপী-ডিতান্।। ক্রন্সতো সি্বমাণা॰শ্চ জাতাস্মাক স্কৃদি ব্যথা। আম্যা-না শমোপায় বিজ্ঞাতু বয় মা-গতাঃ ৷৷ আযুর্বেদ॰ ভবানস্মান-ধ্যাপষ্ত ষত্মতঃ ৷ অঙ্গীক্ত্য বচ স্তেষাণ নৃগতি স্তানুপাদিশৎ।। ব্যাখ্যাত তেন তে যত্নাজ্ঞগৃহ মুনযো নুদা। কাশিরাজ জযা-শীভি রভিনন্দ্য মুদান্বিভাঃ ॥ সু-শ্রেতাদ্যাঃ সুসিদ্ধার্থ।জগ্ম গেইং স্বকং স্বকং। প্রথমং সুশ্রুত স্তেষ্ স্ব॰ তন্ত্ৰণ ক্তবান্ স্ফুট॰ ॥ সূঞ্ৰ তন্য সথাযোপি পৃথক্ তন্ত্ৰাণি তেনিরে। সূঞ্রতেন ক্বত তন্ত্রণ সঞ্জত বহুতি র্যতঃ ৷৷ তত্মাত্তৎ সূক্রত নামা বিখ্যাত ফিতিম-ওলে। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ।। 🟶 ॥

অথ মতান্তরে
বৈদ্যোৎপত্তি কথনণ ৷
সত্য ত্রেতা দ্বাপরেষু যুগেষু ব্রাদ্বাঃ কিল ৷ ব্রহ্ম ক্ষত্রিয় বিট্ শূদ্র
কন্যকা উপযেশিরে ৷৷ তত্র বৈশ্য সুতাষাণ যে জজ্ঞিরে তন্যা
অমী ৷ সর্বে তে মুন্যঃ খ্যাতা বে-

দ বেদাঙ্গ পারগাঃ ৷৷ তেষাণ মু-খ্যো ২মৃতাচাৰ্য্য স্তস্থাবয়া সলে-हि ७९। अग्नष्ठ हेंग्रमादूक छ-তে। জাতি প্রবর্তনাৎ ॥ পরে সর্বে পি চাষষ্ঠা বৈশ্যা ব্ৰাহ্মণ সম্ভবাঃ । জননীতো জনু লক্কা যজ্জাতা বেদ সংস্কৃতৈঃ ৷৷ অম্বন্ঠা স্তেন তে সর্বে দিজা বৈদ্যাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ । অথ রুক্ প্রতিকারিত্বাদ্ভিষজ স্তে প্রকীর্ত্তিতাঃ ৷৷ সত্যে বৈদ্যাঃ পি-তু স্তল্যা স্ত্রেতায়াঞ্চ তথা স্মৃতাঃ । দাপরে ক্ষত্রবৎ প্রোক্তাঃ কলৌ বৈশ্যোপমাঃ স্মৃতাঃ৷৷ অথায়ঠেষু সর্বেষ্ বিখ্যাত। অভবন্ধনী। সে-নো দাসশ্চ গুপ্তশ্চ দত্তো দেবঃ করে৷ ধরঃ ৷৷ রাজঃ সোমশ্চ নন্দি-শ্চ হ্বপ্ত শচন্দ্রশ্চ রক্ষিতঃ।এযা॰ ব॰ শাঃ সমুৎপন্না এতৎ পদ্ধতযো ম-তাং ৷৷ অন্য পদ্ধতযোগ্যেবং সস্তি বৈদ্যা ন তে শ্রুতাঃ। বহুব শৈচক নামানে। নান।গোত্র সমুদ্ভবাঃ॥ যথাকৌ বিশ্রুতাঃ সেন। ইত্যেব মপরে যতাঃ ৷ যস্য যস্য ম্নে র্যো-যঃ সন্তানঃ স স বিশ্রুতঃ ॥ তত্ত-क्लावामिन। देवमाः देखशामास স্বকর্ম্মণা। তথাহি। তিদ্রো বর্ণা-नुशृदर्व। एव उरेथका यथाक्रमः॥ ব্ৰাহ্মণ ক্ষত্ৰিয় বিশাণ ভাৰ্য্যাঃ স্বাঃ শূজজন্মনঃ। যদুচ্যতে দিজাতী-না॰ শূজাদারোপসংগ্রহঃ ॥ নৈ-তন্মম মতং যক্ষাত্ত্রারা জাব-তে স্বৰণ। পাণিণ ভর্ত্তুঃ সব্গাসূস্-হ্লীয়াৎ ক্ষত্রিয়া শরং।। বৈশ্যা প্রতোদ মাদদ্যাদ্বেদনে স্বগ্রজ-শ্বনঃ। সবর্ণেভ্যঃ সবর্ণাসু জায-স্তে চ সজাতয়ঃ।। অনিন্দ্যেযু বি-ৰ'হেযু পুত্ৰাঃ সভান বৰ্দ্ধনাঃ। বিপ্ৰামূৰ্দ্ধাভিষিক্তো হি ক্ষত্ৰিযা-ষা॰ বিশঃ স্ত্রিযা॰ ॥ জাতো ২য়ষ্ঠ-স্ত শূজাযা॰ নিষাদঃ পাৰ্শ্ববোপি বা। বৈশ্যা শূজ্যোশ্চ রাজন্যা-गহিষ্যো দ্বো সুতৌ শৃতো॥ বৈ-শ্যাতু করণঃ শূদ্যাণ বিমাস্থেয বিধিঃ স্মৃতঃ ৷ এতে ষট্ স্লোক। যাজ্ঞবক্ষ্যীয়াঃ। শূদ্রেব ভার্য্যা শূজস্য সাচস্বাচ বিশঃ স্মৃতে। তে চ স্বা চৈব রাজ্ঞস্ত তাশ্চ স্বা চাগ্ৰজন্মনঃ ।। পাণিগ্ৰহণ সংস্কা-রঃ সবর্ণাসূপদিশ্যতে। অসবর্ণা-স্বয° জেযো বিধি রুদ্বাহ কর্ম্মণি য় শরঃ ক্ষত্রিয়য়। গ্রাহ্যঃ প্রতো-দে। বৈশ্যকন্যয়। বসনস্য দশা গ্রাহাঃ শূদ্রযোৎক্রফ বেদনে।। ইতি পদ্যত্রয়ণ। ব্রাহ্মণাদ্বৈশ্য-

কন্যায়া মন্বণ্ঠো নাম জায়তে ! ইতি চ পদ্যাৰ্দ্ধণ মানবীষণ। বৈ-শ্যায়াণ ব্ৰাহ্মণাজ্জাতো ২ম্বণ্ডো-হি মুনি সত্তম। ব্রাহ্মণানা চি-किৎ नार्थः निर्मित्छ। मूनिश्रृऋति রিতি পরাশরঃ ॥ বেদাজ্জাতো্-হি বৈদ্যঃ স্যাদয়প্তো ত্রহ্মপুত্রক ইতি শঙ্খঃ। ত্রনা মূর্কাভিষি-ক্তশ্চ বৈদ্যঃ ক্ষত্র বিশাবপি। অ-भी शक विका এया॰ यथा शृर्वक গৌরব মিভি হারীতঃ।। মাতু বঁদা প্রজাবতে দ্বিতীয় মৌঞ্জিবন্ধ-নাৎ ৷ বান্ধণ ক্ষত্রিয় বিশ স্তব্যা-দেতে দ্বিজাঃ স্মৃতা ইতি যাজ্ঞৰ-**ক্ষ্য বচন॰ ॥ মূ**ৰ্দ্ধাভিষিত । মুঠঃবা রপি পিতৃ বজাৎ দ্বিজন্ব নিতি কৃ দ্ধাঃ ৷ আযুর্বেদোপনয়নাদৈ দ্যো দিজ ইতি স্মৃত ইতি নৈদ্যকে ২গিবেশঃ ।। তপোযোগাৎ পুরা বৈদ্য স্তেজসা পিতৃবৎ স্মৃতাঃ। বিপ্ৰাৎ ক্ষত্ৰাদ্যতো ন্যুনাঃ ক্ৰিয়-য। বৈশ্যবৎ ক্লতাঃ ।। শনৈঃ শ-নৈঃ ক্রিয়া লোপাদথ তা বৈদ্য জাতযঃ ৷ কলো শূড সমাপনা য-থা ফত্রা যথা বিশঃ।। ইতি বিস্ফুঃ ।। যুগে জঘন্যে দ্বে জাতী ব্ৰাহ্মণঃ শূজ এবচেতি যমঃ ॥ শনকৈশ্চ

ক্রিযালোপাদিমাঃ ক্ষত্রিষজাত্যঃ ৷ ৰ্যলত্ব॰ গতা লোকে ব্ৰাহ্মণা-দৰ্শনেন চেতি মনুবচন পৃষ্বা এব ষয়গ্রাদীনামপি কলে। শুদ্রত্ব নি-তি স্ব স্ব গ্ৰন্থেষু বাচস্পতি নিশ্ৰা-দিভি স্তথা শুদ্ধিতত্ত্বে স্মার্ত্তভটা-চার্যোণাখ্যুক্ত॰।। অতএব সল-পঞ্জিকাষ। মুক্তণ। অতিদিষ্টণ হি देवनामा भू ऊषः कवियानिवनि-তি। তক্ষা২ ক্ষত্র বিশে। স্তল্যো বৈদ্যঃ শূদ্ৰস্য পূজিত ইতি।। #॥ মুগে মুগে কর্মাণৈবোৎকর্মাপক-ষাবাহ মনুঃ। তগো রীতি প্রভা-বৈশ্চ তে গচ্ছন্তি যুগে যুগে। মনুয্যেৰিহ জন্মত ইতি ॥ অয<sup>়</sup> গ্রেম্ব্যাচার্যঃ খ্যাতো ২ভূদ্র-নত্ৰযে। সিদ্ধ বিদ্যাস্থ্যাণ কন্যাণ স্ববৈদ্যস্য তু মানসীং॥ উপযে-মে মহৌজা য শ্চিকিৎসকত্য। শ্রুতঃ। অথৈতস্য বরেণেব খ্যা-তা বৈদ্যা মহেইজসঃ ৷৷ সেনো দাসশ্চ গুপ্তশ্চ দত্তো দেবঃ ক-রে। ধরঃ। রাজঃ সোমশ্চ ন-ন্দিশ্চ স্বস্তু শ্চন্দ্রশ্চ রক্ষিতঃ ॥ সন্তান। বহুব শৈচ বাং বভুবুশ্চ চি-কিৎসকাঃ। স্বানুৰপত শৈচ-ষা॰ জাতাঃ পদ্ধতয়ে। ২পাসূঃ॥

তেষাণ প্ৰশংসা নিন্দা চ বভূব স্বে न कर्माण । উद्धरमी स्मन मारमी **চ গুপ্ত দ**ক্তো তথৈৰ চ ।। দেবঃ করশ্চ মধ্যক্ষে রাজ সোনো স্প-লাধমৌ। নন্দি প্রভূতষো নিন্দ্যা লুপ্তপদ্ধতয়ে ২পি চ ॥ কেচি-জ্জাত্যা পরিখ্যাতা তথা বৃত্তানু-সারতঃ। সর্বাসা মেব জাতীনা বৃত্তি রেব গরীষদী ॥ বৃত্তিঃ স্বর্গ্য। চ পথ্যা চ বৃত্ত্যা জাতিঃ প্রবর্ত্ততে । ইতি প্রাচীন স্বলপঞ্জিক। ধৃত ব্যাস বচনানি। ইতি বৈদ্যোৎ-পত্তি কথন॰ ৷৷ ঞ্চ ৷৷ অথ বৈদ্যা-নাণ গোত্রাণি ৷ অক্টাবিণ্শদনী গোত্ৰাঃ সৰ্বেষাণ ভিষজা মপি ৷ প্রত্যেকত্তে বিলিখাত্তে দেন দা-मानिजः क्यां ॥ ध्यस्तिम्ह শক্ত্রিশ্চ তথা বৈশ্বানরাদ্যকৌ। মৌদাল্য কৌশিকৌ ক্লফাত্রেয वाक्रित्रमा २ शि ह ॥ व्यक्ती (११)-ত্রাণি সেনানাং দাসানাং তদন-ন্তর°। মৌদ্যাল্যো ২থ ভরদ্বাজঃ भानकायन এব চ ॥ भारिकाक्त বশিষ্ঠশ্চ বাত্স্যশ্চ ষডমী মতাঃ ৷ গুপ্তানাণ ত্রীণি গোত্রাণি কাশ্য-পো গৌতম স্তথা।। সাবর্ণি রগি দত্তানা চত্বারঃ পরিকীর্তিতাঃ ৷

কৌশিকঃ কাশ্যপ শৈচব শাণ্ডি-ল্য শ্চাপি তৎপরঃ।। মৌদাল্য ইতি বিজেয়া শ্চত্বারো দেব সম্ভ-বাঃ। আত্রেয ক্লফাত্রেয়ে চ শা-ঙিল্য আলমালকঃ।। ধর্স্য কা-শ্যপঃ প্রোক্তো ভরদ্বাজশ্চ সও-জঃ। কাশ্যপো রক্ষিতস্যৈকে। গোত্ৰা এতে প্ৰকীৰ্ভিতাঃ ৷৷ দত্তা-না মাদ্য গোত্রাণাণ দেশভেদেন্ডি সন্ততিঃ। এব মাত্রেষ গোরোপি দতো দেশান্তরে শ্রুতঃ ॥ দত্তাঃ কুফাত্রেয় গোত্রা দৃশ্যন্তে বহুব ন্তথা। তত্মাদভাদ্য গোত্রাণি স-প্ত জ্বেষানি পণ্ডিতৈঃ ৷৷ করাণাণ কাশ্যপো গোতো বাৎসা মৌ-দ্যাল্যকাবপি। দেশতেদে হি বি-দ্যন্তে তৎকরঃ সপ্ত গোত্রকঃ ॥ রাজঃ কাশ্যপ গোত্রোপ্যস্তি ত-দ্রাজ স্থ্রিগোত্রকঃ। শ্রুষন্তে চ জা-মদগ্য গোত্রা দেশান্তরে ধরাঃ।। বহবোপি ভরদ্বাজ গোত্রজাঃ স-ভি রক্ষিতাঃ। ইন্দ্রাদিত্যে পরে বৌ দ্বৌ বৈল্যৌ গোত্রা স্তব্যে রি-মে ৷৷ ইন্দ্রদ্য কাশ্যপে৷ গোত্রএক এব প্রকীর্ত্তিতঃ। আদিত্যানা মি-নৌ গোত্ৰা বাদিত্য কৌশিকৌ স্মৃত্তী ৷৷ পঞ্চাশদেতে বিখ্যাতা

স্তন্মান্দোত্রা ভিষক্ পলে। যবু দেশান্তরে গোত্র মন্যৎ কি মঙ্গি চ শ্রুত ৷৷ দতাদীনা ন তৎ প্রোক্ত মপ্রসিদ্ধ মতীব তৎ। #11 অথ পঞ্জিকান্তরোক্ত রাটীয় বৈ-দ্যঙ্গলান্টকীয় গোত্র সংখ্যা শ্রে-ষ্ঠস্বাদি লিখ্যতে। কাঞ্জীশাদুষি সেনস্য গোত্রাগ্যফৌ ভবন্তি চ 1 শক্ত্রি ধন্বন্তরী শ্রেঙৌ নধ্যে বৈ-শ্বানরাদ্যকৌ ॥ নৌদ্যাল্য কৌ-শিকৌ রুক্তাত্রেষ আঙ্গিনসো ২-ধুনাঃ ৷৷ জুথ রাচীযান্টগৃহ বৈদ্যানা॰ প্রবর্গনাহ। প্রবর্গঃ পঞ্চানাণ ধ্যন্তরি সলোভ বাং। বিনির্দ্দিক্টা ষথা তে চ ধন্ব-ন্তর্য্য পরাশরে।।। নৈযঞ্জব শ্চা-সিরসো বার্হস্পত্য ইতি ক্রনাৎ। শক্তি গোত্রে ত্রযঃ শব্তি পরাশর বশিষ্ঠকাঃ ৷৷ প্রবরাঃ পঞ্চ দাসানা মৌৰ্ৰ চ্যবন ভাগবাঃ। জানদগ্ম শ্চাপুবানঃ প্রোক্তা দৌদাল্য গোত্ৰজাঃ ৷৷ গুপ্তানা॰ ত্ৰয এবৈ-তে কাশ্যপোপ্যপদারকঃ। নৈয-গ্রুবো ২নী প্রবরাঃ কাশ্যপাস্তম সম্ভবাণ ৷৷ দত্তে ত্রয়ণ কৌশিকা-না॰ শান্তিল্যাসিতদেবলাঃ। রু-ফাত্ৰেয়ো বশিষ্ঠশ্চ আত্ৰেয় শেচ-

তি তে ত্রয়ঃ ৷৷ দক্তানাণ প্রবরা এ-তে দতাত্ত্ৰেয় সলোজ্বা॰। আ-ত্রেষ গোত্রজাতানা॰ দেবানাঞ্চ তথা ত্রয়ঃ ৷৷ আত্রেয় আঙ্গিরস-কে। বাৰ্হস্পত্য ইতি ক্ৰমাৎ । কুরে ভরদাজগোত্রে ত্রমো ২নী প্রবরাঃ স্মৃতাঃ ৷৷ ভরদাজো ভা-র্গবশ্চ চ্যবনশ্চ ক্রমাদমী। রা-জবংশে বাৎস্যগোত্তে কথিতাঃ প্রবরা স্ত্রমঃ॥ বাৎস্যে ২সিত স্ত-থা মার্কণ্ডেষ এবং ক্রমাদিতি। অথ কৌশিক গোত্রস্য সোমস্য প্রবরা স্ত্রমঃ ৷৷ কৌশিকঃ কাশ্যপ-শৈচৰ ভাৰ্গৰ শেচত্যমী ক্ৰমাৎ । <u>দেনাদীনা মনুক্তা যে আদ্য গো-</u> ত্রাদি সমুবাং।। প্রবরা স্তেপি বি-দ্ৰেয়া স্তত্তৎ দলভূবাণ মুখাৎ। ननगानीना॰ वत्तरक्षयु ठजूना॰ अ-বরাশ্চ যে।। বিজ্ঞেয<sup>়</sup>স্তে চ নি-থিল। স্তেষাণ সলভুবাণ মুখাত্। रेि रेवनानाः अवताः ॥ \*॥ थथ रेवरमायू द्वाणियामि कथनः। সেনো দাসশ্চ গুপ্তশ্চ দত্তো দে-বঃ কর স্তথা। রাজ সোমাবগী-ত্যকৌ রাটীয়াঃ পরিকীর্তিতাঃ য়া নন্দি শ্চন্দ্রো ধরঃ ঙ্গণ্ডো রক্ষিত শ্চেতি পঞ্চ যে। তে বরেন্দ্রেষু বি-

খ্যাতা দাস দত্ত করা অপি !! রাটীয়া ভিষজো যে যে প্রায় স্তে বঙ্গগা অপি ৷ নন্দ্যাদয়ো মহা-রাষ্ট্রে নিবসম্ভিচ কেচন।। তথা চ পঞ্জিকান্তরে। সেনো দাসশ্চ গুপ্তশ্চ পঞ্চ দত্তাদ্য স্তথা। অ-কৌ রাঢাসু বিখ্যাতাঃ প্রামো ২মী বঙ্গগা অপি।। ইতি ।। তথা ন্যত্র। নন্দি চন্দ্র ধর দত্ত রক্ষিত। স্তে সনামনি বরেন্দ্র বিশ্রুতাঃ। বীজি পূরুষ ইহৈব বক্ষ্যতে তৎ ञनः थन् वत्रस्रकः श्रूनः ॥ ७-থাহি নারাষণ দাসো ২ন্তরঙ্গ খানশ্চ। দালো দত্তে। ধর শৈচব निम प्राची कत ख्या। हक्ता রক্ষিত শ্চেতি বরেন্দ্র স্বল মস্টকণ া। ইতি। তথান্যত্র। অফৌ সে-नामत्या द्राट वत्क्षि वनखा-गी। नन्गामत्या महातारकु न्-প্তপদ্ধতয়ে ২পি চয় কেচিজ্জা-ত্যা পরিখ্যাতা দৃষ্টা দেশান্তরে-ম্বপি। ইতি।। সম্বন্ধঃ স্তৃ্যতে সর্বৈ **दिक्त मार्ग निवामित्ना । निन्छ-**তে ফিল সয়স্কো ভিন্নদেশনিবা-সিনোঃ।। ইতি বৈদ্যেষু রাটীষা-िक्थनः ।। \*।। अथ त्मनानीः না॰ পূৰ্বস্থান মাহ। শ্ৰীকাঞ্জীশা গোনগর করন্ধকোঠ এব চ ৷ মোরশাসন কান্তারো সমানু-স্থান মেব চ ৷৷ মেঢ্যশাসন মপ্য-ন্যো যাসগ্রাম স্তবৈধব চ। অফ্টা-না পেন মুখ্যানা রাচাযা স্থা-न मर्फेक् ।। তথা ह मुर्व्क्यः । का-প্রী গোর করক্ষ মোর কান্তা সমানুকাঃ। মেচ্যো মাল চ রা-ঢাষা বৈদ্যানা স্থলমন্টক মিতি ll ইতি বৈদ্যানা° পূৰ্ৰস্থান কথন° ॥ 🗱॥ অথ স্থানভেদেন সেন।দি ভেদ মাহ। উনবি॰শতিধা সেনা অফাবি॰শতিধা পুরণ। ভবন্তি ভে-দেনৈতেষা বক্ষ্যতে সল লক্ষণ য় একে। বিনাষকঃ সেনে। ভেদে-ন নবধা ভবৎ । মালঞ্চো ধলহ-ণ্ডীয়ঃ খানাজঃ সেনহাটিকঃ ॥ नात्ररूषे। नित्रानीय खथा मन्न-লকোঠজঃ। রাষিগ্রামী বেতজী-যো নব বৈনাযকা অমী ৷৷ বিশে-यতा विनिर्मिखा एक्टया महाना স্লোদ্ভবাঃ। সামান্য স্থান ক-থনে সম্বন্ধ ভাষণে তথা ৷৷ সর্বেষা মেব বৈদ্যান। মিতরেষ। মষণ ক্র-নঃ ৷ ইতি বিনাষক সেন বংশ্য নিৰ্ণয়ঃ ৷৷ একঃ পুন গ্ৰীদেনো ভেদেনৈব চতুর্বিধঃ ৷ বিষপাডা

ভবঃ শ্রেষ্ঠ স্তিকাষিপুরক্ত স্তথা॥ অন্যঃ কডযি সম্ভূতো ধাডাগ্রা-মী ততঃ পরঃ । ইতি গ্যীদেম বংশ্য নির্ণয়ঃ ৷৷ একো রাম্বর সে-নো ২ভূৎ খণ্ডগ্রামেণ বিশ্রুতঃ ৷ স খণ্ডজ ইতি খ্যাতো নাপরা ত্র-স্য চ স্থলী।। ইতি রাষবসেন বং-শ্য নির্ণযঃ। রাজ। বিমলসেনো ভূৎদেন ভূমি ক্লতা শ্ৰয়ঃ। স সেন ভূমৌ বিখ্যাতে। নাপর° তস্য চ স্থল ৷৷ ইতি রাজ্ঞে৷ বিমলসেনস্য বংশ্য নির্ণয়ঃ 11 পাত্র দামোদরঃ সেনঃ পাত্রঃ শিখর ভূপতেঃ। অ-সৌ শিখর ভূজাতো নাপর॰ তস্য চ স্থল•।। ইতি পাত্র দামোদর ব॰-শ্য নিৰ্ণযঃ ॥ বিনসেনোপি য স্তে-কো ধলভূমি কৃতাশ্রমঃ। সএব ধলভূমিষ্ঠো নাপ্রা তন্য চ স্থলী ॥ इंकि विनत्मन द॰ भा निर्वयः ॥ সপ্তমো বুষিসেনো যো বঙ্গভূমৌ প্রতিষ্ঠিতঃ । হাণ্ডিযাগ্রাম সম্ভূত স্তমায়া তস্য তৎ স্বল ।। ইতি হাণ্ডিষা বুষি সেন বংশ্য নির্ণষঃ। ইতি ধন্মন্তরি গোত্রজাতানাণ স-প্রবিধানাও সেনানাও ভেদেনা-ষ্টাদশ প্রকার নির্ণয়ঃ ।। শ্রীবৎস সেন প্রমুখাঃ ষডমী শক্তি গোত্র-

জাঃ ভেদেন সপ্তধা জ্বেয়া যথা ক্রম মমী পুনঃ।। একঃ শ্রীবৎস সেনো হভূত্তেহউগ্রাম বিশ্রুতঃ । তেহউজ ইতি খ্যাতো নাপর॰ তস্য চ স্থল ৷৷ ইতি শ্রীবৎস সেন ৰুশ্য নিৰ্বয়ং ৷ একঃ শিষাল সে-নো ২সৌ ভেদেন দ্বিবিধো ২ভ-বৎ। পোডাগাছা ভবঃ শ্রেষ্ঠঃ প-রঃ পোখরিয়া ভবঃ ৷৷ ইতি শিয়া-ল সেন বংশ্য মির্ণয়ঃ ॥ একো যঃ পুরুদেনো ২ভূদ্র্ঠিনাগতি মা-শ্রিতঃ। ভূঠিনাগডিজত্বেন খ্যা-তে। ২সে) নাপর স্থল ।। ইতি भूक़रनन व॰मा निर्वयः ॥ ठच्छ-সেনো ২গর স্ত্রেক শ্চন্দ্রবীপ নি-বাসক্লং। শক্তিগোত্র সমৃদ্রুত रेनीनभूत माथिठः ॥ रेठि हेर्स সেন বংশ্য নির্ণয়ঃ ৷৷ একো মুঞ্জীর **म्हिला १८मी अर्गणीठी नृशा**ध-যাৎ। স এব স্বর্ণপীঠীতি বিখ্যা-তো মল্লভূ ভবং ॥ ইতি মুঞ্জীর সেন ব॰শ্য নির্ণাঃ।। রামসেনঃ পর স্তদ্যৈবান্তভূতো বভূব যঃ। স মল্লভূষি বসতে) বিদিতানেক-পৌরুষঃ ॥ ইতি রামসেন ব°-শ্যনিৰ্বঃ ৷ ইতি শক্ত্ৰিগোত্ৰ জা-তানা প্রীবৎসদেন প্রসুখানা 🛭

ষ্ণা॰ সপ্ত প্রকার নির্ণয়ঃ ৷৷ আ-দ্য সেনস্ত ষড্বীজী ভেদেন বি-বিধো হভবৎ ৷ নপাডা সম্ভব-স্ত্রেকঃ শালগ্রাম ভবো ২পরঃ॥ মানকরীয় এবান্য স্ত্রয় আদ্যাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ। আদ্যুষ্টিগোত্র স-ম্ভূতাঃ স্বতন্ত্ৰাঃ সৰ্ব এব হি ॥ ইতি সকল সেনানাণ ভেদ নিৰ্ণ-যঃ ৷৷ ৠ ৷৷ অথ দাসানা ওেদ-মাহ। পঞ্চশবিধা দাসা স্তে ২মী বিংশতিধা পুনঃ। একঃ পুন-শ্চাযু দাসে। ভেদেন দ্বিবিধা ২ভবৎ ॥ এক স্তৈহ্ট সম্ভূতে। মালিকাহারজঃ পরঃ । ইতি চা-यूव॰रमा विदिध निर्वयः ॥ शञ्-দাসঃ পুন স্তেকো ভেদেন পঞ্চ-ধা ভবৎ।বালিনাছী ভব শৈচকঃ পরে। মওলজানিকঃ।। মৌডে-শ্বর ভবঃ পালিগ্রামজঃ পাজনৌ রজঃ। ইতি পহুবংশ্যে পঞ্চিধ নির্ণয়ঃ ।। একো ২পরঃ কাযুদ।-সে। বঙ্গভূমে] প্রতিষ্ঠিতঃ ৷ কো-গ্রামীণ ইতি খ্যাতো দাসে মৌ-দাল্য গোত্ৰজঃ ৷৷ ইতি হায-দাস বংশ্য নিৰ্বঃ ৷৷ ভোষী দা-সোপি তৎপূজ্রো খ্যাতৌ দীঘ-ল কেকরে।। অমী ত্রয়ো বসভূ-

মৌ প্ৰসিদ্ধাঃ সৰ্ব এব হি ৷৷ ইতি ভোষীদাসস্য তৎ পুত্ৰষোশ্চ বং-শ্য নির্ণযঃ ॥ একো বরাহ দাসো ২সে। বৌহারিগ্রাম বাসক্রৎ। স বৌহারিজ দাসোপি মতো মৌ-দাল্য গোত্ৰজঃ।। ইতি বে হা-রীয বরাহ দাস বংশ্য নির্ণযঃ ॥ নৃসিণ্হনান দাসৌ দ্বৌ বন্ধদেশে প্রতিষ্ঠিতৌ! তৌ বঙ্গজা বিতিখ্যা-তৌ সলকার্য্য পরাষণো।। ইতি नृशिष्ट् नामत्या वंश्मा निर्वयः ॥ বীর দাদোপি য **স্তেবঃ স বঙ্গজ** ইতি স্মৃতঃ। তত্ত্বৈ বঙ্গে সংক্ষ ত্যভাভূদরকন্যযোঃ॥ ইতি বীর নাল ব°শ্য নিৰ্ণয়ঃ 11 খ্যাতঃ পা-থরতা আমে রামদাসোপি তাদূ-শঃ ৷ সূৰ্ব স্তস্য চন্বারো বীজিন-স্তেপি বিশ্রুতাঃ।। খ্যাতা ডভেড গাত্তেড ধাড বীতাল দাসকাঃ। মৌদাল্য গোত্ৰ সমূতাঃ স্বতস্ত্ৰাঃ দৰ্ব এব হি ॥ ইতি ব্লাম দাসস্য তৎ পুত্রাণাঞ্চ বংশ্য নির্ণয়ঃ ৷৷ ইতি মৌলাল্য গোত্ৰজানাং সকল দা-সানাঃ পঞ্চদশ প্রকারাণাঃ ভে-एम वि॰मंভि श्रकात निर्गयः ॥ 🕸 🛚 অথ গুঞ্জানা॰ ভেদ মাহ। ঙণ্ডাশ্চ ষড্বিধা ভেলা দ্রযোদশ।

বিধাঃ পুনঃ। কাশ্যপান্বয সভূ-তাঃ স্বতন্ত্ৰাঃ সৰ্ব এব হি ॥ একঃ পুনঃ কাষু গুপ্তো ভেদেনান্ট বি-ধো ২ভবৎ ৷ বরাহনগরীযশ্চ শ্রেষ্ঠো ২ভূৎ সলকর্মণি।। প-ণিমালা ভব শ্চান্য স্তথৈব ঙ্গল-শীলবান্। বারাশত সমুভূত স্তৃ-তীয স্তদনন্তর ।। নীলগুপ্তভবা যে তে নিরোল ত্রিপুরাশ্রিতাঃ। ভদ্রখালী নিবাসস্থাঃ কাযু গু-প্তোন্ডবাশ্চ যে।। মাটিযারী ভ-বাঃকেচিল্লোকগুপ্তন্য বংশজাঃ ৷ পশ্চিনস্থান নাশ্রিত্য কেচিৎ স-স্তি নিজেচ্ছ্যা।। ইতি কাযু গুপ্ত-বংশ্যে ২ফীবিধ নির্ণয়ঃ 11 পর্মে-শ্বর গুপ্তো যঃ শ্রেষ্ঠ স্তদ্বংশ সম্ভ-বঃ। যো ২ভূত্রিপুর গুপ্তে:২সৌ ধৌডালা বিহিত স্থিতিঃ।। ইতি ধৌডালীয ত্রিপুরগুপ্ত বংশ্য নি-র্ণযঃ।। পরমেশ্বর গুপ্তস্য বংশজী দৌ প্রতিষ্টিতৌ। ভীঁ পুরী খাডি-গ্রামস্থে মহৎ সঙ্গাধিকারিণী ॥ ইতি মহাধিকারি স্বল্লাধিকারিণো ৰ্বণ্শ্য নিৰ্বহঃ ৷৷ অডাল গুপ্তো যঃ প্রোক্তঃ স তু শিঙ্গান সম্ভবঃ। কাশ্যপান্বয় সমূতঃ সলকার্য্য প-রাষণঃ II ইত্যডাল গুগু বংশ্য নির্ণযঃ ॥ বীরগুপ্ত স্ত যঃ প্রোক্তো তীঁ পুর গ্রাম বাসরুৎ। ভীঁ পুরী-ষ ইতি খ্যাতঃ স চ কাশ্যপগোত্ৰ-জঃ ॥ ইতি বীরগুপ্ত বংশ্য নির্ণযঃ ৈইতি কাশ্যপ গোত্ৰজাতানাণ দকল গুপ্তানাং যড়বিধানাং ভে-**प्तिन व्यामिश श्रकांत्र निर्वयः ॥** । দত্তে চ দ্বিবিথে জেন্থে রা-মদত্তশ্চ পাবিতা। পূৰ্বঃ শাণ্ডিল্য গেত্ৰীষোৰ ইগ্ৰাম সমস্তবঃ! অ-পরঃ পাবিতা দত্তঃ খাঁদভীয়ঃ স এবহি । জাতঃ কৌশিক গো**ত্তে** চ স্বভন্ত্ৰো দ্বো গুণাবিতো ৷ ইতি দত্তবংশ্য নির্ণয়ঃ ॥ 🗱 ॥ বিকারণ দ্য দেবস্য ব°শ্যা আত্রেয গোত্র-জাঃ ৷ সমানুস্থান সম্ভূতাঃ কেতু-গ্রামে ২ধুনা তুতে ৷৷ কৈতুগ্রামীণ দেবে৷২সে নিকারুণ সলোদ্ভবঃ । নিজৈশ্চ পৌক্লধৈ রেব সলক।-র্য্য পরায়ণঃ।। ক্লফাত্রেয় ভবা ষে চযে চ শাণ্ডিল্য গোত্রজাঃ। আ-লমাল ভবা যেচ তেনানা দেশ-বাসিনঃ ৷৷ ইতি দেববংশ্য নির্ণযঃ ।। 🕸 ।। একঃ কাস্তার বাসী চ ক-রো ভেদাদনী এযঃ। বশিষ্ঠ শ-ক্তিগোত্রে দ্বৌ বঙ্গদেশে চ বি-শ্রুতী ॥ যস্ত ধর্ম করে। বীজী ভ- রদ্বাজ সলোদ্ভবঃ। তদ্বংশ্যাঃ সা-ম্পুত সন্তি হিমোডা যাজিগা পুরে ॥ ইতি করবংশ্য নির্ণয়ঃ ॥ # ।। মেচ্যশাসন সম্ভূতৌ রাজ-বংশোদ্ভব। বুভে।। শশিরাজ ম-শীরাজৌ বাৎস্যগোত্ত সমুদ্ভবৌ ।। এলাচি ধাম নগরে শশিরাজঃ ক্নতাশ্রযঃ। মসীরাজঃ খেপড়ী-ষো বঙ্গভূমো চ সংস্কিতঃ।। ইতি त्राज्जवः त्या बिविध निर्वयः ॥ 🕸 ॥ নালগ্রাম সমুদ্ভতো ধর্ম্ম সোমো মহামক্তিঃ। জাতঃ কৌশিক গো-ত্রে চ তদ্ব শ্যা বহুদেশগাং॥ ইতি সোমবংশ্য নির্বাঃ য়। ইতি র.চা প্রসিদ্ধানা মন্টানা সেনাদীনা ভেদেন বংশ্য নির্বয়ঃ ৷৷ ৠ ৷৷ অ-পরে যে নন্দি চন্দ্রৌ ধর সভৌ চ র্ক্ষিতঃ ৷ বারেন্দ্রা অপি পর্টঞ্চতে প্রসিদ্ধা স্তত্র তে পুনঃ।। ইতি ত্র-यामम गृशांगा देवमाना यथा-ক্রম ভেদেন ঙ্গলনির্বহঃ।।ৠ। অ-থ সেনাদীনা সামান্যতঃ সম্বন্ধ লিখনানুরোধাদ্বসতি স্থান মাহ ।। শ্রীখণ্ড নাম নগরী রাচে বঙ্গে চ বিশ্ৰুতা। সৰ্বেষা মেব বৈদ্যানা মাশ্রযো যত্র বিদ্যতে ॥ যত্র গো-ষ্ঠীক্তা বৈদ্যৈ ৰ্যঃ খণ্ডো ২ভূদ্ভি- যক্ প্রিয়ঃ। বিশেষতঃ স্বলীনানাণ সর্বেষা মেব বাসভূঃ।।
ইতি সামান্যতঃ সকল বৈদ্যানাণবাসস্থান মুক্তং॥ #।। ইতি
পৌরাসমলিকাত্মজ ভরতসেন
ক্রত বৈদ্যস্থলতভূং॥।

ক্রত বৈদ্যঙ্গলতত্ত্ব ॥ শব্দাৎ ক্ষ্য প্রত্যবেন নিষ্পন্নঃ ॥ देवमाक॰ क्षी जायूर्वमः। हि-কিৎসাশাত্রণ যথা। যস্যব্যা-করণে বরেণ্য ঘটনা স্ফীতাঃপ্র-বন্ধা দশ প্রখ্যাতা নব বৈদ্যকে-পি তিথিনির্দ্ধারার্থ মেকে৷ডুতঃ ৷ সাহিত্যে ত্রয় এব ভাগবত ত-**ट्यां**टको वय उमा ज्वास्त्रीत শিরোমণে রিহ গুণাঃ কে কে-ন লোকোত্তরাঃ।। ইতি মুগ্ধবো-ধব্যাকরণশেষে বোপদেব প্র-সংশা শ্লোকঃ ৷৷ ৠ ৷৷ তৎ শাস্ত্র-क्रमामानि यथा। श्रग् यकुः मा-गांथवाथान् मृख्ना तमान् अ-জাপতিঃ। বিচিন্ত্য তেষ। মর্থ-देश्वायूट्बंम॰ ठकात मः ॥ कृषा তু পঞ্চমণ বেদণ ভাক্ষরায় দদৌ বিভুঃ । স্বতন্ত্র সংহিতাণ তস্মা-**ভাঙ্গর\***চ চকার সঃ॥ভাঙ্কর**\***চ স্বশিষ্যেভ্য আযুর্বেদ° স্ব সংহি-

তাণ প্রদদৌ পাঠষানাস তে চ-ক্রুংসংহিতা স্ততঃ।। তেষাং না-गानि विদুষा॰ তञ्जानि তৎ क्रछा-नि ह। गांधि थांगा वीजानि সাধি মত্তো নিশাময়।। ধন্বস্তরি দিবোদাসঃ কাশীরাজ স্তথাশ্বি: **त्नो। नञ्जलः मश्टामट्यो शर्कि म्हा**न বনে। জনকো বুধঃ ।। জাবা**লো** জাজলিঃ গৈলঃ কৰথো ২গস্ত্য এব চা এতে বেদাঙ্গ বেদজাঃ स्वाज्य व्याधिनायकाः ॥ # ॥ চিকিৎসাভত্ত্ববিজ্ঞান॰ নাম তন্ত্ৰ• মনোরমণ। ধয়ন্তরিশ্চ ভগবাঁশ্চ-কার প্রথমে সতি। চিকিৎসা-দর্পণ নাম দিবোদাস শ্চনার সঃ ॥ ि किविध्यादको मृतीः विवाः का-শীরাজ শ্চকার সং॥ চিকিৎাা-সারতন্ত্রঞ্ ভূনমণ চাশ্বিনীগুতো। তন্ত্ৰ॰ বৈদ্যকসৰ্বস্ব॰ নজলশ্চ চ-কার সঃ।। চকার সহদেবশ্চ ব্যা-ধিসিন্ধবিমৰ্দন ৷ জ্ঞানাণব ৽ মহা-তন্ত্র° যমরাজ শ্চকার সং॥ চ্যব-নো জীবদানঞ্চ কার ভগবানৃ-ষিঃ। চকার জনকে। যোগী বৈ-**দ্যসন্দেহভঞ্জন°।। সর্বসার°** চন্দ্র-সূতো জাবাল স্তন্ত্রসারক°। বে-দাঙ্গসার তন্ত্রঞ্চ চকার জাজলি

मू निः ॥ रेशता निमानः कवथ স্তন্ত্রণ সর্বধরণ পরণ। দ্বৈধনির্ণয-তন্ত্রঞ্চ চকার স্বন্তসম্ভবঃ ।। চি-কিৎসা শাস্ত্র বীজানি তন্ত্রাণ্যে-তানি যোডশ। ব্যাধি প্রণাশ-বীজানি বলাধান করাণি চ।। মথিত্বা জ্ঞান মন্থানৈ রাযুর্বেদ পযোনিধি°। তত স্তন্ত্ৰাণ্যজ্জহরু ন্বনীতানি কোবিদাঃ।। এতা-নি ক্রমশো দৃষ্ট্। দিব্যাণ ভাস্কর সংহিতা । আযুর্বেদ পর্ববীক সূৰ্ব° জান।মি সুন্দরি॥ ইতি ত্রন্ধ-বৈৰতেৰ্ভ ব্ৰহ্মখণ্ডে ১৬ অধ্যায়ঃ:\ रेवनानाथः १ एनमवित्मयः। यथा। করবীরে মহালন্ধী রুমা-দেবী বিনাষকে। অরোগা বৈ-দ্যনাথে তুমহাকালে মহেশ্বরী ॥ ইতি মাৎস্যে গৌরী নামাই শ 5° ১৩ অধ্যাযঃ ॥ অপিচ। বৈদ্যনাথণ সমারভ্য ভূবনেশা-ন্তগ॰ শিবে। তাবদঙ্গাভিধো-দেশো যাত্ৰাষাণন হি দুয়্তি॥ ইতি শক্তিসঙ্গমতন্ত্রে ৭ পটলঃ ॥ তৈরববিশেষঃ। যথা। হার্দ-शीर्रः देवमानात्थ देवमानाथञ्ज टेज्यवः । (मवजा जयमूर्गार्था) নেপালে জানুনী মন ॥ ইতি ॥

তন্ত্ৰচূডামণো পীঠনিৰ্বযঃ॥ অ-পিচ। হরিজানগরে যত্র বৈদ্য-নাথো মহেশ্বঃ। তত্রাক্ষ্যো विनुवृक्तः सर्ववृक्त छेनास्रवः ॥ रें विवृरक्षमा पूर्वाटन >> व्यशायः ।। অন্যচ্চ। ব্যারখণ্ডে বৈদ্যন।-থে। বক্রেশ্বর স্তথৈব চ। বীর-ভূমৌ সিদ্ধিনাথো রাচে চ তা-রকেশ্বরঃ ॥ ইতি মহালিঙ্গেশ্বর-তন্ত্ৰে পীঠাদি ক্ৰমেণ শিবশত-নাম স্তোত্র গা इं ि भक्षा ।। देवमामा

বৈদ্যবন্ধঃ পু॰ আর্থধবৃক্ষঃ । वसुर्भ ॥

বৈদ্যমাতা স্ত্রী বাসকঃ। ইত্য-गतः॥ जिसग्जननी ह॥ বৈদ্যসি॰হী স্ত্রী বাসকবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ खी कारकानी। इंडि শक्ठिक्व।।।

বৈধঃ ত্রি বিধিবোধিতঃ। যথা। অদৃষ্টাথৈক জাতীৰ কৰ্মণঃ কাল দেশ কর্ত্রাদীনা প্রযো-গানুবন্ধ বৈধ হেভুভূভানাম-*ভেদে উদ্দিশ্য বিশেষাগ্রহ*ঃ। ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্ব ॥ 🕸 ॥ অথ বৈধহিত্স। বিচারঃ । না

হিংস্যাৎ সৰ্বা ভূতানি ইত্যত্ৰ সর্বশব্দস্য ব্যাপকার্থ পরত্যা এ-তদ্বিধি মন্লুজ্য্য বাষব্যং শ্বেতমা-লভেত। ইত্যাদি বিধে বিষয়া-প্রাপ্তে রগত্যা বৈধাতিরিক্ত বি-ষ্যত্বং। সৰ্বাঃ সৰ্বাণি ছন্দসি বা ই-ত্যনেন তৎপদ° সিদ্ধ°। যদপি নানা দৰ্শন টীকাক্সন্তি ৰাচস্পতি মিশ্রৈ স্তত্ত্বেমূন্য। মভিহিতং। ন চ মা হিংস্যাৎ সৰ্বা ভূতানি ইতি সামান্য শাস্ত্রণ বিশেষ শা-স্ত্রেণ অগ্নীসোমীয় পশু মাল-ভেত ইভ্যনেন কাধ্যেত ইতি বা-চ্য° বিরোধাভাবাৎ। বিরোধে হি ৰলীয়সা দুৰ্বল বাগতে। নচা-স্তি বিরোধঃ ভিন্ন বিষয়ত্বাৎ। ত-থাহি। না হি॰স্যাদিতি নিষেধেন হিংসাষা অনৰ্থ হেতৃভাবো জ্ঞা-গ্যাতে ন পুন রক্রত্বথন্ব মপি। ন-চানর্থ হেতুর ক্রতৃপকারকর্ষোঃ एम्डिए विद्यारे । श्रिना शि পূরুষস্য দোষ মাবক্ষ্যতি ক্রতে শ্চ উপকরিষ্যতীত্যস্তেন। তদপি সা॰খ্যনযে। শীমা॰সক মতে তু বিরোধ এব। তথাছি। গুরুনযে ন খলু সৰ্বভূত হিংসাভাব বিষযকং কাৰ্য্য মিতি নিংমধ বিধ্যথস্য বাধ্ব বিনা অগ্নীসোমীয় পশ্বা-লম্ভন বিষয়ক কার্য্য মিতি ভাব বিধ্যর্থ উপপদ্যতে। ভটনযে তু व्यक्त यथा उथान्छ । न ह मूथा পশুযাগে পূরুষার্থে পশুহিণ্সন-স্যার্থ সাধনত্ব মনর্থ সাধনত্বঞ্চো-পপদ্যতে বিরোধাৎ । বস্তুতস্ত অঙ্গেলি বিরোধে৷ ইস্তোব স্বতঃ বিধে রেষ স্বভাবে। যঃ স্ববিষয়ন্য সাক্ষাৎ পরস্পার্যা বা পুরুষার্থ সাধনত্ব মবগময়তি। অন্যথা অ-স্থানাও প্রধানোপকারকত্ব মুগি নাঙ্গীক্রিয়তে। অর্থ সাধনত্বং वलवननिकीननुवकीके माधनकः অনৰ্থ সাধনত্ব° বলবদ্নিট সা-ধনত্ব নচানযো রেকত্র সমাবে-শ ইতি ৷ অত এবোক্তং তম্মান্ম জ্ঞে বধো হবধঃ ইতি। 🗀 ন্বব॰ শ্যেনশভিচরন্ যক্ষেত ইত্যত্র শ্যেনস্য শত্ৰুবধ কপেষ্ট সাধনত্ব মবগতে । অভিচারো মূলকর্মা চ ইতি মননা উপপাতক গণ মধ্যে পাঠাদনিষ্ট সাধনত্ব মবগত॰ । তদেতৎ কথ মপপদ্যত। মিতি চেমৈব॰ । আততায়িন মায়ান্ত॰ হন্যাদেবাবিচার্যন্ ইত্যেক্বা-ক্যত্যা আত্তাবিস্থলে ইফ্টসাথ-

'নত্ব॰ অনাততাবিস্থলে তূপপাত-কত্বেন বলবদনিষ্ট সাধনত্ব মি-তাবিরোধ ইতি। গুরুচরণা অ-প্যেবং। ইতি তিখ্যাদি তত্ত্বং॥ বৈধাত্রঃ পু॰ সনৎস্বমারঃ। ষচ বিধাতৃপুত্রঃ। ইতামরঃ।। বৈধাত্রী জ্রী রান্ধী।ইতিরাজ-निर्घिष्टः ॥ रितृष्गाती खी मानूपमीयनग-রী। ইতি সিদ্ধান্তকৌসুদী॥ दिश्विः पू॰ विक्रसामियुवि॰-শতি যোগান্তৰ্গত শেষযোগঃ। তস্য ত্যজাত্ব যথা। পরিঘস্য তাজেদর্দ্ধণ সপ্ত শূলে চ নাডি-काः । शश्च वार्याञ्चाः सर् ह নব হৰ্ষণ বজুযোঃ॥ বৈধৃতি ব্য-তিপাতৌ চ সমস্তৌ পরিবর্জ-ষেৎ। ইতি জ্যোতিস্তব্ৰুণ ॥ 🗱 ॥ তত্ৰ জাতফল॰ যথা। মৈত্ৰী বি-হীনঃ সটিলঃ খলশ্চ মূৰ্থো দ-রিজঃ পরবঞ্চশ্চ। সক্র্যকর্ত্ত। পরদারভর্তা ভবেমরো বৈধৃ-তি লব্ধজন্ম। ।। ইতি কোষ্ঠীপ্ৰ-मीপः ॥ 🕸 ॥ অমৃত্যোগে তস্য वकात्र मयकात्रुः यथा । यनि বৃষ্টি ব্যতীপাতো দিন° বাপ্য-ভভ॰ ভবেৎ। হন্যতে ২মৃত যোগেন ভাস্করেণ তমো যথা
। হস্ত্যমৃতাখ্যো যোগঃ সর্বাণ্যশুভানি হেলমা নিয়তং। ন ভবৃত্তি পুন রিহ শক্তো বৈধৃতি
কৃষ্টি ব্যতীপাতে।। ইতি জ্যোতিস্তাৰুং।।

বৈধেয<sup>়</sup> ত্রি মূর্খঃ । ইত্যমরঃ ॥ বিধিসম্বন্ধী বিধেষসম্বন্ধী চ ॥ বৈধ্যতঃ পু• বমপ্রতীহারঃ । ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥

বৈনতেয়ঃ পুণ গরুড়ঃ। ইত্য-মরঃ।। অরুণঃ। ইতি মৎস্য-পুরাণং।।

বৈনষিকঃ পৃং শস্ত্রাভ্যাসরথঃ।
ভৎপর্য্যায়ঃ। বোগ্যরথঃ২। ইতি
হেসচন্দ্রঃ। বিনষ্ণয়ন্ধিনি ত্রি।।
বৈনাষিকঃ পৃং বৌদ্ধাঃ ইতি
ক্রিকাণ্ডশেষঃ ।। যথা। ভিমকঃ
ক্ষপণো ২হীকো বৌদ্ধাে বৈনাধিকঃ স্মৃতঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ
বৈনাশিকং ক্রী নাডীনক্ষত্রবিশেষঃ। স তু জন্মক্ষাবিধি ত্রযোবিংশনক্ষত্রং। যথা। জন্মাদ্যং
কর্ম ততোপি দশমং সাংঘাতিকং যোডশভং। সমুদ্য মন্টাদশভংবিনাশ সংজ্ঞং ত্রযোবিংশং
আদ্যাতু পঞ্চবিংশং মান্দ মে-

ব॰ নরঃ ষড়ক্ষঃ স্যাৎ ॥ তৎ কল° যথা। ঈহা দেহাৰ্থ হানিঃ স্যাজ্জনার্ক উপতাপিতে। কর্মা-ক্ষেকৰ্ম্মণাণ হানিঃ পীড়া মনসি মানসে ॥ মূর্ত্তি জবিণ বন্ধূনা॰ হানিঃ সাংঘাতিকে তথা। **স**্-তপ্তে সামুদ্যিকে মিত্র ভৃত্যার্থ म॰क्यः ॥ देवनाभित्क विनाभः স্যাৎ দেহ ডবিণ সম্পদা । ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব॰ ॥ নিধনতা-রা। যথা। বৈনাশিকক্ষে দৃষ্ট॰ গ্রহণ সুধাণ্শু ভাস্করযো:। জনযতি রোগ বহুধা ক্লেশং বিত্তক্ষঞ্চাশু।৷ বৈনাশিককে ত্রযোবি॰শ নক্ষত্রে । ইতি কে-চিৎ ৷ বস্তুতস্তু বৈনাশিকপদ॰ নিধনতারাপর॰। নিধনেপি চে-ত্যেকবাক্যত্বাৎ। ইতি তিথ্যা-দিতত্ত্ব ॥

বৈনাশিকঃ পুণ ক্ষণিকঃ ৷৷ পরতন্ত্রঃ ৷৷ উর্গনাভঃ ৷ ইতি মেদিনী

৷৷ বিনাশসম্বন্ধীযে ত্রি ৷৷
বৈনীতকঃ পুণ ক্লী পরস্পরাবাহনণ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ আকাচণ বাহ্মণ
বৎ সাক্ষাৎ ন বহুতি পরস্পরবৈব বহুতি তদৈনীতকণ ৷ যথা
দোলাণ বহুন্দোলাবাহুকঃ বি-

নীযতে স্মেতি ভা নিকার সংঘতি কে বিনীতকঃ তেনৈব স্থাথে ক্ষে বৃদ্ধৌ বৈনীতকং ৷ ইতি
ভরতঃ ৷৷ বিনীতসম্বন্ধিনি ত্রি ৷৷
বৈন্যঃ পুং বেনপুত্রঃ ৷ স তু
পৃথুরাজঃ ৷ যথা ৷ বেনস্য মধিতেপাণী স বভূব মহাপুমান্ ৷
বৈন্যো নাম মহীপালো যঃ পৃথুঃ পরিকীর্ভিতঃ ৷৷ যেন দুগ্ধা
মহী পূর্বং প্রজানাং হিতকারগাৎ ৷ ইতি বব্লিপুরাণে সর্গান্শাসন নামাধ্যয়ঃ ৷৷
বৈপরীত্যং ক্লী বিপরীতস্য ভা-

বৈপরীত্য°ক্লী বিপরীত্স্য ভা-বঃ । তৎপর্য্যাযঃ । ব্যত্যাসঃ ২ বিপর্য্যাসঃ ৩ বিপর্য্যযঃ ৪ ব্য-ত্যযঃ ৫ । ইতি হেমচক্রঃ ।

বৈপরীতালজ্ঞালুঃ স্ত্রী ব স্বন্ধক্ষুপবৃহৎফলালজ্ঞালুঃ। যথা।
লজ্জালু বৈপরীত্যান্যা স্বন্ধক্ষুপ
বৃহৎফলা। বৈপরীত্যা চলজ্জালু হ্যাতিধানে প্রযোজ্যেৎ ।।
লজ্জালু বৈপরীত্যাহ্বঃ কটু রুকঃ কফাপনুৎ। রুসে নিযামকশৈচব নানা বিজ্ঞানকারকঃ।।
ইতি রাজনির্যুক্তঃ।।

বৈভবঃ পু॰ বিভবস্যভাবঃ!বিভব শক্কাৎ ফ প্রত্যযেন নিঙ্গনঃ ।। বৈভাজিত্রণ ক্লী বিভাজযিত্ ধর্মাণ। বিভালিনিতৃ শব্দাৎ অঞ্ প্রত্যযেন নিষ্ণান°। ইতি সিদ্ধা-ন্তকৌসূদী॥ ক্লী বৈভাজ° प्राचीमानिः। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥ বৈমাত্রঃ পু॰ বৈমাত্রেয়ঃ। ইতি क्रिविद्यः ॥ বৈদাত্র। স্ত্রী বিমাতৃকন্যা।বৈমা-ত্র শব্দাদাপ্ প্রভ্যবেন নিষ্পন্না পু॰ বিনাতৃপুত্রঃ। বৈশাত্রেষঃ তৎপৰ্য্যায়ঃ। বিমাতৃজঃ ২ বৈ-মাত্রঃ ৩। ইতি জটাধরঃ॥ বৈনাত্রেষী স্ত্রী বিমাতৃকন্যা। বৈসাত্রেষ শব্দাদীপ্ প্রত্যবেন निश्रामा ॥ रेवमुकः वि विमुक्तिविभिष्णः॥ তদ্ভাবে क्ली। विमुक्क नकां ९ क প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ।। বৈমেযঃ পু॰ বিনিম্যঃ। ইতি হেমচক্রঃ 11 বৈযাকরণঃ ত্রি ব্যাকরণবেতা।।

व्याक्त्रभारभाजा ॥ व्याक्त्रभ

কাৎ ফ প্রত্যযেন য্বোবুনেতি

ইমা ণিত্তেত্রি রিতি বৃদ্ধৌ চ নি-

ষ্পায়ঃ।। ব্যাকরণসম্বন্ধী চ।।

व्याक्त्रभः॥ বৈষায়ুঃ ত্রি ব্যায়ুচর্মাচ্ছাদিত-রথাদিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। দ্বৈপঃ ২ । ইত্যমরং ॥ যথা । উত্রা-ভিমুখী ভূমা নিরাহার। নিরভ-तः । देवशं घ कर्मवमना मार्न्न মূজাননা সতী।। জ্যোতিম্য ন্দিব॰ শান্ত॰ পর॰ শিবকর॰ প-র°। ইতি কালিকাপুরাণে ६८ व्यश्रीयः ॥ বৈষাঘুপদাঃ পু॰ গোত্রকারক-मूनिदिरमहः। यथा । देवयां यु-পদ্যগোত্রায় সাংস্কৃতি প্রবরায চ। অপুত্রায় দদাম্যেতৎ সলি-ল॰ ভীত্মবর্মাণে ।। ইতি তিথ্যা-मि**ত**कु॰ ॥ বৈষাসকিঃ পু॰ ব্যাসস্যাপত্য°1 ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণ ॥ বৈষাসিকী ত্রি ব্যাসেন রুত স হিতাদি। ইতি শ্রীভাগবত ।।। বৈষুষ্টঃ ত্রি প্রাতর্ভবঃ । রুষ্ট শक्तामण् अञारयन निष्णिषः । ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥ दৈतः क्वी दित्राधः। ইতামরः।! তস্য সমুখান পঞ্চ। শ্রীকৃত . ३ यथा क्रक भिरुशानत्वाः । বৈষাকরণভার্যাঃ পু॰ বৈষাকর-

বাস্তজ্য ২ যথা কৌরব পাশুবানাণ। বাগ্জ্য ৩ যথা জোণ জ্ঞান্দের। সাপত্ম ৪ যথা ফুষিক মার্জারযোঃ। অপরাধজ্য ৫ যথা পূজনী ব্রহ্মদত্তব্যোঃ। ইতি মহান্ডারতং॥

বৈরক্ত• ক্লী বিরক্ততা। বিরক্তশ-কান্ডাবার্থে ফপ্রত্যযেননিষ্ণারণ বৈরঙ্গিকঃ ত্রি বিরাগার্হঃ। ইতি হেনচন্দ্রঃ।।

বৈরনির্যাতন করী ক্রতাপকার-স্য প্রত্যপকার: 1 তৎপর্য্যায়: 1 বৈরশুদ্ধি: ২ প্রতীকার: ৩ । ইত্যমর: 11 •

বৈরপ্রতিক্রিষ। স্ত্রী বৈরনির্যা-তন<sup>1</sup> ইতি হেন্চন্দ্রঃ ।। বৈরশুদ্ধিঃ স্ত্রী বৈরনির্যাভন<sup>1</sup> ইত্যমরঃ ।।

বৈরাগিকঃ ত্রি বিরাগ্মর্হঃ। বি-রাগণ নিত্য মহতি ইত্যর্থে ঠঞ্ প্রত্যযেন নিষ্পান্ধঃ। ইতি সিদ্ধা-স্তকৌমুদী।।

বৈরাগী ত্রি বিষয়েচ্ছারহিতঃ। বৈরাগ্যযুক্তঃ। যথা। সনকশ্চ সনন্দশ্চ ভূতীযশ্চ সনাতনঃ। সনৎসমারো বৈরাগী চতুর্থঃ পুুুুঁত্র এব চা। ইতি ভ্রন্ধবৈবর্তে

ব্ৰহ্মখণ্ডে ২৪ অধ্যায়ঃ।। क्री विषयजूष्ट्धीः। বৈরাগ্য যথা। জ্ঞান বৈরাগ্যযো ভক্তি-প্রবেশাযোপযোগিতা । ঈষৎ প্রথম মেবেতি নাঙ্গন্ত মূচিত• তষোঃ ॥ यमूट्ड हिन्छ कार्ठिगा-হেতৃ প্রাযঃ সতা॰ মতে। সুদ্র-মার স্বভাবেষ° ভক্তি স্তদ্ধেত্-রীরিত। ।। যথা একাদশক্ষন্ধে । তত্মামদ্ভক্তি যুক্তস্য বোগিনৈ। বৈ মদাত্মনঃ। ন জান । ন চ বৈরাগ্যু॰ প্রায়ঃ শ্রেয়ো ভবে-मिरु ।। **रे**ठि । किञ्च ख्रान वित्र-জ্যাদিসাধ্যণ ভক্তৈব সিদ্ধ তি । যথ। তত্রৈব। যৎকর্ম্মতি র্যন্ত-পসা ক্রান বৈরাগ্যতশ্চ ষৎ। যোগেন দানধর্মেণ শ্রেযোভি রিতরৈ রপি।। সর্ব° মন্ড*্রি*ক যো-গেন মন্তক্তো লভতে ২ঞ্জস। । স্বর্গাপবর্গণ মদ্ধাম কথঞ্চিদ্যদি বাঞ্জি ৷৷ রুচি মুদ্দহত স্তত্র জ-নশ্য ভজনে হরেঃ। বিষয়েষু গরিষ্ঠোপি রাগঃ প্রাযো বিলী-যতে।। অনাসক্তস্য বিষয়ান য-थाई गूशयुक्षदः । निर्वक्षः इत्यः সম্বন্ধে যুক্ত॰ বৈরাগ্য মৃচ্যতে॥ প্রাপফিকত্বা বুদ্ধা হরিসহন্ধি

বস্তুনঃ। সুমুক্ষুভিঃ পরিত্যাগো | বৈরোচিঃ পু॰ বাণদৈত্যঃ। যথা বৈরাগ্য॰ কল্প কথ্যতে ॥ ইতি ভক্তিরসামৃতসিন্ধে পূর্বভাগে माथननस्त्री॥ বৈরাটঃ পু॰ ইন্দ্রগোপকীটঃ। ইতি হেমচ**ন্দ্রঃ।।** বিরাটসম্বন্ধি-ં नि खि ॥ বৈরাট্যা স্ত্রী জিনষাে্ডশবি-मारामवाखर्गंड मिवीवित्सवः। ইতি হেনচন্দ্রঃ ॥ বৈরাতঙ্কঃ পু॰ অজ্জুনবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ বৈরী পু॰ শত্রুঃ। ইত্যমরঃ॥ বীরসয়িরনি ত্রি ॥ रिक्लगु॰ क्षी विक्लग्ठा। यथा। বৈৰূপ্য মঙ্গেষু কশানিপাতো ্মেণ্ড্যে॰ তথা লক্ষণ সন্নিবেশঃ। এতান্ বধানহতি ৰক্ষবাদী শা-স্ত্রেষু দূতদা বধে। ন দৃষ্টঃ॥ ইতি মহানাটকে ৫ অঙ্কঃ॥ বৈরোচনঃ পু॰ বুদ্ধঃ ৷৷ বলিরা-জঃ।। অগিপুলঃ।। সূর্যপুলঃ॥ मिक्रगनः। ইতি শব্দর্ত্নাবলী।। বৈরোচননিকেতন॰ ক্লী পাতাল॰ । ইতি হল। যুধঃ ॥ বৈরোচনিঃ পু॰ বুদ্ধঃ॥ বলিরা-জ়ঃ॥ সূৰ্য্যপুত্ৰঃ। ইতি মেদিনী।। 🏿

। বৈরোচি র্বলিনন্দনঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। বৈরোদ্ধারঃ পু॰ ক্নতাপকার্ন্য প্রত্যপকারঃ ৷ যথা ৷ প্রতিকারঃ প্রতীকারো বৈরনির্যাতন তথা । নির্যাতন॰ বৈরশুদ্ধি বৈরো-দ্ধারে। নিগদ্যতে ॥ ইতি শব্দ-तज्ञावनी ॥ रेवनकना॰ क्ली विनकनवः। वि-লক্ষণসাজ্ঞাব ইত্যর্থে ফ্য প্রত্য-যেন নিষ্পন্ন ।। रिवदः क्षी विवंकनः। ইতামর-টীকা॥ বিল্বসম্বন্ধিনি ত্রি॥ বৈবধিকঃ ত্রি বিবধেন ধান্যত-ণ্ডুলাদিনা ব্যবহরতি यः। পদা-রীতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। বা-র্তাবহঃ ২ । ইত্যুমরভরতৌ ॥ বার্তোবহঃ ৩। ইতি শব্দরত্না-वनी ॥ বৈবর্ণ্য ক্লী বিবর্ণত। বিবর্ণস্য-ভাব ইত্যর্থে ফ্য প্রত্যেমে নি-क्या है। বৈবস্বতঃ পু॰ যমঃ। ইত্যমরঃ॥ রুদ্রবিশেষঃ। ইতি জটাধরঃ।। শनिः॥ मश्रुरमा मनुः। वर्छमा-নোষণ। অস্মিমমন্বন্তরে বামনো

২বতারঃ। পুরন্দরঃ ইন্দ্রঃ। আ-দিত্যাঃ বসবো ৰুজা বিশ্বেদেবা মরুদাণাঃ। অশ্বিনাবৃষভঃ। ই-ত্যাদ্যা দেবাঃ। কশ্যপঃ অত্রিঃ বশিষ্ঠঃ বিশ্বামিত্রঃ গোতমঃ জ-মদগ্নিঃ ভরদ্বাজঃ এতে সপ্তর্যয়ঃ। ইক্ষাকঃ নৃগঃশর্যাতিঃ দিষ্টঃ ধৃষ্টঃ ক্রমকঃ নরিষ্যন্তঃ পৃষ্ধুঃ না-ভাগঃ কবিঃ এতে মনুপুত্রা দশ। ইতি শ্রীভাগবতমতং ৷৷ 🗱 ৷৷ অ-পিচ। সপ্তমঞ্চ প্রবন্ধ্যামি যদৈ-বস্বত মুচ্যতে। অত্রি শ্চৈব বশি-ষ্ঠশ্চ কশ্যপো গৌতম স্তথা ।। ভরদাজ স্তথা যোগী বিশ্বাযিত্রঃ প্রতাপবান্। যমদগ্রিশ্চ সল্প্রৈতে সাম্পূত যে মহর্ষঃ ॥ সাধ্যা বিশ্বাশ্চ রুদ্রাশ্চ মরুতো বসবো ২িখনো। আদিত্যাশ্চ সুরা স্ত দ্বৎ সপ্ত দেবগণাঃ স্মৃতাঃ ॥ ই-স্থাসঃ প্রমুখা শ্চাস্য দশপুলাঃ স্মৃত। ভূবি। মন্বন্তরেষু সর্বেষু সপ্ত সপ্ত মহর্বয় ।। রুত্বা ধর্ম ব্যব-স্থান॰ প্রয়ান্তি পর্মণ পদ॰ ৷ ইতি মাৎস্যে ময়ন্তরানুকীর্ত্তনো নাম ৯ অধ্যায়ঃ ।। ৠ।। অন্যক্ত । শ্রী-মার্কণ্ডেষ উবাচ। আদিত্যা বস-বো রুজাঃ সাধ্যা বিশ্বে মরুদ্রা-

ণাঃ। ভূগবো ২ঙ্গিরস শ্চাফৌ যত্ৰ দেবগণাঃ স্মৃতাঃ।। আদিত্য। বসবো ৰুজা বিজ্ঞেয়াঃ কশ্যপা-ত্মজাঃ। সাধ্যাশ্চ মরুতো বিশ্বে ধর্মপুত্রা গণা স্ত্রয়ঃ।। ভূগোস্ত ভূ-গবঃ পুত্রা হৃদিরোঙ্গিরস সুতাঃ। এষ সগস্ত মারীচো বিজ্ঞেয়ঃ সা-ম্পুতাধিপঃ॥তেজস্বী নাম চে-<u>त्यािश महाञ्चा यद्धञागजूक् ।</u> অতীতানাগতা যে চ বৰ্ত্তন্তে যে চ সাম্পুত ।। সর্বে তে ত্রিদশে-खास विख्या सन्। नक्षाः। সহসাকাঃ জলিশিনঃ দর্ব এব পুরন্দরাঃ।। মঘবত্তে। বৃহাঃ সর্বে শৃঙ্গিণো গজগামিনঃ। তে শত-ক্রতবঃ দর্বে ভূতাভিভব তেজসঃ ॥ ধর্মাটেদ্যঃ কারবৈ রেতে রাখি-পত্য গুণায়িতাঃ। ভূত্ ভব ভব-নাথাঃ শৃণু চৈতৎ ত্রয়ণ দ্বিজ ॥ ভূর্লোকো ২য° স্মৃতো ভূমি রস্ত-রীক্ষণ ভুবঃ স্মৃতণ। স্বরাখ্য**শ্চ ত**-থা স্বৰ্গ স্থ্ৰেলোক্য মিতি গদ্যতে ৷৷ অত্রি শৈচব বশিষ্ঠশ্চ কশ্যপশ্চ মহানৃষিঃ। গৌতমশ্চ ভরদ্বাজো বিশ্বামিত্রশ্চ কৌশিকঃ !৷ ভইথব পুত্রো ভগবান্চীক্স্য মহায়নঃ । জनमधिक मटेश्वरण मूनरयाज

তথান্তরে ৷৷ ইক্ষান্স র্নভগটেশ্চব ॥ ষ্টঃ স্বর্যাতি রেব চ। নরিফ্য-স্তশ্চ বিখ্যাতো নাভাগো দিফ্ট এব চ ৷৷ কৰ্ষশ্চ পৃষ্ধু শ্চ ভূমি-পা লোকবিশ্রুতাঃ । মনে। বৈর্ব-়স্বতস্যৈতে নব পুত্ৰাঃ প্ৰকীৰ্ত্তি-তাঃ।। বৈবস্থত মিদ॰ দৈবি কথি-ত° তে মযান্তর°। অস্মিন্ শ্রুতে নরঃ সদ্যঃ পঠিতে চৈব সত্তন ।। মুচাতে পাতকৈঃ দৰ্বৈঃ পুণাফ মহদশুতে। ইতিমার্কণ্ডেযপুরা-ণে বৈবস্বতমন্বন্তরণ সমাপ্তণ।। বৈবন্ধতী স্ত্রী দক্ষিণদিশ।। ইতি त्राजनिर्वन्धेः ॥ বৈবাহিকঃ পু॰ কন্যাপুত্রযোগ শ্বশুরঃ ৷ বেহাই ইতি বঙ্গভাষা । সমধী ইতি হিন্দীভাষা।। বি-বাহসহন্ধিনি ত্রি। যথা। পঞ্চনে সপ্তনে চৈব যেষাণ বৈবাহিকী ক্রিয়া। তেচ সাস্তানিনঃ সর্বে পতিতাঃ শুদ্রতা॰ গতাঃ ।। ইত্যু-দাহতত্ত্ৰ।।অপিচ। কন্যাভ্যশ্চ পিতৃদ্ৰব্যাদেষণ বৈবাহিকণ বসু । অপুত্রকস্য কন্যা স্বা ধর্মজা পুত্রবদ্ধরেৎ !৷ ইতি দাযতত্ত্বে-(मदनः ॥ বৈশস্পাষনঃ পু॰ মুনিবিশেষঃ। যথা। অথ শিব্যান্ প্রজ্ঞাহ চতুরো বেদপারগান্। জৈনি-নিঞ্চ সুমন্ত্রঞ্চ বৈশম্পায়ন মে-বচ ।। পৈলং তেষাং চতুর্থঞ্চ প-ক্ষমং মাং মহামুনিঃ। ঋথেদ প্রা-বকং পৈলং জগ্রাহ্ন সমহামু-নিঃ।। যজুর্বেদ প্রবক্তারং বৈশ-ম্পায়ন মেব চ। ইতি কৌর্মো ৪৯ অধ্যায়ঃ।। সচ বজুবারকঃ। যথা। জৈননিশ্চ সুমন্ত্রশ্চ বৈশ-ম্পায়ন এব চ। পুলস্ত্যঃ পুলহ-দৈচব পর্বৈণ্ডে বজুবারকাঃ।। ইতি পুরাণং।।

বৈশস্ত্রণ ক্ষা অধিকারঃ ৷ বিশসিতৃশকাদঞ্প্রতাষেন নিষ্পায়৽ ৷৷ শস্ত্রাভাববিশিষ্টত্বং ৷ বিগতং শস্ত্রং যত্র ৷ বিপূর্ব শস্ত্রশকাদণ্ প্রতাষেন নিষ্পার্মণ ৷
ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ৷৷
বৈশার্থণ ক্লী ধনুর্বিদাং সংস্থানভেদঃ ৷ যথা ৷ স্থানান্যালীত
বৈশার্থ প্রত্যলীতানি মঙলং ৷
সমপাদঞ্চেতি হেনচন্দ্রঃ ৷৷
বৈশার্থঃ পুং মন্থানদঙ্গঃ ৷ ঘাদশনাসান্তর্গতপ্রথমনাসঃ ৷ তৎপর্যায়ঃ ৷ মাধ্বঃ ২ রাধঃ ৩ ৷
ইত্যমরঃ ৷৷ চান্দস্য ত্স্য লক্ষণং

। বিশাখা তারকা যুক্তা বৈশাখী। পূর্ণিমা ভবেৎ। সা বৈশাখী যত্র মাসে স বৈশাখঃ প্রকীর্দ্তিতঃ।। ইতি শব্দরত্বাবলী।। সতু মেষস্থ রবিকঃ সৌরঃ। তত্র জাত ফল॰। পুমান্ বিনীতো দ্বিজ দেব ভক্তো ধর্মস্য কর্ত্ত। সুজনস্য ভর্ত্ত। । গু-শাভিরামো ২থ জগৎপ্রিয়ঃ স্যাৎ বৈশাধসাসে খলু জন্মযন্য ॥ ইতি কোষ্ঠীপ্ৰদীপঃ। জ্ঞা অথ বৈশা-খ ক্ত্য়ণ। তত্র পদাপুরাণণ। তুলা নকর মেযেযু প্রাতঃ স্নান বিধী-য*়*ত। হ্ৰিষ্য° ব্ৰন্দৰ্য্যঞ্প মহাপা-তক নাশন ।। বৈক্ষামূতে। গ-বাৰ্ম্ধ প্ৰসূতানাং লক্ষ্ণ দন্ধা তু ষৎকল°। তৎকল**° লভতে** রাজ-ন্ মেষে স্বাস্থা তু জাক্লবীণ।। পি-তানহঃ ৷ কাৰ্ত্তিকস্য তু ষৎ শ্বান॰ মাঘে মাসি বিশেষতঃ। রুচ্ছাদি নিষ্মানাঞ্চাক্রমান প্রমাণ্ডঃ॥ আভ্যা° কার্ত্তিকাদি ন্নানে সৌ-রচাজ্রয়ে বিকল্পেনানুষ্ঠানং তত্ৰ চাত্ৰ মণি দ্বিবিধণ। তথা চ विखुः। मर्भाः वा लोगमामीः वा প্রারভ্য স্নান নাচরেৎ। পুণ্যা-ন্যহানি ত্রি॰শত্তু মকরত্ত্বে দিরা-क्टब्र ॥ দर्শः দर्শाञ्ज यागगयन्नि-

নী॰ প্রতিপদ•। পৌর্ণমাসী॰ তদি-ষ্টি সম্বন্ধিনী প্রতিপদ মারভ্য ত্রি॰শত্তিথিং। নারায়ণোপাধ্যা-यञ्च मर्ग (श्रीनंगानी ि शृर्विमिन সঙ্করপর মিতি। তত্র সৌরক্তত্যে রাশ্যুলেখঃ কার্যঃ। সংক্রান্তি বিহিতেকার্য্যে সংক্রান্তিঃপরিকী-র্ত্তিতা ৷ মাসোলেখ শেচতরস্মিন্ রবি রাশি স্থিতি স্তথা॥ইতি গারু-ডাৎ ॥ গুঃ॥ তত্তশ্চারুণোদয কা-লে মজ্জন॰ ক্লন্তাচম্য উদত্বাধঃ ওঁ তৎ সদিত্যুক্তার্য্য জদ্য বৈশাৰে মাসি অমুকপক্ষে অমুক তিথা-বারভ্য মেযস্থ রবিং স্বাবৎ প্রহ্য-হু অমুক গোত্ৰঃ শ্ৰীৰানুক দেব-শৰ্ম। শ্ৰীবিক্ষু প্ৰীতিকানঃ প্ৰাত-শ্বান মহং করিয়ে । ইতি। গঙ্গা-বায় অৰ্দ্ধ প্ৰসূত গৰী লক দান জন্য কল সমকল প্রাপ্তিকামে। বিষ্ণু প্ৰীতিকামো বা ইতি **সম্বন্ধ্য** যথোক্ত বিধিনা ন্নাযাৎ । প্রতি দিন সঙ্কন্ধে তু আরভ্য নেযস্থ রবি॰ যাবৎ প্রত্যহ মিতি ন বক্ত-ব্য° কিম্ব মাসীত্যনস্তর° মেষর¦-শিস্থ রবে। ইত্যধিকণ বক্তব্যং। চান্দ্রে ত্নাস্যনন্তরণ শুক্লপক্ষে প্রতিপদি তিথাবারভ্য দর্শ পর্য্য-

স্ত নিত্যুহনীয°। প্রতিদিন সঙ্কল্পে দ্বারভ্য প্রত্যহ নিত্যস্ত ন বক্ত-ব্যং। এবং হ্লফ্ প্রতিপদারস্তে উ-হনীয় । এবং মাসান্তরে চোহ-नीय । मक्क्षाकत्र (१ कलहानि মাহ ভবিষ্য পুরাণ । সঙ্করেন বিনা রাজন্ যৎকিঞ্চিৎ সরুতে নত্রঃ। ফলঞ্চিত্রালকে তদ্য ধর্ম-मार्किकरवा ভবে९॥क्षा महार्व-বে। যে। দদাতি হি নেষাদৌ শ-জ্নয়ুয়টাহিতান্ । পিতৃ্নূদিশ্য বিপ্ৰেভ্যঃ সৰ্বগাগৈঃ প্ৰসুচ্যতে ॥ বিপ্রেভ্যঃপাদুবাণ্ছত্রণপিভৃভ্যো বিষুবে **শুভ**ণ । গিতৃভাঃ পিতৃ্নু-किना। अज विकृत्रमाः। अवृत কোটি গুণিত লক্ষণ বিস্থৃগদীষু চ। ষডশীতি সহসুত্ত ষডশীত্যা মুদ।হৃত॰ 11 শতনি<del>ন্</del>কুক্ষে পুণা॰ मश्मुख निस्कत्य। विषूत्व भञ-मार्मु या का या देव धन छक्।। ইতি মৎনাপুরাণোক্ত শতসহসূ গুণিত তৎ কর্মাফল জনকত্বেন বিবক্ষণীযন্ত্ৰান্মেষাদাবিত্যপি বি-ষুব সংক্রান্তি পুণাকাল পরং। অ-ন্যথা কালদ্ব্য কল্লাগভেঃ। ব্য-বহারোপি তথা।।ঞ্জ্যা সংক্রমণ পু-গ্য কালস্ত দিন সংক্রমণে রুৎমং

দিন• ৷ ষডশীতি মুখেতীতে বৃত্তে চ বিষুবদ্বয়ে। ভবিয়াত্যয়নে পুণ্য মতীতে চোত্তরাযণে॥ ইতি তু পু-ণ্যতর কালপর॰ দিনবৃত্তো তরায-ণাদি বিহিত বিংশতি দণ্ডাদীনাণ রাত্রি প্রবিষ্টভাগস্যাপি পুণাত্বণ । রাত্রিসংক্রমে তু দণ্ড ন্যুন প্র-থম যামদ্বাভ্যন্তরে তদ্দিবসীয শেষযামদ্য পুণা । দণ্ডদ্যাত্মক নধ্যরাত্রে তদ্দিব**দীষ তিথে রভে**-দে তু তদিবসীষ শেষবানদ্বয়ণ পুণ্য । ভেদে তু তদ্দিবদীয় শে-ययामदयः श्रुनाः शतनिवनीयाना য। বিখ্যভেদ ভেদখে। দক্ষিণায়নে তদ্দিবসীয় শেষ্যাম-দ্বত ৷ উত্তরায়ণে পরদিবসীয়া-দ্য যামন্বয় । দণ্ডাধিক শেযাৰ্দ্ধ রাত্রি সংক্রমণে পরদিনাদ্য যান-ঘব॰। সন্ধ্যাসংক্রমণে তু দিন দণ্ডে দিনস্য রাত্রি দণ্ডে রাত্রে ব্যবস্থে-তি।। 🗱।। সংক্রান্ত্যাণ স্নানমাব-শ্যক'। অনিষ্ঠ স'ক্রমণে তু ত-**प्लाय শান্ত্যর্থ**॰ ধুন্তুর্বীজ সলি-লেন সৰৌষ্ধি জলেন চ স্নানং বিষ্ণুপূজন° তন্মন্ত্ৰজপঃ। স°ক্ৰান্তি কালএব স্ত্রী ভৈল মাণ্স বর্জ্য়ণ। रेन्द्रकरम रमावामगायाः। पिनकः-

ষে তিথিক্ষয়ে। আকামাবৈষু আ-ষাঢ কাৰ্ত্তিক বৈশাখ পৌৰ্ণমাসী-ষু ৷৷ ৠ ৷৷ ততঃ ক্ত স্নানাদিঃ প্রা-ত্বাথ উদ্বাধ বাহ্মণ গন্ধ পুষ্পা-ভ্যা॰ পূজ্যিস্ব। জল ঘটাস্বিত শ-ক্তুশ্চ জল ঘটান্বিত শব্জুভ্যো নমঃ ইতি পূজ্যিত্বা ব্ৰাহ্মণহত্তে জল॰ দম্বা ঘটি॰ সংপ্ৰোক্য বামহ-স্তে স্পৃষ্ঠা সশত্রয তিল জলান্যা-माय अग् ७९ मिन्जूकाया अग् অদ্যামৃকে মাস্যমুকপক্ষে ২মুক-তিথৌ নহাবিষুব সংক্রান্ত্যাণ অ-সুকগোত্রস্য পিতু রমুক দেবশ-ৰ্মাণঃ সৰ্ৰ পাপ বিমুক্তি কামঃ এ-তান্ জলঘটান্বিত শক্তৃন্ বিফু দেবতাকাৰ অমুক গোত্ৰমামুক দেবশৰ্মণে ব্ৰাহ্মণায় তুভা মহং সম্পুদদানীতি বান্ধণ হস্তে জল॰ मना ६। बान्न नष्ट मिन्ट्स उन মধ্য ভাগাগ্নেয তীর্ষেন ওমিত্য-নেন গৃহীদ্বা স্বস্তীত্যুক্ত্বা গাযত্রীণ কামস্তুতিঞ্চ পঠেও। জল ঘটান্বি-তাঃ শক্তবো বিষ্ণুদেবতাকাঃ। ইতি বদেৎ। ততো দক্ষিণা॰ দ-मा ६। यथा अम् अप्नाजा निक्रदेज তৎ জল ঘটান্বিত শক্তুদান ক-শ্বনঃ প্রতিষ্ঠার্থণ দক্ষিণাণ কিঞ্চিৎ

কাথশ্যসূল্যণ ব্ৰহ্ণায়াহণ দদা-নীতি। ততো অচ্ছিদ্রাব ধারণং। ব্ৰাহ্মণ বিশেষানুণ্ড া যথা স-ন্তব গোত্রনায়ে ত্রাহ্মণাষেতি বি-শেষঃ৷ তত্ৰ ব্ৰাহ্মণাসন্নিধানে তুভ্য মিতি ন দেয় । ভূমৌ ত্যাগ জল প্রক্ষেপঃ। এব মন্যত্রাপি সম্পূদ-দ ইতি বাক্যে বিশেষঃ। সৎপা-ত্রাভাবে তৎ সত্ত্বেগি তত্তৎকা-মো বিফুগ্রীতিকামো বা বিক্ষবে দত্বা ব্ৰাহ্মণায় পদ্চাৎ প্ৰতিপাদ-(य९। (मत्व मञ्च। जूनानानि (म-বে দন্ধা তু দক্ষিণাং ৷ তৎসূৰ্বং ত্ৰা-ন্ধণে দদ্যাদন্যথা নিষ্ফল° ভ-বেৎ।। ইতি মৎসাসূক্তাৎ। দ-বেত্যত্র দেযানীতি বারাহীযে পাঠঃ ॥ 🏶 ॥ देवनात्य या घট॰ পূৰ্ণ সভোজ্য বৈ দ্বিজন্মনে । দদাত্যভুক্তা রাজেন্দ্র স যাতি পরমাণ গতি• ৷৷ অত্রাপি ষথাযো-গ্য° সংপূজ্য পূৰ্ববদ্বাক্যেন ম-নোর্থ ফলার্থিনা সভোজ্য ঘ-টো দেয়ঃ ৷৷ ৠতিঃ ৷ মেবা-**(म) শক্তবো দেয়া বারিপূর্ণা** চ গর্গরী। তত্রাপি যথা যোগ্য° স°-পূজ্য পূৰ্ববুৎ বাক্যং ৰুত্বা পঠেৎ । ওন এষ ধর্মঘটো দত্তো ব্রহ্ম

বিষ্ণু শিবাত্মকঃ। অস্য প্রদা-नाष मक्ना गम मञ्ज मत्नात्रथाः ॥ ইতি মন্ত্রলিসাগ্রনোর্থ ফল व (उद्ध ॥ 🗱 ॥ क्रुं छिन्ना गर्ने । মদূর॰ নিম্নপত্রাভ্যা॰ যো ২ ত্তি মেষগতে রবৌ। অপি রোষান্বিত স্তদ্য তক্ষকঃ কি॰ করিষ্যতি !৷ উ ভরার্দ্ধে তু। মেষস্থে চ বিধৌ ভত্র নাস্ত্যত্তে বিষজ্ঞ ভয়ং। ইতি স-ষৎসরপ্রদীপে পাঠঃ। ততশ্চ মে-ষস্থ রবিস্থিতি কালে মসূরণ নিম্ব-পত্ৰদ্বক ভক্ষেত্ৰ 🛚 🏶 🗓 ভবি-ষ্যে। যা শুক্লা নরশাদূ ল বৈশাথে মাসি বৈ তিথিঃ। তৃতীয়া সাক্ষয়। খ্যাতা গীৰ্বাণৈ রূপি বন্দিতা।। যো ২স্যাও দদাতি করকান বা-রি বাজ সমন্বিতান্। স যাতি পু-ৰুষো বীর লোকান্ বৈ হেমমা-লিনঃ ॥ বাজ সন্ন°। হেমমালি-নঃ সূৰ্য্যস্য ৷ ততে৷ জল ময় সম-ষ্বিত দানে সূৰ্য্যলোক গমন° ফ-नः। मानानुश्रीनः शृर्वव ।। क्षा व-ক্ষপুরাণ **৷** বৈশাখে শুক্লপক্ষে তু তৃতীয়াযাণ ক্লতণ যুগণ। কার্ত্তিকে শুক্লপক্ষে চ ত্রেতা চ নবমে ২হ-নি ৷৷ অথ ভাত্ৰগ**ে**মাসি ত্ৰযো-দশ্যান্ত দাপরে। মাযে তু পৌর্ণ-

মাস্যান্ত ঘোরে কলিযুগ্ত স্মৃত ।। সুগারম্ভাস্ত তিথযে। যুগাদ্যা স্তে-ন বিশ্রুতাঃ । তত্র বৈশাখাদয়ঃ পৌৰ্নাস্যন্ত। এব তথৈব তিথি-ক্ত্যাভিধানাৎ। মুখ্য বাচিত্রে কাৰ্ত্তিকে নবমে ২হনীতি সিঞ্জৌ শুন্লপক্ষ ইতি ব্যর্থণ স্যাৎ ॥ 🕸 ॥ আসাণ প্রশণসা মাহ বিষ্ণুপুরাণণ । এতা যুগাদ্যাঃ কথিতাঃ পুরাণে রনস্তপুণ্যা স্তিথয শ্চতসুঃ। উ-পঞ্চবে চন্দ্রমসো রবে স্ত্রিম্বপ্যফী-কাস্বপ্যয়ন দ্বয়ে চ ৷৷ পানীয় ম-প্যত্ৰ তিলৈশ্চ মিসুং। দদ্যাৎ পি-তৃভ্যঃ প্রণতো মনুষ্যঃ ।। প্রাদ্ধণ ক্ত° তেন সমাঃ সহসু° রহস্য-মেতৎ পিতরো বদস্তি। উপপ্ল-বে গ্রহণে ।৷ 🕸 ৷৷ দেবীপুরাণ ৷ यूगामा वर्षवृक्ति क मश्रमी शार्ब-তীপ্রিয়া। রবে রুদ্ধ নীক্ষত্তে ন তত্র তিথি যুগ্মতা ।। 🟶 ।। অক্ষয-তৃতীয়া মধিক্ত্য ব্ৰহ্মপুরাণ । ত-স্যা॰ কার্য্যো যবৈ হোমো যবৈ विष्टुं॰ मयर्फरय९। यवान् प्रता९ দিজাতিভাঃ প্রয়তঃ প্রাশযেদ্য-বান্।। পূজ্যেচ্ছর পঙ্গা কৈ-लामक हिपानयः। छगीतथक न्-পতি॰ সাগরাণা॰ সুখাবহ॰ ॥ 🗱॥

স্কান্দে। বৈশাখন্য সিতে পক্ষে তৃতীয়াক্ষম সংজ্ঞিত। তত্ত্ৰ সাং লেপযেকান্ধৈ র্লেপনৈ রতিশো-**ভ**तिः ॥ मा॰ जगमाथः ॥ 🟶 ॥ অন্যত্রাপি। তথাচ জগন্নাথ স্নান মধিরুত্য ভবিষ্যে। সম্বৎসর কলণ রাজন্ নবন্যা॰ কার্ত্তিকে তথা। मन्नारको ह यूगारको ह यामळ्य क-ল° ভবেৎ ।। 🏶 ॥ মন্বাদযন্ত ভ-विषा बाष्मारयाः। अश्वयूक् छ-क्रनवरी घामभी कार्खिकी उथा। তৃতীয়া চৈত্ৰমাসস্য তথা ভাজ-পদস্যত ৷৷ কান্তুনস্যাপ্যমাৰাস্যা পেষিলৈয়কাদশী তথা। আষাঢ-স্যাপি দশনী তথা নাষ্স্য সপ্ত-মী।। প্রাবণসান্তমী কৃক্তা তথা-যাত্রসা পূর্ণিমা। কার্ত্তিকী ফাল্লুনী देव्वी देकाञी शक्षमनी मिलाः ॥ মন্বন্তরাদ্য স্ত্রেতা দত্তস্যাক্ষযকা-तिकाः। অমাবাস্যাষ্ট্রমী ব্যতি-রিক্তাঃ শুক্লাঃ উপক্রমোপসংহা-त्रयाः শুक्लाष कीर्जनाष्ट्र ॥ 🗯 ॥ नातनीरय। देवनारथ एक्न शरक जू षामभी বৈশ্বী তিথিঃ। তস্যাত শীতল তোষেন স্নাপষেৎ কে-শৰু শুচিঃ ৷৷ ইয়ু পিপীতকদ্বা-দশী। নাত্র যুগ্মাদরাপেকা। তত্র

বিন্ধু পূজনে উপবাদোত্তর বি-शानार ॥ क्षा वय यवान वाकः । তত্র বৈশাখ শুক্লপক্ষে সজ শ-নি শুক্তেতর বারে নন্দা রিক্তা ত্রযোদশীতর তিথো জন্মচন্দ্রাফ-মচন্দ্র জন্মতিথি জন্মনক্ষত্র ত্রয পঞ্মতারা ত্রযেতরেষু পূর্বফল্প-नी পূर्वजाजनम পূर्वायाण यथा ভরণ্যশ্লেষার্জেতর নক্ষত্রেষু যব-**শ্রাদ্ধণ কর্ত্তব্য**়। তচ্ছেষ ভোজ-नम्र এতाদৃগ্ निविकाया॰ विवृव **সংক্রন্তো** অক্ষযতৃতীযাযাঞ্চ বি-শেষতঃ কর্ত্তব্যং। বৈশাখাকরণে জৈয়প্তক্লপকে আহাচন্দ্রসক্ষে চ হরিশযনেতরত্র কর্ত্ব্যণ। ইতি ক্তাতত্ত্ব ।। 🕸 ।। 🕸 ।। অথ বৈ-শাখ নাহাত্মাণ। যে কার্ত্তিক ব্রত-পরা যে মাষ পরিনিষ্টিভাঃ। যে বৈশাখ বহাসক্তা ভেষাণ ভুফীঃ मना इतिः ॥ मर्दिया त्यव मामा-না॰ বৈশাখঃ প্রবরঃ স্তঃ। পুরা হরিমুখে রাজন্ শ্রুত মেতল্লসণ-শ্যঃ ৷৷ তত্ৰ স্নান জপো হোমঃ শ্রাদ্ধণ দানাদি ষৎ ক্রতণ। তৎ সৰ্ব॰ ভূপতিশ্ৰেষ্ঠ সভ্য সক্ষয় মু-চ্যতে। ত্ৰক্ সৰ্ভীপনি সৰ্বে-যজ্ঞাঃ সদক্ষিণাঃ। ভূপ বৈশাখ

মাসাল কোট্যংশেনাপি নো স-মাঃ ৷৷ মেৰুতুল্যানি হেমানি স-ৰ্বদানানি চৈকতঃ। একতঃ সৰ্ব-দা ভূপ মাধকো সাধবপ্রিয়ঃ ॥ অসংখ্যানি চ পাপানি বহুজন্ম।-ক্রিভানি চ। নিমেষার্দ্ধেন রা-জেন্দ্ৰ ৰিলফ মাস্তি মাধবে ॥ **বৈশা**থ মাগত দৃষ্টৃা, পিতৃণা मू ९ मत्वा ज्राव । श्रुत्ला नियम মাচর্য্য অস্মভ্য মুদ্ধরিষ্যতি।। ব্যাগত॰ মাধব॰ দৃষ্টু। কম্পন্তে পাপসঞ্যাঃ। অস্মাক নাশ কা-লোষণ ভূপতে দ্রুব মাগতঃ ॥ বৈশাখ পরম মাস মাধ্বস্যো তি হ প্রিয়°। নিয়মেন সমাচর্য্য ন ভূযো জাযতে নরঃ॥ মনসা সংস্মরেদ্যস্ত নিয়মং মাধবোদ্ত-বং। পূষতে পাতকৈঃ সর্বৈঃ শ-ক্ৰেণ সহ মোদতে ॥ বচসা যো বদেভূপ বৈশাখ মাধ্বপ্রিষ। অহণ সমাচরিয়ামি স গচ্ছেদুক ণঃ পুরং II যঃ সমাচরতে ভূপ নি-যমেন জু মাধবং। স বিকো ৰূপ মাসাদ্য বিষ্ণুনা সহ মোদতে॥ নিযমেন সমাচাট্য একাহ মপি ভূপতে। পিতর স্তারিতা স্তেন যাস্যন্তি পরমাণ গতিং 📭 তক্ষিন্ 🎚

ব্লাদ্বা বিশুদ্ধাত্মাশ্রস্ত মাৎসর্য্য ব-জ্জিতঃ। ঈশ্বিতান্ লভতে কামা-न् श्रीविरका मंगिरा जिंदि । बि-ক্ষমে বা ক্তমে ব। মিত্রমং জ্রী বিঘাতকঃ। নিষমেন নযেশ্বাসং স মুক্তঃ সৰ্বপাতকাৎ ৷৷ পাতকা-ना राक राव शायन्छङ विषू र्वु-ধাঃ৷ সৰ্ৰপাপ সমুজূতৌ নাত্ৰ কা-র্য্যা বিচারণা।। বৈশাখ স্নাষিনো লোকাঃ শ্রীবিষ্ণু সেবনোৎসুকাঃ । পাপ॰ ন তেষা মতিমন্নিহ লো-কে পরত্র চ।। সর্বস্বদান বিধিৰৎ সর্বদ। পরিশোধন । চান্দ্রায়ণঞ্চ বিবিশা কৃচ্ছ \* চৈবাতিকৃচ্ছক \* 11 পুণ্যক্ষেত্ৰাভিগ্যন সৰ্বপাপ প্ৰ-নাশন॰। দেবতাভ্যৰ্ক্চন॰ চৈব ত-থৈবাতিথি সেবনং।। কদাপি যৈ-নাচরিত ৰাজ্মনঃ কাষ কর্ম্মভিঃ। সংপ্ৰাপ্য তে তু সৰ্বন্ত মাধবে নি-ৰন° নরাঃ।। সমাচরস্তি যে মাস• মাধব॰ রুতবুদ্ধয়ঃ। সদা প্রীতি-মনা স্তেষা শ্ৰীক্ষো দেবকী সু-তः ॥ या नादी विश्व जूषा माश-বে নিয়ম চরেৎ। স্বলাযুত সহ-সুস্তু নযতে পরমণ গদণ।। পুত্রেণা-পীহ কি॰ কাৰ্য্যণ যেন নাচরিত• নৃপ। বৈশাখ পুত্রশতকাৎ না-

রী ধন্যা হরিপ্রিয়া।। যো মাধব্বে-र्फरयजाजन् रगाविनमः रगानव-ল্লভ°।ন তস্য বিদ্যতে সংখ্যা পূ-• জनमा क्लमा ह ॥ देवकवमा वृ ধর্ম্মস্য পারং গন্তু যদীচ্ছসি ৷ ন-রেন্দ্র মাধবং মাসং নিযমেন স-মাচর ৷৷ কি॰ করিষ্যতি সাংখ্যে-ন যোগেন নরনাযক। মুক্তি মি-চ্ছিদি চেডাজন্ মাধব মাধবে ২-র্চিয়।। অভক্ষ সম্ভবং রাজন্ স্ব-প্রতিগ্রহ সম্ভবং ৷ তৎ পাপং সং-ক্ষয° যাতি মাধবে নিযমে ক্লতে ॥ রণে যদি রিপুং জেতুং ত্বমিচ্ছসি শরাধিপ। নিযমেন তদা বিকোঃ প্রিয়ণ মাধ্ব মাচর ॥ যদি সাণ-সারিকণ দুঃখণ হন্ত মিচ্ছসি ভূমিপ ৷ তদা নিয়ম মাস্থায় মাধ্বে মাধ-ব॰ ভজ ॥ রাজ্য ভোগা॰শ্চ বি-পুলান্ পুত্র মিত্রাদি সম্পদ । যদিচ্ছসি তদা বিক্ষোঃ প্রিয়ণ মা-ধব মাচর।। তাক্তু মিচ্ছসি রাজে-ব্দ জন্ম মৃত্যু জরাদিক । ভয় যদি তদা বিষ্ণোঃ প্রিয়ণ মাধ্ব মাচর ৷৷ ইয় নাচরিত মাস মাধ-ব॰ পাপ বুদ্ধযঃ। নরকান্ন নিব-র্ত্তন্তে দক্ষাঃ কোপাগ্রিনা হরেঃ n ন বৈশাখসম° মাস° বিশেষ° |

কেশবপ্রিয়°। অব্রতেন ক্ষিপে-দযস্ত তং বিদ্যান্নিক্ষাত্মজং ৷৷ য-তিশ্চ বিধবা চৈব বিশেষেণ বনা-শ্রমী । বৈশাথে নরক° যাতি হ্ন-কুত্বা নিষমণ নরঃ ৷৷ তক্ষাড্রাজন প্রযত্নেন সরু স্ব॰ মাধবব্রত॰ । যস্যাচরণ মাত্রেণ হরিস্তক্টো ভ-রিষ্যতি।। তাবদার্জন্তি পুণ্যানি স্বর্গে মত্যে রসাতলে। যাবন্ধাযা-তি রাজেন্দ্র মাধবো মাধবপ্রিয়ঃ ।। অনুমাত্রন্ত যৎকিঞ্চিদেয়াদদা-তি চ মাধ্বে। কালে বা যদি বা **২কালে কোটি কোটি** গুণ° ভ-(त॰ ॥ यरथामधीना॰ त्राक्रदर्य ক্ষযো নৈবোপপদ্যতে । তথৈব মাধবে মাসি ন ক্ষয়ণ পাপ পুণ্য-যোঃ ৷৷ নাচারি ধর্মাচরণেন মা-ধব° নারাধিতো বৈঃ পুরুষপ্র-ধানঃ। যৈ ন শ্রুতা ভূপ কথা মুরারে ভেষা॰ বৃথা জন্ম নরাধ-মানাং ৷৷ ন পীডযন্তি গ্রহ রা-ক্ষসা গণা যক্ষাঃ পিশাচোরগ ভূ-ত দানবাঃ। যে। মাধবে মাসি নরেন্দ্রবর্য্য ধ্রুবং মুরারে র্রত-মাচরন্তি হ ৷৷ ইতি পাদ্মোতর্থ-তে বৈশাখমাহাত্মাকথনে ১৬৮ অধ্যায়ঃ ৷৷

বৈশাখী खी বৈশাখ্যাসস্য-পূর্ণিমা। যথা। বিশাখা তারকা-যুক্তা বৈশাখী পূলিয়া ভবেৎ। ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷ তত্র তপণ रुजः। देवभाशी मुश्रकमा यमः। · शोतान् वा यमि वा क्रकान् छि-লান্ কৌদ্রেণ সংযুতান্। প্রী-যতা॰ ধর্মরাজেতি পিতৃন্ দে-বা॰শ্চ তপ্যেৎ ৷৷ যাবজ্জীবক্ত্ৰ-ত॰ পাগ॰ তৎক্ৰণাদেব নশ্যতি। অব্যাত্ত্য তিপ্তেত্ত স্বৰ্গলোকে ন সংশ্যঃ।। ইতি তিথ্যাদিতত্তুণ ।। 🕸 ।। রক্তপুনর্ব। । ইতিরাজ-निर्घनिः ॥

বৈশিকঃ পু॰ ত্রিবিধনায়কান্ত-গভনায়কবিশেষঃ ৷ যথা ৷ শৃ-সারস্য উভয় সাধ্যমামাকো-পি নিরূপ্যতে ৷ স চ ত্রিবিধঃ ৷ পতি রূপপতি র্বৈশিকশ্চ ৷ বহু বেশ্যাভোগোপরসিকো বৈশি-কঃ ৷ যথা ৷ কাঞ্চী কল ক্বণিত কোমল নাভিকান্তি॰ পারাবত-শ্বনি বিচিত্রিত কঠপালি॰ ৷ উ-ভুন্ত লোচন চকোর মনঙ্গ রঙ্গ মাসাম্মহে কমাপ বারবিলাস-বত্যাঃ ৷৷ ৠ ৷৷ বৈশিক স্কৃত্তম মধ্যমাধ্য ভেদাভ্রিবিধঃ ৷ দ্যি-

তা শ্রম প্রকোপে অপি উপচার পরাষণঃ উত্তমঃ। যথা। চক্ষুঃ প্রান্ত সুদীক্ষ্য পক্ষলদৃশঃ শোণা-রবিন্দশ্রিষণ নোটেচ জল্পতি ন শ্বিত বিতনুতে গৃত্কাতি বীটীণ ন বা। তল্পোপান্ত মুপেত্য কিন্তু পুলক ভ্ৰাজৎ কগোল দ্যুতিঃ কা-স্তঃকেবল মানতেন শিরসাসুক্তা मुक थम्कि ॥ 🗱 ॥ थियायाः প্রকোপে যঃ প্রকোপ মনুরাগং বা ন প্রকট্যতি চেফ্ট্যা মনো-ভাবং গৃহ্ণতি স মধ্যমঃ ! যথা ৷ আস্যৎ যদ্যপি হাস্য বৰ্জিত মিদ? লাস্যেন হীন॰ বচে। নেত্রে শো-**৭ সরোষ কান্তি রুচিয়ে ক্বাপি ফ্র-**৭॰ স্থীয়তে। মালায়াঃ করণোদ্য-নো ন কবিকারন্তঃ সচাস্তোজয়ে ধূৰ্পঃ সন্তল ধোরণীযু সূতনোঃ मायख्टना मृभाटा। 🗱 ॥ ভय ক্লপা লজ্জা শূন্যঃ কামক্রীডায়। মক্ত কুত্যাকুত্য বিচারো ২ধনঃ । যথা। উদযতি হৃদি নৈব যন্য লজ্জান চকরুণান চ কোপি ভীতি লেশঃ। বঙ্গল মুঙ্গল কোষ কোমলা॰ মা॰ পুন রপি তস্য ক-রেণ সাত্যেথাঃ।। 🗱।। মানী চ-তুরঃ শঠ এবান্ত ভ্বভি। মানী যথা। বাহাকূত পরাষণ তব বচো বজ্ঞোপমেষণ মনঃ শ্রুত্বা বাচ মিমা মপাস্য বিনয় ব্যা-জাদ্বহিঃ প্ৰস্থিতে ৷ প্ৰাত ৰ্বক্ৰ বিলোকনে পরিষ্ঠালাপে বি-বৃত্তাননে প্রাণেশে নিযত প-তন্তি রূপণা বামজ্ঞবো দৃফবঃ ॥ 🕸 ॥ वाक् एक्सी वाक्रा ममाग-ম শ্চতুরঃ ৷ বচন ব্যঙ্গ্য সমাগ-মো যথা। তমোজটালে হরি-দভরালে কালে নিশাযা স্তব নিগতাষাঃ। তটে নদীনা॰ নি-কটে বনানা॰ ঘটেত শাতোদ-ति कः गर्गरः॥ 🗱॥ किसे। वा-ষ্যা সমাগ্ৰো যথা। কাত্তে ক-নত জ্যার° করে কমপি **স**র্বতি । জগার লিখিতে **ভানে। বিন্দু** मिन्दूम्थी मत्तो ॥ इंठि तम-मङ्दी ॥

বৈশিষ্ট ক্লী বিশিক্টম্বং। ততু সম্বন্ধপদার্থঃ। বিশিষ্টম্বী নি-যামক ইতি যাবং। যথা। বি-শিষ্ট বৈশিষ্টেত্যাদ্যভ্যুপগম-বাদঃ। ইতি শিরোমণিঃ। দণ্ড সংযোগবান্ ইতি শান্ধবোধো ন বিশিষ্ট বৈশিষ্টাবগাহী। খলে কপোত ন্যাষ্টেন্ব তং

ষীকারাৎ। ইতি ভাবঃ। ইতি कागनीभी मामानानकना ॥ বৈশেষিকঃ পু॰ কণাদ্যুনিক্ত-দর্শনশাস্ত্রবেক্তা। তৎপর্য্যাযঃ। ঔলুক্যঃ ২ । ইতি হেমচম্রঃ ॥ কণাদমুনিক্ত দর্শনশাস্ত্রবিশে-ষঃ ৷ স তু বিশেষপদার্থ নিরূপ-কগ্ৰন্থঃ। অস্য মত॰ ন্যাযদর্শন মততুল্য । অত্র জগতঃ কারণ• পরমাণুপর্য্যন্ত॰ নিরূপিত॰ ॥ৠ॥ ইহ খলু নিখিল প্রেকাবদিস-গপ্ৰতিকূল বেদনীয়ত্য। নিখি-**वाजा म**ेर्दमन मिक्क मुध्य जि হাসত স্তন্ধানোপায়ণ জিজ্ঞা-সুঃ পরমেশ্বর সাক্ষাৎকার নৃপা-য মাকলয়তি। যদ। চর্ম্মবদাকা-শ° বেষ্টযন্তীহ্ সানবাঃ 🕡 ভদা শিব মবিজ্ঞায় দুঃখন্যান্তো ভ-বিষ্যতীত্যাদি বচন নিচ্য প্রা-মাণ্যাৎ ৷ পরমেশ্বস্য সাক্ষাৎ-কারশ্চ শ্রবণ মনন ভাবনাভি ৰ্ভাবনীয়ঃ। যদাহ। আগমে-নানুষানেন ধ্যানাভ্যাসবলেন চ। विश अकन्नयन् अख्टा॰ ल-ভতে যোগ মুত্তম মিতি। তত্র মনন মন্মানাধীন । অনুমান-क वािश्विकानादीन । वािश्वि-

জ্ঞানঞ্চ পদার্থ বিবেক **সাপে**ক্ষ•। **। অতঃ পদা**র্থ বট্কং।। অথাতে। ধর্ম° ব্যাখ্যাস্যাসঃ। ইত্যাদি-কাষাত দশলক্ষণাত কণভক্ষণ ভণবত। ব্যবস্থাপি। তত্রাহ্নিক . घराञ्चरक व्यथरम २४गटर मग-বেতাশেষ পদার্থ কথন মকারি । তত্রাপি প্রথমাহ্লিকে জাতি-মন্নিৰূপণ । দ্বিতীযাহ্নিকে জা-তি বিশেষযো নিৰূপণ আ-ব্লিক দ্বান্নকে দিতীয়ে ভূত দিক্কাল লক্ষণ । তত্রাপি প্র-থমাব্লিকে ভূতবিশেষ লক্ষণং। দিতীয়ে দিক্কাল প্রতিগাদন । আক্লিক দ্বায়কে তৃতীয়ে আ-দাস্তঃকরণ লক্ষণ । তত্রাপ্যা-ত্মলক্ষণ প্রথমে। দ্বিতীযে অ-ন্তঃকরণ লক্ষণ । আহ্নিক দ্বয যুক্তে চতুর্থে শরীর তদুপযো-গি বিবেচন॰। তত্রাপি প্রথমে তদুপযোগি বিবেচন । দ্বিতী-যে শরীর বিবেচন । আङ্गिক-দ্বয়ব্ তি পঞ্জমে কর্ম্মপ্রতিপা-দন° ৷ তত্রাপি প্রথমে শরীর সয়ন্ধি কর্ম চিন্তন । আহ্নিক-দ্বয় শালিনি যঠে শ্রৌত ধর্মা নিকপণ ৷ তত্তাপি প্রথমে দান

প্রতিগ্রহ ধর্ম বিবেকঃ। দ্বিতীষে
চাতুরাশ্রম্যোচিত ধর্ম নিরূপ০°। তথাবিধে সপ্তনে গুণ সমবায প্রতিপাদন°। তত্রাপি প্রথনে বৃদ্ধি নিরপেক গুণপ্রতিপাদন°। দ্বিতীষে তৎসাপেক
গুণ প্রতিপাদন° সম্বায় প্রতিপাদনক। অফ্টমে নির্বিকর্পক
সবিকর্পক প্রত্যক্ষ প্রমাণ চিন্তন°। নবনে বৃদ্ধি বিশেষ প্রতিপাদন°। দশনে অনুমান প্রতিপাদন°। তত্র উদ্দেশো লক্ষণ॰ পরীক্ষা চেতি ত্রিবিধাস্য
শাস্ত্রস্য প্রবৃত্তিঃ। ইতি বৈশেযিকগ্রন্থবিবরণ°।।

বৈশ্যঃ পু॰ বন্ধ উরুদেশজাত
তৃতীয়বর্ণঃ। তৎপর্যায়ঃ। উরব্যঃ ২ উরুজঃ ৩ অর্যাঃ ৪ ভূনিস্পৃক্ ৫ বিট ৬ । ইত্যনরঃ।।
দিজঃ ৭ । ইতি জটাধরঃ।। ভূমিজীবী ৮ । ইতি শব্দরত্বাবলী
।। ব্যবহর্তা ৯ বার্তিকঃ ১০ বিনি
কঃ ১১ পনিকঃ ১২ । ইতি রাজনির্যন্টঃ।। প্রক্ষরীয়ে অস্য সংত্তা উর্ক্লায়নঃ । শালালদ্বীপে
বস্ক্লরঃ। স্পদ্বীপে তাতিযুক্তঃ
। ক্রৌঞ্জীপে জবিনঃ। শাক-

**দীগে দানত্রতঃ। পুষ্করদীগে**। সর্বে একবর্ণাঃ। ইতি ভাগবত-মতে ॥ অস্য শাস্ত্র নিৰ্কণিত ধর্মা দ্রয়ঃ। অধ্যয়ন ১ যজন ৫ ২ দান॰ ৩। চতস্ত্রো জীবিকাঃ। ক্লুষিঃ ১ গোরক্ষণ ২ ব্যণিজ্য ৩ **সশীদ°৪। অস্যাশ্রমান্ত্রযঃ।** ত্র-ন্ধচর্য্য > গার্হস্য ২ বানপ্রস্থ্য ७॥ তमा नक्षनि यंथा। वि-শত্যাশু পশুভ্যুশ্চ ক্লয্যাদানরু-চিঃ শুচিঃ। বেদাধ্যয়ন সম্পন্ধঃ স বৈশ্য ইতি সংজ্ঞিতঃ।। বৈশ্য-স্য চ প্রবক্ষামি যো ধর্মো বে-দ সম্বতঃ। দান মধ্যয়ন॰ শৌ-**ठ॰ यडढ**र्म्ड धन मक्ष्यः ॥ शील-ষেচ্চ পশূন্ বৈশ্যঃ পিতৃবদ্ধ-र्या गर्ब्जयन् । विकर्या ० खटवन-ন্যৎ কর্ম্ম যৎ স সম্বাচরেৎ।। রক্ষা সহি তেষা টব মহৎসুখ মবাপুষাৎ। প্রজাপতি হি বৈ-भाग मृष्ट्री शतिमतम श्रकाः ॥ ব্রাক্ষণেভ্যশ্চ রাজ্যে চ সর্বাঃ প-রিদদে প্রজাঃ। তদ্য বৃত্তি॰ প্রব-ক্যানি যচ্চ তস্যোপজীবনং॥ ষগ্না মেকা পিবেদ্ধেনু॰ শতাচ্চ নিথুন॰ ভবেৎ। লক্ষাচ্চ সপ্তম॰ ভাগত তথা শ্বৈকলক্রে ॥

শস্যানা গর্ষবীজ্ঞানি এষা সাযৎসরী ভৃতিঃ ৷ ন চ বৈশ্যম্য
কামঃ স্যাম রক্ষেয় পশ্লিতি ৷৷
বৈশ্যে রক্ষতি নান্যেন রক্ষিতব্যাঃ কথঞ্চন ৷ ইতি পাদ্যে স্বর্গখণ্ডে বর্ণবিভাগঃ ২৬ অধ্যায়ঃ
৷৷ ৠ ৷৷ অন্যচ্চ ৷ দান মধ্যয়ন গ্
যজ্ঞা ধর্মাঃ ক্ষত্রিয় বৈশ্যমোঃ ৷
দণ্ড স্তথা ক্ষত্রিয় বিশ্যমোণ যা শস্তে ৷৷ স্থান নৈত্রণ ক্ষত্রিয়াণা সংগ্রামেম্বপলামিনা ৷
া বৈশ্যানা মাক্রত স্থান স্বধর্ম্ম মনুবর্ত্তা ৷৷ ইতি গাক্তে
৪০ অধ্যায়ঃ ৷৷

বৈশ্যা জ্রী বৈশ্যজাতিজ্রী।তৎ-পর্য্যায়ঃ। অর্য্যাণী ২ অর্ব্যা ৩ । ইতি জটাধরঃ ।।

दिखवनः भू॰ ऋतंतः। ३०)-भतः॥

दिश्विवशानायः श्रृः विवृक्षः ।

हेि हिमहानः ॥ ऋतित्रश्रृती ह ।
देवश्ववशावामः श्रृः विवृक्षः ।
हेि किशिवतः ॥ ऋतित्रशृह्णः ॥
देशश्विवशान्यः श्रृः विवृक्षः ।
हेि तञ्जभाना ॥

दिश्वरावदः श्रू॰ विश्वरावनगरित-दशमानिः। यथा। बरकावाह।

বৈশ্বদেব প্রবক্ষানি হোম লক্ষণ मुख्यः। शर्वृक्तन मिन शर्युका। ক্রব্যাদ মগ্নিং প্রাহ্নিগোমি দূরং য মরাজ্য॰ গচ্ছতু রিপ্রবাহঃ। ইটেছ-বাব মিতরো জাতবেদা দেবে-. ভ্যো হবাং বহতু প্রজানন্। ওঁ পাবক বৈশ্বানর ইদ মাসন । অবনীগর্ভ সংস্কৃতঃ তেজেকি-(१) मङ्गाबक्तमभूङ्खं। खिष् देव-শ্বানর প্রতিবোধয়ামি। বৈশ্বা-নরোত্র উভষ প্রায়াতু গরাব-তঃ। অগ্নিঃ রঃ নুক্তী রূপপৃষ্টে मिति शृरकोन्नि शृथिता। शृरकी বিশ্বা ওষধী রাবিবেশ। বৈশ্বা-নরঃ সহসা পৃষ্টোগ্রিঃ স বোগ্নিঃ খণ দিব। সৰ্বস্মাত্ত্ব নক্তণ ওঁ প্ৰ-জাপত্ৰে স্বাহা। সোমাৰ স্বাহা । বৃহস্পত্যে স্বাহা। অগ্নী সো-মাভ্যা॰ স্বাহা। ইন্দ্রাগীভ্যা॰ স্বা-হা। দ্যাবা পৃথিবীভ্যা॰ স্বাহা। धन्न छत्र दे नाहा। हेन्द्राय नाहा। বিশ্বেভ্যো দেৰেভ্যঃ স্বাহা। ভূঃ **স্বাহা ভূবঃ স্বাহা স্বঃ স্বহা ভূ** ভূ-বঃ স্বঃ স্বাহা। দেব ক্লভদ্যেনসো ২ব্যজনৰ্মা স্বাহা। মন্য্য ক্লত-বৈগ্ৰনে। ২বযজনমলি স্বাহা । পিতৃক্তিস্যেনমো ২ব্যজন্মসি

স্বাহা আত্মক্রতদ্যোনসো ২বম্ব-জনমিদ স্বাহা। এনসঃ এনসো ২বযজনমসি স্বাহা। যচ্চাহ মে-বিদাণ শ্চকার যচ্চাবিদ্বাণ শুস্য হা। অগ্নয়ে স্বিষ্টিক্তে স্বাহা। সূৰ্য্যায় স্বাহা। প্ৰজাপত্তমে স্বাহা । বনস্পত্তির স্বাহ্। অক্তাঃ স্বাহ। । ওষধি বনষ্পতিভ্যঃ স্বাহা। গৃ-হায বাহা। দেহ দেবতাভাঃ ষাহা। বাস্ত দেবতাভ্যঃ স্বাহা। ইক্রায় স্বাহা। ইব্রুপুরুষেভাঃ वारा। यनाय वारा। यनपुक-रिष्णुः स्रोहा। वक्षाय स्रोहा। বরুণপুরুষেভ্যঃ স্বাহা। সোমায স্বাহা। সোমপুরষেভ্যঃ স্বাহা। বন্ধণে স্বাহা। বন্ধপুরুষেতাঃ স্বাহা। বিশ্বেভ্যো দেবেভ্যঃ স্বা-হ। । সর্বেভ্যো ভূতেভ্যঃ স্বাহা। দিবারাত্রিভাঃ স্বাহা। রক্ষেভাঃ স্বাহা। স্বধা পিতৃভ্যঃ স্বাহা। যে ভূতাঃ প্রচরস্তি দিবা চরস্তি দি-বাচরমিচ্ছত্তো ভুবনস্য মধ্যে তেভ্যে। বলি॰ পুষ্টিকামে। দদ।-মি। মযি পুষ্টি॰ পুষ্টিপতি দদ।-তু। শ্ব চাঙাল পতিত বাবদেত্যঃ ^ । ইতি গারুডে বৈশ্বদেব বিধিঃ

वृक्षः। ইত্যমরঃ।। তয়।মকারণ॰ ∥ বৈফুত॰ ক্লী হোমভক্ষ। ইতি

२,३२ ज्यागः ॥ 🛊 ॥ जमा थ যোগো যথা। পূৰ্বাভিমুখঃ শুচি রূপবীতী সশহস্তঃ সশাসনো-পবিষ্টঃ কৰ্ত্ত। ঘৃতাক্তণ দুগ্ধাক্তণ তৈলাক্ত জলাক্ত অন্ন আ-<u> ৰামণ বা ফলণ জলণ বা জুহুয়াৎ</u> । यथा कटन ७ जुः सरा। ७ जूदः साहा । ७ सः साहा । ७ ভূ ভূবঃ স্বঃ স্বাহা। ওঁ দেবক্ত-স্যৈনসে। ২ব্যজনমসি স্বাহা। ওঁ পিতৃকতস্যৈনসো ২বযজন-गिन साहा । उँ मनुषाक्र जिला-নসো ২ব্যজনমসি স্বাহা ৷ ওঁ আত্মক্তন্যৈনসো ২বষজনমসি স্বাহা। ওঁ যদ্দিবাচ নক্তঞ্জৈন শক্ষম তদ্যাব্যজনমদি স্বাহা। ওঁ ষৎ স্বপন্তশ্চ জাগ্রত শৈন শক্তম তস্যাব্যজনমসি স্বাহা। ওঁ যদিদাণস শ্চাবিদ্বাণস শৈচন শ্চরুম তস্যাব্যজনমসি স্বাহা। ওঁ,এনসঃ এনসে খ্বযজনমসি স্বাহা। ওঁ অগ্নযে স্বিফিক্তে স্বাহা। ইত্যনেন জুহুষাৎ। ইতি বৈশ্বদেকর্ম। ইত্যাক্লিকপ্রযোগ-তত্ত্ব গা বৈশ্বানরঃ পু॰ অগ্নিঃ।। চিত্রক-

যথা। তথাপি দল্মি বে। ৰূপে দ্বে দ্বে প্রত্যেকশো ধুন।। ভূত-কাৰ্য্যেম্বভূতেন দেবলোকে তু মূৰ্ত্তিনা।। তিষ্ঠধ মপি কালান্তে লয॰ স্বাবিশতু দ্রুতং। শরীরাণি পুন মৈবি কর্তব্যোহ মিতি 奪 চিৎ ॥ মূৰ্ত্তানাঞ্চ তথা তুভ্যুণ प्रित्र नामानि **(व**) २४ून। । अभि বৈশ্বানরো নাম প্রাণাপানৌ তথাশ্বিনৌ ৷৷ ভবিষ্যতি তথা গৌরী হিমশৈলসূতা তথা। পৃ-থিব্যাধিগণস্তেষ গজবক্ত্রো ভ-বিষ্যতি।। শরীর ধাতব স্ত্রে**ত** নান। ভূতানি এব তু । অহস্কার স্তথা ক্ষন্ধঃ কার্ত্তিকেয়ো ভবি-যাতি।। ইতি বারাহে আদিত্রে-তাযাত মহাতপোপাখ্যান না-माधायः॥ বৈশ্বী স্ত্রী উত্তরাষাঢানক্ষত্রণ৷ ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥ देवसगा की विसमन । विसम-শব্দাৎ ভাবে ষ্ণ্য প্রত্যবেন निष्भद्यः ॥ जि विषयमञ्जी । বৈষ্যিকঃ বিষয় শকাৎ ঞ্চিক প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ 11

र्गिष्ट ।।

বৈষ্টু॰ ক্লী পিষ্টপণ ইত্যুণা-দিকোষঃ ।। দ্যৌঃ ।। বাষুঃ ।। বিষ্ণুঃ । ইতি সংক্ষিপ্তসারোণা-দিবৃত্তিঃ ।।

বৈয়্ব ক্লী হোমভস্ম।ইতিশব্দ-রত্নাবলী।। বিক্রুসম্বন্ধিনি ত্রি।। दिक्दः पूर् विकृशामकः। विकृ ভক্তঃ। তৎপৰ্য্যায়ঃ। কাৰ্ষ্ণঃ ২ হারঃ ৩৷ তম্য লক্ষণ নাহাত্যা-দি যথা। ফল সন্ধান রহিতা বিক্তু ভক্তাশ্চ বৈষ্ণবাঃ ৷ মৎ প্রীতি ভক্তি কামা স্তে সৰ্বদা সৰ্বকৰ্ম-म् ॥ ७ इत्र रङ्गो विक् मरङ्गा यमा कर्त श्रविमाणि । জीवगुकः বৈষ্ণবস্তু॰ বেদাঃ সর্বে বদস্তি চ য় পুৰুষাণা॰ শত॰ পূৰ্ব॰ গৈতৃ-কঞ্চ শত॰ পর॰। মাতামহস্য চ শত্ মাতর মাত্মাতর ৷৷ ভ গিনী॰ ভ্রাতরক্ষৈব ভাগিনেযঞ্চ মাতৃল**। শৃক্রাঞ্ছ শৃশুরুঞ্বে গু**রু পত্নী॰ গুরোঃ সূতং।। গুরুঞ্চ জ্ঞা-ন দাতার মিত্রঞ্ব সহচারিণ । ভৃত্যং শিষ্যং তথা চেটীং প্ৰজাঃ স্বাশ্রম সমিধে।। উদ্ধরেদাত্মনা সার্দ্ধি মুক্তগ্রহণ মাত্রতঃ। মন্ত্রগ্র-হণ মাত্রেণ জীবন্মুক্তো ভবেষরঃ 🎚

।। তস্য সম্পর্শ মাত্রেণ পূত তী-র্থঞ্চ ভারত । তদ্যৈব পাদরজ-সা সদ্যঃ পূতা বসুন্ধরা।। পাদো-দক প্লুত স্থান তীর্থ মেব ভবে-দ্ধুব । ইতি ব্রহ্মবৈবর্ত্তে প্রকৃতি-খণ্ডে ৮ অধ্যায়ঃ॥ 🕸 ॥ অপিচ। শ্রীশিব উবাচ। শিবমস্ত চ সাধূ-না॰ বৈক্ষবানা॰ সতা মিহ। অ-বৈক্ষবানা মসতা মশিবঞ্চ পদে পদে।। দদাতি বৈক্ষবেভ্যশ্চ ষো দুংখ মৃচ্ছিতো জনঃ। শ্রিক্রফস্য চ সংহৰ্ত্ত। বিশ্ব স্তদ্য পদে পদে।। ञादेवक्षवाना॰ श्रमय॰ न शि **श्वक्ष॰** नम। मल । श्रीकृष मख स्मत्र १ মনো নৈৰ্ম্মল্য কারণ ।। ভিদ্যতে হৃদয় গ্ৰন্থি শ্ছিদ্যতে সৰ্ব সংশ-याः । विकृभत्ञाशामनया कीय-তে কৰ্ম বৈ নৃণাং॥ যে বান্ধণা বৈক্ষবাশ্চ স্বতন্ত্রাঃ পরমণ পদণ ৷ যান্ত্যন্যোপাসকা শ্চান্যৈঃ সা-ৰ্দ্ধঞ্চ প্ৰক্লতে ৰ্লযে ॥ বৰ্ণানা॰ জ্ৰা-ক্ষণাঃ শ্রেষ্ঠাঃ সাধবে৷ বৈষ্ণবা যদি। বিষ্ণুমন্ত্ৰ বিহীনৈভ্যো দ্বি-জেভ্যঃ শ্বপচো বরঃ ৷৷ পরিপক্কা শ্চাবিপক্ষা বৈষ্ণবাঃ সাধবশ্চ তে । সন্তত॰ পাতিতা॰ শৈচৰ বিফু-ठळ° मूमर्गन° ॥ यथा वङ्गी 😎 **দ্বতৃণ° ভম্মীভূত° ভবিষ্যতি 1** তথা পাপ॰ বৈক্বেষু তেজস্বিষু হতাশ্নাৎ ৷৷ গুরুবক্তাদিকুম-স্ত্রো যদ্য কর্ণে প্রবিশ্যতি। ত বৈষ্ণব॰ মহাপূত• প্রবদন্তি মনী-ষিণঃ।। প্রশংসিত পিতৃণাঞ্চ শ-ত॰ মাতামহস্য চ। স্ব সোদরা॰-**শ্চ জননী মুদ্ধরস্ত্যেব বৈ**ক্ষবাঃ । গ্রাযাণ পিওদানের পিওদাঃ পিওভোজিন । সমুদ্ধরন্তি পূ্-সাঞ্চ বৈৰুৱাশ্চ শতং শতং ৷৷ মন্ত্ৰ গ্ৰহণ মাত্ৰেণ জীবন্মকে ভবে-শ্বঃ। বম স্তস্মান্সহাভীতো বৈন-তেষাদ্বথোরগঃ।। নিস্পুনস্ভোব তীর্থানি গঙ্গাদীনি চ ভারতে। ক্লফনত্ত্ৰোপাসকাশ্চ স্পৰ্শনাত্ত্ৰে-ণ বাক্পতে ।। পাপানি পাপিনা॰ চীর্থে যাবন্তি প্রভবন্তি চ। ন-শ্যন্তি তানি সৰ্বাণি বৈক্ষব স্পৰ্শ মাত্ৰতঃ ৷৷ কৃষ্ণকন্ত্ৰোপাসকানা त्रज्ञमा शामश्राम्याः । मटमा मू-ক্তা পাতকেভ্যো হৃক্টা পূতা বসু-ন্ধরা ৷৷ বাযুশ্চ বরুণো বহ্লিঃ সূ-ৰ্যাঃ সৰ্ব॰ পুনাতি চ। এতে পূতা বৈষ্ণবানাণ স্পাৰ্শনাত্ৰেণ লীল্যা ॥ অহ° বন্ধ। চ শেষশ্চ সাক্ষী ধর্মশ্চ কর্মাণা । এতে হৃষ্টাশ্চ বাঞ্জতি বৈক্ষবানা° সমাগম° ॥ ফল° কৰ্মানুসাৱেণ সৰ্বেষা°ভা-রতে ভবেৎ। ন ভবেত্তবৈষ্ণবে **ठ मिक्रिशात्मा यथाक्रूत** ॥ इंखि তেষা॰ কৰ্মা পূৰ্ৰণ ভক্তানা• ভক্ত-বৎসলঃ। ক্রপবা স্বপদ তেভাে দদাত্যেৰ ৰূপানিধিঃ ৷৷ ইতি ত্ৰ-শ্ববৈদৰ্ভে প্ৰকৃতিখণ্ডে ৫৭ অধ্যা-यः।। 🗱।। অন্যক্ষ । শ্রীভগবানু-বাচ ৷ অহু প্রাণা বৈক্ষবানা মম প্রাণাশ্চ বৈক্ষবাঃ ।। তানেব দ্বেষ্টি যো মূচো মনাসূনা স-হি॰সকঃ। পুত্রান্ পৌত্রান্ কল-ত্রা॰ চ রাজলন্ধীণ বিধায চ। ধ্যায়ন্তে সভত যে মাণ কো মে তেভ্যঃ পরঃ প্রিয়ঃ ।। পরা ভক্তা নু মে প্রাণা ন চ লক্ষ্মী ন শঙ্করঃ । ন ভারতী ন চ বৃদ্ধা ন দুর্গা ন গবেশরঃ ॥ ন বাহ্মণা ন বেদাস্চ ন বেদজননী সুরাঃ। ন গোপী ন চ গোপালা ন রাধা প্রাণতঃ প্ৰিয়া ৷৷ ইত্যেব ক্ষিত সৰ্বণ সত্য॰ সারঞ্জ বাস্তব॰। ন প্রশ॰-সা পরু তেষা তে চ প্রাণাধি কাঃ প্রিয়াঃ ।। মাণ দিষন্তি চ যে মূচা জ্ঞানহীনাশ্চ বঞ্চিতাঃ। স্বাস্থানঞ্চ ন জানস্তি তে যান্ডি

নিরয়ণ চির়ণ ।৷ শে দ্বিষস্তি চ মদ্ভ-ক্তান্ প্রাণান। মধিক প্রিয়ান্। ভেষাণ শাস্তাহণ তূর্ণঞ্চ পরত্র নি-র্য° চির°।। প্রভবোহঞ্চ সর্বেষ। মীশ্বরঃ পরিপালকঃ। তথাপি ন স্বতন্ত্রোহ° ভক্তাধীনে। দিবানি-শং॥ গোলোকে বাথ বৈঙ্গতে দ্বি-ভুজঞ্চতুভুজে। ৰূপমাত্ৰ মিদণ সর্ব॰ প্রাণা মে ভক্তসন্নিধে। ॥ যদ্ভক্তণ ভক্তদত্তঞ্চ ভক্ষণীয়ঞ্চত-শ্বম। অভন্য° দ্রব্য মন্যেন দত্ত-ঞ্চেদস্তোপমণ।। ইতি ব্রহ্মবৈব-র্ত্তে শ্রীক্লা জন্মখণ্ডে ২৫ অধ্যায়ঃ ॥ #॥ अभिष्ठ। मर्वान् कामान् পরিত্যজ্য ইফটভক্তিঞ্চ সাধ্যেৎ । স এব বৈষ্ণবাচারঃ কাম সয়-**প্লবজ্জিতঃ ॥ ইত্যাচারভেদতন্ত্র**° !! # !! अभद्रक्ष ! त्रज्ञवनायाः म°-ভোগে কর্মক্ষেত্রে চ ভারতে। স্ব যোক্তঞ্চ ভবেৎ পাপণ নাত্র স্বর্গে চ সুন্দরি ॥ কর্মাক্ষেত্রে চ তৎ কর্মা যদ্বেদোক্ত° শুভাশুভ°। ন ভবে-দ্বৈক্ষবানাঞ্চ জ্বলতা॰ ব্ৰহ্মতেজসা ।। যথা প্রদীপবয়ে চ শুষ্কাণি চ তৃণানি চ। ভবন্তি ভশ্মীভূতানি তথা পাপানি বৈক্ষবে ॥ বিহ্ন मूर्या बाक्षाताचा उड़िकीयान् देव-

ক্ষবঃ সদা।। রক্ষিতে। বিশ্বচক্রে-ণ স্বতন্ত্রো মত্তপঞ্জরঃ। ন বিচা রো ন ভোগশ্চ বৈক্ষবানাং স্ব কৰ্ম্মণাণ।। লিখিত সামি কৌগু-ম্যাণ সরু প্রশ্নণ বৃহস্পতি । অ-স্মাণ্শ্চ সর্বে জানন্তি চন্দ্রবংশ্যাণ শ্চ বৈফ্বান II দেব মন্য° ন সেবস্তে চন্দ্রবংশ্যা হরিং বিনা । ইতি ব্ৰহ্মবৈৰৰ্ত্তে শ্ৰীক্লফজন্মখণ্ডে ৬ অধ্যায়ঃ।। ৠ।। অপিচ। সূত উবাচ। অথ বেণ ইয়াজাথ সো ২শ্বনেধেন ভূপতিঃ ৷৷ ব্রাহ্মণে-ख्या प्रति पान नानाक्षेत्र मान-কথা। জগান বৈক্ষবং লোকং স-কাষো জগতীপতিঃ ॥ বিশ্বুনা সহ ধৰ্মাত্বা নিত্য মেব প্ৰবৰ্ত্ততে । এতত্তে সৰ্ব মাখ্যাত° চরিত° ত-मा जूপতেः ॥ यटपटना देवकव দেখী সৰ্বধৰ্ম বহিষ্কৃতঃ। পৃথুন। পুত্র তীথেন পবিত্রে। ২গাৎ পরণ পদ ।। সৎপুত্র পরম তীর্থ প্ৰাপ্য মুচ্যন্তি পূৰ্বজাঃ। পিতাপি ঋণ মূক্তঃ স্যাৎ জাতে পুত্ৰে মহা-ত্মনি ৷৷ বৈক্ষবে৷ যদি পুত্ৰঃ স্যাৎ স তার্যতি পূর্বজান্। পিতৃ্নধস্ত-না ব॰শা স্তার্যস্তাতিপাবনাঃ।। ইতি পায়ে ভূনিখণ্ডে ১২০ অধ্যা

यः ॥ 🗱 ॥ व्यथं दिवस्वधर्मा ७९ কর্ত্তব্য পঞ্চবিধপূজে । যথা । শ্ৰীপাৰ্ৰত্যুবাচ। বৈক্ষবানাঞ্চ य-দ্ধৰ্মণ কৰ্মাপি তস্য তদ্বদ । যৎ ক্ৰন্বা মানবাঃ সৰ্বে ভবাস্ভোগৌ তরস্তি বৈ ॥ ঈশ্বর উবাচ। অথ দ্বাদশ শুদ্ধিঞ্চ বৈক্ষবানা মিছো-চ্যতে। গৃহোপসর্পণঞ্চৈব তথা-নুগমন° হরেঃ।। ভক্ত্যা প্রদক্ষিণ-বৈশ্ব পাদযোঃ শোধন পুনঃ ১। ২৷পূজার্থণ পত্র পুষ্পাণাণ ভক্ত্যৈ-বোত্তোলন হরে: ৷ করযোঃ সর্ব শুদ্ধীন। মিষা শুদ্ধি বিলিখ্যতে ৩। ৪॥ তন্নাম কীর্ভন ক্ষৈব শু-ণানা ধ্বৈব কীর্ত্তন• । ভক্ত্যা শ্রী ক্লফদেবস্য বচসঃ শুদ্ধি রিষ্যতে ৫ ।। তৎ কথা শ্রবণ ঞ্চৈব ত-স্যোৎসৰ নিরীক্ষণ ৷ শ্রোত্রযো নেত্ৰযে। শৈচৰ শুদ্ধি সম্যগিহে।-চাতে ৬।৭।৮।৯॥পাদোদকঞ্চ নিশ্মাল্যু মালানা মপি ধারণ ৷ উচ্যতে শিরসঃ শুদ্ধিঃ প্রণতস্য হরেঃ পুনঃ ১০ ৷৷ আঘ্রাণ গন্ধ পুষ্পাদে নিৰ্মাল্যস্য তপোধনে। विश्विक्षः माजनस्रमा युनिमानि বিধীষতে ১১ ৷ ১২ ৷৷ তত্ত্ৰ পুষ্পা-দিক° যচ্চ ক্রস্কুপাদ যুগাপিত°। তদেব পাবন॰ লোকে তদ্ধি সর্ব বিশোধ্যেৎ ॥ 🟶 ॥ পূজা চ পঞ্চ-ধা প্ৰোক্তা তাসাণ ভেদান্ শৃণুষ মে। অভিগমন মুপাদান যোগঃ স্বাধ্যায় এব চ ॥ ইফীঃ পঞ্চ প্র-কারার্চ্চাঃ ক্রমেণ কথ্যামি তে 🛚 তত্রাভিগমন নাম দেবতা স্থান गार्जन॰ ॥ উপলেপন निर्माना দূরীকরণ মেব চ ১। উপাদান नाम शक्त भून्यानि हरान यथा २ ॥ ইফা নাম হি চেফীদেঃ পূজন-ঞ্চ যথাৰ্থতঃ ৩। স্বাধ্যায়ো মন্ত্ৰ-রাজ্স্য অর্থ সন্ধানতো জপঃ।। সূক্ত স্ত্রোত্রাদি পাঠশ্চ হরেঃ সণ্-কীৰ্ত্তন° তথা। তন্নাম শান্ত ভ্যা-সশ্চ স্বাধ্যায়ঃ পরিকীর্ত্তিতঃ ৪ ৷৷ যোগো নাম সুদেবস্য ায়নে যৈব ভাবনা ৫ । ইতি পঞ্চপ্ৰ-কারার্চ্চাঃ কথিতা স্তব সুত্রতে ॥ ইতি পাদ্মে পাতালখণ্ডে ১০ অ-शायः ॥ <br/>
॥ <br/>
थायः ॥ <br/>
॥ <br/> খাদ্যাখাদ্য । সায় প্রাত র্ছি-জাতীনা॰ শ্রুত্তুজ মশন॰ ত-থা। বিফুভক্তাবশিষ্টেন দিন পাপাৎ প্রমূচ্যতে ॥ অন্ন॰ ত্রন্ধা রসো বিফুঃ খাদ্যমান চোক্রন্ । এবং জ্ঞাত্বা তু যো ভূঙ্কে সো

**২মদো**ষৈ ৰ্ন লিপ্যতে ।। অলাবু॰ **ব**र्जुनाकादः ममृदशः मदऋनः। তাল শুক্লান্ত বার্ত্তাঙ্গণ ন খাদে-দৈক্ষবো জনঃ।। বটাশ্বখার্ক প-ত্রেষু সম্ভী তিন্দুক পত্রযোঃ। 'काविमात्र कमटम ह न थारमरेष-**यः** त। क्षांवरः। वर्जरम्छ्-জু॰ দধি ভাত্রপদে ত্যজেৎ। দু-**গ্ধ**ন্ত আশ্বিনে মাসি কার্ত্তিকে চা-নিষণ ত্যজেৎ।। দূগ্ধ নমঞ্চ জন্নী-র॰ যদিফো রনিবেদিত । ধীজ-পূর্ঞ শাক্ষ প্রত্যক্ষলবণ স্তথা ॥ যদি দৈবাক্ত ভূজান্তে তদা ত-মামক॰ স্মরেৎ। কলায॰ কঙ্গ ধা-ন্যানি শাক্ষ হিলমোচিকা॰॥ ষষ্টিকা কালশাকঞ্চ মুন্তক জ্ৰ-সুক তথা। লবণে সৈদ্ধব প্রো-্ক্ত॰ বচাচ দধি সপিষী॥শগো-২ন্দৃতসার্ঞ পনসামু হরীতকী । পিপ্ললী জীরকক্ষৈব নাগরঙ্গক **তি** उड़ि ॥ कनवी नवनी शाबी ফলান্যগুড় মৈক্ষবং। অতৈল-পক্ব॰ ভুঞ্জীত হবিষ্যেষ্ প্রচক্ষতে ।। ইতি পাদ্যে প'তালখণ্ডে ১১ ञ्रशायः॥ 🗱 ॥ ञथ देवकवन ক্ষণবিশেষাদিঃ। মাহাত্ম্য মথ ভ-্ক্তানা যৎ কাৰ্য্য যচ্চ লক্ষণ ॥

। क्रतीय॰ इत्त्र दिश्र मावशान-মনাঃ শৃণুঃ ।। হরি রেব সদ। সে-ব্যো নান্যো যস্য মহাত্মনঃ 1 লোকস্য জগদারাধ্যো হরিভক্তঃ म উচাতে।। অনন্য নিৰ্ম্বাল্য ভূ-জে। ভক্তা স্তে ২নন্য মানসাঃ। গোবিন্দোপাসকা যে তু নিত্য দেবান্তর বিনা।৷ অনন্য ধিষণো 'খনন্যহৃদযোখনন্যদেবকঃ।কে-বল॰ হরিসেব্যঙ্গ স ভক্তঃ পরি-কীর্ত্তিতঃ ॥ সত্ত্বু সত্ত্বাশ্রয়ণ সত্ত্ব-গুণ সেবেত কেশব । যে। ২নন্য-ত্বেন মনসা সাত্ত্বতঃ সমুদাহতঃ ।। সর্বদেবান্ পরিত্যজ্য নিত্য ভগবদাশ্রয়ঃ। রত স্তদীষ সেবা-ষা॰ স ভাগবত উচ্যতে ।। বিহায कामा कर्मामीन् ज्यापकाकि-ন॰ হরি॰। সত্য• সত্ত্বগুণোপেতে। ভক্ত্যা তং সাত্ত্বতং বিদুঃ ৷৷ মুঙ্গন্দ-পাদ সেবাযা॰ তন্নাম শ্রবণেপি চ । কীর্ত্তনে চ রতো ভক্তো নায়ঃ স্যাৎ স্মরণে হরেঃ ৷৷ বন্দনার্চ্চন-যো ভক্তি রনিশং দাস্য সথ্যযোঃ । রতি রাত্মার্পণে যস্য দৃচানন্তস্য সাত্তঃ ॥ স্মৰ্ত্তব্যঃ কীৰ্ত্তনীয়শ্চ শ্ৰোতব্যঃ পূজ্য এব চ। যস্যৈকে। বিকু রারাধ্যো বৈক্বঃ সমুদাক্ব-

**टः ॥ यथानार्काणि म**स्रुक्तेः मग-চিত্তো জিতেন্দ্রিষঃ। হরিপাদা-শ্রযো লোকে বিপ্রাঃ সাধু রনি-ন্দকঃ ।। নিবৈরঃ সদযঃ শান্তো দম্ভাহন্ধার বজিতঃ ৷ নিরপেকো মুনি বী তরাগঃ সাধু রিহোচ্যতে ॥ লোভ মোহ মদ ক্রোধ কাম:-দি রহিতঃ সুখী। কৃষণজ্জ্মি শরণঃ माधूः मश्किः ममनर्गनः॥ यिः ফুপাসনা নিতা বিফুঃ র্যস্যেশ্ব-(त। भूत्न। शृंदका। यतेमाक विक्ः। मापित्का त्नात्क म त्विकवः॥ হরেঃ সর্বাবতারাণাণ মৎস্যাদীনা মুপাসকাঃ। তগ্মশ্রেষ্টা অনন্যা-শ্চেষেক্তবা স্তে ন সংশযঃ॥ य-দিকৌ রযুনাথস্ত নৃদিণহো বাম-নো হরিঃ। এতমন্ত্রো বরাহাদি र्वामुरानवः म दिवक्षवः ॥ निरकः। रू-গাসকো দাস স্তন্মন্ত্রেষ্ট স্তদাশ-ষঃ। তমাহু বৈৰুৱু লোকে বিষ্ণু-সেবাপরাষণ ৷৷ সাধ্বী যথা পতি॰ নারী নান্য° জানাতি ত° বিনা। জগদীশণ তথানন্যে। যদি বিষ্ণুণ **স** বৈষ্ণবঃ ।। সমচিত্তে। মূনিঃ পূ-তো গোবিন্দ চরণাশ্রযঃ। সর্ব-ভূতদযঃ কাৰ্ফো বিবেকী সাধু-রুত্তমঃ ॥ ক্লফার্পিত প্রাণ শরীর

বুদ্ধিঃ শান্তেন্দ্রিয স্ত্রী সুত সম্প-দাদিঃ ৷ আসক্তচিত্তঃ শ্রবণাদি ভক্তিমদ্যেহ সাধুঃ সততঃ হরে র্যঃ ৷৷ ক্রফাশ্রায়ঃ ক্রফকথানুর-ক্তঃ ক্লফেন্টনন্ত্ৰ শৃতি পূজনীয়ঃ। क्रकानिশ धान मना जुनत्ना (या देव म माधु मू निवर्या कार्खः ।। যস্যেষ্ট॰ শ্রীভাগবত॰ শাস্ত্র**• শ্রী** ভগবান্ হরিঃ। ভগবত্যা সমণ লক্ষ্যা ভক্তা ভাগবতশ্চ সং ॥ যে ক্লফ্ট শ্রবণাদ্যর্হ। যে তদুচ্ছিষ্ট-ভোজিনঃ। যে ফ্লকোপাসকা লোকা দাসা স্তে পরিকীর্ত্তিতাঃ।। ইতি পান্মে উত্তর্থণ্ডে ৯৯ অধ্যা-যঃ।। 🕸।। অপিচ। ব্ৰহ্মোবাচ। অহোধ্যানৈরপিধ্যাতৃংদেবৈ স্তৃ ন হি শক্যতে। স স্ব॰ কৈলব দে-হেষু তিষ্ঠদীত্যদ্ভুত মহৎ।। ক্ষণ মাত্র মপি স্বামিণস্তক্টে দ্ববি ন কিণ ভবেৎ। স স্ব॰ বৈক্ষব সঙ্গেন ভূম **দীত্যজুত মহৎ ॥ কে বৈ**শ্বাঃ কৈটভারে কি॰ বা তেষাঞ্চ লক্ষ-ণণ। কথণ জ্ঞেয়াশ্চ তে সৰ্বে তন্মে কথ্য কেশব।। ভগবানুবাচ। বৈ-ফবানা॰ লক্ষণানি কল্পকোটি শ-তৈ রপি।। সম্যহক্তু॰ ন শক্ষোমি সংক্ষেপাৎ শূণ্ সত্তম ৷ সংসালো

বৈক্ষবাধীনো দেবা বৈক্ষব পা-লিতাঃ।। অহ্ঞ বৈক্রাধীন স্ত-স্মাৎ শ্রেষ্ঠাশ্চ বৈক্ষবাঃ। ক্ষণ-<u>गाज मिश उन्नन् विश्वाय देवस्व</u> জन॰॥ ठिश्रांगि नार मनाज दैव-·ফবো মম বান্ধবঃ। কাম ক্রোধ বিহীন৷ যে হি॰স৷ দম্ভ বিবৰ্জ্জি-তাঃ।। লোভ মোহ বিহীনাশ্চ তে জেয়া বৈক্ষবা জনাঃ।৷অনৎ-সুরা দ্যাযুক্তাঃ সর্বভূত হিতৈ-ষিণঃ ৷৷ সত্যোক্তি ভাষিণ শৈদৰ জ্ঞেয়া স্তে বৈক্ষবা জনাঃ। পিতৃ **ভক্তা মাতৃ** ভক্তা জ্ঞাতি পোষণ তৎপরাঃ।। ধর্ম্মোপদেশিনে। যে চ জ্বেষা স্তে বৈক্ষবা জনাঃ। স-নান॰ যে চ পশ্যন্তি ত্বাঞ্চ মাঞ্চ মহেশ্বরণ।। স্ববিত্তি পূজা মতিথে ৰ্জেষা স্তে বৈক্ষবা জনাঃ। বেদ-বিদ্যানুরক্তা যে দ্বিজভক্তিরতাঃ সদা !! নপু•সকাঃ পরস্ত্রীষু জ্ঞেষা স্তে বৈক্ষ্বা জনাঃ। একাদশীব্ৰ-ত॰ যে চ ভক্তিভাবেন সৰ্বতে॥ গাযন্তি মম নামানি জ্ঞেষা স্তে বৈক্ষব। জনাঃ। দেবাযতনক-र्ভात खननीयानायातिनः ॥ क-<u> ভাক্ষধারিশে যে চ জ্রেয়। স্তে</u> रिक्ता जनाः। मथ्यापमिनिटेन

র্যেষাণ সিক্তানি মন্তকানি বৈ ॥ মম নৈৰেদ্য মশ্বতি জেয়। স্তে বৈষ্ণবা জনাঃ। শুখ্য চক্র গদ। পদৈ রক্ষিতানি মমাযুধিঃ !৷ এক্ষ-ন্ যেষাণ শরীরাণি জ্ঞেষা স্তে বৈ-ষ্ণবা জনাঃ। কর্ণযো শ্রেচব শী-র্ষেষু তুলসীপত্র মুক্তমণ।। সততং দৃশ্যতে যেষা॰ জ্বেষা স্তে বৈক্ষ জনাঃ: তৃণানি তুলসীমূলাদেয চিন্বন্তিনরোত্তমাঃ!! সিঞ্চিত্তল-সী° ষে চ বিজ্ঞেষা স্তে চ বৈষ্ণব¦ঃ । তুলসীমূলমৃদ্ভিশ্চ তিলকানি নযন্তি যে ॥ তুলসীকাষ্ঠ পৰ্টৈশ্বন্চ विटब्बरा देवकवा जनाः। शका-ন্ধানপর। যে চ গঙ্গানানপরাধ-ণাঃ।। গঙ্গামাহান্ম্যবক্তারে। বি-জ্ঞেয়। স্তে চ বৈক্ষবাঃ । ধাত্ৰীক-ল॰ সুজো যেষা॰ গলেষু কমলা-সন ॥ যজন্তি যে চ তৎ পত্ৰৈ ৰিজেয়া স্তে চ বৈক্ষবাঃ। শাল-গ্রামশিলা যেষাণ গৃহে বসতি স-ৰ্বদা ॥ শাস্ত্ৰ॰ ভাগবতক্ষৈব জ্ঞে-যা তে বৈশ্ব জনাঃ৷ সমার্জ্য-স্তি যে নিত্য॰ মম স্থানানি সর্বদ। ৷৷ দীপণ ষচ্ছন্তি তত্রৈব জ্রেবা স্তে रेवरूवा जनाः। भीतः ययानितः ষে চ সৰ্বতে নূতন পুনঃ ॥ তত্ৰা-

যনঞ্চ শোভাঞ্চ জ্ঞেয়া স্তে বৈক্ষ-বা জনাঃ। <mark>অভয° যে চ যচ</mark>্ছন্তি ভীরুভ্য শতেরানন ৷৷ বিদ্যাদান-ঞ্চ বিপ্রেভ্যো জ্বেষা স্তে বৈক্ষরা জনঃ। কুতৃট্প্রপীডিতেভাশ্চ त्य यष्ड्छाम ययू ह ॥ अयूर् त्य রোগিশুশ্রমাণ জ্বেয়া স্তে বৈক্ত-বা জনাঃ। আরামকারিণো যে চ পিপ্ললারোপিনো ২পি চা৷ গো-সেবা° যে চ স্বস্তি জ্ঞেষা স্তে বৈশ্বা জনাঃ। অত্যন্ত ভক্তা যে বন্ধন্ পিতৃযক্ত প্ৰদৰ্ভে ॥ দৰ্বন্তি দীনশুশ্ৰুষাণ জ্বেয়া স্তে বৈশ্যবা জনাঃ । তডাগ গ্রামক-ৰ্ত্তারঃ কন্যাদান প্রদাশ্চ যে॥ সেবত্তে স্ব গুরৌ যে চ জ্রেয়া স্তে বৈশ্ব। জনাঃ। সেবস্তে জ্যেষ্ঠা ভগিনীং জ্যেষ্ঠং ভ্রাতর মেব চ ৷৷ পরনিন্দাণ ন স্বস্থিত জ্ঞেয়া স্তে বৈশ্বা জনাঃ। দেব-স্বং ত্রান্ধণদ্রব্যং পরস্বঞ্চ চতুর্মুখ ।। পশ্যন্তি বিহবদেষ চ জ্রেষা স্তে বৈষ্ণবা জনাঃ। পাযন্তসঙ্গর্হি-তাঃ শিবভক্তিপরাষণাঃ॥ চতু-ৰ্দশীত্ৰতরতা জ্ঞেষা স্তে বৈষ্ণবা জনাঃ। বহুনাত্র কিসুক্তেন ভাষি-তেন পুনঃ পুনঃ। মদর্চাণ যে চ

পৰ্বস্তি জেয়া স্তে বৈক্ষবা জনাঃ । दिक्कदियु खनाः मर्स्व तनायत्न-শো ন বিদ্যতে॥ তত্মাচ্চতুমু খ দ্ব-ঞ্চ বৈষ্ণবো ভব সাম্পূত**া সমা**-রাধ্য মাণ নিত্যণ ক্রিয়াযোগেঃ প্ৰজায়তে।। সৰ্ৰ মেব সুভদ্ৰ° তে ভবিষ্য**তি ন সংশযঃ ।** ভূষঃ পূৰ্ব-স্থিত মিব সৃজ্যতা॰ সকল॰ জগৎ।। ইত্যুক্ত্বান্তৰ্দধে দেব স্তত্ত্বৈব জ-গদীশ্বঃ। ততস্ত পূৰ্ববন্তুন্ধা সৃ-खेवान् मकनः जग । कियारया-গৈ হরি থফু জগান পরম পদ । যে পঠন্তি মনাধ্যায়ণ ভক্ত্যা না-রাষণাগ্রতঃ ৷৷ সর্বপাপবিনিশ্বক্তা অন্তে যান্তি হরেঃ পদ°। ইতি পাদ্মে ক্রিয়াযোগসারে ২ অধ্যা-यः ॥ ऋ॥ कानिक उदाह। जा-তিস্মরেণ কথিতো রহস্যঃ পর-মো মন। যনকিম্বরযোর্যো ২ভূৎ সংবাদ স্ত॰ ত্রবীনি তে ।। স্বপুরুষ যভিবীক্য পাশহস্ত<sup>\*</sup> বদতি যমঃ কিল তস্য কণ্মূলে। পরিহর **ম**-ধূসূদনপ্রথান্ প্রভু রহ মন্য-নৃণা॰ ন বৈক্বানা॰ ॥ ইতি 🕮-বিষ্পুরাণে তৃতীযেণশে ষমগীত• ৭ অধ্যাযঃ ॥ 🗱 ॥ অপিচ। কর্ম-ক্ষ্যানি কর্মাণি যতঃ সাধু ইরিঃ

देवशिम

স্বয়°। মন্যে ন ভৌতিকো দেহে। বৈক্ষবস্য জগত্রযে।। ইতি ক-ক্ষিপুরাণে ৩• অধ্যাযঃ॥ देवकवी खी विक्शिक्शिष्या। এষা ত্রিশক্তি রুদ্দিষ্টা নয সি-. দ্ধান্ত গামিনী। এষা শ্বেতা প-রা সৃষ্টিঃ সাদ্বিকী ত্রন্ধ সংস্থিতা ।। এरेयत ब्रक्ता द्रकिम रेत्रक्री পরিকীর্ত্তিতা ৷ এবৈব ক্লফা ভ-মসি রৌজী দেবী প্রকীর্ত্তিতা।। অফীদশ তথা কোট্যো বৈক্ষ-বা। ভেদ উচ্যতে। যা বিক্ষো রাজসী শক্তিঃ পালিনী চৈব বৈষ্ণবী।। ইতি বারাহে ত্রিশ-ক্তিমাহাত্ম্য নামাধ্যায়ঃ॥ অ-পিচ ৷ শঙ্খ চক্র গদাধারী বিফ্ মাতা তথারিহা। বিক্টুৰূপাথবা **(मर्वी देवक्क्वी एउन गीयएउ ॥** ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ অধ্যায়ঃ য় অপরঞ্চ। বিফুভক্তা বিকৃৰ-পা বিষ্ণোঃ শক্তি স্বৰ্কাপণী। मृत्छी 5 विकूना मुखी देवस्वी তেন কীৰ্ত্তিতা।। ইতি ব্ৰহ্মবৈব-র্ত্তে প্রকৃতিখ:ও ৫৪ অধ্যাষঃ ১১ দুগা। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ গ-का। यथा शवाभूतां १०। विरक्षाः পাদপ্রসূতাসি বৈষ্ণবী বিষ্পূ-

জিতা। পাহি ন স্তেনস স্তস্মা-দাজন্ম মরণান্তিকাৎ ॥ ইত্যা-দি আহ্নিকাচারতত্ত্বে স্নানার্থ গঙ্গাবাহন মন্ত্ৰঃ।! অন্যচ্চ। বি-ফুপাদ প্রসূতাসি বৈক্ষবী নাম ধারিণী। সর্বত্র রক্ষ মাণ নিত্যণ গঙ্গা ত্রিপথ গামিনী ॥ ইতি গঙ্গাকবচ॰ ॥ অপরাজিতা । ইতি শব্দচন্দ্রিকা ।। শতাবরী । रें जिक्रिक्तिं।। जुलभी। ইতি শব্দৰালা ৷৷ বৈসারিণঃ পু॰ মৎসাঃ। ইত্য-मदः ॥ বৈদূচন ক্লী নাট্যেপুরুষস্য-স্ত্রীবেশধারণ । ইতি কেচিৎ ॥ বৈহার্য্যঃ ত্রি পরিহাসেন লাল-नीयः। भागान मद्यक्तापिः। ३-তাজ্জুনমিশ্রঃ। যথা। যথা বা-लियू नातीयू देवशार्यायू ठरेथ-ব চ । সঙ্গরেষু নিপাতেষু তথা-পদ্যদনেষু চা৷ অনৃত নোক্ত পূৰ্ব॰ মে তেন সত্যেন খণ ব্ৰজ ৷ ইতি মহাভারতে উদেয়াগপৰ্ব।। বৈহাসিকঃ পু॰ বিহাসংকরো-তি যঃ। ভণ্ড ইতি খ্যাতঃ। তৎ-পৰ্য্যায়ঃ। বাসম্ভিকঃ ২ কেলি-কিলঃ ৩ বিদূষকঃ ৪ প্রহাসী ৫

প্রীতিদঃ ৬। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। वार्छ। जी नामी। यथ। পোটा (वाहे। ह रहिंहे ह मानी ह कहे-হারিকা। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ বোডঃ পু॰ গুবাকঃ।ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। জটাধরে ভূরিপ্র-ষোগে চ ঝোড ইতি পাঠঃ॥ বোড্রঃ পুং গোনসসর্পঃ। বোডা ইতি ভাষা। যথা। গোনাসে। মঙলী বোড়ুঃ। ইতি ভরতধৃত বিক্রমাদিত্যঃ।। মৎস্যবিশেষঃ 1 ইতি মেদিনী।। বোড়ী স্ত্রী পণচতুর্পাণ্শঃ। বুডি ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী।। বোচবাঃ ত্রি বহনীয়ঃ। বাহুঃ । বহু ধাতো স্তব্য প্রত্যযেন নি-ষ্পান্ধঃ। ইতিমুগ্ধবোধব্যাকরণং॥ বোঢাঁ পু ভারিকঃ।। মূচঃ।। পরিনেতা। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ मृठः। ইতি মেদিনী॥ অন-ড়ান্।। ঋষভঃ। ইতি রাজ-निर्घकेः ॥ ताष्ट्रः पुः मूनिवित्नसः। स्था। সনকশ্চ সনন্দশ্চ তৃতীয়শ্চ স-নাতনঃ। কপিল শ্চাসুরি শৈংব

বোঢ়ঃ গঞ্চশিখ স্তথা।। সর্বে-

তে তৃপ্তি মাযান্ত মন্দত্তেনাযুনা 🎚

मन। ইত্যাङ्गिकानात्रज्वः॥ বোণ্টঃ পু• বৃস্ত•। বোঁটা ইতি ভাষা। ইতি শব্দরত্নাবলী।। किन्न निर्मिक्त्र अगामशास्त्रीय॰। যথা মূলগ্ৰন্থে। তথা নোঁট ইতি খ্যাতে বৃস্ত প্রসববন্ধন ।। বোদঃ ত্রি আর্ডঃ। ইতি ত্রিকা-ওশেষঃ ॥ वानानः श्रुः मद्मावित्नसः! বোযালি ইতি ভাষা। তৎ-পर्यग्रयः । मङ्मु मःखी २ পाठी-নঃ ৩ বদালকঃ ৪1 ইতি শব্দ-तञ्जावनी ॥ লেখকঃ। ইতি বোরকঃ To. ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ বোরটঃ পু॰ জন্দপুষ্ণ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। বোরপড়ী স্ত্রী মন্দুরা । **মাদুর** ইতি ভাষা। ইতি শব্দমালা ॥ বোরবঃ পু॰ ধান্যবিশেষঃ ! বোরো ইতি ভাষা। অস্য গুণাঃ । বোরবস্ত বুধৈঃ প্রে\জ স্তি দোষস্য প্রকোপণঃ। মধুর শচায়-পাকশ্চ ত্রীহিঃ পিত্তকরো শুরুঃ ॥ ইতি রাজবল্লভঃ॥ বোরখানঃ পু॰ পাটলবর্ণাশঃ 1

ইতি হেমচন্দ্ৰঃ॥

বোলণ ক্লী স্থনানখ্যাত বলিক্

জব্যণ তৎপর্য্যায়ঃ । রক্তাপহণ

২ মুঙ্ ও সুরসণ ৪ পিওকণ ৫
বিষণ ৬ নির্লোহণ ৭ বর্ধরণ ৮
পিঙ্ণ ৯ সৌরভণ ১০ রক্তগন্ধকণ

১১ রসগন্ধণ ১২ মহাগন্ধণ ১৩
বিশ্বণ ১৪ শুভগন্ধকণ ১৫ বিশ্বণ গন্ধণ ১৪ শুভগন্ধকণ ১৫ বিশ্বণ গন্ধণ ১৬ গন্ধরসণ ১৭ বিশারিঃ
১৮ ৷ অস্য গুলাঃ ৷ বোলঞ্চ কটু
তিক্তোক্ষণ ক্ষায়ণ রক্তদোষনুৎ ৷ কফ পিত্তাম্যান হন্তি প্রাদ্ধাদি রক্তাপহণ ॥ ইতি রাজ্তা নির্যান্টঃ ॥
বোলঃ পুণ রসগন্ধঃ ৷ ইত্যমরঃ ॥

বোলঃ পু॰ রসগন্ধঃ। ইত্যমরঃ॥ বোলকঃ পু॰ লেখকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

বোলাইঃ পু॰ অশ্ববিশেষঃ । যথা। বোলাই স্তৃষ মেব স্যাৎ পাঞ্জেশর বালধিঃ। ইতি হে-মচক্রঃ ।।

বোহিখ° ক্লী যানপাত্ৰ° 1 যা-হাজ ইতি ভাষা 1 ইতি হেম-চন্দ্ৰঃ 11

বৌদ্ধ° ক্লী বৃদ্ধকৃতনিরীশ্বর-শাস্ত্র°। তৎ সর্বৈঃ শাস্ত্রকারেঃ শুভিত° অতএবাগ্রাহু°।। জিন-ধর্মঃ। যথা। ততো বৃহস্পতিঃ

শত্রু মকরোদ্বলদর্গিত । এহ-শাস্তি বিধানেন পৌষ্টিকেন চ কৰ্মণা ৷৷ গৰাথ মোহ্যানাস রজি পুত্রান্ বৃহস্পতিঃ। জিন-ধৰ্মণ সমাস্থায় বেদবাহুণ স বে-দবিৎ ॥ বেদত্রয়ী পরিভূকী শ্চকার ধিষণাধি**পঃ। বেদ**বা-হ্বান্ পরিজ্ঞার হেতুবাদ সমন্বি-তান্।। জঘান শক্তো বজেুণ সর্ব ধৰ্মবহিষ্কৃতান্। ইতি সাৎস্যে **সোমব॰শা**নুকীর্ত্তন॰ নাম ২৪ অধ্যাयः ॥ **वृक्षम**यक्तिनि <u>जि ॥</u> তৎপৰ্য্যাযঃ। স্বাহা ২ শ্ৰৌষট্ ৩ ব্যট্ ৪ স্বধা ৫। ইতামরঃ ॥ এতে পঞ্চ শব্দ। দেবহবিদ্যানে বহ্নিমুখাহুতৌ বর্ত্তত্তে। দেবায र्विषा मानः प्रवर्विकानः। তত্র দেবা ইন্সাদযঃ অত্র পি-তরো দেবতা ইতি স্মৃতে স্তেপি দেবাঃ হবিদান ইভানেন এতে মন্ত্ৰ। ইতি সূচিত । অমন্ত্ৰৱে স্বাহাযেৰ হবিভূজি মিতি রযুঃ ৷ স্বাহাব্যৰণ মন্ত্ৰভেদে স্ত্ৰিয়াণ স্বা-সাগ্নিষোবিতীতি কোষান্তরণ । স্বাহা দস্ত্যাদি ৷ শ্রৌষট্ তাল-वाकि मृर्क्तना मधाः। विविध्वयछे

षय॰ मूर्कना नवा॰। यथा मछा।-দি। ইন্দ্রায় স্বাহা ইত্যাদি এ-যোগঃ। ইতি ভরতঃ।। ব্যংশকঃ পু" গর্মতঃ ৷ ইতি ত্রি-কাওশেষঃ ॥ ব্য॰সকঃ পু॰ ঘূর্ত্তঃ।ইতি হেন-ठिखः ॥ ব্যু সিতঃ ত্রি প্রতারিতঃ। ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ।। ব্যক্তঃ ত্রি প্রাক্তঃ। ইত্যমরঃ॥ च्कु हैं। इंडि (निमनी ॥ विकुः। যথা। ব্যক্তো বাষু রংগক্ষজঃ। ইতি তস্য সহসূন।সস্তোত্র° ॥ ব্যক্তদৃষ্টার্থঃ পু॰ সাক্ষী। তৎ-পর্যায়ঃ। প্রত্যক্ষী ২। ইতি ত্রিকা**ওশে**যঃ lt ব্যক্তৰণঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। যথা। অদৃ:শ্যা ব্যক্তৰূপশ্চ সহসূজি দনস্তজিৎ। ইতি তদ্য সহসুনা-সস্তোত্রণ।। স্পাঠ্টকপযুক্তে ত্রি।। ব্যক্তিঃ স্ত্ৰী গৃথগান্ধিক। ইত্য-মরঃ।। জনঃ। ইতি হেমচক্রঃ।। - স্পষ্টতা চ ॥ ব্যগ্ৰঃ ত্ৰি ব্যাসক্তঃ ৷৷ আঙ্গলঃ ৷ ইত্যমরঃ ।। বিফুঃ। যথ।। প্রগ্র-(হ) निज्ञरः। व्याद्या देनकण्-

শো গদাগ্রজঃ। ইতি তদ্য সহ-

সুনামজোত্র° 11 शृ (छकः शिनाकः। ব্যক্ষঃ ইতি মেদিনী।। যুবারাগবিশে-যঃ।তমা লকণ হব। ক্রোধা-যাস প্রজ্ঞাতো বাৰ্গ গিতেন সংযুতঃ। মুখ্যাগ্যা সহসা মণ্ড-ল॰ বিসৃজত্যতঃ ।। নীরুজ॰ ত-নুক॰ শ্যাব॰ মুখে ব্যঙ্গ ভমা-দিশেৎ। ইতি মাধবকরঃ।। 🗱।। তস্য চিকিৎসা। বটাঙ্কুরা মসূ-রাশ্চ প্রালেপাদ্যন্ত নাশনঃ 1 ব্যঙ্গে মঞ্জিষ্ঠবা লেপঃ াশভো মধুযুক্তযা।। অথবা লেপন॰ শ-ন্ত শশদা রুধিরেণ চ। জাতী **ফলস্য লেপস্ত ২**রেদ্য**স্থ** নী-विका॰॥ বটন্য পাঙুপত্রা ।।-लठी इक्कान्य । क्रष्ठ वाली-যক্ত লোধুত এভি ৰ্জ্লেগত প্ৰযো-জয়েৎ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ वाङ्गः जि वाञ्चनया (वारधा) २ थी । যথা। বাচ্যোথোভিধ্বা বো-ধ্যে লক্ষ্যে লক্ষ্য মতঃ ৷ ব্য-জ্যো ব্যঞ্জনয় তাঃ স্যু স্তিসূঃ শব্দস্য শক্তবং।। ইতি সাহিত্য-দর্পণে ২ পরিচ্ছেদঃ 11 वाह नि वाहि ॥ मश्दल। इंडि ক্বিক্রাফ্রনঃ ॥ ব্যাজ শ্চুলঃ।

শ বিচতি সত॰ খনঃ । ছলযতি ইত্যৰ্থঃ। অবিচীৎ বিব্যাচ। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ ব্যজঃ পুং ব্যজনং। বিপূর্ব অজ ধাতে। রল্ প্রত্যযেন নিষ্ণানঃ॥ ব্যজন॰ ক্লী তালবৃস্তক । পাখা ইতি ভাষা । ইত্যমরঃ ম অস্য मागाग्रधनः। मृष्ट्। नारं ठ्का যশ্মশ্রম নাশিত্বং ।। তালব্যজন গুণঃ ত্রিদোষ শমনত্বণ লঘুত্বঞ্চ ।। বংশব্যজন গুণঃ। ৰাক্ষত্বং। উক্তম্বণ। বাযু পিত্ত কারিদ্বঞ্চ॥ বেত্র বস্ত্র নযূরপুচ্ছ ব্যজন গুণঃ । ত্রিদোষনাশিত্বণ ।। বালব্যজন গুণঃ। তেজস্করত্ব॰। মহ্মিকাদি নিবারকত্বঞ্চ। ইতিরাজবল্লভঃ॥ वाञ्चकः पु॰ অভিনयः। ইত্য-মরঃ ৷৷ দ্বে হৃদ্দাত ক্রোধাদি ভা-বাভিব্যঞ্জকে। ব্যনক্রীতি ব্য-ঞ্জকঃ ৷ অনু ধ ঞি গতি মুকণে

**৭কঃ। আঙ্গিক সাত্ত্বিক**া-

হাৰ্য্য ভেদাদ্ব্যঞ্জক শ্চত্ৰিধঃ । অভিমুখ নীয়তে অথো খনেন

ইতি অভিনযঃ। নীঞ প্রাপণে

অন্। হস্তাদিভিঃ শত্রঘাতাদি

সূচন মভিনযঃ । ঘটাদ্যাকার

ভূচক**ণ করাদি সংস্থান মভিন**যঃ

ইত্যন্যেপি। ইতি ভরতঃ ॥ ব্য-ঞ্জনযা প্রতিপাদকঃ । ইতি সা-হিত্যদর্পণঃ ॥

राञ्जन॰ क्ली मृल भाकानि। ইতি ताजनिर्धनिः ॥ ७९१र्यायः । তেমন ২ নিষ্ঠান ৩। ইত্য-মরঃ ।। অস্য গুণাঃ । ব্যঞ্জন॰ শাক মৎস্যাখ্য হৃদ্য বৃষ্যঞ্চ পুষ্টিদ°। দ্রব্যেণ যেন যেনেহ ব্যঞ্জন॰ নৎস্য মা॰সবোঃ ॥ ত-স্যা ত্যা ত্যোশ্চেত্রদ্পুণ দো-ধৈ বিভাবষেৎ ॥ ইতি রাজ-বল্লভঃ ৷৷ ব্যঞ্জনবিশেষগুণাঃ ত-ত্তৎ শব্দে দ্রফব্যাঃ ॥ 🏶 ॥ চিহ্ন° ।। শাশ্রু ।। অব্যবঃ ।। দিন°। ইতি মেদিনী।। স্ত্ৰী পু°-সযো রশুদ্ধদেশঃ। স তু উপস্থঃ ।। অর্দ্ধমাত্রকণ। সত্ ককারাদি ক্ষকারান্তবর্ণঃ। ইতি ধরণিঃ।। বা**ঞ্জনা** দ্রী শব্দসাবৃত্তিবিশেষঃ । ত্যা। লক্ষণ যথা। বিরতা সভিধাদ্যাসু যয়ার্থে। বোধ্যতে পরঃ। সা বৃত্তি ব্যঞ্জনা নাম শ-कमार्थापिकमा ह ॥ सक वृक्ति কর্মণাণ বির্মা ব্যাপারাভাব ইতি নধেনাভিধা লক্ষণা তাৎ-পর্য্যাখ্যাসু তিস্যু বৃত্তিষু সং স্ব

মথণ বোধযিত্বা উপক্ষীণাসু যযা-ন্যো হর্থো বোধ্যতে সা শব্দস্যা-র্থস্য প্রকৃতি প্রত্যেষাদেশ্চ বৃত্তি ব্যঞ্জন ধনন গমন প্রত্যায়নাদি ব্যপদেশ বিষয়। ব্যঞ্জনা নাম। তত্র অভিধা লক্ষণা মূলা শব্দস্য वाक्षना विशा ॥ 🕸 ॥ जिल्हिशामू-লা মাহ। অনেকার্থস্য শব্দস্য সংযোগাদ্যৈ নিষ্প্রিতে। একত্রা-র্থে খন্যধী হেতু ব্যঞ্জন। সাভি-ধাশ্রযা। আদি শকাদ্বিপ্রযে। ্গাদয়ঃ। উক্ত॰হি। সংযোগো বি-প্রযোগশ্চ সাহচর্য্যৎ বিবোধিতা । অর্থঃ প্রকরণণ লিঙ্গণ শব্দস্যা-नामा मिषिः॥ मामर्था (मोिछ-তী দেশঃ কালো ব্যক্তিঃ স্বরাদ-ষঃ৷ শব্দার্থস্যানবচ্ছেদে বিশেষ স্মৃতি হেতবঃ ।। ইতি। সশগ্ৰ চ-ক্রোহরি রিত্যত্র শঙ্ম চক্র সংযো-গেন হরি শব্দো বিষ্ণু মেবাভি-ধত্তে। অশঙ্খচক্রো হরি রিতি তদ্বিষোগেন তমেব। ভীমার্জু না-বিতি অৰ্জুনঃ পাৰ্থঃ। কৰ্ণাৰ্জুনা বিতি কর্ণঃ সূতপুত্রঃ। স্থাণুং বন্দে ভবচ্ছিদে ইতি স্থাণুঃ শিবঃ। সর্ব॰ জানাতি দেব ইতি দেবে৷ ভবান্ । জপিতো মদরশ্বজঃ ইতি মকর- ॥

ধজঃ কামঃ। দেবঃ পুরারি রিতি পুরারিঃ শিবঃ। মধুনামত্তঃ পিক ইতি মধু র্বসন্তঃ। পাতুবো দযি-তা মুখ মিতি মুখণ সাণমুখ্যণ ৷ ভা-তি গগনে চন্দ্ৰঃ ইতি চন্দ্ৰঃ শশী। নিশি চিত্রভানু রিতি চিত্রভানু বঁক্লিঃ। ভাতি রথাঙ্গ মিতি নপু॰-সক ব্যক্তা রথাঙ্গ চক্রণ। স্বরস্ত বেদএব বিশেষ প্রতীতি ক্লব্ন কা-ব্য ইতি তস্য বিষয়ে নোদাহ্বত ৷ ইদঞ্চ কে ২প্যসহমানা আহঃ স্বরোপি কাঞ্চাদি ৰূপঃ কাব্যে বিশেষ প্রতীতি ক্লদেব । উদা-ত্তাদি ৰূপোপি মুনেঃ পাঠোক্ত **किंगा मृक्षातामि तमितिःगय था-**তীতি ক্লদেবেতি। এতদ্বিষয়ে উ-দাহরণ মুচিত মেব ইলি তন্ন ত-থা হি স্বরাঃ কাক্যাদয উদাত্তাদ-যো বা ব্যঙ্গ্যৰূপ মেব বিশেষণ প্রত্যায়যন্তি ন খলু প্রক্নতোক্ত মনেকার্থ শব্দস্যৈকার্থ নিযন্ত্রণ ৰূপ॰ বিশেষ॰। কিঞ্চ যদি যত্ৰ ক্ব-চিদনেকার্থ শব্দানা প্রকরণাদি নিযমাভাবাদনিযন্ত্রিতধে৷ রপ্য-র্থয়ে। রনুৰূপ স্বর বশেটনকত্র নি-যমন॰ বাচ্য॰ তদা তথাবিধ স্থলে শ্লেষানঙ্গীকার প্রাসক্ষঃ ন চ তথা

অতএবাহুঃ শ্লেষ নিৰূপণ প্ৰস্তাবে কার্য মার্গেস্বরো ন গণ্যতে ইতি **চ नय रेखानमूशकी**वाानाः माना। नाः व्याध्यादनव् कछाक निरक्रशः ণ৷ আদি শব্দাদেতাৰুমাক্তত্তনী-ত্যাদে হস্তাদি চেক্টাদিভিঃ স্ত-नामीना॰ कमल कांत्रकामग्राका-রত্ব"৷ এব নেকস্মিন্নর্থে ২ভিধযা নিষম্ভিতে যা শব্দস্যান্যাৰ্থ বৃদ্ধি হেতুঃ শক্তিঃ সা অভিধামূলা-ব্যঞ্জনা। কথা মম তাত পাদানা॰ মহাপাত্ৰ চতুৰ্দশভাষা ৰিলাসি-नी जूजक मराक्वीयत बीह्य শেখর সান্ধি বিগ্রহিকাণাণ দুর্গা লজ্মিত বিগ্রহো মনসিজণ সংমী-লয় স্তেজ্যা প্রোদ্যদাজকলো-গৃহীত গরিমা ৰিশ্বগৃতো ভোগি-ভিঃ। নক্ষত্রেশ ক্রতেক্ষণো গিরি শুরৌ গাঢা° রুচি॰ ধার্যন্ গামা-ক্রমা বিভূতি ভূষিত তনু রাজত্যু-মাবল্লভঃা। অত্র প্রকরণেনাভি-ধ্যা উমাবল্লভশব্দস্য উমানায়ী यशामिती उद्गल जानूमित नृथ-তিৰূপে ২থে নিযন্ত্ৰিতে ব্যঞ্জন-যৈব গোৱীবল্লভৰূপো ২ৰ্থো বো-ধ্যতে। এব মন্যৎ।। 🕸।। লক্ষণা-মূলা মাহা লক্ষণোপাস্যতে যস্য

ক্ততে তত্ত্ব প্ৰযোজন° । যথা প্ৰ ত্যায়তে সা স্যাদ্যঞ্জনা লক্ষণা-व्या।। भनायाः साय रेजाती क नमयामार्थ (वाधनामिक्याया॰ বিরতাষাণ তটাদ্যথ বোধনাক লক্ষণাযাণ বিব্নতাযাণ যয়া শীতত্ব পাবনত্বাদ্যতিশ্যাদি র্বোধ্যতে मा नक्षाम्ना वाक्ष्मा ॥ # ॥ এবং শাব্দীং ব্যঞ্জনা মুক্ত্বা আ-থী ' ৰাঞ্জনা মাহ। বক্তৃ বোধব্য वाकाान। यना मिषि वाठारयाः । প্রস্তাব কাল দেশানা কাকে। **अक्टो** जिस्सा है।। दिनिस्प्राप-ন্য মর্থ॰ যা বোধযেৎ সার্থ সম্ভ-বা। ব্যঞ্জনা ইতি সম্বধ্যতে। তত্ৰ বক্তৃবাক্য প্রস্তাব দেশ কাল বৈ-निष्ठा रका यम। काटना यधुः ঙ্গগিত এষ চ পুষ্পাধন্বা ধীরা বহ<sup>ু</sup> স্তি রতিখেদহরাঃ সমীরাঃ। কে-**की वनीय मिश वक्ष्य कक्ष मक्ष्**र দূরে পতিঃকথ্য কি॰ করণীয় ম দ্য ৷৷ অত্ৰ এতং দেশং প্ৰতি শী-মুণ প্রচ্ছন কামুক স্তৃষা প্রেষ্যতা মিতি সখী॰ প্রতি ক্যাচিৎ দ্যো-ত্যতে ॥ 🛊 ॥ বোদ্ধব্য বৈশিষ্ট্যে যথা ৷ নিঃশেষচ্যুত্চক্দন স্তন-তট॰ নিশ্বফিরাগো ২ধরো নেক্রে

দূর মনঞ্চনে পুলকিতা তদ্বী ত-বেষ তনুঃ। निथावानिनि मृष्ठि বান্ধব জনস্যাজ্ঞাত পীডাগমে বাপী সাতু মিতো গতাসি ন পুন স্তদ্যাধ্মস্যান্তিক ।। অত্র তদন্তিক সেব গতাসীতি বিপ-রীত লক্ষণবা লক্ষ্যু তস্য চারস্ত মিছি বাস্থাণ প্রতিপাদ্য দূতী বৈ-ন্নিধি বৈশিষ্ট্যে যথা। উত্স নি-চ্চল ণিশ্বন্দাভিদিনী পত্তম্ভি রে-হইবলাআ। ণিশ্বল মরগঅভা-অণ পরিট্ঠিআ সত্থ সুতির।। অত্র বলাকাষা নিষ্পান্দত্বেন বি-শ্বস্তত্বং তেনাস্য দেশস্য বিজনত্ব মতঃ সক্ষেত্স্থান মেতদিতি ক্যা-পি সমিহিত প্রচ্ন কামুক প্র-ত্যচ্যতে। অত্ৰৈৰ স্থান নিৰ্জনত্ব ৰূপ ব্যঙ্গাৰ্থ বৈশিষ্ট্য প্ৰযোজ-ন া ভিম্বকণ্ঠ ধনি ধী রৈঃ কাঙ্গ রিত্যভিধীযতে। ইত্যুক্ত প্রকা-রাযাঃ কাকো ভেঁদা আকারাদি-**्रा खा**ञ्जाः ॥ 🕸 ॥ এত ছৈ-শিষ্ট্যে যথা। গুরুপরতন্ত্রতয়। ব-ত দূরতরং দেশ মুদ্যতো গন্ত°া অলিঙ্গল কোকিল ললিতে নে-ষ্যতি স্থি সুর্ভি সময়ে ২সে।।

অত্র নেষ্যতীত্যপি তর্হি এয়-ত্যেব ইতি কাৰু। ব্যজ্যতে ॥ 🕸 ॥ চেকাবৈশিক্ষ্যে যথা। সঙ্কেত-কাল মনসংবিটি জ্ঞাত্বা বিদ্ধাযা । ইনমেত্রাপিতাকৃত লীলাপন্ম॰ নিনীলিত ৷৷ অত্ৰ **সন্ধ্যা সং**ক্ষত কাল ইতি পদ্ম নিমীলনাদি চে-ষ্ট্যা ক্যাচিৎ দ্যোত্যতে। এব॰ বজাদীনা ব্যস্ত সমস্তানা বৈ-**শिक्टा** दाक्वरा ॥ 🕸 ॥ देविन-খ্যাদি য মর্থানাণ প্রত্যেকণ ত্রি-বিষামতা। অর্থানাণ বাচ্য লক্ষ্য ব্যস্যাত্বেন ত্ৰিৰূপত্যা সৰ্বা অ-প্যনন্তরোক্তা ব্যঞ্জনা স্ত্রিবিধাঃ। তত্ৰ বাচ্যাৰ্থস্য ব্যঞ্জনা যথা। কা-ल। यथु दिखामि ॥ वकार्थना যথা নিঃশেষচ্যুত্চন্দন ফিল্যা-দি॥ ব্যঙ্গার্থস্য যথা। উ অ পি-চ্চল ইত্যাদি ॥ 🕸 ॥ প্রকৃতি প্র-ত্যযাদি ব্যঞ্জনম্ভ প্রপঞ্চিষ্যতে । শক্ষেত্রোধ্যে। ব্যনক্ত্যথঃ শক্ষে। ২পার্থান্তরাশ্রমঃ। একন্য ব্যঞ্জ-কত্বে তদন্যস্য সহকারিত।।। य-তঃশকো ব্যঞ্জকত্বে হর্থান্তর ম-পেক্ষ্যতে ৷ অর্থোপি শব্দ তদে-কস্য ব্যঞ্জকত্ত্বে ২ন্যস্য সহকারি-ত্ব মরশ্য মধীকরণীয<sup>়</sup> ৷ অভি-

ধাদি ত্রযোপাধি বৈশিষ্ট্যান্ত্রি-বিধো মতঃ। শব্দোপি বাচক স্তৰ্গক্ষকো ব্যঞ্জক স্তথা।। অ-ভিধোপাধিকো ৰাচকঃ। লক্ষ-**भाषांवित्वा नककः।** वाक्ष-- नाशाधिक। राष्ट्रकः ॥ किशः তাৎপর্য্যাখ্যা॰ বৃত্তিমাহঃ পদা-ৰ্থাম্বয় বোধনে। তাৎপৰ্য্যাৰ্থ্যণ **ভদর্থঞ্চ বাক্যং তদ্বোধকং পরে** । অভিধাষা একৈক পদার্থ বো-ধন বিরমাৎ বাক্যার্থৰূপন্য পদান্ত্ৰয়দ্য বোধিকা তাৎপৰ্য্যা নাম বৃত্তি স্তদর্থশ্চ তাৎপর্য্যা-র্থ স্তদ্বোধকঞ্চ বাক্য মিত্যভি-হিতাম্বযবাদিনা॰ মত॰ । ইতি সাহিত্যদৰ্পণে বাক্যস্বৰূপনিৰ-পণো নাম দ্বিতীযঃ পরিচ্ছেদঃ।। ব্যডম্বকঃ পু॰ এরঙঃ। ইত্যমরঃ॥ ব্যতিকরঃ পু॰ ব্যসন ।। ব্যতি-সঙ্গঃ। ইতি মেদিনী ॥ ব্যতিক্রমঃ পু॰ ক্রমবিপর্য্যয়ঃ। ষথা। সৰ্বত্ৰ প্ৰাজুখো দাতা গ্ৰ-হীতা চ উদ গ্লখঃ। ত্রষ এব বিধি र्मात्न विवारह ह व्यक्तिमः ॥ **इ**ळ्डाहाइडखः॥ ব্যতিরিক্তঃ ত্রি ব্যতিরেকবিশিক্তঃ । ভিনঃ। বি অতি পূৰ্ব রিচধা- 🎚

তোঃ ক্ত প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ ৷৷ ব্যতিরেকঃ পু॰ বিনা। অভাবঃ । यथा। यद्याजिदत्रक ख्वान॰ य-দুৎপত্তি প্রতিবন্ধক তৎ তমি-শ্চয সাধ্য । ইতি পরামর্শগ্রন্থঃ ।। जनकार्तिरमशः। यथा। ता-তিরেকে। বিশেষশ্চেদুপমানো-পমেযযোঃ। শৈলা ইবোন্নতাঃ সম্ভ কিন্তু প্রকৃতি কোমলাঃ।। ইতি চন্দ্রালোকঃ॥ वार्षितकः पू॰ शतन्श्रतस्यानमः। বি অতি সং পূৰ্ৰ গমধাতো ড প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ।। ব্যতিহারঃ পু॰ বিনিম্যঃ। যথা । शतिमानः विनियस्या देनस्यः পরিবর্ত্তন । ব্যতিহারঃ পরাব-র্ত্তো বৈমেয়ে। বিময়ে। ২পি চ।। ইতি হেনচম্রঃ॥ ব্যতীতঃ ত্রি অতীতঃ। গতঃ। যথা। অর্দ্ধরাত্রে ব্যতীতে তু म'क्रांखि र्यमर जंदव । शृदर्व ব্রতাদিক স্বর্যুঃ পরেদ্যুঃ স্নান দানযোঃ ৷৷ ইতি তিথিতত্ত্বে ভীনপরাক্রমীয়ণ।। ব্যতীপাতঃ পু• মহোৎপাতঃ।। অপযান । ইতি মেদিনী ॥ বি-ক্ষাদি সপ্তবিংশতি যোগান্ত-

পত সপ্তদশযোগঃ। ভৱ সৰ্ব क्या वर्जनः यथा। नितः भः प्रिव-**স**ণ বিষ্টি• ব্যতীপাতঞ্চ বৈধৃতি• । কেন্দ্ৰ স্থাপি শুভৈ হী নং পা-পार यशि वर्ज्ययः।। शतियमा ত্যজেদর্দ্ধণ শুভকর্ম ততঃ পর্ণা প্ত ব্যাঘাতযোগ্যট্ট নব হৰণ বজুবোঃ।। বৈধৃতি ব্যতীপাতৌ চ সমন্ত পরিবর্জয়ে । 🛊 । অ-স্যপ্রতিপ্রস্ব মাহ ভীমপরাক্র-মে। ন বিষ্কত্যো নহা গণ্ডো ন ব্যতীপাত বৈধৃতী। চন্দ্র তারা বলে প্রাপ্তে দোষা গচ্ছন্তাসণ সুখাঃ ।। নবম্যসারকো বিষ্টিঃ শনৈশ্চর দিন তথা। ব্যতীপা-তো ন দুষ্যেচ্চ যস্যাৰ্কো দক্ষি-ণে স্থিতঃ।। বৃদ্ধিবিষ্টি ৰাতীপা-তৌ দিন॰ বাপ্যশুভ॰ ভবেৎ । হন্যতে ২মৃতধোগেন ভাস্করেণ তমো যথা।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ।। 🕸 ।। তত্র জাত ফল॰। কঠোর-বাক্যঃ পিশুন স্বভাবো গদাতু-রো মাতৃহিতো মনুষ্যঃ। পরস্য কাৰ্য্যে ক্ৰত পক্ষপাতো যস্য প্ৰ-সূতৌ ব্যতিপাত ষোগঃ॥ ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ॥ গানিভা-ভাষিকয়োগবিশেষঃ। যথা বৃহ-

सन् । स्वर्गासि यनिशे जी नीगरेन रेज मस्टर । यमा ना निन्
यादान राजी माज्य म स्रेगार ।।
ज्ञ गमाना कन ग्रेगार जा ।
ज्ञ गमाना कन ग्रेगार जा ।
राज म्यान स्वर्ग राजी मार ज्ञा ।
राज म्यान स्वर्ग राजी मार ज्ञा ।
ज्ञा कर्म मृर्या राग । पूर्या भाषा ।
ज्ञा कर्म मृर्या राग । पूर्या भाषा ।
ज्ञा कर्मा म्यान स्वर्ण । विश्व श्रेष । विश्व श्रेष । विश्व श्रेष । विश्व स्वर्ण ।।
याजी हात्रः भू श्री दर्ज । विश्व स्वर्ण ।।
याजी हात्रः भू श्री दर्ज । विश्व स्वर्ण ।
याजी हात्रः भू श्री दर्ज । विश्व स्वर्ण ।
याजी स्वर्ण क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ।
याक स्वर्ण । यथा क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया ।
विश्व स्वर्ण । विश्व स्वर्ण । विश्व स्वर्ण ।

ব্যত্যথঃ পু॰ ব্যতিক্রমঃ। তৎপর্যায়ঃ। ব্যত্যাসঃ ২ বিপর্যাসঃ ও বিপর্যায়ঃ ৪। ইত্যমরঃ।।
ব্যত্যাসঃ পু॰ বিপর্যায়ঃ। ইভ্যমরঃ।।

ব্যথ য ম ও দুংখে ৷৷ চালে ৷৷
ভযে ৷ ইতি কবিকল্পজ্ঞমঃ ৷৷ দুঃ
খণ্দুঃখানুভবঃ ৷ চালঃ কম্পনণ
৷ ষ ব্যথা ৷ ম ব্যথযতি ৷ ও ব্যথতে লোকঃ দুঃখ মনু ভবতি ৷
কম্পতে বিভেতি বেত্যৰ্থঃ ৷ কেচিত্ৰু দুঃখ ভয চলনযে৷ রিতি
পঠিত্বা ভয়ে চলনং ভ্যচলন
মিত্যাহঃ ৷ দুঃখ ভয চলনে ইতি

পछिषा मूः थ जयदरा भारतम गूर-পাদন মিতি গোবিশভটঃ। रेकि मूर्गामामः॥ राथकः वि राशकाती। यथा। **जर्गणानः वाशक ख माग्रामर्ग्यः** ুগরুম্বদঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ वाथा जी मूः थः। इंडामतः॥ ব্যথিতঃ ত্রি পীডিতঃ। দুঃখিতঃ । যথা। ততঃ প্রব্যথিতো বাণো দুহিতৃঃ শ্রুত দূষণঃ। দ্বরিতঃ ক-नाकागातः প্राश्वा रखाकी যদূদ্বহ° ।। ইতি শ্রীভাগবতে বাণযুদ্ধে ৬২ অধ্যায়ঃ॥ ব্যধ ঔ য তাডে। ইতি কবিকল্প-দ্রুমঃ।। য বিধ্যতি শঁত্রু॰ শূরঃ। ঔ অব্যাৎসীৎ। কন্টিভু দ্বি-ভূ তিস্যানিকারীভূত বকারস্য ব্যবে বঁকারো বর্গ্যঃ অন্যত্র তু দস্ত্য ইতি মম্বানঃ সনি বিব্যৎ-সতীত্যাহ। ইতি দুর্গাদাসঃ।। ব্যধঃ পু॰ বেধঃ। ইত্যমরঃ॥ वाधाः पूर धनुर्छनः। यथा । ব্যধ্যস্ত প্রতিকায়ঃ স্যাজ্জীবা-জ্যা ভারবং গুণঃ ৷ ইতি ত্রিকা-ওলেবঃ।। वादः भुः अभयः। তৎপर्यायः।

পথার ৫ ৷ ইত্যুসরঃ ৷৷ ব্যপ ক ক্ষৰে। ইতি কৰিকল্পজনঃ ।। অভস্কাদ্যযুক্তঃ। ক ব্যাপয-তি। ইতি দুর্গাদাসঃ।। ব্যপদেশঃ পু॰ কপটঃ। ইতি হেষচন্দ্রঃ।। নাম। ইতি ত্রিকা-ওশেষঃ।। বাক্যবিশেষঃ। ব্যা। ব্যাজেনাত্মাভিলাসোক্তি ব্যপ-দেশ ইতীৰ্যাতে। ইত্যুজ্জুলনী-वयिशः ॥ ব্যপাক্ততিঃ স্ত্রী অপহ্লবঃ। অস্বী-কারঃ। বি অপ আঙ পূর্ব রুধা-ভোঃ ক্তি প্রত্যযেন নিষ্পন্ন।।। ব্যভিচারঃ পু॰ কদাচারঃ।ভু-ফীচারঃ। যথা। ব্যভিচারাত্ত্ ভর্ত্তুঃ স্ত্রী লোকে প্রাপ্নোতি নি-न्गुजाः। गृगानरगिनः প্राक्षा-তি পাপরোগৈশ্চ গীড্যতে ৷৷ ইতি মানবে ৫ অধ্যায়ঃ॥ #॥ দোষবিশেযঃ। তস্য লক্ষণ । সাধ্যতাৰচ্ছেদকাৰচ্ছিন্ন প্ৰতি-ষোগিতাকাভাববদৃত্তিত্ব॰ হি ব্যভিচারঃ । ইতি ব্যধিকরণ ধ-ৰ্মাৰছিল।ভাব চিন্তামণিঃ **।। স** ত্রিবিধঃ। সাধারণঃ ১ অসাধা-রণঃ ২ অনুপসংহারী ৩ । তত্র দুরধঃ ২ বিপথঃ ৩ কদধা ৪ কা- 📗 বিপক্ষবৃত্তিত্ব সাধারণত্ব । সর্ব সপক্ষব্যাবৃত্তত্ব মসাধারণত্বং । ব্যাপ্তিগ্রহানুকূলৈকধর্ম্যুপসং-হারাভাবে। যত্র সদ্বেত্বভিমতো হনুপসংহার্যাঃ । ইতি সব্যভি-চার চিন্তানণিঃ ।।

ব্যভিচারি ক্লী চতুন্ত্রিপৎপ্রকার শৃঙ্গারভাববিশেষঃ। তদ্মথা। নিৰ্বেদঃ ১ গ্লানিঃ ২ শঙ্কা ৩ অসূষা ৪ মদঃ ৫ শ্রমঃ ৬ আল-मा १ देनगा ५ ठिखा २ त्याइः ১০ স্মৃতিঃ ১১ ধৃতিঃ ১২ ব্রীডা ১৩ চপলতা ১৪ হর্ষঃ ১৫ আ-বেগঃ ১৬ জডতা ১৭ গৰ্ৰঃ ১৮ বিষাদঃ ১৯ ঔৎশুক্য° ২০ নি-দ্রা ২**১ অপস্মরঃ ২২ সুপ্তঃ ২৩** বিবোধঃ ২৪ অমৰ্যঃ ২৫ অবহি-খঃ ২৬ উগ্ৰতা ২৭ মক্তিঃ ২৮ উপলম্ভঃ ২৯ ব্যাধিঃ ৩০ উন্ম-দঃ ৩১ মরণ ৩২ ত্রাসঃ ৩৩ বিতৰ্কঃ ৩৪। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ ॥ ব্যভিচারিণী স্ত্রী পরপুরুষগামি-নী। ৰথা। হৃতাধিকারা<sup>°</sup> মলি-নাণ পিগুমাত্রোপদেবিনীণ ৷ প-রিভূতা মধঃশ্য্যাণ বাস্যেদ্ব্য-ভিচারিণী ।। সোনঃ শৌচ দ-দৌ তাসা গন্ধৰাশ্চ শুভা গি-রুং। পাবকঃ সর্বভক্ষিত্বং মেধ্যা

বৈ যোষিতো ছতঃ ৷৷ ইতি তু <u>জ্রীসামান্যবিষয় ।। ব্যভিচারা-</u> দৃতৌ শুদ্ধি গৰ্ভে ত্যাগে। বিধী-যতে। গৰ্ৱ ভত্বিধে তাসাং তথা মহতি পাতকে।। ইতি গাৰুডে ৯৫ জধ্যায়ঃ।। 🛊 ।। তদ্যাঃ পরি-ত্যাগাদি যথা। হারীতঃ। গর্ভি-শী মধোবৰ্ণগাং শিষ্যসূতগামিনীং পাপ ব্যসনাসক্তা॰ ধনধান্য ক্ষয করী॰ বর্জ্জেযেৎ। যমঃ। স্বচ্ছन्দ-গাহিষা নারী তস্যা স্ত্যাগো বি-ধীয়তে। ন চৈব শ্রীবঞ্চ কার্য্যো ন চৈবাঙ্গবিযোজন° ৷৷ বৃহস্পতিঃ 1 হীনবৰ্ণোপভুক্ত। যা ত্যাজ্যা ৰ-ধ্যাপি বাঁ ভবেৎ ৷ বিশেষয়তি মিতাকরায়াণ স্মৃতিঃ। ভান্ধ । ক-ত্রিয় বিশাণ ভার্য্যাঃ শূলে , সঙ্গ-তাঃ। অপ্রজা স্তা বিশুদ্বান্তি প্রা-যশ্চিত্তেন নেতরাঃ।। এতৎ ব-লাৎকাব্ন বিষয়ণ ৷ ইত্যুদ্বাহতত্ত্বণ ॥ 🗱 ॥ তস্যাঃ পুণাকর্মাণি নিস্ফ-লানি ধনান্ধিকারিত্বঞ্চ যথ। 1 হরিব॰শীয় পুণ্যকব্রতোপাখ্যা-त्त । जात्तां श्रवां म श्रवां नि मूक् তান্যপারুদ্ধতি । নিষ্ফলান্যস-তীনা॰ হি পুণ্যকানি তথা শুভে ॥ বৃহমনুঃ। অপুতা শ্বন ভর্তুঃ

ব্যলীক

পালযন্তী ব্রতেন্থিত। । পত্নোব দদ্যাৎ তৎপিগুণ ক্রৎন্ম নংশণ লভেত চ ।৷ ভর্তুঃ শ্যনণ পাল-যন্তী নান্যগামিনী। ইতি দায়-তত্ত্বণ ।।

ব্যভিচারী ত্রি ব্যভিচারবিশিষ্টঃ । বি অভি পূর্ব চরধাতে। র্ণিন্ প্রত্যবেন নিষ্পায়ঃ।।

ব্যয ত্ক গতৌ ॥ ত্যাগে । ইতি কবিকল্পজনঃ ॥ ব্যযয়তি । ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

ব্যয এ গতৌ। ইতি কবিকল্প-দ্রুমঃ ।৷ এ ব্যয়তি ব্যয়তে। ইতি দুর্গাদাসঃ ।৷

ব্যষ ক নুদি। ইতি কবিকল্প-ক্রেমঃ। অন্তস্থাদিযুক্তঃ। ক ব্যা-যযতি। নুদি প্রেরণে। ইতি দু-র্গাদাসঃ।।

ব্যয়ণ ক্লী লগাৎ দ্বাদশস্থানণ।
যথা।লগ্নগধনণ ভ্ৰাতৃ বন্ধু পুত্ৰ
শত্ৰ কলত্ৰকাঃ।মরণণ ধর্মা কাব্যায় ব্যয়া দ্বাদশ রাশ্যঃ।।
ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বণ।।

ব্যয়ঃ পু॰ অর্থস্যাপগমঃ।বিত্ত-সমুৎসর্গঃ। খরু ইতি পারস্য-ভাষা।ইতি শব্দরত্বাবলী।। ব্যাষ্তঃ ত্রি ক্রতব্যয়ঃ। ব্যয়-

শব্দাদিত প্রত্যবেন ব্যয্থাতোঃ
ক্রপ্রত্যবেন চ নিষ্পন্নঃ ii
ব্যথী ত্রি ব্যয্যুক্তঃ যথা ৷ জ্রবিণ পরিমিত মধিকব্যযিনণ
জন মাসলীসরুতে ৷ ক্ষীণাঞ্চলমিব পীনস্তন জ্বনাযাঃ স্ললীনাযাঃ ৷৷ ইত্যুদ্ধটঃ ৷৷
ব্যর্থণ ত্রি নির্থকণ ৷ তৎপর্য্যাযঃ ৷ মোঘণ ২ বিফলণ ৩ ৷ ইতি

জটাধরঃ ৷৷ ব্যলীক ক্লী পীডার্থঃ। ইত্য-মরঃ ।। গতিবিপর্য্যয়ঃ ।। কাম-জাপরাধঃ । ইতি তটীকাষাণ ভরতঃ ৷৷ যথা ৷ ক্নত্যু॰ নৈব বি-জানাতি পরেণাপক্তত ক্বচিৎ ৷ কুত্যঞ্চ সংস্মরেদেতদসত্যঞ্চ ন জন্পতি ।। ব্যলীকেষু নিবৃত্তে। যঃ পর্য্যেতি ক্লতনিশ্চযঃ। নি-ত্যঞ্চ ধৃতিমান্ কিঞ্চিৎ পরো-ক্ষেপি ন চ ক্ষিপেৎ ৷৷ ঋতুকা-লেভিগচ্ছেত অপত্যার্থণ স্বকাণ স্ত্রিয°। ঈদৃশাস্ত নরা ভদ্রে মম কর্ম্ম পরায়ণাঃ ॥ ইতি বারাহে যোনিগর্তুমোক্ষণ নামাধ্যয়ঃ ॥ অপ্রিয়ণ ৷৷ অকার্য্যণ ৷৷ বৈল-ক্যুণ। ইতি মেদিনী।। অপরাধঃ । ইতি হেমচন্দ্রঃ।। প্রভারণা ।

ইতি হল†যুধঃ ।। তদ্বতি ত্রি ।। ব্যলীকঃ পু॰ নাগরঃ ৷ ইতি মে-দিনী ॥ তৎপর্যাযঃ। ষিদ্ধঃ ২ ষটপ্ৰক্তঃ ৩ কামকেলিঃ ৪ বিদৃ-ষকঃ ৫ পীঠকেলিঃ ৬ পীঠমর্দ্দঃ ৭ ভঙ্গিলঃ ৮ ছিদুরঃ ৯ বিটঃ ১০ । ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। **ग्रावकनन॰ क्वी विरयागः। शैनः॥** অঙ্কস্যান্তরকরণ । বাকিকটো ইতি ভাষা। যথা অযে বালে লীলাবতি মতিমতি ক্রহি সহি-তান্ দিপঞ্দাত্রিণশত্রিনবতি শতাকীদশ দশ। শতোপেতা-নেতানযুত বিযুতা শ্চাপি বদ মে यमि राज्ज र्युक्तिं रात्रकलन মার্গেসি সশলা।। ইতি লীলা-বতী ॥

वायकिना कि क्रांचित्र । वायकिना किया विष्या विष्या । वायकिना । वाय महिना वायकिना क्रिया । वाय महिना वायकिना क्रिया । वायमिना क्रिया । वायमिना विष्या । व्यायमिना विषय । वायमिना वायमि

ব্যবচ্ছিন্ন° ত্রি ভিন্ন°। যথা। ভিন্নন্ত ব্যবচ্ছিন্ন° বিশেষিত°। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। ব্যবচ্ছেদঃ পু॰ বাণমুক্তিঃ। ইতি
হেমচন্দ্রঃ। পৃথক হক্ষণ।
ব্যবধা স্ত্রী ব্যবধান । ইত্যমরঃ।।
ব্যবধান ক্রী আড়োদ । তৎপর্য্যায়ঃ। তিরোধা । ২ অন্তর্দ্ধিঃ ও অপবারণ ৪ ছদন ও 
ব্যবধা ৬ অন্তর্দ্ধা ৭ পিধান ৮ দ্ব্যবধিঃ ১০ অপিধান ১১। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

ব্যবধাযকঃ ত্রি ব্যবধানকর্ত্তা।
যথা। স্বর্গকানো যজেত সপ্তদশাবরা ঋদ্ধিকামাঃ সত্র মুপাসীর্মিতি বেদে কামিনাং কর্তৃদ্বাবগতে স্তদনুপপত্ত্যা ঋদ্ধিগ্যাপারাস্তর্ভাবোন ব্যবধাযকঃ
। ইতি প্রাযশ্চিত্রবিকেঃ।।
ব্যবধিঃ পুং ব্যবধানং। ইতি শব্দরত্নাবলী।।

ব্যবসাযঃ পু॰ উপজীবিকা।
পেশা ইতি পারসাভাষা। যথা
। করোতি নাম নীতিজ্ঞো ব্যবসায় মিত স্ততঃ। কল॰ পুন স্তদেব স্যাদ্মদ্বিধে র্মনসি স্থিত॰
।। ইতি হিতোপদেশে ২ পরিচ্ছেদঃ।। অপিচ। আহারো দ্বিশুণঃ স্ত্রীণাং বৃদ্ধি স্তাসাং চতু-

র্গুণা। ষড্গুণো ব্যবসায় 🕶 ক।-ম শ্চাফ গুণঃ স্মৃতঃ।। ইতি চা-ণক্য॰ ॥ অনুষ্ঠান॰ । ইতি ব্যব-मायि नकार्थ मर्ननार ॥ नि-\*চर्यः । यथा । तात्रमायाञ्चिका বুদ্ধি রেকেহ সরুনন্দন। বহু-শাৰ্থা হ্ছনন্তাশ্চ বুদ্ধযো ২ব্য-বসাযিনা॰॥ ইতি ভগবদ্গীতা-যা॰ ২ অধ্যায়ঃ ॥ ব্যবসায়াত্মি-কেতি। ইহ ঈশ্বারাধন লক্ষ-ণে কর্মধোগে ব্যবসাযাত্মিকা পরমেশ্বর ভক্ত্যৈব ধ্রুবণ তরি-য্যামীতি নিশ্চ্যাত্মিকা একৈব এক নিষ্ঠেব বৃদ্ধি ভবতি। অ-ব্যবসাযিনা মীশ্বরারাধন বহি-মুখানা কামিনা কামনান-স্ত্যাদনস্তা স্তত্রাপি কর্মফল গু-ণফলম্বাদি প্রকার ভেদাদ্বশা-খাশ্চ বুদ্ধয়ো ভবস্তি। ইতি ত-कीकागां श्रामी ॥ विख्रः । यथा ৷ ব্যবসাধো ব্যবস্থানঃ সস্থানঃ স্থানদে। ধ্রুবঃ। ইতি তদ্য সহ-সুনামস্তোত্ৰ ॥

ব্যবসাধী ত্রি ব্যবসাধবিশিষ্টঃ

11 বাণিজ্যকারকঃ 1 যথা 1 কো

হতিভারঃ সমর্থানাণ কিণ দূরণ

ব্যবসাধিনাণ 1 কো বিদেশঃ স

বিদ্যানাও কঃ পরঃ প্রিয়বাদি-নাং।। ইতি চাণক্যং।। অনুষ্ঠাত। । যথা। অজেভ্যো গ্রন্থিনঃ শ্রে-ষ্ঠা গ্রন্থিভ্যা ধারিণো বরাং। ধারিভ্যো জ্ঞানিনঃ শ্রেষ্ঠা জ্ঞা-নিভ্যো ব্যবসাধিনঃ ৷৷ ইতি মানবে ১২ অধ্যায়ঃ।। অভ্রে-ভ্য ইতি। উভযোঃ প্রশস্যন্ত্রে সতি অন্যতরস্যাতিশ্যবিবক্ষ-যা শ্ৰেষ্ঠতেতীক্টিনো বিধানা-দীষদধ্যয়না অজ্ঞাঃ তেভ্যঃ স-মগ্রাঞ্চারেঃ শ্রেষ্ঠাঃ 1 তে-ভ্যো হধীতগ্রন্থারণসমর্থাঃ শ্রেষ্ঠাঃ ৷ তেন গ্রন্থিনঃ পঠিতবি-স্তগ্রন্থা বোদ্ধব্যাঃ। ধারিভ্যো ২ধীতগ্রন্থজ্ঞাঃ প্রকৃষ্টাঃ তেভ্যো ২নুৡাতারঃ । ইতি ত-ডীকাষাণ সন্ত্রকভটঃ ॥ ব্যবসিতঃ ত্রি প্রতারিতঃ ৷ ইতি ভূরিপ্রযোগঃ।। অনুষ্ঠিতঃ।। নি-শ্চিতঃ ৷ ইতি ব্যবসায়ি ব্যবসা-य मकार्थ ममना थ।। ব্যবস্থা স্ত্ৰী শাস্ত্ৰনিৰূপিতবিধিঃ । यथा। नीर्घकानः उक्तप्रयाः

श्रात्रभक्ष कमख्रालाः । एमवरत्रभ

সুতোৎপত্তি দ্তকন্যা প্রদী-

যতে। ইত্যাদীন্যভিধাষ এতা- 🛦

नि लाक शुश्रार्थ॰ कल तामि মহাত্মভিঃ। নিবর্ত্তিতানি ক-ৰ্মাণি ব্যবস্থা পূৰ্ৰকণ বুধৈঃ ॥ ইত্যুদাহতত্ত্বে হেমাজি পরাশ-রভাষ্যযো রাদিপুরাণ ॥ वावञ्चानः पू॰ विखुः। यथा। ব্যবসায়ে ব্যবস্থানঃ সন্থানঃ ্স্থানদে। ধ্রুবঃ। ইতি তস্য সহ-সুনাম স্তোক্র ॥ ব্যবস্থিতে। ক্লী। যথা। চাতুৰ্বৰ্গ ব্যবস্থান॰ যশ্মিন্দেশেন বিদ্যতো তং **ट्राक्ट**प्पन जानीयानार्यगवर्ड স্ততঃ পরণ।। ইত্যার্য্যাবর্ত্ত শব্দ-টীকাষা ভরতঃ ॥ ব্যবন্থিতঃ ত্রি বিধিপূর্বকন্থিতঃ। ব্যবস্থাপিতঃ। যথা । অথ ব্য-বস্থিতান্ দৃষ্ঠা ধার্ত্রাক্ট্রান্ ক-পিধজঃ। প্রবৃত্তে শস্ত্র সম্পাতে ধনু রুদাম্য পাওবঃ।। ইতি 🗐-ভগবদ্গীতাযা > অধ্যামঃ।। ব্যবহর্তা<sup>®</sup> পু॰ ব্যবহারকর্ত্ত। । প্রাড়িবাক ইতি যাবৎ। যথা। উত্তরাভিধানান্ডর সভ্যানা মৰ্থি প্ৰত্যথিনোঃ কস্য ক্ৰিয়া স্যাদিতি পরামশ লক্ষণস্য প্র-ত্যাকলিত্স্য যোগীশ্বরেণ ব্য-বহারপাদ্যেনানভিধানাৎ ব্য-

বহর্ত্ব সম্বন্ধাভাবাচ্চ ন ব্যবহা-রপাদত্ব মিতি স্থিত<sup>।</sup> ইতি মি-তাক্ষরাযাত ব্যবহারমাতৃকা।। কাষস্থস্যোপাধিবিশেষশ্চ ॥ পু॰ বিবাদঃ। ইত্য-ব্যবহারঃ **अतः ॥ वृक्**रा जारि ॥ भनः ॥ शिक्षः। देखि यामिनी শব্দরত্নাবলো।। 🟶 ।। অথ ব্য-বহার দর্শন । তত্ত্ব যাজ্বকাঃ। স্ত্যাচার ব্যেশতেন নার্গেণা-ধর্ষিতঃ গরৈঃ। আবেদ্যতি চে-खां छि वावशात्र भाग है उ९ ॥ শ্বৃতি সদাচার বহিভূ তেন বর্ম-না পরে রর্থতঃ শরীরতো বা পী-ডিভ শ্চেদ্রাজনি নিবেদযেত্ত-দ্যবহার দর্শনস্থান । চেদি গ্রত সদিতি মৈথিলাঃ ৷ আে, ্যতি फिष्ठिंग्टनन श्वयः विवादमाथा-পন রাজ্ঞান কর্ত্তব্য মিতি শূল-পাণি মহামহোপাধ্যাষাঃ। রা-জ্ঞীতি ব্যবহারপ্রদর্শক পরং । তথা চ বৃহস্পতিঃ । রাজা কা-ৰ্য্যাণি সম্পশ্যেৎ প্ৰাড়িবাকে। २ वर्ग विजः॥ श्रा श्रिवाक व-ক্ষণমাহ সএব। বিবাদে পৃচ্ছতি প্রশ্নণ প্রতিপন্নণ তথৈব চ। প্রিয পূৰ্ব॰ প্ৰায়দতি প্ৰাদ্বিবাক স্ততঃ

স্তঃ।। কাত্যাযনঃ। ব্যবহার।-শ্রিত প্রশাণ পৃচ্ছতি প্রাডিতি স্থি-**তিঃ। বিবে**চ্যতি য স্তশ্মিন্ প্রা-**ডুিবাক স্ততঃ স্**তঃ ।। অথিন° প্ৰতিভাষাতে কীদৃশীপ্ৰত্থিন . প্রতি চ তবাপি কীদৃশ মুত্তর ই তিপৃক্তীতি প্ৰাট্ শ্ৰেছা চ যুক্তা-যুক্তত্বেন জয° পরাজয° বা বি-विनक्ति ইতি विवाकः প্রাট্চ স বিবাকশ্চেতি প্রাজ্বিকঃ ॥ 🟶 ॥ কাত্যাযনঃ। সপ্রাড়িবাকঃ সামা-**ত্যঃ স্**ত্রাহ্মণ পুরোহিতঃ। স্বয়া স রাজা চিনুযাত্তেষা জয় পরা-জযৌ।। যদা কাৰ্য্যবশাদ্যাজা ন পশ্যেৎ কাৰ্য্যনিৰ্ণয়ণ। তদা নি-যুঞ্জ্যাদিদা•স॰ ত্রান্ধণ বেদপা-त्रगः ॥ यनि विध्या न विषान् স্যাৎ ক্ষত্রিয় তত্র ষোজ্যেৎ। বৈশ্যস্থা ধর্মশান্ত্রভ্রু শূত্র বত্রে-ন বৰ্জ্জয়েৎ।। স বিনীতবেশঃ। মনুঃ। জাতিমাত্রোপজীবী বা काम॰ माष्ट्राञ्चनक्रवः । धर्मा अ বক্তা নৃপতে নতু শূজঃ কদাচন ।। নাধ্যাপ্ৰতি নাধীতে স ত্ৰা-ক্ষণক্রবঃ স্মৃতঃ।। ব্যাসঃ। দিজা-ন্ বিস্থায় যঃ পশ্যেৎ কার্য্যাণি বৃষলৈঃ সহ। তদ্য প্রকুভ্যতে রা- 🏽

জ্য° বল• কোষশ্চ নশ্যতি !৷ যঃ শূদ্রে। বৈদিক ধর্মণ স্মার্ভ্রণ বা ভাষতে যদি। ত্যা দণ্ড দ্বে मश्रम् मृक्षेगी टेठव ज्जमरवर । मूःभीतानि विकः भूक्ता न भू-ত্যে বিজিতেব্রিষঃ ।। দুফীণ গাণ কঃ পরিত্যজ্যার্চ্চবেৎ শীলবতীণ **থরী॰।। এ।। ব্যবহারমাহ** কাত্যা-यनः। वि नानादर्य २व मत्नद হরণ হার উচ্যতে। নানাসন্দে-হ হরণাদ্যবহার ইতি স্থিতিঃ ৷৷ নানা বিবাদ বিষয়ঃ সংশ্ৰেয়া ছি-ষতে ২নেন ইতি ব্যবহারঃ।ভা-ষোত্তরক্রিয়। নির্ণায়কত্ব ব্যবহা-রত্বণ তথা চ বৃহস্পতিঃ। অক্তা-ন তিমিরোপেতান্ সন্দেহ পট-लार्किञान्। नितायशान् यः अकः-তে শাস্ত্ৰাঞ্জন শলাক্যা ৷৷ ইহ কীর্ত্তি॰ রাজপূজা॰ লভতে সদ্গা-তিঞ্চ সঃ। তন্মাৎ সংশ্য মূঢানাং কর্ত্তব্যশ্চ বিনির্ণযঃ।। অতএব না-तमः। অনিষুক্তো নিষুক্তো বা শাস্ত্রজ্ঞো বক্তু মর্হতি। দৈবীণ বা-চ° স বদতি যঃ শাস্ত্র মুপজীবতি ॥ দৈবী॰ দেবানুমতা॰॥ 🟶॥ ध-র্মশান্ত্রযোস্ত বিরোধে লোক ব্য-বহার এবাদরণীয়ঃ ৷ ইত্যাহ স

এব ৷ ধর্মশাস্ত্র বিরোধে তু যুক্তি-যুক্তে। বিধিঃ শৃতঃ । ব্যবহারো-পি বলবান্ধৰ্ম স্তেনাবহীষতে ।। অবহীযতে অবগম্যতে হি গ-তাবিত্যসাদ্ধাতোঃ। অতএব বৃ-হস্পতিঃ। কেবলং শাস্ত্র মাশ্রিত্য न कर्खता विनिर्गसः। युक्तिशैन বিচারে তুর্ধাহানিঃ প্রজাযতে।। ষুক্তি ন্যায়ঃ। স চ লোক ব্যব-হার ইতি ব্যবহারমাতৃকা।। অ-তএব কাত্যাখনঃ। সল শীল বষে। বৃত্ত বিত্তবন্তি রম্বিষ্ঠিত । বণিট্রিঃ স্যাৎ কতিপবৈঃ স্বল-বৃদ্ধৈ রধিষ্ঠিত । সদ ইতি শেষঃ । কাত্যায়নঃ। সভ্যেনাবশ্য ব-ক্তব্য ধর্মার্থ সহিত বচঃ। শৃ-ণোতি যদি নো<sup>্</sup>রাজা স্যাত্ত্ मजा उपान्नः॥ मजाः मजायाः সাধঃ ৷৷ ঋ ৷৷ তথাবিধানাহ যা-জ্ঞবন্ধ্যঃ । শ্রুতাধ্যবনসম্পন্ধাঃ প্রলীনাঃ সত্যবাদিমঃ। রাজ্ঞা সভাসদঃ কাৰ্য্যাঃ শত্ৰে মিত্ৰে চ . যে সমাঃ।। শ্রুতাধ্যয়নসম্পন্নাঃ ধর্মশান্তভাঃ। স্লীনাঃ সন্ধরাদি দোষশূন্য শাতা পিতৃবংশ পরস্প-রাকাঃ। এবম্ভুতাঃ সভাসদঃ স-ভাষা যথা সীদন্তি উপবিশন্তি

তথা দান মান সৎকারে রাজ্ঞা ভূমেঃ সভাত্ব মাহ মনুঃ। যশ্মিন্ দেশে নিসীদস্তি বিপ্রা বেদবিদ-স্ত্রয়ঃ । রাজ্ঞঃ প্রতিক্রতো বিদ্বান ব্ৰাহ্মণ স্তা॰ বিদুঃ ৷৷ বিদ্বৎ সংহতাবপি সভাপর্য্যায় পরিষ-চ্ছব্দ মাহ সত্ৰব। ত্ৰৈবিদ্যো হৈ-তুক স্তকী নিরুক্তো ধর্মপাঠকঃ। ত্রয শ্চাশ্রমিণঃ পূর্বে পরিষৎ স্যা-फ्रमावताः ॥ देवविषाः विद्यप পারগঃ। হৈতুকঃ সদ্যুক্তিব্যব-হারী। অতএবামরসিংহঃ। সভা সদসি সভ্যে চ। অত্ৰ ভা দীপ্তিঃ প্রকাশো জ্ঞান মিতি যাবৎ ত্যা সহ সাক্ষাৎ পরস্পার্য। ব। বর্ত্ত-তে ইতি সভা ।। ক।। ক।ত্যায়নঃ। দিবসম্যান্টন ভাগ মুক্ত্বা ভাগ-ত্রক তু কথা স কালে। ব্যবহারা-णा॰ भाञ्चम्**रहेः** शतः ग्यृठः ॥ ञ-ঊনযামাদ্যার্দ্ধ প্রহর । ভাগত্র-য° প্রহর্ষ পর্যান্ত । মনুঃ। ধ-শ্বাসন মধিষ্ঠাষ্ট সমীতাঙ্গঃ সমা-হিতঃ। প্রণম্য লোকপালেভাঃ कार्यामर्गन मात्राउथ ।। मनू ना-রদ বেখায়ন হারীভাঃ ৷৷ পালে৷ ২ধর্মস্য কর্ত্তারণ পাদঃ সাক্ষিণ

मृष्ड्ि। পानः मञाममः मदीन् পাদে। রাজান মৃচ্ছতি।। রাজা ভ-বতানেনাস্ত মৃচান্তে চ সভাসদঃ। এনো গছতি কর্তারণ নিন্দার্হো ষত্র নিন্দ্যতে॥ কর্ত্তারং বাদিনং। রাজপদ॰ বিৰেচকপর• ৷ অনেনাঃ .নিষ্পাপঃ।াৠ়া অর্থিত্ব মাহতু ব্যা⊦ স নারদৌ। স্বস্য চাভ্যধিক। পী-ডা কার্য্যণ বাপ্যধিকণ ভবেৎ। ত-স্যার্থিভাবো দাতব্যো ন যঃ পূর্ব॰ নিবেদযেৎ।। অত্তৈব পূর্বপক্ষো ভবেত্তস্য ইতি কাত্যাযনীয়ে তৃ-তীয়পাদঃ। ন যঃ পূর্বণ নিবেদযে-দিতি তস্যোত্তরঃ পক্ষ ইতি শেষঃ । স যঃ পূর্ব মিতি পাঠে ষঃ প্রথমণ নিবেদষতি স পূৰ্ববাদীত্যৰ্থঃ। বৃহস্পতিঃ। অহণপূর্বিক্যা যা-তাবর্ধি প্রত্যর্থিনো যদা। বাদে। বৰ্ণানুপূৰ্বেণ গ্ৰাহ্ণঃ পীড়া মবেক্ষ্য বা ৷৷ যত্ৰ দাবেব বদতঃ প্ৰভো মদ্বাক্যণ শৃণু ইতি তত্ৰ ব্ৰাহ্মণা-দি ক্রমেণাধিকপীডাদর্শনেন বা বাদো আহঃ ॥ 🗱 ॥ স্বয়ণ বিবা-দাশক্তৌ প্রতিনিধি মাহ নারদঃ । অর্থিনা সনিযুক্তো বা প্রত্যর্থি প্রহিতো ২ণি বা। যো যস্যার্থে বিবদতে তথে। র্জয পরাজযৌ ৷৷ ত্যে৷ ৰ্বাদি প্ৰতিবাদিনোঃ। বৃছ-স্পতি রপি। ঋত্বিক্ ৰাদে নিযু-ক্তশ্চ সমৌ সম্পরিকীর্ত্তিত<u>ে</u>। यटळ सामााश्रुयाय भूगाः हानिः বাদে ২থ বা জ্যং ৷৷ কাত্যায়নঃ । गनुषामात्राम् (खर्य প्रतमात्रा-ভিমর্ষণে। অভক্য ভক্ষণে চৈব কন্যাহরণ দূষণে ৷৷ পারুষ্যে কূট-করণে নৃপদ্যোহে তথৈব চ। ঐ-তিবাদী ন দাতব্যঃ কর্ত্তা তু বিব-দেৎ স্বয়ণ।। 🟶 ।। স্বলন্ত্রী প্রভৃতী-না॰ প্রতিনিধি মাহ ব্যাসঃ। সল-ক্ৰী ৰালকোশত জডাৰ্ভানাঞ্চ ৰান্ধবাঃ। পূৰ্ৰপক্ষোত্তরে ত্রাযু নিযুক্তো ভৃতক স্তথা।। # ।। ভ্ৰা-ত্রাদীরতস্য পক্ষস্থিতস্য দণ্ডনীয-ত্ব মাহ নারদঃ। যো ন ভ্রাতা পিতা বাপি ন পুলো ন নিষো-জিতঃ। পরার্থবাদী দঙ্যঃ স্যাৎ ব্যবহারেষু বিক্রবন্ ।। বিক্রবন विक्रका कवन्।। 🗱।। नाइमः। निर्दिख्रेकारमा রোগার্ভো यियकू ৰ্ব্যসনে স্থিতঃ। অভিযুক্ত স্তপা-ন্যেন রাজকর্মোদ্যত স্তথা ৷৷ গবা॰ প্রচারে গোপালাঃ শস্য-वरक्ष क्रमीवलाः। भिन्निन मानि তৎকালে আযুধীয়াশ্চ বিগ্ৰহে।।

অপ্রাপ্তব্যবহার চালুতের দালো-गृत्था बडी। विषयक्कि नी त्न-शा बटेंग्जाबाष्ट्रराष्ट्रशः ॥ नि-र्बर्कुकारमा विवास्थ्यवृद्धः । ज-त्याम वामा छात्रभा व्यथा खबा-বহারঃ যোডশ্বর্যাবরব্যক্ষঃা छ कात्व विवाशामित्रमा थिने-ষ্যন্তকালে। এতে বিষমস্থাশ্চ উপপ্লবদেশস্থাশ্চ উত্তমর্ণাদিনা নাসেখ্যা নাবখার্ণীয়াঃ এতান্ প্ৰাপ্তজান ৰাদিনা নিবেদিতা-নিতি শেষঃ ॥ ৠ॥ याख्वरकाः। অভিযোগ মনিস্তীর্ঘ্য নৈন প্র-ত্যভিষোজ্যেৎ। অভিযুক্তঃ স-শ্বুত্তর মদস্ব। ভাষা বাদিন মেত° স্বাভিযোগানুপমর্দকেন বিবাদা-ন্তরেণ ন যোজ্যেৎ। মুগপদনে-ক ব্যবহারাসম্ভবাহ। নারদোপি ৷ পূৰ্ববাদ পরিত্যজ্ঞা যোখন্য মা-व्यश्ं भूनः। বाদ সংক্রমণাজ্ জ্ঞেবে। হীনৰাদী স বৈ নরঃ ॥ হীনবাদীত্যনেন দপ্ততেক্তা ন-তু প্রকৃতার্থান্ধীনতা অন্যথা ছ-नाभरतः॥ 🗱 ॥ भाक्रसा श्रवि-প্রদাব নাহ সত্রব। সর্ব্যাৎ প্র-ত্যভিযোগঞ্ কলহে সাহসেষুচ ॥ वाक्शाक्रया भञ्जानि श्रहाद्य-

म् छ। यश भूवं महम्भारमनोक् কঃ শল্পেৰ হত ইত্যপরাধাভা-वार खेळाजित्यागः भ्यादा छ-থাচ বৃহস্পতিঃ। আজুউন্ত ক্লা-জোশণ স্থাডিতঃ প্রতিভাত্যন্। হত্বাততাধিনকৈব নাপরাধী ভ-বেমরঃ ৷ এতেন বাক্পারুষ্য দ-শুপারুষাযোঃ প্রকৃতাভিযোগে খণ্ডক।ভিযোগেপি ন দোষঃ । येजु পূर्वभाकातरात्रयञ्च नियठः স্যাৎ স দোষভাক্। পশ্চাদ্যঃ সোপ্যদৎকারী পূর্বে তু বিনযো গুরুঃ ।। ইতি নারদ বচন তৎ পূৰ্বাপেক্ষৰা পরস্যাধিক বাক্পা-রুষ্যোৎপাদকস্যাপি বল্পদণ্ডবি-ধাৰক ।।।।।। যুগপৎ সংপ্ৰবৰ্তনে অধিক দণ্ডাভাব মাহ সএব ৷ পা-ৰুষ্যে সাহসে চৈব যুগপৎ সংপ্ৰ-বৃত্তযোঃ। বিশেষশ্চেম লভ্যেত विनयः गाष्ट्र मय खट्योः ॥ विन-(या मण्डा ध्वयः मएखा १ य मन्त्र-রাধে মথি কুতঃ পীডিতথাদিতি ভাষায়া প্রত্যভিয়োগঃ কার্ব্য এব ৷ প্রত্যবক্ষশনোত্রত্বেন যু-গপদনেক ব্যবহারাপত্তি দোষ-স্যাভাবাৎ ॥ 🛊 ॥ সভাপতেঃ কর্ত্তব্য সাহ কাত্যাখনঃ। অথ

हिं थे छित्रू नी छि वान रया गा छ বাদিনো: ৷ সত্ত্বব্দিতো দিনস্যা-ন্তে দদ্যাৎ ভৃত্যায় বেতন ।। প্রতিভবতি তৎকার্য্যে তদন্তব-छि इछि अछिजू लंगकः । वाम-**द्यागाः विराप कलमा मा**श्वित ध-. नामिमानमा मधमानमा ह क-भः। वामित्नाः ভाষাवामिनः छ-खत्रवानिनम्ह । ज्थाह याख्वत-ষ্ক্যঃ । উভযোঃ প্রতিভূ র্গাহ্যঃ সমর্থঃ কার্যানির্ণযে । প্রতিভূব-স্থৃতাবে চ রাজ্ঞা **সংজ্ঞগন**ং ত-যোঃ ।। রাজ্ঞা সংজ্ঞপন দণ্ডতু-ভ্যাধিকরণ° নির্ণযস্য কার্য্যে ধ-নাদি দানে রাজদন্তাদিশ্বাৎ কা-য্য শব্দস্য পূৰ্ৰ নিপাতঃ। ভৃত্যঃ তত্রককো রাজনিযুক্তঃ।। 🟶 ॥ প্রত্যথী যদি কশ্চিৎ কালং প্রা-র্থমতে স লভতে অথী তু কালং প্রার্থযন্ অর্থিত্ব মেব ব্যাহন্যা-দিতি তেন কালে৷ ন প্রার্থনীয়ঃ । তদাহ। প্ৰত্যথী ল**ডতে কাল**° ত্ৰ্যাহ সপ্তাহ মেব চ। অৰ্থীত প্ৰাৰ্থন্ কালং তৎক্ষণাদেব হী-যতে ।। কচিৎ প্ৰত্যৰী কাল ন-লভতে। যাজৰক্ষ্যঃ। সাহস স্তে-যু পারুষ্য গোভিশাপাত্যযে ক্রি-

याः। विवामस्य ममाध्य कारला **২ন্যত্রেছ্য। সৃতঃ।। সাহসং মনু**-যা মারণ । গৌরত্ত দোহা। অভি-শাপো ৰহাপাতকাদিনা। অত্যযে **जवानात्म। जियाः त्रवाजियाः** हा-রিত্র বিবাদ বিষয় প্রাপ্তায়ালন স্যা॰ স্বন্ধ বিবাদে বা। এযু সদ্য এব উত্তর॰ দাপবেদিতি শূলপাণিঃ। विस्नुषर्गे काळार्यनः। राजा কার্য্য সমারম্ভ শ্চিরাত্তেন বিনি-শ্চিতঃ ৷ তত্মান্ন লভতে কাল ম-ভিযুক্তম্ভ কালভাক্। অপবাদ মাহ বৃহস্পতিঃ। অভিযোক্তাপ্র-গল্ডাৎ বব্জু নোৎসহতে যদি। তদা কালঃ প্রদাতব্যঃ কার্য্য শ-ক্ত্যনুৰপতঃ।।#।। অত্ৰাপি বিশে-ষযতি ব্যাসঃ। রাজ দৈব হুতো দোষ স্তন্মিন্ কালে যদা ভবেৎ । অবধ্যযোগ মাত্রেণ ন ভবেৎ স পরাজিতঃ। স ক্রত সমষ বন্ধো ২ভিযুক্তঃ। রাজদৈব রুত॰ দো-য॰ সাক্ষিভিঃ প্রতিপাদযেৎ। জৈকোন বৰ্ত্তমানস্ত দণ্ড্যো দাপ্য-স্ত তদ্ধন । অবধ্যতিক্রমহেতো রাজদৈবিক দোষস্য প্রমিতো ন ভদতিক্রামকো ২পরাধ্যতি জৈ-ন্দাচ্চ তদতিক্রমেণ দণ্ড্যো ভঙ্গী চ ভবতীত্যর্থঃ। ছদ্মকাঠিন্যাদিযু-ক্রো জিয়াঃ। তথা চ হারীতঃ। ছদ্ম মামা ব্যাজ যুক্তা নিরুতিঃ। কৌটিল্য কাঠিন্য শাঠ্য বৈরুদ্য সন্তাব যুক্তং জৈশ্য মিতি। যুক্তং বোগঃ।। ॥।।

ख्य वादश्वशाम निर्वयः ।

उत्व वृङ्ग्लिङः । পূर्वलकः स्मृङः

शामा विशामस्माखदः गृङः ।

क्रियालाम ख्या हाना मह्रूर्या

निर्वयः स्मृङः ॥ मिर्याएको ह हछून्ताय मार्थ প্রতাবক্ষमনে তथा। প্রাঙ্ন্যামে ह म বিজ্ঞেয়ে।

विशाय मध्यिजशिख्यु ॥ यम्प्रिलि

मध्यिजश्वावित्र निर्वया शिख्या

क्रिश्च मध्यिजशिख्यु ॥ यम्प्रिलि

मध्यिजश्वावित्र निर्वया शिख्या

क्रिश्च मध्यिजशिख्यु ॥ यम्प्रिलि

मध्यिजश्वावित्र निर्वया शिक्या

क्रिश्च क्रिशामराञ्चा ॥ ॥ ॥

অথ ভাষাপাদঃ ।
তত্র ভাষা স্বরূপ মাহতুঃ কাত্যাযন বৃহস্পতী । প্রতিজ্ঞা দোষ
নিমুক্তিং সাধ্যং সৎকারণান্বিতং
। নিশ্চিতং লোক সিন্ধঞ্চ প্রকং
পক্ষবিদো বিদুঃ ।। স্বলাক্ষরঃ প্রভূতার্থো নিঃসন্দিক্ষো নিরাস্কলঃ
। বিরোধি কারণৈ মুক্তো বিরোধ

পক্ষঃ কল্পিতঃ পূৰ্বাদিনা। দ-দ্যাৎত্ৰৎ পক্ষ সম্বন্ধ প্ৰতিবাদী তদূত্তরং।। প্রতিজ্ঞা সাধ্যাভিধা-यिक वाक्। जमा सारिकः शत्र-স্পার বিরুদ্ধার্থ পদাদিভি স্ত্যক্তণ সাধ্য সাধনাহাভিমত পক বি-দুঃ। অন্যথা প্রতিজ্ঞা দোষেণ সাধ্যদোষ: স্যাৎ। অতএবোক্ত॰ । বচনস্য প্রতিজ্ঞাত্ব তদর্থস্য চ পক্ষতা। অসন্ধরেণ বক্তব্যে ব্যব-शास्त्रयू वाणि जिः ॥ वक्कत्वा शक् প্রতিজ্ঞে পূর্বেত্তে। নারদেনা-পি ৷ সারস্ত ব্যবহারাণা প্রতি-জ্ঞা সমুদাহতা। তদ্ধানৌ হীয-তে বাদী তরুস্তা মুত্তরো ভবেৎ ॥ উত্তরে। বিজয়ী। यमाপাनाव সাধ্য জ্ঞাপ্য তদ্বিশিষ্টধক্ষী প-ক্ষ ইতি ভেদঃ তথাপ্যত্ৰ বাক প্ৰ-ত্যায্যণাদি ধর্মবিশেষ বিশিষ্টস্য পক্ষতযা ধর্মিণো ২ধনণা দে রে-ব সাধ্যত্বাৎ সাধ্যপক্ষযো রভে-দাভিধান । উপসংহারে চএবম্বি-ধঃ পক্ষ ইতি। মিতাক্ষরাযান্ত ভা-ষা প্রতিজ্ঞা পক্ষ ইতি নার্থান্তর নিত্যক াঁ ভাষাৰ্থ মুক্ত্বা ভাষা ক্ষুপু প্রপঞ্চ মাহ স্বল্লাকর ইতি ৷ মিরাঙ্গলঃ পৌর্বাপর্য্য বিপর্য্যা-

मानि भूनाः । তত্ত मृार्ड ह वाव-হারে চ প্রব্রতে যজ্ঞকর্মণি। যা-নি পশ্যন্ত্যুদাসীনাঃ কর্ত্তা তানি ন পশ্যতি ৷৷ ইতি গৃছসংগ্ৰহ ব-চনাদুদাসীনেভ্যো জ্ঞাত্বা শোধ-ষেৎ। তচ্ছোধন মাহ বৃহস্পতিঃ । ন্যুনাধিক পূৰ্ৰপক্ষ তাবদ্বাদী वित्नाथत्य । न ममामुखं वः या-বৎ প্রত্যথী সভ্য সন্ধিধী।। 🟶 🛚 ।। তলিখন প্রকার মাহ ব্যাসঃ। পাণ্ডুলেখেন ফলকে ভূমৌ বা প্রথমণ লিখেৎ। ন্যুনাধিকন্ত সণ-শোধ্য পশ্চাৎ পত্ৰে নিবেশ্যেৎ ॥ ফলক॰ কাষ্ঠাদিপটক॰। কা-ত্যায়নঃ। পূৰ্ৰপক্ষণ স্বভাবোক্তণ প্রাজ্বিকো ২থ লেখ্যেও। পা-**ণ্ডুলেখেন ফলকে ততঃ পত্ৰে ২-**ভিলেখযেৎ।। শোধযেৎ পূর্বপ-ক্ষন্ত যাবমোত্তর দর্শন । উত্ত-রেণাবরুদ্ধস্য নিবৃত্ত শোধনং ভবেৎ॥ অন্যদুক্ত निर्थानाः দর্থি প্রত্যর্থিনে। ৰ্বচঃ। চৌরব-চ্ছাশযেত্তত্ত ধার্মিকঃ পৃথিবীপ-তিঃ ।। স্বভাবোক্ত সক্<u>ত</u>িম<sup>°</sup>। এতচ্চ স্বরবিশেষাদিনা সুজ্ঞেয়ণ ।। 🟶 ।। অতএব যাজবক্ষ্যঃ। ছল॰ নিরস্য ভূতেন ব্যবহারান্নযেন্-

পঃ। ভূত মপ্যনুপন্যস্ত॰ হীযতে ব্যবহারতঃ ৷৷ ভূত তত্ত্বার্থসম্ব-ऋ°। नातनः। ভূত॰ তব्।र्थमय-স্ব' প্রমাদাভিহিত' ছল'। কিন্তু রাজ্ঞা বিশেষেণ স্বধর্ম নভিরক্ষ-ত। ।। মনুষ্যচিত্ত বৈচিত্রাৎ পরী-কা সাধসাধু বা। সর্বেম্বর্থ বিবা-দেষু বাক্ছলে নাবসীদতি ৷৷ প-শু দ্রী ভূম্যণাদানে শাস্যোপ্য-ৰ্থাম হীষতে। সৰ্বেদ্বৰ্থ বিবাদে-ষু প্রমাদাভিধানেপি নাবসীদতি অত্যোদাহরণ পশুস্ত্রীত্যাদি। অৰ্থ বিবাদ গ্ৰহণাৎ মন্যুক্ত বি-বাদেষু প্রমাদাভিধানে প্রক্নতা-र्थामभाषां कीयठ देखि गगाउ। ৰথাহ মনেন শিরসি পাদেন তা-ডিতঃ ইত্যভিষাষ কেবল হস্তে-ন তাডিত ইতি বদন্ন কেবল° দণ্ড্যঃ পরাজীযতে চ। ততশ্চ ত্বণ মহ্য মৃণ ধার্যসি মত্ত ঋণত্বেন গৃহীততাবন্ধনকত্বাদিতি ভাষাশ-রীর•এতচ্চ সংস্কৃত দেশভাষান্য-তরেণ যথা বোধ বক্তব্য লেখ্য বা। মূর্খাণামপি বাদি প্রতিবাদি-তা দর্শনাৎ অতএবাধ্যাপনে ২-পি তথোক্ত॰ বিকুধর্মোতরে । সংস্কৃতৈঃ প্ৰাক্ততৈ ৰাকৈয় ৰ্যঃ শি-

ষ্য-মনুৰূপতঃ । দেশভাষাদ্যুপা-বৈশ্চ বোধ্যেৎ স গুৰুঃ স্মৃতঃ ।।

্ অথোত্তরপাদঃ। তত্র কালমাহ কাত্যাধনঃ। সদ্যঃ ক্লতেষু কাৰ্য্যেষ্ সদ্যএব বিবাদ-राष्ट्री कानाजीत्वयू वा कानः **प्रमाथ अञार्थित अञ्घा तापि-**নোক্তস্য সাধ্যস্য প্রতীপ মর্থষ-তে ইতি প্রত্যর্থী। নারদঃ। গ-হনন্বাদ্বিবাদানা মসামৰ্থ্যাৎ স্মৃ-তে রপি। अनामिषु श्रादश्कानः কামং তত্ত্ববুভুৎসযা ॥ বৃহস্প-তিঃ। যদ। ত্বেবয়িধঃ পাক্ষঃ কল্পি-তঃ পূৰ্ববাদিনা। দদ্যাৎ তৎপক্ষ সম্বন্ধ প্রতিবাদী তদোত্তর ॥ **मम्बन्न गूर्णयूकः। जनाया जना**-বাদিত্বেন ভঙ্গ প্রশঙ্গাৎ। অন্য-वामी किया एकी नाशकायी नि-রুত্তরঃ। আহৃত প্রপলাযী চ হী-नः शक विधः सृष्ठः ॥ প্রপলাযী ত্রিপক্ষেণ মৌনত্রৎ সপ্ততি দিঁ-নৈঃ। ক্রিয়াদ্বেষী তু মাসেন সা-ক্ষিভিন্নস্ত তৎক্ষণাৎ ৷৷ ইতি নার-দোক্তেঃ। ক্রিয়া লেখ্যাদিক। সা-কিভিন্নঃ সাক্ষিভিঃ পরাজিতঃ । বাদিনোক্তস্য সাধ্যস্য প্রতীতং বদহীতি প্রতিবাদী ৷ উত্তীর্যাতে

নি স্তীৰ্ব্যতে প্ৰক্লভাভিযোগো ২-নেন ইতি উত্তর । যাজ্ঞবন্ধ্যঃ। শ্ৰুতাৰ্পসোত্তর লেখ্য পূৰ্বাবে-দক সন্ধিধে। লেখ্য মিতি বাক্য-माभूगिनकक्षा 🛊 ॥ উত্তর य-ৰূপ॰ তদ্ভেদা॰ চাহ নারদঃ। প-ক্ষন্য ব্যাপক সার মসন্দিশ্ধ ম-**নাঙ্গল•। অ**ব্যাখ্যাগম্য মিত্যেব মুক্তর॰ তিছিদে। বিদুং ।। মিথ্যা সংপ্রতিপত্তিত্বং প্রত্যবস্কন্দন স্ত-থা। প্রস্তন্যায়া শ্চোতরাঃ প্রো-ক্ত। শ্চত্বারঃ শাস্ত্রবেদিভিঃ ।। অভিযুক্তো ২ভিযোগস্য যদি স্ব-यामगङ्गवः। मिथा छल् विका-নীযাদুত্তর ব্যবহারতঃ।। পক্ষস্য ভাষাৰ্থস্য ব্যাপক আচ্ছাদক অভিযোগ প্রতিকৃল মিতি মাবৎ । অতএব পূর্বপক্ষার্থ সম্বন্ধ প্র-जिशकः निर्दातस्यितिकुरिकः। न চ বিপ্রতিপত্ত্যা ন্যাবার্থ মাগত-স্য ধার্যসীত্যভিযুক্তস্য ধার্যা-মীতি সংপ্রতিপত্তেঃ কথমুত্তরত্ব অভিযোগাপ্রতিকূলত্বাদিতি বা-**छा॰। ভাষাবাদিনো मूर्थएक्रनाश** हू **७या वा कमाठिखाया** जिवामातम-বায় স্থীয়তে ইতি ভাষা বিমর্ষ পর্যান্ত বিপ্রতিপদস্যাপ্যুত্তর-

वामित्ना ভाষार्थः नगागवगना তমিষেধার্থ॰ সম্যগুত্তরাসম্ভবাৎ বিৰৎসভাষা চাসত্য বচন স-ত্যন্তাধর্মকারকং পরোক্তি পরা-कृत्य ह प्रश्नाप्तः वामिना ह देवत নিত্যাদি প্রতিসন্দধতঃ সংপ্রতি-পত্তে রুত্তরত্বং সম্ভবত্যেব। এবং এতেভ্য এবানিস্তারাৎ সাধ্যত্বে-ताशिमकेमा शक्तमा मिक्कांक्ता-পন্যাদেন সাধ্যন্ত নিবারণাৎ সিদ্ধসাধনেনাপি বাদিনঃ প্রত্য-বস্থানাচ্চোত্তরত্বণ সম্পুতিপত্তেঃ সিদ্ধ মিতি। সারু প্রক্কতোপযো-িগি। অনাঙ্গলং পূর্বাপর বিরোধ-শूनाः। खवााथाशमा मधाहा-রাদিক বিনৈব প্রতীত অভি-ষোগদ্য অভিযুজ্যতে ইত্যভি-যোগঃ সহেতুক সাধ্য তস্যাপ-হ্রব মিত্যথাঃ ॥ 🟶 ॥ উত্তরাভাষ মাহ কাত্যাবনঃ। প্রক্তেনত্বস-ষদ্ধ° অত্যন্ন মতিভূরি চ**া পক্ষৈ**-কদেশব্যাপ্রৈয়ব তচ্চ নৈবো-তর॰ ভবেৎ ॥ অন্ত ব্যস্ত পদ-ব্যাপি নিগূঢার্থণ তথাসলং। ব্যা-খ্যাগম্য মৃদারঞ্চ নোত্তর শৃদ্য-তে বুধৈঃ॥ অন্ত ব্যস্ত পদব্যা-পি অন্বিতার্থ পদব্যাপ্ত মিতি

ব্যবহারভিলকে ভবদেবভট্টাঃ ॥ 🗱 ॥ भिट्याखित एजमभार्जुः भून वंगिम नात्रमो । मिटेथा**ञ्**ना-ভিজানামি মম তত্র ন সন্নিধিঃ ৷ অজাত শাস্মি তৎকালে ইতি মিখ্যা চতুর্বিধ ।। মিথ্যৈতদিতি শব্দতো নাভিজানামীত্যাদিক মর্থতো ২পত্নবঃ। তথাচ কাত্যা-যনঃ ৷ শ্ৰুত্বা ভাষাৰ্থ মন্যস্ত যদি ত॰ প্ৰতিষেধতি ৷ অৰ্থতঃ শব্দতো বাপি মিখ্যা তজ্জেষ মুন্তর ।। দ্ব॰ মহু॰ ধার্যসীতি প্রতিজ্ঞাবাণ ন গৃহীত মিতি শব্দতঃ। কাল-বিশেষ গৰ্ভাষা তস্যা সত্যাণ তদা নাহু জাত ইতি অর্থতঃ। দেশ কালবিশেষ গর্ভাষাণ তদা-তত্র নাহ মাসং ইত্যপ্যর্থতঃ। দে-শাদিমত্যা তচ্ছন্যাষা বান জা-नामीठार्थठ এवे यागान्यत्व নার্থত স্তদগ্রহণ প্রতিপাদনাৎ অত্র চরমত্রবং গ্রহণাবক্ষদন মৃ-খেন গ্রহণাভাব প্রতিপাদক সা-পদেশমিথ্যোত্তর মাত্র॰ আদা॰ নিথ্যো ভরমাত্র ।। ৠ ।। বৃহস্পতিঃ । শ্রুত্বাভিযোগ প্রত্যথী যদি ত॰ প্রতিপদ্যতে ৷ সা তু সংপ্রতিপ-ত্তিঃ স্যাচ্ছাস্ত্রবিদ্ধি রুদাহত।।।

वर्षिन। जिहित्वा स्था २४३ अ-**जाभी यमि ७**॰ जभा । श्राभाग কারণ জয়াৎ প্রত্যবন্ধন্দন হি ७९॥ जाठाद्रिगावम्यां भि भून र्लिथराज रामि । माजिरशरा জিতঃ পূৰ্ব প্ৰাড্ন্যাযম্ভ স উচ্য-তে ৷৷ অভিযুজ্যতে ইত্যভিষো-গঃ ৷ প্রতিপদ্যতে ২ দীকরোতি ৷ ত সাধ্যার্থ । তথা প্রসদ্য সত্য-দ্বেনাঙ্গীরুত্য। কারণ তৎপ্রতি-কূলৰূপণ কারণ জ্বাৎ তদা তদূত্তর প্রত্যবক্ষদন । বাদ্যুক্ত-मा প্রতিকূলত্বেন প্রত্যবন্ধদান মিত্যর্থঃ। প্রতিপক্ষাবস্কন্দনাৎ প্রত্যবন্ধন্দন মিতি জীমূতবা-হনঃ ৷৷ 🗱 ৷৷ তঞ্চ কারণোভরণ बिविक्षः । *वनव* ः जूनावनः मूर्बः **नक**। তত্ৰ বলবদুত্তর যথা । দ্বতঃ শত গৃহীত মিতি সত্য কিন্তু পরিশোধিত মিতি ৷ অত্র উত্তরবাদিন এব ক্রিষা নির্দেশঃ । তথা চ নারদঃ। আধর্য্য পূর্ব-পক্ষস্য যশ্মিমর্থবশাস্তবেৎ। বি-বাদে সাক্ষিণ স্তত্র প্রফীব্যাঃ প্র-**তিবাদিনः ॥ आध्याः मूर्वलपः** পূৰ্বপক্ষসা। ততশ্চ স্থাপকসাধ্য-मा धार्मामा भाषा भाषा कार्य कार्य कि-

র্যাতনাদি তক্রপ মৃত্তরণ কারণো-ন্তর ৷ অভএব নিখ্যোত্তরাদস্য ভেদঃ। ভদ্ধি বার্য্যমাণত্বস্যাত্য-স্তাভাব প্ৰযোজক মগ্ৰহণৰূপ**•** म जू श्राम्त्रा 🛊 ॥ जूनावन-कान्रत्गाखन यथा। मनीत्यय छ-মিঃ ক্রমাগতস্থাদিতি বাদ্যুক্তে **ম**-मीरवर ज्या क्यागठवानि ज প্রতিবাদিনা তথোত্তর মিতি তত্র পূৰ্ববাদিনঃ সাক্যুপন্যাসঃ। ত-দসামর্থ্যে প্রতিবাদিনঃ । তথা চ বাজ্ঞবদ্ধ্যঃ। সাকিষ্ভবতঃ সৎ-म् माकिनः शूर्वरापिनः। शूर्वश-ক্ষে ২ধরীভূতে ভবস্তুয়ত্তর বাদি-नः ॥ **॥॥ पूर्वनका**त्रणाखत्र य-থা। মনেষ ভূঃ ক্রমাগতত্বাদিতি বাদ্যুক্তে মনেয়ণ ভূ দশবৰ্ষ ভুজ্য-মানস্বাদিতি প্রত্যুত্তর তত্ত্ব যাত্র প্রযুক্ত। পশ্যতো ২ক্রব-ত। रानि धन्मा मनवार्षिकी । ইতি ষাজ্ঞবন্ধীয় বীজ । কিন্ত **নৈতদ্মুক্ত•। পরেণ ভুজ্যমানা**যা ভূমে ৰিশতি বাৰ্ষিকী ৷ ইতি ভূ-মি মাত্র বিয়ক তৎপরার্কেনা-পোদিতত্বাদিতি ভবদেৰ ভটাঃ। পশ্যতো ংক্রবতো হানি ভূমে র্বি॰শতি বাষিকী। পরেণ ভুজ্য-

गानाया धनमा मुन्य यिकी ॥ ইতি শূলপাণিষ্ত পাঠোপি ত-ত্রার্থে প্রমাণ । ততশ্চাত্র ক্রমা-গতত্বে পূৰ্ৰবাদিনঃ প্ৰমাণোপ-ন্যাসঃ। তথাচোক্তণা গুরাবভি-িহিতে হেতৌ প্রতিবাদি ক্রিয়া ভবে । पूर्वता वामिनः थ्याका ক্রিয়া তুল্যেপি বাদিনঃ ॥ আচা-রেণ ব্যবহারেণ। অবস্থানে। ভঙ্গী । লেখযতে ভাষা মিতি শেষঃ। স-বাদী অস্মিন্নর্থে ময়া পূর্বণ পরা-জিতঃ বাচ্যঃ প্রাঙ্ন্যায়ো হি ধা-ৰ্য্যমাণত্ব সামান্যাভাব জ্ঞাপকঃ ।। 🗱 ।। এতেষা॰ সঙ্করে বিশেষ-মাহতু ব্যাস হারীতৌ। মিথ্যো-ত্তরণ কারণঞ্চ স্যাতা মেকত্র চে-দুভে। সত্যঞ্চাপি সহানেন তত্র আছে কি মুতর ।। মিখ্যা কারণ-ষে বাপি আছে কারণ মৃত্রে। ষৎ প্রভূতার্থ বিষয়ণ যত্র বা স্যাৎ ক্রিয়া ফল ।। উত্তরণ তত্ত্ব বিজে-ষ মসংকীৰ্ণ মতো খন্যথা। শৃতা-ভিষোগে শতগ্ৰহণ মিথ্যা পঞ্চা-শদেব গৃহীতা স্তাশ্চ পরিশুদ্ধা ইতি মিখ্যা কারণাংশযো স্তল্য **ৰূপত্বে** কারণে ত্রেণ আ**হুণ আ**-को विठातनीयः পরিশোধনস্যা-

ৰাচীনত্বেন স্মরণার্হত্বাৎ পশ্চা-নিথ্যে ভর তত্ত্ব খণস্য চিরাতী-তৃস্য কট প্ৰতিপাদ্যত্বাৎ ৷ এবঞ্চ नवंजानियारम मिरेशाज्य यसि পুরাণা এব মধা গৃহীতা স্তত্রাপি ত্রি॰শৎ পরিশুদ্ধা স্ত্রি॰শদ্ধারযামি ইতি মিথ্যা কারণ সত্যৈঃ সন্ধী-র্ণোরোত্তরে ২পি পূর্ববৎ কারণো-ভরমেব গ্রাহ্ণ মিথ্যা কারণযো ৰ্বাপীতি বাপি শব্দাভ্যা তথা দ-শিতত্বাৎ সত্যোত্তরস্য স্বয়ং স্বী-ক্তত্বেন নিৰ্যানহ্যাদিতি ভা-वः। প্রাওন্যাযেন সহ সর্বথৈব সঙ্করানুপপত্তি রিতি তন্মেকি ষদি শত মিথ্যা পঞ্চবি শতি পু-রাণা গৃহীতা তে চ পরিশুদ্ধা স্ত-था गिथा। भमा अनुतार्थ विषय-স্য বিচার উপক্রমণীয়ঃ। ভয়ে। ২নুরোধস্যাভ্যহিতত্বাৎ পশ্চাৎ यनार्थमा विठात इंछि । जूनार्थ विषयद्व ७ यब कियायाः माक्गा-प्तः कलः निर्भशः भीष्रः छवि তদংশলৈয়ের প্রমাণ্ণ গ্রাহ্ণ তথা যদি শতগ্ৰহণে পত্ৰ মস্তি শতাপ-इत् ह शक्षाम् श्रितमाध्त नाकिन छना मिथ्या खत्र अवारिनो তৎ খণ্ডনায় গ্ৰহণপত্ৰ গ্ৰাহণ লিখিতস্য সাক্ষিভ্যা বলবব্দ্রেন
সমাঙ্ নির্গষ কারিত্বাৎ পশ্চাৎ
পরিশোধন সাক্ষিণঃ প্রস্টব্যাঃ।
সক্ষরোত্তর মপ্যসন্ধীর্ণ মদুষ্ট অতো ভিন্ন মন্যথা সন্ধীর্ণ দুষ্ট মিত্যর্থঃ। অত্র চাবচ্ছেদ ভেদেন
মিথ্যোত্তর সন্ধরে সদূতরত্ব মেকাবচ্ছেদেন। সন্ধরে তু অসদূত্তরত্বমাহ কাত্যায়নঃ। পলেকদেন
শেষৎ সত্য মেকদেশে চ কারণণ
। মিথ্যা চৈটবকদেশে স্যাৎ সকরাত্তদন্তরণ। একদেশে ইত্যত্র
একস্মিন্দেব দেশে ন ভিন্নদেশে
যথা শতং ধার্যাম্যেব পরিশোথিতংন গৃহীতম্বা ইতি॥ #॥

অথ ক্রিযাপাদঃ ।
উত্তরাভিধানানস্তরণ যাজ্ঞবন্ধ্যঃ
। ততো ২থী লেখমেৎ সদ্যঃ
প্রতিজ্ঞাতার্থ সাধকণ । অথী বাদী প্রতিবাদী চ স্বপক্ষাথিত্বাৎ ।
তযো রধিকারে নিয়ন মাহ ব্যাসঃ। প্রাঙ্ন্যাধে কারণোক্তৌ চ
প্রতাধী সাধ্যেৎ ক্রিয়াণ । মিথ্যোত্তরে পূর্বাদী প্রতিপত্তৌন
সা ভবেৎ ।। মিথ্যোত্তরে ন গৃহীভং মযেত্যাদিরপে পূর্বাদী ভানাবাদী সাক্ষ্যাদিকং নির্দিশে-

মোত্তরবাদী তত্র তস্য মানুষ্যাঃ क्रियाय। अमर्खवामिष्ठि नगारमा-মূল অত্রাপি সাক্ষ্যাদ্যভাবে উ-তরবাদিন এব দিব্য । ন কন্চি-দভিষোক্তার দিব্যেষু বিনিষো-জযেৎ। অভিযুক্তায দাতব্য• मिवा॰ मिवाविशातरेमः । **ই**তি কাত্যাযনোক্তেঃ। অত্ৰ পূৰ্বাৰ্দ্ধে-नार्थिता मिवानित्राक्ष প্রত্যথিন স্তৎ প্রাপ্তে পরাদ্ধা-ভিধান॰ সিদ্ধে সত্যারস্ভো নিষ্-মাষ ইতি ন্যাযান্নিযমার্থণ ন চ ব্যাস বচনে ক্রিয়াপদ কারণো-ত্তর মানুষী দৈবীপর মিত্যেতা-বদর্থক মিথ্যোত্তরেপ্যনুযুজ্যতে ইতি তত্রাপি অর্থিন এব দিব্য মিতি বাচ্য শ্ৰেষমাণ পদস্য হি পুন রম্বার্থ মেবানুষঙ্গঃ। নম্ব-র্থবৈষম্য সহিত্য্য গৌরবাৎ পূ-(बाक नाग मुनक विषयनारको काञायत्नाक मिताविषय नि-यगजनानर्षाक गत विवास वि-ষ্যে প্রত্যথী সন্দিহান স্তত্ত ত-স্যোত্তরানহত্যা অর্থিন এব দৃ-ফৈঞিয়। ভদসম্ভবে তস্যৈব দিব্যং ন তু প্রভার্থিনঃ অধিকার নিশ্চ-যাভাবাৎ অথিন তৎসত্বাৎ নচ

ন কশ্চিদভিযোক্তার মিত্যাদিনা বিরোধ স্তদ্যোত্তরার্হপ্রতিযোগি বিষ্মস্থাৎ এতদ্বিষয় এব ধনস্বা-মিনো দিব্য মিভি লোকপ্রবাদঃ ।। 🟶 ।। লিখিতাদ্যভাবেনাপি দি-.ব্য মাহ যাজ্ঞবন্ধ্যঃ। প্রমাণ লি-থিত ভুক্তিঃ সাক্ষিণশ্চেতি কীৰ্ত্তি ত । এষা মন্যতমাভাবে দিব্যা-ন্যতম মুচ্যতে ৷৷ 🏶 ৷৷ অথ দিব্যুণ । पिरानगर मधर। जुलाशारमा বিষ কোষো দিব্যানীহ বিশুদ্ধ-ষে। মহাভিযোগেছেতানি শী-র্ষকন্তে ২ভিযোক্তরি। রুচ্যা বা-नाजतः कर्याानिज्या वर्खराक्रि-तः । विनामि भीर्यकः क्या ६ न्-পদ্রোহে ২থ পাতকে। মহাভি যোগেষু মহাপাতকাদি গুরুত-রাভিষোগেয় । শীর্ষকস্থা শীর্ষ-ক প্রধান ব্যবহারস্য চতুর্থপা-দো জয় পরাজয় লক্ষণঃ তেন দ-খে। লক্ষ্যতে। তত্ৰ তিষ্ঠতি বৰ্ত্ততে তদঙ্গীকরোতীত্যর্থঃ। অত্রাভি-ষোক্তুঃ শিরোবর্তিন্বোক্তে রভি-যোজাস্য দিব্যকর্ত্ত্ব প্রতীয়তে । প্রত্যথী চ্ছেষা অর্থিনো দিব্য মাহ রুচ্যেতি। ইতরো ২ভিযুক্তঃ । এতৎ সর্ব॰ দিব্যতত্ত্বে বিবৃত॰।

প্রতিজ্ঞাতার্থ সাধকমিতি সাধক माक्गामिक । जमार वृहम्मिजिः । দিপুকারা ক্রিষা প্রোক্তা মানুষী रिनिविको छथा। माक्कि लिथान्-মানঞ্ মানুষী ত্রিবিধা স্মৃতা ॥ ४-টাদ্যা ধর্মজান্তা চ দৈবিকী নব-ধা স্মৃতা। তত্রানুমানম্ব ভুক্ত্যাদি ।। 🟶।। তত্র সাক্ষ্য মাহ মনুঃ। স-यक प्रभाव भाका अवगरिकव সিধ্যতি। এতৎ প্রযাণ মাত্রোপ-লক্ষণ । অনুভাবী চ যঃ কশ্চিৎ হ্বৰ্যাৎ সাক্ষ্য বিবাদিনা ইতি তদ্বচনান্তরাৎ। অতএবারুভম-পি সাক্ষিণ মাহ মনুঃ। যত্রানিরু-দ্ধো বীক্ষ্যেত শৃণুযাদ্বাপি কিঞ্চন । পৃষ্ট স্তত্তাপি তদ্বাষাৎ ৰথা *দৃষ্ট॰ ষথা শ্রুত*॰ II অনিরুদ্ধ স্তু ম-ত্র সাক্ষিত্বেনানিযুক্তঃ। পরস্পর-यानि व्यवनमात्र विकुः। উদিके সাক্ষিণি মৃতে দেশাস্তর গতে ২পি বা। তদভিহিত শ্রোতারঃ প্রমাণ নাত্র সংশযঃ। অস্যোত্তর সংজ্ঞা गार नात्रमः। माकिना मि य९ সাক্ষ্য॰ স্বপক্ষ॰ পরিভাষতা॰। 🛎-বণাৎ আবণাদাপি স সাক্যুত্ত-র সংজ্ঞকঃ। স্বপক্ষ সম্বন্ধি সাক্ষ্যণ পরিভাষতা সাক্ষিণা ষঃ স্বস্থ

শৃণোভি অধিনা প্রাব্যতে বা স অবণাৎ আবনাদুত্রসাকীতার্থঃ । खर ता श्थिन। गृज्या अखा থিবচন প্রাবিতঃ স গূচসাকী-णार्म এत। अर्थिना सार्थिमका-্র্পতপ্রত্যর্থি চবন স্ফুট । यः আ-ব্যতে তদা গুঢ়ো গুঢ়সাক্ষী স উ-্চ্যতে ৷৷ তেনান্যতর বাদ্যভিহি-ভার্থ বিষষক দৃষ্ট কারণজ বি-জ্ঞাপন সাক্ষ্য মিতি স্থিত । তত্ৰ নারদঃ ৷ তেষামপি ন বালঃ স্যা-হৈকে। ন ত্রী ন দুষ্টরুৎ। ন বা-ন্ধবো নচারাতি জ্রাযু স্তে কার্য্য मनाथा।। कार्याः नमि वानाथा **ত** विक्रक्त एवन । এবঞ্চ यদि পরম-ধার্ম্মিকত্বেন বান্ধবাদীনামপি স ত্যবাদিত্ব নিশ্চীযতে তদা তে ২-পি সান্দিগোভবিতৃ মর্ম্ভীতি তে-্ষাণ সাক্ষ্য বিধায়ক বক্ষ্যমাণ্ম-নুবচন মপি এতাদৃখিবষণ। যাজ্ঞ-वकाः। कावताः माकित्ना एक्याः শ্রোত সার্ভ ক্রিয়ারতাঃ াযথা-জাতি ৰথাবৰ্ণ সৰ্বে সৰ্বেষু বাস্মৃ-তাঃ ৷৷ ত্রমো ২বরা নিক্লফা যেষাণ তে ত্রাবরাঃ ত্রিভ্যো খন্যুনা ভব-ন্তীত্যৰ্থঃ। যথেতি যো ষজ্জাতীয স্থস্য তব্জাতীয়ঃ সাক্ষী ৷ স্ত্ৰীণা

ল্রিযো হন্তাজানা নন্তাজাঃ। य-थावर्ग बाक्यनाना वाक्यनाः कवि-यामीनाः कवियानवः। अञ्चादव বরা ইত্যস্যাপবাদ মাহ সত্রব। উভযানুমতঃ দাক্ষী ভবেদেকো **ংশি ধর্মবি** । উভ্যানুমতত্ব ধ-ৰ্মবিল্বঞ্চ নিষত তত্ত্ৰ । তদাহ বিষ্ণুঃ। অভিমত গুণসম্পন্ন স্তৃ-ভযানুমত স্তেকে। ২পি ইতি । অতএব শোত্রিয় মপ্যেক নিষে-ধয়তি বৃহস্পতিঃ। নব সপ্তপঞ্ বা স্যুশ্চদার দ্রম এব বা। উভৌ जू व्याविरये वास्त्री तिकः ग्-চ্ছেৎ কদাচন ৷৷ একো মিলিত শুণসম্পন্ধঃ প্রধানকল্পঃ তদভাবে উভযানুমতমাত্রো ২পি ঞাছ স্ত-**मारु नात्रमः । উভयान् मट्या यः** मा जुर्या विवन गान रयाः। ज्व-ত্যেকো ২পি সাকিছে প্রশ্বরঃ मा। म मन्मि। उउँचान्मठ একো श्लूकाशिमा गर्रकम अ-বহুজন সমিধে প্রফীব্যঃ তথাত্বে নেহ বৈরাদি সবে ২পাকীর্ত্তি ভ-যাৎ সত্যাভিধান সম্ভবাদিত্যাশ-ষঃ। বিচারস্য তত্ত্বনির্ণযার্থত্বাত্ত- নিহি মনুঃ। একোপ্যলুক্তঃ সাকী স্যাৎ বহ্যাঃ শুটো পশি ন স্ত্রিয়ঃ । **জীবুদ্ধে** রন্থিরম্বান্তু দোবৈ **শ্চা**-ন্যে ২পি ষে বৃতাঃ।। একো ২লু-**ৰম্ভ সাক্ষী স**্যাদিতি সন্নুকভট্যৰূ-• छशार्रः। একো न्स खुमाकी मा-**मि** জीमृতবাহনধৃতপাঠ स्त न बुकः। नुकाट्य बर्दाभागाकि-ণো ভবিতু মহস্তীতি একপদব্যর্থ-তাপত্তেঃ। ভবতুবা তৎপাঠঃ ত-থাপ্যেক ইত্যনুরোধাৎ তন্নিষে-**४** यू (थना न्कटेमां कमा। न्यिक म-ত্ত্বে ধর্ম্মবিত্ত্ব মন্তরেণ সাক্ষিত্বণ বো-ধা॰ ইত্যর্থতো ন বিরোধঃ। অ-তএব বিশ্বৰূপ প্ৰভৃতীনা উভ-**বানুমত একএব সাক্ষীতি ব্যাখ্যা**-त्न धर्मविपिछि त्नाकुः। प्राटेष-স্তেযাদিভিঃ। তথা চ নারদঃ। স্তেনাঃ সাহসিকা ধূর্ত্তাঃ কিত-বা যোধকাশ্চ যে। অসাক্ষিণ স্ত-তে দৃষ্টা স্তেষু সত্য° ন বিদ্যতে॥ কিতবা দূতকরাঃ।। 🟶।। অপবাদ माइ छमना। मारमा रक्षा विध तः अशी **खी वाल ख्वितामयः ।** এ-তেপ্যনভিসম্বন্ধাঃ সাহসে সাক্ষি-ণো নতাঃ।। স্থবিরো গ্লানেন্দ্রিय-গ্রামঃ ৷ আদিশব্দাৎ কিতবাদযঃ 🎚

। উভয়ান্মতাভাবে শুচিলিয-**ত্বাদিগুণযুক্ত লৈচ**কো গ্রাহ্ণঃ। ত-था ह रागः। एकिकियम्ह धर्भ-জ্ঞা যে। १ नावाश्यन् ভূতবাক্। প্রমাণ মেকো ২পি ভবেৎ সাহ-সেষু বিশেষতঃ ৷৷ অনুভূতবাক্ স্থানান্তরে সত্যত্বেনেতি। ভবদে-বভটো ২প্যেব॰॥ #॥ সাহস মাহ नातमः। मनूषा मात्रग एउए १-রদারাভিমর্য গণারুষ্য মন্ত-হৈশ্ব সাহসং পঞ্ধা স্মৃত ।। কা-ত্যায়নঃ। অভ্যন্তরস্ত নিঃকেপে সাক্ষ্য মেকো ২পি দাপয়েৎ। অ-র্থিনা প্রহিতঃ সাক্ষী ভবেদেকো **২পি বাঢিতে॥ স° স্কৃত° যেন ষৎ** পণ্য॰ তত্তেনৈব বিভাবষেৎ । একএৰ প্ৰমাণ স বিবাদে পরি-কীর্ত্তিতঃ ॥ সম্ফৃতণ গঠিতণ পণ্য• **ऋ**खनामि । विकृः । त्ख्य **मारम** বান্দণ্ড পারুষ্য সংগ্রহণেষ্ সা-ক্ষিণো ন পরীক্ষা ইতি স্তেষ পর-দারগমনাদি কার্য্যাণা নিহ্লবে-देनव कियमान्याद देनवादमव श-রু সাক্ষিণে ভবস্তীতি ন পরী-কা ইত্যুক্ত• ৷ তেষা• বাক্যম্ব মি-ত্রারিভাবাদি নিরূপণেটনবোপ-পত্যনুপপত্তিভ্যা মা**লোচনীয•**।

ন্তু বাক্যনাত্রাদিতি ব্যবহার্না-্তৃক। তেতাৰ কাত্যামনঃ। ঋ-,গাদিষু পরীক্ষেত সাক্ষিণঃ স্থিরক-ৰ্ম্মসু৷ স্মৃত্সাত্যযিকে নৈব পরী-ফা সত্রচিৎ স্মৃতা।। ইতি।। 🕸।। <u>(आवियामीन। मनाकामार ना-</u> রদঃ ৷ শ্রোত্রিয়া স্তাপসা বৃদ্ধা যে চ প্রব্রজিতা নরাঃ৷ বচনাত্তেম্বসা-কিত্ব॰ নাত্র হেতু রুদাহতঃ। দী-নরত্বাকরে শ্রোত্রিয়নাহ দেবলঃ । একা॰শাথা॰ সকলা। বা ষম্ভি র-ঙ্গৈ রধীত্য বা। ষট্কর্ম নিরতো ৰিপ্ৰঃ শ্ৰোত্ৰিষা নাম ধৰ্মবিৎ ॥ স্কুলা<sup>ণ</sup> কল্পমাত্রা**ঙ্গ স**হিতাং। ব-ম্ভি রিতি সহার্থে তৃতীয়া। বচনা-দিতি শ্ৰোতিষত্বাদি**ৰূপ**াভিধা-নাৎ ন চ তত্রান্যো হেছু রিত্যথঃ । তথা চাস্বীষ বৈদিক কর্ম্মকরণ ব্যগ্রত্যা পরকীষ কার্য্যে বিষ্মর-গসম্বাৎ সাফিম্বৰূপ লঘুকাৰ্য্য নিষোগে তচ্ছাপভাষেন ব্যবহার জ্ঞারো ২পি তান্ন পৃচ্ছন্তী-তি তৎসাক্ষ্য করণানর্থক্যাচ্চ ন তে সাফিণঃ কর্তব্যাঃ কিন্তুরুভাঃ স্বয়ং সাক্ষিণো ভবস্তোব। উভৌ তু শ্রোত্রিয়ে। স্যাতা মিতি স্মৃতেঃ । বৃদ্ধস্যাসাক্ষিত্ব॰ বৃদ্ধত্বাদেব গ্লা-

निखिराशिष्टार्थः। मनुः। खी-া সাক্ষ্য প্ৰিয়ঃ স্বৰ্যু দ্বিজানাণ সদৃশা দিজাঃ। শূদ্রাশ্চ সন্তঃ শূ-দ্রাণা সন্ত্যান। মন্ত্যবেশনযঃ। অ-ভর্বেশ্মন্যরণ্যে বা শরীরস্যাত্য-ষে হপি চ। দ্রিযাপ্যসম্ভবে কা-ৰ্য্যত বালেন স্থবিরেণ বা 11 শিষ্যে-ণ বন্ধুনা বাপি দাসেন ভৃতকেন ব। দেব ত্রাহ্মণ সামিধ্যে সাহ্ম্য॰ প্চ্চেদ্ত দিজান্।। উদগ্ৰান্ প্ৰাৰুখান বা পূৰ্বাক্লে বৈ ভিচিঃ শুচীন্। ত্ৰহীতি ব্ৰাহ্মণ পৃচ্ছেৎ সত্য° ক্রহীতি পার্থিব॰।। গো বী-জ কাঞ্চনৈ ৰৈশ্যি শুজ সৰ্বৈ স্ত পাতকৈঃ। মো বীজ কাঞ্চনাপ-হারে যৎপাপ তত্তবানৃতাভিধা-নে স্যাদিতি বৈশ্যে । এতৎ সা-क्गान्जाजिशास्म ज्वान् मरैर्दः পাতকৈঃ সম্বধ্যত ইত্যুক্ত্য শূদ্র-ঞ্চ পৃচ্ছে<u> । এক্ষমো বে স্মৃতালো</u>-কা যে চ দ্রী বাল ঘাতিনঃ। সি-<u>বিদেহঃ রুতম্বা তে তে বাু ₹দ-</u> তো মৃষা।। ইতি মনুক্ত দূষণ। म् रुवक्षा अन्यत्व महमुख म-ত্যঞ্জুলয়। গৃতং। অশ্যের সহ-সান্ধি সত্য মেকাতিরিচ্যতে। ইতি यन् नातरमाङ्ग् व्यावस्य ॥ 🛊 ॥

योख्दकाः। न मनाठि हि यः मा-काः जानमाशि नताधमः। म कृते-माक्किनाः भारेश खला। मरखन চৈব হি ॥ কাত্যাখনঃ। অবীচি নরকে বর্ষ বসেযুঃ কৃট সাক্ষিণঃ। .**বাজ্ঞবদ্ধ্যঃ। স**ত্যা॰ প্রতিজ্ঞা॰ য-**म्या** जू नाकिनः म क्यी ज्य । जनायातामित्न। यमा क्षय समा পরাজ্যঃ।। বর্ণানা হি বর্গো य-ত্র সাক্ষানৃত বদেৎ। তৎ পাবনায় নিৰ্বাপ্য শ্চরুঃ সারস্ব-তো দিজৈঃ।। গৌতমঃ। নানৃত বচনে দোষো জীবনঞ্চেত্তদধীনণ ন তু পাণীয়সো জীবন° ইতি। দৈধে বহুনা বচন সমেষু গুণি-নাণ তথা। গুণিদ্বৈধে তু বচনণ প্রাহ্ণ যে গুণবত্তরাঃ॥ তেষা মি-তি শেষঃ। যত্ সাঞ্লাণ লিখি-তানাঞ্চ নিৰ্দ্দিষ্টানাঞ্চ বাদিনাণ। তেষা মেকো ২ন্যথাবাদী ভেদা-ূৎ সৰ্বে ২প্যসাক্ষিণঃ ॥ ইতি কা-ত্যায়ন বচন । তত্র্যাণা তুল্য-ৰূপাণা সাক্ষিণা নধ্যে একস্যা-প্যন্যথাবাদে অপর্ব্য ততুলাস্য সৎপ্রতিপক্ষত্যা তৃতীয়স্য কি-ঞ্চিৎ বাদিস্বে তত্র ভেদাৎ পর-স্পর বিরুদ্ধার্থাভিধানে ভেদাৎ ॥

সাক্ষিভ্যোন নির্ণয ইতি পর• 1 वृश्याि अ नाकि दिवस कर्या नि-ষ্ঠানা গ্রহণমাহ গুণি দৈধে ক্রি-যাবতা মিত্যনেন। তথা সাঞ্চি-ণো ২র্থি সমুদ্দিটোন্ সৎসু দো-रियु (मायरयः । अनुर्येः मृययन् বাদী তৎসমণ দণ্ড মৰ্হতি ইতি। তৎসম॰ বিবাদসম॰। সভাসদা-দি বিদিত সাক্ষি দূষণ মেব গ্রাহৃণ নতু ত্র্যবরাদি সাক্ষিভিঃপ্রতিপা-দ্য॰॥ ৠ॥ অনবস্থাপাতাদিত্যাহ नात्रमः। मञाममा॰ श्रमिक्षः य-লোক সিদ্ধ মথাপি বা ৷ সাক্ষিণাণ দূযণ গ্রাহ্ম নসাধ্য দোষ বর্জ-ना९॥ অন্যৈশ্চ সাক্ষিভিঃ সাধ্যে দূষণে পূর্ব সাকিণা । অনবঙ্গা ভবেদোষ স্তেষা মপ্যন্যসম্ভবাৎ ॥ অসাধ্য॰ সাধনানর্হণ সিদ্ধারা-দ্দোষ বর্জনাৎ। অনবস্থা বির-হাত্তস্মাৎ প্রসিদ্ধ দূষণ মেব গ্রা-रुः ॥ 🗱 ॥ দূষণমাহ কাত্যাযনঃ । বালো ২জানা দসত্যাৎ জ্রী পাপাভ্যাসাচ্চ কৃটক্রৎ । বিক্র-যাৎ বান্ধবঃ সেহাৎ বৈরনির্যা-তনাদরিঃ ।। यः সাক্ষী নৈব নি-দিন্টে। নাভূতো নৈব দশিতঃ। ক্রয়ান্মিথ্যেতি তথ্য বা দণ্ডাঃ

त्मा श्रि नदाधमः ॥ 🕸 ॥ यमू-ভরে যেন ক্রিয়া প্রদৃশ্যতে ত-वार्। मिथाकिया शृहवारम का-রণে প্রতিবাদিনঃ। প্রাঙন্যাযে বিধিসিদ্ধৌ তু জযপত্রণ বিনির্দ্দি-শেৎ৷৷ মিথ্যোত্তরে সতি পূর্ববাদে शृर्ववामिनि किया अर्घवा। ३७ শেষঃ ।। 🟶 ।। তদানী॰ সন্ধিমাহ বৃহস্পতিঃ। পূর্বোত্তরে ২ভিলি-থিতে প্রক্রান্তে কার্য্যনির্ণযে । ঘযো ৰুত্তপ্তযোঃ সন্ধিঃ স্যাদ্যঃ-পিওযো রিব।। উত্তাপ কারণ মা-হ সএব। সাকি সভ্যবিকল্পস্ত ভ-८वल्याका करमा त्रि । त्नानाय-মানৌ যৌ সন্ধি স্বর্যাতা তৌ বিচক্ষণৌ ॥ কাত্যাখনঃ । ক্রিযা ন দৈবিকী প্রোক্তা বিদ্যমানেষু সাক্ষিষু । লেখ্যে চ সতি বাদেষু ন দিব্য° ন চ সাক্ষিণঃ ৷৷ সমত্ব° সা-ক্ষিণাণ যত্র দিবৈয় স্তত্র বিশোধ্যে-ৎ। এতৎ সংশ্বানুচ্ছেদে বোধ্যং। যাজ্ঞবন্ধ্যঃ। নিহ্নতে লিখিতানে-ক মেকদেশে বিভাবিতঃ। দাপ্যঃ সৰ্বামৃপেণাৰ্থাম গ্ৰাম্ স্তৃনিবেদি-ण्डः ॥ या निश्रिजात्मकः मूवर्गा-দিক॰ অপলপতি স একদ্রব্যে সা-ম্যাদিভি ৰিভাবিতঃ সন্ সৰ্বান্ 🎚

ममा १ यरमाकरमन विভावतन वाहिटना श्वजाह यवशया हेह्य-পর মধা লেখবিতৃ বিশৃত মিতি ত্ৰতে স তক্ষৈ ভাষাকালে অনু-পनाञ्च॰ न ममाप्तिचक न क्वर-व॰ वाठनिक॰ किट्युक्टम**ः** दि-ভাবনাদ্বিজ্ঞানত এবাস্য তদপ-लार्थ मुः नीलकावधात्रगामभताः-শেংপি তথাত্বমেব সম্ভাব্যতে স্ ত্যবিভাবকস্যাপি প্রক্রান্ত বিষ-বে यथा वञ्च वामावधात्रशामवि-ভাবিতাংশে ২পি সত্যবাদিশ্ব স-স্তাবন মিত্যেব কপ তর্ক পরস্প-রা সম্ভাবনা প্রত্যধানুগৃহীতা-স্মাদেব যোগীশ্বর বচনাৎ সর্বণ দাপনীয় মিতি নির্ণয়ঃ এবঞ্চ **७**र्कवाक्रानुजाद्वन निर्नत्य क्रिय-মাণে বস্তুনো ২ন্যথাছে হপি ব্য-বহার দর্শিনা॰ ন দোষঃ ৷ তথা চ গৌতমেনাপি ন্যাষাধিগমে ত-কোঁ ২ভাূপামঃ তেনাপি সংগৃছ यथाञ्चानः गमरामिजुाकु। जन्मा-দ্রাজাচার্য্যাবনিন্দ্যাবিত্যুপসংস্ক-ত । এবঞ্চাস্য ন্যায়স্য বাদিদ্বয সাধারণত্বাদুভয বিষয়ত্ব বচনা-না । অতএব কাত্যায়নঃ। যদ্যে-কদেশ প্রাপ্তাপি ক্রিয়া বিদ্যেত मानुरी। मा वाका न जू भूनीनि देमविकी बम्छा॰ नृगा॰।। वम्छा॰-বিবদতা মিত্যবিশেষেণ দর্শযতি । পূर्नाणि रेपितिकी मम्य विषयि কাপি ন গ্রাহ্ম তেনৈকদেশ প্র-.िंशां िक्या मान्या व्यिषा म-মস্ত সাধ্য সিদ্ধি রিভি। ন চ য-দ্যেষা শধ্যে এক মপি মধা গৃহী-ত বিজ্ঞাবয়সি তদা সৰ্বমেব দা-তব্য• ইতি প্ৰতিজ্ঞাবিষয়কত্ব মে-কদেশবিভাবিতত্ব\* ৰচনস্যেতি জোগ্নোক্ষতানুসারি মৈথিলন-ত যুক্ত মিতি বাচ্য প্ৰতিজ্ঞা বি-ষ্যত্বে অনেকার্থাভিযুক্তেন স-ৰ্বাৰ্থ ব্যপলাপিন। বিভাবিতৈক-**(मत्भन (मय॰ यमिख्युकारक है-**ত্যনর্থকণ প্রোটিবাদেনাভিযুজ্য মানাদধিকস্যাপি প্রতিজ্ঞাতস্য দানাবশাকস্বাৎ ন গ্রাহ্ম স্তুনি-বেদিত ইত্যপি ব্যর্থ অনিবে-দিত্য্যাপি প্রাগজ্ঞাতত্ত্বেনাপ্রতি-জ্ঞাতস্য সৰ্বথৈব দেষত্বাৎ। ন চ বিভাবিতৈকদেশ বচনং ব্যাপ্য-ভূতৈকদেশ বিষয° তস্মিণ্স্ত প্র-তিপাদিতে ব্যাপকৈকদেশ প্রতী-তি রনুমানাৎ সম্ভবতীতি বাচ্য বিভাবিতৈকদেশানুমিতব্যাপক- 🏻

স্যাপি ন্যায়তো ২গ্রাহ্নত্বে সিদ্ধে ন্ঞাহ্ স্থৃনিবেদিত ইত্যভিধানা-नूश्राद्धः। এवक माधार्थाः ल নিগদিতে সাক্ষিভিঃ সকলং ভ-বেৎ। স্ত্রীসঙ্গে সাহসে চৌর্য্যে যৎসাধ্য॰ পরিকল্পিড• ॥ ইতি কা-ত্যাযনবচন । তদ্বিষয় প্রদর্শক। ঋণনিক্ষেপাদ্যগহ্নবে ২পি যো-জ্য মিতি। যতু অনেকার্থাভিয়ো-গে তু যাবৎ সংশোধযেদ্ধনী। সাক্ষিভি স্তাবদেবাসৌ লভতে সাধিত ধন ৷৷ তদৃণাদ্যনভিজ্ঞ পুত্রাদি বিষযক । তথাহি নানা বিধ পিত্রণাদ্যভিযুক্তেনাজান-তা নাহ° জানামীতি উত্তরবা-**मिना भाक्यामिछि यावक्षन॰ श्र-**তিপাদযতি তাবদেব পুক্রেণ দা-তব্য° এবমেব বিশ্বৰূপ জীমূত-বাহন প্রভূত্যঃ । কাত্যায়নঃ । অনুমানাদরঃ সাক্ষী সাক্ষিত্যে। লিখিত গুরু। অনিরুদ্ধা ত্রিপুরু-ষী ভুক্তি স্তেভ্যো গরীষসী॥#॥ অনুমান প্রত্যাসম্বলিত তদাহ মনুঃ। বাহৈছ বিভাববেল্লিফৈ র্ভা-ব মন্তর্গত॰ নৃণা॰। স্বরবর্ণেঞ্চিতা-কারে শ্চক্ষুষা চেক্টিতেন চ॥ স্ব-রো গদ্দাদাদিঃ বর্ণো ২স্বাভাবি- কিঃ। ইঙ্গিত স্বেদ বেপথু রোমা-ঞ্চাদি। আকারো বিক্ততঃ। চক্ষুষা কাতরেণ।চেষ্টিতেন স্থানত্যাগা-**मिना। এষাঞ্চান্যথাসিদ্ধে पूर्निक**-প্যদ্বাদেভ্যঃ সাক্ষী বলবান্ ইত্য-र्थः ॥ 🟶 ॥ মুখনিৰূপ্যত্বে তু যাজ্ঞ-বক্ষ্যঃ। দেশাদেশান্তর॰ যাতি সৃক্ষণী পরিলেটি চ। ললাট স্বি-দ্যতে চাস্য মুখ বৈবৰ্ণ্য মেতি চ ।। পরিশুয়াৎস্থলদাক্যো বিরুদ্ধণ বহু ভাষতে। বাক্ চক্ষুঃ পূজ্যতি নো তথৌঠো নিভূ জত্যপি ৷৷ স্ব-ভাবাদ্বিক্কতি॰ গচ্ছেম্বনো বান্ধা-য কর্মভিঃ। অভিযোগে চ সা-শ্বেন চ স দুষ্টঃ পরিকীর্ত্তিতঃ ॥ ন পরোক্তা॰ বাচ॰ প্রতিবচনেন পূজ্যতি তথেষ্ঠি চক্ষুশ্চ পরকীয বীকণেন নিভুজিতি সটিলীক-রোতি যদা মনো বাক্কায কর্ম্মভিঃ স্বভাবাৎ পূর্বোক্তা॰ যথাযো-गा॰ विक्विं शत्कुलमा **म पू**र्य ইত্যর্থঃ ৷ অতএব শ্রীরামায়ণে ৷ আকার শ্ছাদ্যমানো ২পি ন শক্যো १८मी निशृहिजू । वला-দ্ধি বিৰূণোত্যেৰ ভাৰ মন্তৰ্গত॰ নৃণাণ।। আকারো দেহধর্মঃ মুখা-व्यमान देवदर्शक्यः । नादमः ।

সুদার্ঘেণাপি কালেন লিখিত मिश्वि माश्रुया । मः जानमाश-নো লেখ্য মজানং স্তত্ত্ব লেখ-**यर ॥ मूमीर्यराजि म**न्कारता-দোধকলিখনসত্ত্বাদয় চিরেণা-পি সাক্ষ্যু দাতু শক্ষোতীত্যর্থঃ ॥ 🗱॥ निशिखः वश्खन त्न-খবেৎ তদক্ত পরহন্তেনেত্যাহ व्यामः । जनिनिएका अनी यः স্যাৎ লেখযেৎ স্বমতন্তু সঃ। সা-ক্ষী বা সাক্ষিণান্যেন সৰ্বসাক্ষি-সমীপগঃ ৷৷ বৃহস্পতিঃ ৷ মুযিত৽ যাতিত যচ্চ সীমাযাশ্চ সমস্ত-তঃ। অক্লতো হপি ভবেৎ সাক্ষী গ্রাম স্তত্র ন সংশ্বঃ ৷৷ ৠ ৷৷ অর্ন-তা অপি সাক্ষিণো ভবন্তীত্যাহ্তু र्मनू काळायतो। जता पुन त-निर्फिकाः माकिनः ममून। श्राटाः। গ্রামশ্চ প্রাডিবাকশ্চ রাজা চ ব্যবহারিণা॰॥ কার্য্যেন্বভ্যন্তরো-यः माप्तर्थिन। श्रहिज्य यः । ञन्माः ञनिविचारमयु ७८वयु ८उ १िष माकिनः॥ स्रृिकः। मुखान-ত্তে ২থ ভূত্যানাং স্বামিনাং নি-র্গমে সতি। বিক্রয়াদানসম্বন্ধে ক্ৰীত্বা ধন মনিচ্ছতি ৷৷ দৃয়তে স-সাহ্বযে চৈব বিবাদে সমুপস্থিতে।

সাঞ্চিণঃ সাধনং প্রোক্তং ন দিব্যং ন চ লেখাক॰॥ প্রক্রান্তে সাহসে বাপিপারুষ্যে দণ্ডবাচিকোবলো-खटवयू कार्यायू माकिरना निवा-মেব চ ।। বৃহস্পতিঃ। লেখ্য॰ ব। .সাকিণো বাপি বিবাদে যস্য দূষি-তাঃ। তস্য কাৰ্য্য॰ ন সিধ্যেত যা-বত্তন্ন বিশোধষেৎ ৷৷ তল্লেখ্য সা-কিকগ প্ৰমাণ° ॥**ঞ্চা। লেখ্য শো**-ধন মাহ কাত্যাযনঃ। স্বহস্ত লে-খ্য সন্দেহে জীবতো বা মৃতস্য চ । তৎ স্বহস্ত ক্তে রন্যৈঃ পত্রে স্তল্লেখ্য নিৰ্ণয়ঃ।। তথা সমবেতৈ-শ্চ যদ্দটে॰ বক্তব্য॰ তত্ত্তথৈব চ। বিভিন্নেনৈব কাৰ্য্যে তু তদ্বক্তব্যং পৃথক্ পৃথক্।। নাপৃষ্টে রনিষুজে ৰ্ষা সন্দ সভ্যা প্ৰয়ত্নতঃ । বক্তব্য সাঞ্চিভিঃ সাক্ষ্য বিবাদ স্থান मागरेजः ॥ अनुिहत्यन हिट्छन मुके मगाधिमा जू य९। প্রত্যক্ষণ ত শৃত কাৰ্য্য সাক্ষ্য সাকী তু তদ্বদেৎ।। নারদঃ। যঃ পরার্থে ২পহরতি স্বা॰ বাচ॰ পুরুষাধমঃ। আত্মার্থে কি॰ ন স্বর্যাৎ স পা-পী নরক নির্ভযঃ॥ অর্থা বৈ বাচি নিষ্তা বাগুলা বাগ্বিনিঃসূতাঃ । যস্ত্ৰ তা॰ স্তৈনষেদ্বাচ॰ স সর্ব-

खियक्त्रज्ञ । । < । विश्वायनः । **१५** পশ্বনৃতে হম্ভি দশ হস্তি গবানৃ-তে । শতমশ্বানৃতে হস্তি সহসু° পুরুষানৃতে।। হস্তি জাতানজা-তা॰শ্চ হিরণ্যার্থে ২নৃত॰ বদন্। স্ৰ্ৰণ ভূমান্তে হন্তি সাক্ষ্যে সা-ক্ষী মৃষা বদন্।। বৃহস্পতিঃ। যস্য শেষণ প্রতিজ্ঞাতণ সাক্ষিভিঃ প্রা-তিপাদিত<sup>।</sup> । म ज्यो मापनाथा जू माधार्थं न ममाश्रु वा< ॥ या-ক্তবন্ধ্যঃ। উক্তে ২পি সান্ধিভিঃ সাক্ষ্যে যদ্যন্যে গুণবত্তরাঃ। দ্বি-গুণা বান্যথা জ্বযুঃ কূটাঃ দ্যুঃ পূ-र्बमाकिनः ।। अनाथा शृह्वितिशती-তার্থ প্রকারেণ। কূটা অনাদেয বচনাঃ ৷ তথা ৷ যঃ সাক্ষ্যু প্রা-বিতে৷ খন্যেভ্যো নিহ্নতে তমসা-বৃতঃ। স দাপ্যো ২ফ গুণ দণ্ডণ बाक्म विवाम एव ॥ इन्त्रा-ভাঃ সাক্ষ্য প্রাব্যেতি বাদিনা প্রযুক্তো যঃ প্রাবিতঃ কারিতম্ব-যাৎ পদসিদ্ধিঃ এবস্তৃতো ২পি সভাষা নিগদকালে সাক্ষ্য নি-হ্নতে য স্তস্যাফিণ্ডণো দণ্ডঃ।।#॥ অথ লিখিত ৷

তত্র বৃহস্পতিঃ। বাণ্মাবিকে ২-পি সমযে ভ্রান্তিঃ সংজাযতে যতঃ । ধাত্রাকরাণি সৃষ্টানি পত্রাৰতা-ন্যতঃ পুরা।। নারদঃ। লেখাণ তু দ্বিবিধ প্রোক্ত স্বহস্তান্যরূতণ তথা ৷ অসাফিক সাফিনচ্চ সি-षि **र्मगङ्**ठि उरगाः ॥ मृठाञ्ज माकिता यव धनिकर्णिक त्वथ-কাঃ। তদপ্যপার্থ করণ মৃতে স্বা-ধেঃ স্থিরাশ্রয়াৎ ৷৷ দশিত প্রতি-কালঞ্চ পাঠিত স্মারিতঞ্চ ষৎ। লেখ্য সিধ্যতি সৰ্বত্ৰ মৃতেম্বপি চ माकिषु ॥ व्याथा प्रमाखद्रव्य ह **দक्षि** पूर्निशिष्ठ ऋष्ठ । সত **छ**९ কালহরণ মসতে। জফূ দর্শন ।।। ছিম ভিম ক্তোমৃষ্ট নন্ট দুর্লি-থিতেষু চ। কর্ত্তব্য মন্যালিখিত। एश्य जिथाविधिः सृष्ठः ॥ जि-খ্যু॰ যচ্চান্যনামাঙ্ক॰ হেম্বস্তর-ক্লতন্তবেৎ। বিপ্রতিপত্তৌ গরী-ক্ষ্য° তৎ সম্বন্ধাগমহেতুভিঃ ॥ স্বলেখ্য মসাক্ষিক মপি প্রমাণ অন্যদারা লেখা সাক্ষিমদিতি य्थाम॰ त्थानाम्रयः । तम्मञ्रिट ৰ্যস্মিন্ দেশে যাদৃশ লেখ্যস্থিতিঃ প্রবর্ত্ততে তত্র তাদৃশ্যাঃ। তযোঃ স্বহস্তান্যহস্তক্তলেখ্যযোঃ। মৃ-তা ইতি সাক্ষ্যাদৌ মৃতে পুত্রাদি-নংস্থ লেখ্যপত্রং ন সিধ্যতি ।

যদ্যাধিভোগো ২স্তি তদা তদপি প্ৰমাণ মিত্যৰ্থঃ ৷৷ ঋ ৷৷ ব্যক্ত মাহ কাত্যায়নঃ। যত্ৰ পঞ্চন্নাপন্নো লেখকঃ সহ সাক্ষিভিঃ। ঋণিকো ংধনিকশ্বৈচৰ নৈনং পত্ৰং প্ৰমাপ-ষেৎ।। দৰ্শিত মিতি তথাবিধ মপি পূৰ্ব মৃণিকাদি সমিধৌ স্বয-মন্যেন বা দর্শিতং স্মারিভয়া ত-দিপি সিধ্যতীত্যর্থঃ । সতে। দে-শান্তরন্থপল্রস্য তৎকালহরণণ পত্রানয়নকাল প্রতীক্ষণ । অ-সতো দন্ধাদেঃ তদবলোককো-পন্যাসঃ। লেখ্য মিতি যৎ পত্ৰণ কেনাপি হেতুনা অন্যনামচি-হ্লিত তত্র বিপ্রতিপত্তী যমামা পত্র॰ তেন সহাস্য বিশ্বাসহেতু-ভূত সম্বন্ধাবগমৰূপকারণৈ নি-ণেঁতব্য মিতি । বৃহস্পতিঃ । সুমৃ-ষ্ট শিশু ভীতাৰ্ত্তেঃ স্ত্ৰী মত্ত ব্য-সনাতুরৈঃ। নিশাপৎসু বলাৎ-কারেঃ ক্বতং লেখ্যং ন সিধ্যতি।। ব্যাসঃ ৷ দাসাস্বতন্ত্ৰ বালৈশ্চ স্ত্ৰী-ক্লতক্ষৈব যদ্ভবেৎ। প্রমাণ নৈব তল্লেখ্য মিতি শাস্ত্রবিদে। বিদুঃ ॥ মিতাক্ষরাযাণ স্মৃতিঃ। পূগশ্রেণী গণাদীনা॰ যা স্থিতিঃ পরিকীর্ত্তি-তা ৷ তস্যাস্ত্র সাধনং লেখ্যং ন

मिवा॰ न চ माफिनः॥ शृशस्त्र । সমূহে৷ বণিগালীনাং পূগঃ স প-রিকীর্ত্তিতঃ। ইতি কাত্যায়ন ব-চনোক্তঃ। আদি শব্দাৎ বিজ্ঞা-তীয় লাভঃ। তেন আম নগরা-দিঃ। শ্রেণী তু সজাতীয় সমূহঃ তামূলিক স্বিন্দ কর্ম্মকারকাদিঃ। গণএকক্রিষার্থোদ্যতঃ ৷ লেখ্যস্য চাপ্ৰামাণ্য শস্কাষাণ লেখ্য গ্ৰাহি-ণাঁ° প্রাপ্তক্ত শোধন প্রকারেণ তন্নিরসনীয়া তৎ পুজেণ তুলে-খ্যাধীনে৷ ভোগ এব উপন্যা-(मा) न ज् लिथा मुक्ततिगि॰। তদাহ কাত্যায়নঃ। আহর্ত্ত। ভূ-क्ति यूट्डा ४थि त्वश मार्यान् বিশোধবেৎ। তৎসুতো ভুক্তি দোষা॰ ख लिथा দোষা॰ ख ना-श्चरा ।। वृङ्क्षाि । উদ্ধরে-ন্নেখ্য মাহৰ্ত্তা তৎসুতো ভুক্তি মেব হি। অভিযুক্তঃ প্রমীত-**ে**চৎ তৎসুতো ২পি তদুদ্ধরেৎ ॥ অভিযুক্ত ইতি লেখাস্য সাধু-দ্ব জ্ঞাপনার্থণ অভিযুক্তে লেখ্য এহীতরি তদবিভাগৈয়ৰ মৃত্তে ভৎ পুত্ৰেণ সাধুত্ব° সাধ্য মিত্যৰ্থঃ । তৎ সাধনঞ্ স্বহস্ত লিখনাদি-নেতিপ্রাগুক্ত ॥ 🗱 ॥

অথ ভুক্তিঃ ৷

তত্র যাজ্ঞবক্ষ্যঃ। পশ্যতো হক্রব-তো হানি ভূমে ৰিংশতি বাৰ্ষিকী । পরেণ ভুজ্যমানায়। ধনস্য দশ-বাৰ্ষিকী।। বিবাদ মঙ্গৰ্ৰতঃ সমক্ষণ ভূসামিনঃ পরেণাসপিণ্ডাদিনা ভূজ্যশানাষা ভূমে বিংশতিবর্ষ-নিবৃত্ত। স্বস্থানিঃ। অত্র লোক-ব্যবহার কর্মদ্বাদর্যগণনা সাব-নেন। তথা চ বিফুধর্মোত্তর । मबागुशामानाथ मावतन ली-ক্যঞ্চ যৎ স্যাৎ ব্যবহারকর্ম ! তত্রৈব। সাবনে চ তথা মাসি ত্রি॰শৎ সূর্য্যোদযাঃ স্মৃতা ইতি। বিশেষষতি ব্যাসঃ। বর্ষাণি বিশ-শতি র্বস্য ভূ ভূ ক্তা তু পরে রিহ। <u> বতি রাজ্ঞি নমর্থস্য তস্য সেহ ন</u> সিধ্যতি ৷৷ সমর্থস্য বালত্বাদি দো-**যরহিত্স্য । ধন্স্য দশ্**বর্ষনিকৃ**ত্ত।** স্বত্বহানিঃ। তথা চ মনু নারদৌ। य ६ कि शिष्म गवर्षा वि मिन्न दियो । 🕰 -ক্ষতে ধনী। ভুজ্যসান পরে স্তৃ-কী॰ন স তল্লকু মহতি।। যৎকিঞ্চি-ৎ ধনজাত সমক্ষ মেব প্রীত্যাদি ব্যতিরেকেণ পরে দশবর্ষাণি ভু-জ্যমান স্বামী তৃকী প্ৰেক্ত মা ভুজ্যতা নিতি ন প্রতিসিধ্য- তি নাসে তল্লকু যোগ্যো ভব-তি তত্ৰ তস্য স্বাম্য নশ্যতীত্যৰ্থঃ । গোতমঃ। অজডাপৌগণ্ড ধন° দশবর্ষভুক্তণ পরেঃ সমিধৌ ভো-জ্বঃ ইতি। জড়ে। বিকলেন্দ্রিয়ঃ পৌগঙঃ পূতো ২নুৎপন্নশ্ৰশ গভঃ কপোলো যস্য সঃ। তদাহ नात्रनः। वाल आसाफ्नाप्तर्या পৌগণ্ড শ্চাপি শব্দাতে ৷ অত্ৰা-পৌগঙঃ প্ৰকীৰ্ত্তিত ইতি সন্ত্ৰুক-ভটেন লিখিত । তৎপাঠে ২পি অপৌগণ্ডস্ত পৌগণ্ডঃ ইতি দ্বিক-পকোষাদবিরুদ্ধঃ। তস্মাদ্যাজ্ঞ-বজ্ঞাদি বচনাদি শতিবর্ষ দশ-বৰ্ষাদিকালৈ ভোঁগ এব স্বত্বং জ-নহতি। যথা কালপ্রাপ্তিবলেন বীজ মন্ধুর° জনয়তি তরবশ্চ **স**-সুম মিতি স্বামিনা চাপরিত্যক্তে ২পি শাস্ত্রোক্ত কালীন ভোগাৎ স্বাম্য মন্যম্য ভবতি। যথা জ-যেন রাজ্ঞঃ পররাষ্ট্র ধনে ইতি। এব মেব শ্রীকর বালক জোগ্নো-ক ভবদেবভট শূলপাণি সন্ত্রক-ভট চণ্ডেশ্বর মন্ত্রি নব্যবর্দ্ধমানো-পাধ্যায় প্রভূতয়ঃ ক্যবহারো ২পি তাদৃগেব। এতদ্বিরুদ্ধ বচনান্য-नाथा वारिश यानि ॥ \*॥ टां ।।

পেক্ষয়া স্বস্থহানি॰ ভুক্ত্যা চ স্কর-यार् नात्रमः । जुजायानान् शदेत-রর্থান্ যস্তামোহাদুপেকতে ৷ সমক্ষণ তিপ্ঠতো ২প্যস্য তান্ ভূ-ক্তিঃ সরুতে বশে।। ব্যক্তমাহ বৃ-হস্পতিঃ। স্থাবর॰ সিদ্ধিমাপ্নোতি ভূক্ত্যা হানি মুপেক্ষষা। উপে-ক্ষয়া ক্ষময়া তৎ কারণঞ্চ স্বামিনঃ मुगीलव मरहक्ष्व प्रयानुवापि। এবঞ্চ বিংশতিবর্ষাৎ পূর্বণ স্বক্ল-তিসাধ্য কর্ষণ পালনাদ্যৈ রুৎপ-ন্ন দ্রব্য এব স্বন্ধ<sup>।</sup> এবং দশবর্ষাৎ পূৰ্ব॰ স্বকৃতি সাধ্য দোহন পাল-নাদ্যৈ ৰুৎপন্ন দুগ্ধাদাবেব স্বত্বং তত্তৎকাল পরতস্তু ভূমৌ গবাদি ধনে ২পি স্বন্ধ নিতি। পূর্ব তত্ত-মাশক ভোগে তু চৌৰ্যনেবা-ভবত্যেব ৷ ভোগে তু স্বত্বহানি गाधामीनाः वावर्खयञ् ॥ 🕸 ॥ পশ্যতো ২ক্রবত ইত্যভিধাষ যা-জ্ঞবক্ষ্যঃ। আধি সীমোপনিক্ষেপ জড বাল ধনৈ ৰিনা! তথোপনি-ধিরাজ স্ত্রীশ্রোত্রিযাণাণ ধনৈ রিহ ॥ আধি ৰ্বন্ধকজব্য । উপনিক্ষে-পস্ত বাসনস্থ মনাখ্যায় সমুদ্রণ यिति शिष्ट देखि नात्राका । বাসন নিক্ষেপাধারভূত সম্পু-

টাদিক । সমুদ্র গ্রন্থাদিযুত । জ ডে। বুদ্ধিবিকলঃ। বালে। ২প্রা-**প্তষোডশব**ৰ্ষঃ। উপনিধিঃ প্ৰীত্যা ভোগার্থ মর্পিতঃ। ততশ্চ আ-ধ্যাদিভি ৰ্জ্জভাদিধনৈশ্চ বিনা '২ম্যানি ধনানি উক্তভোগকালে স্বামিনো নশ্যস্তি এতানি তু স্বা-মিনো ন নশ্যন্তি ন বা ভৌক্তু ৰ্ভ-বস্তি। নিতাক্ষরাযাণ স্মৃতিঃ। দার-মার্গ ক্রিয়াভোগ জলবাহাদিষু ক্রিযা। ভূক্তি রেব তু গুরী স্যান্ন দিব্য° ন চ সাফিণঃ॥ যাজ্ঞবক্ষ্যঃ ৷ আগমো হুধিকো ভোগাদ্বিনা পূর্বক্রমাগতাৎ । নাগমঃ কারণ॰ তত্ৰ ভুক্তিঃ স্তোকাগি যত্ৰ ন।। আগমস্ত ক্লতো যেন সো ২ভি-যুক্ত স্ত সুদ্ধরেৎ।ন তৎসূত স্তৎ-সূতো বা ভূক্তি স্তত্ৰ গৰীয়সী॥ যোভিযুক্তঃ পরেতঃ স্যাত্তস্য রি-ক্থী তমুদ্ধরেৎ। ন তত্র কারণ ভূক্তি রাগমেন বিনা ক্রতা।। ভূ-म्यामावागमः পূर्वभूक्षय क्याना-গত ভোগাদ্ববান্ অতঃ ক্রমা-গত ভোগ আগমাদ্লবান্। ত-থাচ বৃহস্পতিঃ। অনুমানাৎ গু-রুঃ সাক্ষী সানিত্যো লিখিত° ণ্ডরু। অব্যাহত। ত্রিপুরুষী ভূক্তি।

স্তেভ্যো গরীযসী॥ৠ॥ ত্রিপুরুষ ভোগমাহ ব্যাসঃ। প্রপিতামহেন যদ্ভুক্ত॰ তৎপুত্ৰেণ বিনা চ ত॰ । তৌ বিনা যদ্য পিত্রা চ তদ্য ভোগ স্ত্রিপূরুষঃ ॥ পিতা পিতা-মহে। যস্য জীবেচ্চ প্রপিতামহঃ । ত্ৰয়াণা° জীবিতা° ভোগো বি-জ্ঞেয স্তেক পূরুষঃ ॥ আগমোপি বলবান্ন ভবতি যত্ৰ স্তোকাপি ভু-ক্তি নাস্তি। তথা চ নারদঃ।বিদ্য-মানে ২পি লিখিতে জীবৎস্বপি চ সাক্ষিয়ু । বিশেষতঃ স্থাবরাণাণ যন্ন ভুক্ত॰ ন তৎ স্থির॰॥ ইতি দী-পকলিক। যত্ৰ বাদিনে স্বস্বাগন বল প্ৰবৃত্তো আগমযোশ্চ পূৰ্ৱা-পর ভাবো নাস্তি তত্র যস্য ভু-क्टि समागरमा वनीयान् नवना-স্যেত্যর্থঃ ইতি মিতাক্ষরা। অ-ৰ্থান্যত্ৰাগন পৌৰ্বাপৰ্য্য নিশ্চয স্তত্ৰ সৰ্বেধেৰ বিবাদেযু বলবত্যু-ত্তরা ক্রিয়া। আধৌ প্রতিগ্রহে ক্রীতে পূর্বা তু বলবত্তরা ॥ ইতি याङ्डवक्का वहनानिर्वयः । जानम স্ত্রিতি আ সম্যক্ গম্যতে প্রাপ্য-তে স্বীক্রিয়তে যেন স আগমঃ ক্রযাদি রিতি ব্যবহারনাতৃকা। আগনঃ সাক্ষি পত্রাদিক মিতি দীগকলিকা। আগমো ধনোপা-र्क्जताशायः क्यांनि दिणि रैन-থিলাঃ। তত্রান্যেনাভিযুক্ত স্তৎ কূটতা মুদ্ধরেৎ তৎপুত্র পৌত্রৌ নাগম মুদ্ধরেতা॰ কিন্তু ভুক্তিরে-ব। তত্ৰ প্ৰমাণ বিশেষয়তি বৃহ-ম্পতিঃ। আহৰ্ত্ত। শোধযেৎ ভূ-ক্তি মাগমঞ্চাপি সণ্সদি। তৎসু-তো ভুক্তি মেবৈকাণ পৌল্রাদিষু न किश्वन ॥ देम॰ भृनभागिष्ठ॰ ७९ भूजानि र्न किश्वति रेग-থিলধৃত । আহর্ত। অর্জনকর্ত্ত। অত্র পুত্রস্য ভুক্তিশোধন মাত্রণ ।।।।। ভুক্তি শোধন মাহ তু र্ব্যাস কাত্যাযনৌ। সাগমো দীর্ঘকাল-শ্চ নিচ্ছিদ্রে। খন্যরবোজ্ঝিতঃ । প্রতার্থি সন্মিধানঞ্চ ভোগঃ প-ঞ্চাঙ্গ ইষ্যতে ॥ ইষ্যতে প্রমাণত্ত্বে-ন। সাগমঃ ক্রযাদিযুক্তঃ। এষ চ ভূমিবিষযক বিংশতিবর্ষ ধনবিষ-যক দশবর্ষান্যুন কালভোগপরঃ । যে। ২ভিযুক্ত ইত্যাদি যে। ভো-গে ক্রিযমাণে পরেণাভিযুক্তঃ স-ন্পরেতো মৃতঃ স্যান্ধাগম মুদ্ধৃ-তবান্ তদা তৎ পুল্রাদি রাগম সুদ্ধরেৎ। তথা চ নারদঃ। অথা-ৰত বিবাদস্য প্ৰেতস্যাব্যবহা-

রিণঃ। পুত্রেণ সোর্থঃ সংশোধ্যো ন তু ভোগো নিবর্ত্তবেৎ ॥ বি-বাদে সতি শেষঃ। ভোগঃ কেব-লভোগঃ। তথা চ সএব। আদে তু কারণ দান মধ্যে ভুক্তিস্ত সাগমা ইতি এষ সবিবাদ ভোগঃ ষষ্ট্যব্দেতরপরঃ। তথাবিধ ভো-গস্যাগমণ বিনাপি প্রামাণ্যাৎ ৷ তথা ব্যাসঃ । বর্ষাণি বি॰শতি॰ ভুকু। স্বামিনা ব্যাহতা সতী। ভুক্তিঃ সা পৌরুষী ভূমে দিগুণা जू विलोक्षी ।। जिलोक्सी जू ত্রিগুণা ন তত্রাবেষ্য আগমঃ। এতদ্বচন মসমক্ষ ভোগ বিষযক মিতি সমক্ষ বি॰শতিবর্ষাভোগ-বিষষক বচনেনাবিরোধঃ ৷ এ-তাদৃক্ স্বৃত্যক্ত কালএব ৷ কাত্যা-যনঃ। স্মার্তকালে ক্রিষা ভূমেঃ সাগমা ভুক্তি রিষ্যতে । অস্মা-র্ত্তে দ্বাগমাভাবাৎ ক্রমান্ত্রিপুরু-ষাগত। ।। ষষ্টিববৈৰ্কপুৰুষভু-ক্তৌ ত্রিপুরুষভূক্তি ব্যপদেশস্য ফলমাহ ন তত্ত্ৰেত্যাদি। অতএব नातमः। अन्याद्यन ज् येषुकः পিত্ৰা পূৰ্বতনৈ স্ত্ৰিভিঃ। ন ভৎ শক্য মপাকর্তু ক্রমাল্রিপুরুষা-গত° ৷৷ অন্যাযেনেত্যত্রানাগম

মিতি শুলপাণিগৃত পাঠঃ। তুর-॥ প্যর্থঃ। পিত্রা সহ পিতর মাদায ত্রিভি রিতার্থঃ। ফতু অনাগমন্ত যো ভুঞ্জে বহুন্যৰু শতানি চ। চৌরদভেন তং পাগং দণ্ডযেৎ 'পৃথিবীপতিঃ।। ইতি তদ্য বচন° দও বিধাযক ন ত্যুখ্যার্থর ধৰ্মশাস্ত্ৰ বিরোধাৎ। তদাহ সএব ।। যত্র বিপ্রতিগতিঃ স্যাৎ ধর্ম-শাস্তার্থশাস্ত্রযোঃ । অর্থশাস্ত্রা-র্থ মুৎসূজ্য ধর্মাশাক্রার্থ মাচরেৎ । এবনেব শূলপাগুপাধ্যাযাঃ। বস্তুতস্তু অনাগ্য মিতি দণ্ড বি-ধায়ক বচন° জীধন নৃগধন পর• । जीवनक नृशिक्षानाः न कर्नाहन জীর্ব্যতি। অনাগমণ ভূজামান ম-পি বর্ষশতৈ রপি॥ ইতি স্বন্ধ নি-ষেধক বচনান্ডরৈকবাক্যত্বাৎ । যুত্র বিপ্রতিপত্তিঃ স্যাদিতি বচন-माालाञ्चूषाङ्क्षणः । यदेवकमा জ্বে ২বধাৰ্য্যমাণে নিত্ৰলব্ধি র-পরস্য জ্বে ২বধার্যনাণে ধর্ম-লব্ধি ন্তত্র। হিরণ্য ভূমিলাভে ভ্যো নিত্ৰলান্তি যবা যতঃ। অতো যতেত তৎপ্রাপ্তাবিতি বেদবি-দা॰ মত॰। ইতি যাজ্ঞবন্ধ্যোক্তার্থ-শান্তার্থ মুৎসৃদ্ধ্য ক্রোধ লোভ

বিবজ্জিত ইতি ংশ্বশাস্ত্রার্থ নবলয় ব্যবহার প্রশেত । তত্ত্রব
সভ্যেনাবশ্যবজন্য হর্ন হা দ্রহিত বচঃ ৷ ইতি কাত্যাযনেক্তণ ভবদেবভটান্ত ব্যাসবচন
প্রতিবাদিনে৷ হসনিবানে পুর্নি
বৈক্ষযভোগাভিপ্রায়ণ ৷ ত্রৈপুরুষ ভোগন্য তত্রব প্রমাণ্ডাদিত্যাহুঃ ৷৷ ্কঃ ৷৷

অথ ভুক্তিমন্বাগবাদঃ ।
বৃহস্পতিঃ। ভুক্তি ত্রৈপুরুষী সিদ্যোদপরেষাণন সংশয়ং। অনিবৃত্তে সপিগুদ্ধে সঙ্গল্যানাণ ন
সিদ্ধাতি।। অস্বানিনা চ ষডুক্তণ
গৃহ ক্ষেত্রাগণাদিকণ । সূহ্বদ্ধু
সঙ্গল্যাসান ভড়োগেন হীয়তে।।
বিবাহ্য শ্রোত্রিষৈ ভুক্তিণ রাজ্যানাতা গুরুষেব চ । সুদীর্ঘেণাপি
কালেন তেষাণ ভতু ন সিদ্ধাতি।।
আপণো বিক্রমস্থানণ বিবাহ্যে।
জানাতা।। #।।

অথ যুক্তিঃ ৷
নারদঃ ৷ উকাহত্তো হগিদো জ্ঞেযঃ শত্রপাণিশ্চ ঘাতকঃ ৷ কেশাকেশি গৃহীতশ্চ যুগপৎ পারদারিকঃ ৷৷ সদালগাণি র্বিজ্ঞেয়ঃ
সেতুভেতা সমীপগঃ ৷ তথা

পঠারহস্তশ্চ বনচ্ছেত্র। প্রকীর্তি-তঃ ॥ প্ৰত্যক্ত চিক্লৈ ৰিজেযে। দ-ও পারুষ্যক্ষরঃ। অসাকি প্র-ত্যয়া হেতে পাৰুষ্যে তু পরীক্ষণ ॥ প্রত্যক্ষচিট্রেঃ রুধিরাভ্রথদ্ধা-দিভিঃ। পারুব্যে বাক্পারুষ্যে। শুখঃ ৷ লোগুহস্তশ্চ চৌরঃ ইতি । নারদঃ। অভীক্ষণ দেশ্যমানো ২পি প্রতিহন্যান্ন তদ্বচঃ। ত্রি চ-তুঃ পঞ্চজে বা পরতো ২র্থণ ত্যাবহেৎ ৷৷ যদা ধনিকেনাধ্য-ৰ্ণিক ক্ৰি চতঃ পঞ্চকুত্বে। বা স্ব° মে খণ ধার্যসীভি পুনঃ পুন র্দেশ্য-মানো ২পি ন তদ্বাক্যং প্ৰতিহ্নিত তদোত্তরকাল মনেন ভ্রিপগতে। ২্য স্থ ইতাব্ধাৰ্য্য তম্থ মূপি-काष माश्रामिडार्थः॥ 🛊॥ অথ শপথঃ ৷

নারদঃ যুক্তিরপ্যবস্থাসু শপথে বেন সর্দ্ধবেৎ ৷ অর্থ কাল বলা-পেন্দ বগ্রায়ু সূক্তাদিভিঃ ৷ এনং বিচার্য্যাণ মর্থ অর্দ্ধবেৎ পীড-বেলির্থ্যাণ অর্থ ৷ অর্থস্য বিবা-দাস্পদস্য বলং বহু ক্সভাবঃ কাল-ন্য চ বলং পুখ্যাপুণ্যত্বং তদপেক্ষং

यशामाानिठार्थः । ভূ দুর্বাকরত্ব-

मा পুতাদিশিরংস্পর্শাস্য চাত্রে

দর্শনীযত্বাৎ। অত্র মধ্যেতৎ ক্র ত ন বেতি প্রতিক্রা মুচ্চার্য্যাগ্নৌ জলে বা হস্ত॰ প্রক্ষিপেৎ। এত-অিথ্যাত্ত্বে মন সুক্তত° নশ্যেদিতি বা ক্রয়াৎ। নত্ত্বগ্নি গরীক্ষাণ জল পরীক্ষাণ বা স্বর্যাৎ ইত্যতিপ্রা-যবৰ্ণন॰ যুক্ত॰ তস্য। মহাভিযোগ বিষয়কদ্বেন শপথ সমভিব্যাহা-রানর্থাৎ । সূক্তাদিভি রিত্যা-দিনা দূৰ্বা সভ্যাদ্যুপগ্ৰহঃ ৷ তথা চ বিকুঃ। সর্বেঘেবার্থজাতেষ मृला॰ वर्ग॰ প্रकन्नरम् । তত্র ক্ষলোনে শূদ্র দুর্বাকরং শাপ-ষেথ। দ্বিক্র কলেনে ভিলকরণ ত্রিরুঞ্জােনে জলকর চতুংরু-কলোনে স্বৰ্ণকরং পঞ্চক্রকলো-নে সীতোদ্ধৃত মহীকরং সুবর্ণা-কোনে কোশো দেযঃ শূ ত্রস্য য-থা সমধে বিহিতা ক্রিয়া তথা দিওণে ২র্থে রাজন্যস্য ত্রিওণে ২র্থে বৈশ্যদ্য চত্*ৰ্গু*ণে হর্থে বা-ন্ধণায়, ভি। ক্লকলঃ কাঞ্চনরতি-কা তন্মুল্যানূ নৈ হ্লক্ষলোনে। এব মন্যত্র। মনঃ। সত্যেন শাপ্যে-দ্বিপ্ৰণ ক্ষত্ৰিবং বাহনাযুৱের গো বীজ কাঞ্চনৈ ৰৈশ্যিণ শুদ্ৰণ স-ৰ্বৈস্ত পাতকৈঃ॥ পুত্ৰ দার্ন্য বা-

ব্যবহা

প্যেব॰ শিরা॰িদ স্পর্শবেৎ পৃথক্ 1 ব্রাক্ষণেন মটোতৎ ক্রত॰ ন ক্রত॰। বেতি প্রতিজ্ঞা নৃক্ষার্য্য সত্য নি-তি বক্তব্য°। তথৈব ক্ষত্রিবেণ বাহনাযুধ্ব স্পুষ্টব্য । তথৈব বৈ-'শ্যেন গো বীজ কাঞ্চনানামন্য-তন॰ স্পুষ্টব্য॰। শূদ্ৰেণ তু পূৰ্বে।-ক্ত॰ সৰ্বমেব স্প্ৰাফ্টব্য॰ তেষা বৃ-থাক্কতস্পাৰ্শানা॰ পাতকহেতুত্বাৎ পাতকশব্দেন নির্দেশঃ। হলাযু-(धारणाव॰ ॥ \* ॥ रेमविक्य। वि-यय गार् गात्रमः। खत्रत्या निर्कतन রাত্রাবন্তরেশানি সাহসে। ন্যা-সাগহরণে চৈব দিব্যা সম্ভবতি ক্রিযা।। বৃহস্পতিঃ। শৌব ত্রান্ধণ পাদ। শ্চ পুত্র দার শিরা भि চ। এতে তু শপথাঃ প্রোক্ত। মনুন। স্বন্ধকারণে ॥ সাহসেগভিশাপে চ দিব্যানি তু বিশোধনণ। অত্র শপথ দিব্যয়েঃ পৃথক্ত্বপ্ৰতীতেঃ ৷ শগ্ৰহথ ন দিব্যধৰ্মাঃ কিন্তু বৈধে কৰ্মণি তত্ৰ শৌচাৰ্থ° স্নানাচম-नामिमाञ कार्या । मियानि जु দিব্যতত্ত্বে কথিতানি নাত্ৰ লিখি তানি। অত্ৰাভিযুক্তেন শপথঃ ক र्खता हेर्गुरमर्गः ॥ 🕸 ॥ উভবে-চ্ছ্যাভিযোক্তাপীত্যাহ্ নারদঃ ৷

অভিযোক্তা শিরোবত্তী সর্বত্তৈ-ব প্রকীর্ত্তিতঃ। ইচ্ছ্যান্যতরঃ পর্য্যাদিতরে। বর্ত্তযেচ্ছিরঃ ॥ ই-তরঃ শপথ কর্ত্তৃভিন্নঃ । তথা কা-णायनः । चाठ्यमं भकामद्रा-যস্য নে। রাজ দৈবিকং। ব্যসনং জাযতে যোর স জ্রেষঃ শপথে শুচিঃ৷৷ ব্যসন মাপৎ৷ যোর মতি-পীডাকরণ। তথা চ কোষাধিকা-রে যস্য পশ্যেদিত্যনূর্ত্তৌ বিষ্ণুঃ ৷ রোগো ২গ্নি জ্ঞাতিমরণ রাজা-তঙ্ক মথাপি বা। তমশুদ্ধণ বিজ্ঞা-নীয়াৎ তথা শুদ্ধ বিপৰ্য্যয়াৎ ॥ কাত্যায়নঃ। তদ্যৈক্স্য ন স্র্ব-मा জनमा यनि मस्टावः । ता-গো ২গি র্ক্তাতিমরণ মৃণ দদ্যাৎ দমঞ্চ সঃ ৷৷ জ্বরাতিসার বিস্ফোট গৃঢ়ান্থি পরিপীভন । নেত্ররুগ্নল-রোগশ্চ তথোমাদঃ প্রজাষতে !! শিরোরুগ্তদভঙ্গশ্চ দৈবিকা ব্যা-ধযো নৃণাণ। তদ্যৈকস্যেতিন তু (দশব্যাপক মরণাদিঃ।।ৠ। মনুঃ। ন বৃথা শপথ সর্ব্যাৎ স্বল্পেগর্থে নরো বুধঃ। বৃথা হি শপথ সর্বন্ প্ৰেত্য চেহ্ চ নশ্যতি॥ কামিনী-ষু বিবাহেযু গৰাণ ভক্ষ্যে তথেশ্ধ-নে। ব্ৰাহ্মণাভ্যুপপত্তৌ চ **শপথে** 

নাস্তি পাতকং ।। কামিনী নিতি রহসি কামিনী সন্তোষার্থণ কৃথা শপথে এবং বিবাহ সিদ্ধার্থণ গো-প্রাসার্থণ আবশ্যক হোমেন্ধনা-র্থণ ব্রান্ধনার্মার্থ সঙ্গীরুত ধনা-দৌ । যমঃ । বৃথা তু শপথণ রুত্বা কীটস্য বধসংযুতং । অন্তেন চ যুজ্যেত বধেন চ তথা নরঃ ।। ত-স্মান্ধ শপথণ সর্য্যান্ধরো মিথ্যা ব-ধেপিতং । কীটস্যেতি প্রাণিনা-ব্রোপলক্ষণণ তদ্বধ পাপেন বৃথা শপথকর্ত্তা যুজ্যত ইত্যর্থঃ ।। ৠ ।। অথ নির্ণয়ঃ ।

তত্র নারদঃ। যস্যোচুঃ সাক্ষিণঃ
সত্যাণ প্রতিজ্ঞাণ স জ্বী ভবেৎ
। অন্যথা বাদিনো যস্য প্রব স্তস্য পরাজ্যঃ।। স্বয্যভূপপদ্মে।
২পি স্বচর্য্যাবসিতো ২পি সন্।
ক্রিযাবসমোপ্যর্হেত পরণ সভ্যাবধারণা। সভ্যৈ রবধৃতঃপশ্চাৎ
স শাস্যঃ শাস্ত্রমার্গতঃ। যস্য বাদিনঃ প্রতিবাদিনো বা সাক্ষিণ
ইত্যুপক্ষলণা। মধ্যে ২ন্যতম প্রমাণণ যস্য প্রতিজ্ঞায়াঃ সত্যম্বপ্রতিপাদকণ স্থাব জ্বী অন্যথা
পরাজ্যিত ইতি প্রত্যেত্ব্যাণা স্বয্-

মত্যুপপন্নঃ আত্মনৈবাংীক্ত স্ব পরাজ্যঃ স্বচ্য্যাব্সিতঃ কম্পা-स्यम देववर्गमिमा शज्ञाकिल्यः নাবগৃতঃ ৷ ক্রিয়াবসলঃ সাক্যাদি-না প্রাপ্তপরাজ্যঃ। পর্মনন্তর *সভ্যাবধারণ মহেঁত সভাস্*দা<sup>৽</sup> মিলিতানাময়ণ পরাজিত ইতি নিৰ্ণয মৰ্হেত । আকাজ্ফেভ স শাস্ত্রবিধিন। শাস্যঃ ॥ 🗱 ॥ নির্ণ-যস্য কলনাহ বৃহস্পতিঃ। প্রতি-জ্ঞাভাবনাদ্বাদী প্রাজ্বিবাকাদি পূজনাৎ। জয়পত্রস্য চাদানাৎ জ্বী লোকে নিগদ্যতে !৷ 🎂 !৷ **জ্যপত্রস্য লিখন প্র**কার নাহ **সএব । বিদ্বৃত্ত॰ ব্য**বহারেয়ু পূর্ব-**পক্ষোত্তরাদিক°।** ক্রিয়াবলার-ণোপেত॰ জয়পত্তে ২খিত লি-থেৎ ৷৷ পূৰ্বেণোক্ত ক্ৰিয়াযুক্ত নির্বহান্ত॰ যদা নৃপঃ ৷ প্রদদ্যা-জ্ঞযিনে পল্রু জয়পল্রু তদুচ্য-তে।। কাত্যাযনঃ। অর্থি প্রত্য-র্থি বাক্যানি প্রতিসাক্ষিবচ স্তথা । নির্ণ্যশ্চ তথা তস্য যথাচাব-ধৃত॰ স্বয়ণ।। এতদ্বধাক্ষরণ লেখ্যণ যথা পূৰ্ব॰ নিবেশ্যেৎ। সভাস-দশ্চ যে তত্ৰ ধৰ্মশাস্ত্ৰবিদ স্তথা ৷৷ ততশ্চ ভাষোভ্তরে ক্রিয়া চ পত্র

সাক্ষ্যাদিক নির্ণযো জয় পরাজ ষাবধারণ নির্ণযকালাবস্থিত ম **ধ্যস্থা শ্চেত্যা**দিক° সৰ্ব°লেখনীয° নিকপণস্য সম্যকন্ব প্রদর্শনার্থ । তথাহি ভাষোত্তর লিখন° হেত্ব-ভরেণ পুন ন্যায প্রত্যবস্থান নি-ষেধার্থ॰ নহি ন গৃহীত মিতি মি-থ্যোত্তরেণ পরাজিতদ্য পুনঃ প-রিশোধিত মযেতি প্রত্যবস্থান मस्वि । अभाग निथनस्र भूनः প্রমাণান্তরেণ ন্যায় নিষেধার্থ । তদাহ কাত্যাযনঃ। ক্রিয়া॰ বল-বতী॰ ত্যক্ত্বা দুৰ্বলা॰ যো ংবলম্ব-**তে। স** জয়ে খবধুতে সভ্যৈঃ পু-म खा॰ नाश्रूषा किया। निनी-তে ব্যবহারে তু প্রমাণ ম্ফল্ণ ভ-বেং! লিখিত॰ সাক্ষিণো বাগি পূ-ৰ্ষ মাবেদিত ন চেৎ!! যথা পঞ্চেষ্ शास्त्राषु निक्तनाः প্রাবৃষ্যে গুণাঃ । নিণী তব্যব্যবহারাণা প্রমাণ মফল স্তথা।। 🗱 ।। নির্ণযোত্তর রু-ত্য মাহ মনুঃ। অর্থে ২পব্যয়মান-স্তু কারণেন বিভাবিত । দাপযে-দ্ধনিকস্যার্থণ দওলেশঞ্চ শক্তি-তঃ ৷৷ অপব্যয়মান গ্ৰপলপত্ত । कातरान माकगानि अभारान । যাত্রবন্ধাঃ। জ্যাসাপরাধ (দশ-

क्ष कोनः वन मथानि वा। वसः कर्म চ विज्ञक्ष मञ्ज मरङ्गु मार्श-(य९॥ मन्ः। ठीतिकः नान्निकंशः ষত্র ক্বচন সম্ভবেৎ। ক্বতং তদ্ধর্ম-তো বিদ্যাৎ ন তৎ ভূষো নিব-ৰ্ত্তবেৎ।। অনুশিষ্ঠ॰ সাক্ষ্যাদি নি ণী ত অতএব তীরিত প্রাড়িবা-কাদিভিঃ সমাপিত•। তদ্বিবাদপ-म॰ পून र्न निवर्खरामिङार्थः। यळ তীরিতানুশিষ্টধো রপ্যধর্মাক্তত্বণ मञ्चा পরাজ্যী পুন দিগুণ দণ্ড-মঙ্গীক্বত্য প্রত্যবতিষ্ঠতে। তত্র পু-ন ন্যাযদর্শন মাহ নারদঃ। তী-রিত চানুশিষ্টঞ্ধ যো মন্যেত বি-थर्मा**डः। विश्वनः मञ्ज मा**नाग जल কার্য্য॰ পুন রুদ্ধরে ।। ৠ।। অসদি-চারে তু বিচারান্তর মাহ সএব। অমাক্ষিকস্ত यमृष्ठे॰ विমার্গেণ চ তীরিতং। অসম্মত মতৈ দৃ ফি॰ পুন দৰ্শন নহতি॥ অসাক্ষিক মিত্য-প্রমাণকোপলক্ষণণ যা ফ্রবক্ষ্যঃ । দুদ্ ফীণ্স্ত পুন দৃ ফুী ব্যবহার।-মৃপেণ তু। সভ্যাঃ সজ্যিনো দ-**छा। विवामा क्रिछन प्रमण्या माकि** मञ्जावमन्नानीं पृष्टा पर्मन शू-নঃ। সুচৰ্যাবদিতানান্ত নাস্তিপৌ-नर्ज्दा विधिः ॥ माक्किरहतनम्

সভ্যাবধারণেন চ প্রাপ্তাবসাদা नाः भून न्यायमर्गनः ख्वाभाद्वनः বিৰুদ্ধ ভাষাদিনা প্ৰাপ্তাবসাদা-নান্ত নান্তি পুন ন্যাষঃ । বৃহস্প-তি রপি।পলাখনানুত্তরভাদন্যগ ক্ষাশ্ৰযেণ চ। হীনস্য গৃহতে ব।-দে। ন স্ববাক্যজিতস্য চ ।৷ মনুঃ। বলাদত বলাজুক্ত বলামা লি-খিতঞ্চ ষৎ। সর্বান্ বলফ্লতানর্থা-নক্তান্ মনু রব্ববীৎ ॥ ষাজ্ঞব-ষ্কাঃ। বলোপাধি বিনিবৃত্তান্ ব্যবহারামিবর্ত্তযেৎ। স্ত্রী নক্ত ম-ন্তরাগার বহির্তামক্তাণ স্তথা ।। মত্তোম্বত্তার্ত্ত ব্য**সনি বাল ভীত**া-দি যোজিতঃ। অসম্বন্ধকৃত শৈচব ব্যবহারোন সিদ্ধ্যতি ৷৷ উপাধি-শ্ছল নিতি শূলপাণিঃ। উপাধি র্ভযাদি রিতি বিজ্ঞানেশ্বরঃ। তন্স-তে ভীতাদি যোজিত ইত্যুক্ত ব-চনেন পৌনৰুক্তণ। বহিগ্ৰামঃ ব-हिर्प्तनः। यक्ता यमापिना। উ-শ্ৰতো বাতাদিনা। ব্যসনী দ্যুতা-দ্যাসক্তঃ। অসম্বন্ধো বাদিনিমু-ক্রব্যতিরিক্ত উদাসীনঃ। আদি পদাদস্বতন্ত্র দাস পুত্রাদে এ হণণ া তথা চ নারদঃ। স্বতন্ত্রো ২পি হি যৎ কার্য্য পর্য্যাচ্চাপ্রকৃতি 🖟 গতঃ। তদপ্যক্তত মেবাস্থু রস্বাত-স্ত্রম্য হেতুতঃ॥ কাম ক্রোধাভি-ভূতা বা ভষ বাসন পীডিতাঃ ! রাগ দ্বেষ পরীতাশ্চ জ্ঞেয়৷ স্কুপ্র-ক্*তি°* গতাঃ।। তথা দাসত্তত° কা-র্য্য মক্তত পরিচক্ষতে । অন্যত্র স্বামি সন্দেশান্ন দাসঃ প্রভু রাত্ম-নঃ ।। পুত্রেণ চ ক্কতণ কার্য্যণ যৎ স্যাদচ্ছন্দতঃ পিতুঃ। তদপ্যক্ত-মেবাৰ্ছ ৰ্দ্দাস পুক্ৰো চ তৌ সমৌ ।। এতচ্চ স্বটু যভরণাতিরিক্ত বিষয় । স্বটুস্বার্থে ২ভাধীনে। ২পি ব্যব-হার॰ যুমাচরেৎ। স্বদেশে ব। বি-দেশে বাত জ্যাযান্ন বিচাল্যেৎ ॥ ইতি মনুবচনাৎ <mark>জটুয় মবশ্যত</mark>-রণীয়ণ। অভ্যধীনঃ পরতন্ত্রঃ পুত্র-मानामिश वावशांत मृनामिकः स्ता-যান্ স্বতন্ত্ৰঃ ন বিচালযেৎ অনুম-ন্যেত। তথা চ নারদঃ। স্বাতন্ত্য-ম্ব স্মৃতং জ্যেষ্ঠে জ্যৈষ্ঠং গুণ বযঃ ক্ত°। অস্বতন্ত্ৰাঃ প্ৰজাঃ সৰ্বাঃ স্ব-তন্ত্রঃ পৃথিবীপতিঃ।। অস্বতন্ত্রঃ শ্মৃতঃ শিষ্য আচাৰ্য্যস্য স্বতন্ত্ৰতা। অস্বতন্ত্ৰাঃ স্ক্ৰিয়ঃ সৰ্বাঃ পুত্ৰা দা-সাঃ পরিগ্রহাঃ॥ বতন্ত্র স্তত্ত্র তু গৃহী যস্য ভূৎ ন্যাৎ ক্রমাগত । গৰ্ভ স্থৈঃ সদৃশো জ্বেষঃ অফ্টমা-

ব্যবহা

ছৎসরাৎ শিশুঃ।। বাল আযো-ডশাদ্বর্যাৎ পৌগশ্রোপি নিগদ্য-তে ৷ পরতো ব্যবহারজ্ঞঃ স্বতন্ত্রঃ পিতরাবৃতে॥ জীবতো ন স্বতন্ত্রঃ স্যাজ্জর্যাপি সমন্বিতঃ। তথে। রপি পিতা শ্রেষান্ বীজ প্রাধান ন্য দর্শনাৎ।। অভাবে বীজিনো-মাতা তদভাবে চ পূৰ্ৰজঃ। পরি-এহা অনুজীবি প্রভূতযঃ। তথা চ বৃহস্পতিঃ। পিতৃব্য ভ্রাতৃপুত্র স্ত্রী **দাস** শিষ্যানুজীবিভিঃ। यकाशी-তি।। কাত্যায়নঃ। স্টুয়ার্থ মশ-**क्लिन गृ**शीष्ठ व्याधित्वन व। । উপপ্লব নিমিত্তঞ্চ বিদ্যাদাপৎ হ্ন-তম্ভ তৎ ৷৷ কন্যা বৈবাহিকঞৈব প্রেতকার্য্যে চ যৎ ক্রত । এতৎ সর্ব॰ প্রদাতব্য॰ স্বটুম্বেন ক্রত॰ প্রভোঃ ৷৷ প্রভো রিতি কর্ত্তরি ষ-ষ্ঠী তেন প্রভুগা দাতব্য মিতি র-ত্মাকরঃ। বৃহস্পতিঃ। ষঃ স্বামি-,ना निषु उक्त। श्री धनाय दाय পালনে। সমীদ ক্ষয়ি বাণিজ্যে निनृकीर्थञ्ज न स्नृठः ॥ अनानः তৎ কৃত্ত সৰ্বং যাভালাভ ব্য-ষোদয়ণ। স্বদেশে বা বিদেশে বা স্বামী তন্ন বিসম্বদেৎ ॥ ইতি 🕮 🛚

রযুনন্দনভটাচার্য্যবির্চিত ব্য বহারতত্ত্ব॰ সমাপ্ত॰।। 🕸।। वावश्रतकः भू॰ श्राश्ववावश्रतः। স তু ষোডশবর্ষানন্তরণ ভবতি। যথা বাল আষোডশাদ্বৰ্যাৎপৌ গণ্ডোপি নিগদ্যতে। পরতো ব্যবহারজ্ঞঃ স্বতন্ত্রঃ পিতরাবৃত্তে ॥ ইতি ব্যবহারতত্ত্বধৃত নারদ বচন॰ ।। ব্যবহারজ্ঞাতরি ত্রি ।। बावशांत्रमर्भन॰ क्री नायमर्भन॰। বিচারকরণণ ৷ ইতি মিতাক্ষরা ৷৷ वावशात्रभाष क्री वामिन। ताब्धि-निर्वान । यथा याञ्चवक्राः । স্মৃত্যাচার ব্যপেতেন মার্গেণা-ধর্ষিতঃ পরেঃ। আবেদযতি চে-দ্রাজ্ঞি ব্যবহারপদ° হি ত২ ॥ স্মৃতি সদাচার বহিভূতেন ব-র্ঘন। পরে রর্থতঃ শরীরতো বা গীডিত শ্চেদ্রাজনি নিবেদযেৎ তদ্যবহার দর্শন স্থান°। চেদি-ত্যত্ৰ যদিতি মৈথিলাঃ। আধে-দয়তি চেদিভ্যনেন স্বয়ণ বিবা-দোখান রাজ্ঞান কর্ত্তব্য মিতি শূলপাৰি মহামহোপাধ্যায়াঃ॥ রাজ্ঞীতি ব্যবহার প্রদর্শক পরণ তথাচ বৃহস্পতিঃ। রাজা কার্য্যা-ণি সংগণ্যেৎ প্রাডিবাকো ২থ বা ৰিজঃ। কাত্যায়নঃ। স প্রাজ্বিকঃ সামাত্যঃ স্ ব্রাহ্মণ পুরোহিতঃ। স্বয়ণ স রাজা চি-ন্যাৎ তেয়া জয় পরাজযৌ ।। যদ। কার্য্যবশাজাজা ন প-শ্যেৎ কাৰ্য্যনিৰ্ণয় । তদা নি-যুঞ্জ্যাৎ বিদ্বাণ্সণ ত্রান্ধণণ বেদ-পারগং ৷৷ যদি বিপ্রো ন বিদ্বান্ স্যাৎ ক্ষত্রিয়ণ তত্র যোজয়ে২। বৈশ্যস্থা ধর্মশাব্রত্তং শুদ্রং য• **र्ज्जन वर्जरय** ।। म विनी ज्राव-শঃ। মনুঃ। জাতি মাত্রোপজী-বী বা কাম॰ স্যাদ্রাহ্মণক্রবঃ। ধর্মপ্রবক্তা নৃপতে ন তু শূজঃ কদাচন ॥ ব্যাসঃ। দ্বিজান্ বি-হায় যঃ পশ্যেৎ কাৰ্ক্যাণি বৃষ-*লৈঃ সহ। তস্য প্রক্ষুভ্যতে র*া-জ্য° বল° কোষশ্চ নশ্যতি।। मुःभीत्नां पि पिष्कः शृष्का। न শৃহদ্র। বিজিতেজিয়ঃ । দুকীণ গাঁ° কঃ পরিত্যজ্যার্চ্চযেচ্ছীল-বতী° খরী° ৷৷ ইতি ব্যবহার-তত্ত্ব° 11

ব্যবহারপাদঃ পু॰ ব্যবহারা॰শঃ। যথা। অথ ব্যবহারপাদনিণ্যঃ। তত্র বৃহস্পতিঃ। পূর্বপক্ষঃ স্মৃতঃ পাদো দ্বিপাদ শ্চোত্রঃ স্মৃতঃ। ক্রিযাপাদ স্তথা চান্য শ্চতুর্থো নির্গয় স্মৃতঃ ।। ইতি ব্যাবহার-তত্ত্বং ।। অপিচ । পরস্পারং মনু-য্যাণাং স্বার্থ বিপ্রতিপত্তিষু । বা-ক্যান্যায়ান্যবস্থানং ব্যবহার উ-দাহতঃ।। ভাষোত্তরক্রিয়া সাধ্য সিদ্ধিভিঃ ক্রমকৃত্তিভিঃ। আন্ধি-প্ত চতুরংশস্ত চতুষ্পাদভিধীষ-তে ।। ইতি মিতাক্ষর। ।।

ব্যবহারমাতৃকা স্ত্রী ব্যবহারো-পযোগিক্রিয়া। তদ্মথা। ব্যব-হারদর্শন ১ ব্যবহার লক্ষণ ২ সভাসদঃ ৩ প্রাড়্বিকাদিঃ ৪ वावशाविषयः ७ वा छः कार्या-নুৎপাদকত্ব ৬ কার্য্যার্থিনি-প্রশ্নঃ ৭ আহ্বানানাহ্বানে ৮ আদেধঃ ৯ প্রত্যর্থিন্যাগজে লেখ্যাদিকর্ত্তব্যতা ১০ পঞ্চবি-ধোহীনঃ ১১ কীদৃশৎলেখ্যণ ১২ পক্ষাভাষাঃ ১৩ অনাদেষাঃ ১৪ আদেযঃ ১৫ নিযুক্তজযপরাজ-ষে বাদিজযপরাজয়ে ১৬ শো-ধিতলেখ্যনিবেশন° ১৭ উত্তরা-বধিশোধন° ১৮ শোধিতে পজ্ৰা-ৰূচে উত্তরকর্ত্তব্য° ১৯ উত্তর-লক্ষণ ২০ সত্যোত্তরলক্ষণ ২১ সিথ্যোত্তরলক্ষণ ২২ প্রত্যবস্ক-

র° ২৪ উত্তরাভাসঃ ২৫ সঙ্করা-नुक्त २७ अग्रासिकियानिएन শঃ ২৭ উত্তরেপত্রেভিনিবেশি-তেসাধননির্দেশঃ ২৮ তৎসি-· স্কৌসিদ্ধিঃ২৯ চতুষ্পাদব্যবহ।-রঃ ৩০। ইতি মিতাক্ষরাযাণ ব্য-বহারমাতৃকা ॥

ব্যবহারমার্গঃ পু॰ ব্যবহারবিষ-यः। दावश्वत्रात्रापः। ইতি मिछा-अन्त्रा ॥

ব্যবভারবিধিঃ পু॰ ব্যবহারস্য-বিধা**ন ৷ ধর্ম**শাস্ত্র ৷ ইতি মি-ভাকরা।৷

ব্যবহারবিষয় পুণ ব্যবহারপদণ । ততु अकीमगविषः। यथा । ঝণাদান° ১ নিক্ষেপঃ ২ অস্বা-নিবিক্রয়ঃ ৩ স্বস্তুযসমুখান ৪ দত্তস্যানপকর্মা ৫ বেতনাদান° ৬ সম্বিদোব্যতিক্রমঃ ৭ ক্রযবি-क्यान्यदः ৮ यानिशानरया-विवामः २ मीमाविवामधर्माः २० राक्शाक्या॰ ১১ मख्शाक्या॰ ১২ স্তেষণ ১৩ সাহসণ ১৪ স্ত্রী-সংগ্রহণ ১৫ স্ত্রাপুংর্ম্মঃ ১৬ বিভাগঃ ১৭ দূতে ১৮ ৷ ইতি वाराज ৮ अधायः॥

ন্দনোত্তর° ২৩ প্রাড়ন্যাযোত্ত- || ব্যবহারস্থান॰ ক্লী ব্যবহারপ**দ৽৷** ব্যবহারবিংযঃ। ইতি মিতাক্ষরা ব্যবহারিকঃ ত্রি ব্যবহারযোগ্যঃ । यथा। देय॰ वृक्तिः ख्वारिन 🕾 -যৈঃ সহিতা সতী বিজ্ঞানময-কোষো ভবতি। অয় কতৃ স্ব ভোক্তৃত্বাভিমানিত্বেন ইহলো-ক পরলোকগামী ব্যবহারিক জীব উচ্যতে। ইতি বেদাস্ত-সারঃ 11

> ব্যবহারিকা স্ত্রী লোকষাত্রা ॥ मगार्जनी ॥ रेक्रूपतृकः। रेठि त्मिनी ॥

> ব্যবহারী ত্রি ব্যবহারবিশি**কঃ৷** ব্যবহার শব্দাদস্তার্থে ইন্ প্র-ত্যযেন নিষ্পন্নঃ॥

ত্রি ব্যবহরণীযঃ । ব্যবহার্যঃ ব্যবহর্তব্যঃ। বি অব পূর্ব হা ধা-তো ৰ্যাণ প্ৰত্যযেন নিষ্পন্নঃ।। ব্যবহিতঃ ত্রি ব্যবধানবিশিষ্টঃ। যথা ৷ কর্ত্ত কর্ম্ম ব্যবহিতা ম সা-ক্রিয়াসিদ্ধৌ শাস্ত্রে ২ধিকরণ মত ।। ইতি মুগ্ধবোধটীকাষা রামতর্কবাগীশঃ ॥

ব্যবায়ণ ক্লী তেজঃ । ইতি (यिनिनी 11

বাবাষঃ পু॰ দৈথুন । ইত্যমরঃ ।। অন্তৰ্দ্ধানণ। ইতি মেদিনী।। শুদ্ধিঃ। ইতি ধরণী।। वावामी पू॰ खी कामूकः। यथा। ঞান্ধে নিযুক্তো ভুক্ত্বা বা ভো-किषश नियुका ह। वावायी রেতসো গর্ত্তে মজ্জবত্যাত্মনঃ পিতৃন্।। ইতি আদ্ধতর্ণ ।। वामनः क्ली विश्र ॥ जु॰मः ॥ কামজকোপজদোষঃ । ইত্য-মরঃ।। বিপৎ বিপত্তিঃ। ভুংশো ২পায়ঃ পতন । মৃগয়। দ্যুত ন্ত্ৰী মদ্যপান স্বৰূপে চতুৰ্বৰ্যে প্রসক্তিঃ কামজো দোষঃ ৷ ই-চ্ছাপ্রভবদ্বাৎ । বাক্পারুষ্য দণ্ডপারুষ্য অর্থপারুষ্য ঞ্চেতি ত্রিবর্গঃ কোপজে। দোষঃ ৷ কো-প প্রভবদ্বাৎ। এযুব্যসন । ব্য-সাতি শ্রেষোমার্গাৎ ব্যসনংক র্ত্তরি অনট্। ভ্রুণে তু ভাবে। ইতি ভরতঃ ।। অশুভ॰ ।। দৈবা-নিউকলং॥পাপং॥ নিষ্কলো-मार्यः । ≷ि यिनिनी ।। 🟶 ।। বাজ্ঞা॰ ব্যসনানি যথা। মৃগষা-ক্ষাঃ ব্রিযাপন বাক্পারুষ্যার্থ-দূষণে। দণ্ডপরুষ্য মিত্যেতদ্ধে-ষণ ব্যসন সপ্তকণ।। ইতি হেম-

চন্দ্রঃ ॥ 🗱॥ ব্যসনাসক্তে দো-ষো যথা। একৈক বিষ্যাস-ক্তাঃ সর্বে মৃত্যুবশণ গতাঃ। যঃ পুনঃ সংহতান্ সেবেৎ বিষ-ষান্ বিষয়ী নরঃ॥ স পতেমহ-দৈশ্ব্যাচ্ছিন্ন নূল ইব ক্রনঃ। স্ত্রিয়ঃ পান॰ দিবাস্বপ্ন॰ তথা বা-দিত্র নর্ত্তন ।। দূরতাটন মৃগা-গেষ কামজানি তথা পরে ৷ मटेख वीठा नेव्याम्या त्काध পৈশুন্য সাহস॰ ॥ অর্থদূষণ ক্রোধোর্যে অস্টকোপণ বিনাশ-ক্রৎ। দেবা বিদ্যাধরা যক্ষাঃ কিন্নরেরগ মানুবাং ॥ পশবঃ পক্ষিণঃ সর্বে বিষয়ে নিধন॰ গ-তাঃ। এবং বিবেক নাসকং বুদ্ধা যোর নরাধিপ ॥ ধर्ा ।। क मभाञ्चाय विषदेयः मशिदव-শ্যতা । ইতি দেবীপুরাণে ৮ অধ্যায়ঃ ৷৷ ব্যসনার্ত্তঃ ত্রি দৈবীমানুষীপী-ডার্ভঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। উপরক্তঃ ২। ইত্যমর ভরতে) ॥ বাসনী ত্রি বাসনবিশিষ্টঃ।তৎ পর্য্যায়ঃ। পঞ্চজঃ ২ বিপ্লুতঃ ৩। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥

🎚 ব্যস্তঃ ত্রি ব্যাঙ্গলঃ ॥ ব্যাপ্তঃ ।

ব্যাকর

ইতি মেদিনী।। প্রত্যেক । পৃ-থক্ পৃথক্ । यथा বিশ্বামিতঃ। ৰুচ্ছ্ চান্দ্ৰাযণাদীনি শুদ্ধ্যভ্যুদ-<mark>য</mark> কারণ°। প্রকাশে চ রহদ্যে চ সংশযে ংনুক্তকে ংক্ষুটে॥ প্রাজাগত্যঃ শান্তপনঃ শিশু-রুচ্ছঃ পরাককঃ । অতিরুচ্ছঃ পর্ণক্রচ্ছঃ সোম্যঃ ক্লচ্ছাতিক্র-চ্ছকঃ।। মহাশান্তপনঃ শুদ্ধো তপ্তরুচ্ছস্ত পাবনঃ। জলোপ-বাসরুছ্ট্ত ত্রন্তুর্জন্ত শোধ-কঃ ৷৷ এতে ব্যস্তাঃ সমস্তা কা প্রত্যেক মেকশোপি বা । পা-তকাদিষু সর্বেগু পাতকেষু প্রয-ত্ৰতঃ ।। কাৰ্য্যা শ্চাজ্ৰাষ্টেণ যু-ক্তাঃ কেবলা বা বিশুদ্ধযে । ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্ব° । 1 🕸 🛭 বি-পরীতঃ। যথা। প্রতিপদাপ্যমা-বাস্যা তিথ্যা যু গ্মণ মহাফলণ। এতদাস্ত মহাযোর হন্তি পুণাণ পুরাক্তে ।। এতদাস্ত যুগাবি-পরীত°। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব° 11 वाखनान क्षी अनामाना जित्यारम পদান্তরেণোতর । যথা। সুবর্ণ শতাভিযোগে অনেনাহস্তাডি-ত ইতি। ইতি মিতাক্ষরা।। ব্যস্তারণ ক্লী হস্তিমদপ্রযোগঃ!

ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ वाक्त वा क्या क्या का का विद्या कि वा कि का कि ইতি শব্দরত্নাবলী॥ তত্র সাধ্য সাধন কৰ্তৃকৰ্ম জি**ৰা সমাসাদি** নিৰূপণ ৷ ত্যা ব্যুৎপত্তি ৰ্যথা । ব্যাক্রিয়ন্তে ব্যুৎপাদ্যভে সা-ধুশবল অস্মিন্ অনেনেতি বা। रेठि मूर्गामामः ॥ 🕸 ॥ जथ ব্যাকরণ বন্ধ্যে কাত্যায়ন সনা-সতঃ। সিদ্ধশব্দ বিবেকায বাল-ব্যুৎপত্তি হেতবে।। সুপ্ তিওস্ত পদি খ্যাত সুপঃ সপ্ত বিভক্তয়ঃ া স্যৌজসঃ প্রথমা প্রোক্তা সা প্রাতিপদিকাত্মকে॥ সংস্থাধনে চ লিঙ্গাদাবুক্তে কর্মাণি কর্তুরি। অর্থবৎপ্রাতিপদিক ধাতু প্রত্য-য বৰ্জ্জিত ।। অমে।ট্ সসে। দ্বি-তীয়া স্যাৎ তৎকৰ্ম্ম ক্ৰিয়তে চ যৎ। দ্বিতীয়া কর্ম্মণি প্রোক্তা উ-ক্তানুক্তবিভেদতঃ॥ টা ভ্যা॰ ভি-স্ তৃতীয়া স্যাৎ করণে কর্ত্তরী-রিতা। যেন ক্রিষতে তৎ করণ তৎ কর্ত্ত। যঃ করে।তি সঃ ।। ঙে-ভ্যাণভ্যস্ চতুথী স্যাৎ সম্পুদা-নে চ কারকে। যশ্মৈদিৎসা ধা-রয়তে রোচতে সম্পূদানক° ॥ পঞ্চনী স্যাৎ ওসি ভ্যাণ ভ্যো হুপাদানে চ কারকে। যতো ২-গৈতি সমাদত্তে অপাদান° ভষ° ষতঃ৷৷ ওলোসামশ্চ ষণ্ঠী স্যাৎ স্বামি সম্বন্ধ মুখ্যকে। ড্যোস্ সু-পশ্চ সপ্তমী স্যাৎ সা চাধিকরণে ভবেৎ ৷৷ আধার শ্চাধিকরণাণ রক্ষার্থানা॰ প্রযোগতঃ। ঈপ্সি-ত॰ চানীপ্সিত॰ যত্তদপাদানক॰ স্মৃত ৷৷ পঞ্নী পর্যুপান্তযোগ ইতরর্ত্তেন্য দিল্বুথে। এন যো-গে দ্বিতীয়া স্যাৎ কর্ম প্রবচ-নীয়কৈঃ ৷৷ লক্ষণ বীপ্সেখণভূতে ২ভি র্ভাগে চ পরি প্রতী। অ-স্তরেষু সহার্থে চহীনে ২নূগশ্চ কথ্যতে।! দ্বিতীয়া চ চতুথী স্যা-চ্চেন্টাযা॰ গতি কর্ম্মণি। অপ্রানে হি বিভক্তী দ্বে মন্য কর্ম্মণ্যনাদ-রে ৷৷ নমঃ স্বস্তি স্বধা স্বাহাল বষট্ যোগ ঈরিত। । চতুথী´ চৈব তাদৰ্থে তুমৰ্থান্ডাব ৰাচিনঃ ॥ তৃতীয়া সহযোগে স্যাৎ ক্ৎসি-তেঙ্গে বিশেষণে। কালে ভাবে সপ্তনী স্যাদেতৈ ৰ্বোগে চষ-ষ্ঠাপি ৷৷ স্বামীশ্বরাধিপতিভিঃ সা-ক্ষি দাযাদ সূতকৈঃ। নির্দ্ধার-ণে দ্বে বিভক্তী যগ্নী হেতু প্ৰযো-গকে ৷৷ স্মৃত্যর্থ কর্মণি তথা ক- ||

রোতেঃ প্রতিযত্নকে। হি॰সার্থা-না॰ প্রযোগে চ ক্তৃতি কর্ম্মণি ক-র্ত্তরি॥ ন কর্ত্তৃ কর্মণোঃ ষষ্ঠী নি-ষ্ঠাদৌ প্রতিপাদিতা। দ্বিবিধণপ্রা-তিগদিক॰ প্রাতিগদিক মজ্ঝ-ল॰ ॥ 🛊 ॥ ভুবাদিভ্য স্তিঙো লঃ স্যালকারা দশ বৈ স্মৃতাঃ। তিপ্ত-সন্তি প্রথমে৷ মধ্যঃ সিপ্ থঙ্গে-ত্তম পূরুষঃ ৷৷ মিৰক্ষসঃ পরক্ষৈ তু পদানাঞ্চাত্মনে পদ° ৷ তামাতা-মন্তা॰ প্ৰথমো মধ্য স্থাসাথাণধ্ৰ মু-ত্তনঃ ॥ আদেশা ই বহি মহন্তা অনিজাদপি ধাতৃতঃ ৷ নায়ি প্র-যুজ্যমানেগি প্রথমঃ পুরুষে৷ ভ-বেৎ ৷৷ মধ্যমে৷ যুশ্দদি প্রোক্ত উত্তমঃ পুরুষো ২ম্মদি। ভুবাদ্যা। ধাতবঃ প্রোক্তাঃ সনাদ্যকান্ত ধাতবঃ ।। লডী রিতে। বর্ত্তমানে স্মেনাতীতে চ ধাতুতঃ । ভূতা নদ্যতনে লট্চ লোডাশিষি চ ধাত্তঃ।। বিধ্যাদাবেবানুমতৌ-লিঙ্বিধি শ্মন্ত্রণে ভবেৎ । নিমন্ত্র-ণাধীষ্ট সংপ্রশ্ন প্রার্থনেষু তথা-শিষি ৷৷ লিডতীতে পরোক্ষে স্যা-ল্লঙ্লৃঙ্লৃট্লৃঙ্ভবিষ্যতি। স্যা-**দদ্যতনে লৃট্চ ভ**বিষ্যতি চ ধা-তুতঃ ।। ধাতে। নিঞ্রিবাভিপত্তৌ

নিঙৰ্ষে লোট্ প্ৰকীৰ্ত্তিতঃ ॥ क्र-ত ত্রিম্বপি বর্তন্তে ভাবে কর্ম্মণি, কর্ত্তরি। শতৃ শান তব্যঙ্গ্য य भीय ६ का जृ हा परः ॥ इंडि গারুডে জমারব্যাকরণে ২০১ अधायः॥ 🗱 ॥ अभात छेवा ।। সিদ্ধোদাহরণ বক্ষ্যে সংহিতাদি গরস্পর । বিপ্রান্ন সাগতান্ধী-দ॰ সৃত্তম॰ স্যাৎ পিতৃষভঃ॥ ছো-ভূকারো বিশ্রুতেষ লাঙ্গলীষা यनीयसा। भट्यामकः उवकार सः ণাৰ্ণ প্ৰাৰ্থ মিত্যপি ৷৷ শীতাৰ্ত্তশ্চ ভবস্কারঃ সৈন্দ্রী সৌকার ইত্য-পি। মধাসনঞ্চ পিত্ৰয়ে নশ্বয়ং না প্যধোজ্ঞ্যেৎ ৷৷ নাযকো লবণ নাব স্তএতে তেন ঈশ্বরাঃ।দে-বীগৃহ মথো ২মুত্র যমুরেহি পটু ইমৌ ॥ অমী অশ্বাঃ ষডশ্বেতি তনুরাখু স্তৃণানি চ। তচ্চরেত্তলু-সুগন্ধত্র পচন্দত্র ভবা শ্ছাদযতীতি দিক্। ভবাণ্ঠকুরক শৈচব ভ-বাণ্স্তরতি সংস্তিণ ॥ ভবালিখ-তি তাঞ্জেতে ভবাঞ্জরো ২ন্যদী-দৃশ॰ । ভবাণ্ডীন॰ বস্তরসি স্ব-करतां जि जनार्कन ॥ कन्हरत् কণ্ঠকারেণ কঃ সর্য্যাৎ কঃ খ-

লে স্থিতঃ। কঃ শেতে চৈব কঃ ষঙঃ কোর্থঃ কো ষাতি গৌরব•॥ ক ইহার্থ স্তএবাহু দেবা আহু-শ্চ ভো বজ। প্রসূ বিক্টু বজিতি চ গীষ্পতি শৈচব ধুষ্পতিঃ।। তস্মা-নৈষ ৰজেৎ স স্যান্ন কৰ্ষত্যন্গ-চ্ছতি। স্বদীচ্ছাযা তথাচ্ছামা সাধ-বো খনো তথেদৃশাঃ।। ৠ। সমা-সাঃ ষট্ পুরাণে যে সদ্দিজঃ কর্ম-शात्रयः। विश्व जित्वनी वागया অয়ণ তৎপুরুষঃ স্মৃতঃ ॥ তৎক্বত-ঞ্চ তদথ শ্চ বৃকভীতিশ্চ यদ্ধন । জ্ঞান দক্ষিণ তত্ত্বজ্ঞো বহুত্ৰীহি র-থাব্যবী ।। ভাবে। ২ধিন্ত্ৰি যথো-क्किष्ठ॰ घटमु। एतर्वि मानदाः । 🐅। তদ্ধিতাঃ পাশুবঃ শৈবো ব্ৰাক্ষণ ব্ৰহ্মতাদ্যঃ ॥ क्ष ॥ দেবা-গ্নি সখি পত্য শু ক্রোফু স্বয ভু-বঃ পিতা। না প্রশাস্তা চ রা গৌ গ্লৌৰভাজভাক পু॰স্যপি।। #॥ হলন্তা শ্চাশ্বযুক্ স্বাভুগ্নৰুৎ ক্ৰ-ব্যান্দৃগাবিধঃ। আত্মা রাজা যুবা পন্থাঃ পূষ ব্ৰহ্মহণৌ শশী ॥ বি-**प्युधा उमनानष्ट्रामधूनिए कार्छ-**তট্ তথা। #। বন বাৰ্য্যস্থি বস্তুনি জগৎ সামাহনী তথা।। কর্ম সর্পি র্বপু স্তেজ অজ্বলস্তা ন- शूर्मिक । क्रायां कता नि লন্ধীঃ শ্রী ভূমি বঁধূ রপি।। ভূঃ পুনভূ স্তথা ধেনুঃ স্বসা মাতা চ নেঃ স্ত্রিয়ঃ। বাক্ শ্রক্ ধী ক্ষুৎ কুধঃ পামা যুবতিঃ কন্সভ खशा। एको भ् जिः आवृष टेन्हव मूमन উक्टिशे खिया । 🗱। छन **ভব্য ক্রিয়া যোগাল্রিলিঙ্গা°**\*চ বদামি তে।। শুক্লঃ কীলালপা শৈচৰ শুচিশ্চ গ্রামণীঃ সুধীঃ। পটুঃ কমলভূঃ কর্ত্ত। সুমতো ব-হবঃ সুনৌঃ।। সত্যো নাশ্ৰ স্তথা श्रुरमा मधुङक मनीर्घशाए। ध-नाथी ह मूंख मात्यो वागक खानिक खथा।। मृवर्ग वरुशाटकः যা চৈষা স্বনজুহা তথা। 🕸 ৷ সর্ব বিশ্বোভ্যে চোভৌ অন্যান্তরে-তরাণি চ ।। ডতর ডতমে নেমঃ সমোথ সিম ইত্যয় । পূর্বাপরা-বরা শৈচব দক্ষিণ শেচাত্তরাধরৌ **11 অপর \*চান্তরে**| ২প্যেতদ্যত্র কিনদসে। দ্বাণ। যুত্মদক্ষৎ প্রথম **\*চরমান্সে তথার্জকে ॥ একঃ ক-**তিপযো ছৌ চ ত্ৰয় সৰ্বাদয স্তথা। #। ভূবি বিদি পবি ক্রন্দি ধার্য্যশ্চ ব্যয়তিঃ স্থাদিঃ ।। গীর্দ্ধ र्विमा। जूट्राञ्चि जराञ्चि म- ||

ধাত্যপি । দীপ্যতি স্তৃ্যতি বংহি পুত্রশিষ্ট শ্চিনোত্যপি ॥ ত্রুটি শ্চাসূযতি স্বলি রুধি গুরী হতী তনিঃ। দফিঃ করোতিঃ ক্রীণাতি বূঁণোতি দ্যুঁতি বৰ্চ্চতি॥ কলী-ড রূপ রা জীবা ধাতবশ্চ যুনা তথা৷ 🕸 ৷ ভবৎ ভবান্ ভবন্তী চ জ্ঞেয° কর্ত্তব্য মেব চ ॥ কার্য্য° কুতশ্চ কুত্যা চপ্রত্যযাঃ স্য তথা পরে। সূর্য্যাহয়ৌ সুরাঃ সন্তি দে-ব বিপ্র বনান্যজ ।। নরেণ কা-ৰ্য্য° বে**দৈশ্**চ ক্ৰিয়তে দেহি ভো-জন°। দ্বিজাষ চ বরিষ্ঠাভ্যা॰ মা তেভ্যোংস্ত সমাগতঃ ।৷ তীৰ্থান্ত-থা প্রমাজাধ্ব সত্যেভ্যঃ শ্বশুর-म্য চ। গন্ধর্বযোঃ করণানাঞ্চ তা-ন° সিদ্ধ মহাস্কাষোঃ ৷৷ জ্ঞান ১৫৭-ষু চেত্যের মন্যে নেষা ষ্থামতি ৷ সৰ্বে তিগ্ঠন্তি সৰ্বস্থৈ সৰ্বস্থাৎ সর্বতো গতঃ ॥ সর্বেষা স্থৈব স-र्बिमारमयः विश्वामय उथा। शृर्वः পূৰ্ৰাশ্চ পূৰ্ৰস্মাৎ পূৰ্ৰস্মিন্ পূৰ্ৰ ইত্যলে ।। সূত উবাচ। সুপ্তি-**ওন্ত**° সিদ্ধৰূপ° নান নাত্ৰেণ দ-শিতে । কাত্যায়নঃ সমারাত্র জ্ঞাত্বা বিস্তর সত্রবীৎ 11 ইতি গারুডে জনারব্যাকরণে

ব্যাঘাত

অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ এতদ্ভিন্ন॰ অ-গ্নিপুরাণে কার্ত্তিকেযোক্ত ব্যা-করণ মস্তি। এব॰ মহেশক্ত মাহেশব্যাকরণ পাণিনিমুনি-ক্লত পাণিনীযব্যাকরণ সর্ববর্ম্ম-क्र कना शर्मा कर्न क्या निर्म রক্ত সংক্ষিপ্রসারব্যাকরণ প অনাভদত্তক্ত সুপল্ব্যাকরণ বোপদেবক্ত মূগ্ধবোধব্যাকর-**ণ॰ গো**হানিক্ত গ্রিনামামৃত-ব্যাকরণ ভট্টোজীদীক্ষিতকৃত নিজান্তকৌমুদীব্যাকরণ অনু-ভূতস্বৰূপাচাৰ্য্যাদিক্ত সার্থ-ত দিব্যাকরণানি চ সন্তি ॥ ব্যাঙ্গলঃ ত্রি শোকাদিভিরিতি কর্ত্তব্যতাশুন্যঃ। তৎপর্যায়ঃ। বিহস্তঃ ২। ইত্যমরঃ॥ ব্যাসলাত্মা ত্রি শোকাভিহত-চিত্তঃ। যথা। ভো বৃক্ষাঃ পৰ্বত-স্থা বহুজসুমযুতা বাযুনা ঘূৰ্ণমা-না রামোহ॰ ব্যাহ্নলাত্মা দশ-র্থতনমঃ পৃচ্চ্তে শোকদক্ষঃ। বিষোষ্ঠী চারুনেত্র। গজপতিগ-यन। मीर्यत्कनी सूपका हा गी-তা কেন নীতা মন হৃদ্যগতা কেন বা স্বত্ত দৃষ্টা ॥ ইতি মহা-ना हेक ॥

ব্যাকৃতিঃ স্ত্রী ভঙ্গিঃ।ইতি হ-लायुधः ॥ ব্যাকোশঃ ত্রি বিকশিতঃ৷ ইত্য-মর্টীকাষাণ রামাশ্রমঃ ॥ ত্রি প্রকৃলঃ। ইতা-ব্যাকোষঃ - यतः ॥ ব্যাখ্যা স্ত্রী বিবরণ ৷ ইতি হলা-गूधः ॥ ব্যাখ্যাগম্য ক্লী উত্তরাভাদ-(छतः । व्याथाया विवत्रत्वन ग-ম্যতে জ্ঞাষতে ষ্থা যথা। অস্ত ব্যস্ত পদব্যাপি নিগূঢার্থ তথা-জল । ব্যাখ্যাগম্য মসারঞ্চ নো-ন্তর॰ শৃদ্যতে বুধৈঃ ॥ ইতি ব্যব-হারতত্ত্ব° 11 ব্যাখ্যাতঃ ত্রি বিবৃতঃ। কথিতঃ। বি আঙ্ পূৰ্বক খ্যা বাতোঃ ক্তঃ প্রত্যযেন নিষ্পানঃ 11 ব্যাঘাতঃ পু॰ বিষ্কম্ভাদিসপ্তবিণ-শতিযোগান্তৰ্গত ত্ৰযোদশযো-গঃ। যথা। পরিয়স্য তাজেদর্দ্ধ॰ শুভকর্ম ততঃ পরণ ৷ ত্যজাদৌ পঞ্চ বিষ্কন্তে সপ্তশূলে চ নাডি-काः ॥ शश्च वाावाज्याः विष्ठ নব হৰ্ষণ বজুযোঃ। বৈধৃতি ব্য-তিপাতৌ চ সমক্তৌ পরিবর্জ-যেৎ ৷৷ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ৷৷ #!!

**তত্র জাতফল ।** ব্যাযাতকর্ত্ত। চ সতা॰ নিতান্ত॰ ব্যাঘাতজন্ম মনুজঃ কঠোরঃ। অসত্যভাষী क्रथा विशेषा भएककरण मी-ৰ্যতনুঃ ক্লশাঙ্গঃ।। ইতি কোষ্ঠী-**अमीर्गः ॥ 🗱 ॥ अस्त्रायः ॥** প্রহারঃ। ইতি মেদিনী ।। অল-কারবিশেষঃ। তস্য লক্ষণ যথা **৷ যদ্বথা সাধিত** কেনাপ্যপ-রেণ তদন্যথা। তথৈব যদিধী-যেত স ব্যাঘাত ইতি স্মৃতঃ ৷াবে-নোপাবেন যদেকেন উপকল্পি-**ত॰ তস্যান্যেন জি**গীযুত্যা ত-मू शायक स्मत यम नाथा कत् १° म স্বসাধিতবস্তুব্যাহতি হেতুত্বাৎ वााघाउः ॥ উদাহরণ । দৃশা-**एक्ष॰ मनमिक॰ की वयन्ति मृटेग**-ব ষাঃ। বিৰূপাক্ষ্য্য জ্যিনী স্তা স্তবে বামলোচনাঃ।। ইতি কাব্যপ্রকাশে ১০ উল্লাসঃ ॥ वाषुः पुः ज्ञावित्भवः। वाष ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। শা-र्फृनः २ षीशी २। ইত্যমরः ॥ পৃদাঙ্গঃ ৩ বনশ্বঃ ৪ চিত্রকঃ ৫ পুণ্ডরীকঃ ৬। ইতি জটাধরঃ॥ হিংসুপশুঃ ৭ ব্যাডঃ ৮ হিংসুকঃ ৯ হি॰সারুঃ ১২ স্বাপদঃ ১৩। 🏻

ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷ পঞ্চনথঃ ১৪ ব্যালঃ ১৫ গুহাশ্যঃ ১৬ তীক্ষদ ফুঃ ১৭ জীব্রঃ ১৮ নখা-যুধঃ ১৯ ৷ অস্য মাংসগুণাঃ ৷ সা-र्फृ ल नि॰ र मत्र छक् ठतक मूथा। যেন্যে প্রসহ্ বিনিহস্ত্যভিষর্ত্ত-যন্তে ৷ তে কীৰ্ত্তিতাঃ প্ৰসহনাঃ পলল॰ তদীয় মৰ্শঃ প্ৰমেহ জঠ-রাম্য জাডাহারি॥ ইতি রাজ-নিৰ্ঘণ্টঃ ॥ স তু কশ্যপভাৰ্য্যা प्रवृत्ति । यथा । प्रक्रु ত্বজনয়ৎ পুত্রান ব্যাঘু দিংছাণ-শ্চ ভাবিনী। দ্বীপিনশ্চ সূতা खना। वानाणा नामिरश्रियाः ॥ ইত্যাদ্যে বহ্নিপুরা**ণে কাশ্য**-शीय व॰मनायाधायः ॥ 🟶 ॥ নরাদ্যতরঙ্গ শ্রেষ্ঠার্থ বাচকঃ ॥ রক্তৈরঙঃ ॥ করঞ্চঃ । ইভি त्यिमिनी ॥

ব্যাযুদলঃ পু॰ এরগুবৃক্ষঃ। ইতি শব্দমালা ॥ রাজনির্ঘণ্টে র-ক্তৈরগুপর্য্যাযে ব্যায়ুতল ইতি পাঠঃ॥

ব্যাঘুনখ ক্লী নখীনামগন্ধজব্য । তৎপর্য্যায়ঃ। ব্যাডাযুধ ২ করজ ৩ চক্রকারক ৪। ইত্য-মরঃ॥ নখাক ৫ নখী ৬ নখ্য

ব্যাজে।ক্তি

৭ ব্যাঘুনখী ৮। ইতি শব্দরত্না-বলী।। কন্দবিশেষঃ।। নথক্ষত-বিশেষঃ। ইতি মেদিনী।। वायुनशः पू॰ सूरीवृकः॥ वान-নখঃ। ইতি ব্লাজনিৰ্ঘন্টঃ ॥ ৰ্চা-• युमा नथक ॥ वार्युनथक॰ क्री नथक्क**ः। ३**छि नक्याना ॥ ব্যায়ুনাযকঃ পু॰ শৃগালঃ ৷ ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ ব্যায়ুপাই পু॰ বিকন্ধতবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ ॥ মুনিবিশেষঃ । ইতি পুরাণ ।। ব্যাঘুতুল্যচরণে ত্রি । ইতি মূঞ্চবোধব্যাকরণ ॥ ব্যাঘুপাদঃ পু॰ বিকম্বতবৃক্ষঃ।। বিকণ্টকবৃক্ষঃ া ইতি রাজ-निर्घकैः ॥ ব্যায়ুপুচ্ছঃ পু॰ এরওবৃক্ষঃ ইত্যমরঃ ॥ ব্যাঘুস্য লাঙ্গুলঞ্চ ॥ তরদাজপক্ষী। ব্যাঘ্রাটঃ T' ইত্যমরঃ 11 ব্যাঘ্রাদনী স্ত্রী ত্রিবৃতা। ইত্য-यतः ॥ ব্যাঘ্রাস্যঃ পু॰ বিডালঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা॥ ব্যায়্মুখে ক্লী॥ ন্ত্রী কন্টকারী। ইত্য-মরঃ ।। ব্যাযুপত্নী চ ॥

পু॰ কপটঃ। স তু অয-ব্যাক্তঃ থার্থব্যবহারঃ॥ বঞ্চনমাত্রফল• । ইতি সৰ্বানন্দো মধুশ্চ ।। অ-পদেশঃ৷ স কারণান্তর প্রবৃত্তেঃ কারণান্তরোদ্ভাবন । ব্যাজো <u> ২ত্র স্বৰূপাচ্ছাদন । যথা ধ্যান</u> ব্যাজ মুপেত্য চিন্তযদি কামিতি । ব্যাজো ২বমভিপ্রাবগোপন-ফলঃ। পূর্বোক্তস্ত পরাপকারফ-লঃ। ইত্যমথার্থ ব্যাজ্যো র্ভেদঃ । अना मुक्तिभा अना श्रीठिशानन মিহ ব্যাজ ইত্যর্থঃ। যদাহ অ-नामू किना जनार्थ मनुष्ठान मन शरमभः। यथा। जनकी जा पू-**फि**णा जातावटनाकनार्थः या-তীতি। ইত্যমরভরতৌ ॥ ব্যাজনিন্দা স্ত্রী কপটঙ্গৎসা ্ম অলঙ্কারকিশেষঃ। যথা। নিন্দা-যা নিন্দ্রয়া ব্যক্তি ব্যাজনিন্দে-তি গীয়তে। ইতি চন্দ্রালোকঃ॥ ব্যাজস্তুতিঃ স্ত্রী কপটপ্রশংসা।! অলঙ্কারভেদঃ। যথা। উক্তি ৰ্ব্যাজস্তুতি নিন্দা স্তুতিভ্যাণ স্তু-তি নিন্দযোঃ ৷ ইতি চন্দ্রালোকঃ ন্ত্ৰী ছলবাক্য ।। ব্যাজোক্তিঃ व्यवस्थात्रियः। यथा। व्या-জোক্তি রন্যহেভূক্ত্যাযদাকার-

স্য গোপন । ইতি চন্দ্রালোকঃ ব্যাডঃ পু॰ সর্পঃ।। মাণসভক্ষক-পশুঃ। ইত্যমরঃ ।। ইন্দ্রঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ বঞ্চ । ইতি রাযমুক্টঃ ॥ वााषायुर की वाायुनशायागक-দ্রব্যুণ। ইত্যমরঃ ।। ব্যাডিঃ পু<sup>

 প্</sup> কোষকারমুনিবি-শেষঃ ৷ তৎপৰ্য্যায়ঃ ৷ বিশ্ব্যবাসী ২ নন্দিনীতনযঃ ৩ ৷ ইতি হেম-চন্দ্ৰঃ ।। বিশ্বাস্থঃ ৪ নন্দিনীসূতঃ ৫। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। ব্যাত্যক্ষী স্ত্রী রসিকান। মন্যো-ना॰ कनकी छन॰। ইতি म॰कि-প্তসারোণাদিবৃত্তিঃ॥ তৎপর্য্যা-যঃ জলক্রীডাশব্দে দ্রফব্যঃ।। **राामिंगः पूर् विख्रायणा ज-**নভৰূপো ২নন্তশ্ৰী জিত্মন্যু র্ভযাপহঃ। চতুরস্রে। গভীরা-ज्ञा विमित्मा कामित्मा मिनः ॥ ইতি মহাভারতে তদ্য সহসু-নাম স্তোত্ৰণ 11 ব্যাধঃ পু॰ মৃগহি॰সকজাতিঃ। শিকারী ইতি ভাষা। স তু সর্ব-স্বিপত্ন্যা॰ ক্ষত্রিযাজ্জাতঃ । যথা

৷ নাপিতাকোপকন্যায়া পর্ব-

স্বী তস্য যোষিতি। ক্ষত্ৰাদ্বভূব

ব্যাধশ্চ বলবান্ মৃগহিংসকঃ ॥
ইতি ব্রন্ধবৈত্তে ব্রন্ধথণ্ড ১০
অধ্যামঃ ॥ তৎপর্যামঃ । মৃগবধাজীবঃ ২ মৃগমুঃ ৩ লুককঃ ৪
। ইত্যমরঃ ॥ মৃগাবিৎ ৫ জোহাটঃ ৬ ৷ ইতি জটাধরঃ ॥ মৃগজীবনঃ ৭ বলপাংশুনঃ ৮ ৷
ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ দুফ্টঃ ।
ইতি মেদিনী ॥

ব্যাধভীতঃ পু॰ মৃগঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।।

ব্যাধামঃ পু॰ বজু॰। ই ৃতি ছেম-চন্দ্ৰঃ।।

ব্যাধিঃ পু॰ সঠ॰।। রোগঃ। ইত্যমরঃ।। কামব্যথাসন্তাপজন্যক্তশতা। ইতি রসমঞ্জরী।। ৠ।। জঠস্য নিদান॰ যথা। ব্যালোকন
মনস্থোল্য ক্রীডা বিষয় চেষ্টিতৈঃ। বিরোধ কক্ষ তী হর্ষ বিযাদাদ্যৈশ্চ দূ্যিতঃ।। পু৽স্কোৎসাহ বলভু॰শ শোথ চিতাপ্লবজ্বান্। সর্বাকারাঙ্গ নিস্তোদণ
রোমহর্ষণ সুসুপ্ততাণ।। সঠণ বিযম মন্যচ্চ সর্যাৎ সর্বাঙ্গ মার্দ্বণ।। ইতি গাক্তডে ১৭২ অধ্যায়ঃ।। অন্যৎ স্পঠ্যা চিকিৎসা
ব্যণ।।ৠ।। অথ স্পঠ্যা চিকিৎসা

৷ বাতোত্তরেষু সর্গি র্বমনণ ককো-ত্তরেষু সণ্ঠেষু।পিত্তোত্তরেষু মো-**एक। तुक्रमा** विदत्तृहुनः (अर्थः ॥ পথ্যা করঞ্জ সিদ্ধার্থ নিশাবন্তুজ সৈন্ধবৈঃ। বিভঙ্গ সহিতৈঃ পিটেট র্লেপো মূত্রেণ সষ্ঠন্ৎ।। অবস্তু-জঃ বান্দচীতি লোকে। পথ্যাদি-ভির্লেপঃ।। 🗱।। সোমরাজী ভব-**চূর্ণ শৃঙ্গবের সমন্বিত** । উদ্বর্ত্তন নিদ॰ হস্তি সপ্তরোগণ ক্রতাস্পদণ ।। সোমরাজী বাঙ্গ চীতি লোকে। সোমরাজ্যুদ্রর্তন॰ ॥ 🕸 ॥ রসায-ন॰ প্রবক্যামি ব্রহ্মণা যদুদাহত । মার্কণ্ডেষ প্রভৃতিভি র্যৎ প্রযু-ক্ত॰ মহর্ষিভিঃ ॥ পুষ্পকালে তু श्रुष्णानि कनकारन कनानि ह। সংগৃহ্য পিচুমর্দস্য স্ত্রগ্ মূলানি দ-লানি চ ॥ দ্বির শানি সমাহ্বত্য ভাগিকানি প্রকল্পবেৎ। ত্রিকলা लू हार वाकी अन कु कि करा शयः ।। বিডক্ষসার বারাহী লোহচূর্ণাঃ স্মৃতাঃ সমাঃ। নিশাদ্বাবন্তুজক व्याधिषाठाः मगर्वताः ॥ अश्र মিব্রুষকাঃ পাঠা চূর্ণ মেষান্ত সং-যুত । খদিরাসন নিয়ানা ঘন ক্বাথেন ভাব্যেৎ ৷৷ সপ্তধা পঞ্চ নিষম্ভ মার্কব স্বর্দেন চ। স্নিঞ্চঃ

**শুদ্ধতন্** ধীমান্ বোজ্যেত্জু-ভে দিনে ।। মধুনা তিক্ত হ্রিয়া খদিরাসন বারিণা। লেছ মুক্রা-ন্তুসা বাপি কোল বৃদ্ধ্যা পলং ভ-বেৎ ৷৷ জীৰ্ণে তক্ষিন্ সমশ্লীয়াৎ নিগ্ধ লঘু হিত চ যৎ। বিচর্চি কোদুষর পুঙরীক কণাল দক্র কিটিভালসাদি । শতারু বি-ক্ষোট বিসর্পমালাঃ কফ প্রকো-গ॰ ত্রিবিধ॰ কিলাস॰ ॥ ভগন্দর শ্লীপদ বাতরক্ত জডান্ধ নাডীত্রণ শীর্ষরোগান্। সর্বান্ প্রমেহা-न् अप्तताः क मर्वान् पः सु। दियः मृलविष॰ निरुखि ॥ शृत्नामतः मि॰ इक्*र*मामदः मा९ मूक्षिक मिक्क मंधुत्नान्यागाव। मानाव রোগাদপি যে দশন্তি সর্পাদযো-যান্তি বিনাশ মাশু॥ জীবেচ্চিরণ ব্যাধিজরা বিমুক্তঃ শুভে রতি শ্চ-क्रमगानकान्तिः। व्ययमर्थः। निय-স্য ফলপুষ্পা স্বক্ পত্র মূলানি স ৰ্বাণি সমুদিতানি দ্বিগুণানি চূৰ্ণি-তানি ভৃঙ্গরাজস্য রসেন সপ্তবা-রান্ ভাব্যেৎ। ত্রিফলাদীনি পা-ঠান্তানি সমুদিতান্যেক ভাগানি চূণিতানি খদিরাসন নিম্বানাণ নিবিড ক্বাথেন ভাব্যেৎ। ততঃ मर्ब (भकीक्षठ) मशामिनाविन-হ্বাৎ। পঞ্চনিম্বকাবলেহঃ।। 🕸 🛚 ।। শশিলেখা পঞ্চপল তাবন্দিরি-জন্য গুগ্নলো দশ চ। তাপ্যস্য পলত্ৰিত্য• দ্বে লোহাচ্ছাবণিকা-ষাঃ ৷৷ ত্রিফলা করঞ্জ পল্লব খদির **७७ हो विवृष्ण छाः। मूछा वि**ष्ण द़कनी ऋष्ठक चक् निच वङ्गि म-স্পাকাঃ ৷৷ এতৈ রচিতাণ বটিকাণ মধু ষৃত মিশ্রা॰ গিলেৎ প্রাতঃ। গোমূত্রেণ চ अर्थ नुमञ्जामृक् বাত মচিরেণ ৷৷ শ্বিত্রাণি পাণ্ডু-রোগং বিষমানুদর প্রমেহ গু-ন্মা॰শ্চ । নাশ্যতি বলী পলিত॰ रयांगः स्रायसूर्या नाम्ना ॥ मनि-লেখা সোমরাজী। গিরিজস্য শি-লাজতুনঃ। তাপ্যস্য স্বৰ্মাক্ষিক-স্য। শ্রাবণিকা মুঞ্জীতি লোকে। স্বাৰভুবো গুগ্ধলু: ॥ 🛊 ॥ চিত্ৰকণ ত্রিফলা ব্যোষ মজাজী কারবী বচা। সৈশ্ধবাতিবিষে সন্ত চব্যৈ-লা যাবশূকজ ।। বিডঙ্গান্যজ-त्यामा ह मूखा हामत्रमाङ्ग ह। যাবস্ত্যেতানি সৰ্বাণি তাবন্মাত্ৰস্ত গুয়ুলুঃ ॥ সংক্তৃত্য সর্পিষা সার্দ্ধণ গুটিকা॰ কারষেদ্ভিষক্। প্রাত ভোজনকালে চ খাদেদগ্নিবল

যথা।। হস্তাফাদশ স্বষ্ঠানি রুমী-ন্ দুফত্রণানি চ। গ্রহণ্যশো বি-কারা॰ শ্চ মুখামষ গলগ্রহান্।। গৃধুসী মন্থিভগ্নঞ্চ গুল্মঞ্চাপি নি-যচ্ছতি। ব্যাধি কোষ্ঠগতা খা-পি জযেषिक् तिवाम् तान्।। **এক**-বি॰শতিকো গুগ্লুলুঃ ॥ 🛊 ॥ বাত রক্তাধিকারোক্তঃ পুরঃ কৈশোর-কাভিধঃ। স্ঠানাণ বাত রক্তা-না॰ নাশযেৎ পরমৌষধণ। কৈ-শোরকো গুগ্গুলুঃ ৷৷ৠ৷ ভলাতক• প্রস্থুগণ ছিত্বা জোণ জলে ক্ষি-পেৎ। প্রস্থদ্বয় গুড়ুচ্যাশ্চ কুন্ন তত্রান্তাসি ক্ষিপেৎ 11 চতুর্থা শা-বশেষস্ত কষায় মবতার্যেৎ। বস্ত্র পূতে ক্ষাযে চ বক্ষ্যমাণানি নি-ফিপেৎ।। সরাবমাত্র**ং গোসপি** র্গোদৃগ্ধস্যাতক॰ তথা । সিতা• প্রস্থমিতা॰ দদ্যাৎ প্রস্থান্ধ মা-ক্ষিক॰ ক্ষিপেৎ ৷৷ সৰ্বাণ্যেকত্ৰ ভা-ওে তু পচেৎ মৃদ্বগিনা শনৈঃ। সৰ্বজব্যে ঘনীভূতে পাবকাদ্ব-তারযেৎ।। তত্র কেপ্যাণি চূর্ণানি ক্রমো বিল্প মিতামৃতা। বাঙ্গচী চাথ দক্তप्रः পिচুমর্দে। হরীতকী ।। ধাত্রী রাত্রিশ্চ মঞ্জিষ্ঠা মরিচ॰ नागतः कना । यवानी देमक्षवः मुख॰ षरगना नागरकभत्र ॥ अ-পঁটঃ পত্রকণ বাল মুশীরণ চন্দনণ তথা। গোকুরস্য চ বীজানি ক-র্চ্চূরো রক্তচন্দন ।। পৃথক্ পলা-জিমানানা চূর্ণ মেষা নিছ জি-পেৎ ৷ পলমাত্র মিদ° প্রাতঃ সম-श्रीयाञ्जलन हि ॥ नागरयमय-লেহে৷ ২য° স্ঠানি নিখিলান্য-পি । বাতরক্তানি সর্বাণি সর্বা-ণ্যশা সেবিতঃ ।। ব্যাযাম মাতপণ বহ্নি মন্লণ মাণসণ দধি স্তি-যে । তৈলাভ্যঙ্গ তথায়ান । ন-রো ভল্লাতকে ত্যজেৎ ॥ অমৃত ভল্লাতকাবলেহঃ।। 🟶 ।। নিস্ব॰ গোপারুণা কঢ়ী ত্রাযন্তী ত্রিফলা ঘন । পর্প টাবন্তুজানন্তা বচা খদির চন্দন॰।। পাঠা শুগী শচী ভাগী বাস। ভূনিম্ব বৎসক । भारास्यवाङ्गी मृबी विषेत्रयः যবানলণ ৷৷ হস্তিপৰ্ণো ২মৃতা জে-का शरहान तकनी घरः। क्लात-থ্ধ সপ্তাহ্ব কুষ্ণবেত্রোচ্চটাফ**ল**° ॥ मिक्किष्ठी नाष्ट्रनी द्वासा मक्क भानः পুনর্গবা। দন্তী বিজয়নার-শ্চ ভৃষরাজ সর•টক° II অক্ষোঠ-কঞ্চ শাথোটি দ্বিপলা শে পৃথক্ পৃথক। গৃহীযাত্তানি সর্বাণি জ-

লদ্ৰোণে গচেচ্ছনৈঃ ॥ অফুমাণ-শাবশেষন্ত ক্ষায় মবতার্ষেৎ । বিধাষ বাসদা পূত॰ স্থাপষেস্তা-জনে দৃঢ়ে ॥ ভল্লাতক সহসূাণি किथ्वा बीगमत श्यमि । १८५-দফীবশেষম্ভ কষাষ নবতার্যেৎ ।। তচ্চ বস্ত্ৰেণ সংশোধ্য ছৌ কষ্া-ষৌ বিনিশ্রযেৎ। গুডস্য চ তুলা॰ मञ्चा त्वर्व माधू माध्यय ॥ ভল্লাতক সহস্যাণি তচ্চ বীজানি নিঃক্ষিপেৎ । ত্রিকটুঃ ত্রিকল। মুস্ত বিডঙ্গ চক্রক তথা ৷৷ চন্দ-न॰ रिमन्तवः ऋष्ठे॰ मीलाककः लनः পল॰। সৌগদ্ধার্থ॰ ক্ষিপেত্তত্র চা-তুর্জাত॰ পল॰ পৃথক্।। মহাভন্না-তকো ছেষ মহাদেবেন ভাষিতঃ । প্রাণিনা॰ হিতকামায জযেচ্ছী-ঘু॰ প্রযোজিতঃ ॥ শ্বিত্র মৌডুখ-तः मद्धः मृक्षिञ्चः मकाकनः । পুগুরীকঞ্চ দর্শাখ্য বিক্ষোট র-ক্তমণ্ডল ।৷ কণ্ডু পণালক সঞ্চ পামানঞ্চ বিপাদিকাণ। বাতর-ক্ত॰ ষডশা॰সি পাণ্ডুরোগণ ব্রণ ক্রমীন্ ॥ রক্তপিত মুদাবর্ত্ত কা-স শ্বাসণ ভগন্দরণ। সদাভ্যাসেন পলিত মামবাত॰ সুদুস্তরণ।। নি-র্যন্ত্রপ্ত কথিতো বিহারাহার সৈ-

থুনৈঃ। স্বৰুতে পর্যাণ কান্তিণ প্রদীপ্ত জঠরানল ।। অনুপান প্রযোক্তব্যু ছিন্নাতোয় পয়ে **২থবা । ভোজনে তু সদা** ত্যাজ্য মুক্ত মন্লু বিশেষতঃ ৷৷ গোপা শ্বে-তশ্বাউ ইতি লোকে ৷৷ যত আহ নিঘন্টঃ। সারিবা সারদা স্ফোটা গোপকন্যা প্রতানিকেতি। তদ্বা-চকো গোপীশব্দশ্চ যত আহ। গোপী শ্যামা সারিবা স্যাদন-স্তোৎপলসারিবা ইত্যমরঃ ৷৷ গোপাঙ্গনা গোপবল্লী লতাস্থা কাষ্ঠসারিবেতি মদনপালঃ অৰুণা অতীস্। অবল্লুজঃ সো-মরাজী। অনন্তা দুরালভা। চ-ন্দন॰ শ্বেত॰ । ভার্গ্যা অলাভে কণ্টকারীমূল । শ্যামা ক্লফানা-উ। হস্তিকর্ণঃ হথিকণ। দ্রেকা বকা ইতি। সপ্তাহ্যঃ ছতিবন্। ক্লফবেত্ৰঃ জলবেতসঃ। উচ্চটা-ফল॰ আরক্তগুঞ্জাফল॰। স্বর-•টকঃ কটসরৈয়া। দীপ্যকঃ যবা-নী। মহাভল্লাতকঃ ।।ৠ। মঞ্জিষ্ঠা ত্রিফলা তিক্তা বচা দারু নিশা-মৃতা। নিশ্ব শৈচ্যাণ ক্রভঃ কাথঃ সৰ্বঙ্গতি নাশ্যেৎ ৷৷ লঘুমঞ্জি-श्रेषिकायः॥ 🗱 ॥ मञ्जिश्रे वाञ्रही 📗

**ठक्रमर्दश शिह्मर्हक । इत्री**ठकी হরিজা চ ধাত্রী বাসা শতাবরী।। वन। नागवना यसीयशक॰ कृत-কোপি চ। পটোলস্য লভোশীর• গুড়ুচী রক্তচন্দন ।। মঞ্জিষ্ঠাদি-র্য° ক্বাথঃ স্বপ্তানা° নাশনঃ পরঃ । বাতরক্তম্য সংহর্তা কণ্ডু মণ্ডল খণ্ডনঃ ৷৷ মধ্যমমঞ্জিষ্ঠাদিকাথঃ ॥ 🗱॥ মঞ্জিষ্ঠা স্কটজামৃতা ঘন-বচা শুগী হরিজাদ্বত ক্ষ্ডারিষ্ট পটোল সন্ঠ কটুকা ভাগী বিড-স্পায়িক । মূৰ্বা দাৰু কলিন্স ভূঙ্গ মগধা ত্রাযন্তি পাঠা বরী গাযতী ত্রিফলা কিরাতক মহানিয়াস-নারশ্বধং ॥ শ্যামাবল্পজ চন্দনং বৰুণক॰ দন্তী কশা যোঢক॰ বাসা পর্গ ট সারিবা প্রতিবিধান স্থা বিশালা জলে। সঞ্জিষ্ঠাদি রয়ং ক্ষাৰী বিধিনা নিত্যু পুমান্ যঃ পিবেৎ ত্তুপোষা হুচিরেণ যান্তি विवय॰ अर्छानि हास्ताम्य ।। ना-শ॰ গচ্ছতি বাতরক্ত মখিল॰ নশ্য-ন্তি রক্তাময়া বীসর্প স্তুচি শূন্যতা নযনজা রোগাঃ প্রশাম্যন্তি চ ৷ **जित्रकेः निम्नः।** कलिन्नः **हेन्स**म्य । ভূঙ্গ ভূঙ্গরা। বরী শতাবরী। গাযত্রী খদিরঃ। অসনঃ বিজয-

मातः। भागा थियकः। ठनन মত্র রক্ত॰ গ্রাহৃ৽। সারিবা সাউ। অনস্তাদুরালভা। বিশালা ইক্র <mark>বাৰুণী ইতি। জল॰ নে</mark>ত্ৰবালা। वृष्ट्याञ्जिष्ठामिकाथः ॥ # ॥ मतिह॰ ত্রিবৃতা মুস্তা হরিতাল মনঃশি-লা। দেবদারু হরিদ্রে দ্বে সাণ্সী সষ্ঠ॰ সচন্দন॰।। বিশালা॰ করবী-রঞ্চ ক্ষীরমর্কসমূদ্ভবং ৷ গোম্বস্য রসং সর্য্যাৎ প্রত্যেকং কর্য সন্মি-ত॰ ॥ বিষ্ণ্যাৰ্দ্ধপল॰ দেষ॰ তৈল॰ প্রস্থমিত॰ কটু। পচেচ্চতুর্গুণে নীরে গোমূত্রে দ্বিগুণে তথা।। मित्रिकामा भिमे॰ टेंचन मञ्जूषा । স্ঠনাশন॰ । এতস্যাভ্যঙ্গতঃ শ্বিত্রণ বিবর্ণণ তৎক্ষণান্তবেৎ ॥ তৈল মেতজ্জয়েৎ কণ্ডূ॰ পামা॰-সিরাণ বিচর্চিকাণ। পুঙরীকণত-থা দক্রণ শূন্যতাণ নিত্যসেবিনাণ u लघुमतिहामा॰ टेंच्ल॰ ॥ 🕸 ॥ भ-রিচ° ত্রিবৃতা দন্তী ক্ষীর মার্ক্ত শ-ক্রজসঃ।দেবদারু হরিজে দ্বে মাণ-সী স্বষ্ঠ॰ সচন্দন॰।। বিশালা কর-বীরশ্চ হরিতাল মনঃশিলা। চিত্রক॰ লাসলী মুস্তা বিডঙ্গ॰ ठक्रमर्फकः ॥ नित्रीयः ऋटेटजा নিয়ঃ সপ্তপর্ণো ২মৃতা সুহী। স-

ম্পাকো নক্তমালশ্চ খদিরো বা-ষচী বচা॥ জ্যোতিশ্বতী চ প-লিকা বিষণ দ্বিপলিকণ ভবেৎ । আঢক কটুতৈলন্য গোমূত্রঞ্চ চতুৰ্গ্ৰণ।। মৃৎপাত্ত্ৰে লোহপাত্ত্ৰ চ শনৈ মৃ দিমিন। পচেৎ। মরি-চাদ্য মিদ তৈল মহন্যুনিভি রী-রিত° ৷৷ ভিষগেতেন তৈলেন মু-ক্ষ্মেৎ কৌষ্ঠিকান্ ব্ৰণান্ । পা-ম। বিচর্চ্চিক। দক্ত কণ্ডু বিস্ফো-টকানি চ ॥ বলষঃ পলিত° ক্ষা-যা নীল॰ ব্যঙ্গ তথৈব চ। অভ্য-ঙ্গেন প্রণশ্যন্তি সৌঙ্গমার্য্যঞ্চ জা-যতে ।। প্রথমে ব্যসি স্ত্রীণা॰ যা-সা॰ নস্য॰ প্রদীয়তে। তাসা মপি জরা প্রাপ্য ন স্যাতাণ স্থালিতৌ खरनो ॥ वनीवर्फ खत्रद्या वा গজে। বা বাযুপীডিতঃ। ত্রিভি রভ্যঞ্জনৈ রম্যু ভবেশারুত বি-क्यः ॥ জ्याठिश्रठी मानक-ঙ্গুণীতি লোকে। মহামরিচাদি তৈল° ৷৷ 🟶 ৷৷ তালকস্য তু পত্ৰা-ণি যস্য সন্তি পৃথক্ পৃথক্। অ-ভুকস্যৈব তদ্যাহৃণ হরিতালণ **চিকিৎসকৈঃ।। পুনর্ণবাষাঃ স্বর-**সে তালক॰ তদ্বিমৰ্দযেৎ । দিন-মেক॰ তত স্তান্মিন্ ঘনত্ব॰ গমিতে

সতি।। স্বীত চক্রিকাণ তাস্ত শোষযেৎ সম্যগাতপে। পুনর্বা ममखाबकारितः खानी॰ गनाविध ।। প্রযেচ্চ ততঃ কারণ ডাচযেৎ পীডনেন হি । ক্ষারস্যোপরি তা॰ দদ্যাৎ তালকস্য তু চক্রি-কাণ্যা তত আচ্ছাদনণ দত্বা মুদ্রাণ ক্তবা বিশেষবেৎ। স্থালী চুল্ল্যা निधायापि ययन श्वान त्य छियक् ।। নিরন্তর মহোরাত্র॰ পঞ্চক॰ তেন সিদ্ধ্যতি। স্বাঙ্গ শীতং সমু-তার্য্য গৃহীযাজস মৃত্রমং।। তা-লকেশ্বর নামায মুক্তো গুঞ্জা निতा तमः। ७७ पृताि क्यारयन গদানেতান্ বিনাশ্যেৎ ॥ অ-ফীদশাপি স্বষ্ঠানি বাতরক্ত॰ ত-থোদ্ধত । ফিরঙ্গদেশজ রোগ দুস্তরণ চ ব্যপোহতি ॥ এতদ্ভেষজ সেবী তু লবণাম্লে বিবৰ্জ্জবৈৎ। তথা কটুরসং বহ্নি মাতপং দূরত স্ত্যজেৎ ৷৷ লবণ যঃ পরিত্যক্তৃণ ন শক্ষোতি কথঞ্চন স তু সৈশ্বব মন্দ্রীয়াৎ মধুরোপরসো হি সঃ।। তালকেশ্বরো রসং ৷৷ 🕸 🛚 তাল তাপ্য শিলা সূত্ত টক্কণ সিধু সং-যুত । গদ্ধাকে দিগুণো সূত।জ্জ-श्रीतान्तिः अगर्मत्य ।। रुष्टः भू

টিত॰ ষোঢা ভূধরে সকল॰ দ্বিদ• । ষট্পদ॰ দ্বিপল॰ তামু॰ লোহ ভ-या ठलूष्णवः ॥ कष्ठीतां छि र्मिनः ঘৃষ্ট॰ ত্রি॰শদ॰শ॰ বিষ॰ ক্রিপেৎ। অস্য মাসদ্বয়ং খাদেখাহিষীঘৃত म॰यूज्॰ ।। मश्चारेका बान्नि वी-জৈঃ কর্ষণ লিহ্নাত্ততঃ পরাণ। তালকেশ্বর নামায়ণ সর্বন্দপ্ত হ-রো রসঃ।। অর্কো মারিতং তামুং। দিতীয তালকেশ্বরো রসঃ॥#॥ রসো বলি স্তামু ময়ঃ পুরো ২গিঃ শিলাজতু স্যাদ্বিষ তিন্দুকশ্চ। বরা চ তুল্যুণ গগনণ করঞ্জ বীজণ পৃথগুগে চতুষ্টযঞ্চ।। সংমর্দ্য 🧃 মধুনা ঘৃতেন ঘৃতস্য পাত্ৰে িই-ত॰ প্রযত্নাৎ। কর্ষণ ভজেৎ াত্য-হ মস্য পথ্যং শাল্যোদনং দুগ্ধ ম-थु वयक । विभी व कर्न क्रू नि ना-সিকোপি ভবেদনেন শ্বর তুল্য মূর্ত্তিঃ। দারা পরিত্যাগ ইহ প্র-দিষ্টো তিলৌদন° তত্ৰ নিবদ্ধমূ-লে।। তামুমধশ্চ মারিতং। পুরো গুয়ুলুঃ। অগ্নি শ্চিত্রকণ। বিষতি-ন্দুকঃ স্বচিলা। বরা ত্রিফলা। র-সাদি ত্ৰিফলাস্ত সৰ্ব তুল্য । গ-গন মভুক । করঞ্বীজঞ্চ পৃথক্ চতুর্গুণ রসাৎ। তত্র স্বচ্চে বন্ধ-

মূলে সতি তিলৌদন মেব পথ্য•। ইতি গলৎ সন্তাধিকারঃ। ইতি ভা-বপ্রকাশঃ।। ৠ।।।। অথ সর্বব্যা-ধিহর কবচে। হরি রুবাচ। সর্ব-ব্যাধিহর বক্ষ্যে বৈক্ষর কবচ ্শিব॰। যেন রক্ষা ক্তা শস্তোঃ শ্বেত রক্ষ্মতঃ পুরা ।। প্রণম্য দে-ৰ নীশান মজ° নিত্য মনাময°। দেব॰ সৰ্বেশ্বর॰ বিষ্ণু॰ সর্বব্যাপিন মব্যয়ং ৷৷ ব্য়ামা**হং প্রতিসরং নম**-স্কৃত্য জনার্দ্দন । অমোষাপ্রতি-ম॰ সর্ব॰ সর্বদুইটনিবারণ ।। বিষ্ণু র্মামগ্রতঃ পাতু ক্লফো রক্ষতু পূ-ষ্ঠতঃ । হরি র্মেরক্ষতু শিরে। হৃদ-यक्ष क्रनार्फनः।। यटना यय रुषी-কেশো জিহ্বা॰ রক্ষতু কেশবঃ। পাতৃ নেত্রে বাসুদেবঃ শ্রোত্রে স-স্কর্যণো ২বতু।। প্রদ্যুদ্ধঃ পাতু মে ঘু। মনিরুদ্ধশ্চ চর্ম্মক । বনমা-লী গলস্যান্ত শ্রীবৎসে৷ রক্ষতা মুরং।। পার্শ্বণ রক্ষত্র মে চক্রণ বা-ম॰ দৈত্যনিবারণঃ। দক্ষিণন্ত গদ। **प्तिरी मर्बामृत निवार्तिशै॥ উদর**॰ মুষল॰ পাতু পৃষ্ঠি মে পাতু লাঙ্গ-লং। উৰা রক্ষতু যে শাৰ্ষণ জ্ঞা রক্ষতু নন্দকঃ ॥ পাক্ষী রক্ষতু শ-ৠশ্চ পদ্ম॰ মে চরণাবুতৌ। সর্ব ॥

কার্যার্থ সিদ্ধার্থণ পাতু মাণ গরু-ডঃ সদা ।। বরাহে। রক্ষতু জলে বিষদেষু চ ৰামনঃ। অটব্যা॰ নর-সি॰হশ্চ সৰ্বতঃ পাতু কেশবঃ ।। হিরণ্যার্ত্রো ভগবান্ হিরণ্য মে প্রযক্ত্তু। সাংখ্যাচার্যাস্ত কপি-লো ধাতুসাম্য করোতু মে।। শ্বে-তদীপ নিবাসী চ শ্বেতদ্বীপণ ন-यञ्जः । मर्वान् भवृन् मृपयञ মধুকৈটভসূদনঃ ৷৷ বিফুঃ সদা বিকিরতু কিলিষ মম বিগ্রহাৎ । হ•সো মৎস্য স্তথা কৃৰ্দ্মঃ পাত-মা॰ সৰ্বতো দিশং ৷৷ ত্ৰিবিক্ৰযস্ত प्य प्तरः म्बान् शाशान् निक्रस-जू । नतनातायां (मत्वे वृक्ति° পালযতা॰ মম ।। শেষো মে নি-র্ম্মল॰ জ্ঞান॰ করোম্বজ্ঞাননাশ-ন'। বলরামে। নাশ্যতু কলাষ' যৎ কৃত মযা।। পদ্ভ্যাণ দদাতু পরমো মুখণ মূদ্ধা মম প্রভুঃ ৷ দত্তাত্রেযঃ কলযতু সপুত্র পশু বান্ধবং ৷৷ সৰ্বানরীশাশ্যতু রানঃ পরশুনা মম। রক্ষোমস্ত দাশর-থিঃ পাতু নিত্য॰ মহাভুজঃ ॥ শত্রুন্মে সমরে হন্যাদ্রামো যা-দবনন্দনঃ। প্রলম্ব কেশি চাণুর পূতনা কংসনাশনঃ 11 কৃষ্ণস্য যো বালভাবঃ স মে কামান্ প্র-যচ্তু। অন্ধকার° তমোঘোর° পুরুষণ রুষ্ণ পিঙ্গলণ।। পশ্যামি ভষসন্তপ্তঃ পাশহস্ত মিবান্তকং ৷ ততো ২হু পুঞ্জীকাক্ষ মচ্যুত্ত শরণ গতঃ ৷৷ ধন্যো ২হ° নির্ভষো নিত্য**° যস্য মে ভগৰান্** হরিঃ ৷ শ্ৰুত্বা নাবাষণ দেব সৰ্বোপড বনাশন া৷ বৈক্ষব কবচ বন্ধা বিচরামি মহীতলে ৷ অপ্রধৃষ্টো-শ্মি ভূতানা॰ সৰ্বদেবমধো হুহং॥ স্মরণাদেবদেবস্য বিষ্ণো রমিত-তেজসঃ। সিদ্ধি র্ভ বতু মে নিত্য॰ যথা মন্ত্ৰ মুদাহতে ।। যো মাণ প-শাতি চক্তাণ যাণ্ড্র পশ্যানি চফুষা। সর্বেষাণ পাপ দৃষ্টীনাণ বিষ্ণু বঁগ্নাতি চক্ষ্যা।। বানুদেব-স্য যুক্তক্র° ত্স্য চক্রস্য যে স্ব রাঃ। তে ছিন্দম্ভ চ পাপ॰ মে মম **হি॰সম্ভ হি**॰সকান্ ।। রাক্ষসেযু পিশাচেষ্ কান্তারেম্টবীষু চ। বিবাদে রাজমার্গেষু দ্যুতেষু কল-হেষ্চ ৷৷ নদী সম্ভরণৈ ঘাতে সং-প্রাপ্তে প্রাণসংশ্বে । অগ্নি চৌর নিপাতে চ সৰ্বগ্ৰহ নিবারণে ৷৷ বিদ্যুৎ সর্প বিষোদ্বেশে রোগে ২থ বিন্ন শঙ্কটে। জপ্য মেভজ্জ-

পেমিত্য॰ শরীরে ভয়নাগতে ॥ অ্য° ভগবতো মন্ত্রো মন্ত্রাণা° প-রমে। মহান্। বিখ্যাত কবচ গুহুত সর্বপাপপ্রণাশনত ৷৷ স্বমা-যা কৃতি নিৰ্মাণ ক্লান্তগৃহনো **मह९ । जनामाञ्च जगदी**ज পদ্মনাভ নমোস্তু তে ॥ ওঁ কা-লায স্বাহা। ওঁ কালপুরুষায স্বাহা। ওঁ ক্লাষ স্বাহা। ওঁ ক্ৰুপুৰুষাৰ স্বাহা। ওঁচণ্ডাৰ স্বাহা। ওঁ চওপুরুষায় স্বাহা। ওঁ প্রচণ্ডায় স্বাহা। ওঁ প্রচণ্ড পুক্ৰাৰ স্বাহা। ওঁ সৰ্বাৰ স্বাহা। ওঁ সর্বপুরুষায় স্বাহা। ওঁ নমো ভ্বনেশায ত্রিলোকধা**ত্তে** ইরি-টি মিরিটি স্বাহা। ওঁ নমো অম্বে চাভ্যে যে যে সন্ধা যা পাত্ৰা বৈষা দৈত্য দানব যক্ষ রাক্ষন ভূত পিশাচ ঙ্গমাণ্ডাপস্মারকো-চ্ছাদন জ্বরাণা মৈকাহিক দ্বিতীয ভূভীয চাতুর্থক নৌষ্টুর্ত্তিক দিন-জ্বর রাত্রি**জ্বর সন্ধ্যাজ্বর সর্বজ্বরা**-দীনাণ লূতা কীট কণ্ঠ পূতনা ভুজঙ্গ স্থাবর জন্ম বিষাদীনা-মিদ॰ শরীর মমাপপথ্য ভবত্ তুষুরু স্ফুট প্রকটোৎকট বিকট দ'ষ্টু পূৰ্বতো রক্ষ । ওঁ হৈহৈ হৈহৈ

ব্যান

দিনকর সহসূকাল মমাগ্রতো জয় পশ্চিমতো রক্ষ। ওঁ নিবি নিবিপ্রদীপ্ত ত্বলন ত্বালাকারা মহাকপিল উত্তরতো রক্ষ। ওঁ মিলি মিলি বিলি বিলি গারুডি भोति गामाति विषयाङ विष বিষমাণ্সণ মোহযতু স্বাহা 1 দ-ফিণতো রক্ষ মা° অমুকস্য সর্ব ভূত ভ্রোপদ্রবৈভ্যো রক্ষ রক্ষ জব জয় বিজয়তে ন হীয়তে বিপ্রশ্রমোহ॰ ক্রতবাদ্যতে। ভষ ৰুদ্ধৰ ভ্ৰথবোভধো ২ভৰণ দিশ-<u>ज् यसाखाद नामन बहुाठः ।</u> তদুদর মখিল বিশন্ত লোকা यूगंशतिवर्छ मश्मु॰ क्याखमन-মিব প্রবিশক্তি কস্মষনো।। বা-मूर्णिवः मक्षर्यनः श्रामुग्नः म्हानि-রুজকঃ। সর্বজ্বামমমন্ত বিকু র্নারায়ণো হরিঃ।! ইত্যাদিমহ।-পুরাণে গারুডে সর্ব্যাধিহর বিকুকবচ ২০০ অধ্যায়ঃ॥ ব্যাধিষাতঃ পু॰ আর্থধবৃকঃ। ইত্যমরঃ ॥ ব্যাধিতঃ ত্রি ব্যাধিযুক্তঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। আম্যাব। ২ বিক্তঃ ৩ অপটুঃ ৪ আতুরঃ ৫ অভ্য-নিতঃ ৬ অভ্যান্তঃ ৭1 ইত্যমরঃ

।। রোগী ৮। ইতি জটাধরঃ।। ব্যাধিহন্তা পু॰ বারাহীকনঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ব্যাধিঘা-তকে ত্রি ॥ ত্রি কম্পিতঃ । ইতি ব্যাধুতঃ) ব্যাধৃতঃ**) শব্দরত্নাবলী।।** वतानः पु॰ भतीत्रष्टशक्षवायुष्ठर्भठ-मर्बभरीतगवायुः । इंछामतः ॥ ইমে প্রাণাদ্যঃ গঞ্চ বাষবঃ শ্-রীরে তিগ্ঠন্তি তে চ নিযত স্থান-স্থাঃ । যদাহুঃ। হৃদি প্রাণো গুদে ২পানঃ সমানে। নাভি সংস্থিতঃ ৷ উদানঃ কণ্ঠদেশে চ ব্যানঃ সৰ্বশরীরগঃ ।। ইতি । এব° ত-দ্যাপারাশ্চ বথা। অন্ন প্রবেশ-ন মূত্রাদ্যুৎসর্গো ২ম বিপাচ-न॰ ভাষণাদি নিমেষাদি তদ্যা-পারাঃক্রমাদমী॥ ইতি ভরতঃ॥ শ্রীধরস্বামিমতে তৎকর্ম্ম। ব্যা-যন । আঙ্গঞ্চন প্রসারণাদি।। অন্যচ্চ। ব্যানে। ব্যানশ্যত্য-**ম॰ সৰ্ব্যাধি প্ৰকোপনঃ। মহা**-রজত স্প্রখ্যো হানোপাদান-কারণঃ।। স চাক্ষি কর্ণবোর্মধ্যে কট্যা॰ বৈ গুলফযো রপি। যা-ণে গলে স্ফিগুদ্দেশে তিষ্ঠত্যত্র নিরন্তর॰ ॥ স্কন্দ্যত্যধরণ বক্ত্রণ

গাত্র নেত্র প্রকোপনঃ ৷৷ ইতি শারদাতিলকদীকা।। ব্যাপকঃ ত্রি বিশেষেণাক্ষোতি যঃ।। তদ্বমিষ্ঠাত্যস্তাভাবাপ্রতি-ষোগী। যথা। সাধ্যস্য ব্যাপ-কো যম্ভ হেতো রব্যাপক স্তথা । স উপাধি ভবৈত্তস্য নিষ্কর্ষো ২য॰ প্রদর্শ্যতে।। ইতি ভাষাপ-त्रिष्ट्रमः ॥ आक्ट्रामकः। यथा ৷ পক্ষস্য ব্যাপক পার মসন্দিশ্ধ মনাঙ্গল । অব্যাখ্যাগম্য মি-ত্যেব মুত্তর॰ তদিদে। বিদুঃ ।। পক্ষস্য ভাষার্থস্য ব্যাপক আ-চ্ছাদক অভিযোগাপ্রতিকূল মিতি যাবৎ। ইতি ব্যবহার-তত্ত্ব° 11

ব্যাপদ্ দ্রী মৃত্যুঃ ।। জাপৎ । বিপূৰ্ৰ আঙপূৰ্ৰ পদধাতোঃ ক্বিপ্ প্রত্যবেন নিষ্পন্ন। ।। ব্যাপন ক্লী আচ্ছাদন ॥ ব্যা-প্তিঃ।। কথা। অত্র লব্দন মসণ-ক্রমণঞ্চ রবে স্তদা ভবতি যদা তন্মাস তৎপূৰ্বমাসান্ত্যক্ৰণযো রেকরাশ্যবস্থিতস্য তন্মাসান-ন্তর মেব রাশ্যন্তরসংযোগঃ ন-ত্বেকরাশিস্থিতস্য মাসব্যাপন-মাত্রণ। ইতি মলমাসতত্ত্বণ।। ব্যাপন্নঃ ত্রি মৃতঃ। ইতি হেম-ठक्दः ॥ ব্যাপাদঃ পু॰ জোহচিন্তন । ইত্যমরঃ ॥ ব্যাপাদন ক্লী মারণ ৷ ইতি হেমচন্দ্রঃ।। পরানিফটিভে া ইত্যমরটীকাষাণ রামাশ্রমঃ।। ব্যাপাদিতঃ ত্রি দ্রোহটিন্ডিতঃ। মারিতঃ। যথা। একা চেদ্বহুভিঃ ক্বাপি দৈবাদ্যাপাদিতা ভবেৎ । পাদ॰ পাদঞ্ছ হত্যায়া শ্চরেষু স্তে পৃথক্ পৃথক্ ॥ ইতি প্রায-শ্চিত্ততত্ত্বধৃতসম্বর্ত্তবচন ।। ব্যাপিকা স্ত্রী ব্যাপিনী। যথা। অধৰ্মপত্নী মিথ্যা সা সৰ্বধূৰ্টেজ্জ

পূজিতা। যথা বিনা জগন্মুক্ত

মুচ্ছনা পি বিধিনির্মিত পা সত্যে
চাদর্শনা যা চত্রেতায়া পুশ্বনপিনী । অর্জাবয়বৰপা চ দ্বাপরে সংবৃতা ভিয়া । কলো মহাপ্রমন্তা চ সর্বত্র ব্যাপিকা ভবেৎ
। কপটেন সমণ ভারা ভুমত্যেব
গৃহে গৃহে ।।. ইতি ব্রহ্মবৈবর্ত্তে
প্রক্রতিখণ্ডে ১ অধ্যায়ঃ ।।
ব্যাপারঃ পুণ কর্মা । যথা । স্যাৎ
প্রাণবিষোগফলকো ব্যাপারো
হননণ স্মৃতণ । রাগান্দ্রেষাৎ

পূরাণব্চন ।।
ব্যাপারী তি ব্যাপারবিশিষ্টঃ।
ব্যবসায়ী। যথা। লাক্ষালোহাদি ব্যাপারী রসাদি বিক্রথী চ
যঃ। স যাতি নাগবেষ্টঞ্চ নাগৈ
র্বেষ্টিত এব চা। ইতি ব্রহ্মবৈ-

বর্ত্তপুরাণণ।।

প্রমাদাদ্বা স্বতঃ পরত এব বা।।

ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্বধৃত অগ্নি-

ব্যাপী ত্রি বিকুঃ। যথা। স্বপনঃ
স্ববশো ব্যাপী নৈকাত্মা নৈককর্মারুং। ইতি তস্য সহসুনামস্তোত্রণ ।। ব্যাপকঃ ।। আছোদকঃ। যথা। ত্রি দক্ষা ব্যাপিনী
যাতু নৈব পূজ্যা সদা তিথিঃ।
ন তত্র যুগ্ঞাদরণ মন্যত্র হরি-

বাসরাথ। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বধৃত পরাশর বচনং ।।
ব্যাপৃতঃ পুণ কর্ম্মসচিবঃ । যথা।
নিযোগী কর্মসচিব আযুক্তো
ব্যাপৃতশ্চ সঃ । ইতি হেমচন্দ্রঃ
।। ব্যাপারযুক্তে ত্রি । বি আঙ্
পূর্ব পৃ ধাতোঃ ক্ত প্রত্যাযেন
নিষ্পায়ঃ ।।

ব্যাপ্ত॰ ত্রি সম্পূর্ণ।তৎপর্যায়ঃ । পূর্ণ ২ আচিত ৩ ছন্ন ৪ পুরিত ৫ ভরিত ৬ নিচিত ৭। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। কীতং।। সম্ব ক্রান্তণ। ইতি মেদিনী ॥ স্থাপি-ত । यथा । প্রাপ্ত প্রণিহিতে সমে ইত্যত্র ব্যাপ্ত মপি পাঠঃ। रेळामत्रीकायाः तायमूक्रिः ॥ ব্যাপ্তিঃ ত্রী ব্যাপন ।। রয়ঃ। ইতি মেদিনী।। রয়স্থানে লয়-নমিতি হেমচন্দ্রে পাঠঃ॥ শি-বস্যাকৈশ্বগ্যান্তর্গ তৈশ্বগ্যবি-শেষঃ। যথা। অনিমা লিখিমা ব্যাপ্তিঃ প্রাকাম্য° মহিমেশিত। । বশি কামাবশাবিদ্ধে ঐশ্বর্যা मर्ख्या युष्ट ॥ इष्टि शक्नाना ॥ क्ष ॥ न्यायमण्ड माधावपन्या-বৃত্তিত্ব°। যথা। অগ্যভাবস্থা-त्न धूममादर्जभानषः । देयः

অন্বয় ব্যাপ্তিঃ। অস্যা জ্ঞান॰ প্রতি ব্যক্তিচারজ্ঞানাভাবঃ স হচারজ্ঞানক কারণ। এবং সা-ধ্যাভাবব্যাপকীভূতাভাব প্র-তিযোগিত্ব । ইয় ব্যতিরেক-ব্যাপ্তিঃ। অস্যা জ্ঞান॰ প্রতি সাধ্যাভাব এবং হেম্বভাবস্য স-হচারজ্ঞান॰ ব্যভিচারজ্ঞানা-ভাবশ্চ কারণ । তত্র প্রমাণ । ব্যাপ্তিঃ সাধ্যবদন্যশিষ্ণসম্বন্ধ উদাহতঃ। অথবা হেতুমনিৡ বিরহাপ্রতিযোগিনা ৷৷ সাধ্যে ন হেতো রৈকাধিকরণ্য ব্যা-প্তি রুচ্যতে। ব্যক্তিগ্রস্যাগ্র-হোপি মহচারগ্রহ তথা ৷৷ হে-ত ৰ্ব্যাপ্তিত্ৰহে তৰ্কঃ স্কৃচিৎ শঙ্কা-নিবর্ত্তকঃ। দৈবিধ্যস্ত ভবেদ্যা-প্তে রম্বয় ব্যতিরেকতঃ ৷৷ অনুষ্-ব্যাপ্তি রু**ক্তৈব ব্যতি**রেকাদথো-চ্যতে ৷ সাধ্যাভাবব্যাপকত্ব হেম্বভাবস্য যদ্ভবেৎ ৷৷ ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ 11

ব্যাপ্য° ক্লী সাধন°। যথা। ব্যাপ্য° লিঙ্গঞ্চ সাধন°। ইতি স্ফীৰ্ণবৰ্গে ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ॥ ঙ্গ-ঠৌযধ°।ইত্যনব্ৰঃ॥ ব্যাপ্যঃ ত্ৰি ব্যাপ্তিবিশিক্টঃ।

ব্যাপনীয়ঃ। যথা। প্রস্থান ত স্বলিশ কলনাগিশ্চিত° পণ্ডি-তাত্র্যৈ শ্চিত্তে ২স্মাকণ ভদপি রমতে যাহি যাহীতি বাণী। অপ্রামাণ্য কথ্যতি সদা নন্দ-সূনে। বিযোগো ব্যাপ্যজ্ঞানা--দ্রুজঙ্গলভুবাং ব্যাপকস্যাপি সি-দ্ধৌ।। ইতি পদাৰুদূতঃ।। ব্যানঃ পু॰ তির্যাক্ পার্শ্বে তত্তবোঃ সহস্তযে। র্বাহ্যো রন্তরণ। বেঁষু ইতি ভাষা ৷ ব্যামীয়তে ২নেন ব্যানঃ ক্লাঞ্জাং কভাব ইতক্তে র্মাঙো ডঃ। ইত্যমর্ভরতী ॥ वाग वायाम नात्थामा स्थिमाक् বাহু প্রসারিতো। ইতি হেম-हिन्द्र ॥ ব্যামন॰ ক্লী ব্যামঃ। ইতি 🦠 কাওশেষঃ ৷৷ वागिष्ठ जि वाशिष्टा एमर्था ॥ দূঢ়॰।। অতিশ্যঃ। ইতি মেদিনী वागायाः शुः अतिस्यः ॥ आयः॥

ব্যাসতং ত্রি ব্যাপৃতং ।। দৈর্ঘাণ ।।

দৃচং ।। অতিশ্বং । ইতি মেদিনী

ব্যামানঃ পুণ পৌরুষং ।। প্রামান ।

বিষমং ।। দুর্গসংগরেং ইতি মেদিনী ।। ব্যামান । ইতি হেমচন্দ্রঃ

।। মল্লক্রীড়া । ক্রন্তীতি পারস্যাভাষা । অস্য গুলাদি যথা ।

ব্যামানো হি সদা পথ্যে। বলিনাং স্বিশ্বাভাজিনাং । স চ শী-

তে বসন্তে চ তেয়া॰ পথ্যতমঃ ष्मृञः ॥ मर्स्तिभृञ्स् मर्देत र्हि मृ রৈ রাত্মহিতার্থিভিঃ। শক্ত্যদ্ধেন তু কর্ত্তব্যা ব্যায়ামে। হন্ত্যতো-वाथाः ॥ ऋको ननारहे जीवा ষা॰ যদা ঘৰ্মঃ প্ৰবৰ্ত্ততে। শক্ত্য-**ৰ্দ্ধ° ত**° বিজীনীযাদায়তোচ্ছাস (भव ह ॥ लायव॰ कर्यानामर्था॰ স্থৈৰ্য্য° ক্লেশ সহিফুতা।দোষক-যো ২গিবৃদ্ধিশ্চ ব্যাযামাদুপ-জায়তে ৷৷ ব্যায়ামণ দৰ্বতো নি-ত্য॰ বিরুদ্ধ নপি তোজন॰। বি **দ**क्ष गविषक्षः व। निर्काषः शति-পচাতে ৷৷ ন চ ব্যাধাৰ **সদৃশ ম**-ना ९ एष्। ना। शवर्ष १ १ न हे वा।-যানিনং নত্যং নর্দশন্ত্যরয়ে। ব-লাৎ ।। ন চৈনং সহসাক্রম্য জ-র। সদ্ধিগচ্ছতি । ব্যাধান করে-গাত্রসা পদ্যা মুম্বভিত্সা চ ॥ ব্যাখযো নোপদর্পত্তি বৈনতেয মিবোরগাঃ। রক্তপিত্তী ক্ষ্মী-শোষী কাসী শ্বাসী ক্ষতাতুরঃ॥ जुक्तान् खीयू ह कीरना वर्गाना ম॰ পরিবর্জয়েৎ। বাতপিতান-यी वादना वृद्धा १ की नी कि म॰ ত্যজেৎ ৷৷ অতিব্যায়ামতঃ কা-সোরক্তপিত্ত॰ প্রজাযতে। শ্রমঃ |

क्रमः क्रम खुका खुत क्रिकिन জাযতে ॥ ইতি রাজবল্লভঃ॥ वारियागः पू॰ ममविधकानकान्छ-ৰ্গতৰূপক্ৰিশেষঃ। যথা। স্যা-মাটক প্রকরণ ভণঃ প্রহসন ডিমঃ। ব্যাষোগঃ সমবাকারো বিথ্যক্ষেহামৃগা ইতি ৷৷ অভি-নেযপ্রকারাঃ স্যু ভাষাঃ ষট্ সং-স্কৃতাদিকাঃ।। ইতি হেমচক্রঃ।। वानः पु॰ मर्गः॥ श्वाभमः। है-তামরঃ ।। দুঝগজঃ । ইতি মে-দিনী।। চিত্রকঃ।। বায়িঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। রাজা। ইত্যমর-টিকাষা॰ মথুরেশঃ॥ ব্যালঃ ত্রি শঠঃ। ইতামরং। পূর্তঃ। ইতি জটাধরঃ॥ वानिकः पू॰ मुख्याकः। ७९-পর্য্যাযঃ। গন্তীরবেদী ২ অন্ধূশ-पूर्कतः ७ ठानकः 8 1 ইতি जि-कांखरश्यः॥ दानिश्वाः पुः वाननशः। ইতি द्राक्रनिर्घक्टः॥ वानगन्ना जी नामनी। ইতি त्राजनिर्घन्छः॥ वानधारः पुः वानधारी। ইতাসরটীকাষাণ ভরতঃ॥ वाालधारी पु॰ जिकार्थ॰ मर्भ- ব্যালব

ধারী। সর্গথেলকঃ। সাপুডিযা ইতি বাদিয়া ইতি চ ভাষা। তৎ পর্যায়ঃ। অহিতুণ্ডিকঃ ২। ই-ত্যমরঃ॥ জাঙ্গুলিঃ ৩ জাঙ্গলিঃ ৪ আহিতুণ্ডিকঃ ৫ ব্যালগ্রাহঃ ৬ গারুডিকঃ ৭ বিষ্বৈদ্যঃ ৮। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

ব্যালজিহ্বা স্ত্রী মহাসমঙ্গা । ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ ॥

ব্যালদ ফুঃ পু॰ গোক্ষুরঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ব্যালনখঃ পু॰ গন্ধজব্যবিশেষঃ।
বয্নহা ইতি হিন্দীভাষা। তৎ
পর্যায়ঃ। কৃটস্থঃ ২ চক্রনাযকঃ
৩ চক্রী ৪ চক্রনখঃ ৫ ক্রাসুফলঃ
৬ ব্যাঘুনখঃ ৭ দ্বীপিনখঃ ৮
খপুরঃ ৯ ব্যালপাণিজঃ ১০ ব্যাল্যুধঃ ১১ ব্যালবলঃ ১২ ব্যাল্যুধঃ ১১ ব্যালবলঃ ১২ ব্যাল্যুধঃ ১৩ অস্য গুণাঃ। তিল্ডুম্বং । উক্তম্বং। ক্ষাম্যম্বং। ক্ষা
বাত স্বন্ধ কণ্ডু ব্রণ নাশিম্বং। বন্ধ্রিং। সৌগন্ধ্যপ্রদম্বঞ্চ। ইতি
রাজনির্যন্টঃ।।

য্যালপত্ৰ। স্ত্ৰী এৰ্বাৰুঃ। ইতি রাজনিৰ্ঘন্টঃ।।

ব্যালবলঃ পু॰ ব্যালনখঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ। ব্যাবৃত্তি

ব্যালমৃগঃ পু॰ চিত্রব্যাযুঃ। চি-তাবাষ ইতি ভাফা। ইতি ষহা-ভারতে রাজধর্মঃ।।

वाजा १५ ते जिल्हा १ विकास १ व

ব্যালাযুধ ক্লী নখীনামগন্ধ-দ্ৰব্য ৷ ইত্যমরটীকাষা মথ্-রেশঃ ৷৷

ব্যালামুধঃ পু॰ ব্যালনখঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

ব্যাবক্রোশী স্ত্রী পরস্পরাক্রো-শন° ৷ ইতি স্ত্রীলিঙ্গসংগ্রহ টী-কাষাণ ভরতঃ ॥

ব্যাবভাষী ত্রী ব্যাবক্রোশী।
ইত্যমরটীকাষা রাষমুক্টা।
ব্যাবর্ত্তঃ পুণ নাভিকন্টকঃ। ইতি
শব্দরত্নাবলী॥ তত্র আবর্তকোপি পাঠঃ॥

ব্যাবহারী স্ত্রী পরস্পারহরণ । ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ।।

ব্যাবহাসী স্ত্রী পরস্পারহসন । ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ।।

ব্যাবৃত্তঃ ত্রি বৃতঃ। যথা। বৃতে তু বৃত্ত ব্যাবৃত্তো। ইতি হেন-চক্রঃ।। আবৃতশ্চ।

ব্যাবৃত্তিঃ স্ত্রী খণ্ডন । যথা। অতীতঃ প্রভান তব্চ মহিম। বাজ্মনসমো রতদ্যাবৃত্ত্যা ষণ চকিত মভিধতে শ্রুতি রপি। স
কিস্য স্তোতব্যঃ কৃতিবিধগুণঃ
কিস্য বিষয়ঃ পদে স্বর্গাচীনে পততি ন মনঃ কদ্য ন বচঃ ৷৷ ইতি
মহিমস্তোত্রণ ৷৷ অবৃত্তিঃ ৷ যথা
৷সর্ব সপক্ষব্যাবৃত্তি রেব দোষো
ন বিপক্ষব্যাবৃত্তি রপি তস্যাননুগুণস্থাৎ ৷ ইতি চিস্তামণৌ অসাধারণমূলণ ৷৷

ব্যা**দঃ পু**ং বিস্তারঃ।ইত্যমরঃ॥ মানভেদঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ।। পাঠকব্ৰাহ্মণঃ। যথা। নৈয-তকালিক কল্পতরে ভবিষ্যপু-রাণ ৷ বিস্পষ্ট মদ্রুত শান্ত স্পান্টাক্ষরপদ॰ তথা। কলম্বর সমাযুক্তণ রস ভাব সমন্বিতণ।। वृक्षामानः मनर्थः देव अस्त्रार्थः ক্রৎস্নশো নৃপ। ব্রাহ্মণাদিষু স-রেষু গ্রন্থার্থ ঞার্পযেমৃপ ॥ য-এবং বাচষেদুন্ধন্ স বিপ্রো ব্যা-স উচ্যতে ৷ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব° ॥ (भानमा अभारतथा। यथा। ব্যাসে ভ নন্দাগ্নি হতে বিভক্তে খ বাণ সূর্টব্যঃ পরিধিস্ত সূক্ষঃ। দাবি শতিয়ে বিহুতেথ শৈলৈঃ স্থূলোথ বা স্যাদ্যবহারযোগ্যঃ

উদাহরণ ৷ বিষ্কম্ভ মান• কিল যত্ত্ৰ সপ্ত তত্ত্ৰ প্ৰমাণ প-तिर्धः क्षेत्रकः । बादिःगठि र्वरः পরিধি প্রমাণ তদ্যাস সংখ্যা **চ সখে বিচিন্ত্য ।। ইতি লীল**া-বতী।। #।। মুনিবিশেষঃ। তস্য পর্য্যায়া বেদব্যাস শব্দে ডক্ট-ব্যাঃ **। স** চ সত্যবত্যা॰ কন্যা-কালে পরাশরাজ্জাতঃ । শ্রীক্লক্ষ-স্য পঞ্চলেভিবঃ। যথা। ব্যাসঃ পুরাণসূত্রঞ্চ পপ্রচ্ছ বাল্মিক য-দা।মৌনী ভূতঃ স সম্মার দ্বামেব জগদয়িকাণ।। তদা চকার সিদ্ধা-ন্ত॰ স্বরেণ মুনীশ্বরঃ। সংপ্রাপ নিৰ্মাল জ্ঞান ভুমান্ধ ধণ্স দীপ-ক॰।। পুরাণসূত্র॰শ্রুত্ব। স ব্যাসঃ পঞ্চকলোদ্ভবঃ। ত্বা॰ সিযেন্তে প্র-দধ্যে চশতবর্ষঞ্চ পুষ্করে !! তদা ত্বত্তো বরু প্রাপ্য স কবীন্দ্রো বভূ-ব হ ৷ তদা বেদ বিভাগঞ্চ পুরাণঞ্চ চকার হ ॥ ইতি ব্রহ্মবৈবর্ত্তে প্রক্ল-তিখণ্ডে ৪ অধ্যায়ঃ ৷৷ ৠ ৷৷ তস্য জন্মান্তর॰ যথা। অথ ভূযো জ-গৎসুষ্ঠা ভোঃ শব্দেনানুবাদযন্ । সরস্বতী মুচ্চচার তত্র সারস্বতো ২ভবৎ ।। অপান্তরতমা নাম সূতো বাক্সম্ভবঃ প্রভুঃ। ভূত

ভব্য ভবিষ্যজ্ঞঃ সত্যবাদী দৃঢ-ব্ৰতঃ।। ত মুবাচ নত মুৰ্দ্ধা দেব।-ना गानि व्यवायः। त्वनाशात्न व्य-তিঃ কার্য্য যথা মতিমতারর ॥ তন্মাৎ সরু যথাক্তপ্ত যমৈতদ্ব-চন॰ বুনে। তেন ভিন্ন। স্তদা বে-मा भरनाः शायजुरवा २ खरत् ॥ ७-ত স্তুতোষ ভগবান্ হরি স্তেনাস্য কর্মণা। তপদা চ সূতপ্তেন যমে-ন নিষমেন চ ৷৷ মন্বস্তুরেষু পুত্র ত্ব মেব মেব॰ প্রবর্তকঃ। ভবিষ্যস্য-চলে। বন্ধন্নপ্রধ্যাশ্চ নিতাশঃ।। ইতি ষহাভারতে মোক্ষধর্মঃ ॥ 🟶 🛚 অন্যচ্চ । সূত প্রজনষচ্চক্তে রদৃশ্যন্তী পরাসরণ। কালী পরা-সরাৎ যজে ক্লেট্রেপায়ন মুনিং १। देवशायनाम्बन्धाः देव खदन যজ্ঞে গুণান্বিতঃ। ইতি বহ্নিপুরা-ণে প্রজাপতিসর্গো নামাধ্যায়ঃ ।। 🟶 ।। यूगराज्य वागराज्या যথা। যশ্মিমান্বভরে ব্যাসা যে যে তা॰ স্তান্মিবোধ মে। যথা চ ভে-দঃ শাখানা॰ ব্যাদেন ক্রিয়তে নু-নে॥ অফাবি॰শতিরূত্বো বৈ বে-দো ব্যস্তো মহর্ষিভিঃ। বৈবস্বতে-ন্তরে দ্বিন্দ্রিষ্ পুনঃ পু-নঃ ॥ বেদব্যাসা ব্যতীতা যে অ-

ফীবি॰শতি সত্তমাঃ। চতুর্ধাবেঃ ক্রতো বেদে৷ দ্বাপরেষু পুনঃ পুনঃ ॥ द्वांभदत् , श्रथं ये वा खाः ययः বেদাঃ স্বয়ন্ত্রবা। দিতীয়ে দাপরে চৈব বেদব্যা**দঃ প্র**জাপতিঃ ॥ তৃতীষে চোশনা ব্যাস শতুর্থে ডু বৃহস্পতিঃ। সবিতা পঞ্চমে ব্যা-সো মৃত্যুঃ মঞ্চে স্মৃতঃ প্রভুঃ ॥ সপ্তমে চ তথৈবেন্দ্রো বশিষ্ঠ শ্চা-ফনে স্মৃতঃ। সারস্বতশ্চ নবমে ত্রিখামা দশমে স্মৃতঃ।। একাদ-শে বৈ ত্রিবৃষো ভারদ্বাজ স্ততঃ পর॰ । ত্রযোদশে চাস্তরীকো ধ-স্মী চাপি চতুর্দশে ॥ ত্রযারুণঃ পঞ্চদেশ ষোডশে তু ধনঞ্জয়ঃ ৷ *হৃতপ্ৰ*যঃ সপ্তদশে ঋণক্যোষী-দশে স্তঃ ॥ ততো ব্যাদে ভ রদ্বাজে। ভরদ্বাজাত্তু গৌতনঃ। গোত্যাদ্ভনো ব্যাসো হর্যাত্মা যো ২ভিধীযতে ।। অথ হর্যাত্ম-নো বেণঃ স্মৃতো বাজশ্রবাস্ত যঃ ৷ সোমো মুখ্যায়ন স্তস্মাতৃণবিন্দু রিতি স্মৃতঃ ৷৷ ঋকে৷ ২ভূদ্তার্গব-স্তম্মাদালীকি র্যো ২ভিধীয়তে । তত্মাদক্ষৎপিতা শক্তি ব্যাস खन्मामरु॰ मूटम ॥ জाতुकर्ता १-ভবন্মতঃ ক্লফ দৈপায়ন স্ততঃ।

ব্যাসঙ্গঃ পু॰ বিশেষেণ আসঙ্গঃ

অফীবি°শতি রিত্যেতে বেদব্যা-সাঃ পুরাতনাঃ।। একো বেদ শচতুর্ধা তু তৈঃ ক্রতে৷ দ্বাপরা-षियू। ভবিষ্যে দ্বাপরে চাপি জৌণি ৰ্ব্যাসে। ভবিষ্যতি॥ ব্য-তীতে মম পুত্রেস্মিন্ ক্লফট্বেপা-यत्न गूर्नो । इंछि विक्यूश्रुतात्व ও অংশে ও অধ্যাষঃ।।ৠ। কূর্ম-পুরাণে স্বিয়ান্ বিশেষঃ। দ্বাদ-শে দাপরে শততেজাঃ ৷ ত্রযো-मत्भ धर्मः । ठजूमत्भ जतकः । शक्षिमा व्यायवः। असीमान ঋতঞ্জযঃ। একবিংশে বাজশ্র-বাঃ। দাবিংশে শুমাপণঃ। ত্র-যোবি°শে তৃণবিন্দুঃ। চতুৰ্ৰি°শে वाचाकिः। शक्षिविण्या विख्ः। অন্যৎ বিষ্ণুপুরাণবৎ ॥ ব্যাসক্তঃ ত্রি বিশেষেণাসক্তঃ। न नाः। यथा। कारकारम्भी-বরাভা কনক পরিলসৎ পীত-বাসাঃ সুহাসা বহৈ ৰুচ্চন্দ্ৰকা-ত্তৈ ৰ্বলয়িত চিন্দুরা চারু কর্ণা-বতংসা। অংসব্যাসক্ত বংশধ্নি সুথিত জগদল্লবীভি ল্সন্তী মূ-র্ত্তি র্গোপস্য বিষ্ণে। রবতু জগ-তি নঃ সুন্ধরা হারি হারা।। ইতি ছন্দোমঞ্জরী ৷৷

বি আঙ পূৰ্ৰ সন্জ ধাতো ৰ্যঞ প্রত্যযেন নিষ্পায়ঃ ৷৷ ব্যাসমাতাঁ স্ত্রী বেদব্যাসজন্নী । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ তৎ-পর্য্যায়ঃ। সভ্যবতী ১ বাসবী ২ গন্ধকালিকা ৩ যোজনগন্ধা ৪ मारम्यी ७ भीन कायन की वमृः ৬। ইতি হেষচন্দ্রঃ।। গ্রন্থান্তরে শালস্কায়নজা ইতি চ পাঠঃ॥ काली १ अरुशामत्री ৮ विष्ठिव-বীৰ্য্যসূঃ ৯ চিত্ৰাঙ্গদসূঃ ১০ যো-জনগন্ধিকা ১১। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।৷ গন্ধকালী ১২ সত্যা ১৩ मामनिमनी 281 ইতি শব्দ-त्रश्रावनी ॥ নিষিদ্ধঃ। ইতি ব্যাসিদ্ধঃ ত্রি নিতাকর। ॥ ব্যাহতঃ ত্রি বিশেষেণাহতঃ।। ব্যর্থঃ। যথা। সুপ্ত ব্যাসক্ত ম-नमा (कक्कियार्थ(याः मनिकर्य-নিমিত্তত্বাৎ তৈ শ্চাপদেশা জ্ঞ্জানবিশেষাণা॰ ব্যাহ্তদ্বাদ-হেতুঃ। ইতি গোতনসূত্রে প্র-ত্যক্ষপরীক্ষা প্রকরণণ।৷ অপি চ । অব্যাহতাজ্ঞঃ সর্বাসু যঃ সদা

দেবযোনিষু। নিৰ্জ্জিতাখিল-

বিরোধাচরণ । ইতি মেদিনী।।

रेनजातिः म यनार मृन्त ७९॥ ইতি দেবীমাহাত্ম্য ।। ব্যাহারঃ পু॰ বাক্যণ। ইত্যমরঃ॥ ব্যাহ্বতিঃ স্ত্রী ব্যাহারঃ॥ মন্ত্র-বিশেষঃ। যথা। ওঙ্কার মাদিতঃ ক্লত্বা ব্যাহ্নতি স্তদনস্তরণ। ততো **২ধীষীত সাবিত্রী মেকাগ্রশ্রন্ধ**-যাম্বিতঃ ।। পুরা কল্পে সমুৎপদা ভূ ভূবঃ স্বঃ সনাতনাঃ। মহা-ব্যাহ্নত্য স্তিসুঃ সর্বাশুভ নিব-ৰ্হণাঃ ।। প্ৰধানপুৰুষঃ কালো ব্রহ্ম বিষ্ণু মহেশ্বরাঃ। সত্ত্ব॰ রজ স্তম স্তিসুঃ ক্রমাদ্যাহ্নতযঃ স্মৃ-তাঃ ৷৷ ওঙ্কার স্তৎপরণ এক্ষ সাবিত্রী স্যাত্তদক্ষরণ। এষ মস্ত্রো মহাভাগ সারাৎসার উদাহতঃ ।। ইতি কৌর্ম্মে উপরি ভাগে ১৩ व्यक्षायः ॥ ব্যুতঃ ত্রি সূতে । ইতি ভরত-দ্বিৰূপকোষঃ ৷৷ ব্যুতিঃ স্ত্রী উতিঃ। তম্বসন্ততিঃ। ইতি ভরতদ্বিৰূপকোষঃ ।। क्रमिविशर्यायः। ব্যুৎক্রমঃ পুণ ব্যতিক্রমঃ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ উৎ-ক্রমঃ ২ অক্রমঃ ৩ ৷ ইতি হেম-ठन्दः ॥

ব্যুখান ক্লী স্বাতন্ত্ৰ্যক্ত্য ।।

প্রতিরোধন ।। সমাধিপারণ । ইতি হেমচন্দ্রঃ।। নৃত্যভেদঃ । ইতি শব্দরত্নাবলী।। বিশেষে-ণোখানঞ্ব ॥ ব্যুৎপত্তিঃ স্ত্রী বিশেষেণাৎ: পত্তিঃ ॥ সংস্কারঃ । ইতি ব্যুৎ-পন্নশব্দার্থ দর্শনাৎ। ষ্থা। শ-<u> ब्रष्टानत्वाधनीयत्वन भात्रमा</u> পদব্যুৎপত্তে স্তৎপদ তালব্যা-দি সারু দদাতীতি ব্যুৎপত্তিস্ত কান্ননিকী।ইতিতিখ্যাদিতত্ত্বণা শক্তিজ্ঞান°। যথা। ব্যবহারাদি वाधकः विना विवत्रनामि गुर-পত্তেঃ ৷ বাধকণ বিনা স্বসাধ্যস্য বাধকণ যদিশেষণ তদভাববত্ব বিশেষণ সহকারেণ ব্যুৎপভেঃ ব্যুৎপত্তি সম্ভবাৎ শক্তিগ্ৰহস-ন্তবাদিতি যাবৎ। ইতি আখ্যা-তবাদস্য মাথুরীটীকা।। ব্যুৎপন্নঃ ত্রি সংস্কৃতঃ। ইতি হেমচন্দ্রশব্দরত্বাবল্যো ॥ ব্যুৎ-পত্তিযুক্তঃ। যথা।ব্যাকরণব্যুৎ-পন্নশব্দজানাধীন শাস্ত্রান্তর-জ্ঞান॰ তদধীনা চ বৈদিকক্ৰিয়া তৎফল॰ স্বৰ্গাদি ৷ ইতি মুগ্ধ-বোধটীকাষা॰ দুর্গাদাসঃ।।

ব্যুৎপাদকঃ ত্রি ব্যুৎপত্তিজনকঃ
। যথা। শব্দব্যুৎপাদকশাস্তারস্থে শব্দৈ রেব মঙ্গলং কর্ত্ব্যং
। ইতি মুগ্ধবোধটীকাষাং দুর্গাদাসঃ।।

ব্যুষ্ট॰ ক্লী ফল॰॥ দিন॰॥ প্র-ভাত॰॥ পর্যুষিত৽। ইতি হেম-চক্সঃ॥

ব্যুক্টঃ ত্রি উষিতঃ ॥ দক্ষঃ । ইতি মেদিনী ॥

कुाँकिः द्वी कलः॥ ममृक्षिः। ইতি
भित्री ॥ खिठिः। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥

ব্যুচঃ ত্রি বিন্যস্তঃ। সংহতঃ।
ইত্যমরঃ।। প্রথুলঃ। ইতি মেদিনী।।

ব্যুতকক্ষটঃ ত্রি সমস্বঃ । ইত্য-মরঃ ॥

ব্যুটিঃ স্ত্রী বিন্যাসঃ॥সংহতিঃ॥ প্রথ্নতা। ইতি ব্যুচশব্দার্থ দ-শ্নাৎ॥

ব্যত° ত্রি উত°। তন্ত্বসন্তত°। বি পূর্ব বেঞ ধাতোঃ ক্ত প্রতা-যেন নিষ্পন°।।

ব্যুতিঃ স্ত্রী বস্ত্রাদিবপনক্রিষা। তৎপর্যায়ঃ। বাণিঃ ২। ইত্য-মরঃ।। ব্যুতিঃ ৩। ইতিতট্টীকা।।

ব্যুহঃ পু॰ সমূহঃ 11 নিৰ্মাণ ।। তर्कः। ইতি মেদিনী॥ দেহঃ॥ সৈন্যঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ যুদ্ধার্থসেনারচনা। তৎপর্যা-यः। वलविनाभिः २। ইতামরः॥ युक्तार्थ॰ रेमनामा प्रमिवित्मव বিভজ্য দুর্লজ্যাত্ব নিমিত্ত স্থা-পন॰ বৃূুহঃ। উহ বিতর্কে বিপূ-बां पा पा पूर्व प्रधानत्या ভেদা বিশেষা ব্যুহস্যেত্যৰ্থাৎ আদিনা ভোগ মঙল সংহতা-না॰ গ্রহঃ। যথাহ কামন্দকিঃ। তিষ্যমৃত্তিশ্চ দঙ্খ স্যান্ডোগো ২ন্বাবৃত্তি রেব চ। মণ্ডল° সর্বতো-বৃত্তিঃ পৃথগৃত্তি রসংহতঃ ইতি । এষা চতুর্ণাঞ্চ বহবো ভেদাঃ ক্রৌঞ্চ চক্রাদযে। গ্রন্থগৌরব-ভযানোক্তাঃ। ইতি ভরতঃ।। অপি চ। সমগ্রস্য তু সৈন্যস্য বিন্যাসঃ স্থান ভেদতঃ ৷ স ব্যুহ ইতি বিখ্যাতো যুদ্ধেষু পৃথিবী-ভুজা ৷৷ ব্যুহভেদান্ত চন্বারে৷ দণ্ডো ভোগো হস্ত্রনওলং। অ-সংহতশ্চ নিণী তা নীতিসারা-দি সন্মতাঃ ।। অন্যেপি প্রকৃতি वुर्हाः (क्रीक्ष ठक्काम्यः क्रिवि । তির্যাগ্রুতিস্ত দঙঃ স্যাডোগো

ংঘাবৃত্তি রেব চ।। মণ্ডল° সর্ব-তোবৃত্তিঃ পৃথগৃত্তি রসংহতঃ। দৈন্যানা নীতিসারাদে ব্যহ-ভেদাঃ সমীরিতাঃ ৷৷ ক্রেঞ্চি-ক্রাদি ভেদানাও লক্ষণও ভারভা-िष्यू। ইতি শব্দরত্নাবলী ।। वृष्ट्रन क्ली रिमनाम श्रान । वि পূৰ্ৰ উহধাতো রনট্ প্ৰত্যযেন নিষ্পন্ন ।। ব্যুহপার্ফিঃ পু॰ ব্যুহপশ্চান্ডাগঃ । তৎপর্য্যাযঃ। প্রত্যাসারঃ ২। ইত্যমরঃ।। প্রত্যাসরঃ ৩। ইতি তডীকা ॥ ব্যহস্য পশ্চাদ্যুহা-ন্তরণ। ইতি কেচিৎ। ইতি ভ-রতঃ॥ বূাহ্নধ্য॰। ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी ॥ ব্যে ঞ ঐ বৃতৌ।ইতি কবিকন্ধ-फ्रमः ॥ এ वार्या वार्या । के वीया । इंडि मुर्गामामः॥ লৌহকারঃ । ব্যোকারঃ পুণ ইত্যমরঃ ॥ ব্যোম ক্লী আকাশঃ।ইত্যমরঃ ।। जन॰।। ভाস্করস্যার্চ্চনাশ্রযঃ । ইতি মেদিনী।। অভুকণ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ব্যোমকেশঃ পু॰ শিবঃ। ইত্যমরঃ

গঙ্গাধারণকালে ব্যোমব্যাপিনঃ কেশা অস্য সম্ভীতি ব্যেমকেশ শকাদিন্ প্রত্যযেন নিষ্ণানঃ॥ ব্যোমচারিপুর॰ क्ली শৌভপুর॰। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ॥ ব্যোমচারী পুত দেবতা।। পক্ষী । ইতি यामिनी ।। চित्रकीवी॥ দ্বিজাতঃ। ইতি বিশ্বঃ॥ ব্যোমধূনঃ পু॰ নেখঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ ব্যোমনাসিকা গ্রী ভারতীপক্ষী । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। ব্যোমমঞ্র ফ্রী পতাকা। ইভি ত্রিকাওশেষঃ ৷৷ ব্যোমনওল॰ ক্লী পতাকা। ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷ আকাশঞ্চ ৷৷ त्यामगुलातः पुः निर्मा**ः। ३** उ श्रावनी॥ ব্যোম্যান ক্রী বিমান ইভা-म्बा **त्यागञ्जी औ जृ**गिः। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ॥ নভস্তঞ্ ॥ ব্যোমাভঃ পু॰ বুদ্ধঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ 11 रवारमामक॰ क्वी मिटवामक॰ 1 ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। ব্যোমকেশী পু॰ মহাদেবঃ।। ব্যোষ॰ ক্লী ত্রিকটু।ইত্যমরঃ॥ বজ গতো। ইতি কবিকল্প দ্রুমঃ

॥ বজতি। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

বজ ক্সংক্তাে॥ গতাে। ইতি
কবিকল্প দ্রুমঃ॥ ক ব্রাজ্যতি।
বিরেক্টো ভৌ । তৌ এতৌ বিরেক্টো রেকর্হিতৌ চ স্যাভাং।
ইতি দুর্গাদাসঃ॥

বজঃ পণ সমহঃ। ইত্যেবঃ॥

ব্ৰজঃ পু॰ সমূহঃ। ইতামরঃ॥ গোষ্ঠ ॥ গভাঃ। ইতি নেদিনী ॥ জগ্রবণ নথু,, যোলভুজ্পার্শ্ব-· दर्खिएन । अन्य दिव तुन श्था । মাৎস্যো এজন**ওল ভগোল**° শেষ নাগফণ বরণ জনদাখাণ মহাত্রেপ্ত সর্বেবাণ মধ্য সংস্থি-ত ।। ত্রোগেরি স্থিত লোক मर्बद्धानः गराकनः । कृक्नी-লা বিহারার্থ মুক্তহান বিরা-জিভ॰ ॥ চতু রফ্টক ক্রোশেন প রিপূর্ণ বিরাজিত । অন্য প্রদ-किनीश्रर्वन् धन धाना भूषः ल-ভেৎ ॥ দানার্চ। বাসতো লো-का विकृतनाक मवाश्वराध । আবাসান্ত্রিয়তে চেহ পুনর্জন্ম ন বিদাতে ॥ পুণা॰ লক্ষণ্ডণ॰ লদ্ধ্য ক্তে হস্মিন্ ব্ৰজনওলে। ক্ৰেণ্-ন নিৰ্দ্মিতা স্তীৰ্থাঃ নাৰ্দ্দিষ্য স श्रुकाः ॥ 🕸॥ उजारमो वरना-

প্ৰবন প্ৰতিবনাধিবনান্যফচম্বা-রি॰শৎ তানি চতুরফ ক্রোশ গ-রিমাণ স্থিতানি চতুর্তাগশো ২-ভান্তর স্থিতানি ক্রমণ আহ। পালো। বনানি দাদশান্যাহ র্যসু-गाउत पश्चित्। **यहातनः य**हा-শ্ৰেষ্ঠ : দ্বৰু কাম্যবনু শুভু ২ ।। কোকিলাখ্য° তৃতীয়ঞ্চ ৩ তূর্ব্য॰ তালবন॰ তথা ৪। পঞ্চন॰ জনুদা-খ্যঞ্চ ৫ ষষ্ঠ তাণ্ডীর সংজ্ঞক ৬ ৷৷ নাম্না ছত্রবন॰ শ্রেষ্ঠ॰ সপ্তন॰ পরি-কীর্ত্তিত প। অফ্টমণখদিরণ প্রো-ক্ত° ৮ নব্ম° লোহজ° ব্ন॰ ৯॥ নায়। ভদ্ৰবনং শ্ৰেষ্ঠং দশমং বহু-भूगाम॰ ३०। এकामम॰ ममाशाउ॰ বহুলাবনসংজ্ঞকং ১১॥ নামা বিল্প-বন প্রেষ্ঠ ছাদশ কাননাপ্রদ ১২। ইতি ছাদশসণ্জ্ঞানি বনানি শুভদানি চ।। ইতি দাদশ বনানি ।। अ।। অথ দাদশোপবনান্যাহ বারাহে। আদৌ ত্রন্ধবন॰ নাম ১ দ্বিতীয়ণ স্বন্ধরাবনণ ২। তৃতীয়ণ বিহ্বলং নাম ৩ কদয়াখ্যা চতুর্থ-ক॰ ৪ ৷৷ নামা স্বৰ্বন॰ শ্ৰেষ্ঠ৽ গঞ্চ-মণ্পরিকীর্ত্তিত ৫। সুরভীবন না-गान॰ यष्ठ माङ्गामवर्क्तन॰ ७॥ ८था-ষ্ঠ প্রেমবন নাম সপ্তম শুভদ• नृशं १। मगृत्वन नामान मर्छ-ম॰ পরিকীর্ত্তিত ৮ ॥ মালেঙ্গি-তবন শ্রোপ্ত নবম মান বর্দ্ধ ন॰ ১। শেষশাধিবন॰ শ্রেষ্ঠ॰ দশ্য পাপনাশন ১০ 11 একা-দশ সমাখ্যাত নারদাখ্য শু-ভোদিত ১১ ৷ দ্বাদশ পরমা-नम दन॰ मर्बार्थमायक॰ ১২ ॥ ইতি দাদশসংজ্ঞানি বনান্যুপ-বনানি চ। ইতি দ্বাদশোপবনা-নি ৷৷ 🟶 ৷৷ অথ দ্বাদশ প্রতিবনা-नि । ভবিষ্যে । আদৌ রঙ্কবন॰ শ্রেষ্ঠ॰ পুরসংজ্ঞাবিরাজিত৽ ১। বার্ত্তাবন দ্বিতীয়ঞ্চ ২ করহাখ্য তৃতীযকণ ৩ ॥ চতুর্থণ কাম্যনা-মান॰ বন॰ কামপ্রদ॰ নৃগাঁ । বনমঞ্জ ন নামানং পঞ্চমং দ্রীশু-ভপ্রদ॰ ৫।। নামা কর্ণবন॰ শ্রেষ্ঠ॰ ষষ্ঠ॰ স্বপ্নবরপ্রদ॰ ৬ । ক্লফাফি পলকং নাম বনং সপ্ত সমীরিতং १।। নন্দ প্রেক্ষণ ক্লেখ্যে বন नन्तन मर्छमः ৮। दन मिन्नदनः নাম নৰমণ ক্ষপৃজিত। ১ ॥ শিক্ষাবনং শুভং প্রোক্তং দশমং নন্দভাষিত॰ ১০। চন্দ্রাবলীব ন॰ শ্রেষ্ঠ মেকাদশ মুদাহ্বত° ১১ ॥ নামা লোহবন শ্ৰেষ্ঠ দাদশ্

শুভদ॰ নৃণা॰ ১২। ইতি প্রতি-বনান্যাহ্ন মার্গে বামে চ দক্ষিণে ৷৷ ইতি দ্বাদশসণজ্ঞা স্তে দেবাবাস ফলপ্রদাঃ। ইতি দ্বাদশ প্রতি-वनानि ॥ 🕸 ॥ जय द्वानगाधिव-नानि । विक्यूत्रतात्। मथूता अथ-মং নাম ১ রাধান্তও দ্বিতীযকং ২। নন্দগ্রাম<sup>°</sup> তৃতীয়ঞ্চ **৩ গঢ**-স্থান চতুর্থক ৪ ৷৷ পঞ্চম লিল-তাগ্রামণ ৫ বৃষভানু পুরঞ্ ষট্ ৬। সপ্তম গোসল স্থান ৭ মন্ত-भ॰ वलामवक॰ ৮॥ গোবर्कग्वन॰ শ্রেষ্ঠ॰ নবম॰ কামনাপ্রদ॰ ১। বন॰ জাববট॰ নাম দশম॰ পরি-कीर्তिङ ३०॥ मूथा वृन्मावन॰ শ্রেষ্ঠ মেকাদশ প্রকীর্ত্তিত ১১ সক্ষেত্ৰটক স্থান বন দান্ কীৰ্ত্তিত ১২ ॥ ইতি দাদশসণ জ্ঞানি বনান্যধিবনানি চাবনা-নামধিপাঃ প্রোক্তা ব্রজমণ্ডল ম-ধ্যগাঃ ॥ এষা॰ নৈব বিলোকেন বনযাত্রা চ নিছ্কলা। এযাঞ্চ দর্শ-নেনৈব বনধাত্রা শুভপ্রদা ৷৷ আ-प्तो नीना॰ यहा शत्भाष्ट्रनया<u>ज</u>ा॰ তত শ্বেৎ। সৰ্বান্ কামানবা-পোতি বিফুলোক মবাগু্যাৎ।। সৰ্বত্ৰ বিজয়ীভূয়াদ্বন্যাত্ৰা প্ৰভা-

বতঃ। ইতি ব্ৰজভতি বিলাদে ১ অধ্যায়ঃ ॥

বজ° ক্লী বজন°। গমন°। বজ গতৌ ইত্যস্মাৎ ঘ প্রত্যবেন নি-স্পন্ন°। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥ বজকঃ পু॰ তপসী। ইতি শক-রত্নাবলী॥

ব্রজকিশোরঃ পু॰ শ্রীকৃষ্ণঃ। স তু দ্বাদশাধিবনান্তৰ্গত ললিতা-আমাধিবনাধিপো দেবঃ॥ অথ ললিতাগ্রামাধিপ ব্রজকিশোর गबः। यथा देखधरताशनियनि। ওঁ শ্রৈঁ ললিতাগ্রামাধিবনা-**धिश**ाठ्य तुक्रकित्भाद्राय नगः । ইত্যেকবি॰শাক্ষরে। ব্রজকি-শোর মন্তঃ। অনেন মন্ত্রেণ প্রা-ণাযামঃ। অস্য মন্ত্রস্য বিভা-ণ্ডকঋষি র্বজকিশোরে। দেবত। গাযত্রীচ্চুনঃ নন সকল পাপ-क्य घाता युगल क्रक मर्गनार्य বিনিযোগঃ। শিরসি বিভাওক **খয়যে ন**মঃ মুখে ব্রজকিশোরা-य नमः ऋषि भाषञ्जीष्ट्नरम न-মঃ ॥ অথ ধ্যান॰। ললিতা সংযুত্ত রুক্ত মরৈন্ত স্থিতি ৰ্যুত্ত। ধ্যামেত্ৰিবেনি কূপস্থ ম হারাস ক্রতোৎসবং।। ইতি ধ্যা- দ্বা যথা শক্তি জপণ ক্রন্ধা গুহা-তীত্যাদিনা জপণ সমর্পবেৎ । ইতি ললিতা গ্রামাধিপ ব্রজকি-শোরমন্ত্রঃ । ইতি ব্রজভক্তিবি-লাসে ১ অধ্যায়ঃ ।।

বজনাথঃ পু॰ শ্রীক্লফঃ। ইতি পুরাণ•।।

বজভূঃ পুং কেলিকদয়ঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। বুজভূমৌ স্ত্ৰী।। বজজাতে ত্ৰি।।

বজমণ্ডল° ক্লী বজভূমিঃ। ষথা মাৎস্যে। বজমণ্ডল ভূগোল° শেষনাগফণ° বর°। সমুদাখা° মহাশ্রেষ্ঠ° সর্বেষা° মধ্যম°স্থি-ত°।। ইতি বজভক্তিবিলাসে ১ অধ্যাযঃ।।

ব্রজনোহনঃ পু॰ শ্রীক্রকঃ।ইতি পুরাণং।।

বজবরঃ পু॰ শ্রীক্লফঃ। সতুদাদশাধিবনান্তর্গত জাববটাধিবনাধিপো দেবঃ। অথ জাববটাধিবনাধিপ বজবরমন্ত্রঃ। শৌনকীযে। বটাদ্বহিঃ সমন্তান্তু সঘন॰ বন মান্তিতং। তমেবাধিবনংখ্যাতং বটসেবা পরায়ণং।।
তিস্মিমধ্যে বটং শ্রেষ্ঠং ক্লফ্রনীডা বরপ্রদং। বটাদ্বহির্বনং জ্ঞা-

ত॰ মধ্যে চৈব বট॰ স্মৃত৽ ৷৷ বট॰ বৃক্ষণ স্থিত তত্ৰ বটসণজ্ঞ বিধী-ষতে। বটজাবানুসারেণ বটলি-ঙ্গানি দশ্যেৎ॥ বটস্থানলিঙ্গণ ॥ उँ रेः काँ विशिधवनाधिश-তবে বুজবরাষ নমঃ। ইত্যে-কোন বি॰শাক্ষরো জাববটাধি-বনাধিপ বুজবরমন্ত্রঃ। অনেন মন্ত্রেণ প্রাণায়ামঃ। অস্য মন্ত্র-मा वानीक श्रीष जीववडीधिव-নাধিপো ব্ৰজবরো দেবতা প-্জিচ্ছনঃ মম সকল সৌভাগ্য मम्भर कन थालार्थ जरम विनिरयाभः। नामः शृर्वव ।। অথ ধ্যান । নানা শৃঙ্গার ভূষা-ঢ্যে রাধারুক্ত মনোহর । ধ্যা-যেন্দুগল মূর্তিঞ্চ বনষাত্র। বর-প্রদ ।। ইতি ধ্যাদ্বা যথাশক্তি জপ° হৃত্বা গুহাতীত্যাদিনা জ-প॰ সমর্পযেৎ। ইতি জাববটা-ধিবনাধিপ ব্রজবর্মন্তঃ । ইতি ব্ৰজভক্তিবিলাসে ১ অধ্যায়ঃ।। ব্ৰজবল্লভঃ পু• শ্ৰীক্লফঃ। ইতি ইতি পুরাণ ॥

ব্রজাঙ্গন। স্ত্রী গোপী। যথা। বিলাসবংশস্থ বিলং মুখানিলৈঃ প্রপূর্ব্য যঃ পঞ্চমরাগমুদ্যিরন্।

বুজাঙ্গনানা মপিগানশালিনাণ জহার মানণস হরিঃ পুনাতুবঃ । ইতি ছন্দোমঞ্জরী ॥ ব্রজ্যা স্ত্রী প্র্যাটনণা জিগীষোঃ প্রমাণণ ॥ গমনণা ইত্যমরঃ॥ বর্গঃ। ইতি মেদিনী ॥ রঙ্গঃ। ইতি ধরণিঃ॥

বণ শব্দে। ইতি কবিকল্পজ্ঞাঃ ।।
বণতি। ইতি দুৰ্গাদাসঃ ।।
বণ ত্ক অঞ্চচুৰ্ণে। ইতি কবিকল্পজ্ঞাঃ ।। অঞ্চচ্ৰণ্ড অঞ্চতেদঃ
। বণ্যতি গাত্ৰণ বাণেন ভটঃ ।
ইতি দুৰ্গাদাসঃ ।।

বর্ণঃ পূণ রী ক্ষতণ তেৎপর্যাযং ক্রিমণ ২ অরুণ্ণ ৩ । ইত্যমরঃ
। ক্রিমণ ৪ । ইতি তটীকা ।। অথ
ব্রণাধিকারঃ । ব্রণো দিধা পরি
ক্রেমো দোষজাগন্তভেদতঃ ।
দোষজো দুইদোইখা স্যাদন্যঃ
শন্তাদিসম্ভবঃ ।। ৠ ।। তত্র বাতিক্স্য লক্ষণ মাহ । স্তর্ধাং কঠিন সংস্পর্শো মন্দ্র্যাবো মহারুজঃ । তুদ্যতে স্ফুটিত শ্যাবো
ব্রণো মারুতসম্ভবঃ ।। স্তর্ধাং অচলঃ ।। ৠ ।। পৈত্রিক মাহ ।
তৃষ্ণা মোহ স্বর ব্রেদ দাহ দুঃথাবদারণৈঃ । ব্রণং পিত্রকৃতং

বিদ্যাৎ সাবৈ গ দ্ধৈশ্চ পৃতিকৈঃ ।। क्रिम वार्फाण। मूहथ रायाकाश 1 **অবদারণ**° ত্রণে বিদারণবৎগী-ডা।। 🟶 ।। দ্বৈত্মিক মাহ। বহুপি-চ্ছো গুৰুঃ শ্লিগ্ধ স্তিনিতো মন্দৰে-एनः 1 পाञ्च्यर्गा २ झम॰ ट्रिक्स किंह-রপাকী কফব্রণঃ য় বহুপিচ্ছঃ বহু-পিচ্ছিলঃ। অন্নসংক্লেদ ঈ্যদার্ডঃ ।। 🕸 ।। রে, ধির॰ দ্বন্দুজ॰ সাদ্মিপা-তিকমাহ। রজে। রক্তসূতী রক্তা-**फ़्रि** विकः म्याद्यम्बयः। उपन्नयः षि जिला यिन जिला में युक्तः ॥ 🗱 ॥ **শু**দ্ধবংলিঙ্গ মাহ। জিহ্বাতলা-ভে। ২তিমৃদ্ঃ স্বস্থঃ স্নিগ্ধে। ২ন্নবে-मनः । সুব্যবস্থে নির্সাবঃ শুদ্ধ-ব্ৰণ ইতি স্মৃতঃ ॥ জিহ্বাতলাভঃ তলশব্দোত্র স্বরগার্থঃ। তেন **जिस्रावज्रकः। गू**वावकः छेष्क्रन-তা রহিতঃ ।। 🗱 ॥ দুফটরণ লিজ-भार। পৃতি পৃষাদি দুঊ।সৃক্ সু।-ব্যুৎসঙ্গী চিরস্থিতিঃ। দ্ফবিণো-তिशक्षािमः শুদ্ধानिक विशर्वायः ॥ উৎসঙ্গী কোটরবান্। অতিগ-ন্ধাদিঃ আদিশব্দেন সুাব বেদনা বিবৰ্তাদ্যঃ সংগৃহত্তে ॥ 🗱 ॥ সংরোহ ত্রণস্য লিঙ্গমাহ। কপো-তবৰ্ণ প্ৰতিমা যস্যাণ তালোদ্ব-

র্জিতাঃ। স্থিরাশ্চ পিডকাবস্তো রোহস্তীতি তমাদিশেৎ।। কগো-তবর্ণ প্রতিমাঃ পাওুধূসরাঃ। স্থি-রাঃ বিদীর্নভারহিতাঃ। পিডকা-বন্তঃ সংরোহণার্থা ষে মাণসান্ধু-রা उদ্যুক্তাः॥ 🗱 ॥ সকচ লিঙ্গ-নাহ। কচবর্মান মগ্রন্থি মশূল মরুজ বণ । স্বক্ স্বর্ণ সমত-नः मगुगुणः विनिर्मित्यः ॥ क-তবৰ্মান পশ্ৰত সূত্ৰিমাৰ্গ । সম-তল॰ অনিম়॰॥ \*।। সুখসাধ্যস্থা-দিক মাহ। স্বঙ্মা°সজঃ সুখে দে-শে তরুণস্যানুপদ্রবঃ। ধীমতো-**২ভিনবঃ কালে সুখে সাধ্যঃ সুখ**-ব্রণঃ ॥ সুখে দেশে মর্মরহিতে। অনুপদ্রবঃ স্বর তৃফা শ্বাস কাসা-রোচকাদি রহিতঃ ! ধীমতঃ পথ্য-সেবিনঃ। সুথে কালে হেমস্তে শিশিরে চ। গুণৈ রন্যতরৈ রেভি ছীনিঃ ক্লেফ্। ব্ৰঞ্জ্যুতঃ। সর্বৈ र्विशैरना विटब्डिय स्नुमारधा नि-রুপক্রমঃ।।এভি স্তৃত্মাণসজন্বাদি-ভিঃ ৷ নিৰূপম ক্ৰমঃ অনুপক্ৰী**তঃ** চিরনুপেক্ষিত ইতি যাবৎ **। বসা**-মেদোপ মজ্জান° মস্তলুঙ্গঞ্গ यः সুবেৎ ৷ আগন্তজো ব্ৰণঃ সিদ্ধে**ন** मिटकटकायमध्यः ॥ मञ्जलू**क** 

মস্তকাভ্যন্তর সেহঃ। প্রচিনাং॥ ভিষজুকীনাং শোষিণাং নধুনে-हिना । बना बत्राष्ट्रन मियाँ छ ষেষাণ চাপি ব্রণে ব্রণঃ ৷৷ ঋ ৷৷ অ-রিষ্ট মাহ। দহুত্তে চান্ত রত্যর্থ° বহিঃ শীতাশ্চ যে এণাঃ। দহ্স-**ন্তে বহি রত্য**র্থণ ভবস্ত্যতশ্চ শী-তলাঃ।। প্রাণ মাণ্স ক্ষয় স্থাস কা-সারোচক পীডিতাঃ। প্রবৃদ্ধ পূ-य क्रिवंत वंश य চাপি नर्मम् ॥ ক্রিযাভিঃ সম্যগারনা ন সিধ্যন্তি চ যে ব্ৰণাঃ। চিকিৎসেন্নৈব তান্ देवनाः मःत्रकमात्रात्मा यनः ॥ মদ্যাগুৰ্ৰাজ্য সুমনাঃ পদ্ম চন্দন **ठम्भकः। मगन्ना** मिवागन्नाम्ह মুমূষ্ ণা॰ এণাঃ স্মৃতাঃ ।। মর্মসু शायु नाञ्चि क्रमगामियूग मूमनाः জাতিঃ। দিব্যগন্ধাঃ পারিজাতা-দিগস্ধ†ः॥ **ৠ॥ অথ**†श्रवनमा नि-मान गार । नानाधातामूरेथः म-স্ত্রৈ নানা স্থান নিপাতিতঃ। ভ বন্তি নানাক্কতযো ত্রণাণ স্তাণ স্তামিবোধ মে।। নানা ধারা মূ-খানি যেষা॰ তৈঃ শক্তৈঃ অৰ্দ্ধচন্দ্ৰ খদ্দা ভল্ল সন্ত শূল শরাদিভিঃ। নানাক্ত্যঃ ষডাক্ত্যঃ ৷ তা আ-ক্রতীরাহ।ছিন্ন॰ ভিন্ন॰ তথা বিদ্ধ।

ক্ষত॰ পিজিত মেব চ । গুৰু <mark>শাহুঃ</mark> স্তথা ষষ্ঠৎ তেষাৎ বক্ষ্যামি লক্ষণ ॥ 🗱 ॥ তত্র ছিল্ল না লক্ষণ নাহ। তিৰ্যাক্ ছিন্ন ঋজু ৰ্বাপি যো বুণ স্ত্যাবতো ভবেৎ। গাত্রস্য প*্*ত-ন° তদ্ধি ছিন্ন নিত্যভিধীয*ে*। শে ব্ৰণঃ তিৰ্য্যক্ছি**নঃ খ** क्रुं ठिर्वाक्ष्ड्मक्रुं । अङ् গি অথ বা খদ্ধাদি ক্রতো র ব্ৰণঃ। আষতঃ দীৰ্ঘঃ। আষত ই 🐬 তিৰ্য্যক্ছিমস্য ঋজোশ্চ বিশে -ণণ ৷ গাত্রস্য পাতনণ গাত্রস্যৈ -দেশস্য ছেদেন পৃথক্ করণ ব ছিম মিত্যভিধীযতে ॥ 🕸 ॥ 🗺 মাহ। শক্তি স্তেষু খদ্ধাগ্ৰ বি ণৈ রাশযো হতঃ। যৎ কি 🍳 প্রসবেত্তদ্ধি ভিন্ন মিত্যভিধীয়-তে ॥ আশ্यः কোষ্ঠঃ ॥ 🕸 ॥ কেষ্ঠিভেদস্য লক্ষণ মাহ। স্থানা-ন্য মগিপকানা মূত্রস্য রুধিরস্য চ। হৃদুভুকঃ ফুঃফুসশ্চ কোষ্ঠ ইত্যভিধীয়তে ॥ ত্সিন্ ভিন্নে রক্তপূর্ণে স্বরো দাহশ্চ জাযতে। নূত্রমার্গ গুদাদ্যৈর রক্তণ ঘ্রাণাচ্চ গচ্ছতি।। মূচ্ছা শ্বাস স্ত্যায়ান মভক্ত ছন্দ এব চ । বিন্যুত্র বাত সঙ্গশ্চ স্বেদস্যাবে।ক্ষি রক্ততা।।

লোহগন্ধিত্ব নাদ্যদ্য গাত্র দৌ গন্ধা মেব চ। হৃদি শূলং পার্শ্ব पार्ट वित्ययम्हा छिद्योयत् ॥· তব্মিন্ কোঠে। ভিন্নে শক্ত্যাদি-ভিঃ৷ রক্তপূর্ণে কোন্তে তম্মাদঙ্গা-় ডিয়াৎ সুতেন রক্তেন পূর্ণে বা জরাদযো জাযন্তে॥ ॥।। আমা-শ্যে পকাশ্যে চ রক্তপূর্ণে লক্ষণ ভেদ নাহ। আনাশ্যত্তে রুধিরে রূধির° ছর্ন্দ্রবতাপি ৷ আগ্রান মতিমাত্রঞ্ শূলঞ্ ভূশ দারুণ ॥ পক্ষাশ্যগতে রক্তে রুজা গৌরব মেব চ ৷ অধঃকাষে বিশেষেণ শীততাচ ভবেদিহ ৷৷ রুজা শূলং । গৌরব॰ পকাশ্যে। অধঃ কাষে মাতে রধোদেশে বিশেষেণগৌর-ব মিত্যস্বয়ঃ। শীততা চ ভবেদি-হ ইহ নাভে রধোদেশে শীততা চ স্যাৎ। সা চ ব্যাধি স্বভাবাৎ ॥ 🗱 ॥ विक्रवार । मृक्षामानना ভিহত॰ পদ গলাশ্য বিনা। উত্ত্তিত নিৰ্গত বা তদ্বিদ্ধ নিতি নিৰ্দ্দিশেৎ 11 আশ্যণ বিনা কো-ষ্ঠ॰ বিনা। উত্ত্তিত অনি গতশ-ল্যু॰ ৷ নিৰ্গত বা নিগ্ৰেশল্যু॰ বা 11 %-11 मन्निमा बनमा नक्न मी-হ। শ্যাব॰ সশোথণ পিডকাযুত-

ঞ্ মুহু মুহুঃ শোণিত বাহনঞ্। मृদ्काञः त्षूम जूना माःनः वनः সশল্য সরুজ বদন্তি।। মুহু মু হুঃ শোণিতবাহন খদ। খদ। শল্য চলতি তদা তদা রুধিরণ বছতি ৷ উলাত॰ উথিতমুখণ ৷৷ 🏶 ৷৷ কো-ষ্ঠস্থিতস্য শল্যস্য লক্ষণ মাহ ৷ স্বচো ২তীত্যশিরাদীনি ভিন্বাঙ্গণ পরিহৃত্য বা ৷ কোষ্ঠে প্রতিষ্ঠিত শল্য॰ স্ব্যাদুক্তানুপদ্রান্।। ছ-চঃ সপ্তাপি অতিক্রম্য উক্তানুপ-দ্রবান্ আটোপানাহে বুণমুখে-नाव भूतीय मर्गनक्षा 🗱 ॥ अमा-ধাস্য কোষ্ঠস্য রক্তস্য পুরীষস্য লক্ষণ মাহ । কোষ্ঠান্তর্লোহিত° পাণ্ডু শীত পাদ করানন । শী-তোচ্ছাস॰ রক্তনেত্র মানদ্ধঞ্চ বি-বৰ্জযেৎ ৷৷ আনদ্ধ আনাহবন্ত ॥ # ॥ ক্ষত মাহ। নাতিচ্ছিন্ন॰ নাতিভিন্ন মুভষো লক্ষণান্বিত । বিষমণ ত্রণ মঞ্চে যত্তৎ ক্ষতণ পরি-कीर्डिङ ॥ नाडिष्टिशः नाडिपीर्य ঘাতং। নাতিভিন্নং নাতিগন্তীর-ষাত । উভবে। শ্ছিন্নভিন্নবোঃ। বিষমণ ত্রণ মঙ্গে যৎ যদুণ মঙ্গ-বৈষম্যকরে ॥ 🐲 ॥ পিক্তিত মাছ । প্রহার পীডনাভ্যান্ত যদক্ষ পূ-

থুতা॰ গত•। সাস্থি তৎ পিচ্চিত॰ বিদ্যাজক্ত মজ্জ পরিপ্লুতং ॥ প্র-হারো মুদ্দারাদিনা। পীডন॰ ক-পাটাদিনা। পৃথুতা চিপিটতা ॥ 🗱 ॥ घृरु भार । घर्यनामिन घा-তাদ্বা ষদঙ্গ বিগতত্বচং। উত্ম সুবাধিত তত্ত্ ষৃষ্ট মিত্যভি-ধীয়তে ॥ ঘর্ষণাৎ কর্কশেষ্টিক। পাষাণভিন্নাদিভিঃ II 🕸 II মাণ্স শিরা স্বাযু সন্ধান্থি মর্মসু ক্ষতেষু সামান্য লক্ষণ মাহ। ভুমঃ প্রলা-পঃ পতন॰ প্রনোহে। বিচেষ্টন॰ গ্রানি রথোফতা চ। সুস্তাঙ্গতা মূৰ্চ্ছন মূৰ্দ্ধুবাত স্তীত্ৰ। ৰুজো বাত-ক্তাশ্চ তা স্তাঃ ।। মাণ্যোদকা-ভ॰ রূধিরঞ্চ গচ্ছেৎ সর্বেন্দ্রিযা-র্থোপরম স্তবৈব। দশার্দ্ধসংখ্যে-ছথ বিক্ষতেৰু সামান্যতো মনসু লিঙ্গ মুক্তণ।। পতনণ ভূমৌ। বি-চেষ্টন॰ বিরুদ্ধণ চেষ্টনণ হস্তপা-मामि প্রক্ষেপণাদিক<sup>,</sup> । মূর্চ্ছ্ন<sup>,</sup> ইন্দ্রিবনোহঃ। প্রমোহে। মনো-মাত্রমোহঃ। তীব্রা রুজে। বা-তক্তাস্চ তা স্তাঃ দণ্ডাপতানকা-**म**यः। कृषित्रक गट्हि पाइन ভগ छन्। ना युष्ति । সর্বেভিন্তারে পরমঃ ইভিন্তাণা কার্য্যনাশঃ ৷৷ ৠ ৷৷ অথ নর্শ্ম শিরা वायू मकाञ्चाः विकानाः श्थग् লক্ষণ মাহ। সুরেন্দ্রগোপ প্রতি-মং প্রভৃতং রক্তং সুবেত্ত ২ম্বজ-শ্চ বায়ঃ। করে।তি রোগান্ বি-বিধান্ যথোক্তান্ শিরাসু বিদ্ধা-. স্বথবা স্কৃতাসু য় সুরেন্দ্রগোপো বার্ষিকোখিত কীটবিশেষঃ । বী-রবহুটী ইতি লোকে নিদ্ধণ। প্র-ভূত বহু। রোগান্ শিরোভিতা-পান্ধতাক্ষকাদীন্। বিদ্ধাসু শ-রাদিনা । কতাসু খলাদিনা ॥ কৌজ্যু॰ শরীরাবয়বাবসাদঃ ক্রি-ষাশ্চ শক্তি স্তমলা রুজাশ্চ। চি-রাদ্রণো রোহতি যদ্য চাপি ত॰ স্বাবৃবিদ্ধং পুরুষং বদন্তি ॥ কৌ-ব্জ্যাণ বিদ্ধাস্যাপস্য বক্রতা। তুমুল নহতী।। শোখাতিবৃদ্ধি স্তমূ*ল*ারু-জশ্চ বলক্ষয় সৰ্বত এব শোধঃ৷ ক্ষতেষু সন্ধিষচলাবলেযু স্যাৎ সন্ধিকশ্মোপর্মশ্চ লিঙ্গু ৷৷ সর্ব-ত এব শোথঃ সৰ্বসন্ধীন্ ব্যাপ্য শোপঃ ৷ উপরমঃ নাশঃ ৷৷ ঘোরা क़रक। रमा निशामित्व महीय-বস্থাসু ন চৈতি শান্তি°। ভিষধি-পশ্চিজিনিতার্থসূত্র স্ত মস্থিবিদ্ধণ পুরুষণ এনজি॥ সর্বায়বস্থাসু শ-

যনাসনাদিকাসু। বিদিতার্থসূত্রঃ खानगनः ठाउ॰ ।। कः ।। यथ मर्या শিরাদি বিদ্ধা লিস্কানি পুর্বসভি ধায় মর্মা শিরালীনাও বিজ্ঞানাও পৃথক্লিঙ্গান্যতিদেশেনাহ। যথা স্বমেতানি বিভাববেচ্চ লিজানি মৰ্শ্মস্বপি তাডিত্রেয়ু। যথা স্ব॰ শি-রাদীনা বিদ্ধানা এতানি লিঙ্গা-নি পৃথগুক্তানি লিফানি চকারাৎ ভূম প্রলাপাদীনি চ মর্মস্বপি শি-রাদিষু ভাডিতেষু বিদ্ধেষু। বিভা-वर्षः जानीयाः ॥ 🗱 ॥ मर्वतं-ণান। মুগজবানাহ। বিদর্পঃ পক্ষ-যাত\*চ শিরাস্তস্তো ২ণতানকঃ। নোহোত্রাদৌ ত্রণেপীড়া ত্বর স্তু-ফা হনুগ্রহঃ ।। কাস শছ্দি রতী-সারো হিক্কা স্বাসঃ সবেপথুঃ। যোডশোপদ্রবাঃ প্রোক্তা ত্রণা-না॰ ব্রণচিন্তকৈঃ।। 🕸।। অথাগ্নি-**দक्षमा** निमान यार । ठ्वाशि घि-বিধো জ্ঞেষঃ সেহ ৰূকঃ সমাঞ্ৰি তঃ। স্নেহ স্তত্র তু তৈলাদি কক্ষণ लोशिन कथारा ॥ 🗱 ॥ जिमिन দগ্ধ॰ চতুৰিধ মাহ। অগ্নিদগ্ধ॰ চ-जुक्ता मार क्षू छै॰ मूर्मक यार ह। সম্যাগদগ্ধ তথাতীব্ৰদগ্ধপণ বিকী-ত্তিত ।। 🟶 ।। তেষা । লক্ষণ মাহ।

ষদিবৰ্ণ মতিপ্লুষ্ট॰ তৎপ্লুষ্ট মভি-ধীয়তে। তীব্ৰদাহো ব্যথাবস্তো যত্ৰ স্ফোটা ভৰস্তি হি॥ চিরেণ তেপ্রশাসান্তি তদ্দুর্দগ্ধ মুদাস্বতং। ভানুবৰ্ণ মগন্তীর॰দাহ পীডা সম-ন্বিতে ।। সুসংস্থিতঞ্চ কথিত সম্য-গনশ্ব° ভিষথরৈঃ। স্বত্না॰স॰ যত্র দ-গ্ধ॰ স্যাদ্বিপ্লেষো বপুষ স্তথা।। শি-রা স্বাযুষ্টি সন্ধীনাওতং বদন্ত্যতি-দগ্ধক । অত্যর্থ বেদনা দাহে। জ्र अ कृ मूर्ष्क् या मह।। मा द्वि अ हि-রান্দ্রোহে ৰাঢো যাতি বিবর্ণতা॰ ॥ 🕸॥ 🚳॥ অথ ত্রণস্য চিকিৎসা । আদৌ শোথহরে। লেপ স্ততস্তু পরিষেচন° । বিষ্লাপন মদ্জ্যো-क खुठः माानू थना हन ।। थी-চন° ভেদন° পশ্চাৎ পীডন° শোধন॰ তথা। রোপণ॰ বর্ণক-রণ বণসৈতে ক্রমাঃ স্মৃতাঃ ॥ ক্রমা শ্চিকিৎসাঃ। সুপ্রতিষু ত্ৰণসা যফিৰপ ক্ৰমা লিখিতাঃ সন্তি তে সর্বে ২ত্র বিস্তর্ভযান্ন লিখিতাঃ ॥ #॥ তত্রাদৌ শোখ হর° লেপমাহ। যথা প্রত্ত্বলিতে বেশন্যন্ত্রস। পরিষেচন । ক্ষিপ্রণ প্রশ্মযত্যগ্নি মেব মালেপনং রু-জ॰।। বীজপূর জটা হি॰সু। দেব- দারু মহৌষধ । রামাগ্রিমস্থো লেপোষণ বাত শোথ বিনাশনঃ ।। 🗱।। यथुकः ठन्मनः मृत्रं। नल मृल-ম্ব পদাক ়ী উশীরং বালকং পদাং লেপোষণ পিত্ত শোথহা ॥ ন্য-গ্রোধোদুম্বরাশ্বত্থ প্রক্ষ বেতস ব-क्करेलः। ममर्लि रेकः थरमरः मा চ্ছোথে পিত্ত সমুদ্ভবে ।।ৠ।। আ-গম্ভজে রক্তজে চ লেপ এযোভি-পূজিতঃ ৷ অজগন্ধাজশৃঙ্গী মঞ্জিষ্ঠা সরল স্তথা।। একৈকিকা-শ্বগন্ধা চ লেপোষ প্লেম শোধ-হা। অজশৃঙ্গী মেঢাশৃঙ্গী। একৈ-কিকা শ্যাম নিসোতঃ৷৷ ক্লঞ্চাপুরা-ণপিণ্যাকণ শিশু ত্বক্ শিকতা শি-বা ৷ মূত্রপিষ্টঃ সুখোষ্ণোষণপ্রলে-পঃ শ্লেম শোথহা ॥ ৠ৷ ন রাত্রে লেপন॰ দদ্যাদ্দত্ত॰ চপতিত৽ তথা ৷ ন চ পৰ্য্যুষিত শুষ্যমাণ তত্ৰৈব ধার্যেৎ ॥ দত্ত দত্ত মেব পুন ন দদ্যাৎ ৷ পতিত দীষ্মান যদ-**জাৎ পতিত । পর্যুষিত লেপন** দ্ৰব্যকস্কীক্তত যৎ পৰ্য্যুষিত ॥ তমসা পিহিতো হুমা রোমকূপ মুখে স্থিতঃ। বিনা লেপেন নিৰ্যা-তি রাত্রো নালেপযেদতঃ ৷৷ রা-ত্রাবপি প্রলেপস্ত বিধাতব্যা বি-

চক্ষণৈঃ ৷ অপাকি শোথে গন্তীরে রক্তপিত সমুদ্ভবে ॥ **#** ॥ **অথ** পরিষেচন মাহ। যথামুভিঃ ষিচ্য-মানঃ শান্তি মগ্নি হি গচ্ছতি। দোষাগ্নি রেব॰ সহসা পরিষেকেণ শাম্যতি ৷৷ তদ্মথা ৷ বাতম্বেষধ-निःकारेथ रेखरेन **र्याप्तराम प्**र তৈঃ। উটেফঃ সংসেচযেৎ শো**থ॰** বাতিক॰ কাঞ্জিকেন তু ॥ পিত্ত রক্তাভিয়াতোত্বং শোথং সিঞ্চেত্র শীতলৈঃ। ক্ষীরাজ্য মধু খণ্ডেক্ষু-রুসেঃ পিতৃহরেঃ শুতৈঃ ৷৷ কফ-মৌষধ নিষ্কৃাথৈ রশীতৈঃ পরি-ষেচযেৎ। তৈল ক্ষারামু সূত্রৈশ্চ শোথ॰ শ্লেম সনুদ্ভব॰।। 🕸।। অথ বিষ্লাপন মাহ। রুজভঃ কঠিনস্যা-স্য কার্য্য বিম্লাপন শনৈ: । অথ শোথস্য বিম্লাপনস্য বিধি মাহ। সুশ্রুতঃ। অভ্যক্ত্য স্বেদ-যিত্বাতু বেণুনাড্যা শনৈঃ শনৈঃ । বিমৰ্দ্দেষেদ্ভিষত্মান্দ্ৰ তলেন।স্কৃষ্ঠ-কেন বা ৷৷ বেণুনাভ্যা স্বেদযিস্বা উক্স্বেদ॰ ক্স্ত্বা ॥ 🕸 ॥ রক্তমো-ক্ষণমাহ ৷বেদনোপশমার্থায়তথা পাকসমায চ। অচিরোৎগতিতে শোথে শোণিত সাবণঞ্জেৎ ॥ চরেৎ স্ব্যাৎ। একতস্ত ক্রিযাঃ দর্ব। রক্তমোকণ মেকতঃ। রক্ত॰ হি বেদনামূল ভডেচহাস্তি ন চা-शि क्रक् ॥ विवर्त्य किंदिन नगादव ব্রণে চাত্যন্তবেদনে। সবিশেষে বিশেষেণ জলোকোভিঃ পদৈ র-পি'৷৷ শোণিত শ্রাবৃণঞ্চরেদিত্যনে-नात्रयः ॥ ॥ जारथाननाश्ट्यम মাহ ৷ তদ্য বিধি ভেঁষজ সাধন প্র-করণে কথিত এবাস্তি।রুজাবতা॰ দারুণানাং কঠিনানাং তথৈব চ। শোধানা প্রেদন কার্য্য যে চা-প্যেব॰ বিচারণাৎ ৷৷ শোখানা॰ मामानान वनाः वन्यायाः তেষা মপি স্বেদন কাৰ্য্য । শো-থযো ৰুপনাহন্ত দদ্যাদাম বিদ-প্ধষোঃ। প্রশাম্যত্যবিদগ্ধস্ত বি-দক্ষঃ পাক মেতি চা! অবিদশ্ধঃ আম। বিদশ্ধঃ পাকোনাুখঃ। স यथा। मगमूनी वना तासा वाकि शक्षा श्रमातिनी। भूनः रूनश्रवा-তারি সিন্দুবার পুনর্গবাং ॥ শো-ভাঞ্জনঃ কণা চাপি সৈন্ধবং বি-শ্বভেষজণ শণ কাৰ্পাসযো বী-জ নতনী চ সলখিক। ॥ তিলা যবাশ্চ সিদ্ধার্থঃ সঠেরে৷ মূলকং নিসিঃ। যথাপ্রাপ্তৈ রনীভিস্ত खरेता तृर**ञ्चन म॰ यूरेटः ॥ कन्दी**क्र- তৈঃ সুখোটেক্ত্রুত স্বেদ্যেদ্বিধিব-চ্ছনৈঃ। অনেন প্রশন যাতি বাতশোষো ন সংশ্যঃ ৷৷ 🕸 ৷৷ मन्यापि क्य याह्। भूनर्वा দারু শুর্গী শিগুঃ নিদ্ধার্থ এব চ। अञ्चित्रिकः मू (शारतनायः প্রবেপঃ मर्वरमाथङ्। ॥ भूनर्वनिः॥ 🗱 ॥ অথ পাচন মাহ। ন প্রশাম্যতি যঃ শোথঃ প্রলেপাদি বিধানতঃ **া** দ্রব্যাণি পাচনীয়ানি দদ্যাত্তত্ত্যো-পনাহনে ॥ \* ॥ পাচনদ্রা-ণ্যাহ। শণ মূলক শিগুণা॰ ফলা। নি তিল সর্যপাঃ। অতসী সক্তবঃ কিণু মুক্তজব্যঞ্চ পাচনং ৷৷ শ্ৰ ফলাদীনা মতস্যস্তাঃ সক্তবঃ ক-र्खवाः । किनुः मुद्रावीकः। यव গোধুম ধান্যাদি প্রকারঃ অন্য-চ্চোক্তব্য ব্রণস্য পাচন ভ-वि ।। 🕸 ।। ज्रथ (ज्रमन मारु । অন্তঃ পূষেষু বক্তেুষু তথৈবোৎ-সঙ্গবৎস্বপি।গতিবৎস্বথরোগেষু ভেদনং সংপ্রযুজ্যতে ॥ উৎসঙ্গ-বৎসু কোঠরবৎসু । গতিবৎসু নাডীব্রণেষু। ভেদনং শস্ত্র মৌফ ধকর্ম চ্যাঞ্চা তত্র শস্ত্রেণ ভেদন মাহ ৷ রোগে ব্যধনসাধ্যে তু য-थारिन अमान्यः। नजः विधास

দোষস্ত স্থাবয়েৎ কঞ্চিত যথা ॥ 🛊 ॥ कठिष्ठ्य निटक्पीপবाদ মাহ ৷ বাল বৃদ্ধাসহ ক্ষীণা ভীৰ-ণা॰ যোষিতা মপি। ব্ৰণেষু মৰ্ম জাতেষু ভেদন॰ জব্যলেপন॰॥ 🗱 🛚 তত্র ভেদ মাহ। চিরবিন্থে। **ংগ্লিকো দন্তী চিত্রকো হ্যমারকঃ** । কগোত বন্ধ গৃধাণা॰ মল॰ লে-পোন দারণা। চির**বিন্তঃ করঞ্জঃ** েন্ট্ৰিকঃ ভমাতকঃ **॥ ভল্লাতকা**-ন**্যত্ রক্তচন্দন নিয্যতে। হ**-यगातकः कत्रवीतः। मात्रनः छ-मनः। कात्राजदाः उथा कादता मा-রণঃ পরিকীর্ত্তিতঃ। কার্যাব্য অপামার্গাদি ৷ ক্ষারঃ স্বর্জিকা যবক্ষারাদিঃ ॥ হস্তিদস্তো জলে পিটো বিন্দুমাত্রঃ প্রলেপতঃ । অত্যন্ত কঠিনে শোথে কথিতো ভেদনঃ পরঃ।। 🟶 ।। অথ পীডন মাহ। পূষ গভাননুদ্ধারান্ বণা-ন্ মৰ্ম্মগতানপি। যথোক্তৈঃ পী-ডন জব্যৈঃ সমন্তাৎ পরিপীড-যেৎ।। #।। পীডন জব্যাণ্যাহ। দ্রব্যাণা পিচ্ছিলানাম্ব ত্বমূলানি প্রগীড়যেও। বব গোধূম মাষা-ণা॰ চূৰ্ণানি চ সনাসতঃ।। শুষ্য-মাণ নুপেকেত প্রলেপণ গীডনণ

প্রতি ৷ ন চাপি মুখমালিস্পেন্ত-পা দোষঃ প্রসিচ্যতে ॥ পীডন• প্রতি গীড়নদ্রব্যলেপণ প্রতি । পীডন দ্রব্যলেপে শুষ্যস্ত মপি शातरयमिठार्थः । তथा तुगमा मू-থেলেপণ বিনা প্রসিচ্যতে সুব-তি।। 🟶 ॥ অথ শোধন মাহ। ব্ৰ-ণস্য স্ববিশুদ্ধস্য ক্বাথঃ শুদ্ধিক-রঃ পরঃ। পটোল নিম্বপত্রস্য স-ৰ্ৰথৈব প্ৰযুজ্যতে ৷৷ বাতিকে দ-শমূলানা কীরিণা গৈতিকে ব্রণে। আরগ্ধাদেঃ কফজে ক-ষাযঃ শোধনে হিতঃ।। **অশ্ব**থো-ডুম্বর প্লক্ষ বট বেতসজ্ঞ সৃতং। ত্রণ শোধোপদেশানা নাশন ফালনাৎ স্মৃত ।। তৈল সৈম্ব यक्गास्त्र निष्ठशक निशायूरेनः। विवृष्यनयूरिकः कार्याः अत्नरभा ত্রণশোধনঃ ৷৷ একৈক সারিবা মূল॰ সৰ্ব বুণবিশোধন॰ । নিশ্ব-পত্ৰ তিলা দন্তী ত্ৰিবৃৎ সৈন্ধব गाक्किकः ॥ मूर्केतुन श्रममत्ना লেপঃ শোধন কেশরী। শোধন-কেশরী শোধনশ্রেষ্ঠঃ। লেপান্ধি-স্বদলৈঃ কল্কৈ র্রণশোধন রোপণঃ । ভক্ষণাচ্ছদি মন্দাগ্নি পিত্ত শ্লেষ क्रमीन् श्रत्र ॥ वनान् विरमाध-

रिष्ट वर्जा मृका मान मिन्न म-ৰ্মজান্। অভয ত্ৰিবৃতা দন্তী वाष्ट्रणी मधू रेमऋरेवः ॥ निम्नश-ত্ৰ ঘৃত কৌন্ত্ৰ দাৰী নধুক সংযুতা ৷ বস্তি স্তিলানা॰ কন্ধে৷ বা শো-थरयराज्ञां शरयाकु 📭 💵 🥞 💐 রোপণ মাহ। অপেত পৃতিমাণ সানা॰ মাণসস্থান মরোহতা । কল্কস্ত রোপণে দেয স্তিলজে৷ মধুসংযুতঃ।। অশ্বগন্ধা রুহ। লো-धुः क हेकूल॰ मधुयिकि। गम-**ঙ্গ**িধাতকীপুষ্পণ পরম• ত্রণরোপe ।। नधुयुक्ता भत्नभूषा **भर्**खन রোপণী কথিতা। সুখবীপত্র ধ-ভূর বলা মোচা স্বঠেরকা॥ পৃথ-গেতে প্রলেপেন গম্ভীর ব্রণরো-পণাঃ। সুখবীপত্র কলে। স্পীপত্র । অস্যা এতদেব নাম পুস্তকে ধৃ-**७• । ऋ**ट्टितक वद्गवती ।। कन्न-ভোত্যরাশ্বখ জযু কট্কল লো-ধুজৈঃ। দ্বক্চুর্নি শ্রুনিতা লে-পাৎ প্ররোহন্তি নহাত্রণাঃ।। প্রি-ষঙ্গু ধাতকী পুষ্প যঠীমধু জতূনি চ। সৃত্বচূণী ক্তানি সূত্রোপ-गानावधूननाथ ॥ यवह्र्नं नम-धूक॰ मटेंजन॰ मरु मर्शिय। १ म-मामात्वरान कायः मार मू-

लाপশান্তযে॥ করঞ্চারিফ নি-र्ख्डी लिला इनाषु क क्रमीन्! লসুনস্যাথ বা লেপো ছিঙ্গু নি-স্বক্তাথ বা ।। নিম্বপত্র বচা হিন্দু मिर्ल ह्मर्व मर्स देशः । शृथनः मा ষুণে রক্ষঃ হৃমি কণ্ডু রুজাপহ।।। যে ক্লেদ পাক সুতি গন্ধ বস্তো ত্ৰ-ণা শ্চিরোখাঃ সমতাশ্চ শোধাঃ । প্রবান্তি তে গুগ্গলু মিশ্রিতেন পীতেন শাস্তিঃ ত্রিফলা সৃতেন।। পটোল নিশ্বাসনসারধাত্রী পথ্যা-ক্ষ নিৰ্যূহ মৰু মুখে তু। পিবেৎ फुछ॰ ध्रमुन्। विमर्भ विष्कारे मूरुवन भाष्ठि निष्ठ्न् ॥ **क्षा व्यथ** সবর্ণতা করণ। মনঃশিলা সম-ঞ্জিষ্ঠা সলাকা রজনীঘ্যণ । প্র-লেপঃ সঘৃত ক্ষৌদ্র স্তৃচঃ সাবর্ণ্য-রুৎ স্মৃতঃ।। 🟶 ॥ অথ ত্রণিনো ভোজন । জীর্ণ শাল্যোদন প্ন-গ্ধ মল্প মুক্ত ডবোত্তরণ। ভুঞ্জানো जाकरेल सी॰रेमः भीषु॰ बन म-পোহতি ॥ তণুলীযক জীবন্তী वाख्क मूनिय: दिकः । वानः भून-क वार्जीक शरिंगेटनः कांत्ररवन्न-रेकः ॥ नमाछिरमः नामनरेकः षृञ्जूरेकः मरमन्नरेतः । जरेना रत्रव<sup>•</sup> छदेव बीलि गूकाकीना॰ त- সেন চা৷ এভিঃ সহ জীর্ণশাল্যো-দন ভুঞ্জানঃ শীষু ত্রণ মপোহ-তীত্যস্বয়ঃ।। অস্ত্রুণ দধি চ শাকঞ্চ ষা'স মানূপ মোদক'। ক্ষীর' গুৰূপি চান্যানি ত্রণিতঃ পরিবর্জ-বেৎ ৷৷ ত্রণে শ্বয়পু রাযাসাৎ স চ রাগশ্চ জাগরাৎ। তৌ চ রু-ক্চ দিবা স্বাপাৎ তাশ্চ মৃত্যুশ্চ रेमथूना । 🗱 ॥ जथा 🛪 वन চিকিৎসা। জুদ্ধে সদ্যো ত্রণ॰ अर्यगानुकृष्णयण्ठ त्नाथनः । कि-যা শীতা প্রযোক্তব্যা রক্তপি-ত্যোশ নাশিনী ।। লঙ্খনঞ্চ বল॰ জ্ঞান্বা ভোজন চাসু মোকণ ৷ **ঘৃক্টে বিদলিতে চৈব সূতর। মি**-ষ্যতে বিধিঃ।। ছিমে ভিমে তথা বিদ্ধে ক্ষতে বাসৃগতিসুবেৎ ৷ ব্লক্তক্ষযাত্তত্ত্ৰ ৰুজঃ করোতি পব-নো ভূশণ।। স্নেহপান পরীষেক লেপা স্তত্তোপনাহন স্বী ভ ন্মেহ বস্তিঞ্চ মারুতমৌষধৈ র্ভি-ষক্।। খদ্ধাদি চ্ছিন্নগাত্রস্য তৎ-কাল॰ পৃতিতে। ত্রণঃ। গাঙ্গেরুকী मृलद्रदेमः मुगः माष्ट्र भाष्ट्रतमः नः ॥ गारमङ्की नागवन। छत्र-সকরী ইতি লোকে॥ কষায ম-ধুরাঃ শীতাঃ ক্রিযাঃ সর্বাঃ প্রযো-

জरयद् । मरमा जनानाः मखाः হাৎ পশ্চাৎ পূর্বোক্ত মাচরেৎ ॥ जागानयस्य कृषितः विषया-६ মন॰ নরঃ। তিম্মন্ প**কাশ্যত্তে** তু গৃহ্নীষাৎ স বিরেচন । ক্বা-থো বংশস্বগেরও স্বদংক্ট্রাম্মভি-मा क्ठः । श्क्रं रेमक्क म॰ युङः **८कार्श्वश्रम्भावत्यममृक्॥ यव ८का-**ল সলখানা নিমেহেন রসেন চ েভুঞ্জীতান্নং যবাগুং বা পিবেৎ দৈশ্বব সংযুত ।। জাতী নিম্ব প-টোল পত্র কটুকা দাবী নিশা শারিবা মঞ্জিষ্ঠাভ্য তিক্ত তুত্থ मधुरेक बंकास्त्र वीरेजः मरेमः। সর্পিঃ সিদ্ধ মনেন সৃষ্ধ বদনা মর্মাঞ্রিতাঃ স্থাবিশোঃ গম্ভীরাঃ সরুজো ব্রণাঃ সগতিকাঃ শুক্ खि রোহন্তি চ II বৃদ্ধ বৈদ্যোপ-দেশেন পারস্পর্য্যোপদেশতঃ । জাতীযৃতেন সংসিদ্ধে ক্ষেপ্তব্যং मिक्थक॰ दूरिधः ॥ জाতा। नियु-ত॰ ।। 🗱 ।। জाতी निश्व भটीनां-না॰ নক্তমালস্য পল্লবাঃ । সিক্-থ সমধুক সন্ত দ্বে নিশে কটু রোহিণী।। মঞ্জিষ্ঠা পদ্মক॰ পথ্যা लाशु प्रक् नीलगू ८ शल । माति-বা তুথক চাপি নক্তমাল ফল

তথা।। সারিবা স্থানে সনিম্ব ইতি চ পাঠঃ। এতানি সনভাগানি কদ্ধীক্ষতা প্রযন্তকঃ। তিলতৈল শচেৎ সম্যক্ বৈদ্যঃ পাক বিচ-ক্ষণঃ ৷৷ বিষত্ৰণে সমুৎপদ্ধে স্ফো-টকে কক্ষরোগিণি। দক্র বীসর্প রোগেষু কীটদক্টেষ্ সর্বথা।। স-**माः শ**ञ्ज्ञशास्त्रयू मक्ष विस्कृष् टेठव हि। नथ प्रस्तु ऋटा (प्रट्र मुखेगा॰ माश्रवर्षा ।। जक्रावन হিত তৈল মিদ শোধন রোপ্-**१°। তৈল॰ জাত্যাদিনামৈত**ৎ প্রসিদ্ধণ ভিষগাদৃত ।। জাত্যাদি তৈল ।। 🟶 ॥ চিত্রক রসোন রা-মঠ শরপুংখা লাঙ্গলীক সিন্দুরৈঃ **। সবিটেষ স্তথ**া সঙ্গটেঙঃ কটুতৈল° সাধসংযুক্তণ।। বিপরীত মল্লতৈ-नः मुख्वनः ठशा नाषीः। वह-ভেষজৈ রসাধ্যা মপথ্যভোক্তৃ **\***চ নিণুদতি ।। বিপরীতমলতে **छ॰ ॥ 🗱 ॥** अपृञा পটো नपून ত্রিফল। ত্রিকটু ক্রমিম্নানা॰। সম-ভাগানাণ চূৰ্নণ সৰ্বসমো গুগ্লুলো-র্ভাগঃ ৷৷ প্রতিবাসর মেকৈকাণ খাদেদিহাক্ষ পরিমাণাণ ৷ জেতুণ ত্রণবাতাসৃগ্ গুল্মাদরশোথ বা-তরোগা॰ 🕫 ॥ অমৃতাদি গুগ্গুলুঃ

॥ 🗱 ॥ অথাগ্রিদগ্ধস্য চিকিৎসা । প্লুফ্টস্যাগ্নি প্ৰপতন কাৰ্য্য মূক্ষণ তথৌষধণ। সম্যক্ স্বিন্নে শরীরে তু স্বিন্ন° ভবতি শোভিত• ।। প্র-**হত্যা সলিল॰ শীত•** ক্ষন্দযন্ত্যতি-শোণিত । তস্মাৎ সুখযতি প্লুফ न जू भी ७॰ कमा हन।। ऋम्म रखि শোষ্যন্তি। শীতা मुकाक मूर्मत्क ক্রিষা॰ স্ব্যাত্তভঃ পুনঃ। ঘৃতা-লেপ প্রদেকাস্ত শীতানেবাস্য কারযেৎ।। সম্যান্দক্ষে তুগাকী-ती क्षक ठम्पन देशविदेकः। मामृ-তৈঃ সর্পিষা যুক্তৈ রালেপণ কার-यिखिषक् ॥ आयानृत्रीमदेक 'র্মাণ্টেসঃ পিটে**উ** রেনণ প্রলেপযেৎ । অতিদধ্ধে বীশীর্ণানি মাণ্সানু-क्रुंग भीठना॰ ॥ क्रिया॰ ऋर्या ६ ততঃ পশ্চাচ্ছালিতগুল কণ্ডনৈঃ । তিন্দুক্যাশ্চ কসাথৈ ৰ্বা ঘৃতমি-শ্ৰৈঃ প্ৰলেপযেৎ ।। বদরীত্বক্ ক-ষায়ৈ ৰ। যৃতমিশ্ৰেঃ প্ৰলেপন । যবান্ দঞ্ধা মসীক্লত্য তৈলেন যু-ত্ৰা ত্ৰা ৷৷ অষঃ সৰ্বাগ্লিদক্ষেষু লেপনাদ্ব্রাপণঃ ৷ ব্রণ গৃচ विठिबः वा ছामरयमथ वामरेनः ।। মধূচ্ছিষ্ট॰ সমধুক॰ লেপ॰ সর্জ-রস॰ তথা। মঞ্জিষ্ঠা চন্দন॰ মূর্বা॰

পিষ্ট্ৰা সৰ্পিষি পাচয়েৎ 11 সৰ্বেষা মগ্লিদক্ষানা মেতজোপণ মুত্তমণ। मिक्थकानिष्ठ॰ ॥ # ॥ मिक्न॰ क-ষায় কন্ধাভ্যা॰ পটোল্যা কটুতৈ-लक । जनमञ्च क्राजा मुप्त मार বিস্ফোট নাশনং॥ পটোলীতৈ-লং ৷৷ বাতোক্ত মশ্রুত দুষ্ট পশ্ শোষ্য গ্রথিত ব্রণ ৷ স্ব্যাৎ সদাহণ কণ্ডাঢাণ ত্রণ গ্রন্থিস্ত স স্মৃতঃ ৷৷ কম্পিল্যকং বিডঙ্গানি ष्ठि मार्गा खटेश्व **छ। शि**ख्री তৈল॰ পচেত্তন্ত ব্রণগ্রন্থিহর॰ প-র ৷৷ ইতি ত্রণাগন্তব্রণাগিদম विश्वादिकातः ॥ # ॥ जगाधिका-রস্ত ভগ্নকে ডফব্যঃ ॥ না ডীব্রণনিদান নাডীব্রণশব্দে ড-**रो**वा॰ ॥ 🐐 ॥ व्यथ नाडीवनमा চিকিৎসা। সুহুক দুগ্ধ দাবী ভি র্বতি॰ রুদ্বা প্রপুরয়েৎ। এষ সর্ব-শরীরস্থাণ নাডীণ হন্যাৎ প্রযো-গরাট্ ৷৷ আরখধ নিশা কালা চূর্ণাঢ্যা ক্ষৌত্র সংযুতা। সূত্রব-র্ত্তি র্ত্তণে যোজ্যা শোধনী গতি-নাশিনী ৷৷ কালা মঞ্জিষ্ঠা ৷৷ জা-ত্যর্ক সম্পাক করঞ্জ দন্তী সিদ্ধৃত্থ भोवर्ष्ठन यावमूरिकः । वर्<del>जिः</del> ক্রতা হন্তাচিরেণ<sup>্</sup>নাডী° সুক্

ক্ষীর পিষ্টা সহ চিত্রকেণ II না-ড্যাঃ শত্ত্ৰেণ বদন বৃহৎ ক্ৰছা প্রবেশযেৎ। স্বশলো বস্তিবিধি-ৰা তৈলং জাত্যাদি সাধিতং॥ এব মন্যক্ত ষ্টেলণ ঘৃতয়া স্বর্সণ তথা। যত্তৈলং যদ্মনং পঞ্চং স্তর-স॰ বা তথৈব চ ৷ ইতি বা পাঠঃ । নাড্যা অভ্যন্তরে বৈদ্যো লঘু-হস্তঃ প্রবেশযেৎ।। কপুরক র-সৈ স্তৈল সিদ্ধার্থক ভব ভিষ-ক্।পচেৎ সিন্দূর কল্কেন নাডী-দুষ্টব্রণাপহ°।। গুগ্গুলু ত্রিকলা ব্যোষেঃ সমাণশৈ রাজ্য যোজি-তং। অফ প্রমাণাং গুটিকাং খা-**प्रक**िंटायुन। नतः॥ नाजी पूर्छ-ব্রণ শূল মূদাবর্ত্ত তগন্দর । छ-वाक अनजान हना। शक्ति हो भन्नगानिव॥ मञ्जाद्या <u>७शुन</u>्ध॥ ইতি নাডীত্রণাধিকারঃ ॥ 🟶 ॥ ভগন্রস্য নিদান চিকিৎসা চ ভগন্দরশব্দে দ্রফব্যা ।। উপদ•-भना निमानामार्गमण्यमास ज-खेताः ॥ 🟶 ॥ অথোপদংশস্য চিকিৎসা । উপদংশেষু সর্বেষু ন্মিঞ্চ স্বিন্ধস্য দেহিনঃ ৷ মেটুমধ্যে শিরাণ বিধ্যেৎ পাত্যেদ্বা জলৌ-কসঃ ॥ সদ্যো নিহ্ন ত দোষস্য

দ্ধক্ শোথাবুপশাম্যতঃ। পাকো নিবার্য্যো যত্নেন শিশ্বক্ষযকরঃ म बर ॥ विधाः वाह्यक्त्रं कष् লোধু পথ্যা হরিদ্রা রচিতঃ প্র-লেপঃ ৷ ব্যথা॰ তথা শোখ মপা-ক্রেগতি সর্বোপদংশেষু ততে৷ হিতোষণ ৷৷ উপদংশেষু পক্ষেষ ত্রণ প্রকালন হিত । ত্রিকলা-যাঃ ক্ষাধ্যেণ ভূসরাজ রসেন বা ।। नीतारशन भूकमूम शमः সৌগন্ধিক॰ তথা। এষ চূর্ণণ ধূল-নার্থ॰ প্রলেপ শ্চাত্র শস্যতে ॥ বন্ধৃক দল চূর্ণেন রজসা দাডিম-ষ্ঠঃ। গুঠনা ত্রুণে স্ব্যাল্লেপ॰ পূগফলেন বা ॥ দহেৎ কটাহে ত্রিকলা তন্মখী মধুসংযুতা । প্র-(लरशरनाशमण्यमा वनः मा প্ররোহ্যেৎ ॥ পটোল নিয় ত্রি-ফলা কিরাত স্কাথণ পিবেদা খ-দিরাসনাভ্যাং ৷ সগুয়ুলং বা ত্রিফলাযুত বা সর্বোপদংশোপ-হরঃ প্রষোগঃ ॥ ভূনিম্ব নিম্ব ত্রি-ফল। পটোল করঞ্জ ধাত্রী খদি রাসনানা । ক্ষায়ক্কৈঃ শৃত মাশু চাজ্যু॰ সর্বোগদংশোপছ-র॰ প্রদিউ॰ ॥ ভূনিম্বাদিঘৃত॰ ॥ মৃতানি যানি প্রাক্তানি সঠে । বণহ। স্ত্রী গুড়ুচী।ইতি শক-

নাডীত্রণে ত্রণে। উপদংশে প্র-**যোজ্যানি সেকাভ্যঞ্জন ভো**জ-নে ।। ক্ষার সূত্রেণ সংছিদ্য লি-ঙ্গবৰ্ত্তি মশেষতঃ। দহে*চ*চ তা-ন্তত স্তাভ্যাণ চিকিৎসাণ ব্ৰণব-চ্চরেৎ ৷৷ ইত্যুপদ্শাধিকারঃ ॥ #॥ मृक्तामाधिकातः मृक-দোষশব্দে দ্রক্টাব্যঃ। ইতি ভা-বপ্রকাশঃ ॥ 🟶 ॥ অথ ত্রণনা-শকতৈল । উভুম্বর বট প্লক্ষণ **जयूषर गशार्ज् न ।** शिक्षनश्र कमश्रक्ष भनाम लाधु जिन्मूकः ।। मधुक मामु मर्ज्य वहतः शन्न-কেশর । শিরীষবীজ কতক মেতৎ ক্বাথেন সাধিত ।। তৈ-লং হন্তি ত্রণাল্লেপাচিরকাল-ভবানপি।। ইতি গাৰুডে ১৯৮ व्यशायः ॥

ব্রণকৃৎ পু॰ ভল্লাতকঃ। ইতি রত্নমালা।। ক্ষতকারকে ত্রি।। ব্রণকেতুমী স্ত্রী দুগ্ধফেণীক্ষুপঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ ত্রণদিট্ পুণ ত্রাহ্মণষ্ঠিকা। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা ॥ ত্ৰণছেষকে ত্ৰি ॥ ব্ৰণহঃ পু এরওবৃক্ষঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। ত্ৰণঘাতকে ত্ৰি।।

जिसका।। कनिकातीवृकः। 20 ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ ত্রণারিঃ পু॰ বোল ।। অগস্ত্য-বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। ব্ৰত পুংক্লী ভক্ষণ । ইত্যুণা-দিকোষঃ ৷৷ পুণাজনকোপবা-मानि । তৎপর্য্যাयः । नियमः २ পুণাক ৩। ইত্যমরঃ ॥ নি-যানঃ ৪ সংযায় ৫ । ইতি শ-प्रवृत्रावनी ॥ অथ अठविधिः । তদারম্ভ প্রতিষ্ঠযো বর্জ্যকাল-মাহ জ্যোতিষে। গুরো ভূগো-রস্তবাল্যে বার্দ্ধকে সিংহগে গু-तो रेछि। वृष्का वाला मिन-ত্রষ মিত্যস্ত॰। মঠ প্রতিষ্ঠাতত্ত্বা-मावनूत्रदक्षयः ॥ # ॥ वृक्षास्त्री-ত্রতে বিশেষো রাজমার্তভো-ক্তো যথা। দিজেন্দ্রসূত সংযু-ক্তা পূৰ্ণা যাচ সিতাফমী। ত-म्या॰ निषमकर्छ। द्वा न मृाः थ-ণ্ডিত সম্পদঃ ॥ পতঙ্গে মকরে যাতে দেবে জাগ্রতি মাধবে। বুধাঊমীণ প্রন্থবর্গিত বর্জবিদ্বা তু চৈত্রকীণ।। প্রসুপ্তে চ জগ-দাথে সন্ধ্যাকালে মধৌ তথা। বৃধাৰ্ট্যীণ ন স্বীত ক্লতা হস্তি 🏾

পুরাক্ত ।। 🛊 ॥ অথ ব্রতানুষ্ঠা-নং। তত্ত্ৰ দেবলং। অভুক্ত্বা প্ৰা-তরাহার স্নাত্বা চৈব সমাহিতঃ। সূর্য্যাদি দেবতাভ্যশ্চ নিবেদ্য ত্রত মাচরেৎ।। ত্রন্দচর্য্য তথা শৌচ॰ সত্য মানিষ বৰ্জন । ব্ৰ-তেম্বেতানি চম্বারি বরিষ্ঠানীতি নিশ্চযঃ॥ অত্র প্রাত রিত্যস্যা-ভূক্ত্বেতাত্র নাম্বয়ঃ । কিন্তু ব্রত মিত্যনেনাম্বধো ২ভার্হিতত্বাৎ। প্রাতঃ সঙ্কল্লযেদিদ্বানুপবাস ত্র-তাদিক । নাপরাক্সে ন মধ্যাক্সে পিত্ৰকালো হি তৌ স্মৃতৌ ॥ ইতি বরাহপুরাণৈকবাক্যত্বাচ্চ । তত-শ্চাভুক্তা প্রাতরাহার মিতি মৃ-নিভি র্দিরশন প্রাক্ত বিপ্রাণা মত্যবাসিনা॰ নিত্য॰ । অহনি ह তথা তমস্বিন্যাণ সার্দ্ধপ্রহর যামা-ন্তঃ।। ইতি ছন্দোগপরিশিষ্টাদে-কাহার পূর্বদিনে রুদ্বা পরদিনে শ্বাদাচম্যু সূর্য্যাদি দেবেভ্যো নি-त्वमा । उँ मूर्याः मात्म। यम ₹-ত্যাদি মন্ত্রেণ সামিধ্যণ প্রার্থ্য ব্রত माहरत्र । ठठः महन्नरय । य-षा मृर्यापि प्रत्यका नित्रपा পূজনীয জব্যাদি দম্বা ত্রত মাচ-রেৎ ব্রত॰ স্ব্যাৎ। তদিধানঞ্চ

শান্তিপৰ্বণি। গৃহীদ্বৌজুম্বরং পা-ত্র॰ বারিপূর্ণ মূদজুখঃ। উপবাসস্ত্র। ग्रीया॰ यदा वार्त्याव शाहरय॰ ॥ 🗱 ॥ कर्यातने मृर्यापृष्का मार ব্ৰহ্মপুরাণ'। যাবন্ন দীযতে চার্ঘ্যণ ভাস্করাষ মহাত্মনে । তাবন্ধ পূ-জযেদ্বিফু॰ শঙ্করণ বা মহেশ্বরীণ।। নবগ্রহ পূজা মাহ মৎস্যপুরাণ । নবগ্ৰহ্মখ॰ ক্লন্বা ততঃ কৰ্ম্ম সমা-রভেৎ। অন্যথা ফলদ॰ পু॰সা॰ ন কাম্য° জায়তে ক্বচিৎ ॥ জা-দিত্যাদি পূজা মাহ পলপুরাণ । আদিত্যং গণনাথঞ্চ দেবীং রুদ্রং যথাক্রন । নারায়ণ বিশুদ্ধাখা অন্তে চ স্বদেবতা ।। যতু দে-বতাদৌ যদা মোহাৎ গণেশঞ্চ ন পূজ্যেৎ। তদা পূজাফল° হ-ন্তি বিমরাজো গণাধিপঃ ৷৷ ইত্য-নেন গণেশপূজনস্যাদিস্ব নুক্ত॰ তৎ সূর্য্যপূজেতরপর । সলদে-বতেত্যত্র সলাদ্যুপলক্ষণ । ব্রত যক্ত বিবাহেষু শ্রান্ধে হোমে ২র্চনে জপে। আরন্ধে সূতক° ন স্যাদনারক্ষে তু সূতক ।। তত্র বিশেষয়তি মৎস্যপুরাণণ । গার্ভি-**ণী সৃতিকা নক্ত° স্ব**শারী চ রজ-স্বলা। যদাশুদ্ধা তদান্যেন কা-

র্যেৎ ক্রিয়তে সদা 🛚 উপবাসা-শক্তো তুনক্তংভোজন স্বী'ত । উপবাদেষশক্তানা॰ নক্ত• ভো-জন মিষ্যতে। ইতি বচনাস্তরাৎ **অগুদ্ধা চেৎ পূ**জা॰ কার্ন্বেই । কাযিকঞ্চোপবাসাদিক সদা শু-দ্ধয়া অশুদ্ধয়া বা স্বয়ণ ক্রিয়তে। অত্যন্তাসামর্থ্যে পুক্রাদি প্রতি-নিধি দারা উপবাসঃ কার্য্যঃ। ত-দভাবে ২নুকল্পঃ। গরুডপুরাণ॰। ভাৰ্য্যা ভত্ ব্ৰতণ সৰ্ব্যাৎ জাষা-যাস্ত পতি তথা। অসামর্থ্যাৎ দ্বযো স্তাভ্যা॰ ব্ৰতভঙ্গে ন জা-যতে ৷৷ পুত্ৰু বা বিনষোপেত ভগিনী॰ ভূাতর॰ তথা। এষা ম-ভাব এবান্য ভ্রাহ্মণ বিনিয়ো-জ্যেৎ ॥ ৠ ॥ আর্ব্ধ ব্রত্স্যা-সমাপ্তৌ মরণেপি তৎফল প্রা-**श्चि माहाक्रिताः । त्या यमर्थ**॰ চরেদ্ধর্মণ ন সমাপ্য মৃতো ভ-বেৎ। স তৎ পুণ্যফল প্রেত্য প্রাপুয়ামনু রব্রবীৎ 11 প্রেত্য পরলোকে। শাষপুরাণ । লো-ভামোহাৎ প্রমাদাদা ব্রতভঙ্গো यन। ভবেৎ । উপবাসত্ত্রয়ণ স্প-ৰ্ব্যাৎ স্বৰ্যাদা কেশমুঙন ॥ মোহো ভূমঃ। প্রমাদো ২নবধা-

নতা। বাশব্দঃ সমূচ্চয়ে তেন মূ-ওনঞ্চ কার্য্যণ মুওনাকরণে দ্বি-গুণ প্রাযশ্চিত্ত। উপবাস ত্রযা-শক্তো চতুর্বিশাতিপণা দেষাঃ । পদ্মপুরাণ । বপন । নৈব নারী-ণাণ নানুবজ্যা জপাদিকণ ৷ ন গোপ্তে শ্যনং তাসাং ন চ দ্ধ্যা-**দাবাজিন°।। স**র্বান্ কেশান্ স-मूक्ष्ठा ছেদ্যেদঙ্গুলিদ্বयः। এব भित कू नाती गा॰ मूख मूखन मा-দিশেৎ ৷৷ ইতি গোবধ প্রকরণে 'বিবেচিত' । প্রাযশ্চিত্ত মিদ' ক্ল-ত্ব। পুন রেব ত্রতী ভবেৎ। পূর্ব<sup>,</sup> গৃহীত্ব। সঙ্কর° প্রমাদানাচরেন্দ্র-দি। জীবন ভবতি চঙালো মৃতঃ শ্বা চাভিজাযতে ৷৷ ইতি প্রায-শ্চিত্তবিবেক ঘৃত বচনং ৷৷ দে-বলঃ। সর্বভূতভ্যুণ ব্যাধিঃ প্র-মাদো গুরুশাসন্ও। অব্রতন্থানি কথ্যন্তে সক্লদেতানি শাস্ত্রতঃ।। **७**र्ज् तन् क्रया जीवा॰ दठकत्ररव ন দোষঃ। কামণ ভর্তু রনুজ্ঞযা ব্ৰতোপৰাস নিযমেজ্যাদীনা ম-ভ্যাসঃ স্ত্রীধর্ম ইতি সম্বৎসর প্র-मीभध्य गद्य वहनार ॥ 🕸 ॥ অত্র কথা শ্রবণ মাহ দেবীপুরা-ণুণ ৷ তদ্যান তজ্জপঃ স্নান তৎ-

কথাশ্রবণাদিক । উপবাস ফ্ল-তো হেতে গুণাঃ প্রোক্তা মনীষি-ভিঃ ৷৷ 🟶 ৷৷ অথ ব্ৰতপ্ৰতিষ্ঠা বি-ধিঃ। শ্রীভগবানুবাচ। গোপথা-রাম স্ত্না॰ মঠ সংক্রম বেশ্ব-নাং। নিষম ত্রত রুচ্ছাণাং প্রতি-ষ্ঠা॰ শূণু সত্তম !! ত্রাক্ষ্যেণ বিধিনা चङ्गि॰ समाक्षाय विष्ठकनः । निला॰ পূর্ণষট কাণ্যাণ সম্ভবে স্থাপষে-षूषः।। जन्मन् मर्बः ममानामा अ-**शरयम्यद्रभयः ५ इः । कीरद्रं व**-পিলাযাস্ত তদিকো রিতি সাধ-কঃ ৷৷ প্ৰণবেণাভিঘাৰ্য্যাথ দৰ্ব্যা সংঘট্টযেত্ততঃ । সাধ্যিত্বাবতা-ৰ্য্যাথ ভদ্বিক্ষো ব্লিভি হোমযেৎ ॥ ব্যাহ্নত্যা চৈব গাযত্ত্ব্যা তদ্বিপ্রা-সেতি হোমবেৎ। বিশ্বত শ্চক্ষ বি-ত্যুক্ত্বা বেদাদৈয় হোনযেত্তথা।। ত্তম্ভূরগ্রেস্বাহা ৷ ওম্সূর্যায স্বাহা। ওম্ প্রজাপত্যে স্বাহা। **७**म् जखतीकां याश । ७म् দ্যৌঃ স্বাহা। ওম্ ত্রন্ধ্রে স্বাহা। ওন্ পৃথিব্যৈ স্বাহা ৷ ওন্ মহা-রাজায় স্বাহা। ওম্ সোমং রাজা-ন মিতি জুহুয়াৎ। ওম্ লোকপা-লেভাঃ স্বাহা। স্ব স্ব মন্ত্রৈ জুহ-যাদ্যুহেভ্যশ্চ। এবং হন্তা চরো

र्ভागः मनाष मगमिगाः विनः। ততঃ পলাশ সমিধা হনেদকৌ-ত্তর° শত॰ ॥ আজ্যন্ত জুহুয়াৎ পশ্চাদেভি ম দ্রৈ দিজোত্তমঃ। ততঃ পুরুষসূক্তিশ্চ মন্ত্রে রাজ্য-ख द्रामरप ।। देतावणीक जु-হ্যাৎ তিলান্ গৃতপরিপ্লুতান্। হন্বা চ ব্ৰহ্ম বৃফ্টীশ দেবানা মন্-यायिन ।। धराना माङ्ठी छंद। লোকেশানা মথো পুনঃ। পর্ব-তানা॰ নদীনাঞ্চ সমুজাণাণ জ-থৈব চা। হন্বা ব্যাহৃতিভি দদ্যাৎ শ্রুচা পূর্ণাহুতিত্রয<sup>়</sup>। বৌষডন্তে-न भरखन देवकःदन मूदबाखम ॥ পঞ্গব্যঞ্ সংপ্রাশ্য দদ্যাদাচা-ষ্য দক্ষিণা । তিলপাত্র হেম্যু-ক্ত॰ সবস্ত্র॰ গা নলস্কৃতা॰।। প্রী-যতাণ ভগবান্ বিষ্ণু রিত্যুৎস্-জেদ্বত° নরঃ। ৠ। আরাম° কার-বেশ্বস্তু নন্দনে স চিরু বসেৎ 1 মঠপ্ৰদানাৎ স্বৰ্লোক প্ৰাপ্নোতি পুরুষঃ সদা।। সেতু প্রদানাদি<del>জ্</del>র-স্য লোক মাপ্নোতি মানবঃ।প্র-পাদানাদারুণঞ্চ লোক নাপো-ত্যসংশ্যং ৷৷ সংক্রমাণান্ত যঃ ক-র্ত্ত। দুর্গতি॰ তরতে নরঃ । স্বর্গলো-কে চ নিবদেৎ ইউকাদেতুরুত্ত-

থা ৷৷ গোমার্গস্য তথা কর্ত্তা গো-লোকে ক্রীডতে চিরং। নিয়ম ব-**ज्हम्यां विकृत्नां कः न**रता छनः ।। ক্লচ্ছকুৎ স্বৰ্গ মাপ্পোতি সৰ্বপা-প বিৰজ্জিতঃ। অনেন বিধিনা गर्जाः मःशृर्वः कल माध्याः ॥ ।। ইষ প্রতিষ্ঠা সামান্যা সর্বসা-ধারণানঘ। কর্ত্তব্যা দেশিকেল্ডে-স্ত প্রতিষ্ঠা ষত্র বিদ্যতে ॥ ইতি সংক্ষেপতঃ প্রোক্তঃ সমুদায় বিধি স্তব ৷ সৰ্বেষা মেব বৰ্ণানা॰ সৰ্বকা-ম ফলপ্ৰদঃ ।। সৰ্বেষ্ক্ৰেষ্ কৰ্ত্ত-ব্যা প্রতিষ্ঠা বিধিনা বুধৈঃ। ফলা-র্থিভি স্তপ্রতিষ্ঠ যন্মানিক্ষল মু ठाटा ॥ इंछि इयमीट्स ममूनाय প্রতিষ্ঠা পটলঃ ॥ ৠ॥ ব্রান্দ্যোণ বৈদিকেন স্বগৃহ্খোক্তবিধিনেতি যাবৎ। শিলেতি উদূখলোপল-ক্ষণ । কা॰স্য অগ্নিপ্রণ্যনার্থ । কাংস্যেন অগ্নিপ্ৰণয়ন মাহ গৃহ্ছা-সংগ্ৰহে। শুভ॰ পাত্ৰস্ত্ৰ কাৎস্য• স্যাত্তেনাগ্নি প্রণযেদুধঃ ৷৷ তস্যা-ভাবে সরাবেণ নবেনাভিমুখঞ্চ ত । সৰ্বতঃ পাণি পাদান্তঃ সৰ্ব-তোক্ষি শিরো মুখঃ । বিশ্বৰূপো মহানগিঃ প্ৰণীতঃ সৰ্বকৰ্মসু॥ এবঞ্চাগ্নিপ্রণ্যনানন্তর সর্বত ই-

ত্যস্য পাঠে। যুক্তঃ। প্ৰণীত ইতি মন্ত্রলিঙ্গাৎ। অন্যথা স্থাপনান-ন্তর এতদ্বিধান ব্যর্থ স্যাৎ।।\*।। অত্ৰ চ পাকাৰত্বাৎ সাহস না-মান মগ্নি মাহ গৃহাসণ্এহ:। প্রা-যশ্চিত্তে বিধু শৈচৰ পাক্ষজ্ঞে ভু সাহসঃ। পূৰ্ণাহত্যা॰ মৃডো নাম শান্তিকে বরদ তথা।। আহৃয চৈব হোতব্যু যত্ৰ যো বিহিতে ২নলঃ। প্রাযশ্চিত্তে হোন কর্ম বৈশুণ্য সমাধানার্থ প্রাযশ্চি-ত্তাত্মক মহাব্যাহৃতি হোমাদে।। **७**था চ ছন্দোগপরিশিষ্ট॰। যত্র ব্যাহৃতিভি হোমঃ প্রাযশ্চিত্তাত্ম-কোভবেৎ। চতসু স্তত্র বিজ্ঞেষাঃ ন্ত্ৰীপাণিগ্ৰহণে যথা।। অগি বা-জ্ঞাত মিত্যেষা প্রাজাপত্যাপি-বাহুতিঃ। হোতব্যা ত্রি বিকল্পোষণ প্রাযশ্চিত্তবিধিঃ স্মৃতঃ ।। অত্র ত্ৰি ৰ্বিকল্প ইত্যভিধানাৎ সামগা-না॰ ভবদেব ভটোক্ত শাট্যাযন-হোমো নিষ্ণামাণিক:। অত্য-মুকাগ্নে ইহাগচ্ছাগচ্ছ ইত্যুচ্চা-র্য্য মবাভাবে বীহাদিভি রপি হোমঃ। হবিষ্যেষু যবা মুখ্যা স্ত-দনু ত্ৰীহযঃ স্মৃতাঃ। মাষ কোজব গৌরাদীন্ সর্বাভাবে বিবর্জয়েৎ

।। যথোক্ত বস্তুসম্পত্তে গ্রাহৃ• তদনুকরি যৎ। যবানা নিব গো-धू मा बीशीना मिव मालयः ॥ ইতি চ্ন্দোগগরিশিষ্টাৎ ॥ তত্র ा-ভিলেন অথ হবি নিৰ্ৰপতি ত্ৰী-হীন্ যবান্ব। কাণ্স্যে চরুত্থা--ল্যা॰ বা অমুক্মৈ দ্বা জুফ্টণ নিৰ্ব-পামীতি দেবতানামোদেশঃ । সক্লমজুষা দি স্তক্ষী মিত্যনেন নিৰ্বাপ ক্ৰমাভিধানা সামগে-ন তন্মাত্র• কর্ত্তব্য• ৷ জত্র চ বি-ক্ষবে দ্বা জুষ্ট নিৰ্বপামীত্যনে-ন ষজুষা চরু ইত্যভিধানাৎ হবনীষ নিৰ্বাপণাদি চৰু নিষ্প-ত্তিঃ কর্ত্তব্যা। তত্র ছ্রুনাগপরি-**শिके॰।** দেবতাস॰খাराগৃহ্থ নি-ৰাপাণ্চ পৃথক্ পৃথক্। তুষ্টীণ দ্বি রেব গৃহীযান্ধোম শ্চাপি পৃ-থক্ পৃথক্।। অত্র দেবত। সংখ্য-ষা পৃথক্ পৃথক্ নিৰ্বাপঃ। অনু-নিৰ্বাপ স্তম্ভ্রেণৈব। হোমোপি পৃ-থক্ পৃথগেবেতি । আলস্যাদি পুরুষদোষেণ গৃহীত তণ্ডুলেনা-পি মন্ত্রেণ নির্বাপাদিক সমাচর-স্তি ষাজ্ঞিকাঃ।। ষাতে ন্যনে ত-থাচ্ছিলে সান্ধাজ্যে মান্ত্ৰিকৈ তথা । যজে মন্ত্রাঃ প্রযোক্তব্যা মন্ত্রা

यङ । थ नाधकाः ॥ हेट्रान्डः । মাত্রিকে মন্ত্র সাধ্যে অব্যাতাদৌ ন্যুনে তৎকালে মন্ত্রপাঠাভাবে भद्धः थरबाक्रवाः। कशिनास অভাবে অন্যধেনো রপি ঘৃতেন সপ্রণব তিরিক্ষা রিত্যনেনাতি-ষাৰ্ব্য **দ**ৰ্ব্য। দক্ষিণাবৰ্ত্তেন সং-নি শ্রবেৎ। দবী চ প্রাদেশ প্রমা-ণ। দালুল বিস্তারা আহা। ইশ্ব-জাতীয় নিশ্বাদ্ধি প্রমাণ মেদণণ ভবে । বৃত্ত বাৰ্কঞ্প পৃথু অ মব-मानकियाकन ॥ अरेख मरी य স্তত্ৰ বিশেষ স্তমহ° ক্ৰবে। দবী দ্যঙ্গুল পৃথুগ্রা তুরীযোনঞ্চ নেক্ষ-৭॰ ।। ইতি ছন্দোগগরিশিফাৎ। ইগ্নাৰ্দ্ধ প্ৰমাণ প্ৰাদেশমাত্ৰ । প্রাদেশদ্ব মিশ্বস্য প্রসাণ পরি-কীর্ত্তিত । ইতি ছন্দোগপরিশি-ষ্টোক্তেঃ। অথেত্যনেন স্বগৃহ্ছো-ক্ত শেষকর্ম্ম সমাপনানন্তরণ প্র ক্লতহোমঃ। অত্ৰ বহুদেবতাক छ-রুহোমাদুপদ্মত হোমঃ। চরেী **जू वहरेमवरका (इामः मा**गमूल-যাতবং। ইতি ছন্দোগ্পরিশিষ্ট ধৃত বচনাৎ !। 🟶 ॥ উপঘাত ল-ক্ষণ মাহ গৃহাসংগ্ৰহঃ। পাণিনা মেক্ষণেনাথ সুবেণৈব তু যদ্ধবিঃ

। সুষতে চান্পস্তীর্য্য উপঘাতঃ স উচ্চতে ॥ যদ্যুপদাত॰ জহুযা-চ্চরাবাজ্য॰ সমাবপেৎ। মেফ-ণেন তু হোতব্য নাজ্যভাগে৷ ন বিষ্টিক্নৎ ॥ অনুপন্তীর্ব্য ইত্য-নেন সুচি যচ্চতুরাবর্ত্ত পঞ্চাব-র্ত্ত॰ বা ঘৃতোপস্তরণাদিকণ ভদত্র নাস্তি তেন মেক্ষণাদিনা সক্ত্ গৃহীত্বা হোতবাং ॥ 🗱 ॥ প্রকৃত-হোমাৎ প্রাক্ বহ্নি পূজন মাহ गार्क (७४ भूतान । शृक्ष रमक ठ-তো বহ্নিং দদ্যাচ্চাপ্যাহতীঃ ক্র-মাৎ। তত ইতি বহে নামকরণ ধ্যানানন্তর । হোমানুষ্ঠানে স্মৃ-তিঃ। মন্ত্রেণোকার পূর্বেন স্বাহা-ন্তেন বিচক্ষণঃ। স্বাহাবসানে ज्रह्याक्यायन् देव मञ्जलवा ।। তত স্তদ্বিক্যো রিতি নম্রেণ চরুণা হোমধেৎ। এবং ব্যাহ্নত্যাপ্রত্যে-ক' ভূ রিত্যাদিনা। গাযত্র্যা সা-বিত্র্যা ৷ তদিপ্রাসেতি তদিপ্রা-সো বিপণ্যবো জাগ্বাণ্স ইত্যা-দিনা। বিশ্বত ইতি বিশ্বত শ্ৰু রুত বিশ্বতো মুখ ইত্যাদিনা। বে-দাদ্যৈঃ অগ্নিমীলে ইত্যাদিনা। ইষেদ্বোর্জ্যেত্ব। ইত্যাদিনা। অগ্ন আয়াহি ইত্যাদিনা । শক্ষোদে-

বী রিত্যাদিনা চতুর্ভিঃ। ভূরগ্নষে -ইত্যাদ্যফীভিঃ। ততঃ সোম॰ রা-জান মিত্যাদিনা। ততো লোক-পালেভ্য ইত্যাদিনা স্বস্ত্ৰমন্ত্ৰৈ স্ত-ত্তদেদোক্ত দশদিক্পালমন্ত্রেঃ। তত্র সামগানা॰ ইন্দ্রস্য ত্রাতার মি-ত্যাদিন।। অগ্নেশ্চ অগ্নি॰ দূত॰ বৃ-ণীমহে ইত্যাদিনা। যমস্য নাকে সুপর্ণ মিত্যাদিনা। নিশ্বতে র্বে খাহি নিশ্ব তীনা ইত্যাদিন।। বরুণস্য ঘৃতবতী ভুবনানা মিত্যা-দিনা। বাষোঃ বাত আবাতু ভে-ষজ॰ ইত্যাদিনা। সোমস্য সো-ম॰ রাজান নিত্যাদিনা। ঈশান-স্য অভিন্বা শূরণো নুম ইত্যা-দিন। বন্ধণো বন্ধযজ্জান প্র থম মিত্যাদিন। অনন্তম্য চর্য-ণী ধৃত মিত্যাদিনা। তথা চ গো-ভিনীষ কর্মপ্রদীপে । ত্রাতার মিন্দ্র মবিতার মিন্দ্রস্য পরিকী-ৰ্জ্তিতঃ। অগ্নি॰ দূত॰ বৃণীমহে বহ্নে र्यद्या यममा देव ॥ नादक मूलर्ग মূপয়ৎ বেখাহি নিঋতে স্তথা। যৃতবতীতি বৰুণস্য বাত আবাত্ ভেষজং ৷৷ বাথো র্মস্তঃ সমুদ্দিষ্টঃ সোম॰ রাজান মিত্যুচা ॥ সোম-স্য মন্ত্ৰঃ কথিত স্তৃভিত্বেতীশ উ-

চ্যতে ।। ঈশে ঈশানস্য । ব্ৰহ্ময-জজ্ঞান প্রথম ত্রন্ধণঃ পরিকী-ৰ্ত্তিতঃ । চৰ্ষণী ধৃত মিতি চ সৰ্প-স্য সমুদাহৃতঃ ।। গ্রহেভ্যঃ নব-वारङ्जाः । ययमरेखः मर्वद्यमः সাধারণৈঃ । সূর্য্যস্যাক্তকেনে-ত্যাদিনা । সোমস্যাপ্যাযেত্যা-দিন।। মঙ্গলস্যাগ্নি মূর্ণ্ধা ইত্যা-দিন। বুধস্যাগ্নে বিবস্বদিত্যাদি-না। বৃহস্পতে বৃহস্পতেঃ পরি-দীযেত্যাদিনা। শুক্রস্য শুক্রস্তে ২ন্যান্ধজন্ত ইত্যাদিনা। শনৈ-শ্চরস্য শক্ষোদেবী রিত্যাদিনা। রাহোঃ ক্যানশ্চিত্রেভ্যাদিন। 1 কেতোঃ কেতু॰ ক্লণুনিত্যাদিনা। তথা চ মৎসাপুরাণ ৷ আকুকে নেতি সূৰ্য্যায় হোনঃ কাৰ্য্যো বি-জানতা। আপ্যায়স্বৈতি সোনা-য মন্ত্রেণ জুহুষাৎ পুনঃ ॥ তারি মূৰ্দ্ধা দিকো মন্ত্ৰ মিতি ভৌমায কীৰ্ত্তযেৎ। অগ্নে বিবস্বদূষ্স ইতি নোমসূতাষ চ।। বৃহস্পতে পারি-দীয়া রথেনেতি গুরো র্নতঃ ৷ শু-ক্রতেখন্যদিতিচ শুক্রস্যাপি নি-গদ্যতে ॥ শনৈশ্চরাযেতি পুনঃ শলোদেবীতি হোমযেৎ ৷ কথান-শ্চিত্র আভূব দূতী রাহো রুদা**হ্ন**- णः ॥ त्कजू॰ क्षगृन्निजि क्रयान কেতূনা মুপশান্তযে । এব° চরু-হোষণ সমাপ্য চরুদেয়েণ প্রা-**ठामिमिश्राः शायमवनिः ममा**९ । जन्यशा । এषभायमविनः अस् প্রাটো দিশে নৃদঃ ইত্যাদিনা। দক্ষিণায়ে দিশে স্বাহা ইতি শ্রু-তি দর্শনাৎ। হরিহরপদ্ধতি ফ্র-ত্যপ্ৰদীপাভ্যা॰ স্বাহান্তেন ব-লিদান মুক্ত°। বস্তুতস্ত বলি প্রকরণ এব প্রাচ্যূদ্ধাবাচীভ্যো ২হরহ র্নিত্য° প্রযোগ ইতি গো-ভিলদূত্রে স্ত্রীলিঙ্গ নির্দেশাৎ দিশা॰ দেবতাত্ব॰ বলৌ প্রতীযতে ৷৷ অত্ৰ স্ববাচীতি পাঠাৎ শ্ৰুত্যক্ত হোনীয়ে দক্ষিণায়ে ইতানাদৃত্য ওম্ অবাচ্যৈ দিশে নম ইতি বলৌ প্রযুজ্যতে ৷এভি র্ন ব্রৈ স্তদিফোঃ পর্মণ পদণ ইত্যাদি যাবন্মজ্ঞৈঃ। আজ্যন্তিতিতু শব্দেন সমিদ্ধো-মে তেষা ব্যাবর্ত্তনাৎ মন্ত্রাকা-স্কাষাণ প্রাথমিকত্বেন তবিষ্ণো রিত্যস্য পরিগ্রহঃ। তত স্তদ্বিঞ্চো রিতি মঞ্জেণ স্বাহাজেন যৃতাক্ত পলাশ সমিদ্ধি রফৌত্তরশতং জু-হুষাৎ ॥ পূৰ্বোক্ত মন্ত্ৰঃ পূৰ্বোক্ত দেবতাভ্যঃ সুবেণাজ্যাহতী জুহ-

যাৎ। পুরুষসূক্ত স্তত্তদেশক্তঃ। তত্র সামগানা । ওম্ ইদ বিষ্ণু রিতি। প্রেক্ষকস্য বিক্ষো রিতি। প্রাকাব্য সুষলেব ব্রুবাণ ইতি ৷ मरमुनौर्याज । बिशामृष्ट्र रेजि । পুরুষ এবেদমিতি। এতাবানস্য ইতি। ততে। বিরাডিতি। ক্যান ইত্যাদি পুরুষসূক্ত°। তথা চ সা-মিধেনী শ্রুতিঃ । ইদ বিক্ষুঃ প্রে-ক্ষকস্য বিক্ষোঃ প্রাকাব্য মুষলেব-ক্রবানঃ ইতি বারাহ মন্ত্যং পুরুষ ব্ৰতে চৈষা বৈক্ষবীনাম সহিতে-নাণ প্রযুঞ্জন্ বিফুঃ প্রীণাতি ইতি প্রাকাব্য মুষলেব ব্রুবাণ ইতি বারাহ মন্ত্য মিত্যনেন একো ম-ন্ত্ৰঃ প্ৰকাশিতঃ। পুৰুষ ইত্যনেন পুরুষপদযুক্ত পঞ্মস্ত্রাঃ। ব্রতে ইত্যনেন ক্যানশ্চিত্ৰ ইত্যেকে৷ नञ्जः। সানগো जूरुया । यजू-র্বেদী তু তত্র প্রসিদ্ধাভিঃ সহসু-শীৰ্ষেত্যাদি ঋণ্ডিঃ ষোডশাহতী জু হ্যাৎ। ইরাবতীতি তিলান্ ষ্তাক্তান্ সক্ষজ্হযাৎ। এবং ব্ৰহ্মানুযাযিভ্যঃ স্বাহ। বিফুনুষা-বিভ্যঃ স্বাহা ঈশানানুষাযিভ্যঃ স্বাহা।এবং পূর্বোক্ত নবগ্রহমন্ত্রেঃ शृद्दीरेक र्निकशानगरेखक जूर-

ব্রত

ষাৎ ।। এবং পৰ্তেভ্যঃ স্বাহা নদীভাঃ স্বাহা নদেভাঃ স্বাহা সমুদ্রেভ্যঃ স্বাহা ভূঃ স্বাহা ভূবঃ স্বাহা ইতি জুহ্যাৎ। ততঃ পরি-ভাষা সিদ্ধ স্বশাখোক্ত মহাব্যা-হাতি হোন প্রাযশ্চিত হোনক ক্লত্বা সূচা তদিকো রিতি মন্ত্রেণ বৌষডভ্তেন পূৰ্ণাহুতি ত্ৰষ মুখায जुरुरामि वित्निर्वानामाना ६ নাত্ৰ স্বশাখোক্ত পূৰ্ণহোমঃ।। ত-তঃ পঞ্চাব্যু চরুশেষ প্রাশ্য য্রা-ত্বা বা হেমযুক্তণ সবস্ত্রণ তিলপা-ত্ৰ॰ অলক্তা• গাঞ্চ দক্ষিণা মাচা-ৰ্য্যাম দদ্যাৎ॥ আচাৰ্য্যপদঞ্চ। উ-দাহরতি বেদার্থান্ যজ্ঞ বিদ্যাঃ স্মৃতী রপি। শ্রুতি স্মৃতি সমাপন্ন माठायां ७ विम् व्धाः ॥ ३७ ছন্দোগপরিশিষ্টাৎ ৷৷ কর্ম্মোপ-দেষ্টু রাচার্য্যন্থেন আচার্য্যপদ স্বয়ং হ্যেতৃপক্ষে ত্রন্ধপরং অন্য হোতৃ পক্ষে ব্ৰন্ধহোতৃ দ্বয় পরণ। স্বয়ণ বন্ধকোতৃ কর্মা করণপক্ষে পুস্তক্ধারক পর° ॥ এক্ষণে দ-ক্ষিণা দেয়া যত্র যা পরিকীর্ত্তিতা ৷ কর্মান্তে ২নুচামানাবা পূর্ণ-পাত্রাদিকা ভবেৎ ৷৷ বিদধ্যা-জোত্র মন্যশ্চেদক্ষিণার্দ্ধহরো ভ

ति । ययस्म ज्यः अर्यामना-সৈম প্রতিপাদয়েও।। ইতি ছ-ন্দোগপরিশিষ্টেকবাক্যস্বাৎ এব॰ ব্রহ্মবিধিনা অগ্নিস্থাপনাদি প্রীয়তাণ ভগবান্ বিষ্ণু রিত্যস্ত কর্ম সংস্কৃত গোপথাদি দান নিয-ম ব্রভ কৃচ্ছাদি করণান্যতর্ৰপা সমুদায প্রতিষ্ঠা কর্ত্ব্যা। সমুদা-যন্য প্রকৃতগোপথাদেঃ প্রতিষ্ঠা সনুদায প্রতিষ্ঠা ৷৷ তথাচ কপিল পঞ্চরাত্রণ। প্রতিষ্ঠা শব্দ সংসি-দ্ধিঃ প্ৰতিপূৰ্বচ্চ তিপ্ততঃ। ব-व्यर्थवाविशाञानाः मःकातारमी প্রতঃ স্থিতিঃ ৷৷ তথাচ গোগথা-**८५ इन्छ कर्म मः कृ**ठमा क्वजन-কত্বণ। অপ্রতিষ্ঠন্ত নিষ্কল মিত্যু-ক্তেঃ। এতদ্ৰুত কৰ্ম্মণা প্ৰীয়ভাণ ভগবান্ বিकु রিতি সমাপুষাৎ ।। 🕸 ।। অথ ব্রতপ্রতিষ্ঠা প্রযোগঃ ৷ তত্ৰ ক্বত নিত্যক্ৰিয়ঃ কথান্ত • ব্ৰত° সমাপ্য তত্তদেবতা প্ৰীতি-কামো যথাশক্তি দানাদি দদ্যাৎ । ব্রতে দেবগৃহোৎসর্গে কূপাদী-না॰ প্রতিষ্ঠনে। দদ্যাৎ বোডশ-দানানি দ্বিড্দানানি চৈব বা :৷ ইতি দানসাগরধৃত বচনাৎ ।। अम् उ९ मिक्युकार्या अम ज-

দোতাদি অমুকগোতো ২মুক্ দেবশৰ্মা তত্তন্তুত ফল প্ৰাপ্তিকা-**নঃ ক্**তৈতৎ অমৃক্ত্ৰতপ্ৰতিষ্ঠা-মহ॰ করিষ্যে। ত্রী চেদ্রুতকারিণী · **তদা অমুকগো**ত্রামুকী দেবীতা-मृाङ्॰ ইতি महन्नः जर्गाः । ত-তো ঘট• সংস্থাপ্য পঞ্চেবান্ সংপূজ্য গৌৰ্ব্যাদি যোডশমাতৃ-কাঃ সংপূজ্যাঃ পুরুষদেতত্তদা না-ন্দীশ্রাদ্ধ° সর্য্যাৎ। তত উত্তরা়-ভিনুখণ জাঙ্গণ মুপবেশ্য তৎস-মীপে আসন মানীয শ্রাংশ্ব যজনানঃ ওম্ সাধু ভবানান্তা॰ ইভি ক্তাঞ্জলি বঁদে২। ওম্ সাধ-হমাসে ইতি প্রতিবচন । ওম্ জার্চাধিষ্যামে। ভরতঃ ইতি পুন-রুক্তে ওন্ অঠ্যতি প্রতিব্যন<sup>ং</sup> । ততে। বস্ত্রালন্ধার গরূপুস্থাদি ভিরভাঠাদিশি জাবু (র) ওন্ অন্তে।দি অসকলেন সমুক (भगलकीन चौठिङ हो डिउमगुक লতপ্ৰতিষ্ঠা কৰ্মনি হোমাদি কৰ্ম कत्वाय जवस्य गर्॰ वृ.न। अग् वृ-ভোষাতি প্ৰতিবচনণ। ওম্যথা-বিহিত° বৃত কর্ম সরু ৷ ওম যথা-জ্ঞান<sup>∙</sup> করবাণি ইতি প্রতিবচন° 1 ততে। বেদী॰ পঞ্চনব্যেন। ভূম্বা

পূৰ্বে পঞ্চটান্ ঘট মেকণ্ বা সং-স্থাপ্য প্রথম লিখিত ক্রমেণ ভূত-শুদ্ধ্যাদি গণেশাদি পূজাণ বিধায তত্তদ্দেবতা॰ ক্রনেণ পূজ্যেৎ। ততো হোতা স্বগৃহ্খোক্ত বিধিনা-গ্নি॰ সংস্থাপ্য ব্রহ্ম স্থাপনানন্তরণ চরু শ্রপণ স্বর্যাৎ। অন্যৎ সর্ব॰ প্রতিষ্ঠাপদ্ধতৌ জ্ঞেয়ণ ॥ৠ॥ অথ ব্ৰতপ্ৰযোগঃ। স্বস্তিবাচন কৃষ্ণা সূৰ্য্যঃ সোম ইতি পঠিম্বা সৰুল্প॰ স্বর্যাৎ। অদ্যেত্যাদি অমুক কা-মো ২মুক্রত মহ॰ করিষ্যে । বতাবৃত্তে আবৃত্তি সংখ্যা মুল্লি-খেৎ অদ্যারভ্যেতি চ ৷ উদগুখো ভূষা এতৎ স্ব্যাৎ। ওম্ যুদঃ किरेंडा नम दे**ि उ**खिन॰ मार्জ-বেং । ওম্স ইত্যভ্যুক্ষেং । বামহন্তেন স্বভিলং গৃহীত্বা দ্বশে-ন প্ৰণৰ গূৰ্ৰক॰ চতুৰ্থ্যন্ত ত্ৰত দে-বতানাম লিখেৎ। হন্তপ্রমাণ স্থাভিল॰ চত্রসূণ সিভতাগুলেনা-পূর্য্য মধ্যে বিভন্ত্যুর্জ্ব কর্ণিক হ-রিদাচূর্ণেন তছছি বিভক্তি প্র-गांगानारनाानामङ्गानि वर्षेन-লানি সিত ভঞ্ন চূর্ণেন পত্রমূলে কেশরাণি সমুস্ত চুর্ণেন প্রসন্ধী বিল্লাদিপত্রচূর্ণেন পীঠগাত্রাণি দগ্ধ পুলাকজেন ক্রত্বা ঘটণ সংস্থা-প্য সামান্যাৰ্ঘ্য° ক্বন্বা তদুদকেনা-ত্মান পূজোপকরণঞ্চাভ্যুক্য গ-**ल्या**नीन् नवश्रशःटेम्हव शृकः বেৎ ৷ ততে৷ ব্ৰুদেবতাঃ পূজ-যেৎ। ইতি ব্ৰত্তব্ব ।! 🕸 ।। অ্থ ত্রত লক্ষণ । দীর্ঘকালানুধাল-**নীয় সঙ্করো ব্রত মিতি নারা**য-পোপাধ্যাযানা স্বরুসঃ। স্বক-ৰ্ত্তব্য বিষধে। নিয়তঃ সঙ্কল্পে। ত্ৰত মিতি শ্রীদত্ত হরিনাথ বর্দ্ধমানপ্র-ভূতযঃ ৷৷ সঙ্কল্প ভাবে মথৈতৎ কর্ত্তব্য মেব নিষেধে ন কর্ত্তব্য নি-তি জ্ঞানবিশেষঃ। অতএব সঙ্ক-লঃ কর্মানানস নিভ্যাভিধানিকাঃ । বস্তুতস্তু পূর্ষোক্ত বরাহপুরাণ বচনেনৈকাদশ্যুপবাসন্য ব্ত-ত্বাভিধানাৎ একলক্তেন নক্তে-ন তথৈবাখাচিতেন চ। উপবা-সেন চৈকেন পাদক্রচ্ছ উদাহ্ব-ভঃ ॥ ইত্যাদি বাজ্ঞবন্ধ্যাদ্যুক্ত-ষু একভক্ত নক্তাযাচিত ভোজ नाथवागामियु शामक्ष्म्यामिया-ভিধানা**চ্চ ন সঙ্কল্পে**। বৃত্ত**া** কি-ম্ভ সঙ্কল্ল বিষয় তত্ত্ৰৎ কৰ্ম্পৈৰ ব্ৰত মিতি। অতএব ব্রতানাণ সঙ্কল্প मध्दव गोरु गगुः ! मकत्रगृजः

় কালো বৈ যুজাঃ সঙ্কল্পসম্ভবাঃ। ত্ৰতা নিয়ন.ধ**ৰ্মাশ্চ সৰ্বে স**ক জাঃ স্মৃতাঃ ৷৷ অনেন কর্মানা ইদ-নিষ্ট হল সংগ্ৰতে ইত্যেক বি-यस। तुक्तिः सक्षम्न उपन एक निके- : সাধনতনা **অব**সতে ভস্মিন ইচ্ছা জাবতে তত স্তদর্থণ প্রয়ন্ত্রণ স্বরী-ভ ইত্যাৰ প্ৰভাগ সম্প্ৰসম্ভবাগ । এতা নিষমৰাণা ধৰ্মা শততুৰ্থা-প্যাযে ব**ক্ষ্যমাশাঃ। সর্বে** ইত্য**ে**ন-ন অন্যেপি শাস্ত্রার্থাঃ সম্বল্পাদেব जायरष्ठ देखि ब्रह्मकछिः॥ 🛊॥ সঙ্কল্প নাহ বরাহপুরাণণ ৷ প্রাতঃ সঙ্গল্পবেদ্বিদ্বানুপ্রাস ব্রতাদিকণ । নাপরাহ্নে ন মধ্যাহ্নে পিত্র্যকা-লৌ হি তৌ স্মৃতৌ।। সঙ্কল্পে ব্রত-স্যারম্ভ ইত্যক্ত॰ রাঘবদৃতো বি-कुः। उठ यद्ध दिवारः यू आरक হোনে ২**ৰ্চনে জগে।** আরন্ধে সূ তক॰ ন স্যাদনারদ্ধে তু সূতক॰ ॥ আরুট্রো বরণ মজ্যে সকল্পো ব্রড জাপযোঃ। নান্দীশ্রাদ্ধণ বিবা-হাদৌ শ্রাদ্ধে পাকগরিদ্রিয়া।। নিমন্ত্রণন্ত বা প্রাদ্ধে আরস্তঃ স্যা-দিতি শ্রুতিঃ। পাক পরিষ্কিষেতি নাগে দৰ্শ শ্ৰাদ্ধ বিষয়ং। তত্ত্ৰৈব তস্যাগ্ন্যন্ধারণ বিধানেন তদ্মি-

गाक गामाधात पञ्चा । । ॥ मस्स विधान । नम्भ मत्रं भीता । धा-তঃ সন্ধ্যাণ ততঃ রুজ। সম্বন্ধণ বধ আচরেৎ।শান্তিগর্বণ।গৃহীত্রে-. জুয়র্ণ পাত্রণ বারিপূর্ণ নুদ্রাখং। উপবাসন্ত পৃত্রীফালেদ। মাল্যে-**দুধঃ ॥ দেবত। তদ্য ত্**যান্তি কা-ী মিক তুসী সিদ্ধাতি। অন্যথাত্ वृथा गर्छााः हिन्गाछि यन्नवृक्षयः -1। যদ্বেতি গক্ষান্তর্গ। তেন তাসু-পাত্রাভাবে সঙ্কন্ধবাত্রণ করণীয়ঁণ ॥ 🕸 ॥ গৃহীত ব্রতাকরণে দোষ মাহ ছাগলেষঃ। পূৰ্ব॰ ব্ৰত॰ গৃহী-ত্বা যো নাচরেৎ কানুমোহিতঃ। জীবন্ ভবতি চাঙালো মৃতঃ শ্বা-চৈব জাযতে॥ দ্বাদশীত্ৰত নাদা-য ব্রতভঙ্গ॰ করোতি বঃ। দ্বাদশা-ক॰ ত্ৰত॰ চীৰ্ণ॰ নিজ্ফল॰ ভস্য জা-যতে। ইতি নারদীয় বচনাৎ দ্বা-मनाग॰ दिटलट्यात्रि ॥ **%॥ था**य-শ্চিত্ত মাহ পমপুরাণণ লোভাৎ মোহাৎপ্রমাদাদা ব্রভভালা যদা ভবেৎ। উপবাসত্রয° সর্ব্যাৎ স্ব্যাদ্বা কেশ্যু গুনং ॥ প্রায়শ্চি-ত্ত মিদ॰ রুদ্ধ। পুন রেব ব্রতী ভ-বে২ ৷ বাশকঃ সমুক্চযে তেন মুখনঞ্চ কর্ত্তব্য নিতি প্রায়শ্চিত্ত-

বিবেকঃ। **প্রমাদাদস্য সরুৎ রু**-তত্বে প্রতিপ্রসূতে দেবলঃ। সর্ব-ভূত ভষণ ব্যাধিঃ প্রমাদে৷ গুরু-শাসন । অব্ৰত্মানি কথ্যন্তে স-ক্তদেতানি শাস্ত্ৰতঃ ॥ ইত্যেকা-দশীতত্ত্ব° ॥ 🐉 ॥ পুণ্যজনক ত্র-তানি যথা। বৈশাখস্য শুক্লাতৃ-তীযাযা॰ অক্ষযতৃতীষাব্ৰত॰ ত্য্য শুক্লা দ্বাদশী পিপীতকী ২ তক্ততুদ্দশী নৃসিংহচতুৰ্দ্দশী ৩ **ठमा इक्षाचेनी जिला**हनाकेमी ৪ ত্রুদা ক্লফচতুর্দাশী সাবিত্রী ৫ জ্যৈষ্ঠ শুক্লতৃতীয়া রম্ভাতৃতীয়া ৬ তস্য শুক্লা চতুথী উমাচতুথী প তস্য শুক্লা যঞ্চী অরণ্যযঞ্চী ৮ ত-চ্চতুৰ্দ্দশী চম্পকচতুৰ্দ্দশী ২ আ-ষাটী শুৱৈকাদশী শ্যনৈকাদ-শী ১০ শ্রাবণী ক্লফাষ্টনী শ্রীক্লম্ব-জনাউমী ১১ ভাত্রগুলা চতুথী লিবাচতুৰী ১২ তদ্য শুক্লা ষষ্ঠী চপেটাযন্তী ১৩ তস্য শুক্লা সপ্ত-নী ললিতাসপ্তমী তত্ৰ সন্ধূচী-ৰত ১৪ তস্য শুক্লাফ্**মী দূৰ্বাফ্ট**-মী ১৫ রাধা**ন্ট**মী চ ১৬ তস্য শুক্লা নবনী তালনবনী ১৭ তস্যশুক্রৈ-কাদশ্যাণ পার্শ্বপরিবর্ত্তনত্রত ১৮ তদ্য শুৱাদাদশী শ্ৰবণদাদশী১৯

**তস্য শুক্লা চতুর্দ্দশী** অনভচজুর্দ্দ-॥ শী ২০ তদ্য ক্লো চতুৰী গণেশ-**हर्व्यो २३ व्याधिन ७ क्वार्कनी य** शर्खेंगी २२ कार्जिक छङ्गानवनी দুর্গানব্দী ২৩ তম্য শুক্লৈকাদশী उँथारेनकाम्मी २८ जमा एका **ठजूर्भनी** भाषानठजूर्भनी २६ ज-गानीरेयकामगामि शक्ष ठिशा-ত্মক• বকপঞ্চক• ২৬ বৃশ্চিকস ক্ৰাস্ত্যাণ সৰ্বজযাত্ৰত ২৭ কাৰ্ত্তি-কেষত্ৰতঞ্চ ২৮ অগ্ৰহাষণস্য শু-ক্লা ষষ্ঠী গুহুষষ্ঠী ২৯ তদ্য শুক্লা সপ্তমী মিত্রসপ্তমী ৩০ তস্য শুক্লা षामगी अथञ्चाषामभी ७३ माघ শুক্লা চতুথী বরদাচতুথী ৩২ তস্য শুক্লাপঞ্চম্যাণ শ্রীপঞ্চমীত্র-ত ষড়র্য নিষ্পাদ্য ৩৩ তস্য শুক্লা যন্ত্ৰী শীতলাষন্ত্ৰী ৩৪ তস্য শুক্লা সপ্তমী আরোগ্য সপ্তমী ৩৫ তদ্য শুক্লৈকাদশী ভীমে-কাদশী ৩৬ তদ্যাদশী বরাহদ্বা-দশী ৩৭ তস্য ক্ষণ চতুৰ্দ্দশী শি-বরাত্রিঃ ৩৮ ফাল্গুনশুক্লাদাদশী গোবিন্দদ্বাদশী ৩৯ চৈত্রক্লফা-ষষ্ঠী কন্দষষ্ঠী ৪০ চৈত্ৰ শুক্লাফিমী অশোকান্টনী ৪১ তস্য শুক্লা নব-মী শ্রীরামনবদী ৪২ তদ্য শুক্ল।

ত্ৰযোৱনী মদনত্ৰযোদশী ৪৩ ! ইতি শৃতিঃ।। জ্বা। অথাচিতত্তত• নক্তত্ৰত॰ উমামাহেশ্বরত্রত॰ শঙ্ক-রনারায়ণত্রত দেবীপুরাণে রু-কাফ্ৰীত্ৰতনানাধ্যাবে সন্মার্জ-. नगराशाक्षाकात्यक जरुवा ।। 🕸 ।। তিখ্যাদিবত গাৰুডে ১১৬ অ-ধ্যাযে অগস্ত্যার্য্যবর্ত গারুডে ১১৯ অধ্যাষে চাতুর্মাস্যব্রতানি গাৰুডে ১২১ অধ্যায়ে ভীম্মপঞ্চ-কাদিৱত গাৰুতে ১২৩ অধ্যা-যে চ জফব্য° ॥ ৠ ৷ কার্ত্তিক-স্নানব্ৰত কাৰ্ত্তিক্ৰত কাৰ্ত্তিক-প্রদীপদান্ত্রতঞ্চ পাল্যোত্তরখণ্ডে ১৪০ অধ্যাযে দ্রফব্যে ॥ 🗱 ॥ প্র-তিপৎকল্পে ব্ৰন্ধবৃত । দ্বিতীয়া-কল্পে পুষ্পদ্বিভীষাব্ৰত॰ কলদ্বি-তীযাত্রতঞ্চ তৃতীয়াকলে গৌ-রীব্রত । চতৃথী কল্পে গণেশচতু-থী<sup>'</sup>। পঞ্নীকলে ভাদ্রভক্লাপ-ঞ্চমী নাগপঞ্চী। ষ্ঠীকল্পে তা-(त्र गाव ७क्न ग छनी द थम छनी । শুক্লপক্ষে রবিবারে সপ্তম্যাণ রো-হিণীনক্ষত্রযোগে বিজ্যাসপ্তমী । রবিবারে সংক্রান্তৌ আদিত্য-शमयबङ । एक्षणकीयमथा।

প্রধানকনক্ষত্রবাগে জয়াসপ্ত-गी। नाष ध्वम अनी जय छी। ভাদ্রহন্ত্রমন্ত্রী ভাপরাজিতাস-গুনী। শুক্লপক্ষে সপ্তম্যাণ রবি-म जगर। भराजगाम अभी। मा-র্ণনীর্ষস্য শুক্লা সপ্তমী নন্দাসপ্ত-মী। শুক্লাসপ্তম্যাণ হস্তানক্ষত্র-যোগে ভদ্রাসপ্তমীব্রত । ফাগ্লু-नमा श्कामश्रमी कामनामश्रमी। পাপনাশিনীসগুনীবত । ভানু-পদত্ৰত । সৰ্ব্যাপ্তিমপ্তমীৰ্ত । মার্ত্তসপ্তমীরত । ভারশুক্ল সপ্তমী নতমগুমী। প্রাবণশুক্ল-नश्रनी অভ্যञ्जनश्रमी। गार्गभी-र्यमा भिতमधुगाः र्खानक्व-যোগে ত্রিত্যপ্রদারত । ইতি ভবিষ্য পুরাণ ॥ ৠ ॥ উত্তরাষণে শুক্লপক্ষে বুধবারে অফমী বুধা-ফুনী। অনাবাসাত্রতং। বৈশা-चीशृर्विमा मिळेशूर्विमा । मय-भ॰क्वारको नवभ॰क्वान्डिः। জল-भ-जान्धिः। कलभःकान्धिः। जन-সংক্রাভিঃ । দ্ধিস্ক্রাভিত্রতঞ্চ ॥ 🗱 ॥ তাথ ব্রত্বিধিঃ। ভত্র ত্ৰতধৰ্মাঃ। তত্ৰ বিকু হারীতৌ। দিনাত্তে নথ রোমাদীন্ প্রবা-প্য নান মাচরেৎ। ভঙ্গা গোম্য

সূদারি পঞ্চব্যাদিকক্সিত ॥ ম- ব লাপকর্ষণ কার্য্যত বাহ্যাশোচা-অসিদ্ধয়ে। দম্ভধাবন পূৰ্বেণ প-ঞ্গব্যেন সংযুত্।। ব্ৰতং নিশাসূ থে গ্রাহণ বহি স্তারক দর্শনে। তেন প্রাযশ্চিত্ত ত্রতারন্তে পূর্ব-দিনে পঞ্গব্যং প্রাশ্য দন্তধাবনং কৃত্ব। সায় সমধে এত সঙ্কলঃ ক-র্ত্তব্যঃ। বশিষ্ঠঃ। শাশ্রু কেশ ন-थान् वालरयनिकटनाम निथाव-র্জ । কেশধারণেচ্ছা্যা ছিণ্ডণ ত্রত মাহ হারীতঃ। রাজা বা রাজপুতো বা বান্ধণো বা বহু-শ্ৰুতঃ। কেশানা বপন কুত্বা প্রাযশ্চিত্ত সনাচরেৎ ৷৷ কেশা-না॰ ধারণার্থন্ত দ্বিগুণ বত নাচ-রেৎ। দ্বিগুণে তু ব্রতে চীর্ণে দ-কিণা দ্বিগুণা ভবেৎ ॥ 🕸 ॥ द्धि-যাঃ কেশবপনং ন কাৰ্য্য মিত্যাহ (वेशायनः। क्र.ष्ट् जिनवन गून-কোপস্পর্শন মধঃশ্যন মেকবা-সতা কেশ খাশ্রু নথ রোম বাগনং এতদেব দ্রিষাঃ কেশ বপন বজ্জ । পঞ্গব্য যুত প্রাশনযো র্বিক-লঃ। তথা শুখ্ৰ লিখিতৌ। বাপ্য কেশ নখান্ পূৰ্বণ ঘৃতণ প্ৰাশ্য ব-ছি নিশি। প্রত্যেক নিযত কাল মাল্লনো ত্ৰত মাদিশেৎ ৷৷ প্ৰায-শ্ভিত্ত মুপাসীনো বাগ্যুত ব্ৰিস্ব-ন॰স্পুশেৎ। একবাসার্দ্রবাসা বা वशानी इंखिरलन्यः॥ सानी वी-রাসনী মৌনী মৌঞ্জী দওকনও-नू॰। ভৈক্ষচর্যাগ্নিকার্য্যক্ষ ক্ষা ঙি জু হযাদ্যত ।। প্রত্যেক ।নিয-ত কাল মিতি ব্রভ সংখ্যা সঙ্কল্প-বাক্যে উল্লেখনীয়া ইত্যৰ্থঃ। বী-রাসনী ভিত্ত্যাদ্যনাশ্রিতঃ। দও কমণ্ডলু॰ আর্মস্বাৎ মতুপোলো-পেন তেনৈতানুক্ত ইত্যর্থঃ। জ-স্মাত্তৈ ৰ্যদ্ধেবা দেবহেলন মিত্যা-দি মষ্ট্রো মনুঃ। মহাব্যাহাতিভি হোমঃ কর্ত্তব্যঃ স্বয় নম্বহণা অহিৎ-**না সতা** মজোৰ **না**ৰ্জ্বঞ্চ সনাচ-রে९।। ত্রি রহ্ন দ্রি নিশায়াক সবা-সাজল মারিশেৎ। ত্রি রক্ত ন্ত্রি নি-শায়াঞ্ ইতি ষট্স্বান বিষয় মিদ° । পিপীলিক। মধ্য চাত্র যণাদি ত-গুরুচ্ছ বর্জ্জণ দলাতিশ্যার্থণ বহু-ষ ত্রিসবন বিধানাৎ। তথা দ্রী-শূদ্র পতিতাণ্দৈর নাভিভাযেত কহিচিৎ।স্পানাসনাভ্যাশবিহরে-দশক্তো ২বঃশ্যী ভবেৎ ॥ বন্ধ-চারী ব্রতীচ স্যাদ গুরুদেব দিজা-ৰ্জকঃ মাবিত্ৰীঞ্চ জপেখিতাং প্ৰ-

বিত্রাণি চ শক্তিভঃ ॥ সর্বেষু চ ব্ৰতেম্বেণ প্ৰাযশ্চিত্তাৰ্থ নাদৃতঃ। ব্ৰন্নচারী নৈথুনবর্জ বতী ছত্তা-পানহ মাল্যাঞ্জন গদ্ধানি বৰ্জ্জ॰। শূজেণ মাবিত্রীজপস্থানে নারা-যণাদি মন্ত্ৰ জপঃ কাৰ্য্যঃ। অন্য-দারা বা কার্ষিতব্যঃ।এব মন্য-ত্রাপি। যথা বরাহপুরাণণ। অম-ন্ত্ৰস্ভন্য বিপ্ৰো মন্ত্ৰেণ গৃহ্ন-তে। জাবালঃ। সারয়ে সর্ব ফ্র-চ্ছাণা॰ সমাপ্তে। চ বিশেষতঃ। আজ্যেনৈৰ হি শালাগে জুহুয়া-দ্বাহাতীঃ পৃথক্।। আদ্বং দ্বর্যা-ছুতান্তে চ গো হিরণাদি দক্ষিণাণ । গৃহে গৃহী বসন্ সর্বন্ একলো-কে নহীদতে।। স্ত্রীণাণ হোমো ন कर्ववाः शक्षभरा खरेषव छ। भु-जानाः भाभिनादेशव मयागः ग हे कात्रयथ ॥ मशान्छ न कर्रता স্ত্রিবর্টেশ্চ কদাচন। ত্রান্সণেটনব বক্তব্য উৎপন্নে প্রাণসংশ্যে !! শ্রাদ্ধ নিতি শুদ্ধার্থণ শ্রাদ্ধণ দর্গি-ত°। স্ত্রীভি হোঁলো ন কর্ত্তব্যঃ পঞ্গব্য পানঞ্চলত্যনাং কর্ত্তরি বেতি ষষ্ঠা। প্রান্তরভূপীভয়া প্রাণসংশ্বে। অন্যে বর্ণা ন এফ-ব্যা বাহ্মণ এব এফব্যঃ। বত॰

মৌন° পূৰ্বোক্ত°। তত্ৰ বিশেষ মাহ আপস্তরঃ। তত্র মৌন স্তরু॰ ত্রৈ-विमावृदेक म् निर्जि द्वरेना दा अ নিভি ৰ্ৰহুশ্ৰুতৈ দিয়ে দিয়ান্ দ ऋगि छन् थ এव मावन्यावनथ॰ - ভাষেত ন মন্ত্র লোপো তবহীতি বিজ্ঞাযতে। মন্ত্রলোগো ব্রতলে। পঃ। বালবৃদ্ধাদিভি রঙ্গহীন মপি ত্ৰত কাৰ্যী নিত্যাহ লঘ্বিফুঃ। অসংস্কৃতো নিরুৎসাহে৷ রোগী নবতিজীবকঃ। যথাশক্তি প্রদ ৰীতিভ্ৰত' হেযু ন লুগ্য**তে।। অ**-শক্তাবন্যছারাপি কার্য্য মিতি উক্তঞ্চ রন্ধপুরাণে।রোগী বৃদ্ধ-স্ত পোগণ্ডঃ প্রবস্তান্যৈ র্বতং স-मा । চতুর্থান্তৎসরাদুর্দ্ধু অফ**স**ং যাবদেব হি ॥ শিশো ব্ৰত প্ৰদ্ৰ-ৰীরিন্ গুরু সমন্ত্রি বান্সবাঃ গুৰিণী বালবৎসা চ রোগী ড্রব্য-পরায়ণঃ ৷৷ এতে নক্তেয় ভূঞ্জন্তি বালা মধ্যাত্র এব চা ব্রতম্বঃ প্রা-ণরকার্থণ কদাচিদ্দকণ পিবেৎ ।। ফলমূলে তথা ক্ষীরণ যজ্ঞশিক্ত তথা হবিঃ। বতমধ্যে ত্ রোগা-ৰ্ত্তো বৈদ্যপ্ৰোক্ত মংখীৰধণ।। ব-রোতি চ গুরে। ৰ্বাক্য° ব্রত্য স্তৎ-ক্ষণাদপি। ব্রাক্ষণস্যাভিল্সিত

माधरयमविष्ठात्रयम् ॥ এতাन्य-ক্টো ব্ৰহ্মানা মত্ৰতন্মানি স্ত্ৰ-চিৎ। ব্রতেম্বেডেমু দেবাণ স্তান বতৰম্ভ প্ৰপূজ্যেৎ ৷৷ পোগড়ো वानः। जवार्यतायवः अर्वेशी फ ব্যাজন পালন পরঃসন্ধিত্যর্থঃ 11 বৌধাষনঃ। অক্টো তান্যব্ৰতন্না-নি আপো মূল**ং ফলং প**য়ঃ ৷ হবি র্ত্রাহ্মণ কাম্যা চ গুরো ইচন মৌ-যধ°।। হারীত যমে।। বলয শ্চে: পহারশ্চ হবীণষি চরব স্তথা ৷ নিৰ্বিশঙ্কেন ভোক্তব্যং ব্ৰত মৃস্য न नुপारा ॥ विन देव भारमवामि-দেবতাভ্যো দত্তঃ । উপহারে। देनदवना । इकः शार्वनश्चानी-পাকাদি। অত্র চৈষা॰ দত্তাব-শিষ্ট॰ ভক্ষণীয় মিতি । দেবলঃ। উপবাসে। বিনশ্যেত দিবাস্বপ্না-ক্ষ নৈথুনৈঃ। অভ্যয়ে জলপানে-ন নোগবাসঃ প্রণশাতি ॥ বৃদ্ধ-শাভাতপঃ। গন্ধালন্ধার বস্ত্রাণি পুष्ण गानगान्**रलशन** । डेशवारन-न म्याछि मछश्वन गक्षन ॥ অলম্বার বস্ত্র সিন্দুরাদি উপবা-সেন হেতুন। ইত্যর্থঃ। তথা। স্ত্ৰীণাণ সম্প্ৰেক্ষণাৎ স্পৰ্শাৎ তা-ভিঃ সংকথনাদপি । ব্রত্চর্য্য বি- পলেত ন দারসঙ্গনাদিপি ৷৷ সং-প্রেফণাৎ সংকথনাৎ ইতি অত্র স্রাগত্ব সংশব্দসার্থঃ। ইতি প্রাযশ্চিত্তবিবেকঃ ॥ 🗱 ॥ প্রায-শ্চিত্তাত্মক ব্রতানি যথা। বিশ্বা-মিত্রঃ। রুচ্ছ চান্দ্রাযণাদীনি শু-দ্ধ্যভ্যুদয় কারণ । প্রকাশে চ র-হস্যে চ সংশ্বে ২নুক্তকে ২স্ফুটে ।। প্রাজাপত্যঃ সাত্তপনঃ শিশুক্-চ্ছঃ পরাককঃ। অতিক্রচ্ছঃ পর্ণ-ক্ৰছঃ সৌম্যঃ ক্ৰছণতিক্ৰছ কঃ।। মহাসান্তপনঃ শুদ্যৈ তপ্তরুচ্ছস্ত পাবনঃ। জলোপবাসরুচ্ছস্ত ত্র-**ন্দকৃত্যস্ত শোধকঃ ৷৷ এতে ব্যস্ত**াঃ সমস্তা বা প্রত্যেক মেকশোপি-বা। পাতকাদিযু সর্বেষ পাপকে-षु প্রযন্তঃ !! কার্য্যা শ্চান্দ্রায়ণে-ৰ্যুক্তাঃ কেবলা বা বিশুদ্ধযে। শি-শুচান্দ্রায়ণ প্রোক্ত যতিচান্দ্রা-যণ তথা ৷৷ যবসধ্য তথা প্রো-ক্ত॰ তথা পিপীলিকাক্কতি। উ-পবাস ব্রিরাত্রন্ত মাসঃ পক্ষ স্তদ-ৰ্দ্ধক॰ ।। ষডহ দ্বাদশাহাদি কাৰ্য্য॰ শুদ্ধিফলার্থিনা। উপগাতক যু-क्लाना मनामि: छेषु टेठव हि ॥ প্রকাশে চ রহস্যে চ অভিসন্ধ্যা-দ্যপেক্ষ্য। জাতি শক্তি গুণান্।

দৃষ্ট্রা সরুদ্ধুদ্ধিরুত তথা।। অনু-বন্ধাদিক• দৃষ্ট্। সর্বণ কার্য্যণ য-থাক্ৰমণ ৷ ইতি প্ৰাযশ্চিত্ততত্ত্বণ ।।ঞ। দাদশবার্ষিকাদিত্রত প্রা-যশ্চিত্তবিবেকাদৌ ড্রম্টব্যু॰ ॥ ব্রততিঃ স্ত্রী বিস্তারঃ।। লতা। ইত্যমরঃ ॥ 😁 ব্রতী স্ত্রী বিস্তারঃ ॥ লতা । ইতি ভরতদ্বিৰূপকোষঃ।। ব্রতভিক্ষা স্ত্রী উপন্যনকালীন-ভিক্ষ। তস্যা বিধি বঁথা। অথ ভৈক্ষ্যঞ্রতি। অথশব্দ স্তব্দী মাদিত্যোপস্থান মগ্নিপ্রদক্ষিণঞ্চ শংসতি ৷ প্রতিগৃহেপ্সিতং দণ্ড মুপস্থাপয ভাস্করণ। প্রদক্ষিণণ পরীত্যাগ্নি॰ চরেটেক্তফ্যু॰ যথা-विधि ॥ इंछि मनुवहना । छि-কাসমূহণ ভৈক্ষ্যণ তচ্চরতি আ-বহৃতি ইত্যর্থঃ। মাতর মেবাগ্রে যে চান্যে সুহৃদো খাবত্যো বা সমিহিতাঃ সূঃ ৷ যাচতে ইত্য-शाहार्याः। मूक्ता विश्व क्षार्य স্বস্থান্যে। তথা চ মনুঃ। মাতর॰

বা স্বসারু বা মাতুর্বা ভগিনীণ

নিজাণ ভিক্ষ্যেত ভিক্ষাণ্প্রথমাণ

যা চৈন॰ নাবমানবেৎ ॥ সনি-

হিতা স্তদ্দেশস্থাঃ ন তুপ্রতিগৃহণ

গন্ধ। তবতি তিক্ষাণ দেহীতি বাধ্বণ তিক্ষা প্রয়োগঃ। তথা চ ননুঃ। তবৎপূর্বণ চরেৎ তৈক্য নুগনীত দিজোত্তনঃ। তবম্বধা-ন্ত রাজন্যো বৈশ্যস্ত তবদূত্তরণ । আদি মধ্যাবসানেষু তবচ্ছ-কোপলক্ষিতা া বিশাক্তমণ ।। ইতি যাজবন্ধ্যবচনাচ্চ। ইতি সংক্ষারতত্ত্বণ।।

ত্রহসংগ্রহঃ পু॰ দীকা।ইতি হেষচন্দ্রঃ।।

বতাদেশঃ পু° উপন্যনং। যথা।
আনন্ত জননাৎ সদ্য আচূডাদেকরাত্রক°। ত্রিরাত্র মাত্রতাদেশাৎ দশরাত্র মতঃ পর্ব॰।।
ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব°।।

ত্রতী পুণ বজনানঃ। ইত্যমরঃ।।
ত্রতবিশিষ্টে ত্রি। যথা তিথ্যন্তে
চোৎসবাস্তে বা ত্রতী স্বর্ণিত
পারণুণ। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং।।
ত্রশ্চ উ শ ছেদে। ইতি কবিকর্মজনঃ।। দন্ত্যোপধঃ চ্যোগাৎ তালবাঃ। তেন কিপি শচ্ছাজেতি যিও নিনিভাভাবে
নিনিত্রিক্স্যাপ্যভাব ইতি ন্যাযাৎ তালব্যম্য দন্ত্যত্বে সংযো-

গাদেঃ সদ্য লোপে সুবৃট্ ইতি।
তথাচ। নকারজাবনুষার পঞ্চমৌ বালি ধাত্যু। সকারজঃ শকারঃ স্যাৎ ষাউবর্গ স্তবর্গজঃ
।। ইতি বোপদেবঃ।! অস্যার্থঃ।
ধাত্যু মধ্যে ঝলি ঝসে পরে অনুষার পঞ্চমা নকারজৌ জ্যেন
নুষার পঞ্চমা নকারজৌ জ্যেন
কারজাতঃ মূর্জন্যধকারাৎ পার্রজাতঃ মূর্জন্যধকারাৎ পার্রজাতঃ আর্কান্তা ক্রেয়
ইতি। ঞি প্তা স্থানে ইত্যাদীনাঞ্চ থকারাদি প্রকৃতিত্তে তথ্যে
ইত্যাদি বোধাণ। উ অব্রশ্চীৎ
অব্যক্ষীৎ। শ বৃশ্চতি। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

বশ্চন॰ ক্লী ছেদন॰। বশ্চধাতে। রনট্প্রত্যযেন নিষ্পন্ন॰॥

ব্রশ্চনঃ পু॰ স্বর্ণাদিছেদিকা।
ছেনী ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ
। পত্রপরশুঃ ২। ইত্যমরঃ ॥ পত্রপশুঃ ৩। ইতি শব্দরত্রাবলী
॥ স্বর্ণলোহাদিভেদকঃ ৪। ইতি
জটাধরঃ ॥

বাজিঃ স্ত্রী বাষুঃ। বজধাতো রৌণাদিক ইঞ্প্রত্যবেন নি-প্রানা।

যাৎ তালব্যস্য দভ্যত্বে সংযো⊦ ∥ব্ৰাতঃ পু॰ সমূহঃ। ইত্যমরঃ :।

ব্যাধাদি। ইতিব্রাত্যশব্দ টীকা যা° ভরতঃ ।। ব্রাতীনঃ পু॰ সংঘজিবী । ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।

ত্রাত্যঃ পু॰ দশস॰কাররহিতঃ। ষোডশবর্ষাদূর্জ্ব অরুতত্ত্রতব-ন্ধো ভূষ্টগাযত্রীকো বা। ইতি ভরতঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ। সংস্কার-হীনঃ ২। ইত্যমরঃ।। সাবিত্রীপ-তিতঃ ৩ বান্দুষ্টঃ ৪ পুরুষোক্তি-কঃ ৫। ইতি জটাধরঃ ॥ তস্য প্ৰাযশ্চিত্তাদি যথা। অথ ত্ৰাত্য বিধিণ দেবি প্রাযশ্চিত্তন্ত যন্ত-বেৎ ৷ তৎ শৃণুষ মহেশানি স-र्वेवर्ग विरमयंग्डः ।। ममवर्यानि পঞ্চৈব ত্রান্ধণ স্কোপনীয়তে 1 একবি॰শতি বর্ষাণি যাবদর্ষ মু-পাবশেৎ।। অত উৰ্দ্ধুণ পতমেব সর্ব ধর্মা বহিষ্কৃতঃ। গাযত্রীপ-তিতা ব্রাত্যা ব্রাত্যস্তোমেন সংস্কৃতঃ।। অশক্তে চৈব যজ্ঞস্য **চরেদৌদ্দানিক** বত । দ্বৌ মাসে যাবকাহারো মাসমেকণ পয়ঃ পিবেৎ ॥ দগ্গ চ পক্ষ মে-কন্তু সপ্তরাত্র॰ ঘৃতেন তু। অযা-চিতেন ষড্রাত্রণ ত্রিরাত্রণ বর্ত্তযে-জ্জলৈঃ।। অহে। রাত্রণ ন ভূঞ্জী- ত ততঃ সংস্কার মহঁতি। পতিতা যস্য গাযত্রী দশবর্ষাণি পঞ্চ চ 11 প্রাযশ্চিত্ত॰ ভবেত্তদ্য প্রোবাচ ভগবান্ শিবঃ। সশিখণ বপ্সন• ক্লত্বা ব্ৰত স্ব্য্যাৎ সমাহিতঃ॥ হবিষ্যু ভোজ্যেদন্ধ বান্ধণান সপ্ত পঞ্চ বা : একবি॰শতি রাত্র-স্থ পিবেৎ প্রসৃতি যাবক॰ ॥ ততো যাবক শুদ্ধৰ্ম্য তম্যোপ-নযন॰ স্মৃত । ব্রত্স্যাচরণাশ-ক্রে স্বর্যাচ্চান্দ্রাযণত্রয়ণ।। সা-বিত্ৰী পতিতা যেষাণ দেশকালা-मि विक्षवार । ठाट्यायन ठात-দযস্ত ভ্রতান্তে ধেনু মুৎসূজেৎ 11 कीत शांशि शिरवन्नामः म-मांमा॰ वर्मगानिनी॰। इंडि মৎস্যস্তে প্রাযশ্চিত প্রকর্ ণে ৩৮ পটলঃ।।

ব্রাত্যস্তোমঃ পুণ্ যজ্ঞবিশেষঃ। যথা। সাবিত্রী পতিতা ব্রাত্যা ব্রাত্যস্তোমাদৃতে ক্রতোঃ। ইতি গারুডে ৯৪ অধ্যাযঃ।।

বী গ গি বৃত্যাং। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ ॥ রেফোপধঃ । গি বিণাতি বীণঃ বীণিঃ। গ যো বীণাতি জয শ্রিষণ রণমুখে। বীতঃ বীতিঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ ত্রী ও য ও গতে। । বৃত্যা । ইতি কবিকল্প দ্রুম । রেফোপ-ধঃ। য ও ত্রীয়তে। ও ত্রীণঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ৰীড য ঞি কিপি ।। লজে ।
ইতি কবিকল্পদ্রমাণ রেকযুক্তঃ
য ৰীড্যতি বুণে চাপঃ। বীড্যতি বধুঃ। ঞি বীডিতো হস্তি ।
ইতি দুর্গদোসঃ।।

ব্রীডঃ পুর্ণ লক্ষা। ইত্যমরঃ ।। ব্রীডনণ ক্লী লক্ষা। মথা। অথ মন্দাক্ষ মন্দাস্যণ লক্ষা লক্ষা চ হ্রী দ্রপা। ব্রীডো ব্রীডা ব্রীড-নঞ্চ লক্ষাপর্য্যায় ইরিতঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

ব্রীড়া স্ত্রী লজ্জা। ইত্যমরঃ।। ব্রীস কি বধে। ইভি কবিকল্প-দ্রুমঃ।। কি ব্রীস্থতি ব্রীস্তি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ব্রীহিঃ পু॰ ধান্যমাত্রণ। আশু-ধান্য । ইত্যমরঃ । অস্য সা-মান্য নাম গণনা গুণাশ্চ যথা। ব ধান্য ভোগ্যঞ্চ ভোগার্হ মন্না-দ্য জীবসাধনণ। তচ্চ তাবল্রি-ধা জ্বেষণ শূক শিদ্বী তৃণাহ্বয়ণ।। বীহ্যাদিকণযদি হ শূক সমন্বিতণ স্যাৎ যথ শূকধান্য ময় মুদ্যা

गञ्चकामि । भिन्नी निशृष्ट भिक्ति তৎ প্রবদন্তি শিশ্বী ধান্যং তৃণো-ন্তব তথা তৃণধান্য মন্যৎ।। তত্ত্ৰ जित्नाय भगन॰ नयू भृक्थानाउ॰ তেজে বলাতিশ্য বীৰ্য্যবিবৃদ্ধি-দায়ি। শিশ্বীভব॰ গুৰু হিমঞ্চ বি-বন্ধদায়ি বাতালকন্তু শিশির॰ তৃ-नशाना माङः॥ प्लटम प्लटम मृ-क्शाताम् मःशा छाजूः भका নৈব তৈ ৰ্দেবতৈ ৰ্বা। অস্মাদে-ষা॰ যেষু ভোগোপভোগা স্তা-ন্যস্মাভি ৰ্ব্যাক্রিয়স্তে কিয়স্তি।। শালয়ঃ কলমা রুচ্যা বীহিশ্রে-ष्ठी नृशिक्षियाः । शास्त्राख्यां क বিজ্ঞেষাঃ কৈদারাঃ সুস্নমারকাঃ ॥ রাজান্ন যম্টিক সিতেতর রক্ত मुख कृतान शक्त जितियानिक मा-লি সংজাঃ। ত্রীহি স্তথেতি দশ-ধা ভূবি শাযনাঃ স্যু স্তেষা॰ ক্র-मिन छन नाम गन बरीमि॥ बी-হি গৌরো মধুর শিশিরঃ পিত্ত-হারী ক্যায়ঃ স্নিঞ্চো বৃষ্যঃ ক্লমি কফহর স্তাপ রক্তাপহশ্চ। পৃষ্ঠি॰ मट्ड थ्रम **ग**मनक्रकीर्यावृक्ति॰ विन ধত্তে রুচ্যোত্যন্ত॰ জনযতি সুদ॰ বাতরুমেচকোন্যঃ ॥ ইতি রাজ-নিৰ্ঘণ্টঃ।। ঋ।। অপি চ। বাৰ্ষিকাঃ

কাণ্ডিতাঃ শুক্লা ত্রীহ্য শ্চির পা-কিনঃ। কুক্ত্রীহিঃ পাটলশ্চ লক্ত্র-টাওক ইত্যপি॥ শালমুখো জতু মুখ ইত্যাদ্যাত্রীহ্বঃ স্মৃতাঃ। ক্লফ-ত্রীহিঃ স বিজেযে। যৎক্ষণত্ব তণ্ডলাঃ ৷৷ পাটলঃ পাটলাপুষ্পা-বৰ্ণকো ত্ৰীহি ৰুচ্যতে ॥ স্বৰ্কুটা-**ণ্ডাক্কতিত্রীহী সন্ধূ**টাণ্ডক উচ্যতে । শালমুখঃ ক্ষশুকঃ ক্ষতভুল **छि**ठा**रछ ॥ नाकार्र्नम्थ॰ यमा** জেযো জতুনুখস্ত সং। ত্ৰীহযঃ ক্ষিতাঃ পাকে মধুরা বীর্যাতো হিনাঃ ৷! অল্পাভিষ্যন্দিনো বন্ধ-বৰ্চকাঃ ষ্**ষ্টিকৈঃ সমাঃ। ক্ল**্ড-ত্রীহি র্বর স্তেষাণ তত্মাদল্পগুণাঃ পরে।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ 🕸 ॥ তস্য যক্তিযত্বণ যথা। যজার্থণ তন্ত্ৰ ভূতানাং ভক্ষ্য মিত্যেব বৈ শ্রুতিঃ । দিব্যো ভৌম স্তথা পৈ-তো মানুষো ত্রান্ধ এব চয়া এতে পঞ্ মহায়ক্ত। ব্ৰহ্মণা নিৰ্দ্মিতাঃ পুরা। ব্রাহ্মণানা হিতার্থায় ই-ज्दत्रगा॰ <br/>
ठ जगूशाः ॥ इंज्दत्रगा॰ তু বর্ণানা ভাষ্ণলৈ কারিতাঃ শুভাঃ। এবং ক্লম্বা নরো ভুক্তা ২স্মাদ্ধরিত্রি বিশুদ্ধ্যতি ॥ অন্য-পা ব্ৰীহযোপ্যেতে একৈকে মূগ-

পকিণঃ। মন্তব্যা দাতৃ ভোক্তুপা• महासा॰म॰ वृ ७९ सु ७॰ ॥ देखि বারাহে আদিক্রত বৃত্তাভাধ্যায়ঃ ।। 🛊 ।। তেন পিতৃতৃপ্তি র্যথা । गनुः । ভिटेल बॉ हि यटेव गीटे**य** রন্ডি মূল কলেন বা দত্তেন মা-সং গ্রীষন্তে রিধিবৎ পিতরো নৃণা॰ ।। ত্রীহিঃ শরৎপঞ্ধান্য॰। বাক্তবল্ক্যঃ। হবিষ্যা**র্গেন বৈ** মা-সং পাষ্টেন চ বৎসরং। মাৎ-স্য হারিণকৌরভূ শাঙ্গনি জ্ঞাগ পার্য তৈঃ ॥ ঐণ রৌরব বারাহ **गारेग मी॰रेम यंशाल म॰ ।** जन বৃদ্ধ্যাভিতৃপ্যন্তি দত্তেনেহ পি-তানহাঃ ॥ হ্রিফালেন শালি ত্ৰীহনেন। ইতি। জমাবাস্যা ত্তি-দ্যে। ২উকা নাবী প্রৌঠগদূর্দ্রেণ क्रक्खायामनी बीहि यवशास्त्री চ। এতা॰ ख आफ्रकानान देव নিত্যানাহ প্রজাপতিঃ। প্রাদ্ধ মেতেম্বর্শনো নরকণ প্রতিপ-দ্যতে ॥ ইতি বিফ্বচন॰ নৰালা-গমশ্রাদ্ধদ্যৈর ত্রীহি যবেভিয প্রাপ্তি বিষয়কণ্টেন বিধায়কণ देशकानि थाना वानामाय। मानि धानामा जू वाश्विः। भद्रहम-স্তবোঃ কেচিৎ নবযক্ত প্রচক্ষ-

তে ৷ ধান্যপাকবশাদন্যে শ্যা-মাকে। বনিনঃ স্মৃতঃ ।। ইতি ছ-ন্দোগপরিশিষ্টে ব্রীহ্পপ্রাপ্ত্যা ন-वगरमारकी गानि विश्वाना य-জ্ঞতুল্য ন্যায়াৎ আদ্দেপি তথা ্কল্পনাৎ ৷ ইতি ৮ শ্রাদ্ধতত্ত্বণ ।। \*।। निवास आक्रकारना यथ।। বিক্ষুঃ। অমাবস্যা স্তিস্নো ২ফকা उत्मा ﴿ वर्षे दा माघी लोर्छन-मृक्षु॰ क्रक्<u>वे</u>र्यामनी बीहियवशी-কৌ চা এতাণ্স্ত প্রাদ্ধকালান বৈ নিত্যানাহ প্রজাপতিঃ। শ্রা-দ্ধ নেতেয়ঙ্গৰ্বাণো নূরকণ প্রতি-পদ্যতে ৷৷ ত্ৰীহিপাকে চ কৰ্ত্তব্য• যুৱগাকে চু পার্থিব ৷ নু তাবা-দ্যৌ মহারাজ বিনা শ্রাদ্ধ কথ-क्ष्न। ইতি মলমাসতত্ত্ব° ॥ 🕸 ॥ তেন বাগকরণ যথা। ব্রীহিভি ৰ্যজেত যবৈ ৰ্যজেত ইতি শ্ৰুয়তে ু তত্ৰ ব্ৰীহি প্ৰযোগে প্ৰতীত যব প্রামাণ্য গরিত্যাগঃ। অপ্রতীত যবাপ্রামাণ্য কল্পন । ইত্যেকাদ-সীতত্ত্ব॰ ॥ \* ॥ ত্রীহুপ্রাপ্তৌ শা-লিধান্যেন কর্মা কর্মণ যথা। য-থোক্ত বস্তুসম্পত্তী গ্রাহণ তদ-নুকারি য় । যুবান। মিব গো-धुन। बीरीना मित गानयः ॥

ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব॰ ॥ ব্ৰীহিকঃ ত্ৰি ধান্যবিশিষ্টঃ।ব্ৰী-পান্নঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌ নুদী।। <u>রীহিকাঞ্চনঃ পু॰ মশূরঃ।ইতি</u> ত্রিকাওশেষঃ 11 ব্ৰীহিপণী স্ত্ৰী শালপণী হৈতি ताजनिर्यक्टः॥ ত্ৰীহিভেদঃ পু॰ ধান্যবিশেষঃ। চিনা ইতি খ্যাতঃ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ । অনুঃ ২। ইতামরঃ ॥ বীহিন্যঃ পু॰ ব্ৰীহিনিৰ্মিতপু-রোডাশঃ। ত্রীহেঃপুরোডাশে ইত্যনেন ত্রীহি শকাল্যট্ প্র-ত্যযেন নিষ্পন্নঃ ৷ ইতি সিদ্ধান্ত-क्रिमृ ॥ ত্রীহিরাজিকঃ পুণ কঙ্গধান্য ।। চীনকধান্য । ইতি মেদিনী ॥ दीहित्थिष्ठेः युः नानियानाः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ বীহী ত্রি ব্রীহিযুক্তকেত্রাদি। ব্ৰীহ্ণাদিভ্যশ্চ ইত্যনেন ব্ৰীহি শ্বাদিন প্রত্যেম নিসায়ঃ ৷ ইতি শিদ্ধান্তকৌ गृদী ॥ বীহুগার রী ধান্যগৃহ্ণতেৎ-

**शर्यायः । अमृ**नः २ । ইতি

ত্রিকাণ্ডশেষঃ 11

রেফযুক্তঃ। শি ক্রডতি অক্র- ইতি সিদ্ধান্তকৌ মুদী।।

ক্রড শি সংবৃতি সংহত্যোঃ।। | বৈহঃ তি ত্রীহিনির্মিতঃ। ত্রীহি মজ্জে। ইতি কবিকল্পজ্মঃ।। । শকাদন্ প্রত্যায়েন নিষ্পায়ঃ। ডীৎ বুৰোড। মজ্জো মজ্জন°। | ব্ৰৈহেষঃ দ্বি আশুধান্যোপ-ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ক্রাস কি বধে। ইতি কবিকল্প- ব্লী গ গি গতি বৃত্যােঃ। ইতি জনঃ । রেফযুক্তো দীয়ী । কি কবিকয়দ্রদানঃ ।। অন্তস্থ তৃতী-ক্রান্যতি ক্রান্ত । ইতি দুর্গা-দাসঃ ।।

রীনিঃ । ইতি দুর্গাদাক্ষ ।।

